अघटित कौं सुघटित करैं, सुघटित कौं अटकाय।
अटपट गति भगवंत की, जो मन नाहिं समाय।

—अज्ञात

अपनी बात—

राजस्थानी शब्द-कोश का प्रकाशन जोधपुर से हो रहा है, इस बात से मैं परिचित था और इसके साथ मेरी यह धारणा भी रही कि कोश निर्माण राजस्थानी भाषा के विकास में निश्चय ही एक अभूतपूर्व योगदान है। राजस्थानी भाषा में अनुपम एवं विस्तृत साहित्य उपलब्ध है परन्तु इस भाषा के प्रमाणिक कोश का अभाव उपलब्ध साहित्य की एक बहुत बड़ी न्यूनता थी जो सम्भवत: दीर्घकाल से साहित्य—समाज को खल रही थी। ऐसी स्थिति में राजस्थानी शब्द-कोश निर्माण का श्री सीतारामजी लालस का यह प्रयास सराहनीय ही नहीं अपितु भाषा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण कदम प्रतीत हुआ। प्रशासकीय सेवाओं में निरत रहने के कारण साहित्यिक प्रवृतियों एवं गतिविधियों के सम्पर्क में आने का न मैं अवकाश ही निकाल पाया और न अवसर ही उपलब्ध कर सका। अनायास ही जब मुझे यह सूचना मिली की राजस्थानी शब्द - कोश, उपसमिति के भूतपूर्व अध्यक्ष माननीय ठा० श्री केसरीसिंहजी के त्यागपत्र दे देने के कारण शिक्षा-समिति चौपासनी ने मुझे उक्त समिति का अध्यक्ष बनाकर कोश प्रकाशन के कार्यभार को मेरे कन्धे पर डाला है तो मुझे आश्चर्य ही हुआ कि मुझ जैसा व्यक्ति जो कभी साहित्यिक प्रवृतियों के सम्पर्क में नहीं रहा और कोश जैसे महती कार्य की प्रणाली से परिचित नहीं हुआ, किस प्रकार इस गुरुतर भार को वहन कर पायेगा। शब्द-कोश निर्माण जैसे महत्वपूर्ण कार्य के लिए समिति का अध्यक्ष बनने की योग्यता न मुझ में पूर्व थी और न आज ही अनुभव कर रहा हूँ। हाँ, मातृभाषा राजस्थानी के प्रति विशेष अभिरुचि प्रारम्भ से ही रही है। साहित्य की सरलता और उसमें निहित आकर्षण से मैं पूर्व परिचित था। इस समय इस भाषा की सेवा के लिए प्राप्त हो रहे अवसर को उपयुक्त समझ मैंने राजस्थानी शब्द - कोश उपसमिति के अध्यक्षीय कार्यभार को वहन करना स्वीकार कर लिया।

यदि उत्तरदायित्व का निर्वाह लगन और ईमानदारी से हो जाता है तो निश्चय ही व्यक्ति नवीन उपलब्धियाँ प्राप्त करने में सफल हो जाता है, मेरे अपने कार्यकाल में मेरा यह निजी अनुभव रहा है। मेरे समस्त सेवाकाल में मेरा कार्यक्षेत्र भाषा और साहित्य आदि के कार्यक्षेत्र से सर्वथा भिन्न रहा लेकिन कोश निर्माण कार्य के साथ मेरा सम्पर्क होते ही मुझे नवीन उपलब्धि हुई। अपनी ही भाषा राजस्थानी का वास्तविक बोध तब हुआ जब मैंने निकट से राजस्थानी शब्दों के स्वरूप और उनके अर्थ-विस्तार को देखा।

राजस्थानी शब्द-कोश के प्रकाशन की व्यवस्था के लिए बनी उपसमिति के अध्यक्षीय कार्यभार को जब मैंने वहन किया था उस समय कोश अपनी प्रगति के पथ पर था। कोश का प्रथम खण्ड और द्वितीय खण्ड की प्रथम जिल्द प्रकाशित हो चुकी थी। द्वितीय जिल्द लगभग पूर्ण सी थी। शीघ्र ही उसको भी प्रकाशित कर दिया गया। अब तक के इस सुसम्पादित कार्य को देख कर मुझे अतीव प्रसन्नता की अनुभूति हुई और साथ में यह भी अनुभव हुआ कि यह कोश राजस्थानी भाषा के लिए ही नहीं वरन समस्त साहित्य के लिए एक अमूल्य देन है। पथ प्रशस्त था इसलिए मुझे अपने कार्य को आगे संचालित करने में विशेष कठिनाई की कोई आशंका नहीं रही।

कोश निर्माण काल में ही कोश से मेरा निकट सम्पर्क होने के कारण मैं इस सत्यता से परिचित हुआ कि कोश निर्माण एवं उसके प्रकाशन का कार्य निश्चय ही समय-साध्य और साथ साथ व्यय—साध्य कार्य है। समुचित अर्थ-व्यवस्था एवं उपयुक्त श्रमशील कार्यानुभव प्राप्त भाषाविदों के अभाव में यह कार्य किसी भी दशा में सम्पादित नहीं हो सकता। अब तक के किए गए कार्य में कोशकर्त्ता को निश्चय ही अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा होगा। मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि राजस्थान शिक्षा - विभाग के भूतपूर्व निदेशक श्री अनिल बोर्डिया ने कोश निर्माण के सम्बन्ध में कुछ अनिवार्य व्यय के लिए नियमित आर्थिक सहयोग की व्यवस्था की जो नियमित रूप से प्राप्त हो रही है। इसके लिए मैं श्री अनिल बोर्डिया तथा शिक्षा - विभाग के प्रति अपना धन्यवाद प्रकट करता हूँ। यह आर्थिक सहयोग कोश

कार्यालय में कार्य को निरन्तर रखने के लिए सहायक मात्र था। प्रकाशन के लिए पर्याप्त अर्थ-व्यवस्था की आवश्यकता रहती है; उसकी पूर्ति इससे किसी दशा में सम्भव नहीं थी। कोश कार्यालय के पूर्व पत्रों का अवलोकन करने से ज्ञात हुआ कि कोश प्रकाशन के लिए समय-समय पर केन्द्रीय सरकार एवं राजस्थान राज्य सरकार से आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ है और श्री सीतारामजी लालस ने उसका समुचित सदुपयोग कोश के विभिन्न खण्डों के प्रकाशन में किया है। इस प्राप्त आर्थिक सहयोग से ही तीन जिल्दों का प्रकाशन सम्भव हो सका है। राज्य सरकार से अनुदान प्राप्त करने में राज्य के शिक्षा-मंत्रालय का हमें पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ है। माननीय श्री शिवचरणजी माथुर शिक्षा-मंत्री तथा श्री जगन्नाथसिंहजी मेहता शिक्षा-सचिव ने कोश प्रकाशन के प्रति सद्भावनायें प्रकट कर जो हमें सम्बल और प्रेरणा दी है उसके लिए हम आप सज्जनद्वयी के प्रति आभार प्रकट करते हैं। अर्थ-व्यवस्था में जब-जब भी व्यवधान उपस्थित हुआ कार्य की गति में अवरोध आ गया। इसे मैं स्वाभाविक ही मानता हूँ और यही कारण रहा कि अन्य खण्ड शीघ्र प्रकाशित न हो सके।

साहित्यिक जिज्ञासुओं के समक्ष इस कोश के खण्डों की कड़ी में तृतीय खण्ड की यह प्रथम जिल्द प्रस्तुत की जा रही है। प्रारम्भिक योजना में तृतीय खण्ड को एक ही जिल्द में प्रकाशित करने का विचार था लेकिन पृष्ठों की अधिक संख्या तथा द्वितीय खण्ड के पश्चात् प्रकाशन कार्य के लिए प्रेस सम्बन्धी कुछ विशेष कठिनाइयाँ उपस्थित होने के कारण इस तृतीय खण्ड को भी दो जिल्दों में ही प्रकाशित करने का निश्चय किया गया। यह कहना उचित ही होगा कि इस प्रकाशित खण्ड में पूर्व के खण्डों की भांति कोश निर्माण के लिए पूर्व निर्धारित सिद्धान्तों एवं नियमों का पूर्णतया निर्वाह हुआ है और साथ ही भाषाविदों तथा विशिष्ठ साहित्यकारों से प्राप्त परामर्शानुसार वांछनीय परिवर्तन भी किया गया है। प्रस्तुत जिल्द में 'प' वर्ग के 'प' तथा 'फ' वर्ण के शब्दों को समाविष्ट किया गया है। आगे का कार्य अपनी गति पर ही है। प्रकाशन के लिए यथा समय पूर्व की भांति सरकारी आर्थिक अनुदान प्राप्त होता रहा तो कोश के अवशिष्ट भाग को अपने जिज्ञासु भाषा मर्मज्ञों एवं शोध विद्यार्थियों के समक्ष प्रस्तुत करने में अधिक विलम्ब नहीं होगा, ऐसी मेरी मान्यता है। कोशकार श्री सीतारामजी लालस तथा कोश कार्य से सम्बन्धित उपसमिति की उत्कट अभिलाषा है कि कोश की शेष जिल्दें उचित अवधि में प्रकाशित हो जायें। वर्तमान परिस्थितियों के अनुसार मैं हमारे विज्ञ पाठकों को विश्वास दिला सकता हूँ कि कोश को अन्तिम चरण तक पहुँचाने का यथा सम्भव पूरा-पूरा प्रयत्न होगा। कोश प्रकाशन की व्यवस्था में मेरे सहयोगी बन्धु श्री गोरधनसिंहजी खानपुर सेवा निवृत I. A. S. तथा केप्टिन श्री चन्दनसिंहजी एम० एससी० रोडला ने सदैव अपना सक्रिय सहयोग प्रदान किया है, इसके लिए उन्हें धन्यवाद अर्पित करना मेरा कर्त्तव्य समझता हूँ।

यहाँ अपनी बात कहते हुए यदि मैं स्वर्गीय (कर्नल) ठा० श्यामसिंहजी भूतपूर्व सचिव उपसमिति राजस्थानी शब्द-कोश के प्रति दो शब्द व्यक्त न करूं तो मेरी यह 'अपनी बात' निश्चय ही अपूर्ण रहेगी। यदि मैं यह कहूँ कि कोश निर्माण के आज के तीस वर्ष पूर्व के विचार को मूर्तरूप प्रदान कर कोश को वर्तमान स्थिति तक पहुंचाने में स्व० कर्नल ठा० श्यामसिंहजी, रोडला का दृढ़ हाथ ही मूलभूत आधार था तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। कोश के निर्माण और यथा समय उसकी सम्पूर्णता के प्रति जो आपकी रुचि और उदार भावना रही है वह शब्दों में व्यक्त नहीं की जा सकती है। कोश परिवार के लिए यह अपार दुख की बात हुई कि कोश की सम्पूर्णता के पूर्व ही काल की क्रूरता के प्रभाव से असमय में ही आपके सौहार्द्र से हमें वंचित हो जाना पड़ा। कोश एवं राजस्थानी साहित्य के प्रति आपकी सद्भावनायें रही हैं वे इस साहित्य जगत में इस कोश के साथ चिरकाल तक विद्यमान रहेंगी। मैं दिवंगत आत्मा के प्रति अपनी तथा उपसमिति की ओर से पावन श्रद्धांजलियां अर्पित करता हूँ।

पोष शुक्ला पूर्णिमा
संवत् २०२६
विजय विहार,
जोधपुर.

रणधीरसिंह
अध्यक्ष—उपसमिति
राजस्थानी शब्द-कोश
जोधपुर.

पूर्व प्रकाशित खण्डों के प्रति

कोश प्रत्येक भाषा की समृद्धि और सबलता का सूचक है। वह साहित्य का अनिवार्य अंग है। इसके अभाव में भाषा के साहित्य का समग्र-ज्ञान उक्त भाषा भाषियों को भी नहीं हो सकता फिर इतर भाषा-भाषियों के लिए तो कहा भी क्या जा सकता है। राजस्थानी भाषा के विशाल एवं अनुपम साहित्य से साहित्य-मर्मज्ञ पूर्णतया परिचित हैं। विगत काल में राजस्थानी भाषा में प्रचुर मात्रा में लोकप्रिय साहित्य का सृजन तो अवश्य हुआ लेकिन उक्त भाषा के शब्द-कोश का अभाव सदा ही बना रहा। मध्यकाल में कुछेक छोटे-मोटे कोशों की रचना अवश्य हुई जिनमें अवधानमाला, हमीर नाममाला, नागराज डिंगल-कोश आदि आदि उल्लेखनीय हैं लेकिन इनमें से कोई भी कोश प्रमाणिक कोश नहीं माना जा सकता। साहित्य में प्रयुक्त शब्दावली का उपयुक्त संग्रह एवं उनकी समुचित अर्थ-व्याख्या न होने के कारण ये कोश पर्यायवाची शब्दों के संग्रह मात्र ही बन कर रह गए। कालान्तर में भी उपयुक्त कोश के निर्माण के लिए कोई प्रयत्न हुआ दृष्टिगोचर नहीं होता। यह अभाव वर्तमान समय तक निरन्तर बना रहा। यह सत्य ही है कि "राजस्थानी सबद कोस" की आवश्यकता साहित्य जगत में निरन्तर अनुभव की जा रही थी। सम्भवतः इसी भावना से प्रेरित होकर श्री सीतारामजी लाळस ने यह बीड़ा अपने हाथ में लिया और अपने अथक परिश्रम एवं साहित्यिक साधना के फलस्वरूप राजस्थानी शब्दों का संकलन कर वृहद् शब्द-कोश के प्रकाशन का कार्य प्रारम्भ कर दिया।

"राजस्थानी सबद कोस" के प्रकाशित प्रथम खण्ड में कोशकर्त्ता और सम्पादक श्री सीतारामजी लाळस द्वारा प्रस्तुत किए गए निवेदन से स्पष्ट प्रकट हो जाता है कि कोश प्रकाशन का गृहीत बीज-भाव काल की गति के साथ कैसे अंकुरित होकर साहित्य सेवी सहयोगियों की सद्भावनाओं एवं सरकारी आर्थिक सहयोग को प्राप्त कर पल्लवित हुआ। अनेकानेक संघर्षपूर्ण स्थितियों के बीच एक लम्बी अवधि के पश्चात् इस वृहद् कोश का प्रथम खण्ड स्वर प्रकरण के साथ 'क' वर्ग के सभी वर्णों के लगभग २८७७१ शब्दों के संग्रह के रूप में सन् १९६२ में पाठकों के समक्ष प्रस्तुत हुआ। इस प्रथम खण्ड में एक महत्वपूर्ण विस्तृत साहित्योपयोगी प्रस्तावना जोड़ी गई है। जिसमें राजस्थानी भाषा के उद्भव और विकास की व्याख्या करते हुए राजस्थानी साहित्य का विवेचनात्मक परिचय दिया गया है।

समग्र कोश को चार खण्डों में ही सम्पूर्ण कर प्रकाशित करने की योजना थी लेकिन प्रथम खण्ड प्रकाशित होने के पश्चात् आर्थिक संकट उपस्थित होने के कारण दूसरा खण्ड शीघ्र प्रकाशित नहीं किया जा सका। व्यवधान के कारण कुछ समय अधिक व्यतीत हो गया। अब तक प्रकाशन का कार्यभार 'राजस्थानी शोध संस्थान जोधपुर' पर था परन्तु इस बीच की अवधि में कोश को शीघ्र प्रकाशित करने के उद्देश्य से 'चौपासनी शिक्षा-समिति जोधपुर' के तत्वधान में 'उप-समिति राजस्थानी शब्द-कोश' का गठन किया गया। उप-समिति के देख-रेख में सर्वप्रथम द्वितीय खण्ड की प्रथम जिल्द जिसमें लगभग २०४२८ शब्दों का संग्रह है सन् १९६७ में जिज्ञासु पाठकों के समक्ष प्रस्तुत की गई। इस जिल्द में जिसमें ७६८ पृष्ठ हैं 'च' वर्ग और 'ट' वर्ग के वर्णों के साथ 'त' वर्ग के 'त' वर्ण शब्दों को संग्रहीत किया गया है। इसके थोड़े समय पश्चात् ही सन् १९६८ के ५ नवम्बर माह में द्वितीय खण्ड की दूसरी जिल्द भी जिसमें ६४७ पृष्ठ है प्रकाशित कर दी गई। इस जिल्द में 'त' वर्ग के 'थ' वर्ण से 'न' वर्ण तक के लगभग १६,४६५ शब्दों का संग्रह किया गया है। इस प्रकार द्वितीय खण्ड दो जिल्दों में सम्पूर्ण हुआ, जिसमें 'च' से 'त' वर्ग तक के सभी वर्णों के लगभग ३६,८९३ शब्द है।

कार्यालय में कार्य को निरन्तर रखने के लिए सहायक मात्र था। प्रकाशन के लिए पर्याप्त अर्थ - व्यवस्था की आवश्यकता रहती है; उसकी पूर्ति इससे किसी दशा में सम्भव नहीं थी। कोश कार्यालय के पूर्व पत्रों का अवलोकन करने से ज्ञात हुआ कि कोश प्रकाशन के लिए समय-समय पर केन्द्रीय सरकार एवं राजस्थान राज्य सरकार से आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ है और श्री सीतारामजी लालस ने उसका समुचित सद्उपयोग कोश के विभिन्न खण्डों के प्रकाशन में किया है। इस प्राप्त आर्थिक सहयोग से ही तीन जिल्दों का प्रकाशन सम्भव हो सका है। राज्य सरकार से अनुदान प्राप्त करने में राज्य के शिक्षा-मंत्रालय का हमें पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ है। माननीय श्री शिवचरणजी माथुर शिक्षा-मंत्री तथा श्री जगन्नाथसिंहजी मेहता शिक्षा-सचिव ने कोश प्रकाशन के प्रति सद्भावनायें प्रकट कर जो हमें सम्बल और प्रेरणा दी है उसके लिए हम आप सज्जनद्वयी के प्रति आभार प्रकट करते हैं। अर्थ-व्यवस्था में जब-जब भी व्यवधान उपस्थित हुआ कार्य की गति में अवरोध आ गया। इसे मैं स्वाभाविक ही मानता हूँ और यही कारण रहा कि अन्य खण्ड शीघ्र प्रकाशित न हो सके।

साहित्यिक जिज्ञासुओं के समक्ष इस कोश के खण्डों की कड़ी में तृतीय खण्ड की यह प्रथम जिल्द प्रस्तुत की जा रही है। प्रारम्भिक योजना में तृतीय खण्ड को एक ही जिल्द में प्रकाशित करने का विचार था लेकिन पृष्ठों की अधिक संख्या तथा द्वितीय खण्ड के पश्चात् प्रकाशन कार्य के लिए प्रेस सम्बन्धी कुछ विशेष कठिनाइयाँ उपस्थित होने के कारण इस तृतीय खण्ड को भी दो जिल्दों में ही प्रकाशित करने का निश्चय किया गया। यह कहना उचित ही होगा कि इस प्रकाशित खण्ड में पूर्व के खण्डों की भांति कोश निर्माण के लिए पूर्व निर्धारित सिद्धान्तों एवं नियमों का पूर्णतया निर्वाह हुआ है और साथ ही भाषाविदों तथा विशिष्ठ साहित्यकारों से प्राप्त परामर्शानुसार वांछनीय परिवर्तन भी किया गया है। प्रस्तुत जिल्द में 'प' वर्ग के 'प' तथा 'फ' वर्ण के शब्दों को समाविष्ट किया गया है। आगे का कार्य अपनी गति पर ही है। प्रकाशन के लिए यथा समय पूर्व की भांति सरकारी आर्थिक अनुदान प्राप्त होता रहा तो कोश के अवशिष्ट भाग को अपने जिज्ञासु भाषा मर्मज्ञों एवं शोध विद्यार्थियों के समक्ष प्रस्तुत करने में अधिक विलम्ब नहीं होगा, ऐसी मेरी मान्यता है। कोशकार श्री सीतारामजी लालस तथा कोश कार्य से सम्बन्धित उपसमिति की उत्कट अभिलाषा है कि कोश की शेष जिल्दें उचित अवधि में प्रकाशित हो जायें। वर्तमान परिस्थितियों के अनुसार मैं हमारे विज्ञ पाठकों को विश्वास दिला सकता हूँ कि कोश को अन्तिम चरण तक पहुँचाने का यथा सम्भव पूरा-पूरा प्रयत्न होगा। कोश प्रकाशन की व्यवस्था में मेरे सहयोगी बन्धु श्री गोरधनसिंहजी खानपुर सेवा निवृत I. A. S. तथा केप्टिन श्री चन्दनसिंहजी एम० एससी० रोडला ने सदैव अपना सक्रिय सहयोग प्रदान किया है, इसके लिए उन्हें धन्यवाद अर्पित करना मेरा कर्त्तव्य समझता हूँ।

यहाँ अपनी बात कहते हुए यदि मैं स्वर्गीय (कर्नल) ठा० श्यामसिंहजी भूतपूर्व सचिव उपसमिति राजस्थानी शब्द-कोश के प्रति दो शब्द व्यक्त न करूं तो मेरी यह 'अपनी बात' निश्चय ही अपूर्ण रहेगी। यदि मैं यह कहूँ कि कोश निर्माण के आज के तीस वर्ष पूर्व के विचार को मूर्तरूप प्रदान कर कोश को वर्तमान स्थिति तक पहुंचाने में स्व० कर्नल ठा० श्यामसिंहजी, रोडला का दृढ़ हाथ ही मूलभूत आधार था तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। कोश के निर्माण और यथा समय उसकी सम्पूर्णता के प्रति जो आपकी रुचि और उदार भावना रही है वह शब्दों में व्यक्त नहीं की जा सकती है। कोश परिवार के लिए यह अपार दुख की बात हुई कि कोश की सम्पूर्णता के पूर्व ही काल की क्रूरता के प्रभाव से असमय में ही आपके सौहार्द्र से हमें वंचित हो जाना पड़ा। कोश एवं राजस्थानी साहित्य के प्रति आपकी सद्भावनायें रही हैं वे इस साहित्य जगत में इस कोश के साथ चिरकाल तक विद्यमान रहेगी। मैं दिवंगत आत्मा के प्रति अपनी तथा उपसमिति की ओर से पावन श्रद्धांजलियां अर्पित करता हूँ।

पोष शुक्ला पूर्णिमा
संवत् २०२६
विजय विहार,
जोधपुर.

रणधीरसिंह
अध्यक्ष—उपसमिति
राजस्थानी शब्द-कोश
जोधपुर.

पूर्व प्रकाशित खण्डों के प्रति

कोश प्रत्येक भाषा की समृद्धि और सबलता का सूचक है। वह साहित्य का अनिवार्य अंग है। इसके अभाव में भाषा के साहित्य का समग्र-ज्ञान उक्त भाषा भाषियों को भी नहीं हो सकता फिर इतर भाषा-भाषियों के लिए तो कहा भी क्या जा सकता है। राजस्थानी भाषा के विशाल एवं अनुपम साहित्य से साहित्य-मर्मज्ञ पूर्णतया परिचित हैं। विगत काल में राजस्थानी भाषा में प्रचुर मात्रा में लोकप्रिय साहित्य का सृजन तो अवश्य हुआ लेकिन उक्त भाषा के शब्द-कोश का अभाव सदा ही बना रहा। मध्यकाल में कुछेक छोटे-मोटे कोशों की रचना अवश्य हुई जिनमें अवधानमाला, हमीर नाममाला, नागराज डिंगल-कोश आदि आदि उल्लेखनीय हैं लेकिन इनमें से कोई भी कोश प्रमाणिक कोश नहीं माना जा सकता। साहित्य में प्रयुक्त शब्दावली का उपयुक्त संग्रह एवं उनकी समुचित अर्थ-व्याख्या न होने के कारण ये कोश पर्यायवाची शब्दों के संग्रह मात्र ही बन कर रह गए। कालान्तर में भी उपयुक्त कोश के निर्माण के लिए कोई प्रयत्न हुआ दृष्टिगोचर नहीं होता। यह अभाव वर्तमान समय तक निरन्तर बना रहा। यह सत्य ही है कि "राजस्थानी सबद कोस" की आवश्यकता साहित्य जगत में निरन्तर अनुभव की जा रही थी। सम्भवतः इसी भावना से प्रेरित होकर श्री सीतारामजी लाळस ने यह बीड़ा अपने हाथ में लिया और अपने अथक परिश्रम एवं साहित्यिक साधना के फलस्वरूप राजस्थानी शब्दों का संकलन कर बृहद् शब्द-कोश के प्रकाशन का कार्य प्रारम्भ कर दिया।

"राजस्थानी सबद कोस" के प्रकाशित प्रथम खण्ड में कोशकर्त्ता और सम्पादक श्री सीतारामजी लाळस द्वारा प्रस्तुत किए गए निवेदन से स्पष्ट प्रकट हो जाता है कि कोश प्रकाशन का गृहीत बीज-भाव काल की गति के साथ कैसे अंकुरित होकर साहित्य सेवी सहयोगियों की सद्भावनाओं एवं सरकारी आर्थिक सहयोग को प्राप्त कर पल्लवित हुआ। अनेकानेक संघर्षपूर्ण स्थितियों के बीच एक लम्बी अवधि के पश्चात् इस बृहद् कोश का प्रथम खण्ड स्वर प्रकरण के साथ 'क' वर्ग के सभी वर्णों के लगभग २८७७१ शब्दों के संग्रह के रूप में सन् १९६२ में पाठकों के समक्ष प्रस्तुत हुआ। इस प्रथम खण्ड में एक महत्वपूर्ण विस्तृत साहित्योंपयोगी प्रस्तावना जोड़ी गई है। जिसमें राजस्थानी भाषा के उद्भव और विकास की व्याख्या करते हुए राजस्थानी साहित्य का विवेचनात्मक परिचय दिया गया है।

समग्र कोश को चार खण्डों में ही सम्पूर्ण कर प्रकाशित करने की योजना थी लेकिन प्रथम खण्ड प्रकाशित होने के पश्चात् आर्थिक संकट उपस्थित होने के कारण दूसरा खण्ड शीघ्र प्रकाशित नहीं किया जा सका। व्यवधान के कारण कुछ समय अधिक व्यतीत हो गया। अब तक प्रकाशन का कार्यभार 'राजस्थानी शोध संस्थान जोधपुर' पर था परन्तु इस बीच की अवधि में कोश को शीघ्र प्रकाशित करने के उद्देश्य से 'चौपासनी शिक्षा-समिति जोधपुर' के तत्त्वधान में 'उप-समिति राजस्थानी शब्द-कोश' का गठन किया गया। उप-समिति के देख-रेख में सर्वप्रथम द्वितीय खण्ड की प्रथम जिल्द जिसमें लगभग २०४२८ शब्दों का संग्रह है सन् १९६७ में जिज्ञासु पाठकों के समक्ष प्रस्तुत की गई। इस जिल्द में जिसमें ७६८ पृष्ठ है 'च' वर्ग और 'ट' वर्ग के वर्णों के साथ 'त' वर्ग के 'त' वर्ण शब्दों को संग्रहीत किया गया है। इसके थोड़े समय पश्चात् ही सन् १९६८ के ५ नवम्बर माह में द्वितीय खण्ड की दूसरी जिल्द भी जिसमें ६४७ पृष्ठ है प्रकाशित कर दी गई। इस जिल्द में 'त' वर्ग के 'थ' वर्ण से 'न' वर्ण तक के लगभग १६,४६५ शब्दों का संग्रह किया गया है। इस प्रकार द्वितीय खण्ड दो जिल्दों में सम्पूर्ण हुआ, जिसमें 'च' से 'त' वर्ग तक के सभी वर्णों के लगभग ३६,८९३ शब्द है।

यह कहना उचित ही होगा कि कोश निर्माण के लिए प्रारम्भ में जिन सिद्धान्तों का निर्माण कर कार्यारम्भ किया गया था उनका आज तक पूर्णतः निर्वाह हुआ है। अर्थ स्पष्टीकरण के लिए उपयुक्त उद्धरण साथ दिए गए हैं। साथ ही शब्दों से सम्बन्धित लोक व्यवहृत मुहावरों तथा लोकोक्तियों को भी यथा स्थान अकारादि क्रम से देकर उनका अर्थ भी हिन्दी में दिया गया है। शब्दों की व्युत्पत्ति भी देने की व्यवस्था रही है।

द्वितीय खण्ड को दो जिल्दों में विभक्त कर प्रकाशित करने में प्राप्त हुई सुविधा को देखकर तृतीय खण्ड को भी दो जिल्दों में ही प्रकाशित करने का निर्णय किया गया। 'उप-समिति राजस्थानी शब्द कोश' के संरक्षण में ही यह प्रथम जिल्द तैयार की गयी जिसे पाठकों के समक्ष रखते हुए हमें हर्षानुभव हो रहा है। प्रसन्नता है कि कोशकार्य अपनी गति पर है और अब निकट भविष्य में ही इसकी पूर्णता की आशा है। इस तृतीय खण्ड की प्रथम जिल्द में 'प' वर्ग के 'प' तथा 'फ' वर्ग के लगभग १०४१८ शब्दों का संकलन है।

राजस्थानी होने के नाते ही नहीं अपितु भाषा के प्रति स्वाभाविक रुचि होने के कारण भाषा सम्बन्धी कार्य के प्रति मेरा अनुराग रहा है। मैं अपने स्वर्गीय पूज्य पिताजी कर्नल ठा० श्यामसिंहजी को विशेष रूप से राजस्थानी भाषा के साहित्य अध्ययन एवं उनके विकास कार्य में सतत संलग्न देखा। उनके द्वारा किया गया वृहद् साहित्य संग्रह, साहित्य की ओर प्रेरित करने में पर्याप्त है। पूज्य पिताजी श्री की इस कोश में भी विशेष अभिरुचि रही है। कोश निर्माण कार्य में रुचि पूर्वक योगदान कर इसे अपने पिताजी की अभिलाषानुरूप पूर्ण कराना अपना धर्म और कर्त्तव्य समझकर अपनी ओर से यथाशक्ति प्रयत्नशील हूं। सहृदय साहित्यिक सज्जन वृन्द के सौहार्द एवं राज्यीय सहयोग से पूर्ण आशवस्त हूं कि यह कोश अब शीघ्र ही सम्पूर्ण हो सकेगा। इस पुनीत कार्य के लिए सभी पाठक बन्धुओं से भी ऐसी कामना की आशा रखता हूं।

विनीत

चन्दनसिंह

सचिव

उप-समिति राजस्थानी शब्द कोश

जोधपुर.

दोलत्ता भवन,
रिसालारोड़, जोधपुर.
२६ जनवरी १९७०

॥ श्री ॥

* निवेदन *

—: दूहा सोरठा :—

नारायण भूले नहीं, अपणी मायाईश। रोग पैन आखद रचै, जगवाला जगदीश ॥१॥
साच न बूढो होय, साच अमर संसार में। कैतो धोवो कोय, श्रो सेवट प्रगटै 'उदय' ॥२॥
सेवा देश समाज, धरती में साचो धरम। इण सू पूरै आज, सकल मनोरथ सांवरो ॥३॥
साहित री सेवाह, सेवा देश समाज री। आवे इण एवाह, ईंशर कीरपा सू उदय ॥४॥
सत ऊजल संदेश, उदयराज ऊजल अखे। दीरै वांरा देश, ज्यारा साहित जगमगे ॥५॥

भारत संसद में सन् १९५० रे करीब देशरी दूसरी सगला प्रान्ता री भासावां मानी गई उणां रे सामल राजस्थानी भाषा ने नहीं मानी तो कुदरती तौर सू राजस्थान में अपणी भासा राजस्थानी ने मान्यता दिरावण सारु आन्दोलन पत्रों में शुरू हुवो।

राजस्थानी रो विरोध में अकसर आ वात कही जाती के इण रो कोई आधुनिक कोश नहीं हो। श्रो घाटो मिटावण सारु में श्री सीतारामजी लालस ने क्यो क्योकि हूं जाणता हो के डिंगल रा शब्द संग्रह रो उणां ने काफी अनुभव है। श्री सीतारामजी इणा काम सारु तैयार हो गया ने म्हें दोनु सामिल होय ने पूरा सहयोग से मैनत सूं कोश रो काम शुरू कियो नें इण में खर्च री मदत री जरुरत हुई तो उसा वावत म्हें स्वर्गीय ठाकुर श्री भवानीसिहजी साहव बार एटला पोकरण ने अरज करी। इणां कृपा करने मंजूर करी ने तारीख १-५-५१ सूं रुपीया री मदद देणी चालू कर दीवी। सीतारामजी मथाणियां में लेखक राख ने काम शब्द संग्रह री स्लिप कोपिया लिखावण रो चालू कर दियो श्रौर म्हें दोनू तारीख १-५-५१ सूं सन् १९५२ रा आखिर तक सामिल कोम कियो जिण सूं कुल शब्द ११३००० स्लिप कोपियां में लिखीजीया फेर समय रा हेरफेर सू श्री पोकरण ठाकुर साहव री सहायता बंद हो गई। इण सूं सन् १९५३ लगायत सन् १९५६ तक ४ साल तक कोश रो काम वन्द रेयो।

इण कोश ने पूरो करण री म्हां दोनूं री पूरी लगन ही। म्हें करनल श्री सोमसिंहजी रोडला ने जून १९५६ में कोश में सहायता देण सारु कागद लिखियो उण रो जवाव उणां तारीख २९-६-५६ रा कागद में म्हने लिखियों के कोश सारु मावार रु० ५०), ३ या ४ साल तक या कोश पूरो होवे जठा तक दे सकूंला। परन्त उणांरा पिता करनल श्री अनोपसिंहजी वीमार हो गया इण वास्ते सहायता चालू में देरी हुई। उणां रे स्वर्गवास होणे रे वाद में मास नवम्बर रा अन्त में नें दिसम्बर रा सरु में जोधपुर में ही जद कर्नल श्री सांमसिंहजी कोश री मदत वावत वातचीत करण ने दोयवार म्हारे मकान पर आया श्रौर फिर सहायता देणी चालू कर दीवी।

कोश रो काम उणां री सहायता सूं सन् १९५७ री जनवरी सूं सीतारामजी जोधपुर में चालू कर दिया क्योंकि जद उणां रो तवादला जोधपुर में हो गयो हो। जो एक लाख तेरह हजार शब्दो री स्लिप कोपिया पेलो वणी हुई ही। उणा री स्लिपां काट काटकर अक्षरवार अलग अलग कर दी गई ने नवा शब्द भी जो मिलिया के शामिल कर दिया गया। इणतरे सव शब्द अक्षरवार किया जाय ने उणां ने अक्षरवार रजिस्टरों में लिख लिया गया। इणतरे कोश सन् १९५८ री माह मई तक पूरो हो गयो। म्हें पैली री तरे सीतारामजी रे साथ हर तरह रो सहयोग ने मदत राखी ने काम कियो। श्रो कोष करनल श्री सामसिंहजी री रुपीया री सहायता सूं पूरो हुवो।

इणरे वाद प्रेस कापी वणाइण रो काम चालू हुवो उणरे खरचे रो प्रवन्ध ठाकुर श्री गोरधनसिंहजी मेडतिया खानपुर वाला श्री झालावाड़ दरवार सू श्री नीवांज ठाकुर साहव सू रुपियां री सहायता लेने करायो ने करे छपण रो प्रवन्ध राजस्थानी सोध संस्थान चोपासणी जोधपुर सूं हुवो ने तारीख ११-३-१९५९ ने सीतारामजी ने इण सांध संस्थान शिक्षा विभाग सू लोन पर ले लिया जद सूं वे इण संस्थान में काम करण लागा।

इण कोश ने तैयार करावण में व्युत्पति विभाग पूरो करावण में स्वर्गीय पं० नित्यानन्दजी शास्त्री जोधपुर री घणी मदत ही इण वास्ते वैकूठवासी विद्वान ने वणा धन्यवाद देवां हां। तारीख २२-५-५७ ने लिख दय्या नीचे मुजब हो:—

चांदयावटी
ता० २२-५-५७

सीतारामजी लालस ने राजस्थानी कोश की रचना की है। यह भारी कठिन कार्य का यन्त्र श्री उदयराजजी ऊज्जवल यन्त्री (मेकेनिक) के वल संचालित हुवा है। मैंने इसे देखा इन्होंनें प्रत्येक शब्द और धातु को जाचकर उनके प्रयोज्य सव प्रकार के प्रयोगों को प्रदर्शित किया है क्योंकि इन्होंने संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश विविध भापाओं के वल पर यह कार्य भार उठाया है। बीच बीच में हर समय मेरे साथ विचार विमर्श करते हुए आपने पूर्ण परिश्रम करके इसे रचा है। ऐसे कठिन कार्य को पार करने में श्री सीतारामजी की ही पूर्ण कृपा ने सहायता की है। आशा है राजस्थान की जनता इससे लाभ उठाकर इस कोश की त्रुटी की पूर्ती से पूर्ण संतुष्ट होगी और श्रम को समझने वाले विद्वान कार्य प्रशंसा करेंगे। फकत नित्यानंद शास्त्री।

इणी तरे ननरण विश्वविद्यालय सूं डा० डब्लू० एस० एलन जो संसार री करीव चालीस भापाओ रो जाणकार है ने अन्तरराष्ट्रीय ख्याती रा भापा शास्त्री है वे राजस्थानी भापा रे ध्वनी विज्ञान संबंधी जांच वो शोध रो काम सारु सन् १९५२ में राजस्थान में आया हा ने जोधपुर में दोय मास ठहरिया हा ने भापा रे सिलसिले में म्हारे कने घणा आता उणांने म्हे ने सीतारामजी दोनू कोश वाली स्लिप कोपिया राय रे वास्ते म्हारा मकान पर दिखाई ही उणां म्हारो उत्साह बधायो उणां री सम्मति नीचे मुजव है:—

THINITY COLLEGE CAMBRIDGE 26 Feb., 1960

It is excellent news for Indo-Aryan Linguistics that the Rajastani Dictionary of Shri Udayraj Ujjwal and Shri Sitaram Lalas is now to de published. Rajastani has long presented a serious gap in the comparative Study of the vaca-bulary of the Indo-Aryan Languages and now at last it is filled by the devoted work of two Rajasthani Scholars and the support of their distinguished Sponsors, I know well and difficulties that have beset the under taking of this task and its Completion is therefore all the more a menument to the courage of these who conceived the project and brought it to fruition. With this work added to the grammer by Shri Sitaramji, the status of the Rajasthani language can no longer be denied.

Sd.-W.S. Allen. M.A.P.H.D.
Professor of Comprative Philology
In the University of Cambridge.

कोश दोय दातार राजपूत सरदारो री रुपीया रो मदत सू शुरू होय ने पूरो वणियो, इण वास्ते पुरानी प्रथा रे माफक महे ता० २६-६-५७ ने इण वावत काव्य गीत, कवित, रचियो ने सीतारामजी कने भेजीया वो अठे दिया जावे है इण ने दोनूं सरदारो रो धन्यवाद रे तौर पर वण ने है। इण गीत री सीतारामजी पत्रो में तारीफ की है।

"गीत" राजस्थानी में

कोम मरु वाणरो सुणे वण्यो नह किणी सू, लाख शब्दो तणे वडो लेखो गया भूपात कवराज गुण गावता, दियो नह ध्यान इण हेत देखो ॥१॥
खूटगा खजाना नरेसो देखता, गया तजमाल ठकरेत गाढा। सेव साहित्य री वणी न किणी सू, लागता पंथ घन छोड़ लाडा ॥२॥
सेव साहित्य ही रहे संसार में, सुजसफल लागवे घणी सरसे। मिले सुखलाध हितकर नित समाजां, दिनों दिन कितां सनमान दरसै ॥३॥
पांण मरू वांन है प्रांत रो परंपर, वेण परताप राजस्थान ऊचों। रखी न पढण में मायखां प्रांत री, निरखतां जाय है प्रांत नीचो ॥४॥
वणाई चारणों व्याकरण विधोवित्र, वणेगी कोश ही लाख सवदो। सीत रो परिश्रम अधग फलियों सिरे, रेटियो 'उदय' मिल सकल सवदो ॥५॥
पोकरण भवानीसीह चापे प्रथम कोश रे हेत घन खर्च कीयो। पडंता लांच इण समेरा फेर सू, स्यामंसी रोडले कांम सीधो ॥६॥
रोटले स्यामसी सपूतो सिरोमण, कमवज आज अखियाज कीधी। वार विपरीत में हजारो खरचवे, दाद ऊजल 'उदे' देस दीधी ॥७॥
चारणा दोय मिल व्याकरण कोश रचि,वण्या नह वडो कवराज मिलियो। कमधा दोय मिन कियो सुभ कांम जो,महीयो कियो नह बीस मिलियो ॥८॥

कवित

सूर्यमल मिशण से वनाया वंस भास्कर, वूंदी नृपराम ने खजाना खोल करके।
सावल कविराज ने लिखाया इतिशास त्योही, उदियापुर रान के कोप वल धरके।
सीताराम लालस ने कीन राजस्थानी कोश, उदयराज उज्जवल के योग शक्ति भरके।
पोकरण भवानीसिह स्यामसिह रोटला के कोश हित कोप वने दानी घनवघर के।
प्रान्त की प्रवल भापा प्रतिष्ठित परंपर विवुवन दीनमाल वीरपद वाला है।
शिक्षा को माध्यम निज प्रान्त हूँ में रखी नहीं होय कोटि जनता को दास गति डाला है।
डूवत है मात्रभापा वीर राजस्थान के री, प्रान्त का भविष्य याते दर्शित विदाजा है।
जीवित उट्टेगी प्रीय राजस्थानी आशामात्र, व्याकरण कोश याके वनेगे शिशाला है।

Compared by
Sd-Bhawar Singh
Sd-लक्ष्मीप्रकाश गुप्ता

Sd-ह० उदयराज उज्वल
Sd-Nemi chand Jain
Civil Judge, Jodhpur.

संकेताक्षरों का विवरण

संक्षिप्त रूप	पूर्ण रूप	रचियता का नाम
अं०	अंग्रेजी	
अ०	अरबी	
अक०	अकर्मक	
अक० रू०	अकर्मक रूप	
अनु०	अनुकरण	
अनेक०, अनेका०	अनेकार्थी कोश	श्री उदयरांम वारहट (गूंगा)
अप०	अपभ्रंश	
अमरत	अमरत सागर	श्री महाराजा प्रतापसिंह (जयपुर)
अ० मा०	अवधांन माळा	श्री उदयरांम वारहट (गूंगा)
अ० रू०		
अल्प०, अल्पा०	अल्पार्थ रूप	
अ० वचनिका	अचळदास खीची री वचनिका	सिवदास गाडण
अव्य०	अव्यय	
इव०	इवरानी	
उ०	उदाहरण	
उप०	उपसर्ग	
ऊ० र०	उक्ति रत्नाकर	
उभ० लिं०	उभयलिंग	
ऊ० का०	ऊमर काव्य	श्री ऊमरदांन लाळस
एका०	एकाक्षरी नांम माळा	श्री वीरभांण रतनू. श्री उदयरांम वारहट (गूंगा)
ऐ० जै० का० सं०	ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह	संपादक-अगरचंद नाहटा
क० कु० वो०	कविकुळ वोध	श्री उदायरांम वारहट
क० च०	करनी चरित्र	ठा० किशोरसिंह वार्हस्पत्य
कर्म० वा०, कर्म०वा०रू०	कर्म वाच्य रूप	
कहा०	कहावत	
कां० दे० प्र०	कांन्हड़ दे प्रबंध	श्री पद्मनाभ
क्रि०	क्रिया	
क्रि० अ०	क्रिया अकर्मक	
क्रि० प्र०	क्रिया प्रयोग	
क्रि० प्रे०	क्रिया प्रेरणार्थक	
क्रि० वि०	क्रिया विशेषण	
क्रि० स०	क्रिया सकर्मक	
क्व० क्व० प्र०	क्वचित् प्रयोग	
ग० मो०	गज मोख	हरसूर वारहठ
गी० रां०	गीत रांमायण	श्री अमृतलाल माथुर (कुचेरा निवासी)
गु०	गुजराती	

संक्षिप्त रूप	पूर्ण रूप	रचयिता
गु० रू० बं०	गुण-रूपक-बंध	श्री केसोदास गाडण
गोर	गोरादि	
गो० रू०	गोगादे रूपक	श्री पहाड़ खां आढ़ो
ची०	चीनी	
चेत मांनखा	चेतमांनखा	श्री रेवतदांन कल्पित
चौबोली	चौबोली	सम्पादक डॉ० कन्हैयालाल सहल
ज० खि०	जगा खिड़िया रा कवित	श्री जगो खिड़ियो
जा०	जापानी	
ज्यो०	ज्योतिष	
झूमखो	वातांरो झूमखो	सम्पादक डॉ० मनोहर शर्मा
डिं०	डिंगल	
डिं० को०	डिंगल कोश	कविराजा मुरारिदांन जी (बूंदी)
डिं० नां० मा०	डिंगल नांम माला	श्री हरराज (कवि)
ढो० मा०	ढोला मारू[१]	सम्पादक श्री रामसिंह, श्री सूर्य करण पारीक, श्री नरोत्तमदास स्वामी
तु०	तुर्की	
द० दा०	दयालदास री ख्यात	श्री दयालदास सिंढायच
दसदेव	दसदेव	नानूरांम संस्कर्ता
द० वि०	दलपत विलास	सम्पादक श्री रावत सारस्वत
दे०	देखो	
देवि, देवी	श्री देवियांण	श्री ईसरदास बारहठ
द्रो० पु०	द्रोपदी पुकार	श्री रांमनाथ कवियो
ध० व० ग्रं०	धर्म वर्धन ग्रंथावली	संपादक अगरचंद नाहटा
नां० मा०	नांम माला	अज्ञात
ना० डिं० को०	नागराज डिंगल कोस	श्री नागराज पिंगल
ना० द०	नाग दमण	श्री सांइया झूला
नी० प्र०	नीति प्रकास	श्री सगरांम सिंह मुहणोत
नैणसी	मुहणोत नैणसी री ख्यात	प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर
पं०	पंजाबी	
पं० पं० च०	पंच पंडव चरित्र	सालिभद्र सूरि
प० च० चौ०	पद्मिनी चरित्र चौपाई	कविलब्धोदय
पर्या० पर्याय०	पर्यायवाची शब्द	
पा०	पाली	
पा० प्र०	पाबू प्रकास	कवि श्री मोडजी आसियो
पिं० प्र०	पिंगल प्रकास	श्री हमीरदांन रतनू
पी० ग्रं०	पीरदांन ग्रंथावली	पीरदांन लालस

१. इसके अतिरिक्त हमने "ढोला मारू" की भिन्न २ लेखकों द्वारा लिखित हस्तलिखित वातों की प्रतियों में से भी शब्द लिए हैं, उनका भी संकेत चिन्ह ढो. मा ही रखा गया है।

संक्षिप्त रूप	पूर्ण रूप	रचयिता
पु०	पुल्लिग	
पुर्त्त०	पूर्त्तगाली	
पृप०	पृषोदरादि	
पे० रू०	पेमसिंह रूपक	श्री प्रतापदांन गाडण
प्र०	प्रत्यय	
प्रा०	प्राकृत	
प्रा० प्र०	प्राचीन प्रयोग	
प्रा० रू०	प्राचीन रूप	
प्रे०	प्रेरणार्थक	
प्रे० रू०	प्रेरणार्थक रूप	
फा०	फारसी	
फ्रां०	फ्रांसिसी	
वहु०/व०व०	वहु वचन	
वां० दा०	वांकीदास ग्रंथावली भाग १,२,३,	श्री वांकीदास
वां० दा० ख्या	वांकीदास री ख्यात	श्री वांकीदास
वा०दा० ख्यात		
वी० दे०	वीसल दे रासौ	नरपति नाल्ह
भ० मा०	भक्तमाल	श्री वह्मदास दादुपंथी
भाव०	भाव वाचक	
भाव०वा०भाव या० रू	भाव वाच्य रूप	
भिक्खु	भिक्खु दृष्टान्त	
भि० द्र०	,, ,,	
भू०	भूतकाल	
भू० का० क्रि०	भूत कालिक क्रिया	
भू० का० कृ०	भूतकालिक कृदन्त	
भू० का० प्र०	भूत कालिक प्रयोग	
भ्रं० पु०	भ्रंगी पुरांण	श्री हरदास
म०	मराठी	
मह० रू० भे०	महत्व रूप भेद	
मह० महत्व	महत्त्ववाची शब्द	
मा०	मागधी	
मा० कां० प्र०	माघवानल काम कंदला प्रवंध	कवि गणपति
मा० म०	मारवाड़ मर्दुमशुमारी रिपोर्ट	मुंशी श्री देवी प्रसाद
मा० वचनिका	माताजी री वचनिका	जती जयचंद
मि०	मिलाग्रो	
मीरां	मीरां वाई	
मु० मुहा०	मुहावरा	
मे० म०	मेहाई महिमा	श्री हिंगलाजदान कवियौ
यू०	यूनानी	
यौ०	यौगिक	
र० ज० प्र०	रघुवरजस प्रकाम	श्री किसनौ ग्राढौ

संक्षिप्त रूप	पूर्ण रूप	रचयिता
रू०	रघुनाथ रूपक गीतां री	श्री मंछाराम, मंछकवि
र० वचनिका	रतनसिंह महेशदासोत री वचनिका	जगो खिड़ियो
र० हमीर	रतना हमीर री वारता	महाराजा मानसिंह जोधपुर
रा०, राज	राजस्थानी	
रा० ज० रासौ	राउ जैतसी रो रासौ	अज्ञात
रा० जै० सी०	राउ जैतसी रो छंद	श्री बीठू सूजो नगराजोत
रात वासौ	राजस्थांनी कांणी संग्रह	नृसिंह राजपुरोहित
रा० दू०	राजस्थानी दूहा	सम्पादक नरोत्तमदास स्वामी
रा० प्र०	राजस्थानी प्रत्यय	
रां० रा० / रांम रासौ	रांम रासो	श्री माधोदास दधवाड़ियो
रा० रू०	राज रूपक	श्री वीरभांण रतनू
रा० वं० वि०	राठौड़वंश री विगत	अज्ञात
रा सा० स०	राजस्थानी साहित्य संग्रह भाग १	सम्पादक नरोत्तमदास स्वामी
रु० भे०	रूपभेद	
ल० पिं०	लखपति पिंगल	श्री हमीरदांन रतनू
ला० रा०	लावा रासौ	श्री गोपालदांन कवियौ
लू०	लू	ठा० चन्द्रसिंह बीको
लै०	लैटिन	
लो० गी०	राजस्थानी लोक गीत	
वं० भा०	वंश भास्कर	श्री सूर्यमल्ल मीसण
व०	वर्तमान काल	
व०० का कृ०	वर्तमान कालिक कृदन्त	
वचनिका	वचनिका रतनसिंह महेशदासोतरी	श्री जगो खिड़ियो
वरसगांठ		श्री मुरलीधर व्यास
व० स०	वर्णक समुच्चय	सम्पादक भोगीलाल सांडेसरा आदि
वांणी	संत वांणी	
वादळी	वादळी	ठा० चन्द्रसिंह बीको
वि०	विशेषण	
वि० कु०	विनय कुसुमांजली	विनयचंद्र-कृति-कुसुमांजलि
विलो०	विलोम	
वि० वि	विशेष विवरण	
वि० सं०	विड़द संणगार	कविराजा करणीदान कवियौ
वी० मा०	वीरमायण	वहादुर ढाढ़ी
वी० स०	वीर सतसई	सूर्यमल मीसण
वी० स० टी०	वीर सतसई टीका	श्री किसोरदांन बारहट
वेलि०	वेलि किसन रुकमणी री	महाराजा प्रिथीराज राठौड़
वेलि० टी०	वेलि किसन रुकमणी री टीका	अज्ञात

संक्षिप्त रूप	पूर्ण रूप	रचयिता
व्या०	व्याकरण	
शक०	शकुंदादि	
शा० हो०	शालि होत्र	
शि० वि०	शिखर वंशोत्पत्ति पीढ़ी वार्तिक	श्री गोपाल् कवियो
शि०सु०रू०	शिवदांन सुजस रूपक	श्री लालदांन बारहट
सं०	संस्कृत	
सं०उ०	संज्ञा उभय लिंग	
सं०पु०	संज्ञा पुल्लिग	
सं०स्त्री०	संज्ञा स्त्रीलिंग	
स०	सकर्मक	
स०कु०	समय-सुन्दर-कृति-कुसुमांजली	महाकवि समय सुन्दर
सभा०	सभाशृंगार	
स०रू०	सकर्मक रूप	
सर्व०	सर्वनाम	
सू०प्र०	सूरज प्रकास	कविराज करणीदान कवियो
स्त्री०	स्त्रीलिंग	
स्पे०	स्पेनिस	
श्री हरि पु०	श्री हरि पुरुषजी	श्री हरिपुरुषजी
ह०नां० / ह०नां मा०	हमीर नांम माला	हमीरदांन रतनूं
ह०पु०वां०	श्री हरि पुरुषजी की वांणी	श्री हरिपुरुषजी
हं०प्र०	हंस प्रबोध	श्री हमीरसिंहजी राठौड़
ह०र०	हरिरस	श्री ईसरदास बारहट
हा०झा०	हालां झालां रा कुण्डलिया	श्री ईसरदास बारहठ

ॐ [यह संकेत इस बात को सूचित करता है कि यह शब्द केवल कविता में ही प्रयोग होता है।

? शंकास्पद

"श्रद्धांजलि"

श्री अनोप री पूत, पूतळौ परमारथ रौ।
सांच झूठ परखण जिण, झाल्यौ पथ पारथ रौ ।।
महावीर रणधीर, फौज में थी जो करनळ।
सिंधु सरिस गंभीर, नीर गंगा ज्यूं निरमळ ।।
हनुमांन आंन नै प्रांण सम, पाळी थी जो पेखलौ ।
जीवन धिन जिण रौ नांम सुभ, आदि अखर में देखलौ ।।

—संपादक

सहज सरलता की प्रति-मूर्ति, स्वाभाविक सौम्यता के प्रतिरूप भक्त-हृदय,
स्नेहसिक्त सहृदयी मृदुभाषी उदारमना परम साहित्य सेवी सुग्रध्येता
परहितचिंतक लोकोपकारक जनप्रिय ग्रामनायक

(कर्नल ठाकुर श्री श्यामसिंहजी रोडला)

जन्म :	स्वर्गधाम :
संवत् १९६२	संवत् २०२४
फाल्गुन शुक्ला ३	फाल्गुन शुक्ला ६

जिन्होंने कोश के निर्माण में अपूर्व सहयोग दिया
जिन्होंने आत्मभाव से साहित्योपकार किया
उन्हें
हमारी कोटि – कोटि पावन श्रद्धांजलियां

राजस्थांनी सबद कोस

[राजस्थानी हिन्दी वृहत् कोश]

[तृतीय खण्ड]

(प्रथम जिल्द)

प

प—देवनागरी वर्णमाला का इक्कीसवां व्यञ्जन जो कि विवार, श्वास, घोष और अल्पप्राण प्रयत्न लगने से तथा दोनों ओठों के मिलाने से उच्चरित होता है। अतः इसे स्पर्श व ओष्ठ्य वर्ण कहते हैं।

पंइताळीस—देखो 'पैंताळीस' (रू.भे.)
उ०—पंइताळीस धनुस नी उंची, कंचन वरणी काया रे। सुंदर रूप मनोहर मूरति, प्रणमइ सुरनर पाया रे।—स.कु.

पंक-संपु० [सं०] १ पाप (ह.नां., अ.मा., डिं.को.)
उ०—कट्ट कांगरै-कांगरै, पसर न दै अर-पंक। कोट भड़ां रा कांगरा, अड़ बैठा नभ अंक।—रेवतसिंह भाटी
२ कलंक, धब्बा। उ०—सोळै किरणां सरसियौ, प्रगट फब्यौ विण पंक। सही क सुवरण वेल सूं, मिळियौ आंण मयंक। —र. हमीर
३ कीचड़, कीच। उ०—१ वितए आसोज मिळै नभि वादळ, प्रिथी पंक जळि गुडळपण। जिम सतगुरु कळि कळुख तणा जण, दीपति ग्यांन प्रगटे दहण।—वेलि.
उ०—२ अस्ट करम मळ पंक पयोधर, सेवक सुख संपति करणं। सुर-नर-किन्नर-कोट निवेसित, समय सुंदर प्रणमति चरणं। —स.कु.

रू०भे०—पंग।
यौ०—पंक-जणी, पंक-जनम, पंक-जात।

पंककीर-संपु० [सं०] टिटिहरी नामक चिड़िया।

पंकज-वि० [सं०] कीचड़ से उत्पन्न होने वाला।
संपु०—१ कमल (ह.नां.)
२ फूल (अ.मा.)
रू०भे०—पंकज्ज, पंकय।
यौ०—पंकज-ग्रह, पंकज-बंधु, पंकज-राग, पंकज-हती।

पंकजग्रह-संपु० [सं०] वरुण (नां.मा.)

पंकजणी—देखो 'पंकजिनी' (रू.भे.)

पंकजनम-संपु० [सं० पंकजन्मन्] कमल, पद्म।

पंकजबंधु-संपु० [सं०] सूर्य, रवि (अ.मा.)

पंकजराग-संपु० [सं०] पद्म-रागमणि।

पंकजहत, पंकजहती, पंकजहत्य, पंकजहत्थी, पंकजहथ, पंकजहथी—संपु० [सं० पङ्कजहस्त] सूर्य, भानु (डिं.को.)
वि०वि०—पङ्कजहस्त=कमलों का हाथ (सहारा)। यदि इसे गुण-वाची 'इन्' प्रत्यय के साथ रखें तो 'हस्ती' होगा। उसका अर्थ होगा कमलों को सहारा देने वाला।

पंकजात-संपु० [सं०] कमल।

पंकजासण, पंकजासन-संपु० [सं० पंकजासन] ब्रह्मा।

पंकजिणी—देखो 'पंकजिनी' (रू.भे.)

पंकजित-संपुं० [सं० पंकजित्] गरुड़ का एक पुत्र।

पंकजिनी-संस्त्री० [सं०] कमल का पौधा जो पानी में होता है। (डिं.को.)
रू०भे०—पंकजणी, पंकजिणी।

पंकज्ज—देखो 'पंकज' (रू.भे.)

पंकण, पंकणी-संस्त्री०—१ प्रत्यञ्चा। उ०—कह कबांण नैण रस, जोह पंकणी तांणेह। मारू तीर कबांण जिम, नह चूके बांणेह। —ढो.मा.
२ देखो 'पंखणी' (रू.भे.)

पंकत, पंकति—देखो 'पंक्ति' (रू.भे.)
उ०—१ चंदी सूळ पारजात मराळां पंकतां चंगी, किरमाळां मोज पंगी कोसल्या कवार।—र.रू.
उ०—२ काळी-घड़ पावस कंवळयं, बग-पंकति दीप दंतूसळयं। —ग.रू.बं.
उ०—३ रुखमणीजी की दंति पंकति सोभित छै।—वेलि. टी.

पंकति-दूहौ-संपु० [सं० पंक्ति+रा० दूहौ] वह दोहा जिसमें चारों चरण मिला कर ४८ ह्रस्व वर्ण हों। इसका दूसरा नाम सर्प है।

पंकती—देखो 'पंक्ति' (रू.भे.)

पंकदिग्धांग-संपु० [सं०] कार्तिकेय का एक अनुचर।

पंकधूम-संपु० [सं०] एक नरक (जैन)

पंकप्पभा, पंकप्पहा, पंकप्रभा-संस्त्री० [सं० पंकप्रभा] एक नरक।
वि०वि०—इस नरक में कीचड़ भरा हुआ माना जाता है।

पंकय—देखो 'पंकज' (रू.भे.)
उ०—सेवइ जसु पय साघ अहे, पंकय महूअर रुण उणइ ए। धन धनु जे नरनारि अहे, नित नितु प्रभु गुण गण थुणइ ए। —ऐ.जै.का.सं.

पंकरुट-संपु० [सं०] कमल (डिं.को.)

पंकरुह, पंकरूह-संपु० [सं० पंकरुह] कमल, पद्म (डिं.को.)
रू०भे०—पंकेरुह।

पंकाउळी—देखो 'पंकावळी' (रू.भे.) (पिं.प्र.)

पंकाभा-संस्त्री० [सं०] चौथी नरक (जैन)

पंकावळि, पंकावळी-संस्त्री० [सं० पंकावलि] प्रत्येक चरण में प्रथम गुरु फिर दो नगण फिर दो भगण सहित १३ वर्णं का वर्णिक वृत्त विशेष जिसे कंजअवळी भी कहते हैं (र.ज.प्र.)
रू०भे०—पंकाउळी।

पंकित—देखो 'पंक्ति' (रू.भे.)
उ०—सेरी सांथ मोकळी वाट, नगर मांहि छोह पंकित हाट। —कां.दे.प्र.

पंकेरुह—देखो 'पंकरुह' (रू.भे.)
पंक्खण—१ देखो 'पंख' (रू.भे.)
२ देखो 'पक्षी' (रू.भे.)
३ देखो 'पंखी' (रू.भे.)
पंक्ति-सं०स्त्री० [सं०] १ प्राय: एक ही प्रकार की वस्तुओं का ऐसा समूह जो एक दूसरी के पश्चात् एक ही सीध में हों, कतार, पांती, लाइन, श्रेणी। उ०—किते चवदंडिय होदनि छाय, दये डगवेरनि तें खुलवाय। चले मिळि दंतिय पंक्ति समग्र, मनो बग पंक्ति उठी घन अग्र।— ला.रा.
पर्या०—तति, माळा, राजी, वीथि।
२ एक साथ बैठ कर भोजन करने वालों की कतार।
३ फौज में दस-दस योद्धाओं की कतार।
४ प्रत्येक चरण में एक भगण और अंत में दो गुरु वाला एक वर्ण-वृत्त।
५ दस की संख्या*।
रू०भे०—पंकत, पंकति, पंकती, पंकित, पंगत, पंगति, पंगती, पंत, पंति, पंती, पांत, पांति, पांती, पिंगति।
पंक्तिपावन-सं०पु० [सं०] ऐसा ब्राह्मण जिसको यज्ञ में बुलाना और दान देना श्रेष्ठ माना जाता है।
पंक्तिबद्ध-वि० [सं०] कतार में बंधा हुआ, श्रेणीबद्ध।
पंख-सं०पु० [सं० पक्ष] १ चिड़ियों, पतंगों आदि पक्षियों का वह अवयव जिससे वे हवा में उड़ते हैं, पर।
उ०—१ आगै खोजां जावतां पंख पड़िया पाया।
—केसोदास गाडण
उ०—२ कुंभड़ियां कळिअळ कियउ, सुणीउ पंखइ वाइ। ज्यांकी जोड़ी वीछड़ी, त्यां निसि नींद न आइ।—ढो.मा.
पर्या०—छद, पत्र, पिच्छ, बाज।
मुहा०—१ पंख आणा—देखो 'पंख लागणा'।
२ पंख उखलणा—असमर्थ होना।
३ पंख उखेलणा—असमर्थ करना।
४ पंख कटणा—देखो 'पंख उखलणा'।
५ पंख काटणा—देखो 'पंख उखेलणा'।
६ पंख जमणा—देखो 'पंख लागणा'।
७ पंख लगणा—देखो 'पंख लागणा'।
८ पंख लागणा—बुरे रास्ते पर जाने के रंग-ढंग दिखाई पड़ना, इधर-उधर घूमने या भटकने की इच्छा दीख पड़ना।
२ पुष्प-दल।
३ धूलि। उ०—दळ मेहळ ऊपड़ै, भमर रज डम्मर भ्रम्मै। असंख वांण आतस्स, गयण पंखारच गम्मै। पसरि पंख है पाई, इळा उड्डै आचंतरि। जरद लाल इक स्याह, वरन वांना वि: बहथरि।
—गु.रू.बं.
रू०भे०—पंक्खण, पंखि, पंखी।
अल्पा०—पंखड़ी, पंखडी, पंखड़ौ, पंखडौ, पंखुड़ी।
मह०—पंखड़, पंखड, पंखांण।
४ गिद्ध, चील आदि मांसाहारी पक्षी।
५ राजा की सवारी का हाथी।
६ अश्व, घोड़ा (डिं.नां.मा.)
उ०—पाखर में परचंड, पंख पाहाड़ अचग्गळ। ऊंचासौ इंद्र रै, रांम रै गुरड विहंगम।—ग.रू.बं.
७ धारा, प्रवाह। उ०—मांडिया उतबंग जियइ द्रू माथइ, नांम जपंतां एक निमंख। संकरदेव पखउ कुण साहइ, पडती गंग तणा झट पंख।—महादेव पारवती री वेलि
८ देखो 'पक्षी' (रू.भे.)
उ०—तांणै मीर तीर घनंख पाड़ै गयण हूंता पंख।—गु.रू.बं.
यौ०—पंखपति, पंखराज, पंखराव।
९ देखो 'पंखारी' (रू.भे.)
उ०—१ असिधुज सिलह पखर भिदि आवै। पंख जिकां भींजण नह पावै।—सू.प्र.
उ०—२ कोमंड गरज्ज हुए हलकार, भडां भालोड़ करत भंभार। एकू की मूठ विछुट्ट असंख, परै सिर फूटै कोरी पंख।—गु.रू.बं.
पंखड़, पंखड—१ देखो 'पंख' (मह., रू.भे.)
पंखड़ी, पंखडी—देखो 'पंख' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—१ आडा डूंगर वन घणा, खरा पियारा मित्त। देह विधाता पंखड़ी, मिळि मिळि आवउं नित्त।—ढो मा.
उ०—२ कुंझां! द्यउ नइ पंखडी, थांकउ विनउ वहेसि। सायर लंघी प्री मिळउं, प्री मिळि पाछी देसि।—ढो.मा.
पंखड़ौ, पंखडौ—१ देखो 'पंख' (अल्पा. रू.भे.)
२ देखो 'पंखी' (अल्पा., रू.भे.)
३ देखो 'पक्षी' (अल्पा., रू.भे.)
पंखण, पंखणि, पंखणी-सं०स्त्री० [सं० पक्षिणी] १ मादा पक्षी।
२ मादागिद्ध। उ०—१ रिमसेन सगह वहिया जुध रासै। रूकां पांण कनोजै-राय। पळ भखती रासी पिड पंखण। तगसंती राता गिर ताय।—धोळूजी विठू
उ०—२ वारण कारण धाव-दाव वर, भख पंखण रीझव भाराथ। वेटौ बाप दहूं रथ वैठा, सासु वहू अच्छर कर साथ।
—गोपाळदास बळरांम गौड़ रो गीत
उ०—३ झड़प्फड़ पंखणि साव्रज झूल। गुडंत गयघण गात्र सथूल।
—गु.रू.बं.
३ चील।
४ वर्तमान और आगामी दिन के बीच की रात।
५ अप्सरा।
उ०—पनंगणी कना काय पंखणी, कोण देस हूंता गवण। हूं

तुज्ज भेद जांणूं नहीं, कह है तूं बाई कवण ।—पा.प्र.

६ राठौड़ वंश की कुलदेवी, चक्रेश्वरी, नागणेची ।

उ०—चक्रेस्वरी बळे स्थाने, राटेस्वरी तथा रट । पंखणी सप्त मात्रेण, नागणेची नमस्तुते ।—पा.प्र.

रू०भे०—पंकणी, पंखयांणी, पंखायण, पंखिण, पंखिणि, पंखिणी, पंखीणी, पंखीनी, पांखणी ।

पंखणीग्र'ळी, पंखणीयाळी—सं०पु० [सं० पक्ष+आलुच् प्र०] पक्षी, पंखेरु ।

पंखपत, पंखपति, पंखपती, पंखपत्त, पंखपत्ति, पंखपत्ती—सं०पु०यौ० [सं० पक्षी+पति] १ गरुड़, पक्षिराज (डिं.को.)

उ०—परिठिवउ प्रांण पागड़इ पाउ, रेवंति चड़िय 'जइतसी' राउ । 'चउंडाहर' चड़िवउ चक्रवति, परमेसर जांणे पंखपत्ति ।

—रा.ज.सी.

२ जटायु ।

रू०भे०—पंखीपत, पंखीपति, पंखीपती, पंखीपत्त, पंखीपत्ति, पंखीपत्ती ।

पंखयांणी—देखो 'पंखणी' (रू.भे.)

उ०—पंखयांणी आव पख्ख, दांन पाव भाव दख्ख । रूप तो अमर रख्ख, ख्ळां भेळि खख्ख ।—पा.प्र.

पंखराउ, पंखराऊ, पंखराज, पंखराय—देखो 'पक्षिराज' (रू.भे.)

उ०—१ वरवागू के सांचे पंखराउ सी धाव । खुरताळुं के झमके सत सिपा के सिळाव ।—र.रू.

उ०—२ दक्खणियां घर वाहण आदो, व्राहनपुर आयो साहिजादो । देख 'खुरम' दखणी दळ भग्गे, किरि दीठौ पंखराऊ पनग्गे ।

—गु.रू.वं.

उ०—३ तुरी झळूस साज तांम, धाव देत धारकं । उडांण पंखराज एम, पांण में अपारकं ।—सू.प्र.

उ०—४ जळ भीतर ग्राव मचाय महाजुध, कंटक लोध दबाय करी । गळळावत सूंड रही दुय अंगुळ, हेत घणै पंखराय हरी ।

—भगतमाळ

पंखराळ—वि० [सं० पक्ष+आलुच्] १ बड़े बड़े परों वाला ।

२ देखो 'पखराळ' (रू.भे.)

उ०—वदन मजीठ रूप विकराळां । पमगां चढै पूर पंखराळां । कहि चहुवांण तणा भड़ केहा । जम हूं लड़ै चाळवंध जेहा ।—सू.प्र.

पंखराव—देखो 'पक्षिराज' (रू.भे.)

उ०—१ उरड तूटि असमांन, जुटि पंखराव जहरधर । हुवै विकट करि हाक, दंत नरसिंघ बाहादर ।—पनां वीरमदे री वात

उ०—२ सारी 'ओरंग साह' सूं, दाखै दूत विगत्त । 'दुरग' 'अकब्बर' जांम्य-दिस, गा पंखराव जुगत्त ।—रा.रू.

पंखवा—सं०स्त्री० [सं० पक्ष+वायु] पंखे की हवा ।

पंखवौ—देखो 'पंखारौ' (रू.भे.)

पंखांण—देखो 'पासांण' (रू.भे.)

उ०—गढ़ भंजे भीत किमाड़ं, उत्थापै जड़ां उपाडं । सातखणा मह मंडांणं, किया ढाहि पंखांण पंखांणं ।—गु.रू.वं.

२ देखो 'पंख' (मह., रू.भे.)

३ देखो 'पक्षी' (मह., रू.भे.)

पंखांराउ, पंखांराऊ, पंखांराज, पंखांराव—देखो 'पक्षिराज' (रू.भे.)

उ०—१ वेग लिए मूंठी वाऊ, राज रथां पंखांराऊ ।—गु.रु.वं.

पंखाकुळी—सं०पु०यौ० [सं० पक्ष+तु० कुली] पंखा खींचने के लिए नियत व्यक्ति ।

पंखाबरदार—सं०पु० [सं० पक्ष+फा० बरदार] पंखे से हवा करने वाला ।

रू०भे०—पंखावरदार ।

पंखाबरदारी—सं०स्त्री० [सं० पक्ष+फा० बरदार+रा.प्र.ई] पंखे से हवा करने का कार्य । उ०—लहलहती नाचै लता, पवन संगीती पाय । पंखाबरदारी करै, रंभ बिचै बणराय ।—बां.दा.

रू०भे०—पंखावरदारी ।

पंखायण—देखो 'पंखणी' (रू.भे.)

पंखार, पंखारौ—सं०पु० [सं० पक्ष+आलुच्] तीर का पीछे का वह भाग जहां से तीर प्रत्यञ्चा पर चढ़ाया जाता है ।

वि०वि०—तीर के इस स्थान पर दोनों ओर छोटे छोटे पर (पंख) लगे हुए होते हैं ।

उ०—१ खतां अंगि तीर फरक्कि पंखार । घड़ा छत मेघ घणा छत्र-धार ।—सू.प्र.

उ०—२ ऊपर रूपै रा सांबा छै, पीतळ तांबै रा छला छै, दांत री चौकड़ी छै, तिलोर रा पंखारा छै ।—रा सा.सं.

उ०—३ कुंवरसी रै हाथ रौ तीर जिण रै लागै उण ही घोड़ै तक रै पार नीसर जाय । सवार रै लागै जीं मांही पंखारा भींजै तक नहीं ।—कुंवरसी सांखला री वारता

रू०भे०—पंख, पंखवौ, पंखोवौ, पुंख, पुंखौ ।

पंखाळ, पखाळौ—वि० [सं० पक्षालुः] १ जिसके पंख हों, पर वाला ।

उ०—१ मणिधर मोटा देखीइ, पंखाळा पुन्नाग । सात फणइग्री सहिस-गळ, विमणी विमणी वाग ।—मा.कां.प्र.

उ०—२ चलै करण ताळ उलाळा चलावै । घरै काळ भा अद्रि पंखाळा धावै ।—वं.भा.

२ पक्ष का, एक ओर का । उ०—तुरंग मातंग रथाळि पाळा, ते पारथ नै वारि हूंया पंखाळा ।—विराट पर्व

सं०पु०—१ पक्षी । उ०—पड़ि सोक भयंकर उडि पंखाळ । काळ में जांणि घण प्रळयकाळ ।—सू प्र.

२ मांसाहारी पक्षी । उ०—१ गुदाळक जे पंखाळ गजै । विकराळ बंबाळ त्रंबाळ वजै ।—गो.रू.

उ०—२ वरंगां राळ वरमाळ सूरा वरै, त्रिपत पंखाळ दिल खुलै

ताळा। सवळ पड भार सिर तणावै ग्रहेसुर, महेसुर वणावै मुंड-माळा।—र.रू.

३ पक्षिराज, गरुड़। उ०—'पातल' वग्ग पमंग री, यूं कर भली उताळ। चत्रभुज जांणे चालियो, पिड़ कज सभ पंखाळ।

—किसोरदांन बारहठ

४ गिद्ध।

५ सांप, नागा उ०—गज, तूंबी, चीतळ, गोरावा, सुज काळा, पंखाळा सेत नव-कुळ नाग म आंणे नैड़ा, नव-कुळां ई टाळे सखतेत।

—आसो गाडण

[सं० पक्ष सेनाका एक बाजू+आलुच्] ६ घोड़ा, अश्व (डि.नां.मा.)

७ तीर, शर (डि.नां.मा.)

उ०—१ पूर सोक पंखाळ ग्ररस, छायो ग्राघंतरि।—गु रू.वं.

उ०—२ अखत पंखाळ अणियाळ उछाळती, सुतिए ताळ विकराळ साए। दूसरा 'पाल' चुगलाळ घड़ दुलहणी, विमळ वरमाळ करमाळ वाए।—जोगीदास चांपावत रो गीत

८ डिंगल का एक गीत (छंद) विशेष जो छोटे सांणोर का एक भेद होता है। इसमें तीन द्वाले होते हैं और ह्रस्व दीर्घ का नियम नहीं होता है।

पंखावरदार—देखो 'पंखावरदार' (रू.भे.)

पंखावरदारी—देखो 'पंखावरदारी' (रू.भे.)

पंखासाळ-सं०स्त्री० [स० पक्ष+शाला] १ वह शाला जहां हवा के निमित्त पंखा लगा हुआ हो।

२ मकान के भीतर की वह खुली शाला जिसमें हवा सुगमता से आती हो।

३ मकान के भीतर बनी हुई वह खुली शाला जिसके दोनों पक्षों के कमरों आदि में सामान आदि रखा जाता है किन्तु शाला में प्राय: सामान आदि नहीं रखा जाता है। यह प्राय: गर्मी की ऋतु में दिन को बैठने, मेहमानों को ठहराने व सोने के उपयोग में ली जाती है।

पंखि—देखो 'पक्षी' (रू.भे.)

उ०—१ अनि पंखि बंधे चक्रवाक असंधे, निसि संधे इमि अहो-निसि। कांमिणि कांमि तणी कांमागनि, मन लाया दीपकां मिसि।

—वेलि.

उ०—२ रात सखी इणि ताल मइं, काइज कुरळी पंखि। उवै सरि हूं घरि आपणइ, बिहूं न मेळी अंखि।—ढो.मा.

२ देखो 'पंख' (१-३) (रू.भे.)

उ०—अजै जांनकी सोधवा जोध आया। गिरां 'अंगदेसं' चढ़ै रांम गाया। सुणै रांम रो नांम उच्छाह साई। उठै ग्रीध संपात रै पंखि आई।—सू प्र.

३ देखो 'पंखो' (८) (रू.भे.)

पंखिग्रो १—देखो 'पक्षी' (अल्पा०, रू.भे.)

२ देखो 'पंखियो' (रू.भे.)

३ देखो 'पक्ष' (अल्पा., रू.भे.)

पंखिण, पंखिणि, पंखिणी—देखो 'पंखण' (रू.भे.)

उ०—१ पंखिण पंखी वीछड़ै, जिम सोकातुर थाय। तिम कुमरी नै पिउ विना, खिण एक खिण न सुहाय।—वि.कु.

उ०—२ दुख सायर मन बेडली, कूप ते माधव नांम। कांमकंदळा पंखिणी, फिरि-फिरि एक जि ठांम।—मा.कां.प्र.

उ०—३ कोधी सांन खांनि मूंगळ नइ, सींगिणी परठघर तीर। तांणी गयणि पंखिणी वीधी, पेखइ मोटा मीर।—कां.दे प्र.

पंखियो-सं०पु० [सं० पक्ष+रा०प्र० इयो] १ वह बैल जिसके पसलियों की अन्त की हड्डियां कुछ छोटी हों (अशुभ)।

रू०भे०—पंखिग्रो, पंखीग्रो, पंखीयो।

२ देखो 'पक्षी' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—१ संकुड़ित समसमा संध्या समयै, रति वंछिति रुखमणि रमणि। पथिक वधू द्रिठि पंख पंखियां, कमळ पत्र सूरिज किरणि।

—वेलि.

३ देखो 'पंखो' (अल्पा०, रू.भे.)

पंखी-सं०पु० [स० पक्षी] १ गरुड़, पक्षिराज (ह.नां., अ.मा.)

२ बांण, शर (डि.नां.मा.)

३ एक प्रकार का ऊनी कपड़ा जो पहाड़ी भेड़ के बालों से बुना जाता है। उ०—आंनन विमळ मुखोप अपारां। तांबूळादि दियै तिण वारां। एहिज सदन सिसर हिमवंतां। आसण पखो पसम अनंतां।—सू.प्र.

[सं० पक्ष] ४ रहट चलाने वाले के लिए बैठने का स्थान जहां पर बैठ कर वह बैलों को हांकता है।

सं०स्त्री०—५ फूल का दल, पंखुरी।

६ गिद्ध, चील आदि मांसाहारी पक्षी।

७ मक्खी, मक्षिका।

८ बंदूक के अग्र भाग में उभरा हुआ वह अंश जिसकी सहायता से निशाना साधा जाता है।

९ देखो 'पक्षी' (रू.भे.) (अ.मा., ह.नां.)

उ०—१ स्रीपति कुण सुमति तूझ गुण जु तवति, ताछ कवण गयण जु समुद्र तरै। पंखी, कवण गयण लगि पहुंचै, कवण रंक करि मेरु करै।—वेलि.

उ०—२ धनवंतां री 'धरमसी', आवै सहु घरि आस। सरवर भरियो देख सहु, पंखी बैसै पास।—ध.व.ग्रं.

१० देखो 'पंख' (१-३) (रू.भे.)

११ देखो 'पंखो' (अल्पा., रू.भे.)

पंखीग्रो—१ देखो 'पंखियो' (रू.भे.)

२ देखो 'पक्षी' (अल्पा., रू.भे.)

पंखीड़—१ देखो 'पंखो' (मह०, रू.भे.)

२ देखो 'पक्षी' (मह०, रू.भे.)

पंखीड़ौ—देखो 'पक्षी' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—रूड़ा पंखीड़ा, पंखीड़ां, मुन्हइ मेल्ही नइ म जाय। धुर थी प्रीती करी मइं तो सुं, तुझ विण क्षण न रहाय।—स.कु.

पंखीणी, पंखीनी—१ देखो 'पंखणी' (रू.भे.)

२ देखो 'पक्षी' (रू.भे.)

उ०—ऊमर अति आरहडा खडइ, तउ ढोलउ किम ही नापडइ। पंखीनी परि ऊडयउ जाइ, करहउ मिळियौ वाउवाइ।—ढो.मा.

पंखीपत, पंखीपति, पंखीपती, पंखीपत्त, पंखीपत्ति, पंखपत्ती—देखो 'पंखपत' (रू.भे.) (ह.नां., अ.मा.)

उ०—वाहण गुरूड सयल पंखीपति, जादव करई जगीस। सुर-नर पंनग माहे मोटा, ईस्वर नउं वर ईस।—रुकमणी मंगळ

पंखीयौ—१ देखो 'पक्षी' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—भोगव्या कांम भोग छोड़नै, वेहुं भव हळका थाय। वेउ सरीखा पंखीया नी परै, विचरसां इच्छा आपणी दाय।

—जयवांणी

२ देखो 'पंखियौ' (रू.भे.)

पंखीराव—देखो 'पक्षिराज' (रू.भे.)

उ०—गाढा दांणवां गाळिवा गाव, भवांनी आदू सुभाव। चढूं चक्कां सीस चाव विरद्दाव, पंखीराव हूंतां पाव।—सक्ति-सुयश

पंखीस-सं०पु० [सं० पक्षी+ईश] १ गरुड़, पक्षिराज।

२ देखो 'पक्षी' (मह०, रू.भे.)

उ०—पंखीस गीध वैठा अपार, मिळ सकळ पात पळ वेसुमार। इण भांत चली सरता अभंग, जिण वार कमंध असुरांण जंग।

—शि.सु.रू.

पंखुडी—देखो 'पंख' (अल्पा., रू.भे.) (१-२-३)

उ०—आडा डूंगर भुइं घणी, सज्जण रहइ विदेस। मांगी तांगी पंखुडी, केती वार लहेस।—ढो.मा.

पंखेरुओ—देखो 'पक्षी' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—उड ज्या रे पंखेरुआ सांझ पड़ी।—मीरां

पंखेरू—देखो 'पक्षी' (रू.भे.)

उ०—तरइं पंखेरू आगळि परधांनां, विवरा सुघउ कह्यउ वतकाव। वहिलउ दरसण हुवइ विसुंभर, अस इछ कहि पंखो ऊपाव।

—महादेव पारवती री वेलि

पंखेरूओ, पंखेरूवो—देखो 'पक्षी' (रू.भे.)

उ०—पिया रै फिकर में भयी दिवांणी, मुसकल घड़ी अे घड़ी, उड जा रे! पंखेरुवा सांझ पड़ी।—मीरां

पंखेसर-वि० [सं० पक्ष+ईश्वर] जिसके पंख हों, पंखधारी।

उ०—स्रीखंडूं का डंवर समीर सैं झोला खावै। मळियागिर के मोळैं भूलि पंखेसर मिणधर भुजंग आवै।—सू.प्र.

सं०पु०—१ पक्षिराज, गरुड़।

२ जटायु।

३ देखो 'पक्षी' (मह०, रू.भे.)

उ०—अनेक पंखेसर नाग अनंत। मिळै सिधि साधिक संत-महंत।

—रांमरासौ

पंखौ-सं०पु० [सं० पक्ष+रा.प्र. औ] १ वह वस्तु जिसे हिला-डुला कर हवा के झोंके को किसी ओर ले जाया जाय। विजना।

वि०वि०—पहले इसे पंख से बनाते थे अथवा इसका आकार पंख जैसा होता था इसलिए इसका यह नाम पड़ा। छत में कपड़े का पंखा लगा कर डोरी से खींच कर हिलाया जाता है। छत में लटका कर चरखी द्वारा भी घुमाया जाता है। आजकल नाना प्रकार के बिजली से घूमने वाले पंखों का व्यापक प्रयोग होता है, जिनसे हवा में इच्छानुसार न्यूनाधिक गति उत्पन्न की जा सकती है।

क्रि०प्र०—खींचणौ, चलणौ, चलाणौ, झळणौ, डुलाणौ, हिलाणौ

मुहा०—पंखौ करणौ—हवा में गति उत्पन्न करने के लिए पंखे को हिलाना-डुलाना।

२ सोने, चांदी, गोटे आदि की बनी एक प्रकार की झल्लरी जिसे स्त्रियों के चीर या साड़ी की किनार पर लगाया जाता है।

३ प्रायः सुनारों, लुहारों और कारखानों में आग जलाने का एक आधुनिक ढंग का उपकरण विशेष।

अल्पा०—पंखड़ी, पंखड़ौ, पंखडी, पंखडौ, पंखियौ, पंखी।

मह०—पंखीड़, पंखीड।

पंखोवौ—देखो 'पंखारौ' (रू.भे.)

उ०—पिसण घणौ कुवर्णत पिण, जचै न जो सर जेम। करहि पंखोवा काट दै, सखी चलै सर केम।—रेवतसिंह भाटी

पंग—१ देखो 'पंगु' (रू.भे.)

उ०—१ आज 'अममल' भूप एहो, जुधां जोपण पंग जेहो। सांसणां गयंदां समापै, कुरंद पातां तणा कापै।—सू.प्र.

उ०—२ उदित ब्रह्म मधि ईस, पछै वप विसन प्रकासै। तम नासै जोवतां, नांम कहतां अघ नासै। अंतरीख मग उरस, चंचळ सातह-मुख चालै। सुरंग पंग सारथी, हेक चक्रह रथ हालै।—सू.प्र.

उ०—३ हाथ! भलइं रह हालता, पाउ सदैवत पंग। हाळी बाळी आपसिउं, अवरां ही मोरूं अंग।—मा.कां.प्र.

२ देखो 'पंक' (रू.भे.)

पंगत—देखो 'पंक्ति' (रू.भे.)

उ०—१ लूंबां झड़ नदियां लहर, बक पंगत भर बाथ। मोरां सोर ममोलियां, सांवण लायौ साथ।—बां.दा.

उ०—२ जीमण रै वै दिन राजा रा आदमी ऊंठां पर चढ़ नै आय पूग्या हा अर पंगत में भगदड़ मचणीज वाळी ही कै सेठां मुंसीजी नै एक कांनी बुलाय नै जेब गरम कराय दी।—रातवासौ

उ०—३ सिर झुकिया सहंसाह, सींहासण जिण सांमनै। रळणौ पंगत राह, फावै किम तो नै 'फता'।—केसरीसिंह बारहठ

पंगतटाळ-सं०पु०यौ० [सं० पंक्ति+राज० टाळ=पृथक] वह साधु या संन्यासी जो किसी पाप-कर्म के कारण भोजन के समय साधु-मंडली में साथ न बैठने दिया जाता हो।

पंगति, पंगती—देखो 'पंक्ति' (रू.भे.)

उ०—तिणरी आडी पंगति रौ, कोठौ आदि जिकोइ। आंक सरब गुर एकडौ, जांणीजै विधि जोइ।—ल.पिं.

पंगनृप-पंगराज सं०पु० [सं० पंगु+नृप] राजा जयचंद के लिये प्रयोग किया जाने वाला विरुद सूचकशब्द।

उ०—कीजिये इण विध कांम, निज पंग-नृप जिम नांम। विध एम करतां वात, भिळ सैंद दहुंवै भ्रात।—सू प्र.

वि०वि०—महाराजा जयचन्द राठौड़ की सेना इतनी अधिक थी कि उसके कूच और पड़ाव तक के मध्य भाग में सदैव पंक्ति सी बनी रहती थी जिसे कवियों ने पंगु मनुष्य के चलने पर भूमि पर बनी घसीट से तुलना कर राजा जयचन्द का विरुद 'दळपंगुळ' दे दिया। कालान्तर में इसी विरुद के आधार पर राजा जयचन्द का एक नामान्तर ही दळ पंगुळ, दळ पांगळौ, पंग और पंगु हो गया।

पंगरण-सं०पु० [सं० उपांगधरण] १ वस्त्र।

उ०—१ विहद कोर गोटै वणै, पातर रै पोसाक। परणी फाटै पंगरण, बैठी फाड़ै बाक।—बां.दा.

उ०—२ पदमणि पुरखां रै पंगरण नह पूरा। भूखा सूतोड़ा संगरणवै भूरा।—ऊ.का.

रू०भे०—पंगुरण, पंगुरिण, पंगुरिणि, पांगरण, पांगुरण, पुंगरण, पूंगरण, पूगरण।

पंगराव, पंगराज—[सं० पंगुराज] राजा जयचन्द का एक नाम।

उ०—१ अनेक पचाणी आवास, रूप भोमि रच्चए। अनेक राग-रंग ओप, नृत्तकार नच्चए। भरै अनेक दंड भूप, केक वीनती करै। करै अनेक दांन कोड़ि, पंगराज भूप रै।—सू.प्र.

उ०—२ कहि यम हैजम करै, विखम रूपी विकराळा। चढि मदभर चालियो, तूर वाजतां त्रंबाळा। तूटै नदी तटाक, हाक खूटै ताळीहर। पंगराव जिम प्रबळ, हलै फौजां घैंसाहर।—सू.प्र.

पंगळ—देखो 'पंगुळ' (रू.भे.)

पंगळियौ—देखो 'पंगुळ' (अल्पा., रू.भे.)

पंगळी—देखो 'पंगुळी' (रू.भे.)

पंगळौ—देखो 'पंगुळ' (अल्पा., रू.भे.)

(स्त्री० पंगळी)

पंगा—देखो 'पगां' (रू.भे.)

पंगी-सं०स्त्री० [सं० पंग्वी] कीर्ति, यश (डिं.को.)

उ०—१ पंगी गंग प्रवाह, निरमळ तन कीधो नहीं। चित क्यूं राखै चाह, तिकै सरग पावण तणी।—बां.दा.

उ०—२ अकबर जतन अपार, रात दिवस रोकण करै। पूगी समदां पार, पगी रांण 'प्रतापसी'।—दुरसौ आढौ

वि०स्त्री०—जो पैरों से चल न सकती हो, अपंग, लँगड़ी।

रू०भे०—पांगी।

पंगु-वि० [सं०] (स्त्री० पंगवी) जो पैरों से चल न सकता हो, लँगड़ा

उ०—मन पंगु थियौ सहुसेन मुरछित, तह नह रही संपेखतै। फिरि नीपायौ तदि निकुटी ए, मठापूतळी पाखांण में।—वेलि.

सं०पु०—१ शनिश्चर।

२ सूर्य के सारथि का एक नाम।

३ एक प्रकार का रोग जिससे मनुष्य पैरों से चल नहीं सकता।

रू०भे०—पंग, पंगू।

अल्पा०—पांगौ।

पंगु-गति-सं०स्त्री० [सं०] वर्णिक छंद का एक दोष जो लघु के स्थान पर गुरु और गुरु के स्थान पर लघु के आ जाने पर माना जाता है।

पंगु-ग्राह-सं०पु० [सं०] १ मकर राशि।

२ मगर।

पंगुरण, पंगुरिण, पंगुरिणी—देखो 'पंगरण' (रू.भे.)

उ०—दिन जेही रिणि रिणाई, दरसणि, क्रमि क्रमि लागा संकुड़िणि। नीठि छुडै आकास पोस निसि, प्रौढ़ा करखणि पंगुरिण।—वेलि.

पंगुळ-वि० [सं० पंगुलः] (स्त्री० पंगुळी) १ सफेद रंग का घोड़ा।

२ लँगड़ा, पंगु।

उ०—१ दादू विरह प्रेम की लहरि में, यह मन पंगुळ होय। रांम नांम में गळि गया, बूझै विरळा कोय।—दादूवांणी

रू०भे०—पंगळ।

अल्पा०—पंगळियौ, पंगळौ, पांगळियौ, पांगळौ, पांगौ।

पंगुळी-सं०स्त्री० [सं० पंगुल+रा.प्र.ई] १ लंगड़ी।

२ कीर्ति। उ०—मेवाड़ ढूंढाड़ जीऊं ही हाड़ौती माळवौ मोळी, दौळा काळ चक्र सो किणी न आवै दाय। झालै किसौ तो विनां पयाळ जाती काळ-झांपा, लाडली पंगुळी 'चांपा' अंगुळी लगाय।

—सूरजमल मीसण

पंगुळौ—देखो 'पंगुळ' (अल्पा., रू.भे.)

(स्त्री० पंगुळी)

पंगू—देखो 'पंगु' (रू.भे.)

उ०—पंगू पयादं मूक सादं ऊदमादं कढ्ढए। तेजाळ तांमं वेग कांमं नीस लांमं वढ्ढए।—प्रा.प्र.

पंगौ-वि० [देशज] (स्त्री० पगी) वह द्रव पदार्थ जो गाढा न हो और जिसमें पानी की मात्रा अधिक हो। उ०—काळींगा तूसां कुळी, हूंचां हूंत जियंत। ऊमर दिन ओछा करण, पंगौ राब पियंत।

—कविराजा बांकीदास

पंघरणौ, पंघरबौ—देखो 'पांगरणौ, पांगरबौ' (रू.भे.)

उ०—हरिया तरु गिरवर हुआ, पंघरिया वन पात।

—सिवबक्स पाल्हावत

पंघरणहार, हारौ (हारी), पंघरणियौ—वि० ।
पंघरिग्रोड़ौ, पंघरियोड़ौ, पंघरयोड़ौ—भू०का०कृ० ।
· पंघरीजणौ, पंघरीजबौ—भाव वा० ।
पंघरियोड़ौ— देखो 'पांगरियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० पंघरियोड़ी)
पंच–वि० [सं०] १ जो चार से एक अधिक हो, पाँच ।
उ०—१ आवरत मेघ सम ग्रोवड़े, घड़ी पंच वागी खड्ग । सिरदार इता भिड़िया समर, नीवड़िया जिम घाय नग ।—रा.रू.
यौ०—पंचअंग, पंचइंद्री, पंचकन्या, पंचकपाळ, पंचकरम, पंचकळा, पंचकवळ, पंचकसाय, पंचकांम, पंचकारण, पंचकेस, पंचकोस, पंचगीत, पंचदेव, पंचनद, पंचनाथ, पंचपिता, पंचबांण, पंचरतन, पंचवांणी, पंचसबद, पंचवाद्य, पंचहुतासण ।
२ जिसका स्थान चार के बाद पड़े, पाँचवां ।
सं०पु०—१ पांच की संख्या या पाँच का अंक ।
२ किसी झगड़े या विवाद का निर्णय करने के लिए एकत्र एक या एक से अधिक व्यक्तियों का समूह ।
मुहा०—पंच परमेस्वर—पाँच व्यक्ति मिल कर जो कहें वह परमेश्वर के कहे के समान होता है ।
३ पचायत का सदस्य ।
[अं०] ४ लोहे को छेदने का ग्रोजार ।
पंचअंग–वि० [सं० पंचाङ्ग] पाँच अंगों वाला ।
सं०पु०—१ कच्छप, कछुआ (ह. नां. मा.) ।
२ देखो 'पंचांग' (रू.भे.)
रू०भे०—पाच अंग ।
पंच-आचार–सं०पु० [सं० पंचाचार] ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चरित्राचार, तपाचार व वीर्याचार (जैन)
पंचइंद्री—देखो 'पचेंद्रिय (रू.भे.)
उ०—सास्त्र सार बतीस जांणौ, केवल-ग्यांनी का उपकारी । पंच-इद्री कूं जीत न मांनत, पाखंड साध मुनिंद सतधारी ।
—भि.द्र.
पंचइवाद्य—देखो 'पंचवाद्य' (रू.भे.)
उ०—गांन सुसर मुखि गाय करि, वायसि पंचइवाद्य । तिहुअण त्रिणवत लेखवउं, आज्जनइ उन्मादि ।—मा.कां.प्र.
पंचक–सं०पु० [सं०] १ धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपदा, उत्तरा-भाद्रपदा और रेवती इन पांचों नक्षत्रों के समूह का नाम ।
२ फलित ज्योतिष के अनुसार धनिष्ठा नक्षत्र ग्रोर मकर के चंद्रमा से आरम्भ होकर मीन के चंद्रमा तक चलने वाला समय जिसमें तृण, काष्ठादि का संग्रह वर्ज्य माना जाता है ।
३ पांच का समूह या संग्रह ।
४ शकुन-शास्त्र ।
रू०भे०—पचक, पिचक, पिच्चक ।
पंचकन्या–सं०स्त्री० [सं०] सदा कन्या मानी जाने वाली वे पांच स्त्रियां जो विवाहित होने पर भी वे कन्या के समान ही रहीं, उनका कौमार्य नष्ट नही हुआ । यथा—अहिल्या, द्रौपदी, कुन्ती, तारा और मंदोदरी (पौराणिक)
पंचकपाळ–सं०पु० [सं० पंचकपाल] पाँचों कपालों में पृथक-पृथक पकाया जाने वाला पुराडोश ।
पंचकमाळा–सं०स्त्री०—प्रत्येक चरण में एक भगण, फिर एक मगण, फिर एक सगण तथा अन्त में एक दीर्घ वर्ण का कुल दस वर्ण वाला एक वर्णिक छन्द विशेष (पि.प्र.) ।
पंचकरम–सं०पु० [सं० पंचकर्म] १ पाँच प्रकार के कर्म—उत्क्षेपण, अवक्षेपण, आकुंचन, प्रसारण और गमन—वैशेषिक ।
२ चिकित्सा की पांच क्रियाएँ—वमन, विरेचन, नस्य, निरूहबस्ति और अनुवासन, मतांतर से निरूहबस्ति और अनुवासन के स्थान पर स्नेहन और बस्तिकरण माने जाते हैं ।
रू०भे०—पंचक्रम ।
पंचकळा–सं०स्त्री० [सं० पंचकला] गुर्ज, गुप्ति, मसकेत, ढाल और बयोनट नामक पाँच शस्त्रों के समूह से बना शस्त्र विशेष ।
पंचकलियांण—देखो 'पंचकल्यांण' (रू.भे.)
पंचकल्प–सं०पु० [सं०] एक सूत्र का नाम (जैन)
उ०—पंच-कल्प ते पंचम छेद । सवा इग्यारसैं संख्या वेद ।
—ध.व.ग्रं.
पंचकल्यांण–सं०पु० [सं० पंचकल्याण] वह घोड़ा जिसके चारों पैर और मस्तक श्वेत हों तथा अन्य शरीर किसी अन्य रंग का हो ।
(शुभ)
उ०—कासनी ताफता पंच-कल्यांण । सूलहरी चंपा पट सिचांण ।
—सू.प्र.
रू०भे०—पंचकलियांण, पंचकिलियांण, पंचक्लियांण, पंचाकिल्यांण, पचकल्यांण ।
पंचकवळ–सं०पु० [सं० पंचकवल] खाने के पूर्व कुत्ते, पतित, कोढी, रोगी और कौवे के लिए निकाले जाने वाले पांच ग्रास, अग्रासन ।
पंचकविधि–सं०स्त्री० [सं०] पंचक में किसी का देहावसान होने पर किया जाने वाला संस्कार ।
वि०वि०—यदि पांचों नक्षत्रों (पंचकों) में कोई मरता है तो उसके साथ चार पुतले, चार में तीन, तीन में दो व दो में एक पुतला साथ में जला कर इसका निवारण किया जाता है ।
पंचकसाय–सं०पु० [स० पंचकषाय] पांच वृक्षों का कषाय—जामून, सेमर, खिरैंटी, मोलसिरी और बेर ।
वि०वि०—दुर्गा पूजन के लिए यह कषाय, इन वृक्षों की छाल को पानी में भिगोकर तैयार किया जाता है ।
पंचकांम–सं०पु० [सं० पंचकाम] काम, मन्मथ, कंदर्प, मकरध्वज और मीनकेतु नामक पाँच कामदेव (तंत्रसार)

पंचकारण-सं०पु० [सं०] किसी कार्य की उत्पत्ति के पांच कारण, यथा—काल, स्वभाव, नियति, पुरुष और कर्म (जैन)

पंचकिलांण, पंचकिलियांण, पंचकिल्यांण—देखो 'पंचकल्यांण (रू.भे.) (शा.हो.)

उ०—कविला काळा केकांण, कमेत पंचकिल्यांण ।—गु.रू.बं.

पंचकेस-सं०पु० [सं० पंच:केश] यज्ञोपवीत संस्कार के समय वटुक के शिर पर रखी जाने वाली पांच शिखायें । इनको कम से कम एक वर्ष तक रखा जाता है और इस अवधि में वटुक को ब्रह्मचर्य का पूर्ण पालन करना पड़ता है ।

वि०वि०—यह प्रथा गोकुलिया गोस्वामियों में है ।

पंचकेसी-सं०पु० [सं० पंचकेश:] १ वह प्रथा जिसके अनुसार कोई अपने शिर, मूंछ, दाढी, बगल व गुप्तेन्द्रिय के केश न कटाए ।

२ उक्त प्रथा का पालन करने वाला व्यक्ति ।

पंचकोण-सं०पु० [सं०] कुण्डली में पांचवां व नवां स्थान (ज्योतिष)

पंचकोल-सं०पु० [सं०] पाचक व रुचिकर पांच वस्तुएं—यथा, पीपल, पीपलामूल, चव्य, चित्रकमूल और सोंठ । वैद्यक के अनुसार ये गुल्म और प्लीहा रोगनाशक होते हैं ।

पंचकोस-सं०पु० [सं० पंचकोश] १ शरीर सघठित करने वाले पांच कोश (स्तर), यथा—अन्नमय कोश, प्राणमय कोश, मनोमय कोश, विज्ञानमय कोश और आनन्दमय कोश (उपनिषद् और वेदान्त)

२ पांच कोस के क्षेत्र में बसी हुई काशी ।

पंचकोसी-सं०स्त्री० [सं० पंचक्रोशी] १ काशी का एक नाम ।

२ काशी की परिक्रमा ।

३ प्रयाग की परिक्रमा ।

पंचक्रम—देखो 'पंचकरम' (रू.भे.)

पंचकृत्य, पंचक्रित्य-सं०पु० [सं० पंच-कृत्य] महादेव या ईश्वर के पांच प्रकार के कर्म, यथा—सृष्टि, स्थिति, ध्वंस, विधान और अनुग्रह ।

पंचक्लेस-सं०पु० [सं० पंचक्लेश] पांच प्रकार के क्लेश, यथा—अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेश (योग शास्त्र)

पंचक्षारगण सं०पु० [सं०] पांच प्रकार के मुख्य क्षार या लवण, यथा—काचलवण, सैंधव, सामुद्र, विट और सोवर्चल (वैद्यक)

पंचगंगा-सं०स्त्री० [सं०] १ गंगा, यमुना, सरस्वती, किरणा और धूतपापा नामक पांच नदियों का समूह जिसे पंचनद भी कहते हैं ।

२ काशी का वह स्थान जहां गंगा, किरणा और धूतपापा का सङ्गमस्थल था । धूतपापा और किरणा ये दोनों अब लुप्त हो गई हैं ।

पंचगण-सं०पु० [सं०] पांच औषधियों का गण, यथा—विदारीगंधा, वृहती, पृश्निपर्णी, निदिग्धिका और भूकुष्मांड (वैद्यक)

पंचगव्य-सं०पु० [सं०] गाय से प्राप्त होने वाली पांच वस्तुएं जो पवित्र मानी जाती हैं यथा—दूध, दही, घी, गोबर और गोमूत्र ।

पंचगव्यघ्रत, पंचगव्यघ्रित-सं०पु० [सं० पंचगव्य घृत] अपस्मार मिरगी और उन्माद में दी जाने वाली एक आयुर्वेदिक औषधि जो पंचगव्य से बनाई जाती है ।

पंचगीत-सं०पु० [सं०] श्रीमद्भागवत के दशवें स्कन्ध के पांच मुख्य प्रकरण, यथा—वेणुगीत, गोपीगीत, युगलगीत, भ्रमरगीत और महिषीगीत ।

पंचगुप्त-सं०पु० [सं०] कछुआ, कच्छप ।

पचगौड़-सं०पु० [सं०]—विंध्याचल के उत्तर में बसने वाले ब्राह्मणों के पांच भेद, यथा—सारस्वत, कान्यकुब्ज, गौड़, मैथिल और उत्कल ।

पंचग्गळउ-वि० [सं० पञ्च+अग्रिलकम्] पांच अग्र है जिसके ।

उ०—राधा नामिहिं तसु घररंगि करणु भरणु तसु पूत्तु सउ कूंयर पंचग्गळउ किव हरि पढिवा जाइ ।—पं.पं.च.

पंचग्रह-सं०पु०यौ० [सं०] मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि का समूह (ज्यो०)

रू०भे०—पचग्रह ।

पंचघट्टी-सं०पु० [सं० पञ्चघटिका] लगभग पांच घटी रात्रि व्यतीत होने पर सोने का समय (शेखावाटी)

पंचत्रकर, पंचचक्र-सं०पु० [सं० पंचचक्र] पांच प्रकार के चक्र, यथा—राजचक्र, महाचक्र, देवचक्र, वीरचक्र और पशुचक्र (तंत्र)

पंचचामर-सं०पु० [सं० पंचचामर] १ एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में जगण, रगण, जगण, रगण, जगण और अन्त में गुरु होता है ।

पंचचूड-सं०पु० [सं०] पांच शिखा वाला व्यक्ति ।

पंचचूडा-सं०स्त्री० [सं०] एक अप्सरा (रामायण)

पंचजग्य—देखो 'पंचमहाजग्य' ।

पंचजन-सं०पु० [सं०] १ पांच व पांच प्रकार के जनों का समूह ।

२ ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और निषाद ।

३ पुरुष (ह.नां.)

४ मनुष्य, जीव और शरीर से सम्बन्ध रखने वाले प्राण आदि ।

५ एक प्रजापति का नाम ।

६ राजा सगर के पुत्र का नाम ।

७ पाताल में रहने वाला एक असुर जो श्रीकृष्ण द्वारा मारा गया था ।

पंचजन्य-सं०पु० [सं० पांचजन्य] १ श्रीकृष्ण द्वारा बजाया जाने वाला शङ्ख जो पाताल में रहने वाले पंचजन नामक असुर की हड्डी का बना था ।

रू०भे०—पंचाईण, पंचाईन, पंचायन ।

पंचझारी—देखो 'पंचहजारी' (रू.भे.)

पंचडोळिया-सं०पु० [सं० पंच+राज० डोळिया] पांच देवताओं को सम्बोधित कर के गाए जाने वाले पांच गीत (पुष्करणा-ब्राह्मण)

पंचतंत्री-सं०स्त्री० [सं०] एक प्रकार की वीणा जिसमें पांच तार लगते हैं ।

पंचतत, पंचततव, पंचतत्व-सं०पु० [सं० पंचतत्व] १ पांच प्रकार के तत्व आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी।

उ०—सावधांन गुर-ग्यांन, पाव द्रिढ सरा परट्ठै। जुग कीतग जोड़वा, पंचतत पंच पइट्ठै।—जगो खिड़ियो

२ वाम मार्ग के अनुसार मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन।

३ गुरुतत्व, मंत्रतत्व, मनस्तत्व, देवतत्व और ध्यानतत्व (तंत्र)

पंचतन्मात्र-सं०पु० [सं०] पांच स्थूल महाभूतों के कारण-रूप सूक्ष्म महाभूत, यथा—शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध। ये अतींद्रिय माने गए हैं (सांख्य)।

पंचतपौ-सं०पु० [सं० पंचतपस्] पंचाग्नि तापने वाला, तपस्वी।

पंचतर, पंचतरु—देखो 'पंचदेव व्रक्ष' (रू.भे.)

पंचतव—देखो 'पंचत्व' (रू.भे.) (जैन)

पंचताळ-सं०पु० [सं० पंचताल] ध्रुवताल का एक भेद (संगीत)

पंचताळीस—देखो 'पैंताळीस' (रू.भे.)

पचतिक्त-सं०पु० [सं०] आयुर्वेदानुसार ज्वर, कुष्ट, विसर्पादि रोगों में दी जाने वाली पांच औषधियों का समूह जो निम्न है—

गिलोय, कंटकारि, सोंठ, कुट और चिरायता।

पंचतिथ, पंचतिथि-सं०स्त्री० [सं० पंचतिथि] १ कार्तिक शुक्ल एकादशी से पूर्णिमापर्यन्त पांच तिथियों का समूह।

२ वैशाख शुक्ल एकादशी से पूर्णिमापर्यन्त पांच तिथियों का समूह।

पंचतीरथ-सं०पु० [सं० पंचतीर्थ] विश्रांति, शौकर, नैमिष, प्रयाग और पुष्कर इन पंच तीर्थों के समूह का नाम।

पंचतीरथी-सं०स्त्री० [सं० पचतीर्थ+रा.प्र.ई] १ पांच (स्थापनाचार्य (अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु) की असदभूत स्थापना जो कपड़े में बंधी हुई पोटली में रहती है (जैन))

२ देखो 'पंचतीरथ' (रू.भे.)

पंचत्रण-सं०पु० [सं० पंचतृण] पांच तृणों का समूह, यथा—कुश, कास, शर, दर्भ और ईख।

पंचत्व-सं०पु० [सं०] १ पांच का भाव।

२ शरीर के पंचभूतों (जिनसे शरीर संघठित होता है) का अलग-अलग अवस्थान, मृत्यु।

क्रि०प्र०—होणौ।

मुहा०—पंचत्व प्रापत होणौ—पंचत्व प्राप्त होना, मरना।

३ मोक्ष।

रू०भे०—पंचतव।

पंचदसी-सं०स्त्री० [सं० पंचदशी] १ पूर्णिमा, पूर्णमासी।

२ अमावस्या।

पंचदेव-सं०पु० [सं०] पांच प्रकार के मुख्य देवता, यथा—आदित्य, रुद्र, विष्णु, गणेश और देवी।

पंचदेवव्रक्ष, पंचदेवव्रख, पंचदेवव्रिक्ष, पंचदेवव्रिख-सं०पु० [सं० पंचदेव-वृक्ष] पांच प्रकार के वे वृक्ष जो सुर-वृक्ष माने जाते हैं *यथा*—मंदार, पारिजात, संतान, कल्पवृक्ष और हरिचंदन।

पंचद्रविड़-सं०पु० [सं०] विंध्याचल के दक्षिण में बसने वाले ब्राह्मणों के पांच भेद। यथा—महाराष्ट्र, तैलंग, कर्णाट, गुर्जर और द्रविड़।

पंचधारलपनसी-सं०स्त्री० [सं० पंचधारलपनश्री] एक प्रकार की लपसी विशेष। उ०—१ रोटी बाटी, ठोठि अंगार करि वेढमी, मारुयाडिनी पंचधार-लपनसी, सुदलित सुललित वरनारि परीसी।

—व.स.

उ०—२ सुंहाली सांकुली सातपुडी खंडमोदक गुडमोदक दोठां दही-वडां मरकी सिंहकेसर पंचधारलपनसी एवं विध पक्वान्न।

—व.स.

पंचन-सं०पु०—कमल (अ.मा.)

पंचनइ—देखो 'पंचनद (रू.भे.)

उ०—पतिसाह पंचनइ लंघि पाइ, ऊतग्यिउ कोटि मरोटि आइ। सुरिताण चाचि कीयउ सहाउ, तेवाड़ि कूप भरिया तळाउ।

—रा.ज.सी.

पंचनख-सं०पु० [सं०] वह प्राणी जिसके हाथ व पैर पर पांच-पांच नाखून हों जैसे बंदर।

पंचनद, पंचनदी-सं०स्त्री० [सं०] १ वह स्थान जहां पांच नदियां बहती हों।

२ पंजाब जहां रावी, सतलज, व्यास, चिनाव और झेलम ये पांच नदियां बहती हैं और सिंधु में मिलती हैं।

३ पांच नदियों का समाहार।

उ०—मीर सोराब रा मुलक सूं दिखण हैदराबाद आथमणौ सिंधु री दरिया पंचनद मिळ हुवो जिकै उत्तर दाऊद पोहरा, पूरब जैसळमेर।—बां.दा.ख्यात

रू०भे०—पंचनइ।

अल्पा०—पंचनदौ।

पंचनदौ—देखो 'पंचनदी' (अल्पा०, रू.भे.)

पंचनाथ-सं०पु० [सं०] पांचनाथ, यथा—बदरीनाथ, द्वारकानाथ, जगन्नाथ, रंगनाथ और श्रीनाथ।

पंचनांमौ-सं०पु० [सं० पंचनाम्नः] पंचों द्वारा दिए गए निर्णय का पत्र।

पंचनिंब-सं०पु० [सं०] नीम के पांच अंग, यथा—पत्ता, छाल, फूल, फल और मूल।

पंचपक्षी-सं०पु० [सं० पंचपक्षिन्] एक प्रकार का शकुन शास्त्र।

पंचपगी-सं०पु [सं० पंच+पदी] एक प्रकार का अशुभ घोड़ा।

पंचपणौ-सं०पु० [सं० पंच+त्व] १ पंच का कार्य।

२ पंच का पद।

३ वाद-विवाद।

पंचपद—देखो 'नवकार'

उ०—परचक्र तिहां अतिहि रुकलइ, सम्रुवरग मोटा निरदळइ।
सैन्य सुभट लेई दवदंति, चालंतइ पंचपद समरंति।
—नळ-दवदंती रास

पचपन—देखो 'पचपन' (रू.भे.)
पंचपनमो—देखो 'पचपनमो' (रू.भे.)
पंचपरमेस्ठि—देखो 'नवकार'
उ०—पंचपरमेस्टि मन सुद्ध प्रणमी करी, धरमहित आगम अरथ हीवडे धरी।—ध.व.ग्रं.

पंचपातर, पंचपात्र-सं०पु० [सं० पंचपात्र] १ पूजा के पांच पात्रों का समूह। उ०—कमळा री वाप जिकै मो'लै में रै'तो हो वो भलै मांणसां री हो। ऊमा-रै हरख सूं हिलोडा खावतै हिवड़ै रै अनुराग री लालाई अरुण रै दरसणां सूं वै-री आंखडल्यां में छळक ऊठती जणै वै मो'लै री सांति पचपात्र आचमण्यां रै खड़कै अर भगवांन रै संकटमोचन नांव रै राग-भरियै उच्चारण रै सागै भंग हुआ करती ही।—वरसगांठ
२ पूजा के पांच पात्रों में से एक पात्र जो पांच धातु का बना चौड़े मुंह का होता है और जिससे पूजा के लिए जल भरा जाता है।

पंचपिता-सं०पु० [सं० पंचपितृ] पांच प्रकार के पिता, यथा—पिता, आचार्य, श्वसुर, अन्नदाता और भय से रक्षा करने वाला।

पंचपित्त-सं०पु० [सं०] वैद्यक शास्त्रानुसार वराह, छाग, महिष, मत्स्य और मयूर का पित्ता।

पंचपुसप, पंचपुसब, पंचपुस्प-सं०पु० [सं० पंचपुष्प] देवताओं के प्रिय पांच फूल, यथा—चंपा, आम, शमी, कमल और कनेर।
(पौराणिक)

पंचवटी—देखो 'पंचवटी' (रू.भे.)

पंचबळा-सं०स्त्री० [सं० पंचबला] वैद्यक में पांच ओषधियों का समूह, यथा—बला, अतिबला, नागबला, राजबला और महाबला।

पंचबलि-सं०स्त्री० [सं०] पांच रूपों में किया जाने वाला दान या पुण्य यथा—गो ग्रास, स्वान बलि, काक बलि, अतिथि बलि, पीपिलिका बलि।

पंचबांण-सं०पु० [सं०] १ कामदेव के पांच बांण यथा—उन्मादन, तापन, शोषण, सम्मोहन तथा स्तम्भन या आकरसण, मोहण, द्रावण, उन्मादण तथा वसीकरण। (वं.भा.)
२ कामदेव के पांच पुष्प बांण यथा—अरविंद, अशोक, आम, नवमल्लिका और नीलोत्पल।
३ कामदेव। उ०—१ आगळि रितुराय मंडियो अवसर, मंडप वन नीझरण म्रिदंग पंचबांण नायक गायक पिक, वसुह रंग मेळगर विहंग।—वेलि.
उ०—२ अन्य जिण्या! इम सूं लवइ? हूं किहां ताहरी मात?। पंचबांण-पीड़ा घणी, कइ वरि कइ करि घात।—मा.कां.प्र.
रू०भे०—पंचवांण, पांचबांण।

पंचभद्र-सं०पु० [सं०] १ वह घोड़ा जिसकी पीठ, छाती, मुंह और दोनों पार्श्व श्वेत रंग के हों (डि.को.)
२ एक जाति विशेष का घोड़ा (शा.हो.)
३ पंचकल्याण घोड़ा।
वि०वि०—देखो 'पंचकल्याण'।
४ गिलोय, पितपाड़ा, मोथा, चिरायता और सोंठयुक्त एक औषधिगण।

पंचभरतारी-सं०स्त्री० [सं० पंचभर्तृका] द्रौपदी।

पचभीख, पंचभीखम, पंचभीखम—देखो 'भीखमपंचक' (रू.भे.)

पंचभूत-सं०पु० [सं०] पंचतत्व।

पंचभूतक, पंचभूतिक-वि० [सं० पंचभौतिक] पंचभौतिक।
रू०भे०—पांचभूतिक।

पंचमटळी-सं०स्त्री० [सं० पंच+मटन रा.प्र.ई.] पंचायत।

पंचम-सं०पु० [सं०] १ संगीत के सात स्वरों में पांचवां स्वर।
उ०—स्वर बाजंत्र का भेद कहि दिखाय सो कैसे खड्ज रखब गंधार मधम पंचम धईवंत निखाद सप्तत सुर के अलाप करि कोकिलूं की बांणी सैं बोलते हैं।—सू.प्र.
२ राग विशेष (ध.व.ग्रं.)
उ०—वीणा डफ महुयरि वंस वजाए, रोरी करि मुख पंचम राग। तरुणी तरुण विरहि-जण दुतरणि, फागुण घरि घरि खेलै फाग।
—वेलि.
वि० (स्त्री० पंचमी) पांचवां। उ०—१ भूपति पूंजतणैं दुति अदभुत। सजण विनोद नांम पंचम सुत।—सू प्र.
उ०—२ पंचमैं प्रहरे दीह रै, सायधण दिये बुहारि। रिमझिम रिमझिम हुइ रही, हुइ घण री जोहारि।—ढो मा.
उ०—३ ससि सुत भवन पंचमैं सोहै, महा सुबुध लख जगत विमोहै। मंडळ धर मन में ग्रह मंडत, खाग जैत नित भाग अखंडत।
—रा.रू.
रू०भे०—पंचहम।
अल्पा०—पंचमो।

पंचमकार-सं०स्त्री० [सं०] मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन।
(वाममार्ग)

पंचमगति-सं०स्त्री० [सं०] मोक्ष। उ०—मन विकसै तिम विकसता, पुहप अनेक प्रकार। प्रभु पूजाए पंचमी, पंचमगति दातार।
—ध व.ग्रं.

पंचमगुण-सं०पु० [सं०] मोक्ष। उ०—करम आठ मेटै कियौ, पंचमगुण परवेस। थिर सिद्धाचळ थापना, आदीस्वर आदेस।—बां दा.

पंचमराग—देखो 'पंचम' (२)
उ०—फागुण-केरां फणगटां, फिरि फिरि गाई फाग। चंग वजावइ चंग परि, आलवइ पंचम राग।—मा कां प्र.

पंचमहायज्ञ-सं०पु० [सं० पंचमहायज्ञ] वे पांच कृत्य जिनका गृहस्थों

द्वारा नित्य करना आवश्यक बताया गया है—(स्मृतियां और गृह-सूत्रों के अनुसार)

यथा—१ अध्यापन (ब्रह्मयज्ञ)

२ पितृतर्पण (पितृयज्ञ)।

३ होम (देवयज्ञ)

४ बलिवैश्वदेव (भूतयज्ञ)

और (५) अतिथिपूजन (नृयज्ञ)

पंचमहापातक-सं०पु० [सं०] पांच प्रकार के महापाप—ब्रह्महत्या, सुरापान, चोरी, गुरु की स्त्री के साथ व्यभिचार तथा इन चार प्रकार के महापाप करने वाले का संसर्ग।

पंचमहाव्याधि-सं०स्त्री० [सं०] पांच प्रकार के महारोग—अर्श, यक्ष्मा, कुष्ठ, प्रमेह और उन्माद।

पंचमहाव्रत-सं०पु० [सं०] योग शास्त्र के अनुसार पांच आचरण जो जैन यतियों के लिए भी जैन शास्त्रों के अनुसार ग्रहण करना आवश्यक बतलाया गया है। वे निम्न हैं—अहिंसा, सूनृता, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह।

उ०—गुलाब रिसि बत्तीस सूत्र खांधै लियां फिरतो पिण सरधा खोटी। वळी पंचमहाव्रत नां द्रव्य क्षेत्र काळ भाव पूछया।

—भि.द्र.

रू०भे०—पांच महाव्रत।

पंचमहासवद, पंचमहासब्द-सं०पु० [सं० पंचमहाशब्द] १ पांच प्रकार के वाद्यों का समूह, यथा—शृंग, तम्मट, शंख, भेरी और जय-घंटा।

२ उक्त वाद्यों से उत्पन्न ध्वनि (मंगलसूचक)

पंचमाथ-सं०पु० [सं० पञ्च+मस्तक] महादेव, शिव।

उ०—गग के सुथांन नख करत प्रकास भांन, रहत सदीव उर मधि पंचमाथ के।—र.ज.प्र.

पंचमी-सं०स्त्री० [सं०] १ चांद्रमास के किसी पक्ष की पांचवीं तिथि।

रू०भे०—पांचम, पांचिम, पांचु, पांचू, पांचै।

२ द्रौपदी।

३ अपादानकारक (व्याकरण)

४ मोक्ष, मुक्ति।

ज्यूं—गत पंचमी गया।

५ शौचादि से निवृत्त होने की क्रिया (जैन)

वि०स्त्री०—जिसका स्थान क्रमशः चार के बाद पड़े, पांचवीं।

उ०—१ संसार सुपहु करता ग्रिह संग्रिह, गिणि तिणि हीज पंचमी गाळि। मदिरा रीस हिंसा निंदा मति, च्यारै करि हिंसा निंदा मति, च्यारै करि मूंकिया चंडाळि।—वेलि.

उ०—२ मुणीजै तुही पंचमी स्कंधमाता। खटी मात कात्यायणी तू विख्याता। रचै सातमो रूप तू काळरात्री। दिगी गोरि तू निध्यमी सिद्धदात्री।—मे.म.

रू०भे०—पांचमि, पांचमी, पांचवीं।

पंचमुख-सं०पु० [सं०] १ सिंह (ह.नां., ना.डि.को.)

उ०—१ जुड़ै जरद नह साथी जोवै, परदळ दीठां पंचमुख। बाघ न क्यूं परगह बोलावै, रावत वळियो तेण रुख।

—राव कांधळजी रो गीत

उ०—२ बदळ गया भड़ देख मुरधर थंभण खाग बळ, भूप श्रो जोधपुर खळां भांनो। दुरद 'जगता' अगै पंचमुख डाखिश्रो, मेरगर डिगै नह डिगै 'मांनो'।—रतनजी बोगसो

२ नृसिंहावतार। उ०—प्रांणेस्वर जो पंचमुख, भणै पंचमुख वाह। पूज जिका स्री पावही, दैणी असुरां दाह।—वां.दा.

३ शिव, महादेव। उ०—प्रांणेस्वर जो पंचमुख, भणै पंचमुख वाह। पूज जिकां स्री पावही, दैणी असुरां दोह।—वां.दा.

४ ब्रह्मा।

रू०भे०—पांचमुख।

पंचमुखी-वि० [सं० पंचमुखिन्] पांच मुख वाला।

सं०पु०—एक प्रकार का अशुभ रंग का घोड़ा।

पंचमुदरा—देखो 'पंचमुद्रा' (रू.भे.)

उ०—किण रो गुरुजी मैं तिलक बणाऊं, किण री माळा फेरूं रे लोय। पंचमुदरा रो चेला तिलक बणावो, निरगुण माळा फेरो रे लोय।—स्री हरिरांमजी महाराज

पंचमुद्र-सं०पु० [सं०] महादेव, शिव (नां.मा.)

पंचमुद्रा-सं०स्त्री० [सं०] १ पूजन-विधि में पांच प्रकार की मुद्रायें, यथा—आवाहनी, स्थापनी, सन्निधापनी, सम्बोधिनी और सम्मुखी करणी।

२ हठयोग में विशेष अंग-विन्यासा ये पांच मुद्रायें निम्नलिखित होती हैं—खेचरी, भूचरी, चाचरी, गोचरी और उनमनी।

रू०भे०—पंचमुदरा।

पंचमूळ-सं०पु० [सं० पंचमूल] औषधियों की जड़ लेकर बनाई जाने वाली एक प्रकार की पाचक-औषध (वैद्यक)

पंचमूळी-सं०स्त्री० [सं० पंचमूली] स्वल्प पंचमूल।

पंचमेर, पंचमेरु-सं०पु० [सं० पंच+मेरु] वैताढय-गिरि, हिमाचल, निषध, नीलवंत और चित्रसेन ये पांच प्रसिद्ध पर्वत।

पंचमेळ, पंचमेळो-वि० [सं० पंच+मिलन्] जिसमें पांच प्रकार की वस्तुयें मिली हुई हों।

उ०—मीठा मीठा कावरा, गवारफळी कचनार। मांठफळी चूंळा-फळी, मांय मतीरो मिळाय। यों पंचमेळा रो साग देवतड़ां नै नहीं मिळै ओ राज।—लो.गी.

पंचमेवो-सं०पु०यौ० [सं० पंच+फा० मेवा] बादाम, पिस्ता, दाख, छुहारा और नारियल की गिरी (इन पांचों का समूह)

पंचमेस-सं०पु० [सं० पंचमेश] जन्म-कुंडली में पांचवें घर का स्वामी। (फलित ज्योतिष)

पंचमों—देखो 'पंचम' (अल्पा., रू०भे०)
(स्त्री० पंचमी)
पंचरंग-वि० [सं०] पांच रंगों वाला, पांच रंग का।
पंचरतन, पंचरत्न-सं०पु० [सं०] १ पांच प्रकार के रत्न यथा—माणिक्य, पन्ना (मरकत), पुष्पराज, हीरा व नीलम। मतान्तर—सोना, चांदी, मोती, लाजावर्त व मूंगा। मतान्तर—सुवर्ण, हीरा, नीलम, पद्मराग व मोती। मतान्तर—नीलम, हीरा, पद्मराग, मोती व मूंगा।
२ श्रीअच्युत विरचित एक स्तोत्र का नाम।
३ अनुस्मृति, गजेन्द्रमोक्ष, गीता, भीष्मस्तव और विष्णुसहस्रनाम—इन पांच ग्रंथों के संग्रह का नाम।
उ०—पर निंदा आठूं पहर, चाटै विख री चाठ। क्यों नंह तू प्राणी करै, पंचरतन रो पाठ।—बां.द.
पंचराइओ-सं०पु० [देशज] वस्त्र विशेष (व.स.)
पंचरात्र-सं०पु० [सं०] १ पांच दिन में होने वाला एक प्रकार का यज्ञ।
२ पांच रातों का समूह।
पंचरासिक-सं०पु० [सं० पंचराशिक] गणित में एक प्रकार का हिसाब।
पंचरूप, पंचरूपी-सं०पु०यौ० [सं०?] सुमेरु पर्वत
(ह.नां.मा., अ.मा., नां.मा.)
उ०—१ कमधज्जं उदोतं कवट्टं, किरि कांठळ भांणं प्रगट्टं। दोळा दळ दिल्ली वाळा, पंचरूप किरि प्रब्बत माळा।—ग.रू.बं.
उ०—२ आवध्य डावि छतीस अंग। नीमजे भुज अड़िया निहंग। गज केसर जांमळि गज विभाड़। पंचरूप जांमळि जांणि पहाड़।
—ग.रू.बं.
पंचळ-वि०—पांचाल या पंजाब देश का।
सं०पु०—द्रुपद नरेश का पुत्र धृष्टद्युम्न।
उ०—सुण झरड़ा अर व्है सबळ, रचणी छळ सूं राड़। मार्‌यो द्रोणी रात रो, पंचळ नैं पछाड़।—पा.प्र.
वि०वि०—इसने महाभारत युद्ध में द्रोणाचार्य का वध किया था। इसका प्रतिशोध द्रोणाचार्य के पुत्र अश्वत्थामा (द्रोणी) ने इसे रात्रि में सोते हुए को मार कर लिया।
पंचलक्षण-सं०पु० [सं०] पुराण के पांच लक्षण या चिन्ह यथा—सृष्टि की उत्पत्ति, प्रलय, देवताओं की उत्पत्ति व वंशपरम्परा, मनवंतर मनु के वंश का विस्तार।
पंचलड़ो-वि० [सं० पच] (स्त्री० पंचलड़ी) १ पांच लड़ का।
२ पांच तह का।
रू०भे०—पांचलड़ो।
सं०पु०—गले में पहनने की पांच लड़ वाली माला या हार।
पंचलोह-सं०पु० [सं० पंचलोह] १ पांच प्रकार की धातुएँ—सोना, चांदी, तांबा, सीसा और रांगा। २ पांच प्रकार का लोह—वज्रलोह, कांतलोह, ३ क्रोंचलोह, पिंडलोह और कालिंगलोह।
पंचवटी, पंचवट्टी-सं०स्त्री० [सं० पंचवटी] दण्डकारण्य में गोदावरी के तट पर नासिक के पास का एक स्थान जहां पर श्री रामचन्द्र भगवान वनवास काल में रहे थे। यहीं से सीता हरण हुआ था।
(रामायण)
उ०—वनां दंडकारा विचै पंचवट्टी। जठै धार गोदावरी आय जट्टी।
—सू.प्र.
रू०भे०—पंचवटी।
पंचवदन-सं०पु० [सं०] १ शिव।
२ ब्रह्मा।
३ प्रत्येक चरण में प्रथम सात टगण फिर त्रिकल और अन्त में रगण कुल ४७ मात्रा का मात्रिक छंद (र.ज.प्र.)
पंचव्रत-सं०पु० [सं० पंचव्रत] पांच महाव्रत (जैन)
पंचवरग-सं०पु० [सं० पंचवर्ग] पांच वस्तुओं का समूह।
पंचवरण, पंचवरन-सं०पु० [सं० पंचवर्ण] १ प्रणव के पांच वर्ण—अ, उ, म, नाद और बिन्दु।
२ वस्त्र विशेष (व.स.)
३ वह घोड़ा जिसके शरीर पर पांच रंग हों।
उ०—राजलोक जोया कुंवरी, जिहां कांन्हड़ नी अंतेउरी। कूंयरि करइ केतलउं वखांण, जोया पंचवरण केकांण।—कां.दे.प्र.
वि०—पांच रंग का। उ०—सालि प्रमुख पंचवरण तणा, घण ढोवै धांन प्रधांन। सिद्ध चक्र नी तिहां करे थापना, धारी निरमळ ध्यांन।
—सीपाळ रास
पंचवांण—देखो 'पंचबांण' (रू.भे.)
पंचवांणी-सं०स्त्री० [सं० पञ्च+वाणि] कबीर, दादू, हरिदास, रामदास और दयालदास के उपदेशों का संग्रह।
पंचवाद्य-सं०पु० [सं०] तंत्र, आनद्ध, सुषिर, घन और वीरों का गर्जन।
रू०भे०—पंचइवाद्य।
पंचवीस—देखो 'पचीस' (रू.भे.) (उ.र.)
पंचवो—देखो 'पंचम' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—पंचवो तो फेरो बाई, लियो राज कंवार। अन धन दीन्हा बाई नैं मोकळा।—लो.गी.
पंचसंधि-सं०स्त्री० [सं०] १ संधि के पांच भेद—स्वरसंधि, व्यञ्जनसंधि, विसर्गसंधि, स्वादिसंधि और प्रकृति भाव।
२ पांच की संख्या।
पंचसद—देखो 'पंचसब्द' (रू.भे.)
उ०—धुरि देवळ धरमसाळि, पंचसद सुणिजै प्राभा। झालर रा झणकार, देवग्रिह दीपक झाझा।—ध.व.ग्रं.
पंचसदी—देखो 'पंचसद्दी' (रू.भे.)
पंचसद्द—देखो 'पंचसब्द' (रू.भे.)
पंचसदी-सं०पु० [सं० पंच+फा० सदी=१००] पांच सौ ऊंटों का स्वामी। उ०—१ चढ़े पंच हज्जारिया पंचसद्दी। चढ़े मल्ल पायक्क बगसी अहद्दी।—गु.रू.बं.

उ०—२ हजारी सदी पंचसद्दी विसद्दी। जगज्जेठ जोधा मिळे नांम-जद्दी।—वचनिका

पंचसबद, पंचसबदउ, पंचसबद्द, पंचसद्द—सं०पु० [सं० पंचशब्द] १ पांच प्रकार के वाद्य—तंत्री, ताल, झांझ, नगारा और तुरही।

मतान्तर के अनुसार—तंत्री, वीणा, किन्नरी, तंबूरा और निशान (नगारा) (मंगलसूचक)

उ०—१ नीसांण रोड़ि दमांम नोबति, भेरी पंचसबद्द ए। लख थाट मोगर लीए लसकर, गिगन धूळ गरद्द ए।—गु.रू.वं.

उ०—२ आया सुर मिळे महोछव ऊपर, पंचसबदउ वाजियउ पडूर। देव तणउ मुख झांखउ दीसइ, सहस गुणउ ऊगउ जगसूर।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—३ तठा उपरांति करि नै राजांन सिलांमति अनेक राग-रंग वधाई वांटीजै छै। राय अंगण घोळहरे गेहणी घणां मंगळाचार गीत नाद खंभाइची गावै छै। छत्रीस वाजां पंचसबदां वाजै छै। तांहरा नांम तती १ वीणा २ किन्नरी ३ तंबूरो ४ नीसांण ५ ऐ तौ पांच सबदा आगै छत्रीस वाजां रा नांम कहै छै।—रा.सा.सं.

उ०—४ जय-जयकार उचरइ ए, ते नगर मझारि। पंचसबद वाजित्र वाजइ, गाइ गीत नारि।—नळ दवदंती रास

२ पांच वाद्यों की मंगल-सूचक ध्वनि।

३ पांच प्रकार की ध्वनि, यथा—वेदध्वनि, वंदीध्वनि, जयध्वनि, शंखध्वनि और निशानध्वनि।

व्याकरण के अनुसार—सूत्र, वार्तिक, भाष्य, कोष और महाकवियों के प्रयोग।

रू०भे०—पंचसद, पंचसद्द' पर्यंचसबद।

पंच-समंदीय—सं०पु० [देशज] एक प्रकार का घोड़ा।

पंचसर—सं०पु० [सं० पंचशर] १ कामदेव (ह.नां.)

उ०—दरपक कंदरप कांम कुसुमायुध, संबरारि रति-पति तनुसार। समर मनोज अनग पंचसर, मनमथ मदन मकरध्वज मार।

२ कामदेव के पांच बाण। —वेलि.

वि०वि०—देखो 'पंचबांण'।

पंजसरधारी—सं०पु० [सं० पञ्च+शर+धारिन्] कामदेव, मनोज (डि.को.)

पंचसाख—सं०पु० [सं० पंचशाख] हाथ, हस्त; कर (ह.नां.मा)

रू०भे०—पांचूंसाख।

पंचसिख—सं०पु० [स० पंचशिख] सिंह (ह.नां. अ.मा.)

पचसिद्धौसद्धि—सं०स्त्री० [सं० पचसिद्धौपधि] वैद्यक में पांच सिद्धौपधियां यथा—सालिब मिस्री, वराहीकंद, रोदंती, सर्पाक्षी और सरहटी।

पंचसूना—सं०स्त्री० [सं० पञ्चसून:] वे पाँच प्रकार के काम जिनके करने से जीव हिंसा होती है—चूल्हा जलाना, आटा आदि पीसना, झाड़ू देना, कूटना और पानी का घड़ा रखना (जैन)

पंचसौ—सं०पु० [सं० पंच+शत] देशी कपड़ा बुनने वालों का कपड़े की बुनाई में प्रयोग लिया जाने का एक औजार।

पंचस्नेह—सं०पु० [सं०] पांच प्रकार के स्निग्ध पदार्थ—घी, तेल, चरबी, मज्जा और मोम।

पंचस्वेद—सं०पु० [सं०] पांच स्वेद यथा—लोष्ठ स्वेद, वालुका स्वेद, वाष्प स्वेद, घट स्वेद और ज्वाला स्वेद (वैद्यक)

पंचहजारी, पंचहज्जारी—सं०पु० [फा० पंजहजारी] १ पाँच हजार की सेना का अधिपति। उ०—१ इण परवांणी साह उचारै। सुणतां सितर वहोतर सारै। इण थी जो राखै भड़ यारी। हुवै कमंध सुज पंचहजारी।—रा.रू.

उ०—२ चढ़ै सब्बदावेध लूधा सिधांणं। चढै तूणमें घातिआ भूळ बांणं। चढ़ै पंचहज्जारियां पंचसद्दी। चढ़ै मल्ल पायक्क वगसी अहद्दी।

—गु.रू.वं.

२ मुगल साम्राज्य में बड़े बड़े लोगों को मिलने वाली एक पदवी।

उ०—रांणो अमरसिंह नै जहांगीर पातसाह रै वात हुई। रांणो अमरो साहिजादै खुरम सूं घोघूंदै में मिळियो, तद रांणा नुं मेवाड़ ऊपर इतरी ठौड़ जागीर में दे नै पंचहजारी असवार रो मुनसब कीयो। असवार हजार १००० चाकरी थापी।—नैणसी

उ०—२ तद बुरहांनपुर रो सूबो राव रतन नूं भोळायो। पंच-हजारी मनसब दियो। तद सूं ठाकुराई बूंदी री वधी।

—बां.दा.ख्यात

रू०भे०—पंचझारी, पंचहजारी, पांचहजारी।

पंचहम—देखो 'पंचम' (रू.भे.)

उ०—खड़ग रिखभ गंधार, मद्धि पंचहम निखादह। सरिस कंठ सुर सपत, गीत संगीत अलापह।—गु.रू.वं.

पंचहुतासण—सं०पु० [सं० पचहुताशन] तपस्या की पाँच अग्नियां।

वि०वि०—तपस्वी अपने इर्द-गिर्द चार दिशाओं में अग्नि जला देता है और पाँचवीं अग्नि सूर्य की होती है।

पंचांइण—देखो 'पंचानन' (रू.भे.)

उ०—पंचांइण नइं पाखरयउ, मइगळ नइ मद कीध। मोहन-वेली मारुई, कंत पेम रस पीध।—ढो.मा.

पंचांग—सं०पु० [सं० पञ्चांग] १ पाँच अंग या पांच अंगों से युक्त वस्तु।

२ सूर्य चन्द्र की स्थिति से बनने वाले वार, तिथि, नक्षत्र, योग और करणों के ब्योरेवार विवरण का पत्रक।

(ज्योतिष)

३ पुरश्चरण में किए जाने वाले पांच कर्म—जप, होम, तर्पण, अभिषेक और विप्रभोजन।

४ तांत्रिक उपासना में किसी इष्टदेव का कवच, स्तोत्र, पद्धति, पटल और सहस्रनाम।

५ सहाय, साधन, उपाय, देश-काल-भेद और विपद-प्रतिकार।

(राजनीति शास्त्र)

६ वृक्ष के पांच अंग—जड़, छाल, फल, पत्ती और फूल। (वैद्यक)

७ कच्छप।

८ देखो 'पंचकल्यांण'

पंचांगनि, पंचांगनी, पंचांगि—देखो 'पचाग्नि' (रू.भे.)

उ०—सीआळइ जळ-मांहि सरि, उन्हाळइ पंचांगि। वरसाळइ वग-डइ वसइ, कांमकंदळा-काजि।—मा.कां.प्र.

पंचांण—देखो 'पंचानन' (रू.भे, ना.डि.को.)

उ०—वाई आवज्यो सात ही बहनां, पाउरे पंचांण। चूकजो मती वड चारण, आज रो अवसांण।—हटूजी आढ़ो

पंचांणुं, पंचांणूं, पंचांणू—देखो 'पचांणु' (रू.भे.)

उ०—वाजा सहज अड़ताळीस वाजे, फरहता नेजा घरीयां। पायक कोड़ि पंचांणू आगै, नौवति वाजै घूघरियां।—वि.कु.

पंचांणूक—देखो 'पचांणूक' (रू.भे.)

पंचांणूमौं, पंचांणूवौं, पंचानमौं, पंचानवौं—देखो 'पचांणूमो' (रू.भे.)

पंचायण, पंचाइण—देखो 'पंचानन' (रू.भे.)

पंचा-अगनि—देखो 'पंचाग्नि' (रू.भे)

उ०—कांई तपसी तप करै, कांई पंचा-अगनि साझै।—गु.रू.बं.

पंचाइत—देखो 'पंचायत' (रू भे.)

पंचाइन—देखो 'पंचानन' (रू.भे.)(ह.नां.मा.)

पंजाईण, पंचाईन—१ देखो 'पंचजन्य' (रू.भे.)

उ०—ओढण वाहण भाया भीढया, अंगइं आयुध झाल्या। पंचाईण पूरघउ परमेस्वर, चौपट मल चढ़ि चाल्या।—रुकमणी-मंगळ

२ देखो 'पंचानन' (रू.भे.)

पंचाकिल्यांण—देखो 'पंच-कल्यांण' (रू.भे.)

पंचाक्षर-वि० [सं० पंच+अक्षर] जिसमें पांच अक्षर हों, पांच अक्षर का।

सं०पु०—१ शिव का एक मंत्र जिसमें पांच अक्षर होते हैं, यथा—'ओ३म नमः शिवाय।'

पंचाक्षरी-सं०पु० [सं० पंच+अक्षर+रा० प्र०ई] १ शिव के पंचाक्षर मंत्र का जाप करने वाला।

उ०—के गणीया के गारुडी, पचाक्षरी प्रमांण। को आराधइ देवता, जोसी जे जे जाण।—मा.कां.प्र.

२ पंचाक्षरी मंत्र।

पंचागनि, पंचागनी, पंचाग्नि-सं०स्त्री० [सं० पंचाग्नि] १ तपस्या के समय तपस्वी के चारों ओर जलाई जाने वाली चार धूणियों की अग्नि और पांचवां सूर्य का ताप।

उ०—गोदड़, कांनफाड़, जोगी, जंगम, सोफी, संन्यासी, अवधूत, पंचागनि रा झूलणाहार अलमसत-फकीर जिकै संसार नूं भागा थका फिरै।—रा.सा.सं.

२ चीता, चिचड़ी, भिलावा, गंधक और मदार नामक औषधियां जो बहुत उष्ण मानी जाती हैं (वैद्यक)।

वि०—१ पंचाग्नि तापने वाला।

२ पांच की संख्या* (डि.को.)

रू०भे०—पंचांगनि पंचांगनी, पंचांगि, पंचा-अगनि।

पंचाचार—देखो 'पंच आचार' (रू.भे.)

उ०—आचारिज पय युग नमूं, पाळै पंचाचार। गुण छत्रीस विराजता, आगम अरथ भंडार।—श्रीपाळ रास

पंचाणण, पंचाणणु—देखो 'पंचानन' (रू.भे.)

उ०—१ तरण राथ थिकत घणा वहै लागां अतर, अदर कर कर मरै वरण अवरी। पहं पह गजाणण कहै इम पंचाणण, गजाणण कठै रिण सोध गवरी।—पीथो सांदू

उ०—२ अमर त जिणवर गिर त मेरु निसियर तद सासणु, तरुत अमरतरु घन त घनु महता पंचाणणु।—अभयतिलक यती

पंचातप-सं०पु० [सं० पंच-आतप] ग्रीष्म ऋतु की धूप में चारों ओर अग्नि जला कर किया जाने वाला तप।

वि०वि०—देखो 'पंचाग्नि'।

पंचात्मा-सं०पु० [सं०] पंचप्राण।

पंचाद-सं०स्त्री० [देशज] पश्चिम और वायव्य के मध्य की दिशा जिस ओर पुष्य और विशाखा नक्षत्र अस्त होते हैं।

पंचादी-वि० [देश०] 'पंचाद' दिशा का।

उ०—पौ पंचादी अर सांझ निवासी, सो नर क्यूं कर फिरै उदासी।
—अज्ञात

वि०वि०—यात्रा के लिए प्रातःकाल रवाना होने पर यदि पंचाद दिशा में तीतर बोले तो शुभ माना जाता है।

पंचादौ-सं०पु०—प्रथम और तृतीय चरण में बारह बारह मात्रायें तथा द्वितीय और चतुर्थ चरण में ग्यारह ग्यारह मात्राओं का मात्रिक छंद विशेष।

पंचानन-वि० [सं०] १ पांच मूंह वाला, पंचमुखी।

२ वीर, बहादुर।

सं०पु०—१ शिव, महादेव (डि.को.)

२ सिंह (अ.मा.)

३ स्वर-साधन की एक प्रणाली (संगीत)

रू०भे०—पंचांण, पंचांयण, पंचाइण, पंचाइन, पंचाईण, पंचाईन, पंचाणण, पंचाणणु, पंचायण, पंचायन, पंचाहण, पंच्चांण, पांचायण।

अल्पा०—पचायणो।

पंचाननी-सं०स्त्री० [सं०] १ शिव की पत्नी।

२ दुर्गा।

पंचमरा-सं०स्त्री० [सं०] दुर्वा, विजया, विल्वपत्र, निगुंडी और काली तुलसी इन पांच का समूह (वैद्यक)

पंचाम्रत, पंचाम्रित-सं०पु० [सं० पंचामृत] देवता के स्नान कराने या

चढ़ाने आदि के काम आने वाला एक स्वादिष्ट पेय जो पांच चीजों के योग से बनाया जाता है यथा—दूध, दही, घी, शक्कर और मधु।

उ०—१ एक सीह नइ पाखरचउ, सूर सिहाइति आवसरच, पंचाम्रित अमी परगरचउ।—अ-वचनिका

उ०—२ पंचाम्रित पखाळ करि, पूजा सारी सार। रुद्रजाप रूडइ करिउ, संख्या सहस इग्यार।—मा.कां.प्र.

पंचाम्ल-सं०पु० [सं०] पांच अम्ल या खट्टे पदार्थ—अमलवेद, इमली, जंभीरीनींबू, कागजी नींबू और बिजौरा नींबू।

मतांतर से—बेर, अनार, विपांवलि (चूका) अमलवेद और बिजौरा (वैद्यक)

पंचायण—देखो 'पंचानन' (रू.भे.)

उ०—१ पंचायण पांचू खेत ढहंता बरी जो परी, कळू चंदनांमो ज्यां धरीजो जेण कीत। आठ दूणा बरसां बीत रैण आंटै। राजपूतां छाडांणी करीजो ऐण रीत।

—कांवां रा भोमिया सींधल राठोड़ां री गीत

उ०—२ उलटी काय न मार ही, पंचायण मैमंत। 'कड़तळ' दळां उपाड़ि करि, कड़काय चाळी कंत।—हा.झा.

उ०—३ मिथ्या भ्रम रूपक द्विरद, तिहां पंचायण जेह। चिदानंद चिद्रूप सुं, निस-दिन अधिक सनेह।—वि.कु.

उ०—४ राठौड़ सूरो खींवो, कांधळजी रा बेटा मोहिलां रा दोहिता सो बड़ा सूर, धीर-वीर राजपूत, चोसठ-आखडी-निवाहणहार खाग-त्याग पूरा, काछ-वाच निस्कळंक, सरणाई-साधार, पर-भोम पंचायण, पार की छटी जागै, इण भांत रा दातार जूंझार।

—सूरे खीवे कांधळोत री वात

पंचायणी—देखो 'पंचानन' (अल्पा., रू.भे.)

पंचायत-सं०स्त्री० [सं०] १ विवाद, झगड़े या किसी अन्य मामले पर विचार करने वाले अधिकारियों या चुने हुए व्यक्तियों का समूह।

२ पंचों की बैठक या सभा।

३ कई लोगों की एक साथ बैठ कर की जाने वाली बकवाद।

रू०भे०—पंचाइत, पंचायती।

अल्पा०—पंचायतड़ो, पंचायतडी।

पंचायतड़ी, पंचायतडी—देखो 'पंचायत' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—ढाळ ढोलिया लोग, ठौड़ इण ठंडी छ या। उस्णकाळ री ओग, गिणै ना गांवां जाया। पंचायतडी जोड़, जुड़ै सै आथण तांई। नीम निरातप व्रिक्ष, संतोखै ऊपर सांई।—दसदेव

पंचायतन-सं०पु० [सं०] पांच देवताओं की मूर्तियों का समूह, यथा—शिव, विष्णु, सूर्य, गणेश और देवी।

पंचायती-वि —१ पंचायत का, पंचायत संबंधी।

२ देखो 'पचायत' (रू.भे.)

उ०—कहियो बारठ 'केहरी' विध रचतां वरियांम। पाऊं बोल पंचायती, हूं लाऊं संगरांम।—रा.रू.

पंचायन—१ देखो 'पंचजन्य' (रू.भे.)

उ०—एक दिवस स्री नेमजी रे, आया आयुध साळी पंचायन संख पूरियो रे, चाढ्यो धनुस कराळी।—जयवांणी

२ देखो 'पंचानन' (रू.भे.)

पंचाळ-सं०पु० सं० पंचाल] हिमालय और चंबल के बीच गंगा नदी के दोनों ओर के एक प्रदेश का प्राचीन नाम। इसकी सीमा विभिन्न कालों में भिन्न भिन्न रही है। गंगा के दोनों ओर के प्रदेशों को उत्तर-पंचाल व दक्षिण-पंचाल कहते थे। यह प्रदेश देव-पंचाल (सौराष्ट्र) से भिन्न था।

१ उत्तर-पंचाल की राजधानी अहिच्छत्रपुर और दक्षिण की कंपिल लिखी है। पांडव काल मे राजा द्रुपद से द्रोणाचार्य ने उत्तर-पचाल का प्रदेश छीन लिया था। द्रौपदी यहीं के राजा की राजकुमारी थी इसीलिए पांचाली कहलाई।

२ गुजरात-काठियावाड़ का प्राचीन नाम जहां पर जैनियों का प्रसिद्ध तीर्थ-स्थान भद्रेसर नामक ग्राम है, सौराष्ट्र देश।

उ०—१ जोअण पंचसइ छावीस छकला, सहस छतीस देश ऊजळा पंचाळ देस भद्रिसर गांव, वावड़ी कूआ आरांम।

उ०—२ पचासई छावीस जोअणै, छकला ऊपरि आंण। पंचाळ देस तट सोहइ, भद्रेसर ग्रांम।—झगडू साह री रास

उ०—३ जिण 'झालै' बळ जोर जंग आहुणि जाडेचां। पुहवि कछ-पंचाळ गजि लीधी पटुपेचां।—वं भा.

वि०वि०—पुराणों के अनुसार महाराज हर्यश्व अपने भाई से लड़ कर अपनी ससुराल मधुपुरी चले गए और वहां अपने ससुर मधु की सहायता से उन्होंने अयोध्या के पश्चिम प्रदेश को अधिकृत कर लिया। इस पर अयोध्या के राजा ने उक्त प्रदेश पर आक्रमण कर दिया। जब इसकी सूचना इन्हें मिली तब उन्होंने अपने पांच पुत्रों (मुद्गल सृंजय, वृहदिपु, प्रवीर और कांपल्य) की ओर देख कर कहा कि ये पांचों हमारे राज्य की रक्षा के लिए अलम् हैं। तभी से उनके देश का नाम (पंच+अलम्) पंचालम् पड़ा। चारण जाति भी प्राचीन काल में इसी सौराष्ट्र देश में निवास करती थी अतः चारण कुलोत्पन्न देवियों को भी पंचाली पांचाली कहने की प्रसिद्धि इसी देश के कारण हुई।

पंचाळि, पंचाळी-वि० [सं० पांचाली] पंचाल देशोत्पन्न, पंचाल देश की।

सं०स्त्री०—१ चारण कुलोत्पन्न आवड़ देवी, बरवड़ी, राजबाई व सैणी के लिए राजस्थानी में प्रयोग किया जाने वाला शब्द।

उ०—सांभळ बाहर साद संचाली ताळ मिळै मुझ हेकण ताळी। पीथल बाहर काछ-पंचाळी। धाइयै 'राजल' (चारण) धावल-वाली

—प्रथ्वीराज राठौड़

२ देखो 'पांचाली' (रू.भे.) (अ.मा.)

उ०—१ एक दिवस वण जोयती भोळाटी पंचाळी। जोईजोई ऊसना पंडव वणि विकराळि।—पं.पं.च

उ०—२ सायर जळ कपिकेत सर, पंचाळी चय चीर। यां सूं मोजां आपरी, वधती 'जेहल' वीर।—बां.दा.

पंचावन, पंचावनइ, पंचावनि—देखो 'पचपन' (रू.भे.) (उ.र.)

पंचावनो—देखो 'पचपनो' (रू.भे.)

उ०—१ संवत सोळ पंचावनइ, फागुण सुदि रविवार। प्रगट थई प्रतिमा घणी, सेत्रावा सिणगार।—स.कु.

उ०—२ आयो जाळंधर 'अजो', सुख ऊपनो सरस्स। सुज तिण ऊपर संपनो, पंचावनो वरस्स।—रा.रू.

पंचास—देखो 'पचास' (रू.भे.)

उ०—पंचास कोस गढ़ पोळि पगार।—रांमरासो

पंचासम—देखो 'पचासमो, पचासवों' (रू.भे.)

उ०—तिणि तप गणि गुणवन्ति पाटि, 'देवसुंदर' सुखकारी जी। पंचासम पाटिइं गुरु सुंदर, सोमसुंदर गणधारी जी।—कवि गुणविजय

पंचासर-सं०पु० (देशज) पार्श्वनाथ का एक नाम।

उ०—पांणि कसू एक छि जे अणहलपुर पाटण? सघट घाटे करी विचत्र चित्रां में करी अभिरांम महामहोछवे भलां आरांम पंचासर प्रमुख देव देवाला, जे नगर मांहइ दांनसाळा पोसघसाळा धरमसाळा।—व.स.

वि०वि०—पार्श्वनाथ की मूर्ति पंचासर (पाटण) ग्राम से उत्थित होने के कारण पंचासर नाम पड़ा।

पंचासी—देखो 'पिचियासी' (रू.भे.) (उ.र.)

पंचाहण—देखो 'पंचानन' (रू.भे.)

पंचाहर—देखो 'पजाहर' (रू.भे.)

उ०—भड खळिया भंभर वेहक वज्जर, वढ़िया पक्खर विहुंड वपै। पळ खंडिया पंजर पड़ै पंचाहर, जैं जैं संकर सकति जपै।—गु.रू.बं.

पंचिंदि, पंचिंदिय, पंचिंदी—देखो 'पंचेंद्रिय' (रू.भे.) (जन)

पंची—देखो 'पक्षी' (रू.भे.)

पंचीकरण-सं०पु० [सं०] वेदांत में पंचभूतों का विभाग विशेष।

पंचीकृत-सं०पु० [स० पञ्चीकृत] जिसका पंचीकरण हुआ हो। (वेदान्त)

पंचीक्रनी-सं०पु० [सं० पंचीकरण] मनुष्य (अ.मा.)

पंचुत्तर-सं०पु० [सं०] पंच अनुत्तर।

उ०—वासिग उप्परि धरणि, धरणि उप्परि जिम गिरिवर। गिरिवर उप्परि मेह, मेहु उप्परि रवि ससिहर। ससिहर उप्परि तियस, तियस उप्परि जिम सुरवर। इंदुप्परि नवगीय गीय उप्परि पंचुत्तर।—अभययतिक यती

वि०वि०—जिससे बढ कर दूसरी कोई वस्तु न हो अर्थात् जो सर्वश्रेष्ठ हो उसे अनुत्तर कहते हैं (जैन)

पंचेंदि, पंचेंदी, पंचेंद्रिय, पंचेंद्री, पंचेंद्री-सं०स्त्री० [सं० पञ्चेन्द्रिय]

१ शरीर के वे पांच अवयव जिनके द्वारा बाह्य जगत के भिन्न भिन्न गुणों का भिन्न भिन्न रूपों में अनुभव होता है।

यथा—कान, नाक, आंख, जिह्वा और त्वचा।

२ वह प्राणी जिसके पांच इन्द्रियें हों।

उ०—पंचेंद्री तणी छइं घणी जाति, पाप करइ इक दीह मइ राति।—दस्तिग

रू०भे०—पंचिंदि, पंचिंदिय, पंचिंदी, पणइंदिय, पांचिंद्रिय।

पंचेषु-सं०पु० [सं० पंचेषु] कामदेव, पंचसर।

पंचेरी—देखो 'पंसेरी' (रू.भे.)

पंचेरो—देखो 'पंसेरो' (मह., रू.भे.)

पंचेंद्री—देखो 'पंचेंद्रिय' (रू.भे.)

उ०—केई हिंसा धरमी कहै—एकेंद्री विचै पंचेंद्री रा पुन्य घणा।—भि.द्र.

पंचोतरो—देखो 'पिचंतरो' (रू.भे.)

उ०—प्रगटयो वरस पंचोतरो, सांवण सघण सराय। साहू करंडव पंखि पर, दुमुखि रहे चख लाय।—रा.रू.

पंचोळ-सं०पु० [सं० पंच+रा. प्र. ओळ] पंचायत।

उ०—पुटियां टोळ पंचोळ, चील चंगे चित आलां। झामर झोल तमोळ, मोळ मन मकड़ी जाळां।—दसदेव

पंचोळी-सं०पु० [सं० पंच-कुल=पंचकुली] (स्त्री० पंचोळण) वंश परंपरा से चली आई हुई मारवाड़ के माथुर कायस्थों की एक उपाधि। (मा.म.)

पंच्चांण—देखो 'पंचानन' (रू.भे.)

उ०—परभोम दवावै खगां पांण। परभोम जिके वाजै पंच्चांण।—सू.प्र.

पंच्याणुं, पंच्याणु—देखो 'पंचाणु' (रू.भे.)

उ०—कुंअर कुळोधर वीनमइं जी, सांभळि भीम भुआळ। पंच्याणु क्षोहिणि मिळी जी, जेह नइं ओजी ताळ।—रुकमणी मंगळ

पंच्यासी, पंच्यासीइ—देखो 'पिचियासी' (रू.भे.)

उ०—सुयखंध दोइ जेहना रे, प्रवर अध्ययन पचीस रे। उद्देसादिक जांणियइ रे लाल, पंच्यासी सुजगीस रे।—वि.कु.

पंछि—देखो 'पक्षी' (रू.भे.)

पंछियो-सं०पु० (देशज) १ छोटी धोती।

उ०—मदरसै सूं घरै आवतै ई पंछियो पै'र धोतो रै पटल्यां घाल'र चोळं नैं झड़काय'र दोयां न खूंटी ऊपर टांगदी।—वरसगांठ

२ देखो 'पक्षी' (अल्पा०, रू.भे.)

पंछी—देखो 'पक्षी' (रू.भे.)

उ०—परसरांम भज चाख अम्रत-फळ, जनम सुफळ होय जासी। पाछो वळे अमोलक पंछी। अण तरवर कद आसी।—ओपो आढ़ो

पंछीड़ो—देखो 'पक्षी' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—किणरा पंछीड़ा मग मांय; वटाऊ वण रह्या भरतार। झबूकै अषविच भौर कंवळ, अधूरा कांमणियां सिणगार।—सांझ

पंछीलो—देखो 'पक्षी' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—गउए चरण चाली, पंछीला मारग चाल्या। नेम धरम सब साथ।—लो.गी.

पंछोलो–सं०पु० [देशज] स्वर्णकारों का ओजार विशेष।

पंज—देखो 'पंजो' (मह., रू.भे.)

उ०—दुख उपज्यो सहदेस नैं, पड़चो काळ री पंज। सह्यो न जावै सज्जनां, राजमात रौ रंज।—ठा. फतैसिंह कूंपावत

पंजणो–वि० [देशज] मिटाने वाला, नाश करने वाला।

उ०—सिर जोर खग दरा संजणा, पह रोर आमय पंजणा। भड़ जुध असंतां भंजणा, रघुराज संतां रंजणा।—र.ज.प्र.

पंजणौ, पंजवौ–क्रि०स० [देशज] मिटाना, नाश करना, ध्वंस करना।

उ०—सूरज वंस तणौ नूप सूरज, पावर आसुर पंजे रे गह गंजे।—र.ज.प्र.

पंजणहार, हारौ (हारी), पंजणियौ—वि०।

पंजिओड़ो, पंजियोड़ौ, पंज्योड़ौ—भू०का०कृ०।

पंजीजणौ, पंजीजवौ—कर्म वा०।

पंजर–सं०पु० [सं० पञ्जरः पञ्जरं] १ शरीर, देह।

उ०—इहां सु पंजर, मन उहां, जय जांणइला लोइ। नयणां आडा वींझवन, मन नह आडो कोइ।—ढो.मा.

२ शरीर का वह कठोर भाग जो अणु जीवों तथा विना रीढ़के और क्षुद्र जीवों में कोश या आवरण आदि के रूप में ऊपर होता है और रीढ़वाले जीवों में कड़ी हड्डियों के रूप में भीतर होता है। हड्डियों का ठट्ठर या ढांचा जो शरीर के कोमल भागों को अपने ऊपर ठहराए रहता है।

३ ठट्ठर, अस्थि-पंजर, कंकाल।

उ०—१ ऐ जो अकबर काह, सैंधव कुंजर सांवठा। वांसै तौ वहताह, पंजर थया 'प्रतापसी'।—दुरसो आढो

उ०—२ सज्जण ज्यूं ज्यूं संभरइ, देख्या आहीठांण। झुरि-झुरि नइ पंजर हुई, समर-समर सहिनांण।—ढो.मा.

४ शरीर का ऊपरी धड़ या हड्डियों का घेरा, पसलियों, वक्षस्थल आदि का अस्थिसमूह, पसलियों का परदा।

उ०—सखि ए साहिव आविया, जांह की हूंती चाइ। हियडउ हेमांगिर भयउ, मन पंजरे न माइ।—ढो.मा.

५ देखो 'पींजरो' (मह०, रू.भे.)

उ०—अनंत मेछ उल्लटे, वहै सुवाट उब्वटे। पमंग अंग पाखरां, परां गिरां कि पंजरां।—रा.रू.

६ माला।

उ०—जग 'राजड़' अलंग सूं जड़ियो, पंजर कसकै पंजर पसार। हात न लागो जठै हाडकौ, साज अलाज नहीं संसार।—महारांणा राजसिंह रौ गीत

वि०—रक्षक।

उ०—धरा धूण धक-चाळ, कीध दहिया दह-वट्ट। सवदी सबळां साल, प्रांण मेवास पहट्ट। 'आल्हण' सुत 'विजयसी' वंसराव प्रागवड़, खाग त्याग खत्रवाट सरण विजै पंजर सोहड़। चहुवांण राव चौरंग 'अचळ' नरां नाह अण-भंग नर, ध्रमेर सेस जां लग अटळ, तांम राज साचोर घर।—नैणसी

रू०भे०—पिंजर, पींजर।

अल्पा०—पंजरि, पंजरौ, पिंजरौ।

मह०—पांजर।

पंजरविसन, पंजरविसनु—देखो 'विसनुपंजर' (रू.भे.)

उ०—१ ब्रह्म-कवच पंजर-विसन, रक्षा-रांम उचार। वेदोक्ती सू-ब्राह्मण, आसीसै अणपार।—रा.रू.

उ०—२ ब्रह्म-कवच पंजर-विसनु, रक्षा-रांम वचाय। ईस तणै वळ ऊठिया, अंवर सोस लगाय।—रा.रू.

पंजरि—देखो 'पंजर' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—भाद्रवडा भाई भणउ, भूरि जळ भरी म भागि। पंजरि-थिकुं पलेवणउ, माहरूं सकइ न मागि।—मा.कां.प्र.

पंजहजारी—देखो 'पंच-हजारी' (रू.भे.)

पंजातोड़-वैठक-सं०स्त्री०यौ० [फा० पंजा+सं० वेशन=विष्ठ=प्रा. विट्ठ+सं० तुष्ठ=प्रा० तुठ्ठ] कुश्ती का एक पेच।

पंजाव-सं०स्त्री० [फा०=सं० पञ्चाप अथवा पंचाम्बु] भारत के उत्तर का एक प्रदेश जहाँ सतलज, व्यास, रावी, चिनाव और झेलम नाम की पाँच नदियां बहती हैं। पंचनद।

पंजावळ–सं०पु० [फा० पंजा+सं० वल] पालकी के कहारों की बोली जिसके अनुसार अगली पालकी के कहार पिछली पालकी के कहारों को यह सूचित करते हैं कि आगे भूमि ऊँची है।

पंजाबी–वि० [फा०] पंजाब का, पंजाब सम्बन्धी।

सं०स्त्री०—पंजाव की भाषा।

सं०पु०—पंजाव-निवासी।

पंजार—देखो 'पंजोळ' (रू.भे.)

पजारी—देखो 'पंजीरी' (रू.भे.)

पंजाळी–सं०स्त्री० [फा० पंजा+सं० आलुच्] चड़स खींचते समय बैलों की गरदन पर पहनाया जाने वाला जुआ विशेष।

उ०—एक दिन प्रभात रा चढि नीसरिया। एकै ठोड़ आया। आगै देखै तो तेवि नै घाव पायनं मरद तौ सोह गांम गया छै। एक वैर जावै छै। सु साठीकौ कोहर, तियै री वरत छै सु वरत सांवटिनै काख मांहे घाली छै। कोस पंजाळी वांह मांहे घातिया छै। माथै विघड़ियो भरियो पांणी रो छै अर मारग चालो जाय छै।—नैणसी

वि०वि०—यह ऊपर से जुएनुमा होता है। इसके दोनों ओर छेद होते हैं। यह जुआ बैलों की गरदन के ऊपर रहता है। इस जुए के समानान्तर इतनी ही लम्बी एक लकड़ी और जुडी रहती है जो बैलों की गरदन के नीचे रहती है। इसके भी दोनों ओर छेद होते हैं। जुए के छेदों में से होते हुए लकड़ी के छेदों तक (दोनों ओर) लकड़ी के पतले गोल डंडे फंसा दिए जाते हैं जो जोतों के स्थान पर होते हैं। इस प्रकार बैलों की गरदनें लकड़ी की चौखटो के बीच आ जाती हैं। नौसिखिए बैलों के लिए भी इस उपकरण का प्रयोग किया जाता है।

मुहा०—पंजाळी में आंणौ, पंजाळी में फसणौ—बंधन में आना, आफत में फंसना।

रू०भे०—पूंजाळी।

पंजाळौ-वि० [फा० पंजा+सं० आलुच्] पंजे वाला (जानवर)

पंजावौ-सं०पु० [सं० पंच+रा.प्र. आवौ] १ प्रथम प्रसव देने वाली गाय के गर्भ रहने के बाद पांचवें मास के थन का उभार या उठाव।

२ देखो 'पचावौ' (रू.भे.)

पंजाहर-सं०स्त्री०—सेना, फौज।

उ०—घड़ां तणा धुवका, जवन दळ पडिसै जाडा। अइयौ निकळंक अलख, मुरिडि नांखै खळ माडा। केई गिलै क्रम कीच, हुवै दस कोड़ि पंजाहर। जवन दळां जग-जेठ, विसन मारै वह वाहर।

—पी.ग्र.

रू०भे०—पंचाहर।

पंजियोड़ौ-भू०का०कृ०—मिटाया हुआ, नाश किया हुआ, ध्वंस किया हुआ।

(स्त्री० पंजियोड़ी)

पंजियौ—देखो 'पंजौ' (अल्पा०, रू.भे.)

पंजी—देखो 'पांची' (रू.भे.)

पंजीरी, पंजेरी-सं०स्त्री० [सं० पञ्च+जीरा] एक प्रकार का मिष्ठान्न जो आटे को घी में भून कर उसमें पीपरामूल, सौंठ, अजवाइन, गूंद और धनिया मिला कर बनाया जाता है। इसका उपयोग कृष्ण-जन्माष्ठमी उत्सव पर प्रसाद बांटने में किया जाता है। प्रसूता स्त्री के लिए भी पंजीरी बनाई जाती है।

उ०—१ कूड़ा पूजारी कूड़ो कथ कीन्ही। देवण कांनां में पंजीरी पीन्ही।—ऊ.का.

उ०—२ सुणौ सासूजी हमारा ऐ रे बहू रा मीठा बोल। करदयौ ना पंजीरी को रतन कचोळै। थां रै चढैजी वडाई हम जच्चा पच होय।—लो.गी.

पंजोळ-सं०पु० [सं० पंच+रा.प्र. ओळ] खेत में ज्वार के पौधों के सीधे खड़े पांच पयालों का समूह।

वि०वि०—केवल सूखने के लिए।

पंजौ-सं०पु० [फा० पंजा] १ पांच का समूह।

२ हाथ या पैर की पांचों उंगलियों का समूह।

वि०वि०—साधारणतया हथेली सहित पांच उंगलियों या पांव के आधे तलवे सहित पांच उंगलियों का समूह।

पद—१ पंजे में—ऐसी अवस्था में जहां चाहे जो किया जा सके, अधिकार में, कब्जे में, वश में, पकड़ में, मुट्ठी में।

२ पंजे सूं—अधिकार से, कब्जे से, वश से, पकड़ से।

मुहा०—१ पंजौ फैलांणौ—देखो 'पंजौ पसारणौ'।

२ पंजौ बढ़ांणौ—देखो 'पंजौ पसारणौ'।

३ पंजौ मारणौ—झपट्टा मारना (लेने के लिए) हाथ लपकाना, पञ्जे से प्रहार करना।

४ पंजौ पसारणौ—हथियाने का उद्योग करना, लेने का प्रयत्न करना।

३ पंजा लड़ाने की कसरत या बल-परीक्षा।

उ०—अवासू गिरंदू के बीच पडसाद फुट्टै। जाजुळमांन काळा गोरा वीर जैसे जगजेठ जुट्टै। नजरुं का निहार पंजूं का दाव। कदमूं का फुरत डोरयूं का घाव।—सू.प्र.

मुहा०—१ पंजौ मोड़णौ—देखो 'पंजौ लड़ांणौ'।

२ पंजौ लड़ांणौ—दो आदमियों का परस्पर उंगलियों से उंगलियां मिला कर बल-परीक्षा करने हेतु मोड़ने का प्रयत्न करना।

३ पंजौ लेणौ—देखो 'पंजौ लड़ांणौ'

४ बादशाह के हाथ की पांचों उंगलियों सहित वह छाप-चिन्ह जो खास-खास फरमानों पर अंकित किया जाता था।

उ०—१ वह दगे सूं खांन बहादर, आयौ गढ जोधांणौ ऊपर। खोलै पंजौ कौल दिखायौ, भव नह मिटै तुमारौ भायौ।—रा.रू.

उ०—२ पत कमधांगढ जोधपुर, तुम अजमेर सहाय। औ पंजौ औ कौल द्रढ, विच पढ़ बोल खुदाय।—रा.रू.

५ शेर, चीता, बिल्ली आदि की जाति के पशुओं अथवा नेवला, गोह, छिपकली, चूहा आदि जाति के प्राणियों के पांव का अग्र भाग।

६ ताजिये के साथ झण्डे या निशान की तरह बांस पर बांध कर ले जाया जाने वाला टीन या धातु का बना मनुष्य के पञ्जे के आकार का पंजा।

७ जूते का अग्र भाग।

८ ताश में पांच चिन्ह या बूटियों वाला पत्ता।

९ जुए का एक दाव।

मुहा०—छक्के-पंजै सावधान रैणौ—सचेत रहना, होशियार रहना, चालबाजी से सावधान रहना।

१० पीठ खुजलाने का एक उपकरण।

अल्पा०—पंजियौ।

मह०—पंज, पंजड़।

पंड-सं०पु० [सं० पिण्ड] १ आकाश, आसमान (ना.डि.को.)
२ पवन ।
[सं० पाण्डव] ३ अर्जुन । उ०—सू मघ जेठ कळाधर सारी, आयो रवि ज्यौं किरण अकारी । पंड कोपियो किनां घार पण, वीरभद्र दिख ज्याग विधूंसण ।—रा.रू.
४ देखो 'पांडु' (रू.भे.)
उ०—पांचूं पूत पंड के पटकि बैठे हिम्मत को, चूकिगो छमा को भवतव्य बस चेतो ई ।—र.ज.प्र.
५ देखो 'पांडव' (रू.भे.)
उ०—'जिहंगीर' 'खुरम' जुडसी उभै, साखी चंद दुंदिद सुर । जोगणी-पीठ निहटा जवन, फिर हथणापुर पंड-कुर ।—गु.रू.बं.
६ देखो 'पिंड' (रू.भे.)
उ०—१ पंड में घणो प्यार, मिळतां मन हरखे मिळै । वे हैतू लखवार, मिळजो दिन में 'मोतिया' ।—रायसिंह सांदू
उ०—२ महोदघ पूछियो कहो मो सहस-मुख, 'जमन' की नवो सणगार जुड़ियो । 'भांण' रै लोह सुरतांण घड़ भेळियो, चळोवळ पंड मो पूर चढ़ियो ।—चतरो मोतीसर

पंडग-सं०पु० [सं० पंडक] नपुंसक, हिजड़ा (जैन)

पंडत—देखो 'पंडित' (रू.भे.)
उ०—पंडत ओर मसालची, दोऊं उलटी रीत । ओर दिखावै चांनणो, आप अंधेरे बीच ।—अज्ञात
(स्त्री० पंडतण, पंडतांणी)

पंडतण, पंडतांणी—देखो 'पंडितांणी' (रू.भे.)

पंडर-सं०पु० [सं० पाण्डु] १ यवन, मुसलमान ।
उ०—१ पुडि गयणाग गीध पंखारव, गोम गहै गज घाट गुड़ै । पंडर घड़ 'रतनो' परणीजै, जांगी नेवर सद्द जुड़ै ।—दूदो
उ०—२ 'सता' तणो वढ लोप न सकियो, लोपी नहीं लोह ची लीह । पै पंडर घड़ रा पाडतै, दरगै रा पड़िया तिण दीह ।
—नैणसो
२ बादशाह ।
[सं० पिण्ड] ३ पानी का बुलबुला, बुल्ला ।
उ०—सहजां सांई सिवरियै, आळस ऊंघ न आंणि । जन 'हरिया' तन पेखणो, ज्यूं जळ पंडर जांणि ।
—स्री हरिदेवदासजी महाराज
४ देखो 'पांडुर' (रू.भे.)
उ०—१ जिण घण कारण ऊमह्यउ, तिण घण संदावेस । तिण मारू रा तन खिस्या, पंडर हूवा जकेस ।—ढो.मा.
उ०—२ अजमेर आयो साहजादो, 'करन' सत्थे आंण ए । परवतां पासै लाल पंडर, गयण गूडर तांण ए ।—गु.रू.बं.

पंडरवेस-सं०पु० [सं० पाण्डु] १ बादशाह ।
उ०—१ पांण चढै जादव राइ परणी, पंडरवेस कन्हां लै पांण । 'जैसिंघदे' ऊभै किम जायै, सोरठ वैरड़ी घरि सुरितांण ।
—जैसा सरवहिया कवाटोत री गीत
उ०—२ गढ़ गढ़ राफ राफ मेटै गह, रैण खत्रीध्रम लाज अरेस । पंडरवेस नाद अण-पीणग, सेस न आयो 'पतो' नरेस ।
—महारांणा प्रताप री गीत
२ मुसलमान ।
उ०—१ चारहड़ां चुंडराव चवीजै, दीन्हो इम लीयो इम देस । पंडरवेस पाड़ि गढ़ पैठो, पड़ियै पैठा पंडरवेस ।
—दूदो बारहठ
उ०—२ केताइ हिंदू खेड़िया, केताइ पंडरवेस । हूवा खिडिकि हेकठा, लंक उहल्ला देस ।—गु.रू.बं.
रू०भे०—पंडरावेस ।

पंडरावेस—देखो 'पंडरवेस (रू.भे.)
उ०—ऊकरड़ ओक ओकां पड़ै ऊपरै, नारि संभार सै कंत नाया । मरण मद भलो दीधो खळां मारुवै, पंडरावेस पीठांण पाया ।
—राव जैतसी राठौड़ लूणकरणोत री गीत

पंडरू—१ देखो 'पांडुर' (रू.भे.)
२ देखो 'पिंडरू' (रू.भे.)

पंडव—१ देखो 'पांडव' (रू.भे.)
उ०—१ पत राखै द्रोपदी, प्रभू विरदां प्रतपाळै । ब्रहम पत्त राहवी, वेद च्यारे ही गावाळै । पत राखै पंडवां, अंब कर मांझि उपाये । गजपत पत राहवै, अनंत खगपत चढ़ आए ।—ज.खि.
उ०—२ घणो करै घणियाप, सेवक है समरथ सदा । पंडव हर परताप, भारत जीतो 'भैरिया' ।—बळवंतसिंह (रतलाम)
उ०—३ वरहास वणो पक्खर विसाळ । गज-गाह स-डंबर चमर-माळ । सिख नवख लगै पंडव सिंगार । आंणियो लूण ऊपरि उतार ।
—गु.रू.बं.
उ०—४ पंडवां करै साकति पमंग । सजि पाखर वादळ घड़ सुचंग ।
—सू.प्र.
२ देखो 'पांडु' (रू.भे.)
उ०—ओठा दिन आयाह, खोटै मग कैरव खड़्या । जुघ पंडव जायाह, साथ जिताया सांवरा ।—रांमनाथ कवियो

पंडवडो—देखो 'पांडव' (अल्पा०, रू.भे.)
उ०—पंचइ पंडवडा वसइं, तीछे वंमण वेसि । वात गई जण जण मिळी, दुरयोधन नइ देसि ।—पं.पं.च.

पंडव-तिलक—देखो 'पांडव-तिलक' (रू.भे.) (अ.मा.)

पंडव-नांमी—देखो 'पांडव-नांमी' (रू.भे.)
उ०—'पातल' हरा ऊपरा पराभव, खळ खूटा टूटा खड़ग । पंडव-नांमी नीठ पाड़ियो, लग ऊगमण आथमण लग ।
—खेमराज सोदो

पंडव-प्रिया–सं०स्त्री०यौ० [सं० पाण्डव-प्रिया] द्रौपदी (अ.मा.)

पंडव-मघ–सं०पु०यौ० [सं० पाण्डव+मध्य] अर्जुन (अ.मा.)

पंडवेस–सं०पु० [सं० पाण्डवेश] १ राजा पाण्डु।

उ०—वंसां द्रोही छतीसां अ्रंगेस रै कराळो बीर, रावतेस भीम······ पंडवेस रै रीसोद।—हुकमीचंद खिड़ियौ

२ युधिष्ठिर।

३ पाण्डव।

[सं० पाण्डु] ४ मुसलमान, यवन।

उ०—१ कियौ विच मोगर खैंग गरक्क, जरद्दां वाजिय घार जरक्क। पड़ै इक भाज धकै पंडवेस, मिळै पग रुंड अकुंड महेस।
—रा.रू.

उ०—२ जुध वेळ खगे रिणछोड़ जठै। तन पाथ जिसौ रुघनाथ तठै। पंडवेस पड़ै जुड़ पार पखै। लख वांह झड़ै पतसाह लखै।
—रा.रू.

५ बादशाह। उ०—१ घर काज मिसलत धार, चक्रवतिय जतन विचार। दिस मरुस्थळ-पति देस, व्रत अलख चख पंढवेस।
—रा.रू.

उ०—२ रव रथ पौहर थकत होय रह्यौ, नमो नमो [चतरंग] नरेस। जुगां न जाय नांम सस जडियां, पड़ियां तो चढ़ियौ पंडवेस।
—महारांणा वडा अड़सी री गीत

६ ललाई लिए हुए पीला रंग।

७ श्वेत रंग।

८ श्वेत हाथी।

रू०भे०—पंडिवेश।

पंडवौ—१ देखो 'पांडव' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—प्रथीमाळ परमांण, वधै चहुवांण तणै बळ। तेण वंस वल्लाल दांन दीपियौ दसावळ। वळ वाहड़दे जेण, जेण पंडवौ परजाळै। वाहड़दे अस चढै, वैर गंजे चोवाळै।—नैणसी

२ देखो 'पंडौ' (अल्पा०, रू.भे.)

पंडसुत–सं०पु० [सं० पाण्डु+सुत] १ राजा पाण्डु के पांच पुत्रों में से कोई एक।

२ अर्जुन (अ.मा.)

पंडां—देखो 'पिंडां' (रू.भे.)

उ०—'रांम वगस' राज नखै आयो छै, जिको कुरब वधारसी। अठा लायक कांम बिदगी लिखावसी, अठी दसा की आप गाढी खुसियां रखावसी। खांन-पांन की पंडां की जावतो रखावसी।
—मयाराम दरजी री वात

पंडा–सं०स्त्री० [सं०] बुद्धि।

पंडाळ–सं०पु० [सं०पंडाल] किसी समारोह के लिए बनाया हुआ मंडप।

पंडित–सं०पु० [सं०] (स्त्री० पंडितांणी) शास्त्रों का ज्ञाता, विद्वान, ज्ञानी। उ०—गुज भिड़ज रूप सपतास भांति, कवि तेण लखण गुण वरण क्रांति। सत उकति जेण पंडित प्रमांण, जुधि जैत मरम क्रम प्रथम जाण।—रा.रू.

पर्या०—अभिरूप, आचारिज, कुसळ, कोविद, क्रती, क्रस्टी, दोखगिन, धिखिणि, धीमांन, धीर, निपुण, नैवाइक, पात्र, पारखद, प्रयागिनी, प्रवीण, प्रायंतरु, बुधि, मतिधण, मनीखी, महाचतुर, वागमी, विचखण, विदुख, विदवांन, विधिग, विविस्चति, विसारद वेधी, सुधि, सुलखण, सूरि।

रू०भे०—पंडत, पंडिति, पंडिय, पांडिति, पिंडत, पिंडित, पिंडिति।

पंडितांणी–सं०स्त्री० [सं० पण्डित+रा०प्र० आंणी] १ पंडित की स्त्री।

२ ब्राह्मणी।

३ विदुषी।

रू०भे०—पंडतण, पंडतांणी, पिंडतण, पिंडतांणी।

पंडिताई–सं०स्त्री० [सं० पंडित+रा.प्र. आई] विद्वता, पाण्डित्य।

उ०—तिण सूं रावत धरम-सास्त्र पुरांण विद्या पंडिताई की चरचा कराई।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

पंडिताउ–वि० [सं० पण्डित+रा.प्र. आऊ] पण्डितों के ढंग का।

पंडिति—देखो 'पंडित' (रू.भे.)

उ०—तिणि अवसरि बोलाविउ पंडिति, 'कहउन कांई काज'। विनय लगइ बोलइ धन सागर, 'निसुणउ पंडितराज'।
—विद्याविलास पवाडउ

पंडिपाद–सं०पु०—एक प्रकार का वस्त्र।

उ०—छडी दो छडी नरम पंडिपाद नैत्र-जादर तिलवास मंडप।
—व.स.

पंडिय—देखो 'पंडित' (रू.भे.)

उ०—महावीर जिण भवणिट्ठिय संठिउ जिण वल्लह। जिणि उज्जोयउ चंदु गच्छु पंडिय जिण वल्लह।—ऐ.जै.का.सं.

पंडिवेस—देखो 'पंडवेस' (रू.भे.)

पंडी–सं०स्त्री० [सं० पण्डा] पंडा की स्त्री।

पंडीर–सं०पु०—महादेव, शिव।—(क.कु.बो.)

पंडीस, पंडीसक—देखो 'पांडीस' (रू.भे.)

उ०—१ पंडीस वरंग करै खळ पांणि। वदै मुख हूंत हरै गंग वांणि।
—सू.प्र.

उ०—२ पंडीसक वाह करै अणपाल। 'दलावत' साहिबखांन दुमाल।
—सू.प्र.

पंडु—१ देखो 'पांडु' (रू.भे.)

उ०—सउ बेटा धयराठ घरे, पंडु तणइ घरि पंच। दुरयोधन कउतिग करए, कूडा कवडप्रपंच।—पं.पंच.

२ देखो 'पांवडो'

उ०—बावन हुं बळराज पै, दुख मांगै वर का। दीध त्रलोक अलोकनाथ, त्रिय पंडु भर का।—दुरगादत्त बारहठ

३ देखो 'पांडव' (रू.भे.)

४ देखो 'पांडुर' (रू.भे.) (नां मा.)

पंडुक-सं०पु० [सं० पाण्डु] (स्त्री० पंडुकी) ललाई लिए भूरे रंग का कबूतर की जाति का एक पक्षी।

पंडुर—देखो 'पांडुर' (रू.भे.) (नां.मा.)

पंडुरी-सं०स्त्री० [देश.] पंडुक नामक पक्षी, फाख्ता।

उ०—विहांगड़े ज उदाभ्रयां, सर ज्यउं पंडुरियांह। कालर काफा कमळ ज्यउ, ढळि-ढळि ढेर थियांह।—ढो.मा.

पंडू—१ देखो 'पांडु' (रू.भे.)

२ देखो 'पांडव' (रू.भे.)

पंडूर-वि० [सं० पाण्डुर] १ उज्ज्वल, निर्मल।

उ०—सुप्रसन सांमणि सारदा, होयो मात हजूर। बुद्धि दियो मुझनें बहुत, प्रगट वचन पंडूर।—प.च.चौ.

२ देखो 'पडूर' (रू.भे.)

उ०—करसं रूप सफळ हिवं देह, जोवन सफळ लेस्ये गुण-गेह। एहवो घर वर रिद्धि पंडूर, लहियें जो होवें पुन्य अंकुर।

—स्रीपाळ रास

३ देखो 'पांडुर' (रू.भे.)

पंडोखळी-सं०स्त्री० [देश.] गांठ बांधने का वस्त्र।

पंडो-सं०पु० [सं० पण्डावित्] १ मन्दिर का पुजारी।

उ०—दाता दे वित दांन, मोज मांणे मुरसंडा। लाखां लै धन लूट, पूतळी पूजक पंडा।—ऊ.का.

२ तीर्थ-गुरु। उ०—पंडे उच्छव धार उर, विध सम समें विचार। पधरायो नवकोट पत, दरसण करण दुवार।—रा.रू.

अल्पा०—पंडवो, पांडियो, पांड्यो।

पंत-वि० [सं० प्रान्त] तुच्छ।

उ०—अरस विरस अंत पंत लुह, ए चाल्या पंच आहार। ए जीमी जीवे मुनि, घन मोटा अणगार।—जयवांणी

सं०पु०—१ बचा हुआ आहार।

उ०—आप निमित्त काढ़यो बाहिर, अथवा न काढ़यो बहार। तीजें खातें ऊवरे, पंत वळे लुख आहार।—जयवांणी

२ देखो 'पंक्ति' (रू.भे.)

उ०—१ प्रघटे जटत जवहर पंत अति आछापणें। तोरां मांन राजें तखत परस रवि तणें।—वां.दा

उ०—२ गज मोत्यां री दांवणी, मुखड़ें सोभा देत। जांणें तारां पंत मिळ, राख्यो चंद लपेट।—बां दा.

३ देखो 'पांति' (रू.भे.)

पंतर, पंतरण—देखो 'पांतरण' (रू.भे.)

उ०—आंणियो द्रोह अतहकरण, पाडी 'खुरम' पंतरण। ततकाळ 'सेर' सुरतांण रो, कीधो अज्जुणतो मरण।—गु रू.बं.

पंतरणो, पंतरबो—देखो 'पांतरणो, पांतरबो' (रू.भे.)

उ०—दुरजण केरा बोलडा, मत पंतरज्यो कोय। अणहूंती हूंती कहै, सगळो साच न होय।—ढो.मा.

पंतरणहार, हारो (हारी), पंतरणियो—वि०।

पंतरिओड़ो, पंतरियोड़ो, पंतरयोड़ो—भू०का०कृ०।

पंतरीजणो, पंतरीजबो—कर्म वा०।

पंतरियोड़ो—देखो 'पांतरियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० पंतरियोड़ी)

पंतरोह-सं०स्त्री० [सं० पंक्ति=पृथ्वी+रोह=रुहं=उत्पन्न] धूलि, रज (अ.मा.)

पंतावल-सं०पु०—स्वर्ग, देवलोक (नां.मा.)

पंति, पंती—१ देखो 'पंक्ति' (रू.भे.)

उ०—१ जगमगत दीपक-जोत, अति जोति पंति उद्योत।

—रा.रू.

उ०—२ फबें बग्ग पंती, भ्रागें दंत फोज्जं।—वचनिका

२ देखो 'पांति'

पंथ-सं०पु० [सं० पथः] १ रास्ता, मार्ग। उ०—१ 'करनी' थांरे कारणें, प्यारो थळवट पंथ। मोत्यां सूं मुहगो मिळें, हीरां पाज हरंत

—अज्ञात

उ०—२ क्रम-क्रम ढोला पंथ कर, ढांण म चूकें ढाळ। आ मारु बीजी महल, भ्राखइ झूठ एवाळ।—ढो.मा.

मुहा०—१ पंथ दिखाणो—मार्ग बताना, रास्ता दिखाना।

२ पंथ देखणो—प्रतीक्षा करना, इन्तजार करना, खोजना।

३ पंथ निहारणो—देखो 'पंथ देखणो'।

४ पंथ पकड़णो—मार्ग पर चलना, प्रारम्भ कर देना।

५ पंथ बुहारणो—आने वाले की प्रतीक्षा में उसके स्वागत की तैयारी करना।

६ पंथ लगाणो—रास्ते पर लगाना, उपयुक्त कार्य पर लगाना, समाप्त करना।

७ पंथ लागणो—रास्ता पकड़ना, समाप्त होना।

८ पंथ हेरणो—देखो 'पंथ देखणो'।

२ सम्प्रदाय, धर्म-मार्ग, मत।

ज्यं—कबीरपंथ, दादूपंथ।

उ०—ताकड़ा 'अजण' 'भीमेण' ताय। खांगड़ा उरस थी भचक खाय। 'अभपती' जती गोरक्ख एम। तेरे सख बारह पंथ तेम।

—वि.सं.

मुहा०—पंथ पकड़णो—किसी सम्प्रदाय विशेष के मत को मानना, सम्प्रदाय विशेष में सम्मिलित होना।

३ आचार पद्धति, व्यवहार का क्रम, चाल, व्यवस्था, रीति।

उ०—जोग पंथ संकर तजें, व्है गिरमेर गरवक। करणी ऊपर नह करे, ऊगे केम अरवक।—चौथ बीठू

मुहा०—१ पंथ दिखाणो—धर्म या आचार की रीति बताना, उपदेश देना।

२ पंथ पकड़णो—विशेष प्रकार के कर्म में प्रवृत्त होना।
३ पंथ पर—आचरण विशेष में प्रवृत्त, ढंग पर।
४ पंथ लगाणो—देखो 'पंथ पर लाणो'।
५ पंथ पर लाणो—ठीक चाल-चलन पर लाना, अच्छा आचरण ग्रहण कराना, उत्तम आचरण सिखाना।
६ पंथ लागणो—देखो 'पंथ पकड़णो'।
यौ०—कुपंथ, सुपंथ।
४ मद्य, मांस, व्यभिचार आदि बातों के विधान वाला वह तान्त्रिक मत जो वेदविहित दक्षिण मार्ग के प्रतिकूल है, वाममार्ग।
मुहा०—१ पंथ बैठणो—वाम मार्ग में प्रवृत्त होना।
२ पंथ बैठांणणो—वाम मार्ग में प्रवृत्त करना।
३ पंथ में—वाममार्ग में प्रवृत्त।
४ पंथ में आंणो—वाम मार्ग में प्रवेश करना, वाम मार्ग में आना।
५ पंथ में बैठांणणो—देखो 'पंथ बैठांणणो'।
६ पंथ में लेणो—वाम मार्ग में लेना, वाम मार्ग में प्रवृत्त करना।
७ पंथ में होणो—वाम मार्ग में होना। वाम मार्ग धारण करना।
रू०भे०—पत्थ, पत्थय, पथ, पथ्थ, पाथ।
अल्पा०—पंथड़ो।
मह०—पंथमांण, पंथांण।

पंथक-वि० [सं० पथ+क] राह में उत्पन्न।
सं०पु०—चोर (अ.मा.)

पंथक-पंथक-सं०पु०—शत्रु, दुश्मन (अ.मा.)

पंथग-सं०पु० [सं० पथग] अनुयायी, शिष्य।
उ०—गुरु निंदा करणी नहीं, माठो देखे मग्ग। सेलग गुरु मदवसी सूझे, पंथग चांपे पग्ग।—ध.व.ग्रं.

पंथड़ो—देखो 'पथ' (अल्पा०, रू.भे.)
उ०—फेकांणां विण पंथड़ो, धण विण रैण विहाय। सो भायां विण आंगियो, यूं ही अकारथ जाय।
—जलाल बूबना री वात

पंथमांण—देखो 'पंथ' (मह०, रू.भे.)

पंथवारियो-सं०पु० [सं० पंथः+आलुच्] १ वे कङ्कड़ जिनको पंथवारी हेतु स्थापित किए जाते हैं।
२ वह सुरक्षित स्थल जहां पर, तीर्थ यात्रा पर गये हुए के पीछे, गेहूँ या जव बोये जाकर घर की औरतों द्वारा सींचे जाते हैं।
क्रि०प्र०—पूजणो, सींचणो।
रू०भे०—पथवारियो।

पंथवारी-सं०स्त्री० [सं० पथः+आलुच्+रा.प्र.ई]
उक्त प्रकार से बोये हुए गेहूँ या जव को सींचने की प्रथा।
उ०—पंथवारी रा मारगां, फूलांरी वाड़ियां, आछा-आछा फूल दिरावो महादेव नै, ऊठो राधा रुकमण पूजो पंथवारियां। पंथवारी पूजियां काई फळ होसी, अन होसी, धन होसी, पूतां रो परवार होसी, धीवड़ियां रो थाट होसी, ऊठो राधा रुकमण पूजो पंथवारियां।
—लो.गी.
रू०भे०—पथवारी।

पंथांण—देखो 'पंथ' (मह०, रू.भे.)
उ०—कुपिया कुटुंब कळहो, पावस पंथांण रोग प्रज्वळ ए। दुरमती दुस्ट पुत्रो, दुघटियं पंच दुखाई।—गु.रू.बं.

पंथाई-वि० [सं० पथ+रा.प्र. आई] १ वाम मार्ग मतावलंबी, वाममार्गी।
२ पन्थ का, पन्थ सम्बन्धी।
सं०पु०—वाम मार्ग मतावलम्बी व्यक्ति।

पंथाळरो-सं०पु०—घोड़ा (डि.नां.मा.)

पंथिक—देखो 'पंथी' (रू.भे.)

पंथिड़ो—देखो 'पंथी' (अल्पा०, रू.भे.)
उ०—पंथिड़ो चाल्यो परदेस में रे।—जयवांणी

पंथियो—देखो 'पंथी' (अल्पा०, रू.भे.)
उ०—प्यास मरतां पसू पंखियां, पंथियां, पाप व्है पावज्यो मतां पांणी। भर-मिया भला-भला लोक एहै भरम, धरम कियो तिणं धूळ-धांणी।
—ध.व.ग्रं.

पंथी-सं०पु० [सं० पंथिन्] १ राही, बटोही।
उ०—१ आज निसह म्हे चालिस्यां, बहिस्यां पंथी-वेस। जळ-जीव्या तउ आविस्यां, मुया त उणि हिज देस।—ढो.मा.
उ०—२ जाळि मगि चढ़ि-चढ़ि पंथी जोवै, भुवणि सुतन मन तसु मिळित। लिखि राखै कागळ नख लेखणि, मसि काजळ आंसू मिळित।—वेलि.
२ किसी सम्प्रदाय का अनुयायी।
३ वाममार्गी।
रू०भे०—पंथिक, पंथीक, पंथीय, पई।
अल्पा०—पंथिड़ो, पंथियो, पंथीड़ो, पंथीडो, पंथीयो, पइयो।

पंथीक—देखो 'पंथी' (रू.भे.)

पंथीड़ो, पंथीडो—देखो 'पंथी' (अल्पा०, रू.भे.)
उ०—१ मांगी दूं बधावणी तोनै, पंथीड़ा लाख-पसाव हो राज। वळै संघ जोता बाटड़ी, थे तो आवी आज सुणाय हो राज।
—रसीलैराज री गीत
उ०—२ पंथीडा अंदेसउ मिटस्यै जे दिन रे। ते तउ मुझ नइ आज बताउ रे!—वि.कु.

पंथीय—देखो 'पंथी' (रू.भे.)

पंथीयो—देखो 'पंथी' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—जीवै पंथीया तोय नाग भूंबाउं, असड़ी मन में आई। 'भगवत' मरण तणी कथ भूंडी, स्रवणां मूझ सुणाई।—ओपो आढो

पंदरमों, पंदरवों—देखो 'पनरमों' (रू.भे.)
उ०—राजा भोज फेर मुहरत धराय सिंघासण कनै आइया, जद

पंदरवीं पूतळी ग्राम कहणं लगी ।—सिंघासण बत्तीसी
(स्त्री० पंदरमीं, पंदरहवीं)
पंदरह—देखो 'पनरै' (रू.भे)
पदरहमों, पंदरहवों—देखो 'पंदरहवो' (रू.भे.)
(स्त्री० पंदरहमीं, पंदरहवीं)
पंदरेंक—देखो 'पनरेंक' (रू.भे.)
पंवरै—देखो 'पनरै' (रू.भे.)
पंदरेंक—देखो 'पनरेंक' (रू.भे.)
पंद्रह—देखो 'पनरै' (रू.भे.)
उ०—तद असवार दस पंद्रह साथ सूं वंध मगरा ग्राण लागिया ।
—सुंदरदास भाटी वीकूंपुरी री वारता
पंनर—देखो 'पनरै' (मह.,रू.भे.)
उ०—पंचताळीसउ पूठि बरीस, मास मागसिर पूनिम दीस । संवत पंनर वारोतरउ, तिणि दिन सोमवार विस्तरू ।—कां.दे.प्र.
पंन्नग—देखो 'पन्नग' (रू.भे.)
उ०—पंन्नग-लोक म्रित-लोक तण प्रभु, वडा रिखोसर जोवै वाट । दहनांमी दीदार देखना, घठे हुवा हुवा गजघाट ।
—महादेव पारवती री वेलि
पंन्नहो—१ देखो 'पनहो' (रू.भे.)
२ देखो 'पांन' (अल्पा., रू.भे.)
पंन्नड़ो—देखो 'पांन' (मह०, रू.भे.)
पंन्नडी—१ देखो 'पांन' (अल्पा०, रू.भे.)
२ देखो 'पनड़ो' (रू.भे.)
उ०—रायजादी ऊभी रायग्रांगण, करि सोळह सिणगार करि । सउणै तिह झूंटणा सोहइ, पंन्नड़ी नान्हइ नखत्र परि ।
—महादेव पारवती री वेलि
पंन्नडौ—देखो 'पांन' (अल्पा०, रू.भे.)
उ०—तरु तरु त्रूटइ पंन्नड़ा, गिरि गिरि त्रूटइ वाहु । फागुण ! कागुण ताहरू, नींगमिउ मोरू नाह ।—मा.कां.प्र.
पंप—सं०पु० [अं०] १ जलादि तरल पदार्थों को ऊपर खींचने या पहुँचाने अथवा इधर-उधर ले जाने हेतु बना यंत्र ।
२ ट्यूब ग्रादि में हवा भरने की एक प्रकार की कला ।
३ एक प्रकार के अंगरेजी जूते की बनावट विशेष जिसमें पैर का अगला भाग ही ढंका रहता है और जिनमें कस्से नहीं होते ।
४ पिचकारी ।
पंपा—सं०स्त्री० [सं०] १ दक्षिण की एक नदी का नाम जो प्राचीन काल में ऋष्य-मूक पर्वत के समीप बहता थी ।
२ इस नदी के समीप बसने वाले एक प्राचीन नगर का नाम ।
३ इस नगर के निकट के एक तालाब का नाम ।
पंपागर, पंपागिर, पंपागिरि—सं०पु०यौ० [सं० पंपागिरि] पंपा नदी से लगा हुग्रा दक्षिण का एक पर्वत ।

पंपाळ—सं०पु० [देशज] १ असत्य, झूठ (अ.मा.,ह.नां.मा.)
२ ढोंग, ग्राडंबर, छल, कपट । उ०—प्रभु समरि तजि ग्राळ पंपाळ ।
—ह.नां.मा.
३ व्यर्थ का प्रलाप ?
उ०—१ कूट कपट नित केळवइ, माया नइ मोह । ग्राळ-पंपाळ मुख मखइ, हियइ वज्र कठोर ।—स.कु.
उ०—२ पाछली रात रो वेगो जाग, पांणी ग्रगन रो दीसै अभाग । मुख सूं बोलै ग्राळ-पंपाळ, बूढा तिके पण कहिये बाळ ।
—जयवांणी
४ दुनिया का जंजाळ, प्रपंच । उ०—ग्रा विन्यायकजी री खूंटी गिरस्ती रो पंपाळ है, इणसूं थोड़ो घणो खोळो न्हियांई जोव ग्रागै सिरकै ।—फुलवाड़ी
वि०—जो असली न हो, खोटा, जाली, झूठा ।
उ०—होर पनां वाळा हार, पंपाळा तज 'पत' । तै कर चाळा ली तिका, तुकमां माळा तत ।—जुगतीदांन देथो
यौ०—ग्राळ-पंपाळ ।
अल्पा०—पंपाळो ।
पंपाळो—देखो 'पंपाळ' (अल्पा०, रू.भे.)
उ०—कोई साध नै साधवी, देवै दुरासी नै गाळो रे । भरम मोसा दाखै रीस थी, बोलै ग्राळ-पंपाळो रे ।—जयवांणी
पंपोटो—सं०पु० [देशज] बुलबुला, बुदबुदा, बुल्ला ।
उ०—खळ-हळ खळक्या लोही खाळ, पावस रित जांणै परनाळ । रुहिर माहि पंपोटा थाय, दोड़ी जोगणी पात्र भराय ।—प.च.चौ.
पंपोळणो, पंपोळवो—क्रि०अ० [सं० पम्पस्] धीरे-धीरे किसी पर हाथ फेरना, सहलाना ।
उ०—जुध टोळी जपिया जठै, चिपि गोळी चुपचाप । बटको दोळी बांध नै, पंपोळी न 'प्रताप' ।—जुगतीदांन देथो
पंपोळणहार, हारो (हारी), पंपोळणियो—वि० ।
पंपोळवाड़णो, पंपोळवाड़वो, पंपोळवाणो, पंपोळवावो, पंपोळवावणो, पंपोळवावो, पंपोळाड़णो, पंपोळाड़वो, पंपोळाणो, पंपोळावो, पंपोळावणो, पंपोळाववो—प्रे०रू० ।
पंपोळिग्रोड़ो, पंपोळियोड़ो, पंपोळयोड़ो—भू०का०कृ० ।
पंपोळीजणो, पंपोळीजवो—कर्म वा० ।
पंपोळणो, पंपोळवो—कर्म वा० ।
पंपोळाड़णो, पंपोळाड़वो—देखो 'पंपोळाणो, पंपोळावो' (रू.भे.)
पंपोळाड़णहार, हारो (हारी), पंपोळाड़णियो—वि० ।
पंपोळाड़िग्रोड़ो, पंपोळाड़ियोड़ो, पंपोळाड़योड़ो—भू०का०कृ० ।
पंपोळाड़ीजणो, पंपोळाड़ीजवो—कर्म वा० ।
पंपोळाणो, पंपोळावो—क्रि०स० [पंपळणो क्रिया का प्रे०रू०] धीरे-धीरे किसी के शरीर पर हाथ फिराना, सहलवाना ।
पंपोळाणहार, हारो (हारो), पंपोळाणियो—वि० ।

पंपोळायोड़ौ—भू०का०कृ० ।
पंपोळाईजणौ, पंपोळाईजवौ—कर्म वा० ।
पंपोळाड़णौ, पंपोळाड़बौ, पंपोळावणौ, पंपोळाववौ—रू०भे० ।

पंपोळायोड़ौ-भू०का०कृ०—धीरे-धीरे हाथ फिराया हुआ, सहलाया हुआ ।
(स्त्री० पंपोळायोड़ी)

पंपोळावणौ, पंपोळाववौ—देखो 'पंपोळाणौ, पंपोळाबौ' (रू.भे.)
पंपोळावणहार, हारौ (हारी), पंपोळावणियौ—वि० ।
पंपोळाविओड़ौ, पंपोळावियोड़ौ, पंपोळाव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
पंपोळावीजणौ, पंपोळावीजवौ—कर्म वा० ।

पंपोळावियोड़ौ—देखो 'पंपोळायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० पंपोळावियोड़ी)

पंपोळियोड़ौ-भू०का०कृ०—धीरे-धीरे किसी पर हाथ फेरा हुआ, सहलाया हुआ ।
(स्त्री० पंपोळियोड़ी)

पंमाड, पंमाडिया—देखो 'पमाड़िया' (रू.भे.)

पंमार—देखो 'परमार' (रू.भे.)
उ०—'ऊदा' के 'वीदा' भड़ उदार, पड़ियार 'कमां' 'मंडळा' पंमार ।
—पे.रू.

पंयाळ—देखो 'पाताळ' (रू.भे.)
उ०—हुई हमस्स घमस्स, पंयाळ दहलिया ।—गु.रू.वं.

पंव-सं०पु०—पांच । उ०—सुभ खिल्लत पंच वसन सुरंगी । असि खंजर सर पेच कलंगी ।—रा.रू.

पंवर, पंवरी—देखो 'पामड़ी' (रू.भे.)
उ०—ढाळौ चंवर ओढ़ावौ पंवर, गउ माता लाय पुजावौ हो रांम ।
—लो.गी.

पंवाड़—देखो 'पंमाड़ियौ' (मह०, रू.भे.)

पंवाड़ियौ—देखो 'पमाड़ियौ' (अल्पा०, रू.भे.)

पंवार—देखो 'परमार' (रू.भे.)
उ०—करण अखियात चढ़ियौ भलां काळमौ, निवाहण वैण भुज वांधियां नेत । पंवारां सदन वरमाळ सूं पूजियौ, खळां करमाळ सूं पूजियौ खेत ।—वां.दा.

पंसणी-वि० [सं० पांसुल] (स्त्री० पांसुली) दुष्ट, नीच (अ.मा.)

पंसारी-सं०पु० [सं० पण्यशाली] (स्त्री० पंसारण) वह बनिया या दुकानदार जो जड़ी बूंटी औषधि तथा हल्दी धनिया आदि मसाले वेचता हो ।
रू०भे०—पनसारी पसारी ।

पंसी-उकत—पैशाची भाषा (अ.मा.)

पंसुली—देखो 'पासळी' (रू.भे.)
उ०—धीरमेर रा खड्ग प्रहार सूं कन्ह महर री अंस पंसुली सूधौ झड़ियौ, तौ भी घणा सात्रवां री सुंदरियां रा कंकणां री कोळाहळ मिटाय पड़ियौ ।—वं.भा.

पंसेरी-सं०स्त्री० [सं० पंच+सेर+रा.प्र.ई] पांच सेर का तोल ।
उ०—पंसेरी इक पालटे, पुंगी फळ इक श्रोड़ । उ तोलण प्रम कर उभे, आ चतुराई छोड़ ।—बां.दा.
रू०भे०—पंचेरी, पनसेरी, पसेरी ।
मह०—पंचेरौ, पंसेरौ, पनसेरौ ।

पंसेरौ—देखो 'पंसेरी' (मह०, रू.भे.)
वि०—१ रक्षक (एकाक्षरी)

प-सं०पु० [सं०] १ रवि, सूर्य ।
२ पवन ।
३ वृक्ष ।
४ गुरु ।
५ राजा ।
६ सिंह ।
७ कामदेव ।
८ पीना क्रिया (एका०)

पइंठणौ, पइंठवौ—देखो 'पैठणौ, पैठवौ' (रू.भे.)
उ०—पइत समान मच्छ एक मोटौ, मुख प्रसारि नैं वैठो । ततखिण तेह कुमर नैं गिळियौ, वळि जळ ऊंडै पइंठौ ।—वि.कु.
पइंठणहार, हारौ (हारी), पइंठणियौ—वि० ।
पइंठिओड़ौ, पइंठियोड़ौ, पइंठ्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
पइंठीजणौ, पइंठीजवौ—भाव वा० ।

पइंठियोड़ौ—देखो 'पइंठीयोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० पइंठियोड़ी)

पइंडउ—१ देखो 'पैंडौ' (रू.भे.)
उ०—नदी वहइ झावुका नांखती, घोम उदक ची लागी धार । ईसर तणी आंन्या इसड़ी, पइंडउ वहत उतारइ पार ।
—महादेव पारवती री वेलि
२ देखो 'पैंड़ौ' (रू.भे.)

पइंडौ—१ देखो 'पैंडौ' (रू.भे.)
उ०—मुरकी मैं लाडू भला, पइंडा सखर सवाद ।—वि.कु.
२ देखो 'पैंडौ' (रू.भे.)

पइंतीस, पइंत्रीस—देखो 'पैंतीस' (रू.भे.) (उ.र.)
उ०—वांका विचित्त पाधोर वक, तांणइ कमांण पइंतीस-टंक । आयासि पंखि पाडइ अमुल्ल, माकडा-मुक्ख मुंडा मुगल्ल ।
—रा.ज.सी.

पइंसठ, पइंसठि—देखो 'पैंसठ' (रू.भे.) (उ.र.)

पइ-अव्य० [सं० प्रति, प्रा० पडि, अप० पइ] १ अधिकार में, कब्जे में, पल्ले । उ०—एक दिवस पूंगळ सहर, सउदागर आवंत । तिण पइ घोड़ा अति घणा, वेच्या लाख लहंत ।—ढो.मा.
२ पास में, निकट में ।

संपु० [सं०पद] पैर, चरण । उ०—हठमल्लि 'जइति' मनावि हीर, हल्लावि हविक हिंदू हमीर । सत 'जइतसीहि' आया सकत्ति, पइ सेव मनाविय देसपत्ति ।—रा.ज.सी.

पइड़ो—
१ देखो 'पईसौ' (अल्पा०, रू.भे.)
२ देखो 'पैंड़ो' (रू.भे.)

पइज—देखो 'पैज' (रू.भे.)

पइट्ठणौ, पइट्ठबौ—देखो 'पैठणौ, पैठबौ' (रू.भे.)
उ०—१ कांमा-कांम कमंधज दीठो, पलकां अंतरि अमी पइट्ठो ।—गु.रू.बं.
उ०—२ सज्जण अळगा तां लगइ, जां लग नयणे दिट्ठ । जब नयणां हूं बीछड़ें, तब उर मंझ पइट्ठ ।—ढो.मा.
पइट्ठणहार, हारौ (हारी), पइट्ठणियौ—वि० ।
पइट्ठिओड़ो, पइट्ठिवोड़ो, पइट्ठयोड़ौ—भू०का०कृ० ।
पइट्ठीजणौ, पइट्ठीजबौ—भाव वा० ।

पइट्ठा—देखो 'प्रतिष्ठा' (रू.भे.) (जैन)

पइट्ठियो-वि० [सं० प्रतिस्थित] आश्रित ।
उ०—आकास वायु दग प्रथ्वी तस, थावर जीव होय । अजीवा जीव पइट्ठिया जीवा, कम्म पइट्ठिया जोय ।—जयवांणी

पइट्ठियोड़ो—देखो 'पैठियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० पइट्ठियोड़ी)

पइठणौ, पइठबौ—देखो 'पैठणौ, पैठबौ' (रू.भे.)
उ०—पडइ त्रास भडवाय तुरक नइ, देस दहोदिसि नाठा । घणा दिवस दळ मारगि चाली, मारूआडि मांहि पइठा ।—कां.दे.प्र.

पइठांणी-वि०—पइठाण देश संबंधी, पइठाण देश का ।
सं०स्त्री० [देशज] पइठाण प्रदेश का बुना वस्त्र विशेष (व.स.)

पइठांणौ-सं०पु० [देशज] पइठाण प्रदेशोत्पन्न घोड़ा ।
उ०—अरब छइ घोड़ा, हेरंमा हरीअड़ा नील नीलड़ा काळूंग्रा काजळा किहाड़ा कोसीरा अहिठांणा पइठांणा ऊजळा जीहड़ा······।—व.स.

पइडो—देखो 'पैंड़ो' (रू.भे.)

पइदिणि-सं०पु० [सं० प्रतिदिन] प्रतिदिन । उ०—राजा भोडी अवग्रह लीउ । पइदिणि नर एकेकउ दीउ ।—पं.पं.च.

पइन्ना-सं०पु० [सं० प्रकीर्ण] प्रकीर्ण । उ०—छठो जीतकल्प इण नांम, इकसो पांच छ कह्या आंम । दसे पइन्ना हिव इम दाखै, सूत्रसची ते हीये राखे ।—ध.व.ग्रं.

पइमाळ—देखो 'पैमाल' (रू.भे.)
उ०—कव्वित्तल सिंघ कोटां किंवाड़ । मूगळै कयउ पइमाळ माड़ ।—रा.ज.सी.

पइयो—१ देखो 'पैंड़ो' (अल्पा०, रू.भे.)
२ देखो 'पईसौ' (रू.भे.)
३ देखो 'पथिक' (अल्पा०, रू.भे.)

पइर-सं०पु० [सं० प्रकार] प्रकार, भांति, तरह ।
उ०—दवदंती तिहां पितामंदिरि, संभारइ नळ गुण सदा । हवइ नल नु संबंध संभळ, पइरि हुई सी तदा ।—नळदवदंती रास

पइरवौ—देखो 'पेरवो' (रू.भे.)
उ०—वइरागर पुणंग पइरवां ऊपर, लहइ जिके ताइ सवालख । कुंदण रइ दळ महा काढ़िया, नहरणियां कोरण नइ नख ।—महादेव पारवती री वेलि

पइरोज, पइरोजउ, पइरोजौ—देखो 'फिरोजो' (रू.भे.)
उ०—सींगी ताइ कंठ एहवी सोहइ, निमळ विप्र जोवतां निगेम । सोळह ताइ सात सोवन मइं पइरोजइ जडिया कर प्रेम ।—महादेव पारवती री वेलि

पइलइ—देखो 'पैलै' (रू.भे.)
उ०—कूंझड़ियां कळिअळ कियउ, सरवर पइलइ तीर । निसि भरि सज्जण सल्लियां, नयणे वूहा नीर ।—ढो.मा.

पइलउ, पइलो—देखो 'पैलो' (रू.भे.)
(स्त्री० पइली)

पइसड़ौ—देखो 'पईसो' (अल्पा०, रू.भे.)

पइसणौ, पइसवौ—देखो 'पैसणौ, पैसवौ' (रू.भे.)
उ०—१ रांणी भणइ विमासउ किस्यूं, अम्हे सवे जमहरि पइसिस्यूं ।—कां.दे.प्र.
उ०—२ हिवडइ भीतर पइसि करि, ऊगउ सज्जण रूंख । नित सूकइ नित पल्हवइ, नित नित नवला दूख ।—ढो.मा.
उ०—३ पइसण देवै नहीं प्रतिहारा ।—ध.व.ग्रं.
पइसणहार, हारौ (हारी), पइसणियौ—वि० ।
पइसिओड़ो, पइसियोड़ो, पइस्योड़ो—भू०का०कृ० ।
पइसीजणौ, पइसीजबौ—भाव वा० ।

पइसागर—देखो 'पयसागर' (रू.भे.)

पइसारउ, पइसारो—देखो 'पैसारो' (रू.भे.)
उ०—१ नयरि पइसारउ पंडु, नरिंद किरि अमराउरि अवतरी ए ।—पं.पं.च.
उ०—२ पइसारइ तणउ मांडियउ प्रारंभ, मोटइ दिख जोवतां मंडांण । घणघट घमंड जांगीए घुरते, आयो लै परिग्रह आपांण ।—महादेव पारवती री वेलि

पइसियोड़ौ—देखो 'पैसियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० पइसियोड़ी)

पइसौ—देखो 'पईसो' (रू.भे.)
उ०—करो कृपा करतार, इतरा चाया आपसूं । पइसन सुख परिवार, चित चरणां में चकरिया ।—मोहनलाल साह

पइहरणौ, पइहरबौ—देखो 'पै'रणौ, 'पै'रबौ' (रू.भे.)

उ०—पाटी बैठधा बीसळराइ, गढ़ अजमेरो राज यो। माणिक मोती चोक पुराई, दीया खरोदक पइहरणाइ।—बी.दे.

पइहरणहार, हारो (हारी), पइहरणियो—वि०।

पइहरिप्रोड़ो, पइहरियोड़ो, पइहर्योड़ो—भू०का०कृ०।

पइहरीजणो, पइहरीजबो—कर्म वा०।

पइहरियोड़ो—देखो 'पैंरियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० पइहरियोड़ी)

पइहिलो—देखो 'पैं'लो (रू.भे.)

उ०—पइहिली पोति ग्रांणि गळै बांधी, ताको द्रस्टांत जैसे कपोत कहतां केमेडा का कंठ की स्याह लोक देखोयै।—वेलि. टी.

(स्त्री० पइहिली)

पई—१ देखो 'पैंडो' (रू.भे.)

उ०—वड़के ओघण वंधिया, पंसे पई पताळ। सोच करै नही सागड़ी, धवळ तणी दिस भाळ।—बां.दा.

२ देखो 'पथिक' (रू.भे.)

उ०—करतब नह राजी क्रपण, राजी रुपैयांह। कड़वो दाम कुटंबियां, प्रांमणाई पइयांह।—बां.दा.

पईखणो, पईखवो—देखो 'पेखणो, पेखवो' (रू.भे.)

उ०—तमासा सिध पइखै समर मारतंड। उमापत सधप तोड़ै कमळ आप।—राजा राघवदेव झाला री गीत

पईखणहार, हारो (हारी), पईखणियो—वि०।

पईखिप्रोड़ो, पईखियोड़ो, पईख्योड़ो—भू०का०कृ०।

पईखीजणो, पईखीजबो—कर्म वा०।

पईखियोड़ो—देखो 'पेखियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० पईखियोड़ी)

पईठणो, पईठबो—देखो 'पैंठणो, पैंठबो' (रू.भे.)

उ०—विड़द विनायक दोनूंजी आया, आया पवास्या सोळै वड़ तळै। बूझत नगर पईठ्या, पोळ बतावो ल डेली रै बाप री।

—लो.गी

पईठणहार, हारो (हारी), पईठणियो—वि०।

पईठीजणो, पईठीजबो, पईठिप्रोड़ो, पईठियोड़ो, पईठ्योड़ो

—भू०का०कृ०।

पईठियोड़ो—देखो 'पैठियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० पईठियोड़ी)

पईडउ—१ देखो 'पैंडो' (अल्पा.,रू.भे.)

उ०—पोतइ तूं छइ पांगळु, खेडू खोडू जांणि। श्रेकइ पईडइ अे रथो, नहीं चालइ निखांणि।—मा.कां.प्र.

२ देखो 'पैंडो' (रू.भे.)

पईयो—१ देखो 'पैंडो' (अल्पा०, रू.भे.)

२ देखो 'पईसो' (अल्पा०, रू.भे.)

पईसड़ो—देखो 'पईसो' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—देखो कोय-नी अभै री रंग? 'कंनै टा' ठाकुरजी री कांई मरजी है'। किता'क पईसड़ा कमाय लेयो हो।—वरसगांठ

पईसो—सं०पु० [सं० पदय=पाय=पई+अंश=अंस अथवा पणांश]

१ तांबे का बना एक प्रकार का सिक्का जो पहिले एक रुपए का चौसठवां भाग माना जाता था और आजकल एक रुपए का सौवां भाग माना जाता है।

वि०वि०—पहिले का पैसा आजकल के पैसे से आकार में बड़ा व वजन में भारी होता था।

२ एक प्रकार का तोल जो एक तोले से बड़ा और १।। तोले से कुछ कम होता था।

३ उक्त तोल का बाट जो पैसे के आकार का किन्तु पैसे से वजनी होता था और जिसे 'पदको-पईसो' भी कहते थे।

३ रुपया पैसा, धन, दौलत। उ०—लुगाई सरमावती धोमै मधुरै सुर में बोली—'कांई बताऊं बाईजी! झगड़ो बोजोई है। जूवै में रुपिया हार'र आया है। अबै म्हारा गैणा बेचण री कैवै है। नित ऊंगरा पईसा जोयोजै। किसो खाड मांय सूं लाऊं।—वरसगांठ

मुहा०—१ पईसो आणो—धन-दौलत का आना, रुपया प्राप्त होना।

२ पईसो ऊठणो—रुपया-पैसा खर्च होना।

३ पईसो उठाणो—धन का व्यर्थ खर्च करना, धन का नष्ट करना, कर्ज लेना, उधार लेना। जमा रकम में से खर्च हेतु लेना।

४ पईसो उडणो—धन का व्यर्थ ही खर्च होना, धन का नष्ट होना।

५ पईसो उडाणो—फजूलखर्चा करना, धन को नष्ट करना।

६ पईसो कमांणो—धन-दौलत का उपार्जन करना, रुपया पैदा करना।

७ पईसो करणो—पदार्थ आदि बेच कर रुपया कमाना, धन इकट्ठा करना।

८ पईसो खांणो—रिश्वत लेना, धोखा देकर रुपया पैसा हजम कर जाना।

९ पईसो खींचणो—सब धन ले लेना, खूब उपार्जन करना। चालाकी या चतुराई से धन बटोरना।

१० पईसो घड़णो—देखो 'पईसो कमांणो'।

११ पईसो जाणो—धन का नष्ट हो जाना।

१२ पईसो जुड़णो—धन का इकट्ठा होना, रुपए का जमा होना।

१३ पईसो जोड़णो—धन का इकट्ठा करना, धन का संग्रह करना।

१४ पईसो डूबणो—किसी कार्य या स्थान में लगा हुआ धन नष्ट होना, दिया हुआ धन प्राप्त न होना।

१५ पईसो ढोणो—सम्पत्ति को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना।

१६ पईसो पईसो करणो—हर वक्त धन के विषय में ही सोचना।

१७ पईसो पैदा करणो—देखो 'पईसो कमाणो'।
१८ पईसो वटोरणो—देखो 'पईसो समेटणो'।
१९ पईसो लगाणो—व्यापार में पूंजी लगाना।
२० पईसो समेटणो—खूब कमाना, व्यापार में लगे धन को वापस इकट्ठा करना, धन इकट्ठा करना।
२१ पईसो होणो—धन का होना, रुपया पैसा इकट्ठा होना।
रू०भे०—पइसो, पीसो, पैसो।
अल्पा०—पइड़ो, पइयो, पइसड़ो, पईयो, पईसड़ो, पीसो।

पउंजणी—देखो 'पूंजणी' (रू.भे.)(उर)

पउंतार—देखो 'पुंतार' (रू.भे.)
उ०—१ अथ मदावर लोह नी सांकळ त्रोड़ि, आलानस्तंभ मोड़ि, हस्तिमाळ भाजि पउंतार गाजइ कमाड फाडइ, मठ मंदिर पाडिइ, हस्ति नीं यूथ स्मरइ······।—व.स.
उ०—२ नव पडिहार दस प्रति सुवरणकार इग्यार सामंत बार महामंडळेस्वर, तेर पसाइता चउद चडियात, पनर पउंतार सोळ महामसांणी।—व.स.

पउ-सं०पु० [सं० वपु] शरीर। उ०—वधै पउ अधिक तेज तनु वाधइ, बाळक तणा जोवतां बंध। दिन-दिन लई अंतरा देवी, वरस मास रा किया निबंध।—महादेव पारवती री वेलि

पउढ़णो, पउढ़वो—देखो 'पोढ़णो, पोढवो' (रू.भे.)
उ०—मंदिर महुल मझार सेज तळाई मइ पउढ़त तउजी।
—स.कु.
पउढ़णहार, हारौ (हारी), पउढ़णियो—वि०।
पउढ़िग्रोड़ो, पउढ़ियोड़ो, पउढ़्योड़ो—भू०का०कृ०।
पउढ़ीजणो, पउढ़ीजवो—भाव वा०।
पउढ़ाड़णो, पउढ़ाड़वो, पउढ़ाडणो, पउढ़ाडवो—देखो 'पोढ़ाणो, पोढ़ावो' (रू.भे.)
उ०—१ सोलइ सुर सानिध करी रे, तुरत आव्या ते हाथ। पुत्र सोनानइ पाळणइ रे, पउढ़ाड़यउ सुख साथ।—स.कु.
उ०—२ इंह घरि अच्छइ मंत्र लाख तणउं छद घवळहरी। माहि पउढ़ाडउ सत्र एकसरा सवि संहरउं।—पं पं.च.
पउढ़ाड़णहार, हारौ (हारी), पउढ़ाड़णियो—वि०।
पउढ़ाड़िग्रोड़ो, पउढ़ाड़ियोड़ो, पउढ़ाड़्योड़ो—भू०का०कृ०।
पउढ़ाड़ीजणो, पउढ़ाड़ीजबो—कर्म वा०।

पउढ़ाड़ियोड़ो—देखो 'पोढ़ायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० पउढ़ाड़ियोड़ी)

पउढ़िम—देखो 'पोढ़म' (रू.भे.)
उ०—पउढ़िम परहरियाह, आरंभ करि ऊपरि असुर। देवि दुवार थियाह, वेनतियाइत वीस-हथि।—श्र. वचनिका

पउढ़ियोड़ो—देखो 'पोढ़ियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० पउढियोड़ी)

पउतीय, पउतीयो—देखो 'पोतियो' (रू.भे.)
उ०—आंणीजे सुहड मोळि मोळीयां, पउतीयां जिम हुइ पटउळीयां।
—सालि सूरि

पउधारणो, पउधारवो—देखो 'पधारणो, पधारवो' (रू.भे.)
उ०—रांणो आयो 'रतनसी' लोक सहु आणंद। महिलां पउधारे तरै मेटयो सगळो दंद।—पं.च.चौ.
पउधारणहार, हारौ (हारी), पउधारणियो—वि०।
पउधारिग्रोड़ो, पउधारियोड़ो, पउधार्योड़ो—भू०का०कृ०।
पउधारीजणो, पउधारीजवो—भाव वा०।

पउधारियोड़ो—देखो 'पधारियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० पउधारियोड़ी)

पउम—देखो 'पदम' (रू.भे.)
उ०—जिणदत्तसूरि जिन नमहि पय पउम, मच्चु (गव्वु) नियमणि वहहि।—कवि पल्ह

पउमा—देखो 'पदमावती' (रू.भे.)
उ०—रंभा पउमा गवर गंग इण आगळ हरी।—वृ.स्त.

पउमावइ—देखो 'पदमावती' (रू.भे.)
उ०—कला केलि वर रूववर, करुणां केरवचंद। चरणि कमल सुंदर भमर, पउमावइ धरणिंद।—स.कु.

पउर—१ देखो 'प्रचुर' (रू.भे.) (जैन)
२ देखो 'पोर' (रू.भे.)

पउरिस, पउरिस्सि—देखो 'पोरस' (रू.भे.)
उ०—पडियाळ धूणि पउरिस्सि पूरि। गाजणइ तणइ पइठउ गुरूरि।
—रा.ज सी.

पउळ, पउळि—देखो 'पोळ' (रू.भे.)
उ०—१ जोगी वहठो पउळइ जाई, बभूत सरी सी खोळ कराई।
—बी.दे.
उ०—२ पगि-पगि पउळि, पउळि हस्ती को गज घटा। ती ऊपरि सातसात सइ, धनकघर सांवठा।—श्र. वचनिका

पउहंतणो, पउहंतवो—देखो 'पहुंचणो, पहुंचवो' (रू.भे.)
उ०—वात सुणी (नी) सुळतांण(न) एह, वे बजीर सचा कहउ। दरवेस-वेस मलावदी आय, पउहंतउ विप्र पोह।—प.च.चौ.
पउहंतणहार, हारौ (हारी), पउहंतणियो—वि०।
पउहंतिग्रोड़ो, पउहंतियोड़ो, पउहंत्योड़ो—भू०का०कृ०।
पउहंतीजणो, पउहंतीजवो—भाव वा०।

पउहंतियोड़ो—देखो 'पहुंचियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० पउहंतियोड़ी)

पऊर—देखो 'प्रचुर' (रू.भे.)
उ०—चाचर सूर पऊर गह, चाचर चाड़ढै देग। लक्ख लहै दुहुं वांह-वळि, दुहं-दुहं वधै तेग।—गु.रू.वं.

पएस—देखो 'प्रदेस' (रू.भे.) (जैन)

पएसबंध—देखो 'प्रदेसबंध' (रू.भे.) (जैन)
पएसी—देखो 'प्रदेसी' (रू.भे.) (जैन)
पग्रोहर—देखो 'पयोधर' (रू.भे.)
उ०—उन्नत-पीन-पग्रोहर नारी, कडो निगोदर उर धरि हारि। इसी नारि धरि हुई दुय च्यारी, अउर किसूं छइ सरगह वारि।
—लो.गी.

पकड़-सं०स्त्री० [सं० प्रकृष्ट, प्रा० पकड या पकड्ढ] १ पकड़ने की क्रिया या भाव, ग्रहण।
मुहा०—पकड़ में आणौ—पकड़ा जाना, हाथ लगना, दाव में फसना या आना, घात में आना, मिलना, वश में होना।
२ पकड़ने का ढंग।
३ अशुद्धि, दोष आदि ढूंढ निकालने की क्रिया या भाव।
४ राग में आये स्वरों का एक ऐसा छोटा स्वर-समूह जो राग के पूरे रूप को प्रकट करता हो।
५ एक प्रकार की संडासी जिससे चीजें पकड़ी जाती हैं।
६ मस्तिष्क में बैठना, समझ में आना।

पकड़णौ, पकड़बौ-क्रि०स० [सं० प्रकृष्ट, प्रा० पकड या पकड्ढ] १ किसी पदार्थ को दृढ़ता से इस प्रकार छूना या हाथ में लेना कि वह आसानी से छूट न सके अथवा इधर-उधर न जा सके, हिल न सके, थामना, गहना, धारण करना।
उ०—१ काल न आवै कायरां, वालम विसवा-वीस। पकड़े रण घर पंथ नूं, पकड़ै नह पांडीस।—बां.दा.
उ०—२ मन में फेर धणी री माला, पकड़ै नंह जमदूत पलो।
—बां.दा.
२ अधिकार में करना, काबू में करना, दबोचना।
उ०—सफरी पकड़ण सांतरो, बैठो ढब बुगलांह। कथा-बुरी करवा तणो, चोखो ढब चुगलांह।—बां.दा.
३ बंधन में डालना, गिरफ्तार करना।
उ०—की बांधव की दीकरा, हुकम दिए जो फेर। पातसाह जां नूं पकड़, चाढ़े गढ़ ग्वाळेर।—बां.दा.
४ गलती या भूल करने पर रोकना, टोकना।
ज्यूं—थूं जठै भूल करसी उठै म्हैं थनै पकड़सूं।
५ गति या व्यापार से निवृत्त करना, कुछ करने से रोकना, ठहराना, स्थिर करना।
६ अपने स्वभाव या प्रवृत्ति के अंतर्गत करना।
उ०—दूय-चत्र-मास बादियो दिखणी, भीम गई सो लिखत भवेस। पूगो नहीं चाकरी पकड़ी, दीधो नहीं मह'ठां देस।—बां.दा.
७ आक्रांत करना, ग्रसना, घेरना।
ज्यूं—बीमारी नै पकड़ लियो।
८ धारण करना, रखना। उ०—कठण पड़ै जद कांम, हांम पकड़ गाढ़ो रहे। तो अलबत ही तांम, रांम भलो हुवै राजिया।
—किरपारांम

९ ऊपर का ऊपर थाम लेना, सम्हालना।
उ०—जमरांण जंजीर जिकां जकड़ै, पड़तो असमांण तिका पकड़ै।
—मे.म.
क्रि०अ०—१० किसी पदार्थ को अपने में व्याप्त होने देना, किसी पदार्थ में व्याप्त होना।
ज्यूं—घासलेट रो आग पकड़णो, कपड़ां रो रंग पकड़णो।
११ प्रगतिशील के बराबर होना।
ज्यूं—दोड़ में मो'वन आगै हो पण म्हैं उण नै पकड़'र बराबर हो गयो, म्हैं मो'वन सूं दो कक्षा लारै हो पण उणनै पकड़ लियो, हमैं म्हां बराबर हां।
पकड़णहार, हारौ (हारी), पकड़णियौ—वि०।
पकड़वाड़णौ, पकड़वाड़बौ, पकड़वाणौ, पकड़वाबौ, पकड़वावणौ, पकड़वावबौ, पकड़ाड़णौ, पकड़ाड़बौ, पकड़ाणौ, पकड़ाबौ, पकड़ावणौ, पकड़ावबौ—प्रे०रू०।
पकड़िओड़ौ, पकड़ियोड़ौ, पकड़योड़ौ—भू०का०कृ।
पकड़ीजणौ, पकड़ीजबौ—कर्म वा०।
कपड़णौ, कपड़बौ, पक्कड़णौ, पक्कड़बौ, पाकड़णौ, पाकड़बौ
—रू०भे०।

पकड़ाड़णौ, पकड़ाड़बौ—देखो 'पकड़ाणौ, पकड़ाबौ' (रू.भे.)
पकड़ाड़णहार, हारौ (हारी), पकड़ाड़णियौ—वि०।
पकड़ाड़िओड़ौ, पकड़ाड़ियोड़ौ, पकड़ाड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।
पकड़ाड़ीजणौ, पकड़ाड़ीजबौ—कर्म वा०।

पकड़ाड़ियोड़ौ -देखो 'पकड़ायोड़ौ' (रू भे.)
(स्त्री० पकड़ाड़ियोड़ी)

पकड़ाणौ, पकड़ाबौ-क्रि०स० [पकड़णौ क्रिया का प्रे०रू०] १ किसी पदार्थ को दृढतापूर्वक हाथ में पकड़ाना, रखवाना, थमाना।
२ अधिकार में करवाना, काबू में कराना, दबोचवाना।
३ बंधन में डलवाना, गिरफ्तार करवाना।
४ गलती या भूल रुकवाना।
५ गति या व्यापार से निवृत्त करवाना।
६ अपने स्वभाव या प्रवृत्ति के अन्तर्गत करवाना।
७ आक्रांत करवाना, ग्रसाना, घेराना।
८ धारण कराना, रखाना।
९ ऊपर का ऊपर थमवा लेना, सम्हलवाना।
१० किसी पदार्थ को अपने में व्याप्त करवाना।
११ प्रगतिशील की बराबरी कराना ?
पकड़ाणहार, हारौ (हारी), पकड़ाणियौ—वि०।
पकड़ायोड़ौ—भू०का०कृ०।
पकड़ाईजणौ, पकड़ाईजबौ—कर्म वा०।
पकड़ाड़णौ, पकड़ाड़बौ, पकड़वावणौ, पकड़वावबौ—रू०भे०।

पकड़ायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ किसी पदार्थ को दृढता से पकड़ाया हुआ,

रखवाया हुआ, थमवाया हुआ।
२ अधिकार में करवाया हुआ, काबू में करवाया हुआ।
३ बंधन में डलवाया हुआ, गिरफ्तार करवाया हुआ।
४ गलती या भूल रुकवाया हुआ।
५ गति या व्यापार से निवृत्त करवाया हुआ।
६ अपने स्वभाव या प्रवृत्ति के अन्तर्गत करवाया हुआ।
७ आक्रांत करवाया हुआ, ग्रसाया हुआ, घेराया हुआ।
८ धारण करवाया हुआ, रखवाया हुआ।
९ ऊपर का ऊपर थमवाया हुआ, सम्हलवाया हुआ।
१० किसी पदार्थ को अपने में व्याप्त करवाया हुआ।
११ प्रगतिशील की बराबरी किया हुआ।
(स्त्री० पकड़ायोड़ी)

पकड़ावणो, पकड़ाववो—देखो 'पकड़ाणो, पकड़ावो' (रू.भे.)
उ०—ओडां ऊचाळो कियो, खुलिया नाठा जाय। मेल्हि फौज पकड़ाविया, आणि रोकाया मांय।—जसमा ओडणी री वात
पकड़ावणहार, हारो (हारी), पकड़ावणियो—वि०।
पकड़ाविओड़ो, पकड़ावियोड़ो, पकड़ाव्योड़ो—भू०का०कृ०।
पकड़ावीजणो, पकड़ावीजवो—कर्म वा०।

पकड़ावियोड़ो—देखो 'पकड़ायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० पकड़ावियोड़ी)

पकड़ियोड़ो-भू०का०कृ०—१ किसी पदार्थ को दृढ़ता से पकड़ा हुआ।
२ अधिकार में किया हुआ, काबू में किया हुआ, दबोचा हुआ।
३ बंधन में डाला हुआ, गिरफ्तार किया हुआ।
४ गलती या भूल करते हुए को रोका हुआ।
५ गति या व्यापार से निवृत्त किया हुआ, कुछ करने से रोका हुआ, ठहराया हुआ।
६ अपने स्वभाव या प्रवृत्ति के अन्तर्गत किया हुआ।
७ आक्रांत किया हुआ, ग्रसा हुआ, घेरा हुआ।
८ धारण किया हुआ, रखा हुआ।
९ ऊपर का ऊपर थामा हुआ, सम्हाला हुआ।
१० किसी पदार्थ को अपने में व्याप्त किया हुआ।
११ प्रगतिशील की बराबरी किया हुआ।
(स्त्री० पकड़ियोड़ी)

पकणो, पकबो-क्रि०अ० [सं० पचप्] १ कार्य सिद्ध होना।
२ मामला तय होना, सौदा पटना।
३ चौसर की गोटियों का सभी घरों को पार कर अपने घर में आना।
४ देखो 'पाकणो, पाकवो' (रू.भे.)
पकणहार, हारो (हारी), पकणियो—वि०।
पकवाड़णो, पकवाड़बो, पकवाणो. पकवावो, पकवावणो, पकवाववो—प्रे०रू०।
पकाड़णो, पकाड़बो, पकाणो, पकाबो, पकावणो, पकाववो—
पकिओड़ो, पकियोड़ो, पक्योड़ो—भू०का०कृ०।
पकीजणो, पकीजवो—भाव वा०।

पकरणी-सं०स्त्री० [सं०] वृक्ष विशेष।
उ०—कणवीर पकरणी केतकी, बीजोरड़ी नाळेर।
—रुकमणी-मंगळ

पकल्ल-सं०पु० [सं० पक्षल:] घोड़ा (डि.को.)

पकवांन, पकवांनु-सं०पु० [सं० पक्वान्न] घी या तेल में तल कर बनाया हुआ भोज्य पदार्थ, पकाया हुआ पौष्टिक भोजन।
उ०—१ पकवांनें पांने फळे सुपुहपे, सुरंगे वसत्रे दरब सव। पूजियै कसटि भंगि वनसपती, प्रसूतिका होळिका प्रब।—वेलि
उ०—२ धवळतणी सर धोरणि, छोरणि तरुवर पांन। गेलि गहिल्ली मोरडी, ओरडी भरइं पकवांनु।
—जयसेखर सूरि
रू०भे०—पक्वांन, पक्वांनु पक्वान्न।

पकवासय-सं०पु० [सं० पक्वाशय] पाचन संस्थान का वह भाग जहां खाया हुआ भोजन पचता है।

पकाई-सं०स्त्री० [सं० पक्व] १ पकने या पकाने की क्रिया या भाव।
२ पकाने की मजदूरी।
३ दृढ़ता। उ०—तद पातसाहजी अरज कबूल करी। अर इसी कही जो करनसिंघ कूं यहां चूक करवाय देंगे। इसी पकाई हुयगी थी।—द.दा.
४ कठोरपन।
५ निपुणता, चतुराई।
६ सतर्कता।

पकाड़णो, पकाड़बो—देखो 'पकाणो पकावो' (रू.भे.)
पकाड़णहार, हारो (हारी), पकाड़णियो—वि०।
पकाड़िओड़ो, पकाड़ियोड़ो, पकाड़्योड़ो—भू०का०कृ०।
पकाड़ीजणो, पकाड़ीजवो—कर्म वा०।

पकाड़ियोड़ो—देखो 'पकायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० पकाड़ियोड़ी)

पकाणो, पकावो-क्रि०स० [सं० पचप्] १ अनाज, फलादि को परिपक्वावस्था प्राप्त कराना।
२ आंच या गरमी देकर गलाना या नरम करना, सिझाना, सिद्ध कराना, रिंधाना।
३ आंच देकर कड़ा या लाल करना।
४ फोड़ा, फुन्सी या घाव को मवाद भर आने की अवस्था तक पहुँचाना।
५ कार्य सिद्ध कराना, मामला तै कराना, सौदा पटाना।
पकाणहार, हारो (हारी), पकाणियो—वि०।
पकायोड़ो—भू०का०कृ०।

पकाईजणौ, पकाईजबौ—कर्म वा० ।
पकणौ, पकबौ—अक० रू० ।
पकाड़णौ, पकाड़बौ, पकावणौ, पकावबौ—रू०भे० ।

पकायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ परिपक्वावस्था को प्राप्त किया हुआ। (अनाज, फलादि)
२ आंच देकर कड़ा या लाल किया हुआ ।
३ आंच या गरमी देकर गलाया या नरम किया हुआ ।
सिझाया हुआ ।
४ फोड़ा, फुन्सी या घाव को मवाद भर आने की अवस्था में पहुंचाया हुआ ।
५ कार्य सिद्ध कराया हुआ, मामला तै कराया हुआ, सौदा पटाया हुआ ।
(स्त्री० पकायोड़ी)

पकार-सं०पु० [सं०] 'प' अक्षर ।

पकाव-सं०पु० [सं० पक्व] १ पकने की क्रिया या भाव ।
२ मवाद, पीव ।

पकावणौ, पकावबौ—देखो 'पकाणौ, पकाबौ' (रू.भे.)
पकावणहार, हारौ (हारी), पकावणियौ—वि० ।
पकाविप्रोड़ौ, पकावियोड़ौ, पकाव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
पकावीजणौ, पकावीजबौ—भाव वा० ।

पकावियोड़ौ—देखो 'पकायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० पकावियोड़ी)

पकियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ कार्य सिद्ध हुवा हुआ ।
२ मामला तय हुवा हुआ, सौदा पटा हुआ ।
३ चौसर की गोटियां सभी घरों को पार कर अपने घर में आई हुई ।
४ देखो 'पाकियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० पकियोड़ी)

पकीनकल—देखो 'पकीरोकड़' ।

पकीरोकड़-सं०स्त्री०यौ० [सं० पचप्+राज० रोकड़] महाजनों की वह वही जिसमें कच्ची रोकड़ (दैनिक आय व्यय की पुस्तिका) की सही-सही प्रतिलिपि की जाय ।

पकोड़ी—देखो 'पकोड़ौ' (अल्पा., रू.भे.)

पकोड़ौ-सं०पु० [सं० पक्व+वटक] (स्त्री० पकोड़ी) १ घी या तेल में तल कर फुलाया हुआ वेसन या पीसी हुई दाल का वटक ।
२ देखो 'पक्कौ' (अल्पा., रू.भे.)
अल्पा०—पकोड़ी ।

पकौ—देखो 'पक्कौ' (रू.भे.)
उ०—तठै राजावां सारां मनसोभौ कीयौ जो किणी ही तरै साची खबर मंगावौ, कांई मचकूर है। तद श्री साहबै रो फकीर वडो नेक है। अर करणसींघजी रै सागै हो सूं इण क्यो हूं अस्तखान नूं पूछ'र पकी खबर लाऊं छूं ।—द.दा.
(स्त्री० पकी)

पक्कंबर—देखो 'पैगंबर' (रू.भे.)
उ०—कहै साह जिहंगीर, 'खुरम' सुरतांण सुणे-रहंत । तम सूर हम खुदाइ, पीर पकंबर मुहृत ।—गु रू.व.

पक्कडणौ, पक्कडबौ—देखो 'पकड़णौ, पकड़बौ' (रू भे.)
उ०—जिहंगीर कहै जम-रूप हुय, खुरम कहां जाइ बप्पडौ । पैसे पयाळ अंबर चढ़ै, जिहां जाइ तिहां पक्कडौ ।—गु.रू.बं.

पक्कण-सं०पु० [सं० पक्कणः] १ एक अनार्य देश का नाम (सभा.)
२ बर्बर या चाण्डाल का झोंपड़ा ।
३ अनार्य देशवासी (व.स.)

पक्कौ-वि० [स० पक्व] (स्त्री० पक्की) १ फल या अनाज जो परिपक्व हो गया हो, जो कच्चा न हो ।
ज्यूं—पक्की काकड़ी, पक्कौ आंबौ ।
२ जिसमें किसी प्रकार का अभाव न हो, पूर्णता को प्राप्त, पूर्ण, पूरा । उ०—ज्यूं कोई रै स्रद्धा बैसांणी नैं कहै, हिवै तूं गुरु कर। तव ते कहै दोय च्यार जणां नैं पूछ सूं तथा आगला गुरु नैं पूछ सूं । ते कहसी तौ गुरु कर सूं । जब जांणणी इण रै स्रद्धा पक्की बैठी नहीं ।—भि.द्र.
३ शिक्षित, नियंत्रित । उ०—तांहरा नरबदजी वैहलिया २ मोल लिया । सो वैहल जोड़ नै नित फेरै, भूंय चाढै । रातिब दै । यूं करतां तीस कोस जाय अर पाछा आवै । इसी भूंय चाढिया तांहरां जाणियौ हमैं पक्का हुआ ।—नैणसी
४ जो प्रौढता को प्राप्त हो गया हो, जिसमें हीर पड़ गई हो, परिपुष्ट ।
ज्यूं—पक्की लकड़ी ।
५ जो आंच पाकर कड़ा और लाल हो गया ।
ज्यूं—पक्की ईंट, पक्की मटकी, पक्कौ माटौ, पक्कौ हांडी ।
६ कुशल निपुण, अनुभवप्राप्त दक्ष, निष्णात ।
मुहा०—पक्कौ पीर—पूर्ण अनुभवी ।
७ आंच पर गलाया या नरम किया गया हो, सीझ चुका हो, पूर्ण रूप से पकाया हुआ ।
८ जिसके विरुद्ध कहा न जा सके, अखण्डनीय, अकाट्य ।
उ०—तीरां री भाथड़ी पूठै बांध जुध कियां जीतै, ज्यूं भेख धारयां सूं चरचा करणी तौ पक्का जाब सीखनै करणौ, कच्चा जाब सूं न करणौ ।—भी.द्र.
९ जिसका मान प्रामाणिक हो, टकसाली ।
ज्यूं—पक्को मण, पक्कौ सेर ।
१० जिसमें सुरखी, चूने आदि का उपयोग हो, ईंट या पत्थर का बना हुआ भवन (भवन)
उ०—वौ बैठो-बैठो मन में मंनसूबा बांधण लागौ कै घरे जातां ही

अेक पक्की हवेली चुणावूंला।—फुलवाड़ी
११ उबाला हुआ, औटाया हुआ (पानी)
१२ स्थिर, दृढ़, टिकाऊ।
ज्यूं०—पक्को रंग।
१३ जिसमें खालिस सोना या चांदी का तार लगा हो, जो नकली न हो।
ज्यूं—पक्को कांम।
१४ न टलने वाला, निश्चित, अटल।
ज्यूं—पक्की वात, पक्को मौरत।
उ०—१ थूं घी न लावै तौ ई म्हैं थारो की विगाड़ नी करूंला। म्हैं थनै पक्को वचन दूं हूं।—फुलवाड़ी
उ०—२ उण रा सगरा डील में गुळी री एड़ी पक्को रंग बैठो जको कदै ई मगसो नीं पड़ सकै।—फुलवाड़ी
१५ ब्राह्मणों द्वारा परिभाषित विशिष्ट भोजन।
ज्यूं—पक्को भोजन, पक्की रसोई।
वि०वि०—इस प्रकार के भोजन में घी की प्रधानता होती है और भोज्य पदार्थों को घी में तल कर उनमें से पानी का अंश समाप्त कर दिया जाता है। अतः जहां पानी की मात्रा गौण हो जाती है और घी की प्रधानता हो जाती है वह पक्का भोजन होता है।
१६ प्रामाणिक सनद।
ज्यूं—पक्को पट्टौ, पक्की चिट्ठी, पक्की रसीद।
१७ देखो 'पाकौ' (रू.भे.)
रू०मे०—पको।
अल्पा०—पकोड़ौ।

पक्कोपईसौ-सं०पु०—मोटे आकार का तांबे का वजनी पैसा जो पहले तोलने के काम आता था।
वि०वि०—इस पैसे का वजन डेढ तोले से अधिक व दो तोले से कुछ कम होता था।

पक्ख—देखो 'पक्ष' (रू.भे.)
उ०—१ पित-मात तारण पक्ख। सिणगार तेरह सक्ख।
—वचनिका
उ०—२ बिहूं पक्ख ऊजळौ, कमळि निकळंक कळानिधि। मांण महातम मरट, अगड सूरातन अव्वधि।—गु.रू.बं.
उ०—३ दिखणाधी की फतै पंच, खट पक्खां मांही।
—गु.रू.बं.

पक्खर—देखो 'पाखर' (रू.भे.)
उ०—है थाट समंद जांण हिलोळ, पमंगां हमस पक्खर रोळ।
—गु.रू.बं.

पक्खरणौ, पक्खरबौ—देखो 'पाखरणौ, पाखरबौ' (रू.भे.)
उ०—गजसिंघ लियण जाळोर गढ़। चढ़ियौ हयि गयि पक्खरै।
—गु.रू.बं.
पक्खरणहार, हारौ (हारी), पक्खरणियौ—वि०।
पक्खरिओड़ौ, पक्खरियोड़ौ, पक्खरचोड़ौ—भू०का०कृ०।
पक्खरीजणौ, पक्खरीजबौ—कर्म वा०।

पक्खराळ—देखो 'पखराळ' (रू.भे.)
२ देखो 'पाखर' (मह०, रू.भे.)

पक्खराळौ—देखो 'पखराळ' (अल्पा०, रू.भे.)
उ०—पड़ै पखराळा, तड़फ्फै उताळा। जळां तोछ जेहां, ओपै मच्छ एहा।—सू.प्र.
२ देखो 'पाखर' (अल्पा., रू.भे.)
(स्त्री० पखराळी)

पक्खरिय—देखो 'पाखर' (रू.भे.)
उ०—तरणातप टोप बगत्तरयं। प्रतबंब चमंकत पक्खरियं।
—रा.रू.

पक्खरियोड़ौ—देखो 'पाखरियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० पक्खरियोड़ी)

पक्खरी—देखो 'पाखर' (अल्पा०, रू.भे.)
उ०—असवारी ऊपरि चढिया, परिप्रीछक पुंतार। सुंढा सोविन पक्खरी, करिवर अंकुस सार।—मा.कां.प्र.

पक्खरेत, पक्खरैत—देखो 'पखरैत' (रू.भे.)

पक्खी-सं०स्त्री० [सं० पक्ष+रा.प्र.ई] १ मृत व्यक्ति के मृत्यु दिन से पन्द्रह दिन तक एक ब्राह्मण नित्य जिमाने की प्रथा (कायस्थ)
२ देखो 'पक्षी' (रू.भे.)
३ देखो 'पखी' (रू.भे.)
वि०—सहायक, मददगार।
उ०—चढ्यौ पीरखांने वाज लक्खी। जिणूं के रहै पीर चौवीस पक्खी।—ला.रा.

पक्खै—देखो 'पखै' (रू.भे.)
उ०—पखै इंद आवध्ध, कमण झेलै कर वज्जर। पक्खै खाटंगधर, जरै कुण खारो जैहर।—गु.रू.बं.

पक्वांन, पक्वांनु, पक्वांन्न—देखो 'पकवांन' (रू.भे.)
उ०—१ मनसा के पक्वांन सौं, क्यौं पेट भरावै। ज्यौं कहिये त्यौं कीजिये, तब ही बण आवै।—दादूवांणी
उ०—२ माहि साठी चोखानउ वाकु, तीण समारी, नगर मांहि नीवेडी, लाडूआं री तेडी नीपजइं पक्वांनु पणि अति हिं सुवांनु।
—व.स.
उ०—३ फग फगां फीणां दुग्ध वरण दहीथरां, घ्रत वरण घारी सुकुमाळ साकुळी, सेव साकुळी, परीसणहारी नहीं आकुळी, अखंड मांडी सउंतळया सेवच्चां प्रभ्रति पक्वांन्न।—व.स.

पक्ष-सं०पु० [सं० १ किसी वस्तु, भवन, सेना आदि का दायां या बायां भाग, बगल, पार्श्व, ओर, तरफ।
२ हाथी, घोड़ा, ऊंट आदि का दक्षिण पार्श्व या वाम पार्श्व।
३ किसी विषय का कोई अंग, किसी प्रसंग में विचार करने की

भिन्न भिन्न बातों में से कोई एक पहलू।
४ किसी विषय के दो पहलुओं में से कोई एक जिसका खंडन या मंडन किया जाय। विचार करने योग्य विषय की कोई कोटि।
मुहा०—१ पक्ष गिरणौ—युक्तियों द्वारा मत सिद्ध न हो सकना। शास्त्रार्थ या विवाद में पराजय पाना।
२ पक्ष ढीलौ पड़णौ—मत का युक्तियों द्वारा पुष्ट न हो सकना।
३ पक्ष प्रबळ होणौ—मत का युक्तियों द्वारा पुष्ट होना।
४ पक्ष में—मत या बात के प्रमाण में।
५ किसी व्यक्ति या पदार्थ के प्रति किसी की अनुकूलता या समर्थन की स्थिति, वादी या प्रतिवादी के संबंध में अनुकूलता की स्थिति।
मुहा०—१ पक्ष करणौ—तरफदारी करना, झगड़े टंटे में किसी की ओर होना।
२ पक्ष ढीलौ पड़णौ—अपने समर्थकों में शिथिलता आना।
३ पक्ष प्रबळ होणौ—समर्थकों का प्रबल होना।
४ पक्ष में—समर्थन में, अनुकूलता में।
५ पक्ष लेणौ—देखो 'पक्ष करणौ'।
यौ०—पक्षपात।
६ चांद्रमास के दो भागों में से एक।
७ वंश, कुल।
८ निमित्त, लगाव, संबंध।
ज्यूं-औ कांम इण तरै करणौ थारा पक्ष में ठीक नहीं है।
९ वह वस्तु जिसमें साध्य की स्थिति संदिग्ध हो (न्या०)
१० किसी की ओर से लड़ने वालों का दल, सेना, फौज।
११ सहायक, सखा, साथी।
१२ सहायकों, सवर्गों का दल, साथ रहने वालों का दल।
१३ किसी विषय के संबंध में भिन्न भिन्न मत रखने वालों का विशिष्ट वर्ग या दल, वादियों या प्रतिवादियों का दल।
१४ पंख, पर, डैना।
१५ बाण में लगा पर या पंख।
१६ शरीर का दायां या बायां भाग, शरीर के एक ओर का भाग।
यौ०—पक्ष घात।
१७ मदद, सहायता। उ०—राव स्त्री जैतसिहजी राज कियौ। स्त्री भगवती, माताजी 'करणीजी' वडी पक्ष राखी।
—ठाकुर जैतसी राठौड़ री वारता
१८ पक्षी।
१९ परिस्थिति, हालत, अवस्था।
२० घोड़ा, अश्व।
२१ राजा की सवारी का हाथी, हाथी।
२२ दो की संख्या* (डि.को.)
रू०भे०—पंखिओ, पक्ख, पखउ, पखत, पखि, पखी, पखौ, पख्ख, पच्छ, पाख, पाखौ।
अल्पा०—पखड़ौ।
पक्षता-सं०स्त्री० [सं०] तरफदारी, पक्षपात।
पक्ष-धर-सं०पु० [सं० पक्षधरः या पक्षधर] १ चन्द्रमा, चांद (डि.को.)
२ पक्षपाती।
३ पक्षी।
वि०—किसी भी पक्ष में रहने वाला, पक्ष विशेष में रहने वाला।
पक्षपात-सं०पु० [सं०] न्याय अन्याय का विचार त्याग कर किसी का पक्ष ग्रहण करना, तरफदारी। उ०—पक्षपात विन महा प्रतापी, निरभय तेज उनंगी।—ऊ.का.
रू०भे०—पखपात, पखापखि, पखापखी, पखायत।
पक्षपाती-वि० [सं०] न्यायान्याय का विचार किए बिना ही किसी की तरफदारी करने वाला, तरफदार।
रू०भे०—पक्षपाती।
पक्षवरद्धिनी-सं०स्त्री० [सं० पक्षवर्द्धिनी] सूर्योदय से लेकर अगले सूर्योदय तक रहने वाली द्वादशी।
पक्षघात-सं०पु० [सं०] एक प्रकार का वात रोग जिससे शरीर का बायां या दाहिना पार्श्व क्रियाहीन हो जाता है, फालिज।
उ०—बुरहांनपुर हाडा राव 'रतन' री हवेली कनै डेरा हुवा। वडा जैसिंघजी रै मास दोय असमाध रही, पक्षाघात हुवौ।
—बां.दा.ख्यात
रू०भे०—पखघात, पखाघात, पख्याघात, पख्वाघात।
पक्षितीरथ-सं०पु०यौ० [सं० पक्षितीर्थ] दक्षिण भारत का एक तीर्थ।
पक्षिराज-सं०पु० [सं०] १ पक्षियों का राजा, गरुड़।
२ जटायु।
रू०भे०—पंखराउ, पंखराऊ, पंखराज, पंखराय, पंखराव, पंखांराउ, पंखांराज, पंखांराव, पंखीराव, पक्षीराज, पच्छीराज।
पक्षी-वि० [सं० पक्षिन्] १ परों वाला, पंखों वाला।
२ पक्षों से सम्पन्न।
सं०पु०—१ पंखों के बल उड़ने वाला प्राणी, चिड़ियादि।
पर्या०—अंडज, कळकंठी, खग, तरसंग, पतंग, पतत्री, पत्र-रथ, पत्री, पद-दरप, विहंगम, सकुनी, सजव, हरिवती।
२ मध्य ह्रस्व की पांच मात्रा का नाम ऽ।ऽ (डि.को.)
रू०भे०—पंख, पंखि, पंखी, पंची, पंछि, पंछी, पक्खी, पच्छी, पछि, पछी।
अल्पा०—पंखिओ, पंखियौ, पंखीओ, पंखीड़ौ, पंखीयौ, पंखेरुओ, पंखेरू, पंखेरुओ, पंखेरुवौ, पंछियौ, पंछीड़ौ।
मह०—पंखांण, पंखाळ, पंखाळौ, पंखीड़, पंखीस, पंखेसर।
पक्षीराज—देखो 'पक्षिराज' (रू.भे.)
पखंड—देखो 'पाखंड' (रू.भे.)
पखंडी—देखो 'पाखंडी' (रू.भे.)
पख—देखो 'पक्ष' (रू.भे.)

उ०—१ गुण गंध ग्रहित गिळि गरळ उगळित, पवण वाद ए उभय पख। स्रीखंड सैल संयोग संयोगिणि, भणि विरहिणि भुयंग मुख।
—वेलि

उ०—२ गोपाळ रौ पख ले'र एक जणौ बोलियौ। मालकां कैई रौ पखमौ नहीं गुमावणौ।—वरसगांठ

उ०—३ पाळै पख बार किता पहलाज। किया सुख सेवग सारण काज।—ह.र.

उ०—४ रितु किहि दिवस सरस राति किहि सरस, किहि रस संध्या सुकवि कहंति। बे-पख सूपति बिहूं मास बे, वसंत ताइ सारिखौ वहंति।—वेलि

उ०—५ जे दोही पख ऊजळा, जूझण पूरा जोध। सुणतां वै मड़ सौ गुणा, बीर प्रकासण बोध।—वी.स.

उ०—६ देवकी'र वसुदेव, पख ऊजळ माता पिता। जिण कुळ जनम अजेय, सो किम विसरयौ सांवरा।—रांमनाथ कवियौ

उ०—७ उर दोनूं पख आंणिया, सांई एकण सत्थ। 'अवरंग' नू उवेळणौ, हिंदवांणां ग्रह हत्थ।—रा.रू.

उ०—८ पढ़ै अपढ़ै सारसा, जो नहि आतम लक्ख। सिल कोरी सादी 'अखा', दोनां हि डूबण पक्ख।—पखौ

पखग्रंधियार—देखो 'ग्रंधारोपख' (रू.भे.)

उ०—मास मिगसर द्वादसी, इळ पुड़ पखग्रंधियार। जुड़ियौ गुण-चाळै 'जगौ', अजमल छळै उदार।—रा.रू.

पखइ, पखई—देखो 'पखै' (रू.भे.)

उ०—१ चढिया जाइ पन्नंग कोप चढि, रोस सरोस थरकिया रोम। पावक धूंवइ पखइ परजळियउ, विकटी जटा विलागी वोम।
—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ भाद्रवडइ भागी मणा, उतपति अन्न सगाळ। कांम-कंदळा ! तू पखई, माहरइ देहर दुकाळ।—मा.कां.प्र.

पखउ—१ देखो 'पक्ष' (रू.भे.)

उ०—एक पखउ मइ तौ जांणियौ जो, स्वांमि सेवक व्यवहार। धवलड़ी दूध जिम देखि नै जी, हूं रच्यौ सरळ अनुहार।
—वि.कु.

२ देखो पखै' (रू.भे.)

उ०—१ भागीरथ भजि-रे भौळी चक्रवत, आगा लगइ जोवतां अथाह। संकर देव पखउ कुण साहइ, पडती गंग तणा प्रवाह।
—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ संकर देव भटखउ कुण साहइ, पडती गंग तणा भट पंख।
—महादेव पारवती री वेलि

पखक्रस्न—देखो क्रसणपख' (रू.भे.)

उ०—अरक दिखण मग अयन, मास अगटन गुण मंडत। क्रत-मंगळ पखक्रस्न, उदय आणंद अखंडत।—रा.रू.

पखघात—देखो 'पक्षाघात' (रू.भे.)

पखणपती—सं०पु०यौ० [सं० पक्षिपति] गरुड़।

उ०—गजराज धनुख महुरा गरळ, पखण-पती ते लोक पत। सुर नर सुरेस रव ब्रम सिव निध, विलसे मोताव......नित।—अज्ञात

पखतरणि—सं०पु०यौ० [सं० पक्ष+तरणि] शुक्ल पक्ष।

उ०—तिथ तेरस पख-तरणि, वार सुभ करण चंद्रवर। एकादस ग्रह अरक, लगन कन्या लाभंकर।—रा.रू.

पखतूट—सं०पु० [सं० पक्ष=त्रुटित] रचना में अनुप्रासों की कहीं बाहुल्यता तथा कहीं न्यूनता से होने वाला काव्य संबंधी एक दोष।

उ०—तवै दोख पखतूट, जोड़ पतळी अरु जालम।—र.रू.

पखनी—सं०स्त्री० [सं० पक्षिणी] रात्रि, निशा (अ.मा.)

पखपाड़ौ—सं०पु० [सं० पक्ष+पत्] हीरे की विकृति जिसमें हीरे का मूल्य घट जाता है।

उ०—साच सब हीरा खरा, राखै विरळा कोय। पखपाड़ा लागै नहीं, सो फिर हीरा होय।—ह.पु.वा.

पखपात—देखो 'पक्षपात' (रू.भे.)

उ०—गोधूळक वेळा हुई। हीरू लिखमीजी रौ पूजन करण वैठी कयौ—मा ! तूं मा हो'र पखपात कियां करण लागगी ?
—वरसगांठ

पखपाती—देखो 'पक्षपाती' (रू.भे.)

उ०—कुगुरां रा पखपाती नै साधु सुहावै नहीं।—भि.द्र.

पखर—देखो 'पाखर' (रू.भे.)

उ०—झळहळ पखर सिलह अत्र झालै, हय असवार दोय लख हालै।
—सू.प्र.

पखरणौ, पखरबौ—देखो 'पाखरणौ, पाखरबौ' (रू.भे.)

उ०—रह सज्जिय गय गुडिय तुरिय पखरिय पलांणिये।
—अभयतिक यती

पखरणहार, हारौ (हारी), पखरणियौ—वि०।

पखरिग्रोड़ौ, पखरियोड़ौ, पखरचोड़ौ—भू०का०कृ०।

पखरीजणौ, पखरीजबौ—कर्म वा०।

पखरांण—देखो 'पाखर' (मह., रू.भे.)

उ०—१ सिलहांण अंगांण वेधांण सरां। पखरांण केकांण अभीच परां।—सू प्र.

उ०—२ घमंख पखरांण नीसांण वज घूमरां, परी थाक थकत होय अग पडै पास।—गु.रू.बं.

पखराड़णौ, पखराड़बौ—देखो 'पखराणौ, पखराबौ' (रू.भे.)

पखराड़णहार, हारौ (हारी), पखराड़णियौ—वि०।

पखराड़िग्रोड़ौ, पखराड़ियोड़ौ, पखराड़चोड़ौ—भू०का०कृ०।

पखराड़ीजणौ, पखराड़ीजबौ—कर्म वा०।

पखराड़ियोड़ौ—देखो 'पखरायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० पखराड़ियोड़ी)

पखराणौ, पखराबौ—क्रि०स० [पाखरणौ क्रि० का प्रे०रू०] हाथी घोड़े

आदि को झूल या कवच से सुसज्जित करवाना ।

पखराणहार, हारौ (हारी), पखराणियौ--वि० ।

पखरायोड़ौ--भू०का०कृ० ।

पखराईजणौ, पखराईजबौ--कर्म वा० ।

पखराड़णौ, पखराड़बौ, पखरावणौ, पखराववौ--रू०भे० ।

पखरायोड़ौ-भू०का०कृ०—(हाथी, घोड़े आदि) झूल या कवच से सुसज्जित करवाए हुए ।

(स्त्री० पखरायोड़ी)

पखराळ-स०पु० [सं० प्रखरः = प्रा. प्रक्खर = पाखर+आलुच्]

१ पाखर से सुसज्जित घोड़ा या हाथी ।

२ घोड़ा । उ०—१ हले पखराळन पंच हजार ।—वं.भा.

उ०—२ सझिया पखराळ सजावट का, नखरा कुलटा कि बटा नट का ।—मे.म.

रू०भे०—पक्खराळ ।

अल्पा०—पक्खराळौ ।

३ देखो 'पाखर' (मह.,रू.भे.)

उ०—अह-अह बाहर बाज अंबाळ, पमंगां पीठ मंडे पखराळ ।

—गो.रू.

पखराळौ-वि० [सं० प्रखर प्रा.=प्रक्खर=पाखर] (स्त्री० पखराळी)

१ पाखर सम्बन्धी । २ पाखरयुक्त, पाखर सहित ।

उ०—१ आखत पग ऊठतां पूठ साखत पखराळौ। काच हुलम कोमाच नाच पातर नखराळौ ।—मे.म.

उ०—२ साभंदा हुय आतसां, दुहुं दळ दुरदाळा । दहूं दळां हुय साभंदा, पमंगां पखराळा ।—सू.प्र.

२ देखो 'पखराळ' (अल्पा;रू.भे.)

पखराय—देखो 'पक्षिराज' (रू.भे.)

पखरावणौ, पखराववौ—देखो 'पखराणौ, पखराबौ' (रू.भे.)

उ०—मलुखांनि हाथी पखराव्या, पल्लांणाव्या तोखार । हल हल करी भणी अजूयाळां, सांचरिया असवार ।—कां.दे.प्र.

पखरावणहार, हारौ (हारी), पखरावणियौ—वि० ।

पखराविओड़ौ, पखरावियोड़ौ, पखराव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

पखरावीजणौ, पखरावीजबौ—कर्म वा० ।

पखरावियोड़ौ—देखो 'पखरायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० पखरावियोड़ी)

पखरियोड़ौ—देखो 'पाखरियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० पखरियोड़ी)

पखरेत, पखरैत-वि० [सं० प्रखरः, प्रा० पक्खर=कवच+रा.प्र. एत या ऐत अथवा प्रखरेतस्] पाखर से सुसज्जित, कवचधारी ।

उ०—जळधार अग्राज चढि घोम जोर । घण-निसा अमावस तिमर घोर । पखरैत भिड़ज जरदैत पूर । संघार हुवै अणपार सूर ।

—सू.प्र.

सं०पु०—१ योद्धा, वीर, सामन्त । उ०—१ जठै गजारूढ चालुक्य-राज सांमुहौ पकाय अलाव पकतां लोयणां मिळाय आपरा पखरैतां नूं प्रेरणा रै काज अनेक प्रसंसा रा प्रपंच भणियौ ।—वं.भा.

उ०—२ अर पाछै सूं आप भी पांच हजार ५००० पखरैतां रै साथ अरबुदळ पूगण री प्रस्थान करियौ ।—वं.भा.

२ घोड़ा । उ०—जिस वखत छतीसवंस राजकुळ उमराव सिलह आवधां सूं कड़ाजूड़ होयके पखरैतूं चढि आए, दळां का पारंभ समंद सा दरसाए ।—सू.प्र.

रू०भे०—पाखरेत, पाखरैत ।

पखवाड़ौ, पखवारौ-सं०पु० [सं० पक्ष+पाटकः, प्रा० पक्ख+वाड]

१ चान्द्र मास का एक पक्ष ।

२ पन्द्रह दिन का समय । उ०—१ सजन फळजो फूल ज्यूं, वाड़ जिम विस्तरजो । मासां पखवाड़ां मिळै, इणहिज रंग रहिजो ।

—जलाल बूबना री वात

उ०—२ उणरी माजनी पाहती वा कह्यौ—हें ओ, थांनै थोड़ी घणी सरम को आवै नीं ? थांरा सुमरीजी नै चलियां पूरौ पखवाड़ौ ई नीं बीत्यौ अर थें ढोली री गळाई रागां करौ ।—फुलवाड़ी

पखवासउ-सं०पु० [सं० पक्ष+वासः] पक्षपर्यन्त का समय, पन्द्रह दिन का समय । उ०—तप नइ अधिकारइ पखवासउ तप सार । पड़िवा थी लीजइ पनरह तिथि सुविचार ।—स.कु.

पखांण-वि० पखांणा—देखो 'पासांण' (रू.भे.)

उ०—१ मगज करता जिके चत्रांमां मंडांणा । वैरहर पखांणां बीच वसिया ।—नाथौ बारहठ

उ०—२ जरद लाल सेत स्याह, जालियां पखांण ए ।--गु.रू.वं.

पखांणभेद—देखो 'पासांणभेद' (रू.भे.)

पखांणौ—देखो 'पासांणौ' (रू.भे.)

पखा-क्रि०वि० [सं० पक्ष] ओर, तरफ । उ०—१ बि पखा अहरपुरस सांचरिया, क्षेत्र मूडाविउं । विहुं गमी सन्नद्ध बद्ध नीपना ।

—व.स.

उ०—२ विहु पखा हाकि-हाकि, हिणि-हिणि, मारि-मारि नाठउ-नाठउ, भागउ-भागउ, इणि परि सुभट सब्द नीपजावइं ।—व.स.

पखाउज—देखो 'पखावज' (रू.भे.)

पखाउजकार, पखाउजिय, पखाउजी-वि० [सं० पक्ष+वाद्य+कार]

पखावज बजाने वाला । उ०—१ आल विणिकार अलविकार कूट-कार वंसकार यंत्रकार उलकार तलकार ताळाकार भुंगळकार आउज-कार पखाउजकार गीतकार ।—व.स.

सं०पु०—पखावज बजाने वाली जाति का व्यक्ति ।

उ०—१ आल वणिकार वीणाकार वंसकार उतिकार मांन-ताळकार अडाउजिय पखाउजिय पाटलिहिक प्रमुख ।—व.स.

उ०—२ आल विणिकार वीणाकार वंसकार आउज्जी पखाउजी ।

—व.स.

पखाघात—देखो 'पक्षाघात' (रू.भे.)

पखाचळ-वि० [सं० पक्ष+अचल] पक्ष को अचल करने वाला, पक्ष को दृढ़ करने वाला।

पखापखि, पखापखी—देखो 'पक्षपात' (रू.भे.)

उ०—१ पखापखी मन छाडिए, निरपख होय सुख देख। निरपख सूं निरपख मिळै, तौ पूरण ब्रह्म अलेख।—ह.पु.वा.

उ०—२ दादू पखापखी संसार सब, निरपख विरळा कोइ। सोई निरपख होइगा, जाकै नांम निरंजन होइ।—दादूवांणी

पखाग्रत-वि० [सं० पक्ष+रा.प्र. आयत] पक्ष करने या लेने वाला, पक्षपाती। उ०—मांस मंजारु नूं मुर्दे, वंदर भरोसै वाग। पंच पखायत घरपिया, ओगुण करै अथाग।—अज्ञात

पखारणौ, पखारबौ—देखो 'पखाळणौ, पखाळबौ' (रू.भे.)

पखारणहार, हारौ (हारी), पखारणियौ—वि०।

पखारिग्रोड़ौ, पखारियोड़ौ, पखारयोड़ौ—भू०का०कृ०।

पखारीजणौ, पखारीजबौ—कर्म वा०।

पखारियोड़ौ—देखो 'पखाळियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० पखारियोड़ी)

पखाळ-सं०पु० [सं० प्रक्षालनम्] १ विरेचन, जुलाब।

क्रि०प्र०—दैणौ, लागणौ, लैणौ।

२ स्नान ? उ०—संध्या वांदी विधिकरी, संकर करीउ पखाळ। तिहां तपीउ को तप तपइ, ते बोलउ ततकाळ।—मा.कां.प्र.

पखाल-सं०स्त्री० [सं० पय=पानी=प+राज० खाल] चमड़े का बना एक प्रकार का दो छेद या मुंह का बड़ा थैला (मदक) जिसको प्राय: ऊंट या भैंसे पर लाद कर पानी ढोते हैं।

उ०—पखालां भरै जम्म भैंसा स-प्रजै। सुरां-राव सिवको छड़वकाव साजै।—सू.प्र.

रू०भे०—वखाल।

अल्पा०—पखाली।

पखाळणौ, पखाळबौ-क्रि०स० [सं० प्रक्षालनम्] धोकर साफ करना, धोना। उ०—१ वडी तो आया जी ल्होड़ी के प्यारा पांमणा, चोकी तो चावळां जी वडी जी थांनै बैसांणं। दूध पखाळां पांव।—लो.गी.

उ०—२ तो सुरसरी तरंग, कूंचो सरग कपाट री। एथ पखाळै अंग, जग में धिन मांनव जिके।—बां.दा.

पखाळणहार, हारौ (हारी), पखाळणियौ—वि०।

पखळाणौ, पखलावौ, पखळावणौ, पखळावबौ—प्रे०रू०।

पखाळिग्रोड़ौ, पखाळियोड़ौ, पखाळ्योड़ौ—भू०का०कृ०।

पखाळीजणौ, पखाळीजबौ—कर्म वा०।

पखारणौ, पखारबौ, पखोळणौ, पखोळबौ, पाखळणौ, पाखळबौ —रू०भे०।

पखाळद-सं०स्त्री०—विचार-विमर्श ?

उ०—१ तरै वरसात रा दिन था। काचै खड़ै पखाळद थकी राव चीरोद री पाखती थौ।—नैणसी

उ०—२ खंगार पण मोटौ हुवौ। वरस २० तथा २२ मांहै हुवौ। साहुवी संभाही। तरै साथ करनै रावळ नै यां विचै सीप नदी छै, तठै आयौ। पैली कांनी सूं रावळ मांणस हजार सात-आठ सूं आयौ। हजार आठ-नवां सूं खंगार आयौ। पखाळद हुई। नैड़ा आया।—नैणसी

पखाळियोड़ौ-भू०का०कृ०—धोया हुआ, साफ किया हुआ।

(स्त्री० पखाळियोड़ी)

पखालियौ—देखो 'पखाली' (अल्पा०, रू.भे.)

पखाली-सं०पु० —१ पखाल से पानी ढोने वाला व्यक्ति। भिश्ती।

(स्त्री० पखालण)

२ वह पशु (ऊंट, भैंसा आदि) जिस पर पखाल लाद कर पानी ढोते हैं।

अल्पा०—पखालियौ।

३ देखो 'पखाल' (अल्पा०, रू.भे.)

पखावज-सं०पु० [सं० पक्ष+वाद्य] मृदंग से कुछ छोटा एक वाद्य यंत्र।

उ०—सांवरियौ रंग राचां राणा, सांवरियौ रंग राचां। ताल पखावज मिरदंग वाजा, साधां आगै नाचां।—मीरां

रू०भे०—पखाउज।

पखावजी-सं०पु० [सं०पक्षवाद्य, प्रा. पक्खवाउज्ज+रा.प्र.ई] पखावज बजाने वाला व्यक्ति।

रू०भे०—पखाउजिय, पखाउजी।

पखि, पखी-वि० [सं० पक्ष+रा.प्र.ई] १ मित्र, हितैषी, शुभेच्छु।

उ०—अरि जाळंधर आवियो, मिळिया खळ अण-दाद। पखि गुण हीण निरासपण, हितू अरज्जण आद।—रा.रू.

२ रक्षक, रक्षा करने वाला।

उ०—विरदाळौ जी विरदाळौ, दुज गाय पखी विरदाळौ। सीता चौ सांम सिघाळौ, पोह सेवगरां व्रतपाळौ। जी विरदाळौ।—र.ज.प्र.

३ पक्ष करने वाला, पक्षपात करने वाला, पक्षपाती।

उ०—पंच सोइ न हुवै पखी, मड़ सोइ जुध अभीत। न्याय पखां नह नीवड़ै, रसा अनादी रीत।—अज्ञात

सं०पु०—ओर, तरफ। उ०—१ चडी त्रिकळसइ सांतळ वइसइ, बिहूं पखि चांमर ढळइ।—कां.दे.प्र.

उ०—२ चांमर विजन बिहूं पखि हूइ छइ।—कां.दे.प्र.

२ बगल, पार्श्व। उ०—स्रियजीत-पति गुण परखि, चखि सुख सकस पखि जिम सुंदरी।—रा.रू.

३ बढई का एक ग्रौजार।

४ देखो 'पक्ष' (रू.भे.)

उ०—पखि प्रकासि 'फिरमास, उभैगुण भेद अनुक्रम। पंच मास खट मास, तेज जस-वास वर्ष तिम।—रा.रू.

पखीइं, पखीइ—देखो 'पखै' (रू.भे.)

उ०—फळ पाखइ नवि भंजीइ व्रक्ष, विनय पाखइ नवि भंजीइ सिस्य। लावण्य पखीइ नवि भजीइ रूप, जळ पाखइ नवि भजीइ कूप।—नळ-दवदंती रास

पखीणौ-वि० [सं० पक्षिन्] (स्त्री० पखीणी) पक्ष का, पक्ष सम्बन्धी।

उ०—एक पखीणौ अंग, प्रीत कियां पछताइये। दीपक देखि पतंग, जळ-बळ राख हुए 'जसा'।—जसराज

पखू-वि० [सं० पक्ष+रा.प्र.ऊ] पक्ष ग्रहण करने वाला, सहायक।

उ०—आतपत्र खोस आरूढ़ कीधौ उठै, जत्र-कत्र कियौ खळ जगत जांणी। तैं जणणी उबारचौ पड़चौ कस्ट तत्र-तत्र, रहै पखू जैत रै राजराणी।—बालाबख्स बारहठ

पखे-क्रि०वि० [सं० पक्ष] १ ओर, तरफ।

उ०—चिहू पखे परिअचि अति भली, धूपघटी चिहू पासे वली। मंच महामंच कीधा घणा, पार न पांमइ कोइ तेह तणा।

—नळ-दवदंती रास

२ देखो 'पखै' (रू.भे.)

पखैं, पखै-क्रि०वि० [सं० पक्षास्मिन्=अप० पक्खहि] १ अभाव में, विना।

उ०—१ रुख-रुख तीरां रूकड़ां, मुख-मुख बीरां मौळ। पूंचाळा हेकण पखै, दळ में प्रबळ दरोळ।—वी.स.

उ०—२ दाता पातां रसण सूं, सुण-सुण सुजस जीवंत। पातां नूं पायां पखै, पांणी ही न पीवंत।—वां.दा.

२ सिवा, अतिरिक्त।

उ०—१ गजसिंघ कियौ गज-गाहणौ, 'भीम' मारि भागौ 'खुरम'। कमधज्ज पखै जीतौ कमण, साजै नांम संग्रांम इम।

—गु.रू.बं.

उ०—२ सांस छतै जीवे सकळ, ऊमर रै आधार। जस सूं जीवे जगत में, सांस पखै सुदतार।—वां.दा.

उ०—३ तो पखै बीजी ठाकुर को नहीं छै। ठाकुर देस मांहे बीजा ही घणा छै।—द.वि.

रू०भे०—पखइं, पखइ, पाखइं, पाखइ, पखे, पखौ, पाखै।

पखैत-वि० [सं० पक्ष+रा.प्र. ऐत] पक्ष वाला।

उ०—धुजा फरक्की धूहड़ां, बहरक्की गजबोह। वसु थरक्का कावळी, मुरधर छक्की मोह। मुरधर छक्की मोह, पांण 'परताप' रै। ओछं दुगा आथांण, खळी वळ खापरै। ज्यांरा सोवन थाळ, भलांई धज्जिया। 'पातल' जनम पखैत, सूमीरत सज्जिया।

—किसोरदांन बारहठ

पखैवार-वि०—असीम, अपार।

उ०—पखैवार पिंडार था दोहूं पासै, लियां लकड़ी कंध ऊभा हुलासै।—ना.द.

पखोळणौ, पखोळबौ—देखो 'पखाळणौ, पखाळबौ' (रू.भे.)

उ०—वही तो आया जी हरीड़ी के प्यारा पांवणा, चौकी तो चावळ जी पांनै बैठावां। दूध पखोळां ला पांव वडी तो।

—लो.गी.

पखोळणहार, हारौ (हारी), पखोळणियौ—वि०।

पखोळाणौ, पखोळाबौ, पखोळावणौ, पखोळावबौ—प्रे०रू०।

पखोळिओड़ौ, पखोळियोड़ौ, पखोळ्योड़ौ—भू०का०कृ०।

पखोळीजणौ, पखोळीजबौ—कर्म वा०।

पखोळियोड़ौ—देखो 'पखाळियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० पखोळियोड़ी)

पखौ—१ देखो 'पक्ष' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—१ निज पातां संतां तारै, घणनांमी, नहच्चौ ज्यां नेड़ौ घणनांमी। निरपखां पखौ घणनांमी, नाथ अनाथां चौ घणनांमी।

—र.ज.प्र.

उ०—२ लिछमीस राम अणभंग लखौ। परमेस पाळ जन दीन पखौ।—र.ज.प्र.

२ देखो 'पगै' (रू.भे.)

उ०—१ मदनो कुंवरजी रा हुकम पखौ हीज भूंजाई रा चाळ, थाळी, भूंजाई री झिणकार, घोड़ौ चहवांण रांमदास ले गयौ।

—द.वि.

उ०—२ ठकुराणिये बीजीये ही फूकी घणीये पीयौ छै। तो पखौ ही मौनूं ओळखसी।—द.वि.

पख्याघात—देखो 'पक्षाघात' (रू.भे)

पख्य—देखो पक्ष' (रू.भे.)

पख्वघात—देखो 'पक्षाघात' (रू.भे)

पग-सं०पु० [सं० पदकः, प्रा० पअक=पअग=पग] वह अवयव या अङ्ग जिस पर स्थित होने पर बदन का सम्पूर्ण वजन रहता है तथा जिसके बल प्राणी चलते-फिरते हैं (ह.नां., अ.मा.)।

उ०—पावस मास प्रगट्टियउ, पगइ विलंबइ गारि। धण की आही वीणती, पावस पंथ निवारि।—ढो.मा.

पर्या०—अंघ्रि, ओयण, कदम, क्रमण, गतिवंत, गमण, चरण, चलण, जोअण, नग।

मुहा०—१ ऊभा पगां—खड़े-खड़े, तुरन्त, शीघ्र।

२ काळौ मूंडौ'र नीला पग—पिंड छुड़ाना, दुर्गति।

३ खाडा में पग पड़णौ—देखो 'पग खाडा में पड़णौ'।

४ खोड़ा में पग पड़णौ—देखो 'पग खोड़ा में पड़णौ'।

५ जमी माथै पग नीं मंडणौ—भूमि पर पद-चिन्ह का अङ्कित न होना, बहुत प्रसन्न होना, हर्षित होना, ऐंठना, गर्व करना।

६ धरती माथै पग नीं टिकणौ—अभिमान के कारण सीधे पैर न रखना, बहुत ऊंचा होकर चलना, आनन्द के मारे उछलना, बहुत होना, इतराना।

७ पग अड़णी—बंधन में फंसना, जाल में आना, कपट में फँसना।

८ पग अड़ाणी—अड़ंगा डालना, बाधा डालना, किसी कार्य में व्यर्थ सम्मिलित होना, व्यर्थ को अड़चन डालना, हस्तक्षेप करना।

९ पग अटकणी—देखो 'पग अड़णी'।

१० पग अटकाणी—देखो 'पग अड़ाणी'।

११ पग आंगणी करणी—अधिक आना-जाना।

१२ पग आडो देणी—बाधा डालना, अड़चन पैदा करना, विघ्न डालना, रोक लगाना।

१३ पग उखड़णा—स्थिर न हो सकना, स्थिर होकर खड़ा न रह सकना, पैर जमे न रहना, पैर हट जाना अपने पद या स्थान से डांवाडोल हो जाना, हट जाना, ठहरने के बल या साहस का न रहना, भागने की स्थिति में आना, पलायन करना, रोजी समाप्त होना।

१४ पग उखाड़णा—पैर जमे न रहने देना, पलायन कराना, किसी बात पर स्थिर न रहने देना, स्थिरता या दृढता का भंग करना।

१५ पग उठाणा—जल्दी जल्दी चलना, शीघ्रतापूर्वक चलना।

१६ पग उतरणी—पैर का संधि-स्थान से सरक जाना।

१७ पग उथल—देखो 'पगां री उथल'।

१८ पग ऊंघीजणी (ऊंघणी)—पैर सुन्न हो जाना, पैर में झुनझुनी होना, पैर झन्ना उठना, स्तब्ध हो जाना।

१९ पग ऊंचो-नीचो पड़णी—गलती करना, भूल करना, पुरुष का पर-स्त्री गमन या स्त्री का पर-पुरुष प्रसंग संबंधी त्रुटि का होना।

२० पग ऊठणा—जल्दी जल्दी पैर अग्रसर रखना, डग भरना, चलने के लिए तेज कदम बढाना, डग आगे रखना, चलना आरंभ करना।

२१ पग कट जाणा, पग कटणा—आना जाना न होना, आने जाने की शक्ति का न रहना, रोजी का छीना जाना, अन्न जल का उठ जाना, रहने या निवास करने के आश्रय का अन्त हो जाना, किसी संरक्षक या पालक का संसार से उठ जाना।

२२ पग कांपणा—देखो 'पग थरथराणा'।

२३ पग काचा—पैर कमजोर, बुजदिल, पस्तहिम्मत, साहस-हीन।

२४ पग काटणा, पग काट देणा—असमर्थ या अयोग्य बना देना, चलने फिरने की शक्ति का न रहने देना, बेकार करना।

२५ पग कादा में पड़णी—देखो 'पग कीचड़ में पड़णी'।

२६ पग कीचड़ में पड़णी—पैर का दलदल में पड़ना, नीच संगत का होना, नीच कर्म में प्रवृत्त होना, संकट में फसना।

२७ पग कूंडाळिये पड़णी—झपट में आना, आकस्मिक रोगग्रस्त होना, संकट में फसना।

२८ पग खाडा में पड़णी—अनुचित कार्य कर बैठना, आपत्ति में पड़ना, किसी अविवाहिता अथवा विधवा का किसी के साथ अनुचित संबंध से गर्भ रह जाना।

२९ पग खोड़ा में आणी (पड़णी)—किसी प्रकार के बंधन या जाल में फंसना, बंधन में आना, कैद होना, पुरुष का विवाहित होकर गृहस्थी का उत्तरदायित्व लेना।

३० पग गडणा—चलते समय पैरों का भूमि में धंसना, भय व आतंक के कारण चलने में असमर्थ होना, घबरा जाना, भयभीत होना, अपने स्थान पर अटल होना, दृढ होना।

३१ पग गाडणी—जम जाना, अटल होना, स्थिर रहना, पलायन न करना।

३२ पग घिसणा—देखो 'पग रगड़ना'।

३३ पग घीसणा—देखो 'पग रगड़ना'।

३४ पगचंपी करणी—पैरों का दबाना, खुशामद करना, चापलूसी करना।

३५ पग चांपणा—देखो 'पगचंपी करणी'।

३६ पग चूंमणा—पैरों का चुम्बन लेना, खुशामद करना, चापलूसी करना।

३७ पग छूटणा—देखो 'पग उखड़णा'।

३८ पग छोडणा—सफलता पर फूला न समाना, घमण्ड करना, मदान्ध होना, मर्यादा का उल्लंघन करना, मर्यादा छोड़ना, स्थिर या दृढ न रहना, पलायन करना, भगना, हिम्मतविहीन होना।

३९ पग जमणा—स्थिर भाव से खड़ा होना, दृढ रहना, हटने या विचलित होने की अवस्था में न होना, संकटकाल में न घबराना, अटल रहना, रोजी लगना।

४० पग जमाणा—दृढतापूर्वक ठहरे रहना, डटा रहना, न हटना, स्थिर हो जाना, अपने ठहरने या रहने का पूर्ण प्रबंध करना, अटल हो जाना, रोजी लगाना।

४१ पग झणणाणा—भय या अन्य कारण से पैरों का सुन्न हो जाना।

४२ पग टिकणा—देखो 'पग जमणा'।

४३ पग टिकाणा—देखो 'पग जमाणा'।

४४ पगटिकाव—आश्रय, सहारा।

४५ पगटिकाव होणी—आश्रय पाना, सहारा मिलना, रोजी में लगना।

४६ पग ठरड़णा—देखो 'पग रगड़णा'।

४७ पग ठं'रणा—पैर जम जाना, पैर न हटना, स्थिर हो जाना, दृढ रहना, ठहरा रहना।

४८ पगठौड़—रहने का स्थान, ठहरने का स्थान, विश्राम का स्थान।

पग डगमगाणा—देखो 'पग डिगमगाणा'।
४६ पग डाळणो—देखो 'पग फसाणो'।
५० पग डिगणो—पैर ठीक स्थान पर न रहना, इधर-उधर हो जाना, विचलित हो जाना, पथभ्रष्ट हो जाना।
५१ पग डिगमगाणा—पैर दृढतापूर्वक न जमना, पैर स्थिर न रहना, पैरों का स्थान पर ठीक न पड़ना, पैरों का इधर-उधर हो जाना, लड़खड़ाना, कर्त्तव्य निभाने में असमर्थ होना।
५२ पग तळै री खिसकणी—ऐसी भयंकर आपत्ति या दुःख जिसे सुन कर घबरा जाना। स्तब्ध-सा हो जाना, होश उड़ जाना, होस-हवास ठिकाने न रहना, सुन्न हो जाना, सन्नाटे में आना, पग टूटणा, चलने में बहुत थक जाना, पैरों में दर्द हो जाना, बहुत दौड़-धूप करना, बहुत हैरान होना, अथाह परिश्रम करना, रोजीहीन होना।
५३ पग तोड़णा—बहुत परिश्रम करना, बहुत दौड़-धूप करना, बहुत चलने की अवस्था में होना, बहुत गतिमान कर थकाना, तेजी से दौड़ना, बहुत दौड़-धूप करना, बेकार करना, असहाय करना, रोजीहीन करना।
५४ पग थरथराणा—भय आशंका, अशक्ति आदि के कारण पैरों का कंपायमान होना, अगवानी रहने या होने की हिम्मत न होना, साहस न होना।
५५ पग दबाणा अथवा दबाणा—थकान मिटाने हेतु जंघा से पंजा-पर्यन्त पैरों का दबाना, दबाव पहुँचाना, खुशामद करना, चापलूसी करना, पांवचंपी करना।
५६ पगदौड़ (करणी)—प्रयत्न करना, कोशिश करना।
५७ पग धरणो—कहीं पर जाना, पैर रखना, स्थान पाना।
५८ पग धूजणा—देखो 'पग थरथराणा'।
५६ पग धोणा (धोवणा)—देखो 'पग पखाळणा'।
६० पग धो'र पीणा—चरणामृत लेना, बड़े आदर भाव से पूजा करना, चापलूसी करना।
६१ पग पकड़णा—भक्ति और श्रद्धापूर्वक नमस्कार करना, बड़ी दीनता प्रकट करना, पैर छूना, अनुनय करना।
६२ पग पखाळणा—पैर धोना, खुशामद करना।
६३ पग-पग—स्थान-स्थान, जगह-जगह, पैदल, तुरन्त, अति शीघ्र, खड़े-खड़े।
६४ पग पड़णो—१ देखो 'पग कूंडाळिये पड़णो'।
२ देखो 'पग खाडा में पड़णो'।
६५ पग पटकणा—अपनी बात सिद्ध करने के लिए रौब दिखाना, जोश प्रकट करना, हट करना, दुराग्रह करना, घोर प्रयत्न करना, हैरान होना, इतराना।
६६ पग पणियारी गाणा—अत्यधिक परिश्रम से थक जाना, थकान के मारे पैर सुन्न हो जाना, पैर झन्नाना।
६७ पग पसारणा—पैरों को फैलाना, आराम के साथ पड़े रहना, या सोना, ठाट-बाट बताना, आडंबर फैलाना, अपना कार्य-भार फैलाना, मर जाना।
६८ पग पाछो दिराणो—किसी स्त्री के पति के मरने के बाद पीहर वालों द्वारा स्त्री को अपने घर लाना।
पग पीटणा—धमकी देना, रौब गालिब करना, जोश बताना।
६६ पगपीटो (करणो)—घोर परिश्रम, अथक परिश्रम, रौब गालिब करना, धमकी, घुड़की, अधिकार जमाना।
७६ पग पूजणा—सेवा-सुश्रूषा करना, श्रद्धा रखना, पैरों की अर्चना करना, बड़ा आदर-सत्कार करना।
७१ पग फसणो—आफत में पड़ना, संकट में आना, बंधन में आना।
७२ पग फसाणो—देखो 'पग अड़ाणो'।
७३ पग फिसळ जाणो—देखो 'पग फिसळणो'।
७४ पग फिसळणो—पैर का जम कर न रहना, रपट जाना, सरक जाना, कर्त्तव्य से च्युत होना।
७५ पग फूंक २ कर देणो—बहुत बचा कर कार्य करना, बहुत विचार कर कार्य करना, कुछ भी करते समय इस बात का पूर्ण ध्यान रखना कि कोई ऐसी बात न हो जाय जिससे कोई हानि या निंदा हो, बहुत सतर्कतापूर्वक चलना।
७६ पग फूलणा—भय या आशंका के कारण पैरों का आगे न बढ सकना, पैर आगे न उठना, पैरों में थकान आना, थकान से पैरों का दुखना, घबरा जाना।
७७ पगफेर, पगफेरो—आवागमन।
७८ पग फैलाणा—पैर पसारना, आडंबर या ठाट का बढाना, आराम से पड़े रहना, सोना, अधिक प्राप्त करने हेतु हाथ बढाना, हठ करना, जिद्द या दुराग्रह करना (बच्चों का) मचलना, मरना।
७६ पग फैला कर सोणो (सोवणो)—निश्चित होकर सोना, आराम से पड़े रहना।
८० पग-बंधण (होणो)—पैरों को बंधना, इधर उधर के आवा-गमन से रुकावट या बाधा होना, उत्तरदायित्वयुक्त होना।
८१ पग बढाणा—बड़े २ कदम भरना, जल्दी जल्दी चलना, अधि-कार बढाना, अतिक्रमण करना।
८२ पगबायरो—देखो 'पगां बायरो'।
८३ पग बारै होणो—व्यभिचारी होना, बदचलन होना।
८४ पगबारोळ—व्यभिचारी, चरित्रहीन, पथभ्रष्ट।
८५ पग बाल होणो—देखो 'पगांबाल होणो'।
८६ पग भारी होणा—गर्भ रहना, हमल होना, पेट होना।
८७ पग भारी होणो—देखो 'पग भारी होणा'।
८८ पग मंडणो—पैर रखने का साहस होना, अटल होना, दृढ होना।

८९ पग मण-मण रा होणा—आकस्मिक दुर्घटना, भय, आशंकादि के कारण चलने में असमर्थ होना, भयभीत होना।

९० पग मांडणा—साहस का होना, अटल रहना, दृढ रहना, विचलित न होना।

९१ पग माथै पग दे'र कराणौ—किसी से जबरदस्ती काम कराना, भय दिखा कर कार्य कराना, रौब गालिब कर काम कराना।

९२ पग माथै पग दे'र लैणौ—किसी को दबा कर या भयभीत कर उसका माल छीनना, बलात् छीन लेना, बलात् लेना, जबरदस्ती से लेना, ब·पूर्वक लेना, रौब गालिब करना।

९३ पग माथै पग दे'र बैठणौ—देखो 'पग माथै पग राख'र बैठणौ'।

९४ पग माथै पग राख'र बैठणौ—काम धंधा छोड़ कर आराम से बैठा रहना, हाथ पैर न हिलाना, परिश्रम न करना, चैन से पड़े रहना।

९५ पग में चकर होणौ—देखो 'पगां में चकर होणौ'।

९६ पग मोकळौ करणौ—केवल जी बहलाने के लिए धीरे-धीरे चलना या घूमना, सैर करना, हवा खाना, मंद गति से टहलना, धीरे-धीरे कदम रखते हुए चलना।

९७ पग रगड़ना—खूब चलना, खूब परिश्रम करना, अधिक दौड़-धूप करना, खूब प्रयत्न करना, बहुत हैरान होना, आवारा फिरना, मारा-मारा फिरना।

९८ पग राखण नै ठिकाणौ होणौ—रहने या रहने का स्थान होना, निवास करने का स्थान होना।

९९ पग राखणौ—पग धरना, किसी के यहाँ जाना।

१०० पगरी उथल—देखो 'पगां री उथल'।

१०१ पग री जूती—नाकुछ, तुच्छ, अत्यंत क्षुद्र, सेवक या दासी।

१०२ पग री जूती माथा में लागणी—छोटे आदमी का बड़े से मुकाबला करना, क्षुद्र या नीच का सिर चढना।

१०३ पग रैंणा—पैरों का अशक्त हो जाना, पैरों का चलने में असमर्थ होना? अधिक चलने की थकान में पैरों का बेकार होना।

१०४ पग रोपणा—अड़ना, अटल रहना, न भगना, पलायन न करना, दृढ रहना।

१०५ पग री खटको—चलने की आहट, चलने पर पैरों से होने वाली आवाज।

१०६ पग लड़खड़ाणा—देखो 'पग थरथराणा'।

१०७ पग लांबा करणा—पैर पसारना, पैरों को फैला कर सोना, अवसान होना, मरना।

१०८ पग लैणा—छोटे बच्चों का पैरों के बल खड़ा होना, बच्चों का पैरों से चलने का अभ्यास होना।

१०९ पग वडो—देखो 'वडो पग'।

११० पग समेटणा—पैर खींच कर मोड़ना जिससे वे दूर तक फैले न रहें, तटस्थ होना, लगाव न रखना, इधर-उधर घूमना छोड़ना।

१११ पग सूजणा—पैरों में सूजन आना, अभिमान आना, गर्व करना, चलने में असमर्थता प्रकट करना।

११२ पगां आणौ—पैदल चलना।
देखो 'बात पगां आणी'।

११३ पगांऊं—पैरों से, पैदल।

११४ पगां करणौ—तैयार करना, योग्य बनाना, साहस बँधाना।

११५ पगांकाचौ—बुजदिल, पस्तहिम्मत, असाहसी (के प्रति)

११६ पगां चलणौ या चालणौ—बच्चे का पैरों के बल चलना, बच्चे का पैरों के बल चलने का अभ्यास होना।
देखो 'पगां हालणौ'।

११७ पगां जनमणौ—प्रसव के समय प्रथम पैरों का बाहर आना।

११८ पगां तळा री जमीं खिसकणी—देखो 'पग तळै री खिसकणी'।

११९ पगां-पगां—ठीक पीछे-पीछे, तुरंत, शीघ्र, पैदल।

१२० पगां पड़णौ—पैरों में शिर रखना, नत मस्तक होना, नम्रता तथा दीनता से विनय करना, अनुनय करना, खुशामद करना।

१२१ पगां पनोती होणी—जन्म या नाम राशि से दूसरी राशि पर शनि का गोचरभ्रमण काल जो शुभ या अशुभ दोनों में से एक रहता है।

१२२ पगां पांण होणौ—अपने पाँवों पर खड़ा होना, अपने बल या सामर्थ्य पर चलना, स्वावलंबी होना।

१२३ पगांबायरो—अविश्वासपात्र, असत्यभाषी, अस्तित्वहीन।

१२४ पगां बाल होणौ—पैरों बहाल होना, खड़ा होना, कार्य हेतु तत्पर होना।

१२५ पगां वेड़ी घालणी—किसी प्रकार के बंधन या जाल में फंसाना, विवाहित कर देना, गृहस्थ के उत्तरदायित्व को देना।

१२६ पगां वेड़ी पड़णी—देखो 'पग खोड़ा में पड़णौ'।

१२७ पगां (पगांऊं) वैंणौ—देखो 'पगां हालणौ'।

१२८ पगां में चकर होणौ—अधिक परिभ्रमण करना, इधर-उधर घूमते रहना।

१२९ पगां में पाणी पड़णौ—अत्यधिक परिश्रम करना, इतनी भागदौड़ करना कि थक जाय, पाँव दर्द करने लगे, थक कर चूर हो जाना।

१३० पगां में वेड़ी पड़णी—तेज न चल सकना।
देखो 'पग खोड़ा में पड़णौ'।

१३१ पगां में माथौ देणौ—पैरों में शिर रखना, नत मस्तक होना, साष्टांग दण्डवत् करना, अत्यंत दीनता से विनय करना।

१३२ पगां में सनोसर होणौ—देखो पगां पनोती होणौ'।

१३३ पगां री उथल—चलते समय पैर रखने का विशेष ढंग या क्रिया जो हृदयस्थ भावों का प्रकाशन करती हो, गति, चाल ।
१३४ पगां री धूड़—देखो 'पगां री रज' ।
१३५ पगां री रज—नाकुछ, तुच्छ, अत्यंत क्षुद्र ।
१३६ पगां रै पांखां आणी—बहुत तेज चलना ।
१३७ पगां रै मैं'दी लागणी—कार्य करने में टालमटोल करना, चलने में आलस्य प्रकट करना ।
१३८ पगां री धोवण (खोळण) पीणो—चरणामृत लेना, बड़े आदर भाव से सत्कार करना, खुशामद करना, चापलूसी करना ।
१३९ पगां सूं बांध्यो हाथां सूं नी छूटणो—अपेक्षाकृत अधिक चतुर, प्रवीण या दक्ष के लिए प्रयोग किया जाता है ।
१४० पगां लागणो—गुरुजनों, ब्राह्मणों, पंडितों आदि का अभिवादन करना, किसी वधू का अपने कुटुम्ब या पास-पड़ोस की वृद्धा के पैर छूकर आशीर्वाद प्राप्त करना, पांव छूना, प्रणाम करना, चरण स्पर्श करना, नमस्कार करना ।
१४१ पगां लगाणो—किसी को मस्तक नत करना, पैर छुआना, चरण स्पर्श कराना ।
१४२ पगां सनैसर होणो—देखो 'पगां पनोती होणी' ।
१४३ पगां सूं—प्रताप से, प्रभाव से, बल से ।
१४४ पगां (पगांऊं) हालणो—नियमपूर्वक चलना, मर्यादा निभाना, उच्छृंखलता छोड़ना, अपव्ययन करना, छोटे बच्चे का पैरों के बल चलना ।
१४५ पगां होणो—पैरों से जन्म लेना, पैरों पर खड़ा होना ।
१४६ पगे-पगे—देखो 'पगां पगां' ।
१४७ पगे पड़णो—देखो 'पगां पड़णो' ।
१४८ पगे रहणो—दृढ़ रहना, अटल रहना, फिसलना नहीं, धोखा न देना, सेवा में रहना, टहल में रहना ।
१४९ पगे हालणो—देखो 'पगां हालणो' ।
१५० फूंक फूंक'र पग देणा—देखो 'पग फूंक फूंक'र रखणा' ।
१५१ बडो पग—संबंधी, रिश्तेदार, या कुटुम्ब के व्यक्ति का आयु में छोटा किन्तु पद में बड़ा होना ।
१५२ भारी पगां होणो—देखो 'पग भारी होणो' ।
१५३ बात पगां (पगे) आणो—निर्णय होना, निश्चय होना, वास्तविकता प्रकट होना ।
२ चलने से भूमि पर अंकित होने वाला पदचिन्ह ।
मुहा०—१ पग खोजणा—भूमि पर अंकित पदचिन्हों की तलाशी करना ।
२ पग जाणा—भूमि पर अंकित पदचिन्हों की गति ।
३ पग टोळणा—भूमि पर अंकित पदचिन्हों का अनुसरण करते हुए चलना ।
४ पग ढकणा या ढाकणा—भूमि पर अंकित पदचिन्हों को जांच हेतु ढक कर रखना ।
५ पग ढूंढणा—देखो 'पग खोजणा' ।
६ पग-पग—अंकित पदचिन्हों का अनुसरण ।
७ पग लेणा—भूमि पर अंकित पदचिन्हों का अनुसरण करते हुए चलना ।
८ पगां-पगां—देखो 'पग-पग' ।
९ पगे-पगे—देखो 'पग-पग' ।
१० पग मिळणा—अंकित पदचिन्हों का पता मिलना ।
रू०भे०—पगि, पग्ग, पाग ।
यौ०—पगचंपी, पगटंडी, पगडांडो, पगदासी, पगपांन, पगपावटी, पगवाव ।
अल्पा०—पगड़ो, पगलड़ो, पगलटो, पगलियो, पगलो, पगल्यो, पगल्लो, पागलियो ।
मह०—पगड़, पघड़, पागड़, पावड़ ।

पगड़—१ देखो 'पग' (मह०, रू.भे.)
२ देखो 'पाग' (मह०, रू.भे.)

पगड़ो—देखो 'पाग' (अल्पा०, रू.भे.)

पगड़ो-सं०पु० [सं० प्रगे+रा.प्र.ड़ो] १ उषाकाल, प्रातःकाल ।
उ०—दीपक रो पण तेज घटण लागो, चिड़ियां चहकण लागी, इण भांत पगड़ो हूण लागो, जठै प्रेम प्रीत रो झगड़ो हूण लागो ।
—र. हमीर
२ चौसर के खेल में प्रारम्भ में गोटी रखने की क्रिया ।
३ देखो 'पागड़ो' (रू.भे.)
उ०—पमंगां धाड पगड़ा वात अे-घड़ा विचारी ।—पा.प्र.
४ देखो 'पग' (अल्पा०, रू.भे.)
रू०भे०—पगड़ो, पुगड़ो, प्रगड्उ ।

पगचंपणी, पगचंपी, पगचांपणी-सं०स्त्री०यौ० [देशज] १ थकावट दूर करने या आराम पहुंचाने हेतु पैर दबाने की क्रिया ।
उ०—नारायण देवां मही, ज्यूं तारायणचंद । कमळा पगचपी करै, 'चंक' संक तज वंद ।—बां.दा.
२ खुशामद ।
क्रि०प्र०—करणी, करवाणी, होणी ।

पगछंटो-वि० (स्त्री० पगछंटी) फुर्तीला, चंचल, तेज ।
उ०—पगछंटा पैरू निसा, घरियां कर घांनंख । रखवाळा मेवास का, एहा भील असंक ।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

पगडंडी, पगडांडो-सं०स्त्री० [सं० पदक+दण्ड] जंगल या मैदान में मनुष्यों के चलने फिरने से बनने वाला पतला मार्ग या रास्ता ।

पगडो—देखो 'पगड़ो' (रू.भे.)

पगणो, पगवो-क्रि०अ०—१ अनुरक्त होना, लीन होना ।
उ०—१ अब नेम लगै इण आतम सौं । तव प्रेम पगै परमातम सौं ।—ऊ.का.

उ०—२ लगोमग मांह जळंघर लीगा, पायौ पुरसारथ मेह प्रवीण। यूंही खट चक्कर भ्रघाव, पछे त्रिपुटी तुरिया पद पाव।
—ऊ.का.

पगणहार, हारौ (हारी), पगणियौ—वि०।

पगवाड़णौ, पगवाड़बौ, पगधाणौ, पगवाबौ, पगवावणौ, पगवाववौ, पगाड़णौ, पगाड़बौ, पगाणौ, पगावौ, पगावणौ, पगाववौ—प्रे०रू०।

पगिग्रोड़ौ, पगियोड़ौ, पग्योड़ौ—भू०का०कृ०।

पगीजणौ, पगीजबौ—भाव वा०।

पगत-वि०—नित्य। उ०—आप पावां पगत वहै इळ ऊपरां। तिका गंगा सकळ जगत तारै।—र रू.

पगतरी-सं०स्त्री० [सं० पदक-तल] जूती।

पगतळ, पगतळो-सं०पु०यौ० [सं० पदक+तल] तलवा, पादतल।

उ०—१ पगतळ थी परठी पछह, रातडी पद्म पराग।
—मा.कां.प्र.

उ०—२ कांटी भाजै पगतळै, ते खटके वारो-वार रे।—वि.कु.

पगतळी—देखो 'पगथळी' (रू भे.)

उ०—कुण्यां के भरमाया ओ चाल्या चाकरी जी म्हारा राज। वा घण देई है सीख मिरगा-नैणी राज। थारी ए लिलाड़ी ए प्यारी की पगतळी जो म्हारा राज।—लो.गी.

पगतियौ, पगत्यौ—देखो 'पगथियौ' (रू.भे.)

पगथळी-सं०स्त्री० [सं० पदक+ताल+रा.प्र.ई] पैर के नीचे का भाग जो चलने या खड़े होने पर भूमि पर टिकता है, पादतल।

उ०—१ बीकांणै मत देई म्हारा बावल, सासरियो ए लोय ए लोय, बीकांणै पांणी बोळो दूर, सासरियो ए लोय ए लोय। ल्यावत घिस गई बाई री पगथळी।—लो गी.

उ०—२ मांडिया सरोज भयंग चइ माथइ, हरणाखी चित लावण हरि। अति रगता विराजइ ऊपर, पगथळियां मीमलइ परि।
—महादेव पारवती री वेलि

रू०भे०—पगतळी।

पगथिग्रो, पगथियो, पगथ्यो-सं०पु० [सं० पदक+स्था] निसेनी, जीना, सीढ़ी आदि में क्रम-क्रम से ऊंचे चढ़ने या नीचे उतरने के लिए एक के ऊपर एक बना हुआ पैर रखने का स्थान, पैड़ी।

उ०—१ पांनि तणी परिगुरु, देहरी तण उमहरु, चउकी चउखंडे झळ-हळइं, उग्रारे पांणी खळहळइं, पगथिग्रां रा साख्यारा, वरंडी उदार।
—व.स.

उ०—२ जठै मांहिली वंदूकां छूटै छै। जकां येक-येक गोळी दस-दस आदम्यां मैं फूटै छै। लोथ पर लोथ पड़ै छै। मोतियां की सी माळा झड़ै छै। जका लोथियां रा पगथिया कर कर घणा हेतु, भाई, भतीजा, वाप-वेटा, ऊपरा पग घरता अर घणा हरख करता कोट मैं पड़ण नूं धावै छै।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

उ०—३ सूकडीया गवाक्ष मळयागिरी जाळी झरणागिरी थांमली मणिवंध काचबंध भूमि। उरा उरी व मी। पगथीयां रा चउकीसर चूनालूग्रां सत भूमिका सहस्र भूमिका समांनो रचना।—कां.दे.प्र.

उ०—४ तैं पटकी पाताळ, ऊंची लै आकास तक। पगथ्यौ वण पाताळ, जीव उठूं रे जेठवा।—जेठवौ

रू०भे०—पगतियौ, पगत्यौ, पगोड़ौ, पगोढौ, पगोतियौ, पगोत्यौ, पगोथियौ, पगोथ्यौ, पागेटियौ, पागोटौ, पागोढियौ, पागोडौ, पागोतियौ, पागोतीयौ, पागोत्यौ, पागोथियौ, पागोथ्यौ।

पगदासी-सं०स्त्री० [सं० पदक+दासी] जूती (अ.मा.)

पगधोई-सं०स्त्री० [देशज] १ मेवाड़ की एक नदी का नाम।
(नैणसी)

२ शादी के दूसरे दिन लड़की के पिता द्वारा लड़के के पिता का पाँव धोने की प्रथा (ब्राह्मण)

क्रि०प्र०—करणी, होणी।

पगपड़ण, पगपडण-सं०पु० [सं० पदक+पतनम्] एक प्रकार की रस्म या प्रथा जिसके अनुसार वधू को प्रथम बार ससुराल जाने पर सास आदि घर की बड़ी-बूढ़ी औरतों के चरण स्पर्श करने होते हैं।

उ०—पगपडणइ द्रव्य आपइ हरखी सासू, आ पुण्यइ रुडी वहु पामीइ ए। प्रभाति ऊठि तेह सासू ससरा नइ, चरण कमळि सीस नांमीइ ए।
—नळ-दवदंती रास

पगपलोटण-सं०पु० [सं० पदकप्रलोटनम्] १ पांवों को दवाने या सहलाने वाला।

२ पावों को दबाने या सहलाने की क्रिया।

पगपांन-सं०पु०यौ० [सं० पदक+पत्रम्] स्त्रियों के पैर के ऊपर उठे हुए भाग पर धारण करने का पीपल के पत्ते के आकार का एक आभूषण विशेष।

उ०—वळै चूड़ो सोने री वंगड़ीदार विराजै छै जांणै काळी घटा में बीज चमकै छै। कट-मेखळा जड़ाव री सोहै छै, सोनै री पायल पग-पांन पोलरी अणवट पगां विराजै छै।—रा.सा सं.

पगपांवडो-सं०पु०यौ० [सं० पदक+पाद+रा.प्र ड़ो] वह कपड़ा जो किसी के स्वागत या आदर हेतु उसके चलने के रास्ते पर विछाया जाय। उ०—पाटंबर पग-पांवडे, सुंदा गांत सुवासि। मुख निरखै-हरखै महल, गायण दासि खवास।—रा.रू.

पगपाखर-सं०पु०यौ० [सं० पदक+प्रखरः] पादरक्षिका, जूती।
(नां.मा.)

पगपावटी-सं०स्त्री०यौ० [सं० पदक+रा. पावटी] पैरों के वल चलाया जाने वाला रहट।

रू०भे०—पग-वावटी।

पगफूटणी-सं०स्त्री०यौ०—पैरों का एक रोग (अमरत)

पगमड, पगमंडा, पगमंडणा-सं०पु०यौ० [सं० पदक+मंडनं]

१ आगंतुक अतिथि के स्वागत हेतु उसके चलने के राह पर विछाया जाने वाला वस्त्र, पावंडा।

उ०—मूंहगा घणा मोल रा, पड़ पग-मंडा अपारां। पट्ठ पसमी मुखमलां, तास अतळस जरतारां।—सू.प्र.

२ इस प्रकार बिछाए हुए वस्त्र पर पैर रख कर चलने की क्रिया।

३ पावंडा पर बने हुए पदचिन्ह।

पगरकियौ—देखो 'पगरखी' (अल्पा०, रू.भे.)

पगरकी—देखो 'पगरखी' (रू.भे.)

उ०—पसू खाल री वर्णं पगरकी, पैं'र पैं'र सुख पावैं। अरथ खाल थारी नहिं आवैं, लेवौ अरथ लगावैं।—ऊ.का.

पगरकौ—देखो 'पगरखी' (अल्पा०, रू.भे.)

पगरखियौ—देखो 'पगरखी' (अल्पा.,रू.भे.)

पगरखी-सं०स्त्री० [सं० पदक+रक्षिका] पदत्राण, जूती।

उ०—तन मन सुरतां तुरा कलंगी, मन प्रमोद री मोड़ बंधाय। प्रीत भई प्यारी पगरखियां, हरि चरणां हित सूं पधराय।

—गी.रां.

पर्या०—उपानह, कांटारखी, खळौ, जरवौ, जूती, जोड़ी, पग-पाखर, पगसुख, पद-पीठ, पनिया, पयचार, पहनी, पापपोस, पायत्रांण, पांव-रखणी, मोचौ, मोजौ।

रू०भे०—पगरकी।

अल्पा०—पगरकियौ, पगरकौ, पगरखियौ, पगरखौ।

मह०—पगरखीड़।

पगरखीड़—देखो 'पगरखी' (मह०, रू.भे.)

पगलड़ौ—देखो 'पग' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—माधव केरां पगलड़ा, सघळां सोंधी ल्यावि। हियड़ा भीतरि हूं धरी, सेवा करूं संभावि।—मा.कां.प्र.

मुहा०—कुंकु रा पगलड़ां पधारौ—पैरों पर कुंकुम लगाए हुए पधारिए (स्वागत)

पगलियौ—१ देखो 'पगल्यौ' (रू.भे.)

२ देखो 'पग' (अल्पा०, रू.भे.)

पगलौ-सं०पु० [सं० पदक+रा.प्र. लौ] १ खड़ाऊ, पादुका।

उ०—म्हारी वहिन हे वहिनी हे वहिनी म्हारी, प्रणम्या स्त्री पुंडरीक हे। म्हारी वहिनी हे वहिनी म्हारी गज चढ़ी मरुदेवी माय हे। रायण तळी पगला प्रभु तणा।—स.कु.

२ देखो 'पग' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—होफरता वकंता हाकलता, दोड़ा पगला देवैं। जावैं ऐ कुसळैं 'जालांणी', नैंडो भाखर लेवैं।

—कांवा रा भोमियां रौ गीत

३ देखो 'पागल' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—दुत भाव तजो दुनियां पगली, गुरु ग्यांन गहो समझौ सगळी।

—ऊ.का.

(स्त्री० पगली)

पगल्भ—देखो 'प्रगल्भ' (रू.भे.)

पगल्यौ-सं०पु० [सं० पदक+रा.प्र. ल्यौ] (बहु व० पगल्या) १ किसी देव विशेष की सोना, चांदी, पत्थर या कपड़े पर बनी चरणों की आकृति जिनकी पूजा के लिए स्थापना की जाती है।

२ देखो 'पग' (अल्पा.,रू.भे.)

उ०—उड-उड रे म्हारा काळा काग, जे म्हारी पिवजी आवै। पगल्यां में तेरे बांधु घूघरा, गळ में हार पहराऊं रे कागा, कद म्हारा पिवजी आवै।—लो.गी.

पगल्ल, पगल्लौ—१ देखो 'पग' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—श्रोरी दाखवौ बाल होसी अवारो। पगल्ले पगल्ले महल्ले पधारो।—ना.द.

२ देखो 'पागल' (रू भे.)

पगवंदण-सं०पु०यौ० [सं० पदक+वंदनम्] पैर छू कर प्रणाम करना, पैरों में नमना। उ०—जहां जादवेंद्र स्री ऋसण छै, तहां तूं जाजे। माहारै मुखि हूंता तूं, पगवंदण कहिजे।—वेलि टी.

पगवट, पगवट्ट-सं०पु०यौ० [सं० पदक+वाटः] १ चलते समय पैर रखने का ढंग या क्रिया।

२ पैदल।

उ०—पुळै पगवट्ट उजाड़ पहाड़। दहूं दिसि केई कराड़ दराड़।

—ध.व.ग्रं.

पगवाव, पगवावड़ी-सं०स्त्री० [सं० पदक+वापिका] एक प्रकार का कूप जिसमें जल भरने के लिए आने जाने हेतु जीना या पैड़ी लगी होती है।

पगवावटी—देखो 'पगपावटी' (रू.भे.)

पगवाहौ-सं०पु० [सं० पदक+वह] ······पैदल, पदाति।

उ०—वामां ली विचित्रां पगवाहां। वांसै हाक हुई खगवाहां।

—रा.रू.

पगविण-सं०पु०यौ० [सं० पदविहीन]. सूर्य, भानु (अ मा.)

पगसुख-सं०पु०यौ० [सं० पदक+सुख] जूती, उपानह (अ.मा.)

पगह—देखो 'परगं' (रू.भे.)

उ०—धरमपति लखधीर हेल हमीर बावन वीर दुबाह। निरमळ मुखि नूर पगह पूर सांमंत सूर सगाह।—ल.पि.

पगां-क्रि०वि० [देशज] लिए, वास्ते।

उ०—१ इण भांत आरोग परवारिया छै। थाळ बारियां उठाया छै। हाथां री चीकणाई उतारण रै पगां मूंगां रा थाळ मंगायजै छै। तिण मांहे हाथ मारजै। मूंगां सूं मसळ चीकणाई उतारजै छै।

—रा.सा.सं.

उ०—२ स्री अचळेसरजी रै दरसण करण रै पगां फेर अठयासी रिसी नवनाथ मेळै भरै।—ढाढाळा सूर री वात

रू०भे०—पंगा, पगा, पगि, पगे, परग, परगा।

पगांणो, पगांतियौ, पगांतौ, पगांस्यौ, पगांथियौ, पगांथौ, पगांथ्यौ-सं०पु० [सं० पदक्+स्था=पदस्थ] पलंग या चारपाई का वह

भाग जिस ओर सोते समय पैर रहते हैं (सिरांतियो का विलोम)

उ०—१ ना ए सइयां, खूंटी भंवरजी री बंदूक, ना रे विलंगणी भंवरजी रा कापड़ा। घुड़ला सइयां दीसै य न ठांण ना रे, पगांणे भंवरजी रा मोचड़ा।—लो.गी.

उ०—२ फुरमायो छै—डबी एक सुजांण नायक री, हरड़ै एक सवा सेर री, समरणा एकमुखी रुद्राक्ष री, कंठी एक थांहरी इतरी वसतां म्हारै महल में ढोलिये रै पगांतिये आळा में कळ छै।
—पलक दरियाव री वात

उ०—३ म्हारै महल में ढोलिया रै पगांथिये आळो छै तिण मांहे छै सो जाय लेवो।—पलक दरियाव री वात

उ०—४ तिकै समईयै वधाईदार आयो। आइ सिरहांणै ऊभो रह्यो, तितरै बीजी रांणी रै पुत्र हूवो। ऊवै री वधाईदार पगांथियां ऊभो रह्यो।—जगदेव पंवार री वात

पगांम—देखो 'पैगांम' (रू.भे.)

उ०—ताहरां बीजाणंद कहियो—भलां! हिवार री वरियां वही जावै छै, सूं छै मास माहे भरि लेयोस। वाह-वाह! आरे वयण पगांम आहे।—सयणी री वात

पगा—देखो 'पगां' (रू.भे.)

उ०—१ सेखेजी पूछियो—'तूं कुण छै?' ताहरां कह्यो—'हूं राव जैतसींह छूं। ताहरां सेखे कह्यो—'रावजी! म्हैं थांहरो कासूं उजाड़ियो हुतो?' म्हे तो काको भतीजो धरती रै पगा विढता हुंता।
—नैणसी

उ०—२ इसो समइयो वण नै रह्यो छै। जिसैं में पांणी में तिरता मुरगावी नजर आवै छै। तिकां रै सिकार रै। पगा वंदूकां गिलोलां मंगायजे छै।—रा.सा.सं.

पगाई-सं०स्त्री० [सं० प्रकृति] प्रकृति (जैन)

पगाड़णो, पगाड़बो—देखो 'पगाणो, पगावो' (रू.भे.)।

पगाड़णहार, हारो (हारी), पगाड़णियो—वि०।

पगाड़िओड़ो, पगाड़ियोड़ो, पगाड़योड़ो—भू०का०कृ०।

पगाड़ीजणो, पगाड़ीजबो—कर्म वा०।

पगाड़ियोड़ो—देखो 'पगायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० पगाड़ियोड़ी)

पगाढ—देखो 'प्रगाढ़' (रू.भे.)

पगाणो, पगावो-क्रि०स० [पगणो क्रि० का प्रे०रू०] १ अनुरक्त करना, लीन करना।

पगाणहार, हारो (हारी), पगाणियो—वि०।

पगायोड़ो—भू०का०कृ०।

पगाईजणो, पगाईजबो—कर्म वा०।

पगाड़णो, पगाड़बो, पगावणो, पगावबो—रू०भे०।

पगायोड़ो-भू०का०कृ०—१ अनुरक्त किया हुआ, लीन किया हुआ।

(स्त्री० पगायोड़ी)

पगार-सं०पु० [सं० प्राकार] १ परकोटा, शहरपनाह।

उ०—१ स्त्री नगर जाळहुर तणी रचना। गढ़-मढ़ मंदिर पोळ-पगार। अट्टाळीयां माळीयां टोडड़े त्रिकळसां गगन चुंबित कोसीसां।
—कां दे प्र.

उ०—२ गढ़-मढ़ मंदिर नव-नवां, नव-नव पोळि-पगार। सुर-मंदिर सरवर नवां, नव-नव नृपति विचार।—मा.कां.प्र.

२ मार्ग, रास्ता। उ०—धांम-धांम मंगळ-धवळ, हुए हुंगांम हलोर। छड़क पगारा नीर छित, धुरै नगारां घोर।—र.रू.

३ पराक्रम, शौर्य, बाहुबल। उ०—'माधव' वाहि साम्रवां मार। 'पूरणमलोत' बांहां पगार।—गु.रू.बं.

४ वह जलाशय, बांध, सागर या नदी जो पैरों से चल कर पार किया जा सके। उ०—स्रो माहाराज ईस्वरा अवतार, कळिजुग समुद्र जाकै आगै पगार।—रा.रू.

५ गढ़, किला। उ०—लोह पगार कहे लाखावत, गैमर हैमर जेथ गुड़ै। मुंह रावत जो आप न मुड़ियै, मोड़ा वेधा प्रसण मुड़ै।
—रावत चूंडा सीसोदिया रो गीत

६ रक्षा, पनाह। उ०—प्रजा प्रकार द्वार पै, पगार पावती नहीं।
—ऊ.का.

[देशज] ७ तनख्वाह, वेतन। उ०—म्हैं आप नै म्हारा राज रा खास दीवांण वणावणा चावूं। पगार आप फरमावो जको म्हनै मंजूर है।—फुलवाड़ी

वि०—१ रक्षा करने वाला, रक्षक। उ०—तठा उपरांति करिनै राजांन सिलांमति उआं गज राजां आगै गड़ा, चरखी दारू रा आरावा छूटिनै रहिया छै। जांणै धुंधळे पहाड़ पाखती रीछी लाग रही छै। मदि वहतां मतवाळा ज्यौं पग नीठ भरै छै। गडां रा तोड़णहार दरवाजां रा फोड़णहार दळां रा मोड़णहार, दळां रा पगारा फोजां रा सिणगार।—रा.सा.सं.

रू०भे०—पगार।

पगावणो, पगावबो—देखो 'पगाणो, पगावो' (रू.भे.)

पगावणहार, हारो (हारी), पगावणियो—वि०।

पगाविओड़ो, पगावियोड़ो, पगाव्योड़ो—भू०का०कृ०।

पगावीजणो, पगावीजबो—कर्म वा०।

पगावियोड़ो—देखो 'पगायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० पगावियोड़ी)

पगास—देखो 'प्रकास' (रू.भे.) (जैन)

पगि—देखो 'पग' (रू.भे.)

उ०—ज्यौं रचना नृप ज्याग री, को वरणो कवि-राव। वेदोकत सासत्र-वचन, पगि-पगि लगन प्रभाव।—रा.रू.

पगियोड़ो-भू०का०कृ०—१ अनुरक्त हुवा हुआ, लीन हुवा हुआ।

(स्त्री० पगियोड़ी)

पगी-सं०स्त्री० [देशज] कूए के ऊपर घूमने वाले घेरे 'डावड़' में बीच

में आडी लगाई जाने वाली काष्ठ की पट्टी जिस पर माळ घूमती है।

वि०वि०—ये संख्या में सोलह होती हैं।

पगे—देखो 'पगां' (रू.भे.)

उ०—'केहर' 'बाघ' आद वड कारण। चक्रवत पगे एक सो चारण। —रा.रू.

पगेलो-वि० [सं० पदक+रा.प्र. इलो] १ पैरों से चलने योग्य। (बालक)

२ पैदल चलना, पैरों के बल चलने की क्रिया।

पगोड़ो, पगोठी—देखो 'पगथियो' (रू.भे.)

उ०—गूंदी रंग गिलोय, पिलूंदी पसरै चढणै। ऊंट फोग जड़ ऊण, पगोठा देवे वढ़णै।—दसदेव

पगोडो-सं०पु० [सं० पदक+रा.प्र. डो, ड़ो] १ कांसी का बना लंबा मोटा छड़ जो सोने की गोलियां साफ करने के काम आता है।

२ देखो 'पगथियो' (रू.भे.)

पगोतियो, पगोत्यो, पगोथियो, पगोथ्यो—देखो 'पगथियो' (रू.भे.)

उ०—१ काळी गोटी ह्वै ज्यूं वो दौड़तो चिंघाड़तो आयो अर पगोतियां-पगोतियां उतर नै वो धापनै बावड़ी में पांणी पीयो। —फुलवाड़ी

उ०—२ गोपाळ आयो-ई कै'र माळियै सूं नीचे उतरण लागो। पग जण घूलागा, माथो घूमण लागो। हीये में हिलोड़ो ऊठियो अर आंख्यां आडी रात आयगी। ऊपरलै पगोथियै सूं पग उचकियो जको गुड़कतो-गुड़कतो आंगण में आतो ठैरियो।—वरसगांठ

पगो-सं०पु० [देशज] १ रहट के मध्य स्तंभ के नीचे रखा जाने वाला पत्थर जिस पर वह स्थिर रहता है।

२ देखो 'पागो' (रू.भे.)

पग्ग—देखो 'पग' (रू.भे.)

उ०—आरण भिडंत जोवंत अग्ग, 'ऊहड़' परट्टि अहि सीस पग्ग। —ग.रू.वं.

पग्गार—देखो 'पगार' (रू.भे.)

उ०—पच्छवांण पग्गार, हूओ राजा मंडोवर।—गु.रू.वं.

पघड़—१ देखो 'पाग' (मह०, रू.भे.)

२ देखो 'पग' (मह०, रू.भे.)

पघड़ो—देखो 'पाग' (अल्पा०, रू.भे.)

पघपड़—१ देखो 'पाग' (मह०, रू.भे.)

२ देखो 'पग' (मह०, रू.भे.)

पघलो—देखो 'पागल' (अल्पा०, रू.भे.)

(स्त्री० पघली)

पड़-सं०स्त्री० [सं० पट = चित्र-पट] १ कपड़े पर चित्रित किसी लोकप्रिय महापुरुष का जीवन-चरित्र।

२ देखो 'परड़' (रू.भे.)

३ देखो 'पुड़' (रू.भे.)

पड़आगळ, पड़आलग—देखो 'पड़ियालग' (रू.भे.)

पड़कमणो—देखो 'पडिकमणा' (रू.भे.)

पड़काळ—देखो 'परकार' (रू.भे.)

पड़काळो-सं०पु० [देशज] १ घायलों को उठा कर ले जाने का पालकीनुमा उपकरण विशेष।

उ०—इतरै भाग फाटतै री गांव में खबर आई। जे इण तरह कजियो हुवो, सूरोजी खींवोजी दोनूं कांम आया। पोकर पोंहचो। तद लोग गांव रा पड़काळा मांचा लेय सिरदार मांणस पांच सो हालिया।—सूरे खींवे कांधळोत री वात

२ जीना, सीढ़ी।

पड़कोट, पड़कोटो-सं०पु० [सं० परिकोट या परिकूट:] किसी नगर के चारों ओर रक्षार्थ बनाई हुई बड़ी दीवार, शहर-पनाह।

उ०—कोटरी सफील ऊंची गज १९ ओसार गढ़ री महलायत हेठै गज २० अोर गज १० कोट अर पड़कोटै रै बीच छै।—द.दा.

अल्पा०—पड़कोटियो।

पड़कोटियो—देखो 'पड़कोटो' (अल्पा०, रू.भे.)

पड़को-सं०पु० [सं० पत्] ......प्रहार, चोट ?

उ०—रीस भरयो कोई रांक, वस्त्र-विण चल्यो वाटे। तपियो अति तावड़ो, टाळतां मुसकल टाटे। बील रूंख तळि वैसि, टाळणो मांडयो तड़को। तरु हूंती फळ त्रूटि, पड़यो सिर माहे पड़को। आपदा साथ लागै लगी, जाय निरभागी जठै। करम-गति देख 'धरमसी' कहै, कहो नाठां छूटै कठै।—ध.व.ग्रं.

पड़क्खणो, पड़क्खवो—देखो 'पडखणो पडखबो' (रू.भे.)

उ०—सड़प्फै बीजूजळां, हास मोड़ा बड़प्फै सूर। सीसहार भड़प्फै पड़क्खै नथी संम।—गु.रू.वं.

पड़क्खणहार, हारो (हारी), पड़क्खणियो—वि०।

पड़क्खिओड़ो, पड़क्खियोड़ो, पड़क्ख्योड़ो—भू०का०कृ०।

पड़क्खीजणो, पड़क्खीजवो—कर्म वा०।

पड़क्खियोड़ो—देखो 'पडखियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० पड़क्खियोड़ी)

पड़खणो, पड़खवो—देखो 'पडखणो, पडखबो' (रू.भे.)

पड़खणहार, हारो (हारी), पड़खणियो—वि०।

पड़खिओड़ो, पड़खियोड़ो, पड़ख्योड़ो—भू०का०कृ०।

पड़खीजणो, पड़खीजवो—कर्म वा०।

पड़खियोड़ो— देखो 'पडखियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० पड़खियोड़ी)

पड़खाऊ-वि० [सं० पत्+खाद्य+ऊ] बैठा-बैठा खाने वाला, निरुद्यमी, निठल्ला।

पड़गम-सं०पु० [सं० प्रतिग्रहण, प्रा० पडिग्गहण] प्रतिगृहीत कार्य का सम्पादन करना, वचनबद्धता।

उ०—सुणि सूडा सुंदरि कहय, पंखी पड़गन पाळि। प्रीतम पूंगळ पंथ सिरि, किम ही पाछउ वाळि।—ढो.मा.

रू०भे०—पडगन।

पड़गनौ-सं०पु० [फा० पर्गनः] वह भू-भाग जिसके अन्तर्गत बहुत से गांव हों। उ०—पड़गनौ जांगळू री गांव ८४ सूं सांखलां कना सूं लियो। नै सांखला चाकर हुवा। पड़गनै पूगळ रै मैं आंण फेर सेखे वरसलोत नूं पायनांमी कियो।—द.दा.

पड़गरणौ, पड़गरबौ—देखो 'पडगरहणौ, पडगरहबौ' (रू.भे.)

पड़गणहार, हारौ (हारी), पड़गणियौ—वि०।

पड़गरिग्रोड़ौ, पड़गरियोड़ौ, पड़गरयोड़ौ—भू०का०कृ०।

पड़गरीजणौ, पड़गरीजबौ—कर्म वा०।

पड़गरियोड़ौ—देखो 'पडगरहियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० पड़गरियोड़ी)

पड़गाहणौ, पड़गाहबौ-क्रि०स० [सं० प्रतिग्रहणम्] १ पकड़कर कैद करना। उ०—वडा-वडा गढपतियां री मांन मोड़णहार गढ़पतियां री पड़गाहणहार, छत्रपतियां री नमावणहार, भाई अनंतरांम सांखला तो जिसौ अबार इण समै कोई हुवौ न होसी।

—कहवाट सरवहिया री वात

२ देखो 'पडगाहणौ, पडगाहबौ' (रू.भे.)

पड़गाहियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ पकड़ कर कैद किया हुआ।

२ देखो 'पडगाहियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० पड़गाहियोडी)

पड़घारव—देखो 'पडघारव' (रू.भे.)

पड़चंदौ—देखो 'पडचंदौ' (रू.भे.)

पड़चिवौ—देखो 'पड़चौ' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—वौ आपरे ई हाथां एक लांठा पड़चिया में सीरौ रांधनै रोजीना डकार जावतो।—फुलवाड़ी

पड़चूंण, पड़चूंन, पड़चूण, पड़चून-सं०स्त्री० [सं० प्रचूर्णि] आटा-दाल, नमक-मसाला, चावल आदि फुटकर सामान।

रू०भे०—परचूंन, परचूण, परचून, परचूणि।

पड़चूणी-सं०पु०—१ पड़चून का सामान बेचने वाला।

रू०भे०—परचूनी।

पड़चौ-सं०पु०—१ लोहे की एक चद्दर का बना कटाह।

अल्पा०—पड़चियो।

२ देखो 'परचौ' (रू.भे.)

उ०—व्यापक ब्रह्म मोह नहीं माया, वेहदि पड़चा भेद भल पाया।

—ह.पु.वा.

पड़च्चौ—देखो 'पुड़छौ' (रू.भे.)

पड़च्छ—देखो 'पड़छ' (रू.भे.)

पड़च्छौ—देखो 'पुड़छौ' (रू.भे.)

पड़छंदौ—देखो 'पड़चंदौ' (रू.भे.)

पड़छ-सं०स्त्री० [देशज] १ ऊंट की चाल जो ढाण से मंद तथा वीख से तेज होती है।

२ घोड़े व बैल की चाल विशेष।

रू०भे०—पड़च्छ, पड़छ।

३ देखो 'पुड़छौ' (रू.भे.)

उ०—झमरूख चमर सिखराळ झाट। सुजि ओछ पड़छ आसण सु-घाट।—सू.प्र.

पड़छणौ, पड़छबौ—देखो 'परछणौ, परछबौ' (रू.भे.)

पड़छणहार, हारौ (हारी), पड़छणियौ—वि०।

पड़छिग्रोड़ौ, पड़छियोड़ौ, पड़छ्योड़ौ—भू०का०कृ०।

पड़छीजणौ, पड़छीजबौ—कर्म वा०।

पड़छाय, पड़छाव-सं०स्त्री० [सं० प्रतिछाय] छाया।

उ०—जेठ महीनै धूप पड़ैली, तावड़िया री ताह। पड़छावां में पड़िया रहसां, वाह रे सांई वाह।—लो.गी.

पड़छियोड़ौ—देखो 'परछियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० पड़छियोड़ी)

पड़छौ-सं०स्त्री०—१ घोड़े या ऊंट की पीठ पर देशी चारजामे के नीचे लगाया जाने वाला उपकरण।

अल्पा०—पड़छियौ।

२ देखो 'पुड़छौ' (रू.भे.)

उ०—१ किसाहेक घोड़ा छै? वे-पख भला ऊंचा अलला, कटोरा नखा आरसी सारीखा, ति-अंगळ-गाळा, मूठिया वील-फळा, निमंसा-नळा गोडा नाळेर-फळा......कनौती लोय-दीयै मगर लादक अच्छी छोटी पड़छौ।—रा.सा.सं.

उ०—२ आगळा कंध पड़छी अलप, मलप गुलाली मूंठियां। धक-पंख-धाव खागां धकै, ऊपडै वागां ऊठियां।—मे.म.

उ०—३ पड़छी सतुच्छ पींडै प्रचंड। खंडरइ जु आंठू भीति खंड। पूछी तउच्छ सत्थोर पग्ग। वजिन्न विछोडइ मिरी वग्ग।

—रा.ज.सी.

३ कुए या गहरे खड्डे से धूल निकालने के लिए किसी चादर या कपड़े का बनाया हुआ झोला।

वि०वि०—इसमें दो व्यक्ति आमने-सामने खड़े हो जाते हैं और कपड़े के चारों पल्लों को अपने हाथों में पकड़ कर धूल को ऊपर उछालते रहते हैं।

४ चादर या किसी कपड़े के एक तरफ के दोनों पल्लों को गले में बांध कर दूसरी तरफ के दोनों पल्लों को दोनों हाथों में पकड़ कर बीच में कोहनियें अड़ाकर बनाया जाने वाला झोला।

५ देखो 'पुड़छौ' (रू.भे.)

पड़छौ-सं०पु० [देशज] १ मंझले आकार का लोहे का कड़ाव।

२ देखो 'परचौ' (रू.भे.)

उ०—दीसै न न्याय भोगवि दसा, पड़छौ सुदि वदि पख री। देखे न

साच दाखै दुनि, छांडी चांदी है खरी ।—अज्ञात

अल्पा०—पड़छौ ।

पड़जन—देखो 'पड़जांन' (रू.भे.)

पड़जनियौ—देखो 'पड़जांनियौ' (रू.भे.)

पड़जांन-सं०स्त्री० [सं० प्रति+जन्यः] दुल्हे तथा बरात का वह स्वागत या अगवानी जब वह दुलहिन के पिता के गांव की सरहद में पहुचती है, सीमान्त-पूजन ।

रू०भे०—पड़जन ।

पड़जांनियौ-सं०पु० [सं० प्रतिजन्य] कन्या पक्ष की ओर से बरात का गांव की सीमा पर अगवानी करने वाला व्यक्ति ।

रू०भे०—पड़जनियौ ।

पड़णौ, पड़बौ-क्रि०अ० [सं० पतनम्, प्रा० पडन=पड़न=पड़णौ]

१ किसी ऊँचे स्थान से गिरकर, उछल कर या अन्य किसी प्रकार से नीचे के स्थान पर पहुँचना या ठहरना, पतित होना, गिरना ।

उ०—पछै गजराज मस्तक समेत दाहिमी बाहण बिहूण हेठौ आय पड़ियौ ।—वं.भा.

२ प्रविष्ट होना, प्रवेश होना ।

उ०—वणक कहै आवै वसत, कै कूड़ कै गूंण । चेळै पड़ै सो होय सुष, सैंभर पड़ै सलूंण ।—बां.दा.

३ एक वस्तु का दूसरी वस्तु पर फैला कर रखा जाना, डल जाना, फैलना । उ०—जिणि दीहे पाळउ पड़इ, टापर पड़ तुरियांह । तिणां दीहां री गोरड़ी, दिन-दिन लाख लहांह ।—ढो.मा.

४ प्रहार होना ।

उ०—अर केही बार वाजी नूं अठी-रो-अठी उडाय बीच दीघौ । अठी सूं कन्ह पहुवांण रौ किवांण प्रतिहार नाहरराज रा मस्तक चूकि वांम भुज रै भुज-बंध पड़ियौ ।—वं.भा.

५ छोड़ या डल जाना, पहुँचना या पहुँच जाना ।

ज्यूं-पेट में रोटी पड़णौ, साग में नमक पड़णौ ।

६ पूर्व की स्थित या दशा को छोड़ कर नवीन स्थिति या दशा में होना ।

ज्यूं-ढीलौ पड़णौ, खोळौ पड़णौ, भोळौ पड़णौ, कमजोर पड़णौ, ठाढौ (ठंडौ) पड़णौ ।

उ०—मतवाळौ जोबन सदा, तूझ जमाई माय । पड़ियां थण पहली पड़ै, बूढी घण न सुहाय ।—वी.स.

७ बीच में आना या जाना, हस्तक्षेप करना, दखल देना ।

ज्यूं-थे चाहो ज्यूं करौ म्है थांरै इण कांम में नी पड़ूंला ।

८ किसी पदार्थ को लेने हेतु तेजी से आगे बढना, टूटना, झपटना ।

उ०—१ दूसरौ मयंक दूहवे दळां देखतां, जोटवट छड़ाळ अरुण जड़ियौ । हसत दीठां समा सीह बाथां हुवौ, पनंग सिरकना खखपंख पड़ियौ ।—राठौड़ वतू गोपाळदासोत चांपावत री गीत

उ०—२ तरै थलू कही—व्यासजी सांची कहै छै । आंपां इसा नीसरां सो सागी हाथी जावां । ताहरां सवार मोहरे हुआ पाळा पूठे किया त्यांनूं कही—थे पाधरां तोपखाना ऊपर पड़ज्यौ ।

—अमरसिंह री वात

९ उत्पन्न होना, पैदा होना ।

ज्यूं-धांन में कीड़ा पड़णा, फळ में कीड़ा पड़णा ।

उ०—१ सूतौ बाहर नींद सुख, सादूळौ बळवंत । वन कांठै मारग वहै, पग-पग होल पड़ंत ।—बां.दा.

उ०—२ सादूळौ वन संचरै, करण गयंदां नास । प्रबळ सोच भमरां पड़ै, हसां होय हुलास ।—बां.दा.

१० होना । उ०—सींधलां इंदां री लड़ाई हुई । सींधल २५ कांम आया । हिवै वैर पड़ियौ । भाद्राजण अर चोरासी रो मारग भागौ । कोई मारग वहै नहीं । इसौ वैर पड़ियौ—नैणसी

११ दुखप्रद घटना का घटित होना, अनिष्टावस्था प्राप्त होना ।

ज्यूं-काळ पड़णौ, आफत पड़णौ ।

उ०—'चंद्रावत' तज सांम-ध्रम, विण ही पड़ियां ताव । 'दुरगौ' भागौ दुरग सूं, रांमपुरा रौ राव ।—बां.दा.

१२ ठहरना, डेरा डालना, टिकना, पड़ाव करना या लेना ।

उ०—या सुणतां ही अणहिलपुर रौ अघोस सेना रा संभार सूं महो रा मचोळा देतौ गजनवी रौ वेग झेलण रै काज जवनेस रौ राह रोकि सोभति सहर आड़ौ आय पड़ियौ ।—वं.भा.

मुहा०—पड़्यौ रै'णौ—एक ही स्थान पर बना रहना, एक ही अवस्था में रहना, रखा रहना, धरा रहना ।

१३ आराम करना, विश्राम के निमित्त सोना या लेटना ।

ज्यूं-रोटी खा'र पड़णौ सूझै है ।

मुहा०—पड्यौ रै'णौ—बिना कुछ काम किए ही पड़ रहना, लेटा रहना, सो कर बेकारी के दिन व्यतीत करना, बेकार रहना ।

१४ वीर गति प्राप्त होना, युद्ध करते मरना ।

उ०—१ पड़तै 'पदम' कमंध पाटोधर, पाड़ लियौ दिखण्यां पतसाह ।

—पदमसिंह (बीकानेर) री गीत

उ०—२ पाड़े फिरंग नीठ रिण पड़िया कमधां साकौ ऊजळ कियौ । दीधौ मरण 'बलू' दहवारो, सार कोट रै मरण कियौ ।

—जादूरांमजी आढौ

१५ अवसान होना, मरना (राजा महाराजाओं)

उ०—हा जसवंत ! हकबक हुऔ, अकबक लोक अजांण । मह-पत पोतौ 'मांन' री, पड़ियौ गुण अप्रमांण ।—ऊ.का.

१६ उपस्थित होना, प्रसंग में आना, संयोगवश होना ।

ज्यूं—मोकौ पड़णौ, पाळौ पड़णौ, पांनौ पड़णौ ।

१७ प्रबल इच्छा होना, धुन होना, चिन्ता होना ।

ज्यूं—चाहे कांम बिगड़ौ या सुधरौ, थांरै तो घर जावण री पड़ी है ।

१८ त्वचा का उतरना, त्वचा का शरीर से दूर होना ।

उ०—धरती म्हांरी, म्हे धणी, ढाहण नेजां ढल्ल । किम कर पड़सी ठाकुरां, ऊभा सींहां खल्ल ।—अज्ञात

१९ पड़ता खाना ।

ज्यूं—श्रो कोट पैंतीस रुपियां में पड़चौ है, श्रा मेज पचीस रुपियां में पड़ी है ।

२० पकड़ में आना, पकड़ा जाना, बंधन में आना, कैद होना ।

उ०—१ मरणौ लाजम मांमलै, धार अणी चढ धाप । पड़णो सांकळ पींजरै, सिहां बडी सराप ।—बां.दा.

उ०—२ रीझै सांभळ राग, भीजै रस नह भैचकै । नेड़ी आवै नाग, पकड़ीजै छाबड़ पड़ै ।—बां.दा.

२१ आय प्राप्ति आदि की औसत होना, पड़ता होना ।

ज्यूं—इण दिनां तांगा वाळां रै दस रुपया रोज पड़ जावै है ।

२२ मिलना, प्राप्त होना । उ०—मुहकम नूं रूठी महमाई, कागळ लिखिया पड़ण कमाई ।—रा.रू.

पड़णहार, हारौ (हारी), पड़णियौ—वि० ।

पड़वाड़णौ, पड़वाड़बौ, पड़वाणौ, पड़वाबौ, पड़वावणौ, पड़वावबौ, पड़ाड़णौ, पड़ाड़बौ, पड़ाणौ, पड़ाबौ, पड़ावणौ, पड़ावबौ —प्रे०रू० ।

पड़िओड़ौ, पड़ियोड़ौ, पड़चोड़ौ—भू०का०कृ० ।

पड़ीजणौ, पड़ीजबौ—भाव वा० ।

पटकणौ, पटकबौ, पाड़णौ, पाड़बौ—स०रू० ।

पड़त-सं०स्त्री० [सं० पत्] १ वह भूमि जो उपजाऊ करने हेतु कुछ काल न जोती गई हो ।

रू०भे०—पड़तल, पड़ती, पड़ेत ।

२ किसी पदार्थ के खरीद या तैयारी का खर्च, लागत ।

३ दर, शरह ।

[सं० प्रति] ४ एक ही प्रकार की कई वस्तुओं में से अलग-अलग एक एक वस्तु ।

उ०—एह पाठ स्वामी जी बताया । जद खंतिविजय बोल्या—इण में खोट है, त्यावरे चेला ! आंपां री पड़त पोथी खोल नै देख तो । —भि.द्र.

रू०भे०—परत ।

पड़तमाळ, पड़तमाळो—देखो 'प्रतिमाळ' (रू.भे.)

पड़त रा खालड़ा-सं०पु०—देशी राज्यों में किसानों से लिया जाने वाला कर विशेष ।

पड़तल-वि० [देशज] कंगाल, निर्धन ।

सं०पु०—१ सामान, सामग्री ।

उ०—१ कठठ जूट रहकळां, जूट नाळियां जंबूरां । रथ बहल रैवंत, भार पड़तल भरपूरां ।—सू.प्र.

उ०—२ पछै ऊपर सूं असाढ आयो, ताहरां गांवां मांहे लोग आय बसियो । सू वांनर तेजो 'भलो' रजपूत हुतो । आपरो खासो चाकर हुतो, सोई मळ गयो हुतो सु श्रो पण पाछो आयो । दोय साथे टाबर एक बेटो एक बेटी । एक पड़तळ नूं बळद ।—नैणसी

२ ऊंट घोड़ा आदि के चारजामा संबंधी उपकरणसमूह ।

[सं० पट+तल] ३ लादने वाले घोड़े के चारजामा के नीचे रखा जाने वाला टाट या मोटा कपड़ा ।

[सं० परि+तल] ४ जागीरदार द्वारा अपना भाग लेने के बाद खलिहान में किसान के लिए स्वेच्छा से छोड़ा जाने वाला अन्न ।

५ वे उपकरण जो गाड़ी हल आदि जोतने के समय उपयोग लिए जाते हैं ।

६ देखो 'पड़तलो' (मह.,रू.भे.)

७ देखो 'पड़त' (रू.भे.)

रू०भे०—परतळ ।

पड़तलो-सं०पु० [सं० परि+तन] १ तलवार रखने के लिए चमड़े या मोटे कपड़े की पट्टी जो कंधे से लेकर कमर तक छाती और पीठ पर से तिरछी आती है ।

२ चपरास ।

रू०भे०—पड़दड़ो, पड़दलो, परतलो, पुड़दड़ो ।

अल्पा०—पड़दड़ी, पड़दली, पडदडी, पडदली, पुड़दली ।

मह०—पड़तल, परतल, पुड़दड़ ।

पड़ताळ-सं०स्त्री० [सं० प्रति+भालनम् अथवा परितोलनम्]

१ पड़तालना क्रिया का भाव, गौर के साथ की गई जांच, भली भांति जांच या देखभाल ।

उ०—पुलिस री जांच-पड़ताळ सूं मालम हुयौ कै श्रो मकांन गुंडां अर बदमासां रो खास अड्डो है ।—रातवासो

२ खोज, तलाश, ढूंढ-ढांढ । उ०—पांणी री पड़ताळ, लड़थड़ाता बेहाल । लूआं मती लड़ायज्यो, मां थारा वै लाल ।—लू

३ ध्वनि, आवाज । उ०—मोरिया झिंगोर खाय नै रह्या छै, बीजळी सिहर सिळाव करनै रही छै, परनाळां रा पड़ताळ वाजि नै रह्या छै ।—जखड़ा मुखड़ा भाटी री वात

४ बौछार । उ०—पड़ि पावस पड़ताळ, सघण घण मेह को । होसी कोण हवाल, नवला नेह को ।—पनां वीरमदे री वात

५ प्रहार, चोट । उ०—१ पड़ताळां पाताळ, वहतां तुरी वजाड़ियौ । उडी रजी छायौ अरस, किम्र झांखो किरणाळ ।—वचनिका

उ०—२ पड़ताळ पाइ पवंग है, भुम्र भारि कपि भुम्रंग । —गु.रू.बं.

पड़ताळणौ, पड़ताळबौ-क्रि०प्र० [सं० प्रताडनम्] १ जोशपूर्वक आगे की ओर बढ़ाना, झोंकना । उ०—झलण करतौ छड़ा सेल रंगिये 'जसौ' जुध वटे खेलतौ 'गजन' जायौ । पमंग पड़ताळ पंचाइण पाड़तौ अफारै चकारै चाल आयौ ।

—महाराजा जसवंतसिंह री गीत

२ ध्वंस करना, नष्ट करना ।

३ पीटना, मारना।
४ पराजित करना, हराना, भगाना।
५ तेजी से चलाना, तेजी से हाँकना।
उ०—ढोलउ चढि पड़ताळिया, डूंगर दीन्हा पूठि। खोजे बावू हत्थड़ा, धूड़ि भरेसी मूठि।—ढो.मा.
६ खोजना, तलाश करना, ढूंढना।
७ जाँच करना, छान-बीन करना। उ०—उलटौ रस उलाळ उण, श्राख घरंग उलाळ। दाख त्रिदस फिर पंचदस, तुक बिहुंवे पड़ताळ।
—र.ज.प्र.
पड़ताळणहार, हारौ (हारी), पड़ताळणियौ—वि०।
पड़ताळिग्रोड़ौ, पड़ताळियोड़ौ, पड़ताळयोड़ौ—भू०का०कृ०।
पड़ताळीजणौ, पड़ताळीजबौ—कर्म वा०।
पडताळणौ, पडताळबौ, परताळणौ, परताळबौ—रू०भे०।

पड़ताळियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ जोशपूर्वक आगे की ओर बढाया हुआ, झोंका हुआ।
२ ध्वंस किया हुआ, नष्ट किया हुआ।
३ पीटा हुआ, मारा हुआ।
४ तेजी से चलाया हुआ, तेजी से हाँका हुआ।
५ खोजा हुआ, तलाश किया हुआ, अनुसंधान किया हुआ।
६ जाँच किया हुआ, जाँचा हुआ।
७ पराजित किया हुआ, भगाया हुआ।
(स्त्री० पड़ताळियोड़ी)

पड़ती—देखो 'पड़त' (रू.भे.)

पड़थम—देखो 'प्रथम' (रू.भे.)

पड़द-सं०स्त्री० [सं० पर्दः] खजूर (अ.मा.)

पड़दड़ी-सं०स्त्री०—देखो 'पड़तली' (अल्पा०, रू.भे.)
उ०—मूंफ री कमर में रही वा सदामद। निमक मेल हां नहीं घणौ नेहा। पड़दड़ी मांय गढ केई मावै परा। जोधपुर अनै जाळोर जेहा।—ठा० सवाईसिंह चांपावत रौ गीत

पड़दड़ौ-सं०पु०—१ तलवार की म्यान या कोश।
उ०—सुज श्री म्याव संसार, वीरमदे सांभळ वचन। तीखी दो तरवार, पड़ै न एकण पड़दड़ै।—गो.रू.
रू०भे०—पड़दलौ।
२ देखो 'पड़तलौ' (रू.भे.)

पड़दनी-सं०स्त्री० [देशज] चमड़े का बना उपकरण जो कुम्रा चलाते समय चूतड़ के नीचे रखा जाता है।

पड़दली—देखो 'पड़तलौ' (अल्पा०, रू.भे.)
उ०—दूजा 'क्रन' नमी पराक्रम 'दुरगा', रूक वर्द धारी दोहुं राह। राजा वीया पड़दली राखै, पड़दलियां धारै पतसाह।
—दुरगादास राठोड़ रौ गीत

पड़दलौ—१ देखो 'पड़दड़ौ' (रू.भे.)
२ देखो 'पड़तलौ' (रू.भे.)

पड़दांनगी—देखो 'प्रधानगी' (रू.भे.)

पड़दांनी-सं०स्त्री० [देशज] रहट की लम्बी भुजा पर रखी जाने वाली सिला।
रू०भे०—परदांनी।

पड़दाइत—देखो 'पड़दायत' (रू.भे.)

पड़दादौ-सं०पु० [सं० प्र+राज० दादौ] (स्त्री० पड़दादी)
प्रपितामह। उ०—जद स्वांमीजी बोल्या—थांरा बाप दादा, पड़दादा आदि पीढ़ियां रा नांम तथा त्यांरी पुरांणी बातां जांणौ हौ सो किण देखी।—भि.द्र.
रू०भे०—परदादौ।

पड़दादार—देखो 'परदादार' (रू.भे.)

पड़दादारी—देखो 'परदादारी' (रू.भे.)

पड़दानसीन—देखो 'परदानसीन' (रू.भे.)

पड़दापोस—देखो 'परदापोस' (रू.भे.)
उ०—सारां अदतारां मंही, आछो पड़दापोस। मुंह न दिखावै मंगणां, देणी उत्तर दोस।—बां.दा.

पड़दावेगण-सं०स्त्री० [फा० पर्दः+तु० वेगम] वह स्त्री जो राजप्रासादों में सशस्त्र होकर पहरा दे।
उ०—राज-लोक रिख दूण, वीस पड़दायत प्यारी। संग सहेली प्यार, अगन सिनांन उचारी। बारै गायण बळै, वळै नव पड़दावेगण। हाथळ चेरी उभै, उभै दो जणी हजूरण। पातरां पांच नाजर उभै, भल बाई अ्रत भावियौ। 'जसवंत' सुतन सतियां सहत, यौं स्वरग-लोक सिधावियौ।—रा.रू.
रू०भे०—पड़दावेगण, परदावेगण, परदावेगण।

पड़दायत, पड़दायतन-सं०स्त्री० [फा० पर्दः+रा.प्र. आयत] १ वह स्त्री जो राजा-महाराजा, सामंत तथा सम्पन्न व्यक्ति के यहां बिना विवाह किए ही स्त्री रूप से रहती हो, उपपत्नी, रखैल।
उ०—१ कुलटा साची व्है ठुकरांणी कूड़ी। पड़दै पड़दायत रांणी सूं रूड़ी।—ऊ.का.
उ०—२ मुर्दे एह खट महल, सहल अ्रत गिणूं सुपावन। पड़दायत हित प्रिया, अघट सति मिळी अठावन।—रा.रू.
२ वह स्त्री जो परदा रखती है। उ०—पड़दायत नारी मंदिर माळिये रे। जोवै जाळयां में मूंडो घाल रे।—जयवांणी
सं०पु०—३ वह जिसके यहाँ परदा रखने की प्रथा हो।
रू०भे०—पड़दाइत, परदाइत, परदायत।

पड़दार-सं०पु० [फा० पर्दः+दार] १ एक मुसलमान जाति विशेष जो प्राचीन काल में बादशाहों तथा राजा-महाराजाओं की जनानी ड्योढ़ी पर पहरा देने का कार्य करते थे।
२ इस जाति का व्यक्ति।
उ०—'निजरू' अनै 'करीम', बिहि पड़दार बहादर। नगारची

'नाहरौ', हाक करि ग्रौरे हैमर ।—सू.प्र.

३ द्वारपाल; दरवान । उ०- जलाल एक दिन झरोखे रै मारग न जाय सकियौ, रेसमी रस्सौ थौ सो टूटौ थौ, तद पहलां री भांत नेत्रां खवास ग्रा फूलां रै बोझै बैठांण माळण रै माथै घर भीतर नूं ले हाली । इतरै पड़ाइयै पड़दार बोझै हाथ घालियौ नै कह्यौ—हरांमजादी लोडी ! हमेसा जलाल क्यूं ल्यावती है ।

—जलाल बूबना री बात

पड़दारू-सं०पु० [फा० पर्दाज] चित्र की महीन रेखाएं ग्रादि ।

उ०—चिग पड़दारू पाल चमंकै । दांमण जांण सिळाउ दमंकै ।

—सू.प्र.

पड़दावेगण—देखो 'पड़दावेगण' (रू.भे.)

पड़दी-सं०स्त्री० [फा० पर्दः] १ ग्रलमारी के विभाग करने के निमित्त बीच-बीच में लगाया जाने वाला पत्थर, काष्ठ या धातु का खण्ड । [सं० परिधानी] २ ग्राड़ या ग्रोट के निमित्त बनाई गई पतली दीवार ।

३ वह वस्त्र या पट जो विवाह के समय वर ग्रौर वधू के बीच में टांगा या लगाया जाता है, ग्रन्तरपट ।

४ एक प्रकार का कपडे का बटुग्रा जिसमें कसीदे कढ़े हुए, रेजगारी, रुपए व मुहरें रखने के ग्रलग ग्रलग भाग होते हैं ।

उ०—ताहरां 'एवाळां' कह्यौ—'लीजै राज !' मेळै कह्यौ—'यूं हो नहीं ल्यूं । जो थे मोल ल्यौ तौ ल्यूं ।' ताहरां एवाळां कह्यौ—'दीजै राज !' ताहरा मेळै सेपटै नव फदिया पड़दी मांहै सूं काढ़ि नै दिया ।—नैणसी

पड़दौ, पड़द्दौ-सं०पु० [फा० पर्दः] १ किसी वस्तु, व्यक्ति ग्रादि को दृष्टि से ग्रोझल करने में प्रयोग किया जाने वाला कपड़ा, ग्राड करने में प्रयोग किया जाने वाला कपड़ा, टाट चिक ग्रादि ।

उ०—इतरौ सुण रांणी ग्राप पूछी, कासूं छै । तद भरमल री मा कही—जे भरमल बाहर खड़ी छै सो कहे छै-कपड़ा भीज डील सूं चिपक गया तीसूं लाज ग्रावै छै । तौ रांणी कहो—पड़दा छोड देवो सो भरमल नीसर जावै ।—कुंवरसी सांखला री वारता

मुहा०—१ पड़दौ खोलणौ—गुप्त बात को जाहिर करना, भेद का उद्घाटन करना ।

२ पड़दौ डाळणौ—छिपाना, गुप्त रखना, प्रकट न होने देना ।

३ पड़दौ पड़णौ—छिपाव होना, दुराव होना ।

४ पड़दौ राखणौ—किसी के ग्रवगुणों को लोगों में प्रकट न होने देना, किसी की प्रतिष्ठा या मान को बना रहने देना ।

२ दृष्टि या गति के मध्य में इस प्रकार पड़ने वाली वस्तु कि उसके इस पार से उस पार ग्राना जाना देखना ग्रादि न हो सके, दृष्टि या गति में रुकावट डालने वाला पदार्थ, व्यवधान ।

३ ग्राड़ या ग्रोट जिससे सामने की वस्तु कोई देख न सके या उसके निकट तक न पहुंच सके ।

४ लोगों की दृष्टि के सामने न होने की स्थिति, ग्राड़ ।

ग्रोट, छिपाव । उ०—कांमी फिर बांमी क्रपण, जादूगर नर च्यार । रात दिवस पड़दै रहै, पड़दा सूं हिज प्यार ।—बां.दा.

५ स्त्रियों को घर के भीतर रखने तथा बाहर निकल कर लोगों के सामने न फिरने देने की प्रथा या नियम ।

६ ग्रन्तःपुर, जनानखाना, राजप्रासाद, हरम ।

उ०—१ पड़दै घालौ पातरां, ठावी-ठावी ठौड़ । परणी नूं नह पेटियौ, देखौ बुध री दौड़ ।—बां.दा.

उ०—२ सूरमा लड़ै बवड़ै संभाळ । बेगमां घसै पड़दा विचाळ ।

—वि.सं.

मुहा०—१ पड़दै घालणौ—किसी स्त्री को रखैली बना कर ग्रन्तःपुर में रखना ।

२ पड़दै बैठणौ—किसी स्त्री का किसी के यहां रखैली होकर रहना ।

७ किसी बात को दूसरे से छिपाने का भाव, दुराव, छिपाव, भेदभाव ।

उ०—१ प्रीत जहां पड़दा नहीं, पड़दा जहां नह प्रीत । प्रीत करै पड़दा रखै, प्रीत भई विपरीत ।—ग्रज्ञात

उ०—२ मितर सूं ग्रंतर नहीं, वैरी सूं नहि नेह । प्रीतम सूं पड़दौ नहीं, जिण निरखी सब देह ।—ग्रज्ञात

मुहा०—१ पड़दौ करणौ, पड़दौ राखणौ—छिपाव रखना, बात खोल कर नहीं करना, दुराव रखना, भेदभाव रखना ।

२ पड़दौ खोलणौ—भेद या रहस्य का प्रकट करना ।

३ पड़दा री पोल—गुप्त बात का प्रकटीकरण ।

९ एक प्रकार का देशी पालने (घोड़ियौ) में बांधा जाने वाला कपड़ा जिस पर बच्चे को सुला कर इधर से उधर हिलाया जाता है । उ०—जाय दरजी नै यूं कईजो, हां रै जाय दरजी नै यूं कईजो । पड़दा नै पाटी लेई ग्राय जो म्हारै पाटी नै पड़दौ लै ग्राईजो । पड़दै म्हारै हालरौ पोढ़सी, कांई पाटी बांधै हालरिया री माय जी ।—लो.गी.

१० तह, परत ।

ज्यूं—जमी रौ पड़दौ ।

११ वह पतली दीवार जो ग्रोट या ग्राड़ करने के निमित्त बनाई गई हो ।

रू०भे०—परदौ, परद्दौ ।

ग्रल्पा०—पड़दी ।

पड़धान—देखो 'प्रधांन' (रू.भे.)

पड़धांनगी—देखो 'प्रधांनगी' (रू.भे.)

पड़नांनौ-सं०पु० [सं० प्र+राज० नांनौ] (स्त्री० पड़नांनी) मातामह का पिता, मामा का पितामह ।

पड़नाळ—देखो 'परनाळ' (रू.भे.)

उ०—घड़ फूटत तूटत सीस घार। पड़नाळ स्रोण वभकं अपार।
—सू.प्र.

पड़पंच, पड़पच— देखो 'प्रपंच' (रू.भे.)
उ०—१ क्यूं पड़पंच करै जिय कूड़ा, बिलकुल मन में धार विवेक। दाता जो बाधी लिख दीनी, आधी करणहार नह एक।
—भीखजी रतनू
उ०—२ वादी पच थाको विसनावत, पड़पंच कर उपचारपणौ। मंत्र-जंत्र आखौ नह मांनै, ताखौ सालमसींग तणौ।—अज्ञात
उ०—३ अठी उठी मांग तांग नै कीकर ई पड़पंज करनै आपरो खेत बवाय दीनो।—फुलवाड़ी

पड़पड़—देखो 'पड़ापड़' (रू.भे.)
पड़पड़ाणौ, पड़पड़ावौ–क्रि०अ०—पड़पट् शब्द होना।
पड़पड़ा'ट, पड़पड़ाहट–सं०पु० [अनु०] पड़पड़ाने की क्रिया, पड़पड़ शब्द।
पड़पण–सं०पु० [सं० परिपणं, परिपनम्] १ मूल पूंजी, धनदौलत।
२ वैभव, ऐश्वर्य।
३ शक्ति, सामर्थ्य, बल। उ०—वित सारू दत वांटजो, ज्यूं पड़पण घर का।—दुरगादत्त बारहठ
४ सहायता, मदद।
उ०—मांनौ वचन साह सत मेरो, तुरत करां सब कारज तेरो। जो राजा ऊपर खट् जाऊं, पड़पण खांन सुजायत पाऊं।—रा.रू.
५ कुए के उपकरण। उ०—पड़पण कोहिर पर कोहिर पड़ जावै। खड़ खड़ करता खर खुद घर खड़ि जावै।—ऊ.का.
रू०भे०—पड़प्पण, पड़पण, परप्पण।
पड़पड़णौ, पड़पड़वौ–क्रि०अ०—१ पार पाना, जीतना।
उ०—मिणियारौ वापड़ौ तौ काळोधार वूहांणौ। अबै करै तौ कांई करै। इण अचपळी जात सूं वौ अेकलौ कीकर पड़पै।
—फुलवाड़ी
२ वश चलना। उ०—रांणां नै पड़पूं नहीं, वैहती देखै वाट। दोन्ही म्हारी डीकरी, घर कित कोळू घाट।—पा.प्र.
३ जैसे-तैसे वहन करना, कार्य चलाना। उ०—जे ओजी उधारो तौ कठै ही क्यूं जुड़ै नहीं नै रावळी वसी मांहै इतरा मालदार वाणियां छै तिण री आधी माल रावळै ल्यो। आधी माल रहण देज्यो। मास री वळै, पिण आधी नीसरसी आधी छोड़तां उवै ही नीसरसी, पड़पसी।—राव मालदेव री वात
४ मुकाबला करना। उ०—वापड़ा दोनूं ई उण गोरियावर रै मारया घणा दुखी हा, पण जोर कांई करै। सांप्रत काळ सूं कीकर पड़पै।—फुलवाड़ी
पड़पियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ पार पाया हुआ, जीता हुआ।
२ वश चला हुआ।
३ जैसे-तैसे कार्य चलाया हुआ।
४ मुकाबला किया हुआ।
(स्त्री० पड़पियोड़ी)
पड़पोतरौ, पड़पोतौ, पड़पोत्र, पड़पोत्रौ—देखो 'प्रपौत्र' (रू.भे.)
उ०—इतरा थोक वेलि पढंतां वधै। परिवार पूत पोत्रां करि पड़पोतां करि।—वेलि टी.
(स्त्री० पड़पोतरी, पड़पोती, पड़पोत्री)
पड़प्पण—देखो 'पड़पन' (रू.भे.)
उ०—कोयक सकट कुसागड़ी, भार विसेस भरंत। धवळ पड़प्पण आपरै, खांधै ले निवहंत।—बां.दा.
पड़प्फणौ, पड़प्फबौ–क्रि०स० [देशज] वरण करना, वरना।
उ०—सड़प्फै वीजूजळां हास मोहा वड़प्फै सूर। सीस हार झड़प्फै पड़प्फै नथी संभ। ग्रीधणी हड़प्फै पळां सांमळी हड़प्फै गूद। रुंड केई अड़प्फै पडंप्फै वरां रंभ।—बद्रीदांन खिड़ियौ
पड़भव–सं०पु० [देशज] प्रातःकाल, सवेरा।
पड़यागळ, पड़यालग—देखो 'पडियालग' ((रू.भे.)
पड़वज–सं०पु० [देशज] १ सहानुभूति, हमदर्दी। उ०—१ तूं छइ माहरइ सगुण सनेही। तउ करी पड़वज कीजै केही।—वि.कु.
उ०—२ ताहरां दीवांण आंख देख नै वडो सोच कियौ। घणा पिछताया। पछै दीवांण नरवदजी रै डेरै पधारिया बडो सिसटाचार पड़वज कियौ।—नैणसी
२ प्रत्येक दिन ?
उ०—तुरक सुजायतखांन री, बात करां सूं बात। दाखै लिखै 'दुरग' तूं, पड़वज संझ प्रभात।—रा.रू.
पड़वा–सं०स्त्री० [सं० प्रतिपदा] चन्द्रमास के प्रत्येक पक्ष की प्रथम तिथि, परिवा। उ०—अरिदळ निरदळिया 'अजै', सोबा गिळिया सात। दीवाळी वीळी 'उदै', पड़वा हुंदै प्रात।—रा.रू.
रू०भे०—पड़िवा, पडवा, पडिवा, पडोवा, परवा।
पड़वाचा, पड़वाचौ–सं०पु० [सं० प्रति-वचन] उत्तर, जवाब।
पड़वौ–सं०पु० [सं० प्रतिपस्त्य] १ घास-फूस या खपरैल की छाजन का मकान या कमरा। उ०—ओरियै-ओरियै देवर नै जेठ, पड़वै नणदां री भूलरी। वरसै-वरसै ऐ मा मोरी मेह, भीजै भाइयां री बहनड़ी।—लो.गी.
२ रंग-भवन। उ०—१ पड़वै पोढ़ंतांह, करड़ापण हरकोई करै। धारा में धसतांह, आंसू आवै 'ईलिया'।—लाखणसी चारण
उ०—२ पेटो मोड छिपावियां, जांण्यो धाव न जोव। हेली दिवसां पांवणो, पड़वै दीठो पीव।—वी.स.
मुहा०—पड़वौ ओळगणौ—शयनागार (रंग भवन) के पास रात भर जाग कर गायन करना।
३ देखो 'पड़ह' (अल्पा०, रू.भे.)
उ०—ताहरां खाफरै कह्यौ—हूं चोर छूं, खाफरौ म्हारौ नांव छै, काल पड़वौ फिरतौ ताहरां मैं विचारी—मरणौ तौ एक बार छै,

जो राजाइ री हार खाधी तौ हमैं पिण—तै सूं महाराज रै मुजरौ ग्रायौ छूं।—खापरा चोर री वात

अल्पा०—पड़ायौ।

पड़सद, पड़सद्द, पड़साद–सं०पु० [सं० प्रति-शब्द] १ प्रतिध्वनि।

उ०—१ हुय मुजरौ रावतां, होय हाका पड़सद्दां। हाक जसोळां हुई, निहस ग्रंबागळ सद्दां।—सू.प्र.

उ०—२ मारु तोइ न कणमणइ, साल्हकुमर बहु साद। दासी तद दीवाघरी, सांभळिया पड़साद।—ढो.मा.

उ०—३ वागां वि-दळ बराबर वादे। पिड़ गाजियौ गयण पड़सादे।
—रा.रू.

२ घोर शब्द, जोर की ध्वनि। उ०—१ तिण समीयै ग्रांटौ मील ग्रायौ। ग्रागै वळै ग्रायौ थौ, पिण जोर लागौ नहीं, तिको ग्रायौ कोट सात कूदि नै मैं'ल चढियौ। परनाळां रा पड़सादां थी खड़कारी निघै पड़ै नहीं।—जखड़ा मुखड़ा भाटी री वात

पड़साळ, पड़साळा–सं०स्त्री० [सं० प्रति-शाल] मकान के ग्रगाड़ी की शाला? उ०—बहदौ हुवौ ज्यो पहलां ही उठाय ग्राया सो ग्रादमी न्हासता-भाजता मारिया। गांव लुगाई-टाबर सारा भेळा कर कोटड़ी में पड़साळा भूंपड़ा था तिकां में दिया।
—ग्रमरसिंह गजसिंहोत री वात

रू०भे०—पठसाळ, पठसाळा, पडसाळ, पडसाळा।

पड़सूची, पड़सूघी—देखो 'पडूदी' (रू.भे.)

पड़हड़—देखो 'पटह' (रू.भे.)

उ०—सज्जण चाल्या हे सखी, पड़हड़ वाज्यउ द्रंग। कांही रळीबधांमणां, कांही ग्रवळउं ग्रंग।—ढो.मा.

पड़हार—देखो 'प्रतिहार' (रू.भे.)

पड़ह, पड़हौ–सं०पु० [सं० पटह] १ सर्वसाधारण को ढोल बजा कर दी जाने वाली सूचना, घोषणा। उ०—१ राजा फेरावै पड़ह, नगर मांहि इण रीति। मुझ कुमरी राजी करै, द्युं तेहनै सुख-प्रीति।
—वि.कु.

उ०—२ जोधपुर में स्वांमीजी पधारचा। जद...भेळा होय चरचा करवा ग्राया। ऊंधी ग्रंवळी चरचा करवा लागा। जीव बचायां कांई हुवै? विजयसिंहजी पड़हौ फेरायौ तेह नौं कांइ थयौ?
—भि.द्र.

३ देखो 'पटह' (रू.भे.)

पड़ाउ, पड़ाऊ–वि० [सं० पतित] सेना द्वारा पराजित होने पर युद्धस्थल में छोड़ा हुग्रा सामान (घोड़ा, हाथी, ग्रस्त्र-शस्त्रादि)

उ०—१ वंघवै रै वाघेलै 'मुकुंद' सौं वेढ हुई, 'मुकंद' भागौ। हाथी घणा पड़ाऊ ग्राया। खिड़ियै खींवराज वात कही।—नैणसी

उ०—२ घोड़ा तीन सौ पड़ाऊ ग्राया था जिके रावजी रै नजर गुदराइया।—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—३ दुरंग वणहड़ा सहित सरदार ग्रड़ते दियौ, जमी ग्रसमांन विच सबद जड़ियौ। हाथियां तणौ 'उमेद' वड हेड़ाऊ, पड़ाऊ लियण रौ व्यसन पड़ियौ।—उमेदसिंह सीसोदिया रौ गीत

पड़ाणौ, पड़ाबौ–क्रि०स० [पड़णौ क्रि० का प्रे०रू०] १ दूसरे को पटकाने में प्रवृत्त करना, गिराना।

२ किसी पदार्थ को दूसरों के ग्रधिकार से बलात् ग्रपने ग्रधिकार में कर लेना, छीनना। उ०—बरछियां सूं ग्रसवार दस नांख दिया। घोड़ा पड़ायलिया।—सुंदरदास बीकूंपुरी भाटी री वारता

३ बनाना, बनवाना।

पड़ाणहार, हारौ (हारी), पड़ाणियौ—वि०।

पड़ायोड़ौ—भू०का०कृ०।

पड़ाईजणौ, पड़ाईजबौ—कर्म वा०।

पड़ावणौ, पड़ावबौ—रू०भे०।

पड़ापड़, पड़ापड़ी–सं०स्त्री० [सं० पत्] (ग्रनु०) लगातार पड़पड़ शब्द की ग्रावृति, पड़-पड़ की ऐसी ग्रावाज जिसमें दो ध्वनियों के मध्य इतना कम ग्रवकाश हो कि ग्रनुभव में न ग्रा सके।

क्रि०वि०—निरंतर पड़पड़ ध्वनि के साथ, निरतर पड़पड़ शब्द करते हुए।

रू०भे०—पड़पड़, पटपट, पटापट।

पड़ायौ—देखो 'पड़वौ' (ग्रल्पा०, रू.भे.)

पड़ायोड़ौ–भू०का०कृ०—१ एक दूसरे को पटकाने में प्रवृत्त किया हुग्रा, गिराया हुग्रा।

२ किसी पदार्थ को दूसरों के ग्रधिकार से बलात् ग्रपने ग्रधिकार में किया हुग्रा, छीना हुग्रा।

(स्त्री० पड़ायोड़ी)

पड़ाळ, पड़ाळा–सं०पु० [सं० पत् ?] टीबों के मध्य की नीची भूमि।

उ०—खेत मंढैया मंढी, डूंचियां डांमक बाजै। खाडां डांडो खिडै, पडाळां वांडी भाजै।—दसदेव

पड़ाव–सं०पु० [सं० प्रत्यावास] १ किसी सेना, यात्री-समूह या व्यापारी वर्ग का किसी स्थान पर रात्रि भर का ठहराव, यात्रीसमूह का यात्रा के बीच में ग्रवस्थान।

उ०—१ तको महा नरमोही, तकण री ऐड़ी ठकुराई जो बारा-बारा कोस ऊपर फौज री पड़ाव है।—कल्यांणसिंह वाढेल री वात

उ०—२ लोथां पर लोथां लुढक, दे रण इम दरसाव। घणा वणजारा गूणत्यां, पटकी देण पड़ाव।—रेवतसिंह भाटी

२ ऐसा स्थान जहां पर यात्री ठहरते हों। यात्रियों के यात्रा के बीच में ठहरने का निर्दिष्ट स्थान, चट्टी।

पड़ावणौ, पड़ावबौ—देखो 'पड़ाणौ, पड़ाबौ' (रू.भे.)

उ०—सोने तो रूपै सायबा ईंट पड़ाय जी। जिणरा चिणाय दो महल'र माळिया।—लो.गी.

पड़ावणहार, हारौ (हारी), पड़ावणियौ—वि०।

पड़ाविग्रोड़ौ, पड़ावियोड़ौ, पड़ाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

पड़ावीजणौ, पड़ावीजबौ—कर्म वा० ।

पड़ावियोड़ौ—देखो 'पड़ायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० पड़ावियोड़ी)

पड़िआगळ, पड़िआलग—देखो 'पडियालग' (रू भे.)

उ०—आहवि 'मधौ' अगाहि, पड़िआलग वागै प्रवंग । जांणि खंडी-वन जाळिवा, भटकि कटकां भाहि ।—वचनिका

पड़िकमणउ, पड़िकमणा, पड़िक्कमणौ—देखो 'पडिकमणा' (रू.भे.)

उ०—१ अभक्ष्य न खावइ हो लहूड़ी-वडउ, अनंत काय नउ सूंस । सांझ सवारइ हो पड़िकमणउ करइ, वलि करइ संजम हूंस ।

—स.कु.

उ०—२ मरजादा वावीस वोलणी रे लाल, पनरे करमादांन सुविचारी रे । अनरथ-दंड निवारियौ रे लाल, पोसा पड़िकमणा वहुवांन सुवि ।—जयवांणी

उ०—३ पौसह पड़िकमणौ करे, सीलव्रत नित्य नेम । चोखो पाले सूंस आखड़ी, देव-गुरु धरम सूं प्रेम ।—जयवांणी

पड़िमा—देखो 'प्रतिमा' (रू.भे.)

उ०—सूरत सोहती ए, जन-मन मोहती ए । पीतळ पड़िमा पासि, भेटचउ अधिक उलासि ।—स.कु.

पड़ियागळ—देखो 'पडियालग' (रू.भे.)

उ०—पमंग अदाग सुजळ पड़ियागळ, अकबर दळ रहि अगण । कळंक विना 'कुंभेण' कळोधर, 'वाघ' कळोधर कळंक विण ।

—दुरसौ आढ़ौ

पड़ियार—देखो 'प्रतिहार' (रू.भे.)

पड़ियारिया-सं०स्त्री० [देशज] एक राजपूत वंश ।

पड़ियाळ, पड़ियालग—देखो 'पडियालग' (रू.भे.)

उ०—१ जोम छक हरक जड़ियाळ भंजा गजां, जेण तक वजर पड़ियाळ जांणी ।—जोधसिंह राठौड़ री गीत

उ०—२ सल्लूण तुरी सोभड सुचंग, आपड़इ तेजि तीन्हउ तुरंग । पड़ियाळ घूणि रघुनाथ पासि, विढसी संप्रत चडियउ व्रहासि ।

—रा.ज.सी.

उ०—३ वागी हाक कमंध वरदाई, लागू जळै तणी पर लाय । पड़ियालग थारै चांपावत, सुरमुख वरसै वाय सवाय ।

—पहाड़ खां आढौ

उ०—४ 'मोकळ' हरा महाजुध मचतै, वचतां सर नत्रीठ वहै । 'पातल' तूझ तणौ पड़ियालग, रुघर चरचियौ सदा रहै ।

—प्रथ्वीराज राठौड़

पड़ियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ किसी ऊंचे स्थान से गिर कर या उछल कर नीचे स्थान पर ठहरा हुआ, गिरा हुआ ।

२ प्रविष्ट किया हुआ, प्रवेश हुवा हुआ ।

३ एक पदार्थ दूसरे पदार्थ पर फैला कर रखा हुआ, फैला हुआ ।

४ छोड़ा गया हुआ, डाला गया हुआ, पहुंचा हुआ ।

५ पूर्व की स्थिति या दशा को छोड़ कर नवीन स्थिति या दशा में हुवा हुआ ।

६ बीच में आया हुआ, हस्तक्षेप किया हुआ ।

७ किसी पदार्थ को लेने हेतु तेजी से आगे बढ़ा हुआ, झपटा हुआ ।

८ उत्पन्न हुवा हुआ, पैदा हुवा हुआ ।

९ हुवा हुआ ।

१० दुखप्रद घटित हुवा हुआ ।

११ ठहरा हुआ, डेरा डाला हुआ, पड़ाव किया हुआ ।

१२ आराम किया हुआ, विश्राम हेतु लेटा हुआ ।

१३ वीर गति प्राप्त हुवा हुआ ।

१४ अवसान हुवा हुआ, मरा हुआ ।

१५ उपस्थित हुवा हुआ, प्रसंग में आया हुआ ।

१६ प्रवल आकांक्षायुक्त हुवा हुआ ।

१७ चमड़ा उतरा हुआ ।

१८ पड़ता खाया हुआ ।

१९ पकड़ में आया हुआ, पकड़ा गया हुआ ।

२० पड़ता हुवा हुआ ।

२१ मिला हुआ, प्राप्त हुवा हुआ ।

(स्त्री० पड़ियोड़ी)

पड़िवत्ति-सं०स्त्री० [सं० प्रतिपत्तिः] १ प्राप्ति, उपलब्धि ।

उ०—वेस्ट सिलोक निजुत्ति तेरे, जिनजी सहगणी पड़िवत्ति ।

—वि.कु.

२ ज्ञान ।

पड़िवा—देखो 'पड़वा' (रू.भे.)

उ०—१ पड़िवा पख पर सब तजो, सुती श्रोर ही वाट । गगन-मंडळ आसण किया, लांघ्या श्रौघट घाट ।—ह.पु.वा.

उ०—२ पड़िवा थी लीजइ पनरह तिथि सुविचार ।—स.कु.

पड़िहाइणौ, पड़िहाइबौ-क्रि०अ०—व्याकुल होना, घबराना, विह्वल होना । उ०—लक्ख एक तोखार ठिल्ल, अरियण घड़ भंजे । पाताळ सेस पड़िहाइयौ, दूर देस राव डंडवै ।—नैणसी

पड़िहार—देखो 'प्रतिहार' (रू.भे.)

पड़ूतर, पड़ूत्तर—देखो 'पडुतर' (रू.भे.)

उ०—१ कई वार डूंगरी छाया में आडा मारगां पर रात री टैम आवाज आवती—कुण है रे ऊंट वाळी ? पड़ूतर में ईंट री जवाव पत्थर सूं मिळती—थारी वाप भीमौ' ।—रातवासौ

उ०—२ हूं च विचै थारी अकल घणी मोटी है, पैला उणनै तीखी करनै लाव । पछै म्हनै मारण री जुगत कर, कागली मींडका री पड़ूत्तर सुण नै फीटी पड़ियौ ।—फुलवाड़ी

पड़्दी-सं०स्त्री० [देशज] गेहूं के मेदे के साथ घी शक्कर मिला कर बनाया हुआ पौष्टिक व्यंजन । उ०—रावड़ियौ दूध पड़्दी रोटी, मुगती साकर मीठी । देसड़ले नित की दोवाळी, 'नीवज' विना न दीठी ।—अज्ञात

रू०भे०--पड़सूदी, पड़सूघी, पड़ोदी, पड़ोघी, पडसूदी, पडसूघी, पडूदी, पडूघी, पडोदी, पडोघी।

पड़ेच (पड़ैंच)-सं०स्त्री० [देशज] कनात, पर्दा।

पड़ैत--देखो 'पड़त' (१) (रू.भे.)

पड़ोज--देखो 'पडोज' (रू.भे.)

उ०--ग्रौर ग्राप ग्रापरी तरफ सूं कागद घणा पड़ोज मनुहार सूं लिखियौ।--जलाल बूबना री वात

पड़ोटियो--देखो 'परड़' (ग्रल्पा., रू.भे.)

पड़ोदी, पड़ोंघी--देखो 'पड़ूदी' (रू.भे.)

पड़ोस--देखो 'पाड़ोस' (रू.भे.)

उ०--नहं पड़ोस कायर नरां, हेली वास सुहाय। वळिहारी जिण देसड़े, माथा मोल विकाय।--वी.स.

यौ०--ग्रड़ोस-पड़ोस, पास-पड़ोस।

पड़ोसी--देखो 'पाड़ोसी' (रू.भे.)

उ०--१ एक पड़ोसी तिण विण खोडा में धूळ, खात, कचरो न्हांख नै दर लीपनै ऊग्रा साफ कियौ।--भि.द्र.

उ०--२ वरज चढी ना पड़ोसण को, दिवली जी महाराज।

--लो.गी.

(स्त्री० पड़ोसण, पड़ोसणी)

पच-सं०पु० [सं० पच्] १ पचना क्रिया का भाव।

२ देखो 'पथ्य' (रू.भे.)

उ०--१ सुणो सासूजी म्हारा ऐ रे वहू रा मीठा बोल। करदयो पंजीरी को रतन कचोळै। थांरै चढै जी वडाई हम जच्चा पच होय।--लो.गी.

पचक--देखो 'पंचक' (रू.भे.)

पचकणो, पचकबो--देखो 'पिचकणौ, पिचकवौ' (रू.भे.)

पचकणहार, हारो (हारी), पचकणियो--वि०।

पचकिग्रोड़ो, पचकियोड़ो, पचक्योड़ो--भू०का०कृ०।

पचकीजणो, पचकीजबो--भाव वा०।

पचकल्यांण--देखो 'पंचकल्यांण' (रू.भे.)

उ०--मोहरी चंपा सेली समंध, पचकल्यांण पहचांणिये।

--सू.प्र.

पचकांण--देखो 'पचखांण' (रू.भे.)

पचकाणो, पचकावो--देखो 'पिचकाणो, पिचकावो' (रू.भे.)

पचकाणहार, हारो (हारी), पचकाणियो--वि०।

पचकायोड़ो--भू०का०कृ०।

पचकाईजणो, पचकाईजबो--कर्म वा०।

पचकायोड़ो--देखो 'पिचकायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० पचकायोड़ी)

पचकियोड़ो--देखो 'पिचकियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० पचकियोड़ी)

पचकूटो-सं०पु० [सं० पञ्च+कुट्टनम्] शमी वृक्ष की उबाली हुई कच्ची फली (सांगरी), कुम्मट के उबाले हुए बीज, करील के उबाले हुए कच्चे फल (कैर), ग्रमचूर (ग्रमहर), तथा गुड़ या शक्कर के साथ बनाया हुग्रा शाक।

पचक्खणो, पचक्खबो, पचखणो, पचखबो-क्रि०स० [सं० प्रत्याख्यानम्] छोड़ना, त्यागना, परित्याग करना।

उ०--१ सकल जीव खमाविनइ, सरण कीधा च्यार। सत्य निवारी मनथकी, पचख्या चारे ग्रहार।--लाधो साह

उ०--२ जयमलजी रा टोळा माहि थी संवत १८५२ रै ग्रासरै गुमांनजी, दुरगादासजी, पेमजी, रतनजी ग्रादि सोळै जणा नीकळ्या। थांनक, नित-पिंड कलाल री पांणी वहिरणो ग्रादि छोड नवो साधपणो पचख्यो पण सरधा तो वाहिज पुन री।--भि.द्र.

पचखांण-सं०पु० [सं० प्रत्याख्यानं] १ दुष्कर्म के त्याग की प्रतिज्ञा, पापों के त्याग की प्रतिज्ञा।

उ०--जद साध बोल्या भगवांन थयांनै मेलै। थे ग्रागै माठा करम किया तिण सूं कसाई रै कुळ ऊपनो। वळै इसा करम करै तो नरक में जाय पड़सी। इम भिन्न-भिन्न करनै समझायो। बकरा मारवा रा जावजीव पचखांण कराया।--भि.द्र.

२ छोड़ना, परित्याग, त्याग।

रू०भे०--पचकांण।

पचखाणो, पचखावो, पचखावणो, पचखावबो-क्रि०स० [पचखणो क्रि० का प्रे०रू०] छुड़ाना, परित्याग करवाना।

उ०--स्वांमीजी···मांहि थी नीकळी नवो-साधपणो पचखावा नै त्यार थया। जद कनै साध था ज्यांरी प्रक्रती देखी।--भि.द्र.

पचखायोड़ो, पचखावियोड़ो-भू०का०कृ०--छुड़ाया हुग्रा, परित्याग करवाया हुग्रा।

(स्त्री० पचखायोड़ी, पचखावियोड़ी)

पचखियोड़ो-भू०का०कृ०--छोड़ा हुग्रा, परित्याग किया हुग्रा।

(स्त्री० पचखियोड़ी)

पचग्रह--देखो 'पंचग्रह' (रू.भे.)

पचड़ो-सं०पु० [सं० पचनम्] किसी विषय से संबंधी व्यर्थ की वातचीत, झंझट, बखेड़ा।

पचणो, पचबो-क्रि०ग्र० [सं० पचनम्] १ जठराग्नि के बल से खाए हुए पदार्थों का रसादि में परिणित होना, हजम होना।

उ०--पेट में ग्राधो पच्योड़ो बुगलो बोल्यो--म्हैं जींऊ हूं, म्हैं जागूं हूं, उठ विचियो कनै जाई म्हारी बुगली।--फुलवाड़ी

२ पराया धन ग्रन्य ग्रधिकार में इस प्रकार ग्राना कि वह वापिस मालिक के हाथ में न जा सके, ग्रनुचित रूप से प्राप्त धन का ग्रधिकार में होना।

३ एक पदार्थ का दूसरे पदार्थ में लीन होना।

४ ग्रवैध रूप से प्राप्त धनादि का काम में ग्राना।

५ अत्यधिक, शारीरिक या मानसिक परिश्रम के कारण क्षीण होना, बहुत हैरान होना, दुखी होना।

उ०—जोड़ी माया कृपण पच, रांधै सुपच्च अनाज। वायस संचियो मांस वप, कळ में नावै काज।—बां.दा.

६ पकना।

पचणहार, हारौ (हारो), पचणियौ—वि०।

पचवाड़णो, पचवाड़बौ, पचवाणो, पचवाबौ, पचवावणो, पचवाववौ —प्रे०रू०।

पचाड़णो, पचाड़बौ, पचाणो, पचाबौ, पचावणो, पचाववौ— स०रू०।

पचिओड़ौ, पचियोड़ौ, पच्योड़ौ—भू०का०कृ०।

पचीजणो, पचीजबौ—भाव वा०।

पचतारी—देखो 'पचदारी' (रू.भे.)

पचताळीस—देखो 'पेंताळीस' (रू.भे.) (उ.र.)

पचतीरत, पचतीरथ—देखो 'पंचतीरथ' (रू.भे.)

पचदारी, पचधारी—सं०स्त्री० [देशज] १ एक प्रकार का हलवा विशेष जिसमें पानी के स्थान पर केवल दूध या दूध का बना मावा ही डाला जाता है।

रू०भे०—पचतारी।

पचपच—सं०पु० [अनु०] १ कीचड़।

२ पचपच शब्द होने की क्रिया।

पचपचौ—सं०पु० [अनु०] १ घृत की बाहुल्यता से बना व्यंजन विशेष।

२ अधपका भोजन जिसका पानी पूर्ण तरह से जला या सूखा न हो।

रू०भे०—पिचपिचौ।

पचपन—वि० [सं० पञ्चपञ्चांश] पचास और पांच का योग।

सं०पु०—पचास और पांच की संख्या या अंक ५५।

रू०भे०—पंचावन, पंचावनि, पचावन।

पचपनमौं, पचपनवौं—वि० [सं० पञ्चपञ्चाशत्] जो गिनती में चौवन के बाद पचपन के स्थान पर पड़े, क्रम में पचपन के स्थान पर पड़ने वाला।

रू०भे०—पंचपनमौं।

पचपनै'क—वि०—पचपन के करीब, पचपन के लगभग।

पचपनौ—सं०पु० [सं० पञ्चपञ्चाशत्] पचपन की संख्या का वर्ष या साल।

रू०भे०—पंचावनौ।

पचभीलण, पचभीसम—देखो 'भीखमपंचक' (रू.भे.)

पचरंग—सं०पु० [सं० पंच+फा० रंग] १ भिन्न-भिन्न प्रकार के पांच रंगों की सामग्री जो चौक-पूरण में उपयोग ली जाती है।

२ देखो 'पचरंगौ' (मह०, रू.भे.)

उ०—थारा गुरांजी नै पचरंग मोळियो, थारी गुरांणी नै दखणी चीर।—लो.गी.

रू०भे०—पिचरंग।

पचरंगौ—वि० [सं० पंच+फा० रंग] (स्त्री० पचरंगी) भिन्न-भिन्न पांच रंग का, पांच रंग का या पांच रंगों वाला।

उ०—१ आभा चमके बीजळी, सीकर बरसे मेह। छांटा लागै प्रेम का, भीजै सारी देह। जी उमराव बना थांरो पचरंगो पेचो भीजै म्हारा प्रांण।—लो.गी.

उ०—२ सांवरिया री मूरत-मूरत सोभै रंगी चगी ए। पचरंगी ए। मुकट विराजे नेमने क सहियां ए।—जयवांणी

रू०भे०—पचरंग, पिचरंग, पिचरंगौ।

पचराई—सं०स्त्री० [सं० पञ्च+राजी] काचर, ग्वारफली, टिंड, तुरई तथा बेंगन के सम्मिश्रण का बनाया हुआ शाक।

पचलड़ी—सं०स्त्री० [सं० पञ्च+राज० लड़ी] पांच लड़ियों वाली माला की तरह का स्त्रियों के कंठ में धारण करने का आभूषण।

उ०—जठै दासी पारसी में बोली। पनां नै बधाई दीनी। मनचायौ आयौ रंगभीनी। आ कही बाई थौ बधाई। बहोत दिन डूलै। आयौ देसोत। जठै पनां बोली। थारी जीभ रा वारणा ल्यूं। जो तूं मांगै सो बधाई द्यूं। जठै 'पनां' बी गैला ऊपरै निजर कीनी। यां नै दीठा हर। किसतूरी नै बधाई में एक पचलड़ी दीनी।

—पनां वीरमदे री वात

वि०वि०—इसकी अग्रिम लड़ी नाभि तक पहुँचती है तथा लड़ी के मध्य 'पांन' या 'चौकी' लगी रहती है। इस माला के दाने सोने, मोती या अन्य किसी रत्न के होते हैं।

मह०—पचलड़ौ।

पचलड़ौ—देखो 'पचलड़ी' (मह., रू.भे.)

पचवीस—देखो 'पंचीस' (रू.भे.)

उ०—इणि लेखै आखर उगणीस, विगति मात्र पूरी पचवीस।

—ल.पिं.

पचहत्तर—देखो 'पिचंतर' (रू.भे.)

पचहत्तरमौं—देखो 'पिचंतरमौं' (रू.भे.)

पचहत्तरै'क—देखो 'पिचंतरै'क' (रू.भे.)

पचहत्तरौ—देखो 'पिचंतरौ' (रू.भे.)

पचांणु, पचांणू—वि० [सं० पञ्चनवति, शौर. प्र० पंचाणउइ, अप० पंचानवे] नव्वे और पांच का योग, पांच कम सौ।

सं०पु०—नव्वे से पांच अधिक की संख्या।

उ०—उगणत्रीस लख आवगा, सहस पचांणु सोइ।—ल.पिं.

रू०भे०—पंचांणु, पंचांणू, पंच्याणु, पंच्यांणू, पच्यांणु, पच्यांणू, पिच्यांणमै, पिच्यांणु।

पचांणू'क—वि०—पचानवे के लगभग।

पचांणूमौं, पचांणूवौं—वि०—जिसका स्थान क्रमशः चौरानवे के बाद पड़े, पचानवां।

सं०पु०—पचानवे की संख्या का वर्ष।

रू०भे०—पंचांगूमौं, पंचांगूवौं, पंचांनमौं, पंचांनवौं।

पचाड़णो, पचाड़बौ—देखो 'पचाणो, पचावौ' (रू.भे.)

पचाड़णहार, हारौ (हारी), पचाड़णियो—वि०।

पचाड़िग्रोड़ौ, पचाड़ियोड़ौ, पचाड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।

पचाड़ीजणो, पचाड़ीजबौ—कर्म वा०।

पचाड़ियोड़ौ—देखो 'पचायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० पचाड़ियोड़ी)

पचाणो, पचावौ-क्रि०स० [सं० पचप्] १ खाए हुए पदार्थों को जठराग्नि के बल हजम करना।

२ किसी का धनादि अवैध उपाय से हस्तगत करना, अपने अधिकार में करना।

३ अनुचित रूप से प्राप्त धनादि को अपने काम में लाना, उससे लाभ उठाना।

४ अत्यधिक परिश्रम लेकर या कष्ट देकर शरीर, मस्तिष्क आदि को थकित करना, तंग करना, हैरान करना।

५ एक पदार्थ का दूसरे पदार्थ को अपने आप में लीन करना, खपाना।

६ पकाना।

पचाणहार, हारौ (हारी), पचाणियो—वि०।

पचायोड़ौ—भू०का०कृ०।

पचाईजणो, पचाईजबौ—कर्म वा०।

पचणो, पचबौ—अक० रू०।

पचाड़णो, पचाड़बौ, पचावणो, पचावबौ—रू०भे०।

पचायणोत-सं०पु०—भाटी वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

पचायोड़ौ-भू०का०कृ०—जठराग्नि के बल हजम किया हुआ (खाद्य)

२ अवैध उपाय से हस्तगत किया हुआ (धनादि)

३ अनुचित रूप से प्राप्त धनादि को काम में लाया हुआ, उपयोग किया हुआ, लाभ उठाया हुआ।

४ अत्यधिक परिश्रम से शरीर, मस्तिष्क आदि को थकित किया हुआ, हैरान किया हुआ, तंग किया हुआ।

५ एक पदार्थ का दूसरे पदार्थ को अपने आप में लीन किया हुआ, खपाया हुआ।

६ पकाया हुआ।

(स्त्री० पचायोड़ी)

पचारणो, पचारबौ—देखो 'पछाड़णो, पछाड़बौ' (रू.भे.)

उ०—जोगणी-पीठि वीकइ जुड़ेय। काढिय' नाळि करवद्द करेय।
पाधरे खेत दूदइ पचारि। सूंडाळ लियौ सिरियउ संघारि।

—रा.ज.सी.

पचारणहार, हारौ (हारी), पचारणियो—वि०।

पचारियोड़ौ—भू०का०कृ०।

पचारीजणो, पचारीजबौ—कर्म वा०।

पचारसोत-सं०पु०—कछवाह वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

पचारियोड़ौ—देखो 'पछाड़ियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० पचारियोड़ी)

पचावणो, पचावबौ—देखो 'पचाणो, पचावौ' (रू.भे.)

पचावणहार, हारौ (हारी), पचावणियो—वि०।

पचाविग्रोड़ौ, पचावियोड़ौ, पचाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

पचावीजणो, पचावीजबौ—कर्म वा०।

पचावन—देखो 'पचपन' (रू.भे.)

पचावनो-सं०पु०—पचपन की संख्या का वर्ष।

पचावियोड़ौ—देखो 'पचायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० पचावियोड़ी)

पचावौ-सं०पु० [देशज] लंबायमान ऊंचा सुव्यवस्थित जमाया हुआ घास-फूस अथवा बाजरे, ज्वार आदि के सूखे डंठलों का ढेर।

उ०—कांणिया काचर रौ कैणौ व्हियौ अर सगळै गुड़ै में लाय लागगी। कठीनै ढांणियां सिळगै, कठीनै चारा रा पचावा सिळगै। गुडा में हायतराय मचगी।—फुलवाड़ी

रू०भे०—पंजावौ, पचासौ।

पचास-वि० [सं० पञ्चशत्, प्रा० पंचासा] चालीस और दस, चालीस से दस अधिक।

सं०पु०—वह संख्या जो चालीस और दस के योग से बने।

चालीस और दस के योग से बनने वाली संख्या (५०)

रू०भे०—पंचास।

पचासमौं-वि० [सं० पञ्चासमः] गिनती में पचास के स्थान पर पड़ने वाला।

पचासे'क-वि० [सं० पञ्चशत्] पचास के लगभग।

पचासौ—देखो 'पचावौ' (रू.भे.)

पचियासियौ—देखो 'पिचियासियौ' (रू.भे.)

पचियासी—देखो 'पिचियासी' (रू.भे.)

पचियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ हजम हुवा हुआ, पचा हुआ (खाद्य)

२ अवैध ढंग से हस्तगत हुवा हुआ (धनादि)

३ अनुचित उपाय से उपयोग में आया हुआ, लाभ हुवा हुआ।

४ अत्यधिक परिश्रम से थका हुआ, हैरान हुवा हुआ।

५ एक पदार्थ दूसरे पदार्थ में लीन हुवा हुआ, खपा हुआ।

५ पक्का हुवा हुआ।

पचियौ—१ देखो 'पिचियौ' (रू.भे)

२ देखो 'पचीसौ' (अल्पा., रू.भे.)

पचीयत-सं०पु०—पश्चात्ताप ? उ०—'पीथल' तणो म कर दुख पचीयत। द्रढ तज गया तियां कर दुख। आद जुगाद 'अखा' हर आगै। सार मरण घण घणो सुख।—प्रिथीराज जैतावत रौ गीत

पचीर-सं०पु० [देशज]'सुरणाई' नामक फूंक वाद्य के मुंह पर लगा

हुआ गोलाकार नारियल की खोपड़ी का खंड या टुकड़ा जो बजाते समय होठों को ढक लेता है।

पचीस-वि० [सं० पञ्चविंशति, प्रा० पंचवीसति, अप० पा० पचीस] पांच और वीस, वीस से पाँच अधिक या तीस से पाँच कम।

सं०पु०—वह संख्या या अङ्क जो पाँच और वीस के योग से बने। पाँच और वीस के योग से बनी संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है (२५)।

रू०भे०—पचवीस, पच्चीस।

पचीसमौं-वि० (स्त्री० पचीसमीं) जो क्रम में पचीस के स्थान पर हो, गिनती में पचीस के स्थान पर पड़ने वाला।

रू०भे०—पच्चीसमौं।

पचीसिका, पचीसी-सं०स्त्री० [सं० पंचविंशति] १ एक प्रकार की पचीस वस्तुओं का समूह या संग्रह।

उ०—कुवचन मुख कहणौ नहीं, सुवचण कहणौ सुद्ध। वचन विवेक पचीसिका, इम आखै अविरुद्ध।—बा.दा.

२ आयु के प्रारम्भ के पचीस वर्ष।

रू०भे०—पच्चीसी।

पचीसे'क-वि० [सं० पञ्चविंशति ?] १ पचीस की, पचीस संबंधी।

उ०—दिली ए सहर से सायवा पोत मंगावौ जी। तो हाथ पचीसे'क गज वीसी गाढ़ा मारूजी।—लो.गी.

२ पचीस के लगभग, करीब पचीस।

रू०भे०—पच्चीसे'क।

पचीसौ-सं०पु० [सं० पञ्चविंशति+रा.प्र. औ] पचीस की संख्या का वर्ष।

रू०भे०—पच्चीसौ।

अल्पा०—पचियौ।

पचेटौ, पचोटौ-सं०पु० [सं० पञ्च+रा.प्र. एटौ] पांच गोल कंकड़ या काच की गोलियां जिनसे छोटी छोटी लड़कियें ऊपर उछाल कर हाथ में ग्रहण करने का खेल खेलती है।

उ०—इतरै संध्या पड़ी, गुळगचिया आछा-आंछा फूटरा सेर दोय तीन भेळा कर आडण री वांह फाटियोड़ी में घाल मुंहडी वांध साथ लिया। विचारी छोकड़ी रै रमणै नूं पचेटा होसी।

—साह रांमदत्त री वारता

पचोतड़(ड)—देखो 'पचोतर' (रू.भे.)

पचोतड़(ड)सौ—देखो 'पचोतरसौ' (रू.भे.)

पचोतर-वि० [सं० पञ्चोतर] सौ की संख्या से पांच अधिक, पाँच ऊपर।

रू०भे०—पचतोड़(ड)।

पचोतरसौ-सं०पु० [सं० पञ्चतर+शत] सौ और पाँच के योग की संख्या का अंक। एकसौ पांच (१०५)।

रू०भे०—पचोतड़(ड) सौ।

पचोतरी—देखो 'पिचोतरी' (रू.भे.)

पच्चंग-सं०पु० [सं० प्रत्यङ्ग] प्रत्यंग (जैन)।

पच्चक्ख—देखो 'प्रत्यक्ष' (रू.भे.)

पच्चक्खांण, पच्चक्खांणौ—देखो 'पचखांण' (रू.भे.)

उ०—१ स्रावक स्राविका सहू को सांभळउ। तुम्हे छउ चतुर सुजांणीजी। जन्म जीवित सफळउ करउ आपणउ। करउ आखड़ी पच्चक्खांणौ।—स.कु.

उ०—२ मनुस्य जन्म नवि हारो आळ। तमे पांणी पहली वांधौ पाळ। जो करइ व्रत आखड़ी पच्चक्खांण। समयसुंदर कहइ ते चतुर सुजांण।—स.कु.

उ०—३ करम छतीसी कांने सुण नइ, करजो व्रत पच्चक्खांण जी। समयसुंदर कहइ सिव सुख लहिस्यउ, परम तणौ परमांण जी।

—स.कु.

पच्चर—देखो 'फाच्चर' (रू.भे.)

पच्ची-सं०स्त्री० [सं० पचिता] १ इस प्रकार से जड़ने या जमाने का कार्य की जमाई या जड़ी हुई वस्तु उस पदार्थ के समतल हो जाय जिससे जड़ी जाती है।

२ किसी धातु-निर्मित वस्तु पर किसी अन्य धातु के पत्तर का जड़ाव।

पच्चीकारी-सं०स्त्री० [सं० पचिता+फा० कारी] पच्ची करने की क्रिया या भाव, जड़ने-जोड़ने की क्रिया या भाव।

पच्चीस—देखो 'पचीस' (रू.भे.)

पच्चीसमौं—देखो 'पचीसमौं' (रू.भे.)

(स्त्री० पच्चीसमी)

पच्चीसी—देखो 'पचीसी' (रू.भे.)

पच्चीसौ—देखो 'पचीसौ' (रू.भे.)

पच्छ—१ देखो 'पक्ष' (रू.भे.)

उ०—१ पढै फारसी प्रथम, म्लेच्छ कुळ में मिळ जावै। अंगरेजी पढ़ अवल, होटलां मैं हिळ जावै। पच्छ ग्रहै प्रालब्ध, नहीं पुरसारथ नैड़ो। चोखै मत नहिं चाय, भाय आवै मत भैंड़ो।—ऊ.का.

उ०—२ परघौ रणखेत मसूर मलच्छ, मचविक्रय सेन किलमनि पच्छ।—ला.रा.

२ देखो 'पछै' (रू.भे.)

उ०—पहली गाहो पर वजे, गीत दूहो यक पच्छ फिर गाहो दूहो सुफिर, गीततणो दख दच्छ।—र.ज.प्र.

पच्छम—देखो 'पच्छिम' (रू.भे.) (डि.को.)

पच्छमियौ—देखो 'पच्छमी' (अल्पा०, रू.भे.)

पच्छमी-वि०—१ पश्चिम दिशा संबंधी, पश्चिम दिशा का।

२ देखो 'पच्छिम' (रू.भे.)

उ०—जंबू दीप मैं जांम एको जिकारौ, दिशा पच्छमी दूर प्रासाद द्वारौ।—मे.म.

रू०भे०—पच्छिमी, पछिमि, पछिमि, पछिमी ।

अल्पा०—पच्छमियौ, पच्छिमियौ ।

पच्छवांण—देखो 'पछमांण' (रू.भे.)

उ०—नीमडियौ भारत्थ, कथ राखी कमधज्जे । किया जोध खळहांण, मार पडतौ ग्रहि भुज्जे । पच्छवांण पगार, हुग्री राजा मंडोवर । रुद्दै जैत रिण तूर(फ), वडो जीतौ जुडि जागर ।—गु.रू.वं.

पच्छिम-सं०स्त्री० [सं० पश्चिम] वह दिशा जिसमें कृतिका नक्षत्र ग्रस्त होता हो, कृतिका नक्षत्र का ग्रस्त-स्थान, पूर्व दिशा के ठीक सामने की दिशा, पश्चिम । उ०—१ ग्रपभ्रंस भाखा प्राकृत सो कुळ का विवहार जिस सेती प्राकृत भाखा विस्तार करि गाई । जिसमें पूरब पच्छिम उत्तर दक्खिण की ए च्यार भाखा कहि दिखाई ।

—सू.प्र.

उ०—२ सूरज ना किरण पच्छिम ढळया, पंथी सगां नइ मिळया ।

—रा.सा.सं.

रू०भे०—पच्छम, पच्छिव, पछम, पछमांण, पछवांण, पछि, पछिम, पछिवांण, पस्चिम, पाछिम, पीछम ।

पच्छिम-घाट-सं०पु० [सं० पश्चिम+रा. घाट] बंबई प्रदेश के पश्चिम ग्रोर की पर्वतमाला ।

रू०भे०—पछमघाट, पस्चिमघाट ।

पच्छिमि—१ देखो 'पच्छिम' (रू.भे.)

२ देखो 'पच्छमी' (रू.भे.)

उ०—तुं पच्छिमी पाट पतिसाह, तुं भेस सरब भगवंत मू । 'पीरीये' कहै परमेसरी, हींगळाज सुप्रसन्न हू ।—पी.ग्रं.

पच्छिमियौ—देखो 'पच्छमी' (ग्रल्पा०, रू.भे.)

पच्छिमो—देखो 'पच्छमी' (रू.भे)

पच्छिराज—देखो 'पक्षिराज' (रू.भे.)

पच्छिव—देखो 'पच्छिम' (रू.भे.)

पच्छी—देखो 'पक्षी' (रू.भे.)

उ०—भुकियो वेळ भड़ ग्राधो-फर ग्राधो । हाथाताळी हरिण लुकियो नहीं लाधो । कच्छियो कर-कर रच्छी रुळ जावै । तड़फै मच्छी-तळ पच्छी पुळ जावै ।—ऊ.का.

पच्छेवांणु-वि० [सं० पश्चात्+त्वन्] पीछे का, पीछे चलने वाला ।

उ०—साधीउ पच्छेवांणु भीमि पुरोहितु लाळहरे । मेल्हीउ दीधु पीगांणु केडइ ग्रावी पुणु मिलए ।—पं.पं.च.

पच्छोकड़ो, पच्छोकडउ, पच्छोकडो—देखो 'पछोकड़ो' (रू.भे.) (उ.र.)

पच्यांणु—देखो 'पचांणु' (रू.भे.)

पच्यासियौ—देखो 'पिचियासियौ' (रू.भे.)

पच्यासी—देखो 'पिचियासी' (रू.भे.)

पच्यासी'क—देखो 'पिचियासी'क' (रू.भे.)

पच्यासीमौं—देखो 'पिचियासीमौं' (रू.भे.)

(स्त्री० पच्यासामीं)

पछंटणौ, पछंटवौ—देखो 'पछटणौ, पछटवौ' (रू.भे.)

उ०—कर साह किरमिर सूर समहर । ग्रडर ग्ररिहर पछंट सिर पर ।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

पछ-सं०पु० [सं० पथ्य] १ किसी कार्य की सिद्धि के हेतु उसकी पूर्ति पर्यन्त धारण किया जाने वाला व्रत, प्रण ।

उ०—ए छोरी दासी तू वैरी भी लगाय, क्यांरी म्हारी जच्चा रांणी पछ लियौ हो राज । मांठां को मंडक्यो, ग्रळसी को तेल, वो थारी जच्चा रांणी पछ लियौ हो राज ।—लो.गी.

२ त्यागना क्रिया, त्यागना, छोड़ना ।

३ देखो 'पथ्य' (रू.भे.)

उ०—रांम नांम निज मंत्र है, लीजै चित्त लगाय । ग्रोखद खावै'र पछ रखै, ज्यांरी वेदन जाय ।—ग्रज्ञात

४ देखो 'पछै' (रू.भे.)

उ०—सब लघु पय पय धरि, पछ यक गुरु करि, जळहर कळ सम लछण धरै ।—र.ज.प्र.

पछइ—देखो 'पछै' (रू.भे.)

उ०—१ दउढ़ वरस री मारवी, त्रिहूं वरसांरउ कंत । बाळपणइ परण्यां पछइ, ग्रंतर पड़घउ ग्रनंत ।—ढो.मा.

उ०—२ सुणि सुंदरि केता कहां, मारू देस वखांण । मारवणी मिळियां पछइ, जांण्यउ जनम प्रवांण ।—ढो.मा.

पछखाड़णौ, पछखाड़वौ, पछखाणौ, पछखावौ—देखो 'पचखाणौ, पचखावौ' (रू.भे.)

पछखायोड़ौ—देखो 'पचखायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० पछखायोड़ी)

पछट-सं०स्त्री०—१ तलवार, खड्ग ।

२ प्रहार, चोट. ३ पछाड़ ।

रू०भे०—पछटी, पछट्ट, पछट्ठ ।

पछटणौ, पछटवौ-क्रि०स० [देशज] १ तेज हांकना, द्रुत गति से चलाना । उ०—पमंगां पछटि खेहां पूर, सूझै नहीं ग्रंवर सूर ।

—गु.रू.वं.

२ मैल निकालने के लिए गीले कपड़े को लंबोतरा समेट कर उसके एक छोर को हाथ में पकड़ कर दूसरे छोर को पत्थर पर मार कर धोना ।

३ प्रहार करना, मारना ।

उ०—ग्ररि गज-घटा पीठि पछटै इम । जळ सिला तटा रजक दुपटा जिम ।—सू.प्र.

पछटणहार, हारौ (हारी), पछटणियौ—वि० ।

पछटिग्रोड़ौ, पछटियोड़ौ, पछटयोड़ौ—भू०का०कृ० ।

पछटीजणौ, पछटीजवौ—कर्म वा० ।

पछट्ठणौ, पछट्ठवौ, पछठणौ, पछठवौ—रू०भे० ।

पछटियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ तेज हांका हुग्रा, द्रुत गति से चलाया

हुआ।

२ शिल पर खड़े-खड़े पछाड़ कर धोया हुआ (वस्त्र)

३ प्रहार किया हुआ, चोट पहुंचाया हुआ, मारा हुआ।

(स्त्री० पछटियोड़ी)

पछटी, पछट्ट, पछट्ठ—देखो 'पछट' (रू.भे.)

उ०—खाय पछट्टा मीर खग, कटिया कोपट्ट।—लूणकरण कवियो

पछट्ठणौ, पछट्ठबौ—देखो 'पछटणौ, पछटबौ' (रू.भे.)

उ०—'हठी' रिणछोड़ तणौ करि हाक। पछट्ठत खाग हणै पिसणाक।

—सू.प्र.

पछठणौ, पछठबौ-क्रि०स० [देशज] १ भेजना।

उ०—प्रीउ बालंतु पंखीउ, अहनिस रहि अगासि। वयरणि तास न नीसरइ, पछठौ माहरे पासि।—मा.कां.प्र.

२ देखो 'पछटणौ, पछटबौ' (रू.भे.)

पछठणहार, हारौ (हारी), पछठणियौ—वि०।

पछठिअोड़ौ, पछठियोड़ौ, पछठ्योड़ौ—भू०का०कृ०।

पछठीजणौ, पछठीजबौ—कर्म वा०।

पछठियोड़ौ-भू०का०कृ०— १ भेजा हुआ।

२ देखो 'पछटियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० पछठियोड़ी)

पछताअौ—देखो 'पछतावौ' (रू.भे.)

पछताणौ, पछतावौ-क्रि०अ० [सं० पश्चाताप, प्रा० पच्छताव] अपने द्वारा या निकटस्थ संबंधी या इष्ट मित्रों द्वारा अनुचित कार्य होने के कारण दुखी होना, खेद प्रकट होना, मनस्ताप होना, पछताना। उ०—पर नारी सूं प्रीत कर, आफू डळा अरोग। आखर पछताया अठै, लांणत दे दे लोग।—बां.दा.

पछतावणहार, हारौ (हारी), पछतावणियौ—वि०।

पछतायोड़ौ— भू०का०कृ०।

पछताईजणौ, पछताईजबौ—भाव वा०।

पछतावणौ, पछतावबौ, पछिताणौ, पछिताबौ, पसताणौ, पसतावौ, पस्ताणौ, पस्तावौ, पस्तावणौ, पस्तावबौ, पिछताणौ, पिछतावौ, पिछतावणौ, पिछतावबौ, पिसताणौ, पिसतावौ, पिसतावणौ, पिसतावबौ, पिस्ताणौ, पिस्तावौ, पिस्तावणौ, पिस्तावबौ।—रू०भे०।

पछताप, पछतापौ—देखो 'पछतावौ' (रू.भे.)

उ०—१ हा हा! वीर तइं स्यूं वस्यूं जी रे जी, गौतम करत अनेक विलाप रे जी। जेतलउ कीजइ नेहलउ जी रे, जिवड़ा तेतलउ हुयइ पछताप रे।—स.कु.

उ०—२ पस्चाताप ते करे घणौ, वचन मांन्यौ नहीं सजनां तणौ। तेह नी परै संभळ तूं राय रे? पछै पछतापौ तो नै थाय।

—जयवांणी

पछतायोड़ौ-भू०का०कृ०—मनस्ताप किया हुआ, खिन्न हुवा हुआ।

(स्त्री० पछतायोड़ी)

पछताव—देखो 'पछतावौ' (रू.भे.)

पछतावणौ, पछतावबौ—देखो 'पछताणौ, पछताबौ' (रू.भे.)

उ०—१ न करघौ नीच पुरुस सूं नेह, करसी ते पछतावसी जो खिण-खिण मां।—वि.कु.

उ०—२ इतरी बात देख झाली री मुंहडौ सफेद पड़ गयौ, धर दूर जाय नै ऊभी रही। मन में पछतावण लागी। जे भ्रो कासूं उपद्रव छै।—कुंवरसी सांखला री वारता

पछतावणहार, हारौ (हारी), पछतावणियौ—वि०।

पछताविअोड़ौ, पछतावियोड़ौ, पछताव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

पछतावीजणौ, पछतावीजबौ—भाव वा०।

पछतावियोड़ौ—देखो 'पछतायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० पछतावियोड़ी)

पछतावौ-सं०पु० [सं० पश्चात्ताप, प्रा० पच्छताव] वह मनस्ताप या दुख जो अपने या अपने निकटस्थ संबंधी या इष्ट मित्रों के द्वारा किसी अनुचित कार्य होने के पश्चात् उस कार्य के औचित्य-अनौचित्य का ध्यान आने पर किया जाय, अनुताप, अफसोस, रंज। उ०—१ सुमरण का सांसा रह्या, पछतावा मन मांहि। दादू मीठा रांम रस, सगळा पीया नांहि।—दादूवांणी

उ०—२ अकल रै विचार सूं कांम रै अत नूं देखौ, तिसूं कांम कियां रै पाछै पछतावौ नहीं होय। पाछै पछतावै सूं कोई नफौ नहीं छै।—नी.प्र.

उ०—३ कूड़ कपट नवि कीजियइ रे, पापे पिंड भराय। पहिले पुण्य न कीजियइ रे, तउ पछइ पछतावौ थाय।—स.कु.

रू०भे०—पछताअौ, पछताप, पछतापौ, पछताव, पछाताप, पछातापौ, पछिताव, पछितावौ, पस्चात्ताप, पस्ताव, पस्तावौ, पिछताअौ, पिछताप, पिछतापौ, पिछताव, पिछतावौ, पिसतावौ, पिस्ताअौ, पिस्ताप, पिस्तापौ, पिस्ताव, पिस्तावौ।

पछम—देखो 'पच्छिम' (रू.भे.)

उ०—कालींझर री पहाड़ वडे गांव सूं कोस······पछम दिसा। लांबौ कोस पांच ५।—नैणसी

पछमघाट—देखो 'पच्छिमघाट' (रू.भे.)

पछमांण-वि० [सं० पश्चिम+रा.प्र. आंण] १ पश्चिम दिशा का, पश्चिम का (की)

उ०—घुर्कै आरांण असमांण नीसांण घुवै, ढहै मोहतांण मुगळांण ढेरी। जोड़ियां पांण सज डांण जोगणपुरी, फौज पछमांण दखणांण फेरी।—जोगीदास चांपावत री गीत

२ देखो 'पच्छिम' (रू.भे.)

उ०—तूं तजै मांण दिल करय तंग। पछमांण दिसा ऊगै पतंग।

—वि.सं.

रू०भे०—पच्छवांण, पछवांण, पछिवांण।

पछलारी-वि० [सं० पश्चात्+रा.प्र. आरौ] (स्त्री० पछलारी)

उ०—सीरांवण जीमण दोपेरां सारी। पीसण पोवण नै आरी पछलारी। आती ओलण नै अंवक दक आयी। छाती छोलण नै छपनी छित छायो।—ऊ.का.

पछलो—देखो 'पाछलो' (रू.भे.)

उ०—ओर सहेली, मा खिलण-मिळण नै जाय, मनै दोन्हो मा पोवणी जे। पोयी पोयी, मा रोटियां री ए जेट, पछली पोयी, मा, मांढियो जे।—लो.गी.

(स्त्री० पछली)

पछवांण—१ देखो 'पछमांण' (रू.भे.)

उ०—गजण गरज्जै बोलियो, करि ग्रहियै केवांण। भला भिड़ंता आगळी, वाहुड़ियो पछवांण।—गु.रू.बं.

२ देखो 'पच्छिम' (रू.भे.)

पछवा—देखो 'पिछवा' (रू.भे.)

उ०—हां जी म्हारा सायवा, चाली है परवा पछवा पून तिंवाळी तिंवाळी सुंदर गिर पड़ी जी म्हारा राज तिंवाळो।—लो.गी.

पछवाई-स०स्त्री० [स० पश्चात्] सेना के पीछे के भाग से युद्ध करने की क्रिया। उ०—कांधळजी घोड़ो खुरी करावता ताहरां सदा तंग पुस्तंग दुमची आगवंध तूट जावता सु तूट गया। ताहरां दीकरा-राजी सूरी, नीवी बीजी ही साथ हूतो तैने कह्यो के थे फौज री मुहडी झाली, जितरै हूं तंग सुंवार ल्यां। सु साथ ठैहराय न सक्यो। पासै सूं कर वध गयो। ताहरां कांधळजी कह्यो—जावो रे कपूतां! म्है तो थांनू वाघा रै भरोसै पछवाही री कह्यो हूतो, कै बाघो सदाई पछवाई करतो हूतो।—नैणसी

रू०भे०—पछवाही।

पछवाड़ो-सं०पु० [सं० पश्चात+पाट अथवा वाटः] पीछे का भाग, पीछे का प्रदेश। उ०—दिन-दिन खींची तूटता गया, हाडां री जमाव हूतो गयो। हाडे खीची मारनै धरती भोग घाती, मुदो मऊ ऊपर सूं मऊ नू गोव १४०० लागै। गांव ७०० अगवाड़(रे) तिके चोड़ै गांव ७०० पछवाडै।—नैणसी

पछवाही—देखो 'पछवाई' (रू.भे.)

उ०—तद कांधळजी तंग सारण नूं ऊतरिया। अरु साथ सारो आनै है। जिसै सारंग खांन नूं कांधळजी रै साथ पर घोड़ा उठाय नांखिया। तद साथ सूं अरु कांधळ रै वेटां सूं धकौ झलियो नहीं, सू भाज नीसरिया। नै कांधळजी खनै आदमी पनराएक रया। पीछै कांधळजी कयो 'जावो रे कपूतां! मैं थांनै वाघा रै भरोसै पछवाही री कयो हो।' पीछै कांधळजी पाळा आदमियां पनरा सूं सारंग खांन री फौज सूं तरवारां भिळिया।—द.दा.

पछांणणी, पछांणवी—देखो 'पिछांणणी, पिछांणवी' (रू.भे.)

उ०—धरणीधर नूं जिके ध्यावइ, सरग तणे विचि तिके समायइ। उर ऊपर लिछमी पग आंणै, पारब्रह्म रा चरण पछांणै।

—पी.ग्रं.

पछांणणहार, हारो (हारी), पछांणणियो—वि०।

पछांणाणो, पछांणावो, पछांणावणो, पछांणाववो—प्रे०रू०।

पछांणिओड़ो, पछांणियोड़ो, पछांण्योड़ो—भू०का०कृ०।

पछांणीजणो, पछांणीजवो—कर्म वा०।

पछाड़-सं०स्त्री० [सं० पश्चात्+प्रहार] १ पछाड़ने की क्रिया या भाव।

२ मूच्छित होकर या अचेत होकर गिरने की क्रिया।

उ०—आधी सी ढळतां जी क चनणा नीसरी जी, कोई रांमूड़ो खाई छै पछाड़। खाय तिंवाळो जी क रांमूड़ो गिर पड़्यो जी।

—लो.गी.

पछाड़णो, पछाड़बो-क्रि०स० [सं० पश्चात्+प्रहार] १ वध करना, हनन करना, घात करना, मारना। उ०—१ पिड़ भू 'भीम' पछाड़ियो, खुरम गयो कर खेह। गाजण-गंजण अगंजियां, वीर वणायो वेह।—वां.दा.

उ०—२ झळहळ वीज रूप खग झाड़ूं। पिसण घणा जरदैत पछाड़ूं।

—सू.प्र.

उ०—३ यमुना तीरे जाय नै कन्हैया, तैं नाथ्यो काळी नाग रे। कंसराजा नै पछाड़ियो, पछै खुलिया थारा भाग रे।—जयवांणी

२ पराजित करना, हराना, खदेड़ना।

उ०—१ अघळा दईत पछाड़िया, भिड़ि जोता भाराथ। ताहरी दरसण त्रीकमां, साथ करै समराथ।—पी.ग्रं.

उ०—२ पातिसाहां रा नर हैवर-कुंजर-घड़ा पछाड़ां। चद-जस-नांमी चाडां।—वचनिका

उ०—३ महाबळवंत काळीनाग नै नाथियो। कंस नै मार जरासंध पछाड़ियो।—जयवांणी

३ मारना, पीटना। उ०—फबै जूत सिर फूल, पत्र सोई पटक पछाड़ै। फळ ढूंणां में फाड़, तोय बांसां सूं ताड़ै।—ऊ.का.

[सं० प्रक्षालनम्] ४ धोने के निमित्त कपड़े को खड़े-खड़े पत्थर पर जोर-जोर से आछटना, पटकना।

५ कुश्ती में विपक्षी को गिराना, पटकना।

६ गिराना, पटकना। उ०—महावीर पाड़ै पछाड़ै मइंदां, ग्रहै दंत रोकै मदाळा गइंदां।—वं.भा.

पछाड़णहार, हारो (हारी), पछाड़णियो—वि०।

पछाड़ाड़णो, पछाड़ाड़बो, पछाड़ाणो, पछाड़ाबो, पछाड़ावणो, पछा-ड़ावबो—प्रे०रू०।

पछाड़िओड़ो, पछाड़ियोड़ो, पछाड़्योड़ो—भू०का०कृ०।

पछाड़ीजणो, पछाड़ीजबो—कर्म वा०।

पचारणो, पचारबो, पछाटणो, पछाटबो, पछारणो, पछारबो—रू०भे०

पछाड़ियोड़ो-भू०का०कृ०—१ वध किया हुआ, मारा हुआ।

२ पराजित किया हुआ, हराया हुआ, खदेड़ा हुआ।

३ गिराया हुआ, पटका हुआ।

४ (खड़े-खड़े कपड़े को) धोने हेतु जोर-जोर से पटका हुआ।
५ कुश्ती में गिराया हुआ।
६ पटका हुआ, गिराया हुआ।
(स्त्री० पछाड़ियोड़ी)

पछाड़ी-सं०स्त्री० [सं० पश्चात्+रा. प्र. आड़ी] १ पीछे का भाग, पीछे का हिस्सा, पृष्ठ भाग। उ०—१ ज्यूं जसवंतसिहजी भागिया सो जसवंतसिहजी कन्है आपरी चाळीस हजार फौज थी सो सारी भागी। हूरमां हाथियां चढी पछाड़ी नूं खड़ी थी सो लूट लीवी अर चलता रहिया।—पदमसिंह री वात
उ०—२ पोसाकां कर परी, वैंठ सुखपाळ पछाड़ी। दो माला-बरदार, एक नीसांण अगाड़ी।—अरजुणजी बारहठ
२ घोड़े के पिछले पैर बांधने की रस्सी। उ०—राजाजी रा घोड़लिया काळा रै लारै दौड़ं ओ। आऊं रा घोड़ा तो पछाड़ी तोड़ं ओ झगड़ो ह्वैंण दो। झगड़ा में थांरी जीत व्हैला ओ झगड़ो व्हैण दो।—लो.गी.
क्रि०प्र०—बांधणी, मारणी, लगाणी।
३ पंक्ति में सबसे अन्तिम व्यक्ति या प्राणी।
४ बंदूक छोड़ते समय सीने पर लगने वाला कुन्दे का आघात।
क्रि०प्र०—मारणी, लगाणी।
अव्य०—जिधर मुह हो उसके विरुद्ध दशा में, पीठ की ओर, पीछे।

पछाड़ीवाव-सं०स्त्री०यौ० [सं० पश्चात्+रा० वाव=प्रहार] वह बंदूक जो छूटने पर छोड़ने वाले के सीने के ऊपर कुंदे का आघात या झटका मारती हो।

पछाडणौ, पछाडबौ—देखो 'पछाड़णौ, पछाड़बौ' (रू.भे.)
उ०—पाडे किय पहट मंदांनं, दरबार दीवांणह-खांनं। उध्धै पुढि दखण उपाडे, खंडे मीर खपाह पछाडे।—गु.रू.बं.

पछाडियोडौ—देखो 'पछाड़ियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० पछाडियोडी)

पछाडो—देखो 'पछाड़ो' (रू.भे.)

पछातापं, पछातापौ—देखो 'पछतावौ' (रू.भे.)
उ०—माहो-माहे मोठे मिल्या ए, मांन महातम खोय। पछाताप ते अति करै ए, हूण-हार जिम होय।—ध.व.ग्रं.

पछिमो—देखो 'पच्छिम' (रू.भे.)
उ०—गुण-जांणग 'लाखो' खत्रिआं-गुर, आस दातार अभिनमो आंमुर। धरती पछिमो करामति घणी, भूपां रूप लियां ब्रद भारी।
—ल.पिं.

पछि—१ देखो 'पच्छिम' (रू.भे.)
उ०—१ फरियो पछि वाउ उत्तर, फरहरियो सहूए सूहव उर सरग। भुयंग धनी प्रथमी पुड़ भेदे, विवरे पैंठा वे बरग।—वेलि.
उ०—२ तठा उपरांति करि नै राजांन सिलांमति हेमंतरित रो वणाव कीजै छै। हेमंतरित लागि पछि रौ वाउ फिरियौ, उतराधौ वाउ वाजियौ—रा.सा.सं.
२ देखो 'पखी' (रू.भे.)

पछिताणौ, पछिताबौ—देखो 'पछताणौ, पछताबौ' (रू.भे.)

पछितायोड़ौ—देखो 'पछतायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० पछितायोड़ी)

पछितावौ—देखो 'पछतावौ' (रू.भे.)
उ०—जिको सुणि पूरा पछितावा समेत समुद्र सिंह आपरी पत्नी इसड़ी विजयसुर री बहिणी वरजण नूं गोळ में भेजी, जिकण कहियो—बाभी! पहिली मोनूं मारि पछै चिता री तरफ चरण दीजै।—वं.भा.

पछिम—देखो 'पच्छिम' (रू.भे.)
उ०—पेख उतराद दखणाद पूरब पछिम, धूज मन सरम सारी धरा की। सबळ दोय राह री साह री मांन संक, ताह री 'करन'-सुत ओट ताकी।—भोपत आसियौ

पछिमि, पछिमी—१ देखो 'पच्छमी' (रू.भे.)
२ देखो 'पच्छिम' (रू.भे.)

पछिलउ, पछिलौ—देखो 'पाछलौ' (रू.भे.)
उ०—एक दिन पेट नउ गरभ दीठउ, गुरुणी पूछ्युं स्युं एह रे। पतिनउ गरभ ए हूतउ, पहिलउ नहि पछिलउ निसंदेह रे।
—स.कु.
(स्त्री० पछिली)

पछिवांण—देखो 'पछमांण' (रू.भे.)
उ०—१ दळथंभ हुओ पछिवांण-दळ, आप पराक्रम अप्रमै। कमधज्ज तांम संग्रांम किय, जुड़ै जांम एकह उभै।—गु.रू.बं.
उ०—२ अगनि मैं बांण छूटा असंख, वळी वीट चिहूं वै-वळा। पछिवांण हुओ पूठीरखो, 'गजण' नांम दिल्ली दळां।
—गु.रू.बं.

पछींत—देखो 'पछीत' (रू.भे.)

पछी-क्रि०वि० [सं० पश्चात्] १ पश्चात, बाद में, अनन्तर, पीछे।
उ०—तो वारूं राजा रे अहि डसियां पछी मांहरा साहिबा अनंगसेना इण नांम रे वेस्या विगताळी।—वि.कु.
२ देखो 'पखी' (रू.भे.)

पछीत, पछीतरा-सं०स्त्री० [सं० पश्चात् ?] मकान के अन्दर सामान रखने के निमित्त लगाया जाने वाला पड़ा और सीधा लम्बा-चौड़ा पत्थर जिसकी एक किनार दीवार में अड़ी रहती है।
उ०—एक चोरीयं तु तो क्यूं भला छै। भलो वस्त आवे हाथ अर मरीजुं तो पिण भलां। आइनै पछीतरां नेचा उभो रह्यो। मांहैं खींवो सूतो जाग छे।—चौबोली
रू०भे०—पछींत, पछीतरा।

पछैं, पछे—देखो 'पछै' (रू.भे.)
उ०—१ जिको सुणि पूरा पछितावा समेत समुद्रसिंह आपरी

पत्नी इसड़ी विजयसूर री वहिणी वरजण नूं गोळ में भेजी जिकरण कहियौ—वाभी, पहिली मोनूं मारि पछै चिता री तरफ चरण दीजो।—वं.भा.

उ०—२ पछे एकांत में बैठ'र कागद नू वाचणै लागी।

—कुंवरसी सांखला री वारता

पछेड़की—देखो 'पछेवड़ी' (अल्पा०, रू.भे.)

पछेड़लु, पछेड़लू–वि० [सं० पश्चात्+रा. प्र. लु या लू] (स्त्री० पछेड़ली)

१ पश्चात् का, बाद का. २ पीछे का।

३ देखो 'पछेवड़ी' (अल्पा०, रू.भे.)

पछेड़ियौ—देखो 'पछेवड़ौ' (अल्पा०, रू.भे.)

पछेड़ी—देखो 'पछेवड़ी' (रू.भे.)

पछेड़ौ—देखो 'पछेवड़ौ' (रू.भे.)

पछेडलु—देखो 'पछेड़लु' (रू.भे.)। उ०—अगीग्रा ! एक पछेडलु, अंधारू अम्ह आपि। मंदिर जाऊं मलपतु, वइसउ थांनक थापि।

—मा.कां.प्र.

पछेडी—देखो 'पछेवड़ी' (रू.भे.)

उ०—पाघडी वींटी रेट चूनड़ी पाताळ साडी, नंदरवारी, पाघडी पांमडी लोवडी वाहण वही लोवडी पछेडी चूनडी गजवडी।—व.स.

पछेली–सं०स्त्री० [देशज] स्त्रियों के हाथ की कलई में धारण करने का आभूषण।

पछेवड़ी–सं०स्त्री० [सं० प्रच्छद:+पटि या पटी या पच्छात्-पटी] १ मोटा सूती कपड़ा जो पहनने ओढ़ने या विछाने के काम आता है।

उ०—१ परभात रा लाखोजी घोड़ा देखण नूं पधारिया ताहरां घोड़ौ देखनै कह्यौ—रे घोड़ो रे घोंड़ौ किणी छोड़ियौ नहीं हुंतो ! ताहरां साहणी कह्यो जो कुण छोडै ? ताहरां लाखोजी घोड़ै ऊपर पछेवड़ी फेरी। पछेवड़ी सूं घोडौ लूह्यौ—नैणसी

उ०—२ पछै खेतसीजी स्वांमी वै सुवांण नै सिरांणा माहि थी नवी पछेवड़ी काढ नै ओढाय दीधी।—भि.द्र.

२ निश्चित लम्बाई का, मोटा पूरा कपड़ा, थान।

उ०—यूं करतां हेक दिन रावजी सूं चूक कियो। पचीस गज पछेवड़ी रिणमलजी रै ढोलियै दोळी पळेटी। आप पोढिया हुता।

—नैणसी

३ सिलमा सितारे से वना लाल या श्वेत छोटे अर्ज का लम्बा कपड़ा जो दरबार में जाते समय पगड़ी पर बांधा जाता था।

(मेवाड़)

४ सिरोपाव में पगड़ी के साथ दिया जाने वाला वस्त्र (मेवाड़)

५ स्री संघ द्वारा पूज्य पाट पर आसीन करते समय ओढाया जाने वाला श्वेत वस्त्र (जैन)

उ०—पाटू नी पूजि ओढउ पछेवड़ी रे। पाटण नीपनी सखरी दोपड़ी रे।—स.कु.

मुहा०—पछेवड़ी ओडाणी—शिष्य बनाना, पूज्य पद पर आसीन करना (जैन)

६ देखो 'पछेवड़ौ' (अल्पा०, रू.भे.)

रू०भे०—पछेड़ी, पछेडी, पछेवडी, पछेवडी, पछोड़ी, पिछेड़ी, पिछेवड़ी, पिछोड़ी, पीछोड़ी।

अल्पा०—पछेड़की।

पछेवडु, पछेवडु, पछेवड़उ, पछेवड़ो, पछेवड़ौ–सं०पु० [सं० प्रच्छद:+पट: या पटम्] १ प्राय: सफेद रंग का ओढ़ने का कपड़ा (उ.र.)

उ०—१ राणोजी देवलोक हुवै जद पाटवो कुंवर पछेवड़ौ ओढ़लै। रांणाजी नूं दाग दे पाछा आवै उमराव दरबार में जद कोठारियै री राव कुंवर माथा सूं पछेवडो दूर करै।—वां.दा.ख्यात

उ०—२ तरै सोढ़ी कहै—'थांहरै डोल री पछेवड़ौ मोनूं दीजै। इण पछेवड़ा रा दरसण करीस नै मोहल में बैठी रहीस।—नैणसी

उ०—३ दीनी रै वीरा ! भांणजड़ां नै वांट, ऊबरती रौ फाको म्है लियोजी म्हाराराज। आधी वाई भांणजड़ां रै हाथ, कोई आधी घाल पछेवड़ै जी म्हाराराज।—लो.गी.

२ जाजम, पलंग आदि पर विछाने का सफेद रंग का कपड़ा, प्रच्छदपट।

रू०भे०—पछेड़ौ, पछेडौ, पिछेड़ौ, पिछेडौ, पिछेवड़ौ, पिछेवडौ, पिछोड़ौ, पिछोवड़ौ।

अल्पा०—पछेड़ियौ, पछोड़ो, पछेड़लु, पछेड़लू, पछेडलु, पछेवड़ी, पीछोडलु।

पछेवांणि–क्रि०वि०—पीछे की ओर। उ०—वीर पुरस महा-सुभट प्रगुण नीपना चक्रव्यूह गुरुड़-व्यूह तणी रचना नीपनी अगवांणी सींगडिया तणी स्रेणी, पछेवांणि फारक तणी पद्धति, तती हस्ती-घंटा सीत्कार करती।—व.स.

पछैं, पछै–क्रि०वि० [सं० पश्चात्] १ बाद, तदुपरांत, पीछे।

उ०—१ रांम-रांम रसणा रटै, वासर वेर अवेर। अटक्यां पछैं न आवसी, रांम तणी मुख रेर।—ह.र.

उ०—२ वरस एक हुओ, ता पछै महमद हुसेन अहमदावाद आय घेरी।—द.वि.

२ फिर। उ०—ले जाओ रै इणां नै घोड़ां री पायगा में, अर लागे जूत रांड रै। रावळा घोड़ा नै बावळा असवार। अंदाता री हुकम लागो, पछै पूछणी ई कांई। हाजरियै आपरा हाथां री सार पूरी काढियौ।—रातवासौ

३ अन्त में। उ०—पछै काबुल जातां रा। किसोरदास गोपाळ-दासोत रै चाकर मारियौ।—नैणसी

रू०भे०—पछइ, पछैं, पछे, पाछै।

पछोकड़ौ, पछोकडउ, पछोरडौ–सं०पु० [सं० पश्चादोक] पीछे का स्थान, पीठ का स्थान, आगे के विरुद्ध दिशा का स्थान।—(उ.र.)

रू०भे०—पच्छोकड़ौ, पच्छोकडउ, पच्छोकडौ, पिछावड़ौ, पिछोवड़ौ, पिछोकड़ौ, पिछोकडउ, पिछोकडौ।

पछोड़ी—देखो 'पछेवड़ी' (रू.भे.)
उ०—वारणौ पिण तुटी आटि न मिळै एक, सूत नी आटी, मिळै पछोड़ी पण फाटी।—सभा.

पछोपौ, पछोपो—देखो 'पाछोपौ' (रू.भे.)
उ०—राजा अवळसर कहइ छइ—यउ तउ बोलियउ करि विचारिजइ, एक पुरुख तउ पुरिख-कइ पछोपइ उबारिजइ।—अ. वचनिका

पजणौ, पजबौ-क्रि०अ० [सं० प्रजुडन्] १ बंधन में आना, फँसना।
उ०—१ गाडी वाळौ मन में सोच्यौ के किराड़ आज तौ जबरौ पजियौ। ऊमर में वळीतौ मोलावणौ नीं भुलाय दूं तौ चौधरण रा नीं चूंधिया।—फुलवाड़ी
२ उलझन पड़ना, अड़ना। उ०—उण सांयत मल्ल कह्यौ—अपां बाथियां तौ आवां पण हार-जीत रौ साखी कुण रैवैला। कीं वात पजगी तौ उणरौ निवेड़ौ कुण करैला।—फुलवाड़ी
३ इस प्रकार जड़ा जाना या जमाया जाना कि जमाई गई हुई वस्तु उस वस्तु के समतल बराबर हो जाय।
ज्यूं—खाट में पट्टी पजणी, हल में कील पजणी।
४ किसी वेश या पहिराव का अंग पर या अपने स्थान पर उपयुक्त बैठना।
ज्यूं—पग में जूती ठीक पजी है, कोट ठीक पजतौ बणायौ है।
५ पीटा जाना, मारा जाना।
ज्यूं—गाय रै सींगड़ा में गवाळिया रै ठुलिया री आय ऐड़ी पजी के गाय रै माथा में भंणाट ऊठियौ।—फुलवाड़ी
६ अधीन होना, पराजित होना, हार जाना।
उ०—सुख हित स्याळ समाज, हिंदू अकबर बस हुवा। रोसीलौ मृगराज, पजै न रांण प्रतापसी।—दुरसौ आढ़ौ
७ बलात् प्रविष्ट होना, घसना, धसना। उ०—सेठ जोर सूं पूछ्यौ—लाडी पैला बींटी चिट्टूड़ो रै पजी के मिट्टूड़ो रै। च्यारां में ईं पैरलै।—फुलवाड़ो
८ पूर्ण रूप से किसी कार्य में लगना, खपना।
उ०—समर में दसकंध जिण सजे, पह वडा हर चाप दळ पजे। मनव ते घन जांण सुधमता, रघुपति जस जे नित रता।
—र.ज.प्र.

पजणहार, हारौ (हारी), पजणियौ—वि०।
पजवाड़णौ, पजवाड़बौ, पजवाणौ, पजवाबौ, पजवावणौ, पजवावबौ
—प्रे०रू०
पजाड़णौ, पजाड़बौ, पजाणौ, पजाबौ, पजावणौ, पजावबौ—क्रि०स०
पजिओड़ौ, पजियोड़ौ, पज्योड़ौ—भू०का०कृ०
पजीजणौ, पजीजबौ—भाव वा०।

पजांमौ—देखो 'पाजांमौ' (रू.भे.)
पजाओ—देखो 'पजावौ' (रू.भे.)
पजाड़णौ, पजाड़बौ—देखो 'पजाणौ, पजाबौ' (रू.भे.)
पजाड़णहार, हारौ (हारी), पजाड़णियौ—वि०।
पजाड़िओड़ौ, पजाड़ियोड़ौ, पजाड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।
पजाड़ीजणौ, पजाड़ीजबौ—कर्म वा०।

पजाड़ियोड़ौ—देखो 'पजायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० पजाड़ियोड़ी)

पजाणौ, पजाबौ-क्रि०स० [सं० प्रजोडनम्] १ बंधन में करना, फंसाना।
२ अधिकार में करना, आधिपत्य में करना।
उ०—१ वैरसल नरवद रावजी जोधाजी नूं आवता सुण नै आप री वसी ले नै नीसर गया। घणौ झलियौ नहीं। राव जोधोजी द्रोणपुर छापर मारियौ। सारी धरती पजाई। वडौ अमल कियौ।
—नैणसी
उ०—२ रावजी आप द्रोणपुर पधारिया, कबीला काढ दिया। धरती सारी पजाई।—नापे सांखले री वारता
३ उलझाना, अड़ाना, फसाना, धसाना। उ०—द्यालदास सुत रांमदास रै, परचौ फेर पजाई। मांनौ लाय लागी मुरधर में, ऊपर आंधी आई।—ऊ.का.
४ पराजित करना, हटाना।
५ तंग करना, परेशान करना, हैरान करना।
उ०—कवि सूर रा द्रस्टांत सूं सूरवीर रौ साहस कहै छै, इण कवळै (वाराह) तूंड रे जोर हाथी पाड़िया—फेट दे घोड़ा सवार पाड़िया, डाढां (दातड़ो) सूं सूरवीरां नै ओझाड़िया, झटकौ दे हेठा न्हांकिया—देखो एकण हीज कंवळै सूर फौजां रा पाथरा कर खूंद न्हांकिया। प्रयोजन एकण हीज सूरवीर सारी फौज नै पजाय दीधी।
वी.स.टी.
६ दण्ड देना, अधीन करना, वशीभूत करना।
७ मजबूती से फंसाना, प्रवेश कराना, जमाना।
८ इस प्रकार से जड़ने या जमाने का कार्य करना कि जमाई हुई वस्तु को उस वस्तु के समतल कर देना।
९ पीटना, ठोकना, मारना।
पजाणहार, हारौ (हारी), पजाणियौ—वि०।
पजायोड़ौ—भू०का०कृ०।
पजाईजणौ, पजाईजबौ—कर्म वा०।
पजणौ, पजबौ—अक० रू०।
पजाड़णौ, पजाड़बौ, पजावणौ, पजावबौ—रू०भे०।

पजायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ बंधन में किया हुआ, फसाया हुआ।
२ अधिकार में किया हुआ, आधिपत्य में किया हुआ।
३ उलझाया हुआ, फसाया हुआ, धसाया हुआ।
४ पराजित किया हुआ।
५ तंग किया हुआ, परेशान किया हुआ।
६ दण्डित, अधीन।
७ मजबूती से फसाया हुआ, जमाया हुआ।

८ जड़ा हुआ, जमाया हुआ ।
९ पीटा हुआ, मारा हुआ, ठोका हुआ ।
(स्त्री० पजायोड़ी)

पजाव—देखो 'पजावौ' (मह०, रू.भे.)

पजावगर-सं०पु० [फा० पजाव:+गर] मिट्टी की ईंट बनाने वाला व्यक्ति। उ०—पजावगर री प्रीत, खंघेड़ो खातर राखै। लाय खमोळा खूब, पीड़ पावै अंग आखै। पांणी में पिघळीज, लोय विसन री तापै। चढ कारीगर करां, कांम ईंटोडी कांपै।
—दसदेव

पजावणौ, पजाववौ—देखो 'पजाणी, पजावौ' (रू.भे.)
उ०—१ सोझत दुंद करे 'सबळावत', च्यारूं तरफ 'विजौ' चांपावत। जोधांणं उत्तर दिस जेती, अहनिस रांम पजावै एती।
—रा.रू.
उ०—२ कुतक खिदर घव काठ रा, विदर पजावण वेस। तौ पिण हाजर राखना, घण मेखचा हमेस।—वां.दा.
उ०—३ सिवियांणं सोनगिर जेण, एकण दिन गीता। वीर नारायण वंस, वहे वेसास वदीता। दहियावत ढूंढार, मार संग्रांम मनावै। कर सह वरस कटक, पछै नाडूळ पजावै।—मालौ आसियौ
उ०—४ परजा भाडंगनेर पजावै। ऊगै दिन फरियादां आवै।
—गो.रू.
उ०—५ जुद लीधौ जाळोर, घण साचोर पजावै—रा.वं.वि.
पजावणहार, हारौ (हारी), पजावणियौ—वि०।
पजाविओड़ौ, पजावियोड़ौ, पजाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।
पजावीजणौ, पजावीजवौ—कर्म वा०।

पजावियोड़ौ—देखो 'पजायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० पजावियोड़ी)

पजावौ-सं०पु० [फा० पजाव:] १ ईंटें खड्डी आदि का पकाने के लिए व्यवस्थित ढंग से बनाया हुआ ढेर।
क्रि०प्र०—देणौ, लगाणौ।
रू०भे०—पजाओ।
मह०—पजाव।

पजियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ बंधन में आया हुआ, फसा हुआ।
२ उलझन में पड़ा हुआ, अड़ा हुआ।
३ जड़ कर या जम कर किसी वस्तु के समतल हुवा हुआ।
४ कोई वेश या पहिनाव अङ्ग पर या अपने स्थान पर उपयुक्त बैठा हुआ।
५ पीटा गया हुआ, मारा गया हुआ।
६ हारा हुआ, पराजित।
७ बलात प्रविष्ट हुवा हुआ, घुसा हुआ, फसा हुआ।
८ पूर्ण रूप से किसी कार्य में लगा हुआ, खपा हुआ।
(स्त्री० पजियोड़ी)

पजूंण; पजूण, पजूसण—देखो 'परयूसण' (रू.भे.)
उ०—१ सीख करे मेडता थकी, सादड़ो पधारइ। परब पजूसण पारणइ, रांणपुर जोहारइ।—गुणविजय
उ०—२ आया पजूसण भादव मास, छतो सक्ति न करइ उपवास। चित दियो घ्रत रोटा दाळ।—जयवांणी
उ०—३ पुररिणी सतरं सै पचीसै, प्रगट पख पजूसणै। वाचक विजय हरस, सांनिध, 'धरमसी' मुनि इम मणै।—ध.व.ग्रं.

पजोणौ, पजोवौ, पजोवणौ, पजोववौ-क्रि०स०—प्राप्त करना।
उ०—१ एक समय आखेट, वळै साळा वहणोई। आवे हणे सस एक, प्रीति मनुहार पजोई।—वं.भा.
उ०—२ आसी हे उदमादियौ, रळी पजोवण कंत। मो 'मुगणी' री साहिबौ, मदमातो मैमंत।—पनां वीरमदे री वात
पजोवणहार, हारौ (हारी), पजोवणियौ—वि०।
पजोविओड़ौ, पजोवियोड़ौ, पजोव्योड़ौ—भू०का०कृ०।
पजोवीजणौ, पजोवीजवौ—कर्म वा०।

पजोयोड़ौ, पजोवियोड़ौ-भू०का०कृ०—प्राप्त किया हुआ।
(स्त्री० पजोयोड़ी, पजोवियोड़ी)

पज्ज-सं०पु० [सं० पद्य=प्रा पज्जा] मार्ग, रास्ता।
उ०—सज्जण चाल्या हे सखी, पाछै पीळी पज्ज। नव पाडा नग्गर वसइ, मो मन सूंनउ अज्ज।—ढो.मा.

पज्जण-सं०पु० [सं० पर्जन्य] वर्षा, बादल (जैन)

पजत, पज्जत्त-वि० [सं० पर्याप्त] १ पर्याप्त से युक्त, सम्पूर्ण, पूर्ण (जैन)
उ०—अगनि असख्यात गुण पज्जत्त बादरा, एह थी गुण असंख्यात अनुत्तर सुरा।—ध.व.ग्रं.
२ समर्थ, शक्तिवान (जैन)
३ उतना, जिससे काम चल जाय, यथेष्ट (जैन)

पज्जता-सं०स्त्री० [सं० पर्याप्त] १ सम्पूर्णता, पूर्णता।
उ०—सूक्ष्म पज्जता जांण सूखम सहुगिणौ भव्य सत्यासी में भणौ ए।—ध.व.ग्रं.

पज्जत्ति-सं०स्त्री० [सं० पर्याप्ति] १ जीव की वह शक्ति जिसके द्वारा पुद्गलों को ग्रहण करने तथा उनको आहार, शरीर आदि के रूप में परिवर्तन करने का काम होता है (जैन)
२ शक्ति, सामर्थ्य (जैन)

पज्जव-सं०पु० [सं० पर्यव] १ परिच्छेद, निर्णय (जैन)
२ विशेषता (जैन)
३ द्रव्य और गुण का रूपान्तर (जैन)
४ पर्याय। उ०—एक अक्षर केवळी तणो, कीजै पज्जव अनंत। एक पज्जवे अनंत गया, भाल्या श्री भगवंत।—जयवांणी

पज्जूसण, पज्जोसवण, पज्जोसवणा—देखो 'परयूसण' (रू.भे.)
उ०—१ चोपरवी पज्जूसण परव, वलि कल्यांणक तिथि पण सरव।
—स.कु.

उ०—२ संवत १८५४ स्वांमीजी च्यार साधां सूं खेरवै चौमासो कीधो। तिहां पज्जूसण में केयक स्रावक गछ वास्थां कनै सुणवा गया।—भि.द्र.

पदझटिका-सं०स्त्री० [सं० पद्धटिका] एक प्रकार का मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में आठ लघु, एक गुरु, चार लघु व एक गुरु कुल सोलह मात्रायें होती हैं। किसी भी चरण के अन्त में लघु नहीं होता है।

रू०भे०—पद्धटिका।

पटंगय-सं०स्त्री०—एक राग विशेष। उ०—भणंत स्त्री विनोदयं। कल्याण केक मोदयं। खंभायची पटगयं। वगेसरी विहंगयं।

—रा.रू.

पटंतर-सं०पु० [सं० पट+अन्तर] १ वह जिसका तत्व सहज में सब की समझ में न आ सके, गोप्य विषय, रहस्य।

उ०—एह पटंतर दाख इम, भगतां वच्छळ अम्र। कीधा अम्ह के तुम किया, धुर हर पाप धरम्म।—ह.र.

२ भेदोपभेद। उ०—भूपाल आल भयंकरं, साहाय सुर सिव संकरं। सो भाग खाग 'प्रिग्राग', समवड वड त्याग कळप तरं। स प्रवीत चीत नरेसरं, परभांण जांण पटंतरं। उदार वसुधा वार, आंकण अनड भट अकरं।—ल.पि.

३ पार्थक्य, पृथकत्व, अलगाव। उ०—१ एक बाप नी पुत्री दोय, परतिख पुन्य पटतर जोय।—स्रीपाळ

उ०—ग्याति जाति सो सारखी, अधिको नाहीं कोय। थे राजा म्हे ओडण्यां, ओह पटंतर जोय।—जसमा ओडण री वात

४ सादृश्य कथन, उपमा। उ०—कौण पटंतर दीजिये, दूजा नाहीं कोइ। रांम सरीखा रांम है, सुमिरे ही सुख होय।—दादूवांणी

५ समानता, सादृश्य। उ०—उचित यो राजा वचन दियो भोज सुणि बाई! वचन तैं कह्या चोज। ज्यांनको लिय पटंतर। धीय तणइ सिर सोवन गोट।—वी.दे.

६ परिवर्तन। उ०—छै अगवाळ ढळंती छाया, जको पटंतर सकळ जुए। सुवस वसावै सहर सितारो, हत्थणापुर में वेड हुए।

—ग्रोपो आढो

रू०भे०—पट्टंतर।

अल्पा०—पटंतरो।

पटंतरइ-सं०स्त्री०—१ पाट बैठते समय ओढाई जाने वाली चादर।

सं०पु०—२ आचार्य के पट्ट यानी गद्दी पर बैठाया जाने वाला दूसरा व्यक्ति।

उ०—हसितइ बोलइ बोल, ते बोल होते बोल, थारा मुझ नइ सांभरइ हो। एहवा चतुर सुजांण, कहउ, कुण हो महउ, कुण हो कहियउ पूज्य पटंतरइ हो।—स.कु.

पटंतरो—देखो 'पटंतर' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—१ परतख वायस पटंतरो, बहुनइ सुण बोलीह। जीहा धासी दाख ज्यां, न रुचै नींबोळीह।—र. हमीर

उ०—२ सूरज पुत्र करन्न, पेटकुंता उतपन्नो। पवनपुत्र हणमंत, उदर अंजनी उपन्नो। ईसपुत्र खटमुक्ख, पुत्र जनमे रुद्रांणी। राघव दसरथ पुत्र, जणे कउसल्या रांणी। जनमियो पुत्र कणहेगिरी, 'अमर' कुंअर गजसिंघ रो। बे-पक्ख सुद्ध आदू विरद, पुत्रां एह पटंतरो।

—गु.रू.बं.

उ०—३ वधता विसेस 'धरमसी' वधे, वळत छांह जिम विस्तरै। द्रस्टांत एण सज्जण दुज्जण, परखि देख पटंतरै।—ध.व.ग्रं.

उ०—४ एह नो कांइ पटंतरो, निगे लहै सू साचवै। इम चींतवी हसि हस मिळ्यौ, थाई सूं वातां राचवै।—रीसाळू री वात

पटंबर-सं०पु० [सं० पट्टः+अम्बर] १ कौशेय, रेशमी वस्त्र।

उ०—१ आसन स्यंध, घटातन स्यांम। पटंबर पीत, सु विद्युत है।

—र.ज.प्र.

उ०—२ वपु स्यांम सुंदर मेघ रुचि फबि तड़ित पीत-पटंबरं।

—र.ज.प्र.

२ वस्त्र, कपड़ा। उ०—जुरती नहीं आवण जावण की, फुरती नहीं रांड फंसावण की। परवाह न पाट पटंबर की। अब चाह सु कंवर अंबर की।—ऊ.का.

[सं० पटः=पर्दा+अंबर] ३ कपट, धूर्तता। (डि को.)

४ गुप्त भेद।

५ गोप्य विषय।

रू०भे०—पटंबरि, पटंबरी, पाटंबर।

अल्पा०—पटंबरो।

पटंबरि, पटंबरी-वि० [सं० पटः+अंबर+रा.प्र. ई] १ कपट करने या रचने वाला, धूर्त।

२ देखो 'पटंबर' (रू.भे.)

उ०—पांणी धांन पटंबरी, संतोखिउं सहकोय। आनंद इक मांगतां, देवा ऊठइ दोय।—मा.कां.प्र.

पटंबरो—देखो 'पटंबर' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—झूठा पाट पटंबरा, झूठा दिखणी चीर। सांचि पियाजी री गूदड़ी, निरमळ रहे सरीर।—मीरां

पट-सं०पु० [सं० पटः या पटम्] १ वस्त्र, कपड़ा।

उ०—१ चाकर जांण चरण कमळां रो। मन रो ताप मटावो म्हारो। जटाजूट रो भार उतारो। मुकट-माळ पट भूखण धारो।

—गी.रां.

उ०—२ परगट कट तट तड़त पट, सरस सघण तन स्यांम।

—र.ज.प्र.

२ महीन कपड़ा. ३ कपाट, किवाड़। उ०—निज मंदिर पट ढिग दरसण श्रत, मन आणंद माता।—जोगीदांन कवियो

क्रि०प्र०—उघड़णो, खुलणो, खोलणो, देणो, बंध करणो, भिड़णो, भिड़ाणो।

मुहा०—१ पट उघड़ना—पूजा काल में मन्दिर के कपाट खुलना।
२ पट खुलणा—देखो 'पट उघड़णा'।
३ पट मंगळ होणा—सेवा-पूजा के पश्चात् देव मन्दिर के कपाट बन्द हो जाना, दर्शन का समय बीत जाना।
४ पट वंद होणा—देखो 'पट मंगळ होणा'।
४ पर्दा।
क्रि०प्र०—उघड़णी, उघाड़णी, करणी, कराणी, खुलणी, खोलणी, खोलाणी, हटणी, हटाणी।
मुहा०—१ पट खुलणी—गुप्त बातों का प्रकट हो जाना, भेद खुल जाना।
२ पट खोलणी—छिपी बात को प्रकट करना, भेद का उद्घाटन करना।
५ पालकी के दरवाजे के कपाट।
यौ०—पटदार—वह पालकी जिसमें पट हो।
क्रि०प्र०—खुलणी, खोलणी, देणी, वंद करणी, सरकणी, सरकाणी
६ वह कागज जिस पर चित्र उतारा या खींचा जाय।
यौ०—चित्रपट।
७ जगन्नाथ, बदरिकाश्रम आदि मन्दिरों में दर्शनप्राप्त यात्रियों को दिया जाने वाला चित्र।
८ नदी का तट या किनारा।
ज्यों—नदी पूर पटां व्है है।
यौ०—पूरपटां।
९ शकट या गाड़ी के ऊपर लगाया जाने वाला सरकण्डे आदि का बना छप्पर।
यौ०—पटमंडप।
१० छत, छाजन।
यौ०—पटमंडप।
११ कुश्ती का एक पेच।
१२ किसी छोटे पदार्थ को गिरने से होने वाली आवाज।
ज्यूं—पट पट छांटा पड़ण लागा।
१३ नाश, ध्वंस।
मुहा०—१ पट करणी—वर्बाद करना, नाश करना, नष्ट करना।
२ पट होणी—नाश होना, वर्बाद होना, नष्ट होना।
क्रि०वि०—१ शीघ्र, झट। उ०—धोवौ मुट्ठी धांन, मांगै ज्यांनै ना मिळै। पट काढ़ै पकवांन, ना ना करतां नाथिया।—नाथियौ
२ देखो 'पट्ट' (रू.भे.)
३ देखो 'पाट' (रू.भे.)
४ देखो 'पटौ' (मह., रू.भे.)
पटउडि, पटउडी—देखो 'पटकुटी' (रू.भे.)
उ०—पगि-पगि पठळि-पठळि हस्ती की गज-घटा। ती ऊपरि सात-सात सइ धनक-धर सांवठा। सात-सात ओळि पाइक की वइठी सात-सात ओळि पाइक की ऊठी। खेड़ा उडण मुद फरफरी चुंह-चकि ठांइ-ठांइ ठठरी। इसी एक त्या पटउडि चत्र दिसि पड़ी।
—अ. वचनिका
पटउलउ, पटउलीय, पटउलौ—देखो 'पटकूल' (रू.भे.)
उ०—पाय पटउला पाथरी, लीधउ मंदिर मांहि। अंगरखी अपच्छर जिसी, चिहू पखि चमर ढुळाइ।—मा.कां.प्र.
उ०—२ पहरणि सेत्र पटउलीय, ऊलीम पांन न माइ।
—जयसेखर सूरि
उ०—३ उमरगढ़ गुच्छ पटउलउं, साव पट्ट पट्टहीर। सूहवी चोपाच्छुडहू सवाही, चंपावती स्वेत सिलाहट्टी।—व.स.
पटओ—देखो 'पटवौ' (रू.भे)
पटक-सं०स्त्री० [सं० पत्] १ पराजय, हार. २ पछाड़।
क्रि०प्र०—खांणी, देणी।
पटकणौ, पटकवौ-क्रि०स० [सं० पत्] १ किसी पदार्थ को ऊपर उठा कर जोर से झोंके के साथ डालना। उ०—बीरम लोपी वाग, खोटा अस ज्यूं हा खत्री। पटकी जोयां पाग, विढ़ रण वेढ घसाव सां।
—वी.म.
उ०—२ मुख ओढी रै मांहिलो, पर काचहा पुरीस। पटकै रोड़ी सवण पर, से चांडाळ सरीस।—बां.दा.
२ अधाधुंध दानादि में व्यय करना, झोंकना।
उ०—चाह करोर कळी नृप चटकै, भंवर छैल वेश्या-घर भटकै। पत महुआ सम दांनी पटकै, खत्रिय वंस वांस मिळ खटकै।
—ऊ.का.
३ पहनाना, धारण करवाना। उ०—जिण रा कटिया सीस नूं थाळ में मंगाय जवनराज री सुता वरमाळा पटकण रौ विचार कियौ।
—वं.भा.
४ किसी पदार्थ का आधार या अवरोध आदि हटाकर उसे अपने स्थान से नीचे डालना, गिराना। उ०—कहै सुगरीव सुणौ हरि वातां। हूं देखी सीता नै जातां। रांवण हर नै लेगो स्वांमी। रथ सूं गगन पंथ रौ गांमी। भूसण सिया पटकिया केई। ए देखौ प्रभु धरचा अठेई।—गी.रां.
५ व्याप्त करना, फैलाना। उ०—नागणी लेती तोप रै अभिमुख धकावै जिण तरह काळेजा करां मैं लीधा प्रांणां रौ दुरभिक्ष पटकता चहुवांणा रा सामंत बीच हुआ।—वं.भा.
६ अपने पास से पृथक करके दूसरे के हाथ करना, दूसरे के अधिकार में देना, सौंपना। उ०—दखिखण में साल १ रै तथा दूसरा तीसरा कुपुत्र २ रै साथ केही जुद्ध जीति केही पुर १ दुरग २ दाबि पत्र हस्त लिख'र ७५००० रौ मुलक दिल्ली हेठै पटकियौ।
—वं.भा.
७ द्वन्द्वयुद्ध या कुश्ती में विपक्षी को पछाड़ना या गिराना, गिरा देना।

८ भीतर से वेगपूर्वक बाहर निकालना, गिराना, डालना।

उ०—गोरण दिन सूती सखी, वागा ढोल विणास। बाह उसीसो खींचियो, जागी पटक निसास।—वी.स.

पटकणहार, हारौ (हारी), पटकणियौ—वि०।

पटकवाड़णो, पटकवाड़बो, पटकवाणो, पटकवाबो, पटकवावणो, पटकवावबो, पटकाड़णो, पटकाड़बो, पटकाणो, पटकाबो, पटकावणो, पटकावबो—प्रे०रू०।

पटकिग्रोड़ो, पटकियोड़ो, पटक्योड़ो—भू०का०कृ०।

पटकीजणो, पटकीजबो—कर्म वा०।

पड़णो, पड़बो—ग्रक० रू०।

पटक्कणो, पटक्कबो, पट्टकणो, पट्टकबो—रू०भे०।

पटकाड़णो, पटकाड़बो—देखो 'पटकाणो, पटकाबो' (रू.भे.)

पटकाड़णहार, हारौ (हारी), पटकाड़णियौ—वि०।

पटकाड़िग्रोड़ो, पटकाड़ियोड़ो, पटकाड़्योड़ो—भू०का०कृ०।

पटकाड़ीजणो, पटकाड़ीजबो—कर्म वा।

पटकाड़ियोड़ो—देखो 'पटकायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० पटकाड़ियोड़ी)

पटकाणो, पटकाबो-क्रि०स० [पटकणो क्रि० का प्रे०रू०] १ (किसी पदार्थ को) ऊपर उठाकर जोर से झोंके के साथ नीचे गिरवाना या डलवाना।

२ ग्रन्धाधुन्ध खर्च करवाना, खर्च करने में प्रवृत्त करवाना।

३ ग्राधार या ग्रवरोध हटवा कर नीचे की ग्रोर डलाना, डलवाना, गिराना, गिरवाना।

४ पहनवाना, धारण कराना।

५ व्याप्त कराना या करवाना, फैलाना।

६ दूसरे के अधिकार में करवाना।

७ कुश्ती में गिरवाना।

८ भीतर से वेगपूर्वक बाहर निकलवाना।

पटकाणहार, हारौ (हारी), पटकाणियौ—वि०।

पटकायोड़ो—भू०का०कृ०।

पटकाईजणो, पटकाईजबो—कर्म वा०।

पटकायोड़ो-भू०का०कृ०—१ (पदार्थ को) ऊपर उठा कर जोर से झोंके के साथ डलवाया हुग्रा, गिरवाया हुग्रा।

२ ग्रन्धाधुन्ध व्यय करवाया हुवा, दानादि में झोंकवाया हुग्रा।

३ पहनाया हुग्रा, धारण करवाया हुग्रा।

४ ग्राधार या ग्रवरोध को हटवा कर नीचे की ग्रोर गिरवाया हुग्रा या डलवाया हुग्रा।

५ व्याप्त करवाया हुग्रा, फैलाया हुग्रा।

६ दूसरे के अधिकार में करवाया हुग्रा।

७ कुश्ती में गिरवाया हुग्रा।

८ भीतर से वेगपूर्वक बाहर निकलवाया हुग्रा।

(स्त्री० पटकायोड़ी)

पटकाय-सं०पु० [सं० पटकारः] १ कपड़ा बुनने वाला, जुलाहा, तंतुवाय. २ चित्रकार।

पटकावणो, पटकावबो—देखो 'पटकाणो, पटकाबो' (रू.भे.)

पटकावणहार, हारौ (हारी), पटकावणियौ—वि०।

पटकाविग्रोड़ो, पटकावियोड़ो, पटकाव्योड़ो—भू०का०कृ०।

पटकावीजणो, पटकावीजबो—कर्म वा०।

पटकावियोड़ो—देखो 'पटकायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० पटकावियोड़ी)

पटकियोड़ो-भू०का०कृ०—१ (पदार्थ को) ऊपर उठा कर जोर से झोंके के साथ डाला हुग्रा या गिराया हुग्रा।

२ ग्रन्धाधुन्ध व्यय किया हुग्रा, दानादि में झोंका हुग्रा।

३ पहनाया हुग्रा, धारण कराया हुग्रा।

४ ग्राधार या ग्रवरोध हटाकर नीचे की ग्रोर गिराया हुग्रा।

५ व्याप्त किया हुग्रा, फैलाया हुग्रा।

६ कुश्ती में पछाड़ा हुग्रा, गिराया हुग्रा।

७ दूसरे के अधिकार में किया हुग्रा या सौंपा हुग्रा।

८ भीतर से वेगपूर्वक बाहर निकाला हुग्रा।

(स्त्री० पटकियोड़ी)

पटकी-सं०स्त्री० [सं० पत्] वज्र, बिजली, विद्युत।

उ०—१ परम गुरु के सरणै जाऊं, करूं प्रणांम सिर लटकी। जेठ बहू की कांण न मानूं, पड़ी घूंघट पर पटकी।—मीरां

उ०—२ ग्रमली ढोली एक, जकौ ग्रलगूंजै गावै। सांझ वगत रै समै, ग्रागै ग्रसवारी ग्रावै। जिण नै जव नित सेर, करै रीझां दे चटकी। एह वैंडा, दातार पड़ै तो ऊपर पटकी।

—ग्ररजुणजी वारहठ

उ०—३ ताकत ढोलै तीसरा, साथरवाड़ा सोद। पैलां घर पटकी पड़ै, माखां रै मनमोद।—ऊ.का.

मुहा०—पटकी पड़णी—दैव से भारी दण्ड मिलना, सत्यानाश होना।

ग्रल्पा०—पटकौ।

२ वज्र, इन्द्र का ग्रस्त्र।

पटकुटी-सं०स्त्री०—छोटा तम्बू, खेमा, छोलदारी।

रू०भे०—पटउडि, पटउडी।

पटकूल-सं०पु०यौ० [सं० पट्ट+दुकूल] १ वस्त्र, कपड़ा।

उ०—तिमरी ग्राविया, पइसारा मोटई मंडांण कराविया, ढोल जांगी झालरि संखि वादित्र वजाविया। बिहुंपासे पटकूल तणा नेजा लहकाविया।—रा.सा.सं.

२ रेशमी वस्त्र, रेशम का कपड़ा। उ०—१ मोखमल मोटा मोल रा, पंचरंग पटकूल। जरी कथीया जुगति सूं, सखर बिछावे सूल।

—प.प.च.

उ०—२ घडी विध कीधा रातीजुगा, साहमी वच्छळ सारी जी। पटकूलै कीधी पहिरांवणी, सहू संघ नै सीकारी जी।—ध.व.ग्रं.

३ दुपट्टा (रेशम का)

उ०—ताहरां राजा नूं ओड़ कहै, नव सौ हाथी, एक हजार घोड़ा, हीर, चार पटकूल, राजा कह्यौ ओड मोल कर न जांणौ।

—जसमा ओडणी री वात

४ देखो 'पट्टदुकूल' (रू.भे.)

रू०भे०—पटउल, पटउलीय, पटउलो।

पटकोड़ा-सं०स्त्री०—पंवार वंश की एक शाखा।

पटकोड़ो-सं०पु०—पंवार वंश की पटकोड़ा शाखा का व्यक्ति।

पटको—देखो 'पटकी' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—घुर-घुर कर-कर नर लागा धीरावण। वे सोने चांदी री करिग्या सीरावण। पड़जी कुलसणिया वौ'रां पर पटकौ। गैंणा-गांठा रौ करिग्या ठग गटको।—ऊ का.

पटक्कणी, पटक्कवौ—देखो 'पटकणौ, पटकवौ' (रू.भे.)

पटक्कियोड़ौ—देखो 'पटकियोड़ौ' (रू भे.)

(स्त्री० पटक्कियोड़ी)

पटड़ियौ—१ देखो 'पटौ' (अल्पा०, रू.भे.)

२ देखो 'पाटौ' (अल्पा०, रू.भे.)

३ देखो 'पटियौ' (रू.भे.)

पटड़ी—१ देखो 'पटी' (अल्पा०, रू.भे.)

२ देखो 'पट्टी' (अल्पा०, रू.भे.)

३ देखो 'पाटी' (अल्पा०, रू.भे.)

पटड़ौ—१ देखो 'पटौ' (अल्पा., रू.भे.)

२ देखो 'पाटौ' (अल्पा०, रू.भे.)

पटचर-सं०पु० [सं० पटच्चर] चोर (ह नां.मा.)

पटचार-सं०पु [सं० पट+चारः] वस्त्र, कपड़ा।

उ०—विय आनूप सरुप स्यांम घट वरसणवार। कसियौ कट तट कोमळा चपळा पटचार।—र.ज.प्र.

पटझर—देखो 'पटाझर' (रू.भे.) (डि को.)

उ०—१ चर वहूवै दिस नूपत चलावै। पटझर सेत रंग नह पावै।

—सू.प्र.

उ०—२ झिलम टोप सूधौ सिर झड़ियो। पटझर हूं चूड़ामणि पड़ियो।—सू.प्र.

पटण—देखो 'पट्टण' (रू.भे.)

पटणी-सं०स्त्री० [सं० पटः या पट+रा. प्र. णी] एक प्रकार का बहुमूल्य वस्त्र। उ०—दुरंग गज मांगळ रोवज गढगजी चुगजी पटणी पट-पाटू पंचवरण छींट नीलवटां चकवटां।—व.स.

पटणीतेग-सं०स्त्री०यौ०—एक प्रकार की तलवार।

पटणौ-सं०पु० [सं० पट्टन] पाटलीपुत्र।

पटणौ, पटबौ-क्रि०अ० [सं० पत्] १ कर्ज या उधार दिए गए धन की वसूली या प्राप्ति होना।

ज्यूं—इण दिनां सुगाळ होणै सूं सारी उधार पट गई।

२ परस्पर दो व्यक्तियों के विचार, भाव तथा स्वभावादि में समानता होना जिससे उनमें मैत्री या सहयोगिता हो सके, मन मिलना, बनना।

ज्यूं—सरदारमलजी थांनवी ग्रौर श्रीनाथजी मोदी में खूब पटै है।

३ क्रय-विक्रय, लेन-देन आदि में दोनों पक्षों का मूल्य, सूद, शर्तों आदि में सहमत हो जाना, तै हो जाना।

ज्यूं—सोदौ पट गयौ, मांमलौ पट गयौ।

४ किसी झील, कूप या गढ्ढे आदि का समीप की सतह के बराबर हो जाना, समतल होना।

ज्यूं—बाईजी री तळाव पूरौ पट गयौ, हमैं उण में पांणी कोनी।

५ स्थान विशेष में पदार्थ विशेष का इतना आधिक्य होना कि उससे रिक्त स्थान न दिखाई पड़े। पूर्ण होना, परिपूर्ण होना।

ज्यूं—स्याळकोट रौ मैदांन दुसमणां री लासां सूं पट गयौ।

६ घसना, प्रवेश करना। उ०—अंगोअंगि पटै अणियाळैं, प्रांण पाखर फोडइ। खांदा तणै घाइ सपरांणै, सांधिइ सांधि विछोटइ।

—कां.दे प्र.

पटणहार, हारौ (हारी), पटणियौ—वि०।

पटवाड़णौ, पटवाड़बौ, पटवाणौ, पटवाबौ, पटवावणौ, पटवावबौ, पटाड़णौ, पटाड़बौ, पटाणौ, पटाबौ, पटावणौ, पटावबौ—प्रे०रू०।

पटिओड़ौ, पटियोड़ौ, पट्योड़ौ—भू०का०कृ०।

पटीजणौ, पटीजबौ—भाव वा०।

पटतर—देखो 'पटंतर' (रू.भे.)

उ०—कामधेनु के पटतरै, करै काठ की गाइ। 'दादू' दूध दूझै नहीं, मूरख देहु बहाइ।—दादूवांणी

पटताळ-सं०पु० [सं०पट्ट+ताल] एक दीर्घ और दो ह्रस्व मात्रा का मृदंग का एक ताल।

पटधारी-वि० [सं०] जो वस्त्र धारण किए हुए हो।

पटन—देखो 'पट्टण' (रू.भे.)

पटपड़ौ-सं०पु० [देशज] १ मस्तक, शिर (व्यंग्य)

२ लकड़ी या लोहे का एक उपकरण जो राज द्वारा दीवार या फर्श के चूने या सीमेंट को समतल व चिकना बनाने के रूप में लिया जाता है।

पटपट—देखो 'पड़ापड़' (रू.भे.)

पटपाटु-सं०पु०यौ० [सं० पटः+रा. पाटू] एक प्रकार का बढिया कपड़ा। उ०—गढगजी, सवागजी, चुगजी, पटणी, पटपाटु 'पंचवरण' छींट, नीलवटां चकवटां······।—व.स.

पटपोरौ-सं०पु० [?] सूंघनी या तम्बाकू की डिब्बी को खोलने से पूर्व उंगली द्वारा डिब्बी के बाहर से सूंघनी को झाड़ने की क्रिया।

उ०—नवौ हुवोड़ा नीच, टबौ भर लेवै टाकौ। पैंठ समारे बीच,

करै मनवार फजाकी। दे पटपोरा दोय, नाक में दावै नीकां। मूंढो खांधो मोड़, छड़ा-छड़ खावै छींकां। अंग में आय निसदिन अड़ै, झड़ै नहीं मळ झाड़ियो। जगदीस पाक कीन्हां जिकां, बिलळां नाक बिगाड़ियो।—ऊ.का.

पटमजरी-सं०स्त्री० [सं०] सम्पूर्ण जाति की एक शुद्ध रागिनी जो हिंडोला राग की स्त्री मानी जाती है (मीरां)।

पटमंडप-सं०पु० [सं०] तम्बू, खेमा।

पटरंगणा(ना)-सं०पु० [सं० पटः+फा० रङ्ग=खेलतमाशा (व.व.)] विवाह के पश्चात वर-वधू द्वारा खेला जाने वाला खेल।

उ०—कुळ देवी आगळि छोड़ि अंचळ, जुअनो आचार। रुकमणी रांम रमंतड़ां ? कुण जीपस्यइं कुण हार। विस्वस्व ज्योति कळामति नइ, विस्व नऊं अधिकार। तुम्हे महालिखमी सहा मोटा, क्रिस्ण नउं अधिकार। स्रीक्रस्ण जीता दळया दांणव रुखमणी वर कांन्ह। पटरंगणा करि अंगनां हरि दिधलु निजमांन।—रुकमणी-मंगळ

पटरांणी, पटरागणि, पटरागणी—देखो 'पट्टरांणी' (रू.भे.)

उ०—१ स्रीरघुनाथ औतार निरमळा हुआ, जनक सुता पटरांणी। त्रेता लीला असी कीधी, जुग-जुग भगति वखांणी।—रुकमणी-मंगळ

उ०—२ जाळंधर राजा 'अजन', पटरागणि चहुवांण। दसरथ कौसल्या तणी, जोड़ प्रकासी जांण।—रा.रू.

पटरी—१ देखो 'पटी' (रू.भे.)

२ देखो 'पट्टी' (अल्पा०, रू.भे.)

३ देखो 'पाटी' (अल्पा०, रू.भे.)

पटळ, पटल-सं०पु० [सं० पटलम्] १ मकान की छत, छान, छप्पर।

उ०—१ १३८० संवत् समां में चउदहां १४ दिल्लीस गयासुद्दीन १४ कोई प्रासाद रा पड़ता पटल रै हेठै आइ मरियो।—वं.भा.

उ०—२ घोड़ां घर ढालां पटळ, भालां थंभ बणाय। जो ठाकुर भोगै जमीं, और किसो अपणाय।—वी.स.

२ आड़ करने या आच्छादन करने का पदार्थ पर्दा, आवरण।

उ०—धुनि उठी अनाहत सख मेरि धुनि, अरुणोदय थियो जोग अभ्यास। माया पटळ निसा मैं मंजे, प्रांणायांमं ज्योति प्रकास।

—वेलि

३ ढेर अंबार।

उ०—एवडऊ ताप गाढउ, भावइ करवउ टाढउ वाइ वाजइ प्रबळ उड़इ धूळि ना पटळ।—रा.सा.सं.

४ समूह, झुण्ड (ह.नां., अ.मा.)

उ०—पणिहारि पटळ दळ वरण चंपक दळ, कळस सीस करि कर कमळ। तीरथि तीरथि जंगम तीरथ, विमळ आंहाण जळ विमळ।

—वेलि

५ आंख का मोतियाबिंद नामक रोग।

उ०—१ मरमल री दोनूं आंख्यां रा पटळ दूर हुय गया जिसा निरधूम दिया होय।—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ दादू सद्गुरु अंजन बाहिकर, नैण पटळ सब खोले। बहरा कांनां सुणणै लागा, गूंगे मुख सूं बोले।—दादूवांणी

६ देखो 'पिटल' (रू.भे.)

पटलि-सं०स्त्री० [देशज] १ मोटाई, मोटापन। उ०—तेजइ पटलि सूरय निवारइ, स्वेत छत्र कि इंद्र ज डारइ।—शालि सूरि

२ देखो 'पटली' (रू.भे.)

पटली-सं०स्त्री० [सं० पटः+रा. प्र. ली] १ धोती की लांग का तहजमा वह भाग जो धोती के साथ नाभि के नीचे खोंसा जाता है।

उ०—अथवा दियै सुभट कोई अहोड़ो। लजहीणा ज्यां हूंत लड़ै। मूंछां दिसा हाथ न मेलै। पटली ऊपर हाथ पड़ै।

—लक्ष्मीदांन बारहठ

२ 'ओढने' के वस्त्र के एक छोर की तह बना कर लहंगे या घघरी के साथ नाभि प्रदेश में खोंसा जाने वाला भाग।

उ०—इण भांत गणगोर री तयारी कर आप आप रै डेरै सणगार करवा सारी ही गई। वसन भूसण का। मुरलियां गाती हुई। जठे चीता रा सा-लंक ऊपरै लहंगा कसीजै छै। घण मही झीण चीर ओढीजै छै। चुणवट री पटल्यां वणाईजै।

—पनां वीरमदे री वात

३ देखो 'पटी' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—हरस हिंडोळाणइ झूलइ, नेमि-प्रभ जिन राय। जिहां सुद्ध आसय भूमि पटली, सोहियइ थिरवाय।—वि.कु.

रू०भे०—पटलि।

पटवाद्य-सं०पु० [सं०] झांझ से मिलता-जुलता एक प्रकार का वाद्य जो ताल लगा कर बजाया जाता है।

पटवार, पटवारगिरी-सं०स्त्री० [सं० पट्ट+कार+फा० गरी]

१ पटवारी का काम।

२ पटवारी का पद।

३ पटवारी को मिलने वाला पारिश्रमिक, धन।

पटवारी-सं०पु० [सं० पट्ट+कार=राज० वार+रा०प्र० ई] वह सरकारी कर्मचारी जो गांव की जमीन और उसके लगान का हिसाब-किताब रखता है। उ०—जद गांवरा चौदरी पटवारी औ छौ धांमे जद चेला नै हुंकारो करनै घर हाटां रा केलू फोड़ै……।

—भि.द्र.

पटवो-सं०पु० [सं० पट्ट+रा०प्र० वो] (स्त्री० पटवी) गहनों को पिरोने व गूंथने का कार्य करने वाला व्यक्ति।

उ०—आं रे गांवां रै गोरवे पटवो बीणै छै पाट। मेरे साहब को 'पो' दे पूंचियो।—लो.गी

रू०भे०—पटओ, पटुओ, पटुवो।

पटसन-सं०पु० [देशज] एक पौधा जिसके तनों से रस्सी, टाट, बोरे आदि बुनते हैं।

पटसाळ-सं०स्त्री० [सं० पृष्ठ-शाला] मकान के पीठ से बनी शाला।

उ०—पटसाळां ओरा प्रघळ बिच चौकी विसतार ।—गजउद्धार

रू०भे०—पठसाळ

पटह-सं०पु० [सं० पटहः] १ दुन्दुभी, नगाड़ा ।

उ०—सांभळि पटह नी घोसणा ।—वि.कु.

२ बड़ा ढोल ।

रू०भे०—पड़ह, पड़हउ, पड़हौ, पडह, पाड ।

३ प्रथम गुरु ढगण के एक भेद का नाम ऽ। (डिं.को.)

रू०भे०—पट्टह ।

पटहत्य, पटहथ, पटहस्ती-सं०पु० [सं० पट्ट+हस्ती] १ हाथी, गज । (ह.नां., अ.मा.)

उ०—१ पटहत्थ मदोमत पक्खरियं, वन जांण वसंत गिरव्वरियं ।—गु.रू.बं.

उ०—२ पटहत्थ पतसाह मयंद मोताहळ, पै भाजतां जु भुय पड़िया, 'दूद' दीठा मैं चक्रवत चुणता, कळत रै स-श्राभरण किया ।—नैणसी

२ राजा की सवारी का हाथी । उ०—पटहती सीकरण रो(नो) रे, श्राय हुश्रा असवारो ।—जयवांणी

रू०भे०—पट्टहसती, पाटहांथी ।

[सं० पट्ट=तलवार+हस्त] ३ योद्धा, वीर ।

उ०—कांम पतसाह रै जरद झळहळ कियां, सेल सींदूरियौ सजै जगीस । पवंग सींदूर व्रन चाढ़तां पटहथां, 'सूरै' सूरमंडळ नांमियौ सीस ।—माली सांदू

पटहोड, पटहोडउ, पटहोडौ-सं०पु० [देशज] घोड़ा, अश्व ।

उ०—१ जडलग फरी खड़खड़ई जोड । पटहोडां वाजिय पूरी पोड ।—रा.ज.सी.

उ०—२ इळ आरति जर साकति आंणउ । पटहोडउ पंडवा पलांणउ ।—रा.ज.सी.

उ०—३ धाइस्यां बीजी घर आंणी, पटहोड़ा पक्खरिय पलांणी । यह केतउ केता विचि पांणी, खेड़ सिरइ खिड़िया खुरसांणी ।—रा.ज.सी.

रू०भे०—पाटहोडौ, पाटीहोडौ ।

पटांतर, पटांतरूं-अव्य० [सं० प्रत्यन्तर] प्रत्यन्तर (उ.र.)

पटांसुक-सं०पु० [सं० पटांशुक] एक प्रकार का वस्त्र या पहनावा ।

उ०—अथ-वस्त्र-देवांगचीर चीनांसुक पटांसुक पट्टदुकूल पट्टहरी···। —व.स.

पटा—देखो 'पट्टा' (रू.भे.)

पटाइत—देखो 'पटायत' (रू.भे.)

पटाई-सं०स्त्री०—१ पटाने की क्रिया या भाव ।

२ वसूली, प्राप्ति ।

३ पाटने की क्रिया या भाव ।

४ पाटने का पारिश्रमिक ।

पटाक-अव्य०—१ किसी छोटे पदार्थ के गिरने का शब्द ।

२ शीघ्र, जल्दी ।

उ०—हिरणी फेर कह्यौ—म्हारा विचिया खाया जिण री पेट फूट ज्यौ । खोडिया ना'र री पटाक देणी री पेट फूटग्यौ ।—फुलवाड़ी

पटाकौ, पटाखौ-सं०पु० [अनु०] एक प्रकार की आतिशबाजी जो छूटते समय पटाक शब्द करती है । उ०—हीरू घर में बड़ियौ पण उदास मन सूं । टाबर बाप नैं घेर'र पटाका मांगण लागा । पण मा आधी ऊभी है आंगळी फेरी, जकै-नै देख'र सै-रा सै चुप हुयग्या ।—वरसगांठ

पटाझर-सं०पु०यौ० [सं० पट्ट=मुकुट, पगड़ी+झर=क्षरणम्]

१ मस्त हस्ती, मदोन्मत्त हाथी । उ०—१ चढतै जोवन रंग चुवै, पायल वाजै पाय । चालै सुंदर चौहटै, जांण पटाझर जाय ।—पनां वीरमदे री वात

उ०—२ पेखि रोस पतिसाह; माळ मोतियां समर्प्पै । वगसी भेजि सताव, श्रांणि माळा सुज अर्प्पै । मीर-तुजक मारि, धिकै जमदढ कर धारै । दुम्भल खांन दौरांन पटाझर जिम पूंतारै । असतुत करै बहकरि अरज, जोड़ै हाथ जुहारियौ । असपती मोहर आंणै 'अभौ', इण विध क्रोध उतारियौ ।—सू.प्र.

२ हस्ती, हाथी, गज (ह.नां.)

उ०—करां खग मोगर घूण करूर । पटाझर श्राहुडिया मदपुर ।—गो.रू.

३ सिंह, शेर ।

रू०भे०—पटझर, पट्टझर, पट्टाझर ।

पटाड़णौ, पटाड़बौ—देखो 'पटाणौ, पटावौ' (रू.भे.)

पटाड़ियोड़ौ—देखो 'पटायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० पटाड़ियोड़ी)

पटाणौ, पटाबौ-क्रि०स० ['पटणौ' क्रि० प्रे०रू०] १ वसूली कराना, प्राप्ति कराना ।

२ दो व्यक्तियों के विचार, भाव, स्वभाव आदि में समानता कराना, मेल कराना ।

३ क्रय-विक्रय, लेन-देन आदि में दोनों पक्षों को मूल्य, सूद, शर्तों आदि में सहमत कराना, तै कराना ।

४ किसी कूप, झील, गड्ढे आदि का आसपास के स्थान के समतल कराना, बराबर कराना ।

५ किसी स्थान पर पदार्थ विशेष की इतनी अधिकता करानी कि रिक्त स्थान दिखाई न पड़े ।

६ ध्वंस या नष्ट कराना ।

७ घसाना, प्रविष्ट कराना ।

पटाणहार, हारौ (हारी), पटाणियौ—वि० ।

पटायोड़ौ—भू०का०कृ० ।

पटाईजणौ, पटाईजबौ—कर्म वा० ।

पटणौ, पटबौ—अक०रू०

पटाड़णौ, पटाड़बौ, पटावणौ, पटावबौ—रू०भे० ।

पटाधर-वि० [सं० पट्ट+धारी] वह जिसके पास पट्टा हो ।

सं०पु०—१ जागीरदार, सामन्त ।

२ हाथी. ३ सिंह ।

पटापट, पटापटी—देखो 'पड़ापड़' (रू.भे.)

पटापांन-सं०स्त्री०—एक प्रकार की तलवार ।

रू०भे०—पट्टापांन ।

पटाबंधाई—देखो 'पाटाबंधाई' (रू.भे.)

उ०—रिपिया पंद्रह हजार पटाबंधाई री खरची रा दिया । उम्मीदवार कांम आया त्यांनूं पट्टौ जागीर दीवी ।—डाढाळा सूर री वात

पटाबाज देखो 'पटैबाज' (रू.भे.)

पटायत-सं०पु० [सं० पट्टः = सनद+रा० प्र० आयत] १ जागीरदार, सामन्त । उ०—१ खाग झड़ उरड़ पड़ ढालड़ा खड़भड़ै । रोस चढ़ सोहड़ आथुड़ भ्रगुट रड़वड़ै । खटायत वरद 'सुरतांण' साम्हा खड़ै । लाख रौ पटायत न्याव इण विध लड़ै ।—किसनौ आढौ

उ०—२ लाखां तणा पटायत लड़िया, चूंडा झाला चंगा । एकण भूप 'उमेद' ऊपरा, असमर वगा अढंगा ।

—उम्मेदसिंह सीसोदिया रौ गीत

उ०—३ सो दळ करण रै डेढ सौ घोड़ा पायगा मांहे, बाकी पटायतां रा घोड़ा सो इण तरह सूं—घोडा अढाई सौ वीं कन्है रहै ।

—सुंदरदास बीकूंपुरी भाटी री वारता

२ वह सामन्त या जागीरदार जो जमीन का पट्टा रखता हो ।

रू०भे—पटाइत, पट्टायत ।

पटायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ वसूल कराया हुआ, प्राप्त कराया हुआ ।

२ दो व्यक्तियों के विचार, भाव, स्वभाव आदि से मेल कराया हुआ ।

३ क्रय-विक्रय, लेन-देन आदि में दोनों पक्षों का मूल्य, सूद आदि में सहमत कराया हुआ ।

४ किसी कूप, गड्ढा, झील आदि को समतल (बराबर) कराया हुआ ।

५ किसी स्थान पर पदार्थ विशेष का इतना आधिक्य कराया हुआ कि वहां रिक्त स्थान न दिखाई पड़े ।

६ ध्वंस या नष्ट कराया हुआ ।

७ धसाया हुआ, प्रविष्ट कराया हुआ ।

(स्त्री० पटायोड़ी)

पटाळ-वि०—जिसकी गर्दन पर पट्टे हों, गर्दन पर पट्टों वाला ।

सं०पु० [सं० पट्टः=मुकुट=पगड़ी+आलुच्] १ वह पुरुष जिसके सिर पर पट्टे हों, पट्टे रखने वाला पुरुष. २ हाथी ।

उ०—पटे ऊपटे मद्द धारा पवाळं, खळक्कै गिरांमेर थी नीर खाळं । प्रळै काळ छंछाळ छूटा पटाळं, क्रमै डारणा कारणा भूतकाळं ।

—वचनिका

३ ऊंट । उ०—रुडै कोस ऊडंगळै जोस राता, घटा जांणि आसाढ गाजे निघाता । मुखै बांधि खोलै किता रोस मत्ता, अनेके अने जोस दाखे उमत्ता । पटाळा हठाळा महांगात पूरां, सुरंगा सगाहा सकोपा सनूरां । सलीता कन्है फैंकवै प्रांण साहै, लियां हाथ लट्ठी समासेल ठाहै ।—रा.रू.

४ एक प्रकार का सिंह । उ०—तठा उपरांति करि नै राजांन सिलांमति बडा सिकारी सिंघळी सादूळ पटाळा केहरी नवहथां कंठी रीग्रां रींछीग्रां तेलिग्रां तींदुळा......भांति भांति जाति रा नाहर सांकळै जड़िग्रा रह हुग्रे गाडै वैठा कसता करणाता बुंबाड़ा करता वहै छै ।—रा.सा.सं.

वि०वि०—प्रायः गर्दन पर बाल होने के कारण राजस्थानी में सिंह, हाथी और ऊंट के लिए पटाळा शब्द प्रयोग किया जाता है ।

[सं० पटः = किरच] ५ पटे खेलने वाला, पटैबाज ।

[सं० पट्टः सनदपत्र+आलुच्] ६ जागीरदार, सामन्त ।

अल्पा०—पटाळौ ।

पटालय-सं०पु० [सं० पटः+आळय] खेमा, तम्बू ।

पटाळौ—देखो 'पटाळ' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—पटाळा दळां काठळ सजे ऊपटां, फैल प्रगटां करै नकूं फिरियौ । भयांनक छटा चहुं-फेर सारां भळळ, घटा वांधे गिरा सीस घुरियौ ।

—कविराजा करणीदांन

पटावणौ, पटावबौ—देखो 'पटाणौ, पटाबौ' (रू.भे.)

पटावळी—देखो 'पट्टावळी' (रू.भे.)

पटावियोड़ौ—देखो 'पटायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० पटावियोड़ी)

पटासी-सं०स्त्री० [देशज] लकड़ी छीलने का ग्रोजार ।

पटियार-सं०स्त्री० [देशज] १ गणेश स्थापन के बाद विवाहित होने वाली लड़की को उसके पिता के घर में ही पाटे पर बैठाने की प्रथा या रीति । इस प्रथा के दूसरे दिन से बंन्दोळौ जिमाने का कार्यक्रम प्रारम्भ किया जाता है । उ०—म्हारै आंगण पड़ी अरायी, म्हारी मा करी परायी । अै रांम राती झंबी, पटियार राती झंबी ।

—लो.गी.

२ देखो 'पठियार' (रू.भे.)

३ देखो 'पटियारी' (मह०, रू.भे.)

पटियारी-सं०स्त्री० [सं० पटः+रा०प्र० यारी] बकरी के बालों की डोरों का बना मोटा कपड़ा जो प्रायः बिछाने के काम में आता है ।

रू०भे०—पटीयारी, पिटियारी ।

मह०—पटियार ।

पटियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ वसूल हुवा हुआ, प्राप्त ।

२ परस्पर दो व्यक्तियों के विचारों में ऐक्य हुवा हुआ ।

साम्य हुवा हुआ ।

३ क्रय-विक्रय, लेन-देन आदि में दोनों पक्षों का तै हुवा हुआ ।

४ कूप, गड्ढा, झील आदि समतल हुवा हुआ।
५ परिपूर्ण हुवा हुआ, भरा हुआ, आच्छादित हुवा हुआ।
६ धसा हुआ, गडा हुआ।

पटियो-सं०पु० [सं० पट्ट:] १ स्त्रियों के कंठ का स्वर्णाभरण।
२ बकरी के बालों का बना मोटा खुरदरा कपड़ा।
३ देखो 'पटौ' (अल्पा., रू.भे.)
४ देखो 'पट्टी' (अल्पा०, रू.भे.)

पटी-सं०स्त्री० [सं० पट्टी] १ सड़क के दोनों ओर का ऊँचा और कम चौड़ा मार्ग जो पैदल चलने वालों के लिए होता है।
२ रेलमार्ग।
३ क्यारों (केदारों) के इधर-उधर का पतला मार्ग।
४ काष्ठ की सीधी चपटी लकड़ी जो मकान बनाते समय सीध बाँधने के काम आती है।
५ देखो 'पट्टो' (रू.भे.)
उ०—१ मुड़े तार कच्छे किनां बार मच्छी, अटै फार जै पंच ही धार अच्छी। गिणीजै पटी में किनां तोप गोळा, टळावै वाग में नाग टोळा।—वं.भा.
उ०—२ घट सुंदर ग्रीव कवांण घटी, पवमांण विमांण समांण पटी।—मे.म.
६ देखो 'पाटी' ((रू.भे.)
अल्पा०—पटड़ी, पटरी।

पटीड़णौ, पटीड़बौ-क्रि०स० [देशज] मारना, पीटना।

पटीदारी—देखो 'पट्टीदारी' (रू.भे.)

पटीयारी—देखो 'पटियारी' (रू.भे.)

पटु-वि० [सं०] १ चतुर, निपुण, दक्ष। उ०—जिण झालै बळ जोर, जंग आहुणि जाड़ेचां। पुहवि कच्छ पंचाळ, गंजि लीधी पटु पेचां।
—वं.भा.
२ चालाक, धूर्त, मक्कार।
३ स्वस्थ, आरोग्य (अनेका०)
४ तीक्ष्ण, चरपरा, तीता (अनेका०)
५ कुशाग्रबुद्धि (अनेका०)
सं०पु० [सं० पट:] ६ ओढ़ने का ऊनी वस्त्र विशेष।
रू०भे०—पटू।
अल्पा०—पटुड़ौ।
मह०—पटूड़।

पटुओ—देखो 'पटवौ' (रू.भे.)
उ०—सोनचिड़ी मेरी मायली, चुगदे नौसरहार। पटुए की बेटी मेरी मायली, पो दे नौसरहार।—लो.गी.
मह०—पटूड़।

पटुड़ौ—देखो 'पटु' (अल्पा०, रू.भे.)

पटुता-सं०स्त्री० [सं०] पटु होने का भाव, निपुणता।

पटुलड़ौ—देखो 'पटुलौ' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—परघांनि प्रणेपति करि पघरविउ द्विजराय। परि परितणा पटुलड़ां पुहु पथरतइ पाय।—मा.कां.प्र.

पटुली—देखो 'पटोली' (रू.भे.)
उ०—१ फाडि पटुली फटकडे, वेणि विणासी हत्थि। रा अंतेउरि तंडिउ, दुहवइ दासी-हत्थि।—मा.कां.प्र.
उ०—२ घनवेलि, कमळवेलि कपूरवेलि सेला पटुली खमरतळी झमरतळी चेउली महघु-साळू चौरसा खरवांन खेस।—व.स.

पटुलौ—देखो 'पटोळौ' (रू.भे.)
उ०—१ पाय पटुलां पाथरी, पीऊ पधारउ सेज। जंपी तू जी, जी, करइ, आंणी आपइ वेगि(ज) ?—मा.कां.प्र.
उ०—२ टमरू मसरू रत्न कंबळ छाइल मकबल अगल साउला उर साला वाला पटुलां वाकलां घनवेलि।—व.स.

पटुवौ—देखो 'पटवौ' (रू.भे.)

पटूड़—१ देखो 'पटु' (मह०, रू.भे.)
२ देखो 'पटवौ' (मह०, रू.भे.)

पटेत—देखो 'पटैत' (रू.भे.)

पटेपड़ौ—देखो 'पाटेपड़ौ' (रू.भे.)

पटेबाज—देखो 'पटैबाज' (रू.भे.)

पटेल—१ देखो 'पिटल' (रू.भे.)
उ०—चूंडा रांणपुर री वस्ती ७० (घर) वांणियां १५० घरवाड़ पटेल १०० (घर) सिपाही।—नैणसी
२ देखो 'पटैल' (रू.भे.)
उ०—सप्ताहां न मावै सूर वड़ी-वड़ी नाच सूंडे। आग झड़ी द्रोह ऊंडै चसम्मा अटेल। भड़ी खड़ी मूंछ भ्रूहां लोहरे हड्डूंडे भांत, पड़ी अड़ी राड़ 'चूंडे' अचूंडै पटेल।—बद्रीदास खिड़ियौ

पटेली-सं०स्त्री० [देशज] श्वेत व काले बालों की लकीर वाली बकरी।

पटैत, पटैतिय-सं०पु० [सं० पट्ट:=मुकुट, पगड़ी+रा०प्र० ऐत] १ सिंह की एक जाति, इस जाति का सिंह (अ.मा.)
उ०—उस तरफ केसरीसिंघ, पटैत नळै झाड़ भभकार सांमुहे आए।
—सू प्र.
२ सिंह। उ०—हलां करोळां तबोळां, वाज घेरियौ गिरंद हिंदु, जगायौ अड़िंद्र जांणै नौहया जटैत। दौहोहा रूठतो ऊठियौ रोसरत्ते देख, 'पत्तै' आपमतै ऊ वाकारियौ पटैत।
—महाराज प्रतापसिंह किशनगढ री गीत
[पट=किरच+रा०प्र० ऐत] ३ योद्धा, वीर।
उ०—१ आप आपरा पराक्रम रै प्रमांण दो ही नरेसां नूं अचंभौ दिखाय दोही पटैतां प्रहार टाळि दीधा।—वं.भा.
उ०—२ घटै दळ मुग्गळ सैयद धांण। पटैत कटै कई सेख पठांण।
—मे.म.
४ पटा खेलने या लड़ने वाला, पटैबाज।

रू०भे०—पट्टैत।

पटैवाज-वि० [सं० पट=किरच+फा० बाज] १ पटा खेलने वाला, पटे से लड़ने वाला।
२ धूर्त, चालाक।
३ व्यभिचारी।
रू०भे०—पटावाज, पटेवाज।

पटैल-वि० [सं० पट्टः=मुकुट, पगड़ी] सिर या गर्दन पर बालों वाला।
सं०पु०—१ वह पुरुष जिसके शिर पर पट्टा हो। २ सिंह की एक जाति, इस जाति का सिंह। ३ सिंह, शेर।
४ शिर पर जटाधारी भयंकर सर्प, सांप। उ०—रटक कुण लियै सुत 'भीम' खगराज हूं, पेस भर कटक मिणधर पटैलां। नवकुळी वळ रा अटक रहिया नथी, गया माथा पटक बीस गैलां।
—महादांन महड़ू
५ ऊंट. ६ हाथी।
[सं० पट=किरच+रा०प्र० ऐल] ७ वीर, योद्धा, बहादुर।
उ०—आयौ उरेडियौ जोम रौ पटैल माथै धारै आंट, रवतेस दूर हूं तेड़ियौ काथै राग। सांकळां हूं लांघणीक हेड़ियौ बीहतौ सेर, पूंछ चांप सूतौ फेर छेड़ियौ पैनाग।—बद्रीदास खिड़ियौ
८ पटा खेलने वाला, पटैवाज।
[सं० पट्ट=सनदपत्र] ६ पट्टाधिकारी।
१० जागीरदार, सामन्त।
११ स्वामी, मालिक। उ०—पिण पतिसाही मांहे कोई सिपाई नहीं। दिली का पटेल है। जमीपट में भै खाये है।
—वीरमदे सोनगरा री वात
१२ देखो 'पिटल' (रू.भे.)

पटोघर, पटोधर—देखो 'पाटोधर' (रू.भे.)
उ०—१ इसौ भड़ 'केहर' री दइवांण। पटोधर जूटत पौरस पांण।
—सू.प्र.
उ०—२ पहिरावियउ निज गच्छ सहुए, अधिको करणी कीध। 'स्त्री जिन सिंह' पटोधरु, जग मांहें जस लीध।—कविवर स्रीसार

पटोळ-सं०पु० [सं० पटोलः] १ परवल की लता या उसका फल।
(अमरत)
२ कड़वी तोरू (अमरत)
३ देखो 'पटोळौ' (मह०, रू.भे.)
४ देखो 'पटोली' (मह०, रू.भे.)
रू०भे०— पट्टोळ।

पटोलड़ी—देखो 'पटोली' (अल्पा०, रू.भे.)
उ०—पाई नी आंगुळी पोलरा परठव्या। नेवरा संठवी नाद सारा। पहिर पटोलड़ी ही न नीचोलड़ी। नारी नै नयणडै हरण-हारा।
—रुकमणी-मंगळ

पटोलि—देखो 'पटोली' (रू.भे.)
उ०—कचीयौ, चूंनड़ी, जांमसाइ, मुंगीपटण, जांमावाडि, सुय, लखारस, खासौ, तपई, पिरमो, कसबी, पटोली, मुलमुल।—व स.

पटोळियौ—देखो 'पटोळौ' (अल्पा०, रू.भे.)

पटोली-सं०स्त्री० [सं० पटः=वस्त्र+रा०प्र० ली] साड़ी।
उ०—साहिब परणी प्रीत सूं, सांचो मोसू भाव। मो सुगणी रा साहवा, वेग पटोली लाव!—व.स.
रू०भे०—पटुलि, पटुली।
मह०—पटोळ।

पटोळौ, पटोलौ-सं०पु० [सं० पटः=वस्त्र, कपड़ा+रा. प्र. ओलौ]
१ वस्त्र, कपड़ा। उ०—१ रांणी वळण नूं चाली छै। डावड़ी रांणी री गोद मांहे थी सो उण ठौड़ कोटेस्वर महादेव छै। तठै बांमण विजयदत्त पुत्रअरथ सेवा करै छै। तिण नूं से रांणी तेड़नै पटोला सूं बींट नै वेटी दीयौ। बांभण विजैदत्त जांणियौ क्यूं माल छै।—नैणसी
उ०—२ जीह भरणै भण जीह भण, कंठ भरणै भण कंठ। मो मन लागी महमहण, हीरा पटोळै गंठ।—ह.र.
२ लहंगा। उ०—वीरा म्हारा रै कड़चां नै पटोळौ लाज्यो, म्हारी चूनड़ वैठ रंगाज्यो जी। म्हारै रुमक झुमक भाती आज्यौ, वीरा थे आज्यो रै भाभी लाज्यो।—लो.गी.
[सं० पट्टः=महीनतम वस्त्र] ३ रेशम का वस्त्र।
उ०—१ पाखरया हाथी पादसाह, सु गुरु सांम्हो संचरइ। गुरु पाय हेठइ कथीपां नइ, पटोला बहु पाथरइ।—भक्ति लाभोपाध्याय
उ०—२ इण कळि समुख नवि भिळइ रे। वळि पहुंचइ नहीं मात रे। दूर थकी जे रंग इसी परि रे। राखिस ए पटोळै भांति रे।
—वि.कु.
४ बाजरी के आटे से पका कर बनाया हुआ पेय पदार्थ।
रू०भे०—पटुली, पटुलु।
अल्पा०—पटोळियौ, पट्टोळौ।
मह०—पटोळ।

पटौ-सं०पु० [सं० पट्टः] १ शासन सत्ता या राज संस्था द्वारा किसी व्यक्ति को दिया जाने वाला भूमि के उपयोग का अधिकार पत्र।
ज्यूं—मकान रौ पटौ, खेत रौ पटौ।
२ राजा द्वारा किसी सामन्त या सरदार को दिया जाने वाला जागीर के उपभोग का अधिकारपत्र या सनद।
उ०—१ लड़े इम नागोर लीधौ। दुकल बंधव नू पटो दीधौ।
—सू.प्र.
उ०—२ सुरतांण रायसिंघोत। संमत १६६६ सुरजवासणी पटै।
—नैणसी
क्रि०प्र०—करणौ, खोणौ, गमणौ, देणौ, बणाणौ, मिळणौ, राखणौ, लाणौ, होणौ।
३ जागीर। उ०—जद स्वांमीजी बोल्या—रजपूत रौ बेटौसं ग्रांम

करतां न्हांस जावै तौ सूर किम कहियै। तिणनै राजा पटौ किम खावा दै।—मि.द्र.

मुहा०—पटौ जब्त करणौ—जागीर छीनना, आमदनी बन्द करना।

४ एक प्रकार का स्त्रियों का आभूषण जो चूड़ियों के बीच में धारण किया जाता है।

५ घोड़े के मस्तक पर पहिनाने का एक प्रकार का आभूषण।

६ चपड़ास।

७ चपड़ास टंगी रखने की कपड़े या चमड़े की पट्टी।

८ चमड़ा, प्लास्टिक आदि की बनी कमरबन्द या पट्टी।

९ चमड़े या बनात आदि की बद्धी जो कुत्ते बिल्ली आदि के गले में पहनाई जाती है।

क्रि०प्र०—खोलणौ, बांधणौ।

१० पुरुषों के सिर के बराबर कटे हुए बाल जो पीछे या कनपट्टियों की ओर गिरे रहते हैं। उ०—बिदर मूछ जांणं ग्रथा, इधक पटां रो आथ। हाकां वागां हिरणियां, बिदर गळी रा बाघ।—बां.दा.

११ ऊंट, हाथी, सिंह के शिर तथा गर्दन के बाल जहां से प्रायः मद स्रवता रहता है।

उ०—१ नवहथी भोक रा, बाथिमें कंध रा, छत्रधारी माथै रा, कोरिमें कांन रा, साहमै वांनरा, तजिया होठां रा, कसतूरिआं पटां रा, भमणमथा सालीग्र (सालुळिग्रं) सिंह ज्यों सारसै करता सींघोड़ा सा''''।—रा.सा.सं.

उ०—२ सुघटा घट घाट घटा सरसै। रसतारव डांण पटा वरसै।
—मे.म.

उ०—३ परचंड पिड भरता पटां, भणणाहट करता भमर। कज्जळ पहाड़ वारण कस्या, सज्जळ घण कारण समर।—मे.म.

१२ ऊंट, हाथी, सिंह के गर्दन से स्रवने वाला रस या मद।

उ०—सटा न मावै बाघ मैं, फलंग ग्रटा गरकाव। पेख छटा सूकै पटा, सिंधुर घटा सताब।—बां.दा.

१३ एक प्रकार की छोटी तलवार। उ०—जम हूंत फेट खाणा जिका, सिरखाणा दांणां सटै। ते वीर कांमरांण तणा, प्रांणां पर खेलै पटै।—मे.म.

१४ शस्त्र विद्या सिखाने व सीखने का खेल।

उ०—पटादि खेल पेलकै, सटा समालतै नहीं। घुसै गयंद की घटा, मयंद मालतै नहीं।—ऊ.का.

१५ रेशमी कपड़ा जो कशीदा निकालने हेतु जूती पर लगाया जाता है। उ०—मोची परवांणा-माफक मोजड़ी करै छै। मोती लाल-पटा, पना लगाया छै।—वीरमदे सोनगरा री वात

१६ देखो 'पाटौ' (रू.भे.)

रू०भे०—पट्टौ (रू.भे.)

पट्टंतर—देखो 'पटंतर' (रू.भे.)

उ०—दरहिं न किंपि परत्र, वेविसु पल्प्पह जुज्झहिं। सुगुरु कुगुरु मणि मुणिवि न किवि पट्टंतर बुज्झहिं।—कवि पल्ह

पट्ट-सं०पु० [सं० पट्ट या पट्टः] १ लिखने की पटिया, पट्टी, तख्ती।

२ किसी पदार्थ का चौरस या चपटा तल-भाग।

३ रेशम।

४ महीन वस्त्र। उ०—खाली मो रख खोळियां, पोमचो न अब पट्ट। अस लागै अज आपजै, काट चढूं जद कट्ट।
—रेवतसिंह भाटी

५ मुकुट या किरीट।

६ राज्य सिंहासन, तख्त।

७ युद्ध में धारण करने का वह पहनावा या कवच जिसमें केवल धड़ ढका रहता है।

८ ढाल।

९ घाव पर बांधने की पट्टी।

१० चिपटी और चौरस तलभूमि। उ०—पाहाड सिरंगै पंथ पवंगै, गोम निहंगै गूघोळं। पाथर किय पट्टं वन्न विकट्टं, जांणि उलट्टं जळ-बोळं।—गु.रू.बं.

११ देखो 'पट' (रू.भे.)

उ०—सील सहित सिव राज सितारे, खोस लूट घर खाई। कै ओरंग के कटक काटकर, पट्ट करी पतसाई।—ऊ.का.

१२ देखो 'पाट' (रू.भे.)

१३ देखो 'पाटौ' (अल्पा०, रू.भे.)

रू०भे०—पाड।

पट्टकूळ—देखो 'पट्टदुकूळ' (रू.भे.)

उ०—पट्टकूळ, हीरावडि, गजवडि, नीलवडि, सेवन्नीवडि, सोवनवडि, जादर पोतीवर।—व.स.

पट्टझर—देखो 'पटाझर' (रू.भे.)

पट्टडी—१ देखो 'पट्टी' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—लागां पाखरां साज, लूमां, लड़ी सूं चलै ज्यां नट्टी पट्टडी सूं।
—वं.भा.

२ देखो 'पाटौ' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—पीठ धरणीधर पट्टडी, हरितिय चित्रण हार। तोइ तोरा चरितां तणौ, परम न लभै पार।—ह.र.

पट्टण, पट्टन-सं०पु० [सं० पट्टनम्] नगर, कस्बा (डिं.को)

रू०भे०—पटण, पटन, पतन, पत्तन।

पट्टदुकूळ-सं०पु० [सं० पट्टदुकूल] १ रेशम का वस्त्र।

२ वस्त्र, कपड़ा। उ०—अथ वस्त्र, देवांगचीर, चीनांसुक, पटांसुक, पट्टदुकूळ, पट्टहरी।—व.स.

३ देखो 'पटकूळ' (रू.भे.)

पट्टप—देखो 'पाटप' (रू.भे.)

पट्टपकुमार-सं०पु०यौ० [सं०] जेष्ठ कुमार, युवराज।

उ०—इणी ही समय रांणां लखमण री पट्टपकुमार अरिसिंह आखेट

रमतां कोई ग्रांम रा परिसर में एक चंदांणा जाति रा हळलड़ राजपूत री पुत्री नूं ।—वं.भा.

पट्टरांणी-सं०स्त्री० [सं० पट्ट-राज्ञी] राजा की विवाहिता राणियों में सर्वप्रथम या सर्वप्रधान राणी जो राजा के साथ सिंहासन पर बैठने की अधिकारिणी हो, पट्टमहिषि, पट्टदेवी ।
रू०भे०—पटरांणी, पाटरांणी ।

पट्टसाउली-सं०पु०—एक वस्त्र विशेष (व.स.) ।

पट्टसिखर-सं०पु० [सं० पट्ट+शिखर] सिर का आभूषण विशेष (व.स.)

पट्टह—देखो 'पटह' (रू.भे.)

पट्टहरी-सं०पु०—एक वस्त्र विशेष (व.स.)

पट्टहीर-सं०पु० [सं०] रेशमी वस्त्र ।

पट्टाझर—देखो 'पटाझर' (रू.भे.)

पट्टापांन—देखो 'पटापांन' (रू.भे.)

पट्टावींटी, पट्टाबीटी-सं०स्त्री० [सं०पट्ट+आवेष्ठनम्] वर पक्ष वालों की ओर से विवाह मे पाणि-ग्रहण के पूर्व दुलहिन की उंगुली में धारण करने हेतु दी जाने वाली चांदी की बनी मुद्रिका विशेष । (पुष्करणा ब्राह्मण)

पट्टायत—देखो 'पटायत' (रू.भे)
उ०—जोरजी वीदावत वोल्यौ, हुई ओर सूं ओर । लाखां री पट्टायत मरग्यौ, नहीं रांम सूं जोर ।—डूंगजी जवारजी री पड़

पट्टावळि, पट्टावळी-सं०स्त्री० [सं० पट्ट+अवली] पाट परम्परा, गुरु परम्परा । उ०—प्रणमी वीर जिणेसर देव, सारइ सुरनर किन्नर सेव । खरतर गुरु पट्टावली, नांम मात्र पभणुं मन रली । —स.कु.

पट्टिस-सं०पु० [सं० पट्टिश, पट्टिस, पट्टीश, पट्टीस] एक प्रकार का बड़ी पैनी नोंक का भाला । उ०—तरवार छोड़ि नट रैं माफिक मलंग लेर पल्हण प्रतिहार रै जमदाढ जाय जड़ी, अरि वाजि सूं उतरि वार वार पट्टिस चलावतौ दिणयर नूं ठहरायौ दोय घड़ी । —वं.भा.

पट्टी-सं०स्त्री० [सं०] १ घोड़े की तेज चाल ।
उ०—देखे डाव पीठ दुसमण की, धीमी चाल धपावै । पूरे वेग करै जब पट्टी, लख ममरेज लगावै ।—ऊ.का.
२ तेज दौड़ । उ०—कटि बगतर आंगी कटै, काया खळ कट्टी । आधा धड़ पड़िया उडै, पीछा धर पट्टी ।—सू.प्र.
३ घोड़े का तंग ।
४ पत्थर का लंबोतरा खण्ड जो मकान की छाजन में उपयोग किया जाता है ।
५ कपड़े की वह धज्जी जो घाव या अन्य स्थान पर बांधी जावे ।
६ सूती या ऊनी कपड़े की धज्जी जो सर्दी और थकावट से बचने के लिए पैरों में बांधी जाती है ।
७ किसी भू-भाग के नाम के अगाड़ी लग कर उसका बोध कराने वाला शब्द, ज्यूं—मेड़तापट्टी, नागोरपट्टी ।
उ०—सोम भाटी राठौड़ जयसिंघ जांरा गांव फळोदी री पट्टी में आगे घणा हुआ ।—बां.दा. ख्यात
८ पीतल का एक आयताकार टुकड़ा जिस पर विभिन्न मूर्तियां खुदी हुई होती हैं । सोने या चांदी की पतली चादरों को इस पर ठोकने से मूर्तियां उत्कीर्ण हो जाती हैं ।
९ देखो 'पटी' (रू.भे)
१० देखो 'पाटी' (रू.भे.)
अल्पा०—पटड़ी, पट्टड़ी, पाटड़ी ।

पट्टलु—देखो 'पटोळौ' (रू.भे.)
उ०—किहां पट्टलु कांबळ, किहां चंदन किहां कट्ठ ? अंतर अेतु अंघोउ, तिम सगुण नइं सट्ठ ।—मा.कां.प्र.

पट्टैत—'पटैत' (रू.भे.)

पटोळ(ळा)—देखो 'पटोळ' (रू.भे.)

पट्टोळौ—देखो 'पटोळौ' (अल्पा.रू.भे.)
उ०—सहसे लाखे साटविसु, परिघळ आंणा वेसि । घरि बइठा ही प्रीतमा, पट्टोळा पहिरेसि ।—ढो.मा.

पट्टौ—देखो 'पटौ' (रू.भे.)
उ०—रिपिया पंद्रह हजार पटावंधाई खरची रा दिया । उम्मीदवार कांम आया त्यांनूं पट्टौ जागीर दीवी ।—डाढाळा सूर री वात

पट्ठांण—देखो 'पठांण' (रू.भे.)
उ०—माभी मीर वलक्की मल्लं, मोर, सैद, पट्ठांण, मुगल्लं । —रा.रू.

पट्ठौ-वि० [सं० पुष्ठ, प्रा० पुट्ठ] (स्त्री० पट्ठी) १ चर प्राणी का वह बच्चा जो यौवनावस्था में आ गया हो किन्तु जिसमें पूर्णता न आई हो, युवा, नवयुवक, तरुण ।
२ मांसपेशियों व हड्डियों को परस्पर बांधने वाला तन्तु ।
३ कमर और जांघ के जोड़ का स्थान, रग ।
४ कुश्तीबाज, लड़ाका ।
रू०भे०—पठौ ।
अल्पा०—पठियौ ।

पठंग, पठंगौ-सं०पु० [सं० पृष्ठ+अंग] १ सहारा, मदद ।
उ०—मिळियागिरि-नइं मेहलि करि, उत्तरि वळ्यु वाय । पन्नग तणा पठंगथी, खिण खिण खावा धाय ।—मा.कां.प्र.

पठ-सं०पु० [सं० पठ्] १ पढना क्रिया का भाव ।
२ देखो 'पाट' (रू.भे.)

पठड़ी—देखो 'पाठ' (८) (अल्पा०. रू.भे.)

पठन-सं०पु० [सं० पठ्] १ पढने की क्रिया ।
२ कलाओं में में एक कला ।

यौ०—पठन-पाठन ।

पठमंजरी-सं०स्त्री०—एक रागिनी ।

पठसाळ—देखो 'पठाळ' (रू.भे.)

पठांण-सं०पु० [पश्तो पुख्ताना, फा० पुख्तोनां] (स्त्री० पठांणी) अफगानिस्तान और पाकिस्तान की सीमा पर बसने वाली एक स्वाधीनताप्रिय एवं क्रूर मुसलमान जाति ।

रू०भे०—पट्टांण, पाठांण, पाठांन ।

पठांणी-वि० [फा० पुख्तोना] १ पठान का, पठान सम्बन्धी ।

सं०स्त्री०—२ पठान जाति की स्त्री ।

पठांणीलोद, पठांणीलोध-सं०पु० [सं० पट्टिकालोध्र] एक प्रकार का जंगली वृक्ष विशेष जिसकी लकड़ी और फूल औषधि के काम में आते हैं ।

पठाड़णौ, पठाड़बौ—देखो 'पठाणौ, पठावौ' (रू.भे.)

पठाड़ियोड़ौ—देखो 'पठायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० पठाड़ियोड़ी)

पठाणौ, पठावौ-क्रि०स० [सं० प्रस्थानं या प्रस्थापितम्, प्रा० पट्ठान] भेजना । उ०—इतरा मूंति उपाय, एक नवि इद्री उपाया । दस इंद्री दस देव, परम करि घणी पठाया ।—पी.ग्रं.

पठाणहार, हारौ (हारी), पठाणियौ—वि० ।

पठायोड़ौ—भू०का०कृ० ।

पठाईजणौ, पठाईजबौ—कर्म वा० ।

पठणौ, पठबौ—अक० रू० ।

पठाड़णौ, पठाड़बौ, पठावणौ, पठावबौ—रू०भे० ।

पठायोड़ौ-भू०का०कृ०—भेजा हुआ ।

(स्त्री० पठायोड़ी)

पठार-सं०पु० [सं० पृष्ट+धार] समुद्र तल से काफी ऊंची पहाड़ी समतल भूमि । उ०—तिण ऊपरा छाजू छाडयरी तयारी कीवी नै ठौड़ जोवाड़ी सो ऐ वूंदी चीत्रोड़, आंतरी विचै पठार रा गांव यां री वसती ।—नैणसी

पठाळ-सं०स्त्री० [सं० पृष्ठशाल] बरामदा ।

पठावड़ी-सं०स्त्री० [सं० पट्ट+अवली] पेट पर सफेद दाग या चिकत्ता वाली बकरी ।

पठावणौ, पठावबौ—देखो 'पठाणौ, पठावौ' (रू.भे.)

पठावियोड़ौ—देखो 'पठायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० पठावियोड़ी)

पठिक—देखो 'पाठक' (रू.भे.)

उ०—तासु उयरि प्रभु अवतरया, सुदि वारस वैसाखौ जी । चवद स्वप्न रांणी लह्या, सुपन पठिक सुत दाखौ जी ।—स.कु.

पठित-वि० [सं०] १ पढा हुआ (ग्रंथ)

२ पढा हुआ, शिक्षित ।

पठियाळ—देखो 'पटियाळ' (रू.भे.)

पठियौ—देखो 'पट्टौ' (अल्पा०, रू.भे.)

पठौ—देखो 'पट्ठौ' (रू.भे.)

(स्त्री० पठी)

पडंग-सं०पु० [सं० पतंग=चिड़िया] १ पक्षी ।

उ०—पसु पडंग नइ नारि जिहां रहइ, तिहां न रहइ ब्रह्मचारि रे ।
—स.कु.

२ पतंग, पतंगा ।

३ टिड्डी ।

पडआगळ, पडआलग—देखो 'पडियालग' (रू.भे.)

पडकमणौ—देखो 'पडिक्कमण' (अल्पा०, रू.भे.)

पडखणौ, पडखबौ-क्रि०स० [सं० प्रतिक्षा, प्रा० पडिक्ख, पडक्ख] प्रतीक्षा करना, इन्तजार करना ।

उ०—१ क्षण एक पडखु अहींइ मुनिवर ! महिसी दोही ल्यावूं दुग्ध ए । यती तणी भक्ति धरतु घरि आवइ ते मुग्ध ए ।
—नळ-दवदंती रास

उ०—२ जउहर महि जळिवाह, इसइ तेज पइसइ अनळ । पहिला थी रहि पाछिलौ, पग एकि पडखइ नाह ।—अ. वचनिका

पड़क्खणौ, पड़ुखबौ, पड़खणौ, पड़खबौ—रू०भे० ।

पडखियोड़ौ-भू०का०कृ०—प्रतीक्षा किया हुआ, इन्तजार किया हुआ ।

(स्त्री० पडखियोड़ी)

पडगन—देखो 'पड़गन' (रू.भे.)

पडगोरव-सं०स्त्री०यौ० [देशज] विवाह के चार-पाँच दिन बाद (श्रीमाली ब्राह्मणों में) वधू पक्ष द्वारा किया जाने वाला भोज जिसमें वर-वधू दोनों पक्ष के लोग सम्मिलित होते हैं ।

पडघारव-सं०स्त्री० [सं० प्रतिघात+रा. रव] ध्वनि, आवाज ।

उ०—क्षुरीइं क्षिति नाखइ खणी, घणी कहूं सी वात । पडधारव पाताळि पडइ, व्योम सदनि निरघात ।—मा.कां.प्र.

पडचंदौ-सं०पु० [सं० प्रति+चंद्र] प्रतिबिम्ब ।

उ०—देव्यां री ये देवी पड़चा, ये पडचदा दिल्ली के म्हेल में सुरग्याणा हूरम कुणसी, कूंटा का ये पड़चंदा पड़ै ।—लो.गी.

रू०भे०—पड़चंदौ, पड़छंदौ ।

पडछ—देखो 'पड़छ' (रू.भे.)

पडणौ, पडबौ—देखो 'पड़णौ, पड़बौ' (रू.भे.)

उ०—अरस हूंत ऊतरे, एक वर अच्छर वरिया । एक पडै लोहडै, लोह छक्का लालुरिया ।—गु.रू.बं.

पडताळणौ, पडताळबौ—देखो 'पड़ताळणौ, पड़ताळबौ' (रू.भे.)

उ०—वीजइ पुड करण जिगन भड वेऊं, दिख पडताळण हुकम दिया । करवा भारथ वडउ कुदरती, कुदरत घट प्रगट किया ।
—महादेव पारवती री वेलि

पडताळियोड़ौ—देखो 'पड़ताळियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० पडताळियोड़ी)

पटपण—देखो 'पड़पण' (रू.भे.)

पटयाळ. पटयागळ, पटयालग—देखो 'पडियालग' (रू.भे.)

पटळ—देखो 'पटल' (रू.भे.)

उ०—मोह पटळ दूरे करचा जी रे जी, गौतम जांण्यूं जिन नीराग रे।
—स.कु.

पटळो-सं०पु० [सं० पटल] गणेशपूजन की एकत्रित सामग्री जो विवाह में एक पुड़े में रखकर व मोली से बांध कर रखी जाती है।

उ०—चालो विनायक, म्हांपां पंसारी रै चालां। चोखा-चोखा पटळा मोलावां म्हारो बिड़द विनायक।—लो.गी.

वि०वि०—उक्त पूजन की सामग्री वर पक्ष की ओर से विवाह के दिन भेजी जाती है जिसके साथ वरी भी जाती है जिसमें—सूखी मेंहदी, सूखा मेवा, दूल्हन के कपड़े पतासे आदि विभिन्न वस्तुयें थालों में सजा कर भेजी जाती हैं। यह एक प्रथा विशेष है।

पटवा—देखो 'पटवा' (रू.भे.)

पटवो—देखो 'पड़वो' (रू.भे.)

पटसद—देखो 'पड़सद' (रू.भे.)

पटसाद—देखो 'पड़साद' (रू.भे.)

पटसद्द—देखो 'पड़सद्द' (रू.भे.)

पटसाळो—देखो 'पट्साळो' (रू.भे.)

पटवज-सं०पु० [देशज] सहानुभूति, हमदर्दी।

उ०—पछै दीवांण नरवदजी रै डेरै पधारिया, वडो सिसटाचार पटवज कियो।—नैणसी

पटसूदी, पटसूधी—देखो 'पटूदी' (रू.भे.)

उ०—दूध पाक, सेलडी पाक सरगां पाजां 'जळेबी' रेसमी वारू पटसूधी तणा पाड़ा मांडा।—व.स.

पटह, पटहउ—देखो 'पटह' (रू.भे.) (उ.र.)

उ०—१ वाज्य पटहउ संसार वदीतउ, गति अवगति सह जांणइ थांन।—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ वाजइ पटह पखावज भेर।—वी.दे.

पटहड—देखो 'पड़हड़' (रू.भे.)

पटाउ, पटाऊ—देखो 'पटाऊ' (रू.भे.)

पटाग-सं०स्त्री०—पताका। उ०—धादि जिणेसर वर भुवणि, ठवयि मंडि सुविसाल। धय पटाग तोरण कलिय, चउदिसि वंदुरवाल।
—कविसार सूरति

पटिहार—देखो 'प्रतिहार' (रू.भे.)

उ०—जाति मानइ आचार, विवेक मानइ विचार, घर मानइ प्राहूणउ, वखांण मानइ साधु. रांटा मानि पटिहार, मनुस-मानि पसाउ।—व.स.

पटापो-सं०पु० [देशज] घास-फूस का बना छोटा मकान।

पटाळ-सं०स्त्री० [देशज] घोरे के नीचे की भूमि।

उ०—पैत मंडेया मंडी, ढूंणियां डामक वाजै। मोटा डांडी चिंटै, पटाळां वांडी भाजै।—दसदेव

पडाव-सं०पु० [देशज] १ गर्व, घमण्ड। २ एहसान।

पडि-सं०पु० [सं० प्रति] युद्ध।

पडिग्रागळ, पडिग्रालग—देखो 'पडियालग' (रू.भे.)

पडिग्रालग—देखो 'पड़ियालग' (रू.भे.)

पडिकमइ, पडिकमण, पडिकमणउ, पडिकमणा, पडिकमणुं, पडिकमणो, पडिक्कमणा, पडिक्कमणो-सं०पु०स्त्री०[सं० प्रतिक्रमण, प्रतिक्रमणा] जैन मतानुसार—शुभ योगों से अशुभ योग में गए हुए पुरुष का वापिस शुभ योग में आने की क्रिया। यह पांच प्रकार की है—१ आश्रयद्वार प्रतिक्रमण २ मिथ्यात्व प्रतिक्रमण ३ कषाय प्रतिक्रमण ४ योग प्रतिक्रमण ५ भावप्रतिक्रमण।

उ०—१ देव न पूजै देहरै रे, पडिकमइ नहीं पोसाल। सिथल थया स्रावक सइ रे, जतो पडया जंजाल।—स कु.

उ०—२ विण कीधां पचखांण, विण दीधां वांदणां, पड़िकमणै विधि पांतरै ए।—ध.व.ग्रं.

उ०—३ परभाते पड़िकमणउ करइ, धरम बुद्धि हियइ में धरइ। गुणइ कुलउ ते सिव सुख लहइ, समय सुंदर तउ साचउ कहइ।
—स.कु.

उ०—४ सेलग नाम आचारज मोटउ, राजपिंड थयउ ग्रद्ध जी। मद्यपान करी रहे सूतउ, नहीं पड़िकमणां सुद्धि जी।—स.कु.

उ०—५ प्रतिदिन पड़िकमणुं करइ, गति पांमइ जी। सांमायिक एकंत देव, गति पांमइ जी।—स.कु.

उ०—६ सांमायिक पोसह पड़िकमणो, देव पूजा गुरु सेव जी। पुण्यतणां ए भेद परूप्या, अरिहंत वीतराग देव जी।—स.कु.

उ०—७ इण निद्रां ने वस प्रांणियो, इम जांणि ने बहुली हूं रात के। एतलो जांण ने ढल गयो ए तो, घाले हो पडिक्कमणां नी घात के।—जयवांणी

उ०—८ सांमायिक पोसा करो, पडिक्कमणो दोय काल। इम आतम ने ऊधरो, झूठी मत करो झिकाल।—जयवांणी

रू०भे०—पड़कमणउ, पड़कमणो, पड़िकमणउ, पड़िकमणो, पड़ियकमणो, पड़िक्कमणा।

पडिकार—देखो 'प्रतिकार' (रू.भे.)

उ०—ति(नि) यह(रु) अते अगलिय विम पडिकार निरुतिय।
—कवि पल्ह

पडिकूळ—देखो 'प्रतिकूळ' (रू.भे.)

पडिगरिउ-वि० [सं० प्रतिजागरितः, पटूकृतः] सचेत किया (उ.र.)

पडिगाहण-वि०—नाश करने वाला, विध्वंस करने वाला।

उ०—वासठि हजार फोजां रा भांजणहार। छत्रंट सुरतांण रा विधूंसणहार। मैमंत हाथियां रा मारणहार। पतिसाहां रा विभाड़णहार। पतिसाहां रा पडिगाहण।—वचनिका

पडिपुन्न-वि० [सं० प्रतिपन्न] पूर्ण, पूरा।

उ०—सुख विलसतां दिन-दिस, पुंयवंत गरभ उपन्न। नव मास जिहां पडिपुन्न, जनमीया पुत्र रतन्न।—ऐ.जै.का.सं.

पडिंबिब—देखो 'प्रतिबिंब' (रू.भे.)

उ०—यह ओसोवणि त्रिसला पासि, जिणि पडिंबिब ठवी उलासि।
—स.कु.

पडिबोध, पडिबोह—देखो 'प्रतिबोध' (रू.भे.)

उ०—घरि घरि मंगल चारु, भविय कमल पडिबोह करो।
—ग्यांनकलस

पडिबोहणौ, पडिबोहबौ—देखो 'प्रतिबोधणौ, प्रतिबोधबौ' (रू.भे.)

उ०—सो सिरि 'कीरतिरयण सूरि' भवियण पडिबोहइ। लवधिवं महिमांनिवास, जिण सासन सोहइ।—ए.जै.का.सं.

पडिमा—देखो 'प्रतिमा' (रू.भे.)

उ०—जिन पडिमा सुख कंदो रे।—वृ.स्तो.

पडिमाधारी-वि०यौ० [सं० प्रतिमाधारी] प्रतिमाधारी।

उ०—स्रावक बोल्या—पडिमाधारी स्रावक ने सूजतो आहार पांणी दियां कांइ हुवै।—भि.द्र.

पडियार—१ देखो 'प्रतिकार' (रू.भे.)

२ देखो 'प्रतिहार' (रू.भे.)

पडियारया—देखो 'प्रतिहार' (रू.भे.)

पडियाळ, पडियागळ, पडियालग, पडियालगि-सं०स्त्री० [देशज] तलवार

उ०—१ पमंग अदग सुजस पडियालग, खरहंड तणी न लागी खेह। रांण 'उदैसी' तणी अरेहण, राव 'मालदे' तणी अणरेह।
—दुरसौ आढौ

उ०—२ पडियाळग मेर सफे विढ संग्रह, हमल हिलोळे आप हथ। किसन किसन जिम रतन काढिया, महण मंडोवर खंड मथ।
—द.दा.

२ कटार, कटारी।

रू०भे०—पड़िआगळ, पड़िआलग, पड़यागळ, पड़यालग, पड़िआगळ, पड़ियालग, पड़ियागळ, पड़ियालग, पडआगळ, पडआलग, पडयागळ, पडयालग, पडिआगळ, पडिआलग, पडियाळ, फड़ियागळ।

पडिल—देखो 'पिटल' (रू.भे.)

उ०—बांभण वांणिआ कुलबी पडिल तुरक तेली कोली प्रभृति अढार जाति, च्यार वरण तेहि करी सलोक।—व.स.

पडिलेहण, पडिलेहणा, पडिलेहा, पडिलेही, पडिलेह्या-सं०स्त्री० [सं० प्रतिलेखन, प्रतिलेखना] जैन मतानुसार शास्त्रोक्त विधि से वस्त्र, पात्र आदि उपकरणों का उपयोग पूर्व दैनिक निरीक्षण करने की क्रिया। उ०—१ पाय नमइं सगला साधु केरा, सुणइं सुगुरु वखांण ए। ध्यांन करइ अथवा गुणइ, प्रकरण कहइ अरथ सुजांण ए। पुंण पहूर पडिलेहण करीनइ; मात रा पडिलेह ए। जल घड़ा लोटी वाटका, पडिलेहवा वलितेह ए।—स.कु.

उ०—२ पहिलइ दिन रे; सांझ समइ उपग्रहण सहु। पडिलेही रे, रही पटि राखइ बहु।—स.कु.

उ०—३ पोसा में अण पडिलेह्या उपगरण भोगवण रा त्याग। तिण पडिलेह्या तो नहीं अनै भोगव्यां जिण लेखै त्याग भागा।
—भि.द्र.

पडिवजणौ, पडिवजबौ-क्रि०स० [सं० प्रतिपद्यते] स्वीकार करना।

उ०—ऊठीउ ए गुरु गंगेउ, कुणवि दुरयोधनु ताजिउ ए। तउ भणइ ए 'पंडव पंच', वयणु महारउ पडिवजुं ए।—पं.पं.च.

पडिवजणहार, हारौ (हारी), पडिवजणियौ—वि०।

पडिवजिओड़ौ, पडिवजियोड़ौ, पडिवज्योड़ौ—भू०का०कृ०।

पडीवजीजणौ, पडीवजीजबौ—कर्म वा०।

पडिवजियोड़ौ-भू०का०कृ०—स्वीकार किया हुआ।
(स्त्री० पडिवजियोड़ी)

पडिहाइणौ, पडिहाइबौ-क्रि०अ० [सं० प्रति-भाति] १ भयभीत होना, डरना। उ०—गुज्जरवै नह नमैं, नमैं नह डाहल रायह। डाहालू सब चित, लोध सैंभर वैंचायह। वार सत्त पंचास गुड़े, गैमर गळ गंजे। लक्ख एक तोखार, ठिल्ल अरियण घड़ भंजे। पाताळ सेस पडिहाइयौ, दूर देस राव डंडवै। बांकड़ो राव वैरड़ वसुह, मुणस हेक मेवाड़वै।—नैणसी

२ दिखाई देना, प्रकट होना। उ०—भांमिणि भरतारह सरिसु, अहमति किम पडिहाइ। रमण जडी जइ वांण ही, तउ पहिरीजइ पाय।—हीराणंद सूरि

पडिहार, पडिहारु—देखो 'प्रतिहार' (रू.भे.)

उ०—तुम्ह ऊपरि खलहिउ जांम, जांणी सुरवइ बोलउं तांम। हुं पाठविउ वेगि पडिहारु, जईअ पयालि कीउ उपगारु।—पं.पं.च.

पडीवा—देखो 'पड़वा' (रू.भे.)

पडु-सं०पु० [देशज] खलिहान में भूसे सहित अनाज के ढेर में खड़ा किए जाने वाला लकड़ी का टुकड़ा।

पडुतर-सं०पु० [सं० प्रत्युत्तर] उत्तर के उत्तर में दिया गया जवाब।

उ०—हमें उत्तर पडुतर करतां नीठ गेल छूटी।—र. हमीर

रू०भे०—पड़ूतर, पड़ूत्तर, पडूतर, पडूत्तर।

पडूंचउ-सं०पु० [सं० प्रतिभाव्यम्] प्रतिभाव्य (उ.र.)

पडूछणौ, पडूछबौ-क्रि०अ० [सं० प्रतिपृच्छति] गुरु से पूछ कर कार्य करना (उ.र.)

पडूतर, पडूत्तर—देखो 'पडुतर' (रू.भे.)

पडूदी, पडूधी—देखो 'पड़ूदी' (रू.भे.)

उ०—कलैवा पछै आयै ऊनाळै दोपारां रा नाळेर न्है जैड़ा पांच पडूदी रा लाडू रावळै अरोग जाता।—फुलवाड़ी

पडूर, पडूरि-सं०पु० [सं० प्रचुर] अधिक, बहुत।

उ०—१ आया सुर मिळे महोछव ऊपर, पंच-सबदउ वाजियउ पडूर। देव तणउ मुख झांखउ दीसइ, सहस गुणउ ऊगउ जगसूर।
—महादेव पारवती री वेलि

उ०—प्रतपइ तेज पडूरि।—स.कु.
रू०भे०—पंडूर।
पडेरौ-सं०पु०—डेरा, खेमा, शिविर
उ०—घेरे सिकार मांहि ससा, लुंकड़ी, सीह, रोभ, स्याळ, रींछ, अनेक हिरण आदि भेळा हुया छै। नांन्हां जीवां पडेरा मांहे आइ आइ पडे छै।—द.वि.
पडोज-सं० पु०—सहानुभूति, हमदर्दी, शिष्टाचार।
उ०—१ यूं करतां दिन नीसरता जावै छै। होळी ऊपर आदमी दस साथे देय प्रोहित नूं वेणीदास खरळ कन्है मेलियौ जे हलांणौ कर दीज्यौ घणी पडोज मनहारां लिखी।
—कुंवरसी सांखला री वारता
उ०—२ प्रोहितजी नूं मेलिया घणी-घणी पडोज मनुहारां जे कराई।—कुंवरसी सांखला री वारता
पडोटियौ-सं०पु० [देशज] एक छोटा सफेद और चितकबरा सर्प।
रू०भे०—परडोटियौ।
पडोदी, पडोधी—देखो 'पड़ूदी' (रू.भे.)
पडोस—देखो 'पाड़ोस' (रू.भे.)
पडोसी—देखो 'पाड़ोसी' (रू.भे.)
उ०—किण ही साहूकार गोहां रा खोडा भरया। ऊपर दर लीपनैं तीखा किया। एक पडोसी तिण पिण खोडा में धूल खात कचरौ न्हांख नै दर लीपनैं ऊपर साफ कीधौ।—भि.द्र.
(स्त्री० पडोसण, पडोसणि, पडोसणी)
पडोसु—देखो 'पाड़ोस' (रू.भे.)
पड्डौ—देखो 'पाडौ' (रू.भे.)
पढ़णी-सं०स्त्री० [सं० पठ्] १ पढ़ने की क्रिया या ढंग।
उ०—पढ़णी वेळा में पग फावै, पढ़यां विचै पोमाई नै। करे दलील जिकां सूं कोई, लावै त्यार लड़ाई नै।—ऊ.का.
२ कविता पाठ करने का उच्चारण या ढंग।
पढ़णौ, पढ़बौ-क्रि०स० [सं० पठनं] १ किन्ही लिखे गए शब्दों या वाक्यों का अभिप्राय समझना।
२ लिखावट के शब्दों का उच्चारण करना, बाँचना।
३ उच्चारण करना।
४ स्मरण रखने हेतु किसी अंश का बार-बार उच्चारण करना या रटना, पढ़ना।
५ मंत्र बोलना या कहना। उ०—प्रगटै मधु कोक संगीत प्रगटिया, सिसिर जवनिका दूरि सिरि। निज मंत्र पढे पात्र रितु नांखी, पहुपांजळि वणराय परि।—वेलि
६ अध्ययन करना। उ०—हरि समरण रस समझण हरिणाखी, चात्रण खळ खगि खेत्र चढ़ि। वैसे सभा पारकी बोलण, प्रांणी वंछइ त वेलि पढ़ि।—वेलि
७ शिक्षा प्राप्त करना, पढाई करना।
उ०—पढ़ियां बिना मूढ़ पग फावै।—ऊ.का.
८ मैना तोते आदि द्वारा मनुष्यों के सिखाए हुए शब्दों का उच्चारण करना।
पढ़णहार, हारौ (हारी), पढ़णियौ—वि०।
पढ़वाड़णौ, पढ़वाड़बौ, पढ़याणौ, पढ़यावौ, पढ़वावणौ, पढ़वावबौ, पढ़ाड़णौ, पढ़ाड़बौ, पढ़ाणौ, पढ़ावौ, पढ़ावणौ, पढ़ावबौ—प्रे०रू०।
पढ़िओड़ौ, पढ़ियोड़ौ, पढ़योड़ौ—भू०का०कृ०।
पढ़ीजणौ, पढ़ीजबौ—कर्म वा०।
पढम—देखो 'प्रथम' (रू.भे.)
उ०—पोस पढम दसमी दिन सांमी, वंस इखवाग सुहायउ। चउसठ इंद्र मिली मन रंगइ, मेरु सिखरि न्हवरायउ।—स.कु.
पढ़ाई-सं०स्त्री० [सं० पठनम्] १ अध्ययन, विद्याध्ययन।
२ पढने की क्रिया, भाव या ढंग।
३ पढने के बदले दिया जाने वाला धन।
४ पढाने का ढंग, अध्यापन की शैली।
५ पढाई के बदले दिया जाने वाला धन।
पढाड़णौ, पढाड़बौ—देखो 'पढ़ाणौ, पढावौ' (रू.भे.)
पढ़ाड़णहार, हारौ (हारी), पढ़ाड़णियौ—वि०।
पढ़ाड़िओड़ौ, पढ़ाड़ियोड़ौ, पढाड़योड़ौ—भू०का०कृ०।
पढ़ाड़ीजणौ, पढाड़ीजबौ—कर्म वा०।
पढ़ाड़ियोड़ौ—देखो 'पढायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० पढ़ाड़ियोड़ी)
पढ़ाणौ, पढ़ावौ-क्रि०स० [सं० पठ्] १ शिक्षा देना।
२ अध्ययन कराना।
३ उच्चारण करने के लिए प्रेरित करना।
४ उच्चारण कराना।
५ रटाना।
६ सिखाना, समझाना।
७ कोई कला या हुनर सिखाना।
पढ़ाणहार, हारौ (हारी), पढ़ाणियौ—वि०।
पढ़ायोड़ौ—भू०का०कृ०।
पढ़ाईजणौ, पढ़ाईजबौ—कर्म वा०।
पढ़ायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ शिक्षा दिया हुआ।
२ अध्ययन कराया हुआ।
३ उच्चारण के लिए प्रेरित किया हुआ।
४ उच्चारण कराया हुआ।
५ रटाया हुआ।
६ सिखाया हुआ, समझाया हुआ।
७ कोई कला या हुनर सिखाया हुआ।
(स्त्री० पढ़ायोड़ी)
पढ़ावणौ, पढ़ावबौ—देखो 'पढ़ाणौ, पढ़ावौ' (रू.भे.)

पढ़ावणहार, हारो (हारी), पढ़ावणियो—वि० ।
पढ़ाविग्रोड़ो, पढ़ावियोड़ो, पढ़ाव्योड़ो—भू०का०कृ० ।
पढ़ावीजणो, पढ़ावीजवो—कर्म वा० ।

पढ़ावियोड़ो—देखो 'पढ़ायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० पढ़ावियोड़ी)

पढ़ियोड़ो-भू०का०कृ०—१ लिखे हुए शब्दों या वाक्यों का अभिप्राय समझा हुआ ।
२ लिखावट के शब्दों का उच्चारण किया हुआ, बांचा हुआ ।
३ उच्चारण किया हुआ ।
४ स्मरण रखने के लिए बार-बार उच्चरित, रटा हुआ, पठित ।
५ मंत्र बोला हुआ या कहा हुआ ।
६ अध्ययन किया हुआ ।
७ कोई कला या हुनर सीखा हुआ ।
(स्त्री० पढ़ियोड़ी)

पढ़िवू-वि० [सं० पठितव्यम्] १ पढ़ने योग्य (उ.र.)
२ पढ़ाने योग्य ।

पढ़ू-वि० [सं० प्रति-भूः] १ जमानत देने वाला, जामिन । उ०—ताहरां राव कांनड़दे कह्यौ—'माला ! तो नूं धरती मैं तीजी हैंसी देईस ।' ताहरां कह्यौ—'जी मोनूं एथ लिखाय द्यौ, अर थांहरा रजपूत पढ़ू द्यौ तो छोडूं ।' ताहरां ग्रोथ हीज कागळ लिख दियौ । रजपूत पढ़ू दिया ताहरां छोडिया ।—नैणसी
२ निष्कलंक, बेदाग । उ०—प्रथीपत वै पखां पढ़ू मोटा प्रगट, ग्रोछवै धकै जुध भार ग्रायै । तोल ग्रणियाळ जळबोळ चखता तणा, रोद हीलोळिया दईवरायै ।—नरहरदास बारहठ
३ वीर, बहादुर । उ०—परै जोधांण बीकांण मोटा पढ़ू ग्राज री लाज तो सूं ग्रनाजा । राज जहांगीर रौ करां थिर राखियो, राव रांणो सिरै 'सूर' राजा ।—किसनो सिंढ़ायच
रू०भे०—पिढ़ू ।

पढ़ोकड़ो-वि० [सं० पठ्+रा०प्र० ग्रोकड़ो (स्त्री० पढ़ोकड़ी) १ पढने वाला, अध्ययन करने वाला ।
२ विद्वान (व्यंग्य)

पणंग, पणंगियो, पणंगो-सं०पु० [सं० पानाङ्ग] १ पानी ।
—ना.डि.को.
२ मेघ की बूंद । उ०—प्रभू तूं पांणी मांय पवन्न, गरज्जै गाजै मांय गगन्न । इळा तव पौढ़ण ग्रोढ़ण ग्रभ्म, पणंगां मेघां तूं ज ग्रम्म ।—ह.र.
रू०भे०—पणग, पुणग ।
ग्रल्पा०—पणगो ।

पणंच—देखो 'पणच' (रू.भे.)

पण-सं०पु० [सं० प्रतिज्ञा, प्रा० पइण्ण] १ प्रतिज्ञा । उ०—ग्रो धनुस वहौ विकराळ रघुवर छोटौ रे ! कमळ जिसो तन रांम रौ, ग्रो धनुस वजर सम जांण, रघु ! वडो कठण पण पिता कियो, कोइ रंच न कियो विचार, रघु ।—गी.रां.
यौ०—पणधर, पणधारी, पणबंद, पणबंध, पणमंड, पणवंत, पणहार, पणधारण, पणहारी ।
[सं० पर्वन् ग्रन्थि, जोड़] २ ग्राय के चार भागों में से एक ।
ज्यूं—बचपण, लड़कपण, चौथापण ग्रादि ।
[सं० पानीयम्] ३ पानी, जल ।
यौ०—पणघट ।
क्रि०वि० [सं० पुनः ग्रपि] १ भी ।
उ०—ताहरां रांणो कुंभो मांडव रै पातसाह ऊपर ग्रायो । तद् रिणमलजी पण हुतो ।—नैणसी
२ परन्तु । उ०—मुह्रै रावळ रै जीव प्रांण बीजा बेटा हता पण रायधण सूं वडो प्यार, ए ग्रठै राज करै ।—रायधण री वारता
उ०—२ सव्वे भला मासड़ा, पण वइ साहम तुल्ल । जे दवि दाधा रूंखड़ा, तीहूं मायइ कुल्ल ।—रा.सा.सं.
ग्रव्य०—१ तो । उ०—गहवी 'गांगो' गाविजै, स्यांम न मेल्है साथ । ग्रोढण ग्रनिकारां नरां, हालां रा पण हाथ ।—हा. झा.
२ तो भी ।
वि० [सं० पंच] —पंच, पांच ।
यौ०—पणइंद्रिय ।
प्रत्यय—१ प्रत्यय: जिसके लगने से नामवाचक या गुणवाचक संज्ञा भाववाचक बन जाती है ।
ज्यूं—गैलापण, छिछोरापण, टाबरपण, लड़कपण ग्रादि ।
रू०भे०—पणउ, पणि, पणी, पणू, पिण, पिण, पिणि ।

पणइंद्रिय—देखो 'पंचेंद्रिय' (रू.भे.)
उ०—जल थल खचर भुयंग दुइ, पणइंद्रिय तिरि ग्रइयाल ।
—स.कु.

पणखो-सं०पु० [देशज] छाछ से बना पेय पदार्थ विशेष । उ०—जो जीविया तां सीम फड़ीस ग्रर पणखो छाछ पातळी रो ग्रारोगता ।
—द.वि.

पणग-सं०स्त्री०—वर्षा की बूंद ।
उ०— पणग ते जांणे पाछणां, पवन ते लाइ लूण । पडी पडी हुं तडपडुं, पीडि निवारइ कुण ?—मा.कां.प्र.
उ०—निसि तु धाइ तिमेस की, दियस लसीनइ जाय । परजापति ! तइ पणग को, ग्रधिकु करिकु ग्राय ।—मा.कां.प्र.

पणगो-देखो 'पणंग' (ग्रल्पा., रू.भे.)
उ०—मोटै पणगै मेइ, ग्राव्यौ धरती धरपती । ग्रम पांती नौ एह, झाकळ न वरस्यौ जेठवा ।—जेठवा

पणगो—देखो 'पांणगो' (रू.भे.)
उ०—भांति भांति रा पकवांन मांय पड़सीया । हळवे-हळवे गुमते सारा ग्रारोगै छै, दारू रो पणगो हुवै छै, तिको पांणी ज्यूं होळीजै

छै।—राव रिणमल री वात
पणघट-सं०पु० [सं० पानीय+घट्ट] पानी भरने का घाट।
उ०—हेम कळस कुच जुग हिए, नीर कळस सिर लेइ। पणघट हूं तां वाहुडे, कळस दुहूं कर देइ।—बां.दा.
रू०भे०—पनघट, पिणघट।
पणच, पणछ-सं०स्त्री० [सं० प्रतंचिका] धनुष की प्रत्यंचा (डि.को.)
उ०—१ पह वीर हाक पनाक पणचां, वाज डाक अंवाक। असनाक पर ग्रीधाक आवध, करण वाज कजाक।—र.ज.प्र.
उ०—२ धनुस मांनि पणछ, सरीर मांनि छाया, पग मांनि वांणही, आंखि मांनि भरण।—व.स.
पर्या०—गुण, जीवा, द्रूणा, वांणासण, मुरवी।
रू०भे०—पिणच, पुंणच, पुंणछ, पुणच, पुणछ।
पणभल्ल-वि०यौ० [सं० प्रतिज्ञा+राज. झल्ल] प्रतिज्ञा का पालन करने वाला, प्रणवीर। उ०—ईंदा आहव आगळां, पड़िहारां पण-भल्ल। हरवल्लां आगै हुवा, चढ़े अलला भल्ल।—रा.रू.
पणणो, पणबो—देखो 'पुणणो, पुणवौ' (रू.भे.)
उ०—पणै 'पीरियौ' दास प्रभ पतिसाहो। अला हो, अला हो, अला हो, अला हो।—पी.ग्र.
पणधर, पणधारी-वि०यौ० [सं० प्रतिज्ञा+धारी] प्रतिज्ञा धारण करने वाला। उ०—१ ओलै राखण आपरां, चोळै नै कर चाव। 'सूरज माल' समापिया, पणधर लाख पसाव।—द.दा.
उ०—२ धन वे पुरुस वडा पणधारी, खलक सिरोमण सुजस खटै। उमगे दांन ऊधमै आचां, रांम-रांम मुख हूंत रटै।—र.रू.
पणनडौ-सं०पु० [स० पानीय+रा. नडौ] पोखर।
उ०—पावस वरसइ पणनडे, नयणे वाली नींक। हैडइ गाढइ हुं दीउं, ढीलूं करवा ढीक।—मा.कां.प्र.
पणपणो, पणपवो-क्रि०अ० [सं० पर्ण=पत्र व पर्णय=हरा होना]
१ पानी प्राप्त कर फिर से हरा हो जाना।
२ फिर से तंदुरुस्त होना, रोगमुक्त होने के बाद स्वस्थ तथा हृष्ट-पुष्ट होना।
३ वैभवयुक्त होना।
४ प्राप्त होना, मिलना।
रू०भे०—पनपणो, पनपवौ।
पणपाणो, पणपावो-क्रि०स० [सं० पर्ण] १ पानी पिला कर फिर से हरा-भरा करना।
२ रोगमुक्त करना, हृष्ट-पुष्ट करना।
३ वैभवयुक्त करना।
४ प्राप्त कराना, मिलाना।
पणपायोड़ो-भू०का०कृ०—१ पानी पिला कर हरा-भरा किया हुआ।
२ रोग मुक्त किया हुआ, हृष्ट-पुष्ट किया हुआ।
३ वैभवयुक्त किया हुआ।
४ प्राप्त किया हुआ, मिलाया हुआ।
(स्त्री० पणपायोड़ी)
पणपियोड़ो-१ पानी प्राप्त कर फिर से हरा हुवा हुआ।
२ फिर से तंदुरुस्त हुवा हुआ।
३ प्राप्त हुवा हुआ, मिला हुआ।
४ वैभवयुक्त हुवा हुआ।
(स्त्री० पणपियोड़ी)
पणफर-सं०पु० [सं०] कुण्डली में लग्न से दूसरा, पांचवां, आठवां और ग्यारहवां घर।
पणबंद, पणबंध-वि० [सं० प्रतिज्ञा+बन्ध] प्रणवीर, प्रतिज्ञावान।
उ०—मोहकमसिंह किल्यांण तण, मेड़तियो पणबंध। तज मनसब सुरतांण रो, मिळियौ फौज कमंध।—रा.रू.
पणमंड-वि० [सं० प्रतिज्ञा+मण्डनं] प्रतिज्ञावीर, प्रण निभाने वाला।
उ०—वग्गां खग्गां साह दळ, माड़ेचा पणमंड। वार विजैमी झेलणा, आदूनेम अखंड।—रा.रू.
पणमणो, पणमवो-क्रि०स० [सं० प्रणाम] प्रणाम करना, नमस्कार करना।
उ०—कांमित संपय करणं, तम भर हरणं सहस्सकर किरणं। पणमसि सद्‌गुरु चरणं, वरणिस नवकार गुण वरणं।—ध.व.ग्रं.
पणयालीस—देखो 'पैंताळीस' (रू.भे.)
उ०—सुयखंध एक दसमइ अंगइ पणयालीस अज्झयणा। पणया-लीस उद्देश वलीपद, सहस संख्यात नीरयणा।—वि.कु.
पणवंत-वि० [सं० प्रतिज्ञा+वान्] (स्त्री० पणवंती) प्रतिज्ञावान्।
उ०—चालेवौ चक्रवती, निजर सुरपती निहारै। भाग धन्य भूपती, एम सोभाग उचारै। पणवंता पारणी, सीळवंती सतवंती। अति मुगती हालियो, कियां साथे कुळवंती।—रा.रू.
पणव-सं०पु० [सं० पणवः] १ छोटा नगाड़ा।
२ छोटा ढोल।
पणस-सं०पु० [सं० पनस] १ कटहल का वृक्ष अथवा उसका फल।
२ राम की सेना का एक बंदर। उ०—नळ नील दधमुख पणस नाहर, विहद जंबूवांन।—र.ज.प्र.
पणसणु-वि०—नष्ट करने वाला।
पाणसणो, पणासवो-क्रि०स० [सं० प्रनाश] १ नष्ट करना।
उ०—तउ जिणदत्त जई सुनांमि, उव सग्ग पणासइ। रूपवंतु जिणचंद सूरि, सावय आसासय।—कवि सारमूर्ति
क्रि०अ०—२ नष्ट होना। उ०—नामिइं लीधइ जास तणां, सवि पाप पणासइ दूरि।—हीराणंद सूरि
पणासियोड़ो-भू०का०कृ०—१ नष्ट किया हुआ।
२ नष्ट हुवा हुआ।
(स्त्री० पणासियोड़ी)
पणहार, पणहारण, पणहारी-वि०यौ० [सं० प्रतिज्ञा+हारी] १ प्रतिज्ञा

को हारने वाला, प्रण में हार जाने वाला ।
२ देखो 'पणिहार' (रू.भे.)
उ०—१ पणघट पर पणहार, नीर कज नीसरी । स्रीफळ तणौ प्रमांण क सोभा सीस री ।—सिवबक्स पाल्हावत
उ०—२ हंसपाळ मायो पड़िये पछै घड़ गायां ले वळियो । गायां खेड़ आंणी । पणहारियां कह्यौ—'देखो माथा विण घड़ ग्रावै छै ।' —नैणसी

पणि—देखो 'पण' (रू.भे.)
उ०—१ जु वेदवंत भला ब्राह्मण था । त्यां वेद री वेदोकित विचारयौ । वात पणि कही चाहीजै अर मन माँहि भय उपनो छै । —वेलि टी.
उ०—२ सेना मात कूखि मांनस सर, राजहंस लीना राजेसर । प्रकट रूप पणि तूं परमेसर, अलखरूप पणि तू अलवेसर ।—स.कु.
उ०—३ तुम्हें करवउ धरम, पणि नथी जांणता मरम । —वि.कु.

पणियार, पणियारी, पणिहार, पणिहारण, पणिहारी—सं०स्त्री० [सं० पानीयहारी] १ पानी भर कर ले जाने वाली, पनिहारिन ।
उ०—१ सजना बूझी पांणी री पणियार । होद बतावो ए पणियारियां हाडेराव री ।—लो.गी.
उ०—२ बूझी भंवरजी कुवे री पणियारी, पोळ बताग्रो रांणी सीकरी री, कुणसी जी म्हारा राज ।—लो.गी.
उ०—३ पना ए भंवरजी बूझी कुवै री पणिहार ।—लो.गी.
उ०—४ काळी रे कळायण ऊमड़ी ए पणिहारी ए लो । छोटोड़ा छांटां री बरसै मेह वाला जी ग्रो ।—लो.गी.
२ वर्षा के बहते पानी में उठने वाले बड़े-बड़े बुदबुदे (मारवाड़)
३ हल के नीचे का वह भाग जिसमें कुश या फाल लगाया जाता है। खेत जोतते समय जिससे सीता बनती है (मेवात) ।
४ ऐसी 'चऊ' जिसके ऊपर हल चलाते समय फाल या कुसी लगाने की आवश्यकता नहीं रहती (शेखावाटी) ।
५ एक राजस्थानी लोक गीत ।
६ सारंगी में हाथी दांत से मढा वह खड्डा जिसमें से होकर मुख्य तार या दूसरा तार निकलता है ।
७ गधा या गधी (ऊमरकोट, थाट)
रू०भे०—पणहार, पणहारण, पणहारी, पणीहारी, पनीहारी, पिणयार, पिणहार, पिणहारी, पिणियार, पिखियारी, पिणिहार, पिणिहारी ।
अल्पा०—पीणिहारड़ी ।

पणी—देखो 'पण' (रू.भे.)

पणीहारी—देखो 'पणिहार' (रू.भे.) (उ.र.)

पणू, पणौ—सं०पु० [देशज] वह फलाहार जो खरबूजा, पपीता, केला, कलमी-ग्राम में से किसी विशिष्ट फल को काट कर गिरी के टुकड़ों में शक्कर मिला कर रोटी के साथ खाया जाता है ।
२ देखो 'पण' (अल्पा०, रू.भे.)
उ०—पसू पणौ पंखी पणूं, सुतर मुरग रै संग । मरद पणौ मिहला पणौ, मावड़िया रै ग्रंग ।—बां.दा.
रू०भे०—पांणौ, पुणौ, पूंणौ ।

पण्यांगना—सं०स्त्री० [सं० पण्य+अंगना] १ वेश्या ।
उ०—१ अवसर सिउं इणि परि कहै, माधव मरण समांनि । प्रेम करी पण्यांगना, देवी जीवित दांनि ।—मा.कां.प्र.
उ०—२ अधो दृष्टि जोई रहो पण्यांगना मां, ऊतर नापै लिगार रे । —वि.कु.

पतंग—सं०पु० [सं०] १ सूर्य, सूरज ।
उ०—ऽवे पहराव कनक अरघांणं । अरघण अरक गंगाजळ आंणं । पतंग अरधि नृप सेव पधारै । धाय उठाय खड़ाऊ धारै ।—सू.प्र.
यौ०—पतंगज, पतंगजा ।
२ दीपक, ज्योति (अ.मा.)
३ चिनगारी ।
४ खून । उ०—लड़तां ग्रंग लोह छछोह लगै । जगि जांणिक ज्वाळ अहूति जगै । अरणांग पतंग ज ई उफणै । वप खोवण धाव जड़ाव वणै ।—सू प्र.
५ लाल रंग । उ०—कसीसत बांण जुबांण कबांण । विहूं वळ छूटत फूटत वांण । अठै अंग नारंग छींछ अपार । फिरंगिय जांणि पतंग फुंहार ।—सू.प्र.
६ हल्का रंग (अ.मा.)
मुहा०—पतंग-रंग—हल्का या अस्थायी स्नेह ।
७ अंग ।
उ०—दिये कपि डांण उडांण दमंग, पड़े उर चोट मतंग पतंग । —सू.प्र.
८ परदारकीड़ा, पतंगा ।
उ०—१ दीप पतंग तणी परइ सुपियारा हो । एक पखो म्हारो नेह नेम सुपियारा हो ।—स.कु.
उ०—२ जड़ियो तिलक जवाहरां, जांणै दीपक जोत । वालम चीत पतंग विधि, हित सू आसक होत ।—बां.दा.
९ पक्षी (अ.मा.)
१० टिड्डी ।
११ कनकौग्रा, किनका, गुड्डी ।
उ०—रमै वसंत राजंद, पतग चरख अप्पालां । केसर छोळ अबीर, गूंज डंबरां गुलालां ।—सू.प्र.
क्रि०प्र०—उडाणौ, कटणौ, काटणौ, वढाणौ, लड़ाणौ ।
यौ०—पतंगबाज, पतंगबाजी ।
१२ शरीर, अंग ।
१३ एक झाड़ी विशेष जिसकी लकड़ी का रंग लाल होता है । (अमरत) (उ.र.)

१४ एक प्रकार का वृक्ष विशेष ।

१५ डिंगल का वेलिया सांणोर छंद का भेद विशेष जिसके प्रथम द्वाले में ५६ लघु ४ गुरु कुल ६४ मात्राएँ होती हैं तथा शेष द्वालों में ५६ लघु ३ गुरु कुल ६२ मात्राएँ होती हैं (पि.प्र.) ।

रू०भे०—पतग, पंतिग, पतिग, पयंग, पातंग ।

अल्पा०—पतंगड़ो, पतंगियो, पतंगो, पतंग्गियो ।

पतंगज-सं०पु०यौ० [सं०] १ सूर्यपुत्र यमराज ।

२ सूर्यपुत्र अश्विनीकुमार ।

३ सूर्यपुत्र कर्ण ।

४ पसीना ।

पतंगजा-सं०स्त्री०यौ० [सं०] सूर्य की पुत्री यमुना ।

पतंगवाज-सं०पु०यौ० [सं० पतंग+फा० वाज] १ पतंग उड़ाने की क्रिया में निपुण ।

२ पतग उड़ाने का शौकीन ।

पतंगवाजी-सं०स्त्री०यौ० [सं० पतंग+फा० वाजी] १ पतंग उड़ाने की क्रिया या भाव ।

२ पतग उड़ाने का शौक ।

पतंगसुत—देखो 'पतंगज' ।

पतंग्या—देखो 'प्रतिग्या' (रू.भे.)

उ०—भीसम सील पतंग्या भारथ । सरविद्या पारथ परसावथ ।

—ऊ.का.

पतंगियो, पतंगो—देखो 'पतंग' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—१ पडिया होय पतंगिया, फोळू सूं खग काढ़ । हूतासण 'जीदै' हुवै, वेढ लिया दळ वाढ ।—पा.प्र.

उ०—२ घण वोभ उठावै सिर गधो, सबळवांन वाजै न सुण । विप घरै पतंगो आगविच, कहै सूर जिणनूं कवण ।—पा.प्र.

पतंजळि-सं०पु० [सं० पतजलि:] १ एक ऋषि जिन्होंने योग शास्त्र की रचना की ।

२ एक मुनि जिन्होंने पाणनीय सूत्रों पर महाभाष्य की रचना की ।

उ०—वैसेसिक में कणभुक सो वळ विस्तारघो पातजळो पाठ पतंजळि जेम प्रचारघो ।—ऊ.का.

पत-सं०स्त्री० [?] १ गुड़ व पानी के मिश्रण से वनाया गया द्रव पदार्थ जो किसी खाद्य पदार्थ को मीठा वनाने के काम आता है, गुड़ की चासनी ।

रू०भे०—पात ।

२ मर्यादा । उ०—माताजी मनावै मीरां थे मानो, दूधड़ला री पत राख । भक्ति छोडो जी हरिनाम की ।—मीरां

३ प्रतिष्ठा, इज्जत, लाज । उ०—१ ऊभा पर्गा अनेक, केता नर सळवळ करै । पड़ियां पूठी पेख पत तूं राखै 'पातला' ।

—ऊकजी वोगसो

उ०—२ सट्ठ सभा में वैठतां, पत पंढत री जाय । एकण वाड़ै किम वड़ै, रोभ गवेड़ी गाय ।—अज्ञात

उ०—३ सत मत छोडो हे नरां, सत छोड्यां पत जाय । सत की बांधी लिछमी, फेर मिळैगी आय ।—अज्ञात

४ पैठ, विश्वास, भरोसा । उ०—भूठै की कुछ पत नहीं, साजन भूठ न वोल । लाखांपति का भूठ में, दो कोडो का मोल ।

—अज्ञात

रू०भे०—पति ।

५ देखो 'पति' (रू.भे.)

उ०—१ नायक है जग रांम नरेसर, ते कर लायक देवतरेसर । सीत तणी पत संत सधारण, चाव करे भज तूं धिन चारण ।

—र.ज.प्र.

उ०—२ हूं कुळ में पापी हुवो, पत नै दीन्ही पूठ । तिया पतिव्रत पाळ तूं, धिक धिक मत कह धीठ ।—बां.दा.

६ देखो 'पत्री' (रू.भे.)

७ देखो 'पत्र' (रू.भे.)

उ०—आंम फळै परवार सूं, महू फळै पत खोय । ताको रस जे कोई पियै, अकल कठा सूं होय ।—अज्ञात

विलो०—अपत ।

अल्पा०—पाती ।

पतउट-सं०पु०यौ० [सं० उडपति] चन्द्रमा, सोम (डि.को.)

पतओखद-सं०पु०यौ० [सं० ओपधिपति] चन्द्रमा, सोम (डि.को.)

पतकिरण-सं०पु०यौ० [सं० किरणपति] सूर्य, रवि ।

उ०—सह भांत विगत विवाह सुणतां, अंग प्रफुलित आंण । पतकिरण निकसै रसम परसत, जळज विकसे जांण ।—र.रू.

पतग—देखो 'पतंग' (रू.भे.)

पतगर-सं०पु० [?] विश्वास, भरोसा ।

अल्पा०—पतगरो ।

पतगरणो, पतगरवो-क्रि०अ०स० [?] १ विश्वास करना ।

उ०—कोप कळचाल जमदाढ 'भरड़ा' कहर, चाळ दुरजण तणै हिये चढियो । पोह वडा पतगरै कमंध एकाधपत, जड़ाळो सुघट 'जंदराव' जड़ियो ।—भरड़ा राठौड़ रो गीत

२ मानना, स्वीकार करना । उ०—पर्ख जारज न को अनेरां पतगरै, करै सोभाग आतम सकत कोड । हरै विकटोरिया रवो रची हुवो, रजै तण खूंद वळरूप राठौड़ ।—किसोरदांन वारहठ

पतगरियोड़ो—भू०का०कृ० ।

पतगरियोड़ो-भू०का०कृ०—१ विश्वास किया हुआ ।

२ स्वीकार किया हुआ ।

(स्त्री० पतगरियोड़ी)

पतगरो—देखो 'पतगर' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—पल-पल रो पतगरो, लेर दीठो लिलना रो, पोपां री पायगा, खबर न पड़ै तोखारां ।—अरजुणजी वारहठ

पतग्वाळ-सं०पु० [सं० ग्वालपति] श्रीकृष्ण (अ.मा.)

पतड़ी-सं०स्त्री० [सं० पत्रम्+रा.प्र.ड़ी] इष्टदेव की धातु के पत्र पर बनी मूर्ति जिसे डोरे में पिरो कर गले में धारण करते हैं।
रू०भे०—पतरी, पातड़ी।

पतड़ो-सं०पु० [सं० पत्र+रा. प्र. ड़ो] १ तिथिपत्र, पंचांग, पत्रा।
उ०—जितणा, ए गोरी, वह पीपळ रा पांन, इतणा दिनां में थासी सायबो। वाळूं जाळूं, रे जोसी, पतड़ै रो वेद, आक धतूरा, जोसी, थारो मुख भरूं।—लो.गी.
२ कुम्भट की फली।
रू०भे—पतरो, पातड़ो।

पतचील-सं०पु० [रा० चील=सर्प+सं० पति] शेषनाग।
उ०—पड़ी खबर नर 'पेम' नै, अड़ी मूंछ अहू आय। चढी पंख पतचील रै, घड़ी उण 'वक घुराय।—पे.रू.

पतजादव-सं०पु० [सं० यादवपति] श्रीकृष्ण (ह.नां.)

पतझड़-सं०स्त्री० [सं० पत्रम्+क्षरणम्] वह ऋतु जिसमें पेड़ों के पत्ते झड़ जाते हैं। शिशिर-ऋतु।

पतणी—देखो 'पत्नी' (रू.भे.)
उ०—द्रुपद सुता नो चीर बढायां, दुसासण मद मारण। पहळाद परतग्या राखां, हरणाकुस नो उद्र विदारण। थे रिख पतणी किरपा पायां, विप्र सुदांमा विपत विडारण। मीरां रे प्रभु अरजी म्हारी, अब अबेर कुण कारण।—मीरां

पतत—देखो 'पतित' (रू.भे.)
उ०—परमेसर जै लोकपति, पतत नु तारण पारि। जगत निमंधण गुर जगत, बळ-बंधण बलिहारि।—पि.प्र.

पतत्रि-सं०पु० [सं०] पक्षी, चिड़िया (अ.मा.)

पतत्रिभरण-सं०पु०यो० [सं० पतत्रि+राज. भरण] जटायु।
उ०—घणनांमी इम सुणे विगत घण, जण जटायू भर अंक जण। वण द्रिग गोद धरे पतत्रि भवण, मणधर छवरी हरख मण।—र.रू.

पतत्री-सं०पु०—पक्षी (अ.मा.)

पतधीर-वि०—विश्वासी। उ०—पीरां पतधीरां पैलो घर धायो। उण दिन रांमो डर सांमो नहि आयो।—ऊ.का.

पतन-सं०पु० [सं०] १ अवनति, अधोगति।
२ गिरना, पड़ना।
उ०—अळै व्रज करेवा नीम दांमण पतन, गयण फूटै घटा भीम गरजै। उठावै अछळतो जेम हळधर अनुज, बळ तर्क यंद्र छो भलां वरजै।—बां.दा.
३ मृत्यु, नाश।
४ देखो 'पट्टण' (रू.भे.)

पतनाळ, पतनाळो—देखो 'परनाळ' (रू.भे.)

पतनी, पतन्नी-सं०स्त्री० [सं० पत्नी] १ स्त्री, नारी (अ.मा., ह.नां.मा.)
२ देखो 'पत्नी' (रू.भे.)
उ०—१ व्यथा विरहाग वियोग विहाय, सवागण भाग संयोग सुहाय। अनाग्रह मुल्लित प्रांन उपाय, प्रफुल्लित ज्यूं पतनी पति पाय।—ऊ.का.
उ०—२ पति पूजन जीवन पतनी रो सो कई कोसो जग-जामी। सब ही विध सेवा व्रत साधूं हो संग लीजे मो नैं स्वांमी।
—गी.रां.
उ०—३ वंदे भ्रात वे तिण वार, चवियो मुनि सिसटाचार। निज वह हुती रिसपतनी स सीता मिळी नांमे सीस।—र.रू.
उ०—४ देवी वांण रै रूप अरजुण वन्नी। देवी द्रोपदी रूप पांचां पतन्नी।—देवि.

पतनीवरत, पतनीव्रत, पतनीवरत, पतनीव्रत—देखो 'पत्नीव्रत' (रू.भे.)

पतन्नी—देखो 'पथरणी' (रू.भे.)

पतन्या—देखो 'प्रतिग्या' (रू.भे.)
उ०—पूरउ तप हुउ पतन्या पूगी, ईसर ताई मूनव्रत लीयइ। वारां जुगां हुंती बहुनांमी, ताळी छोडी दीह तीयइ।
—महादेव पारवती री वेलि

पतपच्छी-सं०पु०यो० सं० पक्षीपति] १ गरुड़।
२ देखो 'प्रतिपक्षी' (रू.भे.)
उ०—पतपच्छी जुग पांण, सरोरुह पल्लवां। नग-जुत वळय अमोल, दिया जे निधनवां।—बां.दा.

पतप्रीत-सं०पु०यो० [सं० पति=स्वामी+प्रीति] १ सेवक, अनुचर (अ.मा.)
सं०स्त्री० [सं० पति=धव+प्रीता] २ पतिव्रता।
वि०स्त्री० [सं० पति=धव+प्रीता] पति से प्रेम करने वाली, पतिअनुरक्ता।
उ०—सुता दलै' रावळ तणी, पतवरतां पत-प्रीत। रांणी राजा परणियो, मिरघावती 'अजीत'।—रा.रू.

पतप्रेम-सं०स्त्री०यो० [सं० पति+प्रेमा] १ सती, साध्वी (अ.मा.)
सं०पु०यो० [सं० पति+प्रेमिन्] २ सेवक।

पतवरत—देखो 'पतिव्रत' (रू.भे.)

पतवरता—देखो 'पतिव्रता' (रू.भे.)

पतव्रत—देखो 'पतिव्रत' (रू.भे.)

पतमंदोदरी-सं०स्त्री० [सं० मंदोदरीपति] रावण (अ.मा.)

पतमाळ—देखो 'प्रतमाळा' (रू.भे.)

पतयारो—देखो 'पतिआरो' (रू.भे.)

पतर—१ देखो 'पात्र' (रू.भे.)
उ०—१ तिण आपरा गळा रो कांठलो १ जड़ाव रो मालदे नूं दीयो, पतर एक लोही रो भर दीयो सु मालदे पीयो नहीं।
—नैणसी
उ०—२ पुणियो यम जायल पती, रो'ड़दार सूं रीस। जोगो नै जो मायनै, वळ दो पतर भरीस।—पा.प्र.

२ देखो 'पत्र' (रू.भे.)
३ देखो 'पतर' (रू.भे.)

पतरण—देखो 'पथरण' (रू.भे.)

पतरणौ, पतरबौ—देखो 'पथरणौ, पथरबौ' (रू.भे.)
पतरणहार, हारौ (हारी), पतरणियौ—वि०।
पतरिओड़ौ, पतरियोड़ौ, पतरयोड़ौ—भू०का०कृ०।
पतरीजणौ, पतरीजबौ—कर्म वा०।

पतराखण-वि० [राज० पत+सं० रक्षणम्] प्रतिष्ठा की रक्षा करने वाला।
सं०पु० [राज० पत+रक्षणम्] ईश्वर (नां.मा.)

पतरियोड़ौ—देखो 'पथरियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० पतरियोड़ी)

पतरी—१ देखो 'पथरी' (रू.भे.)
२ देखो 'पत्र' (अल्पा०, रू.भे.)
उ०—पतरी लिखद्यूं प्रेम की ए दीज्यो पियाजी नैं जाय।—लो.गी.
३ देखो 'पतड़ी' (रू.भे.)

पतरूह, पतरोह-सं०स्त्री० [सं० पृथ्वी+रूह] रज, धुलि (अ.मा.)

पतळ—देखो 'पातळ' (रू.भे.)

पतलज-सं०स्त्री० [रा० पत=पति+लज=लज्जित करने वाली] कुटनी, व्यभिचारिणी। उ०—गोली गोरे गात, पर घर दीसे पदमणी। पतलज सागे पात, रती न कीजै राजिया।—किरपारांम

पतळियौ-स०पु० [सं० पत्रल] १ सोने चांदी के आभूषणों पर खुदाई के काम में तार खोदने का एक लोहे का कीला (स्वर्णकार)
२ देखो 'पतळौ' (अल्पा०, रू.भे.)
उ०—हां ए गोरी, होठ पतळिया दांत ऊजळिया बोलण की चतराई मिरगा-नैणी।—लो.गी.

पतलून-सं०पु० [अं० पैण्टलून] विना मियानी का मोटे वस्त्र का पाजामा।

पतलूननुमां-वि० [अ० पैंटलून+सं० नामन्] पतलून से मिलता-जुलता, पतलून के समान।

पतळोड़ौ—देखो 'पतळौ' (अल्पा०, रू.भे.)
(स्त्री० पतळोड़ी)

पतळौ-वि० [सं० पत्रल] (स्त्री० पतळी) १ तरल।
उ०—बिलळी बातां री वांणी बधरावै। पतळी भिण जिण में पांणी पधरावै।—ऊ.का.
२ अशक्त, कमजोर। उ०—१ पीहर पतळां रा सैणां रा प्यारा। तारक तूटां रा नैणां रा तारा।—ऊ.का.
उ०—२ अपणां आसरिये असळौ दिन ऊगौ। पीहर सासरिये पतळौ पुनि पूगौ।—ऊ.का.
उ०—३ 'खीमसी' री 'कंवरसी', 'कंवरसी' री 'जैसौ', 'जैसा' री 'मूंजौ', 'मूंजा' री 'ऊदौ', 'ऊदा' सूं सांखला पतळा पड़िया।
—वां.दा.ख्यात

मुहा०—१ पतळौ दिन—दुर्दिन, दुर्दशाकाल।
२ पतळौ पड़णौ—कमजोर होना, अशक्त होना, निर्धन होना।
३ कृश, क्षीण, दुबला। उ०—१ खटकै खांवंद रै अड़ियां उर खारी। पतळी कड़ियां री कड़ियां विन प्यारी।—ऊ.का.
उ०—२ पतळै सै करवै जवांई जी जिन चढौ, पतळा थारी भायां री प्यारी रा होट, सुरग्यानी जंवाई'''।—लो.गी.
यौ०—पतळौ-दूबळौ।
मुहा०—पतळौ पड़णौ—कृश या क्षीण होना।
४ जो स्थूल न हो, मोटा न हो।
५ जिसका घेरा कम हो, संकड़ा, कम चौड़ा।
उ०—हां ए गोरी, पींडी पतळियां एडी उजळियां चालण की चतराई मिरगा नैणी।—लो.गी.
६ वह वस्तु जिसकी मोटाई का दल कम हो, झीना, महीन।
रू०भे०—पातळौ।
अल्पा०—पतळियौ, पतळोड़ौ, पातळड़ौ, पातळियौ।

पतवड़—देखो 'पित्तोड़' (रू.भे.)

पतवरत—१ देखो 'पतिव्रत' (रू.भे.)
२ देखो 'पतिव्रता' (रू.भे.)

पतवरता—देखो 'पतिव्रता' (रू.भे.)
उ०—सुता 'दलै' रावळ तणी, पतवरता पत-प्रीत। रांणी राजा परणियो, 'मिरधावती' 'अजीत'।—रा.रू.

पतवसांन-सं०पु० [सं० प्रत्यवसान] भोजन (अ.मा.)
रू०भे०—पतिवसांण।

पतवांण-सं०स्त्री० [सं० प्रत्यापन] १ जांच।
२ विश्वास।

पतवांणणौ, पतवांणबौ-क्रि०स० [सं० प्रत्यवायनम्] परीक्षा करना, जांचना। उ०—मन री तिसणा नहु मिटै, प्रगट जोइ पतवांण। लाभ थकी बहु लोभ व्है, है त्रिसणा हैरांण।—ध.व.ग्रं.
पतवांणणहार, हारौ (हारी), पतवांणणियौ—वि०।
पतवांणिओड़ौ, पतवांणियोड़ौ, पतवांण्योड़ौ—भू०का०कृ०।
पतवांणीजणौ, पतवांणीजबौ—कर्म वा०।

पतवांणियोड़ौ-भू०का०कृ०—परीक्षा किया हुआ, जांचा हुआ।
(स्त्री० पतवांणियोड़ी)

पतवार-सं०स्त्री० [सं० पत्रवाल या पात्रपाल प्रा० पात्तवाड] नाव का विशेष अंग जिसके द्वारा नाव मोड़ी या घुमाई जाती है।

पतवासत-सं०पु० [सं० वास्तोष्पति] इन्द्र (नां.मा.)

पतव्रत—देखो 'पतिव्रत' (रू.भे.)

पतव्रता—देखो 'पतिव्रता' (रू.भे.)

पतसंगम-वि० [सं० पति+संगम] शीतल*।

पतसा—देखो 'बादशाह' (रू.भे.)
उ०—हुवै न गमियां हांण, आइयां ही हरख न ऊपजै। राजा

पतसा रांण, मन कांइ परखा मोतिया ।—रायसिंह सांदू

पतसाई—देखो 'बादसाही' (रू.भे.)

उ०—सील सहित सिवराज सितारे, खोस लूट घर खाई । कै औरंग के कटक काट के, पट्ट करी पतसाई ।—ऊ.का.

पतसाय—देखो 'बादसाह' (रू.भे.)

पतसार-सं०पु० [सं० सार=लोह+पत=पिता] पहाड़ (अ.मा.)

पतसाळ-सं०स्त्री० [सं० पितृ+शाला] १ पैतृक भवन, पीहर ।

उ०—जनवास रह्यौ कळ चालजती । सुविचार वळी पतसाळ सती ।
—पा.प्र.

पतसाह—देखो 'बादसाह' (रू.भे.)

उ०—'सोनग' बीठळदास रो, रोद्रां लग्गो राह । जोत न धारे दुंद डर, चंद्र ज्यूंही पतसाह ।—रा.रू.

पतसाहण-वि०—१ बादशाह का ।

२ देखो 'बादसाह' (रू.भे.)

पतसाही—देखो 'बादसाही' (रू.भे.)

उ०—१ पिंड 'सूजो' पाधोरियो, औरंग' लियौ उबार । पतसाही राखी पगे, 'केहर' राजकुमार ।—पदमसिंह री वात

उ०—२ आगे ग्रह बाराह रै, पुहकर सांम गरज्ज । लड़िया पतसाही दळां, झड़ पड़िया कमधज्ज ।—रा.रू.

पतस्वाहा-सं०पु० [सं० स्वाहापति] अग्नि (डि.को.)

पतहीण, पतहीणो-वि० [राज० पत+सं० हीन] १ अविश्वासपात्र ।

२ मानहीन ।

पतांणणो, पतांणबो-क्रि०स० [सं० प्रत्यवायः] जांच करना ।

पतांणणहार, हारो (हारी), पतांणणियो—वि० ।

पतांणिओड़ो, पतांणियोड़ो, पतांण्योड़ो—भू०का०कृ० ।

पतांणीजणो, पतांणीजबो—कर्म वा० ।

पतांणियोड़ो-भू०का०कृ०—जांचा हुआ, परखा हुआ ।

(स्त्री० पतांणियोड़ी)

पता—देखो 'पिता' (रू.भे.)

उ०—'फला' हरा जुध वार करारी, जुध जीपण अवसांण जता । पता, कहै सैंवास पूत नैं, पूत कहै सैंवास पता ।—अज्ञात

पताक—देखो 'पताका' (रू.भे.)

उ०—प्रत सदन पीत पताक फरकत, वरण बहु खुख वेस । मध जनकपुर सुर असुर मांनव, पड़ै संभ्रत पेस ।—र.रू.

पताकणी, पताकनी-सं०स्त्री० [सं० पताकिनी] १ फौज, दल, सेना
(ह.नां.मा.)

उ०—यह है न पताकणी, तस में असन तुखार । रूप रढाळी रटण रण, हिम हिम्मत हथियार ।—रेवतसिंह भाटी

२ एक देवी ।

रू०भे०—पताकिनी, प्रताकनी ।

पताका-सं०स्त्री [सं०] १ झण्डा, झण्डी, ध्वजा (अ.मा., ह.नां.मा.)

क्रि०प्र०—उडणी, उडाणी, खड़ी करणी, खोलणी, गाडणी, गिरणी, गिराणी, पड़णी, पाड़णी, फहरणी, फहराणी, रोपणी ।

२ पिंगल के नौ प्रत्ययों में से आठवां जिसके द्वारा किसी निश्चित गुरु-लघु वर्णों के छंद या छंदों का स्थान जाना जाय ।

३ घोड़े के चारजामा का एक भाग जहां पर जल-पात्र लटकाए जाता है ।

रू०भे०—पताक, पताख, पताखा, प्रताका ।

पताकादंड-सं०पु०यो० [सं०] १ झण्डे का डण्डा ।

२ ध्वज ।

पताकामीन-सं०पु०यो० [सं० मीन+पताका] कामदेव (अ.मा.) ।

पताकिनी—देखो 'पताकनी' (रू.भे.)

पताकी-वि०—पताकधारी ।

सं०पु० [सं० पताकिन्] १ रथ ।

२ फलित ज्योतिष के अनुसार राशि और ग्रहों का वेध देखने का चक्र विशेष ।

पताख, पताखा—देखो 'पताका' (रू.भे.)

उ०—१ हल हल्लिय लंक गढ़ वंक सो, दस घू पैहल काहल्लिय । हल्लिय पताख गजराज पै, विजै कटक राघव हल्लिय ।—र.ज.प्र.

उ०—२ घोडा लोह चाब रह्या छै । जीणां री साखां-जनाखां ऊंची नांखजै छै । तंग खोळा कीजै छै । तठा उपरांत पताखां सूं बादळा छोडजै छै ।—रा.सा.सं.

उ०—३ अवर वेद उणि आगळी, दूजै कोठै दाखि । महि पताखा मोढिजै, रुडो लेखो राखि ।—ल.पि.

पताम्ह—देखो 'पितामह' (रू.भे.) (डि.को.)

पताळ—देखो 'पाताळ' (रू.भे.)

उ०—परि किमि करि लागां पगे, पाउ पताळ प्रमांण । स्रमण दिसै वैकुंठ छत, राज निमो रहमांण ।—पी.ग्रं.

पताळखंड—देखो 'पाताळखंड' (रू.भे.)

पताळगारड़ो—देखो 'पाताळ-गारुडी' (रू.भे.)

पताळदंती—देखो 'पाताळदंती' (रू.भे.)

पताळजंत्र—देखो 'पाताळजंत्र' (रू.भे.)

पताळि—देखो 'पाताळ' (रू.भे.)

उ०—सरग पताळि प्रिथी चो सांम ।—रांमरासो

पताळियो-वि०—पाताल संबंधी, पाताल का ।

सं०पु० [सं० पाताल+रा.प्र. इयो] १ नीचे की ओर झुके हुए लम्बे सींगों वाला बैल ।

२ अथाह पानी का बहुत गहरा कुआ ।

यौ०—पताळियो-बेरो ।

३ देखो 'पाताळ' (अल्पा., रू.भे.)

रू०भे०—पाताळियो ।

पतास—देखो 'पतासो' (मह०, रू.भे.)

उ०—१ सड़ण पड़ण विधंसण देहणी, तिणरी किसड़ी रे आस । खिण एक मांही जासी रे बिगड़ी, जिम पांणी मांहे पतास ।
—जयवांणी

उ०—२ घारां, घेवर, ससिवदन, सुहाली, प्रतवणी, घारडी, पतास फीणी, दहीथरां, तिलसांकली···।—व.स.

पतासड़ो—देखो 'पतासो' (अल्पा.,रू.भे.)

पतासि—देखो 'पतासी' (रू.भे.)

पतासियो—देखो 'पतासी' (अल्पा०, रू.भे.)

पतासी-सं०स्त्री० (?) १ लोहे की चद्दर का तासकनुमा बना हुआ एक बर्तन विशेष जिसके एक तरफ लकड़ी का डण्डा लगा हुआ होता है ।

२ लोहे की एक ही चद्दर की बनी छिछली व कम गहरी कढाई ।

३ वढई का एक ओजार विशेष, छोटी रुखाणी ।

४ एक प्रकार की आतिशबाजी जो अनार का छोटा रूप होती है ।

४ देखो 'पतासो' (अल्पा०, रू.भे.)

पतासो-सं०पु० [सं० वातास] १ चीनी की नरम चासनी को टपका कर बनाया हुआ एक पदार्थ विशेष, बताशा । उ०—मिसरी पतासा मखांणा अर नाळेरां री विकरी घणी ही व्हैण लागी ।—फुलवाड़ी

२ पानी का बुदबुदा ।

३ मैदे का तल कर फुलाया हुआ एक गोलाकार खाद्य पदार्थ जिसमें जलजीरे का पानी भर कर खाते हैं ।

रू०भे०—बतासो ।

अल्पा०—पतासड़ो, पतासियो ।

पतिंग—देखो 'पतंग' (रू.भे.)

उ०—अला पतिंगह चदमां तणो पालो । अला झाझ नांमी, इसा विरद झालो ।—पी.ग्रं.

पति-सं०पु० [सं०] १ किसी स्त्री का विवाहित पुरुष, भर्ता, खाविंद (ह.नां.मा.)

उ०—१ व्यथा विरहाग वियोग विहाय, सवागण भाग संयोग सुहाय । अनाग्रह भुल्लित आंन उपाय, प्रफुल्लित ज्यूं पतनी पति पाय ।—ऊ.का.

उ०—२ वांणी हर वीसार कर, वंचै आंन कुवांण । नार छांड पति आपणो, जार विलग्गी जांण ।—ह.र.

पर्या०—ईस्ट, कंत, करणविवाह, खामंद, ढोलो, घणी, घव, नाथ, नायक, पनामारू, पीतम, प्रांणेय, प्रांणेस, वर, वरयित, बालम, भरतार, भोगता, मांटी, रमण, विवोढ़, साहिब ।

२ स्वामी, प्रभु, मालिक ।

३. ईश्वर ।

४. शिव ।

५. मर्यादा, इज्जत, प्रतिष्ठा ।

६. विश्वास, प्रतीति, पत ।

उ०—साहिब, तुज्झ सनेहड़इ, प्रीति-तणी पति जाइ । जळ खिण ही जांणइ नहीं, मच्छ मरइ तिण मांइ ।—ढो.मा.

७ देखो 'पत' (रू.भे)

रू०भे०—पत, पती, पत्त, पत्ति, पत्ती ।

पतिआणो, पतिआवो-क्रि०स० [सं० प्रत्ययितम्] विश्वास करना, सच मानना ।

क्रि०अ०—विश्वास होना ।

पतियाणो, पतियाबो, पतियावणो, पतियाववो (रू०भे०)

पतिआयोड़ो-भू०का०कृ०—१ विश्वास किया हुआ, सच माना हुआ ।

२ विश्वास हुवा हुआ ।

(स्त्री० पतिआयोड़ी)

पतिआरो-सं०पु० [सं० प्रत्ययित] विश्वास, भरोसा ।

रू०भे०—पतयारो, पतियारो, पत्यारो ।

मह०—पतियार ।

पतिउत्तर-सं०पु०यो० [सं० उत्तर+पति] कुबेर (नां.मा.)

पतिग—देखो 'पातक' (रू.भे)

उ०—वांणारसी विहां परसजे, तिणि दरसण जाई पतिग म्हास ।
—बी.दे.

पतिघातण, पतिघातणी, पतिघातिण पतिघातिणी-सं०स्त्री० सं० पति-घातिनी] १ स्त्री की हथेली पर होने वाली वह रेखा जो अंगुष्ठ की जड़ के अति नीचे से कनिष्ठका अंगुली तक सीधी जाती है, वैधव्यसूचक हस्तरेखा ।

२ वह स्त्री जिसका ज्योतिष या सामुद्रिक शास्त्र के अनुसार विधवा हो जाना संभव हो, वैधव्य योग या लक्षण वाली स्त्री ।

३ पति की हत्या करने वाली स्त्री ।

पतिजळ-सं०पु० [सं० जलपति] समुद्र, उदधि (ह.नां.मा.)

पतित-वि० [सं०] १ गिरा हुआ ।

(स्त्री० पतिता)

२ महापापी, अतिपातकी ।

उ०—अनंत पर आरती उतारिस, सोळ प्रकार पूज संभारिस । भाव भगत करतो जग-भावन, पतित सरीर करिस मम पावन ।—ह.र.

३ आचार, नीति या धर्म से गिरा हुआ ।

रू०भे०—पतत, पतीत ।

पतितउधारण-स०पु०यो० [सं० पतित+उद्धारण] ईश्वर (नां.मा.)

पतिधरम-सं०पु०यो० [सं० पति-धर्म] पति के प्रति स्त्री का कर्त्तव्य, धर्म ।

पतिवरत—१ देखो 'पतिव्रत' (रू.भे.)

२ देखो 'पतिव्रता' (रू.भे.)

पतिबरता—देखो 'पतिव्रता' (रू.भे.)

उ०—रांम न छाडो मैं डरूं, ऊंडै घसैं बलाय । पतिबरता पति कूं

व्रजे, तब ही खोटा खाय ।—ह पु.वा.

पतिव्रत—देखो 'पतिव्रत' (रू.भे.)

पतिमराळ-सं०पु०यो० [सं० मराल+पति] ब्रह्मा (नां.मा.)

पतियत-सं०पु० [सं० पति+रा. प्र. यत] स्वामित्व, पतित्व ।

उ०—जिकी जीव नूं प्यारो राखै छै तिण नूं सरदारो, देस पतियत सूं कांई काम छै ।—नी.प्र.

पतिया-सं०स्त्री० [सं० पत्र] देखो 'पत्र' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—तरसत अखियां हुई द्रुम पखियां। जाय मिलो पिव सूं सखियां । यदुनाथजी रे हाथ री ल्यावे कोई पतियां ।

—जयवांणी

पतियाणो, पतियाबो—देखो 'पतिआणो, पतिआबो' (रू.भे.)

उ०—माया मरे जीव सब, खंड खंड कर खाइ । दादू घट का नास कर, रोयैं जग पतियाइ ।—दादूवांणी

पतियारो—देखो 'पतिआरो' (रू.भे.)

उ०—वा सिंघ अर चीता नैं कह्यो—आप इण नकली राजा रै डर सूं मांस छोड़ दियो, थांनैं लाज नीं आवै । अेकर सांमनो करनै तो पतियारो लो ।—फुलवाड़ी

पतियावणो, पतियावबो—देखो 'पतिआणो, पतिआबो' (रू.भे.)

उ०—फूल न सेभ सूल होइ लागी, जागत रैणि विहावै हो । कासूं कहूं कुण मानै मेरी, कह्यां न को पतियावै हो ।—मीरां

पतिलोक-सं०पु०यो० [सं०] पतिव्रता स्त्री को प्राप्त होने वाला वह स्वर्ग जहां उसका पति रहता हो ।

पतिवती-सं०स्त्री० [सं०] सौभाग्यवती, सधवा ।

पतिवरत—देखो 'पतिव्रत' (रू.भे.)

उ०—१ जळवा काज 'नरूकी' 'जादम', घर ऊठी पतिवरत तणै भ्रम । रट हरि मुखपति ध्यांन रहायो, मंजण कर सिणगार मंगायो ।

—रा.रू.

उ०—२ लाज सीळ सप्रेह, लाज पतिवरत न मूकै ।—रा.रू.

पतिवरता—देखो 'पतिव्रता' (रू.भे.)

उ०—वेस्या सुख भोगै पतिवरता व्याधी । इणसूं ईस्वर री ईस्वरता आधी ।—ऊ.का.

पतिवसांण—देखो 'पतवसांन' (रू.भे.)

पतिव्रत-सं०पु० [सं०] स्त्री की अपने पति में निष्ठा, प्रीति ।

उ०—१ पत सहती पतनी सर्व, दोनौ वैकुंठा वास । पतिव्रत पाळयो हरि भज्यो, प्रभू निवाजै तास ।—गजउद्धार

उ०—२ हूं कुळ में पापी हुवो, पत नूं दीन्हो पीठ । त्रिया पतिव्रत पाळ तूं, धिक धिक मत कह धीठ ।—बां.दा.

क्रि०प्र०—धारणो, निभाणो, पाळणो, राखणो ।

रू०भे०—पतवरत, पतव्रत, पतवरत, पतव्रत, पतिवरत, पतिव्रत, पतिवरत, पतिव्रत, पतीवरत, पतीव्रत, पतीवरत, पातिव्रत, प्रतिवत ।

पतिव्रता-सं०स्त्री [सं०] पति में अनन्य अनुराग रखने वाली स्त्री, सती, साध्वी, सच्चरित्रा ।

उ०—अनुकूळ पुरस, पतिव्रता जोय । सुभ करम करत, कुळअम सकोय ।—सू.प्र.

पर्या०—एकपत(ति) पतिप्रेमा, मनसमी, मनस्विनी, सती, साध्वी, सुचरुच, सुचहिय, सुभचरिता ।

रू०भे०—पतवरता, पतव्रता, पतवरता, पतव्रता, पतिवरता, पतिव्रता, पतिवरता, पतीवरता, पतीव्रता ।

पतिसाह—देखो 'बादसाह' (रू.भे.)

उ०—कूरमनाथ नवाब कै, साथ हुवै 'जैसाह' । बावीसो वेली दिया, विदा किया पतिसाह ।—रा.रू.

पतिसाही—देखो 'बादसाही' (रू.भे.)

उ०—कांम फैल मति करो, स्यांमध्रम धरो सिपाही । सराजांम दो सरब, तोपखांना पतिसाही ।—सू.प्र.

पतिस्या—देखो 'बादसाह' (रू.भे.)

पतिहथणापुर-सं०पु०यो० [सं० हस्तिनापुर+पति] युधिष्ठिर

(ह.नां.मा.)

रू०भे०—पतीहतणापुर ।

पती—१ देखो 'पति' (रू.भे.)

उ०—१ सत पाय उपाय दिगाय सती । पद गाय रिझाय छुडाय पती ।—ऊ.का.

उ०—२ नित जय ग्यांन निवास, पती गणनायको । लंबोदर हर नंद, सिरोमण लायको ।—बां.दा.

२ देखो 'पत्र' (अल्पा., रू.भे.)

पतीअपार-वि० [सं० अपारपति] वह जिसके अनेक पति हों ।

सं०स्त्री०—१ पृथ्वी ।

२ वेस्या ।

३ लक्ष्मी ।

पतीग्रह-सं०पु० [सं० ग्रहपति] सूर्य (ना.डिं.को.)

पतीजणो, पतीजबो-क्रि०स० [सं० प्रत्यय, प्रा० प्रतिज्ज] विश्वास करना, भरोसा करना । उ०—रीता हुवै हजारहां, कळस भरीज भरीज । रीतो हुवै निवांण नह, इण द्रस्टांत पतीज ।—बां.दा.

पतीजियोड़ो-भू०का०कृ०—विश्वास किया हुआ ।

(स्त्री० पतीजियोड़ी)

पतीत—देखो 'पतित' (रू.भे.)

उ०—श्रो पतीत पावन प्रभु, इणि रो करो उचार । इणि रो नांम कल्यांण छै, श्रो श्ररिजण रो यार ।—पी ग्र.

पतीनागराइ-सं०पु० [सं० पतिनागराज] शेषनाग ।

उ०—पतीनागराई फेण सा चौगणा आगराई पीधा, माहूंलोक दीधा पाव पाघड़ै समाज ।—महादांन महड़

पतीनि—देखो 'पत्नी' (रू.भे.) (ह.नां.)

पतीयासी—सं०स्त्री० [?] सरोवर ?
उ०—जसीया कसीयक छै, आपनै भी उघारै जसीयक छै। पतीयासी को कमळ, गंगासी विमळा भूभळिया नैनां की भ्रमरता सा वेरणां की।
—मयाराम दरजी री बात

पतीव्रत—देखो 'पतिव्रत' (रू.भे.)
उ० - मात पिता रौ मोह, कुटुंब छोडै जिरण कारण। घरै पतीव्रत घरम, तेण समभै भवतारण।—ऊ.का.

पतीराखण—देखो 'पतराखण' (रू.भे.) (ह.नां.मा.)

पतीवरत—देखो 'पतिव्रत' (रू.भे.)

पतीवरता—देखो 'पतिव्रता' (रू.भे.)
उ०—कुळवंति पतीवरता किहड़ी, उघरै पख च्यारि जिसा इहड़ी। घुरिआ घरण वाजित्र घाउ घणूं, तिरिण वर त्रिआं वघि रूप तणूं।
—वचनिका

पतीवसंत-सं०पु०यौ० [सं० वसन्त+पति] वृक्ष (नां.मा.)

पतीव्रत—देखो 'पतिव्रत' (रू.भे.)
उ०—दरसरण देख करै नित दांतरण, रहै पतीव्रत रंगी। पून्य खीरण तैं करत पयांणौ, घणौ छोड अरधंगी।—ऊ.का.

पतीव्रता—देखो 'पतिव्रता' (रू.भे.)
उ०—पुरस तो वीर है—अर स्त्री पतीव्रता सूरमी सती है।
—वी.स.टी.

पतीहतणापुर—देखो 'पतिहथणापुर' (रू.भे.)

पतेरि-सं०स्त्री० [सं०पितृव्य+रा प्र रि] चाचा की पुत्री, चचेरी बहन।
उ०—छळ कर बळ कर घाइ कर, मारे जिहि तिहि फेरि। दादू ताहि न घीजिये, परणे सगी पतेरि।—दादूबांणी

पतोड़, पतोळ—देखो 'पित्तोड़' (रू.भे.)

पतोलड़ी, पतोली—देखो 'पातली' (अल्पा; रू.भे.)

पतौ-सं०पु० [सं० प्रत्यय, प्रा०पत्ताय=ख्याति] १ स्थान सूचित करने वाली वह बात जिससे उस स्थान पर पहुंचा जा सके।
क्रि०प्र०—करणौ, जांणणौ, दैणौ, पूछणौ, बताणौ, लैणौ।
२ चिट्ठी पर लिखी वह इबारत जिससे वह निर्दिस्ट स्थान पर पहुँच जावे।
क्रि०प्र०—पढ़णौ, पढ़ाणौ, लिखणौ, लिखाणा।
३ जानकारी, खबर।
उ०—१ ए इतरा मिनख कठा सूं आवै है, अर कठै जावै है, कांई पतौ ही नही लागै।—रातवासौ
उ०—२ छींयां देखनै म्हैं पतौ पाड़ लेवूंला के कुण पड़ियौ अर कुण पटकियौ।—फुलवाड़ी
क्रि०प्र०—करणौ, दैणौ, भेजणौ, लगाणौ, लागणौ, होणौ।
४ अनुसंधान, खोज, टोह, सुराग।
उ०—म्हनै राज रै दाय पड़ै ज्यूं वाढ़ौ, छूनौ, पण अेकर चोर रौ पतौ लगाय लूं तौ मरियां हूं मुगातर पावूं।—फुलवाड़ी

५. मोटे कागज का गोल या चौकोर खण्ड जो तास के खेल में काम आता है।
६ देखो 'पत्र' (रू.भे.)
७ देखो 'पत्तौ' (रू.भे.)
रू०भे०—पैंतौ।

पत्त—१ देखो 'पत्र' (रू.भे.)
यौ०—पत्तपुप्फ।
२ देखो 'पित्ता' (रू.भे.)
३ देखो 'पति' (रू.भे.)
उ०—साहां ऊथप थप्पणौ, पह नरनाहां पत्त। राह दुहूं हद रक्खणौ, 'अभैसाह' छत्रपत्त।—रा.रू.
४ देखो 'पात्र' (रू.भे.)
उ०—जइधार तार जैकार किद्ध, भरि पत्त रत्त जोगणी पिद्ध।
—गु.रू.बं.

पत्तन—१ देखो 'पट्टण' (रू.भे.)
उ०—राज्य हस्ती नइ तुरंगम, हारीउ भंडार रे। नगर पुर पत्तन सवि भला, अग थोलगूं सार रे।—नळदवदंती रास
२ देखो 'पतन' (रू.भे.)

पत्तपुप्फ—देखो 'पत्रपुस्प' (रू.भे.)

पत्तर-सं०पु० [सं० पात्र] १ सन्यासियों का भिक्षा-पात्र, खप्पर, खपड़ा।
उ०—पिंड फूटै रत पड़ै, पियै चौसठि भर पत्तर। सिर तूटां, सूरिमां, सभै संकर गळि चौसर।—सू.प्र.
२ देखो 'पत्र' (रू.भे.)
३ देखो 'पात्र' (रू.भे.)

पत्तळ—देखो 'पातळ' (रू.भे.)

पत्ति, पत्ती—१ देखो 'पति' (रू.भे.)
उ०—हिंदुआं मौड राठौड़ मोटे हुसम, पुहवि पत्ति मांहि परताप प्राभौ।—ध.व.ग्रं.
२ देखो 'पत्र' (अल्पा.,रू.भे.)
उ०—पुरांणी प्रभु वंचांणी पत्ति, जगत्पति तूं ही सब्ब जगत्ति।
—ह.र.

पत्तीजणौ, पत्तीजबौ—देखो 'पतीजणौ, पतीजबौ' (रू.भे.)
उ०—फूलां फळां निघट्टियां, मेहां घर पड़ियांह। परदेसां का सज्जणा, पत्तो जूं मिळियांह।—ढो.मा.

पत्तीसुरळियौ-सं०पु० [देशज] स्त्रियों के कान का आभूषण विशेष।

पत्तेणम—देखो 'पत्र' (रू.भे.)
उ०—सिसु वै मित्ती वित्ती, उदभौ पौगंड मंढ सिंगारौ। ज्यो व्रंदारक सरयं, प्रांमै डाळ संगि पत्तेणम।—रा.रू.

पत्तौ-सं०पु० [सं० पत्रक] १ कान का आभूषण विशेष।
उ०—बीरा म्हारे कांनां में पत्ता लाज्यो, म्हारे कुंडळ बैठ घड़ाज्यो,

म्हारे रिमक-भिमक भाती आव्यो ।—लो.गी.

२ देखो 'पतौ' (रू.भे.)

उ०—१ पत्ता भड़ पत्ता खत्ता खड़खावै, उड़ता ऊमर इव पत्ता नहि पावै ।—ऊ.का.

उ० –२ चोर पत्तो पड़ियां म्हैं अठी-उठी उण रो हेरो करू' तौ लारै राजा नै साची वात तौ वता सकै ।—फुलवाड़ी

उ०—३ ऊंट रै दूजा डील रो तौ कीं पत्तो नीं पण भींडी रै माथा कर वधती वा गावड़···सगळै फिरगी ।—फुलवाड़ी

पत्थ—१ देखो 'पारथ' (रू.भे.)

उ०—मरोड़े गजां कंध ओडै मरद्दं, रहचै जिसा सिंध मुक्की रवद्दं, । कसीसं गुणं ओसटंकी कवांणं, वळी भीम वत्थ कळी पत्थ वाणं ।

—वचनिका

२ देखो 'पंथ' (रू.भे.)

उ०—पालउ जीव दया इह धरम पत्थ, भगवंत भाखइ सवत्थ सत्थ ।

—स.कु.

३ देखो 'पथ्य' (रू.भे.)

उ०—हाथी जनमि किसौं न ल्है, वैंद दिये किम पत्थ । नर आदर किम नां लहै, उत्तर तिहुं इक अत्थ ।—ध.व.ग्रं.

पत्थकळा—देखो 'पत्थरकळा' (रू.भे.)

पत्थय—१ देखो 'पंथ' (रू.भे.)

उ०—नवाव पुत्र नूरली, अनेक मीर असल्ली । सिताव सामरत्थयं, कियौ कि पार पत्थयं ।—रा.रू.

२ देखो 'पारथ' (रू.भे.)

३ देखो 'पथ्य' (रू.भे.)

पत्थर–संपु० [सं० प्रस्तरः, प्रा० पत्थर] पृथ्वी के बड़े स्तर का पिण्ड या खण्ड, पाषाण

उ०—स्रीहर परहर अवर नूं, मत संभरै अयांण । तरु छंडै लागी लता, पत्थर चै गळ जांण ।—ह.र.

पर्या०—असम, उपल, ग्राव, घण, द्रखद, धात, पाखांण, सिळ ।

रू०भे०—पथर, पथ्थर, पाथर ।

यौ०—पत्थरकळा, पत्थरचटी (चट्टी), पत्थरफोड़, पत्थरफोड़ौ, पत्थरवाज, पत्थरवाजी ।

पत्थरकळा–संस्त्री०यौ० [सं प्रस्तरकला] एक प्रकार की वन्दूक जिसके घोड़े के पास पत्थर होता था जिस पर घोड़े को चोट पड़ने से वन्दूक छूटती थी ।

रू०भे०—पत्थकळा, पत्थरकळा ।

पत्थरचटी–संस्त्री०यौ० [सं० प्रस्तरः+चष्ट] एक प्रकार की औषधि, पाषाणभेद ।

रू०भे०—पथरचटी, पथरचट्टी ।

पत्थरचटौ–वि० [स० प्रस्तरः+चष्ठ] कंजूस ।

संपु०—१ एक प्रकार का सर्प ।

२ एक प्रकार की घास जिसकी पत्तियां कोमल होती हैं ।

पत्थरफोड़–संपु० [सं० प्रस्तरः+स्फोटनं] १ एक प्रकार का पक्षी, हुद-हुद ।

२ देखो 'पत्थरफोड़ौ' (रू.भे.)

पत्थरफोड़ी–संस्त्री [सं० प्रस्तरः+स्फोटनं] पत्थर को तोड़ने वाली, टांकी ।

रू०भे०—पथरफोड़ी ।

पत्थरफोड़ौ–वि० [सं० प्रस्तरः+स्फोटनम्] (स्त्री० पत्थरफोड़ी) पत्थर तोड़ने का कार्य करने वाला, संगतरास ।

रू०भे०—पत्थरफोड़ ।

पत्थरवाज–वि० [सं० प्रस्तरः+फा०वाज्] पत्थर फेंकने वाला ।

पत्थरवाजी–सं० स्त्री० [सं०प्रस्तरः+फा० वाजी] पत्थर फेंकने की क्रिया या भाव ।

पत्थरी—देखो 'पथरी' (रू.भे.)

पत्थु—देखो 'पारथ' (रू.भे.)

उ०—तीणं परीक्षां गुर तणी, पूगउ एक जु पत्थु । राहा वेहु तउ सिखवइ, मच्छइ देविणु हत्थु ।—पं.पं.च.

पत्थ्या–संस्त्री० [सं० पथ्या] १ गली ।

उ०—वैठस वैरागी त्यागी तन तावै, वेला तेला विधि सहजां वण आवै । पत्थ्या पाटण दै भिक्ष्याटण भाजी, रत्थ्या करपट लै चरपट वत राजी ।—ऊ.का.

२ मार्ग, रास्ता ।

पत्नी–संस्त्री० [सं०] विधिवत् विवाहिता स्त्री, अर्धांगिनी (डि.को.)

पर्या०—अरधांगणी, जोड़ायत, घण, प्यारी, लाडी ।

रू०भे०—पतनी, पतन्नी, पतीनि, पत्नि ।

यौ०—पत्नीदास, पत्नीप्रिय, पत्नीभक्त, पत्नीव्रत ।

पत्नीदास–संपु०यौ० [सं०] पत्नी का गुलाम ।

पत्नीप्रिय–संपु०यौ० [सं०] १ पत्नी का प्यारा ।

२ वह जिसको पत्नी प्यारी हो ।

पत्नीव्रत—देखो 'पत्नीव्रत' (रू.भे.)

पत्नीभक्त–संपु०यौ० [सं०] पत्नी का भक्त ।

पत्नीव्रत–संपु०यौ० [सं०] अपनी पत्नी के अलावा किसी अन्य से गमन न करने का संकल्प, प्रण ।

रू०भे०—पतनीवरत, पतनीव्रत, पतनीवरत, पतनीव्रत, पत्नी-व्रत ।

पत्यारौ—देखो 'पतियारौ' (रू.भे.)

पत्र–संपु० [सं० पत्रम्] १ चिट्ठी, पत्री, खत (अनेका.)

२ लिखा हुआ कागज, दस्तावेज ।

उ०—जरै खीची रो भय टळियां विस्वास पाइ धीजियां नूं रजपूत करण रै काज मीणां री चाल छोडण रो पत्र कपट कर लिखांणौ ।

—वं.भा.

३ पन्ना, पृष्ठ, पेज (अनेका०)

४ किसी वृक्ष का पत्ता, पर्ण।

उ०—गजंद सुंड नाभ कुंड पेट पत्र-पीपळं। नितंब तंब जंघ रंभ केहरी कटी मिळं।—पा.प्र.

पर्या०—छद, छदन, दळ परण, पळाश, पांन।

५ तीर या पक्षी का पंख (अनेका०)

६ चिड़िया, पंखेरू (अनेका०)

७ प्रथम लघु ढगण के भेद का नाम (डि.को.)

८ सवारी रथ, वहल, ऊंट, घोड़ा आदि।

९ देखो 'पात्र' (रू.भे.)

उ०—१ दीघ तिहवर चड पत्र पर गूंद पळ वर घपाई रिण धीर।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

उ०—२ विहंग खळां वह स्रोण वहाऊं। पत्र भरि भरि काळिका धपाऊं।—सू.प्र.

रू०भे०—पत, पतर, पतौ, पत्त, पत्तर, पतेरणम, पत्रियांणि।

अल्पा०—पतरी, पतिया, पती, पति, पाती।

पत्रका—देखो 'पत्रिका' (रू.भे.)

पत्रकार-सं०पु० [सं०] किसी समाचार पत्र का सम्पादक।

पत्रच्छेद-सं०स्त्री० [सं०] पुरुषों की ७२ कलाओं में से एक कला।

पत्रज-सं०पु० [सं०] तेजपात (वृक्ष विशेष)

पत्रती-सं०पु० [सं० पतत्रि] पक्षी, पंखेरू (अ.मा.)

पत्रदूत-सं०पु० [सं० पत्र+दूत] चिट्ठीरसा, डाकिया, पत्रवाहक।

पत्रधार-सं०पु० [सं० पत्र+धार=पक्षी] पक्षी।

उ०—भुघ जंतुनखो मख लेन चले, पत्रधार पळच्चर संग हले।
—ला.रा.

पत्रपुगावण-सं०पु०—पत्रवाहक (डि.को.)

पत्रपुस्प-सं०पु० [सं०] भेंट की मामूली सामग्री।

रू०भे०—पत्त-पुप्फ।

पत्रबाह—देखो 'पत्रवाह' (रू.भे.)

पत्रभंग-सं०पु०यौ० [सं०] सौंदर्य वृद्धि के लिए माथे और गाल पर की जाने वाली चित्रकारी (मारोठ)

पत्ररथ-सं०पु०—पक्षी (अ.मा.)

पत्रवाह-सं०पु० [सं०] संदेशवाहक, पत्रवाहक।

रू०भे०—पत्रबाह।

पत्रांतूळ, पत्रातूळ-सं०पु० [सं० पत्र+तुल्य] नाश, समाप्ति।

उ०—कोस दोय दंताळा दकूळ भूल जत्रां-कत्रां, पत्रांतूळ कीधी वत्रां वघूल पटेल।—हुकमीचंद खिड़ियौ

पत्राकार-वि० [सं० पत्र+आकार] पत्ते क आकार वाला।

उ०—पियकर परसत पीठ, घणौ सुख पाव ही। कदली पत्राकार, प्रसिद्ध कहावही।—वां.दा.

पत्राळ-सं०पु० [सं० पत्र=पक्ष, आलुच्] १ पक्षी, पंखेरू।

उ०—कई जातरा तत्र पत्राळ कूंजै, गहक्कै सिवा साद सादूळ गूंजै।
—मे.म.

२ घने पत्तों वाला वृक्ष।

पत्रावळी-सं०पु० [सं० पत्रं+अवली] १ एक प्रकार का हार।

उ०—एकावळी कनकावळी, रत्नावळी वज्रावळी चंद्रावळी।
—व.स.

सं०स्त्री०—२ पत्तों की पंक्ति।

३ फायल।

पत्रिका-सं०स्त्री० [सं०] १ छोटा पत्र, खत। उ०—या प्रेम पत्रिका दीज्यो हो, म्हारा मारू ने जाय कीज्यो। आंसू टप टप अंगिया टपके, बदन गुलाबी भीज्यो भीज्यो।—लो.गी.

यौ०—जन्मपत्रिका, लग्नपत्रिका।

२ कोई सामयिक पत्र या पुस्तक।

३ जन्मपत्रिका।

४ लग्नपत्रिका।

रू०भे०—पत्रका।

पत्रियांणि—देखो 'पत्र' (रू.भे.)

पत्री-सं०स्त्री० [सं० पत्रिन्] १ वृक्ष (अ.मा.)

२ पक्षी (अ.मा.)

३ तीर, बाण। उ०—वळी नृप 'जंत' करां वळिहार। पत्री मण-भीज परां खळ पार।—मे.म.

४ यमराज (नां.मा.)

५ कमल (अनेका०)

[सं० पत्रं+रा.प्र.ई] ६ चिट्ठी, खत।

७ जन्मपत्रिका।

८ ताड़।

९ पर्वत, पहाड़।

रू०भे०—पत।

पत्रीराज-सं०पु० [सं० पत्री+राज] गरुड़ (नां.मा.)

पत्रीस-सं०पु० [सं० पत्री+ईश] १ कल्पवृक्ष, कल्पतरु (अ.मा.)

२ गरुड़।

पत्रेसुर—देखो 'पित्रेस्वर' (रू.भे.)

उ०—यों वरखा रितु ऊतरी, आवी सरद सुभाय। पत्रसुर कीजै प्रसन, पोखीजै रिख राय।—रा.रू.

पत्रौ—देखो 'पतड़ौ' (रू.भे.)

पथ-सं०पु० [सं० पाथं] १ जल, पानी (अ.मा., डि.को.)

२ देखो 'पथ्य' (रू.भे.)

उ०—मीठे को मंडको अळसी को तेल, वो थारी जच्चा रांणी पथ लियौ राज।—लो.गी.

३ देखो 'पारथ' रू.भे.)

उ०—भीम पथ जिम करण भारथ निवहि चाडण नीर।—ल.पिं.

४ देखो 'पंथ' (रू.भे.)

उ०—उज्जैण महाराज वीर विक्रमादित्य राज करै। तहां सकळ प्रजा धरमपथ हालै।—सिंघासण बत्तीसी

रू०भे०—पाथ।

अल्पा०—पाथू।

पथक-सं०पु० [सं०] १ रास्ता चलने वाला राहगीर।

२ रास्ता बताने वाला।

पथचारी-सं०पु० [सं० पथचारिन्] राहगीर, पथिक।

पथछाया-सं०पु०यौ० [सं०पथ+राज०छाया] आकाश, आसमान (डि.को.)

पथदरसक-वि० [सं० पथदर्शक] मार्ग बताने वाला, रास्ता दिखाने वाला।

पथर—देखो 'पत्थर' (रू.भे.)

उ०—अकबर **पथर** अनेक, के भूपत भेळा किया। हाथ न लागो हेक, पारस रांण 'प्रतापसी'।—दुरसो आढ़ो

पथरकळा—देखो 'पत्थरकळा' (रू.भे.)

पथरचटौ—देखो 'पत्थरचटौ' (रू.भे.)

पथरचटौ—देखो 'पत्थरचटौ' (रू.भे.)

पथरणउ, पथरणौ-सं०पु० [सं० प्रस्तरणम्] गद्दा, घासिया।

उ०—ऊठौ म्हारा मारू वनड़ा करो नी पोढणियो, हिंगळू तौ ढोळयौ बनड़ा सिरख **पथरणौ**।—लो.गी.

रू०भे०—पतन्नौ, पाथरणि, पाथरणौ।

अल्पा०—पथरणियौ।

मह०—पाथर।

पथरणौ, पथरबौ—देखो 'पाथरणौ, पाथरबौ' (रू.भे.)

पथरणहार, हारौ (हारी), पथरणियौ—वि०।

पथरिग्रोड़ौ, पथरियोड़ौ, पथरयोड़ौ—भू०का०कृ०।

पथरीजणौ, पथरीजबौ—कर्म०वा०।

पथरफोड़ौ—देखो 'पत्थरफोड़ौ' (रू.भे.)

पथरफोड़ौ—देखो 'पत्थरफोड़ौ' (रू.भे.)

पथराणौ, पथराबौ-क्रि०स० [सं० प्रस्तरणम्] फैलाना, बिछाना।

उ०—पछै साहां पैहलो सड़ो सवळो बंधायो, हेठे हाडे सोर **पथरायो**, ऊपर घास पाथरियो।—नैणसी

पथराणहार, हारौ (हारी), पथराणियौ—वि०।

पथरायोड़ौ—भू०का०कृ०।

पथराईजणौ, पथराईजबौ—कर्म०वा०।

पथरावणौ, पथरावबौ, पाथरणौ, पाथरबौ, पाथराणौ, पाथराबौ, पाथरावणौ, पाथरावबौ—रू०भे०।

पथरायोड़ौ-भू०का०कृ०—फैलाया हुआ, बिछाया हुआ।
(स्त्री० पथरायोड़ी)

पथरावणौ, पथरावबौ—देखो 'पथराणौ, पथराबौ' (रू.भे.)

पथरावणहार, हारौ (हारी), पथरावणियौ—वि०।

पथराविग्रोड़ौ, पथरावियोड़ौ, पथराव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

पथरावीजणौ, पथरावीजबौ।—कर्म०वा०।

पथरावियोड़ौ—देखो 'पथरायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० पथरावियोड़ी)

पथरी-सं० स्त्री० [सं० प्रस्तरः+रा०प्र०ई] १ पक्षियों के पेट का वह भाग जहां अन्न पचता है।

२ मूत्राशय में छोटे-छोटे पत्थर के टुकड़े हो जाने का रोग।

३ कटोरी के आकार का बना पत्थर का पात्र, कूंडी, पत्थर का प्याला।

४ चकमक पत्थर जिस पर चोट पड़ने से आग उत्पन्न होती है।

उ०—प्रीत पुराणी ना पड़ै, जो सज्जन सूं लग्ग। सौ जुग जळ में रहै, **पथरी** तजै न अग्ग।—अज्ञात

५ पत्थर का वह टुकड़ा जिस पर रगड़ कर औजार तेज करते हैं, सिल्ली।

रू०भे०—पतरी, पत्थरी।

पथरीलौ-वि० [सं० प्रस्तरः, रा. प्र. ईलौ] पत्थरों से युक्त, पथरीला।

यौ०—पथरीलौ-मारग।

पथरोटी—देखो 'पथरोटौ' (अल्पा०, रू.भे.)

पथरोटौ-सं०पु० [सं० प्रस्तरः+रा०प्र०ओटौ] पत्थर का बना बड़ा पात्र, कूंडा।

अल्पा०—पथरोटी।

पथवारियौ—देखो 'पंथवारियौ' (रू.भे.)

पथवारी—देखो 'पंथवारी' (रू.भे.)

पथारी-सं०स्त्री० [सं० प्रस्तरणम्] १ बिछौना, बिस्तर (घास-फूस)

उ०—म्हारा रूंगता ऊभा व्हेग्या, अर म्हूं म्हारी **पथारी** सूं च्यार छः हाथ आघो जाय पड़यो।—रातवासौ

२ झड़बेरी के सूखे पत्तों को झाड़ लेने के बाद बचे हुए कांटों से युक्त भाग का वह अंश जिसे एक आदमी सिर पर उठा कर लेजा सके।

रू०भे०—पाथारी।

पथि—देखो 'पंथ' (रू.भे.)

उ०—बांण घोरणि विहुं **पथि** छूटइं, नाद सींगणि तणे गुणि सूंकइं।
—पं.पं.च.

पथिक-सं०पु० [सं०] १ रास्ता चलने वाला राहगीर।

२ रास्ता बताने वाला।

रू०भे०—पई, पथिग्र, पथी, पहिय, पही।

पथिचक्र-सं०पु० [सं०] फलित ज्योतिष का एक चक्र जिससे यात्रा का शुभ या अशुभ फल जाना जाता है।

पथी—देखो 'पथिक' (रू.भे.)

पथ्य—१ देखो 'पंथ' (रू.भे.)

उ०—पय मिथुला **पथ्यं** साझ समथ्थं हुण धनु हथ्थं पह पांणै। सिय परण सिधायै दुजपत आयै गरब गमाये जग जांणै।—र.ज.प्र.

२ देखो 'पारथ' (रू.भे.)

पथ्थर—देखो 'पत्थर' (रू.भे.)

पथ्य-सं०पु० [सं०] १ हलका और जल्दी पचने वाला आहार जो रोगी के लिए लाभदायक हो।

उ०—पथ्य लिये हुंता, पथ्य गोघळजी आपरै हाथि आरोगाडता।
—द.वि.

२ हित, मंगल, कल्याण।

३ हरं (हड़) का वृक्ष।

रू०भे०—पच, पछ, पत्थ, पथ।

पथ्या-सं०स्त्री० [सं०] हर्रं, हरड़ (नां.मा., ह.नां.मा.)

पद-सं०पु० [सं०] १ पैर, चरण, पांव।

उ०—१ पह तूं सदा भेख पद पूजै, दह्व विनां उपदेस न दूजै।
—सू.प्र.

उ०—२ अनंग न अंग उमंग इलोळ, हरी-पद संगम गंग हिलोळ।
—ऊ.का.

२ योग्यता के अनुसार नियत स्थान, दर्जा।

उ०—मंडळ मांह वसाय म्रग, थयौ कळंकी चंद। पायौ सिंह मयंद पद, हण हाथळ म्रगवंद।—बां.दा.

क्रि०प्र०—खोणौ, दैणौ, पाणौ, मिळणौ, लैणौ।

३ ईश्वरभक्ति संबंधी गीत, भजन। उ०—राधिका क्रस्ण रास, व्रंदावन व्रजविलास। गिनका गज अजामेळ, गीघ पद गाता।
—ऊ.का.

क्रि०प्र०—गाणौ, पढणौ, बोलणौ।

४ छंद श्लोकादि का चतुर्थांश, छंद का एक चरण।

उ०—सात मत्त पद प्रत पड़ै, सुगति छंद सो थाय। आठ मत्त अंतह तगण, पगण छंद कहवाय।—र.ज.प्र.

५ व्यवसाय, काम।

६ पैर का चिन्ह या निशान।

यौ०—पदचिन्ह।

७ व्याकरण में आया हुआ वह वाक्यांश या वाक्यखंड जिसका कोई अर्थ हो।

यौ०—पदच्छेद, पदव्याख्या, पदपरिचय।

८ उपाधि, पदवी। उ०—उदर ब्रांमणी अवतरचौ, पद संन्यासी पाय। चतुर नरां चित में चढचौ, दयानंद गुरु दाय।—ऊ.का.

९ वह स्थान जिस पर रह कर कोई विशिष्ट कार्य करता हो, ओहदा, स्थान।

१० मोक्ष, निर्वाण।

क्रि०प्र०—पाणौ, मिळणौ।

११ पुराणानुसार दान के रूप में दी जाने वाली वस्तु। यथा—जूते, छाता, कपड़े, बर्तन, आसन आदि पद-दान।

१२ कोमल, मुलायम* (डिं.को.)

१३ देखो 'पद्य' (रू.भे.)

रू०भे०—पय, पां, पांय, पांव, पाअ, पाइ, पाऊ, पाए, पाद, पावं, पाव, पाहि।

अल्पा०—पांवळियौ, पावळौ।

पदआलय-सं०पु० [सं० पदआश्रय] घर, गृह (अ.मा.)

पदक-सं०पु० [सं०] किसी धातु का बना सिक्कानुमा गोल अथवा चौकोर टुकड़ा जो किसी व्यक्ति को विशेष अच्छा या अद्भुत कार्य करने के उपलक्ष में दिया जाता है। तुकमा, मैडल।

यौ०—रजतपदक, स्वरणपदक।

रू०भे०—पदग, पदग्ग।

पदकझरणौ-सं०पु० [सं० पदक+राज० झरणौ] हीरा (अ.मा.)

पदकड़ी-सं०स्त्री० [देशज] एक आभूषण। उ०—मोती तणु हार, झूमणां तणु झमकार. कंठि कनकमय, पदकड़ी।—व.स.

पदकणौ, पदकबौ—देखो 'फुदकणौ, फुदकबौ' (रू.भे.)

पदकणहार, हारौ (हारी), पदकणियौ—वि०।

पदकिओड़ौ, पदकियोड़ौ, पदक्योड़ौ—भू०का०कृ०।

पदकीजणौ, पदकीजबौ—भाव वा०।

पदकियोड़ौ—देखो 'फुदकियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० पदकियोड़ी)

पदकुळक, पदकूळक—देखो 'पादाकुळक' (रू.भे.)

पदग, पदग्ग-सं०पु० [सं०पदग, पदाग्र] १ पैदल चलने वाला, प्यादा।

२ पैर का अगला भाग। उ०—विसाळ भाळ कंध रा, रसाळ छ्रति युरथरै। रहै पदग्ग रेख तें, सुखेद ते अरी डरै।—ऊ.का.

३ देखो 'पदक' (रू.भे.)

रू०भे०—पद।

पदचर-सं०पु०यौ० [सं०] पैदल चलने वाला, प्यादा।

पदचांपड़ी-सं०स्त्री० [सं० पद+राज० चांपड़ी] पगचम्पी। उ०—खाज खुरच खंधेडा थारी, पटुता सूं पदचांपड़ो। मरणै परणै विसर न करां, ऊपर देव न आपड़ो।—दसदेव

पदचार, पदचारी-सं०पु० [सं० पदचारिन्] पैदल चलने वाला व्यक्ति।

उ०—रुहल्यां पदचार सवार रयां, हथियार छतीस प्रकार हयां।
—मे.म.

रू०भे०—पादचारी।

पदचिह्न-सं०पु० [सं०] १ पूजन आदि कार्यों के लिए पत्थर या धातु पर खोदे गए किसी देवता के चरणों के चिन्ह।

२ चलते समय पैरों के जमीन पर बने चिन्ह या निशान।

पदठवणउ, पदठवणौ-सं०पु० [सं० पद+स्थापनम्] पांवड़ा।

उ०—१ आचरिज पद थापियउ, सइं हथि जिणचंद सूर हो पूजजी। पदठवणउ क्रमचंद कियउ, अकबर साहि हजूर हो पूजजी।—स.कु.

उ०—२ पारिख साह भला पुण्यात्मा, सांमीदास सूरदासौ जी। पदठवणौ कीधौ मन प्रेम सूं, वित्त खरच्या सुविलासौ जी।
—ध.व.ग्रं.

पदतळ-सं०पु० [सं० पद+तल] पैर का तलुवा ।
रू०भे०—पयतळि, पादतळ ।
पदत्याग-सं०पु० [सं०] किसी पद को छोड़ने की क्रिया ।
पदत्र-सं०पु० [सं०] उपानह, जूती । उ०—तस पदत्र बिच आय छिप्यौ । उड़ि फन सु गरळमय पय ।—वं.भा.
पदत्रभंग-सं०पु० [सं०] श्रीकृष्ण (अ.मा.)
पदद्रव-सं०पु० [सं० पदद्रवः] भागना क्रिया, पलायन ।
उ०—जठै घणां रा कचरघांण में आपरा अनीक रा पदद्रव रा प्रवाह में पड़ियौ नवाब कासिमखांन १ समेत कुमार दारासाह ४०/१।२ भी ठहरण न पायौ ।—वं.भा.
पदपलव, पदपल्लव-सं०पु०यौ० [सं० पदपल्लव] पैर की अंगुली ।
उ०—१ ऊपरि पदपलव पुनरभव ओपति, निमळ कमळ दळ ऊपरि नीर । तेज कि रतन कि तार कि तारा, हरिहंस सावक ससिहर हीर ।—वेलि
उ०—२ वणियां अणवट बीछिया, पदपल्लव छवि पूर । की कोमळता रंग कहां, चंपकळी चकचूर ।—बां.दा.
पदपीठ-सं०स्त्री० [सं० पदपीठम्] पादरक्षिका, जूती (अ.मा.)
पदबंध—सं०पु० [सं०] १ वह गद्य जिसमें अनुप्रासों और समासों की अधिकता हो । २ पद्यबन्ध ।
पदबी—देखो 'पदवी' (रू.भे.)
पदम-सं०पु० [सं० पद्म] (स्त्री० पदमण, पदमणी) १ कमल (डिं.को.)
उ०—वदन पदम सम, कनक पदम क्रम । पदम-पांणि उपम, हुई पाय जु ।—स.कु.
२ विष्णु का एक आयुध । उ०—चतुरभुज रूपं अधिक अनूपं विरद भक्तवछळदा है । संख चक्र विराजै सोभा छाजै, गदा पदम भळकंदा है ।—गजउद्धार
३ सामुद्रिक शास्त्रानुसार पैर में बना कमल का चिन्ह ।
उ०—राजा वीर विक्रमादित्य आयौ छै । पद में पदम री चिन्ह छै ।—पंचदंडी री वारता
४ नव-निधियों में से एक निधि का नाम (नां.मा.) ।
यौ०—पदमनिधि ।
५ गले में पहिनने का एक प्रकार का गहना ।
६ हाथी के मस्तक व सूंड पर बनाए जाने वाले चित्र ।
७ पदम या पदमाख वृक्ष ।
८ सर्प के सिर पर बना चिन्ह ।
९ बिल्ली के पंजे पर बना चिन्ह ।
१० वास्तु विद्या के अनुसार एक ही कुरसी पर बना आठ हाथ का चौड़ा घर ।
११ एक प्रकार के नाग की जाति, इस जाति का नाग ।
१२ गणित में सोलहवें स्थान की संख्या ।
उ०—दळ चढ़े पूर सामंद्र दुति, कमंध दरगह कांमरा । फिर मिळै पदम अढ़ार कपि, रांवण मारण राम रा ।—सू.प्र.
१३ योग के अनुसार शरीर के भीतरी भाग का एक कल्पित कमल ।
१४ सोलह प्रकार के रतिबन्धों में से एक ।
१५ बलदेव, दाऊ ।
१६ पुराणानुसार एक नरक का नाम ।
१७ पुराणानुसार जम्बू द्वीप के दक्षिण पश्चिम का एक देश ।
१८ जैनों के अनुसार भारत का नवां चक्रवर्ती ।
१९ एक पुराण का नाम ।
२० जैनों के एक तीर्थंकर, पद्मप्रभु ।
उ०—रिसभ, अजित, संभव नमुं, अभिनंदन अभिरांम । सुमति, पदम, सुपासजी, पहुंता सिवपुर ठांम ।—जयवांणी
२१ लखपत पिंगल के अनुसार दो सगण, एक जगण, एक भगण, एक रगण; एक सगण और अन्त में ह्रस्व वर्ण वाला वर्ण वृत्त ।
२२ घोड़े के कंधे और बगल की भँवरी (शुभ) (शा.हो.)
२३ आभूषणों पर खुदाई किया गया एक प्रकार का चिन्ह ।
२४ वार व नक्षत्र संबंधी २८ योगों में से चौदहवां योग (ज्योतिष)
२५ हाथी, गज ।
रू०भे०—पद्म, पदमु, पदुम, पदम्म, पद्म ।
पदमअंजणी, पदमअंजनी-सं०पु० [?] एक प्रकार का घोड़ा जिसके दाहिने अथवा बायें पसवाड़े पर लाल रंग का धब्बा होता है, यह अशुभ होता है ।
पदमजूण, पदमजोणी—देखो 'पदमजोनी' (रू.भे.)
पदमण—१ देखो 'पदमणी' (रू.भे.)
उ०—१ पदमण रिख असमांन पहूंती, पंखां विनां जिहांन पढीजै । केवट कुळ प्रतपाळ दया कर, चरण पखाळ जिहाज चढीजै ।—र.ज.प्र.
उ०—२ एकै पदमण वासतै, सींघल गयौ 'रतन्न' । ऊमरकोट न आवियौ, मतौ कियौ की मन्न ।—बां.दा.
उ०—३ अलियळ सहज सुबास वस, रहै निकट दिन रात । हिमकर बदनी हंसगत, जुवती पदमण जात ।—बां.दा.
उ०—४ काळी फांणी कोफी फांमण, अपणी परणी आछी । अवछर आभ थवर अरधंगा, पदमण घरिये पाछी ।—ऊ.का.
पदमणपती—देखो 'पदमणीपति' (रू.भे.)
पदमणि—देखो 'पदमणी' (रू.भे.)
उ०—पदमणि पूंगळ री ऊगळ गळ आगै, लंजा हंजादे गंजाग्रह लागै ।—ऊ.का.
पदमणिपति—देखो 'पदमणीपति' (रू.भे.) (अ.मा.)
पदमणिय—देखो 'पदमणी' (रू.भे.)
उ०—अति चलति सुगति दुति अमित विद्ध, पदमणिय हंस किरि गुरु प्रसिद्ध ।—रा.रू.

पदमणी-सं०स्त्री० [सं० पद्मिनी] १ कोक शास्त्र के अनुसार स्त्रियों की चार जातियों में से सर्वश्रेष्ठ जाति की स्त्री।
उ०—१ सवाग भाग सुंदरी, अनुराग लाग सातरी, हसतिणि, चितरणी, पदमणी घणी जणी वणी ठणी हाथां रूमाल बीड़ां भू भरिया।—पनां वीरमदे री बात
उ०—२ गोली गोरे गात, पर घर दीसै पदमणी। पतलज लागे पात, रती न कीजै राजिया।—किरपारांम
२ चित्तौड़ के राव रत्नसिंह की रानी, पद्मिनी।
३ कमलिनी या छोटा कमल।
४ कमल से युक्त जलाशय।
५ हथिनी।
६ स्त्री। उ०—एक नहीं अपघर इसी, कैसा हम पतिसाह। याक एती पदमणी, देखत उपजै दाह।—पं.पं.चो.
७ गाथा छंद का एक भेद जिसमें सकार नहीं आता।
८ कुमुदनी।
रू०भे०—पदमण, पदमणि, पदमणिय, पदमिण, पदमिणि, पदमिणी, पदमिनि, पदमी, पदम्मिणी, पदवन, पद्मणी, पद्मनी, पद्मिनी।
पदमणीपति, पदमणीपती-सं०पु० [सं० पद्मिनीपति] १ सूर्य, भानु।
रू०भे०—पदमणपति, पदमणिपति।
२ चन्द्रमा (ना.मा.)।
पदमणो-वि० [?] चतुर, बुद्धिमान। उ०—हूकी लेतां हाथ में, चेतो गयो चुळाय। पड़ै धमांधम पदमणां, अधमाधम अकुळाय।
—ऊ.का.
पदमधर-सं०पु० [सं० पद्म-धर] १ ईश्वर (नां.मा.)
२ विष्णु (डि.को.)
पदमनाग—देखो 'पदम-११'।
(स्त्री० पदमनागणी)
पदमनाभ-सं०पु० [सं० पद्मनाभः] १ श्रीकृष्ण (अ.मा.)
२ ईश्वर, परमेश्वर (नां.मा.)
३ विष्णु।
रू०भे०—पदमनाभ, पद्मनाभ, पद्मनाभि।
३ ब्रह्मा (नां.मा.)
४ जैन मतानुसार भविष्यत् काल के प्रथम तीर्थंकर का नाम।
—(स.कु.)
पदमबंध-सं०पु० [सं० पद्म-बंधु] सूर्य, भानु (नां.मा.)
पदमभू—देखो 'पद्मभू' (रू.भे.)
पदमराग-सं०पु० [सं० पद्मराग] मानिक या लाल नामक रत्न।
उ०—करि ईंट नीलमणि कादो कुंदण, थंभ लाल पट पांच थिर। मंदिर गोख सु पदमरागमै, सिखरि सिखि रमै मंदिर-सिर।—वेलि
यौ०—पदमरागमणि, पदमरागमिणि।
रू०भे०—पद्मराग।
पदमरागपटळ-सं०पु० [सं० पद्मराग+पटल] एक प्रकार का वस्त्र।
उ०—मोती तणा भूंबखा उंबाव्या मांहि पदमराग पटळ संबाव्या।
—व.स.
पदमरागमणि, पदमरागमिणि-सं० पु० [सं० पद्मराजमणि] पद्मराग जाति की मणि, लाल मणि।
पदमसिला-सं०स्त्री० [सं० पद्मशिला] कुए के ऊपरी भाग पर लम्बाई की ओर रखी जाने वाली वह पत्थर की पट्टी जो रहंट की लाट को टिकाए रखने वाले पत्थर पर दबाव का काम करती है।
पदमहत, पदमहथ-सं०पु० [सं० पद्महस्त] सूर्य।
उ०—भलो रांम 'सगराण' इम, अघदची मुख भणै। दुजड़हत दस सहँस चोल दीधो। पदमहथ मयंक रो ग्रहण व्है अघपहर, कलम रो ग्रहण दिन तीस कीधो।—महारांणा संग्रांमसिंह रो गीत
पदमा-सं०स्त्री० [सं० पद्मा] १ लक्ष्मी (डि.को.)
२ नव निधियों में से एक निधि (ह.नां.मा.)
३ रुक्मिणी। उ०—लोकमाता, सिंधुसुता स्री लिछमी, पदमा, पदमालया, पदमा प्रभा। अवर ग्रहे अस्थिरा इंदिरा रांमा हरिवल्लभा रमा।—वेलि
रू०भे०—पद्मा, पम्हा।
पदमाएकादसी—देखो 'पद्माएकादसी' (रू.भे.)
पदमाक—देखो 'पदमाक्ष' (रू.भे.)
पदमाकर—देखो 'पद्माकर' (रू.भे.)
पदमाक्ष-सं०पु० [सं०] १ फलित ज्योतिष के २८ योगों में से एक योग (ज्योतिष)
२ पद्मकाष्ठ नामक एक वृक्ष (अमरत)
३ कमलगट्टा, कमल के बीज (अमरत)
४ विष्णु।
रू०भे०—पदमाक, पदमाख।
पदमाख—देखो 'पदमाक्ष' (रू.भे.)
उ०—पीपळ पाडळ पीपळी, पीठवनी पदमाख। पारिजात पीलूवड़ै, पीपरि पत्तां पाख।—मा.कां.प्र.
पदमापित-सं०पु० [सं० पद्मापिता] समुद्र (अ.मा.)
पदमालय—देखो 'पद्मालय' (रू.भे., अ.मा.)
पदमालया—देखो 'पद्मालया' (रू.भे.)
उ०—लोकमाता सिंधुसुता स्री लिछमी, पदमा पदमालया प्रभा। अवर ग्रहे अस्थिरा इंदिरा, रांमा हरिवल्लभा रमा।—वेलि
पदमालयापित-सं०पु० [सं० पद्मालयापिता] समुद्र।
पदमावती-सं०स्त्री० [सं० पद्मावती] १ ३२ मात्राओं वाला एक छंद जिसमें १०, ८, ६ और ८ पर यति होती है।
२ लक्ष्मी। उ०—वेद च्यारह ऐनै ब्रह्म वाखांणियो, जडाधर सरीखे प्रमेसर जांणियो। पेख पारवती अनै पदमावती, अनंत रै ऊपरा

उतारी आरती। पी.ग्रं.
३ चित्तौड़ के राव रत्नसिंह की रानी, पद्मिनी।
४ पुराणानुसार एक अप्सरा का नाम।
५ उज्जयिनी का एक प्राचीन नाम।
६ स्त्रियों की चार जातियों में से सर्वोत्तम जाति (कोक शास्त्र)
उ०—स्त्री की केती जाति, कहि न राघव सुविचारी। रूपवंत पति-व्रता, सूंघ साहइ सुपियारी। हस्तनी चित्रणी कर संखिनी, पुहवी बडी पदमावती। इम भणइ विप्र साचउ वयण, आलमसाह अलावदी। —प.च.चौ.

रू०भे०—पउमावइ, पद्मावती।

पदमासण—देखो 'पद्मासन' (रू.भे.)
उ०—पदमासण आसण जोग पूर। क्रोध में हुतासण तप करूर। —वि.सं.

पदमिण, पदमिणि पदमिणी, पदमिनि, पदमी—देखो 'पदमणी' (रू.भे.)
उ०—१ पूछ्यां थी वादळ कहै, मेळि करण रै मेळि रे भाई। जाइ कहउ हुं आवयउ, पदमिणि तुम नइ गेलि रे भाई। —प.च.चौ.
उ०—२ जीव विना जिम देहुड़ी, वारि विना जिमि मच्छि। पुरुस बिना तिम पदमिनी, साचूं संभलि वच्छि। —मा.कां.प्र.
उ०—३ रूप अनूपमा रंभ सम, उवा पदमी कहै याह। वार वार विह्वल थकी, जपै आलिमसाह। —प.च.चौ.

पदमूळ-सं०पु० [सं० पदमूल] पैर का तलुआ।

पदम्भ—देखो 'पदम' (रू.भे.)
उ०—१ अड़ीखंभ जोधा पदम्भ अठारां। मिळै थाट नीसांण वाजै अठारां। —सू.प्र.
उ०—२ उभै कर दूण आवद्ध असंख। सारंग पदम्भ गदा चक्र संख। —ह.र.
उ०—३ सठिक त्रकूंण कर चहन सम्म। पै उरध रेख जळहळ पदम्म। —सू.प्र.

पदम्मिणी—देखो 'पदमणी' (रू.भे.)

पदम्मी-सं०पु० [सं० पद्मिन्] (स्त्री० पदमण, पदमणी) हाथी (डि.को.)

पदर-सं०पु० [देशज] ड्योढीदारों के बैठने का स्थान।

पदराणो, पदराबौ—देखो 'पधराणी, पधराबौ' (रू.भे.)
पदराणहार, हारौ (हारी), पदराणियौ—वि०।
पदरायोड़ौ—भू०का०कृ०।
पदराईजणो, पदराईजबौ—कर्म वा०।
पदरायोड़ौ—देखो 'पधरायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० पदरायोड़ी)

पदरावणी—देखो 'पधरावणी' (रू.भे.)

पदरावणौ, पदरावबौ—देखो 'पधराणी, पधराबौ' (रू.भे.)
पदरावणहार, हारौ (हारी), पदराविणयौ—वि०।
पदराविग्रोड़ौ, पदरावियोड़ौ, पदराव्योड़ौ—भू०का०कृ०।
पदरावीजणो, पदरावीजबौ—कर्म०वा०।

पदरावियोड़ौ—देखो 'पधरायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० पदरावियोड़ी)

पदरी—देखो 'पद्धरी' (रू.भे.)

पदवन—देखो 'पदमणी' (रू.भे.)
उ०—अला अनरज तूं हीज भरतार ओखा, अला सहज पदवंन रा तूं ही सरीखा। —पी.ग्रं.

पदवी-सं०स्त्री० [सं०] १ मार्ग, रास्ता (डि.को.)
२ पद, उपाधि।
उ०—गयौ ग्राह वैकुंठ कूं, पूरण पदवी पाय। —गजउद्धार
रू०भे०—पद्दवी।

पदांसुक-सं०पु० सं० पदांशुक] वस्त्र विशेष।
उ०—विद्यापुरीग्रां, देकापाटकीग्रां, कस्मीरीग्रां, धूमराई, खीरोदक, पदांसुक, चीनांसुक, खांडकी। —व.स.

पदाकांती-सं०पु० [सं० पदक्रान्त] पदाघात, ठोकर ?
उ०—पादाकांती पदकांती विन पावै, आरचावरतो जन अन बिन अकुळावै। —ऊ.का.

पदाघात-सं०पु० [सं०] पांव से किया गया आघात, ठोकर।

पदाणौ, पदाबौ—देखो 'पिदाणौ, पिदाबौ' (रू.भे.)
पदाणहार, हारौ (हारी), पदाणियौ—वि०।
पदायोड़ौ—भू०का०कृ०।
पदाईजणो, पदाईजबौ—कर्म०वा०।

पदात, पदाति-सं०पु० [सं० पदातः पदातिः] १ पैदल, प्यादा।
उ०—राजति अति एण पदाति कुंजरथ, हंसमाळ वंधि लास हय। ढालि खजूरि पूठि ढळकावै, गिरिवर सिणगारिया गय। —वेलि
२ छंद शास्त्र में डगण के चतुर्थ भेद का नाम। (डि.को.)
रू०भे०—पदायत।

पदाधिकारी-सं०पु० [सं०] किसी पद पर रह कर अधिकारपूर्वक कार्य करने वाला व्यक्ति, ओहदेदार।

पदानुग-सं०पु० [सं०] अनुसरण करने वाला, अनुयायी।

पदायत—देखो 'पदात' (रू.भे.)
उ०—राजा मंत्री गज तुरी, ऊंट पदायत दीठ। विणकारणि मूंया वढ़ी, चढ़ी चउसठि पीठ। —मा.कां.प्र.

पदायोड़ौ—देखो 'पिदायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० पदायोड़ी)

पदारथ-सं०पु० [सं० पदार्थ] १ शास्त्रानुसार मोक्ष के चार साधन—अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष में से एक।
उ०—जगदंबा आरूढ़ जस, उदा करौ उपचार। काळी गुण भुजियां करग, चढ़ै पदारथ च्यार। —अ.मा.

२ चीज, वस्तु ।

उ०—नये-नये पदारथांन, खांन खोजते नहीं। गुमान मेटनें गुनी, प्रमांन सोभते नहीं ।—ऊ.का.

पदारथवाद-सं०पु० [सं० पदार्थवाद] वह सिद्धांत जिसके अनुसार ईश्वर की सत्ता को न मान कर भौतिक पदार्थों को ही सब कुछ माना जावे।

पदारथवादी-सं०पु०यौ० [सं० पदार्थवादी] पदार्थवाद को मानने वाला व्यक्ति ।

पदारथविज्ञान-सं०पु०यौ० [सं० पदार्थविज्ञान] पदार्थ-विज्ञान शास्त्र, भौतिकविज्ञान ।

पदारथविद्या-सं०स्त्री०यौ० [सं० पदार्थविद्या] पदार्थों का ज्ञान कराने वाली विद्या।

पदारपण-सं०पु० [सं० पदार्पण] किसी स्थान पर आने या पैर रखने की क्रिया ।

क्रि० प्र०—करणौ, कराणौ, होणौ ।

पदारौ-सं०पु० [सं० पदधारणम्] शरीर में किसी देव विशेष की उपस्थिति अनुभव कर, उसके अनुसार अंग संचालन करने की क्रिया ।

क्रि०प्र०—आणौ।

रू०भे०—पधारौ ।

पदावळी-सं०स्त्री० [सं० पदावली] पद्यों का संग्रह ।

पदुम—देखो 'पदम' (रू.भे.)

पदोड़-सं०स्त्री० [देशज] १ एक प्रकार की बकरी (शेखावाटी)

२ देखो 'पदोड़ौ' (मह०, रू.भे.)

पदोड़ौ-सं०पु०—अधिक पादने वाला ।

मह०—पदोड़ ।

पदोदक-सं०पु० [सं०] चरणामृत ।

रू०भे०—पादोदक ।

पद्मनाभ—देखो 'पदमनाभ' (रू.भे.)

उ०—एकै खिण मांय भांजै घर आभ । निपावै एकण पद्मनाभ ।

—ह.र.

पद्दवी—देखो 'पदवी' (रू.भे.)

पद्धड़ौ देखो 'पद्धरौ' (रू.भे.)

पद्धटिका—देखो 'पज्झटिका' (रू.भे.)

पद्धति, पद्धती-सं०स्त्री० [सं० पद्धति] १ मार्ग, रास्ता ।

उ०—अर दाहिमा रौ तौत्र लागतां ही प्रांमार सारंग रौ प्रांण कढण पैंठण री पद्धति सूं डुळियौ ।—वं.भा.

२ रीति, रिवाज, परम्परा ।

३ कार्यप्रणाली, ढंग ।

रू०भे०—पधिति ।

पद्धर—१ देखो 'पाधरौ' (मह०, रू.भे.)

उ०—आडेवळ 'अभो' नृप आयौ, करि सर पद्धर कूच करायौ ।

—रा.रू.

२ देखो 'पाधर' (रू.भे.)

पद्धरपति, पद्धरपती—देखो 'पाधरपतसा' (रू.भे.)

उ०—विटि सनाहनि थट उर, सकल जुद्ध तन सज्जि । चढे वीर पद्धरपती, पूर नगारति वज्जि ।—ला.रा.

पद्धरय—देखो 'पाधर' (रू.भे.)

उ०—गिर भ्रंगरयं । विय पद्धरयं । पुळि जंगमयं । रुळि कंजमयं ।

—गु.रू.बं.

पद्धरि, पद्धरी-सं०पु० [?] १ सोलह मात्राओं व अंत में जगण वाला मात्रिक छंद ।

२ देखो 'पाधरौ' (रू.भे.)

रू०भे०—पदरी, पधड़ी, पधरी, पाधड़ी, पाधरी ।

पद्धरौ—देखो 'पाधरौ' (रू.भे.)

उ०—परमेसर पद्धरे, हुवै आनद घणाई । परमेसर पद्धरे, कदै नह चिंता काई । परमेसर पद्धरे, दुवरा त्रिस भूख न आवै । परमेसर पद्धरे, आठ सिध नव निध पावै । कवि 'जगा' राखिद्रिढ़ जीव करि, मिटै न लेख करम्म रौ । अह दीह सबै ही पद्धरे, ज्यां परमेसर पद्धरौ ।—जग्गो खिड़ियौ

(स्त्री० पद्धरी)

पद्म—देखो 'पदम' (रू.भे.)

उ०—साचउं कहु सुलखणी ! छांडइ नहीं अे छद्म । संक न आणइ सुंदरी, पांच फणा सिरि पद्म ।—मा.कां.प्र.

पद्मक्षेत्र-सं०पु०यौ० [सं०] उड़ीसा प्रांत के एक तीर्थ का नाम ।

पद्मज-सं०पु० [सं०] ब्रह्मा ।

पद्मजूण, पद्मजोण, पद्मजोणी, पद्मजोनि-सं०पु० [सं० पद्मयोनि]

१ ब्रह्मा (डि.को.)

२ बुद्ध का एक नाम ।

रू०भे०—पदमजूण, पदमजोण ।

पद्मणी—देखो 'पदमणी' (रू.भे.)

उ०—१ अनेक पद्मणी अवास, रूप भोमि रच्च ए। अनेक राग रंग ओप, नृत्तकार नच्च ए ।—सू.प्र.

उ०—२ देवी खेचरी भूचरी भद्रखेमा । देवी पद्मणी सोभणी कळहप्रेमा ।—देवि.

उ०—३ व्यास कहै सुर नर मन मोहनी रे, अदभुत रूप अनेक। है चितहरणी तुरणी महल में रे, पिण नहीं पद्मणी एक ।

—प.च.चौ.

पद्मनाभ, पद्मनाभि—देखो 'पदमनाभ' (रू.भे.) (अ.मा.)

पद्मनिधि-सं०स्त्री०यौ० [सं०] नव-निधियों में से एक ।

रू०भे०—पदमनिधि ।

पद्मनी—देखो 'पदमणी' (रू.भे.)

उ०—१ विण तरुअर जिमि वेलडी, कंठ विना जिम माळ । पुरुस विहूणी पद्मनी, किणि परि ठेलिसि काळ ।—मा.कां.प्र.

उ०—२ काका भत्रीजा बिहुं, गोरउ अरु बादल्ल । पद्मनी काजि भारथ कीउ, हडमत जिम सर झल्ल ।—प.च.चौ.

पद्मप्रभ, पद्मप्रभु-सं०पु०यौ० [सं० पद्म+प्रभु] वर्तमान काल के छठे जैन तीर्थंकर (स.कु.)

पद्मबंध-सं०पु०यौ० [सं०] कमल का आकार बनाने वाले अक्षरों का एक चित्र काव्य ।

पद्मभास-सं०पु० [सं०] १ विष्णु । २ शिव ।

पद्मभू-सं०पु० [सं०] ब्रह्मा ।

रू०भे०—पदमभू ।

पद्ममुद्रा-सं०स्त्री० [सं०] दोनों हथेलियों को सामने करके उंगलियाँ नीचे कर अंगूठे मिलाने की एक मुद्रा (तांत्रिक)

पद्मराग—देखो 'पदमराग' (रू.भे.)

पद्मरेखा-सं०स्त्री०यौ० [सं०] भाग्यवान के लक्षण की एक हथेली की रेखा जो प्राकृतिक होती है ।

पद्मलांछण-सं०पु०यौ० [सं० पद्मलांछन] १ ब्रह्मा ।

२ कुबेर । ३ सूर्य ।

पद्मलांछणा-सं०स्त्री० [सं० पद्मलांछना] १ सरस्वती का एक नाम ।

२ तारा का एक नाम ।

पद्मलेस्या-सं०स्त्री० [सं० पद्मलेश्या] जैन मतानुसार छः लेश्याओं में से पांचवी लेश्या जिसकी स्थिति में पहुँच कर मनुष्य अल्प क्रोध वाला, अल्प मान वाला, अल्प माया वाला, अल्प लोभ वाला, शान्त चित्त वाला, अपनी आत्मा का दमन करने वाला, स्वाध्यायादि करने वाला, तप करने वाला, परिमित बोलने वाला, उपशान्त और जितेन्द्रिय बन जाता है ।

रू०भे०—पम्मलेसा, पम्हलेसा ।

पद्महृद—देखो 'पदमहृत' (रू.भे.) (डिं.को.)

पद्मा—देखो 'पदमा' (रू.भे.)

पद्माएकादसी-सं०स्त्री०यौ० [सं०] भाद्रपद के शुक्ल पक्ष की एकादसी ।

रू०भे०—पदमाएकादसी ।

पद्माकर-सं०पु० [सं०] १ तालाब, सरोवर ।

२ कमलयुक्त तालाब ।

रू०भे०—पदमाकर ।

पद्मालय-सं०पु० [सं०] १ समुद्र, २ ब्रह्मा ।

रू०भे०—पदमालय ।

पद्मालया-सं०स्त्री० [सं०] १ लक्ष्मी, २ रुक्मिणी, ३ लौंग ।

रू०भे०—पदमालया ।

पद्मावती—देखो 'पदमावती' (रू.भे.)

पद्मावळि, पद्मावळी-सं०पु० [सं० पद्मावलि] एक वस्त्र विशेष ।

उ०—पुतलीउं, बहुमूळ, घुणौलियं, मोणीयं, काळं, फूटडउं, रातउं, फूटडऊं, सूपडती, मेघावळि, मेघडंबर, पद्मावळि, पद्मोत्तर इत्यादि वस्त्राणि ।—व.स.

पद्मासण, पद्मासन-सं०पु० [सं० पद्मासन] १ योग के चौरासी आसनों के अन्तर्गत एक प्रसिद्ध आसन । इसके चार भेद होते हैं—

१ बद्ध पद्मासन—दाहिने पैर को बायें पैर के मूल में और बायें पैर को दाहिने पैर के मूल में स्थापित किया जाता है । फिर गरदन को नीची नमाकर ठुड्डी को हृदय पर लगाया जाता है । पश्चात् पृष्ठ भाग से दोनों हाथों को घुमाकर दाहिने हाथ से बायें पैर का और बायें हाथ से दाहिने पैर का अँगूठा पकड़ा जाता है । दृष्टि को नासिका के अग्र भाग पर ठहरा कर शरीर को सीधा और निश्चल करके बैठा जाता है ।

२ अर्ध पद्मासन—दाहिने पैर को बायें पैर के मूल में और बायें पैर को दाहिने पैर के मूल में स्थापित किया जाता है । दोनों पावों की एडियों पर बायें हाथ के पंजे को सीधा रखकर उसके ऊपर दाहिने हाथ के पंजे को रखा जाता है । चिबुक के हृदयो समीप रख कर गुदा संकोच करके अपान का ऊर्ध्व आकर्षण किया जाता है । दृष्टि को नासिका के अग्र भाग पर रखना चाहिये ।

३ ऊर्ध्व पद्मासन—प्रथम, अर्ध पद्मासन की तरह बैठकर, सिर को जमीन पर रखकर दोनों हाथों के आधार से आसन को आकाश की ओर उठा कर ऊंचा कर के स्थिर होना चाहिये ।

४ वामार्ध पद्मासन—बांये पांव को घुटने से लौटाकर दाहिने पांव की जांघ पर रखना और दाहिने पांव का पंजा बायें पांव के घुटने के नीचे पृथ्वी पर रखकर बैठना होता है । इसे प्रौढ़ासन भी कहते हैं । बड़े लोगों के सामने इस आसन से बैठना शिष्टता समझा जाता है ।

२ संभोग के चौरासी आसनों के अन्तर्गत एक आसन ।

रू०भे०—पदमासण ।

पद्मिनी, पद्मीनी—देखो 'पदमणी' (रू.भे.)

उ०—वारि वसंती पद्मनी, ससीहर सूरि आकासि । महीपति ! तिम महिला तणा, मन तो माधव पासि ।—मा.कां.प्र.

पद्मोतर-सं०पु० [सं०] एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।

उ०—सूपडति, मेघावळि, मेघडंबर, पद्मावती, पद्मोतर इत्यादि वस्त्रादि ।—व.स.

२ एक राजा का नाम ।

उ०—नाकी राखण रे कारणे रे, 'माधव' धान की खंड में जाय रे, पद्मोत्तर री इज्जत पाड़नै रे, सूंपी द्रोपदी लाय रे ।—जयवांणी

पद्य-वि० [सं०] १ जिसमें कविता के पद या चरण हों ।

उ०—तूं ही पिंगळा डिंगळा पद्य गद्या । तूं ही वैदिका लौकिका छंद विद्या ।—मे.म.

२ पदचिन्हों से चिन्हित ।

३ चरण सम्बन्धी ।

४ पिंगल के अनुसार चार चरणों वाला नियमित मात्रा या वर्ण का छंद । उ०—गद्य-पद्य वे जगत में, जांण छद की जात । सम पद पद्य सराहजै. छुटक गद्य छ जात ।—र.ज.प्र.

क्रि०प्र०—कंणो, जोड़णो, पढणो, बणाणो, रचणो ।
रू०भे०—पद ।
विलो०—गद्य ।

पघड़ी—देखो 'पद्धरी' (रू.भे.)

पघर—देखो 'पाघरी' (मह.,रू.भे.)

पधराणो, पधरावो-क्रि०स० [सं० प्र+धारणम्]
१ आदरपूर्वक ले जाना, इज्जत से ले जाना ।
उ०—१ अवदुल्लै उच्छब घरै, साम्हौ आय वधाय । मिळ 'अगजीत' कमंध सूं, पधरायौ सुख पाय ।—रा रू.
उ०—२ पडे उच्छब धार उर, विध सम समै विचार । पधरायो नवकोटपत, दरसण करण दुवार ।—रा.रू.
२ स्थापित करना ।
उ०—मिळ कूरम सांमुहे पेख सुख लहे अपंपर । पधरायो तोरण सप्रेख दुति जेम दिनंकर । —रा.रू.
३ देवता की स्थापना करना । उ०—१ मकरांणा रा पाहण री मूरत नवी देवी चंडेस्वरी घळाव मूळराजजी जैसळमेर मंदिर नवै पधरायी ।—वां.दा ख्यात
उ०—२ पीछे बरस तीन कोडमदेसर रया । धीकेजी आ जागा आछी देखी तद तळाव री पाळ माथै गोरंजी री मूरति पधराई । चौक करायो ।—द.दा.
४ हड़प जाना, छीन लेना । उ०—१ दो हजार रुपया एकला पधरावगा ।—वां.दा. ख्यात
उ०—२ घोड़ा जोड़ा पागड़ी, मुठवाळीर मरोड़ । पाटण में पधरायगा, रकम पांच राठौड़ ।—अज्ञात
५ डाल देना, फेंक देना । उ०—घुड़लै नै कुए में पधरायद्यो ।
—वां.दा. ख्यात
६ आभूषण या कपड़े आदि का धारण कराना ।
उ०—प्रेम प्रभा जरकस री जांमी परम प्रभू रै अंग पधराय । मन-मोहण सुमनां री माळा जगजांमी रै गळ पधराय ।—गी.रां.
७ भेंट करना । उ०—करि ओछाव कहाव करि, ऊहवि पति आंवेर । उर भायो दूलह 'अभो', पधरायो नारेळ ।—रा.रू.
८ खाना, हजम करना ।
९ लाना । उ०—१ ऐरापति असवार इळ, सुजि सिंगार सिंदूर पधरायो गजराज सो, स्रो महाराज हजूर ।—रा.रू.
१० बैठना, विराजमान करना । उ०—वहि मिळी घड़ी जाइ घणां वांछतां, घण दीहां अंतरै घरि । अंकमाळ आपे हरि आपणि, पधरायी स्री सेज परि ।—वेलि
उ०—२ मुहलदार मेल्हीया मुहरइं, खोजा असली जिके खरा । वर पधरायउ तियां भली विध, धुर मुखमुल अउछाड धरा ।
—महादेव पारवती री वेलि
११ प्रवेश कराना । उ०—पोह निज रंगमहल पधराए । ऊप्रमि वीर संघानक आए ।—सू.प्र.
१२ लेना ।
१३ ले जाना । उ०—सतरै संमत सतावनै, मासै उत्तम माह । लाल वधै हित 'होठलू', पधरायो नरनाह ।—रा.रू.
१४ भेज देना । उ०—१ हुजदारां आपरां, वेग ताकीद करावो । दखिण गुजराति दिसा, पेसखानां पधरावो ।—सू.प्र.
उ०—२ तो गोपाळदास कही कुंवरजी नूं बाहिर पधराम्रो सो कुंवर नूं बाहिर लेय आया ।—गोपाळदास गौड़ री वारता
१५ प्रकट करना, जाहिर करना ।
पधराणहार, हारो (हारी), पधराणियो—वि० ।
पधरायोड़ो—भू०का०कृ० ।
पधराईजणो, पधराईजबो—कर्म वा० ।
पदराणो, पदरावो, पदरावणो, पदरावबो, पधरावणो, पधरावबो, पाधारणो, पाधारवो—रू०भे० ।

पधरायोड़ो-भू०का०कृ०—१ आदरपूर्वक ले जाया हुआ ।
२ स्थापित किया हुआ ।
३ स्थापित किया हुआ (देवता) ।
३ हड़पा हुआ, छीना हुआ ।
५ डाला हुआ, फेंका हुआ ।
६ आभूषण या कपड़े धारण किया हुआ ।
७ भेंट किया हुआ ।
८ खाया हुआ, हजम किया हुआ ।
९ लाया हुआ ।
१० बैठाया हुआ, विराजमान किया हुआ ।
११ प्रवेश कराया हुआ ।
१२ लिया हुआ ।
१३ ले जाया हुआ ।
१४ भेजा हुआ ।
१५ प्रकट किया हुआ, जाहिर किया हुआ ।
(स्त्री० पधरायोड़ी)

पधरावणी-सं०स्त्री० [सं० पद+धारणम्] गोकलिया गोस्वामी और रामावत साधुओं के महंत को घर बुला कर दी जाने वाली भेंट ।

पधरावणो, पधरावबो—देखो 'पधराणो, पधरावो' (रू.भे.)
उ०—१ मासोत्तम वैसाख मैं, गढ़ जाळंधर हूंत । रांणी पधरावी सहर, साथे कुंवर सपूत ।—रा.रू.
उ०—२ 'दुरग' घणी पधरावियो, उछब करे अनूप । सेन सवाई आवियो, 'भीमरळाई' भूप ।— रा.रू.
उ०—३ समस्त ही मंडप रा प्राघुणकां प्रामारराज री तरफ सूं बरात रै सिविर जाय दुल्लह नूं मारीच चढ़ाय अरवुद रा दुरग रै तोरण पधरावियो ।—वं.भा.

उ०—४ विलळी वातां री बांणी वधरावै। पतळी झिण जिण में पांणी पधरावै।—ऊ.का.

उ०—५ मोडां मांनूं रे रांम रा मारियां। छुपकै-छुपकै घी लोगां री पधरावौ भरि पारियां।—ऊ.का.

उ०—६ तीन दिनां सूं साक मिळै, तोई धोकौ हिए न धारौ। सूंक ले'र पधरावौ सीरौ, नहिं नीकौ निरधारौ।—ऊ.का.

उ०—७ आगै कंमधै आखियौ, सुण मछरीक 'मुकन्न'। अन-पांणी मन भावियां, पधराविया 'अजन्न'।—रा.रू.

उ०—८ पाय पटुलौ पाथरी, पीउ पधरावउ सेज। जंपी तू जी जी करइ, आंणी आपइ वेगि।—मा.कां.प्र.

उ०—९ पधरावण परणायबा, स्रीदूलह 'अभसाह'। मथुरा मांडइ मंडियौ, जिमि कूरम 'जैसाह'।—रा.रू.

उ०—१० संसकार स्रुतिवांण सुणि, कूरम कै सक्कार। परणावै पधरावियौ, महलै राजकंवार।—रा.रू.

उ०—११ रणसिंगा रुड़ा आगै ऊड़ा, घूड़ घूड़ घूकंदा है। जाखेड़ा जोड़ी घोड़ा घोड़ी, पधरावै पुळकंदा है।—ऊ.का.

उ०—१२ साह दरगह सेव, जिकां दुय राह वखांणै। फरकसाह थप्पियौ, वाहुवळ नाह ठिकांणै। सरस प्रीत 'अभसाह', सुतौ दिन-दिन सरसावै। हसन खांन अब्दुल्ल, दरस आवै पधरावै।—रा.रू.

उ०—१३ हुजदारां आपरां, वेग ताकीद करावौ। दखिण गुजरात दिसा, पेसखांनां पधरावौ।—सू.प्र.

पधरावणहार, हारौ (हारी), पधरावणियौ—वि०।

पधराविओड़ौ, पधरावियोड़ौ, पधराव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

पधरावीजणौ, पधरावीजबौ—कर्म वा०।

पधरावियोड़ौ—देखो 'पधरायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० पधरावियोड़ी)

पधरी—देखो 'पद्धरी' (रू.भे.)

पधारणौ, पधारबौ—क्रि०अ० [सं० पदधारणम्] १ आना, पहुंचना।

उ०—१ घर त्यागकरण परघर विधन, आहूं पहर ऊंघारिया। जीव नै देत मोता जिकै, पोतादार पधारिया।—ऊ.का.

उ०—२ पिण पंथ वीर जूजुआ पधारया, पुरि भेळा मिळि कियौ प्रवेस। जण दूजण सहि लागा जोवण, नर-नारी नागरिक नरेस।
—वेलि

२ जाना, चला जाना। उ०—१ भलां पधारौ भीचड़ा, गरक सिलह में गात। केहर वाळा कळह री, वळता कीजौ वात।
—वां दा.

उ०—२ पूछिया गवर तिवार प्रभु तूं, सांमि किसउ कउतिग संसार। दिख रइ जगन पधारउ देखण, देव अनेक करइ दीदार।
—महादेव पारवती री वेलि

पधारणहार, हारौ (हारी), पधारणियौ—वि०।

पधारिओड़ौ, पधारियोड़ौ, पधारयोड़ौ—भू०का०कृ०।

पधारीजणौ, पधारीजबौ—भाव वा०।

पउधारणौ, पउधारबौ, पद्धारणौ, पद्धारबौ—रू०भे०।

पधारियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ आया हुआ।

२ गया हुआ।

(स्त्री० पधारियोड़ी)

पधति—देखो 'पद्धति' (रू.भे. ह.नां.)

पधरि, पधिरी—१ देखो 'पाधर' (अल्पा., रू.भे.)

२ देखो 'पद्धरी' (रू.भे.)

पधोरणौ, पधोरबौ—देखो 'पाधोरणौ, पाधोरबौ' (रू.भे.)

पधोरणहार, हारौ (हारी), पधोरणियौ—वि०।

पधोरिओड़ौ, पधोरियोड़ौ, पधोरयोड़ौ—भू०का०कृ०।

पधोरीजणौ, पधोरीजबौ—कर्म वा०।

पधोरियोड़ौ—देखो 'पाधोरियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० पधोरियोड़ी)

पध्धर—देखो 'पाधरौ' (मह०, रू.भे.)

उ०—मारु देस उपन्नियां, सर ज्यउं पध्धरियांह। कडुवा बोल न जांणही, मीठा बोलणियांह।—ढो.मा.

पध्धारणौ, पध्धारबौ—देखो 'पधारणौ, पधारबौ' (रू.भे.)

उ०—राजा-रांणी हरखिया, हरिख्यउ नगर अपार। साल्ह कुंवर पध्धारियउ, हरखी मारू नार।—ढो.मा.

पनंग—देखो 'पन्नग' (रू.भे.) (डिं.को.)

उ०—जमकै नहीं भवांणक जांणै। पनंग जिकौ ग्रहियौ नृप पांणै।
—सू.प्र.

(स्त्री० पनंगण, पनंगणी)

पनंगणी—सं०स्त्री० [सं० पन्नग+रा.प्र. णी] १ नाग कन्या।

उ०—पनंगणी कना काय पंखणी, कोण देस हूंता गवण। हूं तुज्ज भेद जाणूं नहीं, कह है तूं बाई कवण।—पा.प्र.

२ नागिन।

पनंगपति—देखो 'पन्नगपति' (रू.भे.)

पनंगपाळ—सं०पु० [सं० पन्नग+पाल] चन्दन (ह.नां.)

पनंगलोक—देखो 'पन्नगलोक' (रू.भे.)

पनंगसंघार, पनंगसिंघार—सं०पु० [सं० पन्नग+संहार] मोर, मयूर
(ह.नां., अ.मा.)

पनंगांण—देखो 'पन्नग' (मह०, रू.भे.)

पनंगाराय—सं०पु० [सं० पन्नगराज] शेषनाग।

पनंगासन—देखो 'पनगासन' (रू.भे.)

पनंगेस—सं०पु० [सं० पन्नग+ईश]

उ०—कठठिया दहूं दळ काळ कोठ पनंगेस कमळ भिडि कमठ पीठ।
—सू.प्र.

पनंग्ग—देखो 'पन्नग' (रू.भे.)

पन—१ देखो 'पुण्य' (रू.भे.)

उ०—प्रथम विनायक पूजियै, प्रघळ हुयै कोई पन। रिधि सिधि

समपै राजियो, गुणपती देव गहन ।—पी.ग्रं.
२ देखो 'प्रण' (रू.भे.)
३ देखो 'पांन' (रू.भे.)
४ देखो 'पांनी' (मह०, रू.भे.)

पनग-सं०पु०—१ देखो 'पन्नग' (रू.भे.)
उ०—पाव घाव सिर पनग रै, घाव नाव धजराज । समपै 'भारा-राव' सुत, करण चाव जस काज ।—बां.दा.
२ शेषनाग।

पनगपति, पनगपती—देखो 'पन्नगपति' (रू.भे.)
उ०—पूरब देस नयर अंबापुर, नव दीपां चा नमइ नरेस । असुरां सुरां पनगपति नरपति, दिख राजा दीपइ दह देस ।
—महादेव पारवती री वेलि

पनगलोक-सं०पु० [सं० पन्नग+लोक] पाताल, नागलोक।
उ०—पाळ्यौ जहर पिवाय, भीम गंग पटक्यो हुतो । पनंग लोक परणाय, साथै ल्यायो सांवरा ।—रांमनाथ कवियो
रू०भे०—पनंगलोक, पन्नगलोक ।

पनगहार-सं०पु० [सं० पन्नग+हार] शिव, महादेव (डिं.को.)

पनगांण—देखो 'पन्नग' (महपो., रू.भे.)
उ०—पय मिस्री पनगांण, श्रोखीजै आठूं पहर । जहर घणो घट जांण, मिटै सहज न मोतिया ।—रायसिंह सांदू

पनगारि—देखो 'पन्नगारि' (रू.भे.)
उ०—किधौ कुळ अद्रनि इंद्र हकारी । किधौ कुळ कद्रूनि पै पनगार ।
—ला.रा.

पनगासन-सं०पु० [सं० पन्नग+असन] गरुड़ । उ०—लक्ष वटेर सिच्चांन, मनहु चीता अग मारन । हेरि पत्थ जयद्रथ, बाघ हेरयौ मनु वारन । हर हेरयौ आगस्त, पनग हेरयौ पनगासन ।
—ला.रा.
रू०भे०—पनंगासन, पन्नगासन ।

पनग्ग—देखो 'पन्नग' (रू.भे.)
उ०—जरासिंध अंग में जोर पायो । पनग्गी मनू पांय पुच्छी दबायो ।
—ला.रा.

पनग्गो—देखो 'पन्नग' (अल्पा०, रू.भे.)
उ०—तो पन दिघ्घ अवाज तें, घरनीधर धग्गी । कोळ कमट्ठ जोर परि, सिर धूनि पनग्गो ।—ला.रा.

पनघट—देखो 'पणघट' ।

पनड़ियो-सं०पु०— [?] खूबकला नामक घास (जयसलमेर)

पनड़ी-सं०स्त्री० [सं० पत्रम्] १ स्त्रियों के आभूषणों के नीचे लटकता हुआ लगाया जाने वाला पत्ते के समान पतला खण्ड ।
उ०—१ बीभलियां नैणां वणी, वंक पटा वनड़ीह । बालम रा सवणां वजी, पायल री पनड़ीह ।—र. हमीर
उ०—२ तेवटियो तेवटियो गोरी कोई बिलखै, मेह बिना धरती तरसै मेहड़ो हुवण दै । तेवटियो घड़ाऊं पनड़ो भाळो, मेहड़ो आवण दै ।—लो.गी.
२ एक सुगंधित पत्ती विशेष जो कपड़ों में रखी जाती है ।
३ चने के पौधे के सुखाए हुए पत्ते जो साग के काम में लिए जाते हैं ।
४ देखो 'पांनड़ी' (रू.भे.)
उ०—१ ढोमड़ा वेरा माथै पनड़ी री खड़िद खड़िद री ठेको ।
—फुलवाड़ी
उ०—२ माळ फिरै ज्यूं पनड़ो बाजै, फिरै काळियो डोरो । मोट्ट पांणी भरै घड़लियां, आगै हालै धोरो । रुपल रेत रे ।
—चेत मांनखा
५ देखो 'पांन' (अल्पा०, रू.भे.)
रू०भे०—पन्नड़ी, पांनड़ी ।

पनडुब्बी-सं०स्त्री०—१ एक जलपक्षी ।
२ एक प्रकार की नाव जो पानी के अन्दर चलती है । इसका प्रयोग शत्रु के जहाजों को डुबोने के लिए किया जाता है ।

पनपणो, पनपबो—देखो 'पणपणो, पणपबो' (रू.भे.)
पनपणहार, हारो (हारी), पनपणियो—वि० ।
पनपिग्रोड़ो, पनपियोड़ो, पनप्योड़ो—भू०का०कृ० ।
पनपीजणो, पनपीजबो—भाव वा० ।

पनपाणो, पनपाबो—देखो 'पणपाणो, पणपाबो' (रू.भे.)

पनपायोड़ो—देखो 'पणपायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० पनपायोड़ी)

पनपियोड़ो—देखो 'पणपियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० पनपियोड़ी)

पनर, पनरह—देखो 'पनरह' (रू.भे.) (उ.र.)
उ०—हणु बारह मेघ नीर विरचित मास तेरह मंड । दस च्यार विद्या रतन दाखव पनर तिथि परचंड ।—र.ज.प्र.

पनरम, पनरमंइ, पनरमंउ, पनरमओ-वि० [सं० पंचदशः] पन्द्रहवां (उ.र.)
उ०—१ पनरम घरम तयालींस गणि चोसठ हजार । साहु साहुणी बासठ सहस अनै सय चार ।—ध.व.ग्रं.
उ०—२ राति दिवस करि चालीयउ । पनरमंइ दिवस पहुतो तिणी ठार ।—वी दे.
उ०—३ संवत तेर इकोतरइ, देसलहर अधिकारी जी । समरइ साह करावियउ, ए पनरमउ उद्धारो जी ।—स.कु.

पनरवाड़ियो-सं०पु० [?] १ वह क्रम जिसके अनुसार किसी नक्षत्र पर १५ दिन तक सूर्य रहे ।
२ वह क्रम जिसके अनुसार कोई नक्षत्र १५ दिन तक रहे ।

पनरह-वि० [सं० पंचदश, प्रा० पण्णरह] १ जो संख्या में दस और पांच के योग के बराबर हो। उ०—पनरह दिन हूं जागती, प्री सूं प्रेम करंत। एक दिवस निद्रा सबळ, सूती जांणि निचंत।—ढो.मा.

सं०पु०—२ दस और पांच के योग की संख्या (१५)

रू०भे०—पंदरह, पंदरै, पंद्रह, पनर, पनरह, पनरे।

मह०—पंनर, पन्नर।

पनरहवींविद्या-सं०स्त्री०—चोरी, झूठ आदि की विद्या।

उ०—तिण राजा रै च्यारि मित्र। श्रागीयो वेताळ। कवड़ियौ जुआरी। मांणिकदे मदपांण। खापरो चोर। सु राजा भोज रै घरै आया। घणां कायदा किया। अनेक भांति री भक्ति हुई। घणां सनमांन देनै कह्यौ—पनरहवींविद्या मोनूं जिण भांत आवै तिम करो।—चौबोली

पनराड़ी-सं०स्त्री०—पंद्रह दिन का समय, पक्ष।

उ०—नौ दिन तौ मैं करया जी नौरता, सोळा दिन गणगौर जी, बनड़ा। पनराडी मैं ग्यारस करती, बारा करती चौथ जी बनड़ा।
—लो.गी.

पनरै—देखो 'पनरह' (रू.भे.)

उ०—करमा दांन पनरै कह्या जी, प्रगट अठारै जी पाप। जे मंइ सेव्या ते हवइ जी, बगस बगस माइ बाप।—स.कु.

पनरै'क—पंद्रह के लगभग।

रू०भे०—पंदरे'क, पदरै'क।

पनरौ-सं०पु०—पंद्रह की संख्या का वर्ष।

उ०—पांचो आठी दस पनरौ खू पड़िया। सतरै वीसै हय खतरै में पड़िया।—ऊ.का.

पनरोतड़ो—देखो 'पनरौ' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—१ अवध पनरोतड़ै, समत पनरै इळा, वाघ चढणोत रै वेद वरणी। गेह बड़भाग किनियां तणी गोत रै, कळा साजोत रै रूप करणी।—खेतसी बारहठ

उ०—२ पनरै सै समत (१५१५) पनरोतड़ै, सुदि जेठ ग्यारस सनढ। अवगाढ जोध रचियौ इसौ, गाढपूर जोधांण गढ।—सू.प्र.

पनवां-सं०स्त्री०—पान के आकार की हमेल आदि आभूषणों में लगी हुई बीच की चौकी, पान।

पनवाड़ि, पनवाड़ी-सं०स्त्री० [सं० पर्ण+वाटिका]

१ नागरवेल का खेत।

उ०—तिण में अकालुगरो, तिण री नांनी बनास पांणी पीवती नै नागरवेलरी पनवाड़ी चरनै घर आवती। तरै जखड़ै उण सांड नै सारणी मांडी।—जखड़ा मुखड़ा भाटी री वात

सं०पु०—२ पान बेचने का व्यवसाय करने वाली जातिया इस जाति का व्यक्ति।

३ राजा-महाराजाओं के यहां पान के सुपारी, चूना, काथा आदि लगाकर तैयार करने वाला।

उ०—पांतियां विराजै तांम पह, मह उछब पह मांनियां। पनवाड़ी पात्र थंडै पवित्र, मंडे वड़ी महमांनियां।

४ एक प्रदेश विशेष का नाम जहां पर पान बढ़िया होते हैं।

उ०—उमराव बनाजी बीड़ा थे लाइजो रे नागोरी देस रा। सिरदार बना जी बीड़ा थे लाइज्यो पनवाड़ी देस रा।—लो.गी.

पनस-सं०पु० [सं०] कटहल का वृक्ष या उसका फल।

रू०भे०—फणस।

पनसारी—देखो 'पंसारी' (रू.भे.)

पनसूरो-सं०पु० [सं० पत्र+चूरणम्] बाजरी, ज्वार आदि के पत्तों का चूरा जो पशुओं को खिलाया जाता है (शेखावाटी)।

रू०भे०—पनहूरो, पनूरो।

पनसेरी—देखो 'पंसेरी' (रू.भे.)

उ०—उत्तम थूंक विलोवही, मध्यम मूंकी थाप। वणिक अधम चिढ़ता करै, पनसेरी सूं पाप।—बां.दा.

पनसेरौ—देखो 'पंसेरी' (मह०, रू.भे.)

पनहि, पनही-सं०स्त्री० [सं० उपानह] जूतो। उ०—जनमै बीछू जगत में, जणणी री लै जीव। तिण गुनाह पनही तळै, सह को हणै सदीव।—बां.दा.

रू०भे०—पांणही, पांनह, पांनही।

अल्पा०—पनियौ।

पनहूरो—देखो 'पनसूरो' (रू.भे.)

पनांग—देखो 'पिनाक' (रू.भे.)

उ०—सिव तिण वार पनांग साहियइ, बंगाळी दाखवै बळ। उण वेळा सिव रइ मुह आगळ, दूजा कुण नेठवइ दळ।

—महादेव पारवती री वेलि

पना—देखो 'पनाह' (रू.भे.)

पनाक—देखो 'पिनाक' (रू.भे.)

उ०—पह वीरहाक पनाक पणचां, वाज डाक त्रंबाक। असनाक पर ग्रीधाक आवध, करग वाज कजाक।—र.ज.प्र.

पनाकी-सं०पु० [सं० शिवजी (डि.को.)

पनाग-सं०पु० [सं० पन्नगः=नागः=हाथी] १ हाथी।

उ०—वाजै वंकी रोड कै अखाड़ै रूघौ खासवाड़ै। जंगी होदां सूधा कै पनागां पाड़ै जूथ।—हुकमीचंद खिड़ियौ

रू०भे०— पैनाग।

२ देखो 'पन्नग' (रू.भे.)

३ देखो 'पिनाक' (रू.भे.)

पनामारू-सं०पु०यौ० [राज० पनौ=रत्न विशेष+मारू=पति]

१ पति, प्रेमी और वल्लभ के लिए स्त्रियों द्वारा प्रयोग किया जाने वाला शब्द। उ०—१ थांरै साथ्यां नै सागै ले लौ जी मारू जी, भात भरण नै चालो रूड़ै मांणजे। नाई की नै लेस्यां जी, पनामारू, म्हें भी म्हारै साथ भात भरण नै जास्यां रूड़ै मांणजै।
—लो.गी.

उ०—२ पनामारू घणां नै घरां रा मिजमांन, ग्रजी कांई सांवलड़ा नादांन। रात ग्रनंत प्रात म्हारै ग्राया, तन पर केई सैनांण।
—रसीलैराज रा गीत

२ रसिक।

३ एक लोक गीत।

रू०भे०—पन्नामारू।

पनाळ—देखो 'परनाळ' (रू.भे.)

पनाह-सं०स्त्री० [फा०] १ रक्षा, शरण। उ०—१ वाहां बीस तणं भय बंधव, लुळे बभीख पनाहां लीध। रखे ग्रोट तिणनूं फिर राजा, कनक दुरंग सकाजा कीध।—र.रू.

उ०—२ ताहरां पातसाहजी कहियौ खुदाइ पनाह दियै। एथि त्रिहाई मांहै राखी 'भोपति' नूं।—द.वि.

क्रि०प्र०—देणी, पांणी, लेणी।

२ रक्षा पाने का स्थान।

रू०भे०—पना, पन्हा।

पनाही-वि० [फा० पनाह+रा.प्र.ई] शरण में ग्राने वाला, पनाह लेने वाला। उ०—परस लिया पद पांनी, दार जुनारदा। बम्भीछण बगसांणी, लंक पनाहियां।—र.ज.प्र.

पनिया—देखो 'पनही' (ग्रल्पा०, रू.भे.)

उ०—भटकै कर-कर भेख, घर-घर ग्रलख जगावही। दुनिया रा ठग देख, मिळसी पनिया 'मोतिया'।—रायसिंह सांदू

पनी-सं०स्त्री० [सं० पर्ण] १ ऐरे के पौधे का सिट्टा जो प्रायः फोड़े फुंसियों पर पीसकर लगाया जाता है।

२ देखो 'पन्नी' (रू.भे.)

पनीडो—देखो 'परींडो' (रू.भे.)

पनीर-सं०पु० [फा०] १ फाड़ कर जमाया हुग्रा दूध, छेना।

२ पानी निचोड़ा हुग्रा दही।

पनीहारी—देखो 'पणिहारी' (रू.भे.)

पनुंती—देखो 'पनोती' (रू.भे.)

उ०—ग्रवळ दीयौ पद ऊंच, पीड़ई तोइ पनुंती। घरै उत्तम नर घरम, पापिनै तप पर हुंती।—ध.व.ग्रं.

पनूं—देखो 'पनौ' (रू.भे.)

उ०—पनूं म्हारो मुजरो लीजो जी, रसराज मोठी निजरयां सुं मिळयो हुग्रो कर का गजरा सु०।—रसीलैराज रा गीत

पनूंतो-वि० [राज० पुनीत=सं० पूत] पवित्र, श्रेष्ठ।

उ०—पोस पनूंता दीहड़ा, जे पीऊ साथि घात। खटरस क्षितिमंडलि सरइ, रंग मांहि रस सात।—मा.कां.प्र.

रू०भे०—पनोत, पनोतो।

पनूरो—देखो 'पनसूरो' (रू.भे.)

पनोति, पनोती-सं०स्त्री० [सं० प्रशप्तिः=प्रा० पनत्ती] १ शनि ग्रह की शुभाशुभ फलप्रद उस स्थिति काल का नाम जो राशि विशेष से बारहवीं, जन्म की तथा दूसरी राशिपर्यंत रहता है, महाकल्याणी।

२ कुग्रहों का योग, दुर्दशाकाल।

उ०—१ पदवी है प्रति वासुदेव नी जो, जोरावर जरासंघ। ग्रांण पनोति दोली फिरीजी, कस्ण काट दियौ कंध।—जयवांणी

उ०—२ कहै दास सगरांम सुणौ सज्जन हितकारी। कर सुक्रत भज रांम, पनोति ग्राई भारी।—सगरांमदास

रू०भे०—पनुंती।

पनोतो—देखो 'पनूंतो' (रू.भे.)

उ०—१ ग्रा जोवन ग्रा संपदा रे, ग्रा ग्रम ग्रद्भुत देह। भोग पनोता भोगउ रे, निपट न दीजइ छेह।—स.कु.

उ०—२ ग्राठ भवां री नेहज हुती, नव में दी छिटकाई। तुमसा पूत पनोता होयनै, जादव जांन लजाई।—जयवांणी

पनौ-सं०पु० [सं० पर्ण] १ फिरोजे से मिलता-जुलता एक प्रकार का हरे रंग का रत्न विशेष। उ०—हीर पना वाळा हरख, पंपाळा तज 'पत्त'। तैं कर चाळा ली तिका, तुकमां माळा तत्त।—जुगतीदांन देथौ

पर्या०—गरुत-मत, मरकत, हरितमणि।

२ सुकुमार, कोमलांग (ग्रमीर)

उ०—प्रीत रीत पाळता विलाला साहीजादा पना ग्रो। छांछाळा, एळा श्रीत ढाळता ऐसोत।—र. हमीर

यौ०—ग्रालीजोपनौ, गीलीपनौ, साहजादौपनौ।

३ चौड़ाई, ग्ररज।

रू०भे०—पणौ, पहनौ, पैनौ।

४ देखो 'पनांमारू'।

उ०—पना घर ग्राज्यौ रे लाडली छोटी रा वना। रसराज नेह लगाय विसर गया एकरसां मिळ जाज्यौ रे।—लो.गी.

५ देखो 'पांनौ' (रू.भे.)

६ देखो 'पण' (रू.भे.)

पन्नंग—देखो 'पन्नग' (मह०, रू.भे.)

पन्न—देखो 'पांन' (मह., रू.भे.)

उ०—१ करहा लंब कराड़िग्रा, बे बे ग्रंगुळ कन्न। राति ज चीन्हों वेलड़ी, तिण लाखीणा पन्न।—ढो.मा.

उ०—२ व्है यूं कुकवी हाथ में, पोथी तणौ प्रकास। केछ पन्न जांणै कियौ, बांनर रै कर वास।—बां.दा.

उ०—३ ऊभी घूंट हेको करी जात ग्रारा, थंभेरी महूका लहैका मथारा। जसोदा नके झंप साधी जमन्ना, पहे लाभियौ मांन हू जात पन्ना।—ना.द.

२ देखो 'पवन' (रू.भे.)

पन्नग-सं०पु० [सं०] सर्प, नाग।

२ शेषनाग।

उ०—१ चड़िया कट्टक ग्रांवक्क चाल, वेढिसी जइत न करइ विमाळ। ग्रसराळां ताजी ऊमगेहि, पन्नगां नेस धूजइ पगेहि।
—रा.ज.सी.

उ०—२ उण भवण वसण राजा 'अजन', आप सुखासण ऊतरी। लखि वरत सुरी अचरज लगी, नार पन्नगी किन्नरी।—रा.रू.

(स्त्री० पन्नगी)

रू०भे०—पनंग, पनंग, पनग, पनग्ग, पन्नंग, पुनांग।

अल्पा—पनगो, पनग्गो।

पन्नगकेसर—देखो 'नागकेसर'।

पन्नगपति-सं०पु० [सं०] शेष नाग।

२ नागलोक का राजा।

रू०भे०—पनंगपति, पनगपति, पनगपती।

पन्नगपीवण—देखो 'पंणो'।

उ०—मारवणी मुख-ससि-तणइ, कसतूरी महकाइ। पासइ पन्नग-पीवणउ, बिळकुळियउ तिणि ठाइ।—ढो.मा.

पन्नगलोक, पन्नगलोकि—देखो 'पनगलोक' (रू.भे.)

उ०—वेगि करी वसुधा-तलइ, पइठउ पन्नगलोकि। ततखिणि अम्रत आंणियु, राउ पडिउ जिहां सोकि।—मा.कां.प्र.

पन्नगारि-सं०पु०यौ० [सं०] गरुड़।

रू०भे०—पनगारि।

पन्नता-सं०पु० [सं० प्रज्ञप्तिः] कथित, प्ररूपति। उ०—निवद्ध निकाचित जे सासय कड़ा, जिन पन्नता रे भाव। भाखी रे सुंदर एह परूवणा, चरण करण नो रे जाव।—वि कु.

पन्नर—देखो 'पनरह' (रू.भे.)

उ०—तनु तोलंतां टांक को, गुण-मणि गणित न थाइ। साढा पन्नर वरस नी, सोळ समीपि जाइ।—मा.कां.प्र.

पन्नवणा-सं०पु० [सं० प्रज्ञापना] प्रज्ञापना नाम का सूत्र जो जैन धर्म के ३२ सूत्रों में से एक है।

उ०—इम अल्प बहुत्व विचार चिहुं दिसि, सतर भेद जीवां तणउ। स्रीपन्नवणा सूत्र पदे तीजे, तिहां विस्तार छइ घणउ।—स.कु.

पन्नाभंवर—देखो 'पनामारू'।

उ०—ए जी श्रो म्हारा पन्ना-भंवरजी, घाई रे कुमाई घर आव। क्या से सिंचाऊ डोडा इळायची रे म्हारा लोटण फरवा; क्या से सिंचाऊ नागर वेल, एजी श्रो सेजां रा सूरज मारूणी उडीके घर आव।—लो.गी.

पन्नामारू—देखो 'पनामारू' (रू.भे.)

उ०—कुण थांने चाळा चाळिया हो, पन्नामारू जी हो, किण थांने दीवी रे ढोला सीख। सीख हो पिया प्यारी रा ढोला जी हो, हां रे सांवणियो विलम्यो रे बीकानेर।—लो.गी.

पन्नी-सं०स्त्री० [सं० पर्ण] रांगे, पीतल आदि के कागज की तरह के पत्तर जिन्हें काट कर अन्य वस्तुओं पर सौन्दर्य के लिए लगाते हैं।

रू०भे०—पनी।

यौ०—पन्नीगर, पन्नीसाज।

पन्नीगर, पन्नीसाज-सं०पु० [सं० पर्णीकर, सं० पर्णी+फा० साज= पन्नी बनाने वाला] पन्नी बनाने का कार्य करने वाला।

पन्नीसाजि-सं०स्त्री०—पन्नी बनाने का व्यवसाय।

पन्नो—देखो 'पनौ' (रू.भे.)

उ०—१ कळरंग घाट कुमाच, पन्ना-स नीलम पाच। संग रंग ढंग सुढाळ, पुखराज अन्य प्रवाळ।—सू.प्र.

उ०—२ थारी महंदी पर वारूं पन्ना ये जवार। पेम-रस महंदी राचणी।—लो.गी.

पन्हा—देखो 'पनाह' (रू.भे.)

पपइयो, पपईयो-सं०पु० [सं० वपीहा ?] एक पक्षी, चातक।

उ०—पपइया, तूं बोल रे, जित म्हारै, आलीजे भंवर रो मुकाम। —लो.गी.

पर्या०—चातक, नभनीरप, सारंग।

२ एक लोक गीत।

रू०भे०— पपय्यो, पपियो, पपिहियो, पपिहो, पपीयरो, पपीयो, पपीहरो, पपीहो, पपंइयो, पपैयो, पपैयो, पब्बयो, पापइयो, वप्पियारो, वप्पीहड़ो, वप्पीहो, ववैयो, वापियउ, वापियड़ो, वापियो, वापीअड़ो, वापीइड़ो, वापीयड़ो, वापैयो, वापैयो, वावहियउ, वावहियो, वावीयो, वावीह, वावीहडउ, वावीहीयो, वावीहो, वावैहियो।

पपड़ी-सं०स्त्री० [सं० पर्पटी] १ किसी वस्तु की ऊपरी परत जो सिकुड़ी हुई हो।

२ घाव के ऊपर का खुरण्ट।

रू०भे०—पपरी, परपटी।

अल्पा०—पप्पड़ी।

पपघनवा—देखो 'पुस्पधन्वा' (रू.भे.) (अ.मा)

पपय्यो—देखो 'पपइयो' (रू.भे.)

उ०—अचरा मोर छोड कन्हइया, कुंज-कुंज के मुरवा देखे, पपय्या देखे।—रसीलैराज रा गीत

पपरी-सं०पु० [?] १ तीर, वाण (अ.मा.)

२ देखो 'पपड़ी' (रू.भे.)

पपियो—देखो 'पपइयो' (रू.भे.)

पपिलका—देखो 'पिपीलिका' (रू.भे.)

पपिली—देखो 'पिपीली' (रू.भे.)

पपिहियो—देखो 'पपइयो' (रू.भे.)

पपिहो—देखो 'पपइयो' (रू.भे.)

पपी-सं०पु० [सं०] १ सूर्य, रवि (डिं.को.)

२ चन्द्रमा, सोम।

पपीतो-सं०पु० [मला० पपाया] एक प्रसिद्ध वृक्ष एवं उसका फल।

पपीयरो, पपीयो—देखो 'पपइयो' (रू.भे.)

उ०—१ उल्लसति हीयरो करि पपीयरो, करत प्रियु-प्रियु सोर। विरह संइ पीरी अति अधीरी, डरत विरहन जोर।—वि.कु.

उ०—२ पपीया आस पजोवसी तो नेछावरूं जीव, वैरी तू पीव-पीव

न बोल ।—पनां वीरमदे री वात

पपील—१ देखो 'पिपील' (रू.भे.)

२ देखो 'पिपीलिकामारग' ।

उ०—भक्त जोग परे हठ जोग है, सांख्य जोग ता आगी । मीन पपील बिहंगम पुनि, तीहू राह चीन बडभागी ।

—स्री हरिरांमजी महाराज

पपीलिका—देखो 'पिपीलिका' (रू.भे.)

उ०—यह पत्र विचित्रित चित्र-योग्य, आरुण्य रुदन वत भो अयोग्य । प्रिय जाट पुत्रिवत प्रस्नपेस, पितु कति पपीलिका विल प्रवेस ।

—ऊ.का.

पपीहरौ, पपीहौ, पपैइयौ, पपैग्री, पपैयौ—देखो 'पपइयौ' (रू.भे.)

उ०—१ प्यारो लागै पपीहरौ, मुरळी को मल्हार । कुहकै रहि रहि कोयली, भूल भंवर झंकार ।—अज्ञात

उ०—२ बरसा समय पर दादुर-मोर-पपीहा बोलै ।

—सिंघासण बत्तीसी

उ०—३ भादू बरसा झुक रही, घटा चढ़ी नभ जोर । कोयल कूक सुणावती, बोलै दादुर मोर । ए जी सिरकार पपैग्रो पिव-पिव सबद सुणावै म्हारा प्रांण ।—लो.गी.

उ०—४ भवर म्हारै बागां आव्यो जी, बागां फिरूं अकेली पपैयो बोल्यौ जी ।—लो.गी.

पपोळणौ, पपोळवौ—देखो 'पंपोळणौ, पंपोळवौ (रू.भे.)

पपोळियोड़ौ—देखो 'पंपोळियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० पपोळियोड़ी)

पप्पड़—देखो 'पापड' (मह., रू.भे.)

उ०—सूकवे कप्पड़ पप्पड़ बड़ियां, नासीय छिपे नृप भय पड़ियां ।

—बृहद स्तोत्र

पप्पड़ौ—१ देखो 'पापड़' (अल्पा., रू.भे.)

२ देखो 'पपड़ौ' (अल्पा., रू.भे.)

पब—१ देखो 'परवत' (रू.भे.)

उ०—जोवंतां हिक मेघ-झड़, घर में केक घुसंत । जद लागै घर त्रिजड़-झड़, पब-कंदर प्रविसंत ।—रेवतसिंह भाटी

२ देखो 'पर्व' (रू.भे.)

पबइया-सं०स्त्री—चौहान वंश की एक शाखा (बां.दा. ख्यात)

रू०भे०—पवियां, पब्बया, पब्बाया ।

पबइयौ-सं०पु०—चौहान वंश की पबइया शाखा का व्यक्ति ।

रू०भे०—पब्बयौ, पब्बायौ ।

पबंध—देखो 'प्रबंध' (रू.भे.) (जैन)

पबळ—देखो 'प्रबळ' (रू.भे.)

उ०—धवळ कमळ कळकित्ति पूर, धवळीकय महिग्रळ । पबळ पमायक लाव कुंभ, भंजण घण अविग्रळ ।—स.कु.

पबलिक-सं०स्त्री० [ग्रं० पब्लिक] सर्वसाधारण, आम जनता ।

पबलिकवरकस-सं०पु० [ग्रं० पब्लिक वर्क्स] सर्वसाधारण के लिये किये जाने वाले निर्माण सम्बन्धी कार्य ।

पबव—देखो 'परवत' (रू.भे.)

पबांणी-वि०—पर्वतीय, पर्वत का ।

पबासाई, पबासाही-सं०स्त्री०—एक प्रकार की तलवार ।

रू०भे०—पब्बासाही ।

पबि—देखो 'पवि' (रू.भे.)

पबिया—देखो 'पबइया' (रू.भे.)

पबे, पबै—देखो 'परवत' (रू.भे.)

उ०—१ 'अवरंग' 'तहवर' ऊपरै, फिर कोपे जगदीस । पबै भुरज्जां वज्र पर, पड़ी बुरज्जां सीस ।—रा.रू.

उ०—२ पबै सरां पाळगां, रुदन बाळक मछरीकां । सुण चमकै 'सुरतांण', हियै सालै दुख हीकां ।—सू.प्र.

पबैग्रस्त-सं०पु०यौ० [सं० अस्ताचळ पर्वत] अस्ताचल पर्वत ।

उ०—वहे जातरी रात री दीह बारा, घकै चाढवौ मागरौ खाग धारा । उदैअद्र जो वारमौं भांण ऊगै, पबैग्रस्त सो पूगियां नीठ पूगै ।

—मे.म.

पबैड़ो-सं०पु० [देशज] हाथ में रखने का डंडा ।—ना.डि.को.

पबैराट—देखो 'परवतराज' (रू भे.)

पबैसर—देखो 'पावासर' (रू.भे.)

उ०—आणंद सुणि अधिराज, मिळण आयै सझि घूमर । हुय सनेह वह हरख, सुपंह इम मिळै पबैसर ।—सू.प्र.

पब्ब, पब्बय, पब्बय—देखो 'परवत' (रू.भे.)

उ०—१ ऊतंग स्यांम गत्ति अजब्ब, पावस जांण धोया पब्ब ।

—गु.रू.बं.

उ०—२ सेख वासगयं, डंबरे डंबयं, गाहीजै पब्बयं, सात सांमंदयं ।

—गु.रू.बं.

पब्बयौ—१ देखो 'पबइयौ (रू.भे.)

२ देखो 'पपइयौ' (रू भे.)

पब्बाया —१ देखो 'पबइया' (रू.भे.)

२ देखो 'परवत' (रू.भे.)

पब्बायौ—देखो 'पबइयौ' (रू.भे)

पब्बासाही—देखो पबासाई' (रू.भे.)

पब्बै—देखो 'परवत' (रू.भे.)

उ०—जथा कै कड़क्कै छटा मेघ जोडां, मचै सिंधु कै मथ पबै घमोडां ।

—वं.भा.

पब्बगिर-सं०पु०—पर्वत ।

उ०—ओपियं वेरकां कुंजरां ऊपरै. गुड्डियं उड्डियं जांण पब्बै-गिरै ।

—गु.रू.बं.

पब्बेराट—देखो 'परवतराज' (रू.भे.)

उ०—कोड़ी डढ्ढ़ा फुणीझाट मोड़तौ कुमट्टां कंध, पबैराट सिंधु

वीछोडतौ भोम पाट ।—हुकमीचन्द खिड़ियो

पव्व—देखो 'परवत' (रू.भे.)

पभंकर—देखो 'प्रभाकर' (रू.भे.)

पभणो, पभवौ-क्रि०स० [सं० प्रभणं] कहना, बोलना ।

उ०—पणमिय वीर 'जिणदचंद', कय सुकय पवेसो । खरतर सुरतरु गच्छ स्वच्छ, गणहर पभणेसो ।—ऐ.जै.का.सं.

पभा—देखो 'प्रभा' (रू.भे.) (जैन)

पभारा-सं०स्त्री० [सं० प्राग्भारा] प्राग्भारा नामक आठवीं अवस्था जिसमें शरीर पर सलवट पड़ जाते हैं और शरीर झुक जाता है । (जैन)

पभाव—देखो 'प्रभाव' (रू.भे.) (जैन)

पभूय—देखो 'प्रभूत' (रू.भे.) (जैन)

पमंग, पमंगर, पमंगयं, पमंगह, पमंगांण-सं०पु० [सं० प्रवंगः या प्रवगः =वानर, वंदर] घोड़ा, अश्व (डि.को.) ।

उ०—१ वदन मजीठ रूप विकराळा, पमंगां चढ़े पूर पखराळां । —सू.प्र.

उ०—२ पड़े निहाव भेरि घाव उल्लटा पमंगयं । महा समुद्र लोप हद्द जांण लीध मग्गयं ।—रा.रू.

रू०भे०—पमंग्गं, पमग, पयग, पवंग, पवंगम, पवगांण; पविगि ।

मह०—पमंगेस ।

पमंगाळौ-सं०पु० [सं० प्रवंगः+आलुच्] घोड़ों का समूह ।

उ०—ओठी हालै अगं, पीठ घूमर पमंगाळौ । आसथांन रौ उतन, साख तेरे उजवाळौ ।—पा.प्र.

पमंगेस-सं०पु० [सं० प्रवंगः+ईश] देखो 'पमंग' (मह०, रू.भे.)

उ०—मिळयौ ब्रह्म सूं ब्रह्म सो ध्यानं मायौ । पमंगेस देवेस रौ तंत पायौ ।—पा.प्र.

पमंग्गं—देखो 'पमंग' (रू.भे.)

उ०—पमंग्गं पडताळ पंयाळ भ्रमै । भर मार सिरं हरहार भ्रमै । —गु.रू.बं.

पमग—देखो 'पमंग' (रू.भे.)

पमण—देखो 'पवन' (रू.भे.)

उ०—परठण पमण सुजळ नभ प्रिथमी । लखमण वंधव समरि वर लिखमी ।—वि.प्र.

पमत—देखो 'प्रमत्त' (रू.भे.)

पमाअ—देखो 'प्रमाद' (रू.भे.) (जैन)

उ०—पमाओ अट्ठहा भवे ।—जै.त.प्र.

पमाड़ियो, पमाडियौ—देखो 'पवांड' (अल्पा०, रू.भे)

उ०—पमाडिया ना पांन, केइ बगरौ नइं कांटी । खावै खेजड़ छोड, सालितुस सबला वांटी ।—स.कु.

पमाणौ, पमावौ—देखो 'पोमाणौ, पोमावौ' (रू.भे.)

उ०—सिध फतै करि गाजियो, दखणी भांज दुभल्ल । पाडि पमायौ सू पछै, सोई सच्चौ मल्ल ।—गु रू.बं.

पमाणहार, हारौ (हारी), पमाणियौ—वि० ।

पमायोड़ौ—भू०का०कृ० ।

पमाईजणौ, पमाईजवौ—कर्म वा० ।

पमाय—देखो 'प्रमाद' (रू.भे.)

उ०—पवल पमाय कळाव कुंभ, भंजण घण अविग्रल । —स.कु.

पमायोड़ौ—देखो 'पोमायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० पमायोड़ी)

पमार—देखो 'परमार' (रू.भे.)

पमावणौ, पमाववौ—देखो 'पोमाणौ, पोमावौ' (रू.भे.) (उ.र.)

पमावणहार, हारौ (हारी), पमावणियौ—वि० ।

पमाविओड़ौ, पमावियोड़ौ, पमाव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

पमावीजणौ, पमावीजवौ—कर्म वा० ।

पमावियोड़ौ—देखो 'पोमायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० पमावियोड़ी)

पमुंह, पमुह-सं०पु० [सं० प्रतिमुख] १ उल्टा, विरुद्ध ।

उ०—आतस इंदु अरक ताढ़िम अंग, सायर छंडे लहरि सुवाह । पह मेड़ता चले पारोठौ, पमुह वहे सुरसरि प्रवाह ।

—रांमदास मेड़तिया रौ गीत

२ देखो—'प्रमुख' (रू.भे.)

पमुंकणौ, पमुंकवौ—देखो 'मूकणौ, मूकवौ' (रू.भे.)

उ०—पुहुपवती लता न परस पमुकै, देतौ अंग आलिंगन दांन । मतवाळौ पय ठाइ न मंडै, पवन वमन करतौ मधु पांन ।—वेलि

पमुकणहार, हारौ (हारी), पमुकणियौ—वि० ।

पमूंकिओड़ौ, पमूंकियोड़ौ, पमूंक्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

पमूंकीजणौ, पमूंकीजवौ—कर्म वा० ।

पमूंकियोड़ौ—देखो 'मूकियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० पमूंकियोड़ी)

पमोडी-सं०स्त्री० [सं० पद्मकर्कटी] पद्मकर्कटी (उ.र.)

पमोद—देखो 'प्रमोद' (रू.भे.) (जैन)

पम्मलेसा—देखो 'पद्मलेस्या' (रू.भे.) (जैन)

पम्ह—देखो 'पद्म' (रू.भे.) (जैन)

पम्हलेसा—देखो 'पद्मलेस्या' (रू.भे.) (जैन)

पम्हा—देखो 'पदमा' (रू.भे.) (जैन)

पयंग—१ देखो 'पतंग' (रू.भे.)

२ देखो 'पमंग' (रू.भे.)

उ०—दहलै पयंग पायळां दौड़ । परसाद थंभ पै जांण पौड़ । —गु.रू.बं.

पयंचसवद—देखो 'पंचसवद' (रू.भे.)

पयंडु, पयडौ-सं०पु० [सं० प्रचण्ड] १ प्रखर, तेज ।

उ०—१ सुहगुरु सिरि जिण लवधि सूरि, पट्ट कमल मायंडु । भायडु

सिरि जिणचन्द सूरि, जो तव तेय पयंडु ।—कवि ग्यांनकलस

उ०—२ पोळि पहुतउ पंडु तेजि तरणि पयंडु ।—पं.पं.च.

२ जबरदस्त । उ०—विहुं खवे दो भाथा करयलि कोदंडी । वाळी वेसह वाळी भुयदंड पयंडो ।—पं.पं.च.

पयंद-सं०पु० [सं० पय+इन्द्र] तालाब, सरोवर (अ.मा.)

उ०—अतरे सारंग आवियो, किया पयंदा कोट । साट पड़ावण सूर री, गोठ करण मन मोट ।—पा.प्र.

पयंपणी, पयंपबौ-क्रि०स० [सं० प्रजल्पनम्] कहना, कथना ।

उ०—ऊठि अचूंका बोलणा, नारि पयंपं नाह । घोड़ां पाखर घमघमी, सिधू राग हुवाह ।—हा.झा.

दयंपणहार, हारौ (हारी), पयंपणियौ—वि० ।

पयंपिप्रोड़ौ, पयंपियोड़ौ, पयंप्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

पयंपीजणी, पयंपीजबौ—कर्म वा० ।

पयंपियोड़ौ-भू०का०कृ०—कहा हुआ, कथा हुआ ।

(स्त्री० पयंपियोड़ी)

पय-सं०पु० [सं०] १ दूध । उ०—पय मीठा कर पाक, जो अमरत सींचीजिये । उर करड़ाई आक, रंच न मूके राजिया ।

—किरपारांम

२ पानी । उ०—भूखो की जोमें सिसकारा भरती । नांखे निसकारा घीमें पग घरती । मुखड़ी कुम्हळायो भोजन विन भारी । पय पय कर तोड़ी पोढ़ी पियप्यारी ।—ऊ.का.

[सं० पद, प्रा० पग्र] ३ चरण, पंक्ति । उ०—मुहरि अंति लुघवि गुरु मभि, वार चिश्रार विनांण । पय सोळह आखर परठि, आखि रूप इहनांण ।—ल.पि.

४ पैर । उ०—रिणमाल ऊठि नरसिंघ रुख, पय ग्रहि लात पछाड़िया ।—सू.प्र.

५ तेज, कान्ति । उ०—पालर पय पिव खाग पय, पड़े समांण प्रभाव । सफरी अर तिय चख सदा, घाले प्रजळा घाव ।

—रेवतसिंह भाटी

पयग-सं०पु० [सं० पयोग] वरुण (अ.मा.)

पयगूण-सं०पु०—शरीर (अ.मा.)

पयचार-सं०स्त्री० [सं० पदचार] १ पादरक्षिका, जूती (अ.मा.) ।

२ देखो 'पदचार' (रू.भे.)

पयट्ठणी, पयट्ठबौ—देखो 'पैठणी, पैठबौ' (रू.भे.)

उ०—आजूणउ घन दीहड़उ, साहिब कउ मुख दिट्ठ । माथा भार उळाघ्यियउ, आंख्यां अमी पयट्ठ ।—ढो.मा.

पयड, पयडउ, पयडिउ-सं०पु० [सं० प्रकट] प्रकट ।

उ०—१ गुरु तक्क कव्व नाडय पमुह, विज्जा वास पसिद्ध घर । परिहरवि आवि विहि पयड कइ, पुहवि पसंसिजइ सुपरपरि ।

—ऐ.जै का.सं.

उ०—२ अत्यांगु पहुविरायह तणु उजिणि, रंजवि जयपत्त लियउ । खरहरय सद्दि जगि पयडिउ, जुत पहांणु पहुविप्पयउ ।

—ऐ.जै.का.सं.

पयडिय, पयडी-सं०स्त्री० [सं० प्रकृति] प्रकृति । उ०—सिरि 'उद्योतन' 'वद्धमान सिरि सूरि' जिणेसर' । थंभणपुर सिरि 'अभयदेव', पयडीय परमेसर ।—ऐ.जै.का.सं.

पयडीबंध—देखो 'प्रकृतिबंध' (रू.भे.)

पयण-सं०पु० [सं० पद] चरण । उ०—दुजवर जगण पयेण जिण, सो करहंती सुणंत । सात गुरु पय जास मध, सीखा छंद सुभंत ।

—र.ज.प्र.

पयतळि—देखो 'पदतळ' (रू.भे.)

उ०—भूवलयंमि पसिद्ध सिद्ध, जो संकरु भणियउ । गोरी पयतळि रुलिय, सोव इणि वांणिहि हरियउ ।—अभयतिलक

पयद—देखो 'पयोद' (रू.भे.)

पयदळ—देखो 'पैदल' (रू.भे.)

पयदात-सं०पु० [सं० पदाति] पैदल, प्यादा ।

उ०—सहनाय सुर विचि सोह अति, अच्छर लेत विमोह । सब सस्त्र संजुत सूर, पयदात झुंड सपूर ।—रा.रू.

पयध—देखो 'पयोधि' (रू.भे.) (डि.को.)

पयधर—देखो 'पयोधर' (रू.भे.)

उ०—पयधर रा मथण जगत रा पाळग । सर रा अचळ संत रा साथ ।

—र.रू.

पयधि—देखो 'पयोधि' (रू.भे.)

पयनध, पयनिध, पयनिधि—देखो 'पयोनिधि' (रू.भे.)

उ०—असमांन धार मंजर उचितापति, आगर अलिम मंळै निळ आप । पाळग मीन मोर तर पातां, पयनिधि पावस वसंत 'प्रताप' ।

—महारांणा प्रताप रो गीत

पयनिरत-सं०स्त्री०यो० [सं० पयोनृत्यं] मछली (अ.मा.)

पयन्ना-सं०पु० [सं० प्रकर्ण] प्रकर्ण (जैन)

पयप-सं०पु०यो० [सं०] वरुण (अ.मा.)

पयपांन-सं०पु०यो० [सं० पयपान] १ दुग्ध-पान ।

२ जल-पान ।

पयलु-वि० [सं० पराचीन] पराचीन (उ.र.)

पयसणी, पयसबौ—देखो 'पैसणौ, पैसबौ' (रू.भे.)

उ०—निसुणी नारि विचारिण पयसियइ । प्रीय तणी तडि कउतिगि वयसियइ ।—सालीभद्र सूरि

पयसागर-सं०पु० [सं०] १ समुद्र ।

२ तालाब ।

३ वर्तन विशेष (दूध या जल)

रू०भे०—पइसागर ।

पयसीरा-सं०स्त्री० [सं० पयः+रा० सीर] नदी (अ.मा.)

पयस्वनी-सं०स्त्री० [सं० पयस्विनी] पानी वाली नदी ।

उ०—भीमां धुनी पयस्वनी, गोदावरी गहीर। उन्नतभद्रा पूरणा, किसना निरमळ नीर।—बां.दा.

पयहद—देखो 'पयोधर' (रू.भे.)

पयहारी-सं०पु० [सं० पय+आहारी] केवल दूध पर निर्वाह करने वाला।

रू०भे०—पयारी, पैहारी।

पयांण, पयांणउ—देखो 'प्रयांण' (रू.भे.)

उ०—१ जिण परवत प्रभु पग धरै रे, सो तो करै रे पताळ पयांण। —मी.रां,

उ०—२ तइं संचलतइं सूर, धूंधळियउ धर धमधमी। खउंदाळिम खीची दिसइ, कियउ पयांणउ पूर।—अ० वचनिका

उ०—२ हिले सप हैथाट, चले बांना बदरंगी। छळ जळनिधि उलटे, जांण वडवानळ संगी। गिर छीजै खुरताळ, पहवि थळ सिखर पलट्टै। पड़ अपंथ पंथ, ग्रह तुट्टै सर खुट्टै।—गु.रू.बं.

पयांणौ—देखो 'प्रयांण' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—१ लीला किम ढीलौ वहै, पंथ पयाणौ दूर। गोख उडीकै कामणी, जोवन में भरपूर।—अज्ञात

पयाद, पयादौ-सं०पु० [सं० पदाति] (स्त्री० पयादी) पैदल, प्यादा।

उ०—१ पंगू पयादं मूक सादं ऊदमादं कढ्ढ ए। तेजाळ तामं वेग कामं नीस लाभं वढ्ढ ए।—पा.प्र.

उ०—२ तीस हजार साथि घोड़ा रजपूत। बीस हजार फौज पयादौ मजबूत।—सि.वं.

उ०—३ बादसाह इण रा वचन री धाक सूं तुरत पयादौ होय कही।—नी.प्र.

रू०भे०—पय्यादौ।

पयार-सं०पु० [सं० प्रकार] १ प्रकार। उ०—नव-नव भंगिहि पंच पयार, भोगिवि भोग वल्लह कुमार।—उपाध्याय मेरुनन्दन गणि

२ देखो 'पाताळ' (रू.भे.)

पयारी—देखो 'पयहारी' (रू.भे.)

पयाळ—१ देखो 'पाताळ'।

उ०—पैठा नाग पयाळ मैं, तर चंदण कर त्याग। घाळक चंदण लपटिया, नागां पोगर नाग।—बां.दा.

२ देखो 'पलाळ' (रू.भे.)

पयाळसींगी—देखो 'पाताळसींगी' (रू.भे.)

पयाळि, पयाळु—देखो 'पाताळ' (रू.भे.)

उ०—भवसि घड़ा वळि माळि, वांमण ज्युं 'वीठळ' वधै। उतवंग जाइ ब्रह्मंडि अडै, पग सातमै पयाळि।—वचनिका

पयालौ—देखो 'प्यालौ' (रू.भे.)

उ०—सोण चंडी पयालां नवालां ग्रीध भखै मांस।
—राजा रायसिंह झाला री गीत

पयावच्च-सं०पु० [सं० प्रजापति] ब्रह्मा (जैन)

पयावच्चथावरकाय-सं०पु० [सं० प्रजापति स्थावर काय] वनस्पति काय (जिसका मालिक प्रजापति नामक देव हो) (जैन)

पयावाळौ-वि०—पैसे वाला, धनवान।

पयावि—देखो 'प्रतापी' (रू.भे.) (जैन)

पयासण—देखो 'प्रकासन' (रू.भे.) (जैन)

पयासणौ, पयासवौ—देखो 'प्रकासणौ, प्रकासवौ' (रू.भे.)

उ०—एकंतु करि अखीउ कण गुभु कुंती पयासीउ।
—पं.पं.च.

पयूख—देखो 'पीयूख' (रू.भे.)

पयैं—देखो 'पय' (रू.भे.)

उ०—तास समर जिण तारिया, पयैं ऊपरा पखांण।—पि.प्र.

पयो-सं०पु०—पैसा। उ०—यदि चंदनं वहु तदा किं कपाट युग्मं कारयं यदा पयो वहु तदा किं सरधस्य क्षेपणीयं।—व.स.

पयोद-सं०पु० [सं०] बादल।

रू०भे०—पयद, पयोदु।

पयोदर—देखो 'पयोधर' (रू.भे.)

पयोदु—देखो 'पयोद' (रू.भे.)

उ०—टंकार कोदंड तणु सु वाजिउं। जांणे सु कल्पांत पयोदु गाजेउ।
—विराट पर्व

पयोध—देखो 'पयोधि' (रू.भे.)

उ०—ग्राह गोह गयंदां, देख व्याघ मदंधा। पेख क्रोध पुलिंदां, पयोध नघ पार।—र.ज.प्र.

पयोधर-सं०पु० [सं०] १ समुद्र (डि.को.)

२ तालाब।

३ बादल।

४ स्तन, कुच (ह.नां.मा.)

उ०—धरधर लिंग सघर सुपीन पयोधर, घणीं खीण कटि अति सुघट।—वेलि

५ गाय का आयन।

६ सूर्य।

७ लघु, गुरु, लघु चार मात्रा के समूह का नाम (र.ज.प्र.)

८ २४ लघु, १२ गुरु कुल ३६ वर्ण और ४८ मात्रा का दोहा नामक छंद (र.ज.प्र.)

९ ४४ गुरु, ६४ लघु, १०८ वर्ण व १५२ मात्रा का छप्पय नामक छंद (र.ज.प्र.)

रू०भे०—पओहर, पयधर, पयहर, पयोदर, पयोहर, पहोवर, पुओहर, पुओहर।

पयोधार-सं०पु० [सं० पयोधर] समुद्र। उ०—सर्फ सोड मैंडांण ऊडांण सारां। पयोधार हूंता न को होय पारां।—सू.प्र.

पयोधि-सं०पु० [सं०] समुद्र। उ०—फईक तौ कंस निजवंस रा फ-वाड़ा, पाप रा पयोधि कइक पड़िया। समै इण मांय नौमाज 'पीथल'

सुतन, खेंग मग घरम रै धँ ईज खड़िया ।

—ठा उम्मेदसिंह नीमाज री गीत

ल०भे०—पयध, पयधि, पयोध ।

पयोनध, पयोनिध, पयोनिधि–सं०पु० [सं० पयोनिधि] समुद्र (डिं.को.)

उ०—१ इण विध श्राभरणांह, मनूं मुकता मिळी । छक तरुणाई छोळ, पयोनिध ज्यूं छिली ।—बां.दा.

उ०—२ सुरता विकसी सर सायन में, परि प्रेम पयोनिध पायन में ।—ऊ.का.

रू०भे०—पयनध, पयनिध, पयनिधि ।

पयोमुख, पयोमुच–सं०पु० [सं०] बादल, मेघ।

उ०—देव श्रवर मीठा मुखे, हृदय कुटिळ असमांन। जांणि पयोमुख संग्रह्या, ते विस कुंभ समांन ।—वि.कु.

पयोवाह–सं०पु० [सं०] बादल, मेघ ।

पयोव्रत–सं०पु० [सं०] मत्स्य पुराण के अनुसार एक व्रत का नाम ।

पयोहर—देखो 'पयोधर' (रू.भे.)

उ०—१ पहिलौ मुखराग प्रगट थ्यौ प्राची, श्ररुण कि श्ररुणोद श्रंबर । पेखे किरि जागिया पयोहर, संभा वंदण रिखेसर ।

—वेलि

उ०—२ श्राठ वेद मागण श्रांणौ, मांहे तास पयोहर मांणौ। वाचि छंद इम 'पदमावती', करि रुघनाथ तणी कीरत्ती ।—पि.प्र.

पय्यादी—देखो 'पयादी' (रू.भे.)

उ०—घोड़ा ऊंट हाथी तौ पय्यादी फौज वेंणा ।—शि.वं.

परं–श्रव्य०—किन्तु, लेकिन । उ०—बीजे ठाकुरे वात विचारि श्रर राव भोज मेलियौ। कहाडियौ जु राजि पातिसाहजी सलांमति रावळौ साथ श्राइ श्रापड़ियौ छै। परं पहुचण दीजै ।—द.वि.

परंग, परंगि–सं०पु० [सं० पर+श्रंग] दूसरे का शरीर या श्रंग ।

उ०—बिहुं वेवाहिय मंदिरि व्रंदि रमइं तगु श्रंगि । लेई लागवि घाविय श्राविय वात परंगि ।—नेमिनाथ फागु

परंच–श्रव्य० [सं०] १ श्रौर भी ।

२ तो भी ।

३ परन्तु ।

परंजण, परंजन—देखो 'परजन्य' (रू.भे.) (श्र.मा., नां.मा.)

परंतप–वि० [सं०] १ वैरियों को दुःख देने वाला ।

२ जितेन्द्रिय ।

सं०पु० [सं०] चिन्तामणि ।

परंतु–श्रव्य० [सं०] १ पर ।

२ तो भी ।

३ किन्तु ।

४ लेकिन ।

परंद, परंदो–सं०पु० [फा० परिन्दः] चिड़िया, पक्षी ।

उ०—व्रद दुधा खड्ग रव रूपा बभंदा बरण, सवा सावक करण सुधा घर सीज । तरोहर हमाऊ परंद छाया तरंद, राजचंद नरंद कुरंभ तणी रीज ।—हुकमीचंद खिड़ियौ ।

परंध्री—देखो पुरंध्रि' (रू.भे.) (ह.नां., श्र.मा.)

परंपर–सं०पु० [सं०] १ श्रविच्छिन्नक्रम, सिलसिला ।

उ०—प्रकरण सिद्धांत गुरु परंपर, सुणौ सहु श्रधिकार ए ।

—स.कु.

२ पुत्र, पौत्र, बेटे-पोते ।

परंपरा–सं०स्त्री० [सं०] अनुक्रम, सिलसिला ।

यौ०—परंपरागत ।

रू०भे०—परापर, परापरी ।

पर–वि० [सं०] १ श्रन्य, दूसरा, पराया ।

उ०—१ वाद भणी विद्या भणी, पर रंजण उपदेस ।—स.कु.

उ०—२ वसा ए ना वासौ जी ल्यां, म्हारी मिरगानैणी राज । पर घर वासौ ए सुंदर, ना लेवां जी म्हारा राज ।—लो.गी.

यौ०—परश्रातमा, परउपकार, परकस्ट, परकाज, परघर, परचिंता, परदुख, परद्रोह, परधन, परनिंदा, परपीड़न, पररंजन, परसुख ।

२ श्रागे का, पूर्व का । उ०—श्रणभे श्रणरागी, पर भव पागी, वग बागी वाजंदा है ।—ऊ.का.

३ दूसरे का, पराए का । उ०—जीव दया पालउ जांण, श्राप समा पर प्रांण ।—स.कु.

४ बाद का ।

५ चोर (श्र.मा.)

सं०पु० [सं०] १ शत्रु, वैरी (ह.नां.मा.)

उ०—१ नीसांणै घाव वाजिया, गाजै गहरै सद्द । श्राकंपै पतसाह दळ, पडहायौ पर मद्द ।—नैणसी

उ०—२ सखी श्रमीणौ साहिवौ, सुणै नगारां घ्रोह । जावै पर दळ सांमुहौ, ज्यूं सादूळौ सीह ।—बां.दा.

उ०—३ सखी श्रमीणौ साहिबौ, गिणै पराई देह । सर वरसै 'पर चक्र सिर, ज्यूं भादवड़ै मेह ।—बां.दा.

यौ०—परंतप ।

२ पंख, पक्ष । उ०—वहि खाळ रत्राळ ग्रिभाळ परां, वजि छाक बंबाळ लंकाळ छके ।—सू.प्र.

मुहा०—१ पर श्राणा—पंख उगना, पंखों से युक्त होना ।

२ पर उखड़णा—कमजोर हो जाना, शक्तिहीन हो जाना ।

३ पर उखाड़ना—कमजोर कर देना, शक्तिहीन कर देना ।

४ पर ऊगणा—शरारत श्राना, दुष्टता श्राना ।

५ पर कट जाणा—श्रशक्त हो जाना, कुछ करने लायक न रहना ।

६ पर काट देणा—श्रशक्त कर देना, कुछ करने लायक न रहने देना ।

७ पर कैंचणा—पंख काट देना (कबूतरबाज)

८ परजमणा—देखो 'परऊ गणा' ।

९ पर जळणा—साहस न होना, पहुंच न होना।
१० पर झाड़णा—पुराने परों को गिराना, पंख फटफटाना।
११ पर टूटणा—देखो 'पर जळणा'।
१२ पर न मारणा—पैर न रख सकना, जा न सकना।
१३ पर निकळणा—देखो 'पर आणा'।
१४ पर निकाळणा—उड़ने योग्य होना, पंखों से युक्त होना, बढ़ कर चलना, इतराना।
सं०स्त्री० [सं०] ३ प्रीति, प्रेम। उ०—१ सुसतौ सो ठाकुर हुवौ। रजपूतां परज-लोग सूं भली पर पाळी।—नैणसी
उ०—२ चीलांगण न तजै द्रुमचंदण, मांछां-गण न तजै महण। मोटा धणी श्रबै तो 'मांना', पर पाळै तौ वडापण।
—रिवदांन महड़ू
४ प्रतिज्ञा, प्रण। उ०—पर प्रहळाद तणी प्रत पाळी। वळ धू अखी कियौ वनमाळी।—र.ज.प्र.
५ मर्यादा, परम्परा। उ०—पर जूनी पाळण कव पातां, गहलां राखण कीत घणी। करणीगर भव-भव मो कीजै, घरणीधर देवड़ौ धणी।—दुरसौ आढौ
६ इतिहास, इतिवृत्त। उ०—पत हिंदू करण गुणां री पारख, पर जूनी पहचांण। भोम विलास पधारौ 'भीमा', रूपग सुणवा रांण।
—किसनौ आढौ
अव्य०—१ परन्तु, लेकिन। उ०—सर फूटै हैमरां नर दुसार। पर रुधर न भीजै होय पार।—वि.सं.
२ ऊपर, सीमा से परे। उ०—इतरे लाभ वधूळौ आवै, कहर क्रोध डंडूळ कहावै। छित पर कांम धुंध नभ छावै, पात्र विवेक निजर नहिं आवै।—ऊ.का.
यौ०—परब्रह्म।
३ देखो 'प्र' (रू.भे.)
क्रि०वि०—अलग।
परइ—देखो 'परै' (रू.भे.)
उ०—ससनेही समदां परइ, वसत हिया मंझार। कुसनेही घर आंगणइ, जांण समदां पार।—ढो.मा.
परइयत-सं०पु० [सं० परैधित ?] भृत्य, दास (ह.नां.मा.)
परउपकार—देखो 'परोपकार' (रू.भे.)
परउपकारी—देखो 'परोपकारी' (रू.भे.)
परउपगार—देखो 'परोपकार' (रू.भे.)
उ०—परउपगारइं थाय ते तु पिण, जिण जी हुइ तेम रे लाल।
—वि.कु.
परउपगारी—देखो 'परोपकारी' (रू.भे.)
परकट—देखो 'प्रकट' (रू.भे.)
उ०—गोप्य गुसांई व्है रहै, अब काहे न परकट होइ। रांमसनेही संगिया, दूजा नाहीं कोय।—दादूवांणी

परकज—देखो 'परकज्ज' (रू.भे.)
परकजू-वि०यौ० [सं० पर+कार्य+रा.प्र.ऊ] दूसरे का कार्य करने वाला, परोपकारी।
रू०भे०—परगजु।
परकज्ज-सं०पु०यौ० [सं० पर+कार्य] दूसरे का कार्य, पराया कार्य।
रू०भे०—परकज।
परकत, परकत्त—देखो 'प्रकृति' (रू.भे.)
उ०—अवनी रोग अनेक, ज्यांरी विध कीधौ जतन। इण परकत्त री एक, रची न ओखद राजिया।—किरपारांम
परकमण, परकमणा, परकमा, परकम्मा—देखो 'परिक्रमा' (रू.भे.)
उ०—१ परकमणा दे पड़ पगां, बंदन कर जिण वेर। नाथ अगाड़ी नाखियौ, नृप सिर री नाळेर।—पा.प्र.
उ०—२ सोहूं सिल पर जेथ, पगलिया सिभू-केरा। करौ परकमा 'मेघ', निमौ दे मांन घणेरा।—मेघ.
उ०—३ राय देह पवराय, वार तण चेह विचंभा। झळअग्गी झूलिवा, करण लग्गी परकम्मा।—रा.रू.
परकर-सं०पु० [सं० परैश्वर्य] वैभव, ऐश्वर्य। उ०—अरु जिणां दिनां में माजन रा ठाकर उदैभांणजी री बडी परकर। घोड़ा ५०० काठी पड़ै।—द.दा.
रू०भे०—परखर, परिकर, परीकर।
परकमण, परकारमण-सं०पु० [सं० पर+कार्मण] अनुचर, नौकर।
(ह.नां.मा.)
परकरती—देखो 'प्रकृति' (रू.भे.)
परकांड—देखो 'प्रकांड' (रू.भे.)
परकार, परकाळ-सं०पु० [फा० परकार] १ वृत्त या गोलाई खींचने का एक उपकरण या औजार।
रू०भे०—पड़काल, पळकाळ।
२ देखो 'प्रकार' (रू.भे.)
उ०—महाविदेह सुदरसण मेरु तणै परकार।—स.कु.
परकास-सं०पु० [सं० प्रकाश] १ हंस (अ.मा.)
२ देखो 'प्रकास' (रू.भे.)
परकासक—देखो 'प्रकासक' (रू.भे.)
परकासण—देखो 'प्रकासण' (रू.भे.)
परकासणौ, परकासबौ—देखो 'प्रकासणौ, प्रकासबौ' (रू.भे.)
उ०—इसड़ी वात विचारनै, कुमर बोल्यावौ पास रे लाला। रांणी जितरौ मनमांहे तेवड़ी, तितरी दीधी परकास रे लाला।
—जयवांणी
परकासमांन, परकासवांन—देखो 'प्रकासवांन' (रू.भे.)
परकासियोड़ौ—देखो 'प्रकासियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० परकासियोड़ी)
परकिरिया—देखो 'प्रक्रिया' (रू.भे.)

परकीय-वि० [सं०] १ दूसरे का, पराया ।
२ देखो 'परकीया' (रू.भे.)

परकीया-सं०स्त्री० [सं०] १ पर पुरुष से प्रीति व संबंध रखने वाली स्त्री, एक नायिका ।
२ गाथा छन्द का एक भेद जिसमें दो जगण होते हैं (र.ज.प्र.)
रू०भे०—परकीय ।

परकीरण—देखो 'प्रकीरण' (रू.भे.)

परकोट, परकोटो-सं०पु०[सं०पर+कोट:] किसी स्थान या किले की रक्षा के लिए चारों ओर उठाई गई ऊंची व दृढ़ दीवार, चहारदीवारी, प्राचीर ।
उ०—१ कोट मांहे वडी इमारत कांई नहीं। कोट आगै परकोट, तिण मां वडी कोटड़ी छै ।—सोजत रै मंडळ री वात
उ०—२ किला परकोटा री उण कनै इदकाई है । म्हारा विचार में गम खाणी वत्ती है ।—फुलवाड़ी

परकोप—देखो 'प्रकोप' (रू.भे.)

परक्खणौ, परक्खबौ—देखो 'परखणौ, परखबौ' (रू.भे.)
उ०—गुणचाळै वद भादवै, नवमी ऊगत भांण। आवी फौज अचितियां, चोज परक्खण पांण ।—रा.रू.
परक्खणहार, हारौ (हारी), परक्खणियौ—वि० ।
परक्खिओड़ौ, परक्खियोड़ौ, परक्ख्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
परक्खीजणौ, परक्खीजबौ—कर्म वा० ।

परक्खियोड़ौ—देखो 'परखियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० परक्खियोड़ी)

परक्रत, परक्रति, परक्रत्त, परक्रत्ती-सं०स्त्री० [सं० परकृति] १ दूसरे का किया हुआ कार्य ।
२ देखो 'प्रकृति' (रू.भे.)
उ०—पुखतो गुणै प्रवांन, कदे नहिं मन में कावळ। पिण कांइ परक्रती सांम, नहीं मन में सावळ ।—ध.व.ग्रं.

परक्रमण, परक्रमा—देखो 'परिक्रमा' (रू.भे.)
उ०—परक्रमण तिण दे पग परसे, जस यम जीह अपार जपे। लेखा नर नागां नै दुरलभ, दीधी सो मीनै दीदार ।—र.रू.

परखंड-सं०पु० [सं०] विदेश, परदेश । उ०—खंडां परखंडां फिरियौ, संतां तणौ सुकाळ। तो भजियां सुख ऊपजै, तो का परदा टाळ ।
—अज्ञात

परख—देखो 'परीक्षा' (रू.भे.)
उ०—वळ खांधै जण जण वहै, कस वांधै करवाळ । परख भड़ां अर कायरां, अहअहियां अंवाळ ।—वी.स.

परखणौ, परखबौ-क्रि०स० [सं० परीक्षणम्] १ किसी वस्तु या पदार्थ की जांच करके उसके गुण-दोष, महत्व, मान आदि का ज्ञात करना ।
उ०—वै एक सुनार कनै उण मोती अर उण लाल नै परखावण सारू उडिया । सुनार पैला लाल नै परखी अर पछै मोती नै परखियौ ।—फुलवाड़ी
२ किसी मनुष्य अथवा प्राणी के स्वभाव तथा चरित्र की विशेषता को जानना । उ०—पारवती परमेस सरव पारवती सती । कहि हो कहि त्रिसकति जोग सु गोरख जती । सीता सी सारिखी जोया सारंगधर सरिखी । सावतरी सुभराज प्रघळ ब्रह्माजी परखी ।
—पी.ग्रं.
३ परीक्षा करना, जांच करना । उ०—सगुरा निगुरा परखिये साधु कहैं सब कोइ। सगुरा सांचा निगुरा झूठा, साहिब के दर होइ ।—दादूवाणी
४ पहिचानना । उ०—१ अगम निगम दोय वाणी परखौ, सूक्षम, भेद भणाया । भेटया भेद वेध नहिं लागे, यूं आतम दरसाया ।
—स्री हरिरामजी महाराज
उ०—२ मैं परणंती परखियौ, सूरति पाक सनाह । घड़ि खड़िसी गुड़िसी गयंद, नीठि पड़ेसी नाह । नाह नीठि पड़िसी, खेत मांझी निवड । गयंद पड़िमी गहर, करड़ घड़ भड़ गहड़ ।—हा.झा.
५ जानना, परिचय प्राप्त करना । उ०—नर संपत विलसै नहीं, जाझा दुख सूं जोड़ । लियो परख लालच लहर, खरी बुरी आ खोड़ ।—वां.दा.
परखवाड़णौ, परखवाड़बौ, परखवाणौ, परखवाबौ, परखवावणौ, परखवावबौ, परखाड़णौ, परखाड़बौ, परखाणौ, परखाबौ, परखावणौ परखावबौ—प्रे०रू० ।
परखिओड़ौ, परखियोड़ौ, परख्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
परखीजणौ, परखीजबौ—कर्म वा० ।
परक्खणौ, परक्खबौ, परिखणौ, परिखबौ, परीखणौ, परीखबौ, परीछणौ, परीछबौ, परेखणौ, परेखबौ, पारखणौ, पारखबौ ।
—रू०भे०

परखत्र-वि० [सं० पर+क्षत्रम्] क्षत्रियत्व, वीरता, बहादुरी ।
उ०—राव रायभांणजी राज करै । वडो सुभियांण, परखत्र प्रमांण, आचार री करण, भीम री सेल, साच री जुधीस्टर···।
—पनां वीरमदे री वात

परखद, परखदा—देखो 'परिसद' (रू.भे.)(अ.मा., ह.नां.मा.)
उ०—१ स्री महावीर धरम परकासइ, वइठी परखद बार जी । अम्रत वचन सुणत अति मीठा, पांमइ हरख अपार जो ।—स.कु.
उ०—२ बार परखदा वइठी आगलि, आप आपणइ ऊलासइ रे ।
—स.कु.
उ०—३ दिनें उंचा रहै । रात्रि हेटे दुकांन में वखांण देवै । परखदा घणी होवै । लोक घणा समज्या ।—भि.द्र.

परखर—१ देखो 'प्रखर' (रू.भे.)
२ देखो 'परकर' (रू.भे.)

परखा—देखो 'परीक्षा' (रू.भे.)
उ०—१ प्रजाराज आणंद पूगी परखा । वधै देवतां कीध फूलां वरिखा ।—सू.प्र.

उ०—२ कर चाप अटार-टंकी करखं। परखा सर एलम की परखं।—मे.म.

परखाई-सं०स्त्री० [सं० परीक्षा] १ परखने की क्रिया।
२ इसकी मजदूरी। उ०—मिनख लुगायां होकर गेली, व्है चेली हरखाई। पांमर गुरु नै परखावण री, पले नहीं परखाई।
—ऊ.का.

परखाड़णी, परखाड़बौ—देखो 'परखाणौ, परखाबौ' (रू.भे.)
परखाड़णहार, हारौ (हारी), परखाड़िणयौ—वि०।
परखाड़िओड़ौ, परखाड़ियोड़ौ, परखाड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।
परखाड़ीजणौ, परखाड़ीजबौ—कर्म वा०।

परखाड़ियोड़ौ—देखो 'परखायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० परखायोड़ी)

परखाणौ, परखाबौ-क्रि०स० [परखणौ क्रिया का प्रे०रू०] १ किसी वस्तु या पदार्थ के गुण, दोष, महत्व, मान आदि की जाँच कराना। उ०—सराफां सुनारां नूं दिखाय देय, रुपया खरा लेय परखायजे, अर तोनूं कोई पूछे थारै तेघड़ कठा सूं आई तौ कहजै म्हारा गुरु वेचण नै दीन्ही छै।—वैताळपचीसी
२ किसी मनुष्य अथवा प्राणी के स्वभाव तथा चरित्र की जानकारी कराना।
३ परीक्षा कराना, जांच कराना।
४ पहिचानवाना।
५ परिचय प्राप्त कराना, जानकारी कराना।
परखाणहार, हारौ (हारी), परखाणियौ—वि०।
परखायोड़ौ—भू०का०कृ०।
परखाईजणौ, परखाईजबौ—कर्म वा०।
परखाड़णौ, परखाड़बौ, परखावणौ, परखावबौ, परीछावणौ, परीछावबौ, पारखणौ, पारखबौ—रू०भे०।

परखायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ गुण-दोष, महत्व, मान आदि की जाँच कराया हुआ (पदार्थ)
२ चरित्र, स्वभाव आदि की जानकारी कराया हुआ (मनुष्य)
३ परीक्षा कराया हुआ, जाँच कराया हुआ।
४ पहिचान कराया हुआ।
५ परिचय प्राप्त कराया हुआ, जानकारी कराया हुआ।
(स्त्री० परखायोड़ी)

परखावणौ, परखावबौ—देखो 'परखाणौ, परखाबौ'।
उ०—१ मिनख लुगायां होकर गेली, व्है चेली हरखाई। पांमर गुरु ने परखावण री, पले नहीं परखाई।—ऊ.का.
उ०—२ वै एक सुनार कनै उण मोती अर उण लाल नै परखावण सारु उडिया।—फुलवाड़ी
परखावणहार, हारौ (हारी), परखावणियौ—वि०।
परखाविओड़ौ, परखावियोड़ौ, परखाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।
परखावीजणौ, परखावीजबौ—कर्म वा०।

परखावियोड़ौ—देखो 'परखायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० परखावियोड़ी)

परखियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ गुण-दोष, महत्व, मान आदि की जाँच किया हुआ (पदार्थ)
२ चरित्र, स्वभाव आदि की जानकारी किया हुआ (मनुष्य)
३ परीक्षा किया हुआ, जांच किया हुआ।
४ पहिचाना हुआ।
५ जाना हुआ, परिचय प्राप्त किया हुआ।
(स्त्री० परखियोड़ी)

परखी-सं०स्त्री० [सं० परीक्षणम्] एक प्रकार का लोहे का बना नुकीला लंबोतरा उपकरण जिसकी सहायता से बंद बोरियों में से नमूने के तौर पर कण या बीज निकाले जाते हैं।

परख्य—देखो 'परीक्षा' (रू.भे.)
उ०—झगड़उ भागउ गोरियां, ढोलइ पूरी सख्ख। मारू रळिया-इत हुई, पांमी प्रिय परख्ख।—ढो.मा.

परग-सं०पु० [देशज] पैर, चरण। उ०—सीस सरग सातमैं, परग सातमैं पयाळै। अरणव साते उदर, विरछ रोमांच विचाळै।—र.रू.

परगड़उ—देखो 'प्रकट' (रू.भे.)
उ०—सूरपसती नांमइ परगडउ रे, जेहनउ छइ उद्दांम उवंग रे।
—वि कु.

परगड़णी, परगड़बौ—देखो 'प्रकटणौ, प्रकटबौ' (रू.भे.)
उ०—स्री जिन मांणिक सूरि प्रथमसिस्य परगड़ा रे, विनय समुद्र बडगात।—प.प.चौ.

परगजु—देखो 'परकजु' (रू.भे.)
उ०—पर उपगारी परगजु, मोटी तुमारी लाज।—धरम-पत्र

परगट—देखो 'प्रकट' (रू.भे.)
उ०—१ कांमी अरु क्रोधी वेद विरोधी, परगट नरक पड़ंदा है। भगती नहि भोगा जुगत न जोगा, अदविच संत अड़ंदा है।
—ऊ.का.
उ०—२ कांमधेन खरणै धवळ, क्यूं नह झालै भार। भरियौ गाडौ भार सूं, परगट जांण पहाड़।—बां.दा.

परगटणौ, परगटबौ—देखो 'प्रकटणौ, प्रकटबौ' (रू.भे.)
उ०—परहित कारण परगटिया, थे महर करौ। म्हारा जिव री जळण मिटाय, श्रो उपकार करौ।—मी.रां.
परगटणहार, हारौ (हारी), परगटणियौ—वि०।
परगटवाड़णौ, परगटवाड़बौ, परगटवाणौ, परगटवाबौ, परगटवावणौ, परगटवावबौ, परगटाड़णौ, परगटाड़बौ, परगटाणौ, परगटाबौ, परगटावणौ, परगटावबौ—प्रे०रू०।
परगटिओड़ौ, परगटियोड़ौ, परगट्योड़ौ—भू०का०कृ०।
परगटीजणौ, परगटीजबौ—भाव वा०।

परगटाड़णो, परगटाड़बो—देखो 'प्रकटाणो, प्रकटावो' (रू.भे.)
परगटाड़णहार, हारो (हारी), परगटाड़णियो—वि०।
परगटाड़िग्रोड़ो, परगटाड़ियोड़ो, परगटाड़चोड़ो—भू०का०कृ०।
परगटाड़ीजणो, परगटाड़ीजबो—कर्म वा०।

परगटाड़ियोड़ो—देखो 'प्रकटायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० परगटाड़ियोड़ी)

परगटाणो, परगटावो—देखो 'प्रकटाणो, प्रकटावो' (रू.भे.)
परगटाणहार, हारो (हारी), परगटाणियो—वि०।
परगटायोड़ो—भू०का०कृ०।
परगटाईजणो, परगटाईजबो—कर्म वा०।

परगटायोड़ो—देखो 'प्रकटायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० परगटायोड़ी)

परगटावणो, परगटावबो—देखो 'प्रकटाणो, प्रकटावो' (रू.भे.)
परगटावणहार, हारो (हारी), परगटावणियो—वि०।
परगटाविग्रोड़ो, परगटावियोड़ो, परगटाव्योड़ो—भू०का०कृ०।
परगटावीजणो, परगटावीजबो—कर्म वा०।

परगटावियोड़ो—देखो 'प्रगटायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० परगटावियोड़ी)

परगट्ट—देखो 'प्रकट' (रू.भे.)
उ०—मेछ निजामळि मुलक, ग्रमल दवखण वरतायो। एण कपट ग्रापरो, जिको परगट्ट जणायो।—रा.रू.

परगडणो, परगटबो—देखो 'प्रकटणो, प्रकटबो' (रू.भे.)
उ०—१ विण ग्रपराधइ वांधीइ, ग्रबळा सवळी ग्रंग। पछइ करत ते परगडउ, परनारी सिउं संग।—मा.कां.प्र.
उ०—२ जुग प्रधान जगि परगडा रे, स्री जिनचंद सूरिंदो रे।
—स.कु.

परगणो—देखो 'परगनो' (रू.भे.)

परगत-सं०पु० [सं० परित्यक्त] १ परित्याग। उ०—गहमत गत ग्रसत ग्रवर तत परगत। ग्रखत दुचित रत भरथ ग्रत।—र.रू.
२ देखो 'प्रकृति' (रू.भे.)

परगती—१ देखो 'प्रकृति' (रू.भे.)
२ देखो 'प्रगति' (रू.भे.)

परगनो-सं०पु० [फा० पर्गनः] वह भूभाग जिसके अंतर्गत बहुत से ग्राम हों, परगना।
रू०भे०—पड़गनो, पड़गणो, परगणो, पिड़गनूं, पिड़गनो।

परगरणो, परगरवो-क्रि०ग्र० [सं० परिगलनम्] घुल जाना।
उ०—एक सीह नइ पाखरयउ, सूर सिहाइति ग्रावरयउ, पंचाम्रत ग्रमी परगरयउ। महादांन ग्राछइ घड़इ, दूध मांहि साकर पडइ।
—ग्र. वचनिका

परगळ-वि० [सं० पुष्कल] (स्त्री० परगळी) प्रचुर, ग्रधिक, पूर्ण, पूरा। उ०—घर ढांगी 'ग्रालम' घणी, परगळ लूणी पास। लिखियो जिणनै लाभसी, राड़धड़ारो वास।—ग्रज्ञात
रू०भे०—परघळ, परिघळ, प्रगळ, प्रघळ।
ग्रल्पा०—परगळो, परघळो, प्रग्घळो।

परगळांण, परगळाई-सं०स्त्री० [सं० पुष्कल] १ बाहुल्यता, ग्रधिकता, ग्राधिक्य।
२ विस्तार, फैलाव।
रू०भे०—परघळांण, परगळाई, प्रगळांण।

परगळो—देखो 'परगळ' (ग्रल्पा., रू.भे.)
(स्त्री० परगळी)

परगस—सं०पु०-पुष्प विशेष ?
ऊ०—डहडहत कुसम पुरत पराग, पलव दळ मिळ जेव जाग। रव-मुखी दावदी पुन पळास, नाफुरमा परगस ग्रासपास।
—मयाराम दरजी री वात

परगह—देखो 'परिग्रह' (रू.भे.)
उ०—१ परगह ले बांधी पगा, सेंठी गूघर साथ। हंजा रो सारो हुकम, हुग्रो रंगीली हाथ।—वां.दा.

परगहे—देखो 'परिग्रह' (रू.भे.)
उ०—इसडाई पिंहु ग्रलखांमणा, परगहे इसी सह पास।—पा.प्र.

परगाढ—देखो 'प्रगाढ' (रू.भे.)

परगाळ—देखो 'प्रगाळ' (रू.भे.)

परगाळियो—देखो 'प्रगाळियो' (रू.भे.)

परगास—देखो 'प्रकास' (रू.भे.)
उ०—स्रो राजा जनक घर कन्या ग्रवतारी। कोटिक भांण परगास कोटि भानूं चंद कळा उजियाळी।—समानबाई

परगासक—देखो 'प्रकासक' (रू.भे.)

परगासणो, परगासबो—देखो 'प्रकासणो, प्रकासबो' (रू.भे.)
परगासणहार, हारो (हारी), परगासणियो—वि०।
परगासिग्रोड़ो, परगासियोड़ो, परगास्योड़ो—भू०का०कृ०।
परगासीजणो, परगासीजबो—कर्म वा०।

परगासियोड़ो—देखो 'प्रकासियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० परगासियोड़ी)

परगाह, पगैर, परग्गह—देखो 'परिग्रह' (रू.भे.)
उ०—१ मन मांहे मुळकेह, हय चढ 'जींदो' हालियो। परगह हूंत पुणेह, यण सिध नै म्हैं ग्रोळख्यो।—पा.प्र.
उ०—२ 'ग्रखौ' परग्गह ग्रागळो, जरद न मावै जोम। वाद तरस्सै साह सूं, वांह परस्सै व्योम।—रा.रू.

परग्या—देखो 'प्रग्या' (रू.भे.)

परग्याचक्षू—देखो 'प्रग्याचक्षु' (रू.भे.)

परग्रह—देखो 'परिग्रह' (रू.भे.)
उ०—तइ दिख राजा तणइ साठ ताय पुत्री, साठ हजार कुंवर सिरदार। नवखंड रा भूपाळ नमइ जिण, परग्रह लहइ तियइ कुण पार।—महादेव पारवती री वेलि

परघट—देखो 'प्रकट' (रू.भे.)
परघरळ, परघळ—देखो 'परगळ' (रू.भे.)
उ०—१ पिंगळ ऊचाळो कियो, आयो पुहकर तीर। खड़पांणी परघरळ तिहां, सुख पांमीयो सरीर।—ढो.मा.
उ०—२ दादो तो समरचां आवइ, दादो परघरळ लक्ष्मी लावइ हो।—स.कु.
परघळणो, परघळबो—देखो 'पिघळणो, पिघळबो' (रू.भे.)
उ०—धरा कहतां प्रिथी गाढ पकड़्यो, कठोर हुई। हेंमाचळ परवत परघळयो।—वेलि.टी.
परघळणहार, हारो (हारी), परघळणियो—वि०।
परघळिओड़ो, परघळियोड़ो, परघळयोड़ो—भू०का०कृ०।
परघळीजणो, परघळीजबो—भाव वा०।
परघळांण, परघळाई—देखो 'परगळांण' (रू.भे.)
परघळो—देखो 'परगळ' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—१ सू ऊंट किण भांतरा है? थापवी तळी रा, सुपवी नळी रा, कवाडिया दांतां, उधरै पींड रा, परघळा आसण रा, कांगरै धूब रा।—रा.सा.सं.
उ०—२ खळ दळां कंकळ सवळ खंड, वीर तंडै भुजवळी। सुज गळां समपै ग्रीध समळां, पळां भोजन परघळी।—र.ज.प्र.
(स्त्री० परघळी)
परघु, परघू, परघे, परघै—देखो 'परिग्रह' (रू.भे.)
उ०—१ वीटिया घलहर रायनां, पायक परघू जाइ। धरम दुवारइ ऊतरइ, कोइ न साहमुं थाइ।—मा.कां.प्र.
उ०—२ इसोही कोई आंवणी परघै रै मांही छै इण घोड़ी नै लेय आवै।—सूरै खींवै कांधळोत री बात
उ०—३ सारा रजपूतां सैमल लैणो भड़ घोड़ा भजको, घोड़ा ताता भड़ फुरतो वाळा, इसो सरदार नै इसो परघै, होवै तो उण रो हुकुम इण जिहांन में चालै।—वी.स.टी.
परघ्घन—देखो 'परिघ' (रू.भे.)
उ०—तुपक्कनि तोप जमूर जुलाल, परघ्घन सूल गदा भिंदिपाळ। गुपत्तिय खंजर धूप कटार, करत्तिय चक्र चलै चुकमार।—ला.रा
परघ्रत-सं०पु० [सं० पर+घृत] मक्खन, नवनीत (अ.मा.).
परड़-सं०स्त्री० [देशज] एक प्रकार का सर्प।
रू०भे०—परड़, पिरड़।
अल्पा०—पडोटियो, परड़ोटियो।
परड़ोटियो—देखो 'परड' (अल्पा०, रू.भे.)
उ०—ख्यांत कर देखियो वंस छत्तीस नै, भांत परड़ोटियां रंग भळियो। भांण हिंदवांण दुनियांण इण विचाळै, मणिधर सुपातां तूं हिज मिळियो।—ठा० उम्मेदसिंह नीमाज रो गीत
परड़ो—देखो 'प्रलय' (रू.भे.)
उ०—कहै दास सगरांम, कांम माछर रो करड़ो। मोटो हो तो करै, श्रो दुस्ट पिरथी परड़ो। पिरथी रो परड़ो करै, एड़ो देख्यो घाट। आछी कीवी रांमजी, जो नैंनो कियो निराट। नैंनो कियो निराट, तउ कररावै वरड़ो। कहै दास सगरांम, कांम माछर रो करड़ो।
—सगरांम
परचंड—देखो 'प्रचंड' (रू.भे.)
उ०—१ धन लूट कीधो धांण, वधि नारनोळ विनांण। चंड-नयर रा परचंड, दो नगर श्रै भुजदंड।—सू.प्र.
उ०—२ परचंड पटाझर पंथि पुळं। किरि जांणि परव्वत अट्ट कुळं।—गु.रू.बं.
परचइ—१ देखो 'परचो' (रू.भे.)
२ देखो 'परिचय' (रू.भे.)
परचक्कपल्ल-वि० [सं० पर+चक्र+राज० पल्ल] शत्रु दल को रोकने वाला, वीर, बहादुर। उ०—भारत्थि चडिय तेजसी भल्ल। परवाड़-मल्ल परचक्कपल्ल।—रा.ज.सी.
परचणो, परचबो-क्रि०स० [सं० प्रच्छ ?] १ कहना। उ०—कागां केरी चांच ज्यूं, चुगलां केरी जीह। विसटा ज्यूं परची बुरी, चूंथे सबही दीह। —वां.दा.
२ स्वीकार करना, मानना। उ०—१ जे मन परचसी तो कुंवर जीं नै ले आवसां, नहीं तो श्रांपां जाय तीरथ परस आसां।
—पलक दरियाव री बात
उ०—२ ढोलउ किम परचइ नहीं, सुहु रहिया समझाइ। पुळिया पूगळ दिसी, के कांइ कजि काइ।—ढो.मा.
३ समझना। उ०—साखी सबदी सीख कर, गावै सारी रात। आतम तो परच्या नहीं, करै विरांणी वात।
—स्त्री हरिरांमजी महाराज
परचणहार, हारो (हारी), परचणियो—वि०।
परचवाड़णो, परचवाड़बो, परचवाणो, परचवाबो, परचवावणो, परचवावबो, परचाड़णो, परचाड़बो, परचाणो, परचावो, परचावणो, परचावबो—प्रे०रू०।
परचिओड़ो, परचियोड़ो, परच्योड़ो—भू०का०कृ०।
परचीजणो, परचीजबो—कर्म वा०।
परचलण—देखो 'प्रचलण' (रू.भे.)
परचाड़णो, परचाड़बो—देखो 'परचाणो, परचावो' (रू.भे.)
उ०—सुरसत गणपत दे सुमत, आखर सरस अलाप। गढ़पती गाऊं गुणां, परचाडा 'परताप'।—किसोरदांन बारहठ
परचाड़णहार, हारो (हारी), परचाड़णियो—वि०।
परचाड़िओड़ो, परचाड़ियोड़ो, परचाड़्योड़ो—भू०का०कृ०।
परचाड़ीजणो, परचाड़ीजबो—कर्म वा०।
परचाणो, परचावो-क्रि०स० [परचणो क्रिया का प्रे०रू०] १ कहलाना।
२ स्वीकार कराना।
उ०—सराव पी हो तो सराव छोडो। जो कांम सारो कियो सो

छोडी, पण रिजक संभाळो। घणी ही परचाइयौ पण नवाव तौ मन काठो कियो।—पदमसिंह री वात

परचाणहार, हारो (हारी), परचाणियौ—वि०।

परचायोड़ो—भू०का०कृ०।

परचाईजणो, परचाईजवो—कर्म वा०।

परचाड़णो, परचाड़बो, परचावणो, परचावबो—रू०भे०।

परचाधारी-सं०पु० [राज० परचो+सं० धारिन्] सिद्ध पुरुष, महात्मा।

उ०—पंढरपुर में प्रथम परचाधारी नांमदे छीपो हुवो।—बां.दा.ख्यात

परचायोड़ो-भू०का०कृ०—कहलाया हुआ।

२ स्वीकार कराया हुआ।

३ समझाया हुआ।

(स्त्री० परचायोड़ी)

परचार—देखो 'प्रचार' (रू.भे.)

उ०—पाळ तणौ परचार, कीधां आगम कांम री। वरसंता घणवार, रुकै न पांणी राजिया।—किरपारांम

परचारक—१ देखो 'परिचारक' (रू.भे.) (ह.नां.मा.)

२ देखो 'प्रचारक' (रू.भे.)

परचारणो, परचारबो—देखो 'प्रचारणौ, प्रचारबौ' (रू.भे.)

उ०—अवळां उद्धारी, सवळां कुळ आया। पुन परचारण रा, परमोदय पाया।—ऊ.का.

परचारणहार, हारो (हारी), परचारणियौ—वि०।

परचारिओड़ो, परचारियोड़ो, परचारयोड़ो—भू०का०कृ०।

परचारीजणो, परचारीजबो—कर्म वा०।

परचारत—देखो 'प्रचारित' (रू.भे.)

परचारियोड़ो—देखो 'प्रचारियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० परचारियोड़ी)

परचावणो, परचावबो—देखो 'परचाणौ, परचावौ' (रू.भे.)

उ०—इण भांत कजियो हार झाली ठाकुरसिंह पाछो गयो। राजपूत दिलासा करता परचावता नीठ-नीठ जे जावै छै। ठाकुरसिंघ भागेमन उदास थवयो निसासा गेरतो जावै छै।

—डाढ़ाळा सूर री बात

परचावणहार, हारो (हारी), परचावणियौ—वि०।

परचाविओड़ो, परचावियोड़ो, परचाव्योड़ो—भू०का०कृ०।

परचावीजणो, परचावीजबो—कर्म वा०

परचावियोड़ो—देखो 'परचायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० परचावियोड़ी)

परचासुध-वि० [राज० परचो+सं० शुद्ध] सतर्क, होशियार (अमरत)

परची-सं०स्त्री० [सं० परिचय] वह पुस्तक जिसमें किसी महात्मा का वर्णन हो, महात्मा की जीवनी। उ०—धाळदास सुत रांमदास रै, परची फेर पजाई। मांनो लाय लगी मुरधर में, ऊपर आंधी आई।

—ऊ.का.

परचूण, परचून—देखो 'पड़चूण' (रू.भे.)

उ०—इणां रै उपरांत आटे सीधै री, दूकानवाळै रा, पांनवाळै रा परचून। अवै तौ भंवरजी री अक्कल चकराई।—वरसगांठ

परचूनियौ—देखो 'पड़चूणियौ' (रू.भे.)

परचूनी—देखो 'पड़चूनी' (रू.भे.)

परचूरणि—देखो 'पड़चूण' (रू.भ.) (उ.र.)

परचूरता—देखो 'प्रचुरता' (रू.भे.)

परचेतस-सं०पु० [सं०] वरुण (डि.को.)

परचै—देखो 'परिचय' (रू.भे.)

परचो-सं०पु०यौ० [सं० परिचय] १ चमत्कार। उ०—सुग्रीव निरवळ राखि सरणै, सवळ 'वाळ' संघार। पह जोय 'किसना' नांम परचौ, तोय गिरवर तार।—र.ज.प्र.

क्रि०प्र०—दैणौ, वताणौ।

२ परिचय, पहिचान। उ०—अचंभ लख्यौ परचै घट एह। बस्यौ हररांम स्वदेस विदेह।—ऊ.का.

क्रि०प्र०—दैणौ, लैणौ, करणौ, कराणौ, होणौ।

३ शक्ति, बल। उ०—ऐंठै चूंठै नै मीठो कर आंणै। दीठो अणदीठो दीठो कर जाणै। पोखै प्रांणां नै नीसरिग्या परचा, चोसै वींठै री वीसरिग्या चरचा।—ऊ.का.

[फा० परचः] ४ पत्र, चिट्ठी। उ०—लख पुळ 'पातल' जस परचो लिख लीनो। दुनिया पाळण री कौंसल कस कीनो।—ऊ.का.

क्रि०प्र०—वांचणौ, भेजणौ, मेलणौ, लिखणौ, लिखाणौ।

५ परिणाम, फल। उ०—साहिव तू सुंदर कहै, सुकलीणी सबजांण। परचो सुकनी पूजवी, भळ आया कुळ भांण।

—कल्यांणसिंघ नगराजोत वाढेल री वात

६ प्रश्न, पेपर।

क्रि०प्र०—करणौ, दैणौ, मांगणौ, लैणौ।

७ देखो 'पड़छो' (रू.भे.)

रू०भे—पड़चौ, परतौ, परतौं, परिचौ, प्रचौ।

परचोवणो, परचोवबो-क्रि०स० [क्वचित्] उपदेश देना, समझाना

उ०—मांगळियांणी, सांखली, प्रीतम परचोवै। 'दल्लो' औगुण दाटवै, गुण आदू जोवै।—वी.मा.

परचोवणहार, हारो (हारी), परचोवणियौ—वि०।

परचोविओड़ो, परचोवियोड़ो, परचोव्योड़ो—भू०का०कृ०।

परचोवीजणो, परचोवीजबो—कर्म वा०।

परचोवियोड़ो-भू०का०कृ०—उपदेश दिया हुआ, समझाया हुआ।

(स्त्री० परचोवियोड़ी)

परछणो, परछबो-क्रि०स० [देशज] पकडना। उ०—करै चाड़ पर काचड़ा, अठी उठी नूं ईख। पगविच हाडक परछियां, तिणसूं स्वांन सरीख।—वा.दा.

परछणहार, हारो (हारी), परछणियौ—वि०।

परछवाडणो, परछवाडवो, परछवाणो, परछवावो, परछवावणो, परछवाववो, परछाड़णो, परछाड़बो, परछाणो, परछावो, परछावणो, परछाववो—प्रे०रू० ।
परछिग्रोड़ो, परछियोड़ो, परछयोड़ो—भू०का०कृ० ।
परछीजणो, परछीजबो—कर्म वा० ।
पडछणो, पडछबो—रू०भे० ।
परछन-सं०स्त्री० [सं० परि+अर्चन] वर की आरती उतारने की क्रिया, विवाह की एक रीति ।
रू०भे०—परिछन ।
परछयजार-सं०पु० [सं० परक्षयज्वाल] सुदर्शन चक्र (अ.मा.)
परछांई, परछाई-सं०स्त्री [सं० प्रतिच्छाया] प्रतिबिंब, छाया, अक्स ।
क्रि०प्र०—आणी, गिरणी, पड़णी, होणी ।
मुहा०—परछांई ऊं डरणो या भागणो—बहुत डरना, पास तक आने से डरना ।
परछाड़णो, परछाड़बो—देखो 'परछाणो, परछावो' (रू.भे.)
परछाड़णहार, हारो (हारी), परछाड़णियो—वि० ।
परछाड़िग्रोड़ो, परछाड़ियोड़ो, परछाड़योड़ो—भू०का०कृ० ।
परछाड़ीजणो, परछाड़ीजबो—कर्म वा० ।
परछाड़ियोड़ो—देखो 'परछायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० परछाड़ियोड़ी)
परछाणो, परछाबो-क्रि०स० [परछणो क्रिया का प्रे०रू०] पकड़ाना ।
परछाणहार, हारो (हारी), परछाणियो—वि० ।
परछायोड़ो—भू०का०कृ० ।
परछाईजणो, परछाईजबो—कर्म वा० ।
परछाड़णो, परछाड़बो, परछावणो, परछाववो—रू०भे० ।
परछायोड़ो-भू०का०कृ०—पकड़ाया हुआ ।
(स्त्री० परछायोड़ी)
परछावणो, परछाववो—देखो 'परछाणो, परछावो' (रू.भे.)
परछावणहार, हारो (हारी), परछावणियो—वि० ।
परछाविग्रोड़ो, परछावियोड़ो, परछाव्योड़ो—भू०का०कृ० ।
परछावीजणो, परछावीजबो—कर्म वा०
परछावियोड़ो—देखो 'परछायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० परछावियोड़ी)
परछेद—देखो 'परिच्छेद' (रू.भे.)
उ०—मात्रा छंद तणो अनुमांन, गणतांई सु न आवै गांन । पूरो हुवो परथम परछेद, भणि जिम सांभळियो भेद ।—अज्ञात
परजंक—देखो 'परयंक' (रू.भे.)
उ०—दूजां नूं सांनी दिये, एक तणे वस अंक । किण किण नंह दीधो कदम, पातर रै परजंक ।—बां.दा.
परजंग—देखो 'प्रजंघ' (रू.भे.)
परजंत—देखो 'परयंत' (रू.भे.)
उ०—च्यार ही संतांन बूंदीस बैरीसाल रै बय में पैंसठियां वरस परजंत प्रकटिया ।—वं.भा.
परज-सं०स्त्री० [सं० पराजिका] १ एक रागिनी जो गांधार, धनाश्री और मारू के मेल से बनी हुई मानी जाती है । इसमें स्वर ऋषभ कोमलधैवत तथा मध्यमतीव्र लगता है । रात के ११ दंड से लेकर १५ दंड तक इसके गाने का समय है । उ०—कलंग परज कन्नड़ां, सुरां सवाद सुघड़ां । निवास सात नाळियं, त्रि-ग्रांम मूळ ताळियं ।
—रा.रू.
२ देखो 'प्रजा' (रू.भे.)
उ०—१ मंडि झड़ घमंड कर ईस ब्रहमंड रा, तुझ घर मांहि किण वात ओटा । सार इतरी गरज परज री अरज सुणि, मेह करि मेह करि घणी मोटा ।—ध.व.ग्रं.
उ०—२ रजवट सोहड़ ठिकांणै राजे, परज सदा सुख पासी । कूंपा राजस थिर नव कोठां, मुरधर अमल जमासी ।
—रतनसिंह कूंपावत रो गीत
परजघण-सं०पु०यौ० [सं० प्रजा+राज० घण=अधिक] सूअर ।
(अ.मा.)
परजन, परजन्य-सं०पु० [सं० पर्जन्यः] १ मेघ, बादल (नां.मा., ना.डि.को., ह.नां.मा.)
२ वर्षा । उ०—दरसंत जांमणि रूप दांमणि, प्रगटि मिट तम प्रगट ही । द्रग मिळत अभिळत चपळ देखत, अवनि परजन अघट ही ।
—रा.रू.
३ इन्द्र ।
४ देखो 'परिजन' (रू.भे.)
रू०भे०—परंजण, परंजन, परंजिण, परजिन, परिजन ।
परजळणो, परजळबो—देखो 'प्रजळणो, प्रजळबो' (रू.भे.)
उ०—१ पंजरि पावक परजळइ, जिम जिम नाखइ वाय । मूंधि न जांणउ एतलूं, तिम-तिम अधिकु थाइ ।—मा.कां.प्र.
उ०—२ गया गळती राति, परजळतो पाया नहीं । से सज्जण पर-भाति, खड़हड़िया खुरसांण ज्यूं ।—ढो.मा.
परजळणहार, हारो (हारी), परजळणियो—वि० ।
परजळाणो, परजळाबो—सक०रू० ।
परजळिग्रोड़ो, परजळियोड़ो, परजळ्योड़ो—भू०का०कृ० ।
परजळीजणो, परजळीजबो—भाव वा० ।
परजळाणो, परजळाबो—देखो 'प्रजळाणो, प्रजळाबो' (रू.भे.)
परजळाणहार, हारो (हारी), परजळाणियो—वि० ।
परजळायोड़ो—भू०का०कृ० ।
परजळाईजणो, परजळाईजबो—कर्म वा० ।
परजळणो, परजळबो—अक०रू० ।
परजळायोड़ो—देखो 'प्रजळायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० परजळायोड़ी)

परजळियोड़ो—देखो 'प्रजळियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० परजळियोड़ी)

परजा—देखो 'प्रजा' (रू.भे.)
उ०—१ 'संकर' वेगो गयो सिधाई। परजा दुखी घणी पिछताई।
—ऊ.का.

उ०—२ चेले गुरु चलत इक चीलहै, है फळदार बटोरण हीलै। परजा को हाकम सब पीलै, बस कोल्हू कानून बसीलै।—ऊ.का.

परजाऊ—देखो 'परिजाऊ' (रू.भे.)

परजागर—देखो 'प्रजागर' (रू.भे.)

परजात-सं०पु० [सं०] १ नौकर, चाकर, सेवक (अ.मा., ह.नां.)
२ कोकिल, कोयल (ह.नां.मा.)

परजापत, परजापति, परजापती-सं०पु०—१ इन्द्र (अ.मा.)
२ देखो 'प्रजापति' (रू.भे.) (अ.मा.,डि.को.)
उ०—१ नाळी ताइ कंठ तणी निरखंता, रची अचंभ परजापति राव।
—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ परजापतिया नह परजा नैं पाळै। टुकड़ै टुकड़ै नै टींबै टंक टाळै।—ऊ.का.

परजापाळ—देखो 'प्रजापाळ' (रू.भे.)

परजायोक्ति—सं०पु० [सं० पर्यायोक्ति] एक प्रकार का अर्थालंकार जिसमें मुख्य भाव को सीधे, स्पष्ट एवं साधारण रूप से न कह कर एक विचित्र ढंग से कहा जाता है और उसे असाधारण सा बना दिया जाता है।

परजाळ-सं०पु० [सं० प्रज्वलनम्] आग की लपट, जलन।
उ०—जाळतां सहर ऊठी जिके, परजाळां असपत्ति रै। ऊफणि बराळां क्रोध उरि, वे भाळां असपत्ति रै।—सू.प्र.

परजाळणो, परजाळबो—देखो 'प्रजाळणो, प्रजाळबो' (रू.भे.)
उ०—तनु परजाळी तप करि, पोढां तणी ए युक्ति। अमरवर आदि थकां, मिथुन करंतां मुक्ति।—मा.कां.प्र.
परजाळणहार, हारो (हारी), परजाळणियो—वि०।
परजाळिओड़ो, परजाळियोड़ो, परजाळयोड़ो—भू०का०कृ०।
परजाळीजणो, परजाळीजबो—कर्म वा०।

परजाळियोड़ो—देखो 'प्रजाळियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० परजाळियोड़ी)

परजाव-सं०पु० [देशज] अवसर, मौका। उ०—रे चूंडा! सुण राव, कर संजुत चढ काछियां। पोह इसड़ो परजाव, जीवसो ज्यां जुड़गी नहीं।
—गो०रू०

परजिण, परजिन—१ देखो 'परजन्य' (रू.भे.)
२ देखो 'परिजन' (रू.भे.)

परजूड़ी-सं०स्त्री० [देशज] जूआ का निम्न भाग, प्रासंग (डि.को.)

परजूसण—देखो 'परयूसण' (रू.भे.)

परज्याद—
उ०—गौरस को उभेल जींमे परज्याद। सकरसै वीडै तरतकर का सवाद।—सू.प्र.

परट्ट, परट्ठ—देखो 'परठ' (रू.भे.)
उ०—मोद अगेती मुरधरा, रणखेती रजवट्ट। इण सेती 'पातल' उमंग, पहली वाह परट्ट।—जैतदांन बारहठ

परट्ठणो, परट्ठबो—देखो 'परठणो, परठबो' (रू.भे.)
उ०—१ आदि तणो जोतां अरथ, भगो न मूझ भरम्म। पहली जीव परट्ठिया, किया कि पहली क्रम्म।—ह.र.
उ०—२ पाय परट्ठी पावठी, जड़ी सु हीरा हेम। पाट पटंबर पाथ-रइ, माधव चालइ जेम।—मा.कां.प्र.

परट्ठवाणो, परट्ठवाबो, परट्ठाणो, परट्ठाबो—देखो 'परठाणो, परठाबो'
(रू.भे.)

परट्ठियोड़ो—देखो 'परठियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० परट्ठियोड़ी)

परठ-सं०स्त्री० [सं० प्रस्थं] १ समाचार, सूचना।
उ०—१ प्रोहित हाल जांगळू आयो, खींवसी जी सूं मिळियो, कागद दीन्हा। उठारी सारी परठ कही।
—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ आदमी वस्तु भार सारो घरां जाय सांपियो, परठ कही दीन्ही।—पदमसिंह री वात
२ सूची, लिस्ट। उ०—अर खरळां जाय, डेरो कर, ओठी एक सारी परठ लिख मुखात समाचार कही। ताकीद घणी देय विदा कियो।—कुंवरसी सांखला री वारता
३ निरख, भाव, रेट। उ०—दूजो सौदा में, खेती में, सौदागिरी में भांति भांति री परठ लिख दीजे छै।—नी.प्र.
सं०पु०—४ आकाश, आसमान (डि.नां.मा.)
५ ब्रह्मा (डि.नां.मा.)
रू०भे०—परट्ट, परट्ठ।

परठण-सं०स्त्री० [सं० पर+स्थापनम्] स्थिति।
उ०—हर कोई जीव घालियो हाळी, बास सदा जिण मांय बसै। परठण कज रोटी कपड़ां री, जितै कमावै भोग जिसै।—ओपो आढ़ो

परठणो, परठबो-क्रि०स० [सं० प्रतिष्ठापितं] १ चिन्ह बनाना, निशान बनाना। उ०—ढोलइ चलतां परिठव्यउ, अगणि मोजा सल्ल। ढोलउ गयउ न बाहुड़इ, सुया मनावण चल्ल।—ढो.मा.
२ पहिनना, धारण करना। उ०—समुहां ऊपरि सोहलो, परिठिउ जांणि क चंग। ढोला ए ही मारुवी, नव नेही नवरंग।—ढो.मा.
३ भेजना, पठाना। उ०—१ महमंदखांन अमलीकमांण। परठियो विदा वगसो पठांण।—सू.प्र.
उ०—२ 'सूज्जा' दिसि जैसींघ उभि, दूजो 'मांन' दुबाह। पोतो साथै परठियो, पूरब घर पतिसाह।—वचनिका
४ प्रस्थान करना। उ०—केतळा लक्ख घांनंखघर, केताइ लख गैमर गुडे। जिहगीर पयांणं परठियो, दिल्ली दिस हैमर चडे।
—गु.रू.बं.

५ पूजा करना, पूजना। उ०—परठि नागांण सझि परेच। निज नांम हुवौ जिण नागणेच।—सू.प्र.

६ स्थापित करना, सजाना। उ०—१ जोइ जळद पटळ दळ सांवळ ऊजळ, धुरै नीसांण सोइ घणघोर। प्रोळि प्रोळि तोरण परठीजै, मांडै किरि तांडव-गिरि मोर।—वेलि

७ देखना। उ०—असट दीह नरइंद, इंद जिम रहै अमासां। डेरा बाहिर दिया, परठि महुरत परगासां।—सू.प्र.

८ प्रहार करना। उ०—करगे अवसि होए वसि कीधी, गज दळ घाव वही गज घाव। पग 'गोपाळ' जड़ाळी परठै, पड़ियौ हसतौ मरण परिजाव।—गोपाळदास चूंडावत री गीत

९ रखना। उ०—मुहरि अंति लुधवि गुरु मझि, बार चिआर विनांण। पय सोळह आखर परठि, आखि रूप इहनांण।
—ल.पिं.

१० चलना। उ०—नमते निय सेन तणौ नागद्रह, भारथ भू भड़ विरती भीर। पग किम रावत परठै पाछा, जड़िया परियां तणां जंजीर।—रतनसिंह चूंडावत री गीत

११ बंदूक से निशान लगाना।

१२ रचाना, बनाना। उ०—१ नवग्रह निध नवै नाथ, छत्तीस जुगांणा। चौरासी लख चार खांण, परठै परमांणा।
—केसोदास गाडण

उ०—२ बाळण सीत लियां दळ बांनर, पाज समंद परठिए पाथर।
—पिं.प्र.

१३ देना। उ०—जा, अह्म आव्यां जांण करि, मूरख म करि विचार। पणि मांगइ ते परठ्यौ, सहि तूं सोविन-भार।
—मा.कां.प्र.

१४ देव मंदिर की स्थापना करना, प्रतिष्ठा करना।

परठणहार, हारौ (हारी), परठणियौ—वि०।

परठवाड़णौ, परठवाड़बौ, परठवाणौ, परठवाबौ, परठवावणौ, परठवावबौ, परठाड़णौ, परठाड़बौ, परठाणौ, परठाबौ, परठावणौ परठावबौ—प्रे०रू०।

परठिओड़ौ, परठियोड़ौ, परठ्योड़ौ—भू०का०कृ०।

परठीजणौ, परठीजबौ—कर्म वा०।

पड़ठणौ, पड़ठबौ, परट्ठणौ, परट्ठबौ, परिठणौ, परिठबौ—रू०भे०।

परठता-संoस्त्री० [सं० प्रतिष्ठापनम्] जैनी साधुओं के लघुशंका करने का पात्र विशेष।

उ०—स्वांमीजी अमरसींगजी रै स्थांनक गया। मांहै खेजड़ी नो रूंख देखि स्वांमीजी बोल्या—रात्री में लघु परठता हुस्यौ जद इण री दया किम रहै ?—भी.द्र.

परठाड़णौ, परठाड़बौ—देखो 'परठाणौ, परठाबौ' (रू.भे.)

परठाड़णहार, हारौ (हारी), परठाड़णियौ—वि०।

परठाड़िओड़ौ, परठाड़ियोड़ौ, परठाड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।

परठाड़ीजणौ, परठाड़ीजबौ—कर्म वा०।

परठाणौ, परठाबौ-क्रि०स० [परठणौ क्रिया का प्रे०रू०] १ चिन्ह बनवाना, निशान बनवाना।

२ पहिनाना, धारण कराना।

३ भिजवाना, पठवाना।

४ प्रस्थान कराना।

५ पूजा कराना, पुजाना।

६ बंधवाना, सजवाना।

७ दिखाना।

८ प्रहार कराना।

९ रखाना।

१० चलाना।

११ बंदूक से निशाना लगवाना।

१२ रचना कराना, बनवाना।

१३ दिलाना।

१४ देव मन्दिर की स्थापना कराना, प्रतिष्ठा कराना।

परठाणहार, हारौ (हारी), परठाणियौ—वि०।

परठायोड़ौ—भू०का०कृ०।

परठाईजणौ, परठाईजबौ—कर्म वा०।

परट्ठवाणौ, परट्ठवाबौ, परट्ठाणौ, परट्ठाबौ, परठाड़णौ, परठाड़बौ, परठावणौ, परठावबौ—रू०भे०।

परठायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ चिन्ह बनाया हुआ।

२ पहिनाया हुआ।

३ भिजवाया हुआ।

४ प्रस्थान कराया हुआ।

५ पूजा कराया हुआ।

६ बंधवाया हुआ, सजाया हुआ।

७ दिखाया हुआ।

८ प्रहार कराया हुआ।

९ रखाया हुआ।

१० चलाया हुआ।

११ बंदूक से निशाना लगवाया हुआ।

१२ बनवाया हुआ।

१३ दिलाया हुआ।

१४ देव मंदिर की स्थापना कराया हुआ।

(स्त्री० परठायोड़ी)

परठावणौ, परठावबौ—देखो 'परठाणौ, परठावौ' (रू.भे.)

परठावणहार, हारौ (हारी), परठावणियौ—वि०।

परठाविओड़ौ, परठावियोड़ौ, परठाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

परठावीजणौ, परठावीजबौ—कर्म वा०।

परठावियोड़ौ—देखो 'परठायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० परठावियोड़ी)
परठि-सं०स्त्री० [सं० पृथ्वी] १ पृथ्वी, भूमि।
सं०पु० [?] २ समुद्र (डि.नां.मा.)
परठो-सं०पु० [सं० प्र+स्था] सजावट। उ०—तिण वेळा तरह फ़रास तेड़िया, जांणइ परठा जिके घण जांण।—महादेव पारवती री वेलि
परड—देखो 'परड़' (रू.भे.)
उ०—किहि किहि अग्गिर ऊंमटइ, चाकलुंडि चित्राबि। परड पुरांणी सीगली, धामणि धूंप्रटि धावि।—मा.कां.प्र.
परडोटियौ—देखो 'परड' (अल्पा०, रू.भे.)
उ०—दिन भर उणां लाटा में कांम कियौ जरूर, पण उणरै मनमें तौ एईज विचार परडोटिया रै ज्यूं आंटा खावता हा।
—रातवासौ
परण-सं०पु० [सं० पर्ण] १ पत्र (अ.मा.)
२ पलास (अ.मा.)
[सं० परिणयः, परिणयनं] ३ विवाह।
परणकुटी-सं०स्त्री० [सं० पर्णकुटी] पत्तों की बनाई हुई कुटी।
परणण-सं०पु० [सं० परिणयः] विवाह।
परणणौ, परणबौ-क्रि०स० [सं० परिणयनम्] विवाह करना।
उ०—मैं परणंती परखियौ, सूरति पाक सनाह। घड़ि लड़िसी गुड़िसी गयंद, नीठि पड़ेसी नाह।—हा.झा.
परणणहार, हारौ (हारी), परणणियौ—वि०।
परणवाड़णौ, परणवाड़बौ, परणवाणौ, परणवाबौ, परणवावणौ, परणवावबौ, परणाड़णौ, परणाड़बौ, परणाणौ, परणाबौ, परणावणौ, परणावबौ—प्रे०रू०।
परणिग्रोड़ो, परणियोड़ो, परण्योड़ो—भू०का०कृ०।
परणीजणौ, परणीजबौ—कर्म वा०।
परिणणौ, परिणबौ, पिरणणौ, पिरणबौ—रू०भे०
परणशाळा-सं०स्त्री० [सं० पर्णशाला] पत्तों की बनी कुटिया।
परणाड़णौ, परणाड़बौ—देखो 'परणाणौ, परणाबौ' (रू.भे.)
परणाड़णहार, हारौ (हारी), परणाड़णियौ—वि०।
परणाड़िग्रोड़ो, परणाड़ियोड़ो, परणाड़्योड़ो—भू०का०कृ०।
परणाड़ीजणौ, परणाड़ीजबौ—कर्म वा०।
परणाणौ, परणाबौ-क्रि०स० [सं० परिणयनम्] विवाह कराना।
उ०—प्रथ्वीराज नूं आप रै अंतहपुर आंणि वेद मंत्रां रा विधान पूरवक अंगजा इच्छिणी परणाय दीधी।—वं.भा.
परणाणहार, हारौ (हारी), परणाणियौ—वि०।
परणायोड़ो—भू०का०कृ०।
परणाईजणौ, परणाईजबौ—कर्म वा०।
परणाड़णौ, परणाड़बौ, परणावणौ, परणावबौ, परिणाणौ, परिणाबौ, परिणावणौ, परिणावबौ, पिरणाणौ, पिरणाबौ—रू०भे०।
परणांम—१ देखो 'प्रणांम' (रू.भे.)
उ०—त्रिणह प्रदखिण भमती देऊं, त्रिणह करूं परणांम री माई।—स.कु.
२ देखो 'परिणांम' (रू.भे.)
परणायोड़ो—भू०का०कृ०—विवाह कराया हुआ।
(स्त्री० परणायोड़ी)
परणाळका—देखो 'प्रणाळका' (रू.भे.)
परणाळ—देखो 'परनाळ' (रू.भे.)
उ०—विविध वस्तु हेरइ बोलव्यउ बोल फेरइ। चढ़इ गाळ अटाळि, पइसइ परणाळ खाळि।—सभा.
परणावणौ, परणावबौ—देखो 'परणाणौ, परणाबौ' (रू.भे.)
उ०—मारूं त्रिहुं वरसे वडी, चंपारइ उणिहार। सा कुंमरी परणाविस्यां, चालउ राजकुमार।—ढो.मा.
परणावणहार, हारौ (हारी), परणावणियौ—वि०।
परणाविग्रोड़ो, परणावियोड़ो, परणाव्योड़ो—भू०का०कृ०।
परणावीजणौ, परणावीजबौ—कर्म वा०।
परणावियोड़ो—देखो 'परणायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० परणावियोड़ी)
परणाह-वि० [सं० परिणाहः या परीणाहः] दीर्घ, बड़ा (अ.मा.)
परणि, परणी-सं०स्त्री० [सं० परिणीता] १ विवाहिता स्त्री, पत्नी।
उ०—काळी कांणी कोभी कांमण, अपणी परणी आछी। अपछर आभ अवर अरधंगा, पदमण घरियै पाछी।—ऊ.का.
यौ०—परणीपांती, परणीपाती।
रू०भे०—परणइ, पारणी।
सं०पु०—२ वृक्ष पेड़ (डि.को.)
परणियोड़ो-भू०का०कृ०—विवाह किया हुआ, विवाहित।
(स्त्री० परणियोड़ी)
परणेत-वि० [सं० परणीतः] विवाहित। उ०—परणेत हुया सिग चढ़ तीयइ प्रब, जांगी सद गूंजिया जग।—महादेव पारवती री वेलि
परणेता-सं०स्त्री० [सं० परिणीता] विवाहिता स्त्री। उ०—धूं जांणूं धरती री धणी हूं सो धणी री परणेता न जावै ज्यूं धरती ही न जावै।—वी.स.टी.
परणेतु-वि० [सं० परिणयः+रा.प्र.एतु] विवाह सम्बन्धी।
परणोत्तरीजांन, परणोत्रीजांन-सं०स्त्री० [सं० प्रणयः+जन्या] विवाह के पश्चात वधू के ननिहाल वालों की ओर से बरात को दिया जाने वाला भोज (पुष्करणा ब्राह्मण)
परणौ-सं०पु० [सं० परिणयनम्] विवाह।
उ०—मरणै परणै में गोडा खर गाळै। बनिता सुत जावौ वेतौ रै वाळै।—ऊ.का.
परण्योड़ो, परण्यौ-भू०का०कृ०—विवाह किया हुआ, विवाहित।
सं०पु०—पति। उ०—ईं ईंढांणी रै कारणै म्हारौ परण्यौ पाळौ जाय, गमगी ईंढांणी।—लो.गी.

यौ०—परण्योपांत्यो ।
(स्त्री० परण्योड़ी, परणी)
परतंग्या—देखो 'प्रतिग्या' (रू.भे.)
उ०—मन नी हे सखि मन नी हे पूगी आस । सफली हे सखि सफली परतंग्या करी जी ।—प.च.चौ.
परतंचा—देखो 'प्रत्यंचा' (रू.भे.)
परतंत, परतंत्र-वि० [सं० परतंत्र] १ अधीन, वशीभूत ।
उ०—१ अर देव रै परतंत्र परतापसिंघ अरिसिंघ दो ही गइंदां रै वीच आया ।—वं.भा.
उ०—२ या सुणतां ही कोपरै परतंत्र राजा भीम काका सारंगदेव रा सातूं ही पुत्रां नूं आपरा देस सूं प्रवास कियौ ।—वं.भा.
२ दूसरे के सहारे रहने वाला, पराश्रित, पराधीन ।
उ०—१ चरचा करतां चुगल सूं, प्रकत हुवै परतंत । चुगली कांनां सुणण सूं, मैलो व्है गुरमंत ।—बां.दा.
उ०—२ पराधीन भारत हुवौ, प्यालां री मनवार । मात्र भोम परतंत्र हो, बार-बार धिक्कार ।—अज्ञात
३ देखो 'परमतत्व' (रू.भे.)
उ०—१ निमौ देव अरिहंत, पुरुस परधांन पुरातम । परमारथ परतंत, परम अणपार पराक्रम ।—पी.ग्र.
उ०—२ तूं परमिति परतंत, सूं तूं होज परदेव पुणीजै । परउपगारी परम, ग्यांन पररूप गिणीजै ।—पी.ग्र.
परत-सं०पु०—१ सामना, मुकाबला । उ०—जुटिया विन्है आवरत जुंहरी, घास रीट घडइ घमचाळ । उड मछा आवधां मुहडे, पाछा दियण परत री वार ।—महादेव पारवती री वेलि
२ प्रण, प्रतिज्ञा ।
उ०—ढाढियां कुंमारी नूं कह्यौ—बाई क ढोलाजी री हजूर मालवणी न होय जद तू म्हांनै खबर दैजे । कुंमारी बोली—मालवणी न होय जद क्यूं ? तद ढाढीयां कह्यौ—म्है लुगाई नै मुजरौ करण री परत वहां छां ।—ढो.मा.
३ प्रकृति, स्वभाव (उ.र.)
सर्वं०—१ परस्पर ।
उ०—ताहरां मेघे नूं कहाड़ियौ—म्हारै घोड़ियां सूं कांम नहीं । माल सूं कांम नहीं । म्हारै थारै मांथै सूं कांम छै । परत री वेढ करस्यां ।—नैणसी
क्रिवि०—१ हरगिज, कदापि, कभी भी ।
उ०—१ माता म्हारी ए, आया विड़ला पाछा ए फेर, परत न परणू रांणी काछवौ, काछवौ जी म्हारा राज ।—लो.गी.
उ०—२ रिसालू तो लागैजी'क प्यारी थारो सायबौ जी, कोई प्यारी रौ लणिहार, परत न भेजांजी'क प्यारी थांनै सासरै जी ।
—लो.गी.
उ०—३ केहर मत बाळक कहो, देखो जात सुभाव । वांसै देखे वाहरां, परत न छंडै पांव ।—बां.दा.
२ प्रत्यक्ष ।
२ देखो 'पडत, परत्त' (रू.भे.)
३ देखो 'प्रति' (रू.भे.)
परतक—देखो 'प्रत्यक्ष' (रू.भे.)
उ०—१ ओ संसार मोहणी माया, देख रीझ मति भाया रे ! अग-जळ नीर निगे कर नांई, परतक मिथ्या थाया रे !
—स्री सुखरांमजी महाराज
उ०—२ परतक म्हैं जांण सेवियौ पारस, जग जस आखे जणी-जणी । करतां रीझ 'जलावत' कीधौ, पारस हूंत सवाय पणी ।
—मांनजी लाळस
परतकाळी-सं०पु०—१ एक प्रकार का शराब विशेष जिसे पुर्तगाली शराब भी कहते हैं । उ०—सूनै रूपै के मोरियां नु जड़ाऊ के प्याले फिरते हैं । जिस प्यालूं के बीच ही अनार दालचीनी, परतकाळो, अंगूरी गले गुलाब ऐसो भांति-भांति के फूल ऐराक भरते हैं ।—सू.प्र.
२ देखो 'पुरतगाळी' (रू.भे.)
परतकूळता—देखो 'प्रतिकूळता' (रू.भे.)
परतक्ख, परतक्खि, परतक्ष, परतख, परतखि, परतखी, परतख्य, परतछ—देखो 'प्रत्यक्ष' (रू.भे.)
उ०—१ घाटे सुघट्ट लिय मोळि लक्खि, परतक्खि जास रेवंत पक्खि ।—रा.ज.सी.
उ०—२ परतक्ष ठगोरी पेरियौ, मनुज अहै ठग मंडळी । पेरियां मंत्र सिंधुर सगह, आवै दरगह अगळी ।—रा रू.
उ०—३ जिम सुपनंतर पांमियउ, तिम परतख पांमेसि । सज्जन मोतीहार ज्यूं, कंठाग्रहण करेसि ।—ढो मा.
उ०—४ लहियै सोभा लोक मैं, तप करि कसतां तन्न । परतखि वीर प्रसंसियौ, धन्नौ मुनिवर धन्न ।—ध.व.ग्र.
उ०—५ एकावन लघु मुर गुरु अंत । परतख्य सिंहि गाहा प्रसंग ।
—ल.पिं.
परतग्या—देखो 'प्रतिग्या' (रू.भे.)
उ०—कीधी परतग्या इसी, मनसेती महाराय । पदमणि परणुं तौ घर रहु, नहिं तौ गिरि बनराय ।—प.च.चौ.
परतणौ, परतबौ—क्रि०अ०—परिवर्तित होना (उ.र.)
परतमा—देखो 'प्रतिमा' (रू.भे.)
परतमाळ, परतमाळा, परतमाळी—देखो 'प्रतिमा' (रू.भे.)
परतळ—देखो 'पड़तळ' (रू.भे.)
परतळौ-सं०पु०—१ पूतला ?
उ०—सोळंकी कुमारपाळ सात वसन रा परतळा करा चढाय अठारै दिसा वाहर काढिया ।—बां.दा.ख्यात
२ देखो 'पड़तलौ' (रू.भे.)
३ चद्दर ।

परताप-सं०पु० [देशज] १ किनारा, तट (डिं.को.)
२ देखो 'प्रताप' (रू.भे.)
उ०—१ पार पखे राजी प्रजा, पाजी न करै पाप। साजी ताजी साहबी, माजी रै परताप।—वां.दा.
उ०—२ वे भाटा रो पूतळियां रै उनमांन ऊभा भगती रो परताप देखता रह्या।—फुलवाड़ी
यौ०—परतापवांन।

परतापी, परतापीक—देखो 'प्रतापी, प्रतापीक' (रू.भे.)
उ०—१ सब विधि की सेवा सधी, आदर भयो अमाप। मांननीय गुरु मांनियो, परतापी 'परताप'।—ऊ.का.
उ०—२ नवमैं मईनै राजा रै सूरज चांद रै उणियार परतापी कंवर जलमियो।—फुलवाड़ी
उ०—३ जो श्री जगतसिंघ रो बेटो नै बुधसिंह रो छोटो भाई, तिणसूं जैसळमेर अखैसिंघ पायो। बडो परतापीक रावळ हुवो।
—नैणसी

परताळ—देखो 'पड़ताळ' (रू.भे.)
उ०—बुझै न अगन बुझाय, पावस परताळां पड़ै। लागी भो उर लाय, जळ वरसै जिम-जिम जळै।—पा.प्र.

परताळणौ, परताळबौ—देखो 'पड़ताळणौ, पड़ताळबौ' (रू.भे.)
उ०—१ आगै सींधळां सूं वैर हुतो, हिवै साळो मारियो, हिवै वैर वधियो, ताहरां ऊदैजी तो पाछली रात रा चढ़ परताळिया सो घरे गया।—नैणसी
उ०—२ 'कांन्हियो' भिसूळां मार खळ काळियो, 'कमर' परताळियो जड़ां काढी। पोखियो 'चीक' 'रिड़माल' नै पाळियो, दंत परजाळियो स्वेतदाढी।—खेतसी बारहठ

परताळियोड़ौ—देखो 'पड़ताळियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० परताळियोड़ी)

परतिग्या—देखो 'प्रतिग्या' (रू भे.)
उ०—तात हूं त इधकी परतिग्या, सांभळ बात कहूं सरसाळ।
—र.रू.

परतिकूळ—देखो 'प्रतिकूळ' (रू.भे.)

परतिख—देखो 'प्रत्यक्ष' (रू.भे.)
उ०—इण इळ किया किता पति आगैं, परतिख किता किता परपूठ। वसुधा प्रगट दीसती वेस्या, भूभै भूप भुजंग सुं भूठ।
—ध.व.ग्रं.

परतिनिधि—देखो 'प्रतिनिधि' (रू.भे.)

परतीक—देखो 'प्रतीक' (रू.भे.)

परतीत—१ देखो 'प्रतीत' (रू.भे.)
२ देखो 'प्रतीति' (रू.भे.)
उ०—१ हुवै प्रथम घन हांण, घणी तन पांण घटावै। कोई न राखे कांण, मांण परतीत मिटावै।—ऊ.का.
उ०—२ तदि धरै दिल परतीत। इम बोलियो 'जगजीत'।
—सू.प्र.

परतीति—देखो 'प्रतीति' (रू.भे.)
उ० —सावचेती राखो साची काची ना सम्हाई कहूं। राची कुळरीति परतीति प्रगटाई तैं।—ऊ.का.

परतेंक—देखो 'प्रत्येक' (रू.भे.)
उ०—बादर प्रथिवी नैं वह्नि पांणी, वनसपती परतेंक जी।
—ध.व.ग्रं.

परतै-क्रि०वि०—द्वारा, से। उ०—गढ़ गिरनार रो राजा हूं सूं म्हारै परतै दियो न जाइ सू बीजो कोण द्रव्य देवै ?
—सयणी चारणी री वात

परतोळी—देखो 'प्रतोळी' (रू भे.)

परतौ—देखो 'परचौ' (रू भे.)
उ०—१ लोक जायइ यात्रा घणा, पद्मावती परता पूरई रे।
—स कु.
उ०—२ परगट परता पूरवै, सुद्ध मन करतां सेव रे लाल।
—ध.व.ग्रं.

परत्त—देखो 'परत' (रू.भे.)
उ०—१ रुघपत्ती गुणपत्त री, प्रोहित धार परत्त। आगै वगो सूरमां, अणभाजणै वरत्त।—रा.रू.
उ०—२ सुणी कमंधां ऊधरां, उत मेवाड़ां वत्त। साथे साहस झल्लियो, घाते हात परत्त।—रा.रू.

परत्ताख—देखो 'प्रत्यक्ष' (रू.भे)

परत्थी—देखो 'परत्री' (रू.भे.)
उ०—धम्म सुधम्म पहांण जत्थ, नहु चोरी किज्जइ। धम्म सुधम्म पहांण जत्थ, परत्थी न रमिज्जइ।—अभयतिक यती

परत्यक्ष—देखो 'प्रत्यक्ष' (रू.भे.)
उ०—पंद्रह तत्व का स्थूल सरीरा, जाग्रत सबही जंजाळ। इंद्रियां अपणे अपणे कांमां, रहो विसय रस माळ। परत्यक्ष भूठा रे, मांने मन सांच करे।—स्री सुखरांमजी महाराज

परत्र-अव्य० [सं०] परलोक में, अगले जन्म में।
उ०—दरहिं न किंपि परत्र, वेविसु परघर जुज्झहिं।
—कवि पल्ह

परत्री-सं०स्त्री० [सं० पर+स्त्री] दूसरे की स्त्री, पर-स्त्री।
उ०—सदाई लपै लाग नै त्याग सूरा। पखै जै प्रवीनाथ सूपाळ पूरा। परत्री न भेटे गऊ विप्र पाळै, चलै राह वेदी खित्री ध्रम्म चाळै।
—वचनिका
रू०भे०—परत्थी।

परथ-वि० [सं० परार्थ] पराधीन, परतंत्र।
उ०—परथ जीवका पड़ी जकै दमड़ी न दिरापै।—अज्ञात

परथट्टपल्ल–वि० [सं० पर+राज. थट्ट-सेना+पल्ल=रोकने वाला] शत्रु दल को रोकने वाला, योद्धा, वीर ।
उ०—'तुंगरउ' चढ़िय राहड़ दुभल्ल । प्राभ्रउ अपार परथट्टपल्ल ।
—रा.ज.सी.

परथम—देखो 'प्रथम' (रू.भे.)

परथमी—देखो 'प्रथ्वी' (रू.भे.)

परथीधर—देखो 'प्रथ्वीधर' (रू.भे.)

परथा—देखो 'प्रथा' (रू.भे.)

परथी—देखो 'प्रथ्वी' (रू.भे.)

परथीनाथ—देखो 'प्रथ्वीनाथ' (रू.भे.)

परथु—देखो 'प्रथु' (रू.भे.)

परदकण, परदकणा, परदक्खण, परदक्खण, परदक्षण, परदक्षणा, परदखण, परदक्खणा ।
देखो 'प्रदक्षिणा' (रू.भे.)
उ०—१ परदक्षण दई दक्षणा नई. विलंब मंडइ वार । कर कनक कापई दांन, आपई सुपिक्र सिणगार ।—रुकमणी-मंगळ
उ०—२ दीन्दी प्रभु दोळी परदक्षणा, रहस करै दीन्हउ नाळेर ।
—महादेव पारवती री वेलि

परदड़ी—देखो 'पडतली' (अल्पा०. रू.भे.)
उ०—सो ढालां पातसाहजी सिलेहटरी ढालांरी परदडी में पटा घालनै ढाल छांने मेली ।—रा.वं.वि.

परदच्छिण, परदच्छिणा, परदछ, रपदछण, परदछणा, परदछिणा—देखो 'प्रदक्षिणा' (रू.भे.)
उ०—१ पाय दीधा जिकै किसन परदछ । फिर नाच राघव आगै सफळ कर तन नरा ।—र.ज.प्र.
उ०—२ चोप अरच हरि चरण चोप फिर रे परदछण । चोप करे कर जोड़, जनम सरजत आगळ जण ।—र.ज.प्र.
उ०—३ विधवत वेद विधांन, दंडव्रत करे करे परदछिणा । सभि नृप वह सनमांन, आसण समपि जोड कर अखै ।—सू.प्र.

परदत—देखो 'प्रदत्त' (रू.भे.)
उ०—अपदतां परदता लुपै अनरुद अमर, भंडाणां जुग जुग क्यूं न भाळो, लोभ काळो जिकां सांसणां लगायो, काळो लागां जिकां जनम काळो ।—कविराजा बांकीदास

परदर—देखो 'प्रदर' (रू.भे.)

परदरप-सं०पु० [सं० परदर्प] पक्षी (अ.मा.)

परदरसक—सं०पु०—१ गढ, किला (अ.मा.)
२ देखो 'प्रदरसक' (रू.भे.)

परदांन—देखो 'प्रदांन' (रू.भे.)
२ देखो 'प्रधांन' (रू.भे.)
उ०—अनाथां कराउ नास रौ अवैतौ, 'रास' री आसरौ लेर रूपियौ रंगगुळी तेल हुय गार लरलुजि, प्रजाने तलूंजी मेळ पीदो, सास लै भैंसरौ वासतै सळूजी, कळूजी पाप रौ परदांन कीदौ ।
—ऊमरदांन लाळस

परदांनगी—देखो 'प्रधांनगी' (रू.भे.)

परदांनौ—देखो 'दड़दांनौ' (रू.भे.)

परद इत—देखो 'पड़दायत' (रू.भे.)

परदाखत-सं०पु० [अ० परदाख्त] संरक्षण, देखभाल ।
उ०तखत मोटै वैठणौ आसांन छै । अठै घड़ी भर नूं ही चैन मत जांणजे । न्याय नै भूखां री परदाखत करणौ छै ।—नी.प्र.

परदाज-सं०पु० [?] सजावट, सज्जा । उ०—गिरदै उदै चहुर गहराई । अनंग जांणि परदाज वणाई ।—सू.प्र.
रू०भे०—परदुज ।

परदादार-वि० [फा०] वह जिसके यहाँ परदा रखने की प्रथा हो ।
सं०स्त्री०—वह स्त्री जो परदे में रहती हो ।
रू०भे०—पड़दादार ।

परदादारी-सं०स्त्री० [फा०] १ परदा रखने की प्रथा ।
२ परदे में रहने की क्रिया या भाव ।
रू०भे०—पड़दादारी ।

परदादौ—देखो 'पड़दादौ' (रू.भे.)
(स्त्री० परदादी)

परदानसीन-वि० [फा० परदानशीन] वह जाति या व्यक्ति जिसके यहां पर्दा रखने की प्रथा हो ।
सं०स्त्री०—परदे में रहने वाली स्त्री, अंतःपुर में रहने वाली स्त्री ।
रू०भे०—पड़दानसीन ।

परदापरथा, परदाप्रथा-सं०स्त्री० [फा० पर्दः+सं० प्रथा] घूंघट या परदे में रहने की प्रथा ।

परदायत—देखो 'पड़दायत' (रू.भे.)

परदक्षिण, परदक्षिणा, परदिखणा—देखो 'प्रदक्षिणा' ।

परदीपत, परदीप्त—देखो 'प्रदीप्त' (रू.भे.)

परदुज—देखो 'परदाज' (रू.भे.)
उ०—परदुज वर भरपूर प्रचंडै । मुखमल तणी विछायत मंडै ।
—सू.प्र.

परदे'—१ देखो 'परदेस' (रू.भे.)
उ०—कुंवरजी फुरमायौ–ए मेवा, कपड़ा-वसत म्हारै पण घणा ही है । थे तो परदे' रा परखंड फिरणवार छौ । कोई अपूरब वसत लावणी थी ।—पलक दरियाव री बात

परदेस-सं०पु० [सं० परदेश] १ अन्य देश, विदेश ।
उ०—जिण रित नाग न नीसरइ, दाझइ वनखंड दाह । जिण रित माळवणी कहइ, कुण परदेसां जाह ।—ढो मा.
रू०भे०—परदे', परदेह ।
अल्पा०—परदेसड़ौ ।

२ देखो 'प्रदेस' (रू.भे.)

परदेसड़ो—देखो 'परदेस' (अल्पा०, रू.भे.)

परदेसी-वि० [सं० परदेशी] (स्त्री० परदेसण, परदेसणी) अन्य देस का, विदेशी। उ०—१ बावहिया रत-पंखिया, बोलइ मधुरी वाणि। काइ लवंतउ माठि करि, परदेसी प्रिउ आंणि।—ढो.मा.

उ०—२ मत दो म्हारी बाई नें गाळ। बाई म्हारी परदेसण जी परदेसण।—लो गी.

सं०पु०—अन्य देश का निवासी, विदेश का निवासी (व्यक्ति)

अल्पा०—परदेसीड़ो।

परदेसीड़ो—देखो 'परदेसी' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—तेरा जांनीड़ा दरबार खड़ा, परदेसीड़ा री भगत कराय, बैठावो री सज बांन मंडप तळ।—लो.गी.

परदेह—देखो 'परदेस' (रू.भे.)

उ०—ऊनमियउ उत्तर दिसइ, काळी कंठळि मेह। हूं भीजूं घर अगणइ, पिउ भीजहि परदेह।—ढो.मा.

परदोस—देखो 'प्रदोस' (रू.भे.)

परदो—देखो 'पड़दो' (रू.भे.)

परधांन—१ देखो 'प्रधांन' (रू.भे.)

उ०—१ रुखमणी राजि तणै पटरांणी, दइता हुंता सदा दुमेळ। प्रम परधांन वात नां ग्रह्यां, मुहमद...मेळ।—पी.ग्रं.

उ०—२ हंसा उड सरवर गिया, अब काग भया परधांन। विप्र घर पधारो आपरै, सिंघ किणरा जजमांन।—फुलवाड़ी

उ०—३ काचर केळो आंमफळ, पीव मित्र परधांन। इतरा तो पाका भला, काचा कोइ न कांम।—अज्ञात

२ देखो 'परिधांन' (रू.भे.)

परधांनगी-सं०स्त्री०—देखो 'प्रधांनगी' (रू.भे.)

उ०—जैसळमेर च्यार परधांन भाटी साख-साख रा। तिणां मांहि एक परधांनगी हमीरां री भाटियां रै पोकरण हुती।—नैणसी

परधांम-सं०पु० [सं० परधाम] परलोक।

उ०—निमौ देव अरिहंत, पुरुस परधांम पुरातम। परमारथ परतंत परम अणपार पराक्रम।—पी.ग्रं.

परनाळ-सं०पु० [सं० प्रणाल, प्रणाली] छत का पानी नीचे गिराने के लिए बनाया जाने वाला नाला।

उ०—घण पावस नीझर गिरंद घाट। परनाळ वहै मद पंच पाट।—सू.प्र.

रू०भे०—परणाळ, परिनाळ, प्रनाळ।

अल्पा०—परणाळी, परनाळि, परनाळी।

मह०—परनाळो।

परनाळका—देखो 'प्रणाळका' (रू.भे.)

परनाळणो, परनाळबो-क्रि०स० [सं० प्रणालनम्] चीरना, फाड़ना (पेट)

उ०—१ कांन्हड़देजी देवरा मांहि अलोप हुवा। तरै वीरमदे पेट आपरो परनाळियो कटारी सूं।—वीरमदे सोनगरा री वात

उ०—२ कितरा एक दिनां पछै राजा पठावता पर चढाई करी। वडो जुद्ध हुवो। त्यां नूं जीतिया। पछै आप परलोक प्राप्त हुवो। जणां उजेणी रो राज सूनो हुओ। धरती दुखी हुई। महाराज विक्रम विन म्हारो पाळण कुण करै? राजा री रांणी नूं गरभ मास सात को थो। तद सगळा मंत्री प्रधांन मिळ रांणी री पेट परनाळियो। पेट मां थी पुत्र नीसरियो।

—सिंघासण-बत्तीसी

परनाळणहार, हारी (हारी), परनाळणियो—वि०।

परनाळिओड़ो, परनाळियोड़ो, परनाळ्योड़ो—भू०का०कृ०।

परनाळीजणो, परनाळीजबो—कर्म वा०

परनाळियोड़ो-भू०का०कृ०—चीरा हुआ, फाड़ा हुआ।

(स्त्री० परनाळियोड़ी)

परनाळी—१ देखो 'परनाळ' (अल्पा०, रू.भे.)

२ देखो—'प्रणाळी' (रू.भे.)

परनाळो—देखो 'परनाळ' (मह०, रू.भे.)

उ०—१ पड़ै प्रेम घर-घर परनाळा। जुगती जळ मेटी त्रिस ज्वाळा।—ऊ.का.

उ०—२ पड़तां ई माया री किळी किळी विखरगी। लोई रा जांणै परनाळा छूटण लागा।—फुलवाड़ी

परन्योड़ो—देखो 'परण्योड़ो' (रू.भे.)

उ०—परन्योड़ै की भैंस खो गई, म्हारो कांई सारो जी। पना-भंवर को तीतर खो गयो, भीतर भिळ गयो रे। पनजी मुखड़े बोल।

—लो.गी.

परपंच—देखो 'प्रपंच' (रू.भे.)

उ०—१ तरै राव रांणगदे री वैर राव केल्हण नूं कहाड़ियो—'मोनूं थे घर आंणो तो हूं थानूं गढ दूं।' तरै केल्हण परपंच कियो, नै कहाड़ियो 'भली वात'।—नैणसी

परपंचो—देखो 'प्रपंचो' (रू.भे.)

परपख—देखो 'परिपक्व' (रू.भे.)

उ०—जात पांत कुळ री जठै रहण न पावै नेम। रहै निरंतर एक रंग, परपख सोई प्रेम।—र. हमीर

परपचक-वि० [सं० प्रपाचक] पचाने वाला, पाचक।

उ०—करि अचवन जळ चळू करावै। भक्ष परपचक चूरण भुगतावै।

—सू.प्र.

परपट-वि० [?] पपड़ी जमा हुआ, सूखा। उ०—ताळ सूख परपट भयो, हंसा कहूं न जाय। प्रीत पुरांणी कारणै, चुग चुग कांकर खाय।

—अज्ञात

सं०स्त्री०—१ पपड़ी।

२ पापड़। उ०—रयघटा जिम परपट चूरियइं। सुहड नां रणि

रोम अंकुरियइं ।—विराट पर्व

परपटी-सं०स्त्री० [सं० पर्पटी] एक प्रकार का वैद्यक का रस ।
२ पपड़ी ।

परपत्राघळि-सं०स्त्री० [सं०] खजूर (अ.मा.)

परपराट—देखो 'परपराहट' (रू.भे.)

परपराणी, परपराबो-क्रि०अ० [देशज] मिर्च आदि तीक्ष्ण चीजों की अधिकता से जीभ अथवा अन्य अंश पर उत्पन्न उग्र संवेदन होना, चुनचुनाना ।
परपराणहार, हारो (हारी), परपराणियो—वि० ।
परपरायोड़ो—भू०का०कृ० ।
परपराईजणो, परपराईजबो—भाव वा० ।

परपरायोड़ो-भू०का०कृ०—चुनचुनाया हुआ ।
(स्त्री० परपरायोड़ी)

परपराहट-सं०स्त्री०—परपराने का भाव, चुनचुनाहट ।
रू०भे०—परपराट ।

परपरिवाद-सं०पु० [सं०] टेढी बोली द्वारा दूसरों के दोष ढूंढ़ना (जैन)

परपलव—देखो 'पारिपलव' (रू.भे.)

परपात-सं०पु० [सं० परिपात] १ डाकू, लुटेरा (डि.को.)
२ देखो 'प्रपात' (रू.भे.)

परपिंड, परपिंडो-सं०पु० [सं० परपिण्ड] चाकर, दास (अ.मा., ह.नां.मा.)

परपुरस-सं०पु०यौ० [सं० परपुरुष] पति के अतिरिक्त, दूसरा पुरुष ।

परपुस्ट-सं०स्त्री० [सं० परपुष्ट] कोयल ।

परपूठ-क्रि०वि० [सं० परपृष्ठ] पीठ पीछे, अनुपस्थिति में ।
उ०—खागां अंग वखेरियो, रण री भूलो रुठ । वेखे साळो वींद नूं, पछतावै परपूठ ।—वी.स.

परपूरण—देखो 'परिपूरण' (रू.भे.)

परपैंठ-सं०स्त्री०—पहली हुंडी खो जाने पर दूसरी बार लिखी गई हुण्डी (पैंठ) के भी खो जाने पर तीसरी बार लिखी जाने वाली हुण्डी ।

परपोतरो, परपोतो, परपोत्र, परपोत्रो—देखो 'प्रपोत्र' (रू.भे.)
(स्त्री० परपोतरी, परपोती, परपोत्री)

परप्पण—देखो 'पड़पण' (रू.भे.)
उ०—१ सुत साह माल आपै सुतो, मिळ लीजै छळ मंत्रणै । कुण वाद छळै राठौड़ कुळ, आद परप्पण आपणै ।—रा.रू.
उ०—२ 'धीर' परप्पण धारियां, 'सूजो' वीर सुजाव । आहव जीव उजाळणा, रीत 'घवेचां राव ।—रा.रू.

परप्रिया-सं०स्त्री० [सं०] १ गनिका, वेश्या (अ.मा.)
२ छिनाल, कुलटा ।

परफूल्लंत—देखो 'प्रफुल्लित' (रू.भे.)
उ०—कमघज्ज मिळे सू कमधजां, हीया परफूल्लंत हुवै । वदियो 'गजण' विय चंदवरि, तांम सुरपके हिंदवै ।—गु.रू.बं.

परफुल्ल—देखो 'प्रफुल्ल' (रू.भे.)

परबंद-सं०पु० [सं० पदबंध] नृत्य की एक गति विशेष ।

परबंध—देखो 'प्रबंध' (रू.भे.)
उ०—१ सरपां हुंदी बाड़ कर, सिहां री परबंध । जो जमरां गो पोहल, संणां मिळवो संध ।—जलाल बूबना री वात
उ०—२ गुर मकार दीरघ विमळ, मांहे चरण निमंध । इम एकादस आखरे, बंध छंद परबंध ।—पि.प्र.

परब—देखो 'परव' (रू.भे.)
उ०—१ 'भांण' तणो हरनाथ महामड़ । आयां परब उआरण अच्चड़ ।—रा.रू.
उ०—२ गया स्राद्ध तीरथ ग्रहण, सरब परब समुदाय । है सारा इण हाथ में, हलै तो हाथ हलाय ।—ऊ.का.
उ०—३ हरणीमन हरियाळियां, उरहालियां उमंग । तीज परब रंग त्यारियां, सांवण लायो संग ।—बां.दा.
उ०—४ सू आपां इण बदळै मरां तो इसो परब मिळै नहीं तथा आपणै बीकानेर रो रिजक तो नहीं है पण जोधपुर रावा छै ज्यूं ई बीकानेर रा धणी छै, अरु यांरो पण मरण विगड़े है सू औ वडो परब आयो है, अठै सारा कांम आसां ।—द.दा.

परबत—देखो 'परवत' (रू.भे.) (अ.मा., डि.नां.मा., नां.मा.)
उ०—सांई सूं सब कुछ हुवै, वंदा सूं कुछ नांहि । राई सूं परबत हुवै, परबत राई मांहि ।—ह.र.

परबतअरि, परबतअरी—देखो 'परवतारि' (रू.भे.)

परबतजा—देखो 'परवतजा' (रू.भे.) (अ.मा., ह.नां.मा.)

परबतमाळ, परबतमाळा—देखो 'परवतमाळ' (रू.भे.)
उ०—रांणा कहां ऊभा रहै, मझि परबतमाळां ।—माली सांदू

परबतमेर—देखो 'मेरुपरवत' (रू.भे.)
उ०—चीटांणा जिके रहै रावत वट, माझी परबतमेर गिरं ।
—गु.रू.बं.

परबतसुत—देखो 'परवतसुत' (रू.भे.)

परबतियो—१ देखो 'परवतियो' (रू.भे.)
२ देखो 'परवत' (अल्पा०, रू.भे.)

परबती—देखो 'परवती' (रू.भे.)

परबत्त—देखो 'परवत' (रू.भे.)
उ०—हिलिया भद्रजातिय काळ वांणी पंच वांणी बोल ए । परबत्त पर जुघ्व पेरं समस्सेरं तोल ए ।—गु.रू.बं.

परबयं-सं०पु० [सं० पर्वयम] सुदर्शनचक्र (नां.मा.)

परबळ—देखो 'प्रबळ' (रू.भे.)

परबस-वि० [सं० परवश] १ जो स्वतंत्रतापूर्वक आचरण न कर सकता हो, जो दूसरे के वश में हो ।

२ जो दूसरे पर निर्भर रहता हो।

उ०—जोग री वात कै अेक दिन वो ई सिंघ जाळ में फंसग्यो। परवस लाचार व्हियोड़ो जाळ में वोलो वोलो वैठो।—फुलवाड़ी

परवसता, परवसताई-सं०स्त्री० [सं० परवश+रा.प्र. आई] पराधीनता, परतंत्रता।

परवात—देखो 'प्रभात' (रू.भे.)

उ०—भिळ जाय जुवां लाखां भळे, लेऊं कांइ इण लाड में। परवात पीहर जासूं परी, खांवंद पड़ज्यो खाड में।—ऊ.का.

परवातियो—देखो 'प्रभातियो' (रू.भे.)

परवाती—देखो 'प्रभाती' (रू.भे.)

परवारो-वि० [सं० पर+द्वार] (स्त्री० परवारी) १ सीधा।

उ०—१ रुको वांच रावळो, अवस परभाते आवत। आप विना हूं उठं, वहे परवारो जावत।—अरजुणजी वारहठ

उ०—२ घरवाळां सूं विना मिळियां ई वो परवारो सिंघ री सांमी खिसक गयो।—फुलवाड़ी

२ स्वतः ही, स्वयं ही। उ०—लूंकी ऊंचौ मूंडो करनै कागला री टूंच में अो उम्दा वाटियो देखियो तो उण री जीव डुळियो। पूंछ उण री मतै ही परवारी हिलण ढुकी।—फुलवाड़ी

३ विना। उ०—राजाजी कह्यो पण म्हे थारे मन परवारो को कांम नीं करणो चावूं।—फुलवाड़ी

क्रि०वि०—परोक्ष में, पीठ पीछे।

रू०भे०—परभारो, परवारौ।

परवाळ-सं०पु० [सं० पर=शत्रु+वाल=केश] १ आंख की पलक का वह वाल जो आंख मे सीधा चुभता है और वहुत पीड़ा देता है।

२ देखो 'प्रवाळ' (रू.भे.)

परवाहपय—देखो 'परवाहपय' (रू.भे.)

परवीण, परवीन—देखो 'प्रवीण' (रू.भे)

परवेस—देखो 'प्रवेश' (रू.भे.)

परवोध, परबोध-सं०पु० [सं० प्रवोध] १ एक यगण, दो सगण, एक भगण और एक यगण वाला छन्द विशेष।

२ देखो 'प्रवोध' (रू.भे.)

उ०—सगुण छंद करिया करि सोध। वुधजण सांभळिजो परवोध।—ल.पिं.

परवोधक—देखो 'प्रवोधक' (रू.भे.)

परबोधणी—देखो 'प्रवोधनी' (रू.भे.)

परबोधणी, परवोधवौ—देखो 'प्रवोधणौ, प्रवोधवौ' (रू.भे.)

उ०—मोडा एक वहुत व्है महिला, ज्यूं भैंसिन में सोटा। दे छाटा-नारी परवोधै, खसम वतावै खोटा।—ऊ.का.

परवोधणहार, हारो(हारी), परवोधणियो—वि०।

परवोधिओड़ो, परवोधियोड़ो, परवोध्योड़ो—भू०का०कृ०।

परवोधीजणो, परवोधीजवो—कर्म वा०।

परवोधिओड़ो—देखो 'प्रवोधियोड़ो' (रू.भे.)

परव्व—देखो 'परब' (रू.भे.)

उ०—पदारथ तूं ही सव्व परव्व।—ह.र.

परव्वत, परव्वै—देखो 'परवत' (रू.भे.)

उ०—१ परचंड पटाकर पंथि पुळं किरि जाणि परव्वत अट्टकुळं।—गु.रू.वं.

उ०—२ केजम जीण तुरंग में राजित, पाखरिया फिरि पंख परव्वत।—गु.रू.वं.

परव्रहम, परव्रह्म, परव्रिह्म-सं०पु० [सं० परब्रह्मन्] १ शिव (डि.नां.मा.)

२ निर्गुण, निरुपाधि, परमात्मा। उ०—आसउं विगत हुय सुचित सांभळ उमा। अगम परव्रह्म गुण गत अपारं।—र.रू.

रू०भे०—परिव्रह्म, पारव्रहम, पारव्रह्म, पारव्रह्म।

परभव, परभवि-सं०पु०यौ० [सं० पर+भव] १ दूसरा लोक।

उ०—१ सिर संती जिणेसर, सेवत ही सुख खांण। इण भव लहै लीला, परभव पद निरवांण।—ध.व.ग्रं.

उ०—२ केह नो गुमांन रहै नहीं सावतो रे, गंजी नइं कुण जाय। परभवि परमेसर पूज्यां विना रे, जेत कहो किम ताय।—वि.कु.

२ देखो 'परिभव' (रू.भे.)

परभव्विय—देखो 'पराभव' (रू.भे.)

उ०—पातिसाह परभव्विय, अंव उतारी अभंगा। कहूं गिड़ावि गोमट्ट, ताडि आठुए तुरंगा।—रा.ज.सी.

परभा—देखो 'प्रभा' (रू.भे.)

परभाकर—देखो 'प्रभाकर' (रू.भे.)

परभात—देखो 'प्रभात' (रू.भे.)

उ०—प्रेम मन धारि नित पहुर परभात रे। विविध जसवास गुण-रास वाढो।—ध व.ग्रं.

परभातड़लो, परभातड़ी—१ देखो 'प्रभात' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—मोहे कहै अलमस्त दिवांनी, कहां लगाऊं वातड़ली। मीरां के प्रभु गिरधर नागर, आंन मिळो परभातड़ली।—मीरां

२ देखो 'प्रभाती' (अल्पा., रू.भे.)

परभाति—१ देखो 'प्रभात' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—पालीतांणा पाजडी ए, चडियइ ऊठि परभाती।—स.कु.

२ देखो 'प्रभाती' (रू.भे.)

परभातियो—देखो 'प्रभातियो' (रू.भे.)

परभातियो-तारो—देखो 'प्रभातियो-तारो' (रू.भे.)

परभाती—देखो 'प्रभाती' (रू.भे.)

परभातीतारो—देखो 'प्रभातियो-तारो' (रू.भे.)

उ०—समदर देख्यो सूरज कांनी, गरज्यो तीर उछाळो दे। कै दे चंदा गिगन वीचलो, कै परभातीतारो दे।—चेतमांनखा

परभाव—देखो 'प्रभाव' (रू.भे.)

उ०—हरि दरसण मोकूं कहां, सो मैं कीयो आय। ओ तो फळ

पायौ कहूं, पूरवले परभाव ।—गजउद्धार

परभारौ—देखो 'परवारौ' (रू.भे.)

उ०—१ इसड़ी कहाइ दूजै ही दिन कुमार दुरजनसाळ आखेट रा रमण हूं परभारौ ही घोड़ां रा चाकरां नूं वरजाइ दौड़ां रा साथियां । घोड़ां रा पचास ही छड़ा असवार साथ ले'र पिता रै पर्ग लागण नूं दिल्ली री फौज रै समीप आयो ।—वं.भा.

उ०—२ आछी-आछी सारी चीज ऊंटां गाडां में घाल परभारी लाखेरी नूं वहिर कीनी ।—गोपाळदास गौड़ री वारता

(स्त्री० परभारी)

परभाव—देखो 'प्रभाव' (रू.भे.)

उ०—ढाळ चवदमी ए कही रे, कांइ पूरण थयो अधिकार रे । सतगुरु नै परभाव सुं रे, कांइ एह लह्यौ पणिपार रे ।—वि.कु.

परभाव-वंकणया-सं०स्त्री० [सं० प्रभाववक्रता] बुरी शिक्षा देने, खोटे माप-तौल रखने, मिलावट करने व झूठा लेखा-जोखा रखने की क्रिया । (जैन)

परभावसाळी—देखो 'प्रभावसाळी' (रू.भे.)

उ०—म्हारै खनै-ई आया हा । कैण लाग्या—थे-ई म्हारै सार्ग हालो, थारै जिसा परभावसाळी आगै आसी जणै गरीबां रो उपगार हुसी । —वरसगांठ

परभास-सं०पु० [सं० प्रभासः] सूर्य, रवि

परभासखेत्र—देखो 'प्रभासखेत्र' (रू.भे.)

परभु, परभू—देखो 'प्रभु' (रू.भे.) (डि.को.)

परभुता—देखो 'प्रभुता' (रू.भे.)

परभेद—देखो 'प्रभेद' (रू.भे.)

परभ्रत, परभ्रित-सं०पु० [सं० परभृतः परभृत्] १ शिव, महादेव । (अ.मा.)

उ०—नमो परब्रह्म नमो परभ्रत ।—ह.र.

२ चाकर, सेवक (अ.मा.)

३ कोयल (अ.मा.) (डि.को.)

४ स्वामी कार्तिकेय (ह.नां.मा.)

रू०भे०—परिभ्रत, प्रभ्रत ।

परम-वि० [सं०] १ अति दूरवर्ती, अन्तिम ।

२ मुख्य, प्रधान ।

३ सर्वोच्च, सर्वश्रेष्ठ ।

४ आरम्भिक ।

५ अत्यंत, बहुत । उ०—पातर भगतण पेख, परम मन में सुख पाई । मिळियां मच्छी मार, करै ज्यूं मोद कसाई ।—ऊ.का.

६ महान्, बड़ा । उ०—चारण वरण चितार, कारण लख महमां करी । धारण कीजै धार, परम उदार 'प्रतापसी' ।—दुरसो आढो

सं०पु० [सं०] १ ईश्वर । उ०—चमराळ फिरै दळबळ चिहूं, दर्ग तोप गोळा दमंग । तिण वार भडां मुरधर तणां, परम कहे अो रे पमंग ।—सू.प्र.

२ विष्णु (ह.नां.मा.)

उ०—सब लहै कुण सुकवि, सब सब हुंता न्यारौ । ब्रह्मचारी गोविंद, परम लिखमी नां प्यारौ ।—पी.ग्रं.

३ शिव (अ.मा.)

४ कामदेव (अ.मा.)

अव्य०—परसों (उ.र.)

उ०—यूं होज करतां जासी ऊमर, परम न काल परार न पोर । आंपां वात करां अवरां री, आंपां री करसी कोइ और ।

—ओपो आढो

रू०भे०—परम्म, परम्य, प्रम, प्रम्म ।

परमई—देखो 'परमे' (रू.भे.)

परमकोस-सं०पु० [सं० परम+कोष: ?] कपट (अ.मा.)

परमगत, परमगति-सं०पु० [सं० परमगति] मोक्ष, मुक्ति ।

उ०—आदि पुरुस आदेस, आदि जिण स्रिस्ट उपाई । आदि पुरुस आदेस, परमगति वैकुंठ पाई ।—ह.र.

परमगुर, परमगुरु, परमगुरू-सं०पु० [सं० परमगुरु] १ ईश्वर (अ.मा., ह.नां.मा.)

उ०—मैं दुरबळ अति ही पतित, दुरबळ दीन अनाथ । पत कुण राखै परमगुरु, राज विनां रघनाथ ।—गजउद्धार

२ शिव । उ०—आया सिवपुरी हुआ कारज सिघ, परमगुरु था ग्रहिया पगि । माहोमाहि करइ वातां मिळि, जनम सुकियारथ हूआ जगि ।—महादेव पारवती री वेलि

३ श्रीकृष्ण (अ.मा.)

४ चंद्र, चांद (ना.डि.को., ह.नां.मा.)

रू०भे०—प्रमगुर, प्रमगुरु, प्रम्मगुरु ।

परमचित-सं०पु० [सं० पराचित ?] चाकर, सेवक (अ.मा.)

सं०स्त्री० [देशज] संगीत की एक ताल ।

परमट—देखो 'परमिट' (रू.भे.)

परमत—देखो 'प्रमत्त' (रू.भे.)

परमतत, परमतत्व-सं०पु० [सं० परमतत्त्व] १ सम्पूर्ण विश्व के विकास का मूल तत्व ।

२ ब्रह्म, ईश्वर ।

रू०भे०—परतंत, परतत ।

परमत्थ—१ देखो 'प्रमत्त' (रू.भे.) (जैन)

२ देखो 'परमारथ' (रू.भे.) (जैन)

परमथ—देखो 'प्रमथ' (रू.भे.)

परमथनाथ—देखो 'प्रमथनाथ' (रू.भे.)

परमद-सं०पु० [सं०] एक रोग विशेष जो अधिक मात्रा में शराब का उपयोग करने के कारण उत्पन्न होता है ।

परमधाम-सं०पु० [सं० परमधाम] वैकुंठ, स्वर्ग (नां.मा.)

उ०—धरि सहस्र फरासां धारणा, खिति अनोप कीधी खड़ी । अस-

पति सुणे अच्चविजयी, परमधाम फिर प्रगड़ो ।—रा.रू.

परमनंद, परमनंदन-सं०पु० [सं० परमनंदन:] गणेश, गजानन । (ह.नां.मा.)

परमपद-सं०पु० [सं०] १ मोक्ष, मुक्ति ।

उ०—संत जातरा है सुखदाई । जहां सुखरांम परमपद पाई ।
—स्री सुखरां दासजी महाराज

२ ईश्वर (नां.मा.)

परमपिता-सं०पु० [सं०] परमेश्वर (डि.को.)

परमपुर-सं०पु० [सं०] १ विष्णुलोक । उ०—इंद्रपुर ब्रह्मपुर नागपुर सिवपुर, परमपुर तांई ऊपरि पार । राजा सरग सात में 'रतनो', मिळयो जोतसरूप मझार ।—दूदो

२ वैकुंठ, स्वर्ग ।

३ कैलाश, शिवधाम ।

रू०भे०—प्रमपुर ।

परमपुरायण-सं०पु० [सं० परम:परायण] ईश्वर (डि.को.)

परमपुरस-सं०पु० [सं० परमपुरुष] ईश्वर, विष्णु ।

परमप्रिय-सं०पु० [सं०] दो ह्रस्व मात्राओं का नाम (डि को.)

परमफळ-सं०पु० [सं० परमफल] मोक्ष, मुक्ति ।

परमब्रह्म-सं०पु० [सं०] ईश्वर ।

परमब्रह्मचारिणो-सं०स्त्री० [सं०] दुर्गा ।

परमर-वि०—१ श्रेष्ठ, उत्तम । उ०—नरपति पुर नागोर नूं, विदा कियो 'वखतेस' । आयो जैतारण अभो, राजा परमर वेस ।
—रा.रू.

परमळ, परमळि-सं०पु० [देशज] १ मक्का के भुने हुए दाने (ढूंढाड़)

२ देखो 'परिमळ' (रू.भे.)

उ०—१ अत परमळ पसर पसरिया आंबा । सुक पिक बोलै सुखद सराग ।—वां.दा.

उ०—२ नासा विसन करिस इम निरमळ । प्रभु घूंटै तो परणी परमळ ।—ह.र.

परमसुख-सं०पु० [सं०] आनंद (अ.मा.) (ह.नां मा.)

परमहंस-वि० [सं०] बहुत भोला-भाला, सीधा, सरल ।

सं०पु०—१ परमात्मा, ईश्वर ।

२ ज्ञान मार्ग में बहुत आगे बढा हुआ संन्यासी ।

३ स्मृतियों के अनुसार कुटीचक्र, बहुदक, हंस और परमहंस नामक संन्यासियों के चार भेदों में सर्वश्रेष्ठ भेद ।

४ उक्त सर्वश्रेष्ठ भेद का संन्यासी ।

रू०भे०—परहंस, प्रमहंस ।

परमांण—१ देखो 'प्रमांण' (रू.भे.)

उ०—१ केहरि छोटो बहुत गुण, मोहै गयंदां मांण । लोहड़ बडाई को करै, नरां नसत परमांण ।—हा.झा.

उ०—२ कंवर कह्यो—स्री इकलिंगजी री वाच वांह छै, ज्यों थे कहण वाळी कहस्यो तो परमांण छै ।—राव रिणमल री वात

उ०—३ जोसी वचन परमांण करि, मांडची राय वीवाह । परणावूं सुरसुंदरी, अधिको करी उच्छाह ।—स्रीपाळ

उ०—४ देखैलो हिंदवांण, निज सूरज दिस नेह सूं । पण थारा परमांण, निरख निसासां नांखसी ।—केसरीसिंह बारहठ

२ देखो 'परमांणु' (रू.भे.)

परमांणिक—देखो 'प्रमांणिक' (रू.भे.)

परमांणु-सं०पु० [सं० परमाणु] १ अत्यंत सूक्ष्म कण ।

२ किसी तत्व का वह अति छोटा कण या खण्ड जिसके कण या खण्ड बन ही नहीं सकते हों ।

रू०भे०—'प्रमांणु' ।

परमांणुवाद-सं०पु० [सं० परमाणुवाद] १ परमाणुओं से संसार की रचना मानने वाला वाद विशेष ।

परमाणुवादी-वि०—परमाणुवाद संबंधी, परमाणुवाद का ।

सं०पु० [सं० परमाणुवादिन्] परमाणुवाद के सिद्धान्त को मानने वाला व्यक्ति ।

परमांणो—देखो 'प्रमांण' (अल्पा., रू.भे.)

परमा—देखो 'प्रमा' (रू.भे.)

परमाइस्ट-सं०पु० [सं० परमेष्टिन्] ब्रह्मा (डि.नां.मा.)

परमाणंद, परमाणंदो—देखो 'परमानन्द' (रू.भे.)

उ०—१ हरि हरख आंणि मनि जाणी, इम थयो आणंद । वीर वचने सांमह्या, परवरया परमाणंद ।—रुकमणी-मंगळ

उ०—२ राज करइ तिहां राजियउ, पुंडरीक नांम नरिंदो जो । गुण सुंदरी तसु भारिजा, पांमइ परमाणंदो जी ।—स.कु.

परमातम, परमातमा, परमात्म, परमात्मा-सं०पु० [सं० परमात्मा]

१ ईश्वर ।

उ०—लिखि लापर लेख लिखावन की, दुनियां विध देख दिखावन की । परमातम को नहिं पावन की, बक-व्रत्तीय ब्रह्म बतावन की ।
—ऊ.का.

२ परब्रह्म । उ०—१ घरम थी गरम क्रोध के घर में, परमति सरमति लाई । परमातम सुद्ध परम पुपुस भज, हर मतु हरम पराई ।
—घ.व ग्रं.

उ०—२ परिब्रह्म पूरण, तत मग्न तूरण । परमात्म प्राप्त, वह पुरुस आप्त ।—ऊ.का.

उ० ३ महात्मा आत्मा ए परम परमात्मा हिळमिळै । झिलै जीवोक्योती झगमगत ज्योती झिळमिळै ।—ऊ का.

रू०भे०—प्रमातमा ।

परमाद—देखो 'प्रमाद' (रू भे)

उ०—सतगुरु संगति पायनै ए, मत कीजो परमाद । पर निंदा ईरसा तजो ए, कीजो धरम आह्लाद ।—जयवांणी

परमादी—देखो 'प्रमादी' (रू.भे.)

उ०—पारब्रह्म सूं पधारिया, पीछा ताहि मिळिजे ए । अन परमादी

आतमा, ताका दरसण कीजे ए।—स्री सुखरांमजी महाराज
परमादो—देखो 'प्रमाद' (अल्पा०, रू.भे.)
उ०—थविर जांणी इम आऊखूं, किम कीजइ परमादो जी। नरकां राज्य न वांछयइ ते, मांहि नहीं को सवादो जी।—स.कु.
परमाद्वैत-सं०पु० [सं० परम+अद्वैतम्] १ जीव और ब्रह्म में अभेद कल्पना करने वाला वेदान्त सिद्धान्त विशेष।
२ परब्रह्म, परमात्मा।
परमांधांमी-सं०पु० [सं० परमाधार्मिक, प्रा० परमाधम्मिअ, परमाहम्मिअ] नरकवासियों को दण्डित करने वाला देव।
उ०—जइ ऊपजइं कूंभी मंभारि, बाघइ देह न माइ वारि। परमाधांमी किलकिल करी, धाइं खंडोखंडि करइं तिण ठांइ।
—चिहुंगति चउपई
परमानंद, परमानंदौ-सं०पु० [सं० परमानंद] १ आनंदस्वरूप ब्रह्म, परमात्मा। उ०—जब निराधार मन रह गया, आतम के आनंद। दादू पीवै रांम रस, भेटैं परमानंद।—दादूबांणी
२ ब्रह्म के अनुभव का सुख, ब्रह्मानन्द।
३ बहुत बड़ा सुख।
उ०—बादळ नहीं तहं बरसत देख्या, सब्द नहीं गरजंदा। बीज नहीं तहं चमकत देख्या, 'दादू' परमानंदा।—दादूबांणी
रू०भे०—परमाणंद।
अल्पा०—परमानदो।
परमापति-सं०पु० [सं० परम+पति] ईश्वर।
उ०—परमापति सांगति प्रेरक की, हहराय थके मति हेरक की। अज एक असंडित ईस्वर को, जप जाप सदा जगदीस्वर को।
—ऊ.का.
परमाय—देखो 'प्रमाद' (रू.भे.) (जैन)
परमायत-वि०—१ सब में दीर्घ (जैन)
२ सब काल में स्थित (जैन)
परमार-सं०पु० [सं० पर+रा० मारना] अग्नि कुल के अंतर्गत माना जाने वाला राजपूतों का एक कुल।
उ०—लीधो दळ परमार दळ, आबू भोळै राव। गाजै जादव देवगिर, लोधो 'करण' सुजाव।—बां.दा.
रू०भे०—पंमार, पंवार, पमार, पुंवार, प्रमार।
परमारत, परमारथ-सं०पु० [सं० परमार्थ] १ परोपकार।
उ०—१ 'जसवंत' जग में जीवडा, सो न लखै हिय सुन्य। स्वारथ हांती सारखो, परमारथ सो पुन्य।—ऊ.का.
उ०—२ यही रुपया है अनदाता, स्वारथ परमारथ सुख साता।
—ऊ.का.
२ उत्कृष्ट पदार्थ। उ०—पायउ जिम बांमण परमारथ, कहतउ वात निघात कहइ। जांणीयउ पारवती जांणपणउ, कोइ गहिलां सुं आखडी ग्रहइ।—महादेव पारवती री वेलि
३ मोक्ष। उ०—परमारथ पंथ नाहि पिछांण्यो, स्वारथ अपणो मांनि सगीनो।—ध.व.ग्रं.
४ दुःख का सर्वथा अभाव रूप सुख (न्याय)
५ वास्तव सत्ता।
रू०भे०—परमत्थ, प्रमरथ।
परमारथता-सं०स्त्री० [सं० परमार्थता] सत्यभाव, यथार्थ।
परमारथवादी-वि०—परमार्थवाद सम्बन्धी, परमार्थवाद का।
सं०पु० [सं० परमार्थवादिन्] १ बहुत बड़ा ज्ञानी और तत्वज्ञ।
२ परमार्थवाद को मानने वाला।
परमारथी-वि० [सं० परमार्थिन्] १ परोपकारी।
उ०—परमारथ को सब किया, आप सवारथ नांहि। परमेस्वर परमारथी, कै साधू कळि मांहि।—दादूबांणी
२ मोक्ष चाहने वाला। उ०—सुखारथी, स्वारथी, जे स्वसुख दुख प्रारथी वच सदैं। वदै जी विद्यारथी विसद परमारथी वच वदैं।
—ऊ.का.
परमाहमी-वि० [सं० परम+अधर्मी] परम अधर्मी, महान नीच।
उ०—साधवी माता कहइ सांभलि, भुंडा ए कांम भोग रे। आलिंगन लोह पूतली सुं, परमाहम्मी प्रयोग रे।—स.कु.
परमिट-सं०पु० [अं०] अनुमति पत्र।
रू०भे०—परमट।
परमिट्ठो—देखो 'परमेस्ठी' (रू.भे.)
उ०—सुभ भाव समकित ध्यांन समरण, पंच स्त्री परमिट्ठओ। सो गुरु स्री जिणचंद सूरि, धन्न नयणे दिट्ठओ।—स.कु.
परमिति-सं०स्त्री० [सं०] १ परिमित।
२ परमसीमा। उ०—निमो देव अरिहंत, पुरुस परधांम पुरातम। परमारथ परतंत, परम अणपार पराक्रम। तूं परमिति परतंत, तूं ही परदेव पणीजै। परउपगारी परम, ग्यांन पररूप गिणीजै।
—पी.ग्रं.
३ मर्यादा।
परमिस्टं-सं०पु० [सं० परमेष्ठ] ब्रह्मा। (नां.मा.)
परमुख-वि० [सं०] १ प्रतिकूल आचरण करने वाला, विरुद्ध आचरण करने वाला।
२ जिसका मुख दूसरी ओर फिरा हुआ हो, विमुख।
सं०स्त्री०—१ राजस्थानी साहित्य में वर्णनीय अन्य पुरुष के वचनों से वर्णन कराने की एक साहित्यिक रीति विशेष।
२ देखो 'प्रमुख' (रू.भे.)
रू०भे०—परम्मुख।
परमे—देखो 'परमै' (रू.भे.)
परमेट्ठि, परमेट्ठी, परमेठि—देखो 'परमेस्ठी' (रू.भे.)
उ०—१ जपउ पंच परमेट्ठि परभाति जापं, हरइ दूरि सोक संताप। पापं।—स कु.

उ०—२ एकं पाइं दिणयर द्रंठि। हीयवइ मंत्र पंच परमेठि।
—पं.पं.प.

परमेस-सं०पु० [सं० परमेश] १ परमेश्वर।
उ०—च्यारि वीर चत्रभुज, लाछिवर जिसौ लखमंण। भरथ आप भगवंत, समर परमेस सत्रघंण।—पी.ग्रं.
२ परब्रह्म। उ०—देस में कियौ परवेस जब दरसियौ। 'मेस' परमेस री जोत मिळियौ।—महेसदास कूंपावत री गीत
रू०भे०—प्रमेस।

परमेसटी—देखो 'परमेस्ठी' (रू.भे.) (ह.ना.मा.)

परमेसर—देखो 'परमेस्वर' (रू.भे.)
उ०—रुद्र विना सुर कमण जाप परमेसर जोड़ै। विण ग्रह सुत प्रीवरत त्रिपति कुण वंधै सोड़ै।—रा.रू.

परमेसरी—देखो 'परमेस्वरी' (रू.भे.)
उ०—फरे ग्रादेस ग्रारोहिया केसरी, मरद ग्रलवेस री जोग माया। दाखता विगति जंगळ धरा देस री, इंद्र परमेसरी गुड़द ग्राया।
—मे.म.

परमेसरु, परमेसुर—देखो 'परमेस्वर' (रू.भे.)
उ०—१ तिणि पुरि हूउ संति जिणेसरु। संघह संतिकरउ परमेसरु।
—पं.पं.प.
उ०—२ बंदगी वैर भरि देत बोट। परमेसुर पै नहि धरत पोट।
—ऊ.का.

परमेस्ट—देखो 'परमेस्ठ' (रू.भे.)

परमेस्टिनी—देखो 'परमेस्ठिनी' (रू.भे.)

परमेस्टि, परमेस्टी—देखो 'परमेस्ठी' (रू.भे.)
उ०—ध्यांन धरइ परमेस्टि रिसीसर रूड़उ रे।—स.कु.

परमेस्ठ-सं०पु० [सं० परमेष्ठ] ब्रह्मा, प्रजापति।
रू०भे०—परमेस्ट।

परमेस्ठि—देखो 'परमेस्ठी' (रू.भे.)

परमेस्ठिनी-सं०स्त्री० [सं० परमेष्ठिनी] १ देवी।
२ श्री।
रू०भे०—परमेस्टिनी।

परमेस्ठी-सं०पु० [सं० परमेष्ठिन्] १ ब्रह्मा, चतुरानन।
२ अग्नि आदि देवता।
३ तत्व, भूत।
४ प्राचीनकाल का एक प्रकार का यज्ञ विशेष।
५ शालिग्राम की एक प्रकार की मूर्ति।
६ विराट पुरुष जो परम ब्रह्म का ही एक रूप है।
उ०—दागै सम ईरण जीरण छद दाटै। कोरण विस्थीरण संकीरण काटै। वाल्हा वन्हौ विन वल्हा विसरावै। घर ग्रंतेस्टी कर परमेस्ठी धावै।—ऊ.का.
७ अर्हन्, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और मुनि (जैन)
रू०भे०—परमिट्ठयो, परमेटि, परमेट्ठि, परमेट्ठि, परमेठि, परमेस्टि, परमेस्टी, परमेरिठ।

परमेस्वर-सं०पु० [सं० परमेश्वर] १ संसार का परिचालक व कर्ता, ईश्वर (ह.ना.मा.)
उ०—परमेसर पारी पा प्रभिनागे, छदमी क्यूं छूटंदा है।
—ऊ.का.
पर्या०—ग्रादपुरस, ईसर, कंसनिकंदन, करतार, कानड़, किल्याण, केसव, क्रस्ण, गिरधर, गोपाळ, गोविंद, चक्रपांणि, जगदीस, त्रभुवणनाथ, दामोदर, दीनदयाळ, नारायण, निरंजन, पदमनाभ, पुरसोतम, प्रभु, बाळमुकुंद, मधुसूदन, माधव, मुरळीधर, मुरारि, रणछोड़, रांम, वासुदेव, विसंभर, वीठल।
२ विष्णु।
३ शिव।
रू०भे०—परमेसर, परमेसरु, परमेसुर, प्रमेसर, प्रमेसुर, प्रमेस्वर।

परमेस्वरी-सं०स्त्री० [सं० परमेश्वरी] दुर्गा, देवी।
रू०भे०—परमेसरी।

परमेह—देखो 'प्रमेह' (रू.भे.)

परमै-ग्रव्य०—परसों।
रू०भे०—परमइ, परमे।

परमोच्छव, परमोछव, परमोतसव-सं०पु० [सं० परम+उत्सव]
१ बड़ा उत्सव, महान उत्सव। उ०—गारू ग्रायो मधुपुरी, लो दूलह 'ग्रभसाह'। परमोछव परणायवा, गुण संहै 'जयसाह'।
—रारू.

परमोद—१ देखो 'प्रबोध' (रू.भे.)
उ०—बाबा सिघ मिळै बाबां सूं, बळ जातां सूं हरख हुवौ। सिख वातां सूं नहीं सलूधा, हाथां सूं परमोद हुवौ।—बांकीदास बीटू
२ देखो 'प्रमोद' (रू.भे.)

परमोदय-सं०पु० [सं० परम+उदय] महान उदय, ग्रहोभाग्य, शुभ ग्रवसर। उ०—ग्रवळां उद्धारी, सवळां कुळ ग्राया। पुन परचारण रा, परमोदय पाया।—ऊ.का.

परमोध—१ देखो 'प्रबोध' (रू.भे.)
२ देखो 'प्रमोद' (रू.भे.)

परम्म—देखो 'परम' (रू.भे.)

परम्मळ—देखो 'परिमळ' (रू.भे.)
उ०—परम्मळ कम्मळ सद्रस पग्ग। निपांन परम्म निवारण नग्ग।
—ह.र.

परम्मुख—देखो 'परमुख' (रू.भे.)
उ०—तीन ही सांमंत सलेम रै साथ सांम्हैं जाइ बाणारसी रै समीप कुमार रा काका नूं कोरड़ौ लोह चलायौ। जिण थी पहला ही प्रघात में परम्मुख होइ दूजौ कु ार दूजा रौ प्रहार भी न खायौ।
—वं.भा.

परम्य—देखो 'परम' (रू.भे.)

उ०—दसा विसम्य संम्यहा ! अगम्य गम्य है नहीं। रसा परम्य रम्य रम्य, हा ! हरम्य है नहीं।—ऊ.का.

परयक-संoपुo [सं० पर्यंक] पलंग, शय्या।

उ०—जूड़ा जोड़ा परयक पेसणो पात्र पुंज कटि करवाळ पुहवी में पैठो तो भी मंतु विहूण जनक रा मित्र नै मारण मैं म्हारो तो मन घाघात रो उरकरस नहीं मानै।—वं.भा.

रू०भे०—परजंक, परिजंक, परियंका, प्रजंक, प्रयंक।

परयंत-अव्य० [सं० पर्यन्त] तक, लौ। उ०—और भी सातवाहन रा चरित्र नूं आदि लेर अस्थिपाळ वीसळदेव वल्लभाचारय रा चरित्र परयंत इसा ही प्रमाणिकां रै लिखिया।—वं.भा.

रू०भे०—परजंत, परियंत, परियंत, प्रयंत, प्रजंत।

परयटन-संoपुo [सं० पर्यटन] भ्रमण, घूमना, देशाटन।

रू०भे०—परजटन, परिजटन, परियट्टन।

परयतन—देखो 'प्रयत्न' (रू.भे.)

परयां—देखो 'परियां' (रू.भे.)

परयाग—देखो 'प्रयाग' (रू.भे.)

उ०—धवळी-धारा छांह पड़ंता इसड़ो राजै। विन परयागां गंग जमुन रो संगम साजै।—मेघ०

परयाप्त-वि० [सं० पर्याप्त] यथेष्ट, यथोचित, पूरा।

परयाय—देखो 'परयाय' (रू.भे.)

उ०—म्हे ढीला पड़ गया हां तो ही मानां एक दांणा में च्यार परयाय च्यार प्रांण ते सुवाया पुण्य किम हुसी अनें थे मुंहपती वांध नै क्यूं खोटी हुवा ?—भि.द्र.

परयास—देखो 'प्रयास' (रू.भे.)

परयुक्षण-संoपुo [सं० पर्युक्षणम्] पवित्र पूजा व श्राद्ध आदि के पहिले मंत्र पढ़ कर या वैसे ही पानी छिड़कने की क्रिया।

परयुक्षणी-संoस्त्रीo [सं० पर्युक्षणी] पर्युक्षण में छिड़कने के पानी का पात्र।

परयुसण, परयूसण-संoपुo [सं० पर्युषणम] १ पूजन, अर्चन, सेवा। २ जैनियों का एक पर्व विशेष।

उ०—कितरायक दिनां वेदी कियो पछै वावेचा लातर गया। परयूसणां में इंद्रध्वज काढ्यो। स्वांमीजी रा मूंढा आगे घणो वेलां ऊभा रहो गावै बजावै तांन करै।—भि.द्र.

वि०वि०—जैन सम्प्रदाय का एक महत्वशाली पर्व जो भाद्र कृष्णा द्वादशी से भाद्र शुक्ला पंचमी तक चलता है। इन आठ दिनों में इस धर्म के अनुयायी प्रातः साधुओं एवं विद्वानों के प्रवचन श्रवण करने, दोपहर को चौपाई आदि व सायं प्रतिक्रमणार्थ स्थानक में जाते हैं। श्रद्धालु लोग इन पूरे आठ दिनों तक उपवास रखते हैं जिसे अठाई कहते हैं। व्यापारी लोग इन आठ दिनों में व्यापार बंद रखते हैं और अपना समय धर्माचरण में लगाते हैं। अन्तिम समाप्ति का दिन संवत्सरी कहलाता है। मंदिरमार्गी सम्प्रदाय वाले इस दिन भगवान की धूमधाम से सवारी निकालते हैं जिसमें भजन-कीर्तन का विशेष कार्यक्रम रहता है। संवत्सरी के दूसरे दिन जैनी लोग अपने पूर्व कृत्यों के लिए परस्पर क्षमायाचना करते हैं जिसे 'खमद खांवणा' कहते हैं। दिगंबर संप्रदाय वालों में यह पर्यूसण भाद्र शुक्ला पंचमी से भाद्र शुक्ला चतुर्दशी तक चलता है।

३ एक ही स्थान में जैन साधुओं का वर्षाकाल व्यतीत करना।

रू०भे०—पजूंसण, पजूसण, पजूसण, पज्जूसण, पज्जोवसण, पिजूसण।

परयोग—देखो 'प्रयोग' (रू.भे.)

परयोजन—देखो 'प्रयोजन' (रू.भे.)

पररूप—देखो 'प्ररूपक' (रू.भे.)

पररूपणा—देखो 'प्ररूपणा' (रू.भे.)

परेरउ-वि०—पराया, दूसरे का। उ०—साहिब कच्छ न जाइयइ, तिहां परेरउ द्रंग। मीमळ नयण सुवंक घण, भूलउ जाइसि संग।—ढो.मा.

परळंब—देखो 'प्रळंब' (रू.भे.)

परळंबी, परलबो—देखो 'प्रळंब' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—अस्टापद जिम अरचियइ, भरत भराया बिंबो जो ! ग्वालेरइ गढ्यड़ि निलउ, बावन गज परलंबो जी।—स.कु.

परळ-संoस्त्रीo [देशज] १ झूठ. २ असत्य वात, गप्प।

परळउ—देखो 'प्रळय' (रू.भे.) (उ.र.)

परळको-संoपुo [देशज] चमक, प्रकाश।

परळय—देखो 'प्रळय' (रू.भे.)

परळयकरण-संoस्त्रीo [सं० प्रलय+करण] अग्नि, आग।

रू०भे०—परळैकरण।

परळाई-संoपुo [देशज] उछलकूद। उ०—कठै 'मोर' करै परळाई। मोर जाइ पण 'सादो' न जाई।—नैणसी

परळै—देखो 'प्रळय' (रू.भे.)

उ०—१ पिंड पड़ै, पुन ना पड़ै, परळै पतित न होय। रज्जब, सगी जीव का, सुकृत सिवाय न कोय।—रज्जब

उ०—२ पैला कुण रुकै ? उण सारू तो आज ही परळै है। लांठा जिनावर मिळ नैं दुवळां रो विचार करण लागा।—फुलवाड़ी

परलै-क्रि०वि० [सं० पर=दूसरा+राज० लै] उस ओर, दूसरी ओर

उ०—इतरे पेमसिंह चांपावत बरछी री दोन्ही सो सक्तिसिंह रै परलै पासै नीसरी।—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

परळैकरण—देखो 'परळयकरण' (रू.भे.) (डि.को.)

परलैदिन—देखो 'पैलैदिन' (रू.भे.)

उ०—आज काले परसूं और परलैदिन करतां कीं महीना फेर गुड़ गया।—फुलवाड़ी

परलोक-संoपुo [सं०] १ शरीर छोड़ने पर आत्मा को मिलने वाला लोक, वैकुण्ठ। उ०—जसवंत' जुवति जे जहंहि जीव, दहनोदय

दहुंही प्रथक पीव। निस्चित पतिव्रत लोक नेम, प्रत्येक करहि पर-लोक प्रेम।—ऊ.का.

२ दूसरा लोक।

यौ०—परलोकगमन, परलोकप्राप्ति, परलोकवास।

मुहा०—१ परलोकगामी होणौ—मरना।

२ परलोक सिधारणा—मरना।

रू०भे०—परलोय, प्रलोक।

परलोभ—देखो 'प्रलोभ' (रू.भे.)

परलोभन—देखो 'प्रलोभन' (रू.भे.)

परलोय—देखो 'परलोक' (रू.भे.) (जैन)

परळौ—देखो 'प्रळय' (अल्पा० रू.भे.)

उ०—१ उत्पत्ति मांह उपज्या नहिं चेतन, नहिं थिति माए वो थिति रे! परळा में कबहूं नहिं पलटे, नित निरलेप चेतन रे!

—स्री सुखरांमजी महाराज

उ०—२ एक पूरब दसा महीथळ परीपार ऐसे नांम नगर, तठै राजा मुकनसेण ऐसे नांम राज करै। तको महा निरमोही। तिकण री ऐही ठकुराई जो बारा बारा कोस ऊपर फौज री पड़ाव रहै। महा सिकार री जीव। तको चढ़ै जद जीवां जीवन री परळौ होऐ।

—कल्यांणसिंघ नगराजोत वाढेल री वात

परलौ—वि० [सं० पर+रा०प्र० लौ] (स्त्री० परली) १ उस ओर का, दूसरी ओर का। उ०—दुइ दुइ कोठो हेंठि दिवारि, सही इमि कीजै आक संचारि। ऊपरि एक एकड़ो अंति, इम परलै कोठे आवंति।—ल.पिं.

मुहा०—१ परलै दरजे रौ—हर दर्जे का, बहुत, अत्यन्त।

२ परलै पार होणौ—अंत तक पहुंचना, बहुत दूर तक जाना।

३ परलै सिरै रौ—देखो 'परलै दरजे रौ'।

२ सामने की ओर भगा हुआ (उ.र.)

३ ध्यान देने वाला (उ.र.)

४ उत्तर काल भव (उ.र.)

५ दूसरी ओर अवस्थित (उ.र.)

परव—सं०पु० [सं० पर्वन्] ग्रंथि, जोड़, गांठ।

ज्यूं—वांसरी परव।

२ अंश, भाग, टुकड़ा, विभाग।

३ ग्रंथ का भाग।

ज्यूं—महाभारत रा १८ परव है।

४ अवधि, निर्दिष्टकाल, विशेष कर प्रतिपक्ष की अष्टमी और चतुर्दशी तथा पूर्णिमा एवं अमावस्या।

५ पूर्णिमा, अमावस्या और संक्रान्ति।

६ उत्सव, पुण्यकाल।

७ अवसर, मौका। उ०—चाढ़ि घड़ वेहड़ां वाढ़ि भड़ चौसरां। चाळि कळि काळि उजवाळि चीला। परब इसड़ मुग्री 'नाथ' मांहि पग, ढीलड़ी तणा पग हुआ ढीला।

—राव सत्रसाल गोपीनाथोत हाडा री गीत

८ यज्ञादि के समय होने वाला उत्सव।

९ त्योहार।

१० चन्द्र या सूर्यग्रहण।

[सं० प्रपा ?] ११ पौसाला, प्याऊ (उ.र.)

१२ कूप, कुण्ड (उ.र.)

१३ समय। उ०—गुणग्राहक गिरनारपत, चूंटा राव खंगार। एक परव आपो अरब, दे तुं हिज दातार।—बां.दा.

रू०भे०—पव, पव्व, परव, परव्व, प्रब, प्रबि, प्रव्व, प्रव।

परबकार—सं०पु० [सं० पर्वकारिन्] वह ब्राह्मण जो अमावस्यादि पर्व के दिनों में किया जाने वाला धर्मानुष्ठान का कार्य निजी लोभ के वशीभूत होकर किसी अन्य दिन कर डाले।

परवकाळ—सं०पु०यौ० [सं० पर्व-काल] १ पर्व का समय।

२ वह समय जब कोई पर्व हो, पुण्यकाल।

३ चतुर्दशी, अष्टमी, पूर्णिमा, अमावस्या और संक्रान्ति।

४ चन्द्रमा के क्षय का समय।

परवगांमी—सं०पु० [सं० पर्वगामिन्] पर्व के दिन स्त्री-प्रसंग करने वाला।

परवज—सं०पु० [सं० पर्वज] वह वृक्ष जिसके तने के मध्य गांठ हो—यथा ईख, बांस, एरंड।

रू०भे०—पव्वया।

परवरणी—सं०स्त्री० [सं० पर्वणी] पूर्णिमा, पूर्णमासी, पूनम।

परवत—सं०पु० [सं० पर्वत] १ वह प्राकृतिक भू-भाग जो भूमि से बहुत ऊंचा उठा हुआ हो और जो प्रायः पत्थर ही पत्थर हो, पहाड़. उ०—गुड़ै मयमंत सेना मुहर गैमरा, प्रकटिया मारका थाट जोध-पुरा। धूंसियै हैवपुरा पाय अरबद, पसरिये 'सिंघ' परबत थया पाधरा।—महाराज रायसिंघ बीकानेर री गीत

पर्या०—अग, अचळ, अडोळ, अतोल, अद्री, अनड़, आहारज, उप-लंगी, कंदराकर, गिर, गोत्र, ग्राव, डूंगर, दरीभ्रत, द्रुमपाळ, धर, धराधर, नग, भाखर, भूखर, भूधर, मगरौ, मरुत, महीध्र, सघण, सांनुमांन, सिखरी, सिलोचय, सैल, स्रंगी।

रू०भे०—पव, पवव, पवे, पवै, पव्व, पव्वय, पव्वव, पव्वाया, पव्वै, परबत, परवत्त, परवताय, परव्वत, परव्वै, पय, पवै, पव्वय, पव्वै, पुब्ब, प्रब, प्रव्व, प्रव्वत।

अल्पा०—पवयो, परबतड़ौ, परवतियौ, परवतड़ौ, परवतियौ।

मह०—परबतौड़, परवतौड़।

२ पर्वत के समान ही किसी पदार्थ विशेष का बहुत ऊंचा ढेर।

३ दश-नामी सन्यासियों की एक शाखा।

४ महाभारत के अनुसार एक गंधर्व का नाम।

५ वृक्ष, पेड़ (डिं.को.)

६ एक प्रकार की मछली।

परवतश्ररि—देखो 'परवतारि' (रू.भे.)
परवतजा-सं०स्त्री० [सं० पर्वतजा] १ पार्वती, गिरिजा, गौरी।
२ नदी।
रू०भे०—परबतजा।
परवतनंदणी(नी)-सं०स्त्री० [सं० पर्वतनन्दिनी] पार्वती, गिरिजा, गौरी।
परवतमाळ, परवतमाळा-सं०स्त्री०यौ० [सं० पर्वतमाला] १ पर्वत-श्रेणी।
२ हिमालय पर्वत।
रू०भे०—परबतमाळ, परबतमाळा।
परवतमेर—देखो 'मेरुपरवत' (रू.भे.)
परवतराज-सं०पु०यौ० [सं० पर्वत+राज] १ हिमालय पर्वत।
२ सुमेरु पर्वत।
३ कोई बड़ा पर्वत।
परवतसुत-सं०पु०यौ० [सं० पर्वतसुत] लोहा (श्र.मा.)
रू०भे०—परबतसुत।
परवतारि-सं०पु० [सं० पर्वतारि] इन्द्र।
रू०भे०—परवतश्ररि, परवतश्ररी, परबतश्ररि।
परवतासण(न)-सं०पु०यौ० [सं० पर्वतासन] योग के चौरासी श्रासनों के अंतर्गत एक श्रासन विशेष जिसमें पद्मासन की तरह बैठ कर दोनों हाथों को शिर की तरफ ऊँचा करके करतलों का सम्पुट करके बैठना होता है।
परवतास्त्र-सं०पु०यौ० [सं० पर्वतास्त्र] एक प्रकार का श्रस्त्र विशेष जिसका प्राचीनकाल में प्रयोग किया जाता था।
परवतियौ-वि० [सं० पर्वत+रा.प्र. इयौ] १ पर्वतसम्बन्धी, पर्वत का।
२ देखो 'परवत' (श्रल्पा०, रू.भे.)
परवती-वि० [सं० पर्वत+रा. प्र. ई] १ पर्वतसम्बन्धी, पर्वत का।
२ पहाड़ों पर रहने वाला।
३ पहाड़ों पर उत्पन्न होने वाला।
सं०स्त्री०—एक प्रकार की बकरी।
रू०भे०—परबती।
परवतेस, परवतेसर-सं०पु० [सं० पर्वतेश, पर्वतेश्वर] १ हिमालय पर्वत।
२ सुमेरु पर्वत।
३ कोई बड़ा पर्वत।
परवन-सं०स्त्री०—मेवाड़ की एक नदी का नाम।
परवर-वि० [फा०] पालन-पोषण करने वाला, पालक।
सं०स्त्री०—१ चूल्हे की वेवणी (मेवाड़)
२ देखो 'प्रवर' (रू.भे.)
उ०—१ भारथ पारथ जंतवंत, राव 'चौक' घरांणा। हूं उजवाळूं ऊजळा, परवर श्रापांणा।—द.दा.
उ०—२ सोलंकियां रै भारद्वाज गोत्र, खेमज चांमुंडा दोय देवी, महिपाळ पितर, परवर तीन, खिड़ियो चारण।...—वां.दा. ख्यात
३ देखो 'परवाळ' (रू.भे.)
४ देखो 'परवळ' (रू.भे.)
परवरणौ, परवरबौ-क्रि०श्र० [सं० प्रवर्त्तनम्] १ घूमना-फिरना।
उ०—१ दीजै तिहां डंक न दंड न दीजै, ग्रहणि मवरि तरु गांनगर। कर ग्राही परवरिया मधुकर, कुसुम गंध मकरंद कर।—वेलि
उ०—२ व्याप्त होना। उ०—हैवैराव रूठै हिंदवांणै, प्रळै ताप उरि परवरिया। श्रधरम तणा पटा 'श्रासाउत', उतवंगि चाढ़ि न श्रादरिया।—सुजांनसिंह राठौड़ रौ गीत
३ प्रसिद्धि प्राप्त होना, प्रसिद्ध होना।
उ०—परवरिया सारी प्रथी, 'गिरवरिया' रा गीत।—श्रज्ञात
४ प्रस्थान करना, गमन करना। उ०—इंद्रक भोज सबळ सित्रादिक, पाळा लेई परवरिया। बार-श्रक्षोहणी दळ बलिभद्र लेई नई, हरिपूठठइ संचरिया।—रुकमणी मंगळ
उ०—गीतारथ गुण ना दरिया रे!, गुरु समता रसना भरिया रे। पंच सुमति गुपति सुं परवरिया रे, भव सागर सहजे तरिया रे।
—स.कु.
परवरणहार, हारौ (हारी), परवरणियौ—वि०।
परवरिश्रोड़ौ, परवरियोड़ौ, परवरयोड़ौ—भू०का०कृ०।
परवरीजणौ, परवरीजबौ—भाव वा०।
परवरतक—देखो 'प्रवरतक' (रू.भे.)
परवरती-वि० [सं० प्रवर्ती] भूलेभटकों को रास्ते पर लाने वाला।
उ०—लागो ध्यांन धरा पर लोटै, सुधबुध भूला मोम सिळै। विहद कृपाळ हुश्रा परवरती, मुगती पोहरां मांय मिळै।
—बांकीदास बीठू
परवरदिगार, परवरदीगार-सं०पु०यौ० [फा० परवरदिगार] १ ईश्वर।
उ०—१ तिस वखत परवरदिगार कूं सिजदा करि महमंद मरतुजा श्रली को याद करि दाहिणै दसत सेती समसेर तोल हुकम फरमाया।
—सू.प्र.
२ पालन कर्ता, पालक।
उ०—श्रला यक परवरदीगार खालक खुदाई।
—केसोदास गाडण
परवरा-वि०—पर्व का(पर्यूषण- पर्व का)। उ०—वेणीरांमजी स्वांमी स्वांमीजी नै कह्यौ—हेमजी नै बखांण श्रस्खलित परवरा मुंहडै तो श्रावै नहीं नै जोड़ता जाय श्रनै बखांण देता जाय।—भि.द्र.
परवरियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ घूमा हुश्रा, फिरा हुश्रा।
२ व्याप्त।
३ प्रसिद्धिप्राप्त, प्रसिद्ध।
४ प्रस्थान किया हुश्रा, गया हुश्रा।

(स्त्री० परवरियोड़ी)

परवरिस, परवरिसि-सं०स्त्री [फा० परवरिश] पालन-पोषण ।

उ०—आदाव अरज्ज उम्मेदवार, परवरिसि करहु परवरदिगार ।
—ऊ.का.

परवळ-स०स्त्री० [देशज] १ एक प्रकार की लता विशेष ।

२ उक्त लता का फल जिसका शाक बनाया जाता है ।

३ नागर बेल का फल जिसका भी शाक बनाया जाता है ।
(डूंगरपुर)

४ चिचड़ा जिसके भी फलों का शाक बनाया जाता है ।

परवळांण-सं०स्त्री० [देशज] घोड़े के अगले और पीछे के पैर बांधने की रस्सी विशेष ।

वि०वि०—यह तिरछा बंधन होता है ।

परवस-वि० [स० परवश] १ जो दूसरे के वश में हो, पराधीन ।

२ जो दूसरे पर निर्भर हो ।

रू०भे०—परवस, परवस्स ।

परवसता-सं०स्त्री० [सं० परवश+रा०प्र०ता] पराधीनता ।

रू०भे०—परवस्यता ।

परवसि—देखो 'परवस' (रू.भे.)

उ०—कुंजर के भै मैं टरूं, सो डर सह्या न जाय । कांम हेत परवसि पड्या, बेटी लागी पाय ।
—ह पु.वा.

परवस्ती-सं०स्त्री [?] परवरिश, पालनपोषण ।

उ०—इण बाळक माथै थोड़ी दया विचारो, अबै औ आपरै सरणै है । इण री परवस्तो आज सूं अबै आप करो, म्हारै कनै रह्यो इण नै कई जोखा हे ।—फुलवाड़ी

परवस्यता—देखो 'परवसता' (रू.भे.)

परवस्स—देखो 'परवस' (रू.भे.)

उ०—आप विचार उपाए, होवण हार वात परहत्थे । आसावार न पारं विधि, तिण ज्यास थयो परवस्से ।—रा.रू.

परवांण—१ देखो 'प्रमांण' (रू.भे.)

उ०—१ हूं आवियू अजांण, पर पहिलूं पूछो नहीं । पांतरिया परवांण, वन थे हुइज्यो वींझरा ।—वींझरै अहीर री वात

उ०—२ नरां नखत परवांण, ज्यां ऊभां सकै जगत । भोजन तर्पं न भांण, रांवण मरतां राजिया ।—किरपाराम

उ०—३ राजा ओढ तेड़ाविया, खोदण काज निवांण । गूजर-खंट सौं आविया, करि पूरो परवांण ।
—जसमा ओडणी री वात

उ०—४ वो तो आपरै मन परवांण धोळो २ दूध जांणतो ।
—फुलवाड़ी

२ देखो परिमांण' (रू.भे.)

परवांणि, परवांणी-वि० [सं० प्रमाणिक, प्रामाणिक] १ शास्त्रसिद्ध, प्रमाणिक ।

उ०—१ एकै सबद पोथ का, सोई सत कर जाणि । राम नाम सद्गुर कह्या, दादू सो परवाणि ।—दादूवांणी

उ०—२ सब्द ही ब्रह्म निगम परवांणौ, सब्द सूं पुराण अठारा । सब्द स्रुति स्म्रिति कहियै, महावाक्य विस्तारा ।
—श्री हरिरामजी महाराज

उ०—३ धन माया सब धूड़ ज्यूं जांणी, तो थांनी जग में परवांणी ।
—श्री हरिरामजी महाराज

२ माननीय ।

३ प्रमाण का, प्रमाणसिद्ध ।

परवांणै-क्रि०वि० [सं० प्रमाण=मात्रा] अनुसार, मुताबिक ।

उ०—१ धाकी री पोळ होना रै माथै पाती परवांणै कूट दियो ।
—फुलवाड़ी

उ०—२ आपरी खुराक परवांणै नित घणा मांहै अेक जीव टेमोटेम धारी नूं खुद चलायनै आपरै हाजर हो जासी ।—फुलवाड़ी

परवांणो-सं०पु० [फा० परवाना] १ आज्ञा-पत्र ।

उ०—पोछै राजायां मारांई मिळ करणसिंघजी नूं हिंदुस्थान रै पातसाह रो विरद दियो । अर साहबै रै फकीर नूं मारवाड़ देस में पर दीठ पको पईसो कर परवाणा कर दीना । करणसिंघजी पंरे याळै फकीर नूं ।—द.दा.

रू०भे०—परवांनो ।

मह०—परवांण ।

२ देखो 'प्रमांण' (अल्पा०, रू.भे.)

परवान—१ देखो 'परवांणो' (रू.भे.)

उ०—भेलि परवान मान महाराज कीना मन्है । लोपियो हुकम करतूत लहसी ।—ध.व.ग्रं.

२ देखो 'प्रमांण' (रू.भे.)

परवानगी-सं०स्त्री० [फा० परवानगी] आज्ञा, अनुमति ।

परवांनो-सं०पु० [फा० फरवान] १ पतंगा ।

२ देखो 'परवांणो' (रू.भे.)

परवा-सं०स्त्री० [फा०] १ चिन्ता, व्यग्रता, खटका ।

उ०—हुवै न गमियां हांण, आइयां ही हरख न ऊपजै । राजा पतसा रांण, मन कांइ परवा मोतिया ।—रायसिंह सांदू

२ ध्यान, ख्याल ।

उ०—लोगां री खिजमतां सारू अबै घणी परवा ई को करतो नीं ।
—फुलवाड़ी

रू०भे०—परवाह ।

३ देखो 'पड़वा' (रू.भे.)

४ देखो 'परवाई' (रू.भे.)

परवाइ, परवाई-सं० स्त्री० [सं० पूर्व+वायु] पूर्व दिशा की वायु ।

उ०—रांमदास हररांम गुरां री, गुरु महिमा सच गाई । प्रकट भमंग

भुजंग डस्ये पर, प्रबळ चली परवाई।—ऊ.का.

रू०भे०— परवा, परवायी, परवाही, पिरवा, पिरवावाई, पुरवाई।

परवाड़मल, परवाड़मल्ल—देखो 'प्रवाड़मल्ल' (रू.भे.)

उ०—गंगाजळ निरमळ जेम गंग, आहत्त धीर ओपित्त अंग। भारथि चडिय 'तेजसी' मल्ल, परवाड़मल्ल परचक्कपल्ल।—रा.ज.सी.

परवाड़ो—देखो 'प्रवाड़ो' (रू.भे.)

उ०—१ 'मामड़' रै माल्हिया, नांव आवड़ नै आई। आई री अवतार हुवो, 'करनळ' मेहाई'। 'जैत' नूं जैत दीधी जिको, परवाड़ी जां री पुणूं। विदमांन सकती ताळा विळंद, सिरी इंद्रबाई सुणूं।—मे.म.

उ०—२ रातां जागण री जंगळ में रोळो, ढांणी-ढांणी में फिरतो ढंढोळो। घुणता नर माथा चुणता घर घाड़ा, पावू हरवू रा सुणता परवाड़ा।—ऊ.का.

उ०—३ तितरै रांणगदे चढियो नीसरियो, ताहरा गोगाजी बोलिया राव रांणगदे! तू वडो सगो छै, म्हारो परवाड़ो लेल्यो। ताहरां रांणग बोलियो, तो सारीखा विस्टा रो म्है परवाड़ो लेता फिरां छां।—नैणसी

उ०—४ भांति भांति री पंडिताई परवाड़ा उण सूं था।—नी.प्र.

परवाद-सं०पु० [सं० प्रवाद] १ छल, कपट (अ.मा., ह.नां.मा.)

२ देखो 'प्रवाद' (रू.भे.)

परवायी—देखो 'परवाई' (रू.भे.)

परवार—देखो 'परिवार' (रू.भे.)

उ०—१ आंम फळै परवार सूं, महू फळै पत खोय। ताको रस जे कोइ पियै, अकल कठा सूं होय।—अज्ञात

उ०—२ भाटी आणद जेसावत रो परवार-आंक-२। नैणसी

परवारणौ, परवारबौ-क्रि०अ० [सं० परवारणम् अथवा परावर्तनम्]

१ मस्त होना, लीन होना, तल्लीन होना। उ०—वनात री गऊमुखी में हाथ घातियां आपरै इस्ट रो ध्यांन सुमिरण कर परवारिया छै, जाजमां आय विराजे छै।—रा.सा.सं.

२ तृप्त होना, अघाना। उ०—इण भांत आरोग परवारिया छै, थाळ वारियां उठाया छै। हाथां री चीकणाई उतारण रै पगां मूंग थाळ मंगायजै छै।—रा.सा.सं.

३ तैयार होना, सन्नद्ध होना। उ०—कूरमां समै कळपंत ज्यौं, प्रांण देण परवारिया। अत वार जेम अम्रत मिळै, 'अजै' तेम ऊवारिया।—रा.रू.

४ दुरावस्था को प्राप्त होना, खराब दशा में आना, अच्छा न रह जाना। उ०—१ करै न अच्छर-करम, धरम नहिं कुळ रो धारै। पलै न राखै परम, सरम नहिं किण रै सारै। मन खावण नै मरै, ढेढ़ री हांडी ढूंढ़ै। उडै नहीं असळाग, माखियां बैठै मूंढै। परवार गयो पिस्तावणो, करूं न मूंवां कंथ रो। म्हारो महा दुख मेट दै, भलो हुवै भगवंत रो।—ऊ.का.

५ नष्ट होना, समाप्त होना। ऊ०—१ ठालाभूला ठोठ, कुवध नहिं छोडै काल्हा। पुण्य गया परवार, व्यसन जद लागा वाल्हा।—ऊ.का.

उ०—२ पुन्न गया परवार, सज्जन साथ छूट्या जदै। दुरजण जिण री लार, रोता फिरै वे राजिया।—किरपारांम

६ नीति-पथ से भ्रष्ट होना, बदचलन होना, चाल-चलन खराब होना, बिगड़ना।

परवारणहार, हारो (हारी), परवारणियो—वि०

परवारिओड़ो, परवारियोड़ो, परवारघोड़ो—भू०का०कृ०

परवारीजणो, परवारीजबो—भाव वा०

परवारियोड़ो-भू०का०कृ०—१ तल्लीन, लीन, अनुरक्त, मस्त।

२ अघाया हुआ, तृप्त।

३ तैयार, कटिबद्ध, सन्नद्ध।

४ खराब दशा में आया हुआ, दुरावस्था-प्राप्त।

५ नष्ट, समाप्त।

६ नीतिपथ से भ्रष्ट, बिगड़ा हुआ।

(स्त्री० परवारियोड़ी)

परवारो—१ देखो 'परिवार' (अल्पा; रू.भे.)

उ०—तारचो पीहर-सासरो, रांणी, तारचो सो परवारो जी। परण्यो तारचो आपको, रांणी, करचो ए दूरां दूर वासो जी।—जयवांणी

२ देखो 'परबारो' (रू.भे.)

परवाळ—१ देखो 'प्रवाळ' (रू.भे.)

उ०—अहरां दीजै ओपमा परवाळ प्रकारां।—मयारांम दरजी री वात

२ देखो 'परवाळ' (रू.भे.)

परवाळि, परवाळी-सं०पु० [सं० प्रवाल+रा०प्र०ई] १ प्रवाल के रंग से मिलतेजुलते रंग का वस्त्र विशेष।

उ०—हवइ राजा परिवार प्रति वस्त्र आपइ; गुडीआं, सणीआं, कस्तूरीआं, प्रतापीआं, कुसमीआं, मोळीआं, मांडवीआं, मोणीआं, वाटलीआं, जळोदरीआं, मगीआं, जोडदरीआं, प्रागीआं, चुकडीआं, टसरीआं, पूरीआं, अमरीआं, मूगीआं, चळवळीआं, चारुळीआं, परवाळीआं, मांडळीआं…। —व०स०

२ देखो 'प्रवाळ' (अल्पा; रू.भे.)

उ०—निरखी-निरखी अंखुडी, पद्मि पंखड़ी कीध। अधर तणी रातडी गणी, तु परवाळी प्रसिद्ध।—मा.कां.प्र.

३ देखो 'प्रवाळी' (रू.भे)

परवाह—१ देखो 'प्रवाह' (रू.भे.)

उ०—१ 'कांम-कंदळा' कही-कही, धडहड मूकइ धाह। पूरि चढ़ियां पांणी वहइ, लोअण ना परवाह।—मा.कां.प्र.

उ०—२ धरूं विसन रो ध्यान, लेऊं परवाह गंगजळ। वसूं जाय

वनवास, हाट गाळूं हेमाळै ।—पहाड़खां आढ़ो
उ०—३ ताहरां साइल कहे—हूं परवाह देने पछै साथै चढ़ीस। एकलो चढूं नहीं ।—नैणसी
उ०—४ हू थांनूं पछै ले जाईस, वचन दीयो। ताहरां जेलू रांणै नूं परणीया। यूं करतां भोजै परवाह रांणै सूं दूणी दीन्ही।
—देवजी बगड़ावत री वात

२ देखो 'परवा' (रू.भे.)
उ०—मुझ मनि सिंघल द्वीप नी रे, पदमणी देखण चाह। तुझ परसादे सहु हुस्ये रे, हिव मुझ सी परवाह ।—प.च.चौ.

परवाहपय-संoपु०यौ० [सं० प्रवाह-पय] नदी (अ.मा.)
रू०भे०—परवाहपय ।

परवाहणौ, परवाहबौ—देखो 'प्रवाहणौ, प्रवाहबौ' (रू.भे.)
उ०—१ यां महरांणी उच्चरै, सुहड़ां तजो सचींत। परवाहौ खग धार दे, जमणा धार प्रवीत।—रा.रू.
उ०—२ महरांणी 'जसराज' री, यां बोली तिण वार। प्रथम अमां परवाहियं, खग-धारा जळ-धार।—रा.रू.
परवाहणहार, हारौ (हारी), परवाहणियौ—वि०।
परवाहिओड़ौ, परवाहियोड़ौ, परवाह्योड़ौ—भू०का०कृ०।
परवाहीजणौ, परवाहीजबौ—कर्म वा०।

परवाहियोड़ौ—देखो 'प्रवाहियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० परवाहियोड़ी)

परवाही-वि० [फा० परवा+रा.प्र.ही] १ परवाह करने वाला, खुशामदी। उ०—परवाही पुरसां तणी, मेह प्रतीत मनांह। वप उत्तरिया चढत विस, परवाही पवनांह।—वां.दा.
२ देखो 'परवाई' (रू.भे.)
उ०—परवाई पुरसां तणी, मेट प्रतीत मनांह। वप उत्तरिया चढत विस, परवाही पवनांह।—वां.दा.
३ देखो 'प्रवाही' (रू.भे.)

परवीण—देखो 'प्रवीण' (रू.भे.)
उ०—भागवत कथा मूढ़ावळी, हिरण दरस हींडोर घा। परवीण होय जाणै पुरस, मालजादी रा मोरचा।—ऊ.का.

परवीणता—देखो 'प्रवीणता' (रू.भे.)

परवीन—देखो 'प्रवीण' (रू.भे.)
उ०—भक्ति नैन ग्यांन ज्यूं दरपण, रवि वैराग मिळ तीन। जव सुखरांम आतम मुख दरसै, लखे संत परवीन।
—स्री सुखरांमजी महाराज

परवेस—देखो 'परिवेस' (रू.भे.)
उ०—मुनि आगे हरि-मंत्र, वदन कजि अंत विकस्सै। कियौ ग्रेह परवेस, रंजी पुरखेस दरस्सै। समा-समा उच्चरै, फरै पारस रस कूंदळ। प्रगट जांण परवेस, मेघ आगम रविमंडळ। चंदण सुवास पधा समर, कज गंगाजळ दास करि। द्रिढ़कंत कंत रांणी छहूं, पांणी खेल वसंत परि।—रा.रू.

परवेस—देखो 'प्रवेस' (रू.भे.)
उ०—१ मुखि आखै हरि मंत्र वदन कजि अंत विकस्सै। कियौ ग्रेह परवेस रजी पुरखेस दरस्सै।—रा.रू.
उ०—२ देस में कियौ परवेस जद दरसणियौ। 'भेस' परमेस री जोत मिळियौ।—महेसदास कूंपावत रौ दूहौ

परव्रढ़-सं०पु० [?] राजा, नृप (अ.मा.)

परव्रहम—देखो 'परब्रह्म' (रू.भे.)
उ०—दिव नयणां परब्रहम न पेखै। परा:क्रती नर जिम हरि पेखै।
—सू.प्र.

परसंख्या—देखो 'परिसंख्या' (रू.भे.)
उ०—परसंख्या इकथळ परठि, थळ दूजौ ठहराइ। नेह हरिण जियमैं नहीं, जजी दीप मैं जाय।—पिंगळ सिरोमणि

परसंग—देखो 'प्रसंग' (रू.भे.)
उ०—१ भाव भक्ति उपजै नहीं, साहिब का परसंग। विसय विकार छूटै नहीं, सो कैसा सतसंग।—दादूवांणी
उ०—२ रांम रावळ देवीदास रौ, तिको रावळ हापा रै परणियौ हुतौ तिण परसंग रांम रौ बेटौ संकर महवै हीज रह्यौ।—नैणसी

परसंगी—देखो 'प्रसंगी' (रू.भे.)
उ०—घोळख वोया आसरां में, मांढ मांडणा मोवणा। राजी रैवण परसंग्यां सिर, छिड़क छांटणां सोवणा।—दसदेव

परसंघ—देखो 'प्रसंग' (रू.भे.)

परसंघी—देखो 'प्रसंगी' (रू.भे.)

परसंतोख-सं०पु० [सं० परसंतोष] चोर (अ.मा.)

परसंसणौ, परसंसबौ—देखो 'प्रसंसणौ, प्रसंसबौ' (रू.भे.)
उ०—कहर अरि कंटकी काटि कांनै किया, विरद मोटा लिया आप वाहै। 'करण' तण आपणौ सुजस सगळै कियौ, सही परसंसियौ पातिसाहै।—ध.व.ग्रं.
परसंसणहार, हारौ (हारी), परसंसणियौ—वि०।
परससिओड़ौ, परससियोड़ौ, परसंस्योड़ौ—भू०का०कृ०।
परसंसीजणौ, परसंसीजबौ—कर्म वा०।

परसंसा—देखो 'प्रसंसा' (रू.भे.)
उ०—हरि बांधउ हाथ थी ऊतरि, त्रिएह प्रदिक्षणा दीधौ जी। क्रसण महाराज परसंसा करि, जन्म सफळ तइं कीधौ जी।—स.कु.

परसंसियोड़ौ—देखो 'प्रसंसियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० परसंसियोड़ी)

परस-सं०पु०—१ दो लघु के रागण गण के तीसरे भेद का नाम
(डिं.को.)
२ देखो 'स्परस' (रू.भे.)
उ०—आ कैय नै वा वनमाळी रै उनमांन उणी भांत गूंदी रा डाळा माथै चढी अर अजेज गावड़ रै वालाजोड़ी मार नै टिरगी।

परस व्हेतां ई गावड़ चिमकी अर माळण तौ सगळा रै देखतां देखतां भींडी लांघती हां करतां अदीठ व्हैगी ।—फुलवाड़ी

३ देखो 'परसरांम' ।

उ०—बदरी, टीकम, परस बुध, जग मोहण जैकारं । घणदाता आणंदघण, स्रीपति सब आधारं ।—ह.र.

४ देखो 'पारस' (रू.भे.)

परसण—१ देखो 'प्रसन्न' (रू.भे.)

२ देखो 'प्रस्न' (रू.भे.)

परसणौ, परसबौ–क्रि०स० [सं० स्पर्शनम्] १ देव-दर्शनार्थ तीर्थयात्रा पर जाना । उ०—१ गंगा परस 'अजो' गढ़पत्ती, छिल आयौ मारु छत्रपत्ती । सहरै पुरै वधावा सारै, उछब थया स् कमण उचारौ ।—रा.रू.

उ०—२ ओळगू हरदांन रांमदांन दोनूं अतीत होय गया था । तीरथां नै रवांनै होय गया था सो आगै केदारनाथजी परस, बदरीनाथ परस, विस्वाधार परस ··· ।—पलक दरियाव री वात

२ देवदर्शन करना ।

३ स्पर्श करना, छूना । उ०—राघव तणी परसतां पदरज, इमि गौतमी त्रिय हुओ उधार ।—ह.नां.मा.

४ देखो 'पुरसणौ, पुरसबौ' (रू.भे.)

परसणहार, हारौ (हारी), परसणियौ—वि० ।

परसिओड़ौ, परसियोड़ौ, परस्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

परसीजणौ, परसीजबौ—कर्म वा० ।

परस्सणौ, परस्सबौ, फरसणौ, फरसबौ—रू०भे० ।

परसत—देखो 'परिसद' (रू.भे., डि.को.)

परसतार—देखो 'प्रस्तार' (रू.भे.)

परसताव—देखो 'प्रस्ताव' (रू.भे.)

परसताविक, परसतावीक—देखो 'प्रस्ताविक' (रू.भे)

परसद, परसदा—देखो 'परिसद' (रू.भे.)

उ०—१ ले आव्या नृप परसद मांहि ।—वि.कु.

उ०—२ सम वसरण प्रभु देसना, बैठी परसदा वारौ जी ।—स.कु.

परसध(द)—देखो 'प्रसिद्ध' (रू.भे.)

परसन, परसन्न—१ देखो 'प्रसन्न' (रू.भे.)

उ०—सुद्रष्टि जिणरी हुवै जांणि परसन्न सुर ।—ध.व.ग्रं.

२ देखो 'प्रस्न' (रू.भे.)

उ०—हूं पहिले परसन बूझियौ ।—जयवाणी

परसपर—देखो 'परस्पर' (रू.भे.)

उ०—१ पधरावि त्रिया वांमै प्रभणावै, वाच परसपर जथा विधि । लाधी वेळा मांगी लाधी, निगम पाठके नवे-निधी ।—वेलि

उ०—२ गोपि अधर खंडन मुख गोविंद । पीयै महारस परसपर ।—ह.नां.मा.

परसरग–सं०पु० [सं० परसर्ग] आधुनिक भाषा-विज्ञान में ने, नै, का, की, के, को, रा, री, रै, री, से, मैं आदि संज्ञा-विभक्तियां ।

परसवरण–सं०पु० [सं० परसवर्ण] पर या उत्तरवर्ती वर्ण के समान वर्ण-

पसाइ, पसाउ—देखो 'प्रसाद' (रू.भे.)

परसाणौ, परसावौ–क्रि०स० [सं० स्पर्शनम्] १ स्पर्श कराना, छुआना ।

२ तीर्थयात्रा कराना ।

३ देवदर्शन कराना ।

४ देखो 'पुरसाणौ, पुरसावौ' (रू.भे.)

परसाणहार, हारौ (हारी), परसाणियौ—वि०

परसायोड़ौ—भू०का०कृ०

परसाईजणौ, परसाईजबौ—कर्म वा०

परसावणौ, परसाववौ—रू०भे०

परसाद—१ देखो 'प्रसाद' (रू.भे.)

उ०—१ हाथ दीधा जकै जोड़ आगळ हरि, उदर परसाद चरणाम्रत आच रा ।—र.ज.प्र.

उ०—२ तठै स्री गोरखनाथजी तुस्टमांन होय नै बोलिया राजा ! मांग तनै तूठौ···सो राजा सुण नै सिलांम करनै बोलियौ महाराज आपरै परसाद करनै सारी वात री दौलत छै पिण एक पुत्र कोई नहीं ।—रीसाळू री वात

२ देखो 'प्रासाद' (रू.भे.)

उ०—१ असुरांण सीस उपाड़ि, परसाद न सकै पाड़ि ।—सू.प्र.

उ०—२ अडग हिंदवांण परसाद तीरथ अनंत, सहू आलम कलम हुआ साखी । कूरमां वेहूं रण पूठ अण-फेर करि, रैण ऊथळ-पुथळ होती राखी ।—पूरौ महियारियौ

परसादी—देखो 'प्रसादी' (रू.भे.)

परसायोड़ौ–भू०का०कृ०—१ स्पर्श कराया हुआ, छुवाया हुआ ।

२ तीर्थयात्रा कराया हुआ ।

३ देवदर्शन कराया हुआ ।

४ देखो 'पुरसायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० परसायोड़ी)

परसार—देखो 'प्रसार' (रू.भे.)

परसारणौ, परसारवौ—देखो 'प्रसारणौ, प्रसारवौ' (रू.भे.)

पसाव—देखो 'प्रसाद' (रू.भे.)

परसावणौ, परसाववौ—देखो 'प्रसारणौ, प्रसारवौ' (रू.भे.)

उ०—हिलै न चालै परस्पर हरसै, दरसै मुख दरसावै । बारेई मास अमीरस बरसै, परसै तन परसावै ।—ऊ.का.

परसावणहार, हारौ (हारी), परसावणियौ—वि०

परसाविओड़ौ, परसावियोड़ौ, परसाव्योड़ौ—भू०का०कृ०

परसावीजणौ, परसावीजवौ—कर्म वा०

परसावियोड़ौ—देखो 'परसायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० परसावियोड़ी)

परसिद, परसिद्ध, परसिद्धउ, परसिध—देखो 'प्रसिद्ध' (रू.भे.)

उ०—१ प्रभु काज साधि पोतें पछै..काज प्रजा रा पिण करै।
परसिद्ध भली परधांन री, राज साज सगळा सरै।—ध.व.ग्रं.
२ मरुधर देस मझारि, सबळ धन-धन्न समिद्धउ। नांमइ पूगळ नयर पुहवि, सगळइ परसिद्धउ।—ढो.मा.

परसिदता, परसिद्धता, परसिधता—देखो 'प्रसिद्धता' (रू.भे.)

परसिधि, परसिधी—देखो 'प्रसिद्धि' (रू.भे.)

परसियोड़ो—भू०का०कृ०—१ देव-दर्शनार्थ तीर्थयात्रा गया हुआ।
२ देवदर्शन किया हुआ।
३ स्पर्श किया हुआ।
४ देखो 'पुरसियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० परसियोड़ी)

परसीजणो, परसीजबो—क्रि०अ० [सं० प्रस्वेदनम्] पसीना होना।
उ०—यूं करतां घड़ी एक हुई। रुदन करण लागो। देही परसीज गई। विवहल होय गयो, ज्यों प्रांण छूटै।—पलक दरियाव री वात
परसीजणहार, हारो (हारी), परसीजणियो—वि०
परसीजिओड़ो, परसीजियोड़ो, परसीज्योड़ो—भू०का०कृ०
परसीजणो, परसीजबो—भाव वा०

परसीणो—देखो 'पसीनो' (रू.भे.)

परसीतस—सं०पु० [स० परशु+रा० तस=हाथ] १ गजानन, गणेश (डि.को.)
२ परशुराम।

परसीधर—देखो 'परसुधर' (रू.भे.)

परसीपांण—सं०पु०यौ० [सं० परशु+पाणि] १ गजानन, गणेश (अ.मा.)
२ परशुराम।

परसु—सं०पु० [सं० परशु] लकड़ी के डंडे पर अर्ध चंद्राकार लोहे का फल लगा हुआ एक शस्त्र, फरसा।
रू०भे०—फरस, फरसि, फरसी, फरि, फरी फुरस।
मह०—फररसो, फरसो. फरस्स।

परसुधर, परसुधरण—वि० [सं० परशुधर] परशु नामक शस्त्र को धारण करने वाला।
सं०पु०—१ जमदग्नि के पुत्र परशुराम।
२ गजानन, गणेश।
३ परशुधारी सिपाही।
रू०भे०—परसीधर, फरसधर, फरसधरण, फरसांधर, फरसाधर, फरसाधरण, फरसीधर, फरसीधरण, फरीधर।

परसुरांम—सं०पु० [सं० परशुराम] महर्षि जमदग्नि के पुत्र, परशुराम।
पर्या०—दुजरांम, दुजराज, परसुरांम, फरस, भ्रगुपत, रांम।
रू०भे०—परसरांम, परसूरांम, फरसरांम, फरसिरांम, फरसुरांम, फरसूरांम, फुरसरांम, फूरसरांम।
अल्पा०—परस्सो।
मह०—परस, फरस।

परसुवन—सं०पु० [सं० परशुवन] एक नरक का नाम।

परसूं—क्रि०वि० [सं० परश्वः] १ गत दिन से पहले का दिन।
२ आगामी दिन से आगे का दिन।
रू०भे०—परसो, परा पिरसूं, पिरिश्रां, पिरियां, पिरूं, पिरू।

परसूत—देखो 'प्रसूत' (रू.भे.)

परसून—देखो 'प्रसून' (रू.भे.)

परसूरांम—देखो 'परसुरांम' (रू.भे.)

परसेद, परसेवो—देखो 'प्रस्वेद' (रू.भे.)
उ०—१ कांई देख्यो कै एक जाट सूखा में ई खेत खड़ै। परसेवा में घांण व्हियोड़ो—लथोबथ।—फुलवाड़ी
उ०—२ लिलाड़ सूं परसेवा री बूंदां चवती ही।—फुलवाड़ी

परस्त्रीगमन—सं०पु० [सं०] १ पराई स्त्री के साथ संभोग।
२ पराई स्त्री के साथ संभोग करने वाला।

परस्पर—क्रि०वि० [सं०] आपस में, एक दूसरे के साथ।
उ०—हिलै न चलै परस्पर हरसै, दरसै मुख दरसावै। बारेई मास अमीरस बरसै, परसै तन परसावै—ऊ.का.
रू०भे०—परसपर।

परस्परोपमा—सं०स्त्री० [सं०] एक प्रकार का अर्थालंकार जिसमें उपमान की उपमा उपमेय को और उपमेय की उपमा उपमान को दी जाती है, उपमेयोउपमालंकार।

परस्सणो, परस्सबो—देखो 'परसणो, परसबो' (रू.भे.)
उ०—श्रौरंगसाह महाबळी, विसव तणै वडवाग। रीत तरस्सी पूत सिर, सोर परस्सी आग।—रा.रू.
परस्सणहार, हारो (हारी), परस्सणियो—वि०।
परस्सिओड़ो, परस्सियोड़ो, परस्योड़ो—भू०का०कृ०।
परस्सीजणो, परस्सीजबो—कर्म वा०।

परस्सियोड़ो—देखो 'परसियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० परस्सियोड़ी)

परस्सो—१ देखो 'परसुरांम' (अल्पा०, रू.भे.)
उ०—चखां झाळ तूटै मुखां झाळ चंडा। परस्सो फरस्सी भ्रमावै प्रचंडा।—सू.प्र.
२ देखो 'परसु' (मह०, रू.भे.)

परहंस—सं०स्त्री० [?] १ पराजय, हार। उ०—बोले यां राजांन, जो अजांनबाह पूरा। ऐसे परहस वंस, खमै सो अधूरा।—रा.रू.
२ देखो 'परमहंस' (रू.भे.)

परहउ—अव्य० [सं० परतस्] १ दूसरे से (उ.र.)
२ शत्रु से (उ.र.)
३ आगे (अपेक्षाकृत) परे, पीछे ऊपर (उ.र.)
४ अन्यथा, नहीं तो (उ.र.)
५ भिन्न प्रकार से (उ.र.)

उ०—१ प्रभु काज साधि पोतें पछै काज प्रजा रा पिण करै।
परसिद्ध भली परधान री, राज साज सगळा सरै।—धा.व.ग्रं.
२ मरुधर देस मझारि, सवळ धन-धन्न समिद्धउ। नांमइ पूगळ नयर
पुहवि, सगळइ परसिद्धउ।—ढो.मा.
परसिदता, परसिद्धता, परसिधता—देखो 'प्रसिद्धता' (रू.भे.)
परसिधि, परसिधी—देखो 'प्रसिद्धि' (रू.भे.)
परसियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ देव-दर्शनार्थ तीर्थयात्रा गया हुआ।
२ देवदर्शन किया हुआ।
३ स्पर्श किया हुआ।
४ देखो 'पुरसियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० परसियोड़ी)
परसीजणौ, परसीजबौ–क्रि०अ० [सं० प्रस्वेदनम्] पसीना होना।
उ०—यूं करतां घड़ी एक हुई। रुदन करण लागौ। देही परसीज
गई। विवहल होय गयौ, ज्यों प्रांण छूटै।—पलक दरियाव री वात
परसीजणहार, हारौ (हारी), परसीजणियौ—वि०
परसीजिओड़ौ, परसीजियोड़ौ, परसीज्योड़ौ—भू०का०कृ०
परसीजणौ, परसीजबौ—भाव वा०
परसीणौ—देखो 'पसीनौ' (रू.भे.)
परसीतस–सं०पु० [सं० परशु+रा० तस=हाथ] १ गजानन, गणेश
(डि.को.)
२ परशुराम।
परसीधर—देखो 'परसुधर' (रू.भे.)
परसीपांण–सं०पु०यौ० [सं० परशु+पाणि] १ गजानन, गणेश
(अ.मा.)
२ परशुराम।
परसु–सं०पु० [सं० परशु] लकड़ी के डंडे पर अर्ध चंद्राकार लोहे का
फल लगा हुआ एक शस्त्र, फरसा।
रू०भे०—फरस, फरसि, फरसी, फरि, फरी फुरस।
मह०—फररसौ, फरसौ, फरस्स।
परसुधर, परसुधरण–वि० [सं० परशुधर] परशु नामक शस्त्र को धारण
करने वाला।
सं०पु०—१ जमदग्नि के पुत्र परशुराम।
२ गजानन, गणेश।
३ परशुधारी सिपाही।
रू०भे०—परसीधर, फरसधर, फरसधरण, फरसांधर, फरसाधर,
फरसाधरण, फरसीधर, फरसीधरण, फरीधर।
परसुरांम–सं०पु० [सं० परशुराम] महर्षि जमदग्नि के पुत्र, परशुराम।
पर्या०—दुजरांम, दुजराज, परसुरांम, फरस, भ्रगुपत, रांम।
रू०भे०—परसरांम, परसूरांम, फरसरांम, फरसिरांम, फरसुरांम,
फरसूरांम, फुरसरांम, फूरसरांम।
अल्पा०—परस्सौ।
मह०—परस, फरस।
परसुवन–सं०पु० [सं० परशुवन] एक नरक का नाम।
परसूं–क्रि०वि० [सं० परश्वः] १ गत दिन से पहले का दिन।
२ आगामी दिन से आगे का दिन।
रू०भे०—परसौ, परां पिरसूं, पिरिआं, पिरियां, पिरूं, पिरू।
परसूत—देखो 'प्रसूत' (रू.भे.)
परसून—देखो 'प्रसून' (रू.भे.)
परसूरांम—देखो 'परसुरांम' (रू.भे.)
परसेद, परसेवौ—देखो 'प्रस्वेद' (रू.भे.)
उ०—१ कांई देख्यौ कै एक जाट सूखा में ई खेत खड़ै। परसेवा में
घांण व्हियोड़ौ—लथोबथ।—फुलवाड़ी
उ०—२ लिलाड़ सूं परसेवा री बूंदां चवती ही।—फुलवाड़ी
परस्त्रीगमन–सं०पु० [सं०] १ पराई स्त्री के साथ संभोग।
२ पराई स्त्री के साथ संभोग करने वाला।
परस्पर–क्रि०वि० [सं०] आपस में, एक दूसरे के साथ।
उ०—हिलै न चलै परस्पर हरसै, दरसै मुख दरसावै।
बारेई मास अमीरस बरसै, परसै तन परसावै—ऊ.का.
रू०भे०—परसपर।
परस्परोपमा–सं०स्त्री० [सं०] एक प्रकार का अर्थालंकार जिसमें उप-
मान की उपमा उपमेय को और उपमेय की उपमा उपमान को दी
जाती है, उपमेयोउपमालंकार।
परस्सणौ, परस्सबौ—देखो 'परसणौ, परसबौ' (रू.भे.)
उ०—औरंगसाह महाबळी, विसव तणौ वडवाग। रोस तरस्सी
पूत सिर, सोर परस्सी आग।—रा.रू.
परस्सणहार, हारौ (हारी), परस्सणियौ—वि०।
परस्सिओड़ौ, परस्सियोड़ौ, परस्योड़ौ—भू०का०कृ०।
परस्सीजणौ, परस्सीजबौ—कर्म वा०।
परस्सियोड़ौ—देखो 'परसियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० परस्सियोड़ी)
परस्सौ—१ देखो 'परसुरांम' (अल्पा०, रू.भे.)
उ०—पखां झाळ तूटै मुखां झाळ चंडा। परस्सौ फरस्सौ भ्रमावै
प्रचंडा।—सू.प्र.
२ देखो 'परसु' (मह., रू.भे.)
परहंस–सं०स्त्री० [?] १ पराजय, हार। उ०—बोलै यां राजांन, जो
अजांनबाह पूरा। ऐसे परहंस वंस, खमै सो अधूरा।—रा.रू.
२ देखो 'परमहंस' (रू.भे.)
परहुउ–अव्य० [सं० परतस्] १ दूसरे से (उ.र.)
२ शत्रु से (उ.र.)
३ आगे (अपेक्षाकृत) परे, पीछे ऊपर (उ.र.)
४ अन्यथा, नहीं तो (उ.र.)
५ भिन्न प्रकार से (उ.र.)

ताज है, साहिब पिउ परांण ।—दादूवांणी

३ देखो 'पुरांण' (रू.भे.)

४ देखो 'प्रयांण' (रू.भे.)

उ०—१ जाणायउ राजा थारौ ऊ हो जांण। दुई फा मील्या छै एक परांण ।—बी.दे.

उ०—२ थे घरि चालौ देवता, मूरिख राजा अपढ़ अयांण। हू किम चालूं एकलौ ? आगइ गोरी तीजइ परांण ।—बी.दे.

परांणी–सं०स्त्री० [सं० प्रेरणिका या प्राजनम्] १ बैलों को हांकने की लकड़ी की दण्डिका (उ.र.)

उ०—मांहियौ ! ताहरां गोगादेजी मगरां में परांणी रा घाव दीठा तद कह्यौ औ कांसूं छै ।—नैणसी

रू०भे०—परोंणी, पिरांणी, पीरांणी, पुरांणी ।

अल्पा०—परोंणियौ ।

२ देखो 'प्रांणी' (रू.भे.)

३ देखो 'पुरांणी' (स्त्री०)

परांत–सं०स्त्री० [देशज] फसल की गुहाई या कटाई के लिये कार्यकर्ताओं द्वारा हर बार अपने लिये लिया जाने वाला कार्य का हिस्सा।

रू०भे०—पांत ।

परांवठौ–सं०पु० [सं० प्रोत्था, प्रा० प्रोट्ठ, अप० परौंठा] घी डालकर वेली हुई एवं तवे पर घी के साथ सेकी हुई परतदार रोटी ।

परा–अव्य० [सं०] एक अव्यय शब्द जो दूर, पीछे, एक तरफ, ओर के अर्थ में प्रयुक्त होता है ।

उ०—१ परा सूं किलेदार आयौ सो दरवाजौ-दरवाजौ जुड़ियौ, खिड़की खुली ।—गौड़ गोपाळदास री वारता

उ०—२ अपछर देख मिळै आखाड़ौ, विघन तणौ रचियौ वीमाह। रिणवट उरा बाधियौ 'रतनै', परा फौज आवी पतिसाह ।—दूदौ

उ०—३ परा रायसिंघ नैं उरा दूजौ 'पदम', धरा नको दूजौ अंजस धारै ।—द्वारकादास दधवाड़ियौ

सं०स्त्री० [सं०] १ चार प्रकार की वाणियों में से प्रथम वाणी जो नाद-स्वरूप और मणिपुर चक्र से निकलती हुई मानी जाती है जिसका स्थान नाभि के पास माना जाता है ।

उ०—परा नभ मैं बसत है, पस्यंती हिड़दै मझार। मध्यमा कंठ में खुलत है, वेखरी सब्द उचार ।—स्री हरिरांमजी महाराज

२ वह विद्या जो गोचर पदार्थों के परे रहने वाले ज्ञान को कराती है, ब्रह्म विद्या, उपनिषद विद्या ।

३ एक प्रकार का साम-गान ।

४ गंगा नदी का नाम ।

पराई—देखो 'परायौ' (रू.भे.)

उ०—ल्यावै लोड़ि पराइयां, नहं दै आपणियांह ।
सखी अमीणा कंथ री, उरसां झूपड़ियांह ।—हा.झा.

पराउपगार—देखो 'परोपकार' (रू.भे.)

उ०—लाज का समुद्र करण सा दातार। भीकम सा विवेकी परा उपगार ।—सू.प्र.

पराकम—देखो 'पराक्रम' (रू.भे.)

पराकमी—देखो 'पराक्रमी' (रू.भे.)

पराकरत—देखो 'प्राकृत' (रू.भे.)

पराकरम—देखो 'पराक्रम' (रू.भे.)

पराकरमी—देखो 'पराक्रमी' (रू.भे.)

पराका–सं०स्त्री० [सं० पराऽऽका=उत्कृष्टता से लहलहाने वाली] ध्वजा, पताका । (ह.नां.मा.)

पराकाष्टा, पराकास्ठा, पराकोटी–सं०स्त्री० [सं० पराकाष्ठा, पराकोटि]

१ चरम सीमा, हद ।

२ ब्रह्मा की आधी आयु ।

पराकृत—देखो 'प्राकृत' (रू.भे.)

पराकृति, पराकृती—देखो 'प्राकृतिक' (रू.भे.)

उ०—दिव नयनां परब्रहम न देखै। पराकृती नर जिम हरि पेखै।
—सू.प्र.

पराक्रम–सं०पु० [सं०] १ बल, शक्ति ।

उ०—देस ताप सावै दुनौ, आप पराक्रम आस। रोस झाळ-पूळा रहै, सादूळा स्याबास ।—बां.दा.

२ उद्योग, पुरुषार्थ ।

उ०—कहै कळहप्री अनै सहसकर, जुगां विहूं जुध हूवा जेह। अंत दिन कियौ पराक्रम 'ईसर', अेकण किणहि न कियौ एह।
—ईसरदास मेड़तिया रौ गीत

रू०भे०—पराकम, पराकम्म, पराकरम, प्राकम, प्राकम, प्राक्रम ।

पराक्रमवत–वि० [सं० पराक्रमवान्] (स्त्री० पराक्रमवंता) बहादुर, वीर ।

उ०—सूरवीर नैं धीर नर, सतवादी सतधार। पराक्रमवंता मावजी, दुःकर नहीं लिगार ।—जयवांणी

पराक्रमी–वि० [सं० पराक्रमिन्] १ बलवान, बलिष्ठ, शक्तिवान ।

उ०—ईम पंच भाखा उच्चरै, सुणि ग्रंथां ततसार। अब कुळ भाखा उच्चरूं, पराक्रमी अणपार ।—सू.प्र.

२ उद्योगी, पुरुषार्थी ।

रू०भे०—पराकमी, पराकरमी, प्राक्रमी, प्राकमी ।

पराक्म्म—देखो 'पराक्रम' (रू.भे.)

परासाड़–सं०पु० [सं० पराऽऽसाड = शत्रुओं को नहीं सहने वाला] इन्द्र (ना.डि.को.)

पराग–सं०पु० [सं०] १ पुष्पों के बीच में जमी रहने वाली धूलि, पुष्परज । उ०—१ भणहण भंवर मस्त फूलां सूं, और उड़ रह्यौ छै पराग। मारू आसौ रसराज वसंत में, किणियक सुगणो रै भाग।
—रसीलैराज रा गीत

उ०—२ डोर सूं झरोखे ढोल्यै आयौ। जांणै कवलि पराग रै ऊपरै भवर लोभायौ ।—पनां वीरमदे री बात

परापति, परापती—देखो 'प्राप्ति' (रू.भे.)

परापर-सं०पु० [सं०] १ फालसा, एक फल।

२ देखो 'परंपरा' (रू.भे.)

उ०—ऐसा परापर परम भेद, गुर बिनां को देवै। मस्तक ऊपरि हस्ति राखै, आपणां करि लेवै।—ह.पु.वा.

परापरी—देखो 'परंपरा' (रू.भे.)

पराभव-सं०स्त्री० [सं०] १ ध्वंस, नाश, संहार।

उ०—'पातल' हरा ऊवरा पराभव, खळ खूटा टूटा खड़ग। पांडव-नांमी नीठ पाड़ियौ, लग उगमण आथमण लग।—खेमराज सौदो

२ पराजय, हार।

उ०—सक चहुदह समह समा, लागां इम जय ले'र। मारि खळां लीधी मऊ, दळां पराभव दे'र।—वं.भा.

रू०भे०—परभव्विय।

पराभूत-वि० [सं०] १ ध्वस्त, नष्ट।

२ पराजित, हारा हुआ।

परामरस-सं०पु० [सं० परामर्श] १ सलाह, राय।

२ विवेचन, विचार।

क्रि०प्र०—करणौ; देणौ, लेणौ।

परामुख-सं०पु० [सं०पराङ्‌मुख] १ कविनिबद्धपात्रप्रौढ़ोक्ति।

उ०—वरणनीय नूं कवि बिना, जपै अवर कर जुक्त। सुकवि मंछ तिणनूं समझ, कहै परामुख उक्त।—र.रू.

वि०—विमुख, विरुद्ध।

उ०—चांपावत भगवांनदास, जुजठळ का अवतार, झूठ सूं परामुख साच सूं प्यार।—रा.रू.

परायउ—देखो 'परायौ' (रू.भे.)

उ०—आज उमाहडउ मो घणउ, ना जांणू किव केण। पुरख परायउ वीर वड, अहर फुरक्कइ केण।—ढो.मा.

परायचित—देखो 'प्राछत' (रू.भे.)

परायण-वि० [सं०] १ निरत, प्रवृत्त, लीन, तत्पर, लगा हुआ।

उ०—१ रूप भाग गुण भजन नरायण। पुत्र हुवौ सुज भगत परायण।—रा.रू.

उ०—२ परधन हरण परायण पांमर, वंचक वांणी रे। ते झूंठी बुगलां री वातां, नाहक तांणी रे।—ऊ.का.

२ देखो 'पारायण' (रू.भे.)

उ०—वेद परायण इसी बंचाई, मही सरायण सुणजो मूढ। निज नारायण गुरु निवाजै, फजर गई तारायण फूट।—बांकीदास बीठू

परायोड़ी-स्त्री० [भू०का०कृ०] वात्सल्य स्नेह के कारण स्तनों में दूध उतारी हुई गाय, भैंस इत्यादि (पशु)

परायौ-वि० [सं० पर+रा०प्र०आयौ] १ दूसरे का, अन्य का।

(स्त्री० पराई, परायी)

उ०—१ ओर भाव लेतां करै, देतां ओर ही भाव। धाव पराया हरण धन, साहां जात सुभाव।—वां.दा.

उ०—२ नागा नवलो नेह, जिण तिण सूं कीजै नहीं। लीजै परायौ छेह, आप तणौ दीजै नहीं।—अज्ञात

२ जो आत्मीय न हो, जो स्वजनों में न हो, दूसरा, अन्य, बिराना।

उ०—अपणायौ अपणेह, पुरस कद होय परायौ। तूं कदरी पतिव्रता, कंथ अपणौ छिटकायौ।—ऊ.का.

३ देखो 'प्रस्वेद' (रू.भे.)

परारंभ—देखो 'प्रारंभ' (रू.भे.)

परारंभिक—देखो 'प्रारंभिक' (रू.भे.)

परार-अव्य० [सं० परारि] गत वर्ष से पूर्व का वर्ष।

उ०—यूं हिज करतां जासी ऊमर, परम न काल परार न पौर। आंपां वात करां अवरां री, आंपां री करसी कोइ और।

—ओपौ आढ़ौ

परारथ-सं०पु० [सं० परार्थ] दूसरे का उपकार, परोपकार।

परारथना—देखो 'प्रारथना' (रू.भे.)

परारथी—देखो 'प्रारथी' (रू.भे.)

परारद, परारबध—देखो 'प्रारब्ध' (रू.भे.)

परारब्धी—देखो 'प्रारब्धी' (रू.भे.)

पराळ-सं०पु० [सं० पलाल:] १ चावलों की भूसी।

२ घास का बंधा हुआ छोटा पुलिन्दा।

उ०—पराळा बौहळा पीटियां कण हेक न पावै।—केसोदास गाडण

३ भूसा, घास।

उ०—१ नहीं तू विप्र नहीं तू वैस, नहीं तू खत्रिय सुद्र न खेस। नहीं तू मूळ नहीं तू डाळ, नहीं तू पत्र नहीं तू पराळ।—ह.र.

उ०—२ रूस फ्रांस मझ रच्चिया, जरमन हूता जुद्ध। पड़ियौ जांण पराळ में, कण मंगळ कर क्रुद्ध।—किसोरदांन बारहठ

मुहा०—पराळ कूटणौ—व्यर्थ की बक-झक करना।

४ जंजाल, प्रपंच।

रू०भे०—पराळु।

परालवद—देखो 'प्रारब्ध' (रू.भे.)

परालवदी—देखो 'प्रारब्धी' (रू.भे.)

परालबध—देखो 'प्रारब्ध' (रू.भे.)

परालवधी—देखो 'प्रारब्धी' (रू.भे.)

पराळी-वि० [देशज] प्रचंड, तेज।

पराळु—१ देखो 'पराळ' (रू.भे.)

२ देखो पराळू' (रू.भे.)

पराळू-वि० [सं० पल्लवित] खरीफ की वह फसल जो बोने के पश्चात दूसरी वर्षा होने के पूर्व ही पल्लवित हो गई हो।

रू०भे०—पराळु।

परावठ—देखो 'प्राव्रट' (रू.भे.)

परावणौ, परावबौ—देखो 'पराणौ, पराबौ' (रू.भे.)

परावत—देखो 'पारावत' (रू.भे.)

उ०—दान दियौ जिण आपणी देह को, लीनौ परावत जीव लुकाई।
—ध.व.ग्रं.

परावध, परावधी-सं०स्त्री० [सं० परा+अवधि] सीमा, छोर, अंतिम सीमा। उ०—१ रुखवाळा राठौड़, धरा यूरोप री। पेखौ सह संसार, परावधी कोप री।—किसोरदांन बारहठ

उ०—२ अनंत बात अंत की, छिपी न अंतराय की। सहायहीन को उपाय, सूझती सहाय की। समाधि योग सावधी, परावधी पीछांण लो। महेस राज राजवं, महाधिराज मांन लो।—ऊ.का.

परावह-सं०पु० [सं०] वायु के सात भेदों में से एक।

परावट—देखो 'प्रावट' (रू.भे.)

परासकंद, परासकंदी, परासकंधी-वि० [सं० परास्कंदित] चोर, तस्कर
(अ.मा., ह.नां.मा.)

परासर-सं०पु० [सं० पराशर] १ एक प्रसिद्ध ऋषि जो महर्षि द्वैपायन वेदव्यास के पिता थे।

२ पुराणानुसार एक गोत्रकार ऋषि जो वशिष्ठ और शक्ति के पुत्र थे।

३ एक आयुर्वेदाचार्य ऋषि (चरक संहिता)

४ एक प्रसिद्ध स्मृतिकार ऋषि।

५ पाराशर संहिता के रचयिता, एक ज्योतिषाचार्य।

६ सिंह को मारने वाला एक जानवर, अष्टापद।

७ शृगाल, लोमड़ी आदि हिंसक वन्य पशु।

रू०भे०—परासुर, पारासर।

परासु-वि० [सं०] प्राणहीन, मृत।

उ०—प्रामार रा प्रहरणां रा प्रहार पाइ पीलू री पीठी हूं परासु होय पड़तां रहीमअली रौ मस्तक तौ चाहुवांण याचक देव काटि लीधौ।—वं.भा.

परासुर—देखो 'परासर' (रू.भे.)

परास्त-वि० [सं०] पराजित, हारा हुआ। उ०—परिश्रमी परास्त दे विजेत है परीश्रमी।—ऊ.का.

परास्रय-सं०पु० [सं० पराश्रय] दूसरे का अवलम्ब, पराधीनता।

पराह—देखो 'परहा' (रू.भे.)

पर्रि—देखो 'परि' (रू.भे.)

उ०—चंद चकोर तणी पर्रि, तूं वस्यउ मोरइ चीति। समयसुंदर कहइ ते खरी, पे परमेस्वर स्युं प्रीति।—स.कु.

पर्रिडौ—देखो 'परींडो' (रू.भे.)

उ०—मंड में काळी माता जागिया, पुरी में जगन्नाथ बावौ जागिया, पर्रिडै पितर देवता जागिया। झालर बाजे राजा रांमजी।
—लो.गी.

पर्रिदो-सं०पु० [फा० परिन्द] पक्षी।

परि-उप [सं०] एक उपसर्ग जिसके लगने से शब्द के अर्थ में वृद्धि होती है।

जैसे—परिभ्रमण, परिपूर्ण, परित्याग, परिहास।

क्रि०वि०—१ ऊपर, पर। उ०—भी सिणगार संवारिक आई सेज परि। (परिहां) जांणे अपछर इंद्रक बैठा आप घरि।
—ढो.मा.

२ ज्यों, मानो, जैसे।

३ परन्तु, किन्तु। उ०—परि किमि करि लागां पगे, पाउ पताळ प्रमांण। समण दिसै वैकुंठ छत, राज निमो रहमांण।—पी.ग्रं.

वि०—समान।

रू०भे०—पर्रि।

सं०पु०—१ भांति, तरह, प्रकार। उ०—पढ़े रिण पाखती, छीण वै हार परि। आव त फेरि संघारि भूंझार अरि।—हा.झा.

२ देखो 'परी' (रू.भे.)

उ०—जुध किणहिक जातां नृप जांणै। परि कंकण पड़ियौ खुलि पांणै।—सू.प्र.

३ देखो 'परी' (स्त्री.)

उ०—मांडी परि वेहां मांडण की, निज विप्र करै पांवडा न वंध।
—महादेव पारवती री वेलि

परिआंण—१ देखो 'परियांण' (रू.भे.)

२ देखो 'प्रयांण' (रू.भे.)

परिआतमा—देखो 'परमात्मा' (रू.भे.)

उ०—तू आतम परिआतमा सबदां सहनांणी।—केसोदास गाडण

परिकर-सं०पु०[सं०परिकर]१ परिवार, कुटुम्ब। उ०-१ नरनारी ना हो परिकर बहु मिळै, वंदण भणी विसेस। आय विराज्या हो पूजजी पाटिए, द्यै धरम रा उपदेस।—ऐ.जै.का.सं.

उ०—२ जो पत्र बांचतां ही प्रतापसिंह, अरिसिंह, गोकळदास, गोइंदराज, हरीसिंघ, स्यांमदास, भगवदास सातूं ही सूरबीर आप आप रै परिकर सहित चंडासिराज रै बास रहण आया।—वं.भा.

२ लवाजमा। उ०—अर जैतकुमार जुक्त सब सुद्धांत परिकर सहित प्रामार राज सलख चहूआंण कुमार सूं स्वकीय सुता री संबंध करण अजमेर द्रंग चलायौ।—वं.भा.

३ दल, समूह, सेना। उ०—१ अर काके भी पुळियार होइ प्राचौ रौ परिकर इकट्ठौ करि फेर भी दिल्ली पर चलावण द्रढ़ भाव गहियौ।—वं.भा.

उ०—२ अर जवनेस रा आगम रै निमित प्रथ्वीराज कुमार पिता सूं प्रच्छ आपरौ परिकर केमास रै समीप भेजि खुरसांण री फौजां विरोळण रौ निदेस कहियौ।—वं.भा.

४ अनुचर, सेवक।

उ०—राजा! तुम्ह रुडुं हजो, इम माहरी आसीस। परिकर सहू परिवार-सिउं, जीवै कोडि वरीस।—मा.कां.प्र.

५ वैभव।

उ०—ऊरघ अकास, पाताळ पास। सब ठौर सिद्ध, परिकर प्रसिद्ध।
—ऊ.का.

६ कमरबन्द, पटुका।

उ०—पीतळ परिकर पर चीतळ कर परसै। वेहद महितळ सिर, सीतळ सर बरसै।—ऊ.का.

७ एक अर्थालंकार जिसमें अभिप्रायपूर्ण विशेषणों के साथ विशेष्य का कथन होता है।

८ पर्यंक, पलंग।

९ फैसला, निर्णय।

रू०भे०—परीकर।

परिकरमा—देखो 'परिकमा' (रू.भे.)

परिकरांकुर—सं०पु० [सं०] एक अर्थालंकार जिसमें विशेष्य का साभिप्रायता से वर्णन किया जाता है।

परिकास—देखो 'प्रकास' (रू.भे.)

उ०—रुहिर ज प्रगटउ परिकास, नाच्यो नारद कीधो हास।
—प.च.चौ.

परिक्खणो, परिक्खबो—देखो 'परखणो, परखबो' (रू.भे.)

उ०—गुरु परिक्खइ गुरु परिपक्खइ अन्नदीहमि। दुरयोधन पमुह सवि रायकूंवर वण भाहि लेविणु।—पं.पं.च.

परिक्खियोड़ो—देखो 'परखियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० परिक्खियोड़ी)

परिक्खिव—देखो 'परिसव' (रू.भे.)

उ०—सावइहिं परिवुखवि परिवरिउ, मुल्लि महग्घउ जिव रयणु।
—कवि पल्ह

परिक्रमणा, परिक्रमा, परिक्रम्मा—सं०स्त्री० [सं० परिक्रमण, परिक्रमा] चारों ओर घूमना, फेरी, चक्कर। उ०—१ करणसिंह उमराव, ईस पूजन यक आयो। करि परिक्रमण अनेक, बीलपत्रनि हर छायौ।
—ला.रा.

उ०—२ पछै जमी आकास पवन पांणी चंद सूरिज नूं परणांम करि आरोगी दोळी परिक्रमा दीन्ही।—वचनिका

उ०—३ चमर धार परवार, करी आंमर परिक्रमा। भुज लंबत डंडोत, वयण व्रत पेख व्रहम्मा।—रा.रू.

रू०भे०—परकमण, परकमा, परकम्म, परकरमण, परकरमणा, परक्रमण, परक्रमा, परिकम्मा, पिरकरमा।

परिक्षा—देखो 'परीक्षा' (रू.भे.)

परिख—देखो 'परीक्षा' (रू.भे.)

उ०—दादू यहु परिख सराफी उपली, भीतर की यह नांहि। अंतर की जांणै नहीं, तार्थ खोटा खांहि।—दादूबांणी

परिखणो—वि०—परीक्षा करने वाला, जाँच करने वाला।

परिखणो, परिखबो—देखो 'परखणो, परखबो' (रू.भे.)

उ०—दीठउ नळ सोभाग निधि, कुमरीइ परिखो ते विधि।
—नळदवदंती रास

परिखा—वि० [देशज] अपार, असीम, बहुत। उ०—करे दांन हित कंत, तरे दुज दांन निरंतर। किता चीर मंजीर, हीर मांणक जव्वाहर। सती तेज समरत्थ, वहे इम पंथ विचाळै। परीखा धन आवता, जांणि बरखा बरसाळै। ईखवा अचळ साहस ऊवरि, सुर दळ विमळ तरसिया। विसतार नूर सतियां वदन, द्वादसं सूर दरसिया।
—रा.रू.

सं०स्त्री०—१ किसी नगर या गढ के बाहर चारों ओर बनी नहर के आकार की खाई जो नगर या गढ़ की रक्षार्थ बनवाई जाती थी।

२ देखो 'परीक्षा' (रू.भे.)

उ०—सकळ गुण सकज, पांच दस परिखा पहुंतौ। आंण्यां नह इतबार, मन सुद्ध थाप्यो महतौ।—ध.व.ग्रं.

परिख्या—देखो 'परीक्षा' (रू.भे.)

उ०—पण कोइ इसो है ज्यो चोर है, मारै नदो रजपूत बोल्या, कहै महाराज पांचां री रुजगार अकेला खाए जो किसै कांम आवैगा। अणां री परीख्या तो लीजै।—पंचमार री बात

परिख्यण—वि० [सं० परीक्षणम्] परीक्षा करने वाला।

उ०—गुणाखट भाख परिख्यण, आपण साख उजाळणो।
—ल.पिं.

सं०पु०—परीक्षा, जाँच।

परिख्यात—देखो 'प्रख्यात' (रू.भे.)

परिगणन—सं०पु० [सं०] भली प्रकार गिनना, ठीक ठीक गिनना।

परिगणना—सं०स्त्री० [सं०] पूरा गिनना, ठीक ठीक गिनना।

परिगणित—वि० [सं०] जिसकी गिनती हो चुकी हो, गिना हुआ।

परिगत—वि० [सं०] १ बीता हुआ, गत।

२ विस्मृत।

३ मरा हुआ।

४ घेरा हुआ, वेष्ठित।

६ जाना हुआ, समझाया हुआ ज्ञात।

परिगह, परिगहि—देखो 'परिग्रह' (रू.भे.)

उ०—१ मुहरि मांडीजै काजि दिगविजय मंडोवरी, धुर धमळ सिरे परिगह धरिसै। दिलीवै सोच 'गजसाह' मुख देखीजै, दिलीवै हरख तोई 'गजण' दीसै।—महाराजा गजसिंह रो गीत

उ०—२ 'केहरि' परिगहि पालियौ, करि परधांनां गूझ। राजा राठौड़ वडो, जैसूं मांडि म भूझ।—गु.रू.वं.

परिगूढ—वि० [सं०] जो समझ में भी न आए, कठिनता से समझ में आने वाला, नितांत गूढ।

परिग्गह—देखो 'परिग्रह' (रू.भे.)

उ०—१ प्रभणै इम 'केहरि' तेउ परिग्गह, मै कळपै तन मूझ तणौ। पतिसाह उतांमळ मूझ समापै, मी इकवार अछै मरणौ।—गु.रू.वं.

परिग्यांण, परिग्यांन—सं०पु० [सं० परिज्ञान] किसी वस्तु का पूर्ण ज्ञान, सम्यक ज्ञान।

परिग्रह, परिग्रहो-सं०पु० [सं० परिग्रह] १ किसी वस्तु अथवा धन आदि का संग्रह।

उ०—१ भोग परित्याग प्रव्रज्या परयव जी। सूय परिग्रह चारू तप उपधांन हो।—वि.कु.

उ०—२ मदिरा मांस माखण भखइ, बहु आरंभ निवास। पार नहीं परिग्रह तणउ, इच्छा जेम आगास।—स.कु.

उ०—३ परिग्रहो नहीं राखवो, त्रि-विधे, त्रि-करण त्याग। रयणी-भोजन परिहरे, ते सांचो वैराग।—जयवांणी

२ परिजन, परिवार। उ०—सैसव सुजु सिसिर वितीत थयो सहु, गुण गति मति अति एह गिणि। आप तणो परिग्रह ले आयो, तरुणापो रितुराउ तणि।—वेलि

३ चाकर, अनुचर. ४ स्वीकृति. ५ दान. ६ पकड़। ७. प्राप्ति, उपलब्धि. ८ धन, दौलत. ९ सेना, फौज।

उ०—गर्जसिंघ परिग्रह आगळै, हाक मार आयो हणूं। करमेत उही कपूर वरि, गो छंडे गढ लाडणूं।—गु.रू.वं.

१० अंतःपुर, रनिवास।

११ सूर्यग्रहण, चन्द्रग्रहण।

१२ कलंक, दोष, पाप। उ०—ब्राह्मण गळवां री संकळप भरियो सो पण कोई देवै नहीं। तैरो पण प्रायचित थानै ही लागसी। आगै तो इसो परिग्रह कदेइ लगायो न थो। अबकै टळतो दीसै न छै। —पलक दरियाव री वात

रू०भे०—परगह, परगहै, परगाह, परगै, परग्गह, परघु, परघू, परघै, परधै, परिगह, परिगहि, परिगहै, परिग्गह, परिघरउ।

परिघ, परिघन-सं०पु० [सं० परिघः] १ एक आयुध विशेष।

उ०—केते कुठार बाहत करूर, परिघन कितेक कितेक सिर चकन-चूर।—ला.रा.

२ ज्योतिष के २७ योगों में से १९ वां योग।

वि०वि०—इस योग को आधा छोड़ कर शुभ कार्य करना चाहिए।

रू०भे०—परघ्घन, परिघ्घन।

परिघरउ—देखो 'परिग्रह (रू.भे.)

उ०—चउरास्या सहु को मीलयो। पाळो परिघरउ सयळ असेस। —वी.दे.

परिघळ—देखो 'परगळ' (रू.भे.)

उ०—सहसे लाखे साटविसु, परिघळ आणा वेसि। घरि बइठा ही प्रीतमा, पट्टोला पहिरेसि।—ढो.मा.

परिघात-सं०पु० [सं०] (वि० परिघाती) १ वध, हत्या, हनन।

२ डंडा, लुहांगी।

परिघोस-सं०पु० [सं० परिघोष] १ मेघ की गर्जना।

२ अनुचित कथन।

३ घोर, हल्ला।

परिघ्घन—देखो 'परिघ' (रू.भे.)

उ०—चलत लोह उत्ताळसूर सर गदा परिघ्घन।—ला.रा.

परिचउ, परिचय-सं०पु० [सं० परिचय] १ किसी व्यक्ति, विषय या पदार्थ के सम्बन्ध में प्राप्त हुई जानकारी, ज्ञान, विशेष जानकारी। (उ.र.)

२ प्रमाण। उ०—चुप चतुर पाय, स्मरण सम्हाय। लय लीन लच्छ, परिचय प्रतच्छ।—ऊ.का.

३ जान-पहिचान।

ज्यूं—अठै घणा आदमियां सूं आपरो परिचय है।

रू०भे०—परचइ, परचै।

परिचर-सं०पु० [सं० परिचरः] १ अनुयायी।

२ नौकर, सेवक।

परिचायक-वि० [सं०] परिचय कराने वाला, परिचय देने वाला।

परिचार-सं०पु० [सं०] १ सेवा, टहल।

२ देखो 'प्रचार' (रू.भे.)

उ०—बीज लवइ गज्जइ गयण, पवन तणा परिचार। इणि आसाढ़ि हूं डरूं, दहि दिगंतर दार।—मा.कां.प्र.

परिचारक, परिचारिक-सं०पु० [सं० परिचारकः, परिचारिकः] सेवक, अनुचर (ह.नां.मा.)

रू०भे०—परचारक।

परिचारी-सं०पु० [सं० परिचारिन्] सेवक, अनुचर।

परिचालक-वि० [सं०] १ चलने के लिए प्रेरित करने वाला, चलाने वाला।

२ किसी कार्य को जारी रखने तथा आगे बढाने वाला।

परिचावणो, परिचाववो-क्रि०स० [?] फुसलाना, ललचाना।

उ०—पुण्य कृतूत किया अति परिघळ, सुरपति सवळ पड़ी मन सांक —स.कु.

परिचावियोड़ो-भू०का०कृ०—फुसलाया हुआ, ललचाया हुआ। (स्त्री० परिचावियोड़ी)

परिचित-वि० [सं०] जिसका परिचय या जानकारी हो चुकी हो, जाना-पहिचाना, जाना-बूझा।

परिचो—देखो 'परचो' (रू.भे.)

परिच्छेद-सं०पु० [सं०] ग्रंथ का कोई स्वतंत्र भाग, अध्याय, प्रकरण।

रू०भे०—परछेद, परिछेद।

परिच्छेद्य-वि० [सं०] १ गिनने, नापने या तौलने योग्य।

२ बांटने योग्य, विभाज्य।

परिछंदो-सं०पु०—परिवार। उ०—मात के कूखि लहवो अवतार, भयो व्रत को अभिलाख अमंदो। तात कियो व्रत उच्छव देस में, सेस प्रजा हू यही परिछंदो।—ध.व.ग्रं.

परिछन—देखो 'परछन' (रू.भे.)

परिछेद—देखो 'परिच्छेद' (रू.भे.)

परिजंक—देखो 'परयंक' (रू.भे.)

परिजटन—देखो 'परयटन' (रू.भे.)

परिजन-संपु० [सं०] १ परिवार, कुटुम्ब।
रू०भे०—परजिण, परियण, परीयणी।
२ देखो 'परजन' (रू.भे.)
परिजनता-संस्त्री० [सं०] परिजन होने का भाव।
परिजळणौ, परिजळबौ—देखो 'प्रजळणौ, प्रजळबौ' (रू.भे.)
उ०—उतइं लाखहरं परिजळइं उतइं भीमुजु केडइ मिळीइ।
—पं.पं.च.
परिजळणहार, हारौ (हारी), परिजळणियौ—वि०।
परिजळिओड़ौ, परिजळियोड़ौ, परिजळयोड़ौ—भू०का०कृ०
परिजळीजणौ, परिजळीजबौ—भाव वा०
परिजळियोड़ौ—देखो 'प्रजळियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० परिजळियोड़ी)
परिजाउ-वि० [देशज] वीररसपूर्ण कविता ?
उ०—वाह-वाह वारठजी भली कही। मन री लही। हुकुम किया। जांगड़िश्रे वडाराग माहे दूहा दिया। परिजाऊ दूहा। वेगडा सांड धवळ रा दूहा। एकलगिड़ वाराह रा दूहा। मुंज मारवणि रा दूहा।
—वचनिका
परिजात-वि० [सं०] १ उत्पन्न, जन्मा हुआ।
२ देखो 'पारिजात' (रू.भे.)
उ०—ग्राम गुणां परिजात, नरां पोनां दुखहरणा। वीर सत्यां सुख सिरे, अमर आंणंद रा झरणा।—दसदेव
परिजाळणौ, परिजाळबौ—देखो 'प्रजाळणौ' 'प्रजाळबौ' (रू.भे.)
उ०—अतेउर परिजाळ्यौ जी, स्रेणिक दियउ रे आदेस। भगवंत सांसउ भांगियउ जी, चमक्यउ चित्त नरेस।—स.कु.
परिजाळणहार, हारौ (हारी), परिजाळणियौ—वि०
परिजाळिओड़ौ, परिजाळियोड़ौ, परिजाळ्योड़ौ—भू०का०कृ०
परिजाळीजणौ, परिजाळीजबौ—कर्म वा०
परिजाळियोड़ौ—देखो 'प्रजाळियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० परिजाळियोड़ी)
परिट्ठा—देखो 'परियट्ठा' (रू.भे.)
परिणणौ, परिणबौ—देखो 'परणणौ, परणबौ' (रू.भे.)
उ०—तींह मझि वि पूतली फिरइं, स स्रस्थिसहारि। तासु नयण वेही करी, परिणउ द्रूपदि नारि।—पं.पं.च.
परिणत-वि० [सं०] बदला हुआ, पलटा हुआ।
परिणति-संस्त्री० [सं०] १ अवनति।
२ रूपांतर।
रू०भे०—परीणत।
संपु० [सं०] तिरछी चोट करने वाला हाथी।
परिणय, परिणयन-संपु० [सं० परिणयः परिणयनम्] विवाह, शादी।
उ०—सांमंतां समेत संभरराज रै तनूज परिणयः, रौ प्रस्थान कीधौ।
—वं.भा.
परिणाणौ, परिणाबौ—देखो 'परणाणौ' 'परणाबौ' (रू.भे.)
परिणाम-संपु० [सं० परिणामः, परीणामः] नतीजा, फल।
उ०—१ प्राणांत पहुमि परिणांम पथ्य। रट्ठौर सकळ संबत रहस्य।
—ऊ.का.
उ०—२ कुसळ गुरु नांमे नवनिधि पांमे। ध्यावै जेह सूधे मन सतगुरु, दिन-दिन सुभ परिणांमौ।—ध.व.ग्र.
परिणामदरसी-वि० [सं० परिणामदर्शिन्] दूरदर्शी, सूक्ष्मदर्शी।
परिणामद्रस्टि-संस्त्री० [सं० परिणामदृष्टि] किसी कार्य के परिणाम को जान लेने की शक्ति।
परिणिति-संस्त्री० [?] प्रवृत्ति।
उ०—'नायसागर' नीःकामता, नीरखि परिणिति सांति। उत्तराध्यन आदे बहु, संभलावे सिद्धांत।—ऐ.जैका.सं.
परितांण—देखो 'परित्रांण' (रू.भे.)
परिताप, परितापन-संपु० [सं० परितापः] पश्चाताप, संताप, कष्ट।
उ०—१ काती पाती वन्हि परि, वपु-पंजरि परिताप। बाति वेसि हूं वलूं, अवळा आवइ आप।—मा.कां.प्र.
उ०—२ जेठ! तु परितापन करइ, राति करइ न हींण। पांणीवळ पुहचइ नहीं, रमका रंगि अमींण।—मा.कां.प्र.
परितापी-वि० [सं० परितापिन्] पश्चाताप करने वाली, दुखी।
संपु० [सं०] पीड़ा देने वाला, दुखित करने वाला।
परितियाग—देखो 'परित्याग' (रू.भे.)
परितियागी—देखो 'परित्यागी' (रू.भे.)
परितुस्ट-वि० [सं० परितुष्ट] संतुष्ट, प्रसन्न।
परितुस्टि-संस्त्री० [सं० परितुष्टि] संतोष, प्रसन्नता।
परितोख—देखो 'परितोस' (रू.भे.)
परितोम-संपु० [?] गिलाफकोली।
परितोस-संपु० [सं० परितोष] संतोष, प्रसन्नता।
रू०भे०—परितोख परीतोस।
परितोसक-संपु० [सं० परितोषक] संतुष्ट करने वाला, प्रसन्न करने वाला।
परितोसी-वि० [सं० परितोषिन्] संतोषी।
परित्त-वि०—चारों ओर।
उ०—गमा अनंता जेहमां रे, वलि अनंत परयांण रे। यस परित्त तउ छ इहां रे लाल, थावर अनंत कहाय रे।—वि.कु.
परित्यज्य-वि० [सं०] त्यागने योग्य, छोड़ने योग्य।
परित्याग-संपु० [सं०] छोड़ने का भाव, त्यागने का भाव।
रू०भे०—परितियाग।
परित्यागी-वि० [सं० परित्यागिन्] त्यागी, छोड़ने वाला।
रू०भे०—परितियागी।
परित्रप्त-वि० [सं० परितृप्त] अघाया हुआ, संतुष्ट।
परित्रांण-संपु० [सं० परित्राणम्] रक्षा, बचाव।

परिदक्षिण, परिदक्षिणा, परिदखणा, परिदखिणा—देखो 'प्रदक्षिणा' (रू.भे.)

उ०—१ एकीकइ रोम ऊपरइ ईसर, मांडिया कोठ अनंत ब्रह्मंड। सायर सात दियइ परिदक्षिण, डवर चा अंबर घजदंड।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ बावन देहुरियां जो परिदखणा परियां।—ध.व.ग्रं.

उ०—३ एहवौ धातकी खंड ए, परिदखिणा परकार। अठलख जोयण वीटीयो, समुद्र कालो दधि सार।—ध.व ग्रं.

परिदरसन—सं०पु० [सं० परिदर्शन] भली भांति अवलोकन करना।

परिध—सं०पु० [सं० परिधि] १ गढ़, किला (ह.नां.मा.)

२ देखो 'परिधि' (रू.भे.)

परिधन, परिधांन—स०पु० [सं० परिधांन] पहना जाने वाला वस्त्र।

रू०भे०—परधांन।

परिधि—सं०पु० [सं०] किसी गोल पदार्थ या वृत्त की सीमा निर्धारित करने वाली रेखा, घेरा।

रू०भे०—परिध।

परिनाळ—देखो 'परनाळ' (रू.भे.)

उ०—रगत खाळ परिनाळ, लगं पगां पायाळइ। नवै कुळी नागिंद्र हुआ, स्रोणी वंवाळइ।—गु.रू.वं.

परिनिस्ठा—स०पु० [सं० परिनिष्ठा] १ चरम सीमा, पराकाष्ठा।

२ पूर्ण ज्ञान, पूर्ण परिचय।

परिन्यास—सं०पु० [सं०] किसी काव्य का वह स्थल जहाँ कोई विशेष अर्थ पूरा हो।

परिपक्व—वि० [सं०] १ पूर्ण पका हुआ।

२ पूर्ण विकसित।

३ निपुण।

रू०भे०—परपख।

परिपण—सं०पु० [सं०] मूलधन, पूंजी (डि.को.)

परिपाक—सं०पु० [सं०] १ पकने या पचने का भाव (अमरत)

२ पूर्णता।

३ निपुणता।

परिपाटि, परिपाटी—सं०स्त्री० [सं०] १ प्रणाली, शैली, प्रथा।

उ०—यह अंधाधुंध परिपाटी महा अंधेरौ। घर त्याग नीसरघौ घनानंद को घेरौ।—ऊ.का.

२ पद्धति, रीति, चाल।

परिपाळग—सं०पु० [सं० परिपालक] पालन-पोषण करने वाला, पालन-कर्ता। उ०—'प्राग' हरो पात्रां परिपाळग, मोटां दांन दिम्रण मन मोट।—ल पिं.

परिपाळणौ, परिपाळवौ—क्रि०स० [परिपालनम्] पालन-पोषण करना, रक्षा करना। उ०—दस मास उदरि धरि वळे वरस दस, जो इहां परिपाळे जिवड़ी। पूत हेत पेखतां पिता प्रति, वळी विसेखै मात वडी।—वेलि

परिपीड़ण—सं०पु० [सं० परिपीडनम्] अत्यन्त दुःख पीड़ा, कष्ट।

परिपुसट, परिपुस्ट—वि० [सं० परिपुष्ट] भलीभांति पोषित, पूर्ण हृष्ट-पुस्ट, मोटाताजा।

परिपूजण—सं०पु० [सं० परिपूजनम्] सम्यक प्रकार से पूजा या उपासना करने की क्रिया।

परिपूजणौ, परिपूजवौ—क्रि०स० [सं० परिपूजनम्] १ परिपूर्ण करना, सन्तुष्ट करना। उ०—उलग कहीय छइ एकलां, दूजण सरिस कहइ घर वास। राजा रिधि छइ आपणइं, इण परिपूजई मन की आस।—वी.दे.

परिपूर—वि० [स० परिपूर्ण] पूर्ण, पूरा। उ०—परिपूर लच्छि प्रताप, सुजि लुटत हाट सराय।—सू प्र.

परिपूरण—वि० [सं० परिपूर्ण] खूब भरा हुआ, सम्पूर्ण।

उ०—तुं पर-नारी-बंधु ते, परखिउ मइं परिपूरण। अह्मे न अवला कहि, तणी पुजसि तुझ प्रावूरण।—मा.कां.प्र.

परिपोटक, परिपोटिक—सं०पु० [सं० परिपोटकः] कान की लौ सूज कर होने वाला एक कर्ण रोग (अमरत)

परिप्रीछक—वि० [सं० परिपृच्छक] जिज्ञासा करने वाला।

उ०—असवारी ऊपरि चढिया, परिप्रीछक पूंतार। सुंढा सोविन पक्खरी, फरिवर अंकुस सार।—मा.कां.प्र.

परिबंधन—सं०पु० [सं०] चारों ओर से जकड़ कर बांधना।

परिबह—सं०पु० [सं० परिबर्ह] १ राजा के हाथी घोड़े की झूल।

२ राजा के छत्र चंवर आदि (डि.को.)

परिबार—देखो 'परिवार' (रू.भे.)

परिबेस—देखो 'परिवेस' (रू भे.)

परिब्रह्म—देखो 'परब्रह्म' (रू.भे.)

उ०—परिब्रह्म पूरण, तत मग्न तूरण। परमातम प्राप्त, वह पुरुस आप्त।—ऊ.का.

परिभव—सं०पु० [सं०] १ अनादर, अपमान। उ०—इकि वयरी ना परिभव सह्या। लहूया नदण पाछलि रह्या।—पं.पं च.

२ पराजय, हार।

रू०भे०—परभव, परीभाव, परीभव।

परिभवण—सं०पु० [सं० परिभावन] १ पराजय, हार। उ०—एक राव परिभवण, एक रावां पड़िगाहण। एक राव जड गमण, एक राउ सरणे रक्खण।—गु.रू.व.

परिभाव—देखो 'परिभव' (रू.भे)

परिभासा—सं०स्त्री० [सं० परिभाषा] १ स्पष्ट कथन।

२ पदार्थ-विवेचन-युक्त अर्थ-कथन।

३ किसी ग्रंथ, शास्त्र आदि की विशिष्ट संज्ञा।

परिभ्रत—देखो 'परभ्रत' (रू.भे)

उ०—नवेली वसंत, नए द्रुम वेल तहां रही लेल, परिभ्रत कंजन देलै भ्रमर झकृत।—रसील रसराज

परिभ्रमण-सं०पु० [सं०] घूमना, चक्कर काटना।
परिमंडळ-सं०पु० [सं परिमंडलम्] १ घेरा, चक्कर।
२ चूडी के समान गोलाकार।
परिमळ-सं०स्त्री० [सं० परिमलः] सुगन्ध, सुवास। उ०—कापड़ माल असंख, हेम मिण रयण विभूखण। परिमळ चंदन अगर पांन कपूरह असण।—गु.रू.वं.
रू०भे०—परमिळ, परम्मळ, परिमळि, परिमिल, परिम्मिळ।
परिमांण-सं०पु० [सं० परिमाण] १ नाप। २ तोल।
परिमित-वि० [सं०] सीमित, नपा-तुला।
उ०—दादू मेरा एक मुख, कीरति अनंत अपार। गुण केते परिमित नही, रहे विचार विचार।—दादूवांणी
परिम्मळ—देखो 'परिमळ' (रू.भे.)
उ०—गुलाब मालती सुगंध, सेवती सुपडुळं। तरांणि पंच केवडाकि, केतकी परिम्मलं।—गु.रू.वं.
परियंक, परियका—देखो 'परियंक (रू.भे.)
उ०—१ परियक्क तजो हव 'पोळ' वना। विडंगाण चढो हरिआळ वना।—पा.प्र.
उ०—२ पोढे परियंका सदा निसंका। स्रीखंड-स सुगंधा है।
—ऊ का.
परियट-सं०स्त्री० [अं० परेड] कवायद, परेड।
परियट्ट-सं०पु० [सं०परिवर्त] परिवर्तनदोष (जैन)
परियटण—देखो १ 'परिवरतन' (रू.भे) (जैन)
२ देखो 'परयटन' (रू.भे.)
परियट्टणा-सं०स्त्री० [सं० परिवर्तना] पढे हुए सूत्र या पाठ को बार-बार दोहराना (जैन)
परियट्टावोस-सं०पु०[?] खराब आहार को डाल कर अच्छा आहार लाने से लगने वाला दोष (जैन)
परियट्टियदोस-सं०पु० [सं० परिवर्तितदोष] अपनी वस्तु दूसरे को देकर उसके बदले दूसरे की वस्तु लेकर साधु को देने से लगने वाला दोष (जैन)
परियण-सं०पु० [सं० प्रणय] १ प्रेम ?
उ०—ताडि पहुतउ जल गाहिर्य नाहिय 'प्रभु हरिकेसि, 'भांनि न परियण उत्सव कुत्स वयण म भणेसि'।—जयसेखर सूरि
२ देखो 'परिजन' (रू.भे.)
उ०—पाखळै राव पोढीमणी, घणां पांण परियण घणा। मालदे राव मंडोवरो, वीह चित्यो-ई वीहावणी।—द.दा.
३ देखो 'परियांण' (रू.भे.)
परियणो, परियबो-क्रि०स० [सं० परित्यागनम्] छोड़ना, परित्याग करना। उ०—कइं पंडव पंथ संचरू, कई जाय सेव सूं गंग-दुवार। कह्यउ हमारु जइ सुणइं, उलग स्वांमी ! परियजि वार।
—वी.दे.
परियां-सं०पु० [सं० परिजन] पूर्वज। उ०—१ खाग त्याग वरजाग, प्रिसण बाळै पर जाळे। खत्रवाट कुळवाट, पाट परियां उजवाळै।'
—गु.रू.वं.
उ०—२ ओछो तिल न कूं तिल अधको, मुणतां सुकव करां ले माप। तूं ताहरा रांणा टोडरमल, परियां सारीखो 'परताप'।
—दुरसो आढो
रू०भे०—परयां, परिहां, परीआं, पिरियां, पिरियां।
परियांण-सं०पु०—१ वंश, कुटुम्ब। उ०—पुर जोधांण, उदैपुर जैपुर, पह थांरा खूटा परियाण। आंकै गई आवसी आंकै, बांकै 'आसल' किया वखांण।—वां दा.
[फा० पर+सं० या=गतौ] २ पंखधारी। उ०—समसेर बांण छूटै समर, आ ओपम इण नाचनै। परियाण जाण छूटै पनंग, जावै चंदण वावनै।—सू.प्र.
३ कीर्ति, यश। उ०—छित घड़ आवध छक छतां, मन विह मूवयो मांण। अढ़ा-अढ़ी उरसां उड़ी, पड़ी पीव-परियांण।—रेवतसिंह भाटी
४ पर्यटन, भ्रमण।
५ सूर्योदय के समय पुकारी जाने वाली पूर्व व आग्नेय के बीच की दिशा (शकुन)।
६ पूर्व और आग्नेय के मध्य की दिशा।
७ देखो 'प्रयांण'।
उ०—१ ढोलउ करहउ सज कियउ, कसवी घाति पलांण। सोवन-वांनी घूघरा, चालण रइ परियांण।—ढो.मा.
उ०—२ समूहा सेन तणी सुरतांण, पछिम्म दिस किया परियांण।
—रा०ज० रासो
रू०भे०—परवांण परियण।
परिया-क्रि०वि० [देशज] १ उस तरफ, उस ओर। उ०—सु वणवीर परिया सिरोही हुंता राजाजी अर मुंहते री मेल्हियो आयो।—द.वि.
२ दूर, अलग।
परियाणो, परियाबो-क्रि०अ० [सं० परि+या+रा.प्र.णो] जाना, गमन करना।
उ०—कस्मात् कस्मिन् किल मित्र किमरथ, केन कारथ परिणासि कुत्र। ब्रूहि जनेन येन भो ब्राह्मण, पुरतो मो प्रेसितम् पत्र।—वेलि
परियाय—देखो 'परयाय' (रू भे.)
परियावट-वि०[?] पूर्वकृत।
उ०—एह कथा जे संभलइ, वंचइ वली विसेख। पातक परियावट तणा, तिहां रहइ नहि रेख।—मा.कां.प्र.
परयावळी-सं०स्त्री० [सं० पूर्वज+अवली] वंशावली, वंश-वृक्ष।
उ०—१ ऊमरकोट रा सोढा पदवी रांणा ज्यांरी परयावली रांणो गांगो चांपा री पातो गांगा री।—बां.दा.ख्यात
उ०—२ कवित्त छप्पय सीरोही री टीकायतां री परयावळी रा आसियो मालो कहै।—नैणसी

परियास-संपु० [सं० प्रकाश] १ प्रकाश। उ०—चिहुं दिसि बीज झळहळइ, पंथी घर भणी पुळइ। विपरीत आकास चंद्र सूरय परियास। —रा.सा.सं.

२ देखो 'प्रयास' (रू.भे.)

परिरंभ-संपु० [सं०] गले से गला या छाती से छाती मिलाकर मिलना, आलिंगन।

उ०—दोइ ही तरफ गोळां री गजरहूं ओट आवै जिता ही घोड़ां १ सिपाहां २ समेत हाथियां ३ रा गोळ उडण लागा। अर इळा १ आकासरै २ हारावळी रूप विघ्नकारी डूंगरां रा डोहणहार विघ्न-विहीण परिरंभ जुड़ण लागा।—वं.भा.

परिरोध-संपु० [सं०] रुकावट, अवरोध।

परिलंघन-संपु० [सं०] छलांग मारना, कूद कर लांघना।

परिलुप्त-वि०—१ नष्ट।

२ क्षतिग्रस्त।

परिलेख-संपु० [सं० परिलेख:] ढांचा, खाका।

परिलोप-संपु० [सं० परिलोप:] विलोप, नाश।

परिवड-संस्त्री० [सं० प्रतिपदा, प्रा. पडिवाग्रा] प्रत्येक पक्ष की प्रथम तिथि। उ०—आदिपुर पाज उतरूं ए, सिधवड लूं विस्रांम। चैत्र परिवड इण परिवारि ए, सीधा वांछित कांम।—स.कु.

परिवत्सर-संपु० [सं०] पांच वर्षों के युग का द्वितीय वर्ष (ज्योतिष)

परिवरणौ, परिवरबौ-क्रि०अ० [?] १ आना, आगमन होना।

उ०—स्रो अस्टापद आविया, आदीसर अरिहंत। साध संघाति परि-वरिया, केवलग्यांन अनंत।—स.कु.

२ आवेष्ठित होना, घिर जाना।

उ०—१ अतिसय कमलां हाथिणी रे, परिवरियउ निस दीस। सहजानंद नंदन वनइ रे, केलि करइ सुजगीस।—वि.कु.

उ०—२ बत्तीस अंतेउ परिवरचउ, भोगवइ सुख सासं। नेमि समीप संजम लियउ, जांण्यौ अथिर संसारो।—स.कु.

३ देखो 'परवरणौ, परवरबौ' (रू.भे.)

परिवरणहार, हारौ (हारी), परिवरणियौ—वि०।

परिवरिग्रोड़ौ, परिवरियोड़ौ, परिवर्‌योड़ौ—भू०का०कृ०।

परिवरीजणौ, परिवरीजबौ—भाव वा०।

परिवरत-संपु० [सं०परिवर्त] १ घुमाव, चक्कर, फेरा, फिराव।

२ विनिमय, अदल-बदल।

३ किसी काल या युग का अंत।

४ प्रलय, नाश (डिं०को०)

५ मृत्यु के पुत्र दुस्सह के पुत्रों में से एक (पुराण)

परिवरतक-संपु० [सं० परिवर्त्तक) १ उलट-पुलट करने वाला, परि-वर्तन करने वाला।

२ घूमने वाला, फिरने वाला।

३ युग का अन्त करने वाला।

४ प्रलय करने वाला।

परिवरतन-संपु० [सं० परिवर्तन] १ बदलने या बदले जाने की क्रिया का भाव, दशान्तर।

२ दो पदार्थों का परस्पर अदल-बदल, अदला-बदली, हेर-फेर।

३ घुमाव, घेरा, आवर्तन, चक्कर।

४ शृंगार में एक प्रकार का आसन।

५ किसी काल या युग का अन्त, समाप्ति।

रू०भे०—परियट्टण।

परिवरियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ आया हुआ, आगमन हुवा हुआ।

२ आवेष्टित, घिरा हुआ।

(स्त्री० परिवरियोड़ी)

परिवह-संपु० [सं० परिवह:] १ सात प्रकार के पवनों में छठा पवन।

२ अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक।

परिवांण—देखो 'प्रमांण' (रू०भे०)

उ० -तूं हीज सज्जण मित्त तूं, प्रीतम तूं परिवांण। हियडइ भीतरि तूं वसइ, भावइ जांण म जांण।—ढो.मा.

परिवा—देखो 'पड़वा' (रू०भे०)

परिवाडि, परिवाडी—देखो 'परिपाटी' (रू०भे०)

उ०—पणमीउ सांमीउ नेमिनाहु, अनु अंबिकि माडी। पभणि सु पंडव तणउं चरितु, अभिनव परिवाडी।—पं.पं.च.

परिवाद-संपु० [सं०] १ दोष-कथन, निंदा।

२ वीणा या सितार बजाने का लोहे के तारों का बना छल्ला।

रू०भे०—परीवाद।

परिवादक-संपु० [सं०] निंदा करने वाला व्यक्ति।

वि०—निंदक।

परिवादणी-संस्त्री० [सं० परिवादिनी] सात तारों वाली बीन।

परिवादी-संपु० [सं० परिवादिन्] निंदा करने वाला व्यक्ति, निंदक।

परिवापन-संस्त्री० [सं० परिवापन] हजामत (डिं०को०)

परिवार, परिवारि, परिवारौ-संपु० [सं० परिवार:, परीवार:] १ अपने भरण-पोषण के हेतु किसी विशेष व्यक्ति के आश्रित रहने वाले लोग, आश्रित वर्ग, पोष्य-जन।

उ०—चाहइ वेगि निरूपणा, सम पूरव पद चार लाल रे। पिण इण कलि मांहि नहीं, सांप्रति सहु परिवार लाल रे।—वि कु.

२ एक ही कुल में उत्पन्न लोगों का समुदाय, कुटुम्ब, कुनबा, परिजन-समुदाय।

उ०—१ सउं परिवारिहिं सुं दलिहिं हस्तिनागपुरि नगरि आवइं, अन्न-दिवसि रिसि नारदह नारि कज्जि आदेसु पांमइ।—पं.पं.च.

उ०—२ राजा रांणी वरजै, वरजै सब परिवारो। सीस फूल सिर ऊपर सोहै, बिंदली सोभा न्यारी।—मीरां

३ तलवार की म्यान, कोष।

रू०भे०—परवार, परिव्वार, परीवार, परीवार, पिरवार।

अल्पा०—परवारौ, परिवारौ।

परिवारौ—देखो 'परिवार' (अल्पा; रू.भे.)

उ०—स्री सावत्थी समोसरया पांचसइ मुनि परिवारौ जी।—स.कु.

परिवाह-स०पु० [सं०] १ मोरी (डिं०को०)

२ पानी का निकास मार्ग (डिं०को०)

३ जलाशयों का वह नियत स्थान जहां से आवश्यकता से अधिक जल निकलता है। ओटा।

रू०भे०—परीवाह।

परिवेख—देखो 'परिवेस' (रू०भे०)

परिवेदन-सं०पु० [सं०] पूरा ज्ञान, सम्यक ज्ञान।

परिवेस-सं०पु० [सं० परिवेशः, परीवेशः, परिवेषः, परीवेषः] १ घेरा, मण्डल, परिधि।

उ०—सिर चमर चौसर सोह प्रति सूर किरण विमोह। परिवेस सुभट सप्रीत, गढ़ आवियौ 'अगजीत'।—रा०रू०

२ सूर्य या चन्द्रमा के चारों ओर बनने वाला सफेद बदली का घेरा।

उ०—तिण समय चंद्रमा रै चौतरफ परिवेस रै प्रमांण फालौ सिंहदेव साठ हजारी सेना सूं स्वकीय स्वांमी रा सिविर रै छबीनां रौ चक्र चलायौ।—वं.भा.

रू०भे०—परवेख, परिवेस, परीवेख, परीवेस।

परिवेसण-सं०पु० [सं० परिवेषणं] परसना, परोसना।

उ०—देखी मुहतु सखी सखेद, पूछिउ लेई मन नउ भेद। सांमिणि आगलि सहूइ कहिउं, परीवेसण तीणइ सांसहिउ।

—हीराणंद सूरि

परिवेस्टन-सं०पु० [सं० परिवेष्टन] १ दायरा, घेरा।

२ लपेटने की क्रिया।

परिव्रज्या-सं०स्त्री० [सं०] १ इधर-उधर घूमकर भिक्षुक की तरह समय बिताना।

२ इधर-उधर घूमना, फिरना, परिभ्रमण।

३ तपस्या।

परिव्राज, परिव्राजक-सं०पु० [सं० परिव्राजः, परिव्राजकः] (स्त्री० परिव्राजिका] १ वह सन्यासी जो सदा भ्रमण करता है।

२ यती, परमहंस।

३ तपस्वी। उ०—१ गैरिक परिव्राजक तिहां आयो, 'हथिणापुर' मांय। तपस्या कस्ट घणौ करै, नर-नारी बहु जाय।

—जयवांणी

उ०—२ कुमारी परिव्राजिका, अघव अघघ गुरु नारो जी। व्रत भांजइ तेह नइ कहउ, छम्मारी तप सारो जी।—स.कु.

परिसंख्या-सं०पु० [सं०] १ गणना, गिनती।

२ एक अर्थालंकार जिसमें किसी वस्तु को उसके योग्य स्थान से हटा कर किसी अन्य स्थान पर स्थापित किया जाता है।

रू०भे०—परसंख्या।

परिसद, परिसदा-सं०पु० [सं० परिषद्] १ सभा, समिति।

उ०—१ बैठी परीखद बार जी। (जैन)

उ०—२ परिसदा सुण पाछी गई, वलिया क्रस्ण नरेस। गज-सुकुमार वैरागियौ, लागी धरम री रेस।—जयवांणी

रू०भे०—परखद, परखदा, परसत, परसद, परसदा, परीसदा।

[सं० परिषदः] २ सदस्य, सभासद।

परिसर-सं०पु० [सं०] समीप, पास। उ०—इणी समय रांणा लक्खण रौ पट्टपकुमार अरिसिंह आखेट में रमतां कोई ग्राम रा परीसर में एक चंनाणा जाती रा हळखड रजपूत री पुत्री नूं ठळ में अतुळ जांणि प्रसभ पूरवक परणियौ।—वं.भा.

परीसरण-क्रि०स० [सं० स्पर्शनम्] छूना, स्पर्श करना।

उ०—परिसरणं रघुनाथ पद, अहिल्या थई अकरम।—रांमरासौ

परिसरम—देखो 'परिश्रम' (रू.भे.)

परिसरमी—देखो 'परिश्रमी' (रू.भे.)

परिसराव—देखो 'परिस्राव' (रू.भे.)

परिसह, परिसहा, परिसा-सं०पु० [सं० परिषह]. संयम के मार्ग में विचरते हुए प्रतिकूल परिस्थिति के कारण साधु द्वारा उठाए जाते वाले बाईस कष्ट। उ०—१ साधु सहे बावीस परिसह, आहार ल्यइ दोस टालि रे।—स.कु.

उ०—२ राज लीला सुख भोगियउ, म्हारउ रिसभ सुकुमाल रे। आज सहइ ते परिसहा, भूख त्रिसा नित काल रे।—स.कु.

उ०—३ बावीस परिसहा जे सहइ, चालइ सुद्ध आचारौ जी।

—स.कु.

वि०वि०—निम्न लिखित २२ परिषह हैं—

(१) क्षुधा (२) तृषा (३) शीत (४) उष्ण (५) दंशमशक (६) अचेल (७) अरति (८) स्त्री (९) चर्या (१०) निषद्या (११) शय्या (१२) आक्रोश (१३) वध (१४) याचना (१५) अलाभ (१६) रोग (१७) तृणस्पर्श (१८) जल्लमैल (१९) सत्कार, पुरस्कार (२०) प्रज्ञा (२१) अज्ञान और (२२) दर्शन।

रू०भे०—परीसउ, परीसह, परीसा।

अल्पा०—परिसौ, परीसौ।

परिसिद्ध—देखो 'प्रसिद्ध' (रू.भे.)

उ०—परिसिद्ध नांम प्रभात नौ, ल्यै सहु कोइ मन सुध लोक।

—ध.व.ग्रं

परिसिस्ट-वि० [सं० परिशिष्ट] शेष, अवशिष्ट, छूटा हुआ।

सं०पु०—१ यथा स्थान लगने से छूटी हुई वे बातें जो किसी ग्रन्थ या लेख के बाद में जोड़दी गई हों।

२ किसी ग्रंथ या लेख के अन्त में संख्या, गणना आदि की दी गई जानकारी।

परिसीलन-सं०पु० [सं० परिशीलन] मननपूर्वक अध्ययन।

परिसौ—देखो 'परिसह' (अल्पा; रू.भे.)

उ०—पड़ रही तावड़े री भोट, तिरसा सूं सूखा होट। सुणो रिसभजी, कठिनं परिसो साधनो(णो)।—जयवांणी

परिसोधन-सं०पु० [सं० परिशोधन] १ पूर्ण रीति से शुद्ध करना।
२ सफाई, स्वच्छता।
३ चुकता करना।

परिस्तांन-सं०पु० [फा०] १ परियों का लोक (कल्पित)
२ सुन्दर स्त्रियों के जमघट का स्थान।

परिस्क्रत-वि० [सं० परिष्कृत] शुद्ध किया हुआ, साफ किया हुआ।

परिस्रम-सं०पु० [सं० परिश्रम] श्रम, मेहनत, उद्यम।
रू०भे०—परिसरम, परीसरम।

परिस्रमी-वि० [सं० परिश्रमिन्] उद्यमी, मेहनती।
रू०भे०—परिसरमी।

परिस्राव-सं०पु० [सं०] एक रोग विशेष जिसमें गुदा से पित्त और कफ मिला पतला मल निकलता है।
रू०भे०—परिसराव।

परिहंस—१ देखो 'परहंस' (रू.भे.)
उ०—१ जै सिंघ आद राजा जिता, लाज रही परिहंस लियै। 'अजमाल' मेळ 'अबदुल्ल' सूं, हुवो साल मुगळां हियै।—रा.रू.
उ०—२ कसियै जरदि मरद नवकोटी, चौरंगि चढियै प्रभत चडै। ऊभो जां बांसै आसावत, परिहंस सु नहं पुरांणि पडै।
—राठौड़ अमरसिंह आसकरणोत रो गीत
उ०—३ दिल्लेस खीज रीझां दिये, खोद हियै परिहंस खमै। ऊगतो भांण बाळक 'अभो', राय आंगण इण विध रमै।—सू.प्र.

परिहंसणो, परिहसबो-क्रि०अ०—हंसना, परिहास करना।

परिहरणो, परिहरबो-क्रि०स० [सं० परिहरणम्] देखो 'परहरणो, परहरबो' (रू.भे.)
उ०—१ उत्तार आज स उत्तारउ, ऊकटिया सारेह। वेलां वेलां परिहरइ, एकल्लां मारेह।—ढो.मा.
उ०—२ दादू गऊ बच्छ का ग्यांन गह, दूध रहै ल्यौ लाइ। सींग पूंछ पग परिहरै, अस्तन लागै धाइ।—दादूवांणी
परिहरणहार, हारो (हारी), परिहरणियो—वि०।
परिहरिओड़ो, परिहरियोड़ो, परिहरयोड़ो—भू०का०कृ०।
परिहरीजणो, परिहरीजबो—कर्म०वा०।

परिहरियोड़ो-भू०का०कृ०—देखो 'परहरियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० परिहरियोड़ी)

परिहां—देखो 'परियां' (रू.भे.)
उ०—हर घर ध्यांन कमध हेमाळै, परिहां चाढ़ेवा प्रभत। किसन व जोग चारणां कारण, गळियो जुजठळ राव गत।—बां.दा.

परिहार-सं०पु०—१ त्यागना, छोड़ना।
२ देखो 'प्रतिहार' (रू.भे.)

परिहास-सं०पु० [सं०] हंसी, दिल्लगी, मजाक।

परींडो-सं०पु०—वह स्थान जहां पानी पीने के मटके रक्खे जाते हैं।
उ०—१ बंगळै में हणमान बावो जाग्या। परींडे में पितर देवता जाग्या। झालर तो बाजी राजा रांम की।—लो गी.
उ०—२ तद इण अरज कीवी—महाराज ठाठो भाटो मोसूं नह उपड़ै, किणही वांणियां रै आगै पांणी परींडो कर लेयस्यूं।
—साह रांमदास री वारता
रू०भे०—पनींडो, परिंडो, परेंडो, पलींडो, पींडो, पेंडो, पैंडो।
अल्पा०—पलींडो।

परी-सं०स्त्री० [फा०] १ अप्सरा (अ.मा.)
उ०—परी वरी स्रुग वसै 'दळपत्ति'। उसी हिज केहर' कीध उकत्ति।
—सू.प्र.
पर्या०—अच्छर, खों, बारंगा, सारंगा, सारिका, सुरति।
२ कोहकाफ पर्वत पर रहने वाली वे कल्पित स्त्रियां जो बहुत सुन्दर मानी जाती हैं और जिनके दोनों कंधों पर पर लगे रहते हैं।
३ एक पुष्प (अ.मा.)
४ एक प्रकार का बांण (अ.मा.)
५ देखो 'परो' का स्त्री०।
उ०—इतरी इवं कही तद नायण कहो तो हालो आपां अठै सूं परी हालां। तद ऐ अठै सुं उठ अर नदी आई।—चौबोली
रू०भे०—परि।

परीआं—देखो 'परियां' (रू.भे.)
उ०—एकणि रहणि हिंदूआं ओपम, पाट-उधोर वडा पण पाळै। अवतारी भारी इहकारी, आप-तणां परीआं अजुयाळै।—ल.पि.

परीकर—देखो 'परिकर' (रू.भे.)

परीक्खणो, परीक्खबो—देखो 'परखणो, परखबो' (रू.भे.)

परीक्षक-सं०पु० [सं०] (स्त्री० परीक्षिका) परीक्षा करने वाला, जांच करने वाला।
रू०भे०—परखणो, परिखणो, परिखाणो, परिछण, पारकी, पारखी, पारखू, पारखो, पारिख, पारिखू, पारीखो।

परीक्षण-सं०पु० [सं०] १ परीक्षा की क्रिया या भाव।
२ देखभाल या जांच।
रू०भे०—परीखण।

परीक्षत—देखो 'परीक्षित' (रू.भे.)

परीक्षा-सं०स्त्री० [सं०] किसी की योग्यता, सामर्थ्य, गुण-दोष आदि जांचने की क्रिया।
क्रि०प्र०—करणी, दैणी, लैणी, होणी।
रू०भे०—परक्ख, परख, परिक्षा, परिखा, परिख्य, परिख्या, परीख, परीख्या, परेख, पारख, पारखा, पारिखा, पारिख्या, पारीख।
अल्पा०—पारखड़ी, पारिखो।

परीक्षित-वि० [सं०] परीक्षा किया हुआ, जांचा हुआ।

सं०पु०—एक राजा का नाम (अर्जुन का पौत्र व अभिमन्यु का पुत्र)

उ०—राय परीक्षित रूयडु, बळीउ वाळी वेसि। सोइ स्रंगी-साप मुउ, धूनां घवळहर-रेसि।—मा.कां.प्र.

रू०भे०—परीक्षत, परीखत, परीछत, पीछत, प्रीच्छत, प्रीछत।

परीख-सं०स्त्री०—१ इच्छा।

उ०—कवर पिता दरसण करण, पेखी साह परीख। अप्पी सरभ वि-राह री, साह समप्पी सीख।—रा.रू.

२ देखो 'परीक्षा' (रू.भे.)

उ०—स्रीपाळ राजा कीधी परीख। कोढ़ रोग गयो हुतो बहु बरीक।—स.कु.

परीखण—देखो 'परीक्षण' (रू.भे.)

परीखणौ, परीखबौ—देखो 'परखणौ, परखबौ' (रू.भे.)

उ०—रूपक रख्यण लाइक लख्यण, पात्र परीखण लख्यपती। रीति रहावण कीति कहावण, मौज महाघण मोटमती।—ल.पि.

परीखणहार, हारौ (हारी), परीखणियौ—वि०

परीखिग्रोड़ौ, परीखियोड़ौ, परीख्योड़ौ—भू०का०कृ०

परीखोजणौ, परीखीजबौ—कर्म वा०

परीखत—देखो 'परीक्षित' (रू.भे.)

उ०—१ कियो 'अभय' नृप कूरमां, पावां लियो बचाय। प्रभू परीखत रक्खियो, जेम जळंतौ लाय।—रा.रू.

परीखियोड़ौ—देखो 'परखियोड़ौ' (रू.भे.)

परीख्या—देखो 'परीक्षा' (रू.भे.)

उ०—तदी रजपूत बोल्या—कहै—महाराज पांचां रौ रुजगार अखेला खाए है जी (को) कीसै काम आवैगा। अणां री परीख्या तौ लीजै।—पंचमार री वात

परीचणौ—सं०पु [देशज] रहट के चक्र की बीच की लकड़ी को रोकने व सहारा देने वाला एक लकड़ी का लट्ठा।

रू०भे०—परीसणौ, पलीचणौ, पलीसणौ।

परीछण—देखो 'परीक्षक' (रू.भे.)

उ०—वेद सासित्र भेद विमळ परीछण गुणगीत पिंगळ। चवद विदि आलहण चात्रिम रहावण कुळ रीति।—ल.पि.

परीछणौ, परीछबौ—देखो 'परखणौ, परखबौ' (रू.भे.)

उ०—१ चखां उदै विलासदास यों हुलास चीत में। परीछ जानकी अनंद रांमचंद प्रीत में।—रा.रू.

उ०—२ सकळ ही परिवार, हेता दियइ अपार। पाल्हणसी परीछा-यउ, दरीछइ नहीं गंवार।—अ. वचनिका

उ०—३ पेसखांना वाळी वात परीछइ, आगा लगइ करण आरास। दळ वादळ तांणिया दुवाहै, फारक ईसर तणा फरास।—महादेव पारवती री वेलि

परीछणहार, हारौ (हारी), परीछणियौ—वि०।

परीछिग्रोड़ौ, परीछियोड़ौ, परीछयोड़ौ—भू०का०कृ०।

परीछीजणौ, परीछीजबौ—कर्म वा०।

परीछत—देखो 'परीक्षित' (रू.भे.)

उ०—विच पेट परीछत मीच बचाय'र थेट हरीजन थापिया।—र.ज.प्र.

परीछाणौ, परीछाबौ—देखो 'परखाणौ, परखाबौ' (रू.भे.)

परीछाणहार, हारौ (हारी), परीछाणियौ—वि०।

परीछायोड़ौ—भू०का०कृ०।

परीछाईजणौ, परीछाईजबौ—कर्म वा०।

परीछायोड़ौ—देखो 'परखायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० परीछायोड़ी)

परीछावणौ, परीछावबौ—देखो 'परखाणौ, परखाबौ' (रू.भे.)

परीछावियोड़ौ—देखो 'परखायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० परीछावियोड़ी)

परीछियोड़ौ—देखो 'परखियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० परीछियोड़ी)

परीणत—देखो 'परिणति' (रू.भे.)

उ०—परीणत स्वास उसास प्रभाव। प्रिया प्रिय पास पलोटत पाव।—ऊ.का.

परीत—देखो 'प्रीति' (रू.भे.)

उ०—बिरखा हुवा अर तावड़िया रौ तोटौ भुगतणौ पड़ै अर पंछी जिनावरां सूं मोह परीत है।—फुलवाड़ी

परीतौ-सं०पु० [देशज] रहट का एक उपकरण जिसमें डोरा लपेटने के समय का ज्ञान होता है।

वि०वि०—देखो 'डोरौ' ६।

परीतोस—देखो 'परितोस' (रू.भे.)

परीवार—देखो 'परिवार' (रू.भे.)

परीब्रम्म—देखो 'परब्रह्म' (रू.भे.)

उ०—सीता रमा सोय, कीजै सम कोय। भाखौ परीब्रम्म, राघौ महारंभ।—र.ज.प्र.

परीमग-सं०पु० [फा० परी+सं० मार्ग] आकाश, आसमान (नां.मा.)

परीमीड-सं०पु० [?] एक प्रकार का व्यंजन। उ०—घेवर, ससिवदन, सुंहाली, घ्रतवणी, घारड़ी, पतास, फीणी, दहीथरां, तिलसांकळी, फाफड़ा, पुरी, गुंझा, गुंद-बड़ा, परीमीडां, घूघरी, गुलपापड़ी, गुद-पाक।—व.स.

परीयचि—देखो 'परियछ' (रू.भे.)। उ०—अर मंत्र पढै छै। बीचि थै परीयचि खांचि ल्यै छै।—वेलि टी.

परीयच्चय-सं०पु०—आंचल। उ०—तरुणि पुंणोव गहियं परीयचय मितरेण पिउ दिट्ठं। कारण कवण सयाणे दीपक्को धुणए सीसं।—ढो.मा.

परिग्रछ, परीयछ, परीयछि-सं०स्त्री०—१ पर्दा। उ०—१ परीयछ बंधावौ इहां, त्रिलोचना तुझ पुत्री जेह।—वि.कु.

उ०—२ जवनिका छै, परीयछि को नांम सु आडी दियां राजा के आगे पात्र आवै छै।—वेलि टी.

२ जाजम, बिछायत। उ०—मेघव ना उलच वांध्या छइ, परीयछ ढली छइ। केतकी ना गंध गहगहीया छइ।—कां.दे.प्र.

रू०भे०—परियचि, परेच।

परियणि—देखो 'परिजन' (रू.भे.)

उ०—कन्हडि बांधीउ सूयण लोक सहु सोग निवारीयउ। पहुतु सहुइ नीय नयरि परीयणी परिवारीय।—पं.पं.च.

परीवाडोदोस-सं०पु०—भोजन की पंक्ति में न बैठ कर उसका उल्लंघन कर के भोजन करने पर लगने वाला दोष (जैन)

परीवाद—देखो 'परिवाद' (रू.भे.)

परीवार—देखो 'परिवार' (रू.भे.)

उ०—अर गुजरात री अधीस विकळ थको परीवार सूं चंद्रहास लेतो ही आगै आय पड़ियो।—वं.भा.

परीवाह—देखो 'परिवाह' (रू.भे.)

परीवेस—देखो 'परिवेस' (रू.भे.)

परीसउ—देखो 'परिसह' (रू.भे.)

उ०—साधु परीसउ ते सह्यउ, आव्यउ उत्तम ध्यांन मुनिवर।
—स.कु.

परीसणो—देखो 'परीचणो' (रू.भे.)

परीसदा—देखो 'परिसद' (रू.भे.)

उ०—जब परीसदा वांदण नीकली, सुण आयो 'सुबाहु कुमारो रे।
—जयवांणी

परीसरम—देखो 'परिस्रम' (रू.भे.)

परीसह, परीसा—देखो 'परिसह' (रू.भे.)

उ०—१ जद स्वांमीजी कह्यो—परीसह कितरा ? जब ते बोल्या—परीसह बावीस।—भि.द्र.

उ०—२ कठिन सिला संथारि, सबल परीसा पुत्र तूं सहइ जा हो।
—स.कु.

परीसारो—देखो 'पुरसगारो' (रू.भे.)

उ०—१ जाहरां परीसारा-रो हुकम कियो। परीसारो हुवो।
—प्रतापमल देवड़ा री वात

उ०—२ परीसारा रो हुकम हुवो छै। सारै साथ नै सरव वसत रो परीसारो हुवै छै। पांच-पांच दस-दस इकलाळिया दांहदा भेळा बैठा छै। मनुहारां हुय रही छै।—रा.सा.सं.

परीसो—देखो 'परिसह' (अल्पा; रू.भे.)

उ०—आगे निरणी सांभलो जी सहे परीसो केम।—जयवांणी

परुतसार-सं०पु०—एक पौराणिक राजा।

उ०—भूप परुत सारसा, जग आरंभ कर का। कोट-कोट दुज एक को दिय दांन मोहर का।—दुरगादत्त बारहठ

परुस-वि० [सं० परुष] १ कठोर, कड़ा।

उ०—परुस चीकणी चुट्ट, पड़ै डागळियां पक्कां। सुद्ध पाधरी पड़ी, जकी सिगळी बिन टक्कां।—दसदेव

२ बांण, तीर।

परुसगारो—देखो 'पुरसगारो' (रू.भे.)

(स्त्री० परुसगारी)

परुसणो, परुसबो—देखो 'पुरसणो, पुरसबो' (रू.भे.)

परुसता-सं०स्त्री० [सं० परुषता] कठोरता, कड़ाई।

उ०—मिथ्यामत रज दूर मिटावइ, प्रगटइ सुरुचि सुगंध। अरुचि परुसता प्रगट न होवइ, करुणा रस स्रवइ सुबंध।—वि.कु.

परुसियोड़ो—देखो 'पुरसियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० परुसियोड़ी)

परुहूत-सं०पु०—देखो 'पुरुहूत' (ना.डिं.को.)

परूण—देखो 'पुरण' (रू.भे.)

परूपणया, परूपणा—देखो 'प्ररूपणा' (रू.भे.)

परूपणो, परूपबो—देखो 'प्ररूपणो प्ररूपबो' (रू.भे.)

उ०—१ सांमायिक पोसह पड़िकमणो, देव-पूजा गुरु सेव जी। पुण्य तणा ए भेद परूप्या, अरिहंत वीतराग देव जी।—स.कु.

उ०—२ स्वांमीजी और तो स्रद्धा आचार चोखा परूप्या, पिण नदी उतरया धरम या बात तो स्वांमीजी पिण खोटी परूपी।—भि.द्र.

परूपियोड़ो—देखो 'प्ररूपियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० परूपियोड़ी)

परूवणया, परूवणा—देखो 'प्ररूपणा' (रू.भे.)

परूवणो, परूवबो—देखो 'प्ररूपणो, प्ररूपबो' (रू.भे.)

उ०—काचा पांणी में अपकाय रा असंख्याता जीव अनै नीलण रा अनंता जीव चोथा, छठा, तेरमा गुण ठांणा वाला सरव सरधे परूवै पण फरसणा में फेर।—भि.द्र.

परूसगारो—देखो 'पुरसगारो' (रू.भे.)

उ०—और भींतर तो परूसगारो हुवै। होळै-होळै चोख सूं जीमै। चाकर लोगां रा कटोरा भरणे नूं हुकम हुवो।
—सूरै खींवे कांधळोत री वात

परूसगारो—देखो 'पुरसगारो' (रू.भे.)

उ०—तिसै जोगेसर नै पिण आपरी पाखती बैसांण्यो। पतर मांहै परूसगारो कियो। मनुहारै मनुहारां जीमिया।
—जगमाल मालावत री वात

परुसणो, परुसबो—देखो 'पुरसणो, पुरसबो' (रू.भे.)

उ०—चेली चोळां में मन मोळां में रोळां में रूठंदा है। पकवांन परूसै रळपट रूसै, फरगट सुख फेंकंदा है।—ऊ.का.

परूसणहार, हारो (हारी), परूसणियो—वि०।

परूसिग्रोड़ो, परूसियोड़ो, परूस्योड़ो—भू०का०कृ०।

परूसीजणो, परूसीजबो—कर्म वा०।

परूसारो—देखो 'पुरसगारो' (रू.भे.)

परूसो-सं०पु०—वह भोजन जो किसी आमन्त्रित व्यक्ति के जीमने न आने पर उसके यहां परोस कर भेजा जाता है।
मि०—कांसी।

परूसाणी, परूसावी—देखो 'पुरसाणी, पुरसावी' (रू.भे.)
उ०—जिमावै जिके भावता भोग जांणि, परूसावै जसोदा जिमै चक्रपाणी। अरोगे अघायै कियौ आचमन्न, कपूरी ग्रहे पान बीड़ा क्रसन्न।
—ना.द.
परूसाणहार, हारौ (हारी), परूसाणियौ—वि०।
परूसायोड़ौ—भू०का०कृ०।
परूसाईजणौ, परूसाईजबौ—कर्म वा०।

परूसायोड़ौ—देखो 'पुरसायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० परूसायोड़ी)

परूसारौ—देखो 'पुरसगारौ' (रू.भे.)
उ०—आदमी ४०० चाकर-बाकर बीजा सड़ा मांहे बैसांणिया। भली-भांति परूसारौ किया नै दारू पावता गया।—नैणसी

परूसावणौ, परूसावबौ—देखो 'पुरसाणौ, पुरसावौ' (रू.भे.)
परूसावणहार, हारौ (हारी), परूसावणियौ—वि०।
परूसाविओड़ौ, परूसावियोड़ौ, परूसाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।
परूसावीजणौ, परूसावीजबौ—कर्म वा०।

परूसावियोड़ौ—देखो 'पुरसायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० परूसावियोड़ी)

परूसियोड़ौ—देखो 'पुरसियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० परूसियोड़ी)

परेंडौ—देखो 'परींडौ' (रू.भे.)

परे-अव्य०—१ भांति, तरह। उ०—नेम तणी परे छोडी रिद्ध। जग में सुजस हुवौ परसिद्ध।—ऐ.जै.का.सं.
२ दूर।
३ देखो 'परं' (रू.भे.)

परेख—१ देखो 'परीक्षा' (रू.भे.)
उ०—मर मर थाका जरमनी, लिख थाको चित्रलेख। तोइ न थाकी ताहरी, 'पातल' रूक परेख।—किसोरदांन बारहठ
२ कील, मेख।

परेखणौ, परेखबौ—देखो 'परखणौ, परखबौ' (रू.भे.)
उ०—भूमि परेखौ हो नरां, कहा परेखौ व्यंद। भुयं विन भला न नीपजे, कण त्रण, तुरी नरिंद।—जखड़ा-मुखड़ा भाटी री वात
परेखणहार, हारौ (हारी), परेखणियौ—वि०।
परेखिओड़ौ, परेखियोड़ौ, परेख्योड़ौ—भू०का०कृ०।
परेखीजणौ, परेखीजबौ—कर्म वा०।

परेखियोड़ौ—देखो 'परखियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० परेखियोड़ी)

परेग-सं०स्त्री० [अं० पिग] मेख, कील।

परेच—देखो 'परीयछ' (रू.भे.) उ०—तिका पावड़ी बैठी थी तठै चाली चाली आई। परेच आडी खंचाई नै जांवोती कह्यौ।
—जगदेव पंवार री वात

परेज—देखो 'परहेज' (रू.भे.)

परेजगार—देखो 'परहेजगार' (रू.भे.)

परेट, परेड-सं०स्त्री० [अं० परेड] कवायद, परेड।

परेत—देखो 'प्रेत' (रू.भे.)
उ०—मड़ियौ कुड़ियौ मेर, संग सड़ियौ न सुहावै। पड़ियौ रहै परेत, दैत ज्यूं दांत दिखावै।—ऊ.का.

परेतकरम—देखो 'प्रेतकरम' (रू.भे.)

परेतपत, परेतपति, परेतपती—देखो 'प्रेतपति' (रू.भे.)
उ०—नरसिंहदेव नूं छिन्न-भिन्न होइ पड़तौ देखि कहौ—जवनां नूं परेतपति री पुरी पांहुणा करि ऊहीज उतमंग आंणि।—वं.भा.

परेम-सं०स्त्री० [सं० परिमल] १ सुगन्ध, सुवास।
२ देखो 'प्रेम' (रू.भे.)

परेमी—देखो 'प्रेमी' (रू.भे.)

परेरउ-वि०—१ पराया, दूसरे का। उ०—साहिब कच्छ न जाइयइ, तिहां परेरउ ढ्रंग। मीमळ नयण सुवंक घण, भूलउ जाइसि संग।
—ढो.मा.
२ देखो 'परं' (रू.भे.)

परेरणा—देखो 'प्रेरणा' (रू.भे.)

परेली-सं०पु०—ताण्डव नृत्य का प्रथम भेद जिसमें अंग-संचालन अधिक और अभिनय थोड़ा होता है।

परेवौ—१ देखो 'पारेवौ' (रू.भे.)
उ०—२ गाढे-राव वारंगां वरेवा उभै पाखां गिरै, लाखां साखा-भ्रगा नै हरेवा खेध लागा। जिके कांन रंध्रां हुवै नीसरै करेवा जंगां, महा-कूप हूंतां जू परेवा गैण माग।—र.रू.
(स्त्री० परेवी)

परेस—देखो 'प्रेस' (रू.भे.)

परेसतौ—देखो 'फरिस्तौ' (रू.भे.)

परेसांन-वि० [फा० परेशान] व्यग्र, उद्विग्न, व्याकुल, हैरान।
उ०—तद आदमी एक ठावौ मेल गढ में कहायौ—बादसाह जबरन सूं म्हांनूं आंख्यां अदीठ कीन्हा छै, सो साथ लेय सांच कूड़ कर अठै दिन काढण नूं आया छां। ओ थांरौ मुलक छै। खावौ पीवौ। जैसी कीन्ही तैसी पाई। परेसांन था तिकां खरच पायौ।
—जलाल बूबना री बात

परेसांनी-सं०स्त्री० [फा० परेशानी] उद्विग्नता, व्याकुलता, व्यग्रता।

परैं, परै-सं०पु०—१ प्रकार, तरह, भांति। उ०—१ हिव वरतंत सुणौ सहु, आदरवंत अचूक। सेठ तिहां ठग नी परै, पड़ियौ पाड़े कूक।—वि.कु.
उ०—२ सुख विलसतां तेम, निसि भरि कुमर इसी परै। एक दिन

चितें एम, तरुण थयो हूं हिव सही ।—वि.कु.
२ सामने वाला दूसरा पार्श्व, दूसरी ओर, दूसरी तरफ ।
उ०—सांगज सोवरणांह, तैं वाही 'परतापसी' । जो बादळ किरणांह, परै प्रगट्टो कुंजरो ।—सूरायच टापरियो
अव्य० [सं० पर] १ उस ओर, उधर । उ०—आद रु अंत मध्य नहिं मेरे, नहीं उरै परै मेरीं सुरता ।—स्री हरिरांमजी महाराज
२ ऊपर, पर । उ०—सिंघ सरिस रायसिंघ रै, रहियौ भूंभै रांम । आडो सरवहियो अच्छै, कळह तणो धरि कांम । कांम संग्रांम चो रांम नां यह करै, पहै गिरनारि जे पडू मोटा परै ।—हा.झा.
३ दूर । उ०—१ तदि राव सेखेजी कहायो—'गड अठै मती घालज्यो, परै जांगळू री हद में घातो' ।—द.दा.
उ०—२ रुकमण या त्यो ये सूंठ-अजवांण, ऐ भी तो लेवो जी करड़ा खोपरा । हर जी परै ए वगावो सूंठ अजवांण, वगड़ विखेरो जी करड़ा खोपरा ।—लो.गी.
रू०भे०—परइ ।

परंज—देखो 'परहेज' (रू.भे.)

परैरो-वि० (स्त्री० परैरी) दूर, अति दूर ।
उ०—तद राव सेखे नूं जाय पूछियो । कसो म्हांनै कोई वसण नूं जागा बतावो । तद सेखे कह्यो—परैरी सी मांडो जागां । तद इंयां कह्यो—परा तो म्है नहीं जावां ।—नैणसी

परैसूं-अव्य० [सं० पर+रा. प्र. सूं] उस ओर से, दूसरी ओर से ।
उ०—सू ऐ ठहै गया वा परैसूं निबाव साथ कर सामा आयो । तठै वेढ हुई ।—द.दा.

परोंणी—देखो 'परांणी' (रू.भे.)

परोंस-सं०स्त्री० [देशज] फसल या घास काटते समय एक साथ व एक बार में काटने के लिए लिया हुआ भाग ।

परोक्ष-सं०पु० [सं०] १ अनुपस्थिति ।
२ अभाव ।
३ छिपाव ।

परोजन-सं०पु० [देशज] १ अग्रवाल जाति में पहला पुत्र उत्पन्न होने पर अदा किया जाने वाला एक संस्कार (मा.म.)
२ देखो 'प्रयोजन' (रू.भे.)

परोजो—देखो 'फिरोजो' (रू.भे.)
उ०—प्रघळ परोजा नीलवी, मुक्ताफळ ता मांहि । लसंत हसत से लसणिया, सोभा कही न जाहि ।—गजउद्धार

परोटणो, परोटबो-क्रि०स० [देशज] १ उपभोग करना, इस्तेमाल करना ।
उ०—वो हार नै फेर धकै करतो कैवण लागो—म्हैं लाधोड़ी चीज नै म्हारै वास्तै नीं परोटणी चावूं ।—फुलवाड़ी
२ निभाना ।
३ सम्हालना ।
४ सुधारना ।
५ देखभाल करना, हिफाजत करना ।
परोटणहार, हारो (हारी), परोटणियो—वि० ।
परोटिओड़ो, परोटियोड़ो, परोटयोड़ो—भू०का०कृ० ।
परोटीजणो, परोटीजबो—कर्म वा० ।

परोटियोड़ो-भू०का०कृ०—१ उपभोग या इस्तेमाल किया हुआ ।
२ निभाया हुआ ।
३ सम्हाला हुआ ।
४ सुधारा हुआ ।
५ देखभाल या हिफाजत किया हुआ ।
(स्त्री० परोटियोड़ी)

परोणियो—देखो 'परांणी' (अल्पा., रू.भे.)

परोत्तर—देखो 'प्रत्युत्तर' (रू.भे.)
उ०—उत्तर परोत्तर किया घणा रे, बाप बेटा नै माय ।
—जयवांणी

परोपंखी-सं०पु०—वह घोड़ा जिसका रंग काला और नीले रंग का हो या भस्म के रंग का । इसे अशुभ मानते हैं (शा.हो.)

परोपकार-सं०पु० [सं०] दूसरों के हित का कार्य, दूसरे की भलाई ।
रू०भे०—परउपकार, परउपगार, पराउपगार, परोपगार ।

परोपकारक-सं०पु० [सं०] दूसरे का भला करने वाला, दूसरे का हितैषी ।
रू०भे०—परउपकारक, परउपगारक, परोपगारक ।

परोपकारी-सं०पु० [सं० परोपकारिन्] (स्त्री० परोपकारण, परोपकारिणी) दूसरे का भला करने वाला ।
रू०भे०—परउपकारी, परउपगारी, परोपगारी ।

परोपगार—देखो 'परोपकार' (रू.भे.)

परोपगारक—देखो 'परोपकारक' (रू.भे.)

परोपगारी—देखो 'परोपकारी (रू.भे.)
(स्त्री० परोपगारण, परोपगारणी)

परोफेसर—देखो 'प्रोफेसर' (रू.भे.)

परोसगारो—देखो 'पुरसगारो' (रू.भे.)

परोसगारी—देखो 'पुरसगारी' (रू.भे.)

परोसणो, परोसबो—देखो 'पुरसणो, पुरसबो' (रू.भे.)
उ०—खीर खांड री थनै थाळ परोसूं, थारी सोने चांच मंढाऊं रे ! कागा, कद म्हारो मारूजी घर आवै ।—लो.गी.
परोसणहार, हारो (हारी), परोसणियो—वि० ।
परोसाड़णो, परोसाड़बो, परोसाणो, परोसाबो, परोसावणो, परोसावबो —प्रे०रू० ।
परोसिओड़ो, परोसियोड़ो, परोस्योड़ो—भू०का०कृ० ।
परोसीजणो, परोसीजबो—कर्म वा० ।

परोसियोड़ो—देखो 'पुरसियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० परोसियोड़ी)

परोहन-सं०पु० [सं० प्ररोहणं] १ नाव, नौका ।

उ०—विड परोहन सिंधु जळ, भव सागर संसार। रांम बिनां सूझै नहीं, दादू खेवणहार।—दादूवांणी

२ वह वस्तु जिस पर सवार होकर यात्रा की जाय।

परी–वि० (स्त्री० परी) निश्चय एवं पूर्णतावोधक शब्द जो सदैव क्रिया से संबंधित रहता है। उ०—१ राती वाही भाटिए देश री विचार कियो, सु भाटी नरसिंघदास देवीदासोत परो काढियो थो। —नैणसी

उ०—२ चपळा गत चूंवीह, परो गई अपछर परै। भ्राय आंगण ऊभीह, कमळादे नर वेखियां।—पा.प्र.

सं०पु० (स्त्री० परी) १ मृत पूर्वजों में वह व्यक्ति जो देव मान कर कुटुम्बियों द्वारा पूजा जाता है।

वि०वि०—यह एक प्रचलित अंध विश्वास है कि मृत पूर्वज पुरखा उसी परिवार के सदस्यों में किसी एक को या सब को नाना विध दैहिक एवं दैनिक कष्ट देता है। इस कष्ट से भयभीत होकर परिवार के सदस्य उसे देव मान कर पूजते हैं।

२ पितर।

रू०भे०—परहो।

परयाय–सं०पु० [सं० पर्याय] १ द्रव्य और गुणों में रहने वाली अवस्था (जैन) उ०—म्है ढोला पड़ गया हां तो ही मांनां एक दांणा में च्यार परयाय च्यार प्रांण ते खुवाया पुण्य किम हुसी। —भि.द्र.

२ ऐसे शब्द जो सदैव परस्पर एक ही पदार्थ, जाति, गुण, व्यक्ति और भाव का बोध कराते हों। समानार्थक शब्द।

रू०भे०—परयाय, परियाय।

परयूसण—देखो 'परयूसण' (रू.भे.)

उ०—भलइ आये परयूसण परव री, भलइ आये।—स.कु.

पलंक—देखो 'पलंग' (रू.भे.)

उ०—उचाट काट नो निराट, पाट ओढणी नहीं। बिलोक वंक लंक दे पलंक पोढणी नहीं।—ऊ.का.

पलंकसा–सं०स्त्री० [सं० पलंकषा] १ लाख, लाक्षा (डि.को.)

२ गूगल (डि.को.)

३ गोखरू।

पलंग—१ देखो 'पल्यंक' (रू.भे.)

उ०—हे ओरा तो मांय ए जच्चा रांणी रे, हे! ओवरो ए जठै रातो सो पलंग बिछाय म्हांनै घणी ए सुहावै जच्चा पीपळी। —लो.गी.

क्रि०प्र०—ढाळणो, बिछाणो।

मुहा०—१ पलंग पकड़णो—बीमार होकर बिस्तरे पर पड़ जाना।

२ पलंग तोड़णो—विना कोई काम किए सोए रहना, निठल्ला रहना।

२ प्लव गति। उ०—नूत पलंग रुच लावै नूपुर। उरप तिरप जंग बाजी ऊपर।—सू.प्र.

३ एक प्रकार का शुभ रंग का घोड़ा (शा.हो.)

पलंगतोड़–वि०—निकम्मा, निठल्ला।

सं०स्त्री०—एक औषधि विशेष। इसका प्रयोग स्तम्भन हेतु किया जाता है।

पलंगपोस–सं०पु० [सं० पल्यंक+फा० पोस] पलंग पर बिछाने की चादर।

पलंगि—देखो 'पल्यंक' (रू.भे.)

उ०—तूठै हार अपार तुरंगम, पहुतटि मांग अनंग पढ़ी। कमधज 'रतनै' स्यूं विसकांमणि, चाचरि चवरंग पलंगि चढ़ी। —रतनसिंघ राठौड़ री वेलि

पलंडु—देखो 'पलांडु' (रू.भे.)

पलंब—१ देखो 'प्लवंग' (रू.भे.)

उ०—डांणां किरि पात पलंब डहै। वाजिद्रक वेग विवांण वहै। —गु.रू.बं.

२ देखो 'प्रलंब' (रू.भे.)

उ०—हेक दिन पलंब नुं आगळी हारियो। मुकंद मामो भलो मथुरा मां मारियो।—पी.ग्रं.

पलंवग—देखो 'प्लवंग' (रू.भे.) (ह.नां.मा.)

पळ, पल–सं०पु० [सं० पल] १ मांस।

उ०—पळ आस उरध ढक गिरध पंख। सर तीर पूर रव नर असंख। —रा.रू.

२ समय का एक बहुत प्राचीन विभाग जो २४ सेकिण्ड के बराबर होता है। उ०—पल-पल में कर प्यार, पल-पल में पलटै परा। वे मतळव रा यार, रहे न छांनां राजिया। —किरपारांम

रू०भे०—पल्ल, पिल्ल, पुलक, प्रल।

सं०स्त्री० [सं० पलक] ३ आंखों की पलक, दृगंचल।

मुहा०—१ पल उगाड़णी—आँखें खोलना।

२ पल झपणी—नींद आना, सोना।

३ पल मारणी—बहुत जल्दी करना।

४ पल लागणी—नींद आना, सोना।

रू०भे०—पल्ल।

पलक–सं०स्त्री० [सं० पल+क] १ क्षण, पल।

उ०—१ पलक निमिक मत पांतरै। दाखै दीनदयाळ।—ह.र.

उ०—२ प्यारा थांसूं पलक ही, वांछूं नहीं वियोग। उर वसिया मुहि आवज्यो, रसिया थांरो रोग।—ऊ.का.

मुहा०—१ पलकदरिया—बड़ा दानी, उदार।

२ पलकनिवाज—शीघ्र प्रसन्न होने वाला।

२ आंख के ऊपर का चमड़े का परदा।

उ०—१ वरमाळा लै कंठि वणावै। पलक खुली तद त्रिया न पावै। —सू.प्र.

उ०—२ सासा सणकावै नासा निरतावै। जीता मरिया जुग भिभरो भररावै। पल पल पलकां सूं पड़ता परनाळा। मोटा मूंगां री होठां में माळा।—ऊ.का.

मुहा०—१ पलक उगड़णी—आंख खुलना।

२ पलक झंपणी—बहुत कम समय, थोड़ा सा सोना।

३ पलक पसीजणी—आंखों में आंसू आना।

४ पलक बिछाणी—अत्यन्त प्रेम से स्वागत करना।

५ पलक मारणी—अति शीघ्र, आंखों से इशारे करना।

६ पलक लगणी—नींद लेना, सोना।

७ पलकां में काढ़णी—बिल्कुल न सोना।

३ चमक, दमक।

४ पाडल नामक वृक्ष (अ०मा०)

रू०भे०—पलक्क।

पळकणो, पळकबो, पलकणो, पलकबो–क्रि०अ० [देशज] चमकना, टिमकना।

उ०—भंवरियो फुरणी में भंवराळो भळकै। पाचर वहती रा पसवाड़ा पळकै।—ऊ.का.

पळकणहार, हारो (हारी), पळकणियो—वि०

पळकिओड़ो, पळकियोड़ो, पळक्योड़ो—भू०का०कृ०

पळकीजणो, पळकीजबो—भाव०वा०

पळकाणो, पळकाबो, पलकाणो, पलकाबो–क्रि०स० [देशज] चमकाना, टिमकाना।

उ०—खोटी खोडी रा गोळा गळगाता। पीळी कोडी रा डोळा पळकाता।—ऊ.का.

पळकाणहार, हारो (हारी), पळकाणियो—वि०।

पळकायोड़ो—भू०का०कृ०।

पळकाईजणो, पळकाईजबो—कर्म०वा०।

पळकायोड़ो–भू०का०कृ०—चमकाया हुआ।

(स्त्री० पळकायोड़ी)

पलकारणो, पलकारबो–क्रि०स०—टपकाना, गिराना।

उ०—लोरां लै लूरां मोरां ललकारै। पांसू पड़ियोड़ा आंसू पलकारै।—ऊ.का.

पलकारणहार, हारो (हारी), पलकारणियो—वि०।

पलकारिओड़ो, पलकारियोड़ो, पलकार्‌योड़ो—भू०का०कृ०।

पलकारीजणो, पलकारीजबो—कर्म वा०।

पलकारियोड़ो—टपकाया हुआ, गिराया हुआ।

(स्त्री० पलकारियोड़ी)

पळकाळ—देखो 'परकार' (रू.भे.)

पळकावणो, पळकावबो—देखो 'पळकाणो, पळकाबो' (रू.भे.)

पळकावणहार, हारो (हारी), पळकावणियो—वि०।

पळकाविओड़ो, पळकावियोड़ो, पळकाव्योड़ो—भू०का०कृ०।

पळकावीजणो, पळकावीजबो—कर्म वा०।

पळकावियोड़ो—देखो 'पळकायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० पळकावियोड़ी)

पळकियोड़ो–भू०का०कृ०—चमका हुआ।

(स्त्री० पळकियोड़ी)

पळको–सं०पु० [देशज] चमक।

उ०—घणस्यांम सरूप अनूप घणो रे। तड़ता पळको पटपीत तणो रे।—र.ज.प्र.

पलक्क—देखो 'पलक' (रू.भे.)

उ०—आवधां छाकिया झड़ै, पलक्कां अंबाळा आवै। रवताळा पैला झोक खावै आकारीठ।—उमेदसी सांदू

पलखद्वीप–सं०पु० [सं० प्लक्ष द्वीप] पुराणानुसार पृथ्वी के सात बड़े खण्डों में से एक।

पळगांग–सं०पु०—पक्षी।

पलड़ो–सं०पु०—१ तराजू का पल्ला, तुलापट।

२ झूला का मंच जिस पर बैठ कर झोंका खाया जाता है।

रू०भे०—पालड़ो।

मह०—पल्लड़।

पळचर, पळचार, पळचारी, पळचारो, पळच्चर–सं०पु० [सं०पल+चर]

१ मांसाहारी पक्षी या पशु।

उ०—१ खुलत रिख नयण सुण पंख पळचर खरर।—र.ज.प्र.

उ०—२ गिळ धापै पळचर मंस गाळ। खळकिया घण रुधराळ खाळ।—सू.प्र.

उ०—३ गळ भार लिये पळचार ग्रीध। पतधार सगत भर रुधर पीध।—वि.सं.

उ०—४ पळचार आस पूरूं प्रगट, चित उछाह इसड़ो चहै।—सू.प्र.

उ०—५ नीहसांण दहूं दिस नीधसियं। हरखं पळचारी मनै हसियं।—पा.प्र.

रू०भे०—पळळचर।

२ राजपूतों की कथाओं में वर्णित रक्तप्रिय एक देवता।

उ०—१ पळचार हूर अच्छर सकळ, भूत प्रेत जंगमजती। नर नाग देव यम उच्चरत, जुध जीत्यो पद्धरपती।—ला.रा.

उ०—२ पळच्चर साकणि डाकणि प्रेत। खुधावंत भक्ख लिए रण खेत।—वचनिका

रू०भे०—पळांचार।

पलट–सं०स्त्री०[देशज] १ धोती की वह पलट जो कमर पर रहती है, अंटी।

उ०—अर बीजो खींवै री पलट माहे मींगणी मूकै अर इंडी लै।—चौबोली

२ धोती को घुटनों से ऊपर लेकर व कमर में टांग कर बनाया गया झोला।

पलटण-सं०स्त्री० [ग्रं० बटालियन, फा० बटेलन] १ पैदल सेना का वह विभाग जिसमें दो या अधिक कंपनियां अर्थात् २०० के लगभग सैनिक होते हैं।

उ०—कायमखां कपतांन से करि बातें चव्वी। सेख इनायत खांन के भुज पलटण छव्वी।—ला.रा.

२ दल, समुदाय, झुण्ड।

रू०भे०—पलट्टण, पल्टण, पल्टन।

पलटणो, पलटबो-क्रि०ग्र० [सं० प्रलोठन, प्रा० पलोठन] १ किसी वस्तु की स्थिति बदल जाना, उलट जाना।

२ मुकरना, कह कर नट जाना।

उ०—पलटियो नहीं ग्रहियां पलो, सत हरचंद विरदां सघे।—सू.प्र.

३ छूट जाना, ग्रधिकार से हट जाना।

उ०—१ वैर महीं तोटो वसै, वसै नफो नह 'बंक'। सिया विरह राघव सह्यो, रावण पलटी लंक।—बां.दा.

उ०—२ तात मात मोमाळ तक, सूरां साख संसार। पलटै गढ़ ऊभा पगां, (म्हारो) लाजे पीहर लार।—लछमीदांन बारहठ

४ रुख बदलना, विरुद्ध होना।

उ०—१ मैं कीधो तूं मीत, जोए लाखां में 'जसा'। पलटै क्यूं हिव मीत, पलटयां सोभ न पाइजै।—जसराज

उ०—२ पल-पल में कर प्यार, पल-पल में पलटै परा। ऐ मतलब रा यार, रहै न छांना राजिया।—किरपाराम

५ लौटना, वापिस होना।

उ०—फळ ग्रंगूर देखि द्रग फाटा, ताटा ऊंचा ताय। पलटी लूंकी देय पळाटा, खाटा ऐ कुंण खाय।—ऊ.का.

६ ग्रवस्था या दशा बदलना।

७ किसी वस्तु को बदलना।

उ०—भरइ पलट्टइ भीभरइ, भीभरि भी पलटेहि। ढाढ़ी हाथ संदेसड़ा, घण विललंती देहि।—ढो मा.

८ किसी एक वस्तु के स्थान पर दूसरी वस्तु रखना।

९ किसी वस्तु की स्थिति बदल देना, ऊपर का नीचे या नीचे का ऊपर करना।

१० किसी वस्तु का रूप परिवर्तन कर देना।

उ०—विध विध ग्राभूखण जवाहर, लख वगसे जस सुद्रढ़ लियो। खिला सार पलटै ग्रंग सुकवि, कमंघ रुकमकर रुकम कियो।
—मांनजी लाळस

११ लौटाना या फेरना।

१२ घुमाना, मोड़ना।

पलटणहार, हारो (हारी), पलटणियो—वि०।

पलटवाड़णो, पलटवाड़बो, पलटवाणो, पलटवाबो, पलटवावणो, पलटवावबो—प्रे०रू०।

पलटाड़णो, पलटाड़बो, पलटाणो, पलटाबो, पलटावणो, पलटावबो —सक०रू०

पलटिग्रोड़ो, पलटियोड़ो, पलटयोड़ो—भू०का०कृ०।

पलटीजणो, पलटीजबो—भाव वा०, कर्म०वा०।

पलट्टणो, पलट्टबो, पालौटणो, पालौटबो—रू०भे०।

पलटाड़णो, पलटाड़बो—देखो 'पलटाणो, पलटाबो' (रू.भे.)

पलटाड़ियोड़ो—देखो 'पलटायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० पलटाड़ियोड़ी)

पलटाणो, पलटाबो-क्रि०स० [पलटणो क्रि.काप्रे.रू.] १ किसी वस्तु की स्थिति बदलना, उलटवाना।

२ मुकरवाना, कहला कर नाही कराना।

३ ग्रदलाबदली कराना।

४ रुख बदलवाना।

५ लौटाना।

६ मुड़ाना, घुमाना।

७ ग्रवस्था या दशा बदलवाना।

८ किसी वस्तु को बदलवाना।

९ किसी एक के स्थान पर दूसरी वस्तु रखवाना।

१० किसी वस्तु का रूप परिवर्तन कराना।

पलटाणहार, हारो (हारी), पलटाणियो—वि०।

पलटायोड़ो—भू०का०कृ०।

पलटाईजणो, पलटाईजबो—कर्म वा०।

पलटायोड़ो-भू०का०कृ०—१ किसी वस्तु की स्थिति बदलवाया हुग्रा, उलटवाया हुग्रा।

२ मुकरवाया हुग्रा, कहला कर नाहीं कराया हुग्रा।

३ ग्रदला-बदली कराया हुग्रा।

४ रुख बदलवाया हुग्रा।

५ लौटाया हुग्रा।

६ मोड़ा हुग्रा, घुमाया हुग्रा।

७ ग्रवस्था या दशा बदलवाया हुग्रा।

८ किसी पदार्थ में बदलवाया हुग्रा।

९ किसी एक पदार्थ के स्थान पर दूसरा पदार्थ रखवाया हुग्रा।

१० किसी वस्तु का रूप-परिवर्तन कराया हुग्रा।

(स्त्री० पलटायोड़ी)

पलटाव-सं०पु०[देशज] परिवर्तन। उ०—कळजुग रौ मांनै कहर, बिजनस लागै वाव। रिखां कह्यो इण देह रो, परत करां पलटाव।
—मयाराम दरजी री बात

पलटावणो, पलटावबो—देखो 'पलटाणो, पलटाबो' (रू.भे.)

पलटावणहार, हारो (हारी), पलटावणियो—वि०।

पलटाविग्रोड़ो, पलटावियोड़ो, पलटाव्योड़ो—भू०का०कृ०।

पलटावीजणो, पलटावीजबो—कर्म वा०।

पलटावियोड़ो—देखो 'पलटायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० पलटावियोड़ी)

पलटियोड़ो-भू०का०कृ०—१ किसी पदार्थ की स्थिति बदला हुआ, उलटा हुआ।
२ मुकरा हुआ, कह कर नाहीं किया हुआ।
३ अदला-बदली किया हुआ।
रू०भे०—पलटियोड़ो।
४ रुख बदला हुआ।
५ लौटा हुआ, वापिस आया हुआ।
६ मुड़ा हुआ, घूमा हुआ।
७ अवस्था या दशा बदला हुआ।
८ किसी पदार्थ में बदला हुआ।
९ किसी एक पदार्थ के स्थान पर दूसरा पदार्थ रखा हुआ।
१० किसी वस्तु का रूप-परिवर्तन किया हुआ।
(स्त्री० पलटियोड़ी)

पलटी-सं०स्त्री० [सं० प्रलोठनम्] स्थानान्तर, बदली, ट्रांसफर।
उ०—रोकां तो किण विध रुकै, पलटी हुकमां पाय। उदयापुर निरधन हुवौ, 'दौलत' जयपुर जाय।—नाथूसिंह महियारियो
मह०—पलटौ।

पलटौ-सं०पु० [सं० प्रलोठन] १ परिवर्तन।
उ०—कवी कहै अबै जगत पर सम पलटौ खायौ। विसधर-व्याकरण सूं घरोह हुवौ।—वी.स.टी.
२ चक्कर, घुमाव।
३ प्रतिशोध, बदला।
४ लोहे का बड़ा खुरचना जो बड़ी कड़ाही में पकवान बनाते समय हिलाने के काम आता है।
५ देखो 'पलटी' (मह., रू.भे.)
रू०भे०—पल्टौ।

पलट्टण—देखो 'पलटण' (रू.भे.)
उ०—चूंड राव रिणमल्ल, राउ जोधौ रढरांमण। 'सूजौ', 'बाघौ', 'गंगेव', 'माल' गढ कोट पलट्टण।—गु.रू.बं.

पलट्टणौ, पलट्टबौ—देखो 'पलटणौ, पलटबौ' (रू.भे.)
उ०—१ वड चौक लोक संकत वहै, खांति रहै तह खट्टणं। दीपै नूर दरगाह में, आगम साह पलट्टणं।—रा.रू.
उ०—२ ऊभा 'कूंपै' मेड़तै न घटै. जेण किणी आघा, 'कूंपौ' पाडा मेड़तै पलट्टै मालकोट।—महेसदास कूंपावत री गीत

पलट्टियोड़ो—देखो 'पलटियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० पलट्टियोड़ी)

पळणौ—देखो 'पाळणौ', (रू.भे.)

पलणौ—देखो 'पालणौ' (रू.भे.)

पळणौ, पळबौ, पलणौ, पलबौ-क्रि०अ० [सं० पालनम्] १ परवरिश पाना, आश्रय पाना। उ०—१ चीतारंती चुगतियां, कुंझी-रोवहियांह। दुरा हुंता तउ पळइ, जऊ न मेल्है हियांह।—ढो.मा.
उ०—२ दांणा-पांणी री कीं जुगत कोनीं। मां होय नै म्हैं आपरा जाया नै पाळ नीं सकूं। आपरै आसरै लाखूं जीव पळै है।
—फुलवाड़ी
२ निभना, निभाया जाना। उ०—१ केई इम कहै, हिवड़ां पांचमों आरो है। पूरो साधोपणो पलै नहीं।—भि.द्र.
उ०—२ जद स्वांमीजी बोल्या—थांरा बचावणा रह्या, थें मारणोई छोडो। अंधारी रात्रि में किंवाड़ जड़ो हो। अनेक जीव मरै है। किंवाड़ जड़वा रा सूंस करो तो अनेक जीवां री दया पलै।—भी.द्र.
पळणहार, हारौ (हारी), पळणियौ—वि०।
पळवाड़णौ, पळवाड़बौ, पळवाणौ, पळवाबौ, पळवावणौ, पळवावबौ, पळाड़णौ पळाड़बौ, पळाणौ, पळाबौ, पळावणौ, पळावबौ—प्रे०रू०।
पळिओड़ो, पळियोड़ो, पळ्योड़ो—भू०का०कृ०।
पळीजणौ, पळीजबौ—भाव वा०।
पाळणौ, पाळबौ—सक० रू०।

पलणौ, पलबौ-क्रि०अ० [सं० पलायनम्] १ भागना, भाग जाना।
उ०—भाखर का पांणी ज्यूं बाटका दांणी ज्यूं छेह मती छाडी, थोड़ो सो मन करो गाडो, झालो वागां खड़ो, थोड़ा रहो झलीया पिण थांमें किसी दोस, थांके संगी पलिया।
—सुवारांम दरजी री वात
[सं० पल] २ अड़ना, डट जाना, डटना। उ०—पलतो कर हाकळ मांड पगं। विण छोत मिटै नह सूर वगं।—पा.प्र.
३ मिटना, मिट जाना। उ०—सैदा इदा सांमुहो, यों चढतां 'अभसाह'। 'हसनअली' उर हरखियो, सब दळ पलो सदाह।—रा.रू.
४ रोका जाना।
पलणहार, हारौ (हारी), पलणियौ—वि०।
पलवाड़णौ, पलवाड़बौ, पलवाणौ, पलवाबौ, पलवावणौ, पलवावबौ, पलाड़णौ, पलाड़बौ पलाणौ, पलाबौ, पलावणौ, पलावबौ—प्रे०रू०।
पलिओड़ो, पलियोड़ो, पल्योड़ो—भू०का०कृ०।
पलीजणौ, पलीजबौ—भाव वा०।
पालणौ, पालबौ।—सक.रू.

पलथी—देखो 'पालथी' (रू.भे.)

पळपळाट-सं०पु० [सं० पल्लवम्] १ चमचमाहट।
उ०—१ सामी बैठा लोगां रा मूंढा झाळ री लपटां सूं पळपळाट करै जांणै नाडी रा पांणी माथै सूरज री।—फुलवाड़ी
उ०—२ एक सिपाई खोखाळ में झांकियो तो सांमी हार पड़ियो पळपळाटा करै।—फुलवाड़ी
२ नटखटपन, चंचलता।
३ दुष्टता, नीचता।

पळपळाणौ, पळपळाबौ-क्रि०अ० [अनु०] १ चमचमाना, चमकना।
उ०—१ पळपळाता अणियाळा भाला नै राजा काळजै मारण सारू हाथ उठायो तो पाखती रा रूंख माथै बैठो टीलोड़ी कह्यो—राजा आप घाती महापापी।—फुलवाड़ी

उ०—२ पछै पळपळातो पाचणो सांमी करनै कैवण लागी—इण पाचणां सूं थारो काळजो चीरीजे ।—फुलवाड़ी

२ आभायुक्त होना ।

उ०—१ नायण रा डील माथै पळपळातो सोनो देखनै वांरै काळजै झाळ झाळ ऊठी ।—फुलवाड़ी

उ०—२ वो मन में जांणियो कै ओ पळपळातो हिरण अकेलो खावूं तो वात वणै ।—फुलवाड़ी

रू०भे०—पळपळावणौ, पळपळाववौ ।

पळपळायोड़ो—भू०का०कृ०—१ चमका हुआ, चमचमाट करता हुआ ।

२ आभायुक्त हुवा हुआ ।

(स्त्री० पळपळायोड़ी)

पळपळावणौ, पळपळाववौ—देखो 'पळपळाणौ, पळपळाबौ' (रू.भे.)

उ०—वादळा गाजण लाग्या। बीजळियां कड़कड़ाट करती पळपळावण लागी। मोटी-मोटी छांटां रो मेह ओसरियो ।

—फुलवाड़ी

पलवंग—देखो 'प्लवंग' (रू.भे.)

पळभक्षी, पळभच्छ—वि० [सं० पलम्+भक्षी] मांसाहारी ।

उ०—अकबर मैंगळ अच्छ मांझळ दळ घूमै मसत। पंचानन पळभच्छ, पटके छरा 'प्रतापसी' ।—दुरसौ आढौ

पलमावार—सं०पु० [?] हाथ का आभूषण ।

उ०—तरै जांवोती कपड़ा आछा पहिर पलमादार गुजराती गैहणा पहिरचा, रथ जूतरचो जलूसदार ।

—जगदेव पंवार री वात

पलमो—सं०पु०[देशज] भेद, रहस्य । उ०—एक जणो बोलियो—मालकां केई रो पलमो नहीं गुमावणो जोयीजै। धोती में सै नागा रैवै है ।

—वरसगांठ

पलल—सं०पु० [सं० पलम्] मांस (डिं.को)

पळळाट, पळळाटो—सं०पु०—चमक, चमचमाहट ।

उ०—रथ रा उण पळपळाटा में वांमणी नै एक अजीब ही झबको निगै आयो ।—फुलवाड़ी

पलवंग, पलवंगम—देखो 'प्लवंग' (रू भे.) (अ.मा., नां.मा. ह.नां.मा.)

पलव—वि० [सं० पलवम्] १ चंचल (अ.मा.)

२ देखो 'पल्लव' (रू.भे.)

उ०—ऊपरि पद-पलव पुनरभव ओपति। निमळ कमळ दळ ऊपरि नीर ।—वेलि

पलवकर—सं०पु० [सं० पल्लवकर] हाथ की अंगुली (अ.मा.)

पलवक्ष—सं०पु० [सं०] सिंह (अ.मा.)

पलवग—देखो 'प्लवग' (रू.भे.) (नां.मा.)

पलवट—सं०स्त्री०—कमर, कटि । उ०—१ भाला अणियां झळक जगी आगळ जांमकियां। सिंहरूप सांवळा फसी पलवट मैं रखियां ।

—पा.प्र.

उ०—२ ताहरां खींवें जांघीयो पहिरी पलवट कसि नै कायर चार पलट मांहि कसि नै पीपळ जाय चढीयो ।—चौबोली

पलवसु—सं०पु० [सं० पल्लवसू] नाखून (ह नां.मा.)

पलवाड़ो—सं०पु०—पीछे का भाग, पृष्ठ भाग ।

उ०—खूरम खरवै खळक निओठो। किरि पलवाड़ै सांड पईठो।

—गु रू.वं.

पलवेटणौ, पलवेटवौ

उ०—एक अट्टाळइ ऊतरइ, उंची-थिकी आवासि। पलइ वलइ पलवेडियां, मन सुद्धि माधव-पासि ।—मा.कां.प्र.

पळसेटी—क्रि०वि० [?] तेजी से, वेगपूर्वक ।

उ०—लूंकै वहतै हीज तरवार वाही। इसड़ी पळसेटी पसवाड़ै हुयनै वुही, धड़ सां माथो अळगो जाय पड़ियो ।—नैणसी

रू०भे०—पाळसेट ।

पलस्तर—सं०पु०—देखो 'पलास्टर' (रू.भे)

पलस्तरकारी—सं०स्त्री० [अं० प्लास्टर+सं०कारी] पलस्तर करने का कार्य या भाव ।

पळहारी—सं०पु० [सं० पल=मांस+आहारी] मांसाहारी ।

उ०—हेकठा हुआ बळि तणै हेत। पळहारी वेंतर भूत प्रेत ।

—गु रू.वं.

पलां—सं०स्त्री० [?] संगीत में बाजों के कुछ बोलों का क्रमबद्ध मिलान।

उ०—१ ढोलण ढोली सूं कहै, पलां उतावळ गाह। भीड़ै वाह दुवाह चर, भीड़ै नाह सनाह ।—वी.स.

उ०—२ ए ढोलण ढोली नूं कह इतरी ढोल री पलां (ढोल री पोह या गत) में इतरो क्यूं ताकीद करै। जोधार तौ आप रा वाह नैं चर चरवादार मालक रो घोड़ो सभै छै ।—वी.स.टी.

पळांचर—देखो 'पळचर' (रू.भे.)

उ०—घटा छाजै गैंघड़ा नगारां वाजै वीर-घोर, उठै पै तोखारां रजी मैं न है अछेह। 'चूंडा'-हरो ऊपटेस छोह तूंगे पळांचरा, माथै मारहठां वूठो लोह-धारां मेह ।—हुकमीचंद खिड़ियो

पलांडु—सं०पु० [सं०] प्याज ।

रू०भे०—पलंडु ।

पलांण—सं०पु० [सं० पल्ययनम्] १ ऊंट का चारजामा, ऊंट की जीन (मारवाड़)

उ०—ढोलउ करहउ सज कियउ, कसवी घाति पलांण। सोवन-बांनी घूघरा, चालण रइ परियांण ।—ढो.मा.

२ ऊंट पर बोझ लदने के लिए विशेष प्रकार की बनावट का चारजामा (शेखावाटी)

वि०वि०—देखो 'भारपलांण' ।

रू०भे०—पल्लांण, पल्हांण, पिलांण ।

अल्पा०—पलांणड़ो, पलांणियो, पलांणो, पिलांणड़ो, पिलांणियो :

३ कच्ची मिट्टी की दीवार को वर्षा के पानी से बचाने हेतु उस पर की जाने वाली घास-फूस की छाजन ।

पलांणड़ौ—देखो 'पलांण' (अल्पा; रू.भे.)

पलांणणौ, पलांणबौ-क्रि०स० [सं० पल्लयनम्] ऊंट पर चारजामा कसना, जीन कसना।

उ०—ढोलइ करह पलांणिया, सुंदरी सलूणी कज्ज। श्री मारुवणी सांम्हउ, म्हां उपराठउ अज्ज।—ढो.मा.

पलांणणहार, हारौ (हारी), पलांणणियौ—वि०

पलांणिओड़ौ, पलांणियोड़ौ, पलांण्योड़ौ—भू०का०कृ०

पलांणीजणौ, पलांणीजबौ—कर्म वा०

पल्लांणणौ, पल्लांणबौ, पल्हांणणौ, पल्हांणबौ, पिलांणणौ, पिलांणबौ —रू.भे.

पलांणियोड़ौ-भू०का०कृ०—जीन कसा हुआ (ऊंट) (स्त्री० पलांणियोड़ी)

पलांणियौ—१ अर्द्धवृत्ताकार एक प्रकार का उपकरण विशेष जो हल जोतते समय ऊंट की पीठ पर कसा जाता है, इसका दूसरा नाम 'कुंठाळियौ' भी है (शेखावाटी)

२ देखो 'पलांण' (अल्पा० रू.भे.)

पलांणी-सं०स्त्री०—देखो 'पलांण' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—सो आदमियां मांहां कर सांवत राय रै बरछी री दीवी सु पेट फाड़ पलांणी भांज घोड़े रा मौर भांज काछ में जावती मुड-हाथ नीसरी सो ऊपरै रौ ऊपरै सीझ गयौ।—पदमसिंह री वात

पळा—देखो 'वलाय' (रू.भे.)

पळा'—देखो 'पळास' (रू.भे.)

पला-सं०पु० [सं० पल्लव=कपड़े का छोर] (ब.व.) किसी वृद्ध पुरुष या स्त्री की मृत्यु पर रुदन करते हुए गाया जाने वाला शोकसूचक गायन।

क्रि०प्र०—लैणा।

[सं० पलायनम्] भागना।

उ०—मुख जोवइ दीवाघरी, पाछउ करहि पला-ह। मारू दीठी सास विण, मोटी मेल्हइ धाह।—ढो.मा.

पलाऊ-सं०पु० [देशज] रोकने वाला, मना करने वाला (शकुन)

उ०—अत मंगळ व्याव विनोद ओ ए। हुव सांण पलाउ ए केम हुए। —पा.प्र.

पळाक, पळाको-सं०पु० [देशज] चमक।

उ०—आज ई वेटो हट फेली के मा म्हनै काल सुणाई जिसी कोई चोखी सी कां'णी सुणा जिणमें तलवारां चमकै पळाक पळाक अर बंदूकां छूटै धड़ांम धड़ांम।—रातवासौ

पळाटौ-सं०पु० [?] चक्कर, फेरी ?

उ०—फळ अंगूर देखि द्रग फाटा, ताटा ऊंचा ताय। पलटी लूंकी देय पळाटा, खाटा ए कुण खाय।—ऊ.का.

पलाणौ, पलावौ-क्रि०अ० [सं० पलायनम्] भाग जाना।

उ०—जरा भणइ 'तउ मइं हिव साति। पहिलउं दांत करइं जि पलाति'।—चिहुंगति चउपई

पलाथी—देखो 'पालथी' (रू.भे.)

उ०—मार पलाथी मींट लगावै, करै गजब का फैल। लोग दिखाऊ अन-जळ त्याग्यौ, एक भखै वस पून।—डूंगजी जवारजी री पड़

पलाद-सं०पु० [सं०] मांसभक्षी, राक्षस।

उ०—कूप तिहां ते निरखि नै रे, जल पूरत ससुवाद। सहु निरयामक नै कहै रे, विरुग्री तेह पलाद।—वि.कु.

पलादार—देखो 'पल्लेदार' (रू.भे.)

उ०—क्यों कवांणा कूंडळां पार खड़ैक पखालां। पलादार धड़हड़ै अनळ खळहळै वडाळां।—बखतौ खिड़ियौ

पळापळ-सं०पु० [देशज] १ चमाचम करने की क्रिया।

उ०—१ अेक जंगी मतवाळा हाथी रै लारै लक्खी विणजारा रौ सोनल रथ पळापळ करतौ चालतौ हो।—फुलवाड़ी

२ उक्त क्रिया से होने वाला प्रकाश।

उ०—मन री उमंगां रै साथै गिगन में भुरजाळा बादळ ई गरजण लागा। पळापळ करती बीजळियां चिमकण लागी।—फुलवाड़ी

पलायणौ, पलायबौ-क्रि०अ० [सं० पलायनम्] भाग जाना।

उ०—जिण वळी मेर बिना माथै चहुवांण रा केही सिपाहां रा प्रांणां रौ संघात छुडायौ। इण रीति वीरां रौ संहार होतां प्रतिहार नाहरराज पलाय कढ़ियौ।—वं.भा.

पलायन-सं०पु० [सं०] भागने की क्रिया या भाव।

पलायमान-वि० [सं० पलायमान] भागता हुआ, पलायन करता हुआ।

उ०—दिल्ली रौ कातर कटक पलायमांन थियौ।—वं.भा.

पळायौ-सं०पु० [देशज] वह व्यक्ति जो 'ल्हास' में काम करने में तो सम्मिलित न हो किन्तु भोजन में सम्मिलित होता हो।

रू०भे०—पळासियौ, पलाहियौ।

पलाल, पलालि-सं०पु० [सं०] १ घास, भूसा।

उ०—१ सरके जुड़ भांभर मेछ सही। जुध में धुज रैण पलाल जही। —रा.रू.

उ०—२ जवनां भड पुंज पलाल जही। मिळिया कर मारुत-चक्र मही। —रा.रू.

२ घास का ढेर।

उ०—नीछंटिया गोळा तंत्र नाळि। पावक जांणि पइठउ पलाळि। —गु.रू.बं.

पलालि-सं०पु० [सं०] मांस का ढेर।

पळावण-सं०पु० [देशज] गाय भैंस आदि का दूध दोहने के समय दूध के पात्र में लिया जाने वाला जल जिससे गाय भैंस के स्तन दोहने के पूर्व धो कर साफ किए जाते हैं।

रू०भे०—पळोवण।

पलावित—देखो 'प्लावित' (रू.भे.)

उ०—पसु निदांन निरोग, जिणां रौ दूध दुवाई। रतन तेरवौ घिरत,

पलावित विहद वडाई।—दसदेव

पळास-स०पु० [सं० पलाश] १ राक्षस, दुष्ट।

उ०—ग्राडा डूंगर वन घणा, ग्राडा घणा पळास। सो साजण किम वीसरइ, वहुगुण तणा निवास।—ढो.मा.

२ एक वृक्ष विशेष। उ०—निगरभर तरुवर सघण छांह निसि, पुहुवित अति दीपगर पळास। मौरित अंब रीभ रोमं चत, हरखि विकास कमळ क्रत हास।—वेलि

३ स्वर्णकारों का एक ग्रोजार विशेष।

रू०भे०—पलासि, पाळास।

अल्पा०—पळासियौ।

पळासण-वि० [सं० पलम्+अशन्] मांसभक्षी।

उ०—पळासण अग भखे भर पेट, भेळा उतमंग सदासिव भेंट।
—मे.म.

पळासपापड़ी—देखो 'पळासपापड़ौ' (अल्पा., रू.भे.)

पळासपापड़ौ-सं०पु० [रा० पळास+पापड+रा.प्र. ग्रौ] पलास की फली जो औषध के काम आती है।

अल्पा०—पळास-पापड़ी।

पळासि-वि० [सं० पलाशिन्] मांसाहारी। उ०—विद्या जोवा तीण पळासि, पहिलुं सिला रची ग्राकासि।—पं.प.च.

पळासियौ—देखो 'पळास' (अल्पा०, रू भे.)

उ०—ऊपर बरसात ग्रायी, तरै वयूं ढाक पळासिया रा आसरा किया छै।—नैणसी

२ देखो 'पळायौ' (रू.भे.)

पलास्टर, पलास्तर [ग्रं० प्लास्टर] १ दीवार आदि को सीधा और सुडौल करने के लिए किया जाने वाला चूने, सीमेंट आदि का लेप।

२ हाथ पांव की हड्डी टूट जाने पर उक्त हड्डी को जोड़ने के लिए किया जाने वाला पट्टी के साथ चूने का लेप।

रू०भे०—पलस्तर।

पलाहियौ—देखो 'पळायौ' (रू.भे.)

पलिग—देखो 'पलंग' (रू.भे.)

उ०—लाख दस लहै पलिग, सोडि तीस लख सुणीजै। गाल मसूरिया सहस, सहस दोय गिंदूग्रां भणीजै।—प.च.चौ.

पलिग्रोपम—देखो 'पल्योपम' (रू.भे.) (जैन)

पलित—वि० [सं०] १ वृद्ध, बूढ़ा।

२ पका हुआ (बाल)

सं०पु०—१ बाल पकना।

२ वैद्यक के अनुसार एक रोग।

पळियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ परवरिश पाया हुआ, आश्रय पाया हुआ।

२ निभाया हुआ, निभाया गया हुआ।

(स्त्री० पळियोड़ी)

पलियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ भागा हुआ।

२ अड़ा हुआ, डटा हुआ।

३ मिटा हुआ।

४ रुका हुआ।

(स्त्री० पलियोड़ी)

पलियौ-सं०पु० [देशज] १ टाट का वह टुकड़ा जो पैर पोंछने हेतु दरवाजे की देहली पर डाल दिया जाता है। पायंदाज।

२ टाट अथवा वस्त्र का वह टुकड़ा जिसमें नाई मूंडे हुए बाल एकत्रित करता है।

३ देखो 'पळी' (अल्पा, रू.भे.)

पळियौ—देखो 'पळी' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—ग्रौरां नै तो मा पळियां पळियां ए खीर। मनै पळियो मा, राव को जै।—लो.गी.

पळींडौ—देखो 'परींडौ' (रू.भे)

पलींदौ—देखो 'परींधो' (रू.भ.)

पळी, पली-सं०स्त्री० [देशज] १ घी तेल आदि द्रव पदार्थ निकालने का लम्बी डांडी का धातु का (प्राय: लोहा) बना पात्र।

उ०—ताहरां रावजी नागोर ग्राय नै पळो तोलायो सु पचीस पइसा भर पळी हुवौ। ताहरां रावजी हुकम कियौ—घिरत भूंजाई में इयै पळी सों पुरसो।—नैणसी

अल्पा०—पळियौ।

मह०—पळौ।

[सं० पलित] २ सफेद बाल।

उ०—सु एक दिन रावळ दूदौ ग्रारीसौ जोवतौ थौ—सु पळी १ दाढी मांहे दीठी तरै मूळराज रतनसी भेळौ नेम लियौ थौ सु दूदा नूं नेम चीत ग्रायौ।—नैणसी

[सं० पल्लि:, पल्ली] ३ मकान, झोंपड़ी (मेवाड़)

४ छोटा ग्राम (मेवाड़)

पळीचणौ—देखो 'परीचणौ' (रू भे.)

पलीत-वि० [सं० प्रेत, फा० पलीद] १ कायर, डरपोक।

उ०—तैं लारैं तरवार रै, पायौ रजक पलीत। दीधौ खांवंद नूं दगौ, संत नहीं इण रीत।—बां.दा.

२ मूरख, मूढ। उ०· जसवंतजी वांसौ कीयौ। तरै मांना करमसीयोत नुं एकण भाखरी माथै नगारौ देनै राखीयौ थौ। नै इण पलीत नुं कह्यौ थौ—मो नुं पाछौ ग्रायौ देखनै अठै हुं कहुं तरै नगारौ देजै।—राव मालदे री बात

३ आलसी, निकम्मा। उ०—मावड़ियां मन मांभळी, सो गाडां भर सोत। की ऊंचौ माथौ करै, पड़िया रहै पलीत।—बां.दा.

४ मैला, गन्दा, अपवित्र। उ०—पाळा भरं पलीत, मूत रा बैठा मांही। कोई कांम री कहूं, निलज सीख्यौ इक नांही।—ऊ.का.

सं०पु०—१ नाश। उ०—देव पितर इण सूं डरं, रसक तरै किण रीत। हेम रजत पातर हरै, पातर करै पलीत।—बां.दा.

२ असुर। उ०—पैंडां नोत रा चलाक धु छ च्यार भंज पलीत रा, सूर धीर चीत रा अछेह ओप संस।—र.ज.प्र.

३ प्रेत। उ०—निरवहइ व्रति रोजा निवाज, बंबळीवाळ के तबल-बाज। जब्बा पलीत मूगुल्ल जूह, सारक्क जाणि बोलइ समूह।
—रा.ज.सी.

पलीती—देखो 'पलीतौ' (अल्पा., रू.भे)
उ०—ईण भांत बात कहतां तौ बार लागे। रंजक जागी। कनां तोपखांना री ई क पलीती दागी। हर गोळा छूटो।
—प्रतापसिंघ म्हाकमसिंघ री वात

पलीतौ-सं०पु० [फा० फतीत:] १ कोई यंत्र लिखकर बत्ती के आकार में लपेटा हुआ कागज। इस बत्ती की धूनी प्रेतग्रस्त को दी जाती है।
क्रि०प्र०—सुंघाणौ, सुळगाणौ।
२ बन्दूक अथवा तोप के रंजक में आग लगाने की वह बत्ती जो बररोह को कूट और बट कर बनाई जाती है।
क्रि०प्र०—दागणौ, देणौ, लगाणौ।
३ पनसाखे पर रखकर जलाई जाने वाली एक विशेष प्रकार की कपड़े की बत्ती।
अल्पा०—पलीती।
मह०—पलीत।

पलीथो, पलीधो-सं०पु० [देशज] मांस को पत्थर पर अत्यन्त महीन पीस कर मट्ठे के साथ बनाया जाने वाला एक प्रकार का सालन। इसे खट्टा बनाया जाता है।
उ०—तठा उपरांयत तीतर रौ मांस सिला ऊपर बांट पलीथो कीजे छै।—रा.सा.सं.

पळूंड-सं०पु० [देशज] १ 'जेई' या 'वेई' नामक कृषि-उपकरण का हाथ से पकड़ने का लम्बा डंडा या बेंट। उ०—पीनणी भर पलूंड, ऊंखळी किरूं किवाड़ां। ऊभी कील उखाड़, भेरणा जबर जुवाड़ा।
—दसदेव

पलूटा-सं०पु०—गायन का अलंकार।

पलूलो-
उ०—आराबां अकोळा धोम बघूघळां खेह उडै, उडै आधोफरां भंडा दकुळां अफेर। रंगी ते पलूळां वेस खाथै जोस खळी राजा, साहूरां आवंळां दळां माथै समसेर।—हुकमीचंद खिड़ियो

पलें'क-वि०—एक क्षण के लिए।

पलेग—देखो 'प्लेग' (रू.भे.)

पलेट-सं०स्त्री० [अं० प्लेट] १ लम्बी पट्टी, पटरी।
२ कच्चे लोहे की पत्ती जो रंदे में डाली जाती है और लकड़ी को चिकनी बनाने में मददगार होती है।
३ देखो 'प्लेट' (रू.भे.)

पळेटणौ, पळेटबौ-क्रि०स० [देशज] लपेटना।
उ०—चोर नै गिरियां सूं लेय नै ठेट गळा तक आंटां में पळेट दियो।—फुलवाड़ी
पळेटणहार, हारौ (हारी), पळेटणियौ—वि०
पळेटाड़णौ पळेटाड़बौ, पळेटाणौ, पळेटाबौ, पळेटावणौ, पळेटावबौ
—प्रे०रू०।
पळेटिओड़ो, पळेटियोड़ो, पळेटयोड़ो—भू०का०कृ०।
पळेटीजणौ, पळेटीजबौ—कर्म०वा०।

पळेटफारम—देखो 'प्लेटफारम' (रू.भे.)

पळेटाड़णौ, पळेटाड़बौ—देखो 'पळेटाणौ, पळेटाबौ' (रू.भे.)
पळेटाड़णहार, हारौ (हारी), पळेटाड़णियौ—वि०
पळेटाड़िओड़ो, पळेटाड़ियोड़ो, पळेटाड़योड़ो—भू०का०कृ०।
पळेटाड़ीजणौ, पळेटाड़ीजबौ—कर्म वा०।

पळेटाड़ियोड़ो—देखो 'पळेटायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० पळेटाड़ियोड़ी)

पळेटाणौ, पळेटाबौ-क्रि०स० [पळेटणौ क्रि० का प्रे०रू०] लपेटवाना।
पळेटाणहार, हारौ (हारी), पळेटाणियौ—वि०।
पळेटायोड़ो—भू०का०कृ०।
पळेटाईजणौ, पळेटाईजबौ—कर्म वा०।

पळेटायोड़ो-भू०का०कृ०—लपेटवाया हुआ।
(स्त्री० पळेटायोड़ी)

पळेटावणौ, पळेटावबौ—देखो 'पळेटाणौ, पळेटाबौ' (रू.भे.)
पळेटावणहार, हारौ (हारी), पळटावणियौ—वि०।
पळेटाविओड़ो, पळेटावियोड़ो, पळेटाव्योड़ो—भू०का०कृ०।
पळेटावीजणौ, पळेटावीजबौ—कर्म वा०।

पळेटावियोड़ो—देखो 'पळेटायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० पळेटावियोड़ी)

पलेटिनम—देखो 'प्लेटिनम' (रू.भे.)

पळेटियोड़ो—भू०का०कृ०—लपेटा हुआ।
(स्त्री० पळेटियोड़ी)

पळेटौ-सं०पु० [देशज] १ आवेष्ठन, घेरा। उ०—दर कूंचां जाय दुरग रै, प्रतना रौ पळेटौ दियो। किनो सुमेरु परवत रै चौतरफ जबूदीप रौ मंडळ थियो।—वं.भा.
२ विवाह मण्डप में यज्ञ की परिक्रमा, भांवरी (अजमेर)

पळेथन, पलेथन—देखो 'पळोथण, पलोथन' (रू.भे.)

पलेव—देखो 'पलेवो' (मह., रू.भे.)
उ०—हवइं पलेव आवइ, ते केहवी? चोखा नी पलेव, ज्वारि नी पलेव, बाजरी नी पलेव, हलदीया पलेव।—व.स.

पलेवड़ो—देखो 'पलेवो' (अल्पा., रू.भे.)

पलेवणउ-सं०पु० [सं० प्रदीपनम्] आग लगने की क्रिया?
उ०—भाद्रवड़ा भाई भणउ, भूरि जळ भरीय माणि। पंजरि थिकुं पलेवणउ, माहरूं सकइ न माणि।—मा.कां.प्र.

पलेवो, पलेह-सं०पु० [?] १ पतला खाद्य पदार्थ जो आटे व द्रव्य के

संयोग से बनता है (अमरत)

उ०—अनइ एकि पलेह सिखामय मूलमय त्वगमय पत्रमय फलमय वातहर पितहर स्लेस्महर रोचक दीपक···।—व.स.

२ पहिए की धुरी पर स्निग्ध पदार्थ में भिगोकर लगाया जाने वाला सन या कपड़ा।

अल्पा०—पलेवड़ो।

मह०—पलेव।

पलेहण-सं०पु० [सं० प्रलेखनम्] वस्त्रादि को सम्हालने की क्रिया (जैन)

पलोट—देखो 'प्लोट' (रू.भे.)

पलोटण-सं०पु०—१ वैभव।

२ देखो 'पलोथन' (रू.भे.)

पलोटणो, पलोटबो-क्रि०अ० [सं० प्रलोठनम्] लोटना-पोटना (जमीन पर) उ०—परीणत स्वास उसास प्रभाव। प्रिय प्रिया पास पलोटत पाव।—ऊ.का.

पलोटणहार, हारो (हारी), पलोटणियो—वि०।

पलोटिओड़ो, पलोटियोड़ो, पलोट्योड़ो—भू०का०कृ०।

पलोटीजणो, पलोटीजबो—भाव वा०।

पलोटियोड़ो-भू०का०कृ०—लोटपोट हुवा हुआ।

(स्त्री० पलोटियोड़ी)

पलोणो, पलोबो-क्रि०अ० [सं० प्रलोपनम्] देखना, निरीक्षण करना।

उ०—राज कुंअरि वल्लह तणउ, वयण पलोई जाम। मुहुता नंदन थाहरइ, दीठउ मूरख ताम।—हीरानंद सूरि

पलोतण, पलोथण-सं०पु० [सं० प्रलेपनम्] १ रोटी को वेलते समय लोई या चकल पर लगाया जाने वाला सूखा आटा जिससे वेलन या चकले पर गीला आटा चिपकता नहीं है।

क्रि०प्र०—लगणो, लागणो।

२ वह व्यर्थ का व्यय जो किसी बड़े व्यय के पश्चात् छोटे व्यय के रूप में और हो जाता है।

क्रि०प्र०—देणो, लगाणो, लागणो, होणो।

मुहा०—खुद रो पलोथण लगाणो—खुद का खर्चा करना, व्यय वहन करना।

रू०भे०—पलेथण, पलेथन, पलोटन।

पलोभ—देखो 'प्रलोभ' (रू.भे.)

पलोवण-सं०पु०—देखो 'पलावण' (रू.भे.)

पळो-सं०पु० [देशज] घी, तेल, दूध, चासनी आदि द्रव पदार्थों को कड़ाही आदि से बाहर निकालने का धातु का बना (प्रायः लोहा) एक उपकरण जो कटोरीनुमा होता है और उसके खड़े बल एक डंडी लगी रहती है। उ०—कठारी तेलण कठारो पळो, पाड़ोसण मांगे खळ री ढळो।—फुलवाड़ी

अल्पा०—पळियो, पळी।

पलो-सं०पु० [सं० पल्ल] १ कपड़े का छोर, पल्ला।

उ०—उठै ग्रहि अंत गिर्भा असमांण। पलो इक झालत जोगणि पांण।—सू.प्र.

मुहा०—१ खाली पलै—देखो 'पलो खाली'।

२ पलै पड़णो—प्राप्त होना, मिलना, समझ में आना।

३ पलै बंधणो—ब्याहा जाना, जिम्मे होना।

४ पलै बांधणो—ब्याह देना, जिम्मे कर देना।

५ पलो खाली—निरधन, कंगाल।

६ पलो छुडाणो—छुटकारा पाना।

७ पलो छूटणो—पिण्ड छूटना।

८ पलो छोडणो—किसी को त्याग देना।

९ पलो झाड़णो—सब कुछ छोड़ देना।

१० पलो पकड़णो—शरण लेना, आश्रित होना, हठ करना।

११ पलो पसारणो—मांगना, प्राप्ति की आशा करना, याचना करना।

१२ पलो बांधणो—कमर को कस कर तैयार होना।

१३ पलो बिछाणो—देखो 'पलो पसारणो'।

१४ पलो मांडणो—देखो 'पलो पसारणो'।

१५ पलो लगणो—अनुचित सम्बन्ध होना, गलत सम्पर्क होना।

१६ पलो सिर पर लेणो—बेशर्म होना, लज्जाहीन होना।

२ साड़ी, दुपट्टा आदि का विशेष ढंग से रंगा या बनाया गया छोर, या पट्टा।

यौ०—पल्लेदार।

३ दूरी, फासला।

४ किवाड़ का पट।

५ चार मन का एक वजन।

६ तराजू का पलड़ा।

रू०भे—पल्लो।

पल्टण, पल्टन—देखो 'पलटन' (रू.भे.)

पल्टो—देखो 'पलटो' (रू.भे.)

पल्थो—देखो 'पालथो' (रू.भे)

वि०— उस ओर का।

पल्यंक, पल्यकि, पल्यंकु, पल्यंगं, पल्यंग्ग-सं०स्त्री० [सं० पल्यंक] अच्छी या बढिया ढंग की खाट। उ०—पल्यंक आदिक आसन बैठी करी रे दोनुं ही माथै हाथ चढाय रे।—जयवांणी

उ०—२ मारुवणी ढोलउ मन रंगि, प्रातहि सुखि बैठा पल्यंकि।—ढो.मा.

उ०—३ चित-साळि पल्यंकु पउढणइ। दक्षिण चीर भलउ अउढणइ।—लो.गी.

उ०—४ राज-वचन सुणि राज कुमार। पल्यंग छोड़ि धरती पड़ी नारि।—बी.दे.

उ०—५ आज सखी सपनंतर दीठ। राग चूरे राजा पल्यंगे बईठ।—बी.दे.

रू०भे०—पलंक, पलंग, पलंगि, पलिंग, पल्लंक, पिलंग।

अल्पा०—पालिगो।

पल्या-सं०पु० [सं० पलित] सफेद बाल। उ०—वृद्धपणउं तु सोभीइ, जु हुइ रूडी मति। नवि लेखवीइ पल्या भणी, कुमति ऊपजइ नित।
—नळ-दवदंती रास

पल्योपम-सं०पु० [सं०] काल का एक माप जो कूप की उपमा से गिना जाता है। उ०—व्रत पालो अणसण करि पहुंता, पहिलै देवलोकै परधांन। च्यार च्यार पल्योपम आयुस, धरमसीह धरै धरम ध्यांन।
—ध.व.ग्रं.

वि०वि०—एक योजन लवे एक योजन चौड़े और एक योजन गहरे कुए को देवकुरु उत्तर कुरुक्षेत्र के मनुष्य के बच्चों के बालाग्रों को तीक्ष्णतर शस्त्र से चीर कर ठूंस ठूंस कर ऐसा भरा जावे कि किसी चक्रवर्ती की सेना भी उसके ऊपर से चली जावे तो वह नहीं दवे। इस प्रकार के कुए से १०० १०० वर्ष के बाद एक एक बालाग्र को निकालते-निकालते जब वह कुआ खाली हो जाय और उसमें एक भी बालाग्र न बचे तो ऐसे समय को पल्योपम कहते हैं (जैन)

रू०भे०—पलिओवम।

पल्लंक—देखो 'पल्यंक' (रू.भे.)

उ०—पल्लक परि सूतो हो कुमार दीठो तसं।—वि.कु.

पल्ल—देखो 'पल' (रू.भे.)

उ०—१ त्रिण कोडा कोडि सागर सुखम बीय अरौ। देह दो कोस दोई पल्ल आयु धरी।—ध.व.ग्रं.

उ०—२ मीठो बोलै हंस मिळै, पातां नंह ढक पल्ल।—वां दा.

पल्लड़ो-सं०पु० [सं० पल्ल+रा.प्र.ड़ो] झूला का मंच जिस पर बैठ कर झोका खाया जाता है। उ०—डोल्लहर रा पल्लड़ां रै प्रमांण ऊपरा-ऊपरी लोथि लागण हूकी।—वं.भा.

पळ्ळचर—देखो 'पळचर' (रू.भे.)

उ०—भुव जंतु नखी मख लेन चले, पत्रधार पळ्ळचर संग हले।
—ला.रा.

पल्लण-वि०—मिटाने वाला, दूर करने वाला। उ०—गढ कोट गंजण मांण भंजण थूरि भंजण थाट। पर दुख पल्लण भूल झल्लण वंस चल्लण वाट।—ल.पिं.

पल्लणौ, पल्लबौ—देखो 'पलणौ, पलबौ' (रू.भे.)

पल्लियोड़ौ—देखो 'पलियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० पल्लियोड़ी)

पल्लर—देखो 'पालर' (रू.भे.)

उ०—खळवकं स्रोणी पल्लर खाळ, वधं घण लीण हुओ वरसाळ।
—रा.ज.रासो.

पल्लव-सं०पु० [सं०] १ कोमल पत्ता, कोंपल।

उ०—१ रूखां वळियां पल्लव फूटा, विणा अंकुर हुआं धरती नीली दीसै लागी।—वेलि. टी.

उ०—२ विरहइ पीडित वरसनां, दैव दह्यां जे देह। निसा एक निमेस महिं, नव पल्लव थ्यां तेह।—मा.कां.प्र.

२ दक्षिण का एक राजवंश।

रू०भे०—पलव, पल्लवि, पल्हव।

पल्लवणौ, पल्लवबौ-क्रि०अ० [सं० पल्लव+रा. प्र. णौ] पल्लवित होना, नए पत्ते आना। उ०—तरु लता पल्लवित अणे अंकुरित, नीलांणी नीलंबर न्याइ।—वेलि.

पल्लवणहार, हारौ (हारी), पल्लवणियौ—वि०।

पल्लविओड़ौ, पल्लवियोड़ौ, पल्लव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

पल्लवीजणौ, पल्लवीजबौ—भाव वा०।

पल्हवणौ, पल्हवबौ, पालवणौ, पालवबौ, पाल्हणणौ, पाल्हणबौ—रू०भे०

पल्लवि—देखो 'पल्लव' (रू.भे.)

उ०—एक करइ रथ वाडिय वाडिय माहि विवेक। कुसुम विवादइ चूंटइ खूंटइ पल्लव एक।—जयसेखर सूरि

पल्लवित-वि० [सं०] पल्लवयुक्त, हराभरा।

रू०भे०—पल्हवित।

पल्लवियोड़ौ-भू०का०कृ०—नए पत्ते आया हुआ, पल्लवित।

(स्त्री० पल्लवियोड़ी)

पल्लांण—देखो 'पलांण' (रू.भे.)

उ०—पल्लांण परट्ठै तांण तंग। साकत्ति हेम हीरे सुचंग।
—गु.रू.वं.

पल्लाणणौ, पल्लांणबौ—देखो 'पलांणणौ, पलांणबौ' (रू.भे.)

उ०—हल्लउं हल्लउ मत करउ, हियड़इ साल म देह। जे साचे ई हल्लस्यउ, सूता पल्लांणेह।—ढो.मा.

पळ्ळाटौ—देखो 'पळाटौ' (रू.भे.)

उ०—देखतां देखतां बीजळी पळ्ळाटौ मारियो। आभौ इंवारीजण लागौ।—वरसगांठ

पल्ली-सं०स्त्री०—बाजरी ज्वार आदि के सिट्टे तोड़ कर एकत्रित करने का कपड़ा (शेखावाटी)

पल्लीवाळ-सं०पु०—ब्राह्मणों की एक जाति या इस जाति का व्यक्ति।

रू०भे०—पलीवाळ।

पल्लू-सं०पु०—१ आंचल, छोर।

२ चौड़ा गोट, पट्टा।

पल्लेदार-सं०पु० [हिं० पल्ला+फा० दार] १ अनाज को ढोने वाला मजदूर।

२ एक बंदूक विशेष।

रू०भे०—पलादार।

पल्लोल-सं०पु०—प्रवाह, झोंका? उ०—तंति सुसिर घन सद्दीइ, पवन तणा पल्लोल। माधव महिला सिउं करइ, क्रीड़ा-रसि कल्लोल।
—मा.कां.प्र.

पल्लो—१ देखो 'पलो' (रू.भे.)

उ०—भाटी भीमजी इण चोखळा री जांणीतो आदमी हो। पल्लो खाली होवतां थकां ई घर ग्वाड़ी वाळो खानदांनी रजपूत हो। —रातवासो

२ देखो 'पैलो' (रू.भे.)

उ०—सात सै पड़ै पल्ला सुहड उल्लाई भड एतडा कमधज्ज जुध्ध- मेहकर कियौ वे पतिसाहां प्रग्गाडा।—गु.रू.बं.

पल्हण-सं०पु०—स्नान करने की क्रिया।

उ०—तब कूंजर ही बोलियौ, हम नित आवै जांहि। इतै कांम ही आवियो, पल्हण सायर मांहि।—गजउद्धार

पल्हव—देखो 'पल्लव' (रू.भे.)

पल्हवणौ, पल्हवबौ—देखो 'पल्लवणौ, पल्लवबौ' (रू.भे.)

उ०—हियड़इ भीतर पइसि करि, ऊगउ सज्जण रूंख। नित सूकइ नित पल्हवइ, नित नित नवला दूख।—ढो.मा.

पल्हवित—देखो 'पल्लवित' (रू.भे.)

पल्हांण—देखो 'पलांण' (रू.भे.)

उ०—पंचवरण तेजी पाखरिया, कूंकूंल्लोल पल्हांण। सोना तणां सांकळां पाए, हणहणीया केकांण।—कां.दे.प्र.

पल्हांणणौ, पल्हांणबौ—देखो 'पलांणणौ, पलांणबौ' (रू.भे.)

उ०—कोइ पल्हाणइ पंखीआ, उंदिर अस्व वइल्ल। सव कहि थी संका करइ, गवरि चढइ गज-मल्ल।—मा.कां.प्र.

पवंग, पवंगम—१ देखो 'प्लवंगम' (रू.भे.)

उ०—आदि गुरु मात्रा इकवीस, सुकवि संभळै धूणै सीस। पायै- पायै एण प्रमांणि, जपिया छंद पवंगम जांणि।—पि.प्र.

२ देखो 'पमंग' (रू.भे.)

उ०—भारांणी जस भार, भुज मंडण थारा भुजां। ऊगै दीह उदार, पातां घर पूगै पवंग।—बां.दा.

पव—देखो 'परवत' (रू.भे.)

पवगांण—देखो 'पमंग' (रू.भे.)

पवचौ-सं०पु०—चौहान वंश की पवचा शाखा का व्यक्ति।

पवण—देखो 'पवन' (रू.भे.)

उ०—पारथिया ऋपण वयण दिसि पवणै। विण अंवह बाळिया वणै।—वेलि

पवणवेग-सं०पु० [सं० पवनः+वेग] घोड़ा (डिं.नां.मा.)

पवत्रिय—देखो 'पवित्री' (रू.भे.)

उ०—विडंगक झालि पवत्रिय वाग। भळाहळ सेल ग्रहे मध्य भाग। —सू.प्र.

पवत्री—देखो 'पवित्री' (रू.भे.)

उ०—चोगां तोड़ां पवत्रां, किलंगी सेजी पागछाई। बाजूबंध चौकी जोत जगाई।—मयारांम दरजी री वात

पवन-सं०पु० [सं० पवनः] हवा, वायु। उ०—जिण सवित परखि लजि तड़िति जात। अत गवन पवन मन ज्यों विख्यात।—रा.रू.

पर्या०—अनिळ, अहिवलभ, अहिभख, आसक, गंधवाह, चंचळ, चंक्र, जगतप्रांण, जळरिप, जवन, पवमांण, प्रकंपण, प्रभंजण, प्रापक, महाबळ, मरुत, मारुत, मेघअरि, मेघवाहण, अघभखण, अगवाहण, वात, वायु, सदागति, सपरसन, सबळ, समीर, सासनम, स्वसन, हवा।

यौ०—पवनअसम, पवनकुमार, पवनगतौ, पवनघणईहा, पवनचकी (चक्की), पवनचक्र, पवनज, पवनतनय, पवनदाग, पवनदाह, पवनधिस्ण, पवननंद, पवननंदन, पवनपति, पवनपथ, पवनपरीक्षा, पवनपुत्र, पवनपूत, पवनबंध, पवनमग, पवनमुक्तासन, पवनवांणी, पवनवाहन, पवनवग, पवनव्याधि, पवनसंघात, पवनसख, पवन- सुत।

२ सर्प, सांप।

क्रि०प्र०—लड़णौ, लागणौ।

३ विशिष्ट जाति वर्ग या समूह जो संख्या में ३६ माने जाते हैं—

उ०—१ सोझत था ऊगवण नुं जाट वाणीयां सीरबी छत्तीस पवन वसै। सोझत सरीखो कसबो रा० जैतावत रो उतन।—मा.प.बि.

उ०—२ घांची, घांछा, मोची, मणिहार, मइणारा, मेर, मैणा, सूई, सुतार, सोनार, चूनगर, चित्रगर, नीलगर, तेरमा, लूंणगर, ठंठारा, मठारा, लोहार, लोबांना, लोबना, लोढा, भोपा, भरडा, भिखारी, भील, कोळी, काठी, वणगर, कठीयारा, कळबी, कंसारा, कुंभार, चुड़ीगर, काछी, वाणिया, विप्र, वैद्य, वैस्या, वणघर, माली, तेलो, मरदनीया, मठवासी, गोला, गांधी, गारडी, योगी, यति, सन्यासी, जिंदा, सोफी भगत, भ्रांमोक, भेखधर इत्यादि ३६ पवन।—सभा

४ प्राणवायु।

५ प्रथम लघु ढगण के भेद का नाम।

६ उचास की संख्या* (डिं.को.)

२ चंचल* (डिं.को.)

रू०भे०—पन्न, पमण, पवन, पवन्न, पवन्नि, पूंन, पून, पूण, पोन, पौन।

अल्पा०—पवनियौ, पवनौ।

पवनकुमार-सं०पु० [सं०] १ हनुमान।

२ भीमसेन।

पवनघणईहा-स०स्त्री० [सं० पवन+घन+ईहा] अग्नि, आग (डिं.को.)

पवनचकी, पवनचक्की-सं०स्त्री० [सं० पवन+चक्की] हवा के जोर से चलने वाली चक्की।

पवनचक्र-सं०पु० [सं०] चक्कर खाती हुई जोर की हवा, चक्रवात।

पवनज-सं०पु० [सं०] १ हनुमान।

२ भीमसेन।

पवनजात—देखो 'पवन' (३) (रू.भे.)

रू०भे०—पूणजात, पूनजात।

पवनतनय-सं०पु० [सं०] १ हनुमान।
२ भीमसेन।

पवनदाग, पवनदाह-सं०पु० [सं० पवनदाह] शव का वह अंतिम संस्कार जिसमें शव को खुले व ऊंचे स्थान पर रख दिया जाता है ताकि कौए, चील आदि उसका मांस भक्षण करलें।

पवनधिस्ण-सं०पु० [सं० पवन+धिष्णयं] आकाश, आसमान (नां.मा.)

पवननंद, पवननंदन-सं०पु० [सं०] १ हनुमान।
उ०—पवननंद परचंडनं जीत दारुण खळ जंगी। अजर अमर अण-भंग, बजर आयुध बजरंगी।—र.रू.
२ भीमसेन।

पवनपंथ-सं०पु०यौ० [सं० पवनपथ] आकाश, आसमान (ह.नां.मा.)

पवनपथ-सं०पु०यौ० [सं०] आकाश, आसमान (ह.नां.मा.)

पवनपरीक्षा-सं०स्त्री०—आषाढ की पूर्णिमा को वायु की दिशा देखकर ऋतु का भविष्य बताने की क्रिया। (ज्योतिष)

पवनपुत्र, पवनपूत-सं०पु०यौ० [सं० पवनपुत्र] १ हनुमान।
२ भीमसेन।

पवनबंध-वि० [सं०] पवन को बांधने वाला, प्राणायामी।
उ०—राजा अगर री वात सुं मन में विचारियो-जे एथ कोई हस्त-बंध राजा छै कै पवनबंध योगी छै।—चौबोली
सं०पु०—पवन को बांधने वाला व्यक्ति, प्राणायामी व्यक्ति।

पवनमग-सं०पु० [सं० पवन+मार्ग] आकाश, आसमान (अ.मा.)

पवनमुक्तासण(न)-सं०पु० [सं० पवनमुक्तासन] योग के चौरासी आसनों के अन्तर्गत एक आसन विशेष। इसमें बाएँ पैर की एडी से बाएँ जंघा के निम्न भाग को एवं दाहिने पैर की एडी से दाहिने जघा के निम्न भाग को स्पर्श करा कर दोनों पावों के घुटनों को कंधों के पास लाया जाकर दोनों हाथों को भीतर लेते हैं और बाएँ हाथ से दाहिने हाथ की कुहनी को एवं दाहिने हाथ से बाएँ हाथ की कुहनी पकड़ते हैं।

पवनबांण-सं०पु० [सं० पवनबाण] वह बाण जिसके चलाने से हवा वेग से चलने लगे।

पवनवेग-वि० [सं०] पवन के समान वेग वाला।

पवनसख-सं०पु० [सं० पवनसखा] अग्नि, आग (ह.नां.मा.)

पवनसुत-सं०पु० [सं०] १ भीमसेन (ह.नां.मा.)
२ हनुमान।

पवनांण—देखो 'पावन' (रू.भे.)

पवनासण-सं०पु० [सं० पवन+अशनम्] १ वह जो हवा पीकर ही जीवित रहता है।
२ सर्प, सांप (ह नां.मा.)
[सं० पवनासन]
३ योग के चौरासी आसनों के अन्तर्गत एक आसन जिसमें दोनों घुटनों पर खड़े रह कर दोनों हाथों की तर्जनियों को नाभि के पास एकत्र करके कटि को दबा कर स्थिर होना होता है।

पवनासनी, पवनासी-सं०पु० [सं० पवनाशिन्] सर्प, सांप (अ.मा.)

पवनियौ, पवनौ—देखो 'पवन' (अल्पा०, रू.भे.)
उ०—ऊगते उण तारै परभात, पड़ै। अो मोळौ धूंधूकार। पवनियौ सांसां में भर सांस, सांवटै जग री काळी कार।—सांझ

पवन्न, पवन्नि—देखो 'पवन' (रू.भे.)
उ०—१ दिन छोटा मोटी रयण, थाढा नीर पवन्न। तिण रित नेह न छाडियइ, हे वालम वडमन्न।—ढो.मा.
उ०—२ प्रभु तूं पांणी मांय पवन्न। गरज्जै गाजै मांय गगन्न।
—ह.र.

पवमांण, पवमांन-सं०पु० [सं० पवमानः] हवा, वायु (ह.नां.मा.)
उ०—घट सुंदर ग्रीव कवांण घटी। पवमांण विमांण समांण पटी।
—मे.म.

पवर, पवरु—देखो 'प्रवर' (रू.भे.)
उ०—स्री विमय हरर वाचक सुगुरु, पाठक धरमसी पवर।—ध.व.ग्रं

पवरग-सं०पु० [सं०] प अक्षर से लेकर म अक्षर तक का वर्ग, पवर्ग।

पवसाक, पवसाख—देखो 'पौसाक' (रू.भे.)
उ०—१ तन पवसाक जरी महताबी। फबि चीरा किलंगी सिर फावी।—सू.प्र.
उ०—२ मरद पवसाख भूसण कड़ा मूंदड़ो, कंठ डोरो मुरति लवंग कांनां।—मे.म.

पवांड़—देखो 'पवाड़ो' (मह., रू.भे)

पवाड़उ, पवाड़ो-सं०पु० [देशज] १ चकवड़, चक्रमर्द।
वि०वि०—यह हलका, स्वादिष्ट, रूखा, पित्त-वात-नाशक, हृदय को हितकारी, शीतल तथा कफ, श्वास, कुष्ठ, दद्रु और कृमि को नाश करने वाला है। इसका फल गर्म है और कुष्ठ, कण्डू, दाद, विष, वात, गुल्म, खांसी, कृमि तथा श्वास को दूर करने वाला है और कटु रसान्वित है।
अल्पा०—पंवाड़ियौ, पमाड़ियौ, पमाडियौ, पवाडियौ।
मह०—पंमाउ, पंवाड़, पवांड़, पुवाड़।
२ देखो 'प्रवाड़ो' (रू.भे.)
उ०—१ मोटउ साहस कीधउ, वडउ पवाड़उ सीधउ।—रा.सा.सं.
उ०—२ लूटियौ लहसकर आप वसिकर छोडियौ आलिम। जीत्यौ पवाड़ो धरम आडो आवियौ कत करम।—प.च.चौ.

पवारसाही-सं०स्त्री०यौ० [देशज] एक प्रकार की तलवार।

पवाल—देखो 'प्रवाळ' (रू.भे)

पवासणौ, पवासबो-क्रि०अ० [सं० प्रकाशणम्=प्रभासतम्] १ चमकना, प्रकाशित होना।
उ०—इण तौ आंगणियै, सायबा, जेठजी फिरैला जी, जांणै पून्यूं री चांद पवासियौ जी।—लो.गी.
२ तुष्ठमान होना।
उ०—बिड़द-विनायक दोनूं जी आया। आय पवास्या मीळै बड़ तळै।
—लो.गी.

पवासो-सं०पु० [सं० प्रभास] प्रकाश, चमक ?
उ०—लहरयो तो रखियो सांमें साळ में जी, कोई साळ पवासा लेवै जी क, लहरयो लेदो जी।—लो.गी.

पवि-सं०पु० [सं०] १ वज्र।
उ०—भड़ म्हारा पाछै भिड़ै, जिकां वहोडो जाइ। अब जे भिड़ियो एक भी, तो पड़ियो पवि ताइ।—वं.भा.
२ मार्ग, रास्ता।
रू०भे०—पबि, पवी।

पविगि-देखो 'पमग' (रू.भे.)
उ०—आजि रै वांधियो कड़ो तरगस अभिगि, प्रिथी रै धिणी सस-माथ चडियो पविगि।—पी.ग्रं.

पविट्ठ—देखो 'प्रविष्ठ' (रू.भे.)

पवित, पवितर—देखो 'पवित्र' (रू.भे.)
उ०—१ पवित अंग मन चंग गंग जांणै जळधारा।—गु.रू.वं.
उ०—२ जस तिलक लख पं जळ, जुइ फिर रांम पवितर जेण।
—र.ज.प्र.

पवितरी—देखो 'पवित्री' (रू.भे.)

पवितरौ—देखो 'पवित्रौ' (रू.भे.)

पवित्त—देखो 'पवित्र' (रू.भे.)
उ०—जपइ लाख नवकार जे एक चित्तं, लहइ ते तीरथकर पद पवित्तं।—स.कु.

पवित्तर—देखो 'पवित्र' (रू.भे.)

पवित्ति—देखो 'पवित्र' (रू.भे.)
उ०—केवी घर सैलोट कर, कर नवकोट पवित्ति। आयो जोधांणै 'अजो', परसै द्वारामत्ति।—रा.रू.

पवित्र-वि० [सं०] १ शुद्ध, पापरहित।
उ०—पवित्र कंध इम करिस वहा प्रभ, नमे तूझ चरणां पोहोकर-नभ। कंठ इम पवित्र करिस करुणाकर, गावे तूझ चरित गोपीवर।
—ह.र.
२ निर्मल, स्वच्छ, साफ।
उ०—उदर पवित्र करिस अपरंपर। चरणाम्रत तो घरे चक्रधर।
—ह.र.
सं०पु० [सं० पवित्रं] १ वह कुश जो यज्ञ में घी को छिड़कने या शुद्ध करने में व्यवहृत होता है।
२ तांवा।
पर्या०—पावन, पुण्य, पूत।
रू०भे०—पवित, पवितर, पवित्त, पवित्तर, पवित्ति, पवीतर, प्रवीत, प्रवित, प्रविति, प्रवित्त, प्रवीत, प्रिवित।

पवित्रता-सं०पु० [सं०] १ शुद्धता, पावनता।
२ निर्मलता, स्वच्छता।

पवित्रा-सं०स्त्री० [सं०] १ तुलसी।
२ श्रावण के शुक्ल पक्ष की एकादशी।

पवित्रारोपण-सं०पु० [सं०] वैष्णवों का एक उत्सव जिसमें श्रीकृष्ण को यज्ञोपवीत पहनाया जाता है। यह श्रावण शुक्ला १२ को होता है। मतान्तर से एकादशी को भी होता है।

पवित्रिय, पवित्री-सं०स्त्री० [सं० पवित्र=कुश+रा०प्र०ई] १ कर्म-काण्ड के समय अनामिका में पहनी जाने वाली कुश की बनी हुई अंगूठी।
२ संन्यासियों की माला के मध्य में लगाने का गुरिया।
३ तांबा और चांदी के मिश्रण से बनी मुद्रिका।
रू०भे०—पवत्रिय, पवितरी।

पवित्रौ-सं०पु० [सं० पवित्र] १ मेड़तिया राठौड़ों की पगड़ी के साथ 'चारभुजा' के नाम से बांधी जाने वाली वस्त्र की एक पट्टी विशेष जिस पर लाल और केसरिया रंग के फुंदके (फूबे) लगे रहते हैं।
उ०—सेली पवित्रा सीस कितारे सम सुंवरणो। फुलवयारी रो भगो खवां दोनू ऊपरणो।—बखतो खिड़ियो
२ रेशम के गुच्छे का बना हार विशेष जो मांगलिक अवसरों पर धारण कराया जाता है।
रू०भे०—पवत्रौ, पवितरौ।

पविधर-सं०पु० [सं०] इन्द्र।

पविन—देखो 'पावन' (रू.भे.)
उ०—विसवामित्र रघुपति वदति ए जग पविन जाह्नवी।
—रांमरासो

पविपांणी-सं०पु० [सं० पवि+पाणि] इन्द्र। उ०—कीचक बाळी कदिन, पुरुरवा औ दवीपांणी। लंपट भये लंकेस, जूत खाया जग-जांणी।—ऊ.का.

पवी—देखो 'पवि' (रू.भे.)

पवीतरौ—१ देखो 'पवित्रौ' (रू.भे.)
२ देखो 'पवित्र' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—की लोक निकर सुर नर किसूं, पत उर धांम पवीतरौ। वाधियो ताप दूजां विचै, आज प्रताप 'अजीत' रो।—रा.रू.

पवैं—देखो 'परवत' (रू.भे.)
उ०—मार लीध एक मुस्ट, दूर राळ बोध दुस्ट। हालियो समीर द्रोण, पवैं जड़ी हेत।—र.रू.

पवैंयो-सं०पु० [देशज] हिजड़ों के साथ रह कर नाचने, गाने तथा उनकी लाग-बाग उगाहने वाला पुरुष (मा.म.)

पवौड़ी-सं०स्त्री०—कमल के बीज।

पव्वय—देखो 'परवत' (रू.भे.)
उ०—रुख मज्झिवर कप्परुख संघह धुरि मुणिवर। पंखि मज्झि जिम राजहंस पव्वय धुरि मंदिर।—अभयतिक यती

पव्वया—देखो 'परवज' (रू.भे.)

पव्वै—देखो 'परवत' (रू.भे.)

उ०—पन्ना विहंगेस वाळी मंदार हेमंक पव्वे, घोम काळकूट मेघ-धारां गंगधार।—र.रू.

पसंगौ—देखो 'पासंग' (अल्पा., रू.भे.)

पसंति—देखो 'पस्यंती' (रू.भे.)

पसंद-वि० [फा०] १ अच्छा लगने वाला, रुचिकर, मनोनीत।

उ०—सिध साधक राखै सबर, सबर तजै मतमंद। सबर काज सुधरै सहू, सांई सबर पसंद।—बां.दा.

क्रि०प्र०—आणौ, करणौ, होणौ।

२ देखो 'प्रसन्न' (रू.भे.)

पसंनि-सं०पु०—दर्शन। उ०—अट्ठै पहर अरस में, बैठा पीरी पसंनि। दादू पसे तिन्न के, जे दीदार लहंति।—दादूबांणी

पसंसा—देखो 'प्रसंसा' (रू.भे.)

पस-सं०स्त्री०—१ अवधि, समय। उ०—सातल कह्यौ—हजरत! छै मास री पस पाऊं, सूल सराजांम करूं। कह्यौ—जा, दी पस।

—सातलसोम री बात

[?] २ प्रवेश। उ०—श्रो संसार स्वप्न री नदियां, नीर कल्पना मांई। यामें पस नहावै जुग सारौ, पार कोई नहि जाई।

—स्रो हरिरांमजी महाराज

३ देखो 'पुसी' (रू.भे.)

उ०—हंस भाभी बूझै है बात, नणदल बाई राज। रात नै नणदोई कांई-कांई दे गया जी म्हारा राज। मोहरां म्हारी पस ए भराय, भाभी म्हारी राज।—लो.गी.

अव्य० [फा०] अतः, इस कारण, इसलिए।

पसकण-वि० [?] कायर, डरपोक (डिं.को.)

पसको-सं०पु०—कायरपन, कायरत्व।

पसगत—देखो 'पसुगत' (रू.भे.)

उ०—तन छीजै, जोवन हटै, घटै वयस धन, धरम। मदगत पसगत एक सी, ज्यांमें हया न सरम।—अज्ञात

पसण—देखो 'पिसण' (रू.भे.)

उ०—खळ-खट्ट करै खागां मुहै, सूरज हट्ट समूह गह। कमधज्ज दियण पसणां पहट, थिड़े थट्ट हुआ थडह।—गु.रू.बं.

पसणौ, पसबौ—देखो 'फंसणौ, फंसबौ' (रू.भे.)

पसतौ-सं०पु० [फा० पश्तो] १ साढे तीन मात्रा का ताल, जिसमें दो आघात होते हैं। इसके बोल इस प्रकार हैं—ति, तक, धि, धा, गे।

उ०—डफ खजरी दुतार, विखम रोहिला बजावै। पसतौ अरबी पा'ड़, गजल कड़खा बह गावै।—सू.प्र.

२ अफगानिस्तान की भाषा।

रू०भे०—पस्तौ, पुसतौ, पेसतौ

पसत्थ—देखो 'प्रसस्त' (रू.भे.)

पसत्थराग-सं०पु० [सं० प्रशस्त-राग] देव, गुरु, धर्म के विषय में अथवा अनुकम्पा, दान आदि के विषय में होने वाला राग (जैन)

पसन्न—१ देखो 'प्रसन्न' (रू.भे.)

२ देखो 'प्रस्न' (रू.भे.)

पसम-सं०पु० [फा० पश्म] १ रोमावलि, बाल (अ.मा., ह.नां.मा.)

उ०—मोहरी चपा सेली समंध, पचकल्यांण पहचांणियै। अन्नेक रंग पसमां अलल, जेहा मुखमल जांणियै।—सू.प्र.

२ बहुत मुलायम तथा बढिया ऊन जो प्रायः कश्मीर, पंजाब और तिब्बत की भेड़ों पर से उतारी जाती है। उ०—एहिज सदन सिखर हिमवंतां। आसण पखी पसम अनंता।—सू.प्र.

३ गुप्तेन्द्रिय के बाल, झांट।

पसमीन, पसमीर, पसम्म-सं०पु० [फा० पशमीना] मुलायम व बढिया ऊन का बना कपड़ा या दुशाला जो प्रायः कश्मीर, तिब्बत आदि पहाड़ी और ठंडे देशों में बहुत अच्छा और अधिकता से बनता है।

उ०—१ जिस अवास की सीढियूं के ऊपर रंगदार सब्जू पसमीन पायंदाज राजै। सो कैसे जिसकी सोभा के देखे तै नील घन सघन के बद्दल लाजै।—सू.प्र.

उ०—२ पहरण घण ओढण पसमीना। नोख तोस घणमोल नवीनां।—सू.प्र.

उ०—३ महि माल बह पसमीर, कर उतन जे कसमीर।—सू.प्र.

उ०—४ पगमंडा हीर पसम्म, नवरंग वांणि नरम्म।—सू.प्र.

रू०भे०—पस्मीन।

पसवाड़ौ—देखो 'पसवाड़ौ' (रू.भे.)

पसर-सं०पु० [सं० प्रसर] १ आक्रमण, हमला।

उ०—सम्मूह सेन संख्या पखै, जाइ लसक्कर जूजु ए। पतिसाह दळां दीनी पसर, गिरि झंगर पद्धर हुए।—गु.रू.बं.

२ विस्तार, फैलाव। उ०—इंद्र छभा फिर अमर, निडर राठोड़ निर्भनर। पह रैणाइर पसर, धणी नवकोट छिहत्तर।—गु.रू.बं.

३ पिचकारी। उ०—कचर कूट नांखिया भट कितरा, छूटइ पसरां लोह छर। घाय जुड़इ आवरत घुळंता, घण थट विकट वाढाळवर।

—महादेव पारवती री वेलि

पसरकंटाळी-सं०स्त्री० [सं० प्रसर-कटाली] एक प्रकार का कंटीले पत्तो का पौधा जो जमीन पर फैल जाता है भटकरैया कटारी।

पसरणौ, पसरबौ-क्रि०अ० [सं० प्रसरणम्] १ आगे की ओर बढना या फैलना, विस्तृत होना। उ०—१ अग जातै भायो मनै, आयो पोस अवन्न। पसरता उत्तर पवन, घर सीतळ रवि घन्न।—रा.रू.

उ०—२ अत परमळ पसर, पसरिया आंबा। सुक पिक बोलै, सुलद सराग।—बां.दा.

२ पैर फैलाकर सोना।

पसरणहार, हारौ (हारी), पसरणियौ—वि०।

पसरवाड़णौ, पसरवाड़बौ, पसरवाणौ, पसरवाबौ, पसरवावणौ, पसरवावबौ, पसराड़णौ, पसराड़बौ, पसराणौ, पसराबौ, पसरावणौ, पसरावबौ—प्रे०रू०।

पसरिग्रोड़ो, पसरियोड़ो, पसरयोड़ो—भू०का०कृ० ।
पसरीजणो, पसरीजबो—भाव वा० ।
पसराणो, पसराबो—सक०रू०
पस्सरणो, पस्सरबो, पासरणो, पासरबो, प्रसरणो, प्रसरबो—रू०भे० ।
पसराड़णो, पसराड़बो—देखो 'पसराणो, पसराबो' (रू.भे.)
पसराड़णहार, हारो (हारी), पसराड़णियो—वि० ।
पसराड़िग्रोड़ो, पसराड़ियोड़ो, पसराड़योड़ो—भू०का०कृ० ।
पसराड़ीजणो, पसराड़ीजबो—कर्म वा० ।
पसराड़ियोड़ो—देखो 'पसरायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० पसराड़ियोड़ी)
पसराणो, पसराबो–क्रि०स० ('पसरणो' क्रिया का प्रे.रू.) १ आगे को बढाना, फैलाना, विस्तृत कराना ।
२ पैर फैलवा कर सुलाना ।
पसराणहार, हारो (हारी), पसराणियो—वि० ।
पसरायोड़ो—भू०का०कृ० ।
पसराईजणो, पसराईजबो—कर्म वा० ।
पसराड़णो, पसराड़बो, पसरावणो, पसराववो—रू०भे० ।
पसरणो, पसरबो—अक० रू० ।
पसरायोड़ो–भू०का०कृ०—१ आगे बढ़ाया हुआ, फैलाया हुआ, विस्तृत किया हुआ ।
२ पैर फैलवा कर सुलाया हुआ ।
(स्त्री० पसरायोड़ी)
पसरावणो, पसराववो—देखो 'पसराणो, पसराबो' (रू.भे.)
पसरावणहार, हारो (हारी), पसरावणियो—वि० ।
पसराविग्रोड़ो, पसरावियोड़ो, पसराव्योड़ो—भू०का०कृ० ।
पसरावीजणो, पसरावीजबो—कर्म वा० ।
पसरावियोड़ो—देखो 'पसरायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० पसरावियोड़ी)
पसळी—देखो 'पासळी' (रू.भे.)
पसवान–सं०पु० [सं० प्सा=भक्षणे=प्सानम्] भोजन (अ.मा.)
पसवाड़—१ देखो 'पारसव' (रू.भे.)
२ देखो 'पसवाड़ो' (मह०, रू.भे.)
उ०—गिर नीलम पसवाड़ किलोलां हेत सुहावै । हेम कदळियां चौफेरी मे रुड़ी लखावै ।—मेघ.
३ देखो 'पसवाड़ो' (मह०, रू.भे.)
पसवाड़ै–क्रि०वि० [सं० पार्श्वः+पाटकः] १ तरफ ओर, बगल में ।
उ०—१ इतरी वात सुंण वीरमदे नै रीस ऊपनी । तिको पाखती भैंसा रै पसवाड़ै आय चरताळै कड़ियां सूं तरवार वाही, तिको सींग नै माथो वाढि दोय वटका कर नांख्या ।—वीरमदे सोनगरा री वात
उ०—२ ताहरां खीमो पसवाड़ै चालियो; पोकरण सो कोसे तीनै च्यारै ।—नैणसी
क्रि०प्र०—आणो, रै'णो, होणो ।
२ निकट, पास, समीप । उ०—१ सगळा लोग वाड़ी में ऊभा-ऊभा ई हाको करियो—जावै-जावै जितै तौ मालण उणीज घोरा माथै माळी रै पसवाड़ै आय नै ऊभगी ।—फुलवाड़ी
उ०—२ चोर उणी भांत थांमा रै पसवाड़ै चापळियोड़ो ऊभो रह्यो।—फुलवाड़ी
पसवाड़ो-स०पु० [सं० पार्श्वः] वगल, करवट ।
उ०—१ स्त्री रा इसा वचन सुण वो आळसी सिंह सत्रवां नै तिल मात्र गिणनै पसवाड़ो फेरियो ।—वी.स.टी.
उ०—२ मोडो गोडो दै पसवाड़ा मोड़ै । तड़छा बाछोड़ो घड़छां तन तोड़ै ।—ऊ.का.
मुहा०—पसवाड़ो फिरणो—फुरसत मिलना, समय निकालना ।
रू०भे०—पासाड़ो, पासवाड़ो ।
मह०—पसवाड, पसवाड ।
पसवाज–सं०पु० [देशज] नृत्य के समय पहिना जाने वाला वेश्या का एक घाघरा । उ०—सुसी खसबोय तरव सें लाचार, गहुणें का क्या करणा, गरीबी में गीरफतार । गरमी से सड़ी हाडु का ढेर, फाटी पसवाज का दिखाया फेर ।—दुरगादत्त वारहट
पसवो—देखो 'पसु' (अल्पा०, रू.भे.)
उ०—नाकां डांडो भुंई, ऊतरी सूरत अलोनी । घांन टाबरां नहीं, घास पसवा नै कोनी ।—दसदेव
पसाइ—देखो 'प्रसाद' (रू.भे.)
उ०—भरिया तरु पुहप वहै छूटा भर, कांम वांण ग्रहिया करगि । वळि रितुराइ पसाई वेसम्रर, जण भुरड़ीतौ रहै जगि ।—वेलि
पसाइत—देखो 'पसायत' (रू.भे.)
पसाइती—देखो 'पसायती' (रू.भे.)
पसाइतो—देखो 'पसायतो' (रू.भे.)
उ०—सहर साचोर मांहे सकना तुरक घर १५० छै, सकना कहावै छैं, खेत १०० सहर मांहे, पसाइता खावै छै ।—नैणसी
पसाउ—देखो 'प्रसाद' (रू.भे.)
उ०—अति अनूप आखर अवलि, सरसति करो पसाउ । हींगळाज सुप्रसन हु, पछिम तणा पतिसाउ ।—पी.ग्रं.
पसाणो, पसाबो–क्रि०स० [सं० प्रसावण] १ भात या चावल से मांड निकालना ।
२ किसी पदार्थ में मिला हुआ जल का अंश निकालना ।
पसाणहार, हारो (हारी), पसाणियो—वि० ।
पसायोड़ो—भू०का०कृ० ।
पसाईजणो, पसाईजबो—कर्म वा० ।
पसावणो, पसावबो—रू०भे० ।
पसाय—देखो 'प्रसाद' (रू.भे.)
उ०—१ हुवौ सवाई सावळी, भूप 'अजीत' पसाय । हिळ आया ढूंढा-हड़ा, विचित्रां रस विसराय ।—रा रू.

उ०—२ लागूं हूं पहली लुळे, पीतांबर गुर पाय। भेद महारस भागवत, प्रांमू जास पसाय।—ह.र.

पसायतबाव-सं०पु० [देशज] किसी सेवा विशेष में दी गई जागीर पर जागीर के मालिक से वसूल किया जाने वाला कर विशेष।

पसायत—१ देखो 'पसायतो' (मह., रू.भे.)

२ देखो 'पसायती' (रू०भे०)

पसायती-सं०स्त्री० [सं० प्रसादिता] १ नौकरी या सेवा के बदले में दी जाने वाली भूमि।

२ इस प्रकार की भूमि का उपभोग करने वाला व्यक्ति।

रू०भे०—पसाइत, पसाइती, पायती।

पसायतो-सं०पु० [सं० प्रसादित] १ वह व्यक्ति जिसे नौकरी या सेवा के बदले में जमीन दी जावे।

२ इस व्यक्ति द्वारा उपभोग की जाने वाली भूमि।

रू०भे०—पसाइतो, पायतो।

पसायोड़ो-भू०का०कृ०—१ मांड निकाला हुआ (चावल)

२ जल का अंश निकाला हुआ पदार्थ।

(स्त्री० पसायोड़ी)

पसार—देखो 'प्रसार' (रू.भे.)

पसारटो-सं०पु० [सं० प्रसार+रा.प्र.टो] पंसारी का कार्य।

उ०—ए दलाल ए खुड़दिया, हुंडीवाळ बजाज। ऐहिज करै पसारटो, केवळ धन रै काज।—बां.दा.

पसारणो, पसारबो-क्रि०स० [सं० प्रसारनम्] फैलाना, पसारना, विस्तृत करना। उ०—नर मारगि एक एक मग नारी, ऊमिया अति उछाह करेउ। अंकमाळ हरि नयर आविवा, वाहां तिकरि पसारी वेउ।

—वेलि

पसारणहार, हारो (हारी), पसारणियो—वि०।

पसारिओड़ो, पसारियोड़ो, पसारचोड़ो—भू०का०कृ०।

पसारीजणो, पसारीजबो—कर्म वा०

पसरणो, पसरबो—अक०रू०।

परसारणो, परसारबो, परसावणो, परसावबो, प्रसारणो, प्रसारबो

—रू०भे०

पसारी—देखो 'पंसारी' (रू.भे.)

उ०—म्हारी हळदी री रग सुरंग, निपजे माळवे। हळदी मिळै पसारी री हाट, बनड़ा रै सिर चढ़ै।—लो.गी.

पसाव-सं०पु० [सं० प्रसाद] १ कपड़ा। उ०—अभरी थावै आथ सूं, चित सरसावै चाव। जावै दाता द्वार जे, पावै पांच-पसाव।

—बां.दा.

[सं० प्रस्राव] २ चावल का मांड।

३ किसी पदार्थ से निकाला हुआ पानी का अंश।

४ पसीना, स्वेद।

५ देखो 'प्रसाद' (रू.भे.)

उ०—१ आया रण कांम जिका उमराव। पाया तन नूतन प्रांण पसाव।—मे.म.

उ०—२ साधु मिळै तब ऊपजै, हिरदै हरि का भाव। दादू संगति साधु की, जब हरि करै पसाव।—दादूवांणी

उ०—३ आयो राजा सांभळचो राई, ततखिण वलयउ नीसांणां घाव। राजा माहइ उछव हुवउ, ब्राह्मण दीयउ बहुत पसाव।—बी दे.

पसावण-सं०पु० [सं० प्रस्रावण] किसी उबाली हुई वस्तु का गिराया हुआ पानी, मांड, पीच।

पसावणो, पसावबो—देखो 'पसाणो, पसावो' (रू.भे.)

उ०—तेरा रे वीरा, भु ख्याळवा, घणदेवां ने भात पसाव।—लो.गी.

पसावणहार, हारो (हारी), पसावणियो—वि०।

पसाविओड़ो, पसावियोड़ो, पसाव्योड़ो—भू०का०कृ०।

पसावीजणो, पसावीजबो—कर्म वा०।

पसिद्ध—देखो 'प्रसिद्ध' (रू भे.)

पसीजणो, पसीजबो-क्रि०अ० [सं०प्र+स्विद्=प्रस्विद्यति, प्रा० पसिज्जइ]

१ पिघलना, द्रवित होना।

उ०—इतरी सुण भरमल री डील तौ विरह सूं पसीज गयो। बहुत उदास हुई। नयनां सूं प्रवाह छूटियो।—कुंवर सी सांखळा री वारता

२ दयार्द्र होना।

उ०—मिनखां री खालां उघड़गी, कुंदां रै धम्मीड़ां सूं माथा फूटग्या, खून सूं आंगणा लाल कंकोळ व्हैग्या, पण रागसां रा मन नहीं पसीज्या।—रातवासो

पसीजणहार, हारो (हारी), पसीजणियो—वि०।

पसीजिओड़ो, पसीजियोड़ो, पसीज्योड़ो—भू०का०कृ०।

पसीजियोड़ो-भू०का०कृ०—१ पिघला हुआ, द्रवित।

२ दयार्द्र।

(स्त्री० पसीजियोड़ी)

पसीनो—देखो 'प्रस्वेद' (रू भे.)

उ०—चोधरी नै पूछचो—बावळा फिजूल क्यूं आपळै ? सूखो धरती में क्यूं पसीनो गाळै ?—फुलवाड़ी

क्रि०प्र०—आणो, छूटणो, टपकणो, निकळणो, वैणो, होणो।

मुहा०—१ पसीना री कमाई—परिश्रम से पैदा किया गया रुपया या धन।

२ पसीना री जागां खून वहाणो—किसी के लिए प्राण देने को तैयार रहना।

३ पसीना रो खून करणो—अथक परिश्रम करना।

४ पसीनो-पसीनो होणो—एकदम लज्जित होना, द्रवित होना।

पसु-सं०पु० [सं० पशु] चार पैरों से चलने वाला पूंछ वाला जन्तु जिसके शरीर का भार खड़े होने पर पैरों पर रहता हो।

उ०—पसु अजाद भूचराद होव घात प्रांणयं। असंख जात पंखि बांण वेधजे उडायणं।—रा.रू.

रू०भे०—पसू ।

अल्पा०—पसवौ, पसुवौ ।

पसुकाळ-सं०पु०यौ०[सं० पशु+काल]—सर्प, सांप ।

उ०—जंगळ विडाळ किय रुदन प्रसिट । पसुकाळ जंतु मग परघी द्रसिट ।—ला.रा.

पसुगति-सं०स्त्री० [सं० पशुगति] पशु की सी स्थिति, पशुत्व ।

पसुघात-सं०स्त्री० [सं० पशुघात] पशुओं की बलि ।

उ०—बुध रूप होय अवतरै, भयै जु जुग विख्यात । नदा कीवी जगत की, सदया हिय पसुघात ।—गजउद्धार

पसुता-सं०स्त्री० [सं० पशुता] जानवरपन, पशुपन ।

पसुधरम-सं०पु० [सं० पशुधर्म] पशुओं का सा आचरण ।

पसुनाथ-सं०पु० [सं० पशुनाथ] १ शिव ।

२ सिंह ।

पसुपतास्त्र-सं०पु० [सं० पशुपतास्त्र] महादेव का शूलास्त्र, शिव का त्रिशूल ।

पसुपति, पसुपती-सं०पु० [सं० पशुपति] १ शिव, महादेव ।
(अ.मा.,डि.नां.मा.,नां.मा.)

२ सिंह ।

पसुभाव-सं०पु० [सं० पशुभाव] पशुपन, पशुत्व ।

पसुराज-सं०पु० [सं० पशुराज] सिंह, शेर ।

पसुलक्षण-सं०पु० [सं० पशुलक्षण] ७२ कलाओं में से एक कला ।

पसुवौ—देखो 'पसु' (अल्पा० रू.भे.)

उ०—वलि घनवासी पसुवा हिरणला रे, जोवौ मन धरि नेह ।
—वि.कु.

पसू—देखो 'पसु' (रू.भे.)

उ०—पसू पसू कह पुरुस नै, आधौ करै अनरथ । पसू जिसा वे पुरुसड़ा, आवै ओर न अरथ ।—ऊ.का.

पसे-सं०पु०—दर्शन ।

उ०—अट्ठूं पहर अरस में, वैठा पीरी पसंनि । दादू पसे तिन्न के, जे दीदार लहंनि ।—दादूवांणी

पसेउ—देखो 'प्रस्वेद' (रू.भे.)

पसेरी—देखो 'पंसेरी' (रू.भे.)

पसेव, पसेवौ—देखो 'प्रस्वेद' (रू.भे.)

उ०—आडा लै लै चोका ठारै, पसेवा परियो क्यूं न संभारै ।
—ह पु.वा.

पसै-सं०स्त्री० [देशज] अंगूठा व अंगुलियों को मिलाकर गहरी की हुई हथेली, आधी अजलि (शेखावाटी)

पसोपेस-सं०पु० [फा० पसोपेश] असमंजस, दुविधा ।

पस्चाताप—देखो 'पछतावौ' (रू.भे.)

पस्चिम—देखो 'पच्छिम' (रू.भे.)

उ०—जोही एक पस्चिम दिसा जयसलमेर थटो मुलतांन सूं लाहोर मांही कर आया पण घोड़ी री कठै ही सुध नहीं हुई ।
—सूरे खींवे कांधळोत री बात

पस्चिमतांनासन-सं०पु० [सं० पश्चिमतानासन] योग के चौरासी आसनों के अंतर्गत एक आसन ।

वि०वि०—इसमें दोनों पांवों को दण्ड की तरह आगे फैलाकर कूल्हों के बल बैठा जाता है । दोनों घुटने जमीन से सटे रहते हैं । फिर दोनों हाथों से दोनों पैरों के अंगूठों को पकड़ कर ललाट को घुटनों पर रख देते हैं । इससे प्राण का वहन सुषुम्ना में होने लगता है ।

पस्चिमसागर-सं०पु० [सं० पश्चिमसागर] आयरलैण्ड और अमेरिका के बीच का समुद्र ।

पस्चिमाचळ-सं०पु० [सं० पश्चिमाचल] अस्त होने पर सूर्य जिसकी आड़ में छिप जाता है, अस्ताचल ।

पस्त-वि० [फा०] पराजित, दबा हुआ ।

पस्तहिम्मत-वि० [फा०] कायर, डरपोक ।

पस्तां—देखो 'पिस्ता' (रू.भे.)

उ०—कागदी वदांम, कठ वदांम, सकरी वदांम, पस्तां, निमजां, चाइम, चारुली, जरगोजां, अंजीर ।—व.स.

पस्ताणौ, पस्तावौ—देखो 'पछताणौ, पछतावौ' (रू.भे.)

पस्तावणहार, हारौ (हारी), पस्तावणियौ—वि० ।

पस्तायोड़ौ—भू०का०कृ० ।

पस्तावीजणौ, पस्तावीजवौ—कर्म वा० ।

पस्तायोड़ौ—देखो 'पछतायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० पस्तायोड़ी)

पस्ताव—१ देखो 'पछतावौ' (मह०, रू.भे.)

२ देखो 'प्रस्ताव' (रू.भे.)

पस्तावणौ, पस्तावबौ—देखो 'पछताणौ, पछतावौ' (रू.भे.)

पस्तावणहार, हारौ (हारी), पस्तावणियौ—वि० ।

पस्ताविओड़ौ, पस्तावियोड़ौ, पस्ताव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

पस्तावीजणौ, पस्तावीजबौ—कर्म वा० ।

पस्तावियोड़ौ—देखो 'पछतायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० पस्तावियोड़ी)

पस्तावौ—देखो 'पछतावौ' (रू.भे.)

पस्तौ—देखो 'पसतौ' (रू.भे.)

पस्म-सं०स्त्री० [फा० पश्म] बढ़िया किस्म की मुलायम ऊन ।

पस्मीना—देखो 'पसमीन' (रू.भे.)

पस्यंती-सं०स्त्री० [सं० पश्यती] मूलाधार से उठ कर हृदय में जाने की ध्वनि, नाद । उ०—परा चित चितवन करे, पस्यंती मनन मनार । मध्यमा लखत व्यवहार कूं, वैखरी ॐ अहकार ।
—स्री हरिरांमजी महाराज

रू०भे०—पसंति ।

पस्सरणौ, पस्सरबौ—देखो 'पसरणौ, पसरबौ' (रू.भे.)

उ०—दखणी दक्खण पस्सरिया दळ। किरम कडा करस्सण मेहळ।
—गु.रू.बं.

पस्सरणहार, हारौ (हारी), पस्सरणियौ—वि०।
पस्सरिअोड़ौ, पस्सरियोड़ौ, पस्सरयोड़ौ—भू०का०कृ०।
पस्सरीजणौ, पस्सरीजबौ—कर्म वा०।

पह-सं०पु० [सं० पथ] १ रास्ता, मार्ग (जैन)
[सं०प्रभु] २ स्वामी, प्रभु। उ०—समर में दसकंठ जिण सजे। पह वडा हर चाप दळ पजे।—र.ज.प्र.
३ राजा, नृप। उ०—१ मेवाड़ हुआ नागां मंडळ, साफ राफ पाहाड़ सह। इकलिंग कंठ रहियौ 'अमर' चीलसेख चीतौड़ पह।
—गु.रू.बं.
उ०—२ पुर जोधांण उदैपुर जैपुर, पह थांरा खूटा परियांण। आंकै गई आवसी आंकै, वांकै आसल किया वखांण।—वां.दा.
[सं० पद=पय=पव=किरण] ३ प्रातःकाल, उषाकाल।
उ०—१ दारुण गोयद चौगद्द, फिरिया पह फट्टी।—सू.प्र.
उ०—२ बीजइ दिन ऊंमर मिळयउ पह ऊगंतइ सूर। ढोला मारू एकठा, कहि केतीहक दूर।—ढो.मा.
मुहा०—पह फाटणौ—प्रातःकाल होना।
रू०भे०—पौ', प्रह।
५ प्रतिष्ठा, इज्जत, मान। उ०—१ नैतियार जिणरी नृपत, समाधांन सरसाय। विदा किया दसरथ वडौ, पह दे कुरब पसाय।
—र.रू.
उ०—२ जमीं न पह पीठांण जिण, रद छद जेम रुळेह। वेखे कुण गढ विहड वन, सुळगे किनां सुळेह।—रेवतसिंह भाटी
६ पुण्यकाल, सुअवसर। उ०—'पीथल' हरौ अभंग मोटे पह, छळ पह परियां तणौ छळि। पग देसी 'मधकरी' पयंपै, कमळा पालटियां कमळि।—महेस कल्यांणमलोत सांखला रौ गीत
सं०स्त्री० [सं० पृथ्वी] ७ पृथ्वी, भूमि। उ०—पह पत रघुपती दत झोक पांणां।—र.ज.प्र.
वि० [सं० प्रभु] १ योद्धा, वीर। उ०—सुणि जबाव 'जसराज' तेडि सित्ताब महा भड़। सूर 'बलू' सारिखा, जिसा गोवरधन अनड। चोद घड़ा वांनैत, तेड़ि माहेस तिआंरा। 'पीथल' 'कन्न' 'उदिल्ल' जिसा 'मधुकर' झूंझारां। 'जगराज' 'रुघा', 'गिरधर' जिसा पूछि 'जसै' मोटा पहां। उंवरां नरां असिपत्ति सूं, कहौ जाव कासुं कहां।
—वचनिका
२ शक्तिशाली, समर्थ, बलवान। उ०—पह चाळक धनवंतपुर, लांठै लूट लियाह। कांठै नदी कवेरजा, खेमा खड़ा कियाह।—वां.दा.
३ दाता, दानवीर।
[सं० प्रथम] ४ पहला, प्रथम। उ०—पह ज्यांरा चित लागा, रघुवर पाय। पुळ पुळ में त्यां पुरखा, थिर सुख थाय।—र.ज.प्र.
रू०भे०—पहू, पौं, पोह, पोहव, पोहाव, पाहौ, पौहव, पोहौ।

पहड़णौ, पहड़बौ-क्रि०अ० [सं० पृथु=प्रक्षेपे] १ अपने स्थान से हट जाना, डिग जाना, विचलित होना। उ०—१ भोळा की डर भागियौ, अंत न पहड़ै ऐण। वीजी दीठां कुळ बहू, नीचा करसी नैण।—वी.स.
उ०—२ लहरी दरियाव स्रवण दत लाखां, कीरत सुण आयौ सौ कोस पहड़ै तू रांणा पारथियां, 'दीपा' इण कुळजुग नै दोस।
—ओपौ आढौ
२ अधीर होना, घबराना। उ०—हिरणाकुस खड़ड़ै, पुत्र न पहड़ै। सौ पर उरड़ै, खग सुरड़ै।—भगतमाळ
३ धोखा देना।
पहड़णहार, हारौ (हारी), पहड़णियौ—वि०।
पहड़िओड़ौ, पहड़ियोड़ौ, पहड़योड़ौ—भू०का०कृ०।
पहड़ीजणौ, पहड़ीजबौ—भाव वा०।
रू०भे०—पहिड़णौ, पहिड़बौ, पहुड़णौ, पहुड़बौ, पुहड़णौ, पुहड़बौ, पैड़णौ, पैड़बौ।

पहड़ियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ अपने स्थान से हटा हुआ, डिगा हुआ, विचलित हुवा हुआ।
२ अधीर, घबराया हुआ।
३ धोखा दिया हुआ।
(स्त्री०पहड़ियोड़ी)

पहचवांन—देखो 'पीचवांन' (रू.भे.)

पहचांण—देखो 'पैचांण' (रू.भे.)
उ०—एक वीर री स्त्री पती रा हाथ रा सस्त्रवां रै सस्त्र लागा तिण री पहचांण करावै छै।—वी.स.टी.

पहचांणणौ, पहचांणबौ—देखो 'पैचांणणौ, पैचांणबौ (रू.भे.)
उ०—१ पिंड कुलच्छ पहचांण, प्रति हेत कीजै पछै। जगत कहै सो जांण, रेखा पाहण राजिया।—किरपारांम
उ०—२ अलक डोरि तिल चड़सबौ, निरवळ चिबुक निवांण। सींचै नित माळी समर, प्रेम बाग पहचांण।—वां.दा.
पहचांणणहार, हारौ (हारी), पहचांणणियौ—वि०।
पहचांणिओड़ौ, पहचांणियोड़ौ, पहचांण्योड़ौ—भू०का०कृ०।
पहचांणीजणौ, पहचांणीजबौ—कर्म वा०।

पहचांणाणौ, पहचांणावौ—देखो 'पैचांणाणौ, पैचांणावौ' (रू.भे.)
पहचांणाणहार, हारौ (हारी), पहचांणाणियौ—वि०।
पहचांणायोड़ौ—भू०का०कृ०।
पहचांणाईजणौ, पहचांणाईजबौ—कर्म वा०।

पहचि, पहची—देखो 'पहुंच' (रू.भे.)
उ०—१ सुर जेठ अने संकर सिकौ, अहि अमर मांनव उरा। परमेस निमौ थारी पहचि, परा परा सिगळां परा।—पी.ग्रं.
उ०—२ घणी थारी पहची वात थारी घणी। ओड़ि नाखै असुर भीर भगतां तणी।—पी.ग्रं.

पहट-सं०स्त्री० [देशज] १ पराजय, हार।

उ०—कमधज्ज दियण, पसणां पहट, थिडे थट्ट, हूआ थडह ।
—गु रू.वं.

२ ध्वस्त, नष्ट ।

उ०—पाडे किया पहट मैदानं । दरबार दिवांणह-खानं ।—गु.रू.वं.

३ प्रहार, आघात, टक्कर ।

उ०—हे नाळ पहट गिरतर हुआ, चढ़े घटा रज परचंडे । सरसती नदी तटि सिधपुर, महिपत्ती डेरा मंडे ।—सू.प्र.

रू०भे०—पहट्ट ।

पहटणो, पहटबो-क्रि०स० [देशज] १ हराना, पराजित करना ।

उ०—खड़े सेन खरहंड, घूण लीधी घर धारह । परमारां दळ पहट, दीव प्रसणां पाहारह ।—नैणसी

२ ध्वस्त करना, नष्ट करना ।

पहटणहार, हारो (हारी), पहटणियो—वि० ।

पहटिओड़ो, पहटियोड़ो, पहटयोड़ो—भू०का०कृ० ।

पहटीजणो, पहटीजबो—कर्म वा० ।

पहट्टणो, पहट्टबो—रू०भे० ।

पहटियोड़ो-भू०का०कृ०—१ हराया हुआ, पराजित किया हुआ ।

२ ध्वस्त किया हुआ, नष्ट ।

(स्त्री० पहटियोड़ी)

पहट्ट—देखो 'पहट' (रू०भे०)

पहट्टणो, पहट्टबो—देखो 'पहटणो', 'पहटबो' (रू०भे०)

उ०—पोसाळियो पहट्ट मिळे विरद में मुकांमां । तटां चढ़े तिण वार, घरां रावां ऊधांमां ।—सू प्र.

पहतणो, पहतबो—देखो 'पहुंचणो' 'पहुंचबो' (रू०भे०)

उ०—पहतउ किळास तणइ जाइ परबत, माता कन्हा आगिया मांग । तप विण ऊहिज ऊहिज तीरथ, जगत सधारण ऊहिज जाग ।
—महादेव पारवती री वेलि

पहतणहार, हारो (हारी), पहतणियो—वि० ।

पहतिओड़ो, पहतियोड़ो, पहत्योड़ो—भू०का०कृ० ।

पहतीजणो, पहतीजबो—भाव०वा० ।

पहतियोड़ो-भू०का०कृ०—देखो 'पहुचियोड़ो' (रू०भे०)

(स्त्री० पहतियोड़ी)

पहनणो, पहनबो—देखो 'पहरणो, पहरबो' (रू०भे०)

पहनणहार, हारो (हारी), पहनणियो—वि० ।

पहनिओड़ो, पहनियोड़ो, पहन्योड़ो—भू०का०कृ० ।

पहनीजणो, पहनीजबो—कर्म वा० ।

पहनाई-सं०स्त्री०—पहनने की क्रिया या भाव ।

पहनाड़णो, पहनाड़बो—देखो 'पहराणो, पहराबो' (रू०भे०)

पहनाड़णहार, हारो (हारी), पहनाड़णियो—वि० ।

पहनाड़िओड़ो, पहनाड़ियोड़ो, पहनाड़योड़ो—भू०का०कृ० ।

पहनाड़ीजणो, पहनाड़ीजबो—कर्म वा० ।

पहनाड़ियोड़ो—देखो 'पहरायोड़ो' (रू०भे०)

(स्त्री० पहनाड़ियोड़ी)

पहनाणो, पहनाबो—देखो 'पहराणो, पहराबो' (रू.भे.)

पहनाणहार, हारो (हारी), पहनाणियो—वि० ।

पहनायोड़ो—भू०का०कृ० ।

पहनाईजणो पहनाईजबो—कर्म वा० ।

पहनाथ-सं०पु० [सं० प्रभुनाथ] ईश्वर ।

उ०—दसनाथ विभज भराथ दखं । पहनाथ समाथ अनाथ पखं ।
—र.ज.प्र.

पहनायोड़ो—देखो 'पहरायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० पहनायोड़ी)

पहनाव—देखो 'पहनावो' (रू.भे.)

पहनावणो, पहनावबो—देखो 'पहराणो, पहराबो' (रू.भे.)

पहनावणहार, हारो (हारी), पहनावणियो—वि० ।

पहनाविओड़ो, पहनावियोड़ो, पहनाव्योड़ो—भू०का०कृ० ।

पहनावीजणो, पहनावीजबो—कर्म वा० ।

पहनावियोड़ो—देखो 'पहरायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० पहनावियोड़ी)

पहनावो-सं०पु०—पोशाक, पहिराव, सिरोपाव ।

रू०भे०—पहनाव, पहिनावो ।

पहनियोड़ो—देखो 'पहरियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० पहनियोड़ी)

पहनी-सं०स्त्री० [सं० उपानह] जूती, पगरक्षिका (अ.मा.)

पहनो—देखो 'पनो' (रू.भे.)

उ०—अर डांभ रो राछ एके जिनस रो घड़ायो । न जिहुं युगां मांहे सांभळयो न दीठो । पन्नो च्यारि बिचाळे दिराई आंगुळ बिहुं बिहुं रै पहने रो ।—द.वि.

पहप—देखो 'पुस्प' (रू.भे.)

उ०—सोनै वास सुवास, फूल अहिवेल तणै फळ । पीपळ तणै पहप, सुजळ जळ-निध्र तणो जळ ।—पी.ग्रं.

पहपदंती—देखो 'पुष्पदंती' (रू.भे.)

पहपमाळ—देखो 'पुस्पमाळा' (रू.भे.)

पहपमास—देखो 'पुस्पमास' (रू.भे.)

पहपवेण-सं०स्त्री० [सं० पुष्पवेणि] फूलों की चोटी ।

पहपणो, पहपबो-क्रि०अ० [सं० पुष्प] प्रफुल्लित होना ।

उ०—पेखे सकति वदन पहपहियो । कर जोड़े राजा इम कहियो ।
—सू०प्र०

पहपणहार, हारो (हारी), पहपणियो—वि० ।

पहपहिओड़ो, पहपहियोड़ो, पहपयोड़ो—भू०का०कृ० ।

पहपीजणो, पहपीजबो—भाव वा० ।

पहपहियोड़ो-भू०का०कृ०—प्रफुल्लित ।

(स्त्री० पहपहियोड़ी)

पहम, पहमी—देखो 'प्रथवी' (रू.भे.)

उ०—नवघण घटा गरक गुण तीनूं, रांम रतन घन नेरा। बूठै मेह पहम रुति पलटै, सुख में रहे बसेरा।—ह.पु.वा.

पहर-सं०पु० [सं० प्रहर] देखो 'प्रहर' (रू.भे.)

उ०—१ पर निंदा आठूं पहर, चाटै विसरी चाठ। क्यों नह तूं प्रांणी करै, पंच-रतन री पाठ।—बां.दा.

उ०—२ पाछलै पहर कुंवर रतन री सवारी वणाय मुतसधियां सारां साथै गोपाळदास रै डेरै आयो।—गोपाळदास गौड़ री वारता

पहरण-सं०पु० [सं० प्रहरणम्] १ अस्त्र-शस्त्र।

२ देखो 'पहरणि' (रू.भे.)

पहरणि-सं०स्त्री० [सं० परिधान] पोशाक।

उ०—कडि मणि मेहल नूंपर रूप रहावइं पाय। पहरणि सेत्र पटउलीय कूलीय पांन न माइ।—जयसेखर सूरि

रू०भे०—पहरण, पैहरण।

पहरणौ, पहरबौ-क्रि०स० [सं० परिधान] पहिनना, धारण करना।

उ०—उदर दीधौ जिको पूरसी जळ असन। वणै छित्र घणै पटपीत पहरण बसन।—र.ज.प्र.

पहरणहार, हारौ (हारी), पहरणियौ।—वि०।

पहरवाड़णौ, पहरवाड़बौ, पहरवाणौ, पहरवाबौ, पहरवावणौ, पहरवावबौ, पहराड़णौ, पहराड़बौ, पहराणौ, पहराबौ, पहरावणौ, पहरावबौ।—प्रे०रू०।

पहरिओड़ौ, पहरियोड़ौ, पहरयोड़ौ—भू०का०कृ०।

पहरीजणौ, पहरीजबौ।—कर्म वा०।

पहनणौ, पहनबौ, पहिनणौ, पहिनबौ, पहिरणौ, पहिरबौ, पहोरणौ, पहोरबौ, पै'रणौ, पै'रबौ, पैहरणौ, पैहरबौ।—रू०भे०

पहरतणौ, पहरतबौ-क्रि०स० [सं० प्रहरणम्] नष्ट करना।

उ०—बळदेव महाबळ तासु भुजाबळि, पिड़ि पहरतै नवी परि। बिजड़ां मुहे वेडते बळभद्र, सिरां पुंज कीधा समरि।—वेलि

पहरतणहार, हारौ (हारी), पहरतणियौ—वि०।

पहरतिओड़ौ, पहरतियोड़ौ, पहरत्योड़ौ—भू०का०कृ०।

पहरतीजणौ, पहरतीजबौ—कर्म०वा०।

पहरतियोड़ौ-भू०का०कृ०—नष्ट किया हुआ।

(स्त्री० पहरतियोड़ी)

पहरवौ—देखो 'प्रहरी' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—बास विकट कोई पांन न खंडै, अग वसै ता मांही लो। पायक पांच पहरवा राख्या, उदै अस्त दोय नांही लो।—ह पु.वा.

पहरांमणी, पहरांवणी—देखो 'पहरावणी' (रू.भे)

उ०—साल सूतरू चिकन सुभ, अतळस जरकस आंण। तो तट दी 'लाखै' तरां, पहरांमणी पुरांण।—बां.दा.

पहराइत—देखो 'पौ'रायत' (रू.भे.)

उ०—चरणे चांमीकर तणा चंदाणणि, सज नूपुर घूघरा सजि। पीळा भमर किया पहराईत, कमळ तणा मकरंद कजि।—वेलि

पहराड़णौ, पहराड़बौ—देखो 'पहराणौ, पहराबौ' (रू.भे.)

पहराड़णहार, हारौ (हारी), पहराड़णियौ—वि०।

पहराड़िओड़ौ, पहराड़ियोड़ौ, पहराड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।

पहराड़ीजणौ, पहराड़ीजबौ—कर्म वा०।

पहराड़ियोड़ौ—देखो 'पहरायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० पहराड़ियोड़ी)

पहराणौ, पहराबौ-क्रि०स० ('पहरणौ' क्रि० का प्रे० रू०) पहिनाना, धारण कराना।

उ०—किणही वीर स्त्री री पति जुद्ध में हारनै मरण सूं डरतौ तरवार री ताप सूं घर में आय वड़ियो। तठै वीर स्त्री आपरा कपड़ा उतार पतीनै पहराय घर में आधौ धुसाय ''।—वी.स.टी.

पहराणहार, हारौ (हारी), पहराणियौ—वि०।

पहरायोड़ौ—भू०का०कृ०।

पहराईजणौ, पहराईजबौ—कर्म वा०।

पहनाणौ, पहनाबौ, पहनावणौ, पहनावबौ, पहराड़णौ, पहराड़बौ, पहरावणौ, पहरावबौ, पहिनांणौ, पहिनाबौ, पहिराणौ, पहिराबौ, पै'राड़णौ, पै'राड़बौ, पै'राणौ, पै'राबौ, पै'रावणौ, पै'रावबौ, पैहराड़णौ, पैहराड़बौ, पैहराणौ, पैहराबौ, पैहरावणौ, पैहरावबौ—रू०भे०।

पहरायत—देखो 'पौ'रायत' (रू.भे.)

पहरायोड़ौ-भू०का०कृ०—पहिनाया हुआ, धारण कराया हुआ।

(स्त्री० पहरायोड़ी)

पहराव—देखो 'पहनावौ' (रू.भे.)

उ०—देवीदास पण सांझ री घरै आय, जीमण जीम महल गयौ। घड़ी पलक बतळावण करौ। वही ले बहिर हुवौ। वासे बहू पण गहणो-कपड़ो उतार, सादौ पहराव पहर बहिर हुई।

—पलक दरियाव री वात

पहरावणी-सं०स्त्री० [सं० परिधापनी] विवाह आदि शुभ संस्कार के पश्चात सगे संबंधियों को वस्त्र पहिनाने अथवा नकद के रूप में देने की प्रथा। यह प्रायः विवाह के पश्चात् होती है।

उ०—१ करि पहरावणी भोज संयूत। दीधा पेई भरी बहूत।

—वी.दे.

उ०—२ हमें जांन यूं आत पहरावणी दे विदा दीनी। सात सहेली नै दस दासी इण रै साथ कीनी।—र.हमीर

रू०भे०—पहरामणी, पहरांवणी, पहिरांमणी, पहिरामणी, पै'रामणी, पै'रांवणी, पै'रावणि, पै'रावणी, पैहरांमणी, पैहरावणी, पैहरावणि, पैहरावणी।

पहरावणौ, पहरावबौ—देखो 'पहराणौ, पहराबौ' (रू.भे.)

उ०—राजा राठोडवै, मेर मांझी मुंह आगळ। पहरावै पडगरै, भार दीनौ भुज्जांवळ।—गु.रू.वं.

पहरावणहार, हारौ (हारी), पहरावणियौ—वि०।

पहराविग्रोड़ौ, पहरावियोड़ौ, पहराड्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
पहरावीजणौ, पहरावीजबौ—कर्म वा० ।
पहरावियोड़ौ—देखो 'पहरायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० पहरावियोड़ी)
पहरिणौ, पहरिबौ—देखो 'पहरणौ, पहरबौ' (रू.भे.)
उ०—ग्रर म्होकमसिंघ सुणनै पहरियां बैठो थो सो सरपाव ग्रर घोड़ो घणौ धन खवरदार नूं दीधौ।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात
पहरियोड़ौ—भू०का०कृ०—पहिना हुग्रा, धारण किया हुग्रा ।
(स्त्री० पहरियोड़ी)
पहरी, पहरू—देखो 'प्रहरी' (रू.भे.)
पहरौ-सं०पु० [सं० प्रहरदान] १ रखवाली, निगरानी, चौकसी ।
उ०—पाताळ लोक मांही बळी राजा राज करै छै । त्यांकै द्वार भगवांन ग्राप पहरौ देवै ।—सिंघासण-बत्तीसी
मुहा०—१ पहरौ देणौ—चौकसी करना, रखवाली करना ।
२ पहरौ पड़णौ—चौकसी होना, रखवाली होना ।
२ रक्षक, नियुक्ति ।
मुहा०—१ पहरौ बदळणौ—रक्षक बदलना ।
२ पहरौ बैठणौ—रक्षक नियुक्त होना ।
३ पहरौ बैठाणौ—रक्षक नियुक्त करना ।
३ हिरासत, हवालात ।
मुहा०—१ पहरा में देणौ—हिरासत में देना, हवालात में भेजना ।
२ पहरा में बैठाणौ—देखो 'पहरा में देणौ' ।
३ पहरा मे रखणौ—नजरबंद रखना, हिरासत में रखना ।
४ पहरा में होणौ—नजरबंद होना ।
रू०भे०—पुहरौ, पौ'रौ, पोहरौ, पौ'रौ, पोहरौ ।
पहल-वि० [सं० प्रथम] प्रथम, प्रारम्भ । उ०—महाराज के जोधांण के राव । हथलूं पहल कीए बीजलूं कि घाव ।—सू.प्र.
सं०पु० [?] १ बादल । उ०—जळ जाळ स्रवति जळ काजळ ऊजळ, पीळा एक राता पहल । ग्राघोफरै मेघ ऊवसता, महाराज राजै महल ।—वेलि
२ शत्रु, दुश्मन । उ०—पहलां सूं मिळ पकड़ियौ, 'सिंभू' ग्रोरंगसाह । चक्रवत दक्खण चालतौ, राजा भूंडे राह ।—रा.रू.
३ मिट्टी का पात्र, कूंडा । उ०—मोलहण साह बोलियौ—तीस बरस ईंधण हूं पूरीस, भीमंसाह कह्यौ—म्हारै इतो गुळ है, ग्रठारै बरस तांई ढीकली गुळ रा हीज गोळा चलावौ, सादूसाह कह्यौ—दही रा पहल भरिया है ।—वां दा.ख्यात
४ धुनी हुई रूई की मोटी तह । उ०—रूई के पहल ज्यौं सगूं पर चढ़ाइ रोळै । छूटे हंस पड़े जांणे मंजीठ बोळै ।—सू.प्र.
५ देखो 'पहलू' (रू.भे.)
पहलकं—देखो 'पैलकं' (रू.भे.)
रू०भे०—पहल्ल, पै'ल ।
पहलव-सं०स्त्री० [सं० पह्लव] एक प्राचीन जाति ।
पहलवां, पहलवांन-सं०पु० [फा० पहलवान] कुश्तीबाज, पहलवान, मल्ल । उ०—जहां पहलवां जोम सूं, केकाउस कहियोह । ग्रंतक केहर ग्रगर ग्रो, रुस्तम नहं रहियोह ।—वां दा.
रू०भे०—पे'लवांन, पै'लवांन ।
पहलवांनी-सं०स्त्री० [फा० पहलवानी] कुश्ती लड़ने का कार्य, पहलवान होने का भाव ।
रू०भे०—पे'लवांनी, पै'लवांनी ।
पहलवी-सं०स्त्री० [फा० पह्लवी] ईरान की एक भाषा विशेष ।
रू०भे०—पल्हवी ।
पहलां—देखो 'पै'लां (रू.भे.)
उ०—ग्राप राजू यां नूं मालम कीवी । कहो म्हां ग्राज पहलां इसो कजियौ कियौ न सुणियौ ।—सूरे खीवे कांधळोत री बात
पहळाज, पहळाद—देखो 'प्रह्लाद' (रू.भे.)
उ०—१ पाळै पख वार किता पहळाज । किया सुख सेवग सारण काज ।—ह.र.
उ०—२ ऊचरतां सुख ऊपजै, सुणतां ग्रावै स्वाद । कहियौ दांणव कोप कर, हर पर-हर पहळाद ।—भगतमाळ
पहली—१ देखो पै'ली' (रू.भे.)
उ०—पहली किया उपाव, दव दुसमण ग्रामय दटै । प्रचंड हुवा बस वाव, रोभा घालै राजिया ।—किरपारांम
२ देखो 'पहेली' (रू.भे.)
उ०—काढ़ै दोसण कायबां, बातां दिए बिगोय । पूछै ग्ररथ रु पहलियां, सूंब मजाकी सोय ।—बां.दा.
पहलोभव-वि०—पहले जन्मा हुग्रा, जेष्ठ (डिं को.)
पहलू-सं०पु० [फा०] १ बगल ग्रौर कमर के बीच का भाग, करवट ।
मुहा०—१ पहलू गरम करणौ—किसी का विशेषतः प्रेयसी या प्रेमपात्र का सट कर बगल में बैठना या बैठाना ।
२ पहलू बदळणौ—करवट बदलना. २ रंग बदलना ।
३ पहलू में बैठणौ—किसी के पहलू से ग्रपना पहलू सटा कर बैठना ।
४ पहलू में बैठाणौ—किसी के पहलू से ग्रपना पहलू सटा कर बैठाना ।
२ पड़ोस, ग्रासपास ।
मुहा०—१ पहलू बसणौ—किसी के पड़ोस में जाकर रहना ।
२ पहलू में रहणौ—किसी के निकट जाकर रहना ।
३ सेना का दाहिना ग्रथवा बायां भाग ।
मुहा०—१ पहलू दबाणौ—किसी फौज या दुर्ग पर एक ग्रोर से ग्राक्रमण करना ।
२ पहलू पर होणौ—सहायक होना ।
३ पहलू बचाणौ—मुठभेड़ बचाते हुए निकल जाना, ग्रांख बचाना ।

४ विचारणीय विषय का कोई एक अंग।
रू०भे०—पैंलू।
पहलूणी—देखो 'पैंलूणी' (रू.भे.)
पहलूणो—देखो 'पैंलूणो' (रू.भे.)
(स्त्री० पहलूणी)
पहले—देखो 'पैंलै' (रू.भे.)
उ०—जउ साहिब तूं नावियउ, मेहां पहलइ पूर। विचइ वहेसी बाहळा, दूर स दूरे दूर।—ढो.मा.
पहळो-वि० (स्त्री० पहळी) चौड़ा, विस्तृत।
उ०—राहग कोस १५ लांबो, कोस १५ पनरै पहळो छै। कोस तीस री गिरदवाई छै।—नैणसी
रू०भे०—पैंळो।
पहलो—देखो 'पैंलो' (रू.भे.)
(स्त्री० पहली)
पहलोत-सं०स्त्री०—१ प्रथम पत्नी (जयपुर)
२ देखो—'पैलियांण' (रू.भे.)
पहल्ल—देखो 'पहल' (रू.भे.)
उ०—'पातल' परगह ओपरी, हलकारै हरवल्ल। जरमन काग कवांण ज्यूं, पलै भगांण पहल्ल।—किसोरदांन बारहठ
पहल्ली—देखो 'पैंली' (रू.भे.)
उ०—कथ 'गोइंद' 'किसन' रै पेखि चित खांत पहल्ली। साहिजादै 'किसन' सूं, मंडे हित पेच मुगल्ली।—सू.प्र.
पहल्लो—देखो 'पैंलो' (रू.भे.)
पहव-सं०पु० [सं० प्रभु] १ राजा, नृप।
उ०—उछब मिळ प्रिय जूथ आए, गांन मंगळ चार गाए। अग्र कांम कळस्स आंणे, पहव वंदण कीध पांणे।—सू प्र.
२ योद्धा, वीर।
उ०—कुंडळ सूं कुळ भांण, पंथ आतुर खेडै पमंग। जोइयां उतन ज-आंण, पख हेकण आया पहव।—गो.रू.
वि०—प्रथम।
उ०—मिळै न पुळपुळ तन मनख, धनख-धरण चित धार। पात झड़ै तरवर पहव, चढ़ै न फेर विचार।—र.ज.प्र.
पहवि, पहवी—देखो 'प्रथवी' (रू.भे.)
उ०—१ कळिजुग तणि जड काढिवा, आयी भली अचंक री। फरवरी पहवि ऊपरि फिरै, निमो फोज निकळंक री।—पी.ग्रं.
उ०—२ लोकां आगे इम कहै, मांहि बैठा जाय। जपै प्रथवी-पति जेह थी, पहवी वधइ प्रताप।—प.च.चौ.
पहसाच-सं०पु० [सं० प्रहसांच] चन्द्रमा (नां.मा.)
पहांण—देखो 'प्रधांन' (रू.भे)
उ०—धम सुधम पहांण जत्थ नहु जीव हणिज्जइ। धम्म सुधम्म पहांण जत्थ नहु कूड़ भणिज्जइ।—अमययतिक यती

पहा-सं०पु०—प्रण, प्रतिज्ञा।
उ०—नेम धारियो नरेस, पहा न को चढ़े पेस। देख कहैं सको देस, खत्री बीज गयो खेस।—र.रू.
पहाड़-सं०पु० [सं० पाषाण] १ पर्वत, गिरि (डि.नां.मा.)
मुहा०—१ पहाड़ उठाणो—बड़ा काम सिर पर लेना।
२ पहाड़ कटणो—आफत दूर होना।
३ पहाड़ काटणो—नामुमकिन काम करना।
४ पहाड़ रा पत्थर ढोणो—देखो 'पहाड़ काटणो'।
५ पहाड टाळणो—आफत से जान बचाना।
६ पहाड़ टूटणो या टूट पड़णो—एकाएक भारी आफत आ जाना।
७ पहाड़ सूं टक्कर लेणी—भारी शत्रु से सामना करना।
८ पहाड़ हो जाणो—भारी या कठिन हो जाना।
२ किसी वस्तु का बड़ा भारी ढेर।
रू०भे०—पहार, पाड़, पाहड़, पाहाड़।
अल्पा०—पहाड़ी।
पहाड़वी-सं०स्त्री० [?] दक्षिण दिशा से उत्तर दिशा की ओर बहने वाली हवा।
वि०वि०—इस हवा के चलने से बादल तो खूब उमड़ते हैं किन्तु वर्षा नहीं होती है। यह हवा किसानों के लिए लाभदायक नहीं होती है।
पहाड़ा-सं०पु० [सं० प्रस्तार ?] किसी एक अंक के सिलसिलेवार एक से लेकर दस तक के साथ गुणा करने के फल।
ज्यूं—तीन रो पहाड़ो, सात रो पहाड़ो आदि।
रू०भे०—पावड़ो।
पहाड़ी-वि० [सं० पाषाण=पहाड़+रा. प्र. ई] पहाड़ पर रहने या होने वाला।
सं०स्त्री०—१ एक राग विशेष जिसके गाने का समय आधी रात है।
२ देखो 'पहाड़' (अल्पा., रू.भे.)
रू०भे०—पाहाड़ी।
पहार—१ देखो 'पहाड़' (रू.भे.)
उ०—प्यारा वे दिन खूब था, बिच न समातो हार। अब तो मिळणो कठण है, पड़े जु बीच पहार।—अज्ञात
२ देखो 'प्रहार' (रू.भे.)
उ०—नैण भळक्का लागिया, 'पंजर पड़ी पहार। कै ओ घायल जांणसी, कै वो वाहणहार।—जलाल बूबना री वात
पहारणी, पहारबो—देखो 'प्रहारणी, प्रहारबो' (रू.भे.)
उ०—किसनसिंघ कमधज्ज, मुग्रो 'गोअरधन' मारे। करमसेन नीकळे, कुंत गज कुंम पहारे।—गु.रू.बं.
पहारणहार, हारो (हारी), पहारणियो—वि०।
पहारिओड़ो, पहारियोड़ो, पहारयोड़ो—भू०का०कृ०।

पहारीजणो, पहारीजबो—कर्म वा० ।

पहारियोड़ो—देखो 'प्रहारियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० प्रहारियोड़ी)

पहास—देखो 'प्रभात' (रू.भे.)

उ०—किसनेस' 'तास' हरकिसन रा, बिहूं सोम्र झक बोळिया ।
तरवार जोर वाही तिहां, पहास रीत पंखोळिया ।

—बगतौ गिड़ियो

पहासणो, पहासबो—देखो 'प्रभासणो, प्रभासबो' (रू.भे.)

पहासणहार, हारो (हारी), पहासणियो—वि० ।

पहासिप्रोड़ो, पहासियोड़ो, पहास्योड़ो—भू०का०कृ० ।

पहासीजणो, पहासीजबो—कर्म वा० ।

पहासियोड़ो—देखो 'प्रभासियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० पहासियोड़ी)

पहि-अव्य०—१ किन्तु, लेकिन ।

उ०—सरसती न सूझै, ताइ तूं सोझै, पावता हुमो कि पाङळो ।
मन सरिसो धावतो मूढ मन, पहि किम पूजे पांगुळो ।

—वेलि

२ देखो 'प्रथ्वी' (रू.भे.)

३ देखो 'पथिक' (रू.भे.)

पहिम्र—देखो 'पथिक' (रू.भे.)

पहिड़ो—देखो 'पैंडो' (रू.भे.)

पहिचांण—देखो 'पैंचांण' (रू.भे.)

पहिचांणणो, पहिचांणबो—देखो 'पैंचांणणो, पैंचांणबो' (रू.भे.)

पहिचांणणहार, हारो (हारी), पहिचांणणियो—वि० ।

पहिचांणिप्रोड़ो, पहिचांणियोड़ो, पहिचांण्योड़ो—भू०का०कृ० ।

पहिचांणीजणो, पहिचांणीजबो—कर्म वा० ।

पहिचांणी—देखो 'पैंचांण' (रू.भे.)

उ०—तब कह्यौ सु परमेस्वर कौण । तब पहिता कहउ सु स्री क्रस्णजी । वासुदेवजी रा पुत्र । मनुस्य कै विचारि करि तौ इहि भांति अनुराग हुवउ । अर उवइ जातिस्मर हुंता ही । उनको पहिलां जनमां की पहिचांणि हुंती ही ।—वेलि

पहिचांणियोड़ो—देखो 'पंचांणियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० पहिचांणियोड़ी)

पहिटणो, पहिटबो-क्रि०स०—१ पलटना, बदलना ।

उ०—नदी तणा प्रवाह पहिटीइ, वनसपती जलिइ करी छाटीइ ।
एह वइ सखी ! ए वरसा काळ, नळहईइ जिम सल्लइ साल ।

—नळ-दवदंती रास

२ देखो 'पैठणो, पैठबो' (रू.भे.)

पहिटणहार, हारो (हारी), पहिटणियो—वि० ।

पहिटिप्रोड़ो, पहिटियोड़ो, पहिट्योड़ो—भू०का०कृ० ।

पहिटीजणो, पहिटीजबो—कर्म वा० ।

पहिटियोड़ो-भू०का०कृ०—१ पलटा हुआ, बदला हुआ ।

२ देखो 'पैठियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० पहिटियोड़ी)

पहिठाणो-सं०पु०—एक जाति विशेष का घोड़ा । उ०—इग्यार तरह तणा घोड़ा । जिका-जिका घोड़ा—अरबरा, कचूरा, कारा, गोरखा, मारिजा, सीपुरा, पहिठोला, पहिठाणा, नासरदेस रा, कछिरा, कतूक देस रा कुनदा···।—वां.दे.प.

पहिडणो, पहिडबो—देखो 'पहड़णो, पहड़बो' (रू.भे.)

उ०—तोम मुहिम जो हुवै, तोही पहिडूं नहीं पावीत । मोवगे एहवो कह्यो, तोही रावा पासि गीत ।—दोपाळ

पहिडणहार, हारो (हारी), पहिडणियो—वि० ।

पहिडियोड़ो, पहिड़ियोड़ो, पहिड्योड़ो—भू०का०कृ० ।

पहिडीजणो, पहिडीजबो—भाव वा० ।

पहिड़ियोड़ो—देखो 'पहड़ियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० पहिड़ियोड़ी)

पहिरणो, पहिरबो—देखो 'पहरणो, पहरबो' (रू.भे.)

पहिरणहार, हारो (हारी), पहिरणियो—वि० ।

पहिरियोड़ो, पहिरियोड़ो, पहर्योड़ो—भू०का०कृ० ।

पहिरीजणो, पहिरीजबो—कर्म वा० ।

पहिराणो, पहिराबो—देखो 'पहराणो, पहराबो' (रू.भे.)

पहिराणहार, हारो (हारी), पहिराणियो—वि० ।

पहिरायोड़ो—भू०का०कृ० ।

पहिराईजणो, पहिराईजबो—कर्म वा० ।

पहिरायोड़ो—देखो 'पहरायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० पहिरायोड़ी)

पहिरावणो, पहिरावबो—देखो 'पहराणो, पहराबो' (रू.भे.)

पहिरावणहार, हारो (हारी), पहिरावणियो—वि० ।

पहिराविप्रोड़ो, पहिरावियोड़ो, पहिराव्योड़ो—भू०का०कृ० ।

पहिरावीजणो, पहिरावीजबो—कर्म वा० ।

पहिरावियोड़ो—देखो 'पहरायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० पहिरावियोड़ी)

पहिरावो—देखो 'पहरावो' (रू.भे.)

पहिरियोड़ो—देखो 'पहरियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० पहिरियोड़ी)

पहिय, पहियड़—देखो 'पथिक' (रू.भे.)

उ०—१ नरवर देस सुहामणउ, जइ जावउ पहियांह । मारू-तणा संदेसड़ा ढोलइ नूं कहियाह ।—ढो.मा.

उ०—२ मारू मारग पहियड़ा, जउ पहिरइ सोवन्न । दंती चूड़इ मोतियां, ग्रीवा हेक वरन्न ।—ढो.मा.

पहियो—देखो 'पैंडो' (रू.भे.)

उ०—तो सांवत कह्यो—म्हारै ढाळ रै पगां पाछो कुण फिरै । सो

मुंहडै आगै रहकळौ खड़ो थौ तिणरी पहियौ चढ़ियौ ही जे काढ़ लियौ।
--नापै सांखलै री वारता

पहिरण-सं०पु० [सं० परिधान, प्रा० परिहाण] वस्त्र, पोशाक।
उ०—१ नयण सलूणीय काजल रेह तिलउ कसतूरी यम णिघडीय। करयले कंकण मणि झमकारु जादर फालीय पहिरण ए।
—पं.पं.च.
उ०—२ बीजळियां चमकै घणी, आभै-आभै पूरि। कदे मिले सूं सज्जना, करि कै पहिरण दूरि।—जसराज

पहिरणौ, पहिरबौ—देखो 'पहरणौ, पहरबौ' (रू.भे.)
उ०—मारुवणी मुंह-वन्न, आदित्ता हूं उज्जळौ। सोइ झांखउ सोवंन्न, जो गळि पहिरउ रूपकउ।—ढो.मा.
पहिरणहार, हारौ (हारी), पहिरणियौ—वि०।
पहिरिओड़ौ, पहिरियोड़ौ, पहिरयोड़ौ—भू०का०कृ०।
पहिरीजणौ, पहिरीजबौ—कर्म वा०।

पहिरामणी—देखो 'पहरावणी' (रू.भे.)
उ०—कुंयरी जोवा आवी भणी। राउलि दीधी पहिरामणी।
—कां.दे.प्र.

पहिराइत—देखो 'पौ'रायत' (रू.भे.)

पहिराड़णौ, पहिराड़बौ--देखो 'पहराणौ, पहराबौ' (रू.भे.)
उ०—कद करिसौ दुनीआंन मां, खूंदालमजी खैर। चुड़लौ कद पहिराड़सो, वकै कुंआरी वैर।—पी.ग्रं.

पहिराणौ, पहिराबौ—देखो 'पहराणौ, पहराबौ' (रू भे.)
उ०—कणियर तरु करणि सेवंती कूजा, जातो सोवन गुलाल जत्र। किरि परिवार सकळ पहिरायौ, वरणि वरणि ईए वसत्र।—वेलि
पहिराणहार, हारौ (हारी), पहिराणियौ—वि०।
पहिरायोड़ौ—भू०का०कृ०।
पहिराईजणौ, पहिराईजबौ—कर्म वा०।

पहिरायत, पहिरायति—देखो 'पौ'रायत' (रू.भे.)
उ०—ए पीळा भ्रमर छै। ए पहिरायति छै। चोकीदार छै। रुखमणिजी का चरण कमळ त्यैं को मकरंद जि रस—त्यैं का रखवाळा छै।—वेलि टी.

पहिरायोड़ौ—देखो 'पहरायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० पहिरायोड़ी)

पहिरावणी—देखो 'पहरावणी' (रू.भे.)
उ०—कीधी वहु पहिरावणी, राजवीयां ने रंग। रस राख्यौ जस संग्रह्यौ, वाध्यौ प्रेम अभंग।—स्रीपाळ

पहिरावणौ, पहिरावबौ—देखो 'पहराणौ, पहराबौ' (रू.भे.)
उ०—जो पहिरावै सोई पहिरूं, जो दे सोई खाऊं। मेरी उणकी प्रीत पुराणी, उण बिनि पल न रहाऊं।—मीरां
पहिरावणहार, हारौ (हारी), पहिरावणियौ—वि०।
पहिराविओड़ौ, पहिरावियोड़ौ, पहिराव्योड़ौ—भू०का०कृ०।
पहिरावीजणौ, पहिरावीजबौ—कर्म वा०।

पहिरावियोड़ौ—देखो 'पहरायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० पहिरावियोड़ी)

पहिरी—देखो 'प्रहरी' (रू.भे.)
उ०—हाथी सहु पहिरी हलकारैं, हलकंता नवि हारैं। सुंडा-दंड सबळ विसतारैं, मद-उनमत्ता मारैं हो।—वि.कु.

पहिलइ—देखो 'पै'लौ' (रू.भे.)
उ०—पहिलइ पोहरै रैणकै, दिवला अंबर डूल। घण कसतूरी हुइ रही, प्रिव चंपा रौ फूल।—ढो.मा.

पहिलउ—देखो 'पै'लौ' (रू.भे.)
उ०—ती पुत्र को हेत विचारतां पिता थी माता वडी। तेहि हित करि माता को वरणन पहिलउ कीयउ।—वेलि टी.
(स्त्री० पहिलड़ी)

पहिलकउ, पहिलको-वि० (स्त्री० पहिली) पहिले का, पूर्व का।
उ०—नयणां तणां वांण नीछटतां, निमख निमख ताइ वाधइ नेह। रत जांणती समउ जांणीयउ, साईं सूं पहिलकउ सनेह।
—महादेव पारवती री वेलि

पहिलड़ौ—देखो 'पै'लौ' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—ताडिका तणा जोनी संगट टाळीया। पहिलड़ै पवाड़ै लिगन ना पाळिया।—पी.ग्रं.
(स्त्री० पहिलड़ी)

पहिळाद, पहिळादि, पहिळादौ—देखो 'प्रहळाद' (रू.भे.)
उ०—१ हिरणाकस राकस जेण हणे, पहिळाद उवारण सोजि पणे। इळि भगत वभीखण लंक अपे, जगनाथ जगतगुरु आप जपे।—पिं.प्र.
उ०—२ हरि नै प्यारौ हेत प्रथम पहिलाजि पियारौ।--पी.ग्रं.
उ०—३ बळभद्र द्रू पहिळाद वभीसण। रतनो रुखमांगद अमरेस। मांझी हतौ भीच कुळमंडण। सहकारी जुहिठळ सारीस।—दूदौ
उ०—४ पांचां सा पहिळाद, पाट हरिचंद पधारौ। नवां कोड़ियां नूर, सात कोड़िआं सुधारौ।—पी.ग्रं.

पहिली—देखो 'पै'ली' (रू.भे.)
उ०—१ जउ तूं साहिब नावियउ, सावण पहिली तीज। बीजळ-तणइ झबूकड़इ, मूंध मरेसी खीज।—ढो.मा.

पहिलुं, पहिलु, पहिलूं—देखो 'पै'लौ' (रू.भे.)
उ०—१ विप्र विलंब न कीध जेणि आइस वसि, वात विचारि न भलौ न वुरौ। पहिलुं इ लगन लै पुहतौ, प्रोहित चंदेवरी पुरौ।
—वेलि
उ०—२ पापथांनिक पहिलु तुमे जांणौ, जीव हिंसा नवि करीये। वेंद्री तेंद्री चोरिंद्री पंचेंद्री, वध मां मन नवी धरीये।—ऐ.जै.का.सं.

पहलूंणि, पहलूंणी—१ देखो 'प्रथम, पहिले'।
उ०—अवढि आठे पांच टळाय, तीन ऊबरै बाकी ताय। पंगति और चलै तिणी पासि, परि पहिलूंणी जेम प्रकासि।—ल पिं.
२ देखो 'पैलियांण' (रू.भे.)

पहारीजणो, पहारीजबो—कर्म वा० ।
पहारियोड़ो—देखो 'प्रहारियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० प्रहारियोड़ी)
पहास—देखो 'प्रभास' (रू.भे.)
उ०—किसनेस' 'लाल' हरकिसन रा, बिहुं सोण झक वोळिया ।
तरवार जोर वाही तिहां, पहास रीस पंचोळिया ।
—वखतो खिड़ियो
पहासणो, पहासबो—देखो 'प्रभासणो, प्रभासबो' (रू.भे.)
पहासणहार, हारो (हारी), पहासणियो—वि० ।
पहासिग्रोड़ो, पहासियोड़ो, पहास्योड़ो—भू०का०कृ० ।
पहासीजणो, पहासीजबो—कर्म वा० ।
पहासियोड़ो—देखो 'प्रभासियोड़ो' (रू.भे)
(स्त्री० पहासियोड़ी)
पहि-अव्य०—१ किन्तु, लेकिन ।
उ०—सरसती न सूझै, ताइ तूं सोझै, वाउवा हुग्रो कि वाउळो ।
मन सरिसो धावतो मूढ मन, पहि किम पूजै पांगुळो ।
—वेलि
२ देखो 'प्रथ्वी' (रू.भे)
३ देखो 'पथिक' (रू.भे.)
पहिग्र—देखो 'पथिक' (रू.भे.)
पहिड़ो—देखो 'पैंड़ो' (रू.भे.)
पहिचाण—देखो 'पैंचांण' (रू.भे.)
पहिचांणणो, पहिचांणबो—देखो 'पैंचांणणो, पैंचांणबो' (रू.भे.)
पहिचांणणहार, हारो (हारी), पहिचांणणियो—वि० ।
पहिचांणिग्रोड़ो, पहिचांणियोड़ो, पहिचांण्योड़ो—भू०का०कृ० ।
पहिचांणीजणो, पहिचांणीजबो—कर्म वा० ।
पहिचांणी—देखो 'पैंचांण' (रू.भे.)
उ०—तब कह्यो सु परमेस्वर कौंण । तब पंडितां कह्यउ सु स्री क्रस्णजी । वासुदेवजी रा पुत्र । मनुस्य कै विचारि करि तौ इहि भांति अनुराग हुवउ । ग्रर उवइ जातिस्मर हुंता ही । उनकी पहिलां जनमां की पहिचांणि हुंती ही ।—वेलि
पहिचांणियोड़ो—देखो 'पंचांणियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० पहिचांणियोड़ी)
पहिटणो, पहिटबो-क्रि०स०—१ पलटना, बदलना ।
उ०—नंदी तणा प्रवाह पहिटीइ, वनसपती जलिइ करी छाटीइ ।
एह यद सखी ! ए वरसा काळ, नळहईइ जिम सलहइ साल ।
—नळ-दवदंती रास
२ देखो 'पैठणो, पैठबो' (रू.भे.)
पहिटणहार, हारो (हारी), पहिटणियो—वि० ।
पहिटिग्रोड़ो, पहिटियोड़ो, पहिट्योड़ो—भू०का०कृ० ।
पहिटीजणो, पहिटीजबो—कर्म वा० ।
पहिटियोड़ो-भू०का०कृ०—१ पलटा हुग्रा, बदला हुग्रा ।
२ देखो 'पैठियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० पहिटियोड़ी)
पहिठांणो-सं०पु०—एक जाति विशेष का घोड़ा । उ०—छत्रीस वरण तणा घोड़ा । किस्या-किस्या घोड़ा—उज्जरा, गह्वरा, कारा, तोरका, भारिजा, सींधुया, अहिवांणा, पहिठांणा, उत्तरदेस ना, ऊंदिरा, कलूज देस ना कुनथा""।—कां.दे.प्र.
पहिडणो, पहिडबो—देखो 'पहड़णो, पहड़बो' (रू.भे.)
उ०—छोरू कुछेरू जो हुवै, तोही पहिड़ै नहीं मावीत । भोलपणे एहबो कह्यो, तोही राजा चाले नीत ।—स्रीपाळ
पहिड़णहार, हारो (हारी), पहिड़णियो—वि० ।
पहिड़िग्रोड़ो, पहिड़ियोड़ो, पहिड़्योड़ो—भू०का०कृ० ।
पहिड़ीजणो, पहिड़ीजबो—भाव वा० ।
पहिड़ियोड़ो—देखो 'पहड़ियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० पहिड़ियोड़ी)
पहिनणो, पहिनबो—देखो 'पहरणो, पहरबो' (रू.भे.)
पहिनणहार, हारो (हारी), पहिनणियो—वि० ।
पहिनिग्रोड़ो, पहिनियोड़ो, पहन्योड़ो—भू०का०कृ० ।
पहिनीजणो, पहिनीजबो—कर्म वा० ।
पहिनाणो, पहिनाबो—देखो 'पहराणो, पहराबो' (रू.भे.)
पहिनाणहार, हारो (हारी), पहिनाणियो—वि० ।
पहिनायोड़ो—भू०का०कृ० ।
पहिनाईजणो, पहिनाईजबो—कर्म वा० ।
पहिनायोड़ो—देखो 'पहरायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० पहिनायोड़ी)
पहिनावणो, पहिनावबो—देखो 'पहराणो, पहरावो' (रू.भे.)
पहिनावणहार, हारो (हारी), पहिनावणियो—वि० ।
पहिनाविग्रोड़ो, पहिनावियोड़ो, पहिनाव्योड़ो—भू०का०कृ० ।
पहिनावीजणो, पहिनावीजबो—कर्म वा० ।
पहिनावियोड़ो—देखो 'पहरायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० पहिनावियोड़ी)
पहिनावो—देखो 'पहनावो' (रू.भे.)
पहिनियोड़ो—देखो 'पहरियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० पहिनियोड़ी)
पहिय, पहियड़—देखो 'पथिक' (रू.भे.)
उ०—१ नरवर देस सुहांमणउ, जइ जावउ पहियांह । मारू-तणा संदेसड़ा ढोलइ नूं कहियाह ।—ढो.मा.
उ०—२ मारू मारइ पहियड़ा, जउ पहिरइ सोवन्न । दंती चूड़इ मोतियां, श्रीया हेक वरन्न ।—ढो.मा.
पहियो—देखो 'पैंड़ो' (रू.भे.)
उ०—तो सांवत कही—म्हारै ढाळ रै पगां पाछो कुण फिरै । सो

मुंहडै आगै रहकड़ो लड़ो वो तिणरो वहियो वहियो ही जे काड़ लियो।
—नापै सांखलै री वारता

पहिरण—सं०पु० [सं० परिधान, प्रा० परिहाण] वस्त्र, पोशाक।
उ०—१ नयण सलूणीय काजल रेह तिलउ कसतूरी यम लिघटोय। करयले कंकण मणि झमकार आदर कानीय पहिरण ए।
—पं.पं.च.

उ०—२ बीजळियां चमकै घणी, घाभै-घाभै पूरि। कदे मिलै सूं सज्जना, करि के पहिरण दूरि।—जसराज

पहिरणो, पहिरबो—देखो 'पहरणो, पहरबो' (रू.भे.)
उ०—मादवणी मुंह-पत्र, आदिता हूं उज्जळो। सोइ आंतरउ सोवंन, जो यळि पहिरउ ऊजळउ।—ढो.मा.
पहिरणहार, हारो (हारी), पहिरणियो—वि०।
पहिरियोड़ो, पहिरियोड़ो, पहिरयोड़ो—भू०का०कृ०।
पहिरीजणो, पहिरीजबो—कर्म वा०।

पहिरामणी—देखो 'पहरावणी' (रू.भे.)
उ०—कुंवरी जोवा आयो मनी। राउलि दीधी पहिरामणी।
—का.दे.प्र.

पहिरावत—देखो 'पौ'रायत' (रू.भे.)

पहिराड़णो, पहिराड़बो—देखो 'पहराणो, पहरावो' (रू.भे.)
उ०—कद करिसो दुनीचंद मां, गुंदालमजी ग्रेर। गुदलो कद पहिराड़सो, वर्क कुंवारी बेर।—पी.ग्रं.

पहिराणो, पहिराबो—देखो 'पहराणो, पहराबो' (रू.भे.)
उ०—कळियर तद करणि हेवंसो कूजा, जांसा सोवन गुलाल जत्र। किरि परिवार सकळ पहिरायो, वरणि वरणि ईए वसत्र।—वेलि
पहिरावणहार, हारो (हारी), पहिराणियो—वि०।
पहिरायोड़ो—भू०का०कृ०।
पहिराईजणो, पहिराईजबो—कर्म वा०।

पहिरायत, पहिरायति—देखो 'पौ'रायत' (रू.भे.)
उ०—ए पीठा भ्रमर छै। ए पहिरायति छै। चोकीदार छै। रुक्मणिजी का चरण कमळ रूपै को मकरंद जि रस—रूपै का रसवाळा छै।—वेलि टी.

पहिरायोड़ो—देखो 'पहरायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० पहिरायोड़ी)

पहिरावणी—देखो 'पहरावणी' (रू.भे.)
उ०—कीधी बहु पहिरावणी, राजवीयां नै रंग। रस राख्यो जस संग्रह्यो, वाध्यो प्रेम अभंग।—सोवाळ

पहिरावणो, पहिरावबो—देखो 'पहराणो, पहराबो' (रू.भे.)
उ०—जो पहिरावै सोई पहिरूं, जो दे सोई खाऊं। मेरी उणकी प्रीत पुराणी, उण बिनि पल न रहाऊं।—मीरां
पहिरावणहार, हारो (हारी), पहिरावणियो—वि०।
पहिरावियोड़ो, पहिरावियोड़ो, पहिराव्योड़ो—भू०का०कृ०।
पहिरावीजणो, पहिरावीजबो—कर्म वा०।

पहिरावियोड़ो—देखो 'पहरायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० पहिरावियोड़ी)

पहिरी—देखो 'प्रहरी' (रू.भे.)
उ०—हाथी सहू पहिरी हलकारै, हलकंता नवि हारै। सुंडा-दंड सबळ विसतारै, मद-उनमत्ता मारै हो।—वि.कु.

पहिलइ—देखो 'पैं'लो' (रू.भे.)
उ०—पहिलइ पोहरै रैणकै, दिवला भ्रंबर हूंत। पछ कसतूरी हुइ रही, प्रिय चंपा री फूल।—ढो.मा.

पहिलउ—देखो 'पैं'लो' (रू.भे.)
उ०—सो पुत्र को हेत विचारतां पिता थी माता वडी। तेहि हित करि माता को वरणन पहिलउ कीयउ।—वेलि टी.
(स्त्री० पहिलड़ी)

पहिलकउ, पहिलको—वि० (स्त्री० पहिली) पहिले का, पूर्व का।
उ०—नयणां तणां वांण नीछटतां, निमख निमख ताइ वाधइ नेह। रस जोणतो समझ जांणीयइ, सादै सूं पहिलकउ सनेह।
—महादेव पारवती री वेलि

पहिलड़ो—देखो 'पैं'लो' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—गाडिका तणा जोनी संगट टाळीया। पहिलड़ै पवाड़ै लिगन ना पाळिया।—पी.ग्रं.
(स्त्री० पहिलड़ी)

पहिलाद, पहिलादि, पहिलादो—देखो 'प्रहलाद' (रू.भे.)
उ०—१ हिरणाकस राकस जेण हणे, पहिलाद उधारण सोजि पणे। दळि भगत वभीखण लक अपे, जगनाथ जगतगुर आप जपे।—पि.प्र.
उ०—२ हरि नै प्यारो हेत प्रथम पहिलादि पियारो।—पी.ग्रं.
उ०—३ वळभद्र ध्रू पहिलाद वभीखण। रतनो रूखमांगद अमरेस। भाभी हुतो भीष कुळमंडण। सहकारी जुहिठळ सारीस।—दूदो
उ०—४ वाचा सा पहिलाद, पाट हरिचंद पधारो। नवां कोड़ियां नूर, सात कोड़िआं सुधारो।—पी.ग्रं.

पहिलो—देखो 'पैं'लो' (रू.भे.)
उ०—१ जउ तूं साहिब नाविया, सावण पहिली तीज। बीजळ-तणइ भबूकड़इ, मूंध मरेसी खीज।—ढो.मा.

पहिलुं, पहिलु, पहिलूं—देखो 'पैं'लो' (रू.भे.)
उ०—१ विप्र विलंब न कीघ जेणि प्राइस वसि, वात विचारि न भली न बुरी। पहिलुं ई लगन लै पुहती, प्रोहित चदेवरी पुरी।
—वेलि
उ०—२ पावयांनिक पहिलु तुमे जांणो, जीव हिंसा नवि करीये। बेंद्री तेंद्री चोरिद्री पचेंद्री, वध मां मन नवो धरीये।—ऐ.जै.का.सं.

पहलूंणि, पहलूंणी—१ देखो 'प्रथम, पहिले'।
उ०—नेवदि आठे पांच टळाय, तीन ऊपरै बाकी ताय। पंगति ओर चलै तिणी पासि, परि पहिलूंणी जेम प्रकासि।—ल पि.
२ देखो 'पैलियांण' (रू.भे.)

पहिलूंणो—देखो 'पैंलूणो' (रू.भे.)
(स्त्री० पैंलूणी)
पहिलै—देखो 'पैंलो' (रू.भे.)
उ०—जिहां परमेस्वरि पहिलै जनम दीयो । जिण मुख रै विसै जीभ दीधी । पाछै भरण पोसण करै ।—वेलि टी.
पहिलो—देखो 'पैंलो' (रू.भे.)
उ०—१ किसै जवानै करै प्रघट दाखियो पहिलो । दैत भणै अकब्बर विसन नां ल्याव वहिलो ।—पी.ग्रं.
उ०—२ स्री कृस्ण देव तैं पहिलो ज रुकमणीजी को वरणन कीयउ । सु या वासते जु स्रंगार ग्रंथ कीजैं तो पहिलै स्री को वरणन कीयो चाही जै । स्रंगार स्री को सोभित विसेस छै ।—वेलि टी.
पही—१ देखो 'पथिक' (रू.भे.)
उ०—१ कवि पंडित जाहिर करै, मोटां रो जस वास । छोटां रा जस रो हुवै, पहियां हूंत प्रकास ।—बां.दा.
उ०—२ पही भमंता जइ मिळइ, तउ प्री आखे भाय । जोवण बंधन तोडसइ, वंधण घातउ आय ।—ढो.मा.
२ देखो 'पैंड़ी' (रू.भे.)
उ०—कांन जड़ाऊ कांम रा, कुंडळ धारण कीन्ह । झळहळ तारा झूमका, दुहुं पाखां ससि दीन्ह । दुहुं पाखां ससि दीन्ह, अंधार निकंदवा, तेजोमय रथ तास निघात पही नवा । मांगफूल सिरफूल, जड़ाऊ मंडिया । खिण खिण निरखै नाह, हिये दुख खंडिया ।—बां.दा.
पहुंच, पहुंचण-सं०स्त्री० [सं० प्रभूत] १ पहुंचने की क्रिया या भाव ।
२ किसी के कहीं पहुचने की सूचना ।
३ ऐसा स्थान जहाँ तक पहुँचा जा सके ।
ज्यूं—दीवाल घणी हाथ री पहुंच सूं ऊंची है ।
४ किसी स्थान या व्यक्ति तक पहुंचने की शक्ति, सामर्थ्य ।
उ०—१ सह दरसै संसार, अंग आक्रत वण एक सम । चितवन समझ विचार, पहुचण कवण 'प्रतापसी' ।
—जैतदांन बारहठ
५ किसी विषय का होने वाला ज्ञान ।
६ ज्ञान की सीमा ।
रू०भे०—पउहंत, पहुंत, पहुत, पहूंत, पहूत, पहोंत, पहोच, पांत, पांथ, पुंहच, पुंहत, पोच, पोंत, पोंहच, पोहंत, पो'च, पो'छ, पोहत, पोहोत, पौंच, पौच, पौहच, पौहत्त ।
पहुंचणो, पहुंचबो-क्रि०अ० [सं० प्रभूत, प्रा० पहूच] १ एक स्थान से चल कर दूसरे स्थान पर उपस्थित होना, प्राप्त होना, पहुँचना ।
उ०—दिन लगन सु नैड़ो, दूरि द्वारिका, भो पहुचेस्यां किसी भति । सांझ सोचि कुंदणपुरि सूतो, जागियो परभाते जगति ।—वेलि
मुहा०—पहुंचण वाळो—जिसका प्रवेश बड़े-बड़े स्थानों में हो, बड़ी-बड़ी शक्तियो से सम्पर्क हो ।
२ किसी भेजी हुई वस्तु का प्राप्त होना ।
ज्यूं—चिट्ठी पहुंचवा सूं सब समाचार मालम हुया ।
३ फैलाव के कारण एक स्थान से दूसरे स्थान तक व्याप्त होना, पहुँचना । (पानी, आग आदि)
४ मान, मात्रा या संख्या में किसी विशिष्ट स्थिति को प्राप्त होना ।
५ प्रविष्ठ होना, घुसना, पैठना ।
ज्यूं—इण भींत रै कारण सारा मकान में सील पहुचै ।
६ समझने में समर्थ होना ।
उ०—कहू न सुन न सुरतै सुप आगै, अगम सहर है सोई । तहां बसै ताहि दाग न लागै, पहुंचै बिरळा कोई ।—ह.पु.वा.
७ ज्ञान के क्षेत्र में सक्षम होना ।
उ०—कीधां कुण पहुंचै किसन, वडां सरीखां वाद । आद नको तो विण अनंत, आतम अम्म न आद ।—ह.र.
८ किसी का आशय या अभिप्राय समझ लेना ।
ज्यूं—हूं आपरै मतळब तक पहुंच को पायो नीं ।
मुहा०—पहुंचो हुओ—जिसे सब कुछ मालूम हो, जो सब कुछ जानता हो ।
९ किसी विषय में किसी के बराबर होना ।
ज्यूं—पढ़ण में म्हो आपरै भाई नै नीं पहुंचै ।
१० एक स्थिति या अवस्था से दूसरी स्थिति या अवस्था को प्राप्त होना, पाना (उन्नति)
११ परिणाम के रूप में अनुभव होना, प्राप्त होना ।
ज्यूं—हकीमजी री दवाई सूं काफी फायदो पहूंच्यो ।
पहुंचणहार, हारो(हारी), पहुचणियो—वि० ।
पहुंचाड़णो, पहुंचाड़बो, पहुंचाणो, पहुंचावो, पहुंचावणो, पहुंचावबो
—प्रे०रू० ।
पहुंचिओड़ो, पहुंचियोड़ो, पहुंच्योड़ो—भू०का०कृ० ।
पहुंचीजणो, पहुंचीजबो—भाव वा० ।
पउहंतणो, पउहतबो, पहुंतणो, पहुंतबो, पहुतणो, पहुतबो, पहुत्तणो, पहुत्तबो, पहूंतणो, पहूंतबो, पहूतणो, पहूतबो, पहूत्तणो, पहूत्तबो, पहोंचणो, पहोंचबो, पहोंतणो, पहोंतबो, पहोतणो, पहोतबो, पांचणो, पांचबो, पांथणो, पांथबो, पुंहचणो, पुंहचबो, पुंहतणो, पुंहतबो, पोंचणो, पोंचबो, पोंतणो, पोंतबो, पोहंचणो, पोहंचबो, पो'चणो, पो'चबो, पो'छणो, पो'छबो, पोहचणो, पोहचबो, पोहतणो, पोहत्तबो, पौंहचणो, पोहचबो, पोथणो, पोथबो, पौहचणो, पौहचबो, पौहतणो, पौहतबो ।—रू०भे० ।
पहुंचवांन—देखो 'पो'चवांन' (रू.भे.)
पहुंचाड़णो, पहुंचाड़बो—देखो 'पहुंचाणो, पहुंचावो' (रू.भे.)
उ०—मुंहतै रो साळो 'पतो मुंहतो' कोट मांहे हुतो सु वाहिरा जका वस्तु मांहि न्हाळीजती सु करमचंद मुंहतो घाटो मांहा पहुंचाड़ै तिण वास्तै कोट टूटै नहीं ।—द.वि.
पहुंचाड़णहार, हारो(हारी), पहुंचाड़णियो—वि० ।

पहुंचाड़िप्रोड़ौ, पहुंचाड़ियोड़ौ, पहुंचाड़योड़ौ—भू०का०कृ० ।
पहुंचाड़ीजणौ, पहुंचाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

पहुंचाड़ियोड़ौ—देखो 'पहुंचायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० पहुंचाड़ियोड़ी)

पहुंचाणौ, पहुंचाबौ—क्रि०स० ('पहुंचणौ' क्रि० का प्रे० रू०) १ एक स्थान से दूसरे स्थान पर उपस्थित या प्राप्त कराना, पहुंचाना ।
२ किसी भेजी हुई वस्तु को प्राप्त कराना ।
३ फैला कर एक स्थान से दूसरे स्थान तक व्याप्त कराना, पहुंचाना (आग, पानी)
४ मान, मात्रा या संख्या में किसी विशिष्ट स्थिति को प्राप्त कराना ।
५ प्रविष्ठ कराना, घुसाना, पैठाना ।
६ समझने में समर्थ कराना/करना ।
७ ज्ञान में सक्षम करना/कराना ।
८ किसी के आशय या अभिप्राय को समझाना ।
९ किसी विषय में किसी के बराबर करना/कराना ।
१० एक स्थिति या अवस्था से दूसरी स्थिति या अवस्था को प्राप्त कराना । (उन्नति)
११ परिणाम के रूप में अनुभव कराना, प्राप्त कराना ।
पहुंचाणहार, हारौ(हारी), पहुंचाणियौ—वि० ।
पहुंचायोड़ौ—भू०का०कृ० ।
पहुंचाईजणौ, पहुंचाईजबौ—कर्म वा० ।
पहुचाड़णौ, पहुंचाड़बौ, पहुंचावणौ, पहुंचावबौ, पहुचाड़णौ, पहुचाड़बौ, पहोंचाणौ, पहोंचाबौ, पहोचावणौ, पहोंचावबौ, पांचाणौ, पांचाबौ, पुहुंचाणौ, पुहुंचाबौ, पुहुंताणौ, पुहुंताबौ, पोंहचाणौ, पोंहचाबौ, पों'चाणौ, पों'चाबौ, पो'चाणौ, पो'चाबौ, पोहचाड़णौ, पोंहचाड़बौ, पोहचाणौ, पोहचाबौ, पोहचावणौ, पोहचावबौ, पोहोचाणौ, पोहोचाबौ, पोंहचाणौ, पोंहचाबौ, पोचाणौ, पोचाबौ, पोचावणौ, पोचावबौ, पोंचाड़णौ, पोंचाड़बौ, पोंचाणौ, पोंचाबौ, पोंचावणौ, पोंचावबौ, पोहचाणौ, पोहचाबौ, पोहताणौ, पोहताबौ
—रू०भे० ।

पहुंचायोड़ौ—भू०का०कृ०—१ एक स्थान से दूसरे स्थान पर उपस्थित या प्राप्त कराया हुआ, पहुंचाया हुआ ।
२ किसी भेजी हुई वस्तु को प्राप्त कराया हुआ, पहुंचाया हुआ ।
३ फैला कर एक स्थान से दूसरे स्थान तक व्याप्त कराया हुआ ।
(आग, पानी)
४ किसी विशिष्ट स्थिति को प्राप्त कराया हुआ ।
(मान, मात्रा या संख्या में)
५ प्रविष्ठ कराया हुआ, घुसाया हुआ ।
६ समझने में समर्थ कराया हुआ ।
७ सक्षम कराया हुआ (ज्ञान में)
८ किसी के आशय या अभिप्राय को समझाया हुआ ।
९ किसी के बराबर कराया हुआ (किसी विषय में)
१० एक स्थिति या अवस्था से दूसरी स्थिति या अवस्था को प्राप्त कराया हुआ (उन्नति)
११ परिणाम के रूप में अनुभव कराया हुआ, प्राप्त कराया हुआ ।
(स्त्री० पहुंचायोड़ी)

पहुंचावणौ, पहुंचावबौ—देखो 'पहुंचाणौ, पहुंचाबौ' (रू.भे.)
पहुंचावणहार, हारौ(हारी), पहुंचावणियौ—वि० ।
पहुंचाविप्रोड़ौ, पहुंचावियोड़ौ, पहुंचाव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
पहुंचावीजणौ, पहुंचावीजबौ—कर्म वा० ।

पहुंचावियोड़ौ—देखो 'पहुंचायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० पहुंचावियोड़ी)

पहुंचियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ एक स्थान से चल कर दूसरे स्थान पर उपस्थित हुआ हुआ, प्राप्त हुआ हुआ, पहुंचा हुआ ।
२ ईश्वर का सामीप्य प्राप्त, ज्ञानी ।
३ प्राप्त हुआ हुआ, पहुंचा हुआ (पत्र या वस्तु)
४ फैलाव के कारण एक स्थान से दूसरे स्थान तक हुआ हुआ ।
(पानी, आग)
५ मान, मात्रा या संख्या में किसी विशिष्ट अवस्था को प्राप्त हुआ हुआ ।
६ घुसा हुआ, पैठा हुआ, प्रविष्ठित ।
७ समझने में समर्थ ।
८ किसी कार्य सम्पादन में दक्ष, चतुर, सक्षम, ज्ञानी ।
९ ज्ञान के क्षेत्र में सक्षम, पारंगत ।
१० प्रकाण्ड-पण्डित ।
११ किसी के आशय या अभिप्राय को समझा हुआ, प्राप्त हुआ हुआ ।
१२ किसी विषय में किसी के बराबर हुआ हुआ ।
१३ एक स्थिति या अवस्था से दूसरी स्थिति या अवस्था को प्राप्त हुआ हुआ । (उन्नत)
१४ परिणाम के रूप में अनुभव हुआ हुआ, प्राप्त हुआ हुआ ।
(स्त्री० पहुंचियोड़ी)

पहुंचि, पहुंची—देखो 'पहुंच' (रू.भे.)
उ०—पुणे गुर असुर 'दुरंगेस' आपकी पहुंचि, वडा अनड़ां सिरै आंक वाळै । पूत 'अवरंग' तणै नार सारा पळै, पूत अवरंग तणा तूंहीज पाळै ।—दुरगादास राठौड़ रौ गीत

पहुंची—देखो 'पुणचौ' (रू.भे.)
उ०—अही नारी जरे, सही मोल ऊंची, प्रभू रै पहुंचै लटूके प्रहुंची ।
—ना.द.

पहुंत—देखो 'पहुंच' (रू.भे.)

पहुंतणौ, पहुंतबौ—देखो 'पहुंचणौ, पहुंचबौ' (रू.भे.)
उ०—पित कुरब नूंण भूपाळ रो, करि ऊजळ जुध जस करगि । मगहर भेदि सूरज मंडळ, 'सूरजमल' पहुंतौ सरगि ।—सू.प्र.

पहुतणहार, हारौ (हारी), पहुंतणियो—वि० ।
पहुतिश्रोड़ो, पहुतियोड़ो, पहुंत्योड़ो—भू०का०कृ० ।
पहुंतीजणो, पहुंतीजबो—भाव वा० ।
पहुंतियोड़ो—देखो 'पहुंचियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० पहुतियोड़ी)
पहु-सं०पु० [सं० प्रभु] १ ईश्वर, प्रभु ।
उ०—नमो पहु सायर बांधण पाज, नमो रिपु-रांवण-रोळण-राज ।
—ह.र.

२ राजा, नृप ।
उ०—१ पहु गोघळिया पास, आलूधा अकबर तणी । रांणो खिमै न रास, प्रघळो सांह 'प्रतापसी' ।—दुरसो आढ़ो
उ०—२ मोटां पहु आराध करै महि, मोटं गढ़ लीजतै मुवौ । जगि हरि-भगत तुहाळो 'जैमल', हरि सारीख प्रताप हुवौ ।
—जैमल वीरमदेवोत मेड़तिया राठौड़ री गीत

क्रि०वि०—प्रत्यक्ष, सामने ।
रू०भे०—पहू ।

पहुआवर-सं०पु० [देशज] एक प्रकार का व्यंजन विशेष ।
उ०—पहुआवर घनपुर तणा रे, लाल गुप-चुप गढ ग्वाळेर । फरणसाही लाडू भला रे, लाल वारू बीकानेर ।—प.च.चौ.
पहुचणो, पहुचबो—देखो 'पहुंचणो, पहुंचवो' (रू.भे.)
पहुचणहार, हारौ (हारी), पहुचणियो—वि० ।
पहुचिश्रोड़ो, पहुचियोड़ो, पहुच्योड़ो—भू०का०कृ० ।
पहुचीजणो, पहुचीजबो—भाव वा० ।
पहुचाड़णो, पहुचाड़बो—देखो 'पहुंचाणो, पहुंचावो' (रू.भे.)
उ०—सिवांणो राजाजो हीज तोड़ियो हुतो पणि मुंहतो 'पतै' मुंहतै नूं ऊपरि जिका वस्तु जोईजती सु पहुचाड़तो तिण वासतै गांव तूटो नहीं ।—द.वि.
पहुचाड़णहार, हारौ (हारी), पहुचाड़णियो—वि० ।
पहुचाड़िश्रोड़ो, पहुचाड़ियोड़ो, पहुचाड़्योड़ो—भू०का०कृ० ।
पहुचाड़ीजणो, पहुचाड़ीजबो—कर्म वा० ।
पहुचाड़ियोड़ो—देखो 'पहुंचायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० पहुचाड़ियोड़ी)
पहुचाणो, पहुचावो—देखो 'पहुंचाणो, पहुंचावो' (रू.भे.)
पहुचाणहार, हारौ (हारी), पहुचाणियो—वि० ।
पहुचायोड़ो—भू०का०कृ० ।
पहुचाईजणो, पहुचाईजबो—कर्म वा० ।
पहुचायोड़ो—देखो 'पहुंचायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० पहुचायोड़ी)
पहुटणो, पहुटबो—देखो 'पहटणो, पहटबो' (रू.भे.)
उ०—तूटै हार अयार तुरंगम, पहुटति मांग अनंग पड़ी । कमधज 'रतनै' सूं वितकामणि, चाचरि चवरंग पलंग चढ़ी ।—दूदो
पहुटणहार, हारौ (हारी), पहुटणियो—वि० ।
पहुटिओड़ो, पहुटियोड़ो, पहुटयोड़ो—भू०का०कृ० ।
पहुटीजणो, पहुटीजबो—भाव वा० ।
पहुड़णो, पहुड़बो—देखो 'पहड़णो, पहड़बो' (रू.भे.)
पहुड़णहार, हारौ (हारी), पहुड़णियो—वि० ।
पहुड़िश्रोड़ो, पहुड़ियोड़ो, पहुड़्योड़ो—भू०का०कृ० ।
पहुड़ीजणो, पहुड़ीजबो—भाव वा० ।
पहुड़ियोड़ो—देखो 'पहड़ियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० पहुड़ियोड़ी)
पहुत—देखो 'पहुंच' (रू.भे.)
पहुत्त—देखो 'पहुंच' (रू.भे.)
पहुतणो, पहुतबो—देखो 'पहुंचणो, पहुंचबो' (रू.भे.)
उ०—ताहरां 'ऊदो' पाग ले चालियो । जाइ 'मेळै' रै गांम पहुंतो ।
—ऊदै उगमणावत री बात

पहुतणहार, हारौ (हारी), पहुतणियो—वि० ।
पहुतिश्रोड़ो, पहुतियोड़ो, पहुत्योड़ो—भू०का०कृ० ।
पहुतीजणो, पहुतीजबो—भाव वा० ।
पहुत्तणो, पहुत्तबो—देखो 'पहुंचणो, पहुंचबो' (रू.भे.)
उ०—इणि परि ऊमा देवड़ी, जांणी मारुवत्त । सुप्रभाति कहि वांभणी, पिंगळ पासि पहुत्त ।—ढो.मा.
पहुतियोड़ो—देखो 'पहुंचियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० पहुतियोड़ी)
पहुपंजळि—देखो 'पुस्पांजळि' (रू.भे.)
उ०—प्रगटै मधु कोक संगीत प्रगटिया, सिसिर जवनिका दूरि सिरि । निज मंत्र पढ़ै पात्र रितु नाखो, पहुपंजळि वणराय परि ।—वेलि
पहुप—देखो 'पुस्प' (रू.भे.)
उ०—पहुप भार दुख जननि न प्रंमै । जोगणि असटम वरस जनंमै ।
—सू.प्र.

पहुपांजळी—देखो 'पुस्पांजळि' (रू.भे.)
पहुमि, पहुमी—देखो 'प्रथवी' (रू.भे.)
उ०—१ प्राणांत पहुमि परिणामपस्य । रट्ठौर सकळ संवत रहस्य ।
—ऊ.का.

उ०—२ छोरा रोळा में छपने रस रुळिया, पहुमी नवरस नस दस ह्रौं दिस पुळिया ।—ऊ.का.
उ०—३ जळ जेथै जगदीस, भासे जग भागीरथी । सो व्है पहुमी सीस, तो जळ सूं निरमळ तुरत ।—बां.दा.
पहुर—देखो 'प्रहर' (रू.भे.)
उ०—पहुर हुवउ ज पधारियां, मो चाहंती चित्त । डेहरिया खिण मइ हुवइ, घण दूठइ सरजित्त ।—ढो.मा.

पहूवो—देखो 'प्रथवी' (रू.भे.)

उ०—टूटी धावारा कावारां छिळती । पड़ती परनाळां पहुवी पिळपिळती ।—ऊ.का.

पहुवीनाह—देखो 'प्रथवीनाथ' (रू.भे.)

पहूंत—देखो 'पहुंच' (रू.भे.)

पहूंतणो, पहूंतबो—देखो 'पहुंचणो पहुंचबो' (रू.भे.)

उ०—१ पाटपो-प्रधान चल्यो तिणी ठाई । पहु अजमेर पहूंता जाई । —बी.दे.

पहूंतणहार, हारो (हारी), पहूंतणियो—वि० ।

पहूंतिओड़ो, पहूंतियोड़ो, पहूंत्योड़ो—भू०का०कृ०

पहूंतीजणो, पहूंतीजबो—भाव वा० ।

पहूंतियोड़ो—देखो 'पहुंचियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० पहूंतियोड़ी)

पहू—देखो 'पहु' (रू.भे.)

उ०—तूं जागतउ सोरभ 'पास' पहू । जाणइ ए वात जगत्र सहू । —ल.कु.

पहूतणो, पहूतबो—देखो 'पहुंचणो, पहुंचबो' (रू.भे.)

उ०—पंचम कउ दिन पहूतो दइ माईं । कउत हुंड परि ढोढो हो राईं ।—बी.दे.

पहूतणहार, हारो (हारी), पहूतणियो—वि० ।

पहूतिओड़ो, पहूतियोड़ो, पहूत्योड़ो—भू०का०कृ० ।

पहूतीजणो, पहूतीजबो—भाव वा० ।

पहूतियोड़ो—देखो 'पहुंचियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० पहूतियोड़ी)

पहूत्त—देखो 'पहुंच' (रू.भे.)

पहूत्तणो, पहूत्तबो—देखो 'पहुंचणो, पहुंचबो' (रू.भे.)

उ०—हय हींसारव गज धमक, बलोधा सुहड़ पहूत्त । अगि ऊमि मारग मूंकतां, कामावती पहूत्त ।—मा.कां.प्र.

पहूत्तणहार, हारो (हारी), पहूत्तणियो—वि० ।

पहूत्तिओड़ो, पहूत्तियोड़ो, पहूत्त्योड़ो—भू०का०कृ० ।

पहूत्तीजणो, पहूत्तीजबो—भाव वा० ।

पहूत्तियोड़ो—देखो 'पहुंचियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० पहूत्तियोड़ी)

पहेली—सं०स्त्री० [सं० प्रहेलिका] १ दूसरी वस्तु या विषय का-सा ज्ञान पड़ने वाला किसी वस्तु या विषय का वर्णन, बुझौवल । (उ.र.)

२ कोई ऐसी बात जिसका अर्थ न खुलता हो ।

मुहा०—पहेली बुझाणी, घुमा फिरा कर कहना ।

रू०भे०—पहली, पहैली, प्रहेलि, प्रहेलिका ।

पहेत—वि०—सहित, संयुक्त ?

उ०—घणी मूंग बाजरी री खीच रांद दाळ रोटियां पहेत घोर गोरस सारो तयार करनै राखिया छै ।—नैणसी

पहैली—१ देखो 'पै'ली' (रू.भे.)

उ०—पीहर हेक रिड़मां पहैली, पाप खांड घर परवाळो । लाग मवासां कुंभै लागी, मांडु घुणी परतमाळो ।—नैणसी

२ देखो 'पहेली' (रू.भे.)

पहोंच—देखो 'पहुंच' (रू.भे.)

उ०—बादसाहा नूं कांम घणा छै तिणसूं कांम री पहोंच पूरी नहीं कर सकै ।—नी.प्र.

पहोंचणो, पहोंचबो—देखो 'पहुंचणो, पहुंचबो' (रू.भे.)

उ०—इतरै में चावरो लोग पण पाण होज पहोंचियो । सत्रुसाळ, रतन महेसदासोत रै सामळ रहिया ।

—महाराजा सो पदमसिह री वात

पहोंचणहार, हारो (हारी), पहोंचणियो—वि० ।

पहोंचिओड़ो, पहोंचियोड़ो, पहोंच्योड़ो—भू०का०कृ० ।

पहोंचीजणो, पहोंचीजबो—भाव वा० ।

पहोंचाणो, पहोंचाबो—'पहुंचाणो, पहुंचाबो' (रू.भे.)

पहोंचाणहार, हारो (हारी), पहोंचाणियो—वि० ।

पहोंचायोड़ो—भू०का०कृ० ।

पहोंचाईजणो, पहोंचाईजबो—कर्म वा० ।

पहोंचायोड़ो—देखो 'पहुंचायोड़ो (रू.भे.)

(स्त्री० पहोंचायोड़ी)

पहोंचावणो, पहोंचावबो—देखो 'पहुंचाणो, पहुंचाबो' (रू.भे.)

पहोंचावणहार, हारो (हारी), पहोंचावणियो—वि० ।

पहोंचाविओड़ो, पहोंचावियोड़ो, पहोंचाव्योड़ो—भू०का०कृ० ।

पहोंचावीजणो, पहोंचावीजबो—कर्म वा० ।

पहोंचावियोड़ो—देखो 'पहुंचायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० पहोंचावियोड़ी)

पहोंचियोड़ो—देखो 'पहुंचियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० पहोंचियोड़ी)

पहोंत—देखो 'पहुच' (रू.भे.)

पहोंतणो, पहोंतबो—देखो 'पहुंचणो, पहुंचबो' (रू.भे.)

उ०—ईण भांत दिन पांच सात आडा घात नै एक तो साथ रजपूत घर येक चाकर सो भी मजबूत । दोय आदमी साथ लेनै जिण मेवासा मैं भील रहतो तठै ही घाय जाय पहोंतो ।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

पहोंतणहार, हारो (हारी), पहोंतणियो—वि० ।

पहोंतिओड़ो, पहोंतियोड़ो, पहोंत्योड़ो—भू०का०कृ० ।

पहोंतीजणो, पहोंतीजबो—भाव वा० ।

पहोंतियोड़ो—देखो 'पहुंचियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० पहोंतियोड़ी)

पहोड़—सं०पु०—भाटी वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।

पहोड़ो—देखो 'पंडो' (रू.भे.)

उ०—जावतै हीज मुंह आगै रावजी रो अरावो खड़ो हुतो सु एकै रहकळै री पहोड़ो चढ़ियै हीज काढ़ि अर हाथ कर लियो।

—नैणसी

पहोच—देखो 'पहुंच' (रू.भे.)

पहोचणो, पहोचबो—देखो 'पहुंचणो, पहुंचबो' (रू.भे.)

पहोचणहार, हारो (हारी), पहोचणियो—वि०।

पहोचिओड़ो, पहोचियोड़ो, पहोच्योड़ो—भू०का०कृ०।

पहोप—देखो 'पुस्प' (रू.भे.)

उ०—जन हरिदास वसंत रुति, खेले गोपा ग्वाळ। हरि सन्मुख जहां का तहां, करि पहोपन की माळ।—ह.पु.वा.

पहोपकछो—सं०पु० [सं० पुष्पकच्छ] एक प्रकार का अशुभ रंग का घोड़ा (शा हो.)

पहोमि, पहोमी—देखो 'प्रथवी' (रू.भे.)

पहोर—देखो 'प्रहर' (रू.भे.)

उ०—१ पछै श्रावण री पहोर छै, ताहरां 'जैतो', 'कूंपो', अखैराज सोनगरो कूंपाजी रै डेरै में बैठा छ।—नैणसी

पहोरो—देखो 'पहरो' (रू.भे.)

उ०—जगहत्थ जगत सिर जळहळै, दस दिगपाळ दहक्कवै। महिमाल छहां जिहां सातमो, चौथै पहोरै चक्कवै।—सू.प्र.

पहोवर—देखो 'पयोधर' (रू.भे.)

पहोवी—देखो 'प्रथवी' (रू.भे.)

उ०—चंचळ चपळ चकोर जिम, नयण कांती सोहै घणी। कहै राघव सुलतांण सुणि, पहोवी हुवै अइसी पदमणी।—प.च.चौ.

पहोत—देखो 'पहुंच' (रू.भे.)

पहोतणो, पहोतबो—देखो 'पहुंचणो, पहुंचबो' (रू.भे.)

उ०—१ पछै सवराड़ रा गाडा दुनाड़ै पहोता। तितरै देवीदास रांणेराव री थांणो मारनै गढ़ लियो।—नैणसी

उ०—२ चंदरसेण सारण री चढ़ियो, लोहीयावट आय पहोतो।

—नैणसी

पहोतणहार, हारो (हारी), पहोतणियो—वि०।

पहोतिओड़ो, पहोतियोड़ो, पहोत्योड़ो—भू०का०कृ०।

पहोतीजणो, पहोतीजबो—भाव वा०।

पहोर—देखो 'प्रहर' (रू.भे.)

उ०—दिन पहोर चढ़ियो नै वोठी फळोधी आया।—नैणसी

पह्लवी—देखो 'पहलवी' (रू.भे.)

पां—क्रि०वि०—१ पास में (हाड़ौती)

२ देखो 'पांसु' (रू.भे.)

३ देखो 'पद' (रू.भे.)

४ देखो 'पांम' (रू.भे.)

पांउंडो, पांवडो—देखो 'पांवडो' (रू.भे.)

पांऊणो—देखो 'पांमणो' (रू.भे.)

उ०—ढोला तणा संदेसड़ा, दिस सैणां कहियाह। हूं आवु छूं पांऊणो, वेगो हो वहीयांह।—ढो.मा.

पांक—१ देखो 'पूंछ' (रू.भे.)

२ देखो 'पंक' (रू.भे.)

पांकणो, पांकबो—क्रि०स० [?] १ छोड़ना, त्यागना।

उ०—१ अमर हुआ मह को दळ ऊपर, पांकै परम जिकै नर पोच। सूरां मरण तणी की संका, सूरां मरण तणी की सोच।

—केसरीसिंह बारहठ (कणावास)

उ०—२ हूं लालच पांकै नहीं, यै आंकै बारांह। लैणो भावै मंगणां, दैणो दातारांह।—बां दा.

पांकणहार, हारो (हारी), पांकणियो—वि०।

पांकिओड़ो, पांकियोड़ो, पांक्योड़ो—भू०का०कृ०।

पांकीजणो, पांकीजबो—कर्म वा०।

पांकियोड़ो—भू०का०कृ०—छोड़ा हुआ, त्यागा हुआ।

(स्त्री० पांकियोड़ी)

पांख—सं०स्त्री० [सं० पक्ष] १ पक्षी का डैना, पंख, पर।

उ०—सयणां पांखां प्रेम की, तई अब पहिरी तात। नयण कुरंगउ ज्यूं वहइ, लगइ दीह नहि रात।—ढो.मा.

२ कुक्षि, कूंख।

उ०—बालो पांखां बाहर आयो, माता वैण सुणावै यूं। म्हारी गोद सिळाय रै वाला, मैं तोय सतरी घूंटी द्यूं।—लो.गी.

मुहा०—पांखा बाहर आणो—जन्म लेना, पैदा होना।

३ शाखा।

उ०—साहपुरी देवळियो दोय पांख उदैपुर री ऐ।—बां.दा.ख्यात

४ पुष्पदल।

५ देखो 'पूंख' (रू.भे.) (जैसलमेर)

रू०भे०—पांखी।

अल्पा०—पांखड़ली, पांखड़ि, पांखड़ी, पांखुड़ली, पांखुड़ी।

मह०—पांखड़, पांखड़ो।

पांखड़ली, पांखड़ी—देखो 'पांख' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—१ चांचड़ली थारै हिंगळू ढोळूं, पांखड़ल्यां रंग केसर। ए चिड़कली गोगा नै खिलायी ए।—लो.गी.

उ०—२ पांखड़ियां ई किउं नहीं, दैव अवाडू ज्याह। चकवी कइ हुइ पंखड़ी, रयणि न मेळउ त्याह।—ढो.मा.

उ०—३ तुझ मुख मटकउ अति भलो रे, जांणइ पुनमचंद। आंखड़ी कमळ नी पांखड़ी, सीतल नइ सुखकंद।—वि.कु.

पांखड़ो—१ देखो 'पांख' (मह.,रू.भे.)

२ देखो 'पूंख' (अल्पा.,रू.भे.)

पांखण—देखो 'पंखण' (रू.भे.)

उ०—सुरतांण दत्तांणी खाग खळां सर, पींजरिया परमळ पहरंत।

पांखण तीयै अजै नर पांमै, भगर अजै सग वास अमंत ।

—दुरसो आढ़ो

पांखणो, पांखबो—देखो 'प्रांखणो, प्रांखबो' (रू.भे.)।

उ०—पल तणां तोरण पांखीजै, बड़ बेहड़ा पट टोप विचाळ। भाला तोर भारती अससर, थांने अंग घालै वरमाळ।

—राठौड़ अमरसिंह गजसिंहोत री वात

पांखणहार, हारो (हारी), पांखणियो—वि०।

पांखिग्रोड़ो, पांखियोड़ो, पांख्योड़ो—भू०का०कृ०।

पांखीजणो, पांखीजबो—कर्म वा०।

पांखळियो—देखो 'पांखळो' (अल्पा., रू.भे.)

पांखळो-सं०पु० [सं० पक्ष+आलुच्] १ बैलगाड़ी के दाईं तथा बाईं ओर लगाया जाने वाला लकड़ी का कटहरा जिससे उसमें रखा जाने वाला अनाज या सामान बाहर न गिरने पावे।

२ बकरी के बालों का बना हुआ वह कपड़ा जो अनाज आदि भर भर लाते समय बैलगाड़ी के चारों ओर डंडे लगाकर लगाया जाता है ताकि अनाज बाहर न गिरने पावे। (मारवाड़)

रू०भे०—पाखळो।

अल्पा०—पांखळियो, पाखळियो।

पांखणो—देखो 'पंखणो' (रू.भे.)

उ०—छायो गयण रंग रच छाजै। चितमी पांख पांखणी पाजै।

—सू.प्र.

पांखियोड़ो—देखो 'प्रांखियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० पांखियोड़ी)

पांखियो—देखो 'पंखी' (अल्पा.,रू.भे.)

उ०—उमंडै मद गै-सुंड छोहै अगे। पांखिया जांण पाहाड़ हालै पगे।

—गु.रू.ब.

पांखी—देखो 'पांख' (रू.भे.)

उ०—पेखूं अंग प्रियंगु, केसड़ा मोर पांखियां। मुखड़ो चंद मांय, आंखड़ी नैंण हिरणियां।—मेघ.

पांखीजणो, पांखीजबो-क्रि०अ० [सं० पक्ष+रा. प्र. ईजणो] चींटियों का पंखयुक्त होना।

पांखीजियोड़ो-भू०का०कृ०—पंखयुक्त हुवा हुआ।

(स्त्री० पांखीजियोड़ी)

पांखुड़ी, पांखूड़ी—देखो 'पांख' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—१ स्वांह का हसा उजळा नख छै। ज्यां माहे केसरि की पांखुड़ीयां रो प्रतिबिंब दीसै छै।—वेलि टी.

उ०—२ रुकमणीजी कह सांथि जु सखी छै सु सीसै करि फूलै कर नै वै करि एक समान छै। जैसे कमळ नी पांखूड़ी सरब बरावरि छै।

—वेलि टी.

पांगरण—देखो 'पंगरण' (रू.भे.)

उ०—खान पान पांगरण नु, मूढ ! म करसि विचार। आगळि-आगळि अनुक्रमइं, स्वामि करेसि सार।—मा.कां.प्र.

पांगरणो, पांगरबो-क्रि०अ० [सं० उपाङ्गधरणम्] १ अंकुरित होना, पनपना। उ०—सांवण आयो सायवा, सब वन पांगरियाह। आव विदेसी पावणा, ए दिन दूमरियाह।—अज्ञात

२ हृष्टपुष्ट होना, ताजा होना।

३ विहार करना। उ०—वाल्हेसर रळियांमणा हो, जे जगि साचा मीत। तिण पी पांगरउ पूज्यजी रे, मो मनि ए परतीत।

—समय प्रमोद

पांगरणहार, हारो (हारी), पांगरणियो—वि०।

पांगरिग्रोड़ो, पांगरियोड़ो, पांगर्योड़ो—भू०का०कृ०।

पांगरीजणो, पांगरीजबो—भाव वा०।

पंगरणो, पंगरबो, पांगुरणो, पांगुरबो, पांगूरणो, पांगूरबो, पांगळणो, पांगळबो—रू०भे०।

पांगरियोड़ो-भू०का०कृ०—१ पनपा हुआ, अंकुरित।

२ हृष्टपुष्ट हुवा हुआ, ताजा हुवा हुआ।

३ विहार किया हुआ।

(स्त्री० पांगरियोड़ी)

पांगळ-सं०पु० [सं० पांगुल्य] १ ऊंट (अ.मा.) (ना.डि.को.)

२ युवा ऊंट।

उ०—पाटाळो पापड़ो थांप नै हेलिया पांगळ मायै चढ'र सेठ जठैई जावता, खूब भाव आदर होवतो।—रातवासो

३ देखो 'पंगु' (मह.,रू.भे.)

अल्पा०—पांगळियो।

पांगळणो, पांगळबो—१ देखो 'पांगरणो, पांगरबो' (रू.भे.)

उ०—करै मन कोप तप दसटि चार जिकां, भसम होय तका रण जोड़ भूरा। अभंग 'जगतेस' जग काळ चारो अगां, पिसण नह पांगळे कधी पूरा।—जगतरांम हाडा रो गीत

पांगळियो—१ देखो 'पंगुळ' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—ना मूं बांमण वाणये री, ना विणजारे री धीय। हूं तो सकल देवतीये, पांगळियां पग देय।—लो.गी.

(स्त्री० पांगळी)

२ देखो 'पांगळ' (अल्पा०, रू.भे.)

पांगळी—देखो 'पंगुळी' (रू.भे.) (डि.को.)

उ०—सांमळी सगत चरणा स्रवण सांभळै, उठै अत नांगळी भांण ऊगै। आंगळी करघ कीयां पड़ी एक में, पांगळी वा'र मा तुरत पूगै।—सेतसी बारहठ

पांगळो—देखो 'पंगुळ' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—पांगळा राड़ै जमदूत फीटा पड़ै, जोखमी ऊपड़ै नयण जूटो।

—मे.म.

(स्त्री० पांगळी)

पांगी—देखो 'पंगी' (रू.भे.)

पांगुरण—देखो 'पंगरण' (रू.भे.)

उ०—पांगुरण जण खंड पांन, पहरै धूपि रांचे धांन । गीतड़ा तिण भोम, गावै 'रतनसी' राजांन ।—दूदो

पांगुरणौ, पांगुरबौ—देखो 'पांगरणौ, पांगरबौ' (रू.भे.)

उ०—१ प्रीतम कामणगारियां, थळ थळ बादळियांह । घण बरसंतइ सूकियां, लू सूं पांगुरियांह ।—ढो.मा.

उ०—२ संघ वंदावी गुरुजी पांगुरयां, आया म्हेसांणे गांमो जी ।
—ऐ.जै.का.सं.

पांगुरणहार, हारौ (हारी), पांगरणियौ—वि०

पांगुरिग्रोड़ौ, पांगुरियोड़ौ, पांगुरयोड़ौ—भू०का०कृ०

पांगरीजणौ, पांगरीजबौ—भाव वा०

पांगुरियोड़ौ—देखो 'पांगरियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० पांगुरियोड़ी)

पांगूरणौ, पांगूरबौ—देखो 'पांगरणौ, पांगरबौ' (रू.भे.)

उ०—जीभ न जीभ विगोय नौ, दव का दाधा कूंपळी मेल्ही । जीभ का दाधा नुं पागूरई, वाल्हा कहइ सुणाजइ सब कोइ ।—बी.दे.

पांगूरणहार, हारौ (हारी), पांगूरणियौ—वि० ।

पांगूरिग्रोड़ौ, पांगूरियोड़ौ, पांगूरयोड़ौ—भू०का०कृ० ।

पांगूरीजणौ, पांगूरीजबौ—भाव वा० ।

पांगूरियोड़ौ—देखो 'पांगरियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० पांगूरियोड़ी)

पांगौ—देखो 'पंगु' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—लंकाळ सेवग तूझ लांगौ, आत लिछमण खळां भांगौ । पतीकुळ स्वारथी पांगौ, करण असह निकंद ।—र.ज.प्र.
(स्त्री० पांगी)

पांघरणौ, पांघरबौ—देखो 'पांगरणौ, पांगरबौ' (रू.भे.)

उ०—लूग्रां थे क्यूं उणमणी, दीठां बादळियांह । धारा वाळ्या पांघरै, फळसी पांघरियांह ।—लू

पांघरणहार, हारौ (हारी), पांघरणियौ—वि० ।

पांघरिग्रोड़ौ, पांघरियोड़ौ, पांघरयोड़ौ—भू०का०कृ० ।

पांघरीजणौ, पांघरीजबौ—भाव वा० ।

पांघरियोड़ौ—देखो 'पांगरियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० पांघरियोड़ी)

पांच—वि० [सं० पंच] १ जो गिनती में चार और एक हो, चार से एक अधिक । (उ.र.)

मुहा०—१ पांचां आंगळी घी में होणी—सुख से दिन कटना, खूब बन आना ।

२ पांचां अंगळी बराबर न होणी—सब का समान या बराबर न होना ।

३ पांचां सवारां में नांम लिखाणौ—बड़े आदमियों की श्रेणी में गिनाना ।

सं०पु०—१ पांच की संख्या ।
२ पांच का अंक ।

३ देखो 'पंच' (रू.भे.)

रू०भे०—पांचि, पांचूं, पांपूं ।

अल्पा०—पांचड़ौ, पांचटौ, पांचौ ।

पांचअंग—देखो 'पंचअंग' (रू.भे.)

पांचअव्रत-सं०पु०यौ० [सं० पंच+अव्रत] हिंसा, झूठ, चोरी, मैथुन, परिग्रह ये पांचों पांच अव्रत कहलाते हैं । (जैन)

पांचकौ-सं०पु० [सं० पंच] प्रसव के पांचवें दिन किया जाने वाला संस्कार विशेष ।

पांचड़ौ, पांचटौ-सं०पु० [देशज] १ लम्बा कदम, छलांग ।

उ०—इसौ मन में जांणी नै खड़ग हाथ मांहे झालि सिंह रा सा पांचड़ा भरि नै ढोलिये कनै जायनै उलाळ दीधो नै नैड़ नै हेठौ नांख्यो ।—जगदेव पंवार री वात

२ देखो 'पांच' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—जांणिजै ग्रांक चौगड़ौ जेथि, तठि च्यारि रूप मांडिजै तेथि । परठजै पांच पांचटै पाय वळि, विगड़ै वीरघनि वे बधाइ ।—ल.पिं.

पांचजन, पांचजन्य-सं०पु० [सं० पांचजन्य] श्री कृष्ण का शंख ।

वि०वि०—यह शंख श्री कृष्ण को उस समय प्राप्त हुआ था जब उन्होंने अपने गुरु सान्दीपनि के पुत्र को पंचजन नामक दैत्य से छुड़ाया था ।

पांचणा-सं०पु० (ब.व.) [सं० पंच+रा०प्र०णौ] बलि दिए हुए बकरे के सिर और चारों पैरों के समूह का नाम ।

रू०भे०—पूंचणा, प्रांचणा ।

पांचणौ, पांचबौ—देखो 'पहूंचणौ, पहूंचबौ' (रू.भे.)

पांचणहार, हारौ (हारी), पांचणियौ—वि० ।

पांचिग्रोड़ौ, पांचियोड़ौ, पांच्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

पांचीजणौ, पांचीजबौ—भाव वा० ।

पांचनखौ-सं०पु०[सं० पंच+नख]एक प्रकार का अशुभ घोड़ा । (शा.हो.)

पांचपवौ-सं०पु० [सं० पंच+पद] वागड़ क्षेत्र में जोगियों के एक समूह-वादन का नाम ।

वि०वि०—इस समूह वादन में दो सहनाइयां, एक ढोलक, एक झालर व एक कुंडी नामक वाद्य होता है । ढोलक वाला ढोलक-सहित नाचता है । यह नृत्य विवाह में बरात के आगे आगे किया जाता है ।

पांचबांण—देखो 'पंचबांण' (रू.भे.)

उ०—दिन जास्यै हिव दोहिला, किम रहिसै मुझ प्रांण । संतावै मुझ नै सदा, घट मां पांचेबांण ।—वि.कु.

पांचभूतिक—देखो 'पंचभूतक' (रू.भे.)

पांचम—१ देखो 'पंचमी' (रू.भे.)

उ०—पांचम आज सहेलियां, पांचूं वंध्या ठांण । उळगांणा री कोटड़ी, हुई पिलांण पिलांण ।—अज्ञात

२ देखो 'पंचम' (रू.भे.)

उ०—पांचम सुविधि जिनेसर सेव । सो गणधर ध्यावौ नित मेव ।
—ध.व.ग्रं.

पांखण तीयै घजै भरा पांर्न, भमर भजै लग वास भनंत ।

—दुरसो आढ़ो

पांखणो, पांखबो—देखो 'प्रांखणो, प्रांखबो' (रू.भे.) ।

उ०—पख तणां तोरण पांखोजै, बड़ बेहड़ा घट टोप विचाळ । आला वीर आरडी असमर, पांखे अंग पाखे परनाळ ।

—राठौड़ अमरसिंह गजसिहोत री वात

पांखणहार, हारो (हारी), पांखणियो—वि० ।

पांखियोड़ो, पांखियोड़ो, पांख्योड़ो—भू०का०कृ० ।

पांखीजणो, पांखीजबो—कर्म वा० ।

पांखड़ियो—देखो 'पांखड़ो' (अल्पा., रू.भे.)

पांखड़ो-सं०पु० [सं० पक्ष+आलुच्] १ बैलगाड़ी के दाई तथा बाईं ओर लगाया जाने वाला लकड़ी का कटहरा जिससे उसमें रखा जाने वाला अनाज या सामान बाहर न गिरने पावे ।

२ बकरी के बालों का बना हुआ वह कपड़ा जो अनाज आदि भर कर लाते समय बैलगाड़ी के चारों ओर डंडे लगाकर लगाया जाता है ताकि अनाज बाहर न गिरने पावे । (मारवाड़)

रू०भे०—पांगड़ो ।

अल्पा०—पांखड़ियो, पाखड़ियो ।

पांखणो—देखो 'पंखणो' (रू.भे.)

उ०—छायो गयण रंग रथ छाजै । विलमी पांख पांखणी वाजै ।

—सू.प्र.

पांखियोड़ो—देखो 'प्रांखियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० पांखियोड़ी)

पांखियो—देखो 'पक्षी' (अल्पा.,रू.भे.)

उ०—उमंडै मद् गैं-सुंड डोहै अगे । पांखिया जाण पाहाड़ हालै पगे ।

—गु.रू.बं.

पांखी—देखो 'पांख' (रू.भे.)

उ०—पेगूं अंग प्रियंगु, केसड़ा मोर पांखियां । मुखड़ो चंद मांय, आंखड़ी नैण हिरणियां ।—मेघ.

पांखीजणो, पांखीजबो-क्रि०अ० [सं० पक्ष+रा. प्र. ईजणो] चींटियों का पंखयुक्त होना ।

पांखीजियोड़ो-भू०का०कृ०—पंखयुक्त हुवा हुआ ।

(स्त्री० पांखीजियोड़ी)

पांखुड़ी, पांखूड़ी—देखो 'पांख' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—१ ग्यांह का इसा उजळा नख छै । ज्यां मांहे केसरि की पांखुड़ीयां रो प्रतिबिंब दीसै छै ।—वेलि टी.

उ०—२ रुकमणीजी कहै आपि जु सखी छै सु सीलै करि फुलै कर नै यै करि एक समान छै । जैसे कमळ नी पांखूड़ी सरव बरावरि छै ।

—वेलि टी.

पांगरण—देखो 'पंगरण' (रू.भे.)

उ०—खान पान पांगरण नु, मूढ ! म करसि विचार । आगळि-आगळि मनुक्रमई, स्वामि करेसि सार ।—मा.कां.प्र.

पांगरणो, पांगरबो-क्रि०अ० [सं० उपाङ्कुरणम्] १ अंकुरित होना, पनपना । उ०—सांवण आयो सायबा, सब वन पांगरियाह । आव विदेसी पावणा, ए दिन दूभरियाह ।—अज्ञात

२ हृष्टपुष्ट होना, ताजा होना ।

३ विहार करना । उ०—वाल्हेसर रलियांमणा हो, जे जगि साचा मीत । तिण वी पांगरउ पूज्यजी रे, मो मनि ए परतीत ।

—समय प्रमोद

पांगरणहार, हारो (हारी), पांगरणियो—वि० ।

पांगरियोड़ो, पांगरियोड़ो, पांगर्योड़ो—भू०का०कृ० ।

पांगरीजणो, पांगरीजबो—भाव वा० ।

पंगरणो, पंगरबो, पांगुरणो, पांगुरबो, पांगूरणो, पांगूरबो, पांगळणो, पांगळबो—रू०भे० ।

पांगरियोड़ो-भू०का०कृ०—१ पनपा हुआ, अंकुरित ।

२ हृष्टपुष्ट हुवा हुआ, ताजा हुवा हुआ ।

३ विहार किया हुआ ।

(स्त्री० पांगरियोड़ी)

पांगळ-सं०पु० [सं० पांगुल्य] १ ऊंट (अ.मा.) (ना.डि.को.)

२ युवा ऊंट ।

उ०—आंटाळी पाघड़ी बांध नै तेलिया पांगळ मायै चढ़'र सेठ जठैई जावता, खूब आव आदर होवतो ।—रातवासो

३ देखो 'पंगु' (मह.,रू.भे.)

अल्पा०—पांगळियो ।

पांगळणो, पांगळबो—१ देखो 'पांगरणो, पांगरबो' (रू.भे.)

उ०—करै मन क्रोध तप दसटि पार जिकां, भसम होय तका रण जोड़ भूरा । अभंग 'भगतेस' तण झाळ बारी अगां, पिसण नह पांगळै कधी पूरा ।—भगतराम हाडा री गीत

पांगळियो—१ देखो 'पंगुळ' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—ना मूं बामण वांणये री, ना विणजारे री धीय । हूं तो सकल देवतीयें, पांगळिया पग देय ।—लो.गी.

(स्त्री० पांगळी)

२ देखो 'पांगळ' (अल्पा०, रू.भे.)

पांगळी—देखो 'पंगुळी' (रू.भे.) (डि.को.)

उ०—सांभळी सगत चरणां स्रवण सांभळै, उठै अत नांगळी गांण ऊगै । आंगळी ऊरध कीधां घड़ी एक में, पांगळी वा'र मा तुरत पूगै ।—पोतसो बारहठ

पांगळो—देखो 'पंगुळ' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—पांगळा खड़ै जमदूत फोटा पड़ै, जोखमी ऊपड़ै नयण जूटी ।

—मे.म.

(स्त्री० पांगळी)

पांगी—देखो 'पंगी' (रू.भे.)

पांगुरण—देखो 'पंगरण' (रू.भे.)

उ०—पांगुरण जण खंड पांन, पहरै धूपि राचै धांन। गीतड़ा तिण भोम, गावै 'रतनसी' राजांन।—दूदौ

पांगुरणो, पांगुरबौ—देखो 'पांगरणौ, पांगरबौ' (रू.भे.)

उ०—१ प्रीतम कांमणगारियां, थळ थळ वादळियांह। घण वरसंतह सूकियां, लू सूं पांगुरियांह।—ढो.मा.

उ०—२ संघ वंदावौ गुरुजी पांगुरयां, आया म्हेसांणे गांमो जी।—ऐ.जै.का.सं.

पांगुरणहार, हारौ (हारी), पांगरणियौ—वि०

पांगुरिप्रोड़ो, पांगुरियोड़ो, पांगुरयोड़ौ—भू०का०कृ०

पांगरीजणौ, पांगरीजबौ—भाव वा०

पांगुरियोड़ौ—देखो 'पांगरियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० पांगुरियोड़ी)

पांगूरणो, पांगूरबौ—देखो 'पांगरणौ, पांगरबौ' (रू.भे.)

उ०—जीभ न जीभ विगोय नौ, दव का दाधा कूपळी मेल्हो। जीभ का दाधा नुं पांगूरई, वाल्हा कहइ सुणाजइ सब कोइ।—वी.दे.

पांगूरणहार, हारौ (हारी), पांगूरणियौ—वि०।

पांगूरिप्रोड़ौ, पांगूरियोड़ौ, पांगूरयोड़ौ—भू०का०कृ०।

पांगूरीजणौ, पांगूरीजबौ—भाव वा०।

पांगूरियोड़ौ—देखो 'पांगरियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० पांगूरियोड़ी)

पांगौ—देखो 'पंगु' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—लंकाळ सेवग तूझ लांगौ, भ्रात लिछमण खळां भांगौ। पतीकुळ स्वारथी पांगौ, करण असह निकंद।—र.ज.प्र.

(स्त्री० पांगी)

पांघरणो, पांघरबौ—देखो 'पांगरणौ, पांगरबौ' (रू.भे.)

उ०—लूआं थे क्यूं उणमणी, दीठां वादळियांह। धारा वाळ्या पांघरै, फळसी पांघरियांह।—लू

पांघरणहार, हारौ (हारी), पांघरणियौ—वि०।

पांघरिप्रोड़ौ, पांघरियोड़ौ, पांघरयोड़ौ—भू०का०कृ०।

पांघरीजणौ, पांघरीजबौ—भाव वा०।

पांघरियोड़ौ—देखो 'पांगरियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० पांघरियोड़ी)

पांच—वि० [सं० पंच] १ जो गिनती में चार और एक हो, चार से एक अधिक। (उ.र.)

मुहा०—१ पांचां आंगळी घी में होणी—सुख से दिन कटना, खूब बन आना।

२ पांचां अंगळी बराबर न होणी—सब का समान या बराबर न होना।

३ पांचां सवारां में नांम लिखाणौ—बड़े आदमियों की श्रेणी में गिनाना।

सं०पु०—१ पांच की संख्या।

२ पांच का अंक।

३ देखो 'पंच' (रू.भे.)

रू०भे०—पांचि, पांचुं, पांचूं।

अल्पा०—पांचड़ौ, पांचडो, पांचो।

पांचअंग—देखो 'पंचअंग' (रू.भे.)

पांचअव्रत—सं०पु०यौ० [सं० पंच+अव्रत] हिंसा, झूठ, चोरी, मैथुन, परिग्रह ये पांचों पांच अव्रत कहलाते हैं। (जैन)

पांचको—सं०पु० [सं० पंच] प्रसव के पांचवें दिन किया जाने वाला संस्कार विशेष।

पांचड़ो, पांचडौ—सं०पु० [देशज] १ लम्बा कदम, छलांग।

उ०—इसो मन में जांणी नै खड्ग हाथ माहे झालि सिंह रा सा पांचड़ा भरि नै ढोलिये कनै जाय नै उलाळ दीधौ नै मैरू नै हेठो नांख्यौ।—जगदेव पंवार री वात

२ देखो 'पांच' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—जांणिजै आंक चोगहो जेथि, तळि च्यारि रूप मांडिजै तेथि। परठजै पांच पांचड़ै पाय वळि, विगड़ै वीचलि वे बचाइ।—ल.पिं.

पांचजन, पांचजन्य—सं०पु० [सं० पांचजन्य] श्री कृष्ण का शंख।

वि०वि०—यह शंख श्री कृष्ण को उस समय प्राप्त हुआ था जब उन्होंने अपने गुरु सान्दीपनि के पुत्र को पंचजन नामक दैत्य से छुड़ाया था।

पांचणा—सं०पु० (ब.ब.) [सं० पंच+रा०प्र०णो] बलि दिए हुए बकरे के शिर और चारों पैरों के समूह का नाम।

रू०भे०—पूंचणा, प्रांचणा।

पांचणो, पांचबौ—देखो 'पहुंचणौ, पहुंचबौ' (रू.भे.)

पांचणहार, हारौ (हारी), पांचणियौ—वि०।

पांचिप्रोड़ौ, पांचियोड़ौ, पांच्योड़ौ—भू०का०कृ०।

पांचीजणौ, पांचीजबौ—भाव वा०।

पांचनखो—सं०पु० [सं० पंच+नख] एक प्रकार का अशुभ घोड़ा। (शा.हो.)

पांचपवौ—सं०पु० [सं० पंच+पद] वागड़ क्षेत्र में जोगियों के एक समूह-वादन का नाम।

वि०वि०—इस समूह वादन में दो सहनाइयां, एक ढोलक, एक झालर व एक कुंडी नामक वाद्य होता है। ढोलक वाला ढोलक-सहित नाचता है। यह नृत्य विवाह में बरात के आगे आगे किया जाता है।

पांचबांण—देखो 'पंचबांण' (रू.भे.)

उ०—दिन जास्यै हिव दोहिला, किम रहिसै मुझ प्रांण। संतावै मुझ नै सदा, घट मां पांचेबांण।—वि.कु.

पांचभूतिक—देखो 'पंचभूतक' (रू.भे.)

पांचम—१ देखो 'पंचमी' (रू.भे.)

उ०—पांचम आज सहेलियां, पांचूं बंध्या ठांण। उळगांणा री कोटड़ी, हुई पिलांण पिलांण।—अज्ञात

२ देखो 'पंचम' (रू.भे.)

उ०—पांचम सुविधि जिनेसर सेव। सो गणधर ध्यावौ नित मेव।—ध.व.ग्रं.

पांचमउ—देखो 'पंचम' (मल्पा., रू.भे.)

उ०—पांचमउ पुरस गोरखनाल । पांचवुण घरि एह गोपाल ।

—सालिसूरि

पांचमहाव्रत—देखो 'पंचमहाव्रत' (रू.भे.)

उ०—सेव नै पाछो देवे तो साहूकार । सेव नै पाछो न देवे मांगी कजहो करै ते दिवाल्यो । ज्यूं पांच महाव्रत सेव नै चोखा पालै ते साध अनै न पालै ते असाध ।—भि.द्र.

पांचमि, पांचमी—१ देखो 'पंचम' (रू.भे.)

उ०—पांचमि तप विधि सांभळउ, पांमउ जिम भव पारो रे ।

—स.कु.

२ देखो 'पंचमी' (रू.भे.)

पांचमुख—देखो 'पंचमुख' (रू.भे.)

उ०—दुस्सासण जिके जिगा दुरजोधन, रिण प्रसवामा द्रोण रिणं । भारथ मुइ जिके कहै मह भार्ज, परदळ भंजण पांचमुख ।—गु.रू.बं.

पांचमो—देखो 'पंचम' (मल्पा०, रू.भे.)

उ०—पात तीन भट 'गोद' करै जय प्रकट सकाजा । मोज सात पांचमों लेण वगसै महाराजा ।—सू.प्र.

(स्त्री० पांचमी)

पांचरूप—देखो 'पंचरूप' (रू.भे.)

उ०—काळ प्रळै पेंति पैंतीस कुळ, सोहि मदंता सह मद्दै । पांचरूप हुवो नव कोट पह, गाढ पवर चोळै रहै ।—गु.रू.बं.

पांचलड़ी-वि० [सं० पंच+यष्टि] १ पांच लड़ों वाली ।

२ पांच लड़ वालो ।

पांचलड़ो—१ पांचों लरों सहित ?

उ०—एकलड़ो जीव न्यारो गोता, नव पदारथ में पांच कहै तिण लेखे पांचलड़ो जीव न्यारो गोता इम कहिणो ।—भि.द्र.

२ देखो 'पंचलड़ो' (रू.भे.)

पांचलोड़-सं०पु०—पुरोहित ब्राह्मणों का एक भेद विशेष जो अपने को पाराशर ऋषि की सन्तान कहते हैं ।

पांचवां—देखो 'पंचम' (मल्पा०, रू.भे.)

(स्त्री० पांचवीं)

पांचवां—१ नैऋत्य कोण से चलने वाली हवा जो कालसूचक मानी जाती है ।

२ देखो 'पंचमी' (रू.भे.)

पांचसदो—देखो 'पंचसदो' (रू.भे.)

उ०—सैद अहमद मैद मेहमद रो बेटो कासमखान रो जमाई पांचसदी असवार दोयसो ।—नैणसी

पांचहजारी—देखो 'पंचहजारी' (रू.भे.)

उ०—मरहट्टियो रूप भ्रंग्रियांमणी, बहवतो बंबाड़तो । धरहतो तुजड़ जड़तो भ्रसुर, पांचहजारी पाड़तो ।—सू.प्र.

पांचाणो, पांचाबो—देखो 'पहुंचाणो, पहुंचाबो' (रू.भे.)

पांचाणहार, हारो (हारी), पांचाणियो—वि० ।

पांचायोड़ो—भू०का०कृ० ।

पांचाईजणो, पांचाईजबो—कर्म वा० ।

पांचापर-सं०पु०—सेना के पांच दल ?

उ०—मुगल आविया । जसवंतजी वांसो कीयो । तरै 'मांना' करमसोत नुं एकण आसरी माथै नगारो देनै राखियो थो । नै इण पनोत नूं कहियो थो—मोनूं पाछो आयो देख नै अठै हूं कहूं तरै नगारो देजे । यूं कह नै आप वांसो कियो । तरै मांनो बैठो छै । अठै साथ घणो काम आयो । पैलो पांचापर पाछेया नै उणं मांनै साथ पेढ जीतो देख नै नगारो दीयो ।

—राव मालदेव री वात

पांचाम्रत—देखो 'पंचाम्रत' (रू.भे.)

उ०—पात पात पांचाम्रत पाजे, जण जण पूगो जुग्रो-जुग्रो । मेलियो गढवाहो मदवाळो, मरणीका छेतरे मुग्रो ।—बळराम राठौड़ री गीत

पांचायण—देखो 'पंचानन' (रू.भे.) (डि.को.)

पांचायोड़ो—देखो 'पहुंचायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० पांचायोड़ी)

पांचाळ—देखो 'पंचाळ' (रू.भे.)

पांचाळी-सं०स्त्री० [सं० पांचाली] १ पाण्डवों की स्त्री, द्रोपदी ।

उ०—दमयंती नळराज नै, जाण तजी निरधार । पांडव पांचाळी तजी, जुवारी आचार ।—पंचदंडी री वारता

२ साहित्य में एक प्रकार की रीति ।

३ इन्द्रजाल के छः भेदों में से एक ।

रू०भे०—पंचाळी ।

मह०—पंचाळ ।

पांति—देखो 'पांच' (रू.भे.)

पांचिद्रिय—देखो 'पंचेंद्रिय' (रू.भे.)

पांचिम—देखो 'पंचमी' (रू.भे.)

उ०—प्रथमादि भाग बसंत पांचिम राग फाग परीतिये । हित धाम धाम धमाळ मुख हुय उरस भोमळ ईतिये ।—रा.रू.

पांचियोड़ो—देखो 'पहुंचियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० पांचियोड़ी)

पांची-सं०स्त्री०—ताश की वह पत्ती जिस पर पांच बूंटियां होती हैं ।

रू०भे०—पंजी ।

पांचुं, पांचूं—१ देखो 'पांच' (रू.भे.)

उ०—१ पाछो आय देखै तो चूला लारै रोटी पड़ी हुती ते मिनको ले गई । तवै री तवै बल गई । खीरां री खीरां बल गई । इण रीते एक महाव्रत भागां पांचु भाग जावै ।—भि.द्र.

उ०—२ पांचम आज सहेलियां पांचू बंध्या ठांण । उळगांणा री कोटड़ी, हुई पिलाण-पिलाण ।—अज्ञात

२ देखो 'पंचमी' (रू.भे.)

पांचप्रगट—सं०पु० [सं० पंचप्रकट] कछुआ, कमठ (अ.मा.)

पांचूं साख—देखो 'पंचसाख' (रू.भे.) (अ.मा.)

पांचे'क, पांचेक—वि० [सं० पंच+एक] पांच के लगभग। उ०—संकर री किरपा सूं धांनड़ो तौ अबकै वीसे'क वीसे'क कळसी व्हे जावैला जिणमें तिलां री पांचे'क कळसी री अंदाज है।—रातवासौ

पांचें—देखो 'पंचमी' (रू.भे.)

पांचो—सं०पु० [सं० पंच] १ पांच की संख्या का वर्ष या साल। उ०—पांचो आठो दस पनरो खूं'पड़िया। सतरै वीसै हय खतरै में खड़िया।—ऊ.का.

२ पांच की संख्या का अंक।

पांजर, पांजरउ, पांजरड़न—सं०पु० [देशज] १ चड़स से लाव जोड़ने के स्थान पर चड़स में लगाए जाने वाले काष्ठ के गुटके जो एक दूसरे पर+धन का चिन्ह बनाते हुए रखे जाते हैं। उ०—बारै बारै रे धन दै वणणाटा। गांजर खाचे लै पांजर गणणाटा।—ऊ.का.

२ देखो 'पंजर' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—१ रे जीव वखत लिख्या सुख लहियइ। झूरि झूरि काहे होत पांजर, दैव दीना दुख सहियइ।—स.कु.

उ०—२ पांजरड़उ ते भुलउ भमइ रे, जीव तमारे पासि रे। तमस्युं बोल्यइ विण माहरइ रे, पनरह दिन छ मासि रे।—स.कु.

पांजरी—देखो 'पंजर' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—बोजइ दिन राउति रिण सोधिउं, दीठा पडचां पल्हांण। हाथी तणी पांजरी भागी, धरणि ढल्या केकांण।—कां.दे.प्र.

पांजा—सं०पु० [सं० पंच] वह धागा जिसमें पांच धागे सम्मिलित हों।

पांड—सं०स्त्री० [देशज] १ छाव।

उ०—१ कह्यो-जी, सलखो जी पधारिया हुता, सु किरियांणो लियो गूढै जावता हुता। सु म्हारै मांथै पांड हुती सु सुगन हुवौ।—नैणसी

उ०—२ आगै सूनी हाटां पड़ी छै, कंदोई री पण हाटां मिठाई सों भरी पड़ी छै। तद नायण मिठाई री पांड भर हर बाहर जाय रजपूतां नुं देइ आई।—चौबोली

२ देखो 'पांडु' (रू.भे.)

उ०—पांचमउ पुरस गोरखवाल। पांड पुत्र घरि एह गोवाल।

—सालि सूरि

३ देखो 'पिंड' (रू.भे.)

उ०—जोरावियो जुधे जींदरै मोत न हुंदो मांड। हुतासणे में होम सूं 'पाबू' मेळो पांड।—पा.प्र.

४ देखो 'पांडुर' (रू.भे.) (ह.नां.मा.)

पांडर, पांडरउ, पांडरो—वि० [सं० पांडुर] १ स्वच्छ, निर्मल।

उ०—सो किण भांति तळाव जांणै दूसरो मोनसरोवर राती-सी एके रहि रै माथै पांडरो नीर पवन रो मारियो कराड़ै फींण आछटतो ठपां लाइनै रहिया छै।—रा.सा.सं.

२ देखो 'पांडुर' (रू.भे.)

पांडव—सं०पु० [सं०] १ राजा पांडु के पुत्र—युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल व सहदेव।

उ०—तूं ब्रह्मा रो तात, नमो नारीयण तणो नम। हुओ वडो लहणियो, पांच पांडव सरिस प्रम।—पी.ग्रं.

२ पांच इंद्रियां (योग)।

उ०—पांचूं पांडव फेरि, घेरि अपणै घरि आया। चांवड के सिर चोट, भेद भेरूं का पाया।—ह.पु.वा.

३ घोड़े की टहल बंदगी करने वाला, सईस।

उ०—१ पांडवां खुरहरां झपट पाय। तदि मिळै हाथळां ओप पाय।—सू.प्र.

उ०—२ सु रावळी बडी घोड़ी थी तिका चरवादार तळाव संपडावण वास्तै लै आया, यां रै तळाव री पाळ डेरो छै वैठा छै नै पांडव घोड़ियां चढ़िया आवै छै।—नैणसी

उ०—३ पांडवां नीलो पलांण। असी घोड़ै राव आंण। वैंडतै उमै विकास। आरिखै जिसो उचास।—गु.रू.बं.

४ मुसलमान, यवन।

रू०भे०—पंड, पंडव, पंडू, पांडवेय, पिंड, पांडु।

अल्पा०—पंडवड़ो, पंडवो।

पांडवतिलक—सं०पु०यौ० [सं०] युधिष्ठिर (ह.नां.मा.)

रू०भे०—पंडवतिलक।

पांडवनगर—सं०पु०यौ० [सं० पाण्डवनगर] दिल्ली।

रू०भे०—पडवनगर।

पांडवनांमी—वि० [सं० पांडवनाम्न] पाण्डव के पांच पुत्रों में से कोई एक, पाण्डव।

रू०भे०—पंडवनांमी।

पांडवेय—देखो 'पांडव' (रू.भे.)

पांडित—देखो 'पंडित' (रू.भे.) (ह.नां.मा.)

पांडियो—देखो 'पंडो' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—पांडिया नूं बुलाय त्यावै बखत राजा उठा थी नोसर मजूर रो रूप कियो।—पंचदण्डी री वारता

पांडीउ—सं०पु० [सं० पाण्डु] एक देश का नाम।

उ०—तत्र देसे गोमुख नरा—महाभोट ३ कोडि, अस्वमुख नरा, कान्हड़उ, चौड सारद्ध ३ लक्ष, मलयगिरि ७ लक्ष, पांडीउ १७ लक्ष, सिंघलदीप १ कोडि।—व.स.

पांडीस—सं०स्त्री० [डि.] तलवार (डि.को.)

उ०—काळ न आवै कायरां, बालम विसवावीस। पकड़ै रण धर पंथ नूं, पकड़ै नह पांडीस।—वां.दा.

रू०भे०—पंडीस, पंडीसक।

पांडु—सं०पु० [सं०] १ एक रोग विशेष।

उ०—ताप सन्निपात जांणी अतीसार संग्रहांणि, फोहो विघ राल

पांचमउ—देखो 'पंचम' (मत्वा., रू.भे.)

उ०—पांचमउ पुरख गोरखलाल । पांडपुत्र परि एह गोवाल ।
—सालिसूरि

पांचमहाव्रत—देखो 'पंचमहाव्रत' (रू.भे.)

उ०—सेय नै पाछो देवै तो साहूकार। सेय नै पाछो न देवै मांग्यां फगड़ो करै ते दिवाल्यो। ज्यूं पांच महाव्रत सेय नै चोखा पालै ते साध मनै न पालै ते असाध ।—भि.द्र.

पांचमि, पांचमी—१ देखो 'पंचम' (रू.भे.)

उ०—पांचमि तप विधि सांभळउ, पांमउ जिम भव पारो रे ।
—स.कु.

२ देखो 'पंचमी' (रू.भे.)

पांचमुख—देखो 'पंचमुख' (रू.भे.)

उ०—दुस्सासण जिसड़ा दुरजोधन, रिख धमधामो द्रोण रिनं । मारख भुद जिकै करै नह मासें, पदरक्ख भंजण पांचमुख ।—गु.रू.बं.

पांचमो—देखो 'पंचम' (मत्वा०, रू.भे.)

उ०—पाउ मांन मट 'गोर' करे अस प्रकट सकाजा । मीज सास पांचमों जेण वगसै महाराजा ।—सू.प्र.

(स्त्री० पांचमी)

पांचरूप—देखो 'पंचरूप' (रू.भे.)

उ०—काळ प्रळै पेलि पैतीस कुळ, सोहि सदंता सह बहै । पांचरूप हुवो नव कोट पह, राउ सबर मोळै रहै ।—गु.रू.बं.

पांचलड़ी—वि० [सं० पंच+यष्टि] १ पांच लड़ों वाली ।

२ पांच लड़ वाली ।

पांचलड़ो—१ पांचों तत्वों सहित ?

उ०—एकलड़ो जीव खासी गोता, नव पदारथ में पांच रहे तिण लेखे पांचलड़ो जीव खासी गोता इम कहिणो ।—भि.द्र.

२ देखो 'पंचलड़ो' (रू.भे.)

पांचलोड़—सं०पु०—पुरोहित ब्राह्मणों का एक भेद विशेष जो अपने को पाराशर ऋषि की सन्तान कहते हैं ।

पांचवों—देखो 'पंचम' (मत्वा०, रू.भे.)

(स्त्री० पांचवीं)

पांचवों—१ नैऋत्य कोण से चलने वाली हवा जो कालसूचक मानी जाती है ।

२ देखो 'पंचमी' (रू.भे.)

पांचसदी—देखो 'पंचसदी' (रू.भे.)

उ०—सैद अहमद सैद मेहमद रो बेटो कासमखान रो जमाई पांचसदी असवार दोयसौ ।—नैणसी

पांचहजारी—देखो 'पंचहजारी' (रू.भे.)

उ०—मल्हपियो रूप अंत्रिपामणी, बहसतो वंसाड़तो । उरड़तो सुजड़ जड़तो असुर, पांचहजारी पाड़तो ।—सू.प्र.

पांचाणो, पांचावो—देखो 'पहुंचाणो, पहुंचावो' (रू.भे.)

पांचाणहार, हारो (हारी), पांचाणियो—वि० ।

पांचायोड़ो—भू०का०कृ० ।

पांचाईजणो, पांचाईजबो—कर्म वा० ।

पांचापर—सं०पु०—सेना के पांच दल ?

उ०—मुगल भागिया । जसवंतजी थाणो कीयो । तरै 'मांना' करमसोत नुं एकण नगारो मार्थ नगारो देनै राखियो थो । नै इण पत्तोत नूं कहियो थो—मोनूं पाछो आयो देख नै अठै हूं कहूं तरै नगारो देजो । यूं कह नै आप थाणो कियो । तरै मांनो वैठो छै । अठै साथ घणो काम आयो । पैलो पांचापर पाड़ीया नै उणं मांनै साथ बेड जीतो देख नै नगारो दीयो ।
—राव मालदेव री वात

पांचाम्रत—देखो 'पंचाम्रत' (रू.भे.)

उ०—पान पाउ पांचाम्रत पाजे, जण जण पूगो जुवो-जुवो । मेलियो गळवाहां मळवाळां, मरणोका ऊतरे मुवो ।—बळराम राठौड़ री गीत

पांचायण—देखो 'पंचानन' (रू.भे.) (डि.को.)

पांचायोड़ो—देखो 'पहुंचायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० पांचायोड़ी')

पांचाळ—देखो 'पंचाळ' (रू.भे.)

पांचाळी—सं०स्त्री० [सं० पांचाली] १ पाण्डवों की स्त्री, द्रौपदी ।

उ०—दमयंती नळराज नै, जोता तजी निरधार । पांडव पांचाळी तजी, जुवारी भाचार ।—पंचदंडी री वारता

२ साहित्य में एक प्रकार की रीति ।

३ इन्द्रजाल के छः भेदों में से एक ।

रू०भे०—पंचाळी ।

मह०—पंचाळ ।

पांचि—देखो 'पांच' (रू.भे.)

पांचिंद्रिय—देखो 'पंचेंद्रिय' (रू.भे.)

पांचिम—देखो 'पंचमी' (रू.भे.)

उ०—प्रथमादि माग बसंत पांचिम राग फाग परोलिये । हित धांम धांम धमाळ सुख हुय उरध मोगळ ईलिये ।—रा.रू.

पांचियोड़ो—देखो 'पहुंचियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० पांचियोड़ी)

पांची—सं०स्त्री०—ताश की वह पत्ती जिस पर पांच बूंटियां होती हैं ।

रू०भे०—पंजी ।

पांचुं, पांचूं—१ देखो 'पांच' (रू.भे.)

उ०—१ पाछो आय देखै तो चूला लारै रोटी पड़ी हुती ते मिनकी ले गई । तवे री तवे बल गई । सीरां री सीरां बल गई । इण रीते एक महाव्रत भागां पांचु भाग जावै ।—भि.द्र.

उ०—२ पांचम आज सहेलियां पांचूं बंध्या ठांण । उळगांणा री कोटड़ी, हुई विलांण-विलांण ।—अज्ञात

२ देखो 'पंचमी' (रू.भे.)

पांचप्रगट-सं०पु० [सं० पंचप्रकट] कछुआ, कमठ (अ.मा.)

पांचूंसाख—देखो 'पंचसाख' (रू.भे.) (अ.मा.)

पांचे'क, पांचेक-वि० [सं० पंच+एक] पांच के लगभग। उ०—संकर री किरवा सूं धांनड़ी तो अबकै बीसे'क बीसे'क कळसी व्है जावैला जिणमें तिलां रो पांचे'क कळसी रो अंदाज है।—रातवासो

पांचैं—देखो 'पंचमी' (रू.भे.)

पांचो-सं०पु० [सं० पंच] १ पांच की संख्या का वर्ष या साल। उ०—पांचो आठो दस पनरो खूं'पड़िया। सतरै बीसै हुय खतरै में खड़िया।—ऊ.का.

२ पांच की संख्या का अंक।

पांजर, पांजरउ, पांजरड़न-सं०पु० [देशज] १ चड़स से लाव जोड़ने के स्थान पर चड़स में लगाए जाने वाले काष्ठ के गुटके जो एक दूसरे पर+धन का चिन्ह बनाते हुए रखे जाते हैं। उ०—बारै बारै रे घन दे वणणाटा। गांजर खाचे लै पांजर गणणाटा।—ऊ.का.

२ देखो 'पंजर' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—१ रे जीव वखत लिख्या सुख लहियइ। भूरि भूरि काहे होत पांजर, दैव दीना दुख सहियइ।—स.कु.

उ०—२ पांजरडउं ते भुलउ भमइ रे, जीव तमारे पासि रे। तमस्यूं बोल्यइ विण माहरइ रे, पनरह दिन छ मासि रे।—स.कु.

पांजरी—देखो 'पंजर' (अल्पा.,रू.भे.)

उ०—बीजइ दिन राउति रिण सोधिउं, दीठां पडचां पल्हांण। हाथी तणी पांजरी भागी, धरणि ढल्या केकांण।—कां.दे.प्र.

पांजा-सं०पु० [सं० पंच] वह धागा जिसमें पांच धागे सम्मिलित हों।

पांड-सं०स्त्री० [देशज] १ छाव।

उ०—१ कह्यो-जो, सलखो जो पधारिया हुता, सु किरियांणो लियो गूढे जावता हुता। सु म्हारै मांथै पांड हुती सु सुगन हुवो।—नैणसी

उ०—२ आगै सूनी हाटां पड़ी छै, कंदोई री पण हाटां मिठाई सों भरी पड़ी छै। तद नायण मिठाई री पांड भर हर बाहर जाय रजपूतां नुं देइ आई।—चौबोली

२ देखो 'पांडु' (रू.भे.)

उ०—पांचमउ पुरुस गोरखवाल। पांड पुत्र घरि एह गोवाल।

—सालि सूरि

३ देखो 'पिंड' (रू.भे.)

उ०—जोतमियो जुधे जींदरै मौत न हूंदी मांड। हूतासणे में होम सूं 'पाबू' मेळो पांड।—पा.प्र.

४ देखो 'पांडुर' (रू.भे.) (ह.नां.मा.)

पांडर, पांडरउ, पांडरो-वि० [सं० पांडुर] १ स्वच्छ, निर्मल।

उ०—सो किण भांति तळाव जांणै दूसरो मानसरोवर राती-सी एकै रहि रै माथै पांडरो नीर पवन री मारिओ कराड़ै फीण माछटतो टपां साइनै रहिया छै।—रा.सा.सं.

२ देखो 'पांडुर' (रू.भे.)

पांडव-सं०पु० [सं०] १ राजा पांडु के पुत्र—युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल व सहदेव।

उ०—तूं ब्रह्मा रो तात, नमो नारीयण तणो नम। हुओ वडो लह-णियो, पांच पांडव सरिस प्रम।—पी.ग्रं.

२ पांच इंद्रियां (योग)।

उ०—पांचूं पांडव फेरि, घेरि अपणे घरि आया। चांवड के सिर चोट, भेद भेरुं का पाया।—ह.पु.वा.

३ घोड़े की टहल बंदगी करने वाला, सईस।

उ०—१ पांडवां खुरहरां झपट पाय। तदि मिळै हाथळां ओप पाय।—सू.प्र.

उ०—२ सु रावळी वडी घोड़ी थी तिका चरवादार तळाव संपडावण वास्तै ले आया, यां रै तळाव री पाळ डेरो छै बैठा छै नै पांडव घोड़ियां चढ़िया आवै छै।—नैणसी

उ०—३ पांडवां नीलो पलांण। असी घोड़ै राव आंण। वैडतै उमै विकास। आरिखै जिसो उचास।—गु.रू.बं.

४ मुसलमान, यवन।

रू०भे०—पंड, पंडव, पंडू, पांडवेय, पिंड, पांडु।

अल्पा०—पंडवड़ो, पंडवो।

पांडवतिलक-सं०पु०यौ० [सं०] युधिष्ठिर (ह.नां.मा.)

रू०भे०—पंडवतिलक।

पांडवनगर-सं०पु०यौ० [सं० पाण्डवनगर] दिल्ली।

रू०भे०—पडवनगर।

पांडवनांमी-वि० [सं० पांडवनाम्न] पाण्डव के पांच पुत्रों में से कोई एक, पाण्डव।

रू०भे०—पंडवनांमी।

पांडवेय—देखो 'पांडव' (रू.भे.)

पांडित—देखो 'पंडित' (रू.भे.) (ह.नां.मा.)

पांडियो—देखो 'पंडो' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—पांडिया नूं बुलाय ल्यावै बखत राजा उठा थी नोसर मजूर रो रूप कियो।—पंचदण्डी री वारता

पांडीउ-सं०पु० [सं० पाण्डु] एक देश का नाम।

उ०—तत्र देसे गोमुख नरा—महाभोट ३ कोडि, अस्वमुख नरा, कान्हडउ, चौड सारद्ध ३ लक्ष, मलयगिरि ७ लक्ष, पांडीउ १७ लक्ष, सिंघलदीप १ कोडि।—व.स.

पांडीस-सं०स्त्री० [डि.] तलवार (डि.को.)

उ०—काळ न आवै कायरां, वालम विसवावीस। पकड़ै रण धर पंथ नूं, पकड़ै नह पांडीस।—बां.दा.

रू०भे०—पंडीस, पंडीसक।

पांडु-सं०पु० [सं०] १ एक रोग विशेष।

उ०—ताप सन्निपात जांणो अतीसार संग्रहांणि, फोहो विष राल

पांडु गोला सूल खैन है। हीया रोग सास खास रुधिर प्रवाह रूप, सीस पीड़ रोग अरु जेते रोग नैन है।—घ.व.ग्रं.
२ सफेद रंग (ह.नां.मा.)
३ कुछ लाली लिए हुए पीला रंग।
४ प्राचीन काल के एक राजा का नाम जो पांडवों के पिता थे।
५ देखो 'पांडव' (रू.भे.)
रू०भे०—पंड, पंडु, पंडू, पांडू।
पांडुता-सं०स्त्री० [सं०] सफेदी, रक्ताल्पता।
पांडुनाग-सं०पु० [सं० पाण्डुनाग] १ सफेद रंग का हाथी।
२ सफेद रंग का सांप।
पांडुत्र, पांडुपूत-सं०पु० [सं०] पांडुपुत्र, पांडव के पुत्र, पांडव।
पांडुर-वि० [सं०] १ पीला।
२ सफेद (डि.को.)
सं०पु०—१ पीलिया नामक रोग का रोगी।
उ०—समभावै बहूधीत सयांणा, वाचक नींत विनीत। संख सेत है रीत सदा री, पांडुर पीत प्रतीत।—ऊ.का.
२ एक रोग जिसमें रक्ताल्पता होती है।
३ वह जो सफेद हो।
रू०भे०—पंडर, पंडरू, पंडुर, पंडूर, पांड, पांडर, पांडरव, पांडरौ, पांडूर, पिंडर, पुंडर।
अल्पा०—पांडरो, पांडूरौ।
पांडुरी-सं०स्त्री०—एक प्रकार का पीपल का वृक्ष जिसे राजस्थानी में पारस पीपल कहते हैं।
पांडुरौ—देखो 'पांडुर' (अल्पा., रू.भे.)
पांडुलिपि-सं०स्त्री० [सं०] काट-छांट करने अथवा घटाने-बढ़ाने आदि के लिये तैयार किया गया लेख आदि का पहला रूप, मसविदा, ढोल।
पांडू—देखो 'पांडु' (रू.भे.) (डि.को.) (ह.नां.मा.)
पांडूप-सं०पु०—एक वस्त्र विशेष।
उ०—देवदूस्य, देवांग, चीनांसुक, पटटुकूल, नीलनेत्र, वार्यंगण-नेत्र, पांडूप्र, पट्टहीर, पट्टसाउल।—व.स.
पांडूर, पांडूरौ—देखो 'पांडुर' (रू.भे.) (ह.नां.मा.)
उ०—असी वरस की हो बूढ़ि वेसि। दांत कवाड्या सिर पांडूरा केस।—वी.दे.
पांडे—देखो 'पांड्यौ' (रू.भे.)
पांडेरी(की)ओवरी-सं०स्त्री० [देशज] मेवाड़ के महाराणा का एक कारखाना जिसमें महाराणा की नजर आदि में आई हुई वस्तुओं को लिखा जाकर सम्बन्धित कारखाने में भेजी जाती हैं।
पांडीसवौ-सं०पु० [देशज] खड्गधारी, योद्धा ?
उ०—परळ जळ गरळ बळ जळै पाडीसवौ, नरां अंत कळकळै वळै नीड़ो। 'केहरी' वियौ मुणिसाळ रळतौ कळै, ताइयां जांणियौ काळ तीड़ो।—राजा भीमसिंघ हाडा रो गीत

पांड्यौ-सं०पु० [सं० पण्डा] १ पण्डित, विद्वान।
उ०—पांड्या वीरा हूं थारौ गुणदास। दिन दस महूरत मोडव परगास।—वी.दे.
२ शिक्षक।
३ रसोइया।
४ देखो 'पंडौ' (अल्पा., रू.भे.)
पांण-सं०पु० [सं० प्राण] १ शक्ति, बल।
उ०—१ ऊभा सीहां केल इक, कर लेणौ मुसकल्ल। पांण छतै क्यूंकर पड़ै, ऊभा सींहां खल्ल।—बां.दा.
उ०—२ करै घर पारकी, आपणी जिकै नर। केवियां सीस खग-पांण करणा कचर।—हा.झा.
[सं० पानीय] २ पानी, जल।
उ०—बारह कुल तणी गोचरी जी, इकवीस जाति नो पांण। तके नहीं आटा नै टीमलाती, चतुर अवसर तणा जांण।—जयवांणी
[सं० प्राण] ३ जीव, प्राण।
उ०—तुड़तांण पांण काया तजंत। जै रांम रांम जीहा जपंत।
—गु.रू.बं.
[सं० उपानह] ४ जूती।
उ०—रुकमणी जी समस्त स्त्रंगार संपूरणि करि देविका देहरा दिसि मन कियौ। मोतियां जड़ित पांनिही पहिरी छै। सु ए पांण नहीं छै। ए मांनु चालि चालिवा की होड़ छांड़ि हंस आणि पगां लागा छै।—वेलि टी.
५ प्रभाव, प्रताप।
उ०—अगम निगम दोय वांणी जग में, ऊभी करै वखांण। राजा प्रजा दरस न आवै, विन जोगी थारौ पांण।—स्री हरिरांमजी महाराज
६ प्रण।
उ०—अकबर जग उफांण, तंग करण भेजै तुरक। रांणावत रिढ-रांण, पांण न तजै प्रतापसी।—दुरसौ आढौ
७ पसली व चूतड़ की हड्डी के बीच का रिक्त स्थान, बगल।
८ कारण, हेतु।
उ०—राजाजी री आंख्यां खोरा जगै ज्यूं जगण लागी। रीस रै पांण फुरणियां सूं वाफां निकळण लागी।—फुलवाड़ी
सं०स्त्री० [सं० प्रण] ९ मर्यादा, प्रतिष्ठा।
उ०—१ वित ले जावै विसटिया, पांण चकारां पाड़। मारो ज्यांनै मोटवी, सगत असूळां चाड़।—पा.प्र.
उ०—२ पाड़ चकारां पांण, हमणै वित ले हूंडियौ। रे कछ घर री रांण, आज कठी गो 'आवड़ा'—पा.प्र.
[सं० पानम] १० किसी शस्त्र अथवा पैनी धार वाली वस्तु को गरम कर के पानी या अन्य तरल पदार्थ में बुझाने को क्रिया जिसमे उसकी धार अधिक पैनी हो जाय।
उ०—तद लोहार कही राज हूं अठै बावड़ी रै पांणी सूं पांण

देनै तरवार करूं छूं ।—चौबोली

११ चमक ।

उ०—एक तौ इणसूं फासलौ दूणौ व्है जावै अर दूजै तस्वीर में पांण आजावै ।—फुलवाड़ी

१२ कपड़े या सूत पर चढाया जाने वाला कलफ जो भिन्न-भिन्न प्रकार के कपड़ों के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार की होती है, मांडी ।

१३ वह छोटी सीधी लकीर जो सख्या के आगे लगाने से एक के चतुर्थांश का बोध कराती है ।

१४ पशुओं—विशेषतया गाय, भैंस व बैल के खाद्य-पदार्थ से तृप्त हो जाने पर पेट के तन जाने की अवस्था ।

१५ मान (ह.नां.मा.)

१६ कुए अथवा बावड़ी से पूरे खेत को सींचने की क्रिया ।

यौ०—कोरपांण ।

क्रिवि० [सं० प्राण] १ ही ।

उ०—१ व्रतधारियां न जेझ विचारी । सुणतां पांण हुई असवारी ।
—रा.रू.

उ०—२ आ तौ म्हैं सावचेती राखी कै पड़तां पांण हेलौ कर दियौ ।
—फुलवाड़ी

२ तुरन्त, फौरन ।

रू०भे०—पांणि ।

अल्पा०—पाणौ ।

१७ देखो 'पांणि' (रू.भे.)

उ०—उडै ग्रहि अंत ग्रिभां असमांण । पलौ हिक झालत जोगणि पांण ।—सू.प्र.

पांणकोर, पांणकोरौ [देशज] १ वह नवीन वस्त्र जिसे धोकर उसका कलप उतारा न गया हो ।

पांणगौ, पांणग्ग-सं०पु० [सं० पानः] १ गांव के लोगों का पानी पीने का कूआ ।

२ शराब, अफीम आदि की गोष्ठी ।

उ०—१ भालां तणौ पांणगौ भारी, 'कुंभ' कळोधर 'जगै' कियौ । तण अणहार वेवलां तोड़ै, गौरी सेन अचेत गियौ ।
—उडणा प्रथ्वीराज री गीत

उ०—२ सज्जण मिळिया सज्जणां, तन मन नयण ठरंत । अण-पीयइ पांणग्ग ज्यूं, नयणे छाक चढत ।—ढो.मा.

रू०भे०—पांणिगौ, पैणगौ ।

पांणग्रहण—देखो 'पाणिग्रहण' (रू.भे.)

उ०—अनि सुणि कोइक वरण नृप आसी । पांणग्रहण पहिला मृत पासी ।—सू.प्र.

पांणत-सं०स्त्री० [सं० पानीयकृत्य] १ खेत की क्यारियों में पानी पिलाने की क्रिया । उ०—पैंलो जोटो आवै है, पांणतिया वीरा चेत रे । कोई पांणत गंगा ऊतरै ।—चेत मांनखा

२ उक्त कार्य की मजदूरी ।

पांणतियौ, पांणती-सं०पु० [सं० पानीयकृती] (स्त्री० पांणतण) खेत की क्यारियों मे पानी पिलाने वाला । उ०—१ बायरै रा ठंडा झोला, सांमी छाती झेलजै । पैंलौ जोटौ आवै है, पांणतिया खोडो घेरजै ।—चेत मांनखा

उ०—२ सौडि बिचि सूइजै तापिजै सिगडियै, सब्रल सी मांहि विण सद्रव सोरा । एतिण वार में पांणती ओजगी, दोजगी भरै निसदिस दौरा ।—ध.व.ग्रं.

पांणद—देखो 'पांणी' (रू.भे.) (अ.मा.) (ह नां.मा.)

पांणधर-वि० [सं० प्राणधारिन्] शक्तिशाली, बलवान ।

उ०—पड़ै झळ दसटि वळ छूट विखम प्राजळ पांणधर नको तोय आंण पुगै । करां तोय तेग निजि लपट लागै कहर, अरि-हरां कूंपळां नथी ऊगै ।—भगतरांम हाडा री गीत

पांणप—देखो 'पांणिप' (रू.भे.)

उ०—१ है तूं बाकी हेक, कर पांणप धर मूंछ कर । दूजां सांमो देख, कायर मत होजै नकुळ ।—रांमनाथ कवियौ

उ०—२ इंद्रसिंघ पांणप ऊझळै, वळ घात मूंछां काबळै ।—रा.रू.

पांणपखौ-सं०पु० [देशज] घीया पत्थर ।

पांणपुन्न-सं०पु०यौ० [सं० पानीपुण्य] पानी पिलाने से होने वाला पुण्य (जैन)

पांणही—देखो 'पनही' (रू.भे.)

उ०—सिणगार करे मन कीधौ स्यांमा, देवि तणा देहरा दिसि । होउ छंडि चरणे लागा हस, मोती लगि पांणही मिसि ।—वेलि

पांणि-सं०पु० [सं० पाणि] १ कर, हाथ । उ०—'अभौ' निरखै ऊमरा, परखै भूप प्रकास । जांणि पलट्टां थंभवै, एकण पांणि अकास ।—रा.रू.

यौ०—पांणिग्रहण, पांणिपीड़ण ।

२ देखो 'पांणी' (रू.भे.)

३ देखो 'पांण' (रू भे.)

उ०—धणी उप्परै लूंण वारंत धज्जं । गिरावै जिकै आठुआं पांणि गज्जं ।—वचनिका

रू०भे०—पांण, पांणी ।

पांणिगौ—देखो 'पांणगौ' (रू.भे.)

उ०—कसूंबौ रातां ओछड़ां ओछाड़ीजै छै । कसूंबौ नै हुसनाक पवन न्हांकै छै । कसूंबै रौ पांणिगौ मंडियौ छै ।—रा.सा.सं.

पांणिग्रहण-सं०पु० [सं० पाणिग्रहण] विवाह की वह प्रथा जिसमें कन्या का पिता वर के हाथ में कन्या का हाथ देता है, विवाह ।

उ०—इण रीति अरबुद रा अधीस री पुत्री रौ पांणिग्रहण करि कुमार प्रथीराज अजमेर आवियौ ।—वं.भा.

रू०भे०—पांणग्रहण, पांणीग्रहण, पांणंग्रहण, पांनग्रहण ।

पांणिणि, पांणिन, पांणिनि-सं०पु० [सं० पाणिनिः] संस्कृत भाषा के स्वनामख्यात एक व्याकरणी विद्वान का नाम।

पांणिनीय-वि० [सं० पाणिनीय, पाणिनीयः] पाणिनी संबंधी, पाणिनी का बनाया हुआ। उ०—प्रभु पांणिनीय व्याकरण प्रमांण प्रमांणी। पद महाभास्य अभ्यास पिछांणी।—ऊ.का.

पांणीपीड़ण-सं०पु० [सं० पाणिपीडनम्] पाणिग्रहण, विवाह।
उ०—बारहठ पाछो आइ याही अरज कीधी, तो सुणि दया रै दरियाव हालू नरेस सातवीसी सुमटां नूं पड़िहारां री पोळि पांणिपीड़ण स्वीकार कराई।—वं.भा.

पांणियौ—देखो 'पांणी' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—पावकौ जम सपो वेस्या, तुरिया पांणियौ वहणै। तसकर तुरक नरिंदो, आपांण कदे न हुवंत।—गु.रू.बं.

पांणिप-सं०पु०—१ बल, शक्ति, सामर्थ्य।
उ—१ पांणिप सहत खगां तन पोधौ, रीधौ भांण रखै न। कह कह धींद अछर मन कीधौ, लीधौ साथ 'लखै' नै। 'कांबां' रा भोमिया।
—सींधल राठौड़ां री गीत
उ०—२ या सुणतां ही कुमार रा पांणिप नूं प्रमांण करि पाछौ जाइ फौजदार आपरा वीरां नूं बहोड़ि दसोर पूगौ।—वं.भा.
२ प्रतिष्ठा, इज्जत, मान। उ०—१ अनमी कुळ काछड़ो न आंणै, जुध भागां कन पांणिप जाय।—जैचंद कल्यांणोत रौ गीत
उ०—२ पंद्रह दिन रहियां पछै मुगळ मीर तैमूर। क्रम इण मंडळ जीत कर, गौ ग्रह पांणिप पूर।—वं.भा.
३ कांति, आभा।
रू०भे०—पांणप, पांनिप।

पांणी-सं०पु० [सं० पानीय] १ एक पारदर्शक, निर्गंध और स्वाद तथा रंगरहित तरल पदार्थ जो वनस्पति एवं सब प्राणियों के जीवित रहने के लिए एक अनिवार्य आवश्यक है।
—जल, वारि
उ०—सालूरा पांणी विना, रहइ विलक्खा जेम। ढाढी साहिब सूं कहइ, मो मन तो बिन एम।—ढो.मा.
पर्या०—अंतर, अंब, अयर, अप, अमृत, अम्रति, अरण, अल, आब, उजळ, उदक, कं, कबंध, कमळ, कीळाळ, कुळीनस, कुस, कपीट, खीर, घणअप, घणरस, छापि, जग-जीवन, जळ, जाद, जीवन, जोतंवळ, झरनाळ, टातंब, तरंग, तर-तात, तोय, दक, धार, धोइअंग, नर, निवाल, नीचय, नीर, नीलंठ, पणंग, पय, पांणद, पीठ, पुसप, पोहकर, प्रवतक, बंधांणी, वन, वार, भुवन, भू, भोमीवळ, भ्रजण, मळमंजण, मेघ, मेघपुसप, रंग, वन, वसुधाधुक, वार, विख, संवर, संदक, सर, सरग्रढ, सरबमुख, सलिल, सारंग, सी, सीतळ, सेलंबल, हर।
मुहा०—१ पांणी आणौ—वर्षा होना, वर्षा के पानी का तालाब में एकत्र होना।
२ (आंखियां में) पांणी आणौ—द्रवित होना, रुदन करना, रोना।
३ (मुंह में) पांणी आणौ—खाने के लिए लालायित होना, ललचाना।
४ पांणी उतरणौ—पानी की सतह का नीचा होना।
५ पांणी ऊं पतळौ—अत्यन्त निर्धन, अत्यन्त कमजोर, अत्यन्त सूक्ष्म, अति सूक्ष्म।
६ पांणी ऊपरा कर फिरणौ—पानी की सतह से ऊपर हो जाना, स्थिति से काबू से बाहर हो जाना।
७ पांणी काटणौ—तैर कर दूरी तय करना, मूर्खता का कार्य करना।
८ पांणी काडणौ—खुदाई द्वारा धरती की सतह का पानी निकालना, कूए से पानी निकालना।
९ (पग मार नै) पांणी काडणौ—महान कार्य करना, असंभव कार्य करना।
१० पांणी कातणौ—असम्भव कार्य करना।
११ (दूध का दूध) पांणी का पांणी—न्यायोचित बात कहना, सार सत्व निकाल कर रख देना। यथार्थ न्याय करना।
१२ पांणी चढ़णौ—पानी की सतह का ऊंचा होना, शारीरिक अवयव का निरन्तर पानी में रहने से रुग्ण एव विकृत होना। चाकू या शस्त्र पर धार लगना।
१३ पांणी चढ़ाणौ—नल द्वारा यांत्रिक दबाव से पानी को ऊंचा चढ़ाना, ऊपर पहुंचाना।
१४ पांणी छणणौ—पानी का किसी वस्त्र के टुकड़े या बारीक जाली से होकर निकलना, पानी का स्वच्छ और निर्मल होना, स्थिति स्पष्ट होना।
१५ पांणी छूटणौ—बंध हटने पर जलप्रवाह चालू होना।
१६ पांणी छोडणौ—सिंचाई के लिए किसी बंध, नदी या नहर के पानी को खेतों की ओर प्रवाहित करना। किसी चीज का रसना। यथा-तरकारी को आग पर चढ़ाने से पानी छोड़ना।
१७ पांणी टूटणौ—पानी का कम होना। (बंध, तालाब या कूप)
१८ पांणी तोड़णौ—पानी कम करना, कुए आदि का पानी समाप्त कर देना।
१९ पांणी दिखाणौ—पशु को पानी पिलाना।
२० पांणी देखणौ—स्थिति का पता लगाना, किसी के स्वभाव की गहराई का पता लगाना।
२१ पांणी देणौ—किसी पौधे आदि को सींचना, नष्ट करना, पित्रों को अंजलि द्वारा तर्पण करना।
२२ पांणी नीं मांगणौ—किसी बिच्छू या सर्प के काटने से तुरन्त मर जाना।
२३ (आधं) पांणी न्याव करणौ—आधा लाभ प्राप्त करना।

२४ पांणी पड़णौ—देखो 'पांणी आणौ'।
२५ (गोडां) पांणी पड़णौ—बुरी तरह थकना।
२६ पांणी पर मळाई ठं'णौ—हर हालत में लाभ पहुंचना।
२७ पांणी-पांणी करणौ—द्रवित करना।
२८ पांणी-पांणी होणौ—द्रवित होना।
२९ पांणी पांणौ—देखो 'पांणी दणौ'।
३० (ठंडौ) पांणी पाणौ—सुख देना।
३१ पांणी पा'र छोडणौ—भारी तंग करना।
३२ पांणी पावणौ—पीटना, हराना।
३३ (ऊकळ्यौ) पांणी पीणौ—पूरी तरह याद करना, शीघ्रता करना।
३४ (ढकं घड़ं रौ) पांणी पीणौ—इज्जत बनाए रखना।
३५ (नित कुम्रो खोदणौ नित) पांणी पीणौ—रोज की कमाई रोज खाना, रोज कमाना रोज खाना।
३६ पांणी पिछाणणौ—वास्तविकता समझना।
३७ पांणी पीतां पीतां नाज को सवाद आणौ—बुरी स्थिति का सामना करते अच्छी स्थिति में आना।
३८ पांणी पी'र जात पूछणौ—स्वार्थसिद्धि के बाद औचित्य पर ध्यान देना।
३९ (तातौ) पांणी पी'र जाणौ—कष्ट भोग कर जाना।
४० पांणी पी-पी पातळौ होणौ—झूठा अमीर बनना।
४१ पांणी पैं'ली पाळ बांधणी—आफत आने से पूर्व ही उस को रोकने का प्रबन्ध कर लेना।
४२ पांणी फिरणौ—काम बिगड़ना, किये कार्य का यश न मिलना।
४३ पांणी फूटणौ—पानी का मेढ़ तोड़ कर बहना।
४४ पांणी फेरणौ—काम बिगाड़ देना, किसी के परिश्रम को न सराहना।
४५ पांणी बांधणौ—पानी को रोकने हेतु बांध बनाना।
४६ पांणी बारै काढणौ—धोना (वस्त्र)।
४७ पांणी बोलणौ—स्थान विशेष से प्रभावित होना, उबाल आने पर या अधिक वर्षा होने पर पानी की आवाज होना।
४८ पांणी भरणौ—किसी की तुलना में फीका होना, निम्न स्तर का होना।
४९ पांणी मरणौ—पानी का रिस रिस कर अन्दर जाना (मकान या दीवार) किसी कारणवश किसी के सामने दबना, ज्यूं अठै आवतां उण रौ पांणी मरै है। बेइज्जत होना।
५० पांणी मा'कर काढणौ—देखो 'पांणी बारै काढणौ'।
५१ पांणी में आग लगाणौ—असंभव को संभव करना।
५२ पांणी में उतरणौ—कमजोर पड़ना, पोची दिखाना।
५३ (अजांणे) पांणी में उतरणौ—अज्ञात स्थिति में आना।
५४ पांणी में खोज काढ़णौ—गहरी जांच करना, दुर्लभ्य का पता लगा लेना।
५५ पांणी में बहाणौ—व्यर्थ खर्च करना, किसी वस्तु को नष्ट करना।
५६ पांणी री नींव—कच्चा काम।
५७ पांणी रो पोट—वह साग या तरकारी जिसमें पानी का अंश अधिक मात्रा में हो। ऐसा व्यक्ति जो दिखने में मोटा ताजा लगता है परन्तु वस्तुतः बहुत कमजोर होता है।
५८ पांणी री तरह बहणौ—अंधाधुंध खर्च होना।
५९ पांणी री तरह बहाणौ—देखो 'पांणी में बहाणौ'।
६० पांणी रै पी'दै बैठाणौ—बर्बाद करना, डुबो देना।
६१ पांणी रै भाव बिकणौ—अत्यन्त सस्ता होना।
६२ पांणी रोकणौ—देखो 'पांणी बांधणौ'।
६३ पांणी रो आसरो—पानी पीकर जीवन-निर्वाह करना।
६४ पांणी रो पतासो या बुलबुलो—क्षणिक।
६५ (पूणी) पांणी री सीर—पूर्व जन्म की आत्मीयता का प्रसंग।
६६ पांणी लागणौ—जलवायु का प्रतिकूल पड़ना।
६७ पांणी वारणौ—रोग विशेष की मुक्ति हेतु किसी पात्र में जल भर कर किसी के ऊपर से घुमाना।
६८ (बांसां) पांणी होणौ—अत्यधिक जल होना, अत्यधिक कठिन होना।
६९ (मेह) पांणी होणौ—वर्षा होना, फूट-फूट कर रोना।
७० भारी पांणी—गरिष्ठ जल।
७१ मीठौ पांणी—मीठा पेय, शर्बत आदि।
७२ हळकौ पांणी—पाचक जल।
२ शक्ति, बल।
उ०—समझावै सोही बैरी बोही, द्रोही हुय दाकंदा है। पिंड में नहीं पांणी निज निरमांणी, सठ हांणी साकंदा है।—ऊ.का.
३ तेज, चमक, कान्ति।
उ०—१ काच रौ पांणी कितोई भळभळाट करै, कितोई चळकै, पर पांनणी बिना वो निरद आंधो।—फुलवाड़ी
उ०—२ जाया रजपूतांणियां, औरत दीधो चेह। प्रांण दियै पांणी पुरण, जावा न दीये जेह।—बां.दा.
मुहा०—१ पांणी उतरणौ—देखो 'पांणी जाणौ'।
२ पांणी चढ़ाणौ—चमकीला व तेज बनाना, धार लगाना, आभा या कान्तियुक्त करना।
३ पांणी जाणौ—चमक या कान्ति नष्ट हो जाना।
यौ०—पांणीदार।
४ वीर्य।
उ०—हर हर करतौ हरख कर, आळस म कर अयांण। जिण पांणी सूं पिंड रच, पवन बिलग्गै प्रांण।—ह.र.
मुहा०—१ पांणी काढ़णौ—सम्भोग करना।
२ पांणी छूटणौ—स्खलित होना।

५ आंसू।
मुहा०—पांणी आणो—द्रवित होना।
६ इज्जत, प्रतिष्ठा।
उ०—सूरा नमो आखियो सूरां, भारथ करे साखियो भांण। पांणी गोत चढ़ाय बिरदपत, चत्रभुज जोत मिळै चहुवांण।
—भीमसिंघ हाडा रो गीत
मुहा०—१ पांणी उतरणो—अपमानित होना या लज्जित होना।
२ पांणी उतारणो—अपमानित करना।
३ पांणी चढ़णो—मान प्रतिष्ठा इज्जत का बढ़ना।
४ पांणी चढ़ाणो—मान इज्जत का बढ़ाना।
५ पांणी जाणो—इज्जत समाप्त होना।
६ पांणी चढ़ाणो—मान इज्जत का बढ़ाना।
७ (सौ घड़ा) पांणी पड़णो—शर्मिंदा होना, लज्जित होना।
८ पांणी पांणी होणो—लज्जित होना।
९ पांणी बचाणो—इज्जत की रक्षा करना।
१० पांणी मरणो—बेइज्जत होना, बेशर्म होना, कलंकयुक्त होना।
११ पांणी राखणो—इज्जत रखना।
यौ०—पांणीदार।
७ देखो 'पांणि' (रू.भे.)
उ०—कदेक सपना मांय सायधण आंण मिळांणी। धण लेतो गळ-वत्थ पसारू' दरसां पांणी।—मेघ.
रू०भे०—पांणद, पांणि, पांणिय, पांणू, पांनि, पांनी।
अल्पा०—पांणियो, पांणीड़ो, पांणीडो।

पांणी-ग्रहण—देखो 'पांणि-ग्रहण' (रू.भे.)
उ०—ब्रांह्मण जु कछु धरम होय कहै। तब कह्यौ एक स्त्री सु बार-बार पांणी ग्रहण न होय हथळेवौ एक ही बार होय।—वेलि टी.

पांणीड़ो—देखो 'पांणी' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—१ सात सहेली पांणीड़ै नै निकळी। सातूं एक उणियारे हो रांम। भरण गई जळ जमना को पांणी।—लो.गी.
उ०—२ औ जी औ मनै पांणीड़ो पोमचियो रंगादे मोरी मांय। लूवर रमवा मैं ज्यासूं।—लो.गी.
उ०—३ सरवण भैया पांणीड़ो पिला। वन मांई प्यास लगी।
—लो.गी.

पांणीजरो—देखो 'पांणीझरो' (रू.भे.)

पांणीजीवो—सं०पु० [सं० पानीयजीव] कच्छप, कछुआ (ह.नां.मा.)

पांणीझरो—सं०पु० [?] एक प्रकार का आंत्रिक ज्वर।
उ०—नीमां चढ़ी गिलोय वणी बडी गुणगारी। छः आना भर पाव फळावै ग्रांम पसारी। काढ़ो पांणी-झरा घूंटियो गुजराती में। कम-जोरी में ववाय पीड़ होयां छाती में।—दसदेव
वि०वि०—यह एक प्रकार का मयादी बुखार है जिसमें शरीर पर छोटी-छोटी फुंसियां हो जाती हैं।

पांणीपंथ—देखो 'पांणीपत' (रू.भे.)
उ०—पछै दमादी दे अर चढ़ियो अकबर पातिसाह दिली नूं पांणी-पंथ आयो।—बां.दा. ख्यात

पांणीपंथो—सं०पु०—एक जाति विशेष का घोड़ा जो पांनीपत प्रदेश में होता था।
उ०—पांणी पंथा नइ खुरसांणी, एक तुरकी तुरंग। सूडा पंखा नइ किहाड़ा, एक नीलड़ा सुरंग।—कां.दे.प्र.

पांणीपत, पांणीपथ—सं०पु० [सं० पानीपत ?] वर्तमान अम्बाला और दिल्ली के आसपास स्थित एक प्राचीन प्रदेश जहां के घोड़े प्रसिद्ध हुआ करते थे। कालान्तर में यह प्रदेश समाप्त हो गया और इसको मैदान के नाम से जाना जाने लगा। इसी मैदान में वे तीन प्रसिद्ध ऐतिहासिक युद्ध हुए हैं जिनके परिणामस्वरूप भारत का भाग्य ही बदल गया।
रू०भे०—पांणीपंथ, पांणीपथ, पांनीपथ।

पांणीपीड़ण—देखो 'पांणिपीड़ण' (रू.भे.)

पांणीय—देखो 'पांणी' (रू.भे.)
उ०—खाजां खरहर चूरतां कूरतां आविउ थाळि। नांमइ घ्रत जिम पांणीय, जांणिय लीजइ दाळि।—जयसेखर सूरि

पांणीलंघणो—सं०स्त्री० [देशज] गमी के बाद कराई जाने वाली विशेष रस्म जिसमें मृतक के परिवार वालों को अन्न जल ग्रहण करवाया जाता है। उ०—तीजै पहर माधवसिंघ, सूरतसिंघ, खिंगारजी बीजा ही हिंदू ठाकुर पधारिया। पधारि अर पांणीलंघणो कराड़ियो।
—द.वि.

पांणीवाड़ो—सं०स्त्री० [देशज] किसी के सम्बन्धी की अन्य स्थान या नगर में मृत्यु होने की सूचना मिलने पर उस द्वारा वहीं के किसी तालाब आदि पर जाकर स्नानादि करने व अंजली देने की रस्म।

पांणीस, पांणीसवळ—सं०स्त्री०—१ परमार वंश की एक शाखा।
उ०—परमारां री पेंतीस साख लिखंते—परमार, पांणीस, वलसी, लोदा, घरिया।—बां.दा. ख्यात
सं०पु०—२ इस शाखा का व्यक्ति।

पांणीहुंड, पांणीहल—सं०पु० [सं० पानीय+रा० हुंड] मुक्ता, मोती।
उ०—१ राजा तूझ समी अन राजा, होड कियां नृप विया हसै। पांणीहुंड पहरै दोहूं पासां, नासा नार जिहूं इ नकसै।—सांइयो झूलो
उ०—२ रंभ झूलणो कमळ दळ रौदां, दुहूं मझ भिड़ गत देख-दिखाळ। प्रिसणां सीस चुगै पांणी हळ, 'पांचौ' हंस चढे खगपाळ।
—पंचायण करमसीयोत रो गीत

पांणीहारी—देखो 'पणिहार' (रू.भे.)
उ०—थयुं प्रभात तव तुरणी नारि, गई सरोवर पांणीहारि। आगइ आछउं हूंतुं निरवरण, दीठउं पांणी लोही वरण।—कां.दे.प्र.

पांणूं—सं०पु०—१ एक प्रकार का छंद।
उ०—तीने हार सुचि लहू तंते, आंणी हार इक जिण अंते। पांणूं

छंद इण विध पढो, रांवां-राव हरि हरां रटो ।—पिंगळ सिरोमणि
२ देखो 'पांणी' (अल्पा०, रू.भे.)
उ०—कान्ह ने भाग रिड़माल राजा कियौ, पियो पय हाकडो समंद पांणू ।—बालाबख्स बारहठ (गजूकी)

पांणेची-संस्त्री० [सं० पानीय+रा. प्र. ची=की] पीने के पानी के पात्र रखने का स्थान, परींडा ।
उ०—भेळाया भुरजाळ ज्यां, पांणेचो गम पैठ । जिके कहांणा खोय जस, वसुधा मंडळ बैठ ।—बां.दा.
रू०भे०—पांणेछी, पांणेवी ।

पांणेचीधरा-संस्त्री० [सं० पानीय+रा.प्र.ची+धरा] पूर्वजों की भूमि ।
उ०—प्रजा नचीत रहो सुख पावो, सुख पावो सोह कवेसर ।
पांणेची-धरा किसुं पूछणो, नवी खाट सी जिसो नर ।
—केसरीसिंह बारहठ (रूपावास)

पांणेछी—देखो 'पांणेची' (रू.भे.)

पांणे-वि०—सामर्थ्यशाली ।
क्रिवि०—लिए, वास्ते, निमित्त ।

पांणग्रहण—देखो 'पांणिग्रहण' (रू.भे.)
उ०—गहड़ घड़ कांमणी, करै पांणग्रहण । करगि खग वाहतो, जुवा जुसण कसण ।—हा.झा.

पांणेडो-संपु० [सं० पानीय+रा.प्र ड़ो] सरदारों आदि के लिए पीने के जल-पात्र रखने का स्थान (उदयपुर)
उ०—उदैपुर आबदारखांनो पांणेड़ो कहावै, कपड़ा री कोठार निकारी ओरी कहावै ।—बां.दा.ख्यात

पांणो—१ देखो 'पणो' (रू.भे.)
२ देखो 'पांण' (रू.भे.)
उ०—मुगल महा भड साहसी, मूंकै दोय-दोय बांणो रे । लालचंद पतिसाह स्युं, पुजे केहो किम पांणो रे ।—प.च.चौ.

पांत—१ देखो 'पंक्ति' (रू.भे.)
उ०—१ बिरळा दांतां री पांतां बिरळाती । चोड़ै चाचर री चोड़ै चिरळाती ।—ऊ.का.
उ०—२ तठा पछै बीजा बांभणां 'रतन' रा भाईयां 'रतन' नूं पांत मांहि था परो काढियो ।—नैणसी
उ०—३ पग-पग फटिया पांहुणा, खागां सहणी खांत । पीव पदसै पांत में, भूलै केम दुभांत ।—वी.स.
मुहा०—१ पांत ऊ काढणी—किसी पाप कर्म के कारण भोजन के समय सजातीय मंडली में साथ न बैठने देना ।
२ पांत ऊं टाळणी—देखो 'पांत ऊं काढणी' ।
२ देखो 'पांती' (रू.भे.)
उ०—दोख निज दीह न दीसै रे, रसा अवरां पर रीसै रे । बात निज हाथ बिगाड़ी रे, आई सोई पांत अगाड़ी रे ।—ऊ.का.

पांतर, पांतरण-संस्त्री० [देशज] भूल, विस्मरण ।
उ०—१ पांतर भाव न पूछता, योंथी करता पंथ । पगां पड़ै कुळ पागहूंत, वळे बुहारै पंथ ।—रेवतसिंह भाटी
उ०—२ पहि पिता गुर पांतरण, इसौ कठण पण ओट । पाप चडै किस रांमचंद, किम पूरीजै कोट ।—रांमरासो
रू०भे०—पंतर, पंतरण ।
अल्पा०—पांतरो ।

पांतरणो, पांतरबो-क्रि०स० [देशज] १ छोड़ना ।
उ०—घिरे घोम धूंवा रवण धरा धुहि धूजिया, कटे पड़िया कटक ऊकटा काट । कटे घोड़ा सुहड़ हुई आरिण विकट, विहारी पांतर केम कुळवाट ।—राठौड़ बिहारीदास मानोत रो गीत
२ भूलना, विस्मरण करना । उ०—१ विरुद्ध वेद वारता प्रबुद्ध पांतरै नहीं । विसुद्ध सुद्ध संघ तैं असुद्ध आंतरै नहीं ।—ऊ.का.
उ०—२ हर हर करै न पांतरे, हर रो नांम रतन्न । पांचू पांडव तारिया, कर दागियो करन्न ।—ह.र.
३ बुद्धिहीन होना, पागलपन करना ।
उ०—१ सजु करै अहीरां सरिस सगाई, ओलांडै राजकुळ इता । विपपर्णे मति कोई वेसासो, पांतरिया माता इ पिता ।—वेलि
उ०—२ अंब तजइ नहि कोइला, सरवर मालूरांह । राज हिवइ मा पांतरउ, था घण चउ अवरांह ।—ढो.मा.
४ धोखा खाना । उ०—दुरजण केरा बोलड़ा, मत पांतरजउ कोय । अणहुंती हुंती कहइ, सगळी सांच न होय ।—ढो.मा.
पांतरणहार, हारो (हारी), पांतरणियो—वि० ।
पांतरिओड़ो, पांतरियोड़ो, पांतरयोड़ो—भू०का०कृ० ।
पांतरीजणो, पांतरीजबो—कर्म वा० ।
पंतरणो, पंतरबो—रू०भे० ।

पांतरियोड़ो-भू०का०कृ०—१ छोड़ा हुआ ।
२ भूला हुआ ।
३ बुद्धिहीन बना हुआ ।
४ धोखा खाया हुआ ।
(स्त्री० पांतरियोड़ी)

पांतरो—देखो 'पांतर' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—चाकर पोहरै ऊभो थो, तिण पांतरे मारियो ।—नैणसी

पांता, पांतावत—देखो 'पातावत' (रू.भे.)

पांति—१ देखो 'पांती' (रू.भे.)
उ०—माया सहि उतिम मधिम, प्रभु सरीखो पांति । आ प्रज री लागै अधिक, भगतवछळ ना भ्रांति ।—पी.ग्रं.
२ देखो 'पंक्ति' (रू.भे.)
उ०—१ करै पांति चौसरी, जरी तांणिया सिमांना । उठै भूप आविया, थंभ दुहु हिंदुसथांना ।—सू.प्र.
उ०—२ प्रभणंति पुत्र, इम मात पिता प्रति, अम्हा वासना वसी इसी । ग्याति किसी राजवियां ग्वाळां, किसी जाति कुळ पांति किसी ।—वेलि

पांतिग—देखो 'पातक' (रू.भे.)
उ०—चत्रभुज बाप आउब च्यार, साधुआं तणां पांतिग संघार।
—पी.ग्रं.

पांतियौ-सं०पु० [सं० पंक्ति] वह बिछाने का वस्त्र जिस पर बैठ कर लोग भोजन करते हैं।
उ०—तारां अमरसिंघजी उणांरै डेरै पधारिया। वां पांतिया ढाळ सारेई साथ सूं आरोगण विराजिया।—द.दा.
रू०भे०—पांतौ, पांतोटौ, पांत्यौ।

पांती-सं०स्त्री० [सं० पंक्ति] १ हिस्सा, भाग।
उ०—जद स्वांमीजी आहार नी पांती करतां ठंडी रोटी ऊपर एक एक लाडू मेल दियौ।—भि.द्र.
२ देखो 'पंक्ति' (रू.भे.)
रू०भे०—पांत, पांति।

पांतीदार-सं०पु०यौ० [सं० पंक्ति+फा० दार] हिस्सेदार, भागीदार।

पांतीवार-वि० [सं०पंक्ति+राज. वार] हिस्से अनुसार, भाग के अनुसार।
उ०—पांती चंद्रसेणी सूपदेणी धार लीनी। पांतीवार तीनां की लिखावटी मांड दीनी।—शि.वं.

पांतोटौ, पांतौ, पांत्यौ—देखो 'पांतियौ' (रू.भे.)
उ०—१ हवलदारां अरज कीवी छै। भुजाई तयार हुयी छै। आप फुरमायो छै पांतोटा नांखौ, वाजवट थाळ मंगावौ।—रा.सा.सं.
उ०—२ जद रसोडदार अरज कीवी-पांत्यौ कराइजै। सिरदार अरोगीजै।—पनां वीरमदे री वात

पांथणौ, पांथबौ—देखो 'पहुंचणौ, पहुंचबौ' (रू.भे.)
उ०—तोपखांनौ अकवर री फौज सांमौ पहलां वहीर कियौ, सो तोपखांनौ दिली सूं तीन कोस पांणीपत पांथौ।—बां.दा.ख्यात
पांथणहार, हारौ (हारी), पांथणियौ—वि०।
पांथिओड़ौ, पांथियोड़ौ, पांथ्योड़ौ—भू०का०कृ०।
पांथीजणौ, पांथीजबौ—भाव वा०।

पांथियोड़ौ—देखो 'पहुंचियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० पांथियोड़ी)

पांन-सं०पु० [सं० पा] १ पीना क्रिया।
उ०—१ स्रीपत चरण सरोज रौ, गंगाजळ मकरंद। अलियळ ज्यूं कर पांन अब, अधिकावण आणंद।—बां.दा.
उ०—२ जुड़ैवा जु तूं नाग काळी जगावै, अजै मुख पे-पांन री सोढि आवै।—ना.द.
यौ०—खांन-पांन, दुग्ध-पांन, पय-पांन, सुरा-पांन, स्तन-पांन।
[सं० पर्णम्] २ पत्ता, पत्र। उ०—रांमा अवतार नांम ताइ रुखमणि, मांनसरोवरि मेरु गिरि। बाळकति करि हंस चौ बाळक, कनकवेलि बिहु पांन करि।—वेलि
३ सोने के हार (पहनने का) में पत्ते के आकार का तावीज।
४ चूना, कत्था, सुपारी आदि के साथ खाया जाने वाला नागरवेल का पत्ता, ताम्बूल (अ.मा.)। उ०—१ 'सूर' पांन ले साहरा, आयौ करण अखियात। धर मुदफर सिर छत्र धर, विसटाळा री वात।
—सू.प्र.
उ०—२ किहि करगि कुमकुमौ कुंकुम किहि करि, किहि करि कुसुम कपूर करि। किहि करि पांन अरगजौ किहि करि, धूप सखी किहि करगि धरि।—वेलि
यौ०—पांनदांन।
रू०भे०—पन।
५ तमाखू। उ०—डूबगी वात सब देस री, खूब असुभ गुण खाटियौ। पांन रौ ध्यांन धरियां पछै, सांसौ गिणै न साटियौ।—ऊ.का.
[सं० पानः] ६ नगाड़ा। उ०—लागा सिंधरी राग रा पांना साकुरां भड़ालां लीदां। अभागां छड़ाळां आभ छवंतौ ता-ठोड।
—विसनसिंह राठोड़ रौ गीत
७ सर्प, सांप।
क्रि०प्र०—लड़णौ, लागणौ।
यौ०—पांनदार।
८ खेलने के ताश के चार प्रकार के पत्तों में से लाल रंग का एक पत्ता।
९ ताश का पत्ता।
१० स्त्रियों की नाक में पहिनने का आभूषण।
११ फौलाद की बनी पत्ती।
रू०भे०—पन्न।
अल्पा०—पांनड़लौ, पांनड़ौ, पांनौ।

पांनक-सं०स्त्री० [सं० पानकम्] पेय पदार्थ।
उ०—इळ सीत अंबर पसरि उत्तर, वसन प्रीत विसेख ए। आंमिक्ख पांनक पूर आसव, पुहवी नृप सुख पेख ए।—रा.रू.

पांनकराड़-सं०पु० [सं० पान+रा. कराड] शराब बेचने वाला, कलाल (डि.को.)

पांनगहण—देखो 'पांणिग्रहण' (रू.भे.)

पांनड़लौ—देखो 'पांन' (अल्पा, रू.भे.)
उ०—एक पांनड़लौ तोड़ियौ, ए लूम्यां री डोरी। चुय-चुय पड़ै ए मजीठ, वारी ए लूम्यां री डोरी।—लो.गी.

पांनड़ी-सं०स्त्री० [सं० पर्णम्+रा. प्र.ड़ी] १ चंदा उगाहने की सूची।
२ रहट पर संगीतात्मक ध्वनि उत्पन्न करने के लिए लकड़ी का उपकरण जो जोड़े में होता है और रहट की माल घुमाने वाले घेरे को उलटा फिरने से रोकने वाले उपकरण 'डूहा' पर लगाया जाताहै।
वि०वि०—मधुर ध्वनि के लिए यह जोड़ा प्राय: आम की लकड़ी का बनवाया जाता है। इसके लिए यह भी कहा जाता है कि इसकी ध्वनि की लय के साथ साथ बैल आसानी से रहट को चलाते रहते हैं।
३ मूंग, मोठ, गवार आदि के सूखे पत्ते जो पशुओं को खिलाते हैं।

४ देखो 'पनड़ी' (रू.भे.)

पांनड़ो—१ देखो 'पांनो' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—रांणा रा धिन राखतां, गाढ़ो आदर गाढ़। पायो अकबर पांनड़े, चित्रकोट जळ चाढ़।—बां.दा.

२ देखो 'पांन' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—पय ठव सूका पांनड़ा, मां बजाड़ मयमंत। खबरदार के बेखबर, वन इण सीह वसंत।—बां.दा.

पांनचराई-सं०स्त्री०यो० [सं० पर्ण+चर] एक प्रकार का टैक्स जो मवेशी रखने वालों से वसूल किया जाता था।—नैणसी

पांनदांन-सं०पु०यो० [सं० पर्ण+दान] वह डिब्बा जिसमें पान और उसको लगाने की सामग्री रखी रहती है। उ०—छजंत भूपती छमा, सलांम भूपती सजै। कपूर पांनदांन केक, राखि भूपती रजै।—सू.प्र.

पांनदार-सं०पु०यो० [राज. पांन+फा. दार] वह अर्ध मंडलाकार पत्थर जिसके मध्य में सर्प की आकृति खुदी रहती है (शिल्प)

पांनपखीण-सं०पु०—चन्द्रमा (नां.मा.)

पांनबीड़ो-सं०पु०यो० [राज०] लगाया हुआ पान का बीड़ा, गिलोरी। उ०—अरोगे अघाये किया आचमनं। कपूरी ग्रहे पांनबीड़ा क्रसनं।—ना.द.

पांनस-सं०स्त्री० [देशज] तिलहन की सूखी पत्तियां (शेखावाटी)

पांनसी-स०स्त्री० [देशज] १ मोठ, मूंग, गवार, चौले आदि की सूखी हुई पत्तियां जो पशुओं को खिलाने के काम में ली जाती हैं।

२ देखो 'पनड़ी' (रू.भे.)

पांनह, पांनही—देखो 'पनही' (रू.भे.) (अ.मा.)

उ०—हू बळिहारी सज्जणां, सज्जण मो बळिहार। हूं सज्जण पग पांनही, सज्जण मो गळहार।—ढो.मा.

पांनि—देखो 'पांणि' (रू.भे.)

उ०—कमनैत तीरनि तांनिके, पखरेत वेधत पांनि के।—वं.भा.

पांनिप-सं०पु० [सं० पान:=ढोलक या ढोल की दुकान] १ नगाड़ा, २ ढोल। उ०—अहिके नद पांनपि तुं तुंबुरयं। चहिके चहुं ओरनि जंबुरयं।—ला.रा.

३ शराब पीने वाला व्यक्ति। ४ देखो 'पांणिय' (रू.भे.)

पांनी—देखो 'पांणी' (रू.भे.)

पांनीपथ—देखो 'पांणीपत' (रू.भे.)

पांनूस—देखो 'फांनूस' (रू.भे.)

पांनोली-सं०स्त्री० [सं० पर्ण+अवलि] पौधे के अंकुर के साथ निकलने वाली पत्ती, किसलय। उ०—उगता पांन री पांनोली छांनी नीं रहै।—फुलवाड़ी

पांनो-सं०पु० [सं० पान:] १ नगाड़ा। उ०—राग वज सिंधवो, विखम पांनो रुड़ै। कंपू 'जैतसी' तणो, आंण चढियो कड़ै।—जसजी आढो

२ अधिकार। उ०—१ नांखै नीसासा, आसा अड़ियोड़ी। पांमर पुरुसां रै पांनै पड़ियोड़ी।—ऊ.का.

उ०—२ सु ऐ अठै नागौर रा हाकम रै पांनै पड़िया, सु औ लेनै पातसाह री हजूर जातो थो।—नैणसी

[सं० पर्ण] ३ पत्र, कागज। उ०—वली पंच महाव्रत नो द्रव्य क्षेत्र काल भाव पूछ्या। जद बोल्यो—पांनां में मंड्या है।—भि.द्र.

४ पृष्ठ, पेज। उ०—पाछलै पांनै वंसावळी छै।—नैणसी

मुहा०—पन।

५ वंश।

[फा० पहन] ६ स्त्रियों के स्तन में वात्सल्य के कारण दूध उतरने की अवस्था। उ०—१ तटक्कै मुंहै नागणी बोल तारो, प्रभू आगमी मूझ पाछा पधारो। काळी नाग सूं लीजियै वेगि कांनो, पड़्यो तात सोभै चढ़ै मात पांनो।—ना.द.

उ०—२ नटणी रांमत करण सारू त्यार हुई के उण नै ख्याल आयो—भरत पार करतां दो तीन घड़ी लाग जावैला। उणरै हांचळां तैं पांनो आयोड़ो हो।—फुलवाड़ी

७ जमीन का भाग या हिस्सा।

८ धार, पैनापन।

उ०—जिण वगत वो जैपुर रा राजा रै सांमा इक्कीस नवलक्खा हारां री निजरांणो धकै करियो उण वगत इस्टूरां एक काठा भाटा रै माथै रगड रगड़ नै भोटी कवाड़ी रो पांनो करतो हो।—फुलवाड़ी

९ देखो 'पांन' (अल्पा०, रू.भे.)

रू०भे०—पांन्हो।

अल्पा०—पांनड़ो।

पांन्हो—देखो 'पांनो' (रू.भे.)

उ०—घड़ी एक हुई। त्यूं बाळक री साद हुवो ईं ऐरे आंचळां पांन्हो आयो।—देवजी बगड़ावत री वात

पांपण, पांपणि-सं०स्त्री० [देशज] पलक। उ०—१ पांपण नै पदतांह, कही तो कुवा भराविये। मांणेरा मरतांह, सरीर में सरणी वहे।—अज्ञात

उ०—२ दळ फूलि विमळ वन नयण कमळ दळ, कोकिळ कंठ सुहाइ सर। पांपणि-पंख संवारि नवी परि, भ्रूहां रै भ्रमिया भ्रमर।—वेलि

पांभड़ी, पांभरी-सं०स्त्री० [सं० पक्ष्माटिका] १ एक प्रकार का पुरुषों के ओढने का दुशाला विशेष। उ०—१ ताहरां कुंवर लो दळपतजी पातिसाह रै पाए लागा। घणी दिलासा पातिसाहजी की पांभड़ियां रो जोड़ो हेक, सिरपाव, घोड़ो इनायत कियो।—द वि.

उ०—२ पहरी पटोली पांभड़ो रे लाल, दासह सुंदर देह।—प.च.चौ.

उ०—३ श्री 'जिन सागरसूरि' जी, सद्गुर सार्थ लीध रे। पाटंबर नै पांभरी, जाचक जन ने दीध रे।—सुमति वल्लभ

२ विवाह में भांमरी (विवाह मंडप में) के समय दुलहिन को ओढ़ाया जाने वाला वस्त्र विशेष।

रू०भे०—पंवरी, पांमड़ी, पांमडी, पांमरी, पांवरी, पुंहरी, फमड़ी, फांवड़ी, फांभरी, फांमड़ी, फांवरी ।

पांम-सं०स्त्री० [सं० पामन्] १ रक्त विकार के समय होने वाला एक रोग विशेष, एक प्रकार की खुजली ।

वि०वि०—इसमें प्रायः अंगुलियों के जोड़ों, जांघों के जोड़ों, मल द्वार अथवा अन्य अंगों पर छोटी-छोटी फुंसियां उठती हैं । ये फुंसियां धीरे-धीरे फैलती जाती हैं । यह छूत का रोग है और पशुओं में भी पाया जाता है ।

२ रोग, बिमारी ।

उ०—रांमजणी अर कंचणी, पातर देवै पांम । है बाघण वन हेक री, राखै अळगी रांम ।—बां.दा.

रू०भे०—पां, पांय, पांव ।

पांमणड़लो—देखो 'पांमणो' (अल्पा., रू.भे.)

पांमड़ी—देखो 'पांभड़ी' (रू.भे.)

उ०—चूनड़ी, पातल साड़ी, नंदरवारी, पाघड़ी, पांमड़ी, लोवड़ी, वाहणवही लोवड़ी, पछेडी···।—व.स.

पांमड़ो—देखो 'पांवडो' (रू.भे.)

पांमणड़ो—देखो 'पांमणो' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—रतन तणी पर जतन राखतां, खड़ग तणो घा खमियौ । पोहर तणो हुतौ पांमणड़ो, गावतड़ां ईज गमियो ।—ओपो आढ़ो

पांमणचार, पांमणाचार-सं०पु०यौ० [सं०प्राघुणः+चार] खातिरदारी, मेहमानदारी ।

पांमणो-सं०पु० [सं० प्राघुणक] (स्त्री० पांमणी) मेहमान, अतिथि ।

रू०भे०—पांउणो, पांम्हणो, पांवणो, पांहणो, पांहुणो, पाहूणउ, पाहूणो, प्रांमणो, प्रांहुणो, प्राहुणो ।

अल्पा०—पांमणड़लो, पांमणड़ो ।

मह०—पाहुण, पाहूण, प्राहुण ।

पांमणो, पांमबो—देखो 'पाणो, पाबो' (रू.भे.)

उ०—१ पद वनराव न पांजियो, दुरद दिखाळै दांत । सीह थयो वन साहिबो, ठींगां री संकरांत ।—बां.दा.

उ०—२ एकणि जीभ किसा कहूं, मारू रूप अपार । जे हरि दीयइ त पांमियइ, उदियइ इण संसार ।—ढो.मा.

उ०—३ जिम सुपनंतर पांमियउ, तिम परतख पांमेसि । सज्जन मोतीहार ज्यूं, कंठा ग्रहण करेसि ।—ढो.मा.

पांमणहार, हारो (हारी), पांमणियो—वि० ।

पांमिओड़ो, पांमियोड़ो, पांम्योड़ो—भू०का०कृ० ।

पांमीजणो, पांमीजबो—कर्म वा० ।

पांमर-वि० [सं० पामर] १ नीच कुल या वंश का(की) ।

उ०—मन रुच खाया बेर फळ, जिण सबरी पांमर । ते कदमूं रज आभड़े, अवरत गोतम तर ।—र.ज.प्र.

२ पापी, नीच । उ०—लाखां धन दे लोक नैं, मरद मरोड़ै मूंछ । सापुरसां रै सींग नहि, पांमर रै नहि पूंछ ।—ऊ.का.

[सं० पामरः] ३ मूर्ख, निर्बुद्धि, खल । उ०—छित कुळ ध्रम छांडै गुरुगम गाडै, भाडै चख मूंदंदा है । पांमर कर चोळा झांमर झोळा, पांमर पद पूजंदा है ।—ऊ.का.

रू०भे०—पांमल, पांवर ।

पांमरजोग-सं०पु० [सं० पामरयोग] १ भारत के नट, बाजीगर आदि द्वारा दिखाया जाने वाला निकृष्ट योग ।

२ एक प्रकार का निकृष्ट योग (फलित ज्योतिष)

पांमरी—देखो 'पांमड़ी' (रू.भे.)

उ०—पछि वस्त्र पहिरावइ, देवदूसित वस्त्र, रतन कांवळ, चीर, सोनहरी, पांमरी, खीरोदक खासा... ।—व.स.

पांमल—१ देखो 'पांमर' (रू.भे.)

२ देखो 'पांयलो' (मह०, रू.भे.)

उ०—गुड़दा खेचां हुय, पांमल गुण गावै । मुड़दा मुड़दा में, सांमल मिळ जावै ।—ऊ.का.

पांमलियो—देखो 'पांयलो' (अल्पा०, रू.भे.)

पांमिचदोस-सं०पु० [?] साधु के लिए आहार आदि उधार लाकर देने पर लगने वाला दोष, अपमित्यदोष (जैन)

पांमियोडो-भू०का०कृ०—प्राप्त किया हुआ ।
(स्त्री० पांमियोड़ी)

पांमेचो—देखो 'पांमिच्च-दोस' (रू.भे.)

पांम्हणो—देखो 'पांमणो' (रू.भे.)

उ०—कोई एक वीर स्त्री आपरा जोधार पती नैं कह रही छै-आप रा पांम्हणां (दुसमण) तो पंथ निहारै, झगड़ा री वाट जोवै ।
—वी.स.टी.

पांय—१ देखो 'पद' (रू.भे.)

उ०—प्रमेसर तेरा पांय प्रळोय । कुरांण पुरांण न जांणै कोय ।
—ह.र.

२ देखो 'पांम' (रू.भे.)

पांयणो—देखो 'पायलो' (रू.भे.)

पांयदान-सं०पु० [फा० पायंदाज] पैर पोंछने का बिछावन (उपकरण)

पांयलियो—देखो 'पांयलो' (अल्पा०, रू.भे.)

पांयल, पांयलो-वि० (स्त्री० पांयली) पांम रोग ग्रसित ।

अल्पा०—पांमलियो, पांयलियो, पांवलियो ।

मह०—पांमल, पांयल ।

पांव—१ देखो 'पद' (रू.भे.)

उ०—रूक-हथ पेखिसो हाथ जसराज रा । ठिवंतां पांव धीरा दियो ठाकुरां ।—हर.झा.

२ देखो 'पांम' (रू.भे.)

उ०—उंणी पांव में कोढ ईरखा, गळे अंग गड़वड़िया है । लुच्चां वांणी माथै लीनी, झूठां रा नख झड़िया है ।—ऊ.का.

पांवड़ो [सं० पदक+रा.प्र.ड़ो] १ पैर को एक स्थान से दूसरे स्थान तक रखने की दूरी, पैंड, डग, कदम ।
उ०—सो तौ पांवड़ा दोय सौ आगै वहै छै। लाख मांणसां री जहाज क्यूं डूबी छो।—मारवाड़ रा अमरावां री वारता
२ देखो 'पांयदांन' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—पलकां सूं करां पांवडा जी, अंचळां सूं मग झार। गिरधर म्हारो परम सनेही, मीरां उनकी नार।—मीरां
रू०भे०—पांउडौ, पांमडौ, पाउंडो ।
पांवणो—देखो 'पांमणो' (रू.भे.)
उ०—१ आयोड़ा किणजी रा सीस, किणजी रै सिगरत पांवणा। पोळिड़ा पोळ उघाड़, आज नै अवेळा आया पांवणा।—लो गी.
उ०—२ आ परदेसण पांवणी जी, पुळ देखै नीं वेळा। आलीजा रै आंगण में, करै मनां रा मेळा।—चेत मांनखा
(स्त्री० पांवणी)
पांवणो, पांववो—देखो 'पाणी, पावो' (रू.भे.)
पांवर—देखो 'पांमर' (रू.भे.)
उ०—मिनखा जनम अमोलक मूरख, पांवर फेर न पावै। हिळ-मिळ हंसणो वेवळ वसणो, औ मोसर कद आवै।—ऊ.का.
पांवरी-सं०पु० [देशज] 'वडावेस' में लाई गई वेश-भूषा को वधू को पहिनाने की रीति या प्रथा (पुष्करणा ब्राह्मण)
पांवळियो, पांवळो—१ देखो 'पद' (अल्पा०, रू.भे.)
उ०—हरि मंदिर जातां पांवळियो रै दूखे, फिर आवै सारो गांम रै।
—मीरां
२ देखो 'पांयलो' (अल्पा०, रू.भे.)
उ०—जाळ छाल वाळ बुरकायां, राख खरूंट लै ऊतरै। सांढ पांवळी सूत पतीजै, 'राम वांण है छूत रै'।—दसदेव
(स्त्री० पांवळी)
पांस-सं०स्त्री० [सं० पांशु] १ रज, धूलि (अ.मा.)
२ देखो 'फांस' (रू.भे.)
रू०भे०—पांसु, पांसू, पां', पोह ।
पांसर-सं०पु०—१ डांस, गोमक्खी ।
२ देखो 'पांसुल' (रू.भे.)
पांसळि, पांसळी—देखो 'पासळो' (रू.भे.)
उ०—पिंजर पांसळियां भीतर पैठोड़ा। बोलै बोवाता डोबा वैठोड़ा।
—ऊ.का.
पांसु—१ देखो 'पांस' (रू.भे.) (ह.नां.मा.)
२ देखो 'पासळी' (रू.भे.)
पांसुखुर-सं०पु० [देशज] घोड़ों का एक रोग जो पैरों में होता है ।
पांसुभंग-सं०पु० [सं० पशुंका+भंज्] छोटी पसली का ऊंट ।
पांसुल-वि० [सं० पांसुल या पांशुल] १ पापी, दुष्ट ।
२ गंदला किया हुआ । ३ भ्रष्ट किया हुआ ।
रू०भे०—पांसर ।
पांसुळी-वि० [सं० पुंसुला या पांशुला] १ रजस्वला ।
२ छिनाळ औरत ।
३ देखो 'पासळी' (रू.भे.) (उ.र.)
पांसू—१ देखो 'पांस' (रू.भे.)
उ०—१ क्रतध्वंसी विस्णूं कमळ भव जिस्णूं स्तुति करै। हिमांसू स्तुति करै। हिमांसू उस्णांसू पदम पद पांसू सिर धरै।—मे.म.
उ०—२ लोरां लै लूरां मोरां ललकारै। पांसू पड़ियोड़ा आंसू पळ-कारै।—ऊ.का.
पांसो—देखो 'पासो' (रू.भे.)
पांह—देखो 'पांस' (रू.भे.)
उ०—मोटा घेदा छै, तोबड़िया छै, घणै लोलै जड़ी-बूटी रा चरण-हार, पांहरै पांणी रा पीवणहार।—रा.सा.सं.
पांहणो—देखो 'पांमणो' (रू.भे.)
उ०—कंवर चूंडो जी बोल्या-थे तो अठै म्हांकै पांहणा छो।
—राव रिणमल री बात
पांहि, पांही-क्रि०वि०—पास, निकट ।
उ०—जीव दांन देवहु इन्है, मरण जोग ये नांहि। संकर भोळानाथ मैं, करूं विनय तुम पांहि।—जलाल बूबना री बात
पांहुणो—देखो 'पांमणो' (रू.भे.)
उ०—ए विना निवता रा पांहुणा (सत्रु) ढळिया आय नै ऊतरिया छै। पण म्हारो पती परूस जांणै है।—वी.स.टी.
पा'—देखो 'पास' (रू.भे.)
पा-वि०—पीने वाला ।
सं०पु०—१ पान ।
२ पक्षी ।
३ अमृत ।
सं०स्त्री०—१ शिवा ।
२ रज, धूलि (एका०)
पाअ—देखो 'पद' (रू.भे.)
उ०—एकणि पाए आंणिजै, सोळह कळ वळि सात। तविआ पैंगळ रीत रह, इसा छंद अवदात।—ल.पि.
पाअणो, पाअवौ—देखो 'पाणी, पावो' (रू.भे.)
उ०—पव्वै धारा पाए मौत रळगी अमरांपुरां। ऊजळै गो गोत बूंदी समरां आथांण।—दुरगादत्त बारहठ
पाअरधिय, पाआराधिय-सं०पु० [सं० परिधान=आच्छादनम्] ओट से मारने वाला, शिकारी, भील ।
उ०—पाअरधिय 'चांदोय' वैण पढै। सज आयोय 'पाल' विडंग चढे।—पा.प्र.
पाइ—देखो 'पद' (रू.भे.)
उ०—अति घण ऊनिमि आवियउ, झाझो रिठि झड़वाइ। बग ही

भला त वप्पड़ा, घरणि न मुक्कइ पाइ ।—ढो.मा.

पाइक, पाइक्क—१ देखो 'पायक' (रू०भे०)

उ०—१ पदमिणि रखपाळ पाइदळ पाइक्क । हिळवळिया हलिया हसति ।—वेलि

उ०—२ मलं अखाड़ केक मंड, दाव घाव दायकं । वहंत के पटास्य वंक, पांणवंत पायकं ।—सू.प्र.

पाइगह—देखो 'पायगा' (रू.भे.)

उ०—कुंवरी नैं कह्यौ—यें राजा रै पाइगह रा घोड़ा २ जय-विजय नांम छै सु ले मरदांनो वागो पहर खरीची ले नै वाग में आवौ ।
—चौबोलो

पाइणि—देखो 'पोयणी' (रू.भे.)(उ.र

पाइदळ—देखो 'पाईदळ' (रू.भे.)

उ०—हिरणां का जु जूथ देखीजै सोइ मांनौं पाइदळ हूआ ।
—वेलि टी.

पाइप-सं०पु० [अं०] पानी की कल, नल

पाइल—देखो 'पायल' (रू.भे.)

पाइली—देखो 'पायली' (रू.भे.)

पाई-सं०स्त्री०—१ एक छोटा सिक्का जो एक पैसे का तिहाई भाग होता है । उ०—पाई नहिं पाई पाटी पढियोड़ी । चपटा दांतां पर काई चढियोड़ी ।—ऊ.का.

२ छोटी खड़ी रेखा जो वाक्य के अंत में लगाई जाती है, पूर्ण-विराम का चिन्ह ।

३ इकाई का चतुर्थांश प्रकट करने वाली वह रेखा जो अंकों के आगे लगाई जाती है ।

४ झड़वेरी के सूखे कंटीले डंठलों का गुच्छा जो अहाता आदि बनाने के काम में आता है ।

पाईक—देखो 'पायक' (रू.भे.)

उ०—वे हवसी कन्नड़ा, केई पाईक फरीधर । के राजा के राव, केई रावत्त वहादर ।—गु.रू.वं.

पाईगह—देखो 'पायगा' (रू.भे.)

उ०—इणि अंतर वीसलदे राय । सवा लाख पाईगह केकांण ।
—वी.दे.

पाईता-सं०पु० [देशज] १ प्रथम मगण फिर एक भगण फिर एक सगण का ९ वर्ण का एक वर्णिक छंद (पि.प्र.)

पाईदळ-सं०पु०—पैदल सिपाही, पदाति ।

उ०—नेजा न संख नेजाइतां, न को संख पाईदळां । असपत्ति तणी फौजां असंख, मिळै कहळै मेहळां ।—गु.रू.वं.

रू०भे०—पयदळ, पाइदळ ।

पाउंड-सं०पु० [अं०] १ सोने का एक अंग्रेजी सिक्का जो २० शिलिंग का होता है । यह लगभग १४) रु० के बरावर होता है ।

२ एक अंग्रेजी तोल जो लगभग ४३० ग्राम के वरावर होता है ।

पाउंडो—देखो 'पांवडौ' (रू.भे.)

पाउ—१ देखो 'पद' (रू.भे.)

उ०—हाथ भलइं रहू हालता, पाउ सदैवत पंग । हाळी वाळी आप सिउं, अवरा ही मोह रंग ।—मा.कां.प्र.

२ देखो 'पाऊ' (रू.भे.)

पाउग, पाउगा—देखो 'पादुका' (रू.भे.)

पाउडर-सं०पु० [अं०] १ पीस कर आटे के समान वारीक बनाई गई कोई वस्तु, चूर्ण ।

२ चेहरे की शोभा वढाने हेतु स्त्रियों अथवा नाटक के पात्रों द्वारा प्रयोग किया जाने वाला एक प्रकार का चूर्ण ।

पाउरण—देखो 'प्रावरण' (रू.भे.) (जैन)

पाउरदोस-सं०पु० [सं० प्रकाश+दोष] दीपक, मणि आदि का प्रकाश करने पर लगने वाला दोष । (जैन)

रू०भे०—पाओअर-दोस ।

पाउल—देखो 'पाटल' (रू.भे)

उ०—पाउल देउल रंग भरि, देस देसांतर हांम । स्रस्ठा सरजाहि न कां, केलि करंतां कांम ।—मा.कां.प्र.

पाउस—देखो 'पावस' (रू.भे.)

उ०—सो जांणौ पाउस काळ री नदियां में उपटथट वेग रै अनु-सार तरां वोट छळतौ महानद आय मिळियौ ।—वं.भा.

पाउसियाकिरिया-सं०स्त्री० [सं० प्राद्वेषिकीक्रिया] दुष्ट, पापी, कृपण आदि को तो कष्ट में देख कर प्रसन्न होने तथा पुण्यवान, गुणवान आदि को सुख में देख कर ईर्षा करने की क्रिया (जैन)

पाऊ-सं०पु० [देशज] १ लोहे का मोटा कोला जो ऊपर से कुछ मुड़ा हुआ होता है और दीवार में विशेषकर पानी के नल को रोकने में काम आता है ।

२ देखो 'पद' (रू.भे.)

उ०—पोणां करि पाऊ पलंब डहै । वाजिद्रक वेग विवांण वहै ।
—गु.रू.वं.

रू०भे०—पाउ ।

पाए—देखो 'पद' (रू.भे.)

उ०—तव माधव पाए पड़इ, पंडित दत्त कुरंग । आलिंगन अलजइ दिइ, हीयडा अंतरि अंग ।—मा.कां.प्र.

पाएल—देखो 'पैदल' (रू.भे.)

उ०—छिलता झिलता घणूं छछोहा, ताढो तट छाया अख ताड़ । मद झरता इतरा ममंगळ, पाएल चालय्यइ पहाड़ ।
—महादेव पारवती री वेलि

पाओअरदोस—देखो 'पाउरदोस' (रू.भे) (जैन)

पाओलां-सं०स्त्री० [सं० पाद+अवलि] चमड़े की कसों में गुंथी हुई घुंघरुओं की दो पट्टियां जो लोक नृत्य में पैरों में वांधी जाती हैं ।

रू०भे०—पावलां ।

पाफ–वि० [फा०] १ पवित्र, शुद्ध, निर्मल।
उ०—प्रांण जितै जग आपणौ, प्रांण जितै तन पाक। प्रांण प्रयांण कियां पछै, व्है नर नांम हलाक।—बां.दा.
२ पापरहित, निर्दोष।
[सं० पाक:] ३ पकाया हुआ। उ०—पय मीठा कर पाक, जो इमरत सींचीजिये। उर करडाई आक, रंच न मूकै राजिया।
—किरपारांम
४ जो पकने को तैयार हो, पकने योग्य हो।
५ अनुकूल होने वाला।
सं०पु०—१ पकने की क्रिया या भाव (भोजन, अन्न, ईंट)
२ पका हुआ अन्न, भोजन, व्यंजन।
यौ०—पाकागार, पाकसास्त्र, पाकविग्यांन।
३ मिठाई, मिष्ठान्न। उ०—भूप वधायौ मोतियां, कीधा निजर तुरंग। भोजन भूंजाई विवध, विंजन पाक सुरंग।—रा.रू.
४ मिश्री, चीनी (शक्कर) या शहद के मिश्रण से बनाया पौष्टिक पदार्थ।
उ०—दूधपाक, कोहलापाक, सेलड़ीपाक, गूंदपाक, नालीअरपाक, कौचापाक, आदापाक।—व.स.
५ पचने की क्रिया, हजम होने की क्रिया।
६ घाव के पक जाने की अवस्था।
७ वृद्धावस्था के कारण बालों का पक कर सफेद हो जाना।
८ लकड़ी के मध्य का परिपक्व।
९ एक दैत्य जिसे इन्द्र ने मारा था।
यौ०—पाकरिपु, पाकसासण।
१० बालक, बच्चा (ह.नां.मा., अ.मा.)
११ किए हुए कर्मों का विपाक, कर्मविपाक।
१२ देखो 'पाकिस्तांन'।
रू०भे०—पाग।
पाकड़–सं०पु० [सं० पर्कटी, प्रा० पक्कड़ी] एक वृक्ष विशेष जो पंचवटों में से है, प्लक्ष।
रू०भे०—पाकर।
पाकड़णौ, पाकड़बौ—देखो 'पकड़णौ, पकड़बौ' (रू.भे.)
उ०—हथळेवौ ऋस्णजी आंगुठां सहित पाकड़ियौ।—वेलि टी.
पाकड़णहार, हारौ (हारी), पाकड़णियौ—वि०।
पाकड़िओड़ौ, पाकड़ियोड़ौ, पाकड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।
पाकड़ीजणौ, पाकड़ीजबौ—कर्म वा०।
पाकड़ियोड़ौ—देखो 'पकड़ियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० पाकड़ियोड़ी)
पाकट–सं०पु० [अं० पाकेट] जेब, खीसा।
रू०भे०—पाकेट।
पाकठ–वि०—१ पका हुआ।
२ अनुभवी।
पाकणौ, पाकबौ–क्रि०अ० [सं० पचप्] १ अनाज, फल आदि का ऐसी अवस्था में पहुंचना जिसके बाद वे झड़ने लग जांय, खाने योग्य होना, परिणतावस्था को प्राप्त होना।
उ०—१ ढाढ़ी एक संदेसड़उ, ढोलइ लगि लइ जाय। कण पाकउ करसण हुअउ, भोग लियउ घरि आइ।—ढो.मा.
उ०—२ भांत-भांत रा फळां में मूंडौ मारनै वौ पाक्योड़ी गूंदियां नै बगळ-बगळ खावण लागौ।—फुलवाड़ी
मुहा०—ऊमर पाकणी, बाळ पाकणा—पूर्ण वृद्धावस्था को प्राप्त होना।
२ आंच या गरमी पाकर गलना या नरम होना, कठोर होना, सिद्ध होना, सीझना, रिंधना, चुरना।
३ फोड़ा, फुंसी, घाव आदि का मवाद भर आने की अवस्था को प्राप्त होना, पीब भरना।
४ देखो 'पकणौ, पकबौ' (रू.भे.)
पाकणहार, हारौ (हारी), पाकणियौ—वि०।
पाकिओड़ौ, पाकियोड़ौ, पाक्योड़ौ—भू०का०कृ०।
पाकीजणौ, पाकीजबौ—कर्म वा०।
पकणौ, पकबौ—अक०रू०।
पाकती–क्रि०वि०—१ निकट, समीप।
उ०—प्रथम मार परमार लियौ जूनौ लोहा लड़। रहै राव पाकती भड़ां घोड़ां भीड़ोहड़।—पा.प्र.
रू०भे०—पाखति, पाखती, पासै, पागती।
पाकथांन–सं०पु० [सं. पाकस्थान] १ पाकशाला, रसोईघर।
२ देखो 'पाकिस्तांन' (रू.भे.)
पाकर—देखो 'पाकड़' (रू.भे.)
पाकरिपु–सं०पु० [सं० पाक+रिपु] इन्द्र (डि.को)
पाकसाळा–सं०स्त्री० [सं० पाकशाला] भोजन बनाने का स्थान, रसोईघर।
पाकसासण, पाकसासन–सं०पु०यौ० [सं० पाकशासन] इन्द्र
(ह.नां.मा.)
उ०—नांम गोवंद थयौ नमां नंदराय नंद, अमंद जस गोरधन आभ अड़ियौ। छोड आसण गयंद धाक मांनै छळी, पाकसासन बळी पगां पड़ियौ।—बां.दा.
पाकसिया–सं०स्त्री०—रामावत साधुओं की एक शाखा।
पाकारि–सं०पु० [सं० पाक+अरि] इन्द्र (डि.को.)
पाकिस्तांन–सं०पु० [फा० पाकी+सं० स्थान] वह मुसलमानी राज्य जो भारत का विभाजन करके बनाया गया है और जिसका कुछ भाग भारत के पश्चिम और कुछ भाग पूर्व में भी है।
पाकेट, पाकेटू–सं०पु० [देशज] १ ऊँट (डि.को.)
उ०—१ चरख्यां चठौठ अंगीठ चख, पीठ समोवड़ पालणा। पाकेट

सज्या सो कोस पथ, हैकरण चांटी हालणा ।--मे.म.

उ०--२ कठठे हुठी पाकेडु की कतार सो कैसे बगलूं के उरले गिर सिखरू से थूंभ ।--सू.प्र.

२ देखो 'पाकट' (रू.भे.)

पाकोड़ौ--१ देखो 'पाकौ' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०--वासप नैंणा सूं निकळै मुख बाफां, रेंगूं ऐडी पर फाटोड़ी राफां। थुर-थुर धूजंता थुड़ता थाकोड़ा, पीळा पड़ियोड़ा पिळिया पाकोड़ा ।--ऊ.का.

पाकौ-वि० [सं० पक्व] १ अति वृद्ध । उ०--सू किसा-अेक सरदार जुवांन छै ? पाकां पाकां वरियांमा नूं, अजरायलां नूं, खोवरां नूं, डाणहुलां, डाकियां नूं. करड़दंतां नूं, लोह घड़ा लाह पर डाहलां नूं, लोलीदेता, कटारी उठारइ खाता, पचासां वोळावियां आधे आधवाढ उतारियां ।--रा.सा.सं.

मुहा०--पाकौ पांन--अत्यन्त बूढ़ा ।

२ देखो 'पक्को (रू.भे.)

उ०--१ जेहवी चंचळ वीजळी, पीपळ नौ वळि पाकौ पांन कि । ठार रो तेह न ठाहरै, वैस्या नौ जिम नेह निधांन कि ।

--ध.व,ग्रं.

उ०--२ कुंभ कह्यौ-घोड़ां राज घोड़ा हीज मुदाइत, जिणरै घोड़ां रौ अधिकार हुसी तिण रौ राज । रजपूत रौ सिणगार घोड़ां रौ असवार पाकौ छूं ।--राव रिणमल री बात

रू०भे०--पक्कौ ।

अल्पा०--पाकोड़ौ ।

पाक्षिक-वि० [सं०] १ पक्ष या पखवाड़े से सम्बन्धित ।

२ किसी व्यक्ति विशेष का पक्ष करने वाला, तरफदार, मददगार ।

३ अच्छे वंश का ।

४ वह पत्र व पत्रिका जो पंद्रह-पंद्रह दिन से प्रकाशित होती है ।

पाखंड-सं०पु० [सं० पाषण्ड] १ वेदविरुद्ध आचरण ।

२ षट् दर्शनों में से कोई एक अथवा सब ।

वि०वि०--वेदों में धार्मिक, आध्यात्मिक व सामाजिक विषयों का जो प्रतिपादन किया गया है उनसे भिन्न मत वाले दर्शन को वेदानुयायियों ने पाखण्ड नाम से सम्बोधित किया है । ये दर्शन छै हैं जो 'षट् दर्शन' कहलाते हैं-

(१) सांख्य (२) योग (३) वैशेषिक (४) न्याय (५) मीमांसा (पूर्व मीमांसा) और (६) वेदान्त (उत्तर मीमांसा)

इनके अतिरिक्त चार्वाक, बौद्ध और जैन इनका प्रादुर्भाव और हुआ । इनके मत भी वेदानुकूल न होने के कारण ये भी पाखंड कहलाए । कालान्तर में इन्हीं दर्शनों को विभिन्न सम्प्रदायों के रूप में माना जाने लगा ।

इन षट् दर्शनों के ९६ भेद माने जाते हैं (प्रत्येक के १६, १६) परन्तु षट् दर्शन समुच्चयनामक जैन ग्रंथ में कुल १०२ भेदों (प्रत्येक के १७, १७) का उल्लेख मिलता है जिनकी सूची निम्न लिखित है--

(१) नैयायिक दर्शन--(१) भाट (भटज) (२) शैव (३) पाशुपति (४) कापालिक (५) घंटाल (६) पाह्न (पाहू) (७) आकट (आकड) (८) केदारपुत्र (९) नग्न (१०) अयाचक (११) एक भिक्षु (एक चक्षु) (१२) धाड़ीवाहा (१३) आयारी (आयरिय) (१४) पतियाणा (१५) मठपतिया (१६) चारण (चाइण) और (१७) कालमुख ।

(२) सांख्य दर्शन--(१) भगवन्त (२) त्रिदंडीया (३) स्नातक (४) चन्द्रायण(णी) (५) मुनिया (मोनिया) (६) गुरिया (गउरिया) (७) कवि (८) बूहारा (कू-घू) (९) विगठिन (१०) गूगलिया (११) दांभिक (१२) गलतड़िया (वहड़िया) (१३) सांखिया (संखाया, संखिया) (१४) बिलेसरिया (१५) अवगरिया (१६) स्वामिसतु (स्वामिया) और (१७) नागरिया ।

(३) वैशेषिक--(१) ब्राह्मण (२) अवस्तिया (इवा) (३) अग्निहोत्रिया (४) दीक्षित (५) अग्निक (याज्ञिक) (६) उपाध्याय (७) आचार्य (८) व्यास (९) ज्योतिर्विद (ज्योतिषी) (१०) पंडित (११) कथक (१२) चतुर्मुख पाठक (१३) केहकुलिया (क-केहलीय) (१४) भट्ट (भाट) (१५) वैष्णव (१६) कड़तगिया और (१७) वडूआ (वडूआ)

(४) बौद्ध (वेदान्त) दर्शन--(१) बोधा, बोधी (२) चंडी (उद्दावदर) (३) सात घड़िया (४) दगडि (दंतुड़ा) (५) डागुरा(डा) (६) मूहिमा (भूइंमदा) (७) कपालिया (मा, मे) कमलिय (८) मूलधरिया (मूलपाणिया) (९) पेटुहड़ा (भेदफोड़ा) (१०) भांडिया (भाड़) (११) विट (१२) पावईया (१३) थोइया (तुरी) (१४) गुरुडा (गरोन) (१५) गणघडलिय (१६) जगहथिया (जगहच्छिया) और (१७) वासदेविय (सु) (वांसवेटिया ।

(५) जैन दर्शन--(१) श्वेताम्बर (२) दिगम्बर (दियाकृत) (३) काष्टासंगी (४) मूलासंगी (मयूरशृंगी) (५) जायलिया (जांगालिया) (६) चउदसिया (७) पूनमिया (८) वडगछा (९) धर्मघोष (१०) खरतर (११) आंचलिया (१२) आगमिया (१३) मलधारी नटावा (१४) भावसार (१५) पुजारा (१६) ऊकट (कुटिया) और (१७) वेषधराः सर्वे (धूर्त कितव)

(६) चार्वाक--(१) योगी (विवरण) (२) हरिमेखलिया (हरमेखलिया) (३) इन्द्रजालिया (४) नागमतिया (५) तोलमतिया (६) माटमतिया (७) कुलमतिया (८) गोगामतिया (९) धनंतरिया (१०) रसायणी रसाइणीया (११) भिक्षु (१२) तुम्बक (तुम्बण) (१३) मंत्रवादी (१४) शम्मवादी (१५) पत्रवादी (पत्री) सात्तकर्मिया (१६) नोरसिया और (१७) धातुर्वादी (वोदिया)

३ वास्तविक श्रद्धा के अभाव में झूठी श्रद्धा का प्रदर्शन, ढोंग, आडम्बर । उ०—पाखंड खंड दव दड अखंड पुजायो । धरणी तळ को बळवंड प्रचंड पुजायो ।—ऊ.का.

४ धाराख, नीचता ।

५ कपट, धोखा ।

६ ९६ की संख्या* ।

रू०भे०—पखंड ।

पाखंडी-वि०—१ वेदविरुद्ध आचरण करने वाला ।

उ०—आस्तिक विन दंडुक, नास्तिक, तिडुक, सास्तिक मत मोखंदा है । तज धरम त्रिदंडी, अधिक अखंडी, पाखंडी पोखंदा है ।—ऊ.का.

२ षटदर्शनों के अंतर्गत भिन्न-भिन्न मतों में किसी एक मत को मानने वाला, षटदर्शनी ।

३ ढोंगी, धूर्त ।

४ कपटी, धोखाबाज ।

५ धाराखी, नीच ।

रू०भे०—पखंडी ।

पाख-क्रि०वि०—१ ओर, तरफ । उ०—कांन जड़ाऊ कांम रा, कुंडळ धारण कीन्ह । झळहळ तारा झूमका, दुहूं पाखां ससि दीन्ह ।—बां.दा.

२ देखो 'पक्ष' (रू.भे.)

उ०—पुनं चैत आसोज रा स्वेत पाखां । जुळै मात नूं जातरी लोक लाखां ।—मे.म.

३ देखो 'पाखर' (रू.भे.)

रू०भे०—पाखे, पाखहि, पाखैं ।

पाखइ—देखो 'पखै' (रू.भे.)

उ०—१ विनयचंद्र कवि कहइ तुम्ह पाखइ । किण सुं हो २ माहरउ मन रमइ जी ।—वि.कु.

उ०—२ तिणी नगरीइं गही गयु, पाकउ पामकहीन । अंगि उचाटिउ अति घणउं, जिम जल-पाखइ मीन ।—मा.कां.प्र.

उ०—३ सूरघ पाखइ दिवस नहीं पुण्य पाखइ सौख्य नहीं ।—रा.सा.सं.

पाखड़ी-सं०स्त्री० [देशज] १ आंख की पलक ।

२ देखो 'पाख' (अल्पा.,रू.भे.)

पाखड़ो-सं०पु० [देशज] १ ऊंट के पारजामे के बाजू की लकड़ी ।

[देशज] २ भैंस या ऊंट का अगला पैर (ठांण से) बांधने की रस्सी या सांकल ।

पाखति, पाखती—देखो 'पाकती' (रू.भे.)

उ०—दस जूता दस जूतणी, दस पाखती बहंत । हेकण धवळा वायरा, खैंचातांण करंत ।—बां.दा.

पाखर-वि० [सं० प्रखर] तीक्ष्ण, तेज ?

उ०—आठम प्रहर संभा समै, धण ठव्वै सिणगार । पांन काजळ पाखर करै, फूलां को गळिहार ।—ढो.मा.

सं०पु० [सं० प्रखर:] १ युद्ध में रक्षा के लिए हाथी या घोड़े पर डाली जाने वाली लोहे की झूल ।

२ हाथी या घोड़े की झूल ।

उ०—गजगाहो पाखर गजां, [illegible] । [illegible] ।—[illegible]

३ ओढ़ना, घूंघट । उ०—[illegible] ।—रा.सा.सं.

४ कवच । उ०—१ [illegible] पाखर [illegible] ।—ढो.मा.

उ०—२ [illegible] पाखर करि [illegible] । [illegible] ।—सू.प्र.

रू०भे०—पाक्खर, पक्खरिय, पखर, पाखराळ, पखरैत ।

अल्पा०—पखराळो, पखरो, पाखराळो, पाखरड़, पाखरड़ो, पाखरो ।

मह०—पंखराळ, पखरांळ, पखराळ, पाखरांळ, पखराळ, पखरांण, पाखरांण ।

पाखरड़, पाखरड़ो—देखो 'पाखर' (अल्पा.,रू.भे.)

उ०—[illegible] पाखरड़ [illegible] पाखरड़ [illegible] । 'बाहड़' [illegible] ।

—महाराजा प्रताप रो गीत

पाखरणो, पाखरबो-क्रि०स० [सं० प्रखर:] १ कवच, शस्त्र आदि से सुसज्जित करना ।

उ०—१ पंचाइण नई पाखरयउ, मदगळ नइ मद कीध । मोहण-वेली मारुई, कंत पेम रस पीध ।—ढो.मा.

उ०—२ पातिसाह रा दळ बादळ सोवन थाट जड़दिया छै । बीस असवार पाखरीया ।—रा.सा.सं.

२ घोड़े, ऊंट आदि को जीन कस कर सुसज्जित करना ।

उ०—चपल तुंग तुरंगम पाखरिया । गुहगुडया असवार ते सांचरिया ।

—सालिभद्र सूरि

पाखरणहार, हारो (हारी), पाखरणियो—वि० ।

पाखरिओड़ो, पाखरियोड़ो, पाखरयोड़ो—भू०का०कृ० ।

पाखरीजणो, पाखरीजबो—कर्म वा० ।

पक्खरणो, पक्खरबो, पखरणो, पखरबो—रू०भे० ।

पाखरवंत-वि० [सं० प्रखर= प्रा० पक्खर+सं० वान] झूल, जीन, कवच, शस्त्र आदि से सुसज्जित ।

उ०—पायक असु रथ पंथ अपारां । हाथी पाखरवंत हजारां ।

—रा.रू.

पाखरांण—देखो 'पाखर' (मह०, रू.भे.)

पाखरियोड़ो-भू०का०कृ०—१ कवच, शस्त्र आदि से सजा हुआ ।

२ जीन कसा हुआ ।

(स्त्री० पाखरियोड़ी)

पाखरी—१ देखो 'पाखर' (अल्पा०, रू.भे.)

२ देखो 'पाखळी' (अल्पा.,रू.भे.)

पाखरैत—देखो 'पखरैत' (रू.भे.)

उ०—दे कळां जामकी सारौ साथ यूं फिरांणौ दोळी, सात्रवां हिरांणौ नाडौ ऊगे समै सूर। पाखरैतां घोड़ां भड़ां थाट सूं घिरांणौ 'पनौ', 'जालांणी' लिरांणौ वीटौ दिरांणौ जरूर।

—कांबां रा भोमिया सींवल राठौड़ां री गीत

पाखळणौ, पाखळबौ–क्रि०स० [देशज] ऊंट या घोड़े के अगले व पिछले पैर को बांधना।

पाखळणहार, हारौ (हारी), पाखळणियौ—वि०।

पाखळिग्रोड़ौ, पाखळियोड़ौ, पाखळयोड़ौ—भू०का०कृ०।

पाखळीजणौ, पाखळीजबौ—कर्म वा०।

पाखळि, पाखळिय—देखो 'पाखळी' (रू.भे.)

उ०—रुंड मुंड रडवडइ रिणंगणि, लोही तणा प्रवाह। ऊभे हाथ असुर पोकारइ, पाखलि पाडइ धाह।—कां.दे.प्र.

पाखळियोड़ौ–भू०का०कृ०—अगला व पिछला पैर बांधा हुआ (घोड़ा या ऊंट)

(स्त्री० पाखळियोड़ी)

पाखळियौ—देखो 'पांखळौ' (अल्पा०, रू.भे.)

पाखळी, पाखळीय–सं०स्त्री० [देशज] मोट (चड़स) कि खाली होने वाले स्थान पर तीन ओर लगाए जाने वाले पत्थरों में से एक पत्थर।

क्रि०वि०—पास, समीप ?

उ०—ऊंचा ते अळगाह, भुंवि पड़िया भावै नहीं। थुड़ी पाखळी फिरताह, जीव गमायौ जेठवा।—अज्ञात

पाखळौ—देखो 'पांखळौ' (रू.भे.)

पाखाण—देखो 'पासांण' (रू.भे.) (अ.मा.) (डि.ना.मा.)

उ०—जितै 'जसौ' पह जीवियौ, थिर रहिया सुर-थांण। आंगळ ही 'अवरंग' सूं, पड़ियौ नह पाखांण।—वां.दा.

पाखांणवद्ध—देखो 'पासांणवद्ध' (रू.भे.)

पाखांणभेद—देखो 'पासांणभेद' (रू.भे.)

पाखांणी—देखो 'पासांणी' (रू.भे.)

पाखांणौ—देखो 'पाखांनौ' (रू.भे.)

पाखांन—देखो 'पासांण' (रू.भे.)

पाखांनौ–सं०पु० [फा० पायखाना] १ भोजन के पाचन के बाद पचा हुआ मल जो गुदा में होकर बाहर निकल जाता है, टट्टी, गू।

२ शौचस्थान, टारत, टट्टी।

मुहा०—१ पाखांनौ निकळणौ—मारे भय के बुरा हाल होना।

२ पाखांनौ फिर देणौ—भय से घबरा जाना।

३ पाखांनौ फिरणौ—मल त्याग करना।

४ पाखांनौ लगणौ—मल का वेग जान पड़ना।

रू०भे०—पाखांणौ, पैखांनौ।

पाखाळणौ, पाखाळबौ—देखो 'पखाळणौ, पखाळबौ' (रू.भे.)

उ०—पोह सामंद्र खड़ग पाखाळै। अरक वंस विरदां उजवाळै।

—सू.प्र.

पाखाळणहार, हारौ (हारी), पाखाळणियौ—वि०।

पाखाळिग्रोड़ौ, पाखाळियोड़ौ, पाखाळयोड़ौ—भू०का०कृ०।

पाखाळीजणौ, पाखाळीजबौ—कर्म वा०।

पाखाळियोड़ौ—देखो 'पखाळियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० पाखाळियोड़ी)

पाखि–क्रि०वि०—पास ?

उ०—पंड-तणी गति पवन सहू, कहिया पाखि तुं प्रीछि। ते प्रीछिम प्रियतम जई, एह अम्हारी ईच्छ।—मा.कां.प्र

पाखी–सं०स्त्री० [सं० पक्ष] कुए से सींची जाने वाली फसल की भूमि की कुछ क्यारियों का समूह जिनको एक ही नाली से पानी पिलाया जाता है।

मुहा०—पाखी पीणौ—सब खराब होना, सब एक जैसे होना।

सं०पु०—१ घोड़ा।

२ देखो 'पक्षी' (रू.भे.)

उ०—औ मिनख मरघा कै मरघा पाखी। औ देख मरघौ कै मरघौ साखी।—कन्हैयालाल सेठिया

पाखे, पाखेड़ि, पाखै—देखो 'पाकती' (रू.भे.)

उ०—१ परपीड़न पेखे दया न देखे, लेखे विन लूटंदा है। परमेस्वर पाखे आ अभिलाखे, छदमी क्यूं छूटंदा है।—ऊ.का.

उ०—२ सिरचंद अर तेजसी क्याल वैद हुइ अर कारी की। सु कारी न हिंदुस्तांन न खुरासांण मांहे सुणी व दीठी। सूंटी रै पाखेड़ि कारी की।—द.वि.

२ देखो 'पखै' (रू.भे.)

उ०—ऊपर आंवा मोरिया, तळ नीझरण झरंत। साजण पाखै दीहड़ा, ताढ़ा तोय तपंत।—अज्ञात

३ देखो 'पाख' (रू.भे.)

पाखौ–सं०पु० [सं० पक्ष] १ दूध देने वाले पशुओं के स्तन का किसी ओर का एक भाग या पूरे स्तन-मण्डल का आधा भाग।

२ देखो 'पक्ष' (रू.भे.)

उ०—अगहन मास ऋतुग्यौ आखौ। पौं त्रेता युग बीतौ पाखौ।

—ऊ.का.

पाग–सं०स्त्री० [सं० पदक=पग] १ सिर पर बांधने का वस्त्र, पगड़ी।

उ०—आज घुराऊ धुंधळी, मोटी छांटां मेह। भींजी पाग पधारस्यौ, जद जांणूली नेह।—अज्ञात

वि०वि०—पाग को पहले पैर के घुटने पर बांधते हैं और फिर सिर

पर रखते हैं। इसी कारण इसका नाम पाग प्रतीत होता है।
२ देखो 'पग' (रू.भे.)
उ०—ऊंचे गिरवर आग, जळती सह देखे जगत। परजळती निज पाग, रती न दीसै राजिया।—किरपाराम
३ देखो 'पाक' (रू.भे)
रू०भे०—पाघ।
अल्पा०—पगड़ी, पग्गड़ी, पघड़ी, पग्घड़ी, पागड़ी, पाघड़ी, पागणी।
मह०—पगड़, पग्गड़, पघड़, पग्घड़, पागड़, पागड़ो।

पागड़—१ देखो 'पाग' (मह०, रू.भे.)
२ देखो 'पागड़ो' (मह०, रू.भे.)
उ०—ढोलउ हल्लांणउ करइ, धण हल्लिवा न देह। झब झब झूंमइ पागड़इ, डब डब नयण भरेह।—ढो.मा.
३ देखो 'पग' (मह०, रू.भे.)

पागड़ाछाक-सं०स्त्री० [देशज] एक प्रकार की रीति जिसमें मेहमानों को रवाना होते समय शराब की मनुहार देते हैं (राजपूत)

पागड़ापछाड़-सं०स्त्री० [देशज] घोड़े के पेट पर रकाब के रहने के स्थान पर होने वाली भौंरी जिसे अशुभ मानते हैं।

पागड़ी—देखो 'पाग' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—ए झटपट बांधी पागड़ी रण-झुणियो ले। ए दोड़्या बागां जाय जाजो मरवो ले।—लो.गी.

पागड़ूत-सं०पु० [देशज] १ ऊंट की रकाब के बांधने का बन्धन जो ऊंट के चारजामे के साथ बधा रहता है (शेखावाटी)
२ देखो 'पागड़ो' (रू.भे.)

पागड़ो-सं०पु० [सं० पदक+रा० प्र०ड़ो] १ घोड़े के चारजामे में लगा पायदान, रकाब।
उ०—सु महेस इयुं कहि अर पावां आगै आइ पड़ियो। अर मदनो पातावत घोड़ै हूता पड़ियो। जे पागड़ो तूटै नहीं तो मरै।—द.वि.
मुहा०—१ पागड़ै पग देणौ—रकाब में पैर रखकर घोड़े पर सवार होना।
२ पागड़ै लगाणौ—आधीन करना।
३ पागड़ो छाडणौ—घोड़े से नीचे उतर कर विश्राम करना।
४ पागड़ो झालणौ—रुकने को आग्रह करना, खुशामद करना। पनाह ताकना।
५ पागड़ो पकड़णौ—देखो 'पागड़ो झालणौ'।
२ पुरुषों के पैर में पहिनने का सोने अथवा चांदी का बना आभूषण विशेष।
उ०—झांझर, नेउर, सांकळां, ग्रैवेयक, पागड़ां, वींछीया, अंगूठळी, वाला, झालि...।—व.स.
३ देखो 'पाग' (मह., रू.भे.)
उ०—टांगड़ी भेर लागां टळै, पड़ै खिसकिनै पागड़ो। नागड़ो तोई देखो निलज, अमल न छोडै आघड़ो।—ऊ.का.
रू०भे०—पाघड़ो।
मह०—पागड़, पागड़ूत, पाघड़।

पागणौ, पागबौ-क्रि०स० [सं० पाकः] १ पकाकर, गुड़ आदि की बनी मीठी चासनी में डुबोना या तर करना।
क्रि०अ०—२ डूबना, मग्न होना, तन्मय होना।
उ०—बोलो आय अभागै बैठे, रस पागै प्रिय रोळ। मूरख रै लागै तन मिरचां, त्यागै तुरत तमोळ।—ऊ.का.
पागणहार, हारो (हारी), पागणियो—वि०।
पागिग्रोड़ो, पागियोड़ो, पाग्योड़ो—भू०का०कृ०।
पागीजणौ, पागीजबौ—कर्म वा० भाव वा०।

पागती, पागते—देखो 'पाकती' (रू.भे.)
उ०—तिसै सा गढ पै सारा टावर रमै छै। पागती लोग ऊभा छै।
—वीरमदे सोनीगरा री बात

पागल-वि० [सं०] (स्त्री० पगली) १ जिसका दिमाग ठीक न हो, बावला, सनकी।
२ नासमझ, मूर्ख।
उ०—पसुवत पांमरपण पोसण घण पागल। दोनूं भुज दुरगति चौंघटियां दागल।—ऊ.का.
३ क्रोध, प्रेम, शोक आदि के कारण होश-हवास खो देने वाला।
यौ०—पागलखानौ।
अल्पा०—पगलो, पगल्लो।

पागलखानौ-सं०पु० [सं० पागल+फा० खाना] वह स्थान जहाँ पागलों की चिकित्सा की जाती है।

पागलणी—देखो 'पगली' (रू भे.)
उ०—हरिजी सूं हित करलै हे पागलणी। प्रभुजी सूं प्रेम करलै हे पागलणी।—गी.रां.

पागलियो—१ देखो 'पग' (अल्पा.,रू.भे.)
उ०—जैसळमेर री पागीड़ो तेड़ायो ओतो पागलियो, पांणी में काढ़ै रे, म्हारो गोरबंध चोरांणो।—लो.गी.
२ देखो 'पागो' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—मांचां रा पागलिया लियां, लांमी लांम झड़ामड़ी। टाबरिया गेडिया टाळै, बूढ़ां ठेंगण कांमड़ी।—दसदेव

पागार-सं०पु० [सं० प्राकार] परकोटा।
उ०—तेणि पातिसाहि आयां सांतरि खत छाडइ नहीं, खत्र खांडइ नहीं, दीण न भाखइ, पागार लंघित न होयइ।—अ. वचनिका

पागि—देखो 'पग' (अल्पा.,रू.भे.)
उ०—साहिउ अरजुनि वनचरु पागि, प्रकटु हुई बोलइ 'वरु मागि'।
—पं.पं.च.

पागियोड़ो-भू०का०कृ०—१ पकाकर, गुड़ आदि की चासनी में डुबोया हुआ।

२ तन्मय, मग्न ।
(स्त्री० पागियोड़ी)

पागी-सं०पु० [सं० पदक+रा प्र. ई] १ भूमि पर अंकित पद चिन्हों को पहिचानने वाला, खोजी ।
उ०—सरणागत सोधै, प्रेम प्रबोधै, गोधे जिम गाजंदा है । अरणभेअरण रागी, परभव पागी, बग बागी बाजंदा है ।—ऊ.का.
२ ज्ञाता, जानकार, विज्ञ ।
उ०—भली भई, मोय सतगुरु मिळिया, तिहुं मारग का पागी । भिन्न-भिन्न करके भेद बताऊं, अनुभव उगती जागी ।
—स्रो हरिरांमजी महाराज
रू०भे०—पाहाघी ।
अल्पा०—पागीड़ो ।

पागीड़ो—देखो 'पागी' (अल्पा.,रू.भे.)
उ०—जैसळमेर ती पागीड़ो तेड़ायौ, श्रो तो पागलिया पांणी में काडे रे, म्हारी गोरवंघ चौरांणो ।—लो.गी.

पागीपौ-सं०पु० [सं० पदक+रा. प्र. पौ] १ भूमि पर अंकित पद-चिन्हों को पहिचानने का कार्य ।
२ भूमि पर अंकित पदचिन्हों को पहिचानने का पारिश्रमिक ।

पागोड़ियौ, पागोड़ो—देखो 'पगथियौ' (रू.भे.)
उ०—ओप बावड़ी पागोडा थिर नीलम जड़िया । रतन-नाळ जुत हेम कंवळ जळ फूटर भरिया ।—मेघ.

पागोटियौ—देखो 'पगथियौ' (रू.भे.)

पागोटी-सं०स्त्री० [सं० पदक+रा. प्र. ओटी] स्वस्तिकासन बैठने का एक आसन विशेष, पालथी ।
रू०भे०—पाघोटी ।

पागोटौ, पागोडियौ, पागोडौ, पागोतियौ, पागोतीयौ, पागोत्यौ, पागोथियौ, पागोथ्यौ—देखो 'पगथियौ' (रू.भे.)

पागौ-सं०पु० [सं० पाद] पलंग, कुर्सी, चौकी, तख्त आदि में लगा खड़ा डंडा जिसके सहारे उसका ढांचा या तल ठहरा रहता है, पाया ।
उ०—केई नर सूता, केई नर जागै, जागतड़ां री पागड़ियां ढोल्या रै पागै, सूतोड़ां री पागड़ियां जागतड़ा ले भागै, फोरा पतळां री डाव नीं लागै ।—फुलवाड़ी
रू०भे०—पगौ ।
अल्पा०—पागलियौ ।

पाघ—देखो 'पाग' (रू.भे.)
उ०—जिस वखत स्रो महाराजा केसरिया ऊंच पौसाक पहिरि खांधी पाघ पेच वणवाय । जवहर के सिरपेच सिर सोवा जगजोति जगाय ।
—सू.प्र.

पाघड़—१ देखो 'पाग' (मह०, रू.भे.)
उ०—कर कम चालै जीम अत, सिर पाघड़ सिरकंत । विढे वजारां वांणियां, मुख मूछां फरकंत ।—वां.दा.
२ देखो 'पागड़ौ' (मह०, रू.भे.)

पाघड़ी—देखो 'पाग' (अल्पा०, रू.भे.)
उ०—मूंछ केस खंडत नहीं, नाक न खंडत कोर । पड़ी पुळंता पाघड़ी, सुकुळीणी तज सोर ।—वां.दा.

पाघड़ौ—१ देखो 'पागड़ौ' (रू.भे.)
उ०—असवार बड़ौ असमांन गति, घूहड़ धूजै वड घडै । पह पूठि चढै जैवंत भड़, पाउ परठ्ठै पागड़ै ।—गु.रू.बं.
२ देखो 'पाग' (मह.,रू.भे.)
उ०—कितां कसै एराक, ऊंच पोसाकां ऊपर । अरि ओळां पाघड़ां, कुलंग जूंगां वह जब्बर ।—सू.प्र.

पाघोड़ो—देखो 'पगथियौ' (रू.भे.)

पाघणी—देखो 'पाग' (अल्पा०, रू.भे.)
उ०—नांणे वेसे वीड नंह, उळभे लेखे अत्थ । राती पाघणियां तणा, सुळभावण समरत्थ ।—वां.दा.

पाघोटी—देखो 'पागोथियौ' (रू.भे.)

पाड़-सं०पु०—१ एक प्रकार का वाद्य यंत्र ।
उ०—डफ खंजरी दुतार विखम रोहिला वजावै । पसतो अरवी पाड़ गजल कड़खा वह गावै ।—सू.प्र.
२ अहसान । उ०—जसवंत सुत जैसिंघ नू, दिवरायौ ढूंढाड़ । आलम सो अजमाल नूं, प्रगट मनायौ पाड़ ।—रा.रू.

पा'ड—देखो 'पहाड़' (रू.भे.)
उ०—कमध आव सुण कूक धणारी रा भाड़ां सूं । कुरछी हूंता कहूं 'पाल' केरू पा'ड़ां सूं ।—पा.प्र.

पाडणौ, पाडबौ–क्रि०स० [सं० पातनम्] १ पराजित करना ।
उ०—'भांण' रै बीच बळभद्र रौ ऊथाळै सावळ अणी । नरमाल प्रिथीमल पाडियौ, दांणव सिंघ दरस्सणी ।—गु,रू.बं.
२ प्रविष्ट करना ।
३ हस्तक्षेप करना, दखल डालना ।
ज्यूं—आपस का झगड़ा में दूजा नै पाड़णौ ठीक नहीं ।
४ दुःखप्रद घटना का घटित करना ।
ज्यूं—आफत पाड़णी ।
५ वीर गति को प्राप्त कराना ।
उ०—पाड़े फिरंग नीठ रिण पड़िया, कमधां साको प्रबळ कियौ । दीधौ मरण 'वलू' दहवारी, सारकोट रै मरण कियौ ।
—जादूरांमजी आढ़ौ
६ मारना, संहार करना । उ०—उंवर आदि राजा पाड़ै अरि । किलम हजार गुलाव छड़ी करि ।—सू.प्र.
७ त्वचा उतारना । उ०—वारा सुखनां खीजियौ, अकबर साह जलाल । उच्चरियौ हूं जीवतां, सीहां पाड़ूं खाल ।—वां.दा.
८ गिराना, पटकना । उ० —हाथी पाड़ूं हींडता, घोड़ा पाखरियांह ।

तौ जांणीजै रावतां, भूंडण रा जणियांह ।

—डाढाळा सूर री वात

९ एक वस्तु का दूसरी पर फैलाकर रखा जाना, फैलाना।

१० छोड़ा या डाला जाना।

ज्यूं—पेट में रोटी पाड़णी, साग में नमक पाड़णो।

११ पूर्व की स्थिति को छुड़ा कर नवीन स्थिति या दशा में डालना।

ज्यूं—ढीलो पाड़णो, कमजोर पाड़णो।

१२ प्राप्त कराना, हथियाना।

१३ उखाड़ना।

उ०—वाभी दिन दिन पोल में, कहता वडणो कंत। हमैं निहारो हाथियां, देवर पाड़ै दंत।—बी.स.

१४ लूटना। उ०—रावळ देवीदास पाचै री बेटो। तिणै बाप रै वैर उमरकोट पाड़ियो।—नैणसी

पाड़णहार, हारो (हारी), पाड़णियो—वि०।

पाड़िग्रोड़ो, पाड़ियोड़ो, पाड़्योड़ो—भू०का०कृ०।

पाड़ीजणो, पाड़ीजबो—कर्म वा०।

पड़णो, पड़बो—अक०रू०।

पाड़वलो—देखो 'पडवलो' (रू.भे.)

पाड़ियोड़ो-भू०का०कृ०—१ हराया हुआ, पराजित किया हुआ।

२ प्रविष्ट कराया हुआ।

३ हस्तक्षेप कराया हुआ।

४ दुखप्रद घटना घटित कराया हुआ।

५ वीरगति प्राप्त कराया हुआ।

६ मारा हुआ।

७ त्वचा उतारा हुआ।

८ गिराया हुआ, पटका हुआ।

९ फैलाया हुआ।

१० डाला हुआ।

११ नवीन स्थिति में डाला हुआ।

१२ प्राप्त किया हुआ, हथियाया हुआ।

१३ उखाड़ा हुआ।

१४ लूटा हुआ।

(स्त्री० पाड़ियोड़ी)

पाड़ी—देखो 'पाडो' (रू.भे.)

पाड़ै-अव्य० [देशज] १ निकट, पास।

२ ओर, तरफ।

पाड़ोस-सं०पु० [सं० प्रतिवेश, प्रा० पडिवेस या प्रत्योकस्] १ किसी के घर के समीप का घर।

क्रिप्र०—करणो, होणो।

२ किसी स्थान के आसपास के स्थान।

रू०भे०—पड़ोस, पडोस, पाडोस।

पाड़ोसण-सं०स्त्री० [सं० प्रतिवेश+रा.प्र.ण] वह स्त्री जिसका घर पड़ोस में हो, पास के मकान में रहने वाली स्त्री।

उ०—ना म्हे सासू नणद सतायी, ना पाड़ोसण सतायी हो राम। ना म्हे दियरो ने दियरो संजोयो, ना म्हे काली नींद सतायी हो राम।

—लो.गी.

रू०भे०—पड़ोसण।

पाड़ोसी-सं०पु० [सं० प्रतिवेश+रा०प्र०ई] (स्त्री० पाड़ोसण) वह जिसका घर पड़ोस में हो, पड़ोस में रहने वाला व्यक्ति।

उ०—एक मारवाड़ सेठ नै लोग देवै—थेई जिणरो पाड़ो ईलो। न दियो लोक दीवाल्यो कहै। पाड़ोसी दीवाल्यो हुवो नै सुणनै टूटै।

—मि.द्र.

रू०भे०—पड़ोसी, पडोसी, पाडोसी।

पाढ़ो-सं०पु० [सं० पट्टन] मुहल्ला।

पाच-सं०स्त्री० [देशज] मणि।

उ०—परम परम मह कोई नाहिं, बिण अंतर समभाव रे। सांकर लूण सरीसा दीसै, काच पाच समभाव रे।—लोपाळ

पाचक-वि० [सं०] कच्ची वस्तु को पचाने या पकाने वाला।

सं०पु०—१ भोजन पकाने वाला, रसोइया, बावर्ची।

२ पांच प्रकार के पित्तों में से एक। (अमरत)

सं०पु०—३ पाचक पित्त में रहने वाली अग्नि।

४ भोजन को पचाने तथा पाचन शक्ति व भूख को बढ़ाने वाली औषधि।

पाचड़ियो-सं०पु० [देशज] काष्ठ की मजबूती के लिए हल के पीछे लगाई जाने वाली लकड़ी।

रू०भे०—पाचड़ियो, पाचीयो।

पाचणो—देखो 'पाछणो' (रू.भे.)

उ०—एकर नाई एक वा'रला वाणिया रै निजमत करी। पाचणा सूं माथो घुरद नै तांबा जैड़ो कर दियो।—फुलवाड़ी

पाचणो, पाचबो-क्रि०स० [सं० पचन्] १ पकाना (उ.र.)

२ हजम कराना।

पाचणहार, हारो (हारी), पाचणियो—वि०।

पाचिग्रोड़ो, पाचियोड़ो, पाच्योड़ो—भू०का०कृ०।

पाचीजणो, पाचीजबो—कर्म वा०।

पाचन-वि० [सं०] १ पचाने वाला, पकाने वाला।

२ हजम करने वाला।

सं०पु०—१ वह औषधि जो आम या अपक्वदोष को पचावे, बदहजमी मिटाने वाली औषधि।

२ उदरस्थ वह शक्ति जो एक प्रकार की अग्नि के रूप में मानी जाती है और जिसकी सहायता से खाए हुए पदार्थ पचते या हजम होते हैं, हाजमा, जठराग्नि।

३ आग, अग्नि।

पाचनसक्ति, पाचनसगति, पाचनसगती-सं०स्त्री०यौ० [सं० पाचनशक्ति] भोजन को पचाने की शक्ति, हाजमा।

पाचनी-सं०स्त्री० [सं०] हर्ड (नां.मा.)

पाचर, पाचरौ-सं०पु० [देशज] १ गाड़ी के पहिये के ऊपर पुट्ठी को मजबूत करने के लिये पुट्ठी के छेदों में लगाई जाने वाली लकड़ी।

उ०—चौधरी पुचकार नैं बळदां री रास खांची। हेठै उतर नैं जोयौ—पूठियां तौ साव खोळी ह्वंगी ही। ठोरण सारू हाथ वसू कीं दूजी चीज निगै नीं आई तौ वौ लप करतौ मा'राज री वींणी उठायौ। आगा सूं लांठौ घूवौ व्है ज्यूं देख्यौ तौ वो जांण्यौ के पाचरा ठोरण सारू नांमी रांच है। वौ भवाय नैं पूरा करार सूं एक पाचरा माथै वीणी वायौ हो। पूठी अर पाचरा रौ भचीड़ उड़तां ई उणरी तौ किळी-किळी विखरगी।—फुलवाड़ी

रू०भे०—फाचर, फाचरौ।

अल्पा०—फाचरी।

पाचळणी-वि०—पीछे की।

उ०—प्रवाड़ौ खाट दरबार न आयौ सुपह, कथन आय नरां दूसरा कहिया। पाचळणी झड़ी कमर सूं पाकड़ै, राव रावत विनै खेत रहिया।—अज्ञात

क्रि०वि०—पीछे से।

पाचियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ पकाया हुआ।

२ हजम किया हुआ।

(स्त्री० पाचियोड़ी)

पाची-सं०स्त्री० [देशज] एक प्रकार की लता विशेष, हरित पत्रिका।

पाचू-सं०पु० [देशज] ऊंट के शरीर के किसी भाग में होने वाली ग्रंथी विशेष जिसमें कीड़ा पड़ जाता है और मवाद निकलती है। इसमें से खील निकल जाने पर यह ठीक हो जाती है। यह ऊंट के पिछले पैर में अधिक होती है।

पाछ-सं०स्त्री० [देशज] कमी, बाकी।

उ०—१ सो कजिये में ठाकुरां पाछ नहीं राखी। कही थी तिण सूं दस गुणी कर दिखाई।—मारवाड़ रा अमरावां रो वारता

उ०—२ घर में रांमजी राजो होवतां थकांई सेठ सेठांणी नैं इण बात रौ बडौ दुख हौ के उणांरै कोई संतांन कोय ही नी। कोसीस करण में सेठां पाछ कोय राखी नी।—रातवासौ

पाछइ-क्रि०वि० —पीछे, बाद में।

उ०—हित विण प्यारा सज्जणां, छळ करि छेतरियाह। पहिली लाड लडाइ कइ, पाछइ परहरियाह।—ढो.मा.

पाछउ—देखो 'पाछौ' (रू.भे.)

उ०—ढोलइ सूवउ सीख दइ, जा पंखी ग्रह वास। उडियर पाछउ आवियउ, माळवणी-कइ पास।—ढो.मा.

(स्त्री० पाछी)

पाछटणौ, पाछटबौ-क्रि०स० [देशज] १ वार करना, चलाना।

उ०—पहली असवर पाछटै, अरियां लोह बिछोड़। पाछै अजका भूप रा, दळ भड़ पूगै दौड़।—वी.स.

२ फोड़ना, तोड़ना।

उ०—विण मरियां विण जीतियां, धणी आवियां धांम। पग-पग चूड़ी पाछटूं, जे रावत री जांम।—वी.स.

३ देखो 'पछटणौ, पछटवौ (रू.भे)

पाछटणहार, हारौ (हारी), पाछटणियौ—वि०।

पाछटिओड़ौ, पाछटियोड़ौ, पाछटयोड़ौ—भू०का०कृ०।

पाछटीजणौ, पाछटीजबौ—कर्म वा०।

पाछटियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ वार किया हुआ, चलाया हुआ।

२ फोड़ा हुआ, तोड़ा हुआ।

३ देखो 'पछटियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० पाछटियोड़ी)

पाछड़ियौ—देखो 'पाचड़ियौ' (रू.भे.)

पाछणौ-सं०पु० [देशज] १ बाल मूंडने का उस्तरा (अमरत)

उ०—पणग ते जांणे पाछणां, पवन ते लाइ लूण। पड़ी पड़ी हुं तड़फडूं, हुं पीड़ि निवारइ कूंण।—मा.कां.प्र.

२ एक प्रकार का छोटा छुरा जो द्वंद्व युद्ध के समय पैर के अंगूठे में बांधा जाता था।

उ०—जठै वीरमदे खेलण नैं दरबार री तयारी कीधी। जदै अपछरा गुपत आय कह्यौ, पंजू रै पग रा अंगूठा माहें पाछणौ छै।

—वीरमदे सोनगरा री वात

रू०भे०—पाचणौ, पासणौ।

पाछत, पाछतरौ-वि० [सं० पश्चात्] अवसर या मौसम निकल जाने के बाद बोई गई फसल।

रू०भे०—पछेत।

विलो०—आगत, आगतरौ।

पाछपीळि-क्रि०वि० [सं० पश्चात] पीछे।

उ०—पाछपीळि पापी करइं, कुडु दीधउ रतिवाउ। निहणीय पंच पंचाल, बाल, अनु राखसि जाउ।—पं.पं.च.

पाछमनौ-वि० [सं० पश्चात+मन] आगे बढ़ने में उदास।

उ०—नितरै किण हेक महेस रै चाकर ऊंचै चढ़तां महेस जी री आंण कही। तठै रिणमल पाछमना सा हुवा।

—राव मालदे री वात

पाछल-सं०स्त्री [सं० पश्चात] १ पीठ।

उ०—कांणियौ फाचर रीस में पग पटकतौ बोल्यौ—नी सीखिया तौ आज म्हैं थां नैं सिखाऊं। आ बात कहनै वो आपरी वा'र धकी नै पाछल फोरी।—फुलवाड़ी

२ देखो 'पाछलौ' (मह.,रू.भे.)

उ०—वेस्या नेह, जुवार धन, काती अवर छार। पाछल पौ'र अऊत घर, जात न लागै वार।—अज्ञात

पाछलो-वि० [सं० पश्चात्] (स्त्री० पाछली) १ पूर्व का, पहले का ।
उ०—१ जन्म भूमि में करै जातरा, पाप प्रबळ मिट जावै । पुन्न पाछला होवै पूरा, श्रा मन में जद श्रावै ।—ऊ.का.
२ पीछे का, बाद का ।
उ०—१ रिणमलजी मानै नहीं । चचंडो जी छाडै नहीं । यूं करतां पाछलो पहर हुश्रो ।—नैणसी
उ०—२ श्रागलि गलि दोरी धरी, पाछलो बांधी पांणि । (राजा जंपइ) 'राउ-नई', भूठै भाली श्राणि ।—मा.कां.प्र.
उ०—३ घर छोडियां नूं जै तीन बरस हुवा छै । पाछली खबर तक नहीं के किण तरह छै ।—रांमदत्त साह री वारता
रू०भे०—पछलो, पछिलो, पाछिलउ, पाछिलो, पिछलो ।
पाछिम—देखो 'पच्छिम' (रू.भे.)
उ०—वपि रजवट खत्रवट प्रघट धणी । धरपति लतपति, धन पाछिम धणी ।—ल.पि.
पाछिलउ—देखो 'पाछलो' (रू.भे.)
उ०—१ पाछिलइ भवि तुं बांमण हुतउ, अधिकारी दुख दायो जी । पांचसइ हाली नइ तइं कीयउ, अन्न पांणी अंतरायो जी ।—स.कु.
उ०—२ तब राघव चितवइ बयर पाछिलउ संभारयउ । कहूं जिहां पदिमनी साह जु चितइ धारउ ।—प.च.चौ.
(स्त्री० पाछिली)
पाछिलो—देखो 'पाछलो' (रू.भे.)
उ०—१ कूंझड़ियां कळरव कियउ, धरि पाछिलै धणेहि । सूती साजण संभरया, द्रह भरिया नयणेहि ।—ढो.मा.
उ०—२ दीवा पाछिली राति दसो श्रातो दीसै छै ।—वेलि टी.
(स्त्री० पाछिली)
पाछेवो—देखो 'पाछोपो' (रू.भे.)
पाछै—देखो 'पछै' (रू.भे.)
उ०—हाथ न श्रपणै होवसी, हरी हाथ जय हार । पटक हाथ विल-तावसी, पाछै हाथ पसार ।—ऊ.का.
पाछोपो-वि० [सं० पश्चात् ?] १ पीछे का, बाद का (वंश)
उ०—तरै सवणी कह्यो—जु इण गढ़ 'सधो' रावळ रो नांम रह्यो चाहीजै नै पाछोपो नहीं रहै ।—नैणसी
२ पीठ पीछे का ।
रू०भे०—पछोपो, पछोवो, पाछेवो ।
पाछोर-सं०स्त्री० [सं० पश्चात् ?] तालाब या पोखर के श्रासपास की पिछली भूमि ।
पाछो-वि० (स्त्री० पाछी) वापिस, पीछे ।
उ०—१ ढेढ नांम सुण पाछा छळिया । वाट श्रावता उणहिज वळिया ।—ऊ.का.
उ०—२ श्राप धरै घर श्रोर री, वयण इस्ट दे वीच । श्रा श्राछो न करै श्रठै, न दिए पाछो नीच ।—बां.दा.

रू०भे० पाछउ ।
पाज-सं०स्त्री० [देशज] १ दृढ़ता ।
उ०—पद लो निभावो, बांह गह्यां री पाज । बलवत गरुड़ चढ्या गिरधारी, पतित उधारण पाज ।—मीरां
[सं० पाजस्य] पुल, सेतु ।
उ०—१ केरी कहदूं 'बांकला', करै अहोली काज । रांम हार लिखनै रची, पांणी ऊपर पाज ।—बां.दा.
उ०—२ बंधे दस पाज महाजग पार । पटक्क हजार उतारिय पार ।
—ह.र.
३ तट, किनारा (अ.मा.)
४ तालाब की पाल ।
उ०—बाबहिया, चढि डूंगरै, चढि ऊंचड़ री पाज । मत ही साहिब बाहुड़इ, सुणि मेहां री गाज ।—ढो.मा.
५ सीमा, मर्यादा ।
उ०—१ करि पाज हिंदू की ऐसी करेगौ । जिहारे रहो राज के पाज फेरो ।—ला.रा.
उ०—२ यह चढे लोगि दप छिनै पाज । जिनद्रोह दरस करि महाराज ।—सू.प्र.
६ प्रतिष्ठा, मान, गौरव ।
उ०—थें मिळ दुस्टो साज, पाज बनाओ पायटै । लाजै कुळ री लाज, लो कोलां सूं सांपगा ।—रांमनाथ कवियो
७ पंक्ति, कतार ।
उ०—हरेक लूटपोसा पर सूं समाव में पावदै री आजम तरै चीजां री पाज सी बणगी ।—रातवासौ
८ पट्टा, पाट । उ०—बावड़ी री पाज माथै दोनां जणा निरांत सूं बैठा लाडुआं री कोथळी खोल नै खावण लागा ।
—फुलवाड़ी
रू०भे०—पाजा, पाजि ।
अल्पा०—पाजड़ी ।
पाजड़ी—देखो 'पाज' (अल्पा०, रू.भे.)
उ०—पालीताणा पाजड़ी ए, चढियउ ऊठि परभाति । सेत्रुंज नदीय सोहामणी ए, दूरी थकी देखात ।—स.कु.
पाजणखीर-सं०पु० [?] एक प्रकार का कंद विशेष ।
उ०—मरहा मोगरि मूंगली, सापस सेली कंद । पाजणखीर कपूरीया, चंद चमारी चंद ।—मा.कां.प्र.
पाजणो—देखो 'पैंजणो' (रू.भे.) (उ.र.)
पाजांमो-सं०पु० [फा० पाजामा] कमर से टखने तक के भाग को ढका रखने वाला पैरों से पहिनने का एक प्रकार का सिला हुआ वस्त्र ।
रू०भे०—पजांमो, पायजांमो ।
पाजा—देखो 'पाज' (रू.भे.)

उ०—प्रमेसर बांधिसे पाजा, लोपसै दधि तणी लाजा। साधुग्रां रा दीह साजा, वजाडो वाजा।—पी.ग्रं.

पाजि—१ देखो 'पाज' (रू.भे.)

उ०—रुगनाथ निरेहण रेसण रांमण, डंवर मेलि पलंब दळं। मांडे महिरांणं पाजि पखांणं, वांण धनंख सजे सबळं।—पि.प्र.

२ देखो 'पाजी' (रू.भे.)

पाजी—वि० [फा० पा] (ब.व. पवाज) १ दुष्ट, नीच।

उ०—१ जलाल कही-इसा पाजियां रै ऊपर आपका पधारणा ठीक नहीं हैं।—जलाल वूबना री वात

उ०—२ मतलव रा पाजी, कर जोड़ियां विनती करै। विन मतलब राजी, बोलै नहिं वै बाघजी।—ग्रासी वारहठ

२ लुच्चा, बदमाश।

रू०भे०—पाजि।

पाजेब—देखो 'पायजेब' (रू.भे.)

पाझळणी, पाझळबौ—देखो 'प्रजळणी, प्रजळवौ' (रू.भे.)

पाझळणहार, हारौ (हारी), पोझळणियौ—वि०।

पाझळिओड़ो, पाझळियोड़ौ, पाझळयोड़ौ—भू०का०कृ०।

पाझळीजणी, पाझळीजबौ—भाव वा०।

पाझळियोड़ौ—देखो 'प्रजळियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० पाझळियोड़ी)

पाझौ—देखो 'प्राझौ' (रू.भे.)

पाटंबर—देखो 'पटंबर' (रू.भे.)

उ०—१ पाटंबर धोयति, जिग प्रवीत। उद्दार तिलक, क्रांति अद्वीत।—सू.प्र.

उ०—२ ग्रोपै हाट ग्रोछंडिया, पाटंबर ग्रणपार। वांणक जांणक वद्दळां, इंद्र धनुख उणहार।—रा.रू.

पाट—सं०पु० [सं० पट्टः] १ रेशम का वस्त्र। उ०—उचाट काटनी निराट, पाट ओढणी नहीं। विलोक वंक लंक दे, पलंक पोढणी नहीं।—ऊ.का.

२ रेशम का डोरा। उ०—१ बाजूबंध बंधै गोर बाहु बिहुं, स्यांम पाट सोहत सिरी। मणिमै हींडि हींडळै मणिधर, किरि साखा स्रीखंड की।—वेलि

उ०—२ हिवड़ा नै हारु ज लावजो, म्हारै हिवड़ा ने हारु'ज लाव। ओ म्हारै तमण्यो पाट पळावजो, हो भंवर म्हांनै खेलण द्यो गणगोर।—लो.गी.

३ वस्त्र।

उ०—मुखमल री वदु पाथरी माहे, पाथरिउ रेसम री पाट।
कळ पदम करि चिहुं कनारै, थरकाई वेहां कर थाट।
—महादेव पारवती री वेलि

४ सिंहासन, राजगद्दी। उ०—१ रांम पाट कुस भूप विराजै। सुज कुस पाटि अतिथ दिन साजै।—सू.प्र.

उ०—२ बहसियो 'सूर' रो साह सूं बराबर, घाल असुरांण दळ भांजवा घाट। उदै हुं छतो विरतो रतो जुध अभंग, प्रोटवो परै ग्रहियो खड़ो पाट।—द.दा.

क्रि०प्र०—उतरणौ, उतारणौ, वैठणौ, वैठाणौ।

यौ०—पाटगादी, पाटथांनी, पाटघणी।

५ पीढा या बाजोट, चौकी।

मुहा०—१ पाट वैठणौ—विवाह की एक रस्म जो पाणिग्रहण के कुछ दिन पूर्व दूल्हे या दुलहिन को चौकी पर बैठा कर मंगल गीतों के साथ सम्पन्न की जाती है। यह रस्म विवाह आरंभ की प्रतीक मानी जाती है।

६ तख्ता।

७ राजा, सम्राट। उ०—१ करि राज एम क्रमधां तिलक, वसे अमरपुरि क्रीत वरि। तिण पाट 'माल' वैठो तखत, धर मुरधर सिर छत्र धरि।—सू.प्र.

उ०—२ पाइगाह मंडण चढण पाट। सांहणी छोड सिणगार थाट।—गु.रू.बं.

मुहा०—१ पाट घाव करणौ—राज्याधिकारी को मारना।

२ पाट री सोगंध लैणी—राजा की शपथ खाना।

यौ०—पाट-गादी, पाट-भगत, पाट-रांणी, पाट-हाथी।

८ चक्की का एक ओर का (ऊपर का अथवा नीचे का) भाग।

९ कोल्हू में 'लाठ' से संलग्न आयताकार काष्ठ का तख्ता जिस पर भारी पत्थर 'लाठ' पर दवाव बढ़ाने के लिए रखा जाता है तथा यह वृत्ताकार पथ में धरातल के समानान्तर बैल के साथ-साथ घूमता रहता है।

१० कपड़े का थान।

११ मकान के छत के पत्थरों की दृढ़ता के लिए उनके नीचे दीवारों पर लगाया जाने वाला लम्बोतरा पड़ा पत्थर।

उ०—उडि पड़ै पाट दिवाळ, लगि लाल पाथर लाल। धड़ड़ंत झळ धोमाळ, कड़ड़ंत वीज कराळ।—सू.प्र.

१२ छत में लगाए जाने वाले लकड़ी के पाटिए, शहतीर।

उ०—ग्रिह-ग्रिह प्रति भींति सुगारि हींगळू, ईंट फिटकमै चुणी अचंभ। चंदण-पाट कपाटइ-चंदण, कुंभी पनां प्रवाळी खभ।—वेलि

१३ वह जमीन जिसमें वर्षा का पानी एकत्रित होने से गेहूं, चने आदि पैदा होते हैं। उ०—सु जोधपुर रै मारग सोजत सूं जातां डावी तरफ ईंदावो अरहट विलावस वांसै छै। नै जीमणी तरफ पाट जोड़ लगती सोजत री छै। पाट आगै जोधपुर मारग पावू नाडी तळाई छै।—सोझत रै मंडळ री वात

१४ भूमि की तह, परत। उ०—हे सखी! फौज तो सत्रुआं री इतरी है जिणरा झंडा धजाग्रां सूं आकास छाईजगो है नै घोड़ां रा पौड़ां सूं धरती रा पाट न्यारा-न्यारा होय रह्या है पण इतरी फौज ऊपरै निसंक थको तोरण माथै बींद जावै ज्यूं म्हारो पती निसंक जाय रयो छै।—वी.स.टी.

१५ भूमि, जमीन। उ०—तवे खगधार सिरि राह खत्रियां तणौ, वहसि 'खेमाळ' हर ऊमियै वाह। पाट सूं मेळतौ भीछ पतसाह रा, पाट ऊखेळतौ प्रिसण पतसाह।

भावसिंह कूंपावत राठौड़ री गीत

१५ नदी की चौड़ाई। उ०—लाग खाई परे पाटां उहै कंपू खेध लागा, वहै खाटा घायलां निराटां भीमवार। केम भागै लाट-राटां जाट-राटां वाळी कोट, कपाटां ठिकांणा ऊभा नद रा कुंवार।

—कविराजा बांकीदास

१७ कुए पर लगाई जाने वाली पत्थर या लकड़ी की वह पट्टी जिस पर गिर्री के दोनों ओर लगाये जाने वाले डंडे लगाए जाते हैं। (जयपुर)

१८ कुए की जगत पर आड़ी लगाई जाने वाली पत्थर की वह सिला जिस पर चड़स या मोट को रख कर खाली करते हैं।

१९ कुए पर खड़ी लगाई जाने वाली पत्थर की वह पट्टी जिस पर पैर अड़ा कर चड़स या मोट को भरने के लिए रस्सी (लाव) को बार बार खींच कर छोड़ते हैं।

२० स्त्रियों के गले में पहिनने का आभूषण विशेष।
उ०—ए रे गांवां के गोरवें रांणी पटवौ पोवै छै पाटां जी। मेरे सायब को पो दे पूंचियौ रांणी सती माता नै नवसर हारौ जी।

—लो.गी.

२१ कोमल*
२२ देखो 'पट' (रू.भे.)
२३ देखो 'पट्ट' (रू.भे.)
रू०भे०—पाठ, पाढि।
अल्पा०—पाटलौ, पाटियौ, पाटी, पाटौ।

पाटऊधोर—देखो 'पाटोधर' (रू.भे.)
उ०—झालियौ भार भूंझारि भुजि झालियौ। पाटऊधोर हालां वखत पाळियौ।—हा.झा.

पाटक-वि० [सं० पटुक] १ चतुर, दक्ष। उ०—अबै लोग सागड़ी री भोळप अर थळिया री हुंस्यारी माथै चरचा करण लागा के मा'टौ थळियौ तौ गजब री चाप्र'ग अर पाटक निकळियौ, अपां तौ उणरै पग री ई होड नी कर सकां।—फुलवाड़ी

२ धूर्त, चालाक। उ०—एक धरमसाळा में एक नाई रैवतौ हो। अणूंतौ ई पाटक। आपका खूंजिया में हरदम नीवू राखतौ हो। आवतौ जकौ मारगू उठे रोटी खावतौ तौ वौ उणरै पाखती बैठ नै वतळ करणी सुरु कर देवतौ।—फुलवाड़ी

सं०पु० [पाटक] वाण, तीर।

पाटड़ागोह-सं०स्त्री०यौ० [देशज] एक प्रकार की भूरे रंग की गोह।
उ०—एक पाटड़ागोह अळगा सूं आ रचना देखी।—फुलवाड़ी
रू०भे०—पाटागोह, पाडागोह।

पाटड़ी—१ देखो 'पाटी' (अल्पा.,रू.भे.)
२ देखो 'पटी' (रू.भे.)
३ देखो 'पट्टी' (अल्पा०, रू.भे.)
४ देखो 'पाटी' (रू.भे.)

पाटड़ौ-सं०पु० [सं० पट्टः] हैंगा।

पाटण-सं०पु० [सं० पत्तन, प्रा० पट्टण] १ गुजरात का एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर (व.स.)
उ०—देस नगर नइ पाटण कनक रतन भंडार रे। कूबर जीपी ते लीइ हस्ती कोठार रे।—नळदवदंती रास
२ पाटने की क्रिया का भाव।

पाटणमुखी-सं०पु० [?] काजळ, कज्जल (अ.मा.)

पाटणी-सं०पु० [सं० पट्ट+रा०प्र०णी] वस्त्र विशेष। उ०—देवदूस्य चीनांसुक गोजी चउडसी नीलनेत्र सचोपां पाटणीयां हीरपट्ट साउला...प्रभृति वस्त्र जाति।—व.स.

पाटणौ, पाटवौ-क्रि०स० [सं० पाटनम्] १ किसी चीज की रेल-पेल कर देना। उ०—भुज लगां 'विलंद' घड़ भड़ भिड़ज, धरा पाटि झाटकि धरूं। आपरा लूंण हूंता 'अभा', कळह वोलवाला करूं।

—सू.प्र.

२ किसी नीचे स्थान या गड्ढे को उसके आसपास के धरातल के बराबर कर देना।
३ दो दीवारों के बीच या किसी गहरे स्थान के आरपार, लकड़ी, पत्थर आदि की पट्टियां बिछा कर ढक देना, छत बनाना।
पाटणहार, हारौ (हारी), पाटणियौ—वि०।
पाटिओड़ो, पाटियोड़ो, पाटयोड़ो—भू०का०कृ०।
पाटीजणौ, पाटीजवौ—कर्म वा०।
पटणौ, पटवौ—अक०रू०।

पाटथंभ-सं०पु० [सं० पट्टस्तम्भ] १ राजसिंहासन का रक्षक।
२ राजा।
रू०भे०—पाट रा थंभ।

पाटथांन-सं०पु० [सं० पट्टस्थान] प्रमुख स्थान, राज्यस्थान।
उ०—वाला वरसिंघ वरसिंघ नांव पाया, तीनां का तीन पाटथांन जो बताया।—शि.वं.

पाटनगर-सं०पु० [सं० पट्टनगर] किसी राज्य की राजधानी।
रू०भे०—पट्टनगर।

पाटप-वि० [सं० पट्टप] १ प्रधान। २ शिरोमणि।
उ०—अकबर हिए उचाट, रात दिवस लागौ रहै। रजवट वट समराट, पाटप रांण 'प्रतापसी'।—दुरसौ आढौ

पाटपत, पाटपति, पाटपती-सं०पु० [सं० पट्टपति] १ राजा, नृप। (अ.मा.)

उ०—१ रिप नाट परमळ हाट रावळ, धरण परधर घाट। पित-पाट राखण पाटपत, नृप काट हूंत निराट।—नैणसी
उ०—२ कंथानांमी साजियौ हरांमी भड़ां तणै कहै, कीधी की

अमामी कीधी नमांमीं कुलाट। सुछत्री मारियो दगा सूं राज हिंदवा सूर, पाटपती तीसूं हुवो नछत्री मेवाट।
—राजा राघोदेव झाला रो गीत

२ युवराज, राज्याधिकारी। उ०—१ पोकरणि पलटि 'गजवंध' रा पाटपति, बांधियो जोधपुर गळे छत्रवंध।
—नरहरदास बारहठ

उ०—२ 'मेघ' हरो तेग खरो राजगतो मोटमती। पाटपती देसपती राउ तणो लखपती।—ल.पि.

पाटरख्यक—सं०पु० [सं० पाटरक्षक] पाटरक्षक, राजा, नृप। उ०—तियै प्रस्तावि राव कल्यांणमल रो पुत्र पाटरख्यक महाराजाधिराज महाराजा स्री रायसिंघ चीत्रोड़ि परणीजण पधारिया हुता।—द.वि.

पाटरांणी—देखो 'पटरांणी' (रू.भे.)

पाटरायंभ—देखो 'पाटथंभ' (रू.भे.)
उ०—उभै नर बरावरा पाथ रूपी अडर, घणो निज हाथ स्रीनाथ घड़िया। तिकै पातां भड़ां अदन मुरधर तणै, पाटरायंभ रिणवाट पड़िया।—पहाड़ खां आढ़ो

पाटरियंव—सं०पु० [सं० पट्टः=चौराहा] युद्धस्थल, लड़ाई का मैदान। उ०—पड़िया नेजाळ विढ़ै पाटरियै, भागां कोट नह क्रम भरिया। 'अजमल' तणा खड्ग रै ओळै, अथपत मोटा ऊव्वरिया।
—राजरांणा अज्जा झाला रो गीत

पाटळ, पाटल—सं०पु० [सं० पाटलः] १ बेल के समान पत्तों वाला एक वृक्ष विशेष। उ०—दाख मोगरो केतकी दाड़म वेल गुलाब। पाटल चूही केवड़ो आंवळ चंवेलि आंव।—गजउद्धार
पर्या०—अमोघा, करवुरा, थाली, दंवु, दूधका, फळेरहा, मवक्ष, वसामध, वांमासर।
२ एक देश। उ०—मळय सिंगल कोसल नइ अंग्य, स्रीपरवत द्राविड़ नइ वंग्य। वैरोट तापी लाजो धार, स्त्री वैदरभ पाटल अतिसार।
—नळदवदंती रास
३ तलवार। उ०—ट्रक पैलां करण लागतो पाटलां, पड़ै गोळा असण उभै कोसां पला।—राजाधिराज लछमणसिंघ रो गीत
रू०भे०—पाटलि, पाडळ, पाडल।
अल्पा०—पाटलो।

पाटला, पाटलावती—सं०स्त्री० [सं० पाटलावती] दुर्गा।

पाटलिपुत्र, पाटलीपुत्र—सं०पु० [सं०] वर्तमान विहार का एक नगर जो पटना कहलाता है। उ०—पाटलीपुत्र पुरै राजा नवनंद हुवो ज्यांरी लक्ष्मी दांना भावात गंगा तीरे पीत पाखांण हुई अजूं है।
—वां.दा.ख्यात

पाटलो—सं०पु० [व०व० पाटला] १ स्त्रियों की हाथ की कलाई में पहिनने का सोने का बना चौड़ा पट्टीनुमा बना आभूषण विशेष।
२ बैल गाड़ी के पहिये में लगाया जाने वाला गोल, चौड़ा व मोटा लकड़ी का वह टुकड़ा जो आरा और पूठी के बीच में लगाया जाता है।
३ कातने के चरखे के नीचे का वह लकड़ी का भाग जिसमें तकुआ डालने के दोनों डंडे खड़े-रूप में लगे रहते हैं।
४ देखो 'पाटल' (अल्पा.,रू.भे.)
उ०—राजा नंद रा ठावा आदमियां वन में पाटळा व्रख री डाळ बैठा पंखी नीलटांच, जिणरा मुख में विना उद्यम कियां लटां पड़ै, जिका देखिया।—वां.दा. ख्यात
५ देखो 'पाट' (अल्पा.,रू.भे.)
उ०—चंपा नगरी प्रभु हुंता, जांण्या उदाई रा भाव। सूंपी स्थानक पाटला, विहार कियो धर चाव।—जयवांणी
रू०भे०—पातलो।

पाटलोपळ—सं०पु० [सं० पाटलोपल] पद्मरागमणि।

पाटव—सं०पु० [सं०] १ स्वास्थ्य, आरोग्य।
उ०—जरै सती रा स्राप हूं कलेवर में कोढ पाई, पुस्कर, प्रयाग प्रमुख तीरथां में न्हाइ और भी ओखधाधिक अनेक उपाय करि थाको परंतु पाटव न पायो।—वं.भा.
२ स्फूर्ति, कुशलता।
उ०—सो थवां रा धड़ पड़ता देखि खड्ग खेटक रा पाटव में प्रवीण सूर भाव रै साथ स्रद्धा रै समांन सात्रवां रो संहार करती सारी ही मध्यपुर रा प्रकोस्ट रै माथै आवती क्रपांणां रै वाढ़ लागी।—वं.भा.

पाटवी—वि० [सं० पट्ट+रा०प्र०वी] १ उत्तराधिकारी, पट्टाधिकारी।
उ०—१ मछरीकां रा पाटवी, 'चुतर' अने 'फतमाल'। ढाळ तणी पर लेखवै, रिण जोधा 'रिणमाल'।—रा.रू.
उ०—२ डूंगरपुर बांसवड़ाह देस। पाटवी रांण राखीह पेस।
—वि.सं.
२ रेशमी, कौशेय।

पाटवीराग—सं०पु० [सं० पट्टप+राग] वीर राग, सिंधु राग।
उ०—झुकै नाग रा सीस, आंबाळ तासा झड़ै, पाटवीराग रा विखम हाका पड़ै। अोय! लागै गजब भुजां उरसां अड़ै, 'जैत' मारू कटी कड़ा सलहां जड़ै।—महादांन महड़ू

पाटहाथी—१ देखो 'पटहस्ती' (रू.भे.)
उ०—तिण समय साहण सिणगार नांम राजा रो पाटहाथी डांण लागो।—वं.भा.

पाटहोड़ो—देखो 'पटहोड़ो' (रू.भे.)

पाटागोह—देखो 'पाटड़ागोह' (रू.भे)

पाटावंध, पाटावाधण—वि० [सं० पट्ट+बंधनम्] १ घावों पर मरहमपट्टी करने वाला, जर्राह।
उ०—तरै जोगीसरां झोळी मांडिनै उठायो, तिको किणहेक सहर ल्याया। पाटावंध तेड़ नै पाटा वंधाया।
—जखड़ा मुखड़ा भाटी री बात
२ वीर जिसने कई योद्धाओं को युद्धस्थल में घायल कर दिया हो।
उ०—दूदा रै वेटो हरदास। वीकानेर सूं छाड जोधपुर चाकर रह्यो।

पछै नवाव खांनखांनै मांग लियो। बडो डील, वडो घरमातमा, बडो पाटावघ ठाकर हुतो।—वां.दा. ख्यात

३ वह जिसके युद्धस्थल में कई घाव लगे हों और जिसके कई पाटे बांधे गये हों।

पाटावंधाई [सं० पट्ट+वधनम्] १ घाव पर मरहम पट्टी बांधने का कार्य।

२ उक्त कार्य का पारिश्रमिक।

पाटि—देखो 'पाट' (रू.भे)

उ०—तरु ताळ पत्र ऊंचा तड़ि तरळा, सरला पसरंता सरगि। वैठे पाटि वसंत वंधिया, जगहथ किरि ऊपरि जगि।—वेलि

पाटियोड़ो-भू०का०कृ०—१ ढेर लगाया हुआ, रेल-पेल किया हुआ।

२ आसपास की जमीन या धरातल के वरावर किया हुआ।

३ दो दीवारों के बीच का छाया हुआ स्थान।

(स्त्री० पाटियोड़ी)

पाटियो-सं०पु० [?] १ पीतल का दूध दुहने का पात्र।

२ देखो 'पाट' (अल्पा.,रू.भे.)

३ देखो 'पाटी' (अल्पा.,रू.भे.)

उ०—ताहरां साहजादी डूबती थकी रै हाथ पाटियो १ डूंडा री आयो। तिको झाल नै वैठी सु नदी री धार मांहे वूहो जावती हुती। —नैणसी

पाटिसथांन, पाटिस्थांन-सं०पु० [सं० पट्ट+स्थान] १ प्रमुख स्थान।

२ सिंहासन। ३ राजधानी।

पाटी-सं०स्त्री० [सं० पट्टः] १ परिपाटी, रीति।

उ०—सीह छतीसी सांभळै, छाकै वंस छतीस। 'बांकै' पाटी वीर रस, वरणी विसवावीस।—वां.दा.

[सं० पाटीः] २ गणनादि का क्रम, जोड़, बाकी, गुणा, भाग आदि का क्रम।

यौ०—पाटीपहाड़ा।

३ पाठ, सबक।

उ०—पढ़िया नहिं पाटी, घट में घाटी, तळ ताटी तोड़ंदा है। करणी में किर-किर, धिरणी में घिर-घिर, फिर-फिर सिर फोड़ंदा है। —ऊ.का.

मुहा०—१ पाटी पढ़णो—छलकपट करना, कुछ सीखना।

२ पाटी पढ़ाणो—किसी को बहकाना, गुरु का शिष्य को पढ़ाना।

३ पाटी में आणो—किसी के सिखाने में आना।

४ चारपाई के ढांचे में लम्बाई की ओर की पट्टी।

उ०—जाय खातीजी नै यूं कईजो, म्हारै पिलंग पाटी ले आयजो। म्हारै पलंग पाटी लइ आवैजो।—लो.गी.

५ पत्थर अथवा टीन का वह टुकड़ा जिस पर विद्यारंभ करने वाले छात्र लिखते हैं, स्लेट।

उ०—सांचो पढवा पाठ, संवारी सोहणी। मनमथ राजकुंवार क, पाटी मोहणी।—वां दा.

६ विवाह के समय पढे जाने वाले वेद-मंत्र।

क्रि०प्र०—पढणी।

७ कान के नीचे का हिस्सा जहां पर छेद कर आभूषण पहिनाए जाते हैं।

क्रि०प्र०—छेदणी।

८ जोते हुए खेत की मिट्टी बराबर करने का कृषि-उपकरण, हेंगा।

मुहा०—१ पाटी फिरणी—कार्य नष्ट हो जाना।

२ पाटी फेरणी—किए हुए कार्य को नष्ट करना।

९ घाव पर बांधने की कपड़े की पट्टी।

क्रि०प्र०—खोलणी, बांधणी।

१० किसी कपड़े की कोर अथवा किनारी।

११ मांग के दोनों ओर तेल, मोम, पानी आदि की सहायता से कंघी द्वारा वैठाए हुए सिर के बाल।

क्रि०प्र०—पाड़णी, संवारणी।

१२ वह भूभाग जिसे किसान मवेशी चराने, घास उगाने अथवा पेड़ों को पालने के उपयोग में लेता है (जयपुर)

१३ देखो 'पट्ट' (अल्पा०, रू.भे.)

१४ देखो 'पट्टी' (रू.भे.)

१५ देखो 'पाट' (अल्पा०, रू.भे.)

रू०भे०—पटी।

अल्पा०—पटड़ो, पाटड़ो।

पाटीपोतो-सं०पु० [सं० पट्टः+पोतः] स्लेट साफ करने का कपड़ा।

पाटीहोड़ो—देखो 'पटहोड़ो' (रू.भे.)

उ०—घणा घणा-मोला घोड़ा, पाइगड़ां पाटीहोड़ा। आगळा घड़े अलंब, अजूळी पियै ज अंब।—गु.रू.बं.

पाटु-सं०पु० [सं० पट्ट] १ वस्त्र विशेष।

उ०—१ जरदोजी जांमो वण्या, पाटु सुथन पाइ। साहिब घरे पधारिया, सो गल वलगुं जाइ।—व.स.

उ०—२ पाटु नी पूजि ओढउ पछेवड़ी रे। पाटण नी नीपनी सखरी दोपड़ी रे।—स.कु.

[सं० पाद] २ लात। उ०—कमलापति कैवल्य अति, विस्व-विधाता जेह। भलपण ए अगुरिसि-तणउं, पाटु मारिउ तेह। —मा.कां.प्र.

पाटुआली-सं०स्त्री०[सं०पाद+आलुच] पादप्रहारिणी, पैर की चोट(उ.र.)

पाटेपड़ी-सं०स्त्री०[देशज]एक पक्षी विशष जिसका मांस खाया जाता है।

रू०भे०—पटेपड़ी, पाठेवड़ी।

पाटैदार-सं०पु० [सं० पट्ट+फा० दार] पट्टी बांधने वाला।

उ०—पचासां वोळावियां आधेआध वाढ उतरियां, जियांरा पांच-पांच हजार दांम, पाटा बंधाई रा पाटैदार खाय चुका छै।—रा.सा.सं.

पाटोतौ-सं०पु० [सं० पट्टः+रा.प्र. ओतौ] भोजन करते समय थाली रखने की चौकी।
उ०—इतरा में खवास आंण अरज कीवी—भुजाई तयार छै, पाटोता विछाया छै। तद सरदार सारा ऊठिया।
—सूरे खींवे कांधळोत री वात

पाटोधर-वि० [सं० पट्ट+धारिन्] १ श्रेष्ठ।
उ०—मन माठइ सइ नाळे र मेल्हियउ, आगा लगइ करण ऊछाह।
परणीजसी कुंवर पाटोधर, वरदळ तणइ हुस्यइ वीमाह।
—महादेव पारवती री वेलि
सं०पु०—राजा, नृप।
उ०—सूरिजमल 'गंग' 'वाघ' सलक्खां, पाटोधर चाढण जळ पक्खां।
मोहरै अणी किम्रा रिणमल्लां, चांपां कूंपां 'जैत' अचल्लां।
—वचनिका
२ राज्यसिंहासनाधिकारी, युवराज।
उ०—सुत 'जालण' 'छाडो' वंससूर। पाटोधर 'तीडो' विरद पूर।
—सू.प्र.
३ वीर, बहादुर।
रू०भे०—पटोधर, पाटऊधोर, पाटोधरण।

पाटौ [सं० पट्टः=धज्जी] १ मरहम-पट्टी।
उ०—पाटा पीड़ उपाव, तन लागां तरवारियां। वहे जीभ रा घाव, रती न ओखध राजिया।—किरपारांम
२ काष्ट का बना विशष प्रकार का तख्ता जिस पर छात्र लिखने का काम करते हैं।
उ०—ते दूमातउ देखी पंडित, एक दिवस बोलावइ। सविहुं छात्र तणा सवि, पाटापाटी सदा मंजावइ।—हीराणंद सूरि
२ देखो 'पाट' (अल्पा०, रू.भे.)
उ०—१ ए धरम कहै दोपै घणी, एह नै मूंडा आगल थाटी रे। स्यूं इण री रोजगार छै, ए ऊंचो वैठो पाटो रे।—जयवांणी
उ०—२ सूरत सहर जिणचंद सूरिजी, आव्यो आपणो पाटो जी। महोत्सव गाजै वाजै मांडिया, गीतो री गहगाटो जी।—ध.व.ग्रं.
मुहा०—१ पाटै उतरणौ—समाप्त होना, नाश होना, बरबाद होना।
२ पाटै उतारणौ—समाप्त करना, नाश करना, ध्वंस करना, बरबाद करना।

पाटौधरण—देखो 'पाटोधर' (रू.भे.)
उ०—कमधज्ज वंस ऊदोत कर, कमधज्जां कुळि आभरण। गरजियौ पिता वैठे 'गजण', पिता पाट पाटौधरण।—गु.रू.बं.

पाठ-सं०पु० [सं०] १ पढ़ने की क्रिया, पढाई।
२ किसी धर्मपुस्तक को पढने की क्रिया।
उ०—मोती समो न ऊजळो, चंदण समो न काठ। 'करनी' समो न देवता, गीता समो न पाठ।—अज्ञात
यौ०—पाठदोस, पाठप्रणाळी।
३ पढने या पढाने का विषय।
४ एक दिन में, एक बार में पढाया जाने वाला किसी विषय का अंश। उ०—सांची पढवा पाठ संवारी सोहणी। मनमथ राजकुंवार क पाटी मोहणी।—बां.दा.
क्रि०प्र०—देणौ, पढणौ, पाणौ।
मुहा०—१ पाठ पढणौ—कोई बुरी बात सीखना।
२ पाठ पढाणौ—किसी को बहकाना।
५ पुस्तक का एक अंश, परिच्छेद, अध्याय।
६ शब्दों या वाक्यों का क्रम।
यौ०—पाठभेद, पाठांतर।
७ फालसा।
सं०स्त्री० [सं० पुष्ट] ८ वह जवान बकरी जिसने अभी तक बच्चा देना प्रारम्भ न किया हो।
रू०भे०—पाठर।
अल्पा०—पठड़ी, पाठड़ी।
९ देखो 'पाठौ' (मह०, रू.भे.)
१० देखो 'पाट' (रू.भे.)

पाठक-सं०पु० [सं०] १ पढाने वाला, अध्यापक।
उ०—विधि पाठक सुक सारस रस वंछक, कोविद खंजरीट गतिकार। प्रगळभ लाग दाट पारेवा, विदुर वेस चक्रवाक विहार।
—वेलि
२ पढने वाला, पाठ करने वाला। उ०—नित पाठक नार नसावन कौं, हिय हाटक हार हुंसावन कौं। छिल गादर कादर छंटन में, वड आदर चादर वंटन में।—ऊ.का.
३ धर्मोपदेशक।
४ गौड़, सारस्वत, सर्यूपारीण व गुजराती ब्राह्मणों का एक भेद।
रू०भे०—पाठिक, पाठीक, पाढीक।

पाठड़ी—देखो 'पाठ' (८ अल्पा०, रू.भे.)

पाठड़ौ-सं०पु० [सं० पुष्ट+रा.प्र.ड़ौ] सूअर का नौजवान बच्चा।
उ०—पूरा आकुल पाठड़ा, भालां पड़तां भार। हेकण कवळा बाहरी, झाड़ां झाड़ां डार।—बी.स.

पाठदोस-सं०पु० [सं० पाठदोष] १ पढने की निंद्य व वर्जित चेष्टा।
२ किसी ग्रंथ के शब्दों के अक्षरों तथा वाक्यों के शब्दों की अशुद्ध भ्रामक योजना।

पाठन-सं०पु० [सं०] पढाना, अध्यापन।

पाठप्रणाळी-सं०स्त्री० [सं०पाठप्रणाली] १ पढने की रीति, पढने का ढंग।
२ पढाने की रीति, पढ़ाने का ढंग।

पाठभेद-सं०पु० [सं०] एक ही ग्रंथ की एक से अधिक प्रतिलिपियों के पाठ का भेद, पाठांतर।

पाठर—देखो 'पाठा' (अल्पा०, रू.भे.)

पाठवणौ, पाठवबौ—देखो 'पठाणौ, पठावौ' (रू.भे.)

उ०—१ नितु नितु नवला साढिया, नितु नितु नवला साजि। पिंगळ राजा पाठवइ, ढोला तेडन काजि।—ढो.मा.

उ०—२ मांणस हवां त मुख चवां, म्हे छां कूंझड़ियांह। प्रिउ संदेसउ पाठविसु, लिखि दे पंखड़ियांह।—ढो.मा.

पाठसाळा-सं०स्त्री० [सं० पाठशाला] वह स्थान जहाँ पढा या पढाया जाता है, स्कूल, विद्यालय, पाठशाला।

पाठांण, पाठांन—देखो 'पठांण' (रू.भे.)

उ०—चढे सेख चंदवळां, मुगळ वर गोळज गोळां। रचे गोळ राफजी, सयद पाठांण हरोळा।—सू.प्र.

पाठांतर—देखो 'पाठभेद'।

पाठा-सं०स्त्री० [सं०] एक लता विशेष जिसके पत्ते गोल व नोंकदार, फूल सफेद व फल लाल होते हैं।

रू०भे०—पाठ, पाठर।

पाठाफेर-सं०पु० [सं० पाठ+रा. फेर] किसी कवि की कविता के शब्दों और भावों में परिवर्तन करने की क्रिया।

पाठिक—देखो 'पाठक' (रू.भे.)

पाठी-वि० [सं० पाठ+रा. प्र. ई] पाठ करने वाला, पढने वाला।

सं०स्त्री०—हृष्ट-पुष्ट व नौजवान स्त्री।

रू०भे०—पाठीन।

पाठीक—देखो 'पाठक' (रू.भे.)

पाठीन-सं०स्त्री० [सं०] १ एक प्रकार की मछली (अ.मा.) (ह.नां.मा.)

२ देखो 'पाठी' (रू.भे.)

पाठेवही—देखो 'पाटेपड़ी' (रू.भे.)

पाठो-सं०पु० [सं० पुष्ट] (स्त्री० पाठी) १ हृष्ट-पुष्ट या मोटा ताजा व्यक्ति।

[देशज] ऊंट के पारजामे में लगाये जाने वाले काठ के दो डंडों में से एक।

३ एक प्रकार का हरिण। उ०—आतुसूं के घम के वासूं की चोट। संभळ चीतळ पाठे केते लोटपोट।—सू.प्र.

४ डबल, फुल-स्केप साइज का कागज।

उ०—कलम छुडियाळ समर करि पाठौ, घण खळ सुद्रब आखरा घाव। साखां तेरह सम्है समरि करि, सल्हैं वैर घरि 'माल' सुजाव।

—सादूळ पंवार री गीत

५ जांघ पर गांठ होने वाला एक रोग विशेष।

६ जवान हाथी। (मेवाड़)

पा'ड, पाड—१ देखो 'पटह' (रू.भे.)

उ०— वाजी औ औं मंगल संख। धिधिकट धेंकट पाड असंख।

—हीराणंद सूरि

२ देखो 'पट्ट' (रू.भे.)

उ०—तरुआरे सोनह री मूंठि, करडां खेडां घालइ पूंठि। कड्डिही कटारी हीरे जड़ी, पाड सूत्र नी छड दावड़ी।—कां.दे.प्र.

३ देखो 'पा'ड़' (रू.भे.)

उ०—सकत थड़ै तूं पूगिया जी, घणा हरख नै साह। आद घणेरा आगलै जी, किसो घटावूं पा'ड।—वि.कु.

४ देखो 'पा'ढ़' (रू.भे.)

५ देखो 'पहाड़' (रू.भे.)

पाडको—देखो 'पाडो' (अल्पा.,रू.भे.)

पाडकौ—देखो 'पाडो' (अल्पा.,रू.भे.)

(स्त्री० पाडकी)

पाडगत, पाडगती-सं०पु०—१ रघुवरजसप्रकाश के अनुसार सुपंखरा गीत जिस में नृत्य के बोल आते हों।

२ वह गीत छंद जिसके विषम चरणों में १६ मात्रा हों सम चरणों में १८ मात्राएं हों तथा लय मिलाने हेतु जिस में आगड़दो शब्द अनिवार्य रूप से हो।

रू०भे०—पाड़गत।

पाडड़ी—देखो 'पाडी' (अल्पा.,रू.भे.)

उ०—ऐ काम धेनवां थारै, थारी बरोबरी म्है करां स, कोई भैंस पाडड़ी म्हारै। गिरधारी हो लाल।—लो.गी.

पाडण-सं०स्त्री०—एक प्रकार की मछली विशेष।

पाडर—देखो 'पाटल' (रू.भे.)

उ०—पाडर पुन रायन तर तमार, तहां गरु बकायन सरस सार। चंदन अगर तीया कुंद चारु, सीताफळ चंपक मरु अनार।

—मयाराम दरजी री बात

पाडळ-सं०स्त्री० [देशज] १ विशेष प्रकार के रंग की गाय।

उ०—मोटी गोटी पैं परवाड़ा मोहै। तड़ड़ा वाछोडी घड़ड़ा तन तोहै। पीळी पाडळ पर फिर-फिर कर फेरै। धोळी धूंगर नै घिर-घिर घर घेरै।—ऊ.का

२ पीले रंग की हरिणी विशेष।

३ एक प्रकार का पीपल विशेष, पारस पीपल (अमृत)

४ देखो 'पाटल' (रू.भे.) (अमृत) (अ.मा.)

उ०—पीपल, पाडल पीपली, पीठवनी पदमाख। पारिजात पीनूवडा, पींपरि पस्ता पाख।—मा.कां.प्र.

पाडसूत्र-सं०पु० [सं० पट्ट+सूत्र] रेशमी डोरे का कार्य करने वाली जाति का व्यक्ति।

उ०—नगरि मांडवी वारू पीठ, आछी खेरा चोल मजीठ। पाडसूत्र पटूआ सालवी, वुहरइ वस्त घणावइ नवी।—कां.दे.प्र.

पाडाखुरो-सं०पु० [राज. पाडो+सं० खुरः] भैंसे के समान खुर वाला, सूअर।

उ०—गैंदंतो पाडाखुरो, आरण अचळ अघट्ट। भूंडण जणै सु भूमळो, थोभै अरियां थट्ट।—हा.झा.

पाडागोह—देखो 'पाटड़ागोह' (रू.भे.)

पाडाजीभी-सं०स्त्री० [राज० पाडो+सं० जिह्वा] भैंसे के जीभ के आकार की कटार।
उ०—सू कटारी किण भांतरी छै? विरांणपुर री, रांमपुरा री, बूंदी री राजासाही, ओडारी, अढ़ाई, मोगलीरी, कोताखांनी, पाडाजीभी, घणै सोने में भकोळी थकी।—रा.सा.सं.
पाडियो—देखो 'पाडो' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—पालर ठंडो जांमे पायो। स्वाद अनोखो घणो सरायो। दया करी निज ताळ दिखायो। गया पाडिया जळ गिदळायो।—ऊ.का.
(स्त्री० पाडी)
पाडिहार, पाडिहारू—देखो 'प्रतिहार' (रू.भे.)
उ०—फबै मंडळा 'खेतसी' पाडिहारं। वधै चाड राजा तणै वारवारं।
—रा.रू.
पाडी-सं०स्त्री० [देशज] भैंस की छोटी बछिया।
उ०—१ खुंडी पाडी रा लाडी चख खोळै। धमती खांडाळी काळी दिन धोळै।—ऊ.का.
उ०—२ आथूणो तो खेत दीज्यो बिच में दीज्यो नाडी। घरवाळी नै छोरी दीज्यो भैंस ल्यावै पाडी।—लो.गी.
रू०भे०—पाड़ी।
अल्पा०—पाडकी।
पाडुई, पाडुया-वि० [सं० पातुक, प्रा० पाडुअ] खराब, अशुभ (जैन)
उ०—१ वीर कहइ तुम्हे सांभळउ, दांनसीळ तप भाव। निंदा छइ अति पाडुई, घरम करम प्रस्तावि।—स.कु.
उ०—२ परिग्रह आरंभ पाडुया, पाडुया पाप ना करमो जी। पाडी-जइ परभवि गयां, ते किम कीजइ अघरमो जी।—स.कु.
रू०भे०—पाडूई, पाडूउ।
पाडू-सं०स्त्री०—लूट।
उ०—आव्या तुरक पाडूऊं करिउं, सू तुं नगरि सहू को धरिउं।
—कां.दे.प्र.
पाडूई, पाडूउ—देखो 'पाडुइ' (रू.भे.)
उ०—१ मनुस्य नइ उपदिसा आवइ त्यारइ कुमति ऊपजइ। आवण-हारी वेळा पाडूई, तव सुमति किहां थी संपजइ।—नळ दवदंती रास
उ०—२ सबळ बंधन बांधीउ, रायनइ कहिउं तेह। आदेस दीघउ पाडूउ, हऊउ मभनइ छेह।—नळ दवदंती रास
पाडोस—देखो 'पाड़ोस' (रू.भे)
पाडोसण—देखो 'पाड़ोसण' (रू.भे.)
पाडोसी—देखो 'पाड़ोसी' (रू.भे.)
पाडो-सं०पु० [देशज] १ भैंसा, महिष।
उ०—प्यारा टोघड़िया पाडा कद पेखां। दूधां दहियां रा चाडा कद देखां।—ऊ.का.
[सं० पटह] २ घोषणा, ढिंढोरा। उ०—तरै राजा सहर में पाडो फेर्‌यो—नागजी नै ताजो करै, तिण नै लाखपसाव देवां।
—नागजी नागवंती री बात
३ आक का फल जिसमें से रूई जैसा महीन रेशेदार पदार्थ बीज के साथ निकलता है।
अल्पा०—पाडको, पाडियो।
४ देखो 'पाड़ो' (रू.भे.)
उ०—सज्जण चाल्या हे सखी, पाछै पीळी पज्ज। नव पाडा नगगर वसइ, मो मन सूनउ अज्ज।—ढो.मा.
पाढ-सं०पु० [?] १ वंश, कुल। उ०—नीपणां दै लाख 'लाखो' राखि जांणै नांमो। सात्रवां री पाढ कढ़ै गाढधारी 'सांमो'।—ल.पिं.
२ देखो 'पाठ' (रू.भे.) (उ.र.)
पाढ़गति—देखो 'पाडगत' (रू.भे.)
पाढि—देखो 'पाट' (रू.भे.)
पाढीक—देखो 'पाठक' (रू.भे.)
पाढो-सं०पु० [देशज] १ योग, संस्कार। उ०—पण छोरी ढूकती को होनी, गरीब नै कुण देवै। नित-नित थांरी-म्हांरी हिड़क्यां रै हाथ लगांवतै-लगांवतै छेकड़ एक जागा पाढो ढूकौ।—वरसगांठ
२ देखो 'पाट' (अल्पा०, रू.भे.)
पाणो, पाबो-क्रि०स० [सं० प्रापण, प्रा० पावण] १ पिलाना, पान कराना।—मा मूई जब एह नी, तब ए लघुतर बाल। पय पाई मोटो कियो, एम कहे भूपाल।—वि.कु.
[सं०पा] २ प्राप्त करना। उ०—१ रात दिवस होवै मन राजी, निरख पराई नारी। पढण पंढावण मोसर पायो, चूक गयो विभ-चारी।—ऊ.का.
उ०—२ मंडळ मांह वसाय म्रग, थयो कळंकी चंद। पायो सीह मयंद पद, हण हाथळ म्रग व्रंद।—बां.दा.
३ भोगना, अनुभव करना।
४ खाना, भोजन करना। उ०—भोळी भड़कावै पोळी पावै, टोळी सूं टाळंदा है।—ऊ.का.
५ समझना, तह तक पहुंचना।
६ देखना, साक्षात्कार करना।
७ किसी बात में किसी के बराबर पहुंचना।
८ समर्थ होना। उ०—जठै धणां रा कचरघांण मैं आपरा अनीक रा पद-द्रव रा प्रवाह में पड़ियो नवाब कासिमखांन १ समेत कुमार दाराशाह ४०।१।२ भी ठहरण न पायो।—वं.भा.
९ धूम्रपान कराना।
ज्यूं—साथीड़ा नै बीड़ी पांणी चाही।
क्रि०अ०—१० मिलना, प्राप्त होना।
पाणहार, हारो (हारी), पाणियो—वि०।
पायोड़ो—भू०का०कृ०।
पाईजणो, पाईजबो—कर्म वा०, भाव वा०।
पांमणो, पांमबो, पावणो, पाअबो, पावणो, पावबो, प्रांमणो, प्रांमबो
—रू०भे०।

पातंग—देखो 'पतंग' (रू.भे.)

पातंजळ-वि० [सं० पातञ्जल] पतंजल रचित, पतंजल का बनाया हुआ।
रू०भे०—पातंजळि।

पातंजळ-दरसण-सं०पु० [सं० पातंजल-दर्शन] योगदर्शन।

पातंजल-भास्य-सं०पु० [सं० पातंजल-भाष्य] एक प्रसिद्ध व्याकरण-ग्रंथ, महाभाष्य।

पातंजळसूत्र-सं०पु० [सं० पातञ्जलसूत्र] योग-सूत्र।

पातंजळि—देखो 'पातंजळ' (रू.भे.)
उ०—वैसेसिक में कणभुक सो वळ विस्तारयो। पातंजळि पाठ पतंजळि जेम प्रचार्यो।—ऊ.का.

पात-सं०पु० [सं० पात्रम्] १ कवि। उ०—जिकै वार बोले वडा पातजई। वडा वंस वाखांण हुई विहई।—सू.प्र.
२ याचक। उ०—पातां जीवन पाळगर, ग्रनदाता ग्राधार। 'जेहो' भारमल्ल रौ, भावठ भंजणहार।—बां.दा.
३ हल की फाल के नीचे लगाई जाने वाली लोहे की चक्र।
४ प्रहार, चोट। उ०—गज सीस पड़ै घड़ पड़ै गात। पड़िया किर पाहड़ वज्रपात।—सू.प्र.
५ ग्राभूपण चूड़ा ग्रादि पर सोना, चांदी ग्रादि का चढाया जाने वाला पत्तर। उ०—चुड़लौ हस्ती दांत रौ, रंग तौ सुरख नयौ। महीं चीर्यो कारीगर को यो, सोवन पात छयौ।
—रसीलैराज रौ गीत
६ पत्तरा। उ०—ग्रांम को गाडूलो घड़ ल्याय, चांदी का पात चढ़ाय।—लो.गी.
७ ग्रौरतों के पहिनने का सिर का ग्राभूपण विशेष।
८ पत्ता, पल्लव। उ०—पुहुपां मिसि एक एक मिसि पातां, खाडिया द्रव मांडिया ऊखेळि। दीपक चंपक लाखे दीघा, कोड़ि धजा फहरांणी केळि।—वेलि
९ पाई की बनावट में बान की लड़ियों का वह समूह जिसके मध्य में होकर बुनावट के लिए लड़ी को खींचा जाता है।
१० पतन।
११ 'पत' (रू.भे.)
उ०—लाडू करूं कसार को, करडी मैं राखूं पात रे। दिन दिन तो दुख से काढ दूं, वैरन हो गई रात रे।—लो.गी.
रू०भे०—पात्र।
ग्रल्पा०—पातडो, पाथू।

पातक-सं०पु० [सं०] १ पाप, कुकर्म, ग्रघ।
उ०—सूंमपणौ पातक छटौ, ग्रपजस तर ग्रांकूर। कारण इण 'वीकम' 'करण', इणसूं रहिया दूर।—बां.दा.
२ गुनाह।
रू०भे०—पातिग, पातग, पातिग, पातिगि।

पातकि, पातकी-वि० [सं० पातकिन्] १ पापी, कुकर्मी, ग्रधर्मी।
उ०—नर कोटी ही थयो तिरयंच पातकी ग्रहा कुसुम गही। गुरु एक भणे, वली कहवुं छुं हो ग्रागम मांहि, नरक वेदन फल संग्रही।
—वि.कु.
२ गुनाहगार। उ०—हेली सिळगै मो हियो, रह्यो तड़फि दिन रात। बालम दुगो विदेश में, जो दुख सह्यो न जात। जो दुख सह्यो न जात, रात बरसात की। पालै प्राणां पाव पपीहो पातकी।
—सिववक्स पाल्हावत
रू०भे०—पायकी।

पातग—देखो 'पातक' (रू.भे.)

पातड़ी-सं०स्त्री० [सं० पत्र+रा.प्र.ड़ी] १ ऊंट की नाक पर चोट लगने से होने वाली गांठ। (शेखावाटी)
२ देखो 'पतड़ी' (रू.भे.)
३ देखो 'पातड़ी' (ग्रल्पा.,रू.भे.)
उ०—बावळिया कठे रे मेलूंली थारो फूल। बावळिया कठे रे मेलूंली थारी पातड़ी।—लो.गी.
४ देखो 'पात' (ग्रल्पा.,रू.भे.)
५ देखो 'पातो' (ग्रल्पा.,रू.भे.)

पातड़ो-सं०पु० [?] १ रूंख या रौंझ का वृक्ष ग्रथवा इसका फल।
२ बबूल नामक वृक्ष की फली।
३ देखो 'पात' (ग्रल्पा.,रू.भे.)
४ देखो 'पातो' (ग्रल्पा.,रू.भे.)
५ देखो 'पतड़ो' (रू.भे.)
रू०भे०—पातरो (रू.भे.)
ग्रल्पा०—पातड़ी।

पातन-सं०पु० [सं०] पारे के ग्राठ संस्कारों में से पांचवां संस्कार।

पातर-सं०स्त्री० [सं० पात्र] १ राजस्थान में रहने वाली वेश्याग्रों में एक जाति की हिन्दू वेश्या।
उ०—कुकड़ा रौ गुण कांम, काक गुण भखण कीनो। जुध करण रो जोध, स्वांन गुण सांप्रत लीनो। ग्रणपढ़ियां में ग्रांण, खरौ गुण लीनो खर रो। धाड़ा चोरो, धरम, घमंड गुण कीनो घर रो। मद-पांन मगन मादा रहै, देय हकीमां दांन जू। परणी तज पातर रखै, खरा गुणां री खांन जू।—ऊ.का.
वि०वि०—देखो 'वेश्या'।
२ देखो 'पातरो' (मह.,रू.भे.)
३ देखो 'पातळ' (रू.भे.)
४ देखो 'पात्र' (रू.भे.)
रू०भे०—पातरु, पातुर, पात्र।
ग्रल्पा०—पातुरी।

पातरउ—देखो 'पातरो' (ग्रल्पा.,रू.भे.)
उ०—क्रिया करउ चेला क्रिया करउ, क्रिया करउ जिम तुम्ह निस्तरउ। पड़िलेहउ उपग्रण पातरउ, जयणा सुं काजउ ऊधरउ।
—स.कु.

पातरवाड़ो-सं०पु० [सं० पात्र+पाटकः] वेश्याओं का मुहल्ला।
उ०—श्री नह पीयै ऐराक अखाड़ां, पातरवाड़ां छाक पीयै। नागी खाणां भाट लियै नह, लाग नागियां वाव लीयै।
—कविराजा बांकीदास

पातरु—१ देखो 'पातरौ' (रू.भे.)
उ०—हाथे दीधुं घी नुं पातरु, मुझनइ आथेरउ वउ लावि रे।
—स.कु.
२ देखो 'पातर' (रू.भे.)

पातरौ-सं०पु० [सं० पात्र] १ जैनी साधुओं द्वारा काम में लिया जाने वाला काठ का पात्र।
उ०—मुनिवर मांडयौ पातरौ, पांणी लै पीधौ तिण वार हो। साधु जी साता पांमिया, तिरखा दीधी निवार हो।—जयवांणी
२ देखो 'पातड़ौ' (रू.भे.)
३ देखो 'पात्र' (अल्पा.,रू.भे.)
रू०भे०—पातरु, पात्रौ।
मह०—पातर।

पातळ-सं०स्त्री० [सं० पत्र] १ पत्तल, पनवारा।
उ०—तद कुंवर पांच पातळ परिसाय नै दोय पातळ आप रांणीजी नै भर तोन्ह पातळ छै सु पंखी जांनावरां नै घातै।—चौबोली
२ एक मनुष्य के खाने योग्य भोजन-सामग्री।
३ देखो 'पतळौ' (मह.,रू.भे.)
रू०भे०—पातर, पातलल।

पातलड़ी—देखो 'पातळौ' (अल्पा.,रू.भे.)
उ०—१ मिरगा घेरो नी, अम्हा जी रा ईसर जी, घेरो नी वन रा मिरगला, म्हें क्यूं घेरां, ए म्हारी गवर सांवलड़ी, गवर पातलड़ी, बाई म्हारी सोदरा सासरै।—लो.गी.
उ०—२ थे तो वण जाज्यौ वारिया, मारुजी, मैं पातलड़ी पणिहार। थे तो वण जाज्यौ कीलिया मारुजी, मैं पातलड़ी छकियार।
—लो.गी.

पातळचट्ट, पातळचट्टौ-वि०यौ० [सं० पात्र+रा० चट्टौ] (स्त्री० पातळचट्टी) १ स्वार्थी, धोखेबाज। २ खुशामदखोर, चापलूस।

पातळपेटी-वि० [सं०पत्राळ+पेट+रा.प्र.ई] पतले पेट वाली, कृशोदरा।
उ०—दीरघ नेसां री छांणां तप देती। लांबा केसां री दांणा लप लेती। वेगी छेटी विन भेटी भुज भारी। पातळपेटी निज वेटी सम प्यारी।—ऊ.का.

पातळियौ—देखो 'पतळौ' (अल्पा.,रू.भे.)
उ०—हेमाचळ जी री गवरळ डोकरी हां जी रे! वा पातळिये ईसर घर नार।—लो.गी.

पातळौ-वि०स्त्री० [सं० पत्राल] पतली, कृश, कृशांगी, सुन्दर।
उ०—१ जांघड़ली मूमल री देवळिये रौ थंभ ज्यौं हांजी रे, साथड़ली सपीठी पींडी पातळी, म्हांजी माड़ेची मूमल, हाले नी रे आलीजे रै देस।—लो.गी.
उ०—२ पायेलवाळी, पातळी गोरी इन गळियां मत आव। तेरी पायल वाजणी, छैला रौ बुरौ सुभाव।—लो.गी.
अल्पा०—पातलड़ी, पातलोड़ी।

पातली-सं०स्त्री० [देशज] मटकी (डि.को.)
अल्पा०—पतोलड़ी, पतोली, पातलड़ी।

पातळौ-वि० [सं० पत्राल] १ कम उपजाऊ (भूमि, खेत)
उ०—दुधवड़ थी तीखा २, वीठारा रै मारग खेड़ो छै। दिखण नुं नाडी खेजड़नडी, खेत पातळा।—नैणसी
२ देखो 'पतळौ' (रू..भे.)
उ०—१ कोमळ राता पातळा, अधर जिकांरा ईख। अभिलासै पीवण अमर, सुधा जांम दे सीख।—वां.दा.
उ०—२ ताहरां प्रथवीराज कह्यौ-जीवै महाराज! ऐ हीज छै। तरै रावजी कह्यौ-मेड़तै प्रधांनां रा पग पातळा भाई।—नैणसी
उ०—३ घाल घणा घर पातळौ, आयौ घह में आप। सूतौ नाहर नींद सुख, पौहरौ दियै प्रताप।—वां.दा.
(स्त्री० पातळी)
३ देखो 'पाटलौ' (रू.भे.)

पातसा—देखो 'वादसाह' (रू.भे.)
उ०—वा उण नै फटकारती वोली-मूरखां रा पातसा गुफा ई कदै ई वोलै।—फुलवाड़ी

पातसाई—देखो 'वादसाही' (रू.भे.)

पातसाह—देखो 'वादसाह' (रू.भे.)
उ०—नाथावतां री वूंदी री प्रोळ वडी तरवार राव 'रतन' काळ कियौ, तरै सो नाहरखांन राघवदासोत पातसाह जहांगीर रै चाकर हुऔ।—नैणसी

पातसाही—देखो 'वादसाही' (रू.भे.)
उ०—सद मांडव रो पातसाही पातसाह गोरी हुसंग भोगवै।
—नैणसी

पातस्या—देखो 'वादसाह' (रू.भे.)
उ०—दिली रा हरोळ 'क्रन' तणा रायसिंघ दूजा, सिंधु भुजा पूजै भड़ां पातस्या सिपाय।—अमरदास वारहठ

पातस्याई, पातस्याही—देखो 'वादसाही' (रू.भे.)
उ०—नवे लाख घोड़ा तणी; पातस्याही तणी नेकी। एकै राजा 'क्रन' वंधे दुहुं भुजां आय।—अमरदास वारहठ

पाता—देखो 'पातावत' (.रू.भे.)

पाताळ-सं०पु० [सं० पाताल] १ पृथ्वी के नीचे का सातवां लोक।
उ०—राजा तीं सूअर रै पाछै आय गुफा में गया। सो पाताळ लोक जाय नीसरिया।—सिंघासण वत्तीसी
पर्या०—अधोभुवन, अवट, कुहर, गरट, गरत, जळनीवांण, नागलोक, निरवांण, रसातळ, विवर।

२ छंद शास्त्र में वह चक्र जिसके द्वारा मात्रिक छंदों की संख्या, लघु, गुरु, कला आदि का ज्ञान होता है ।

रू०भे०—पताळ, पताळि, पयार, पयाळ, पयाळि, पायाळ, पियाळ, पियाळ, पीयार, पीयाळ ।

अल्पा०—पताळियौ, पाताळियौ ।

यौ०—पाताळखंड, पाताळगरुड़ी, पाताळगरुड, पाताळगारुड़ी, पाताळजंत्र, पाताळपती, पाताळसींगी, पाताळसिद्धि ।

पाताळखंड-सं०पु० [सं० पातालखंड] पाताल लोक ।

रू०भे०—पताळखंड ।

पाताळगरुड़ी, पाताळगरुड, पाताळगरुड़ी-सं०स्त्री० [सं० पातालगरुड] एक प्रकार की लता जिसके पत्तों के रस से पानी जम जाता है ।

रू०भे०—पताळगारुड़ी ।

पाताळजंत्र-सं०पु० [सं० पातालयंत्र] कड़ी औषधियां पिघलाने या उनका तेल निकालने का यंत्र ।

रू०भे०—पताळजंत्र ।

पाताळतुंबी-सं०स्त्री०यौ० [सं० पातालतुम्बी] पीले रंग के बिच्छू के डंक जैसे कांटों वाली लता विशेष ।

पाताळदंती-स०पु० [सं० पाताल+दंती] वह हाथी जिसका दांत नीचे की ओर झुका हुआ होता है ।

रू०भे०—पताळदंती ।

पाताळपती-सं०पु० [सं० पाताल+पति] शेषनाग ।

पाताळसींगी-सं०स्त्री० [सं० पाताल+शृंग+रा.प्र.ई] नीचे की ओर मुड़े हुए सींगों वाली भैंस ।

रू०भे०—पयालसींगी ।

पाताळसिद्धि-सं०स्त्री० [सं० पातालसिद्धि] बहत्तर कलाओं में से एक कला ।

पाताळियौ—१ देखो 'पताळियौ' (रू.भे.)

२ देखो 'पाताळ' (अल्पा., रू.भे.)

पातावत—राठौड़ वंश की एक उप शाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।

रू०भे०—पांता, पांतावत, पातावत, पाता ।

पाति—देखो 'पाती' (रू.भे.)

पातिक, पातिग, पातिगि—देखो 'पातक' (रू.भे.)

उ०—१ नाम नै गोत्र सुणियां थकां, पातिक जाव परा दूर रे । साजे ही मन आराधतां, त्यांरे ही गति देवै चूर रे ।—जयवांणी

उ०—२ आवै है आराधै आई, भाई हे दाखं भहरि । 'पीरीयै' तणै उतारै पातिग, सायां रै वसिया सहरि ।—पी.ग्रं.

उ०—३ पीरदास तणै अक्रम प्रगळ, सिंचिआ घणो सुधारियो । आगिमिणि न आ अनंत रे, हरि पातिगि सोहारियो ।

—पी.ग्रं.

पातिव्रत—देखो 'पतिव्रत' (रू.भे.)

पातिव्रत—देखो 'पतिव्रत' (रू.भे.)

पातिसा, पातिसाह—देखो 'बादसाह' (रू.भे.)

उ०—१ नमो तुरक संख्या घणो त्रेस्ट मग्गो । नतिर्णा तणो पातिसा रयाति तग्गो ।—मे.म.

उ०—२ अहमदानगर आसेरगढ़, पातिसाह पालट्टिया । पूरब-पच्छिम उत्तर दखण, च्यार चक्क चकवै लिया ।—गु.रू.बं.

पातसाही—देखो 'बादसाही' (रू.भे.)

उ०—एक हूं करत रस, धरतो कोप 'सूरद', बेहद्दा पद्दा करंतो चरंतो दुवाह । 'सूर' ही करै सराह पातसाही बांसै पूरो, वाह वाह बीकानेरै तणो हयवाह ।—दूदो मोड़ू

पातिस्या, पातीस्या—देखो 'बादसाह' (रू.भे.)

पातिस्याही—देखो 'बादसाही' (रू.भे.)

पाती-सं०स्त्री० [सं० पत्री] १ तलवार (डि.को.)

२ स्वर्णकार का औजार विशेष जो लड़ बांधने के काम में आता है ।

३ लोहे व अन्य धातु की पतली सीरी, पत्ती ।

४ देखो 'पत्र' (१) (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—१ दादू पाती प्रेम की, विरळा बांचै कोइ । वेद पुरांण पुस्तक पढ़ै, प्रेम बिना क्या होइ ।—दादूवांणी

उ०—२ वनस्पती, कंदमूल, घास व फळफूल सह दळिया, नीली पाती न रही ।—डाढाळा सूर री बात

पातुर—देखो 'पातर' (रू.भे.)

उ०—पातुर नाचए परम दुवार, मेरो माय भलो ए राजन पार उतार ।—लो.गी.

पातुरी—देखो 'पातर' (अल्पा., रू.भे.)

पातौ-सं०पु० [सं० पात्र] १ मिट्टी का बना बड़ा बर्तन विशेष ।

२ स्त्रियों के कंठ में पहिनने का आभूषण विशेष ।

रू०भे०—पतर ।

३ राठौड़ों की पातावत शाखा का व्यक्ति ।

उ०—ऐ पाता ताता अवतांणै । काज घणो वाजै केवांणै ।

—रा.रू.

पात्र-सं०पु० [सं०] १ वह वस्तु जिसमें कुछ रखा जा सके, बर्तन, भाजन ।

२ किसी वस्तु या विषय का अधिकारी व्यक्ति ।

उ०—१ वळिबंधण सुक स्याळ सिंघ वळि, प्रासै जो बीजो परणै । कपिळ धेनु दिन पात्र कसाई, तुळसी करि चांडाळ तणै ।

—बेलि

उ०—२ इतरे लाभ बधूळो आवै, कहर क्रोध दंडूळ कहावै । दिल पर काम धुंध नभ छावै, पात्र विवेक निजर नह आवै ।

—ऊ.का.

३ नाटक के नायक नायिका आदि ।

उ०—आठ पुहर नित पूजा करइ, ईडे ध्वजा वस्त्र फरहरइ । वलतइ

वारि हुइ नितु जात्र, नाटक नृत्य नचावइ पात्र ।—कां.दे.प्र.

यौ०—कुपात्र, कृपापात्र, दायापात्र, दानपात्र, सिक्षापात्र, सुपात्र ।

४ देखो 'पत्र' (रू.भे.)

५ देखो 'पातर' (रू.भे.)

उ०—नगर मांहिइ नवि नाचइ पात्र, नेसालइ भणइ नहीं छात्र । न पोसाळइ करइ वखांण, इस्ट गोस्टी न करइ सुजांण ।

—नळदवदंती रास

६ देखो 'पात' (रू.भे.)

उ०—'प्राग' हरी पात्रां परिपाळग, मोटां दांन दिग्रण मन मोट । पह समराथ हाथ जग ऊपरि, कयावरि 'करन' करम री कोट ।

—ल.पिं.

पात्रता-सं०स्त्री० [सं०] १ पात्र होने का भाव ।

२ योग्यता, भाजनता ।

पात्रौ—देखो 'पातरौ' (रू.भे.)

उ०—जद स्वांमीजी बोल्या—म्हारै तौ पात्रा रंगीयाई है थारै संका हुवै तौ तूं मत रंग ।—भि.द्र.

पाथ-सं०पु० [सं० पाथं] १ जल, पानी (अ.मा., ह.नां.मा.)

२ देखो 'पत्थर' (रू.भे.)

उ०—जांनकी नाथ गिरतार पाथ । सो हूं समाथ भवसिंघु सार ।

—र.ज.प्र.

३ देखो 'पंथ' (रू.भे.)

उ०—नमो हरिरांम नमौ निज नांम, गुरु हरिरांम नमो ग्रह गांम । मही हरि रांम नमौ जिन मात, पिता हरिरांम नमौ धिन पाथ ।

—ऊ.का.

४ देखो 'पारथ' (रू.भे.) (अ.मा., डिं.को.)

उ०—सीलका गंगेव भारथ का पाथ । नरुका जंवहरी, जोधांण का नाथ ।—सू.प्र.

५ देखो 'पथ' (रू.भे.)

पाथनाथ-सं०पु० [सं०] समुद्र ।

पाथनिधि-सं०पु० [सं० पाथोनिधि] समुद्र ।

पाथर—१ देखो 'पत्थर' (रू.भे.) (अ.मा., डिं.नां.मा.)

उ०—१ पांन खांन हित भाव सपूरति । मुख बोलि पाथर रची मूरति ।—सू.प्र.

उ०—२ महाराज हिवै कळयुग आयौ । ईंडौ पाथर री कराईजै । राजा वात मांनी, पाखांण री ईंडौ करायौ ।—चौबोली

२ देखो 'पथरणौ' (मह.,रू.भे.)

उ०—तुंडां गज, फेटां तुरी, डाढां भड ओभाड । हेकण कोळै धूंदिया, फौजां पाथर पाड ।—वी.स.

पाथरणि—देखो 'पथरणौ' (अल्पा.,रू.भे.)

उ०—ग्रह पुहुप तणौ तिणि पुहपित ग्रहणौ, पुहपई ओढ़ण पाथरणि । हरखि हिंडोळि पुहपमै हिंडति, सहि सहचरि पुहपां सरणि ।—वेलि

पाथरणौ—देखो 'पथरणौ' (रू.भे.)

पाथरणौ, पाथरबौ-क्रि०स० [सं० प्रस्तरणम्] १ फैलाना, बिछाना ।

उ०—१ पग-पग-कांटा पाथरं, वादीलो वनराय । होणी ज्यूं ल्यूं होवसी, दियं न हींणी दाव ।—बां.दा.

उ०—२ मुखमल री सवङ्ग पाथरी, माहे पाथरियउ रेसम री पाट । कळ पदम करि चिहुं किनारे, थरकाई वेहां फर थाट ।

—महादेव पारवती री वेलि

२ धराशायी करना, मारना ।

उ०—कूरम किता धुमाड़ा 'कान्हा', उतवंग आगड़ियै अनड़ । सारे फेरि कीया सत्र पाथर, घड़ा तीन बाईस घड़ ।

—कीरतसिंघ वळभद्रोत कछवाहा री गीत

पाथरणहार, हारौ (हारी), पाथरणियौ—वि० ।

पाथरिओड़ौ, पाथरियोड़ौ, पाथरयोड़ौ—भू०का०कृ० ।

पाथरीजणौ, पाथरीजबौ—कर्म वा० ।

पथरणौ, पथरबौ—रू०भे० ।

पाथराणौ, पाथराबौ—देखो 'पथराणौ, पथराबौ' (रू.भे.)

पाथराणहार, हारौ (हारी), पाथराणियौ—वि० ।

पाथरायोड़ौ—भू०का०कृ० ।

पाथराईजणौ, पाथराईजबौ—कर्म वा० ।

पाथरायोड़ौ—देखो 'पथरायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० पाथरायोड़ी)

पाथरावणौ, पाथराबबौ—देखो 'पथराणौ, पथराबौ' (रू.भे.)

पाथरावणहार, हारौ (हारी), पाथरावणियौ—वि० ।

पाथराविओड़ौ, पाथरावियोड़ौ, पाथराव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

पाथरावीजणौ, पाथरावीजबौ—कर्म वा० ।

पाथरावियोड़ौ—देखो में 'पथरायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० पाथरावियोड़ी)

पाथरी—१ देखो 'पाथरौ' (अल्पा०, रू.भे.)

२ देखो 'पथारी' (रू भे.)

पाथरौ-सं०पु० [सं० प्रस्तरणम्] १ खेत में कटे हुए अनाज के पौधों का ढेर ।

अल्पा०—पाथरी

पाथारी-सं०स्त्री० [सं० प्रस्तरणम्] १ गोष्ठी ।

२ घास की गंजी या ढेरी ।

३ देखो 'पथारी' (रू.भे.)

पाथियौ-सं०पु० [सं० पथक या पथिक] राहगीर ।

उ०—नाउ सांमा आवतौ, दरपण लीयां हाथ । सुकन विचारौ पाथियां, सम्मत आवै साथ ।—अज्ञात

पाथिव—देखो 'पारथिव' (रू.भे.) (डिं.नां.मा.)

पाथू—१ देखो 'पात' (अल्पा.,रू.भे.)

२ देखो 'पाथ' (अल्पा.,रू.भे.)

उ०—पाथू माछ पनग गज पंखी, किहीं न बीजं सेव करंत । राउळ

समंद मळेतर रेवा, मांनसरोवर मन मांनंत ।—ईसरदास बारहठ

३ देखो 'पथक' (अल्पा.,रू.भे.)

पाथेय-संपु० [सं०] राह में खाने के लिए राहगीर द्वारा ले जाया जाने वाला भोजन, मार्ग का कलेवा ।

रू०भे०—पाहेय ।

पाथोज-सं०पु० [सं०] कमल ।

पाथोद-सं०पु० [सं०] १ मेघ, बादल ।

उ०—तेज हाकनीर पूर पाथोद पाड़िया तसा, नगांद्र ताडिया ज्यूं खगेंद्र बंधे नेत । पवैं पंख वडूजा झाड़िया वोम वज्र-पात, ताळा थाट दूजे 'दलै' बभाड़िया खेत ।—हुकमीचंद खिड़ियो

२ समुद्र (डि.को.)

पाथोधर-सं०पु० [सं०] बादल, मेघ ।

पाथोधि, पाथोनिधि, पाथोनिधी-सं०पु० [सं० पाथोधि, पाथोनिधि] समुद्र, सागर ।

उ०—अकबर मच्छ अयांण, पूंछ-उछाळण बळ प्रवळ । गोहिलवत गहरांण, पाथोनिधी 'प्रतापसी' ।—दुरसो आढ़ो

पाथोरुह-सं०पु० [सं०] कमल ।

पाद-सं०पु० [सं० पर्दः] १ गुदा मार्ग से निकलने वाली वायु, अपान वायु ।

उ०—वाद अो विवाद को सवाद तें सह्यो । राव रौ निनाद ऊंट पाद ज्यूं गयो ।—ऊ.का.

[सं०] २ पैर, चरण ।

उ०—अगहर उद्धारक ते भवतारक, खारक दास सुपंदा है । ले स्वाद लुभावैं पाद पुजावैं, घट में नाद धुरंदा है ।—ऊ.का.

पादक-सं०पु० [सं०] आभूषण विशेष ।

उ०—हस्त संकलिका पाद संकलिका उतरिका, पादक ग्रैवेयक सत्त ।
—व.स.

पादचारी—देखो 'पदचारी' (रू.भे.)

पादटीका-सं०स्त्री० [सं०] किसी ग्रंथ के पृष्ठ के नीचे लिखी गई टिप्पणी, फुटनोट ।

पादण-सं०स्त्री० [सं० पर्दनम्] वह स्त्री जो अपान वायु निकाले ।

पादणो-सं०पु० [सं० पर्दनम्] (स्त्री० पादण) वह पुरुष या बैल जो वार-बार अपान वायु निकाले ।

पादणो, पादबो-क्रि०स० [सं० पर्द] गुदा से वायु बाहर निकालना, अपानवायु निकालना ।

उ०—होको होर्डै हाथ लटकतो खटियो लारै । पड़ पड़ पादै पाद नोंप जिम पड़ी नगारै ।—ऊ.का.

पादणहार, हारो (हारी), पादणियो—वि० ।

पादिओड़ो, पादियोड़ो, पादयोड़ो—भू०का०कृ० ।

पादीजणो, पादीजबो—भाव वा० ।

पादतळ—देखो 'पदतळ' (रू.भे.)

पादत्र-सं०पु० [सं०] १ जूता, जूती । २ पड़ाऊ ।

पादत्राण-सं०पु० [सं० पादत्राण] जूता, उपानह (डि.को.)

रू०भे०—पायत्रांण ।

पाददाह-सं०पु०यौ० [सं०] पैरों के तलवे में जलन का रोग ।

पादप-सं०पु० [सं०] वृक्ष, पेड़ (डि.को.)

पादपूरण-सं०पु०यौ० [सं०] किसी कविता के पद (चरण) को पूरा करना ।

पादपोस-सं०पु० [फा० पा—पोश अथवा सं० पाद+फा० पोश] जूता, पगरखी ।

रू०भे०—पायपोस ।

पादर—देखो 'पाधर' (रू.भे.)

उ०—गांव रै अड़ोअड़ एक खेत आयोड़ो—पादर, गांव नै खेत रै विचाळै फगत एक बाड़ ।—रातवासो

पादरी-सं०पु० [पुर्त०—पॅद्रे] १ ईसाई धर्म का पुरोहित ।

२ देखो 'पाधरी' (रू.भे.)

पादरो—देखो 'पाधरो' (रू.भे.)
(स्त्री० पादरी)

पादवंदन-सं०पु० [सं०] पैर पकड़ कर प्रणाम करने की क्रिया ।

पादवेस्टक-सं०पु० [सं० पादवेष्टक] पैर में धारण करने का आभूषण विशेष ।

उ०—लघुचूड़क, मुक्ताचूड़क, सुवरण्णचूड़क, मोतीसरी, करंगो, कंकणी, पादवेस्टक, पोलरकत्रिक, चतुसरक, नवसरक, अस्टादससरक इति आभरणानि ।—व.स.

पादसंकळिका-सं०स्त्री० [सं० पादशृंखलिका] पैर का आभरण विशेष ।

उ०—संकलिक, सवणपीठ, सवणमाल, वैंस्टिक, हस्तसंकलिका, पादसंकलिका, उत्तरिका पादक'''।—व.स.

पादसाखा-सं०स्त्री० [सं० पादशाखा] पैर की अंगुलि ।

पादसाह—देखो 'बादशाह' (रू.भे.)

उ०—पांमीयउ परमाणद ततक्षण, हुकम दिखहो नउ कियउ । अत्यंत आदर मांन गुरु नैं, पादसाह अकबर दियउ ।—स.कु.

पादहरस-सं०पु० [सं० पादहर्ष] पैरों में झुनझुनाहट उत्पन्न करने वाला एक रोग विशेष (अमरत)

पादहिता-सं०स्त्री० [सं०] पदरक्षिका, जूती, उपानह ।

पादांकुळक—देखो 'पादाकुळक' (रू.भे.)

पादाअंगद-सं०पु० [सं०] नूपुर (अ.मा.)

पादाकांतो-वि०[सं०] पैरों से कुचला या रौंदा हुआ, पददलित ।

उ०—पादाकांतो पदकांतो विन पावै । आरचावरतो जन अन विन अकुळावै ।—ऊ.का.

पादाकुळक, पादाकुळति, पादाकूलक-सं०पु० [सं०] प्रत्येक चरण में सोलह मात्रा और अंत में गुरु वर्ण वाला मात्रिक छंद ।

रू०भे०—पदाकुळक, पादांकुळक, पादकुळक ।

पादारवंद, पादारव्यंद-सं०पु० [सं० पादारविन्द] चरणकमल ।

उ०—'किसन्नेस' आखै अरज्जी कविंदं। वडो आसरो रांम पादार-ब्यंदं।—र.ज.प्र.

पादियोड़ो-भू०का०कृ०—गुदा से वायु बाहर निकाला हुआ, अपान वायु निकाला हुआ।

(स्त्री० पादियोड़ी)

पादुका-सं०स्त्री० [सं०] १ खड़ाऊ।

२ जूती।

३ देखो 'पगलिया'।

उ०—जरगा ऊपर राजा हरिचंद री थापी गुसांई री पादुका छै। तठै त्रिसूळ छै।—नैणसी

रू०भे०—पाउग, पाउगा।

पादोदक—देखो 'पदोदक' (रू.भे.)

पादोदर-सं०पु० [सं०] सर्प, सांप।

पादोरणौ, पादोरबौ—देखो 'पाधोरणौ, पाधोरबौ' (रू.भे.)

पादोरियोड़ो—देखो 'पाधोरियोड़ो'।

(स्त्री० पादोरियोड़ी)

पादौ-सं०पु० [सं० पर्दः] (स्त्री० पादी) वह पुरुष जो अधिक अपान वायु निकालता हो।

पाद्रि—देखो 'पाधरी' (रू.भे.)

उ०—आवी पाद्रि सईफलउं मांडचउं, लीधा चउपट घाउ। सोरठीया राउत सपरांणा, न दीइ पाछा पाउ।—कां.दे.प्र.

पाधड़ी—देखो 'पद्धरी' (रू.भे.)

पाधर-वि० [?] १ पालतू। उ०—नीठर नेमि गदाधरु पाधर सीह विमासि। परि अ सरीसीय मांडइ ए मांडइ ए पाडिसु पासि।

—जयसेखर सूरि

२ अनुकूल। उ०—दीहा पाधर वंक गय, भुज घरियै कुळ भार। चोळ वरन्न लोचने, आयौ आप दुवार।—गु.रू.बं.

सं०पु०—१ समतल भूमि, खुला मैदान, सपाट मैदान।

उ०—१ भंवरचो फुरणी में भंवराळो भळकै। पाधर वहती रा पसवाड़ा पळकै।—ऊ.का.

उ०—२ उठै निराठ पाधर छै और भूमि निराठ दूरी छै।

—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

सं०पु०—१ तरवार (डि.को.)

उ०—लोक जठै रंको नहीं, नंह संको पर-थाट। सोढां जस डंको घुरै, पाधर वंको घाट।—बां.दा.

२ देखो 'पाधरौ' (मह., रू.भे.)

उ०—पाधर अकबर सूं 'पतौ', विढे इसौ वरियांम। सो गाजै चीतोड़ सिर, की इचरज रौ कांम।—बां.दा.

रू०भे०—पद्धर, पद्धरयं, पधर, पादर।

पाधरणौ, पाधरबौ—देखो 'पाधोरणौ, पाधोरबौ' (रू.भे.)

पाधरणहार, हारौ (हारी), पाधरणियो—वि०।

पाधरिओड़ो, पाधरियोड़ो, पाधरयोड़ो—भू०का०कृ०।

पाधरीजणौ, पाधरीजबौ—कर्म वा०।

पाधरपतसा-सं०पु० [राज० पाधर+फा० बादशाह] १ कछवाहा वंश के अंतर्गत नरूका शाखा के राजपूतों का विरुद।

२ खुले मैदान में युद्ध करने वाला वीर।

रू०भे०—पद्धरपति, पद्धरपती।

पाधरसलो-वि० [राज. पाधर+अ. सलाह] १ प्रासादगुणयुक्त (कविता)।

उ०—पह सर आखर पाधरा, वापार पढाणां। पाधरसला दूहड़ा, कै दीह रहांणा।—मयारांम दरजी री बात

२ सीधे व सरल स्वभाव का व्यक्ति।

पाधरियोड़ो—देखो 'पाधोरियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० पाधरियोड़ी)

पाधरी-वि० [?] १ सीधी, सरल।

रू०भे०—पद्धरी, पादरी, पाद्री।

२ देखो 'पद्धरी' (रू.भे.)

पाधरौ-वि० [?] (स्त्री० पाधरी) १ जिसमें फेर या घुमाव न हो, अवक्र, सीधा।

उ०—वंबौ इंदर पौढियो, काळो दवकै काय। पूंगी ऊपर पाधरो, आवै भोग उठाय।—वी.स.

२ जो किसी ओर ठीक प्रवृत्त हो, ठीक लक्ष्य की ओर हो।

उ०—न्याय री सीख न मांनै अनै अजोगाई अन्याय करै तिणनै पाधरो करवा ऊपर स्वांमीजी द्रस्टांत दियो।—भि.द्र.

३ जो कुटिल या कपटी न हो।

उ०—बेटी 'रायधण' मोयै दायजै मांगै। पण आपा पाधरा रज-रजपूत छां।—रायधण री वारता

४ जो विरुद्ध न हो, अनुकूल।

उ०—गाहै गजराजां गुड़ां, रुहिर मचावै कीच। ज्यांरै नव-ग्रह पाधरा, जे वंका रण बीच।—बां.दा.

५ जिसका करना कठिन न हो, आसान।

६ शांत, सुशील, शिष्ट।

उ०—एक रजपूत रावतजी की हजूर रहै। जको आदमी तो पाधरो सो। पण मोटियार पगछंटो सो।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

७ जो जल्दी समझ में आवै, दुर्बोध न हो।

८ देखो 'पाधर' (मह०, रू.भे.)

रू०भे०—पद्धरौ, पादरौ।

मह०—पधर, पध्धर।

पाधारणौ, पाधारबौ—देखो 'पधारणौ, पधारबौ' (रू.भे.)

उ०—१ आखइ ताइ सती अरज करि आगळि, निज अवधार अनाथांनाथ। पाधारउ राजांन जियइ पुर, सांम मोनइ ही लीजइ साथ।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ परणीजै पाधारियौ, सांभर 'अजन' सुजाव। जस सांभळि रीजै जवन, रीझै मुरधरराव।—रा.रू.

पाधारणहार, हारौ (हारी), पाधारणियौ—वि०।

पाधारिश्रोड़ो, पाधारियोड़ो, पाधारयोड़ो—भू०का०कृ०।

पाधारीजणी, पाधारीजबौ—भाव वा०।

पाधारियोड़ो—देखो 'पधारियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० पाधारियोड़ी)

पाधोर-वि० [? सीधा लक्ष्य पर निशान लगाने वाला।

उ०—वांको विचित्त पाधोर वंक। तांणइ कमांण पइंतीस-टंक।

—रा.ज.सी.

सं०स्त्री०—सीध।

पाधोरणौ, पाधोरबौ-क्रि०स० [सं० उपाधोरणम्] १ दंड देकर सीधा करना।

उ०—पह 'सूजो' पाधोरियौ, 'श्रोरंग' लियौ उबार। पतसाही रासी पगे, 'केहर' राज कुंवार।—द.दा.

२ युवा बैल को हल, गाड़ी आदि में जोतने को अभ्यस्त करना, हिलाना।

पाधोरणहार, हारौ (हारी), पाधोरणियौ—वि०।

पाधोरिश्रोड़ो, पाधोरियोड़ो, पाधोरयोड़ो—भू०का०कृ०।

पाधोरीजणौ, पाधोरीजबौ—कर्म वा०

पाधरणौ, पाधरबौ—रू०भे०

पाधोरियोड़ो-भू०का०कृ०—१ दण्ड देकर सीधा किया हुआ।

२ युवा बैल को हल, गाड़ी आदि में जोतने को अभ्यस्त किया हुआ, हिलाया हुआ।

(स्त्री० पाधोरियोड़ी)

पाधोरौ-वि० [?] (स्त्री० पाधोरण) १ दंड देकर सीधा करने वाला।

२ युवा बैल को हल, गाड़ी आदि हेतु अभ्यस्त करने वाला।

३ अचूक निशानेबाज।

पाधो-सं०पु० [सं० उपाध्याय] पंडित, ब्राह्मण।

(शेखावाटी)

पाप-सं०पु० [सं०] १ वह कार्य जिसका फल इस लोक व परलोक में अशुभ हो, निंदित काम। उ०—धोळा बुगला ध्यांन लगावै, खावै मछियां खूब। पापी पल पल पाप कमावै, डबके जावै डूब।—ऊ.का.

दुष्कर्म। उ०—पाप जिता तू पलक में, सुरसरी हरण समत्थ। इता पाप ऊमर महीं, सो कुण करण समत्थ।—बां.दा.

मुहा०—१ पाप उदय होणौ—संचित पाप का फल मिलना, बुरे दिन आना।

२ पाप कटणौ—पाप का नाश होना, अच्छा समय आना।

३ पाप काटणौ—पाप से मुक्त करना, नष्ट करना।

४ पाप कमाणौ—पाप कर्म करना, झूठ कपट छल आदि को अपने जीवन में स्थान देना।

५ पाप प्रगटणौ—देखो 'पाप उदय होणौ'।

६ पाप री धूप—क्षणिक, अस्थायी।

७ पाप लागणौ—अपराध होना, बुरे कर्म का बुरा परिणाम भोगना, कलंक लगना।

२ दुर्भाग्य। उ०—रोग सोक दुख पाप रिण, ऐ मत करो प्रवेस। रहौ अनीत अनीत बिण, दाता हंदै देस।—बां.दा.

४ वध, हत्या।

५ बुरी नीयत, खोट, हीनभावना।

उ०—हरसा समरथ मोधी रे, जे तूं रांनेला पेटै पाप। श्रोदर का रे लोटघा, दरगा में दांवणगिरियां रे बापूं।—लो.गी.

६ अनिष्ट, अहित, बुराई।

७ झंझट, जंजाल।

मुहा०—१ पाप कटणौ—झगड़ा दूर होना।

२ पाप काटणौ—झगड़ा मेटना।

३ पाप मोल लेणौ—झंझट में पड़ना, बखेड़े में पड़ना।

४ पाप पलै पड़णौ—व्यर्थ का झंझट सिर पड़ना।

५ पाप मिटणौ—झंझट हटना।

६ पांच मात्रा के आठ भेदों में से पांच लघु मात्रा का नाम।

(र.ज.प्र.)

७ दुखद वर्णन* (डि.को.)

८ अटल* (डि.को.)

९ तप्त वर्णन* (डि.को.)

१० कृष्ण वर्णन* (डि.को.)

रू०भे०—पापि, पापु, पाब।

अल्पा०—पापौ।

पापड़यौ—देखो 'पपड़यौ' (रू.भे.)

पापकरण-सं०पु० [सं०] शिकार, आखेट (डि.को.)

पापकरम-सं०पु० [सं० पापकर्म] अनुचित या बुरा काम, कुकर्म, दुष्कर्म।

पापकरमी-सं०पु० [सं० पापकर्मिन्] (स्त्री० पापकरमणी) पापी, कुकर्मी।

पापक्षय, पापखै-सं०पु० [सं० पापक्षय] १ पापों के नष्ट होने की क्रिया।

२ वह स्थान जहां जाने से पाप नष्ट हो जाते हैं, तीर्थ।

पापगण [सं०] छन्द शास्त्र के अनुसार ठगण का आठवां भेद (डि.को.)

पापग्रह-सं०पु० [सं०] १ कृष्णपक्ष की दशमी से शुक्लपक्ष की पंचमी तक का चन्द्रमा (ज्योतिष)

२ फलित ज्योतिष के अनुसार सूर्य, मंगल, शनि, राहु और केतु-ग्रह।

पापड़-सं०पु० [सं० पर्पट, प्रा० पप्पट] १ उर्द, मूंग, मोठ आदि की धोई दाल के आटे में मसाला आदि मिला कर बनाई गई पतली

(इसका आटा क्षारयुक्त पानी में गूंदा जाता है)

उ०—१ फोग, कैर काचरफळी, पापड़ घेघर पात। बड़ियां मेलै बांणियां, सांगरियां सोगात।—बां.दा.

उ०—२ पापड़ पापड़ी नां साक, सेक्या पापड़ तल्या पापड़, बघारचा पापड़...।—व.स.

वि०वि०—इसको प्रायः भोजन के पश्चात् आग पर सेक कर अथवा तेल या घी में तल, खाने के काम में लेते हैं। हिन्दुओं-विशेष कर नागरिकों के भोज में पापड़ एक आवश्यक खाद्यपदार्थ है।

२ एक प्रकार का वृक्ष जिसकी लकड़ी इमारती होती है।

वि०—१ बारीक, पतला।

२ सूखा, शुष्क।

अल्पा०—पप्पड़ो, पापड़ियो।

पापड़ी-सं०स्त्री० [सं० पर्पटी] १ बंबूल की फली।

उ०—बांवळ्या कुण रै सरीसो थारो फूल, बांवळ्या कुण रै सरीसी थारी पापड़ी। गोरी ए सोनै सरीसो म्हारो फूल, रूपै सरीसी म्हारी पापड़ी।—लो.गी.

२ एक प्रकार का खाद्य पदार्थ। उ०—सेव सूंहाली लाडू गल्या, आछा मांडा पापड़ तल्या। खाजे खड़क सालणे वड़ी, कूर कपूर तली पापड़ी।—कां.दे.प्र.

३ एक प्रकार का वृक्ष विशेष।

४ देखो 'पपड़ी' (रू.भे.)

उ०—कोई कोई जगै थोड़ो घास ही ऊगै, पण पांण सूक्यां पछै लूण री पापड़्यां जम जावै।—रातवासो

पापड़ो-खार-सं०पु० [सं० पर्पटक्षार] केले के पेड़ का क्षार, क्षार विशेष। (अमरत)

पापड़ो-सं०पु० [देशज] १ स्कंध की वह हड्डी जो पीठ की ओर रीढ एवं बाहुमूल के बीच में स्थित है। कंधे की हड्डी।

रू०भे०—पुट-पड़ो।

२ देखो 'पापड़' (मह०, रू.भे.)

पापड़ो-कायो-सं०पु० [सं० पर्पट+क्वाथ] एक प्रकार का कत्था (अमरत)

पापचंद्रमा-सं०पु० [सं० पापचंद्रमा] विशाखा के अंतिम चरण से जेष्ठा के अन्तिम चरण तक का चंद्रमा (फलित ज्योतिष)

पापचर-वि० [सं०] पापी, पाप करने वाला।

पापचारी-वि० [सं० पापचारिन्] (स्त्री० पापचारिणी) पापी, पातकी।

पापजूंण-सं०स्त्री० [सं० पापयोनि] पशु-पक्षी आदि की योनि, पाप योनि।

पापण, पापणी-वि० [सं० पापिनी] पाप में रत, पापिनी।

उ०—१ पापण जा पाछीह, हव तो मारयां स्यूं हुवै। आंण करी आछीह, पावू नै कुण पाळसी।—पा.प्र.

उ०—२ जद ब्राह्मण बोल्या—हे पापणी! म्हांनै भ्रस्ट किया। अबै गंगाजी जाय स्नांन पांणी रा लेप करी सुद्ध थास्यां।—भि.द्र.

रू०भे०—पापिणी।

पापत्रयताप-सं०पु० [सं० पाप+त्रय+ताप] तीन प्रकार के पाप, कायिक, वाचिक और मानसिक (आध्यात्मिक, आधिभौतिक, आधि-दैविक) का ताप।

पापदरसी-वि० [सं० पापदर्शिन्] १ बुरी नीयत या अनिष्ट दृष्टि से देखने वाला।

२ जो पाप की पहिचान कर सकता हो।

पापद्रस्टी-वि० [सं० पापदृष्टि] जिसकी दृष्टि में पाप भरा हो।

पापनक्षत्र-सं०पु० [सं०] भरणी, कृतिका, विशाखा, जेष्ठा और अश्लेषा नक्षत्र। (फलित ज्योतिष)

पापनांमी-वि० [सं० पापनामन्] पापी, दुष्ट, निंदित।

पापनासणी-सं०स्त्री० [सं० पापनाशिनी] पापों को नष्ट करने वाली, तुलसी।

पापनासन-सं०पु० [सं० पापनाशन] १ पाप का नाश करने वाला, पापनाशी।

२ विष्णु।

३ शिव।

४ वह कर्म जिससे पापों का नाश हो, प्रायश्चित।

पापफळ-वि० [सं० पापफल] वह कार्य जिससे पाप लगे, पापोत्पादक कार्य।

पापमति-वि० [सं०] जिसकी बुद्धि सदा पाप में रहे, पापचेता।

पापमय-वि० [सं०] पाप से युक्त, पाप से भरा हुआ।

पापमोचण, पापमोचणी, पापमोचन-सं०स्त्री० [सं० पापमोचनी] १ चैत्र कृष्ण एकादशी।

२ पाप नष्ट करने वाली, गंगा।

पापरोग-सं०पु० [सं०] पाप विशेष के कारण होने वाला रोग।

वि०वि०—धर्म शास्त्र अनुसार कुष्ठ, यक्ष्मा, कुनख, पीनस, हीनांगता, पंगुत्व, मूकता, लोलजिह्वता, उन्माद, अंधत्व, काणत्व आदि पाप रोग माने गए हैं। ये रोग ब्रह्महत्या, सुरापान, स्वर्णहरण आदि पापों के कारण नरक और पशु कीट आदि की योनियों से पुनः मनुष्य जन्म प्राप्त करने पर होते हैं।

पापरोगी-वि० [सं० पापरोगिन्] (स्त्री० पापरोगणी, पापरोगिणी) पाप रोग से ग्रसित।

पापळ-वि० [?] अशक्त। उ०—पांणी प्रेरणिका पापळ पुचकारै। वापू वापू कर थापल बुचकारै।—ऊ.का.

पापलोक-सं०पु० [सं०] पाप करने वाले को मिलने वाला लोक, नरक।

पापसमणी-वि० [सं० पापशमनी] पापनाशक, तुलसी।

पापस्थांन-सं०पु०यौ० [सं० पापस्थान] जन्म कुंडली मे ६, ८, १२ वां स्थान।

पापहर, पापहारी-वि० [सं० पापहरिन्] पापनाशक, पापों को हरने वाला, पाप को मिटाने वाला। उ०—गंग के सुथान नख करत प्रकास भांन, रहत सदीव उर मधि पंचमाथ के। पापहारी प्रगट अहिल्या के उधारी सिर, मंडन सिखा री बनचारिन के साथ के।
—र.ज.प्र.

सं०स्त्री० [सं० पापहर] एक नदी का नाम।

पापांकुसा-सं०स्त्री० [सं० पापांकुशा] आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी।

पापा-सं०पु०—१ बच्चों द्वारा पिता के लिए प्रयोग किया जाने वाला शब्द।

वि०वि०—इसका प्रयोग प्राय: यूरोपियन बच्चे ही करते हैं। किन्तु आजकल अपने आपको आधुनिक (एडवांस) मानने वाले अफसर भी अपने बच्चों को यही शब्द सिखाते हैं।

२ प्राचीन काल के विसप पादरियों एवं वर्तमान के केवल यूनानी पादरियों के एक विशेष वर्ग की उपाधि।

३ पुराण के अनुसार एक तीर्थ।

पापाख्या-सं०स्त्री० [सं०] बुध की उस समय की गति जब वह हस्त, अनुराधा अथवा जेष्ठा नक्षत्र में रहता है।

पापाचार-सं०पु० [सं०] पाप का कार्य, दुराचार।

वि०—बुरी राह चलने वाला, पापी, दुराचारी।

पापात्मा-वि० [सं० पापात्मन्] पापी, दुराचारी।

पापि—१ देखो 'पाप' (रू.भे.)

उ०—कइ अम्हे नीचसंग आचरियउ, कनक चोरिया कापि। तुरक तणइ बंधानइ पडीयां, कहउ अम्हे केहइ पापि।—कां.दे.प्र.

२ देखो 'पापी' (रू.भे.)

पापिणी—देखो 'पापणी' (रू.भे.)

उ०—निज स्वारथ अन पहुंचता, निज सूरिकंता नारी रे। पापिणी पति नइ विस दियउ, पिण देखस्यइ दुख भारी रे।—स.कु.

पापियउ—देखो 'पापी' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—पापियउ आव्यउ पोस, स्यउ जीविवा नउ सोस।—स.कु.

पापियो—देखो 'पापी' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—साधुआं सुधारो सही, पापिया बिसारै परा। संभारै चीतारै तिकां तारै सिरताज।—पी.ग्रं.

पापिस्ट-वि० [सं० पापीष्ट] बड़ा पापी, बड़ा गुनाहगार।

उ०—पूत नहीं पापिस्ट हूं, मुझ हत्या जे होय। स्त्री वंभण बेहू तणी, टालि सकइ नहीं कोय।—मा.कां.प्र.

पापी-वि० [सं० पापिन्] (स्त्री० पापण, पापणी) १ अघी, पातकी।

उ०—यौवन! जा रे पापीया, तूं हिमगिरि पारि। भूंडा! तुझ मइं भोगविसि, भवि बीजइ भरथारि।—मा.कां.प्र.

२ क्रूर, निर्दय, परपीड़क।

सं०पु०—पाप करने वाला, अपराधी। उ०—धोळा बुगला ध्यांन लगावै, खावै मछियां खूब। पापी पल पल पाप कमावै, डबके जावै डूब।—ऊ.का.

रू०भे०—पापि।

अल्पा०—पापियउ, पापियो, पापीयो।

पापीयो—देखो 'पापी' (अल्पा० रू.भे.)

पापु—देखो 'पाप' (रू.भे.)

उ०—दैवु न गिणई दैवु न गिणई पुण्णु नइ पापु।—पं.पं.च.

पापैड़ो-सं०पु० [सं० पाप+रा.प्र. ऐड़ो] पाप का कृत्य, पापकर्म।

पापोस-सं०पु० [फा० पा+पोश] जूता, उपानह।

पापो—देखो 'पाप' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—जीव अजीव न ओलख्या, जाण्या पुण्य न पापो रे। आस्रव संवर निरजरा, बंध मोक्ष वले पापो रे।—जयवाणी

मुहा०—पापो कटणो—देखो 'पाप कटणो'।

पाबंद-वि० [फा०] १ बंधा हुआ, बद्ध, कैद।

२ किसी नियम, प्रतिज्ञा आदि का पालनकर्ता।

३ नियम, प्रतिज्ञा आदि का पालन करने को विवश।

४ कर्तव्य के प्रति सावधान।

सं०पु०—घोड़े की पिछाड़ी।

पाबंदी-सं०स्त्री० [फा०] १ पाबंद होने का भाव, बद्धता।

२ नियम, प्रतिज्ञा आदि का पालन करना।

३ कोई विशेष कार्य करने की बाध्यता या लाचारी।

४ रोक, मनाही।

पाबागढ-सं०पु०—चौहानों का एक छोटा सा राज्य जो मालवे में था।

पाबासर-सं०पु० [सं० पर्वतसर] मानसरोवर झील।

उ०—यह दाता पातां वडां, अपहड़ पूरै आस। मोताहळ हंसां मिळै, पाबासर रै पास।—बां.दा.

रू०भे०—पर्बसर, पावासर, पावाहर।

पाबासरो, पाबाहरो-वि० [सं० पर्वत+सर+रा.प्र. ओ] मानसरोवर का। उ०—सार दळ बोळ, जळ बोळ सीरोहियां, विरदपत झूलियो घणो वांणै। प्रसण जिम चालियो पोहणो चंपतो, जगो पाबाहरो हंस जांणै।—जगमाल सीसोदिया रो गीत

सं०पु०—हंस, मराल।

पाबू, पाबूराठोड़-सं०पु०—१ एक प्रसिद्ध प्रतिज्ञा-वीर।

उ०—रातां जागण री जंगळ में रोळी। ढांणी-ढांणी में फिरतो ढुंढोळी। घुणता नर माथा चुणता घर घाड़ा। पाबू हरबू रा सुणता परवाड़ा।—ऊ.का.

वि०वि०—इनका जन्म महेवा निवासी धांधलजी राठौड़ के यहां हुआ था। मुंहता नैणसी की ख्यात तथा अन्य कथाओं के आधार पर ये एक अप्सरा के गर्भ से उत्पन्न हुए। इनका पिता धांधलजी पाटण के तालाब के किनारे से एक अप्सरा को पकड़ लाए थे तथा उससे

विवाह कर कोलूगढ आ गए। वहीं उसके गर्भ से दो सन्तानें—एक पुत्र एक पुत्री हुई। पुत्र का नाम पाबू और पुत्री का नाम सोनाबाई रखा गया। दूसरी पत्नी से भी धांधलजी के दो सन्तानें हुईं। एक पुत्र व एक पुत्री जिनके नाम क्रमशः बूड़ा और पेमाबाई था। धांधलजी की मृत्यु होने पर राज्य का अधिकार बड़े बेटे बूड़ा को मिला।

बूड़ोजी राज्य करते थे और पाबूजी भोमिया के रूप में अपनी जीविका उपार्जन करते थे। ये नित्य सांढ (मादा ऊंट) पर चढ कर शिकार करने जाते थे तथा छोटी सी उम्र में ही बड़े बड़े काम कर दिखाते थे। उस समय आना बघेला एक वीर राजपूत था। उसके यहां थोरी जाति के सात जवान नौकर थे। ये सातों ही एक ही मां के बेटे थे और बड़े ही शूरवीर थे। सबसे बड़े बेटे का नाम चांदिया था। एक बार आना बघेला के राज्य में अकाल पड़ा। इन थोरियों ने भूख से व्याकुल होकर एक दिन एक जानवर का वध किया। खबर मिलने पर राजा के कुंवर ने इनको ऐसा करने से रोका। बात बढ़ जाने पर लड़ाई ठन गई। युद्ध में राज कुमार मारा गया। राजा के भय से डर कर थोरी अपने सामान व बाल बच्चों को लेकर भाग निकले। राजा को खबर मिली तो उसने इनको जा घेरा। युद्ध हुआ। और उसमें थोरियों का बाप वीरगति को प्राप्त हो गया। राजा इसीसे सन्तुष्ट हो गया और अपने महल में लौट गया। इन थोरियों को कोई भी शरण देने को राजी न हुआ। अंत में ये पाबूजी के पास गए और पाबूजी ने इनको अभय दान दे दिया। पाबूजी के ये अनुयायी बन गए और उनके साथ रहने लगे।

इन थोरियों की सहायता से पाबूजी ने कई वीरतापूर्ण कार्य किए जिनमें से मुख्य ये हैं—

(१) अपनी बहिन सोना बाई द्वारा अपने भाई की बुराई न सुन सकने के कारण उसके पति सिरोही के रावजी द्वारा कोड़े मारने पर अपने बहनोई को पकड़ लाना व बहिन द्वारा अभयदान मांगने पर छोड़ देना।

(२) अपनी भाभी डोडगहेली द्वारा ताना मारने पर उसके भाई को डोडवाणा से मुसकें बांध कर पकड़ लाना व भाभी को दिखा कर उसके कहने पर छोड़ देना।

(३) अपने सहयोगी चान्दा के कहने पर उसके पिता के हत्यारे आना बघेला को मारना व उसके पुत्र द्वारा शरण में आने पर राज्य सौंपना।

(४) अपनी भतीजी को विवाह के समय दिए गए वचन के अनुसार दूदा सूमरा से सांडनियां लाकर देना।

जब ये दूदा सूमरा से सांडें छीन कर ऊमरकोट के पास से निकल रहे थे तो झरोखे में खड़ी राजकन्या इनकी तेजस्विता को देख कर इन पर मोहित हो गई। उसने अपनी माता से इनके साथ विवाह करने की इच्छा प्रगट की। पाबूजी को सूचना भेजी गई। पाबूजी ने उत्तर दिया, 'अभी तो हम सांडों को लेकर जा रहे हैं। वापिस आकर विवाह करेंगे। सोढों ने उसी समय नारियल दे व टीका करके सगाई पक्की कर दी।

एक वर्ष पश्चात जब ये बरात सजा कर रवाना हुए तो मार्ग में कुछ अपशकुन हुए। साथ के लोगों द्वारा बरात लौटाने हेतु काफी आग्रह करने पर भी ये नहीं माने और सब लोगों के वापिस रवाना हो जाने पर अपने साथ डांभा को लेकर दोनों ही विवाह करने चल दिए। बड़ी ही धूमधाम से विवाह हुआ। इन्होंने फेरा लेने के साथ ही कूच करने की तैयारी करदी। जब लोगों ने इसका कारण जानना चाहा तो इन्होंने मार्ग में अपशकुन होने की बात बताई और उसी रात वापिस लौटना आवश्यक कहा। वीर पत्नी सोढी को जब इसका पता लगा तो वह भी साथ ही विदा होने का हठ करने लगी। उसे भी रथ में बैठा लिया गया। ये रातोंरात अपने गांव लौट आए। गांव में बधाइयां बंटी। पाबूजी अपने महल में जा सो रहे। पाबूजी के विवाह में उनके बहनोई जींदराव खीची भी आए थे। कच्छ के एक चारण के पास एक कालमी घोड़ी थी जो बड़ी ही करामाती थी। इस कारण से चारणों ने उसे न बेचने का निश्चय कर रखा था। जींदराव खीची ने भी इसे खरीदना चाहा था पर चारणों ने नहीं दी थी। पाबूजी के भाई बूड़ाजी को भी यह घोड़ी नहीं बेची गई। किन्तु चारणों ने यह घोड़ी पाबूजी को इस शर्त पर देदी थी कि कोई विपत्ति आने पर वे उनकी सहायता करेंगे। इस समय यह घोड़ी पाबूजी के पास थी।

जींदराव खीची ने इस बात को याद कर बदला लेने का यह अवसर अच्छा समझा। विदा कर उसने चारणों के गो-धन का अपहरण कर लिया और ले चला। देवल देवी (मुंहता नैणसी की ख्यात में बिरवड़ी नाम है) ने बूड़ाजी से आकर गो-धन छुड़ाने की प्रार्थना की पर बूड़ाजी ने बहाना बना कर सहायता नहीं की। देवल देवी ने पाबूजी के खास आदमी चान्दा से जाकर कहा—'पाबूजी तो यहां हैं नहीं, अतः तुम ही सहायता करो।' यह बात पाबूजी ने सुन ली। वे बाहर आए। अपने साथियों को लेकर खीची को जा घेरा। लड़ाई शुरू हो गई। खीची के बहुत से आदमी मारे गए। गायें छुड़ा ली गई और पाबूजी अपने महल में लौट आए।

इसी समय किसी अनजान व्यक्ति ने आकर बूड़ाजी को आकर पाबूजी के मारे जाने की झूठी सूचना दे दी। बूड़ाजी ने अपनी सेना लेकर खीचियों को जा घेरा। खीचियों ने कहा—'पाबूजी लौट गए हैं। अब मत लड़ो। किन्तु बूड़ाजी ने इस बात पर विश्वास नहीं किया। लड़ाई हुई और बूड़ाजी वीरगति को प्राप्त हो गए। बूड़ाजी की मृत्यु से खीची भयभीत हो गए। वे सोचने लगे, यदि अब पाबूजी को नहीं मारा तो हमारा जीना मुश्किल है।' वे कोलूमढ के राजा के पास गए और सहायता की प्रार्थना की। वह राजी हो गया। दोनों की सम्मिलित सेना ने पाबूजी पर चढाई करदी। घमासान युद्ध हुआ। पाबूजी अपने सैनिकों सहित वीरगति को प्राप्त हुए।

उनकी पत्नी उसी समय उनके साथ सती हो गई।

सारे मारवाड़ के लोग पाबूजी को देवता की तरह पूजा करते हैं। अनेक स्थानों पर पाबूजी के छोटे-छोटे मन्दिर बने हुए हैं जिनमें उनकी घोड़े पर चढ़ी मूर्तियां हैं तथा साथ में थोरी जाति नामक दो साथी चांदा और ढेबा हैं। आज तक मारवाड़ के गांव गांव में थोरी जाति के लोग पाबू का गुण-कीर्तन करते फिरते हैं। इनके पास एक बड़ी चादर भी होती है जिस पर पाबूजी के जीवन काल की अनेक घटनायें भी चित्रित होती हैं। इस प्रकार के प्रदर्शन को 'पड़ बांचना' कहते हैं। कुछ भिन्नता लिए यही इतिहास पाबू-प्रकाश नामक ग्रंथ में है जो बहुत बाद का रचा हुआ है।

२ एक प्रकार का लोक गीत।

पावे—देखो 'परवत' (रू.भे.)

पायंदाज-सं०पु० [फा०] पैर पोंछने का बिछावन।

उ०—पगमंड थान अपार, हिक हिक मोल हजार। रंग बिछाइत अनिराज, दूति इसा पायंदाज।—सू.प्र.

पायंवारी-सं०स्त्री० [देशज] एक समय का राशन।

पाय—देखो 'पद' (रू.भे.)

उ०—१ पावस मास प्रगट्टिउं, जगि आणंद विहाय। बग ही भला जु वप्पड़ा, धरण न मेल्हइ पाय।—ढो.मा.

उ०—२ आवे पाये त्रिणिय गुण, रुचिर चमोतरि रूप। कुंवर तणी करि कीरति, भणि लखपती भूप।—ल.पिं.

पायक-सं०पु० [सं० पादाति या पादाविक] (स्त्री० पायका)

१ सेवक, नौकर। उ०—रिणसोहा रिणसूरमा, 'वीको' 'सोम' वखांणि। नायक पायक भड़ निवड़, अरि-भंजण आरांणि।
—हा.झा.

२ पैदल सिपाही, प्यादा। उ०—पायक अस रथ पंथ अपारां। हाथी पाखरवंत हजारां।—रा.रू.

३ दूत, हरकारा। उ०—हां जी बना भरत सत्रूघन साथ हनुमांन सा पायक ल्याज्यो जी, हां हां रे हनुमांन सा पायक ल्याज्यो जी।
—लो.गी.

४ कर्मेन्द्रिय (साधु) उ०—नौसे खाई कोट, पांच पायक अभि-मांनी। महल वहेतरि मांहि, मांहि दोय बारू पटरांणी।—ह.पु.वा.

५ योद्धा, वीर। उ०—हूतासण में होमिया, वसत हुवै सुप्रवीत। जूंझ मुंवा जुध में जके, पायक सदा प्रवीत।—पा.प्र.

रू०भे०—पाइक, पाइक्क, पाईक।

अल्पा०—पायकौ।

पायका-सं०स्त्री० [सं० पादातिका] दासी, सेविका।

उ०—कटी सु छीन केहरी प्रवीण पायका नहीं। विनीत बांणि बीन-सी नवीन नायका नहीं।—ऊ.का.

पायकी—देखो 'पातकी' (रू.भे.)

उ०—मइं सुयोधन मिलिइन जाईइ, कुंतिगइं बिस किमइ न खाईइ। सयरि हुइ किमइ वीर पायका, चांपीयइ न नृप सीम पारकी।
—सालि सूरि

पायकौ, पायक्क—देखो 'पायक' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—१ कोई हांभो जी बण आयो ज्यांरो पायकौ।
—पाबूजी री पड़

उ०—२ पाअरविय सोधिय धीस पुलं। पायक्क अथक्क पुळै प्रगळं।
—पा.प्र.

पायगा, पायगाह-सं०पु० [फा० पाएगाह] अश्वशाला, घुड़शाला।

उ०—१ तिण दिनां पायगा घोड़ा घणा बांधै। तरै रावळ जैतसी बेटा नूं कहाड़ियो—इतरा घोड़ा बाधा चारोजै, इतरो हासल आंपणै किसूं छै ? घोड़ा असवारी रा पायगां बांधा राखो।
—नैणसी

उ०—२ तठा पछै वरिहांसूं दावो मांगण री मन में राखै, सु घणो साथ राखियो। घणा घोड़ा पायगाह किया।—नैणसी

रू०भे०—पाइगह, पाईगह।

पायड़-सं०पु० [देशज] बैलगाड़ी के पहिए का वह अवयव जो लोहे से जड़ा होता है तथा जिस पर 'पूठी' (चंद्राकार लकड़ी) लगाई जाती है।

पायचो-सं०पु० [देशज] धोती को कमर में खूंस कर बनाई गई वह पलट जिसमें किसान लोग अनाज व अन्य वस्तुएं भर लिया करते हैं।

पायच्छित, पायछत, पायछित—देखो 'प्राछत' (रू.भे.)

उ०—१ पाछिलो रातइं उठइं नइ हो स्रावक हुयइ सावधान। राइ पायछत काउसग करो हो, देव वांदइ सुभ ध्यांन।—स.कु.

उ०—२ नाकी राख नै आलोयणा करे रे, पायछित लेवे गुरु पास रे। कदा इण लोक सूं डरता गोपवे रे, तो नहीं सद्गति री आस रे।—जयवांणी

पायजन—देखो 'पायजेब' (रू.भे.)

पायजामो—देखो 'पाजांमो' (रू.भे.)

पायजादौ-वि० [सं० पा+अ. जादः] प्राप्त करने वाला। उ०—महण सुभावां कमंदगुर तायजादौ मठां, खगां बळ दिलो दळ सायजादां। पायजादो सुजस सायजादो पनो, रायजादां मुगट रायजादो।
—मेघराज आढो

पायजेब-सं०स्त्री० [फा०] स्त्रियों के पैरों में पहिनने का आभूषण विशेष, नूपुर।

रू०भे०—पाजेब, पायजन।

पायत-सं०पु०—एक प्रकार का छंद विशेष जिसके प्रत्येक चरण में एक मगण, एक भगण और एक सगण होता है (र.ज.प्र.)

पायतावो-सं०पु० [फा०] पैर का मोजा, जुर्राब।

पायती—देखो 'पसायती' (रू.भे.)

पायतौ—देखो 'पसायतो' (रू.भे.)

पायत्रांण—देखो 'पादत्रांण' (रू.भे.)

पायदळ-सं०पु० [सं० पाददल] पैदल सिपाही, पैदल सेना।

उ०—झुकतो कळ दावानळ झालै। च्यार हजार पायदळ चालै।
—सू.प्र.

रू०भे०—पायल, पायल्ल ।

पायदार-वि० [फा०] टिकाऊ, दृढ़, मजबूत, निश्चित ।
उ०—अंगरेज कहैं सीप सूं मोती प्रगट हुवै । सीप नूं चीर मोती लोक लियै तैरी ऊपर काडचा पवन ऊपर है । इणनूं पायदार मत जांणौ ।—बां.दा.ख्यात

पायनांमी-वि० [सं० पाद+नाम+रा.प्र.ई] पैरों में सिर झुकाने वाला, नमने वाला । उ०—सारा आंण मिळिया, टका किया, घोड़ा लिया, पायनांमी किया ।—ठाकुर जैतसी री वारता

पायनांमौ-सं०पु० [सं० पाद+नाम] अधिकार ।
उ०—सूबा बादिस्याहि पायनांमां में लगाया । राजा रायसलजी खडपुर कै पाट आया ।—शि वं.

पायपोस—देखो 'पादपोस' (रू.भे.)

पायपोसबरदार-सं०पु० [फा०पापोश+बरदार या सं० पाद+फा० पोश+बरदार] जूता उठा कर चलने वाला व्यक्ति ।
उ०—सिधिया दिखणी सांवतां रा पायपोस बरदार नै हुल कर सांवतां रा उमराव है ।—बां.दा.ख्यात

पायल-सं०स्त्री० [सं० पाद+रा०प्र०ल] १ स्त्रियों के पैरों में पहिनने का एक गहना जिसमें घुंघरू लगे रहते हैं, नूपुर । उ०—वीरा म्हारै पगल्यां पायल ल्याज्यो, म्हारा बिछिया बैठ घड़ाज्यो ।—लो.गी.
२ मकान आदि पर पट्टियें चढाने हेतु काष्टादि के खम्भों के बंधन से बनाया गया ढालू रास्ता ।
३ देखो 'पायदळ' (रू.भे.)
रू०भे०—पाइल, पायल्ल, पाळ ।
अल्पा०—पायलड़ी ।

पायलड़ी—१ देखो 'पायल' (रू.भे.)
उ०—कोई कोई पहरचा रिमझिम बिछिया, कोई कोई पहरचा पायलड़ी । होळी आई ए ।—लो.गी.
२ देखो 'पायली' (अल्पा०, रू.भे.)

पायली-सं०स्त्री० [सं० पाद+रा०प्र० ली] मिट्टी, धातु या काष्ठ का बना अनाज नापने का बर्तन विशेष ।
रू०भे०—पाइली, पावली ।
अल्पा०—पायलड़ी ।

पायलौ-सं०पु० [सं० पाद+रा.प्र.लो] १ मिट्टी, धातु या काष्ठ का बना अनाज नापने का बर्तन विशेष जो 'पायली' का चौथाई होता है (मारवाड़)
२ अफीम का छबड़ा । उ०—बांटै ज्यूं बाधौ (धारै) पल्लै न बाधौ पायलौ । मिळियौ खी माधौ, कै लाधौ को पारस 'लछा' ।
—भगवांनजी रतनू
रू०भे०—पायणौ ।

पायल्ल—१ देखो 'पायदळ' (रू.भे.)
उ०—मांवां ऊपर मुळकता, ले चलिया पायल्ल । म्हे थांनै पूछां ठाकरां, सूअर कै घायल्ल ।—डाढाळा सूर री वात
२ देखो 'पायल' (रू.भे.)

पायस-सं०पु० [सं० पायसं या पायस:] १ दूध, क्षीर ।
२ देखो 'पाइस' (रू.भे.)

पायांण—देखो 'प्रयांण' (रू.भे.)
उ०—तई पतिसाह तणेह, पायांणउ पारंभ सुणी । हळ-हळिया हेकांणवइ, गढपति गमे-गमेह ।—अ० वचनिका

पायाकुळक—देखो 'पादाकुळक' (रू.भे.)

पायारोपणी-सं०स्त्री० [सं० पद+ रोपणं] मन्दिर, मकान आदि की नींव लगाने की क्रिया ।
उ०—घड़े घाट करै कोरणी, लगन भले पायारोपणी ।—ब्र. स्तु.

पायाल—देखो 'पाताळ' (रू.भे.)
उ०—वळ पायाळ चलवियौ वोलै, जुग वोलियौ घणा दिन जाय । मांडव राव मुवयौ मेवाड़ै, केसव सूझ न सुक हो काय ।
—हरिदास केसरियौ

पायाळमुख-स०पु० [सं० पाताळ+मुख] वृक्ष, पादप, दरख्त ।
(अ.मा.)

पायुभेद-सं०पु० [सं०] चन्द्र ग्रहण के मोक्ष का एक प्रकार ।

पायू-सं०पु० [सं० पायु] मलद्वार, गुदा (डि.को.)

पायोड़ो-भू०का०कृ०—१ पिलाया हुआ, पान कराया हुआ ।
२ प्राप्त किया हुआ ।
३ भोगा हुआ, अनुभव किया हुआ ।
४ खाया हुआ, भोजन किया हुआ ।
५ समझाया हुआ, तह तक पहुंचाया हुआ ।
६ देखा हुआ, साक्षात्कार किया हुआ ।
७ किसी बात में किसी के बराबर पहुंचा हुआ ।
८ समर्थ ।
९ धूम्रपान कराया हुआ ।
(स्त्री० पायोड़ी)

पायौ-सं०पु० [सं० पाद] १ बन्दूक का घोड़ा, खटका ।
२ एक बार में सेंक कर या तल कर निकाली जाने वाली भोजन-सामग्री ।
ज्यूं—सेव रौ पायौ, पुड़ियां रौ पायौ ।
३ नक्षत्र का चतुर्थांश समय ।
वि०वि०—प्रत्येक नक्षत्र के चार पाद माने जाते हैं जिसमें प्रथम पाद सुवर्ण, द्वितीय पाद रौप्य, तृतीय पाद ताम्र और चतुर्थ पाद लोहे का होता है ।
मतान्तर से धनिष्ठा से ५ नक्षत्र तक का स्वर्णपाद, आर्द्रा से १० नक्षत्र तक का रौप्यपाद, विशाखा से ७ नक्षत्र तक का ताम्रपाद तथा शेष ५ नक्षत्र लोहपाद माने जाते हैं ।

४ खम्भा, स्तंभ।

५ एक प्रकार की बीमारी जो घोड़े के पैर में हुआ करती है। (शा.हो.)

६ पद, ओहदा।

उ०—बादसाह नूं वचन पसंद आवियो अर उण रो पायो वधाइयो। —नी.प्र.

७ वश, अधिकार। उ०—हर एक तफा नूं आपरा पाया में राखै। —नी प्र.

८ देखो 'पागो' ((रू.भे.)

उ०—खातीड़ा तू मोल चंदण रो रूंख काढ घड़ लाजे रंग रो ढोलियो, आया पाया रतन जड़ाव ईसां ढळावो जाभा हींगळू।—लो गी.

९ देखो 'पद' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—मुगति पहुंता अनुक्रमि मुनिवर, श्री ढढण रिसि गयो जी। समयसुंदर कहइ हुं ए साधना, प्रतिदिन प्रणमुं पायो जी।—स.कु.

पारंग, पारंगत–वि० [सं० पारगत] १ पार गया हुआ।

२ पूर्ण पंडित, किसी विषय का पूर्ण जानकार।

उ०—दादू नमो नमो निरंजनम्, नमस्कार गुरु देवतः। वदनम् सरब साधवा, प्रणामं पारंगतः।—दादूवांणी

रू०भे०—पारगत।

पारंद–सं०पु० [?] १ बाण, तीर (अ.मा)

२ देखो 'पारींद्र' (रू.भे) (ह.नां मा.) (अ.मा.)

पारंव.र–सं०पु०—आरपार ?

उ०—साधां समीपे पूछसी, घर छोड़ी हो होसी अणगार। पंच समिति तीन गुप्ति सूं, घोर तपसी हो होसी पारंवार —जयवांणी

पारंभ—देखो 'आरंभ' (रू.भे.)

उ०—१ ऐ घोड़ा ऐ आदमी, कहो नी आया काह। कोई मोटो पारंभ कियो, आरंभ निमो अलाह।—पी.ग्रं.

उ०—२ सझि आउध तिम रूप सनाही, आभूखण आभरेणे अंग। पारंभ मीर घड़ा गुड़ि-पाखर, जोधा सूं रचियो रिण रंग। —दूदो

उ०—३ आयउ राजांन सिंहासण ऊतर, सिध साधक तेड़िया सिध। पारंभ की कुंवरि परणावण, वेह बांधो भली विधि। —महादेव पारवती री वेलि

उ०—४ पारंभ करण आरंभ में, लियण खंभ सोरंभ जस। रस-पाळ मंडोवर राखिया, भू डंडे रक्खे अडस।—गु.रू.बं.

उ०—५ जिस वखत छत्तीस वंस राजकुळ उमराव सिलह आवधूं सैं कड़ाचूड़ होयकै पखरे तूं चढि आयै, दळ्का पारंभ समंद-सा दरसावै।—सू प्र.

या०—पारंभ-गुर।

पारंभगुर, पारंभगुरु, पारंभगुरु–वि० [सं० पारंभगुरु] १ महान कार्य करने वाला, यश का कार्य करने वाला। उ०—पारंभगुर पुरुष मांने 'पातल', घटा सुरिंद सिद्धि करै विचार। किम गम पार चलावी कीरति, घन आवियो-स किम दातार।—दुरसौ आढ़ौ

२ आरंभ किए हुए कार्य को पूर्ण करने वाला।

पार–वि० [सं० पारम्] दूसरा, पराया।

सं०पु० [सं० पार] १ दूर तक फैली हुई किसी वस्तु अथवा नदी, जलाशय आदि का दूसरी ओर का किनारा, अपर तट।

उ०—१ संग्रामिए जीतिए तरणि तापणिए, दाईं दवद्रा द्रढ निग्रह किया। प्राणी भव सागर वेलि पढंतां, दिया पार तरि पारि दिया। —वेलि

उ०—२ पार उतारै पुत्रियो, कविराज हजारै। कठै कहूं राघव कही, इम रीझ उतारै।—सू.प्र.

मुहा०—१ पार उतर जाणो—मतलब साध कर अलग हो जाना, नदी आदि के बीच से होते हुए दूसरे किनारे पर पहुंचना, उद्धार हो जाना, किसी काम को पूरा न कर चुकना, सिद्धि या सफलता प्राप्त करना, मर कर समाप्त होना।

२ पार उतरणो—देखो 'पार उतर जाणो' (२) (३) (४) व (५)

३ पार उतारणो—दूसरे किनारे पर पहुंचाना, किसी कार्य को पूरा कर चुकना, उद्धार करना, मार डालना, समाप्त करना।

४ पार करणो—नदी आदि के बीच से होते हुए उसके दूसरे किनारे पर पहुंचना, दुर्गम मार्ग तै करना, उद्धार करना।

५ पार लगणो—पूरा हो सकना।

६ पार लगाणो—किसी वस्तु के बीच से ले जाकर उसके दूसरे किनारे पर पहुंचाना, कष्ट या दुख के बाहर करना, पूरा करना, समाप्त करना।

७ पार होणो—दूर तक फैली हुई किसी वस्तु के बीच से होते हुए उसके दूसरे किनारे पर पहुंचाना, किसी काम को पूरा कर चुकना, मतलब साध कर अलग हो जाना।

[सं० पारम्] २ दूसरी ओर, दूसरी तरफ।

उ०—धवळ पयंपै रे धणी, की दुमनो घण भार। छोडे घर री आवगो, करूं पहाड़ां पार।—बी.स.

मुहा०—१ पार करणो—किसी वस्तु के ऊपर, नीचे या भीतर होते हुए उसकी दूसरी ओर पहुंचना।

२ पार होणो—किसी वस्तु पर से जाकर, उसे लांघ कर या उसमें घुस कर उसके दूसरी तरफ निकलना।

३ किसी वस्तु के पूरे विस्तार के बीचोंबीच से गई हुई कल्पित रेखा के दोनों छोरों पर पड़ने वाले तटों या पार्श्वों में से कोई एक ओर या तरफ।

४ सीमा, छोर, अन्त, हद। उ०—१ संमत मेक सपत्त मिळै

पुणसठो छमच्छर। सरद पार हिमवार, सकळ रित हू रित सुंदर।
—रा.रू.

उ०—२ पीठ धरणी-घर पट्टही, हरितिय चित्रणहार। तोई तोरा चरितां तणौ, परम न लागै पार।—ह.र.

उ०—३ महमाया माया निमो, परम न जांणै पार। ते हिज निपाया तीन गुण, कै जाया करतार।—पी.ग्रं.

मुहा०—१ पार पड़णौ—किसी कार्य का पूरा होना।

२ पार पाड़णौ—किसी कार्य को पूरा करना।

३ पार पाणौ—किसी के अंत तक पहुंचना।

५ शत्रु, दुश्मन। उ०—पहली भेलै पार री, बाहे अंस उतार। जोवौ भाभी जेठ री, बळिहारी सौ बार।—वी.स.

६ चोर (ह.नां.मा.)

७ किसी वस्तु का अधिक से अधिक परिमाण।

उ०—फर ल्हसकर कीधा कतळ, पार पखै परमार। डूंगा रूठै देवरज, धारा काळी धार।—वां.दा.

रू०भे०—पारि।

पारअपार-सं०पु०यौ०—परमेश्वर, ईश्वर (ह.नां.मा.) (नां.मा.)

पारउ—देखो 'पारौ' (रू.भे.)(उ.र.)

पारक-सं०पु० [अं० पार्क] १ बगीचा, उपवन।

२ देखो 'पारकर' (रू.भे.)

३ देखो 'परीक्षा' (रू.भे.)

पारकर-सं०पु०—१ राठौड़ों के प्रसिद्ध तेरह वंशों में से एक वंश।

२ पारकर नामक प्रांत में पाया जाने वाला घोड़ा

पारकियौ—देखो 'पारकौ' (अल्पा०, रू.भे.)

पारकी-वि० [सं० परकीय] १ पराई, दूसरे की।

उ०—पड़ी न छेहै पारकी, चिहुं वरण विचाळा। ऐसा राज करै अवध, दसरथ नृप वाळा।—र.रू.

२ शत्रु की। उ०—करै घर पारकी आपणी जिकै नर। केवियां सीस खग-पांण करणा कचर।—हा.भा.

३ देखो 'पारकी' (रू.भे.)

पारकौ-वि० [सं० परकीय] (स्त्री० पारकी) १ अन्य का, दूसरे का, पराया। उ०—सासू मंत्र ज साज, पूत जण्या जे पारका। ज्यांरी पारख आज, सांची व्हैगी सांवरा।—रांमनाथ कवियौ

२ शत्रु का। उ०—घोड़ां चढणौ सीखिया, भाभी किसड़े कांम। बंब सुणीजै पारकौ, लीजै हात लगांम।—वी स.

अल्पा०—पारकियौ।

पारखड़ी—देखो 'परीक्षा' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—हंसा आ पारखड़ी, छीलर जळ न पियंत। कै पावासर पीवणौ, कै तिरसाहि मरत।—अज्ञात

पारख—१ देखो 'परीक्षा' (रू.भे.)

उ०—मेळ उखेळै मंडळी, असगज ऊरवड़ांह। खूंद लखै भाराथ कर, पारख हाथ भड़ांह।—रा.रू.

पारखणौ, पारखबौ—देखो 'परखणौ, परखबौ' (रू.भे.)

पारखणहार, हारौ (हारी), पारखणियौ—वि०।

पारखिग्रोड़ौ, पारखियोड़ौ, पारख्योड़ौ—भू०का०कृ०।

पारखीजणौ, पारखीजबौ—कर्म वा०।

पारखत, पारखद—देखो 'पारसद' (रू.भे.) (ह.नां.मा.)

उ०—हरजन को मारग जुदौ, वे जम लोक न आय। चढ विमांन वंकूंठ कूं, लिय पारखत जाय।—गजउद्धार

पारखा—देखो 'परीक्षा' (रू.भे.)

उ०—देव गुरु धरम नहीं पारखा। सगळाई जांणै सारखा।
—जयवांणी

पारखि—१ देखो 'परीक्षक' (रू.भे.)

उ०—जुव पारखि रमतै जोधा रवि, फाळा घाट वणावत केव। खापर घड़ 'रतनसी' खेडेचौ, विजड़ै वाथां मिळिया वेव।—दूदौ

२ देखो 'परीक्षा' (रू भे.)

पारखियोड़ौ—देखो 'परखियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० पारखियोड़ी)

पारखौ, पारखु, पारखू—देखो 'परीक्षक' (रू.भे.)

उ०—१ चन्नण पड़ियौ चौवटै, लेउड़ा फिर फिर जाय। आसी चंनण रौ पारखौ, लेसी मोल चुकाय।—अज्ञात

उ०—२ ताहरौ मूरिखै रौ नांम रतन पारखू दीयौ। रतन परखावण लोक आवै।—चौवोली

पारखौ—१ देखो 'परीक्षा' (मह., रू.भे.)

उ०—किया जिता समवड़ी 'कलावत', पुरख जिकां सेविया पग। मोटां एह पारखौ मारू, लता चढै तर तीस लग।—संकर बारहठ

२ देखो 'परीक्षक' (अल्पा., रू.भे.)

पारग-वि० [सं०] पार जाने वाला।

उ०—छत्री की धरम धार कौ मारग, कवेसरां की साख निरवाह सूं पारग।—रा.रू.

पारखड़ी—देखो 'परीक्षा' (अल्पा., रू.भे.)

पारगत—देखो 'पारंगत' (रू.भे.)

पारगामी-वि०यौ० [सं० पार+गामिन्] पार जाने वाला, पार उतरने वाला।

पारचौ-सं०पु० [सं० पारज] १ स्वर्ण, सोना।

उ०—हाथी पालकी सात पारचां रो खिलत अनायत हुई।
—द.दा.

[फा० पार्च.] २ कपड़ा, वस्त्र।

३ कपड़े का टुकड़ा।

पारजात, पारजातक, पारजाति, पारजाती—देखो 'पारिजात' (रू.भे.)
(अ मा., डिं.को., नां मा.)

उ०—१ दंडकाळ करगा तरेस सौ गणेस दंत, सूर अळै रसम्मां

मरोस सुधा सार। चंडी सूळ पारजात, मराळां पंकता चंगी, किर-माळां मौज पंगी कोसल्या कंवार।—र.रू.

उ०—२ मंदार पारजाती कळप, हरिचंदन संतान तर। परसियो 'अभै' व्रंदा विपन, कुंज पुंज तरवर निकर।—रा.रू.

उ०—३ झांबो पारजाती री कदाच ऐळी जावै झाली। रेणां दूर्दा-पति री न जावै खाली रीझ।—दुरगादत्त बारहठ

पारजीत-वि० [सं० पार+जीत] पार जाने वाला ?

उ०—पारजीत जोगेन्द्र, थयो गोरख अविनासी। पारजीत खटजती, नाथ नव सिद्ध चोरासी। पारजीत वैराग हुवा, चौवीस तीथंकर। पारजीत चोवीस, पीर मोटा पैगंबर। पार री बोध लाधण प्रथम, आपै अकल आधारणी। जिण पारजीत आखुं जुगत, सुमत समापै चारिणी।—पा.प्र.

रू०भे०—पाराजीत।

पारटी-सं०स्त्री० [अं० पार्टी] १ मण्डली, दल।

२ दावत, भोज।

पारणउ—देखो 'पारणौ' (रू.भे)

उ०—करहा, इण कुळि गांमडइ, किहां स नागरवेलि। करि कइरां ही पारणउ, अइ दिन यंही ठेलि।—ढो.मा.

पारणी—देखो 'परणी' (रू.भे)

उ०—पणवंती पारणी सीळवंती सतवंती अति मुगती हालियो कियां साथै कुळवंती।—रा.रू.

पारणौ-सं०पु० [सं० पारणम्] १ किसी व्रत या उपवास के बाद दूसरे दिन किया जाने वाला प्रथम भोजन।

उ०—१ वरित करूं घरि आपणइं, पारणौ कीधौ द्वादसी जोग। दोई दिन स्वांमी थे विलंवज्यौ, तेरस कइ दिन करज्यौ हो भोग।

—वी.दे.

उ०—२ दोयां में एक जणौ वेलै-वेलै पारणौ करै तिणनै कह्यौ—थें तौ तपस्या ठीक करौ छौ पिण दूजो ते तौ करै नहीं।—भि.द्र.

२ तृप्त करने की क्रिया का भाव।

रू०भे०—पारणउ।

पारत—देखो 'पारद' (रू.भे.)

पारत्थ—देखो 'पारथ' (रू.भे.)

उ०—मेड़तियो 'सूरो' पण समत्थ। हेड़वण दुयण पारत्थ हत्थ।

—रा.रू.

पारत्थणौ, पारत्थबौ—देखो 'प्रारथणौ, प्रारथबौ' (रू.भे.)

उ०—कुळ तूझ विना जायै कुणे, मेछ महण रण मत्थियो। ईखे समाथ 'अभसाह' नूं, प्रथीनाथ पारत्थियो।—रा.रू.

पारत्थणहार, हारौ (हारी), पारत्थणियौ—वि०।

पारत्थिग्रोड़ौ, पारत्थियोड़ौ, पारत्थ्योड़ौ—भू०का०कृ०।

पारत्थीजणौ, पारत्थीजबौ—कर्म वा०।

पारत्थियोड़ौ—देखो 'प्रारथियोड़ौ' (रू.भे)

(स्त्री० पारत्थियोड़ी)

पारथ-सं०पु० [सं० पार्थ] १ पृथा के पुत्र—युधिष्ठिर, भीम व अर्जुन आदि में से कोई एक।

२ अर्जुन, पार्थ (अ.मा., ह.नां.मा.)

उ०—पारथ हेकरसां हथणापुर, हटियो त्रिमा पड़तां हाथ। देख जका दुरजोधण कीधी, पछै तका कीधी कोइ पाथ।—जमणौ बारहठ

३ अर्जुन नामक वृक्ष।

४ श्वेत* (डि.को.)

५ श्याम-काला* (डि.को.)

रू०भे०—पत्थ, पत्थयं, पथ, पथ्थ, पराथ, पाथ, पारत्थ, पारथि, पारथी, पारथ्थ, पारथ्थी, पाराथ, परारथ।

पारथणौ, पारथबौ—देखो 'प्रारथणौ, प्रारथबौ' (रू.भे.)

उ०—जग मुगति भुगति दाता 'जगा', दांन मांन वंछित दियै। पारथै किसूं मेळग कुपह, प्रभु नाथ पारथियै।—ज.खि.

पारथणहार, हारौ (हारी), पारथणियौ—वि०।

पारथिग्रोड़ौ, पारथियोड़ौ, पारथ्योड़ौ—भू०का०कृ०।

पारथीजणौ, पारथीजबौ—कर्म वा०।

पारथव—देखो 'पारथिव' (रू.भे.)

(अ.मा., ह.नां.मा.)

पारथि—देखो 'पारथ' (रू.भे.)

उ०—तउ उत्तारिइं भ्रत्य चढ़ी नइं आंणिउ। भाथा भला भीडी पारथि तांणिउ।—सालिभद्र सूरि

पारथियोड़ौ—देखो 'प्रारथियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० पारथियोड़ी)

पारथिव-वि० [सं० पार्थिव] १ पृथ्वी सम्बन्धी।

२ मिट्टी का बना हुआ।

सं०पु० [सं० पार्थिवः] १ राजा।

२ बादशाह, सम्राट।

३ तगर का पेड़।

४ मंगल ग्रह।

५ मिट्टी का बर्तन।

६ पृथ्वी पर निवास करने वाला प्राणी।

रू०भे०—पार्थिव, पारथव।

यौ०—पारथिवलिंग।

पारथिवलिंग-सं०पु० [सं० पार्थिवलिंग] मिट्टी का शिवलिंग।

पारथी-वि०—१ प्रार्थना करने वाला, प्रार्थी।

२ पार्थिव शिव-लिंग की अर्चना।

३ कवि। उ०—लहरी परियाव स्रवण दत लाखां, कीरत सुण आयो सौ कोस। पहडै तू रांणा पारथियां, 'दीपा' इण कळजुग नै दोस।—ग्रोपो आढ़ो

४ योद्धा, वीर। उ०—'चद' 'डेवे' जिसा पारथी मन चला, सांप-

रत करदई काच सीसी । आवड़ा-फूल रावत पड़ै अबीढा, वढै संग सांवळा सातवीसी ।—गिरवरदांन सांदू

पारथी—देखो 'प्रारथना' (रू.भे.)

उ०—दुजिद वेद मंत्र दाखि, आसिवाद उच्चरै । सतोत्र पाठ ह्वै सकत्ति, कोटि पारथी करै ।—सू.प्र.

पारथ्थ, पारथ्थी—देखो 'पारथ' (रू.भे.)

उ०—जिण करै समर पारथ्थ जोड़ । सुभांत पड़ियौ लोहां अरोड़ ।—शि.सु.रू.

पारद-वि० [सं०] पार देने वाला । उ०—सारद ससि सारद वदन, सारद कविता सुद्ध । अदसारद पारद उकति, करण विसारद बुद्ध ।—रा.रू.

सं०पु० [सं०] १ पारा । उ०—जोगी नेमनाथ सेवै जिण । तेरह रती दीध पारद तिण ।—सू.प्र.

२ पारस में रहने वाली एक जाति विशेष या इस जाति का व्यक्ति।

३ सफेद, श्वेत* (डि.को.)

रू०भे०—पारत ।

पारदरसक-वि० [सं० पारदर्शक] जिसके भीतर से होकर प्रकाश की किरणों के जा सकने के कारण उस पार की वस्तुयें दिखाई दें ।

पारदरसी-वि० [सं० पारदर्शिन्] १ उस पार तक देखने वाला ।

२ दूरदर्शी, चतुर, बुद्धिमान ।

पारध-सं०पु० [देशज] १ खुला मैदान । उ०—आरंभ रांम आरंभ गुर, पारध ही फरसांधरण । गजसिंघ महण गंभीर पण, कळा तेज सैंहस किरण ।—गु.रू.व.

२ देखो 'पारधी' (मह., रू.भे.)

पारधि,पारधी,पारधियो, पारध्धी-सं०पु० [सं० परिधान=आच्छादन=घाड़ में शिकार करने वाला अथवा पापर्द्धि] बहेलिया, शिकारी ।

उ०—१ हिरण रहै थिर होय, वींणा सुर सूं 'वांकला' । जिण कारण सूं जोय, पारधियां पांनै पड़ै ।—वां.दा.

उ०—२ हां, सांमी ! जावै हो चित्त इम कहै, वलै बोल्या मुनिराय हो । तिण बाग में हो कोई पारधी वसै, तो जाय के नहीं जाय हो ।—जयवांणी

उ०—३ नांम नीति अनीति सब, पहलो बांधै बंद । पसू न जांणै पारधी, दादू रोपै फंद ।—दादूवांणी

उ०—४ दुजड दांत आलाय, आग दवंगे उठते । पारध्धी पाडतौ, तुंड उप्पाडै क्रूंते ।—गु.रू.बं.

२ भील । उ०—'पाल' छाड जाय पागड़ो, राख कोट सम रात । संतरां पारधिया सैहत, चांदो ढैमो साथ ।—पा.प्र.

रू०भे०—पाराध, पाराधी, पारिध ।

पारपंथक-सं०पु० [सं० पारिपंथिक] डाकू, चोर (ह.नां.मा.)

पारपखै-वि० [?] असंख्य, अपार, असीम । उ०—तिण समै धरती मांहे ऊपरा ऊपरी सुगाळ हुवा छै । सु वांणियां रै धांन पारपखै भेळो हुवो छै ।—नैणसी

पारपलव—देखो 'पारिपलव' (रू.भे.) (अ.मा.)

पारबत, पारबतां, पारबती—देखो 'पारवती' (रू.भे.) (डि.को.) (ह.नां.मा.)

उ०—वीरभद्र गणराज, सहत पारबती संकर । खिल नारद खेचरा, भूत भूचरा भयंकर ।—सू.प्र.

पारबतीनाथ-सं०पु० [सं० पार्वतीनाथ] शिव, महादेव (ह.नां.मा.)

पारबतीपति-सं०पु० [सं० पार्वतीपति] शिव, महादेव (डि.नां.मा.)

पारबत्ती, पारब्बती—देखो 'पारवती' (रू.भे.)

उ०—अब तो सरणैं आवियो, वेगी बाहर कर । ब्रह्मांणी पारब्बती, गंगा गोदावर ।—ठा० जूझारसिंह मेड़तियो

पारब्रह्म—देखो 'परब्रह्म' (रू.भे.)

उ०—परमतत परभेद, सकळ जुग मंडण जोगी । पारब्रह्म हरि अखिल, रस रोग रसना नहीं भोगी ।—ह.पु.वा.

पारमारथिक-वि० [सं० पारमार्थिक] १ परमार्थसम्बन्धी, जिससे मनुष्य को पारलौकिक सुख हो ।

२ सदा ज्यों का त्यों रहने वाला, वास्तविक ।

पारलियामेंट-वि० [अं० पालियामेण्ट] देश या राज्य के शासन के नियम बनाने वाली सभा, संसद ।

पारलौकिक-वि० [सं०] स्वर्गसम्बन्धी, परलोकसम्बन्धी ।

पारवण-सं०पु० [सं० पार्वण] किसी पर्व में किया जाने वाला श्राद्ध ।

पारवतां—देखो 'पारवती' (रू.भे.)

पारवती, पारवत्ती-सं०स्त्री० [सं० पार्वती] हिमालय पर्वत की कन्या, शिव की अर्द्धांगिनी (अ.मा.)

उ०—१ पेख पारवती अनै पदमावती । अनंत रै ऊपरा उतारौ आरती ।—पी.ग्रं.

उ०—२ सायंता पाखती लीवां राठौड़ सहत्तौ सती, पेखै पारवत्ती करै आरत्ती प्रसंन ।—किसनसिंह राठौड़ री गीत

पर्या०—अंबिका, अद्रजा, ईसरी, उमा, गिरिजा, गौरी, जगदंबा, त्रिलोचना, भवांनी, मंगळा, रुद्रांणी, संकर-घरणी, संकरी, सकती, सती, सिवा, हेमवती ।

रू०भे०—पारबत, पारबत्ती, पारब्बती, पारबतां ।

पारवारयं-वि० [?] पार होने वाला, पार निकलने वाला ।

उ०—उभै दळै उचारयं, मचै सु मार मारयं । विसक्ख पारवारयं, भड़ां सनाह भारयं ।—रा.रू.

पारवाळ-सं०पु० [सं० प्रहारिंवाल] आंख की पलक के भीतर निकलने वाले वे बाल जो आंख में खटका करते और रोशनी मिटा देते हैं ।

रू०भे०—परबाळ; परवाळ ।

पारब्रहंम, पारब्रह्म—देखो 'परब्रह्म' (रू.भे.)

उ०—तू पारब्रह्म पराति पर, अळगां अळगेरा ।

—केसोदास गाडण

पारस-वि० [?] चंगा, स्वच्छ, निरोग ।

सं०पु० [सं० पारस्य] १ हिन्दुस्तान के पश्चिम में अफगानिस्तान के आगे का एक देश ।

[सं० स्पर्श] २ वह कल्पित पत्थर जिसको छूने से लोहा सोना बन जाता है। उ०—१ आसण अनंत फिरे ता फेरचा, गावै था सो गाया । पारस परसि भया मन कंचन, निज विसरांम समाया।

—ह.पु.वा.

उ०—२ जण ही सू जड़ियोह, मद गाढौ करि माढवां । पारस खुलि पड़ियोह, रोयां मिळै न राजिया ।—किरपारांम

[सं० पार्श्व] ३ निकट का भाग, बगल ।

उ०—पारस प्रासाद सेन संपेखे, जांणि मयंक कि जळहरी । मेरु पाखती नखित्र माळा, ध्रू माळा संकर धरी ।—वेलि

४ परशुराम ।

५ देखो 'पारसनाथ' ।

रू०भे०—पारसि ।

पारसद-सं०पु० [सं० पार्षदः] १ पास रहने वाला, सेवक ।

२ परिषद में बैठने वाला, परिषद का सदस्य, पंच (कौंसलर)

३ गण ।

ज्यूं—सिव रा पारसद, विस्णु रा पारसद ।

४ विख्यात पुरुष ।

रू०भे०—पारखत, पारखद ।

पारसदेव—देखो 'पारसनाथ' ।

उ०—अज्जु सफल अवतार असाड़ा, दिट्ठा पारसदेव । वुट्ठा मेह अमियदा, तुट्ठा साहिब सतमेव ।—ध.व.ग्रं.

पारसनाथ-सं०पु० [सं० पार्श्वनाथ] जैनियों के तेईसवें तीर्थंकर ।

उ०—पारसनाथ सरिखुं सहु रे, एह ना गुण छइ अनंत । समय सुंदर कहइ जउ मिलइ, इंद्र तउ पिण कहि न सकंत ।—स.कु.

रू०भे०—पारस, पारसनाह, पास, पासि ।

अल्पा०—पासौ ।

पारसपीपळ-सं०पु० [सं० पारीशपिप्पल] पीपल की जाति का एक प्रकार का वृक्ष विशेष ।

वि०वि०—पारिस पिप्पल का वृक्ष भी पीपल के समान होता है, परन्तु पीपल पर फूल नहीं लगते और पारिश पिप्पल में भिंडी के समान ही पीले रंग के फूल आते हैं ।

अल्पा०—पारसपीपळी, पारिसपीपळी ।

पारसपीपळी-सं०स्त्री०—देखो 'पारसपीपळ' (अल्पा०, रू.भे.)

पारसव—देखो 'पारसव' (रू.भे.) (डिं.को.)

पारसल-सं०पु० [अं० पार्सल] रेल या डाक से रवाना किया हुआ पैकेट या गट्ठर, पुलिन्दा ।

पारसव-सं०पु० [सं० पारशवः] १ लोहा (ह.नां.मा.)

२ पराई स्त्री से उत्पन्न पुत्र, वर्णसंकर ।

३ हरामी, दोगला ।

क्रि०वि० [सं० पार्श्व] समीप, निकट (अ.मा.)

रू०भे०—पसवाड़, पारसव ।

पारसियो—देखो 'पारसीयो' (रू.भे.)

पारसी-सं०स्त्री० [देशज] १ सांकेतिक भाषा या बोली । उ०—जठै किसतूरी पागां रा बंध पछांण्या । अै तो निडर साभाव रा रसिया । मिजमांन जांण्या । जठै पारसी में बोली । पनां नै बधाई दीनी ।

—पना वीरमदे री वात

२ संकेत, इशारा । उ०—प्रभु कुण जांणिसै साच री पारसी । निमो थंमि नीसरै गाजियो नारसी ।—पी ग्रं.

३ देखो 'फारसी' (रू.भे.)

उ०—१ पांच वखत निवाज रा करणहार, सुद्ध कलमैं रा पढणहार पेसता, आरबी, पारसी रा बोलणहार ।—रा.सा.सं.

उ०—२ जगलोक वांण सीखै जवन, पढै ब्रह्म मुख पारसी । हित देव सेव आधा हुआ, काई लागां आरसी ।—रा.सा.सं.

पारसीअजमोद-सं०स्त्री० [सं० पारसीकयवानी] खुरासानी, अजवायन ।

पारसीयो-सं०पु० [देशज] मिट्टी या पत्थर का बना चौड़ा मुंह का छोटा वर्तन ।

रू०भे०—पारसियो ।

पाराइण—देखो 'पारायण' (रू.भे.)

पाराजातपत-सं०पु० [सं० प्रजात+पति] इन्द्र (अ.मा.)

पाराजीत—देखो 'पारजीत' (रू.भे.)

पारातीरत, पारातीरथ-सं०पु० [सं० परातीर्थ] वेश्यागमन, व्यभिचार

उ०—विळखीजै रिणतूर वागियां, अदंग वागियां हरख मचै । धारा तीरथ चढ़ै धूजणी, पारातीरथ कियां पछै ।

—कविराजा बांकीदास

पाराथ-सं०पु०—१ योद्धा, वीर ।

२ देखो 'पारथ' (रू.भे.) (अ.मा.)

उ०—अहंकार नव्वाब दज्जोण एहो । जठै हिंदवानाथ पाराथ जेहो ।—सू प्र.

३ देखो 'प्रारथना' (रू भे.)

उ०—पाराथ सेवग आथ आपण करण सिध मन काथ । दसदूण-हाथ समाथ दाटक, मार खळ दसमाथ ।—र.ज.प्र.

पाराथणो, पाराथबो—देखो 'प्रारथणो, प्रारथबौ' (रू.भे.)

उ०—साहजादे पाराथियां, सको कमंधां साथ । सूर तरस्सै बोलिया, मूछ परस्सै हाथ ।—रा.रू.

पाराथणहार, हारो (हारी), पाराथणियो—वि० ।

पाराथिग्रोड़ो, पाराथियोड़ो, पाराथ्योड़ो—भू०का०कृ० ।

पाराथीजणो, पाराथीजबो—कर्म वा० ।

पारथियोड़ो—देखो 'आरथियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० पाराथियोड़ी)

पाराध, पाराधी—देखो 'पारधी' (रू.भे.)
उ०—पैलो री दावण प्रघो रखिया पाबू राव। घो ऊभो पाराधियां घर लो जींद थकाय।—पा.प्र.

पारायण-सं०पु० [सं०] १ किसी अनुष्ठान की की जाने वाली समाप्ति।
२ किसी ग्रंथ का समय बांध कर आद्योपांत पाठ।
३ किसी चीज का बार-बार पढ़ा जाना या कहना।
उ०—बिगड़ी किसमत री परायण बांचै, नाड़ी नाड़ी में नारायण नाचै।—ऊ.का.
४ पूरा करने का कार्य, समाप्ति।
रू०भे०—परायण, पाराइण, पुरायण।

पारायणी-सं०स्त्री०—१ चिंतन या मनन करते हुए समाप्त या पूर्ण करने की क्रिया।
२ सरस्वती।
३ पार पाने वाली, पार तक पहुंचने वाली।
उ०—उभै रूप पारायणी साचेली जिहांन आखै, तारायणी सिला-घू नाचेली नित्याद। पारायणी प्रवाहां आद्धेली दसा देण पाती, नारायणी रूप नमो काछेली प्रनाद।—नवलजी लाळस

पारावत-सं०पु०—१ कबूतर।
२ लाल, रक्त वर्ण० (डि.को.)

पारावार-वि० [सं०] पारंगत, पूर्ण। उ०—च्यार वेद नो व्याकरण, खट सासत्रं के विनांण। पिहत विद्या में पारावार जांणं, नवदूण पुरांण।—सू.प्र.
सं०पु०—समुद्र। उ०—दिये मुरा दाद दीवांण आलम दुनी, पारा-वार तटै चढ़ कीत पांगी। अब पख घाउ सारंग घरै आवियो, जीत खळ राह वाजाह जांगी।—सारंगदेव री गीत
२ सीमा, अंत, हद। उ०—हदवर गहवर पाइदळ, पुहवि न पारा-वार। गोरीराउ गिरि आसनउ, गउ गढ़-गंजणहार।
—अ. वचनिका

पारासर [सं० पाराशर] १ पाराशर के पुत्र, वेदव्यास।
२ ब्राह्मणों के अंतर्गत एक जाति विशेष।
३ देखो 'परासर' (रू.भे.)
रू०भे०—पारासुर।

पारासुर, पारास्वर—देखो 'पारासर' (१) (रू.भे.)
उ०—पारासुर पैहलाद, सेस गंगेव महेसुर। अरिजण नै अकरूर, व्यास रिसि वारट ईसर।—पी.ग्रं.

पारि—देखो 'पार' (रू.भे.)
उ०—बापड़ा कंटक बूड़िसै, आदए पारि उतारि। ताहरा सेवग तारिया, तिमि मुनाई तारि।—पी.ग्रं.

पारिख—१ देखो 'परीक्षक' (रू.भे.)
उ०—केते पारिख जौहरी, पंडित ग्याता ध्यांन। जांण्या जाइ न जांणिये, का कहि कथिये ग्यांन।—दादूवांणी
२ देखो 'परीक्षा' (रू.भे.)

पारिखा—देखो 'परीक्षा' (रू.भे.)
उ०—नीसांण छोड़ धज प्रांण निज, गयंद फतैगज सारिखा। ऊगी मलाह कच्ची उवरि, पुगी सच्ची पारिखा।—रा.रू.

पारिखू—देखो 'परीक्षक' (रू.भे.)
उ०—रतन एक बहु पारिखू, सब मिळ करै विचार। गूंगे, गहिले, बावरे, दादू वार न पार।—दादूवांणी

पारिखो—१ देखो 'परीक्षा' (रू.भे.)
उ०—अगिन पाहण नहीं पारिखो ए। तिण राजा तूं कठियारा सारिखो ए।—जयवांणी
२ देखो 'परीक्षक' (रू.भे.)

पारिख्या—देखो 'परीक्षा' (रू.भे.)
उ०—जद कुंवर कहै थारी वर्णी पारिख्या पण कीदी।
—बधो बुहारी री वात

पारिजात, पारिजातक, पारिजाती-सं०पु० [सं० पारिजातः, पारिजातकः]
१ इन्द्र के नन्दन कानन का एक देव वृक्ष।
उ०—१ लछमी कौस्तुभ पारिजात, मथ काढ़ै मांही। सुरा धनंतर चंद्रमां, निकसे तीहू ठाही।—गजउद्धार
उ०—२ अंतर काग हंस सर सायर, चंदन काष्ठ पळासां। इवड़ो अंतर हरि सिसिपाळई, पारिजातक अरडूसां।—रुकमणी मंगळ
उ०—३ सुरां भेंव रूपी तरां अंब सोभै। लटे पारिजाती तर्जे मार लोभै।—रा.रू.
वि०वि०—पुराणानुसार यह वृक्ष समुद्र मंथन के समय निकला था और चौदह रत्नों में से एक है। सत्यभामा को प्रसन्न करने हेतु श्रीकृष्ण इन्द्र से युद्ध करके इसको स्वर्ग से ले आए थे। इसका पूरा उपयोग करके वे इसे पुनः स्वर्ग में रख आए थे।
इसके फूल इच्छानुसार गन्ध देने वाले माने जाते हैं तथा शाखाओं पर भिन्न-भिन्न प्रकार के रत्न लगे हुए बताते हैं। इसको इच्छा-नुसार फल देने वाला भी माना जाता है।
२ फलित ज्योतिष के अनुसार एक शुभ योग।
३ हरसिंगार नामक वृक्ष का नामान्तर।
४ पारियात्र नामक एक सूर्यवंशी राजा। उ०—जे सुत पारिजात कृत कंभळ। बाळ नृपति जे सुतण महाबळ।—सू.प्र.
रू०भे०—परिजात, पारजात, पारजातक, पारजाति, पारजाती।

पारितोसिक-सं०पु० [सं० पारितोषिक] पुरस्कार, इनाम।

पारिध—देखो 'पारधी' (रू.भे.)

पारिपलव-वि० [सं० पारिप्लव] चंचल (ह.नां.मा.)
रू०भे०—परपलव, पारपलव।

पारिवात्र-सं०पु० [सं० परिपात्र] विंध्य के अन्तर्गत सप्त कुल पर्वतों में से एक।
पारिभासिक-वि० [सं० पारिभाषिक] वह जिसका अर्थ परिभाषा द्वारा सूचित किया जावे।
पारियौ-सं०पु० [देशज] हल में लोहे की फाल को मजबूती से जमाए रखने के लिए लगाया जाने वाला लकड़ी का उपकरण।
पारिवौ—देखो 'पारेवौ' (रू.भे.)
उ०—काती लेई पिड कापी नई, ले मास तू सींचांण रूड़ा पंती। आजुए तोलावी मुझ नई दियउ, एह पारिवा प्रमांण रूड़ा राजा।
—स.कु.
पारिस—देखो 'पारस' (रू.भे.)
पारिसपीपळ—देखो 'पारसपीपळ' (रू.भे.)
पारींद्र-सं०पु० [सं०] १ सिंह, शेर।
२ अजगर।
रू०भे०—पारद।
पारी-सं०स्त्री० [देशज] १ घी रखने का मिट्टी का बना छोटा पात्र।
उ०—मोडां मांनूं रे राम रा मारियां लुपके छुपके घी सोगां रा, पधरावो भरि पारियां।—ऊ.का.
अल्पा०—पारोटियौ, पारोटी।
२ व्यंजन विशेष (?) उ०—विहोली नई पपिनी, पोयणि पूंत पटोळि। पारी संकळ पाथरी, विटी पाज प्रगोळि।—मा.कां.प्र.
रू०भे०—पाळी।
पारीक-सं०पु०—छः न्याति ब्राह्मणों की एक शाखा।
रू०भे०—पारीख।
पारीख—१ देखो 'परीक्षा' (रू.भे.)
उ०—यळ अन पहां नजर न आई, पाई किव पूरण पारीख। साहपुरा वाळी हदसाही, तुरंगां भड़ां सवाई तीख।—जवांनजी बारहठ
२ देखो 'पारीक' (रू.भे.)
पारीखौ—देखो 'परीक्षक' (रू.भे.)
उ०—परबत बोल रे! नर लाखां पूछे, पात भड़ां पारीखो। दीन दाता तैं पण कोई दीठो, सोलंकी सारीखो।
—जीवराज सोलंकी री गीत
पारू-वि० [सं० पारम्] पार करने वाला। उ०—प्रभु विधि अवतार अणपार पारू। जर्ख किदरे जास राखे जुहारू।—पी.ग्रं.
पारूठौ—देखो 'अपूठौ' (रू.भे.)
उ०—पारुठे पाए किय पहारि। मारिया मेछ वाजित्र मारि।
—रा.ज.सी.
पारेचौ-सं०स्त्री० [देशज] पत्थर की वह कुंडी जिसमें रहट की माल से पानी गिरता है।
रू०भे०—पारेसौ।
पारेवउ-सं०पु०—१ वस्त्र विशेष। उ०—सुवरणा पडि, पंचवरण पटि, कारणपटि, गाठउं आदर, भातीगतु आदर पोथी पारेवउ-पट सावल मेघाडंबर।—व.स.
२ देखो 'पारेवौ' (रू.भे.)
उ०—पारेवउ सींचांणा पूठे अवतरो, पड़ि मूं पारेवउ गोला मांय राजा।—स.कु.
पारेवड़ौ—देखो 'पारेवौ' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—पूरे मारो पारेवड़ो, दुम करे अरदास। जादवराय बंधन पड्या पग माहरे, ढोला करे कोई पास।—जयवांणी
पारेवड़ौ—देखो 'पारेवौ' (अल्पा०, रू.भे.)
उ०—प्रीतड़ भली पारेवड़ां, जेता अवर विहूंग। वात न सहूइ वियोगनी, सदा निरंतर संग।—मा.कां.प्र.
(स्त्री० पारेवड़ी)
पारेवर—देखो 'पारेवौ' (रू.भे.)
उ०—नळ वाजि विहंगां राग नरे। पारेवर वोलें जेण परे।
—गु.रू.बं.
पारेवी-सं०स्त्री० [सं० पारावती] कबूतरी, कपोती।
उ०—पारेवी ज्यूं घुगतका, कुकय वाज वस थाय। पांता ज्यूं हा पांनड़ा, जत्र तत्र व्है जाय।—दो.दा.
रू०भे०—परेवी।
अल्पा०—पारेवड़ी।
पारेवौ-सं०पु० [सं० पारावत] (स्त्री० पारेवी) १ कपोत, कबूतर।
उ०—१ विधि पाठक सुक सारस रस वंदुक, कोविद खंजरीट गतिकार। प्रगलभ लाग डाट पारेवा, विदुर वेस चक्रवाक विहार।
—वेलि
उ०—२ नेहाळू नजरांह, जोई कांमण पर हथ 'जसा'। विरही पारेवांह, तारां हूं टूटे परे।—जसराज
उ०—३ उरि गयवर नइ पग भमर, हालंती गय हुंस। माझ पारेवाह ज्यूं, अंसो रत्ता मंझ।—ढो.मा.
२ डूंगरपुर में निकलने वाला संगमूसा पत्थर।
रू०भे०—परेवौ, पारिवौ, पारेवउ, पारेवर।
अल्पा०—पारेवड़ौ।
पारेसौ—देखो 'पारेचौ' (रू.भे.)
पारोकिया-वि०स्त्री० [?] दूर की ?
उ०—बीजुळियां पारोकियां, नीठ ज नीगमियांह। अजइ न सज्जण वाहुड़े, वळि पाछी वळियांह।—ढो.मा.
पारोटियौ, पारोटी—देखो 'पारी' (अल्पा०, रू.भे.)
पारोठौ—देखो 'उपरांठौ' (रू.भे.)
(स्त्री० पारोठी)
पारौ-सं०पु० [सं० पारद] १ साधारण गर्मी या सर्दी में द्रव अवस्था में रहने वाली चांदी की तरह सफेद और चमकीला एक पदार्थ।
(अ.मा.)

उ०—कर पारो काचो कळस, जळ राखियो न जात। नव नहचे ठहरै नहीं, विदर उदर में बात।—बां.दा.

पर्या०—चळ, पारस, पारद, रस, सूत।

मुहा०—१ पारो उतरणो—क्रोध शांत होना।

२ पारो उतारणो—क्रोध शांत करना।

३ पारो चढणो—क्रोध आना।

४ पारो तेज होणो—देखो 'पारो चढणो'।

५ पारो पिलाणो—किसी चीज को बहुत भारी करना।

६ पारो पीणो—बच्चा न होने के लिए पारा खाना।

२ घी रखने का मिट्टी का बना बर्तन।

उ०—लाडी लाखीणों घारां घूंघाती। पीवर ऊपां री पारां पय पाती।—ऊ.का.

३ देखो 'पार' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—म्हारे पापां को छेह न पारो रे, यां बिना घोर अंधारो रे।
—जयवाणी

रू०भे०—पाळो।

पालंखी, पालंठी—देखो 'पालकी' (रू.भे.)

उ०—सज्जण चाल्या हे सखी, वाज्या विरह निसाण। पालखी विसहर भई, मंदिर भयउ मसाण।—ढो.मा.

पाळ-सं०स्त्री०[सं० पाळिः पाली] १ पानी को रोकने वाला किनारा, तट, बांध (अ.मा.)

उ०—१ ए वाड़ी, ए बावड़ी, ए सर-केरी पाळ। ये साजण, ये वीहड़ा, रही संभाळ संभाळ।—ढो.मा.

उ०—२ सज्जण बांधे पाळ सिर, मोसा छकियां गाळ। दुरजण फोड़े गाळ दे, प्रीत सरोवर पाळ।—बां.दा.

२ [सं० पालः] हर्र, हरड़ (अ.मा.)

३ देखो 'पायल' (रू.भे.)

उ०—बोली बीणा हंस गत, पग बाजंती पाळ। रायजादी घर अंगणइ, छुटे पटे छंछाळ।—ढो.मा.

रू०भे०—पाळि, पाळी।

पाल-सं०पु० [सं० पट] १ तम्बू, सामियाना।

उ०—चिग पड़दाह पाल चमंके। दामण जांण सिळाव दमंके।
—सू.प्र.

२ नाव के मस्तूल लगा कर बांधा जाने वाला कपड़ा।

क्रि०प्र०—खोलणो, ताणणो, बांधणो।

३ टाट का लम्बा-चौड़ा कपड़ा जो प्रायः बिछाने के काम आता है। [सं० पल्लिः, पल्ली] ४ भीलों की बाहुल्यता वाला गांव।
(मेवाड़)

उ०—पावा गढ इलाखा जोड़े बाहिर पारो इलाखो। चोवला भीलां री पाल अनेक येक ही नीको।—केहर प्रकास

४ मना करने या रोकने की क्रिया या भाव।

५ भूसा, घास आदि बिछा कर बनाया गया फलों को पकाने का स्थान।

क्रि०प्र०—देणो।

६ देखो 'फाल' (रू.भे.)

उ०—तठे हीरण पाल सांधनै बाग री भींत कुदीयो। तठै पातसाह लारै भागो।—रीसाळू री बात

पाळउ—देखो 'पाळो' (रू.भे.)

उ०—जिणि दीहे पाळउ पड़इ, टापर तुरी सहाइ। तिणि रिति बूढी ही झुरइ, तरुणी केम रहाइ।—ढो.मा.

पाळक, पालक-वि० [सं० पालक] रक्षक, रक्षा करने वाला।

उ०—१ महागज ग्राह बिछोडण मंत। सनातन केवळ पाळक संत।
—ह.र.

उ०—२ वह तो अखलेस्वर अवगति अनदाता। तत सत जगपाळक जगमाळक भ्राता।—ऊ.का.

रू०भे०—पाळग।

सं०पु० [सं० पालक] एक प्रकार की पत्ती वाला साग।

अल्पा०—पालको।

पालकी-सं०स्त्री० [सं० पल्यंक] आदमियों द्वारा कंधे पर उठा कर ले जाई जाने वाली एक प्रकार की सवारी।

उ०—पछै फेर सेनापति नै सांमी देख नै कह्यो—संत पाळा आवै है तो आंपां ई सगळा पाळा जावांला। वधायां पछै म्हैं खुद संतां री पालकी ऊचावूंला।—फुलवाड़ी

रू०भे०—पालंखी, पालखी।

मह०—पालखो।

पालकीखांनो-सं०पु० [सं० पल्यंक+फा० खानः] वह स्थान जहां पालकियां रखी जाती हैं। उ०—ऊदावत केहरसिंघ रै गळा में भमरकड़ी रहती। नित्य सेर पक्की खीचड़ी खातो। हमैं पालकीखांनो है जठै कैद में हुतो।—बां.दा. ख्यात

पालकीनसीन-सं०पु० [सं० पल्यंक+फा नशीन] पालकी में बैठने वाला।

उ०—इस बर्ज सैं बोले च्यार हजार। सो पालकीनसीन आठ फीलूं के असवार।—सू.प्र.

पालकी-सरोपाव-सं०पु०यौ० [सं० पल्यंक+शिर+पाद] जोधपुर दरबार द्वारा दिया जाने वाला एक प्रकार का सिरोपाव जिसमें सामान्य रूप से ४७२ रु० व विवाह के समय ५५१ रु० दिए जाते थे।

पालको—देखो 'पालक' (अल्पा०, रू.भे.)

पालखी—देखो 'पालकी' (रू.भे.)

उ०—दीधी वाला पालखी, दीधा हाथी उतम ठाई।—बी.दे.

पालखो—देखो 'पालकी' (मह., रू.भे.)

उ०—सिरोही ना अमराव, कांमदार आदि मतो कियो उदैपुर, जैपुर, जोधपुर वाळां रै पालखो। आंपां रै ई पालखो बणावो। इम विचार,

बांस बांध ऊपर छाया करी, लाल वस्त्र श्रोढाय पालखो वणायो।
—भि.द्र.

पाळग-सं०पु० [सं० पालक] १ बादल, मेघ (नां.मा.) (ह.नां मा.)
२ देखो 'पालक' (रू.भे.)
उ०—जीपे दस सिर जंग, समंदां लग दीपै सुजस। ऊ रघुनाथ अभंग, जन पाळग समराथ जग।—र.ज.प्र.

पाळगर-सं०पु० [सं० पाल+कर] पालन करने वाला, रक्षक।
उ०—प्रथमी छट्टा पाळगर, नर मट्टा करनार। तखत वयट्टा 'सूध' कवि, थट्टा सहर मझार।—वां.दा.

पाळगोटी—देखो 'पालथी' (रू.भे.)

पालड़ी-सं०स्त्री० [?] गोष्ठी।
उ०—गांव रा मठ में श्रमल री पालड़ी हुई ही, इण वास्तै बूढा-ठाडा लोग उठै जाय जम्या।—रातवासो

पालड़ो—देखो 'पलड़ो' (रू.भे.)
उ०—पंसेरी इक पालड़ै, पुंगीफळ इक श्रोड़। ऊ तोलण सम कर उभै, श्रा चतुराई खोड।—वां.दा.

पालट-सं०पु० [?] परिवर्तन। उ०—हाथिणी सांहि री दूध पालट हुश्रो कहै ससि लोक श्रो समंद इमरिति कूश्रो।—पी.ग्रं.

पालटणो, पालटबो—देखो 'पलटणो, पलटवो' (रू.भे.)
उ०—संभळत धवळ सर साहुलि संभळि, श्राळूदा ठाकुर श्रलल। विड बहुरूप कि भेख पालटे, केसरिया ठाहे क्रिगल।—वेलि
पालटणहार, हारो (हारी), पालटणियो—वि०।
पालटिश्रोड़ो, पालटियोड़ो, पालटचोड़ो—भू०का०कृ०।
पालटीजणो, पालटीजबो—कर्म वा०, भाव वा०।

पालटियोड़ो—देखो 'पलटियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० पालटियोड़ी)

पालठी—देखो 'पालथी' (रू.भे.)
उ०—बत्रीस दूखण बारह तनु नां, मारि बइसइ पालठी। श्रति अथिर श्रासण दिस्टि चंचल, करइ काया एकठी।—स.कु.

पाळण-सं०पु० [सं० पालनम्] १ रक्षा, बचाव।
उ०—श्रजंपा जाप भगतां उधार, संसार घड़ण पाळण संघार।
—पी.ग्रं.
२ पोषण, परवरिश।

पालण-सं०पु० [सं० पालनं] १ पथ्य।
२ रोक, मना।

पालणड़ो—देखो 'पालणो' (श्रल्पा०, रू.भे.)
उ०—पालणड़इ पउढघउ रमइ, म्हारउ वालुयड़उ। हींडोळइ श्रचिरा माय, म्हारउ नान्हड़ियउ।—स.कु.

पालणियो—देखो 'पालणो' (श्रल्पा., रू.भे.)
उ०—रेसम हंदा पोतड़ा, पालणियै पोढाय। तो जेहा वेटा तिके, भलै भुलाया माय।—वां.दा.

पाळणो, पाळबो-क्रि०स० [सं० पालनम्] १ भरण-पोषण करना, परवरिश करना। उ०—१ चुगइ चितारइ भी चुगइ, चुगि चुगि चितारेह। कुरभी बच्चा मल्हिकइ, दूरि थकां पाळेह।—ढो.मा.
उ०—२ माळी ग्रीखम मांह, पोख सुजळ द्रूम पाळियो। जिण री जस किम जाय, श्रत घण वूठां ही 'श्रजा'।—वां.दा.
२ निभाना। उ०—१ जिम सालूरां सरवरां, जिम धरणी श्रर मेह। चंपावरणी वाल्हा, इम पाळीजइ नेह।—ढो.मा.
उ०—२ धकै फरसधर चक्रधर, पाळी जिण निज पैज। सो सूरां सिर सेहरो, नर-पुंगव सुर-नैज।—वां.दा.
३ रक्षा करना।
पाळणहार, हारो (हारी), पाळणियो—वि०।
पाळिश्रोड़ो, पाळियोड़ो, पाळयोड़ो—भू०का०कृ०।
पाळीजणो, पाळीजबो—कर्म वा०।

पालणो-सं०पु० [सं० पल्यंक] १ बच्चों को सुलाने को रस्सियों के सहारे टंगा हुश्रा खटोला या छोटा बिस्तरा।
उ०—पित मो बाधी पालणै, रांमत रिझवारै। इम रांमण सुणि श्रंगदह, खळ वायक खारै।—सू.प्र.
२ प्रायः छत से टंगा हुश्रा झूलने का पलंग या बिस्तरा।
उ०—जठै एक कन्या कही राजा री छै। तिका राकस ले श्रायो छै। सु पालणै में वैठी हींडै छै। नाम फूलमती छै।—चौबोली
रू०भे०—पलणो।
श्रल्पा०—पालणियो।

पालणो, पालबो-क्रि०स० [सं० पालनं] १ दूर करना, हटाना।
उ०—श्रला तुम्हारो श्रासरो, श्रला तुहारी श्रास। परमेसरजी पालिजै, पीर तणा जम पास।—पी.ग्रं.
२ रोकना, मना करना। उ०—पग नह मांडै पालियो, रावतियां रो साथ। केहर सूं कुसती करै, द्यो थीणा मैं हाथ।—वां.दा.
३ मिटाना, नष्ट करना। उ०—वालम श्रोड़ा री पीड़ा कुण पालै। पीहर प्यारी नै सासरियो सालै।—ऊ.का.
४ भगाना।
पालणहार, हारो (हारी), पालणियो—वि०।
पालिश्रोड़ो, पालियोड़ो, पाल्योड़ो—भू०का०कृ०।
पालीजणो, पालीजबो—कर्म वा०।

पालतू-वि० [सं० पालनम्] पाला हुश्रा, पोषा हुश्रा।
उ०—नापो मन में सोची जे हिरण सहर की श्राड़ी क्यूं जावै। किहीं री पालतू जे छै।—नापे सांखले री वारता

पालथी-सं०स्त्री० [सं० पर्य्यस्त=फैलाना] एक प्रकार का बैठने का ढंग, पद्मासन, कमलासन (उ.र.)
उ०—जोगी रो रूप धारण करनै उण धूमाळा माथै पालथी मारनै बैठ गयो।—फुलवाड़ी
वि०वि०—इसमें दोनों जांघें दोनों श्रोर फैला कर जमीन पर रखी

जाती हैं और घुटनों पर से दोनों टांगें मोड़ कर बायां पैर दाहिनी जंघा पर और दाहिना पैर बाईं जंघा पर टिका दिया जाता है।

रू०भे०—पलथी, पलाथी, पल्थी, पालंठी, पाळगोठी, पालठी, पालोठी।

पाळम—सं०स्त्री० [?] शकुन चिड़ी।

पाळमहि—सं०पु० [सं० महिपालः] १ बादल, घन (ग्र.मा.)
२ राजा, नृप।

पालर, पालरियो—सं०पु० [देशज] वर्षा का पानी।
उ०—१ पालर ठंडो जांमै पायो। स्वाद ग्रनोखो घणो सरायो।
—ऊ.का.
उ०—२ पालर पय पिय-त्याग-पय, पहै समांन प्रभाव। सफरी सर तिय चख सदा, घालै प्रजळा घाव।—रेवतसिंह भाटी
उ०—३ झाडू दै डांगी झालरिया झाड़ै। पांणी पालरया पीवण पद्धाड़ै।—ऊ.का.

पालवणी—सं०पु०—वह गीत छंद जिसके प्रथम द्वाले के प्रथम चरण में १६ मात्रायें, शेष के प्रत्येक चरण में १६ १६ मात्रायें तथा तुकांत चारों चरणों का मिलाया जाता हो।

पालवणो, पालवबो—देखो 'पल्लवणो, पल्लवबो' (रू.भे.)
उ०—तास थयो प्रारंभ रै थंभ, जिसा रै तरवर पालवै रे। दुनियां नै दुरलंभ रे, विरही लोकां रै हीयड़ै सालवै रे।—वि.कु.
पालवणहार, हारो (हारी), पालवणियो—वि०।
पालविग्रोड़ो, पालवियोड़ो, पालव्योड़ो—भू०का०कृ०।
पालवीजणो, पालवीजबो—कर्म वा०।

पालवियोड़ो—देखो 'पल्लवियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० पालवियोड़ी)

पालवी—सं०पु० [सं० पल्लिः+रा.प्र. वी] १ पाल (भीलों की बाहुल्यता वाला ग्राम) के निवासियों का मुखिया।
उ०—पालवी राजा सूं मिळ पांणो सरद करायो। लाख बीस रा पट्टा रो बाहरियो लरायो।—केहर प्रकास
२ भील। उ०—सूरावण रो द्याकियो देखै तमासो ऊगतो सूर, घरा तळै पोहां सेस गाजियो धमांम। पालवी हजारां मिळै साजियो घानंको प्रळै, सोलंकी ऊमळो खागां बाजियो संग्राम।
—गंभीरसिंह सोलंकी रो गीत

पाळसेट—देखो 'पलसेटो' (रू.भे.)
उ०—एक काठियां रे वास थो, तठै रावळ वाड़ मांहै कूद पड़ियो। 'लाखै' दीठी-जुजु जाइ तरै पाळसेट तरवार बाही, सु गुदड़ी मांहै आंगळ वे वैठी।—नैणसी

पालसो—देखो 'फालसो' (रू.भे.)

पाळागर—सं०पु० [सं० प्रालेय+गिरि] हिमगिरि, हिमालय।
उ०—कहर बाज लोहाळ लूग्राळ झाटक कटक, तूटतां वराळां जोस तायं। ग्ररक ग्रीखम तणौ तेज तवियो 'ग्रजन', मेछ पाळागरां तणी मायं।—नाथो सांदू

पालापाली, पालापूली—सं०स्त्री०यो० [देशज] मना करने या रोकने की क्रिया, मनाही, रोक। उ०—म्हारी हाथ जोड़नै थां सगळां नै ग्रा इज ग्ररज है कै थे म्हनै इण कांम वास्तै पालापूली मत करो।
—फुलवाड़ी

पाळास—देखो 'पळास' (रू.भे.)

पालिगो—देखो 'पल्यंक' (ग्रल्पा०, रू.भे.)

पाळि—सं०स्त्री० [सं० पालिः] १ पंक्ति, कतार। उ०—घटै सांमद्रां हाथियां पाळि थाई। उभै जम्म री जांणि जम्मात ग्राई।—सू.प्र.
२ देखो 'पाळ' (रू.भे.)
उ०—ढाढी एक संदेसड़उ, ढोलइ लगि लइ जाइ। जोबण फटी तळावड़ी, पाळि न बंधउ काइ।—ढो.मा.

पाळिका—सं०स्त्री० [सं० पालिका] पालन-पोषण करवे वाली।
उ०—घुमंड मेघ की घटा, यहां ग्रटाळिका नहीं। कहां भुजाळ माळ में, कपोत पाळिका नहीं।—ऊ.का.

पाळियोड़ो—भू०का०कृ०—१ भरण-पोषण किया हुग्रा।
२ निभाया हुग्रा।
३ रक्षित।
(स्त्री० पाळियोड़ी)

पालियोड़ो—भू०का०कृ०—१ हटाया हुग्रा, दूर किया हुग्रा।
२ रोका हुग्रा, मना किया हुग्रा।
३ मिटाया हुग्रा।
४ भगाया हुग्रा।
(स्त्री० पालियोड़ी)

पालिस—सं०स्त्री० [ग्रं० पालिश] १ वह मसाला जिसके लगाने से चमक ग्रा जाय, रोगन।
२ चमक, ग्रोप।
मुहा०—१ पालिस करणी—रोगन रगड़ कर चमकाना।
२ पालिस होणी—रोगन से चमकीला किया जाना।
क्रि०प्र०—ग्राणी, करणी, होणी।
रू०भे०—पोलिस।

पालिसरंदो—सं०पु० [ग्रं०पालिश+सं०रंदन] बढ़ई का एक ग्रोजार विशेष।
रू०भे०—पोलिसरंदो।

पालिसी—सं०स्त्री० [ग्रं०] १ कार्य साधन का ढंग, नीति।
२ चाल।

पाळी [सं० पालि, पाली] १ कान का ग्रग्र भाग (डिं.को.)
२ देखो 'पाळो' (स्त्री०)
उ०—१ दूजै पोहरै रयण कै, मिळियत गुरफा-गुरुघ। घण पाळी पिव पाखरयो, बिहूं भला भड़ जुद्ध।—ढो.मा.
उ०—२ पहसी जद कांम दोड़सी पाळी, दाढचाळी ग्रसुरां भुजडांण। या ग्रावै ऊपर इकताळी, देसणौक वाळी दीवांण।—ग्रज्ञात
३ देखो 'पाळ' (ग्रल्पा०, रू.भे.)

४ देखो 'पारी' (रू.भे.)

पाली-सं०स्त्री० [?] १ एक प्राचीन भाषा जिसमें महात्मा बुद्ध ने उपदेश दिए थे।

२ कोना (डि.को.)

पालीयात-सं०पु०—पदाति, पैदल ?

उ०—पुहुरायत पूठि थया, अहीआ चली तबार। दीवटीया दह दिसि रह्या, पालीयात नहीं पार।—मा.कां.प्र.

पाळू-वि० [सं० पालक] १ पालने वाला, पालक। उ०—इण बांभण री मुलाहिजो कियो। अठै तो इव राजा ही गरीबां रो पाळू छै।

—अमरसिंह गजसिंहोत राठौड़ री बात

२ पाला हुआ, पालतू।

पाळे-सं०पु० [देशज] भैंस अथवा ऊंटनी (सांड) की गर्भ धारण हेतु ऋतुमती होने अथवा 'रवै' आने की दशा।

पाळोकड़, पाळोकड़ो—देखो 'पालतू' (रू.भे.)

उ०—वां काजीजी रै एक पाळोकड़ कुत्ती ही।—फुलवाड़ी

(स्त्री० पोलकड़ी)

पालोठी—देखो 'पालथी' (रू.भे.)

पाळो-वि०पु० [सं० पाद+आलुच्] (स्त्री० पाळी) पैदल।

उ०—जिण रीति भाई नैं पाळो हुवो देखि मारवधरा रो कँवाड़ कनक प्रतिहार असिरो आघात दे'र प्रथ्वीराज रा अस्व रो अंस उडाय पाड़ियो। उण समय पाळा होय दोही वीरां अजमेर मंडोवर रा सुहाग री लाज रा लंगर घींसता अस्वमेध अध्वर रा अवभृथ रौ (यज्ञ समाप्ति के स्नान का) तिरस्कार करता पैंड सांम्हे ही लगाया।

—वं.भा.

सं०पु० [सं० प्रालेय] १ बर्फ, हिम। उ०—माह महीने पाळो पड़सी, पांणी पथ्थर खाह। पांणी रो पथ्थर कीनो, वाह रे सांई वाह।—लो.गी.

क्रि०प्र०—जमणो, पड़णो।

२ रोगियों अथवा वृद्धों के लिए पेशाब टट्टी करने हेतु धातु का बना थालीनुमा बर्तन विशेष। उ०—पाळा भरै पलीत, मूत रा बैठी मांही। कोई कांम रो कहू, निलज सोह्यो इक नांही।—ऊ.का.

३ कबड्डी आदि के लिए खेलों में दोनों दलों के लिए पृथक पृथक निश्चित मैदान जिसकी हदबन्दी प्राय: रेखा खींच कर स्थिर की जाती है।

४ निर्जन स्थान, रेगिस्तान।

५ देखो 'पारो' (रू.भे.)

रू०भे०—पाळव।

पालो-सं०पु० [सं० पल्लवम्] झड़बेरी के सूखे पत्ते जो मवेशियों के खाने के काम आते हैं। उ०—बकरी कह्यो—गंवूंड़ा खवाड़स्यूं, पालो चरावस्यूं, पूंछ माथै बैठायनै हींडा खवाड़स्यूं।—फुलवाड़ी

पाल्टो-सं०पु० [देशज] बैलगाड़ी के चक्र का वह भाग जो लोहे की पत्तियों से बंधा होता है।

पाल्हवणो, पाल्हवबो—देखो 'पल्लवणो, पल्लवबो' (रू.भे.)

उ०—सजण मिलया, मन ऊमय्या, अवगुण सहि गळियाह। सूका था सु पाल्हव्या, पाल्हविया फळियाह।—ढो.मा.

पाल्हवणहार, हारो (हारी), पाल्हवणियो—वि०।

पाल्हवियोड़ो, पाल्हवियोड़ो, पाल्हव्योड़ो—भू०का०कृ०।

पाल्हवीजणो, पाल्हवीजबो—भाव वा०।

पाल्हवियोड़ो—देखो 'पल्लवियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० पाल्हवियोड़ी)

पावंटो—देखो 'पांवटो' (रू.भे.)

उ०—मन करतो तो चारा रै मूंडो घालतो, पांणी पीवतो अर मन करतो जणां भार उगणतो नींतर घणा ई सोटां रा धमीड़ उड्या तो ई एक पावंटो आगै को करतो नीं।—फुलवाड़ी

पाव-सं०पु० [सं० पाद=चतुर्थांश] १ चतुर्थांश, चौथाई भाग।

उ०—कांकरा समै कुबेलियां, सरकरा तणौ सुभाव। निगुणां थिर रोपै नहीं, वाप घड़ी हो पाव।—बां.दा.

२ तोल जो एक सेर का चौथाई तथा चार छटांक के बराबर होता है।

[सं० पाद] ३ नाथ सम्प्रदाय के सिद्ध पुरुषों के नाम के साथ लगाई जाने वाली एक उपाधि या पद। उ०—साधन सिध सबै एक साधन सौं, 'बांका' सूधो बाट वह। रोजै देवनाथ रीजायो, पाव जळंधर 'मांन' पह।—बां.दा.

४ पैर, चरण। उ०—भूल न दीजै ठाकुरां, पावक माथै पाव। रात रहीजै दाभियां, तियां धरीजै चाव।—वी.स.

मुहा०—१ पावै घालणो—आहत करना।

२ पावै लागणो—प्रणाम करना, चरण स्पर्श करना।

५ देखो 'पाप' (रू.भे.)

उ०—आहेडइ चल्लीऊ पाव पमरि मनि मोहि घुमीउ। पुत्तु लेउ पीहरि गई 'गंग' तीरा अवमांणि दूमीय।—पं.पं.च.

पावक-सं०पु० [सं०] १ अग्नि, आग (अ.मा., डि.को., ह.नां.मा.)

उ०—१ तिण समयै तिण वेर, उभै नाजर अत आदर। पावक करण प्रवेस, तरण पति चरण निरंतर।—रा.रू.

उ०—२ भूल न दीजै ठाकुरां, पावक माथै पाव। रात रहीजै दाभियां, तियां धरीजै चाव।—वी.स.

२ एक प्रकार का बाण (अ.मा.)

३ सूर्य।

४ लाल* (डि.को.)

रू०भे०—पावक्क, पावग।

अल्पा०—पावको।

पावककुंड-सं०पु० [सं०] १ अग्नि कुण्ड।

२ त्रिकोण* (डि.को.)

पावकमणि-सं०स्त्री० [सं०] सूर्यकान्तमणि।
पावकुळक—देखो 'पादाकुळक' (रू.भे.)
पावको—देखो 'पावक' (अल्पा०, रू.भे.)
उ०—पावको जम सपो वेस्या, तुरिया पांणियो वहणे। तसकर तुरक नरिंदो, आपांण कदे न हुवंत।—गु.रू.बं.
पाववक—देखो 'पावक' (रू.भे.)
उ०—जाळ देह पाववक, पाळ पतिवरत महापण। कुळ लज्या उजयाळ, रीत रखवाळ नरेहण।—रा.रू.
पावग—देखो 'पावक' (रू.भे.)
पावड़ियो-सं०पु० [सं० पाद+रा.प्र. ड़ियो] १ सीढ़ी।
उ०—पावड़िया गोमोद का, रह्या लसणियो लग्ग। सोभत सुंदर प्रति सरस, जोत होत जिगमग्ग।—गजउद्धार
२ देखो 'फावड़ो' (अल्पा०, रू.भे.)
रू०भे०—पावड़ीयो।
अल्पा०—पावड़ी, पाहुड़ो।
पावड़ी-सं०स्त्री० [सं० पादुका] १ खड़ाऊ, पादुका।
उ०—पावड़ियां सहत नरम पद पंकज, नूपुर-हाटक परम पुनीत। छुद्र कटबंध सुचंगी छाजै, पट ग्रंगा राजै पुंण पीत।—र.रू.
२ जुलाहे का एक उपकरण। उ०—लोग रेजों खेसला के साड़ियां मोलावण सारू आवै तो सीढ़ो वांनै पावड़ियां माथै पग चलावतो केई ग्यांन री वातां बतावै, वेजा रा सगळा कमियाळा नै वौ मिनखदेह माथै ढाळै।—फुलवाड़ी
वि०वि०—यह काष्ठ का बना होता है तथा खड़ाऊ के आकार का होता है। यह करघे में पैर रखने के काम आता है। इसमें रस्सी लगी होती है जिसे 'राछ' से बांध देते हैं। ये संख्या में प्रायः दो होते हैं किन्तु कहीं कहीं एक भी होता है।
३ फासला, दूरी। उ०—जैतसी बोलिया, कहियो—'खीमाजी! इतरी भांय नहीं लाभो, जोधपुर नै समेळ बिचै पावड़ी घणी छै। —नैणसी
४ देखो 'पावड़ियो' (अल्पा०, रू.भे.)
उ०—ठाकुर हूतो ठीक पावड़ी चढण न पातो। हूं जांणतो इसी बिटळ नै थूक वगातो।—ऊ.का.
५ देखो 'फावड़ो' (अल्पा०, रू.भे.)
रू०भे०—पावटी, पावठी।
पावड़ीयो—१ देखो 'पावड़ियो' (रू.भे.)
२ देखो 'फावड़ो' (अल्पा०, रू.भे.)
पावड़ो—१ देखो 'पहाड़ो' (रू.भे.)
२ देखो 'फावड़ो' (रू.भे.)
पावचा-सं०स्त्री—चौहान वंश की एक शाखा।
पावचो-सं०पु०—चौहान वंश की 'पावचा' शाखा का व्यक्ति।
पावजळंद्री-सं०पु० [सं० जालंद्रपाद] जलंधरनाथ। उ०—पग वंदि हरखि भूप तदि पुंणियो। सिध में पावजळंद्री सुणियो।—सू.प्र.
पावटो-सं०पु० [देशज] १ पैरों से चलाया जाने वाला छोटा रहँट।
२ देखो 'पावड़ो' (रू.भे.)
पावटो-सं०पु०—किसी जलाशय का घाट।
उ०—जळ पीघो जाडेह, पावासर रै पावटै। नैनकियै नाडेह, जीव न धापै जेठवा।—जेठवा
पावठी—देखो 'पावड़ी' (रू.भे.)
उ०—पाय परट्ठी पावठी, जड़ी सु हीरा हेम। पाट पटंबर पाथरइ, 'माधव' चालइ जेम।—मा.कां.प्र.
पावण-वि० [सं० पा] १ पिलाने वाला। उ०—पियाला साचियां, अरक पावण पिवण, घणी आवण कीउं न जेझ धारै।—चिमनजी आढ़ो
२ देखो 'पावन' (रू.भे.)
उ०—रघुनाथ द्रोहथ हुवे रावण। परम संतां कीघ पावण।
—र.रू.
पावणो-वि० [सं० पा+रा.प्र. णो] (स्त्री० पावणी] पिलाने वाला।
पावणो, पाववो—देखो 'पाणो, पावो' (रू.भे.)
उ०—१ पोढै तेण वखत नृप पावै। महखी दूध सवा मण मावै।
—सू प्र.
उ०—२ भारांणो भटकेह, आवै कवि पाळा अठै। ऊतरिया अटकेह, अस पावै ऐराक रा।—बां.दा.
उ०—३ रांम असरण सरण, भूप गुण राज रा, पार सीतारमण कमण पावै।—र.ज.प्र.
उ०—४ पकवांन जळेविय पावन कौं, गहरी धुनि रागनि गावन कौं।
—ऊ.का.
पावणहार, हारो (हारी), पावणियो—वि०।
पाविओड़ो, पावियोड़ो, पाव्योड़ो—भू०का०कृ०।
पावीजणो, पावीजवो—कर्म वा०।
पावन-वि० [सं०] १ पवित्र, शुद्ध। उ०—१ पावन ह्वदौ करिस पुरुसोतम। संच गिनांन तूझ स्रो संगम।—ह.र.
उ०—२ पावन हुवौ न पीठवो, न्हाय त्रिवेणी नीर। हेक 'जेत' मिळियां हुवौ, सो निकळंक सरीर।—बां.दा.
उ०—३ गळ मुंडमाळ मसांण ग्रह, संग पिसाच समाज। पावन तूझ प्रताप सूं, संभु अपावन साज।—बां.दा.
२ पवित्र करने वाला।
सं०पु० [सं०] १ प्रथम सात सगण और अंतिम लघु गुरु वर्ण का छंद विशेष। उ०—सात सगण लघु गुरु सहित, एकण पाए आंणि। पाट कुंवर 'लखपति' रा, पावन छंद पछांणि।—ल.पिं.
२ परमेश्वर (ह.नां.मा)।
३ गोबर।
४ रुद्राक्ष।
५ चंदन।

६ सिद्ध पुरुष ।

७ विष्णु ।

सं०स्त्री०—८ राजाओं की दासियां विशेष ।

वि०वि०—ये दासियां पतियों के मरने पर चूड़ा (अहिवात) न उतार कर राजाओं के मरने पर उतारती हैं। इनका सुहाग राजाओं के लिए होता है।

रू०भे०—पावण, पावन्न ।

पावनता-सं०स्त्री० [सं० पावन+रा.प्र. ता] पावन होने की अवस्था या भाव, पवित्रता । उ०—गंग ब्रह्म कमंडळी, पावनता विण पार । तूं मोनू तिरसावही, के देसी दीदार ।—बां.दा.

पावनपुरखि-सं०पु० [सं० पावन+पुरुष] १ विष्णु ।

२ श्रीकृष्ण । उ०—नाथण नाग नगर व्रजनाइक, आवण महर आंगणे । पावनपुरखि नांम पुरखोतम, भूधर चरित भांमणे ।
—पि.प्र.

पावन्न—देखो 'पावन' (रू.भे.)

उ०—१ गजउधार गुण गाविया, करिवा जग पावन्न । पढै सुणे चित में धरै, जिको जमारौ धन्न ।—गजउद्धार

उ०—२ कवरी किरि गुंथित कुसुम करंबित, जमुण फेण पावन्न जग । उतमंग किरि अंबर आधौ अधि, मांग समारि कुंआरमग ।
—वेलि

पावपंथ-सं०पु० [सं० पाद+पंथ] नाथ पंथ, नाथ सम्प्रदाय (मा.म.)

पावपंथी-वि० [सं० पाद+पथ+ रा.प्र.ई] नाथ पंथ अथवा सम्प्रदाय को मानने वाला ।

पावपरिखेवी-वि० [सं० पापपरिक्षेविन्] गुरुजनों अथवा बड़े बूढ़ों की भूल को तूल देने वाला (जैन)

पावपोस—देखो 'पादपोस' (रू.भे.)

उ०—पावपोस मोती प्रगट, गणवत मनुं गयंद । हीरो प्रोहित मिळण हित, उर उपजत आणंद ।—बगसीरांम प्रोहित री वात

पावरी-सं०स्त्री० [सं० प्रावरी] १ चमड़े, ऊन या सूत की बनी छोटी थैली ।

२ देखो 'पावरौ' (अल्पा०, रू.भे.)

पावरोर-सं०पु० [सं० पापरौरव] भयंकर पाप । उ०—पासु पायसिउ अभय सूरि, थंभणपुरि मंडणु । जिणवल्लह सूरि पावरोर, दुखाचल खंडणु ।—ऐ.जै.का.सं.

पावरौ-सं०पु० [सं० प्रावरः] १ चमड़े का अथवा सूत का बना थैला जो प्राय: घोड़े के जीन पर लटका रहता है ।

२ घोड़े के मुंह पर दाना भर कर लटकाने का चमड़े का अथवा धातु का बना थैला, तोबड़ा ।

रू०भे०—पाहुरौ, पाहोरौ ।

अल्पा०—पाहोरी ।

पावलां—देखो 'पाओला' (रू.भे.)

पावलि-सं०स्त्री०—जीना, सीढ़ी ।

उ०—जंपइ ए रमणि सिरोमणि, कमणि शालिय रोलि । रहि रहि वहिनि ऊतावली, पावलि माहि म ढोलि ।—जयसेखर सूरि

पावली-सं०स्त्री० [सं० पाद+रा.प्र.ली] १ एक रुपए का चौथाई सिक्का जो पच्चीस पैसे के बराबर होता है, चवन्नी । उ०—दूजै दिन घड़ी दिन चढ़ियां वो जाट सेठांणी कनै फेर आयो । एक पोळो धक नवी पावली उणरै सांमी करनै कह्यौ—आप रा नौ रिपियां सूं सगळो कांम सार लियो ।—फुलवाड़ी

२ देखो 'पायली' (रू.भे.)

उ०—थोथा चणा एक पावली, इन भांडां को घोनी उनमांन । स्वासणियां नै पोमचा, इन भांडां नै कुला एक थांण ।—लो.गी.

पावलौ [सं० पाद+रा.प्र. लौ] १ पैर, चरण ।

उ०—अहिल्या गाईया, गीत उतावला । प्रभु रा गरीबां, तणे घर पावला ।—पी ग्रं.

२ देखो 'पावली' (मह., रू.भे.)

पावस-सं०स्त्री० [सं० प्रावृष: या प्रावृषा, प्रा० पाउस] १ वर्षा ऋतु । उ०—ग्रीखम पावस सरद गह्याई । ए ब्यारूं कळियुग में थाई ।
—ऊ.का.

२ मेघ, बादल (अ.मा., डि.को., नां.मा., ह.नां.मा.)

रू०भे०—पाउस, पावसि ।

पावसणो, पावसबौ-क्रि०अ० [सं० प्रावृषम्] गाय, भैंस आदि दुधारू पशुओं का स्तनों से दूध उतारना । उ०—भैंसां मूळ न पावसै, सूकै पाहो साथ । हार दुहाग उद्धिया, ठाली वरतण हाथ ।—लू

पावसणहार, हारौ (हारी) ।

पावसिओड़ौ, पावसियोड़ौ, पावस्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

पावसीजणो, पावसीजबौ—भाव वा० ।

पावसाणो, पावसाबौ-कृ०स० ['पावसणौ' क्रिया का सक० रूप] गाय, भैंस आदि दुधारू पशुओं के स्तनों से दूध उतरवाना ।

पावसाणहार, हारौ (हारी) ।

पावसायोड़ौ—भू०का०कृ० ।

पावसाईजणो, पावसाईजबौ—कर्म वा० ।

पावसायोड़ौ-भू०का०कृ०—स्तन से दूध उतरवाई हुई (गाय, भैंस आदि)

पावसि—देखो 'पावस' (रू.भे.)

उ०—वग रिखि राजांन सु पावसि वैठा, सुरं सूता यिउ मोर सर । चातक रटै बलाहकि चंचळ, हरि सिणगारै अंबहर ।—वेलि

पावसियोड़ी-भू०का०कृ०—स्तन से दूध उतारी हुई (गाय भैंस आदि)

पावहियौ-सं०पु० [देशज] हिजड़ा, नपुंसक । उ०—पावहियौ करै गिरनारपत, नाचवियौ पर घर तिको । वरार वेचि मेंहरं किय, मांग 'पाल' हेकण मुखां ।—प्रा.प्र.

पावही-सं०स्त्री०—एक देवी का नाम । उ०—यह इज आसा पुरी हुई, पावही कही जूं । देवी हिंगळाज रैण, डूंगरे रही जूं ।—पा.प्र.

पावासर, पावाहर—देखो 'पावासर' (रू.भे.)
उ०—वड दाता पातां वडा, अपहड़ पूरै आस। मोताहळ हूंसा मिळै, पावासर रै पास।—बां.दा.
पाविवड़-सं०पु० [सं० प्रयागवट] प्रयाग वट, बोधि वृक्ष।
पावेंक-वि०—चार छटांक (पाव) के लगभग।
पावो-सं०पु० [सं० पाद=पाव+रा.प्र.ओ] १ टीन के पूरे पीपे का चौथाई, पौवा।
२ काच की पूरी बोतल का चौथाई, पौवा।
३ बौना, ठिगना।
पासंग-सं०पु० [फा०] १ तराजू के दोनों पलड़ों या डांडी के तोल का अन्तर।
२ तराजू की डंडी या पलड़ों के संतुलन को बराबर करने के लिए डांडी के ऊपर उठते हुए सिरे पर बांधा जाने वाला पदार्थ या भार।
उ०—हाथी तोलीजै जठै गधा पासंग में जाय।
३ सहारा, मदद।
मुहा०—पासंग भी न होणो—बेसहारा होना।
अल्पा०—पसंगो, पासंगो।
पासंगो—देखो 'पासंग' (अल्पा०, रू.भे.)
पास-वि० [अं०] १ पार किया हुआ, तै किया हुआ।
ज्यूं—रेल स्टेशन पास करगी।
२ उत्तीर्ण, सफल।
ज्यूं—वो आठवीं कक्षा पास है।
३ स्वीकृत, मंजूर।
ज्यूं —सभा प्रस्ताव पास कर चुकी।
सं०पु० [सं० पार्श्वः] १ सामिप्य, निकट। उ०—ज्यारै खास बिछावणो, ओढण नूं आकास। ब्रह्म पोस संतोस वित, पूरण सुख त्यां पास।—बां.दा.
२ पड़ोस।
[सं० पाश] ३ पाश, फंदा। उ०—रखे पधारो रावतां, नमक धणी रो नांख। जम री पड़सी पास जद, ऊघड़सी तद आंख।—बां.दा.
४ बंधन। उ०—पति संग जळो ग्रहि लाज पण, तजो पास कुटजुग तणो। व्रत भंग हुए वर बीछड़ै, जिकां अजीवत जीवणो।
—रा.रू.
रू.भे०—पासि, पासी, पासु, पाहि।
अल्पा०—पासड़ी।
मह०—पासो।
५ अधिकार, कब्जा।
६ समूह, झुण्ड। उ०—लागी विहुं करे धूपणै लोधै, केस पास मुगता करण। मन अग चै कारणै मदन चो, वागुरि जाणै विसतरण।—वेलि
[सं० पाशिन्=पाशी] ७ वरुण (अ.मा.)
[अं० पास] ८ कहीं जाने का अधिकार-पत्र।
ज्यूं—रेल रो पास, सिनेमा रो पास।
९ देखो 'पारसनाथ' (रू.भे.)
उ०—मुनि सुव्रत जिन बीसमां, नेमि अरिट्ठ नेम। पास जिनेस्वर वीरजी, पहुता सिवपुर क्षेम।—जयवांणी
क्रि०वि० [सं० पार्श्व] बगल में, निकट में (अ.मा.)
२ अन्दर, में। उ०—वडदाता पातां वडा, अपहड़ पूरै आस। मोताहळ हूंसा मिळै, पावासर रै पास।—बां.दा.
३ अधिकार में, कब्जे में। उ०—पारस नह-नह पोरसो, पातर राखै पास। जिणरै आयो जांणजै, नैड़ो धन रो नास।—बां.दा.
रू०भे०—प.', पासइ, पासह, पासि, पासेही, पासै, पाहुं, पाह, पाहि, पाहिइ, पाहै।
पासइ—देखो 'पास' (रू.भे.)
उ०—१ सखियां रांणी सूं कहइ, माहूमन-मांणी। साल्ह कुंवर पासइ विना, पदमिणि कुंमळांणी।—ढो.मा.
उ०—२ च्यारइ पासइ घण घणउ, बीजळि खिवइ अगास। हरियाळी रुति तउ भली, घर संपति पिउ पास।—ढो.मा.
पासकेरळी-सं०पु० [सं० पाश+केरल+रा.प्र. ई] पासे फेंक कर की जाने वाली ज्योतिष की एक गणना।
रू०भे०—पासाकेवळी।
पासड़ी—देखो 'पास' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—१ तलफत तलफत बहु दिन बीता, पड़ी विरह की पासड़ियां। अब तो वेगि दया करि साहब, मैं तो तुम्हारी दासड़ियां।—मीरां
उ०—२ नैण दुखी दरसण कूं तरसै, नाभिन बैठे सांसड़ियां। राति दिवस यह आरति मेरे, कब हरि राखै पासड़ियां।—मीरां
पासजिणंद, पासजिण-सं०पु० [सं० पार्श्वजिनेन्द्र] पार्श्वनाथ।
उ०—१ सफल करत अपनो सुर पदवी, प्रणमत पाय अरविंदा। समयसुंदर प्रभु परउपगारी, जय-जय पासजिणंदा।—स.कु.
उ०—२ परवयारपायवप वरसिचण मुहरसमांण। पुरिसादाणिअ पासजिण, गुणगण रयण निहांण।—स.कु.
पासणी-सं०स्त्री० [सं० प्राशन+रा.प्र. ई] बच्चे को सर्वप्रथम अन्न चटाने की रीति।
पासणो—देखो 'पाछणो' (रू.भे.)
उ०—रासै छुरी नै पासणा रै, पातरां के रै मांय। नाना बालक भोलवी रे, काळजो काढी नै खाय।—जयवांणी
पासणो, पासबो-क्रि०स० [सं० पाश] पानी निकालने के लिए रस्सी या लाव में बांध कर मोट आदि कुए में डालना।
पासणहार, हारो (हारी), पासणियो—वि०।
पासिओड़ो, पासियोड़ो, पास्योड़ो—भू०का०कृ०।
पासीजणो, पासीजबो—कर्म वा०।
पासत्थउ-वि० ?] चरित्र पालन में शिथिल होना, ढीला। उ०—जउ

पूरव विधि मइ रहइ, न करइ किम विपरीत रे। पिण पासत्थउ ते खरउ, सरव देस परिणीत रे।—वि.कु.

पासत्थभत्तदोस-सं०पु० [?] आचारभ्रष्ट व भेष मात्र से जीविका करने वाले साधु के पास से आहार लेने पर लगने वाला दोष (जैन)

पासनाह—देखो 'पारसनाथ' (रू.भे.)

उ०—फलवधी मंडण पासनाह। वीनवियउ जिनवर मन उच्छाह। —स.कु.

पासपातळी-सं०पु०यौ० [सं० पार्श्व+पत्रल] पतली पसली वाला अशुभ माना जाने वाला घोड़ा (शा.हो.)

पासबान—देखो 'पासवान' (रू.भे.)

पासबुक-सं०स्त्री० [अं०] बैंक अथवा पोस्ट आफिस की लेनदेन के हिसाब रखने की पुस्तक।

पासभ्रत-सं०पु० [सं० पाशभृत] वरुण (ना.मा.)

पासरण-सं०पु० [सं० प्रसरण] १ फैलाव। उ०—लूटे गांम वित धन लीधा। दिस च्यारू' पासरणा दीधा।—रा.रू.

वि०—बंधन डालने वाला ?

उ०—परभात चढिया सो गांव दूजो वळे जाय मारियो। पछै बीजा गांवां नूं पासरणा छूटा सो वित सारो घर ले आया। —अमरसिंह राठौड़ री वात

पासरणो, पासरबो—देखो 'पसरणो, पसरबो' (रू.भे.)

पासरणहार, हारो (हारी), पासरणियो—वि०।

पासरिओड़ो, पासरियोड़ो, पासरयोड़ो—भू०का०कृ०।

पासरीजणो, पासरीजबो—भाव वा०।

पासरियोड़ो—देखो 'पसरियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० पासरियोड़ी)

पासरो-सं०पु० [सं० उपाश्रय] जैन यतियों का स्थान (शेखावाटी)

पासळी-सं०स्त्री० [सं० पर्शुका] मनुष्य या पशु की उन हड्डियों में से एक हड्डी जो उसकी छाती पर होती है तथा गोलाकार होती है।

उ०—१ ताहरां अखैराज रा घाव सूं हाथी री दोय पासळी भागी। —नैणसी

उ०—२ उर चौड़ी कड़ पातळी, झीणी पासळियांह। कै मिळसी हर पूजियां, कै हेमाळे गळियांह।—अज्ञात

मुहा०—१ पासळी फड़कणी—उमंग पैदा होना, जोश आना।

२ पासळ्यां ढीली करणी—बहुत मारना।

३ हड्डी पासळी तोड़णी—देखो 'पासळ्यां ढीली करणी'।

रू०भे०—पंसुळी, पसळी, पांसळि, पांसळी, पासुळी, पांसू।

पासवनो—१ देखो 'पासवानियो' (रू.भे.)

२ देखो 'पासवान' (रू.भे.)

पासवय-सं०पु० [?] पेशाब, लघुशंका (जैन)

पासवान-सं०स्त्री० [सं० पार्श्व] १ बिना विवाह किए पत्नी रूप में रहने वाली स्त्री, रखेल।

सं०पु०—२ सदा पास रहने वाला राजा का सेवक, गरजीदान (मेवाड़)

उ०—भूलै नह सहर मुलक नह भूलै, पंडित नह भूलै पांणा। मह कव पासवान किम भूलै, रूंख न भूलै रांणा। —महारांणा जवांनसिंह री गीत

३ अंगरक्षक, शरीररक्षक।

४ पुराणे राजाओं के जमाने में रावणा राजपूतों का एक नाम। (मा.म.)

रू०भे०—पासबांन, पासहवांन, पासेवांण।

अल्पा०—पासवनो।

पासवानियो-सं०पु०—पासवान स्त्री का पुत्र, रखेल का पुत्र।

रू०भे०—पासवनो।

पासवाड़ो—देखो 'पसवाड़ो' (रू.भे.)

पासहवांन—देखो 'पासवान' (रू.भे.)

उ०—हिचै खग दंगळ नीख हुवास। खत्री गुर पासहवांन खवास। —सू.प्र.

पासाण-सं०पु० [सं० पाषाण] पत्थर, प्रस्तर। उ०—लंबी कोस बेई गुफा खोस लीधी। करे पोस पासांण निरदोस कीधी।—मे.म.

रू०भे०—पखांण, पाखांण, पाखान, पाहण, पाहन, पाहांण।

पासांणकरम-सं०स्त्री० [सं० पाषाणकर्म] ७२ कलाओं में से एक कला।

पासांणबद्ध-सं०पु०यौ०[सं०पाषाणबद्ध]पत्थर से बंधे पट्टों वाला सरोवर।

उ०—पासांणबद्ध कराविया ए, सरोवर चउरासीय। वारू सयंवर वावडी ए, च्यार सइ चउसठ कीय। —स.कु.

रू०भे०—पाखांणबद्ध।

पासांणभेद-सं०पु०यौ० [सं० पाषाणभेद] बगीचों में लगाया जाने वाला सुन्दर पत्तियों का पौधा।

रू०भे०—पाखांणभेद।

पासांणी-वि० [सं० पाषाण+रा.प्र. ई] पत्थर संबंधी, पत्थर का।

रू०भे०—पखांणी, पाखांणी।

पासाकेवळी—देखो 'पासकेरली' (रू.भे.) (उ.र.)

पासाड़ो—देखो 'पसवाड़ो' (रू.भे.)

पासाद—देखो 'प्रासाद' (रू.भे.)

पासावळि, पासावळी-क्रि०वि० [सं० पार्श्व+अवलि] पास, निकट।

उ०—सोवन चोकी सोवटा, पासावळी नविरंग। दीवा झारी गाल मसूरी, उभय सीसा अति चंग।—ढो.मा.

पासावाड़ो—देखो 'पसवाड़ो' (रू.भे.)

पासासार-सं०पु० [सं० पाशक] चौपड़ पासा नामक खेल।

उ०—विजयातसु घर नार ए। बिहुं रमयंति पासासार ए। —स.कु.

पासि—१ देखो 'पारसनाथ' (रू.भे.)

२ देखो 'पास' (रू.भे.)

उ०—१ तासु पासि छागळि जळि भरी। ठाकुर तणी दृष्टि वे ठरी।—ढो.मा.

उ०—२ जोवण भरि जे पहुतउ किमइ। विसय पासि ते वाधउ तिमइ।—वस्तिग

३ देखो 'फांसी' (रू.भे.)

पासियोड़ो-भू०का०कृ०—पानी निकालने की रस्सी या लाव में बांध कर मोट आदि कुए में डाला हुआ।

(स्त्री० पासियोड़ी)

पासींचो—देखो 'पाचड़ियो' (रू.भे.)

पासी-सं०पु० [सं० पार्श्व+रा०प्र० ई] १ तरफ, ओर।

उ०—पसवाड़ै धरती मूकीया। मूकि नै वेहुं वाती पकड़ि नै मांहिलै पासी घस सु उतरीयो।—चौबोली

२ देखो 'फांसी' (रू.भे.)

उ०—प्रात तणी पासी पड़ी, दासी हूं विण दांव। आंख पलक सिर ऊपरै, धारा धरजे पांव।—बां.दा.

३ देखो 'पास' (रू.भे.)

पासीगर-सं०पु० [सं० पाश+कर] जाल रचने वाला, फांसी गूंथने वाला, जालसाज। उ०—पासीगर पूरा साजा सूरा, भूरारू भाळंदा है। जे आतां जातां पेच पजातां, बातां बद बूलंदा है।—ऊ.का.

रू०भे०—फासीगर।

पासीजळ-सं०पु० [सं० पाशी जल] जलदेवता, वरुण (ह.नां.मा.)

पासु—देखो 'पास' (रू.भे.)

उ०—कंठि ठवइ जां पासु ढाल तरुयर णी······। आवियउ बूंद प्रमाणि तांम मनि चिंतिउ सामि।—पं.पं.च.

पासेवांण—देखो 'पासवांन' (रू.भे.)

उ०—बीभणा सूं वायेरा लीजै छै। सू किण भांतरा बीभणां छै? लाहोर रा कियाड़ा छै। रूपै री डांडी, जरी सूं मढी, टुकड़ी री भालरी सु बणी थकी खवास पासेवांणा रै हाथ छै।—रा.सा.सं.

पासेस—देखो 'पारसनाथ' (रू.भे.)

उ०—सीस करै तिहां थी सुमन, पुलिया पच्छिम देस। सुख विहार आया सुगुरु, प्रणमेवा पासेस।—ऐ.जै.का.सं

पासेही—देखो 'पास' (रू.भे.)

पासै-क्रि०वि० [सं० पार्श्व] १ दूर, अलग। उ०—ताहरां राजाजी रामसिंघजी नूं कहियो—मास ४ मांहरै वास हुंता पासै हुवो।—द.वि.

२ देखो 'पास' (रू.भे.) (अ.मा.)

उ०—१ हूं बळिहारी साथिया, भाजै नह गइयांह। छीणा मोती हार जिमि, पासै ही पड़ियांह।—ढो.मा.

उ०—२ पगां माही सवा मण लोह री गटी छै। चाकर रा मांचा दोनूं पासै छै।—सूरे खींवे कांधळोत री बात

पासो-सं०पु० [सं० प्राशक, प्रा० पासा] १ चौसर आदि के खेल में खिलाड़ियों द्वारा बारी-बारी से बार बार फेंके जाने वाले उंगली की लम्बाई के बराबर हाथीदांत, हड्डी, लकड़ी आदि के बने टुकड़ों में से एक। उ०—१ पासो ढुळै है, हाथ लुळै है, ढीली नथ भळकै है। प्रेम री भांई बाहर पळकै है।—र. हमीर

उ०—२ पुरुस नारि मैं तै मती, नहि पासा नहि सारी। डाव नहीं चौपड़ नहीं, नहीं जीत नहि हारी।—ह.पु.वां.

मुहा०—१ पासो खाणो—हार जाना।

२ पासो देणो—खिसक जाना, बच निकलना।

३ पासो पड़णो—भाग्य का अनुकूल होना, भाग्य चेतना।

४ पासो पलटणो—दाव फिरना, भाग्य परिवर्तन होना।

५ पासो फेंकणो—भाग्य आजमाना।

२ [सं० पार्श्व, पार्श्वः] पार्श्व भाग, बगल। उ०—मुख पूज्यर चंद ज्यूं सोळह कळा संपूरण छै। पेट पीपळ रो पांन छै। पासा मांसण री लोथ छै। नितंब कटोरा सा छै।—रा.सा.सं.

३ कान का एक आभूषण विशेष।

४ देखो 'पास' (रू.भे.)

उ०—चाकर चोकीदार ज्यूं, वहुला राखै पासो रे। कांम करावै ते कन्हा, विलसै आप विलासो रे।—ध.व.ग्रं.

५ देखो 'पारसनाथ' (रू.भे.)

उ०—महिमा मोटी महियलै, प्रगट चिंतामणि पासो रे। सफलो नांम करै सदा, आपै वंछित आसो रे।—ध.व.ग्रं.

पास्वो-सं०पु० [सं० पार्श्व ?] एक प्रकार का तकिया। उ०—तिसी हीज बिछायत ऊपरां गाव तकिया, बगल तकिया, गींदवा, वादेला, पास्वा मसंद ऊपरै पड़िया छै।—जगदेव पंवार री बात

पाहं—देखो 'पास' (रू.भे.)

पाहड़—देखो 'पहाड़' (रू.भे.)

पाहण, पाहन—देखो 'पासांण' (रू.भे.) (अ.मा.)

उ०—पाहण गळ बांधे पड़ो, वेरी बावड़ियांह। पिण मगण मत पारखो, मुजळां मावड़ियांह।—बां.दा.

पाहरी, पाहरु, पाहरू—देखो 'प्रहरी' (रू.भे.)

उ०—१ इंद्र अस्व कुण होइ असाहरी। सीह रहइं कवण होइ पाहरी।—सालिभद्र सूरि

उ०—२ ठग कांमेतो ठोठ गुर, चुगल न कीजै सैण। चोर न कीजै पाहरू, ग्रहसपती रा वैण।—बां.दा.

पाहांण—देखो 'पासाण' (रू.भे.)

उ०—नितु-नितु सेवा नवी नवी, तूं नवयौवन नारि। भोगवि जे भणिया नहीं, पंडिउ पाहांणे मारि।—मा.कां.प्र.

पाहाघी—देखो 'पागी' (रू.भे.)

उ०—नै चोखावास मोटै राजा उरो लीयो, हळवा ३ धरती दीवी कांना पाहाघी नूं।—नैणसी

पाहाड़—देखो 'पहाड़' (रू.भे.)

उ०—मेवाड़ हुआ नागा मंडळ, साफ राफ पाहाड़ सह। इकलंग कंठ रहियो 'अमर', चीलसेख चीतोड़ पह।—गु.रू.बं.

पाहाड़ी—देखो 'पहाड़' (अल्पा०, रू.भे.)

पाहार—१ देखो 'पहाड' (रू.भे.)

उ०—फाटौ लोह घरा आभ सुरेस रौ वज्र फाटौ, पेख भूप जाणी फाटौ जलालो पाहार। फेरूं कग्र तरु हीरौ अठारा ठौड़ सूं फाटौ, घणी जातां म्हारौ हीयौ न फाटौ धिकार।

—महाराजा बळवंतसिंह रतलाम री गीत

२ देखो 'प्रहार' (रू.भे.)

पाहारणी—देखो 'प्रहारणी' (रू.भे.)

उ०—देवी रगत ववाळ, गळमाळ रूंडा। देवी मूढ पाहारणी, चंड मूंडा।—देवि.

(स्त्री० पाहारणी)

पाहारणौ, पाहारबौ—देखो 'प्रहारणौ, प्रहारबौ' (रू.भे.)

पाहारणहार, हारौ (हारी), पाहारणियौ—वि०।

पाहारिग्रोड़ौ, पाहारियोड़ौ, पाहारयोड़ौ—भू०का०कृ०।

पाहारीजणौ, पाहारीजबौ—कर्म वा०।

पाहारियोड़ौ—देखो 'प्रहारियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० पाहारियोड़ी)

पाहि—देखो 'पास' (रू.भे.)

उ०—वहू गुणवंती गोरड़ी, कंठि विलाई कंत। मझ पाहि तुझ वल्लही, ते कहीइ फुण तंत।—मा.कां.प्र.

पाहि-अव्य० [सं०] १ एक संस्कृत का पद जिसका अर्थ है रक्षा करो।

उ०—देवि रोग भवहारणी त्राहि मांम। देवी पाहि पाहि देवी पाहि मांम।—देवि.

२ देखो 'पद' (रू.भे.)

उ०—गिरवर ढहर भंगर गाहि। पाधर किया पगंगा पाहि।

—गु.रू.वं.

पाहिइ—देखो 'पास' (रू.भे.)

उ०—वलतूं कहइ मंत्री, सुणउ पिता पाहिइ वहुलु देस। स्वांग उपारजन तुम्ह करु, पोतइ घणउ निवेस।—नळ-दवदंती रास

पाहुंन—देखो 'पांमणौ' (रू.भे.)

उ०—मम अमिय मूरि, द्रग तैन दूरि। आत्मिक अधार, पाहुंन पधार।—ऊ.का.

पाहुडिय दोस-सं०पु० [सं० प्राभृतिका दोष] साधु के कारण मेहमान के सत्कार में आगापीछा करने पर लगने वाला दोष।

वि०वि०—कोई व्यक्ति किसी मेहमान का सत्कार तब ही करे जब कि कोई साधु आवे अर्थात् साधु के आने की इन्तजार में बैठा रहे और जब तक साधु न आवे तब तक मेहमान का भी सत्कार न करे तब पाहुड़िया दोस लगता है (जैन)

पाहुड़ी—देखो 'पावड़ियौ' (अल्पा० रू.भे.)

उ०—पांन सारीखो पेट पातळो अम्रित सी नाभी कुंडळी मांहि पांणी पीतां ढळकतो दीसै छै जांणै काच री सीसी मांहे गुलाब ढळकतो दीसै छै। पेट री त्रवळी जांणै कांम रा महल री पाहुड़ी वणी छै।—रा.सा.सं.

पाहुण, पाहुणउ—देखो 'पांमणौ' (रू.भे.)

उ०—पाहुणउ तूं हम आज, कहुं ते महिमांनी करां जी। सगळी तुम्ह नइं लाज, वादळ राज हमां तणी जी।—प.च.चौ.

पाहुणभतदोस-सं०पु०यौ० [सं०प्राघूर्णक:+भक्त+दोष] मेहमानों को खिलाने से पूर्व उनके निमित्त बनाए गए भोजन को स्वयं के खाने पर लगने वाला दोष (जैन)।

पाहुणौ—देखो 'पांमणौ' (रू.भे.)

उ०—१ जितं करै हट पाहुणो, इतं करै हट एह। पग थिर रोपै पाहुणो, एह हुए असनेह।—बां.दा.

उ०—२ दादू देही पाहुणी, हंस वटाऊ मांहि। का जांणूं कब चालसी, मोहि भरोसा नांहि।—दादूवांणी

(स्त्री० पाहुणी)

पाहुर, पाहुरौ—देखो 'पावरौ' (रू भे.)

उ०—जगदेवजी असवार हुवै तिण पहली चावड़ी आंण ऊभी रही। थैली मोहरां री पाहुरा मांहे घाली।

—जगदेव पंवार री बात

पाहू-सं०पु०—भाटी वंश की एक शाखा। उ०—भाटियां री खांप लिखंते—जेचंद, जेतुग, बुध, केलण, सरूपसी, सोहड़, लेना, छीकण, पोहड़े पाहू, नहू, वारसी।—बां.दा.ख्यात

पाहेय—देखो 'पाथेय' (रू.भे.) (जैन)

पाहेसे-पाहेसे-अव्य० [देशज] भैंस को पानी पिलाने के लिए उच्चारण किया जाने वाला शब्द।

रू०भे०—पाहे।

पाहे—१ देखो 'पास' (रू.भे.)

२ देखो 'पाहेसे-पाहेसे' (रू.भे.)

पाहोड़ा-वि०—पास का, निकट का।

पाहोरी—देखो 'पावरौ' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—लूंणग हाथी री सूंड उरी लेनै घोड़ा री पाहोरी मांहै घाती।

नैणसी

पाहोरौ—देखो 'पावरौ' (रू.भे.)

उ०—१ रावळ पाछो आयो, तरै जिकै वरछी वाहि सकिया न था, त्यां वरछी रो फळ वूड़ी मांज नै पाहोरा मांहि घाती थी।

—नैणसी

उ०—२ ताहरां घोडी नांख दियौ। कहियो—'जी, इतरा दिन दाळ पाहोरौ इण घोड़ी नूं म्है दियौ छै, अबै थे देज्यौ।—नैणसी

पिंक-सं०स्त्री० [सं० पिनेक] मस्ती। उ०—अमल री पिंक लागी अटळ, सुख लूटै वे सुलखणां। सवेरा सांझ दोनूं समै, कांझकंझ नै कुलखणां।—ऊ.का.

पिंग-वि० [सं०] १ लाल-पीला मिला हुआ भूरा (डि.को.)

२ पीलापन लिया हुआ (डि को.)

रू०भे०—पींग।

पिंगति—देखो 'पंक्ति' (रू.भे.)
उ०—पिंगति सातमी मेर परीख। ता समीं···वण एण तरीख।
—ल.पिं.

पिंगळ-वि० [सं० पिङ्गल] १ पीला, पीत।
२ भूरापन लिए पीला, सुंघनी रंग का।
सं०पु० [सं० पिंगलः] १ शनि (अ.मा.)
२ सूरज, सूर्य (अ.मा., नां.मा.)
३ मेघ, बादल (ना.डि.को.)
४ एक प्राचीन मुनि जिन्होंने छन्दशास्त्र बनाया।
५ पिंगल मुनि का बनाया हुआ छन्दशास्त्र।
उ०—पिंगळ भरह पुरांण पराक्रत, विघ विघ जांणण सयळ विमेक। 'जैसा' हरी न मंगवट जांणैं, ऊतर करै न जांणैं एक।
—ईसरदास बारहठ
६ व्रज भाषा। उ०—डिंगळियां मिळियां करै, पिंगळ तणौ प्रकास। संसक्रती व्हे कपट सज, पिंगळ पढियां पास।—बां.दा.
७ पीतल।
८ एक नाग का नाम। उ०—प्रथम अर्हंम मभ्क वेद, छंद मारग दरसायौ। खग भग पिंगळ नाग, नागपिंगळ कर गायौ।
—र.ज.प्र.
९ एक प्रकार का फनदार सांप।
१० भैरव राग का एक पुत्र।
११ बन्दर, कपि।
१२ नेवला, नकुल।
१३ उल्लू, पक्षी।
रू०भे०—पैंगळ।

पिंगळा-सं०स्त्री० [सं० पिंगला] १ शरीरस्थ योग की तीन प्रधान नाड़ियों में से एक। उ०—किण रौ गुरुजी मैं भोग लगावूं, किण रौ पवन ढळाऊं रे। इड़ा पिंगळा श्रवधु भोग लगावौ, सुखमण पवन ढुळावौ रे।—स्री सुखरांमजी महाराज
२ लक्ष्मी का एक नाम।
३ दक्षिण दिग्गज की स्त्री।
४ राजा भर्तृहरि की रानी का नाम। उ०—अवंती रै अधीस प्रामार राज भरतरीहरि रै रांणी पिंगळा जिकण रौ दूजौ नांम अनंगसेना कहीजै सो अद्वितीय प्रीति रौ आस्पद वणी।
—वं.भा.
५ एक भगवद्भक्त वेश्या का नाम।
६ एक चिड़िया।
७ गोरोचन।

पिंगा-सं०स्त्री० [सं०] १ एक रक्तवाहिनी नाड़ी।
२ हल्दी।
३ केशर।
४ हरताल।
५ चण्डिका देवी।

पिंगी-सं०स्त्री० [देशज] वह पतली डोरी या रस्सी जिसे स्त्रियां खेत में काम करते समय बच्चे के पैर से बांध देती हैं।

पिंगो-सं०पु० [देशज] बरसात बीत जाने पर नदी द्वारा किनारे पर छोड़ दी गई मिट्टी।
२ देखो 'पींगो' (रू.भे.)

पिछांटणो, पिछांटबो-क्रि०स० [देशज] पछाड़ना, पटकना।
उ०—कबूड़ा री तौ फींदी विखरती विखरती विखरैला, म्हे अबारू धनै पिछांटनै मार न्हाकूला।—फुलवाड़ी

पिछांटियोड़ौ-भू०का०कृ०—पछाड़ा हुआ, पटका हुआ।
(स्त्री० पिछांटियोड़ी)

पिंजड़ौ—देखो 'पींजरौ' (अल्पा०, रू.भे.)

पिंजण, पिंजन—देखो 'पींजण' (रू.भे.)
उ०—१ बैठा बिजण बिण हिंजरता वारै, घुंघट पिंजर में पिंजण भुणकारै।—ऊ.का.
उ०—२ कासी की हांसी करी, लावी दे ललकार। पिंजन पाखे तूल तिम, उडते फिरै अगार।—ऊ.का.

पिंजर—देखो 'पंजर' (रू.भे.)
उ०—१ रघरूपी पिंजर रचक, सकल नियंता सांम रौ। श्रोर रौ डर नहीं डर अवस, रात दिवस उण रांम रौ।—ऊ.का.
उ०—२ प्रीति जु मेरे पीव की, पैठी पिंजर मांहि। रोम रोम पिव पिव करै, दादू दूसर नांहि।—दादूबांणी

पिंजरौ—१ देखो 'पींजरौ' (रू.भे.)
उ०—मांनै न वयण जो हमें मुक्त, तौ जड़ूं जंजीरां माय तुज्भ। पिंजरै जड़ूं सुल्तांन पेस, भेज दूं करे दरवेस भेस।—वि.सं.
२ देखो 'पंजर' (अल्पा०. रू.भे.)

पिंजस-सं०पु० [फा० फिनस] १ पलंग, डोलिया।
उ०—काछब काछ घणोह, वसौ तौ वासौ म्हेदा। दूध पखाळूं देह, पिंजस ढळावूं पोढणैं।—अज्ञात
२ एक प्रकार की सवारी जो बन्द पालकी की तरह की होती थी।
रू०भे०—पिनस, पींजस, पीनस।

पिंजारण-सं०स्त्री०—पिंजारा जाति की स्त्री।
उ०—चटपट पिंजारण घट घट छुच्चैंठी। अटपट श्रांतां नै तांतां जिम ऐंठी।—ऊ.का.

पिंजारा-सं०स्त्री०—रूई धुनने का कार्य करने वाली एक जाति
—मा.म.
रू०भे०—पिनारा, पींजारा, पीनारा।

पिंजारौ-सं०पु० [सं० पिञ्जनम्] (स्त्री० पिंजारण, पिंजारी) पिनारा जाति का व्यक्ति, धुनिया।

रू०भे०—पिनारो, पींजारो, पीनारो।

पिजूस, पिजूसन-सं०पु० [सं० पिजूषः] १ श्रवणेन्द्रिय, कान।

उ०—पिजूसन ताटंक यों यों कुंडळ पाया।—वं.भा.

२ कान का मैल या ठेठ।

रू०भे०—पिजूसण।

पिंड-सं०पु० [सं० पिण्डम् या पिण्डः] १ कोई गोलमटोल टुकड़ा।

२ कोई द्रव्यखण्ड, ठोस टुकड़ा।

३ ढेर, राशि।

४ गया, हरिद्वार, पुष्कर, सोरों आदि तीर्थों में पितरों को अस्थि-विसर्जन करने के लिए बनाया जाने वाला आटे का गोला।

उ०—परागजी आय मकर रो नाहण करि फेर पाछा जाय कुंवर रा पिंड भरायां पछै छोडनाथजी जगन्नाथजी परस मारकंडेय कुंड तरपण किया।—पलक दरियाव री वात

क्रि०प्र०—भराणो, सराणो।

५ श्राद्ध में पितरों को अर्पण करने हेतु पके हुए चावलों का हाथ से बनाया हुआ गोला।

यौ०—पिंडदान, सपिंड।

६ युद्ध में वीरगति प्राप्त करने की अवस्था में घायल योद्धा द्वारा पितरों को अर्पण करने हेतु अपने खून से बनाया जाने वाला मिट्टी का गोला। उ०—तठै पड़ि खेत किया पिंड तत्र। रिणी जळ गंग नमेळ रतत्र।—सू.प्र.

अल्पा०—पिंडी, पिंडोळी।

मह०—पिंडोण।

७ शरीर, देह (अ.मा.) (ह.नां.मा.)

उ०—१ ताहरां वीरमदे कह्यो—'जाह रे हरदास ! तैं म्हारो पांच हजार रो घोड़ो वधायो'। ताहरां हरदास कह्यो—'कुरजपूत ! म्हैं म्हारो पिंड ही वधायो'।—नैणसी

मुहा०—१ पिंड छुडाणो—किसी का पीछा छुड़ाना।

२ पिंड छोडणो—साथ लगा न रहना।

३ पिंड पड़णो—पीछे पड़ना।

८ शक्ति, बल।

रू०भे०—पिंडप।

९ भोजन, आहार।

१०—देखो 'पांडव' (रू.भे.)

उ०—हुए पिंड वेध वसुधा, अपण मंझेण भुजभ्यो उमए। कुररोत गुरु गमयो, मिरामिरा काळ बुद्ध विपरीतो।—गु.रू.बं.

रू०भे०—पड, पोड, पिंडि, प्यंड।

अल्पा०—पिंडी, पिंडोळी।

मह०—पींड।

पिंडखजूर, पिंडखिजूर-सं०पु० [सं० पिण्डखर्जूरम्] १ मीठे फलों वाला खजूर जाति का वृक्ष (ड.र)

२ खजूर नामक पेड़ का फल।

उ०—वे मीठा मीठा पिंडखिजूर विना श्रेढियां ऊंची करियां ई तोड़ लेता।—फुलवाड़ी

पिंडज-सं०पु० [सं०] १ सब अंगों सहित गर्भ से सजीव निकलने वाला प्राणी।

२ पुत्र।

पिंडत—देखो 'पंडित' (रू.भे.) (अ.मा.)

उ०—जणां पिता री कहण सूं कमळाकर घन लेय कासी गयौ। तेथी पिंडतां री मोकळी सेवा करी।—सिंघासणबत्तीसी

पिंडदान-सं०पु० [सं० पिण्डदान] १ अन्तिम संस्कार के समय तथा उसके बाद मृत आत्मा के लिए अन्न के पिण्ड बना कर दान करने का कर्म।

वि०वि०—यह कर्म कुछ लोगों में मृत्यु के दिन से ६ दिन तक तथा कुछ में १२ दिन तक किया जाता है।

२ श्राद्ध पक्ष में पितरों को पिण्ड देने का कर्म।

३ युद्ध भूमि में घायल वीर द्वारा अपने रक्त से मिट्टी का पिण्ड बना कर पितरों को अर्पण करने की क्रिया।

पिंडप-सं०पु० [सं० पिंडम्+रा.प्र.प] १ शक्ति, बल।

२ देखो 'पिंड' (रू.भे.)

पिंडपुस्प-सं०पु० [सं० पिण्डपुष्पम्] १ अनार, दाडिम (अ.मा.)

२ अशोक वृक्ष।

३ गुलाब विशेष।

पिंडबळी—देखो 'पिंडवळी' (रू.भे.)

पिंडवळी-वि० [सं० पिण्ड+बल+रा.प्र.ई] बलवान शरीर वाला।

शक्तिशाली, बलवान।

उ०—तारा हटग जांणा वेतावां, आयो वाळ अफारा। वेहू एम जूटिया बंधव, पिंडवळी अणहारा।—र.रू.

पिंडर—देखो 'पांडुर' (रू.भे.)

उ०—जिण घण काज उमाहियो, घण हूंदी ऊ वेस। कुच भारू का खिस गया, पिंडर हुवा ज केस।—ढो.मा.

पिंडरू-सं०पु० [सं० पिण्ड] वह अशौच जो घर में किसी का जन्म होने पर लगता है।

रू०भे०—पहरू।

पिंडळी—देखो 'पींडी' (अल्पा०, रू.भे.) (जैन)

पिंडवड़ियो-सं०पु०—पिंडवड़ी के अनुसार कार्य करने वाला व्यक्ति।

पिंडवड़ी-सं०स्त्री० [सं० पिण्ड+राज० वड़ी] किसानों के कृषि-कार्य की एक रीति विशेष।

वि०वि०—इसमें आवश्यकता पड़ने पर एक किसान दूसरे किसान के यहां काम करने जाता है। इसके बदले में दूसरा किसान पहले किसान के यहां काम करने आता है। इसमें एक दूसरे को मजदूरी के पैसे नहीं देने पड़ते हैं।

रू०भे०—पिंडवड़ी ।

पिंडपात्र-सं०स्त्री० [ ] भिक्षा के लिए घूमने की क्रिया, भिक्षार्थ श्रमण (जैन)

पिंडवौ—१ देखो 'पिंड' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—घर चाढि मांभी मिळै थाट मोटै 'घड़ै', पिंडवा सतावी तुरा पाखर पड़ै। होय वीरां हालक जोगणी हड़हड़ै, 'जालमौ' किणी सिर आज ससतर जड़ै।—जालमसिंह मेड़तिया री गीत

२ देखो 'पांडव' (अल्पा०, रू.भे.)

पिंडां-सं०पु० [सं० पिण्ड] श्रीमान, आप ।

रू०भे०—पंडां ।

पिंडाकार-वि० [सं०] गोल-मटोल ।

पिंडांण—देखो 'पिंड' (४ से ६) (मह०, रू.भे.)

उ०—न मागै जिकै जुद्ध, भागां न मारै। सरीरां हुश्रां खंड, पिंडांण सारै।—वचनिका

पिंडार-सं०पु० [सं०] १ गाय भैंस चराने वाला, ग्वाला, गोप ।

उ०—भरयां मांग सिंदूर मारग्ग माळै, वहै सांवळौ व्रज सेरी विचाळै। वहै लार लव्वार पिंडार वाळै, नवा नेह सूं तेह गोपी निहाळै।—ना.द.

२ देखो 'पिंडारौ' (मह०, रू.भे.)

पिंडारक-सं०स्त्री० [सं०] १ एक पवित्र नदी का नाम ।

सं०पु०—२ एक नाग का नाम ।

३ गुजरात में स्थित एक प्राचीन तीर्थ का नाम ।

पिंडारड़ौ—देखो 'पिंडारौ' (अल्पा०, रू.भे.)

पिंडारा-सं०स्त्री० [सं० पिंडार] दक्षिण की एक जाति ।

उ०—पिंडारां री बाईस ढाळ हुलकर रै तावीत मैं हुती। खरड़ा री राड़ में हैदराबादियां नूं लूंटी घनाढय हुआ।—बां.दा.ख्यात

वि०वि०—यह जाति पहले कर्नाटक, महाराष्ट्र आदि में बसती थी और खेती करती थी। बाद में लूटमार करने लगी और मुसलमान हो गई। मुसलमान होने पर भी यह जाति गोमांस नहीं खाती है और देवताओं की पूजा तथा व्रत उपवास करती है।

पिंडारियौ—देखो 'पिंडारौ' (अल्पा०, रू.भे.)

पिंडारी-सं०पु० [देशज] पिंडारा जाति या इस जाति का व्यक्ति ।

पिंडारौ-सं०पु० [देशज] (स्त्री० पिंडारण, पिंडारी) १ पिंडारा जाति का व्यक्ति ।

मह०—पिंडार ।

[सं० पिंड+रा. प्र. आरौ] २ वर्षा के दिनों में जलाने हेतु थापे हुए उपलों का सुरक्षित ढेर ।

क्रि०प्र०—थापणौ, देणौ ।

रू०भे०—पींडारौ ।

अल्पा०—पिंडारड़ौ, पिंडारियौ, पींडारकौ, पीडारड़ौ, पीडारियौ ।

मह०—पिंडार, पींडार ।

पिंडाळ, पिंडाळू-सं०पु० [सं० पिण्ड+आलुच्] १ एक प्रकार का कन्द ।

उ०—गाजर मूळा गिरमिरि, पिंडाळू नहीं नाहि। लसण लसाई डूंगली, तिज परवत अवगाहि।—मा.कां.प्र.

२ अरबी (मेवाड़)

रू०भे०—पींडाळू ।

पिंडि—देखो 'पिंड' (रू.भे.)

उ०—कंचण कंकण केउर, नेउर पइं भुयदंडि। चंदनि देह विलेपनु, लेप न लागइ पिंडि।—जयसेखर सूरि

पिंडी-सं०स्त्री० [सं० पिण्ड] १ पोटली, गठड़ी (अमरत)

२ सारंगी को बजाने के गज (धनुषाकार वस्तु) का हाथ से पकड़ने का स्थान ।

३ कस कर लपेटे हुए सूत रस्सी आदि का लच्छा या गोला ।

४ देखो 'पींडी' (रू.भे.)

पिंडुपिंड-सं०पु० [सं० पिंड] १ कामदेव (अ.मा.)

२ आप, स्वयं ।

पिंडोळी-सं०स्त्री० [?] १ लता विशेष। उ०—पिंडोळी नइं पद्मिनी, पोयणि पूंख पटोळि। पारी संकळ पाथरी, पींडी प्राज प्रगोळि।

—मा.कां.प्र.

२ देखो 'पिंडी' (अल्पा०. रू.भे.)

३ देखो 'पिंड' (अल्पा०, रू.भे.)

पिंडौ—देखो 'पिंड' (अल्पा०, रू.भे.)

पिंण—देखो 'पण' (रू.भे.)

उ०—मुनि सुव्रत मन माहरौ जी, लागौ तुम लगि थेट। पिंण तूं मींटन मेलवे जी, ए व्रत दुक्कार नेट।—वि.कु.

देखो 'पींदौ' (अल्पा०, रू.भे.)

पिंदी—देखो 'पींदौ' (अल्पा०, रू.भे.)

पिंदौ—देखो 'पींदौ' (रू.भे.)

पिंधन-सं०पु० [सं० पिधानं] १ वस्त्र, कपड़ा ।

२ आवरण, ढक्कन ।

पिंयाल—देखो 'पाताल' (रू.भे.)

उ०—मलाई री जड़ ठेठ पिंयाल मैं है।—फुलवाड़ी

पि-सं०स्त्री०—१ विषय ।

२ योनि, भग ।

३ भीष्म ।

४ पवित्र ।

५ शिखा ।

६ स्वर्ग (एका.)

पिअ—देखो 'प्रिय' (रू.भे.)

पिअउ—देखो 'प्रिय' (रू.भे.)

पिअणौ, पिअबौ—देखो 'पीणौ, पीवौ' (रू.भे.)

उ०—आंगणि जळ तिरप उरप अलि पिअति, मरुत-चक्र किरि लियत मरू। रांमसरी खुमरी लागी रट, धूया माठा चद धरू।

—वेलि

पिग्रणहार; हारौ (हारी), पिग्रणियौ—वि० ।
पिश्रोड़ौ, पियोड़ौ—भू०का०कृ० ।
पिईजणौ, पिईजबौ—कर्म वा० ।

पिश्राई-सं०स्त्री० [स० पा] १ कुए से पानी निकाल कर पिलाने की क्रिया ।
२ उक्त कार्य करने वाले व्यक्ति को दिया जाने वाला पारिश्रमिक ।
३ जलाशयों व कुओं पर पशुओं को पानी पिलाने के बदले में दिया जाने वाला धन ।
४ देखो 'पिसाई' (रू.भे.)
रू०भे०—पिहाई, पी, पीश्राई, पीयाई ।

पिग्रार—१ देखो 'प्यार' (रू.भे.)
२ देखो 'पाताल' (रू.भे.)

पिग्रारौ—देखो 'प्यारौ' (रू.भे.)
उ०—ग्रला कन्या वाट जोवै कुंग्रारी । ग्रला परणीजै हिमै करिजै पिग्रारी ।—पी.ग्र.
(स्त्री० पिग्रारी)

पिग्रालौ—देखो 'प्यालौ' (रू.भे.)
उ०—पातिसाहां रा खासा भण्डा जाड़ां थंडां खंडां जाइस्यां । रूक पिग्राला पीग्रस्यां-पाइस्यां ।—वचनिका

पिग्रास—देखो 'प्यास' (रू.भे.)

पिग्रासौ—देखो 'प्यासौ' (रू.भे.)
(स्त्री० पिग्रासी)

पिउ—देखो 'प्रिय' (रू.भे.)
उ०—ऊनमियउ उत्तर दिसइं, काळी कंठळि मेह । हूं भीजूं घर ग्रंगणइ, पिउ भीजइ परदेह ।—ढो.मा.

पिउड़ौ—देखो 'प्रिय' (ग्रल्पा०, रू.भे.)
उ०—जारे तौ तइं इम कह्यु जी, तौ मइं छोडि रे ग्राठ । पिउड़ा मइं हंसतां कह्यु जी, कुणसुं करस्यूं वात ।—स.कु.

पिउहर—देखो 'पी'र' (रू.भे.)
उ०—ग्रर केही दिन उठै हि रहि चंदांणी कुमरांणी नूं ग्राधा न सहित पिउहर मेलिह ग्रायौ ।—वं.भा.

पिऊ—देखो 'प्रिय' (रू.भे.)

पिकंबर—देखो 'पैगंबर' (रू.भे.)
उ०—ग्रसुरांण-तुरकांण रा दळ राजांन ऊपरै विदा हुग्रा सो किण भांत रा कहीजै छै रहमांण रहींम ग्रलाह परवरदिगार; पीरां-पिकंवरां री ग्रोलाद ।—रा.सा.सं.

पिक—सं०स्त्री० [सं०] १ कोयल (ग्र.मा.); (डि.को.)
उ०—मोर सिखर ऊंचा मिळै, नाचै हुवा निहाल । पिक ठहकै भरणा पड़ै, हरिए डूंगर हाल ।—बां.दा.
२ काला* (डि.को.)
रू०भे०—पिकी ।

पिककंठी—वि० [सं० पिककण्ठी] कोयल के समान मधुर कण्ठ वाली ।

पिकवैणी—देखो 'पिकवैनी' (रू.भे.)

पिक-वलभ—सं०पु० [सं० पिकवल्लभ] ग्राम का वृक्ष (ग्र.मा.)

पिकवैनी—वि० [सं० पिक+वचन+रा.प्र.ई] कोयल के समान मधुर वाणी वाली ।
रू०भे०—पिकवैणी ।

पिकी—देखो 'पिक' (रू.भे.)

पिक्खणौ, पिक्खबौ—देखो 'पेखणौ, पेखबौ' (रू.भे.)
उ०—जिण दिट्ठइ हुई सुइ घम्ममइ, ग्रवहहु काइ उइखहु पहु नव फणि मंडिउ खास जिणु ग्रजयमेरि किन पिक्खहु ।—कवि-पल्ह

पिक्खिणौ, पिक्खिबौ—देखो 'पेखणौ, पेखबौ' (रू.भे.)
उ०—धण वरसंदा बूंद ज्यां, नहिं पार लहंदा । पांन तिरंदा पिक्खियै, पंथा उतरंदा ।—सू.प्र.

पिक्खियोड़ौ—देखो 'पेखियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० पिक्खियोड़ी)

पिखणय-सं०पु० [सं० प्रेक्षणम्] दृश्य । उ०—वेराउरि वर नयरि, तुर सहि गज्जंति ग्रंबरु । नच्चतिय वर रमणि, ठामिं-ठामि पिंखणय सुंदर ।—सारमूरति मुनि

पिगळणौ, पिगळबौ—देखो 'पिघळणौ, पिघळबौ' (रू.भे.)
पिगळणहार, हारौ (हारी), पिगळणियौ—वि० ।
पिगळिग्रोड़ौ, पिगळियोड़ौ, पिगळयोड़ौ—भू०का०कृ० ।
पिगळीजणौ, पिगळीजबौ—भाव वा० ।

पिगळाणौ, पिगळाबौ—देखो 'पिघळाणौ, पिघळाबौ' (रू.भे.)
पिगळणहार, हारौ (हारी), पिगळणियौ—वि० ।
पिगळायोड़ौ—भू०का०कृ० ।
पिगळाईजणौ, पिगळाईजबौ—कर्म० वा० ।

पिगळायोड़ौ—देखो 'पिघळायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० पिगळायोड़ी)

पिगळियोड़ौ—देखो 'पिघळियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० पिगळियोड़ी)

पिगाळणौ, पिगाळबौ—देखो 'पिघाळणौ, पिघाळबौ' (रू.भे.)
पिगाळणहार, हारौ (हारी), पिगाळणियौ—वि० ।
पिगाळिग्रोड़ौ, पिगाळियोड़ौ, पिगाळयोड़ौ—भू०का०कृ० ।
पिगाळीजणौ, पिगाळीजबौ—कर्म वा० ।

पिगाळियोड़ौ—देखो 'पिघाळियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० पिगाळियोड़ी)

पिघळणौ, पिघळबौ—क्रि०ग्र० [सं० प्र+गलनम्] १ ताप से किसी वस्तु का द्रव रूप में होना ।
२ चित्त में दया उत्पन्न होना, पसीजना । द्रवीभूत होना ।
उ०—१ पण तोई वौ मन माथै काबू राखियौ । दरसणां वासतै

आयोग्रा भगतां नै आतमा परमातमा परम मुगति अर कल्यांण रा वारा मैं आपरा स्रीमुख सूं अैड़ा आदेस करतौ के वांरी काया उण वगत पिघळती सी लखावती ।—फुलवाड़ी

उ०—२ उण वगत री अरड़ावणी सुणियौ तौ सिंघां रा ई काळजा पिघळ जावै ।—फुलवाड़ी

उ०—३ मिळण नै आया दिन सूं रात, पिघळना दळिया सांम्ही ढाळ । रह्यौ न दिन दिन रात न रात, विचाळै सांझ घणी जंजाळ ।—सांझ

पिघळणहार, हारौ (हारी), पिघळणियौ—वि० ।

पिघळाड़णौ, पिघळाड़बौ, पिघळाणौ, पिघळाबौ, पिघळावणौ, पिघळाववौ—प्रे०रू० ।

पिघळिग्रोड़ौ, पिघळियोड़ौ, पिघळयोड़ौ—भू०का०कृ० ।

पिघळीजणौ, पिघळीजबौ—भाव वा० ।

पिघाळणौ, पिघाळबौ—सक०रू० ।

परघळणौ, परघळबौ, पिगळणौ, पिगळबौ, पीगळणौ, पीगळबौ, पीघळणौ, पीघळबौ, प्रगळणौ, प्रगळबौ—रू०भे० ।

पिघळाड़णौ, पिघळाड़बौ—देखो 'पिघळाणौ, पिघळाबौ' (रू०भे०)

पिघळाड़णहार, हारौ (हारी), पिघळाड़णियौ—वि० ।

पिघळाड़िग्रोड़ौ, पिघळाड़ियोड़ौ, पिघळाड़्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

पिघळाड़ीजणौ, पिघळाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

पिघळाड़ियोड़ौ—देखो 'पिघळायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० पिघळाड़ियोड़ी)

पिघळाणौ, पिघळाबौ-क्रि०स० ['पिघळणौ' क्रि०काप्रे०रू] १ किसी कड़े या जमे हुए पदार्थ को गरमी पहुँचा कर द्रव रूप में लाना ।

२ किसी के मन में दया उत्पन्न करना ।

पिघळाणहार, हारौ (हारी), पिघळाणियौ—वि० ।

पिघळायोड़ौ—भू०का०कृ० ।

पिघळाईजणौ, पिघळाईजबौ—कर्म वा० ।

पिघळणौ, पिघळबौ—अक०रू० ।

पिगळाणौ, पिगळाबौ, पिघळाड़णौ, पिघळाड़बौ, पिघळावणौ, पिघळावबौ ।—रू०भे० ।

पिघळायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ किसी कड़े या जमे हुए पदार्थ को गरमी पहुचा कर द्रव रूप में लाया हुआ ।

२ दयार्द्र किया हुआ ।

(स्त्री० पिघळायोड़ी)

पिघळावणौ, पिघळावबौ—देखो 'पिघळाणौ, पिघळाबौ' (रू०भे०)

उ०—धूंहरि पड़य अथाह, ते विरहानल नौ धूंम । वैगा जावौ कोई, पिघळावौ प्रिय मन मूंम ।—ध.व.ग्रं.

पिघळावणहार, हारौ (हारी), पिघळावणियौ— वि० ।

पिघळाविग्रोड़ौ, पिघळावियोड़ौ, पिघळाव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

पिघळावीजणौ, पिघळावीजबौ—कर्म वा० ।

पिघळावियोड़ौ—देखो 'पिघळायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० पिघळावियोड़ी)

पिघळियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ ताप के कारण किसी घन पदार्थ का द्रव रूप में हुवा हुआ ।

२ चित्त में दया उत्पन्न हुवा हुआ, पसीजा हुआ, द्रवीभूत हुवा हुआ ।

(स्त्री० पिघळियोड़ी)

पिघाळणौ, पिघाळबौ-क्रि०स० [सं० प्रगलनम्] १ किसी घन पदार्थ को ताप द्वारा द्रव रूप में करना ।

२ किसी के चित्त में दया उत्पन्न करना ।

पिघाळणहार, हारौ (हारी), पिघाळणियौ—वि० ।

पिघाळिग्रोड़ौ, पिघाळियोड़ौ, पिघाळयोड़ौ—भू०का०कृ० ।

पिघाळीजणौ, पिघाळीजबौ—कर्म०वा० ।

पिघळणौ, पिघळबौ—अक०रू० ।

पिगाळणौ, पिगाळबौ, पीघाळणौ, पीघाळबौ—रू०भे० ।

पिघाळियोड़ौ-भू०का०कृ०—किसी घन पदार्थ का ताप द्वारा द्रव रूप में किया हुआ ।

२ किसी के चित्त में दया उत्पन्न किया हुआ ।

(स्त्री० पिघाळियोड़ी)

पिड़-सं०पु०—युद्ध, संग्राम ।

उ०—आजे मींत अमल्ल, लग्ग-वग्गां खणकारां । पिड़ सींधू सुर पड़ै, भड़ां कांनां भणकारां ।—ऊ.का.

रू०भे०—पिड़ि ।

पिड़गनूं, पिड़गनौ—देखो 'परगनौ' (रू.भे.)

उ०—जैं दिन अराई को पिड़गनूं भी रीज कीनूं । भादरसिंघ लीनूं भूप माधोसिंघ दीनूं ।—शि.वं.

पिड़गी-सं०स्त्री० [सं० पिटक] ध्वनि, आवाज ।

पिड़जांन—देखो 'पड़जांन' (रू.भे.)

पिड़वा—देखो 'पड़वा' (रू.भे.)

उ०—इकताळा रै चैत सुद, आद उदे नवरात । असुरां सिर आयौ 'अखौ', पिड़वा रै परभात ।—रा.रू.

पिड़ि-सं०पु० [सं० पिंड] १ वृक्ष का तना ।

उ०—घटिघटि घण घाउ घाइ घाइ रत घण, ऊंच छिछ ऊछळै अति । पिड़ि नीपनौ कि खेत्र प्रवाळा, सिरा हस नीसरै सति ।
—वेलि

२ देखो 'पिड़' (रू.भे.)

उ०—हसतिमार भेळौ हुग्रौ, काळौ दळां किंवाड़ । माया पड़ि गाहण भड़ां, पिड़ि अणभंग पहाड़ ।—वचनिका

पिचंड-सं०पु० [सं०] उदर, पेट (डि.को., ह.नां.)

पिचंतर-वि० [सं० पञ्च सप्तति] सत्तर और पांच का योग ।

उ०—ले माल घनै ढांणी लगै, डारण खग हथ दौड़ियां । अंत-रूप साढ धोड़ै सैहत, वढ़ी पिचंतर घोड़ियां ।—पा.प्र.

रू०भे०—पचेतर, पंचोतर, पचहत्तर ।

पिचंतरमों-वि०—पचहत्तरवां, ७५वां।
रू०भे०—पचहत्तरमो।
पिचंतरे'क-वि०—पचहत्तर के लगभग।
रू०भे०—पचहत्तरे'क।
पिचंतरो-सं०पु०—पचहत्तर का वर्ष।
रू०भे०—पंचोतरो, पचहत्तरो।
पिचक—देखो 'पंचक' (रू.भे.)
पिचकणो, पिचकबो-क्रि०अ० [सं० पिच्च्-दबना] किसी फूले या उभरे हुए तल का दब जाना। उ०—दोवड़ी कमर, पिचक्योड़ा गाल नैं बैया रै आंळा जिसा लटकता हांचळ।—फुलवाड़ी
पिचकणहार, हारो (हारी), पिचकणियो—वि०।
पिचकाड़णो, पिचकाड़बो, पिचकाणो, पिचकाबो, पिचकावणो, पिचकावबो—प्रे०रू०।
पिचकिग्रोड़ो, पिचकियोड़ो, पिचक्योड़ो—भू०का०कृ०।
पिचकीजणो, पिचकीजबो—भाव वा०।
पिचकाड़णो, पिचकाड़बो—देखो 'पिचकाणो, पिचकाबो' (रू.भे.)
पिचकाड़णहार, हारो (हारी), पिचकाड़णियो—वि०।
पिचकाड़िग्रोड़ो, पिचकाड़ियोड़ो, पिचकाड़्योड़ो—भू०का०कृ०।
पिचकाड़ीजणो, पिचकाड़ीजबो—कर्म वा०।
पिचकाड़ियोड़ो—देखो 'पिचकायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० पिचकाड़ियोड़ी)
पिचकाणो, पिचकाबो-क्रि०स० ('पिचकाणो' क्रिया का प्रे०रू०) किसी फूले अथवा उभरे हुए तल को दबवाना।
पिचकाणहार, हारो (हारी), पिचकाणियो—वि०।
पिचकायोड़ो—भू०का०कृ०।
पिचकाईजणो, पिचकाईजबो—कर्म वा०।
पिचकणो, पिचकबो—अक० रू०।
पिचकायोड़ो-भू०का०कृ०—किसी फूले अथवा उभरे तल को दबवाया हुआ।
(स्त्री० पिचकायोड़ी)
पिचकार, पिचकारका, पिचकारी-सं०स्त्री० [सं० पिच्चकार] १ पानी या अन्य तरल पदार्थ को जोर से फेंकने का एक नलदार यंत्र।
उ०—१ रसियो तो वंदो पिण वंदी बी तरंदार, पिचकार थें तो करणफूल सूं बचावें छै।—पनां बीरमदे री वात
उ०—२ कई छळ सूं पिचकारका कान में न्हांके छै।
—पनां बीरमदे री वात
उ०—३ घणै अबीर नैं गुलाल मांहे गरकाव हुवा थकां अबीर गुलाल उड़ि रहिया छै। दिस दिस केसरिम्रां पिचकारी छूटि रही छै।—रा.सा.सं.
क्रि०प्र०—चलाणी, छोडणी, मारणी, लगाणी।
मुहा०—१ पिचकारी छूटणी—तरल पदार्थ का पतली धार से फुहारे की तरह निकलना।
२ पिचकारी छोडणी—पानी, रंगीन पानी आदि को पिचकारी से फेंकना।
२ इस यंत्र के द्वारा छोड़ी जाने वाली लम्बी द्रव-धारा।
३ इसी धारा के समान अन्य किसी पदार्थ से निकली हुई लम्बी द्रव-धारा।
अल्पा०—पिचरकी, पीचरकी।
मह०—पिचरको, पीचरको।
पिचकावणो, पिचकावबो—देखो 'पिचकाणो, पिचकाबो' (रू.भे.)
पिचकावणहार, हारो (हारी), पिचकावणियो—वि०।
पिचकाविग्रोड़ो, पिचकावियोड़ो, पिचकाव्योड़ो—भू०का०कृ०।
पिचकावीजणो, पिचकावीजबो—कर्म वा०।
पिचकाव्योड़ो—देखो 'पिचकायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० पिचकावियोड़ी)
पिचकिच-सं०पु० [देशज] खजूर (अ.मा.)
पिचकियोड़ो-भू०का०कृ०—दबा हुआ (फूला अथवा उभरा तल)
(स्त्री० पिचकियोड़ी)
पिचड़णो, पिचड़बो—देखो 'पिछड़णो, पिछड़बो' (रू.भे.)
पिचड़णहार, हारो (हारी), पिचड़णियो—वि०।
पिचड़िग्रोड़ो, पिचड़ियोड़ो, पिचड़्योड़ो—भू०का०कृ०।
पिचड़ीजणो, पिचड़ीजबो—भाव वा०।
पिचड़ियोड़ो—देखो 'पिछड़ियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० पिचड़ियोड़ी)
पिचपिचाणो, पिचपिचाबो-क्रि०अ० [सं० पिच्च] पिचकने के कारण घाव या किसी अन्य वस्तु से पानी, गूदा या पीव आदि का बाहर निकलना, रसना।
पिचपिचाणहार, हारो (हारी), पिचपिचाणियो—वि०।
पिचपिचायोड़ो—भू०का०कृ०।
पिचपिचीजणो, पिचपिचीजबो—भाव वा०।
पिचपिचायोड़ो-भू०का०कृ०—रसाया हुआ।
(स्त्री० पिचपिचायोड़ी)
पिचपिचाहट-सं०पु०—गीला या आर्द्र रहने का भाव, पिचपिचाने का भाव।
पिचपिचो—१ देखो 'चिपचिपो'।
२ देखो 'पचपचो' (रू.भे.)
पिचरंग—१ देखो 'पचरंग' (रू.भे.)
२ देखो 'पचरगो' (रू.भे.)
उ०—सुपने में देख्या भवरजी नैं आवता जी। कोई माथै पिचरंग पाग (ए जी ए) पाग।—लो.गी.
पिचरंगो—देखो 'पचरंगो' (रू.भे.)
उ०—तूटै म्हारा वाजूबा री लूंब, लट उळझी जाय। कोई पिचरंगे

मोळियँ रा पल्ला लहराय ।—चेत मांनखा

पिचरकी—देखो 'पिचकारी' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—सहज भाव सुगंध तेलइं, पिचरकी सम जल रसइं । गुण राग-रंग गुलाल उडइ, करुण ससबोही वसइ ।—वि.कु.

पिचरको—देखो 'पिचकारी' (मह., रू.भे.)

उ०—ग्रस्त्र गुलाल ग्रबीर उडायो । सस्त्र पिचरका छिव सरसायो । —ऊ.का.

पिचांणणो, पिचांणबो—देखो 'पें'चांणणो, पें'चांणबो' (रू.भे.)

पिचांणणहार, हारो (हारी), पिचांणणियो—वि० ।

पिचांणिग्रोड़ो, पिचांणियोड़ो, पिचांण्योड़ो—भू०का०कृ० ।

पिचांणीजणो, पिचांणीजबो—कर्म वा० ।

पिचांणवों—देखो 'पंचांणूमों' (रू.भे.)

पिचांणियोड़ो—देखो 'पें'चांणियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० पिचांणियोड़ी)

पिचास—देखो 'पिसाच' (रू.भे.)

(स्त्री० पिचासणी)

पिचियासियो-सं०पु०—८५वां वर्ष ।

रू०भे०—पचियासियो ।

पिचियासी-वि० [सं० पञ्चाशीति] जो गिनती में अस्सी और पांच हो, पांच कम नव्वे ।

सं०पु०—पचासी की सूचक संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—८५ ।

रू०भे०—पंचासी, पंच्यासी, पंच्यासीइ, पचियासी, पच्चासी, पिच्यासी ।

पिचियासी'क-वि०—८५ के लगभग ।

पिचियासीमों-वि०—८५ वां ।

पिचियो-सं०पु०—१ छोटा बच्चा । उ०—तठा उपरांत सूरदास उण नें समझावतां कह्यो—अबै बाला वोली रें' । थूं ई सोच, थारै रोवण सूं कांई कारी लागेला । सांमो ग्रो बाळ पिचियो चमकेला ।—फुलवाड़ी

२ फोड़ा, फुंसी ।

रू०भे०—पचियो ।

पिचुळ-सं०पु०—झाऊ का पेड़ ।

पिचू-सं०पु० [देशज] १ कैर का वृक्ष ।

२ कैर का पका हुआ फल (जयसलमेर)

३ नीम का वृक्ष । उ०—उखारत मूल पिचू बदुतार । बजारनि हाक परी हटनार ।—ला.रा.

पिचोतर—देखो 'पचोतर' (रू.भे.)

पिचोतर-सौ—देखो 'पचोतर-सौ' (रू.भे.)

पिचोतरी-सं०स्त्री० [सं० पंचोतर+रा.प्र. ई] सौ के ऊपर पांच ।

पिचोवड़ो—देखो 'पछेवड़ो' (रू.भे.)

पिच्चक—देखो 'पंचक' (रू.भे.)

पिच्छ-सं०पु० [सं०] पंख, पर । उ०—गुणवंता सहू को करइ, जिहां जाई तिहां इच्छ । नरपति सिर-सेहरि धरि, मोर-तणां जे पिच्छ ।—मा.कां.प्र.

पिच्छम—देखो 'पच्छिम' (रू.भे.)

उ०—'ग्रोरंग' कोप विलोप भू, गिणै अकब्बर साह । सांम्हा चढिया बावसू, खड़िया पिच्छम राह ।—रा.रू.

पिच्छु-सं०स्त्री०—ह्रस्व इकार की मात्रा । उ०—किवलो पिच्छु कहे लहू, लघु अंक लहावै । गिणै छंद दस गुरु, कवी लघु चार कहावै । —र.ज.

पिच्यांणमैं—देखो 'पचांणू' (रू.भे.)

पिच्यांणमों—देखो 'पचांणूमों' (रू.भे.)

पिच्यांणु—देखो 'पचांणू' (रू.भे.)

पिच्यासी—देखो 'पिचियासी' (रू.भे.)

पिछक-सं०पु० [सं० पिच्छक] तमालपत्र (ग्र.मा.)

पिछड़णो, पिछड़बो-क्रि०ग्र० [सं० पश्चात्कृत] १ पीछे रह जाना ।

क्रि०स०—२ बलपूर्वक किसी चीज को इस प्रकार दबाना कि वह टूट-फूट जाय ।

३ किसी रसदार वस्तु को दबा कर रस निकालना ।

पिछड़णहार, हारो (हारी), पिछड़णियो—वि० ।

पिछड़िग्रोड़ो, पिछड़ियोड़ो, पिछड़्योड़ो—भू०का०कृ० ।

पिछड़ीजणो, पिछड़ीजबो—भाव वा०, कर्म वा० ।

पिछड़ियोड़ो-भू०का०कृ०—१ पीछे रहा हुआ ।

२ दबाव से टूटा हुआ (पदार्थ)

३ दबा कर रस निकाला हुआ (पदार्थ)

(स्त्री० पिछड़ियोड़ी)

पिछताग्रो—देखो 'पछतावो' (रू.भे.)

पिछताणो, पिछताबो—देखो 'पछताणो, पछताबो' (रू.भे.)

उ०—संकर वेगो गयो सिधाई । परजा दुखी घणी पिछताई । —ऊ.का.

पिछताणहार, हारो (हारी), पिछताणियो—वि० ।

पिछतायोड़ो—भू०का०कृ० ।

पिछताईजणो, पिछताईजबो—भाव वा० ।

पिछताप, पिछतापो—देखो 'पछतावो' (रू.भे.)

पिछतायोड़ो—देखो 'पछतायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० पिछतायोड़ी)

पिछताव—देखो 'पछतावो' (रू.भे.)

पिछतावणो, पिछतावबो—देखो 'पछताणो, पछताबो' (रू.भे.)

उ०—यां को धन तो परो दिरावो । अरु ब्रह्महत्या का प्राछत करावो । नहीं तो पछै ही पछतावस्यो । निदांन मारा जावस्यो । —प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

पिछतावणहार, हारौ (हारी), पिछतावणियौ—वि० ।
पिछताविश्रोड़ौ, पिछताविपोड़ौ, पिछताव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
पिछतावीजणौ, पिछतावीजबौ—भाव वा० ।

पिछताविपोड़ौ—देखो 'पछतायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० पछताविपोड़ी)

पिछतावौ—देखो 'पछतावौ' (रू.भे.)
उ०—वो मन में पिछतावौ करतौ के जोवण रा बारै बरस यूं ई तप में विरथा गंवाया ।—फुलवाड़ी

पिछम—देखो 'पच्छिम' (रू.भे.)

पिछमांण—देखो 'पछमांण' (रू.भे.)
उ०—सारस केळ करै संजोड़, ऊंचा भमंग चढै तर श्रोड़ै । दिस पिछमांण बादळा दौड़, तद जळ नदियां ढावा तोड़ै ।
—वर्षा विज्ञान

पिछमांणौ—देखो 'पछमांण' (रू.भे.)

पिछमाद-सं०स्त्री० [सं० पश्चिम+रा. प्र. श्राद] पश्चिम दिशा ।
उ०—सूरज सह सोढांण रौ, महिपत घर पिछमाद । रांणां ऊभां रावतां, हूंण न देवां वाद ।—पा.प्र.

पिछमियौ—देखो 'पच्छिमी' (अल्पा., रू.भे.)

पिछलगी-सं०स्त्री०—पिछलग्गा होने का भाव, अनुसरण ।

पिछलगू, पिछलगौ, पिछलग्गू-सं०पु० [देशज] (स्त्री० पिछलगी) १ वह मनुष्य जो किसी के पीछे पीछे चले ।
२ अनुगामी, शिष्य ।
३ सेवक, नौकर ।

पिछलौ—देखो 'पाछलौ' (रू.भे.)
उ०—१ भगवत करता नै करतब भुगतावै, पिछला पापां रा पांमर फळ पावै ।—ऊ.का.
उ०—२ गरवा लाय पिछली रात कूं मिल्यौ कुंजन में । नटवर वेस किये अलबेलै ।—रसीलैराज
(स्त्री० पिछली)

पिछवा-सं०स्त्री० [सं० पश्चिम] पश्चिम दिशा का वायु ।
उ०—ठंडी ठंडी पिछवा चालै, ऊपर वरसै मेह । सारै वदन में छूटै कंपकंपी, भीजै सारी देह । मारूजी सुनसांन जंगळ में, रात अंधेरी थांरौ चालीवौ ।—लो.गी.
रू०भे०—पछवा ।

पिछवाई—देखो 'पछवाई' (रू.भे.)

पिछवाड़ौ—देखो 'पछवाड़ौ' (रू.भे.)
उ०—मोरी गळियन में श्रावौ जी घणस्यांम । पिछवाड़ै श्राय हेलो दीजो, ललिता सखी है मेरो नांम ।—मीरां

पिछवौ-सं०पु० [सं० पृष्ठ ?] पीठ के पीछे और पूंछ के ऊपर का हाथी का एक आभूषण ।

पिछांण—देखो 'पैचांण' (रू.भे.)
उ०—१ श्रोखधि पिछांण खावौ श्रमल, श्रोखधि है नह श्रकल रौ । श्रसल रौ मजौ क्यूं श्रौर है, निकमूं श्राणंद नकल रौ ।—ऊ.का.
उ०—२ बांमणी सूं खिलपोड़ी करता थका कंवरा लागा—म्हाराज कवरां सूं तौ थारी जलम २ री श्रोळख पिछांण है । पाखती गयां थूं सगळा पिछांण काढ लेवैला ।—फुलवाड़ी

पिछांणणौ, पिछांणबौ—देखो 'पैचांणणौ, पैचाणबौ' (रू.भे.)
उ०—जात पांत सपने सम जांणूं । पाप पुण्य नहिं एक पिछांणूं ।
—ऊ.का.

पिछांणणहार, हारौ (हारी), पिछांणणियौ—वि० ।
पिछांणिश्रोड़ौ, पिछांणियोड़ौ, पिछांणघोड़ौ—भू०का०कृ० ।
पिछांणीजणौ, पिछांणीजबौ—कर्म वा० ।

पिछांणियोड़ौ—देखो 'पैचांणियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० पिछांणियोड़ी)

पिछांणी, पिछांणु—देखो 'पैचांण' (रू.भे.)
उ०—माया दिसि रहे जन सोय । रांम भजन का श्रानंद होय । जन हरिदास तब भई पिछांणी । जब मिटि गई कुटुंब की कांणी ।
—ह पु.वा.

पिछाड़ी—देखो 'पछाड़ी' (रू.भे.)

पिछावड़ौ—देखो 'पछोकड़ौ' (रू.भे.)

पिछी—सं०स्त्री०—ह्रस्व इकार की मात्रा ।

पिछुं-सं०पु० [सं० पुच्छ] १ पूंछ । उ०—उर ढाल वाठका वणै एम झाटका पिछुं दा चवर जेम ।—पे.रू.
२ देखो 'पिच्छू' (रू.भे.)

पिछेड़ी—देखो 'पछेवडी' (रू.भे.)

पिछेड़ौ—देखो 'पछेवड़ौ' (रू.भे.)

पिछेवड़ौ—देखो 'पछेवड़ौ' (रू.भे.)
उ०—कचियौ प्रेम पिछेवड़ौ, कीधी सेज तियार । गोवर रमै मंदिर गई, पिउ मांणी तिण वारि ।—व स.

पिछोकड़, पिछोकड़ौ, पिछोकडउ, पिछोकडौ—देखो 'पछोकड़ौ' (रू.भे.)
उ०—१ वीरो मेरो दौड़ पिछोकड़ जाय । भावज तौ घर में घुस गई जी म्हांरा राज ।—लो.गी.
उ०—२ मूळू छोडै चढ पाटण श्रायौ, सो माळी रै घर में पिछोकड़ै श्राय ऊभो रह्यौ ।—नैणसी

पिछोड़ी—देखो 'पछेवड़ी' (रू.भे.)
उ०—वायर पिछोड़ी को गालणौ हो देवी, रनु बाई भात लई जाय ।
—लो.गी.

पिछोड़ौ, पिछोवड़ौ—देखो 'पछेवड़ौ' रू.भे.)

पिछोहा-सं०पु० [देशज] सांसी जाति में पुत्र जन्म के छठे दिन अपने भाई-बंधुओं को दिया जाने वाला भोज (मा.म.)

पिजूसण—१ देखो 'पिजूसण' (रू.भे.)

२ देखो 'परयूसरा' (रू.भे.)

पिटंत-सं०स्त्री०—पीटने की क्रिया, मारपीट ।

पिटणौ, पिटबौ-क्रि०अ० [सं० पीडनम्] १ पीटा जाना, मार खाना ।

२ प्रतियोगिता आदि में हारना ।

३ कुछ खेलों में गोट, मोहरे आदि का मारा जाना ।

उ०—जुगत बिन सतरंज जीत न जांणी । ऊमरदांन विवेक बिना वपु, पैदल खूब पिटांणी । बुरद भई न भई चौमोरे, प्याद मात भई प्रांणी ।—ऊ.का.

पिटणहार, हारौ (हारी), पिटणियौ—वि०।

पिटवाड़णौ, पिटवाड़बौ, पिटवाणौ, पिटवाबौ, पिटवावणौ, पिटवावबौ, पिटाड़णौ, पिटाड़बौ, पिटाणौ, पिटाबौ, पिटावणौ, पिटावबौ —प्रे०रू० ।

पिटिग्रोड़ौ, पिटियोड़ौ, पिट्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

पिटीजणौ, पिटीजबौ—भाव वा० ।

पिटपिट-सं०स्त्री० [अनु०] किसी छोटी वस्तु के गिरने से उत्पन्न ध्वनि

पिटपिटाणौ, पिटपिटाबौ-क्रि०अ० [अनु०] असमर्थता के कारण हाथ पैर पटक कर विवश होकर रह जाना ।

पिटपिटी-सं०स्त्री० [अनु०] दाना पड़ने से पूर्व के चने के फल ।

पिटल-सं०पु०—१ मारवाड़ राज्यांतर्गत एक काश्तकार कौम या जाति ।

२ इस जाति का व्यक्ति (मा.म.)

रू०भे०—पटल, पटेल, पटैल ।

पिटांट-वि० [देशज] दुबलापतला, अशक्त ।

पिटाई-सं०स्त्री० [सं० पीडनम्] १ पीटने की क्रिया या भाव ।

ज्यूं—छात री पिटाई ।

२ पीटने की मजदूरी ।

३ किसी पर पड़ने वाली मार ।

पिटाट-सं०पु० [देशज] सिर, मस्तक (व्यंग्य)

पिटाड़णौ, पिटाड़बौ—देखो 'पिटाणौ, पिटाबौ' (रू.भे.)

पिटाड़णहार, हारौ (हारी), पिटाड़णियौ—वि० ।

पिटाड़िग्रोड़ौ, पिटाड़ियोड़ौ, पिटाड़्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

पिटाड़ीजणौ, पिटाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

पिटाड़ियोड़ौ—देखो 'पिटायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० पिटाड़ियोड़ी)

पिटाणौ, पिटाबौ-क्रि०स० ('पिटणौ' क्रिया का प्रे०रू०) १ पिट या जाना, मार खिलाना ।

२ प्रतियोगिता आदि में हराना ।

३ कुछ खेलों में गोट, मोहरे आदि को मरवाना ।

पिटाणहार, हारौ (हारी), पिटाणियौ—वि० ।

पिटायोड़ौ—भू०का०कृ० ।

पिटाईजणौ, पिटाईजबौ—कर्म वा० ।

पिटायोड़ौ-भू०का०कृ०—पिटाया हुआ, मार खिलाया हुआ ।

२ प्रतियोगिता आदि में हराया हुआ ।

३ कुछ खेलों में गोट, मोहरे आदि को मरवाया हुआ ।

(स्त्री० पिटायोड़ी)

पिटापिट-सं०पु० [अनु०] १ ध्वनि, आवाज ।

२ मारपीट ।

पिटारी-सं०स्त्री०—१ पान रखने का पात्र ।

२ देखो 'पिटारौ' (अल्पा., रू.भे.)

पिटारौ-सं०पु० [सं० पिटकः] बांस, बेंत, मूंज आदि के नरम छिलकों का बना एक प्रकार का बड़ा सम्पुट या ढकनेदार डलिया ।

उ०—१ करै उपकार भव्य जीव नौ जी, ग्यांन पिटारौ खोल । विकथा लबार करै नहीं जी, बोलै है गिणिया बोल ।—जयवांणी

उ०—२ मांनतौ जंत्र न मंत्र मांनतौ, वैण न मांनतौ मंडतौ वीक । गुरड़ जिम ग्रासकरण तणौ गावड़ ग्रहे, पिटारै घालियौ पनंग पुंडरीक ।

—दुरगादास राठौड़ री गीत

अल्पा०—पिटारी ।

पिटावणौ, पिटावबौ—देखो 'पिटाणौ, पिटाबौ' (रू.भे.)

पिटावणहार, हारौ (हारी), पिटावणियौ—वि० ।

पिटाविग्रोड़ौ, पिटावियोड़ौ, पिटाव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

पिटावीजणौ, पिटावीजबौ—कर्म वा० ।

पिटावियोड़ौ—देखो 'पिटायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० पिटावियोड़ी)

पिटियारी—देखो 'पटियारी' (रू.भे.)

पिटियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ पिटा हुआ ।

२ प्रतियोगिता आदि में हारा हुआ ।

३ कुछ खेलों में गोट, मोहरा आदि को मरवाया हुआ ।

(स्त्री० पिटियोड़ी)

पिट्ठ, पिट्ठी—देखो 'पीठ' (रू.भे.)

उ०—पत्न प्रवळ पिसन पिक्खै न पिट्ठ । रजवट वट दै रट्ठौर रिट्ठ ।

—ऊ.का.

पिट्ठू-वि० [सं० पृष्ठ+रा.प्र.ऊ] पीछे चलने वाला, अनुयायी ।

२ सहायक; मददगार ।

पिठपरा-सं०स्त्री० [सं० पृष्ठपर्णी] औषधि के काम आने वाली एक प्रसिद्ध लता ।

पिठांण—देखो 'पीठांण' (रू.भे.)

पिडीयार—देखो 'प्रतिहार' (रू.भे.)

उ०—पिडीयार लखमणदास गोपाळोत ।—नैणसी

पिढलौ—देखो 'पीढौ' (अल्पा०, रू.भे.)

पिढीयार—देखो 'प्रतिहार' (रू.भे.)

उ०—पिढीयार सादूळोत ।—नैणसी

पिण—देखो 'पण' (रू.भे.)

उ०--१ कुतक खिदर धव काठ रा, विदर पजावण वेस। तो पिण हाजर राखणा, घण मेखचा हमेस।--बां.दा.

उ०--२ ताहरै माहरै प्रीतड़ी जी, आज थी थई रे प्रमांण। पिण दस दिवस मुझ कत नी जी, कांइक राखीयै कांण।--वि.कु.

पिणघट--देखो 'पणघट' (रू.भे.)

उ०--दै घर री तज देहली, पिणघट सांमां पाय। वाजै घूघर पार विण, सोर सरोवर जाय।--बां.दा.

पिणच-सं०स्त्री० [देशज] १ बुना हुआ कपड़ा फैलाने का दो लकड़ियों का बना ढांचा।

२ देखो 'पणच' (रू.भे.)

३ देखो 'पुणच' (रू.भे.)

पिणचोजणो-सं०पु० [देशज] १ ऊंट के पिछले पैर के नीचे के भाग मे सूजन आने से होने वाला रोग।

२ उक्त रोग से पीड़ित ऊंट।

पिणछोजणो, पिणछोजबो-क्रि०अ०--ऊंट के पिछले पैर के नीचे के भाग में सूजन आना।

पिणयार, पिणहार, पिणहारी--देखो 'पणियार' (रू.भे.)

पिणि--देखो 'पण' (रू.भे.)

उ०--इहि विचि की संधि सु वयसंधि कहावै। जैसे सुपिनो। न सोवै छै न जागै छै। आगै पल-पल चढतो होसी। पिणि हिवै वैसंधि को इसो प्रथम ग्यांन ताकी इसी परिछै।--वेलि.टी.

पिणियार, पिणियारी, पिणिहार, पिणिहारी--देखो 'पणियार' (रू.भे.)

उ०--१ सरवरियै नै लहरां पूछ्यौ--क्यूं आई पिणियार ? पिणघट बोल्यौ--भंवर मिलण नै आई भोळी नार।--चेत मांनखा

उ०--२ ताहरां कूंभै सैचाळ नूं कह्यौ--रे मूंहडै मूंछ छै, मरद कहावै छै, इये पिणियारी नूं घड़ो क्यूं नहीं उखणावै छै।

--नैणसी

उ०--३ ताहरां एक पिणिहारी तळाव आई, अर कह्यौ--'वीरा, वैर किण सरदार री गई।'--नैणसी

पितंबर--देखो 'पीतांबर' (रू.भे.) (अ.मा.)

उ०--खिरोद कम्र खीनखास, धारियं धुजंबरं। सुसोभितं सिखा स मुत्र, सेनयं पितंबरं।--सू.प्र.

पित--१ देखो 'पिता' (रू.भे.) (अ.मा.)

उ०--१ धरि गुरु वचन वचन पित धारे। प्रभु सिय-जुत वनवास पधारे।--सू.प्र.

उ०--२ मात सलांमत पित मुआ, आवै नहीं आपांण। घांमघूम मिजनू घटा, जे मावड़िया जांण।--बां.दा.

२ देखो 'पित्त' (रू.भे.)

उ०--आधिभूतक आधिदेव अध्यातम, पिंड प्रभवति कफ-वात-पित। त्रिविध ताप तसु रोग त्रिविधि मैं, नं भवंति वेलि जपंत नित।

--वेलि

पितकाळी, पितगाळी-सं०स्त्री० [सं० पित्ताकारी] लाल मिर्च (जयसलमेर)

पितपति--देखो 'पितरपति' (रू.भे.) (नां.मा.)

पितरपापड़ो--देखो 'पित्तपापड़ो' (रू.भे.)

पितमनमथ-सं०पु०यौ० [सं० मन्मथ-पिता] मन (ह.नां.मा.)

पितर-सं०पु० [सं० पितृ, पितरः] (स्त्री० पितरांणी) १ परलोकवासी वे पूर्वज जिनके नाम पर कर्मकाण्ड के अनुसार श्राद्ध, तर्पण आदि कर्म किए जाते हैं।

२ ऐसा मृत व्यक्ति जो प्रेतत्व से मुक्त हो चुका हो।

३ एक प्रकार के देवता जो सब जीवों के आदि पूर्वज माने जाते हैं।

उ०--देव पितर इण सूं डरै, रसक तरै किण रीत। हेम रजत पातर हरै, पातर करै पलीत।--बां.दा.

४ सामाजिक रूढि के अनुसार किसी परिवार विशेष में विवाहित या अविवाहित वह मृतक जिसको देव योनि में मान कर उसकी पूजा की जाती है।

वि०वि०--किसी व्यक्ति के मरणोपरान्त उसको देव योनि में मानते हुए घर में 'परींडे' पर पाहन को प्रतीक रूप में स्थापित कर धूप-दीप से किसी दिवस विशेष पर पूजा करते हैं। इसके अतिरिक्त किसी समस्या के समाधानार्थ उसको धूप दीप आदि से या वैसे ही याद करने पर उसकी आत्मा का घर के किसी व्यक्ति के शरीर में प्रवेश होता है और फिर उससे इच्छित प्रश्नोत्तर किए जाते हैं।

रू०भे०--पियर, पित्तर, पित्रो, पित्रेस्वर, पित्रैसर, पीतर।

अल्पा०--पितरियो।

पितरपति-सं०पु०यौ० [सं० पितृ+पति] धर्मराज, यमराज (डिं.को.)

रू०भे०--पितपति।

पितरांमेळा-सं०पु० [सं० पितृ+मेलक] मृत पुरुष के लिए बारह दिन के उपरांत पुत्र द्वारा सपिंडी श्राद्ध कृत्य से प्रेतत्व निवृत्ति के पश्चात् पितृत्व प्राप्त करवाने की क्रिया। उ०--पण हाल पितरांमेळो अर बारह महीनां रा टीमल तो बाकी-ई पड़िया है।

--वरसगांठ

रू०भे०--पितरीमेळो, पित्रीमेळो।

पितरियो--देखो 'पितर' (अल्पा., रू.भे.)

उ०--वीर नो पितरियो नांम सु-पास ए।--स.कु.

पितरीमेळो--देखो 'पितरांमेळो' (रू.भे.)

पितरेसुर-सं०पु० [सं० पित्रीश्वर] देखो 'पित्रेस्वर' (रू.भे.)

उ०--आवै अनदातार नूं, भारथ खळां भळाय। पितरेसुर जिण रा पड़ै, नरक विचाळै न्याय।--बां.दा.

पितळकण--देखो 'पितळण' (रू.भे.)

पितळकणो, पितकळबो--देखो 'पितळणो, पितळबो' (रू.भे.)

पितळकणहार, हारो (हारी), पितळकणियो--वि०।

पितळकिओड़ो, पितळकियोड़ो, पितळक्योड़ो--भ०का०कृ०।

पितळकीजणो, पितळकीजबो—भाव वा०।

पितळकियोड़ो—देखो 'पितळियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० पितळकियोड़ी)

पितळण-सं०स्त्री०—१ फिसलने की क्रिया या भाव, फिसलन।
२ ऐसा स्थान जहां चिकनाई के कारण कोई वस्तु या पैर जम न सके।
३ ऐसा पदार्थ या स्थान जिस पर रखने से कोई वस्तु ठहर न सके और रपट जाय।
रू०भे०—पितळकण।

पितळणो, पितळबो-क्रि०अ०—१ फिसलना, रपटना।
उ०—एक दिन अजांण उण रो पग पितळियो। गूंण मांयलो सं लूंण पांणी में गळग्यो।—फुलवाड़ी
२ किसी तरल पदार्थ का पीतल के बर्तन में रखने से कसैला होना, कसिया जाना।
पितळणहार, हारो (हारी), पितळणियो—वि०।
पितळाड़णो, पितळाड़बो, पितळाणो, पितळाबो, पितळावणो, पितळावबो—प्रे०रू०।
पितळिप्रोड़ो, पितळियोड़ो, पितळ्योड़ो—भू०का०कृ०।
पितळीजणो, पितळीजबो—भाव वा०।
पितळकणो, पितळकबो—रू०भे०।

पितळाड़णो, पितळाड़बो—देखो 'पितळाणो, पितळाबो' (रू.भे.)
पितळाड़णहार, हारो (हारी), पितळाड़णियो—वि०।
पितळाड़िप्रोड़ो, पितळाड़ियोड़ो, पितळाड़्योड़ो—भू०का०कृ०।
पितळाड़ीजणो, पितळाड़ीजबो—कर्म वा०।

पितळाड़ियोड़ो—देखो 'पितळायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० पितळाड़ियोड़ी)

पितळाणो, पितळाबो-क्रि०स० ('पितळणो' क्रिया का प्रे०रू०) १ फिसलाना, रपटाना।
२ कसैला करना।
पितळाणहार, हारो (हारी), पितळाणियो—वि०।
पितळायोड़ो—भू०का०कृ०।
पितळाईजणो, पितळाईजबो—कर्म वा०।
पितळणो, पितळबो—अक० रू०।
पितळाड़णो, पितळाड़बो, पितळावणो, पितळावबो—रू०भे०

पितळायोड़ो-भू०का०कृ०—१ फिसलाया हुआ, रपटाया हुआ।
२ कसैला किया हुआ।
(स्त्री० पितळायोड़ी)

पितळावणो, पितळावबो—देखो 'पितळाणो, पितळाबो' (रू.भे.)
पितळावणहार, हारो (हारी), पितळावणियो—वि०।
पितळाविप्रोड़ो, पितळावियोड़ो, पितळाव्योड़ो—भू०का०कृ०।
पितळावीजणो, पितळावीजबो—कर्म वा०।

पितळावियोड़ो—देखो 'पितळायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० पितळावियोड़ी)

पितवड़—देखो 'पित्तोड़' (रू.भे.)

पितसरो-सं०पु० [सं० पिता+श्वसुर] श्वसुर (शेखावाटी)

पिता-सं०पु० [सं० पितृ] जन्म देने वाला, जनक, बाप (डिं.को.)
पर्या०—जणो, जनक, जनेता, जामी, तात, प्रतायिता, बपिता, बाप, विरज, सविता।
रू०भे०—पता, पत्त, पित, पित्त, पिय, पीय।

पितामह-सं०पु० [सं०] १ पिता का पिता, दादा।
उ०—लीलाघण ग्रहे मांनुखी लीला, जग वासग वसिया जगति। पित प्रदुमन जगदीस पितामह, पोतो अनिरुध ऊखापति।
—वेलि
२ भीष्म। उ०—अणहूंती व्हे आज, हुई न आगे होण री। कैरव करे अकाज, आज पितामह ईखतां।—रांमनाथ कवियो
३ शिव। उ०—पितामह नांम हि नांम प्रचार। अहरनिस रांम हि रांम उचार।—ऊ.का.
४ ब्रह्मा (डिं.को.)
उ०—जोग नींद वस भए निरंजन। गज्जे असुर पितामह गंजन।
—मे.म.
५ ६४ भैरवों में से एक भैरव का नाम।
रू०भे०—पियामहि, पीयामह।

पिताविरंच, पिताविरंची-सं०पु०यौ० [सं० पितृ+विरञ्चः, पितृ+विरञ्चि] कमल (अ.मा., ह.नां.मा.)

पितुंडियो, पितुंडो-सं०पु० [देशज] मोठ को पानी में डुबाने हेतु उसी पर बांधे हुए पत्थर के नीचे लगाया जाने वाला चमड़े का टुकड़ा।
रू०भे०—पितुडियो, पितुडो।

पितु-सं०पु० [सं० पितुः] पिता। उ०—खग बळ जो पितु खाटियो, दूर दाटियो देस। पाट अडिग 'परताप' रे, वाजे नृप 'बखतेस'। वाजे नृप 'बखतेस' कळू मधि करण सो। अरक वंस उजवाळ, पाळे खट-वरण सो। पातां लाखपसाव, दुरद सांसण दिया। करिकेता कविराज, कवि अभरी किया।—सिवबक्स पाल्हावत

पितुडियो, पितुडो—देखो 'पितुंडियो' (रू.भे.)

पितोड़, पितौड़—देखो 'पित्तोड़' (रू.भे.)

पित्त-सं०पु० [सं०] १ आयुर्वेदानुसार शरीरस्थ मुख्य तीन तत्वों या दोषों में एक (अन्य दो वात और कफ है) जो यकृत में बनता है तथा नीलापन लिए हुए तरल होता है।
२ उक्त तत्व या दोष का मुख्य गुण ताप या शक्ति जो खाद्य पदार्थ को पचाता है।
मुहा०—१ पित्त उबळणा—कारणवश मन में अत्यधिक क्रोध उत्पन्न होना।
२ पित्त पड़ना—शरीर में पित्त प्रकुपित होना, पित्त प्रकोप होना।
३ देखो 'पिता' (रू.भे.)

उ०—पुत्रां कजि खाटै धन पित्तां।—गु.रू.बं.

रू०भे०—पित।

पित्तकर-वि० [सं०] पित्त को बढ़ाने वाला (द्रव्य)

पित्तकारक-वि० [सं०] पित्त को पैदा करने वाला (पदार्थ)

पित्तकास-सं०पु० [सं०] पित्त के विकृत होने से होने वाला कास रोग या खांसी।

पित्तजुर, पित्तज्वर-सं०पु०यौ० [सं० पित्तज्वर] पित्त की विकृति से होने वाला ज्वर।

पित्तदाह-सं०स्त्री० [सं०] १ पित्त की दाह।

२ पितज्वर।

पित्तप्रकृति-वि० [सं० पित्तप्रकृति] जिसके शरीर में वात और कफ की अपेक्षा पित्त की प्रधानता हो।

पित्तप्रकोप-सं०पु० [सं०] पित्त का आधिक्य जिससे पित्त उग्र रूप धारण कर लेता है।

पित्तर—देखो 'पितर' (रू.भे.)

उ०—भूधरजी नो भूप, तनां पूजै दसरथ-तण। गुण गंध्रप विधि-स्थान, जक्ष किन्नर पित्तर-जण।—पी.ग्रं.

पित्तव्याधि-सं०स्त्री० [सं०] पित्त के प्रकोप से होने वाला रोग।

पित्तसूळ-सं०पु०यौ० [सं० पित्तशूल] पित्त प्रकोप से होने वाला शूल, दर्द।

पित्तस्थान-सं०पु०यौ० [सं० पित्तस्थान] १ शरीरस्थ वे पांच स्थान जिनमें पाचक, रंजक आदि पांचों प्रकार के पित्त रहते हैं।

२ पित्ताशय।

पित्तहर-वि० [सं०] पित्त का नाश करने वाला।

सं०पु०—खसखस, उशीर।

पित्तातिसार-सं०पु० [सं०] पित्त के प्रकुपित होने से होने वाला अतिसार।

पित्तारि-वि० [सं०] पित्त का नाश करने वाला।

सं०पु०—१ पित्त का शत्रु।

२ पित्तपापड़ा।

३ पीला चन्दन।

पित्ताशय-सं०पु० [सं० पित्ताशय] पित्ताशय।

पित्ती-सं०स्त्री० [सं० पित्त+रा.प्र.ई] पित्त के प्रकोप से रक्त में अत्यधिक उष्णता होने से होने वाला एक रोग।

वि०वि०—इस रोग के कारण शरीर के विभिन्न अंगों में छोटे २ ददोड़े निकल आते हैं और जिनमें तेज खुजली चलती है।

रू०भे०—पित्ती, पीति, पीती।

पित्तोड़-सं०पु० [सं० पात्रोट:] बेसन में मसाले डाल कर छाछ या पानी के साथ पकाई हुई वह खाद्य सामग्री जिसको थाली में ठण्डा करके छोटी छोटी कतलियों में काट कर खाते हैं एवं साग भी बनाते हैं।

रू०भे०—पतवड़, पतोड़, पतोळ, पितवड़, पितोड़, पितौड़, पित्तौड़।

पित्तोदर-सं०पु० [सं० पित्त+उदर] पित्त की अधिकता के कारण होने वाला, पेट फूलने का एक रोग।

पित्तोन्माद-सं०पु० [सं० पित्त+उन्माद] पित्ताशय के ठीक काम न करने के कारण होने वाला एक रोग, जिसमें रोगी चिन्तित एवं खिन्न रहता है।

पित्तौ—देखो 'पीतौ' (रू.भे.)

पित्तौड़—देखो 'पित्तोड़' (रू.भे.)

पित्र-सं०पु० [सं० पित्र्य] १ बड़ा भाई (अ.मा.)

२ देखो 'पित्री' (रू.भे.)

पित्रअमावस—देखो 'पित्रीअमावस' (रू.भे.)

पित्रकरम—देखो 'पित्रीकरम' (रू.भे.)

पित्रकिरिया—देखो 'पित्रीक्रिया' (रू.भे.)

पित्रकुळ—देखो 'पित्रीकुळ' (रू.भे.)

पित्रक्रिया—देखो 'पित्रीक्रिया' (रू.भे.)

पित्रगीता—देखो 'पित्रीगीता' (रू.भे.)

पित्रग्रह—देखो 'पित्रीग्रह' (रू.भे.)

पित्रतरपण—देखो 'पित्रीतरपण' (रू.भे.)

पित्रपूरवी [सं० पित्र्य:+पूर्वी] बड़ा भाई (ह.नां.मा.)

पित्रभक्ति, पित्रभगति—देखो 'पित्री भक्ति' (रू.भे.)

पित्रलोक—देखो 'पित्रीलोक' (रू.भे.)

पित्राई-सं०पु० [सं० पित्र्य] पिता के चाचे का बेटा भाई (जयसलमेर)

पित्री-सं०पु० [सं० पितृ] १ पिता।

२ किसी व्यक्ति के पिता, पितामह, प्रपितामह आदि मृत पूर्वज।

३ वह मृत व्यक्ति जो प्रेतत्व से मुक्ति पा चुका हो।

४ एक प्रकार के देवता जो सब जीवों के आदि पूर्वज माने गए हैं।

५ देखो 'पितर' (रू.भे.)

रू०भे०—पित्र।

पित्रीअमावस-सं०स्त्री०यौ० [सं० पितृ+अमावस्या] श्राद्ध पक्ष में आने वाली अमावस्या।

रू०भे०—पित्रअमावस।

पित्रीकरम-सं०पु०यौ० [सं० पितृकर्म] पितरों के उद्देश्य से किये जाने वाले कर्म, श्राद्ध, तर्पण आदि कर्म।

रू०भे०—पित्रकरम।

पित्रीकळप-सं०पु०यौ० [सं० पितृकल्प] श्राद्धादि कर्म।

पित्रीकानन-सं०पु०यौ० [सं० पितृकानन] श्मशानभूमि, मरघट।

पित्रीकारज-सं०पु०यौ० [सं० पितृकार्य] श्राद्ध, तर्पण आदि कर्म।

पित्रीकिरिया—देखो 'पित्रीक्रिया' (रू.भे.)

पित्रीकुळ-सं०पु०यौ० [सं० पितृकुल] पिता, पितामह या उनके भाई-

बंधुओं आदि का कुल ।
रू०भे०—पित्रकुळ ।
पित्रीकुळया-सं०पु०यौ० [सं० पितृकुल्या] एक प्राचीन तीर्थ का नाम ।
पित्रीकृत्य-सं०पु०यौ० [सं० पितृकृत्य] श्राद्धादि पितृकार्य ।
पित्रीक्रिया-सं०स्त्री०यौ० [सं० पितृक्रिया] श्राद्धादि कर्म, पितृकर्म ।
रू०भे०—पित्रकिरिया, पित्रक्रिया, पित्रीकिरिया ।
पित्रीगण-सं०पु०यौ० [सं० पितृगण] १ पितर ।
२ मरीचि आदि ऋषियों के पुत्र ।
पित्रीगाथा-सं०स्त्री० [सं० पितृगाथा] पितरों द्वारा पढ़े जाने वाले कुछ विशेष श्लोक या गाथा ।
पित्रीगीता-सं०स्त्री० [सं० पितृगीता] वाराह पुराण के अन्तर्गत वह गीता जिसमें पितरों का माहात्म्य दिया गया है ।
रू०भे०—पित्रगीता ।
पित्रीग्रह-सं०पु० [सं० पितृगृह] १ पिता का घर ।
२ स्त्री का मायका ।
रू०भे०—पित्रग्रह, पित्रीघर ।
[सं० पितृग्रह] ३ स्कन्दादि बाल ग्रहों में से एक ।
पित्रीघर—देखो 'पित्रीग्रह' (१,२) (रू.भे.)
पित्रीघात-सं०स्त्री० [सं० पितृघात] (वि०—पित्रीघातक, पित्रीघाती,) पित्रीघातक । पिता की हत्या, पिता का वध ।
पित्रीघातक, पित्रीघाती, पित्रीघातीक-वि० [सं० पितृघातकः, पितृघातिन्] पिता को मारने वाला, पितृ-हत्यारा ।
पित्रीजग(य)-सं०पु० [सं० पितृयज्ञ] पितृ तर्पण ।
पित्रीजांण-सं०पु०यौ० [सं० पितृयान] मृत्यु के पश्चात जीव को परलोक ले जाने का वह मार्ग जिससे वह चन्द्रमा में पहुंचता है ।
पित्रीतरपण-सं०पु०यौ० [सं० पितृतर्पण] १ पितरों के उद्देश्य से किया जाने वाला जलदान ।
२ तिल ।
३ गया नामक तीर्थ जहां श्राद्ध करने से पितरों का प्रेतत्व से मुक्त होना माना जाता है ।
रू०भे०—पित्र तरपण ।
पित्रीतिथ, पित्रीतिथि-सं०स्त्री० [सं० पितृ+तिथि] अमावस्या ।
पित्रीतीरथ-सं०पु०यौ० [सं० पितृतीर्थ] १ गया नामक तीर्थ ।
२ मत्स्य पुराण के अनुसार गया, वाराणसी, प्रयाग, विमलेश्वरादि २२२ तीर्थ ।
३ अंगूठे और तर्जनी के मध्य का स्थान जिसमें होकर तर्पण का जल छोड़ा जाता है ।
पित्रीदान-सं०पु०यौ० [सं० पितृदानं] १ उत्तराधिकार में पिता की ओर से मिलने वाली सम्पति ।
२ पितरों का श्राद्ध या श्राद्ध सम्बन्धी दान ।
पित्रीदिन-सं०पु०यौ० [सं० पितृदिन] अमावस्या ।
पित्रीदेव-सं०पु०यौ० [सं० पितृदेव] पितरों के अधिष्ठाता देव, पितरगण ।
रू०भे०—पित्रीदेवत ।
पित्रीदेस-सं०पु०यौ० [सं० तितृदेश] १ पितरों के पूर्वजों के रहने का देश ।
२ वह देश जिसमें कोई अपने पूर्वजों के समय से रहता आया हो ।
पित्रीदेवत-सं०पु०यौ० [सं० पितृदैवत] १ पितृ देवता सम्बन्धी, पितरों की प्रसन्नता के लिए किया जाने वाला (यज्ञादि)
२ पितरों के अधिष्ठाता देवता ।
३ देखो 'पित्रीदेव' (रू.भे.)
पित्रीनाथ-सं०पु०यौ० [सं० पितृनाथ] १ यमराज ।
२ अर्यमा नामक पितर जो सब पितरों में श्रेष्ठ माने जाते हैं ।
पित्रीपक्ष, पित्रीपख-सं०पु०यौ० [सं० पितृपक्ष] आश्विन मास का कृष्ण पक्ष, श्राद्ध पक्ष ।
२ पितृकुल ।
पित्रीपती-सं०पु० [सं० पितृपति] यमराज ।
पित्रीपद-सं०पु० [सं० पितृपद] १ पितरों का लोक या देश, पितृलोक ।
२ पितर होने का पद या स्थिति ।
पित्रीपिता-सं०पु०यौ० [सं० पितृपिता] पितामह, दादा ।
पित्रीप्रसू-सं०स्त्री०यौ० [सं० पितृप्रसू] १ पिता की माता, दादी ।
२ सन्ध्या, सायंकाल ।
पित्रीप्रिय-सं०स्त्री०यौ० [सं० पितृप्रिया] १ भंगरा, भ्रंगराज ।
२ अगस्त का वृक्ष ।
पित्रीभक्त, पित्रीभगत-वि०यौ० [सं० पितृभक्त] माता पिता की आज्ञा शिरोधार्य मानने वाला तथा माता पिता की सेवा करने वाला ।
पित्रीभक्ति, पित्रीभगति-सं०स्त्री०यौ० [सं० पितृभक्ति] १ पितृ-भक्त होने की अवस्था या भाव ।
२ पिता के प्रति होने वाली भक्ति ।
रू०भे०—पित्रभक्ति, पित्रभगति ।
पित्रीभोजन-सं०पु०यौ० [सं० पितृभोजन] १ पितरों को अर्पित किया जाने वाला भोजन ।
२ उरद ।
पित्रीमदिर-सं०पु० [सं० पितृ+मंदिरं] १ पिता का घर ।
२ श्मशान भूमि ।
पित्रीमेध-सं०पु०यौ० [सं० पितृमेध] एक प्रकार का अन्त्येष्ठि कर्म जो वैदिककाल में प्रचलित था ।
पित्रीमेळी—देखो 'पितरांमेळी' (रू.भे.)
पित्रीराज-सं०पु०यौ० [सं० पितृराज, पितृराजः] यमराज ।
पित्रीरिण-सं०पु०यौ० [सं० पितृऋण] धर्मशास्त्रानुसार मनुष्य के

तीन ऋणों में से एक, जिनको लेकर वह जन्म ग्रहण करता है।

वि॰वि॰—पुत्र उत्पन्न करने से मनुष्य इस ऋण से मुक्त हो जाता है।

पित्रीरिस्ट-सं॰पु॰यौ॰ [सं॰ पितृरिष्ट] एक कुयोग जिसमें जन्म लेने वाला बालक पिता के लिए घातक माना जाता है (फलित ज्योतिष)

पित्रीरूप-सं॰पु॰यौ॰ [सं॰ पितृरूप] शिव।

पित्रीलोक-सं॰पु॰यौ॰ [सं॰ पितृलोक] पितरों के निवास करने का लोक, वह लोक जहां पर पितर निवास करते हैं।

रू॰भे॰—पितरलोक, पित्रलोक।

पित्रीवंस-सं॰पु॰यौ॰ [सं॰ पितृवंश] पिता का कुल।

पित्रीवन-सं॰पु॰यौ॰ [सं॰ पितृवन] श्मशान भूमि, मरघट।

पित्रीवनेचर-वि॰ [सं॰ पितृ+वन+चर] श्मशान भूमि में वसने वाला।

सं॰पु॰—१ भूत-प्रेत।

२ शिव।

पित्रीवसती-सं॰स्त्री॰यौ॰ [सं॰ पितृ+वसति] श्मशान, मरघट।

पित्रीवास-सं॰पु॰यौ॰ [सं॰ पितृ+वास] श्मशान, मरघट।

पित्रीवदन-सं॰पु॰यौ॰ [सं॰ पितृवदन] कुश।

पित्रीव्रत-सं॰पु॰यौ॰ [सं॰ पितृ+व्रत] पितृकर्म।

पित्रीसू-सं॰स्त्री॰ [सं॰ पितृसू] १ पिता की माता, दादी।

२ सन्ध्याकाल।

पित्रीस्थान-सं॰पु॰यौ॰ [सं॰ पितृस्थान] १ पिता का पद।

पित्रीहंता-सं॰पु॰यौ॰ [सं॰ पितृहंता] पिता का संहारक।

पितृहा।

पित्रेस-सं॰पु॰ [सं॰ पितृ+ईश] यमराज। उ॰—सजा हूं छुडायो भाई राम 'नेतो'। भाई पुत्र पित्रेस रो सोप लेतो।

—पे म.

पित्रेसुर, पित्रेस्वर-सं॰पु॰ [सं॰ पितर+ईश्वर] १ परलोकवासी पूर्वज। उ॰—यों वरसा रितु ऊतरी, आयो सरद सुभाव। पित्रेसुर पीजै प्रसन, पोसीजे रिस राव।—रा.रू.

२ देवयोनि।

३ देखो 'पितर' (रू.भे.)

रू॰भे॰—पितरेसुर, पित्रेसुर।

पिथ—देखो 'पृथु' (रू.भे.)

उ॰—परिमांण महमदसाह, अमल जमावियो। पिथ भूप जिम पातसाह, इण रस चावियो।—सू.प्र.

पिथराउ-सं॰पु॰ [सं॰ पृथुराज] राजा पृथु। उ॰—मद्र कोप नरसींघ यादु कालम रहि सोमत्त। जिम वदत पिथराव, मरण रघुनाथ मनभत्त।

—पी.ग्रं.

पिदि, पिदो—देखो 'पदी' (रू.भे.)

उ॰—यहै मुदी दरिगाह जिमुदा सदो समदर, रिण पड़ो घणी घारां तणी रीठ। किम फिरै पीठ 'जैसिंघ' क्रूरम तणी, पिधी चो भार क्रूरम तणी पीठ।—पूरो महियारियो

पिदड़को-सं॰पु॰ [देशज] १ कचूमर?

उ॰—वेदव्यास तो राजा री किणी बात रै वास्तै चुंकारो ई नीं करियो। राजा री रीस फेर वत्ती ऊकळी। जरड़ जरड़ उण री सगळी पांखां तोड़ न्हांकी। पछै गीता, वेद कठां करियोड़ा उण सूवटा नैं हेटै पटक पगां सूं चिगदियो। राजा री एड़ी री जोर लागतां ई वेदव्यास री पिदड़को निकळग्यो।—फुलवाड़ी

क्रि॰प्र॰—निकळणो, निकाळणो।

२ नाराज होने की क्रिया या अवस्था।

क्रि॰प्र॰—मारणो।

पिदणो, पिदबो-क्रि॰अ॰ [देशज] १ किसी के द्वारा तंग होना।

२ कष्ट से पीड़ित होना।

पिदणहार, हारो (हारी), पिदणियो—वि॰।

पिदिग्रोड़ो, पिदियोड़ो, पिद्योड़ो—भू॰का॰कृ॰।

पिदीजणो, पिदीजबो—भाव वा॰।

पिदर-सं॰पु॰ [फा॰ मि. सं॰ पितृ] पिता। उ॰—पिदर पिदर जाणै नहीं, मादर पिदरां मूळ। राखै अगणत रंग रा, दिल री कुसी दुकूळ।—बां.दा.

पिदाणो, पिदाबो-क्रि॰स॰ ('पिदणो' क्रिया का प्रे॰रू॰) १ किसी को तंग करना।

२ कष्ट व पीड़ा पहुंचाना।

३ प्रसन्नता के कारण व्यक्ति विशेष का दोनों हाथों को दोहरा करके कांखों के ऊपर तेज गति से ऊंचे नीचे करना।

४ भिखारियों के बच्चों का दानदाता को खुश करने के लिए कांख में एक हाथ डाल कर दूसरे हाथ को तेज गति से ऊपर नीचे करते हुए कांख से ध्वनि करना।

पिदाणहार, (हारो)हारी, पिदाणियो—वि॰।

पिदायोड़ो—भू॰का॰कृ॰।

पिदाईजणो, पिदाईजबो—कर्म वा॰।

पिदणो, पिदबो—अक॰ रू॰।

पिदावणो, पिदावबो—रू॰भे॰।

पिदायोड़ो-भू॰का॰कृ॰—१ व्यर्थ में तंग किया हुआ।

२ पीड़ित किया हुआ।

३ प्रसन्नता के कारण उछला हुआ।

प्रसन्न करने हेतु कांख से ध्वनि किया हुआ।

(स्त्री॰ पिदायोड़ी)

पिदावणो, पिदावबो—देखो 'पिदाणो, पिदाबो' (रू.भे.)

उ॰—टाबर, मोट्यार, लुगायां, बूढा-ठाडा भांत-भांत रा अण-गिण मिनख, हा हो, हा हो करता मेळ में भरग्या। मेळ री तो रंगत ई बदळगी। ज्यूं २ जीव आवड़तो देवराज हरख सूं

किलकारियां करतौ खाकां पिदावतौ ।—फुलवाड़ी

पिदियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ तंग हुवा हुआ ।

२ पीड़ित ।

(स्त्री० पिदियोड़ी)

पिदियौ-सं०पु० [देशज] एक प्रकार की चिड़िया जो रात्रि में सोते समय अपने पैर प्रायः आकाश की तरफ रखती है (शेखावाटी)

पिद्दी-सं०स्त्री० [देशज] एक प्रकार की छोटी चिड़िया ।

सं०पु०—तुच्छ जीव, नगण्य जीव ।

पिद्दौ-सं०पु० (स्त्री० पिद्दी) तुच्छ जीव, नगण्य जीव ।

रू०भे०—फिद्दौ ।

पिधणौ, पिधबौ-क्रि०स० [सं० परिधारणम्] आच्छादन होना, ढका जाना ।

पिधांन-सं०पु० [सं० पिधानम्] १ तलवार का म्यान या कोश ।

२ आवरण, ढक्कन ।

पिधाणौ, पिधाबौ-क्रि०स० [सं० पिधानम्] आच्छादन करना, ढकना, आवरणयुक्त करना ।

उ०—ध्यांन समाधी छोरी कै, मन चित्र बढाया । तद्दिन धूरि वितांन कै, घन भांन पिधाया । सारद पुण्णिम का ससी, जिम बारद छाया । दव्वि धरत्ती पक्खरां इक ओघ लखाया ।—वं.भा.

पिधायोड़ौ—भू०का०कृ०—आच्छादित, ढका हुआ ।

(स्त्री० पिधायोड़ी)

पिद्ध—देखो 'पीन्हौ' (रू.भे.)

उ०—जडधार तार जंकार किद्ध । भरि पत्त रत्त जोगणी पिद्ध ।
—गु रू वं.

पिन-सं०स्त्री० [अं०] लोहे या पीतल आदि की बहुत छोटी कील जो प्रायः कागज आदि को नत्थी करने के काम आती है ।

पिनक-सं०स्त्री० [देशज] अफीम के नशे की झोंक, तंद्रा, हलकी नींद, नींद का झोंका ।

पिनकणौ, पिनकबौ-क्रि०अ० [देशज] अफीम के नशे में झूमना, हलकी नींद लेना, नींद के झोंके खाना ।

पिनकियोड़ौ-भू०का०कृ०—अफीम के नशे में झूमा हुआ, नींद लिया हुआ, नींद के झोंके खाया हुआ ।

पिनकी-वि० [देशज] अफीम के नशे में झोंके खाने वाला, अफीमची ।

पिनस—१ देखो 'पीनस' (रू.भे.)

२ देखो 'पिंजस' (रू.भे.)

पिनसन—देखो 'पेनसन' (रू.भे.)

पिनाक-सं०पु० [सं० पिनाकं, पिनाकः] १ शिवजी का धनुष ।

उ०—१ धरियौ पण जनक इसौ मन धारे, धनक पिनाक चढाय धरै । महपत आय सयंबर मांहे, वसुदा कुंमरी तिकौ वरै ।—र.रू.

उ०—२ विदेह प्रतंग्या कहे इम वाक । पुत्री जो वरै सो ज हाथै पिनाकं ।—सू.प्र.

२ धनुष (अ.मा., ह.नां.मा.)

उ०—पद्दया मुख मूरत सूरत पाक, पद्दया चकचूरत कंध पिनाक ।
—मे.म.

३ धनुषाकार एक प्रकार की वीणा विशेष ।

उ०—वींणा ताळ सुर वींण, तार तंबूर चंग तदि । अत खंजरी पिनाक, जुगति मरदंग वजत जदि ।—सू.प्र.

रू०भे०—पनांग, पनाक, पन्नाक, पिनाग, पिनायक, पुनाग, पुन्नाक, पुन्नाग, पैनाक, पैनाग, पैनायक ।

पिनाकपांणि, पिनाकपांणी-सं०पु०यौ० [सं० पिनाकपाणि] महादेव, शिव ।

पिनाकी, पिनाखी-सं०पु० [सं० पिनाकिन्] महादेव, शिव
(अ.मा.,नां.मा.,ह.नां.मा.)

उ०—पिनाकी रीझियौ 'कूंपौ' सतावी विरोध पूजा, वगसै निरम्भै धांम काटै पाप वंध । केवाणां भसम्मी कड़ा हूत कीधा प्रळैकारां, कैळास लै गयौ सारां पूजारां कमंध ।—उम्मेदजी सांदू

पिनाकेस-सं०पु० [सं० पिनाक+ईश] महादेव, शिव ।

उ०—रूप सीस 'ऊदां' भूप आहुंसी भाखियौ राजा, दळा गाहि हठा-स भाखियौ दीन होय । दूठ नराताळा झोक दाखियौ सुधांन दवौ, पिनाकेस राखियौ माळ में सीस पोय ।
—कविराजा करणीदान

पिनायक—देखो 'पिनाक' (रू.भे.)

उ०—अनोखा घायिकां झोक लायिकां जैसिंध आळा, सौक पंखी गायिकां गै-तायिकां डांण सूक । वरूथां नायकां दोख दायिकां वेधी, आचां पिनायकां झोक सायकां आऊक ।
—हुकमीचंद खिड़ियौ

पिनाग—देखो 'पिनाक' (रू.भे.)

पिनारा—देखो 'पिंजारा' (रू.भे.)

पिनारौ—देखो 'पिंजारौ' (रू.भे.)

पिनिद्ध-वि० [सं० पिनद्ध] पहना हुआ, धारण किया हुआ ।

उ०—सनिद्धि कचांमि के सदा पिनिद्धां पां परधा करै । लरै नहीं सुलोक ते कुलोक ते लरया करै ।—ऊ.का.

पिन्नाक—देखो 'पिनाक' (रू भे.)

उ०—झल्ले राघवां सेस पिन्नाक झल्ले । उभै तेज सांमंद्र जांणै उभल्ले ।—सू.प्र.

पिपरमिंट, पिपरमेंट-सं०पु० [अं० पेपरमिंट] १ पुदीने की जाति का, किंतु रूप में उससे भिन्न, यूरोप और अमेरिका में होने वाला एक पौधा ।

२ इस पौधे का अर्क ।

३ इस अर्क के मिश्रण से शक्कर के योग से बनाई जाने वाली खट्टी-मिट्ठी गोली ।

पिपरामूळ—देखो 'पिप्पळीमूळ' (रू.भे.)
पिपलीश्रो-सं०पु०—एक प्रकार का वस्त्र विशेष। (व.स.)
पिपास, पिपासा-सं०स्त्री० [सं० पिपासा] (वि० पिपासी) प्यास, तृष्णा। उ०—१ क्षुधा पिपासा प्रांण कूं लागत, हरस सोक मन संगी। जनम मरण ग्यांनी देही को जांणो, आतम अपळ अभंगी।
—स्त्री सुखरामजी महाराज
उ०—२ सीत न तावड मनि गणइ, दिवस न रयणी संक। भूख पिपासा न बन्हि जळ, केवळ यथा करंक।—मा.कां.प्र.
रू०भे०—पिवासा।
पिपासित, पिपासी-वि० [सं० पिपासिन्] प्यासा, तृषित।
पिपासु-वि० [सं०] १ जिसे प्यास लगी हो, पिपासित, प्यासा, तृषित।
२ वह जिसके मन में किसी प्रकार की प्रबल कामना या लोभ हो।
३ पीने का इच्छुक।
पिपीतकी-सं०स्त्री० [सं०] वैशाख शुक्ल द्वादशी जो पवित्र और व्रत का दिन माना गया है।
पिपील-सं०पु० [सं० पिपीलः] चींटा।
रू०भे०—पपील।
पिपीलक, पिपीलिक-सं०पु० [सं० पिपीलकः] १ बड़ा चींटा।
[सं० पिपीलकम्] २ एक प्रकार का सुवर्ण।
रू०भे०—पपिलक।
पिपीलिका-सं०स्त्री० [सं० पिपीलिका] एक प्रकार का छोटा चींटा। मादा चींटी।
उ०—भूल रे छेड़ न भूप भड़, ऊठै उरेब आग। पल में काट पछाड़ दे, पिपीलिका पैनाग।—रेवतसिंह भाटी
रू०भे०—पपीलिका, पिवीलिया।
पिपीलिकाभक्षी, पिपीलिकाभखी-सं०पु०यौ० [सं० पिपीलिका-भक्षिन्] लम्बे थथन और बहुत बड़ी जीभ वाला अफ्रिका का एक जन्तु जो प्रायः चींटियों के बिलों को अपने पंजे से खोदता है और उन्हें खा जाता है। इसके दांत नहीं होते हैं।
पिपीलिकामारग-सं०पु०यौ० [सं० पिपिलिकामार्ग] योग साधना के तीन मार्गों में से एक जिसके द्वारा साधक चींटी के समान ही क्रमशः धीरे-धीरे आगे बढता है और षट्-चक्रों को वेधता हुआ प्राण-ब्रह्मांड तक पहुंचता है। इसके अतिरिक्त दो माग—मीन मार्ग व विहंगम मार्ग और होते हैं।
पिपीली-सं०स्त्री० [सं०] चींटी।
रू०भे०—पपिली।
मह०—पपील।
पिपो—देखो 'पीपो' (रू.भे.)
उ०—द्वारामती आणंद भयं मुनिजन देत असीस। जन 'पिपो' समळाइयो, सिंहासण जगदीस।—रुकमणी-मंगळ
पिप्पळ—देखो 'पीपळ' (रू.भे.)
उ०—विळै इग्यारस वरत, भगति ऊपरि प्रभ भीजै। पिप्पळ तुळछी पांन, रांम यां ऊपरि रीजै।—पी.प्रं.
पिप्पळा-सं०स्त्री० [सं० पिप्पला] एक प्राचीन नदी।
पिप्पळाद-सं०पु० [सं० पिप्पल+अद्=खाना+अण्] पुराणानुसार एक ऋषि जो पिप्पल के पत्ते खा कर ही रहते थे।
पिप्पलासन-सं०पु० [सं० पिप्पल+असन] वह जो पिप्पल के फल या गूदा खाता हो।
पिप्पलि, पिप्पली-सं०स्त्री० [सं०] पीपल नामक लता या उसका फल।
रू०भे०—पीपर।
पिप्पळीमूळ-सं०पु०यौ० [सं० पिप्पलीमूल] पीपल नामक लता की जड़ जो औषधियों में उपयोग ली जाती है।
रू०भे०—पिपरामूळ, पिपलामूळ, पीपरामूळ।
पिमूकणो, पिमूकवो—देखो 'मूकणो, मूकबो' (रू.भे.)
उ०—गजसिंघ भड़ां किम्माड पिउ, कीए आगळि कमधजे। डेरा पिमूकि गा दवखणी, फिरि पनंग कांचू तजे।—गु.रू.बं.
पिम्म, पिम्मु—देखो 'प्रेम' (रू.भे.)
उ०—१ मयण म करि धरि धणुह बांण, पुणि पंज म पयडहि। रूविण पिम्म पयावि, वभ हरि हरु मन(त) विनडहि।
—कवि पल्ह
उ०—२ रुउ पिम्मु ता बांण मयण ता दरिसहि धणुहरु।
—कवि पल्ह
पियंकर-वि० [सं० प्रियकर] हितैषी (जैन)
पिय-स०पु० [सं० प्रिय] १ चातक पक्षी के बोलने की आवाज या ध्वनि। उ०—रे पपैया बावरे, कब को बैर चितारयो। म्हैं सूती थी अपने भवन में, पिय पिय करत पुकारयो।—मीरां
रू०भे०—पिउ, पिऊ, पिव, पी।
२ देखो 'पिता' (रू.भे.)
उ०—सच्चवई पिय माय अंबा अंबाली अंबिका।—पं.पं.च.
३ देखो 'प्रिय' (रू.भे.)
स०—१ भूखी की जोमै सिसकारा भरती, नांखै निसकारा धीमै पग धरती। मुखड़ो कुम्हळायो भोजन बिन भारी, पय पय करतोड़ी पोढी पिय प्यारी।—ऊ.का.
उ०—२ सांवण आयो वालमा, वेलां झुर रहि वार। चात्रंग झुरै मेघ बिन, पिय बिन झुर रहि नार।—लो.गी.
३ देखो 'प्रिया' (रू.भे.)
पियड़उ—देखो 'प्रिय' (अल्पा०, रू.भे.)
पियर—१ देखो 'पितर' (रू.भे.)
२ देखो 'पी'र' (रू.भे.)

पियरोळा-सं०स्त्री० [देशज] मैना से मिलती-जुलती किंतु छोटी पीले रंग की एक मधुर स्वर वाली चिड़िया।

पियांण, पियांणउ, पियांणौ—देखो 'प्रयांण' (रू.भे.)

उ०—१ नांमजाद मयगळ मदमाता, त्याउ साहण रूपरांणूं। साथि घणूं पायदळ पाळउं, वेगि दीउ पियांणउ।—कां.दे.प्र.

उ०—२ पछिमि तणौ पतिसाह, सेन मेळिया सप्रणा। परमेसर परठिसैं, पूरव सांमहा पियांणा।—पी.ग्रं.

पियांनौ-सं०पु० [अं० पियानो] एक प्रकार का हारमोनियम की तरह का बड़ा अंगरेजी बाजा जो मेज के आकार का होता है।

पिग्रास—देखो 'प्यास' (रू.भे.)

पिग्रासौ—देखो 'प्यासौ' (रू.भे.)

(स्त्री० पिग्रासी)

पिया—१ देखो 'प्रिय' (रू.भे.)

उ०—१ ऊंचो सो मंडवौ रोपावौ म्हारा बावल, रेसम तणी ए बंधाय। ओ ल्यै भावज घर आपणो(णूं) म्हैं तो जावूंगी पिया जी रै देस।—लो.गी.

उ०—२ अपणा पिया संग हिळमिळ खेलूं, अधर सुधारस पागी। मीरां गिरधर के मन मांनी, अब मैं भई सभागी।—मीरां

२ देखो 'प्रिया' (रू.भे.)

उ०—घर अन राज-काज नह धारै। इक मुख पिया पिया उच्चारै।
—सू.प्र.

पियाई—१ देखो 'पिग्राई' (रू.भे.)

२ देखो 'पिसाई' (रू.भे.)

पियाक-वि० [सं० पा] पीने वाला। उ०—तर्क सिर ईस लियै मुसताक। पड़ै छक जाणि क फूल पियाक।—सू.प्र.

पियाड़-सं०पु० [सं० पा+रा. प्र. आड़] वह खेत जिसमें सिंचाई की जा चुकी हो।

पियाज—देखो 'प्याज' (रू.भे.)

पियादौ—देखो 'प्यादो' (रू.भे.)

उ०—१ वा'र री बात वालावकस वियै रै, हियै रै मांहि तकलीफ हुगी। जरां हूं याद पोहकरी जिम करी जद, पियादा हुरी ज्यां इंद्र पुगी।—मे.म.

उ०—२ पांच पियादा, दस असवार, बाई के वीरो पांवणो जी, म्हारा राज।—लो.गी.

उ०—३ मिळिया मिळिया हजार चौदह असवार रहै। हजार चौदह पियादा रहै।—जलाल बूबना री बात

(स्त्री० पियादी)

पियामहि—देखो 'पितामह' (रू.भे.)

उ०—लेई निय हथियार द्रोण पियामहि अणगमीय। कुंतादिवि भरतार नयण नीर नीझर झरइ ए।—पं.पं.च.

पियावास-सं०पु० [सं० प्रिय+राज. वांस] कटसरैया, कुरबक।

पियार—१ देखो 'प्यार' (रू.भे.)

२ देखो 'पाताल' (रू.भे.)

पियारौ—देखो 'प्यारौ' (रू.भे.)

उ०—१ आडा डूंगर वन घणा, खरा पियारा मित्त। देह विधाता पंखड़ी, मिळ मिळ आवउं नित्त।—ढो.मा.

उ०—२ फेर बसाई भट्टियां, अंत करे पियारी।—द.दा.

उ०—३ सच्च पियारा सांइयां, सांई सच्च सिवाय।—ह.र.

(स्त्री० पियारी)

पियाळ-सं०पु० [सं० पियाल] १ महुए से मिलता-जुलता मझोले आकार का एक वृक्ष विशेष जिसके फल फालसे के बराबर और गोल होते हैं। बीज की गिरी बादाम और पिस्ते की भांति मीठी होती है और चिरोंजी कहलाती है।

२ देखो 'पाताल' (रू.भे.)

उ०—जटा-जूट जोगी जबर है, जूनो जिणरो जोगड़ो। इळा पिंगळा जड़ां पियाळां, भल मरु फरजन फोगड़ो।—दसदेव

३ देखो 'प्यालो' (मह., रू.भे.)

पियालौ—देखो 'प्यालो' (अल्पा., रू.भे.)

पियालो—देखो 'प्यालो' (रू.भे.)

उ०—१ जहर पियालै जेहड़ो, इण कुण मंडै आस। अहि काळै मुख आंगळी, वाळै किर विसवास।—रा.रू.

उ०—२ खड़ी जोवती राह मैं जी, सतगुरु पोंछे आय। पियालो लियां हाजिर खड़ी जी।—मीरां

पियास—देखो 'प्यास' (रू.भे.)

उ०—ज्यों ज्यों पीवै रांम रस, त्यों त्यों वढे पियास। ऐसा कोई एक है, बिरळा दादूदास।—दादूवांणी

पियासाळ-सं०पु० [सं० प्रियसालक] एक प्रकार का बेहड़े या अर्जुन की जाति का वृक्ष विशेष।

पियासौ—देखो 'प्यासौ' (रू.भे.)

(स्त्री० पियासी)

पियूख, पियूस—देखो 'पीयूख' (रू.भे.)

उ०—१ सूखां नै हरिया किया, मुरझाया विकसाया हो। प्रेमांणंद पियूख हा, बादळ बरसाया करै, बाजा मधुर बजाया हो।—गी.रां.

उ०—२ सेवगां हेत पियूस ससि स्रवड़ा, प्रवाड़ा कठा लग पार पाऊं।—बालाबक्स बारहठ (गजूकी)

पियोड़ो—भू०का०कृ०—१ किसी तरल पदार्थ विशेषत: जल को प्राणियों का मुंह द्वारा, वनस्पतियों का जड़ द्वारा अपने आप में लीन किया हुआ, पिया हुआ, आत्मसात किया हुआ।

२ किसी प्रकार की निंदनीय घटना या अप्रिय बात को मन ही मन चुपचाप सहन किया हुआ।

३ किसी प्रकार के उग्र या तीव्र मनोविकार का अंदर ही अंदर दमन किया हुआ, दबाया हुआ।

४ नशे के लिए तम्बाकू, गांजा, चरस आदि का धूम्रपान किया हुआ।

५ पदार्थ विशेष का जल या तरल पदार्थ को अपने अंदर खींचा या सोखा हुआ।

६ शराब या भांग आदि मादक पदार्थ का पान किया हुआ।

७ पीवणा सर्प द्वारा प्राण वायु पिया हुआ।

(स्त्री० पियोड़ी)

पियौ-सं०पु० [सं० पा] पशुओं को पानी पिलाये जाने का दिन।

रू०भे०—पीयौ। (जयसलमेर)

पिरकरमा—देखो 'परिक्रमा' (रू.भे.)

उ०—चांद सूरज रा दिवला संजोया, नव लख तारा धूजी रै पिरकरमा देवै।—लो.गी.

पिरड़—देखो 'परड़' (रू.भे.)

पिरजा—देखो 'प्रजा' (रू.भे.)

उ०—सुख सूं सूती थी पिरजा सुखियारी। दुस्टी आतां ही करदी दुखियारी।—ऊ.का.

पिरजापत, पिरजापति, पिरजापती—देखो 'प्रजापति' (रू.भे.)

पिरणणी, पिरणबौ—देखो 'परणणौ, परणबौ' (रू.भे.)

उ०—अला कन्या वाट जोवै कुंआरी, अला पिरणीजै हिमैं करिजै पिआरी।—पी.ग्रं.

पिरणियोड़ौ—देखो 'परणियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० पिरणीयोड़ी)

पिरतक, पिरतक्ख, पिरतख—देखो 'प्रत्यक्ष' (रू.भे.)

पिरथमी—देखो 'प्रथवी' (रू.भे.)

उ०—पिरथमी मायाजाळ मैं पड़ी। तूं तौ समझि सुहागण सूरता नारि पलक मेरी रांम सूं लगी।—मीरां

पिरथमीतळ—देखो 'प्रथवीतळ' (रू.भे.)

पिरथमीनाथ—देखो 'प्रथवीनाथ' (रू.भे.)

पिरथमीपोख—देखो 'प्रथवीपोख' (रू.भे.)

पिरथवी—देखो 'प्रथवी' (रू.भे.)

उ०—जैसौ ही डील, जैसौ ही रूप, जैसौ ही पोत, मही जैसौ ही बळ, जैसौ ही कुम्मेत रंग, काळी गांठां सो पिरथवी रूप कच्छ री नीपनी, धीणोद रै मठ रा जोगी रै घर री।

—सूरै खींवे कांधळोत री बात

पिरथवीधर—देखो 'प्रथवीधर' (रू.भे.)

पिरथवीनाथ—देखो 'प्रथवीनाथ' (रू.भे.)

पिरथवीपोख—देखो 'प्रथवीपोख' (रू.भे.)

पिरथवीराज—देखो 'प्रथवीराज' (रू.भे.)

पिरथि, पिरथी—देखो 'प्रथ्वी' (रू.भे.)

उ०—१ वीरत कीरत बात, पिरथी सिर वापरी। आयौ औरंगवाद, फतह कर आखरी।—दर्मसिह री बात

उ०—२ पिरथी वड़ा पंमार, पीरथी परमारां तणी। एक उजीणी धार, बीजो आबू बैसणी।—अज्ञात

पिरथीधर—देखो 'प्रथ्वीधर' (रू.भे.)

पिरथीनाथ—देखो 'प्रथ्वीनाथ' (रू.भे.)

पिरथीपाळ—देखो 'प्रथ्वीपाळ' (रू.भे.)

उ०—म्हारा स्वांग में कीं खांमी व्हे तो बतावौ। पिरथीपाळ, अबै रावळा भांड नै राजी होय नै बगसीस दिरावौ।—फुलवाड़ी

पिरथीराज—देखो 'प्रथ्वीराज' (रू.भे.)

पिरथु—देखो 'प्रथु' (रू.भे.)

पिरभु, पिरभू—देखो 'प्रभु' (रू.भे.)

उ०—अविणासी सो वालमा है, जिण सूं साचो प्रीति। मीरां कूं पिरभू मिळया है, ये ही भगति की रीति।—मीरां

पिरवा, पिरवाई—देखो 'परवाई' (रू.भे.)

उ०—सूरियौ कहै सुण पिरवाई। गाडिया मेह कठा सूं लाई।

—वर्षाविज्ञान

पिरवार—देखो 'परिवार' (रू.भे.)

उ०—अरै ऊंठां पर कुण है ? समदड़ी वाळा सेठ जी अर वांरौ पिरवार।—रातवासौ

पिरसूं—देखो 'परसूं' (रू.भे.)

उ०—आज-काले पिरसूं अर परलै रोज करतां कीं महीना फेर गुडग्या। पीढियां रै गांव अर ठाया नै छोडणौ इत्तौ सैल कांम नीं हो।—फुलवाड़ी

पिरांणो—देखो 'परांणो' (रू.भे.)

पिराइयौ—देखो 'प्रस्वेद' (अल्पा., रू.भे.)

पिराग—१ देखो 'प्रयाग' (रू.भे.)

उ०—१ राजा कनोज सहित चोरासी, किला पिराग अनै घर कासी।

—सू.प्र.

उ०—२ रवद पिराग देखि छिब रीधा। डेरा आय गंग तटि दीधा।

—सू.प्र.

२ देखो 'पराग' (रू.भे.)

पिरागवड़—देखो 'प्रयागवड़' (रू.भे.)

पिराचित, पिराछत, पिराछित, पिरास्चित—देखो 'प्राछत' (रू.भे.)

उ०—१ पांणी री छांट तक नी वरसी। दुनिया घणी कळपी, घणौ ई पिराछत करियौ पण मा'देवजी आपरै खण सूं नी डिगिया।

—फुलवाड़ी

उ०—२ एवड़-छेवड़ ओलंभा रे लाल ! बिच-बिच सात सलांम, परण पिराछत क्यूं लियौ जी रह्यौ क्यूंनी अखनकंवार, सनेही ढोला।—लो.गी.

उ०—३ वीं लसकरिया नै जाय कहियौ क्यूं परणे छौ, औ तौ परण पिराछित क्यूं लियौ।—लो.गी.

उ०—४ थनै मारण रा पिरास्चित रै बदळै म्हैं सगळां रै मरणा

री ग्रमर दुख भुगतूंला ।—फुलवाड़ी

पिरिग्रां, पिरियां—१ देखो 'परसूं' (रू.भे.)

२ देखो 'परियां' (रू.भे.)

उ०—जुध करि पिरिग्रां जेम, 'सादा' उत ग्रवसांणसिध । कर वाहे गाहे किलंब, 'ग्रमर' गयो खगि ऐम ।—वचनिका

पिरियोजन—देखो 'प्रयोजन' (रू.भे.)

पिरीत—देखो 'प्रीति' (रू.भे.)

उ०—ऊठ 'फरीदा' जाग रे, भाड़ू देय मसीत । तूं सोवै रब जागता, किस विध वर्णं पिरीत ।—फरीद

पिरू, पिरू—देखो 'परसूं' (रू.भे.)

पिरोजन—देखो 'प्रयोजन' (रू.भे.)

पिरोजी—देखो 'फिरोजी' (रू.भे.)

उ०—१ तरै लाख फदिया हुजदारां थांहरा नुं देस्यां । तरै तेजसी तो गढ़ चढीया । पीरोजी लाख कोठार रावळा थी तेजसी रा हुजदारां नुं सुइलां-सा गिण दीया ।—राव मालदेव री वात

उ०—२ पिरोजी रंग रा सांमियांना में ग्रणगिण जुपयोड़ा दीवा इण भांत लखावता जांणै गिगन सूं ग्राभो ई हेटै उतरग्यो है ।

—फुलवाड़ी

पिरोजो—देखो 'फिरोजो' (रू.भे.)

पिरोणो, पिरोबो—देखो 'पोणो, पोबो' (रू.भे.)

पिरोणहार, हारो (हारी), पिरोणियो—वि० ।

पिरोग्रोड़ो, पिरोयोड़ो—भू०का०कृ० ।

पिरोईजणो, पिरोईजबो—कर्म वा० ।

पिरोयत—देखो 'पुरोहित' (रू.भे.)

पिरोयोड़ो—देखो 'पोयोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० पिरोयोड़ी)

पिरोळ—देखो 'पोळ' (रू.भे.)

पिरोवणो, पिरोवबो—देखो 'पोणो, पोबो' (रू.भे.)

पिरोवणहार, हारो (हारी), पिरोवणियो—वि० ।

पिरोविग्रोड़ो, पिरोवियोड़ो, पिरोव्योड़ो—भू०का०कृ० ।

पिरोवीजणो, पिरोवीजबो—कर्म वा० ।

पिरोवियोड़ो—देखो 'पोयोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० पिरोवियोड़ी)

पिरोहित—देखो 'पुरोहित' (रू.भे.)

उ०—कहै पिरोहित राज ग्रणंकळ । 'माहव' री 'विजपाळ' महाबळ ।—सू.प्र.

पिलंग-सं०पु० [देशज] १ शिकारी कुत्ता । उ०—१ हरिण निबळ पर हुख हियै, प्रहार करण पिलग । स्वांत भरोसो सक्ति री, जुड़ मैंगळ हुंत जंग ।—रेवतसिंह भाटी

उ०—२ फिरै नचीता ग्वाळिया, गायां सिंघ करै रखवाळी । निधड़क एण पिलंग सूं, दावालेण लगाकर ग्राली । चिड़िया ग्राद विहंग वन, वाजां हूंत हर्ष दे ताळी । वधै गरीबां वळ इधक, ऐसी धाक सियावर वाळी ।—र.रू.

२ देखो 'पल्यंक' (रू.भे.)

उ०—१ हमरा पिलंग जड़ाऊ छोड़या, वणिया (रेसम) पीळी पाट । ग्रयां पर राजी भयो सांवरो, चेरी को नहीं खाट ।—मीरां

उ०—२ वो नौजवान इणी कमरा में खड़ां खड़ां ग्राय नै पिलंग माथै वैठग्यो । पिलंग चांदी रो हो ।—फुलवाड़ी

पिलंड-सं०पु०—१ शेषनाग । २ सर्प, सांप ।

उ०—नर नाग मंडळ मेवाड़ निरखतां, कमधज गरुड़ फिरै को पंख । कुंभकरण सिसकनै काढै, पिलंड उर ताप खाग भटपख ।

—मालो सांदू

पिलणो, पिलबो-क्रि०ग्र० [?] १ भग जाना । उ०—सिलो सुरता धस सिद्धि समंद । पिली प्रभुता वस बुद्धि प्रबंध । हिली जुगती जसवार हजार । मिळी मुगती दस-द्वार मभार ।—ऊ.का.

२ दूर होना, चला जाना, मिट जाना । उ०—जनम भूमि में करै जातरा, पाप प्रबळ पिल जावै । पुन्न पाछला होवै पूरा, ग्रा मन में जद ग्रावै ।—ऊ.का.

३ द्रवित होना, पिघल जाना, ग्रनुकूल होना । उ०—मुगधा मव्या नै मोडा मिळ जावै, पड़-पढ़ प्रारथना प्रौढा पिल जावै । हियागम ग्रागम उलटा पण होवै, साच्चो दुख देखै कुलटा सुख सोवै ।

—ऊ.का.

४ तिल, सरसों ग्रादि का पेरा जाना ।

पिलणहार, हारो (हारी), पिलणियो—वि० ।

पिलिग्रोड़ो, पिलियोड़ो, पिल्योड़ो—भू०का०कृ० ।

पिलीजणो, पिलीजबो—भाव वा० ।

पीलणो, पीलबो—सक० रू० ।

पिल्लणो, पिल्लबो, पिल्हणो, पिल्हबो—रू०भे० ।

पिलपिल-सं०स्त्री० [देशज] पिलपिल होने या करने की ग्रवस्था या क्रिया ।

पिलपिलणो, पिलपिलबो-क्रि०ग्र० [देशज] १ नर्म होना, पिलपिला होना । उ०—काळी कांठळ में दांमणियां दमकी, चित में कांमणियां विरहानळ चमकी । छूटी ग्रासारां कासारां छिळती, पड़ती परनाळां पहुवी पिलपिलती ।—ऊ.का.

२ सड़ना, गदबदना ।

पिलपिलणहार, हारो(हारी), पिलपिलणियो—वि० ।

पिलपिलिग्रोड़ो, पिलपिलियोड़ो, पिलपिल्योड़ो—भू०का०कृ० ।

पिलपिलीजणो, पिलपिलीजबो—भाव वा० ।

पिलपिलाणो, पिलपिलाबो—सक० रू० ।

पिलपिलाणो, पिलपिलावो-क्रि०स० ('पिलपिलणो' क्रिया का प्रे०रू०)

१ नर्म करना, पिलपिला करना ।

२ सड़ाना ।

पिलपिलाणहार, हारो (हारी), पिलपिलाणियो—वि० ।
पिलपिलायोड़ो—भू०का०कृ० ।
पिलपिलाईजणो, पिलपिलाईजबो—कर्म वा० ।
पिलपिलणो, पिलपिलबो—अक० रू० ।

पिलपिलाट-सं०स्त्री० [देशज] नर्म या पिलपिला होने की दशा या भाव ।
रू०भे०—पिलपिलाहट ।

पिलपिलायोड़ो-भू०का०कृ०—१ नर्म या पिलपिला किया हुआ ।
२ सड़ाया हुआ ।
(स्त्री० पिलपिलायोड़ी)

पिलपिलाहट—देखो 'पिलपिलाट' (रू.भे.)

पिलपिलियोड़ो-भू०का०कृ०—१ नर्म हुवा हुआ, पिलपिला हुवा हुआ ।
२ सड़ा हुआ, गदबदाया हुआ ।
(स्त्री० पिलपिलियोड़ी)

पिलपिलो-वि० [देशज] (स्त्री० पिलपिली) वह जिसका रस या गूदा हल्के स्पर्श से बाहर आ जाता है ।
ज्यूं—पिलपिलो आंबो, पिलपिली खरबूजो, पिलपिलो फोड़ो ।

पिलवांण—देखो 'पीलवांण' (रू.भे.)
उ०—पिलवांणां आंकस पांण घरै । सुज दांमणि जांणि खिवै सिहरै ।—गु.रू.बं.

पिलां-सं०स्त्री०—एक चिड़िया विशेष जिसका मांस खाया जाता है ।

पिलांण—देखो 'पलांण' (रू.भे.)
उ०—एक सो आठ कौतक हय सिणगारिया, सुंदर-सोवन-जड़ित पिलांण । एक सो नै आठ रथ सिणगारिया, चालै असवारी आगीवांण ।—जयवांणी

पिलांणड़ो—देखो 'पलांण' (अल्पा., रू.भे.)

पिलांणणो, पिलांणबो—देखो 'पलांणणो, पलांणबो' (रू.भे.)
उ०—सांढ्या रे भाई जलदी साड पिलांण । वेग पधारो रांणी सीकरी रै देस में जी ।—लो.गी.
पिलांणणहार, हारो (हारी), पिलांणणियो—वि० ।
पिलांणिओड़ो, पिलांणियोड़ो, पिलांण्योड़ो—भू०का०कृ० ।
पिलांणीजणो, पिलांणीजबो—कर्म वा० ।

पिलांणियोड़ो—देखो 'पलांणियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० पिलांणियोड़ी)

पिलांणियो—देखो 'पलांण' (अल्पा०, रू.भे.)
उ०—१ घण तेजाळ, घोड़लो, तुरी करै वह तांन । हीरै जड़ित पिलांणियो, दे बारट नां दांन ।—पी.ग्रं.

पिळाअखतेस—देखो 'पीळाअक्षत' (रू.भे.)
उ०—सझे खग ऊजळ झाटक सूर । पिळाअखतेस चढ़ावत पूर ।
—सू.प्र.

पिलाणो, पिलाबो—देखो 'पाणो, पाबो' (रू.भे.)
उ०—कंठ सुं पांणी पांणी कहियो । विलळो भांग पिलायर वहियो ।—ऊ.का.
पिलाणहार, हारो (हारी), पिलाणियो—वि० ।
पिलायोड़ो—भू का०कृ० ।
पिलाईजणो, पिलाईजबो—कर्म वा० ।

पिलायोड़ो—देखो 'पायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० पिलायोड़ी)

पिलिया-सं०स्त्री० [देशज] पकी हुई ककड़ी । उ०—घुर घुर घूजंता घुड़ता धाकोड़ा । पीळा पडियोड़ा पिलिया पाकोड़ा ।—ऊ.का.

पिलियोड़ो-भू०का०कृ०—१ भगा हुआ, पलायन किया हुआ ।
२ दूर हुवा हुआ, गया हुआ, मिटा हुआ ।
३ द्रवित हुवा हुआ, पिघला हुआ, अनुकूल ।
४ पेरा हुआ ।
(स्त्री० पिलियोड़ी)

पिलुपरणी-सं०स्त्री० [सं० पिलुपर्णी] मरोड़फली नामक लता, मूर्वा ।

पिलूंवी-सं०स्त्री० [देशज] एक प्रकार की मोटे तने की लता विशेष जो वृक्षों पर चढती है ।

पिलोत—देखो 'पीलसोज' (रू.भे.)

पिल्ल—देखो 'पल' (रू.भे.)
उ० —बिलकुल नं पणी तातो मिळै । प्रिथिमें घडी पिल्ल री मिजमांन हवो थको फिलै ।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

पिल्लणो, पिल्लबो—'पिलणो, पिलबो' (रू.भे.)
उ०—हठि चडचउ सुरतांण, खंणवि धरणि तलि पिल्लउं वेगि ल्यावि पदमिणी, सेन सवि साहर घल्लउं ।—प.च.चौ.
पिल्लणहार, हारो (हारी) पिल्लणियो—वि० ।
पिल्लिओड़ो, पिल्लियोड़ो, पिल्योड़ो—भू०का०कृ० ।
पिल्लीजणो, पिल्लीजबो—भाव वा०, कर्म वा० ।

पिल्लियोड़ो—देखो 'पिलियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० पिल्लियोड़ी)

पिल्हणो, पिल्हबो-क्रि०स० [?] १ स्पर्श करना, चूमना ।
उ०—तव कमलिणि बिस तरग, नयण सुं नयण न मेलिग । वयण-वयण नहु मिली, अहर सुं अहर न पिल्हिग ।—प.च.चौ.
२ देखो 'पिलणो, पिलबो' (रू.भे.)
उ०—सांमि कजि अणसरउं, नारि पदमिणी उवेलउं । गढ राखउं राखउं भुज प्राणि, मारि असुरां दल पिल्हउं ।—प च.चौ
पिल्हणहार, हारो (हारी), पिल्हणियो—वि० ।
पिल्हिओड़ो, पिल्हियोड़ो, पिल्ह्योड़ो—भू०का०कृ० ।
पिल्हीजणो, पिल्हीजबो—कर्म वा० ।

पिल्हियोड़ो-भू०का०कृ०—१ स्पर्श किया हुआ, चूमा हुआ ।
२ देखो पिलियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० पिल्हियोड़ी)

पिल्लो-सं०पु० [तामिल, पिल्ला] कुत्ते का बच्चा ।

(स्त्री० पिल्ली)

पिव—देखो 'प्रिय' (रू.भे.)

उ०—उड उड रे म्रो काळा काग । जे म्हारा पिव जी घर आवै ।—लो.गी.

पिवासा—देखो 'पिपासा' (रू.भे.) (जैन)

पिवण—देखो 'पीवण' (रू.भे.)

पिवणौ, पिवबौ—देखो 'पीणौ, पीबौ' (रू.भे.)

उ०—तंत तणक्कइ, पिउ पियइ, करहउ ऊगाळेह । मल वळावौ दीहड़ा, दइ वळावण देह ।—ढो.मा.

पिवणहार, हारो (हारी), पिवणियौ—वि० ।

पिविग्रोड़ौ, पिवियोड़ौ, पिव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

पिवीजणौ, पिवीजबौ—कर्म वा० ।

पिवरियौ—देखो 'पी'र' (अल्पा., रू.भे.)

पिवीलिया—देखो 'पिपीलिका' (रू.भे.) (जैन)

पिसकस-सं०पु० [?] १ एक प्रकार का धनुष ।

२ धनुष (अ.मा.)

पिसण-वि० [सं० पिशुन] १ नीच, दुष्ट ।

उ०—विपत मंत्र विपरीत, अधरम आळस ऊंघणौ । अपजस सोर अनीत, पैला घर वांछै पिसण ।—बां.दा.

२ चुगलखोर, निंदक ।

३ छली, कपटी, धूर्त ।

सं०पु०—१ शत्रु, दुश्मन (ह.नां.मा.)

उ०—१ हुवौ अति सिधुवौ राग, वागी हकां । घाट आया पिसण, घाट लागा थकां ।—हा.झा.

उ०—२ 'गाजू' मार्ग पांचसो, पिसण करग्गां पेख । खांची वग्गां 'रांम' रिण, जंगां दाख विसेख ।—रा.रू.

उ०—३ जन हरिदास माया नरां, मारै अगि लगाय । पहली सज्जन व्है मिळै, पछै पिसण व्है खाय ।—ह.पु.वा.

२ केसर (नां.मा., ह.नां.मा.)

रू०भे०—पसण, पिसन, पिसन्न, पिसुण पिसुन, प्रसण, प्रिसण ।

मह०—पिसणाक, प्रसणांण, प्रसणायण, प्रिसणांण ।

पिसणखोर-वि० [सं० पिशुन, फा० खोर] शत्रु को संहार करने वाला ।

उ०—जांणै अकबर जोर, तौ पिण तांणै तोर तिड । आ बलाय है श्रोर, पिसणखोर 'प्रतापसी' ।—दुरसो आढ़ो

पिसणपनंग-सं०पु०यौ० [सं० पिशुन+पन्नग] मयूर, मोर (अ.मा.)

पिसणाक—देखो 'पिसण' (मह., रू.भे.)

उ०—'हठी' रिणछोड़ तणौ करिहाक । पछट्टत खाग हुवै पिसणाक ।—सू.प्र.

पिसणौ, पिसबौ-क्रि०अ० ('पीसणौ' क्रिया का अक. रू.) १ पिसा जाना (आटा आदि)

२ रगड़ या दबाव के कारण महीनतम टुकड़ों में होना, चूर्ण होना ।

३ कुचला जाना; दब जाना ।

४ किसी प्रकार से कष्ट या संकट आदि के पड़ जाने से अथवा बहुत अधिक परिश्रम के कारण थक कर पूर्ण शिथिल होना ।

५ शोषित किया जाना, शोषित होना ।

६ देखो 'फिसणौ, फिसबौ' (रू.भे.)

पिसणहार, हारो (हारी), पिसणियौ—वि० ।

पिसिग्रोड़ौ, पिसियोड़ौ, पिस्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

पिसीजणौ, पिसीजबौ—भाव वा० ।

पिसताणौ, पिसताबौ—देखो 'पछताणौ, पछताबौ' (रू.भे.)

उ०—लिख पतर राणू मीरां नै भेज्यो संग साधां से पिसतास्यो जी ।—मीरां

पिसताणहार, हारो (हारी), पिसताणियौ—वि० ।

पिसतायोड़ौ—भू०का०कृ० ।

पिसताईजणौ, पिसताईजबौ—भाव वा० ।

पिसतायोड़ौ—देखो 'पछतायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० पिसतायोड़ी)

पिसतावणौ, पिसतावबौ—देखो 'पछताणौ, पछताबौ' (रू.भे.)

उ०—पुण्य करे पिसताविया रे, राजा गंध्रपसेण । यूं पिसतावै जगत सब, मुख गदा री लेण ।—स्री हरिरांमजी महाराज

पिसतावणहार, हारो (हारी), पिसतावणियौ—वि० ।

पिसताविग्रोड़ौ, पिसतावियोड़ौ, पिसताव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

पिसतावीजणौ, पिसतावीजबौ—भाव वा० ।

पिसतावियोड़ौ—देखो 'पछतायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० पिसतावियोड़ी)

पिसतावौ—देखो 'पछतावौ' (रू.भे.)

उ०—तरसै देख अवर वनतावां, भूलै रघुवर भोळा । जद करसी पिसतावौ जम रा, दूत फिरैला दोळा ।—र.रू.

पिसतोल—देखो 'पिस्तोल' (रू.भे.) (अ.मा.)

उ०—करावीन जंबूर, तुपक पिसतोल तयारिय । ठौर ठौर नद घोर, यते लुकमांन डकारिय ।—ला.रा.

पिसतौ—देखो 'पिस्तौ' (रू.भे.)

उ०—विध विध सहेली वाड़ियां छाजै छै । आंबा केला नारेल पिसता छूहारा दाख बिदांम···।—बगसीरांम पुरोहित री वात

पिसन, पिसन्न—देखो 'पिसण' (रू.भे.)

उ०—१ पन प्रबळ पिसन पिक्खै न पिट्ठ, रजवट-वट दै राठौर रिट्ठ ।—ऊ.का.

उ०—२ विरदपत परताप 'विजपत' विय, सदविजै अंबाटां पिसन्न सेलोट । उरड जाता वडा करंवा गरदवां, अभंपद वसै वे राज री

श्रोट ।—महाराजा मांनसिंह रौ गीत
पिसर-सं०पु० [फा०] पुत्र, लड़का, बेटा ।
उ०—तिसके दरम्यांन खलक के खालक अवतारू के अवतंस मुनराज के मालक दसरथ का पिसर अतेबर सूं आये ।- र रू.
पिसलणौ, पिसलबौ-क्रि०स० [सं० पेषणम्] १ किसी नरम पदार्थ को हाथ, हथेली या उंगलियों से दबाते हुए रगड़ना या मसलना ।
उ०—नाहो नीसर गई, आंतड़ा पेठा ऊंडा, कूंडा में कांचतां, भिळै है ढांळा भुंडा । मूठयां सूं मसळता, पिसलता डोडा पीसै; पोसत छांण'र पियै, दसत रा दोसत दीसै ।—ऊ.का.
२ देखो फिसळणौ, फिसळबौ' (रू.भे.)
पिसळणहार, हारौ (हारी), पिसळणियौ—वि० ।
पिसळिप्रोड़ौ, पिसळियोड़ौ, पिसळ्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
पिसळीजणौ, पिसळीजबौ—कर्म वा०, भाव वा० ।
पिसळियोड़ौ—देखो 'फिसळियोड़ौ' (रू भे.)
(स्त्री० पिसळियोड़ी)
पिसाई-सं०स्त्री [सं० पेषणम्] १ पीसने की क्रिया या भाव ।
२ चक्की द्वारा पिसाई करने का धन्धा या व्यवसाय ।
३ पिसाई करने पर मिलने वाला पारिश्रमिक ।
४ अत्यधिक कार्य करने से होने वाला परिश्रम ।
५ अत्यधिक परिश्रम करने से होने वाली शारीरिक अवस्था ।
रू०भे०—पिश्राई, पियाई, पिहाई, पीश्राई, पीयाई, पीसाई, पीहाई ।
पिसाड़णौ, पिसाड़बौ—देखो 'पिसाणौ, पिसाबौ' (रू.भे.)
पिसाड़णहार, हारौ (हारी), पिसाड़णियौ—वि० ।
पिसाड़िप्रोड़ौ, पिसाड़ियोड़ौ, पिसाड़्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
पिसाड़ीजणौ, पिसाड़ीजबौ—भाव वा० ।
पिसाड़ियोड़ौ—देखो 'पिसायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० पिसाड़ियोड़ी)
पिसाच, पिसाचक-सं०पु० [सं० पिशाच] (स्त्री० पिसाचरण, पिसाचणी)
१ एक प्रकार के भूत या प्रेत जो यक्षों और राक्षसों से हीन कोटि के देवों में गिने जाते है ।
उ०—गळ मुंडमाळ मसांण ग्रह, संग पिसाच समाज । पावन तूझ प्रभाव सूं, संभु अपावन साज ।—बां दा.
२ बीभत्स या जघन्य कर्म करने वाला व्यक्ति ।
३ भारत के पश्चिमोत्तर भाग से कश्मीर की सीमा तक के भू भाग का प्राचीन नाम ।
४ इस प्रदेश का निवासी व्यक्ति ।
वि०—मांसाहारी, मांसभोजी ।
रू०भे०—पिचास, पिसाचर, पिसाय ।
पिसाचकी-सं०पु० [सं० पिशाचकिन्] कुबेर (अ.मा.)
पिसाचघन-वि०यौ० [सं० पिशाचघ्न] १ पिशाचों का नाश करने वाला ।
२ पिशाच-बाधा मिटाने वाला ।
सं०पु०—पीली सरसों ।
पिसाचचरजा-सं०स्त्री०यौ० [सं० पिशाचचर्या] पिशाचों की भांति मरघट में परिभ्रमण करना ।
पिसाचद्रु-सं०पु० [सं० पिशाचद्रु] सिहोर का वृक्ष ।
पिसाचपत, पिसाचपति-सं०पु० [सं० पिशाचपति] महादेव, शिव ।
पिसाचबाधा-सं०स्त्री०यौ० [सं० पिशाचबाधा] पिशाच के द्वारा प्राप्त होने वाला कष्ट ।
पिसाचभासा-सं०स्त्री०यौ० [सं० पिशाचभाषा] १ पिशाच प्रदेश की भाषा (प्राचीन)
२ पिशाचों की भाषा, पैशाची भाषा ।
पिसाचमोचन-सं०पु०यौ० [सं० पिशाचमोचन] काशी का एक प्रसिद्ध तालाब जिसके तट पर पिंडदान करने से जीवात्मा को पिशाच योनि से मुक्ति हो जाती है ।
पिसाचर—देखो 'पिसाच' (रू.भे.)
उ०—तर पीपळ रै तळै, फिरै फूंकार मणधर । तर पीपळ रै तळै, रमै वैताळ पिसाचर ।—पा प्र.
पिसाचविवाह-सं०पु०यौ० [सं० पिशाचविवाह] आठ प्रकार के विवाहों में से सबसे अधम विवाह, जो एकान्त स्थान में सोई हुई बेखबर या नशे में बेहोश पड़ी हुई कन्या के साथ सम्भोग करके किया जाता है ।
पिसाचांगंजन-सं०पु० [सं० पिचाश+राज० गंजन] वरुणदेव । (नां.डि.को.)
पिसाचा-सं०पु० [सं० पिशाचिन्] १ कुबेर (ह.नां.)
सं०स्त्री० [सं० पिशस्य] २ एक देव जाति (नां.मा.)
पिसाची-सं०स्त्री० [सं० पिशाची] २ पिशाच स्त्री ।
३ पिशाचों की भाषा पैशाची ।
४ जटामासी ।
पिसाणौ, पिसाबौ-क्रि०स० ('पीसणौ' क्रिया का प्रे०रू०) १ सूखे या ठोस पदार्थ को दबाव पहुंचा कर या रगड़ महीनतम चूर्ण के रूप में कराना, किसी वस्तु को आटे के रूप में कराना ।
२ शिला पर रख कर किसी पदार्थ को पत्थर से महीनतम बंटाना, चटनी रूप कराना ।
३ अत्यधिक परिश्रम कराना, कठोर परिश्रम कराना ।
४ किसी को पूरी तरह से कुचलना किसी से कठोरतापूर्वक कार्य कराना ।
५ शोषण कराना
पिसाणहार, हारौ (हारी), पिसाणियौ—वि० ।
पिसायोड़ौ—कर्म०का०कृ० ।
पिसाईजणौ, पिसाईजबौ—कर्म वा०
पिसाड़णौ, पिसाड़बौ, पिसावणौ, पिसावबौ—रू०भे०

पिसादिय—देखो 'फिसादी' (रू.भे.)

उ०—पिसादिय लोक मरै रिस पूर। करै जद कम्मध कोप करूर।
—पे रू

पिसायोड़ो-भू०का०कृ०—१ सूखे या ठोस पदार्थ को महीनतम चूर्ण के रूप में कराया हुआ, किसी वस्तु को आटे के रूप में कराया हुआ।
२ महीनतम बंटाया हुआ, चटनी रूप में कराया हुआ।
३ अत्यधिक व कठोर परिश्रम कराया हुआ।
४ बुरी तरह से कुचलाया हुआ।
५ शोषण कराया हुआ।
(स्त्री० पिसायोड़ी)

पिसारण, पिसारी-सं०स्त्री०[सं० पेषणम्] वह स्त्री जो पिसाई का कार्य करती हो।

पिसावणी, पिसाववी—देखो 'पिसाणी, पिसावौ' (रू.भे.)
पिसावणहार, हारौ (हारी), पिसावणियौ—वि०।
पिसाविम्रोड़ो, पिसावियोड़ो, पिसाव्योड़ो—भू०का०कृ०।
पिसावीजणो, पिसावीजवौ—कर्म वा०।

पिसावियोड़ो—देखो 'पिसायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० पिसावियोड़ी)

पिसित-सं०पु० [सं० पिशितम्] १ मांस, गोश्त।
२ मांस का टुकड़ा या बोटी (डिं.को.)

पिसियोड़ो-भू०का०कृ०—१ पिसा गया हुआ।
२ रगड़ या दबाव के कारण महीनतम टुकड़ों या खण्डों में हुवा हुआ।
३ कुचला गया हुआ।
४ किसी प्रकार के कष्ट या संकट आदि में पड़ जाने के कारण अथवा बहुत अधिक परिश्रम के कारण थक कर शिथिल हुवा हुआ।
५ शोषित किया गया हुआ।
(स्त्री० पिसियोड़ी)

पिसुण, पिसुन—देखो 'पिसण' (रू.भे.) (डिं.को., ह.नां.मा.)

उ०—मांनइ मोटा उवरा, मांनइ रांणा राय हो पूजजी। तेज घणउ जगि ताहरउ, पिसुन लगाड्या पाय हो पूजजी।—स.कु.

पिस्ट-वि० [सं० पिष्ट] पिसा या पीसा हुआ, चूर्ण किया हुआ।
सं०पु० [सं० पिष्ट] १ जल के साथ पिसा हुआ वह अन्न जिसकी मालिश की जाती है।
२ आटा।
३ चूर्ण।

पिस्टपेसण-सं०पु०[सं० पिष्टपेषणम्] १ पिसी हुई वस्तु को पुनः पीसना।
२ कही हुई बात को पुनः कहना।
३ व्यर्थ का काम करना।

पिस्टि, पिस्टी-सं०स्त्री० [सं० पिष्टि] १ पीसी हुई वस्तु।
२ पीठी।

पिस्ती—देखो 'पिस्ती' (रू.भे.) (अमरत)

पिस्तोळ-सं०पु० [अं० पिस्टल] एक प्रकार का तमंचा, छोटी बंदूक।
रू०भे०—पिसतोळ।

पिस्तौ-सं०पु० [सं० पिस्त] १ एक प्रकार का छोटा वृक्ष विशेष जो ईराक, अफगानिस्तान में होता है।
२ इस वृक्ष का फल जो मेवों में गिना जाता है।

उ०—पिस्तां सूं ना प्रेम, कोड काजू री कोनी। नोजा लागै निकांम, किसमिसी भावै कोनी। खारक ना खुस करै, खुमांणी दाय न आवै। खारी वणी बिदांम, दांम अखरोट लगावै। मारवाड़ मलांणी मगरै, खोखो चोखो मेवड़ो। सूकौ ससतौ देवै सदा, मुरधर खेजड़ देवड़ो।
—दसदेव

रू०भे०—पिसतौ।

पिस्सू-सं०पु० [फा० पश्शः] १ एक प्रकार का उड़ने वाला छोटा कीड़ा जो मच्छर की तरह काटता है।
२ मच्छर।

पिह-सं०पु० [सं० प्रभु] पति। उ०—भूंडण भूंडो नह जणै, ना पिह लोपै रेह। तिण सू पहला ठहरता, दव मचावै खेह।
—डाढाळा सूर री बात

पिहर—देखो 'पी'र' (रू.भे.)

उ०—प्यारा आजो पांमणा, प्यारी धण रै देस। साजन म्हांरा पिहर में, थांरा कोड हमेस।—अज्ञात

पिहलउ-वि० [सं० पृथुल] चौड़ा। उ०—पहिलौ जंबूद्वीप, समइ विचि थाळ आकार। लांबउ पिहलउ इक, लख जोइण नै विस्तार।
—ध.व.ग्रं.

रू०भे०—पिहुलउ, पिहुलो।

पिहळाद—देखो 'प्रहळाद' (रू.भे.)

पिहाई—१ देखो 'पिम्राई' (रू.भे.)
२ देखो 'पिसाई' (रू.भे.)

पिहित, पिहिय-वि० [सं० पिहित] १ छिपा हुआ, गुप्त। उ०—तिण सकार इण तौर, सतत गणिका समझाई। वेस वधू गुण वदळि, प्रीति लेस न पलटाई। तदि सकार असि तोलि, घाव उण रै लगाय घण। मरि जांणि खळ मूढ़, लिहित आयो घर अघण। न मरी सु प्रवळ सब सौं नयति, दिन कितांक अंतर दिया। सह विप्र वळै विलसै सफळ, कांम वयस जुव्वन किया।—वं.भा.
२ ढका हुआ।

पिहुक्खणो, पिहुक्खवो—देखो पेखणो, पेखवौ' (रू.भे.)

उ०—पावहु पवित्र प्रहरन प्रसाद। पिहुक्ख प्रयांन पक्खर प्रनाद।
—ऊ.का.

पिहुलउ, पिहुलो—देखो 'पिहलउ' (रू.भे.)

उ०—दीपइ बीजउ दीप ए, घन घन धात की खंड। पिहुलो चिहुं लख जोयणै, मंडळ रूपै खड।—ध.व.ग्रं.

पीं-सं०स्त्री० [अनु०] अव्यक्त, ध्वनि या शब्द।

उ०—टाबर टुकहा जोड, ठीकरी मुख में लेवै। घीच जाळरी पांन, जोर सूं फूंकां देवै। पीं पींज्यूं पिक वेण, पींपटी वणै रंगीली। देव दुकानां मिळै, मुफतरै मोल चंगीली।—दसदेव

मुहा०—पीं बोलणी—अशक्त होना, साहसहीन होना, किसी कार्य के करने में असमर्थ होना।

पींग—देखो 'पिंग' (रू.भे.)

पींगो-सं०पु० [सं० प्लवंग] रस्सियों के बल लटकाया हुआ बच्चों का पलना या झूला। उ०—१ पेखै चंद प्रकास, देसै निस जळ देवियां। है मन बाळ हुलास, पींगै सर तट पोढियो।—पा.प्र.

उ०—२ पींगै पूतां रै तंबू तणा जावै। सेजां सूतां रै वजरंग वण जावै।—ऊ.का.

वि०—अति तरल।

रू०भे०—पिंगो।

पींडणौ, पींडबौ—देखो 'पीड़णौ, पीडबौ' (रू.भे.)

उ०—पलक गिणै एक मास सउ, घडिय गिणै छम्मास। वरस समान दिनह गिणइ, इम विरह पींडइ तास रे।—प.च.चौ.

पींचणौ, पींचबौ-क्रि०अ० [सं० पिच्च, पीड्] १ दबना।

उ०—भूवाजी नै लखायो के वांरो काळजो जांणै केकड़ा रा पंजा में भिळियोडो पींचीजै है। वांरी नाडियां में जांणै लोई ऊंधो वैवण लागो। बोलणो चायो तो ई वांरा मूंडा सू बोल नीं निकळियो। —फुलवाड़ी

२ सिकुड़ना। उ०—आंख्यां आडा खीरा जगण लागा। नाड़ियां वाढनै लोई पीवणा सूं ई तिस मुझै तो लोई पीणो पड़ैला। डील री सगळी नाड़ियां जांणै पींचीजण लागी। खावा खावतां खावतां री अणचींत्यो एक बावडी रै पाखती पूगो।—फुलवाड़ी

३ किसी भारी वस्तु के दबाव से कुचला जाना, रौंदा जाना।

उ०—कदेई लखावतो के म्हारा माथा नै कोई उकळती कढाई में तळै है, कदै ई लखावतो के कोई हजारेक काळिदर म्हारा माथा में फूंफां-फफां करै है, कदेई लखावतो के किणी मोटा भाखर रै हेटै दबनै पींचीजै है।—फुलवाड़ी

४ दबाना।

पींचणहार, हारो (हारी), पींचणियो—वि०।

पींचिग्रोड़ो, पीचियोड़ो, पींच्योड़ो—भू०का०कृ०।

पींचीजणो, पींचीजबो—भाव वा०, कर्म वा०।

पींचियोड़ो-भू०का०कृ०—१ दबा हुआ।

२ सिकुड़ा हुआ।

३ किसी दबाव से कुचला गया हुआ।

४ दबाया हुआ।

(स्त्री० पींचियोडी)

पींचो-सं०पु० [देशज] एक प्रकार की चिड़िया जिसकी दुम का रंग लाल होता है, गुल-दुम।

रू०भे०—पीचो।

पींछ-सं०पु० [सं० पिच्छम्] १ मयूर की पूंछ का पर (ड.र.)

उ०—मोर पींछ कुण चीतरै जी। कुण करै संध्या रंग।
—विनय-विजयी

२ मयूर की पूंछ।

३ डैना (ड.र.)

४ कलंगी (छोटी) (ड.र.)

रू०भे०—पीछ।

पींछरो-सं०पु० [सं० पिच्छम्] गेहूं, जो, जवार आदि की दाना-रहित छूछी घास जो पशुओं को खिलायी जाती है।

उ०—जोबन नै जवार, काचा थका ज माणियै। झड़पै जासी भार, बाकी रहसी पींछरा।—अज्ञात

पींजण-सं०स्त्री० [सं० पिञ्ज+ल्युट=अन=पिंजनम्] रूई धुनने की धुनकी, पिंजन।

रू०भे०—पिंजण, पिंजन, पींजणी, पीनण।

पींजणी-सं०स्त्री० [देशज] १ पैर में धारण करने का एक प्रकार का आभूषण जो कड़े के आकार का परन्तु उससे कुछ मोटा और खोखला होता है। उ०—हाथ में सोनै रो चटियो घु-जो रमण खेलण नै चाल्या। पांव में पींजणियां गळै कुंज-माळा।—लो.गी.

वि०वि०—इसके अंदर कंकड़ियें होती हैं जिससे चलने में यह बजता है।

२ बैलगाड़ी के पहिए के आगे की धनुषाकार वह लकड़ी जिसके छेद में से होकर धुरा निकला रहता है।

३ देखो 'पींजण' (अल्पा., रू.भे.) (हि.को.)

रू०भे०—पीजणी, पीनणी।

पींजणौ, पींजबौ-क्रि०स० [सं० पिजि] १ धुनकी से रूई धुनना।

२ पीटना, मारना। उ०—किणी रै कीं होयै टूकी नीं कै एक जाट विचाळै हो छाती ठोरनै कैवण लागो—ठाकर सा नै मनाय लावण रो जिम्मो तो म्हारो पण पछै अठै आयां ठाकरमा म्हारा मोर पीज न्हाकै तो इणरो जिम्मो कुण लेवैला।—फुलवाड़ी

पींजणहार, हारो (हारी), पींजणियो—वि०।

पीजिग्रोड़ो, पीजियोड़ो, पींज्योड़ो—भू०का०कृ०।

पीजीजणो, पीजीजबो—कर्म वा०।

रू०भे०—पीजणौ, पीजबौ पीनणौ, पीनबौ।

पींजर—देखो 'पंजर' (रू भे.)

उ०—१ मारका जांण जूटंत मल्ल, गजथाट गहे भड गहो-घल्ल। पींजर पडंत पडियालगांह, सिर अडावडा पड सुभट्टांह।
—गु.रू.बं.

उ०—२ सारण परली ठीकरी, घिस-घिस पतळी होय। परदेसी की गोरड़ी, झुर-झुर पींजर होय।—लो.गी.

उ०—३ मिळणो हुवै तो जी ढोला वे मिळो, दिन-दिन पींजर होती जाय।—लो.गी.

पींजरणौ, पींजरबौ—क्रि०स० [सं० पिंजि] १ संहार करना, मारना।
उ०—१ विहण सु प्रवि चीतौडि 'वीर'-उतु, वह दळ पींजरिया बांणासि। धुक-धुक हेक गया घड़ धरती, अध घड़ हेक गया आकासि।
—ईसरदास मेड़तिया री गीत
उ०—२ कतियांणी कह-कह नारद डह-डह, हेका टह-टह वीर हसै वड रावत ग्रह-ग्रह, पौरसि प्रह-प्रह टूडी ठह-ठह होठ डसै। पडिया-लागि पींजरै हुइ हुव, हींजर गाजै गिरवर गोम ग्रहे। ओल्हार अणि-सर, जमघर खजर, घटि-घडि असमर धार वहे।—गु.रू.बं.
२ ध्वंस करना, नाश करना।
३ आच्छादित करना, ढकना। उ०—१ तो आंगमण नमो 'सांगा' तण, रह-रांवण मेवाड़ा रांण। पमंगां अणी तुरंग पींजरिया। खग-वट्ट ता पड़तां खूमांण।—महारांणा उदयसिंह री गीत
उ०—२ चीर जरद पाखर चंडाडण, कांचू जिरह जड़ाव करि। प्रिय कजि परिमळ रजी पींजरे, हालै टूकी 'जोप' हर।—दूदौ
उ०—३ फुण नागि निमै। गयणगि गिमै। रज पींजरियं। हय हींजरयं।—गु.रू.बं.
पींजरणहार, हारौ (हारी), पींजरणियौ—वि०।
पींजरिओड़ौ, पींजरियोड़ौ, पींजरयोड़ौ—भू०का०कृ०।
पींजरीजणौ, पींजरीजबौ—कर्म वा०।
पीजरणौ, पीजरबौ—रू०भे०।
पींजरल्यौ—देखो 'पींजरौ' (अल्पा०, रू.भे.)
उ०—खदै तो माटी चीकणी, घड़ल्यां घड़ै ए कुमार। हसती तौ घूमै राजा रूड के, चालो सैंयां देखण चाल। चदन रूख कटायक जी पींजरल्यौ घड़ाय। बेटी तो जलमी रूड के, दीजो नदी ये बुहाय।
—लो.गी.
पींजरापिरोळ, पीजरापोळ—स०स्त्री० [सं० पञ्जर+प्रतोली] १ संस्था द्वारा चलाई जाने वाली गोशाला।
२ खेती आदि की हानि पहुँचाने वाले पशुओं को बद करने का स्थान, कांजीहाउस। उ०—थे फालतू जिदो भाई? आंपां रै किसी सारै-री बात है। फाटक वाळां नै ईज जोईजै के वे सगळी गायां नै पीजरापिरोळ में घाल दे।—वरसगांठ
पींजरियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ संहार किया हुआ, मारा हुआ।
२ ध्वंस किया हुआ, नाश किया हुआ।
३ आच्छादित किया हुआ, ढका हुआ।
(स्त्री० पींजरियोड़ी)
पींजरौ—सं०पु० [स० पञ्जरकम्] बांस, धातु आदि की खपच्चियों का या लोहे की सलाकों का बना हुआ झाबा या बक्स की तरह का उपकरण जिसमें पशु, पक्षी आदि बंद किए जाते हैं।
उ०—मरणो लाजम मांमलै, धार अणी चढ धाप। पड़णौ सांकळ पीजरै, सिंहां बडो सराप।—बां.दा.
रू०भे०—पिंजड़ौ, पिंजरौ।

अल्पा०—पींजरल्यौ।
पींजस—देखो पिंजस (रू.भे.)
उ०—'डूंग' न्हार नै पकड़ कर, वां पींजस दियो बिठाय। आगरै के लाल किले में, दीनूं छै पूंचाय।—डूंगजी जवारजी री पद़
पींजारा—देखो 'पिंजारा' (रू.भे.)
उ०—गुळी रा खेत कदेक हुवा था, तिण री जमा चली जाय थी छींपा पींजारा।—नैणसी
पींजारौ—देखो 'पिंजारौ' (रू.भे.)
पींजियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ धुन द्वारा धुना हुआ, पींजा हुआ।
२ पीटा हुआ, मारा हुआ।
(स्त्री० पींजियोड़ी)
पींजू—सं०पु० [देशज] करील का फल। उ०—लूआं लाग पिळीजिया, आंमां हाल बेहाल। पींजू मुरधर पाकिया, लै लाली ज्यूं लाल।—लू
पींड—१ देखो 'पिंड' (रू.भे.)
२ देखो 'पींडौ' (मह०, रू.भे.)
३ देखो 'पींडी' (मह०, रू.भे.)
पींडकौ—देखो 'पींडौ' (अल्पा., रू.भे.)
पींडळी—देखो 'पींडी' (अल्पा०, रू.भे.)
उ०—पींडळियां रोमाळियां हो जी, बैरी जांघ देवळ के री थांम। हे गवरल, रूड़ो हे नजारो तीखो हे नैणां रो।—लो.गी.
पींडवा—सं०स्त्री० [देशज] हल पर वजन रख कर की जाने वाली जुताई।
पींडाढाळ—सं०पु० [देशज] ऊट (ना.डिं.को.)
पींडार—सं०पु० [सं० पिण्डार] १ गडरिया।
२ ग्वाला।
३ देखो 'पिंडारौ' (मह०, रू.भे.)
अल्पा०—पींडारकौ, पींडारडौ।
पींडारकौ, पींडारड़ौ, पींडारियौ—१ देखो 'पींडार' (अल्पा०, रू.भे.)
उ०—पींडारड़े तउ दल पूंठि दीधी। वूवारवइं भुइं भव भीरु कीधी।
—सालि सूरि
२ देखो 'पिंडारौ' (अल्पा०, रू.भे.)
पींडारौ—देखो 'पिंडारौ' (रू.भे.)
पींडाळू—देखो 'पिंडाळू' (रू.भे.)
पींडी—सं०स्त्री० [सं० पिण्ड] १ महादेव की मूर्ति या लिंग।
उ०—मैं इण भांत सेवा की, महादेव ओ फळ दियो, हमरकै देहरा मांहे कावड़ रै मिस जाऊं, जाय नै ऊपर एक भाटो नांखूं, पींडी भांजूं—नैणसी।
२ सने हुए आटे की गोल रोटी जिसे सेक कर चूर कर तल कर चूरमा बनाया जाता है।
उ०—तिजारै रै पांणी सूं आटो गूंदजै छै। तेरा रोटा करजै छै। रोटा भोर पींडी कीजै छै। तठा पछै कढाही में तळजै छै।
—रा.सा.सं.

३ टांग के घुटने के नीचे का पिछला मांसल भाग।
उ०—जांघ केळे का जी थांम, मिरगानैणी जी राज। पींडी तो कहियै रतनाळियां जी म्हारा राज।—लो.गी.
४ मोट (चडस) के मुंह पर लगाया जाने वाला लकड़ी का चौखटा.
५ देखो 'पींडो' (ग्रल्पा रू.भे.)
रू०भे०—पिंडी।
ग्रल्पा०—पिंडली, पिंडोळी, पींडळी।
मह०—पींड।
पींडो-सं०पु० [सं० पिण्ड] १ पशुग्रों के पिछले पैर का ऊपर का हिस्सा जो मांसल होता है।
उ०—१ ग्राप दोन्हू बकरां रा पींडा लेय ग्रागै हालियौ।
—जलाल बूबना री वात
उ०—२ पड़छी स-तुच्छ पींडै प्रचंड, खंडरइ जु ग्राटूं भींति खंड।
—रा.ज.सी.
२ हल को जमीन में गहरा पहुँचाने के लिए उस पर रखा जाने वाला मिट्टी का भार।
३ जेवड़ी का लपेट कर बनाया हुग्रा गोला या गुच्छा।
४ किसी गीले पदार्थ का बंधा हुग्रा पिंड, लोंदा।
उ०—माईतां री लोई पीवण री सोगन दिरायां पछै ई छोकरी ग्रापरी ठौड़ बैठी थेपड़ी रै मापै डिगली सूं गोबर रौ पींडो लेय नीची घूण करियां थापण रौ कांम उणी भांत चालू करियौ।
—फुलवाड़ी
५ देखो 'परींडो' (रू भे)
उ०—मेरौ पींडो रीतो, बो बावल, कुण भरैगो तेरी धीय बिना। तेरी भाव्यां भरैगी तेरौ पींडो, लाडो बेटी जाय घरां।—लो.गी.
ग्रल्पा०—पींडको, पींडी।
मह०—पींड।
पींणच—देखो 'पुंणच' (रू.भे.)
पींदो-सं०पु० [सं० पिण्ड] किसी वस्तु का वह भाग जिस पर वह टिकी रह सके, तला। उ०—कुलडी रै पींदा जेड़ी उपसियोड़ी छोटी लिलाड़।—फुलव ड़ी
रू०भ०—पिंदो।
ग्रल्पा०—पिंदी, पेंदी।
पींधो-सं०पु०[?] चिवड़ा।
पींप—देखो 'पीप' (रू.भे.)
उ०—ग्रग्रत ग्रारोगी न थी, तां टळवळती टींप। चाखि न पहिलां चारवी, पछइ न भावइ पींप।—मा.कां.प्र.
पींपटी—देखो 'पींपी' (ग्रल्पा., रू.भे.)
उ०—टावर टुकड़ा जोड़, ठीकरी मुख मे लेवै। बीच जाळ रौ पांन, जोर सूं फूंकां देवै। पींपी ज्यूं पिक वैण, पींपटी वर्ण रंगीली। देव दुकांनां मिळै, मुफतरै मोल चंगीली।—दसदेव
पींपळ—देखो 'पीपळ' (रू.भे.)
उ०—ग्रला पींपळै फूल ग्रति वेग फूलै। ग्रला चढै हूरतण तणौ दूप चूलै।—पी.ग्रं.
पींपळियो—देखो 'पीपळ' (ग्रल्पा०, रू.भे.)
उ०—पेटड़लो मूमल रो, पींपळिये रो पांन ज्यों, हां जी रे, हीवड़लो हतीयारी रो संचै ढाळीयो।—लो.गी.
पींपळी—देखो 'पीपळी' (रू.भे.)
उ०—पीपल पाडल पींपली, पीठवनी पदमाख। पारिजात पीलूवड़ां, पींपरि परतां पाख।—मा.कां.प्र.
पींवळो-सं०स्त्री० [देशज] भाले, तलवार ग्रादि की नोंक।
पींवा-सं०स्त्री० [देशज] खींप की फली। उ०—खींपां पींवा फोग, भुरट बूई वरणावै। भुरट लांपड़ी लुळै, गजब वेलां गरणावै।—दसदेव
पींपीं-सं०स्त्री०—फूंक से बजाया जाने वाला पान ग्रौर ठीकरी के मेल से बना बच्चों का बाजा।
रू०भे०—पींपटी।
पी-सं०पु०—१ स्वर्ण, सोना (एका०)
२ लोहा (एका०)
३ पीड़ा, कष्ट (एका०)
सं०स्त्री०—४ हल्दी (एका०)
५ चींटी।
६ देखो 'प्रिय' (रू.भे.)
उ०—१ पाघ वजाजां पूछ पी, लेसौ मोल मंगाड़। ईजत किण विध ग्रांणसौ, पूछूं हेला पाड़।—बां.दा.
७ देखो 'पिग्राई' (रू.भे.)
पीग्रणजहर-सं०पु०यौ० [सं० पा+फा० ज़हर] शिव, महादेव (ह नां.मा.)
रू०भे०—पीयण-जहर।
पीग्रणो, पीग्रबो—देखो 'पीणो, पीवो' (रू.भे.)
उ०—रांमरस प्यालै रा पीग्रणहार, दया धरम रा पाळणहार, करम-जाळ रा भोडणहार, तापस ग्रस्टांग जोग रा साभणहार, सांत रस मांहे गळतांण होइ नै रहिग्रा छै।—रा.सा सं.
पीग्रणहार, हारो (हारी), पीग्रणियो—वि०।
पीग्रोड़ो, पीयोड़ो—भू०का०कृ०।
पीईजणो, पीईजबो—कर्म वा०।
पीग्रळ, पीग्रल—देखो 'पीयळ' (रू.भे.)
पीग्रळो, पीग्रलो—देखो 'पीळो' (रू.भे.)
उ०—ऐक रातां ऐक पीग्रळो, ऐक काळां एक सेत। कुसुम करइ कोडांमणा, विस्व वधारइ हेत।—मा.कां.प्र.
(स्त्री० पीग्रळी, पीग्रली)
पीग्रांणूं, पीग्रांणो—देखो 'प्रयांण' (ग्रल्पा०, रू.भे.)
उ०—पूरब सागर लगइ कटक लेई, ग्रागइ दीऊं पीग्रांणूं। मइ दुइ राय देस छंडाव्या, तिहां ग्रम्हारउं थांणूं।—कां.दे.प्र.

पीग्राई—१ देखो 'पिग्राई' (रू.भे.)
२ देखो 'पिसाई' (रू.भे.)

पीग्रारड़ी-वि०स्त्री० [सं० पराक, प्रा० पराय] १ पराई, दूसरे की।
उ०—देखी न सकइ रूग्रडू, हईइ दुस्ट ग्रपार। देखी रिद्धि पीग्रारड़ी, वहइ निरंतर खार।—नळ-दवदंती रास
२ देखो 'प्रिया' (ग्रल्पा०, रू.भे.)

पीइ, पीई—देखो 'प्रीति' (रू.भे.)

पीउ, पीऊ—१ देखो 'पिय' (रू.भे.)
२ देखो 'प्रिय' (रू.भे.)
उ०—चहुं दिस दामिनि सघन घन, पीउ तजी तिण वार। मारू मर घातग भई, पिउ पिउ करत पुकार।—ढो.मा.

पीऊडइ—देखो 'प्रिय' (ग्रल्पा., रू.भे.)
उ०—फंठी कलापी ग्रवतरिउ, ते सिव कंठ समांन। हाळाहळ न रसमसि, पीऊडइ मांग्यां पांन।—मा.कां.प्र.

पीऊस—देखो 'पीयूख' (रू.भे.)

पीक-सं०पु० [सं० पिच्च] १ थूक, ष्ठीवन।
२ चबाए हुए पान के बीड़े का थूक के साथ मिला हुग्रा रस।
उ०—तद पूठी चमेली ग्रांख री सागं रंग पायो, ग्रंग ग्रंग में दरपण रीसी चमक जिण सूं ग्र हणां री दोलड़ी चोलड़ी चमक जिण रै पांन री पीक गळै उतरती वारै झळकै है सू गोरा गळा पर जांणै निमए पार री मांणक हीज पळकै है।—र. हमीर
यौ०—पीकदांन
सं०स्त्री० [देशज] १ चाह, इच्छा।
२ ग्रावश्यकता, जरूरत।
क्रि०प्र०—पड़णी, होणी।
३ ग्राशय, मतलब ग्रौर प्रयोजन।

पीकदांन-सं०पु० [सं० पिच्च+फा० दान] वह पात्र जिसमें पीक थूकी जाती है, उगालदान।
ग्रल्पा०—पीकदांनी।

पीकदांनी—देखो 'पीकदांन' (ग्रल्पा०, रू.भे.)

पीगळणौ, पीगळबौ—देखो 'पिघळणौ, पिघळबौ' (रू.भे.)
पीगळणहार, हारौ (हारी), पीगळणियौ—वि०।
पीगळिग्रोड़ौ, पीगळियोड़ौ, पीगळयोड़ौ—भू०का०कृ०।
पीगळीजणौ, पीगळीजबौ—भाव वा०

पीगळियोड़ौ—देखो 'पिघळियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० पीगळियोड़ी)

पीघळणौ, पीघळबौ—देखो 'पिघळणौ, पिघळबौ' (रू.भे.)
उ०—सुरनर मुनिवर इसो न कोय हो मुनिवर जो। कांई जिणनै जोयां सूं म्हारो मन पीघळै हो राज।—गी.रां.
पीघळणहार, हारौ (हारी), पीघळणियौ—वि०।
पीघळिग्रोड़ौ, पीघळियोड़ौ, पीघळयोड़ौ—भू०का०कृ०।
पीघळीजणौ, पीघळीजबौ—भाव वा०।

पीघळियोड़ौ—देखो 'पिघळियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० पीघळियोड़ी)

पीड़—देखो 'पीड़ा' (रू.भे.)
उ०—१ पाटा पीड़ उपाव, तन लागां तरवारियां। वहे जीभ रा घाव, रती न ग्रोखद राजिया।—किरपारांम
उ०—२ पीड़ न पेखै दया न देखै, लेखै बिन लूटंदा है।
—ऊ.का.
उ०—३ जात पिछांणै जातरी, ग्रौरां पीड़ न एस। रे भोळा! घण रोयसी, सो दुख मूझ विसेस।—वी.स.
उ०—४ हिव तूं जउ उपगार करि, मेटि सहु नी पीड़। स्युं भाखै छै मो भणी, भांजी दुहेली भीड़।—वी.कु.
उ०—५ भगतां भूधर भांजण भीड़, पालीजै देव ग्रम्हीणी पीड़। त्रिविध त्रिजग त्रिविक्रमतार, चतुरभुज चेतन ग्रातम सार।—ह.र.
उ०—६ विध चूका वैद न जांणै वेदन, ग्रोखध लहै न पीड़ ग्रथाह। रात दिवस खटकै उर 'राजो', साजो तेण नहीं पतसाह।
—पीरदांन ग्रासियौ

पीड़क-वि० [सं० पीडक] १ कष्ट देने वाला, पीड़ा पहुंचाने वाला।
२ ग्रत्यधिक ग्रत्याचार या ग्रन्याय करने वाला, ग्रत्याचारी।
३ ग्रहण करने वाला, पकड़ने वाला।
४ दबाने वाला।

पीड़ण, पीड़णी-सं०स्त्री० [सं० पीडन] १ व्यक्ति विशेष को पहुंचने वाला मानसिक या शारीरिक कष्ट या तकलीफ।
२ दर्द, पीड़ा।
३ ग्राक्रमण द्वारा किसी देश को बर्बाद करने का कार्य
उ०—ग्रभूत रीस पूत साह जूत दाह ग्रंग में। हले ग्रभंग रूप माग धू लग निहंग में। पड़े भगांण देस देस ग्रग्रवांण पीड़णी। सलाह पाछलै पुरै मिटी तुरेस भीड़णी।—रा.रू.
४ संकट, कष्ट।
५ सूर्य, चंद्र ग्रादि का ग्रहण।
६ उच्छेद, नाश।
७ स्वरों के उच्चारण करने में होने वाला एक प्रकार का दोष।
रू०भे०—पीड़न।

पीड़णौ, पीड़बौ-क्रि०स० [सं० पीड़नम्] पीड़ा देना, कष्ट देना, पीड़ित करना। उ०—१ पीड़ंति हेमत सिसिर रितु पहिलो, दुख टाळ्यौ वसंत हित दाख। व्याए वेली तणी तरुवरां, साखां विसतरियां वैसाखि।—वेलि
उ०—ले तौ ग्रकारा दंड, निरदयी प्रचंड। पर पीवां नै पीड़तौ ए, ग्रापणै छंदै कीड़तौ ए।—जयवांणी
पीड़णहार, हारौ (हारी), पीड़णियौ—वि०।
पीड़िग्रोड़ौ, पीड़ियोड़ौ, पीड़्योड़ौ—भू०का०कृ०

पीड़ीजणी, पीडीजबो—कर्म वा० ।
पिड़णो, पिड़बो—अक० रू० ।
पीड़णो, पीड़बो, पीडणो, पीडबो—रू०भे० ।

पीड़त—देखो 'पीड़ित' (रू.भे.)
उ०—उपव मुनि मेल्है सिख इतरै। जवन सक्रोध भाविया जितरै। संभ्रम दिल आसमां सिकारां। पीड़त मुनि कीधा अरणपारां।
—सू.प्र.

पीड़न—देखो 'पीड़ण' (रू.भे.)

पीड़ा-सं०स्त्री० [सं० पीडा] १ रोग, बिमारी, व्याधि ।
(अ.मा.)
२ यातना, कष्ट, तकलीफ (डिं.को.)
३ किसी भी प्रकार के मानसिक या शारीरिक आघात से उत्पन्न होने वाली अप्रिय अनुभूति जो प्राणियों को विव्हल या व्यथित कर देती है, वेदना, दर्द, व्यथा ।
४ शरीर के अगों में किसी प्रकार का विकार उत्पन्न होने से अथवा शारीरिक क्रियाओं का अव्यवस्थित होने वाली अनुभूति जिसका अनुभव सारे शरीर के स्नायविक तंत्र द्वारा होता है ।
ज्यूं-अपच पेट री पीड़ा, ज्वर जुखांम माथा री पीड़ा ।
५ किसी भी प्रकार की अव्यवस्था के कारण होने वाला कष्ट या दर्द, अतिक्रमण, नियमभंग ।
६ चद्रमा या सूर्य का ग्रहण ।
७ नाश, उच्छेद ।
८ हल्दी (अ.मा.)
रू०भे०—पीड़, पीडि, पीर ।

पीड़ाकर-वि० [सं० पीडा+कर] पीड़ा या कष्ट देने वाला, पीड़ा पहुंचाने वाला ।

पीड़ाघर सं०पु०यौ० [सं० पीड़ा गृह] १ वह स्थान जहां किसी को कष्ट या पीडा पहुचाई जाती है ।
२ कष्टप्रद स्थान ।

पीड़ावणी, पीड़ावबो-क्रि०अ० [सं० पीडनम्] १ पीड़ा होना, दर्द होना।
उ०—ताहरा उवां नुं कहियो। रांमदास, खिगार, रायसल्ल नू कहियो जु कंवरजी स्री भोपतजी रौ पेट दूखे छै। उवां पणि कहियौ कुंवर जी पधारौ डेरे पेट पीडावै छै।—द.वि.
२ प्रसव के पूर्व कष्ट होना, दर्द होना ।
पीड़ावणहार, हारौ (हारी), पीड़ावणियौ—वि० ।
पीड़ाविओड़ो, पीड़ावियोड़ो, पीड़ाव्योड़ो—भू०का०कृ० ।
पीड़ावीजणी, पीड़ावीजबो—कर्म वा० ।
पीड़ावियोड़ी-भू०का०कृ०—प्रसव के कारण पीड़ित हुई हुई ।

पीड़ावियोड़ो-भू०का०कृ०—१ पीड़ा हुवा हुआ, दर्द हुवा हुआ।
(स्त्री० पीड़ावियोड़ी)

पीड़ास्थान-सं०पु यौ० [सं० पीडा-स्थान] फलित ज्योतिष के अनुसार जन्म कुंडली में उपचय अर्थात् लग्न से तीसरे, छठे, दसवें और ग्यारहवें स्थान के अतिरिक्त शेप स्थान जो अशुभ ग्रहों के स्थान माने जाते हैं । अशुभ ग्रह-स्थान ।

पीड़िका-सं०स्त्री० [सं० पीडिका] फुंसी, फुड़िया (अमरत)

पीड़ित-वि० [सं० पीडित] १ वह जिसे व्यथा या पीड़ा पहुंचती हो, दुखित ।
२ जो किसी प्रकार की पीड़ा से ग्रस्त हो, पीड़ायुक्त, क्लेशयुक्त ।
उ०—खुधा त्रिखा पीड़ित पुरख, तन त्यागंत अतीव । अभवी कह न अनाप दे, जे द्विज अभवी जीव ।—ऊ.का.
३ जो किसी दूसरे के अत्याचार, जुल्म आदि से आक्रान्त हो ।
४ जो किसी चीज के प्रभाव या फल से अपने को दुखी समझता हो ।
सं०पु० [सं०] शृंगार में एक आसन विशेष ।
रू०भे०—पीड़त ।

पीड़ियार—देखो 'प्रतिहार' (रू.भे.)

पीच-सं०पु० [देशज] १ भीड़, समूह । उ०—खाळ रगत रह खळकता, पीच पड़ै पंखाळ । बरड़ै भड़ करड़ै बरी, भव रौरव रण भाळ ।
—रेवतसिंह भाटी
२ जलाशय पर पानी पीने हेतु होने वाली पशुओं की भीड या जमघट । उ०—मोटी मोती मोल कम, सायर पीच न थाय । रावत भागो राड़ में, को चेला किम थाय ।—अज्ञात
३ ग्रामनिवासियों और उनके पशुओं के निमित्त कुए से जल निकालने का कार्य या श्रम ।
४ उक्त का पारिश्रमिक ।
५ उक्त पानी के उपलक्ष में दिया जाने वाला निर्धारित धन
(कर)
रू०भे०—पीछ ।

पीचको-सं०पु० [सं० पा०] सार्वजनिक कुआ ।
रू०भे०—पेचको, पेजको ।

पीचरकी—देखो 'पिचकारी' (अल्पा०, रू.भे.) (अमरत)

पीचास—देखो 'पिसाच' (रू.भे.)
(स्त्री० पीचासणी)

पीचू-सं०पु० [देशज] करील का पक्का फल ।

पीचो—देखो 'पींचो' (रू.भे.)

पीछ-सं०पु०—१ पर्दा । उ०—आड़ी पीछ तांणी हुती नै बाहिर राजा नूं बैसारियो ।—चौबोली
२ पूंछ ।
३ देखो 'पीछै' (रू.भे.)
उ०—घर मुहर तोपखांनां सधीर। ज्यां पीछ अरांनां गज-जंजीर ।
—वि.सं.
४ देखो 'पीच' (रू.भे.)

६ देखो 'पींछ' (रू.भे.)

पीछम—देखो 'पच्छिम' (रू.भे.)

पीछे, पीछै-क्रि०वि० [सं० पश्चात्, प्रा० पच्छ] १ जिस ओर मुंह हो ठीक उसकी विरुद्ध या विपरीत दिशा में आगे या सामने का उलटा, पीठ में।

ज्यूं—थूं थारै पीछै देख कुण ऊभो है।

मुहा०—१ पीछै आणौ। देखो 'पीछै चलणौ'।

२ पीछै करणौ—भेद लेने हेतु पीछे भेजना, किसी को पकड़ने हेतु उसके पीछे भेजना।

३ पीछै चलणौ—नकल करना, अनुकरण करना, किसी का अनुगामी या अनुयायी होना।

४ पीछै छूटणौ—राह में चलते चलते पीछे रह जाना, भेद लेने के लिए जासूस होना, किसी आदमी को पकड़ने के लिए किसी को भेजना। किसी का भेद या रहस्य आदि जानने के लिए किसी का नियुक्त किया जाना या होना।

५ पीछै छोडणौ—किसी को पकड़ने के लिए किसी को भेजना या दौड़ाना। किसी का पीछा करने के लिए किसी को भेजना, जासूस या भेदिया बना कर किसी को किसी के पीछे लगाना। गुप्त रूप से किसी के साथ रह कर उसका भेद या उसके कार्यों की जानकारी लेने के लिए किसी को नियुक्त करना। किसी विषय में औरों से बढ़ कर इस प्रकार आगे हो जाना कि और लोग उसकी तुलना न कर सकें। अपने विपक्षी को पद, कौशल आदि में पीछे रखना।

६ पीछै जाणौ—किसी का पीछा करना, अपने पूर्वजों के गुणों को अपने अंदर लाना, पूर्वजों के गुणों को धारण करना।

७ पीछै डालणौ—देखो 'पीछै पटकणौ'।

८ पीछै दौड़णौ—किसी का पीछा करना, किसी को पकड़ने के लिए प्रयत्नशील होना, अनुगमन करना।

९ पीछै दौड़ाणौ—पीछे-पीछे भेजना, गए हुए व्यक्ति के पास संदेश भेजना या उसे वापिस बुलाने के लिए किसी को उसके पीछे भेजना, भागे हुए या जाते हुए को पकड़ लाने के लिए किसी को भेजना, भागे हुए का पीछा करने के लिए किसी को भेजना।

१० पीछै पड़णौ—किसी कार्य को कर डालने पर तुल जाना, किसी कार्य को कर डालने के लिए अविराम परिश्रम करना, निरन्तर कार्य को करने में जुट जाना, कोई काम करने के लिए किसी को बार बार कहते रहना, किसी को बहुत अधिक तंग करना या परेशान करना, अवसर पाकर किसी की बुराई करते रहना, किसी का नुकसान करने के लिए सदैव कटिबद्ध होना, किसी कार्य की सफलता के लिए आग्रहयुक्त होना।

११ पीछै पटकणौ—भविष्य की आवश्यकता के लिए अपनी कमाई में से धन की बचत करना, आगे के लिए संचित करना, भविष्य में पूरा करने के लिए किसी कार्य को रख छोड़ना, पीछे दौड़ाना, पीछा करवाना।

१२ पीछै भेजणौ—भेदिया लगाना, किसी को पकड़ने के लिए आदमी भेजना।

१३ पीछै लगणौ—देखो 'पीछै लागणौ'।

१४ पीछै लगाणौ—आश्रय देना, साथ कर लेना, अनिष्ट या दुखप्रद वस्तु से सबन्ध कर लेना, किसी को सहारा या आश्रय देना, अकारण अपने पर आफत लेना, साथ भेजना।

१५ पीछै लागणौ—किसी स्वार्थवश किसी के पीछे पीछे चलना, आश्रय लेना, साथ साथ चलना, पीछे पीछे घूमना, साथ साथ चलना, पीछा करना, किसी अनिष्ट या अप्रिय वस्तु का संबन्ध हो जाना, रोग कष्टादि का दीर्घकाल तक बना रहना।

१६ पीछै होणौ—अनुकरण करना, आश्रय लेना।

२ पीठ की ओर कुछ दूरी पर, कुछ दूर पर।

ज्यूं—थे अठा तांई आ गया, घंटाघर घणौ पीछै रै'गयौ।

३ देश या कालक्रम में किसी के पश्चात या बाद में, स्थिति या घटना के विचार से किसी के अनंतर, कुछ दूर या कुछ समय बाद, पश्चात, अनंतर, उपरांत।

४ किसी की अनुपस्थिति या अभाव में, किसी की अविद्यमानता में।

ज्यूं—किणी रै पीछै किणी री बुराई करणी ठीक नहीं है।

५ अंत में, आखिर में।

६ प्रति व्यक्ति या इकाई में हिसाब से।

ज्यूं—अब रासन में फी आदमी पीछै एक पाव आटो मिळै है।

८ किसी अर्थ से, किसी कारण से, निमित्त, लिए, वास्ते।

ज्यूं—थारै पीछै म्हैं घणौ आरांम में हूं।

८ मरणोपरांत, बाद में।

रू०भे०—पीछ।

पीछोड़लू—देखो 'पछेवड़ौ' (रू.भे.)

उ०—परि जोई पाछा वल्या, राइं करिउ विचार। पोढी परि पीछोडलु, आंणी उढिउ सार।—मा.कां.प्र.

पीछोड़ी—देखो 'पछेवड़ी' (रू.भे)

उ०—हंस रोमनी तूलिका, लाहि पीछोडी लक्षि। करि-धरि चांमर चालवइ, ऊलग करति असंख्य।—मा कां प्र.

पीछो-सं०पु० [सं० पश्चात्, प्रा० पच्छ] १ किसी व्यक्ति या वस्तु का वह भाग जो सामने की विपरीत दिशा में पड़ता हो। किसी व्यक्ति या वस्तु के पीछे का भाग, आगा का विपरीत।

२ किसी के पीछे लगे रहने की क्रिया या भाव।

उ०—१ तद एक दिन धांधळजी विचारियो देखां, अपछरा कह्यो हुतो म्हारो पीछो मती समाळजै सु आज तो जायनै देखीस।

—नैणसी

उ०—२ सो सपूत जो पीछो राखै, दुरजन होण कदै ना भाखै। वैरां

तणा विसारै वेहा, सो जाया ही प्रणजाया जेहा ।

—डाढाळा सूर री वात

मुहा०—१ पीछौ करणौ—किसी को पकड़ने, पीटने, मारने आदि के लिए उसके पीछे तेजी से चलना या दौड़ना। किसी का भेद या रहस्य जानने के लिए गुप्त रूप से उसके पीछे पीछे चलना। हर समय किसी के समीप या पास रहना। कोई काम निकालने के लिए बहुत आग्रह करना। किसी वात के लिए किसी को तंग करना। गले पड़ना।

२ पीछौ छुडाणौ—२ पीछा करने वाले से छुटकारा पाना। किसी बात के आग्रह से तंग करने वाले से अपने आपको दूर करना। गले पड़े हुए व्यक्ति से जान छुडाना।

३ पीछौ छूटणौ—पीछा करने वाले व्यक्ति से छुटकारा मिलना। अप्रिय साथ या कष्टप्रद वस्तु का दूर होना। गले पड़े हुए का साथ छूट जाना। पिंड छूटना, छुटकारा पाना, बचाव या रक्षा होना।

४ पीछौ छोडणौ—पीछे करने का कार्य बंद करना, किसी आशा या मतलब से किसी के साथ फिरना बंद करना, सहारा छोड देना, किसी कार्य के लिए किसी से अधिक आग्रह करना बंद करना, किसी को तंग करना बंद करना।

५ पीछौ पकड़णौ—किसी आशा से किसी का साथी बनना, आश्रय की अभिलाषा करना, सहारा बनना।

३ किसी मकान या वस्तु के पीछे का विस्तार।

पीजणवाव-सं०पु०यौ० [?] प्रजा से वसूल किया जाने वाला एक प्रकार का सरकारी कर।

पीजणौ—देखो 'पींजणौ' (रू.भे)

पीजरणौ, पीजरबौ—देखो 'पींजरणौ, पीजरवौ' (रू.भे.)

पीजरणहार, हारौ (हारी), पीजरणियौ—वि०।

पीजरिग्रोड़ो, पीजरियोड़ौ, पीजरयोड़ौ—भू०का०कृ०।

पीजरीजणौ, पीजरीजबौ—कर्म वा०।

पीजरियोड़ौ—देखो 'पींजरियोड़ौ' (रू.भे)

(स्त्री० पीजरियोड़ी)

पीजहलउ, पीजहलू-सं०पु० [सं० पेय-फलम्] पेय फल (उ.र.)

पीट-सं०स्त्री० [सं० पीड्] प्रहार, चोट, मार।

पीटणौ, पीटबौ-क्रि०स० [सं० पीडनम्] किसी प्राणी पर उसे कष्ट पहुंचाने अथवा सजा देने के उद्देश्य से किसी डंडे आदि से मारना, आघात करना।

ज्यूं—गुरां सा छोरां नैं कांवा सूं बुरी तरै पीटिया।

२ लोहा, चांदी, सोना आदि धातु या इन धातुओं से बने पदार्थ को आघात पहुंचा कर चौड़ा करना या बढ़ाना, चोट मार कर चौड़ा या चिपटा करना।

ज्यूं—पतरौ पीटणौ।

३ बजाना।

ज्यूं—डूंडी पीटणी।

४ किसी वस्तु पर चोट पहुचाना, मारना।

ज्यूं—छत री चूनौ पीटणौ।

५ घोर दुख, व्यथा या शोक प्रदर्शित करने के लिए अपने दोनों हाथों की हथेलियों से शिर या सीने पर चोट मारना, आघात करना।

ज्यूं—छाती माथौ पीटणौ।

६ किसी न किसी प्रकार से प्राप्त करना, उपार्जन करना।

ज्यूं—दिन भर भाग दौड़ कर'र पांच रुपिया रोज पीट लूं।

७ चौसर या शतरंज आदि खेलों में विपक्षी की गोटी को मारना।

८ प्रतियोगिता में हराना।

पीटणहार, हारौ (हारी), पीटणियौ—वि०।

पीटिग्रोड़ो, पीटियोड़ौ, पीटयोड़ौ—भू०का०कृ०।

पीटीजणौ, पीटीजबौ—कर्म वा०।

पिटणौ, पिटबौ—अक० रू०।

पीटियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ डंडे आदि से मारा हुआ, आघात किया हुआ।

२ चोट या आघात पहुंचा कर चौड़ा या चपटा किया हुआ।

३ बजाया हुआ।

४ चोट पहुंचाया हुआ, मारा हुआ।

५ शिर एवं छाती पीटा हुआ, दुःख प्रकट किया हुआ।

६ प्राप्त या उपार्जन किया हुआ।

७ विपक्षी की गोटी को मारा हुआ।

८ प्रतियोगिता में हराया हुआ।

(स्त्री० पीटीयोड़ी)

पीटोकड़, पीटोकड़ौ-वि० [सं० पीड्] १ निर्लज्ज, ढीठ, धृष्ट।

२ पीट खाने की आदत वाला, पिटने योग्य।

पीठ-सं०स्त्री० [सं० पृष्ठ] १ प्राणियों के शरीर में, पेट, छाती के ठीक विपरीत दिशा की ओर का वह भाग जो मनुष्यों के पीछे और पशु-पक्षियों, कीड़े-मकोड़ों आदि के ऊपर की ओर होता है।

उ०—१ पीठ तुरस केवांण कर, आसपास रजपूत। मावड़िया सोहै नहीं, मुख मूंछां सिर सूत।—बां दा.

उ०—२ भडा फरक्कै बयहां पीठ कोमंडांचा चला झूले, घूवां रोळ आतसां नगारां पड़ै घ्रोह।—राजाधिराज बखतसिंह रो गीत

मुहा०—१ पीठ करणी—देखो 'पीठ राखणी'।

२ पीठ खाली होणी—असहाय होना, रक्षक का न होना, कोई सहारा या मदद करने वाला न होना।

३ पीठ ठोकणी—कोई उत्तम कार्य करने पर अभिनन्दन करना, प्रशंसा करना, प्रोत्साहन या शाबासी देना, किसी कार्य को करने हेतु उत्साहित करना, हिम्मत बढाना, साहस दिलाना, प्रोत्साहित करना।

४ पीठ थपथपांणी—प्यार में किसी की पीठ पर हाथ फेरना, किसी पर प्यार जताना या करना, कुद्ध हुए पशु का क्रोध शान्त करने हेतु उसकी पीठ पर हथेली फेरना, थप-थपाना, जोश दिलाना।

५ पीठ दिखाणी—युद्ध या मुकाबले से भाग जाना, मैदान छोड़ देना, मैदान छोड़ कर सामने से हट जाना, भाग जाना, पीछा दिखाना।

६ पीठ दैणी—मुह मोड़ना, विमुख होना, स्नेह तोड़ना, प्रस्थान करना, कर्तव्यविमुख होना।

७ पीठ पर होणौ—सहायक होना, मददगार होना, रक्षक होना, संरक्षक होना।

८ पीठ पाळणी—रक्षा करना, सहायता करना, मदद करना।

९ पीठ पालणी—शत्रु को रोकना, आफत टालना या मिटाना।

१० पीठ पीछै—अनुपस्थिति में, अविद्यमानता में, परोक्ष में, आड में, पीछे पीछे।

११ पीठ फेरणी—विदा होना, प्रस्थान करना, ममत्व व स्नेह आदि का ध्यान छोड कर अलग होना, दूर चला जाना।

१२ पीठ राखणी—सहायता करना, मदद करना।

१३ पीठ लागणी—पशुओं की पीठ पर जख्म होना, घाव होना।

१४ पीठ सभाळणी—भेद लेना, गुप्त बात को जानने का प्रयत्न करना, गुप्त बात या रहस्य का पता लगाने का प्रयत्न करना, गुप्त बात को जानना।

२ पहिनने के वस्त्र का वह भाग जो पीठ पर रहता हो।

मुहा०—पीठ फटणी—पहिनने के वस्त्र का पीठ पर धारण करने का भाग फट जाना, मदद का टूट जाना, सहारा न रहना।

३ कुर्सी सिंहासन आदि आसन का वह भाग जो पीठ पर रहता हो।

४ किसी वस्तु की बनावट में उसके अगले ऊपर के या सामने वाले भाग के ठीक विरुद्ध का भाग। साधारणतः काम में आने या सामने वाले भाग से विपरीत का भाग, पीछे वाला भाग।

ज्यूं—कागद री पीठ माथै पतौ लिखदौ।

५ दुकान पर होने वाली ग्राहकों की भीड़ या समूह।

उ०—१ तिण सूं व्योपारी खुस हुआ, सो लाख ऊपर दांण री उपाजी, असी पीठ लागी, फेर लागती ही जावै है।

—मारवाड रा अमरावां री वारता

उ०—२ विविध वस्तु हाटै पांमइ, छत्रीसइ किरयाणां लीइ। नगरी मांडवी वारू पीठ, आछ खेरा चोल मजीठ।—कां.दे प्र.

६ जलाशय पर पानी पीने वाले पशुओं आदि की होने वाली भीड़, जमघट।

७ मूर्ति का वह आधार-स्थान जिस पर वह खड़ी रहती है, वेदी।

८ व्रतधारियों, विद्यार्थियों आदि के बैठने के लिए बना हुआ कुशासन, आसन।

९ बैठने के निमित्त लकड़ी, धातु या पत्थर आदि का बना हुआ आसन, चौकी, पीढ़ा।

१० राजसिंहासन।

११ बैठने का एक विशेष प्रकार का ढंग, आसन या मुद्रा।

१२ किसी प्रकार का उपदेश या शिक्षा देने का स्थान या केन्द्र।

ज्यूं—विद्यापीठ धरमपीठ।

१३ वह स्थान जहां सती के शरीर का कोई अंग या आभूषण भगवान विष्णु के चक्र से कट कर गिरा हो।

वि०वि०—ऐसे स्थान पुराणों के अनुसार ५१, ५३, ७७ और १०८ है जिसमें ये कुछ महापीठ और कुछ उपपीठ नाम से संबोधित किए जाते हैं।

१४ कपड़े की बुनावट में विशेष प्रकार की मोटाई या दृढता।

रू०भे०—पिट्ठ, पिठ्ठ, पूंठ, पुठ, पूठि, पूठै, पूठौ।

पीठक-सं०पु० [सं०] चौकी, पीढ़ा।

पीठगरभ-सं०पु० [सं० पीठगर्भ] वह गड्ढा जो मूर्ति को जमाने के लिए वेदी पर खोद कर बनाया जाता है।

पीठड़-सं०पु० [देशज] झाला राजपूत वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

पीठडलौ—१ देखो 'पीठौ' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—बना पीठड़ली दिन चार, रुच रुच मसळा लो। बनड़ा चाघ-ळिया दिन चार, रुच रुच जोमल्यो।—लो.गी.

२ देखो 'पीठडी' (अल्पा०, रू.भे.)

पीठड़ी-सं०स्त्री० [सं० पिष्टि+रा०प्र० ही] जस्ते का चूर्ण या भस्म जो गुलाब जल में घोट कर आंख में आंजते हैं, आंख की दवा विशेष (मारवाड़)

अल्पा०—पीठड़लौ।

पीठनायका-सं०स्त्री० [सं० पीठ-नायिका] १४ वर्ष की कन्या जो दुर्गोत्सव में दुर्गा की प्रतिनिधि मानी जाती है।

पीठ-भू-सं०पु० [सं० पीठ भूः] चहार दीवारी के आसपास की जमीन, प्राचीर के आसपास का भू-भाग। उ०—अर आगै देवराज रौ रचियौ आठ हाथ उछिन, आठ हाथ लंबायत, ३२ पूतळी सहित चंद्रकांत मणिमय एक सिंघासण कोई प्रासाद री पीठ-भू खोदतां कढियौ तकौ ही आपरै भद्रासण बणायौ।—वं.भा.

पीठमरद-सं०पु० [सं० पीठ-मर्द] १ नायक के चार सखाओं में से एक जो अपनी वचन चातुरी से नायिका का मान-मोचन करने में समर्थ हो। (साहित्य)

२ कुपित नायिका को प्रसन्न करने में समर्थ नायक।

३ नर्तकी वेश्या को नृत्य सिखाने वाला उस्ताद।

पीठलौ-सं०पु० [सं० पिष्ट+रा०प्र०लौ] बेसन को पानी में घोल कर उसमें नमक, मिर्च मसाले डाल कर हलवे की तरह पकाया हुआ एक खाद्य पदार्थ।

वि०वि०—यह प्राय: शाक की जगह काम आता है।

पीठवनी-सं०स्त्री० [सं० पृष्टि पर्णी] १ एक प्रकार का क्षुप विशेष जिसके गोल पत्ते तथा बीज दवा के काम आते हैं।

२ एक प्रकार का वृक्ष विशेष। उ०—पीपळ पाडळ पींपळी, पीठवनी पदमाख। पारिजात पीलूवडां, पीपरि पस्तां पाख।

—मा.कां.प्र.

पीठांण, पीठाणि-सं०पु० [देशज] युद्ध। उ०—१ प्रबळ सुर असुर जिण लगाया पागड़े, जिको खळ चापड़ै खेत जारां। पाड़ियौ रांम दसकध पीठांण में, सबद जै जै हुवा लोक सारां।—र रू.

उ०—२ अवसांण तेल खळ खाग ऊपरै, असि सुरि गहणि गंगोदक आंणि। सूरां वडां तणां संपाड़े, 'पूरौ' सांपड़ियौ पीठांणि।

—पूरणमल भांणावत रौ गीत

रू०भे०—पिठांण।

पीठाड़ी-सं०स्त्री० [देशज] एक प्रकार का गोलाकार पौधा जिसके बीज प्राय: पागल कुत्ता काटने पर दवाई के रूप में प्रयुक्त किए जाते हैं।

पीठि-क्रि०वि० [सं० पृष्ठ] १ पीछे। उ०—एक राति निसीथ रै समय एकला वहाह नूं पुर बारै जावतौ दीखि विक्रम भी प्रच्छन्न पीठि लागौ थको एक नदी रै तीर समसांण देस गियौ।

—वं.भा.

२ देखो 'पीठ' (रू.भे.)

उ०—उठै प्रतिहार सिंह चांमुंडराज सों कहियौ गज बाजी री पीठि न लैण पावै तिण पहली ही चालुक्यराज रा प्रांणां रौ उपहार कुमार प्रथ्वीराज रै भेंट करणौ म्हारा विचार में ठीक जांणियौ।

—वं.भा.

पीठिका-सं०स्त्री० [सं०] १ मूर्ति या खम्भे का मूल या आधार।

२ पुस्तक के विशिष्ट भागों में से कोई एक।

रू०भे०—पीठका।

पीठी-सं०स्त्री० [सं० पिष्टि] १ शरीर की त्वचा को कोमल, स्वच्छ सुंदर बनाने के लिए उस पर किया जाने वाला उबटन विशेष जो प्राय: आटा, हल्दी, चिरांजी, सरसों के तेल के सम्मिश्रण से बनाया जाता है।

उ०—१ तद नायण पूछो कहो थारो धणी कठै छै। तद इयै कही सिकार गयो छै। तद नायण इयै नूं पीठी कर सनांन कराय माथो गूंथ तैयार कीवो। इतरै कुंवर सिकार ले आयौ।

—चौबोली

२ विवाह की एक प्रथा विशेष जिसमें विवाह के कुछ दिन पूर्व दुल्हा दुलहिन के शरीर पर किया जाने वाला उबटन जो जौ के आटे, हल्दी और घी या तेल के साथ बनाया जाता है।

उ०—कोट माय जोसी तेड़ि नै लगन वूझियौ। तरै प्रभातै गोधू क रो लगन छै। सगळी सजाई कीधी। बीजै दिन वीरमती नै पीठी कराई। खेहटियौ विनायक थाप्यौ। तीजै पो'र गोठ जीमण नै आया।

—जगदेव पंवार री बात

३ विवाह में दुल्हा, दुल्हिन के उबटन के अवसर पर गाया जाने वाला एक राजस्थानी लोक गीत।

अल्पा०—पीठड़ली।

पीढ़-सं०पु० [सं० पीठम्] आसन। उ०—भीम आपरा वांम भुजनूं इच्छणी रा तांटंक री पीढ़ करण रौ संकल्प तजियौ।

—वं.भा.

पीढ़ली—देखो 'पीढ़ौ' (अल्पा०, रू.भे.)

पीढियौ-सं०पु० [सं० पीठम्] १ बैलगाड़ी में ऊपरी चौड़े तख्ते (थाटे) के नीचे घोड़े के खुर की आकृति वाले तख्ते (आक या अंगठ) के बीच लगाया जाने वाला काष्ठ-खण्ड।

२ देखो 'पीढ़ौ' (अल्पा०, रू.भे.)

पीढी-सं०स्त्री० [सं० पीठिका] १ बैठने के निमित्त एक विशेष प्रकार की सूत या मूंज से बुनी हुई छोटी चौकी, छोटा पीढ़ा।

उ०—तरै पाखती एक पुरांणौ बडो देहुरौ छै, तठै सांखळी नूं ओलै राखी, उठै 'धारू' जायौ तरै पीढ़ी एकी उपरी राखियौ तठै साप रौ बिल एक छै, तिण मांहे सूं साप एक नीसरनै पीढ़ी परदखणा देनै मोहर १, सोनौ तोळा पांच भर री मेल गयौ।—नैणसी

२ किसी कुल विशेष की परम्परा में किसी विशिष्ट व्यक्ति की आगे जन्म लेने वाली संतान का क्रमागत स्थान या कड़ी।

वि०वि०—वंश का क्रम दोनों से गिना जाता है यथा—प्रपितामह, पितामह, पिता ये तीन पीढ़ियां या पुत्र, पिता, दादा ये तीन पीढियां। जिस व्यक्ति से क्रम शुरू होता है उसी के बाद से पीढी चलती है।

उ०—१ आप मनांणै आविया, निरभै कर नगर। 'जूंझै' नीसांणी कही, मूझ सीस मयाकर। दस पीढ़ी सूं रावळौ, यूं रहियौ ऊपर। तो जस करनी 'मेह' तणा, त्रिहलोकां ऊपर।

—जूंझारसिंह मेड़तियौ

उ०—२ तेरा सै संमत बरस इकतीसै, जवन हिंदवां हुवौ जुद। रांणै बात अबीढ़ी राखी, तेरा पीढी झड़ी तद।

—महारांणा गढ़ लक्ष्मणसिंह रौ गीत

३ वंश क्रम में प्रत्येक कड़ी के अंतर्गत आने वाले सब लोग जो संबंध रिश्तों में बराबर के हों।

ज्यूं—उण री तीजी पीढ़ी में परिवार रै लोगां री गिणती पचास रै उनमांन ही, पण पांचवी पीढ़ी में बीस डील रौ परिवार है।

४ किसी देश, समाज या परिवार का एक समय व एक अवस्था के अंतर्गत आने वाले व्यक्तियों का समूह।

ज्यूं—आज री पीढ़ी रै लोगां में प्राचीन परंपरावां रै प्रति गै'री उदासी है।

५ किसी क्षेत्र विशेष या विषय विशेष से संबंधित परम्परागत अवस्था।

ज्यूं—संगीत अर कळा री पुरांणी पीढ़ी में फिलम रै आविस्कार बो'त अंतर आयगौ है।

यौ०—पीढ़ी-दर-पीढ़ी।

पीढ़ोनांमौ-सं०पु०यौ० [सं० पीठिका+नाम्नः] वंशवृक्ष।

पीढ़ौ-सं०पु० [सं० पीठक] चौकी के आकार का चार पाएदार वह आसन जो मूंज या सूत की डोरियों से बना हुआ होता है।

उ०—चरखा, पीढ़ा, सांगवा भल, पेई पिलांण पाचरा। हलवै भरया कड़ाव हालै, ओग भूररी आंचरा।—दसदेव

अल्पा०—पीढलौ, पिढ़ियौ।

पीण—१ देखो 'पीन' (रू.भे.)

उ०—अधर सुरंग जिसा परवाळौ, सरल सुकोमळ बाह। पीण पयो-हर अति ही मनोहर, जाणे अमिय पवाह।—विद्याविलास पवाडउ

२ देखो 'पैंणौ' (मह०, रू.भे.)

पीणिहारड़ी—देखो 'पणिहार' (अल्पा०, रू.भे.)

पीणिहारी—देखो 'पणिहार' (रू.भे.)

पीणुक-वि० [सं० पा] उपभोग करने योग्य, उपभोग्य ?

उ०—प्रीतम मीर तणी घड़ पीणक, वेधक विघन तणौ वीमाह। रहियौ बिचै खड्गहथ 'रतनौ', म्रत मिंदर रिण-चवरी मांह।

—दूदौ

पीणौ-सं०पु० [सं० पानम्] १ पीना क्रिया या भाव।

२ देखो 'पैंणौ' (रू.भे.)

उ०—वाही थी गुण वेलड़ी, वाही थी रस चेलि। पीणइ पीधी मारवी, चाल्या सूती मेलि।—ढो.मा.

पीणौ, पीबौ-क्रि०स० [सं० पानम्] १ किसी तरल वस्तु विशेषतः जल को प्राणियों द्वारा मुंह से वनस्पतियों द्वारा जड़ों से आत्मसात करना, पीना। उ०—सोभा अति सागर तणी, जो नहीं वरणी जाय। देखि भरयौ मंझार दधि, पय भोळै पी जाय। पय भोळै पी जाय, भलो तण भांत सूं। हंसां संभ्रम होय, क्षीर सिंधु खांत सूं। वणियौ ताळ विहद, 'बखत' नृप वीर रौ। उण पर अधिक आराम, धाम छत्रधार रौ।—सिवबक्स पाल्हावत

२ किसी प्रकार की निंदनीय घटना या अप्रिय बात को मन ही मन में चुपचाप सह लेना या दबा देना, तथा उसके विषय में कुछ न कहना या करना, सर्वथा मौन धारण कर लेना।

३ किसी प्रकार का उग्र या तीव्र मनोविकार को अंदर ही अंदर दबा देना, उसका कुछ भी अनुभव न करना, मनोभाव ही न रहने देना।

ज्यूं—लज्जा पीणी, क्रोध पीणौ।

४ नशे के लिए गांजे, तमाकू, चरस आदि मादक पदार्थों का धूंआ श्वास द्वारा मुंह के अंदर खींचना तथा बाहर निकालना। धूम्रपान करना। उ०—खाण नैं पीण आधा खिसक, लागा लपक लकूंदरा। इम अमल तमाकू है उभै, एकण बिल रा ऊंदरा।—ऊ.का.

५ शराब या भंग आदि पेय पदार्थ का पान करना, पीना।

ज्यूं—इण छोरौ पीयोड़ौ है, इण नैं मत छेड़ौ।

उ०—चालाक तो चंडू पिए, भोळा पीए भंग। अलीण सूं आधा रहे, रजपूतां नैं रंग।—ऊ.का.

६ पदार्थ विशेष का किसी दूसरे द्रव या तरल पदार्थ को अपने अंदर खींचना या सोखना।

ज्यूं—स्याहीसोख स्याही पी गयौ, पारौ घी घणौ पीयोड़ौ है।

७ पीवणा सर्प द्वारा किसी मनुष्य या प्राणी की प्राण वायु पीना, खींचना।

पीणहार, हारौ (हारी), पीणियौ—वि०।

पीओड़ौ, पीयोड़ौ—भू०का०कृ०।

पीईजणौ, पीईजबौ—कर्म वा०।

पिअणौ, पिअबौ, पिवणौ, पिवबौ, पीअणौ, पीअबौ, पीवणौ, पीवबौ

—रू०भे०

पीतंबर—देखो 'पीतांबर' (रू.भे.)

उ०—१ ध्रू पहळाद भभीखण सिधुर, अपणाया सुख आपै। पीत-बर काटै दुख पासां, थिर कै दासां थापै।—र.ज.प्र.

उ०—२ की मंजण जळ करूं, किसूं पहरूं पीतंबर।

—बखतौ खिड़ियौ

पीत-वि० [सं०] १ पिया हुआ, पान किया हुआ।

२ भीगा हुआ, तर।

३ पीले रंग का, पीला। उ०—वसन्न सु पीत देही धनवांन।

—ह.र.

३ भूरा (डि.को.)

सं०पु०—१ पीला रंग।

२ भूरा रंग।

३ हरताल (डि.को.)

४ देखो 'प्रीति' (रू.भे.)

उ०—पत तूं भूलौ पीत को, चित देख विचारे। भीलण का फळ भोगतां, नह भूठ निहारे।—भगतमाळ

पीतअंजणौ-सं०पु०यौ० [सं० पीत+राज० अंजणौ] वह घोड़ा जिसके कंधे पर पीले रंग का चकत्ता हो (शा.हो.)

पीतकुस्मांड-सं०पु०यौ० [सं० पीत कुष्मांड] पीलाकुष्माण्ड।

पीतड़ली, पीतड़ी—देखो 'प्रीति' (रू.भे.)

उ०—आप जाय मुथरा में बैठे, पीतड़ली वोह वाढी।—मीरां

पीतचंदण, पीतचंदन-सं०पु०यौ० [सं० पीतचन्दन] द्रविड़ देश में होने वाला पीले रंग का चदन, हरिचंदन।

पीतता-सं०स्त्री० [सं० पीत+रा. प्र. ता] पीलापन।

उ०—श्री वदन पीतता चित व्याकुळता, हियै धगधगी खेद हुइ। धरि चख लाज पगे नेउर धुनि, करे निवारण कंठ कुइ।

—वेलि

पीतधातु-सं०पु०यौ० [सं०] गोपी चंदन ।
पीतन, पीतनक स०स्त्री० [सं० पीतनम्] १ केशर (नां.मा., ह.नां.मा.)
२ हरताल (डि.को.)
[सं० पीतनः] ३ वट वृक्ष ।
पीतनायक-सं०पु०यौ० [सं० प्रीति+नायक] आभूषण विशेष ।
(व स.)
पीतपट-सं०पु० [सं०] पीला वस्त्र, पीताम्बर ।
उ०—पुलिण रवि-सुता फहरावजे पीतपट । ग्रावजे रास घळ वज्र-नाथ ग्राय ।—वां.दा.
पीतम—देखो 'प्रियतम' (रू.भे.) (ह.नां.)
उ०—१ माता पितु बेटी बेटा भल मरिया, प्यारां प्यारां नें मुसकल परहरिया । जतर जर हरणूं अभ्यंतर जड़ियौ, पीतम प्यारी नें परहरणूं पड़ियौ ।—ऊ.का.
उ०—२ चित लागौ पीतम रे चरणां, भवन रहण रुचि नहिं म्हांरी । हुकम करो तो सासू ! पिव संग जाऊंला, पति-सेवा ही सुखकारी ।—गी.रां.
पीतमौ—देखो 'प्रियतम' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—तुम मती जांणो पीतमा हो, तुम बिछड्यां मोहि चैन ।
—मीरां
पीतरंग-सं०पु० [सं०] १ सोना, स्वर्ण (अ.मा., ह.नां.मा.)
२ अनार (अ.मा.)
पीतर—देखो 'पितर' (रू.भे)
उ०—जख कींदर पीतर जंगे, इमिया ग्राखि अलाह । ब्रह्मा संकर वखांणियौ, पछिम तणौ पतिसाह ।—पी ग्र.
पीतरगत-वि० [सं० पीतरक्त] नारंगी रंग का ।
सं०स्त्री० [सं० पीत+रक्तम्] १ केशर (अ.मा.)
२ पुखराज ।
पीतरयाई-सं०पु० [सं० पितृव्य] पितृव्य, चाचा, चचा ।
उ०—'पाच सैं भाला लागसी तरै मार लेस्यां' । सु पैली कांनो खंगार रो भाई साहिब नें पितरयाई 'फूल', यां कह्यो ।—नैणसी
पीतळ-सं०पु० [सं० पित्तलम्] तांबे और जस्ते के मेल से बनने वाला एक मिश्रित धातु । उ०—मोड़ मुख मोड़ हीतळ हत वाळी, पीतळ पैरण नें सीतळ सतवाळी । लुच्चा ललचावै लालच धिन लागै, लोचण जळ मोचण सोचण खिण लागै ।—ऊ.का.
पर्या०—ग्रारकूट, गिरिग्रार, पीतलोह ।
पीतळियौ-वि० [सं० पित्तल+रा.प्र.इयौ] पीतल का बना, पीतल का ।
उ०—वावेलो ए ओठी पीतळियो पिलांण । हीरां सूं जड़ियौ साजणो ।—लो.गी.
स०पु०—पीतल का बना तसला या कलसा ।
पीतळीजणौ, पीतळीजबौ-क्रि०ग्र० [सं० पित्तलम्] पीतल के बर्तन में रखे किसी अम्ल पदार्थ का कसिया जाना, विकृत हो जाना ।
पीतलोह-सं०पु० [सं०] पीतल (डि.को.)
पीतवसु-सं०पु०—एक देश का नाम (व.स.)
पीतवान-स०पु० [देशज] हाथी के दोनों आखों के बीच का स्थान
(डि.को.)
पीतवास-सं०पु० [सं० पीत वासस्] १ श्रीकृष्ण (नां.मा.)
२ विष्णु का नामान्तर ।
पीतबिंदु-सं०पु० [सं०] विष्णु के चरण-चिन्हों में से एक ।
पीतस-सं०स्त्री० [?] पति या पत्नी की माता, सासु (शेखावाटी)
पीतसरौ-स०पु० [?] चचिया ससुर ।
पीतांबर-सं०पु० [सं० पीत+अम्बर] १ पीले रंग का वस्त्र ।
उ०—मोर मुकुट पीतांबर सोहैं, स्यांम बरण वडभागी । जनम-जनम को साहिब मोरो, वा सौं लौ लागी ।—मीरां
२ पूजा पाठ के समय पहिनी जाने वाली मरदानी रेशमी धोती ।
उ०—१ लघु-भ्रत जिम अभिलाख सू लाधै, समैं तेणि दासातन साधै । उतिम सिनांन करावै ग्रांणे, पीतांबर धोतावर पांणे ।—सू.प्र.
उ०—२ गढपति न्हाय गंग जळ गहरे, पीतांबर खीरोदक पहरे ।
—सू.प्र.
३ पीला वस्त्र धारण करने वाला व्यक्ति ।
४ विष्णु (डि.नां.मा.)
५ श्रीकृष्ण (डि.को.)
रू०भे०—पितंबर, पीतंबर ।
पीता-स०स्त्री० [सं०] हल्दी (अ.मा.)
पीति, पीती-सं०पु० [सं० पीतिः] १ घोड़ा (डि.को.)
२ देखो 'पित्ती' (रू.भे.)
पीतु-सं०पु० [सं० पितुः] १ सूर्य ।
२ अग्नि ।
३ हाथियों के गिरोह का सरदार, यूथपति (डि.को.)
पीतौ-सं०पु० [सं० पित्त] पित्त का थैला जो यकृत या जिगर के पीछे और नीचे की ओर होता है । उ०—अळगा एकांयत नीयत निरदावै, धूणी अवधूतां दूणी धुकवावै । पूरा पोमाहूं सूरा सत सावै, पीता मरियोड़ा जीता पद पावै ।—ऊ.का.
मुहा०—१ पीतामार कांम करणौ—ऐसा कार्य करना जो अपनी सामर्थ्य के बाहर हो और जिसे पूरा करने में बहुत अधिक परिश्रम की आवश्यकता हो ।
२ पीतौ उबळणौ—पित्ताशय में उष्णता होना, क्रोध आना ।
३ पीतौ गळणौ—पशु का पित्ता खराब हो जाना जिससे उसके पूंछ के बाल गिर जाते हैं और शनैः शनैः वह भी मर जाता है ।
४ पीतौ मरियोड़ौ—अति कृश व कमजोर ।
रू०भे०—पित्तौ ।
पीग्रांग्री-वि० [सं० पिता+रा.प्र. ग्रांणी] पिता के वंश का, पिता संबंधी ।

सं०स्त्री० [सं० पितृव्य+पत्नी] चाची (उ.र.)

पीत्रीयउ, पीत्रीयु-सं०पु० [सं० पितृव्य] १ चाचा, काका।

उ०—पणमीय तायह पाय पाछउ वालीउ मद्रि सउं। विद्या वुद्धि उपाइ आपीय पहुतउ पीत्रीयउ।—पं.पं.च.

२ कोई भी कुटुम्ब का वृद्ध पुरुष (उ.र.)

पीथ-सं०पु० [सं० पीथः] १ सूर्य (डि.को.)

२ अग्नि।

३ समय।

४ जल।

पीथड़-सं०पु०—राठौड़ वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

पीथळिया-सं०स्त्री०—पंवार वंश की एक शाखा।

पीथळियौ-सं०पु०—उक्त शाखा का व्यक्ति।

पीथापुरा-सं०स्त्री०—सोलंकी वंश की एक शाखा।

पीथि-सं०पु० [सं० पीथिः] घोड़ा (डि.को.)

पीद, पींदु, पीदौ, पीध, पीधु, पीधौ—देखो 'पीन्हौ' (रू.भे.) (उ.र.)

(स्त्री० पीदी, पीधी)

पीन-वि० [सं०] १ मोटा, मांसल, स्थूल। उ०—सुणतां हाकौ सहज ही, कीधी जेज कघी न। नींदाळू अव छोडणां, भीडांणा कुच पीन।—वी.स.

२ भरापूरा, सम्पन्न।

३ पुष्ट।

रू०भे०—पीण।

४ देखो 'पीन्हौ' (रू.भे.)

(स्त्री० पीनी)

पीनण—देखो 'पींजण' (रू.भे.)

पीनणी—देखो 'पींजणी' (रू.भे.)

उ०—ताखो ताव तमांम, पीनणो अर पुसळाई। नेंड़ी थेंड़ी तणी, जाळ त्रसतुवा वणाई।—दसदेव

पीनणौ, पीनबौ—देखो 'पींजणौ, पींजबौ' (रू.भे.)

पीनणहार, हारौ (हारी), पीनणियौ—वि०।

पीनिग्रोड़ौ, पीनियोड़ौ, पीन्योड़ौ—भू०का०कृ०।

पीनीजणौ, पीनीजबौ—कर्म वा०।

पीनस-सं०पु० [सं०] १ सर्दी, जुखाम।

२ नाक का एक रोग जिससे नाक से दुर्गन्धमय पानी निकलता रहता है तथा घ्राण शक्ति नष्ट हो जाती है।

उ०—पीनस-काय के पास कपूर, धरयौ कवि 'ऊमर' तौ हिय हारयौ।—ऊ.का.

३ देखो 'पिंजस' (रू.भे.)

उ०—घोड़े की हींस को सुण कर डरे, मुरदे की तरह पीनस की सवारी करे।—दुरगादत्त बारहठ

रू०भे०—पिनस।

पीनसी-वि० [सं०पीनस+रा०प्र०ई] पीनस रोग से पीड़ित।

उ०—रूठ'र कहै अवर नह रूड़ो, तूठ न देऊं तार। पूठ फिराय पीनसी जंपै, गांधी ऊठ गंवार।—ऊ.का.

पीनारा—देखो 'पिंजारा' (रू.भे.)

पीनारौ—देखो 'पिंजारौ' (रू.भे.)

उ०—धोबी सवणी-गर न्यारा रे, नाई नीलगरं पीनारा। सकलीगर गांछा नै घोसी रे।—जयवांणी

(स्त्री० पीनारी)

पीनियोड़ौ—देखो 'पींजियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० पीनियोड़ी)

पीनोड़ौ, पीन्ह, पीन्होड़ौ, पीन्हौ-वि० [सं० पीत] पान किया हुआ पिया हुआ।

(स्त्री० पीनोड़ी, पीन्होड़ी, पीन्ही)

रू०भे०—पिद्ध, पीद, पीदु, पीदौ, पीध, पीधु, पीधौ, पीन।

पीप-सं०पु० [सं० पूयं] फोड़े या घाव के अन्दर से निकलने वाला सफेद रसदार पदार्थ (पानी), मवाद, पीव।

रू०भे०—पींप, पीव।

पीपड़ी—देखो 'पीपी' (अल्पा०, रू०भे०)

पीपड़ौ-सं०पु० [देशज] १ लोहे का एक पत्तरा जिसके चारों ओर के किनारे उठे हुए होते हैं। (स्वर्णकार)

२ देखो 'पीपौ' (अल्पा०, रू.भे.)

पीपर-सं०पु० [सं० पिप्पली] १ एक प्रकार की लता जो मगध, बरार में अधिक होती है।

२ उक्त लता की कली जो औषधि के रूप प्रयोग में ली जाती है।

पर्या०—उपकुल्या, उसणा, कणा, कोल्या, ऊसणा, चपळा, तंदुला, तिगम, मागधी, वैदेही।

३ देखो 'पीपळ' (रू.भे.)

रू०भे०—पीपळ।

अल्पा०—पिप्पळ, पींपलि, पीपली।

पीपरामूळ-सं०पु० [सं० पिप्पला+मूल] देखो 'पिप्पळीमूळ' (रू.भे.)

पीपळ-सं०पु० [सं० पिप्पल] १ भारत में सर्वत्र पाया जाने वाला बरगद की जाति का एक वृक्ष विशेष जिसे हिन्दू पवित्र मान कर पूजते हैं (अ.मा., नां.मा., ह.नां.मा.)

पर्या०—अस्वथ, कुंजरभख, चळदळ, दंतीभख, बोधीव्रख, सुव्रख, स्त्रीव्रख।

२ देखो 'पीपर' (रू.भे.)

रू०भे०—पिप्पल, पींपल, पीपर।

अल्पा०—पीपड़ियौ, पीपळियौ।

पीपळपतो, पीपळपत्तो-सं०पु०यौ० [सं० पिप्पल-पत्र] (ब.व. पीपलपत्ता)
१ पीपल वृक्ष का पान या पत्ता।
२ स्त्रियों के कान में धारण करने का सोने या चांदी का बना आभूषण विशेष।
३ पीपल के पत्तों के आकार की बनी झल्लरी जो स्त्रियों के आभूषणों के नीचे लगाई जाती है।

पीपळपान-सं०पु०यौ० [सं० पिप्पलपत्र] स्त्रियों के कान में धारण करने का आभूषण।

पीपळपानकटार-सं०स्त्री०यौ०—एक प्रकार की कटार जिसकी बनावट पीपल के पत्ते के समान होती है।

पीपळरी—देखो 'पीपी' (अल्पा०, रू.भे.)

पीपळामूळ—देखो 'पिप्पळीमूळ' (रू.भे.)
उ०—तद चाचे दीठी। देखें तो कासूं बिछेरो छै। तुरंत ग्रई मांहे लपेट एकै भूहरै मांहे राखियो। कुमार री वयर चतुर हुंती। घोड़ै नै मांखण मांहे पीपळामूळ अजमो चटायै।
—राव रिणमल राठोड़ सावड़िये री वात

पीपळि—देखो 'पीपर' (अल्पा०, रू.भे.)
२ देखो 'पीपळी' (रू.भे.) (अमरत)

पीपळियो-वि० [सं० पिप्पल+रा.प्र. इयो] १ पीपल का, पीपल वृक्ष-संबंधी।
२ पीपल का फल।
३ देखो 'पीपळ' (अल्पा०, रू.भे.)
उ०—इण सरवरिया री पाळ, हगांमी ओ ढोला रे पीपळिया, हो ढोला, पीपळिया थोड़ा, वड़ळा चौगणां, हो राज।—लो.गी.

पीपळी-सं०स्त्री० [सं० पिप्पल] १ एक प्रकार का पीपल का वृक्ष विशेष, यह आकार में पीपल से छोटा होता है।
उ०—कळियां कूंळां री कादै में कळगी। विसहर संगत सूं पीपळियां वळगी।—ऊ.का.
२ वहन के लिये प्रयोग में लाया जाने वाला शब्द।
उ०—सो थे उठीनै सूरांचंद रा झाड़ां खेह लगावण नै जावो छो तौ हू थांरी धरम री पीपळी छूं। आगै आपो परगागो।
—जैतसी ऊदावत री वात
३ एक राजस्थानी लोक गीत।
रू०भे०—पींपळी, पीपळि।

पीपळौ-सं०पु० [देशज] तलवार का वह निचला भाग जहां से वह कुछ अधिक पतली होकर चंद्राकार मुड़ी हुई होती है।

पीपाड़ा-सं०स्त्री०—गहलोत वंश की एक शाखा।

पीपाड़ो-सं०पु० (स्त्री० पीपाड़ी) गहलोत वंश की पीपाड़ा शाखा का व्यक्ति।

पीपावंसी-सं०पु०—१ पीपा नामक भक्त के वंशज।
२ दर्जियों की एक जाति।

पीपी-सं०स्त्री० [सं० पिप्पलं] १ पीपल का फल।
२ कागज, पत्ता आदि को मोड़कर बच्चों द्वारा फूंक देकर बजाया जाने वाला बाजा विशेष।
३ छोटा टीन।
अल्पा०— पीपड़ी, पीपाड़ी।

पीपूड़ी, पीपूड़ीपरड़-सं०स्त्री० [देशज] एक प्रकार का छोटा सर्प विशेष जो प्राय: उछल कर काटता है।
उ०—धरती सारी जे'र, धर निजर पूगै जितरै भटई झाड़ बांटको नै पालपूल रो नाम ही नी। इण धरती में छोटा धर पीपूड़ीपरड़ा घणो मिळै।—रातवासो

पीपो-सं०पु० [देशज] १ लोहे का बना चोकोर बर्तन विशेष जिसमें तेल, घी आदि प्राय: तरल पदार्थ रखे जाते हैं।
उ०—कलसियाबंद घाटो पीतांणो, पीपाबंद घी धर बोरियाबंद गुड़ खांड आई।—रातवासो
२ एक विशेष प्रकार की बनावट की, कुए से पानी निकालने की डोली।
३ गागरोण (कोटा) का खीची राजा जो रामानुज का शिष्य हो गया था।
रू०भे०—पिपो।
अल्पा०—पीपड़ो, पीपलियो।

पीब—देखो 'पीव' (रू.भे.)

पीय—१ देखो 'प्रिय' (रू.भे.)
उ०—१ मिगसर पाळो परगंकियो, प्यारी लागी सोय। प्यारी मोठो पीय नूं, प्यारी मोठो पीय।
—कुंवरसी सांखला री वारता
उ०—२ लाधो हिव प्रभु पड़दो लाय। मुरारि परसाद बाहिर माय। ठगारा ठाकुर हेको पीय। पड़दो नांख परो हिव पीय।
—ह.र.
२ देखो 'पिता' (रू.भे.)
उ०—घह दंयह वसि तेपि पंच ए पंडव पणि चलिय। हथिणाउरि जाएवि मुकलावइ निय माय पीय।—पं.प.च.

पीयण-वि०—पीनेवाला।
सं०स्त्री०—१ पीने की क्रिया या भाव।
२ देखो 'पैणो' (रू.भे.)

पीयणजहर—देखो 'पीअणजहर' (रू.भे.) (ह.नां.)

पीयणो—देखो 'पैणो' (रू.भे.)
उ०—जिण मुह पन्नग पीयणा, कयर-कंटाळा रूंख। आके-फोगे छांइडी, हूंछां भांजइ भूख।—ढो.मा.

पीयमधु-सं०पु० [सं० प्रियमधु] श्री कृष्ण के बड़े भाई बलराम (ह.नां.)

पीयर—देखो 'पी'र' (रू.भे.)
उ०—ढोलाजी रे परणी पीयर मेल।—लो.गी.

पीयल-सं०स्त्री० [सं० पा] १ वह भूमि जिसमें कुए से सिंचाई कर

पानी पिलाया जाता है।

२ रबी की वह फसल जिसका उत्पादन सिंचाई द्वारा होता है।

उ०—हळवद री पाखती झाड़ी थोड़ी, मैदांन छै। खेती ज्वार, बाजरी, तिल, कपास हुवै। उनाळी-पीयल कस वे काई नहीं। —नैणसी

३ पीले रंग की चिड़िया विशेष जो बाजरी की बालों में दाने पड़ने से पूर्व 'उत्तर-पश्चिम' दिशा की ओर से आती है और बाजरी की बालों के दाने खाकर चली जाती है।

४ शराब की गोष्ठी।

उ०—साथ सारा नूं पीयल हो रहो छै। मनहारां होय छै। —कुंवरसी सांखला री वारता

५ कान का आभूषण विशेष।

उ०—फूली भूली भांमिणी, कांन कहंती वात। पीयल ऊपरि पांनड़ी, मंडि महासणि सात।—मा.कां.प्र.

रू०भे०—पीग्रळ, पीग्रल, पील, पीवल।

पीयळो, पीयलो—१ देखो 'पीळो' (रू.भे.)

(स्त्री० पीयळी, पीयली)

पीयांण, पीयांणउ, पीयांणो—देखो 'प्रयांण' (रू.भे.)

उ०—१ हूं लूकिड रे लाडकी, दिहाडी दूरि पीयांण। माहरु भमइ तुहनारडा, पंजर पूठइं प्रांण।—मा.कां.प्र.

उ०—२ जं ताहरुं दळ भुजावलि मइं न जाणिउं। मइं देखि दीधउं तुझ ऊपरि पीयांणउं।—सालिसूरि

उ०—३ सवा लाख खांडायत सरसू, पाखरीए केकांणे। समीग्रांणे सउळ कांन्हडदे, ग्राग्यु छडै पीयांणे॥—कां.दे.प्र.

उ०—४ सुंन सहर की चढ्या चाकरी, प्रकट किया पीयांण। गुरगम घोड़ा मेरे सतगुरु दीना, ब्रह्म आणंद में रहणा॥ —स्री हरिरांमजी महाराज

पीया—१ देखो 'प्रिय' (रू.भे.)

२ देखो 'प्रिया' (रू.भे.)

पीयाई—१ देखो 'पिसाई' (रू.भे.)

२ देखो 'पिग्राई' (रू.भे.)

पीयामह—देखो 'पितामह' (रू.भे.)

पीयार—१ देखो 'पाताल' (रू.भे.)

२ देखो 'प्यार' (रू.भे.)

उ०—पिसुन-पणइ प्रांणी हण्या. जीह न बोलिउं साच। चोरी वस्त पीयारड़ी, पर-नर-नारी राचि।—मा.कां.प्र.

पीयारडुं, पीयारड़ो—१ देखो 'प्यारो' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—१ प्रेम धरी प्रासाद-मुखि, अक्षर सिखिया हरिथ। आंजइ दुख पीयारडुं, सो अवनी-तलि नत्थि।—मा.कां.प्र.

उ०—२ भांजइ दुख पीयारडुं, सो अवनी-तलि अत्थि। भूप-तणा अक्षर भणी, अति आनदिउ चिंति।—मा.कां.प्र.

वि०—२ पराया, दूसरे का।

(स्त्री० पियारडी)

पीयारी—देखो 'प्यारी' (रू.भे.)

पीयारो—देखो 'प्यारो' (रू.भे.)

(स्त्री० पीयारी)

पीयाल—१ देखो 'पाताल' (रू.भे.)

२ देखो 'प्यालो' (मह०, रू.भे.)

पीयाली—देखो 'प्यालो' (अल्पा०, रू.भे.)

पीयालो—देखो 'प्यालो' (रू.भे.)

उ०—१ ताळी खुलै कुदां पीयालां जंतू तांनमानां, अद्रा सिधां घेरे जोस ऊजळै अमाप। भूरा-वाघ षटैतां मेळियो भलां भाई, षटैतां सेकलो ढाहे विजाई 'प्रताप'।—महारांणा भीमसिंह रो गीत

उ०—२ सूळा गोळां घणै मसालै, वळै कटारी अमल विया। ऐकण चोट पीग्रालां असमर, कुरमां दल सेलोट कीया। —दुरजणसिंह सेरसिंह राठौड़ रो गीत

पीयूख, पीयूस-सं०पु० [सं० पीयूषं या पीयूषः] १ अमृत, सुधा। (ह.नां.मा.)

उ०—१ वीनती सेठजी सांभळो जी, सरस पीयूस समांन।—वि.कु.

२ दूध।

३ मधुर* (डिं.को.)

रू०भे०—पयूख, पियूख, पियूस, पीऊस।

पीयोड़ो—देखो 'पियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० पीयोड़ी)

पीयो—१ देखो 'प्रिय' (अल्पा०, रू भे.)

उ०—पड़ै ठाउड़लो जोरावर ग्रो राज, मरै रे वन रा मोरिया। पाडोसण रो पीयो घर ग्रावियो, मद री लेनै मनवार।—लो.गी.

२ देखो 'पियो' (अल्पा., रू.भे.)

पी'र-सं०पु० [सं० पितृ+गृह] विवाहिता स्त्री के माता-पिता का घर, मायका, मैका।

उ०—१ हंस-सरोवर गोरी पी'र थांहरो जी राज। मांन-सरोवर थांरो सासरो जी राज।—लो.गी.

मुहा०—१ पी'र पूरो करणो—पिता के वंश में किसी को न रखना, पिता का वंश समाप्त करना।

२ पी'र पूरो होणो—पिता के वंश में कोई न रहना, पिता का वंश नाश होना।

रू०भे०—पिउहर, पियर, पिवर, पिहर, पीयर, पीवर, पीह, पीहर, अल्पा०—पींवरियो, पींहरियो, पी'रियो, पी'रो, पीवड़लो, पीहड़ो, पीहरड़ो।

पीर-वि० [फा०] १ महात्मा, पूज्य, सिद्ध।

उ०—पर पीर विदीरण पीर प्रपा, तुलसी तसवीर कवीर कृपा। सुधि नांनक बांनक सी सरसी, दुति दादु दयाळ समो दरसी। —ऊ.का.

२ बड़ा।

उ०—पाल्यो रहै न पीर, साच कहुं कांनां सुणौ। बढ़जै रण विच वीर, आजे मत भाजै 'अजा'।—बांकजी बोगसो

३ बूढा, वृद्ध।

४ चालाक, धूर्त।

सं०पु०—१ परलोक का मार्गदर्शक, धर्मगुरु।

उ०—१ च्यारूं दिस कीरत रही, पीर तणी छित छाय। जग में नीर तळाय सह, वणिया खीर तळाय।—बां दा.

उ०—२ पूजै फर-फर पीर, घर-घर नूंतै गांम में। वळे जगावै वीर, मूंठ चलावै मोतिया।—रायसिंह सांदू

२ महात्मा और सिद्ध पुरुष, सिद्धिप्राप्त महात्मा।

उ०—पीरां पतधीरां पं'ली घर घायो, उण दिन 'रांमो' डर सांमो नहिं आयो। लुट-लुट खीरां में दुनियां लव लाई। पांचूं हि पीरां मिळ खीरां न खाई।—ऊ.का.

३ मुसलमानों के धर्मगुरु, पैगम्बर।

उ०—१ पीर पैकंबर दस्तगीर, सब हाजर बंदे।

—केसोदास गाडण

उ०—२ राग न रंग उमंग न राजस, हौज न बाग फुंहार न हूजर। ह्वै असवार सिकार न हालत, पाठ कुराण न पीर पैकंबर।

—सू.प्र.

वि०वि०—वैसे तो मुसलमानों में बहुत से धर्मगुरु हुए हैं परन्तु इनमें प्रमुख २४ ही माने जाते हैं यथा—आदम, शीश, नूह इब्राहीम, याकूब, इसहाक, यूसुफ, इस्माईल, जकरिया, यहया, यूनुस, दाऊद, अयूब, लूत, सुलेमान, स्वालह, शुएब, ईसा, मूसा, इलयास, हारू, यूसआ, जिलकिल्प, मुहम्मद साहिब।

४ सोमवार।

५ देखो 'पीड़ा' (रू.भे.)

उ०—१ संयम सहाय, अल अंतराय। परहरहु पीर, तुरीयाब्धि तीर।—ऊ.का.

उ०—२ पर पीर विदीरन पीर प्रथा, तुलसी तसवीर कबीर कृपा। सुधि नांनक बांनक सी सरसी, दुति दादुदयाळ समी दरसी।

—ऊ.का.

पीरअजोनी-सं०पु० [फा० पीर+सं० अयोनी] महादेव, शिव।

उ०—हास मधुर कुंडळ हिंडळता, जोग्याभ्यास जजोनी। इण तसवीर रावळी ऊपर, वारूं पीरअजोनी।

—महाराजा मानसिंह (जोधपुर)

पीरजादो-सं०पु० [फा० पीर+जादः] (स्त्री० पीरजादी) धर्म-गुरु का लड़का।

उ०—१ कुतब-गोस अबदाळ सूफी अनै कळंदर, पीरजादा मिळै सांझ परभात। कांन अवरंग रा भरै इक राह कज, बरै नह पड़ै 'जसवंत' छतै बात।—नरहरदास बारहठ

उ०—२ मक्कारै पीरजादा, नोसरे साह नूं लिखी तो ने बादसाही न सोभै।—नी प्र.

पीरजुगादी-सं०पु० [फा० पीर+सं० युग+आदि] महादेव।

पीरांण—देखो 'प्राण' (रू.भे.)

उ०—तूटो बोम बाट निराताळ सो विछूटो तारो, केतां छूटो पीरांण आ लखां ताकै कूप। कोप रुद्र माळका विहंगनाथ धूटो किना, रुठो गोरां माथै प्रळै काळ को सो रुप।—गिरवरदांन कवियो

पीरांणो-वि० [फा० पीर+रा०प्र० आंणो] १ पीरों का, पीरों संबंधी।

उ०—अला मांहि महमद साथै मुलांणा, अला पास दरवेस दीसै पीरांणा।—पी.प्र.

२ देखो 'परांणो' (रू.भे.)

पीराई-सं०स्त्री० [फा० पीर+रा०प्र०आई] १ पीर होने के भाव।

२ पीर का चमत्कार, पीर की करामात।

सं०पु०—३ पीरों के गीत बाजे पर गाने वाले एक प्रकार के मुसलमान।

पी'रियो-वि० [सं०पितृ+गृह+रा०प्र०इयो] विवाहित स्त्री के मायके का।

सं०पु०—१ विवाहित स्त्री के पिता के कुटुम्ब या निवास का व्यक्ति।

२ देखो 'पी'र' (अल्पा.,रू.भे.)

रू०भे०—पीवरियो, पीहरियो।

पीरी-सं०स्त्री० [फा० पीर+रा०प्र०ई] १ पीर होने का भाव।

२ वृद्धावस्था। ३. शिष्य बनाने का धंधा।

पीरु-सं०स्त्री० [सं० पीड़ा] पीडा, दर्द।

उ०—ध्रुव धन सिधायो वचन मारचो ध्यांन धारचो एक ये। तजि पांन नीरू महाधीरु परा पीरू पेख ये।—करुणासागर

पीरोजियो, पीरोजी—देखो 'फीरोजी' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—१ तरै राठौड़ आसकरण जैतावत देवीदासोत नै दोनूं ही भेळा होय नै पीरोजी २०००० राव रांम नूं दी.........।

—राव चंद्रसेण री वात

उ०—२ संवत १६४१ मोटै राजा राव सुरतांण सिरोही रो धणी जिण माथै पेसकसी पीरोजी लाख दोय नै घोड़ा १३ ठहराया।

—बां. दा. ख्यात

पीरोजो-सं०पु०—देखो 'फीरोजो' (रू.भे.) (अ.मा.)

पीरोत—देखो 'पुरोहित'

उ०—टग-टग महलां जी उमादे रांणी ऊतरी जी, जड़िया सजड़ किंवाड़। पहली मनाव महाराज पीरोत पधारिया, भठियांणी रांणी खोल किंवाड़।—लो.गी.

पी'रो—देखो 'पी'र' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०-रांमलै री बहू, राजी-राजी पी'रै सूं गैणा लाय'र भूवा जी, मासी जी अर मांमो जी रो टंटो निवटाय दियो अर सासू रो जी सोरो

कराय दियौ।—वरसगांठ

पील–वि० [?] रक्षक, सहायक।

उ०—के तुम किस के मांमले चाहत सुर भाया। के तुम किस के पील हो अरजी गुजराया।—ला.रा.

सं०पु० [फा०] १ हाथी।

रू०भे०—पीलु।

२ देखो 'पोयल' (रू.भे.)

उ०—वीघा २००० रेलोजं, काठा गेहूं हुवै। पील घणी कोन्ही।

—नैणसी

पीळखांनौ–सं०पु०यौ० [फा० पील+फा० खांन] हाथियों के बांधने का स्थान, हस्तिशाला।

पीळचोस, पीळचौस, पीळजोत—देखो 'पीलसोज' (रू.भे.)

उ०—१ सेझवट तकिया घणू ऊजळा गरकाब गदरा परां नैरू सूं भरिया थका घणूं ऊजळी गरकाव विछात कीजै छै, पीलचोसां अढार दांनीआं री रुसनाई लागी रही छै, तेज-पुंज आसप आरोगीजै छै।

—श.सा.सं.

उ०—२ तद हरिरांम कह्यौ—'लोक सरव ऊभा ऊठो। तद लोक सरव ऊठि ऊभा हुआ। मसाळची पीलचोसां ने गया।

—पलक दरियाव री बात

उ०—३ चारू कांनी घी री पीलजोतां जगमगावती ही। सौरमी चीजां री सौरम सूं कमरा में भभरोळां उठती ही।—फुलवाड़ी

पीळणौ, पीळबौ–क्रि०अ० [?] पीला पड़ना, पीत वर्ण होना, पीला होना।

उ०—पीळांणी धरा ऊलघी पाकी, सरदि काळि एहवी सिरी। कोकिल निसुर प्रसेद ओसकण, सुरति अति मुख जिम सुत्री।

—वेलि

पीलणौ, पीलबौ–क्रि०स० [देशज] १ कठोर और वजनी दो वस्तुओं के बीच में किसी रसदार पदार्थ को डाल कर इस प्रकार दबाना कि उसका रस निकल जाय।

उ०—वेळू घांणी पील-कर कोई तेल कढावै।—केसोदास गाडण

२ मारना, संहार करना।

उ०—मळिया मेछां मांण, पापी चौकस पीलिया। आलम जोरी आंण, आज हुई इळ ऊपरा।—पी.ग्रं

३ ध्वस्त करना, नाश करना।

४ तंग करना, परेशान करना।

५ अत्यधिक परिश्रम कराना। ज्यूं०—कांम में पीलणौ।

पीलणहार, हारौ (हारी), पीलणियौ—वि०।

पीलाड़णौ, पीलाड़बौ, पीलाणौ, पीलाबौ, पीलावणौ, पीलाववौ

—प्रे०रू०।

पीलिओड़ौ, पीलियोड़ौ, पील्योड़ौ—भू०का०कृ०।

पीलीजणौ, पीलीजबौ—कर्म वा०।

पीलती–सं०स्त्री०—देखो 'पीळी' (रू.भे.)

उ०—गाय भैंस अर ऊंट, पीड सूं खड़ा खुडावै। मारै दूसरौ पसू, पांव में सोई आवै। सीघ्र खंदेड़ो खोद, पीलती माटी लावै। गोबर रै गुण घाल, ठींगळै घोळ सिजावै। सैंती सैंती पीड ताहो, लपेट लकड़ी लीरड़ा। तीजै दिन वन पयांन करै, त्यांग दुवाई चोरड़ा।

—दसदेव

पीलपांव–सं०पु०यौ० [फा० पील+सं० पाद] श्लीपद नामक एक प्रसिद्ध रोग जिससे पैर फूल कर हाथी के पैर जैसे हो जाते हैं।

पीलपायौ–सं०पु० [फा० पील-पाय] १ चारपाई के पाए के नीचे लगाया जाने वाला सहारा या आधार। (पत्थर काष्टादि)

२ किले आदि की दीवार के साथ या नीचे बनी बहुत मोटी दीवार।

पीलपाळ–सं०पु० [फा० पील+सं० पाल] हाथीवान, महावत।

पीलवांन—देखो 'पीलवांन' (रू.भे.)

पीलरियौ—देखो 'पीलरौ' (अल्पा०, रू भे.)

पीलरौ–वि० (स्त्री० पीलरी) १ रक्ताल्पता रोग से पीड़ित, अति दुर्बल।

उ०—तिण दिण नू घणौ दुरवळ दीठौ, पीलरौ दीठौ, तरै पीलरौ होंण रौ हाल पूछियौ।—नी.प्र.

२ पीले रंग का, पीत।

उ०—हे सोना नै सरीसी घणा पीलरी ओ राज। राज ढोला राखेनी थारै हियड़ै रै मांय।—लो.गी.

अल्पा०—पीलरियौ।

पीलवण–सं०स्त्री० [देशज] एक प्रकार की मोटे तने की लता जो वृक्षों पर चढ़ी रहती है। रंगभेद से सफेद और श्याम दो प्रकार की होती है। (मारवाड़)

रू०भे०—पीलवांण, पीलवांनी।

मह०—पीलवणौ।

पीलवणौ—देखो 'पीलवण' (मह०, रू.भे.)

पीलवांण, पीलवांन–सं०पु० [सं० पीलुवान, फा० फीलवान] महावत।

उ०—१ पीलवांण कूंभाथळां माथै पगां रा अंगूठा चलावै छै, गज-वागां खैंचे छै, घता-घता करै छै।—रा सा सं.

उ०—२ उरं ओद्रकं सास अभ्यास आंणं। वडा जूह पूंतारिया पील-वांणं।—वचनिका

उ०—३ पोसाक ऊंच अनोप, इम पीलवांनह ओप। असवार गज उणवार, पुज देव दुज अणपार।—सू.प्र.

२ देखो 'पीलवण' (रू.भे.)

रू०भे०—पिलवांन, पीलवांन।

पीलवपांनी–सं०स्त्री० [फा० पीलवान+ई] १ फीलवान का कार्य, महावत का कार्य।

२ महावत का पद।

३ महावत को मिलने वाला वेतन ।
४ देखो 'पीलवण' (रू.भे.)

पीलसोज, पीलसोत-सं०स्त्री० [फा० फतीलसोज] १ पीतल या और किसी धातु की बनी दीवट जिसमें एक अथवा अनेक दीपक ऊपर बने हुए होते हैं। उनमें तेल रखकर बत्तियां जलाई जाती हैं।
उ०—१ दोय वडी नोवत, दोय वडी देग रकबाई घड़ियाल, सोनारी पीलसोज, रूपा रा किवाड़ चितोड़ सूं श्रांण अकवर अजमेर ख्वाजेजी रै भेंट किया।—बां.दा. ख्यात
उ०—२ भरमल री मा कन्है बैठी दारू पावै छै, पीलसोतां बल रही छै।—कुंवरसी सांखला री वारता
२ साधारण चिरागदान।
रू०भे०—पिलोत, पीलचोस, पीलचोस, पीलजोत, पीलोत।

पीळाअक्षत, पीळाआखतो, पीळाआखा, पीळानावळ-सं०पु०यौ० [रा० पीळा+सं०अक्षत, तंदुल] (ब.व.) मांगलिक अवसरों पर इष्टमित्रों के यहां कुंकुमपत्रिका के स्थान पर केसर या हल्दी में रंग कर भेजे जाने वाले चावल।
उ०—१ इम धसूं गोळ मझि फरि फरि उरड़, धसत लोपि धड़ मेंगळां। उजळा करूं पीळाअक्षत, असुर विहंड खग उजळां।—सू प्र०
उ०—२ तौ पहूंचूं लग नील पताखां, इम उजवाळूं पीळाआखा।
उ०—३ अठै आईदांन खड़िया री बेटी परणियो छै, तिण बाई सूं दोय संदेसा कहिणा छै। तरै म्हारा सासरिया पूछसी राज रै वहू सूं कठारी सैंध। तरै थे कहिज्यो म्हारै पीळाआखां रो धणी सांमदांन आसियो छै। तिण री भाणेजी छै।—जैतसी ऊदावत री वात
मुहा०—पीळा चावळ देणा—मांगलिक अवसर पर निमंत्रण देना।
रू०भे०—पीलाअखतेस।

पीळाडी-वि० [?] पापी, दुष्ट।
उ०—पेच मुंदियाड़ पर 'बादरो' पीलाड़ी, कयर रै लिलाड़ी माय करकै। हारगा बियां सूं हिलै न हिलाड़ी, सिलाड़ी तो विना मांज सिरकै।—ऊमरदांन लाळस

पीलाणौ, पीलाबौ-क्रि०स० ('पीलणौ' क्रिया का प्रे०रू०) १ कठोर और वजनी दो वस्तुओं के बीच में डालकर किसी रसदार पदार्थ का रस निकलाना, कोल्हू में डाल कर पेराना।
२ मरवाना, सहार कराना।
उ०—अबै तौ म्हनै घांणी में पीलाय देवेला। मार मारनै फेर मारेला।—फुलवाड़ी
३ परेशान करना, अत्यधिक परिश्रम कराना।
पीलाणहार, हारो (हारी), पीलाणियो—वि०।
पीलायोड़ो—भू०का०कृ०।
पीलाईजणौ, पीलाईजबौ—कर्म वा०।
पीलावणौ, पीलावबौ—रू०भे०।

पीलायोड़ो-भू०का०कृ०—१ रसदार पदार्थ का दो वजनी वस्तुओं द्वारा रस निकलाया हुआ, कोल्हू में पेराया हुआ।
२ मरवाया हुआ, संहार कराया हुआ।
३ परेशान करवाया हुआ, अधिक परिश्रम करवाया हुआ।
(स्त्री० पीलायोड़ी)

पीलावणौ, पीलावबौ—देखो 'पीलाणौ, पीलाबौ' (रू.भे.)
उ०—हार देवता देवता ही ईं घांणी में पीलायं तौ सौ वार पीलाबं।
—फुलवाड़ी
पीलावणहार, हारो (हारी), पीलावणियो—वि०।
पीलाविओड़ो, पीलावियोड़ो, पीलाव्योड़ो—भू०का०कृ०।
पीलावीजणौ, पीलावीजबौ—कर्म वा०।

पीलावियोड़ो—देखो 'पीलायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० पीलावियोड़ी)

पीलिया—देखो 'पीलू' (अल्पा०, रू.भे.)
उ०—कई राम पीलिया फैणा, कई जाळ जाळोटिया। मुरधर मरुत घणुं इण मेवं, बाळ बैठ बोरोटिया।—दसदेव

पीलियोड़ो-भू०का०कृ०—१ कोल्हू में डालकर पेरा हुआ, तेल निकाला हुआ।
२ संहार किया हुआ, मारा हुआ।
३ तंग किया हुआ, परेशान किया हुआ।
(स्त्री० पीलियोड़ी)

पीळियो-वि० [देशज] पीत वर्ण का, पीले रंग का।
सं०पु०—१ रक्त के दूषित होने से होने वाला एक रोग जिससे नेत्र, नाखून और शरीर का रंग पीत वर्ण का हो जाता है, कामला।
२ पीले रंग का बैल।
(स्त्री० पीळी)
रू०भे०—पीळयौ।

पीळी-वि० [देशज] पीत वर्ण की, पीले रंग की।
उ०—अेकर एक जूं रिसांणी कर नै आप रै नांनांणै जावती। सोना गैणा सूं पीळी जरद व्हियोड़ी।
—फुलवाड़ी
सं०स्त्री०—१ पीतवर्ण की गाय।
उ०—मोडी गोडी दे पसवाड़ा मोड़ै, तदछां वातोड़ी घड़छां तन तोड़ै। पीळी पाटळ पर फिर फिर कर फेरे, धोळी धूमर नै फिर फिर घर घेरे।—ऊ.का.
२ पीले रंग की घोड़ी।
३ एक प्रकार की मिट्टी विशेष जिसका रंग पीला होता है।
रू०भे०—पीळती।

पीळीकणेर-सं०स्त्री०—कनेर वृक्ष का एक भेद जिसके फूल पीले रंग के होते हैं।

पीळीचमेली-सं०स्त्री०यौ० [रा० पीळी+सं० चंपावेलिः] चमेली की जाति की लता विशेष जिसके फूल पीले रंग के होते हैं।

पीळोजूही-सं०स्त्री०यौ० [रा० पीली+सं० यूथिका या यूथी] एक प्रकार की जूही जिसके फूल पीले रंग के होते हैं, सोनजूही।

पीळीमाटी, पीळीमिटी-सं०स्त्री० [राज० पीळी+सं० मृतिका] पीले रंग की मिट्टी, पीली मिट्टी। (अमरत)

पीलु, पीलू-सं०पु० [सं० पीलुः] १ हाथी, हस्ती (डि.को.)

२ तीर, बाण।

३ एक वृक्ष विशेष, इस वृक्ष का फल।

४ एक राग विशेष।

अल्पा०—पीलिया।

पीलूवडो-सं०पु० [सं० पीलू] वृक्ष विशेष।

उ०—पीपळ पाडळ पीपळी, पीठवनी पदमाख। पारिजात पीलूवडां, पींपरि पत्तां पाख।—मा.कां.प्र.

पीलोत—देखो 'पीलसोज' (रू.भे.)

उ०—ग्रह छिद्र गवाक्षन मीट घणी। तिण दीठिय जोत पीलोत तणी।—पा.प्र.

पीळो-वि० [देशज] (स्त्री० पीळी) १ वह जो सोने, केसर या हल्दी के रंग का हो, पीत, जर्द, पीला।

उ०—चरणे चांमीकर तणा चंदांणणि, सज नूपुर घूघरा सजि। पीळा भमर किया पहराइत, कमळ तणा मकरंद कजि।—वेलि

मुहा०—पीळा हाथ करणा—लड़के या लड़की का विवाह करना।

२ रक्ताल्पता के कारण हलका श्वेत हो गया हो, जिसके स्वास्थ्य-सूचक कांति या दीप्ति न हो, कांतिहीन, निस्तेज। (शरीर)

उ०—प्रीतम बीछुड़ियां पछइ, मुई न कहिजइ काह। चोळी केरे पांन ज्यूं, दिन-दिन पीळी थाइ।—ढो.मा.

क्रि०प्र०—पड़णी, होणी।

३ वह जो भय, लज्जा आदि के कारण पीत हो गया हो।

मुहा०—लाल पीळो होणो—क्रोध के कारण शरीर का रंग फीका पीत होना, क्रोध करना।

सं०पु०—१ स्त्रियों के ओढने का पीला रंगा हुआ वस्त्र।

उ०—थेई ओ बना सूरज ऊगं जोधांणे सिधाओ, पीळो म्हारै कुण जी मोलाय। थेई ओ जच्चा रांणी गीगलियो हुलराय, पीळो म्हारा माताजो मोलावसी।—लो.गी.

२ पुत्र जन्मोत्सव पर राजस्थान में गाया जाने वाला मांगलिक लोक गीत।

३ सोने या हल्दी से मिलता जुलता एक प्रकार का रंग।

४ पीले रंग का बैल।

५ रंग विशेष का घोड़ा।

रू०भे०—पीअळो, पीअलो, पीयळो, पीयलो।

पीळोधतूरो-सं०पु० [सं० पीत धुत्तुर] एक प्रकार का धतूरा जिस के पुष्प पीत वर्ण के होते हैं।

पीळोपो-सं०पु०यौ० [राज०पीळो+सं०पाद=पाय=किरण] उषा-काल, सवेरा, तड़का।

पीळोबादळ-सं० पु० यौ० [रा० पीळो+सं० वारिद] उषाकाल तडका। उ०—चांद-किरण मिळ पवन सूं, टीवां करी किलोळ। पीळेबादळ खोज लै, लूआं रोळ गिदोळ।—लू

पीळ्यो—देखो 'पीळियो' (रू.भे.)

पीव-सं०पु० [सं० प्रिय ?] १ चातक, पीहा। (अ०मा०)

२ देखो 'प्रिय' (रू.भे.)

उ०—१ प्रीत कर पाछी न जावै, ये ही वैराग की रीत। कबहूं तो मन होय उदासी, कबहूं गावै गीत। आसक महल अरु इसक झरोखा, चढण अगम की भीत। पल-पल प्रीत करी उण पीव से, लख जो नीत अनीत।—स्री हरिरांमजी महाराज

उ०—२ सब ही अन्तक देखिये, किहि विध जीवै जीव। साधु सुधा-रस आंणकर, दादू बरसै पीव।—दादूबांणी

उ०—३ झूठै हाकै हुलसता, पीव बधाई दार। जागो सिव सांचो कियो, घूमै मैंगळ वार।—वी०स०

पीवड़लो—देखो 'प्रिय' (अल्पा०, रू.भे.)

२ देखो 'पीवर' (अल्पा०, रू.भे)

उ०—पीवड़ले लिख भोजड़ल्यां पठावां, कहो ऐ भेजां संदेस। भोजड़ल्यां बायब हम नां पतीजां, सदेसे न आवै म्हारो वीर।

—लो.गी.

पीवण, पीवणउ, पीवणो-वि०—१ पीने वाला।

२ देखो 'पंणो' (रू.भे.)

उ०—मारुणी मुख ससि तणइ, कसतूरी महकाइ। पासइ पन्नग पीवणउ, बिळकुळियउ तिणि ठाइ।—ढो.मा.

रू०भे०—पिवण।

पीवणो, पीवबो—देखो 'पीणो, पीवो' (रू.भे.)

उ०—१ इण पर पड़गी रात अंधारी, पीवण नै घट मैं नहीं पांणी। तिरया पुरसां खांचातांणी प्यासां मरता बिलखा प्रांणी।—ऊ.का.

उ०—२ डावी नै फरूकै देखकर, जळै आंख मम जीवणी। साथियां कठै तूं सोखियो, पीव तमाखू पीवणी।—ऊ.का.

उ०—३ वाही थी गुण बेलड़ी, वाही थी रस बेलि। पीगइ पीवी मारवी, चाल्या सूती मेलि।—ढो मा.

पीवणहार, हारो (हारी), पीवणियो—वि०।

पीविओड़ो, पीवियोड़ो, पीव्योड़ो—भू०का०कृ०।

पीवीजणो, पीवीजबो—कर्म० वा०।

पीवर-सं०पु० [सं०] १ बड़ा, स्थूल, मोटा।

उ०—१ उनमत पीवर अतिघन, स्तन मध्य मुकलित माल। सखी मास काती दहत छाती, माळ सो भई झाल।—वि.कु.

उ०—२ लाडो लाखीणीं, हारा घूंघाती। पीवर ऊधांरी पारां पय पाती। माखा खीणां भड़ एवड़ ले आता। धाया धीणा रा गोधन रा धाता।—ऊ.का.

२ देखो 'पी'र' (रू.भे.)

उ०—घण मुढलै पीव पिलंगा, दोय जणां वात करै मते ए उपावै, आवो प्यारी घण मते ए वैठां, करां ए नचींतड़ी वात । हम न करस्यां सायव थे ही करस्यो, म्हारो पीवर दूर ।—लो.गी.

पीवरियो—देखो 'पी'र' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—भंवरजी पीवरिये रै मांय, थरपूं देवळो, हूं आवती नै जावती थानै धोक सूं । भंवरजी एक अरज म्हारी हेलो साभळो ।—लो.गी.

२ देखो 'पी'रियो' (रू.भे.)

उ०—आयो आयो ए मां पीवरिया रो ए काग, वो भपकै लेग्यो मां माड़ियो जे । भागी-दोड़ी मा कागलिये री ए लार, कांटो लाग्यो मा केर को जे ।—लो.गी.

पीवल—१ देखो 'पीयल' (रू.भे.)

उ०—वरसाळा कंवळा खेत, वाजरो घणो हुवै, ऊनाळी पीवल सेवज घणो ।—नैणसी

२ देखो 'प्रिय' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—कै है रे थारै सासू सावकी, ए पणिहारी ए लो । कै है थारो पीवरियो परदेस वाला जी हे लो ।—लो.गी.

पीसण, पीसणू, पीसणो-सं०पु० [सं० पेषणं] १ पीसने की क्रिया या भाव. २ पीसा जाने वाला पदार्थ. ३ पीसाई करने का उद्योग, धंधा ।

पीसणो, पीसबो-क्रि०स० [सं० पेषण] १ सूखे या ठोस पदार्थ को दवाव या रगड़ के द्वारा महीनतम चूर्ण के रूप में करना, किसी वस्तु को आटे के रूप में करना ।

उ०—१ गुण-पाखर पूरब गयो, नभ श्रो घसतं सीस । आटो करे उडाविया, जेण पठाणां पीस—वां.दा.

उ०—२ पीस-पीस पीसणो हाथ घस गया हाथा सूं ।—ऊ का.

२ शिला पर रख कर किसी पदार्थ को पत्थर से महीनतम बांटना, चटनी रूप करना ।

३ बहुत अधिक परिश्रम करना, कठोर परिश्रम करना ।

किसी को बुरी तरह से कुचलना, किसी से कठोरतापूर्वक कार्य कराना ।

५ शोषण करना ।

पीसणहार, हारो (हारी), पीसणियो—वि० ।

पीसाड़णो, पीसाड़बो, पीसाणो, पीसाबो, पीसावणो, पीसावबो —प्रे०रू० ।

पीसिग्रोड़ो, पीसियोड़ो, पीस्योड़ो—भू०का०कृ० ।

पीसीजणो, पीसीजबो —कर्म वा० ।

पिसणो, पिसबो—अक०रू० ।

पीसाई—देखो 'पिसाई' (रू.भे.)

पीसाड़णो, पीसाड़बो—देखो 'पीसाणो, पीसाबो' (रू.भे.)

पीसाड़णहार, हारो (हारी), पीसाड़णियो—वि० ।

पीसाड़िग्रोड़ो, पीसाड़ियोड़ो, पीसाड़्योड़ो—भू०का०कृ० ।

पीसाड़ीजणो, पीसाड़ीजबो—कर्म वा० ।

पीसाड़ियोड़ो—देखो 'पीसायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० पीसाड़ियोड़ी)

पीसाणो, पीसाबो-क्रि०स० ('पीसणो' क्रिया का प्रे रू.) १ सूखे या ठोस पदार्थ को दवाव या रगड़ के द्वारा महीनतम चूर्ण के रूप मे कराना, आटे के रूप में कराना ।

२ शिला पर किसी पदार्थ को महीनतम बंटवाना, चटनी रूप कराना ।

३ बहुत अधिक परिश्रम कराना, कठोर परिश्रम कराना ।

४ बुरी तरह से कुचलाना, कठोरतापूर्वक कार्य करवाना ।

५ शोषण कराना ।

पीसाणहार, हारो (हारी), पीसाणियो—वि० ।

पीसायोड़ो—भू०का०कृ० ।

पीसाईजणो, पीसाईजबो—कर्म वा० ।

पिसणो, पिसबो—अक० रू० ।

पीसाड़णो, पीसाड़बो, पीसावणो, पीसावबो—रू०भे० ।

पीसायोड़ो-भू०का०कृ०—१ दवाव या रगड़ के द्वारा महीनतम चूर्ण रूप में कराया हुआ, आटे के रूप कराया हुआ ।

२ महीनतम बंटवाया हुआ, चटनी रूप कराया हुआ ।

३ अत्यधिक परिश्रम करवाया हुआ, कठोर परिश्रम करवाया हुआ ।

४ कुचलाया हुआ, कठोरतापूर्वक कार्य करवाया हुआ ।

५ शोषण करवाया हुआ ।

(स्त्री० पीसायोड़ी)

पीसावणो, पीसावबो—देखो 'पीसाणो, पीसाबो' (रू.भे.)

पीसावणहार, हारो (हारी), पीसावणियो—वि० ।

पीसाविग्रोड़ो, पीसावियोड़ो, पीसाव्योड़ो—भू०का०कृ० ।

पीसावीजणो, पीसावीजबो—कर्म वा० ।

पीसावियोड़ो—देखो 'पीसायोड़ो (रू.भे.)

(स्त्री० पीसावियोड़ी)

पीसू—देखो 'पिसू' (रू.भे.)

पीसो—देखो 'पईसो' (रू.भे.)

पीसोड़ो—देखो 'पीसियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० पीसोड़ी)

पीसोधरी-सं०पु० [स० पिश=पापयुक्त+धारिन्] राक्षस, असुर ।

उ०—आगम संपेखे अंगद, माया विसतारे । पीसोधर अरि फेरि पूठि, सिल सभा सभारे ।—सू.प्र.

पीसोर-सं०पु०—पेशावर ।

उ०—तानासाह मास ६ दिन १२ गढ़ में लड़ियो । पण गढ़ छूटो नहीं । तद दीवांण हस्त खां रो वेटो जिलफिकार खां पीसोर फौज लाख दोय सूं लड़तो हो सू इण नू बादसाहजी........जल्दी आमो ।
—द.दा.

पीह, पीहर—देखो 'पो'र' (रू.भे.)

उ०—१ ताहरां आ, चांनण सांगमरावजी नूं कहियौ—'जु राज। चढ़ीजै नहीं। घोड़ीरौ वेम हूं ले आईस। ताहरां आ, चांनण पीहर गई। जाय नै भाई विसनदास पासा बछेरौ मांगियौ।—नैणसी

उ०—२ पीहर पतळारा, सैणां रा प्यारा, तारक तूटां रा नैणां रा तारा। सीरी सिटियां रा सूल्हांरा सारा, भीड़ी भूखां रा फूलां रा भारा।—ऊ.का.

उ०—३ पित-मात बांधव गोत्र पीहर, पांण मांण पराक्रमं।
—पी.ग्रं.

उ०—४ जाया माजी रात जिस, पीहर हुओ प्रवीत। आयां सुसरा आंगणं, निरमळ फैगी नीत।—वां.दा.

पीहरड़ो—देखो 'पी'र (अल्पा०, रू.भे.)

पीहरियो—१ देखो 'पीं'रियौ' (रू.भे.)
२ देखो 'पी'र' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—चालो-चालो नगीने रे देस म्हारी सुंदर गोरी रे। थांरो पीहरियो म्हांरो सासरो हो राज।—लो.गी.

पीहरो—देखो 'पी'र' (अल्पा०, रू.भे.)

पीहाई—देखो 'पिसाई' (रू.भे.)

पीहू-सं०स्त्री०—पपीहे के बोलने की आवाज।

पुंख, पुंखौ-सं०पु० [सं० पुङ्ख] तीर का वह भाग जहां उसमें पर लगे रहते हैं।
उ०—जितरै दूसरौ तीर फेर मारियौ सो सर पुंखा समेत गरक हुवौ।
—ठाकुर जैतसी री वारता
२ देखो 'पूंख' (रू.भे.)

पुंग—देखो 'पूग' (रू.भे) (अ.मा.)

पुंगरण—देखो 'पंगरण' (रू.भे.)
उ०—पुंगरण जान सेन है साखति, अणवर 'गोयंद' किसन अगाह। रवद्द तणी घड़ सांम्हौ 'रतनो', मिळियौ मोड़ बंधं रिण मांह।—दूदो

पुंगळ—देखो 'पूंगळ' (रू.भे.)

पुंगव-वि० [सं०] कुशल, श्रेष्ठ।
उ०—धर्क परसधर चक्रधर, पाळी जिण निज पैज। सो सूरां सिर सेहरो, नर-पुंगव सुरनैज।—वां.दा.

पुंगी—देखो 'पूंगी' (रू.भे.)
उ०—विरदां पुंगी रागवस, मांनै मंत्र स-मोद। अथी सिर धाका पड़ै, जटपख ताखा जोध।—कविराजा करणीदांन

पुंगीफळ—देखो 'पूंगीफळ' (रू.भे)

पुंचाळो—देखो 'पूंचाळो' (रू.भे.)
उ०—काका खेमकरण, 'सहस' 'अजवेस' संघाळा। भड़े पांच भात्रीज, पड़े बेटा पुंचाळा।
—कल्यांणसिंह नगराजोत वाढेल री वात

पुंचिका—देखो 'पुणची' (रू.भे.)
उ०—जुहारं मिणो पुंचिका हाथ जोपै, अघ पंकजं मंडळं भ्रंग वोपै, कळी चंप की आंगळी सोभ कीनैं, नसं उज्जळं चंद्र सोभा नवीनैं।
—बगसीरांम प्रोहित री वात

पुंची—देखो 'पुणची' (रू.भे.)

पुंचीयो—१ देखो 'पुणची' (अल्पा०, रू.भे.)
उ०—१ गजरा नवग्रही पूंचिया ए पोंचा कै विसै। आपणी-आपणी ठोड़। विधि-विधि सों बणाया छै।—वेलि टी.
२ देखो 'पुणचो' (अल्पा., रू.भे.)

पुंछ—देखो 'पूंछ' (रू.भे.)

पुंछाळ, पुंछाळो-वि० [सं० पुच्छ+आलुच्] १ पूंछ वाला।
२ पीछे लगने वाला, खुशामदी, आश्रित, पिछलग्गु।
सं०पु०—घोड़ा (डि.नां.मा.)

पुंज-सं०पु० [सं० पुपो०] समूह, ढेर, राशि।
उ०—१ ना बूंदी ना दीद, चाव ना चूरमं घेवर। [पीलूड़ा रस पुंज, जाळ रा मीठा जेवर।—दसदेव
उ०—२ स्वकीय सदन आय प्रभात ही सो पुरट पुंज जाचकां नै लुटाय अपूरब जस लीधो।—वं.भा.
रू०भे०—पूंज।

पुंजी—देखो 'पूंजी' (रू.भे.)
उ०—सजि व्यापार तुं पुंजी सारू, अटकलि ठांम देइ उधारू। रखै वधारे रिण नै रोग, लखण लीजै ज्यूं हसै न लोग।
—घ.व.ग्रं.

पुंठ—देखो 'पूठ' (रू.भे.)

पुंड-सं०पु० [सं० पुण्ड्रः] १ केसर, चंदन आदि का मस्तक पर बनाया गया तिलक या चिन्ह।
यौ०—त्रिपुंड, उर्ध्वपुंड।
२ सफेद कमल।

पुंडग-सं०पु० [?] बूंद। उ०—सिर जावौ सहनांक, नाक न जावै चख। पांणी पुंडग न जावज्यो, लोही जावौ लख।
—कूंवरसी सांखला री वारता

पुंडर—१ देखो 'पुंड्र' (रू.भे)
२ देखो 'पांडुर' (रू.भे.) (नां.मा.)

पुंडरिकणी-सं०पु० [ ] १ श्वेत कमलिनी।
२ एक नगर का नाम। उ०—मध्य विदेह विजय पुस्प कलावती, नयरी पुंडरिकणी सार सलूणां। तिहां विचरइ भविजन मन मोहता सत्य की मातु मल्हार सलूणा।—वि.कु.

पुंडरी-वि० [सं० पाण्डरीक] श्वेत, सफेद। उ०—धर नीली धण पुंडरी, धरि गहगहइ गमार। मारू देस सुहामणउ, सांवणि सांझी वार।—ढो.मा.

पुंडरीक-सं०पु० [सं०] १ कमल, श्वेत कमल।
उ०—पांणी सांथि पुंडरीक, केतूं करइ परांण। मित्त पखइ मरवुं तथा, जांणइ जे को जांण।—मा.कां.प्र.

२ रघुवंश का एक राजा (नभ का पुत्र)
उ०—पुंडरीक नभ पादि विरदपति, सुज पुत्र खेम धन्व वायक सति। देवानीक तास पुत्र दीपत, सुर दातार ग्रनीक तास सुत।—सू प्र.
३ यवन, मुसलमान। उ०—१ पुळिया पुंडरीक सुपह संचरिया, बाग़ी हाक न कोय वळै। वालाचंद ऊठ ग्रतुळीवळ, भोजराज गड़ तूक मळै।—भोजराज रूपावत री गीत
४ बादशाह। उ०—मानतो जंत्र न मंत्र नह मानतो, वैण नह मानतो मंडतो वीक। गुरड़ जिम 'ग्रासकरण' तणो गावड़ ग्रहे, पिटारै पालियो पनग पुंडरीक।—दुरगादास राठौड़ री गीत
४ जैनियों के एक गणधर का नाम। उ०—पुंडरीक गणधर तणी, प्रतिमा ग्रति ग्राणंदि मोरा लाल। हां रे मोरा लाल सहसकूट ग्रस्टापदे, प्रमुख बहु जिन वंदि।—वि कु.
५ सिंह (ग्र.मा.)
६ श्वेत वर्ण।
७ सफेद रंग।
८ सफेद रंग का हाथी।
९ सफेद रंग का सांप।
१० एक प्रकार का बाज पक्षी।
११ एक नाग का नाम।
१२ क्रौंच द्वीप का एक पर्वत।
१३ ग्राकाश।
१४ तिलक।
१५ हाथी का ज्वर।
१६ ग्रग्निकोण के दिग्गज का नाम।
१७ श्वेत कुष्ट (ग्रमरत)
पुंडरीकस, पुंडरीकाक्ष, पुंडरीकाख, पुंडरीकास सं०पु० [सं० पुंडरीकाक्ष] कमल-नयन श्रीकृष्ण, विष्णु, ईश्वर।
उ०—जब बलिभद्रजी ग्राई उलाहणो दियो। तब क्रस्णजी लजाय कै नीची द्रस्टि करी। पुंडरीकाख रहतां कंवळ नयण प्रसन्न हुग्रा।
—वेलि टी.
पुंडरीकासन-सं०पु० [सं० पुंडरीकासन] ब्रह्मा (नाममाला)
पुंड्र-वि० [सं०] १ श्वेत, सफेद। उ०—जेहरि घूघर माळ पगां भुगाळ जियां। कुजै वारिज पुंड्र वचा कलहंसियां।—बां.दा
सं०पु०—१ एक देश का नाम।
२ एक वृक्ष का नाम।
३ बलि के पुत्र एक दैत्य का नाम जिसके नाम पर देश का नाम पड़ा।
४ चंदन या केशर से ग्रंकित ललाट पर तिलक।
५ कमल।
६ श्वेत कमल।
रू०भे०—पुंडर।
पुंण—देखो 'पूंण' (रू.भे.)
उ०—पुंण पहुर पडिलेहण करीनइ, मातरा पडिलेह ए। जल घड़ा लोटी वाटका, पडिलेहवा वलि तेह ए।—स.कु.
पुंणच, पुंणछ-सं०स्त्री०—१ हरिसा ग्रौर हल के जोड़ पर मजबूती के लिए तिरछा लगा हुग्रा काष्ठ का छोटा सा डण्डा।
२ देखो 'पंणच' (रू.भे.)
रू०भे०—पुणछ।
पुंतार-सं०पु० [देशज] हाथी का शिक्षक।
उ०— करणीकार, रसकार, क्षीरकार, सस्यकार, वस्त्रकार, विभूसणकार, पुंतार, ग्रस्व-सिक्षाकार, रथकार, साव्यकार।—व.स.
रू०भे०—पउंतर, पोतार।
पुंन्नाग-सं०पु० [सं० पन्नाग] १ सर्प, सांप।
उ०—मणिधर मोटा देखीइ, पंखाला पुंन्नाग। सात फणइ थी सहिस गल, विमणी-विमणी वाग।—मा.कां.प्र.
[सं० पुन्नाग] २ श्वेत हाथी।
३ श्वेत कमल।
४ नागकेशर का वृक्ष या नागकेशर।
पुंन्यु—देखो 'पूरणिमा' (रू.भे.)
उ०—फिरि जिनुका जसका प्रकास, मनुं हंस का सा विलास। किधुं हरजू का हास किधुं, सरद पुंन्युं का सा उजास।—रा.सा.सं.
पुंलिग—देखो 'पुल्लिग' (रू.भे.)
पुंवार—देखो 'परमार' (रू.भे.)
पुंस-सं०पु० [सं० पुंस्] पुरुष, नर। उ०—परम ग्रंस रवि वंस, ग्रवर दुरवंस ग्रभायो। हंस वंस ग्रवतंस, पुंस परताप सवायो।—रा.रू.
पुंसचळी-सं०स्त्री० [सं० पुंश्चली] १ व्यभिचारिणी, कुलटा स्त्री (ग्र.मा.)
२ वेश्या, गनिका (ग्र.मा.)
रू०भे०—पुंसळी।
पुंसत्व-वि० [सं० पुंसत्व] १ पुरुषार्थ, बल।
२ सत्य।
पुंसरस-सं०पु० [सं०] दूध (ग्र मा.)
पुंसळी—देखो 'पुंसचळी' (रू.भे.)
पुंसवन-सं०पु० [सं०] गर्भाधान से तीसरे महीने में किया जाने वाला सोलह सस्कारों में से दूसरा सस्कार।
पुंहुच—देखो 'पहुंच' (रू.भे.)
पुंहचणो, पुंहचवो—देखो 'पहुंचणो, पहुंचवो' (रू.भे.)
उ०—सोहतो मन मोहतो, पुंहचउ सदल सुरंग। ग्रंगुनी मूंगनो फळी, समस्त तीला नख सुरंगा।—रुकमणी मगळ
पुंहचणहार, हारो (हारी), पुंहचणियो—वि०।
पुंहचिग्रोड़ो, पुंहचियोड़ो, पुंहच्योड़ो—भू०का०कृ०।
पुंहचीजणो, पुंहचीजवो—भाव वा०।

पुंहचियोड़ो—देखो 'पहुंचियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० पुंहचियोड़ी)
पुंहचो—देखो 'पुणचो' (रू.भे.)
उ०—इण भांत री तिजारी सू गोरी भूवरिया पुंहचांसू दूजण साह्यां कटोरां में भलो जुवान मचकावै छै।—रा.सा.सं.
पुंहत—देखो 'पहुच' (रू.भे.)
पुंहतणौ, पुंहतबौ—देखो 'पहुंचणौ, पहुंचबौ' (रू.भे.)
उ०—ताहरां वूड़ंजी नूं रीस आई। ताहरां वूड़ंजी चढ़िया सो खीची नूं जाय पुंहता। ताहरां वूड़ंजी कह्यो—'रे खीची! पाबू नै मार कठै हालियौ?—नैणसी
पुंहतणहार, हारौ (हारी), पुंहतणियौ—वि०।
पुंहतिओड़ो, पुंहतियोड़ो, पुंहत्योड़ो—भू०का०कृ०।
पुंहतीजणौ, पुंहतीजबौ—भाव वा०।
पुंहतियोड़ो—देखो 'पहुचियोड़ो' (रू भे.)
(स्त्री० पुंहतियोड़ी')
पुंहरी—देखो 'पाभड़ी, पांभरी' (रू भे)
उ०—पुंहरी रा छेह ढळकतां पासइ, लाज करे अंजळउ लीयउ। कोरज वळ पहरि रायकुंवरी, कुंकम तिलक निलाट कीयउ।
—महादेव पारवती री वेलि
पुआल—देखो 'पूळो' (मह०, रू.भे.)
पुओहर—देखो 'पयोधर' (रू.भे.)
उ०—उन्नत पीन पुओहर नारि, कठि निगोदर उरवरि हार। इसी नारि घरि हुइ दुइ चारि, अउर किसूं छइ सरगह बारि।
—लो.गी.

पुओ-सं०पु० [सं० पूप]
रू०भे०—पूओ।
पुकरमूळ—देखो 'पुस्करमूळ' (रू.भे.)
पुकर—देखो 'पुस्कर' (रू.भे)
पुकार-स०स्त्री० [प्रकुश] १ बचाव या मदद के लिएं की गई आवाज।
उ०—१ अजामेळ जमदळ अगा, विछटचो विखमी बार। कीधी नारायण कहे, पुत्तर हेत पुकार।—ह.र.
उ०—२ समं कुसमं सुर सारत सार, पुकारत आरत वंत पुकार। सुखी करिये अति आप समांन, दुखी सरणागत ऊमरदांन।
—ऊ.का.
२ किसी के द्वारा पहुचे हुए दुख के प्रतिकार में की गई चिल्लाहट, फरियाद। उ०—तिणरे लाख बळद तिणसूं लखी वालदियौ बाजतौ। ते लूंण लेवा मारवाड़ आवतौ। जद जाटां रा खेत भेलै। जद जाटां विजयसिहजी कनै पुकार की।—भि.द्र.
३ आवश्यकीय पदार्थ के लिए की गई मांग, गहरी मांग।
ज्यूं—जठै जाओ उठै सकर सकर री ही पुकार है।
क्रि०प्र०—करणी, होणी।
४ किसी का नाम लेकर ऊंचे स्वर से बुलाने की क्रिया या भाव। अपनी ओर ध्यान आकर्षित करने के लिए किसी के प्रति ऊंचे स्वर से आवाज।
क्रि०प्र०—करणी, देणी, मचणी, मचाणी, होणी।
रू०भे०—पूकार, पोकार, पोकारु, पौकार।
पुकारणौ, पुकारबौ-क्रि०म० [सं० प्रकुश] दुखी होकर छुटकारे के लिए आवाज करना, रक्षा के लिए चिल्लाना।
उ०—१ अदालतां सूं होय आगती, पिरजा रोय पुकारी रे। सूंक दुकांनां मंडो सरासर, धोळै दिवस अंधारी रे।—ऊ.का.
उ०—२ समं कुसमं सुर सारत सार, पुकारत आरत वंत पुकार। सुखी करिये अति आप समांन, दुखी सरणागत ऊमरदांन।
—ऊ.का.
उ०—३ ब्रह्मादिक तणउ हुओ दईतां वर, अति गति मांडी तियां अनंत। इंद्र री सभा ईंद रह आगळ, कितरा देव पुकार करत।
—महादेव पारवती री वेलि
२ घोषणा करना, ध्यानाकर्षण हेतु कोई बात जोर से कहना।
उ०—सुति समाचार को सार पुकार सुणायौ, धरमी सुख धार अधरमी सीस धुणायौ।—ऊ.का.
३ शिकायत करना। उ०—भीखणजी उठै अमकड़ियै गांमें काचो पांणी लीधो, अमकड़िये गांम कंवाड़ जड़ने सूता, अमकड़िये नित्य पिंड लीधो, इत्यादिक अनेक दोस पांनां सूं वांचवा लागौ। जद सेठजी बोल्या—जोधपुर जावौ। राजा कनै पुकारो।—भि.द्र.
४ नाम रटना, धुन लगाना। उ०—बावहिया डूंगर दहण, छोड़ि हमारउ गांम। सारी रात पुकारियउ, लइ-लइ प्रिय कउ नांम।
—ढो.मा.

५ फरियाद करना।
पुकारणहार, हारौ (हारी), पुकारणियौ—वि०।
पुकारिओड़ो, पुकारियोड़ो, पुकारयोड़ो—भू०का०कृ०।
पुकारीजणौ, पुकारीजबौ—कर्म वा०।
पोकारणौ, पोकारबौ—रू०भे०।
पुकारू-वि०—पुकार करने वाला, फरियादी। उ०—खांन आजम मांहे हुतौ सु जाहरां घेरियौ ताहरां पातिसाह कन्हे पुकारू आया खांन आजम रा मेल्हिया हुता।—द वि.
पुक्कर—देखो 'पुस्कर' (रू.भे)
उ०—खीरकंद मिस्रित हित सनी, भोजन अवर दियै वह भंती। जुगत अरध भक्ष त्रिखा जतावै, अघर फेन पुक्कर अंचवावै।—सू.प्र.
पुक्कळ-सं०पु०—एक सूर्यवंशी राजा का नाम (पुराणों में पुष्कल नाम के स्थान पर किन्नर नाम मिलता है)।
उ०—पुत्र सुनिखत्र नृप रै नृप पुक्कळ, सुत जे अतरीख दळ सब्बळ। कहि सुतपा जिण सुत व्रद कोटिक, अमित्रजीत तेण सुत नृप इक।
—सू.प्र.

पुख्खर-वि० [सं० प्रखर] १ तीक्ष्ण, धारदार, पैना।
२ देखो 'पुस्कर' (रू.भे.)
पुख्खरवरत—देखो 'पुस्करवरत' (रू.भे.)
उ०—काळो दधि नैं पैले पार ए, वीरट्यउ जूड़ी जेम विचार ए। सोलै लख जोयण विस्तार ए, दीप पुख्खरवर अति सुखकार ए।
—ध.व.ग्रं.
पुक्ष-सं०पु० [सं०] १ पुस्य नामक राजा जो हिरण्यनाभ का पुत्र था।
उ०—पुक्ष संभ्रम ध्रुवसंधि प्रथीपति, सुत सुदरसण उदारह दति सति। अगन वरण जे सुत आचारी, सीघ्र नूपति जिण सुत सति धारी।—सू.प्र.
३ देखो 'पुस्य' (रू.भे.) (अ.मा., नां.मा.)
पुख—देखो 'पुस्य' (रू.भे.)
उ०—१ वज्रनाभ सुत सुगण धरम वप, ते सुत विध्रत नरेस उग्र तप। सुत जय हरिणनाभ सुभियांणै, पुख नृप जे सुत इंद्र प्रमांणै।
—सू.प्र.
उ०—२ करि चक्र पूज हेत अधिकारै, धरपति कनकथाळ मभि धारै। उर नंदनंद प्रदुमन आराधै, साधन एह नखित्र पुख साधै।
—सू.प्र.
पुखणौ, पुखबौ-क्रि०स० [सं० पुष्प] १ पुष्पों की माला बनाना।
२ देखो 'पोखणौ, पोखबौ' (रू.भे.)
पुखणहार, हारौ (हारी), पुखणियौ—वि०।
पुखिग्रोड़ौ, पुखियोड़ौ, पुख्योड़ौ—भू०का०कृ०।
पुखीजणौ, पुखीजबौ—कर्म वा०।
पुखत—देखो 'पुख्त' (रू.भे.)
उ०—१ प्रांणी तूं डूबौ पुखत, मोह नदी रे मांहि। देव नदी में डूबियौ, नख पग हुंदौ नांहि।—बां दा.
उ०—२ प्रांण गांठ जेते पुखत, इण तन मांभल एह। यथावर तेते नाम कर, दांम गांठ मत देह।—बां.दा.
उ०—३ मेर मरजाद रणजीत आखाड़मल, खेर दीधा डसण जबर खेटै। पुखत गुरगम मिळी सेन पण पांकियो, भरतपुर फेर नह उसर भेटै।—कविराजा बांकीदास
पुखताई-सं०स्त्री० [फा० पुख+रा. प्र. आई] १ गम्भीरता, गांभीर्य।
२ वृद्धावस्था।
रू०भे०—पुगताई।
पुखतापण, पुखतापणौ, पुखतापो-सं०पु० [फा० पुख्त:+रा. प्र. ण, णौ, पौ] १ वृद्धा अवस्था, बुढापा। उ०—भार्या सूं खेटा किया, बाळां खाधो धन्न। पुखतापै पछितावियौ, हुई सो जांणै मन्न।
—अज्ञात
२ दृढ़ता, मजबूती।
३ पक्कापन, स्थिरता।
रू०भे०—पुगतापणौ।

पुखतौ—देखो 'पुख्तौ' (रू.भे.)
उ०—तरै मोकलजी कह्यौ—राजि हकीकत सुणी होज हुसी। पातसाह रौ कागद नै लकड़ी एक मेली छै नै गोढ दिसा पुछायौ छै, सौ राजि वडेरा पुखता छौ, घणी दीठी छै, तिणसूं म्हांनै.तो गोढ़ री खबर नही।—राव रिणमल री वात
पुखमास—देखो 'पुस्यमास' (रू.भे.)
पुखर—देखो 'पुस्कर' (रू.भे.)
पुखरांण-सं०पु० [सं० पक्षिराट] पक्षिराज। उ०—गुटकांण सिहांण विमांण तणी गत। नाव तिरांण देयांण नृणै। पुखरांण वेगांण प्रमांण पराचक। वात वसै विडगांण भणै।—किसनौ दधवाड़ियौ
पुखराज-सं०पु० [सं० पुष्पराग] एक प्रकार का बहुमूल्य पीले रंग का रत्न या पत्थर। उ०—कलरंग धाट कुमाच, पन्नास नोलम पाच। संग रंग ठंग सुढाल, पुखराज अन्य प्रवाळ।—सू.प्र.
पुखराजी-वि० [सं० पुष्पराट+रा.प्र. ई] पुखराज का बना, पुखराज का। उ०—मोतियां री लड़ां रा पेच उघटि रह्या छै। पुखराजी प्याला सूं अैराक चाक पीवै छै।—पनां वीरम दे री वात
पुखलावती-सं०स्त्री० [सं० पुष्कलावती] पुष्कलावती नामक नगरी।
उ०—पुरी 'पुखलावती' विजय कही, पुंडरिकणी नांमे नगरी लही। तिहां जिनजी उतपति पांमी, सुमरी स्त्रीसीमंधर स्वांमी।
—जयवांणी
पुखसनांन—देखो 'पुस्यस्नांन' (रू.भे.)
पुखा-सं०पु० [सं० पूषन] सूर्य (अ.मा., नां.मा.)
पुखि—देखो 'पुस्पनक्षत्र' (रू.भे.)
पुखीख, पुखेक-सं०पु० [सं० पुष्प+इषु+स्वार्थिक] कामदेव (अ.मा.)
पुख्त, पुख्ता, पुख्तौ-वि० [फा० पुख्त:] १ वृद्ध, बुजुर्ग, बूढा।
२ पक्का, दृढ, मजबूत। उ०—१ बाप रा हिवड़ा सूं बेटा रै वास्तै वा प्रेम री आह ही के तावतप री कराह-पुख्ता तौर माथै सुभट कीं कह्यो नी जा सकै।—फुलवाड़ी
उ०—२ छिण पैला ई आपरै इण मरण री पुख्तौ सनेसौ नी मिळै। मौत री औ अंधारखातो अबै घणा दिन नीं चालैला, आ वात आपनै साफ कैदूं।—फुलवाड़ी
३ पूर्ण, पूरा।
रू०भे०—पुखता, पुखतौ, पुगता, पुगतौ।
पुख्यारक—देखो 'पुस्यारक' (रू.भे)
उ०—कांतिधर सेठ एक नवौ मिंदर बरणोवै सौ पुस्य नक्षत्र रविवार नूं वैंरी नींव लगाई। पुस्य नक्षत्र नूं ही वैंरौ कारज होवै। वीं मिंदर मांही सुंदर भींत सुवरण मई, अर खंभा रतनजटित, तोरण दरीखांना, दरवाजा, महराबदार महल, कोटड़ी, जाळी बारी, सिखर-कळस, ध्वजा-पताका, वंदरवार, चंदवा, पड़दा, रथमाळा, गजमाळा, अस्वमाळा सै परम सुंदर निरमांण कराया। फेर पुख्यारक मांही नीं

मांही प्रवेस कियौ।—सिंघासण बत्तीसी

पुगड़ौ—देखो 'पगड़ौ' (रू.भे.)

उ०—पाट-हसत पुगड़ै पटहोड़ा, पेस करे आय कियौ परणांम। साझै गढ गिरनार 'कला' सुत, जेर किया वे मारू जांम।—द.दा.

पुगताई—देखो 'पुखताई' (रू.भे.)

पुगतापण-सं०पु० [फा० पुख्तः+रा. प्र. पण] वृद्धावस्था।

उ०—कर कंपै लोयण झरै, मुख ललरावे जीह। मावड़िया जुध में मिळै, पुगतापण रा दीह।—वां.दा.

पुगतौ—देखो 'पुख्तौ' (रू.भे.)

उ०—कहै दास सगरांम, हमैं तूं हुश्रो पुगतौ। किया मोकळा कांम, राख खाविंद सूं नुकतौ।—सगरांमदास

पुगाड़णौ, पुगाड़बौ—देखो 'पहुचाणौ, पहुंचावौ'।

पुगाड़णहार, हारौ (हारी), पुगाड़णियौ—वि०।

पुगाड़िश्रोड़ौ, पुगाड़ियोड़ौ, पुगाड़घोड़ौ—भू०का०कृ०।

पुगाड़ीजणौ, पुगाड़ीजबौ—कर्म वा०।

पुगाड़ियोड़ौ—देखो 'पहुंचायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० पुगाड़ियोड़ी)

पुगाणौ, पुगावौ—देखो 'पहुंचाणौ, पहुंचावौ'।

पुगाणहार, हारौ (हारी), पुगाणियौ—वि०।

पुगायोड़ौ—भू०का०कृ०।

पुगाईजणौ, पुगाईजबौ—कर्म वा०।

पूगणौ, पूगबौ—अक० रू०।

पुगाड़णौ, पुगाड़बौ, पुगावणौ, पुगावबौ—रू०भे०।

पुगायोड़ौ—देखो 'पहुंचायोड़ौ'।

(स्त्री० पुगायोड़ी' (रू.भे.)

पुगावण-वि० [?] पहुंचाने वाला। उ०—आगे कनखळ सैल हिमाळै उतरी धरणी। सागर-पूतां सरग पुगावण गंगा सरणी। भौंह चढंतां अंव हंसण मिस झाग उडाती। करां तरंगां चद जटाहर हाथ जुळाती।—मेघ.

पुगावणौ, पुगावबौ—देखो 'पहुचाणौ, पहुंचावौ'।

उ०—१ म्हारै थकां आपरी वारी नीं आवै। श्रो मारै ऊंचायनै म्हैं आपनैं ठेट आपरै घरै पुगावूंला।—फुलवाड़ी

उ०—१ कवूड़ो अर हिरण दोनुं राजकंवर नै मारग तांई पुगावण नै आया—फुलवाड़ी

पुगावणहार, हारौ (हारी), पुगावणियौ—वि०।

पुगाविश्रोड़ौ, पुगावियोड़ौ, पुगाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

पुगावीजणौ, पुगावीजबौ—कर्म वा०।

पुगावियोड़ौ—देखो 'पहुंचायोड़ौ'।

(स्त्री० पुगावियोड़ी)

पुग्गळ, पुग्गल—१ देखो 'पुदगळ' (रू.भे.)

उ०—अरगाहैं पूरण गलणें नभ पुग्गल धम्म। समय वलिय महुत्त दीह पख मासनें साल।—स.कु.

२ देखो 'पूंगळ' (रू.भे.)

पुड़-सं०पु० [?] १ तह, परत। उ०—वमि पावक लोह झड़ी बरसै, दगियां कळ पांत घड़ी दरसै। करणी गढ ग्रास घणी कड़कै, धरणी गढ़ धूजि फणी धड़कै।—मे.म.

२ नगारे या ढोल पर मंढा जाने वाला चमड़ा।

उ०—फुटै पुड़ नौबत पड़ी, टूटै डंड निसांण। पेख सहेली पीव रै, पूंचै बधियौ पांण।—वी.स.

रू०भे०—पुड़ि, पुड़िवाल।

पुड़ऊंध-सं०पु० [सं०पुट+अवमूर्द्ध] १ उथल-पुथल। उ०—लाख नेस लूटिजै, देस कीजै पुडऊंधै। जितौ भूक हुय जाय, सूक साहे पध रूंधै।—रा.रू.

पुड़च्छी, पुड़छी-सं०स्त्री० [देशज] १ घोड़े की पीठ में 'मुट्ठा' और 'पुट्ठे' के मध्य का भाग। उ०—उर ढाल सारीख चौड़ा अलल्ला, भिड़ज्जां वाहु जंघ वे पक्ख भल्ला। पुड़च्छी जिश्रां तोछ पै बंध पूरा, संग्राम विखै हांम पूरंत सूरा।—वचनिका

२ 'पड़छी' (रू.भे.)

रू०भे०—पड़च्छ, पड़च्छी, पड़छ, पड़छी।

पुड़तकाळ—देखो 'पुरतगाळ' (रू.भे.)

उ०—सीरोही री नीपनी, वे आंगळ बाढ झेरियां थका जनैब मगरेब पुड़तकाळ सेफ विलायती भुजरी विरांणपुरी हवसांनी फिरंगी।

—रा.सा.सं.

पुड़दड़ी-सं०स्त्री० [सं० पुट+दृढी] कटारी रखने का बना चमड़े का उपकरण। उ०—मीर म्हे जकां मीरी विसंभर, गांज कुंण सकै 'जसराज' रा गांव। राव एक थाप ऊथापिया रिडमलां, रिडमलां पुड़दड़ी राखिया राव।—वां.दा.

पुड़पुड़ी-सं०स्त्री [सं० पुट् ?] गुदगुदी। उ०—चौरासी आसण रा भेद कीजै छै। अस्टांग मिळण चुंबण, अधरपांन, नखदांन, कुचमरदन, पुड़पुड़ी, चूंहटी, चसका, मसका, हांजी, ना जी इण भांति काम री कुहक पड़िनैं रही छै।—रा.सा.सं.

पुड़ि—देखो 'पुड़' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—१ भगवाट दुहेली कुळवट भारी, वैरी ऊकं घनौख व्रत। जैचंद कहे जीवि चा जग पुड़ि, पनरह ऊपहरां परत।

—जैचंद सोलंकी री गीत

२ देखो 'पुड़ौ' (रू.भे.)

पुड़िकौ—देखो 'पुड़ौ' (अल्पा०, रू.भे.)

पुड़ियाल—देखो 'पुड़' (मह., रू.भे.)

उ०—पड़ै ढोल पुड़ियाल वरंग गुड़ियाल चहुं बळ।

—पनां वीरमदे री वात

पुड़ियौ-सं०पु० [देशज] १ चक्की का पाट।

२ देखो 'पुड़ौ' (अल्पा०, रू.भे.)

३ देखो 'पुड़ी' (अल्पा., रू.भे.)

पुड़ी-सं०स्त्री० [सं० पुटिका, प्रा० पुडिया] १ हाथ चक्की का आटा गिरने के लिए चारों ओर बना हुआ लकड़ी, मिट्टी, पत्थर या लोहे का घेरा।

२ आटे की छोटे आकार की बनी हुई रोटी जो घी में तली जाती है।

३ मोड या लपेट कर संपुट के आकार का किया हुआ कागज या पत्ता जिसके भीतर कोई वस्तु रखी जाय।

४ देखो 'पुड़' (रू.भे.)

रू०भे०—पुड़ि, पुड़ियौ, पुड़ी, पूरी।

पुड़ो-सं०पु०—१ बड़ी पुड़िया या बंडल।

२ चूतड़।

अल्पा०—पुडियौ।

पुचकार-सं०स्त्री० [अनु०] प्यार जताने के लिए ओठों से निकला हुआ चूमने का शब्द, चुमकार।

रू०भे०—पुचकारी, पुचकारौ, बुचकार, बुचकारी, बुचकारौ।

अल्पा०—बुचको।

पुचकारणौ, पुचकारबौ-क्रि०स० [अनु०] १ स्नेह प्रदर्शित करते हुए ओष्ठों से विशेष प्रकार की ध्वनि करना।

उ०—पाणां प्रेरणिकां पापल पुचकारै, बापू बापू कर थापल बुचकारै।—ऊ.का.

२ प्यार से शरीर पर हाथ फेरना। उ०—वीर स्त्री पती रै चढण रा मरजीदांन घोड़ा नै हाथ सूं पुचकार नै कह रही छै अर आ भी जांण रही छै कै म्हारा घणी री फतै इण होज घोड़ा रै प्रताप सूं छै।—वी.स.टी.

पुचकारणहार, हारौ (हारी), पुचकारणियौ—वि०।

पुचकारिओड़ौ, पुचकारियोड़ौ, पुचकारयोड़ौ—भू०का०कृ०।

पुचकारीजणौ, पुचकारीजबौ—कर्म वा०।

बुचकारणौ, बुचकारबौ—रू०भे०।

पुचकारियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ ओष्ठों से एक विशेष प्रकार की ध्वनि करते हुए स्नेह प्रदर्शित किया हुआ।

२ प्यार से शरीर पर हाथ फेरा हुआ।

(स्त्री० पुचकारियोड़ी)

पुचकारी—देखो 'पुचकार' (रू.भे.)

पुचकारौ-सं०पु०—देखो 'पुचकार' (रू.भे.)

पुच्छ, पुच्छौ—देखो 'पूंछ' (रू.भे.)

उ०—१ सदा मिळै बिल स्याळ रै, वच्छ पुच्छ खुर चांम। मिळै गया म्रगराज-ग्रह, गजरद मोती ग्रांम।—बां.दा.

उ०—२ जरासिंध लो अंगमें जोर पायो, पनग्गी मनू पांव पुच्छी दबायो।—ला.रा.

पुच्छणौ, पुच्छबौ—देखो 'पूछणौ, पूछबौ' (रू.भे.)

उ०—पंडु पुच्छीउ पंडु पुच्छीउ विदुर घरि कन्हु, रोसारणु चल्लीयउ मग्गि मिलिउ सहूइ नावइ।—पं.पं.च.

पुच्छणहार, हारौ (हारी), पुच्छणियौ—वि०।

पुच्छिओड़ौ, पुच्छियोड़ौ, पुच्छयोड़ौ—भू०का०कृ०।

पुच्छीजणौ, पुच्छीजबौ—कर्म वा०।

पुजनीक—देखो 'पूजनीक' (रू.भे.)

उ०—तरै वीरम जी कयौ आपणै ही फरास रौ ढोल करावौ। तरै जोयां री मसीत ऊपर फरास थौ ऊ फरास जोयां रै पुजनीक छै। सो फरास बढ़ायनै वीरमजी ढोल करायौ।—रा.वं.वि.

पुजा—देखो 'पूजा' (रू.भे.)

पुजाई-सं०स्त्री० [सं० पूज्+रा.प्र.आई] १ पूजने की क्रिया या भाव।

२ पूजा कराने का पारिश्रमिक।

पुजाड़णौ, पुजाड़बौ—देखो 'पूजाणौ, पूजाबौ' (रू.भे.)

पुजाड़णहार, हारौ (हारी), पुजाड़णियौ—वि०।

पुजाड़िओड़ौ, पुजाड़ियोड़ौ, पुजाड़योड़ौ—भू०का०कृ०।

पुजाड़ीजणौ, पुजाड़ीजबौ—कर्म वा०।

पुजाड़ियोड़ौ—देखो 'पूजायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० पुजाड़ियोड़ी)

पुजाणौ, पुजाबौ-क्रि०स० ('पूजणौ' क्रि० का प्रे०रू०) १ किसी को देवपूजा में प्रवृत्त कराना, दूसरे से पूजा कराना। उ०—पाखंड खंड दब दंड अखंड पुजायौ। धरणी तळ को बल-बंड प्रचंड धुजायौ।—ऊ.का.

२ अपनी पूजा या प्रतिष्ठा कराना।

पुजाणहार, हारौ (हारी), पुजाणियौ—वि०।

पुजायोड़ौ—भू०का०कृ०।

पुजाईजणौ, पुजाईजबौ—कर्म वा०।

पूजणौ, पूजबौ—सक०रू०।

पुजाड़णौ, पुजाड़बौ, पुजावणौ, पुजावबौ, पूजाणौ, पूजाबौ—रू०भे०

पुजापौ-सं०पु० [सं० पूज+रा० प्र० पौ] देवपूजन की सामग्री।

मुहा०—पुजापौ बिखेरणौ—पदार्थों को अस्त-व्यस्त करना।

रू०भे०—पूजापौ।

पुजायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ देवपूजा में प्रवृत्त कराया हुआ। दूसरे से पूजा कराया हुआ।

२ अपनी पूजा-प्रतिष्ठा कराया हुआ।

(स्त्री० पुजायोड़ी)

पुजारी, पुजारौ-सं०पु० [सं० पूज] (स्त्री० पुजारण, पुजारिण, पूजरण, पूजारिण) १ किसी देवमंदिर में देवमूर्ति की पूजा करने के लिए नियुक्त व्यक्ति, किसी देवमूर्ति की पूजा करने वाला व्यक्ति।

उ०—१ गाजै ग्रह मांझल बैठौ मुज्झ, पुजारा पंच चढावै पुज्झ। सब्बां थी तुम्ह तुम्हा थी संभ, उपज्जै जेम प्रकासा अंभ।—ह.र.

उ०—२ राजा आपरा हाथ सूं पुजारी नै खावण सारू वौ अमर-फळ दियौ। पुजारण ई पुजारी रै पाखती ऊभी ही। बोली हंसी हंसतां वा राजा नै हाथ जोड़ वीणती करी—पिंडतजी जवांन छिंयां म्हनै घर सूं तगड़ देवैला।—फुलवाड़ी

रू०भे०—पूजारी, पूजारू, पूजारी।

पुजावणो, पुजावबो—देखो 'पुजाणो, पुजाबो' (रू.भे.)

पुजावणहार, हारौ (हारी), पुजावणियौ—वि०।

पुजाविग्रोड़ो, पुजावियोड़ौ, पुजाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

पुजावीजणो, पुजावीजबो—कर्म वा०।

पुजावियोड़ौ—देखो 'पुजायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० पुजावियोडी)

पुज्झ—देखो 'पूज' (रू.भे.)

उ०—गाजे ग्रह मांझल वैठौ मुज्झ, पुजारा पंच चढावै पुज्ज। सब्बा थी तुम्ह तुम्हा थी संभ, उपज्जै जेम अकासां अंभ।—ह.र.

पुट-सं०पु० [सं० पुट] १ तह, परत, पल्ला।

२ गिलाफ, खोल, आच्छादन।

३ दौने के आकार का पदार्थ, कटोरेनुमा पदार्थ।

ज्यूं—अंजळि-पुट, कर-पुट।

४ कोई भी छिछला गोल बर्तन, दौना, कटोरा।

५ औषध पकाने या भस्म तैयार करने का मुहबंद बर्तन।

६ मुहबंद बर्तन मे औषध पकाने की या भस्म बनाने की विधि विशष।

वि०वि०—एक गज चौड़ा और एक गज गहरा (लगभग २७ इंच) खड्डा कर उसमें गोवरी भर बीच में औषध के संपुट को रख कर अग्नि देने को गज-पुट अग्नि कहते हैं। गज-पुट के लिए २॥ हाथ का गोल खड्डा बना कर पक्की ईंटों से बंधवा लेने से २७ इंच का लगभग खड्डा तैयार हो जाता है। खड्डे की गोलाई जितनी नीची हो उससे ऊपर के भाग में ३, ४ इंच कम करना चाहिए। इस रीति से खड्डा तैयार होने पर अग्नि प्रमाण में लगती है। ईंटों के बांधे बिना अग्नि का तेज जमी में बहुत चला जाता है। संपुट के ऊपर एक दो कण्डों की तह रख कर इस तरह संपुट को बीच में रखना चाहिए। संपुट स्वाग शीतल होने पर ही गज-पुट से निकालना चाहिए। इसी प्रकार गड्ढे के विस्तार के हिसाब से महापुट, कुक्कुट-पुट, वराह-पुट आदि बनते हैं।

७ वैद्यक के अनुसार किसी चूर्ण आदि को किसी प्रकार के रस या तरल पदार्थ में बार-बार मिला कर घोटना और सुखाना जिससे उक्त पदार्थ का कुछ गुण आ जाय। भावना।

उ०—विस में मिठास न हुवै, वळी दूधां ही सूं पुट दियां।

—ध.व.ग्रं.

८ रंग या हल्का मेल देने के लिए धुले हुए वस्त्र को रंग या अन्य तरल पदार्थ में डुबाना, बोर।

ज्यूं—इण रे गुलाबी रंग रो पुट दे दो, इण रै लाल रंग रो पुट दे दो।

९ ढकने वाला पदार्थ, आच्छादन।

ज्यूं—करण-पुट, नेत्र-पुट।

उ०—नमो अग्राह्याह स्रवनपुट सारू सत नमो।—ऊ.का.

१० नगर, शहर (ह.नां.)

वि० [अनु०] उलटा, औंधा। उ०—दो तीन जणां उचक'र आया अर जरै जरै दो लाठी लादाळं रै जमाय दी। दो थप्पड़ वापड़ै छोरा रै लागा। लादाळो गुलांच खा'र पुट पड़ियो।

—वरसगांठ

पुटपड़ौ-सं०पु० [देशज] १ गाल। उ०—फेर तरै दीठी जो आंख्यां नीसर आई, पुटपड़ा बैठ गया।—साह रांमदत्त री वारता

२ देखो 'पापड़ौ' (१) (रू.भे.)

पुटपाक-सं०पु०यौ० [सं०] पत्तो के दोने में रख कर औषध बनाने का ढंग या क्रिया।

पुटभेद, पुटभेदण, पुटभेदन-सं०पु० [सं० पुटभेदन] १ नगर, शहर (अ.मा., डिं.को.)

२ वाद्य-यंत्र विशेष।

पुटाळ, पुटळौ-सं०पु० [सं० पुटं+आलुच्] तलवार की मूठ के मध्य भाग में पकड़ने के स्थान पर उभरे भाग में किसी ओर का ढळवां भाग।

पुटियौ-सं०पु० [देशज] चिड़िया से भी छोटा एक प्रकार का पक्षी विशेष जो आकाश की तरफ पैर करके सोता है।

उ०—१ आछो मांन अमाव, मतहीणा केई मिनख। पुटिया की ज्यूं पाव, राखै ऊंचा राजिया।—किरपारांम

पुट्ठळी—देखो 'पोट' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—सूरो हूरां सत्य है, गळ-बत्थ मिळाया। खंडै राय खिल्हार हू, रन फग्ग रचाया। पात गदा के पुट्ठळी, फटकार फमाया। घाय हुब्बकं रंग के जळजंत चलाया।—व.भा.

पुट्ठो-सं०पु० [सं० पृष्ट या पृष्ठ] १ शरीर के पृष्ठ भाग में चूतड़ के ऊपर का भाग, विशेषकर चौपायों के चूतड़ का ऊपरी भाग।

२ किसी पुस्तक का ऊपरी भाग।

पुठाणो, पुठाबो-क्रि०स० [?] गाड़ी के पूठी लगवाना।

पुठाणहार, हारौ (हारी), पुठाणियौ—वि०।

पुठायोड़ौ—भू०का०कृ०।

पुठाईजणो, पुठाईजबो—कर्म वा०।

पुठाड़णो, पुठाड़बो, पुठावणो, पुठावबो—रू०भे०।

पुठायोड़ौ-भू०का०कृ०—पूठी लगाई हुई गाड़ी या शकट।

पुठो—देखो 'पूठो' (रू.भे.)

पुढणो, पुढबो—देखो 'पोढणो, पोढबो' (रू.भे.)

उ०—'कांम कंदला' कही कही, ऊठि आलिंगन देय। सबल भुजा

भीडी करी, पुढइ पच्छर लेय ।—मा.कां.प्र.

पुढगर-सं०पु० [स० पुथकर] विलाप, रुदन । उ०—होय सबद हा हंत पड़ पुढगर भयंकर । कर हूंता घर कांम, नाख थावै नारी नर । है कासू की हुवौ, जिकै जिण जिण नै वतळावै । केवळ हाहाकार, प्रगट कोई जाब न पावै ।—साहिबौ सुरताणियौ

पुढवी—देखो 'प्रथवी' (रू.भे.)

उ०—पुढवी पांणी अगनि, अनै चौथौ वळि वाय । कालीचक्र असंख्याता ताई जीव रहाय ।—ध.व.ग्र.

यौ०—पुदवीकाय, पुदवोखनन ।

पुण—१ देखो 'पुन' (रू.भे.)

उ०—तसु धरि वइसी राउ सा बाली मागइ । वात स वेढ़ीवाहा पुण चीति न लागइ ।—पं.पं.च.

२ देखो 'पुण्य' (रू.भे.)

उ०—इणि भांति सूं च्यारि रांणी त्रिणि खवासि गंगाजळ सिनांन करि, हीर चीर चांमीर परिमळ पहिरि, पांन कपूर खाइ दांन पुण करण लागी ।—वचनिका

३ देखो 'पुरण' (रू.भे.)

उ०—लघू मध्य रगण फळ अतक पत पवन लख, तात अतु जरा तन रगत आतंख । रखेसुर अंगारख भेड पुण रोद्र रस, उजेणी नृपत कुळ सूद्र रिख अंख ।—र.रू.

पुणग-सं०स्त्री० [?] १ बूंद, जळकण । उ०—१ दादू मीठा रांम रस, एक घूंट कर जाउं । पुणग न पीछे को रहै, सब हिरदे मांहि समःउ ।—दादूबाणी

उ०—२ जाया रजपूतांणियां, बीरत दीधी वेह । प्रांण दियै पांणी पुणग, जावा न दियै जेह ।—बां.दा.

२ अणुमात्र, किंचित ।

३ देखो 'पनग' (रू.भे.)

उ०—घर नोगुल दीघउ सजळ, छाजइ पुणग न माइ । मारू·सूती नींद्र भरि, साल्ह जगाई आइ ।—ढो.मा.

पुणच—१ देखो 'पुणचौ' (मह०, रू.भे.)

२ देखो 'पणच' (रू.भे.)

उ०—विळकुळियौ वदन जेम याकारचो, संग्रहि धनुख पुणच सर संधि, क्रिसन रुकम आउध छेदण कजि, वेलखि अणी मूठि द्रिठि बंधि ।—वेलि.

रू०भे०—पिणच ।

पुणचियौ—देखो 'पुणचौ' (अल्पा०, रू.भे.)

पुणची-सं०स्त्री० [प्रकोष्ठ] १ कलाई पर धारण किया जाने वाला सोने का आभूषण विशेष । उ०—पुणचा जडत जड़ाऊ पुणची, फल आजांनभुजा केयूर । वैजंती वळ मुगत विसाळा, प्रगट हियै माळा भरपूर ।—र.रू.

रू०भे०—पुंचिका, पुंची, प्रहुंची, प्रांची, प्रोची ।

अल्पा०—पूंचियौ ।

पुणचौ-सं०पु० [सं० प्रकोष्ठ] १ अग्र बाहू व हथेली के बीच का भाग, कलाई, मणिबंध । उ०—थोडी ताळ पछै उण चौधरण री वेटो आई । हाथा में पुणचा तांई मूठियौ अर खवांखांच चूड़ो देखनै बोल्यौ—हाथां मे धोळा धोळा अै हाडक क्यूं पळटिया है ।

—फुलवाड़ी

२ कलाई पर धारण करने का आभूषण विशेष ।

रू०भे०—पहुंचौ, पहूचौ, पुंचियौ, पुंहचौ, प्रांचौ ।

अल्पा०—पुणचियौ, पूंचियौ ।

मह०—पुणच, प्रोंच ।

पुणछ-सं०पु०[?] १ पशु के पूंछ के पास का भाग, पशु का चूतड़ ।

२ देखो 'पणच' (रू.भे.)

पुणणौ, पुणबौ-क्रि०स० [सं० पणनं] १ बोलना, कहना ।

उ०—१ पहलै तीजै बार पढ, उभयै वेद इग्यार । पंचा दूहा सौ पुणं, सुकव जिकै मतसार ।—र.ज.प्र.

उ०—२ पुणं भांण राघौ रहै केम पेखै । दुवै भाइयां, एक सारीख देखै ।—सू प्र.

२ रचना, बनाना, कथना । उ०—रुकमणि गुण लखण रूप गुण रचवण, वळि तास कुण करै बखाण । पांचमौ वेद भाखियौ पीथल, पुणियौ उगणीसमौ पुराण ।—दुरसौ आढौ

पुणणहार, हारौ (हारी), पुणणियौ—वि० ।

पुणिओड़ौ, पुणियोड़ौ, पुण्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

पुणीजणौ, पुणीजबौ—कर्म वा० ।

पणणौ, पणबौ—रू०भे० ।

पुणवीर-स०पु०—राठौडों की तेरह शाखाओं में से एक शाखा ।

पुणिंद—देखो 'फणींद्र' (रू भे.)

उ०—मारू घूंघटि दिट्ठ मइं, एता सहित पुणिंद । कीर, भमर, कोकिल, कमळ, चंद, मयंद, गयंद ।—ढो.मा.

पुणि—१ देखो 'पुन्य' (रू.भे.)

२ देखो 'पुन' (रू.भे.)

उ०—परमेसर प्रणवि प्रणवि सरसति पुणि, सदगुरु प्रणवि त्रिण्हे ततसार । मगळरूप गाइजै माहव, चार सु ए ही मंगळचार ।

—वेलि.

पुणियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ बोला हुआ, कहा हुआ, रटा हुआ ।

२ रचा हुआ, बनाया हुआ ।

(स्त्री० पुणियोडी)

पुणियौ—१ देखो 'पुरणियौ' (रू.भे.)

उ०—स्वांमी बोल्या—गाडो नही होणे पुणिया ते गधेड़ा भावता ते ऊपर वेसाण नै गाम में आंण्यो तिण नै कांई थयौ ।—भि.द्र.

२ देखो 'पुरण' (अल्पा.,रू.भे.)

पुणु—देखो 'पुण्य (रू.भे.) (जैन)

पुणोवि—
उ०—तरुणी पुणोवि गहियं परीयच्चय भितरेण पिउ दिट्ठ । कारण कवण सयाणे दीपक्को धूण ए सीसं ।—ढो.मा.
पुण्ण—देखो 'पुण्य' (रू.भे.)
पुण्णट्ठा-सं०पु० [सं० पुण्य-नष्ट] मृत मनुष्य के पीछे पुण्यार्थ बनाए गए भोजन को लेने पर लगने वाला दोष (जैन)
पुण्णमासि, पुण्णमासी—देखो 'पूरणमासी' (रू.भे.)
पुण्णिम—देखो 'पूरणिमा' (रू.भे.)
उ०—ध्यान समाधी छोरिकैं मन चित्र वढाया । तदिन धूरि वितान के, घन भाव विधाया । सारद पुण्णिम का ससी जिम बारद छाया । दव्वि धरित्ती पक्ख में, इक ओघ लखाया ।— वं.भा.
पुण्य-वि० [सं०] १ पवित्र, शुद्ध (अ.मा.)
२ मंगलात्मक, शुभ ।
ज्यूं—कागो पुण्यधांम है ।
३ धर्मशास्त्रानुसार उत्तम फल देने वाला ।
ज्यूं—पुण्य कांम ।
४ उत्सव संबंधी, धूमधाम का, धूमधड़ाका ।
ज्यूं—दिवाळी पुण्य दिन है ।
५ नेक, ईमानदार, धार्मिक ।
६ मनोहर, सुंदर ।
७ कोमल* (डि.को.)
८ प्रसन्नताकारक, आल्हादप्रद ।
यौ०—पुण्यलक्ष्मी ।
सं०पु०—१ वह कार्य जिसका फल शुभ हो, शुभादृष्ट, सुकृत । (डि.को., ह.नां.मा.)
२ शुभ कर्मों का संचय, जिसका फल आगे जाकर मिलता हो ।
उ०—१ ठाला भूला ठोठ, कुबुध नहि छोडै काल्हा । पुण्य गया परवार, व्यसन जद लागा वाल्हा ।—ऊ.का.
उ०—२ सचित पूरव करम ना, फळ भोगवीइ पुण्य । जिहां वाविउं तिहां ऊगमइं, अण वाविऊं तिहां सून्य ।—मा.कां प्र.
३ शुभ कर्मों का बंध (जैन)
४ विशुद्धता, पवित्रता (अ.मा.)
५ परोपकार का कार्य । उ०—तद पुरांणीक पंडित राजा नूं कही 'महाराज भूखी आत्मा नूं जो भोजण देवै पुण्य रो कोई पार नहीं पावै ।—साह रांमदत्त री वारता
६ दान ।
रू०भे०—पन, पुण, पुणि, पुणु, पुण्ण, पुन, पुनि, पुनियर, पुनुं, पुनु, पुन्न, पुन्नि, पुन्य, पुन्यु, पून, पून्य, पोन्यु ।
पुण्यक-सं०पु० [सं०] १ व्रत, अनुष्ठान आदि करने से पुन्य होता है ।
२ वह व्रत या उपचार जो पुत्र-कल्याण के लिए पुत्रवती स्त्री करती है ।
३ विष्णु ।
पुण्यकरता-सं०पु०यौ० [सं० पुण्यकर्तृ] पुण्य कर्म करने वाला ।
पुण्यकरम-सं०पु०यौ० [सं० पुण्यकर्मन्] वह कर्म जिसके करने से पुण्य होता हो ।
पुण्यकाळ-सं०पु०यौ० [सं० पुण्यकाल] दान आदि पुण्य कर्म करने का समय ।
पुण्यक्षेत्र, पुण्यखेत-सं०पु०यौ० [सं० पुण्यक्षेत्र] तीर्थ जहां पर जाने से पुण्य होता हो ।
पुण्यजन-सं०पु०यौ० [सं०] १ राक्षस, असुर (डि.को.)
२ यक्ष (डि.को.)
पुण्यजनेस्वर-सं०पु० [सं० पुण्यजनेश्वर] कुबेर (ह.नां.मा.)
रू०भे०—पुनजनेसर, पूनजनेसुर ।
पुण्यजोग—देखो 'पुण्ययोग' (रू.भे.)
पुण्यतिथ, पुण्यतिथि-सं०स्त्री०यौ० [सं० पुण्यतिथि] १ शुभ या मांगलिक कार्य करने का कोई उपयुक्त दिन ।
२ शुभ कर्मों के करने का दिन । दान, पुण्य आदि करने का दिन ।
पुण्यपुरस-सं०पु०यौ० [सं० पुण्यपुरुष] धर्मात्मा और पुण्यात्मा पुरुष ।
पुण्यभूमि-सं०स्त्री०यौ० [सं०] आर्यावर्त्त देश, भारतवर्ष ।
पुण्ययोग-सं०पु० [सं०] अच्छे कर्मों के प्राप्त होने का योग, शुभ योग ।
रू०भे०—पुण्यजोग, पूनजोग, पुनाजोग ।
पुण्यवंत, पुण्यवांन-वि० [सं० पुण्यवान] (स्त्री० पुण्यवती) शुभ कार्य करने वाला, सुकृती । उ०—१ तास तणी माता सी 'जंबूवती' रे, निरमळ गंगा नीर । पुण्यवंत खट दरसण सेव करइ सदा रे, धरम मूरति मति धीर ।—पं.पं च.
उ०—२ गंग प्रवाहिउ रयण माहि घालिउ मंजूसं । कीजइ पातकु पुण्यवंति कइ लाज कि रीसं ।—पं.पं.च.
रू०भे०—पुन्यवंत, पुन्यवान ।
पुण्यस्थान-सं०पु० [सं० पुण्यस्थान] १ पवित्र स्थान, तीर्थ स्थान ।
२ जन्मकुण्डली में लग्न से नवां स्थान (भाग्यस्थान)
पुण्याई-सं०स्त्री० [सं० पुण्य+रा.प्र. आई] पुण्य का प्रभाव, पुण्य का फल । उ०—एकेंद्रिय सूं नीकल्यो जीवा, इंद्रिय पाई दोय । पुण्याई अनंती वधी जीवा, वाल सिखा न्याये जोय ।—जयवांणी
रू०भे०—पुनियाई, पुन्याई ।
पुण्यातमा, पुण्यात्मा-वि० [सं० पुण्यात्मन्] पुण्यशील, धर्मात्मा ।
उ०—१ पारिख साह भला पुण्यातमा, सांमीदास सूरदासो जी । पदठवणो कीधो मन प्रेम सुं, वित खरच्या सुविलासो जी । —ध.व.ग्रं.
उ०—२ पाले हेत पुण्यातमा ।—ध.व.ग्रं.
रू०भे०—पुन्यातमा ।

पुण्यारथ-वि० [सं० पुण्यार्थ] १ वह जो पुण्य-प्राप्ति के विचार से किया गया हो।
२ परोपकार के निमित्त दानादि में दिया गया हो।
सं०पु०—१ परोपकार की भावना से दिया जाने वाला धन।
२ परोपकार की भावना।
अव्य०—१ लोकोपकार या शुभ फल की प्राप्ति के विचार से।
रू०भे०—पुन्यारथ।

पुण्योदय-सं०पु० [सं०] शुभ कर्मों के फलस्वरूप होने वाला भाग्योदय।
रू०भे०—पुन्योदय।

पुत-सं०पु० [सं० पु०+इति, पृषो० साधुः] १ एक नरक का नाम जिससे पुत्र होने पर ही उद्धार मिलता है।
२ नितम्ब, चूतड़ (डि.को.)
३ देखो 'पुत्र' (रू.भे.)

पुतना—देखो 'पूतना' (रू.भे.)

पुतर—देखो 'पुत्र' (रू.भे.)
उ०—१ जे कोई धूजी ने परणी-पाती गावँ। परणी-पाती गावँ गोद पुतर खेलावँ।—लो.गी.
उ०—२ पिव ! रघुवर वर निज भवन बुलावौ, पुतरी परणावौ।
—गी.रां.
(स्त्री० पुतरी)

पुतळी—देखो 'पूतळी' (रू.भे.)
उ०—१ कँ वा देवी देवां घरी, कँ वा चंद्र वदन उणिहार। कइ बा देवळ पूतळी, ईसीय छइ प्रभुजी ! मारड़ी नार।—बी.दे.
उ०—२ पंचरंग दीधां ढोलिया, पुतळी पागे जांण। सेभ सुंहाली अति भली, रेसम वणीयो वांण।—ढो.मा.

पुतळौ—देखो 'पूतळौ' (रू.भे.)

पुताई-सं०स्त्री० [सं० पूतनं] १ पोतने की क्रिया या भाव।
२ इस कार्य की मजदूरी।
रू०भे०—पोताई।

पुतारणौ, पुतारबौ—देखो 'पूंतारणौ, पूंतारबौ' (रू.भे.)
पुतारणहार, हारौ (हारी), पुतारणियौ—वि०।
पुतारिअ'ड़ो, पुतारियोड़ो, पुतारयोड़ो—भू०का०कृ०।
पुतारीजणौ, पुतारीजबौ—कर्म वा०।

पुतारियोड़ौ—देखो 'पूंतारियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० पूतारियोड़ी)

पुती, पुतीय—देखो 'पुत्री' रू.भे.)
यौ०—पुतीयदांन।

पुतीयदांन-सं०पु०यौ० [सं० पुत्रीदान] कन्यादान।

पुतौ, पुत्त, पुत्तर—देखो 'पुत्र' (रू.भे)
उ०—१ आय माता नें इम कहे, मैं सुण्या वीर ना माय। धन कृतारथ तुम पुता ! इम बोली छं माय।—जयवांणी
उ०—२ प्रसिद्ध बुद्धि सिद्धि निद्ध रिद्धि वृद्धि पूरए। कलूरा पुत्त कित्ति वित्त वढ्ढते सनूर ए।—ध.व ग्रं.
उ०—३ धन वाई, तुळछां, धन थारो नांम। धन वाई, तुळछां, धन उत्तम कांम। वनमाळी रै पुत्तर जायो। जिण तुळछां रो बन रोपायो।—लो.गी.

पुतळविधान-सं०पु० [सं० पुत्तल+विधान] अस्थियों के अभाव में पुतला बना कर किया जाने वाला विधान या क्रिया (ब्राह्मण)
रू०भे०—पूतळविधि।

पुत्ति—१ देखो 'पूरति' (रू.भे.)
उ०—सुमील सभ्य सच्छरं स्त्रुति प्रमांण सोहनें। अभंग पुत्ति ओज के मनोज मूरति मोहनें।—ऊ.का.
२ देखो 'पुत्री' (रू.भे.)

पुत्तिका-सं०स्त्री० [सं०] १ तितली (डि.को.)
२ मधुमक्षिका।
३ दीमक।

पुत्तु, पुत्तो, पुत्र—सं०पु० [सं० पुत्र] पुत्र, लड़का, बेटा।
उ०—१ ए पुत्तु तसु कुखि ऊपन्नउ। विद्या लक्षण गुण संपन्नउ।
—पं पं.च.
उ०—२ तुं जग जीवन प्रांण आधारा। तुं मेरा पुत्ता बहुत पियारा।—स.कु.
उ०—३ सूरज पुत्र करन्न, पेट कूंता उतपन्नो। पवन पुत्र हणमंत, उदर अजनी उपन्नो।—गु.रू.बं.
२ बालक (अ.मा.) (ह.नां.मा.)
पर्या०—अगज, अपकंठ, अरभ, अपुत्र, कुमार, कुळधर, कोमळ, खीरकंठ, छावौ, छोकरो, जायो, जोध, डावड़ो, डिमतनु, डीकरो, तनय, तात, धप, घोटो, नंद, पाक, पोत, प्रथुक, बाळ, लघुवेस, ललत, संमोभ्रम, (समोभ्रम), साव, सिवाई, सिसु, सुआव, सुत, सूनु, स्तन-धय।
रू०भे०—पुत, पुतर, पुतो, पुत्त, पुत्तर, पूत, पूत्त, पूत्तु, पूत्रु।
अल्पा०—पूतड़लो, पूतड़ो, पूतरो, पूत्रो।

पुत्रका—देखो 'पुत्रिका' (रू.भे.)

पुत्रदाएकादसी-सं०स्त्री० [सं० पुत्रदाएकादशी] श्रावण के शुक्ल पक्ष की एकादशी।

पुत्रवंती, पुत्रवती-सं०स्त्री० [सं० पुत्रवती] वह स्त्री जिसके पुत्र हो, पुत्रवाली। उ०—१ हमैं दीध असीस आणंद हूतो। अखं भाग सोभाग हो पुत्रवंतो।—सू.प्र.
उ०—२ कांमा वरखंतो कांम दुघा किरि, पुत्रवती थी मन प्रसन। पुहप करणि करि केसू पहिरे, वनसपती पीळा वसन।—वेलि.

पुत्रि, पुत्रिका—देखो 'पुत्री' (रू.भे.)
उ०—'द्रुम' राजा नी पुत्रिका, 'प्रभावती' इण नांम।—जयवांणी

पुत्री-सं०स्त्री० [सं०] कन्या, बेटी। उ०—रयणायर पुत्री रमा,

दाटी कर दुरभाव। रणायर ते डूबवै, सूंमां केरी नाव।
—बां.दा.

पर्या०—आत्मजा, कन्या, कुळजा, तनिया, तनुजा, दुहिता, धी, बेटी, वत्सा, सुता।

रू०भे०—पुतरी, पुती, पुतीय, पुत्ति, पुत्रका, पुत्रि, पुत्रिका, पूती।

पुत्रेस्टि-सं०पु० [सं० पुत्रेष्टि] पुत्र प्राप्ति हेतु किया जाने वाला यज्ञ।

पुत्रोछव, पुत्रोत्सव-सं०पु० [सं० पुत्रोत्सव] पुत्र जन्म पर मनाया जाने वाला उत्सव।

पुत्रौ—देखो 'पुत्र' (अल्पा०, रू.भे.)
उ०—ईस्वर उमया पुत्रौ, तस्मै गुणेसाय नमः।—गु.रू.बं.

पुदगळ, पुदगल—देखो 'पुद्‌गळ, पुद्‌गल' (रू.भे.)
(अ.मा., डिं.को., ह.नां.मा.)
उ०—पुदगल तणीअ संख्या जांणि, फिरतइं जीव न कीधी कांणि।
—चिहुंगति चउपई

पुदीनो—देखो 'पोदीनो' (रू.भे.)

पुद्‌गळ, पुद्‌गल-सं०पु० [सं० पुद्‌गल] १ शरीर।
उ०—दोही वीरां रा तीव्र दोही तरफां कंकटां नूं काटि पुद्‌गळां में पेठि तूटिया।—वं.भा.
२ पूर्ण गलन धर्म वाला द्रव्य (जैन)
रू०भे०—पुग्गळ, पूदगळ, पुदगळ, पूगळ, पोग्गल, फुदगळ।

पुन-अव्य० [सं० पुनः] १ नए सिरे से, फिर। उ०—अन भायन जोयन आड करै। पुन आय न कोय न खाड परै।—ऊ.का.
२ अनन्तर, पीछे से।
रू०भे०—पुणि, पुनि।
३ देखो 'पुण्य' (रू.भे.)
उ०—१ ऊंची जातां रा नीचा पुन आया। खोडां काढण री खोडा खिड़काया।—ऊ.का.
उ०—२ सावध दांन में पुन सरधै तिण सूं समकत चरित्र एक ही नही।—भि.द्र.
मुहा०—१ पुन खूटणा—पूर्व संचित शुभ कर्मों का ह्रास हो जाना।
२ पुन परवारणा—पूर्वोपार्जित शुभ कर्मों का शुभ फल नष्ट होना।
३ पुन पूरा होणा—देखो 'पुन खूटणा'।

पुनजनेसर—देखो 'पुण्यजनेसर' (रू.भे.) (ह.नां.मा.)

पुनजोग—देखो 'पुण्ययोग' (रू.भे.)
उ०—१ विहार करता आविया रे, साधू तिण हिज गांम। भूला चूका पुनजोग सूं रे, जोग मिलियो छै नांमी।—जयवांणी
उ०—२ पुनजोग कठै मिळणी करणी। जगती पर साख भरै जिण···।—पा.प्र.

पुनम, पुनमी, पुनम्म—देखो 'पूरणिमा' (रू.भे.)
उ०—बसंत कोकिला सरीखी मधरी वांणी। आरीसा सरीखा कपोळ। मुख पुनम रै चांद ज्यूं सोळै कळा संपूरण।
—फुलवाड़ी

पुनरजन्म-सं०पु० [सं० पुनर्जन्म] मरने के बाद किसी भी योनि में प्राप्त होने वाला दूसरा जीवन, दुबारा मिलने वाला जन्म।

पुनरजीवण-सं०पु० [सं० पुनर्जीवनम्] १ मरणासन्न को पुनः प्राप्त होने वाला जीवन, पुनर्जीवन। उ०—तीं कर मुवा। पुनरजीवण ऊठिया। राजा नूं देखि आसीस दीन्ही, पुस्पां री वरसा हुई।
—सिंघासण बत्तीसी
२ पुनर्जन्म।

पुनरनवा-सं०स्त्री० [सं० पुनर्नवा] वर्षा ऋतु में होने वाला एक क्षुप विशेष।
वि०वि०—यह तीन चार जाति की होती है, फूल लाल, सफेद जुदे २ रंग के होते हैं। इनमें सफेद रंग के फूल का विषखपरा है और लाल रंग की सांठ अर्थात् गदपुनेरा कहा जाता है। (१) विषखपरे का क्षुप पृथ्वी पर फैला हुआ, गोल पत्तों तथा लाल किनारेदार होता है। एवं फूल सफेद रंग के होते हैं। (२) सांठ का क्षुप कंकरीली भूमि में अधिक होता है। इसके पत्ते चौलाई के समान तथा फूल लाल होते हैं। राजस्थानी में इसे प्रायः साटी कहते हैं।

पुनरपि-अव्य० [सं० पुनर+अपि] फिर भी।
उ०—पवतां चरित तुहारा चेतन। जगत नहीं पुनरपि मांनव जन।
—ह.र.

पुनरवस—देखो 'पुनरवसु' (रू.भे.)

पुनरव्याव—देखो 'पुनरविवाह' (रू.भे.)

पुनरभव-सं०पु० [सं० पुनर्भव] नाखून (अ.मा.) (ह.नां.मा.)
उ०—ऊपरि पदपलव पुनरभव ओपति, निमळ कमळ दळ ऊपरि नीर। तेज कि रतन कि तार कि तारा, हरि हंस सावक ससिहर हीर।—वेलि.

पुनरवसु, पुनरव्वसु-सं०पु० [सं० पुनर्वसु] सत्ताईस नक्षत्रों में से सातवां नक्षत्र (अ.मा.) (नां.मा.)
उ०—१ आदित्यवार, अनइं, वली, मूल मघा रेवत्ति। पोढी पुण्य पुनरवसु, सेजि चढइ नही सत्य।—मा.कां.प्र.
उ०—२ आदरा भरै खादरा, पुनरबसु भरै तळाव।—वर्षा-विज्ञान
रू०भे०—पुनरबस, पुन्नवसु।

पुनरविवाह-सं०पु० [सं० पुनर्विवाह] पति के मरने पर या छोड़ने पर दूसरा विवाह करने की क्रिया।
रू०भे०—पुनरव्याव।

पुनराव्रत-वि० [सं० पुनरावृत्त] दोहराया हुआ, फिर से घूमा हुआ।

पुनरासी-सं०पु० [सं० पुण्यराशि] पुण्य का समूह, पुण्यवान।
उ०—अकबर जासी आप, दिल्ली पासी दूसरा। पुनरासी 'परताप', सुजस न जासी सूरमा।—दूरसौ आढौ

पुनरुक्ति-सं०पु० [सं०] किसी कही हुई बात को फिर कहना, दोहराना।

पुनवंती—देखो 'पुण्यवंती' (रू.भे.)
उ०—सखि हे, राजिंद चालियउ, पल्लाणियां दमाज। किहि -पुनवंती सांमुहउ, म्हा उपराठउ आज।—ढो.मा.

पुनवती-सं०स्त्री० [सं० पूर्णवती] १ ध्वजा (अ.मा.)
२ देखो 'पुन्यवति' (रू.भे.)

पुनाग—देखो 'पुन्नाग' (रू.भे.)

पुनाजोग—देखो 'पुण्ययोग' (रू.भे.)

पुनावत-सं०पु०—१ राठौड़ वंश की एक उपशाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

पुनि-सं०पु० [सं० पुनः दुग्ध=पुंसवन, उधासि] (पुनि)=दूध) १ दूध।'' (ह.नां.मा.)
२ देखो 'पुन' (रू.भे.)
उ०—नमौ पुनि भूपति प्रत्थ प्रवीत। नमौ अवनी अघ मेट-अनीत।
—ह.र.

पुनितोया-सं०स्त्री० [सं० पुण्यतोया] गंगा। उ०—सोम सुर सांमंद्र प्रता सुध, अघट सुभाव दाखवै अंग। रांम कियौ अत सोमि घरम रसि, पुनितोया मिळि पूब प्रसग।
—राठौड़ रांमदास मेड़तिया री गीत

पुनिम—देखो 'पूरणिमा' (रू.भे.)
उ०—मरुदेवी नी प्रतिमा वली। माही पुनिम थापी रली।
—स.कु.

पुनियर—देखो 'पुण्य' (रू.भे.)
उ०—च्यांन न च्यांन पाप नहिं पुनियर। अधर अलेख नहिं चल-चाळा।—ह.पु वा.

पुनियाई—देखो 'पुण्याई' (रू.भे.)

पुनीत-वि० [देशज] (स्त्री० पुनीता) जिसमें पवित्रता हो, पवित्र, शुद्ध। उ०—१ पूरण पुनीत स्रीरांम-पद, विघनहरण त्रैलोक्यवर। परणांम सुकवि 'ईसर' पुणं, तंतनांम भवसिंधु तर।—ह.र.
उ०—२ ससि बदनी सीता, कंत पुनीता, दास अभीता कुळ दीता।
—र.ज.प्र.
सं०पु०—१ सूर्य, भानु (अ.मा.)
२ युधिष्ठिर (अ.मा.)
३ धर्म, पुण्य (अ.मा.)

पुनं, पुनु, पुन्न—१ देखो 'पुण्य' (रू.भे.)
उ०—१ जाचक हिरन तिसाया जावै, पुन्न नीर सपने नहिं पावै।
—ऊ.का.
उ०—२ नहीं तू जोग नहीं तू जाप। नहीं तू पुन्न नहीं तू पाप।
—ह.र.
उ०—३ पुन्न गया परवार, सज्जन साथ छुटथा जदे। दुरजण जण री लार, रोता फिरवै राजिया।—किरपाराम
उ०—४ नाज पुरांणो घी नयो, आग्याकारी नार। पंथ तुरी चढ चालणो, पुन्न तणा फळ च्यार।—अज्ञात
२ देखो 'पूरण' (रू.भे.)
उ०—पुन्न प्रभावि हि पांमियउ पहिलु कुंतादेवि। पुन्न मणोरह पूत्त पुण सुमिरणं पंच लहेवि।—पं.पं.च.

पुन्नवसु—देखो 'पुनरवसु' (रू.भे.)
उ०—मधि त्रेताजुग चैत्रमास, संक्रति-मेखि सरि। करक लगन पंख सुकळ, घरा पुन्नवसु नखित्र धुरि।—सू.प्र.

पुन्नाक-सं०पु० [सं०] १ सुलताना चम्पा नामक लाल रंग के पुष्पों का वृक्ष।
रू०भे०—पुनाग।
२ देखो 'पिनाक' (रू.भे.)
उ०—कुवरांगुरु तरइ पुन्नाग ग्रह्यउ कर, भड हलकारइ महाभड। एकण बांण कबांण आवजइ, ऊपाडं नांखिया उपड।
—महादेव पारवती री वेलि

पुन्नि—१ देखो 'पुण्य' (रू.भे.)
उ०—दोनां ही पोकर में दोनां पुन्नि कीनां।—शि.वं.
२ देखो 'पुन' (रू.भे.)

पुन्य—देखो 'पुण्य' (रू.भे.) (डि.को.)
उ०—१ साध संगत बिन मुकति न सुपनै, सतगुरु बोल सुणावै। पुन्य वडेरां हुं जद पूग, आ मन में जद आवै।—ऊ.का.
उ०—२ की कहणो कौसल्या, मोटी तैं कीध पुन्य ऐ अममं। जं कूखं खल-जंता आसे, जगराम औतारं।—र.ज.प्र.
उ०—३ भाळो-स आज मूझ भाग, आप ग्रेह आविया। दरस तौं रघू दिलीप, पुन्य हूत पाविया।—सू.प्र.

पुन्यवंत—देखो 'पुण्यवंत' (रू.भे.)
उ०—जोध सहरि गढ जतनि, सदृढ जादव पण सच्चै। सूरवण समरत्थ, रीत अनि पथ न रच्चै। सांमिधरम चित सरम, आदि रज करम अरेहण। परम भगत पुन्यवंत, रीत खग सकति नरेहण।
—रा.रू.

पुन्यवांन—देखो 'पुण्यवांन' (रू.भे.)

पुन्याई—देखो 'पुण्याई' (रू.भे.)
उ०—घणी पुन्याई बाई ताहरी जी, इम बोल्या मुनिराय। देवकी मन में जाणियो जी, या नै तो खबर न काय।—जयवाणी

पुन्यात्मा—देखो 'पुण्यात्मा' (रू.भे.)

पुन्यारथ—देखो 'पुण्यारथ' (रू.भे.)

पुन्यु, पुन्यू—१ देखो 'पूरणिमा' (रू.भे.)

उ०—सखियांन के बीचि हीरां को मुखारबिंद छै जांणे तारा मडळ में पुन्यु को चांद छै।—बगसीरांम पुरोहित री वात

२ देखो 'पुण्य' (रू.भे.)

पुन्योदय—देखो 'पुण्योदय' (रू.भे.)

पुप्फ—देखो 'पुस्प' (रू.भे.)

उ०—एक ऊखेवइ अगर नई, पुप्फ पाथरई हेठि। भणि लाई जळ-यंत्र नी, जिम झडि झडखइ जेठि।—मा.कां.प्र.

पुप्फकरंड—देखो 'पुस्पकरंडक' (रू.भे.)

उ०—रिद्धि भवन घने धांने पूर। वैरी परबल भय रहे दूर। ईसांण कोणे पुप्फकरंड उजांण। सट् रितु ना फल फूल बखांण।

—जयवांणी

पुप्फचूलिका, पुप्फचूलिया-सं०पु० [सं० पुष्पचुलिका] प्रश्न व्याकरण सूत्र का एक उपांग (जैन)

उ०—१ सुणउ रे विपाक स्रुत अंग इग्यारमउ, तजउ विकथा तथा जे अनेरी। ललित उवंग जेस प्रवर पुप्फचूलिका, मूलिका पाप आतंक केरी।—वि.कु.

उ०—२ पुप्फचूलिया जांणीये जो।—वृहत्स्तव

रू०भे०—पुफचूळीया, पुफचूलीया।

पुप्फदंत—देखो 'पुस्पदंत' (रू.भे.)

पुप्फमइ—देखो 'पुस्पमई' (रू.भे.)

उ०—भंवर अलसी पुप्फमइ, दिसि दिसि नीर निघोस। विर-हणिआं मनि विस जिसिउ, आसो नु ए दोस।—मा.कां.प्र.

पुप्फि, पुफ—देखो 'पुस्प' (रू.भे.)

उ०—१ पुप्फि परिमळ ईक्षु रस, दूध मांहि घ्रत जेम। सुणि प्रिऊड़ा! तिम माहरइ, पंजरि पसरिउ प्रेम।—मा.कां.प्र.

उ०—२ पति क्रोध विचारं जिनमति नारं, स्रोमति मारवीय धारं। घटयो पुफ भारं आंणि अवारं, तिय किय घट कर संचारं।

—घ.व.ग्रं.

पुफचूलीका, पुफचूलीया—देखो 'पुप्फचूलिया' (रू.भे.)

उ०—पुप्फिया दसम इग्यार पुफचूलीया, एम वन्ही दसा बारम अनु-कूलीया।—घ.व.ग्रं.

पुब्ब—१ देखो 'परवत' (रू.भे.)

उ०—१ सुज चलत पब्ब समाज। भय तेण पातक भाज।—रा.रू.

२ देखो 'पूरब' (रू.भे.)

उ०—कहि कहि हरिगोविंद इम, कूरम वहिकाया। हरिनारायण पुत्र निज पख, पुब्ब सिखाया।—वं.भा.

पुमांन-सं०पु० [सं० पुमान्] मनुष्य, पुरुष (ह.नां.मा.)

पुमाड़ो—देखो 'प्रवाड़ो' (रू.भे.)

उ०—कूरम किता पुमाड़ा कान्हा, उतवंग आगड़िये अनड़। सारे फेर कीधा सत्र पाघर। घड़ा तीन बायीस घड़।

—कांनसिंह बलभद्रोत री गीत

पुमाणो, पुमाबो—देखो 'पोमाणो, पोमाबो' (रू.भे.)

उ०—१ हटी पुमाय हत्य तें, हलें घुमाय हत्थि को। प्रखेल अंत खेल में, खिलाय ते प्रमत्थि को।—ऊ.का.

उ०—२ पढिया बिना मूढ पग फावे, पढ़ियां बिचे पुमाईनै। उण रै ढिग कोई रहै आदमी, (तो) क्यूंहिक कसर कुमाई में।—ऊ.का.

पुमाणहार, हारो (हारी), पुमाणियो—वि०।

पुमायोड़ो—भू०का०कृ०।

पुमाईजणो, पुमाईजबो—भाव वा०।

पुमायोड़ो—देखो 'पोमायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० पुमायोड़ी)

पुमावणो, पुमावबो—देखो 'पोमाणो, पोमाबो' (रू.भे.)

उ०—घट दीन दरिद्र घुमावत क्यूं। पुरुसारथहीण पुमावत क्यूं।

—ऊ.का.

पुमावणहार, हारो (हारी), पुमावणियो—वि०।

पुमाविग्रोड़ो, पुमावियोड़ो, पुमाव्योड़ो—भू०का०कृ०।

पुमावीजणो, पुमावीजबो—भाव वा०।

पुमावियोड़ो—देखो 'पोमायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री०—पुमावियोड़ी)

पुय-सं०पु० [सं०] १ वरुण (डि.को., ह.नां.मा.)

२ जीवात्मा।

पुरंद, पुरंदर-सं०पु० [सं० पुरन्दरः] १ इन्द्र।

(अ.मा., डि.को., ह.नां.मा.)

उ०—१ मनरा महरांण समायण मोजां, कापण दीनां तणा कुरंद। दीजो किसो समोवड दूजो, पेखे चक्रत रहै पुरंद।

—र.रू.

उ०—२ गोप गायां त्रिया सहत वसिया गिरत, चिरत अदभुत तणी करत चरचा। आप जिम करग थपै दर उचत ऐ, ऊथपै पुरंदर तणी अरचा।—वां.दा.

२ शिव, महादेव।

३ विष्णु।

४ जेष्ठा नक्षत्र।

५ नगर (अ.मा.)

रू०भे०—पुरंदरु, पुरिंद, पुरिंदर, पुरिंद्र, पुळंद, पुलंदर, पुलंद्र, पुलिंद, पुलिंदर, पुल्यदर, प्रलंद।

पुरंदरा-सं०स्त्री० [सं० पुरदर+टाप्] गंगा।

पुरदरु—देखो 'पुरंदर' (रू.भे.)

उ०—जिणवर पूजा हेतइ जांणि पुरंदरु रे, कांमदेव अवतार। स्रेणिक राय परि गुरु भगता सही रे, सिंह मुकुट सणगार।

—प.च.चौ.

पुरंध्रि, पुरंध्री-सं०स्त्री० [सं०] १ पति, पुत्र, कन्या आदि से युक्त स्त्री।

२ स्त्री (अ.मा.)

रू०भे०—परंध्री, पुरंद्री।

पुर-सं०पु० [सं०] १ नगर, शहर (ह.नां.मा.)

उ०—कुळ सूरज मो क्रिपा करीजै, दाखूं जिको तिको पुर दीजै।
—सू.प्र.

रू०भे०—पुरु।

अल्पा०—पुरौ।

२ घर (अ.मा.)

यौ०—अंतेपुर।

३ देह, शरीर (ह.नां.मा.)

४ लोक, भुवन।

५ नक्षत्र-पुंज।

पुर'—देखो 'पुरस' (रू.भे.)

रू०भे०—पुरु।

पुरअमर-सं०पु० [सं० अमर+पुर] स्वर्ग (डि.को.)

पुरइंद-सं०पु० [सं० इन्द्रपुर] स्वर्ग। उ०—ऊससां ससत्र भेलां उरडि, सिर वगसां ससिइंद रै। रथ चढां हूसां गळवांह रंभ, एम वसां पुरइंद रै।—सू प्र.

पुरख—देखो 'पुरुस' (रू.भे.)

पुरखपुरांण—देखो 'पुरांणपुरुस' (रू.भे.)

उ०—प्रछन्न प्रगट्ट पुरखपुरांण। अखंडित ग्यांन, प्रम्म प्रमांण।
—ह.र.

पुरख—देखो 'पुरुस' (रू.भे.) (अ.मा., ह.नां.मा.)

उ०—ठाकर अनाड़सिंघ यूं वडा सज्जन पुरख हा पण दो ऐब वांमें वडा मोटा हा।—रातवासौ

पुरखड़ो—देखो 'पुरुष' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—चढिया जे कर चाह, लालच घोड़ै ललकर्‌ण। 'बांका' हूं बदराह, पड़िया दीठा पुरखड़ा।—बां.दा.

पुरखपुरांण—देखो 'पुरांणपुरुस' (रू.भे.)

पुरखातण, पुरखातन—देखो 'पुरुसातन' (रू.भे.)

पुरखाध्रम-सं०पु०यौ० [सं० पुरुष+धर्म] कुबेर (अ.मा.)

पुरखारत, पुरखारथ—देखो 'पुरुसारथ' (रू.भे.)

उ०—किसी एक! वाळी भोळी अवळा प्रउढा सोडस वरस की। रांणी रवतांणी आपणा देवर जेठ भरतार का पुरखारथ देखती फिरइ छइ।—अ. वचनिका

पुरखि—देखो 'पुरुस' (रू.भे.) (ह.नां.मा.)

पुरखेस-सं०पु० [सं० पुरुष+ईश] राजा, नृप।

उ०—मुखि आखै हरि मंत्र, वदन कजि अंत विकस्सै। कियौ ग्रेह परवेस, रंजी पुरखेस दरस्सै। खमा खमा उच्चरै, कर पारस रस कुंडळ। प्रगट जांण परवेस, मेघ आगम रवि मंडळ।—रा.रू.

पुरसोतम—देखो 'पुरुसोत्तम' (रू.भे.) (ह.नां.)

पुरखो-सं०पु० [सं० पुरुष] १ पूर्वज। उ०—पंडित सब पुरखा सोठ न सिरका, ग्यांनी खाय गपीदा है।—ऊ.का.

२ वृद्ध पुरुष, बुजुर्ग।

रू०भे०—पुरिखो, पुरुखो, पूरखो।

पुरग्ख—देखो 'पुरुस' (रू.भे.)

उ०—काजळ वरणी ए सखी, मूवौ एक पुरख्ख। बळण वाळा कोइ नहीं, रोवण वाळा लख्ख।—अज्ञात

पुरज—देखो 'पुरजो' (मह., रू.भे.)

पुरजण-सं०पु० [सं० पुरजन] १ नगर के लोग, नगरनिवासी, पुरवासी। उ०—हा हा! दियै धरोधर हेला, पुरजण हियै प्रळापा। जियै जिकै नह जांणै जग, किए अनेक कळापा।—ऊ.का.

सं०स्त्री०—२ गेहू की फसल के साथ होने वाला पौधा विशेष जिसका शाक भी बनाया जाता है।

रू०भे०—पुरजणी।

पुरजणी—देखो 'पुरजण' (२) (रू.भे.)

पुरजित-सं०पु० [सं० पुरजित्] १ शिव।

२ जाम्बवती के गर्भ से उत्पन्न श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।

पुरजियौ—देखो 'पुरजो' (अल्पा०, रू.भे.)

पुरजो-सं०पु० [फा० पुर्जः] १ टुकड़ा, खण्ड।

उ०—१ वेणी डंड वाळियउ वळाकै सांम्हउ, सांम्हो अणी लियउ दिख साहि। तिल तिल तिल करे पुरजा तन, होमइ चउण होज हुतासण माहि।—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ इसौ समियौ वण रहियौ छै। इणगी ऐ पचास, उणगी पांच सो सो इसा होज वाजिया सो दीठा ही वण आवै। रात घड़ी च्यार गयां दोनूं भाई 'सूरौ' 'खींवौ' कांम आया। आदमी पचास था तिकां मांहि एक ही नहीं नीसरियौ। पुरजो-पुरजो होय गया।
—सूरे खींवै कांधळोत री बात

मुहा०—१ पुरजो-पुरजो करणौ—खण्ड-खण्ड करना।

२ पुरजो-पुरजो करनै उडांणो—कागज आदि को खण्ड-खण्ड करके उड़ा देना।

३ पुरजो-पुरजो होणौ—खण्ड-खण्ड होना।

२ किसी के साथ भेजी जाने वाली चिट्ठी या पत्र।

उ०—१ सब के बीच मसूरखां, पुरजा वंचवाया। फिर कासीद जवांन दा, समचार सुणाया।—ला.रा.

उ०—२ पुरजा कासली नै वादिसाहां का खिनाया। रायांसाल जाया राव अंमल मे बुलाया।—शि.वं.

३ किसी यंत्र का कोई खण्ड या हिस्सा।

ज्यूं—घड़ी रौ पुरजो, मसीन रौ पुरजो।

मुहा०—१ पुरजा खोळा करणा—कमजोर बनाना, अत्यधिक पीटना।

मुहा०—२ पुरजा ढीला होणा—शरीर में शैथिल्य आना, वृद्धावस्था आना।

३ पुरजा विखेरणा—विखण्डित करना, विभक्त करना।
अल्पा०—पुरजियौ।

पुरट-सं०पु० [सं० पुरट] सुवर्ण, सोना। उ०—१ सेलां अणी सिनान, धारा तीरथ में धसे। देण धरम रण दांन, पुरट सरीर 'प्रतापसी'।—दुरसो आढो
उ०—२ सुवर्ण रौ राशि संपादन होण रौ वर मांगि स्वकीय सदन आय प्रभात ही सौ पुरट पुंज जाचकां नूं लूटाय अपूरब जस लीधौ। —वं.भा.

पुरण-सं०पु० [सं० पुरन्ति अग्रे गच्छन्ति अनेन तत् पुरणम्=वाहनम् या प्रवहणम्] १ घोड़ा (ना.डि.को.)
२ वाहन, सवारी। उ०—रासब पुरण पलांण कर, कोई हस्तबंध कहावै।—केसोदास गाडण
रू०भे०—पुण, पुहण, पुहण, पूंण, पूण, पूहण।
अल्पा०—पुणियौ, पुरणियौ, पूंणियौ, पूणियौ।

पुरणवासी—देखो 'पूरणमासी' (रू.भे.)
उ०—मुसालां रौ चांनणौ वण नै रह्यौ छै, जांणै सरद री पुरणवासी खुली छै।—रा.सा.सं.

पुरणाई-स०स्त्री० [सं० पूर्ण ?] मांगलिक अवसरों पर गोबर, गेरु और पीली मिट्टी से आंगन लीपने की क्रिया या प्रथा।

पुरणाहुति, पुरणाहुती—देखो 'पूरणाहुती' (रू.भे.)
उ०—हुई तांम पुरणाहुती जद मंत्र जपालं। गाड द्रवड़ दोनूं गती दुरगा दरसावै।—पा.प्र.

पुरणिम—देखो 'पूरणिमा' (रू.भे.)

पुरणियौ-सं०पु० [राज० पुरण] १ गधा।
रू०भे०—पुंणियौ, पूंणियौ, पूणियौ।
२ देखो 'पुरण' (अल्पा०, रू.भे.)

पुरतकाळ, पुरतगाल-सं०पु० [अं० Portugal] १ योरुप के दक्षिण पश्चिम का एक छोटा देश।
२ उक्त देश की बनी तलवार विशेष।
रू०भे०—पुड़तकाळ।

पुरतगाळी-वि० [अं० पोर्चूगाल+रा प्र.ई] पुरतगाल संबंधी, पुरतगाल का।
सं०पु०—पुरतगाल का निवासी।
सं०स्त्री०—पुरतगाल की भाषा।
रू०भे०—परतकाळी, परतगाळी।

पुरतोरण-सं०पु०यौ० [सं०] नगर का मुख्य द्वार।

पुरतौ-अव्य० [सं० पुरतस्] १ आगे, सामने। उ०—कस्मात् कस्मिन किल मित्र किमरथ केन कास्य परियासि कुत्र। ब्रूहि जनेन येन भो। ब्राह्मण, पुरतौ में प्रेसितम् पत्र।—वेलि.
२ पूर्व, पहिले।
३ पीछे से।

पुरत्रांण-सं०पु०यौ० [सं० पुरत्राण] परकोटा, शहरपनाह।

पुरदड़ी—देखो 'पड़दळी' (अल्पा०, रू.भे.)
उ०—दुजा 'क्रन' नमौ पराक्रम 'दुरगा', रूक वदै थारी दोय राह। राजा बीया पुरदड़ी राखै, पुरदड़ियां थारी पतसाह।
—दुरगादास आसकरणोत रौ गीत

पुरद्वार-सं०पु०यौ० [सं०] नगर का मुख्य द्वार।

पुरधर-सं०पु०यौ० [स० पुर=धर+धर] नगर, शहर।
उ०—दुब्बर वेळा कठण दुहेली, उर घर म्हे अकुळावां। मुरधर धणी मसांण मेल नै, पुरधर जांण न पावां।—ऊ.का.

पुरनबिरभ—देखो 'पूरणब्रह्म' (रू.भे.)
उ०—अलख निरंजन अग्या दीनी, संतां संकट त्यागया। पूरनबिरंभ 'पदमयै' पाया, भीव तणा भव भागया।—रुकमणी मंगळ

पुरनारी-सं०स्त्री० [सं०] वेश्या, रंडी।

पुरपाळ-वि० [सं० पुर+पाल] नगर-रक्षक।
सं०पु०—१ पुर या नगर का प्रधान अधिकारी।
२ कोतवाल।
३ आत्मा, जीव।

पुरब—देखो 'पूरव' (रू.भे.)

पुरबलौ—देखो 'पूरवलौ' (रू.भे.)
(स्त्री० पुरबळी)
उ०—रांणाजी म्हारी प्रीत पुरबली मैं क्या करूं ? रांम नांम विण घड़ी न सुहावै रांम मिळै म्हारौ हियड़ौ डर जाय।—मीरां

पुरबिया—देखो 'पूरबिया' (रू.भे.)

पुरबियौ—देखो 'पूरबियौ' (रू.भे.)

पुरबी—देखो 'पूरबी' (रू.भे.)

पुरबीकम-सं०पु० [विक्रमपुर] बीकानेर नगर।

पुरराउ-स०पु० [सं० पुरराज] नगरस्वामी, नगरपति।
उ०—इंद अछइ रहत पुरराउ, विज्जमालि ते लहुडउ भाउ।
—पं पं.च.

पुरलिंग—देखो 'पुल्लिग' (रू.भे.)

पुरवणौ, पुरवबौ—देखो 'पूरणौ, पूरबौ' (रू.भे.)
उ०—ओर अमल किस कांम का चढि उतर जावै। अमल करौ इक नांम का अमरापुर जावै। अमल किया मावा भया सुख रैन विहावै। अमल नु कल हरि पूरवै जस मीरां गावै।—मीरां

पुरवाई—देखो 'परवाई' (रू.भे.)
उ०—कदेयक झोला चलै सूरियौ धीमो धीमो पुरवाई। रुत आयी रे पपइया तेरे बोलण की रुत आई।—लो.गी.

पुरवासी-सं०पु० [सं०] पुर या नगर का रहने वाला, नगरनिवासी, नागरिक।

पुरविसन, पुरविस्न-सं०पु० [सं० विष्णु+पुर] वैकुंठ।
उ०—समर 'किरतेस' तजियौ सरीर। विध इण गयौ पुरविसन वीर।—वि.सु.रू.

पुरस-सं०स्त्री० [सं० पुरुष] १ एडी से चोटी तक की ऊंचाई। २ धरातल के समान्तर फैले हाथों की दोनों मध्यमाओं के बीच का फैलाव या दूरी का नाप विशेष। उ०—राव बलू नूं साचोर हुई तरै कूवो १ दिखण दिस नै राव बलू खणायो छै, तिण मांहे पांणी मीठो पुरसै २० नीसरियो छै।—नैणसी

वि०वि०—यह करीब २ गज के बराबर की लम्बाई का होता है। प्रत्येक व्यक्ति का पुरस उसकी ऊंचाई के बराबर होता है अर्थात् उसके पुरस की लम्बाई व शरीर की लम्बाई बराबर होती है।

रू०भे०—पुर', पुरसि।

३ देखो 'पुरुस' (रू.भे.)

उ०—न करिस्यो नीच पुरस सुं नेह। करसी तेह पछतावसी जी, निस्चै नै निस्संदेह।—वि.कु.

पुरसगारी-सं०स्त्री० [सं० परिवेषकार+रा.प्र.ई] १ भोजन परोसने वाली स्त्री। उ०—मांमा रा ब्याव नै मा पुरसगारी। जीमो बेटा रात अंधारी।—फुलवाड़ी

२ परोसी जाने वाली भोजन-सामग्री।

३ परोसने की क्रिया।

रू०भे०—परसगारी, परूसगारी, पुरसारी।

पुरसगारो-सं०पु० [सं० परिवेषकार] (स्त्री० पुरसगारी) भोजन परोसने वाला व्यक्ति।

रू०भे०—परीसारो, परुसगारो, परूसगारो, परूसवारो, परसारो, परोसगारो, पुरसारो।

पुरसड़ो—देखो 'पुरुस' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—काट जिकां कुळ ऊवटै, आठवाट इतफाक। वां सवळां ही पुरसड़ां, वैरो गिणै वराक।—बां.दा.

पुरसणो, पुरसबो-क्रि०स० [सं० परवेषणम्] खाद्य पदार्थ को पत्तल आदि में रखना, भोजन परोसना। उ०—तितरै घर सूं भातो आयो, तरै भातो पत्तर मांहे पुरस नै आप मांखो राखण लागो।—नैणसी

पुरसणहार, हारो (हारी), पुरसणियो—वि०।

पुरसवाड़णो, पुरसवाड़बो, पुरसवाणो, पुरसवाबो, पुरसवावणो, पुरसवावबो, पुरसाड़णो, पुरसाड़बो, पुरसाणो, पुरसाबो, पुरसावणो, पुरसावबो—प्रे०रू०।

पुरसिओड़ो, पुरसियोड़ो, पुरस्योड़ो—भू०का०कृ०।

पुरसीजणो, पुरसीजबो—कर्म वा०।

परसणो, परसबो, परूसणो, परूसबो, परोसणो, परोसबो—रू.भे.

पुरसपत—देखो 'सप्तपुरी' (रू.भे.)

उ०—मिळि हरख जेसठ मास, पख प्रथम धरम प्रकास। पुरसपत रूप प्रवीत, मुख धांम-धारा मीत।—रा.रू.

पुरसपुरांण—देखो 'पुरांणपुरुस' (नां.मा.)

पुरसली-सं०स्त्री० [देशज] एक प्रकार की चिड़िया, काबर।

पुरसाकार-सं०पु० [सं० पुरुषाकार] लिंग, शिश्न।

पुरसाड़णो, पुरसाड़बो—देखो 'पुरसाणो, पुरसाबो' (रू.भे.)

पुरसाड़णहार, हारो (हारी), पुरसाड़णियो—वि०।

पुरसाड़िओड़ो, पुरसाड़ियोड़ो, पुरसाड़्योड़ो—भू०का०कृ०।

पुरसाड़ीजणो, पुरसाड़ीजबो—कर्म वा०।

पुरसाड़ियोड़ो—देखो 'पुरसायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० पुरसाड़ियोड़ी)

पुरसाणो, पुरसाबो-क्रि०स० ('पुरसणो' क्रि० का प्रे०रू०) खाद्य पदार्थ को पत्तल, थाली आदि में रखवाना, भोजन परोसवाना।

पुरसाणहार, हारो (हारी), पुरसाणियो—वि०।

पुरसायोड़ो—भू०का०कृ०।

पुरसाईजणो, पुरसाईजबो—कर्म वा०।

पुरूसाड़णो, पुरूसाड़बो, पुरूसाणो, पुरूसाबो, पुरूसावणो, पुरूसावबो, पुरसाड़णो, पुरसाड़बो, पुरसाणो, पुरसाबो, पुरसावणो, पुरसावबो —रू०भे०

पुरसातण, पुरसातन-सं०पु० [सं० पुरुष+रा०प्र० तन] बल, पराक्रम। उ०—चालंतो कोट पयंपै 'चूंडो', ऐ पुरसातन तणा अपर। रण मुड़ियै नांहीं जो आरण, आगै पाछै मुडै अर।—राव चूंडा री गीत

रू०भे०—पुरुसातन, पुरुसातम, पुरुसातन।

पुरसाद—देखो 'प्रसाद' (रू.भे.)

उ०—पीलूड़ा पुरसाद देवै, भाड़ो लेवै बाळका। विरमांणी विरांणी जाणी, जाळां जूनो काळका।—दसदेव

पुरसायोड़ो-भू०का०कृ०—भोजन परोसवाया हुआ।

(स्त्री० पुरसायोड़ी)

पुरसारथ—देखो 'पुरुसारथ' (रू.भे)

उ०—प्रारब्ध प्रतिग्या द्रढ प्रतीत। पुरसारथ प्रग्या परम प्रीत। —ऊ.का.

पुरसारी—देखो 'पुरसगारी' (रू.भे.)

पुरसारो—देखो 'पुरसगारो' (रू.भे.)

(स्त्री० पुरसारी)

पुरसावणो, पुरसावबो—देखो 'पुरसाणो, पुरसाबो' (रू.भे.)

पुरसावणहार, हारो (हारी), पुरसावणियो—वि०।

पुरसाविओड़ो, पुरसावियोड़ो, पुरसाव्योड़ो—भू०का०कृ०।

पुरसावीजणो, पुरसावीजबो—कर्म वा०।

पुरसावियोड़ो—देखो 'पुरसायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० पुरसावियोड़ी)

पुरसि—देखो 'पुरस' (रू.भे.)

पुरसियोड़ो-भू०का०कृ०—(भोजन) परोसा हुआ।

(स्त्री० पुरसियोड़ी)

पुरसोतम, पुरसोत्तम—देखो 'पुरुसोत्तम' (रू.भे.) (नां.मा.)

उ०—१ गैल अोण रज परसत रीजै नारी गौतम। प्रतिपळ 'किसना' रांमचंद्र सो भज पुरसोतम।—र.ज.प्र.

उ०—२ गुरु न्याय विधायक गोतम से । पुन पाय प्रभा, पुरसोत्तम से ।—ऊ.का.

पुरस्कार-सं०पु० [सं०] पारितोषिक, इनाम ।

पुरस्कृत-वि० [सं० पुरस्कृत] इनाम पाया हुग्रा ।

पुरहथण—देखो 'हस्तिनापुर' (रू.भे.)

उ०—सुत परहुत रासहुत समहर, राघवां जांणौं जीयें रथ । पुरहथण जीही वीकपुर है, यां नवघव ग्राप हथ ।—द.दा.

पुरहूत—देखो 'पुरुहूत' (रू.भे.) (ग्र.मा., नां.मा.)

पुरहूतजय-सं०पु०यौ० [सं० पुरुहूतजय] वज्र (ग्र.मा.)

पुरहूति—देखो 'पुरुहूत' (रू.भे.) (ह.नां.मा.)

पुरह्लत-सं०पु० [सं०] शिव, महादेव (नां.मा.)

पुरांइद—देखो 'इंद्रपुरी' (रू.भे.)

उ०—डाक चमु वजाड़ै घपाड़ै ग्रीधां गळांडळां । वीजुजळां भुजाबळां भांजै खळां चंद । ग्रछरां ग्ररजां करै ग्रांटोला वीवांण ग्रावौ । ग्रंगहोमां कहै ऊभी ग्रावौ पुरांइद ।—वनजी खिड़ियौ

पुरांण-वि० [सं० पुराण] प्राचीन, पुरातन ।

सं०स्त्री०—१ एक नदी का नाम । उ०—साल सूतर चिकन सुम, ग्रतळस जरकस ग्रांण । तो तट दी लाखैं तरां, पहरांमणी पुरांण ।—वां.दा.

सं०पु०—२ हिन्दुग्रों के धर्म-संबंधी ग्राख्यान-ग्रंथ ।

(डिं.को., ह.नां.मा.)

उ०—कतेबां कलम्मां उचारै कुरांणां । पढै भारथां भागवंतां पुरांणां ।—सू.प्र.

वि०वि०—ये संख्या में ग्रठारह हैं । इनके नाम प्रायः ये माने जाते हैं—ब्रह्म, पद्म, विष्णु, वायु या शिव, लिंग या नृसिंह, गरुड़, नारद, स्कन्द, ग्रग्नि, श्रीमद्भागवत या देवी भागवत, मार्कण्डेय, भविष्य, ब्रह्मवैवर्त, वामन, वराह, मत्स्य, कूर्म ग्रौर ब्रह्माण्ड । साहित्यकारों के ग्रनुसार पुराणों में पांच बातें होती हैं—सर्ग ग्रर्थात् सृष्टि, प्रतिसर्ग ग्रर्थात् प्रलय ग्रौर उसके उपरांत फिर से होने वाला सृष्टि, वंशों, मन्वन्तरों ग्रौर वंशानुचरित की बातों का वर्णन । साधारणतः वेदव्यास ही इन पुराणों के रचयिता माने जाते हैं । इनके ग्रलावा १८ उपपुराण भी माने गए हैं ।

३ पुरुष की बहत्तर कलाग्रों में से एक ।

४ ग्रठारह की संख्या* (डिं.को.)

रू०भे०—परांण, पौरांण ।

पुरांणग-सं०पु० [सं० पुराण+ग] ब्रह्मा, विधि (डिं.को.)

पुराणपुरस, पुरांणपुरस, पुरांणपुरक्ख, पुरांणपुरख, पुराणपुरस ।

सं०पु०यौ० [सं० पुराण+पुरुष] १ श्रीकृष्ण (ग्र.मा.)

२ ईश्वर । उ०—प्रकृति ग्रतीत पुरक्ख प्रधांन, गरव्भ विग्यांन जगत्त गिनांन । प्रमेस, पुरांणपुरक्ख प्रतक्ख, ग्रगोचर एक ग्रनेक ग्रलक्ख ।—ह.र.

रू०भे०—पुरक्खपुरांण, पुरखपुरांण, पुरसपुरांण, पुरिखिपुरांण, पुरुखपुरांण, पुरुसपुरांण ।

पुरांणिक—देखो 'पुरांणीक' (रू.भे.)

पुरांणी—१ देखो 'परांणी' (रू.भे.)

२ देखो 'पुरांणो' (स्त्री०)

पुरांणीक-वि० [सं० पौराणिक] १ पुराण संबंधी, पुराण का ।

२ पुराणों का जानकार । उ०—१ एक दिन रै समाजोग रावत प्रतापसिंघ कनै एक पंडित पुरांणीक ग्रायौ, जिण बडा-बडा ग्रंथां री समुद्र को सो पार दरसायौ ।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

उ०—२ तद पुरांणीक पंडित राजा नुं कह्यो, 'महाराज भूखी ग्रातमा नुं जे भोजन देवै तिण पुण्य री कोई पार नहीं पावै ।'

—साह रांमदत्त री वारता

रू०भे०—पुरांणिक ।

पुरांणो-वि० [सं० पुराण] (स्त्री० पुरांणी) १ जो बहुत पहले रहा हो ग्रौर ग्रब न हो, बहुत पूर्व का, पूर्वकाल का, प्राचीन ।

ज्यूं—पुरांणी प्रथा, पुरांणा रीतिरिवाज ।

२ जो बहुत दिनों का होने के कारण सुदृढ दशा में न हो या ठीक तरह से काम न दे सकता हो, जीर्ण-शीर्ण ।

उ०—१ सींगाळो ग्रवखल्लणो, जिण कुळ हेक न थाय । जास पुरांणी वाड़ जिम, जिण-जिण मत्थै थाय ।—हा.झा.

उ०—२ होय सभा हमगीर, दुय हाथां खैंचै दुसट । चळघो पुरांणो चीर, सिर सूं चाल्यो सांवरा ।—रांमनाथ कवियौ

क्रि.प्र०—पड़णौ, होणौ ।

मुहा०—पुरांणो चोळो—वृद्ध शरीर ।

यौ०—फाटो-पुरांणो ।

३ जो वर्तमान समय से बहुत पूर्व का हो, बहुत प्राचीन काल का, प्राचीन, पुरातन । उ०—सुणीजै ऊखांणो पुरांणो सयांणी, रुकीजै नहीं जंगळी जट्टरांणी ।—ना.द.

४ जिसने बहुत समय देखा हो, जिसका ग्रनुभव बहुत दिनों का हो, पूर्ण रूप से परिपक्व ज्ञान वाला, पूर्ण रूप से ग्रभ्यस्त ।

ज्यूं—पुरांणो पंडित ।

मुहा०—पुरांणो खुरांट—वृद्ध, बहुत दिनों का ग्रनुभवी ।

२ पुरांणो खोपड़ी—देखो 'पुरांणो खुरांट' ।

३ पुरांणो घाघ—किसी विषय का ग्रनुभव करते करते बहुत पुराना हो गया हो, बहुत चालाक, बहुत काइयां ।

४ पुरांणो पापी—देखो 'पुरांणो घाघ' ।

५ जो किसी निश्चित समय से सुरक्षित रूप से चला ग्रा रहा हो या बना रहा हुवा हो ।

ज्यूं—जाळोर रै गढ में दोय सो वरस पुरांणो घी है ।

चिड़िया नाथ री धूणी पांच सो वरस पुरांणी है ।

६ जिसे अस्तित्व में आए बहुत समय हो गया हो, नया नहीं, प्राचीन ।

उ०—१ नाज पुरांणो घी नयो, आग्याकारी नार । चंच तुरी चढ चालणो, पुत्र तणा फळ चार ।—अज्ञात

उ०—२ राजा देवे राठवड़, पेलै भाग विचार । पियै पुरांणो सेव गिरा, ऊपर वांणी धार ।—रा.रू.

पुरा-अव्य० [सं०] १ पूर्वकाल में, पुराने समय में ।

२ प्राचीन, अतीत, पुराना ।

ज्यूं—पुराव्रत (वृत), पुराकल्प, पुरातन ।

३ शीघ्र । उ०—गुढै मयमंत सेना गुहर गैमरां, प्रकटिया मारका थाठ जोधापुरा । धूंसियं हैय पुरा पाय अरबद, पसरियं सिघ परबत थया पाधरा ।—राजा रायसिंह रो गीत

पुराचीन—देखो 'प्राचीन' (रू.भे.)

पुराणो, पुराबो-क्रि०स० ('पूरणो' क्रिया का प्रे०रू०) भराना, पूरा कराना । उ०—घर घर ए सखियां मंगळ गावो । घर घर मोतीड़ा सूं चौक पुरावो ।—लो.गी.

पुराणहार, हारो (हारी) पुराणियो—वि० ।

पुरायोड़ो—भू०का०कृ० ।

पुराईजणो, पुराईजबो—कर्म वा० ।

पुरावणो, पुराववो—रू०भे० ।

पुरातत्व-सं०पु० [सं०] प्राचीन काल संबंधी विद्या ।

पुरातन-वि० [सं०] प्राचीन, पुराना । उ०—पुरातन प्रीत जिसी हरि पद । राजा लोमज अनै दसरथ ।—रामरासो

सं०पु०—१ सनातन पुरुष (पति ?)

उ०—पुरुस पुरातन छाड़कर, चली आन के साथ । सो भी संग थे बीछुटया, खडी मरोड़े हाथ ।—दादूवांणी

२ विष्णु (ह.नां.मा.)

रू०भे०—पुरातम, पुरायण, पूरातन ।

पुरातम—देखो 'पुरातन' (रू.भे.)

उ०—१ भलै भगवंत भलै भगवांन, पुरातम पूरण नाथ प्रधान ।
—पी.ग्रं.

उ०—२ निमो देव अरिहंत, पुरुस परधांन पुरातम ।—पी.ग्रं.

पुरातळ-सं०पु० [सं० पुरातल] तलातल ।

पुरायण—देखो 'पारायण' (रू.भे.)

उ०—इठा उपरांत करिनै राजांन सलांमति तिण सहर मांहि च्यार वरण, च्यार आस्रम, अढारै वरण, खटदरसण, परम ग्यांन पुरायण धरम-करम रा पाळणहार, दयाधरम रा राखणहार, देह साभना रा करणहार बैठा तप करै छै ।—रा.सा.सं.

पुरायोड़ो-भू०का०कृ०—पूरा कराया हुआ, भरा हुआ ।

(स्त्री० पुरायोड़ी)

पुरारि-सं०पु० [सं०] शिव ।

पुरारब्ध—देखो 'प्रारब्ध' (रू.भे.)

उ०—महणीयं जोग आर्फ लाहिनि, पुरारब्धे पुन्य पाधरी । 'श्रवद-सोढ' कहै धीरज धरै, थो ही मन रे आपरी ।—ध.व.ग्रं.

पुरारब्धी—देखो 'प्रारब्धी' (रू.भे.)

पुरावणो, पुराववो—देखो 'पुराणो, पुरावो' (रू.भे.)

उ०—मोती चउक पुराविया । वाजित्र बाजै सुरह निशाणा ।
—बी दे.

पुरावणहार, हारो (हारी), पुरावणियो—वि० ।

पुराविप्रोड़ो, पुरावियोड़ो, पुरायोड़ो—भू०का०कृ० ।

पुरावीजणो, पुरावीजबो—कर्म वा० ।

पुराविप्रोड़ो—देखो 'पुरायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० पुराविप्रोड़ी)

पुरिंद, पुरिंदर, पुरिंद्र—देखो 'पुरंदर' (रू.भे.) (नां.मा.)

पुरिस, पुरिसि—देखो 'पुरुष' (रू.भे.)

उ०—माया पुरिस नारि पुनि माया, माया थान मगाई । माया स्वामी माया सेवक, बहोत भांति करि गाई ।—ह.पु.वा.

पुरिसपुरांण—देखो 'पुरांणपुरुस' (रू.भे.) (ह.नां.मा.)

पुरिसोतम—देखो 'पुरुसोत्तम' (रू.भे.)

पुरिसो—देखो 'पुरसो' (रू.भे.)

पुरिमड्ड-सं०पु० [ ] प्रथम दो पहर तक आहार त्याग करने की क्रिया ।

उ०—२ आयबल नीवी, पुरिमड्ड, करे द्रव्य अनुमान । जिन दिन चाहए पाचमी, ए भाख्या भगवान ।—जयवांणी

पुरिस—देखो 'पुरस' (रू.भे.)

उ०—पहिरण ओढण कबळा, साठे पुरिसे नीर । आपण लोक उभांणा, गाडर छाळी गीर ।—ढो.मा.

पुरिसोतम, पुरिसोत्तम—देखो 'पुरुसोत्तम' (रू.भे.)

उ०—'पीरै' सा पुरिसोतमा, हिमे करीजै हिति । भगति दिवारी भूपरा, नाम सिरावो निति ।—पी.ग्रं.

पुरिसो—देखो 'पोरसो' (रू.भे.)

उ०—तजि कोप तयारं सीधो सारं, सोवन पुरिसो लोकारं ।
—ध.व.ग्रं.

पुरी-सं०स्त्री० [सं०] १ नगरी, छोटा शहर (अ.मा., ह.नां.मा.)

रू०भे०—पुरिय ।

२ जगन्नाथपुरी ।

३ स्वामी शंकर के शिष्य पृथ्वीधर के अनुगामी दसनामी संन्यासियों की एक शाखा. २ उक्त शाखा का एक संन्यासी ।

सं०पु० [सं० पुरिन्] ४ चंद्रमा ।

पुरीख, पुरीस-सं०पु० [सं०पुरीष] १ मल, विष्टा ।

उ० –१ हडु तणी ए पंजरी, मांहि मूत्र पुरीस । अवगुण वली अनेक छइ, सभळि माहरी सीख ।—मा.कां.प्र.

उ०—२ मुख ओडी रै मांहि ले, पर काचड़ा पुरीस । पटकै रोडी

स्रवण पर, से चंडाल सरीस ।—बां.दा.

उ०—३ रुड़ौ तीरथ राज रै, नित जळ कीजै न्हांन । तो दिण न हुए पाक तन, मूळ पुरीस मकांन ।—बां.दा.

२ देखो 'पुरुस' (रू.भे.)

उ०—दांत कस्ट वंध्यौ गोरड़ी, तोघी भली दमयंती नारि । नळ राजा मेल्हे गयौ, पुरीस समौ नहीं निगुण संसार ।—वी.दे.

पुरु-सं०पु० [सं०] १ एक प्राचीन राजा जो नहुष के पौत्र और ययाति के पुत्र थे ।

२ एक प्राचीन क्षत्रिय नरेश जो युधिष्ठिर की सभा में उपस्थित था ।

३ सिकन्दर महान से लड़ने वाला एक पंजाब का राजा ।

४ शरीर, देह (डिं.को.)

५ देखो 'पुर' (रू.भे.)

उ०—इंद पत्थ तिलपत्थ पुरु, वारुणु कीसी च्यारि । हस्तिनागपुरु पांचमुं, आपीउ मत्सरु वारि ।—पं.पं.च.

पुरुक्ख—देखो 'पुरुस' (रू.भे.)

उ०—नहीं तो नार पुरुक्ख सनेह । नहीं तो दीरघ छुच्छम देह ।
—ह.र.

पुरुकुसीमांन-सं०पु० [पुरुकुत्स] १ पुरुकुत्स नामक एक सूर्यवंशी राजा ।

उ०—पुरुकुसीमांन सुत वंस रूप । पुर कुत्समु तणै संभूत भूप ।
—सू.प्र.

२. अंगिरा के कुत्स नामक उपगोत्रकार के तीन प्रवरों में से एक ।

पुरुख—देखो 'पुरुस' (रू.भे.)

पुरुखड़ौ—देखो 'पुरुस' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—पसू पसू कहृ पुरुख नै, आधो करै अनरथ । पसू जिसा वे पुरुखड़ा, आवै और न अरथ ।—ऊ.का.

पुरुखपुरांण—देखो 'पुरांणपुरुस' (रू.भे.)

पुरुखातम, पुरुखात्रम—देखो 'पुरुसातन' (रू.भे.)

उ०—१ 'पातल' हरा निमो पुरुखातम, कळ दळ सबळ कळासै । उरडै फौज धजा विच आवी, गुण की गजां गरासै ।
—नाहरसिंह आसियौ

उ०—२ चालंतो दुरंग पयंपै 'चुंडौ', ए पुरुखातम तणी पर । आप न मुड़ियै जाय अरीयण, तो आगै पाछै मुड़ै यर ।
—चूंडा लाखावत सीसोदिया रौ गीत

पुरुखारथ—देखो 'पुरुसारथ' (रू.भे.)

उ०—यउ तउ पातिसाह उत्तर दक्खिण पूरब पच्छिम फउ जइत-धार, इ-का पुरुखारथ प्रवाड़ा नाहि पार ।—अ. वचनिका

पुरुखि—देखो 'पुरुस' (रू.भे.)

पुरुखौ—देखो 'पुरखौ' (रू.भे.) (ह.नां.मा.)

पुरुजित-सं०पु० [सं० पुरुजित्] १ कुंतीभोज का पुत्र जो अर्जुन का मामा था । २ एक निमिवंशीय राजा । ३ विष्णु ।

पुरुरवा-सं०पु० [सं० पुररवस्] एक प्राचीन राजा ।

उ०—कीचक, वालो, कदिन पुरुरवा औ पविवांणी । लंपट भये लंकेस, जूत खाया जग जांणी ।—ऊ.का.

वि०वि०—ये बुध और इला के पुत्र थे तथा बड़े रूपवान, बुद्धिमान और पराक्रमी थे । इन्होंने शापवश भूलोक में आई हुई उर्वशी के साथ तीन शर्तों को मान कर विवाह कर लिया । बहुत दिनों तक सुखपूर्वक रहने के बाद ये शर्तों का पालन करने में चूक गए और फलस्वरूप उर्वशी शाप से छूट कर स्वर्ग चली गई । पुरुरवा की राजधानी प्रयाग में गंगा किनारे थी जिसका नाम प्रतिष्ठानपुर था । उर्वशी के वियोग में ये बहुत दिनों तक विलाप करते घूमते रहे ।

पुरुस-सं०पु० [सं० पुरुष] १ मनुष्य जाति का नर प्राणी, आदमी ।

उ०—अलंकार मांही अहो !, वस देखिए विचित्र । लहै ऊंचता लेण नै, पूरा पुरुस पवित्र ।—महामहोपाध्याय कविराजा मुरारिदांन

२ प्रकृति से भिन्न एक अपरिणामी, अकर्ता और असंगचेतन पदार्थ, विश्वात्मा ।

३ मनुष्य का शरीर या आत्मा ।

४ स्त्री का पति या भर्तार ।

५ जीव या आत्मा ।

६ सूर्य ।

७ शिव ।

८ किसी पीढ़ी या पुश्त का प्रतिनिधि ।

९ वक्ता की दृष्टि से किया जाने वाला सर्वनाम का विभाजन ।
(व्याकरण)

१० पुरुषों की बहत्तर कलाओं में से एक ।

रू०भे०—पुरक्ख, पुरख, पुरखि, पुरक्ख, पुरस, पुरिख, पुरिखि, पुरिस, पुरीख, पुरीस, पुरुक्ख, पुरुख, पुरुखि, पुरुष, पुरुख ।

अल्पा०—पुरखड़ौ, पुरसड़ौ, पुरुखड़ौ, पुरुसड़ौ ।

पुरुसग्रह-सं०पु०यौ० [सं० पुरुषग्रह] रवि, मंगल, गुरु (ज्योतिष)

पुरुसड़ौ—देखो 'पुरुस' (रू.भे.)

पुरुसनक्षत्र, पुरुसनखत्र-सं०पु०यौ० [सं० पुरुषनक्षत्र] अश्वनी, मघा, मूल, रेवती, पुष्य, स्रवण, हस्त और शतभिषा नक्षत्र (ज्योतिष)

पुरुसमेघ-सं०पु० [सं० पुरुषमेघ] एक प्रकार का वैदिक यज्ञ जिसमें मानव की बलि दी जाती थी ।

पुरुसरासि, पुरुसरासी-सं०स्त्री० [सं० पुरुषराशि] मेख, मिथुन, सिंह, तुला, धन और कुंभ (ज्योतिष) ।

पुरुसवार-सं०पु० [सं० पुरुषवार] रवि, मंगल और गुरु ।

पुरुसातन-सं०पु० [सं० पुरुष+तन] शक्ति, बल, सामर्थ्य ।

रू०भे०—पुरखातण, पुरखातन पुरखातम, पुरखात्रम ।

पुरुसारथ-सं०पु० [सं० पुरुषार्थ] १ पुरुष के उद्योग का विषय ।

२ पुरुष में होने वाला सामर्थ्य या शक्ति ।

उ०—घट दीन दरिद्र घुमावत क्यूं । पुरुसारथ हीन घुमावत क्यूं ।
—ऊ.का.

३ परिश्रम, उद्यम । उ०—पच्छ ग्रहे प्रालब्ध, नहीं पुरुसारथ नेड़ो। चोखे मन नंहि चाय, भाय आवे मन भेड़ो ।—ऊ.का.

रू०भे०—पुरखारत, पुरखारथ, पुरसारथ, पुरुखारथ ।

पुरुसारथी-वि० [सं० पुरुषार्थिन्] पुरुषार्थ करने वाला, परिश्रमी, उद्यमी ।

पुरुसु—देखो 'पुरुस' (रू.भे.)

उ०—अछइ सोवन्नी कावज हाथि । एक पुरुसु आविउ छइ साथि । —प.पं.च.

पुरुसोतम, पुरुसोत्तम-सं०पु० [सं० पुरुषोत्तम] १ श्रेष्ठ पुरुष ।

उ०—अपुरब दे वर दाखि अतिग्गह कोट बि राखिय ठेलि कंधार । परउपगार भला पुरुसोतम, अपणा जगत करइ उपगार । —चौहथ बारहठ

२ ईश्वर (नां.मा.)

उ०—नरां नाह नीपनो पार पाड़ियो पुरुसोत्ताम । अगे आदि औ आज, अमर अमरां मां ओपम ।—पी.ग्रं.

३ रामचंद्र । (नां.मा.)

४ श्रीकृष्ण । (ग्र.मा.)

५ जगन्नाथपुरी का मन्दिर ।

६ जगन्नाथ की मूर्ति (उड़ीसा)

यौ०—पुरुसोत्तामक्षेत्र, पुरुसोत्ताममास ।

रू०भे०—पुरसोतम, पुरसोत्ताम, पुरिखोतम, पुरिसोतम, पुरिसोत्तम, प्रसोतम ।

पुरुसोत्तमक्षेत्र-सं०पु०यौ० [सं० पुरुषोत्तमक्षेत्र] जगन्नाथपुरी । (उड़ीसा)

पुरुसोत्तममास-सं०पु०यौ० [सं० पुरुषोत्तममास] अधिकमास, मलमास ।

पुरुहूत-सं०पु० [सं०] इन्द्र ।

रू०भे०—पुरहुत, पुरहूत, पुरहूति, पुरुहुत, पूरहूत ।

पुरूसणो, पुरूसबो—देखो 'पुरसणो, पुरसबो' (रू.भे.)

पुरूसणहार, हारो (हारी), पुरूसणियो—वि० ।

पुरूसिओड़ो, पुरूसियोड़ो, पुरूस्योड़ो—भू०का०कृ० ।

पुरूसीजणो, पुरूसीजबो—कर्म वा० ।

पुरूसियोड़ो—देखो 'पुरसियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० पुरूसियोड़ी)

पुरेंद्री—देखो 'पुरंध्री' (रू.भे.)

उ०—देवि पांडव नरेंद्र पुरेंद्री । द्रूपदी तणइ हउंजि सुलिद्री । —सालि सूरि

पुरे—देखो 'प्रहर' (रू.भे.)

उ०—पड़े मगांण देस देस, अग्रवांण पीड़णी । सलाह पाछलै पुरे, मिटी तुरेस मोड़णी ।—रा.रू.

पुरोगत-वि० [सं०] १ जो सामने हो, सम्मुख हो ।

२ जो पहिले गया हो, पुराना ।

३ देखो 'पुरोगति' (रू.भे.) (अ.मा.)

पुरोगति-वि० [सं०] अग्रगामी ।

सं०पु०—१ स्वान, कुत्ता (ह.नां.मा.)

सं०स्त्री—२ आगे आगे चलने की क्रिया या भाव, अग्रगामिता ।

३ पुरोगत होने की दशा या भाव ।

रू०भे०—पुरोगत ।

पुरोचन-सं०पु० [सं०] दुर्योधन का म्लेच्छ मंत्री एवं मित्र जिसकी नियुक्ति लाक्षा गृह में पांडवों को जलाने के लिए की गई थी ।

उ०—एहु सु पूरोचन नांमि पुरोहितु दुरयोधनह । तुम्हि वीनविया सांमि राय सुयोधनि पय नमीय ।—पं.पं.च.

पुरोडा, पुरोड़ास-सं०पु० [सं० पुरोडाश् या पुरोडाश] १ कपाल में पकाकर बनाई हुई जौ के आटे की टिकिया ।

वि०वि०—इस टिकिया का टुकड़ा काट कर मंत्र पढ़ कर यज्ञों में देवताओं को आहुति दी जाती थी ।

२ उक्त आहुति देते समय पढ़ा जाने वाला मंत्र ।

३ सोमरस ।

पुरोहिअ, पुरोहित-सं०पु० [सं० पुरोहित] (स्त्री०पुरोहितण, पुरोहितांणी)

१ यज्ञ, अनुष्ठान, संस्कार आदि कराने वाला ब्राह्मण ।

२ राजा या किसी अन्य यजमान के यहां यज्ञ, श्रौतकर्म, गृहकर्म संस्कार आदि कराने वाला । प्रधान याज्ञक कृत्य कराने वाला ब्राह्मण ।

३ ब्राह्मण वर्णान्तिर्गत एक गोत्र विशेष जो प्रायः राजाओं और जागीरदारों के कुलगुरु होते हैं ।

४ इस गोत्र का व्यक्ति ।

उ०—तरवाड़ी टोळे थया, पुरोहित पारावार ।—मा.कां.प्र.

५ ब्राह्मण वर्णान्तिर्गत एक जाति विशेष ।

रू०भे०—परोयत, परोहित, पिरोयत, पिरोहित, पीरोत, पुरोहितु, प्रोयत, प्रोहत, प्रोहित ।

पुरोहितु—देखो 'पुरोहित' (रू.भे.)

उ०—राति चालइ राउ मागि सुरंगह कुणवि सउं । दियइ पुरोहितु दाउ लाख हरइ विसनरु ठवइ ।—पं.प.च.

पुरोहिताई-सं०स्त्री० [सं०पुरोहित+रा प्र.आई] १ पुरोहित का कार्य ।

२ पुरोहित का पद ।

३ इस कार्य के करने पर मिलने वाला पारिश्रमिक ।

पुरो—देखो 'पुर' (अल्पा., रू.भे.)

पुलंदर, पुलंद्रो, पुलंद्र—देखो 'पुरंदर' (रू.भे.)

उ०—लील-विलास सुरां मा लाइकि । नमो पुलंद्रा देव बिनाइकि । —पी.ग्रं.

पुळ, पूळ-सं०स्त्री० [फा० पुल] १ किसी नदी, खाई, जलाशय आदि पर उसके आरपार जाने के लिए बनाया गया रास्ता, सेतु ।

क्रि०प्र०—बांधणी ।

मुहा०—१ पुळ टूटणो—अत्यधिक होना, भरमार होना, अधिक तादाद में होना, सहायताहीन होना, बे-सहारा होना।

२ पुळ बांधणो—अत्यधिक तारीफ करना, बातों की झड़ी लगाना, बढ़ा चढ़ा कर कहना।

३ देखो 'पळ' (रू.भे.)

उ०—नाथ अनाथ दासरथ नंदण, सोरधुनाथ 'किसन' साधार। कदम पखी अपखो ज्यां काळा, अबखी पुळ वाला आधार।—र.ज.प्र.

पुळक, पुलक-सं०पु० [सं० पुल+कन्] १ प्रेम, भय, हर्ष के कारण शरीर में होने वाला रोमांच, कम्पन।

२ कोई काम करने की प्रवृत्ति उत्पन्न करने वाली कामना।

यू०—संभोग-पुळक।

३ एक प्रकार का बहुमूल्य पत्थर, रत्न, नगीना जिसे महताब, याकूत, चुन्नी भी कहते हैं।

४ हाथी का रातिब।

५ हरताल।

रू०भे०—पुळकि।

पुळकणो, पुळकबो-क्रि०अ० [सं० पुलक+रा.प्र.णो] पुलकित होना, गद्गद् होना, रोमांचित होना। उ०—हित सूं कमठाकृत हरी, सेवै पुळच सरीर। वदन छिपावण देह विच, ते मांगे तदबीर।—बां.दा.

२ भय, शर्म आदि से मुंह या चेहरा फीका पड़ना, अप्राकृतिक मंद हंसना।

पुळकणहार, हारौ (हारी), पुळकणियौ—वि०।

पुळकवाड़णो, पुळकवाड़बो, पुलकवाणो, पुलकवाबो, पुळकवावणो, पुळकवावबो—प्रे०रू०।

पुळकाड़णो, पुळकाड़बो, पुळकाणो, पुळकाबो, पुळकवाणो, पुळकवाबो—सक०रू०।

पुळकिग्रोड़ो, पुळकियोड़ो, पुळक्योड़ो—भू०का०कृ०।

पुळकीजणो, पुळकीजबो—भाव वा०।

पुळकाड़णो, पुळकाड़बो—देखो 'पुळकाणो, पुळकाबो' (रू.भे.)

पुळकावणो, पुळकावबो—देखो 'पुळकाणो, पुळकाबो' (रू.भे.)

उ०—धाग न जागै ग्रांखियां, तिण सिर दीधा तंत। पल-पल मुख पुळकावणो, कायर हो उपकंत।—बां.दा.

पुळकावणहार, हारौ (हारी), पुळकावणियौ—वि०।

पुळकाविग्रोड़ो, पुळकावियोड़ो, पुळकाव्योड़ो—भू०का०कृ०।

पुळकावीजणो, पुळकावीजबो—कर्म वा०।

पुळकावियोड़ो—देखो 'पुलकायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० पुळकावियोड़ी)

पुळकि—देखो 'पुलक' (रू.भे.)

पुलकित-वि० [सं०] रोमांचित, गदगद।

पुलकियोड़ो-भू०का०कृ०—१ पुलकित हुवा हुआ, गद्गद् हुवा हुआ, भयभीत हुवा हुआ, लज्जित हुवा हुआ।

(स्त्री० पुलकियोड़ी)

पुलग-सं०पु० [सं० प्लवंग] घोड़ा। उ०—१ सपतास के सहोदर लक्खी-लूंबां में अथाग तिलवागूं के सोनैं ल्यावैं, पवनूं की पाय, सांणियां नैं भली विध सिरै खांन के पुलग साज तिए निजरूं गुजरायां।—र.रू.

उ०—२ पुलग पह'र पांडोस पर, पीव पांण पड़ियांह। ग्रानन में ग्रर ग्रांगळ्यां, घलसी उण घड़ियांह।—रेवतसिंह भाटी

पुळघ, पुळछ—देखो 'पोळछ' (रू.भे.)

पुळण, पुलण—देखो 'पुलिन' (रू.भे.)

उ०—वरसिंघदे वाघेलो गुजरात सौं गंगाजी री जात ग्रायो हुतौ सद ग्रठै बंधव री ठोड़ निवळा-सा रजपूत रहै ता, ठोड़ खालो घोठो, सरै गंगाजी रा पुळण मनोहर देखनै ग्रठै रहण री कीवो।

—नैणसी

पुळणो, पुळबो-क्रि०अ० [सं० पलायनम्] १ कूच करना, प्रस्थान करना, रवाने होना। उ०—१ लखी तोपां सालुळी पुळी पलटणा पटैतां। संगीनां सावलां, ग्राभ छायो ग्रसडैतां।—मे.म.

उ०—२ व्याकुळतां घुळतां वळतां पह, मरघट पुळता माली। ग्रकुळातां अंतिम ग्रसवारी, चमरां ढुळतां चाली।—ऊ.का.

२ गमन करना, जाना, चलना। उ०—१ गुठा जीमता गटक, ग्रंब नहीं वांनैं। रात उरोगता रटक, जरै नह सीरो ज्यांनैं। पुळता नगै पाय, मोल बह बूट मगावैं। पट रेजा पहरता, ग्रतळसां दाय न ग्रावैं। ग्रनाथी भ्रात ग्राया ग्रठै, ग्रातम जाणी ग्रापसी। कमंध केह लोह कंचन किया, पारस भूप 'प्रतापसी'।—जुगतीदांन देथो

उ०—२ तुरी पल्हांणि ग्रांणीउ, 'माधव' थियउ ग्रसवार। पाछउं जोइ नह पुळइ, सिंह तणी ग्राचारि।—मा कां.प्र.

३ किसी प्रकार की गति से युक्त होकर ग्रागे बढ़ना, गतिमय होना, बहना। उ०—जो न भांण ऊगमैं, जो नवि वासग धर भलैं। रोम थांण न ग्रहै, करण पारथ्यो ज मुळै। ब्रह्मा छोडै वेद, पवन जा रहे पुळतो। चंद सूर ना वहे, रहै किम ग्रमी भरंतो। पमार नाकारो ना करैं, मेर-समो जाको हियो। कंकाळी कीरति करैं, सीस दांन 'जगदे' दियो।—जगदेव पंवार री वात

४ चलने की साधारण चाल से द्रुत गमन करना, अधिक वेग से चलना, दौड़ना। उ०—जेती जइ मन मांहि, पंजर जइ तेती पुळइ। मनि वइराग न थाइ, वालंभ वीछुडियां तणो।—ढो.मा.

५ भय, संकट ग्रादि के उपस्थित होने पर उससे बचने के लिए द्रुत गति से चल पड़ना, भाग जाना, भागना। उ०—१ मुड़चौ तजि खेतु पुळयौ प्रतमाग। खड़ौ नृप जैत', दळै करि खाग।

—मे.म.

उ०—२ पुळिया पुंडरीक सुपह संचरिया, वागी हाक न कोय वळै। वाळाचंद ऊठ ग्रतुळीबळ, भोजराज गढ तूझ भळै।

—भोजराज रूपावत रो गीत

उ०—३ नरां ग्रही ग्रमरां उलंडे थंटे थाळ नीर, मही रसातळां घोर मंडे ग्रासमाण। महावीर देवा-साल विलोके रोस में मंडे, पुळे कवी-भाल छंडे पछाड़ी पीढाण।—र.रू.

उ०—४ मूंछ केस संडत नहीं, नाक न संडत कोर। पड़ी पुळंता पाघड़ी, सुकुलीणी तज सोर।—बां.दा.

६ नष्ट होना, नाश होना, मिट जाना, मिटना। उ०—१ चोलो ग्रोढूं चीर, लाळ माहि लुळ जावै। ग्रतर लगाऊं ग्रंग, पाद ग्रागै पुळ जावै। मेंदी देऊं मुळक, मेल सूं कर दे मोळी। दीवाळी रै दिवस, हिया में ऊठै होळी। हाथ झटक झिझिकार हूंस, नाथ न लेऊं नाम जी। भव भाड दसै भरतार सूं, रांड मलो ग्रो रामजी।
—ऊ.का.

६ किसी वस्तु का ग्रपने स्थान से कुछ हट जाना, या कुछ इधर-उधर हो जाना, खिसकना, हिलना। उ०—पुळियो नह चाप कंधा सो पांणी, घांम जनक मिळिया रजधांणी। हतो कठै पोरस कुळ-हांणी, ग्रब तै सिया दगो कर ग्रांणी।—र.रू.

८ व्यतीत होना, गुजर जाना। उ०—पुळियो पचीसो चोतीसो चुळियो, ग्रड़ताळीसो भी ग्रंतर ग्राकुळियो।—ऊ.का.

पुळणहार, हारो (हारी), पुळणियो—वि०।

पुळवाड़णो, पुळवाड़बो, पुळवाणो, पुळवाबो, पुळवावणो, पुळवावबो, —प्रे०रू०।

पुळाड़णो, पुळाड़बो, पुळाणो, पुळाबो, पुळावणो, पुळावबो—क्रि०स०

पुळिग्रोड़ो, पुळियोड़ो, पुळयोड़ो—भू०का०कृ०।

पुळीजणो, पुळीजबो—भाव वा०।

पुळाणो, पुळाबो—रू.भे.।

पुळपुळ-सं०पु० [देशज] उत्पात, शरारत, शैतानी।

पुळपुळणो, पुळपुळबो-क्रि०ग्र० [देशज] शैतानी करना, उत्पात करना।

पुळपुळा'ट—देखो 'पुळपुळाहट' (रू.भे.)

पुळपुळाणो, पुळपुळाबो-क्रि०स० [देशज] १ किसी ठोस खाद्य पदार्थ को मुंह में इधर उधर घुमाना, उसका स्वाद लेना, रस चूसना।

२ ऊपर हाथ फेरना, सहलाना।

३ खुजली चलना।

पुळपुळायोड़ो-भू०का०कृ०—१ कोई ठोस खाद्य पदार्थ को मुंह मे इधर-उधर घुमाया हुग्रा, स्वाद लिया हुग्रा, चूसा हुग्रा।

२ ऊपर हाथ फेरा हुग्रा, सहलाया हुग्रा।

३ खुजली चला हुग्रा।

(स्त्री० पुळपुळायोड़ी)

पुळपुळाहट-सं०पु० [देशज] १ शैतानी, शरारत, उत्पात।

२ पुळपुळा होने का भाव।

रू०भे०—पुळपुळा'ट।

पुळपुळियोड़ो-भू०का०कृ०—शैतानी किया हुग्रा, उत्पाद किया हुग्रा।

(स्त्री० पुळपुळियोड़ी)

पुळपुळो-वि० [देशज] (स्त्री० पुळपुळी) १ जिसके भीतर का भाग ठोस न हो, गुदगुदा, मुलायम।

२ चंचल, नटखट।

३ उत्पात करने वाला, बखेड़ा करने वाला।

पुलमजा—देखो 'पुलोमजा' (रू.भे.) (ग्र.मा., नां. मा.)

यौ०—पुलमजापति।

पुलमजापति—देखो 'पुलोमजापति' (रू.भे.) (ग्र.मा.)

पुलवती-वि०स्त्री० [?] सौभाग्यवती, सुशील।

पुळसत, पुलसुत, पुलस्त्य-सं०पु० [सं० पुलस्ति, पुलस्त्य] १ एक ऋषि जिनकी गणना सप्तर्षियों ग्रौर प्रजापति में की जाती है।

वि०वि०—ये ब्रह्मा के ग्राठ मानस पुत्रों में से एक थे जो शक्तिशाली महर्षियों में गिने जाते हैं।

पुलह-सं०पु० [सं०] एक ऋषि जो ब्रह्मा के मानस पुत्रों ग्रौर सप्त-र्षियों में गिने जाते हैं।

पुलाक-सं०पु० [सं०] १ दाने रहित धान्य की भूसी (जैन)

२ दुष्ट रस वाला द्रव्य।

३ एक प्रकार का कदम्ब, ग्रंकरा।

४ चावल का मांड पीच।

५ भात।

६ पुलाव।

७ पुलाक लब्धि वाला साधु (जैन)

रू०भे०—पुलाग।

पुलाकलब्धि-सं०स्त्री० [सं०] देवता के समान समृद्धि वाला विशेष लब्धिसम्पन्न मुनि।

वि०वि०—देखो 'लब्धि'।

पुळाड़णो, पुळाड़बो—देखो 'पुळाणो, पुळाबो' (रू भे.)

पळाड़णहार, हारो (हारी), पळाड़णियो—वि०।

पळाड़िग्रोड़ो, पळाड़ियोड़ो, पळाड़योड़ो—भू०का०कृ०।

पळाड़ीजणो, पळाड़ीजबो—कर्म वा०।

पुळाड़ियोड़ो—देखो 'पुळायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० पुळाड़ियोड़ी)

पुळाणो, पुळाबो, पुलाणो, पुलाबो-क्रि०स० [सं० पलायनम्] १ कूच कराना, प्रस्थान कराना, रवाने कराना।

२ गति से युक्त करके ग्रागे बढ़ाना, गतिमय करना, बहाना, ग्रधिक वेग से चलाना, दौड़ाना।

३ पलायन कराना, भगाना।

४ नष्ट करना, नाश करना, मिटाना।

५ खसकाना, हटाना, हिलाना।

६ देखो 'पुळणो, पुळबो' (रू.भे.)

उ०—१ सरु सांधी राउ कैंउइ धाइ, हरिणउ हरिणी सहितु पुळाइ।
—पं पं.च.

उ०—२ विसु दीधउं दुरयोधनि, भीमहि भोजन माहि। ग्रम्रत

हुई नइ परिणामिउ, पुन्नि हिं दुरिउ पुलाइ ।—पं.पं.च.

उ०—३ तुम नामइ हो मोरा पाप पुलाइ कि, जिम दिन उगइ चोरड़ा ।—स.कु.

पुळाणहार, हारो (हारी), पुळाणियो—वि ।

पुळायोड़ो—भू०का०कृ० ।

पुळाईजणो, पुळाईजबो—कर्म वा०, भाव वा० ।

पुळाड़णो, पुळाड़बो, पुळावणो, पुळावबो—रू०भे० ।

पुलाव, पुलाब-सं०पु० [फा० पुलाव] मांस और चावलों को साथ पकाया हुआ एक प्रकार का व्यंजन, मांसोदन ।

उ०—१ छळती हिक मूंण सराव छकै । भर धूंण पुलाब कबाब भखै ।—मे.म.

उ०—२ तद तेली नूं खनै बैठायो नै मापरा थाळ मांय सूं सीरो पुड़ी चावळ दाळ पुलाव, सावूनो तेली नूं ठाकुरसी माप रा हाथ सूं पुरसिया ।—द.दा.

रू०भे०—पोलाव ।

पुळावणो, पुळावबो, पुलाणो, पुलाबो—१ देखो 'पुळाणो, पुळाबो' (रू.भे.)

२ देखो 'पुळणो, पुळबो' (रू.भे.)

उ०—पुन्य तणां फळ परतिख देखो, करो पुण्य सहु कोय जी । पुण्य करंतां पाप पुळावै, जीव सुख होय जी ।—स.कु.

पुळावणहार, हारो (हारी), पुळावणियो—वि० ।

पुळाविग्रोड़ो, पुळावियोड़ो, पुळाव्योड़ो—भू०का०कृ० ।

पुळावीजणो, पुळावीजबो—कर्म वा० । भाव वा० ।

पुळावियोड़ो—१ देखो 'पुळायोड़ो' (रू.भे.)

२ देखो 'पुळियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० पुळावियोड़ी)

पुळिंद-सं०पु० [सं० पुलिंदक] १ भारत में निवास करने वाली एक प्राचीन असभ्य जाति ।

२ इस जाति का व्यक्ति ।

उ०—१ ग्राह गोह गयंदा, देखव्याघ मदंदा । पेख ग्रोप पुलिंदा, पयोध नघ पार ।—र.ज.प्र.

उ०—२ बलमीक पुलिंद रिखीवाणो, कीधो गुर सुकनाधिप काणो ।—र.ज.प्र.

३ इस जाति का निवास करने का भू-भाग ।

४ देखो 'पुरंदर' (रू.भे.)

उ०—१ घोरा मरदन पुलिंद पास करि, धेनुक बच्छक ताड्या । विद्याधर नळं विख ग्रप हरीयो, कंटक कोटि विभाड्या ।—रुकमणी मंगळ

उ०—२ बादळां दिखणी दळां लूंबिया चहुंवै-वळां । दांमणी चमंकै कूंत रचै महा इंद । ऊतारियो नंद धांम नंद रै पुळिंद आयां, नंद ग्रांम ऊतारियो 'छावाळ' रै नंद ।—देवीसिंघ हाडा री गीत

पुळिंदर—देखो 'पुरंदर' (रू.भे.)

उ०—१ लिखमीवर इहड़ा ब्रिद लीधा, के पहळाद पुळिंदर कीधा ।—पी.ग्रं.

उ०—२ नर-नाराइण निमो, ध्यांन धरियो धरणी-धरि । पेखि रूप परम रो, प्रघळ कांपियो पुळिंदर ।—पी.ग्रं.

उ०—३ मेर-गिरंद जिसा घर मंडप, सत्त-समंद अखूट सरोवर । द्वादस कोट विसम्भर दीपक, चंद अरयक पुळिंदर चाकर ।—पि.प्र.

पुळिया-सं०स्त्री [?] ताप्ती नदी की सहायक एक छोटी नदी जिसका उल्लेख महाभारत में भी है ।

पुळियो-सं०पु० [सं० पुल=ढेर+रा.प्र.ग्रो] लपेटे हुए कागज, कपड़े आदि का छोटा गट्ठर, बंडल ।

पुळिण, पुलिण—देखो 'पुलिन' (रू.भे.)

उ०—पुलिण रवि-सुता फहरावजै पीत-पट, आवजै रासथळ व्रजनाथ आप । कांन कंवार विहरि गळी ब्रज-कुंज री, सुभ रळी कीजियै लाडली साथ ।—वां दा.

पुलित-सं०पु० [सं० प्लुतिः] १ स्वर का एक भेद जिसके उच्चारण में दीर्घ से भी अधिक समय लगता है और तीन मात्रा का होता है ।

उ०—लघु तैं दीरघ पुन पुलित, यां मात्रा दपकाय । त्यां छोटे न वड किय 'पता', वडे महांन वड़ाय ।—जैतदांन बारहठ

[सं० प्लुतं] २ घोड़े की एक चाल विशेष । (शा.हो.)

३ उछलते हुए चलना, सरपट चाल ।

४ छलांग, फलांग ।

पुलिन-सं०पु० [सं० पुलिनं या पुलिनः] १ नदी का रेतीला तट ।

२ नदी का तट । (अ.मा.)

उ०—परणीजै मधुपुरी, 'अभो' व्रंदावन आयो । पेखि धांम सुख परम, अठां तीरथ मन भायो । पेखि निगम द्रुम पुंज, हेक सुख कुंज निहारै । हेक पुलिन हित करै, हेक जळ जमण विहारै ।—रा.रू.

रू०भे०—पळण, पुलण, पुळिण, पुलिण, पुलीण, पुलीन ।

पुळियार-वि० [सं० पलायनकार] भागने वाला ।

उ०—जसराज रा वचनां में मीणां रो इसो अघरम जांणि नेत्रां में जळ आंणि कुमार कहियो—चोरै चढ़ चाल्यां इसड़ा अनरथ रा करणहार अंत्यज पुळियार होइ जीवता रहि जावै ।—वं.भा.

सं०स्त्री० [सं० पलायनम्] भागने की क्रिया या भाव, भगदड़ ।

पुळियोड़ो-भू०का०कृ०—१ कूच किया हुआ, प्रस्थान किया हुआ, रवाने हुवा हुआ ।

२ गमन किया हुआ, गया हुआ, चला हुआ ।

३ किसी प्रकार की गति से युक्त होकर आगे बढ़ा हुआ, बहा हुआ ।

४ अधिक वेग से चला हुआ, दौड़ा हुआ ।

५ भय, संकट आदि से बचने के लिए भागा हुआ, द्रुत गति से चला हुआ ।

६ नष्ट हुवा हुआ, मिटा हुवा हुआ ।

७ खिसका हुआ, हिला हुआ, हटा हुआ।
(स्त्री० पुळियोड़ी)

पुळिस-सं०पु० [अं० पुलिस] १ राज्य की आन्तरिक शान्ति व्यवस्था बनाए रखने व प्रजा के धन माल की सुरक्षा रखने हेतु बनाया हुआ एक राजकीय विभाग।
२ उक्त विभाग के अन्तर्गत सुरक्षात्मक कार्य करने वाले कर्मचारियों का दल।
३ उस दल का व्यक्ति।

पुळी-सं०स्त्री० [देशज] १ छोटे बछड़े के निकलते हुए सींगों का ऊपरी आवरण या भाग। उ०—सींगां पुळी न संचरी, पगां न ठेठर बंध। दूध पीयंतं बाछड़ै, दियो महाभड़ कंध।
—महाराजा मानसिंह जोधपुर
२ एक प्रकार की काले और भूरे रंग की चिड़िया।

पुलीण, पुलीन—देखो 'पुलिन' (रू.भे.)
उ०—ग्रीखम गिर लागा जळन, सखर निकट पुलीन(ण)। वूभंगो कंसे विपिन, परस्यां विना प्रवीण।

पुलोम-सं०पु० [सं० पुलोमन्] १ एक दैत्य जिसकी कन्या 'शची' इन्द्र को ब्याही गई थी।
२ एक राक्षस का नाम।
यौ०—पुलोमजा।
रू०भे०—पुलम।

पुलोमजा-सं०स्त्री० [सं०] पुलोम नामक दैत्य की पुत्री 'शची' जो इन्द्र को ब्याही गई थी, इंद्राणी।
यौ०—पुलोमजापति।
रू०भे०—पुलमजा।

पुलोमजापति-सं०पु० [सं०] शचिपति इन्द्र।
रू०भे०—पुलमजापति।

पुलोमा-सं०स्त्री० [सं०] महर्षि भृगु की पत्नी का नाम।
वि०वि०—यह वैश्वानर नामक राक्षस की कन्या थी तथा च्यवन ऋषि की माता थी।

पुळौ-सं०पु० [सं० प्लुतं] १ घोड़े की एक चाल विशेष, पोई।
२ देखो 'पूळौ' (रू.भे.)

पुल्यंदर—देखो 'पुरदर' (रू.भे.)
उ०—ग्रहां सिरि सरां देवां सिरै गढपत्यां, स ऊजळ हलूरां उरड़ साभाव। जेठ आसोज नभ मास वारह जतू। रवि उदधि पुल्यंदर संभरी राव।—भगतरांम हाडा री गीत।

पुल्लिग-सं०पु० [सं०] पुरुप चिह्न वाला।
रू०भे०—पूंलिग, पुरलिग।

पुल्ली-सं०स्त्री० [देशज] घोड़े के सुम के ऊपर का भाग।

पुव—देखो 'पूरव' (रू.भे.)

पुवन—देखो 'पवन' (रू.भे.)
उ०—और राहण रै लोग सहर रै लोग छतीस पुवन बधाई दीवी।
—कुंवरसी सांखला री वारता

पुवभव—देखो 'पूरवभव' (रू.भे.)
उ०—वोलइ गुरु धरम घोसु, पुवभवि ए पांच ए कुण बीय ए।
—पं.पं.च.

पुवांड—देखो 'पमाड' (रू.भे.) (डिं.को.)

पुवाड़ौ—देखो 'प्रवाड़ौ' (रू.भे.)
उ०—प्रथम पुवाड़इ पूतना सोखी, मर दळियो मुमाल। ए हरि नई आगई दावानळ, दावण नई कुळि काळ।—रुकमणी मंगळ

पुव्वंग—देखो 'पूरवांग' (रू.भे.) (जैन)

पुव्व—देखो 'पूरव' (रू.भे.)
उ०—१ चोरासी पुव्व लाख वरस पाल्यो जिण आयु। पांचसै धनुम प्रमांण काय राजै जगराय।—ध.व.ग्रं.
उ०—२ पुव्व दिसि आसण आइ वैसैं पहू। सुरकृत चोमुख रूप देखे सहू।—ध.व.ग्रं.

पुव्वभव—देखो 'पूरवभव' (रू.भे.)

पुव्वांग—देखो 'पूरवांग' (रू.भे.) (जैन)

पुस—१ देखो 'पुस्य' (रू.भे.) (अ.मा.)
२ देखो 'पुस्प' (रू.भे.)

पुसकर—देखो 'पुस्कर' (रू.भे.) (डिं.को., अ.मा., ह.नां.)
उ०—घट में ही पुसकर श्री लोधेस्वर लछिमन कवर विलासी।
—मीरां

पुसकरचूड़-सं०पु०यौ० [सं० पुस्करचूड] एक दिग्गज का नाम।

पुसकरणा-सं०स्त्री० [सं० पुष्करणा] ब्राह्मण वर्णान्तर्गत एक प्रसिद्ध जाति।
रू०भे०—पुहकरणा, पोकरणा, पोहकरणा।

पुसकरणी-सं०स्त्री० [सं० पुष्करिणी] १ हस्थिनी।
२ देखो 'पुसकरणी' (स्त्री०)
रू०भे०—पुहकरणी, पोहकरणी।

पुसकरणौ-सं०पु०—पुष्करणा जाति का व्यक्ति।
रू०भे०—पुहकरणौ, पो'करणौ, पोहकरणौ।

पुसकरनाम—देखो 'पुस्करनाभ' (रू.भे.)

पुसकरपांन-सं०पु०यौ० [सं० पुष्कर-पर्ण] यज्ञ की वेदी बनाने के उपयोग में ली जाने वाली ईंट।

पुसकरमुख-सं०पु०यौ० [सं० पुष्करमुख] हाथी की सूंड का विवर।

पुसकरमूळ—देखो 'पुस्करमूळ' (रू.भे.)

पुसकराक्ष, पुसकराख-वि० [सं० पुष्कराक्ष] कमलनयन।
सं०पु०—विष्णु।

पुसकरावती-सं०स्त्री० [सं० पुष्करावती] एक प्राचीन नदी का नाम।

पुसकरियो—देखो 'पुस्कर' (अल्पा., रू.भे.)

पुसकरी—देखो 'पुस्करी' (रू.भे.)

पुसकळ—देखो 'पुस्कळ' (रू.भे.)
पुसकळक-सं०पु० [सं॰ पुष्कलक] कस्तूरीमृग ।
पुसकळावती-सं०स्त्री० [सं० पुष्कलावती] गांधार देश की प्राचीन राजधानी का नाम जिसे भरत के पुत्र पुष्कल ने बसाई थी ।
पुसट—देखो 'पुस्ट' (रू.भे.)
पुसटता—देखो 'पुस्टता' (रू.भे.)
पुसटाई—देखो 'पुस्टाई' (रू.भे.)
पुसटी—देखो 'पुस्टी' (रू.भे.)
पुसटीकरण—देखो 'पुस्टीकरण' (रू.भे.)
पुसटीमत—देखो 'पुस्टीमारग' ।
पुसटीमारग—देखो 'पुस्टीमारग' (रू.भे.)
पुसत—देखो 'पुस्त' (रू.भे.)
पुसतक—देखो 'पुस्तक' (रू.भे.)
उ०—पारेवी ज्यूं पुसतकां, कुकुर वाज वस थाय । पांखां ज्यूं ही पानड़ा, जत्र तत्र ह्वं जाय ।—बां.दा.
पुसतनांमो—देखो 'पुस्तकनांमो' (रू.भे.)
पुसतो—देखो 'पुस्तो' (रू.भे.)
पुसप—देखो 'पुस्प' (रू.भे.) (ह.नां.मा., अ.मा.)
पुसपकरंड-सं०पु० [सं० पुष्पकरंडक] १ फूल रखने की डलिया ।
२ उज्जयिनी के शिवोद्यान का नाम ।
पुसपकाळ-सं०पु० [सं० पुष्पकाल] वसंत ऋतु (अ.मा.)
पुसपकीट-सं०पु० [सं० पुष्पकीट] भौंरा (ना.डि.को.)
पुसपकेतु-सं०पु० [सं० पुष्पकेतु] कामदेव (ना.डि.को.)
पुसपगंध-सं०पु० [सं० पुष्पगंध] १ भौंरा (ह.नां.मा.)
२ जूही ।
पुसपचाप—देखो 'पुस्पचाप' (ह.नां.मा.)
पुसपदंत—देखो 'पुस्पदंत' (रू.भे.)
पुसपधनवा—देखो 'पुस्पधन्वा' (रू.भे.)
पुसपधनु—देखो 'पुस्पधनु' (रू.भे.)
पुसपनखत—देखो 'पुस्पनक्षत्र' (रू.भे.)
पुसपपुर—देखो 'पुस्पपुर' (रू.भे.)
पुसपबांण—देखो 'पुस्पबांण' (रू.भे.)
पुसपमाळ, पुसपमाळा—देखो 'पुस्पमाळा' (रू.भे.)
पुसपरस-सं०पु० [सं० पुष्परस] १ पराग, मकरंद (अ.मा.)
२ शहद (अ.मा.)
३ भौंरा (ह.नां.मा.)
पुसपवरखा, पुसपवरसा—देखो 'पुसपव्रस्टी' ।
पुसपवाटिका—देखो 'पुस्पवाटिका' (रू.भे.)
पुसपव्रस्टी-सं०स्त्री० [सं० पुष्पवृष्टि] फूलों को किसी के ऊपर गिराने की क्रिया, पुष्पवर्षा, फूलों का ऊपर से बरसना या बरसाया जाना, पुष्पवृष्टि ।
पुसपसजा, पुसपसज्जा—देखो 'पुस्पसजा' (रू.भे.)
पुसपसर-सं०पु० [सं० पुष्पसर] कामदेव (अ.मा.)
पुसबन—देखो 'पुस्प' (रू.भे.)
उ०—बनी तो लागे प्यारी रे, पुसबन की सुगंध सवाई रे ।
—लो.गी.
पुसरी—रक्त, खून (अ.मा.)
पुसळाई-सं०स्त्री० [देशज] द्वार पर लगा हुआ चार लकड़ियों का ढांचा जिसमें कपाट लगाए जाते हैं । बारसोत, चोखट ।
उ०—हाथी ताव तमांम, पोळणी घर पुसळाई । नैड़ी धैड़ी तणी, जाळ वसतुवां वणाई ।—दसदेव
पुसळी—देखो 'पुसी' (अल्पा० रू.भे.)
उ०—बहतो जळ छोटेह, पुसळी भर पीधो नहीं । नैनकड़े नाडेह, जीव न धापै जेठवा ।—जेठवा
पुसाणो, पुसावो-क्रि०स० [...] देखो 'पोसाणो, पोसावो' (रू.भे.)
पुसायोड़ो—देखो 'पोसायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० पुसायोड़ी)
पुसी-सं०स्त्री० [सं० प्रसर] १ गहरी की हुई हथेली, करतल-पुट, पसर ।
उ०—तैं मुख-कमळ सुदांमा तंदुल । पाया बिलकुल भरे पुसी ।
—र.ज.प्र.
२ गहरी की हुई हथेली में समाने योग्य किसी पदार्थ की मात्रा ।
रू०भे०—पस ।
अल्पा०—पुसळी, पूसळी ।
पुस्कर-सं०पु० [सं० पुष्कर] १ जल, पानी ।
२ कमल ।
३ नील कमल ।
४ तालाब, सरोवर ।
५ आकाश, अंतरिक्ष ।
६ तलवार की धार ।
७ तलवार (कविराजा बांकीदास)
८ तलवार का म्यान (कविराजा बांकीदास)
९ तीर, बांण ।
१० हाथी की जिह्वा का अग्र भाग ।
११ हाथी की सूंड का अग्र भाग ।
१२ युद्ध, लड़ाई ।
१३ सर्प विशेष ।
१४ विष्णु का एक नाम ।
१५ शिव ।
१६ सूर्य, भानु ।
१७ भग्न पाद नक्षत्र का एक अशुभ योग ।
१८ ढोल की चाम ।
१९ ढोलक का मुख ।

२० अनावृष्टि सूचक बादल।
२१ ब्रह्माण्ड के सात विशाल भागों में एक।
२२ अजमेर के पास एक तीर्थ स्थान (राजस्थान)
२३ पीले और बादामी रंग का मृग जिसके सींग छोटे होते हैं।
वि०—कोमल। * (हि.को.)
रू०भे०—पुकर, पुक्कर, पुखर, पुसकर, पुसकरण, पुहकर, पो'कर, पो'खर, पोहकर, पौ'कर, पोहकर, पौहकरण।
अल्पा०—पुसकरियौ, पुस्करियौ।

पुस्करनाभ-सं०पु०यौ० [सं० पुष्करनाभ] विष्णु।
रू०भे०—पुसकरनाभ, पुहकरनाभ, पोहकरनाभ, पौहकरनाभ।

पुस्करमूळ-सं०पु०यौ० [सं० पुष्करमूल] कश्मीर में होने वाली एक प्रकार की वनस्पत्ति की जड़ जो औषध-प्रयोग में ली जाती है।
रू०भे०—पुकरमूळ, पुसकरमूळ, पुहकरमूळ, पोकरमूळ, पोखरमूळ, पो'मूळ, पोहकरमूळ, पौहकरमूळ।

पुस्करवरत-सं०पु० [स० पुष्करावर्त्तक] मेघों के एक विशेष अधिपति।
रू०भे०—पुक्खरवरत।

पुस्करियौ—देखो 'पुस्कर' (अल्पा०, रू.भे.)

पुस्करी सं०पु० [सं० पुष्करिन्] हाथी।
रू०भे०—पुसकरी, पो'करी, पो'हकरी, पौहकरी।

पुस्कळ-वि० [सं० पुष्कल] बहुत, विपुल, अत्यन्त, अधिक।
उ०—अस लेतां हरखित अपै, पुस्कळ नांणौ पीव। पिण पिसणां देणौ पड़ै, जमी मोल निज जीव।—रेवतसिंह भाटी
रू०भे०—पुसकळ।

पुस्ट-वि० [सं० पुष्ट] १ पोषण किया हुआ, पाला हुआ। (हि.को.)
२ मोटा-ताजा, हृष्ट-पुष्ट।
३ अच्छी तरह सम्पन्न, पूर्ण सम्पन्न।
उ०—जे वस्त्र राख्या जिणरी पडिलेहण न करै अनै न भोगवै तौ विसेस कस्ट उपजै तिण सूं पोशौ अपूठौ पुस्ट होवै।—भि.द्र.
४ बलवर्द्धक, मोटाताजा बनाने वाला।
५ पूर्ण, पूरा।
६ पक्का।
रू०भे०—पुसट।

पुस्टता-सं०स्त्री० [सं० पुस्ट+रा.प्र.ता] पुष्ट होने का भाव, पुष्टि।
रू०भे०—पुसटता।

पुस्टाई-सं०स्त्री० [सं० पुष्ट+रा.प्र.आई] पुष्टता, पुष्टि।
रू०भे०—पुसटाई।

पुस्टि-सं०स्त्री० [सं० पुष्टि] १ पोषण। २ बलिष्ठता। ३ मोटापन, ताजापन। ४ बात का समर्थन, पक्कापन। ५ वृद्धि, पूर्णता।
६ सोलह मात्राओं में से एक।
रू०भे०—पुसटी, पुस्टी।

पुस्टिकर-वि० [सं० पुष्टिकर] बलवर्धक, पुष्ट करने वाला।

पुस्टिकरण-वि० [सं० पुस्टि+कर] पुष्ट करने वाला, शक्तिवर्द्धक।
रू०भे०—पुसटीकरण।

पुस्टिमत-सं०पु० [सं० पुष्टिमत] देखो 'पुष्टिमारग'।

पुस्टिमारग-सं०पु०यौ० [सं० पुष्टिमार्ग] वल्लभाचार्य के मतानुकूल, वैष्णव भक्ति-मार्ग।
रू०भे०—पुसटीमारग।

पुस्तंग-सं०पु० [फा० पुश्त+सं.अंग] १ घोड़े के पिछले पैरों का ऊपरी भाग या हिस्सा।
मुहा०—पुस्तंग छांटणौ—घोड़े का पिछले दोनों पैरों को एक साथ उठा कर आघात मारना।
२ घोड़े के पिछले पैरों में होने वाला एक रोग विशेष। (शा.हो.)
३ घोड़े की पीठ के नीचे रहने वाला पट्टा।
उ०—कांधळजी घोड़ौ खुरी करावता ताहरां सदा तंग, पुस्तंग, दुमची आगवंध तूट जावता सु तूट गया।—नैणसी
रू०भे०—पुस्तग।

पुस्त-सं०स्त्री० [फा० पुश्त=] १ किसी पदार्थ का पृष्ठ-भाग, पृष्ठ-प्रदेश, पीछा।
२ मनुष्य, पशु आदि का पृष्ठ भाग, पीठ।
उ०—पैसवाज र पट्टै के जुदे तार, टूटी सी अंगिया अर फाटी सी इजार। चश्मां में काजळ का अैसा वणाव, कुत्ते की पुस्त पर खसेरण का घाव।—दुरगादत्त बारहठ
३ वंशानुक्रम की प्रत्येक कड़ी या स्थान जिस पर कोई पुरुष हुआ हो या होने को हो, पीढी।
उ०—थे साची बातां कही पण महड़ी ना होय, सात पुस्त री जायगां छोड सकै न कोय।—महाराजा जयसिंह आमेर रा धणी री वारता
४ देखो 'पुस्ती' (रू.भे.)
रू०भे०—पुसत।

पुस्तक-सं०स्त्री० [सं० पुस्तकं] १ छपे हुए या हाथ से लिखे हुए कागजों का जिल्द-बंध रूप।
[फा० पुश्तक] २ घोड़े द्वारा पिछले दोनों पैर उठा कर किया जाने वाला आघात, दौलत्ती।

पुस्तकप्रकास-सं०पु० [सं० पुस्तकप्रकाश] पुस्तकों के रखने का स्थान, पुस्तकालय।

पुस्तकसाळ (ळा)-सं०स्त्री० [सं० पुस्तकशाला] पुस्तकालय।

पुस्तकाकार-सं०पु० [सं०] पुस्तक के आकार का रूप जो पुस्तक के रूप में हो।

पुस्तकालय-सं०पु० [सं०] वह भवन या स्थान जहां पर अनेक विषयों की अनेक पुस्तकें जनता के अध्ययनार्थ रखी गई हों, पुस्तकों का संग्रह स्थान

पुस्तखार-सं०पु० [फा० पुश्तखार] पशुओं की पीठ खुजलाने के लिए लोहा, हाथी दांत, सींग आदि का बना उपकरण।

पुस्तग—देखो 'पुस्तंग' (रू.भे.)

उ०—तद कांघळजी घोड़े नूं कुदावता तद तंग, पुस्तग, दुमची तूट जावता ।—द.दा.

पुस्तनांमो-सं०पु० [फा० पुश्त+सं० नाम्न:] किसी वंश में उत्पन्न पुरुषों की पूर्वोत्तर क्रम की सूची ।

रू०भे०—पुसतनांमो ।

पुस्तबंद, पुस्तबंध-सं०स्त्री [फा० पुश्त+सं० बंध] पुश्ते की बंधाई, पुश्ता उठाने की क्रिया ।

पुस्तो-सं०स्त्री० [फा०] १ जळाघात या अन्य किसी प्रकार के आघात से सुरक्षित रखने हेतु दीवार या बांध के तल-पार्श्व भाग से लगा कर कुछ ऊपर उठा हुआ ईंट पत्थर मिट्टी आदि का बना भाग ।

२ पालण-पोषण ।

३ सहायता, मदद ।

४ मजबूती, दृढ़ता ।

उ०—हूं घर तोनूं सोंपियो थो, भलो बसायो, भलो राज री पुस्तो बांधी ।—ठा० राजसिंह रो वारता

रू०भे०—पुसतो

पुस्तैन-सं०स्त्री० [फा० पुश्त+रा.प्र.एन] पीढ़ी-दर-पीढ़ी, वंशपरंपरा ।

पुस्तैनी-वि० [फा०] १ वंशपरम्परा का ।

२ वह जो कई पीढ़ियों से चला आता हो, बाप दादों के समय का पुराना ।

३ भविष्य की पीढ़ियों तक चलने वाला ।

पुस्तो-सं०पु०—देखो 'पुसतो' (रू.भे.)

२ किताब की जिल्द के पुट्ठे पर लगा चमड़ा या कपड़ा ।

रू०भे०—पुसतो ।

पुस्प-सं०पु० [सं० पुष्प] १ पेड़ पौधों के फूल, कुसुम ।

उ०—वों पर एक सुवरणमय व्रक्ष, अम्रत-रस-फळ सुगंधमय पुस्प ।
—सिंघासण बत्तीसी

२ ऋतुमती स्त्री का रज ।

३ आंख का फूला नामक रोग ।

४ घोड़े के शरीर पर होने वाली चित्ती जो स्थान विशेष के कारण शुभ या अशुभ भी मानी जाती है (शा.हो.)

५ कुबेर का विमान ।

६ देखो 'पुस्य' (रू.भे.)

रू०भे०—पप, पहप, पहुप, पहोप, पुव्फ, पुप्फि, पुफ, पुस, पुसप, पुसवन, पुहप, पुहव, पुहुप, पूफ, पूहप, पोहप, पौहप ।

पुस्पक-सं०पु० [सं० पुष्पक] कुबेर का विमान ।

उ०—विना स्रम बैठत व्योम विमांण, जनारदन प्रेरक पुस्पक जांण ।
—क.का.

रू०भे०—पुसपक, पोहपविवांण ।

पुस्पचाप-सं०पु० [सं० पुष्पचाप] कामदेव ।

रू०भे०—पुसपचाप, पुहपचाप, पोहपचाप ।

पुस्पदंत, पुस्पदंती-सं०पु० [सं० पुष्पदंत (ती)] १ वायु कोण का दिग्गज (वं.भा.)

२ शिव का अनुचर, गंधर्व जिसने महिम्न स्तोत्र की रचना की है ।

३ एक प्रकार का नगर द्वार (प्राचीन)

रू०भे०—पहपदंती, पुप्फदंत, पुसपदंत, पुहपदंत, पोहपदंत ।

पुस्पधनु-सं०पु०यौ० [सं० पुष्पधनु] कामदेव ।

रू०भे०—पुसपधनु, पोहपधनु ।

पुस्पधन्वा-सं०पु०यौ० [सं० पुष्पधन्वा] कामदेव ।

रू०भे०—पप्पधनवा, पसपधन्वा ।

पुस्पध्वज-सं०पु०यौ० [सं० पुष्पध्वज] कामदेव ।

रू०भे०—पोहपधुज ।

पुस्पनक्षत्र—देखो 'पुस्यनक्षत्र' (रू.भे.)

पुस्पपति-सं०पु०यौ० [सं० पुष्पपति] कामदेव ।

रू०भे०—पोहपति ।

पुस्पपुर-सं०पु०यौ० [सं० पुष्पपुर] पाटलीपुत्र का एक नाम ।

रू०भे०—पुसपपुर, पुहपपुर, पोहपपुर ।

पुस्पमई-वि० [सं० पुष्प+मय] पुष्पयुक्त, पुष्पसहित ।

रू०भे०—पुपफमई ।

पुस्पमाळ, पुस्पमाळा-सं०स्त्री० [सं० पुष्पमाला] पुष्पहार, फूलों का हार । उ०—सज्ज करी दंत धावन स्नान की तैयारी रे वस्त्र और पुस्पमाळ तुलसी अति प्यारी ।—मीरां

रू०भे०—पहुपमाळ, पहुपमाळा, पुसपमाळ, पुसपमाळा, पुहपमाळ, पुहुपमाळा, पुहुपमाळ, पोहपमाळा ।

पुस्पमास-सं०पु० [सं० पुष्पमास] चैत्रमास ।

रू०भे०—पहपमास, पुहपमास, पुसपमास ।

पुस्परथ-सं०पु०यौ० [सं० पुष्परथ] एक प्रकार का रथ जिस पर चढ़ कर प्राचीन काल में राजे महाराजे हवा सेवन करने को जाते थे ।

पुस्पवाटिका-सं०स्त्री० [सं० पुष्पवाटिका] फूलों वाले वृक्षों या पौधों का बगीचा, फुलवारी ।

पुस्पसजा, पुस्पसज्जा-सं०स्त्री० [सं० पुष्पशय्या] वह शय्या जिस पर फूल बिछे हुए हों ।

रू०भे०—पुसपसजा, पुसपसज्जा ।

पुस्पसरासण-सं०पु० [सं० पुष्पशरासन] कामदेव ।

पुस्पांजळि, पुस्पांजळी-सं०स्त्री० [सं० पुष्पाञ्जलि] फूलों से भरी अंजली जो किसी देवता या महापुरुष को अर्पण की जाती है ।

रू०भे०—पहुपंजळि, पहुपंजळी, पहुपांजळी, पुहपांजळी ।

पुस्पा-सं०स्त्री० [सं० पुष्पा] आधुनिक चपारन का प्राचीन नाम ।

पुस्पाकर-सं०पु० [सं० पुष्पाकार] वसन्त ऋतु ।

पुस्पावळि-सं०स्त्री० [सं० पुष्पावली] पुष्प (नां.मा.)

पुस्पिका-सं०स्त्री० [सं० पुष्पिका] १ प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों या

उसके अध्यायों के अंत में लिखे जाने वाला समाप्ति सूचक वाक्य या वाक्य-समूह जिसमें प्रायः ग्रंथ रचयिता का नाम व संवत भी होता है (रहता है)

पुस्य-सं०पु० [सं० पुष्य] १ पोष मास का नाम।

२ अश्विनी, भरणी आदि सताईस नक्षत्रों में आठवां नक्षत्र जिसकी आकृति धनुष पर चढ़े हुए बाण के समान बताई गई है। इसको तिष्य भी कहते हैं। उ०—आदित्यवार अनड्वळी, मूल, मघा, रेवत्ति। पोढी पुस्य पुनरवसु, सेजि चढइ नंहि सत्य।—मा.कां.प्र.

रू०भे०—पुक्ष, पुख, पुस, पुस्य, पुहव; पूख, पूखा।

पुस्यनक्षत्र—देखो 'पुस्य'।

उ०—कांतीघर सेठ एक नवो मिंदर बणावै सो पुस्यनक्षत्र रविवार नूं वैरो नीव लगाई। पुस्यनक्षत्र नूं ही वैंरो कारज होवै।

—सिंघासण बत्तीसी

पुस्यमास-सं०पु० [सं० पुष्यमास] विक्रम संवत का दशमा मास, पोसमास।

वि०वि०—इस मास में पुस्य नक्षत्र का उदय होना माना जाता है इसलिए इसका यह नाम पड़ा।

रू०भे०—पुखमास।

पुस्यसनांन, पुस्यस्नांन-सं०पु०यो० [सं० पुष्यस्नान] पूस मास में चंद्रमा के पुष्य नक्षत्र में होने पर विघ्न शांति के लिए किया जाने वाला स्नान (प्रायः राजा महाराजा)

रू०भे०—पुखसनांन।

पुस्यारक-सं०पु० [सं० पुष्यार्क] १ रविवार के दिन होने वाला पुष्य नक्षत्र।

२ कर्क की संक्रांति में सूर्य के पुष्य नक्षत्र में होने पर होने वाला एक योग (ज्योतिष)

रू०भे०—पुख्यारक।

पुह—देखो 'प्रथ्वी' (रू.भे.) (डिं.को.)

पुहकर—देखो 'पुस्कर' (रू.भे.)

(अ.मा., डिं.को., डिं.नां.मा., नां.मा, ह.नां मा.)

उ०—जळ गंगा जमुना पुहकर जळ। दळ ग्रह दरम छिड़क तुळछी दळ।—रा.रू.

पुहकरणा—देखो 'पुसकरणा' (रू.भे.)

पुहकरणो—देखो 'पुसकरणो' (रू.भे.)

(स्त्री० पुहकरणी)

पुहकरनाभ—देखो 'पुस्करनाभ' (रू.भे.)

पुहकरमूळ—देखो 'पुस्करमूळ' (रू.भे.) (अमरत)

पुहगाळ-सं०पु० [सं० प्रातःकाल या पुण्यकाल] प्रातःकाल, सवेरा।

उ०—एक दिवस आहेड़ा आळि, नळ राजा चढियो पुहगाळि।

—ढो.मा.

पुहण—देखो 'पुरण' (रू.भे.)

उ०—१ छाया खेजड़ तर भलो, पुहण भलो ज ऊंट।

—ढो.मा.

उ०—२ वीरम नूं तो रात आसुदा पुहण देनै साथे साथे देनै सोहण नूं चलायो।—नैणसी

पुहतणो, पुहतवो—देखो 'पहुंचणो, पहुंचवो' (रू.भे.)

उ०—१ स्री बळभद्र जी जुध कीयो। क्रसणजी रथि वैठा रुक-मणीजी नै लीयां आगै अकेला ही जाता था। रुखमइयो रुखमणीजी को भाई। अकेलो ही फिर आगै क्रसणजी नै पुहतो।

—वेलि टी.

उ०—२ सकळ गुणे सकज्ज, पांच दस परिखा पुहतो। आंण्यो म्हे ईतवार. मन सुध थाप्यो मुहतो।—ध.व ग्र.

उ०—३ ताहरां ईंदो विना जीमी ऊमरांणै पगे दौड़ी। पगोपग गई। आगै सात कोस लगनाथ गयो। जायनै जाळ हेठै नाथ सूतो, सो नाथ नूं तो नींद आय गई। इतरै ईंदो जाय पुहती।—नैणसी

पुहतणहार, हारो (हारी), पुहतणियो—वि०।

पुहतिओड़ो, पुहतियोड़ो, पुहत्योड़ो—भू०का०कृ०।

पुहतीजणो, पुहतीजवो—भाव वा०।

पुहतियोड़ो—देखो 'पुहुंचियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० पुहतियोड़ी)

पुहप—देखो 'पुस्प' (रू.भे.)

उ०—चौकी रूप पिलंग चढायै, विमळ पुहप घण सेज बिछायै।

—सू.प्र.

पुहपचाप—देखो 'पुस्पचाप' (रू.भे.)

पुहपदंत—देखो 'पुस्पदंत' (रू.भे.)

पुहपति-सं०पु० [सं० पुष्पपति] १ पुष्पपति, कामदेव।

उ०—वनसपति पुहपति विसतारै। भंवर गुंजार करै सुर भारै।

—सू.प्र.

२ पृथ्वीपति।

पुहपपुर—देखो 'पुस्पपुर' (रू.भे.)

पुहपमाळ, पुहपमाळा—देखो 'पुस्पमाळा' (रू.भे.)

उ०—चरचै चनण तूझ चीतोड़ा, पुहपमाळ पहरावै। दासपणो न करै दीवाळी, ईद तणै घर आवै।—महारांणा उदयसिंह रो गीत

पुहपवती-सं०स्त्री० [सं० पुष्पवती] पुष्पवती, फूलोंवाली, फूलों से युक्त। उ०—लता जु पुहपवती छै सु ए रजस्वळा कही छै। तांह सों पवन परस करै छै। इह मतवाळा अग छै।—वेलि टी.

पुहपांजळी—देखो 'पुस्पांजळी' (रू.भे.)

उ०—पात्र पुहपां सुं अंजळि भरि अरि मंत्र पढै छै। बीचि परी-यचि वाचि त्यै छै। तब पुहपांजळी होइ छै।—वेलि टी.

पुहपाई, पुहपावती-सं०स्त्री० [सं० पुष्पावती] पुष्पावती नगरी।

उ०—पुहपावती जई नई पुहंता, कुंदणपुर मेल्हांण।

—रुकमणी मंगळ

पुहम, पुहमि, पुहमी—देखो 'प्रथवी' (रू.भे.)

उ०—१ सातें सर ऊपर भया, पुहम पलटि गत नीर। मछळी वसै अकास मैं, लगी प्रेम की सीर।—ह.पु.वा.

उ०—२ भेळौ तैं कीधौ भलौ, जळहर नै जळजाळ। धुन मुधरी पुहमी ध्रवें, दुसह निवार दुकाळ।—बां.दा.

पुहर, पुहरि, पुहरी—देखो 'प्रहर' (रू.भे.)

उ०—१ और बाळक जितरौ वरस दिन माहे वधै, तितरै रुकमणी जी एक महीना मांहे वधै। और महीना माहे वधै। तितरौ रुकमणी जी एक पुहर मांहे वधै।—वेलि टी.

उ०—२ लेख लिखांणा आयस दीधा, फिरइ दिसि ऊपह्लांणा। करी सजाई पुहर पाछि लइ, तेड्या राउत रांणा।—कां.दे प्र.

उ०—३ अति आणंद ऊमाहियउ, वहइ ज पूगळ वट्ट। तीजइ पुहरि उलांघियउ, आडावाळा रउ घट्ट।—ढो.मा.

उ०—४ राजा कांन्हड़दे तणइ कटकि, पाछिलइ पुहरि कडाहि चडइ।—कां.दे.प्र.

उ०—५ अठ पुहरी पोसउ लीजियइ, चउ विहार विधि सुं कीजियइ।—स.कु.

पुहरौ—देखो 'पहरौ' (रू.भे.)

उ०—१ मर जीवउ पांणी तणउ, साल्ह उघट नइ खाइ। दुख सहणा पुहरा दियण, कंत दिसाउरि जाय।—ढो.मा.

उ०—२ जावतां जावतां एकै उद्यान वन विखै आयूण हूवौ ताहरां चारे बोलीया—रोही री समीयौ छै। पुहरै पुळी सावचेत रहणौ।—चौबोली

पुहव—१ देखो 'पुस्य' (रू.भे.)

उ०—विख राजा(न) वीनती दाखि, पुहव-लगन ताइ नहीं पछइ। प्रभु थे अंबावती पधारउ, आठै पहरें लगन अछइ।

—महादेव पारवती री वेलि

२ देखो 'पुस्प' (रू.भे.)

पुहवि—देखो 'प्रथवी' (रू.भे.)

उ०—१ मरुधर देस मझारि, सकळ धन-धन्न समिद्धउ। नांमइ पूंगळ नयर, पुहवि सकळइ परसिद्धउ।—ढो मा.

उ०—२ पाल्हणसी पुहवि हि रह्यउ, अनि समहरचा सरगि। तिणि वेळा हीया भरी, राइ राइ रोवण लगि।—अ. वचनिका

पुहविपति, पुहविपत्ति—देखो 'प्रथवीपति' (रू.भे.)

उ०—हिंदुआं मोड़ राठोड़ मोटै हसम, पुहविपत्ति मांहि परताप प्राझौ। अनूपसिंह रावजी अटक कटके अडिग, आप सोजी करै जास आझौ।—ध.व ग्रं.

पुहवी, पुहवीइ—देखो 'प्रथवी' (रू भे.)

उ०—१ आलिमसाह अलावदी, पूछइ व्यास प्रभात। सयल परीक्षा तुं करइ, स्त्री की केती जाति। स्त्री की केती जाति, कहि न राघव सुविचारी। रूपवंत पतिव्रता, मूंघ सोहइ सुपियारी। हस्तनी चित्रणी कर संखिनी, पुहवी वडी पदमावती। इम भणइ विप्र साचउ वयण, आलमसाह अलावदी।—प.च.चौ.

उ०—२ जूड़ा जोड़ा परयंक पेसणी पात्र पुंज कटि करवाळ पुहवी में पैठी तौ भी मंतु विहूण जनक रौ मित्र मारणा मैं म्हारौ तौ मन आघात रौ उत्करस न मानै।—वं.भा.

उ०—३ हउ कीधउ सुरतांणस्यूं तास कथा संबंध। चाहूआंण गुण वरणवूं पुहवीइ प्राकृत बंध।—कां.दे.प्र.

पुहवीधर—देखो 'प्रथवीधर' (रू.भे.)

पुहवीस—देखो 'प्रथवीस' (रू.भे.)

उ०—मालव देस रा पच्छिम प्रांत रौ पुहवीस, रतळांम नगर रौ वसावणहार।—वं.भा.

पुहुंचणौ, पुहुंचबौ—देखो 'पहुंचणौ, पहुंचबौ' (रू.भे.)

उ०—ढोलइ मनह विमासियउ, एक करीजइ एम। करहइ चढ़ि आपां खड़ां, नरवर पुहुंचां जेम।—ढो.मा.

पुहुंचणहार, हारौ (हारी), पुहुंचणियौ—वि०।

पुहुंचाड़णौ, पुहुंचाड़बौ, पुहुंचाणौ, पुहुंचाबौ, पुहुंचावणौ, पुहुंचावबौ —सक०रू०।

पुहुंचोओड़ौ, पुहुंचियोड़ौ. पुहुंच्योड़ौ—भू०का०कृ०।

पुहुंचीजणौ, पुहुंचीजबौ—भाव वा०।

पुहुचाडणौ, पुहुंचाडबौ—देखो 'पहुंचाणौ, पहुंचाबौ' (रू.भे.)

उ०—परघू सहू परधांन पणि, पुहुंचाडवा पुलंति। ब्रह्मा सनक सरीखड़ा, अंतर को न कलंति।—मा.कां.प्र.

पुहुंचाडणहार, हारौ (हारी), पुहुंचाडणियौ—वि०।

पुहुंचाडिओड़ौ, पुहुंचाडियोड़ौ, पुहुचाडयोड़ौ—भू०का०कृ०।

पुहुंचाडीजणौ, पुहुचाडीजबौ—कर्म वा०।

पुहुंचाडियोड़ौ—देखो 'पहुंचायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० पुहुंचाडियोड़ी)

पुहुंचाणौ, पुहुंचाबौ—देखो 'पहुंचाणौ, पहुंचाबौ' (रू.भे.)

पुहुंचाणहार, हारौ (हारी), पुहुंचाणियौ—वि०।

पुहुंचायोड़ौ—भू०का०कृ०।

पुहुंचाईजणौ, पुहुंचाईजबौ—कर्म वा०।

पुहुंचायोड़ौ—देखो 'पहुंचायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० पुहुंचायोड़ी)

पुहुंचावणौ, पुहुंचावबौ—देखो 'पहुंचाणौ, पहुंचाबौ' (रू.भे.)

पुहुंचावणहार, हारौ (हारी), पुहुंचावणियौ—वि०।

पुहुंचाविओड़ौ, पुहुंचावियोड़ौ, पुहुंचाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

पुहुंचावीजणौ, पुहुंचावीजबौ—कर्म वा०।

पुहुंचावियोड़ौ—देखो 'पहुंचायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० पुहुंचावियोड़ी)

पहुंचियोड़ौ—देखो 'पहुंचियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० पहुंचिओड़ी)

पुहुंतणो, पुहुंतबो—देखो 'पहुचणो, पहुंचबो' (रू.भे.)

उ०—लूंणग हाथी री सूंड उरी लेनै घोड़ा री पाहोरी मांहे घाती। अतरै बीजो ही साथ पातसाही आय पुहुंतो, तिको पातसाह नूं पकड़ लेगयो।—नैणसी

पुहुंतणहार, हारो (हारी), पुहुंतणियो—वि०।

पुहुंतिग्रोड़ो, पुहुंतियोड़ो, पुहुंत्योड़ो—भू०का०कृ०।

पुहुंतीजणो, पुहुंतीजबो—भाव वा०।

पुहुंतियोड़ो—देखो 'पहुचियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० पुहुंतियोड़ी)

पुहुण—देखो 'पूरण' (रू.भे.)

उ०—इतरी बात करतां ही मेरां श्रासथांन रै गुढ़ा रा तीन पुहुण लीया। इण रा गुढ़ा रा लोग पुकारता इणां श्रागै आया।—नैणसी

पुहुतणो, पुहुतबो—देखो 'पहुचणो, पहुंचबो' (रू.भे.)

उ०—ताहरां सिखरै जी बाकरै री कांन चीरनै साथै बांध लियो नै जाय तळाव पुहुता।—नैणसी

उ०—२ निरखइ नगर कामावती, कांमसेन भूपाळ। गढ़ मढ़ मंदिर अति भलां, तिहां पुहुतु ततकाळ।—मा.कां.प्र.

पुहुतणहार, हारो (हारी), पुहुतणियो—वि०।

पुहुतिग्रोड़ो, पुहुतियोड़ो, पुहुत्योड़ो—भू०का०कृ०।

पुहुतीजणो, पुहुतीजबो—भाव०वा०।

पुहुतियोड़ो—देखो 'पहुचियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० पहुतियोड़ी)

पुहुप—देखो 'पुस्प' (रू.भे.)

पुहुपमाळ—देखो 'पुस्पमाळा' (रू.भे.)

उ०—देहा विलेप स्रीखंड ढाल। मालती चंपका पुहुपमाळ।

—गु.रू.बं.

पुहुरायत—देखो 'पो'रायत' (रू.भे.)

उ०—पुहुरायत पूठियया, श्रहीग्रा वळी तलार। दीवटीया दह दिशि रह्या, पालीयात नहीं पार।—मा.कां.प्र.

पुहुवि, पुहोवी—देखो 'प्रथवी' (रू.भे.)

उ०—कूरव कूड न सीधउ काज, पुण्यइ पांडव पांम्यां राज। पुण्य प्रसंसा पुहुवि करी, पदमनाभ पंडित विस्तरी।—कां.दे.प्र.

पुहोवीधणी—देखो 'प्रथवीधणी' (रू.भे.)

उ०—स्त्री बाळक पुहोवीधणी रे, ए तिहुं एक समाव। रढ नवि छांडै आपणी रे, भावैं तौ घर जाय।—प.च.चौ.

पूं-सं०पु० [अनु०] अधोवायु के निकलसे समय उत्पन्न होने वाली ध्वनि।

पूंक—देखो 'पूंख' (रू.भे.)

पूंकड़ो—देखो 'पूंख' (अल्पा०, रू.भे.)

पूंकणो, पूंकबो—देखो 'प्रांखणो, प्रांखबो' (रू.भे.)

पूंकणहार, हारो (हारी), पूंकणियो—वि०।

पूंकिग्रोड़ो, पूंकियोड़ो, पूंक्योड़ो—भू०का०कृ०।

पूंकीजणो, पूंकीजबो—कर्म वा०।

पूंकियोड़ो—देखो 'प्रांखियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० पूंकियोड़ी)

पूंख-सं०पु० [सं० प्रङ्ख] १ बाजरी का सिट्टा (मारवाड़)

उ०—मोटयार ठाकुरजी रा प्रसाद वास्ते खेतां में पूंख मतीरा लावण नै गयोड़ा हा।—रातवासौ

२ ज्वार का सिट्टा (किशनगढ)

३ मक्का का भुट्टा (मेवाड़, डूंगरपुर)

४ खेत की सीमा या मेढ (किशनगढ)

रू०भे०—पूंक।

अल्पा०—पूंकड़ो, पूंखड़ो।

पूंखणो, पूंखबो—देखो 'प्रांखणो, प्रांखबो' (रू.भे.)

उ०—१ गावै जोगणि गीत, ऊडै सर सांम्हा अखत। वेद भणै नारद ब्रहम, पूंखै अच्छर प्रवीत।—वचनिका

उ०—२ पुड़ करै पंखणी अपच्छर पूंखै, धार तोरण श्रणी वदं खग घोड़। विकट लाडी वणी वींद बांको, मयंक री परणजै बांधियां मौड़।—गोपाळदास चांपावत री गीत

उ०—२ पुड़ धर पंख जोगणी पूंखै, निधक घाव दमांम निहाव। चौरंग सूधै पगै चालियो, रोद घड़ा दिस बांको राव।

—दूदा नगराजोत री गीत

पूंखणहार, हारो (हारी), पूंखणियो—वि०।

पूंखिग्रोड़ो, पूंखियोड़ो, पूंख्योड़ो—भू०का०कृ०।

पूंखीजणो, पूंखीजबो—कर्म वा०।

पूंखाळो-वि०पु० [राज० पूंख+सं० आलुच्] (स्त्री० पूंखाळी)

पूंख वाला।

पूंखियोड़ो—देखो 'प्रांखियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० पूंखियोड़ी)

पूंखियो-सं०पु०—१ घास विशेष।

२ देखो 'पूंख' (अल्पा., रू.भे.)

पूंग—देखो 'पूग' (रू.भे.)

पूंगड़ो-सं०पु० [देशज] (स्त्री० पूंगड़ी] १ प्रतिष्ठित संतान।

उ०—वीरमदेजी सिलाम करि कह्यो, हजरत म्हे घर रा धणी रजपूत जमींदार भोमियां छां पातिसाह रा पूंगड़ा म्हारै घर लायक नहीं।—वीरमदे सोनिगरा री वात

२ शाहजादा। उ०—१ तरै नवलाख रिपिया रोकड़ हाथ खरच नूं दिराइया श्रौर आवतां जावतां री रोकड़ खरच दिरायो। श्रौर बादसाह खुस होय कह्यो—जलाल बादसाह रै पूंगड़ा होय जैसा ही है।

—जलाल बूबना री वात

उ०—२ जोर जोवण चढी अणी नख जोड़ली, पिलंग पाधर पड़ी 'दलै' पाली। जावदी तणी घड़ पूंगड़ो जीव ले, होड ग्रहणा हसत छोड हाली।—नैणसी

रू०भे०—फूंबड़ो, फूदड़ो, फूदड़ो, फूमड़ो।

पूंगरण—देखो 'पंगरण' (रू.भे.)

उ०—भागो कंत लुकाय घण, लें खग आतां धाड़। पहर घणी चा पूंगरण, जीती खोल किवाड़।—वी.स.

पूंगळ-सं०पु०—बीकानेर राज्यान्तरगत एक भू भाग का नाम।

उ०—छापर मोहिल राज करै ताहरां मोहिलां नाळे'र सादूळ रांणंगदेवोत नूं पूंगळ मेल्हियो।—नैणसी

रू०भे०—पुंगळ, पुग्गळ, पूगळ, पूर्गळि।

पूंगी-सं०स्त्री० [देशज] सपेरे का फूंक वाद्य विशेष। उ०—१ दूजा गज री पोगर अरिसिंघ री पाघ ऊपर आयो जांणै पूंग्यां रा पूंज पर नागराज भोग उठायो।—वं.भा.

उ०—२ मिणधर, छत्रधर, अवर गेल मन, ताइ घर रज घर 'सींघ' सण। पूंगीदळ पातसाह पैरतां, फेरे कमळ न सहंसफण।

—महारांणा प्रताप री गीत

पूंगीफळ-सं०पु० [सं० पूगफल] सुपारी।

रू०भे०—पुंगीफळ, पूगफळ।

पूंगीधर-सं०पु० [राज० पूंगी+सं० धारिन्] 'पूंगी' को रखने वाला।

उ०—कळपै अकबर काय, गुण पूंगीधर गोड़िया। मिणधर छाबड़ मांय, पड़ै न रांण 'प्रतापसी'।—दुरसो आढो

पूंचणा—देखो 'पांचणा' (रू.भे.)

उ०—ताहरां छोकरी कह्यो—बाईजी! एघ सिरांवण बीजो तौ क्यूं ही नहीं। बाकरां रा पूंचणा तो घट मांहे छै।—नैणसी

पूंचाळ—देखो 'पूंचाळो' (मह., रू.भे.)

उ०—परी ईस जोगणि खग प्रभणै, सात पहर वीता जुध साल। गुड़सी कठै कमळ खग गांमां, पड़सी किण ठांमां पूंचाळ।

—महाराजा बळवंतसिंह गोठड़े री गीत

पूंचाळो-वि० [?] सामर्थ्यवान, शक्तिशाली, बाहुबल वाला।

उ०—१ रुख-रुख तीरां रुकड़ां, मुख मुख वीरां मौळ। पूंचाळा हेकण पखै, दल में प्रबळ दरोळ।—घी.स.

उ०—२ 'पातल' तणौ 'जसो' पूंचाळो। भाखर 'रिदै' तणौ भुरजाळो—रा.रू.

रू०भे०—पुंचालो, पूंछालो, पूचालो।

मह०—पुंचाळ, पूंचाळ, पूंछाळ।

पूंचियो—देखो 'पुणचो' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—ए रे गांवां के गोखं रांणी, पटवो पोवै छै पाटा जी, मेरे सायब को पो दे पूंचियो रांणी, सती माता नै नवसर हारो जी।—लो.गी.

पूंची-सं०पु० [?] १ चोरी का माल लाकर देने वाला व्यक्ति।

२ उक्त कार्य के बदले कार्यकर्त्ता को दिया जाने वाला धन, पारिश्रमिक (शेखावाटी)

३ बैल गाड़ी के अग्रभाग वाले लम्बे डण्डों के पिछले भाग पर चौड़े तख्ते के नीचे मजबूती के लिये लगाया जाने वाला डंडा। (मारवाड़)

४ बैलगाड़ी के पिछले भाग में लगाया जाने वाला लकड़ी का कटहरा।

५ देखो 'पुणची' (रू.भे.)

उ०—है कानै मोताहळ कर पूंची, कंठमाळ पै संकळ। राघो नांम विहूंणा, अनखाणो ढोर आदम्मी।—र.ज.प्र.

रू०भे०—पहुंची, पूछ, पूछी।

पूंचौ-सं०पु० [?] कलाई, मणिबंध।

उ०—फूटै पुड़ नोबत पड़ी, टूटै डंड निसांण। पेख सहेली पीव रै, पूंचै वधियो पांण।—वी.स.

२ देखो 'पुणचो' (रू.भे.)

पूंछ-सं०स्त्री० [सं० पुच्छ] १ गुदा मार्ग के ऊपर रीढ़ की हड्डी की संधि में या उससे निकल कर नीचे की ओर कुछ दूर तक लम्बा चला जाने वाला, मनुष्य से भिन्न अन्य प्राणियों के शरीर का एक भाग विशेष, दुम, लांगूल।

उ०—अदु रूप सिखर थळ दुम विमोह। स्त्रंगार चमर किर पूंछ सोह।—रा रू.

पर्या०—दुम, लांगूळ, लूम, वाळधी।

क्रि०प्र०—खेंचणी, पकड़णी, मरोड़णी।

मुहा०—१ पूंछ फलाणी = गलत सलाह देकर गुमराह करना, रूढ़िवादी बनाना।

२ पूंछ झालणी = रूढ़िवादी होना, लकीर का फकीर होना, हठ करना, जिद करना।

३ पूंछ पकड़णी=देखो 'पूंछ झालणी'।

४ पूंछ फटकारणी = क्रोध व्यक्त करना, काम बिगाड़ना, विघ्न डालना, असहमति प्रगट करना।

२ किसी पदार्थ के पीछे का भाग।

रू०भे०—पूंछ, पुच्छ, पुच्छी।

अल्पा०—पूंछड़ी, पूंछड़ो, पूंछियो, पूंछड़ो।

मह०—पूंछड़।

पूंछड़—देखो 'पूंछ' (मह., रू.भे.)

उ०—बांण यथा अरजुन तणां, हवूआ पूंछड़ जेम। विम तिम वधइ माहरइ, माधव-केरु प्रेम।—मा.कां.प्र.

पूंछड़तंग-सं०पु० [सं० पुच्छ+रा.प्र.ड़+तु.तंग] ऊंट के पारनामे का वह रस्सा जो ऊंट की पूंछ के नीचे रहता है, तथा बैल की झूल के पीछे रस्से का बना गाळिया जो बैल की पूंछ में पहनाया जाता है।

पूंछड़ी-सं०स्त्री०—देखो 'पूंछ' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—१ खड़ती सूवाड़ी बाड़ी विन खटकै। मरती मोछड़ियां पूंछड़ियां पटकै।—ऊ.का.

पूंछड़ो—देखो 'पूंछ' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—तरै मांस काट लेण नै आविया। तरै मूरख भैं रा मारिया सांम्हे न आविया नै पूंछड़ै दसा काटण लागा।

—कल्यांणसिंह नगराजोत बाढ़ेल री बात

पूंछडीलो-सं०पु० [सं० पुच्छ+रा प्र.डीलो] एक प्रकार का अशुभ घोड़ा। (शा.हो.)

पूंछणो, पूंछबो-क्रि०स० [सं० प्रोच्छन, प्रा०पोछन] गर्द, मैल अथवा गीली वस्तु को हाथ अथवा कपड़ा आदि से साफ करना, पोंछना।

उ०—कोरियोड़ा चित्रांमां री गळाई सगळा बोला बोला बैठा रह्या। ठगां रा सरदार री आंख्यां जळजळी होवण लागी तो वो आंख्यां नै गमछा सूं पूंछतां होळै सूं कह्यो।—फुलवाड़ी

पूंछणहार, हारौ (हारी), पूंछणियौ—वि०।

पूंछिग्रोड़ो, पूंछियोड़ो, पूंछ्योड़ो—भू०का०कृ०।

पूंछीजणो, पूंछीजबो—कर्म वा०।

पूंछबुवार-सं०पु० [सं० पुच्छ+राज.बुवार] पूंछ को जमीन पर घसीटता हुआ चलने वाला बैल। (अशुभ)

पूंछरेळ-वि० [सं० पुच्छ+रा.प्र.रेल] पूंछधारी।

उ०—तैहो लंक सांगा सौ जोजनां गिर्ण तूछरेल, मूछरेल अढंगां अयारां मेल मीच। डरावणो रूप रा दयंतां भांगा दूछरेल, भांमणे रांमरा लांगा पूंछरेळ भीच।—र.ज.प्र.

पूंछलतारो-सं०पु०यौ० [सं० पूंच्छ+तार] कभी-कभी उदित होने वाला वह तारा जिससे लगा हुआ भाप या कुहरे सा द्रव्य पूंछ के आकार में दूर तक दिखाई देता है।

पूंछवाळ-सं०पु०यौ० [सं० पुच्छ+वाल] बैल अथवा पशु की पूंछ के निचले भाग के बाल।

पूंछापांछ, पूंछापांछो-वि० [अनु०] अवशिष्ट, शेष, बचा हुआ।

सं०पु०—पोंछने की क्रिया या भाव।

पूंछाळ—देखो 'पूंचाळो' (मह., रू.भे.)

पूंछियोड़ो-भू०का०कृ०—गर्द, मैल, गीली वस्तु आदि को हाथ, कपड़ा आदि से साफ किया हुआ, पोंछा हुआ।

(स्त्री० पूंछियोड़ी)

पूंछियो—देखो १ 'पूंचो' (अल्पा., रू.भे.)

२ देखो 'पूंणयो' (अल्पा., रू.भे.)

पूंछी-सं०स्त्री० [सं० पुच्छ] चौपायों पर लिया जाने वाला कर विशेष (नैणसी)

पूंछेटणो, पूंछेटबो-क्रि०स० [सं० पुच्छ+रा.प्र. एटणो] तेज गति से चलाने हेतु बैलों का पूंछ मरोड़ना।

पूंछेटियोड़ो-भू०का०कृ०—तेज गति से चलाने हेतु पूंछ मरोड़ा हुआ। (बैल)

(स्त्री० पूंछेटियोड़ी)

पूंज-सं०पु० [सं० पुंज] १ बाजरी के सिट्टों का ढेर (मारवाड़)

२ घास का लंबा सीधा ऊंचा गंज।

३ देखो 'पुंज' (रू.भे.)

उ०—जरै वीरमदेजी तिण मोरचै 'घाघा' वांनर नै राखियो, सेलां रो गंज करायो, कटारियां रा पूंज दिराया।

—वीरमदे सोनिगरा री वात

४ देखो 'पूंजवाळ' (रू.भे.)

अल्पा०—पूंजळी।

पूंजड़ी—देखो 'पूंजी' (अल्पा०, रू.भे.)

पूंजण-सं०पु० [सं० परिमार्जनम्] सफाई करने का उपकरण (जैन)

उ०—ते सरीर री साता रै अरथै वस्त्रादिक आछा पाछा पूंजणादिक करै ते सावद्य छै।—भि.द्र.

पूंजणी-सं०स्त्री० [सं० प्रमाजिका] जैन साधु, साध्वी द्वारा जमीन बुहारने का कपड़े का अथवा सूत का बना चंवरनुमा उपकरण जिसे वे सदैव अपने पास रखते हैं। उ०—जे अढाई द्वीप बारला तरचंच स्रावक सांमायक पोसा करै ते किसी पूंजणी राखै छै।—भि.द्र.

रू०भे०—पउंजणी।

पूंजणो, पूंजबो-क्रि०स० [सं० पुंज+रा.प्र. णो] १ 'पूंजणी' या 'ओघा' द्वारा शरीर में होने वाली खुजली का मिटाना, खाज मिटाना।

उ०—१ जद स्वामीजी पाछो फरमायो पूंजनै खूणै ऊभा रहै।

—भि.द्र.

उ०—२ जद स्वामीजी बोल्या पूंजनै खाज खणै सो जाबता सांमायक रा करै कै काया रा करै है।—भि.द्र.

२ ओघा या पूंजणी द्वारा किसी स्थान का परिमार्जन करना।

पूंजणहार, हारौ (हारी), पूंजणियौ—वि०।

पूंजिग्रोड़ो, पूंजियोड़ो, पूंज्योड़ो—भू०का०कृ०।

पूंजीजणो, पूंजीजबो—कर्म वा०।

पूंजळो—देखो 'पूंज' (अल्पा., रू.भे.)

पूंजवाळ-सं०पु० [देशज] १ मूंज या डाभ का वह भाग जो एक बार रस्सी बुनने मे जोड़ा जाता है।

२ रस्सी या पलंग बुनते समय मूंज से गिर कर बिखरने वाला फूस।

पूंजी-सं०स्त्री० [सं० पुञ्ज] १ जोड़ा या जमा किया हुआ धन।

उ०—१ फल किहां थी विण फूल, गांम विना सीम न गिणजो। गुर विन हुवै न ग्यांन, विगर पूंजी किम विणजै।—ध.व.ग्रं.

उ०—२ लोपै हिंदू लाज, सगपण रोपै तुरक सूं। आरज कुळ री आज, पूंजी रांण 'प्रतापसी'।—दुरसो आढो

२ व्यापार में लगाया हुआ या ऋण पर दिया हुआ धन, मूल धन।

३ ऐसा धन या संपत्ति जिससे आय होती हो।

४ किसी विषय की समस्त योग्यता या धन।

क्रि०प्र०—खोणी, गंमांणी जोड़णी, लगांणी।

रू०भे०—पुंजी।

अल्पा०—पूंजड़ी।

पूंजीदार-सं०पु०यौ० [रा० पूंजी+फा० दार] १ अधिक धन या सम्पत्ति वाला व्यक्ति।

क्रि०प्र०—बणणी, होणी।

पूंजीदारी-सं०स्त्री०यौ० [रा० पूंजी+फा० दार+रा.प्र.ई] पूंजीदार होने की अवस्था या भाव।

पूंजीपति-सं०पु० [सं० पुंज+रा.प्र.ई+सं० पति] १ वह जिसके पास अधिक धन हो।

२ वह व्यक्ति जो लाभ की दृष्टि से विभिन्न उद्योग-धंधों में पूंजी लगाता हो, पूंजीदार।

पूंजीवाद-सं०पु०यौ० [रा० पूंजी+सं० वाद] वह आर्थिक प्रणाली जिसमें देश के उत्पत्ति तथा वितरण के प्रमुख साधनों पर पूंजीपतियों का व्यक्तिगत अधिकार हो।

पूंजीवादी-सं०पु०यौ० [रा० पूंजी+ सं० वादिन्] पूंजीवाद के सिद्धांत को मानने वाला व्यक्ति।

पूंठ—देखो 'पीठ' (रू.भे.)

पूंठगठरी-सं०स्त्री०यौ० [सं० पृष्ठ+रा० गठरी] घूम कर माल बेचने वाले के पीठ पर लदी हुई गठरी।

पूंठियो, पूंठीड़ो-सं०पु० [देशज] वस्त्रविशेष, अंगा, अंगरखा।

पूंण-वि० [सं० पाद+ऊन] १ तीन-चौथाई भाग, पौन।

उ०—निज करम परम निरसंक ह्वै, वीदग धरम बजावणूं। हित हरख सवाया पूंण हुय, लूण कदै न लजावणूं।—ऊ.का.

२ देखो 'पुरण' (रू.भे.)

रू०भे०—पुंण, पूण, पूणो।

अल्पा०—पूंणियो, पूणियो।

पूंणियो—देखो 'पुरणियो' (रू.भे.)

२ देखो 'पुरण (अल्पा०, रू.भे.)

३ देखो 'पूंण' (अल्पा०, रू.भे.)

पूंतरी-सं०पु० [ ] छिलका, छाल। उ०—लड़णनै लागि जावै ललकि, तौ पड़ण न देवै पूंतरा। नित नारि गैल रोवै निलज, छैल मतो पी छूंतरा।—ऊ.का.

पूंतारणो, पूंतारबो-क्रि०स० [सं० पुताऽन्तरणम्] प्रोत्साहित करना, जोश दिलाना। उ०—१ उरं ओद्रके सास अभ्यास आंणे, वडा जूह पूंतारिआ पीलवांणे। गंडां मारि वेसारिआ नीठ गज्जं, रुआमाळ फेरे करै झाड़ि रज्जं।—वचनिका

उ०—२ भड पूंतारे आपरा, धारे सांमधरम्म। 'भांण' तणौ अस भेळिया, दळ सांघणो दुगम्म।—

२ दुलारना, प्यार करना।

पूंतारणहार, हारौ (हारी), पूंतारणियो—वि०।

पूंतारिओड़ो, पूंतारियोड़ो, पूंतारयोड़ो—भू०का०कृ०।

पूंतारीजणो, पूंतारीजबो—कर्म वा०।

पूंतारणो, पूंतारबो, पूतारणो, पूतारबो, पूंतारिणो, पूंतारिबो, पोतारणो, पोतारबो, पौतारणो, पौतारबो, प्यूतारणो, प्यूतारबो—रा०रू०

पूंतारियोड़ो-भू०का०कृ०—१ प्रोत्साहित किया हुआ। २ दुलारा हुआ, प्यार किया हुआ।

(स्त्री०—पूंतारियोड़ी)

पूंद-सं०पु०—नितम्ब, चूतड़।

रू०भे०—पून।

पूंदियो-सं०पु० [राज० पूंद+रा.प्र. इयो] चरस चलाते समय लाव (रस्सी) पर रख कर बैठने का चमड़े का टुकड़ा।

पूंदी-वि० [देशज] कायर, डरपोक। उ०—खेळा चंही नचातो अो मचातो सूरमां खागां, घणा जाडा थंडां नूं रचातो घेर घेर। हाकले रांणा सूं सांम्हैं चालतो जै पूंदी हाडा, बूंदी आडावला सूधी रालतो बखेर।—जीवाजी भादो

पून—१ देखो 'पवन' (रू.भे.)

उ०—कठै तो वा दिन में तवा जसी तप्योड़ी धरती'र बळबळती लू अर कठै आ ठंडी ठंडो मखमल जसी नरम नरम रेत अर धीमी सुधरी पून।—रातवासो

२ देखो 'पूंद' (रू.भे.)

पूंमड़ो—देखो 'पूंगड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० पूंमड़ी)

पू-वि०—पूर्ण।

सं०स्त्री०—१ गंगा।

सं०पु०—२ नभ, आकाश।

३ पूर्व, प्राची।

४ नगर।

५ शरीर, वपु।

पूइय-सं०पु०—पूजित (जैन)

पूओहर—देखो 'पयोधर' (रू.भे.)

पूओ—देखो 'पुओ' (रू.भे.)

पूकार—देखो 'पुकार' (रू.भे.)

पूख—देखो 'पुख' (रू.भे.) (नां.मा.)

पूखण-वि० [सं० पूषणम्] १ पोषण करने वाला, पालन करने वाला।

उ०—हरि कहइ जिके करि भाव घणइहित, दासां तियां तणउ हूं दास। वरणविजइ ईसर वरदायक, आस बंधण पूखण हास।

—महादेव पारवती री वेलि

२ देखो 'पूसण' (रू.भे.)

उ०—सिणगार कर दुति विहस पूखण जगे भूखण जोत। पख पूर जांणे विवध संपत अवध कीध उदोत।—र.रू.

पूखा—१ देखो 'पूसण' (रू.भे.) (अ.मा.)

२ देखो 'पुख' (रू.भे.)

पूग-सं०पु० [सं०] १ सुपारी।

२ सुपारी का पेड़।

३ समूह, झुण्ड (ह.नां.मा.)

रू०भे०—पुंग, पूंग।

४ देखो 'पहुंच'।

पूगणो, पूगबो—देखो 'पहुंचणो, पहुंचबो'।

उ०—१ पंथ असेंदै पूगणो, अळगो घणो अकत्थ। व्है विण जांण्यो हालणो, संबळ (जा) विण सत्थ।—बां.दा.

उ०—२ अजको गहली रो कळस, वळती रो नाळेर। एकल पूगो टेकलो, आस किसू धव केर।—वी.स.

उ०—३ वुद्धि सूं च्यारां नै पकड़यां माल राख्यो। अनै एक साथै च्यारां सूं झगड़तो तो कद पूगतो।—भि.द्र.

उ०—४ तपधारी 'तखतेस' रो, सुत मोभी सुभियांण। धरा हूंत मुरधर धणी, पूगो सुरग पयांण।—ऊ.का.

उ०—५ नित समरु एह नो नांम रे, सहुवाते समरथ सांम रे। हिय पूगी हिया नो हांम रे, श्री हिज मुझ आतम रांम रे।—ध.व.ग्रं.

उ०—६ इसड़ी अमोघ उपाइ विचारि कपट रै प्रपंच वांणियां री बरात वणाइ वाजियां रै वदळै रथ छकड़ा जुताइ किताक प्रवहणां मैं प्रहरण छिपाइ कुंकुम रा रंग में गरक दुकूल कीधां दूजी दिसा रै मारग मंडोउर पूगिया।—वं.भा.

उ०—७ रांणी हे सखि! रांणी है अति रंढाल, घरणी हे सखि! घरणी मनहरणी वरी जी। मन नी हे सखि! मन नी पूगी आस, सफली हे सखि! सफलो परतंग्या करी जी।—प.च.चौ

उ०—८ नास गयो जीवतव्य नो जी, पिणसो पूगी भास। तैं कल्पद्रुम जांणि नै जी, सेव्यो निगुण पलास।—वि.कु.

पूगणहार, हारो (हारी) पूगणियो—वि०।

पूगवाड़णो, पूगवाड़बो, पूगवाणो, पूगवावो, पूगवावणो, पूगवावबो —प्रे०रू०

पूगाड़णो, पूगाड़बो, पूगाणो, पूगावो, पूगावणो, पूगावबो—सक०रू०

पूगिग्रोड़ो, पूगियोड़ो, पूग्योड़ो—भू०का०कृ०।

पूगीजणो, पूगीजबो—भाव वा०।

पूगफळ—देखो 'पूंगीफळ' (रू.भे.)

पूगरण—देखो 'पंगरण' (रू.भे.)

उ०—वीर स्त्री आपरा कपड़ा उतार, पति नै पहिराय घर में आघो घुसाय, आप पती रा पूगरण कपड़ा पहर तरवार संभाय घर रो किंवाड़ खोल सत्रुग्रां नै मार तंडलकर झगड़ो जीत गई।—वी.स.टी.

पूगळ—१ देखो 'पुद्गळ' (रू.भे.)

उ०—आदि के अनंतानंत, सिद्ध रूवे जीव संत, दूसरैं निगोद जीव तीजैं वनरास है। चोथो काळ को सरूप, पंचमो पूगळ रूप, छट्ठो वेद भेद तूं अलोक को आकास है।—ध.व.ग्रं.

२ देखो 'पूंगळ' (रू.भे.)

उ०—हाथ करां रे पूगळ पदमणी रे, आछी, दासी होय-होय जाय। आलीजो रे जोवसां म्हारा राज।—लो.गी.

पूगळगढ, पूगळि—देखो 'पूंगळ' (रू.भे.)

उ०—१ इण तो आंगणियै, सायवा सासूजी फिरैला जी, जांणै पूगळगढ रा पदमणी जी।—लो.गी.

उ०—२ पूगळि पिंगळ राऊ, नळ राजा नरवरे नयरे। अदिठा दुरिट्ठा ये, सगाई दईय संजोगे।—ढो.मा.

पूगळिया-सं०स्त्री०—भाटी वंश की एक शाखा।

उ०—भाटियां री सांप लिखंते—जेचंद, जेतूंग, बुध, केलण, सरूपसी, सीहड़.........पचायणोत, देरावरिया, पूगळिया, गुगजो, सोम.......।—वां.दा. ख्यात

पूगाउणो, पूगाडबो—देखो 'पहुंचाणो, पहुंचावो'।

पूगाडणहार, हारो (हारी), पूगाडणियो—वि०।

पूगाडिग्रोड़ो, पूगाडियोड़ो, पूगाड्योड़ो।—भू०का०कृ०।

पूगाडीजणो, पूगाडीजबो—कर्म वा०।

पूगाडियोड़ो—देखो 'पहुंचायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० पूगाडियोड़ी)

पूगाणो, पूगावो—देखो 'पहुंचाणो, पहुंचावो'।

पूगाणहार, हारो (हारी) पूगाणियो—वि०।

पूगायोड़ो—भू०का०कृ०।

पूगाईजणो, पूगाईजबो—कर्म वा०।

पूगावणो, पूगावबो—देखो 'पहुंचाणो, पहुंचावो' (रू.भे.)

पूगावणहार, हारो (हारी), पूगावणियो—वि०।

पूगाविग्रोड़ो, पूगावियोड़ो, पूगाव्योड़ो—भू०का०कृ०।

पूगावीजणो, पूगावीजबो—कर्म वा०।

पूगावियोड़ो—देखो 'पहुंचायोड़ो'।

(स्त्री० पूगावियोड़ी)

पूगियोड़ो—देखो 'पहुंचियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० पूगियोड़ी)

पूचाळो—देखो 'पूंचाळो' (रू.भे.)

उ०—सांमळ सूर जहो 'सांगाहर', सांचो पैज सम्हाळो। रूंधे दुसमण रै उर रोपी, पूचाळो प्रत माळी।

—केसवदास सकतावत रो गीत

पूछ-सं०स्त्री०—१ पूछने की क्रिया।

२ चाह या जरूरत।

३ आदर, इज्जत। उ०—यूं गांव में ऊंठ ही मोकळा हा पण ठाकुर री पूछ विसेस ही। इण रा कई कारण हा, जिणमें सबसूं पैं'लो कारण हो ठाकुर रो निरलोभी सुभाव।—रातवासो

क्रि०प्र०—करणी, होणी।

यौ०—पूछगाछ, पूछताछ।

पूछगाछ—देखो 'पूछताछ' (रू.भे.)

उ०—उण कहणै वाळां सांमो ही नहीं दीठो। उण सूं पूछगाछ न कीवी।—नी.प्र.

पूछड़ो—देखो 'पूंछ' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—वांदर वळता पूछड़ा दरियाव बुझाया।

—केसोदास गाडण

पूछणो, पूछबो-क्रि०स० [सं० पृच्छ्] १ आदर करना या कदर करना।

ज्यूं—आजकाल तो गुणवांणां ने कोई पूछे नीं।
२ ध्यान देना या टोकना।
ज्यूं—आप तो सीधा चला जाज्यो, आपने कोई नीं पूछैला।
३ किसी के प्रति सहानुभूति रखते हुए कुशल समाचार जानना।
उ०—सुख सूं बैठी सदन में, क्यूं पूछो कुसळात। तो तन कुसळायत तणी, बालम पूछूं बात।—बां.दा.
४ किसी के प्रति आदर-सत्कार का भाव प्रगट करते हुए उसकी ओर उचित ध्यान देना।
ज्यूं—इतरी भीड़ भाड़ में कोई कींनेई को पूछै नी।
मुहा०—बात न पूछणी—कुछ भी ध्यान न देना।
५ किसी से कोई बात जानने या समझने को शब्दों का प्रयोग करना, पूछना। उ०—माळवणी मनि दूमणी, आवि वरग विमासि। रइबारी पूछो करी, आई करहा पासि।—ढो.मा.
६ जांच, परीक्षा आदि के लिए प्रश्नों द्वारा उत्तर प्राप्त करना।
उ०—काढै दोसण कायबां, वातां दिए विगोय। पूछै अरथ र पहलियां, सूंब मजाकी सोय।—बां.दा.
पूछणहार, हारो (हारी), पूछणियो—वि०।
पूछाडणो, पूछाडबो, पूछाणो, पूछावो, पूछावणो, पूछावबो —प्रे०रू०।
पूछिओड़ो, पूछियोड़ो, पूछयोड़ो—भू०का०कृ०।
पूछीजणो, पूछीजबो—कर्म वा०।
पुच्छणो, पुच्छबो—रू०भे०।

पूछताछ, पूछताज, पूछपाछ-सं०स्त्री० [अनु] १ पूछने की क्रिया या भाव।
२ चाह, आवश्यकता।
रू०भे०—पूछगाछ, पूछाताछी, पूछापाछी।

पूछाडणो, पूछाडबो—देखो 'पूछाणो, पूछावो' (रू.भे.)
उ०—पणि पहिलो विचार करि अर अखैराज सलहदी नूं सीजो कन्है मेल्हि अर पूछाडियो।—द.वि.
पूछाडणहार, हारो (हारी), पूछाडणियो—वि०।
पूछाडिओड़ो, पूछाडियोड़ो, पूछाडयोड़ो—भू०का०कृ०।
पूछाडीजणो, पूछाडीजबो—कर्म वा०।

पूछाडियोड़ो—देखो 'पूछायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० पूछाडियोड़ी)

पूछाणो, पूछावो-क्रि०स० ('पूछणो' क्रि०का प्रे०रू०) १ आदर या इज्जत कराना।
२ ध्यान दिलाना, या टोकवाना।
३ किसी के प्रति सहानुभूति रखवाते हुए कुशल समाचार ज्ञात करवाना।
४ किसी के प्रति आदर-सत्कार भाव प्रगट करवाते हुए उसकी ओर उचित ध्यान दिलाना।
५ किसी की कोई बात जानने या समझने को शब्दों का प्रयोग कराना, पूछाना।
६ जांच, परीक्षा आदि के लिए प्रश्नों द्वारा उत्तर प्राप्त कराना।
पूछाणहार, हारो (हारी), पूछाणिओ—वि०।
पूछायोड़ो—भू०का०कृ०।
पूछाईजणो, पूछाईजबो—कर्म०वा०।

पूछाताछी, पूछापाछी—देखो 'पूछताछ' (रू.भे.)

पूछायोड़ो-भू०का०कृ०—१ आदर या इज्जत कराया हुआ।
२ ध्यान दिवाया हुआ।
३ किसी के प्रति सहानुभूति रखाते हुए कुशल समाचार ज्ञात करवाया हुआ।
४ किसी के प्रति आदर भाव प्रगट करवाते हुए उसकी ओर उचित ध्यान दिलवाया हुआ।
५ किसी की कोई बात जानने या समझने हेतु शब्दों का प्रयोग कराया हुआ।
६ जांच, परीक्षा आदि के लिए प्रश्नों द्वारा उत्तर प्राप्त कराया हुआ।
(स्त्री० पूछायोड़ी)

पूछावणो, पूछावबो—देखो 'पूछाणो, पूछावो' (रू.भे.)
पूछावणहार, हारो (हारी), पूछावणियो—वि०।
पूछाविओड़ो, पूछावियोड़ो, पूछाव्योड़ो—भू०का०कृ०।
पूछावीजणो, पूछावीजबो—कर्म वा०।

पूछावियोड़ो—देखो 'पूछायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० पूछावियोड़ी)

पूछियोड़ो-भू०का०कृ०—१ आदर या कदर किया हुआ।
२ ध्यान दिया हुआ, टोका हुआ।
३ किसी के प्रति सहानुभूति रखते हुए कुशल समाचार जाना हुआ।
४ किसी के प्रति आदर सत्कार का भाव प्रगट करते हुए उसकी ओर उचित ध्यान दिया हुआ।
५ किसी से कोई बात जानने या समझने को शब्दों का प्रयोग किया हुआ।
६ जांच, परीक्षा आदि के लिए प्रश्नों द्वारा उत्तर प्राप्त किया हुआ।
(स्त्री० पूछियोड़ी)

पूछो—देखो 'पूंछो' (रू.भे.)

पूज-सं०पु० [सं० पूज्य] १ देवता (डि.को.)
२ देखो 'पूजा' (रू.भे.)
उ०—१ सुर झालर घंटा सरसाया, महजीतां सुर बांग मिटाया। सिव हरि सकत सेव सरसाई, मीर पीर त्यां पूज मिटाई।—रा.रू.
उ०—२ सिलल धार जळ धार लगी सूंड आछत स्रवण, चमंकियो लोक बळ कमण चालै। जण समै धरै गिरधर धणी ते जिम जकै। पूज सुरपत तणी भलां पाळै।—बां.दा.
रू०भे०—पुज्ज।

पूजक, पूजग-सं०पु० [सं० पूजक] पूजा करने वाला। उ०—दाता दे चित दांन मौज मांणे मुरसंडा। लाखां लै धन लूट पूतळी पूजग पंडा।—ऊ.का.

रू०भे०—पुजग, पुयग्र।

पूजजी—देखो 'पूज्यजी' (रू.भे.)

उ०—वंदो भवियण हित आंणी। पूजजी नीं मीठी वाणी।

—वि.कु.

पूजणौ, पूजबौ-क्रि०स० [सं० पूजनं] १ देवी-देवता की आराधना करना, अर्चना करना, पूजा करना। उ०—१ करसूं कमळ कवेरजा, निज सिर नांखै नाग। पित तूं कमळां पूज ही, वारण मुख वड भाग।—वां.दा.

उ०—२ ढोला, सायधण मांणने, झीणी पांसळियांह। कइ लाभै हर पूजियां, हेमाळै गळियांह।—ढो.मा.

२ किसी की बराबरी करना, समानता करना। उ०—पारवती तणई वखत कुण पूजइ, परवारै चढ़ि करइ विचार। दासी हुइ जउ तउ ई जीविग्रइ, देखो जइ दिन कउ दीदार।—महादेव पारवती री वेलि

३ आदर करना, सत्कार करना। उ०—'गजसाह' देखि जंहगीर गह, करि हित कमळ प्रकासियौ। पूजियौ साह मुनसप पटां, 'सूरसाह' साबासियौ।—सू.प्र.

४ प्रतिष्ठा करना, बड़ाई करना, हस्तकौशल की प्रशंसा करना। उ०—लोहारी तौ पीव रा, वले न पूजूं हत्थ। फूलंतां रण कंत रै, कही समांणी मत्थ।—वी.स.

५ पूर्ण करना। उ०—यही बात हूजो, प्रभु पूजो आस मन की।

—घ.व.ग्रं.

क्रि०अ०—६ इच्छा पूरी होना। उ०—१ थे सिध्यावउ सिध करउ, पूजउ थांकी आस। वीछुड़तां ही मांणसां, मेळउ दियउ उल्हास।

—ढो.मा.

उ०—२ मेदनी स्रंगार वसइ वरण अढार अति ऊंचा आवास पूजही सहू आस।—सभा

७ देखो 'पहुंचाणौ, पहुंचावौ'।

उ०—भांण करण्ण प्रमांण वळ, मांण दजोण क पत्थ। रण जूंझै पण जोपणां, कुण पूजै समरत्थ।—रा.रू.

पूजणहार, हारौ (हारी), पूजणियौ—वि०।

पूजवाड़णौ, पूजवाड़बौ, पूजवाणौ, पूजवावौ, पूजवावणौ, पूजवावबौ, पूजाड़णौ, पूजाड़बौ, पूजाणौ, पूजावौ, पूजावणौ, पूजावबौ—प्रे०रू०

पूजिओड़ौ, पूजियोड़ौ, पूज्योड़ौ—भू०का०कृ०।

पूजीजणौ, पूजीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

पूजदेव-सं०पु० [सं० पुज्यदेव] इष्टदेव, पूज्यदेव।

पूजन-सं०स्त्री० [सं०] देवी देवता अथवा अन्य किसी पूज्यनीय की वंदना, आराधना।

रू०भे०—पूयण।

पूजनीक, पूजनीय-वि० [सं० पूजनीय] अर्चनीय, पूजा करने योग्य।

उ०—१ पण एक अरज आप सूं है कै आपणां घर मैं तखत, छत्र वगेरै पूजनीक चीजां है जिकै हूं चाहूं।—द.दा.

उ०—२ अह अद्वितीय, पद पूजनीय। उत्साह अरघ. मिलणौ महरघ।—ऊ.का.

रू०भे०—पुजनीक।

पूजळी—देखो 'पूंजळी' (रू.भे.)

२ देखो 'पूंज' (अल्पा०, रू.भे.)

पूजवण—देखो 'पूजवांण' (रू.भे.)

पूजवणौ, पूजवबौ—१ देखो 'पहुंचणौ, पहुंचबौ'।

उ०—घणा सियालि जे जणां, जंबूक घणा। तोहि नहं पूजवै पांण, केहरि तणा।—हा.झा.

२ देखो 'पूजणौ, पूजबौ' (रू.भे.)

पूजवांण-सं०स्त्री० [सं० पुजप्रांण] १ शक्ति, बल।

२ वैभव. ३ पहुंच।

रू०भे०—पूजवण।

पूजा-सं०स्त्री० [सं०] १ किसी देवी-देवता या मान्य व्यक्ति की फूल, फल, अक्षत आदि से अर्चना या वंदना करने की क्रिया।

उ०—मांडे पूजा तूझ महण मथ। सकळ सरीर, करिस इम सूक्रियथ।—ह.र.

२ व्यंग के रूप में मारने-पीटने की क्रिया।

क्रि०प्र०—ऊतारणी, करणी, कराणी, बणणी, होणी।

पर्या०—अरचना, अरहणा।

रू०भे०—पुजा, पूज, पूया।

पूजाड़णौ, पूजाड़बौ—देखो 'पूजाणौ, पूजावौ' (रू.भे.)

पूजाड़णहार, हारौ (हारी), पूजाड़णियौ—वि०।

पूजाड़िओड़ौ, पूजाड़ियोड़ौ, पूजाड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।

पूजाड़ीजणौ, पूजाडीजबौ—कर्म वा०।

पूजाड़ियोड़ौ—देखो 'पूजायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० पूजाड़ियोड़ी)

पूजाणौ, पूजावौ ('पजणौ' क्रिया का.प्रे.रू.) १ किसी को बराबरी कराना, समानता कराना।

२ आदर कराना, सत्कार कराना।

३ बड़ाई कराना, प्रतिष्ठा कराना।

४ पूर्ण कराना।

५ इच्छा पूरी कराना।

६ देखो 'पहुंचाणौ, पहुंचावौ' (रू.भे.)

पूजाणहार, हारौ (हारी), पूजाणियौ—वि०।

पूजायोड़ौ—भू०का०कृ०।

पूजाईजणौ, पूजाईजबौ—कर्म वा०।

पुजाणौ, पुजावौ (रू.भे.)

पूजापती-सं०स्त्री०—१ देवता को पूजा रूप में चढ़ाया जाने वाला पदार्थ।

उ०—पूजापाती भोपा लेग्या, पत्थर गिडकड़ा चाटे रे ।—ऊ.का.
२ देखो 'पूजा'।
पूजावो—देखो 'पुजावो' (रू.भे.)
उ०—म्हूं तो आपरै मूंन रो ओ इज अरथ समझूं के इण नै गुणां परवांणै पूजावो चढ जाणो चहीजै ।—फुलवाड़ी
पूजायोड़ो-भू०का०कृ०—१ किसी की बराबरी कराया हुआ, समानता कराया हुआ।
२ आदर कराया हुआ, सत्कार कराया हुआ ।
३ प्रतिष्ठा या बड़ाई कराया हुआ।
४ पूर्ण कराया हुआ।
५ इच्छा पूरी कराया हुआ।
६ देखो 'पहुंचायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० पूजायोड़ी)
पूजारी, पूजारु, पूजारू, पूजारो—देखो 'पुजारी' (रू.भे.)
उ०—१ कूड़ा पूजारी कूड़ी कथ कीनीं। देवण कांनां में पंजीरी दीनी ।—ऊ.का.
उ०—२ पूजारू पूछइ 'कहइ', अरे अयांण ! अबूझ। नव यौवन निकळंक नर ! तनि सी उछिम तूझ ।—मा.कां.प्र.
उ०—३ गढवाड़ां राखण सरणागत, पूजारां बांधण ध्रम पाळ। विरधा तरण चेलकां वासै, घर बाहर ओठम घंटाळ ।—दोलो
(स्त्री० पूजारण, पूजारिण)
पूजावणो, पूजावबो—देखो 'पोमाणो, पोमाबो' (रू.भे.)
पूजावणहार, हारो (हारी), पूजावणियो—वि०।
पूजाविओड़ो, पूजावियोड़ो, पूजाव्योड़ो—भू०का०कृ०।
पूजावीजणो, पूजावीजबो—कर्म वा०।
पूजावियोड़ो—देखो 'पूजायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० पूजावियोड़ी)
पूजित-वि० [सं०] आराधित, सम्मानित।
पूजियोड़ो-भू०का०कृ०—१ आराधना किया हुआ, अर्चना किया हुआ।
२ किसी की बराबरी किया हुआ, समानता किया हुआ।
३ आदर किया हुआ, सत्कार किया हुआ।
४ प्रतिष्ठा किया हुआ, सत्कार किया हुआ।
५ पूर्ण किया हुआ।
देखो 'पहुंचियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० पूजियोड़ी)
पूज्य-वि० [सं०] १ मान्य, आदरणीय।
२ पूजा किये जाने योग्य।
रू०भे०—पूज।
पूज्यजी-सं०पु० [सं० पूज्य+राज० जी] साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका इन चतुर्विध श्री संघ के अधिष्ठाता (जैन)
उ०—पूज्यजी पधारो हो नगरी हम तणी। होसी घणो उपगार हो महामुनि ।—जयवांणी
रू०भे०—पूजजी।
पूटो—देखो 'पूठो' (रू.भे.)
पूठ-सं०पु० [सं० पृष्ठ] १ सहायता, मदद। उ०—१ अब छोगाळा ऊठ; काळा तूं प्रतिपाळ कर। पांचाळी री पूठ, चढ रखवाळी चतुर-भुज ।—रामनाथ कवियो
उ०—२ जु जो म्हारी पूठ राखो तो दरवाजे रा किंवाड़ छै सु हूं तोड़ूं ।—नैणसी
२ शरण। उ०—महिमो पमार पहीरा डूंगरसूं नीसरियो सु मांडवै रै पातसाह रै पूठ आयो ।—नैणसी
३ देखो 'पीठ' (१ से ४) (रू.भे.)
उ०—१ दूठ घणोई दाखियो, पूठ न दी पर पक्क। मूंठ खड्ग हथ मेलतां, कीधो ऊठ कड़क्क ।—भगतमाळ
उ०—२ परवत सम सवळो, पूठ पड़यो सूंडाल। ततखिण जिण नांमे, अंस करै नहीं आल ।—घ.व.ग्रं.
उ०—३ संके जावै संग सूं, अरध निसा में ऊठ। नर मूरख तो पिण न दे, पातरियां नूं पूठ ।—बां.दा.
उ०—४ खोल्या खोल्या पोळी रा किंवाड़, पूठ फोर धण वा खड़ी जी राज ।—लो.गी.
क्रि०वि०—पीछे। उ०—आडा वन खंड दे गया, परवत दीन्हा पूठ। हियड़ा ऊपर राखती, कदे न कहती ऊठ।—ढो.मा.
रू०भे०—पूठि, पूठी।
पूठइ-क्रि०वि० [सं० पृष्ठ] पीछे। उ०—एक ऊपाड़ां वारणां, नाखी निरखण जाई। जिहां जिहां माधव संचरइ, तिहां तिहां पूठइ थाई।
—मा.कां.प्र.
पूठड़ियो-सं०पु० [सं० पृष्ठवाह] १ फेरी लगा कर सौदा बेचने वाला व्यापारी।
२ देखो 'पूठाड़ो' (अल्पा०, रू.भे.)
रू०भे०—पूठाड़ियो।
पूठड़ो—देखो 'पूठाड़ो' (रू.भे.)
पूठणो, पूठबो-क्रि०स० [?] १ गाड़ी या शकट के चक्के के पूठी लगाना।
२ कूप तालाव के बंध में या बड़ी दीवार में एक विशेष प्रकार के घड़े हुए पत्थर लगाना।
यौ०—पूठीबंध।
पूठणहार, हारो (हारी), पूठणियो—वि०।
पूठाड़णो, पूठाड़बो, पूठाणो, पूठाबो, पूठावणो, पूठावबो—प्रे०रू०।
पूठिओड़ो, पूठियोड़ो, पूठ्योड़ो—भू०का०कृ०।
पूठीजणो, पूठीजबो—कर्म वा०।
पूठरो-वि०पु० [सं० पृष्ठ] (स्त्री० पूठरी) १ पीठ का, पीछे का।

२ देखो 'फूठरौ' (रू.भे.)

पूठली—देखो 'पीठ' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—चंदण चोपदार तसलीम करतै-करतै जाय पगां में माथौ दियौ। आप पूठली थाप ऊंचो कियौ।—पलक दरियाव री वात

पूठलौ-वि०पु० [सं० पृष्ट] (स्त्री० पूठली) पीछे का।

उ०—१ सो आपां तो खाविंद रै पूठै साकौ करणै ऊपर हुवा। अर नैट पूठला इणरी ही जे चाकरी करसी।

—राठौड़ अमरसिंह गजसिंहोत री बात

उ०—२ रथरै मांही पूठलै पाछै एक पेई नै बणवाई।

—कुंवरसी सांखला री वारता

रू०भे०—पूठिलौ।

पूठवाड़ौ-क्रि०वि०—१ पीछे की ओर। उ०—ई सौ विचार नै महोलां रै पूठवाड़ै जावण लागौ।—रीसालू री वात

२ देखो 'पूठाड़ौ' (रू.भे.)

पूठाड़ियौ—देखो 'पूठड़ियौ' (रू.भे.)

२ देखो 'पूठाड़ौ' (अल्पा०, रू.भे.)

पूठाड़णौ, पूठाड़वौ—देखो 'पुठाणौ, पुठावौ' (रू.भे.)

पूठाड़णहार, हारौ (हारी), पूठाड़णियौ—वि०।

पूठाड़िओड़ौ, पूठाड़ियोड़ौ, पूठाड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।

पूठाड़ीजणौ, पूठाड़ीजवौ—कर्म वा०।

पूठाड़ियोड़ौ—देखो 'पूठायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० पूठायोड़ी)

पूठाड़ौ-सं०पु० [सं० पृष्ठ+रा.प्र. ड़ौ] फेरी लगा कर सोदा वेचने का बुगचा।

रू०भे०—पूठड़ौ, पूठवाड़ौ।

अल्पा०—पुठड़ियौ, पूठाड़ियौ।

पूठाणौ, पूठावौ-क्रि०स० [सं० पृष्ठ+रा. प्र. णौ] देखो 'पुठाणौ, पुठावौ' (रू.भे.)

पूठाणहार, हारौ (हारी), पूठाणियौ—वि०।

पूठायोड़ौ—भू०का०कृ०।

पूठाईजणौ, पूठाईजवौ—कर्म वा०।

पूठायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ पूठी चढ़ाया हुआ गाड़ी का चक्का।

२ विशेष प्रकार की घड़त का पत्थर से बंधा हुआ (कूप, तालाब)

(स्त्री० पूठायोड़ी)

पूठावणौ, पूठाववौ—देखो 'पुठाणौ, पुठावौ' (रू.भे.)

पूठावणहार, हारौ (हारी), पूठावणियौ—वि०।

पूठाविओड़ौ, पूठावियोड़ौ, पूठाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

पूठावीजणौ, पूठावीजवौ—कर्म वा०।

पूठावियोड़ौ—देखो 'पूठ योड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० पूठावियोड़ी)

पूठि—देखो 'पूठ' (रू.भे.)

उ०—ढोलइ चढि पड़ताळिया, डूंगर दीन्हा पूठि। खाजे वावू हत्यड़ा, धूड़ि भरेसी मूठि।—ढो.मा.

उ०—२ घरपति गोळ, हरोळ तोप घुरि। पूठि पहाड़, दुरंग तारा-पुरि।—सू.प्र.

२ देखो 'पीठ' (रू.भे.)

उ०—रतनारी पाखर पूठि रळंती, भिड़ज वधइ ताइ आगळ भांण। अंबरराव हतउ ओफाइइ, सिंहरां रा सींगे सहिनांण।

—महादेव पारवती री वेलि

३ देखो 'पूठी' (रू.भे.)

पूठियौ-सं०पु० [देशज] पहिनने का एक वस्त्र विशेष, अंगरखा।

पूठियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ पूठी चढाया हुआ (।) (गाड़ी का चक्का या कूप तालाव का बंध)

(स्त्री० पूठियोड़ी)

पूठिलौ—देखो 'पूठलौ' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—पूठिली परि तै गळगळै, पिण नहीं कोई उपाय। सगळै जो कहै जळ नै बिना, जीव विछूटो जाय।—वि.कु.

(स्त्री० पूठिली)

पूठी-सं०स्त्री० [?] १ गोलाकार बनाने हेतु बैलगाड़ी के चक्के के ऊपर लगाई जाने वाली चन्द्राकार बनी लकड़ी का खण्ड।

उ०—गाडी तो म्हे तो रे नरसी देता तो खरा। पूठ्यां वांकी फाट गई टूट गया आरा।—मीरां

२ कुए, तालाब तथा बड़ी-बड़ी दीवारों में लगाई जाने वाली चंद्राकार, घड़ी हुई पत्थर की सिल्ली।

३ ब्राह्मणों में, वैदिक गोडीय पद्धति से विवाह में वधू के गृह-प्रवेश के अवसर पर वर के द्वार पर पढा जाने वाला मंत्र।

क्रि०वि०—१ वापिस, फिर।

२ देखो 'पूठ' (रू.भे.)

पूठीबंध-वि० [राज० पूठी+सं० बंध] वह जिस के बंध या बनावट में पूठी लगी हो। उ०—तलाव राणीसर रौ कोट तरफ दीखणाद १८५३ में सोर भुरज मांय सूं उडियो थो तिण सूं पड़ गयौ। तिण सूं पाछौ नवौ पूठीबंध करायौ।—मारवाड़ री ख्यात

वि०वि०—देखो 'पूठो'।

पूठीसंवारक-सं०पु०—वह घोड़ा जिस के पिछले पैर सफेद हों और सिर में सफेद तिलक हो (शा.हो.)

पूठै—देखो 'पीठ' (रू.भे.)

उ०—१ यां राजोवर अखियौ, सू जादवां सप्रांण। सोठै नांणां जीवणौ, तो पूठै जैसांण'।—रा०रू०

उ०—२ अडर मूळ डर न धारै केसरी आंण री, पिता माता तणौ डर न पूठै। जतन सूं सखी दध वेचवा जावतां, अचानक कांन री धाड़ ऊठै।—बा.दा.

पूठौ-क्रि०वि० [सं० पृष्ठ] वापिस, पुनः। उ०—ताहरां सारा ही

असवार पूठा फिरिया।—नैणसी

सं०पु०—१ बैल आदि पशुओं के पिछले पैरों का ऊपरी हिस्सा।

२ पुस्तक या कापी का मोटे कागज का आवरण।

३ देखो 'पीठ' (१-४) (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—पूठो भारी रावजी स्री बीकोजी रो।

—सूरे खींवे कांधळोत री वात

रू०भे०—पुट्ठो, पुठो।

पूढी-सं०स्त्री० [सं० प्रौढा] वृद्धा, बूढी। उ०—देवी निंद रे रूप पख विसन रूढी। देवी विसन रे रूप तूं नाभ पूढी।—देवि.

पूण—१ देखो 'पुरण' (रू.भे.)

उ०—चौरंग लख पूणां चहै, अणियां चढवा आय। पिव बिण पूणां व्यय चढै, हथी डोड हिक हाथ।—रेवतसिंह भाटी

२ देखो 'पून' (रू.भे.)

पूणजात—देखो 'पवन' (३)

रू०भे०—पुवनजात।

पूणणो, पूणबो-क्रि०स० [सं० पादोनन] १ नष्ट करना, खराब करना। [सं० पुर्णयति] २ पूरा करना, सम्पूर्ण करना।

उ०—जां विराट सुत चाप न धूणइ। वैर वर्ग मुझ तां यज पूणइ।

—सालिसूरि

३ कम मूल्य में वेचना।

पूणणहार, हारो (हारी), पूणणियो—वि०।

पूणाडणो, पूणाडबो, पूणाणो, पूणावो, पूणावणो, पूणावबो

—प्रे०रू०।

पूणीओड़ो, पूणीयोड़ो, पूण्योड़ो—भू०का०कृ०।

पूणीजणो, पूणीजबो—कर्म वा०।

पूणाणो, पूणावो ('पूणणो' क्रि० का प्रे०रू०) १ नष्ट कराना, खराब कराना।

२ पूरा कराना, सम्पूर्ण कराना।

३ कम मूल्य में विकवाना।

पूणाणहार, हारो (हारी), पूणाणियो—वि०।

पूणायोड़ो—भू०का०कृ०।

पूणाईणो, पूणाईजबो—कर्म वा०।

पूणाड़णो, पूणाड़बो, पूणावणो पूणावबो—रू०भे०।

पूणायोड़ो-भू०का०कृ०—१ नष्ट कराया हुआ, खराब कराया हुआ।

२ पूरा कराया हुआ, सम्पूर्ण कराया हुआ।

३ कम मूल्य में विकवाया हुआ।

(स्त्री० पूणायोड़ी)

पूणावणो, पूणावबो—देखो 'पूणाणो, पूणावो' (रू.भे.)

पूणावणहार, हारो (हारी), पूणावणियो—वि०।

पूणाविओड़ो, पूणावियोड़ो, पूणाव्योड़ो—भू०का०कृ०।

पूणावीजणो, पूणावीजबो—कर्म वा०।

पूणावियोड़ो—देखो 'पूणायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० पूणावियोड़ी)

पूणियोड़ो-भू०का०कृ०—१ नष्ट किया हुआ।

२ पूरा हुवा हुआ, सम्पूर्ण हुवा हुआ।

३ कम मूल्य में वेचा हुआ।

(स्त्री० पूणियोड़ी)

पूणियो-सं०पु०—एक छन्द विशेष। उ०—धुर अठार बी बार धर, ती सोळह चव बार। वि गुरु अंत सो पूणियो, सोय त्रिभंगी सार।

—र.ज.प्र.

२ देखो 'पुंरणियो' (रू.भे.)

३ देखो 'पूंण' (अल्पा०, रू.भे.)

४ देखो 'पूरण' (अल्पा०, रू.भे.)

पूणी-सं०स्त्री० [सं० पूणित या पिंजिका] चरखे पर सूत कातने हेतु धुनी हुई रूई की बनी पोली बत्ती जिससे कातने पर बढ़ बढ़ कर सूत का धागा निकलता है। उ०—कातणवाळी छैल छबीली, बैठी पीढो ढाळ। महीं सही वा पूणी कातै, लंबो काढै तार। चाल रे चरखला।—लो.गी.

पूणो-सं०पु०—पौन का पहाडा।

२ देखो 'पूंण' (रू.भे.)

उ०—हिरदै ऊणा होत, थिर धूणा अकबर सदा। दिन दूणा देसोत, पूणा हुवै न 'प्रतापसी'।—दुरसो आढो

३ देखो 'पणो' (रू.भे.)

पूत-वि० [सं०] १ पवित्र, शुद्ध (डि.को.)

२ देखो 'पुत्र' (रू.भे.)

उ०—१ आज घरै सासू कहै, हरख अचांणक काय। बहू बलैवा हूलसै, पूत मरेवा जाय।—वो.स.

उ०—मिटसी सह मतिमंद, कळंक न मिटसी भरत कुळ। अंध हिया रा अंध, पूत दुसासण पात रे।—रांमनाथ कवियो

पूतआतमा—देखो 'पूतातमा' (रू.भे.)

पूतड़लो, पूतड़ो—देखो 'पुत्र' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—तूं तो कांई, म्हारी मायड़ गरभरी, तूं तो देख पूतड़ला रो ढाळो रे।—लो.गी.

पूतना-सं०स्त्री० [सं०] १ कंस द्वारा श्रीकृष्ण को मारने हेतु भेजी गई एक राक्षसी जिसे श्रीकृष्ण ने मार दिया था। उ०—सकटासुर साभीयो तैं ईज, मारीयो तिणवत। पळ गमीयो पूतना, बडो मांडियो सदाव्रत।—पी.ग्रं.

२ हर्रे, हरड़ (अ.मा., डि.को., डि.नां.मा.)

रू०भे०—पुतना।

पूतनारि-सं०पु० [सं०] पूतना नामक राक्षसी को मारने वाले, श्रीकृष्ण।

पूतनासूदन-सं०पु० [सं०] श्रीकृष्ण।

२ देखो 'फूठरो' (रू.भे.)

पूठली—देखो 'पीठ' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—चंदण चोपदार तसलीम करतं-करतं जाय पगां में माथो दियो। थाप पूठली थाप ऊंचो कियो।—पलक दरियाव री बात

पूठलो-वि०पु० [सं० पृष्ट] (स्त्री० पूठली) पीछे का।

उ०—१ सो भायां तो ठाविद रै पूठै साको करणै ऊपर हुआ। अर मेट पूठला दणरी ही जे चाकरी करसी।

—राठौड़ अमरसिंह गजसिंहोत री बात

उ०—२ रथरै मांही पूठलै पाछै एक पेई जे बणवाई।

—कुंवरसी सांखला री वारता

रू०भे०—पूठिलो।

पूठवाड़ी-क्रि०वि०—१ पीछे की ओर। उ०—ई सो विचार नै महोला रै पूठवाड़ै जावण लागो।—रीसालू री बात

२ देखो 'पूठाड़ो' (रू.भे.)

पूठाड़ियो—देखो 'पूठड़ियो' (रू.भे.)

२ देखो 'पूठाड़ो' (अल्पा०, रू.भे.)

पूठाड़णो, पूठाड़बो—देखो 'पुठाणो, पुठाबो' (रू.भे.)

पूठाड़णहार, हारो (हारी), पूठाड़णियो—वि०।

पूठाड़ियोड़ो, पूठाड़ियोड़ो, पूठाड़योड़ो—भू०का०कृ०।

पूठाड़ीजणो, पूठाड़ीजबो—कर्म वा०।

पूठाड़ियोड़ो—देखो 'पूठायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० पूठायोड़ी)

पूठाड़ो-सं०पु० [सं० पृष्ठ+रा.प्र. ड़ो] फेरी लगा कर सौदा बेचने का बुगचा।

रू०भे०—पूठड़ो, पूठवाड़ो।

अल्पा०—पुठड़ियो, पूठाड़ियो।

पूठाणो, पूठाबो-क्रि०स० [सं० पृष्ठ+रा. प्र. णो] देखो 'पुठाणो, पुठाबो' (रू.भे.)

पूठाणहार, हारो (हारी), पूठाणियो—वि०।

पूठायोड़ो—भू०का०कृ०।

पूठाईजणो, पूठाईजबो—कर्म वा०।

पूठायोड़ो-भू०का०कृ०—१ पूठो चढ़ाया हुआ गाड़ी का चक्का।

२ विशेष प्रकार की घड़त का पत्थर से बंधा हुआ (कूप, तालाब)

(स्त्री० पूठायोड़ी)

पूठावणो, पूठावबो—देखो 'पुठाणो, पुठाबो' (रू.भे.)

पूठावणहार. हारो (हारी), पूठावणियो—वि०।

पूठाविओड़ो, पूठावियोड़ो, पूठाव्योड़ो—भू०का०कृ०।

पूठावीजणो, पूठावीजबो—कर्म वा०।

पूठावियोड़ो—देखो 'पूंठ योड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० पूठावियोड़ी)

पूठि—देखो 'पूठ' (रू.भे)

उ०—ढोलइ चढि पड़ताळिया, डूंगर दीन्हा पूठि। लागै थ'सू हुयवड़ा, पूठि गरेनी पूठि।—ढो.मा.

उ०—२ पाखति गोळ, हरोळ नीर पुठि। पूठि पहाड़, हुरंग धारा-पुरि।—सू.प्र.

२ देखो 'पीठ' (रू.भे.)

उ०—रतनारी पालर पूठि ढळ'गी, निहंग बगड़ ताइ सागड़ नीठ। संबरराय हुवड़ चोम्हा'इड़, तिहरा रा नीरै गहिनीठ।

—महादेव पारवती री वेलि

३ देखो 'पूठो' (रू.भे.)

पूठियो-सं०पु० [देशज] पहिनने का एक वस्त्र विशेष, संवरता।

पूठियोड़ो-भू०का०कृ०—१ पूठो चढ़ाया हुआ (।) (गाड़ी का चक्का या कूप तालाब का बंध)

(स्त्री० पूठियोड़ी)

पूठिलो—देखो 'पूठलो' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—पूठिलो परि सं मछणइ, बिणु नहीं कोई उपाय। मछळी को कहुं जळ में बिना, जीव निसरि जाय।—बि.कु.

(स्त्री० पूठिली)

पूठो-सं०स्त्री० [?] १ गोलाकार बनाने हेतु बैलगाड़ी के चाके के ऊपर लगाई जाने वाली चन्द्राकार बनी लकड़ी का खण्ड।

उ०—गाडी तो रहै तो रै गरसी देता तो ठरर। पूठ्या वाकी फूट गई टूट गया अरा।—लोगी

२ कुए, तालाब तथा बड़ी-बड़ी दीवारों में लगाई जाने वाली चंद्राकार, घड़ी हुई पत्थर की शिला।

३ ब्राह्मणों में, वैदिक गोत्रीय पद्धति से विवाह में वधू के गृह-प्रवेश के अवसर पर घर के द्वार पर पढ़ा जाने वाला मंत्र।

क्रि०वि०—१ वापिस, फिर।

२ देखो 'पूठ' (रू.भे.)

पूठोबंध-वि० [राज० पूठो+सं० बंध] वह जिस के बंध या बनावट में पूठो लगी हो। उ०—तलाब रातीसर री कोट तरफ दोळगाद १८५३ में जोर भुरज माथ सूं ढहियो थो तिण सूं पड़ गयो। तिण सूं पाछो नयो पूठोबंध करायो।—मारवाड़ री ख्यात

वि०वि०—देखो 'पूठो'।

पूठोसंवारक-सं०पु०—वह घोड़ा जिस के पिछले पैर सफेद हों और सिर में सफेद तिलक हो (शा.हो.)

पूठं—देखो 'पीठ' (रू.भे.)

उ०—१ मां राजोपर मतिलयो, सु जादवां तरांण। सोठं गोणी जीवणी, तो पूठं जैसांण'।—रा०रू०

उ०—२ अडर मूळ डर न धारै कंसरी आंण री, पिता माता तणी डर न पूठं। जतन सूं सती दध बेचवा जावतां, अचानक कांन री धाड़ ऊठे।—मी.दा.

पूठो-क्रि०वि० [सं० पृष्ठ] वापिस, पुनः। उ०—ताहरो सारा हो

असवार पूठा फिरिया।—नैणसी

सं०पु०—१ बैल आदि पशुओं के पिछले पैरों का ऊपरी हिस्सा।

२ पुस्तक या कापी का मोटे कागज का आवरण।

३ देखो 'पीठ' (१-४) (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—पूठौ भारी रावजी लो बीकोजी रौ।

—सूरे खींवे कांधळोत री वात

रू०भे०—पुट्ठौ, पुठौ।

पूढी-सं०स्त्री० [सं० प्रौढा] वृद्धा, बूढी। उ०—देवी निंद रे रूप पख विसन रूढी। देवी विसन रे रूप तूं नाभ पूढी।—देवि.

पूण—१ देखो 'पुरण' (रू.भे.)

उ०—चौरंग लख पूणां चढ़ै, अरियां चढवा आय। पिव विण पूणां व्यय चढ़ै, हथी छोड हिक हाथ।—रेवतसिंह भाटी

२ देखो 'पून' (रू.भे.)

पूणजात—देखो 'पवन' (३)

रू०भे०—पुवनजात।

पूणणौ, पूणबौ-क्रि०स० [सं० पादोनन] १ नष्ट करना, खराब करना। [सं० पुर्णयति] २ पूरा करना, सम्पूर्ण करना।

उ०—जां विराट सुत चाप न घूणइ। वैर वर्ग मुझ तां यज पूणइ।

—सालिसूरि

३ कम मूल्य में बेचना।

पूणणहार, हारौ (हारी), पूणणियौ—वि०।

पूणाडणौ, पूणाडबौ, पूणाणौ, पूणावौ, पूणावणौ, पूणावबौ

—प्रे०रू०।

पूणीओड़ौ, पूणीयोड़ौ, पूण्योड़ौ—भू०का०कृ०।

पूणीजणौ, पूणीजबौ—कर्म वा०।

पूणाणौ, पूणाबौ ('पूणणौ' क्रि० का प्रे०रू०) १ नष्ट कराना, खराब कराना।

२ पूरा कराना, सम्पूर्ण कराना।

३ कम मूल्य में बिकवाना।

पूणाणहार, हारौ (हारी), पूणाणियौ—वि०।

पूणायोड़ौ—भू०का०कृ०।

पूणाईणौ, पूणाईजबौ—कर्म वा०।

पूणाड़णौ, पूणाड़बौ, पूणावणौ पूणावबौ—रू०भे०।

पूणायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ नष्ट कराया हुआ, खराब कराया हुआ।

२ पूरा कराया हुआ, सम्पूर्ण कराया हुआ।

३ कम मूल्य में बिकवाया हुआ।

(स्त्री० पूणायोड़ी)

पूणावणौ, पूणावबौ—देखो 'पूणाणौ, पूणाबौ' (रू.भे.)

पूणावणहार, हारौ (हारी), पूणावणियौ—वि०।

पूणाविओड़ौ, पूणावियोड़ौ, पूणाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

पूणावीजणौ, पूणावीजबौ—कर्म वा०।

पूणावियोड़ौ—देखो 'पूणायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० पूणावियोड़ी)

पूणियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ नष्ट किया हुआ।

२ पूरा हुवा हुआ, सम्पूर्ण हुवा हुआ।

३ कम मूल्य में बेचा हुआ।

(स्त्री० पूणियोड़ी)

पूणियौ-सं०पु०—एक छन्द विशेष। उ०—धुर अठार यौ वार धर, ती सोळह चव वार। वि गुरु अंत सौ पूणियौ, सोय त्रिभंगी सार।

—र.ज.प्र.

२ देखो 'पुंरणियौ' (रू.भे.)

३ देखो 'पूंण' (अल्पा०, रू.भे.)

४ देखो 'पूरण' (अल्पा०, रू.भे.)

पूणी-सं०स्त्री० [सं० पुणित या पिंजिका] चरखे पर सूत कातने हेतु धुनी हुई रुई की बनी पोली बत्ती जिससे कातने पर बढ़ बढ़ कर सूत का धागा निकलता है। उ०—कातणवाळी छैल छबीली, बैठी पीढौ ढाळ। मही सही वा पूणी कातै, लंबौ काढै तार। चाल रे चरखला।—लो.गी.

पूणौ-सं०पु०—पौन का पहाड़ा।

२ देखो 'पूंण' (रू.भे.)

उ०—हिरदै ऊणा होत, सिर घूणा अकबर सदा। दिन दूणा देसोत, पूणा हुवै न 'प्रतापसी'।—दुरसौ आढौ

३ देखो 'पणौ' (रू.भे.)

पूत-वि० [सं०] १ पवित्र, शुद्ध (डिं.को.)

२ देखो 'पुत्र' (रू.भे.)

उ०—१ आज घरै सासू कहै, हरख अचांणक काय। बहू बलैया हूलसै, पूत मरेवा जाय।—वो.स.

उ०—मिटसी सह मतिमंद, कळंक न मिटसी भरत कुळ। अंध हिया रा अंध, पूत दुसासण पान रे।—रामनाथ कवियौ

पूतआतमा—देखो 'पूतातमा' (रू भे.)

पूतड़लौ, पूतड़ौ—देखो 'पुत्र' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—तूं तो कांईं, म्हारी मायड़ गरभरी, तूं तो देख पूतड़लां रो ढाळौ रे।—लो.गी.

पूतना-सं०स्त्री० [सं०] १ कंस द्वारा श्रीकृष्ण को मारने हेतु भेजी गई एक राक्षसी जिसे श्रीकृष्ण ने मार दिया था। उ०—सकटासुर साभ्भीयौ तैं ईज, मारीयौ तिणवत। पळ गमीयौ पूतना, वडौ माहियौ सदाव्रत।—पी.ग्रं.

२ हर्रै, हरड़ (अ.मा., डिं.को., डिं नां.मा.)

रू०भे०—पुतना।

पूतनारि-सं०पु० [सं०] पूतना नामक राक्षसी को मारने वाले, श्रीकृष्ण।

पूतनासूदन-सं०पु० [सं०] श्रीकृष्ण।

पूतनाहड़-सं०स्त्री० [सं० पूतना+हरीतकी] छोटी हरे, छोटी हरड़।

पूतरी—देखो 'पुत्र' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—ऊठै भाली राम राम करि ऊठी नै मुगड़ा सूं कह्यो—देवर, थांरी घणी वेल पसरौ, पूतरा पोतां सूं धपो, थान चोखो थावो।
—जगड़ा मुगड़ा भाटी री वात

पूतळ-सं०पु० [सं० पुत्तल] वर्णसंकर, जारज संतान।

उ०—विक्रमादित नूं पाछो चीतोड़ वैसाणियो. पछै पूतळ छोकरी रै बेटै विक्रमादित रमता नु मारियो, वणवीर चीतोड़ लीधी।
—नैणसी

पूतळविधि—देखो 'पूतळविधान' (रू.भे.) (मा.म.)

पूतळी-सं०स्त्री० [सं० पुत्तली] १ लकड़ी, मिट्टी, धातु, पत्थर, कपड़ा आदि की बनी हुई आकृति विशेष। उ०—फेर मुहूरत सुधाय राजा सिंघासण रै बैठणै नूं आइयो जद बत्तीसांसी पूतळी धाय बड़ी।
—सिंघासण बत्तीसी

मुहा०—पूतळी नचाणी—पुतलियों का तमाशा दिखाना।

२ कपड़ा बुनने की कल।

यौ०—पूतळीघर।

३ आंख का काला भाग।

मुहा०—१ पूतळी फिरणी—१ गर्व करना।

२ मरना या मरने के समीप होना।

२ पूतळी नचाणी—आंख से इशारे करना।

४ घोड़े की टाप का मेंढक की तरह निकला मांसल भाग।

रू०भे०—पुतरी, पुतळी।

पूतळो-सं०पु० [सं० पुत्तल] लकड़ी, मिट्टी, पत्थर, धातु आदि का बना पुरुष का आकार या मूर्ति।

उ—पांच तत्व का पूतळा, रज वीरज की बूंद। ऐके घाटी नीसरया, बांमणि, क्षत्री, सूंद।—ह पु वा.

मुहा०—पूतळो जळाणो=१ मृत व्यक्ति का पुतला बना कर उसका दाह-संस्कार करना।

२ किसी की मृत्यु की कामना करने या उसे अपमानित करने हेतु उसका पुतला बनाकर जलाना।

रू०भे०—पुतळो।

पूतातमा-वि० [पूतात्मन्] पवित्र हृदय का, शुद्ध हृदय का।

सं०पु०—१ गरुड़, पक्षिराज (अ.मा.)

रू०भे०—पूतआतमा।

पूतारणो, पूतारबो—देखो 'पूंतारणो, पूंतारबो' (रू.भे.)

उ०—निठा निडु वेसाड, भ्राड नुखरां। धरा भारिया भार पूतारि खित्तां।—रा.रू.

पूतारणहार, हारो (हारी), पूतारणियो—वि०।

पूतारिओड़ो, पूतारियोड़ो, पूतारयोड़ो—भू०का०कृ०।

पूतारीजणो, पूतारीजबो—कर्म० वा०।

पूतारियोड़ो—देखो 'पूंतारियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० पूतारियोड़ी)

पूती—देखो 'पूत्री' (रू.भे.)

उ०—जो नृप पूती नह दियै, दाणो दूध पहार। तो दिहु लिर धरा खिग, सनी, स्याग, पहार।—पृ प.रा.

पूत, पूतु, पूत्र—देखो 'पुत्र' (रू.भे.)

उ०—१ पुत्र प्रमाणिहि दामोदर, पहिलूं सूंपा देवि। पुत्रपत्रौत्र पूत पूत, सुविणा धम लहेवि।—वं.नं.व.

उ०—२ धतिरवि गारवि तहिं वसवै, वाद करइ नहि पूतु। रावा नामिहि तसु घरणि, कन्नु भणुं तसु पूतु।—वं.नं.व.

उ०—३ पूत्र पुरोहित नउ इम भणइ। आदा मउ कउ दइ कहू तणर।—प.च.च.

पूत्रो—देखो 'पुत्र' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—पहिलू सामइ धरवइ पूत्रो। तेह रहइं नवि कोई सत्रो।
—वं.नं.च.

पून—१ देखो 'पवन' (रू.भे.)

उ०—बीण मेरी बाई पे, खिणियो मैं कोई टको पून। आंमल थी पे आयो, भूलो मैं पाई पे तन रा पांगड़ा।—लो.गी.

२ देखो 'पुण्य' (रू.भे.)

उ०—गावड़ मेरो कोण कहइ, पुरस न पून कमाइ। ऊंचा चोखर भरयो, घड़ हो घर ढूंढ़ाड़।—अज्ञात

३ देखो 'पुण्य' (रू.भे.)

उ०—पैली जग रै पून, जिणो इण भव मो जुड़ियो। लोह जिण रै परताप, धरा नह कुं धामड़ियो। दाखो नामवर पूर, नामन अध-धाम मळाहळ। रहत पुत्र घणरेहु, यहां मानव जिण काज।
—पहाड़खां आढ़ो

४ देखो 'पूरणिमा' (रू.भे.)

पूनजनेपुर—देखो 'पुण्यजनेश्वर' (रू.भे.)
(ह.ना.मा.)

पूनम—देखो 'पूरणिमा' (रू.भे.)

उ०—पंग दया पर पोर पंचारो, पूनम सी छवि पावै। दया-हीण पर दीन दिवाळी, काळी-रात कहावै।—ऊ.का.

पूनमपत-सं०पु० [सं० पूर्णमा+पति] चन्द्रमा, शशि।

उ०—जेहल तो दिस विदिस जस, भळहळ छायो भाळ। पूनमपत रो पसरियो, जांण किरणा जाळ।—बां.दा.

पूनमी—देखो 'पूरणिमा' (रू.भे.)

पूनागिर-सं०पु०—मारवाड़ राज्यान्तर्गत एक पहाड़ जहां पर देवी का मन्दिर है।

पूनावत-सं०पु०—राठौड़ वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।
—बां.दा. ख्यात

पूनिम, पूनिमी, पूनू, पूनो—देखो 'पूरणिमा' (रू.भे.)

उ०—१ कैसी ? जैसी आसोज की पूनिम सरद रित जैसी ऊजळी।
—वचनिका

उ०—२ आसो पूनिमि ऊपजइ, पिता-पुत्र-वचि प्रेम । ते महिला मागिउं मछइ, कहु संदेसु एम ।—मा.कां.प्र.

पून्य—देखो 'पुण्य' (रू.भे.)

उ०—पून्य प्रताप होय अंग पूरन, पाप प्रताव अपंगी । प्रथम विचार पाप को पापी, कर मत मीत कुसंगी ।—ऊ.का.

पून्यम, पून्यूं—देखो 'पूरणिमा' (रू.भे.)

उ०—१ राई भली जीसो पून्यम चंद । गोकुळ मांही सोहै ज्यूं गोव्यंद ।—बी.दे.

उ०—२ सेवग हाजरि चाहिजे, साहिब सदा हजूरि । पून्यूं पूरा चंद ज्यूं, जहां तहां भरपूरि ।—ह.पु.वा.

पूप—देखो 'पुम्रो' ।

पूपी-सं०स्त्री० [सं० पूपिका] पूड़ी, रोटी, छोटा मालपुत्रा ।

उ०—१ उंचौ सिद्यौ अंगुळी वहु सेकि वरवर्क । खाजे पूपी खल्लके तजि करि तक्कै ।—वं.भा.

उ०—२ आप करै सोई असण, इस्ट भोग अवसेस । इम पूपी जुग करि उठै, प्रभु रै कीधी पेस ।—वं.भा.

पूफ—देखो 'पुस्प' (रू.भे.) (नां.मा.)

पूमाणौ, पूमावौ—देखो 'पोमाणौ, पोमावौ' (रू.भे.)

पूमाणहार, हारौ (हारी), पूमाणियौ—वि० ।

पूमायोड़ौ—भू०का०कृ० ।

पूमाईजणौ, पूमाईजबौ—कर्म वा० ।

पूमायोड़ौ—देखो 'पोमायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० पूमायोड़ी)

पूमावणौ(बौ)—देखो 'पोमाणौ, पोमावौ' (रू.भे.)

पूमावणहार, हारौ (हारी), पूमावणियौ—वि० ।

पूमाविप्रोड़ौ, पूमावियोड़ौ, पूमाव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

पूमावीजणौ, पूमावीजबौ—कर्म वा० ।

पूमावियोड़ौ—देखो 'पोमायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० पूमावियोड़ी)

पूमार-सं०पु० (स्त्री० पूमारण) परिहार वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।

पूयग्र—देखो 'पूजक' (रू.भे.) (जैन)

पूयण—देखो 'पूजन' (रू.भे.) (जैन)

पूया—देखो 'पूजा' (रू.भे.) (जैन)

पूर-वि० [?] १ अनेक आघातों अथवा भारी आघातों के कारण जिसके सब अंग विकृत हो गए हों, क्षत-विक्षत ।

उ०—सू अठै वडो झगड़ौ हुवौ । आदमी आठ मा'राज रै हाथै ठौड़ रया अठै । अरु मा'राज घणा घावां पूर हुआ ।—द.दा.

२ युक्त, सहित । उ०—पवंग पूर पाखरां, सूर सिलहां बळ सम्मर ।
—सू.प्र.

सं०पु० [सं०] १ घाव का भराव, घाव के भरने की क्रिया ।

[?] २ फटा पुराना चिथड़ा या कपड़ा ।

उ०—१ लायो नटड़ो फावड़ो पुराणौ पूर जी कोई, जद चित आया सोड़'र गींदवा ।—लो.गी.

उ०—२ फाटचो सो गुदड़ो नहीं जे में पूर, वो थारी जच्चा-राणी ओढ़ै जी राज ।—लो.गी.

[सं०] ३ समूह । (ह.नां.मा.)

४ बहुतायत, भरमार ।

उ०—रोम रोम ग्रांमय रहै, पग पग संकट पूर । दुनियां से नजदीक दुख, दुनियां से सुख दूर ।—बां.दा.

५ जल की धारा ।

६ जल की बाढ ।

७ नदी की बाढ (मेवाड़)

८ धारापात प्रवाह ।

उ०—जाउ साहिब तूं नावियउ, मेहां पहलइ पूर । विचइ वहेसी वाहला, दूर स दूरे दूर ।—ढो.मा.

९ देखो 'पूरक' (रू.भे.)

उ०- दइवांण रुद्र एकादसां प्रांण पूर पति धरम पण । कविराय धीर कवि मंछ कह जय-जय स्री रघुवीर जण ।—रू.रू.

१० देखो 'पूरण' (रू.भे.)

उ०—मंण लगाड़े पालड़ां, तोलां मांहि कसूर । उर तज राखै हाडियां, पारद हूंता पूर ।—बां.दा.

११ देखो 'पूरौ' (मह., रू.भे.)

पूरउ—देखो 'पूरौ' (रू.भे.)

उ०—चदा तो किण खंडियउ, मो खंडी किरतार । पूनिम पूरउ ऊगसी, आवंतइ अवतार ।—ढो.मा.

पूरक-वि० [सं०] जो किसी की पूर्ति करता हो, पूरा करने वाला ।

उ०—पूरक पूरा है गोपाळ । सब की चिंता करै दरहाल ।
—दादूवांणी

सं०पु० [सं०] १ प्राणायाम विधि के तीन भागों में से पहली विधि जिसमें श्वास को नाक द्वारा खींच कर अंदर ले जाते हैं ।

उ०—१ निज आठ जोग अभ्यास अहनिस, सधै सुरधर जुगम रवि सस । करै रेचक पूरक कुंभक, वहै दम सिर ठाम ।—र.ज.प्र.

२ मृत्यु तिथि से दस दिन तक मृत व्यक्ति के नाम पर प्रतिदिन एक के हिसाब से दिये जाने वाले पिण्ड ।

३ गुणक अंक ।

रू०भे०—पूर ।

पूरण-वि० [सं०] १ जिसमें किसी प्रकार की कमी या कसर न हो, कामिल पूर्ण ।

उ०—म्हारा इण राज में फगत आप रो घणी म्हारो पूरण स्यांम भगत हो । रांम जांणै क्यूं उणरै जीवतां म्हनै औ विस्वास हो कै

खुद जमराज ई म्हनै कीं हांण नीं पुगा सकैला ।—फुलवाड़ी
२ परिपूर्ण, पूर्ण ।
उ०—पण तौ ई राजा ऊपर सूं रौब जतळावतौ पूरण अकड़ाई रै साथै रैयत रै सांमी गोखड़ा में ऊभौ व्हियौ ।—फुलवाड़ी
३ जितना चाहिए उतना, भरपूर ।
उ०—ज्यांरै खाल बिछावणी, ओढण नूं आकास । ब्रह्म पोस संतोस वित, पूरण सुख त्यां पास ।—बां.दा.
४ कुल, समूचा ।
सं०पु०—१ परिपूर्ण या पूर्ण करने की क्रिया या भाव ।
२ किसी रिक्त स्थान या अवकाश में किसी को बैठाना या भर देने की क्रिया या भाव, पूर्ति कर देने की क्रिया या भाव ।
३ समाप्त करने की क्रिया या भाव ।
४ पूर्ण ब्रह्म, परमात्मा, ईश्वर । उ०—आतम आप आप मांही पूरण, जिस फद है निरवांणी । चित्त सफंद, बातें फुरियां, ज्यूं बांझ पुत्र प्रगटांणी ।—स्री सुखरांमजी महाराज
५ आकाश, आसमान (अ.मा.)
६ मृतक के दसवें दिन दिया जाने वाला पिंड, पूरक पिंड, दशाह पिंड ।
७ जिसमें किसी आवश्यक अंग की कमी न हो, अखण्ड ।
उ०—परमेस्वर अणपार, परम पूरण परमातमा । स्रीपति असरण-सरण, तरणतारण त्रिगुणातम ।—रा.रू.
८ अंक का गुणन ।
रू०भे०—पुनं, पुनु, पुन्न ।

पूरणचंद-सं०पु० [सं० पूर्णचन्द्र] अपनी सब कलाओं से युक्त पूर्णिमा का चन्द्रमा । उ०—पलकां मिलबौ पाल उपाव अनंद नै । चितवै जांण चकोरक पूरणचंद नै ।—बां.दा.

पूरणता-सं०स्त्री० [सं० पूर्ण+रा.प्र.ता] १ पूर्ण होने की अवस्था ।
उ०—नै म्है तौ ईस्वर नै इणी रूप में मांनूं कै धौ न्याय, सच्चाई अर पूरणता री एक भावना मात्र है ।—फुलवाड़ी
२ अभाव, त्रुटि या कमी न होने की दशा । उ०—अर जिण कांम नूं आग्या करै तिण नूं पूरणता नूं पहुंचावै ।—नी.प्र.

पूरणपादासन-सं०पु० [सं० पूर्णपादासन] योग के चोरासी आसनों के अंतर्गत एक आसन जिसमें दोनों पांवों से सीधा खड़ा रहना होता है ।

पूरणपुरख, पूरणपुरण-सं०पु० [सं० पूर्णपुरुष] परमेश्वर, परब्रह्म ।
उ०—पूरण पुरस पुरांण प्रमेसर । सुकवि सधारवार अग्रेस्वर ।
—रा.रू.

पूरणप्रतिग्य-वि० [सं० पूर्णप्रतिज्ञ] अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने वाला, दृढ़प्रतिज्ञ ।

पूरणब्रहम, पूरणब्रह्म-सं०पु० [सं० पूर्णब्रह्म] १ ईश्वर, परमात्मा ।
उ०—प्रथम सुमर इण विध परमेस्वर । पूरणब्रह्म प्रताप अवंपर ।
—रा.रू.
२ देखो 'ब्रह्म' (रू.भे.)
रू०भे०—पुरनबिरंम, पूरणब्रह्म ।

पूरणमलोत-सं०पु०—कछवाह वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।

पूरणमासी-सं०स्त्री० [सं० पूर्णमासी] शुक्ल पक्ष का पंद्रहवां दिन जिस दिन चंद्रमा अपनी सब कलाओं से युक्त होता है, पूर्णिमा ।
उ०—तकण समै कासी माहै बरस दन माहै हेकण दन वैसाखी पूरणमासी करवत दे ए ।—कल्यांणदास नगराजोत बाढेल री बात
रू०भे०—पुण्णमासि, पुण्णमासी, पुरणवासी, पूरनमासी, पोरण-मासी ।

पूरणविराम-सं०पु० [सं० पूर्णविराम] वाक्य के पूर्ण हो जाने पर लगाया जाने वाला खड़ी लकीर का चिन्ह, पूर्णविराम, फुलस्टॉप ।

पूरणब्रह्म—देखो 'पूरणब्रह्म' (रू.भे.)
उ०—सेवग सात समंद, चाकर सूरज चंद । गावै सेस गुणेसं, पूरण-ब्रह्म परमेसं ।—पि.प्र.

पूरणा-सं०स्त्री० [सं० पूर्णा] मास की पंचमी, दशमी, अमावस्या एवं पूर्णिमा की तिथियां ।

पूरणाघात-सं०पु० [सं० पूर्णाघात] ताल में अनाघात के एक मात्रा के बाद आने वाला स्थान (संगीत)

पूरणानंद-सं०पु० [सं० पूर्णानन्द] परमेश्वर ।

पूरणावतार-सं०पु० [सं० पूर्णावतार] सम्पूर्ण कलाओं सहित किसी देवता का अवतार ।
वि०वि०—विष्णु के तीन अवतार ही पूर्णावतार माने जाते हैं यथा—नृसिंहावतार, रामावतार और श्रीकृष्णावतार ।

पूरणाहुति, पूरणाहुती-सं०स्त्री० [सं० पूर्ण+आहुति] १ यज्ञ की समाप्ति पर दी जाने वाली आहुति ।
२ किसी की समाप्ति पर किया जाने वाला अंतिम कृत्य (लाक्षणिक)
रू०भे०—पुरणाहुति, पुरणाहुती ।

पूरणिमा-सं०स्त्री० [सं० पूर्णिमा] प्रत्येक मास के शुक्ल पक्ष की अंतिम तिथि, इस तिथि को उदय होने वाला चन्द्रमा पूर्ण सोलह कलाओं से युक्त होता है । उ०—तौ केसपास छै सोइ राति भई । राका कहतां पूरणिमा ताकौ ईस चंद्रमा सोई मुख हुऔ ।
—वेलि. टी.
रू०भे०—पुंन्यु, पुण्णिम, पुनम, पुनमी, पुनम्म, पुनिम, पुन्यु, पुरणिम, पूनम, पूनमी, पूनिम, पूनिमी, पूनू, पूनो, पून्यम, पून्यु, पून्यूं ।

पूरणी-सं०स्त्री० [सं० पूर्ण...] १ मजबूती के लिए किसी दीवार से लगा कर कुछ ऊपर तक उठाई गई दीवार या पत्थर की पुश्त, पुश्ती ।
२ पूर्ण कार्य ।

पूर्णेंदु-सं०पु० [सं० पूर्णेन्दु] पूर्णिमा का चंद्रमा ।

पूरणोपमा-सं०पु० [सं० पूर्णोपमा] उपमा अलंकार का प्रथम भेद जिसमें उपमेय, उपमान, वाचक और धर्म चारों अंग प्रकट रूप से वर्तमान रहते हों।

पूरणो, पूरबो-क्रि०स० [सं० पूरणम्] १ किसी खाली स्थान को भरना. पूर्ति करना। उ०—आगइ पत्र जोगणियां तणा पूरिया, ग्रोभंण गूद गिलइ अउगाढ़। बीजा गिरवर किया बहादर, चुणिया सूरज भइंजर चाढ़।—महादेव पारवती री वेलि

२ तृप्त करना, संतुष्ट करना। उ०—वह सिरहूं नांखे वह वडती, बिसरति पूरति विवरति वेसि। लाडी धावै गगन लोडती, दोड़ाया मह चौदस देस।—दूदो

३ पूर्ण करना, पूरा करना। उ०—नील धरण हयवर ऊपरै, राज थयो असवार। सहु गुण लक्षण पूरियो, ते हयवर सीकार।—वि.कु.

४ (मनोरथ या आशा) सफल करना, आशा पूरी करना।

उ०—हां महाराज! महाराज रा मनोरथ स्रीमहाराज पूरै। अखिमाति ऊबरै।—वचनिका

५ पूरा पड़ना, गुजर चलना।

६ मंगल अवसरों पर आटा, अबीर खड़ी आदि से चौखूटे आदि क्षेत्र बनाना।

ज्यूं—चौक पूरणो।

७ बजाना (शंख)

उ०—रथ राजन कीयो भेळो, नाथ होइ निसंक। रुखमणी दीठी रथइ बइठो, स्वांमि पूरयउ संख।—रुकमणि मंगळ

क्रि०अ०—८ व्यतीत होना, समाप्त होना।

उ०—दिन-दिन डोहला पूरतो, बोल्या पूरा मास। सुत जायो रलियांमणो, सहु नी पूरी आस।—वि.कु.

९ भर जाना, पूर्ण हो जाना।

उ०—पूरब पराक्रम पूरियो, सिर लागै असमान। गिरे भंगर भागे न गो, चढि आयो मैदान।—गु.रू.वं.

पूरणहार हारो (हारी), पूरणियो—वि०।

पूराड़णो, पूराड़बो, पूराणो, पूराबो, पूरावणो, पूरावबो—प्रे०रू०।

पूरिओड़ो, पूरियोड़ो, पूरयोड़ो—भू०का०कृ०।

पूरीजणो, पूरीजबो—कर्म वा०, भाव वा०।

पूरवणो, पूरवबो—रू०भे०।

पूरत, पूरति-सं०स्त्री० [सं० पूर्ति] पूर्णता, पूरापन।

उ०—जोगणपुरी मयण तण जोवण, वर प्रापत गहि पूरत वेस। परणै जिकी चढ़ी तैं परणवा, नव खंड हिंदू तुरक नरेस।—दूदो

रू०भे०—पुत्ति।

पूरनमासी—देखो 'पूरणमासी' (रू.भे.)

पूरपटी-क्रि०वि० [...] पूरे वेग से, तेज गति से।

उ०—अगळो वळ ओपन पूरपटं। लख मोलिय जायल नेस लटं।

—पा.प्र.

पूरब—देखो 'पूरव' (रू.भे.) (अ.मा., डिं.को.)

उ०—१ पुनि पुन्य उदै भए पूरब के। उघरे उर अंक अपूरब के।

—ऊ.का.

उ०—२ अपभ्रंस भाखा प्राक्रत सो कुळ का विचार जिसतेसी प्राक्रत भाखा विस्तार करि गाई। जिसमें पूरब, पच्छिम, उत्तर, दक्खिण ए च्यार भाखा करि दिखाई।—सू.प्र.

पूरबज—देखो 'पूरवज' (रू.भे.) (अ.मा., ह.नां.मा.)

उ०—पूरबजां तणी अजादन पलटी, पहलां लें हिंदू अबळ। बसू जीत सायरां विचाळै, 'बापै' लीधा आप बळ।

—महारावळ बापा री गीत

पूरबजलम—देखो 'पूरवजन्म' (रू.भे.)

पूरबदेव—देखो 'पूरवदेव' (रू.भे.) (अ.मा., डिं.को, नां.मा.)

पूरबपत, पूरबपति, पूरबपती—देखो 'पूरवपति' (रू.भे.)

(अ.मा., ना.डिं.को., नां.मा., ह.नां.मा.)

पूरबभव—देखो 'पूरवभव' (रू.भे.)

उ०—गोतम! सुण पूरब भव एह। अंते क्षमा अधिकी करी जो, निज रांणी दीधो देह।—जयवांणी

पूरबमीमांसा—देखो 'पूरवमीमांसा' (रू.भे.)

पूरबळ-सं०पु० [?] १ पूर्वजन्म, पहिला जन्म।

२ प्राचीन समय, पुराना जमाना।

३ पूरी शक्ति, पूरी ताकत।

पूरबलो—देखो 'पूरवलो' (रू.भे.)

उ०—१ नंह राखूं नांनींह, सुण म्हारी विपही सरब। छिप मत रख छांनींह, कहदै पूरबलो कथा।—पा.प्र.

उ०—२ थे छिटकाई मनै सासरै, काढ्यो पूरबलो कासू बैर।

—लो.गी.

(स्त्री० पूरबली)

पूरबाचळ—देखो 'पूरवाचळ' (रू.भे.)

पूरबानक्षत्र, पूरबानखत्र—देखो 'पूरबाफालगुणी' ?

उ०—धरा वेध खत्र खेद चत्र कोट गढ ढेलड़ी, पूरबानखत्र सुवखत प्रमांणी। साह अवरंग अवतार सिसपाळ रो, 'राजसी' किसन अवतार रांणी।—महारांणा राजसिंह रो गीत

पूरबाफालगुणी—देखो 'पूरवाफालगुणी' (रू.भे.) (अ.मा.)

पूरबासाढा—देखो 'पूरवासाढा' (रू.भे.)

पूरबिया-वि० [सं० पूर्व+रा.प्र.इया] पूरब का, पूरब सम्बन्धी।

सं०पु० [व.व.] १ पूरब के राजपूत जो देशी राज्यों की सेना में भरती किये जाते थे।

सं०स्त्री०—२ चौहान राजपूतों की एक शाखा।

३ नाइयों की एक शाखा।

रू०भे०—पुरबिया।

पूरबियो-सं०पु० [सं० पूर्व+रा.प्र.इयो] १ पूर्व दिशा का निवासी।

(स्त्री० पूरबियण)
२ उत्तर प्रदेश का निवासी।
३ चौहान राजपूतों की पूरबिया शाखा का व्यक्ति।
४ पूरबिया शाखा का नापित, नाई।
रू०भे०—पुरबियौ।
पूरबी—देखो 'पूरबौ' (रू.भे.)
पूरब्ब—देखो 'पूरब' (रू.भे.)
उ०—पत्त गाहै पट्टण आप वळ, दोमफि भंजे कच्छ दळ। पूरब्ब हूंत आवें पच्छिम, सोह प्रवाहौ किय सबळ।—गु.रू.बं.
पूरब-वि० [सं० पूर्व] पहले (का), आगे (का)।
सं०पु०—१ वह दिशा जहाँ मघा नक्षत्र उदय होता है, पश्चिम के ठीक सामने की दिशा। (अ.मा., डिं.को.)
२ राजस्थान के पूर्व दिशा की ओर का प्रदेश, उत्तर प्रदेश।
३ सत्तर लाख छप्पन हजार वर्ष को एक करोड़ से गुणा करने पर होने वाला समय, ७०५६०००,००००००० वर्ष। (जैन)
रू०भे०—पुब्ब, पुरब, पूरव, पूरब्ब, पुव, पुव्व।
पूरबकरम-सं०पु० [सं० पूर्वकर्म्मन्] १ रोगोत्पत्ति के पहिले किये जाने वाले कार्य। (सुश्रुत)
२ पूर्व जन्म के किये हुए कार्य।
पूरबगंगा-सं०स्त्री० [सं० पूर्वगंगा] नर्मदा नदी।
पूरबग्यान-सं०पु० [सं० पूर्वज्ञान] १ पहिले या पूर्व का ज्ञान।
२ पूर्व जन्म का ज्ञान।
पूरबज-सं०पु० [सं० पूर्वज] १ बड़ा भाई। (डिं.को.)
(स्त्री० पूरबजा)
२ पूर्व पुरुष, पुरखा।
रू०भे०—पूरवज।
पूरबजन्म-सं०पु० [सं० पूर्वजन्मन्] पिछला जन्म, इस जन्म से पहले का जन्म।
रू०भे०—पूरबजलम।
पूरबजन्मा-सं०पु० [सं० पूर्वजन्मा] बड़ा भाई, अग्रज (डिं.को.)
पूरबण-वि० (स्त्री० पूरबणी) पूर्ण करने वाला।
पूरबणौ, पूरबबौ-क्रि०अ० [सं० पोषणम्] १ पालना, पोसना।
२ देखो 'पूरणौ, पूरबौ' (रू.भे.)
उ०—ओ अमल पूरबूं कठा सूं, लाऊं फाईक लाड में। परबात पीहर जास्यूं परी, खावंद पड़ज्यौ खाड में।—ऊ.का.
पूरबणहार, हारौ (हारी), पूरबणियौ—वि०।
पूरबिग्रोड़ौ, पूरबियोड़ौ, पूरब्योड़ौ—भू०का०कृ०।
पूरबीजणौ, पूरबीजबौ—कर्म वा०।
पूरबतरकासन-सं०पु० [सं० पूर्वतर्कासन] योग के चौरासी आसनों के अंतर्गत एक आसन जिसमें दोनों हाथों के पंजों को कपोलों पर लगा कर दोनों हाथों की टहुनी को दोनों घुटनों पर रखते हैं और देह को सामने झुका कर बैठते हैं।
पूरबदिग्वदन-सं०पु० [सं० पूर्वदिग्वदन] मेष, सिंह और धनु राशियां (ज्योतिष)
पूरबदिगीस-सं०पु० [सं० पूर्वदिगीश] १ इन्द्र।
२ मेष, सिंह और धनु ये तीन राशियां (ज्योतिष)
पूरबदिस्ट-सं०पु० [सं० पूर्वदिष्ट] पूर्व कर्मों के फलस्वरूप भोगे जाने वाले दुःख-सुख।
पूरबदेव-सं०पु० [सं० पूर्वदेव] १ नर और नारायण (अ.मा.)
२ असुर, राक्षस।
रू०भे०—पूरबदेव।
पूरबधर, पूरबधार, पूरबधारी-वि० [सं० पूर्वधारी] पूर्व ज्ञान को धारण करने वाले (जैन)
उ०—१ एह तणि उतपति कहुं, निरयुक्ति नई अणुसार। भद्रबाहु सामी भणइ, चउद पूरबधर सार।—स.कु.
उ०—२ रक्षमावंत सतवंत छे रे, चवदे पूरबधार। चउनांणी गुरु साथे मुनिवर परवरया रे, पंच सयां अणगार।—जयवांणी
उ०—३ कुण चवदे पूरबधारी साधुजी केवली जिम हो देता प्रतिबोध के। इण निद्रा परताप सूं मरने, गया हो नरक निगोद के।—जयवांणी
पूरबपक्ष-सं०पु० [सं० पूर्वपक्ष] १ चन्द्रमास का कृष्ण पक्ष।
२ शास्त्र विषय के सम्बन्ध में उठाई हुई बात, प्रश्न या शंका।
३ अभियोग में वादी द्वारा उपस्थित किया हुआ दावा या बात, मुद्दई का दावा।
रू०भे०—पूरबपख।
पूरबपक्षी-सं०पु० [सं० पूर्वपक्षिन्] १ पूर्व का पक्ष उपस्थित करने वाला व्यक्ति. २ दावा दायर करने वाला व्यक्ति।
पूरबपख—देखो 'पूरबपक्ष' (रू.भे.)
पूरबपति-सं०पु० [सं० पूर्वपति] इन्द्र।
रू०भे०—पूरबपत, पूरमपति, पूरबपती।
पूरबफालगुनी—देखो 'पूरवाफालगुनी' (रू.भे.)
पूरबभव-सं०पु० [सं० पूर्व+भव] पूर्व जन्म, पहला जन्म।
उ०—पूरबभव तणइ करम संयोगि, पाणि ग्रहण इण परि हुउं ए। बोलइ मुनिवर हीराणंद, घन नर जीह वंछित फलू ए।—हीराणंद सूरि
रू०भे०—पुवभव, पुव्वभव, पूरबभव।
पूरबभाद्रपद—देखो 'पूरवाभाद्रपद' (रू.भे.)
पूरबमीमांसा-सं०पु० [सं० पूर्वमीमांसा] कर्मकांड सम्बन्धी बातों का वह दर्शन शास्त्र जिसकी रचना जैमिनि मुनि ने की थी।
रू०भे०—पूरबमीमांसा।
पूरबराग-सं०पु० [सं० पूर्वराग] संयोग से पूर्व ही नायक-नायिका में होने वाला प्रेम या अनुराग, पूर्वानुराग।
पूरबरूप-सं०पु० [सं० पूर्वरूप] १ प्रारम्भिक आकार या रूप, पहिले का आकार या रूप।

२ एक अर्थालंकार जिसमें किसी के विनिष्ट गुण, वैभव आदि के वापिस लौटने का उल्लेख होता है। उ०—पूरव रूप क गुण परठ, तजि फिर अपणो लेत। दूजे जिह गुण ना दरस, होय मेटणे हेत। —पिंगळ सिरोमणि

पूरबलो-वि० [सं० पूर्व+रा.प्र. लो] पहिले का, पूर्व का।
(स्त्री० पूरबली)
उ०—१ दादू रंग भर खेलूं पीव सौं, तहं कबहुं न होइ वियोग। दूजे जिह गुण ना दरस, होय मेटणे हेत।—दादूवांणी
उ०—२ कुमर परीक्षा जोइवा, आयो तिहां वन देव। रूप कियो वांनर तणो, तज पूरबली टेव।—वि०कु०
२ प्राचीन समय का, पुराने जमाने का, पहिले समय का।
३ पूरी शक्ति वाला, पूरी ताकत वाला।
रू०भे०—पुरबलो, पूरबलो।

पूरबवाद-सं०पु० [सं० पूर्ववाद] न्यायालय में किसी व्यक्ति द्वारा व्यवहार शास्त्र के अनुसार उपस्थित किया जाने वाला अभियोग, नालिश।

पूरबवादी-सं०पु० [सं० पूर्ववादिन्] न्यायालय में अभियोग उपस्थित करने वाला, वादी, मुद्दई।

पूरबव्रत-सं०पु० [सं० पूर्ववृत्त] इतिहास।

पूरबांग-सं०पु० [सं० पूर्वाङ्ग] चोरासी लाख वर्ष का समय। (जैन)
रू०भे०—पुब्बंग, पुव्वांग।

पूरबाखाड़ा—देखो 'पूरबसाढ़ा' (रू.भे.) (अ मा.)

पूरबाचळ-सं०पु० [सं० पूर्वाचल] उदयाचल पर्वत।
रू०भे०—पूरबाचळ।

पूरबाचारिज-सं०पु० [सं०पूर्वाचार्य] पहले के आचार्य।
उ०—घ्रत जांण आचरण परंपर पूरबाचारिज कही। भगवंत भास्यउ सत्य तेहिज खांचातांण करिवो नहीं।—स०कु०

पूरबानुराग—देखो 'पूरबराग'।

पूरबापर-अव्य० [सं० पूर्वापर] आगे-पीछे।
वि०—आगे का और पीछे का।
सं०पु०—आगे-पीछे की बात।

पूरबाफ़ालगुणी-सं०पु० [सं० पूर्वाफाल्गुनी] दो तारों वाला, सत्ताईस नक्षत्रों में से ग्यारहवां नक्षत्र जिसका आकार पलंग की तरह माना गया है। (ज्योतिष)
रू०भे०—पूरबाफालगुणी, पूरबफाल्गुनी।

पूरबाभाद्र, पूरबाभाद्रपद, पूरबाभाद्रपदा-सं०पु० [सं० पूर्वाभाद्रपदा] सत्ताईस नक्षत्रों में से पच्चीसवां नक्षत्र जिसका आकार घण्टे की तरह माना गया है। (ज्योतिष) (अ०मा०)

पूरबारद्ध-सं०पु० [सं०पूर्वार्द्ध] १ किसी काम, चीज या बात का प्रारम्भ का आधा भाग।
२ शरीर का पहला अर्द्ध भाग।

पूरबासाढ़ा-सं०पु० [सं०पूर्वाषाढ़ा] सत्ताईस नक्षत्रों में से बीसवां नक्षत्र जिसका आकार सूप का सा माना जाता है।
उ०—पूरबासाढा में खाडा में पड़िया। अगले अनरथ रा अंकुर ऊपड़िया।—ऊ०का०
रू०भे०—पूरबासाडा, पूरबाखाडा।

पूरबियोड़ो-भू०का०कृ०—१ पाला हुआ, पोसा हुआ।
२ देखो—'पूरियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० पूरबियोड़ी)

पूरबिलइ-वि० [सं० पूर्विल] पूर्व का, पिछला।
उ०—निसुणउ लाडीय तपह प्रमांणु। पूरबिलइ भवि कियउं नियांणु।—पं०पं०च०

पूरबी-वि० [सं०पूर्वीय] १ पूर्व दिशा का, पूर्व दिशा सम्बन्धी।
२ पहले का, पूर्व का।
उ०—मुनी ताके छाके सुख रु दुख थाके बळ मही। अपूरबी आभा यो लखत कृत पूरबी फळ लही।—ऊ०का०
सं०स्त्री०—१ एक बोली।
२ एक रागिनी।
३ बिहार प्रांत में बिहारी भाषा में गाया जाने वाला एक दादरा।
रू०भे०—पुरबी, पूरवी।

पूरबीघाट-सं०पु०[सं० पूर्वी+घट्ट] दक्षिण भारत में पूर्वी समुद्र के साथ साथ बालासोर से कन्याकुमारी तक गया हुआ पहाड़ों का सिलसिला।

पूरसल-वि० पूर्ण।

पूरहूत—देखो 'पुरुहूत' (रू.भे.)
उ०—प्रीतकर पूरहूत ऊपर, उठे रघुवर आप। सहस भग किय चसम सहसा, सकत मेटे स्राप।—र०रू०

पूरांणो—देखो 'पुरांणो' (रू.भे.)
उ०—जद स्वांमीजी बोल्या—थांरा बाप, दादा, पड़ दादा आदि पीढ़ियां रा नांम तथा त्यांरी पूरांणी वातां जांणो हो सो कुण देखी है? —भि०द्र०
(स्त्री० पूरांणी)

पूराडणो, पूराडबो—देखो 'पूराणो, पूराबो' (रू.भे.)
पूराडणहार, हारो(हारी), पूराडणियो—वि०।
पूराडिओड़ो, पूराडियोड़ो, पूराड्योड़ो—भू०का०कृ०।
पूराडीजणो, पूराडीजबो—कर्म०वा०।

पूराडियोड़ो—देखो 'पूरायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० पूराडियोड़ी)

पूराणो, पूराबो-क्रि०स० ('पूरणो' क्रिया का प्रे०रू०) १ किसी खाली स्थान को भराना, पूर्ति कराना।
२ तृप्त कराना, संतुष्ट कराना।
३ पूरा कराना, पूर्ण कराना।
४ मनोरथ सफल कराना, आशा पूरी कराना।

५ मंगल अवसरों पर आटा, अबीर, खड़ी आदि से चौखूटे क्षेत्र आदि बनवाना ।
६ बजवाना (शंख) ।
७ व्यतीत कराना, समाप्त कराना ।
८ भरवाना, पूर्ण कराना ।
पूराणहार, हारौ (हारी), पूराणियौ—वि० ।
पूरायोड़ौ—भू०का०कृ० ।
पूराईजणौ, पूराईजबौ—कर्म०वा० ।
पूरातन—देखो 'पुरातन' (रू.भे.)
पूरामास-वि० [सं० पूर्ण+मास] पूरे नौ मास की गर्भवती (स्त्री)
पूरायोड़ौ—भू०का०कृ०—१ किसी खाली स्थान को भराया हुआ, पूर्ति कराया हुआ ।
२ तृप्त किया हुआ, संतुष्ट किया हुआ ।
३ पूरा कराया हुआ, पूर्ण कराया हुआ ।
४ मनोरथ सफल कराया हुआ, आशा पूरी कराया हुआ ।
५ मंगल अवसरों पर आटा, अबीर, खड़ी आदि से चौखूटे क्षेत्र आदि बनवाया हुआ ।
६ बजवाया हुआ (शंख)
७ समाप्त कराया हुआ, व्यतीत कराया हुआ ।
८ भरवाया हुआ, पूर्ण कराया हुआ ।
(स्त्री० पूरायोड़ी)
पूरावणौ, पूरावबौ—देखो 'पूराणौ, पूराबौ' (रू.भे.)
उ०—१ लावण लाडू व दोवड़ी छावड़ी, भरीय भणावउ रे । फळहलि छाब भरावउ रे, वेमंइ कळस पूरावउ रे ।—रुकमणी मंगळ
उ०—२ सुख भाया अंजस सयण, आयां सिध अवसांण । पितु मनसा पूरावियां, ज्यां जाया चित जांण ।—जैतदांन बारहठ
उ०—३ मणिमय पूतली सोवनथंभ, मोतीय चउक पूरावियां ए । कुंकुय चंदणि छडउ दिवारि, घरि घरि तोरण ऊभीयां ए ।
—पं.पं.च.
पूरावणहार, हारौ (हारी), पूरावणियौ—वि० ।
पूराविओड़ौ, पूरावियोड़ौ, पूराव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
पूरावीजणौ, पूरावीजबौ—कर्म वा० ।
पूरावियोड़ौ—देखो 'पूरायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० पूरावियोड़ी)
पूरित-वि० [सं०] १ परिपूर्ण, पूर्ण भरा हुआ ।
२ तृप्त, संतुष्ट ।
पूरिय—देखो 'पुरी' (रू.भे.)
उ०—धनदिहि सइ हथि थापिय वापी अवर आरामि । मणि कण घण संपूरिय पूरिय द्वारका नांमि ।—जयसेखर सूरि
परियाकल्यांण-सं०पु० [?] सम्पूर्ण जाति का एक शंकर राग जो रात के पहले प्रहर में गाया जाता है ।
पूरियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ किसी स्थान को भरा हुआ, पूर्ति किया हुआ ।
२ तृप्त किया हुआ, संतुष्ट किया हुआ ।
३ पूरा किया हुआ, पूर्ण ।
४ मनोरथ सफल किया हुआ, आशा पूरी किया हुआ ।
५ पूरा पड़ा हुआ, गुजारा चला हुआ ।
६ मंगल अवसरों पर आटा, अबीर, खड़ी आदि से चौखूटे आदि क्षेत्र बनाया हुआ ।
७ बजाया हुआ (शंख)
८ व्यतीत हुआ, समाप्त हुआ ।
९ भरा हुआ, पूर्ण हुआ ।
(स्त्री० पूरियोड़ी)
पूरी-वि०—१ देखो 'पूरौ' (स्त्री०)
उ०—सखी अमीणा कंथ री, पूरी एह प्रतीत । कै जासी सुर अंगड़ै, कै आसी रण जीत ।—बां.दा.
२ देखो 'पुरी' (रू.भे.)
पूरु-सं०पु० [सं०] १ वैराज मनु के एक पुत्र. २ मनुष्य ।
पूरुस—देखो 'पुरुस' (रू.भे.)
पूरैपाठै-क्रि०वि० [?] पूरी तरह से परिपक्व अवस्था में (गर्भ)
रू०भे०—पूरापाठै ।
पूरौ-वि० [सं० पूर्ण] (स्त्री० पूरी) १ जिसके अन्दर कुछ अवकाश न हो, जिसका भीतरी भाग बिलकुल भरा हुआ हो, भरपूर ।
२ जितना आवश्यक हो, यथेच्छ, यथेष्ट, पर्याप्त ।
उ०—१ पदमणि पुरवारै पंगरण नह पूरा, भूखा सूतोड़ा संगरण घै भूरा । रोजा निसवासर संठां में राजै, बैंकूति कंठां में अलगोजा बाजै ।—ऊ.का.
मुहा०—१ पूरौ पड़णौ—निर्वाह होना ।
२ पूरौ होणौ—समाप्त होना, पूर्ण होना ।
३ समग्र, समूचा, सारा, कुल, सम्पूर्ण ।
उ०—१ लेतो कर कर लाड, दूसरा हसि हसि देतो । नेता हूज्यो नास, वणायो पूरो वेतो—ऊ.का.
उ०—२ पूरी एक बरस बीत्यां म्हारै कनै आज रै दिन पाछा इणी ठौड़ आजो । आठूं दिसावां में मन करै उठी नै जावो परा ।
—फुलवाड़ी
४ जो अपूर्ण या अधूरा न हो, पूर्ण ।
उ०—नमस्कार सूरां नरां, पूरा सतपुरसांह । भारत गज थाटां भिड़ै, अड़ै भुजां उरसांह ।—बां.दा.
मुहा०—१ पूरौ करणौ—सम्पूर्ण करना, समाप्त करना, निपटाना, गुजारना ।
२ पूरौ होणौ—समाप्त होना, पूर्णता की स्थिति में होना ।
५ ऐसा क्रम जो एक निश्चित सीमा तक चल कर पुनः शुरू होता

हो। आदि से अन्त तक का।

उ०—पूरा एक बरस रै उपरांत रितुवां रो गेड़ो पूरो व्हियो। सांवण भादवा रा मईनां में भुरजाळा बादळा धरती माथै ओलरिया तो वे ओलरिया के बात छोडो।—फुलवाड़ी

मुहा०—पूरो होणो—समाप्त होना, पूर्णता को प्राप्त करना।

६ जिसमें कोई कोर-कसर या कमी न रह गई हो, सर्वांगीण।

उ०—थोड़ा दिनां तक उणरै घरै रैय, आपरी झोळी रै सांपां सूं भिड़ाय नोळिया नै पूरो हुंसियार कर दियो।—फुलवाड़ी

मुहा०—पूरो उतरणो—नाप तौल में बराबर होना।

७ आकार, घनता, विस्तार आदि के विचार से ठीक विस्तृत एवं व्याप्त हो चुका हो।

ज्यूं—पूरो जवांन।

८ दृढ़, पक्का, अटल।

उ०—१ सत वक्ता सद्धासील, समीक्षक सूरो। पुरुसारथ पूरण प्रेम प्रतिग्या पूरो।—ऊ.का.

उ०—२ चेली अरु चेला मांहै मेळा, कांम बिकळ किळकंदा है। नित हांजी नांजी पूरा पाजी, ताजी रांड तकंदा है।—ऊ.का.

उ०—३ ऐड़ो नीं व्है के भैस्यां ब्याय जावै अर धनै ऊंघ आय जावै। पाडियां नै जिनावर खाय जावैला। पूरो जाब्तो राखजे।

—फुलवाड़ी

उ०—४ रात दिवस भज रांम नरेसर, पात राख नेहचो मन पूरो।

—र.ज.प्र.

मुहा०—पूरो उतरणो—वादा, कौल, प्रतिज्ञा में खरा उतरना, तोल में पूरा होना।

९ संतोषजनक, तुष्टीपूर्ण, संतोषप्रद।

उ०—रांणी कह्यो—नी, नीं आपनै फोड़ा भुगतण री कीं जरूरत कोनीं। म्हांरो तो इण आश्रम में पूरो मन रमग्यो।—फुलवाड़ी

मुहा०—(मुराद) पूरी करणी—मनवांछित फल प्राप्त होना, इच्छा पूर्ण होनी।

उ०—द्रव्य सत्य नै भाव सत्य नै, मांहो रह्या नहीं रूड़ा रे। भाव सत्य कोई काढसी, ते परमेस्वर नै पूरा रे।—जयवांणी

पूलालाग-सं०पु०यौ० [देशज] एक प्रकार की लाग जो खेत में अनाज कटने पर, अनाज के पौधों के गट्ठर के रूप में नित्य काम आने वाली जातियां लेती हैं।

पूळी—देखो 'पूळो' (स्त्री०)

पूळो-सं०पु० [सं० पूलक] घास, तृण आदि का बंधा हुआ गट्ठर।

उ०—१ ऊछळे खळे तज तुरंग एक। वासूळे पूळां सूं विसेख।

—रा.रू.

उ०—२ सासू बहू म्हे चली खेत नैं, लीनो गंडासो हाथ। सासूजी तो पूळा काटद्या, कोई म्हे काटद्या सर ए पचास।—लो.गी.

मह०—पूआल।

पूवो—देखो 'पुओ' (रू.भे.)

पूस-सं०पु० [सं० पौष] मार्गशीर्ष के बाद आने वाला हेमंत ऋतु का दूसरा चोद्रमास, विक्रमी संवत का दसवां महीना।

रू०भे०—पो', पोस, पोसो, पोह, पौह।

पूसण-सं०पु० [सं० पूषण] १ सूर्य।

२ बारह आदित्यों में से एक।

३ पालन-पोषण करने वाला।

रू०भे०—पूखण, पूखा, पूसा।

पूसणा-सं०स्त्री० [सं० पूषणा] कार्तिकेय की अनुचरी एक मातृका।

पूसदंतहर-सं०पु० [सं० पूसदंतहर] शिव के अंश से उत्पन्न वीरभद्र नामक एक अनुचर जिसने सूर्य का दांत तोड़ा था।

पूसली-सं०स्त्री० [देशज] देखो 'पुसी' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—इरै छोकरी झारी भर नै ले आई। तिसै बाई पूसली भर नै देखै तो पांणी मांहे तेल होज तेल दीसै।

—वीरमदे सोनिगरा री वात

पूसा-सं०स्त्री० [सं० पूषा] १ दाहिने कान की एक नाड़ी का नाम।

—हठयोग

२ देखो 'पूसण' (रू.भे.)

पूहडणो, पूहडबो—देखो 'पहडणो, पहडबो' (रू.भे.)

पूहडणहार, हारो (हारी), पूहडणियो—वि०।

पूहडिओड़ो, पूहडियोड़ो, पूहड्योड़ो—भू०का०कृ०।

पूहडीजणो, पूहडीजबो—भाव वा०।

पूहडियोड़ो—देखो 'पहडियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० पूहडियोड़ी)

पूहण—देखो 'पुरण' (रू.भे.)

पूहतणो, पूहतबो—देखो 'पहुंचणो, पहुंचबो' (रू.भे.)

उ०—थळि थळि थाणा सहू फल्यां, जलि-जलि कमळ विकास। आस न पूहती अह्म-तणी, अहो रे आसो मास।—मा.कां.प्र.

पूहप—देखो 'पुस्प' (रू.भे.)

पूहमीपोख—देखो 'प्रथवीपोख' (रू.भे.) (ना.मा.)

पूहर—देखो 'प्रहर' (रू.भे.)

उ०—१ कांम कुतूहळ केलवी, कांमिनी केते ठांमि। आठ पूहर ऊलग करइ, मन सिद्धि माधव स्वांमि।—मा.कां.प्र.

उ०—२ हीव राजा समस्त रातरै पूहर सभा जोड़नै सारा ही उमरावां नै, प्रधांन नै भेळा करै नै मनसूबो पूछीयो।

—रीसालू री वात

पेंचकस—देखो 'पेचकस' (रू.भे.)

पेंज—देखो 'पेज' (रू.भे.)

उ०—अविचळ छत्र सुख-सुख ओप उच्छव आंण जै। परतख अलंकृत जस पेंज प्रभत प्रमाण जै।—बां.दा.

पेंजार—देखो 'पेंजार' (रू.भे.)

उ०—पावड़ी नै पेंजार। पहिरे नहीं पगां मंझार।—जयवांणी
पेंटर-सं०पु० [अं०] चित्रकार, रंगसाज।
पेंटिंग-सं०स्त्री० [अं०] चित्रकारी, रंगसाजी।
पेंड—१ देखो 'पेंड' (रू.भे.)
उ०—वात भली दिन पाधरा, पेंडै पाकी बोर। घर मिटल घोड़ा जिसी, लाडू मारै चोर।—फुलवाड़ी
२ देखो 'पेंडो' (मह०, रू.भे.)
पेंडो—१ देखो 'पेंडो' (रू.भे.)
उ०—राव रा आदमी हाथीयां नुं गया छै, पाछा वळता इण पेंडै आवसी।—राव मालदे री वात
२ देखो 'परींडो' (रू.भे.)
पेंडी—देखो 'पींदो' (अल्पा०, रू.भे.)
पेंवड-सं०पु० [?] एक घास विशेष जो अकाल के समय मनुष्यों द्वारा खाने के काम में लिया जाता है।
पेंसन—देखो 'पेनसन' (रू.भे.)
पेंसनर—देखो 'पेनसनर' (रू.भे.)
पेंसिल—देखो 'पेनसिल' (रू.भे.)
पे-सं०स्त्री०—१ पेटी। २ पीने की क्रिया, पीवन। ३ भोग। ४ पक्ष। ५ अंडा। ६ पानी, जल (एका.)
पेई-सं०स्त्री० [सं० पेटिका] छोटी सन्दूक, पेटी।
उ०—पीहर पूंछै खोलणी, पेई मूखण केर। हेड़वियां भाभी हंसी, नणंद कनै नाळेर।—वी.स.
रू०भे०—पेयी।
पेकंबर—देखो 'पैगंबर' (रू.भे.)
पेकार-सं०पु० [देशज] गाने का व्यवसाय करने वाला व्यक्ति।
पेखक—देखो 'प्रेक्षक' (रू.भे.)
पेखणी—देखो 'पेसणी' (रू.भे.)
पेखणो, पेखबो-क्रि०स० [सं० प्रेक्षणं, प्रा० पेक्खण] देखना, अवलोकन करना।
उ०—१ दनां दाखियो मूक पाहाड़ देखो। प्रभू पंच जोधा महासूर पेखो।—सू.प्र.
उ०—२ गुण को प्रवाह, रूप को निधान, गुणवंत की लूस, जोवन को पेखणो, इसी उमां सांखुली छै।—लाली मेवाड़ी री वात
पेखणहार, हारो (हारी), पेखणियो—वि०।
पेखाडणो, पेखाडबो, पेखाणो, पेखाबो, पेखावणो, पेखावबो—प्रे०रू०।
पेखिओड़ो, पेखियोड़ो, पेख्योड़ो—भू०का०कृ०।
पेखीजणो, पेखीजबो—कर्म वा०।
पईखणो, पईखबो, पिक्खणो, पिक्खबो, पिखिखणो, पिखिखबो, पिहुक्खणो, पिहुक्खबो, पेखहणो, पेखहबो—रू०भे०
पेखहणो, पेखहबो—देखो 'पेखणो, पेखबो' (रू.भे.)
उ०—बळिहारी गुरु वयणड़े, बळिहारी गुरु मुख चंद रे। बळिहारी गुरु नयणड़े, पेखहता परमाणंद रे।—स.कु.
पेखहणहार, हारो (हारी), पेखहणियो—वि०।
पेखहिओड़ो, पेखहियोड़ो, पेखह्योड़ो—भू०का०कृ०।
पेखहीजणो, पेखहीजबो—कर्म वा०।
पेखहियोड़ो—देखो 'पेखियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० पेखहियोड़ी)
पेखाडणो, पेखाडबो—देखो 'पेखाणो, पेखाबो' (रू.भे.)
पेखाडणहार, हारो (हारी), पेखाडणियो—वि०।
पेखाडिओड़ो, पेखाडियोड़ो, पेखाड्योड़ो—भू०का०कृ०।
पेखाडीजणो, पेखाडीजबो—कर्म वा०।
पेखाडियोड़ो—देखो 'पेखायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० पेखाडियोड़ी)
पेखाणो, पेखाबो-क्रि०स० ('पेखणो' क्रिया का प्रे०रू०) १ दिखाना, अवलोकन कराना।
क्रि०अ०—२ दिखाई देना, मालूम होना (पड़ना)
उ०—पल जांणुं दिन जाय, दिन जांणुं पख ज्यूं दरस। पख एक बरस पेखाय, जावण लागा जेठवा।—जेठवा
पेखाणहार, हारो (हारी), पेखाणियो—वि०।
पेखायोड़ो—भू०का०कृ०।
पेखाईजणो, पेखाईजबो—कर्म वा०, भाव वा०।
पेखाड़णो, पेखाड़बो, पेखावणो, पेखावबो—रू०भे०।
पेखायोड़ो-भू०का०कृ०—१ दिखाया हुआ, अवलोकन कराया हुआ।
२ दिखाई दिया हुआ।
(स्त्री० पेखायोड़ी)
पेखावणो, पेखावबो—देखो 'पेखाणो, पेखाबो' (रू.भे.)
पेखावणहार, हारो (हारी), पेखावणियो—वि०।
पेखाविओड़ो, पेखावियोड़ो, पेखाव्योड़ो—भू०का०कृ०।
पेखावीजणो, पेखावीजबो—कर्म वा०।
पेखियोड़ो-भू०का०कृ०—देखा हुआ, अवलोकन किया हुआ।
(स्त्री० पेखियोड़ी)
पेगंवर—देखो 'पैगंवर' (रू.भे.)
उ०—जाप का पेगंबर आप का दरियाव। ताप का सेस ज्वाळ दाप का कुरराव।—रा.रू.
पेड़-सं०पु० [सं० पिण्ड] वृक्ष, दरख्त। उ०—एक बीज सूं सब हो उपज्या, पेड़ डाल फूलाजी।—स्री सुखरांमजी महाराज
मुहा०—१ पेड़ लगणो—वृक्ष का किसी स्थान पर जड़ पकड़ना, कार्यारम्भ होना।
२ पेड़ लगाणो—वृक्ष या पौधे को किसी स्थान पर जमाना, काम प्रारम्भ करना।
पेड़काली-सं०स्त्री० [सं० पट्टिकालय] छत पर जाने वाली सीढियों की पंक्ति।

पेड़ी-सं०स्त्री० [?] १ पेड़ का तना। उ०—निमझर जीरै भांत, निंबोळी दाखां जैड़ी। आंम उण्यांरै रूंख, एक सा डाळा पेड़ी।

—दसदेव

२ देखो 'पेडी' (रू.भे.)

३ देखो 'पेंड़ी' (रू.भे.)

पेड़ौ—देखो 'पेंड़ौ' (रू.भे.)

उ०—सातमौ मास उलरियौ ए जच्चा, कंद रै पेड़े मन जाय।

—लो.गी.

पेच-सं०पु० [फा०] १ छल, कपट, षड्यंत्र। उ०—कथ 'गोइंद' किसन रै, पेखि चित खांत पहल्ली। साहिजादै 'किसन' सूं, मंडे हित पेच मुगल्ली।—सू.प्र.

क्रि०प्र०—डाळणौ, लगांणौ।

२ उलझन, झंझट, बखेड़ा। उ०—सुण जतनां री वात पंथ रा पेच घणेरा। सुण इमरत संदेस कुरळता कोड मनां रा।—मेघ.

क्रि०प्र०—डालणौ, पड़णौ।

३ चालाकी, चालबाजी, धूर्तता। उ०—१ फौजदार नूं नीडै जांणि केही वार संकल्प पाछौ छोडि तुरकां रा पेच में फंद होण रौ डर धारियौ।—वं.भा.

उ०—२ पुहवि कच्छ पचाळ, गंजी लीधी पटु पेचां।—वं.भा.

क्रि०प्र०—पड़णौ, चलणौ।

४ पगड़ी का फेरा, पगड़ी का लपेट। उ०—१ पेचां मझि स्रोण वहे अणपार। जटा गंग जांणिक धार हजार।—सू.प्र.

उ०—३ पेच सुरगी पाघ रा, ढाकै मत घर ढाल। काछी चढ आछी कहूं, हुआ भीजण हाल।—बां.दा.

क्रि०प्र०—कसणौ, देणौ, पड़णौ, बांधणौ।

५ किसी प्रकार की मशीन, यंत्र।

६ वह कील या कांटा जिसके नुकीले आधे भाग पर चक्करदार गडरियां होती हैं और जो ठोक कर नहीं बल्कि घुमा कर जड़ा जाता है।

क्रि०प्र०—कसणौ, खोलणौ, जड़णौ, निकाळणौ।

७ यंत्र का वह विशेष अंग जिसको दबाने, घुमाने या हिलाने से वह यंत्र चलता या रुकता है।

मुहा०—१ पेच घुमाणौ—तरकीब से किसी का मन फेरना।

२ पेच हाथ में होणौ—किसी के विचारों को परिवर्तन करने की शक्ति होना।

८ युक्ति, तरकीब।

क्रि०प्र०—निकालणौ, लड़ाणौ।

९ पतंग लड़ने के समय दो या अधिक पतंगों के डोर का एक दूसरे में फंस जाना।

मुहा०—१ पेच काटणौ—दूसरे की पतंग को काटना।

२ पेच छूटणौ—दो या दो से अधिक पतंगों की डोर का अलग-अलग होना।

३ पेच लड़ाणौ—दूसरे की पतंग काटने को उसकी डोर में अपने पतंग की डोर को फँसाना।

४ पेच होणौ—दो या दो से अधिक पतंगों की डोर का एक दूसरे से फँसना।

१० कुश्ती में प्रतिद्वंदी को पछाड़ने की युक्ति, दाव।

उ०—पड़ै खग दाव तणा घण पेच। महाबळ खेत लहै 'महवेच'।

—सू.प्र.

क्रि०प्र०—चलाणौ, मारणौ, लगाणौ।

११ किसी टूटी हुई, फटी हुई आदि वस्तु के परत या तल में फटे, टूटे आदि भाग को निकाल कर उसके स्थान पर दूसरा टुकड़ा लगाने की क्रिया।

क्रि०प्र०—लगाणौ।

१२ घुमाव, फिराव, चक्कर।

१३ पगड़ी या टोपी के सामने की ओर खोंसा जाने वाला या लगाया जाने वाला एक आभूषण, सिरपेच। उ०—मोतियां का तुररा रतन पेचूं के बीच ऐसा दरसाए। मानूं नवग्रह के पास तारागण आए।—सू.प्र.

यौ०—सिरपेच।

१४ किसी भी वस्तु का व्यसन, आदत।

पेचक-सं०स्त्री० [सं०] पूंछ का मूल।

पेचकौ—देखो 'पीचकौ' (रू.भे.)

पेचकस-सं०पु० [?] १ लोहे या अन्य धातु के पेच को कसने और जड़ने का एक उपकरण।

२ एक प्रकार का शस्त्र विशेष। उ०—ऐसे भूखणूं सूं जुगति पश्नू के मोहरे जूं से कम्मर पेचकसि। जवह(स) के साज सू जमदढ खग कसि।—सू.प्र.

रू०भे०—पेंचकस।

पेचदार-वि० [फा०] १ जिसमें कोई पेच लगा हुआ हो।

२ उलझन वाला, पेचीदा।

पेचदाव-सं०पु० [?] दावपेच, तरकीब, उपाय।

पेचपट्टी-सं०स्त्री० [?] बढई अथवा स्वर्णकार का एक औजार विशेष जो लोहे आदि में चूडी निकालने के काम आता है।

पेचलगूरीय-सं०स्त्री० [देशज] घोड़े के चलने की एक गति विशेष।

पेचांळौ-सं०पु० [?] वह व्यक्ति जिसके बाल घुंघराले हों।

उ०—सइयां मोरी ए, पटियां पेचांळौ जलालौ मनै मेल दे, अन नेवड़ां सूं लेवा समझाय।—लो.गी.

पेचिस-सं०स्त्री० [फा० पेचिश] १ आंव के कारण पेट में होने वाली पीड़ा, मरोड़।

२ एक उदर रोग जिसमें बार बार पाखाने जाना पड़ता है।

पेची-वि० [?] १ चालाक या धूर्त।

२ देखो 'पेछो' (रू.भे.)

सं०स्त्री० [देशज] १ वर की लाल पगड़ी या दुपट्टे पर लपेटा जाने वाला एक सफेद कपड़े का लंबोतरा टुकड़ा (वांभी)

२ एक विशेष प्रकार से बांधी जाने वाली 'खिड़किया पाग' और उसकी रक्षा के लिए बांधे जाने वाले बंधन 'उपरणा' की जोड़ को छिपाने वाली जरी की पट्टी (पुष्करणा ब्राह्मण)

पेचीदो-वि० [फा० पेचीद:] पेचदार।

पेचूंटी-सं०स्त्री० [प्रा० पेट-कूंची] नाभि के ठीक नीचे की पेट की वह नस जो अंगुली के दबाने से रह-रहकर उछलती हुई सी मालूम पड़ती है, धरण।

पेचू—देखो 'पेछू' (रू.भे.)

पेचो-सं०पु० [?] एक प्रकार की पाग जिसके एक किनारे पर तार, गोटा लगा रहता है।

उ०—आभा चमकै बीजळी सीकर वरसै मेह। छांटां लागै प्रेम की भींजै सारी देह। जी उमराव थांको पचरंग पेचो भींजै म्हारा प्रांण। —लो.गी.

पेछो, पेछू-वि० [?] व्यसनी, दुर्व्यसनी।

उ०—तन अखत रोड डोलै, तिके उर अंतर सूं आफळै। इम पियण घूंट पेछू उमग, होका दीठां हांफळै।—ऊ.का.

रू०भे०—पेची, पेचू।

पेज-सं०पु० [अं०] १ पृष्ठ, पन्ना।

[सं० पेय] २ पीने की वस्तु।

उ०—लियां पत्र पेज भरणैं लटियाळ। घणै तप तेज खमा घटियाळ। —मे.म.

३ प्रतिष्ठा।

४ लाज, शर्म।

५ स्पष्ठ ?

उ०—प्यार ही वरण सुण जो चतुर, पात पुकारे पेज में। आ लाज सरम कुळ री अवे, साध गमावे सेज में।—ऊ.का.

६ प्रतिज्ञा।

७ शर्त।

रू०भे०—पेंज।

पेजको—देखो 'पीचको' (रू.भे.)

पेट-सं०पु० [सं० पेट=थैला] १ शरीर के मध्य भाग का वह सामने वाला अंग जो छाती के नीचे और पेडू के ऊपर होता है। (प्र.मा., ह.नां.मा.)

२ शरीर की वह थैली जिसमें पहुँचकर खाया हुआ अन्न पचता है, आमाशय, ओझर।

उ०—छाक पियो जिण पेट छुहायो। भारी पांणी जनम भंडायो। —ऊ.का.

पद—१ पेट कढावे वेट—भोजन के लिए किए जाने वाला धंधा।

२ पेट का कुत्ता—जो केवल भोजन के लालच से सब कुछ कर सकता हो।

३ पेट का धंधा—१ जीविका-निर्वाह हेतु किया जाने वाला उद्योग, धंधा। २ रसोई बनाने का कार्य।

४ पेट की आग—भूख या क्षुधा।

५ पेट के लिए—उदरपूर्ति के लिए।

मुहा०—१ पेट आणो—पतले दस्त लगना।

२ पेट आफरणो—पेट में वायु के कारण विकार होना, पेट का फूल जाना।

३ पेट और पीठ एक होणो—१ बहुत भूखा होना। २ बहुत दुबला होना।

४ पेट ऐंठणो—पेट में दर्द होना।

५ पेट फटणो—पेट में मरोड़ चलना।

६ पेट काटणो—बचत के लिए कम खाना।

७ पेट की आग बुझाणी—खाकर भूख मिटाना।

८ पेट भराई—गुजारा, निर्वाह।

९ (किसी को) पेट की मार देणी—१ भूखा रखना, किसी की रोजी छीनना, २ जीविका उपार्जन में बाधक बनना।

१० पेट रो पांणी तक न हिलणो—जरा भी परिश्रम न होना।

११ पेट रो पांणी न पचणो—किसी बात को कहे बिना न रह सकना।

१२ पेट गुडगुडाणो—पेट में अपच के कारण गुड़गुड़ शब्द करना।

१३ पेट छंटणो—१ पेट का मल या विकार निकल जाना। २ मोटापा कम होना।

१४ पेट छूटणो—पतले दस्त आना।

१५ पेट जळणो—बहुत भूख लगना।

१६ पेट दिखाणो—भूखे होने का संकेत करना।

१७ पेट दूखणो—किसी की उन्नति देखकर जलना।

१८ पेट न भरणो—पूरा न पड़ना।

१९ पेट नैं धोखो देणो—खाने में बचाना।

२० पेट पकड़'र फिरणो—बहुत अधिक विकलता बताते हुए घूमना।

२१ पेट पर सांप लोटणो—घबरा जाना, हतप्रभ होना।

२२ पेट पांणी होणो—बार-बार पतले दस्त होना।

२३ पेट पापी—जीवन में किए जाने वाले पापों की जड़ पेट है।

२४ पेट पाळणो—किसी तरह निर्वाह करना।

२५ पेट फाटणो—पेट में बहुत अधिक दर्द होना, अधिक खाने से तकलीफ महसूस होना, अत्यधिक खुशी होना।

२६ पेट फूलणो—कोई बात जानने या कहने को बहुत उत्सुक होना।

२७ पेट बाळणो—(किसी को) परेशान करना।
२८ पेट भरणो—१ जो कुछ मिले वह खा लेना।
२ जी भरना, संतोष होना।
२९ पेट मसोसणो—भूखे मरना।
३० पेट मार'र मरणो—आत्मघात करना।
३१ पेट में ऊंदरा दौड़णो—अधिक भूख लगना।
३२ पेट में खळबळो होणी—घबराना, अधिक भूख लगना, भूख के मारे विह्वल होना।
३३ पेट में डाळणो—जो कुछ मिले वह खा लेना।
३४ पेट में दाढ़ी होणी—छोटी अवस्था में ही वयस्कों की तरह चतुर होना।
३५ पेट में पग होणा—अत्यंत छली या कपटी होना।
३६ पेट रै पाटी बांधणो—भूखा रहना।
३७ पेट में वळ पड़णो—अधिक हंसी के कारण पेट में दर्द होना।
३८ पेट बळणो—पेट में अत्यधिक गर्मी अनुभव करना, दुर्घटना की आशंका होना।
३९ पेट सूं पांव निकाळणो—१ कुमार्ग में लगना।
२ सामर्थ्य या योग्यता से अधिक काम करना।
३ वंश, कुल।
उ०—राव लाखा रौ पेट-सोभो, सहसमल लाखो। ऊदो लखारो टीकै न हुवो।—नैणसी
४ बन्दूक या तोप के अन्दर का वह स्थान जहां गोली या गोला भरा या रखा जाता है।
५ किसी खुली या पोली चीज के बीच का भीतरी खाली भाग।
ज्यूं—बोतल रो पेट।
६ स्त्री का गर्भाशय या उसमें स्थित होने वाला गर्भ, हमल।
उ०—१ पेट धरे जायौ पछै, घबरायौ मळ धोय। जिण कारण जगदीस सूं, जणणीं गरबी जोय।—बां.दा.
उ०—२ सुणि ढोला, करहउ कहइ, सांमि-तणउ मो काज। सरदी पेट न लेटयइ, मूंघ न मेलूं आज।—ढो.मा.
पद—१ पेट चोट्टी—वह स्त्री जिसके गर्भ तो हो किन्तु बाहर से दिखाई न पड़े।
२ पेट पोंछना—अंतिम संतान।
३ पेट वाळी—गर्भवती स्त्री।
मुहा०—१ पेट गदराणो—गर्भवती होने के कारण पेट का उभरना।
२ पेट गिरणो—गर्भपात होना।
३ पेट गिराणो—गर्भपात कराना।
४ पेट ठंडो करणो—बच्चों से संतोष करना।
५ पेट ठंडो रहणो—संतान के जीवित रहने से माता का सुखी रहना।
६ पेट दिखाणो—गर्भ पहिचानवाना।
७ पेट फुलाणो—किसी स्त्री को गर्भवती कर देना।
८ पेट फूलणो—गर्भवती होना।
९ पेट बळणो—संतान का मरजाना या संतान मरने का दुख होना।
१० पेट बाळणो—किसी की संतान को मारना।
११ पेट राखणो—पुरुष के साथ सम्भोग करके गर्भाशय में गर्भ स्थित कराना।
१२ पेट रहणो—गर्भ रहना।
१३ पेट सूं होणो—गर्भवती होना।
७ लाक्षणिक रूप में अन्तःकरण या मन।
पद—१ पेट का गहरा—जो अपने मन की बात किसी पर प्रकट न होने दे।
२ पेट हलका—जो सुनी हुई बात छिपाकर न रख सके।
३ पेट की बात—मन में छिपाकर रखी हुई बात।
४ पेट में—मन या हृदय में।
मुहा०—१ पेट देणो—अपना गूढ रहस्य बताना।
२ पेट में घुसणो—मन का भेद जानना।
३ पेट में डाळणो—देखी या सुनी हुई बात अपने मन में छिपा कर रखना।
४ पेट में होणो—भीतर होना, कब्जे में होना।
५ पेट मोटो हो जाणो—१ खूब रिश्वत खाना।
२ धनी हो जाना।
६ पेट से निकळणो—दूसरे द्वारा छिपाई या दबाई हुई चीज को प्राप्त करना।
अल्पा०—पेटड़लो, पेटि, पेटी, पेदो।
पेटड़लो—देखो 'पेट' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—पेटड़लो मूमल रौ पीपळिये रौ पान ज्यों, हांजी रै हीवड़लो हतीयारी रो संचै ढाळीयो, म्हारी नाजकड़ी मूमल हालै नी रे रसीले रे देस।—लो.गी.
पेटधियाळी-सं०स्त्री०यौ० [राज० पेट+राज० धियाळी] १ उदरपूर्ति के लिए की जाने वाली छोटी मजदूरी।
२ छोटी चोरी।
पेटधियाळियो-वि० [राज० पेट+राज. धियाळियो] १ उदरपूर्ति के लिए छोटी मजदूरी करने वाला।
२ छोटी चोरी करने वाला।
पेटपसार-सं०स्त्री०—पेट तक ऊंची (भूमि) उ०—रावजी सलामत! चढाव तो पेटपसार छै नै थेट गयां आदमी रै कांधै पग देनै चढै आगे ऊभो होइ कांगरो पाकड़ै, इसो करै तो गढ पाकड़ै, मिळै हाथ आवै।—राव रिणमल री बात
पेटल—१ देखो 'पेटू' (रू.भे.)
२ देखो 'पेट' (मह०, रू.भे.)
पेटवांन—देखो 'पैठवांन' (रू.भे.)

पेटारथौ-वि० [राज० पेट+सं० अर्थिन्=पीटार्थी] जो केवल पेट भरने को ही सब कुछ समझता हो, पेटू, भुक्खड़ ।

पेटाळजौ, पेटाळिजौ-सं०पु० [देशज] १ पक्षियों के शरीर का वह अवयव जहां पर उनका कलेजा, गुर्दे और हृदय रहता है ।

२ पशु (शिकार) के पेट का भाग विशेष । उ०—सो किण भांति रा सूळा पेटिमारा खालिमां रा, अंतर वेढिग्रां रा, ऊपर पेढ रा, काळिजे रा, पेटाळिजे रा, इण भांति रा सूवरां वाकरां रा सूळा ।
—रा.सा.स.

पेटि—१ देखो 'पेट' (रू.भे.)

उ०—पुरुस पडिइ पणि पेटि थी, नारी छत्र धराय । थाहांवि कुंग्रर वायनइ, वाय न ऊन्हउ वाय ।—मा.कां.प्र.

२ देखो 'पेटी' (रू.भे.)

पेटियौ-सं०पु० [सं० पेट+रा.प्र.इयौ] १ वृत्ति वालों को दिया जाने वाला एक खुराक का विनापक्का (कच्चा) सामान ।

उ०—राजा कांमेती बोलायौ कह्यौ ओढां नूं पेटिया मांडदयौ अर असमांदे नूं साळ, दाळ, घ्रत, मैंदो, खांड मांडिदयौ ।
—जसमा ओडणी री वात

२ तोप या बंदूक में एक बार में खर्च होने वाला बारूद ।

३ एक समय खाया जाने योग्य बिना पकाया हुआ भोजन का सामान । उ०—पड़दे घाली पातरां, ठावी ठावी ठौड़ । परणी नूं नह पेटियौ, देखौ बुध री दौड़ ।—बां.दा.

मुहा०—पेटिया पूरवणौ—किसी को खाने को देना, किसी का निर्वाह करना ।

पेटी-सं०स्त्री० [सं० पेटिका] १ संदूकची, छोटा संदूक ।

उ०—जिण वगत हजार अमोलक मणियां री वा पेटी लक्खी विणजारी आपरा हाथ में आदर सूं झेली···।—फुलवाड़ी

२ छाती और पेडू के बीच का स्थान ।

३ कमर में बांधी जाने वाली पट्टी, कमरबंद, वैल्ट ।

मुहा०—पेटी उतरणी—पुलिस के सिपाही का मुअत्तिल किया जाना ।

४ नाई के औजार (उस्तरा, कैंची आदि) रखने की किसवत ।

५ युद्ध के समय पेट के ऊपर धारण किया जाने वाला उपकरण

६ मशीन पर कते हुए सूत का बंधा गट्ठर ।

रू०भे०—पेटि, पेटिय ।

पेटीय—देखो 'पेटी' (रू.भे.)

उ०—जमदाढ वांमे अंग भीड़ जड़ी । सुज ऊपर पेटिय सांवरड़ी ।
—गो.रू.

पेटू-वि० [रा० पेट+रा.प्र.ऊ] बहुत अधिक खाने वाला, पेटार्थी ।

सं०पु०—वह प्राणी जिसका पेट फूला हुआ हो ।

रू०भे०—पेटल ।

पेटेंट-वि० [अं०] १ किसी आविष्कारक के आविष्कार के लिए सरकार द्वारा दी हुई रजिस्टरी, सर्वाधिकार सुरक्षित ।

२ मशीन, यंत्र, युक्ति या औषध जिसकी इस प्रकार रजिस्ट्री हो चुकी हो, शर्तिया ।

ज्यूं—आ हैजा री पेटेंट दवा है ।

पेटे-क्रि०वि० [देशज] १ बदले में, एवज में । उ०—विणजारौ मांडने सगळौ विगौ दरसायौ । पछै केसरी रै पेटे फगत अेक लाख रिपिया उधारा मांग्या ।—फुलवाड़ी

२ लिए, निमित्त ।

पेटौ-सं०पु०—१ किसी पदार्थ का मध्य भाग ।

२ पशुओं की आंतें ।

३ वृक्ष का तना ।

४ बही के पृष्ठ का मध्य भाग ।

क्रि०प्र०—भरणौ ।

५ ढरकी के मध्य का वह रिक्त स्थान या गड्ढ़ा जिसमें जुलाहे नरी रख कर कपड़ा बुनते हैं ।

६ तलवार का ऊपर से नीचे तक दोनों ओर वाला मध्य का चौड़ा भाग ।

७ कपड़े की बुनवट में बाना का भाग ।

८ उड़ती हुई पतंग की डोर का झोल खाया हुआ भाग ।

९ देखो 'पेट' (अल्पा०, रू.भे.)

उ०—पूरा दिन हुवा । राजा रौ पेटौ फाट्यौ । टावर नीसरीयौ ।
—चौबोली

मुहा०—१ पेटा री वात—हृदयगत भाव, मन के विचार ।

२ पेटा रौ भेद—गुप्त बात, रहस्य ।

३ पेटौ ऊघडणौ—गुप्त बात का प्रकट हो जाना । भेद खुलना ।

४ पेटौ देणौ—भेद या रहस्य प्रकट करना, गुप्त मंत्रणा को प्रगट कर देना ।

१० देखो 'पेटी'. (मह०, रू.भे.)

उ०—रोय सुत किम नीर राळै, टळै भावी कोण टाळै, हुवी होवणहार । पड़ी देह सनेह पेटा, बाप दागण काज बेटा तुरत कीजै त्यार ।
—र.रू.

पेठौ सं०पु० [देशज] १ एक प्रकार का लता फल, सफेद रंग का कुम्हड़ा (अमरत)

२ एक प्रकार की मिठाई जो शक्कर से पागी जाती है तथा मेवा से या मावे से बनाई जाती है । यह सफेद कुम्हड़े से भी बनाई जाती है ।

ज्यूं—आगरा रौ पेठौ, मावा रौ पेठौ ।

पेठावड़ी-सं०स्त्री० [राज० पेठौ+सं० वटक] सफेद कुम्हड़े को पीस कर तथा उसमें नमक, मिर्च, मसाला डाल कर उसकी बनाई हुई बड़ी ।

पेडाइत—देखो 'पेंडायत' (रू. भे.)

उ०—खाडा वूजी भक्ति है, लोहरवाड़े माँहि। परकट पेडाइत बसैं, तहं संत काहे को जाँहि। —दादूवांणी

पेडी-सं० स्त्री० [देशज] १. द्वार के चौखट के नीचे वाली लकड़ी जो जमीन पर रहती है, देहली।

उ०—जद हाट रौ धणी बोलियौ-अबारूं तौ स्वामीजी उतरयां है, सो आखी पेडी रुपियां सूं जड़ देवौ तौ ही न दयूं। —भि.द्र.

२. दुकान या मकान आदि किराये पर लेने के लिये मकान मालिक या पूर्व किरायेदार को किराये के अतिरिक्त दिया जाने वाला धन।

३. देखो 'पेड़ी' (रू.भे.)

४. देखो 'पैड़ी' (रू.भे.)

रू०भे०—पेड़ी, पेढ़ी।

पेडू-सं० पु० [राज० पेट ?] १. नाभि और मूत्रेन्द्रिय के बीच का स्थान, उपस्थ।

उ०—पण इण पैंलां ईज ढूंकिया री गोळी पेडू में आय ठठी, अर वांनै बैठणौ पड़यौ। —रातवासौ

२. गर्भाशय।

उ०—हाथ छडी पग दोरडी, वाघइ कोटि विसाळ। पयोधर पेडू जइ अडइ, भग थाइ, भगनाळ। —मा.कां.प्र.

पद—पेडू की आंच = १. स्त्री का पुरुष के साथ केवल काम वासना का प्रेम।

२. स्त्री की काम वासना।

पेढ़—देखो 'पेड़' (रू.भे.)

उ०—रीति खांति तणी चीति राखी रूड़ा, पेढ़ साखा सहत घड़त पाती। तरवरां ऊपरै केई नर तरछिया, खरौ हूंनर लियां 'नगा' खाती। —नगराज रौ गीत

पेढ़ी—देखो 'पेडी' (रू.भे.)

उ०—क्यूं कै पेट में तौ भूखौ रैवौजै नी, अर बिना हथेरण सेठ लोग पेढ़ी माथे ई चढ़ण देवै नहीं। —रातवासौ

पेतावौ—देखो पेताळौ (१) (रू. भे.)

पेयड़-सं० पु०—राठौड़ वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

उ०—सीहाजीरै केड़रा राठौड़ ज्यांरी विगत—धूहड़िया, मोट, धांधल, महण, रांदा, आसल, बोला, पेयड़, फीटक। —बां. दा. ख्यात

पेयड़बाई-सं० स्त्री०—चारण वंशोत्पन्न एक देवी विशेष।

पेदल—देखो 'पैदल' (रू. भे.)

उ०—चौसट खण रौ घर रचवायौ, ता में सेन सजांणी। पेदल, घोड़ा, ऊंट, अनै कफ, मंडयौ जुद्ध मेदांनी। —ऊ. का.

पेदौ—देखो 'पेट' (व्यंग)

पेनसन-सं० स्त्री० [अं० पेन्शन] वह मासिक अथवा वार्षिक वृत्ति जो किसी मनुष्य को वृद्धावस्था में उसकी सेवाओं के उपलक्ष में उसको अथवा उसके परिवार वालों को दी जाती है।

क्रि० प्र०—दैणी, पाणी, मिळणी, लैणी, होणी।

रू० भे०—पिनसन, पैंनसन, पेंसन।

पेनसनर, पेनसनियौ-सं० पु० [अं० पेन्शनर] पेन्सन वृत्ति पाने वाला व्यक्ति।

रू० भे०—पेंसनर।

पेनसिल—सं० स्त्री० [अं० पेन्सिल] सुरमे, सीसे, रंगीन खड़िया आदि की बनी लिखने की कलम विशेष जिसमें स्याही की आवश्यकता नहीं होती।

रू० भे०— पेंसिल।

पेनाकी—देखो 'पिनाकी' (रू. भे.)

पेनी-सं० स्त्री० [अं०] इंगलैण्ड में चलने वाला सबसे छोटा सिक्का जो एक शिलिंग के बारहवें भाग के बराबर होता है।

पेनीवेट-सं० पु० [अं०] १० रत्ती के बराबर का एक अंग्रेजी तोल।

पेपर-सं० पु० [अं०] १. कागज।

२. समाचार-पत्र, अखबार।

३. परीक्षा का प्रश्न-पत्र।

पेम—देखो 'प्रेम' (रू.

उ०—१. अत चिंता, अभिलाख, परहर मारग पेम रौ। रे! संतोसहि राख, विण चिंता अभिलाख विण। —बां. दा.

उ०—२. अम्हां मन अचरिज भयउ, सखियां आखइ एम। तहँ अणदिट्ठा सज्जणां, किउं करि लग्गा पेम। —ढो. मा.

पेमचीबोर-सं० पु० [देशज] बड़े आकार का बेर जो कलम द्वारा मीठा बनाया जाता है।

रू० भे०—पेमजीबोर, पेमदीबोर, पेमलीबोर।

पेमचौ—देखो 'पोमचौ' (रू. भे.)

पेमजीबोर—देखो 'पेमचीबोर (रू. भे.)

पेमदी-सं० पु० [देशज] एक देव वृक्ष। (अ. मा.)

पेमदीबोर—देखो 'पेमचीबोर' (रू. भे.)

पेमरस—देखो 'प्रेमरस' (रू. भे.)

उ०—महंदी वायी-वायी वालूडारी रेत। पेमरस महंदी राचणी। —लो. गी.

पेमल-वि० [सं०प्रेम+रा० प्र० ल] प्रेम व स्नेह रखने वाला।

स० स्त्री०—मीरां बाई का जन्म का नाम।

उ०—मुख ती हर पास निभावण मीरां, भोग विलास उदास भई। दिन ही दिन दास उपासत देखै, देस धणी हिक त्रास दई। न हुवो घट नास पियो विस 'पेमल' जास धणी बळ तास जरें। —भगतमाळ

पेमली, पेमलीबोर—देखो 'पेमचीबोर' (रू. भे.)

उ०—१. जैपुर के बाजार में पड़चो पेमलीबोर। नीची होय उठावतां, पड़चो कमर में जोर। —लो. गी.

उ०—२. पाखती पेमलीबोरां री एक घेर-घुमेर बोरड़ी ही। —फुलवाड़ी

पेमांनो—सं० पु० [फा० पैमान = वचन, संधि] १. संदेश।

उ०—दूणीनाथ पेमांन रावजी नें, बुला लीनूं। जेनें भूप सीकरि का धणी के साथ कीनूं। —शि. वं.

२. देखो 'पैमांनो' (रू. भे.)

पेमेंट—सं० पु० [अं०] भुगतान, मूल्य चुकारा।

पेमो—देखो 'प्रेम' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—तूं सोच करे छे केमो। हे सुंदर! घर मोसूं पेमो। —जयवांणी

पेय—वि० [सं०] जो पिया जा सके, पीने योग्य।

सं० पु०—१. पीने की वस्तु। २. जल या पानी। ३. दूध।

पेयो—देखो 'पेई' (रू. भे.)

उ०—गोरी ए, पेयां मेलो म्हारो फूल। डावा नैं मेलो म्हारी पागड़ी। —लो. गी.

पेरण—देखो 'पैरण' (रू. भे.)

पेरणौ, पेरबौ—देखो 'प्रेरणौ, प्रेरबौ' (रू. भे.)

उ०—१. मिणधर छत्र-धर अवर गेलमन, ताईधर रजधर 'सींघ'तण। पूंगी दळ पतसाह पेरतां, फेरै कमळ न सहंसफण। —महारांणा प्रताप सिंह रो गीत

उ०—२. परहूंता जिम पसर, धरा फणधार उर धारै। पवन जोर पेरियो, वह वद्दळ विसतारै। नाग राग पेरियो, प्रांण पैलां वसि थप्पै। दास हुकम पेरियो, जास पति धार सजप्पै। परतक्ष ठगोरी पेरियो, मनुज ग्रहै ठग मंडळी। पेरियां मंत्र सिंधुर सगह, आवै दरगह अग्गळी। —रा. रू.

पेरणहार, हारी (हारी), पेरणियौ —वि०।

पेरिओड़ो, पेरियोड़ो, पेरयोड़ो —भू० का० कृ०।

पेरीजणौ, पेरीजबौ —कर्म वा०।

पेरियोड़ो—देखो 'प्रेरियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री० पेरियोडी)

पेरवौ, पेरवौ—सं०पु० [सं० पर्व] १. उंगुली का संधि स्थान या जोड़।

२. उक्त दो जोडों के बीच का भाग।

३. उंगुली या अंगूठे के ऊपर का भाग, पोर।

उ०—आंगळी रो पेरवो टिकै जिती भी जमीन न दूं। —मारवाड़ी ख्यात

रू० भे०—पइरवौ।

पेरी—सं० स्त्री० [सं० पर्व] गन्ना, बाजरी, ज्वार, बांस आदि के डण्ठलों के स्थान स्थान पर जोड़ का उभरा हुआ स्थान।

पेरोजो—देखो 'फीरोजो' (रू. भे.)

उ०—पेरोजा पुखराज के, बणे महल पर छात। ताके खंभ प्रवाळिया, बणे विविध सी भांत। —गजउद्धार

पेरयाळो—वि० (स्त्री० पेरयाळी) दूसरी ओर का, दूर का। (जयसलमेर)

पेल—सं० पु० १. पेलने का भाव, धक्का, ढकेल।

२. पवार वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

उ०—परमारां री पेंतीस साख लिखंते परमार, पांणीस········ ········धध, खेर, टोड, पेल, गूगा, काबा। —बां. दा. ख्यात

पेलणौ, पेलबौ—क्रि० स० [सं० पीड़नम्, पेलनं या पेल्] १. धकेलना, दबाना, ठेलना।

उ०—१. प्रगल्भ कंठ पेल देत कंठ कंठिराव को। दुहत्थ हत्थ ठेल देत हत्थ ले प्रदाव को। —ऊ. का.

उ०—२. गेमि रोमि ते पेलइं परांणि। तीह रहिं दुक्ख आठ गुणउं जांणि। —वस्तिग

२. पराजित करना, हराना।

उ०—पाता प्रसण रिमांदळ पेलण, जोगण बीस भुजाळी। —जसकरण पीरदांनोत लाळस

३. जाना।

उ०—मतो धारि पूरब्ब बन्नीत मेले। पचीसेंक रोहै कपी साथ पेले। —सू. प्र.

४. नष्ट करना, मिटाना।

उ०—एको ही नांम अनंत रो, पेलै पाप प्रचंड। जब तिल जेतो ज्वाळनळ, खोण दहै नवखंड। —ह. र.

५. रोकना, मना करना।

उ०—तीन ही भायां रो तखत माथै चलावणो जांणि प्राची में पुत्र नूं भेजि आवाची कूं आवता दो ही पुत्रां नूं समझावण सांम्है जावता पातिसाहि नूं पेलि तिण रो बडो पुत्र साहस रै सहाय पहली कहिया कटक साथ दरकूंचां दक्खिण रै अभिमुख चलायो। —वं. भा.

६. भेजना।

उ०—१. मैं मेले रे! मैं मेले। परचंड दसूं दिस पेले। नंह भूलो बात मुमंत्रा नंदण! छोह अनाहक छेले। —र. रू.

उ०—२. जिण थी हाडा रा समग्र ही पांच सो ५०० सिपाह तिकां नूं बाढण काज आपरी समस्त ही सेना पेलीजै तो विसंभर बिवाहिणि १ विना ही विहूं संबंधियो रो वचन निबाहे। —वं. भा.

७. झोंकना।

उ०—'हरी' 'बहादर' 'चंद'तण, ईखे मेछ अभंग। एकै सेल उथल्लियो, ऊपर पेल पवंग। —रा. रू.

८. चलाना, दौड़ाना।

उ०—पटादि खेल पेलके सटा समालते नही। घुसै गयंद की घटा मयंद मालते नही। —ऊ. का.

पेलणहार, हारी (हारी), पेलणियौ —वि०।

पेलिग्रोड़ो, पेलियोड़ो, पेल्योड़ो —भू० का० कृ०।
पेलीजणो, पेलीजवो, —कर्म वा०।
पेलणो, पेलवो —रू० भे०।

पेलव-वि० [सं०] १. दुर्वल, निर्वल। (डिं० को०) २. सूक्ष्म, छोटा। ३. सुकुमार, सुकोमल। ४. महीन, पतला।

पें'लवांन—देखो 'पहलवांन' (रू. भे.)

पें'लवांनी—देखो 'पहलवांनी' (रू. भे.)

पेलियोड़ो-भू० का० कृ०—१. पराजित किया हुग्रा, हराया हुग्रा. २. धकेला हुग्रा, दबाया हुग्रा. ३. गया हुग्रा. ४. नष्ट किया हुग्रा. ५. रोका हुग्रा, मना किया हुग्रा. ६. भेजा हुआ. ७. चलाया हुआ. ८. झोंका हुग्रा.
(स्त्री० पेलियोड़ी)

पेस-क्रि०वि० [फा० पेश] १. सामने, सम्मुख।
उ०—सत पेस कियौ सिस सादरतें। उपदेस दियौ गुर ग्रादर तें। —ऊ. का.
क्रि०प्र०—करणो, पहोंचणो, होणो।
२. पूर्ण, पूरा।
उ०—म्हारो कांम बडो खरो छै सो इसा मित्ररी मदद विगर पेस न पहोच सकसी। —नी. प्र.
क्रि० प्र०—चढ़णो, होणो।
२. हाजिर, उपस्थित, पेश।
उ०—मानेन वयण जो हमें मुझ्झ, तौ जड़ूं जंजीरां मांय तुझ्झ। पिंजरे जड़ूं सुलतांन पेस, भेजदूं करे दरवेस भेस। —वि. सं.
क्रि० प्र०—करणो, होणो।
सं० पु०—१. स्वामी, मालिक।
उ०—खळ रा दळण दुरद रा मोखण, पत रा रखण सुमत रा पेस। कळमें दरस आपरा करतां, प्रगट पाप रा गया प्रवेस। —र.रू.
२. दण्ड, कर, लाग।
उ०—१. सांमां, सोढां सूमरां-स हु पेसां ल्याया। सतरंजा सीरोहियां सिर ग्रंक सहाया। —नापे सांखले री वारता
उ०—२. दखणाधी की फतै पंच खट पक्खां मांही। दक्खणियां दे देस, पेस दीनी सगळांही। —गु. रू. ब.
३. वरुण। (ग्र. मा.)
४. भेंट, नजर।
उ०—१. ताइरां एक दिन नापो बैठो हुतो, ताहरां कमांण एक कठाई सों पेस ग्राई। —नैणसी
उ०—२. ब्रह्मा, विस्णु, महेस, मनावै, सुर नर नाग सुरेस। एळा महिप जातरी ग्रावै, पावां लावै पेस। —ग्रज्ञात
उ०—३. ग्राप करै सोही ग्रसण, इस्ट भोग-ग्रवसेस। इम पूपी जुग २ करि उठै, प्रभु रै कीधी पेस। —वं. भा.
रू०भे०—पैस।

पेसकबज, पेसकब्बज, पेसकवज-सं० पु० [फा० पेशकब्ज] कटार विशेष।
उ०—१. पड़ि पेसकवज खरड़क अपार। करड़क्क खाग झरड़क कटार। —सू. प्र.
उ०—२. वहे दहुंवै वळ पेसकव्वज्ज। संग्रांम दहूं वळ स्यांम सकज्ज। —मे. म.

पेसकस, पेसकसि, पेसकसी-स० स्त्री० [फा० पेशकश] बड़ों को दी जाने वाली भेंट, नजर।
उ०—१. हाथी एक घोड़ा चार दीवांण नूं प्रोहित साथै ग्रापरा ग्रादमी पेसकस मेलिया। —नैणसी
उ०—२. सु हाथी करोडिये पेसकस कियो हूंतो सु हाथी मंगायो। —द. वि.
उ०—३. 'चांपा'हरा चलाविया, सोफ्त ऊपर फेर। दिन-दिन लीजै पेसकसि, सोवा लीजै घेर। —रा. रू.
उ०—४. हम महिमांनी तुम करी रै, ग्रव तुम हम मेहमांन। पेसकसी पदमणी कीयां, हिवैं छूटे वो राजांन। —प. च. चौ.
रू० भे०—पेसिकस।

पेसकार-सं०पु० [फा० पेशकार] १. दफ्तर के कागज पत्र अफसर के समक्ष रखकर ग्रादेश लेने वाला लेखक या लिपिक।
उ०—सेणां मसलत नूं पेसकार दौलत मंदां रो कहियो छै। —नी. प्र.
२. मिट्टी, पत्थर ग्रादि डालने वाला छोटा मजदूर।
रू० भे०—पेसगार, पेहगार, पैंकार।

पेसकारी-सं० स्त्री० [फा० पेशकारी] पेशकार का कार्य या पद।
रू० भे०—पेसगारी, पेहगारी।

पेसखांनउ, पेसखांनो, पेसखेमो-सं० पु० [फा० पेशखेमा] १. वह खेमा जो अगले पड़ाव पर पहले से लगा दिया जाय।
उ०—१. ग्रावइ पेसखांनउ ईसर रउ, मिळणइ ग्रागइ करइ मिळांण। —महादेव पारवती री वेलि
उ०—२. जगूं के साज छत्तीस कारखांनु के हवालगीरूं नें सव जंगूं का सराजांम हाजर किया। नागदुरंग की तरफ फरासूं नें पेसखांना खड़ा किया। —सू. प्र.
२. सेना का वह सामान जो पहिले ही उसके अगाड़ी भेज दिया जाता है।
उ०—हुजदारां आपरां वेग ताणीद करावो। दखिण गुजराति दिसा पेसखांना पधरावो। —सू. प्र.

पेसगार—देखो 'पेसकार' (रू. भे.)

पेसगारी—देखो 'पेसकारी' (रू. भे.)

पेसगी-सं० स्त्री० [फा० पेशगी] किसी कार्य के निमित्त पहिले दी जाने वाली रकम, अग्रिम राशि, एडवांस। (ग्रं.)

पेसणी-सं० स्त्री० [सं० पेषणी] चक्की। उ०—जूड़ा जोड़ा परंपक पेसणी पात्र पुंज कटि करवाळ पुहवी में पैठो तो भी मंतु बिहूण जनक रो मित्र मारण में म्हारो तो मन आघात रो उत्करस न मानें। —व. भा

पेसणौ-पेसवौ—देखो 'फेसणौ, फेसवौ' (रू. भे.)

पेसणहार, हारौ (हारी), पेसणियौ —वि०।

पेसिग्रोड़ौ, पेसियोड़ौ, पेस्योड़ौ —भू० का० कृ०।

पेसीजणौ, पेसीजवौ —भाव वा०।

पेसतर-क्रि० वि० [फा० पेश्तर] पूर्व में, पहिले।

पेसता-स० स्त्री० देखो 'पस्ती' (रू. भे.)

उ०—पांच वखत निवाजरा करणहार, सुद्ध कलमें रा पढणहार, पेसता, पारवी, पारसी रा बोलणहार, ग्राउखी डाढ़ी राखणहार। —रा. सा. सं.

पेसताख-सं० स्त्री० [फा० पेशताक] अच्छी व बड़ी इमारतों के ऊपर आगे की ओर कुछ निकली हुई एक प्रकार की मेहराब।

पेसबंद-सं० पु० [फा० पेशबंद] घोड़े के गर्दन में से लाकर दूसरी ओर बांध दिया जाने वाला चारजामे से लगा हुआ दोहरा बन्धन।

रू० भे०—पेसबंध।

पेसबंदी-सं० स्त्री० [फा० पेशबंदी] १. पहिले से की हुई बचाव की युक्ति।

२. षड्यंत्र, छल।

पेसबंध—देखो 'पेसबंद' (रू. भे.)

उ०—बंध जोट दीध कसि जेरबंध। सभि पेसबंध कसमार संध। —सू. प्र.

पेसबाव-सं० पु०—एक प्रकार का घोड़ा।

उ०—बह अबरस मुसकी अर संजाब। बोरता केहरी पेसबाव। —सू.प्र.

पेसराज-सं०पु० [फा० पेश+राज० राज] पत्थर ढोने वाला मजदूर।

पेसरूंद-सं० पु० [?] रग विशेष का घोड़ा?

उ०—रोसनी विदांमी पेसरूंद। कागड़ा हंस चकवा कबूंद। —सू.प्र.

पेसळ, पेसल-वि० [सं० पेशल] १. सुन्दर, मनोहर। (अ.मा., ह.नां.मा.)

२. कुशल, प्रवीण।

पेसवा—सं०पु० [फा० पेशवा] १. नेता, अगुवा।

२. मराठा राज्य के समय महाराष्ट्र साम्राज्य के प्रधान मंत्री की उपाधि। (मा. म.)

पेसवाई-सं०स्त्री [फा० पेशवाई] १. आगे बढ़कर स्वागत करने की क्रिया, अगवानी।

उ०—१. नवाब पेसवाई में ड्योढ़ी तक सांमें आयौ। हाथ झाल महल में लेजाय गादी ऊपर बैठाळिया।

—महाराजा जयसिंह ग्रांमेर रा धणी री वारता

उ०—२. साहजादे देखे हिम्मत निवाह। 'दुरंग' का भाई पेसवाई 'दुरंग' साह। —रा. रू.

२. पेशवा का कार्य।

रू० भे०—पेसवाई।

पेसवाज-सं० स्त्री० [फा० पिशवाज़] वेश्याओं द्वारा नाचते समय पहिना जाने वाला लहंगा।

पेसवाल-स० पु०—प्रतिहार वंश की एक शाखा जो बाद में रैबारी बन गये। वि० वि०—देखो 'रैबारी' (मा. म.)

पेसांणी, पेसांनी—स० स्त्री० [फा० पेशानी] १. ललाट, भाल।

२. भाग्य, प्रारब्ध।

३. किसी पदार्थ का अगला या ऊपरी भाग।

ज्यूं—गाडी री पेसांनी।

पेसाव-सं० पु० [सं० प्रस्रव, फा० पेशाब] मूत्र, मूत।

मुहा०—१. (किसी चीज पर) पेसाव करणौ—(किसी चीज को) बहुत ही हेय अथवा तुच्छ समझना. २. पेशाब री धार पर मारणौ—महा हीन समझना, क्षुद्र समझना. ३. पेसाब री राह बहाणौ—वेश्यावृत्ति में सारा धन गँवाना. ४. पेसाब री चिराग जळणौ—रोब या दबदबा होना. ५. पेसाब निकळ पड़णौ—डर के मारे पेशाब हो जाना. ६. पेसाब बंद होणौ—बहुत डरना. ७. पेसाब सूं सिर मूंडणौ—चेला बनाना।

पेसावखांनौ-सं० पु० [फा० पेशाब+खानः] पेशाब करने का स्थान, मूत्रालय।

पेसार— देखो 'पैसार' (रू. भे.)

पेसारियौ-सं० पु० [राज०] चोरी के उद्देश्य से सेंध लगाकर घुसने से पूर्व कपड़ा बांध कर डाली जाने वाली लकड़ी।

पेसावर-सं० पु० [फा० पेशावर] १. कोई व्यवसाय (पेशा) करने वाला, व्यवसायी।

२. पाकिस्तान के सीमांत का एक नगर, पेशावर नगर।

रू० भे०—पेसोर।

सं० स्त्री० [फा० पेश:+वर] ३. व्यभिचार द्वारा धन उपार्जन करने वाली स्त्री।

पेसावरी-वि० [फा० पेश:+वर+ई] १. व्यवसायी, पेसेवर।

२. पेशावर नगर का।

उ०—के मुनतांनी कावली, पेसावरी प्रचंड। नेसापुर रा नीपना, बगदादी बळबंड। —बां. दा.

पेसिकस—देखो 'पेसकस' (रू. भे.)

उ०—गज भिड़ज्ज गढ़ गांम, करां द्रव दीध पेसिकस। हूं चाकर हुकमरौ, एम कहियौ हजि ग्रंजस। —सू. प्र.

पेसिका-सं०पु० [सं० पेशिका] अण्डा। (डिं. को.)

पेसियोड़ौ—देखो 'फेसियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० पेसियोड़ी)

पेसी-सं० स्त्री० [फा० पेशी] १. मुकदमे की सुनवाई ।
२. सामने होने की क्रिया या भाव ।
३. शरीर के भीतर मांश की गुत्थी या गांठ ।
ज्यूं-मांश-पेसी ।

पेसोर—देखो 'पेसावर' (२) (रू. भे.)
उ०—दिली सरदार दुरगादासजी बगेरा पेसोर सूं आया ज्यां कनै तीन सौ च्यार सौ लोक हुतौ । —वां. दा. ख्यात

पेसौ-सं० पु० [फा० पेशः] १. जीविका उपार्जन के लिए किया जाने वाला उद्योग, व्यवसाय ।
२. वेश्यावृत्ति ।

पेस्तर-क्रि० वि० [फा० पेश्तर] पहिले, पूर्व ।

पेहगार—देखो 'पेसकार' (रू. भे.)

पेहगारी—देखो 'पेसकारी' (रू. भे.)

पेह्ळाद—देखो 'प्रह्लाद' (रू. भे.)

पेहली—देखो 'पैं'ली' (रू. भे.)
उ०—अजमेर आवतां पेहली माहाबतखांन पातसाह साहजहां सुं मालम कीवी-जु राजा गजसिंघ म्हारौ माथौ वाढ़ण रै वास्तै नागोर लियौ हुतौ सु हूं पाऊं । —नैणसी

पेहवौ-वि० [?] व्यर्थ ?
उ०—ऊगां विण सूर पेहवौ अंबर, दीपक पाखै जसौ दुवार । पावस बना जेहवी प्रथमी, 'सांगा' विण जेही संसार ।
—महाराणा संग्रामसिंह वडा रौ गीत

पें—देखो 'पैं' (रू. भे.)
उ०—तासूं भगवांन कहै भार तुम कंधै । पें आलम सूं जंग काज लेग हम बंधै । —रा. रू.

पेंक—देखो 'पंक' (रू. भे.)

पेंकड़ौ—देखो 'पेंखड़ौ' (रू. भे.)

पेंखड़णौ, पेंखड़बौ-क्रि० स० [राज० पेंखडौ] ऊंट या भैंस को लोहे या सूत के 'पेंखडे' से अगले पैर मे बांधना ।
उ०—लुगाई रौ रूं रूं मिनख रै खूंटै पेंखड़ियोड़ौ है । —फुलवाड़ी

पेंखड़णहार, हारौ (हारी), पेंखड़णियौ—वि० ।
पेंखड़िग्रोडौ, पेंखड़ियोडौ, पेंखड़्योडौ—भू० का० कृ० ।
पेंखडीजणौ, पेंखड़ीजबौ—कर्म वा० ।

पेंखड़ौ-सं० पु० [देशज] ऊंट अथवा भैंस को बांधने का लोहे अथवा सूत का बना उपकरण जिसे उसके अगले पैर में बांध कर खूंटे से बांध दिया जाता है ।
रू० भे०—पेंकड़ौ ।

पेंगळ—देखो 'पिंगळ' (रू. भे.)
उ०—एकण पाए आंणिजै, सोलह कळ वळि सात । तविग्रा पेंगळ रीत रह, इसा छंद अवदात । —ल. पि.

पेंड़णौ, पेंड़बौ—देखो 'पहड़णौ, पहड़बौ' (रू. भे.)
उ०—निज करमसोत, पेंड़ै न वीह । उदावत अंड़ैगे अबीह । —ऊ. का.

पेंड़णहार, हारौ, (हारी) पेंड़णियौ—वि० ।
पेंड़िग्रोड़ौ, पेंड़ियोड़ौ, पेंड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
पेंड़ीजणौ, पेंड़ीजबौ—भाव वा० ।

पेंड़ियोड़ौ—देखो 'पहड़ियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० पेंड़ियोड़ी)

पेंजणी, पेंजनी-सं० स्त्री० [सं० पद+अनु+झन] स्त्रियों के पैरों का एक आभूषण विशेष जो चलने पर झन-झन की आवाज करता है, नूपुर ।
उ०—१. डूंगर ऊपर डूंगरी सोनौ घड़े सुनार । मेरी घड़दे पेंजणी मेरे प्रीतम की········ । —लो. गी.
उ०—२. ए मां भाभी नै कहदे मनै पेंजणियां दिरादे मैं खेलण ज्यासूं लूरड़ी । —लो. गी.
रू० भे०—पाजणी ।

पेंट-सं० पु० [अं०] पायजामे की तरह का एक अंग्रेजी वस्त्र, पतलून ।

पेंड-सं० पु० [सं० पद+दण्ड] १. डग, कदम ।
उ०—दियै पेंड दातार ही, दातारां रै पंथ । ग्यांनी पुरसांरा किया, ग्यांनी चरचै ग्रंथ । —वां. दा.
क्रि० प्र०—धरणौ, भरणौ ।
२. देखो 'पेंडौ' (मह., रू. भे.)
रू० भे०—पेंड ।
अल्पा०—पेंडू ।

पेंडाक-वि० [राज० पेंड+प्र० आक] डग भरने वाला, चलने वाला ।

पेंडायत-सं० पु० [राज० पेंड+प्र० आयत] बटमार ।
रू० भे०—पेडाइत ।

पेंडू—देखो 'पेंड' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—बूंदी हाडा छत्रसाल जाडा जस वर का, सो हाथी जिस समधिया सो पेंडू भरका । —दुरगादत्त बारहठ

पेंडौ-सं० पु० [सं० पद+रा० प्र० डौ] १. मार्ग, रास्ता, पथ ।
उ०—१. भासाव्रज मारू-सुर-भासा, भासा-प्राकृत जांण भर । पायौ चरण रूपगां पेंडौ, 'मेहाहो' थारी महर । —वां. दा.
उ०—२. सीतकाळ मांहे सूरिज तिरछै पेंडै चलतौ थौ सु धूप-काळ के विखै सूरज माथा ऊपरि चालण लागौ । —वेलि टी.
२. यात्रा ।
उ०—मन सब का असवार है, पेंडा करै अनेक । मन ऊपरी असवार है, विरळा कोई एक । —ह. पु. वां.

३. प्रणाली, प्रथा।
४. पद-यात्रा।
उ०—सु साहिजादी दिली सुं चली थी सु आंतरी रै कसबै री नदी आई। पैंडि चाली सु दिन भाद्रवा ग्रासोज रा हुंना। —नैणसी
५. वह दूरी जो कोई चल कर आया हो, अथवा चलने को हो।
उ०—१. ठाडी रात रा खासो भलो पैंडो पार व्हैं जावैला। —फुलवाड़ी
उ०—२. घरबिद री वातां करतां-करतां वे चारे'क कोस री पैंडो पार करियो व्हैला कै वांनै मगरा री ढळांत सुं हेटै किणी सिघ रै डाढ़ण री ग्रावाज सुणीजी। —फुलवाड़ी
६. देखो 'परींडो' (रू. भे.)
रू० भे०—पइंडउ, पइंडो, पेंडो।
मह०—पेंड, पेंड।

पैंणो-सं० पु० [सं० पा=पीवनम्] १—एक प्रकार का विषैला सर्प।
उ०—ए रिणछोड़ घर्क मुख आया। पीणै जांण नींद बस पाया। —रा. रू.

वि० वि०—यह जैसलमेर, बीकानेर, सिन्ध (पाकिस्तान) आदि की रेतीली भूमि में पाया जाता है। यह लम्बाई में चार या पांच फुट से अधिक नहीं होता है। नर का पेट कुछ पीलापन लिए होता है तथा शरीर पर लकीर नुमा काले धब्बे होते हैं, जब कि मादा का पेट सफेद होता है और काले धब्बे नर से छोटे ग्राकार के होते हैं। यह बहुत चमकीला होता है। यदि इसके दो दिन के मृत शरीर पर तेज सूर्य की तिरछी किरणें पड़ रही हों तो यह शीशे की तरह चमकता है और दूरी से देखने वाला व्यक्ति यह निश्चय नहीं कर सकता कि यह क्या है। इसको दिन में या तेज रोशनी में दिखाई नहीं देता है। इसीलिए यह दिन में अपने स्थान को नहीं छोड़ता है। यह एक रात में ६०, ७० मील भाग सकता है। अत: यह दूर-दूर तक अपना शिकार करके वापिस अपने स्थान पर पहुँच जाता है। अधिकतर यह अपने स्थान से दूर जाकर ही शिकार करता है। यह अन्य सर्पों की तरह रेंगकर नहीं चलता अपितु कुछ उछल-उछल कर चलता है अत: इसके चलने के निशान कुछ दूर के अन्तर से मिलते हैं। कहते हैं यह अपने शिकार पर चोर की तरह जाता है अत: इसको चोर सर्प भी कहते हैं। चोरी का पता चलने पर आहट पाकर यह भाग भी जाता है। यह बड़ी कठिनाई से मरता है। इसके शरीर पर ज्हां भी डण्डे की चोट पड़ती है वहां से वह रबड़ की तरह फैल जाता है और पुन: पूर्ववत हो जाता है। इसी बीच अवसर पाकर भाग भी जाता है। तलवार आदि तेज हथियारों से भी कठिनाई से कटता है। इसके जख्मी हो जाने या मर जाने पर अन्य सर्पों की तरह इसके पास चींटियां नहीं आती हैं। इसकी आयु के विषय में कोई निश्चित बात नहीं कही जा सकती है।

इसकी सब से बड़ी विशेषता यह है कि यह किसी को काटता नहीं है अपितु मनुष्य, स्त्री व बालक के वक्षस्थल पर (सोते समय) तथा पशु के मुंह के सामने बैठ जाता है और श्वास को पीने हेतु अपना मुंह उसके मुंह अथवा नाक के समक्ष नेत्रा कर खोल देता है। इसी से इसको 'पीणा' अथवा 'पीवणा' सर्प कहते हैं। कहते हैं इसके मुंह में एक प्रकार का जहरीला फोड़ा होता जिसके दर्द से व्याकुल होकर यह इधर-उधर भटकता रहता है। प्राणियों की वायु के स्पर्श से इसका फोड़ा फूट जाता है और उसको पूर्ण शान्ति मिलती है, किन्तु ऐसा होने पर इसके फोड़े का विष प्राणी के श्वास द्वारा कण्ठ में चला जाता है। जाते समय यह प्राणी की छाती पर या मुंह पर जोर से पूंछ मार जाता है। आघात से प्राणी जग जाता है। उसको प्यास के कारण व्याकुलता महसूस होती है और श्वासावरोध होने लगता है। धीरे-धीरे श्वासावरोध बढ़ता जाता है और सर्वांग शीतलता के उपरान्त सूर्योदय से पूर्व ही उसकी मृत्यु हो जाती है।

कुछ वृद्ध पुरुषों के मतानुसार प्राणी के श्वास से अपना श्वास मिलाते समय इसका फोड़ा तो फूट जाता है किन्तु प्राणी के तालु में फोड़ा हो जाता है। सूर्योदय की गर्मी पाकर प्राणी के तालु में उत्पन्न फोड़ा फूट जाता है और उसका विष फैलकर उसकी मृत्यु हो जाती है।

राजस्थानी साहित्य में इस सर्प का जिक्र सातवीं शताब्दी से मिलता है किन्तु संस्कृत साहित्य में कहीं भी उल्लेख नहीं मिलता।
२. कपटी व्यक्ति।
रू० भे०—पींणग, पीणो, पीयणो, पीवणउ, पीवणो, पैंणो।
मह०—पीण, पीयण, पीवण।

पैंतरो-सं० पु० [सं० पदांतर, प्रा० पयांतर] १. कुश्तीबाजी, पटाबाजी, तलवार संचालन आदि में घुमा कर कदम रखने की क्रिया या मुद्रा।
२. चालाकी से भरी हुई कोई बात।
उ०—हाजरियो ई हैरांन हो, छेवट उणै पैंतरो बदळयो। दंड नीति छोड'र दांम नीति अपणाई। —रातवासो
क्रि० प्र०—बदळणो, बताणो।
रू० भे०—पैंतरो।

पैंतावौ—देखो 'पैंताळौ' (१) (रू. भे.)

पैंताळवौ—देखो 'पैंताळीसौ' (रू. भे.)
उ०—पनरै सै पैंताळवै, सुद बैसाख सुमेर। थावर बीज थरप्पियो, 'बीकै' बीकानेर। —द. दा.

पैंताळीस-वि० [सं० पञ्चचत्वारिंशत्, प्रा० पञ्चत्तालीसा, अप० पणतालीस] चालीस और पांच का योग।
उ०—मास तीन बावीस दिन, पैंताळीस वरस्स। अमरापुर वसियो 'अजो', राजा कर राजस्स। —रा. रू.
सं० पु०—चालीस और पांच के योग की संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है, ४५।

रू० भे०—पंइताळीस, पंचताळी, पंचताळीस, पचताळीस, पणया-लीस, पिचताळी, पिचताळीस ।

पैंताळीसमौं–वि० [राज० पैंताळीस+प्र० मौं] पैंतालीस के स्थान पर पड़ने वाला, पैंतालीसवां ।

पैंताळीसे'क–वि० [राज० पैंताळीस+एक] पैंतालीस के लगभग ।

पैंताळीसौ–सं० पु० [राज० पैंताळीस+प्र० औ] १ पैंतालीस की संख्या का वर्ष या साल । रू० भे०—पैंताळवौ, पैंताळौ ।

२. चार हजार पांच सौ की संख्या, ४,५००.

पैंताळौ–सं०पु० [देशज] १. ढीले जूते को चुस्त करने के लिए उसमें डाला जाने वाला पतले चमड़े का लम्बा टुकड़ा, सुखतला ।

रू० भे०—पैंतावौ, पौतावौ ।

२. देखो 'पैंताळीसौ' (रू० भे०)

उ०—बीत बयाळौ वरस, बीत 'मोकमा'तयाळौ । वरस चमाळौ बीत, पछै बीतो पैंताळौ । —अरजुनजी बारहठ

पैंतावौ—देखो 'पैंताळौ' (१) (रू० भे०)

पैंतीस–वि० [सं० पञ्चत्रिंशत्, प्रा० पञ्चतीसा] तीस और पांचकी संख्या का योग ।

उ०—कळ हेवा चंक कूंभक्रन राणा, जगत तणा गुर दुरंग जुळ । काळ्यां अचरज किसौ कटारी, काढ्यां जिण पैंतीस कुळ ।

—महाराणा कुम्भा री गीत

सं० पु०—पैंतीस की संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है, ३५.

रू० भे०—पइंतीस, पइत्रीस, प्रेंतीस ।

पैंतीसमौं–वि० [राज० पतीस+प्र० मौं] पैंतीस के स्थान पर पड़ने वाला, पैंतीसवां ।

पैंतीसे'क–वि० [राज० पैंतीस+एक] पैंतीस के लगभग ।

पैंतीसौ–सं० पु० [राज० पैंतीस+प्र० औ] १. पैंतीस की संख्या का वर्ष ।

२. तीन हजार पांच सौ की संख्या, ३५००.

रू० भे०—पैंत्रीसौ ।

पैंतौ–सं० पु० [?] भेद, रहस्य ।

उ०—किणही पूछचौ—थारै पाग ते कठा सूं आई । जद साहुकार हुवै ते तौ पैंतौ बतावै साईदार भरावै……। —भि० द्र०

पैंत्रीसौ—देखो 'पैंतीसौ' (रू० भे०)

पैंनाग—देखो 'पैनाग' (रू० भे०)

उ०—उठावै करां पोगरां दे उछाळा । किनां लागणौ राग पैंनाग काळा । —वं० भा०

पैंसट—देखो 'पैंसठ' (रू० भे०)

उ०—घणिरौ हुक्म लां सीस घार । हव भरां डंड पैंसट हजार । —पे० रू०

पैंसटमौं—देखो 'पैंसठमौं' (रू० भे०)

पैंसटे'क—देखो 'पैंसठे'क (रू० भे०)

पैंसटौ—देखो 'पैंसठौ' (रू० भे०)

पैंसठ–वि० [सं० पञ्चषष्टि, प्रा० पणसट्ठि, पण्णट्ठि] साठ और पांच का योग ।

सं० पु०—साठ और पांच के योग की संख्या, ६५.

रू० भे०—पइंसठ, पइंसठि, पैंसट, पैंसठि ।

पैंसठमौं–वि० [राज० पैंसठ+प्र० मौं] पैंसठ के स्थान पर पड़ने वाला, पैंसठवां ।

रू० भे०—पैंसटमौं ।

पैंसठि—देखो 'पैंसठ' (रू० भे०)

पैंसठे'क–वि० [राज० पैंसठ+एक] पैंसठ के लगभग ।

रू० भे०—पैंसटे'क ।

पैंसठौ–सं० पु० [राज० पैंसठ+प्र०औ] पैंसठ की संख्या का वर्ष ।

रू० भे०—पैंसटौ ।

पैं–वि० [सं० प्रभा] १. सुन्दर । (एका०)

[सं० पद] २. प्यादा, पैदल ।

सं०पु० [सं पद] १. चरण, पैर ।

उ०—हनमंत विभिखन भांन तनै, जिन कीन वडे जन लाघव रे । भुजगेस, महेस, दुजेस, रिखी नित, पै रज चाहत माधव रे ।

—र० ज० प्र०

२. पद, ओहदा ।

३. सगा, सम्बन्धी । (एका०)

४. श्रद्धा । (एका०)

५. पैसा, टका (एका०)

[सं० पयस्] ६. दूध ।

उ०—जावक दे मिळि जाय, न जावै जाणियो । पै मिळियौ जळ जाय, किसूं पहचांणियो । —बां० दा०

७. जल, पानी ।

[सं० पयज] ८. कमल, नीरज । (एका०)

क्रि० वि० [?] १. ऊपर, पर ।

उ०—असरम सो न धरम पै, कमांन ग्लांन मांन पै । परयौ जमीन पै सु सांग टांग आसमांन पै । —ऊ० का०

२. में ।

३. पास, निकट ।

४. किन्तु, लेकिन ।

उ०—हुवा आद दे फिर हुवै, सह विध करण सुधार । पै परताप 'प्रताप' तैं, अधक सुजस उच्चार । —जैत दांन बारहठ

५. अनन्तर, पीछे ।

रू० भे०—पैं ।

पैकंबर—देखो 'पैगंबर' (रू० भे०)
उ०—राग न, रंग उमंग न राजस, होज न वाग फुंहार न हुन्नर। व्है असवार सिकार न हालत, पाठ कुरांन न पीर पैकंबर।
—सू० प्र०

पैक-वि० [फा० पेक, सं० प्रेक्षी] चतुर, होशियार, कुशल। उ०—पछि पैक भमकत पाय। रिझवंत नटवर राय।—रा.रू.
सं०पु०—दूत, हरकारा।
उ०—चौतरफ लिख फुरमांण चलवे, डाकदार उदार। धाविया वह जूंग धारक, पैक वड अणपार। —सू० प्र०

पैकनभाव-सं० पु० [?] हाथी की बीमारी जिसमें उसकी आंखों से निरंतर पानी गिरता है तथा उसके बाहर के दांत तड़क जाते हैं और उनमें पीप आने लग जाता है।

पैकळौ-सं० पु० [देशज] बहुत बड़ी जूं। (शेखावाटी)

पैकांम-सं० पु० [फा० पैकान] तीर के आगे का भाग, बाण की नोंक।
उ०—'नींबौ' जोधावत टीकावत हुवौ, राव जोधा रै। सु नींबै 'जैसौ' मारियौ तद तीर लगायौ थौ तिणरौ पैकांम मांहे रह्यौ थौ।
—राव जोधा जी रै बेटां री वात

पैकार-सं० स्त्री० [फा०] १. लड़ाई, युद्ध।
सं० पु० [फा० पायकार] २. फुटकर सौदा बेचने वाला।
३. देखो 'पेसकार' (रू० भे०)

पैकेट-सं पु० [अं०] पुलिंदा, गट्ठर।

पैखांनौ—देखो 'पाखांनौ' (रू० भे०)

पैगंबर-सं० पु० [फा०] ईश्वर का सन्देश वाहक, धर्म प्रवर्तक।
उ०—१. नजूमियां अगाऊ नजूमरी कितावां में लिखियौ हौ—आखर जमांना रौ पैगंबर सुतर सवार होसी। —वां० दा० ख्यात
उ०—२. आगै होते मोटे मीर, गये छोड पैगंबर पीर।—दादूवांणी
रू० भे०—पक्कंबर, पिकंबर, पेकंबर, पेगंबर, पैकंबर।

पैगंबरी-सं० पु० [फा०] १. पैगंबर होने का भाव।
२. पैगंबर का पद।

पैगांम-सं० पु० [फा०] १. संदेश, सूचना, खबर।
उ०—हेली घर-घर की हुवै, पूंचा छक पैगांम। हाथी हाथळ आहणै, नाहर जिणरौ नांम। —वी० स०

पैड़काळौ-सं० पु० [?] जीना, सीढी। (शेखावाटी)

पैड़णौ, पैड़बौ—देखो 'पहड़णौ, पहड़बौ' (रू० भे०)
उ०—जिणनूं पाडो पैंड़तौ, आडै दिनां असीम। पैनगां पैड़ै पियौ, भालौ भंजण भीम। —रेवतसिंह भाटी
पैड़णहार; हारौ (हारी), पैड़णियौ—वि०।
पैड़िओड़ौ, पैड़ियोड़ौ, पैड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।
पैड़ीजणौ, पैड़ीजबौ—भाव वा०।

पैड़ियोड़ौ—देखो 'पहड़ियोड़ौ' (रू० भे०) (स्त्री० पैड़ियोड़ी)

पैड़ी-सं० स्त्री० [राज० पैर] १. वह जिस पर पैर रख कर ऊपर चढ़ें, सीढ़ी, जीना।
उ०—सतगुरु सबद अगम की पैड़ी, ता चढि लंघौ पारा। काया कस्ट अगनि मे डारया, तव जळि वळि भया अंगारा।
—ह० पु० वां०
२. सिंचाई के लिए जलाशय से पानी लाकर डाले जाने का स्थान, पौदर।
३. डिंगल का निसांणी छन्द जिसके प्रत्येक चरण में अनुप्रास युक्त १८, १६ मात्रायें व अन्त में मगण होता है।
४. देखो 'पैंड' (अल्पा०, रू० भे०)
रू० भे०—पेड़ी, पेढी, पैहरी।

पैंड़ौ-सं० पु० [सं० परिधि] १. पहिया, चक्र, चक्का।
उ०—कै पड़जावौ कूप गिरवरां चढि गिरजावौ। अंजन वाळौ आय फेर पैंड़ौ फिर जावौ। —ऊ० का०
क्रि० प्र०—चढ़ाणौ, फिरणौ।
२. जाट विशेष द्वारा किये जाने वाले बड़े भोज में ध्वजदण्ड के ऊपर रखाजाने वाला पहिया।
क्रि० प्र०—चढ़ाणौ, टांगणौ।
३. दूध के खोए की गोलाकार छोटी बट्टी पर शक्कर लगाकर बनाई जाने वाली मिठाई विशेष।
४. मकान आदि पर पट्टिएं चढ़ाने हेतु काष्टादि के लट्ठों को बांधकर बनाया जाने वाला ढालू रास्ता।
क्रि० प्र०—बांधणौ।
५. देखो 'पेड़ौ' (रू० भे०)
रू० भे०—पइंडौ, पइडउ, पइडौ, पइड्उ, पइडौ, पई, पईडउ, पईयौ, पहड़ौ, पहि, पहिड़ौ, पहियौ, पही, पहोड़ौ, पेड़ौ।

पै'चांण-सं० स्त्री० [सं० प्रत्याभिज्ञान या परिचयनम्] परिचय, पहिचान, जानकारी।
रू० भे०—पहचांण, पहिचांण, पहिचांणि, पिछांण, पिछांणि, पिछांणी, पिछांणु।

पै'चांणणौ, पै'चांणबौ-क्रि० स० [राज० पै'चांण] १. किसी व्यक्ति के चरित्र अथवा स्वभाव की विशेषता को जान लेना। २. विभिन्न प्रकार के पहचान चिन्हों व रंग-रूपों के आधार पर व्यक्ति विशेष या वस्तु विशेष को जानना। ३. अपनी क्षमता के अनुसार व्यक्ति विशेष या वस्तु विशेष का परिचय प्राप्त करना। ४. स्मरण शक्ति के आधार पर पूर्व देखी हुई किसी वस्तु या प्रांणी को देखते ही जान लेना।
पै'चांणणहार हारौ (हारी), पै'चांणणियौ—वि०।
पै'चांणिओड़ौ, पै'चांणियोड़ौ पै'चांण्योड़ौ—भू० का० कृ०।

पें'चांणीजणौ, पें'चांणीजवौ—कर्म वा० ।
पछांणणौ, पछांणबौ, पहचांणणौ, पहचांणवौ, पहिचांणणौ, पहिचांणवौ, पिचांणणौ, पिचांणवौ, पिछांणणौ, पिछांणवौ—रू०भे० ।

पें'चांणियोड़ौ–भू०का०कृ०—१. किसी व्यक्ति के चरित्र या स्वभाव की विशेषता को जाना हुआ. २. एक वस्तु का दूसरी वस्तु अथवा वस्तुओं से भेद किया हुआ. ३. किसी वस्तु या व्यक्ति को देखते ही जाना हुआ.
(स्त्री० पें'चांणियोड़ी)

पैज–सं० स्त्री० [सं० प्रतिज्ञा] १. प्रण, प्रतिज्ञा ।
उ०—१. धके फरसधर चक्रधर, पाळी जिण निज पैज । सो सूरां सिर सेहरौ, नर-पुंगव सुर-नैंज । —वां. दा.
उ०—२. जुग-जुग भीड़ हरी भक्तन की, दीन्ही मोक्ष समाज । मीरां चरण गही चरणण की, पैज रखो महाराज । —मीरां
क्रि० प्र०—करणी, निभाणी, पूरणी, लैणी ।
२. प्रतिस्पर्धा, प्रतिद्वंद्विता ।
उ०—जिण ऊपर पैजां मारीजै है । केई जीती जै नै केई हारीजै है । —र. हमीर
मुहा०—पैज पड़जाणी = जिद्द हो जाना, हठ हो जाना, उलझ जाना ।
३. मर्यादा, सीमा ।
उ०—तिण मारी ताड़का, जिकण रिख मख रखवाळे । हण सुबाह मारीच, पैज खित्रवट ध्रंम पाळे । —र. ज. प्र.
रू० भे०—पइज, पेंज ।
यौ०—पैजवंध ।

पैजवंध–वि० [राज० पैज+सं० वंध] १. प्रतिज्ञावीर, दृढप्रतिज्ञ ।
उ०—सुणे वांण 'गोकळे'स' पैजवंध हुओ सागे, कीधी बात सारी बादसाह री कवूल । —गोकळदास सक्तावत री गीत
२. मर्यादा रखने वाला ।
३. प्रतिस्पर्द्धा करने वाला ।

पैजार–सं० पु० [फा०] जूता, उपानह । (अ. मा.)
उ०—तद काजी नूं खूब पैजारां पिटवायौ । काज सूं दूर कियौ । —जलाल वूबना री वात
रू० भे०—पेंजार ।

पैटावणौ, पैटाववौ—क्रि० स० [सं० प्रविष्टम्] नये वैलों को जोतने के लिये अभ्यस्त करना ।
उ०—इसी विध वरस दोय हुवा, तरै नाथिया नै पैटावणा मांडिया । तिकै पांच कोस जायनै वैल जूतां पाछा आवै । —जखड़ा मुखड़ा भाटी री वात
पैटावहार, हारौ (हारी), पैटावणियौ—वि० ।
पैटाविओड़ौ, पैटावियोड़ौ, पैटाव्योड़ौ—भू०का० कृ० ।
पैटावीजणौ, पैटावीजवौ—कर्म वा० ।

पैटावियोड़ौ–भू०का०कृ०—जोतने के लिये अभ्यस्त किया हुआ (वैल)
(स्त्री० पैटावियोड़ी)

पैठ–सं० स्त्री० [सं० प्रविष्ठ] १. प्रवेश, गति, पहुंच ।
२. पहली हुण्डी के खो जाने पर महाजन द्वारा लिखी जाने वाली दूसरी हुण्डी ।
३. भरोसा, विश्वास ।
क्रि० प्र०—ऊठणी, खोणी, जमणी, जमाणी, जाणी, होणी ।
४. कार्य कुशलता, दक्षता ।
५. चरित्र ।
उ०—अंग घणां आलंगियौ, अधर घणां री ऐंठ । नर मूरख जांणै नहीं, पातरियां री पैठ । —वां. दा.
६. जानकारी, ज्ञान ।
रू० भे०—पैठि ।

पैठणौ, पैठवौ–क्रि० अ० [सं० प्रविष्टम्] प्रविष्ट होना, घुसना ।
उ०—वास विकट निवळा वसै, सवळ न लागै ताळ । गांजीजै नह गुरड सूं, पैठा नाग पयाळ । —वां. दा.
पैठणहार, हारौ (हारी), पैठणियौ—वि० ।
पैठाड़णौ, पैठाड़वौ, पैठाणौ, पैठावौ, पैठावणौ, पैठाववौ—प्रे०रू० ।
पैठिओड़ौ, पैठियोड़ौ, पैठ्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
पैठीजणौ, पैठीजवौ—भाव वा० ।
पइंठणौ, पइंठवौ, पइट्ठणौ, पइट्ठवौ, पइठणौ, पइठवौ, पईठणौ, पईठवौ, पयट्ठणौ, पयट्ठवौ, पहिटणौ, पहिटवौ—रू० भे० ।

पैठवांन, पैठवांनियौ–सं० पु० [अं० पॉइण्ट्समैन] १. वह आदमी जिसके जिम्मे रेलवे लाईन वदलने का कार्य होता है । २. विश्वासपात्र व्यक्ति, दक्ष व्यक्ति ।
रू० भे०—पेटवांन ।

पैठाड़णौ, पैठाड़वौ—देखो 'पैठाणौ, पैठावौ' (रू० भे०)
पैठाड़णहार, हारौ (हारी), पैठाड़णियौ—वि० ।
पैठाड़िओड़ौ, पैठाडियोड़ौ, पैठाड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
पैठाड़ीजणौ, पैठाड़ीजवौ—कर्म वा० ।

पैठाड़ियोड़ौ—देखो 'पैठायोड़ौ' (रू० भे०) (स्त्री० पैठाड़ियोड़ी)

पैठाणौ, पैठावौ–क्रि० स० ['पैठणौ' क्रिया का प्रे० रू०] प्रविष्ठकराना, घुसाना ।
पैठाणहार, हारौ (हारी), पैठाणियौ—वि० ।
पैठायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
पैठाईजणौ, पैठाईजवौ—कर्म वा० ।
पैठाड़णौ, पैठाड़वो, पैठावणौ, पैठाववौ—रू० भे० ।

पैठायोड़ौ—भू०का०कृ०—प्रविष्ठ कराया हुआ, घुसाया हुआ ।
(स्त्री० पैठायोड़ी)

पैठार-सं० पु० १. प्रवेश, पहुंच। २. प्रवेशद्वार, दरवाजा।
पैठावणौ, पैठावबौ—देखो 'पैठाणौ, पैठावौ' (रू० भे०)
पैठावणहार, हारौ (हारी), पैठावणियौ —वि०।
पैठाविग्रोड़ौ, पैठावियोड़ौ, पैठाव्योड़ौ —भू० का कृ०।
पैठावीजणौ, पैठावीजबौ —कर्म वा०।
पैठावियोड़ौ—देखो 'पैठायोडौ' (रू० भे०) (स्त्री० पैठावियोड़ी)
पैठि—देखो 'पैठ' (रू० भे०)
उ०—अपंग पंग ग्रंध जीमि, बैठि जांणते नहीं। महाजनीन हुंडि सेठ, पैठि मांनते नहीं। —ऊ० का०
पैठियोड़ौ, पैठोड़ौ, पैठौ-भू० का० कृ०—घुसा हुग्रा, प्रवेश किया हुआ। (स्त्री० पैठियोड़ी, पैठी, पैठोडी)
पैढ-सं० पु० [देशज] १. वह ढलुवां रास्ता जिस पर जल भरे चरस को बैल खींच कर चलते हैं। २. देखो 'पैडी' (महा०, रू० भे०)
पर्याय०—गूणी, सारण।
पैडी-सं० पु० [देशज] १. 'गाहटा' या 'रहट' में भीतर की ग्रोर चलने वाला बैल। २. देखो 'पैड़ी' (रू० भे०)
मह० —पैड।
पैणगौ—देखो 'पांणगौ' (रू० भे०)
उ०—'पातल' रै खग पैणगै, ग्रर छकिया जे ग्रांण। ग्रवनी हूंत न ऊठिया, पाछा लै तन प्रांण। —किसोरदांन बारहठ
पैणौ—देखो 'पैंणौ' (रू०भे०)
पैतरौ—देखो 'पैंतरौ' (रू०भे०)
पैत्रक, पैत्रिक-वि० [सं० पैतृक] पुरखों से चला ग्राया हुग्रा, पुश्तैनी।
पैदल-वि० [सं० पादतल, प्रा० पायतल] १. पैरों से चलने वाला।
क्रि० वि०—पैरों से, पांव-पांव।
सं० पु० —१. बिना किसी वाहन के पांव-पांव चलने की क्रिया।
२. पैदल सिपाही, पदाति।
उ०—हालें जिण ग्रगर घूमता हसती, ताता गयण भूमता तुरंग। पैदल प्रबळ रथां ह्द पंगी, चतुरंगी ग्रत फौज सुचंग। —र०रू०
३. शतरंज की प्यादी (गोटी) जो सीधी चलती है और तिरछी मारती है।
रू० भे०—पाएल, पेदल, प्यादल।
ग्रल्पा० —पियादौ, प्याद, प्यादी, प्यादौ।
पैदा-वि० [फा०] १. उत्पन्न, प्रसूत, जन्मा हुवा।
उ०—हेक विदर पैदा हुवै, ग्रगणत मिळियां ग्रंस। विदरां री संगत बुरी, विदरां रै नह वंस। —बां० दा०
२. प्राप्त, ग्रर्जित, कमाया हुग्रा।
३. प्रकट, उपस्थित।
त्रि० प्र०—करणौ, होणौ।
पैदा'—देखो 'पैदाइस' (रू०भे०)
पैदाइस, पैदायस-सं० स्त्री० [फा० पैदाइश] १. उत्पत्ति, जन्म। २. प्राप्ति। ३. आय, ग्रामदनी। ४. उत्पादन। ५. निर्माण। ६. सृजण, रचना।
रू० भे०—पैदा', पैदास।
पैदावार, पैदावारी-सं० स्त्री० [फा० पैदावार] १. खेत से उत्पन्न होने वाली फसल, उपज।
२. ग्रामदनी, ग्राय।
पैदास—देखो 'पैदाइस' (रू० भे०)
उ०—१ तद मोजड़ी राजा उवा देखनै ढढोरो फेरीयो, कहीयो इयै मोजड़ी री जोड़ी पैदास करी तौ जैनूं ग्राधो राज ग्रर बेटी परणाऊं —चौबोली
उ०—२. ग्रागै वडी ठौड हुती रु० लाख ७०००००) री पैदास हुती। —नैणसी
उ०—३. धन्य है माता तूं सो थारो ग्रोघो पैदास हुवै है। —भि० द्र०
उ०—४. वडा-वडा वेद सार, प्रसिद्ध प्रवक्ता। जिण ऐती पैदास की सो कायम कुदरता। —केसोदास गाडण
उ०—५. चौरासी लाख भख दीयण, निरपख निरवांणी। घड़-घड़ भंजैं भी घड़ै, पैदास पुरांणी। —केशोदास गाडण
पैनाक—१. देखो 'पिनाक' (रू०भे०)
२. देखो 'पैनाग' (रू० भे०)
पैनाग-सं०पु० [सं० पन्नग] १. सर्प, सांप।
उ०—सांकळां हूं लांघणीक हेड़ियो बीहतो सेर। पूंछ चांप सूतो फेर छेड़ियो पैनाग। —बद्रीदास खिड़ियो
[सं० पन्नग = नाग = हाथी] २. हाथी।
उ०—कड़ी वाजतां वरम्मां पीठ, पैनागां ऊघड़ी केत, मागां काळ घड़ी देत पैंडा ग्रासमेद। छडालां ग्रभागां लागां ग्रडी, ग्रासमांन छायो, वाजंदा वागां यूं ग्रायो 'उमेद'। —हुकमीचंद खिड़ियो
३. देखो 'पिनाक' (रू०भे०)
रू० भे०—पैनाग, पैनाक, पैनायक।
पैनायक— १.देखो 'पिनाक' (रू० भे०)
उ० हुवै झपट चंम्मरां, नाद हुवै पैनायक। कोतल उछटां करै, नटां झपटा है नायक। —सू०प्र०
२. देखो 'पैनाग' (रू०भे०)
पैनौ—वि० [सं०पैण = घिसना] १. तेज धार वाला, तीक्ष्ण। २. देखो 'पनौ' (रू० भे०)
पैबंद—देखो 'पैवंद' (रू० भे०)
पैबंदी—देखो 'पैवंदी' (रू० भे०)
पैबंदू—देखो 'पैवंद' (रू.भे.)
उ०—कमळा रेसमी नारंगी पैबंदू का हुनर ग्रदभूत। रोसनी

हमगांनी सुरखांनी सहतूत ।—सू.प्र.

पैमांनौ—सं० पु० [फा० पैमाना] मापने का उपकरण, मापदण्ड, नाप ।
रू० भे०—पेमांनौ ।

पैमाइस, पैमायस—सं० स्त्री० [फा० पैमाइश] भूमि आदि नापने की क्रिया या भाव, माप ।
रू० भे०—पैमास ।

पैमाल—वि० [फा० पा-माल] १. गैंदा हुआ, पदाक्रान्त । २. तबाह, बरबाद, दुर्दशाग्रस्त ।
३. तहमनहस नष्ट ।
उ०—जिन्हूं के रस सवाद देखें सै विलायत के पातसाह के भेजें । विलायत त(क) के बेदांने अनार सो पैमाल जावें ।—सू. प्र. ।

पैमाली—सं० स्त्री० [रा० पैमाल+प्र० ई] १. दुर्गति ।
२. बरबादी ।

पैमास—देखो 'पैमाइस' (रू. भे.)

पैर—सं० पु० [सं० पददंण्ड, प्रा० पयदंड, अप० पयड] १. चरण, पाँव ।
उ०—दारतें दुदार पैर पोच में दियौ । कार को बिगार सोच लार सें कियौ । —ऊ. का.
मुहा०—१. पैर उखड़णौ—भागना, न ठहर सकना. २. पैर की धोवण होणौ—मुकाबिले में बहुत छोटा होना. ३. पैर की धूळ झाड़णौ—खुशामद करना. ४. पैर की धूल होणौ—अपेक्षा कृत बहुत नीचा होना. ५. पैर पटकणौ—बहुत प्रयास करना. ६. पैर में सनीचर होणौ—दिन रात चलने वाला होना. ७. पैरों में बेडी डाळणौ—१. कहीं आने जाने न देना, विवाह कर देना ।
२. धूलि पर पड़ा पदचिन्ह । ३. वैभव, ऐश्वर्य ।
४. रक्त प्रदर । (अमरत)
मुहा०—पैर छूटणौ—स्त्री के अधिक रक्तस्राव होना ।
६. प्रहर । (डिं. को.)
६. वक्त, जमाना, युग । ७. खलिहान । (मेवात)

पैरगाड़ी—सं० स्त्री० [सं०पद+शकटी] पैर से चलने वाली हल्की गाड़ी, ज्यूं—बाई-सिकल, ट्राई सिकल, साईकिल आदि ।

पैरण—सं० पु० [सं० परिधानं] खत्री-वैश्यों की स्त्रियों के पहिनने के अधोवस्त्र के साथ टांगा जाने वाला वस्त्र विशेष । २. पहने का वस्त्र ।
रू० भे०—पेरण ।

पै'रणौ, पै'रबौ—क्रि० स०—१. स्वीकार करना, अपने ऊपर लेना ।
[सं० प्लवन] २. तैरना ।
उ०—तुम बिन तारण को नहीं, दूभर यह संसार । पैरत थाके केसवा, सूझै वार न पार । —दादूवांणी

३. देखो 'पहरणौ, पहरबौ' (रू. भे.)
उ०—१. मोड़ें मुख हीतल हतवाळी । पीतळ पैरणनें सीतळ सत वाळी । —ऊ. का.
उ०—२. उणी री माउ तौ जोगण हुई, ए समीचार वीरम सुणनें वैराग आयौ । जद घर-वार छोड भसमी पै'री ।
—कल्यांणसिंघ नगराजोत वाढ़ेल री वात

पै'रणहार, हारौ (हारी), पै'रणियौ—वि० ।
पै'रवाड़णौ, पै'रवाड़बौ, पै'रवाणौ, पै'रवाबौ, पै'रवावणौ, पै'रवावबौ, पै'राड़णौ, पै'राड़बौ, पै'राणौ, पै'राबौ, पै'रावणौ, पै'राववौ—प्रे० रू० ।
पै'रिप्रोड़ौ, पै'रियोड़ौ, पै'रयोड़ौ—भू०का०कृ० ।
पै'रीजणौ, पै'रीजबौ—कर्म वा०/भाव वा० ।
पइरणौ, पइरबौ, पइहरणौ, पइहरबौ, पहरणौ, पहरबौ, पैहरणौ, पैहरबौ—रू०भे० ।

पैरवाई—देखो 'पैरवी' (रू.भे.)

पैरवास, पैरवेस—सं० पु० [सं० परिवेश] पोशाक, वेषभूषा, पहनावा ।
उ०—हे दरजण आज सूं ही म्हारै लंबी बांहां री अंगिया—विधवा री पैरवेस लावजै ।—वी.स.टी.

पैरवी—सं० स्त्री० [फा०] १. अनुगमन, अनुसरण ।
२. पक्ष का मण्डन ।
३. आज्ञा पालन ।
४. कार्रवाई ।
५. अनुकूल फल प्राप्ति हेतु किया जाने वाला प्रयत्न ।
उ०—आ बात तो खरी कठिन छै, मोसूं हुवै नहीं, थां रै वास्तै पैरवी करस्यूं ।—पंच दंडी री वारता
क्रि० प्र०—करणौ, होणौ ।
रू० भे०—पैरवाई ।

पैरवीकार—सं० पु० [फा०] पैरवी करने वाला व्यक्ति ।
रू० भे०—पैरोकार ।

पै'रांमणी, पै'रांवणी—देखो 'पहरावणी' (रू.भे.)

पैराक—वि० [सं० प्लावक] तैरने वाला, तैराक । उ०—महाकाळी कूंत हाथां 'सालमेस' क्रोध मंडी, प्रयाग अधारा पढी वहंती पैराक
—सालमसिंघ देवळ री गीत
रू० भे०—पैराकी ।

पैराकर—वि० [?] पार करने वाला ।
उ०—वंसी एराकरां छ-भाख पैराकरां खड़गवाहां । जोस मेघा आखरां आसुरां मंज जंग । —र.ज.प्र.

पैराकी—वि० [राज० पैराक+प्र० ई] १. प्रवीण, चतुर ।
उ०—जिण साथ पैराकी जंगा रा । अत प्राक्रम दीरघ अंगा रा ।
—र.रू.

२. देखो 'पैराक' (रू.भे.)

पैं'राड़णौ, पैं'रड़बौ—१. देखो 'पहराणौ, पहराबौ' (रू.भे.)
२. देखो 'पैं'राणौ, 'पैं'राबौ' (रू.भे.)
पैं'राड़णहार, हारौ (हारी), पैं'राड़णियौ—वि०।
पैं'राड़िग्रोड़ौ, पैं'राड़ियोड़ौ, पैं'राड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।
पैं'राड़िजणौ, पैं'राड़ीजबौ—कर्म वा०।

पैं'राड़ियोड़ौ—१. देखो 'पहरायोड़ौ' (रू.भे.)
२. देखो 'पैं'रायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० पैं'राड़ियोड़ी)

पैं'राणौ, पैं'राबौ-क्रि०स० ['पैं'रणौ' क्रि० का प्रे० रू०] १. स्वीकार कराना।
२. तैराना।
३. देखो 'पहराणौ, पहराबौ' (रू.भे.)
उ०—दंपति पूजै विविध सूं, चरणां सीस लगाय। धूप दीप फळ फूल जुत, पोहपमाळ पैराय। —गजउद्धार
पैं'राणहार हारौ (हारी), पैं'राणियौ—वि०।
पैं'रायोड़ौ—भू०का०कृ०।
पैं'राईजणौ, पैं'राईजबौ—कर्म वा०।
पैं'राड़णौ, पैं'राड़बौ, पैं'रावणौ, पैं'रावबौ—रू०भे०।

पैं'रायोड़ौ-भू०का०कृ०—१. स्वीकार कराया हुआ। २. तैराया हुआ।
३. देखो 'पहरायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० पैं'रायोड़ी)

पैंरावण-सं० स्त्री० [सं० परिधानं] गिरासी जाति के विवाह की तीन रीतियों में से एक रीति।

वि०वि०—इस जाति के अविवाहित लडके लडकियां जंगल में ढोर चराने जाते हैं। जवान हो जाने पर कोई लडका किसी लडकी को व लड़की उस लड़के को चाहने लगती है। जब दोनों के भली प्रकार मन मिल जाते हैं तो युवक युवती के हाथ लगा देता है और शाम को घर आकर अपने माता-पिता को सूचित कर देता है। लडके के माता-पिता लडकी के माता-पिता को कहलवा देते हैं कि हमारे लडके ने तुम्हारी लडकी के हाथ लगा दिया है अतः अब यह दूसरी जगह न जाने पावे। फुरसत मिलने पर लड़की के मां-बाप, पंचों और गांव के मुखिया को एकत्रित करते हैं और लडके वाले को बुलाकर उनको १२ बछो और १२ पिछेवड़े (वस्त्र) देकर राजी करते हैं। एक-एक बछड़ा पंच और मुखिया अपने मेहनताने के ले लेते हैं। फिर लडकी के मां-बाप अच्छा मुहूर्त देख कर लड़की को उस युवक के साथ कर देते हैं। उस समय दोनों को कुछ कपड़े भी पहिनाते हैं। इसी से यह रीति पैंरावण कहलाती है। अन्य दो रीतियां 'तांणणो' और 'ब्याह' है। (मा.म.)

पैं'रावणि, पैं'रावणी—देखो 'पहरावणी' (रू.भे.)

पैं'रावणौ, पैं'रावबौ—१. देखो 'पहराणौ, पहराबौ' (रू.भे.)
उ०—हाथी सगळी भीड़ में घूमग्यौ तोई वो माळा पैं'रावणी तो अळगी, सूंड नीची ई नीं करी। —फुलवाड़ी
२. देखो 'पैं'राणौ, पैं'राबौ' (रू.भे.)
पैं'रावणहार, हारौ (हारी), पैं'रावणियौ—वि०।
पैं'राविग्रोड़ौ, पैं'रावियोड़ौ, पैं'राव्योड़ौ—भू०का०कृ०।
पैं'रावीजणौ, पैं'रावीजबौ—कर्म वा०।

पैं'रावियोड़ौ—१. देखो 'पहरायोड़ौ' (रू.भे.)
२. देखो 'पैं'रायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० पैं'रावियोड़ी)

पैं'रियोड़ौ—भू०का०कृ०—१. तैरा हुआ।
२. स्वीकार किया हुआ, अपने ऊपर लिया हुआ।
३. देखो 'पहरियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० पैं'रियोड़ी)

पैरोकार—देखो 'पैरवीकार' (रू.भे.)

पैल-वि० [देशज] १. मंदगति से चलने वाला (बैल).
उ०—कीच निहाळ्यां करें भैंसगी चळणूं भारी। पैल बळद पग प्रगट, खिसै नह खीळां खारी —ऊ.का.
२. उद्योग करने में आलसी या मन्द।
सं० स्त्री०—१. बहुतायत, अधिकता।
उ०—मीज रीझ झेली भली, पावस पांणी पैल। मतवाळा मनवार री, छाक म ठेलो छैल।—बां.दा.
२. किसी काम, बात या व्यक्ति को औरों से दिया जाने अथवा मिलने वाला अवसर, प्राथमिकता।

पैं'ल—देखो 'पहल' (रू.भे.)
उ०—जिण दिस देखो सूत्रती, पैं'ल वेम हिरण्यांह। ठंडी निजरां जोयज्यो, कर ऊंची किरण्यांह।—लू

पैं'लके-अव्य०—पहले। उ०—इन्द्रुखां कह्यौ—पैं'लके म्हैं इक्कीस हारां वास्तै ई आपनैं ओडौ दियो हो के थें म्हारी खातर वै हार क्यूं कबूल करिया।—फुलवाड़ा
रू० भे०—पहलके।

पैं'लड़ौ—देखो 'पैं' लौ' (अल्पा.,रू.भे.)
उ०—१. सांवणिया रे पैं'लड़ै मास रिड़मल घुड़ला मोलवे रे! हो रे म्हारी जोड़ रौ रे गढ़ां रौ रावजी रे रिड़मल राव।—लो.गी.
उ०—२. इत्ते में संघीआळै म्हाराज आप'र घोटौ घुमायौ—क्यों! कठीनै री त्यारी करी हो? खंधी पैं'लड़ी ई को आयी नी।
—वरसगांठ
(स्त्री० पैलड़ी)

पैलणौ, पैलबौ—देखो 'पेलणौ, पेलबौ' (रू.भे.)
उ०—१. करमसीहोत हरनाथ जसकरन बेली। केतीबार महा-

बाह साह फौज पैली ।—रा.रू.

उ०—२. राव पिण आंण मुकांम कोस २ बाकी छोड कीया, सु जगमाळ रै कटके विचारियौ सु "राव सुरतांण रै वसी रा रजपूतां रा गांव छै तिणां ऊपर फौज १ पैलीजै, ज्यूं रजपूत जुदा जुदा विखर जाय, पछै सुरतांण नूं कूट मारस्यां ।"—नैणसी

पैलणहार, हारौ (हारी), पैलणियौ—वि० ।

पैलिग्रोड़ौ, पैलियोड़ौ, पैल्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

पैलीजणौ, पैलीजबौ—कर्म वा० ।

पं'ल-पांत, पं'लपोत, पं'लपौत—ग्रव्य०—[सं० प्रथम + पंक्ति] सबसे पहले सर्व प्रथम ।

उ०—१. पं'लपोत गाय री बारी । उणनै छेकला में गाय रै सिवाय दूजी की चीज देखण में नीं ग्राई ।—फुलवाड़ी

उ०—२. स्याळ रै इत्ती नेठाव कठे ! सुणतां ई उडियौ । सांमला गांव में गियौ । वौ पं'लपौत उण डोकरी रै घरै गियौ ।—फुलवाड़ी

पं'लवांन—१. देखो 'पहलवांन' (रू.भे.)

२. देखो 'पंलियांण' (रू.भे.)

पं'लवांनी—देखो 'पहलवांनी' (रू.भे.)

पैलांतर—वि०यौ०—पूर्व जन्म का ।

उ०—१. वीरमदे-बाहिरी घणी दोहरी छै । तिको पैलांतर रौ नेह वाचा-वंधियौ छै ।—वीरमदे सोनगरा री वात

उ०—२. बेगम बोली—बावाजी, हींदू मेरा पैलांतर का खावंद है । आगै छः वेळां इण पाछै मेरी देही जळाई है ।

—वीरमदे सोनगरा री वात

पं'ला—ग्रव्य०—१. ग्रादि, प्रारम्भ या शुरू में, सर्वप्रथम ।

उ०—चाह नीर मिळणौ चित चायौ, हेर भलौ हुवौ हित हरखायौ । पं'ला उण मीठौ जळ पायौ, लारां सूं ऐंठौ खळ लायौ । —ऊ.का.

२. काल, घटना, स्थिति आदि के क्रम के विचार से ग्रागे या पूर्व ।

उ०—वौ ग्रंतावळ करतौ आखतौ पड़नै पूछ्यौ—इण सूं पै'ला ! थूं घरमसाळ में ग्राई कीकर ? म्हनै सगळी बात मांडनै वता, म्हैं सब जांणणी चावूं । —फुलवाड़ी

३. वीते हुए समय में, पूर्व काल में ।

४. देखो 'पै'ली' (रू.भे.)

रू०भे०—पहिलु, पहिलु, पहिलै ।

पं'ळाद—देखो 'प्रह्लाद' (रू.भे.)

उ०—रूप नरसिंग पैंळाद कज धारियौ । गयंद हद तारियौ वेद गाव ।—भगतमाळ

पैलियांण, पैलियांत—वि० स्त्री० [?] प्रथम, पहली ।

सं० स्त्री०—प्रथम बार बच्चा देने वाली गाय, भैंस, बकरी ग्रादि ।

रू०भे०—पहलूंण, पहलूंणां, पहलूंणी, पहलोत, पहिलूंणा, पहिलूंणी, पं'लवांन, पैलीयांत, पैलूंण, पैलूंणी, पैलूणी ।

पैलियोड़ौ—देखो 'पैलियोड़ो' (रू.भे.) (स्त्री० पैलियोड़ी)

पं'ली, पैली—क्रि०वि० [?] उस ग्रोर, दूसरी ग्रोर ।

उ०—१. सद्गुरु काढ़ै केस गहि, डूबत इहि संसार । दादू नाव चढ़ाइ कर, कीये पैली पार ।—दादूवांणी ।

उ०—२. पं'ली कांनीं सूं रावळ मांणस हजार सात ग्राठ सूं ग्रायौ । —नैणसी ।

२. प्रथम ।

३. देखो 'पं'लौ' (स्त्री.)

उ०—इतरा गांवां रौ हांसल खायजै । वाकी पैली धरती रौ कीप घाड़ो ग्रावै ।—सूरे खींवे कांधळोत री वात

४. देखो 'पं'ला (रू.भे.)

उ०—१. दादू दुनियां बावळी सोच करै गैली । रोटी देवै रांमजी, दिन ऊगां पं'ली ।—दादूवांणी

उ०—२. राजकंवर भर निजर उण नै निरखतौ रह्यौ—जांणै पं'ली वार ही इण चीजनै देखी है ।—फुलवाड़ी

उ०—३. घणा दिनां पं'ली री वात है । एक ही राजा नै एक ही रांणी ।—फुलवाड़ी

उ०—४. ऊमर में ग्राज पं'ली ग्रां ग्रांख्यां सूं ग्रासुंवां रौ मेळ हुवौ । —फुलवाड़ी

रू० भे०—पहली, पहल्ली, पहिली, पहिलै, पैहल, पैहली ।

यौ०—पैलीकांनी, पैलीघर, पैलीपैल ।

पैलीघर—स० स्त्री० [?] दूसरा किनारा, दूसरा तट ।

उ०—पीरां पतधीरां पैलीधर धायौ । उण दिन 'रांमौ' सांमौ नहिं आयौ ।—ऊ.का.

पैलीयांत—देखो 'पैलियांण' (रू.भे.)

पैलूंण, पैलूंणी—देखो 'पैलियांण' (रू.भे.) (तोरावाटी)

पं'लू—देखो 'पहलू' (रू.भे.)

उ०—लनता पंखां रा पं'लू लागोड़ा । भूखां भमतां रा भीतर भागोड़ा ।—ऊ.का.

पैलूणी—१. देखो 'पैलियांण' (रू.भे.)

२. देखो 'पैलूणौ' (स्त्री०)

पैलूणौ—वि० (स्त्री० पैलूणी) प्रथम या पहिला ।

रू०भे०—पहिलूणौ ।

पं'लै, पैलै—क्रि०वि०—उस ग्रोर । उ०—सोझत था कोस १ ऊतर नूं नदी रै पं'लै कांनी ।—नैणसी

२. प्रथम, पहिले ।

रू०भे०—पइलइ, पहले, पहिले, पेहले, पैहलै ।

पैलैदिन—सं०पु० [?] वर्तमान दिन से तीन दिन पहिले या तीन दिन बाद का दिवस ।

रू०भे०—परलैदिन ।

पं'लंपार—क्रि० वि०—उस पार, दूसरे किनारे पर।
उ०—रापोदं आधा बघतौ थकौ सैल री राजा रं घमोड़ी। तिका पं'लंपार नीकळी।—जैतसी ऊदावत री वात

पं'लोड़ौ—देखो 'पं'लौ' (अल्पा.,रू.भे.)
(स्त्री० पं'लोड़ी)

पंलोट, पंलोटणौ, पंलोठणौ—देखो 'पंलियांण'.

पं'लौ, पंलौ—वि०पु० [देशज] (स्त्री० पं'ली, पैली) १. समय के विचार से जो सर्व प्रथम जन्मा या हुआ हो।
उ०—१. राजा मसखरी करतां कह्यौ—ग्रर पछं वो पं'लो अमर-फळ थनं खाणौ पड़ेला।—फुलवाडी
उ०—२. उण रांणी री वो पं'लो जीव हो जकौ अठं ग्रायां रोयौ कळपियौ कोनीं।—फुलवाड़ी
उ०—३. अळगा-अळगा पंथ चालता थका वे सगळा ग्रेक ई भांत री वातां सोचता-विचारता जावता। पण पं'लो राजकंवर सब सूं लांठो हो, इण कारण उणनं सातूं भाइयां री अणूंतो ही सोच हो।—फुलवाड़ी
उ०—४. मोटोड़ा रांणी-मां पं'लके म्हारी पं'लो चिड़ी नं घणा लाडकोड सूं मांय आळा में बिसांणनं उण री घणी साळ-संभाळ करी ही। —फुलवाड़ी
२. किसी वर्गीकृत पदार्थ के प्रारंभिक ग्रंश से सम्बंधित।
ज्यूं—पोथी री पं'लौ पांनो, गीता री पं'लो अध्याय।
३. प्रतियोगिता या तुलना मे जो सर्वप्रथम ग्राया हो।
ज्यूं—मोवन दौड़ में पं'लौ लड़को है।
४. वर्त्तमान काल से पूर्व का।
ज्यूं—पं'लारा जमांना जैड़ा हमें सुख कठै।
५. दूसरा, अन्य।
उ०—मांहो मांहि पं'लां रा उलां रा डेरा ग्रावे जावै।—नैणसी
६. शत्रु।
उ०—१. कोट घेरियौ पं'लां कटकां, अधिक सांकड़ै आयौ।
के वेळा माता तें करनी, बीकानेर वचायौ।—वां.दा.
उ०—२. पं'लो खोसै पावड़ी, हंसै दिखाळै दंत। कायर मोनें क्यों कहे, सुद्ध सुभावां संत।—वां.दा.
रू०भे०—पइलउ, पइलो, पइहिलो, पल्लो, पहलो, पहल्लो, पहिलइ, पहिलउ, पहिलुं, पहिलू, पहिलो।
अल्पा०—पहिलड़ो, पे'लड़ो, पे'लोड़ो।

पंलो-जनम—सं०पु०यो०—१. आगे होने वाला जन्म, भावी-जन्म।
उ०—कोई वीर स्त्री भागळ पति नै कहे छे—हे कंथ! आप भला भागनै जीवता घरै ग्राया। ग्रवै म्हारौ वेस धारण करावौ ग्रवै म्हनै ग्रां चुड़ियां सूं लाज ग्रावै छै सो हूं तौ ग्रवै चुड़ियां पंले-जनम मेट सूं।—वी.स.टी.
२. देखो 'पैलो-भव'.

पंलो-भव—सं०पु० [?] १. पूर्वजन्म।
उ०—गैलं वहता गुड़ पड़्या, ऐलै अमलो आप। लै लै करतां लागियो, पंलै-भव रो पाप।—ऊ.का.
२. देखो 'पैलो-जनम.

पंवंद—सं०पु० [फा०] १. कपड़े का वह छोटा टुकड़ा जो किसी बड़े कपड़े का छेद आदि बंद करने के लिए लगाया जाता है।
उ०—किलमांपति भेंटे कारीगर, कारी घाव निहाव कर। बाळ बाळ जुड़ियो थारो विप, पंवंद आइस तणी पर।
—महाराणा जगतसिंह रो गीत
उ०—किसी पेड़ की टहनी काट कर उसी जाति के किसी दूसरे वृक्ष के साथ नये फलों व नये स्वाद के उद्देश्य से बांधने का ढंग।
रू०भे०—पैवंद, पैवंद्र।

पंवंदी—वि० [फा०] १. जिसमें पैवंद लगा हो। २. पैवंद लगाकर उत्पन्न किया हुआ, (फल). ३. वर्ण शंकर।

पंस—सं० स्त्री० १. गति, पहुंच, प्रवेश। (डि.को.)
२. देखो 'पेस' (रू.भे.)

पंसण—सं०स्त्री० [सं० प्रविष्ट] पहुंच, प्रवेश। (डि.को.)

पंसणौ, पंसबौ—क्रि०अ० [सं० प्रविश, प्रा० पइस] प्रवेश करना, घुसना।
उ०—१. वड़कै ग्रोधण वंधिया, पेसै पई पताळ। सोच करै नह सागड़ी, घवळ तणी दिस भाळ।—वां.दा.
उ०—२. ग्रागै दरवाजे नीसरतां देखै तो एक कुंमार परणीज'र ग्रावै छै। दरवाजै मांहे पंसै छै।—नैणसी
पंसणहार, हारौ (हारी), पंसणियौ—वि०।
पंसाड़णौ, पंसाड़बौ, पंसाणौ, पंसाबौ, पंसावणौ, पंसावबौ—सक०रू०
पंसिग्रोड़ौ, पंसियोड़ौ पंस्योड़ौ—भू०का०कृ०।
पंसीजणौ, पंसीजबौ—भाव वा०।
पइसणौ, पइसबौ, पयसणौ, पयसबौ—रू०भे०।

पैसवाई—देखो 'पेसवाई' (रू भे.)

पैसाच, पैसाची—वि० [सं० पैशाच] पिशाच सम्बंधी, पिशाची।
सं० स्त्री० [सं० पैशाची] एक प्रकार की प्राकृत भाषा।

पैसाड़णौ, पैसाड़बौ—देखो 'पैसाणौ, पैसाबौ' (रू.भे.)
पैसाड़णहार, हारौ (हारी), पैसाड़णियौ—वि०।
पैसाड़िग्रोड़ौ, पैसाड़ियोड़ौ. पैसाड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।
पैसाड़ीजणौ, पैसाड़ीजबौ—कर्म वा०।

पैसाड़ियोड़ौ—देखो 'पैसायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० पैसाड़ियोड़ी)

पैसाणौ, पैसाबौ—क्रि० स० ['पंसणौ' क्रि० का० स० रू०] प्रवेश कराना, घुसाना।

पैसाणहार, हारौ (हारी), पैसाणियौ—वि०।
पैसायोड़ौ—भू० का० कृ०।
पैसाईजणौ, पैसाईजबौ—कर्म वा०।
पुसांणौ, पुसांबौ, पैसाड़णौ, पैसाड़बौ, पैसावणौ, पैसावबौ
—रू० भे०।

पैसायोड़ौ–भू० का० कृ० —प्रवेश कराया हुआ, घुसाया हुआ।
(स्त्री० पैसायोड़ी)

पैसार–सं० पु० [सं० प्रवेशनम्] १. पैठ, प्रवेश।
उ०—ऐ थया जाडा आदमी, गत कुटळ जीद अमीर। पैसार सूं नैसार मुसकल, वणैसी सुण वीर।—पा.प्र.
२. डेरा।
उ०—ईसरदास कल्यांणदासोत रै चाकर. रांमसिंघ जगमाळ रै पैसार पैसनैं रातै मारियो।—नैणसी
३. प्रवेश होने का स्थान, प्रवेश द्वार।
उ०—विचार, बुद्धि, बल पूरा राखता होय पैसार नै काळ लड़ाई रा जांणता होवै। —नी.प्र.
रू० भे०—पेसार।
अल्पा०—पइसारउ, पइसारौ, पैसारौ।

पैसारौ–सं० पु० [सं०प्रवेश+चार या प्रवेशनम्] १. पुष्करणा ब्राह्मणों में 'भांवरी' से एक दिन पूर्व की जाने वाली एक रीति या रस्म। (मा.म.)
वि०वि०—इसके अनुसार कन्या के ननिहाल व पिता के पक्ष के स्त्री-पुरुष वर के घर मिलने को आते हैं। वर पक्ष वाले वर को कपड़े व गहने पहिनाकर मकान के बाहर गद्दी पर बैठा देते हैं। वर के सम्बन्धी भी एकत्रित हो जाते हैं। कन्या पक्ष वाले ढोल बजाते हुए आते हैं और स्त्रियां गीत गाती आती हैं। दोनों ओर के सभी व्यक्ति 'सपरदान' की रीति करते हैं।
२. उक्त अवसर पर गाया जाने वाला गीत।
३. विवाह के पश्चात दूल्हे का दूलहिन सहित अपने घर में प्रवेश करने की विधि विशेष।
उ०—१. ताहरां भारमळजी रिणमलजी खावड़ आया। पिण कोस २ तथा २॥ बीच रह्या। तद रिणमलजी नुं भारमलजी कहायो, "थांहरी तरवार मेल देज्या, जु सोढ़ी रो पैसारौ करां। अर पछै म्हे था थाय मिळसां।" इतरो भारमलजी कहायो।
—रिणमल राठौड़ खावड़ियै री वात
उ०—२. हिवै हालीया। रांण भणाय आय पहुता। हिवै पैसारौ करि रांणो घरे गयो। हिवै जेलू भोजैसु परधानां करे। थारै बोलीयेनुं पाल करि। —देवजी वगड़ावतांरी वात
वि०वि०—इसमें दूल्हे को घर के प्रमुख द्वार में प्रवेश करते ही आगन में थालियों की एक कतार रखी मिलती है। उन थालियों को दूल्हा तलवार की नोंक से एक दाईं व एक बाईं तरफ के क्रम से सरकाता जाता है। पीछे दुलहिन और उसकी 'जेठांणी' उन थालियों को संग्रह करती जाती है। संग्रह के समय थालियों की परस्पर आवाज होना अशुभ माना जाता है।
४. देखो 'पैसार' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—निसरणी ऊंची करो, सुभट करो पैसारो रे। आंणी रावळ इण घड़ी, कुट्टण क्या सु गमारो रे। —प.च.चौ.
रू०भे०—पइसारउ, पइसारौ।

पैसावणौ, पैसावबौ—देखो 'पैसाणौ, पैसाबौ' (रू.भे.)
पैसावणहार, हारौ (हारी), पैसावणियौ—वि०।
पैसाविओड़ौ, पैसावियोड़ौ, पैसाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
पैसावीजणौ, पैसावीजबौ—कर्म वा०।

पैसावियोड़ौ—देखो 'पैसायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० पैसावियोड़ी)

पैसिंजरगाडी–सं० स्त्री० [अं० पैसेंजर+राज० गाडी] यात्रियों को ले जाने वाली रेलगाड़ी जो हर स्टेशन पर ठहरती है, सवारीगाड़ी।

पैसियोड़ौ–भू०का०कृ० —प्रवेश किया हुआ, घुसा हुआ।
(स्त्री० पैसियोड़ी)

पैसेंजर–सं० पु० [अं०] १. यात्री। २. देखो 'पैसिंजरगाडी'.

पैसौ—देखो 'पईसौ' (रू.भे.)

पैहरण—देखो 'पहरण' (रू.भे.)
उ०—पट्टोलो पैंतीस हाथ पैहरण पैंहरीजे। पिछोड़ो सोल है, तेण तन नहीं ढकीजे।—नैणसी

पैहरणौ, पैहरबौ—देखो 'पैं'रणौ, पैं'रबौ' (रू.भे.)
उ०—१. महाराज आ अठै मोजड़ी की पैंहरण वाली आई छै अर अठै मोजड़ उवा हाजर कीवी। —चौबोली
उ०—२. तिको पांचा मांहे वैर पहरियो। तिण वैर काढण धणी फिकर रहै। —जैतसी ऊदावत री वात
पैहरणहार, हारौ (हारी), पैहरणियौ—वि०।
पैहराड़णौ, पैहराड़बौ, पैंहराणौ, पैहरावौ, पैहरावणौ, पैहरावबौ
—प्रे०रू०।
पैहरिओड़ौ, पैहरियोड़ौ, पैहरयोड़ौ—भू० का० कृ०।
पैहरीजणौ, पैहरीजबौ—कर्म वा०।

पैहराड़णौ, पैहराड़बौ—देखो 'पैं'राणौ, पैं'राबौ' (रू.भे.)
पैहराड़णहार, हारौ (हारी), पैहराड़णियौ—वि०।
पैंहराड़िओड़ौ, पैंहरड़ियोड़ौ, पैंहराड़योड़ौ—भू० का० कृ०।
पैंहराड़ीजणौ, पैंहराड़ीजबौ—कर्म वा०।

पैहराड़ियोड़ौ—देखो 'पैं'रायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० पैंहराड़ियोड़ी)

पैंहराणौ, पैंहराबौ—देखो 'पैं'राणौ, पैं'राबौ' (रू.भे.)

उ०—जोगी नूं बोलाय, जोगी रा आभरण पैहराय रावळ मलीनाथ नांम दियौ। —नैणसी

पैहराणहार, हारौ (हारी), पैहराणियौ—वि०।
पैहरायोड़ौ—भू० का० कृ०।
पैहराईजणौ, पैहराईजबौ—कर्म वा०।

पैहरायोड़ौ—१. देखो 'पहरायोड़ौ' (रू.भे.)
२. देखो 'पं'रायोडौ' (रू.भे.)
(स्त्री० पैहरायोड़ी)

पैहरावणि, पैहरावणी—देखो 'पहरावणी' (रू.भे.)

पैहरावणौ, पैहराववौ—देखो 'पैहराणौ, पैहराबौ' (रू.भे.)
उ०—जी हो खेलावण हुलरावणं, लाला, चुगांवण ने पाय। जी हो न्हवरावण पैहरावणं लाला, अगो अग लगाय।—जयवाणी
पैहरावणहार, हारौ (हारी), पैहरावणियौ—वि०।
पैहराविप्रोड़ौ, पैहरावियोड़ौ, पैहराव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
पैहरावीजणौ, पैहरावीजवौ—कर्म वा०।

पैहरावियोड़ौ—१. देखो 'पं'रायोड़ौ' (रू.भे.)
२. देखो 'पहरायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० पैहरावियोडी)

पैहरी—देखो 'पंडी' (रू.भे.)
उ०—कचन पाळ विसाळ अति, पैहरी जरी जराय। ता पर सोभा तरुन की, का पै वरनी जाय।—गजउद्धार

पैहल—देखो 'पहल' (रू.भे.)
उ०—सूरज ऊगां पैहल सांभलो, गहलोतां, कछवाहां गौड़। गढपतियां दरवार गवीजै, ठौड़ ठौड़ वाघौ राठौड़। —महाराजा सिवदांनसिंघजी

पैहलड़ौ—देखो 'पं'लौ' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—अर पैहलड़ी लड़ाई मांहे चांदे खीची नूं तरवार वाही हुती। —नैणसी
(स्त्री० पैहलड़ी)

पैहलां—देखो 'पं'ला' (रू.भे.)
उ०—नै सांखळा मेराजनूं तो पैहलांई भाटी रांणगदे मारनै नीसरियो हुतो। —नैणसी

पैहला—देखो 'पं'ला' (रू.भे.)
उ०—राजा जदु पैहला हुवौ छै, तिणांसू जदुवंसी कहावै छै। —नैणसी

पैहळाद—देखो 'प्रहळाद' (रू.भे.)
उ०—वंळ करै मार घड़ मैगळां, जळ पीवै महरांण हूं। पैहळाद चाड पयर विहर, तिको सिंघ रायसिंघ तू। —द.दा.

पैहली—देखो 'पं'ली' (रू.भे.)
उ०—वान प्रताप 'प्रजन' रै पैहली। पूगी खबर सोनागर पैहली। —रा.रू.

पैहलौ—देखो 'पं'लौ' (रू.भे.)
उ०—पैहलै दिन वीमाह हुवौ नै बीजै दिन गोठ की।—नैणसी

पैहारी—देखो 'पयहारी' (रू.भे.)

पैहेलौ—देखो 'पं'लौ' (रू.भे.)

पोंच—१. देखो 'पहुंच' (रू.भे)
२. देखो 'पोच' (रू.भे.)

पोंचणौ, पोंचवौ—देखो 'पहुंचणौ, पहुंचवौ' (रू.भे.)
उ०—१. पनरै वरसां पोंचियां, पिय जागै तो जाग। जोवन दूध उफांण ज्यूं, जाहि ठिकांणै लाग। —अज्ञात
उ०—२. संमत १७११ रा काती मांहे पातसाहजी अजमेर पधारीया तद खबर पोंहची। —नैणसी
पोंचणहार, हारौ (हारी) पोंचणियौ—वि०।
पोंचिप्रोड़ौ, पोंचियोड़ौ, पोंच्योड़ौ—भू०का०कृ०।
पोंचीजणौ, पोंचीजवौ—भाव वा०।

पोंचियोड़ौ—देखो 'पहुंचियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० पोंचियोड़ी)

पोंत—देखो 'पहुंच' (रू.भे.)

पोंतणौ, पोंतवौ—देखो 'पहुंचणौ, पहुंचबौ' (रू.भे.)
उ०—तरै चाचे मेरै डेरै जाइ, पांणी मांहे लाकड़ी नांख, गोढ़ री खबरि पाड़ी। तरै चीठी एक गोढ रै वांध पाछी मेली। तिका दिल्ली पोंहती। —रावरिणमल री वात
पोंतणहार, हारौ (हारी), पोंतणियौ—वि०।
पोंतिप्रोड़ौ, पोंतियोड़ौ, पोंत्योड़ौ—भू०का०कृ०।
पोंतीजणौ, पोंतीजवौ—भाव वा०।
(स्त्री० पोंतियोड़ी)

पोंतियोड़ौ—देखो 'पहुंचियोड़ौ' (रू.भे)

पोंहच—१. देखो 'पहुंच' (रू.भे.)
उ०—जद कहै-म्हारी पोंहच इतरीज ही है।—भि. द्र.
२. देखो 'पोच' (रू.भे)

पोंहचणौ, पोंहचवौ—देखो 'पहुंचणौ, पहुंचवौ' (रू.भे.)
उ०—जम हथ्या फुरती जिका, वरणौ कवण वणांय। पोंहचै मारण प्रांणियां, जळ थळ अंबर जाय। —बां.दा.
पोंहचणहार, हारौ (हारी), पोंहचणियौ—वि०।
पोंहचिप्रोड़ौ, पोंहचियोड़ौ, पोंहच्योड़ौ—भू०का०कृ०।
पोंहचीजणौ, पोंहचीजवौ—भाव वा०।
पोंहचियोड़ौ—देखो 'पहुंचियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० पोंहचियोड़ी)

पोंहचाणौ, पोंहचावौ—देखो 'पहुंचाणौ, पहुंचावौ' (रू.भे.)
उ०—जद आकूंतखां नै मोहवतखां रीसायो, तद कह्यौ तूं खबर पोंहचावै छै। —नैणसी

पोंहचाणहार, हारौ (हारी), पोंहचाणियौ—वि० ।
पोंहचायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
पोंहचाईजणौ, पोंहचाईजबौ—कर्म वा० ।

पोंहचायोड़ौ—देखो 'पहुंचायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० पोंहचायोड़ी)

पोंहत—देखो 'पहुंच' (रू.भे.)

पोंहतणौ, पोंहतबौ—देखो 'पहुंचणौ, पहुंचबौ' (रू.भे.)
उ०—सु राव री साथ लोहीयांणा कनै वाहळौ छै तठै गया । नै लखो लोहायांणै पोंहतौ ।—राव लाखै री वात
पोंहतणहार, हारौ (हारी), पोंहतणियौ—वि० ।
पोंहतिओड़ौ, पोंहतियोड़ौ, पोंहत्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
पोंहतीजणौ, पोंहतीजबौ—भाव वा० ।

पोंहतियोड़ौ—देखो 'पहुंचियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० पोंहतियोड़ी)

पो-सं० पु०—१. पिण्ड । २. सुत, पुत्र । ३. अघ । (एका०) ४. प्रभू ।
५. देखो 'पौ' (रू. भे.)
उ०—पो फाटी जद भोर में, खिणके लाग्यौ दाव । चांदौ मुळक्यौ मोद में, मिटियौ लूआं ताव ।—लू

पो'-सं० स्त्री० [?] १. पृथ्वी । २. चौपड़ नामक खेल का कोडी अथवा पासे का एक दाव ।
वि० वि०—कौडी में दस, पच्चीस और तीस आने पर इन संख्याओं के अतिरिक्त अपनी किसी भी गोटी एक घर आगे और सरकाया जाता है या कोई नई गोटी रखी जा सकती है । नई गोटी पो' आने पर ही रखी जा सकती है । इसी प्रकार पासे में भी किसी एक पासे में एक अंक आने पर पो' माना जाता है ।
३. देखो 'पूस' (रू. भे.)
उ०—अगहन मास ऋतू यौ आखो । पो' त्रेतायुग वीतौ पाखो ।
—ऊ. का.
४. देखो 'पौ' (रू. भे.)
उ०—रांमचरण पो' ऊपर रहियौ । सीत घांम अपणै सिर सहियौ ।
—ऊ. का.

पोअ—देखो 'पोत' (रू. भे.) (जैन)

पोअणौ, पोअबौ—देखो 'पोवणौ, पोवबौ' (रू. भे.)
पोअणहार, हारौ (हारी), पोअणियौ—वि० ।
पोइयोड़ौ—भू० का० कृ० ।
पोईजणौ, पोईजबौ—कर्म वा० ।

पोआणौ, पोआबौ—देखो 'पोवाणौ, पोवाबौ' (रू.भे.)
पोआणहार, हारौ (हारी), पोआणियौ—वि० ।
पोआयोड़ौ—भू० का० कृ० ।
पोआईजणौ, पोआइजबौ—कर्म वा० ।

पोआयोड़ौ—देखो 'पोवायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० पोआयोड़ी)

पोइण—देखो 'पोयण' (रू.भे.)
उ०—नैनांणौ ढीलौ घड़ै, मो कंथ तणौ सनाह । विकसै पोइण फूल जिम, पर दळ दीठां नाह ।
—हा.झां.

पोइणि, पोइणी—देखो 'पोयणी' (रू.भे.)
उ०—१. आयौ इळि वसंत वधावण आई, पोइणि पत्र जळ एणि परि । आणंद वर्णे काच मै अंगणि, भांमिणि मोतिए थाळ भरि ।
—वेलि
उ०—२. लागे साद सुहांमणउ, नस भर कुंझड़ियांह । जळ पोइणिए छाइयउ, कहउत पूगळ जांह ।—ढो. मा.
उ०—३. सार दळ बोल जळ-बोल सीरोहियौ, विरुदपत झूलियौ घणै वांणै । प्रसण जिम चालियौ पोइणी चपंतौ, 'जगौ' पावाहरौ हंस जांणै ।—जगमाल सोसोदिया रौ गीत

पोइयोड़ौ—देखो 'पोवियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० पोइयोड़ी)

पोइस-अव्य० [फा० पोश] हटो, बचो आदि का संकेत ।
वि० वि०—प्राचीन समय में इस शब्द का प्रयोग प्राय: हरिजन (भंगी) करते थे । वे जब सड़क पर चलते थे तो 'पोइस-पोइस' अथवा 'पोस-पोस' कहते हुए चलते थे ताकि आगे या आस-पास चलने वाले अलग हटजावें और उन्हें स्पर्श-दोष न लगे । (मा.म.)
रू० भे०—पायस, पोयस, पोस ।

पोईण—देखो 'पोयण' (रू.भे.)
उ०—वे कंध जांणौ कळस ढाळया, बांह पोईण नाळ ।
—रुकमणिमंगळ

पो'कर—१. देखो 'पुस्कर' (रू. भे.)
उ०—१. पूरव में जागीरी दीवी । स्रीवाराहजी रौ देहुरौ पो'कर मांथै सगर संवरायौ ।—नैणसी
उ०—२. बावाजी हुक्म कराय दौ, हुक्म करौ तो पो'कर न्हायस्यां ।
—लो. गी.
२. देखो 'पोखर' (रू. भे.)

पोकरणा-सं० स्त्री०—१. राठोड़ों की एक उप-शाखा ।
२. देखो 'पुसकरणा' (रू. भे.)
(स्त्री० पोकरणी)
रू० भे०—पोहकरणा ।

पोकरणौ-सं० पु० १. राठौड़ वंश की 'पोकरणा' शाखा का व्यक्ति ।
२. देखो 'पुसकरणौ' (रू. भे.)

पोकरमूळ—देखो 'पुस्करमूळ' (रू. भे.)

पोकरी—देखो 'पुस्करी' (रू. भे.)
उ०—हरी पोकरी रै हुवौ जेम ह्वीजै । कवी पात री मात ऊबेळ कीजै ।—मे. म.

पोकार—देखो 'पुकार' (रू. भे.)

उ०—चातक नुं छै चतुर, सीख सुणि वयणे साचे। पिउ पिउ करै पोकार, जलद सगला मत याचे।—ध. व. ग्र.

पोकारणौ, पोकारबौ—देखो 'पुकारणौ, पुकारबौ' (रू. भे.)

उ०—१. ऊंचे हाथि घाहि पोकारइ, बोलावइ किरतार। आंणीवाइ किम्हइ ऊवेलइ, करइ ग्रम्हारी सार।—कां. दे. प्र.

उ०—२. तूं संभारइ सब्द जउ, हूं मुंकुं खिण मात्र। पीऊ पीऊ मुखि पोकारतां, गहिवरिउं सवि गात्र।—मा. कां. प्र.

पोकारणहार, हारौ (हारी), पोकारणियौ—वि०।

पोकारिग्रोड़ौ, पोकारियोड़ौ, पोकारयोड़ौ—भू० का० कृ०।

पोकारीजणौ, पोकारीजबौ—कर्म वा०।

पोकारियोड़ौ—देखो 'पुकारियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० पोकारियोड़ी)

पोकारु—१. पुकार करने वाला। २. देखो 'पुकार' (रू. भे.)

उ०—कूंयर परीक्षा तणइ मिसि गुरिहिं कूड पोकारु किद्धउ।—प. पं. च.

पोख—सं० पु० [सं० पोषण] १. शरण, सहारा, ग्राधार।

उ०—ज्यांरै खाख विछावणौ, ग्रोढण नूं ग्राकास। ब्रह्म पोख सतोख वित, पूरण सुख त्यां पास।—बां. दा.

२. देखो 'पोसण' (रू. भे.)

उ०—बुध्ध भ्रस्ट, व्याकुळ वचन, तन नहिं पावै पोख। इण दारू में कोण गुण, दांम लगै अर दोख।—अज्ञात

३. देखो 'पोक' (रू. भे.)

पोखण—देखो 'पोसण' (रू. भे.)

उ०—जसवंत' कै'तो जीवनै, पोखण में नहिं पाप। काफर नहिं देणौ कहै, वे इज काफर आप।—ऊ. का.

पोखणौ—वि० [सं० पोषण+रा० प्र० ओ] (स्त्री० पोखणी) पालन-पोषण करने वाला।

सं० पु०—श्रीमाली ब्राह्मणों के विवाह की एक रीति, रस्म। (मा. म.)

वि० वि०—जब 'कुलेवा' की रीति हो जाती है और वर अपने घर पहुँच जाता है तो ठीक उसी समय कन्या के घर की चार ग्रौरतें वर को 'पोखणै' को ग्राती हैं। उनके पास लकड़ी के छोटे-छोटे चार बेलन होते हैं जिनको वे वर के सिर मुँह, हाथ आदि से लगाती है। इसी क्रिया को पोखणौ कहते हैं।

पोखणौ, पोखबौ—१. देखो 'पोसणौ, पोसबौ' (रू.भे.)

उ०—हातमताई हरख सूं, पोखतौ पहियाह। ग्रमर नांम उण रो ग्रजै, कौ जादा कहियांह।—बां.दा.

२. देखो 'प्रांसणौ, प्रांसबौ' (रू.भे.)

उ०—पूत पिता सारै पोखीजै, रण 'गोपाळ' ग्रने वळरांम।—गौड गोपाळदास री वारता

पोखणहार, हारौ (हारी), पोखणियौ—वि०।

पोखिग्रोड़ौ, पोखियोड़ौ, पोख्योड़ौ—भू०का०कृ०।

पोखीजणौ, पोखीजबौ—कर्म वा०।

पोखता—सं० स्त्री० [सं० पोशितृ] एक प्रकार की ग्रप्सरा जिसका सहवास प्राप्त होने पर सब प्रकार के सुख मिलते हैं तथा मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं।

उ०—पदमण जांणै पोखता, एहड़ां आचारां। इंद्रायण के ऊतरी, म्रतलोक मझारां। —मयाराम दरजी री वात

रू०भे०—पोसता।

पोखर—सं०पु० [सं० पुष्कर:] १. छोटा तालाब या गड्ढ़ा।

उ०—भाखरिया हरिया हुआ, पोखर भरिया पास। तरवरिया प्रफुलित थया, नीर निखरिया खास।—जीगीदांन कवियौ

२. देखो 'पुस्कर' (रू.भे.)

रू०भे०—पो'कर।

अल्पा०—पोखरौ।

पोखरमूळ—देखो 'पुस्करमूळ' (रू.भे.)

पोखरौ—देखो 'पोखर' (अल्पा., रू.भे.)

पोखाळौ—सं० पु० [देशज] बरबाद, नष्ट, खराब।

उ०—खवासजी कह्यौ—थूं तौ साव बावळी व्ही है, टोळा रो फुरणौ छोड। वौ तो एक सपनौ हो जको तूटग्यौ। उण सपना रै भरोसै साज सरीखी बाजरी रो पोखाळौ करूं, म्हे ऐड़ो कालो कोनीं। —फुलवाड़ी

पोखियोड़ौ—भू० का० कृ०—पालन-पोषण किया हुग्रा।

(स्त्री० पोखियोड़ी)

पोगंड—देखो 'पौगंड' (रू. भे.)

पोगर—सं० स्त्री० [सं० पुष्करी=हाथी+कर=सूंड] हाथी की सूंड।

उ०—१. ळळवळतां पोगरां, पाय खळहळतां लंगर। झळहळतां चख झाळ, चोळ भळहळतां चाचर।—सू. प्र.

उ०—२. दूजा गज रो पोगर अरिसिंघ री पाघ ऊपर आयो जांणै पूंग्या रा पूंज पर नागराज भोग उठायो।—वं. भा.

पोगसापुद्गल—सं० पु०—ग्रात्मा से लगकर अलग हुए पुद्गल। (जैन)

पोगेती—स० स्त्री० [सं० पर्य्यस्त] पालथी, स्वस्तिकासन।

पोग्गळ, पोग्गल—देखो 'पुद्गळ' (रू. भे.)

उ०—ईंद्रिये रुचि पोग्गली, जीव में रुच पोग्गल थाय। सतक ग्राठ उद्देसे, दसवें चाल्यो भगवती मांय।—जयवांणी

पोग्गळी, पोग्गली—वि०—पुद्गलवान, पुदगलवाला।

उ०—ईंद्रिये रुचि पोग्गली, जीव में रुच पोग्गल थाय। सतक ग्राठ उद्देसे दसवें, चाल्यो भगवती मांय—जयवांणी

पोड़—देखो 'पौड़' (रू. भे.)

उ०—दिनकर वाहण देह, पाहण फूट पोड़ सूं। 'जेहल' साहण जेह,

साहण समंद समापिया ।—बां. दा.

पोड़कणौ, पोड़कवौ–क्रि० अ० [देशज] बदलना, फिसलना ।
पोडकणहार, हारौ (हारी), पोड़कणियौ—वि० ।
पोडकिओड़ौ, पोडकियोड़ौ, पोड़क्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
पोडकीजणौ, पोड़कीजवौ—भाव वा० ।

पोड़कियोड़ौ–भू० का० कृ०—बदला हुआ, फिसला हुआ ।
(स्त्री० पोडकियोडी)

पोड़ि—देखो 'पौड़' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—घोड़े सूं उतरिया, अमल कीघा नै टेवटा लीघा, तितरै घड़ी एक दो गई नै एक ढकौ सुणियौ, घोड़ां री पोडि होकार सुणिया ।
—जगमाल मालावत री बात

पोच–वि० [फा० पूच] १. नीच, निकृष्ट ।
उ०—हर-हर जप अनम कर हर, परहर अहमत पोच । व्यापक नर हर जगत विच, अंतर-गत आलोच ।—र. ज. प्र.
सं० पु०—१. कुमार्ग, कुसंग ।
उ०—दार तै कुदार पैर पोच में दियौ । कार कौं विगार सोच लार सैं कियौ ।—ऊ. का.
सं० स्त्री०—२. कायरता, कमजोरी । उ०—स्वांग सती का पहरकर, करै कुटुंब को सोच । बाहर सूरा देखिये, दादू भीतर पोच ।
—दादूबांणी

३. देखो 'पोचौ' (मह., रू. भे.)

पो'च—देखो 'पहुंच' (रू. भे.)

पो'चणौ, पो'चवौ—देखो 'पहुंचणौ, पहुंचवौ' (रू. भे)
पो'चणहार, हारौ (हारी), पो'चणियौ—वि० ।
पो'चाड़णौ, पो'चाडवौ, पो'चाणौ, पो'चावौ, पो'चावणौ, पो'चाववौ
—प्रे० रू० ।
पो'चिओड़ौ, पो'चियोड़ौ, पो'च्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
पो'चीजणौ, पो'चीजवौ—भाव वा० ।

पो'चाड़णौ, पो'चाड़वौ—देखो 'पहुंचाणौ, पहुंचावौ' (रू. भे.)
पो'चाड़णहार, हारौ (हारी), पो'चाडणियौ—वि० ।
पो'चाड़िओड़ौ, पो'चाड़ियोड़ौ, पो'चाड्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
पो'चाड़ीजणौ, पो'चाड़ीजवौ—कर्म वा० ।

पो'चाड़ियोड़ौ—देखो 'पहुंचायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० पो'चाड़ियोड़ी)

पो'चाणौ, पो'चावौ—देखो 'पहुंचाणौ, पहुंचावौ' (रू. भे.)
पो'चाणहार, हारौ (हारी), पो'चाणियौ—वि० ।
पो'चायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
पो'चाईजणौ, पो'चाईजवौ—कर्म वा० ।

पोचापौ—सं० पु० [देशज] १. वह कारण या कार्य जिससे गौरव, प्रतिष्ठा, कीर्ति एवं स्तर में निम्नता प्राप्त हो । उ०—आपनै यूं खाली हाथ भेजां तौ सगळी न्यात री पोचापौ को लागै नीं ?—फुलवाड़ी
२. अपमान, अप्रतिष्ठा, बेइज्जती ।
उ०—घर रा मोटयारां नै भेजै तौ दो हाथ ई बतावां । लुगाई री जात सूं बात करण में ई म्हांरौ पोचापौ लागै ।—फुलवाड़ी

पो'चायोड़ौ—देखो 'पहुंचायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० पो'चायोडी)

पोचारौ—देखो 'पोचारौ' (रू.भे.)

पो'चावणौ, पो'चाववौ—देखो 'पहुंचाणौ, पहुंचावौ' (रू.भे.)
पो'चावणहार, हारौ (हारी), पो'चावणियौ—वि० ।
पो'चाविओड़ौ, पो'चावियोड़ौ, पो'चाव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
पो'चावीजणौ, पो'चावीजवौ—कर्म वा० ।

पो'चावियोड़ौ—देखो 'पहुंचायोडौ' (रू.भे.)
(स्त्री० पो'चावियोड़ी)

पो'चियोडौ—देखो 'पहुंचियोडौ' (रू.भे.)
(स्त्री० पो'चियोडी)

पोचौ–वि० [फा० पूच] (स्त्री० पोची) १. घृणित, निकृष्ट, हेय ।
उ०—भगवत करता नें करतब भुगतावै । पिछला पापां रा पांमर फळ पावै । भावी भूलोड़ा भूंकौ क्यूं भाया । पोचा करमां रा पोचा फळ पाया ।—ऊ का.
२. तुच्छ ।
उ०—अड़ियौ घोचौ, आंखि अमल छोडण आळोचौ । सोचौ सोचौ सुघड़, पलै बंधियौ नग पोचौ ।—ऊ. का.
३. कमजोर, अशक्त, क्षीण ।
सं०पु० [स्त्री० पोची] १. शूद्र, अनुसूचित ।
उ०—अगम भोम सूं म्हे चल आया, पूरां कारण ब्रह्म पठाया । पोची जात हीण घर पाया, लिछमी-वर सूं प्रांण लगाया ।
—ऊ.का.
मह०—पोच ।

पोछड़ी—सं०स्त्री० [सं०पश्च+रा०प्र०ड़ी] १. वह (स्त्री) जिसकी अंतिम संतान प्रौढा अवस्था को पार करने के बाद होती है । इसीलिये यह अंतिम संतान पोछड़ी कहलाती है ।
२. सब से बाद की संतान, अंतिम संतान ।

पोछड़ीयो–सं०पु० [देशज] गहरे कुओं मे मोट द्वारा पानी निकालने के समय लाव के छोर पर जोडा जाने वाला बुना हुआ छोटा रस्सा ।

पो'छणौ, पो'छवौ—देखो 'पहुंचणौ, पहुंचवौ' (रू. भे.)
पो'छणहार, हारौ (हारी), पो'छणियौ—वि० ।
पो'छिओड़ौ, पो'छियोड़ौ, पो'छ्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
पो'छीजणौ, पो'छीजवौ—भाव वा० ।

पो'छाणौ, पो'छावौ—देखो 'पहुंचाणौ, पहुंचावौ' (रू. भे.)

उ०—जद भाई-बेटांनूं कह्यौ—मांणस लेनैं थे वधनोर में जावज्यौ हूं सरफुद्दीन नूं पो'छावणनैं जाऊं छूं।—वां. दा. ख्यात

पो'छाणहार, हारौ (हारी), पो'छाणियौ—वि०।

पो'छायोड़ौ—भू० का० कृ०।

पो'छाईजणौ, पो'छाईजबौ—कर्म वा०।

पो'छायोड़ौ—देखो 'पहुंचायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० पो'छायोडी)

पो'छियोडौ—देखो 'पहुंचियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० पो'छियोडी)

पोछौंडौ—सं० पु०—पीछे का भाग (मकान), पृष्ठ भाग।

पोट—सं० स्त्री० [सं०] १. ढेर, समूह।
उ०—मेह सुजळ पोटां महीं, सांवण करता सैल। मोटौ हुवै सिताब मन, छोटां रौ ही छैल।—वां. दा.
२. पकने की स्थिति में।
उ०—पोटां आयौ खड़्यो बाजरौ, कोड्याळी ए जवार वदळी।
—लो. गी.
३. गठडी, बुगचा।
उ०—वांधी धोवण कपड़ां री पोट, हांये मने सोगन थारी ये, कोई हाथ लेई रंग री मोगरी जी राज।—लो. गी.
४. पीठ पर माल लदे बैल, गधे आदि का समूह।
उ०—१. दुख मेटण पोट कबीर घरां, दिस हाकळ कीध वईर हरी।
—भगतमाळ
उ०—२. आई हो आई हो साहिवा विणजा रै री पोट, तमाखू ल्यायौ रे म्हारौ मीठी सूरत री रे म्हारा राज।—लो. गी.
५. वज्र, विजली।
उ०—सरादा भडां मुरधरा दळांसुं, हजारां वळां नह रहे हटकी। पापरी चोक नवकोट ऊपरा, पोट अजगैव री आंण पटकी।
—महाराजा प्रतापसिंह किसनगढ़ री गीत
६. सर्प के मुह के अंदर की विषथैली जिस का विष सर्पदंश के समय काटे जाने वाले प्राणी के घाव में मिल जाता है।
रू०भे०—पोटि, पोठ।
अल्पा०—पुट्टली, पोटळियौ, पोटळी, पोठी।
मह०—पोटो, पोटळो।

पोटळियौ—सं० पु० [?] १. कंधे पर माल लादकर व फेरी लगाकर सौदा वेचने वाला व्यापारी। (मा. म.)
२. वकरी के बालों से बना हुआ घास-फूस की गठरी बांधने का वस्त्र विशेष।
३. देखो 'पोट' (अल्पा., रू. भे.]
रू० भे०—पोटळो।

पोटळी—देखो 'पोट' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—१. विना पोटळी नागियौ, विना सींग रौ बैल। कदियक आवै कोटड़ी, छिपतौ-छिपतौ छैल।—वां. दा.
उ०—२. तड़कै वनमाळी राजा नै एक अमरफळ रै खिरण री खुस खवरी सुणावणनैं गियौ उण सूं पैला ई अमरता रौ कोडायौ एक काळिंदर सांप उण अमरफळ मे दांत गडाय आपरै विस री पोटळी फोड़ दी।—फुलवाडी

पोटळौ—सं० पु०—१. कोडा, चावुक।
उ०—जळधार पेस कवजां जडत।
पोटळां मार गुर्जां पडंत।—वि. सं.
२. देखो 'पोट' (मह., रू. भे.)
३. देखो 'पोटळियौ' (रू. भे.)

पोटाड़णौ, पोटाड़बौ—देखो 'पोटाणौ, पोटाबौ' (रू. भे.)
पोटाड़णहार, हारौ (हारी), पोटाड़णियौ—वि०।
पोटाड़िओड़ौ, पोटाडियोडौ, पोटाड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।
पोटाड़ीजणौ, पोटाडीजबौ—कर्म वा०।

पोटाड़ियोड़ौ—देखो 'पोटायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० पोटाड़ियोड़ी)

पोटाणौ, पोटाबौ—क्रि० स०—बहकाना, फुसलाना।
उ०—बुगला कर वैण पोटाय पती। कर चेलिय कंथ बणौ कुमती।
—ऊ. का.
पोटाणहार, हारौ (हारी), पोटाणियौ—वि०।
पोटायोड़ौ—भू० का० कृ०।
पोटाईजणौ, पोटाईजबौ—कर्म वा०।
पोटाड़णौ, पोटाड़बौ, पोटावणौ, पोटावबौ—रू० भे०।

पोटायोडौ—भू० का० कृ०—बहकाया, हुआ फुसलाया हुआ।
(स्त्री० पोटायोड़ी)

पोटावणौ, पोटावबौ—देखो 'पोटाणौ, पोटाबौ' (रू. भे.)
पोटावणहार, हारौ (हारी), पोटावणियौ—वि०।
पोटाविओड़ौ, पोटावियोड़ौ, पोटाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
पोटावीजणौ, पोटावीजबौ—कर्म वा०।

पोटावियोड़ौ—देखो 'पोटायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० पोटावियोड़ी)

पोटास—सं०पु० [अं०] खनिज-पदार्थों से प्राप्त होने वाला एक प्रकार का क्षार विशेष।

पोटि—देखो 'पोट' (रू. भे.)
उ०—घर धंधइ सब धरम गमायउ, वीसरि गयउ देव गुरु भजनं। पोटि उपाड़ि गये कुणपरभवि, म करि म करि जीव लोभ घनं।
—स. कु.

पोटियौ-सं०पु०—१. घास का छोटा ढेर या गंज। २. वह बैल जिसकी पीठ पर बोझ का गट्ठर लदा हो।
रू०भे०—पोठियौ, पोठीयौ।

पोटी-सं०स्त्री०—१. पक्षियों के पेट की वह थैली जिसमें वे चुगा हुआ दाना एकत्रित करते हैं।
वि०वि०—जल में रहने वाले पक्षियों के यह थैली पेट में सीने के पास होती है किन्तु जो पक्षी पानी में नहीं रहते हैं उनके यह थैली पीठ पर होती है।
२. ऊंट के पैर में होने वाली ग्रंथी।
मह०—पोटौ।

पोटीजणौ, पोटीजबौ-क्रि०अ० [देशज] १. बहकाया जाना, फुसलाया जाना। उ०—रांणीजी रौ दुहाग मिट जावै तौ पछै सोने में सौरम जैड़ी वात सरै। अधगैली पोटीजनै भ्रो कांम सार देवै तौ पछै चाहीजै ई कांई। —फुलवाडी

पोटौ-सं०पु० [सं० पत्र+रा० प्र० टौ] १. गोवर, गोमय।
उ०—तिकै पांच कोस जाय नै बैल जूतां पाछा भ्रावै, बीच मांहै पोटा छंगास करै नहीं।—जखड़ा-मुखड़ा भाटी री वात
२. ग्रनाज के पोधों के बाल निकलने के पूर्व के समय की अवस्था।
क्रि० प्र०—म्राणौ, होणौ।
रू० भे०—पोठौ।
३. देखो 'पोटी' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—१. तिलोर तीतर करचांनक मुरगावी होसनाक वणावै छै। पोटा चीरजै छै। —रा. सा. सं.
उ०—२. पोटा चीरजै छै। पेटाळजो चीरजै छै। मुहडै में हींग भरजै छै। पेट में जीरौ भरजै छै।—रा. सा. सं.
४. देखो 'पोट' (मह., रू. भे.)
उ०—मांणस जळ का बुदबुदा पांणी का पोटा। दादू काया कोट में मेवासी मोटा।—दादूवांणी

पोट्टलजिण-सं० पु०—श्री पोट्टिलजिन। उ०—सुनन्दनो जीव ते नवम पोट्टिल जिणं।
वि०वि०—जैन मतानुसार सुनन्द श्रावक का जोव नवम तीर्थंकर श्रीपोट्टिलजिन के नाम से हुग्रा।

पोठ—देखो 'पोट' (रू.भे.)
उ०—गुळ खांड चावल गोहू तणां, पोठ आंणि परगट किया। 'समय सुंदर' कहइ सत्यासीयउ, तुं पग्हो जा हिव पापीया।—स.कु.

पोठियौ—देखो 'पोटियौ' (रू.भे.)
उ०—अरु लाख दोय पोठिया रेत सूं भरायनै हलौ कियौ सू अठै वडो झगड़ो हुवो। —द. दा.

पोठौ— १. देखो 'पोटियौ' (अल्पा., रू. भे.) (जैन)
२. देखो 'पोट' (अल्पा., रू. भे.) (जैन)

पोठीयौ—देखो 'पोटियौ' (रू.भे.)
उ०—अलूखांनि जण सांधि मोकल्या, देखाडघूं मेल्हांण। घोडा हाथी ऊंट पोठीया, वेसर पूठि पल्हांण। —कां. दे. प्र.

पोठौ—देखो 'पोटौ' (रू.भे.)
उ०—अध सूकोड़ा कांम न आवै, दांम न दे अणदड़िया है। गायां उछरगी गोहरि सूं, पोठा लागै पड़िया है। ऊ.का.

पोडौ—देखो 'पौढ़ी' (रू.भे.)

पोढ़उ—देखो 'प्रौढ़' (रू.भे.)
उ०—तिण ते लीधउ वाल हो जी, पुत्र पाली पोढ़उ कियउ लाल।
—स. कु.

पोढ़णौ—वि० (स्त्री० पोढ़णी) शयन करने वाला।
उ०—उचाट काटणी निराट पाट ओढ़णी नहीं। विलोक वंक लंक दे पलंक पोढ़णी नहीं। —ऊ. का.

पोढ़णौ, पोढ़बौ—देखो 'पौढणौ, पौढबौ' (रू. भे.)
उ०—त्यां रावत लूंणौ रावजी सूं सीखकर जाय पोढ़ियौ।
—नैणसी
पोढ़णहार, हारौ (हारी), पोढ़णियौ—वि०।
पोढ़िग्रोड़ौ, पोढ़ियोड़ौ, पोढ़चोड़ौ—भू० का० कृ०।
पोढ़ीजणौ, पोढ़ीजबौ—भाव वा०।

पोढ़ाणौ, पोढाबौ—देखो 'पौढ़ाणौ, पौढ़ावौ' (रू. भे.)
उ०—रेसम हंदा पोतड़ां, पालणिये पोढ़ाय। तो 'जेहा' बेटा तिकै, भलो झुलाया माय।—वां. दां.
पोढ़ाणहार, हारौ (हारी), पोढ़ाणियौ—वि०।
पोढ़ायोड़ौ—भू० का० कृ०।
पोढ़ाईजणौ, पोढ़ाईजबौ—कर्म वा०।

पोढ़ायोड़ौ—देखो 'पौढायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० पोढ़ायोड़ी)

पोढ़िम—देखो 'पौढ़म' (रू. भे.)
उ०—पोढ़िम पवन! तुम्हारडी, पंचय तंत पराय। मन सुद्धि प्रेरी माधवु, लेइ तूं त्याविन कांइ?—मा. कां. प्र.

पोढ़िमपणउं—सं० पु० [सं० प्रौढता] देखो 'पौढ़ीमणौ' (रू. भे.)
उ०—पुरुसारथ पोढ़िमपणउं, जांणइ युगति विवेक। तुहि पांडव पांमया, पांच मिलीनइ एक।—मा. कां. प्र.

पोढ़ियोड़ौ—देखो 'पौढ़ियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० पोढ़ियोड़ी)

पोढ़ी—देखो 'पौढी' (रू. भे.)

पोढ़ीनाथ—सं० पु०—रामदेव तुंवर नामक एक प्रसिद्ध सिद्ध का नाम।
वि० वि०—देखो—'रांमदेव'।

पोढ़ीनेर—देखो 'पौढ़ी'।

पो'णौ, पो'वौ—देखो 'पोवणौ, पोववौ' (रू.भे.)

उ०—पोयी सोढ़ी लड़ दोय च्यार ।—लो. गी.

पोअणहार, हारौ (हारी), पोअणियौ—वि० ।

पोयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

पोईजणौ, पोइजवौ—कर्म वा० ।

पोत-सं० पु० [सं०] १. जहाज, नाव ।—(अ. मा., ह. नां. मा.)

उ०—१. मिट आग तप मिटजाय, साकंप सीत सवाय । द्रढ़ पोत खेवट दांम, तट घरी गुदरी तांम ।—रा. रू.

उ०—२. धाय मुनेस सेस सिर धारै, निज सिर जिकां सुरेस नवाय । जोतसरूप तणा आगरजस, पोत रूप भव सागर पाय ।

—र. ज. प्र.

२. पशु, पक्षी आदि का बच्चा ।

३. अधोवस्त्र, धोती ।

उ०—१. सिनांन नूं पोत काढ़ी । आप तळाव मांहैं पैठा ।

—नैणसी

उ०—२. तठा उपरांयत सिरदारां देसौतां तळाव में भूलण री हांस करै छै । लाल लांगी री पोतां पहरजै छै ।—रा. सा. सं.

अल्प०—पोतड़ी ।

४. वालक । (अ. मा., ह. नां. मा.)

५. भेद, रहस्य ।

उ०—१. तीनू एकण गोत । जिणनें जैसा गुरु मिल्या तिसा काढ़िया पोत ।—भि. द्र. ।

उ०—२. गळ फेरि छुरी, जैचंद गोत । अपणूं पोत करियै न उदोत ।—ऊ. का.

मुहा०—पोत काढ़णौ—अपना भेद देना, कमजोरी प्रकट करना ।

६. वह गर्भस्थ पिण्ड जिस पर भिल्ली न चढ़ी हो ।

७. ढांचा, वनावट, रचना ।

उ०—इसी दूसरी घोड़ा मुलक में नहीं । जैसो ही डील, जैसो ही रूप, जैसो ही पोत, मही जैसो ही वळ ।

—सूरे खीवे कांधळोतरी वात

८. आभा, कान्ति ।

९. वरछी ।

१०. वस्त्र, रेशम ।

उ०—वधि पोत कीमति वेस । मभि कारचोभ मुकेस ।—सू. प्र.

११. वस्त्र की मोटाई ।

उ०—महि माल वहु पसमीर, कर उतन जे कसमीर । इक तार पोत असाधि, विरहांनपुर रंग बाधि ।—सू. प्र.

[सं. प्रोत] १२. एक प्रकार के छोटे मोती विशेष जो स्त्री के कंठाभरण (तेवटे) में पिरोये जाते हैं ।

उ०—१. इसड़ै टोटै हूं सखी, वारी वार अनंत । पोत जणी में मोतियां, चूड़ौ मगळ दंत ।—वी. सं.

उ०—२. तोड़ौ तण वसणां तणी, तोड़ौ अन रौ ताय । पिव तोड़ौ न विसण रौ, तोड़ौ पोत न थाय ।—रेवतसिंह भाटी

१३. माला ।

१४. गले में पहिनने का काला रेशमी डोरा, पवित्रा ।

उ०—१. कंठ पोत कपोत कि कहुं नीलकंठ, वडगिरि काळिद्री वळी । समै भागि किरि संख सखधर, एकणि ग्रहियौ अंगुळी ।

—वेलि

उ०—२. कपोत कंठ पोत केम मोह ओपमा मिळी ।—सू. प्र.

रू० भे०—पोअ, पोत ।

पोतइ—देखो 'पोतै' (रू. भे.)

उ०—१. काते काती ! जनमियां, जउ पांमया वियोग । पुण्य पोतइ पूरयां नहीं, किम लहीइ संजोग ।—मा. कां. प्र.

उ०—२. नरसा सुत गणपति कहइ, अंग थया ए आठ । सूधइ स्वांमिनी सारदा, पोतइ दीधू पाठ ।—मा. कां. प्र.

पोतक-सं० पु० [सं०] नाव, नौका । उ०—सुभ महूरत ले पूरीया, लांध्यो कितरौ रे माग । चलतां जल खूटौ तिहां पोतक, वणिक कहे पूरौ कोई रे अभाग ।

—स.कु.

पोतड़ियौ—देखो 'पोतड़ौ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—लुगाई रौ जमारौ पाय अेकरौ ई पोतड़ियां रौ कस हाथां नीं लागौ तौ सित्तर वरसां रौ औ नरकवाड़ौ क्यूं भुगतियौ !

—फुलवाड़ी

पोतड़ी—देखो 'पोत' (१, ३) (अल्पा., रू. भे.)

उ०—राती कांनी री पोतड़ियां रूड़ी । ऊनी लोवड़ियां वगलां में ऊड़ी ।

—ऊ.का.

पोतड़ौ-सं० पु० [सं० पोत=वस्त्र+रा०प्र०ड़ौ] १. छोटे बच्चों के चूतड़ों के नीचे रखा जाने वाला कपड़ा ।

उ०—रेसम हंदा पोतड़ां, पालणियै पोढ़ाय । तो 'जेहा' बेटा तिके, भलां भुलाया माय ।—वां. दा.

अल्पा०—पोतड़ियौ ।

२. देखो 'पोतौ' (अल्पा., रू. भे.)

(स्त्री० पोतड़ी)

पोतणौ-सं० पु० [सं० पूत+रा०प्र०णौ] वह कपड़ा जिससे कोई चीज पोती जावै ।

क्रि० प्र०—फेरणौ, लगाणौ ।

पोतणौ, पोतवौ-क्रि०स० [सं०प्लुत=प्र०प्रा० पुत+रा० णौ] १. किसी गीले पदार्थ को किसी सूखे पदार्थ पर ऐसा लगाना कि वह उस पर जम जाय ।

ज्यूं०—रंग पोतणौ, वारनिस पोतणौ ।

२. किसी गीले पदार्थ पर दूसरे पदार्थ पर फैलाकर लगाना, चुपड़ना ।

ज्यूं०—तेल पोतणौ, चूनो पोतणौ ।
३. देखो 'पहुंचणौ, पहुंचवौ' (रू. भे.)
पोतणहार, हारौ (हारी), पोतणियौ—वि० ।
पोतिग्रोड़ौ, पोतियोड़ौ, पोत्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
पोतीजणौ, पोतीजवौ—कर्म वा० ।
पोतदार—स० पु० [फा० पोतःदार] १. कोषाध्यक्ष, खजांची ।
[राज० पोतौ=छोटा अफीम का डिब्बा+फा० दार]
२. बड़ा अफीमची ।
रू० भे०—पोतादार, पोतेदार, पोतैदार ।
पोतयोड़ौ—भू० का० कृ०—देखो 'पोतियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० पोतयोड़ी)
पोतरउ—देखो 'पोतौ' (रू. भे.)
उ०—चंद्र प्रभ सामि तउ पोतरउ, चंद्रसेखर नांउ मल्हारो जी ।
चद्र जसराय करावियउ ए, नवमउ उद्धारो जी ।—स. कु.
पोतरांण—देखो 'पोत्रांण' (रू. भे.)
पोतरौ—देखो 'पोतौ' (रू. भे.)
उ०—१. राव प्रथीराज हरराजोत रायसल रो चाकर, राव देवीदास सूजावत रो पोतरो कांम आयो ।—नैणसी
उ०—२. चित में साह विचारियो, राजा थयो जवांन, परवस मेरी पोतरी, पं सिरजोर निदांन ।—रा. रू.
उ०—३. पुकारां करै ऊभी घरै पोतरी, पांण पूजै न क्यूं रहै पाली । —अज्ञात
(स्त्री० पोतरी)
पोतवाळ, पोतवाल—सं० पु० [फा० फोत:+रा०प्र० वाल] अण्ड-कोश ।
रू० भे०—पोताळ, पोतौ ।
अल्पा०—पोतवाळियो, पोताळियो ।
पोतवाळियौ—देखो पोतवाळ (अल्पा., रू.भे.)
पोता—देखो 'पोतै' (रू. भे.)
उ०—१. किण ही स्त्री कह्यो—लोटो म्हारै हाटे दीजो । समजू मन में जांणै पोता रा धणी नैं दोराई छै ।—भि. द्र.
उ०—२. मिच्छांमि दुक्कड़ दइ मन मुद्ध, मूकी निज अभिमांन । पोता नउ दूसण परकास्यउ, पांम्यउ केवल ग्यांन ।—स. कु.
उ०—३. राजुल नारी रो विरहागर क्यारी, पोता नी कर तारी हो ।—वि. कु.
पोताई—सं० स्त्री० [सं० पौत्र+रा०प्र०आई] १. पौत्र के वंशज ।
२. देखो 'पुताई' (रू. भे.)
पोताचेलो—सं० पु० [सं० पौत्र+राज०चेलो] चेले का चेला, प्रशिष्य ।
उ०—जद स्वांमी जी बोल्या—म्हारै तो इसा पोताचेला कोई चाहिजै नहीं ।—भि. द्र.
पोतादार—देखो 'पोतदार' (रू. भे.)
उ०—घर त्याग करण पर घर विघन, आठूं पहर ऊंघारिया ।
जीव नै देत गोता जिकै, पोतादार पधारिया ।—ऊ. का.
पोतार—देखो 'पुंतार' (रू. भे.)
पोतारणौ, पोतारवौ—देखो 'पूंतारणौ, पूंतारवौ' (रू. भे.)
उ०—उण वेला 'ऊदा'हरै, तोले चन्द्रप्रहास । रजपूतां पोतारियां, भुज धारियां अकास ।—रा. रू.
पोतारणहार, हारौ (हारी) पोतारणियौ—वि० ।
पोतारिग्रोड़ौ, पोतारियोड़ौ, पोतारचोड़ौ—भू० का० कृ० ।
पोतारीजणौ, पोतारीजवौ—कर्म वा० ।
पोतारौ—सं०पु० [राज० पोतणौ] १. पुताई करने वाला, पोतने का कार्य करने वाला ।
पोताळ—देखो 'पोतवाळ' (रू. भे.)
पोताळियौ—देखो 'पोतवाळ' (अल्पा., रू.भे.)
पोति—१. देखो 'पोत' (१, ३)(रू. भे.)
उ०—१. पातिसाहजी सेख जमाल रै डेरै पधारिया । ताहरां सेख जमाल कहियो थे पोति पहरियां हीज रहो । द.वि.
उ०—२. भूठा मांणिक मोतिया री, झूठी जगमग जोति । झूठा सब आभूसणां री, सांची पिया जी री पोति ।—मीरां
पोतियावदळभाई—देखो 'पगड़ीबदळभाई' ।
पोतियोड़ौ—भू० का० कृ० —१. पोता हुआ, पुता हुआ । २. चुपड़ा हुआ ।
(स्त्री० पोतियोड़ी)
पोतियौ—सं० पु० [सं० पोत = वस्त्र+रा० प्र० इयो] साफा, पगड़ी ।
उ०—आदमी धोतियो पकड़ै तो पोतियौ बिखर जावै अर पोतियौ संभाळै तो धोतियो खुल जावै । —रातवासो
रू० भे०—पउतियौ, पोत्यौ ।
पोतै—सर्व०—स्वयं, खुद ।
उ०—व्यास सदा पोतै वरदाई । सोहै बाळकिसन सुखदाई ।
—रा. रू.
रू० भे०—पोतइ, पोता ।
क्रि० वि०—हिसाब में, खाते में ।
उ०—पोन्य पोतै हुवै तेह जीवइं सदा, धरम न करै तिकै धम-धमीजै ।—वि. कु.
पोतैदार—१. देखो 'पोतदार' (रू. भे.)
पोतौ—सं०पु० [सं० पौत्र] (स्त्री० पोती) १. पुत्र का पुत्र, प्रपुत्र, बेटे का बेटा ।
उ०—पोतां रै बेटा थिया, घर में वधियो जाळ । अब तो छोडो भागणौ, कंत लुमांणो काळ ।—वी. सं.
पर्या०—अभनवो, कळोधर, बीजौ, संमोभ्रम, हर ।
रू० भे०—पोतड़ो, पोतरउ, पोतरो, पोत्रौ, पौत्रौ ।

पो'णौ, पो'बौ—देखो 'पोवणौ, पोववौ' (रू.भे.)
उ०—पोयी सोढ़ी लड़ दोय च्यार ।—लो. गी.
पोग्रणहार, हारौ (हारी), पोग्रणियौ—वि० ।
पोयोड़ौ—भू० का० कृ० ।
पोईजणौ, पोइजबौ—कर्म वा० ।

पोत-सं० पु० [सं०] १. जहाज, नाव ।—(अ. मा., ह. नां. मा.)
उ०—१. मिट आग तप मिटजाय, साकंप सीत सवाय । द्रढ़ पोत खेवट दांम, तट घरी गुदरी तांम ।—रा. रू.
उ०—२. धाय मुनेस सेस सिर धारै, निज सिर जिकां सुरेस नवाय । जोतसरूप तणा आगरजस, पोत रूप भव सागर पाय ।
—र. ज. प्र.
२. पशु, पक्षी आदि का बच्चा ।
३. अधोवस्त्र, धोती ।
उ०—१. सिनांन नूं पोत काढ़ी । आप तळाव मांहै पैठा ।
—नैणसी
उ०—२. तठा उपरांयत सिरदारां देसोतां तळाव में भूलण री हांस करै छै । लाल लांगी री पोतां पहरजै छै ।—रा. सा. सं.
अल्प०—पोतड़ी ।
४. बालक । (अ. मा., ह. नां. मा.)
५. भेद, रहस्य ।
उ०—१. तीनू एकण गोत । जिणनें जैसा गुरु मिल्या तिसा काढ़िया पोत ।—भि. द्र. ।
उ०—२. गळ फेरि छुरी, जैचंद गोत । अपणूं पोत करियै न उदोत ।—ऊ. का.
मुहा०—पोत काढ़णौ—अपना भेद देना, कमजोरी प्रकट करना ।
६. वह गर्भस्थ पिण्ड जिस पर झिल्ली न चढ़ी हो ।
७. ढांचा, बनावट, रचना ।
उ०—इसी दूसरी घोड़ा मुलक में नहीं । जैसो ही डील, जैसो ही रूप, जैसो ही पोत, मही जैसो ही वळ ।
—सूरे खीवे कांधळोतरी वात
८. आभा, कान्ति ।
९. बरछी ।
१०. वस्त्र, रेशम ।
उ०—बधि पोत कीमति वेस । मंझि कारचोभ मुकेस ।—सू. प्र.
११. वस्त्र की मोटाई ।
उ०—महि माल बहु पसमीर, कर उतन जे कसमीर । इक तार पोत असाधि, विरहांनपुर रंग बाधि ।—सू. प्र.
[सं. प्रोत] १२. एक प्रकार के छोटे मोती विशेष जो स्त्री के कंठाभरण (तेवटे) में पिरोये जाते हैं ।
उ०—१. इसड़ै टोटै हूं सखी, वारी वार अनंत । पोत जणी में मोतियां, चूड़ी मगळ दंत ।—वी. सं.
उ०—२. तोड़ी तण वसणां तणी, तोड़ी अन री ताय । पिव तोड़ी न विसण री, तोड़ी पोत न थाय ।—रेवतसिंह भाटी
१३. माला ।
१४. गले में पहिनने का काला रेशमी डोरा, पवित्रा ।
उ०—१. कंठ पोत कपोत कि कहुं नीलकंठ, वडगिरि काळिंद्री वळी । समै भागि किरि संख सखधर, एकणि ग्रहियौ अंगुळी ।
—वेलि
उ०—२. कपोत कंठ पोत केम मोह ओपमा मिळी ।—सू. प्र.
रू० भे०—पोग्र, पोत ।

पोतइ—देखो 'पोतै' (रू. भे.)
उ०—१. कांते काती ! जनमियां, जउ पांमया वियोग । पुण्य पोतइ पूरयां नहीं, किम लहीइ संजोग ।—मा. कां. प्र.
उ०—२. नरसा सुत गणपति कहइ, अंग थया ए आठ । सूघइ स्वांमिनी सारदा, पोतइ दीधू पाठ ।—मा. कां. प्र.

पोतक—सं० पु० [सं०] नाव, नौका । उ०—सुभ महूरत ले पूरीया, लांघ्यो कितरौ रे माग । चलतां जल खूटो तिहां पोतक, वणिक कहै पूरो कोई रे अभाग ।
—स.कु.

पोतड़ियौ—देखो 'पोतड़ौ' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—लुगाई रो जमारो पाय अेकरो ई पोतड़ियां गो कस हायां नीं लागो तो सित्तर वरसां रो औ नरकवाड़ो क्यूं भुगतियो !
—फुलवाड़ी

पोतड़ी—देखो 'पोत' (१, ३) (अल्पा., रू. भे.)
उ०—राती कांनी री पोतड़ियां रूड़ी । ऊंनी लोवड़ियां बगलां में ऊड़ी ।
—ऊ.का.

पोतड़ौ—सं० पु० [सं० पोत=वस्त्र+रा०प्र०ड़ौ] १. छोटे बच्चों के चूतड़ों के नीचे रखा जाने वाला कपड़ा ।
उ०—रेसम हंदा पोतड़ां, पाजणिये पोढ़ाय । तो 'जेहा' बेटा तिके, भलां भुलाया माय ।—बां. दा.
अल्पा०—पोतड़ियौ ।
२. देखो 'पोतौ' (अल्पा., रू. भे.)
(स्त्री० पोतड़ी)

पोतणौ—सं० पु० [सं० पूत+रा०प्र०णौ] वह कपड़ा जिससे कोई चीज पोती जावै ।
क्रि० प्र०—फेरणौ, लगाणौ ।

पोतणौ, पोतबौ—क्रि०स० [सं०प्लुत=प्र०प्रा० पुत+रा० णौ] १. किसी गीले पदार्थ को किसी सूखे पदार्थ पर ऐसा लगाना कि वह उस पर जम जाय ।
ज्यूं०—रंग पोतणौ, वारनिस पोतणौ ।
२. किसी गीले पदार्थ पर दूसरे पदार्थ पर फैलाकर लगाना, चुपड़ना ।

ज्यूं०—तेल पोतणौ, चूनो पोतणौ ।
३. देखो 'पहुंचणौ, पहुंचवौ' (रू. भे.)
पोतणहार, हारौ (हारी), पोतणियौ—वि० ।
पोतिश्रोड़ौ, पोतियोड़ौ, पोत्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
पोतीजणौ, पोतीजबौ—कर्म वा० ।

पोतदार—स० पु० [फा० पोत:दार] १. कोषाध्यक्ष, खजांची ।
[राज० पोतौ=छोटा अफीम का डिब्बा+फा० दार]
२. बड़ा अफीमची ।
रू० भे०—पोतादार, पोतेदार, पोतैदार ।

पोतयोड़ौ—भू० का० कृ०—देखो 'पोतियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० पोतयोड़ी)

पोतरउ—देखो 'पोतौ' (रू. भे.)
उ०—चंद्र प्रभ सामि तउ पोतरउ, चंद्रसेखर नांउ मल्हारौ जी ।
चद्र जसराय कराविग्रउ ए, नवमउ उद्धारौ जी ।—स. कु.

पोतरांण—देखो 'पौत्रांण' (रू. भे.)

पोतरौ—देखो 'पोतौ' (रू. भे.)
उ०—१. राव प्रथीराज हरराजोत रायसल रौ चाकर, राव देवीदास सूजावत रौ पोतरौ कांम आयो ।—नैणसी
उ०—२. चित में साह विचारियौ, राजा थयौ जवांन, परवस मेरी पोतरी, पं सिरजोर निदांन ।—रा. रू.
उ०—३. पुकारां करै ऊभी घरै पोतरी, पांण पूजै न क्यूं रहै पाली । —अज्ञात
(स्त्री० पोतरी)

पोतवाळ, पोतवाल—सं० पु० [फा० फोत:+रा०प्र० वाल] अण्ड-कोश ।
रू० भे०—पोताळ, पोतौ ।
अल्पा०—पोतवाळियौ, पोताळियौ ।

पोतवाळियौ—देखो पोतवाळ (अल्पा., रू.भे.)

पोता—देखो 'पोतैं' (रू. भे.)
उ०—१. किण ही स्त्री कह्यो—लोटी म्हारै हाटै दीजो । समजू मन में जांणै पोता रा धणी नें दोराई छै ।—भि. द्र.
उ०—२. मिच्छांमि दुक्कड़ दइ मन सुद्ध, मूकी निज अभिमांन । पोता नउ दूसण परकास्यउ, पांम्यउ केवल ग्यांन ।—स. कु.
उ०—३. राजुल नारी रो विरहागर वयारी, पोता नी कर तारी हो ।—वि. कु.

पोताई—सं० स्त्री० [सं० पौत्र+रा०प्र०आई] १. पौत्र के वंशज ।
२. देखो 'पुताई' (रू. भे.)

पोताचेलौ—सं० पु० [सं० पौत्र+राज०चेलौ] चेले का चेला, प्रशिष्य ।
उ०—जद स्वांमी जी बोल्या—म्हारै तौ इसा पोताचेला कोई चाहिजै नहीं ।—भि. द्र.

पोतादार—देखो 'पोतदार' (रू. भे.)
उ०—घर त्याग करण पर घर विघन, आठूं पहर ऊंधारिया । जीव नैं देत गोता जिकै, पोतादार पधारिया ।—ऊ. का.

पोतार—देखो 'पुंतार' (रू. भे.)

पोतारणौ, पोतारबौ—देखो 'पूंतारणौ, पूंतारबौ' (रू. भे.)
उ०—उण वेला 'ऊदा'हरै, तोले चन्द्रप्रहास । रजपूतां पोतारियां, भुज धारियां अकास ।—रा. रू.
पोतारणहार, हारौ (हारी) पोतारणियौ—वि० ।
पोतारिश्रोड़ौ, पोतारियोड़ौ, पोतारयोड़ौ—भू० का० कृ० ।
पोतारीजणौ, पोतारीजबौ—कर्म वा० ।

पोतारौ—सं०पु० [राज० पोतणौ] १. पुताई करने वाला, पोतने का कार्य करने वाला ।

पोताळ—देखो 'पोतवाळ' (रू. भे.)

पोताळियौ—देखो 'पोतवाळ' (अल्पा., रू.भे.)

पोति—१. देखो 'पोत' (१, ३)(रू. भे.)
उ०—१. पातिसाहजी सेख जमाल रै डेरै पधारिया । ताहरां सेख जमाल कहियो थे पोति पहरियां हीज रहो । द.वि.
उ०—२. झूठा मांणिक मोतिया री, झूठी जगमग जोति । झूठा सब ग्रामूसणां री, सांची पिया जी री पोति ।—मीरां

पोतियाबदळभाई—देखो 'पगड़ीबदळभाई' ।

पोतियोड़ौ—भू० का० कृ० —१. पोता हुआ, पुता हुआ । २. चुपड़ा हुआ ।
(स्त्री० पोतियोड़ी)

पोतियौ—सं० पु० [सं० पोत = वस्त्र+रा० प्र० इयो] साफा, पगड़ी ।
उ०—आदमी धोतियो पकड़ै तो पोतियौ बिखर जावै अर पोतियौ संभाळै तो धोतियो खुल जावै । —रातवासो
रू० भे०—पउतियौ, पोत्यौ ।

पोतै—सर्व०—स्वयं, खुद ।
उ०—व्यास सदा पोतै वरदाई । सोहै बाळकिसन सुखदाई ।
—रा. रू.
रू० भे०—पोतइ, पोता ।
क्रि० वि०—हिसाब में, खाते में ।
उ०—पोन्य पोतै हुवै तेह जीपइं सदा, धरम न करै तिकै धम-धमीजै ।—वि. कु.

पोतैदार—१. देखो 'पोतदार' (रू. भे.)

पोतौ—सं०पु० [सं० पौत्र] (स्त्री० पोती) १. पुत्र का पुत्र, प्रपुत्र, बेटे का बेटा ।
उ०—पोतां रै बेटा थिया, घर में बधियौ जाळ । अब तो छोडो भागणौ, कंत लुभांणौ काळ ।—वी. मं.
पर्या०—अभनवौ, कळोधर, बीजौ, संमोभ्रप, हर ।
रू० भे०—पोतड़ौ, पोतरउ, पोतरौ, पोत्रौ, पौत्रौ ।

अल्पा०—पोतड़ियौ ।

२. अफीम का बटुआ, अफीम का डिब्बा ।

उ०—१. सू आगराही अमल री चकी वंधयां, छुरयां सूं मिरीवळ कीजै छै । केसरियां पोतां रुमालां में घातजै छै ।—रा.सा.सं.

उ०—२. आप आघौ गांम मांहै चालियो । माथै अफीम री पोतौ हुतौ सु खिर पड़ियो ।—नैणसी

३. देखो 'पोतवाळ' (रू.भे.)

पोत्यौ—देखो 'पोतियौ' (रू.भे.)

पोत्रांण—देखो 'पौत्रांण' (रू.भे.)

पोत्रौ—देखो 'पोतौ' (रू.भे.)

उ०—तिण समै राव गंगांगदे भाटी, रावळ लखणसेन रौ बेटौ पुनपाळ जैसलमेर सूं काढ़ियौ, तिणरौ पोत्रौ हुतौ ।—नैणसी

(स्त्री० पोत्री)

पोथकी—सं० स्त्री०—नैत्र की पलकों का एक रोग । (अमरत)

पोथड़—देखो 'पोथी' (मह., रू. भे.)

पोथड़की, पोथड़ी—देखो 'पोथी' (अल्पा., रू. भे.)

पोथी—सं० स्त्री० [सं० पुस्तिका, प्रा० पोत्थिआ] १. पुस्तक, ग्रंथ, किताब ।

उ०—१. व्है यूं कुकवी हाथ में, पोथी तणौ प्रकास । केल पत्र जांणै कियौ, वांनर रै कर वास ।—बां. दा.

उ०—२. केवांण पांण कणाकण कहूं, आछट घड़ असुरांण री । कविराज जेम कर ग्रहि करू, पोथी वेद पुरांण री । —सू. प्र.

२. बालक की पुष्टता ।

अल्पा०—पोथड़की, पोथड़ी ।

मह०—पोथड़, पोथौ ।

पोथीखांनौ—सं० पु० यौ० [सं० पुस्तकं+फा० खानः] पुस्तकालय ।

पोथौ—देखो 'पोथी' (मह., रू. भे.)

उ०—पांना पोथां परिहरी, परिपरि देता फाल ।—मा. कां. प्र.

पोद—सं० स्त्री० [देशज] १. कुछ विशेष प्रकार के पौधों या वृक्षों का कोमल नया कल्ला जो एक जगह से मूल सहित उखाड़ कर दूसरे स्थान पर लगाया जाता है ।

२. उक्त प्रकार से उखाड़े हुए पौधों का समूह ।

३. उक्त प्रकार से मूल सहित उखाड़े हुए पौधों या वृक्षों को दूसरे स्थान पर लगाने की क्रिया ।

रू०भे०—पोघ, पोध ।

पोदीनौ—स० पु० [फा० पोदीनः] एक छोटा पौधा ।

वि० वि०—यह पौधा पीपरमैण्ट की जाति का होता है । इसकी पत्तियां दो ढाई अगुल लम्बी और डेढ़ पौने दो अंगुल तक चौड़ी होती हैं तथा देखने में कटावदार और स्पर्श में खुरदरी होती हैं । पत्तियों में बहुत अच्छी गंध होने के कारण लोग इनको पीसकर चटनी आदि में डालते हैं । इसका पौधा या तो जमीन पर ही फैलता है या अधिक से अधिक एक डेढ बालिस्त ऊपर आता है । इसके फूल सफेद होते हैं । बीज न होने के कारण इसके डण्ठलों को ही लगाया जाता है । यह रुचिकारक, अजीर्णनाशक और वमन को रोकने वाला होता है । यह पौधा भारत में बाहर से आया है । प्राचीन ग्रंथों में इसका उल्लेख नहीं है ।

रू० भे०—पुदीनौ ।

पोदौ—सं०पु० [?] १. नया निकला हुआ वृक्ष का वह कल्ला या रूप जो एक स्थान से उखाड़ कर दूसरे स्थान पर लगाया जा सकता है ।

ज्यूं०—आंबा री पोदौ ।

२. वह वनस्पति जो दो तीन हाथ तक ही ऊपर उठती है और जिसका तना व टहनियां बहुत कोमल होती हैं ।

ज्यूं०—गुलाब री पोदौ ।

रू०भे०—पोघो, पौधौ ।

पोध—देखो 'पोद' (रू.भे.)

पोधौ—देखो 'पोदौ' (रू.भे.)

पोन—देखो 'पवन' (रू. भे.)

उ०—सूरज-वैरी ग्रहण है, दीपक वैरी पोन । जी को वैरी काळ है, आतां रोकै कौन ?—अज्ञात

पोनखोलौ—सं० पु० [देशज] आभूषणों पर पान-छाप खुदाई करने का एक औजार विशेष । (स्वर्णकार)

पोन्य—देखो 'पुण्य' (रू. भे.)

उ०—पोन्य पोतै हुवै तेह जीपइं सदा, घरम न करै तिकै धमधमीजै ।
—वि. कु.

पोप—सं० पु० [अं०] कैथोलिक (ईसाई) सम्प्रदाय का प्रधान गुरु ।

पोपट—सं० पु० [देशज] १. योनि, भग ।

२. तोता, शुक ।

उ०—१. घाल्यौ पंजर मां गुण जोइ जो, हुवौ रे पोपट तूं विण तिण दवै रे लो ।—वि. कु.

उ०—२. सरवरि जळ पीघवं पोपटइ । जोउ मांन केतलउं घटइ ।
—कां. दे. प्र.

पोपळ, पोपल—वि० [देशज] १. बनावट में कमजोर, अशक्त । २. सारहीन । ३. खोखला ।

पोपलीन—सं० स्त्री० [फा० पापलिन] एक प्रकार का सूती कपड़ा ।

पोपलौ—वि० पु० [देशज] (स्त्री० पोपली) १. हल्के स्पर्श मात्र से गूदा या रस बाहर निकल सकने वाला । २. पिचका और सुकड़ा हुआ । ३. बिना दांत का ।

पोपां, पोपांबाई—वि० [सं० पुत्रा+राज० बाई] मूर्खा, मूर्ख (स्त्री.)

सं०स्त्री०—एक अयोग्य व मूर्ख रानी ।

उ०—१. गांगौ गिणां क बूभबुभाकड़, ऊंधी अकल उपाईनें ।
सेखसली नें कुंण समभावे, बम इण पोपांबाई नें ।—ऊ. का.
उ०—२. सेखसली सरखा हुवै, मावड़ियां रै मीत । पोपांबाई प्रगट व्है, नवी चलावै नीत ।—बां. दा.

वि०वि०—एक मत के अनुसार यह जालोर के चौहान राजा वीसलदेव वालेचा की रानी थी । इसके पति के राठौड़ों द्वारा धोखे से मारे जाने पर यह स्वयं राज्य-कार्य करने लगी । किन्तु यह राज्य कार्य सम्हालने में असफल रही । अपने राज्य-काल में इसने कई मूर्खत. पूर्ण कार्य किये जिसके किस्से लोगों में प्रचलित है । फलत: राज्य में अव्यवस्था फैल गई। इसका लाभ उठाकर इसी के सेनापति विहारी-पठान युसूफखां ने राज्य-सत्ता अपने हाथ में वि० सं० १४५० में ले ली । रानी अपने दो नाबालिग पुत्रों सहित ईडर राज्य (महीकांठा-गुजरात) में चली गई । कहते हैं बाद में इसके पुत्रों ने भीलनी से विवाह कर लिया ।

मतान्तर से यह कुम्हारी थी जो जयपुर राज्य के अन्तर्गत 'खण्डेले' पर शासन करती थी । कहते हैं कि पोल अधिक होने के कारण इसका शासन पोल का शासन कहलाता था । इसके राज्य में सब धान २० पंसेरी बिकता था । स्वयं की मूर्खता के कारण ही अन्त में इसको सूली पर चढ़ना पड़ा ।

पो'बारा-सं० पु० [राज० पो' + सं० द्वादश] चौपड़ के खेल में पासों में पड़ने वाला एक दाव । इसकी संख्या पो' (एक) और बारह अर्थात् तेरह होती है ।
उ०—तरे बाई पासौ वावती कयौ—पासा तो नें रांमदास वेरावत री आंण छै । पो'बारा पड़ीया तरै लाडुबाई री जीत हुई ।
—रा.सा.सं.

पोमचियौ—देखो 'पोमचौ' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—१. ओजी ओ, मनैं पांणीड़ो पोमचियौ रंगा दे, मोरी माय, लूवर रमवा में जास्यूं ।—लो.गी.

पोमचौ—सं० पु० [देशज] स्त्रियों के ओढ़ने का एक प्रकार का वस्त्र-विशेष जो बढ़िया समझा जाता है ।
उ०—ए मा, भाभीजी नैं कहकै मनैं पोमचौ दिरादै, मैं खेलण जास्यूं लूरड़ी । —लो. गी.
रू० भे०—पेमचौ ।
अल्पा०—पोमचियौ ।

पोमणौ, पोमबौ—'पोमाणौ, पोमावौ' (रू. भे.)
उ०—१. मासी कह्यो—बेटी, क्यूं कौड़ियां माथै पंसेरियां घमकावै । पोमीजण रा दिन तौ म्हारा बरसां पै'ली ढळग्या ।—फुलवाड़ी
उ०—२. मारवाड़ मेवाड़, सको बूझसी सु दावौ । कहिया गुण राजरा, किसुं पोमीया बतावौ ।—साहबौ सुरतांणियौ
पोमणहार, हारौ (हारी), पोमणियौ—वि० ।
पोमिओड़ौ, पोमियोड़ौ, पोम्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
पोमीजणौ, पोमीजबौ—भाव वा० ।

पोमाणौ, पोमावौ-क्रि० अ० स० [सं० पद्मपमानं, प्रा० पद्मपमाण] १. आत्मश्लाघा करना, स्वयं की प्रशंसा करना । उ०—आछा कांम अनेक, प्रकट करि करि पोमावौ । मांनव जनम अमोल, ग्यांन विन मती गुमावौ ।—ऊ. का.
२. प्रशंसा करना, फुलाना । उ०—म्हैं तौ थनै भिडतां ई आ बात दरसाय दी ही । थूं म्हनै पोमा मत, म्हैं सब समझूं हूं ।—फुलवाड़ी
३. गर्व करना ।
पोमाणहार, हारौ (हारी), पोमाणियौ—वि० ।
पोमायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
पोमाईजणौ, पोमाईजबौ—भाव वा० । कर्म वा० ।
पमाणौ, पमावौ, पमावणौ, पमाववौ, पुमाणौ, पुमावौ, पुमावणौ, पुमावबौ, पूमावणौ, पूमाववौ, पोमणौ, पोमवौ, पोमावणौ, पोमाववौ
—रू० भे० ।

पोमायोड़ौ-भू०का०कृ०—१. आत्मश्लाघा किया हुआ, स्वयं की प्रशंसा किया हुआ. २. गर्व किया हुआ. ३. प्रशंसा से फूला हुआ, बना हुआ. (स्त्री० पोमायोड़ी)

पोमावणौ, पोमाववौ—देखो 'पोमाणौ, पोमावौ' (रू. भे.)
उ०—गरबे फोड़े कुंभगज घणवळ घावड़ियांह । पापड़ फोड़ पोमावही, मन में मावड़ियांह । —बां. दा.
पोमावणहार, हारौ (हारी), पोमावणियौ —वि०
पोमाविओड़ौ, पोमावियोड़ौ, पोमाव्योड़ौ —भू० का० कृ०
पोमावीजणौ, पोमावीजवौ —भाव वा० । कर्म वा०

पोमावती--सं०स्त्री० —१. बत्तीस मात्रा का मात्रिक छन्द जिसमें १६, १६ मात्रा पर यति होती है और अंत में दो गुरु होते हैं ।
२. एक प्राचीन नगरी का नाम ।

पोमावियोड़ौ—देखो 'पोमायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० पोमावियोड़ी)

पोमियोड़ौ—देखो 'पोमायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० पोमियोड़ी)

पोमी--सं०स्त्री० [देशज] १. मल द्वार, गुदा ।
२. योनि ।
३. देखो 'प्रथ्वी' (रू.भे) (डि. को.)

पो'मूळ—देखो 'पुस्करमूळ' (रू.भे.)

पोयण--स०पु० [सं० पद्म] १. कमल ।
उ०—अकबर समंद अथाह, तिहं डूबा हिंदू-तुरक । मेवाड़ो तिण माह, पोयण फूल 'प्रतापसी' ।—दुरसो आढ़ो
२. टगण के सातवें भेद का नाम जिसका रूप गुरु-लघु, गुरु-लघु

होता है। (डि. को.)

रू०भे०—पोइण, पोईण।

पोयणनाभ—सं०पु० [सं० पद्म-नाभ:] १. ब्रह्मा।

उ०—घव धोकै कुण धुंसणौ, पोखै पोयणनाभ। रोकै लाखां नह रुकै, अस भोकै अड़भाग। —रेवतसिंह भाटी

२. विष्णु।

पोयणि, पोयणी—सं०स्त्री० [स० पद्मिनी] कमलनी।

उ०—उत्तर आज स उत्तरइ, ऊपड़िया सीकोट। काय दहेसइ पोयणी, काय कुवारा घोट। —ढो. मा.

रू०भे०—पाइणि, पोइणि, पोइणी, पौइणी।

पोयणीनाळ—सं०स्त्री०यौ० [सं० पद्मनाल] कमल की नाल।

उ०—ग्रही नाथियो, पोयणीनाळ ग्रांणै। ग्रस्सवार ग्रापे हुवै, ग्रप्पलांणै। —ना. द.

पोयणौ, पोयबौ—देखो 'पोवणौ, पोवबौ' (रू.भे.)

उ०—पोय-पोय फलका जेट वणाई, पोय-पोय फळका जेट वणाई तो जीमौ वयूं नां जी गौरी रा भरतार।—लो.गी.

पोयणहार, हारौ (हारी), पोयणियौ —वि०।

पोयोड़ौ —भू०का०कृ०।

पोयीजणौ, पोयीजबौ —कर्म वा०।

पोयोड़ौ—देखो 'पोवियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री०पोयोड़ी)

पोर, पो'र—१. देखो 'पौ'र' (रू.भे.)

उ०—करजदारी मांनखां रै माथै ईज व्है, कोई जिनावरां रै माथै व्है कोयनी। पो'र परार किसौ थांरौ सरीर हो, मुक्की देयनै पांणी काढ़ै जिसौ।—रातवासौ

२. देखो 'प्रहर' (रू. भे.)

उ०—१. चोटड़ियाळ डहकनै रही छै। वनसपति सूं वेलां लपटनै रही छै। परभात रौ पो'र छै। गाज ग्रावाज हुय नैं रही छै।

—रा. सा. सं.

उ०—२. दोय घड़ी दिन चढ़ियां घनासरी में 'बाघौ' कोटड़ियौ, तीसरै पो'र सांमेरी में रिड़मल, रात रौ सोढ़ौ महंदरौ गीत गायीजै। —बां.दा.ख्यात

३. देखो 'पेरवौ' (रू.भे.)

पोरख—देखो 'पौरस' (रू. भे.)

उ०—अठै लुहार री निंदा सूं पती री स्तुति है सो कांई कि जुद्ध रौ सुणतां इतरौ पोरख चढ़नै फूलियो सो टोप री कड़ी माथै में गड गई।

—वी. स. टी.

पोरखवांन—देखो 'पौरसवांन' (रू.भे.)

पोरचो—सं०पु० [देशज] पत्थर की वह कुण्डी जिसमें रहट की माळ से पानी गिरता है।

पोरवाळ—सं०पु० [स्त्री० पोरवाळण, पोरवाळणी) जैन मतावलम्बियों की एक जाति या शाखा। (मा. म.)

रू०भे०—पोरुयाड, पोरूयाड।

पोरस—देखो 'पौरस' (रू.भे.)

उ०—१. पद पदारथ संबंध पुनि, प्रत्यय ग्रागम लोप। ग्रारस पोरस सुभ ग्रसुभ, ग्रंथ हृदय धर गोप। —ऊ. का.

उ०—२. कांकळ छोडे कूदियौ, भागल पोरस भंग। कीधा जांणै काढ़मां, कुड नीसरै कुरंग। —बां. दा.

पोरसभंग—देखो 'पौरसभंग' (रू. भे.)

पोरसातन—देखो 'पुरसातन' (रू. भे.)

पोरसि, पोरसी—सं०स्त्री० [स० पौरुषी] एक प्रहर तक धर्म-ध्यान करने की क्रिया। (जैन)

उ०—पहली पोरसी सूत्र चितारै। बीजी पोरसी अरथ विचारै।

—जयवांणी

रू०भे०—पोरिसी, पौरसी।

पोरसौ—देखो 'पौरसौ' (रू.भे.)

उ०—१. विक्रमारक नूं ग्रगनी वेताळ दोय सोना रा पोरसा दिया था। —बां. दा. ख्यात

उ०—२. तरैं जोगी कही—होळी दोळी परदखणा दे। सु जोगी कड़ाह मांहै नांखतौ थौ सु इण दीठो। तरैं जोगी नूं नाखियो। जोगी रौ पोरसौ हुग्रौ पण जोगीरी हत्या सूं गळत कोढ़ हुवौ। —नैणसी

पोरस्स—देखो 'पौरस' (रू. भे.)

पो'रायत—देखो 'पौ'रायत' (रू.भे.)

उ०—हा हा ढोळै पसु कागां कुळ हाथै। मिनकी पो'रायत चूहां दळ माथै।—ऊ.का.

पोरियौ—सं० पु० [देशज] गरीबों का उदर-पोषण का साधन, छोटी मजदूरी।

यौ०—पेटपोरियौ।

पोरिस—देखो 'पौरस' (रू.भे.)

उ०—कुळ छत्री बाराह कुळ, पोरिस बांकम पूर। मिळया चाहे तिण महीं, गोला नैं गडसूर।—बां.दा.

पोरिसी—देखो 'पोरसी' (रू.भे.) (जैन)

पोरी—सं० स्त्री० [?] मूलद्वार, गुदा।

उ०—महा संख री मित्र, सेज नहिं सोवा जाऊं। पोरी सौ मुख पेख, घणौ दोरौ घबराऊं।— ऊ. का.

पोरुयाड, पोरूयाड—देखो 'पोरवाळ' (रू.भे.)

उ०—१. पोरुयाड़ वंसइ प्रगट, जिण सासण सिणगार। करणी मोटी जिण करी, सहु जांणइ संसार।—स.कु.

उ०—२. वंस पोरूयाडइ परगडउ ए, सोमजी साह मल्हार।

—स. कु.

पो'रौ—देखो 'पहरौ' (रू.भे.)

उ०—ग्यांन गुरांसूं लीजिये, तन मन तजियै चाल । आठ पोर पो'रै रहौ, सतगुरु टाळै काळ ।—स्री हरिरामजी महाराज

पोळ-सं० स्त्री० [देशज] १. ५½ गज की जमीन की एक नाप ।

२. देखो 'पोळ' (रू.भे.)

उ०—दे, ए नगारौ ग्रो बीजा, कोइ विजराय चढ़गा जी राज । डेरा तो ढाल्या सोरठड़ी री पोळ में जी ।—लो.गी.

पोल-सं० स्त्री० [देशज] १. आसमान, आकाश । (अ.मा.)

२. खोखलापन, शून्य स्थान ।

उ०—१. बोलके कुबोल भगो टोळ तू भयो । माल तोल व्याज साल, पोल में सह्यो ।—ऊ. का.

उ०—२. मांन कियोड़ी महल ज्यूं, पुगलां ज्यूं कम बोल । मावड़ियो घर मींडको, पुरुसपणा री पोल ।—बां. दा.

मुहा०—१. पोल खुलणी—भण्डा फोड़ होना, रहस्य खुलजाना ।

२. पोल खोलणी—भण्डाफोड़ करना, रहस्य बताना ।

रू० भे०—पोल ।

अल्पा०—पोलड़ी ।

पोलक-सं० पु० [देशज] बिगडे हुए हाथी को डराने हेतु लम्बे बांस के छोर पर बंधा हुआ पयाल जिसे जलाकर हाथी को डराया जाता है ।

पोलग्वाळौ-वि० [देशज] वह बिना चुनाई किया हुआ कुआ जिससे सिंचाई की जाती है ।

पोळच, पोळछ-सं० स्त्री० [देशज] १. भूमि की वह उर्वरता जो पिछली फसल (रबी या तिलहन की खेती) के कारण बढ़ गई हो ।

२. उक्त प्रकार की उर्वरा शक्तिवाला खेत ।

उ०—मुल्कै वेली चख पोळछ लख मोजी । चेली दीठां ज्यूं साधू चित चोजी ।—ऊ.का.

रू० भे०—पुळच, पुळछ, पौळच, पौळछ ।

पोळड़ी—देखो, 'पोळ' (अल्पा., रू.भे.)

पोलड़ी-सं० स्त्री० [देशज] १. अंगूठी के मध्य में ऊपर लगाया जाने वाला घेरा जिसमें नगीने जड़े जाते हैं ।

२. देखो 'पोल' (अल्पा; रू.भे.)

३. देखो 'पोलरी' (रू.भे.)

पोलरी-सं० स्त्री० [देशज] १. सुई चुभने से बचाव के लिए दर्जियों द्वारा सीते समय उंगुली में पहिनने का लोहे या पीतल का बना छल्लानुमा एक उपकरण ।

२. स्त्रियों के पैरों में धारण करने का एक आभूषण विशेष ।

उ०—कट-मेखळा जड़ावरी सोहै छै । सोनैरी पायल पगपांन पोलरी अणवट पगां विराजै छै ।—रा.सा.सं.

रू० भे०—पोलड़ी ।

पोल-रौ-खत-सं० पु० यौ० [रा० पोल+फा० खत] कर्ज की लिखावट का वह ऋण पत्र जिस पर कर्ज देने वाले का नाम न लिखा हो, गुमनाम का खत ।

पोलसेढ़ी-सं० स्त्री० [?] वह गाय अथवा भैंस जिसका दूध आसानी से निकलता हो ।

पोलाद—देखो 'फौलाद' (रू. भे.)

पोलाव—देखो 'पुलाव' (रू. भे.)

पोळि—देखो 'पोळ' (रू.भे.)

उ०—कटै केई पोळि के पोळि बाहर कटै, थाटकै थटै गढ़ बीच थटियौ । वे कटै 'भांण' केवांण आवाहथां, कांगुरै कांगुरै घणां कटियौ ।
—उदैभांण हरभांण गोड़ रौ गीत

पोळिपात—देखो 'पोळपात' (रू.भे.)

उ०—जिकण रै साथै रांणा त्याग रा जस रौ प्रकास प्रसारण रै काज आपरा पोळिपात बारहठ बारू सहित बडा बडा सुभटां नै सज्ज करि हाडां, री आसंग में न आवै इसडौ बरात रौ बांणक बणाय दीधौ ।
—वं.भा.

पोळियौ—देखो 'पोळियौ' (रू.भे.)

उ०—अेक हाजरिया नै भेज पोळिया नै तेड़ायौ—फुलवाड़ी

पोळिव्रति-सं० स्त्री० [सं० प्रतोली+वृत्ति] राजा के मुख्यद्वार पर मिलने वाली वृत्ति ।

उ०—व रि उपचार अगद वपु कीधौ, दुलभ वित्त संचय न्रप दीधौ । पोळिव्रति 'दुरसै' जिण पाई, बढ़ी सतत 'सुरतांण' वडाई ।—वं.भा.

पोलिसरंदौ—देखो 'पालिसरंदौ' (रू.भे.)

पोळी-सं० पु० [देशज] १. रोटी, फुलका के एक तरफ की पतली झिल्ली । उ०—१. अतिथि अभ्यागत टोळा टुळ आवै । झोळी भण्डा ले पोळी पधरावै ।—ऊ. का.

उ०—२. रातूं दे रोडा लूला खोडा, दुखियारा दीसंदा हैं । झोळी झड़कावै पोळी पावै, टोळी सूं टाळंदा हैं ।—ऊ. का.

२. देखो 'पौळी' (रू. भे.)

पोलीसी— देखो 'पालिसी' (रू.भे.)

पोलीसीबाज-वि० [अं० पॉलिसी+फा० बाज़] नीतिज्ञ, चतुर, चालबाज ।

पोलौ-वि० [देशज] (स्त्री० पोली) खोखला, खाली ।

सं०पु०-१. धातु का छल्ला जो छड़ी, लकड़ी, औजार के दस्ते आदि पर उसकी रक्षा तथा मजबूती के लिए लगाया जाता है शाम ।

[अं०] २. घोड़ों पर चढ़कर खेला जाने वाला एक अंग्रेजी खेल ।

३. पैर का एक आभूषण विशेष ।

४. गोबर, गोमल, गोमय ।

पोवट, पोवटौ, पोवठ, पोवठौ-सं० पु० [सं० पोष-प्रावृट्] पोष मास की वर्षा ।

उ०—मावट पोवट मध्य, गुलम गण पूं पळ काढ़े । नेसावरिया डगा, घरणेरा घुरड़े वाढ़े ।—दसदेव

पोवणूं, पोवणौ–सं० पु० [देशज] १. रोटी बनाने की क्रिया ।
उ०—श्रोर सहेली मा, खिलण-मिलण नें ऐ जाय । मनें दीनौ मा, पोवणूं जे ।—लो.गी.
२. माला आदि पिरोने की क्रिया ।

पोवणौ, पोवबौ–क्रि० स० [देशज] १. रोटी बेलना, रोटी पकाना ।
उ०—दवणा ठीश्रा दीप, तांवणी वठळ विलोवण । धावण जमावणिया, पगातां पोळी पोवण ।—दसदेव
[सं० प्रोत प्रा० पोइश्र] २. किसी छेद वाली वस्तु में धागा डालना, पिरोना ।
उ०—सपलो रावलह (लह) लह लै ।
साधन पोवती मोती का माल ।—त्री.दे.
पोवणहार, हारौ (हारी), पोवणियौ—वि० ।
पोविश्रोड़ौ, पोवियोड़ौ, पोंव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
पोवीजणौ, पोवीजबौ—कर्म वा० ।
पिरोणौ, पिरोवौ, पिरोवणौ, पिरोवबौ, पो'णौ, पो'वौ, पोश्रणौ, पोश्रवौ, पोयणौ, पोयबौ, प्रो'णौ, प्रो'वौ, प्रोयणौ, प्रोयबौ, प्रोवणौ, प्रोवबौ ।—रू०भे० ।

पोवा—देखो 'प्याऊ' (रू.भे.)

पोवाड़णौ, पोवाड़बौ—देखो 'पोवाणौ, पोवावौ' (रू.भे.)
पोवाड़णहार, हारौ (हारी) पोवाड़णियौ—वि० ।
पोवाड़िश्रोड़ौ, पोवाड़ियोड़ौ, पोवांड़योड़ौ—भू० का० कृ० ।
पोवाड़ीजणौ, पोवाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

पोवाड़ियोड़ौ—देखो 'पोवायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० पोवाड़ियोड़ी)

पोवाणौ, पोवावौ–क्रि० स०—१. रोटी पकवाने का कार्य कराना, रोटी बेलाना । २. पिरोने का कार्य कराना ।
पोवाणहार, हारौ (हारी), पोवाणियौ—वि० ।
पोवायोड़ौ—भू०का०कृ० ।
पोवाईजणौ, पोवाईजबौ—कर्म वा० ।
पोश्राणौ, पोश्रावौ, पोवाड़णौ, पोवाड़बौ—रू० भे० ।

पोवायोड़ौ—भू० का० कृ०—१. रोटी पकवाया हुश्रा, रोटी बेलाया हुश्रा. २. पिरोवाया हुश्रा.
(स्त्री० पोवायोड़ी)

पोवियोड़ौ–भू० का० कृ०—१. रोटी बेला हुआ, रोटी पकाया हुश्रा. २. पिरोया हुश्रा ।
(स्त्री० पोवियोड़ी)

पोस—सं० पु० [फा० पोश] १. वह जिससे कोई वस्तु या पदार्थ ढका जाय ।
उ०—इण भांत दाव पांच सात लेय पाळै में हाथ ऊजळा कर दोनूं थाळ री पोस उठाय जीमण बैठा ।—कुंवरसी सांखला री वारता
[सं० पोषणम्] २. पक्ष, रक्षा ।
उ०—जिण अधिकारइ ऊपनउ, जे श्रनवस्थित दोस रे, साजन सुणि मोरा । हिव तेहिज विवरण तणउ, निस्चय करिस्यु पोस रे ।
—वि. कु.
३. पालन-पोषण ।
उ०—वैंण सगाई वाळियां, पेखीजै रस पोस । वीर हुतासण बोलमें, दीसै हेक न दोस ।—वी. स.
४. कवच-धारी योद्धा ।
५. कृपा । (ब. मा.)
६. देखो 'पूस' (रू. भे.) (डि. को.)
उ०—पोस महिनौं बीज दिन, देखे धूम मचाय । फेरे श्रांणि 'श्रजीत' री, श्राया रीत दिखाय ।—रा.रू.
७. देखो 'पौरस' (रू.भे.)
८. देखो 'पोइस' (रू.भे.)
रू०भे०—पौस ।

पोसउ—देखो 'पोसध' (रू.भे.)
उ०—पोसउ पोसउ सहु कहइ, पोसउ करइ सहु कोइ । पण पोसा विधि सांभलइ, जिन निस्तारउ होइ ।—स.कु.

पोसक–वि० [सं० पोषक] १. पालने वाला पालक । २. सहायक । ३. बढ़ाने वाला, वर्द्धक ।

पोसण—सं०पु० [सं० पोषण] १. पालन । उ०—चिरत तुम्हारा चत्रभुज, सहूकोई जांण । तुंइ'ज उपावणहार तूं, पोसण सोखांण ।
—गजउद्धार
२. वर्द्धन, बढ़ती ।
रू०भे०—पोख, पोखण ।

पोसणौ, पोसबौ—क्रि० स० [सं० पोषणं] पालना, रक्षा करना ।
उ०—श्रेक तपसी नै काठ रा मजूस रै मांय नंदी में बेवतौ मिळियौ हो । उण दिन सूं वौ तपसी ई उणनै पाळ पोसनै मोटौ करियौ ।
—फुलवाड़ी
पोसणहार, हारौ (हारी), पोसणियौ—वि० ।
पोसाड़णौ, पोसाड़बौ, पोसाणौ, पोसावौ, पोसावणौ, पोसावबौ,
—प्रे० रू० ।
पोसिश्रोड़ौ, पोसियोड़ौ, पोस्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
पोसीजणौ, पोसीजबौ—कर्म वा० ।
पोखणौ, पोखबौ—रू० भे० ।

पोसत—देखो 'पोस्त' (रू. भे.)
उ०—मूटघां सूं मसळतां, पिसळतां डाढ़ां पीसै । पोसत छांण'र पिये दसत रा दोसत दीसै ।—ऊ. का.

पोसता—देखो 'पोखता' (रू. भे.)
उ०—फळोधी किरड़ा री जोहड़ जठै नांना प्रकार री सुगंध आवै । लोक कहै इण में पोसता रहै है ।—बां. दा. ख्यात

पोसती—देखो 'पोस्ती' (रू.भे.)
उ०—भूल गई घर वार आपकी दोसती । आसक वोलो आप मती हुवो पोसती ।—स्री हरिरांमजी महाराज

पोसध—देखो 'पौसध' (रू. भे.)
उ०—तासु चरण प्रणमी करी, पोसध विधि विस्तार—स.कु.

पोसप्प—देखो 'पुस्प' (रू. भे.)
उ०—पोसप्प पांन कपूर प्रिथवी, वणात जण धनवांन ए । इकधार तीरथ जात उद्यम, आदि सुरनदि आंन ए ।—रा. रू.

पोसवा-सं० स्त्री०—पंवार वंश की एक शाखा ।

पोसवाळ—देखो 'पोसाळ' (रू. भे.)

पोसह, पोसहउ—देखो 'पौसध' (रू. भे.)
उ०—१. 'अट्ठम भक्त' चउविह आहार तजी, एतो तीन पोसह दिया ठायो रे ।—जयवांणी
उ०—२. पोसहउ अयिति संविभाग वेऊ परव दिन करि वास ही ।—स. कु.

पोसहसाला—देखो 'पौसधसाला (रू. भे.)
उ०—पोसहसाला मंह एकला, पोसह लियउ मन भाय, रूड़ा राजा ।—स. कु.

पोसाक, पोसाख-सं० स्त्री० [फा० पोशाक] पहनने के वस्त्र, पहनावा, वेश । उ०—१. विहद कोर गोटां वणी, पातर रै पोसाक । परणी फाटा पूंगरण, वैठी फाड़ै वाक ।—ऊ. का.
उ०—२. मावड़िया दीठां फुरै, मत हिय मांहि पयट्ठ । पुरस तणीं पोसाख कर, वाई आंण वयट्ठ ।—बां. दा.
रू० भे०—पवसाक, पवसाख, पौसाक, पौसाख ।

पोसाड़णौ, पोसाड़बौ—देखो 'पोसाणौ, पोसावौ' (रू. भे.)
पोसाड़णहार, हारौ (हारी), पोसाड़णियौ—वि० ।
पोसाड़िग्रोड़ौ, पोसाड़ियोड़ौ, पोसाड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
पोसाड़ीजणौ, पोसाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

पोसाड़ियोड़ौ—देखो 'पोसायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० पोसाड़ियोड़ी)

पोसाणौ, पोसावौ-क्रि० अ० स० ['पोसणौ' क्रि० का प्रे० रू०] १. पूरा पड़ना, गुजर चलना ।
२. पालन कराना, रक्षा कराना ।
पोसाणहार, हारौ (हारी), पोसाणियौ—वि० ।
पोसायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
पोसाईजणौ, पोसाईजबौ—कर्म वा० । भाव वा० ।
पोसाड़णौ, पोसाड़बौ, पोसावणौ, पोसाववौ, पौसावणौ, पौसाववौ—रू० भे० ।

पोसायोड़ौ-भू० का० कृ०—१. पूरा पड़ा हुआ, गुजर चला हुआ.
२. पालन कराया हुआ, रक्षा कराया हुआ.
(स्त्री० पोसायोड़ी)

पोसारौ—देखो 'पौसध' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—मारचो ठग जिणे पोसारे मांय ए, आवती चोवीसी में तीजो जिन राय ए ।—जयवांणी

पोसाळ-सं० स्त्री० [सं० पाठशाला] छोटी पाठशाला, विद्यालय, चटसाला ।
उ०—मोहणी सी बांणी वोल मन हरै छै । चकवा, कपोत, कीर, खग घुंन सुणै छै । मांनुं कांमदेव की पोसाळ वाळक भणै छै ।—अगसीरांम प्रोहित री वात
रू० भे०—पोसवाळ, पौसवाळ, पौसाळ ।

पोसाळियौ-सं०पु० [सं० पाठशाला + रा०प्र० इयौ] १. छोटी पाठशाला या चटशाला का अध्यापक । २. छोटी पाठशाला या चटशाला का छात्र ।

पोसावणौ, पोसाववौ—देखो 'पोसाणौ, पोसावौ' (रू. भे.)
उ०—डोकरी—अरे ! ओ कांई वाला ?'—'चिलम तो पीवां क'नी, माजी !' 'जणै मनै को पोसावै नी, वीजी जागा जोय लो ।'—वरसगांठ
पोसावणहार, हारौ (हारी), पोसावणियौ—वि० ।
पोसाविग्रोड़ौ, पोसावियोड़ौ, पोसाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
पोसावीजणौ, पोसावीजवौ—कर्म वा०/भाव वा० ।

पोसावियोड़ौ—देखो 'पोसायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० पोसावियोड़ी)

पोसियोड़ौ-भू० का० कृ०—पालन किया हुआ, रक्षा किया हुआ ।
(स्त्री० पोसियोड़ी)

पोसीदगी-सं० स्त्री० [फा० पोशीदगी] छिपाव, दुराव ।

पोसीदा-क्रि० वि० [फा० पोशीद:] गुप्त रूप से ।

पोसीदौ-वि० [फा० पोशीद:] छिपा हुआ, गुप्त ।

पोसौ—१. 'पौसध' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—सांमायिक पोसा करो, पड़िक्कमणो दोय काल । इम आतम नै ऊधरो, झूंठै मत करो भिकाल ।—जयवांणी
२. देखो 'पूस' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—सखी री आयो महिनो अब पोसौ, रंगै रमै सहु तजि रोसौ ।—ध. व. ग्रं.

पोस्ट-सं०स्त्री० [अं०] १. स्थान, जगह । २. पद, ओहदा । ३. डाक ।
सं०पु०—४. थम्भा ।
उ०—रात दिवस के रेस कोस में, वाजी लाव वणावै । जाकी पार कोई हुय जावै, वेनिंग पोस्ट वतावै ।—ऊ. का.
यौ०—पोस्टआफिस, पोस्टकारड, पोस्टमास्टर, पोस्टमैन, पोस्टलगाइड ।

पोस्टआफिस-सं० पु० [अं०] डाकघर, डाकखाना ।

पोस्टकारड-सं० पु० [अं० पोस्ट-कार्ड] एक मोटे कागज का पत्र जिस

पर समाचार लिख कर भेजे जाते हैं।

पोस्टमारटम—सं० पु० [अं० पोस्टमार्टम] मृत्यु का कारण निश्चित करने के लिए शव को चीर-फाड़कर की जाने वाली परीक्षा, शल्य-परीक्षा।

पोस्टमास्टर सं० पु० [अं०] डाक घर का सबसे बड़ा कर्मचारी।

पोस्टमैन—सं०पु० [अं०] पत्र बांटने वाला, चिट्ठीरसा, डाकिया।

पोस्टलगाइड—सं० स्त्री० [अं०] डाक घर के नियमों का ज्ञान कराने वाली पुस्तक।

पोस्टेज—सं० पु० [अं०] डाक का महसूल, डाक व्यय।

पोस्त, पोस्ता—सं० पु० [फा० पोस्त] अफीम का पोधा या इसका डोडा या दानें।

रू० भे०—पोसत, पौसत।

पोस्ती—सं० पु० [फा०] १. पोस्त के डोडे पीसकर पीने वाला व्यक्ति, अफीमची। २. आलसी आदमी।

रू० भे०—पोसती।

पोस्तीन—सं० पु० [फा०] १. गरम और मुलायम रोएं वाले समूर आदि। २. खाल का बना कोट जिसमें नीचे की ओर बाल होते हैं।

पोह—१. देखो 'पह' (रू. भे.)

उ०—१. पोह जिण साख नांम प्रगटाए। कमध अहर हूं अहर कहाए।—सू. प्र.

उ०—२. जोधार चढ़े बहु वळे जाय। पोह तेज देख सो लगय पाय।—वि. सं.

२. देखो 'पूस' (रू भे.)

उ०—१. सफाई नै जाहरां पोह माह रा दिन आया तरै एक दिन आधी रात अमावस रै दिन ले परमेसर रो नांम नै गोह चढ़ाई।
—चौबोली

उ०—२. मिगसरिये में मूंग न खायो, पोह अलूणो खायो हो रांम।—लो. गी.

३. देखो 'पो' (रू. भे.)

उ०—राते निंद्रा न आई। पोह पीळी हुवां सेतखांनै जाय हाथ पग उजळा करि दांतण कीधो नै स्नांन सेवा करि गाजी रै दरसण आया।—जखड़ा-मुखड़ा भाटी री वात

पोहकर—देखो 'पुस्कर' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

उ०—१. देस देस रा जाति जाति रा मीरजादा भेळा हुआ छै, माहीमुरातबा समेत पोहकर अजमेर रा थांणा ऊपरै विदा हुआ छै, आवाज फूट नै रही छै।—रा.सा.सं.

उ०—२. पवित्र प्रयाग 'रतनसी' पोहकर, मन निरमळ गंगाजळ जेम। नर नादैत नरिंद नरेहण, निकळंक निखूट निपाप निगेम।
—दूदो

पोहकरनाभ—देखो 'पुस्करनाभ' (रू. भे.)

पोहकरमूळ—देखो 'पुस्करमूळ' (रू. भे.)

पोहकरी—देखो 'पुस्करी' (रू. भे.) (डिं. को.)

पोहड़—सं० पु० [?] भाटी वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

पोहच—देखो 'पहुंच' (रू. भे.)

पोहचणौ, पोहचबौ—देखो 'पहुंचणौ, पहुंचबौ' (रू. भे.)

उ०—पोहचै काळा पांणिरां, हेम भरेया हाट। छाती सालच छाकियां, करड़ी बजर कपाट।—बां. दा.

पोहचणहार, हारौ (हारी), पोहचणियौ—वि०।

पोहचाड़णौ, पोहचाड़बौ, पोहचाणौ, पोहचाबौ, पोहचावणौ, पोहचावबौ—प्रे० रू०।

पोहचिओड़ौ, पोहचियोड़ौ पोहच्योड़ौ—भू० का० कृ०।

पोहचीजणौ, पोहचीजबौ—भाव वा०।

पोहचाड़णौ, पोहचाड़बौ—देखो 'पहुंचाणौ, पहुंचाबौ' (रू. भे.)

पोहचाड़णहार, हारौ (हारी), पोहचाड़णियौ—वि०।

पोहचाड़िओड़ौ, पोहचाड़ियोड़ौ पोहचाड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।

पोहचाड़ीजणौ, पोहचाड़ीजबौ—कर्म वा०।

पोहचाड़ियोड़ौ—देखो 'पहुंचायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० पोहचाड़ियोड़ी)

पोहचाणौ, पोहचाबौ—देखो 'पहुंचाणौ, पहुंचाबौ' (रू. भे.)

उ०—सु सब चहुवांण मारिया। बाहड़मेर कोटड़ो लिया। भर जगमालजी नूं खबर पोहचाई।—नैणसी

पोहचाणहार, हारौ (हारी), पोहचाणियौ—वि०।

पोहचायोड़ौ—भू० का० कृ०।

पोहचाईजणौ, पोहचाईजबौ—कर्म वा०।

पोहचायोड़ौ—देखो 'पहुंचायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० पोहचायोड़ी)

पोहचावणौ, पोहचावबौ—देखो 'पहुंचाणौ, पहुंचाबौ' (रू. भे.)

उ०—ऊपगार ऊपरां बाई दीनी, पिण रावळ मांहे गधेड़ा रा लक्षण दीसै छै। बाई रो जमारो डबोयो, पिण एक वार तो बाई नै गढ़ पोहचावणी।—वीरमदे सोनगरा री वात

पोहचावणहार, हारौ (हारी), पोहचावणियौ—वि०।

पोहचाविओड़ौ, पोहचावियोड़ौ, पोहचाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

पोहचावीजणौ, पोहचावीजबौ—कर्म वा०।

पोहचावियोड़ौ—देखो 'पहुंचायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० पोहचावियोड़ी)

पोहचियोड़ौ—देखो 'पहुंचियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० पोहचियोड़ी)

पोहढ़णौ, पोढ़बौ—देखो 'पौढ़णौ, पौढ़बौ' (रू. भे.)

उ०—तितरां मांहै रात पोहोर गई। तारै कह्यौ, ढोलाजी घे थांरै म्हेल जाय पोहढ़ो।—ढो. मा.

पोहढ़णहार, हारौ (हारी), पोहढ़णियौ—वि०।

पोहढ़िग्रोड़ो, पोहढियोड़ो, पोहढ़योड़ो—भू० का० कृ०।

पोहढीजणौ, पोहढीजबौ—भाव वा०।

पोहढ़ियोड़ो—देखो 'पौढियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री० पोहढ़ियोड़ी)

पोहत—देखो 'पहुंच' (रू. भे.)

पोहतणौ, पोहतबौ—क्रि० स०—१. पूर्ण होना, पूरा होना। उ०—तरै पातसाह कह्यौ—मैं छोडिया, थारौ कौन पोहतौ।—नैणसी

२. देखो 'पहुंचणौ, पहुंचबौ' (रू. भे.)

उ०—१. नरसिंघ नुं खबर पोहती।सुपीयारी पाछी आई।
—नैणसी

उ०—२. सगळा पाछा आयां तेह। पोहंता छै सहू अपणै गेह।
—जयवांणी

पोहतणहार, हारौ (हारी), पोहतणियौ—वि०।

पोहतिग्रोड़ो, पोहतियोड़ो, पोहत्योड़ो—भू० का० कृ०।

पोहतीजणौ, पोहतीजबौ—कर्म वा०/भाव वा०।

पोहतियोड़ो—भू० का० कृ०—१. पूर्ण, पूरा।

२. देखो 'पहुंचियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री० पोहतियोडी)

पोहप—१. देखो 'पुस्पक' (रू. भे.)

२. देखो 'पुस्प' (रू. भे.)

उ०—च्यार चउपद च्यारथं (पं)ख, पोहप च्यार फळ च्यार। पुरंवंदत जो पाइयै, ग्रेहवी मारू नार।—ढो. मा.

पोहपचाप—देखो 'पुस्पचाप' (रू. भे.)

पोहपति—देखो 'पुस्पपति' (रू. भे.)

पोहपदंत—देखो 'पुस्पदत' (रू. भे.)

पोहपधनु—देखो 'पुस्पधनु' (रू. भे.)

पोहपधुज—देखो 'पुस्पध्वज' (रू. भे.)

पोहपपुर—देखो 'पुस्पपुर' (रू. भे.)

पोहपमाळ, पोहपमाळा—देखो 'पुस्पमाळा' (रू. भे.)

उ०—देव दुंदवी वजाविया, पोहपमाळ पहराय। सरग तणी सहनायका, लीधा ग्राय बधाय।—गजउद्धार

पोहपविमांण—देखो 'पुस्पकविमांण (रू. भे.)

उ०—पोहपविमांण सपेखिग्रा, रचि विरंच विनांणी।—रांमरासो

पोहम, पोहमी—देखो 'प्रथवी' (रू. भे.)

उ०—१. पड़े चक्र राह पतिसाह खीजै पोहम, खुरम हुकम हुवो खळक खार। मूंछ मोड़ अन चौहर पूर मच्छर, सूरजत राखिया…… सार।—राव भोज हाडा री गीत

पोहमीईस—स०पु० [सं०पृथिवी+ईश] राजा, नृप। (डि.को.)

पोहर—देखो 'प्रहर' (रू.भे.)

उ०—१ कारण विण जग सूं करै, ग्राठ पोहर उपगार। जांणीजे सुरतर जिकै, मांनव लोक मझार।—बां.दा.

उ०—२. रात पोहर १ गई छै तरै सहर खीदा नूं खबर मेल दीवी।
—नैणसी

पोहराइत, पोहरावत—देखो 'पौ'रायत' (रू.भे.)

उ०—अइयो कळ परतक अबै, पोहरावत पापां तणां। मोहकमा कमंध मोटा मिनख, तो सिरखा जीवै घणा।—अरजुणजी वारहठ

पोहरू—१. देखो 'पौ'रायत' (रू.भे.)

उ०—१. सरपां हंदी बाड़ कर, सिहां री परबंध। जो जमरांणी पोहरू, सैणां मिळवी संघ।—जलाल बूबना री वात

२. देखो 'पहरौ' (रू.भे.)

पोहरे'क—देखो 'पौ'रेक' (रू. भे.)

उ०—राव कटारी लागां पछै पोहरे'क जीवियां। —नैणसी

पोहरौ—देखो 'पहरौ' (रू.भे.)

उ०—१. चाकर पोहरै ऊभो थो, तिण पांतरै मारियौ।—नैणसी

उ०—२. भडां निरीजै हाजरी, नित दीजै मोरांह। जोध फिरै गढ़ जावतै, पै दर पै पोहरांह।—बां. दा.

पोहल—सं०पु०—गुरु नानक की वाणी पढ़ कर सुनाने के बाद पिलाया जाने वाला शरवत। (मा.म.)

पोहव—१. देखो 'पहू' (ग्रल्पा., रू.भे.)

उ०—पोहव गज घजां तूं खेत पाड़े।—मांनसिह ग्रासियौ

२. देखो 'प्रथवी' (रू.भे.)

पोहवी—देखो 'प्रथवी' (रू.भे.)

उ०—सूरां मरण स्यांमध्रम सारै। पोहवी दीनी भ्रकुट पड़े।
—द.दा.

पोही—सं०स्त्री० [सं० पौष+रा०प्र०ई] पौष मास की पूर्णिमा।

उ०—आखा रोहण वायरी, राखी स्रवणैं न होय। पोही मूळ न होय तौ, मही डोलंती जोय।—वर्षाविज्ञान

पोहोकर—देखो 'पुस्कर' (रू.भे.)

उ०—नाहडराव वांसै हुवो, पोहोकर जी री ठोड़ वाराह मूंढ़ा सूं नै पगां सूं खरळ खावड़ो एक पांणी रो कर अलोप हुवौ।—नैणसी

पोहोकरनभ, पोहोकरनाभ—देखो 'पुस्करनाभ' (रू.भे.)

उ०—पवित्र कथ इम करिस वडा प्रभ। नमै तूझ चरणां पोहोकरनंभ।—ह.र.

पोहोचाणौ, पोहचाबौ—देखो 'पहुंचाणौ, पहुंचाबौ' (रू.भे.)

उ०—प्रथीराज रा सांवतां प्रथीराज नै पोहोचायौ, जिण भात आपनै तो इडर पोचांवस्यां।—पनां वीरमदे री वात

पोहोचाणहार, हारो (हारी), पोहचाणियो—वि०।
पोहोचायोड़ो—भू०का०कृ०।
पोहोचाईजणो, पोहोचाईजबो—कर्म वा०।

पोहोचायोड़ो—देखो 'पहुंचायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० पोहोचायोड़ी)

पोहोत—देखो 'पहुंच' (रू.भे.)

पोहोतणो, पोहोतबो—देखो 'पहुंचणो, पहुंचबो' (रू.भे.)
पोहोतणहार, हारो (हारी), पोहोतणियो—वि०।
पोहोतिग्रोड़ो, पोहोतियोड़ो, पोहोत्योड़ो—भू०का०कृ०।
पोहोतीजणो, पोहोतीजबो—भाव वा०।

पोहोतियोड़ो—देखो 'पहुंचियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० पोहोतियोड़ी)

पोहोप—देखो 'पुस्प' (रू.भे.)
उ०—पोसाकां पोहोपां तणी वणि ग्रगछि विवेस। हीरां नग जगमग हुवै, कांकण जडत कणेस।—पनां वीरमदे री वात

पोहपकछ--मधुदैत्य-सं०पु०—एक प्रकार का घोड़ा जिसका वर्ण एक रंग का होता है और शरीर पर शहद के रंग के समान धब्बे या टिकारे होते हैं। (शा.हो.)

पोहोम—देखो 'प्रथवी' (रू.भे.)
उ०—बयळ न सूझै वोम, पोहोम धूजे हय पोड़ां। ग्रटक कटक ऊतरै, रटक लेवा राठोड़ां। —मे.म.

पोहोर—देखो 'प्रहर' (रू.भे.)
उ०—तरै लाखे कयो—'उठै ग्राठ पोहोर चढ़णो-उतरणो, थांहरो कांम नहीं। —नैणसी

पोहोलो-वि० [?] (स्त्री० पोहोली) चौड़ा।

पोहोव—१. देखो 'पह' (रू. भे.)
उ०—पोहो घर मूंछां पांण, पूंतारै परगह पोहोव। जारण खळां पुवांण, सक 'गोगो' मांगै सवण।—गो. रू.
२. देखो 'पो' (रू. भे.)

पोहोसो—देखो 'पोसध' (ग्रल्पा., रू. भे.)
उ०—नहीं पोहोसो नहीं ग्रादरी दीख। —स.कु.

पोहो—१. देखो 'पो' (रू. भे.)
उ०—थिर बिलोचिसथांन, थांन धवळगिर थावै। पोहो साता दीप हूं, उठै माता नित ग्रावै।—मे. म.
२. देखो 'पह' (अल्पा., रू.भे.)
उ०--१. पोहो कीरत बीज खेत रजपूती, दाह सत्रां उर खाद दियो। हळ भालो करतब वडहाळी, करसण ग्रारंभ गजब कियो।
—वड़ली ठाकुर लालसिंघ राठौड़ री गीत
उ०—२. वाजिद गज वाकर मांनव वळ, पोहो अनि होम हुवा वो हो पूर। हाडा रिण तीरथ करि हींसल, सारियो राज मेध जगि सूर।
—सूरजमल हाडा रो गीत
उ०—३. माही पोहो धाड़ ग्रोनाड़ कजि ग्रांमंतां, जाड़ नद फाट खग नवां जाडो। पंखा विहूं साह गाजी तणो विढेस्वति, हेक वड लखां ग्रावीह हाडो।—महाराज सरदारसिंघ हाडा रो गीत

पोहौर—देखो 'प्रहर' (रू.भे.)
उ०--दिन पोहोर २ चढ़ीयां भीनमाळ थी स्रोराजाजी सैंगं ग्राया। ग्राप माहे मिळीयां। तिण दिन जोधपुर थी ग्रोठो २ ग्राया।
—नैणसी

पोहौव—देखो 'पो' (रू.भे.)
उ०-ऊलाळिया चढ़ाये ग्रांळिये, रोद जतै मेवाड़ा रांण। कलम कुरांण बांग तज कहवा, पोहौव तण वांचै पुरांण।
—महारांणा संग्रामसिंघजी रो गीत

पौंच—देखो 'पौच' (रू.भे.)

पौंचाळ—देखो 'पौंचाळो' (मह., रू.भे.)

पौंचाळो—देखो 'पौचाळो' (रू.भे.)
उ०—१. सिंघ ग्रवसांण विरद धरि सांचो, पौंचाळा कीवो परमांण। पंड राठौड़ तणं रोसांणो, धतळ-बळ हाडो चहवांण।
—छत्रसिंघ मेहाउत हाडा रो गीत

पौंची-स०स्त्री० [देशज] मस्त हाथी को वश में करने के लिए उसके पैरों में डाला जाने वाला काष्ट का बना उपकरण विशेष जिसमें कांटे लगे हुए होते हैं।

पौंड्र-सं०पु० [सं०] १. पुंड्र देश का बना रेशमी कपड़ा।
२. भीम के शंख का नाम। ३. मनु के अनुसार एक भ्रष्ट क्षत्रिय वंश, वृपन।

पौंड्रक--सं०पु० [स०] पुंड्र देश का राजा जो जरासंघ का मित्र था।

पौंथ—देखो 'पहुंच' (रू.भे.)

पौंथणो, पौंथबो—१. देखो पौथणो, पौथबो (रू. भे.)
२. देखो 'पहुंचणो, पहुंचबो' (रू.भे.)
पौंथणहार, हारो (हारी), पौंथणियो —वि०।
पौंथिग्रोड़ो, पौंथियोड़ो, पौंथ्योड़ो —भू०का०कृ०।
पौंथीजणो, पौंथीजबो—भाव वा०।

पौंथियोड़ो—१. देखो पौथियोड़ो (रू.भे.)
२. देखो 'पहुंचियोड़ो' (रू.भे.)

पौंहचणो, पौंहचबो—देखो 'पहुंचणो, पहुंचबो' (रू.भे.)
उ०—१. समुद्र मांहे छै, ऐके पासै छः मास रो मारिग छै, ऐके पासै डोढ़ महीना रो मारिग छै, पिण भय छै, जिनावर घणा छै, मगर छै, वाहण भांजै छै, कोई ऐक निरवहै छै, सखरो वायरो हुवै छै तो सवा महीने हो, पौंहचै छै। —सयणी चारणी री वात
उ०—२. उण नूं तो पांडू ले गयो पण ग्रावां गोदारां सूं पौंहच नहीं सकां।—द. दा.

पौंहचणहार, हारौ (हारी), पौंहचणियौ —वि०।

पौंहचिश्रोड़ौ, पौंहचियोड़ौ, पौंहच्योड़ौ —भू० का० कृ०।

पौंहचीजणौ, पौंहचीजबौ —भाव वा०।

पौंहचि—देखो 'पौच' (रू.भे.)

उ०—पाडगति गीत संगीत समझण, पौंहचि बहत्तरी कळा खट-भाख बूझै। —ल.पिं.

पौंहचौ—देखो 'पूंचौ' (रू.भे.) (अमरत)

पौं-सं०स्त्री० [सं० प्रपा] १. राह चलने वालों को जल पिलाने का स्थान।

२. प्रातःकाल। उ०—आज सखी हौं हौ सुणां, पौं फाटत पिय गौन। पौं में हिय में होड है, पहिले फाटै कौन ? —अज्ञात

मुहा०—पौं फटणी, पौं फाटणी—उषाकाल होना।

रू०भे०—पोह, पोहोव, पोहौ, पोहौव।

३. देखो 'परौ' (रू.भे.) (गोढ़वाड़) (स्त्री० पी)

पौइणी—देखो 'पोयणी' (रू.भे.)

उ०—सरोवरां रा जळ निरमळ हुआ छै। कमळ पौइणी फूलि रह्या छै। —रा.सा.सं.

पौक-सं०पु०—पशुओं के बैठने का खुला हवादार स्थान।

पौंकर—देखो 'पुस्कर' (रू.भे.)

पौकार—देखो 'पुकार' (रू.भे.)

उ०—पड़यै जिण जोध पौकार सगलै पड़ी, घरै नहीं अरज पातिसाह धीठौ। —घ.व.ग्रं.

पौगंड--सं०पु० [सं०पौगंडम्] पांच से सोलह वर्ष तक की अवस्था।

उ०—१. जरै आ जांणि पौगंड अवस्था में ही कुमार प्रथ्वीराज पिता सूं अरज करी।—वं. भा.

उ०—२. सिसु वै मित्ती वित्ती उदमो, पौगंड मंड सिंगारो। ज्यों ग्रंदारकतरयं, प्रांमै डाळ संगि पत्तेणम्।—रा. रू.

पौड़-सं०पु० [देशज] घोड़े का सुम। उ०—१. सो घोड़ां रा पौड़ां सूं नै गऊवां रा खुरां सूं रजी उडी है। आसमांन धूंद-धूंदाळौ होय गयौ है।—वी. स. टी.

उ०—२. जडलग्ग फरी खडखडइं जौड़। पटहौड़ा वाजिय पूरि पौड़।—रा. ज. सी.

रू०भे०—पोड़, पोड़ि।

पौड़ी-सं०स्त्री० [देशज] ऊंट या घोड़े के अगले पैरों के बांधने का एक प्रकार का बंधन, जिसके कारण वह खुला छोड़ा जाने पर भी भाग नहीं सकता।

पौच-सं०स्त्री० [सं० प्रभूत] १. पहुंचने की क्रिया या भाव।

२. किसी के कहीं पहुंचने पर भेजी जाने वाली सूचना।

३. ऐसी जगह जहां तक किसी की गति हो सकती हो या कोई पहुंच गया हो।

४. किसी स्थान पर पहुंचने अथवा किसी कार्य के करने की क्षमता, योग्यता, पहुंच, शक्ति, बल, सामर्थ्य।

उ०—कमावण खावण री उणरी पौच कोनीं ही।—फुलवाड़ी

५. किसी विषय का होने वाला ज्ञान।

उ०—इण अकल अर पौच रा घणी आखा देस माथै राज करै। —फुलवाड़ी

६. अभिज्ञता की सीमा, ज्ञान की सीमा।

७. देखो 'पूंची' (रू.भे.)

उ०—प्रवीण कंकणी स पौच गज्जरा ज नौग्रही।—सू.प्र.

रू०भे०—पहोंच, पोंहच, पो'च, पौंच, पौंहचि, पौछ।

पौचणौ, पौचबौ—देखो 'पहुंचणौ, पहुंचबौ' (रू.भे.)

पौचणहार, हारौ (हारी), पौचणियौ—वि०।

पौचिश्रोड़ौ, पौचियोड़ौ, पौच्योड़ौ—भू०का०कृ०।

पौचीजणौ, पौचीजबौ—भाव वा०।

पौचवांन-वि० [राज० पौच+सं० वत्=वांन] १. सिद्धिप्राप्त, सिद्ध, महात्मा।

२. वह जिसकी पहुंच हो, योग्य, समर्थ, शक्तिशाली।

रू०भे०—पहचवांन, पहुंचवांन, पौछवांन।

पौचाड़णौ, पौचाड़बौ—देखो 'पहुंचाणौ, पहुंचावौ' (रू. भे.)

पौचाड़णहार, हारौ (हारी), पौचाड़णियौ—वि०।

पौचाड़िश्रोड़ौ, पौचाड़ियोड़ौ, पौचाड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।

पौचाड़ीजणौ, पौचाड़ीजबौ—कर्म वा०।

पौचाड़ियोड़ौ—देखो 'पहुंचायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० पौचाड़ियोड़ी)

पौचाणौ, पौचावौ—देखो 'पहुंचाणौ, पहुंचावौ' (रू.भे.)

पौचाणहार, हारौ (हारी), पौचाणियौ—वि०।

पौचायोड़ौ—भू० का० कृ०।

पौचाईजणौ, पौचाईजबौ—कर्म वा०।

पौचायोड़ौ—देखो 'पहुंचायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० पौचायोड़ी)

पौचारौ-सं० पु० [देशज] १. द्रव पदार्थ में भीगा हुआ कपड़ा जो पोंछने के काम में लिया जाता है।

२. उक्त प्रकार के कपड़े से आंगनादि पोंछने का कार्य।

३. उक्त कार्य की मजदूरी।

४. छोड़ी या दागी हुई तोप या बंदूक की नाल को ठंडी करने के लिये उस पर भीगा हुआ कपड़ा फेरने की क्रिया।

रू०भे०—पोचारौ।

पौचाळ—देखो 'पौचाळौ (मह., रू. भे.)

पौचाळौ-वि० [राज० पौच+सं० आलुच्] १. शक्तिशाली, बलवान, समर्थ।

उ०—पनरै सहस जोध पोचाळा ।—अ. वचनिका
२. सिद्धि प्राप्त, सिद्ध, महात्मा ।
रू०भे०—पोछाळो, पोहचाळो, प्रांचाळो, प्राचाळो, प्रुचाळो, प्रोचळो ।
मह०—पोचाळ, पोहचाळ, प्रांचाळ ।

पोचावणो, पोचावबो—देखो 'पहुंचाणो, पहुंचाबो' (रू.भे.)
पोचावणहार, हारो (हारी), पोचावणियो—वि० ।
पोचाविश्रोड़ो, पोचावियोड़ो, पोचाव्योड़ो—भू० का० कृ० ।
पोचावीजणो, पोचावीजबो—कर्म वा० ।

पोचावियोड़ो—देखो 'पहुंचायोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री० पोचावियोड़ी)

पोचियोड़ो—देखो 'पहुंचियोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री० पोचियोड़ी)

पोछ—देखो 'पोच' (रू. भे.)
उ०—बळ ईठ साथ लीधां वळोच । पूरी नर जादव वडी पोछ ।
—पा. प्र.

पोछवांन—देखो 'पोचवांन' (रू. भे.)
उ०—जे आंटी छै तो घणी ही छै, पण इब म्यूं करां ग्रा तो वात कम पोछवांना री छै ।—कुंवरसी सांखला री वारता

पोछाड़णो, पोछाड़बो—देखो 'पहुंचाणो, पहुंचाबो' (रू. भे.)
उ०—वाजै हूंत विणास, हिव प्रप रा घट में हुवो । 'वाघै' प्रांगडवास, पाछो ढोल पोछाड़ियो ।—पा. प्र.

पोछाड़ियोड़ो—देखो 'पहुंचायोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री० पोछाड़ियोड़ी)

पोछाणो, पोछाबो—देखो 'पहुंचाणो, पहुंचाबो'—(रू. भे.)
पोछाणहार, हारो (हारी), पोछाणियो—वि० ।
पोछायोड़ो—भू० का० कृ० ।
पोछाईजणो, पोछाईजबो—कर्म वा० ।

पोछायोड़ो—देखो 'पहुंचायोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री० पोछायोड़ी)

पोछावणो, पोछावबो—देखो 'पहुंचाणो, पहुंचाबो' (रू. भे.)
पोछावणहार, हारो (हारी), पोछावणियो—वि० ।
पोछाविश्रोड़ो, पोछावियोड़ो, पोछाव्योड़ो—भू० का० कृ० ।
पोछावीजणो, पोछावीजबो—कर्म वा० ।

पोछावियोड़ो—देखो 'पहुंचायोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री० पोछावियोड़ी)

पोढ़णो, पोढ़बो—क्रि० अ० [सं० प्रलोठनम्] १. आराम करने या नींद लेने के लिए शयन करना, लेटना ।
उ०—१. ताहरां उखेलि वारणो माहे लिया । ढोलियो विछाइ दियो, जाइ पोढ़िया ।—ऊदे ऊगमणावत री वात
उ०—२. पांन प्रयाग तणां पोढ़ियो, सुजि हरि समरि ऊतर करि सोच । (ह. नां. मा.)
२. धराशायी होना ।
उ०—१. भड़ भिड़ज्ज गज मार, धार विहरै पाड़े पड़ । ढहियो सिर पोढ़ियो, बोळ भाबोळ बहादर ।—मू. प्र.
उ०—२. जिण माथै याके दळां, पोढ़ै करज उतार । तिण सूरां रो नांम ले, भड़ बांधै तरवार ।—बो. स.
३. घोड़े या घोड़ी का भूमि पर बैठना ।
पोढ़णहार, हारो (हारी), पोढ़णियो—वि० ।
पोढ़वाड़णो, पोढ़वाड़बो, पोढ़वाणो, पोढ़वाबो, पोढ़वावणो, पोढ़वावबो—प्रे० रू० ।
पोढ़ाड़णो, पोढ़ाड़बो, पोढ़ाणो, पोढ़ाबो, पोढ़ावणो, पोढ़ावबो
—सक० रू० ।
पोढ़िश्रोड़ो, पोढ़ियोड़ो, पोढ़योड़ो—भू० का० कृ० ।
पोढ़ीजणो, पोढ़ीजबो—भाव वा० ।
पउढ़णो, पउढ़बो, पोढ़णो, पोढ़बो, पोहढ़णो, पोहढ़बो—रू०भे० ।

पोढ़म—सं०पु० [सं० प्रौढ़] १. शौर्य, पराक्रम, बहादुरी ।
२. प्रौढ़ता, प्रौढ़त्व ।
३. देखो 'पोढ़िम' (रू.भे.)
रू०भे०—पउढ़िम, पोढ़िम ।

पोढ़ाकू—वि० [राज० पोढ़+प्र० श्राकू] शयन करने वाला ।
उ०—सांझ तो पड़ै रे, दिनड़ो आथमै रे । बादीला तेलण सारै हो तेल । काय न करू हो तेलण जी तेल नैं, दिवला रा पोढ़ाकू बसे परदेस ।
—लो.गी.

पोढ़ाड़णो, पोढ़ाड़बो—देखो 'पोढ़ाणो, पोढ़ाबो' (रू.भे.)
उ०—पोढ़ाड़ै नाद वेद परबोधै, निति दिन वाग विहार नितु । मांगण मयण एण विध मांगै, रुखमिणि कंत वसंतरितु ।
—वेलि
पोढ़ाड़णहार, हारो (हारी), पोढ़ाड़णियो—वि० ।
पोढ़ाड़िश्रोड़ो, पोढ़ाड़ियोड़ो, पोढ़ाड़योड़ो—भू०का०कृ० ।
पोढ़ाड़ीजणो, पोढ़ाड़ीजबो—कर्म वा० ।

पोढ़ाड़ियोड़ो—देखो 'पोढ़ायोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० पोढ़ाड़ियोड़ी)

पोढ़ाणो, पोढ़ाबो—क्रि०स० [राज० पोढ़णो] १. लेटाना, सुलाना ।
२. धराशायी करना ।
उ०—तीजो कुमार भगवतसिंह औरंग आगै केही पैंला पठैतां नूं पोढ़ाइ प्रेत गीधादिक पळचरां नूं धपाइ चंडीरा चसक में आप री ही अस्र आसव पूरि च्यारि तलवारि लागां जीवतो ही खेत रहियो ।
—वं. भा. ।
३. घोड़े या घोड़ी को बैठने में प्रवृत करना, बैठाना ।
पोढ़ाणहार, हारो (हारी), पोढ़ाणियो—वि० ।

पोढ़ायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

पोढ़ाईजणौ, पोढ़ाईजबौ—कर्म वा० ।

पउढ़ाड़णौ, पउढ़ाड़बौ, पउढ़ाडणौ, पउढ़ाडबौ, पोढ़ाड़णौ, पोढ़ाड़बौ, पोढ़ावणौ, पोढ़ावबौ—रू० भे० ।

पोढ़णौ, पोढ़बौ—अक० रू० ।

पोढ़ापौ–सं०पु० [सं० प्रौढ़त्व] १. प्रौढ़ावस्था । २. वृद्धावस्था, वृद्धत्व ।
उ०—सम्रदळ सबळ सीस पतसाहां, दिली विरोळण 'करण' हुवौ । पोढ़ापै समसेर पाकड़ी, हीमत सेर जवांन हुवौ ।
—दुरगादास राठौड़ रौ गीत

पोढ़ायोड़ौ–भू० का० कृ०—१. लेटाया हुआ, शयन कराया हुआ. २. धराशायी किया हुआ. ३. (पोढ़ा या पोढ़ी) बैठाया हुआ. (स्त्री० पोढ़ायोड़ी)

पोढ़िम–सं०पु० [सं० प्रौढ़] १. सुमेर पर्वत ।
उ०—गुजळ किळा पोढ़िम सदण दांन धारियां सको, ऊजळ पय सुरां छंट भुजा उरमांन । मच्छांचर दमंग दह चावगां मांगणां, समंद चद गिरंद इंद कुंवर 'गुनमांन' । —कुंवर गुनमांनसिंघ हाडा रौ गीत
२. दृढ़ता, अटलता ।
उ०—किरणधारियां सहर पोढ़िम गळा रित मुळ, तेज तोय दिढ़ क्षमी सहर सिरताज । चवव मीनां अमर चगोरां चाढवां, रिव उदधि मेर ससि रांण 'जगराज' ।
—महारांणा जगतसिंघ सिसोदिया रौ गीत
३. देखो 'पौढ़म' (रू.भे.)

पोढ़ी–सं०स्त्री० [देसज] मारवाड़ राज्यांतर्गत 'पोकरण' नगर का प्राचीन नाम । उ०—पोढ़ी सूं जोधांपती, प्रात हुवौ असवार । दरसेवा सुभ देहरौ, रांमौ पीर उदार । —रा. रू.
रू०भे०—पोडी, पोढ़ी ।

पोढ़ीमणौ–वि० [सं०प्रौढ़] प्रौढ़त्वशाली ।
उ०—भागो तौ वाराह, राह ग्रहियौ तोड़ दुणियर । छोडौ तोड़ हणमंत, जोर मथियौ तोड़ सायर । जो नथियौ तोड़ नाग, लियौ दरसण तोड़ संकर । सांकळियौ तोड़ सींह, वाघ धी जगै भयंकर । पालटै राव पोढ़ीमणौ, घणौ पांण परिघण घणां । मालदे राव मंडोवरौ, वोह चित्यौ ई बोहामणौ । —द.दा.
रू०भे०—पोढ़िमणउ ।

पोढ़ौ--वि० [सं०प्रौढ़] (स्त्री० पोढ़ी) १. अनुभवी, बुद्धिमान, विकसित । २. युवावस्था व वृद्धावस्था के बीच की अवस्था (मध्यावस्था) वाला । ३. निपुण, चतुर ।

पोतणौ, पोतबौ—१. देखो 'पहुंचणौ, पहुंचबौ' (रू.भे.)
२. देखो 'पोतणौ, पोतबौ' (रू. भे.)
पोतणहार, हारौ (हारी), पोतणियौ —वि० ।
पोतिग्रोड़ौ, पोतियोड़ौ, पोत्योड़ौ —भू०का०कृ० ।
पोतीजणौ, पोतीजबौ—भाव वा० । कर्म वा० ।

पोताणौ, पोताबौ—१. देखो 'पहुंचाणौ, पहुंचाबौ' (रू. भे.)
२. देखो 'पोताणौ, पोताबौ' (रू. भे.)
पोताणहार, हारौ (हारी), पोताणियौ—वि० ।
पोतायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
पोताईजणौ, पोताईजबौ—कर्म वा० ।

पोतायोड़ौ—१. देखो 'पहुंचायोड़ौ' (रू.भे.)
२. देखो 'पोतायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० पोतायोड़ी)

पोतावणौ, पोतावबौ—१, देखो 'पहुंचाणौ, पहुंचाबौ' (रू.भे.)
२. देखो 'पोताणौ, पोताबौ' (रू.भे.)
पोतावणहार, हारौ (हारी), पोतावणियौ—वि० ।
पोताविग्रोड़ौ, पोतावियोड़ौ, पोताव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
पोतावीजणौ, पोतावीजबौ—कर्म वा० ।

पोतावियोड़ौ—१. देखो 'पहुंचायोड़ौ' (रू. भे.)
२. देखो 'पोतायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० पोतावियोड़ी)

पोतारणौ, पोतारबौ—देखो 'पूंतारणौ, पूंतारबौ' (रू.भे.)
उ०—तद भील री वात चाली, जद रजपूत नूं पोतार कहियौ । और तौ कोई दीसै नहीं जिकौ उण भील नूं मारै । जे मारै तौ औ हीज रजपूत मारै । —प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात
पोतारणहार, हारौ (हारी), पोतारणियौ—वि० ।
पोतारिग्रोड़ौ, पोतारियोड़ौ, पोतार्योड़ौ —भू० का० कृ० ।
पोतारीजणौ, पोतारीजबौ —कर्म वा० ।

पोतारियोड़ौ—देखो 'पूंतारियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० पोतारियोड़ी)

पोतियोड़ौ—१. देखो 'पहुंचियोड़ौ' (रू. भे.)
२. देखो 'पोतियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० पोतियोड़ी)

पोत्र—देखो 'पोतौ' (रू. भे.)
(स्त्री० पोत्री)

पोत्रांण--सं०पु० [सं० पौत्र+रा०प्र० आंण] दौहित्र की संतान, दौहित्र का वंश ।
रू०भे०—पोतरांण, पोत्रांण ।

पोय—देखो 'पहुंच' (रू.भे.)

पोयणौ, पोयबौ--क्रि०अ० [सं० प्रस्थानम्] १. प्रस्थान करना, प्रयाण करना ।
२. देखो 'पहुंचणौ, पहुंचबौ' (रू.भे.)
उ०—दासी दौड़ी वेग द्रुत, पोयी रांणी पास । कंवरी सुपियारी करै, आंसूं न्हांक उदास । —पा. प्र.
पोयणहार, हारौ (हारी), पोयणियौ—वि० ।

पोयिश्रोड़ो, पोथियोड़ो, पोथ्योड़ो—भू० का० कृ०।
पोथीजणो, पोथीजवो—भाव वा०।
पोंथणो, पोंथवो, पोहतणो, पोहतवो—रू० भे०।

पोथाळो-वि० [देशज] हृष्ट-पुष्ट।
उ०—वर दायक वाळो-ह, अपछर रैं उर ऊपनो। पावू पोथाळो-ह, वरस जितो दिन में वधै।—पा.प्र.

पोथियोड़ो—भू०का०कृ०—१. प्रस्थान किया हुआ, प्रयाण किया हुआ।
२. देखो 'पहुंचियोड़ो' (रू.भे.)
(स्त्री० पोथियोड़ी)

पोद, पोधे—देखो 'पोद' (रू.भे.)

पोधो—देखो 'पोदो' (रू.भे.)

पोन—देखो 'पवन' (रू.भे.)
उ०—१. देवी पोन रैं रूप तूं गरुड पाडे। देवी गरुड रैं रूप पत्रभुज चाडे।—देवि
उ०—२. दसदुवार को पींजरो, तांमें पंछी पोन। रहण अचूंभो है 'जसा', जांण अचूंभो कोण।—महाराजा जसवतसिंह जोधपुर

पो'र—१. देखो 'पोर' (रू.भे.)
२. देखो 'प्रहर' (रू.भे.)
उ०—१. रात पो'र डोढ़ पो'र वीतगी व्हेला। चंदरमा खासो ऊंचो चढ़ग्यो हो।—रातवासो
उ०—२. ढळती रात रा ठाहै पो'र अपां छांनै सी कुलवै-कुलवै घरनै श्राय जावांला।—फुलवाड़ी

पोर-अव्य० [सं० परुत] गत वर्ष, पिछला वर्ष, वीता वर्ष।
उ०—यूं हिज करतां जासी ऊमर, परम न काल परार न पोर। आपां वात करां अवरां री, आपां री करसी कोई और।
—ओपो आढ़ो
रू०भे०—पो'र।

पोरख—देखो 'पोरस' (रू.भे.)
उ०—जोधार है तिकां नैं तो सुणतां ई पोरख चढ़ै तिण सूं युद्ध में झूंक नैं प्रांण देवै है।—वी. स. टी.

पोरणमासी—देखो 'पूरणमासी' (रू.भे.)

पोरव-वि० [सं०] (स्त्री० पोरवी) १. पुरु संबंधी पुरुका। २. पुरु से आया हुआ।
सं०पु० [सं० पोरवः] १. पुरु के वंशज, पुरु की संतान, पुरु वंशी।
२. उत्तरी भारत के एक प्रान्त विशेष का नाम।
३. उक्त प्रान्त के शासक अथवा अधिवासी।

पोरवी-सं० स्त्री० [सं०] १. संगीत में एक प्रकार की मूर्च्छना।
२. युधिष्ठिर की धर्मपत्नी का नाम।
३. वासुदेव की अर्द्धांगिनी का नाम।

पोरस-वि० [सं० पौरुषेय] मनुष्य का, पुरुष का।
सं०पु० [सं० पौरुषम्] १. मानवी कर्म, मनुष्य का कर्म।
२. वीरता, बहादुरी, विक्रम, शौर्य। उ०—१. हे हेली, पती रा प्राक्रम री इचरज जेडी वात है। थनैं कांही कहूं, हूं तो ओ पोरस देख बळिहारी जाऊं हूं। घर में तो कांम करता देखूं दोय हाथ है, पण रिण में सत्रुआं ऊपरे वहता तरवार सहत तो दीसै है, पूरा एक हजार है।—वी. स. टी.
उ०—२. इम कहै पोरस ऊफणै, विमरीर भळहळ दळ वणै।
—सू. प्र.
३. शक्ति, वल। उ०—सिघ दाखियो भळाहळ सूरत। पोरस अपत तूझ भर-पूरत।—सू. प्र.
४. जोश। उ०—आ अखिआत कीध 'आसावत' रोदां सूं तेवड़ै रिण। वडपण वखत मेर वध वधियो। पोरस मच्छर जवांन पण।
—दुरगादास राठौड़ रो गीत
५. अहंकार, अभिमान। (अ. मा.)
६. उद्योग, परिश्रम।
रू० भे०—पउरिस, पउरिस्सि, पोरख, पोरस, पोरसि, पोरस्स, पोरिस, पोरस्स, पौरिस, पोरिसि, पोरुख।

पोरसवांन-वि० [सं० पौरुष+वत्] शक्तिशाली, बलवांन, समर्थ।
रू० भे०—पोरखवांन।

पोरसी-वि० [?] १. पुरुषार्थी, सामर्थ्यशाली। उ०—मीरखांन चडो रण मंडी, खळ पकडो मारो बळ खंडो। बोल पठायो खांन तहव्वर, उठे पोरसी पूत अकव्वर।—रा. रू.
२. देखो 'पोरसो' (रू. भे.)

पोरसो-सं०पु० [सं० पुरुष] पुतला। उ०—उर उच्छव 'अजमाल', पेख प्रांमे छत्रपत्ती। देस वंस ऊधरो, नेस हूंता सुरपत्ती। कळपव्रक्ष संतांन, पारिजाति हरि चंदण। तर मंदार दुवार, श्रांण ऊगा सुख अप्पण। चिंतामणि पारस पोरसो, सुधा सरोवर कांमगा। संपजै तांम सुत संपनै, ग्रह सुर धांम विरांमगा।—रा. रू.
रू० भे०—पुरिसो पोरसो।

पोरस्स—देखो 'पोरस' (रू. भे.)
उ०—जुटे हिक वथां जोध जुआंण। पोरस्स हुवै हिक वाहे पांण।
—गु. रू. वं.

पोरांण-वि० [सं० पौराणिक] १. पुराण सम्बंधी, पुराणका।
२. प्राचीन, पुराना।
३. देखो 'पुरांण' (रू. भे.)
उ०—वेदां भेदां वेखो पेखो दह आठ हेर पोरांणं। राघो नांम सरीखं, नह को नर देव नागिंद्रं।—र. ज. प्र.

पोरांणिक-वि० [सं० पौराणिक] १. पुराण पाठी। २. पुराण सम्बंधी, पुराण का। ३. पुराण वेत्ता। ४. पूर्व कालीन।

पोराणो, पोराबो–क्रि० स० [सं० प्रहर+रा० प्र० णो] प्रतीक्षा करना, इंतजार करना।

पोराणहार, हारो (हारी), पोराणियो––वि०।

पोरायोड़ो—भू० का० कृ०।

पोराईजणो, पोराईजबो— भाव वा०।

पोरावणो, पोराववो–रू० भे०।

पो'रायत, पो'रायती–सं०पु० [सं० प्रहर+रा० प्र० आयत, आयती] पहरा देने वाला, चौकीदार।

उ०—१. कांमण, घोड़ो, फील नुत, पो'रायत, परवार। जन तुरछी ग्रह जाणगी, मोह कै जड़ै किवाड़।—तुरछी

उ०—२. पोळ पोळ मार्थ पो'रायती मझीजंत ऊभा।—फुलवाड़ी

रू०भे०—पहराइत, पहरायत, पहिराइत, पहिरायत, पहिरायति, पुहरायत, पोरायत, पोहराइत, पोहरायत, पोहर, पोहरायत, पोहरावत।

पोरायोड़ो–भू० का० कृ०—प्रतीक्षा किया हुआ, इन्तजार किया हुआ। (स्त्री० पोरायोड़ी)

पोरावणो, पोराववो—देखो 'पोराणो, पोराबो' (रू. भे.)

पोरावणहार, हारो (हारी), पोरावणियो—वि०।

पोराविओड़ो, पोराबियोड़ो, पोराव्योड़ो—भू०का०कृ०।

पोरावीजणो, पोरावीजबो—भाव वा०।

पोरिस—देखो 'पोरस' (रू.भे.)

उ०—पोहतो सुरग ऐम करि पोरिस। जगत विख्यात अहदवळ रो जस।—सू.प्र.

पोरिसि—देखो 'पोरस' (रू.भे.) (ह.नां.मा.)

पोरी—देखो 'पोळ' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—कनक कोट पोरी कनक, कनक हाट बाजार। जो जन थड़ी हजार में, सब कंचन विसतार। —गजउद्धार

पोरुस—देखो 'पोरस' (रू.भे.)

उ०—पोसाक सिलै ऐसाक पूर-गिरकंघ छाक, पोरुस गरूर।

—वि.सं.

पो'रेक–क्रि०वि० [सं०प्रहर+एक] एक प्रहर के लगभग।

रू०भे०—पोहरै'क।

पो'रो—देखो 'पहरो' (रू.भे.)

उ०—लीली खेती लहरावै है, दे पांणतियो पो'रो साख समेत रे।

—चेतमांनखा

पोळ–सं०स्त्री० [सं० प्रतोली, प्रा० पओली] १. बड़ा दरवाजा, गेट, तोरण-द्वार।

उ०—रहियां राव न पावही, पड़ो बीज उण पोळ। ऊ फळसो रहजो अडग, दूधां दहियां छोळ।—बां. दा.

२. सामने का वह मकान जिसमें से होकर अंदर प्रवेश किया जाता है, ड्योढ़ी।

यौ० —पोळपात, पोळप्रवाह, पोळव्रत्ति।

३. निशान लगाने निमित्त बन्दूक की नाळ पर लगाया हुआ वह उपकरण जिसके अन्दर से देखकर निशाना लगाया जाता है।

४. सारंगी के उपर के हिस्से में वह स्थान जो (Arch) सा मालूम पड़ता है।

रू० भे०—पउळ, पउळि, पिरोळ, पिरौळ पोळ, पोळि, प्रोळ, प्रोळि प्रोळी, प्रौळ, प्रौळी।

अल्पा०—पोळड़ी, पोळी, पौरी, पौळि, पौळी, प्रोळि, प्रोळी, प्रो'ळी।

पोल--सं०पु०—१. देखो 'पोल' (रू.भे.) (अ. मा.)

पोळच—देखो 'पोळव' (रू.भे.)

पोळपात, पोलपात्र—सं०पु० [सं० प्रतोली पात्र] राजपूत युग में चारण जाति का वह व्यक्ति जो युद्ध-काल में शत्रु द्वारा घिर जाने पर, मरने का निश्चय कर युद्ध में कूदने वालों में सबसे आगे रहकर किले का मुख्य द्वार खोलता था।

वि० वि०—राजाओं के राज्य-काल में जब किसी राजा का किला शत्रु द्वारा घेर लिया जाता था तो किले के अन्दर सभी राजपूत मरने का निश्चय कर सामूहिक रूप से अफीम लेकर शत्रु से लोहा लेने के लिए उतारू हो जाते थे। ऐसे समय में सब से पहला व्यक्ति पौळपात वह वंशानुगत चारण होता जो सब से आगे जाकर किले का मुख्य द्वार खोलकर शत्रु से मुकाबला करके वीर-गति को प्राप्त होता था। चारणों की इस निर्धारित अतुल्य सेवा का मूल्यांकन उस समय होता जब कि राज-घराने में विवाह के समय दूल्हा बिना पौळपात की अनुमति के तोरण बांदने नहीं जा सकता था और इस स्वीकृति के साथ 'पौळपात' को निश्चित राशि भेंट-स्वरूप देनी पड़ती थी।

रू०भे०—पोळिपात।

पोळवारहठ–सं० पु० [सं० प्रतोली+द्वार+हठ] पोळ (तोरणद्वार) पर नेग लेने वाला कवि।

वि० वि०—देखो 'पोळपात'।

रू०भे०—प्रोळवारहठ।

पोळसत, पोलसित, पोलस्त, पोलस्त्य—सं०पु० [सं० पौलस्त्यः](स्त्री०पौलस्त्यी) १. पुलस्त्य का पुत्र या वंशज' कुबेर (नां.मा.,ह.नां.मा.)

२. रावण। (नां. मा.)

पोलस्त्यी–सं०स्त्री० [सं०] रावण की बहन, शूर्पणखा।

रू०भे०–पोलहस्ती।

पोळहत्यो–सं०पु० [सं० प्रतोली+हस्त] १ वह बड़ा भोज जिसमें आने वाले को भोजन करने की कोई मनाही नहीं की जाती है। २. पति के साथ सती होने वाली स्त्री के हाथ का नगर के बड़े द्वार पर बना हस्तचिन्ह।

पौळहस्ती—देखो 'पौलस्त्यी' (रू.भे.)

पौळाणौ, पौळावौ–क्रि०स० [देशज] प्रारंभ करना, शुरू करना ।
पौळाणहार, हारौ (हारी), पौळाणियौ—वि० ।
पौळायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
पौळाईजणौ, पौळाईजवौ—कर्म वा० ।
पौळावणौ, पौळाववौ—रू० भे० ।

पौलाद—देखो 'फौलाद' (रू.भे)

पौळायोड़ौ–भू०का०कृ०—प्रारंभ किया हुआ, शुरू किया हुआ ।
(स्त्री० पौळायोड़ी)

पौळावणौ, पौळाववौ—देखो 'पौळाणौ, पौळावौ' (रू.भे.)
पौळावणहार, हारौ (हारी), पौळावणियौ—वि० ।
पौळाविओड़ौ, पौळावियोड़ौ, पौळाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
पौळावीजणौ, पौळावीजवौ—कर्म वा० ।

पौळावियोड़ौ—देखो 'पौळायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० पौळावियोड़ी)

पौळि—देखो 'पौळ' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—पिड़ चूर दिली घर साहजहांपुर, चीत लगे हर प्रात चड़े ।
इळ मूळ जड़ां नारनौळ उखेड़े, पौळि दिली दुख रौळ पड़े ।
—रा रू.

पौळिड़ौ, पौळियौ–सं० पु० [सं० प्रतोली + रा० प्र० ड़ौ, इयौ] द्वारपाल, ड्योढ़ीदार ।
उ०—पोळिड़ा पोळ उघाड़, आज नै अवेळा आया पांवणा ।
—लो. गी.
रू० भे०—पोळियौ, पौल्यौ, प्रोळियौ प्रोळियौ ।
अल्पा०—पौलिड़ौ, पौळीड़ौ ।

पौलिस–सं० पु० [अं० पॉलिश] १. चिकनाई, चमक, ओप ।
२. चिकनाई और चमक लाने का रोगन ।

पौळी—देखो 'पौळ' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—पोळ खुलण रौ दीखै नांही जोग ए जी वौ भंवरजी, वो कोई पौल्यां में सूत्यौ पूत कलाळ ए जी म्हारा राज । —लो. गी.

पौळीड़ौ—देखो 'पौळियौ' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—पोळीड़ा भाई पोळ उघाड़, ए जी कोई बाहर तो ऊभी समरथ पांवणां जी म्हारा राज । —लो. गी.

पौलोमी–सं०स्त्री० [सं०] १. इन्द्राणी । २. भृगु ऋषि की पत्नी ।

पौल्यौ—देखो 'पौळियौ' (रू. भे.)
उ०—रावळी पोळं आवीया । पौल्या वेगी वधावउं जाह ।—वी.दे.

पौस—देखो 'पोस' (रू. भे.)

पौसत—देखो 'पोस्त' (रू.भे.)
उ०—अमल सलीतौ घरि रही । मीना पौसत छाडया छांणि ।
—वी. दे.

पौसध–सं० पु० [सं० पौसध] धर्म वृद्धि के दिन के व्रत । (जैन)
वि० वि०—ये व्रत अष्टमी, चतुर्दशी, अमावस्या और पूर्णिमा को किये जाते हैं क्योंकि ये पर्व-दिन धर्म वृद्धि के कारण माने जाते हैं । इन पर्वों में उपवास करना पौषधोपवास व्रत कहलाता है । यह व्रत चार प्रकार का है । (१) आहार पौषध (२) शरीर पौषध (३) ब्रह्मचर्य पौषध (४) अव्यापार पौषध ।
रू० भे०—पोसद, पोसध, पोसह, पोसहउ, पोहोसौ पौसह ।
अल्पा०—पोसारौ, पोसौ ।

पौसधसाला–सं० स्त्री० [सं० पौषधशाला] पौसध व्रत करने का स्थान ।
उ०—मन रौ जोस करी ने वेग सूं रे, आयौ पौसधसाला रै मांय रे ।—जयवांणी
रू० भे०—पोसहसाला ।
अल्पा०—पौसधसाली ।

पौसधसालौ—देखो 'पौसधसाला' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—माता रै पगे लागनै हो, आया पौसधसालौ, हरिणगमेसी देवता हो, मन चिंतवे तत कालौ ।—जयवांणी

पौसह—देखो 'पौसध' (रू. भे.)

पौसाक, पौसाख—देखो 'पोसाक' (रू. भे.)
उ०—१. सझ पौसाक सुरंग दळ साजा । राज पटण आये चंदराजा ।—सू. प्र.
उ०—२. हे कंथा औ तौ थांरौ घड़ायोड़ौ गहणौ अर थांरी करायोड़ी पौसाख अबै थें धारण करौ, म्हारौ तौ सुहाग गयौ ।
—वी. स. टी.

पौसाळ—देखो 'पोसाळ' (रू. भे.)

पौसावणौ, पौसाववौ—देखो 'पोसाणौ, पोसावौ' (रू. भे.)
उ०—औ गोरियावार दीखतौ सांप्रत काळ है, इण सूं लड़ियां नीं पौसावै । इण रा विस नै तौ अकल सूं दाटणौ पड़सी । डील में करार नीं व्है तौ वगत माथै अकल सूं कांम सारणौ । —फुलवाड़ी
पौसावणहार, हारौ (हारी), पौसावणियौ—वि० ।
पौसाविओड़ौ, पौसावियोड़ौ, पौसाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
पौसावीजणौ, पौसावीजवौ—कर्म वा० ।

पौसावियोड़ौ—देखो 'पोसायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० पौसावियोड़ी)

पौस्टिक–वि० [सं० पौष्टिक] बल व वीर्य वर्द्धक, पुष्टि कारक ।

पौह—देखो 'पह' (रू.भे.)
उ०—१. सीता चो सांम सिघाळौ, पौह सेवग रां प्रतपाळौ । जी बिरदाळौ । —र.ज.प्र.
उ०—२. पौह घणा मागला गई मुहराइ पड़ि । चावगुर 'जसौ' जिणवार वर सोह चड़ि । —हा.झा.
२. देखो 'पूस' (रू.भे.)

उ०—पोह री ठोड़ चैत रो महीनो आयग्यो। —फुलवाड़ी

पोहकर—देखो 'पुस्कर' (रू.भे.) (अ.मा.,ह.नां.मा.)

उ०—प्रया पोहकर नेम ले, 'मधकर' हर कुळ मोड़। देवळ लीवाराह रै, मुगत सरोवर ठोड़। —रा.रू.

पोहकरमूळ—देखो 'पुस्करमूळ' (रू.भे.)

पोहकरण—देखो 'पुस्कर' (रू.भे.) (अ.मा.)

पोहकरी—देखो 'पुस्करी' (रू.भे.) (अ.मा.,ह.नां.मा.)

पोहच—१. देखो 'पहुंच' (रू.भे.)

२. देखो 'पोच' (रू.भे.)

पोहचणौ, पोहचबौ—देखो 'पहुंचणौ, पहुंचबौ' (रू.भे.)

उ०—पोहचि तठै सिवका पोढ़ांणी। इम पण-पूर भरथ मन्न आंणी। —सू.प्र.

पोहचणहार, हारौ (हारी), पोहचणियौ—वि०।

पोहचाड़णौ, पोहचाड़बौ, पोहचाणौ, पोहचाबौ, पोहचावणौ, पोहचावबौ—प्रे०रू०।

पोहचिओड़ौ, पोहचियोड़ौ, पोहच्योड़ौ—भू०का०कृ०।

पोहचीजणौ, पोहचीजबौ—भाव वा०।

पोहचाड़णौ, पोहचाड़बौ—देखो 'पहुंचाणौ, पहुंचाबौ' (रू.भे.)

पोहचाड़णहार, हारौ (हारी), पोहचाड़णियौ—वि०।

पोहचाड़िओड़ौ, पोहचाड़ियोड़ौ, पोहचाड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।

पोहचाड़ीजणौ, पोहचाड़ीजबौ—कर्म वा०।

पोहचाड़ियोड़ौ—देखो 'पहुंचायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० पोहचाड़ियोड़ी)

पोहचाणौ, पोहचाबौ—देखो 'पहुंचाणौ, पहुंचाबौ' (रू.भे.)

उ०—पंथी हेक संदेसड़उ, ढोलउ लग पोहचाई। विरह महा दव जागियउ, आगि न बुझावउ आइ। —ढो.मा.

पोहचाणहार, हारौ (हारी), पोहचाणियौ—वि०।

पोहचायोड़ौ—भू०का०कृ०।

पोहचाईजणौ, पोहचाईजबौ—कर्म वा०।

पोहचायोड़ौ—देखो 'पहुंचायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० पोहचायोड़ी)

पोहचाळ—देखो 'पोचाळौ' (मह., रू. भे.)

उ०—वैहळा-वैहळा मुख वांण वळै। पोहचाळ उडावत ढेल पुळै। —पा.प्र

पोहचावणौ, पोहचावबौ—देखो 'पहुंचाणौ, पहुंचाबौ' (रू.भे.)

पोहचावणहार हारौ (हारी), पोहचावणियौ—वि०।

पोहचाविओड़ौ, पोहचावियोड़ौ, पोहचाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

पोहचावीजणौ, पोहचावीजबौ—कर्म वा०।

पोहचावियोड़ौ—देखो 'पहुंचायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० पोहचावियोड़ी)

पोहचियोड़ौ—देखो 'पहुंचियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० पोहचियोड़ी)

पोहत—देखो 'पहुंच' (रू. भे.)

पोहतणौ, पोहतबौ—देखो 'पहुंचणौ, पहुंचबौ' (रू. भे.)

उ०—१. पांडू-नकोदर कंवर 'वीकैजी' रै जाय पावां लागा अर कंवरजी नूं कयो, 'थारा जाट मार नरसिंघ जाटू सावत जाय है' तद कंवर 'वीकोजी' वा कांधलजी साथ सारै सूं चढ़िया, सूं सीध-मुख सूं कोस दो पर ढीका है तठै जाय पोहता।—द. दा.

उ०—२. ऊनटिया सिर आगरै, 'अबदुला' 'मजमाल'। आगै पोहतै आगलो, वारण खांन दुकाल।—रा. रू.

२. देखो 'पोयणौ, पोयबौ' (रू. भे.)

पोहतणहार, हारौ (हारी), पोहतणियौ—वि०।

पोहताड़णौ, पोहताड़बौ, पोहताणौ, पोहताबौ, पोहतावणौ, पोहतावबौ—प्रे० रू०।

पोहतिओड़ौ, पोहतियोड़ौ, पोहत्योड़ौ—भू० का० कृ०।

पोहतीजणौ पोहतीजबौ—भाव वा०।

पोहताड़णौ, पोहताड़बौ—देखो 'पहुंचाणौ, पहुंचाबौ' (रू. भे.)

पोहताड़णहार, हारौ (हारी), पोहताड़णियौ—वि०।

पोहताड़िओड़ौ, पोहताड़ियोड़ौ, पोहताड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।

पोहताड़ीजणौ, पोहताड़ीजबौ—कर्म वा०।

पोहताड़ियोड़ौ—देखो 'पहुंचायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० पोहताड़ियोड़ी)

पोहताणौ, पोहताबौ—देखो 'पहुंचाणौ, पहुंचाबौ' (रू. भे.)

पोहताणहार, हारौ (हारी), पोहताणियौ—वि०।

पोहतायोड़ौ—भू० का० कृ०।

पोहताईजणौ, पोहताईजबौ—कर्म वा०।

पोहतायोड़ौ—देखो 'पहुंचायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० पोहतायोड़ी)

पोहतावणौ, पोहतावबौ—देखो 'पहुंचाणौ, पहुंचाबौ' (रू. भे.)

पोहतावणहार, हारौ, (हारी) पोहतावणियौ—वि०।

पोहताविओड़ौ, पोहतावियोड़ौ, पोहताव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

पोहतावीजणौ, पोहतावीजबौ—कर्म वा०।

पोहतावियोड़ौ—देखो 'पहुंचायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० पोहतावियोड़ी)

पोहप—देखो 'पुस्प' (रू. भे.)

उ०—सुकर सेलां धजर पाड़तो घणां सत्र, अभंग चाचर भंवर जाय अड़ियो। 'अमा' रौ मधुप जिम वीर सारां अगर, पोहप धारां बगर तूट पड़ियो।—चांदसिंघ रौ गीत

पोहपधनु—देखो 'पुस्पधनु' (रू. भे.)

पोहमि, पोहमी—देखो 'प्रथवी' (रू. भे.)

उ०—१. हुतां राग होकरा, अहूं आए छत्रपत्ती। तांम गजां ऊतरे, पोहमि हित चढ़े प्रभत्ती।—सू. प्र.

उ०—२. वेडा ऊजड़वाट वहे, गिर भंगर गाहघा। पोहमी हलचल होम पुड़, सेस भार नी सहघा। —वी. मां.

पोहमीवंदण-सं०पु० [सं० पृथिवी+वंदन] बांस। (अ. मा.)

पोहर-सं०पु० [देशज] १. जल, पानी। (अ. मा.)

सं०स्त्री०—[सं० प्रहर] २. समय। (अ.मा.)

३. देखो 'प्रहर' (रू.भे.)

उ०—रिध-सिध सुख आपै सकळ, आठूं पोहर उचारियै। पल मांय धाम पूरै परम, सच्चे दिल संभारियै। —ज.खि.

पोहरायत—देखो 'पो'रायत' (रू.भे.)

उ०—पोहरै पोहरायत खड़ा, फिरै गिसत चहुं फेर। 'सारंग' सुत पोढै सदा, अत मोटे आसेर। —पा. प्र.

पोहरेकरण-सं०पु०यो० [सं० कर्ण-प्रहर] राजाकर्ण का दान देने का समय, प्रात: काल, उपाकाल।

उ०—कवियण पोहरैकरण रै, नित ले ज्यां रो नांम। जिके जसोधन पुरस घन 'वांका' करण विरांम।—वां.दा.

पोहरौ—देखो 'पहरौ' (रू. भे.)

उ०—पोहरै पोहरायत खड़ा, फिरै गिसत चहुं फेर। 'सारंग' सुत पोढै सदा, अत मोटे आसेर। —पा. प्र.

पोहव—देखो 'पह' (रू.भे.)

उ०—हेरू दाखे हेत सूं, मन सुध वात मिळाय। पिता वैर सामै पोहव, करौ जेज मत काय। —पा. प्र.

पोहुंमी—देखो 'प्रथवी' (रू. भे.)

पोहचाळौ—देखो 'पोचाळौ' (रू.भे.)

उ०—करण घावळी वा'र 'पाल' घांघल पोहचाळौ। सूरवीर सापुरस, गांगावंसी भालाळौ। —पा. प्र.

पोहौ—देखो 'पह' (रू. भे.)

उ०—दमै दिस मांही, पोहौ जोड़ न हुवै दुवै। हाक जिण आंण सुणी, हिरण खोड़ा हुवै। —सू. प्र.

प्यंड—देखो 'पिंड' (रू.भे.)

उ०—जो मन वसी मोह फंद जूटां। छूटसि तिकां प्रांण प्यंड छूटां। —सू. प्र.

प्यलोणौ, प्यलोबौ-क्रि० स० [?] समेटना।

उ०—सत्र साभत प्यलाणौ सारै तळ छळि प्रण लाल अतांग। पांव प्यलोय पसि सु गि बासियो, नागणि नै डरि कहै हंस नाग।
—चतुरा रांमावत राठौड़ री गीत

प्याज—सं०पु० [फा० प्याज] १. भारत वर्ष में प्राय: सर्वत्र पाया जाने वाला, एक प्रकार का गुच्छों के रूप में श्वेत पुष्पों तथा लंबे पत्तों वाला पौधा विशेष (शाक)। २. उक्त पौधे का कंद जो आकार में गोल तथा रंग में गुलाबी या सफेद होता है। इसका स्वाद बहुत चरपरा तथा तीक्ष्ण होता है और गंध बहुत उग्र होती है। यह पाचक, सारक, बल व वीर्य वर्द्धक तथा वातघ्न होता है।

पर्या०—कांदी, ग्रंजन, दीरघपत्र, पलांडू।

मुहा०—प्याज रौ छिलको उतार नै राख देणौ—बुरी दशा कर देना।

रू०भे०—पियाज।

प्याड-सं०पु०—राजपूत सरदारों के कंठ में धारण करने का एक स्वर्ण-आभूषण।

प्याद—देखो 'पैदल' (अल्पा., रू.भे.)

उ०—बुरद भई न भई चोमोरै, प्याद मात भई प्रांणी। जुगत विन सतरंज जीत न जांणी। —ऊ.का.

यौ०—प्याद-मात।

प्यादल—देखो 'पैदल' (रू.भे.)

उ०—घोड़ा १०० सूं, प्यादल माणस ५०० सूं, स्री 'बीको' जी गांव देसणोक आया।—द. दा.

प्यादौ—देखो 'पैदल' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—सू दखण्यांरी फौज री दोय इणी है। प्यादां री इणी रै विचै तो सावंतराय घोड़ै असवार हुवौ होकर करै है।—द. दा.

प्यारंभ—देखो 'प्रारंभ' (रू. भे.)

उ०—जांणपणउ कळा तियइ तन जोवण, विध विन्हे ही लागा वाद। मथ काढी जांणी महामह प्यारंभ, मांडी तिण रूप री म्रजाद।—महादेव पारवती री वेलि

प्यार-सं० पु० [सं० प्रीति ?] १. पुरुष की स्त्री के प्रति व स्त्री की पुरुष के प्रति होने वाली ऐसी आसक्ति पूर्ण भावना जो पारस्परिक आकर्षण के कारण होती है, प्रेम, मुहब्बत।

२. प्रेम-पूरक किया जाने वाला चुम्बन।

३. किसी के प्रति होने वाली आसक्तिपूर्ण या श्रद्धापूर्ण भावना।

उ०—चिर सार यही सब प्यार चहौ। उपकार विनां नहिं पार अहौ।—ऊ का.

रू० भे०—पिआर, पियार, पीयार।

प्यारी—वि०—अच्छी लगने वाली।

सं० स्त्री०—१. प्रिया, प्रिय।

उ०—१. सहज ललाई सांपरत, प्रीतम प्यारी पाय। निरखे भरमै नायणी, जावक दे मिळि जाय।—वां. दा.

उ०—२. रितुगांमी ह्वै सील राखियो, पुत्रोत्पति फळ पाई। पति पतनी दम्पति विये प्यारी, नवला नेह निभाई।—ऊ. का.

२. पत्नी।

उ०—चंदवदन गुणगांण चतुरनित, परहर अपणी प्यारी। वेस्या संग मोल बिन वाचम, विकणो वडो विकारी।—ऊ. का.

प्यारौ–वि० पु० [सं० प्रिय ?] (स्त्री० प्यारी) अच्छा लगने वाला।

उदा०—प्यारौ बचनौ।

सं० पु०—१. प्रिय, प्यारा।

उ०—१. प्यारा थांनूं पलक ही, थांढूं नहीं विजोग। उर बसिया सो प्रावसी, रसिया थारो रोग। —बां दा.

उ०—२. आंम्या उगियां गोहु, निपट नहीं प्यारौ हुवौ। प्रीतम सो प्यारोह, जोती फिरूं रे जेठवा! —जेठवा

२. पति, स्वामी।

रू० भे०—पिआरौ, पियारौ, पीयारौ।

अल्पा०—पियारड़ौ, पीयारडू, पीयारड़ौ, पीयारडुं, पीयारडौ।

प्याली—सं० स्त्री०—देखो 'प्यालौ' (अल्पा., रू भे.)

प्यालौ–सं० पु० [फा० पियाल] १. चीनी, धातु, कांच आदि का बना छोटा कटोरा जो ऊपर से चौड़ा व पैंदे (नीचे) से संकड़ा होता है।

उ०—मू प्यालौ मयणी 'मानदे' नुं दियो।

—मयणी मारणी री वात

मुहा०—१. प्यालौ देणौ—मद्य पिलाना। २. प्यालौ पीणौ—मद्य पान करना, रस पान करना। ३. प्यालौ भरणौ—हद होजाना, सीमा तक आना, मृत्यु के निकट आना।

२. तोप या बन्दूक का स्थान जिस पर बारूद रख कर पलीता लगाया जाता है।

उ०—१. कारतूस घन छुट्ट कर गुम्मा नग थग्गै। एक पलीती कालिका, दहूं ओरनि दग्गै। रिजकं प्याला मोरही झाळा जगमग्गै। यागो परळै काळरी ज्वाळानळ जग्गै। —ला.रा.

उ०—२. कांबी चोळ भाळ रंगी तोपां दीपमाळका-सी। प्याला सै कराळ वळता सी ओग पीध। —हुकमीचंद खिड़ियो

रू०भे०—पिआलौ, पियालौ, पीयालौ।

अल्पा०—पियाली, पीयाली, प्याली।

मह०—पियाल, पीयाल।

प्यावड़ी–सं० स्त्री० [?] पीली मिट्टी जो शरीर रंगने के काम में ली जाती है। (शेखावाटी)

प्यास, प्यासा–सं० स्त्री० [सं० पिपासा] १. जल पीने की इच्छा, तृषा, पिपासा।

उ०—क्षुधा प्यासा भाषा दुसहकर आसा दुख सगें। अघरमी धार हैं, सरब मुखकारी सुख अगें। —ऊ.का.

किसी वस्तु की प्राप्ति की प्रबल इच्छा, कामना।

पर्या०—त्रसा, अटपांन, पिपासा।

क्रि०प्र०—बुझणी, बुझाणी, मरणी, मारणी, मिटणी, मिटाणी, लगणी, लागणी।

रू०भे०—पिआस, पियास।

प्यासौ–वि० पु० [सं० पिपासु] (स्त्री० प्यासी) १. जल पीने की इच्छा रखने वाला।

२. किसी काम की कामना रखने वाला।

पर्या०—त्रसित, पिपासित।

रू०भे०—पिआसौ, पियासौ।

प्यूतारणौ, प्यूतारबौ—देखो 'पूंतारणौ, पूंतारबौ' (रू भे)

उ० –प्यूतारै मारै गडां पांण। इणविध बैसारै नीठ आंण।

—सू.प्र.

प्यूतारणहार, हारौ (हारी), प्यूतारणियौ—वि०।

प्यूतारिग्रोड़ौ, प्यूतारियोड़ौ, प्यूतारयोड़ौ—भू०का०कृ०।

प्यूतारीजणौ, प्यूतारीजबौ—कर्म वा०।

प्यूतारियोड़ौ—देखो 'पूंतरियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० प्यूतारियोड़ी)

प्रइज—देखो 'प्रजा' (रू भे)

उ०—पालखिए पइठउ प्रइज पाळि। 'वीरम्म' तणउ थाटां विचाळि।—रा.ज.सी.

प्रईक, प्रईख–सं०पु० [सं०प्रेष्य] नौकर चाकर। (अ. मा., ह. नां. मा.)

प्रउढ़ा, प्रऊढ़ा—देखो 'प्रौढ़ा' (रू.भे.)

उ०—१. किसी एक बाळी भोळी अबळा प्रउढ़ा, सोडस वरस की। रंगीणी, रसरंगीणी। आपणा-आपणा देवर जेठ, भरतार का पुरसारथ देखती फिरइ छुट।—अ. वचनिका

उ०—२. पोस कै विसै रात्रि छै सु आकास कौ निठि छोडे छै। जैसे प्रउढ़ा नाइका नाइक कौ। —वेलि टी.

प्रकंप–सं०पु० [सं०] थरथराहट, कंपकंपी।

प्रकंपण–सं०पु० [सं० प्रकंपन] १. वायु, हवा। (अ.मा.)

२. थर थराहट, कंपकंपी।

रू०भे०—प्रकंवण, प्रकंपन।

प्रकंपमांन–वि० [सं० प्रकंपमान] जिस में कंपन होरहा हो, हिलता हुआ।

प्रकंवण—देखो 'प्रकंपण' (रू.भे.) (अ. मा.)

प्रक–सं०पु० [सं० प्र+क=प्रकृष्ट कायति इति=प्रक] मयूर, मोर।

(अ. मा., नां.मा.)

प्रकट–वि० [सं०] १. प्रत्यक्ष, स्पष्ट। २. प्रसिद्ध, मशहूर।

उ०—दूजौ जिण आह्वय दांमीदर प्रकट थियौ दिस दिस वसुधा पर।

—वं. भा.

३. खुला बेपर्दा। ४. दातार। (अ. मा.)

५. उत्पन्न।

उ० प्रकट हुका चीता प्रचुर चित्रक रा चहुवांण। जिण कुळ में गजमल जिसा, थिया अचळ आयांण।—वं. भा.

अव्य०—१.साफतौर मे ।

रू०भे०—परकट, परगट, परगट्ट, परगडउ, परघट, प्रगट, प्रगट्ट, प्रघट, प्रघट्ट ।

प्रकटणौ, प्रकटबौ—क्रि०अ० [सं० प्रकटनम्] १. प्रकट या जाहिर होना । २. उत्पन्न होना, जन्मना । उ०—सब भक्तन भाग्य ही प्रकटे, नाम धरियो रणछोड । —मीरां

प्रकटणहार, हारौ (हारी), प्रकटणियौ—वि० ।

प्रकटाड़णौ, प्रकटाड़बौ, प्रकटाणौ, प्रकटाबौ, प्रकटावणौ, प्रकटावबौ —प्रे० रू०

प्रकटिओड़ौ, प्रकटियोड़ौ, प्रकटचोड़ौ—भू० का० कृ० ।

प्रकटीजणौ, प्रकटीजबौ—भाव वा० ।

परकटणौ, परकटबौ, परगड़णौ, परगड़बौ, परगटणौ, परगटबौ, परगडणौ, परगडबौ, परघटणौ, परघटबौ, प्रगटणौ, प्रगटबौ, प्रगट्टणौ, प्रगट्टबौ, प्रगडणौ, प्रगडबौ, प्रघटणौ, प्रघटबौ, प्रघट्टणौ, प्रघट्टबौ—रू० भे० ।

प्रकटाड़णौ, प्रकटाड़बौ—देखो 'प्रकटाणौ, प्रकटाबौ' (रू. भे.)

प्रकटाड़णहार, हारौ (हारी), प्रकटाड़णियौ—वि० ।

प्रकटाड़िओड़ौ, प्रकटाड़ियोड़ौ, प्रकटाड़चोड़ौ—भू० का० कृ० ।

प्रकटाड़ीजणौ, प्रकटाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

प्रकटाड़ियोड़ौ—देखो 'प्रकटायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० प्रकटाड़ियोडी)

प्रकटाणौ, प्रकटाबौ—क्रि०स० [सं० प्रकटनम्] १. प्रकट या जाहिर करना या करवाना । २. उत्पन्न करना या करवाना ।

प्रकटाणहार, हारौ (हारी), प्रकटाणियौ—वि० ।

प्रकटायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

प्रकटाईजणौ, प्रकटाईजबौ—कर्म वा० ।

परकटाड़णौ, परकटाड़बौ, परकटाणौ, परकटाबौ, परकटावणौ, परकटावबौ, परगटाड़णौ, परगटाड़बौ, परगटाणौ, परगटाबौ, परगटावणौ, परगटावबौ, परघटाड़णौ, परघटाड़बौ, परघटाणौ, परघटाबौ, परघटावणौ, परघटावबौ, प्रकटाड़णौ, प्रकटाड़बौ, प्रकटावणौ, प्रकटावबौ, प्रगटाड़णौ, प्रगटाड़बौ, प्रगटाणौ, प्रगटाबौ, प्रगटावणौ, प्रगटावबौ, प्रघटाड़णौ, प्रघटाड़बौ, प्रघटाणौ प्रघटाबौ, प्रघटावणौ, प्रघटावबौ, प्रघट्टाड़णौ, प्रघट्टाड़बौ, प्रघट्टाणौ, प्रघट्टाबौ, प्रघट्टावणौ, प्रघट्टावबौ—रू० भे० ।

प्रकटायोड़ौ—भू० का० कृ०—१. प्रकट किया या कराया हुआ. २. उत्पन्न किया या कराया हुआ.
(स्त्री० प्रकटायोडी)

प्रकटावणौ, प्रकटावबौ—देखो 'प्रकटाणौ, प्रकटाबौ' (रू. भे.)

प्रकटावणहार, हारौ (हारी), प्रकटावणियौ—वि० ।

प्रकटाविओड़ौ, प्रकटावियोड़ौ, प्रकटाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

प्रकटावीजणौ, प्रकटावीजबौ—कर्म वा० ।

प्रकटावियोड़ौ—देखो 'प्रकटायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० प्रकटावियोड़ी)

प्रकटियोड़ौ—भू० का० कृ०—१. प्रकट हुआ हुवा या जाहिर हुआ हुवा. २. उत्पन्न हुवा हुआ, जन्मा हुआ.
(स्त्री० प्रकटियोडी)

प्रकत, प्रकति, प्रकत्त, प्रकत्ति, प्रकत्ती—देखो 'प्रकृति' (रू.भे.)

उ०—१. विलग्र विमोह विसव्य विग्गांन । रतीपतितात प्रकत्त राजांन ।—ह. र.

उ०—२. उपत्ति खपत्ति प्रकत्ति असंग, राजीवलोचन्न जांणै धुवरंग ।—ह. र.

उ०—३. पुरस पुरांण प्रकत्ती, पार न पावंत सेस गणपत्ती । करनी जयति सकत्ती, गिरा गौ अतीत तौ गत्ती ।—मे. म.

प्रकंपन—देखो 'प्रकपण' (रू.भे.) (ह नां.मा.)

प्रकर—सं० पु० [सं० प्रकर:] १. समूह, ढेर । (ह.नां.मा.)

उ०—अरु कुमार प्रथ्वीराज री तरह देखि प्रसंसा रौ प्रकर गहियौ । —वं.भा.

प्रकरण—सं० पु० [सं० प्रकरणम्] १. विषय, प्रसंग । २. किसी ग्रंथ के अन्तर्गत छोटे-छोटे भागों में से कोई एक भाग, अध्याय ।

३. आरंभिक वक्तव्य, मुखबंध ।

४. विषय विशेष को समझने या समझाने के लिये उस पर वाद विवाद करने की क्रिया, जिक्र करना ।

क्रि० प्र०—चलणौ, छेड़णौ ।

प्रकरस—सं० पु० [सं० प्रकर्ष] १. उत्कर्ष, उत्कर्षता । २. अधिकता, आधिक्य ।

उ०—जिकौ सुणतां ही अकबर रै जांणै बारूद रा गंज में दमंग झड़ै जिण रीति क्रोधानळ रौ प्रकरस छायौ । —वं.भा.

प्रकरसक—सं० पु० [सं० प्रकर्षक] उत्कर्ष करने वाला ।

प्रकरसण—सं० पु० [सं० प्रकर्षणम्] उत्कृष्टता, उत्कर्षता, श्रेष्ठता ।

उ०—सौ भी आततांई नूं उबारि बाप रौ बचावणहार बाढ़ियौ तौ भी अद्वितीय वार हुवा सुणि किता'क कविलोकां तिकण रा ही प्रहार रौ प्रकरसण भणियौ ।—वं. भा.

प्रकवाहण—सं० पु० [सं० प्रकवाहन] कार्तिकेय, षडानन । (अ.मा.)

प्रकांड—वि० [सं०] १. बहुत बड़ा, विशाल । २. बहुत अधिक, विस्तृत । ३. उत्तम, सर्वश्रेष्ठ ।

प्रकांम—स० स्त्री० [सं० प्राकाम्य] अष्ट सिद्धियों में से एक । (डिं. को.)

प्रकार—सं० पु० [सं० प्रकार:] १. ढंग, तौर, तरीका, प्रणाली ।

उ०—साहिब रहउ न राखिया, कोड़ि प्रकार किया-ह। का थां कांमिण मन वसी, का म्हां दूहविया-ह।—ढो. मा.

२. तरह, भांति। उ०—ग्रदतां केगी ग्रत्थ ज्यूं, कायर री किरमाळ। कोड़ प्रकारां कोस सूं, नह पावै निकाळ।—बां. दा.

३. भेद, किस्म।

४. देखो 'प्राकार' (रू. भे.)

रू० भे०—परकार, प्रकारू।

ग्रल्पा०—प्रकारी प्रकारौ।

प्रकारी—देखो 'प्रकार' (ग्रल्पा., रू. भे.)

उ०—सुण-सुण नैं डारी सारी सुण, पागल लाख प्रकारी। ऊमरदांन विचार विनां ग्रब, कछु ह न लागै कारी।—ऊ. का.

प्रकारू—सं० पु० [सं० प्रकारः] १. प्रताप, प्रभाव। उ०—दस द्रस्टांते दोहिलौ, स्रावक नौ कुल सारू रे। संगति वलि सदगुरू तणी, पांमी पुण्य प्रकारू रे।—ध. व. ग्रं.

२. देखो 'प्रकार' (रू. भे.)

प्रकारौ—देखो 'प्रकार' (ग्रल्पा., रू. भे.)

उ०—धरम हीयइं धरउ, धरम ना च्यार प्रकारौ रे। भवियण सांभलउ, धरम मुगति सुख कारौ रे।—स. कु.

प्रकास—सं० पु० [सं० प्रकाश] १. वह जिसके द्वारा पदार्थों का रूप नेत्रों द्वारा दृष्टिगोचर होता है, ग्रंधकार का विलोम, रोशनी चांदना।

२. ज्योतिष्यमान पदार्थों की गति या शक्ति जो तरंगों के रूप में निकलती है।

३. उक्त का वह रूप जो हमें ग्रांखों से दिखाई देता है।

४. ज्योतिर्मय तरंगों के निकलने का वह उद्गम या स्रोत जो हमारी दृष्टि-शक्ति का सहायक होता है।

५. ज्ञान। उ०—डिंगळियां मिळियां करे, पिंगळ तणौ प्रकास। सस्क्रती ह्वै कपट सज, पिंगळ पढ़ियां पास।—बां. दा.

६. स्थिति या ग्रवस्था।

उ०—ह्वै यूं कुकवी हाथ में, पोथी तणौ प्रकास। केळ पत्र जांणै कियौ, वांनर रै कर वास।—बां. दा.

७. नेत्रों की वह शक्ति जिससे पदार्थ दिखाई देते हैं, ज्योति।

८. ख्याति, प्रसिद्धि।

उ०—१. कवि पंडित जाहिर करै, मोटां रौ जसवास। छोटां रा जस रौ हुवै, पहियां हूंत प्रकास।—बां. दा.

उ०—२. जऊं पण बिना ही प्रांण चहूदांण रौ मस्तक पाछौ मुरड़ियौ इसड़ो किवदती नै प्रकास लियौ।—वं. भा.

९. सूर्य का ग्रातप, धूप।

१०. सूर्य, भानु। (ग्र. मा.)

११. चमक। उ०—जुन भमरावळि जाण, जिल्हे तन जागणी। बादळ मांझळ बीज, प्रकास बिलागणी।—बां. दा.

१२. तेज, कांति, दीप्ति। (ह. नां. मा.)

१३. ग्राकाश। (ग्र. मा.)

१४. घोड़े की पीठ की चमक। १५. खुला मैदान। १६. किसी ग्रंथ या पुस्तक का ग्रध्याय।

रू० भे०—पगास, परकास, परगास, परिकास, प्रक्कास, प्रगास।

प्रकासक—वि० [सं० प्रकासक] १. प्रकट करने वाला, दिखलाने वाला। २. चमकीला, उज्ज्वल। ३. व्यक्त करने वाला। ४. व्याख्या करने वाला। ५. प्रसिद्ध करने वाला, विख्यात करने वाला।

सं० पु०—१. सूर्य। २. प्रसिद्धकर्त्ता, विख्यातकर्त्ता।

ज्यूं०—रामायण रौ प्रकासक, गीता रौ प्रकासक।

रू० भे०—परकासक, परगासक, प्रक्कासक, प्रगासक।

प्रकासण—वि० [सं० प्रकाशन] प्रकट करने वाला, प्रसिद्ध करने वाला।

उ०—जे दोही पख ऊजळा, जूझण पूरा जोध। सुणतां वे भड़ सो-गुणा, वीर प्रकासण बोध।—वी.स.

सं० पु० [सं० प्रकाशनः या प्रकाशनम्] १. प्रकाशित करने का कार्य, प्रकाश में लाने का काम। २. ग्रंथ या पुस्तक ग्रादि छपवाकर प्रचारित करने का कार्य। ३. मुद्रित कर प्रसिद्ध की जाने वाली कोई भी पुस्तक। ४. विष्णु का नामान्तर। ५. सूर्य। (ह.नां.मा.)

रू० भे०—पयासणु, परकासण, प्रकासन, प्रक्कासण, प्रगासण।

प्रकासणौ, प्रकासबौ—क्रि० स० [सं० प्रकाशनम्] १. दिखाना, दर्शन देना।

उ०—दीह घणा मांझल दुनी, रुळियौ देखे रूप। माधव हमे प्रकास मो, सिव ताहरो सरूप।—ह.र.

२. कहना, कथना।

उ०—मीठा वैण प्रकास मुख, जग मैं लालच जीत। ऊधम हत्थां ग्रत्यड़ी, कांनां सुण निज कीत।—बां.दा.

३. वर्णन करना, बखानना।

उ०—बांणी पवित्र करिस सीतावर, नितप्रत कीत प्रकासे नर हर। नासा विसन करिस इम निरमळ, प्रभु घूंटै तो चरणां परमळ।—ह र.

४. जाहिर करना, प्रकट करना, व्यक्त करना।

उ०—१. ताहरां ढोलैजी मन री वात प्रकासी, माळवणी म्हारै तो एक महल ग्रोर सांभळां छां, तद माळवणी बोली ग्रा बात भूठी छै।—ढो. मा.

उ०—२. विस मुख जास वसंत, मीठा बोलां हंस मरै। उरग तणौ कर ग्रंत, मोर प्रकासै एह मत।—बां.दा.

५. चलाना, प्रचलित करना।

उ०—हूं बलिहारी जाऊं तेहनी, जेह नउ ग्ररिहंत नांम। जिण ए धरम प्रकासिवउ, कीधउ उत्तम काम।—स.कु.

प्रकासणहार, हारौ (हारी), प्रकासणियौ—वि०।

प्रकासिग्रोड़ौ, प्रकासियोड़ौ, प्रकास्योड़ौ—भू०का०कृ०।

प्रकासीजणौ, प्रकासीजबौ—कर्म वा०।

पयासणी, पयासवौ, परकासणौ, परकासवौ, परगासणौ, परगासवौ, प्रक्कासणौ, प्रक्कासवौ, प्रगासणौ, प्रगासवौ—रू० भे० ।

प्रकासत—देखो 'प्रकासित' (रू.भे.)

प्रकासतभूप—सं० पु० यौ० [स० प्रकाश+भूप] सूर्य, भानु । (डि. को.)

प्रकासदांन—सं० पु० [सं० प्रकाश+फा० दान] स्वच्छ हवा आने के लिए कमरे में छत के नीचे दीवार में बनाया गया छोटा झरोखा, रोशनदान ।

प्रकासन—देखो 'प्रकासण' (रू. भे.)

प्रकासमांन, प्रकासवांन—वि० [स० प्रकाशमान] चमकता हुआ, चमकीला ।
रू० भे०—परकासमांन, परकासवांन ।

प्रकासित—वि० [सं० प्रकाशित] १. जिससे प्रकाश निकल रहा हो, चमकता हुआ ।
उ०—रसम हीलोळ अंग छोळ कर दांन रस, प्रकासित गजित झड़ गुणां पुंजौ । कमळ हंस नीळकंठ जेम पाळण कव्यां, दुझिद सागर मथण मेघ दूजौ ।—महाराज भगतरांम हाडा रौ गीत
२. प्रकट किया हुआ, प्रसिद्ध किया हुआ । ३. जो दीख पड़े, स्पष्ट ।
४. प्रत्यक्ष ।
रू० भे०—प्रकासत ।

प्रकासियोड़ौ—भू०का०कृ०—१. दिखलाया हुआ. २. कहा हुआ, कथा हुआ. ३. वर्णन किया हुआ, बखान किया हुआ. ४. जाहिर किया हुआ, प्रकट किया हुआ, व्यक्त किया हुआ. ५. चलाया हुआ, प्रचलित किया हुआ.
(स्त्री० प्रकासियोड़ी)

प्रकासी—वि० [सं० प्रकाशिन्] १. जिसमें प्रकाश हो, चमकता हुआ, चमकीला ।
२. साफ, उज्ज्वल ।
३. प्रकाश करने वाला ।
उ०—निरालंब निरवांण निरंतर, सब प्रकासी वो ई । सो ई सुखरांम सुधातमा चेतन, मत बुध लखे न मोई ।
—स्री सुखरांमजी महाराज

प्रकीरण—सं०पु० [सं०प्रकीर्ण] १. फुटकर कविताओं का संग्रह ।
२. पुस्तक का अध्याय या प्रकरण । ३. तरह तरह का, अनेक प्रकार का ।
रू०भे०—परकीरण ।

प्रकीरणक—सं०पु० [सं०प्रकीर्णक] १. ग्रंथ का अध्याय या प्रकरण ।
२. चँवर । ३. फुटकर ।

प्रकीरतन—सं०पु० [सं०प्रकीर्तन] १. घोषणा । २. जोर-जोर से कीर्तन करना । ३. जोर-जोर से किया जाने वाला कीर्तन ।

प्रकुपित—वि० [सं०] प्रकोप बढ़ा हुआ, क्रुद्ध ।

प्रकुसमांडी—सं०स्त्री० [सं०प्रकुष्माण्डी] दुर्गा ।

प्रकोप—सं०पु० [सं०] १. अत्यधिक क्रोध । उ०—अर मनीचर री उण आकरी झळ री अंठी प्रकोप व्हियौ कै अेन लक्खी विणजारा री वाळद नदी रै मज्झ आई अर अेन उणी वगत नदी गैगाट करती आटां-पाटां बांमां छेक मलापती गाथा कर पर व्हैगी ।—फुलवाड़ी
२. किसी रोग की प्रबलता अथवा उसका उग्र रूप धारण करना ।
उ०—जिण समय दिल्लीस साहजिहांन रै मूत्रकृच्छ नामक महातंक रौ प्रकोप गियौ । तिकण री पीड़ा रै परतंत्र होइ आपरा अधिकार रै ऊपर वडा पुत्र दारा नूं रहण दियौ ।—वं. भा.
३. किसी रोग विशेष की प्रबलता का समाज में विस्तृत रूप से फैलना ।
ज्यूं०—आज काल माता (सीतला) री नगर में प्रकोप है ।
४. शरीरस्थ वात पित्त आदि का किसी कारण विशेष से विकृत होना जिससे रोगोत्पत्ति होती है ।
५. क्षोभ ।
रू०भे०—परकोप ।

प्रकोस्ठ—सं०पु० [सं०प्रकोष्ठ:] १. कोहनी के नीचे का भाग ।
२. बीच का वह खुला आंगन जो चारों ओर से इमारत से घिरा हो ।
उ०—स्रद्धा रै ममांन सात्रवां रौ संहार करती सारी ही मध्यपुर रा प्रकोस्ठ रै माथै आवती ऊपांणां रै बाढ़ लागा ।—वं. भा.
३. मुख्य द्वार के पास का कमरा ।
४. संसद, विधान सभा आदि के बाहर का वह कमरा या बरामदा जहाँ बैठ कर सदस्य व्यक्तिगत रूप से या पत्रकारों आदि से बातचीत करते हैं, गैलेरी ।

प्रक्कास—देखो 'प्रकास' (रू. भे.)

प्रक्कासक—देखो 'प्रकासक' (रू. भे.)

प्रक्कासण—देखो 'प्रकासण' (रू. भे.)

प्रक्कासणौ, प्रक्कासवौ—देखो 'प्रकासणौ, प्रकासवौ' (रू. भे.)
प्रक्कासणहार, हारौ (हारी), प्रक्कासणियौ—वि० ।
प्रक्कासिओड़ौ, प्रक्कासियोड़ौ, प्रक्कास्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
प्रक्कासीजणौ, प्रक्कासीजवौ—कर्म वा० ।

प्रक्रत—वि० [स० प्रकृत] १. असली, यथार्थ ।
२. स्वाभाविक ।
३. देखो 'प्रक्रति' (रू. भे.)
उ०—१. चरचा करता चुगल सूं, प्रक्रत हुवै परतत । चुगली कांनां सुणण सूं, मैली व्है गुरमत ।—वां. दा.
उ०—२. हसा की प्रक्रत हुआ जाणै, कहा जाणै नर कागा रे ।
—मीरां
उ०—३. रावत खगार मांनसिंह री रीत-भांत दीठी । प्रक्रत एकण भांत री छै, सु रांणा जी नूं कहाड़ियौ ।—नैणसी
उ०—४. काज अहोणौ ही करै, एह प्रक्रत खळ अंग । रांमण पठियौ रांम दिस, कर सोव्रनौ कुरंग ।—वां. दा.

प्रक्रति—सं० स्त्री० [सं० प्रकृति] १. वह अनादि शक्ति जो समस्त विश्व के सृजन, विनाश, कार्य एवं कारण का उद्गम-स्रोत है।
उ०—ओम्३कार अपार, पार जिण री कुण पावै। आदि मध्य, अवसांण, थकां पिंडां नंह थावै। निरालंब निरलेप, जगत गुरु अतर जांमी। रूप रेख विण रांम, नांम जिण री घणनांमी। सच्चिदानद व्यापक सरब, इच्छा तिण में ऊपजै। जगदंब सकति त्रिसकति, जिका ब्रह्म प्रक्रति माया बजै।—मे. म.
२. प्राणी या पदार्थ की अन्तर्निहित वह जन्म-जात प्रवृत्ति या गुण जो अपरिवर्तनशील एवं अपृथकनीय होता है।
उ०—क्रपण क्रपण दरपण निरख, प्रक्रति न तजै प्रबंध। भाळी नवमां भेद में, जिको कहावै अंध।—बां. दा.
३. किसी स्थान विशेष का दृश्य जहां वनस्पति, पशु-पक्षी आदि अपने मूल स्वरूप में दृष्टिगोचर हों।
४. मनुष्य की वह जन्मजात प्रवृत्ति, गुण या विशेषता जिसके कारण वह शुभ या अशुभ पहलू की ओर प्रवृत्त होता है।
५. आवास, निर्वाह आदि की वह व्यवस्था जिसके अन्तर्गत मनुष्य मूलभूत पदार्थों का मौलिक स्थिति में उपभोग करता है।
६. वैद्यक में, शारीरिक रचना और प्रवृत्ति के आधार पर मनुष्य की मूल स्थितियों के ये सात विभाग वातज, पित्तज, कफज, वात-पित्तज, वात-कफज, कफ-पित्तज और सम धातु।
७. व्याकरण में वह मूल धातु रूप जिसके उपसर्ग एवं प्रत्यय लगाने से अनेक रूप बनते हैं।
८. भारतीय प्राचीन राजनीति में राजा, आमात्य या मन्त्री, सुहृद, कोश, राष्ट्र, दुर्ग, बल, (सेना) प्रजा एवं शिल्पी इन नौ का समूह। (अमर कोश)
९. परवर्ती दार्शनिक क्षेत्र में पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, मन, बुद्धि और अहंकार इन आठों का समूह।
१०. आकाश के पांच तत्त्व—काम, क्रोध, शोक, मोह और भय; वायु के पांच तत्त्व—चलन, वलन, धावन, प्रसारण और आकुंचन; तेज के पांच तत्त्व—क्षुधा, तृषा, आलस्य, निद्रा और कांति; जल के पांच तत्त्व—शुक्र, शोणित, लाळ, मूत्र और स्वेद; पृथ्वी के पांच तत्त्व—अस्थि, मांस, नाड़ी, त्वचा और रोम; इन पंच महाभूतों के पच्चीस तत्त्व के समूह का नाम।
११. आकृति। १२. प्रजा। १३. संतान। १४. स्त्री, नारी। १५. माता। १६. योनि, लिंग।
१७. स्वभाव। उ०—घनां जी री प्रक्रति करड़ी जांण नें स्वांमी जी विचारयो आ भारमल जी सूं निभाणी कठिन है।—भि. द्र.
१८. २५ की संख्या*। १९. ८ की संख्या*।
रू० भे०—परकत, परक्त, परकरती, परगत, परगती, प्रकत, प्रकति, प्रकत्त, प्रकत्ति, प्रकत्ती, प्रक्रत, प्रक्रती, प्रक्रत्ति, प्रक्रत्ती, प्रक्रित, प्रगत, प्रगति, प्रगती।

प्रक्रतिबंध—सं० पु० यौ० [सं० प्रकृतिबंध] जीव के द्वारा ग्रहण किए हुए कर्म पुद्गलों में जुदे-जुदे स्वभावों का अर्थात् शक्तियों का पैदा होना प्रक्रतिबंध कहलाता है। (जैन)

प्रक्रती, प्रक्रत्ति, प्रक्रत्ती—देखो 'प्रक्रति' (रू.भे.)
उ०—१. आप म्हारै पती आप रा जेठून नैं दिनोदिन सीधी प्रक्रती रा कारण सूं आप भोळा जांणता हा अर आ जांणता हा कै गरीब पणा रा सूत लक्षण है पण हाथियां री फौज नैं काटनै आप रौ जोग्यपणौ जांणायौ छै।—वी.स.टी.
उ०—२. प्रक्रत्ति पचीस तेतीस प्रचंडय, मंड-स मंडय पिंड इता। हुय थंड विहंडय जीव-स डंडय, सूर प्रचडय मन्न इता। तत्काळ विकराळ विहाळ-स झंपण, व्याधि गिराह सनाह वुरौ।
—करुणासागर

प्रक्रम—सं० पु० [सं०] १. आरंभ, शुरुआत। २. कार्रवाई, पद्धति। ३. ढंग, तौर। ४. पैर, कदम।

प्रक्रमभंग—सं० पु० [सं०] किसी विषय के वर्णन में आरंभ के क्रम का यथावत् पालन न करने पर होने वाला एक साहित्यिक दोष।

प्रक्रस्ट—वि० [सं० प्रकृष्ट] १. उत्कृष्टतर, उत्कृष्टतम, श्रेष्ठ। २. प्रधान, मुख्य।

प्रक्रस्टता—सं० स्त्री० [सं० प्रकृष्ट + रा० प्र० ता] उत्तमता, श्रेष्ठता।

प्रक्रित—देखो 'प्रक्रति' (रू.भे.)
उ०—जाकी प्रीत लगी लालन से, कंचन मिळ सुहागा रे। हंसा की प्रक्रित हंसा जांणै, कहा जांणै नर कागा रे।—मीरां

प्रक्रिया—सं० स्त्री० [सं०] १. ढंग, तौर, तरीका।
२. ग्रंथ का अध्याय, परिच्छेद। ३. व्याकरण में वाक्य रचना प्रणाली। ४. अधिकार, हक।
रू० भे०—परकिरिया।

प्रक्षिप्त—वि० [सं०] १. बाद में मिलाया हुआ, ऊपर से मिलाया हुआ। २. घुसेड़ा हुआ। ३. आगे की ओर बढ़ा या निकला हुआ। ४. फेंका हुआ।

प्रक्षेप—सं० पु० [सं०] १. मिलाना, बढाना।
२. ऊपर से मिलाना, प्रक्षिप्त करना। ३. छितराना, बिखेरना।

प्रखंड—देखो 'परखड' (रू. भे.)

प्रखत—सं० पु० [सं० पृषत:] १. चित्तीदार हरिण।
२. हरिण। (अ. मा., ह. नां. मा.)
[सं० प्रकत्थ्य अथवा पृषत्] ३. मोर, मयूर। (अ. मा.)
४. मोती। (नां. मा.)
५. धन, द्रव्य। (अ. मा.)

प्रखतक—सं० पु० [सं० पृषतक] तीर, बांण। (अ. मा., ह. नां. मा.)

प्रखतवाह—सं० पु० यौ० [सं० पृषत्वाह] स्वामी कात्तिकेय। (अ. मा.)

प्रखर–वि० [सं०] १. बड़ा तेज या तीव्र ।
२. अत्यन्त ऊष्ण । ३. तीक्ष्ण ।

प्रखाळित–वि० [सं० प्रक्षालित] १. धोया हुआ, साफ किया हुआ ।
२. छिड़का हुआ । ३. पवित्र किया हुआ ।
रू० भे०—प्रखोळित ।

प्रखोळित—देखो 'प्रखाळित' (रू. भे.)
उ०—घरिया तनि वसत्र कुमकुमै धोया, सौंधा प्रखोळित महल सुख । भर स्रावणि भाद्रवि भोगविजै, रुखमिणि वर एहवी रुख ।—वेलि

प्रख्यात–वि० [सं०] प्रसिद्ध, विख्यात, मसहूर ।
रू० भे०—परिख्यात ।

प्रख्याति–सं० स्त्री० [सं०] १. कीर्ति, सुयश ।
२. प्रसिद्धि, विख्याति ।

प्रगट–सं० पु० [सं० प्रकट] १. प्रत्येक चरण में तीन रगण का छंद विशेष । (ल. पिं.)
२. देखो 'प्रकट' (रू. भे.) (अ. मा.)
उ०—१. एक न चाहे ओर नूं, उभै दुखी ह्वै अंग । आदम नै इळवीस री, प्रगट विचार प्रसंग ।—बां. दा.
उ०—२. जग में दीठौ जोय, हेक प्रगट विवहार म्हैं । कांम न मोटी कोय, रोटी मोटी राजिया ।—किरपारांम

प्रगटणौ, प्रगटबौ—देखो 'प्रकटणौ, प्रकटबौ' (रू. भे.)
उ०—१. वुहराडे भसम जिगन री वांधी, नांखाडइ हेमगिर निजीक । पारवती अवतार प्रगटसी, कहियउ तरइ ब्रह्मे मरमीक ।
—महादेव पारवती री वेलि
उ०—२. कहिए माळवणी तणइ, रहियउ साल्ह विमास । उन्हाळउ ऊतारियउ, प्रगटचउ पावस मास ।—ढो. मा.
प्रगटणहार, हारौ (हारी), प्रगटणियौ—वि० ।
प्रगटिग्रोड़ौ, प्रगटियोड़ौ, प्रगटचोड़ौ—भू०का०कृ० ।
प्रगटीजणौ, प्रगटीजबौ—भाव वा० ।

प्रगटदसा–सं०स्त्री० [सं०प्रकट+दशा] १. प्रकाश, रोशनी, ज्योति । (अ. मा.)
२. दीपक । (अ. मा.)

प्रगटाड़णौ, प्रगटाड़बौ—देखो 'प्रकटाणौ, प्रकटाबौ' (रू. भे.)
प्रगटाड़णहार, हारौ (हारी), प्रगटाड़णियौ—वि० ।
प्रगटाड़िग्रोड़ौ, प्रगटाड़ियोड़ौ, प्रगटाड़चोड़ौ—भू०का०कृ० ।
प्रगटाड़ीजणौ, प्रगटाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

प्रगटाड़ियोड़ौ—देखो 'प्रकटायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० प्रगटाड़ियोड़ी)

प्रगटाणौ, प्रगटाबौ—देखो 'प्रकटाणौ, प्रकटाबौ' (रू. भे.)
प्रगटाणहार, हारौ (हारी), प्रगटाणियौ—वि० ।
प्रगटायोड़ौ—भू०का०कृ० ।
प्रगटाईजणौ, प्रगटाईजबौ—कर्म वा० ।

प्रगटायोड़ौ—देखो 'प्रकटायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० प्रगटायोड़ी)

प्रगटावणौ, प्रगटावबौ—देखो 'प्रकटाणौ, प्रकटाबौ' (रू. भे.)
प्रगटावणहार, हारौ (हारी), प्रगटावणियौ—वि० ।
प्रगटाविग्रोड़ौ, प्रगटावियोड़ौ, प्रगटाव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
प्रगटावीजणौ, प्रगटावीजबौ—कर्म वा० ।

प्रगटावियोड़ौ—देखो 'प्रकटायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० प्रगटावियोड़ी)

प्रगटियोड़ौ—देखो 'प्रकटियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० प्रगटियोड़ी)

प्रगट्ट—देखो 'प्रकट' (रू. भे.)
उ०—प्रद्युम्न प्रगट्ट पुरवत्त-पुराण ।—ह. र.

प्रगट्टणौ, प्रगट्टबौ—देखो 'प्रकटणौ, प्रकटबौ' (रू. भे.)
उ०—नौबति रोडि हुई नीसांणां । अंबर गाजि वाजिं असमांणां । जांण प्रभाकर जोत प्रगट्टी । गढ़ हूं चढ़ि आयौ तळहटी ।
—गु. रू. बं.
प्रगट्टणहार, हारौ (हारी), प्रगट्टणियौ—वि० ।
प्रगट्टिग्रोड़ौ, प्रगट्टियोड़ौ, प्रगट्टचोड़ौ—भू०का०कृ० ।
प्रगट्टीजणौ, प्रगट्टीजबौ—भाव वा० ।

प्रगड–सं०पु० [सं० प्रगाढ़] गहड़ । (अ. मा., ह. नां. मा.)

प्रगडउ—देखो 'पगड़ौ' (रू. भे.)
उ०—डर मेहां पवनांह ज्यउं, करह उडंदउ जाइ । पूगळ जाइ प्रगडउ करइ, करइ मारवणि दाइ ।—ढो.मा.

प्रगत, प्रगति, प्रगती–सं० स्त्री० [सं० प्रगति] १. आगे की ओर बढ़ना, उन्नति करना । २. विशेषत: किसी कार्य को पूर्णता की ओर बढ़ाते चलना ।
३. देखो 'प्रकति' (रू. भे.) (अ.मा., ह.नां.मा.)
उ०—प्रगत तणौ प्रताप, नहीं पास्यौ नर देही । जग में बीजे जनम हुस्यो, भूंगर कन से ही ।—अरजुणजी बारहठ

प्रगळ—देखो 'परगळ' (रू. भे.)
उ०—गुल प्रगळ सोहै बागरा, यां नै देख अनूप । त्रिया रूप तारै जदी, चिमनां लागी चूप ।—पनां वीरमदे री वात
(स्त्री० प्रगळी)

प्रगळणौ, प्रगळबौ—देखो 'पिघळणौ, पिघळबौ' (रू. भे.)
उ०—पिता जमराज खटतीस करणाघपत, ओपियौ जगत कीधां ऊजाळौ । घोम तो खाग वरियांम जोधां घणी, प्रसण प्रगळै चलै ज्यूंही ज पाळौ ।—रघुनाथ सांदू

प्रगळभ—देखो 'प्रगल्भ' (रू. भे.)

उ०—१. प्रगळभ कहतां विस्तीरण लाग दाट पारेवा ल्यै छै।
—वेलि टी.

उ०—२. विधि पाठक सुक सारस रस वंछक, कोविद खंजरीट गतिकार। प्रगळभ लाग दाट पारेवा, विदुर वेस चक्रवाक विहार।
—वेलि

प्रगळांग—देखो 'परगळांग' (रू. भे.)

प्रगल्भ—वि० [सं०] १. निर्भय, निडर। उ०—प्रस्थान-रै प्रथम बारहठ लोहठ नरेस नूं कहियौ, मंडोवर रै अधीस हमीर पडिहार आपणा चरण चंपै जितरी जमी द्विजां नूं दैण कही जिण कारण इसड़ै तौर चालियौ तौ पडिहार केही पीढियां थी धन्वधरा री प्रांत पाइ प्रगल्भ बणि बैठा जिण थी आहव रौ प्रारंभ उरैं ही पावसी।—वं. भा.

२. साहसी, उत्साही, हिम्मती।

उ०—प्रगल्भ कंठ पेल देत, कंठ कंठिराव कौ। दुहत्थ हत्थ ठेल देत, हत्थ लैं प्रदाव कौ।—ऊ. का.

३. वीर, बहादुर। ४. प्रत्युत्पन्न-मति, हाजिर-जवाब, वाग्मी। ५. पूर्ण वुद्धि को प्राप्त, निपुण। ६. अभिमानी, अहंकारी, घमंडी।

रू० भे०—प्रगळभ।

प्रगल्भता—सं० स्त्री० [सं० प्रगल्भ+रा० प्र० ता] १. निर्भयता, निडरता। २. वीरत्व शौर्य, बहादुरी। ३. चतुराई, दक्षता, निपुणता ४. ढीठता, धृष्टता।

प्रगाढ़—वि० [सं०] १. दृढ़, मजबूत। २. कड़ा कठोर। ३. वीर, बहादुर। ४. शक्ति-शाली, समर्थ। ५. अधिक, बहुत।

रू० भे०—पगाढ़, परगाढ।

प्रगाळ—अव्य० [सं० प्रगे+काल] प्रातः काल, उपाकाल।

रू० भे०—परगाळ, प्रहगाळ।

प्रगाळियौ—वि० [सं० प्रगे+काल+रा० प्र० इयौ] प्रातः काल का, उपा-काल सम्बन्धी।

सं० पु०—उषाकाल में उदय होने वाला तारा।

वि० वि०—देखो 'प्रभातियौ'।

रू० भे०—परगाळियौ, प्रहगाळियौ।

प्रगास—देखो 'प्रकास' (रू. भे.)

उ०—१. लेखे एम निसीत लग, पेखे प्रेम प्रगास। जगि रति मदन विलास ज्यों, हित चित परख हुलास।—रा. रू.

उ०—२. प्रथम परमेसुर बीनवां जी, जिन थरप्या धरनी अकास। चंद सूरजि दोउ थरपिया जी, पांणी पवन प्रगास।
—रुकमणी-मंगळ

प्रगासक—देखो 'प्रकासक' (रू. भे.)

प्रगासण—देखो 'प्रकासण' (रू. भे.)

प्रगासणौ, प्रगासबौ—देखो 'प्रकासणौ, प्रकासबौ' (रू. भे.)

उ०—मन प्रवीण कुंदण मुहर, प्रेम प्रगासै जोत। विरह अगन ज्यूं ज्यूं तपै, त्यूं त्यूं कीमत होत।—अज्ञात

प्रगासणहार, हारौ (हारी), प्रगासणियौ—वि०।

प्रगासिओड़ौ, प्रगासियोड़ौ, प्रगास्योड़ौ—भू०का०कृ०।

प्रगासीजणौ, प्रगासीजबौ—भाव वा०।

प्रगासियोड़ौ—देखो 'प्रकासियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० प्रगासियोड़ी)

प्रगिना—देखो 'प्रग्या' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

प्रग्गडणौ, प्रग्गडबौ—देखो 'प्रकटणौ, प्रकटबौ' (रू. भे.)

उ०—घरि सहस्र फरासां धारणा, खिति अनोप कीधौ खड़ौ। असपती सुणे अच्चज्जियौ, परम-धांम किर प्रग्गडौ।—रा. रू.

उ०—२. पवन पराक्रम स्यां कहूं, सहि थांनकि संचार। पंच-तत्त्व महिं प्रग्गडूं, पहिलूं तुझ अवतार।—मा. कां. प्र.

प्रग्गडियोड़ौ—देखो 'प्रकटियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० प्रग्गडियोड़ी)

प्रग्घळ, प्रग्घळौ—देखो 'परगळ' (रू. भे.)

उ०—१. रत-खाळ रळ-तळ पालर प्रग्घळ। होहूं हूकळ थट्ट हुवै।
—गु. रू. बं.

उ०—२. बरस सितर चौ वीर, अजे जुध आफळै। अंजसै मुरधर आज, 'पता' जस प्रग्घळ।—किसोरदांन बारहठ

प्रग्य—वि० [सं० प्रज्ञ] १. बुद्धिमान। २. प्रतिभावान। ३. विद्वान।

प्रग्या—सं० स्त्री० [सं० प्रज्ञा] बुद्धि, मति, ज्ञान। उ०—घट-घट घण नांमी स्वांमी सुरराई। अंतरजांमी हुय ओळज नह आई। इतरी आवग्या ईस्वर क्यूं आंणी। बूढ़ी हुयग्यौ कै प्रग्या विसरांणी।
—ऊ. का.

रू०भे०—परग्या, प्रगिना, प्रागना, प्रागिना, प्राग्यन।

प्रग्याचक्षु, प्रग्याचख—सं०पु० [सं० प्रज्ञाचक्षुस्] १. नेत्रहीन, अंधा। २. धृतराष्ट्र का नामान्तर। ३. हृदय की आंख वाला, मन।

प्रग्रह—सं०पु० [सं०] १. चंद्र या सूर्य के ग्रहण का आरंभ। २. लगाम, वल्गा। ३. रोकथाम। ४. बंधन, कैद।

वि०— बंदी, कैदी।

प्रघट—देखो 'प्रकट' (रू. भे.)

उ०—सत्रसाल पढ़ीजे वीरभद्र, प्रघट जांम है मह-प्रथी। जाडेची ज 'जसवंत' जांम, घु जिसी गंगा भागीरथी।—गु.रू.बं.

प्रघटणौ, प्रघटबौ—देखो 'प्रकटणौ, प्रकटबौ' (रू. भे.)

उ०—प्रघटै जटत जवहर पंत अति आछापणै। तौरां 'मांन' राजै तखत परस रवि तणै।—बां. दा.

प्रघटियोड़ौ—देखो 'प्रकटियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० प्रघटियोड़ी)

प्रघट्ट—देखो 'प्रकट' (रू. भे.)

उ०—पैंगाल पेहट्ट घाट दुघट्ट हीसा हट्ट घण घट्ट । राठोड़ सुभट्ट आगि निहट्ट, वंध प्रघट्ट रिणवट्ट ।—सू. प्र. वं.

प्रघट्टणौ, प्रघट्टबौ—देखो 'प्रकटणौ, प्रकटबौ' (रू. भे.)

प्रघट्टणहार, हारौ (हारी), प्रघट्टणियौ—वि० ।

प्रघट्टिम्रोड़ौ, प्रघट्टियोड़ौ, प्रघट्टयोड़ौ—भू०का०कृ० ।

प्रघट्टीजणौ, प्रघट्टीजबौ—भाव वा० ।

प्रघट्टियोड़ौ—देखो 'प्रकटियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० प्रघट्टियोड़ी)

प्रघण, प्रघळ—देखो 'परगळ' (रू. भे.)

उ०—१. मह जाय पेरी छांह निरमळ, प्रघण हिम पांणी । नित समय परभा प्रिया तिण नूं, वदै मुख वांणी ।—र. रू.

उ०—२. गय-राजां मुह ग्रहण, रहण पाखर हयराजां । पाजां छलि दळ प्रघळ, सघण वरसाळ समाजां ।—वं. भा.

उ०—३. बीज भळाहळ जळ प्रघळ, नदियां खळकै नीर । रीता सरवर कुण भरै, राज विना रघुवीर ।—अज्ञात

(स्त्री० प्रघणी, प्रघळी)

प्रघळौ–वि० [सं० पुष्कल] १. महान, जबरदस्त ।

उ०—पहु गोघलिया पाग, आजुधा अकबर अणी । रांणौ तिमै न रास, प्रघळौ सांड 'प्रतापसी' ।—दुरसौ आढ़ौ

२. देखो 'परगळ' (रू. भे.)

उ०—पंगी तणा वाजिया प्रघळा, वटै दुरंग गिर राय विहार ।

—महाराजा रायसिंह बीकानेर रौ गीत

प्रघस–सं०पु० [सं० प्रघसः, प्रघस] १. राक्षस । २. भुक्कड़पन, पेटूपन, अहदी ।

प्रघात–सं०पु० [सं० प्रघातः] १. युद्ध, लड़ाई । (अ. मा.)

उ०—तिकण रै साथ कछवाह जयसिंह, गोड़ अनिरुद्धसिंह, नवाब दलेलखां तीन ही मुख्य सामंत देर आपरौ उद्धत अनीक दियौ । तीन ही सामंत सलेम रै साथ सांम्हे जाइ वांणारसी रै समीप कुमार रा काका नूं कोरड़ौ लोह चखायो । जिण घी पहला ही प्रघात में परम्मुख होइ दूजो कुमार दूजा रो प्रहार भी न खायो ।

—वं. भा.

२. वध, हत्या ।

प्रघेळ—देखो 'परगळ' (रू. भे.)

उ०—पहल उवांबर प्रकट, पीछै अछत प्रघेळ । नैठ हियौ 'नगमल' प्रवत, वर्ध विघव वाघेल ।—कल्यांणसिंह नगराजोत वाढ़ेल री वात

(स्त्री० प्रघेळी)

प्रचंड–वि० [सं०] १. अत्यंत तेज, तीव्र, उग्र, असह्य ।

ज्यूं०—आज तावड़ौ घणौ प्रचड है, दिन रा बा'रै जाणौ कठिण है ।

२. जबरदस्त । उ०—सांड त्रिसिंघ अखाड़-सिंघ, पौरिस जोध प्रचंड । [illegible] 'पत्ताणी' [illegible] ।—सू. प्र. वं.

३. मजबूत, बलवान । उ०—मैं सूरतांणी मावसी, मेगावती प्रचंड । मेगापुर रा मीरमा, आगोडी नवखंड ।—बां. दा.

४. साहसी, वीर । उ०—[illegible] 'जयदळ' प्रचंड-भृ । [illegible] ।—सू. प्र. वं.

५. महान, बड़ा । (ह. ना.)

उ०—१. [illegible] । अतिवल अमित प्रचण्ड मकर । [illegible], प्रचंड प्रतापि [illegible] ।—रु. रू.

उ०—२. [illegible] । [illegible] प्रचंड । [illegible] ।—सू. प्र. वं.

६. भयंकर, भयावह ।

उ०—[illegible] प्रचंड । [illegible] ।—रू. र.

७. [illegible] ।

उ०—[illegible] ।—सू. प्र. वं.

८. बड़े शरीर का, महाकाय ।

उ०—[illegible] ।—सू. प्र. वं.

९. मजबूत, दृढ़ ।

उ०—[illegible] प्रचंड । [illegible] ।

—सू. प्र. वं.

१०. कठिन, कठोर । ११. प्रतापी ।

१२. बलवान, शक्तिशाली ।

सं० पु०—१. गजानन, गणेश । (अ. मा.)

२. हाथी, गज । (अ. मा., ह. ना. मा.)

३. ऊंट । (ना. डि. को.)

४. ४९ क्षेत्रपालों में २७ वां क्षेत्रपाल ।

रू० भे०—परचंड, प्रचंडर, प्रचडौ ।

अल्पा०—परचडौ, प्रचडौ ।

प्रचंडक—देखो 'प्रचंड' (रू. भे.)

प्रचंडता–सं० स्त्री० [सं० प्रचंड+रा० प्र० ता] प्रचंड होने का भाव, उग्रता, भयंकरता ।

प्रचंडा–सं० स्त्री० [सं०] दुर्गा, रणचंडी ।

प्रचंडौ–देखो 'प्रचंड' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—सुंडाडंड प्रचंडौ, सूपा आरूढ़ मेक मद दंतौ । ईस्वर उमया पुत्रौ, तस्मै गुणेसाय नमौ ।—सु. रू. वं.

प्रचक्र–सं० पु० [सं०] शत्रु-दल, शत्रु-सेना ।

उ०—विधान चक्र चक्र ते, प्रचक्र पूरती वहै ।—ऊ. का.

प्रचर-सं० पु० [सं० प्रचर:] मार्ग, रास्ता। (ह. नां. मा.)

प्रचलण-सं० पु० [सं०] १. प्रचलन या व्यवहार में होना। २. नियम, रीति-रिवाज, प्रथा सिद्धान्त आदि का प्रचलित रहने का भाव। ३. रिवाज, प्रथा। ४. चलन, प्रचार।
रू० भे०—परचलण।

प्रचलित-वि० [सं०] १. जिसका चलन हो, जारी। (सिक्का आदि) २. जो अधिक लोगों की जानकारी में हो। (शब्द आदि) ३. वह जिसका प्रयोग एक अवधि तक अधिकतर लोग करते हैं। (फैशन, रीति-रिवाज)

प्रचार-सं० पु० [सं०] १. रिवाज, चलन। २. किसी वस्तु का निरंतर प्रयोग, उपभोग या व्यवहार।
उ०—पितामह नांम हि नांम प्रचार, अहरनिस रांम हि रांम उचार।—ऊ. का.
३. चालचलन, आचरण। ४. परंपरा, रीति, रस्म। ५. मार्ग, रास्ता।
रू० भे०—परचार।

प्रचारक-वि० [सं०] प्रचार करने वाला, चलन बढाने वाला।
उ०—तेडि प्रचारक पूछीया, कह कांई कारण श्रेह। प्रथम जिके जावा तणउं, झाली ल्यावु तेह।—मा. कां. प्र.
रू० भे०—परचारक।

प्रचारणौ, प्रचारबौ-क्रि० स० [सं० प्रचारणम्] १. प्रचार करना, फैलाना। उ०—वैसेसिक में कणभुक सो वळ विस्तारचौ। पातजळि पाठ पतंजळि जेम प्रचारचौ।—ऊ. का.
२. कहना, कथना।
३. भेजना। उ०—अर झालां प्रमारां नूं प्रचारि सीसोदियां भी केथोली, सींघोली, जावद, अठांणां, बीझोली आदिक देस दुरग दाबि वेघम माथै तोपां री तात धमायी।—वं. भा.
प्रचारणहार, हारौ (हारी), प्रचारणियौ—वि०।
प्रचारिश्रोड़ौ, प्रचारियोड़ौ, प्रचारयोड़ौ—भू० का० कृ०।
प्रचारीजणौ, प्रचारीजबौ—कर्म वा०।
परचारणौ, परचारबौ—रू० भे०।

प्रचारित-वि० [सं०] १. जिसका प्रचार किया गया हो। २. फैलाया हुआ।
रू०भे०—परचारत।

प्रचारियोड़ौ-भू० का० कृ०— १. प्रचार किया हुआ, फैलाया हुआ. २. कहा हुआ, कथा हुआ. ३. भेजा हुआ.
(स्त्री० प्रचारियोड़ी)

प्रचुर-वि० [सं०] १. बहुत, अधिक, विपुल, पर्याप्त। २. बड़ा, दीर्घ, विस्तृत।
रू०भे०—पउर, पऊर, परचुर, परचूर।

प्रचुरता-सं०स्त्री० [सं० प्रचुर+रा० प्र० ता] प्रचुर होने की अवस्था या भाव। अधिकता।
रू०भे०—परचूरता।

प्रचेता-सं०पु० [सं०प्रचेतस्] १. वरुण। (अ. मा., नां. मा., ह. नां. मा.) २. एक प्राचीन ऋषि। ३. बाहरवां प्रजापति।

प्रचेलक-सं०पु० [सं० प्रचेलकः] अश्व, घोड़ा।

प्रचोळ-वि० [सं०प्र+राज० चोळ] अधिक लाल, रक्त वर्णका।
उ०—अमोल तोल मोल के प्रचोळ चोळ अंख के।—ऊ. का.

प्रचौ—देखो 'परचौ' (रू. भे.)
उ०—'जैमल' हरा जांणाता जिसडौ, साच प्रचौ पूरियौ सही। वढ़ पड़ियौ कागदां वचांणौ, नीसरियौ वांचियौ नहीं।—वां. दा.

प्रच्छक-वि० [सं०] पूछने वाला, प्रश्न कर्त्ता।

प्रच्छन्न-वि० [सं०] गोप्य, गुप्त। उ०—१. पत्र मंडि प्रच्छन्न, दूत मंडू पठवायौ। सुणि 'चौंडा' सजि सेन, अद्ध रजनी गढ आयौ।
—वं. भा.
उ०—२. देऊ नांम दला री पुत्री रा पति रौ प्रांण लीधौ जरै तौ जोड़यां जमाई रौ वैर बाळण रै काज आप रा प्रभु रै प्रच्छन्न प्रहर रै प्रभात वीरमदेव नूं जाइ घेरियौ।—वं. भा.
अव्य० [सं० प्रच्छन्नं] चुपके से, गुप्त रूप से। उ०—एक राति निसीथ रै समय एकला बडाह नूं पुर बारै जावतौ देखि विक्रम भी प्रच्छन्न पीठि लागौ थकौ एक नदी रै तीर समसांण देस गयौ।
—वं. भा.
रू० भे०—प्रछन, प्रछन्न।

प्रच्छा-सं०पु० [सं०प्रच्छ] प्रश्न। (डि. को.)

प्रच्छदन-सं०पु० [सं०प्रच्छादनम्] १. ढकना, छिपाना। २. कपड़ों के ऊपर धारण करने का वस्त्र विशेष।

प्रच्छित—देखो 'परीक्षित' (रू. भे.)

प्रछन, प्रछन्न—देखो 'प्रच्छन्न' (रू. भे.)
उ०—बारह मासां बीह, पांडव ही रहिया प्रछन। 'दुरगौ' हेकौ दीह, अछत रहियौ न 'आसवत'।—दुरगादास राठौड़ रौ दूहौ
उ०—२. जगत्त ही जातिय पांतिय जांण, प्रछन्न हुवौ तउ दीठौ प्रांण।—ह. र.
उ०—२. प्रछन्न प्रगट्ट पुरक्ख-पुरांण।—ह.र.
उ०—३. करि प्रछन्न मुकांम, सुदृढ़ एकत्र हीय सब।—वं.भा.

प्रजंक—देखो 'परयक' (रू.भे.)
उ०—पड़ियौ तकियौ सूं परा, आडौ दियौ प्रजंक। मसलत आया मीरज्यां, ऐ ऊठिया असंक।—रा. रू.

प्रजंघ-सं० पु० [सं०] अंगद द्वारा भगा दिया जाने वाला रावण की सेना का एक योद्धा।.

प्रजंत—देखो 'पर्यंत' (रू. भे.)

प्रज—देखो 'प्रजा' (रू. भे.)

उ०—खांनाजादा खबर ले, प्रज दुज गौ प्रतिपाळ। कर व्रत नित सुकृत करै, माजी केरै माल।—वां. दा.

प्रजपाळ-सं० पु० [सं० प्रजापालक] राज, नृप। (डिं को.)

प्रजपाळण-सं० पु० [सं० प्रजापालण] प्रजा का पालन करने वाला, राजा।

उ०—दूहरण प्रसिद्ध प्रघट प्रजपाळण, दळपति दियण दोखियां दाव। भवि कोइ घड़िस न भलो भाखिस्यां, रावळ जांम सरीखो राव।

—ईसरदास बाहरठ

प्रजरणौ, प्रजरबौ—देखो 'प्रजळणौ, प्रजळबौ' (रू. भे.)

उ०—मन ग्रांन महीपन के प्रजरे, किन पे वसुधा-पति कोप करे।

—ला. रा.

प्रजरणहार, हारौ (हारी), प्रजरणियौ—वि०।

प्रजरिग्रोड़ो, प्रजरियोड़ौ, प्रजरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

प्रजरीजणौ, प्रजरीजबौ—भाव वा०।

प्रजरियोड़ौ—देखो 'प्रजळियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० प्रजरियोड़ी)

प्रजळणौ, प्रजळबौ-क्रि० अ० [सं० प्रज्वलनम्] १. जलना, भस्म होना।

उ०—खट छपर चंदण खाट, प्रजळंत चंदण कपाट। लगि झाळ प्रजळत लाख खभ पाट चंदण खाख।—सू. प्र.

२. कोप करना, कुपित होना।

उ०—कमधां पति कूरमां, उभै मुरढ़िया अधप्पति। सुणै बहादर साह, उवर प्रजळै असपति।—सू. प्र.

प्रजळणहार, हारौ (हारी), प्रजळणियौ—वि०।

प्रजळाड़णौ, प्रजळाड़बौ, प्रजळाणौ, प्रजळाबौ, प्रजळावणौ, प्रजळावबौ

—प्रे० रू०।

प्रजळिग्रोड़ौ, प्रजळियोड़ौ, प्रजल्योड़ौ—भू० का० कृ०।

प्रजळीजणौ, प्रजळीजबौ—भाव वा०।

परजळणौ, परजळबौ, पाभळणौ, पाभळबौ, प्रजरणौ, प्रजरबौ प्रज्जळणौ, प्रज्जळबौ, प्रज्वळणौ, प्रज्वळबौ, प्राजळणौ, प्राजळबौ

—रू० भे०।

प्रजळत-सं० स्त्री० [सं० प्रज्वलनः] १. अग्नि, आग। (अ. मा.)

२. देखो 'प्रज्वलित' (रू. भे.)

प्रजळप—देखो 'प्रजल्प' (रू.भे.)

प्रजळियोड़ौ-भू०का०कृ०—१. जलता हुआ, प्रज्वलित.

२. क्रोध किया हुआ.

(स्त्री० प्रजळियोड़ी)

प्रजल्प-सं०पु० [सं० प्रजल्पः] गप्प-शप्प, बकवाद।

रू०भे०—प्रजळप।

प्रजल्पन-सं०पु० [सं० प्रजल्पनम्] १. वार्तालाप, बोलचाल।

२. गप्प-शप्प, बकवाद।

प्रजा-सं०स्त्री० [सं०] संतान, औलाद।

उ०—पहली एक धाड़वी रजपूत धारा-तीरथ में पड़ियौ तौ भी कोइक कारण रै प्रभाव आप रा साथ समेत प्रेत हुवौ जिकण रै पाछै प्रजा में एक पुत्री रही।—वं.भा.

२. किसी भी राजा के राज्य या शासन में रहने वाले लोगों का समूह, रिआया।

उ०—झग-झग ऊठै हिया में झाळां, दग-दग द्रग जळ डारै। मग-मग लखै आवतौ मारू, पग-पग प्रजा पुकारै।—ऊ.का.

रू०भे०—परजा, पिरजा, प्रझ्ज, प्रज, प्रज्जा।

प्रजागर-सं०पु० [सं० प्रजागरः] १. विष्णु। २. कृष्ण का नामान्तर। ३. अभिभावक, रक्षक।

रू०भे०—परजागर।

प्रजानाथ-सं०पु० [सं०] १. ब्रह्मा। २. मनु। ३. दक्षप्रजापति। ४. राजा। ५. बादशाह, सम्राट।

प्रजाप-सं०पु० [सं० प्रजापः] राजा, नृप, नृपति। (अ.मा.,ह.नां.मा.)

प्रजापत, प्रजापति, प्रजापती-सं०पु० [सं० प्रजापति] १. सृष्टि उत्पन्न करने वाला, सृष्टि कर्त्ता।

उ०—सोळै ई थांन अचळ इंद्री सुर, अति सुख उदै कियौ अंतरि उर। विसन ब्रह्म सिव अरक बखांणौ, जळपति ससि दिस मारुत जांणौ। असनिकुमार अगनि वन आखौ, देवनाथ महि वांमण दाखौ। समंद प्रजापति आदि सुरेसर, कमंधां धणी तणी रक्षा कर।

—रा.रू.

२. ब्रह्मा के दश पुत्र जिन्हे ब्रह्मा ने सृष्टि के प्रारम्भ में प्रजावृद्धि हेतु उत्पन्न किये थे। ३. ब्रह्मा, विरंची।

४. कश्यप। उ०—एक दिवस 'अजमाल', छभा मंडे छत्रपत्ती। पुत्र रूप गुण पेख, गोद लीधौ गढ़पत्ती। मनु संजुति लोकेस, कना रवि हूंत प्रजापति। कै रघुवीरकुंवार, लियां अवधेस प्रभा जुति। उमराव चाव लग्गौ दग्ग, रूप निहारै निजर भर। अनमेख द्रस्ट पेखंत छवि, मीन चंद्र प्रतिबिंब पर।—रा.रू.

५. मनु। ६. सूर्य, भानु। ७. विश्वकर्मा। ८. पिता, जनक। ९. राजा, नृप।

१०. कुम्भकार, कुम्हार। उ०—कुलड़ कटोरदांन कचोळा, लोटां ऊखल माटड़ी। साह खंबेड़दास प्रजापत, ग्याही नगरां हाटड़ी।

—दसदेव

११. सात सवत्सरों में पांचवां संवत्सर। १२. वार व नक्षत्र संबंधी बनने वाले २८ योगों में से चौथा योग।

रू०भे०—परजापत, परजापति, परजापती, पिरजापत, पिरजापति, पिरजापती।

प्रजापाळ, प्रजापाळगर-सं०पु० [सं० प्रजापाल, प्रजापालक] राजा,

नृप। (डि. नां. मा.)
रू०भे०—परजापाळ।

प्रजाळणौ, प्रजाळबौ–क्रि० स० [सं० प्रज्वलनम्] १. जलाना, भस्म करना।
उ०—१. मिनिया मंजारीह, अगन, प्रजाळी ऊबरचा। वरती मो वारी-ह, सुणौ क वहरौ सांवरा।—रांमनाथ कवियौ
उ०—२. देवी सकारी रूप हनमंत ढाळी, देवी रूप हनमंत लंका प्रजाळी।—देवि.
२. क्रुद्ध करना, कुपित करना।
प्रजाळणहार, हारौ (हारी), प्रजाळणियौ—वि०।
प्रजाळिओड़ौ, प्रजाळियोड़ौ, प्रजाल्योड़ौ—भू०का०कृ०।
प्रजाळीजणौ, प्रजाळीजबौ—कर्म वा०।
परजाळणौ, परजाळबौ, परिजाळणौ, परिजाळबौ—रू०भे०।

प्रजाळियोड़ौ–भू०का०कृ०—१. जलाया हुग्रा, भस्म किया हुग्रा.
२. क्रुद्ध किया हुग्रा.
(स्त्री० प्रजाळियोडी)

प्रजु, प्रजुण, प्रजुन्न–वि० [सं० प्रज्वलनम्] १. प्रज्वलित।
उ०—जाय जोगण वंद जाजा, प्रजुण वन्ही करे प्राजा।—र.रू.
२. देखो 'प्रद्युम्न' (रू.भे.)
उ०—संब प्रजुन्न कुमरवरा, विद्याधरा रे। क्रीड़ा गिरि अभिरांम, जय-जय गिरनार गिरे।—स.कु.

प्रजुळ–सं०पु० [सं०प्रज्वलनम्] १. क्रोध। (अ.मा.)
२. ग्राग, अग्नि।

प्रजू, प्रजूण—देखो 'प्रद्युम्न' (रू. भे)
उ०—१. दीपायन रिखि दूहव्यउ, संब प्रजू नैं साहि।—स. कु.
उ०—२. पांचे पांडव इण गिरि सीधा, नव नारद रिखीराय रे। संब प्रजूण गया इहां मुगति, आठे करम खपाय रे।—स. कु.

प्रजेस–सं०पु० [सं०प्रजेश] प्रजापति, राजा।

प्रजोग—देखो 'प्रयोग' (रू. भे.)

प्रजोध–वि० [सं०प्र+योध:] योद्धा, वीर। उ०—प्रजोध जोध कुप्पि के प्रधाव धप्पि दे परें।—ऊ. का.

प्रज्ज—देखो 'प्रजा' (रू. भे.)
उ०—जडिजै गढ़ां किमाड, प्रज्ज भाजै पर-राठां। खळां खंड खळमळै, इळा दहलै दिस ग्राठां।—गु. रू. बं.

प्रज्जळणौ, प्रज्जळबौ—देखो 'प्रजळणौ, प्रजळबौ' (रू. भे.)
उ०—कूंरमि पमारि कमधज्ज सूं, भटियांणी कुळ छळ मळै। जोधपुर हुई जादवि सती, पावक च्यारै प्रज्जळै।—गु. रू. बं.
प्रज्जळणहार, हारौ (हारी), प्रज्जळणियौ—वि०।
प्रज्जळिओड़ौ, प्रज्जळियोड़ौ, प्रज्जळयोड़ौ—भू० का० कृ०।
प्रज्जळीजणौ, प्रज्जळीजबौ—भाव वा०।

प्रज्जुन—देखो 'प्रद्युम्न' (रू. भे)
उ०—सांब प्रज्जुन कुमर क्रीड़ा गिरि, अंबिका टुंक प्रमुख विस्तारी।—स. कु.

प्रज्झटिका–सं०स्त्री० [सं०पद्धटिका] प्रत्येक चरण में सोलह सोलह मात्रा का मात्रिक छंद विशेष।

प्रज्वळणौ, प्रज्वळबौ—देखो 'प्रजळणौ, प्रजळबौ' (रू.भे)
उ०—वेताळ किलकिलइं। दावानळ प्रज्वळइं। भील गीत गाइ।—सभा.
प्रज्वळणहार, हारौ (हारी), प्रज्वळणियौ—वि०।
प्रज्वळिओड़ौ, प्रज्वळियोड़ौ, प्रज्वळयोड़ौ—भू०का०कृ०।
प्रज्वळीजणौ, प्रज्वळीजबौ—भाव वा०।

प्रज्वळित–वि० [सं० प्रज्वलित] १. धधकता हुग्रा, जलता हुग्रा।
२. चमचमाता हुग्रा, चमकीला।
३. क्रुद्ध।
रू०भे०—प्रजळत।

प्रज्वाळणौ, प्रज्वाळबौ–क्रि०स० [सं० प्रज्वालनम्] जलाना।
उ०—कहियौ रण रौ मरण तो दैव रै अनुकूल हुवां होइ जिकौ नवणासी, तो संसार नूं मुख दिखावण जिसड़ौ रहसी नहीं। अर वेद हूं बहिरगत बात वणाइ पतिव्रता पत्नी सूं पहली प्रज्वाळण री प्रसंसा कोई भी कहसी नही।—वं.भा.
प्रज्वाळणहार, हारौ (हारी), प्रज्वाळणियौ—वि०।
प्रज्वाळिओड़ौ, प्रज्वाळियोड़ौ, प्रज्वाळयोड़ौ—भू० का० कृ०।
प्रज्वाळीजणौ, प्रज्वाळीजबौ—कर्म वा०।

प्रझाळ–सं०स्त्री० [सं० प्रज्वाला] ग्राग की लपट, ज्वाला।
उ०—रूस फ्रांस मझ रच्चिया, जरमन हूंता जुद्ध। पड़ियौ जांण पराळ मै, कण मंगळ कर क्रुद्ध। कण मंगळ कर क्रुद्ध, प्रझाळां पस्सरी। धूहड़ियां खग धार, विनांण वहस्सरी।—किसोरदांन बाहरठ

प्रडीन–सं०पु० [सं०प्रडीनम] उड़ना क्रिया का भाव।
उ०—लगा पाखरां साज लूंमा लड़ी सूं। प्रडीनां चलै नटी पट्टड़ी सूं।—वं भा.

प्रण–सं०पु० [सं० प्रतिज्ञा, प्रा० पइण्णा] किसी कार्य को करने का अटल निश्चय या संकल्प, प्रतिज्ञा।
क्रि०प्र०—करणौ, छूटणौ, झेलणौ, लैणौ, हटणौ, होणौ।
रू०भे०—पण, पन, परण।

प्रणछ—देखो 'पणच' (रू.भे.)

प्रणत–वि० [सं०] १. वहुत झुका हुआ।
२. प्रणाम करता हुग्रा।
३. दीन। उ०—प्रणत पुकार सुणत 'पीथल' री 'राजड़' लाज रखाई।—मे.म.
४. चतुर, निपुण।

सं०पु०—नमस्कार। (अ. मा.)

प्रणतारत-वि० [सं० प्रणत+आरत] शरणागत, दुखिया।
उ०—प्रभू प्रणतारत पेखत प्रेम, नहीं निगमागम देखत नेम।—ऊ.का.

प्रणति, प्रणती-सं०स्त्री० [सं०प्रणति] नम्रता, सुशीलता, दीनता।
उ०—सो आज रा वैरियां रौ व्रात आसगियो न जाइ जिण थां प्रपितामह समरसिंह रौ विरुद विचारि सहाय रौ अवलंब दीजे, इण रीति अरजी मे प्रणती री प्रसाद कीधौ।—वं.भा.

प्रणपति-स०स्त्री० [सं० प्रणिपात:] नमस्कार, प्रणाम।
उ०—१. रांणी कह्यो राजा रिखीस्वरां पासे पधारो, रिखीस्वर कोई अधार करे। ताहरां राजा उठि नै रिखीस्वरां पासे गयौ, जाई नै प्रणपति की।—चौबोली
उ०—२. तितरै हेक दीठ पवित्र गळिआगो, करि प्रणपति लागी कहण। देहि संदेस लगी दुवारिका, वीर वटाऊ ब्राहमण।—वेली

प्रणमंग, प्रणम—देखो 'प्रणांम' (रू.भे.) (डिं. को)
उ०—मात चरणग करंग प्रणमंग। सुजस गंग रंग कथंग सरबंग।
—सू.प्र.

प्रणमणौ, प्रणमबौ-क्रि०अ० [सं०प्रणाम] नमस्कार हेतु झुकना, प्रणाम करना, झुकना।
उ०—सिद्ध दंड उद्यम कियो, राजा विक्रमराय। सासू से प्रणमी करी, दमनी करियै सहाय।—पंच दंडी री वारता
प्रणमणहार, हारौ (हारी), प्रणमणियौ—वि०।
प्रणमिओड़ो, प्रणमियोड़ो, प्रणम्योड़ो—भू० का० कृ०।
प्रणमीजणौ, प्रणमीजबौ—भाव वा०।
प्रणम्मणौ, प्रणम्मबौ, प्रणवणौ, प्रणवबौ—रू०भे०।

प्रणमियोड़ो-भू०का०कृ०—प्रणाम किया हुआ.
(स्त्री० प्रणमियोड़ी)

प्रणम्मणौ, प्रणम्मबौ—देखो 'प्रणमणौ, प्रणमबौ' (रू.भे.)
उ०—प्रणम्मै पग परम्म प्रवीत, गायत्री गोरि मावित्री मीत।
—ह.र.

प्रणय-सं०पु० [सं०] १. प्रेम, प्रीति, आसक्ति, स्नेह। (अ.मा.,ह.नां.मा.)
२. मैत्री, दोस्ती। ३. मेल-जोल। ४. विश्वास, भरोसा।
५. विवाह, पाणि-ग्रहण।
[सं० प्रणयी] ६. पति। (अ.मा.)

प्रणव-सं० पु० [सं० प्रणव:] १. ओंकारमंत्र। २. त्रिदेव (ब्रह्मा, विष्णु, महेश)। ३. परमेश्वर।

प्रणवणौ, प्रणवबौ—देखो 'प्रणमणौ, प्रणमबौ' (रू.भे.)
उ०—परमेसर प्रणवि प्रणवि सरसति पुणि, सदगुरु प्रणवि त्रिण्हे ततसार।—वेलि

प्रणांम-सं० पु० [सं० प्रणाम] वयोवृद्ध व पूज्य व्यक्ति के आगे नत मस्तक होकर नमस्कार करने का ढंग, नमस्कार करने की क्रिया।
उ०—१. परम गुरु के सरणै जाऊं, करूं प्रणांम सिर लटकी।
—मीरां
उ०—२. बूंदी आवतो थांणौ राखि वंबावदै जाइ हड्डाधिराज वंगदेव नूं प्रणांम कीधौ।—वं. भा.
रू० भे०—परणांमण, परणांम, प्रणमंग, प्रणम।

प्रणा-सं० स्त्री० [सं० प्रणी+भावे क्विप्] गली। (अ. मा.)

प्रणाळ-सं० स्त्री० [सं० प्रणाल:] १. बड़ा जल मार्ग, नहर।
२. पनाला। ३. कमल की नाल।
४. देखो परनाळ' (रू. भे.)

प्रणाळका-सं० स्त्री० [सं० प्रणालिका] १. बड़ा जल मार्ग, बंबा, नहर।
२. परम्परा। ३. कोई कथारूप में कहा जाने वाला लंबा वृतांत।
रू० भे०—परणाळका, परनाळका, प्रनाळका।

प्रणाळी-सं० स्त्री० [सं० प्रणाली] कार्य करने की वह व्यवस्था जिसमें किसी प्रकार का निश्चित या विशेष कार्य होता हो, ढंग, तरीका।
उ०—प्रिथु वेलि के पंचविध प्रसिध प्रणाळी, आगम नीगम कजि अखिळ। मुगति तणी नीसरणी मंडी, सरग लोक सोपान इळ।
—वेलि
रू० भे०—परनाळी, प्रनाळी।

प्रणिधांन-सं० पु० [सं० प्रणिधानं] १. प्रयोग, व्यवहार, उपयोग।
२. महान प्रयत्न।
३. समाधि। (वं. भा.)

प्रणिपात-सं० पु० [सं० प्रणिपात:] नमस्कार, प्रणाम। (वं. भा.)

प्रणीत-सं०पु० [सं० प्रणीत:] १. मंत्रों द्वारा संस्कृत की हुई यज्ञाग्नि।
२. यज्ञ कार्य के लिये वेद मंत्र पढते हुए कुए से निकाला हुआ जल।
३. उक्त जल रखने का पात्र।
वि० [सं० प्रणीत] १. उपस्थित किया हुआ, पेश किया हुआ।
२ लाया हुआ। ३. भेट किया हुआ। (वं. भा.)

प्रणेता-वि० [सं० प्रणेतृ] निर्माण करने या बनाने वाला।

प्रतंग्या - देखो 'प्रतिग्या' (रू भे.)
उ०—१. बारहट 'भीम' 'गजांन' का सूरां की सनाह, स्रीमहाराज कै कांम चाहे प्रतंग्या के निवाह।—रा. रू.
उ०—२. पण म्हारा पती री टेक प्रतंग्या और निधड़क अभिमांन देख रात में सोवै जद नींद वस असावधांन होवै तद सत्रुआं रो वार लागै, पण आही बात तनक समझ गेह घर रा किमाड़ ही न जड़ै।
—वी.स.टी.
उ०—३. जन प्रह्लाद बहोत दुखपाया, छूटि नांही टाळी। तब हरि नरहरि रूप बणाया, जन प्रतंग्या पाळी।—ह. पु. वां.

प्रतंचा, प्रतज्या—देखो 'प्रत्यचा' (रू. भे.)

प्रत-स० स्त्री० [?] १. प्रतिज्ञा, प्रण।

उ०—नौरोजा मेटचा 'मेहाई', पीयल' री प्रत पाळी ।— देवळ

२. नित्य, सदैव । (डिं. को.)

उ०—गुणियण द्वार वधाई गावै, प्रत दिन अन सोव्रन धन पावै ।
—रा. रू.

३. देखो 'प्रति' (रू. भे.)

उ०—१. सात मत्त पद प्रत पड़ै, सुगति छंद सौ थाय ।—र.ज.प्र.

उ०—२. कथा केम ईसर कहै, खांण सकळ प्रत खेत । वयण स्रवण ना मन वसै, निगम अगोचर नेत ।—ह. र.

प्रतउत्तर—देखो 'प्रत्युत्तर' (रू. भे.)

उ०—धणी वचन प्रोहित सिर धारिज । कहियौ प्रतउत्तर अप कारिज ।—सू. प्र.

प्रतक—देखो 'प्रत्यक्ष' (रू. भे.)

उ०—प्रतक हुवौ दरमाव निज भाव मूं अचळ तप । सबळ खळ 'गुमन' सुत हूंत सांकै ।—महाराजा मांनसिंह जोधपुर री गीत

प्रतका—देखो 'पताका' (रू. भे.)

प्रतकूळ—देखो प्रतिकूळ' (रू. भे.)

उ०—प्रतकूळ थिया विघ अंक प्रमं । साबडू मग आया'इ प्रात समं ।
—पा. प्र

प्रतक्क, प्रतक्ख, प्रतक्ष, प्रतख—देखो 'प्रत्यक्ष' (रू भे.)

उ०—१. गुड़ै गज-रूपं, क मेघ सरूपं । गयंद गडाडं, प्रतक्क पहाडं ।—गु. रू. वं.

उ०—२. प्रमेस पुरांण-पुरक्ख प्रतक्ख, अगोचर एक अनेक अलक्ख ।—ह. र.

उ०—३. करण घाव पर काळजै, जीभ प्रतख जम डाढ़ । जाभी ह्वै ता जीभ सूं, कड़वौ वैण न काढ़ ।—बां. दा.

प्रतखवादी—देखो 'प्रत्यक्षवादी' (रू. भे.)

प्रतखि, प्रतखी—देखो 'प्रत्यक्ष' (रू. भे.)

उ०—कमंध मतौ सिर ढाळण कीधौ । दरसण सकति प्रतखि तद दीधौ ।—सू. प्र.

प्रतगिग्या, प्रतग्या—देखो 'प्रतिग्या' (रू. भे.)

उ०—देवीदास पण दांतण संपाड़ौ करि ठाकुरद्वारै गयौ । दरसण करि भेंट कीवी अर अरज करण लागौ खांनेजाद री प्रतिग्या आप राखी रहसी ।—पलक दरियाव री बात

प्रतग्यापत्र—देखो 'प्रतिग्यापत्र' (रू. भे.)

प्रतच्छ—देखो 'प्रत्यक्ष' (रू. भे.)

उ०—स्वभाविक सास्वत स्वच्छ स्वरूप । अनिच्छ अभिच्छ प्रतच्छ अनूप ।—ऊ. का.

प्रतत्य—सं० पु० [सं० प्रतथ्य] शास्त्र । उ०—रिसी प्रतत्य तत्य के प्रतत्य तत्य ते रहें ।—ऊ. का.

प्रतदंद—देखो 'प्रतिद्वंद' (रू. भे.)

प्रतदंदी—देखो 'प्रतिद्वंदी' (रू. भे.)

प्रतदुंद—देखो 'प्रतिद्वंद' (रू. भे.)

प्रतदुंदी—देखो 'प्रतिद्वंदी' (रू. भे.)

प्रतना, प्रतनी—सं० स्त्री० [सं० पृतना] १. सेना, फौज ।
(अ. मा., ह. नां. मा.)

उ०—दूरकूंचा जाय दुरग रै प्रतना रौ पळेटौ दियौ ।—वं. भा.

२. सैन्य-दल जिसमें २४३ हाथी, २४३ रथ, ७२६ घोड़े और १२१५ पैदल सिपाही होते हैं । ३. युद्ध, लड़ाई ।

प्रतन्या—देखो 'प्रतिग्या' (रू. भे.)

उ०—करी प्रतन्या राउळ कांन्हडि-तउ जिमी सइ धांन । मारी मळेछ देव सोमईउ, अनइ छोडाविस बांन । —कां. दे. प्र.

प्रतपक्ष, प्रतपख—देखो 'प्रतिपक्ष' (रू. भे.) (अ. मा., ह. नां. मा.)

प्रतपक्षी, प्रतपखी—देखो 'प्रतिपक्षी' (रू. भे.)

प्रतपण—सं०पु० [सं०प्रतपनम्] तप, तेज ।

प्रतपणौ, प्रतपबौ—क्रि०अ० [सं०प्र+तप=ऐश्वर्य दीप्तौ=प्रतपति]

१. प्रताप फैलना, शौर्य बढ़ना । उ०—१. उज्जइणीपुर उण समय प्रतपै 'रेणु' प्रमार । तिण री दूजौ नाम जग, आखै करण उदार ।
—वं. भा.

उ०—जठै प्रतपियौ प्रगट जो, हर अवतार 'हमीर' । नीसरतौ चूड़ा मही. नित निरझर नद नीर ।—बां. दा.

२. कीर्ति प्रताप आदि से युक्त होना । उ०—१. मांणिक रयण वधावती, मनि रंगिइ ए दिइ आसीस । दिणयर जिम महीयलि घणउ, प्रभ प्रतपु ए कोडि वरीस ।—हीराणंद सूरि

उ०—२. जिन चंद्र अनै जिन सिंह सूरि, चंद्र सूरिज ज्युं प्रतपीजिये जी । —स. कु.

क्रि०स०—३. ऐश्वर्य भोगना, सुख भोगना । उ०—१. अहि नर किंनर सुर असुर, सहिय सेव समथ । पाट प्रतपै छत्रपति, तैं राजा दसरथ ।—रांमरासौ

उ०—२. जोधांणां पाट प्रतपै जदन, सुजस जितै सिस भांण रै । सत पंच उदक दीना सुपह, कारण जस 'कलीयांण' रै ।
—महाराजा रायसिंह (बीकानेर)

प्रतपणहार, हारौ (हारी), प्रतपणियौ—वि० ।

प्रतपिओड़ौ, प्रतपियोड़ौ, प्रतप्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

प्रतपीजणौ, प्रतपीजबौ—भाव वा०/कर्म वा० ।

प्रतप्पणौ, प्रतप्पबौ—रू० भे० ।

प्रतपायण—सं०पु० [सं०प्रतिपायन] दातार । (अ. मा.)

प्रतपाळ—देखो 'प्रतिपाल' (रू. भे.)

उ०—१. अब छोगाळा ऊठ, काळा तूं प्रतपाळ कर । पांचाळी री

पूठ चढ़ रखवाळी चतुरभुज । —रामनाथ कवियो

उ०—२. पदमरण रिख असमांरण पहूं ती, पंखां विना जिहांन पढ़ीजै । केवट कुळ प्रतपाळ दयाकर, चरण पखाळ जिहाज चढीजै ।

—र. ज. प्र.

उ०—३. नमो प्रहळाद तरणा प्रतपाळ, नमो ससि सूरज जोत गिघाळ ।

—ह. र.

उ०—४ नमो कन्ह रूप निकंदरण कंस, नमो व्रजराज नमो जदुवंस । नमो प्रम संत गऊ प्रतपाळ, नमो दुस्टां दळ दीन दयाळ । —ह. र.

प्रतपाळक, प्रतपाळग—देखो 'प्रतिपाळक' (रू. भे.)

उ०—१, बाळक चढ श्रा चारणी, जाळक रिमां जरूर । प्रतपाळक पातां तणी, काळक टाळ करूर ।—बाला बक्स बारहठ (गजूकी)

उ०—२. 'सैंणी' सेवगां रै प्रतपाळग । याद कियां नित आवै ।

—जसकरण पीरदांनोत लाळस

उ०—३. तरे जसोधर बांमरण बोलियो—माहाराज मां'रा गांवरा राजा महेसदास, गोहल खोसलीया छै तिण सुं मे बोहत परेसांन छां नै राज मोटा खत्री छो, गऊ ब्रांमण रा प्रतपाळक छो, सो राज कने पुकारु आया छां ।—रा. वं. वि.

प्रतपाळण—देखो 'प्रतिपाळण' (रू. भे.)

उ०—ज्यां प्रतपाळण हात निज, वहा रुखवाळण आप । फवण विध्ंसण कर सकै, तो जे सरण 'प्रताप' ।—जैतदांन बारहठ

प्रतपाळणौ, प्रतपाळवौ—देखो 'प्रतिपाळणौ, प्रतिपाळवौ' (रू. भे)

उ०—पर प्रहळाद तणी प्रतपाळी । बळ धू अखी कियो वनमाळी ।

—र.ज.प्र.

प्रतपाळणहार, हारौ (हारी), प्रतपाळणियौ—वि० ।

प्रतपाळिग्रोड़ौ, प्रतपाळियोड़ौ, प्रतपाळयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

प्रतपाळीजणौ, प्रतपाळीजवौ—कर्म वा० ।

प्रतपाळियोड़ौ—देखो 'प्रतिपाळियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० प्रतपाळियोड़ी)

प्रतपाळौ—देखो 'प्रतिपाळ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१. विरदाळौ जी विरदाळौ, दुज गाय पखी विरदाळौ । सीता पौ सांम सिधाळौ, पोह सेवगरां प्रतपाळौ ।—र.ज.प्र.

उ०—२. नख नहिं निरखाती नाजक नखराळी । पिय जिय प्रतपाळी जाती पथ पाळी ।—ऊ. का.

(स्त्री० प्रतपाळी)

प्रतपियोड़ौ—भू० का० कृ०—१. प्रताप फैला हुआ, शौर्य बढ़ा हुआ. २. कीर्ति, प्रताप आदि से युक्त हुवा हुआ. ३. ऐश्वर्य भोगा हुआ, सुख भोगा हुआ.

(स्त्री० प्रतपियोड़ी)

प्रतप्पणौ, प्रतप्पबौ—देखो 'प्रतपणौ, प्रतपबौ' (रू.भे.)

उ०—साहां उर असुहावतो, राजावां रखवाळ । जां 'जसराज' प्रतप्पियो, तां सुर-पूज अकाळ ।—रा.रू.

प्रतप्पणहार, हारौ (हारी), प्रतप्पणियौ—वि० ।

प्रतप्पिग्रोड़ौ, प्रतप्पियोड़ौ, प्रतप्प्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

प्रतप्पीजणौ, प्रतप्पीजबौ—भाव वा० ।

प्रतप्पियोड़ौ—देखो 'प्रतपियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० प्रतप्पियोड़ी)

प्रतवंब—देखो 'प्रतिबिंब' (रू. भे.)

उ०—१. प्रतवंब गिरां सिरागं पटियां । फळळै नभ मारग कूंजड़ियां ।—पा.प्र.

उ०—२. तरणातप टोप बगत्तरयं, प्रतवंब चमंकत पक्खरियं ।

—रा.रू.

प्रतवंध—देखो 'प्रतिबंध' (रू. भे.)

प्रतबिंब—देखो 'प्रतिबिंब' (रू. भे.)

उ०—१. तिण समै 'रतनां' रा रैवास मैं मकरांणा रौ एक महल है, जिण मैं इण री घणी सहल है । सो इण री पगथल्यां रा प्रतबिंब सूं फरस तौ मूंगियां री छिब पावै है ।—र. हमीर

उ०—२. पांणी चंद प्रतबिंब जिम दरपण छाया ।

—केसोदास गाडण

प्रतबिंबी–सं० पु० [सं० प्रतिबिंब] दर्पण, शीशा । (अ.मा.)

प्रतभा—देखो 'प्रतिभा' (रू. भे.)

प्रतमक–सं० पु० [सं०] एक प्रकार का दमा रोग ।

प्रतमा—देखो 'प्रतिमा' (रू. भे.)

उ०—गांव मेड़ता सुं अपूठी कोस ४ जठै देवरौ वडो छै । पोळ रा कींवाड़ां रौ हुवम नहीं । आगै कुवो छै । पाखांण चोकड़ी रौ, प्रतमा ।—नैणसी

प्रतमाळ, प्रतमाळा प्रतमाळी—देखो 'प्रतिमाळी' (रू. भे.)

उ०—१. बोम छद कमळ प्रतमाळ कर वाहतौ, गज घड़ां गाहतौ, खळां गूंडो । रण कटे गयो वैकुंठ ध्रमराह तो, चाहतौ मुकतसांमीप 'चूंडो' ।—रावत गुलाबसिंह चूंडावत रौ गीत

उ०—२. 'सांमळ' सूर जहीं 'सांगा' हर, सांची पैज सम्हाळी । रूंधे दुसमण रै उर रोपीं, पूंचाळै प्रतमाळी ।

—केसवदास सक्तावत रौ गीत

उ०—३. पोहर हेक रिणमळां पहली, पायक रुहिर पखाळी । लाग अमासां 'कूंभै' लागी, माड धणी प्रतमाळी ।

—राव रिणमल री वात

प्रतयोगता—देखो 'प्रतियोगिता' (रू. भे.)

प्रतर–सं० पु० [सं० प्रतरः] १. पार होना, उतर जाना, पार जाना । २. लोक के मध्य में गोलाकार आकृति के अंदर दिखाई दी जाने वाली पड़ी लकीर । (जैन)

वि० वि०—कहते है इन्ही प्रतरों में देवताओं के विमान है ।

प्रतरतप-सं०पु० यौ० [सं० प्रतर:=पार होना+तप:] एक विशेष क्रम से किये जाने वाले उपवास। (जैन)

वि० वि०—प्रारंभ में एक उपवास के बाद 'पारणा' (भोजन) करे, फिर दो उपवास के बाद, फिर तीन उपवास के बाद एवं फिर चार उपवास के बाद 'पारणा' करे। तत्पश्चात् दो उपवास से प्रारंभ करने पर पहले दो के बाद, फिर तीन के बाद फिर चार के बाद 'पारणा' करे एवं चार के बाद फिर क्रम उल्टा प्रारंभ हो जाता है यानी फिर एक के बाद 'पारणा' करते हैं। इसी क्रम से उपवास करने को प्रतरतप कहते हैं। इसे निम्न तालिका द्वारा समझाया जा सकता है:—

१	२	३	४
२	३	४	१
३	४	१	२
४	१	२	३

प्रतरोधक—देखो 'प्रतिरोधक' (रू. भे.) (अ. मा.)

प्रतळ-सं० पु० [सं० प्रतल] १. पाताल के सातवें भाग का नाम।

२. हाथ की हथेली।

प्रतवाय-सं० पु० [सं० प्रत्यवाय] १. वह पाप या दोष जो शास्त्रों में बताए हुए कर्त्तव्यों या नित्यकर्मों को न करने से लगता है।

उ०—मनि हव वचन लोपसी मो नूं, तन प्रतवाय लागसी तो नूं।
—सू. प्र.

२. शास्त्र-विरुद्ध-मार्ग।

३. न्यूनता, ह्रास।

प्रतवासत-सं० पु० [सं० वास्तोष्पति] इंद्र। (नां. मा.)

प्रतव्योम-सं० पु० [?] एक सूर्य वंशी राजा का नाम।

प्रतसटा, प्रतसठा—देखो 'प्रतिस्ठा' (रू. भे.)

उ०—तळाव किलांणसागर रांणी हाडी जी नांम जसरंगदे जी हाडी माहाराज स्रीजसवंतसिंघ जी री रांणी बूंदी रा राव छतरसाल जी री बेटी सं० १७२० रा वैसाख सुद १५ रांग मांडी नै सं० १७३० रा जेठ सुद १५ प्रतसटा हुई।—नैणसी

प्रतहार—देखो 'प्रतिहार' (रू. भे.) (अ. मा.)

प्रताकनी—देखो 'पताकणी, पताकनी' (रू. भे.) (अ. मा.)

प्रताप-सं० पु० [सं०] १. ऐसा ताप जिसमें बहुत तेज हो, चमक, आभा, कांति।

उ०—स्रीमहाराजा 'अजमाल' पातिसाहूं के नाटसाळ, रावळे प्रताप की जीत जागी। अजमेर पीरां को अजाद भागी।—रा.रू.

२. उष्णता, गर्मी, ताप।

३. ऐश्वर्य, वैभव।

उ०—सांम-धरम रा कोल पाळणै मैं नांमी होय रौ दिन-दिन प्रताप वधै।—नी. प्र.

४. पराक्रम, जीवटपन।

उ०—जातां वरस सतावनौ, अप वाधतां प्रताप। 'अजन' मनोरथ पुत्र रौ, करै सदा हरि जाप।—रा.रू.

५. साहस, वीरता, शौर्य।

उ०—स्रीराजकंवर अवतार घरि आयौ, आपणौ प्रताप जिण जगत कूं दिखायौ।—रा. रू.

६. प्रभाव।

उ०—१. पुन्य प्रताप होय अंग पूरण, पाप प्रताप अपंगी।
—ऊ. का.

उ०—२. नांम प्रताप तारिया जळनिधि। विधि-विधि भणि जिण रा वाखांण।—ह. नां. मा.

७. गौरव।

८. बळ, शक्ति।

उ०—चूक कृष्ण नै रथी चक्र को, सील प्रताप संभाई। सील प्रताप सकळ ही संपत, अंतरेजां घर आई।—ऊ. का.

उ०—२. बींधा राघव एक सर, सात ताळ इम सींग। सात देस कोकन लिया, इक प्रताप सूं धींग।—वां. दा.

९. यश, कीर्ति। (अ. मा., ह. नां. मा.)

१० प्रकाश, रोशनी।

उ०—प्रतिहार प्रताप करे सी पाले, दंपति ऊपरि दसैदिसि। अरक अगनि मिसि धूप आरती, निय तणु वारै अहोनिसि।—वेलि

११. कारण। उ०—भारी अगै अगै रे! भारत, हेकण जीभ प्रताप हुवा। मन मिळियोड़ा जिकां माढ़वां, जीभ करै खिण मोंह जुवा।
—वां.दा.

रू० भे०—परताप।

प्रतापवळी, प्रतापवळी-वि० [सं० प्रतापवली] १. प्रतापी, वीर, शक्तिशाली। उ०—१. रांणौ उदयसिंघ सांगा रौ वडौ प्रतापवळी ठाकुर हुवौ।—नैणसी

उ०—२. रावळ देवीदास चाचावत सारीखौ कोई रावळ जैसलमेर प्रतापवळी हुवौ नहीं।—नैणसी

२. भाग्य शाली, प्रारब्धवान। उ०—सीसोदिया परवतसिंघ नुं मारण नुं घणौ ही कीयौ, पिण दिन ऊभा, घात लागी नहीं, सोर हुवौ, राव अखैराज वरस २ रौ हुतौ, सु धाय कोटड़ी मांहे ले पैठी, ऊपर गूदड़ा दीया, प्रथीराज रै साथ घणौ ही सोझियौ, अखैराज प्रतापवळी सु उण रै हाथ लागौ नहीं।—नैणसी

प्रतापवांन-वि० [सं० प्रतापवत्] १. बलवान, पराक्रमी, विक्रमी।

उ०—१. बेटा दिन-दिन मोटा हुवै छै। प्रतापवांन, तेजवंत, महा

बळिस्ट कुंवर जवांन हुवा ।—नैणसी

उ०—२. मालो दिन-दिन वधै । महा प्रतापवांन हुवौ । बीजो बेटौ वीरम, तीजो जैतमाल, चौथौ सोभत ।—नैणसी

२. महिमावान्, गौरवान्वित ।

रू० भे०—परतापवांन ।

प्रतापी-वि० [सं०] १. जिसके प्रताप या प्रभाव से सब कार्य होते हों ।

२. जिसका प्रताप संसार में चारों ओर फैला हुआ हो ।

उ०—महाराज गजसिंह जी वडौ प्रतापी राजा हुवौ ।

—राजसिंह री वारता

रू० भे०—परतापी ।

प्रतापीक-वि० [सं० प्रताप+रा०प्र० ईक] १. भाग्यशाली, प्रारब्धवान ।

उ०—अरु राव जी वडा दातार प्रतापीक हुवा । सं० १६०१ पोस सुद १५ बीकानेर कायम कियो ।—द. दा.

२. ऐश्वर्यवान, प्रभुत्व शाली । उ०—स्रीराजकंवर अवतार धरि आयौ, आपणौ प्रताप जिण जगत कूं दिखायौ । प्रवाड़े अगंजी राजकवर, पातिसाहां, अभंगाह जैत जुझार । जगत सूं विचारौ प्रतापीक वारौ, तरत पधारौ चिंता निवारौ ।—रा. रू.

३. पराक्रमी, बहादुर, वीर । उ०—१. माता जी कही—'थीरा सगाई तौ मो नूं पूछी, म्है कराइ छै । 'बीकौ' वडौ प्रतापीक होसी ।—नापै सांखले री वारता

उ०—२. स्रीईस्वरावतार आगै ही विसम समै आयां ओर तौ लागा धुआ । तठै प्रतापीक पुत्रां सूं सिद्धि काज हुआ । दौलतखांन जवन सेखै की सहाय राव 'गांगै' सीस आयौ, तद राव समै देख कवर मालदे बुलायौ । कंवर को प्रताप देखि सेनापति कियौ सो मेर्ड फूं संघारि जूट जवन लूट लियौ ।—रा. रू.

४. प्रभावशाली, प्रतापी ।

रू० भे०—परतापीक ।

प्रतापिता-सं०पु० [सं० प्र+तायृ=संतान पालनयोः] पिता । (अ.मा.)

प्रति—देखो 'प्रति' (रू. भे.)

उ०—'मा इम बोलति मुझ प्रति, जा सूका सर सेवि । अळीधां अळीआं उच्चरइ, कइ डाकिणी ? कइ देवी ?'—मा कां.प्र.

प्रतिचा—देखो 'प्रत्यंचा' (रू. भे.)

प्रति-अव्य०—एक उपसर्ग जो निम्नांकित अर्थों में प्रयुक्त होता है, बहुत में से हर एक, अलग-अलग ।

ज्यूं०—प्रति व्यक्ति, प्रतिदिन ।

२. उल्टा, विपरीत, विरोध ।

ज्यूं०—प्रतिकूळ, प्रतिद्वंदी, प्रतिवाद, प्रतिरोध ।

उ०—जेळै कई जब्बर बब्बर जोर, दिखावत वायु बरब्बर दोर । रथां पलटाय पाछा प्रतिराह, अछा भपटाय कहावत वाह ।

—मे. म.

३. समान, सदृश ।

ज्यूं०—प्रतिमूर्ति ।

४. बदला ।

ज्यूं०—प्रतिकार ।

५. सम्मुख, सामने ।

ज्यूं०—प्रत्यक्ष ।

६. किसी बात या घटना के फलस्वरूप होने वाला परिणाम ।

ज्यूं०—प्रतिध्वनि, प्रतिक्रिया, प्रतिफळ ।

७. चारों ओर से ।

ज्यूं०—प्रतिरक्षासमग्री ।

८. भली प्रकार ।

ज्यूं०—प्रतिपादन ।

प्रतिकवमांन-सं० पु० यौ० [?] भोजन । (ह. नां. मा.)

प्रतिकार-सं० पु० [सं० प्रतिकारः या प्रतीकारः] १. वह कार्य जो किसी बुरे कार्य या व्यवहार के प्रति बदला लेने की प्रवृत्ति से किया जाय, प्रतिशोध, बदला ।

२. चिकित्सा या इलाज । ३. पुरस्कार ।

रू० भे०—पड़िकार, पड़ियार, प्रतीकार ।

प्रतिकूळ-वि० [सं० प्रतिकूल] जो अनुकूल न हो, जो विरुद्ध हो ।

सं० पु०—स्वभाव, रुचि, या वृत्ति के विरुद्ध पड़ने वाला व्यक्ति ।

रू० भे०—पड़िकूळ, परतिकूळ, प्रतकूळ ।

प्रतिकूळता-सं०स्त्री० [सं०प्रतिकूल+रा०प्र०ता] १. विरोध,विपरीतता ।

२. वह आचरण जो अनुकूल न हो ।

रू० भे०—परतकूळता ।

प्रतिक्रम-सं० पु० [सं० प्रतिक्रमः] १. प्रदक्षिणा, परिक्रमा ।

उ०—रर कमळ माळ सुढार प्रतिक्रम, चांर रति भुजदंड है । कुच जुगळ सुंदर समर करि है, सोभ गिरि प्रसंग है ।—रा. रू

२. उल्टा-पुल्टा (क्रम या सिलसिला) ।

प्रतिक्रमण, प्रतिक्रमणा-सं०पु० [सं०] प्रमाद के वश होने पर शुभ योग को छोड़ कर अशुभ योग में प्रवेश होने पर पुनः शुभयोग पर आने के लिए की जाने वाली क्रिया ।

उ०—एक दिवस विजयचंद जी आपण रा स्वांमीजी कनै सांमायक प्रतिक्रमण करवा आया ।—भि. द्र.

प्रतिक्रिया-सं० स्त्री० [सं०] १. एक तरफ होने वाली किसी क्रिया के प्रतिकार-स्वरूप दूसरी तरफ होने वाली क्रिया ।

ज्यूं०—काले री घटना री आज कांई प्रतिक्रिया हो रई है ।

२. किसी घटना, कार्य या व्यवहार के होने पर उसके विपक्ष में या विरोध में होने वाली क्रिया, विरोध, सामना ।

ज्यूं०—अंगरेजां री दमन नीति री प्रतिक्रिया आ हुई के कांगरेस रो आंदोळण उग्र रूप धारण कर लियो ।

३. किसी कार्य के होने पर ठीक उसके विरुद्ध या विपरीत दशा में

अपने आप स्वाभाविक रूप से होने वाली क्रिया।

ज्यूं०—जोर सूं फेंकियोड़ी गेंद जठै पड़ै उठासूं इणी कारण जोर सूं उछळै क्यूं कै उण पर गिरणै से आघात री प्रतिक्रिया हुवा करै।

४. भौतिक शास्त्रानुसार—एक अवस्था के अंत होने पर प्राकृतिक या स्वाभाविक रूप से दूसरी विपरीत दशा का आविर्भाव।

५. रक्षण, रक्षा।

६. सहायता।

प्रतिक्रियावाद—सं०पु० [सं०] वह वाद जिसमें परम्परागत सिद्धान्तों एव मान्यताओं का विरोध करने वालों का विरोध किया जाता है।

प्रतिक्रियावादी—वि० [सं०] उक्त सिद्धान्त को मानने वाला व्यक्ति।

प्रतिग्या—सं०स्त्री० [सं०प्रतिज्ञा] १. कुछ करने या न करने के सम्बन्ध में किया जाने वाला दृढ निश्चय, प्रण, संकल्प, नियम।

उ०—१. प्रारब्ध प्रतिग्या द्रढ़ प्रतीत। पुरुसारथ प्रग्या परम प्रीत।
—ऊ. का.

उ०—२. सग्व कांम नांमे लेखे रो मुदार बेटे ऊपर ग्रोर देवीदास रै ठाकुरां रै दरसण री प्रतिग्या सो सहर सूं बाहिर अध कोस देहरो तठै स्रीलिखमीनाथ जी बिराजै सो देवीदास नित दरसण करवानै जावै। —पलक दरियाव री बात

२. शपथ, सौगंध।

रू०भे०—पतंग्या, पतन्या, परतंग्या, परतग्या, परतिग्या, प्रतंग्या, प्रतंन्या, प्रतग्गिया, प्रत्यगा, प्रत्यग्या।

प्रतिग्यापत्र—सं०पु० [स० प्रतिज्ञापत्र] ऐसा पत्र जिसमें किसी प्रकार की कीगई प्रतिज्ञा का उल्लेख हो।

रू०भे०—प्रतग्यापत्र।

प्रतिग्रह—सं० पु० [सं०] १. स्वीकार, ग्रहण। २. विधि पूर्वक दिए जाने वाले दान को लेने की क्रिया। ३. पकड़ना या अधिकृत करने की क्रिया। ४. पाणिग्रहण, विवाह। ५ अनुग्रह, कृपा।

प्रतिघात—स०पु० [सं०प्रतिघातः या प्रतीघातः] १. सामना, मुकाबला। २. चोट के बदले में चोट। ३. रुकावट, बाधा।

रू०भे०—प्रतीघात, प्रत्याघात।

प्रतिघातक—वि० [सं०] १. प्रतिघात करने वाला।

२. आघात के बदले आघात करने वाला।

प्रतिघाती—वि० [सं०] १. शत्रु दुश्मन।

२. प्रतिघात करने वाला, बदला लेने वाला।

प्रतिछांह—सं० स्त्री० [स० प्रतिच्छाया] १. प्रकाश के सामने आने पर पीछे की ओर या पीछे की ओर प्रकाश होने पर आगे की ओर पड़ने वाली किसी वस्तु की छायामय आकृति, छाया।

उ०—प्रतिछांह बधै मधि दिन पछै, क्रति सनीत ग्रह, कमळा। गुण रूप एम 'अगजीत' ग्रह, कुंवर 'अभौ' वाधै कळा।—रा. रू.

प्रतिताळ—सं० पु० [स० प्रतिताल] कांतार, समराव्य, वैकुंठ और वांछित नामक चार तालों के समूह का नाम।

प्रतितूनी—स० स्त्री० [सं० ?] चौरासी प्रकार के वात रोगों में से एक प्रकार का वात रोग जिससे मूत्राशय में रह रह कर पीड़ा होती है। (अमरत)

प्रतिदंद—देखो 'प्रतिद्वंद' (रू. भे.)

प्रतिदंदी—देखो 'प्रतिद्वंदी' (रू. भे.)

प्रतिदुंद—देखो 'प्रतिद्वंद' (रू. भे.)

प्रतिदुंदी—देखो 'प्रतिद्वंदी' (रू. भे.)

प्रतिद्वंद—स० पु० [स०] दो समान शक्तियों या व्यक्तियों का विरोध, झगड़ा-टटा।

रू० भे०—प्रतदद, प्रतदुंद, प्रतिदंद, प्रतिदुंद।

प्रतिद्वंदी—वि० [सं० प्रतिद्वंदिन्] १. वाद करने वाला, प्रतिस्पर्द्धी। २. प्रतिकूल। ३. शत्रु।

रू० भे०—प्रतददी, प्रतदुंदी, प्रतिदंदी, प्रतिदुंदी।

प्रतिधुन, प्रतिध्वनि—सं० स्त्री० [सं० प्रतिध्वनि] १. ध्वनि के ठोस माध्यम से टकराकर परावर्तन से उत्पन्न होने वाला प्रतिरूप।

२. लाक्षणिक अर्थ में दूसरों के विचारों आदि को इस प्रकार दोहराया जाना कि उनमें मूलभूत विचारों की छाया झलकती हो।

प्रतिनायक—सं०पु० [सं० प्रतिनायकः] नाटकों अथवा काव्यों में मुख्य नायक का प्रतिद्वंदी नायक।

प्रतिनिध, पतिनिधि, प्रतिनिधी—सं० पु० [सं० प्रतिनिधि] १. मूर्ति, प्रतिमा।

२. वह वस्तु जिसकी प्रतिक्रिया से होने वाली किसी अन्य पदार्थ के समानता की कल्पना।

उ०—भूर जड़ावै मुगट मझ, रोहणगिर उतपत्त। निस दीपग प्रतिनिध रतन, प्रभा अपूरब भत्त।—वां. दा.

३. वह व्यक्ति जो किसी दूसरे की ओर से किसी कार्य को करने के लिये नियुक्त किया गया हो, अभिकर्त्ता।

४. वह जो अपने वर्ग के औरों की जगह काम आ सके, स्थानापन्न।

उ०—जिण कारण महा जोगी उपाध्याय माळव रै महीप व्याकरण रा अध्यापन में एक अब्द रो अनध्याय मांनि पांणिनीय रो प्रतिनिधि भट्टि नांमक काव्य बणाय पढ़ायो जिकण सूं पढ़ियां पडितां रै पाणिनीय ही रहै पढ़ियो। —वं. भा.

५. विधान सभा, लोक सभा आदि का वह सदस्य जो किसी क्षेत्र विशेष से नागरिकों के द्वारा चुना गया हो तथा उसे उस क्षेत्र के नागरिकों की ओर से कार्य करने, बोलने का अधिकार होता है।

६. किसी दल या समूह की ओर से कार्य करने वाला व्यक्ति।

रू०भे०—परतिनिधि।

प्रतिपक्ख, प्रतिपक्ष—स०पु० [सं० प्रतिपक्ष] १. विरोधी दल, विरुद्ध पक्ष, विपक्ष। २. शत्रु सेना।
रू०भे०—प्रतपक्ष, प्रतपख, प्रतिपख।

प्रतिपक्षी—वि० [सं०] १. विरोधी, विपक्षी। २. शत्रु, दुश्मन।
रू०भे०—प्रतपखी, प्रतपक्षी, प्रतिपच्छी।

प्रतिपख—देखो 'प्रतिपक्ष' (रू. भे.)

प्रतिपच्छी—देखो 'प्रतिपक्षी' (रू. भे)

प्रतिपति—सं०पु० [सं०पितपति] यमराज। (नां. मा.)

प्रतिपतिकरम—स०पु० [स० पितपतिकर्म] श्राद्धादि में सब से अंत में किया जाने वाला कर्म।

प्रतिपद, प्रतिपदा—सं०स्त्री० [सं० प्रतिपदा] पक्ष की प्रथम तिथि।

प्रतिपादक—वि० [सं०] १. भली भांति समझाने वाला, प्रतिपादन करने वाला।
२. साबित करने वाला, प्रतिपन्न करने वाला, समर्थन करने वाला।

प्रतिपादन—सं० पु० [सं०] १. प्रतिपत्ति, स्थापन। २. व्याख्या, निष्पादन।

प्रतिपाप—सं० पु० [सं०] किसी पापी के साथ किया जाने वाला कठोर और पाप सम व्यवहार।

प्रतिपायण—सं० पु० [सं० प्रतिपादनम्] दान। (ह. नां. मा.)

प्रतिपाळ, प्रतिपाल—स० स्त्री० [सं० प्रतिपालनम्] १. रक्षण, रक्षा, रखवाली।
उ०—खांनाजादां खबर लै, प्रज द्विज-गो-प्रतिपाळ। कर व्रत नित सुकृत करै, माजी केरै माल।—बां. दा.
२. निगरानी, देख रेख। उ०—जगत दिखायो जनम दे, पोस करी प्रतिपाळ। ईस्वर तूं उपमा दिए, मात तणी मुनमाळ।
—बां. दा.
३ पालन-पोषण। उ०—तिण में रसायण आवै तो तीरथंकर गोत्र बंधै। कोई अनेक भव छेदकर देवै। अनै छकाय रा प्रतिपाल करै।—भि द्र.
४ सहायता, मदद।
वि०—१. रक्षा करने वाला, रक्षक। उ०—प्रभु प्रह्लाद भगत प्रतिपाळ।—ह. र.
२. सहायता करने वाला, सहायक। ३. पालन-पोषण करने वाला, पालक, प्रतिपालक।
रू० भे०—प्रतपाळ।
अल्पा०—प्रतपाळो, प्रतिपाळो।

प्रतिपाळक, प्रतिपाळग—वि० [स० प्रतिपालकः] १. रक्षक, रखवाला। २. पालन-पोषण करने वाला। ३. प्रतिज्ञा पालन करने वाला।
रू० भे०—प्रतपाळक, प्रतपाळग।

प्रतिपाळण—सं० पु० [सं० प्रतिपालनम्] पालन करने की क्रिया, रक्षा।
रू० भे०—प्रतपाळण।

प्रतिपाळणौ, प्रतिपाळबौ—क्रि० स० [सं० प्रतिपालनम्] १. पालन-पोषण करना।
२. रक्षा करना। उ०—सांतिनाथ सुणहु तूं साहिब, सरणागत प्रतिपाळो जी।—स कु.
३ प्रतिज्ञा का पालन करना, संकल्प निभाना। उ०—१. चिर प्रतिपाळयउ चारित छोडी, लीधौ बांधव राज जी।—स. कु.
उ०—२. स्रीमुनि सुव्रत सामिना रे। जीव दया प्रतिपाळ रे।
—स. कु.
प्रतिपाळणहार, हारौ (हारी), प्रतिपाळणियौ—वि०।
प्रतिपाळिओड़ो, प्रतिपाळियोड़ो, प्रतिपाळयोड़ो—भू० का० कृ०।
प्रतिपाळीजणौ, प्रतिपाळीजबौ—कर्म वा०।
प्रतपाळणौ, प्रतपाळबौ—रू० भे०।

प्रतिपाळौ—देखो 'प्रतिपाळ' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—१. पावक मांय करे प्रतिपाळो, बांको एक न होवै वाळ। सुत चौ नांम कियां निसतारै, कर पर गिर धारै किरपाळ।
—भक्तमाळ
उ०—२. मोरमुकट पीतांबर सोहै, ओढ़ै लाल दुमाला रे। मीरां के प्रभु गिरधर नागर, भगतन के प्रतिपाळा रे।—मीरां

प्रतिफळ—सं० पु० [सं० प्रतिफल] १. वह कार्य जो किसी कार्य का बदला लेने या देने के रूप में किया जाय।
२. किसी कार्य या व्यवहार के परिणाम स्वरूप मिलने वाला फल। ३. नतीजा, परिणाम। ४. प्रतिशोध, बदला।

प्रतिबंध—सं० पु० [सं० प्रतिबंधः] १. सौगंध, शपथ।
उ०—ढोलै जी एवाळ सूं पूछियो, पुंगळ नगर रो मारग किसो, तद एवाळ पूछियो कासूं कांम छै। ढोला जी नै नाकारा री भूठ कहण रो प्रतिबंध हुंतो तद ढोलोजी बोलिया म्हारो सासरो छै।
—ढो. मा.
२ विघ्न, बाधा, अवरोध। उ०—जिम सुख होवै तिम करो जी, म करो बहु प्रतिबंध। न.ल्यो मुनिवर जिन नमी जी, मैटण भव नो द्वंद।—जयवांणी
३. वह रोक या बंधन जो किसी कार्य या व्यक्ति पर लगाया गया हो, रोक। ४. बंधन।
रू० भे०—प्रतबंध।

प्रतिबंधक—वि० [सं०] १. रोकने वाला, अटकाने वाला। २. मुकाबला करने वाला, सामना करने वाला। ३. बाधा या विघ्न डालने वाला। ४. बांधने वाला, कसने वाला।

प्रतिबंब—देखो 'प्रतिबिंब' (रू. भे.)

उ०—जोधा जि वडा-वडा घोडा चढ़ी आया। सु सिलह मांहि इसा गरकाब हुया छै। जैसे आरसी मांहि प्रतिबंब लोह वीचि समाइ जाइ छै।—वेलि टी.

प्रतिबंबा-सं० स्त्री० [?] दुर्गा, देवी।

उ०—पीचासणी सावित्री प्रतिबंबा। अथ आराधिजै प्रतिबंबा।
—देवि.

प्रतिबिंब-सं० पु० [सं० प्रतिबिम्बनम्] १. किसी पदार्थ या वस्तु की पारदर्शक तल से दिखाई पड़ने वाली आकृति, परछाई, प्रतिछाया।

उ०—१. आइस्यै जाइ माथि सु चढ़ि चढ़ि आया, तुरी लाग ले ताकि तिम। सिलह मांहि गरकाब संपेखी, जोध मुकुर प्रतिबिंब जिम।—वेलि

उ०—२. समस्त मनुस्य छै. त्यां सिघळां हरी आंखि स्रीक्रस्ण जी रा मुख सौं द्रस्टि लागि रही छै। ताको द्रस्टांत। जैसें समुद्र कै विखै चंद्रमा का प्रतिबिंब नैं मछली सब लागि रहैं छै।—वेलि टी.

३. चमक, झलक। उ०—या बात करण गोचर पड़तां ही गढ़ग सिपाह प्रामार वी अलीग अंग रौ सपरस करतां अल रा चालवा मैं विलंब न होय तिण रीति सुणतां ही समीप आया अर चक्री रा चक्र रै समांन मही रै माथै प्रतिबिंब पाड़ता चतुरंग चक्र मेघ माळा मैं चंचळा रा चपळ भाव मैं चूक पाड़तां चंद्रहास चलाया।—वं.भा.

रू० भे०—पडिबिंब, प्रतबंब, प्रतबिंब, प्रतिबंब, प्रतिव्यंब, प्रतिव्यंब।

प्रतिबूझणौ, प्रतिबूझबौ-क्रि० अ० [सं० प्रतिबोधनम्] १. प्रतिबोधित होना, आत्मज्ञानी होना। उ०—ढंढण कुमर हलूक्रमउ, प्रतिबूझउ ततकालो जी। नेमि समीपि संजम लीयउ, जिन आज्ञा प्रतिपालो जी।—स. कु.

२. देखो 'प्रतिबोधणौ, प्रतिबोधबौ' (रू. भे)

उ०—वंस उपरि चडचउ खेलतउ रे, इलापुत्र अपार। केवलज्ञानी मह कीयउ रे, प्रतिबोध्यउ परिवार।—स कु.

प्रतिबूझणहार, हारौ (हारी), प्रतिबूझणियौ—वि०।

प्रतिबूझिओड़ौ, प्रतिबूझियोड़ौ, प्रतिबूझ्योडी—भू० का० कृ०।

प्रतिबूझीजणौ, प्रतिबूझीजबौ—भाव वा०/कर्म वा०।

प्रतिबूझियोड़ौ-भू० का० कृ०—१ प्रतिबोधित हुआ हुआ, आत्मज्ञानी हुवा हुआ. २. देखो 'प्रतिबोधियोड़ौ' (रू भे)
(स्त्री० प्रतिबूझियोड़ी)

प्रतिबोध-सं० पु० [सं० प्रतिबोधः] १ ज्ञान।

२. शिक्षण, शिक्षा। उ०—कुण चवदे पूरवधारी साधु जी केवली। जिम हो देता प्रतिबोध के। इण निद्रा परताप सूं मरने, गया हो नरक निगोद के।—जयवाणी

३ जागरण। ४. युक्ति, तर्क।

रू० भे०—पडिबोध, पडिबोह।

प्रतिबोधण-सं० पु० [सं० प्रतिबोधनम्] १. ज्ञान उत्पन्न करना।

उ०—इन्द्र हिवै आवै इहां, सबळ आडंबर साज। त्रिप प्रतिबोधण जिन नमण, एक पंथ दोइ काज।—ध. व. ग्रं.

२. जगाना।

प्रतिबोधणौ, प्रतिबोधबौ-क्रि० स० [सं० प्रतिबोधनम्] १. समझाना, ज्ञान देना। उ०—प्रस्नोत्तर करि परगडउ रे, प्रतिबोधी निज नार। प्रभवो चोर प्रतिबूझव्यउ रे, पांच सयां परिवार।—स. कु.

२. धर्मध्यान का रहस्य ज्ञात कराना, अर्थात् आत्मज्ञान का भान कराना। उ०—'भगू' घर 'जस्सा' घरणी, 'कमलावती' आतम उद्धरणी, प्रतिबोध्यौ 'इखुकार' पती, समरूं मन हरखे मोटि सती।
—जयवांणी

उ०—नेम तणी वांणी सुणी जी, मीठी दूधाधार। प्रतिबोध्या छऊं जणा जी, जाण्यौ अथिर संसार।—जयवांणी

उ०—वलि तिण गुरु प्रतिबोधियौ, थयउ स्रावक सुविचार। मुनिवर रूप करावियउ अनारय देस विहार।—स.कु.

प्रतिबोधणहार, हारौ (हारी), प्रतिबोधणियौ—वि०।

प्रतिबोधिओड़ौ, प्रतिबोधियोड़ौ, प्रतिबोध्योड़ौ—भू०का०कृ०।

प्रतिबोधीजणौ, प्रतिबोधीजबौ—कर्म०।

पडिबोहणौ, पडिबोहबौ, प्रतिबूधणौ, प्रतिबूधबौ—रू० भे०।

प्रतिबोधियोड़ौ-भू०का०कृ०—१. समझाया हुआ, ज्ञान दिया हुआ.

२. धर्मध्यान का रहस्य ज्ञात किया हुआ, अर्थात् आत्मज्ञान का भान किया हुआ.
(स्त्री० प्रतिबोधियोडी)

प्रतिव्यंब—देखो 'प्रतिबिंब' (रू. भे.)

प्रतिभट-सं०पु० [सं०प्रतिभटः] १. बराबर का योद्धा, योद्धा।

उ०—'सुरजन' अप रणमस्त मह, भोज कुमारक भीड। भांमी अकबर भेजिया, नांमी प्रतिभट नीड।—व. भा.

[सं० प्रतिभट] २. मुकाबला करने वाला।

प्रतिभा-सं०स्त्री० [सं०] १. असाधारण मानसिक शक्ति या प्राकृतिक बुद्धि जिसमें तीव्रता एवं प्रखरता हो, असाधारण बुद्धिबल।

२. साहस, वीरता। ३. उज्वलता, चमक। ४. प्रकास।

रू०भे०—प्रतभा।

प्रतिभांनु-सं०पु० [सं० प्रतिभानु] श्रीकृष्ण का सत्यभामा के गर्भ से उत्पन्न एक पुत्र।

प्रतिभावांन-वि० [सं० प्रतिभावान्] १. प्रतिभाशाली। २. दीप्तिमान।

प्रतिभासपन-वि० [सं०] जिसमें प्रतिभा हो, प्रतिभाशाली।

प्रतिभासाळी—देखो 'प्रतिभासंपन'।

प्रतिभू-सं० पु० [सं० प्रतिभूः] जमानत देने वाला, जामिन।

उ०—गोइंदराज कहाई म्हैं गोळवाळा नूं मारि टोडौ लीधौ अर आप गोळवाळ री पुत्रियां नूं विवाहण रै काज म्हारा कवरा नूं

तेड़ो जठै सत्रुतारी संका हुवै इण कारण आपरा वाग्हठ हम्मूर नूं प्रतिभू करि अठै भेजि उण रा धरम री वचन दिवाइ आपरी पुत्रियां करि विवाहो जरै बरात आवै।—वं. भा.

प्रतिमल, प्रतिमल्ल–सं०पु० [सं० प्रतिमल्ल] १. मुकाबिला। उ०—वीरां रै वरजतां वाजी री वल्गा उठाय प्रतिहार नाहरराज सूं प्रतिमल्ल जाय सिरू कीधो।—वं. भा.

२. मुकाबिला करने वाला योद्धा। उ०—घणा घोड़ां भड़ां रो घांण काढ़ि बूंदी, कोटा, दोही ऊजळा दिखाई हाडां रा वंस नूं बीजां में बधतो बताई लाज रूप लगर रा धींसया पैलां रा प्रतिमल्ल मंदा लागा मयद।—वं.भा.

प्रतिमांन–सं० पु० [सं० प्रतिमान] १. हाथी के ललाट के नीचे व वाहित्थ प्रदेश के नीचे का भाग। मतान्तर से हाथी के दोनो, दांतों के मध्य का भाग। (डि. को.)

२. मूर्ति, प्रतिमा। ३. सादृश्य।

प्रतिमा–सं० स्त्री० [सं०] १. किसी की वास्तविक अथवा कल्पित आकृति के अनुसार बनाई हुई मूर्ति या चित्र, अनुकृति।

उ०—अर पराजय रै प्रसंग मांणहीण हूवो महमूद साह पाछो आयो तिकण नूं प्रामार रै साथ प्रतिमा मात्र पातसाह रहण नूं अवसर दीधो।—वं. भा.

२. मिट्टी, पत्थर, धातु आदि की बनी देव मूर्ति जिसकी स्थापना करके पूजा की जाती है।

उ०—राजकुमार देवीसिंह भी ऊमर धूणा री उगमणी सीमा पर पिता रा नांम थी वगेस्वरीदेवी को मंदिर वणाइ प्रतिस्टा पूरवक प्रतिमा पधराइ तेथ ही वापी वणावाई विरचाइ बूंदी आपरी थांणो राखि वंबावदै जाइ हड्डाधिराज वंगदेव नूं प्रणांम कीधो।

—वं. भा.

३. हाथी के दांत पर मंडा जाने वाला पीतल, तांबे आदि का बंधन, छल्ला। ४. हाथी का शिरोभाग विशेष। ५. साहित्य में एक अलंकार।

रू० भे०—पड़िमा, परतमा, प्रतमा।

प्रतिमाळ, प्रतिमाळा–सं०स्त्री० [देशज] १. कटार। (डि. को.)

उ०—१. 'खेता' हरा वांका जे खळा, कळहण अडग केवियां काळ। धुर मेवाड़ अनै धूहड़ धर, प्रगटी तूझ तणी प्रतिमाळ।

—रावत चूंडा री गीत

उ०—२. जडां घडां जवनां जंजर, पंजर प्रतिमाळा। हुवै अमां खावद हुकम, दीसै दावाळा।—सू प्र.

रू० भे०—पड़तमाळ, पड़तमाळी, पतमाळ, परतमाल, परतमाळा, परतमाळी, प्रतमाळ, प्रतमाळा, प्रतमाळी, प्रतिमाळी।

२. ६४ कलाओं में से एक कला, अत्याक्षरी।

प्रतिमाळी—देखो 'प्रतिमाळ' (रू. भे.)

उ०—तरवारघां तन तोलि, चढ़ै अणीयां मुंह लायक। प्रतिमाळी करधर विवर, बकै मुखि विक्रत बायक।—ह. पु. वां.

प्रतियोगता, प्रतियोगिता–सं० स्त्री० [सं० प्रतियोगिन्+तल्—टाप्] १. किसी वस्तु, पद उद्देश्य या स्थिति विशेष को प्राप्त करने के लिये दो या दो से अधिक व्यक्तियों में परस्पर होने वाला प्रयत्न, मुकाबला, होड़। २. समुना, दुस्मनी।

रू० भे०—प्रतयोगता।

प्रतिराह–सं० पु० [सं० प्रति+फा० राह] उल्टी मार्ग। उ०—जेळै कई जब्बर प्रहार जोर, दिखावत वागु बरब्बर दौर। रयां पलटाय पछा प्रतिराह, अछा झपटाय कहावत वाह।—मे.म.

प्रतिरोध–सं० पु० [सं० प्रतिरोधः] १. रोक, रुकावट। २. घेरा, अवरोध। ३. विरोध। ४. छिपाव, दुराव। ५. चोरी, डकैती।

रू० भे०—प्रतरोध।

प्रतिरोधक–सं० पु० [सं० प्रतिरोधकः] १. वैरी, शत्रु।

२. चोर। (ह. नां. मा.)

रू० भे०—प्रतरोधक।

प्रतिरोधन–सं० पु० [सं० प्रतिरोधनम्] १. अटकाव, रोक टोक।

२. चोर। ३. डाकू।

प्रतिलिपि, प्रतिलिपी–सं० स्त्री० [सं० प्रतिलिपि] किसी लिखे हुए लेखादि की अक्षरशः और ज्यों की त्यों तैयार की हुई नकल।

प्रतिवचन–सं० पु० [सं० प्रतिवचनम्] उत्तर, जवाब।

प्रतिवत—देखो 'पतिव्रत' (रू. भे.)

प्रतिवस्तु–सं० स्त्री० [सं०] दूसरी वस्तु सदृश्य वस्तु।

प्रतिवस्तूपमा–सं० स्त्री० [सं०] वह अर्थालंकार जिसमें उपमेय-उपमान वाक्यों में एक ही धर्म का एकार्थ-वाची भिन्न-भिन्न शब्दों द्वारा वर्णन किया जाता है।

प्रतिवाद–सं०पु० [सं०प्रतिवादः] १. किसी बात के विरुद्ध कही जाने वाली बात। २. उत्तर का उत्तर, जव्वाब। ३. विवाद, बहस।

प्रतिवादी–वि० [सं० प्रतिवादिन्] विपक्षी, मुद्दालह। उ०—बिनादी वादी तें विक्रत प्रतिवादी नहं वदें।—ऊ. का.

प्रतिवास–सं० पु० [सं०] १. सुगंध, महक। (अमरत)

२. प्रतिवेश, पड़ोस। ३. पास रहना, समीप रहना।

प्रतिव्यंब—देखो 'प्रतिबिंब' (रू. भे.)

उ०—सांम ही लखं प्रतिव्यंब सार, कांमला तद ये रिद्धया कंवार।

—पा प्र.

प्रतिसंलीणता, प्रतिसंलीनता–सं० स्त्री० [सं० ?] इन्द्रिय, कषाय योगों को रोकना, स्त्री, पशु, नपुंसक रहित स्थान में रहना। (जैन)

प्रतिसत–अव्य० स० [स० प्रतिशत] हर सैकड़े के हिसाब से। हर सौ पर। फी सदी।

प्रतिसीरा-सं० स्त्री० [सं०] परदा, कनात, चिक । (डिं. को.)

प्रतिस्टा, प्रतिस्ठा-सं०स्त्री० [सं० प्रतिष्ठा] १. पदार्थ या वस्तु विशेष का अच्छी तरह स्थापित किया जाना, स्थापना । (देवमूर्ति, मकान आदि) उ०—तळाव सूरसागर १६६४ रा वैसाख सुद २ प्रतिस्टा हुई । —नैणसी

उ०—२. खंतिविजय पिण पींपार नां घणां स्रावकां सूं देवल नी प्रतिस्ठा हवै त्यां आयौ ।—भि. द्र.

२. मान, मर्यादा, इज्जत । उ०—वडा-वडा राजवियां री यां ही प्रतिस्ठा घटसी ।—पंचदंडी री वारता

३. आदर, सत्कार,सम्मान । उ०—राजकुमार देवीसिंह भी ऊमर-थूणा री ऊगमणी सीमा पर पिता रा नांम थी वंगेस्वरी देवी रौ मंदिर वणाइ प्रतिस्ठा पूरवक प्रतिमा पधराइ तेथ ही वापी वंगा-बाई विरचाइ, वूंदी आप रौ थांणौं राखि वंवावदै जाइ हड्डाधिराज वंगदेव नूं प्रणांम कीधौ ।—वं. भा.

४. यश, कीर्ति, ख्याति । उ०—माहू कहियौ म्हारा अनामय रौ उद्देस करि आवै जिकां नूं सांम्है जाइ हूं ही समझाइ पाछा मोडि आऊं । तिको भी तात रौ निदेस सनमांनि दारा कहियौ पिता रा पधारण मैं हूं भी पाट रौ पुत्र प्रतिस्ठा नूं पाऊं । —वं. भा.

५. पृथ्वी । ६. आधार, ठहराव । ७. शान्ति, विश्राम । ८. स्थिरता, स्थाईत्व ।

९. चार वर्णं का वृत्त विशेष । (र. ज. प्र.)

रू० भे०—पइट्ठा, प्रतमटा, प्रतसठा, प्रतीठ, प्रतेस्ट, प्रतेस्ठ, प्रत्तेस्ट, प्रत्तेस्ठ ।

प्रतिष्ठावण(न)-सं०पु० [सं० प्रतिष्ठापनं] देवमूर्ति आदि को स्थापित करने की क्रिया ।

रू०भे०—प्रतिस्थापण ।

प्रतिष्ठावांन-वि० [सं० प्रतिष्ठावान] प्रतिष्ठा वाला ।

प्रतिस्ठित-वि० [सं० प्रतिष्ठित] १. स्थापित किया हुआ । २. पूर्ण किया हुआ । ३. आदर प्राप्त, सम्मानित ।

रू०भे०—प्रतीठिउ ।

प्रतिस्थापण-सं० स्त्री० [सं० प्रतिस्थापनं] १. किसी वस्तु के न होने की दशा में उसकी एवज में दूसरी वस्तु रखने की क्रिया ।

२. किसी स्थान पर पूर्व तैनात व्यक्ति के न रहने की दशा में उसके स्थान पर किसी अन्य व्यक्ति को तैनात करने की क्रिया ।

३. देखो 'प्रतिस्ठापण' (रू. भे.)

प्रतिस्परद्धा-सं० स्त्री० [सं० प्रतिस्पर्द्धा] १. किसी कार्य में किसी दूसरे से आगे बढने के लिए किया जाने वाला प्रयत्न ।

२. मुकाबले में अपने सामने वाले को या विपक्षी को पीछे रखने या नीचा दिखाने की प्रवृत्ति, आकांक्षा ।

प्रतिस्रुत-सं० स्त्री० [सं० प्रतिश्रुत या प्रतिश्रुतिः] वादा, प्रतिज्ञा ।

उ०—म्हांरी अरज हूं हाडा नरेस रै आप रा उचित भडां रौ उपयम कराइ पावरौ वैर धोवण री प्रतिस्रुत हुई ।—वं. भा.

प्रतिहत-वि० [सं०] १. हटाया हुआ । २. भगाया हुआ । ३. रुका हुआ, अवरुद्ध ।

प्रतिहार-सं० पु० [सं० प्रतिहारः] १. द्वारपाल, दरबान ।

उ०—१. पइसण देवै नहि प्रतिहारा, आपन्हवण करै अंग उघारा। —ध.व.ग्रं.

उ०—२. सो सुणतां ही खंधावार रौ भार सचिवां रै सीस करनै द्वारपाळ वेस सों विक्रम वडाह री नगरी जाय उण रा प्रतिहारां रौ अध्यक्ष होय सेवा करण लागौ ।—वं. भा.

२. छड़ीदार, चोवदार। (ह. नां. मा.)

३. पहरेदार । उ०—प्रतिहार प्रताप करै सी पालै, दंपति ऊपरि दसैदिसि । अरक अगनि मिसि धूप आरती, निय तणु वारै' अहोनिसि ।—वेलि

४. प्राचीन काल का एक राज्य कर्मचारी जो सदैव राजा के पास या द्वार पर रह कर राजा या राजकुल की रक्षा करता था ।

५. उक्त कर्मचारी वर्ग से उत्पन्न एक राजवंश या इस वंश का व्यक्ति । उ०—जवनां रा जोर सूं हिंदुस्थांन में ओद्राव पड़तां प्रतिहार नाहरराज मंडोवर सूं चलाय प्रत्यंतराज रै अधीन वणियौ। —वं. भा.

वि० वि०—इस पद के लिए किसी खास जाति या वर्ण का विचार नहीं किया जाता था अपितु राजा के पूर्ण विश्वास पात्र ही इस पद पर नियुक्त किये जाते थे । कालान्तर में इसी कर्मचारी वर्ग से एक पृथक राजवंश बन गया ।

रू० भे०—पड़हार, पड़ियार, पड़िहार, पडिग्रार, पडियार, पडिया-रया, पडिहार, पडिहारू, परिहार, पाडिहार, पाडिहारु, पिडीयार, पिढीयार, प्रतहार, प्रतीहार ।

प्रतीक-वि० [सं०] १. प्रतिकूल, विरुद्ध । २. जो नीचे से ऊपर की ओर गया हुआ हो, उल्टा, विलोम ।

स० पु० [सं० प्रतीकम् या प्रतीकः] १. वह वस्तु जिसमें किसी दूसरी वस्तु का आरोप किया गया हो, स्थानापन्न वस्तु ।

२. प्रतिमा, मूर्ति । ३. आकृति, रूप । ४. मुख, मुंह ।

५. किसी पद्य या गद्य के आदि या अन्त के कुछ शब्द लिखकर अथवा पढ़कर उसे पूरे वाक्य का पता बतलाना ।

रू० भे०—परतीक, प्रतीख ।

प्रतीकार—देखो 'प्रतिकार' (रू. भे.)

उ०—जिसड़ा पातसाह थी तोड़ि तिण रौ प्रतीकार दिखावण रै काज केवळ वीरभाव रौ जस चहियौ ।—वं. भा.

प्रतीकास-सं० पु० [सं० प्रतीकाश्व] सूर्यवंशी राजा भानुमान का पुत्र ।

उ०—प्रतीकास जिण सुत.वोह पोरस, जेण सुतण सुप्रतीक उजळ

जस । सुत जे अप मरुदेव वयण सति, पुत्र जास गुनक्षत्र प्रथमि पति ।—सू. प्र.

प्रतीक्षा-सं० स्त्री० [सं०] १. इंतजार । १. खयाल, विचार ।

प्रतीख—देखो 'प्रतीक' (रू. भे.)

उ०—सांचवट नूं अंगो-अंग वाकारनै मारणौ अरु प्रथी प्रतीख चोख री वचन उचारणौ ।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

प्रतीघात—देखो 'प्रतिघात' (रू. भे.)

प्रतीचि, प्रतीची-सं० स्त्री० [सं० प्रतीची] पश्चिम दिशा ।

उ०—१. कह्यो स्वकूच प्राचि को प्रतीचि पंथ तू परयौ ।
—ऊ. का.

उ०—२. जिकण कसमीर मुलतांन दो ही देस लूटिया जांणि पंजाब रा ओला देस ऊजड़ हुवा सुणि दिल्ली सहित प्रतीची दिसा री आधी आरघवरत चळ-विचळ थियौ ।—वं. भा.

प्रतीचीप-सं० पु० [सं०] वरुण । (नां. मा.)

प्रतीठ—देखो 'प्रतिस्ठा' (रू. भे.)

उ०—विब प्रतीठ संघ करि वहुला ।—स. कु.

प्रतीठिउ—देखो 'प्रतिस्ठित' (रू. भे.)

उ०—एतलं ए पंडु नरिंदो जूठिलो पाटि प्रतीठिउ ।—पं. पं. च.

प्रतीत-वि० [सं०] गुजरा हुआ, गया हुआ, व्यतीत । २. विश्वास किया हुआ, विश्वस्त । ३. सिद्ध, साबित । ४. भली भांति ज्ञात, प्रसिद्ध ।

५. देखो 'प्रतीति' (रू. भे.)

उ०—१. झूठे फल लीन्हे रांम प्रेम की प्रतीत जांण ।—मीरां

उ०—२. सखी अमीणा कंथ री, पूरी एह प्रतीत । कै जासी सुर ध्रंगड़ै, कै आसी रणजीत ।—वां. दा.

रू० भे०—परतीत ।

प्रतीतणौ, प्रतीतबौ-क्रि० स० [सं० प्रतीतिः] विश्वास करना ।

उ०—थें म्हारा वचन सरधिया प्रतीतिया रुचिया जिण सूं त्याग करो हो का म्हांनै भांडवानै त्याग करो हो ।—भि. द्र.

प्रतीतणहार, हारौ (हारी), प्रतीतणियौ—वि० ।

प्रतीतिओड़ौ, प्रतीतियोड़ौ, प्रतीत्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

प्रतीतीजणौ, प्रतीतीजबौ—कर्म वा० ।

प्रतीति-सं० स्त्री० [सं० प्रतीतिः] १. विश्वास, भरोसा ।

उ०—गुरु जीव दया नित चाहत है, चित अंतर प्रीति प्रतीति धरी।
—स कु.

रू० भे०—परतीत, परतीति, प्रतीत ।

प्रतीतियोड़ौ-भू० का० कृ०—विश्वास किया हुआ.
(स्त्री० प्रतीतियोड़ी)

प्रतीप-वि० [सं०] १. प्रतिकूल, विरुद्ध ।

उ०—पहली अकबर अवसांण समय रै समीप रीछवा रा राठौड़ पूव भोज रै पगां पड़िया जिकै अब मळ वारां छूटां केई पाछा प्रतीप थिया ।—वं. भा.

२. हठी, दुराग्रही ।

३. बाधा कारक । उ०—घर एकादस अब्द रा गया मळपुर में परगणां सहित पाछौ अमल जमाइ प्रतीप दीठो तिको ही गहियो बाढ़ियो ।—वं. भा.

४. शत्रु । उ०—एकण समय दिल्ली रा प्रतीप गुजरात रा जवनेस मुहम्मद बेगड़ साह रै आस्रित पंजाब रा सिंधु देस में भाटिगनैर रा जोइया मुसलमांन हुंता जिके हरांमखोर होइ ।—वं. भा.

सं० पु० [सं० प्रतीपः] १. एक चन्द्रवंशी राजा शांतनु जो भीष्म के पिता थे ।

[सं० प्रतीपं] २. एक अर्थालंकार विशेष जिसमें उपमेय को उपमान के समान न कहकर उलटा उपमान को उपमेय के समान कहकर उपमान का तिरस्कार करते हैं ।

प्रतीर-सं० पु० [सं०] किनारा, तट । (हि. को.)

प्रतीव्रता—देखो 'पतिव्रता' (रू. भे.)

उ०—जोगी कहै 'प्रतीव्रता' ! सुणेस हुई नच्यंत । प्रीव थारो आव्यो छइ मास वसंत ।—बी. दे.

प्रतीहार—देखो 'प्रतिहार' (रू. भे.)

उ०—स्तुति देई गुप्रसन थई, गोप्य वचन गति गूढ़ । प्रतीहार प्रभु वीनव, सकळ सभा थ्रे मूढ़ ।—मा. कां. प्र.

प्रतुद-सं० पु० [सं० प्रतुदः] पक्षी ।

प्रते—देखो 'प्रति' (रू. भे.)

उ०—अरियां जिकै आपरा झूंपड़ा रा तिणखळा मूढ़ा-मूढ़ा प्रते पकड़िया पण धव धणी वे ही तिणा लेने जावण दीधा नहीं ।
—वी. स. टी.

प्रते'क—देखो 'प्रत्येक' (रू. भे.)

प्रतेस्ट, प्रतेस्ठ—देखो 'प्रतिस्ठा' (रू. भे.)

प्रतै—देखो 'प्रति' (रू. भे.)

उ०—वीर स्त्री रा वचन नायण प्रतै । हे ! नायण आज पग मत मांड इलजो (महदी) मत दे ।—वी.स.टी.

प्रतोखणौ, प्रतोखबौ-क्रि०स० [सं० प्रतोषणम्] संतुष्ट करना ।

उ०—म्होकमसिंघ नूं बुलाय खायापणा में घणा प्रतोखीज्या अर मन में घणा रीज्या ।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

प्रतोखणहार, हारौ (हारी), प्रतोखणियौ—वि० ।

प्रतोखिओड़ौ, प्रतोखियोड़ौ, प्रतोख्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

प्रतोखीजणौ, प्रतखीजबौ—कर्म वा० ।

प्रतोखियोड़ौ-भू०का०कृ०—संतुष्ट किया हुआ. (स्त्री० प्रतोखियोड़ी)

प्रतोद–सं०पु० [सं०प्रतोदः] १. बैलों को हांकने का डंडा । (हि.को.) २. चाबुक ।

प्रतोळका, प्रतोळिका–सं०स्त्री० [सं०प्रतोलिका] गली । (ग्र. मा.)

प्रतोळी–सं०स्त्री० [सं० प्रतोली] १. किसी नगर का मुख्य मार्ग । २. नगर के मध्य से हो कर गया हुआ चौड़ा रास्ता । ३. गली । ४. मुख्य द्वार, बड़ा दरवाजा । ५. नगर के प्रकार में बना हुआ बड़ा दरवाजा । ६. दुर्ग का मुख्य द्वार । ७. वह दुर्ग जिसका द्वार नगर की ओर हो ।

रू० भे०—परतोळी ।

यौ०—प्रतोळीद्वार ।

प्रतोळीद्वार–सं० पु० यौ० [सं० प्रतोली + द्वार] मुख्यद्वार, दरवाजा ।

उ०—चउहिं दिसि द्वारि, प्रतोळीद्वार । अनिवार सत्राकरि ।

—सभा.

प्रत्तेस्ट, प्रत्तेस्ठ—देखो 'प्रतिस्ठा' (रू. भे.)

उ०—जिग हुवै संपूरण एम जाप, प्रत्तेस्ट वधै अति भ्रप प्रताप ।

—स. कु.

प्रत्य—देखो 'प्रथु' (रू. भे.)

उ०—नमौ पुनि भूपति प्रत्य प्रत्रीत । नमौ अवनी-अघ मेट अनीत ।

—ह. र.

प्रत्यमिय—देखो 'प्रथवी' (रू. भे.)

उ०—'सलौ' रण भूझि परयौ जुध जुट्टि । लयौ जसवास प्रत्यमिय लुट्टि ।—ला. रा.

प्रत्यळ—देखो 'प्रथुळ' (रू. भे.)

उ०—खळ प्रत्यळ खळ सयळ, वत्थ दे वळह तणी परि ।

—गु. रू. बं.

प्रत्यीप—देखो 'प्रथ्वीप' (रू. भे.)

उ०—तिकै भादवी माह ऊपांत तिथ्थी । पड़ै माय रै पाय प्रत्यीप प्रथी ।—मे. म.

प्रत्यंचा–सं० स्त्री० [सं०] धनुष की डोरी जिसकी सहायता से तीर छोड़ा जाता है, चिल्ला, ज्या । उ०—धनपत सैणां सिंभु तपै वठ मनमथ जांणै । भंवर प्रत्यंचा बांण डरपतौ हाथ न आंणै ।—मेघ.

रू० भे०—परतंचा, प्रतंचा, प्रतंज्या, प्रतिचा ।

प्रत्यंत–सं० पु० [सं०] यवन, म्लेच्छ ।

यौ०—प्रत्यंतदेस, प्रत्यंतधरा, प्रत्यंतराज ।

प्रत्यंतदेस–सं०पु०यौ० [सं०] म्लेच्छ-देश । उ०—जठै मंकुवांणै कही जवनां री जातिस्वभाव आप री उत्करस जणावै परंतु आज री चाळुक्य सारां ही प्रत्यंतदेसां री सरणौ ।—वं. भा.

प्रत्यंतधरा–सं० स्त्री० [सं०] यवन-देश, म्लेच्छ-देश ।

उ०—तत्तार खुरासांण न्याज निसुरत, रुस्तम, फीरोज इत्यादि प्रत्यंतधरा रा प्रवीर······ ।—वं. भा.

प्रत्यंतराज–सं० पु० [सं०] यवन राजा । उ०—जवनां रा जोर सूं हिंदुस्थांन में ग्रोद्राव पड़तां प्रतिहार नाहरराज मंडोवर सूं चलाय प्रत्यंतराज रै अधीन वणियौ ।—वं.भा.

प्रत्यक्ष–वि० [सं०] १. जो नेत्रों के सम्मुख स्पष्ट दिखाई दे रहा हो, नयनगोचर, उपस्थित, विद्यमान ।

२. जिसका ज्ञान इन्द्रियों द्वारा स्पष्ट हो रहा हो, इन्द्रियगोचर । उ०—आ बात बांचण वाळा में तो सम्यक्त्व प्रत्यक्ष न दीसै । पिण थां सुणवा वाळां री पिण संका पड़ै है ।—भि. द्र.

३. जिसमें किसी प्रकार का घुमाव या फिराव न हो, नियम, परिपाटी आदि से सीधा ।

४. जिसमें किसी प्रकार का बाह्य आधार या साधन का प्रयोग न हुआ हो ।

५. स्पष्ट, साफ, साक्षात् । उ०—१. 'सोमल' ब्राह्मण नी धिया, 'सोमा' नांमैं एक । प्रत्यक्ष जांणै अपछरा, चतुराई रूप विसेस ।

—जयवांणी

उ०—२. सुभ असुभ क्रियाफळ सुख दुख स्वरग नरक थर पांणी । स्वप्ना में स्वप्ना ज्यूं प्रत्यक्ष, भुगत रह्या जग प्रांणी ।

—स्रीसुखरांम जी महाराज

सं० पु०—चार प्रकार के प्रमाणों में से एक, जिसमें किसी प्रकार का संदेह न किया जासके ।

रू० भे०—परतक, परतक्ख, परतक्खि, परतक्ष, परतख, परतखि, परतखी, परतख्य, परतछ, परतिख, परत्तख, परत्यक्ष, पिरतक, पिरतक्ख, पिरतख, प्रतक, प्रतक्क, प्रतक्ख, प्रतक्ष, प्रतख, प्रतखि, प्रतखी, प्रतच्छ ।

प्रत्यक्षवादी–सं० पु० [सं०] वह व्यक्ति जो केवल प्रत्यक्ष प्रमाण ही माने ।

रू० भे०—प्रतखवादी ।

प्रत्यग्या—देखो 'प्रतिग्या' (रू. भे.)

उ०—१. सत्य प्रत्यग्या जो छै ताह री ।—वि. कु.

उ०—२. हूं थांहरो भाई छूं । म्हारी प्रत्यग्या पूरी न होसी, सीसोदिया हंससी ।—राव मालदे री वात

प्रत्यनीक–सं० पु० [सं०] एक अर्थालंकार जिसमें स्वयं शत्रु के अजय होने के कारण उसके किसी सम्बन्धी को बाधा पहुंचाने का वर्णन हो ।

प्रत्यय–सं० पु० [सं०] १. व्याकरण के अनुसार वह अक्षर या शब्द-समूह जो किसी धातु अथवा विकारी या मूल शब्द के अंत में जोड़ा जाने पर उस के अर्थ में विकाश करता हो ।

उ०—पद पदारथ संबंध पुनि, प्रत्यय आगम लोप । आरस पोरस सुभ असुभ, ग्रंथ हृदय धर गोप ।—ऊ. का.

ज्यूं०—पंच में आयत=पंचायत, पटौ=पटा+आयत=पटायत, धाड़+आयत = धाड़ायत, कड़वौ = कड़व + आस = कड़वास

इत्यादि।

२. पिंगल (छंद शास्त्र) का वह प्रकरण जिसके द्वारा छंदों के भेद या विस्तार तथा उन की संख्याएँ जानी जाती हैं। ये कुल नौ होते हैं। प्रस्तार, सूची, उद्दिष्ट, नष्ट, पाताल, मेरु, खंड-मेरु, पताका और मर्कटी।

प्रत्याख्यान-स० पु० [सं० प्रत्याख्यानं] खंडन।

प्रत्यागम-स० पु० [सं० प्रति+आगम] १. पुनर्जन्म।

ऊ०—समापत भोग न रोग न सोग, जपंत निकेवळ केवळ जोग। प्रत्यागम भो लिव भक्ति प्रदीप, समागम सो सिव सक्ति समीप। —ऊ. का.

२. पुनः लौटना, वापस आना।

प्रत्याघात—देखो 'प्रतिघात' (रू. भे.)

प्रत्याहार-सं० पु० [सं०] योग के आठ अंगों में से एक अंग इंद्रीयनिग्रह। (वं. भा.)

प्रत्युक्ति-सं० स्त्री० [सं०] जवाब, उत्तर।

प्रत्युत्तर-सं० पु० [सं०] उत्तर मिलने पर दिया जाने वाला उत्तर, उत्तर का उत्तर, जवाब दर जवाब।

रू० भे०—प्रत्तउत्तर।

प्रत्युत्तरकळा-सं०स्त्री० [सं० प्रत्युत्तरकला] पुरुषों की ७२ कलाओं में से एक कला।

प्रत्यूह-सं० पु० [सं०] १. रोक, अटकाव। उ०—नहिं वहुत बोलवौ सुभट नीत। प्रत्यूह भविस्यत ह्वै प्रतीत।—ऊ. का.

२. विघ्न, बाधा,। उ०—अहेम और ऐस्वरीय जीवना जरघौ करै, मांन्या करै मंतव्य की करत्तव्य को करयौ करै। अमैं प्रत्यूह व्यूह पें समस्तु भ्रु हल्लां भिरी, क्रमैं प्रत्यूह ओपमा दुरूह दंत ली किरी।—ऊ. का.

प्रत्येक-वि० [सं० प्रति+एक] १. बहुतों में से एक, हरेक।

उ०—निरिचित पतिव्रत लोक नेम, प्रत्येक करहिं परलोक प्रेम। —ऊ का.

२. एक बार में एक। ३. अलग-अलग, एकाकी।

रू० भे०—परते'क प्रते'क।

प्रथ—देखो 'प्रथु' (रू. भे.)

उ०—विहद लीध जिण वार, गैण प्रथ भूप जही रस।—सू. प्र.

प्रथक-अव्य० [सं० पृथक्] १. अलग-अलग, एकाकी, अकेला।

उ०—'जगवंत' जुवति जे जहंहि जीव। दहनोदय दहं ही प्रथक पीव।—ऊ. का.

२. भिन्न, जुदा।

प्रथम-वि० [सं०] १. गणना में जिसका स्थान सब से पहले हो, पहला, आदिका, अव्वल। उ०—भुज भिड़ज रूप मपताग भांति, कवि ण लखण गुण वरण क्रांति। सत उकति जेण पंडित प्रमांण, जुधि जैत मरम क्रम प्रथम जांण।—रा. रू.

२. गुण, महत्व, योग्यता आदि में जो सब से बढ़ कर हो, सर्वश्रेष्ठ।

३. वह जिसने प्रतियोगिता, परीक्षा आदि में सब से अधिक अंक प्राप्त किये हों।

सं० पु०—पिता। (ह. नां. मा)

क्रि० वि०—पहिले। उ०—१. प्रथम देस 'जैसांण', 'बीकांण' प्रगटी पछैं।—मे. म.

उ०—२. पातर वाळी प्रीत, मीठी लागै 'प्रथम' मन।—वां.दा.

रू० भे०—पड़थम, पढ़म, परथम, पहुव, प्रथम्म, प्रथिमि, प्रथिमी, प्रिथम।

यौ०—प्रथमपुरुस।

प्रथमज-वि० [सं०] जिसका जन्म प्रथम हुआ हो।

सं० पु०—बड़ा भाई, अग्रज।

प्रथमता-सं० स्त्री० [सं० प्रथम+रा० प्र० ता] प्रथम होने की अवस्था या भाव।

प्रथमपुरुस-सं० पु० यौ० [सं० प्रथमपुरुष] १. पहला व्यक्ति, पथम व्यक्ति।

२. अंग्रेजी व्याकरण के अनुसार उत्तमपुरुष। ३. संस्कृत व्याकरण के अनुसार अन्यपुरुष।

प्रथमांण—देखो 'प्रथवी' (मह., रू. भे.)

उ०—न भजै रघुनंद दया-समदं जे मत मंद जांण जडं। गुण राघव गाणौ 'किसन' कहांणौ, विच प्रथमांणै भाग वडं।—र.ज.प्र.

प्रथमा-सं० स्त्री० [सं०] १. व्याकरण में कर्ता कारक (विभक्ति)।

२. एक प्रकार की शराब।

प्रथमाद, प्रथमादा, प्रथमी—देखो 'प्रथवी' (रू. भे.)

उ०—१. प्रथमाद सिर व्रद पावियौ। कुळ-भांण 'चौड' कहावियौ। —सू. प्र.

उ०—प्रथमी छट्टा पाळगर, नर मट्टा करनार। तखत वयट्ठा 'सूष' कवि, अट्ठा सहर मझार।—वां. दा.

उ०—३. सुभ मंझि असुभ लेख विध साखै। असुभ सगुन प्रथमी सह आखै।—सू. प्र.

प्रथमीतळ—देखो 'प्रथवीतळ' (रू. भे.)

प्रथमीपोख-देखो 'प्रथवीपोख' (रू. भे.) (अ. मा.)

प्रथमेण-देखो 'प्रथवी' (मह., रू. भे.)

उ०—राय हर पण जनक राखै, सूर ससि रिख देव माखै, मुणै जग प्रथमेण।—र. ज. प्र.

प्रथम्म—देखो 'प्रथम' (रू. भे.)

उ०—प्रथम्मा तुही पव्वई सैल-पुत्ती।—मे. म.

(स्त्री० प्रथम्मा, प्रथमी)

प्रथम्मी—देखो 'प्रथवी' (रू. भे.)

उ०—महा-गिड़ पेस महजळ मज्झ। किया तें जुद्ध प्रथम्मी कज्ज।
—ह. र.

प्रथरोमा—देखो 'प्रथुरोमा' (रू. भे.) (अ. मा.)

प्रथळ—देखो 'प्रथुळ' (रू. भे.)

उ०—१. प्रथळ करै रे प्रांणिया नारायण सूं नेह।—पी.ग्रं.

प्रथवी-सं० स्त्री० [सं० पृथिवी] पृथ्वी, भूमि।

उ०—वीस चार धुर वरणवां, सुख-वरीस संसार। प्रथवी सीस पच्चीसमौं, ईस 'पतौ' अवतार।—जैतदान बारहठ

रू० भे०—पहम, पहमी, पहवि, पहवी, पहुमि, पहुमी, पहुवी, पहोमि, पहोमी, पहोवी, पिरथमी, पिरथवी, पुहम, पुहमि, पुहमी, पुहवि, पुहवी, पुहवीइ, पुहुवि, पुहोवी, पोहम, पोहमी, पोहव, पोहवी, पोहोम, पौहमि, पौहमी, पौहुमी, प्रतथमिय, प्रथमाद, प्रथमादा, प्रथमी, प्रथम्मी, प्रथिमि, प्रथिमी, प्रथिवी, प्रिथमाद, प्रिथमी, प्रिथवी, प्रिथव्विय, प्रिथिमि, प्रिथिमी।

मह०—प्रथमांण, प्रथमेण।

प्रथवीतळ-सं०पु०यौ० [सं०पृथिवी+तल] १. पाताल। २. पृथ्वी की ऊपरी सतह, धरातल।

रू०भे०—पिरथमीतळ, प्रथमीतळ, प्रिथमीतळ।

प्रथवीधणी-सं०पु०यौ० [सं० पृथिवी+धनिक] १. राजा, नृप। २. शेषनाग।

रू०भे०—पुहोवीधणी।

प्रथवीधर-सं०पु० [सं० पृथिवीधर] १. राजा, नृप। २. शेषनाग। ३. पर्वत।

रू०भे०—पिरथवीधर, पुहवीधर, प्रथिवीधर।

प्रथवीनाथ-सं०पु०यौ० [सं० पृथिवीनाथ] राजा, नृप।

रू० भे०—पहुवीनाथ, पिरथमीनाथ, पिरथवीनाथ, प्रथिवीनाथ,

प्रथवीपत, प्रथवीपति-सं० पु० यौ० [सं० पृथिवीपति] १. राजा, नृप। २. यमराज।

रू०भे०—पुहविपति, पुहविपत्ति, प्रथिवीपति, प्रथिवीपती।

प्रथवीपाळ-सं०पु०यौ० [सं०पृथिवी+पालक] १.मेघ, इन्द्र। (ना.डि.को.) २. राजा, नृप।

रू०भे०—प्रथिवीपाळ, प्रिथवीपाळ।

प्रथवीपोख-सं०पु०यौ० [सं०पृथिवीपोष] १. इन्द्र। २. राजा, नृप।

रू०भे०—पिरथमीपोख, पिरथवीपोख, पुहमीपोख, प्रथमीपोख।

प्रथवीराज-सं०पु० [सं०पृथिवीराज] राजा, नृप।

रू०भे०—पिरथवीराज।

प्रथवीस-सं०पु० [सं०पृथिवीश] १. राजा, नृप। २. इन्द्र।

रू० भे०—पुहवीस, प्रिथवीस, प्रिथुवीस।

प्रथा-सं० स्त्री० [सं० पृथा] १. राजा कुंती-भोज की पुत्री, जिसका विवाह पांडु के साथ सम्पन्न हुआ था। यह युधिष्ठिर, भीम और अर्जुन की माता थी।

[सं०] २. किसी उत्सव विशेष को मनाने के लिये पुराने समय से चली आ रही परिपाटी, परंपरा।

३. विशेष अवसरों पर कार्य सम्पादन करने की परिपाटी, परम्परा।

४. किसी देश समाज या जाति में सर्वमान्य पुरानी रीति, जिसका उल्लंघन करना अनुचित माना जाता है।

५. रीति-रिवाज, रस्म।

रू० भे०—परथा, प्रिथा।

प्रथित-वि० [सं०] प्रसिद्ध, विख्यात। उ०—प्रथित इण कुळ अप मोहण, जाडेचा हरिया जिण जोहण।—वं. भा.

प्रथिमि, प्रथिमी—१. देखो 'प्रथवी' (रू. भे.)

२. देखो 'प्रथम' (रू. भे.)

उ०—समरां प्रथिमि प्रथिमि सारद नां, निमिस्कार ब्रह्मा नारद नां।
—पि. ग्रं.

प्रथिवी—देखो 'प्रथवी' (रू. भे.)

प्रथिवीधर—देखो 'प्रथवीधर' (रू. भे.)

प्रथिवीनाथ—देखो 'प्रथवीनाथ' (रू. भे.)

प्रथिवीपति, प्रथिवीपती—देखो 'प्रथवीपत, प्रथवीपति' (रू. भे.)

उ०—राज करै रिम-राह प्रगट, पिंगळ प्रथिवीपति। प्रतपै जस परताप, दांनि जळहर जिम दीपति।—ढो. मा.

प्रथिवीपाळ—देखो 'प्रथवीपाळ' (रू. भे.)

प्रथी—देखो 'प्रथ्वी' (रू. भे.) (डि.को.,ह.नां.मा.)

उ०—१. सांचवट सूं अंगी-अंग वाकारनै मारणो, अरु प्रथी प्रतीख चोख को वचन उवारणो।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

उ०—२. प्रथी अप तेज अनीळ अकास। नहीं तुझ सुन्न असुन्न निवास।—ह. र.

उ०—३. कहै जम दियं ज्यूं हिज असुर कोपियो, सहै दुख मांनव अमर सूक। वही जाती थकी प्रथी इण वार विच, रही गड-डसण कमधज तणी रूक।—दुरगादास राठौड़ रौ गीत

प्रथीछात—देखो 'प्रथ्वीछात' (रू. भे.)

उ०—उभै वात थारी प्रथीछात भारी 'अभा', 'अजावत' घरांणी चाढ़ण ओप। महरवाळी नजर लहर महरांण री, कहरवाळी नजर वीज रौ कोप।—वखतौ खिड़ियो

प्रथीनाथ—देखो 'प्रथ्वीनाथ' (रू. भे.)

उ०—मुरधर-पति सूं मेड़तौ, 'अभौ' हुवौ असवार। प्रथीनाथ जोधांणपुर, आयौ हरि अवतार।—रा.रू.

प्रथीप—देखो 'प्रथ्वीप' (रू. भे.)

उ०—परम जोत दसरथ प्रथीप, ते ग्रह अवतार।—र. ज. प्र.

प्रथीपत, प्रथीपति, प्रथीपति—देखो 'प्रथ्वीपति' (रू. भे.)

उ०—१. करणी डहरियी मारै पेट थी, दिन पूरा हुवा, तरै करण री मा कस्टी, तरै जोतखियां कह्यो—'हमार वेळा बुरी वहै छै, श्रै दोय घड़ी टळै, पछै छोरू हुवै तो महाराज प्रथीपत हुवै।'
—नैणसी

उ०—२. मतंग पछटण खगां निहंग छिवतै मछरि, प्रथीपति श्रभंग भुज तैग पूजी। सुरंग भालां लियां जोध नव-साहसी, दुरंग वांका लियै 'कमो' दूजी।—अनोपसिंह सांदू

उ०—३. त्रिया भुज भार फणपफण व्याळ। कणवकण फौज जणज्जण काळ। प्रथीपति बाहर एण प्रकार। डकावत नाहर लेत टकार।—मे. म.

प्रथीपाळ—देखो 'प्रथ्वीपाळ' (रू. भे.)

प्रथीपुरंदर—देखो 'प्रथ्वीपुरंदर' (रू. भे.) (डि. को.)

प्रथीराजोत-सं० पु० [सं० पृथ्वी+राज+पुत्र] चौहान वंश के अन्तर्गत देवड़ा वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

प्रथीस—देखो 'प्रथ्वीस' (रू. भे.)

उ०—बहु वड किग वखाणवै, गढ़पति वंस छतीस। महावीर द्रढ़ सांगध्रम, पातल' पढ़त प्रथीस।—जैतदांन बारहठ

प्रथु-वि० [सं० पृथु] १. चौड़ा, विस्तृत। २. बड़ा, महान।
३. दीर्घ। (श्र. मा.)
४. अधिक, विपुल। ५. असंख्य, अगणित, बहुत।
सं० पु० [सं० पृथुः] १. सूर्यवंशी राजा अनेन के पुत्र का नाम, राजा पृथु।
उ०—सुत 'विकुक्ष' 'सकुनिज' सुत 'स्वसाद', पुत्र ज ककुस्थ अति हित प्रमाद। जे सुत 'अनन' प्रथु पुत्र जास, राजे 'प्रथु' नंदन 'विस्टरास'।—सू. प्र.
२. मतान्तर से राजा वेणु के पुत्र का नाम। ३. अग्नि, आग।
४. विष्णु। ५. शिव।
रू० भे०—परथु, पिथ, पिरथु, प्रत्थ, प्रथ, प्रथू, प्रिस्थु, प्रिस्थू, प्रिथ, प्रिथु।

प्रथुक-सं० पु० [सं० पृथुकः] (स्त्री० प्रथुका) १. बालक, बच्चा, शिशु। (श्र. मा.)
उ०—प्रथुक तुरी वळवळ चपळ, दळ हळवळ दीवांण, सरद निसा फिर खीर सर, वेळा सरस वखांण।—रा. रू.
रू० भे०—प्रिथुक।
[सं० पृथुकं] २. चिड़वा। ३. हिंगुपत्री।

प्रथुरोमा-सं० स्त्री० [सं० पृथुरोमा] मछली। (डि. को., ह. नां. मा.)
रू० भे०—प्रथरोमा।

प्रथुळ-वि० [सं० पृथु+लच्] १. बहुत दूर तक पहुंचने या व्यास होने वाला, लंबा, विस्तृत, दीर्घ। (अ. मा.)
उ०—महि दाखत मेवाड़, राड चाड अकबर रचै, विखै विखायत वाड, प्रथुळ पहाड़ 'प्रतापसी'।—दुरसो आढ़ौ
२. विस्तीर्ण। ३. बहुत, अधिक।
उ०—चहूं कूंटां चरचा प्रथुळ, तव परचा भव पढ़ै।—मे. म.
४. ढेर, राशि, समूह।
रू० भे०—प्रथळ, प्रथळ, प्रथूळ, प्रिथुळ।

प्रथू—देखो 'प्रथु' (रू. भे) (अ. मा., डि. नां. मा.)
उ०—किती कहूं कीरत कथा, प्रभता तूझ अपार। जग सुधार करवी 'जथा' 'पता' प्रथू अवतार।—जैतदांन बारहठ

प्रथूळ—देखो 'प्रथुळ' (रू. भे.)

प्रथ्वी-सं० स्त्री० [सं० पृथ्वी] १. सौर जगत का वह ग्रह जिस पर मनुष्यादि प्राणी रहते हैं। (डि को.)
२. उक्त का आकाश तथा जल से भिन्न वह भाग जिस पर मनुष्य तथा पशु विचरण या भ्रमण करते हैं, जमीन।
उ०—इणां सारां नूं प्रथ्वी पर दातार संग्या है, इतरा दातार कहाया।—द दा.
पर्या०—अकळकुमारी, अचळा, अवनी, इळा, उरवी, कुंभनी, कु, खंडी, खमा, खाख, खित, खोणी, गहवरी, गोत्रा, चास, जगतमोहणी, जगती, जमी, जळसीर, ज्या, तरविसतार, तूंगा, थित, थिरा, दग्दगी, दीपदघ, धर, धरणी, धरती, धरा, धूतारी, प्रथवी, बारही, भंडारी, भरतरी, भू, भूमि, मनहरणी, महि, मुक्तवेणी, मूळा, मेदनी, रणमंडप, रणमंडा, रतनगरभा, रसवती, रसा, रैणा, वसुंधरा, वसुमती, विसंभरा, सथर, समंदमेखळा, सुरथाळी, सोलाळी।
यौ०—प्रथ्वीकाय, प्रथ्वीचक्र, प्रथ्वीछात, प्रथ्वीतळ, प्रथ्वीधर, प्रथ्वीपत, प्रथ्वीपति, प्रथ्वीपती, प्रथ्वीपुत्र, प्रथ्वीपुरदर, प्रथ्वीपोख, प्रथ्वीराज।
३. स्वर्ग और नर्क के अतिरिक्त हमारा यह मृत्युलोक, इहलोक, संसार।
४. पंच तत्त्वों या पंच-भूतों में से एक जिसका प्रधान गुण गंध होते हुए भी जिसमें गौण रूप से शब्द, स्पर्श, रूप और रस चारों गुण भी पाए जाते हैं।
वि० वि०—देखो 'भूत'।
५. सत्रह अक्षरों का एक वर्णवृत्त, जिसमें ८, ९ पर यति और अंत में लघु-गुरु होते हैं।
६. एक॰।
रू० भे०—परथमी, परथवी, परथी, पह, पहि, पिथि, पिथी, पिरथि, पिरथी, पुह, पोमी, प्रथी, प्रित्थी, प्रिथि, प्रिथी, प्रीथी।

प्रथ्वीआचारय-सं० पु० [सं० पृथ्व्याचार्य] भक्तमाल के अनुसार शंकर-स्वामी के प्रमुख चार शिष्यों में से एक शिष्य, जिसने शृंगेरी मठ की स्थापना की थी। इनके चेले भारती, सरस्वती एवं पुरी के नाम से प्रख्यात हैं।

प्रथ्वीकाय-सं० पु० यौ० [सं० पृथ्वी+काया] मिट्टी, हींगलु, हरताल, पत्थर, हीरा आदि।

प्रथ्वीचक्र- सं० पु० यौ० [सं० पृथ्वीचक्र] १. भू-मंडल ।
उ०—ता पीछै पातसाह जी री तपस्या प्रथ्वीचक्र पर सूरज की न्यांई फैलती भई ।—द. दा.

प्रथ्वीछात-सं०पु०यौ० [सं० पृथ्वी+छत्र] राजा, नृप ।
रू० भे०—प्रथीछात ।

प्रथ्वीतळ-सं०पु०यौ० [सं० पृथ्वीतल] १. भूमि का वह ऊपरी तह (धरातल) जिस पर मनुष्य, पशु-पक्षी आदि प्राणी रहते हैं तथा जिस पर पेड़, पौधे, वनस्पतियां, फलती-फूलती हैं ।
२. दुनिया, संसार । ३. पाताल ।

प्रथ्वीधर-वि० [सं० पृथ्वीधर] पृथ्वी को धारण करने वाला ।
सं० पु०—१. शेषनाग । २. पहाड़ । ३. राजा, नृप ।
रू० भे०—परथीधर, पिरथीधर ।

प्रथ्वीनाथ-सं० पु० यौ० [सं० पृथ्वीनाथ] १. राजा, नृप ।
रू०भे०—परथीनाथ, पिरथीनाथ, प्रथीनाथ, प्रिथीनाथ।

प्रथ्वीप-सं०पु० [सं० पृथ्वीप] राजा, नृप ।
रू० भे०—प्रत्थीप, प्रथीप, प्रिथीप ।

प्रथ्वीपत, प्रथ्वीपति, प्रथ्वीपती-सं०पु०यौ० [सं० पृथ्वीपति] १. राजा, नृप । २. यमराज ।
रू० भे०—प्रथीपत, प्रथीपति, प्रथीपती, प्रिथीपति ।

प्रथ्वीपाळ-सं० पु० यौ० [सं० पृथ्वी+पालक] १. मेघ, इन्द्र ।
२. राजा, नृप ।
रू० भे०—पिरथीपाळ, प्रथीपाळ ।

प्रथ्वीपुत्र-वि० [सं० पृथ्वीपुत्र] पृथ्वी से उत्पन्न ।
सं०पु०यौ०—१. मंगल । २. वृक्ष ।

प्रथ्वीपुरंदर-सं०पु०यौ० [सं० पृथ्वीपुरंदर] राजा, नृप ।
रू० भे०—प्रथीपुरंदर ।

प्रथ्वीपोख-सं०पु०यौ० [सं० पृथ्वीपोष] १. इन्द्र । २. राजा, नृप ।

प्रथ्वीराज-सं०पु०यौ० [सं० पृथ्वीराज] राजा, नृप ।
रू० भे०—पिरथीराज ।

प्रथ्वीस-सं० पु० [सं० पृथ्वीश] १. राजा, नृप । २. इन्द्र ।
रू० भे०—प्रथीस ।

प्रद-वि० [सं०] देने वाला, दायक । उ०—नांणी नारायण प्रद पारायण, रांमायण रोसंदा है ।—ऊ. का.
यौ०—आरांमप्रद, दुखप्रद, सुखप्रद ।

प्रदकण, प्रदकणा, प्रदक्खण, प्रदक्खणा, प्रदक्षण, प्रदक्षणा, प्रदक्षिण, प्रदक्षिणा, प्रदखण, प्रदखणा-सं० स्त्री० [सं० प्रदक्षिणं, प्रदक्षिणा] भक्ति पूर्वक किसी पूज्य को दाहिनी ओर करके उसके चारों ओर घूमने की क्रिया, परिक्रमा । उ०—१. त्रिण्ह प्रदक्षिण भमती देऊं, त्रिण्ह करूं परणांम री माई ।—स. कु.
उ०—२. ताहरां रायमल जाय वीरमदे रै ढोलियै प्रदिक्षणा दे, पगे लाग बाहिर आयौ ।—नैणसी
रू० भे०—परदकण, परदकणा, परदक्खण, परदक्खणा, परदक्षण, परदक्षणा, परदक्षिण, परदक्षिणा, परदखण, परदखणा, परदच्छिण, परदच्छिणा, परदछ, परदछण, परदछणा, परदछिणा, परदिखणा, परिदक्षिण, परिदक्षिणा, परिदखणा, परिदखिणा, प्रदच्छ, प्रदच्छण, प्रदच्छणा, प्रदच्छिणा, प्रदछण, प्रदछणा, प्रदछिणा, प्रदिक्षण, प्रदिक्षणा, प्रदीखण, प्रदीखणा ।

प्रदच्छ-वि० [सं० प्रदक्ष] १. चतुर, दक्ष । उ०—घनं प्रतच्छ तच्छ के प्रदच्छ स्कच्छ के घरे ।—ऊ. का.
२. देखो 'प्रदक्षिणा' (रू. भे.)

प्रदच्छण, प्रदच्छणा, प्रदच्छिणा, प्रदछण, प्रदछणा, प्रदछिणा—देखो 'प्रदक्षिणा' (रू. भे.)
उ०—दीध प्रदछण हाथ जोड़ न हरि, चरणाम्रत दरस निहार ।
—र.ज.प्र.

प्रदत, प्रदत्त-वि० [सं० प्रदत्त] जो दिया जा चुका हो, दिया हुआ ।
रू० भे०—परदत ।

प्रदमन—देखो 'प्रद्युम्न' (रू. भे.)
उ०—वसदेव पिता हुआ तें के घर बेटौ हुऔ तौ वासदेव स्रीक्रस्ण जी हुऔ । देवकी सासू हुई । त्यें के घरि वहु हुई तौ रांमा कहतां लखमी तें को अवतार रुखमणी जी कै घरि वहु हुइ तौ रति हुई प्रदमन जी की स्त्री ।—वेलि टी.

प्रदर-सं० पु० [सं०] १. तीर, बांण । (अ.मा., डिं.को.)
२. दरार, तड़कन । उ०—प्रदर निहार पेट में पैसे, दे दारांन दवाई । आ कुण जांणै गाय अनोखी, खळ गुळ साथ खवाई ।
—ऊ. का.
३. स्त्री-रोग विशेष जिसमें स्त्रियों के गर्भाशय से सफेद या लाल रंग का लसीदार पानी सा बहा करता है । इस रोग से स्त्री दिन प्रति-दिन क्षीण और कृश होती जाती है ।
रू० भे०—परदर ।

प्रदरसक-वि० [सं० प्रदर्शक] दिखलाने वाला, बतलाने वाला, प्रदर्शन करने वाला ।
रू० भे०—परदरसक ।

प्रदरसण-सं० पु० [सं० प्रदर्शनम्] १. दिखलाने का काम ।
२. शिक्षण, उपदेश, व्याख्या । ३. सूरत, शक्ल, चितवन ।

प्रदरसणी-सं० स्त्री० [सं० प्रदर्शनम्+रा० प्र० ई] प्रदर्शनी, नुमाइश ।

प्रदांन-सं० पु० [सं० प्रदानम्] १. देने का कार्य, दान । २. भेंट, चढ़ावा ।
रू० भे०—परदांन ।

प्रदाक, प्रदाकु–सं०पु० [सं०पृदाकुः] १. सर्प, सांप। (ग्र.मा.,ह.नां.मा.) २. बिच्छु।

प्रदायक–वि० [सं०] देने वाला।

प्रदाव–सं० पु० [सं०] अग्नि, आग। उ०—दुहत्य हत्थ ठेल देत हत्थ ले प्रदाव को।—ऊ. का.

प्रदाह–सं० स्त्री० [सं०] ज्वर आदि के कारण शरीर में होने वाली दाह या जलन।

प्रदिखरा, प्रदिखरणा—देखो 'प्रदक्षिणा' (रू. भे.)

उ०—१. हरि वांद्यउ हाथी थी ऊतरी, त्रिण्ह प्रदिखरा दीधो जी। —स. कु.

उ०—२. ऊठ कोड़ी रोम ऊलस्या, हुई सफल ते यात्र। त्रिण प्रदिखरणा देइ करी, भावे वंदू हो पात्र।—स.कु.

प्रदिमन—देखो 'प्रद्युम्न' (रू. भे.)

उ०—ग्रर जगती रै विखैं वसीया सु कोण पितामह तौ जगदीस स्रीक्रस्ण। पिता तौ प्रदिमन पोत्रौ ग्रनिरुध।—वेलि टी.

प्रदिसा–सं० स्त्री० [सं० प्रदिशा] दो मुख्य दिशाओं के बीच की दिशा, कोण, विदिशा।

प्रदीखण, प्रदीखणा—देखो 'प्रदक्षिणा' (रू. भे)

उ०—धन्य दोहाड़उ ग्राज को, देई प्रदीखणा लागइ छइ पाई। —वी. दे.

प्रदीप–सं० पु० [सं० प्रदीपः] १. दीपक, चिराग। (नां.मा.,ह.नां.मा.) २. प्रकाश, ज्योति। (ग्र. मा.) ३. किरण, रश्मि। (ह. नां. मा.)

प्रदीपक–वि० [सं०] १. प्रकाश या रोशनी करने वाला। २. प्रदीपन करने वाला।

सं० पु०—एक प्रकार का भयंकर विष जिसके सूंघने मात्र से ही मनुष्य मर जाता है।

प्रदीपण, प्रदीपन–वि० [सं० प्रदीपन] १. प्रकाश करने वाला। २. उत्तेजक।

सं० पु० [सं० प्रदीपनं] १. प्रकाश करने का काम।

[सं० प्रदीपनः] २. एक प्रकार का खनिज विष।

प्रदीप्त–वि० [सं०] १. प्रज्वलित, प्रकाशित। २. जगमगाता हुआ, प्रकाशमान।

रू० भे०—परदीपत, परदीत।

प्रदुमन, प्रदूमन—देखो 'प्रद्युम्न' (रू. भे.)

उ०—१. वसुदेव पिता सुत थिया वासुदे, प्रदुमन सुत पित जगत-पति। सासू देवकी रांमा सुवहू, रांमा सासू वहू रति।—वेलि

उ०—२. करि चक्र पूज हेत अधिकारै, घरपति कनक थाळ मझि धारै। उर नंदनंद प्रदुमन ग्राराधै। साधन एह नखित्र पुख साधै। —सू. प्र.

उ०—३. सहंस समपि कपिला इक साथै। हळद दोव चंदण दधि हाथै। आवै चक्र निकट ऊमहतौ। किसन प्रदूमन नांम कहंतौ। —सू. प्र.

प्रदेस–सं० पु० [सं० प्रदेशः] १. भू-भाग का कोई बड़ा खंड। २. किसी संघ राज्य की कोई इकाई, प्रांत।

ज्यूं०—राजस्थान प्रदेस, उत्तर-प्रदेस।

३. ग्रंगूठे के ग्रगले सिरे से लेकर तर्जनी के ग्रगले सिरे तक की लंबाई या दूरी। ४. ग्रंग, ग्रवयव।

रू० भे०—पएस, परदेस।

यौ०—प्रदेसबंध।

प्रदेसबंध–सं०पु०यौ० [सं० प्रदेश + बंधः] जीव के साथ न्यूनाधिक परमाणु वाले कर्म स्कन्धों का सम्बन्ध। (जैन)

रू० भे०—पएसबंध।

प्रदेसी–वि० [सं० प्रदेशी] प्रदेश संबंधी, प्रदेश का।

रू० भे०—पएसी।

प्रदोख—देखो 'प्रदोस' (रू. भे.)

उ०—ग्रविलोकी उत्तम इसिउं, माधव मनि संतोख। हवु हरिख हेळा-मांहि, पांमिउ समय-प्रदोख।—मा.कां प्र.

प्रदोमन–सं० पु० [सं० प्रद्युम्न] १. सूर्य। (नां. मा.) २. देखो 'प्रद्युम्न' (रू. भे.)

प्रदोस–सं० पु० [सं० प्रदोष] १. सूर्यास्त ग्रौर रात्रि के आगमन का समय, सायंकाल। (डि. को.)

उ०—प्रात प्रदोस दुपैरां जगमग्गै जोतां। मा जगमग्गै जोतां। —मे. म.

२. प्रत्येक पक्ष की त्रयोदशी को किया जाने वाला उपवास या व्रत जिसमें संध्या के समय शिव पूजन करके भोजन किया जाता है। ३. वह ग्रंधेरा जो ठीक सायंकाल के समय होता है। ४. बहुत बड़ा दोष।

रू० भे०—परदोस, प्रदोख।

प्रद्युमन, प्रद्युम्न–सं०पु० [सं०प्रद्युम्न] १. कामदेव, मदन। (ह. नां. मा.) २. रुकमणी के गर्भ से उत्पन्न श्रीकृष्ण के पुत्र का नाम।

उ०—सांब प्रद्युम्न कुमार संताप्यउ, क्रस्ण द्विपायन साह जी। —स. कु.

३. मनु के पुत्र का नाम।

रू० भे०—प्रजु, प्रजुण, प्रजुन, प्रजू, प्रजूण, प्रज्जुन, प्रदमन, प्रदिमन, प्रदुमन, प्रदूमन, प्रदोमन।

प्रद्योत–सं०पु० [सं० प्रद्योतः] १. किरण, रश्मि। २. दीप्ति, ग्राभा, चमक।

प्रद्योतन–सं०पु० [सं० प्रद्योतनः] १. सूर्य, भानु। (अ. मा., डि. नां. मा., नां. मा.)

[सं० प्रद्योतनम्] २. चमक, प्रकाश । ३. दहकन ।

प्रद्रव, प्रद्राव–सं०पु० [सं० प्रद्रवः, प्रद्रावः] १. पलायन करना, भाग जाना । २. गति से चलना ।

प्रधन–सं० पु० [सं० प्रधनम्] १. युद्ध ।

उ०—जिण रीति ववावद रै अधीस हड्डाधिराज हालू सूरसज्जा सोवण रौ साधन संपादन करतै बांणवै वरस रौ वय वांसै वाळियौ 'र अनेक आंटां रा अवमरद आसंगिया तौ भी प्रधन में पुद्गळ रै पैलां रौ प्रहार भी न पायौ ।—वं. भा.

२ युद्ध में लूट का माल । ३. नाश, विनाश ।

४. नमस्कार । (अ. मा.)

रू० भे०—प्रधुन ।

प्रधांन–वि० [सं० प्रधांन] १ खास, मुख्य । उ०—युग प्रधांन जिनसिंघ यतीसर, नगर निजीक पधारे ।—स कु.

२. प्रसिद्ध । ३. उत्तम ।

सं०पु० [सं० प्रधानम् या प्रधानः] १. मुख्य पदार्थ, अत्यावश्यक पदार्थ ।

२. इस भौतिक संसार का उपदान कारण । ३. परब्रह्म ।

४. ईश्वर, शिव । उ०—प्रकत्ति अतीत पुरुख प्रधांन ।—ह. र.

५. सरदार, दरबारी । उ०—नव खंड रा भूपाळ निरखतां, वडा प्रधांन जिके वडवार । गिर कैलास करंता गाहड, आया खडे कियइ इळगार ।—महादेव परवती री वेलि

६. सचिव । उ०—१. पाछै आय प्रधांन, कमधज नें कहिया कथन । जिदै कह्यौ जवांन, पख हेक में जासां परा ।—पा. प्र.

उ०—२. एक राजा रौ प्रधांन राजा रो माल खावै नहीं, विण दूजा प्रधांन द्वेसो । सो राजा कने चुगली खाधी ए प्रधांन आप रौ माल उडावै छै । जब राजा दोयां नें भेलाकर पूछ्यौ । तब ते चुगलखोर कहै–डावडा नें दरबार रा पांना स्याही लेखणा दीधी । जद प्रधांन कह्यौ-पांना स्याही लेखणा तौ भगवानै दीधी छै ।—भि द्र.

७. सेनापति । उ०—जरै स्रोतानुराग रै ही प्रभाव आकरसण, मोहण, द्रावण, उनमादण, वसीकरण, पांचूं ही मनोज रा सायकां रौ वेझौ होय तत्काळ ही आप रा प्रधांन टीला नूं बुलाय प्रामारी रा पांणिग्रहण रै काज अरबुदाचळ जाय सलख रा चित्त में या बात स्वीकार करावण री पुणी ।—वं भा.

८. राजपूत युग में राजा द्वारा किसी सामंत या जागीरदार को दिया जाने वाला पद विशेष । (मारवाड़)

वि०वि०—उक्त पदाधिकारी जागीरदार के अधिकार में अपनी निजी जागीर के अतिरिक्त १० या १२ हजार रु० की आमदनी की जागीरी विशेष होती थी ।

रू० भे०—पड़धांन, परदांन, परधांन, पहांण ।

प्रधांनगी–सं० स्त्री० [सं० प्रधान + रा० प्र० गी] १. प्रधान का पद या उक्त पदाधिकारी को मिलने वाली विशेष जागीर । २. प्रधानता ।

रू० भे०—पड़दांनगी, पड़धांनगी, परदांनगी, परधांनगी ।

प्रधांनता–सं० स्त्री० [सं० प्रधान + रा० प्र० ता] १. प्रधान होने का भाव या कर्म । २. प्राथमिकता ।

प्रधांनौ–सं० पु० [सं० प्रधान + रा०प्र० औ] प्रधान का पद या कार्य ।

उ०—रांम प्रधांनौ राजि रौ, रांमण नह धारै । समहर मांडो सूरिमां, इम वयण उचारै ।—सू. प्र.

प्रधारक–सं०पु० [?] १. बाण, तीर ।

उ०—नभ धरां घूमरां भड़ निराट । घूमरां उडे भिड़ भिड़ज घाट । छूटिया प्रधारक अति छछोह । बाथनां चन्नणां लियण बोह ।—वि.सं.

[सं० पृदाकु] २. सर्प, सांप ।

प्रधाव–सं०पु० [?] आक्रमण, हमला । उ०—प्रचंड लोट विंड के धकै प्रचड के परे, वितुंड तुंड तुंड लौं, भगं अभंड ह्वै झरै । प्रजोध जोध कुप्पि के प्रधाव धप्पि दे परे । महा गुरुर-पूर सूर दूर दूर तें मरे ।—ऊ. का.

प्रधुन—देखो 'प्रधन' (रू. भे.) (अ. मा.)

प्रध्वंस सं० पु० [सं०] १. पूर्ण विनाश ।

२. संहार । ३. नितान्त अभाव ।

प्रध्वंसक–वि० [सं०] विध्वंस करने वाला, नाश करने वाला ।

प्रध्वंसी–वि० [सं०] नाश करने वाला, विध्वंसक ।

प्रनाळ—देखो 'परनाळ' (रू. भे.)

उ०—एक घाव दोय टूक वटक्का अंग रा । खळकै लोही खाळ प्रनाळ पतंग रा ।—किसोरदांन बारहठ

प्रनाळका—देखो 'प्रणाळका' (रू. भे)

प्रनाळी—देखो 'प्रणाळी' (रू. भे.)

प्रपंच–सं० पु० [सं०] १. संसार, दुनिया । उ०—राजा मल्लिनाथ तौ पहली ही पुत्र नूं जुवराज भाव देर प्रपंच हूं उदासीन एकांत में रहियौ ।—वं. भा.

२. उद्योग, परिश्रम । उ०—किल कंचन कांमनि त्याग करै, धन संच प्रपंच न रंच धरै । तज स्वाद फिरै महितारण कौ, निरखै नहि नेनन नारन कौ ।—ऊ. का.

३. सांसारिक, झंझट ।

४. तजवीज, उपाय । उ०—अर अठी नागोर पहली रा जुद्ध मैं आप रौ आबूगढ़ भीम रै गयौ सुणतां ही कुमार समेत प्रमार सळख अणिहलपुर जाय जुद्ध में मरण रौ प्रपंच घड़ियौ ।—वं.भा.

५. षड़यंत्र, जाल । उ०—१. इण रीति अमरसिंह नागौर जाय कैमास रा मिळाप में कपट रै निदांन के ही कैद करण रा प्रपंच किया ।—वं. भा.

उ०—२. रांणी जी छळ सूं एक टावड़ी नै मरदांनौ भेख करवाय नै वां नै मारण रौ ई प्रपंच रचियौ पण खुद भगवांन जिण रै विळ

प्रफुल्लणौ, प्रफुल्लवौ–क्रि० अ० [सं० प्रफुल्ल + रा० प्र० णो] १. फलना-फूलना । २. फूल आदि का खिलना । ३. आनन्दित होना, हर्षित होना । ४. मुस्कराना ।

प्रफुल्लणहार, हारौ (हारी), प्रफुल्लणियौ—वि० ।

प्रफुल्लिग्रोड़ौ, प्रफुल्लियोड़ौ, प्रफुल्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

प्रफुल्लीजणौ, प्रफुल्लीजबौ—भाव वा० ।

प्रफुलणौ, प्रफुलवौ—रू० भे० ।

प्रफुल्लता–सं०स्त्री० [सं०प्रफुल्ल + रा०प्र०ता] प्रसन्नता, हर्ष, खुशी । उ०—रेढ़ौ कहै छै—तूं माता निस्चित रह, मन मह मत कर सोच । राव निचिंतो ना करूं, कदे न खाऊं गोच । जो वरण धारा नूंघिया रावां भंजू माण । तो नै भली कहाड़स्यूं, डाढ़ाळा री आंण । इमा वचन सुण, तन री प्रफुल्लता देख भूंडण कही ।

—डाढ़ाळा सूर री वात

रू०भे०—प्रफुलता ।

प्रफुल्लित–वि० [सं०] १. पूर्ण खिला हुआ, फूला हुआ ।

२. लहलहाता हुआ, हरा भरा । उ०—नीब रा रूंख में आवौ रूख ऊगौ । नीब री जड़ियां में पांणी कूडयां नीब नै आंबो दोनू इ प्रफुल्लित हुवै ।—नी. प्र.

३. आनंदित, हर्षित । उ०—अनाग्रह भुल्लित आंन उपाय, प्रफुल्लित ज्यूं पतनी पति पाय ।—ऊ. का.

४. मुस्कराया हुआ ।

रू०भे०—परफूल्लत, प्रफुलत, प्रफुलित, प्रफूलत ।

प्रफुल्लियोड़ौ–भू०का०कृ०—१. पूर्ण खिला हुआ, फुला हुआ. २. लहलहाता हुआ, हरा भरा. ३. आनंदित, हर्षित. ४. मुस्कराया हुआ. (स्त्री० प्रफुल्लियोड़ी)

प्रफूलत—देखो 'प्रफुल्लित' (रू. भे.)

उ०—देखी जै भूमां द्रुमां, एकी प्रक्रत अभंग । जड़ माया घर में जिते, इते प्रफूलत अंग ।—बां. दा.

प्रबंद्ध—देखो 'प्रबंध' (रू. भे.)

उ०—सिली सुरता घण सिद्धि समंद्ध, विनी प्रभुता बस बुद्धि प्रबंद्ध । हिली जुगती जंस बार हजार, मिळी मुगती दस-द्वार मंझार ।

—ऊ का.

प्रबंध–सं०पु० [सं०] १. साहित्य में श्रव्य काव्य का वह भेद जो उद्देश्य-प्रधान हो तथा जिसमें राष्ट्र-प्रेम, जातीय-भावना, धर्म-प्रेम या आदर्श जीवन की प्रेरणा देने का लक्ष्य हो ।

२. पद्यमय कोई भी रचना । उ०—१. ऐसी विध पंडतराज चातुरय-कळा प्रवीण त्रिलोकूं का प्रबंध अनेक विध विमळ वांणी सें उच्चरें··· ।—सू. प्र.

उ०—२. अभ्र चा असारा गिणै न को गुणी गैण व्हाळा, सिधां पैण व्हाळा न को लांघै हेम सिंध । मही को कवि नंद ग्रंथ गावै वैण व्हाळा माळा, प्रथीनाथ 'रैण' व्हाळा गुणां चा प्रबंध ।

—हुकमीचंद खिड़ियौ

३. एक दूसरे से संबंद्ध वाक्य रचना का विस्तार मय लेख या अनेक संबद्ध पद्यों में पूर्ण होने वाला काव्य । उ०—जिण रा सिद्धान्त प्रमांणिक पंडितां रा रचिया प्रबंधां में इण रीति पुणीजै ।—वं.भा.

४. वह काव्य या ग्रंथ जिसमें विविध प्रकार के चरित्रों या घटनाओं को लेकर वर्णनात्मक कथाएं या कथा कही गई हो ।

५. ऐसा निबंध या लेख जिसका क्रम या सिल-सिला जारी रहे । उ०—किए खंडन सब वडन को, यह अपराध विहाय । निरपक्ष व्है निहारिये, यह प्रबंध कविराय ।

—महामहोपाध्याय कविराजा मुरारीदांन

६. अध्याय या सर्ग । उ०—खीची राजा केहरीसिंघ भारत ग्रंथ सीतारांम चरित्र नांम अठारै प्रबंध करि बणायौ ।—बां.दा.ख्यात

७. सजावट ।

८. प्रण, प्रतिज्ञा । उ०—मुंह न दियै पर-मारियै, केहर कठण प्रबंध । भूखौ थाहर में सुवै, कै गाहै गज-गंध ।—बां. दा.

९. इन्तजाम, बंदोबस्त । १०. व्यवस्था । ११. योजना ।

रू० भे०—परबंध, प्रबंद्ध ।

अल्पा० -प्रबधौ ।

प्रबधौ—देखो 'प्रबध' (अल्पा., रू. भे)

उ०—रायपसेणी सूत्र थी, केसी प्रदेसी प्रबंधौ रे । समयसुंदर कहइ मैं कियउ, सज्झाय भणी संबंधो रे ।—स. कु.

प्रब—देखो 'परब' (रू. भे.)

उ०—१. भ्रै 'धांधल' रजवट उजवाळा । प्रब 'अजमाल' भिड़ण प्रोचाळा ।—रा. रू.

उ०—२. तदि कहि 'किसन्न' 'जसवंत' तण, अम्हां वडौ प्रब आज रो । महाराज सुद्धळ जुध राज मिळ, राज लहूं सुरराज रो ।

—सू. प्र.

उ०—३. उडियण थाळ आवधै आखै, अत प्रब हुळ हाथळां अनीद । भळकै खगै ऊनगै भालै, वधाविजै 'रतनसी' वींद ।—दूदौ

उ०—४. पकवांनै पांनै फळै सुपुहपे, सुरंगे वस्त्रे दरब सब । पूजियै कसटि भगि वनमपती, प्रसूतिका होळिका प्रब ।—वेलि

उ०—५. आवइजै विसन विसभर आवइ, ब्रह्मादिक तउ भाखइ वेद । तेड़िया नहीं ईसवर प्रब तिण, भोळौ-राव न जांणइ भेद ।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—६. तठा उपरांति करि नै राजांन सिलांमति होळिका प्रब पूजीजै छै ।—रा. सा. सं.

प्रबय–वि० [सं०प्र + वय] वृद्ध, बूढ़ा । उ०—सुणि इम बरात विहसै सकळ, जंपि अतुळ चीतौड़ जय । बारहठ तेण 'बारू' वळै, पूळौ दव दीधौ प्रबय ।—वं भा.

प्रबळ–वि० [सं०प्रबल] १. ताकतवर, शक्तिशाली, बलवान ।

(स्त्री० प्रवोधियोड़ी)

प्रव्व—देखो 'परव' (रू. भे.)

उ०—करिमरि कंकण सुकरि, नैंन वाधौ सिखराळह। वीररस वरसोह, कंठ लज्जी वरमाळह। विकट रूप वींदणी, खुरम घड कीध आडंगर। लगन प्रव्व रणताळ, घमळ-मंगळ रण सिंधू-सुर। ऊधपती बहुनरि ऊमरा, सतरि खांन सुरतांण रा, दळ-थंभ 'गजण' दूल्लह हुग्रौ, जांन सेन जोगणपुरा।—गु. रू. बं.

प्रव्वतमाळा—देखो 'परवतमाळा' (रू. भे.)

उ०—दोळा दळ दिल्ली वाळा। पंचरूप करि प्रव्वतमाळा।
—गु. रू. बं.

प्रव्भ, प्रव्भु, प्रव्भू—देखो 'प्रभु' (रू. भे.)

उ०—१. तिणौ ही न आटो देखूं तुज्झ। सुभासुभ मेव करावौ मुज्झ। तूं एक ज प्रव्भ धया तुम्ह अह्म। अपोटा अंबु तणा पर-प्रम्म।—ह. र.

उ०—२. पुरांणी प्रव्भु वचांणी पत्ति। जगत्पति तूं ही सव्व जगत्ति।—ह. र.

प्रव्रत्ति—देखो 'प्रव्रत्ति' (रू. भे.) (डि. को.)

प्रभंज, प्रभंजण, प्रभंजन—सं० पु० [सं० प्रभञ्जनः] पवन, हवा।
(अ.मा., डि.को.)

उ०—व्रज दुरग खिसा रा तबल मारां गोरां वजै, दहल पुड़ रसा रा हल हमल दुंद। लंक दिस प्रभंजण सारा वेग लागा। विलायत दिसा रा उटै घणा ग्रंद।—चैनकरण सांदू

प्रभ—देखो 'प्रभा' (रू. भे.)

उ०—उरज उतंगां ऊपरै, तंग कंचुकि तांण। कंचन रस भरिया कळस, जरकस ढकिया जांण। जरकस ढकिया जांण, कोक जुग वस किया। दरियाई मख-दोड़, लपेटा ज्यां लिया। पसवाड़ां हिम प्रभ क ख्रिवळी छवि तिसी। मनु सुलाख विच महोर, उदर नाभी इसी।
—सिववगस पाल्हावत

२. देखो 'प्रभु' (रू. भे.)

उ०—प्रवांनां दात सुहाणी प्रभ। सुवेस्या राई वुलाई सभ।
—रांमरासौ

प्रभणौ, प्रभवौ—क्रि० स० [सं० प्र+भण्] १. कहना, कथना।

उ०—सुण मरियौ सुत एकलौ, सासू प्रभणै धार। मो जणियौ कायर थियौ, वेटी बळण विचार।—वी.स.

२. वर्णन करना, वखानना। उ०—सार्भ पय वंदगी सुरेसर, जस प्रभणै अह सिभ दुजेसर। 'किसन' कहै कर जोड़ कवेसर, नमो रांम रघुवंस नरेसर।—र.ज.प्र.

३. रटना, जपना। उ०—जेण उधारे अवधपुर, जग सारै जाहर। नांम ब्रह्म सिव आद लै, प्रभणै अह सुर-नर।—र.ज.प्र.

प्रभणहार, हारौ (हारी), प्रभणियौ—वि०।

प्रभणिग्रोड़ो, प्रभणियोड़ौ, प्रभण्योड़ौ—भू० का० कृ०।

प्रभणीजणौ, प्रभणीजवौ—कर्म वा०।

प्रभणियोड़ौ—भू० का० कृ०—१. कहा हुआ, कथा हुआ. २. वर्णन किया हुआ, वखाना हुआ. ३. जपा हुआ, रटा हुआ.
(स्त्री० प्रभणियोड़ी)

प्रभत, प्रभता, प्रभति, प्रभती, प्रभत्त, प्रभत्ता, प्रभत्ती—देखो 'प्रभुता'
(रू. भे.) (डि. को.)

उ०—१. हर धर ध्यांन कमध हेमाळै, परिहां चाढ़ेवा प्रभत। 'किसन' विजोग चारणां कारण, गळियो गुजठळ राव गत।
—वां. दा.

उ०—२. महमा वढ़ि मयंक-कुळ मंडण, पोह अनवारां प्रभत पडी (ढ़ी)। कटका तणी दुयण चै कोटे, चोर्खा रज कांगरै चडी (ढ़ी)।
महारांणा उदयसिंह रौ गीत

उ०—३. सुकव्यां अरट संदेड़ियौ, देतां दत दातार। गढ़पत हुई 'गुमांनसी', प्रभता समदां पार।—मेघराज आढ़ौ

उ०—४. परीछत साहिजिहांन सुत कोपियौ, तक्षक होमण गहण साह सुत तांणि। तपोधनि जहीं हिंदवांण चाढ़ण प्रभति, जरू रखवाळ जैसिंघ सुत जांणि।—राजा रांमसिंघ रौ गीत

उ०—५. अच्छरा वधावै राग रंगां गावै मोद अंगां, अढ़ंगा ऊवारै हवकां प्रभती असेस। पांचसौ सुभट्टां संगां करे इंद-लोक पूगौ, ऊमटां चढ़ावै आब वियौ 'अचळेस'।—वुधसिंह सिढ़ायच

उ०—६. ठेलै सिर अरियांण थट, कहै न हीणी कत्थ। वहै भरोसै वाहुवळ, 'पातल' लहै प्रभत्त।—जैतदांन वारहठ

उ०—७. एम देखि 'अभमाल' पांण तप तेज प्रभत्ती। कमध हूंत तद कीध, प्रीत भय हूंत असपत्ती।—सू. प्र.

प्रभव—सं०पु० [सं० प्रभवः] १. उद्गम-स्थल, निकास, उत्पत्ति स्थान।

उ०—सूर प्रभव तो तेज, तेज नह इम्रत सायक। यिम्रत सायक चंद, चंद नह स्यांम सुभायक।—र. ज. प्र.

२. जन्म, उत्पत्ति। ३. शक्ति, वळ, पराक्रम। ४. विष्णु का नामान्तर।

प्रभवस्यांमळ—सं०पु० [सं०श्यामल प्रभ] श्रीकृष्ण। (अ. मा., नां. मा.)

प्रभा—सं०स्त्री० [सं०] १. चमक-दमक, जगमगाहट। २. कांति, दीप्ति, आभा। उ०—सिर धुणै वोलै सदा, हास चूक विण होय। कुकवि सभा जिण संचरे, सभा प्रभा हत होय।—वां. दा.

३. ज्योति, प्रकाश। उ०—प्रभा कहतां जोति सो चंद्रमा की गई। जब राशि वितीत होण लागी।—वेलि टी.

४. किरण, रश्मि। (अ. मा., डि. को., नां. मा., ह. नां. मा.)

५. शोभा। (अ. मा., ह. नां. मा.)

उ०—दिपै उछाह डंमरं, घमंक घोर घुग्घरं। वरं-वरं प्रभा वणी, घरं-घरं प्रभा घणी।—सू. प्र.

६. कीर्ति, सुयश। (अ. मा., डि. को.)
उ०—ज्यांनै जाय सकव कोई जाचरण, छीलर जेम देखावै छेह।
नेह प्रभा लेवरण नह धारै, नारां हूंत वधारै नेह।—अज्ञात
७. लक्ष्मी। (ह. नां. मा.)
८. आभूषण। (अ. मा.)
रू०भे०—पभा, परभा, प्रभ।

प्रभाकर-सं०पु० [सं० प्रभाकरः] १. सूर्य। (अ. मा., डि. को.)
उ०—जिण कुळ में अरजुन सा अजेय राजा प्रकटिया जिकां रा अभिधांन प्रभात रै समय प्रभाकर हूं प्रथम ऊगण में आवै।
—वं. भा.
२. चंद्रमा, चांद। ३. समुद्र, सागर। ४. शिव। (क. कु. बो.)
रू०भे०—पर्भकर, परभाकर।

प्रभाकरभट्ट-सं०पु०यौ० [सं०] एक प्रसिद्ध मीमांसक पंडित जो स्वामी शंकराचार्य के समकालीन थे।

प्रभाकरवरद्धन-सं०पु० [सं० प्रभाकरवर्द्धन] राजा हर्षवर्द्धन के पिता का नाम।

प्रभात-सं०पु० [सं० प्रभातं] प्रातः काल, सवेरा। उ०—ताहरां मूळ नूं माळी घर मांहे भीतर लियौ। घोड़ो भीतर लियौ, बाधौ। मूळू नूं जीमायौ। रात माळी मूळू नूं घर मांहे राखियौ। प्रभात हुवौ तरां माळण भीतर राजा नी सेवा नां फूल ले हाली।
—नैणसी
रू०भे०—परवात, परभात।
अल्पा०—परभातड़ली, परभातड़ी, परभाति, प्रभाति, प्रभाती।

प्रभातफेरी-सं०स्त्री०यौ० [सं० प्रभातं+राज०फेरी] १. प्रायः नाथों, स्वामियों या साधुओं द्वारा आटा या रोटी के लिये नगर में लगाया जाने वाला चक्कर। २. प्रभात के समय भगवन्नाम का कीर्तन करते हुए लगाया जाने वाला चक्कर।
३. दल बांध कर प्रचार के लिये गाते बजाते और नारे लगाते हुए नगर या ग्राम में सूर्योदय के पूर्व चक्कर लगाना।
उ०—प्रभातफेरी देता देता घर घर हेलो देवै, नही पढ़णियां टाबरियां नै पसु-गधेड़ा केवै।—लो. गी.

प्रभाति—१. देखो 'प्रभात' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—हेकै घोड़ै कुंवर, चढी-चढ़ी खड़ीया। जावतां, जावतां, प्रभाति हुवौ।—चौबोली
२. देखो 'प्रभाती' (रू. भे.)

प्रभातियौ-वि० [सं० प्रभातं+रा० प्र० इयौ] १. प्रभात सम्बन्धी, प्रभात का।
२. देखो 'प्रभातियौ-तारौ'।
रू०भे०—परवातियौ, परभातियौ।

प्रभातियौ-तारौ-सं०पु०यौ० [रा०प्रभातियौ+सं० तारं] ब्रह्म मुहूर्त तारिका, अरुणोदयतारिका (शुक्र)।
रू०भे०—परभातियौ-तारौ, परभाती-तारौ।

प्रभाती-सं०स्त्री० [सं०प्रभातं+रा०प्र०ई] १. प्रत्यूष और प्रभास वसुओं की माता। २. सूर्योदय से पूर्व (ब्रह्ममुहूर्त) समय में गाया जाने वाला भजन, गायन विशेष। ३. प्रभात के समय गाई जाने वाली राग। ४. देखो 'प्रभात' (अल्पा., रू. भे.)
रू०भे०—परवाती, परभाति, परभाती, प्रभाति।
अल्पा०—परवातड़ी, परभातड़ली, परभातड़ी।

प्रभापत, प्रभापति-सं०पु० [सं०प्रभापति] सूर्य, भानु। (क. कु. बो.)

प्रभावंक-सं०स्त्री० [सं० वक्र+प्रभा] तलवार। (अ. मा.)

प्रभाव-सं०पु० [सं०प्रभावः] १. वह अच्छा या बुरा असर जो किसी पदार्थ या व्यक्ति के गुणों के फलस्वरूप लक्षित होता है।
२. परिणामस्वरूप, फलस्वरूप। उ०—१. जिण री संगति रै प्रभाव स्वरग लोक रौ मारग मुद्रित कराय कुंभीपाक रौ निवास भाळियौ।
—वं. भा.
उ०—२. पहली एक घाड़वी रजपूत धारातीरथ में पड़ियो तो भी कोईक कारण रै प्रभाव आप रा साथ समेत प्रेत हुवौ जिकण रै पाछै प्रजा में एक पुत्री रही।—वं. भा.
४. बल, शक्ति। ५. वह रौब, दबाव या अधिकार जो किसी के चरित्रबल या उच्चपद आदि के कारण दूसरों पर असर डालता है।
६. अंतः करण को किसी ओर प्रवृत करने का गुण।
७. ज्योतिष में ग्रह या ग्रहों की विशिष्ट स्थिति के कारण किसी में सामान्य से भिन्न दिखलाई पड़ने वाला विकार।
रू०भे०—परभाव।

प्रभावती-सं०स्त्री० [सं०] १. एक राग विशेष। (मीरां)
२. महाभारत के अनुसार सूर्य की पत्नी का नाम। ३. शिव के एक गण की वीणा का नाम। ४. महाभारत के अनुसार अंगदेश के राजा की रानी का नाम। ५. तेरह वर्ण का एक छंद विशेष जिसका दूसरा नाम रूचिरा भी है।

प्रभावसाळी-वि० [सं० प्रभावशाली] वह जो बहुत अच्छा प्रभाव डाल सकता हो, जिसमें प्रभाव उत्पन्न करने की यथेष्ट क्षमता हो।
रू० भे०—परभावसाळी।

प्रभावित-वि० [सं०] वह जो किसी के प्रभाव में आया हुआ हो, किसी के प्रभाव से दबा हुआ।

प्रभास-वि० [सं०] १. जिसमें यथेष्ट प्रभा या चमक हो, प्रभापूर्ण।
२. चमकीला।
सं० पु०—१. ज्योति, प्रकास, चमक।
२. आठ वसुओं में से एक वसु का नाम।

३. एक प्राचीन तीर्थ का नाम । उ०—पुस्कर पेखि प्रभास पण, कालिंजर कास्मीर । विमळेस्वर वरजावळी, गंगासागर तीर ।
—मा. कां. प्र.

रू० भे०—पहास ।

यौ०—प्रभासखेत्र ।

प्रभासक्षेत्र-सं० पु० [सं० प्रभासक्षेत्र] देखो 'प्रभास' (३) ।
रू० भे०—परभासखेत्र ।

प्रभासणौ, प्रभासबौ-क्रि० अ० [सं० प्रभासनम्] १. प्रकाशित होना, चमकना । २. दिखाई पड़ना ।
प्रभासणहार, हारौ (हारी), प्रभासणियौ—वि० ।
प्रभासिओड़ौ, प्रभासियोड़ौ, प्रभास्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
प्रभासीजणौ, प्रभासीजबौ—भाव वा० ।
पहासणौ, पहासबौ—रू० भे० ।

प्रभासियोड़ौ-भू० का० कृ०—१. प्रकाशित हुवा हुआ, चमका हुआ.
२. दिखाई दिया हुआ.

प्रभित—देखो 'प्रभ्रति' (रू. भे.)
उ०—सांमत सहस सहंस-किरण, तेज पुंज पोरस प्रभित । गजसिंघ तेय तत्तौ थियौ, जेथ थाय सीतळ सवित ।—सू. रू. वं.

प्रभिन्न-सं० पु० [सं० प्रभिन्न] मस्त हाथी, उन्मत्त हाथी । (डिं. को.)

प्रभु-सं० पु० [सं०] १. शक्तिशाली,बलवान । २. योग्य । ३. अधिकार प्राप्त ।
[सं० प्रभुः] १. ईश्वर, परमेस्वर । (नां. मा., ह. नां. मा.)
उ०—१. मन मान मोर, छळ छंद छोर । प्रभु परस पाय, अंतिम उपाय ।—ऊ. का.
उ०—२. कहि अब हूं कैसे करूं, दीनानाथ दयाळ । लाज हमारी राखि प्रभु, बहुत दुखी है बाळ ।—पलक दरियाव री वात
२. श्रीकृष्ण । (अ. मा.)
३. शिव, महादेव । उ०—पूछिया गवर तिवार प्रभु नूं, सांमि किसउ करतिग संसार । दिन रइ जग न पधारउ देखण, देव अनेक करइ दीदार ।—महादेव पारवती री वेलि
४. स्वामी, मालिक ।
५. राजा । (अ. मा., ह. नां. मा.)
उ०—पन्नगलोक मृतलोक तणा प्रभु, वंडा रिखीसर जोवै वाट । दहनांमी दीदार देखवा, घड़े हुवा हूवा गजथाट ।
—महादेव पारवती री वेलि
६. सर्वोच्च अधिकारी ।
७. श्याम (रंग) । (अ. मा.)
८. सूर्य । (डिं. को.)
७. इंद्र ।
रू० भे०—परबु, परभु, परभू, पिरभु, पिरभू, प्रंभ, प्रम्भु, प्रम्भू, प्रभ, प्रभू, प्रम्भु ।

प्रभुता, प्रभुताई, प्रभुति-सं० स्त्री० [सं० प्रभु+रा०प्र०ता, ई]
१. प्रभु होने की अवस्था या भाव, प्रभुत्व ।
२. अधिकार शक्ति आदि से युक्त बड़प्पन, महानता ।
उ०—१. प्रभुता मेरु प्रमांण, आप रहै रजकण इसा । जिकै पुरस घन जांण, रवि मडळ विच राजिया ।—किरपारांम
उ०—२. अठै सुजस प्रभुता उठै, अवसर मरियां आय । मरणौ घररै मांझियां, जम नरकां ले जाय ।—बी.स.
२. ऐश्वर्य, वैभाव । उ०—१. देखे गुणां गांम गज दीधौ, प्रभुता लाख पसाव प्रवीत । कमधज राजां तणी कहां तै, ऐ रीजां दूजा 'अगजीत' ।—बां. दा.
उ०—२. तीन लोक रौ राजा रांवण, सो है म्हारौ भाई रे । म्हां सूं नेह निभाय पाय, पूरण प्रभुताई रे ।—गी. रां.
३. शासन आदि का अधिकार, हुकूमत ।
४. आतंक, रौब, प्रभाव । उ०—महा अजमति परम मूरति, पैंज रघुपति तेज पूरति, प्रभुति सुण अति धूज धरपति, सुणै छत्रपति साह ।—रा. रू.
५. शक्ति, बल, सामर्थ्य । उ०—तूं सब जांण राज प्रभुताई, अजै अतीत परख नह आई ।—सू. प्र.
६. यश, कीर्ति ।
रू० भे०—परभुता, परभुताई, प्रभत, प्रभता, प्रभति, प्रभती, प्रभत्त, प्रभत्ता, प्रभत्ती ।

प्रभू—देखो 'प्रभु' (रू. भे.) (अ. मा., डिं. को.)
उ०—हर जेरै कच-कूप मह, वसै कोड़ ब्रहमंड । केम प्रभू मावै तिके, परगट कीड़ी पिंड ।—र. ज. प्र.

प्रभूत-वि० [सं०] १. निकला हुआ, उद्भूत, उत्पन्न । २. बहुत, विपुल ।
रू० भे०—पभूय ।

प्रभेद-सं० पु० [सं० प्रभेदः] १. हाथी की कनफटियों से मद चूने की क्रिया । २. भेद, भिन्नता ।
रू० भे०—परभेद ।

प्रम्भु—देखो 'प्रभु' (रू. भे.)
उ०—लाधौ हिव प्रम्भु पड़दौ लाय । मुरारि परत्तख बाहिर मांय ।
—ह.र.

प्रभ्रंस-सं० पु० [सं० प्रभ्रंश] पात, गिरना ।

प्रभ्रत—देखो 'परभ्रत' (रू. भे.)

प्रभ्रति, प्रभ्रती, प्रभ्रत्ती-अव्य० [सं० प्रभृति] इत्यादि ।
उ०—सरस्वत्या दिक्ष्योती सुर-गुरु प्रभ्रत्ती यस सभे ।—ऊ. का.
रू० भे०—प्रभित, प्रभ्रिति ।

प्रभ्रस्ट-वि० [सं० प्रभ्रष्ट] नीचे गिरा हुआ, पतित ।

प्रश्रिति—देखो 'प्रश्रति' (रू. भे.)

उ०—प्रश्रिति इंद्र प्रताप, पाक पिंड तेज प्रभाकर ।—गु.रू.बं.

प्रम—देखो 'परम' (रू. भे.) (अ.मा., नां.मा., ह.नां.मा.)

उ०—१. कियौ हरख कमधज्ज, निरख नायक ब्रहमंडां । भेट ग्रांम गज भिड़ज, पूज प्रम धांम घमंडां ।—रा.रू.

उ०—२. प्रम सीस न प्रांमै, पळ नह पंखण, रोहर नर धर ऊपर रड़ियौ । ईसरदास तणौ वप आहव, आंमख खग धारां अड़ियौ ।

—ईसरदास वीरमदेओत मेड़तिया रौ गीत

३. यौं पतसाह जोस अधिकांणै, पूज सुरां विण वेद प्रमांणै । मथुर अजोध्या ओखामंडळ, एतां आद धांम प्रम उज्जळ ।—रा.रू.

प्रमगुर, प्रमगुरु—देखो 'परमगुरु' (रू. भे.) (नां.मा.,ह.नां.मा.)

उ०—प्रमगुर कहै पधारौ 'पातल' प्राभा करण प्रवाड़ा । हेवै सरस अमिळिया हिन्दू, मोसूं मिळ मेवाड़ा ।—दुरसौ आढ़ौ

प्रमजोत—सं० पु० [सं० परम ज्योति] परम ज्योति । उ०—१. तुरंग रथ थांभ जोअै अरक तमासा, रीझ वाखांणियौ दहूं राहे । घड़च खळ दळा नरवाह कर घांन रौ, 'मांन' रौ मिळै प्रमजोत माहे ।

—रघुनाथसिंह रांणावत रौ गीत

उ०—२. जूंझ रौ भार विहूंवां भलौ झलियौ, निज वचन तोल साचौ निभायौ । 'हरा' रौ सती संग सतीपुर हालियौ, मालियौ 'सेर' प्रमजोत मांहे ।—पहाड़ खां आढ़ौ

प्रमत—वि० [सं०] १. विचारा हुआ, मनन किया हुआ ।

२. देखो 'प्रमत्त' (रू. भे.)

उ०—पर दार प्यार हुयगौ प्रमत, बिन सीगां रा बैलिया । भोग रै मांय भंवता भंवर, गयौ जनम सब गेलिया ।—ऊ. का.

प्रमत्त—वि० [सं०] १. नशा किया हुआ, नशे में चूर, मस्त ।

२. उन्मत्त, पागल ।

३. असावधान, लापरवाह । ४. वह जिसे अधिकार पद आदि का अभिमान हो ।

रू० भे०—पमत, परमत, परमत्थ, प्रमत ।

प्रमथ—सं० पु० [सं० प्रमथनम्] १. मथना । २. पीड़ित करना, सताना ।

३. हत्या, वध ।

[सं० प्रमथः] ४. शिव के गण जिनकी संख्या पुराणों के अनुसार ३६ करोड़ बतलाई गई है ।

५. घोड़ा । (डि. को.)

रू० भे०—परमथ ।

प्रमथनाथ—सं० पु० यौ० [सं०] शिव, महादेव ।

रू० भे०—परमथनाथ ।

प्रमथपति, प्रमथांपति—सं० पु० यौ० [सं० प्रमथपति] शिव, महादेव ।

(डि.नां.मा., नां.मा.)

प्रमथा—सं० स्त्री० [सं०] हरीतकी, हरें । (नां. मा.)

प्रमथाधिप, प्रमथाध्रप—सं० पु० [सं० प्रमथाधिप] शिव, महादेव ।

(अ.मा., ह.नां.मा.)

प्रमथालय—सं० पु० [सं०] १. शिव के गणों का निवास स्थान, श्मशान भूमि । उ०—ओदण महदालय ओढ़ण धण ओढ़ै । प्रमुदा आलय विण प्रमथालय पोढ़ै ।—ऊ. का.

२. वह स्थान जहां दुख या यंत्रणा मिलती हो ।

प्रमदति—वि० [सं० प्रमुदित] हर्षित, आनंदित ।

उ०—रति रयण सुदि नर-नारि रांमति, गाळि प्रमदति गावही ।

—रा. रू.

प्रमदरस—सं० पु० [सं० प्रमदः+रस] आनंद । (अ. मा.)

प्रमदा—सं० स्त्री० [सं०] १. धर्मपत्नी, पत्नी । उ०—झालौ सिंहदेव तौ प्रथम अणी में ही लोह छक होय प्रांणा रा पोखण में लुभायौ थकौ प्रमदा रौ पांहुणौ अपूठौ ही खड़ियौ ।—वं. भा.

२. युवती, सुंदरी । (अ. मा.)

उ०—सदव्रत करतोड़ी वरणास्रम सेवा काढ़ै मरतोड़ी रेवा तट केवा । इत्यादिक अज्जा कथितादिक ऊणी । पहुंची प्रमदा पथ परमारथ पूणी ।—ऊ. का.

३. स्त्री । (ह.नां.मा.)

४. रात्रि, निशा । (नां.मा.)

रू० भे०—प्रमुदा, प्रम्मदा ।

प्रमदावन—सं० पु० [सं०] अंतः पुर के समीप का बगीचा ।

प्रमपुर—देखो 'परमपुर' (रू. भे.)

उ०—परमांण बांधि राखण प्रथी, पाल्हणसी नीसारियउ । चहुवांण रांण सांभर-धणी, प्रमपुर अचळ पधारियउ ।

—अ. वचनिका

प्रममंडप—सं० पु० [सं० परममंडप] देवालय, मंदिर । (शिव, विष्णु)

अरू वैर तीजौ गाय, प्रममंडप चौथौ पाय । ऐ च्यार वयर अजेब, जग कीध 'अवरंगजेब' ।—सू. प्र.

प्रमरथ—देखो 'परमारथ' (रू. भे.)

उ० पड पकवांन प्रवाड़ा प्रमरथ, साहां सेन करे बोह-संग । मैदा कटक महारस मसळै, जीम्हण रांण कियौ रण-जंग ।

—महारांणा खेता रौ गीत

प्रमरदन—सं०पु० [सं०प्रमर्दनम्] १. अच्छी तरह कुचलना या नष्ट करना,

२. अच्छी तरह मर्दन ।

प्रमळ—देखो 'परिमळ' (रू. भे.)

उ०—म्रगनाभ अतर सौंधा प्रमळ, वंटि अरगजा वळोवळां । जदि चढ़े अनुज अग्रज गजां, हूंता हाल किलोहळां ।—सू. प्र.

प्रमहंस—देखो 'परमहंस' (रू. भे.)

उ०—नमो प्रमहंस सरोवर प्रेम। निरम्मळ गोकुळनाथ नमेम।
—ह. र.

प्रमांण-वि० [सं० प्रमाणम्] १. जो सबके लिये मान्य हो। उ०—हूं ग्राखूं नय वयण हिक, सांभळ भरथ सुजांण। करणौ तो मो ग्रवस कर, पित चौ हुकम प्रमांण।—र. ज. प्र.

२. मुताबिक, अनुसार। उ०—सांभळि ग्ररथ पराक्रत सासत्रि। अकळि प्रमांण किमी उचार।—ह. नां. मा.

३. समान, अनुरूप, तुल्य, बराबर, सदृश। उ०—१. पड़या पग देवळ थभ प्रमांण। नकेवळ पिंड ग्रद्रां ग्रहनांण। गुड़या गज ग्राव गुड़ावत गोड़। घणां सहि घाव वड़या कई घोड़।—मे. म.

उ०—१. प्रभुता मेरू प्रमांण, ग्राप रहै रजकण इसा। जिके पुरस घन जांण, रवि-मंडळ बिच राजिया।—किरपारांम

उ०—२. बोलै साचा बोल, काचा नह आरै करै। तिण मांणस रा तोल, मेरू प्रमांण मोतिया।—रायसिंह सांदू

उ०—३. तिण समय चंद्रमा रै चारौं तरफ परिवेस रै प्रमांण भालै सिहदेव साठि हजार सेना सूं स्वकीय स्वांमी रा सिविर रै छबीनां रौ नक्र चलायौ।—वं. भा.

४. अटल, दृढ़। उ०—१. अह ग्रागम वचन 'जसा' हर ग्राखै, पहु जांणै ध्रु मेरु प्रमांण। मोनै ग्रस रीभ मोकळियौ, देस्यूं तस वदळौ दीवांण।—दसू चांपावत रौ गीत

उ०—२. ताहरै माहरै प्रीतड़ी जी, लाज थी थई रे प्रमांण, विण दस दिवस मुझ कंत नी जी, कांइक राखीयै कांण।—वि. कु.

५. कामयाब, कृत कार्य, सफल, सार्थक। उ०—१. प्रांण छतै जीवै पुरख, कासूं ज्यां री कांण। प्रांण गयां जीवै पुरख, ज्यों जीवणौ प्रमांण।—बां. दा.

उ०—२. वहै भार जूपै वहै, करै न खांचातांण। जद तूं तांडै धवळ जिम, तां तांडणौ प्रमांण।—बां. दा.

६. निर्धारित, निश्चित, सही। उ०—करण सगण पय ग्रंति करि, मात्रा बत्रीस मंडांण। लीलावती ए लखण, पिंगळ कीध प्रमांण।
—पिं.प्र.

७. सत्य।

स०पु०—१. वह बात या कथन जिस से किसी दूसरी बात या कथन का यथार्थ ज्ञान होता हो, सबूत।

२. वह कथन या बात जो किसी अन्य कथन या बात को सत्य या ठीक सिद्ध करने के लिए औरों के सम्मुख कही या रखी जाती है, गवाही, साक्षी।

३. सत्यता, सचाई। उ०—मोहै नीलांबर सहत, प्रमुदा प्रीत प्रमांण। चंद्रकमाळा हरत चित, जुत भमरावळि जांण।
—बां. दा.

४. प्रतीति, यकीन, दृढ़ विश्वास।

५. ऐसी चीज या बात जो बिल्कुल ठीक होने के कारण सबके लिए मान्य हो। उ०—स्रीमाहाराज! ग्रौ बाळक करडा नक्षत्र में जनम्यौ छै नै कुंडळी मांहे ग्रह खोटा ग्राया छै, वेळा पिण खोटी छै सो माता-पीता नै विघनकारी छै, मोत-घात ज्यूं छै। इण बाळक रौ मूंहडौ बा'रै बरस तांई देखणौ जुगत नहीं छै। इण वीध रा ज्योतिस में समाचार छै। स्रीमाहाराज रा मन में ग्रावै सो कराईजै, तठै राजा जी सूतनौ प्रोहित जी नै कहीयो—थे कहौ सोई ज प्रमांण छै।—रीसालू री वात

६. लंबाई, चौड़ाई नापने या भार ग्रादि तोलने का मान।

७. लंबाई-चौड़ाई, विस्तार, आकार, ग्रायतन। उ०—जिण समय दो ही फौजां रा हिलाळा समुद्र रै समांण प्रमांण में आया अर तोपां री गाज हूं सेस रा सीसां समेत मकराकर मेखळा मही रै मचोळा लगाया।—वं. भा.

८. ऐसी बात, कथन या तथ्य जिसे सब लोग प्रमाणिक या सत्य मानते हों। उ०—गुरु विग्जानंद समीप गयो ब्रह्मग्यांनी। प्रभु पांणिनीय व्याकरण प्रमांण प्रमांनी।—ऊ. का.

९. प्रकार, तरह, भांति। उ०—१. नथी रजोगुण ज्यां नरां, वां पूरौ न उफांण। वे भी सुणता ऊफणै, पूरा वीर प्रमांण।—वी.स.

उ०—२. देवीदास सहस्त्रनांम रौ पाठ कियौ। बहोत करुणा कीधी। गरीब प्रमांण दंडवत करि, घर नै बहिर हुवा।
—पलक दरियाव री वात

१०. वह तर्क या स्पष्टीकरण जिससे किसी बात या विवादास्पद स्थिति के किसी एक पक्ष के ग्रौचित्य की पुष्टि होती हो।

११. धर्म-शास्त्र, ग्रागम। उ०—आप रै ग्रालय ही काठां चढ़ाई वंग्रावदै ग्राइ ग्रग्रज री साथ कीधौ सो जांणि हालू नरेंद्र थी पावक में पत्नी रौ प्रवेस प्रमांण थी विरुद्ध विचारि आप रा ग्रग्रज नु उपालंभ दीधौ।—वं. भा.

१२. तालाब। (ह. नां. मा.)

१३. साहित्य में एक ग्रर्थालंकार जिसमें किसी अर्थ का प्रमाण ग्रर्थात् यथार्थ का अनुभव होता हो (अमुक पदार्थ ऐसा या इतना है) वर्णित हो।

१४. ग्राकार। उ०—१. ग्रग-मद बेंदी भाळ मझ, जाय कही छबि जौन। निस ग्रस्टम सनि रौ नखित, भयो उदै ससि भौन। भयौ उदै ससि भौन, तो ब्रहवां वणी। नयणां ग्रंजन नोक, अड़ी स्रवणां ग्रणी। नासा (कीर) मुक-मुख नारा समांण अधर बिंब ओपिया। पकती हीर प्रमांण रदन जनु रोपिया।—सिवबक्स पाल्हावत

उ०—२. सो पनां कीणीक भांती री छै, सीस री सोभा नाळेर प्रमांण, लीलाट तो पूनम रौ चंद जांण।—पनां वीरमदे री वात

१६. लक्षण, नियम। उ०—१. विध इण मत्ता वरण रौ, परगट जांण प्रमांण। भांण-गीत जिण नांम भल, भण जस रघुकुळ भांण।—र. ज. प्र.

रौ कुकांम हुवौ । निसीथ रै समय कुमार दूदै तिकां मार्थ जाइ नत्रीठा वाजी पटकिया । —वं. भा.

८. योग-शास्त्र के अनुसार समाधि के साधनों की भावना न करना या उन्हें ठीक प्रकार से न समझना । ये नौ प्रकार के अंतरायाम हैं ।

९. मनुष्य की वह अवस्था या स्थिति जिसमें जीव सम्यग्ज्ञान, सम्यग्दर्शन, सम्यग्चरित्र रूप मोक्ष के प्रति उद्यम करने में शैथिल्य करता है । (जैन)

रू० भे०—पमाद, पमाय, परमाद, परमाय ।

अल्पा०—परमादौ ।

प्रमादी-वि० [सं० प्रमादिन्] (स्त्री० प्रमादरा) १. वह जो प्रमाद करता हो ।

२. पागल ।

३. उन्मत्त, मस्त । उ०—पढ़ दुरस प्रमादी मुरसद मादी, महंत पुरस माचंदा है ।—ऊ. का.

४. गफलत करने वाला, लापरवाह, असावधान । उ०—लग्यो स्वादी स्वादी उपग्रिन प्रमादी नहिं लग्यो ।—ऊ. का.

रू० भे०—परमादी ।

प्रमार—देखो 'परमार' (रू. भे.)

प्रमीस सं०पु० [सं० परम+ईशः] १. परमात्मा, ईश्वर । उ०—रमीस प्रमीस हरी अघगीस ।—र. ज. प्र.

२. विष्णु ।

प्रमुकणौ, प्रमुकबौ—देखो 'मूकणौ, मूकबौ' (रू. भे.)

प्रमुकणहार, हारौ (हारी), प्रमुकणियौ—वि० ।

प्रमुकिओड़ौ, प्रमुकियोड़ौ, प्रमुक्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

प्रमुकीजणौ, प्रमुकीजबौ—कर्म वा० ।

प्रमुकियोड़ौ—देखो 'मूकियोड़ौ' (रू. भे.)

प्रमुक्कणौ, प्रमुक्कबौ—देखो 'मूकणौ, मूकबौ' (रू.भे.)

उ०—उर निस्वास प्रमुक्कै, भगो ज्वास चीत साश्र में । यौं चिंता उद्वेगी, लग्गी अग्ग वंस घासांगं ।—रा. रू.

प्रमुक्कणहार, हारौ (हारी), प्रमुक्कणियौ—वि० ।

प्रमुक्किओड़ौ, प्रमुक्कियोड़ौ, प्रमुक्क्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

प्रमुक्कीजणौ, प्रमुक्कीजबौ—कर्म वा० ।

प्रमुक्कियोड़ौ—देखो 'मूकियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० प्रमुक्कियोड़ी)

प्रमुख-वि० [सं०] (भाव० प्रमुखता) १. सब से अग्र या पहले वाला, प्रथम ।

२. जो औरों से सब बातों में बढ़कर हो, श्रेष्ठ, प्रधान, मुख्य ।

३. जो दूसरों के प्रतिमुख होकर खड़ा हो ।

४. समस्त पदों के अंत में, जो प्रधान के पद पर हो ।

ज्यूं०—राज-प्रमुख ।

सं० पु०—१. प्रधान ।

२. प्रधान शासक ।

३. विधान सभा या संसद का अध्यक्ष ।

अव्य०—१. आदि, प्रभृति । उ०—सिव तांम्रवरणी प्रमुख, नदियां ते नर नाह । हैवर ढोया 'भीम' हर, गिरां उतगां गाह ।—बां. दा.

२. आगे, सामने ।

रू० भे०—पमुंह, पमुह, परमुख ।

प्रमुखता-सं०स्त्री० [सं० प्रमुख+रा०प्र०ता] १. प्रमुख होने का गुण या भाव, प्रमुख होने की अवस्था ।

२. प्राथमिकता दी जाने वाली स्थिति ।

प्रमुद-सं०पु० [सं०] १. आनंद । (ह.नां.मा.)

२. देखो 'प्रमुदित' (रू भे.)

प्रमुदा—देखो 'प्रमदा' (रू. भे.)

उ०—१. सोहै नीलांबर सहत, प्रमुदा प्रीत प्रमांण । चंपकमाळा हरत चित, जुत भमरावळि जांण ।—बां. दा.

उ०—२. ओदरा महदालय ओढ़रा थरा ओढ़ै । प्रमुदा आलय दिरा प्रमयालय पोढ़ै ।—ऊ. का.

प्रमुदित-वि० [सं०] आल्हादित, प्रसन्न, हर्षित ।

उ०—फुट दांनरेण कच नाळिकेर फळ, मज्जा तिकरि दधि मंगळिक । कुंकुम अखित पराग किंजळक, प्रमुदित अति गायंति पिक ।—वेलि

रू० भे०—प्रमुद ।

प्रमूकणौ, प्रमूकबौ—देखो 'मूकणौ, 'मूकबौ' (रू. भे.)

उ०—१. गात संवारण में गमै, ऊमर काय अजांण । आखर प्रांण प्रमूक औ, खाख हुसी मळ खांण ।—बां. दा.

उ०—२. द्रढ़ मंत्री दिल्लेस पास, 'अमरेस' भंडारी । रीत नीत ऊजळी, प्रीतधारी हितकारी । सुपनै ही साभाय न्याय-व्रत चाय न चूकै । राज काज चित राग, भाग अनि समळ प्रमूकै । महाराज 'अभै' मंडोवरै, सकळ लाज परखै सरू । द्रढ़ वात नेम लखि रखियौ, खुंद थांन 'खेमंगरू' ।—रा. रू.

प्रमूकणहार, हारौ (हारी), प्रमूकणियौ—वि० ।

प्रमूकिओड़ौ, प्रमूकियोड़ौ, प्रमूक्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

प्रमूकीजणौ, प्रमूकीजबौ—कर्म वा० ।

प्रमूकियोड़ौ—देखो 'मूकियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० प्रमूकियोड़ी)

प्रमेय-वि० [सं०] १. जिसका अवधारण हो सके, जो समझ में आ सके ।

२. जो प्रमाण का विषय हो ।

३. जो प्रमाणों से सिद्ध किया जा सके ।

सं०पु०—१. वह विषय जिसका बोध प्रमाणों द्वारा करा सके, वह पदार्थ या बात जिसका यथार्थ ज्ञान हो सके ।

प्रमेस—देखो 'परमेस' (रू. भे.)

उ०—१. प्रमांण खोडस प्रकार, देत उग्र दांनयं। प्रमेस चंठ' रुद्र पूज, सेवतं सगांनयं।—सू.प्र.

प्रमेसर, प्रमेसुर—देखो 'परमेस्वर' (रू. भे.)

उ०—२. ब्रह्मा रुद्र विचार ब्रह्मम, न जांणै तोरा पार निगम्म। प्रमेसर तोरा पांय प्रळोय, कुरांण पुरांण न जांणै कोय।—ह. र.

उ०—३. हिंदू धरम के रखपाळ, हिंदुस्थांन के प्रमेसुर।—रा.रू.

प्रमेह—सं०पु० [सं०] मूत्र-मार्ग से शुक्र या अन्य धातु निकलने का एक रोग, धातु संबंधी रोग विशेष।

रू० भे०—परमेह।

प्रमोद—सं०पु० [सं० प्रमोदः] १. खुशी, हर्ष, आनन्द।

(अ. मा., ह. नां. मा.)

रू० भे०—परमोद।

उ०—जी हो वरस सरस आठां लगे लाला, लीला वाल, विनोद। जी हो सब ही परमा देवकी, लाला, पावे अधिक प्रमोद।—जयवांणी

प्रमोदक—वि० [सं०] आनन्द देने वाला, हर्षित करने वाला।

सं०पु०—एक प्रकार का जड़हन।

प्रमोदन—सं०पु० [सं० प्रमोदनः] विष्णु का एक नाम।

प्रमोदा—स०पु० [सं०] आठ प्रकार की सिद्धियों में से एक जिसकी प्राप्ति से आध्यात्मिक दुःखों का नाश होता है। (सांख्य)

प्रमोहन—सं०पु० [सं०] मोहित करने की क्रिया।

प्रम्म—देखो 'परम' (रू. भे.)

उ०—नमो प्रहळाद उवारण प्रम्म, नमो अग कासव मारण भ्रम्म।

—ह.र.

प्रम्मदा—देखो 'प्रमदा' (रू. भे.)

उ०—विधि-विधि वल्ली विस्तरड, फूले रंग विचित्र। पेखी पेखी प्रम्मदा, मन चोरंती मित्र।—मा. कां. प्र.

प्रम्मल, प्रम्मळ—वि० [सं० परिमल ?] सुन्दर।

उ०—सजत के चिकन्न साज, सुंदरां स-सोभरा। करंत के मुकेस कांम, भार कार चौभरा। तणंत के वणंत तास, प्रम्मळं पटंबरं। सिवंत के जरी सकाज, अग-अग अंबरं।—सू. प्र.

२. देखो 'परिमळ' (रू. भे.)

प्रयंक—देखो 'परयंक' (रू. भे.)

प्रयंत—देखो 'परयंत' (रू. भे.)

प्रयत्न—सं०पु० [सं०] १. मानसिक या शारीरिक चेष्टाएं जो कोई कार्य या उद्देश्य पूर्ण करने के लिए की जाती है।

२. किसी पदार्थ की प्राप्ति या किसी कठिन कार्य की सफलता हेतु आदि से अंत तक परिश्रमपूर्वक किये जानेवाले कृत्य, उद्योग, चेष्टाएं। उ०—जिण थी दिसा दिसा रा नरेसां मुगळ रै मांम्है अनेक उपहार भेजि आप री इळा आप रै हेठै लेण री प्रयत्न वधारिया।

—व. भा.

३. क्रियाशीलता, सक्रियता।

४. भाषा-विज्ञान और व्याकरण के मतानुसार वर्णों के उच्चारण में होने वाली क्रिया।

५. न्यायशास्त्र के अनुसार जीव या प्राणी के छः गुणों में से एक जो उसकी सक्रिय चेष्टा का सूचक होता है।

रू० भे०—परयतन।

प्रघसा—सं०स्त्री० [सं०] एक राक्षसी जिस को रावण ने सीता को समझाने हेतु नियुक्त किया था।

प्रयांण—सं०पु० [सं०प्रयाणम्] १. कहीं जाने के लिये यात्रा आरंभ करना, कूच, प्रस्थान। उ०—स्रवण संदेसा सांभळै, ढाढी किया प्रयांण। मागरवाळ जु पाविया, देसे गाल्ह सुजांण।—ढो. मा.

२. यात्रा, सफर। उ०—चलतां-चलतां अखंड प्रयांण, आया चित्रोड़ समीपे जांण।—वि. कु.

३. अभियान, चढ़ाई। उ०—जिकण महापातक मायै लेर आधी पातसाही रौ लोभ दे प्रतीची रा पति आप रा अनुज मुरादसाह नूं मिळाइ पाउस री कादंबिनी रै अनुकार आप रो अनीक तणियो। अठी दूजा साहजादै सुजासाह भी पहली री सूचना रै समांन दिल्ली रै अभिमुख प्रयांण कीधौ।—वं. भा.

४. मरकर किसी दूसरे लोक में जाना। उ०—प्रांण जितै जग आपणो, प्रांण जितै तन पाक। प्रांण प्रयांण कियां पछै, हुं नर नांम हलाक।—बां. दा.

५. कार्य का अनुष्ठान या आरंभ।

रू०भे०—पयांण, पयांणउ, परांण, परियांण, पायांण वियांण, वियांणउ, पीआंण, पीयांण, प्रयांन।

अल्पा०—पयांणो, पियांणो, पीआंणउ, पीआंणू, पीआंणो, पीयांणउ, पीयाणो।

प्रयांणकाळ—सं०पु० [सं०प्रयाण+काल] १. यात्रा का समय, यात्राकाल। २. मृत्युकाल।

प्रयांन—देखो 'प्रयांण' (रू. भे)

प्रयाग—सं० पु० [सं० प्रयागः] १. गंगा और यमुना के संगम-स्थान पर स्थित एक प्रसिद्ध तीर्थस्थान, जहां पर प्राचीन काल में बहुत यज्ञ होते थे।

२. वह स्थान जहां पर अधिक यज्ञ होते हों।

३. प्रथम गुरु की चार मात्रा का नाम। (पिंगल)

रू०भे०—परयाग, पराग, पिराग, प्राग, प्रियाग।

प्रयागराज—सं०पु०यौ० [सं०प्रयागः+राज] गंगा जमुना के संगम पर स्थित तीर्थ।

प्रयागराजेस्वर—सं०पु०यौ० [सं०प्रयागः+राजेस्वर] प्रयागवट के पास

स्थित शिवालय । (बां. दा. ख्यात)

प्रयागवड़-सं० पु० [सं० प्रयाग:+वट:] प्रयाग का प्रसिद्ध वटवृक्ष जहां बुद्ध भगवान को ज्ञान प्राप्त हुआ था ।
रू०भे०—परयागवड़, परागवड़, पिरागवड़, प्रागवड़, प्रियागवड़, प्रियागवड ।

प्रयागिरी-सं०पु० [सं०प्राज्ञ] पंडित । (ह.नां.मा.)

प्रयास-सं०पु० [सं०प्रयास:] १. किसी कठिन कार्य को करने के लिए किया जाने वाला उद्योग या प्रयत्न, परिश्रम, मेहनत । उ०—एवटो सिंहलद्वीप सो, फोकट कीध प्रयास । गढ़ चीतोड़ किसो गजो, साहि कहे सुणि व्यास ।—प. च. चौ.
२. वह पदार्थ या कार्य जो इस प्रकार किया या बनाया गया हो ।
रू०भे०—परयास, परियास, प्रियास ।

प्रयुंजणौ, प्रयुंजबौ-क्रि०स० [?] प्रदर्शित करना । उ०—दोइ सुत सघ नइ बीस अध्ययन वलि, बीस उद्देस इहा जिन प्रयुंजइ ।
—वि कु.
प्रयुंजणहार, हारौ (हारी), प्रयुंजणियौ—वि० ।
प्रयुंजिग्रोड़ौ, प्रयुंजियोड़ौ, प्रयुंज्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
प्रयुंजीजणौ, प्रयुंजीजबौ—कर्म वा० ।

प्रयुंजियोड़ौ-भू०का०कृ०—प्रदर्शित किया हुआ.
(स्त्री० प्रयुंजियोड़ी)

प्रयुक्त-वि० [सं०] १. व्यवहार में लाया हुआ, इस्तेमाल किया हुआ ।
२. संलग्न । ३. नियुक्त किया हुआ, नामजद किया हुआ ।
४. प्रेरित किया हुआ, उकसाया हुआ ।

प्रयुत-वि० [सं० प्रयुत] दस लाख । उ०—खांन इनायत जोधपुर, वैठौ नांवणखंड । प्रयुत पमंगे पाखरां, जगे तेन प्रचंड ।—रा. रू.

प्रयोग-सं०पु० [सं०प्रयोग:] १. किसी कार्य में योग, किसी कार्य में लगना, किसी कार्य में अभ्यास करना । उ०—वय बाळ विहाय युवा वरणी, कटिबद्ध भयो करणी-करणी । विमनां अनुराग विराग वह्यौ, चितग्रंथिय जोग प्रयोग चह्यौ ।—ऊ. का.
२. किसी काम में लाया जाना, व्यवहार या इस्तेमाल करना ।
ज्यूं०—सरदी रै दिनां में ऊनी कपड़ां रौ प्रयोग राखणौ, गरमी में ठंडाई रौ प्रयोग राखणौ ।
३. आधुनिक समय में विज्ञानिक क्षेत्रों में किसी प्रकार का आविष्कार करने या अनुसंधान करने के लिए की जाने वाली कोई परीक्षणात्मक क्रिया या उसका साधन ।
४. उक्त प्रकार के आविष्कार या अनुसंधान से जो सिद्ध हो चुका हो उसे दूसरों को समझाने के निमित्त की जाने वाली वह क्रिया जिससे उक्त तथ्य ठीक और मान्य सिद्ध हो सके ।
यौ०—प्रयोगसाळा ।
५. वह क्रिया जो केवल यह जानने के लिये की जाय कि कोई काम, चीज या बात ठीक तरह से सफल हो सकेगी या नहीं ।
६. प्राचीन भारतीय राजनीति में साम, दाम, दंड, भेद आदि का लिया जाने वाला अवलंब ।
७. उचित रूप से कार्य करने का ढंग या विधि ।
८. तांत्रिक उपचार ।
वि०वि०—ये निम्न लिखित हैं—
१. मारण, २. मोहन, ३. उच्चाटण, ४. कीलन, ५. विद्वेषण, ६. कामनाशन, ७. स्तंभन, ८. वशीकरण, ९. आकर्षण, १०. वदिमोचन, ११. कामपूरण, और १२. वाक्प्रसारण ।
९. व्याकरण में कर्त्ता, कर्म अथवा संज्ञार्थक क्रिया के लिंग वचन आदि के अनुसार प्रयुक्त होने वाला क्रिया-पद का नाम जो कर्त्ता के अनुसार होने पर कर्त्तृ-प्रयोग, कर्म के अनुसार होने पर कर्मणि प्रयोग तथा भाव के अनुसार होने पर भावे प्रयोग कहलाता है ।
१०. अभिनय, नाटक ।
११. रोगी के दोषों तथा देश, काल और अग्नि का विचार कर की जाने वाली औषध योजना, उपचार ।
१२. वह उपकरण या औजार जिससे कोई काम होता हो ।
१३. कार्य का अनुष्ठान या आरंभ ।
१४. तरकीब, युक्ति, उपाय ।
रू०भे०—परयोग, प्रजोग, प्रियोग ।

प्रयोगसाळा-सं०स्त्री०यौ० [सं० प्रयोगशाला] पदार्थ-विज्ञान, रसायन शास्त्र, आदि विषयक तथ्यों को समझने, जानने या नई बातों का पता लगाने की दृष्टि से विविध प्रयोग किये जाने का स्थान या भवन ।

प्रयोगी-वि० [सं०प्रयोगिन्] १. व्यवहार में लाने वाला ।
२. प्रयोग करने वाला, प्रयोगकर्त्ता ।

प्रयोजक-वि० [सं० प्रयोजक:] १. प्रयोगकर्त्ता, अनुष्ठानकर्त्ता ।
२. काम में लगाने वाला, प्रेरक ।

प्रयोजन-सं० पु० [सं० प्रयोजनम्] उद्देश्य, अभिप्राय, मतलब ।
उ०—कहण वाळी स्त्री सती है सो थोड़ै ही सरीर नही राखियौ तौ हूं तौ पती री आधी सरीर हूं सो सत कर सुरग में जाय मिळसूं इण आदि अनेक प्रयोजन है सो विसतार भय सूं किंचित लिखिया है ।—वी.स.टी.
रू० भे०—परयोजन, पिरियोजन, पिरोजन, प्रियोजन ।

प्रयोजनवतीलक्षणा-सं०स्त्री० [सं०] वह लक्षणा जो प्रयोजन द्वारा वाच्यार्थ से भिन्न अर्थ प्रगट करे ।
वि० वि०—देखो 'लक्षणा' ।

प्ररय-सं० पु० [सं० प्र+रय] वेग, गति । उ०—तिम लव चउत्थ

[illegible], सत्रम भाखि जे तिण समय। मेनेससिंह झाला सहित, [illegible] प्ररख।—वं. भा.

प्ररग्ग—सं०पु० [सं० प्रराग] कुल। (अ. मा.)

प्ररूढ़—वि० [सं० प्ररूढ] १. आगे या ऊपर उठा हुआ। २. उगा हुआ।

प्ररूप—सं० पु० [सं०] किसी वर्ग की वस्तुओं, व्यक्तियों आदि में से कोई एक ऐसी वस्तु या व्यक्ति जिससे उस वर्ग के सामान्य गुणों, विशेषताओं का बोध हो जाता है।

प्ररूपक—वि० [सं०] व्याख्याकार, समझाने वाला, प्रतिपादक।

उ०—जिण मानु के जाऊं बलिहारे, अमम अकिंचन कुमी संवल, पंच महाव्रत जे धारे। सुद्ध प्ररूपक नइ संवेगी, पालइ सदा [illegible]।—स. कु.

रू० भे०—परूपक।

प्ररूपणा—सं० स्त्री० [सं०] कथन, वखाण। उ०—श्रीदेवचंद्र जी ना गुण गहूं रे, सांभल चतुर सुजाण। घटत गुण नी प्ररूपणा रे, [illegible] मे सावधान रे।—कवियण

रू० भे०—परूपणा, परूपणाया, परूपणा, परूवणाया, परूवणा, प्ररूवणा।

प्ररूपणौ, प्ररूपबौ—क्रि० स० [सं० प्ररूपणम्] १. प्रतिपादन करना, व्याख्या करना, समझाना। (जैन)

उ०—श्रीमहावीर प्ररूपियउ, धरम नउ मरम एह। समयसुंदर [illegible], कहाउ तीरथंकर तेह।—स. कु.

२. रचना, बनाना। उ०—१. दान प्ररूपी हो एह इग्यारमी, [illegible]।—वि. कु.

उ०—२. [illegible] गुरु ने नुत ए जगदीस, वांणी तेह नी विस्वावीस। प्ररूप्या आगम पैंतालीस, [illegible] सांग गहूं सुजगीस।—प.च. ग्रं.

३. स्थापित करना, स्थापना। उ०—जिन प्रतिमा जिन हीज [illegible], पोते जिनजी प्ररूपी। तेहै ते सुद्ध समकित रजी, अग्यांनी ए [illegible]।—प.च.ग्रं.

प्ररूपणहार, हारो (हारी), प्ररूपणियौ—वि०।

प्ररूपिश्रोड़ौ, प्ररूपियोड़ौ, प्ररूप्योड़ौ—भू० का० कृ०।

प्ररूपीजणौ, प्ररूपीजबौ—कर्म वा०।

परूपणौ, परूपबौ, परूपणौ, परूपबौ, परूपणौ, परूपबौ, परूपणौ, परूपबौ—रू० भे०।

प्ररूपियोड़ौ—भू० का० कृ०—१. व्याख्या किया हुआ, समझाया हुआ, प्रतिपादित. २. रचा हुआ, बनाया हुआ. ३. स्थापित किया हुआ. (स्त्री० प्ररूपियोड़ी)

प्ररोह—सं० पु० [सं० प्ररोहः] [illegible], डाल।

[illegible]—सं० पु० [सं० प्ररोह] [illegible]। उ०—[illegible] प्ररोह मोह द्रोह [illegible]।—[illegible]

प्ररोहणौ, प्ररोहबौ—क्रि० अ० [सं० प्ररोहणम्] १. उदय होना, उठना।

उ०—तंबेरम कुंभ दुहाथळ तथ्थ, आडागिरि मत्थ क हत्थ अगत्थ। प्ररोहत होफर खोफ अपार, अबोफर आभ डरै असवार।—मे.म.

२. अंकुरित होना, उगना।

प्ररोहणहार, हारौ (हारी), प्ररोहणियौ—वि०।

प्ररोहिश्रोड़ौ, प्ररोहियोड़ौ, प्ररोह्योड़ौ—भू० का० कृ०।

प्ररोहीजणौ, प्ररोहीजबौ—भाव वा०।

प्ररोहियोड़ौ—भू० का० कृ०—१. उदय हुवा हुआ, उठा हुआ.

२. अंकुरित हुवा हुआ, उगा हुआ.

(स्त्री० प्ररोहियोड़ी)

प्रलंद—देखो 'पुरंदर' (रू. भे.)

प्रळंब,प्रलंब—वि०[सं०प्रलंब] १. नीचे की ओर दूर तक लटकता हुआ,बड़ा।

उ०—भुज प्रळंब आजांन, कमळ आकृति पद कोमळ।—रा. रू.

२. लम्बा। उ०—मयाळ मंडपाळ मेघमाळ मोहनी नहीं, हिलंब से प्रळंब पंभ बिंब सोहनी नहीं।—ऊ. का.

सं० पु० [सं० प्रलंबः] एक दैत्य का नाम जिसे बलराम ने मारा था।

रू० भे०—परलंब, पलंब, प्रलंबौ।

अल्पा०—परळंबौ, परलंबौ।

प्रलंबन—सं०पु० [सं० प्रलंबनम्] सहारा, अवलंबन।

प्रलंबौ—सं० पु० [सं० प्लवंग ?] १. वानर, मर्कट। उ०—हद डांण अगां अभिमांण हरै, प्रळंबौ कुरबांण उडांण परै।—मे. म.

२. देखो 'प्रलंब' (रू. भे.)

प्रलंभन—सं०पु० [सं०प्रलंभः] १. कपट, छल। २. धोखा।

प्रळ—देखो 'पळ' (रू. भे.)

उ०—रगत धापी रतनाळियां, प्रळ धपिया पंखाळ।—पा. प्र.

प्रळइ, प्रळउ, प्रलइ, प्रलउ—देखो 'प्रळय' (रू. भे.)

उ०—१. किसुं पहूतउ द्वापरि प्रलउ, ईह लगइ कइ अम्ह घरि विलउ।—पं. पं. च.

उ०—२. कलकलइ जिम वारिनिधि प्रलइ, किसिउं भूपर कोपि टलटलइ।—सालिसूरि

प्रलपन—सं०पु० [सं०प्रलपनम्] १. वार्तालाप, संभाषण। २. गप्प-शप्प, ऊट-पटांग बातचीत। ३. विलाप।

प्रळयंकर—वि० [सं० प्रलयः+कर] नाशकारी, प्रलयकारी।

प्रळय—सं०पु० [सं० प्रलयः] १. लय को प्राप्त होना, न रह जाना, विलीन होना।

२. पृथ्वी आदि लोकों का न रह जाना, संसार का तिरोभाव।

३. जगत के नाना रूपों का प्रकृति में लीन होकर मिट जाना, नाश हो जाना।

४. बहुत ही उत्कट या तीव्र रूप में होने वाला भयंकर नाश या बरबादी। उ०—सूरातन जांही घणइ सूरातन, ईसर तणा वाविया ग्रंग। प्रळय काळ हुसी·ताइ ध्रिथमी, द्रोही तणा थरकिया द्रंग।
—महादेव पारवती री वेलि

५. संहार, विनाश, ध्वंस।

६. साहित्य में एक सात्विक अनुभाव जिसमें किसी वस्तु में तन्मय होने के पूर्व स्मृति का लोप हो जाता है।

७. मूर्च्छा, बेहोशी।

रू०भे०—परड़, परळउ, परळय, परळै, पळइ, प्रळउ, प्रलइ, प्रलउ, प्रळै, प्रल्लय।

अल्पा०—परड़ो, परळो, प्रळो।

प्रळयकार—सं०पु० [सं० प्रलयः+कारं] १. नाश, विध्वंस। २. संहार।
रू०भे०—प्रळैकार।

प्रळयकाळ—सं०पु० [सं० प्रलयकालः] १. संसार के नाश का समय।
२. नाश का समय, विनाश का समय। उ०—जुड़ै मेन थंडां जाडा-वाळी धोम जाळा री साथात जागी, खडां ग्राडावाळा री लागी हाला री खुलास। जोम गाटावाळी प्रळयकाळ री उनागी उठै, वागी हाडाताळी नराताळी री वांणास।—दुरगादत्त बारहठ
रू०भे०—प्रळैकाळ।

प्रळयकाळी—वि० [सं०प्रलयकारी] नाश करने वाली, नाशकारी।
उ०—चमंकके झाळियां बीच नूर रा हाथियां चली, नाळियां ऊपरां प्रळयकाळियां नाराज।—दुरगादत्त बारहठ

प्रळयांतक—सं०पु० [सं०प्रलयांतक] चौसठ भैरवों में से एक भैरव।

प्रळयानळ—सं०पु०यौ० [सं०प्रलय+अनिल] प्रलयकाल की वायु।
उ०—१. ग्रेक मरमइ ग्रेक सांकल्या, ग्रेक सुंडिया ग्रेक नूर। पार विहूणा परवरिया, जिम प्रळयानळ पूर।—मा. कां. प्र.
उ०—२. संसारि सरजी नथी, ग्रे काया कहि दूजि। कइ माधव रस मांणमिइ, कइ प्रळयानळ पूजि।—मा. कां. प्र.

प्रळाद—देखो 'प्रह्‌ळाद' (रू. भे.)

प्रळाप—सं०पु० [सं०प्रलापः] १. वार्तालाप, संवाद। २. व्यर्थ की बकवाद।
३. विलाप, रुदन। उ०—हा! हा! दियै घरोघर हेला, पुरजण हिए प्रळापा। जियै जिकै नहिं जियै जांण जग,किये ग्रनेक कळापा।
—ऊ. का.

प्रळापक—वि० [सं० प्रलापक] प्रलाप करने वाला, विलाप करने वाला।
सं०पु०—एक प्रकार का सन्निपात जिसमें रोगी अनाप-शनाप बकता है तथा उसके शरीर में पीड़ा और कंप होती है।

प्रलेप—सं०पु० [सं० प्रलेपः] १. लेपन, उबटन। २. मलहम (मरहम)।

प्रळै—देखो 'प्रळय' (रू. भे.) (डि. को.)
उ०—१. फिरंग प्रळै जळ फैलियो, तज दुहूं राहां टेक। पांन ग्रखैवड़ 'पदम' रो, ऊंचो रहियो ग्रेक।—राघोदास सांदू
उ०—२. करम मिटै भव कोड़ रा, पाप प्रळै हुय जाय। मन वंछत सब ही मिळै, प्रभु गुण ग्रंथ प्रभाय।—गजउद्धार
उ०—३. हरणाकुस कूं मार प्रहळाद कूं उबार लिया। प्रळै का दिन जांण सत देस उधारण कूं मच्छ देह धारी।—र.ज.प्र.
उ०—४. दिस मारू खुरसांण तणा दळ, वाधै जांण प्रळै चा वद्दळ।—रा. रू.
उ०—५. प्रळै दैण दुसहां पयण पैण तीरां पड़ै, स्यांम रख वैण वीरां सरूभो। निसा कोतक लगो 'रैण' जुध निरखवा, ग्रेण रथ रोक चंद्र गैण ऊभो।—रणसी सीसोदिया री गीत

प्रळैकार—देखो 'प्रळयकार' (रू. भे.)
उ०—फरे गढ़ां दोळा के हबोळा लाख फौजां, लूट प्रळैकार दुनी करै भू लैणाग। जमी ऐकांकार ऐहो मेटतां 'ग्रजा' रा जेठी,गाढ़ेराव धारै भुजां टूटतो गैणाग।—रावत ग्रजीतसिंह चूंडावत रौ गीत

प्रळैकाळ—देखो 'प्रळयकाळ' (रू. भे.)
उ०—१. प्रळैकाळ का पावस ग्रातसूं का उक भुरजाळ।—सू. प्र.
उ०—२. वूठिया झाळ का चवखां डूंग में पड़ंतां वेध। भाराथ जूटिया वीर चाळका सा भूप। मांझी निराताळ का ऊठिया फिरं-गांण माथै। रांघड़ा रूठिया प्रळैकाळ रा सरूप।
—डूंगजी जवार जी रौ गीत

प्रळैझळ—सं०स्त्री० [सं० प्रलयज्वाला] प्रलयकाल की ग्राग, प्रलयाग्नि।
उ०—प्रळैझळ एक दमंग प्रचंड, खपावत जांणि घणा वन खंड।
—सू.प्र.

प्रळैदातर—सं० पु० [सं० प्रलयदातार] बड़ादान करने वाला, महादानी।
उ०—जोगायत वैरसल रौ। तिण नूं भाईवंटै केहरोर ग्रायो, नै वरसलपुर मांहै हैंसो हुंतो। जोगायत वडो प्रळैदातार हुवो। वडा-वडा दांन दिया। पछै साथरै री मौत मुंवो।—नैणसी

प्रळैमेघ—सं० पु० यौ० [सं० प्रलयमेघ] प्रलयकालीन मेघ, प्रलय जलधर।

प्रलोक—देखो 'परलोक' (रू. भे.)
उ०—१. विलोकं लोक-लोक को, प्रलोक लोक की वदें।—ऊ. का.
उ०—२. पूगियौ सांढ़ियौ ग्रांण सोढ़ांण प्रमांण पायौ, सोढ़ी नै सुणायौ वैण मोढ़ियौ सनेस। सतावी सिनांन झळां मंगळा प्रलोक सागो, मनां में उछाह लागो पती रौ हमेस।—बादरदांन दधवाड़ियौ

प्रळोणौ, प्रळोबौ—क्रि० ग्र० [सं० प्रलोठनम्] १. लोटना-पोटना।
उ०—प्रमेसर तोरा पांय प्रळोय, कुरांण पुरांण न जांणै कोय।
—ह. र.

[?] २. धारण करना (छत्र)।
उ०—रांम न भूलो बप्पड़ां, जे सिर छत्र प्रळोय, कर जीहा लोयण स्रवण, वियो न ग्रापै कोय।—ह.र.

प्रलोप—सं० पु० [सं०] लोप।

प्रलोभ-सं० पु० [सं० प्रलोभ:] अत्यन्त लोभ, अधिक लालच ।
रू० भे०—परलोभ, पलोभ ।

प्रलोभक-वि० [सं०] लालच देने वाला, प्रलोभन देने वाला ।

प्रलोभन-सं० पु० [सं० प्रलोभनम्] किसी को किसी ओर प्रवृत्त करने के लिये उसे लोभ की आशा देने का कार्य, लालसा ।
रू० भे०—परलोभन ।

प्रळोभी-वि० [सं० प्रलोभिन्] लोभ में फंसने वाला, लालच करने वाला ।

प्रळी—देखो 'प्रळय' (अल्पा., रू. भे.)

प्रलय—देखो 'प्रळय' (रू. भे.)
उ०—किनकेस सुतन प्रलय सुकाळ, करग आछटै गज्जां कपाळ ।
—शि.सु.रू.

प्रल्हाद, प्रल्हाद—देखो 'प्रहळाद' (रू. भे.)
उ०—हिरणाकुस प्रल्हाद सतायो, जार अगन विच डाल दियौ री ।
राज छांड दियो नांव न छांड्यौ, खभ फाड़ प्रभु दरस दियौ री ।
—मीरां

प्रवंग-सं० पु० [सं० प्रवंग:] घोड़ा, अश्व । उ०—अंग्रां खग झाट निराट अळग्ग, पड़ै वि वि जंघ पड़ै झड़ि पग्ग । पड़ै रिणि उच्छळि अंग प्रवंग । कुंडां चढ़ि जांणि विनांणि कुरंग ।—वचनिका

प्रवंचक-वि० [सं०] ठग, धूर्त ।

प्रवंचना-सं०स्त्री० [सं०] छल, कपट, ठगी, धूर्तता ।

प्रव—देखो 'परव' (रू. भे.)
उ०—अत प्रव माइ विन्है तो मिळिया, कहिजै ज्यां वाखांण किसा । दुरजोधन जिसड़ा दूसासण, जुधिठिल अरिजण भीम जिसा ।—गोरधन बोगसो

प्रवचन-सं० पु० [सं० प्रवचनम्] १. अच्छी तरह समझकर कहना । २. अर्थ खोल कर बताना, समझाना । ३. उपदेश पूर्ण भाषण । (मि०—वखांण ।)

प्रवत-सं० पु० [?] पानी, जल । (अ. मा.)

प्रवदारण—देखो 'प्रविदारण' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

प्रवयण-सं०पु० [सं० प्रवयणम्] १. बैल हांकने का डंडा । (डिं. को.)
२. चाबुक । ३. अंकुश ।

प्रवर-वि० [सं०] १. महिमान्वित । उ०—सखियां सुं खेले रमै, करै गीत नै गांन, प्रवर पंच परमेस्टि नौ, धरै निरंतर ध्यांन ।
—वि. कु.
२. श्रेष्ठ, सर्वोत्तम । ३. मुख्य, प्रधान । ४. आयु में सब से बड़ा ।
सं०पु० [सं० प्रवर:] १. गोत्रप्रवर्तक ऋषि । २. पूर्व पुरुष । ३. संतति, वंशज । ४. वंश, कुल । ५. अग्नि संस्कार का मंत्र विशेष ।
रू०भे०—परवर, पवर, पवरु ।

प्रवरत-सं०पु० [सं० प्रवर्त:] कार्यारंभ, आरंभ । (वं. भा.)

प्रवरतक-वि० [सं०प्रवर्त्तक] १. किसी कार्य या बात का आरंभ करने वाला ।
२. किसी कार्य में प्रवृत करने वाला, प्रेरणा देने वाला ।
३. किसी बात, मत या कार्य को चलाने वाला, प्रचलन करने वाला ।
४. उत्साह देने वाला ।
५. गति देने वाला, चलाने वाला ।
६. नया आविष्कार करने वाला ।
सं०पु० [सं०प्रवर्तक:] नवीन आविष्कार करने वाला व्यक्ति ।
रू०भे०—परवरतक ।

प्रवरतणौ, प्रवरतबौ-क्रि० अ० [सं० प्रवर्तनम्] १. फैलना, प्रवर्त होना । उ०—त्यौं इह प्रसंन वाउ वाजै छै । अक्षां नै सुख देई । सु जांणै प्रजा माहे न्याव प्रवरत्यौ छै ।—वेलि टी.
२. लेन-देन में आना, व्यवहार में आना, चलना । उ०—ते आगळ पहलो नांणौ कुतबस्याही करायो । इसो नांणो (कोई न) नीपजायौ । तिवारै पछै गुजरात बीजो नांणौ प्रवरतायो । पछै जलाला आद देनै नांणा प्रवरतिया ।—नैणसी
प्रवरतणहार, हारौ (हारी), प्रवरतणियौ—वि० ।
प्रवरतिओड़ौ, प्रवरतियोड़ौ, प्रवरत्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
प्रवरतीजणौ, प्रवरतीजबौ—भाव वा० ।

प्रवरताणौ, प्रवरताबौ-क्रि० स० [सं० प्रवर्तनम्] १. फैलाना, प्रवर्तन कराना ।
२. व्यवहार में लाना, लेन देन में लाना, चलाना । उ०—तिवारै पछै गुजरात बीजो नांणौ प्रवरतायौ ।—नैणसी
प्रवरताणहार, हारौ (हारी), प्रवरताणियौ—वि० ।
प्रवरतायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
प्रवरताईजणौ, प्रवरताईजबौ—कर्म वा० ।

प्रवरतायोड़ौ-भू० का० कृ०—१. फैलाया हुआ, प्रवर्तन कराया हुआ.
२. व्यवहार में लाया हुआ, लेन देन में लाया हुआ, चलाया हुआ.
(स्त्री० प्रवरतायोड़ी)

प्रवरतियोड़ौ-भू० का० कृ०—१. फैला हुआ, प्रवर्त हुवा हुआ.
२. लेन देन में आया हुआ, व्यवहार में आया हुआ, चला हुआ.

प्रवह-सं० पु० [सं० प्रवह:] १. धारा ।
२. पवन, हवा ।
३. सात प्रकार के पवनों में से एक का नाम जिसके सहारे आकाश में ज्योतिष पिण्ड स्थित है ।

प्रवहण-सं० पु० [सं० प्रवहणम्] १. पर्दादार गाड़ी या पालकी, डोली ।
उ०—कुमर तणा गुण खिण खिण समरै, जास कुमति कमलांणी ।

प्रवहण देखि इसै इक नेड़ो, नयण तिहां विकसांणी ।—वि.कु.

२. जहाज, नौका, पोत । उ०—हरख धरि हियड़इ मांहि अति घणउ, तुह पसाय लही तुह गुण भणु । जलधि पारइ प्रवहण ऊतरइ, तिहां समीरण सहि सानिध करइ ।—म.कु.

रू० भे०—प्रवहण ।

प्रवांण—देखो 'प्रमांण' (रू. भे.)

उ०—सुणि सुंदरि केता कहां, मारू देस वखांण । मारवणी मिळियां पछइ, जांणयउ जनम प्रवांण ।—ढो.मा.

प्रवांणौ—देखो 'परवांणौ' (रू. भे)

प्रवाड़—देखो 'प्रवाड़ौ' (मह., रू. भे.)

उ०—मींधुरा दहाड़ मूंवां दहाड़ विभाड़ सत्रां, धाव सिध्र विरदाई प्रवाड़ धरेस । तुरंगां वध्यंदां वांवराड भडां रांम ताखा, निखगां गीभणा धाड जांनकी नरेस ।—र. ज. प्र.

प्रवाड़मल, प्रवाड़मल्ल—सं०पु० [राज० प्रवाड़ + सं० मल्ल] योद्धा, वीर ।

उ०—१. मांझी मोह मराट, 'पातल' राणा प्रवाड़मल । दुजडा किय दहवाट, दळ मैंगळ दांणव तणा ।—दुरायच टापरियो

उ०—२. 'पूरो' 'हरी' प्रवाड़मल, 'सूरो' 'दुज्जणमल्ल' । रूक-हथा हरदास रा, अजरा खरा अचल्ल ।—रा. रू.

रू०भे०—परवाड़मल, परवाड़मल्ल ।

प्रवाड़ि—सं०स्त्री० [?] भक्ति पूर्वक किसी पूज्य को दाहिनी ओर कर उस के चारों ओर घूमना, प्रदक्षिणा । उ०—गुरु सांथइ रे, चैत्य प्रवाड़ि करइ सगी । देव वांदइ रे, सक्रस्तव पाच करी ।—स. कु.

प्रवाड़ौ—सं०पु० [सं०प्रवादः] १, युद्ध, लड़ाई, संग्राम ।

उ०—१. असमर गहे कळम किय आवर, वढ़ते धडा कंवारी धंद । मेछांतणौ प्रवाड़ौ मोटौ, नवखंड हुवौ रांण नरियंद ।

—महारांणा सांगा रो गीत

उ०—२. वातां करतां लागी वेळा, पायो कुजस प्रवाड़ै । डोलां तणां खुसाड़ै डेरो, श्रो आयौ ढोल ऊघाड़ै ।—कायर रो गीत

२. वीरता पूर्ण कृत्य, वहादुरी का काम, वीर कार्य ।

उ०—१. 'ऊदै' भड़ मेलिया अकारा, नीसरियो खळ छोड नकारा । मिरजो नूरमली जुध मुड़ियौ, 'जोधां' जैत प्रवाड़ौ जुड़ियो ।

— रा. रू.

उ०—२. श्रीजैतसिंह जी श्रीमाता जी करणी जी रै प्रताप सूं अनेक प्रवाड़ा किया ।—ठा० जैतसिंह री वारता

उ०—३. राम राज जोधपुर, सहू हरचंद वारी । मास पंच खट मास, साह आपै वाधारी । दखणांधी सरहद्द, वडा जीता आखाड़ा । वडा प्रिसण परभवे, वडा खाटिया प्रवाड़ा । खेगरे खग खळ घासियां, अभंग नाथ उदमाद्रमै । दिन-दिन प्रताप जस आगळै, सूरसिंघ नृप आधमैं ।—गु.रू.व.

उ०—४. छरा भयंकर छोह चख, डाढ़ भयंकर डाच । दीसै नाहर देखियां, सहू प्रवाड़ा साच ।—वां. दा.

३. शौर्य, पराक्रम, वहादुरी । उ०—१. कीत खाटण नमो 'फता' सुत कळोधर । सवाया प्रवाड़ा दीह साजा । 'माल' सुत ताक आयो ज्युं ई मोटमन । रैण मुरधर तणो कीध राजा ।—देवराज रतनू

उ०—२. 'अमर' प्रवाड़ा एण विध, कहिया सुकवि सकाज । इण आगळि, वरणन अथग, राजतेज 'जसराज' ।—सू.प्र.

४. कीर्ति, यश । उ०—तो पद अविधांन प्रवाड़ा सूरत, अरविंद डडग तंत इधरार । नांमें रटै सांभळै निरखै, मसतक जिहै स्रुत नयण मुरार ।—र.रू.

५. यश का कार्य, महान कार्य । उ०—१. सो ईणा रावत प्रतापसिंघ री सरकार सुं भी लेखणीं दांन दीधो । अर आप रा घर मांहे छो सो तो सरब ही दीधो । सो ईणां रो तो सार नै आचार घणों-घणो तिरो कठा-ताई कह्यो जावै । जिणां रा प्रवाड़ा रो कुण पार पावै । निपट अमांमी अद्भुत अछूनी रजपूती रो सरदार ।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

उ०—२. दांमोदर तुझ निमो व्रिज देस, प्रवाड़ां तुझ निमो परमेस ।

—पी. ग्र.

उ०—३. (नैं) कीया कांम वहिया कटग, करता कितरा अेक कहां । ताहरा विसव रूपी त्रिगुण, नाथ प्रवाड़ा ना लहां ।—पी. ग्रं.

६. विजय, जीत । उ०—रावत मेघ वेघम थी चढ़ियो । मजलै एक आयो । सकतावत असवार पिण भिणा मरणीक भेळा हुवा । पछै रावत मेघ हीज विचार कर दीठो । घर १ छै । गोत कदम हूसी । तरै आप सूं हीज पाछो वळियो । भाई-वंध सिगळा मांनसिंघ करणोत वीजै घणो ही कह्यो । सकतावत प्रवाड़ा वधसी । इण आगा कठै ही फिर संका नहीं ।—नैणसी

उ०—२. म्हा आज पहला इसो कजियो कियो न सुणियो । सारा अेक तरह मनगरा था सो जितरो साथ हुतो तितरो जे हुवै और उणसूं कजियो करां जणां तो खबर पड़ जाय । इसी वलाय था । पण भाग सावळ था तीं सूं पचास सवार रहिया । वाकी रा अगल-वगल आगे गया । खीवो पाव वांधणें रुकियो थो तीं सूं खांन री फतह हुई छै । प्रवाड़ौ हाथ आयो । खांन सुण राजी हुवो ।

—सूरे खीवे कांधळोत री वात

७. चमत्कार पूर्ण कृत्य, दैविक कृत, दैविक चमत्कार । उ०—१. त्रहूं जग मिटावण विघन तन ताप रा, खपावण पाप रा मूळ खोटा । अनेकां प्रवाड़ा गिणे कुण आप रा, मात धणियाप रा विड्द मोटा ।

—खेतसी वारहठ

उ०—२. वगतर कर कंथा वडंग डड वांधै, रिम सुभ गत देवण रेस । दिन-दिन नया प्रवाड़ा दीपै, दसमा नाथ नमो 'दुरगेस' ।

—दुरगादास राठोड़ री गीत

रू० भे०—पंवाड़ौ, परवाड़ौ, पवाड़उ, पवाड़ौ, पुमाड़ौ, पुरवाड़ौ, पुवाड़ौ, पुवाडौ ।

मह०—परवाड़, परवाड, प्रवाड़, प्रवाड।

प्रवाड—देखो 'प्रवाड़ौ' (मह., रू. भे.)

प्रवाद–सं० पु० [सं० प्रवादः] १. वार्तालाप, संवाद। २. बातचीत, किंवदंती, अफवाह, जनश्रुति, जनरव। ३. व्यक्त करना, वर्णन करना प्रकट करना। ४. शब्दोच्चारण। ५. झूठी बदनामी, निंदा।

रू० भे०—परवाद।

प्रवाळ—देखो 'प्रवाळ' (रू. भे.)

उ०—अधर प्रवाळ सा जांण जै, दांत दाड़िमी बीज। रसना नागर पान सी, चूंपां चमकै बीज।—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२. कठळी कंनक प्रवाळ माणिक, विविध रूप विस्तार। दांणउ दूआसर मांदल्यां, उर मोतियां भरिहार।—रुकमणी मंगळ

प्रवाळक–वि० [सं० प्रवाल+क] १. लाल, रक्ताभ। उ०—जगी हवदां खळ सेल जड़त, प्रवाळक रूप अंत्राळ पडंत।—सू. प्र.

प्रवाळड़ी, प्रवाळियौ—देखो 'प्रवाळ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१. सिद्ध-पदे इकत्रीस प्रवाळड़ा, राता माणिक अस्ट। रक्त-चदन लेपित गोलक घर्ग, टलै उपद्रव कस्ट।—श्रीपाळ रास

उ०—२. पन्ना लाल प्रवाळिया, हीरा रतन वणाय। चौक रचै अदभुत अधिक, वळि मुक्ताफळ मांय।—गजउद्धार

प्रवाळी–सं०पु० [सं० प्रवालम्] १. नवीन पत्ते, कोंपल।

उ०—घटि-घटि घण घाउ घाइ रत घण, ऊंच छिछ ऊछळै अति। पिड़ि नीपनौ कि खेत्र प्रवाळी, सिरा हुस नीसरै सति।—वेलि

२. देखो 'प्रवाळी' (रू. भे.)

उ०—धनख ज्यूं ही भुंहरां री खंच, नासिका जिसी सूवा री चंच, अधर प्रवाळी, जिसा वणिया दांत जांणै हीरां री कणियां।
—र. हमीर

३. देखो 'प्रवाळ' (रू. भे.)

उ०—साई दे दे सज्जना, रातइ इंणि परि रूंन। उरि ऊपरि आंर ढळइ, जांणि प्रवाळी चून।—ढो. मा.

प्रवाव—देखो 'प्रवाह' (रू. भे.)

उ०—घुमै हिक जोध सहै घण घाव। पड़ै विंड हेकां स्रोण प्रवाव। कटारां वाहे हेक कराळ। धड़ा सिर हेक ध्रवै धाराळ।
—गु. रू. बं.

प्रवास–सं०पु० [सं० प्रवासः] १. अपनी जन्म भूमि छोड़ कर विदेश में जाकर किया जाने वाला वास, परदेस का निवास।

उ०—जीव अम्हारउ जोसिता, ते थापणि तुम्ह-पासि। राखे तुं रुडी परि, पंजर भमइ प्रवासि।—मा. कां. प्र.

२. देश निरवासन, देश निकाला। उ०—आ सुणतां ही कोप रै परतंत्र राजा भीम काका सारंगदेव रा सातूं ही पुत्रां नूं आप रा देस सूं प्रवास दीधौ।—वं भा.

प्रवासी–सं०पु० [सं० प्रवसिन्] १. यात्री, पथिक, बटोही।

२. विदेश में निवास करने वाला, परदेस में रहने वाला।

प्रवाह–सं०पु० [सं० प्रवाहः] १. जल की वह धारा जो किसी दिशा में पूर्ण वेग के साथ बढ़ रही हो। उ०—१. भागीरथ भजि रे। भोळी चक्रवरत्त, आगा लगइ जोवतां अयाहं। संकर देव पखउ कुण साहइ, पडती गंगा तणा प्रवाह।—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२. सो प्रेम सूं हियौ भर आयौ अर आंख्यां सूं प्रवाह छूटिया सो रोकियां रुकै नहीं।—कुंवरसी सांखला री वारता

२. किसी द्रव पदार्थ का किसी ओर वेग पूर्वक लगातार बहते रहने की क्रिया या भाव, बहाव। उ०—१. वनचर गण लीधां बहै, भागीरथ रै राह। स्रीसीता भरतार सम, भागीरथी प्रवाह।
—बां. दा.

उ०—२. गंगी गग प्रवाह, निरमळ तन कीधौ नहीं। चित व्यूं राखै चाह, तिके सरग पावण तणी।—बां. दा.

३. नदी। (ह. नां. मा.)

४. गति, गमन, चाल। उ०—हळ सीत अंबर पसरि उत्तर वसन प्रीत विसेख ए। आंमिख पांनक पूर आसव, पुहवि भ्रप सुख पेख ए। तनि अगनि सुख निसि रहत तापस सरणि वसन संसार ए। हिम सरति राह प्रवाह सुख हुय पंथ याह पगार ए।—रा. रू.

५. किसी काम या बात का निरंतर चलने वाला क्रम जो बीच में कभी नहीं टूटता हो।

६. दान। उ०—'ऊदा' हर धारा तन आगै, भरत खंड सह डंड भरै। प्रोळ प्रवाह बडा गज पातां, कुंजर नयरां रीझ करै।
—सुखजी आढ़ौ

उ०—२. खड़खट थट लाखावट खळखट, गजगति वर कीधौ गजगाह। रातल सावज भ्रविया 'रतनै' पूजवियौ पळ प्रघळ प्रवाह।—दूदौ

७. स्नान।

रू०भे०—परवाह, प्रवाव, प्ररवाह।

प्रवाहणौ, प्रवाहबौ–क्रि०स० [सं० प्रवाहनम्] जलधारा में बहाना।

उ०—गंग प्रवाहिउ रयण माहि घालिउ मंजूसं।—प. पं. च.

प्रवाहणहार, हारौ (हारी), प्रवाहणियौ—वि०।

प्रवाहिओड़ौ, प्रवाहियोड़ौ, प्रवाहयोड़ौ—भू० का० कृ०।

प्रवाहीजणौ, प्रवाहीजबौ—कर्म वा०।

परवाहणौ, परवाहबौ—रू० भे०।

प्रवाहिका–सं०स्त्री० [सं०] पेट का एक रोग जिससे पेट में दर्द होता है और पतले दस्त होते हैं।

प्रवाहियोड़ौ–भू० का० कृ०—जळ प्रवाह में बहाया हुआ.
(स्त्री० प्रवाहियोड़ी)

प्रवाही–वि० [सं० प्रवाहीन्] जो प्रवाह के रूप में बह रहा हो।

उ०—दूसम काले दोहिलउ जी, सूधउ गुरु सयोग। परमारथ प्रीछइ नहीं जी, गडर प्रवाही लोग।—स. कु.

प्रवित, प्रविति, प्रवित्त—देखो 'पवित्र' (रू. भे.)

उ०—१. जम त्रास दुक्ख मिटसी 'जगा' घणूं सुक्ख प्रांमिस घणा। कर प्रवित ग्रंग संनांन कर, तर तरग गंगा तणा।—ज.खि.

उ०—२. ग्रलख करिवा प्रविति नंद रौ आंगणौ। प्रभू रौ जसोदा वंधायौ पाळणौ।—पी. ग्रं.

उ०—३. पुत्रां कजि खाटै धन पित्तं। पुत्रां हूं घर हुवै प्रवित्तं।
—गु. रू. ब.

प्रविदारण-सं० पु० [सं० प्रविदारणम्] युद्ध। (ह. नां. मा.)

रू०भे०—प्रवदारण।

प्रविसणौ, प्रविसवौ-क्रि० अ० [सं० प्रविश्] प्रवेश करना, घुसना।

प्रविसणहार, हारौ (हारी), प्रविसणियौ—वि०।

प्रविसिग्रोड़ौ, प्रविसियोड़ौ, प्रविस्योड़ौ—भू० का० कृ०।

प्रवीसीजणौ, प्रवीसीजवौ—भाव वा०।

प्रविसियोड़ौ-भू० का० कृ०—प्रवेश किया हुग्रा, घुसा हुग्रा.
(स्त्री० प्रविसियोड़ी)

प्रविस्ट, प्रविस्ठ-सं० पु० [सं० प्रविष्ट] प्रवेश। उ०—जठै भीम रा सिपाहां तोरण रै बाहिर ग्राया, जिकै राजा सहित प्राकार में प्रविस्ट कीधौ।—वं. भा.

रू० भे०—पविट्ठ।

प्रवीण-वि० [सं०] १. अच्छा गाने या बजाने वाला। उ०—गिर गज कुंभ गिरीस, प्रवीणां गाविया। सुवरण वरण सुढंग कठोर सुहाविया।—बां. दा.

२. किसी कार्य को करने में पूर्ण जानकार, चतुर।

३. दक्ष, कुशल। उ०—जिण तेज अरक जिम छक जहूर। सुंदर प्रवीण दातार सूर।—वि. सं.

सं० पु०—१. पंडित। (ह.नां.मा.)

२. कवि। (ग्र. मा.)

३. वह जो वीणा बजाने में पूर्ण दक्ष हो।

रू० भे०—परवीण, परवीन, परवीण, परवीन, प्रवीण, प्रवीन।

प्रवीणता-सं० स्त्री० [सं० प्रवीण+रा०प्र०ता] निपुणता, चतुराई, दक्षता।

रू० भे०—परवीणता।

प्रवीत—देखो 'पवित्र' (रू. भे.)

उ०—१. पाटंबर धोयति जिग प्रवीत। उद्दार तिलक क्रांती ग्रद्दीत।
—सू. प्र.

उ०—२. पत-सीत प्रवीत सनीत पढ़ं। दळ-जीत लखां रिण-जीत दढ़ं।—र.ज.प्र.

प्रवीन—देखो 'प्रवीण' (रू. भे.)

उ०—कटी सु छीन केहरी प्रवीन पायका नहीं। विनीत वांनि वीन सी नवीन नायका नहीं।—ऊ. का.

प्रवीर-सं० पु० [सं० प्रवीरः] वीर पुरुष, बहादुर व्यक्ति, योद्धा।

उ०—ग्रादियां रा बीस मीसणा रा पंद्रह प्रवीर पड़ियां पछै बहनोई रा प्रहार थी साळा रौ सीस उडियौ।—वं. भा.

रू० भे०—प्रवीर।

प्रवेस—सं० पु० [सं० प्रवेशः] १. भीतर जाना, ग्रन्तनिवेस, घुसना, पैठारी। उ०—१. तिण समयै तिण वेर उभै नाजर व्रत ग्रादर, पावक करण प्रवेस तरण पति चरण निरंतर।—रा. रू.

उ०—२. रोग सोक दुख पाप रिण, ग्रै मत करौ प्रवेस। रहौ ग्रनीत-ग्रनीत विण, दाता हुंदै देस।—बां. दा.

२. गति, रसाई, जानकारी।

३. दूसरे के काम में दखल देना।

४. किसी कार्य में संलग्न होने की स्थिति।

५. किसी पात्र को रंगमच पर उपस्थिति।

६. द्वार।

७. सूर्य का किसी राशी में संक्रमण।

रू० भे०—परवेस, परवेस।

प्रवेसक-वि० [सं० प्रवेशकः] १. प्रवेश करने वाला, घुसने वाला।

२. प्रवेश कराने वाला, घुमाने वाला।

प्रवेसद्वार-सं०पु०यौ० [सं०प्रवेशः+द्वारं] वह दरवाजा जिसमें से होकर ग्रन्दर जाते हैं।

प्रव्रज्या-सं० स्त्री० [सं०] गृहस्थाश्रम छोड़ कर संन्यास लेना।

उ०—अल्प प्रव्रज्या, ग्रतुल परीसह, ग्रस्ट करम भरी हांण।
—जयवांणी

प्रव्रत्त-वि० [सं० प्रवृत्त] १. किसी की ग्रोर झुका या मुड़ा हुग्रा।

२. किसी ग्रोर लगा हुग्रा।

प्रव्रत्ति-सं० स्त्री० [सं० प्रवृत्तिः] १. मन का किसी विषय की ओर लगाव, लगन। २. प्रवाह, बहाव। ३. झुकाव।

४. दार्शनिक ओर धार्मिक क्षेत्रों में जीवन-यापन का वह ढंग जिसमें मनुष्य सांसारिक कार्यों, सुख भोगों आदि में प्रवृत्त रहता है।

५. राम स्नेही साधुग्रों का एक भेद विशेष जिसके साधु सिले हुए कपड़े पहिनते हैं, सिर पर टोपी या पगड़ी रखते हैं साधु सेवा के नाम से रुपये भी ग्रहण करते हैं, उधार भी देते हैं।

६. मन, वचन, काया को शुभाशुभ कार्य (व्यापार) में लगाने की क्रिया या भाव।

७. मन की विचारधारा। ८. उत्पत्ति, जन्म। ९. हाथी का मद।

१०. यज्ञ, पूजा-पाठ ग्रादि धार्मिक कार्य।

११. कार्य का अनुष्ठान या ग्रारंभ।

१२. मनुष्यों का साधारण ग्राचरण व्यवहार या रहन-सहन।

प्रवृद्ध–वि० [सं० प्रवृद्ध] १. पूर्ण बढ़ा हुआ। २. वृद्धियुक्त। ३. फैला हुआ, विस्तारित। ४. अहंकारी. अभिमानी।
सं० पु०—तलवार के ३२ हाथों में से एक।

प्रसंग–सं० पु० [सं० प्रसङ्ग:] १. अनुराग, आसक्ति।
२. संसर्ग, संबंध, संपर्क, मेल। उ०—घटै आव जस घन घटै, अकळ हटै बळ अंग। नीदवियौ दांना नरां, पातर तणौ प्रसंग।
—बां.दा.
३. अनुचित संबंध, लगाव।
४. वार्ता, विषय। उ०—चुगलां जीभ न चाल ही, पर उपगार प्रसंग। नह नीपज ही नील सूं, राजहंस रौ रंग।—बां. दा.
५. वह विषय जो विवाद-ग्रस्त हो और जिस पर चर्चा चल रही हो।
६. संभोग, मैथुन। उ०—परीणत स्वास उसास प्रभाव, प्रिया प्रिय पास पलोटत पाव। रमै रस रास विलास सुरंग, परस्पर प्रीतम प्रीत प्रसंग।—ऊ. का.
७. संबंध, रिश्ता।
८. मौका, अवसर।
९. प्रकरण। उ०—एक न चाहै और नूं, उभै दुखी ह्वै अंग। आदम नैं इळवीस रो, प्रगट विचार प्रसंग।—बां. दा.
१०. हेतु, कारण।
रू० भे०—परसंग, परसंघ, प्रसंघ।

प्रसंगी–वि० [सं० प्रसंगिन्] १. जिसका प्रसंग चल रहा हो।
उ०—उगग प्रसंगी सूं वयण, चव सुकवि चित चाह। कहै 'मंछ' कवि जिकण नूं, सनमुख उक्त सराह।—र.रू.
२. प्रसंगयुक्त। ३. प्रसंग या संभोग करने वाला। ४. अनुरक्त।
सं० पु०—सम्बन्धी, रिश्तेदार, नाती। उ०—ताहरां ओठी दोय सांम्हां चाढ़िया सो द्रोणपुर कनै झांझरकै आइया। ओकण प्रसंगी थो उण रै घर गया, उठै उतर पांणी पीयौ।
—सूरे खींवे कांधळोत री वात
रू० भे०—परसंगी, परसंघी, प्रसंघी।

प्रसंघ—देखो 'प्रसंग' (रू. भे.)

प्रसंघी—देखो 'प्रसंगी' (रू. भे.)

प्रसंध–सं०पु० [?] शरीर की रचना, शरीर का गठन।
उ०—कर कमळ माळ गु द्वार प्रतिक्रम, बांध रति भुज-बंध है। रत जुगळ सुंदर चमर करि है, सोम रुचिर प्रसंध है। इक ओर आछटर गांन अदभुत, बांण सुरंग बधावणौ।—रा. रू.

प्रसंसक–वि० [सं० प्रशंसक] प्रशंसा करने वाला, तारीफ करने वाला।

प्रसंसणौ, प्रसंसबौ–क्रि०स० [सं० प्रशंसनम्] किसी की प्रशंसा या तारीफ करना गुण गान करना, श्लाघा करना। उ०—वेणीरांम जी स्वांमी गुणनै घणां राजी हुवा। स्वांमी जी नैं घणां प्रसंस्या।
—भि. द्र.
प्रसंसणहार, हारौ (हारी), प्रसंसणियौ—वि०।
प्रसंसिग्रोड़ौ, प्रसंसियोड़ौ, प्रसंस्योड़ौ—भू० का० कृ०।
प्रसंसीजणौ, प्रसंसीजबौ—कर्म वा०।
परसंसणौ, परसंसबौ—रू० भे०।

प्रसंसता—देखो 'प्रसंसा' (रू. भे.)
उ०—अरी न अप्रसन्न ह्वै प्रसन्न में बडौ बिभौ। प्रसंसता प्रसंसनीय की प्रसंसता प्रभो।—ऊ. का.

प्रसंसनीय–वि० [सं० प्रशंस्+अनीयर्] जिसकी प्रशंसा की जा सकती है, प्रशंसा करने के योग्य।
उ०—प्रसंसता प्रसंसनीय की प्रसंसता प्रभो।—ऊ.का.

प्रसंसा–सं० स्त्री० [सं० प्रशंसा] किसी के अच्छे गुणों या कार्यो का किया जाने वाला वर्णन या बखान, बड़ाई, तारीफ, श्लाघा।
उ०—चंपकमाळा हरत चित, जुत भमरावळि जांण, जुत भमरावळि जांण जिल्है तन जागणी। बादळ मांझळ बीज, प्रकास बिलागणी। काय अमावस रैण, प्रसंसा कीजही। दीवाळी सुखदाय, प्रभा दरसीजही।—बां. दा.
रू०भे०—परसंसा, परसंसा प्रसंसता।

प्रसंसियोड़ौ–भू०का०कृ०—किसी की प्रशसा या तारीफ किया हुआ, गुण गान गाया हुआ, श्लाघा किया हुआ.
(स्त्री० प्रसंसियोड़ी)

प्रसण— १. देखो 'प्रसन्न' (रू. भे.)
उ०—१. प्रसण हुय प्रहळाद ऊपर, हर दिखाये हत्थ।—भक्तमाळ
२. देखो 'पिसण' (रू. भे.) (अ. मा.)
उ०—करां खग झाल दुहूं राह मातौ कळह, दूठ लागौ पलां येण दावै। जीव री आस तौ प्रसण नह गहै जळ, जळ गहै प्रसण तौ जीव जावै।—महारांणा प्रताप री गीत
३. देखो 'प्रस्न' (रू. भे.)

प्रसणपनग—देखो 'पिसणपनंग' (रू. भे.)

प्रसणांण, प्रसणायण—देखो 'पिसण' (मह., रू. भे.)
उ०—१. वीर माहाराज तैं मन वसिया, मुणैं समाग्रह मारित मांण। पत वडा अळगा दांन पावै, परभव जे अळगा प्रसणांण।
—राव रिडमल री गीत
उ०—२. कर मुक्ता चूंडावत कीधा, कमधज करवै वांण किये। पांण पता परहंस प्रसणायण, दूर थकां ही रयण दिये।
—राव रिडमल री गीत

प्रसणी–सं० स्त्री० [सं० पृश्निः] श्रीकृष्ण की माता देवकी का एक नाम।

प्रसणीग्रभ—देखो 'प्रस्निगरभ' (रू. भे.)

उ०—राव-वैकुंठ धनंतर रिखभ, गरुड़ारूढ़ विसन प्रसणीग्रभ।
—ह. र.

प्रसत-वि० [?] प्रकट, जाहिर, प्रत्यक्ष। उ०—१. चंड वळ जीत वासव प्रसत चोज में, जोध मकराक्ष श्री हरोळी फौज में।—र. रू.
उ०—२. नर केता नारद निपट, दोल्यां रै वट देह। पण पिव रो प्राक्रम प्रसत, वंधियो नाहिं वंधेह।—रेवतसिंह भाटी
सं० पु० [सं० पृषत्] १. जल या किसी अन्य तरल पदार्थ की बूंद। (डि. को.)
[सं० पृषतः] १. चित्तीदार हिरण। २. धव्वा।

प्रसतर—देखो 'प्रस्तर' (रू. भे.)

प्रसतांनो—देखो 'प्रस्थांनो' (रू. भे.)
उ०—करि प्रसतांनो ले चलें, दस सिरि जम-द्वारे। कूदि चढ़े दह-कंध रै, चित हित चौवारे।—सू. प्र.

प्रसतार—देखो 'प्रस्तार' (रू. भे.)

प्रसताव—देखो 'प्रस्ताव' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)
उ०—१. जोर दिखायो साह रो, फोर घरे प्रसताव। घर-घर हुंदा मांझियां, कर कर वात वढ़ाव।—रा. रू.
उ०—२. श्रो मे प्रसताव दिखायो, ज तूं भूप उणहिज कुळ जायो।
—सू प्र.

प्रसथांण—देखो 'प्रस्थांन' (रू. भे.)
उ०—करघो द्रग देसांण, प्रसथांण 'इंदर' सकति। प्रेम अप्रमांण रा अम्रत पीधा।—मे. म.

प्रसथाव—देखो 'प्रस्ताव' (रू. भे.)

प्रसद-सं० स्त्री० [सं० पृषत् ?] १. नदी। (अ. मा.)
२. देखो 'प्रसिद्ध' (रू. भे)
३. देखो 'प्रसिद्धि' (रू.भे.)
उ०—'धीर' नह मनांगी नीर चाडण धगा। प्रसद जिण पुगाई समंद पाजा।—धीरतसिंह मेडतिया रो गीत

प्रसध—१. देखो 'प्रसिद्ध' (रू. भे.)
उ०—प्रसध नांम इधकार जग जारै मांटीपणो, अतुळ दातार कीरत उजाळा। भलम वातां चिहुं वेस आंणियां-भमर, वाह रे! कवर अवधेस वाळा।—र. रू.
२. देखो 'प्रसिद्धि' (रू. भे.)

प्रसन—देखो 'प्रसन्न' (रू. भे.)
उ०—१. पातसाह राखै प्रसन, 'जेहा' तो घण जांण। मकै मदीनै मारगां, ताठ सकै कुण तांण।—वां. दा.
उ०—२. सुसमित सुनमित निज वदन सुव्रीड़ित, पुंडरीकाख थिया प्रसन। प्रथम अग्रज आदेस पाळिवा, मिरिगाखी राखिवा मन।
—वेलि
उ०—३. प्रज उदभिज सिसिर चुरीस पीड़तो, ऊतर ऊथापिया असंत। प्रसन वायु मिसि न्याय प्रवरत्यो, वनि वनि नयरे राज वसंत।—वेलि
२. देखो 'प्रस्न' (रू. भे.) (डि. को.)
उ०—पूछे यूं 'अन' कवि प्रसन, थाप मेर जिण ठांम। प्रथम मेर मत कवि परठ, रट कीरत रघुरांम।—र. ज. प्र.
३. देखो 'पसंद' (रू. भे.)

प्रसनता—देखो 'प्रसन्नता' (रू. भे.) (अ. मा.)

प्रसना-सं०स्त्री० [सं० प्रसन्ना] मदिरा। (अ.मा.)

प्रसनाई—देखो 'प्रसन्नता' (रू. भे.)
उ०—एक रूप अनमेख, पेख धारै प्रसनाई।—रा. रू.

प्रसनोतर, प्रसनोत्तर—देखो 'प्रस्नोत्तर' (रू. भे.)
उ०—एक सुघड़ रस कायव उच्चर, पूरण सुख लूटै प्रसनोतर।
—रा. रू.

प्रसन्न-वि० [सं०] १. खुश, संतुष्ट। उ०—१. सु देवराज सूं सांमी प्रसन्न हुय नै कह्यो—वात हुइ सो म्है जांणी।—नैणसी
ऊ०—२. अरी न अप्रसन्न ह्वै प्रसन्न में बडो विभो।—ऊ. का.
२. जो किसी के कार्य या वात तथा गुणों को देखकर संतुष्ट और हर्षित हुआ हो। उ०—खम घोड़ै वोह नफो सांपजै, बीसर मती अनोखी वात। रहै प्रसन्न ऐ आयस रीधै,छात सिधां नरपतियां छात।
—वां. दा.
रू० भे०—परसण, परसन, परसन्न, पसंद, पसन्न, प्रसण, प्रसन, प्रासन्न।

प्रसन्नता-सं० स्त्री० [सं०] १. प्रसन्न होने या रहने की अवस्था या भाव, खुशी, हर्ष। २. निर्मलता, स्वच्छता। ३. अनुग्रह, कृपा।
रू० भे०— पसन्नता, प्रसनता, प्रसनाई।

प्रसनमुख-वि० [सं०] जिसका मुख प्रसन्न हो, जिसके मुंह पर प्रसन्नता के चिन्ह हो, हंसमुख, खुश।

प्रसन्नांध-स० पु० [सं०] घोड़े का एक रोग जिसमें उस की आंख देखने में तो ज्यों की त्यों दिखाई देती है परन्तु घोड़े को दिखाई नहीं देता।
(शा. हो.)

प्रसन्नियग्रब्भ—देखो 'प्रस्निगरभ' (रू. भे.)
उ०—नमो गुरु आदि प्रसन्नियग्रब्भ, नमो रघुराज कपिल्ल रिखब्भ।
—ह. र.

प्रसन्नी-वि० स्त्री० [सं० प्रसन्न+रा०प्र०ई] प्रसन्न होने वाली, खुश।
उ०—देवी सारदा रूप पीगळ प्रसन्नी।—देवि.
सं० स्त्री० [सं० पृश्निः] श्रीकृष्ण की माता देवकी।

प्रसपधन्वा—देखो 'पुस्पधन्वा' (रू. भे.) (ह.नां.मा.)

प्रसभ-सं० पु० [सं० प्रसभम्] १. हठ। उ०—१. बुध जांणियो जठ ही जाइ नाइ कांम आवण प्रसभ गहियो।—वं. भा.

उ०—२. इणी समय रांणा लक्खण री पट्टपकुमार अरिसिंह आखेट में रमतां कोई ग्रॉम रा परीसर में एक चंनांणा जाति रा हळखड रजपूत री पुत्री नूं बळ में अतुळ जांणि प्रसभ पूरवक परणियौ ।—वं. भा.

अव्य०—जबरदस्ती से, बरजोरी से ।

प्रसम-सं० पु० [सं० प्रशमः] १. शान्ति । २. शमन, उपशम ।

प्रसमन-सं० पु० [सं० प्रशमनम्] शान्ति, शमन ।

प्रसर-सं०पु० [सं० प्रसरः] १. शीघ्र, जल्दी । (अ. मा., ह. नां. मा.)
२. ऐसी गति जिसमें रुकावट न हो ।
३. वेग, तेजी ।
४. आगे बढ़ना ।
५. विस्तार, फैलाव ।
६. वात, पित्त आदि दोषों का संचार घटाव, बढ़ाव । (वैद्यक)
७. व्यास ।
८. राशि, समूह ।
९. प्रधानता ।

प्रसरणौ, प्रसरबौ—देखो 'पसरणौ, पसरबौ' (रू. भे.)
प्रसरणहार, हारौ (हारी), प्रसरणियौ—वि० ।
प्रसरिप्रोड़ौ, प्रसरियोड़ौ, प्रसरयोड़ौ—भू० का० कृ० ।
प्रसरीजणौ, प्रसरीजबौ—भाव वा० ।

प्रसरियोड़ौ—देखो 'पसरियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० प्रसरियोडी)

प्रसव- सं०पु० [सं० प्रसवः] १. बच्चे को जन्म देने की क्रिया, जनना ।
उ०—प्रति एक प्रसव एतां प्रसार, एकादस प्रकटे कुळ उदार । बाळे स नांम पत्तम बणाय, तिण ठांम दुरग अति रण तणाय ।—वं.भा.
२. उत्पत्ति, जन्म । उ०—सूतौ देवर सेज रण, प्रसव अठी मो पूत । थे घर वाभी बांट थण, पाळौ उभय प्रसूत ।—वी. स.
३. बच्चा ।
४. पुष्प, फूल । (नां. मा.)

प्रसवणौ, प्रसवबौ-क्रि० स० [सं० प्रसवनम्] बच्चा उत्पन्न करना, जन्म देना । उ०—दस मास समापित गरभ दीध रित, मन व्याकुळ मधुकर मुणणंति । कठिण वेयणि कोकिल मिसि कूजति, बनसपती प्रसवती वमंति ।—वेलि
प्रसवणहार, हारौ (हारी), प्रसवणियौ—वि० ।
प्रसविप्रोड़ौ, प्रसवियोड़ौ, प्रसव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
प्रसवीजणौ, प्रसवीजबौ—कर्म वा० ।

प्रसवियोड़ौ-भू० का० कृ०—उत्पन्न किया हुआ, जन्म दिया हुआ.
(स्त्री० प्रसवियोड़ी)

प्रसस्त-वि० [सं० प्रशस्त] १. प्रशंसनीय ।
उ०—सुख दुख राजी सदा, वसंत बनड़ौ बण जावै । हरियै बागै हरख, महक मीठी फैलावै । उपकारी प्रसस्त, गिणै ना सीत सियाळै । लुवां ताती रेत, उनाळै भांण उकाळै ।—दसदेव
२. प्रशंसा किया हुआ । ३. सर्वोत्तम, श्रेष्ठ ।
रू० भे०—पसस्त ।

प्रसस्ति-सं० स्त्री० [सं० प्रशस्तिः] १. प्रशंसा । २. विरुदावली ।
३. प्रशंसा में रची हुई कविता ।

प्रसांण—देखो 'पिसण' (रू. भे.)

प्रसांत-वि० [सं० प्रशान्त] १. चंचलता रहित, अचंचल, स्थिर ।
२. निश्चल वृत्ति वाला, शान्त ।
३. वश में किया हुआ, दमन किया हुआ ।
४. एशिया व अमेरिका के बीच का एक महासागर ।

प्रसांति-सं० स्त्री० [सं० प्रशान्तिः] शान्ति, स्थिरता ।

प्रसाख, प्रसाखा-सं० स्त्री० [सं० प्रशाखा] किसी बड़ी शाखा या डाली से निकली हुई छोटी शाखा ।
उ०—द्रुम समूह सम सोभा सुंदर, मुरधर पत दीठौ मंडोवर । मवसर तिकां कुसम फळ मंजर, साख प्रसाख सहस्र सुरंतर ।—रा.रू.

प्रसाच—देखो 'पिसाच' (रू. भे.) (अ. मा.)

प्रसाद-सं०पु० [सं० प्रसादः] १. देवी देवताओं को भोग लगाया जाने वाला पदार्थ, जो समीपस्थ जन समाज, दर्शनार्थी व भक्तों में बांटा जाता है, नैवेद्य ।
उ०—१. विनोद गीत नाद भेद, सद् घंट झालरी । प्रसाद देव पुंजिइत, अंबिका हरोहरी ।—सु. रू. ग्रं.
उ०—२. मुख इम पवित्र करिस कंस-भंजण, भखे प्रसाद तूझ दुख-भजण ।—ह. र.
क्रि० प्र०—चढ़ाणौ, देणौ बंटणौ, बांटणौ, बोलणौ ।
२. साधु महात्माओं को भेंट किया जाने वाला वह खाद्यपदार्थ जो उन्हीं के द्वारा भक्तजनों में बांटा जाता है । उ०—चह अपराध गांठियौ चित में, धारे सिखां छांटियौ ध्यांन । चारु प्रसाद बांटियौ चेळां, गुरां इसौ ई छांटियौ ग्यांन ।—बांकीदास बीठू
३. ऐसा पदार्थ जो किसी महात्मा या गुरु से उसके अनुग्रह स्वरूप प्राप्त हुआ हो ।
४. किसी पर की जाने वाली ऐसी कृपा या महरबानी जिससे उसका बडा उपकार होता है । उ०—पछै मातामह सूं सीख पाय कुमार प्रथ्वीराज अजमेर आयौ अर तोमराधीस रौ प्रसाद पाय नाहरराज आप रै मदन मंडोवर सिधायौ ।—वं. भा.
५. अनुग्रह, कृपा । उ०—गुरु प्रसाद संतोस गज, जे नर बैठा जाय । जग लालच कूकर जियां, लाळ सकै न लगाय ।—बां. दा.
६. वरदान । उ०—जरै बडाह भी जिण तरह प्रतिदिन अरज करतौ तिण रीति अरथी-जनां नूं देण काज आप रै द्वार सुवरण रौ रासि संपादन होण रौ ही प्रसाद मांगि स्वकीय सदन आय प्रभात ही सौ पुग्ट पुंज जाचकां नूं लुटाय अपूरव जस लीधौ ।—वं.भा.

७. कारण । उ०—फाटक रखवाळी करै, फाटक हरै फसाद । सूम कहै सुख सूं सुवां, फाटक तणै प्रसाद ।—बां. दा.

८. भोजन । (साधु संतों व महात्माओं को कराया जाने वाला) क्रि० प्र०—करणौ, कराणौ, पाणौ ।

९. साहित्य में काव्य का एक गुण जिसमें स्वच्छता, सरलता और सहज ग्राह्यता होती है और कविता को सुनते ही उसका अर्थ समझ में आ जाता है ।

१०. एक मात्रिक छन्द विशेष जिसके प्रत्येक चरण में १९ मात्राएँ होती हैं।

११. देखो 'प्रासाद' (रू. भे.)

उ०—लख समपे जु तैं मांडिया 'लाखा', घाट सुकवि सलवाट घड़ै । प्रसिध तणा प्रासाद न पड़ ही, पाखांणिया प्रसाद पड़ै ।

—लाखा फूलांणी री गीत

रू० भे०—परसाद, पसाइ, पसाउ, पसाद, पसाय, पसाव, प्रासाद ।

प्रसादक-वि० [सं०] १. अनुग्रह करने वाला ।

२. आनंद बढ़ाने व प्रसन्न करने वाला ।

प्रसादी-सं० स्त्री० [सं० प्रसाद+रा० प्र० ई] १. देवता को चढ़ाया हुआ पदार्थ, नैवेद्य ।

क्रि० प्र०—चढ़ाणी, दैणी, बांटणी, बोलणी ।

२. उक्त का व भाग जो प्रसाद के रूप मे जन समाज में वांटा जाता है ।

३. वह पदार्थ जो पूज्य और बड़े लोगों द्वारा छोटों को कृपा स्वरूप दिया जाय, बड़ों की देन ।

४. तीर्थयात्रा से लौटने पर किया जाने वाला एक बड़ा भोज जिसमें इष्ट-मित्रों व सगे सम्बन्धियों को आमन्त्रित किया जाता है ।

क्रि० प्र०—करणी, होणी ।

रू० भे०—परसादी ।

प्रसाधन-सं०पु० [सं० प्रसाधनम्] १. सजावट ।

२. शृंगार । ३. वेष । ४. कंघी ।

प्रसार-सं० पु० [सं० प्रसारः] फैलाव, विस्तार ।

उ०—प्रति एक प्रसव एतां प्रसार, एकादस प्रकटे कुळ उदार, वाळेस नांम पत्तम वणाय, तिण ठांम दुरग अति रण तणाय ।—वं. भा.

रू० भे०—परसार, पसार ।

प्रसारणौ, प्रसारबौ-क्रि०स०—१. स्पर्श कराना, छुआना ।

२. देखो 'पसारणौ, पसारबौ' (रू. भे.)

उ०—जिकण रै साथ रांणा त्याग रा जस री प्रकास प्रसारण रै काज आप रा पोळिपात बारहठ बारू सहित्त वडा वडा सुभटां नूं सज्ज करि हाडां री आसंग में न आवै इसड़ी बरात री वांणिक वणाय दीधौ ।—वं. भा.

प्रसारणहार, हारौ (हारी), प्रसारणियौ--वि० ।

प्रसारिओड़ौ, प्रसारियोड़ौ, प्रसारयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

प्रसारीजणौ, प्रसारीजबौ--कर्म वा० ।

प्रसारियोड़ौ—देखो 'पसारियोड़ौ' (रू. भे.)

प्रसिटी-सं०पु० [सं० प्रेष्ठः] पति । (ह. नां. मा.)

प्रसिद्ध-वि० [सं०] १. विख्यात, मशहूर ।

उ०—१. व्रति चलति सुगति दुति अमित विद्ध, पदमणिय हंस किरि गुरु प्रसिद्ध ।—रा. रू.

उ०—२. ऊरध अकास, पाताळ पास । सब ठोर सिद्ध, परिकर प्रसिद्ध ।—ऊ. का.

२. देखो 'प्रसिद्धि' (रू. भे.)

रू०भे०—परसद, परसध, परसद्ध, परसिद्, परसिद्ध, परसिद्धउ, परसिध, पसिद्ध, पसिध, प्रसद, प्रसध, प्रसिघ, प्रिसध ।

प्रसिद्धता-सं० स्त्री० [सं० प्रसिद्ध+रा० प्र० ता] ख्याति, कीर्त्ति ।

रू० भे०—परसिदता, परसिद्धता, परसिधता ।

प्रसिद्धि-सं० स्त्री० [सं० प्रसिद्धिः] १. प्रसिद्ध होने की अवस्था, गुण या भाव ख्याति, मशहूरी

२. कीर्ति, यश । ३. सजावट, शृंगार । ४. सफलता ।

रू०भे०—परसिधि, परसिधी, प्रसद, प्रसध, प्रसधी, प्रसिध, प्रसिधि, प्रसिधी, प्रिसिधि ।

प्रसिध—१. देखो 'प्रसिद्ध' (रू. भे.)

२. देखो 'प्रसिद्धि' (रू. भे.)

उ०—१. जाळ देह पावक्क, पाळ पतिवरत महापण । कुळ लज्या, उजवाळ, रीत रखवाळ नरेहण । नांम राख नव खंड, प्रसिध चाडे दहुं पक्खे । साथि सांमि समरत्थ, रथे बैठी कथ रक्खे । सुर करै हरख वरखै सुमन, अमर तरणि धिन उच्चरै । नर भुवण हूंत सतियां त्रिपति, सुरपुर मारग संचरै ।—रा. रू.

उ०—२. निरवळां नेकां कीध केकां, साहि हाथ सुनाथ । गुण 'किसन' गावै प्रसिध पावै, अमर ईजत आथ ।—र.ज.प्र.

प्रसिधि, प्रसिधी—देखो 'प्रसिद्धि' (रू. भे.)

ऊ०—दाखै कांन तणौ यम दूजां, आंमेरौ ओ वड आरीख । प्रसिधि तणां भूखण नौहो पहरै, सोवन ज्यां दूखण सारीख ।

—गोरधन कल्याणोत री गीत

प्रसुन—देखो 'प्रसून' (रू. भे.)

प्रसू-सं० स्त्री० [सं०] माता, जननी ।

प्रसूत-वि० [सं०] १. उत्पन्न, संतान, पैदा ।

रू० भे०—परसूत ।

२. देखो 'प्रसूति' (रू. भे)

उ०—१. सूतौ देवर सेज रण, प्रसव अठी मो पूत । थे घर वाभी

वांट थए, पाळो उभय प्रसूत । —वी. स.

उ०—२. बीजां ही सवणियां नूं पूछियो । तियां कह्यो 'जिके रांणी रैं प्रसूत हुसी तियैं रौ बेटौ धरती रौ धणी हुसी ।'—नैणसी

३. देखो 'प्रसूता' (रू. भे.)

उ०—बांझ के पास प्रसूत की वेदन, भेद न जाणत मूंढ भमायो ।
—ऊ. का.

प्रसूता-सं० स्त्री० [सं०] जच्चा स्त्री ।

उ०—सो महाराज आ भूखी आत्मा छै, फेर प्रसूता । ई उद्यांन रै मांही इण रौ कुण वेली ।—रांमदत्त साह री वारता

रू० भे०—प्रसूत ।

प्रसूति-सं० स्त्री० [सं० प्रसूतिः] १. प्रसव, जनन ।

२. उद्भव । ३. संतान ।

उ०—कहां ग्रटेन भूति हा जर्ण प्रसुति केसरी ।—ऊ. का.

४. उत्पत्ति, पैदायश । ५. माता, जननी ।

रू० भे०—प्रसूत ।

प्रसूतिका-सं० स्त्री० [सं०] जच्चा ।

उ०—पकवांने पांने फळे सुपुहपे, सुरंगे वसत्रे दरव स्रव । पूजियै कसटि भंगि वनसपती, प्रसूतिका होळिका प्रव ।—वेलि

प्रसून-सं० पु० [सं०] १. पुष्प, फूल । (ग्र. मा., नां. मा.)

उ०—खमां भणि जोगणि खांचत खून, सुरां कर मांत्रत मेह प्रसून ।
—मे. म.

२. कमल । (ग्र. मा., ह. नां. मा.)

रू० भे०—परसून, प्रसुन ।

प्रसेणिय, प्रसेणी-सं०स्त्री० [?] घोडी । उ०—हडवैं भड ठांभिय छूट हियै । काळवी अस बावळ रूप कियौ । तसलीमिय सांकड़ नास तड़ै । पड़साज प्रसेणिये फीण पड़ै ।—पा. प्र.

प्रसेद—देखो 'प्रस्वेद' (रू. भे.)

उ०—ग्रोस कां कण इहे मानों प्रसेद का कण छै ।—वेलि टी.

प्रसेनजीत-सं० पु० [सं०] सूर्यवंशी एक राजा ।

प्रसेव—देखो 'प्रस्वेद' (रू. भे.)

प्रसोतम—देखो 'पुरसोत्तम' (रू. भे.)

प्रस्कन्न-सं०पु० [सं०] घोड़े का एक रोग जिसमें घोड़े के सब अंग स्तब्ध हो जाते हैं और छाती भारी हो जाती है और वह कुबड़े के समान चलता है । (शा. हो.)

प्रस्ट—देखो 'प्रिस्ट' (रू. भे.)

प्रस्टपरणी-देखो 'प्रिस्टपरणी' (रू. भे.)

प्रस्टवंस—सं० स्त्री० [सं० पृष्टवंश] रीढ़ की हड्डी ।

प्रस्टा-वि० [सं० पृष्टा] प्रश्न पूछने वाला ।

प्रस्टि-सं० पु० [सं०प्रष्टिः] वह घोड़ा जो तीन घोड़ों के रथ में हो ।

प्रस्ठ—देखो 'प्रिस्ठ' (रू. भे.)

उ०—वधियो दरद सु देह विथन्नी, प्रस्ठ दुस्ट चांदी ऊपन्नी ।
—रा. रू.

प्रस्ठोदय-सं० पु० [सं० पृष्ठोदय] पीठ की ओर उदय होने वाली छै राशियां—मेष, वृष, कर्क, धन, मकर और मीन ।

रू० भे०—प्रिस्टोदय ।

प्रस्तर-सं० पु० [सं० प्रस्तरः] १. पत्थर, चट्टान ।

२. चौरस जगह, मैदान ।

३. सेज, शय्या ।

रू० भे०—प्रसतर ।

४. देखो 'प्रस्तार' (रू. भे.)

उ०—संख्या प्रस्तर सूचिका, नस्ट उदिस्ट सुमेर । ध्वजा मरकटी जांण सुव, आठूं करम अफेर ।—र. ज. प्र.

प्रस्तांनौ—देखो 'प्रस्थांनौ' (रू. भे.)

प्रस्ताऊ—देखो 'प्रस्तावू' (रू. भे.)

प्रस्तार-सं० पु० [सं० प्रस्तारः] १. फैलाव, विस्तार ।

२. चौरस जमीन, मैदान ।

३. पिंगल (छंद शास्त्र) के नव प्रत्ययों में से प्रथम जिसके अनुसार छंदों के भेद की संख्या और उनके रूपों का वर्णन होता है ।

रू० भे०—परसतार, प्रसतार, प्रस्तर ।

प्रस्ताव-सं० पु० [सं० प्रस्तावः] १. अवसर, मौका ।

उ०—१. इण प्रस्ताव पूनो तो राव जी कनै गयौ । उठै राव जी नागोर रौ कोट छोडनैं बाहिर आया । भाटियां री फौज आई । ताहरां राव जी सांम्हां जाय नै लड़िया । राव जी कांम आया ।
—नैणसी

उ०—२. जद स्वांमी जी एक टोपसी में सपेतौ हूंतौ इतलै वायरौ वाज्यो । एहवौ प्रस्ताव देखनै आप गाथा जोड़ता थका ईंज बोल्या ।
—भि. द्र.

२. समय । उ०—१. ग्रेकदा प्रस्ताव राव जोधौ जी दरबार कियां विराजै ।—द. दा.

उ०—२. एकणि प्रस्ताव पातिसाह स्रीसेरसाह, सलेमसाह बाप बेटौ दोग्रू विखै पड़ियै राव लूणकरण कन्है चाकरी बीकानेर आय रहिया हुता ।—द. वि.

३. चर्चा, जिक्र, वर्णन ।

४. प्रकरण, अध्याय ।

उ०—इति स्री खट-रिति रैं वात वणाव रौ दूसरौ प्रस्ताव पूरौ हुग्रौ ।
—रा. सा. सं.

५. भूमिका, उपक्रम ।

६. आरंभ, शुरूआत । उ०—केतली प्रतिमा येह नी वलि, किण भराव्यउ भाव सुं । ए कउण नगरी किण प्रतिस्ठी, ते कहुं प्रस्ताव सुं ।—स. कु.

७. वह उद्देश्य, नई बात या योजना जो विचारार्थ सामने रखी जाय, सलाह।

८. विषय, प्रसंग।

रू० भे०—परसताव, पस्ताव, प्रसताव, प्रसथाव, प्रस्तावि, प्रस्तावौ, प्रस्थाव।

प्रस्तावक-वि० [सं०] प्रस्ताव करने वाला।

प्रस्तावना-सं० स्त्री० [सं०] किसी विषय या कथा को प्रारम्भ करने के पूर्व का वक्तव्य, प्राक्कथन, उपोद्घात।

प्रस्तावि—देखो 'प्रस्ताव' (रू. भे.)

उ०—अत्र प्रस्तावि महाराजाधिराज महाराजा श्रीकल्यांणमल विक्रमनगरी राज करै छै।—द. वि.

प्रस्ताविक-वि० [सं०] प्रस्ताव संबंधी, प्रस्ताव का।

सं०पु०—१. काव्य का एक भेद जिसमें वर्णित विषय या वातों का किसी पूर्व की बात या विषय से कोई संबंध न हो, फुटकर काव्य।

उ०—सूमां उर सर जिसा, विरस कांनां लग जातां। केइ सांपरत कवित्त, आदघर की अखियातां। केइक वांरा कवित्त, केइक विदरा पदजी का। केइ प्रस्ताविक कवित, केइक 'जसजी' 'कलजी' का।
—अरजुण जी बारहठ

२. पूर्वापर संबंध रहित वार्त्तालाप।

रू० भे०—परसताविक, परसतावीक, प्रस्तावू।

प्रस्तावित-वि० [सं०] जिसके प्रति प्रस्ताव किया गया गया हो, जिसके लिये प्रस्ताव हुआ हो।

प्रस्तावू-वि० [सं० प्रस्ताव+रा०प्र०ऊ] १. प्रस्ताव का (की), प्रस्ताव संबंधी।

२. प्रस्ताव के समान, प्रस्ताव के ढंग का, प्रस्तावोचित।

उ०—म्हें तौ थारो मन जांणण सारु प्रस्तावू बात करी है।—फुलवाड़ी

३. देखो 'प्रस्ताविक' (रू. भे.)

रू० भे०—प्रस्ताऊ।

प्रस्तावौ—देखो 'प्रस्ताव' (रू. भे.)

उ०—तिण प्रस्तावै एक दिन गढ़ में गोहरी रीसांणौ। तिको हेठो ऊतरीयो।—राव रिणमल री बात

प्रस्तुत-वि० [सं०] १. जो समीप या सामने हो।

२. मौजूद, तैयार, वर्तमान।

सं० पु० [सं० प्रस्तुतम्] उपस्थित विषय।

प्रस्तुतांकुर, प्रस्तुतालंकार-सं० पु० [सं०] एक अर्थालंकार विशेष जिसमें एक प्रस्तुत पदार्थ के सम्बंध में कुछ कहकर उसका अभिप्राय दूसरे प्रस्तुत पदार्थ पर घटाया जाता है।

प्रस्थांन-सं०पु० [सं०प्रस्थानम्] १. कूच। उ०—प्रस्थांन रै प्रथम बारहठ लोहठ नरेस नूं कहियौ।—वं. भा.

२. गमन, यात्रारंभ, रवानगी।

३. सेना या चढ़ाई करने वाले सैन्यदल का कूच।

उ०—जिण समय गुजरात देस रा सत्तरि हजार ७०००० ग्रांमां रौ अधीस अणहिलपुर पाटण में चाळुक्यराज, भोळाराय, भीमराज करै अर वडा वडा देसपती सीमाड़ जिण रा प्रस्थान सूं आतंक धरै।—वं. भा.

रू० भे०—प्रसथांण।

प्रस्थांनौ-सं० पु० [?] किसी मुहूर्त्त वाले दिन यात्रा स्थगित करने पर पूरा सामान या अंश किसी अन्य स्थान पर रखने की क्रिया या प्रथा।

उ०—प्रस्थांनो समहूरति कियउ, पिंगळ पहुंचावा आवियौ।
—ढो. मा.

क्रि० प्र०—करणौ, धरणौ।

रू० भे०—प्रसतांनौ, प्रस्तांनौ।

प्रस्थापन-सं० पु० [सं० प्रस्थापनम्] १. रवानगी, विदाई।

२. स्थापना, सिद्ध करना।

प्रस्थाव—देखो 'प्रस्ताव' (रू. भे.)

उ०—एतौ प्रस्थाव का सिलोक आगिले पिंडत का कह्या साखि के वास्ते कहि दिखाया।—सू. प्र.

प्रस्न-सं० पु० [सं० प्रश्नः] १. वह वाक्य जिससे कोई बात जानने की इच्छा प्रकट होती हो, उत्सुकता दिखाई गई हो, सवाल।

उ०—एक गांम में स्वांमी जी ऊतर्‌या। अमरसिंह जी रा दो साध, इमरदास जी कोजीरांम जी आया। उवै ऊतर्‌या तिहां स्वांमी जी जाय ऊभा प्रस्न पूछ्यौ।—भि. द्र.

२. वह सवाल जिसका उत्तर अभीष्ट हो।

ज्यूं०—गणित रौ प्रस्न।

३. वह बात जिसका उत्तर किसी से मांगा गया हो।

४. न्यायालय में होने वाले वाद संबंधी विचारणीय बात।

५. समस्या।

रू० भे०—परसण, परसन, परसन्न, पसन्न, प्रसन।

प्रस्नि-सं० स्त्री० [सं० पृश्निः] श्रीकृष्ण की माता देवकी का एक नाम।

प्रस्निगरभ सं० पु० [सं० पृश्निगर्भ] श्रीकृष्ण का एक नाम।

रू० भे०—प्रसणीग्रभ, प्रसन्नियग्रब्भ।

प्रस्निभद्र-सं० पु० [सं० पृश्निभद्र] श्रीकृष्ण का एक नाम।

प्रस्नोतर, प्रस्नोत्तर-सं० पु० यौ० [सं० प्रश्नोत्तर] १. प्रश्न और उत्तर, सवाल और जवाब। उ०—प्रस्नोत्तर चरचा मत पींगळ,भूखण सबद अरथ रस भाय। 'बांकैदास' जांणिया विध-विध, राज अनुग्रह जंगळराय।—बां. दा.

रू० भे०—प्रसनोतर।

प्रस्नोतरी, प्रस्नोत्तरी-स०स्त्री० [सं०प्रश्न+उत्तर+रा०प्र०ई] १. प्रश्न और उत्तर की सूची की पुस्तिका या सूची।

२. वह जिसमें प्रश्न और उत्तर दोनों हो।

प्रस्रवणी(नी)-सं०स्त्री० [सं० प्रस्रंसनी] बीस प्रकार की योनियों में से एक, जिसमे से सदा पानी सा निकलता रहता है। इस प्रकार की योनी वाली स्त्री के सन्तान होने में बड़ा कष्ट होता है। (वैद्यक)

प्रस्रगद्वार-सं० पु० [सं० प्रसर्गद्वार] सूर्य। (अ. मा.)

प्रस्राव-सं० पु० [सं० प्रश्रावः] १. झरना।

२. पेशाब, मूत्र।

प्रस्वास-स० पु० [सं० प्रश्वासः] १. नथने से बाहिर आयी हुई श्वास।

२. सांस का नथने से निकलने की क्रिया।

प्रस्वेद-सं० पु० [सं० प्रस्वेदः] पसीना। उ०—ओस जु पड़्यो छै सु मांनु नायका नैं प्रस्वेद का कण हुआ छै।—वेलि टी.

रू० भे०- परसीणौ, परसेद, परसेव, परसेवौ, परेवौ, पसीनौ, पसेउ, पसेव, पसेवौ, प्रसेद, प्रसेव।

अल्पा०—पराइयो, परायो, पिराइयो, पिरायो।

प्रस्सरणौ, प्रस्सरबौ—देखो 'पसरणौ, पसरबौ' (रू. भे.)

उ०—कण मंगळ कर क्रुद्ध प्रभाळा प्रस्सरी। धूहड़ियां खग धार विनांण वहस्सरी।—किसोरदांन बारहठ

प्रस्सरणहार, हारौ (हारी), प्रस्सरणियौ—वि०।

प्रस्सरिओड़ौ, प्रस्सरियोड़ौ, प्रस्सरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

प्रस्सरीजणौ, प्रस्सरीजबौ—भाव वा०।

प्रस्सरियोड़ौ—देखो 'पसरियोड़ो' (रू. भे.)

प्रह—१. देखो 'पह' (रू. भे.)

उ०—१. प्रह फूटी दिसि पुंडरी, हणहणिया हय थट्ट। ढोलइ धण ढंढोळियउ, सीतळ सुंदर घट्ट।—ढो. मा.

उ०—२. प्रह उगमते प्रणमिये, विहरमांन जिन वीसो जी।
—स. कु.

२. देखो 'प्रहर' (रू. भे.)

प्रहगळ—देखो 'प्रगाळ' (रू. भे.)

प्रहगाळियौ—देखो 'प्रगाळियौ' (रू. भे.)

उ०—आप तळाव आय उतरिया छै। आप फुरमायो प्रहगाळिया अमल करौ ठाकुरां।—प्रतापमल देवड़ा री बात

प्रहत-वि० [सं०] (स्त्री० प्रहता) १. मारा हुआ, प्रताड़ित।

२. घायल किया हुआ।

प्रहर-सं० पु० [सं० प्रहरः] १. दिन-रात का आठवां भाग। (डिं. को.)
उ०—प्रहरै प्रहर ऊतरयो, दिवला साख भरेह। धण जीती पिय हारियौ, वेल्हा मिळण करेह।—अज्ञात

२. समय का मान विशेष।

३. समय।

रू०भे०—पहर, पहुर, पहोर, पहौर, पुर, पुहर, पुहरि, पुहरी, पूहर, पोर, पो'र, पोहर, पोहोर, पोहौर, पौ'र, पौहर, प्रह।

प्रहरण-स० पु० [सं० प्रहरणम्] १. अस्त्र-शस्त्र, आयुध, हथियार।
उ०—इसटी अमोघउपाइ विचारि कपट रै प्रपंच वांणियां री बरात बणाइ वाजियां रै बदळै रथ छकड़ा जुताइ किताक प्रवहणां में प्रहरण छिपाइ कुंकुम रा रंग में गरक दुकूळ कीधां दूजी दिसा रै मारग मंडोउर पूगिया।—वं. भा.

२. आक्रमण, हमला।

३. प्रहार, चोट।

४. युद्ध। (अ. मा., ह. नां., मा.)

प्रहरी-सं० पु० [सं० प्रहरिन्] १. पहरा देने वाला, चौकीदार।

२. घंटा बजाने वाला।

रू०भे०—पहरी, पहरु, पहरू, पहिरी, पाहरी, पाहरु, पाहरू।

अल्पा०—पहरवौ।

प्रहळाद-सं० पु० [स० प्रह्लादः] १. भक्त शिरोमणि प्रह्लाद जो असुर-राज हिरण्यकशिपु के पुत्र थे।

उ०—१. साहरी ज्हाज उळझी अथग सिंधु में, कठै अवलंब नह रह्यो वयूं ही। थंभ नैं फाड़ प्रहळाद हरि थभियौ, उबारयौ अधु में अब यूं ही।—बान्ना बक्स पाल्हावत

उ०—२. अहो-निस कागभुसुंड आराध, पढ़ै तौ नांम सदा प्रहळाद।
—ह. र.

२. अत्यन्त आनंद, प्रसन्नता, हर्ष।

रू० भे०—पहळाज, पहळाद, पहिळाद, पहिळादि, पहिळादौ, पिहळाज, पिहळाद पेहळाद, पैळाद, पैहळाद, प्रळाद, प्रह्लाद, प्रल्हाद, पैळाद।

प्रळादगुर-स० पु० [सं० प्रह्लादगुरु] विष्णु। (डिं. नां. मा.)

प्रहसत, प्रहस्त-सं० पु० [स० प्रहस्तः] रावण के अमात्य एव सेना पति का नाम।

प्रहा-स० पु० [?] धनुष। (अ. मा.)

प्रहार-सं० पु० [स० प्रहारः] आघात, वार, चोट। उ०—खाग प्रहार छाग हुड खडत।—मे. म.

रू० भे०—पहार, पाहार, प्रहारि, प्रहारी, प्राहार।

प्रहारक-वि० [सं० प्रहारकः] १. प्रहार करने वाला, चोट मारने वाला।

२. मारने वाला।

प्रहारण-सं० पु० [सं० प्रहारण] प्रहार, वार, चोट।

उ०—धीरण रा पांणी रा प्रहारण हूं वीरमदेव रौ मुंड अछंट उडि पड़ियौ।—वं. भा.

प्रहारणौ-वि० [सं०प्रहारणम्+रा०प्र०औ] (स्त्री०प्रहारणी) १. प्रहार करने वाला वार करने वाला।

२. मारने वाला।

रू० भे०—पाहारणौ ।

प्रहारणौ, प्रहारबौ–क्रि०स० [सं०प्रहारणम्] १. मारना, संहार करना ।

उ०—१. लोक लाजि तजि हल्लतौ, प्रभु जेणि प्रहारे । उण सूं तौ मांहै अधिक, करसी करतारे ।—सू. प्र.

उ०—भुजां धारियौ न खाग तैं बाकारियौ न वाघ भूरौ, करग्गां प्रहारियौ दगा सूं आंण कूंत । ऐकाएक लाखां वातां हारियौ धरम्भ 'मजा', हींदूनाथ मारियौ विसास घात हूंत ।—जीवौ भादौ

प्रहारणहार, हारौ (हारी), प्रहारणियौ––वि० ।

प्रहारिप्रोड़ौ, प्रहारियोड़ौ, प्रहारयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

प्रहारीजणौ, प्रहारीजबौ—कर्म वा० ।

पहारणौ, पहारबौ, पाहारणौ, पाहारबौ—रू० भे० ।

प्रहारि, प्रहारी–वि० [सं० प्रहार:+रा०प्र०ई] १. प्रहार करने वाला, मारने वाला ।

२. दूर करने वाला, मिटाने वाला । उ०—पर-उपकारी पर दुख प्रहारी ।—रा. रू.

३. देखो 'प्रहार' (रू. भे.)

उ०—प्रिसणां दियंत धारां प्रहारि ।—गु. रू. बं.

प्रहास–सं० पु० [सं० प्रहासः] १. अट्टहास ।

२. प्रहसन, हंसी, मखौल ।

३. शिव ।

४. स्वामी-कार्तिकेय के एक अनुचर का नाम ।

५. तलवार । (डि. को.)

६. प्रथम व तृतीय चरण में बीस बीस मात्राऐं तथा द्वितीय और चतुर्थ चरण में अंत गुरु सहित सत्रह सत्रह मात्रा का मात्रिक छंद (गीत) विशेष । (र. रू.)

वि० वि०—प्रथम द्वाले के प्रथम चरण में अनिवार्य रूप से तेईस मात्राऐं होती हैं तथा रघुवर जस प्रकास के अनुसार तुकांत में अंत एक गुरु के स्थान पर दो गुरु लाने का भी उल्लेख है ।

७. प्रत्येक चरण में जगण-सगण नगण और रगण सहित १२ वर्णन और १६ मात्राओं का छंद विशेष । (ल. पिं.)

प्रहुंची—देखो 'पुणची' (रू. भे.)

प्रहेति–सं० पु० [सं०] एक राक्षस का नाम जो हेति नामक राक्षक का भाई था ।

प्रहेलि, प्रहेलिका—देखो 'पहेली' (रू. भे.)

प्रह्लाद—देखो प्रहळाद' (रू. भे.)

उ०—जन प्रह्लाद बहोत दुख पाया, छूटि नांही ताळी । तब हरि नरहरि रूप बणाया, जन प्रतंग्या पाळी ।—ह. पु. वा.

प्रांखणौ, प्रांखबौ–क्रि०स० [सं० पोषणम् या पर+अंकन=उत्कृष्टता से जानकारी करना] दुल्हे या दुलहिन को स्त्रियों द्वारा तोरण द्वार पर बधाना, स्वागत करना । उ०—तठा उपरांत करिनै राजांन कुमार री जांन घणी आडबर सूं हाथी घोड़ा वहिल सुखासण रथ पायक रा वणाव कियां थकां वधेल जांनियां रै साथ लियां घणी मोती जड़ाव जरक्सी सूं लड़ालंब हुआ छै । घणी सोंधे घणी केसरि अगरचे सूं गरकाब कियां थकां घोड़ां रजपूतां रै घूमरै सूं आइ तोरण बांदिओ छै । तठै आगै बखांणी तिण भांति री राय-जादी गोरंगीआं सोळ' सिणगार ठवियां वाळ वाळ मोती सारियां तोरण कळस वंदावै छै । मोतियें वधावै छै । प्रांखै छै ।

—रा. सा. सं.

प्रांखणहार, हारौ (हारी), प्रांखणियौ—वि० ।

प्रांखिप्रोड़ौ, प्रांखियोड़ौ, प्रांख्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

प्रांखीजणौ, प्रांखीजबौ—कर्म वा० ।

परांखणौ, परांखबौ, पांखणौ, पांखबौ, पूंकणौ, पूंकबौ, पूंखणौ, पूंखबौ, पोखणौ, पोखबौ—रू० भे० ।

प्रांगण–सं०पु० [सं० प्राङ्गणम्] मकान के मध्य का या सामने का खुला हुआ भाग, आंगन, सहन । उ०—कहीं सूं खड़ो कपड़ो तीर काही महम्मा घणी प्रांगणै घेन मांही ।—ना. द.

प्रांचणा—देखो 'पांचणा' (रू. भे.)

उ०—पछै ठाकुरां दातण सिनांन कर नांम ले सीस-खुरा मंगाया । आपनै छोकरी नूं कह्यौ—"प्रांचणां री चरू दे ।" ताहरां छोकरी कह्यौ–"चरू सौं कामूं करसौ ?" कह्यौ–"चरू मांहै प्रांचणां छै ।" ताहरा छोकरी कह्यौ–"प्रांचणा सिगळांही रौ सिरावण कियौ ।" ताहरां सारा ही ठाकुर अबोला रह्या ।—नैणसी

प्रांचाळौ—देखो 'पोचाळौ' (रू. भे.)

उ०—'अजबौ' 'ऊदौ' 'हठी' उताळा । 'पातल' रा आया प्रांचाळा ।

—रा. रू.

प्रांची—देखो 'पुणची' (रू. भे.)

उ०—हसत-कमळ जावक मेंहदी रै रंग लागां थकां । चोळा फळी-सी आंगुळी । गोरै प्रांचै प्रांचीआं वणि रही छै । छाप मूंदड़ी नवग्रही जड़ाव वणिया छै ।—रा. सा. सं.

प्रांचौ—देखो 'पुणचौ' (रू. भे.)

उ०—हसत-कमळ जावक मेंहदी 'रै रंग लागां थकां । चोळा फळी-सी आंगुळी गोरै प्रांचै प्रांचीआं वणि रही छै ।—रा. सा. सं.

प्रांछ—देखो 'परांत' (रू. भे)

उ०—घर रो धणी खेन वाहै ते तो प्रांछ री प्रांछ उतारै । अनै चोर आय पड़ै तो वाटावरड़ो करै । एक कठा सूं तोड़ै एक कठा सूं तोड़ै । ज्यूं ये घर रा धणी होय न्याय री एक परचा पार पुगाय 'दूजी करो' ।—भि. द्र.

प्रांण–सं०पु० [सं० प्राणः] १. श्वास, श्वास-प्रश्वास, सांस ।

२. हृदय में रहने वाला वायु, प्राण वायु । (अमरत)

उ०—हर हर करतौ हरख कर, आळस म कर अयांण।
जिण पांणी सूं पिंड रच, पवन बिलग्गौ प्रांण।
—ह. र.

३. शरीर की वह हवा जिसके बल पर वह जीवित कहलाता है, जीवनीय शक्ति। उ०—१. गात संवारण में गमे, ऊमर काय अजांण। आखर प्रांण प्रमूक औ, खाख हुसी मळ खांण।
—बां. दा.

उ०—२. जाया रजपूतांणियां, बीरत दीधी वेह। प्रांण दियै पांणी पुराग, जावा न दियै जेह।—बां. दा.

मुहा०—१. प्रांण आणौ—घबराहट या भय कम होना, चित कुछ ठिकाने होना, होस हवास ठीक होना, चैन पड़ना। २. प्रांण उडणा—बहुत घबराहट होना, हक्का बक्का होना, होस हवास जाता रहना, मरना, अवसान होना। ३. प्रांण कंठ में आणौ, प्रांण कंठ में होणौ—मरणासन्न होना। ४. प्रांण खाणौ—बहुत तंग करना, बहुत सताना, बहुत कष्ट देना। ५. प्रांण गमणा—मरना, अवसान होना। ६. प्रांण गमाणौ—देखो 'प्रांण देणौ'। ७. प्रांण गळै आणौ, प्रांण गळै में आणौ—देखो 'प्रांण मुंडै आणौ'। ८. प्रांण घालणौ—जीवन दान देना, जीवित सा बनाना, जीवन संचार करना। ९. प्रांण छूटणौ—मरना, अवसान होना। १०. प्रांण छोडणौ—मरजाना, मरना। ११. प्रांण छोडाणौ—जानछुड़ाना, पीछा छुड़ाना। १२. प्रांण जाणौ—मरजाना, मोहित होना। १३. प्रांण डाळणौ—देखो 'प्रांणघालणौ'। १४. प्रांणतजणौ—देखो 'प्रांण छोडणौ'। १५. प्रांण त्यागणौ—देखो 'प्रांण छोडणौ'। १६. प्राण देणौ—बहुत प्यार करना, अधिक चाहना, मरजाना। १७. प्रांण निकळणौ—मरजाना, मरना। १८. प्रांण निकाळणौ—मार देना, मारना। १९. प्रांण पंखेरू उडणौ—मरजाना, अवसान होना। २०. प्रांण पयांण करणौ—देखो 'प्रांण पंखेरू उडणौ'। २१. प्रांण बचणौ—जीवित रहना, बच जाना। २२. प्रांण बचाणौ—पीछा छोडाना, जीवित रह जाना। २३. प्रांण मुंडै आणौ—देखो 'प्रांण कंठ में आणौ'। २४. प्रांण मूठी में राखणौ—देखो 'प्रांण हथाळी में राखणौ'। २५. प्रांण में प्रांण आणौ—भय दूर होना, होस हवास आना। २६. प्रांण राखणौ—मौत से बचना। २७. प्रांण लैणौ—मार डालना। २८. प्रांण लेनै भागणौ—जान बचाकर भाग जाना, जैसे तैसे पीछा छुडाकर भाग जाना, बच निकलना। २९. प्रांण हथाळी में राखणौ—मृत्यु के लिये तैयार रहना। ३०. प्रांण हरणौ—देखो 'प्रांण लैणौ'। ३१. प्रांण हारणौ—पंचत्व में मिलना। ३२. प्रांणां पर आ पड़णौ—जान जोखम में होना, खतरे में पड़ना। ३३. प्रांणां पर बाजी खेलणौ—जीवन को खतरे में डालना। ३४. प्रांणां पर बीतणौ—जीवन संकट में पड़ना, जान जोखिम में होना। ३५. प्रांणां री बाजी लगाणौ—सर्वस्व न्योछावर कर देना, बलिदान होना। ३६. प्रांणां रो संचार होणौ—मरणासन्न प्रांणी का जीवित होना, जान में जान आना। ३७. प्रांणा गूं खेलणौ—मृत्यु की परवाह न करना। ३८. प्रांणा सूं हाथ धोवणा—मरजाना।

४. बल, शक्ति, पौरुष। उ०—उदियाभांण प्रांण अणमायौ, औ किर हद न जवन सिर आयौ।—रा. रू.

उ०—२. बाजराज घत बेव, करै नटराज तणी कळ। गजांराज घण गरज, गाज सुरराज मदगळ। रूप भूप रतिराज, प्रांण अगराज प्रकासण। कौरवराज धन करण,बिमळ सुरराज विलासण।
—सू. प्र.

उ०—३. पछै यां विचारियौ—म्हांसूं धरती छूटी। सबळी ठोड़ आंणी। नै म्हांरै प्रांण तौ धरती बळण री नहीं है।
—नैणसी

मुहा०—प्रांण पण सूं जूटणौ—पूर्ण बल सहित कार्य में जुट जाना।

५. पवन, वायु।

६. जीव या आत्मा। उ०—एक दिन राजा रै अरथ कोई तपस्वीन महारसायण रो निदांन एक अपूरब स्वादु फळ दीधौ। सो राजा नै आप रा प्रांण रो औसध अनंगसेना जांणि अवरोध जाइ रांणी रै अरथ निवेदन कीधौ।
—वं. भा.

७. प्राण के समान प्रिय कोई व्यक्ति या पदार्थ।

८. मित्र। (अ. मा.)

९. प्रेम पात्र, माशूक।

१०. पाचन शक्ति।

११. ब्रह्म।

१२. विष्णु।

१३. ब्रह्मं।

१४. इन्द्रिय।

१५. समय का मान विशेष।

१६. गंधरस, बोल। (डि. को.)

१७. प्रयाण। उ०—दिल भरि दिल फेर कहि, स्युं तेह नौ अहिनांण। सांयात्रिक जन मारिवा, तुं गयौ करि नै प्रांण।
— वि. कु.

१८. पांच की संख्या । * (डि. को.)

१६. दस की संख्या । * (डि. को.)

२०. देखो 'प्रांणी' (रू. भे.)

उ०—करे कूच इतकाद, साह दरगाह सपत्तो । गुदरायो घर गुंभ, महासुख सुंभ सुमत्तो । पिण भावी अति प्रवळ, सकळ वस प्रांण असेखा । हुग्रणहार सिध करे, वार न धरै विध रेखा ।—रा. रू.

रू० भे०—परांण, प्रांन ।

यौ०—प्रांणग्रधार, प्राणाधार, प्रांणनाथ, प्रांणपति, प्रांणप्रिय ।

अल्पा०—प्रांणिय, प्रांणियउ, प्रांणियौ ।

प्रांणग्रधार, प्रांणग्राधार—देखो 'प्राणाधार' (रू. भे.)

उ०—जळथळ थळजळ हुइ रह्यउ, बोलइ मोर किंगार । स्रावण दूभर है सखी, विहां मुझ प्रांणग्रधार ।—ढो. मा.

प्रांणइस्ट-सं० पु० यौ० [सं० प्राणेष्ट] १. दोस्त, मित्र । (ह.नां.मा.)

२. पति ।

प्रांणकस्ट-सं० पु० यौ० [सं० प्राणकष्ट] मरते या प्राण निकलते समय होने वाला कष्ट ।

प्रांणगुर-सं० पु० यौ० [सं० प्राण+गुरु] बड़ा बलवान । उ०—ग्रांनन रांम रांम सुण ग्रांणे, ग्रंतर ग्रांणै रांम उर । भोयग मंडळ लोह भणावण, गोरिवै 'कुंभा' प्रांणगुर ।—महारांणा 'कुंभा' रौ गीत

प्रांणघात-सं० पु० यौ० [सं० प्राणघातः] १. वध, हत्या ।

२. ग्रात्मघात ।

प्रांणघातक-वि० यौ० [सं० प्राणघातक] मार डालने वाला, प्रांण ले लेने वाला ।

प्रांणघाती-वि० यौ० [सं० प्राणघातिन्] १. ग्रात्महत्या करने वाला ।

२. देखो 'प्रांणघातक' ।

प्रांणचंड-वि० [सं० प्राणचंड] वीर बहादुर ?

उ०—चंद्रभांण 'मुकन' सुत प्रांणचंड, 'पीथलो' वेस चडतां प्रचंड ।—रा.रू.

प्रांणजिहांन-सं०पु०यौ० [सं० प्राण+फा० जहान] वायु, पवन । (ग्र. मा.)

प्रांणत्याग-सं० पु० यौ० [सं० प्राणत्यागः] शरीर से प्राण का निकल जाना, मर जाना ।

प्रांणदंड-सं०पु०यौ० [सं० प्राणदंडः] कोई गम्भीर ग्रपराध के लिये दी जाने वाली मौत की सजा ।

प्रांणदांन-सं० पु० यौ० [सं० प्राणदान] १. किसी के प्राणों की रक्षा करना ।

२. ग्रपने प्राणों का किसी शुभ कार्य के लिये त्याग करना ।

३. युद्ध । (ग्र. मा.)

प्रांणदा-सं० स्त्री० [सं० प्राणदा] हरीतकी, हर्रे । (ग्र.मा.,नां.मा.)

प्रांणदाता-वि०यौ० [सं०प्राणदाता] प्राणों का संचार करने वाला, जीवित रखने वाला ।

प्रांणधन-सं० पु० यौ० [सं० प्राणधनं] १. वह जो किसी के प्राणों के समान प्रिय हो ।

२. पति ।

प्रांणधार-वि० यौ० [सं० प्राणधारः] जो प्राण धारण किए हुए हो, जीवित ।

प्रांणधारण-सं० पु० यौ० [सं० प्राणधारणं] १. शिव । (ग्र. मा.)

२. प्राणों को पोषित या उनकी रक्षा करने का भाव ।

प्रांणधारी-वि० यौ० [सं० प्राणधारिन्] प्राणी, जीव । उ०—हजारां ही खेत सोधण रै समय सचेत ग्रचेत प्रांणधारी पाया तिके सरब ही 'ग्रोरंग' रा ग्रादेस रूप ग्रनळ में दहिया ।—वं. भा.

प्रांणनांम-सं० पु० यौ० [सं० प्राणनाम] हंस । (ग्र. मा.)

प्रांणनाथ-सं० पु० यौ० [सं० प्राणनाथः] १. वह जो प्राणों का स्वामी हो ग्रर्थात् शरीर का स्वामी हो, स्वामी, मालिक । उ०—ग्रटे सौध ग्रवरोध ग्रचांणक, बोध मोद बिसराए । प्रांणनाथ हा ! नाथ जोधपुर, गौख सौध गणणाए ।—ऊ. का.

२. पति, खाविंद ।

प्रांणनाथी-सं० पु० यौ० [सं० प्राणनाथः+रा० प्रा० ई] १. स्वामी 'प्रांणनाथ' का सम्प्रदाय । २. इस सम्प्रदाय का व्यक्ति ।

प्रांणनास-सं० पु० यौ० [सं० प्राणनाशः] प्राणों का नष्ट होना, मृत्यु, मौत ।

प्रांणनासक-वि० यौ० [सं० प्राणनाशक] प्राणों का नाश करने वाला, मार डालने वाला ।

प्रांणपत, प्रांणपति, प्रांणपती-सं०पु०यौ० [सं० प्राणपतिः] १. स्वामी, मालिक । २. पति, खाविंद । ३. ग्रात्मा । ४. वैद्य ।

प्रांणपूर-वि० यौ० [सं० प्राणपूर्ण] पूर्ण शक्तिशाली, बलवान ।

उ०—दइवांण रुद्र एकादसां, प्रांणपूर पति धरम पण । कविराय धीर कवि 'मंछ' कह, जय जय स्रीरघुवीर जण ।—र. रू.

प्रांणप्यारौ-वि० यौ० [सं० प्राणप्रियः] परम प्रिय, प्रिय ।

उ०—ढूंढया वन बाग सारा री, मिल्या नहीं प्रांणप्यारा री ।—मीरां

सं० पु० यौ०—१. परम प्रिय व्यक्ति । २. पति, खाविंद ।

प्रांणप्रतिस्टा, प्रांणप्रतिस्ठा-स०स्त्री०यौ० [सं० प्राणप्रतिष्ठा] १. प्राण धारण कराना ।

२. हिंदू धर्मशास्त्रों के अनुसार किसी नई बनी हुई देव मूर्ति को देव मन्दिर में स्थापित करते समय मंत्रों द्वारा उसमें प्राण का ग्रारोप करना ।

प्रांणप्रद–वि० यौ० [सं० प्राणप्रदः] १. प्राणदाता।
२. स्वास्थ्य-वर्द्धक।

प्रांणप्रिय–वि० यौ० [सं० प्राणप्रियः] परम प्रिय, प्रियतम।

प्रांणप्रस्टीक–सं०पु०यौ० [सं० वृष्टि प्राणक अथवा वृष्टिक प्राण] मयूर, मोर। (ह.नां.मा.)

प्रांणमयकोस–स० पु० यौ० [सं० प्राणमयकोश] पांच कर्मेन्द्रिय और पांच प्राणों के समूह का नाम। (वेदांत)

प्रांणयात्रा–सं०स्त्री०यौ० [सं० प्राणयात्रा] १. श्वास प्रश्वास के आने जाने की क्रिया।
२. वे व्यापार या क्रियाएँ जिनसे मनुष्य जीवित रहे।
३. आजीविका।

प्रांणयोनि–सं० पु० यौ० [सं० प्राणयोनिः] १. परमेश्वर।
२. वायु, हवा।

प्रांणवल्लभ–वि० यौ० [सं० प्राणवल्लभ] (स्त्री० प्राणवल्लभा) वह जो बहुत प्यारा हो, अत्यन्त प्यारा।
सं० पु० यौ०—पति, खाविंद, प्रियतम।

प्रांणवांन–वि०यौ० [सं० प्राणवान] वह जिसमें प्राण हो, प्राणों से युक्त।
सं० पु० यौ०—जीव, प्राणी।

प्रांणवायु–सं०पु०यौ० [सं० प्राणवायुः] १. प्राण। २. जीव।
३. वातावरण में रहने वाला (पाया जाने वाला) एक प्रसिद्ध गैस जिसमें किसी प्रकार की गंध वर्ण या स्वाद नहीं होता है और जो प्राणियों, वनस्पतियों आदि को जीवित रखने का आवश्यक तत्त्व है।

प्रांणसंकट–सं० पु० यौ० [सं० प्राणसंकटं] जान की जोखिम, प्राणों पर आने वाला सकट।

प्रांणसंतोख–सं०पु०यौ० [सं० प्राणसंतोषः] हरीत की, हर्रे। (अ. मा.)

प्रांणसंदेह–सं०पु०यौ० [सं० प्राणसंदेहः] जीवन की आशंका, प्राण जाने का भय।

प्रांणसरीर–सं०पु०यौ० [सं० प्राणशरीरं] १. वह सूक्ष्म शरीर जो मनोमय विज्ञान और क्रिया का कारण माना गया है। (उपनिषद)
२. ईश्वर, परमेश्वर।

प्रांणहर–वि०यौ० [सं० प्राणहर] जान से मार डालने वाला, प्राण लेने वाला।
सं०पु०यौ०—यमराज। (अ. मा.)

प्रांणहरण–सं०पु०यौ० [सं० प्राणहरणं] यमराज। (नां. मा.)

प्रांणहरणी (नी)–सं० स्त्री० यौ० [सं०प्राणहरणं+रा०प्र०ई] १. वह अवस्था जिसमें प्राण जाने का डर हो।
२. मृत्यु, मौत।

प्रांणांत–सं० पु० यौ० [सं० प्राणान्तः] प्राणों का होने वाला अंत या नाश, मृत्यु।

प्रांणांतक–वि०यौ० [सं० प्राणान्तक] १. प्राणों का अन्त करने वाला, प्राण लेने वाला, घातक।
२. मरने जैसा कष्ट देने वाला।

प्रांणांघात–सं० पु० यौ० [सं० प्राणः+आघात] वध, हत्या।

प्रांणातिपात–सं० पु० यौ० [सं०] जान से मार डालना, जीव हिंसा। (जैन)

प्रांणात्मा–सं०पु०यौ० [सं० प्राणात्मा] जीवात्मा, प्राण।

प्रांणाधार–वि०यौ० [सं० प्राणाधार] जिसके कारण प्राण रह सके, अत्यंत प्रिय, प्यारा।
सं० पु० यौ०—१. प्रेम-पात्र। २. स्त्री का पति।
उ०—अंग में नहीं मावै ढोला कांचळी हो जी। हिवड़े नहीं हो ढोला, हिवड़े नहीं मावै हार, अब घर पधारो नी हो म्हारा प्रांणाधार, ओ जी।—लो. गी.
रू० भे०—प्रांणअधार प्रांणआधार।

प्रांणायांम–सं०पु०यौ० [सं० प्राणायामः] योग शास्त्रानुसार योग के आठ अंगों में से चौथा अंग जिस के अनुसार मन को शान्त और स्थिर रखने के लिए श्वास और प्रश्वास की वायु को नियंत्रित और नियमित रूप से अंदर खींचा और बाहर निकाला जाता है।
उ०—जैसे जोगेस्वरां के माया का पटळ दूरि वै छै। तैसें ही तौ रात्रि दूरि हुई छै। अर प्रांणायांम योगेस्वरां का इहै जोति प्रकास हुओ।—वेलि टी.

प्रांणायांमी–वि० यौ० [सं० प्राणायामिन्] १. प्राणायाम संबंधी।
२. प्राणायाम करने वाला।

प्रांणासण(न)–सं० पु० यौ० [सं० प्राणासन] १. योग के चौरासी आसनों के अन्तर्गत एक आसन विशेष जिसमें दाहिने पैर को बायें पैर की जंघा के मूल में रख कर बायें पैर की जंघा और घुटने का मध्य भाग नीचे नमाये हुए बायें कधे पर रखकर उसी पांव का पंजा भूमि पर रखा जाता है। तत्पश्चात् बायें हाथ को ठेउनी से मोड़ कर उसका पंजा भी भूमि पर रखा जाता है तथा दाहिने हाथ को ठेडनी मोड़कर इस का पंजा घुटने पर रखा जाता है। इससे प्राण वायु का अधो-भाग में आकर्षण होता है।
२. तांत्रिक साधना में एक प्रकार का आसन विशेष।

प्रांणाहुति–सं० स्त्री० यौ० [सं० प्राणाहुति] पांच ग्रासों के रूप में पांच प्राणों को दी जाने वाली आहुति।

प्रांणि—देखो 'प्रांणी' (रू. भे.)

प्रांणिमंडळ—देखो 'प्रांणीमंडळ' (रू. भे.)

प्रांणिय, प्रांणियउ—१. देखो 'प्रांणी' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—प्रभाकर प्रांणिय मातर प्रांण, विभाकर वांणिय ते निरवांण ।
—ऊ. का.

२. देखो 'प्रांण' (अल्पा., रू. भे)

उ०—ढाढ़ी जे प्रीतम मिळइ, यूं कहि दाखवियाह । पंजर नहिं छइ प्रांणियउ, थां दिस झळ रहियाह ।—ढो. मा.

प्रांणियौ—१. देखो 'प्रांणी' (अल्पा , रू. भे)

उ०—१. समयसुंदर कहइ, पुण्य कर प्रांणिया, पुण्य थी द्रव्य कोटां न कोटी ।—स. कु.

२. देखो 'प्रांण' (अल्पा , रू. भे.)

प्रांणी-वि० [सं० प्राणिन्] पांचों प्राणों को धारण करने वाला, जिसमें पांचों प्राणों का निवास हो, जीव-धारी, प्राण-धारी ।

उ०—१. जग में वांछै जीवणौ, सब प्रांणी समुदाय । हूटकर नर उण नूं हरे, जुलम कह्यौ नहि जाय ।—बां. दा.

२०—२. भैंस्यां रिड़कै रिड़ गायां रंभावै । प्रांणी तिरसातुर पांणी कुण पावै ।—ऊ. का.

सं० पु०—१. मनुष्य ।

२. व्यक्ति ।

३. पुरुष की दृष्टि से उसकी स्त्री और स्त्री की दृष्टि से उसका पति ।

रू० भे० - परांणी, पिरांणी, प्रांणि, प्रांनी ।

अल्पा०—प्रांणिय, प्रांणियउ, प्रांणियौ, प्रांणीड़ौ ।

प्रांणीड़ौ—देखो 'प्रांणी' (अल्पा., रू. भे)

प्रांणीमंटळ-सं० पु० [सं० प्राणिमण्डल] जल, स्थल और आकाश का उतना भाग जिसमें कीड़े, मकोड़े, जीव-जन्तु, वनस्पतियां आदि पायी जाती हैं ।

रू० भे०—प्रांणिमंडळ ।

प्रांणेय-सं० पु० [सं० प्रणयी] पति । (ह. नां. मा.)

प्रांणेस-स० पु० [सं० प्राणेश] १. प्राणों का स्वामी ।

२. पति, खाविंद । (अ. मा., ह. नां. मा.)

उ०—कमळनायण कमळाकर, कमळा प्रांणेस कमळकर केसौ ।
—र. ज. प्र.

प्रांणेसुर, प्रांणेस्वर-सं० पु० [सं० प्राणेश्वर] १. प्राणों का स्वामी, मालिक । उ०—प्रांणेस्वर जो पंचमुख, भणै पंचमुख वाह ।
—बां. दा.

२. परम प्रिय व्यक्ति ।

३. पति, खाविंद ।

प्रांत-सं० पु० [सं० प्रांत:] १. किसी देश का एक भाग विशेष ।

उ०—जरै पातसाह दारा रै साथ जोधपुर रो अधीस राठोड़ जसवंत, च्यारि अनुजां सहित कोटा रो अधीस हाडो 'मुकुंद' माळव देस रा पच्छिम प्रांत रो पुहवीस रतळांम नगर रो वसावणहार राठोड़ रतनसिंह ।—वं. भा.

२. सीमा ।

३. किनारा, छोर ।

प्रांन—देखो 'प्रांण' (रू. भे.)

उ०—जावै न मदीनै प्रांन जाय ।—ऊ. का.

प्रांनी—देखो 'प्रांणी' (रू. भे.)

उ०—प्रीति करै तीरथ रै ऊपर, मौज दियै मनमांनी । तक्यौ न मनहर पग जिह तांई, पार न उतरै प्रांनी ।—र. रू.

प्रांमणड़ौ—देखो 'पांमणौ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—करतब नहं राजी क्रपण, राजी रूपैयांह । कडवौ दास कुटंवियां, प्रांमणड़ां पइयांह ।—बां. दा.

प्रांमणौ—देखो 'पांमणौ' (रू. भे)

प्रांमणौ, प्रांमवौ—देखो 'पाणौ, पावौ' (रू. भे.)

उ०—इण अवसर मत आळसै, ईसर आखै एम । प्रांणी हररस प्रांमियां, जनम सफळ थयै जेम ।—ह. र.

प्रांमणहार, हारौ (हारी), प्रांमणियौ - वि० ।

प्रांमिओड़ौ, प्रांमियोड़ौ, प्रांम्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

प्रांमीजणौ, प्रांमीजवौ—कर्म वा० ।

प्रांमती-वि० [सं० प्र + आप्] प्राप्त करने वाला । उ०—कांम जती सूर सोम भूपतीस सुती काहा, विप्र रुद्र तती अन हुयी जीप वार । मांणीगार छरती प्रांमती जो सुपंगी काहा, सोहियौ क्रामंती रायजादां रौ सींगार ।—कुंवर सनमानसिंघ हाडा रो गीत

प्रांमियोड़ौ—देखो 'पायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० प्रांमियोड़ी)

प्रांसु-वि० [सं० प्रांशु] ऊंचा, लंबा, बड़ा । (अ. मा.)

सं० पु०—लंबे डील-डौल का आदमी ।

प्रांहणौ, प्रांहुणौ—देखो 'पांमणौ' (रू.भे.)

उ०—राव जोधै सरीखौ प्रांहणौ अठै कद-कद आवसी ।—नैणसी

प्राईवेट-स० पु० [अं०] १. निजी, तनु ।

२. गुप्त ।

प्राईवेटसेक्रेट्री-सं० पु० यौ० [अं०] निजी सचिव ।

प्राकम—देखो 'पराक्रम' (रू. भे.)

उ०—प्राकम मुदगर नर प्रबळ, बळ दाखै बळवंत । लघु बाळक करळावतां, हंसै न कौतस संत ।—मा. वचनिका

प्राकमी—१. देखो 'पराक्रम' (रू. भे.)

उ०—परभुंइ पसरी प्रघट प्राकमी जी खत्रवट वपि खरी वासौ खग वासै जी ।—ल. पिं.

२. देखो 'पराक्रमी' (रू. भे)

प्राकरत—देखो 'प्राक्रत' (रू. भे.)

प्राकांम, प्राकांमिया-सं० स्त्री० [सं० प्राकाम्यं] आठ प्रकार की सिद्धियों में से एक। (अ.मा.,नां.मा.,ह.नां.मा.)

प्राकार-सं० पु० [स०] १. किसी स्थान या इमारत के चारों ओर की दीवार, चहार दीवारी।

उ०—१. जिकण छतगी री प्रारंभ लगाई उण ही री घाटो (घांटो) लांघि करउर नगर री घेरी लगाइ प्राकार रै प्रमांण बंरूथ री जाळ जड़ियो।—वं. भा.

उ०—२. जिकै-जिकै ही अहकार रै ऊफांण प्राकार रै कंगुरै-कंगुरै होय गढ़ रा सिपाहां पाछा ठेलिया।—वं. भा.

२. गढ़, किला। (अ.मा.,ह.नां.मा.)

उ०—जठै भीम रा सिपाहां तोरण रै वाहिर आया जिके राजा सहित प्राकार में प्रविस्ट कीधो।—वं. भा.

३. देखो 'प्रकार' (रू. भे.)

प्राकिरत—देखो 'प्राक्रत' (रू. भे.)

प्राक्कथन-सं० पु० [सं०] १. पहिले कही हुई बात।

२. प्रस्तावना (पुस्तक)।

प्राक्रत-वि० [सं०प्राकृत] १. प्रकृति संबंधी, प्रकृति का।

२. असली, स्वाभाविक, अपरिवर्तित, असंशोध्य।

३. मामूली, साधारण।

४. अशिक्षित, अनपढ़, गंवार।

५. तुच्छ, क्षुद्र, या नीच।

सं० स्त्री० [सं० प्राकृतम्] १. बोल चाल की भाषा जिसका प्रचार किसी विशिष्ट क्षेत्र या प्रदेश में रहा हो।

उ०—गौरी नंदन वीनवूं, ब्रह्म सुता सरसत्ति। सरस बंध प्राक्रत कवूं, द्यउ मुझ निरमल मत्ति।—कां.दे.प्र.

२. एक प्राचीन भाषा जिसका प्रयोग प्राचीन भारत में संस्कृत नाटकों में स्त्रियों, सेवकों, साधारण व्यक्तियों के मुख से कराया जाता था।

उ०—भासा व्रज मारू सुर भासा, भासा प्राक्रत जांन भर। पायो रचण रूपगां पैंडो, 'मेहाही' थारी महर।—वां.दा.

३. बोल-चाल की प्रांतीय भाषा जिसका निकास संस्कृत से हुआ हो या जो संस्कृत शब्दों के अपभ्रंश रूपों में बनी हो।

मतान्तर से वह विशिष्ट भाषा जिसे भारत में प्राचीन आर्य बोलते थे एवं जिसका संस्कार करके शिक्षित लोगों ने साहित्यिक रचना के लिए बाद मे संस्कृत नामकरण कर दिया।

(अ.मा.,नां.मा.)

४. पुरुषों की ७२ कलाओं में से एक कला।

रू० भे०—पराकरत, पराक्रत, प्राकरत, प्राकिरत।

प्राक्रतप्रळय-सं० पु० [सं० प्राकृतप्रलय] एक प्रकार का प्रलय जिसमें प्रकृति भी ब्रह्म या परमात्मा में लीन हो जाती है। (पुराण)

प्राक्रतबंध-सं० पु० [सं० प्राकृतबंध] जन साधारण में बोली जाने वाली भाषा का प्रबंध या काव्य। उ०—हठ कीधउ सुरतांणस्यूं, तास कथा संबंध। चाहूआंण गुण वरणवूं, पुहवीइ प्राक्रतबंध।

—कां. दे. प्र.

प्राक्रतिक-वि० [सं० प्राकृतिक] १. प्रकृति संबंधी, प्रकृति का।

२. प्रकृति से उत्पन्न, स्वाभाविक।

३. साधारण, मामूली।

रू० भे०—पराक्रति, पराक्रती।

प्राक्रम—देखो 'पराक्रम' (रू. भे.)

उ०—१. हाथी रा माथा में हाथी रा दांत री दे, अमुंड (हाथी री माथो) फाड न्हांकियो। उण वेळा हूं तो पति रा प्राक्रम माथै बळीहारी जाऊं छू।—वी. स. टी.

उ०—२. महावीर री महिमा अपार, इण री किण हि न पायो है पार। जांमवंत हनुमत रिझायो, भूलो प्राक्रम याद दिरायो।

—गी.रां.

प्राक्रमी—देखो 'पराक्रमी' (रू. भे.)

उ०—सो एकण कांनी हजार पांच फोज, एकण कांनी एक इको, इसो प्राक्रमी पोरस छै।—रा. सा. सं.

प्राक्रमीस-वि० [सं० पराक्रम+ईश] महान पराक्रमी, साहसी, वीर।

उ०—प्रेम गंधवाह रै प्राक्रमीस वज्रअंगी, जेठी बीसबांह रै अनम्मी इंद्रजीत। बाका एकरंगी वेहूं राहां रै वारै बदे, दूवो छाताळ रै राजकुंवार उदीत।—कुंवर सनमांनसिंघ हाडा री गीत

प्राग—१. देखो 'प्रयाग' (रू. भे.)

२. देखो 'पराग (रू. भे.)

प्रागना—देखो 'प्रग्या' (रू. भे.)

प्रागभाव-सं० पु० [सं०] १. वैशेषिक-शास्त्र के अनुसार पांच प्रकार के अभावों में पहिला अभाव।

२. वह पदार्थ जिसका आदि न होकर अंत हो, अनादि, सांत पदार्थ।

प्रागवड़—देखो 'प्रयागवड़' (रू. भे.)

उ०—ऊगो झांखो अरक, दिना झांखी दरमांणी। भाखा पंथ भयांण, जांण कळपंत कहांणी। गिरय परव्रत वन व्रख, अचळ चळ चाल अखंडै। उलकापात अछूंट, पड़ै कोरण दह मंडै। तिण समै कैळास सहर तणी, झळदकार पट झंलीया प्रागवड़ सिवराज पड़ै, मंद भाग कव पंखीयां।—साहिबो सुरतांणियो

प्रागज्योतिस-सं० पु० [सं० प्राग्ज्योतिष] आसाम प्रदेशान्तर्गत काम रूप देश का प्राचीन नाम।

वि० वि०—महाभारत काल में यहां का राजा भगदत्त था। वह

चीन और किरात की सेना लेकर महाभारत संग्राम में सम्मिलित हुआ था।

प्रागज्योतिसपुर–सं० पु० [सं० प्राग्ज्योतिषपुर] प्राग्ज्योतिष देश की राजधानी का नाम जो आज-कल गोहाटी में है।

प्रागै–अव्य० [सं०] प्रातःकाल। उ०—महि सुइ खट मास प्रात जळ मंजै, आप अपरस अरु जितइंद्री। प्रागै वेलि पढ़तां नित प्रति, त्री वंछित वर वंछित त्री।—वेलि

प्राग्य–सं० स्त्री० [सं० प्राज्ञ] १. बुद्धिमान, चतुर।
२. पंडित।
३. मूर्ख। (व्यंग)

प्राग्यन–सं० पु० [सं० प्राज्ञ] १. कवि। (अ. मा.)
२. देखो 'प्रग्या' (रू. भे.) (अ. मा.)

प्राघळौ–वि० [सं० पुष्कल] १. उदारचित।
२. देखो 'परगळ' (अल्पा., रू. भे.)
(स्त्री० ाघळी)

प्राघुणक–सं० पु० [सं० प्राघुणकः] मेहमान, अतिथि। उ०—अर वरात रा प्रावुणकां नूं महानस में बुलाय खटरस मय नांना व्यजनां री व्रात पूरण त्रिप्ति चखावियौ।—वं. भा.

प्राचत—१. देखो 'प्राछत' (रू. भे.) (अ. मा.)
उ०—१. घर में मरियां सूं तौ अवस ही जमराज हीज नरकां में लेजासी, कारण कै सरीर सूं अनेक प्राचत वण आवै तिकै और कोई तरै सूं उतरै नहीं।—वी. स. टी.
उ०—२. जिण मुख जोवतां दुख प्राचत जावै। थरू आथ घर नवनिध थावै।—र. ज. प्र.

प्राचाळौ—देखो 'पीचाळौ' (रू. भे.)
उ०—अै घांधल रजवट उजवाळा, प्रव 'मजमाल' भिड़ण प्राचाळा।
—रा. रू.

प्राचि—देखो 'प्राची' (रू. भे.)
उ०—कह्यौ स्व-कूच प्राचि को प्रतीचि पंथ तू परयौ।—ऊ. का.

प्राचिति—देखो 'प्राछत' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

प्राचिनविरह–सं० पु० [सं० प्राचीनबर्हिस्] इंद्र। (ह. नां. मा.)
रू० भे०—प्राचीनब्रह, प्राचीनवरह, प्राचीनवरही, प्राचीनविरही, प्राचीनव्रह।

प्राची–सं० स्त्री० [सं०] पूर्व दिशा। उ०—पहली रौ प्रस्थांन प्राची में ही करि खटपुर रा धणी गौड़ गजमल्ल नूं गंजि पाटण रा अधीस मोहिल मनोहरदास नूं मारि दो ही नैर आप रै वसीभूत किया।
—वं. भा.
रू० भे०—प्राचि।

प्राचीन–वि० [सं०] १. पूर्व दिशा का, पूर्व दिशा संबंधी।
२. पूर्व दिशा की ओर मुड़ा हुआ।
३. अगला, पूर्व कथित। उ०—प्राचीन करम सुभए, पुरखा पाइत उत्तमा महिला। कुळ-दीप पुत्र जिणयै, कुळ-धू विनै रूप संजुगता।
—गु. रू. वं.
४. पुरातन, पुराना।
रू० भे०—पराचीन, पुराचीन।

प्राचीनता–सं० स्त्री० [सं०] प्राचीन होने का भाव, पुरानापन।
रू० भे०—पराचीनता।

प्राचीनब्रह, प्राचीनवरह, प्राचीनवरही, प्राचीनविरही, प्राचीनव्रह—देखो 'प्राचिनविरह' (रू. भे.) (अ.मा.,नां.मा.,ह.नां.मा.)

प्राचीनावीत–सं०पु० [सं०प्राचीन+आवीत] यज्ञोपवीत धारण करने का एक ढंग विशेष जिसमें बायां हाथ यज्ञोपवीत से बाहर रहता है और यज्ञोपवीत दाहिने कंधे पर रहता है। यह उपवीत का विलोम है। इस प्रकार का यज्ञोपवीत पितृकार्य में धारण किया जाता है।
रू० भे०—पराचीनावीत।

प्राचीनावीती–सं०पु० [सं०प्राचीनावीतिन्] प्राचीनवीत यज्ञोपवीत धारण करने वाला।

प्राचीप–सं० पु० [सं०] इंद्र।

प्राचीपति–सं० पु० [सं० प्राचीपतिः] इन्द्र।
रू० भे०—पराचीपति।

प्राचीर–सं० पु० [सं० प्राचीरं] नगर या किले आदि की रक्षार्थ उसके चारों ओर बनाई हुई दीवार, चहारदीवारी, शहरपनाह।
रू० भे०—पराचीर।

प्राच्य–वि० [सं०] १. पूर्व दिशा संबंधी, पूर्व दिशा का, पूर्व का।
२. पुराना, प्राचीन।

प्राछंत, प्राछत, प्राछित–सं०पु० [सं०प्रायश्चित्यं, प्रायश्चित्यमर्हंनीतितत्]
१. कलंक, काला दाग, धब्बा। उ०—चढ़नां कळजुग जोर चढ़ंतौ, घण अमत जाचतौ घणौ। मिळनां समैं रांण मेवाड़ा, टळियौ प्राछत देह तणौ।—महारांणा प्रताप रौ गीत
२. पाप।
[सं० प्रायश्चित्तं] ३. किये हुए दुष्कर्म या पाप के फल-भोग से बचने के लिए किया जानेवाला शास्त्र विहित कर्म जो प्रायः दण्ड के रूप में होता है। उ०—१. यां को धन तौ परौ दिरावौ, अर ब्रह्महित्या कौ प्राछत करावौ।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात
उ०—२. पहिलइ दिन रे, सांझ समइ उग्रहण सहु। पडिलेही रे, रुड़ी परि राखइ बहु। पहिली रातइं रे, साधु समीपि आवी करी। राइ प्राछित रे, प्रथम करइ मन संवरी।—स. कु.
रू० भे०—पराचत, पराचित, पराचिति, पराचेत, पराछत, पराछित, पराछीत, पायच्छित, पायछत, पायछित, पिराचित, पिराछत, पिराछित, पिरास्चित, प्राचत, प्राचिति, प्रायचित, प्रायस्चित।

प्राजळ-सं० पु० [सं० प्र+जल] जल, पानी।
उ०—प्राजळ चख वेगम अंसुपात, जमना जळ काजळ वहत जात।
उण धार त्रिवेणी तीर आय, झूंझार हुवै सो मुगत पाय।—वि.सं.

प्राजळणी, प्राजळबौ—देखो 'प्रजळणी, प्रजळबौ' (रू. भे.)
उ०—हठ नाळ पेठ बाजार हाठ, प्राजळ महल चदण कपाट।
—वि. सं.

प्राजळणहार, हारौ (हारी), प्राजळणियौ—वि०।
प्राजळिग्रोड़ौ, प्राजळियोड़ौ, प्राजळ्योड़ौ—भू० का० कृ०।
प्राजळीजणौ, प्राजळीजबौ—भाव वा०।

प्राजळियोड़ौ—देखो 'प्रजळियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० प्राजळियोड़ी)

प्राजापत्य-वि० [सं०] प्रजापति संबंधी।
सं० पु० [सं० प्राजापत्य] १. यज्ञ विशेष।
२. उत्पादक शक्ति।
[सं० प्राजापत्यः] ३. हिन्दू धर्मानुसार आठ प्रकार के विवाहों में से चौथा विवाह।

प्राजाळ-वि० [सं० प्रज्वलनम्] जलाने वाला। उ०—वदै 'अंग देस' हुवा जोध वंका। लंगा झोक रे झोक प्राजाळ लंका।—सू प्र.

प्राजौ—सं० पु० [सं० पराजय] (स्त्री० प्राजी) १. हार, पराजय।
उ०—जाय जोगण वंद जाजा, प्रजुण वन्ही करे प्राजा। वहण आवध होम वाजा, रुपि दराजा रोस।—र. रू.
२. देखो 'प्राझौ' (रू. भे.)
उ०—१. 'प्राग' हुवा जादव खग प्राजा, 'अमगे' 'खांन' पूरवण आझा।—रा. रू.
उ०—२. परवाड़ौ करनी कियौ पूर, सिर प्रथमी प्राजौ चद सूर।
—रामदान लाळस

प्राझौ-वि० [सं० प्राज्ञ अथवा प्रवुद्ध] (स्त्री० प्राझी) १. बुद्धिमान, चतुर, दक्ष।
२. प्रसिद्ध, विख्यात, मशहूर। उ०—लाखीक वरीसण लाखो जी। भूपाळ निरेहण भाखो जी। जाडेज वडा गुण जांणं जी। प्राझौ प्रिथमाद प्रमांणं जी।—ल.पि.
३. महान। उ०—मांडे जे मंडांण, प्राझौ तै प्रयांणं। दीवांणं दातार, ऊचारै उदारं।—पि. प्र.
४. बहुत, अपार। उ०—१. राघो जी जो गावौ, प्राझौ लच्छी पावौ।—र. ज. प्र.
उ०—२. प्रमगुर कहे पधारो ' प्राझा करण प्रवाडा। हेवै सरस अमिळिया हींदू, मोमूं मिळ मेवाड़ा।—दुरसौ आढ़ौ
उ०—३. पुहविपत्ति मांहि परताप प्राझौ।—ध. वं. ग्रं.
५. शक्तिशाली, समर्थ। उ०—अिग्यांन वखण अिवुलउ समीर, गळि जंत जंत घातण गहीर। 'डूंगरउ' चड़िय 'राहड़' दुझल्ल, प्राझउ अयार पर-घट्ट-पल्ल।—रा. ज. सी.
६. वीर, बहादुर। उ०—चंदखांन चतखांन, पडे प्राझौ पतिसाहे। पडै खांन सेनार, करणंद्रुग हि पडिगाहे।—गु. रू. बं.
७. वयोवृद्ध, पूज्य।
८. अटल, दृढ। उ०—प्राझौ राव जनक तणौ पण, मोड खळां दळ मांनकी। धींग भुजां सत खंड करी धनु, जेण वरी प्रिय जांनकी।
—र. ज. प्र.
रू० भे०—पाझौ, प्राजौ।

प्रात-अव्य० [सं० प्रातर्] सवेरे, तड़के, भोर ही। उ०—१. महि मुइ खटमास प्रात जळ मंजे, आप अगम्म अरु जितइंद्री। प्राग वेलि पढ़ंनां नित प्रति, श्री वंछित वर वंछित श्री।—वेलि
उ०—२. अर आवश्यक कृत्य वणि सकियौ जिको करि दसोर थी फौज चाली जांणि दोही वरातां प्रात ही विदा कीधी।—वं. भा.

प्रातकरम-सं० पु० [सं० प्रातः+कर्मन्] प्रातःकालीन कर्म (शौच, स्नान, पूजा-पाठ आदि)।

प्रातकाळ-सं० पु० [सं० प्रातः+कालः] सूर्योदय से पूर्व का समय, उषाकाल।

प्रातनाथ-सं० पु० [सं० प्रातनाथ] सूर्य, भानु।

प्रातसंध्या-सं० स्त्री० [सं० प्रातः+संध्या] प्रातःकाल में की जाने वाली संध्या।

प्रादुरभाव-सं० पु० [सं० प्रादुर्भावः] १. प्रकट होना, प्रत्यक्ष होना।
२. किसी देव विशेष का भूमि पर अवतार लेना।

प्रादेस-सं० पु० [सं० प्रादेशः] प्रदेश, स्थान।

प्राधांन-वि० [सं० प्राधानिक] १. प्रधान संबंधी।
२ सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्कृष्ट। उ०—हिमगिरि सिखरानुकारिए प्रसाद करि सुंदर। प्राधांन प्राकार करि परिकलतु।—सभा.

प्रापक-सं० पु० [सं०] १. हवा, पवन। (ह नां.मा)
२. प्राप्त करने वाला, वह जिसके नाम कोई वस्तु या पत्र भेजा जा रहा हो।

प्रापणौ, प्रापबौ-क्रि० स० [सं० प्र+आप्] १. प्राप्त करना।
२ मिलना।
प्रापणहार, हारौ (हारी), प्रापणियौ—वि०।
प्रापिग्रोड़ौ, प्रापियोड़ौ, प्राप्योड़ौ—भू० का० कृ०।
प्रापीजणौ, प्रापीजबौ—कर्म वा०।

प्रापत—१. देखो 'प्राप्त' (रू भे.)
उ०—पख एकण विचइ हुई वर प्रापत, राजकुमार अनोपम राज। सायर विचइ पनंग वइसं वळि, ओवण चा छोडिया जिहाज।
—महादेव पारवती री वेलि

२. देखो 'प्राप्ति' (रू. भे.)

उ०—१. सुण केसी ! राजा कहे, ग्यांन प्रापत, काज। सतगुरु मोटा भेटिया, तारण तिरण जहाज।—जयवांणी

उ०—२. ग्यांन तणी प्रापत भणी ए, में वांकी चरचा कीधी घणी ए।—जयवांणी

प्रापतरूप-सं० पु० [सं० प्राप्तरूप] १. पंडित। (अ. मा.)

२. कवि।

प्रापति, प्रापती—देखो 'प्राप्ति' (रू. भे.) (नां.मा.,ह.नां.मा.)

उ०—१. तेह नइ सन्मुख चपल चकोरा, प्रसरत नयणे जोवइ। प्रभु दरसण देखण जग तरसें, प्रापति विण नवि होवइ।—वि.कु.

उ०—२. फिरत फिरत प्रापति मइं पायउ, अरिहंत नु आधार।
—स. कु.

उ०—३. क्रस्ण जी को आंखि जु रुखमणी जी कै रूपि करि प्रेरी छै। सु आंख्यां नै देखिवा की त्रिपति होय नही। जदपि मन नै त्रिपति हुई छै। वारंवार मुख की ओड देख्यै छै। जैसें निरधन कौ धन प्रापति होय। अर वार-वार देखिवौ करै।—वेलि टी.

प्रापतीक-वि० [सं० प्राप्ति+रा०प्र०ईक] प्राप्त करने योग्य।

उ०—जदी रांमवगस सूवौ कीर पकडनै सिवलाल नै दीधौ। सो चार ही वेद बकै (भखै ?) जद सो मोहरां देनै सिवलाल रांमबगस नै लीधौ। सो जसां कनै रहै, जसां नै पढावै। जद जसां वर प्रापतीक हुई। सिवलाल जसां कौ रूप देखनै मन मै उदास हुओ।
—मयारांम दरजी री वात

प्राप्त-वि० [सं०] १. पाया हुआ, लब्ध।

२. जीता हुआ, लिया हुआ।

३. मिला हुआ। उ०—परमात्म प्राप्त, वह पुरुस आप्त।—ऊ.का.

४. सहा हुआ।

५. आया हुआ।

६. पूर्ण किया हुआ।

रू० भे०—परापत, प्रपत, प्रापत।

प्राप्ति-सं० स्त्री० [सं०] १. उपलब्धि, प्रापण, मिलना।

२. पहुंच। ३. आगमन। ४. अर्थागम, अर्जन। ५. हिस्सा, अंश।

६. प्रारब्ध, भाग्य।

७. अणिमादि अष्ट सिद्धियों में से एक जिससे वांछित पदार्थ मिलते हैं।

रू० भे०—परापत, परापति, परापती, प्रापत, प्रापति, प्रापती।

प्रायचित, प्रायस्चित—देखो 'प्राछत' (रू. भे.)

उ०—१. पण अेक बडो इचरज छै—थे तो अेक कीड़ी रा हव दांन लेवौ छो। अै तै पांच सौ आदमी थां निमित्त तय्यार हुआ छै। संकळप भरता यूं कहै छै—आ देही स्रीठाकुर जी निमित्त छै। अोर इणां लारै आदमी सो च्यार बीजा ही मरसी। ब्राह्मण गऊवां रौ संकळप भरियौ सो पण कोई देवै नहीं। तैं रौ पण प्रायचित थानै ही लागसी।—पलक दरियाव री वात

उ०—२. थारौ अन्न खाधौ तिण सूं तीरथ जाय सुद्ध थास्यां पिण मूलगा असुद्ध सुद्ध किम हुवै। भीखन जी स्वांमी कह्यौ—कोइ साध नै दोस लागां प्रायस्चित लेइ सुद्ध हुवै।—भि. द्र.

प्रारंभ—१. किसी कार्य की प्रथमावस्था का संपादन, शुरू, श्रीगणेश, आरभ। उ०—पइसारइ तणउ मांडियउ प्रारंभ, मोटइ दिख जोवतां मंडांण। घणघट घमंड जांगीए घुरते, आयौ ले परिग्रह आपांण।—महादेव पारवती री वेलि

२. उपद्रव, युद्ध।

३. बडा कार्य।

४. वैभव।

५ जलसा।

६. तैयारी। उ०—हिंदुआंण तुरकांण, करण घमसांण कड़क्खै। सझि कवांण गुणवांण, दळां प्रारंभ वळ दक्खै।—वचनिका

रू० भे०—परारंभ, पारंभ।

प्रारंभणौ, प्रारभवौ—क्रि० स० [सं० प्रारंभणम्] प्रारंभ करना; शुरू करना।

प्रारंभणहार, हारौ (हारी), प्रारंभणियौ—वि०।

प्ररभिओड़ो, प्रारभियोड़ो, प्रारंभ्योड़ो—भू० का० कृ०।

प्ररंभीजणौ, प्रारंभीजवौ—कर्म वा०।

प्रारंभिक-वि० [सं०] १. प्रारंभ में होने वाला अथवा उससे संबंधित।

२. शुरुआत का।

३. प्राथमिक।

रू० भे०—परारंभिक।

प्रारथण-सं० स्त्री० [सं० प्रार्थनं] १. प्रार्थना, विनय। (डि. को.)

२. विनती।

प्रारथणा—देखो 'प्रारथना' (रू. भे.)

प्रारथणौ, प्रारथवौ—क्रि० स० [सं० प्रार्थनम्] याचना करना।

उ०—१. च्यारि रयण लिउ चहुटइ, मिळसइ मांगण कोइ। प्रभु जांणी नइं प्रारथइ, नाथ नकारु न होइ।—मा. कां. प्र.

उ०—२. क्रपण नै जव प्रारथ्यै मांगजै छै। तव उहि का मुह माहें थे वचन कुण नीकळै।—वेलि टी.

२. विनय करना, प्रार्थना करना।

प्रारथणहार, हारौ (हारी), प्रारथणियौ—वि०।

प्रारथिओड़ो, प्रारथियोड़ो, प्रारथ्योड़ो—भू० का० कृ०।

प्रारथीजणौ, प्रारथीजवौ—कर्म वा०।

पारत्थणौ, पारत्थवौ, पारथणौ, पारथवौ, पारायणौ, पारायवौ
—रू० भे०।

प्रारथना-सं० स्त्री० [सं० प्रार्थना] प्रार्थना, विनय, आवेदन। (डिं.को)

उ०—१. सुपने मनसा नहिं स्वारथ की,प्रभु प्रारथना परमारथ की ।
—ऊ. का.

उ०—२. प्रारथना भूप री, करी कांनां किनियांणी । दिया इसा वरदांन, धरा जंगळ धिनियांणी ।—मे. म.

रू० भे०—परारथना, पारथी, पाराथ, प्रारथणा ।

प्रारथनापत्र–सं० पु० [सं० प्रार्थना+पत्र] १. वह पत्र जिसमें किसी प्रकार की प्रार्थना लिखी हो, निवेदन पत्र ।

२. किसी विषय में प्रार्थना प्रस्तुत करने के लिये निर्धारित प्रपत्र, आवेदन पत्रक ।

प्रारथनासण(न)–सं० पु० [सं० प्रार्थनासन] योग के चौरासी आसनों के अन्तर्गत एक आसन विशेष जिसमें धीरासन की तरह घुटनों पर बैठ कर दोनों हाथों के पंजों को जोड़कर स्थिर होना होता है ।

प्रारथी–वि० [सं० प्रार्थी] १. प्रार्थना करने वाला, निवेदन करने वाला विनय करने वाला ।

२. याचक, निवेदक, विनीत । उ०—जे प्रारथियां निरवासी, जग मां एतलो ही जरसी ।—वि. कु.

रू० भे०—परारथी ।

प्रारब्ध–सं० पु० [सं० प्रारब्धम्] १. पूर्व जन्म या पूर्वकाल में किये हुए शुभ या अशुभ कर्म जिनका फल वर्तमानकाल मे भोगना पड़ता है ।

२. उक्त कर्मों का फल भोग ।

३. भाग्य ।

रू० भे०—परावद, परारबद, परारबध, परालबद, परालबध, पुरालब्ध, प्रारारब्ध, प्रालब्ध ।

प्रारब्धी–वि० [सं०] १. प्रारब्ध कर्म भोगने वाला ।

२. भाग्यशाली ।

रू० भे०—परारब्धी, परालबदी, परालबधी, पुरालब्धी ।

प्रालब्ध—देखो 'प्रारब्ध' (रू. भे.)

उ०—पढ़ं फारसी प्रथम, म्लेच्छ कुळ में मिळ जावै, 'अंगरेजी' पढ़ अवल, होटलां में हिळ जावै । पच्छ ग्रहै प्रालब्ध, नहीं पुरुसारथ नेड़ो, चोखे मत नहिं चाय, भाय आवै मत भेड़ो ।—ऊ. का.

प्राळेय–सं० पु० [सं० प्रालेयं] वर्फ, हिम । (डि.को.)

प्राळी—देखो 'पाळी' (रू. भे.)

उ०—तठा उपरांति करिनै राजांन सिलांमति तिण ससिर रित री माह मास री राति री प्राळी पड़ै छै । उतराध री पवन ऊतांमलो टीयां खाइनै रहीयो छै ।—रा. सा. सं.

प्रावट—देखो 'प्राव्रट' (रू. भे.)

प्रावरण–सं० पु० [सं०] आच्छादन, आवरण, ढक्कन ।

प्राव्रट–सं० पु० [सं० प्रावृट] १. वर्षा । उ०—फेदड़ फेदड़ सी नभ में निजराई । मालण चालण री मनसा मुरझाई । प्राव्रट प्राव्रट री प्राव्रट मन मारै । थर नै पावां रा थर लिग्या लारै ।—ऊ. का.

२. वर्षा ऋतु ।

रू० भे०—परावट, परावठ, पराव्रट, पावट, प्रावट ।

प्रावृति–सं० स्त्री० [सं० प्रावृति] हाथी का मद । (डि. को.)

प्रासंग–सं० पु० [सं०] १. जुआं का निम्न भाग । (डि. को.)

२. जुआं का वह भाग जो पशु के कंधे पर रहता है ।

प्रास–सं० पु० [सं० प्रासः] १. एक प्रकार का भाला विशेष ।

२. देखो 'पास' (रू. भे)

उ०—तठै कालवूत हसतणी रै फरस करि नै छिबित री खाड मांहै पड़ै छै । पछै लोह सांकळ रा प्रास नाखिनै तिके हाथी पकड़ीजै छै ।
—रा.सा.सं.

प्रासणौ, प्रासबौ–क्रि०अ० [सं० प्राशनम्] खाना खाना, भोजन करना ।

उ०—वळिवंधण मूक स्याळ सिध वळि, प्रासं जो बीजो परणं । कंपिळ धेनु दिन पात्र कसाई, तुळसी करि चाडाळ तणं ।—वेलि

प्रासणहार, हारौ (हारी), प्रासणियौ—वि० ।

प्रासिओड़ौ, प्रासियोड़ौ, प्रास्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

प्रासीजणौ, प्रासीजबौ—भाव वा० ।

प्रासन्न—देखो 'प्रसन्न' (रू. भे.)

उ०—आया पासि 'अजीत' रै, साह तणा फरमांण । पह जोघां प्रासन्न मन, दीयौ वीच कुरांण ।—रा. रू.

प्रासरणौ–सं० पु० [सं० प्रसरणम्] आगे बढ़ने की क्रिया, निकल जाना, प्रयाण करने की क्रिया । उ०—हुवो खळां थांणौ खळहांणौ, लेखा पखं सु धन लूटांणौ । देस थळी प्रासरणौ दीधौ, लोड़े डंड फळोधी लीधौ ।—रा. रू.

प्रासाद–सं० पु० [सं०] १. विशालभवन, राजभवन । उ०—अर आगै देवराज रौ रचियौ आठ हात उछित (ऊंचा) आठ आठ लंबा-यत वत्तीस पूतळी सहित चंद्रकांति मणिमय एक सिंघासण कोई प्रासाद री पीठ-भू खोदतां कढ़ियौ तिको ही आपरै भद्रासण वणायौ ।—वं. भा.

२. भवन । (अ.मा.,ह.नां मा.)

उ०—नख समपै जु तै मांडिया 'लाखा', घाट सुकवि सलवाट घड़ै । प्रसिध तणा प्रासाद न पड़ ही, पाखाणिवा प्रसाद पड़ै ।
—लाखा फूलांणी रौ गीत

३. देव मन्दिर, देवालय । उ०—१. असुरांण सीस उपाड़ि, परसाद न सकै पाड़ि । प्रासाद नव-नवा प्रमेस, हिंदवांण सर्भ हमेस ।
—सू. प्र.

उ०—२. मनंछा परब्रह्म हिंगोळ माता, समं सात पोरां रमै दीप साता । जंबू दीप में जांम एको जिकांरो, दिसा पच्छमी दूर प्रासाद द्वारो ।—मे. म.

४. महल ।

५. देखो 'प्रसाद' (रू. भे.)
रू० भे०—परसाद, पासाद, प्रसाद।

प्रासियोड़ो-भू० का० कृ०—खाना खाया हुआ, भोजन किया हुआ. (स्त्री० प्रासियोड़ी)

प्रासी-स० पु० [सं० पाशिन्] वरुण। (अ. मा.)

प्रासुक-वि० [?] चेतना शक्ति-हीन। (जैन)

प्राहणौ—देखो 'पांमणौ' (रू. भे.)

प्राहार—देखो 'प्रहार' (रू. भे.)
उ०—दर्स-कंध कै कायरा घ्रग दीधौ। कणेठी उरां पाव प्राहार कीधौ।—सू. प्र.

प्राहुण—देखो 'पांमणौ' (मह, रू. भे.)

प्राहुणउ, प्राहुणौ—देखो 'पांमणौ' (रू. भे.)
उ०—१. ढोला रहिसि निवारियउ, मिळिसि दई कइ लेखि। पूगळ हुइम ज प्राहुणउ, दसराहा लग देखि।—ढो. मा.
उ०—२. नाट चिरत फिरता रिख नारिद, गिरिंद तणइ प्राहुणा गया। चलणे ऊठि लागा हेमाचळ, मन सूधै जांणी घणी मया।
—महादेव पारवती री वेलि

प्रिग्रमधु—देखो 'प्रियमधु' (रू. भे) (नां. मा.)

प्रिउ—देखो 'प्रिय' (रू. भे.)
उ०—१. ऊनमियउ उत्तर दिसइं, गाज्यउ गुहिर गंभीर। मारवणी प्रिउ संभरयउ, नयणे वूठउ नीर।—ढो. मा.
उ०—२. वाबहिया निल-पंखिया वाढ़त दइ दइ लूण। प्रिउ मेरा मइं प्रीऊ की, तूं प्रिउ कहइ स कूण।—ढो. मा.
उ०—३. बावहिया डूंगर-दहण, छांडि हमारउ गांम। सारी रात पुकारियउ, लइ लइ प्रिउ कउ नांम।—ढो. मा.
उ०—४. मांणस हवां त मुख चवां, म्हे छां कूंझड़ियांह। प्रिउ संदेसउ पाठविसु, लिखि दे पंखड़ियांह।—ढो. मा.
उ०—५. मत जाणे प्रिउ नेह, गयउ दूरविदेस गयांह। विवणउ बाघइ सज्जणां, श्रोछउ ओहि खळांह।—ढो. मा.

प्रितमाळ—देखो 'प्रतिमाळ' (रू. भे.)
उ०—चढ़ियौ जस कळस आदि लग 'चूंडा', पै गज घाट गिळण 'गोपाळ'। दांणव देव मांनव कोय दाखौ, पग सूं गज हिणतौ प्रितमाळ।—गोपाळदास चूंडावत रो गीत

प्रिति—देखो 'प्रीति' (रू. भे)
उ०—ग्रदु वायक बोध दिये महिला, प्रिति लागण काळ किये पहिला।—ऊ. का.

प्रित्थी—देखो 'प्रथ्वी' (रू. भे.)
उ०—तकै भादवी माह-ऊपांत तित्थी, पड़ै माय रै पाय प्रित्थीप प्रित्थी।—मे. म.

प्रित्थु, प्रित्थू—देखो 'प्रथु' (रू. भे)

प्रिथ—देखो 'प्रथु' (रू. भे.)

प्रिथम—देखो 'प्रथम' (रू. भे.)
उ०—प्रिथम मेक संग्रांम, कियौ महिकर आथांणह। बियौ कीध रिण-जंग, दिखण कटकै मेल्हांणह।—गु. रू. बं.

प्रिथमाद—देखो 'प्रथवी' (रू. भे.)
उ०—प्रिथमाद पवनं भुजै भुजंनं, घण बारह घर प्रति घणी। समरे राजेसर आदि अपपर, धरणी धर त्रिभुग्रण धणी।—पि.प्र.

प्रिथमी—देखो 'प्रथवी' (रू. भे.) (ह.नां.मा.)
उ०—१. प्रिथमी आदि-जुगादि वीर वसुधा वर खत्ती।—गु.रू.बं.
उ०—२. सुजड़ी मोकळसीह-समोभ्रम, ग्रहै दुरंग गिर वडा ग्रह। जिण वीनड़ियां किम वीसारै, प्रिथमी नव-खड तणा पह।
—महाराणा कूंभा रो गीत

प्रिथमीतळ—देखो 'प्रथवीतळ' (रू. भे.) (अ.मा.,ह.ना.मा.)

प्रिथवी—देखो 'प्रथवी' (रू. भे)
उ०—पोसप्प पांन कपूर प्रिथवी, वणत जण धनवान ए।—रा.रू.

प्रिथवीपाळ—देखो 'प्रथवीपाळ' (रू. भे) (डिं. को.)

प्रिथवीस—देखो 'प्रथवीस' (रू. भे.)

प्रिथव्विय—देखो 'प्रथवी' (रू. भे.)
उ०—प्रिथव्विय जातिय रेस पयाळ, दाढ़ां ग्रहि राखिय दीनदयाळ।
—ह.र.

प्रिथा—देखो 'प्रथा' (रू. भे.)

प्रिथि—देखो 'प्रथ्वी' (रू. भे.) (नां.मा.,ह.नां.मा.)
उ०—अर बिळकुळनै घणौ तातौ मिळै। प्रिथि मैं घडी पिछ्ल रो मिजमांन हुवो थको भिळै।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

प्रिथिमि, प्रिथिमी—देखो 'प्रथवी' (रू. भे.) (नां.मा.,ह.नां.मा.)
उ०—कळि कलप वेलि वळि कांमधेनुका, चिंतामणि सोम वल्लि चत्र। प्रकटित प्रिथिमी 'प्रिथु' मुख पंकज, अखरावळि मिसि थाइ एकत्र।—वेलि

प्रिथी—देखो 'प्रथ्वी' (रू. भे.) (नां.मा.,ह.नां.मा.)
उ०—१. प्रिथी विलागी पाय, आरंभ तज अचळेसवर, विच ढ़ीली अर देवगिर, मीलीया मांडवराय।—अ.वचनिका
उ०—२. किताइक वार विसै कळपंत, वांधी तै सींग प्रिथी बळवंत।
—ह. र.

प्रिथीनाथ—देखो 'प्रथ्वीनाथ' (रू. भे.)

प्रिथीप—देखो 'प्रथ्वीप' (रू. भे.)

प्रिथीपति—देखो 'प्रथ्वीपति' (रू. भे.)
उ०—खड़ै सुरलोक भणीजत खांत, भणीं हिंगळाज सुणी जिण

भांत। प्रियीपति राजसथांन पुगाय, अत्रा निज थांन थई थित आय।
—मे. म.

प्रियु—देखो 'प्रथु' (रू. भे.)

प्रियुक—देखो 'प्रथुक' (रू. भे.) (ह.नां.मा.)

प्रियुळ—देखो 'प्रथुळ' (रू. भे.)

प्रियूवीस—देखो 'प्रथवीस' (रू. भे.)

प्रियंगु, प्रियंगू–सं०पु० [सं० प्रियगु:] वृक्ष विशेष व उसका फल (गूंदी)।
—सभा.

प्रिय–वि० [सं०] (स्त्री० प्रिया) १. प्यारा, वल्लभ।
२. मनोहर, सुंदर।
सं० पु० [सं० प्रिय:] १. पति, खाविंद। (अ मा ,ह नां.मा.)
२. स्वामी, मालिक।
३. प्रेमी।
४. जाति विशेष का हरिण।
५. दामाद, जमाता।
६. दो लघु मात्रा का नाम। (पिंगल)
रू० भे०—पिग्र, पिग्रउ, पिउ, पिऊ, पिय, पिया, पिव, पी, पीउ, पीऊ, पाय, पीव, प्रिउ, प्रियु, प्रिव, प्री, प्रीउ, प्रीऊ, प्रीय, प्रीयु, प्रीव।
अल्पा०—पिउडो, पियड़उ, पीऊडइ, पीयो, पीवड़लो, पीवल, प्रियुड़उ, प्रीउड़ो, प्रीउडो, प्रीऊड़ो, प्रीऊडो, प्रीयुड़ो।

प्रियकांक्षी–वि० [सं०] हित-चिंतक, शुभाभिलाषी, शुभेच्छु।

प्रियगण–सं०पु० [सं०] दो लघु मात्रा का नाम। (डिं.को.,र.ज.प्र.)

प्रियतम–वि० [सं०] (स्त्री० प्रियतमा) सर्वाधिक प्रिय, सब से अधिक प्यारा।
सं० पु० [सं० प्रियतम:] १. आशिक, प्रेमी।
२. पति। उ०—१. करूं कड़ाई चाव से तेरी दुरगा मांय, आसोजां में आय के जो प्रियतम मिळ जाय।—लो. गी.
उ०—२. अबकै जे प्रियतम मिळै, पलक न छोड़ूं पास। रोम रोम में छिप रहूं, ज्यूं कळियन में वास।—अज्ञात
३. स्वामी, मालिक। ४. ईश्वर।
५. मित्र, दोस्त, सखा।
रू० भे०—पीतम, प्रीतम।
अल्पा०—पीतमो, प्रीतमो।

प्रियपात्र–वि० [सं०] वह जिसके साथ प्रेम किया जाय, प्रेमपात्र, प्यारा।

प्रियव्रत–सं०पुं० [सं० प्रियव्रत] एक राजा, जो स्वायंभुव मनु के पुत्रों में से एक था।
उ०—मुद्गरमा नै आप रा छठा सहोदर नूं जाळोर रो दुरग दीधो, जठै खंधावार जमाय मौक्तिकराज नै पुरवा प्रियव्रत रै समांन राज कीधो।—वं. भा.

प्रियभद्र–सं० पु० [सं०] श्रीकृष्ण के बड़े भाई का नाम, बलभद्र।
(अ. मा.)

प्रियभासण–सं० पु० [सं० प्रियभाषणं] सब को प्रिय लगने वाली बात, वाणी, संभाषण।

प्रियभासी–वि० [सं०प्रियभाषिन्] मधुर वचन बोलने वाला, मधुर भाषी।

प्रियमधु–सं० पु० [सं०] श्रीकृष्ण के बड़े भाई बलराम का एक नाम।
(नां. मा.)
रू० भे०—पिग्रमधु, प्रीयमधु, प्रीयमधू।

प्रियमरू–सं० पु० [सं० प्रियमरुस्थल] मरुस्थल का प्रेमी, ऊंट।

प्रियवचन–सं० पु० [सं०] मधुर वचन, मीठे बोल।

प्रियवलका–स० स्त्री० [सं० प्रियवल्लिका] रामवेलि। (अ. मा.)

प्रियवादनी–वि० स्त्री० [सं० प्रियवादिनी] मीठी बोलने वाली, मधुरभाषिणी।
सं० स्त्री०—मालती। (अ. मा.)

प्रियवादी–वि० [सं० प्रियवादिन्] मधुरभाषी।

प्रियवादिका–सं० स्त्री० [सं०] बाजा विशेष।

प्रियसदेस–सं० पु० [सं० प्रियसंदेश:] खुश खबरी, शुभ संदेश।

प्रिया–सं० स्त्री० [सं०] १. प्रेयसी, प्रेमिका। उ०—सदा प्रिया सु प्रीति रीति गीत सारणी नहीं। निसास-रोज आंननी उरोज धारणी नहीं।—ऊ. का.
२. स्त्री, पत्नी। (अ.मा.,ह नां.मा.)
उ०—सुधन्य माता कोसल्या, तात दसरथ धनि भूपति। अवधि पुरि धनि अवनि, प्रिया धनि सीत तास-पति।—सू. प्र.
३. माया।
४. दो रगण का वर्ण वृत्त विशेष।
रू० भे०—पिय, पिया, प्रियु, प्रीया।
अल्पा०—पीआरड़ी।

प्रियाग्रधर–वि० [सं० प्रिया+अधर] मधुर। * (डिं.को.)
सं० पु०—प्रियतमा के अधर (होठ)।

प्रियाग—देखो 'प्रयाग' (रू. भे.)

प्रियागवड़, प्रियागवड़—देखो 'प्रयागवड' (रू. भे.)
उ०—धांनंतर मयंक हणू सुक्र धावो, नर पाळग रुद्र रिख निवड़। अेक वारड़ी 'करण' उठाड़ो, वन-खट तणो प्रियागवड़।
—ईसरदास बारहठ

प्रियात्मा–सं० स्त्री० [सं०] प्रिया, भार्या।

प्रियाळ—देखो 'पियाळ' (रू. भे.) (सभा.)

प्रियास—देखो 'प्रयास' (रू. भे.)

प्रियु—१. देखो 'प्रिय' (रू. भे.)

उ०—मनह संकांणी माळवणि, प्रियु कांई चळचित्त। कइ मारुवणी सुधि सुणी, कइ का नवली वत्त।—ढो. मा.

२. देखो 'प्रिया' (रू. भे.)

प्रियुड़उ—देखो 'प्रिय' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—प्रियुड़उ आव्यउ रे आसा फली, बोलइ कोसा नारी। प्रीति पनउता पालियइ, हुं छुं दासि तुम्हारी।—स. कु.

प्रियोग—देखो 'प्रयोग' (रू. भे.)

प्रियोजन—देखो 'प्रयोजन' (रू. भे.)

प्रिव—देखो 'प्रिय' (रू. भे.)

उ०—प्रिव माळवणी परहरे, हाल्यउ पुंगळ देस। ढोला म्हां बिच मोकळा, वासा घणा वसेस।—ढो. मा.

प्रिवित—देखो 'पवित्र' (रू. भे.) (ह.नां.मा.)

प्रिसटपरणी—सं० स्त्री० [सं० पृष्टिपर्णी] एक प्रकार की लता विशेष। (अमरत)

रू० भे०—प्रस्टपरणी, प्रिस्टपरणी।

प्रिसण—देखो 'पिसण' (रू. भे.)

उ०—१. हुवे विग्रह ढहै कहै 'चूंडा' हरौ, इंद्र पावक पवण प्रिसण अेता। महि-मंडळ भीतड़ा क्रीत सूं मीढ़तां, कळी पालट हुवे जाहि केता।—राव गांगौ

उ०—२. प्रिसणां साथ कासळी पडियौ। आंगम लखां दुअौ आखड़ियौ। निस गळती भूंवियौ नग्रीठौ, रूक तणौ मच आवारीठौ।—रा. रू.

प्रिसणांण—देखो 'पिसण' (मह., रू. भे.)

प्रिसध—देखो 'प्रसिद्ध' (रू. भे.)

प्रिसिधि—देखो 'प्रसिद्धि' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

उ०—पहि प्रमांणं, जुगत्ति जांणं, अति बखांणं, जगत्र आखो। घरमधारी, प्रिसिधि प्यारी, लखण भारी, कुंअर 'लाखो'।—ल.पिं.

प्रिस्ट—वि० [सं० पृष्ट] पूछा हुआ, जो पूछा गया हो।

सं० पु०—१. पन्ना, पत्र।

[सं० पृष्ठ] २. किसी छपे हुए या लिखे हुए पत्र या कागज का एक ओर का भाग, पृष्ठ।

सं० स्त्री०—३. पीठ। उ०—वणि जोड़ दुंद सनमुख वदन, दीप धरम भुज दाहिणौं। जळ भूप प्रिस्ट धारे जुगळ, वांमै घू अविचळ वणौं।—रा. रू.

रू० भे०—प्रस्ट, प्रस्ठ, प्रिस्ठ।

प्रिस्टपरणी—देखो 'प्रिसटपरणी' (रू. भे.)

प्रिस्टोदय—देखो 'प्रस्ठोदय' (रू. भे.)

प्रिस्ठ—देखो 'प्रिस्ट' (रू. भे)

प्री, प्रीउ—देखो 'प्रिय' (रू. भे.)

उ०—१. घरा कहतां प्रथी अनेक भांति का रस दे छै। (पोइणी विखै भली सोभा हुई छै)। अन्नादिक सुं पितर छै तिणि कौ मरत-लोक प्री लागै छै।—वेलि टी.

उ०—२. रांणी तदि दूवौ दीध रुखमणी, पति सुत पूछि पूछि परिवार। पूजा व्याज काज प्री परसण, स्यांमा आरंभिया सिण-गार।—वेलि

उ०—३. हे सखि ए परदेस प्री, तनह न जावइ ताप। बाबहियउ असाढ़ जिम, विरहणि करइ विलाप।—ढो. मा.

उ०—४. बीज न देख चहूड़ियां, प्री परदेस गयांह। आपण लोय झबुक्कड़ा, गळि लागी सहरांह।—ढो. मा.

उ०—५. बावहिया निलपंखिया, वाढ़त दइ दइ लूण। प्रिउ मेरा मइं प्रीउ की, तूं प्रिउ कहइ स कूण।—ढो. मा.

प्रीउड़ौ, प्रीउडौ—देखो 'प्रिय' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—मांननि मन माधव कन्हइं, पजर प्रीउडा पासि। समणां माहिं संक कहइ, जोनी जोवा जासि।—मा. कां. प्र.

प्रीऊ—देखो 'प्रिय' (रू. भे)

उ०—१. प्रीऊ बोलंतु पंखीउ, अहनिसि रहि अगासि। वयणि तास न नीसरइ, पछठी माहरइ पासि।—मा. कां. प्र.

उ०—२. पोस! पनुता प्रीऊ पखइ, अंह सिउं आंणि म राग। काळ मुखा! काढ़इ नहीं, दीठा डोळा काग।—मा. कां. प्र.

प्रीऊड़ौ, प्रीऊडौ—देखो 'प्रिय' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१. पुप्फि परिमळ ईक्षु रस, दूध मांहि घ्रत जेम। सुणि प्रीऊडा! तिम माहरइ, पंजरि पसरिउ प्रेम।—मा. कां. प्र.

उ०—२. टाढ़उ वाउ निसंचरइ, तिम-तिम वाघइ झाळ। प्रीऊडा पाखइ पोस ते, काळ तणु जिम काळ।—मा. कां. प्र.

प्रीच्छत—देखो 'परीक्षित' (रू. भे)

उ०—जग अवलंब थंभ सतजुग रा, दिवपुर वसतां 'सिवा' दुवा। पांच हजार वरस प्रीच्छत रा, हमैं संपूरण आज हुवा।

—रांमलाल बारहठ

प्रीछणौ, प्रीछबौ—क्रि० स० [सं० परि+ईक्षणम्] १. समझना।

उ०—चतुर लोक राचइ गुणे रे, अवगुण कोइ न राचइ रे। परमा-रथ तुम्हे प्रीछज्यो रे, सहु को पतीजइ साचइ रे।—स. कु.

[सं० पृच्छ] पूछना। उ० संभळि माधव हुं कहुं, अे दुख-तणउं निदांन। परमाधांमी प्रीछजे, जु सिरि हइ सांन।—मा. कां. प्र.

प्रीछणहार, हारौ (हारी), प्रीछणियौ—वि०।

प्रीछिओड़ौ, प्रीछियोड़ौ, प्रीछयोड़ौ—भू० का० कृ०।

प्रीछीजणौ, प्रीछीजबौ—कर्म वा०।

प्रीछियोड़ौ—भू० का० कृ०—१. समझा हुआ. २. पूछा हुआ.

(स्त्री० प्रीछियोड़ी)

प्रीछत—देखो 'परीक्षित' (रू. भे.)

उ०—राजा प्रीछत, जगदेव जी पंवार, धारसी पवार...इणां सारां नू प्रथ्वी पर दातार सग्या है।—द. दा.

प्रीत—देखो 'प्रीति' (रू. भे.)

उ०—१. सज्जन बाधै पाळ सिर, सीसा छकियां गाळ। दुरजण फोड़ै गाळ दे, प्रीत सरोवर पाळ।—बा. दा.

उ०—२. नारायण रै नाम सूं, प्राणी करलै प्रीत। औघट वणियां आतमा, चत्रभुज आसी चीत।—ह. र.

उ०—३. पिंड कुलछ पहचांण, प्रीत हेत कीजै पछै। जगत कहै सो जांण, रेखा पाहण राजिया।—किरपाराम

प्रीतड़ली, प्रीतड़ी—देखो 'प्रीति' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१. रास तौ कियौ म्हांसै प्रीतड़ली जोड़ी, अब तुम काहे कूं तोड़ी।—मीरां

उ०—२. नेमि जी सुं जउ रे साची प्रीतड़ी, तउ सुं अवरां प्रीतौ रे। गुणवंत मांणस सेती गोड़ी, तउ सुं निरगुण रीतौ रे।

—स. कु.

उ०—३. नैण पदारथ वैण रस, नैणां वैण मिळंत। अण-जांण्यां सूं प्रीतड़ी, पे'ला नैण करंत।—अज्ञात

प्रीतधारी-वि० [स० प्रीति+धारिन्] प्रीति करने वाला। उ०—द्रढ़ मंत्री दिल्लेस, पास 'अमरेस' भंडारी, रीत नीत ऊजळौ, प्रीतधारी हितकारी। सुपनै ही साभाय, न्याय-व्रत चाय न चूकै। राज काज चितराग, माग अनि समळ प्रमूकै।—रा. रू.

प्रीतम—देखो 'प्रियतम' (रू. भे.) (अ.मा.,ह.नां.मा.)

उ०—१. भूरै मुखड़ै पर स्वेदण कण भारी, पहुंची पोळछ में प्रीतम री प्यारी।—ऊ. का.

उ०—२. नख नहिं निरखाती नाजक नखराळी, पिय जिय प्रतपाळी जाती पथ पाळी। घूरण नयणां चळ काजळ जळ घूमै। लड़थड़ आथड़ती प्रीतम गळ लूमै।—ऊ. का.

प्रीतमौ - देखो 'प्रियतम' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—परदा अंतर कर रहे, हम जीवैं किहिं आधार। सदा संगाती प्रीतमा अबके लेहु उबार।—दादूवांणी

प्रीति-सं० स्त्री० [सं०] १. किसी इष्ट पदार्थ को प्राप्त करने या देखने से होने वाला सुख, तृप्ति, सतोष।

२. हर्ष, आनंद, खुशी।

३. स्नेह, प्रेम, प्यार, मुहब्बत। उ०—साहिब तुझ्झ सनेहड़इ, प्रीति तणी पति जाइ। जळ खिण ही जाणइ नही, मच्छ मरइ खिण मांइ।—ढो. मा.

४. अनुराग। उ०—अवती रै अधीस प्रांमारराज भरत्रीहरि रै रांणी पिंगळा जिकण रौ दूजौ नांम अनंगसेना कहीजै सो अद्वितीय प्रीति रौ आस्पद वणी।—वं. भा.

५. मैत्री, दोस्ती, मेल। उ०—एक समय आखेट, बळै साळा बहणोई। आवै हणि सस एक, प्रीति मनुहार पजोई।—वं. भा.

५. कामदेव की स्त्री और रति की सौत का नाम।

६. फलित ज्योतिष के २७ योगों में से चौथा योग।

रू० भे०—परीत, पिरीत, पीइ, पीई, पीत, प्रिति, प्रीत, प्रीती।

अल्पा०—पीतड़ली, पीतड़ी, प्रीतड़ली, प्रीतड़ी, प्रीतौ।

प्रीतिभोज-सं० पु० [सं०] वह भोज या खान-पान जिसमें सबंधी, इष्ट मित्र आदि सप्रेम आमंत्रित किए जाते हैं तथा सम्मिलित होते हैं।

प्रीती—देखो 'प्रीति' (रू. भे.)

प्रीतौ—१. देखो 'प्रीति' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—नेमि जी सुं जउ रे साची प्रीतड़ी, तउ सुं अवरां प्रीतौ रे।

—स. कु.

२. देखो 'प्रिय' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—तुं तौ हिव माहरौ प्रीतौ थयौ रे, तुझ नै दीठां उलसै गात रे।—वि. कु.

प्रीथी—देखो 'प्रथ्वी' (रू. भे.)

प्रीद्रुम-सं० पु० [सं० प्रियद्रुम] वानर, कपि। (नां. मा.)

प्रीय—देखो 'प्रिय' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

उ०—आज ज सूती निसह भरि, प्रीय जगाई आइ। विरह -भुयगम की डसी, लवयवती गळ लाइ।—ढो. मा.

प्रीयमधु, प्रीयमघु—देखो 'प्रियमघु' (रू. भे.)

प्रीया—देखो 'प्रिया' (रू. भे.)

उ०—कोइलि! तूं काळी सही, स्वर पणि ताहरु काळ। प्रिउ पाखइ पेखी प्रीया, प्रांण हरइ तत्काळ।—मा. कां. प्र.

प्रीयारौ—देखो 'प्यारौ' (रू. भे.)

उ०—प्रेम प्रीयारी वाल ही, जे कइ पीहर छै बाई! मांडव धार।

—वी. दे.

(स्त्री० प्रीयारी)

प्रीयु—देखो 'प्रिय' (रू. भे.)

उ०—सखी यादव कोड़ि सुं परवरे, प्रीयु आए तोरण वारि रे।

—स. कु.

प्रीयुड़ौ—देखो 'प्रिय' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—कमल विलासी ब्युं विकस्यौ नहीं रे, इण तौ कर संकोचि। हीयड़ा आगलि दे प्रीयुड़ा तणौ रे, मांड्यो सबलौ सोच।—वि. कु.

प्रीव—देखो 'प्रिय' (रू. भे.)

उ०—सा धण खळती कसोर ज्युं। जांणिक वैठी प्रीव को खोळि।

—वी. दे.

प्रूंचाळो, प्रूचाळौ—देखो 'पोंचाळौ' (रू. भे.)

उ०—सूरां 'उरजरा' हगं सिघाळी, पिड़ 'सूजौ' जादम प्रूचाळौ ।
—रा. रू.

(स्त्री० प्रूचाळी, प्रूचाळी)

प्रूफ-सं० पु० [ग्रं०] १. प्रमाण, सबूत ।
२. किसी छपने वाली चीज का वह नमूना जो उसके छपने से पहिले अशुद्धियों आदि को दूर करने के लिए तैयार किया जाता है ।

प्रेक्षक-वि० [सं०] १. दर्शक । २. जांच करने वाला ।
रू० भे०—पेखक ।

प्रेख-सं० स्त्री० [सं०प्रेक्षा] आज्ञा । (ह. नां. मा.)

प्रेत-सं०पु० [सं० प्रेतः] (स्त्री० प्रेतरा, प्रेतणी) १. मरा हुआ मनुष्य ।
२. वह कल्पित शरीर जो मनुष्य को मृत्यु के बाद प्राप्त होता है । (पुराण)
३. नरक में रहने वाला प्राणी ।
४. एक प्रकार की कल्पित देव-योनि जिसमें प्राणी का रंग काला शरीर के बाल खड़े और विकराल स्वरूप होता है, भूत ।
उ०—१. हुय धड़धड़ा'ट धर व्योम हाक । दस ही दिस वागी प्रेत डाक ।—पा. प्र.
उ०—२. पहली एक धाडवी रजपूत धारातीरथ में पड़ियौ तो भी कोइक कारण रै प्रभाव आप रा साथ समेत प्रेत हुवौ जिकरण रै पाछै प्रजा में एक पुत्री रही ।—वं. भा.
उ०—३. जठै वैताळां रा ग्रास्फाळ, डाकिणी गणां रा डमरू रा डात्कार फेरवियां रा फेत्कार, प्रेतां रा ग्रालाप राक्षसां रा रास कुणपां रा कपाळां रा कटकटाहट, चिता रा ग्रंगारां करि चित्र विचित्र बडो ग्रद्भुत चरित देखियौ ।—वं. भा.
यौ०—भूत-प्रेत ।
५. महाकृपण, कंजूस । (व्यंग)
रू० भे०—परेत, प्रैत ।

प्रेतग्रधिपति-सं० पु० [सं० प्रेतअधिपतिः] १. यमराज ।
२. शिव, महादेव ।

प्रेतग्रन्न-सं० पु० [सं० प्रेतग्रन्न] वह ग्रन्न जो पितरों को अर्पित किया गया हो ।

प्रेतग्रस्थि-सं० स्त्री० [सं०] मुर्दे की हड्डियां ।

प्रेतईस, प्रेतईसर, प्रेतईस्वर-सं०पु० [सं० प्रेतईशः, प्रेतईश्वरः] १. यमराज, धर्मराज ।
२. महादेव, शिव ।

प्रेतकरम, प्रेतक्रत्य-सं०पु० [सं० प्रेतकर्मन्, प्रेतकृत्यं] मृतक जीव के उद्देश्य से दाह से लेकर सपिंडी तक के किये जाने वाले कर्म या कृत्य ।
रू० भे०—परेतकरम, प्रैतकरम ।

प्रेतग्रह-सं० पु० [सं० प्रेतगृहं] श्मशान भूमि, कब्रिस्तान ।

प्रेतचारी-सं० पु० [सं०] शिव, महादेव ।

प्रेततरपण-सं० पु० [स० प्रेततर्पण] किसी मनुष्य के मरने के दिन से सपिंडी दिन तक उसके निमित्त किए जाने वाले कर्म ।

प्रेतदाह-सं० स्त्री० [सं० प्रेतदाहः] मृतक के दाह कर्म की क्रिया ।

प्रेतदेह-सं० स्त्री० [स०] मरने के समय से सपिंडी तक उसकी आत्मा को प्राप्त होने वाला किसी मृतक का कल्पित शरीर ।

प्रेतनदी-सं० स्त्री० [सं०] वैतरणी नदी ।

प्रेतनाथ, प्रेतनाह-सं० पु० [सं० प्रेतनाथः] १. यमराज, धर्मराज ।
२. शिव, महादेव ।

प्रेतपक्ष, प्रेतपख-सं० पु० [सं० प्रेतपक्षः] ग्राश्विन मास के कृष्ण पक्ष के पन्द्रह दिन का समय, श्राद्धपक्ष ।

प्रेतपत, प्रेतपति-सं० पु० [सं० प्रेतपतिः] यमराज का एक नाम ।
उ०—इमड़ो सम्मत करि काळ रा खैंचया प्रेतपति रा पाहुणा होइ हुकम रै प्रमांण तत्काळ ही लेख करि भिळाइ दीधौ ।—वं भा.
रू० भे०—परेतपत, परेतपति, परेतपती ।

प्रेतपिंड-सं० पु० [सं० प्रेतपिण्डम्] किसी मृतक के मरने के दिन से लेकर सपिंडी के दिन तक नित्य दिया जाने वाला अन्नादि का बना हुआ पिंड ।

प्रेतपुर-सं० पु० [सं० प्रेतपुरं] १. यमपुरी ।
२. श्मशान भूमि ।

प्रेतभाव-सं० पु० [सं० प्रेतभावः] मृत्यु, मौत ।

प्रेतभूम, प्रेतभूमि, प्रेतभोम-सं० स्त्री० [सं० प्रेतभूमिः] श्मशान भूमि, मरघट ।

प्रेतमेध-सं० पु० [सं० प्रेतमेधः] मृतक कर्म विशेष ।

प्रेतराज, प्रेतराट-सं० पु० [सं० प्रेतराजः] यमराज । (अ. मा.)

प्रेतलोक-सं० पु० [सं० प्रेतलोकः] यमपुर, यमलोक ।

प्रेतवन-सं० पु० [सं०] श्मशान भूमि ।

प्रेतसरीर-सं० पु० [सं० प्रेतशरीरं] पुराणानुसार किसी मृतक का वह कल्पित शरीर जो उसके मरने के दिन से सपिंडी तक उसकी आत्मा को प्राप्त रहता है जो सपिंडी नामक श्राद्ध करने पर नहीं रहता है, भोगशरीर ।

प्रेतस्राद्ध-सं० पु० [सं० प्रेतश्राद्ध] मरने की तिथि से एक वर्ष के अन्दर अन्दर होने वाले सोलह श्राद्ध जिसमें मासिक, सपिंडी आदि सभी सम्मिलित हैं ।

प्रेताधिप-सं० पु० [सं०] यमराज ।

प्रेतासिनी-वि० स्त्री० [सं०] मृतकों को खाने वाली ।
सं० स्त्री०—भगवती का एक नाम ।

प्रेम-सं०पु०[सं०प्रेमन्] १. वह मनोवृत्ति जिसके अनुसार किसी पदार्थ या

व्यक्ति आदि के संबंध में यह भावना हो कि वह सदा हमारे पास या साथ रहे, उसकी वृद्धि, उन्नति या हित हो, अनुराग, स्नेह । (अ. मा., ह. नां. मा.)

उ०—आपणपा सयण तेडिया आह (व)इ, लांजउ घणी निरवाहण लाज । वर ईसर जगंनाथ अणंवर, प्रेम तणी ताइ बाधी पाज ।
—महादेव पारवती री वेलि

२. पुरुष-समाज और स्त्री-समाज के ऐसे जीवों का आपस का स्नेह या मुहब्बत जो प्राय: रूप, गुण, स्वभाव और कामवासना के कारण होता है, प्यार, मुहब्बत । उ०—१. अलक डोरि तिल चड़-सबी, निरमळ चित्रुक निवांण सीचें नित माळी समर, प्रेम बाग पहचांण । प्रेम बाग पहचांण, निरंतर पाळ ही । ग्रीवा कंबु कपोत, गरब्बां गाळ ही । कंठसरी बहु क्रांति, मिळी मुकनाहळां । हिंडुळ नौसरहार, जळूस जळाहळां ।—बां. दा.

उ०—२. वयणी माळवणी तणइ, रहियउ साल्हकुमार । प्रेमइ बध्यउ प्री रहइ, जउ प्री चालणहार ।—ढो. मा.

३. अनुकंपा, अनुग्रह ।

४. हर्ष, प्रसन्नता । उ०—सुरता विकसी सरसायन में, परि प्रेम पयोनिधि पायन में ।—ऊ. का.

५. लखपत पिंगल के अनुसार एक मात्रिक छंद विशेष जिसके प्रत्येक चरण में बीस मात्राएँ होती हैं ।

६. कोमल मुलायम । ॐ (डिं. को.)

रू० भे०—परेम, पेम ।

अल्पा०—पेमो, प्रेमो ।

प्रेमकरता–वि० [सं० प्रेमकर्त्ता] प्रीति करने वाला, प्रेमी ।

प्रेमगरविता–सं० स्त्री० [सं० प्रेमगर्विता] पति के अनुराग का अहंकार रखने वाली नायिका ।

प्रेमजळ–सं० पु० [सं० प्रेमजल] प्रेम के कारण नेत्रों से निकलने वाला जल, प्रेमाश्रु ।

प्रेमनांनो–सं० पु० [सं० प्रेम+राज० नांनो] माता का नाना ।

प्रेमनांनांणो–सं०पु० [सं० प्रेम+राज० नांनांणो] माता का ननिहाल ।

प्रेमपात्र–वि० [स०प्रेमपात्रं] १. जिससे प्रेम किया जाय ।

२. प्रेम करने योग्य ।

प्रेमपास–सं० पु० [सं० प्रेमपाश] प्रेम का बंधन ।

प्रेमभक्ति–सं० पु० [सं०] बहुत प्रेम के साथ की जाने वाली श्रीकृष्ण की भक्ति ।

प्रेमभांणजो, प्रेमभांणेज–सं०पु० [सं०प्रेमन्+राज०भांणेज] १. भानजे का सौतेला भाई ।

२. भानजी का पुत्र ।

प्रेमरस–सं० पु० [सं०] प्रेम का आनन्द, प्रेम का आस्वादन ।

रू० भे०—पेमरस ।

प्रेमल–सं०स्त्री०—१. मीरां बाई का जन्म का नाम ।

२. प्रत्येक चरण में ३२ मात्रा का मात्रिक छंद विशेष । (ल. पिं.)

प्रेमलक्षणाभक्ति—सं० स्त्री० यौ० [सं०] देखो 'प्रेमभक्ति' ।

प्रेमलेसा, प्रेमलेस्या–सं० स्त्री० [सं० प्रेमलेश्या] वह वृत्ति जिसके फल-स्वरूप मनुष्य विद्वान, दयालु, विवेकी होता है तथा निस्वार्थ भाव से सबसे प्रेम करता है । (जैन)

प्रेमवारि, प्रेमवारी–सं० पु० [सं०] देखो 'प्रेमजळ' ।

प्रेमातुर–वि० [सं०] प्रेम विह्वल, प्रेम से व्याकुल ।

प्रेमालाप–सं० पु० [स०] १. प्रेम पूर्वक होने वाला वार्त्तालाप ।

२. प्रेम संबंधी बातचीत ।

प्रेमास्रु–सं०पु० [सं०प्रेमाश्रु] अधिक प्रेम के कारण नेत्रों से बहने वाला जल ।

वि० वि०—प्रेमास्रु दो अवस्थाओं में प्रकट होते है । प्रथम—चिरकाल के वियोग के बाद नायक नायिका का मिलन हो, द्वितीय—नायक नायिका के बीच किसी गलत फहमी के कारण चल रहे झगड़े के अन्त में समझौते के समय । यह सयोग शृंगार की अवस्था होती है ।

प्रेमास्वारथ–सं० स्त्री० [सं० स्वार्थ+प्रेमा] वेश्या, गणिका । (अ मा.)

प्रेमी–वि० [सं० प्रेमिन्] प्रेम करने वाला, अनुरागी, आसक्त ।

सं० पु०—मित्र, दोस्त । (अ.मा)

रू० भे०—परेमी ।

प्रेमो—देखो 'प्रेम' (अल्पा, रू. भे.)

उ०—अधिक द्रव्य खरचइ तिहां, पात्र पोसइ बहु प्रेमो जी ।
—स. कु.

प्रेयसी–वि० [सं०] १. वह स्त्री जिसके साथ उसका प्रेमी (पुरुष) अत्यधिक प्रेम करता हो, प्रेमिका ।

२. स्त्री, भार्या ।

३. हरीतकी, हर्रे । (नां. मा.)

रू० भे०—प्रहसी ।

प्रेरक, प्रेरक्क–वि० [सं० प्रेरक] प्रेरणा देने वाला, प्रवृत्त करने वाला, प्रेरित करने वाला । उ०—१. अचल अखड अनंत अजनमा एकातीत अनूप । प्रेरक साक्षी द्रस्टा कोई, वोई सुखरांम स्वरूप ।
—स्रीसुखरांम जी महाराज

उ०—२. परमापति सागति प्रेरक की, हहराय थके मति हेरक की ।—ऊ. का.

उ०—३. अहराज किरणि जिम वांणि ग्रंथ, प्रेरक्क सकति कवि रसण पंथ ।—सू. प्र.

प्रेरणा–सं० स्त्री० [सं०] १. किसी को किसी कार्य में प्रवृत करने या लगाने की क्रिया ।

२. सहसा मन में जागृत कोई विचार या भावना जिसके द्वारा कोई निश्चित निर्णय लिया जा सके ।

३. किसी व्यक्ति या क्षेत्र द्वारा कोई कार्य करने अथवा किसी विषय पर विचार करने के लिए प्राप्त होने वाला संकेत,भाव अथवा विचार ।

४. दबाव ।

रू० भे० —परेरणा ।

प्रेरणारथकक्रिया—सं० स्त्री० [सं० प्रेरणार्थक क्रिया] व्याकरण में क्रिया के व्यापार के सम्बन्ध में सूचित होने वाला क्रिया का वह रूप जो किसी की प्रेरणा से कर्त्ता के द्वारा हुआ हो ।

ज्यूं०—पढ़वाड़णौ, पढ़वावणौ ।

प्रेरणौ, प्रेरबौ—क्रि० स० [सं० प्रेरणं] १. ढकेलना, गति देना ।

उ०—आंगण माहें जळ छै । सु पवन को प्रेरियो चालै छै ।

—वेलि टी.

२. भेजना । उ०—१. दिस अरट खबर कज खबरदार,प्रेरया सिद्ध गुटका प्रकार ।—सू. प्र.

३. चलाना, फेंकना । उ०—१. परंतु प्रथ्वीराज रौ मत्री उण रौ इक रूप इंद्रजाळ रा उद्घंघन में न आयौ र स्रावक रा प्रेरिया समस्त ही फंद जांण लिया ।—वं. भा.

४. प्रेरित करना । उ०—जठै गजारूढ़ चालुक्यराज सांमुहो धकाय अळाव धकता लोयण मिळाय आप रा पखरैतां नूं प्रेरण रै काज अनेक प्रसंसा रा प्रपच भणियौ ।—वं. भा.

प्रेरणहार, हारौ (हारी), प्रेरणियौ—वि० ।

प्रेरिओड़ौ, प्रेरियोड़ौ, प्रेरयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

प्रेरीजणौ, प्रेरीजबौ—कर्म वा० ।

पेरणौ, पेरबौ—रू० भे० ।

प्रेरणिका—सं०स्त्री० [सं०] बैल हांकने की लकड़ी । उ०—पाणां प्रेरणिका पापल पुचकारैं । बापू बापू कर थापल बुचकारै ।—ऊ. का.

प्रेरित, प्रेरियोड़ौ—भू० का० कृ० [सं० प्रेरित] १. प्रेरित किया हुआ. २. ढकेला हुआ, गति दिया हुआ. ३. भेजा हुआ. ४. चलाया हुआ, फिराया हुआ ।

(स्त्री० प्रेरियोड़ी)

प्रेस—सं० पु० [अं०] १. समाचारपत्र, पुस्तकें आदि छापने की कल या यंत्र ।

२. छापाखाना, मुद्रणालय ।

प्रेसक—वि० [सं० प्रेषक] १. भेजने वाला ।

२. प्रस्तुत करने वाला ।

प्रेसमेन—सं० पु० [अं०] छापे की कल चलाने वाला व्यक्ति ।

प्रेसिडेंट—सं० पु० [अं०] १. राष्ट्रपति । २. अध्यक्ष । ३. सभापति ।

प्रेसित—वि० [सं० प्रेषित] १. भेजा हुआ, चलाया हुआ ।

२. प्रस्तुत किया हुआ ।

प्रेहसी—देखो 'प्रेयसी' (रू. भे.) (अ. मा.)

प्रेहा—सं० स्त्री० [सं० प्र+इहा] आकांक्षा, अभिलाषा, कामना, इच्छा ।

उ०—'ऊदौ' 'खेतल' 'मधकर' एहा । 'पीथावत' पत कांम स-प्रेहा ।

—रा. रू.

प्रैंतीस—देखो 'पैंतीस' (रू. भे.)

प्रैत—देखो 'प्रेत' (रू. भे.)

प्रैतकरम—देखो 'प्रेतकरम' (रू. भे.)

उ०—प्रैतकरम कीन्हां सूं पैंला, और वैत नहिं आयौ । देवकुंड नण रैत भूंड द्रग, दैनकुंड दरसायौ ।—ऊ. का.

प्रैळाद—देखो 'प्रहलाद' (रू. भे.)

प्रोंच—देखो 'पुणचौ' (मह., रू. भे.)

उ०—बांधिया चिहूं करै बाजूबंध, घर आगळि बहुरखा घर । कांमण हाथ विराजइ कांकण, प्रोंचां ऊपर अवज पर ।

—महादेव पारवती री वेलि

प्रोंचौ—देखो 'पुणचौ' (रू. भे.)

प्रोग्राम—सं० पु० [अं० प्रोग्रेम] १. होने वाले कार्यों का सुनिश्चित क्रम ।

२. कार्यक्रम सूचक पत्र ।

प्रोढ़—देखो 'प्रौढ़' (रू. भे.)

प्रोढ़ा—देखो 'प्रौढ़ा' (रू. भे.)

उ०—१. मुगधा मध्या नै मोडा मिळ जावै । पढ़ पढ़ प्रारथना प्रोढ़ा पिळजावै ।—ऊ. का.

उ०—२. इसी-इसी खोडस वरसां री मुगधा, मध्या, प्रोढ़ा रूप रो निध्यांन ।—रा. सा. सं.

प्रोढ़ौ—देखो 'प्रौढ़' (अल्पा., रू. भे.)

प्रोंणौ, प्रोंबौ—देखो 'पोणौ, पोंवौ' (रू. भे.)

उ०—ताहरां भाटिये रावजी रौ माथौ वाढ़ि वांस में प्रोयौ ।

—नैणसी

प्रोत—१. देखो 'पोत' (रू. भे.)

उ०—पती जुद्ध में दुसमणां री फौजां रा हाथी मारनै तो मोतियां रा ढिगला दिया है, जिण रा प्रोत वा पोत चीड़ां नै हाथियां रै दांतां रा चूड़ा मोल मांगण री कांम नहीं ।—वी. स. टी.

२. देखो 'पुरोहित' (रू. भे.)

उ०—पुमकरणौ विरांमण रिणछोड़दास वेरौ १ रांमेस्वर जी रा मिंदर कनै करायौ संमत १७ में, तिको प्रोत जी रौ कुवौ वाजै है ।

—नैणसी

प्रोत्साहन—सं० पु० [सं०] १. अतिशय-उत्साह, उमंग ।

२. हिम्मत ।

प्रोथ—सं०पु०[सं०प्रोथम्,प्रोथथः] १. घोड़े या सूअर का नथूना । (डि.को.)

२. चूतड़, नितंब। (डि. को.)

३. कटि प्रदेश। (डि. को.)

प्रोथी-सं० पु० [सं० प्रोथिन्] घोड़ा। (डि. को.)

प्रोयणौ, प्रोयबौ—देखो 'पोणौ, पोबौ' (रू. भे.)

उ०—वधियौ महवेचौ 'विजौ' सारां सूं अवसांण। खेंग लसक्कर खांन रा प्रोया सेल प्रमांण।—रा. रू.

प्रोयत—देखो 'पुरोहित' (रू. भे.)

उ०—मीठीनाडी तळाव नैं बाग कमठौ प्रोयत जसकरण हस्ते हुवौ।—नैणसी

(स्त्री० प्रोयतण, प्रोयतांणी)

प्रोयोड़ौ—देखो 'पोयोड़ौ (रू. भे.)

(स्त्री० प्रोयोड़ी)

प्रोळ—देखो 'पौळ' (रू. भे.)

उ०—हिवै हाथी मेडतियां रै गयौ। ताहरां मेडतियां हाथी रा घाव वाधा। हाथी नूं मांहे आंणै सु प्रोळ में हाथी मावै नहीं।
—नैणसी

प्रोळबारट, प्रोळबारहठ—देखो 'पौळबारहठ' (रू. भे.)

उ०—तिण रै प्रोळबारट रवौ सुरतांणियौ हुतौ। तिण रै वैर चारण नागही देवी हुती।—नैणसी

प्रोळि—देखो 'पौळ' (रू. भे.)

उ०—जीयै घड़ी उदैराव रो जनम हूवौ तीयै घड़ी प्रोळि रा कांगरा गिड़ पड़्या। ढोलीयै रा साल चार भागा।
—देवजी बगड़ावत री वात

प्रोळियौ—देखो 'पौळियौ' (रू. भे.)

उ०—सारी प्रोळि रा प्रोळियां नूं हुकम कर राखो, म्हे जिण प्रोळि आवां म्हांनूं उण प्रोळि मांहे असवार १०० एक वीद आवण देज्यौ।
—नैणसी

प्रोळी—देखो 'पौळ' (रू. भे.)

प्रोवणौ, प्रोवबौ—देखो 'पोणौ, पोबौ' (रू. भे.)

उ०—ढोला थे मोती म्हे लाल, ढोला हेकी नै नथड़ी म्हें दोनूं प्रोविया।—लो. गी.

प्रोवणहार, हारौ (हारी), प्रोवणियौ—वि०।

प्रोविओड़ौ, प्रोवियोड़ौ, प्रोव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

प्रोवीजणौ, प्रोवीजबौ—कर्म वा०।

प्रोवियोड़ौ—देखो 'पोयोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० प्रोवियोड़ी)

प्रोसितपतिका-सं० स्त्री० [सं० प्रोषितपतिका] वह स्त्री जो अपने पति के विदेश गमन के कारण उसके वियोग में विह्वल, विकल या दुखी हो, प्रोषित-नायिका।

प्रोह-सं० पु० [सं०] १. हाथी का पैर। (डि. को.)

२. देखो 'पौ' (रू. भे.)

उ०—अमी कोस हूंता खड़ आयौ, 'गजग' कळोधर कुंवर-गुर। लसकर मेले सहर लूटियौ, प्रोह फाटां साहजांपुर।
— महाराजा अभयसिंह रौ गीत

प्रोहत, प्रोहित, प्रोहित्त—देखो 'पुरोहित' (रू. भे.)

उ०—१. वैसाख सुदि १ डेरौ पेवड़ै प्रोहतां रै, बाहळौ वहतां माहे कून कर गया।—नैणसी

उ०—२. स्रीमुनायक जी रो मिंदर रावजी गांगा जी री वार में प्रोहत मूळै करायौ।—नैणसी

उ०—३. राव मालदे जी सूर पातसाह कनै एक प्रोहित नै एक वरजांग दोनूं ही नूं परधांन मेलिया था।—नैणसी

(स्त्री० प्रोहितण, प्रोहितांणी)

प्रौंचाळ—देखो 'पौचाळौ' (मह., रू. भे.)

उ०—'करनाजळ' रिण काळ, 'जैत' कळोधर 'जैत' जिम। सारां पहिलौ 'सूज' उत, पड़िओ लटि प्रौंचाळ।—वचनिका

प्रौंचाळौ—देखो 'पौचाळौ' (रू. भे.)

उ०—'कमा' हरौ 'गिरवर' रिण काळौ, 'पीथलिआ' जांवळि प्रौंचाळौ 'ऊदौ' 'जगौ' किआ वे आगै, जोड़ि 'करण' जैता' छळ जागै।
—वचनिका

(स्त्री० प्रौंचाळी)

प्रौ—देखो 'परौ' (रू. भे.)

प्रौचाळौ—देखो 'पोचाळौ' (रू. भे.)

(स्त्री० प्रौचाळी)

प्रौढ़-वि० [सं०] (स्त्री० प्रौढ़ा) १. जो पूर्णतया बढ़कर या विकसित होकर अपनी पराकाष्ठा तक पहुंच चुका हो, पूर्ण बढ़ा हुआ।

२. वह (व्यक्ति) जिसने अपनी प्रारंभिक आयु पार करके मध्यावस्था प्राप्त कर ली हो।

३. बलवान, शक्तिशाली। ४. दृढ़, पक्का, मजबूत।

५. चतुर, चालाक।

रू० भे०—प्रोढ़।

अल्पा०—प्रौढ़ौ, प्रौढौ।

६. देखो 'प्रौढ़ा' (रू. भे.)

उ०—संकोच होवइ प्रौढ़ रमणी, संग घी लघु कंत ज्युं। तिम कंत तुम चउ वेस देखी, मइं बीभत्स पणुं भजुं। ए प्रौढ़ रयणी सयण सेजइं, एकलां किम जावए। हेमंत रितु मइं प्रिउ उच्छगइ, खेलवुं मन भाव ए।—वि. कु.

प्रौढ़ता-सं०स्त्री० [सं० प्रौढ़+रा०प्र०ता] प्रौढ़ होने का भाव, प्रौढ़त्व।

प्रौढ़ा-सं० स्त्री० [सं०] १. वह स्त्री जिसको युवावस्था प्राप्त हुए बहुत समय व्यतीत हो चुका हो, अधिक वयस वाली स्त्री।

२. साहित्य में वह नायिका जो कांम कला आदि में पूर्ण दक्ष हो। साधारणतः ३० से ५० वर्ष तक की आयु वाली स्त्री प्रौढ़ा मानी जाती है। उ०—दिन जेही रिणी रिणाई दरसणि, क्रमि क्रमि लागा

संकुडिरिण । नीठि छूडै आकास पोस निसि, प्रौढ़ा करखरिण पंगुरिरिण ।—वेलि

वि० वि०—भाव प्रकाश के अनुसार इस अवस्था की स्त्री वर्षा और वसंत ऋतु में संभोग करने योग्य होती है । साहित्य में इसे रति-प्रीता और आनन्द-संभोगिता ये दो भेद माने गये हैं । मान-भेदानुसार धीरा, अधीरा और धीराधीरा ये तीन भेद तथा स्वभावानुसार अन्य सुरत-दुखिता, वक्रोक्ति-गर्विता और मानवती ये तीन भेद माने गये है । इसके अतिरिक्त स्वकीया, परकीया और सामान्या ये तीन भेद भी और हैं ।

३. वह गाथा छन्द जिसमें भगरण का प्रयोग बहुत हुआ हो ।

उ०—भगरण बहुत सौ प्रौढ़ा भंरणजै, गरण बोह विप्र वरधका गिरणजै ।—र. ज. प्र.

रू० भे०—प्रउढा, प्रऊढ़ा, प्रोढा, प्रौढ ।

प्रौढ़ा-अधीरा—सं० स्त्री० [सं०] नायक में विलास सूचक चिह्न देखकर प्रत्यक्ष कोप करने वाली नायिका ।

प्रौढ़ाधीरा—सं० स्त्री० [सं०] नायक में विलास सूचक चिह्न देखकर प्रत्यक्ष कोप न करके व्यंग में कोप करने वाली नायिका ।

प्रौढ़ाधीराधीरा—सं० स्त्री० [सं०] नायक में पर-स्त्री गमन के चिह्न देखकर कुछ व्यंग में और कुछ प्रत्यक्ष में कोप करने वाली नायिका ।

प्रौढ़ोक्ति—सं० स्त्री० [सं०] एक प्रकार का अलंकार जिसमें किसी कार्य के उत्कर्ष का ऐसा कारण कल्पित किया जाय जो वास्तव में न हो । (साहित्य)

प्रौढ़ौ—देखो 'प्रौढ़' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—आसालूध अजैपुर आवी, जुग सहू जोवति जुपाजुई । लसियौ 'हाजन' प्रौढ़ौ लाडो, अकबर फौज सचींत हुई ।—दूदौ

प्रौळ, प्रौळि—देखो 'पौळ' (रू. भे.)

उ०—१. एम गढ़ निज प्रौळ आवै, गांन सहचर भून गावै । कुंभ सनमुख निजर कीधौ, लखै छत्रपति वांद लीधौ । —सू.प्र.

उ०—२. सु तळाई जांगळू री प्रौळ रै मुंहडै आगै करावण मतै छै । —नैणसी

उ०—३. भटनेर प्रौळि हूंता, भटक्कि, कांधलां राउ पइठउ कटक्कि । 'खेतल' रिणि खेसइ खुरासांण, जुध धसइ मत गइ छूह जांण ।—रा. ज. सी.

प्रौळियौ, प्रौलियौ—देखो 'पौळियौ' (रू.भे.)

उ०—लंपट तजि प्रौलियौ, निगुरण प्रभु नीलज नारी ।—घ.व.ग्रं.

प्रौस्ठपदी—सं० स्त्री० [सं० प्रौष्ठपदी] भादौं मास की पूर्णिमा ।

प्लक्ष—सं० पु० [सं०] १. पुराणानुसार सात महाद्वीपों में से एक ।

२. एक प्राचीन तीर्थ का नाम ।

प्लवंग—सं० पु० [सं० प्लवंगः] १. वंदर, वानर ।

२. घोड़ा, अश्व । उ०—जूजूइ जाति-तणा घणा, प्लवंग न लब्भइ पार । वेगि वहंता वाचनइ, हणहण घण हींसार ।—मा. कां. प्र.

३. हिरण ।

रू० भे०—पलंव, पलंवंग, पलवंग, पलवंग, पलवंगम, पलवग, प्लवग ।

प्लवंगम—सं० पु० [सं०] १. एक छंद विशेष जिसके प्रत्येक चरण में ८ व १३ के विराम से २१ मात्राएँ होती है ।

२. वानर ।

३. मेंढ़क ।

रू० भे०—पवंग, पवंगम, फूलवंगम ।

प्लवंगेस—सं० पु० [सं० प्लवंग+ईश] हनुमान ।

प्लव—सं० पु० [सं० प्लवः] चाण्डाल । (डिं. को.)

प्लवग—देखो 'प्लवंग' (रू.भे.)

प्ला वत—वि० [सं०] भरा हुआ ।

रू० भे०—पलावित ।

प्लीहा—सं० स्त्री० [सं०] तिल्ली नामक रोग । (अमरत)

प्लुत—सं० पु० [सं०] १. घोड़े की चाल ।

२. स्वर का एक भेद जिसके उच्चारण में साधारण से तिगुना समय लगता है । (व्याकरण)

३. तीन मात्राओं का ताल । (संगीत)

प्लेग—सं० पु० [अं०] एक भयंकर संक्रामक रोग जो प्रायः सर्दी की मौसम में उत्पन्न होकर फैलता है ।

रू० भे०—पलेग ।

प्लेट—सं० पु० [अं०] तश्तरी, रिकाबी ।

रू० भे०—पलेट ।

प्लेटफारम—सं० पु० [अं० प्लेटफार्म] रेलवे स्टेशन पर रेल की पटरी के समीप बना हुआ जमीन से ऊंचा समतल लम्बायमान चबूतरा ।

रू० भे०—पलेटफारम ।

प्लेटिनम—सं० पु० [अं०] सोने से भी अधिक मूल्यवान सफेद रंग की एक बहुत कठोर धातु ।

रू०भे०—पलेटिनम ।

प्लोट—सं०पु० [अं०] एक निश्चित भू भाग ।

रू० भे०—पलोट ।

फ

फ—देवनागरी वर्णमाला का २२ वां व्यंजन एवं 'प' वर्ग का दूसरा वर्ण जो भाषा विज्ञान एवं व्याकरण की दृष्टि से महाप्राण, अघोष, दन्तोष्ठ्य स्पर्श व्यंजन का संकेतक है।

फंक—देखो 'फांक' (रू. भे.)

उ०—धारा निसंक वंक धंस, अरांण मचा अतंक। फंक-फंक व्है कट पड़ै, रंवड कद व्है रंक।—रेवतसिंह भाटी

फंकणौ, फंकवौ—देखो 'फाकणौ, फाकवौ' (रू.भे.)

उ०—सांफळा मिळै सांफै तुरत, फुरत करै दळ फंकिया। मेछांण वंस तपस्या घटी, ढहसीजे वळि ढूकिया।—गा. वचनिका

फंकणहार, हारौ (हारी), फंकणियौ—वि०।

फंकिओड़ो, फंकियोड़ो, फंकयोड़ो—भू० का० कृ०।

फंकीजणौ, फंकीजवौ—कर्म वा०।

फंकियोड़ो—देखो 'फाकियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० फंकियोड़ी)

फंकी—सं० पु० [देशज] १. मोठ, मूंग, ग्वार आदि का महीनतम चूर्ण जिसके शरीर में लगने से खुजली चलने लगती है। (शेखावाटी)

२. देखो 'फाकी' (रू. भे.)

फंग—सं० पु०[?] एक प्रकार का पौधा विशेष। उ०—जाई नई जंबीर दाड़िम, मृगळणि गोश्रंख। कंटाळि आसंधि बावची, तुळसी मिझंन्यौ फंग।—रुक्मणी मंगळ

फंगड़ियौ—सं० पु० [देशज] रहँट के उस आड़े लम्बे लट्ठे के दो भागों में से एक जिस पर बैठकर बैल हांका जाता है।

फंट—सं० पु० [सं० फांट] १. विरोध।

२. पृथकता।

फंटणौ, फंटवौ—क्रि० अ० [राज०] १. विरुद्ध होना।

२. पृथक होना। उ०—थें आज सूं ई न्यारा-न्यारा फंट जावौ।

—फुलवाड़ी

फंटणहार, हारौ (हारी), फंटणियौ—वि०।

फंटाड़णौ, फंटाड़वौ, फंटाणौ, फंटावौ, फंटावणौ, फंटाववौ

—सक० रू०।

फंटिओड़ो, फंटियोड़ो, फंटयोड़ो—भू० का० कृ०।

फंटीजणौ, फंटीजवौ—भाव वा०।

फटणौ, फटवौ—रू० भे०।

फंटाई—सं० स्त्री० [राज० फाड़णौ] १. बढ़ई का लकड़ी छीलने का औजार।

२. पृथकता।

फंटाड़णौ, फंटाड़वौ—देखो 'फंटाणौ' फंटावौ, (रू.भे.)

फंटाड़णहार, हारौ (हारी), फंटाड़णियौ—वि०।

फंटाड़िओड़ो, फंटाड़ियोड़ो, फंटाड़योड़ो—भू० का० कृ०।

फंटाड़ीजणौ, फंटाड़ीजवौ—कर्म वा०।

फंटाड़ियोड़ो—देखो 'फटायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० फंटाड़ियोड़ी)

फंटाणौ, फंटावौ—क्रि० स० [राज० फंटणौ] १. पृथक करना, अलग करना।

उ०—चूरू कांनीं पधारचा जद आगै चंद्रभांण जी तीलोकचंद जी पहिलां सिवरांमदास जी नै, संतोखचंद जी नै फंटायनै आहार पांणी भेलो कर लियो।—भि. द्र.

२. विरुद्ध करना।

फंटाणहार, हारौ (हारी), फंटाणियौ—वि०।

फंटायोड़ो—भू० का० कृ०।

फंटाईजणौ, फंटाईजवौ—कर्म वा०।

फंटाड़णौ, फंटाड़वौ, फंटावणौ, फंटाववौ—रू०भे०।

फंटायोड़ो—भू० का० कृ०—१. पृथक किया हुआ. २. विरुद्ध किया हुआ.

(स्त्री० फंटायोड़ी)

फंटावणौ, फंटाववौ—देखो 'फंटाणौ, फंटावौ' (रू.भे.)

फंटावणहार, हारौ (हारी), फटावणियौ—वि०।

फंटाविओड़ो, फंटावियोड़ो, फंटाव्योड़ो—भू० का० कृ०।

फंटावीजणौ, फंटावीजवौ—कर्म वा०।

फंटावियोड़ो—देखो 'फंटायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री० फंटावियोड़ी)

फंटियोड़ो—भू० का० कृ०—१. पृथक हुवा हुआ. २. विरुद्ध हुवा हुआ.

(स्त्री० फटियोड़ी)

फंड—सं० पु० [अं०] १. किसी निश्चित कार्य को करने के लिए एकत्रित की जाने वाली सम्पत्ति या धन, कोश।

ज्यूं०—सुरक्षाफंड।

[देशज] २. आडंबर, ढोंग।

फंडर—देखो 'फांडर' (रू भे.)

फंणाकार—देखो 'फणाकार' (रू.भे.)

उ०—जिसी सिंधवी राग काळी जगायौ, उपाड़ै फंणाकार द्रब्बार आयौ। फणाकार झाटकतै पूंछ फेरी, घणौ घातियौ सांकड़ै सांम घेरी।—ना. द.

फंद—देखो 'फदौ' (मह., रू. भे.)

उ०—१. तनै कहूं समझाय, मत-मंद जग फंद तज। अरप तन-मन सुध न वेग सुणसी अरज।—र. ज. प्र.

उ०—२. देखै फिरती दूतियां, सूतौ घूंणै सीस। फंसियौ कांमण फंद में, रसियौ करै न रीस।—बां. दां.

उ०—३. यी वरखा रित बौळवी, वीती सरद अदुंद। हिम-रुत

आधी वीच त्यां, फेर प्रगट्टचो फंद ।—रा. रू.

उ०—४. थांनै कीं तल्लो-मल्लो है तो म्हनै उण री काळजो लायनै दौ; जिण सूं म्हारै जुरा-मरण री फंद कटै अर म्हैं आप रै साथै ताजिंदगी अमर सुख री मौज मांणू ।—फुलवाड़ी

उ०—५. रांणी मूंडो उतारनै कह्यो—म्हारी बदनांमी री तो अवै नीं कोई छेह है नी कोई पार ! नित नवी नवी बातां उडैला । वांरी बोझो म्हारा सूं तो झेलणो दोरो है । मर जावूं तो अ बदनांमी रा फंद कटै ।—फुलवाड़ी

मुहा०—फंद कटणो—समाप्ति होना, छुटकारा पाना ।

फंदणो, फंदबो–क्रि०अ० [देशज] १. बंधन में पड़ना, आफत में पड़ना । उ०—पण नी हजारूं वरसां सुं मिनख इण जाळ में फंदियोड़ो है अर भगवांन हाल तक उण नै सुमत नीं दी ।—फुलवाडी

२. घोखे में आना, जाल में पड़ना । उ०—नाई नै तो आप री अेक ई दांव भरै पड़तो नीं दीस्यो । अवै करै तो कांई करै । माथै में खाज खिणतो कैवण लागो—अठै थांरै कुत्तां सूं तो धरमेलो व्हैगो पण राजा जी रै पाखती गियां माथा में जूता त्यार है । म्हैं तो इण कांम में भूंडो फंदियो ।—फुलवाड़ी

३. झगड़े या टंटे में पड़ना ।

४. कुत्ते की जाति के प्राणियों की जननेन्द्रियों का संभोग के बाद कुछ समय तक आपस में फंसा रहना ।

फंदणहार, हारौ (हारी), फंदणियौ—वि० ।

फंदाड़णो, फंदाड़बो, फंदाणो, फंदावो, फंदावणो, फंदाववो —सक० रू० ।

फंदिओड़ो, फंदियोड़ो, फंदयोड़ो—भू० का० कृ० ।

फंदीजणो, फंदीजबो—भाव वा० ।

फंदाड़णो, फंदाड़बो—देखो 'फंदाणो, फंदावो' (रू.भे.)

फंदाड़णहार, हारौ (हारी), फंदाड़णियौ—वि० ।

फंदाड़िओड़ो, फंदाड़ियोड़ो, फंदाड़योड़ो—भू० का० कृ० ।

फंदाड़ीजणो, फंदाड़ीजबो—कर्म वा० ।

फंदाड़ियोड़ो—देखो 'फंदायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री० फंदाड़ियोड़ी)

फंदाणो,फंदावो–क्रि०स० [देशज] १. वन्धन में डालना,आफत में डालना। उ०—मन में दोनूं जणा राजी व्हैता व्हैला के दीवांण जी नै नांमी फंदाया ।—फुलवाड़ी

२. घोखे में डालना, जाल में डालना ।

३. झगड़े या टण्टे में डालना ।

४. कुत्ते की जाति के प्राणियों में आपस में संभोग कराना ।

फंदाणहार, हारौ (हारी), फंदाणियौ —वि० ।

फंदायोड़ो—भू० का० कृ० ।

फंदाईजणो, फंदाईजबो—कर्म वा० ।

फंदाड़णो, फंदाड़बो, फंदावणो, फंदाववो—रू० भे० ।

फंदायोड़ो–भू०का०कृ०—१. बन्धन में डाला हुआ,आफत में डाला हुआ. २. घोखे में डाला हुआ, जाल में फंसाया हुआ. ३. झगड़े या टण्टे में फसाया हुआ. ४. कुत्ते-कुत्ती या इस जाति के प्राणियों को संभोग कराया हुआ.

(स्त्री० फंदायोड़ी)

फंदावणो, फंदाववो—देखो 'फंदाणो, फंदावो' (रू. भे.)

फंदावणहार, हारौ (हारी,) फंदावणियौ —वि० ।

फंदाविओड़ो, फंदावियोड़ो, फंदाव्योड़ो—भू०का०कृ० ।

फंदावीजणो, फंदावीजबो—कर्म वा० ।

फंदावियोड़ो—देखो 'फंदायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री० फंदावियोड़ी)

फंदियोड़ो–भू०का०कृ०—१. वन्धन में पड़ा हुआ, आफत में पड़ा हुआ. २. जाल में पड़ा हुआ,घोखे में पड़ा हुआ. ३. झगड़े या टण्टे में पड़ा हुआ, उलझन में पड़ा हुआ. ४. कुत्ते-कुत्ती या इस जाति के प्राणियों का संभोगा-वस्था में फंसा हुआ.

(स्त्री० फंदियोड़ी)

फंदो–सं० पु० [देशज] १. वन्धन । उ०—छोड़ दिया सब घर फंदा । स्रीवीर तणी माता 'देवानंदा' ।—जयवांणी

क्रि० प्र०—आणो, छूटणो, पड़णो, लागणो ।

२. जाल, उलझन । उ०—नहीं ज्यां लघु दीरघ कोई, सदा सुद्ध स्वरूप निरमोई । सोई सुखराम रहित धंदा, नहीं ज्यां बंध मुक्त फंदा ।—स्रीसुखराम जी महाराज

क्रि० प्र०—फंसणो ।

३. दु.ख, कष्ट ।

क्रि० प्र०—टूटणो, पड़णो ।

४. झगड़ा, युद्ध ।

क्रि० प्र०—पड़णो ।

५. उपद्रव, उत्पात ।

६. टटा ।

७. पर-पुरुष या पर-स्त्री के प्रेम में पड़ना ।

८. रस्सी आदि में एक विशेष प्रकार की गांठ लगाकर बनाया जाने वाला घेरा । उ०—चौघरी फंदो कीं ढीलो करियौ । कह्यो—अठै कांई खावण नै वळियौ ।—फुलवाड़ी

क्रि० प्र०—खुलणो, खोलणो, देणो, बणाणो, लगाणो, लागणो ।

मह०—फंद ।

फंफणो, फंफबो–क्रि० अ० [देशज] प्रयत्न करना, परिश्रम करना । उ०—मा-बाप घणा-ई फंफिया, थारै-म्हारै हिड़क्यां रै हाथ लगाया, गैणां-गांठे अर नगदी री ई लोभ देखायौ पण आंधी छोरी री कोई हाथ झालण नै त्यार को हुयौ नी ।—वरसगांठ

फंफणहार, हारौ (हारी), फंफणियौ—वि०।
फंफाड़णौ, फफाड़बौ, फफाणौ, फंफावौ, फंफावणौ, फंफावबौ —सक० रू०।
फंफिश्रोड़ौ, फफियोड़ौ, फंफयोड़ौ—भू०का०कृ०।
फंफीजणौ, फफीजबौ—भाव वा०।

फंफाड़णौ, फंफाड़बौ—देखो 'फंफाणौ, फंफावौ' (रू. भे.)
फंफाड़णहार, हारौ (हारी), फंफाड़णियौ—वि०।
फफाड़िश्रोड़ौ, फंफाड़ियोड़ौ, फंफाड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।
फफाड़ीजणौ, फंफाड़ीजबौ—कर्म वा०।

फंफाड़ियोड़ौ—देखो 'फंफायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० फफाड़ियोड़ी)

फंफाणौ, फंफावौ-क्रि०स० [देशज] १. प्रयत्न कराना। २. कष्ट देना।
फंफाणहार, हारौ (हारी), फंफाणियौ—वि०।
फंफायोड़ौ—भू०का०कृ०।
फंफाईजणौ, फंफाईजबौ—कर्म वा०।
फंफाड़णौ, फंफाड़बौ, फंफावणौ, फंफावबौ—रू०भे०।

फंफायोड़ौ-भू० का० कृ०—१. प्रयत्न कराया हुआ. २. कष्ट दिया हुआ.
(स्त्री० फंफायोड़ी)

फंफावणौ, फंफावबौ—देखो 'फंफाणौ, फंफावौ' (रू. भे.)
फंफावणहार, हारौ (हारी), फंफावणियौ—वि०।
फंफाविश्रोड़ौ, फंफावियोड़ौ, फंफाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।
फंफावीजणौ, फंफावीजबौ—कर्म वा०।

फफावियोड़ौ-भू०का०कृ०—देखो 'फंफायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० फंफावियोड़ी)

फंफियोड़ौ-भू०का०कृ०—१. प्रयत्न किया हुआ. २. कष्ट पाया हुआ.
(स्त्री० फफियोड़ी)

फंफेड़णौ, फंफेड़बौ-क्रि०स० [देशज] १. तीर मारना, तीर घुसाना।
उ०—श्रोदी कुडि उलंघि, आयौ जिण दिसि आहेड़ी। तेण चलाया तीर, फाल मांहि टाल फंफेड़ी।—ध. व. ग्रं.
२. किसी प्राणी अथवा पदार्थ को पकड़ कर खूब हिलाना या झटका देते हुए इधर-उधर करना, झकझोरना।
उ०—१. फोथळ ज्यूं थूं उणमणी ज्यूं ढीलौ थारौ गात, के गिंडक फंफेड़ियौ के वाई—सा घाल्यौ हाथ।—फुलवाड़ी
उ०—२. अठै म्हारी धरम-बैन श्रेक मिन्नी रै'वै। म्हारै टूंच मारनै तौ देख, पछै थारी कांई बात विगड़ै। थनै फंफेड़ फफेड़नै मार न्हाकैला।—फुलवाड़ी
फंफेड़णहार, हारौ (हारी), फंफेड़णियौ—वि०।
फंफेड़िश्रोड़ौ, फंफेड़ियोड़ौ, फंफेड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।
फफेड़ीजणौ, फंफेड़ीजबौ—कर्म वा०।

फंफेड़ियोड़ौ-भू०का०कृ०—१. तीर मारा हुआ, तीर घुसाया हुआ.
२. किसी प्राणी या पदार्थ को पकड़ कर खूब हिलाया हुआ या झटका देकर इधर-उधर किया हुआ, झकझोरा हुआ.
(स्त्री० फंफेड़ियोड़ी)

फंवड़ी—१. देखो 'पांमड़ी' (रू.भे.)
२. देखो 'पूंगड़ी' (स्त्री०)

फंवड़ौ—देखो 'पूंगड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० फंवड़ी)

फंवी—देखो 'फुंवी' (रू.भे.)

फंवार-सं० स्त्री०—१. फंवारे से निकलने वाली धारा।
उ०—उन मुन ध्यांन अखंड धुन, वरसत सब्द फंवार। बिना चोंच एक हंसलो, पीवै त्रिवेणी-द्वार।—श्रीहरिरांम जी महाराज
२. देखो 'फंवारौ' (मह, रू. भे.)

फंवारौ-सं०पु० [अ० फव्वार:] १. वह यंत्र जिसमें से दबाव के कारण पानी बहुत बारीक बूंदों के रूप में गिराया जाता है।
२. पानी आदि का बहुत बारीक छींटा।
३. बरसात की महीन बूंदों की झड़ी।
रू०भे०—फवारौ, फव्वारौ, फुंश्रारौ, फुंवारौ, फुंहारौ, फुश्रारौ, फुवारौ, फुहारौ, फूंहारौ, फूहारौ, फोहारौ, फौआरौ, फौव्वारौ, फौहारौ।
मह०—फंवार, फुंवार, फुंहार, फुहार, फौहार।

फंसणौ, फंसबौ-क्रि०अ० [सं०पाशनं] १. नैतिक, सामाजिक, व्यवहारिक या सांसारिक बन्धन के वशीभूत होना।
उ०—सूरदास जी अटकतौ-अटकतौ जवाब देवतौ वां दिनां, म्हैं ई थोड़ौ घणौ माया-जाळ में फंसियोड़ौ हो।—फुलवाड़ी
२. किसी वस्तु का इस प्रकार किसी वस्तु में प्रवेश कर जाना कि उसका पुनः बाहर निकलना कठिन या असंभव हो।
३. किसी तीक्ष्ण पदार्थ में किसी वस्तु का उलझ जाना या अटक जाना।
ज्यूं०—तार में कपड़ौ फंसणौ, कांटां में धोतियौ फंसणौ।
४. किसी कार्य में इस प्रकार व्यस्त रहना कि उससे छुटकारा मिलना मुश्किल हो।
ज्यूं०—म्हैं कांम में बुरी तरां फंस्योड़ौ हूं।
५. मीठी-मीठी या छलपूर्ण बातों में छला जाना या धोखे में आना।
उ०—फंस गये हम मोडन फंदन में, बहुकाळ रहे तिण बंधन में।
—ऊ. का.
६. पर-पुरुष या पर-स्त्री के प्रेम में पड़ना। उ०—देखे फिरती दूतियां, सूतौ घूंणै सीस। फंसियौ कांमण फंद में, रसियौ करै न रीस।—बां. दा.

७. किसी पाश या फंदे में पडना ।
८. पशु-पक्षियों का किसी जाल में पडना
९. किसी रहस्यमयी स्थिति में हत-बुद्धि होना । उ०—राजकंवर आपरी पींडी सांमी जोयौ तौ उठै अेक ई बोटी कटिग्रोड़ी नीं दीसी । नीं लोई रिसतौ निगै आयौ अर नीं किणी घाव रौ दरद लखायौ । वौ किण माया नगरी में फंसग्यौ ।—फुलवाड़ी

फंसणहार, हारौ (हारी), फंसणियौ—वि० ।
फंसाड़णौ, फंसाड़बौ, फंसाणौ, फंसाबौ, फंसावणौ, फंसाववौ —प्रे० रू० ।
फंसिग्रोड़ौ, फंसियोड़ौ, फंस्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
फंसीजणौ, फंसीजबौ—भाव वा० ।
पसणौ, पसबौ, फसणौ, फसबौ—रू० भे० ।

फंसाड़णौ, फंसाड़बौ—देखो 'फंसाणौ, फंसाबौ' (रू. भे.)
फंसाड़णहार, हारौ (हारी), फंसाड़णियौ—भू० का० कृ० ।
फंसाड़ीजणौ, फंसाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

फंसाड़ियोड़ौ—देखो 'फंसायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० फंसाड़ियोड़ी)

फंसाणौ, फंसाबौ—क्रि०स० [राज० फंसणौ क्रि० का प्रे० रू०] १. किसी नैतिक, सामाजिक, व्यवहारिक या सांसारिक बंधन में डालना ।
२. किसी वस्तु को इस प्रकार किसी वस्तु में प्रवेश कराना कि उसको पुन: बाहर निकालना कठिन या असंभव सा हो ।
३. किसी तीक्ष्ण पदार्थ में किसी वस्तु को उलझा देना या अटका देना ।
४. किसी कार्य में इस प्रकार व्यस्त करना कि उससे छुटकारा मिलना मुश्किल हो ।
५. मीठी-मीठी या छलपूर्ण बातों में लेना, धोखे में डालना ।
६. पर-पुरुष या पर-स्त्री के प्रेम में डालना ।
७. किसी पाश या फंदे में डालना ।
८. पशु-पक्षियों को किसी जाल में बांधना या फंसाना ।
९. किसी रहस्यमयी स्थिति में हत-बुद्धि करना ।

फंसाणहार, हारौ (हारी), फंसाणियौ—वि० ।
फंसायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
फंसाईजणौ, फंसाईजबौ—कर्म वा० ।
फंसाड़णौ, फंसाड़बौ, फंसावणौ, फसावबौ, फसाड़णौ, फसाड़णौ, फसाणौ, फसाबौ, फसावणौ, फसावबौ, फावणौ, फावबौ —रू० भे० ।

फंसायोड़ौ—भू० का० कृ०—१. किसी नैतिक, सामाजिक, व्यवहारिक या सांसारिक बंधन में डाला हुआ.
२. किसी वस्तु का इस प्रकार किसी वस्तु में प्रविष्ट किया हुवा होना जिससे उसका बाहर निकलना दुष्कर या असंभव हो.
३. किसी तीक्ष्ण पदार्थ में किसी वस्तु को उलझाया हुआ या अटकाया हुआ.
४. किसी कार्य में व्यस्त किया हुआ.
५. मीठी-मीठी या छलपूर्ण बातों में लिया हुआ या धोखे में डाला हुआ.
६. पर-पुरुष या पर-स्त्री के प्रेम में वशीभूत किया हुआ.
७. किसी पाश या फंदे में डाला हुआ.
८. पशु-पक्षियों को जाल में डाला हुआ.
९. किसी रहस्मयी स्थिति में हत-बुद्धि किया हुआ.
(स्त्री० फंसायोड़ी)

फंसावणौ, फसाववौ—देखो 'फंसाणौ, फंसाबौ' (रू. भे.)
फंसावणहार, हारौ (हारी), फंसावणियौ—वि० ।
फंसाविग्रोड़ौ, फंसावियोड़ौ, फंसाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
फंसावीजणौ, फसावीजबौ—कर्म वा० ।

फंसावियोड़ौ—देखो 'फंसायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० फंसावियोड़ी)

फंसियोड़ौ—भू० का० कृ०—१. किसी नैतिक, सामाजिक, व्यवहारिक या सांसारिक बंधन में पड़ा हुआ. २. कोई वस्तु या पदार्थ किसी वस्तु में प्रविष्ट होने से इस स्थिति में हुवा हुआ कि उसका पुन: बाहर निकलना कठिन या असंभव हो. ३. किसी तीक्ष्ण पदार्थ में अटका हुआ या उलझा हुआ. (कोई पदार्थ) ४. किसी कार्य में इस प्रकार व्यस्त हुवा हुआ कि उससे छुटकारा मिलना मुश्किल हो. ५.मीठी-मीठी या छलपूर्ण बातों में आया हुआ, धोखे में पडा हुआ. ६. पर-पुरुष या पर-स्त्री के प्रेम में पड़ा हुआ. ७. किसी पाश या फंदे में पड़ा हुआ. ८. जाल में या बंधन में पड़ा हुआ. (पशु-पक्षी) ९. किसी रहस्यमयी स्थिति में हत-बुद्धि हुवा हुआ.
(स्त्री० फंसियोड़ी)

फ-सं० पु०—१. पाप । २. फेन, झाग । ३. पुण्य । ४. माघ का महीना । ५. ध्वनि । ६. आंधी, अंधकार । ७. वर्षा । ८. भय । ९. रक्षा । १०. निष्टा । ११. बुद्धि । १२. वाणी । १३. प्रसन्न । (एका०)

फईड़—देखो 'फटीड़ौ' (मह., रू. भे.)

फईड़ौ—देखो 'फटीड़ौ' (रू.भे.)

फउज—देखो 'फौज' (रू. भे.)
उ०—पतिसाह फउज फूटंति पाळि, ब्रहमंड 'जइत' गाजइ विचाळि ।
—रा. ज. सी.

फउरणौ, फउरबौ—देखो 'फेरणौ, फेरबौ' (रू. भे.)
उ०—फूले भरि छाव चढ़ी रथ फउरइ, आंणंद हूम्रो घन दिन ग्रो आज ।—महादेव पारवती री वेलि

फउरणहार, हारौ (हारी), फउरणियौ—वि० ।
फउरिप्रोड़ौ, फउरियोड़ौ, फउरचोड़ौ—भू० का० कृ० ।
फउरीजणौ, फउरीजबौ—कर्म वा० ।

फउरि—देखो 'फररी' (रू. भे.)
उ०—फरहरइ फउरि फरि अफरि फूल, ऊंचास असिम आरिखि अमूल ।—रा. ज. सी.

फउरियोड़ौ—देखो 'फेरियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० फउरियोड़ी)

फउरी—देखो 'फररी' (रू. भे.)

फक–वि० [सं० स्फटिक] १. स्वच्छ, साफ ।
[अ० फ़क़] २. भय, लज्जा आदि के कारण होने वाली चेहरे की अवस्था ।
क्रि० प्र०—पड़णौ, होणौ ।
सं० स्त्री० [अनु०] ध्वनि विशेष ।
रू० भे०—फक्क ।

फकत–अव्य० [अ०] १. केवल, सिर्फ । उ०—तो भुज पर दिल्ली तखत, अरि वयूं तक्कत आय । फीटा पड़ घर ग्या फकत, चित जरमन ललचाय ।—जैतदांन बारहठ
२. बस, इतना ही ।
रू० भे०—फगत ।

फकर–वि० [अ० फ़क्र] १. दीन, दरिद्र । उ०—फकर देतां हमकर परहरणा, दे दिलाय सो खुदाय पिंड पोखण भरणा ।
—केसोदास गाडण
२. निर्लोभी, मस्त, संतोषी ।
३. अभिमान, घमण्ड । उ०—बंदन छोड़ मिळै निरबंदन, ऐसी मेहर मईया । हरिरांम वे अखै देस, कोई फकर लोक लईया ।
स्रीहरिरांम जी महाराज
४. देखो 'फिकर' (रू. भे.)
रू० भे०—फक्कड़, फक्कर, फक्खड़, फखर ।

फकारी–सं० पु० [?] सर्प, सांप । (अ.मा.)

फकीर–वि० [अ०] (स्त्री० फकीरण) १. निर्धन, कंगाल । उ०—बा'रै हजारी कूं खीज फकीर करै, फकीर कूं रीझै तौ नांमदार की किताब धरै ।—रा. रू.
क्रि० प्र०—होणौ ।
२. भिखमंगा, भिक्षुक ।
उ०—जिसौ लाय जाळियौ, फजर मिळ जाय फकीरां । साह दहण सेकियौ, इसौ पेखियौ अमीरां ।—रा. रू.
३. संसार-त्यागी, विरक्त ।
उ०—नवाब साहिब महाराज नूं कही—भाई, में तौ कुछ बद खबर सुणूंगा तब फकीर बण चलना रहूंगा ।—पदमसिंह री वात
४. मुसलमान साधु ।
५. जैसलमेर राज्यान्तर्गत एक मुसलमान जाति ।
मह०—फक्कड़, फक्कर, फक्खड़ ।

फकीरी–सं० स्त्री० [अ० फकीर+रा० प्र० ई] १. साधुता ।
उ०—भेस फकीरी सब कोई लेता, ग्यांन फकीरी पंथ झीना । जिनके सब्द लग्या सतगुरु का, सीस काट धर दीना ।
स्रीसुखरांम जी महाराज
२. निर्धनता, कंगाली ।
उ०—उमीरी फकीरी चड़े एक आंटै, खुदा नै दई है किसी के न बांटै । किनूं कायरी सूरताई दई है, जिनौ अप्पनी अप्पनी ही लई है ।
—ला. रा.
३. संन्यास ।
उ०—फेर बादसाह नूं खबर हुई जद अेक मांणस मेल कहायौ—जे फकीरी लेणी आछी नहीं ।—पदमसिंह री वात

फक्क—देखो 'फक' (रू. भे.)

फक्कड़—१. देखो 'फकर' (रू. भे.)
२. देखो 'फकीर' (मह., रू. भे.)

फक्कर—१. देखो 'फकर' (रू. भे.)
उ०—१. तज मक्कर फक्कर तसूं, उर सुध करखै रात अपंदे । बस करदे इंद्री अवस, तन मभी तप सील तप्पंदे ।—र. ज. प्र.
उ०—२. बक्कर का हलाली खांणा, सूकर कोन खाणां । नीलाही निसांणां राखि फक्कर कौं जिमाणा ।—शि. वं.
२. देखो 'फकीर' (मह., रू. भे.)
उ०—जांणै याकू चेतन आप गुसाई, कै कोई जांणै फक्कर अवलिया ।
—स्रीसुखराम जी महाराज
३. देखो 'फिकर' (रू. भे.)

फक्खड़—१. देखो 'फकर' (रू. भे.)
२. देखो 'फकीर' (मह., रू. भे.)

फखर—देखो 'फकर' (रू. भे.)

फगडंड–सं० पु० [सं० पाषण्ड] ढोंग, पाखण्ड ।

फगडंडी–वि० [सं० पाषण्डी] ढोंगी, पाखण्डी ।

फगडौ–सं० पु० [सं० पाषण्ड] १. ढोंग, पाखण्ड ।
२. टंटा, झगड़ा ।

फगत—देखो 'फकत' (रू. भे.)
उ०—कोथळी खोलनै बनमाळी पूछ्यौ—सिरावण वास्तै आज फगत तिलिया लाडू इज लाई, फेर कीं नी ?—फुलवाड़ी

फगफगणौ, फगफगबौ–क्रि० अ० [देशज] किसी चीज के सब अंगों का फूल की पत्तियों की तरह अलग अलग हो जाना, फूलना, खिलना ।
उ०—१.तदनंतर सुसमुसती मरकी सिसिविसद सुंहाली, चंद्र-

किरणोज्वलगुणा, फगफगां फीणां, दुग्धवरण्ण दहीथरां ।—व.स.
उ०—२. पछइ प्रीसी मुरकी, खाइवा जीभ फुरकी, सेव झीणी, फगफगती फीणी, भितनी घारी, स्वादस्युं आहारी ।—व. स.
फगफगणहार, हारौ (हारी), फगफगणियौ—वि० ।
फगफगिओड़ौ, फगफगियोड़ौ, फगफग्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
फगफगीजणौ, फगफगीजबौ—भाव वा० ।

फगफगियोड़ौ-भू० का० कृ०—किसी पदार्थ के सब अंगों का फूल की पत्तियों की तरह अलग-अलग हुवा हुआ, फूला हुआ, खिला हुआ. (स्त्री० फगफगियोड़ी)

फगवा, फगुवा-सं० पु० [सं० फाल्गुन:] १. होलिकोत्सव का दिन, होली । उ०—असें फगवा में काहे कुं जइयें री, घर हांन अेक दूजी लोक चवाई ।—रसीलैराज
२. उक्त अवसर पर होने वाला आमोद-प्रमोद ।
३. उक्त अवसर पर दिया जाने वाला उपहार या भेंट । उ०—मैं तो हूं बरसाने की ग्वालिन, तुम हलधर के वीर । मीरां के प्रभू फगुवा लीन्हो, मोहन स्यांम सरीर ।—मीरां

फग्ग—देखो 'फाग' (रू. भे.)
उ०—सूरां हूरां सत्थ व्है, गळ-बत्थ मिळाया । खंडे राय खिल्हारहू, रण फग्ग रचाया ।—वं. भा.

फग्गुण—देखो 'फागण' (रू. भे.)
उ०—दळण खळां सिवदत्त प्रबळ बधियो संभरपति । मुलक लूटि मेवाड़ कियो, फग्गुण तरु की मति ।—वं. भा.

फड़-सं० पु० [देशज] १. समूह, ढेर । उ०—हिसार रा लोग महा रिजाला सो कुडी वातां रा फड़ लगाय पग छुडाय दिया ।
—मारवाड़ रा अमरावां री वारता
२. बैलगाड़ी की छत के आधार-स्वरूप लकड़ी के दो डण्डों में से एक ।
३. बैल की मूत्रेन्द्रिय ।
सं० स्त्री०—४. चीरी हुई लकड़ी ।
५. अनाज की दूकान ।
रू० भे०—फड ।

फड़क—देखो 'फड़कौ' (अल्पा., रू. भे.)

फड़कड़,फड़कड़-सं०पु०[अनु०] घोड़े के तेज चलने या भागने का ढंग,इस प्रकार तेज चलने से उत्पन्न ध्वनि । उ०—भाखरां रा खुडां वेहड़ां मांहां सूवर नीचा उतरिया छै । राजा नां देसोतां सूवरां सांमी वाग लीवी छै । फड़कड़ां फड़वड़ाया जावै छै ।—रा. सा. सं.

फड़कण-सं०स्त्री० [अनु०] १. फड़कने की क्रिया या भाव ।
२. हृदय की धड़कन ।
रू० भे०—फुरकण ।

अल्पा०—फड़को ।

फड़कणौ, फड़कबौ-क्रि०अ० [स्फुरणं] १. शरीर के किसी अंग का वायु के कारण बार-बार उभरना और दबना । उ०—फड़की फड़की डावी घण री आंख, हरख्यौ हरख्यौ मारुणी रौ जिवड़ौ अो राज ।
—लो. गी.
२. किसी वस्तु विशेष (वस्त्र, कागज, झंडा आदि) के वायु के वेग से हिलने पर ध्वनि होना ।
३. वायु के आघात या झोंके से कपड़े, कागज आदि का उड़ना ।
फड़कणहार, हारौ (हारी), फड़कणियौ—वि० ।
फड़कवाड़णौ, फड़कवाड़बौ, फड़कवाणौ, फड़कवाबौ, फड़कवावणौ, फड़कवावबौ—प्रे० रू० ।
फड़काड़णौ, फड़काड़बौ, फड़काणौ, फड़काबौ, फड़कावणौ, फड़कावबौ—सक० रू० ।
फड़किओड़ौ, फड़कियोड़ौ, फड़क्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
फड़कीजणौ, फड़कीजबौ—भाव वा० ।
फड़क्कणौ, फड़क्कबौ, फरकणौ, फरकबौ, फरक्कणौ, फरक्कबौ, फरूकणौ, फरूकबौ, फरूखणौ, फरूखबौ, फुरकणौ, फुरकबौ, फुरक्कणौ, फुरक्कबौ—रू० भे० ।

फड़काड़णौ, फड़काड़बौ—देखो 'फड़काणौ, फड़काबौ' (रू. भे.)
फड़काड़णहार, हारौ (हारी), फड़काड़णियौ—वि० ।
फड़काड़िओड़ौ, फड़काड़ियोड़ौ, फड़काड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
फड़काड़ीजणौ, फड़काड़ीजबौ—कर्म वा० ।

फड़काड़ियोड़ौ—देखो 'फड़कायोड़ौ (रू. भे.)
(स्त्री० फड़काड़ियोड़ी)

फड़काणौ, फड़काबौ-क्रि०स० ['फड़कणौ' क्रि०का प्रे०रू०] १. हिलाना डुलाना ।
२. हवा में उड़ाना ।
३. पक्षियों द्वारा अपने परों व गाय, कुत्ता आदि पशुओं द्वारा अपने कानों को झटका देना या हिलाना ।
फड़काणहार, हारौ (हारी), फड़काणियौ—वि० ।
फड़कायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
फड़काईजणौ,फड़काईजबौ—कर्म वा० ।
फड़काड़णौ, फड़काड़बौ, फड़कावणौ, फड़कावबौ, फरकाड़णौ, फरकाड़बौ, फरकाणौ, फरकाबौ, फरकावणौ, फरकावबौ, फरूकाड़णौ, फरूकाड़बौ, फरूकाणौ, फरूकाबौ, फरूकावणौ, फरूकावबौ, फुरकाड़णौ, फुरकाड़बौ, फुरकाणौ, फुरकाबौ, फुरकावणौ, फुरकावबौ—रू० भे० ।

फड़कायोड़ौ-भू०का०कृ०—१. हिलाया डुलाया हुआ. २. हवा में उड़ाया हुआ. ३. पर या कान झटकाया हुआ या हिलाया हुआ. (पशु, पक्षी) (स्त्री० फड़कायोड़ी)

फड़कावणौ, फड़कावबौ—देखो 'फड़काणौ, फड़काबौ' (रू. भे.)
फड़कावणहार, हारौ (हारी), फड़कावणियौ—वि० ।

फड़काविग्रोड़ो, फड़काविघोड़ो, फड़काव्योड़ो—भू० का० कृ० ।
फड़कावीजणौ, फड़कावीजवौ—कर्म वा० ।

फड़काविघोड़ौ—देखो 'फड़कायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० फड़काविघोड़ी)

फड़कियोड़ौ-भू०का०कृ०—१. हिला हुआ, डुला हुआ. २. हवा में उड़ा हुआ. ३. वात-विकार के कारण स्फूरित हुवा हुआ, फुरका हुआ. (अंग)
(स्त्री० फड़कियोड़ी)

फड़कौ-सं० पु० [देशज] १. कपाट का एक भाग, एक पाटिया ।
२. एक प्रकार का कर विशेष जो पहले किसानों से लिया जाता था । उ०—ठिकांणा रा गांवां में रैयत नै वेठ वेगार, लाग-वाग, हासल, खरड़ा भूंपी अर फड़का इत्याद केई भार ढोवणा पड़ता तो कंवण वास्तै नांवमातर सारू ठिकांणा में दिखावा रूपी रकीनां रा साग रचिया जावता हा ।—फुलवाड़ी
३. फल-प्राप्ति की अभिलाषा से सेवा-वृत्ति करने वाले यथा कुम्हार, सुथार आदि को खलिहान में दिया जाने वाला अनाज ।
४. पतंगा ।
५. कंचुकी के पार्श्व भाग में रहने वाला वस्त्र ।
६. हृदय की अस्वाभाविक धड़कन । उ०—बेटा रै मूंडा सूं आ वात सुणतांई मां रै काळजा में तो फड़कौ चढ़ग्यो ।—फुलवाड़ी
क्रि० प्र०—उठणौ, चढ़णौ ।
७. देखो 'फड़कण' (अल्पा., रू. भे.)
अल्पा०—फड़क ।

फड़क्कणौ, फड़क्कवौ—देखो 'फड़कणौ, फड़कवौ' (रू. भे.)
उ०—मुक्कै सैल, घुक्कै धरा, दडक्कै धड़ां सूं माथा, मुड़क्कै कायरां सूर, वकै मार मार । फड़क्कै फींफरां रैणां, धड़क्कै केवियां फौज, धकै चाढ़ भाजै, उरां घणा सारधार ।—बुधसिंह सिढ़ायच
फड़क्कणहार, हारौ (हारी), फड़क्कणियौ—वि० ।
फड़क्किग्रोड़ो, फड़क्कियोड़ो, फड़क्योड़ो—भू० का० कृ० ।
फड़क्कीजणौ, फड़क्कीजवौ—भाव वा० ।

फड़क्कियोड़ौ—देखो 'फड़कियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० फड़क्कियोड़ी)

फड़ड़, फड़ड़ाट-सं० स्त्री० [अनु०] १. वस्त्र के फटने से उत्पन्न ध्वनि ।
२. पक्षियों के उड़ते समय पंखों से उत्पन्न ध्वनि ।
३. अपान वायु की ध्वनि ।
४. पशुओं के नाक से सांस लेने से उत्पन्न ध्वनि । उ०—धुबि नास फड़ड़ रज धूसरड, रथ अछरां मग रोकिया । नाळां निहाव गोळां निहसि, झाळा दिसि असि झोकिया ।—सू. प्र.
५. ध्वनि विशेष ।
रू० भे०—फड़ड़ाहट, फडड, फडडाट, फरड़, फरड़ाट, फरड़ाटौ, फरड़ाहक, फरड़ाहट ।
अल्पा०—फड़ड़ाटौ, फड़ड़ाहटौ ।

फड़ड़ाटौ-सं० पु०—देखो 'फड़ड़' (अल्पा., रू. भे.)

फड़ड़ाहट—देखो 'फड़ड' (रू. भे.)

फड़ड़ाहटौ-सं० पु०—देखो 'फड़ड़' (अल्पा., रू. भे.)

फड़द-सं० स्त्री० [फ़ा० फ़र्द] १. सूची, तालिका ।
२. निमंत्रण का सूचीपत्र ।
३. बही जिसमें हिसाब किताब लिखा हुआ होता है ।
[अ० फ़र्द] ४. रजाई का ऊपरी खोल ।
५. रजाई, दुलाई का वह ऊपरी पल्ला जिसके नीचे अस्तर लगाया जाता है ।
६. ग्रामीण स्त्रियों के घाघरे का मोटा और गाढ़ा टिपकियांदार वस्त्र जिसका पृष्ठ भाग प्रायः श्यामवर्ण होता है और छपाई केवल एक ओर होती है ।
रू० भे०—फडद, फरद ।

फड़दी—देखो 'फरदी' (रू. भे.)

फड़नवीस-सं० पु० [फ़ा० फर्दनवीस] मराठों के राजत्वकाल में प्रधान लेखकों एवं माल विभाग के कर्मचारियों को दिया जाने वाला पद । ये पदाधिकारी जागीरें देने एवं लगान वसूली के हिसाब की जांच की व्यवस्था करते थे ।

फड़फड़-सं० स्त्री० [अनु०] ध्वनि विशेष ।
रू० भे०—फडफफड़, फडफड ।

फड़फड़णौ, फड़फड़वौ-क्रि० अ० [अनु०] १. बैचेन होना, घबराना ।
उ०—पाग्रे हसम्मि हालइ पयाळ, फडफडइ नाग फाटइ फुणाळ । रायां राउ ऊपरि असुरि राइ, जळराइ जांणि मेल्ही अजाइ ।
—रा. ज. सी.
२. ध्वनि होना ।
३. उद्वेलन होना ।
फडफडणहार, हारौ (हारी), फडफडणियौ—वि० ।
फडफडिग्रोड़ो, फडफड़ियोड़ो, फड़फड़्योड़ो—भू० का० कृ० ।
फड़फड़ीजणौ, फडफड़ीजवौ—भाव वा० ।
फडहडणौ, फडहडवौ, फडहडणौ, फडहडवौ—रू० भे० ।

फड़फड़ाणौ, फड़फड़ाबौ-क्रि०स० [अनु०] १. पक्षी के परों तथा पशु के कान आदि को विशेष रूप से फडफड़ की ध्वनि के साथ हिलाना ।
उ०—१. तठै लखो एकलो आय वागर में घास में छिपीयो । सु राव छोडकरण पधारण लागा । तरै कुतरै कांन फड़फड़ाया ।
—राव लाखै री बात
उ०—२. ओ खिलको रचियां पछै वो नेठाव सू नाडी में पांणी पीवण सारू उडियो । धापन पांणी पीयो । पांखां फड़फड़ायनै च्यार-पांच झिकोळा खाया ई ।—फुलवाड़ी

क्रि० अ०—२. घबराना, बेचैन होना।
फड़फड़ाणहार, हारौ (हारी), फड़फड़ाणियौ—वि०।
फड़फड़ायोड़ौ—भू० का० कृ०।
फड़फड़ाईजणौ, फड़फड़ाईजबौ—कर्म वा०/भाव वा०।
फड़फड़ावणौ, फड़फड़ावबौ—रू० भे०।

फड़फड़ायोड़ौ-भू० का० कृ०—१. ध्वनि विशेष करते हुए पर या कान हिलाया हुआ. २. घबराया हुआ, बेचैन, विह्वल।
(स्त्री० फड़फड़ायोड़ी)

फड़फड़ावणौ, फड़फड़ावबौ—देखो 'फड़फड़ाणौ, फड़फड़ाबौ' (रू. भे.)
उ०—बुगलो नै बुगली आकास नै नैड़ी लियो। धोळी पांखां फड़फड़ावता आप रै विचियां कांनी उडता जावै। दोनां री आंख्यां सूं हरख रा मोती बरसण लागा।—फुलवाड़ी
फड़फड़ावणहार, हारौ (हारी), फड़फड़ावणियौ—वि०।
फड़फड़ाविओड़ौ, फड़फड़ावियोड़ौ, फड़फड़ाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।
फड़फड़ावीजणौ, फड़फड़ावीजबौ—कर्म वा०/भाव वा०।

फड़फड़ावियोड़ौ—देखो 'फड़फड़ायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० फड़फड़ावियोड़ी)

फड़फड़ियोड़ौ—भू० का० कृ०—१. बेचैन हुवा हुआ, घबराया हुआ. २. शब्द हुवा हुआ. ३. उद्वेलित हुवा हुआ.
(स्त्री० फड़फड़ियोड़ी)

फड़फड़ियौ-सं० पु० [अनु०] मोटर साइकिल।

फड़फड़ी-सं० स्त्री० [अनु०] १. झुंझलाहट।
२. हिम्मत, साहस, जोश। उ०—डावी आंख रौ डोळौ बारै काढ़ची जद वा जोर सूं चिराळी करी। जीमणा डोळा में हूंच मारण लागौ तद वा फड़फड़ी खाय नै बैठी व्ही।—फुलवाड़ी
क्रि० प्र०—खाणौ।
३. उद्वेलन। उ०—राजा जी रौ जोस मांय रौ मांय फड़फड़ी खावण लागौ।—फुलवाड़ी

फड़पफड़—देखो 'फड़फड़' (रू. भे.)

फड़मल-सं० पु० [देशज] फोग नामक झाड़ी के फूल। उ०—फोगल पछै घिटाळ, जंगळां, झीट झिटाळी। सूरज ऊगण वेळ, फड़मलां छबि निराळी।—दसदेव

फड़वड़ा-सं० स्त्री० [अनु०] घोड़ों के तेज दौड़ने से उत्पन्न ध्वनि।

फड़वड़ाणौ,फड़वड़ाबौ-क्रि० अ० [अनु०] घोड़ों को तेज दौड़ाना।
उ०—इसै समइयै में भालुवां आंण अरज कीवी छै। भाखरां रा पुडां वेहडां मांहां सूवर नीचा उतरिया छै। राजा नां देसोतां सूवरां सांमी वाग लीवी छै। फड़कड़ां फड़वड़ायां जावै छै।
—रा. सा. सं.
फड़वड़ाणहार, हारौ (हारी), फड़वड़ाणियौ—वि०।
फड़वड़ायोड़ौ—भू० का० कृ०।
फड़वड़ाईजणौ, फड़वड़ाईजबौ—भाव वा०।

फड़वड़ायोड़ौ-भू० का० कृ०—घोड़ों को तेज दौड़ाया हुआ.
(स्त्री० फड़वड़ायोड़ी)

फड़हड़—देखो 'फड़हड़ाट' (रू. भे.)
उ०—बाघ रास उपाड़ि चहूंवळ, कुरंभ अरिदळ मार करै। वरहासां कासां चढ़ि वहलां, फड़हड़ नासां तका फरै।
—मांनसिंघ कल्यांणोत कछवाहा रो गीत

फड़हड़णौ, फड़हड़बौ-क्रि० म० [अनु०] १. बैल, घोड़ा आदि पशुओं के तेजी से चलने या दौड़ने से नाक से ध्वनि उत्पन्न होना।
२. देखो 'फड़फड़णौ, फड़फड़बौ' (रू. भे.)
फड़हड़णहार, हारौ (हारी), फड़हड़णियौ—वि०।
फड़हड़िओड़ौ, फड़हड़ियोड़ौ, फड़हड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।
फड़हड़ीजणौ, फड़हड़ीजबौ—कर्म वा०।
फडहडणौ, फडहडबौ—रू० भे०।

फड़हड़ाट-सं० स्त्री० [अनु०] घोड़े के तेज दौड़ने अथवा चलने से नाक से ध्वनि उत्पन्न होना।
रू० भे०—फड़हड़, फडहड, फडहडा।

फड़ाफड़—देखो 'फटाफट' (रू. भे.)

फड़ियाळ—देखो 'पडियालग' (रू. भे)

फड़ियौ-सं० पु० [देशज] अनाज का छोटा व्यापारी।
रू० भे०—फडीयो, फडियो, फडीयो।

फड़ी-सं० स्त्री० [अनु०] १. शीघ्रता या लगातार मारने से उत्पन्न ध्वनि। उ०—घड़ी घड़ी घमोड़ घोड़ बोकड़ा वडी वड़ी। झड़ी लगै छडाळ झीक फेकरा फड़ी फड़ी।—मा. वचनिका
२. ऊंट के पैर का नीचे का भाग।
३. ऊंट द्वारा पैर से किए जाने वाला प्रहार।
४. उक्त प्रहार से उत्पन्न ध्वनि।

फड़ीयो—देखो 'फड़ियौ' (रू. भे.)

फड़ूस-सं० पु० [देशज] भुरट नामक घास के दाने।

फड़ौ-सं० पु० [देशज] ऊंट के चारों पैरों से कूदने की क्रिया।

फचर, फचराक, फच्चर—देखो 'फाचर' (रू. भे.)
क्रि० प्र०—लगाणौ, करणौ, फंसाणौ।
मुहा०—१. फच्चर करणौ—किसी कार्य को करवाने हेतु शीघ्रता करना, दबाव डालना, भय दिखाना। (मि०—आंगळी करणी)
२. फचर लगाणौ, फंसाणौ—अड़चन डालना, रुकावट पैदा करना।
(मि०—फाडी फंसाणी)

फजर, फजराट-सं० स्त्री० [अ० फ़ज्र या फ़ज्र+रा० प्र० आट]

१. प्रातःकाल, सवेरा, तड़का । उ०—१. फजर के पहर गजर ठकोरा बगे, ठोड़ ठोड़ धवंल मंगळ होरां को लंगे ।—र. रू.
उ०—२. फजर होत ही लेऊंगा, रुपया लाख पच्चीस । नां देवौ तौ देखरणां, काट गिराऊं सीस ।—गोपाळदास गौड़ री वारता
२. प्रातःकाल के समय पढ़ी जाने वाली नमाज ।
रू० भे०—फज्जर ।

फजल—सं० स्त्री० [अ० फज़्ल] १. कृपा, दया, मेहरबानी ।
स० पु०—२. बुजुर्ग । उ०—इरण वास्तै देसोतां नूं संगत व मिळाप पिंडतां, फजलां, हकीमां, जांण, प्रवीणां री चाहना करणी ।
—नी. प्र.

फजीत—देखो 'फजीहत' (रू. भे.)
उ०—सु मूळराज फजीत होय पाछौ आवै ।—नैणसी

फजीतवाड़ौ—देखो 'फजीहत' (मह., रू. भे.)
उ०—तौ बाप रै घरवाळां रा फजीतवाड़ा तौ मत करौ ।
—वरसगांठ

फजीती—देखो 'फजीहत' (रू. भे.)
उ०—बिसवावीस आंण सिर बीती, जांणी बात न जावै जीती । सजयौ नहीं काज गह सीती, परण ही हारे कीध फजीती ।—र. रू.

फजीतौ—देखो 'फजीहत' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—मरणौ जीवणौ तौ ईस्वर रै हाथ छै । नारेळ फेरियां म्हारी परतग्या जावै छै । मुल्क रै मांही फजीतौ हुवै । लोग मोनूं कापुरस अर कपूत कहै ।—कुंवरसी सांखळा री वारता
२. लड़ाई-झगड़ा, राड़-तकरार ।

फजोतौ—सं० पु० [देशज] नागौर जिले के कुछ ग्रामों में बनाए जाने वाला गेहूं के आटे का हलवा जिसमें घी अल्पतम मात्रा में होता है ।

फजीलत, फजीलस—सं० पु० [अ० फ़ज़ीलत] १. श्रेष्ठता, उत्तमता ।
उ०—फजीलत अदालत री में औ ही नुकतौ दाव सै छै । अदल प्यारौ सारा मिनखां रौ छ ।—नी. प्र.
२. इज्जत, प्रतिष्ठा । उ०—पारस देस में बादसाहां रौ कायदौ थौ—जिको इरण री संगत में होय तिको हिकमत फजीलत सूं खाली न होतौ थौ ।—नी. प्र.

फजीहत, फजीहती—सं० स्त्री० [अ० फ़ज़ीहत] १. दुर्गत, दुर्दशा ।
२. बदनामी ।
रू० भे०—फजीत, फजीती ।
अल्पा०—फजीतौ ।
मह०—फजीतवाड़ौ ।

फजुली—देखो 'फजूल' (रू. भे.)
उ०—फजुली प्रसाद फेरयौ हिकमत हिसाब हेरयौ, पूरन प्रताप पेरयौ पाजी पेल पेल्यौ तैं ।—ऊ. का.

फजूल—वि० [अ० फ़ुज़ूल] १. आवश्यकता से अधिक, अतिरिक्त ।
२. निकम्मा ।
रू० भे०—फजुली, फजूली, फिजूल ।
यौ०—फजूलखर्च, फजूलखर्ची ।

फजूलखरच—सं० पु० यौ० [अ० फ़ुज़ूल+फा० खर्च] अपव्यय, व्यर्थ का खर्च ।
रू० भे०—फजूलखरची, फिजूलखरच ।

फजूलखरची—वि०यौ० [अ० फ़ुज़ूल+फा० खर्च+रा० प्र० ई] १. बहुत खर्च करने वाला, अपव्ययी ।
२. देखो 'फजूलखरच' (रू. भे.)
रू० भे०—फिजूलखरची ।

फजूली—देखो 'फजूल' (रू. भे.)
उ०—खरच फजूली खोवता, मुल-मुल वधकी माप । काठा पहरे कापड़ा, 'पातल' रो परताप ।—जैतदांन बारहठ

फज्जर—देखो 'फजर' (रू. भे.)
उ०—१. अम्हसम्हा हजारां आहुड़ै, धोम पड़ै खागां धजर । घड़ियाळ जांणि बज्जै घणी, गढ़ लंका फज्जर गजर ।—सू. प्र.
उ०—२. फाजल सेख खुलनी फज्जर, अमुर घसे लागो अति आतुर । अस न खड़ै रिणछोड़ उताळौ, चूरण खळां विचारै चाळौ ।
—रा. रू.

फट—सं० स्त्री० [सं०] १. एक तांत्रिक मंत्र, अस्त्र मंत्र ।
[अनु०] २. हलकी या पतली वस्तु के गिरने या गिरकर फूटने की ध्वनि ।
वि०—सफेद, स्वच्छ ।
क्रि० वि०—१. तुरन्त, झट-पट । उ०—परा सेठ तौ इणी ताक में हा । मूंछ छूटतां ई फट मूंडौ आगौ कर लियौ ।—फुलवाड़ी
२. देखो 'फिट' (रू. भे.)

फटक—सं० पु० [देशज] १. पंवार वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।
२. देखो 'स्फटिक' (रू. भे.) (अ. मा.)
उ०—१. लांबा तिलक लगाय, फटक धजा उठती फिरै । खोटौ दांणौ खाय, कींयां तिरसी केळिया ।—केळियौ
उ०—२. प्रगट अकबर लियौ झपट जुध पाधरै, 'दुरंग' थट बिकट सुरण साह डरियौ । खग हटक मन बिच कटक खुरसांण रै, फटक मुर खट हुय पाल फिरियौ ।—दुरगादास करणोत रौ गीत

फटकड़ी—देखो 'फिटकड़ी' (रू. भे.)

फटकड़ौ—सं०पु० [देशज] वस्त्र विशेष । उ०—फाडि पटुली फटकड़ै, वेणि विणासी हत्थि । रा अंतेउरि तेडिउ, दूहवइ दासी हत्थि ।
—मा.कां.प्र.

फटकरा—सं० स्त्री० [अनु०] सूप से अनाज साफ करने पर निकलने वाला अनुपयुक्त अनाज या कचरा ।

फटकणौ, फटकबौ–क्रि० स० [अनु०] १. फट-फट शब्द करना।
२. अस्त्र-शस्त्र आदि चलाना, फेंकना।
३. पटकना, गिराना।
४. रूई को धुनकी से धुनना।
५. लाचारी की दशा में हाथ पैर पटकना।
६. किसी को भला-बुरा कहना।
७. सूप में अनाज आदि रखकर इस प्रकार उछालना कि उसका कूड़ा-करकट निकल जावें।
८. कपड़े को इस प्रकार झटके से झाड़ना कि सलवट या मिट्टी निकल जावें।
९. उपस्थित होना, आना। उ०—इतरै पती भागल आय फटकियौ।—बी.स.टी.
फटकणहार, हारौ (हारी), फटकणियौ—वि०।
फटकवाड़णौ, फटकवाड़बौ, फटकवाणौ, फटकवाबौ, फटकवावणौ, फटकवावबौ, फटकाड़णौ, फटकाड़बौ, फटकाणौ, फटकाबौ, फटकावणौ, फटकावबौ—प्रे० रू०।
फटकिग्रोड़ौ, फटकियोड़ौ, फटक्योड़ौ—भू० का० कृ०।
फटकीजणौ, फटकीजबौ—कर्म वा०।

फटकमण, फटकमणी, फटकमिणि—देखो 'स्फटिकमणि' (रू. भे.) (डि. को.)
उ०—फटकमणी रचै रंग सारा, लिपै नहीं सब में सब पारा। चिदानंद आतम यूं न्यारा, केवळ आप निरधारा।
—श्रीसुखराम जी महाराज

फटकाड़णौ, फटकाड़बौ—देखो 'फटकाणौ, फटकाबौ' (रू. भे.)
फटकाड़णहार, हारौ (हारी), फटकाड़णियौ—वि०।
फटकाड़िग्रोड़ौ, फटकाड़ियोड़ौ, फटकाड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।
फटकाड़ीजणौ, फटकाड़ीजबौ—कर्म वा०।

फटकाड़ियोड़ौ—देखो 'फटकायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० फटकाड़ियोड़ी)

फटकाणौ, फटकाबौ–क्रि० स० [राज० 'फटकणौ' क्रि० का प्रे० रू०]
१. फट-फट शब्द कराना।
२. अस्त्र-शस्त्र आदि चलवाना, फेंकाना।
३. पटकाना, गिरवाना।
४. रूई को धुनकी से धुनवाना।
५. सूप में अनाज आदि रख कर इस प्रकार उछलवाना कि उसका कूड़ा-करकट निकल जावें।
६. कपड़े को इस प्रकार झटके से झड़वाना की उसकी सलवटें या मिट्टी निकल जावें।
७. किसी को भला-बुरा कहलवाना।
फटकाणहार, हारौ (हारी), फटकाणियौ—वि०।
फटकायोड़ौ—भू० का० कृ०।
फटकाईजणौ, फटकाईजबौ—कर्म वा०।
फटकाड़णौ, फटकाड़बौ, फटकावणौ, फटकावबौ—रू० भे०।

फटकामिण—देखो 'स्फटिकमणि' (रू. भे.)
उ०—मिणी लाल मांणक माळ, मोती चिंतामण, नवनिधी नीलवी केक कोस्तव फटकामिण। पीरोजा पुखराज पनां चूनी परवाळा, हीरा पारस हेम सात धातां सिखराळा।—क. कु. बो.

फटकायोड़ौ–भू० का० कृ०—१. सूप के द्वारा अनाज आदि साफ कराया हुआ. २. सलवट या मिट्टी निकालने के प्रयोजन से कपड़े को झड़वाया हुआ. ३. फट-फट शब्द कराया हुआ. ४. अस्त्र-शस्त्रादि चलवाया हुआ, फेंकाया हुआ. ५. पटकाया हुआ, गिरवाया हुआ. ६. धुनकी से रूई धुनवाया हुआ. ७. किसी को भला-बुरा कहलवाया हुआ.
(स्त्री० फटकायोड़ी)

फटकार–सं०पु० [सं०फट्+कार:] १. ४९ क्षेत्रपालों में से ३८ वां क्षेत्र-पाल।
सं० स्त्री० [राज० फटकारणौ] २. झिड़की, डांट, दुत्कार।
क्रि० प्र०—खाणी, देणी, बताणी, लगाणी, लागणी, सुणणी, सुणाणी।
३. मार्मिक आघात। उ०—फटकार हळाहळ तें फिरगी। घन आनंद अम्रत धां धिरगी।—ऊ. का.
४. शाप, बददुआ।
क्रि० प्र०—देणी, पाणी।
५. प्रहार, आघात। उ०—पौड़ां री फटकारां सूं कागला, मोरयां के दूजा ई पंछी अवस कुरळावता।—फुलवाड़ी
६. कोप-दृष्टि। उ०—उण विणजारा माथै सनीचर री ग्रैंड़ी फटकार पड़ी के धन-संपत रा नांव माथै उण रा हाथां में खुद आपरी दोनूं हथाळियां अर वित्त-मवेसी रा नांव माथै केसरी नै छोड दूजौ कीं बाकी नीं बचियौ।—फुलवाड़ी
७. प्रभाव, असर। उ०—१. मोटा-मोटा तिरसिंघ जी इण री मार नै झेल नीं सकै, पछै माटी रूंदणिया बापड़ा उण कुमार रौ कांईं आपो के वौ धन री फटकार आगै टिक सकै।—फुलवाड़ी
उ०—२. आप रा सुख अर आपरी जरूरतां वास्तै ई कमाई करण रा अफाळा करै पण इण कमाई री ग्रैंड़ी फटकार पड़ै के वौ कमाई करण में ई सरब सुख मांनलै अर धन कमावण री हूंस नै सब सूं लांठी जरूरत समझलै।—फुलवाड़ी
८. पक्षियों के परों की ध्वनि, फड़फड़ाहट। उ०—पांखां री फट-कारां सूं गिगन में वा गड़गड़ाहट माची के हवा रा रेसा चीरीजण लागा। कांनां रा पड़दा फूटण लागा।—फुलवाड़ी
९. झटका, धक्का। उ०—१. नाच रै फटकारां सूं चूंदड़ी रा ग्रेक दो तारा ई तूट नै खिरग्या।—फुलवाड़ी
उ०—२. दूध फाट्यां दही वणै अर दही विलोयां माखण रौ लूंदौ वंधै, उणी भांत विरखा रै विछोव सूं फाटयोड़ौ बादळ रौ

मन वातां रै फेरणा री फटकारां सूं माखण बणतौ गियौ ।
—फुलवाड़ी

रू० भे०—फिटकार ।

फटकारणौ, फटकारबौ-क्रि०स० [अनु०] १. शाप देना, बददुआ देना ।
२. आघात या प्रहार करना, मारना । उ०—लात मारती वगत बा कनौती भेळी करै अर कनौती भेळी व्हैतां ई वा लात फटकार देवै ।—फुलवाड़ी
३. भाड़ना, भटकना ।
ज्यूं०—विस्तरौ फटकार'र विछावणौ चोटी फटकारणी ।
४. पटकना, पछाड़ना ।
५. उपार्जन करना, कमाना ।
ज्यूं०—आज-कल तौ वो पांच रुपिया रोजीना फटकार लेवै है ।
६. डांट-डपट देना, धमकाना । उ—१. जद महंत जी डोकरी नै फटकारतां कह्यौ—रांम मारी तौ पछै क्यूं रोवै ? वौ मिनख थोड़ौ ई हौ, धांन रो कोठलियौ हो जकौ मर खूटौ ।—फुलवाड़ी
उ०—२. उण नै भोळप अर टाबरपणा वास्तै खासी-भली आडै हाथां ली । फटकारती कह्यौ—सोनल, अबै थूं टाबर तौ है कोनी, पण थारौ हाल टाबरपणौ को मिटियौ नी ।—फुलवाड़ी
७. सीख देना, शिक्षा देना ।
८. भटका देना । उ०—नेड़ौ धमसांण चढ़चौ अप नव्व । गुणां चढ़ि बांण मडचौ धमगव्व । किया चठठारव ज्यां फटकारि । दिया घट गोळमदाज विदारि ।— मे. म.
९. भटका देकर दूर फेंक देना ।
१०. रोष प्रकट करना । उ०—फोरै खाथां नै गाळी फटकारै, तोरै जातां नै हाळी ततकारै ।—ऊ. का.
फटकारणहार, हारौ (हारी), फटकारणियौ—वि० ।
फटकारिओड़ौ, फटकारियोड़ौ, फटकारयोड़ौ—भू० का० कृ० ।
फटकारीजणौ, फटकारीजबौ—कर्म वा० ।
फिटकारणौ, फिटकारबौ—रू० भे० ।

फटकारियोड़ौ-भू०का०कृ०—१. शाप दिया हुआ, बददुआ दिया हुआ. २. मारा हुआ, आघात या प्रहार किया हुआ. ३. भाड़ा हुआ, भटका हुआ. ४. प्राप्त किया हुआ, कमाया हुआ. ५. डांटा हुआ, डराया हुआ. ६. शिक्षा दिया हुआ. ७. भटका दिया हुआ. ८. भटका देकर दूर फेंका हुआ. ९. पटका हुआ, पछाड़ा हुआ. १०. रोष प्रकट किया हुआ.
(स्त्री० फटकारियोड़ी)

फटकारियौ-सं० पु० [देशज] १. एक नाली से सींचित होने वाले क्यारों में से अंतिम क्यारा ।
२. देखो 'फटकारियोड़ौ' (रू. भे.)

फटकारै-क्रि०वि०[अनु०] शीघ्रता से,सत्वरता से । उ०—उण रा मन री रीत तौ जांणै फटकारै उडगी ।—फुलवाड़ी

फटकारौ-सं० पु० [अनु०] १. भटका । उ०— १. उण वगत वौ किरियौ तौ बीकानेर सूं घांटी री फटकारौ देतौ अर अेकण ठौड़ बैठो ई नित मंडोवर री सुरंगी बाड़ी चर जातौ ।—फुलवाड़ी
उ०—२. हाळी मूंछ रा लेता हटकारा । फिरता पूंछा रा देता फटकारा ।—ऊ. का.
२. भौंका, भपटा । उ०—१. बुगला री पांखां रै उनमांन धवळ चंवरां रा फटकारा लागता हा ।—फुलवाड़ी
उ०—२. पण पापड़ जीमती वेळा पंखी री फटकारौ कीं जोर सूं लागौ तौ पापड़ उडग्यौ ।—फुलवाड़ी
उ०—३. ढगळौ सेवट पांन नै समभायौ—थूं बावळा म्हनै कीकर बचा सकै । हवा रै पै'ल फटकारै थूं तौ कठै ई उड जासी ।
—फुलवाड़ी
३. शाप, बद-दुआ ।
४. धिक्कार, लानत । उ०—सारि रमाड़ि विफुट सरि, हद फटकारौ दियौ हर । अजमेरा जोगी अवकळिया, धूळि चाटता फिरै घर ।
—अमरसिंघ हाडा रौ गीत
५. भड़ी । उ०—अमल री मनवारां रै सागै आखै दिन बातां रा फटकारा लागता रैवता पण ठकरांणी—सा आप रै मन री आगळ फगत उण भांवण रै सांमी ई खोलता हा ।—फुलवाड़ी
६. आघात, टक्कर, प्रहार ।
७. फट-फट की ध्वनि,फड़फड़ाहट । उ०—थोड़ी ताळ पछै फाटोड़ा लिगतरां रा फटकारा वजावतौ अेक डोकरौ म्हारै पाखती आयनै ऊभग्यौ ।—फुलवाड़ी
८. सत्वरता, शीघ्रता । उ०—म्हारी आ ऊमर तौ ताळी रै फटका—रै खूटै ।—फुलवाड़ी
९. देखो 'फटकार' (अल्पा रू. भे.)
क्रि० प्र०—देणौ, मारणौ ।
रू० भे०—फिटकारौ ।

फटकावणौ, फटकावबौ—देखो 'फटकाणौ, फटकाबौ' (रू. भे.)
फटकावणहार, हारौ (हारी), फटकावणियौ—वि० ।
फटकाविओड़ौ, फटकावियोड़ौ, फटकाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
फटकावीजणौ, फटकावीजबौ—कर्म वा० ।

फटकावियोड़ौ—देखो 'फटकायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० फटकावियोड़ी)

फटकिमणी—देखो 'स्फटिकमणि' (रू. भे.)
उ०—पतिवरता विभचारिणी, दोऊ अनत न बैसै एके साथी । फटकिमणि तब लग भली, जब लग हीरा न आवै हाथी ।
—ह. पु. वा.

फटकियोड़ौ-भू० का० कृ०—१. सूप में उछाल कर साफ किया हुआ.

(अनाज आदि) २. सलवट निकालने या मिट्टी झाड़ने के प्रयोजन से कपड़े को झटके से झाड़ा हुआ. ३. आया हुआ, उपस्थित हुवा हुआ.

(स्त्री० फटकियोड़ी)

फटकौ-सं०पु० [अनु०] १. सूप अथवा थाली से अनाज को साफ करने हेतु फटकने की क्रिया।

२. फटकने की क्रिया से उत्पन्न होने वाली ध्वनि।

फटणौ, फटबौ—१. देखो 'फाटणौ, फाटबौ' (रू. भे.)

२. देखो 'फंटणौ, फंटबौ' (रू. भे.)

उ०—आडै फट वट पड़ै अपारां, आगै पाछै पार न आरां।

—रा. रू.

फटणहार, हारौ (हारी), फटणियौ—वि०।

फटिओड़ौ, फटियोड़ौ, फटयोड़ौ—भू० का० कृ०।

फटीजणौ, फटीजबौ—भाव वा०।

फटफट—देखो 'फटाफट' (रू. भे.)

फटफटाणौ, फटफटाबौ-क्रि० स० [अनु०] १. फड़फड़ाना।

२. गाय, कुत्ते, हाथी आदि पशुओं का कान हिलाते हुए फट-फट की ध्वनि उत्पन्न करना।

३. फट-फट की ध्वनि करना।

फटफटाणहार, हारौ (हारी), फटफटाणियौ—वि०।

फटफटायोड़ौ—भू० का० कृ०।

फटफटाईजणौ,फटफटाईजबौ—कर्म वा०।

फटफटायोड़ौ-भू०का०कृ०—१. फड़फड़ाया हुआ. २. गाय, कुत्ते, हाथी आदि पशुओं का कान हिलाते हुए फट-फट की ध्वनि उत्पन्न किया हुआ. ३. फट-फट की ध्वनि किया हुआ.

फटफटियौ-वि० [अनु०] व्यर्थ की बकवास करने वाला।

सं० पु०—मोटर साइकिल।

फटा-सं० पु० [सं० स्फटा] सांप का फन।

फटाक-क्रि० वि०—तुरन्त, शीघ्र। उ०—अेक मूंडी लत घोड़ी में फेर। कनोती मेळी करनै फटाक लात मार देवै।—फुलवाड़ी

फटाकौ—देखो 'पटाकौ' (रू. भे.)

उ०—नागा मिनखां री आरती उतारयां बिना वे नीं मानै। मन करै जणा ई फटाकौ छोड दे।—फुलवाड़ी

फटाफट-क्रि० वि०—१. तुरन्त, शीघ्र। उ०—किणी लांठा अफसर रौ टेलीफून आयौ। म्हारै देखतां-देखतां फटाफट कांम व्हैगौ।

—फुलवाड़ी

२. लगातार व शीघ्रता से मारने से उत्पन्न ध्वनि।

सं० स्त्री०—ध्वनि विशेष।

रू० भे०—फड़ाफड़, फटफट।

फटि—देखो 'फिट' (रू. भे.)

उ०—काळि ज बहु क्रीडा करी, आज तिजावी आस। माधव मुंभ मूंकी गयु, फटि रे फागुण मास।—मा. कां. प्र.

फटिक—देखो 'स्फटिक' (रू. भे)

उ०—सूरज फटिक पाखांण का, ता सौं तिमर न जाइ। साचा सूरज परकटे, दादू तिमर नसाइ।—दादूवांणी

फटिकमणि—देखो 'स्फटिकमणि' (रू. भे.)

फटित—देखो 'स्फटित' (रू. भे.)

उ०—मोरूं मन अस्टापद सुं मोह्युं,फटित रतन अभिरांम मेरे लाल। भरतेसर जिहां भवन कराव्यउ, कीधुं उत्तम कांम मेरे लाल।

—स. कु.

फटियोड़ौ—देखो 'फाटियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० फटियोड़ी)

फटीड़—देखो 'फटीड़ौ' (मह., रू. भे.)

फटीड़ौ—सं० पु० [अनु०] १. थप्पड़, चोट।

२. तेजी से प्रहार करने का ढंग या क्रिया।

३. प्रहार से उत्पन्न ध्वनि।

रू० भे०—फईड़ौ।

मह०—फईड़, फटीड़।

फट्टणौ, फट्टबौ—देखो 'फाटणौ, फाटबौ' (रू. भे.)

उ०—१. ढाढी एक संदेसड़उ ढोलइ लगि लइ जाइ। जोवण फट्टि तळावड़ी, पाळि न बंधउ कांइ।—ढो. मा.

उ०—२. मेछ उलट्टा मेदनी, फट्टा जांण समंद। बळ छुट्टा भड़ कायरां देख प्रगट्टा दुंद।—रा. रू.

फट्टणहार, हारौ (हारी), फट्टणियौ—वि०।

फट्टिओड़ौ, फटियोड़ौ, फट्टयोड़ौ—भू० का० कृ०।

फट्टीजणौ, फट्टीजबौ—भाव वा०।

फट्टियोड़ौ—देखो 'फाटियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० फट्टियोड़ी)

फड—देखो 'फड़' (रू. भे.)

उ०—धजवडां धार रुळ रुंड मुंडं, विहंड फड वाढ़ खंडह विहंडं।

—गु. रू. बं.

फडड, फडडाट—देखो 'फड़ड़ाट' (रू. भे.)

उ०—फडडाट खेंग करै फुरणैं, नड नीर हुवै किरि नीझरणैं।

—गु. रू. बं.

फडद—१. देखो 'फड़द' (रू. भे.)

२. देखो 'फरहद' (रू. भे.)

उ०—किसिमिसि द्राख, फडद खजूर हरमुजी, मधुरउं मांकडउं दीव सिखा समांन सरस फणस।—वं. स.

फडफड— देखो 'फड़फड़' (रू. भे.)

उ०—कडकड त्रिज्जड आवट कूट, फडफड प्रांण ग्रणी सिर फूट ।
—गु. रू. वं.

फडहटीया-सं० स्त्री० [देशज] एक व्यवसायिक जाति ।
उ०—डवगर वावर फोफलीया फडहटीया फडिया वेगडिया सिंगडिया भोई ।—व.स.

फडहड—देखो 'फडहड़ाट' (रू.भे.)
उ०—घू नाचै भड धड फींफड फडहड, लोडै लडथट लोहि लटै ।
बीयै दळ वड चढ़ हुई हडवड, जोवै घडतड ग्रनड ग्रडै ।—गु.रू.वं.

फडहडणी, फडहडबौ—१. देखो 'फड़हड़णी,फड़हड़बौ' (रू.भे.)
उ०—विउंगां दोड दडवडतेह, फुरणं नास फडहडतेह ।—गु.रू.वं.
२. देखो 'फड़फड़णी, फड़फड़वौ' (रू. भे.)

फडहडणहार, हारौ (हारी), फडहडणियौ—वि० ।
फडहडिग्रोड़ौ, फडहडियोड़ौ, फडहडघोड़ौ—भू०का०कृ० ।
फडहडीजणी, फडहडीजवौ—भाव वा० ।

फडहडा—देखो 'फड़हडाट' (रू.भे.)
उ०—फूरणियां फडहडा, धज्ज धू ग्रध्धडा । है खडै वांकडा, ताजवै ताकडा ।—गु. रू. वं.

फडियाळ—देखो 'पडियालग' (रू.भे.)
उ०—गळ कटै कडियाळ, वाड जडियाळ विजै वळै । ग्रंग फुटां छडियाळ,है किरमाळ वळोवळ । घरणि लुटै घडियाळ कमळ दहियाळ तणी कळ । फडियाळ घांट चाचर फटै, घाव न घटै घुघटै ।
—पनां वीरमदे री वात

फडियौ, फडीयौ—देखो 'फड़ियौ' (रू. भे.)
उ०—फोफलीया फडहटीया फडिया वेगडिया सिंगडिया भोई कंदोई देसाली कलाली ।—व. स.

फणग-सं० पु० [सं० फणिन्+ग्रंग] शेषनाग ?
उ०—गणंक नाळि गोळियं, फणंग धूजि फंगटां । सणंक सार ऊछजे, भणंक खेल सोगटां ।— मा. वचनिका

फण-सं० पु० [सं० फणः] सांप के सिर की उस अवस्था या स्थिति का नाम जब कि वह अपनी गर्दन के दोनों ओर की नलियों में वायु भर कर उसे फैलाकर छत्राकार कर लेता है, फन ।
उ०—भुरजमाळ फण मंडळी, सोर.भाळ विस भाळ । जांण सेस बैठो जमी, मिस चीतोड़ कराळ ।—वां. दा.
रू० भे०—फन, फुण ।
मह०—फुणाट ।

फणकर-सं० पु० [सं० फणः+करः] सांप, सर्प ।

फणकार, फणकारी-सं० स्त्री० [देशज] १. बैलों की रास या घोड़े की लगाम का उन्हें ग्रभीष्ट दिशा या मार्ग की ग्रोर चलाने या मोड़ने के लिए दिया जाने वाला झटका विशेष । उ०—उणनै कीं सुध-बुध के कीं चेतो नीं रह्यौ । घोड़ा री रास फणकारी के घोड़ौ तो पाघरौ भूलरा रै मांय बड़ग्यौ । पिणियारघां कूकी, हाय-त्राय मचाई ।
—फुलवाड़ी
२. सांप के फूंकने व बैल आदि पशुओं के सांस लेने की क्रिया ।
३. सांप के फूंकने व बैल के सांस लेने से फन-फन होने वाला शब्द ।
रू० भे०—फुणकार ।
ग्रल्पा०—फणकारौ, फुणकारौ ।

फणकारणी, फणकारबौ-क्रि० स० [देशज] बैलों की रास या घोड़ की लगाम का उन्हें ग्रभीष्ट दिशा या मार्ग की ग्रोर चलाने या मोड़ने के लिए झटका देना । उ०—१. नूतल नाथा सर नासां मणकारी, फुरणीं घूंघातां रासां फणकारी ।—ऊ. का.
उ०—२. नागोरी वळदां री रासां फणकारता आप रा खेत कमावता ।—फुलवाड़ी
उ०—३. रासां फणकारता ई रथ रा घोड़ा आगै वधिया ।
—फुलवाड़ी

फणकारणहार, हारौ (हारी), फणकारणियौ—वि० ।
फणकारिग्रोड़ौ, फणकारियोड़ौ, फणकारघोड़ौ—भू० का० कृ० ।
फणकारीजणी, फणकारीजबौ—कर्म वा० ।

फणकारियोड़ौ-भू० का० कृ०—अभीष्ट दिशा या मार्ग की ग्रोर चलाने या मोड़ने के लिये रास या लगाम का झटका दिया हुआ.
(बैल या घोड़ा)
(स्त्री० फणकारियोड़ी)

फणकारौ-सं० पु०—देखो 'फणकार' (ग्रल्पा., रू.भे.)
उ०—खीणसाव री चांदणी तारांनै फूठरी बेल सजाई । फणकारा मारता वळदां नै देखनै टीलोड़ी डरपी ।—फुलवाड़ी

फणगट—देखो 'फरगट' (रू. भे)
उ०—मूळि मही-मूळे गइ, ऊंचपणि आकासि । फणगट देइ फिरी रहिया, जांणइ मयण-ह पासि ।—मा. कां. प्र.

फणगटौ—देखो 'फागोटौ' (रू. भे.)
उ०—फागुण केरां फणगटां, फिरि फिरि गाइ फाग । चंग वजावइ चंग परि, ग्रालवइ पंचम राग ।—मा. कां. प्र.

फणगर-सं० स्त्री० [?] पर, पंख ?
उ०—फरकट फोकट नु फिरइ, फागुण फूफूकार । फूनी मझ फणगर जिसिउ, जउ जमली नहीं दार ।—मा. कां. प्र.
२. सांप, नाग । उ०—वाटिइ वनगज फणगर, सीह तणा वोंकार । रौद्र ग्रटवी वीहांमणी, घूक तणा घूतकार ।—नळ दवदंती रास

फणगरी-सं० स्त्री०—शाक विशेष ?
उ०—फूघेडी नइं फणगरी, फूंगारी नइं फोंगि । फूणा फूली फूमती,

फोफल फूनी सांगि ।—मा.कां.प्र.

फणगी-सं०पु० [देशज] पंतगा ।

फणधर-वि० [सं० फणधारिन्] फणवाला, फणधारी । उ०—कोतर मांहि थी बीहावि काला फणधर व्याल रे । दरभ ललाका घणी तूंचि, विहि रुधिर नी धार रे ।—नळाख्यांन

सं०पु०—१. सांप ।

२. शेषनाग । उ०—पर हूंता जिम पसर, धरा फणधर उर धारै । पवन जोर पेरियो, वहै वद्दळ विसतारै । नाग राग पेरियो, प्रांण पैलां वसि थप्पै । दास हुक्म पेरियो, जास पति धरै राजप्पै । परतख ठगोरी पेरियौ, मनुज ग्रहै ठग-मंडळो । पेरियां मंत्र सिधुर सगह, आवै दरगह अगळो ।—रा. रू.

रू०भे०—फनधर, फुणधर ।

फणपंति, फणपंती-सं०स्त्री०यौ० [सं०फणः+पंक्ति] फणों की पंक्ति । उ०—के झुकके गाफिल बटें, लगि नैन पलक्कें । नेग करक्कें संकुली, फणपंति फरक्कें । धायन सत्थं स्वाम के, भरि फेन भभक्कें । छोह गल्ली छोरि के, सिर फोरि मसक्कें ।—वं. भा.

रू०भे०—फनपंति, फुणांपत्ति, फुणांपत्ति ।

फणपत, फणपति, फणपती, फणपत्त, फणपत्ति, फणपत्ती-सं०पु०[सं० फणपति] १. सर्प, सांप ।

२. देखो 'फणिपति' (रू. भे.)

उ०—वदन एक सहस दुय सहस रसना वणी, तिकौ फणपती गुण थकै तवरी । तनै संखेप रघुनाथ विरतां तणी, गहर कीरत कहूं सुणौ गवरी ।—र. रू.

फणफण-सं०स्त्री० [अनु०] तीर, पत्थर आदि को तेज गति से चलाने पर उत्पन्न होने वाली ध्वनि । उ०—भूंभीया तूंबीया मीरगढ़ ऊपरा, गोफणा फणफणा वहै गोळां ।—प.च.चौ.

फणमंडप-सं०पु०यौ० [सं० फण+मंडप] फैला हुआ सर्प का फन । उ०—तां फुणिंदु फणमंडप मांडइ, जां पडइ गुरुड नई नहुं फांडइ ।
—सालिसूरि

फणमाळ-सं०पु० [सं०फणमाल] शेषनाग ।

रू०भे०—फनमाळ ।

फणस-सं० स्त्री० [सं० पनस] कटहल का वृक्ष या फल ।

उ०—१. फेरारी नइ फालसां, फोफल फणस फणिंद । फूघेढ़ी नइ फूढ़ीया, फालक फिरांमण फिंद ।—मा. कां. प्र.

उ०—२. फणस किसेरू फालसां, सोभी मकर गुलाल । कोहलापाक कपूर परि, गविल गलिइ गाल ।—मा. कां. प्र.

उ०—३. पांन अडागर ऊपरि, मोती केरा चूंन । फोफल फणस कपूरनी, बीडां धरती धूंन ।—मा. कां. प्र.

फणसहस-सं०पु० [सं० सहस्रफण] देखो 'सहसफण' (रू.भे.)

फणसहसधार-सं०पु० [सं० सहस्रफणधारिन्] देखो 'सहसफणधार' (रू.भे.)

उ०—वसमसै मरण, फणसहसधार, कसमसै कमठ रज अंधकार ।
—वि.सं.

फणाकार—सं० पु० यौ० [सं०फण+आकार] १. सर्प का फन ।

२. सर्प, सांप । ३. शेषनाग ।

रू०भे०—फंणाकार, फुणाकार ।

फणाळो, फणालो-वि० [सं० फण+आलुच] फणधारी ।

सं०पु०—१. शेषनाग ।

उ०—जबर बजै जद धमजगर, नम सेस फणाळा ।—पा प्र.

२. सर्प, सांप ।

रू० भे०—फनाळी ।

मह०—फुणाळ ।

फणिंद-सं० पु० [सं० फण+इन्द्र] १. देखो 'फणींद्र' (रू.भे.)

उ०—१. फौजां में मौजां फिरै, गाहण गढ़ां गइंद । फुंकै काल फणिंद री, उडि गया नर-इंद ।—ध. व. ग्रं.

उ०—२. फेरारी नइ फालसां, फोफल फणस फणिंद । फूघेढ़ी नइ फुड़ीया, फालक फिरांमण फिंद ।—मा. कां. प्र.

फणि-सं०पु०—१. गगण के प्रथम भेद गुरु का नाम । (र.ज.प्र.)

२. देखो 'फणी' (रू.भे.)

फणिजकुमारि-सं० स्त्री० [सं० फणिजकुमारिका] नाग कन्या ।

उ०—अरिघड़ दूण सवालख आवध, सोळै दूण सभै सिणगारि । कूंत कवांण छुरी कांछोली, मलफि गुरज गहि फणिजकुमारि ।
—दूदौ

फणिपति-सं० पु० यौ० [सं० फणिन्+पतिः] १. नागराज, शेषनाग ।

२. वासुकि नाग ।

रू०भे०—फणपत, फणपति, फणपती, फणपत्त, फणपत्ति, फणपत्ती, फुणांपति, फुणांपत्ति ।

फणियास-सं० पु०—शृंगार में एक आसन का नाम ।

फणिफेन-सं० पु० [सं० फणिन्+फेनः] अफीम ।

फणिराज-सं० पु० [सं० फणिन्+राजः] १. शेषनाग ।

२. वासुकि नाग ।

फणींद, फणींद्र-सं०पु० [सं० फणिन्+इन्द्रः] १. शेषनाग । २. वासुकि नाग । ३. सर्प । ४. एक प्रकार का वृक्ष विशेष ।

रू० भे०—फणिंद, फुणंद, फुणंद्र, फुणद, फुणिंद ।

फणी-सं० पु० [सं० फणिन्] १. सांप, सर्प । (अ. मा., ह. नां. मा.)

उ०—फणी थांभ घर सैंसफण, सदा करै सिसकार । खाविंद धर खग पर थंभी, ह्वै रण मह हूंकार ।—रेवतसिंह भाटी

२. शेषनाग ।

उ०—करणी गढ़ ग्रास घणी कड़कै, धरणी-पुड़ धूजि फणी धड़कै ।
—मे.म.

३. एक प्रकार का बिना पत्तों का भू-फोड़ ।
४. टगण के पाँचवें भेद का नाम । (र. ज. प्र.)
रू०भे०—फणि, फनी, फुणी ।

फणीस-सं० पु० [सं० फणीश] १. शेषनाग । २. सर्प, सांप ।

फणैंजां-सर्व०—आपका, अपना । (कविराज बांकीदास)

फणौ—देखो 'फुणौ' (रू.भे.)

फत—देखो 'फतह' (रू.भे.)
उ०—पछारें पापों को त्रिपत भव तापों त्रुटि तळै । लावें गेश्रा को विधि विधि निसेधा फत मळै ।—ऊ. का.

फतन—देखो 'फितन' (रू. भे.)
उ०—तठा उपरायत खसबोय मंगायजै छै, सू अतर किण भांत री छै ? गुलाब री चनण री फतन री वुर री खस री करणै री, सू सीसी खुली छै ।—रा. सा. सं.

फतवा-सं०पु० [अ० फ़तवः] वह लिखित आदेश या व्यवस्था जो मुसलमान धर्माचार्य (मौलवी) द्वारा किसी विवादास्पद विषय पर अनुकूल या प्रतिकूल दी जाती है ।
उ०—मुल्ला काजी मंगहु मयाद, फतवा लीजै मेटन फसाद ।
—ऊ.का.

फतवी—देखो 'फतूही' (रू.भे.)

फतह-सं० स्त्री० [अ० फ़तह] १. विजय ।
उ०—१. 'जसराज' हरा कर फतह जूंभ, तखत री लाज मरजाद तूझ । कही पातसाह इम विदा कीन, दुहु राह बांह सावास दीन ।—वि.सं.
उ०—२. इतरै उण वखत रा ढोल नगारा बाजिया जिका सुण'र पूछी—आज भाई के पुरे में ढोल नगारै जो बाजै हैं सो किसी की सादी है या कोई कुंवर पैदा हुवा है या किंही ऊपर फतह हासिल की है ?
—पदमसिंह री बात
२. सफलता, कृतकार्य ।
रू० भे०—फत, फते, फतेह, फतै ।
यौ०—फतहचांद, फतहपेच ।

फतहचांद-सं० पु० [अ० फ़तह + सं० चंद्र] १. पुरुषों की पगड़ी पर धारण करने का आभूषण विशेष ।
रू० भे०—फतैचांद ।

फतहपेच-सं० पु० [अ० फ़तह + राज० पेच] १. पगड़ी बांधने का एक विशेष ढंग ।
२. पुरुषों की पगड़ी पर धारण करने का आभूषण विशेष ।
३. स्त्रियों के सिर गूंथने का एक ढंग विशेष ।
४. इस प्रकार के गूंथे हुए सिर पर धारण करने का स्त्रियों का एक शिरोभूषण विशेष ।
रू० भे०—फतैपेच ।

फतूर-सं० पु० [अ० फ़ुतूर] १. उपद्रव, खुराफात ।
२. ढोंग, आडंबर ।
उ०—विपत के मारे बूढ़े बंदर सै दो कलावत गावै, चूड़ेल की चेली सी चार भगतणियें नाच के भाव बतावै कोई खास तो खवासी करै, विचारै दरवांन इधर-उधर मारै-मारै फिरै, असा फतूर कर हमारै बुलांणै का हुकम दिया । देखणा ई था जिससे हमनै ई हठ न किया ।—दुरगादत्त बारहठ
३. विघ्न, बाधा । ४. हानि, नुकसान ।
रू० भे०—फितूर ।

फतूरियौ-वि० [अ० फ़तूर + रा० प्र० इयौ] १. खुराफात करने वाला ।
२. उपद्रवी ।
३. ढोंग या आडम्बर करने वाला ।
४. विघ्न या बाधा डालने वाला ।

फतूह-सं० पु० [अ० फ़ुतूह] १. समूह, ढेर । (अ. मा.)
२. विजय या जीत में प्राप्त धन । उ०—मेरगिर के से तोलणि फतूह के फरसते, सांम कांम में सधीर, सूरूं के सहायक, दीनदूं के दावागीर, दिलपाकूं के दोसत ।—र. रू.

फतूहा-सं० स्त्री० [?] ध्वजा, झंडा । उ०—चीण उदंगळ चेतियौ, दळ मभ गयौ दुबाह । फरक फतूहा फाबियौ, आरण कियौ उछाह । आरण कियौ उछाह, वीरातन वढ़िढ़यौ । मारू लोह, मराट, चमू सभ चढ़िढ़यौ ।—किसोरदांन बारहठ

फतूही-सं० स्त्री० [अ० फ़ुतूही] १. बिना आस्तीन का एक प्रकार का पहनने का बंडा ।
२. सदरी, जाकेट ।
३. युद्ध में लूट में मिला हुआ माल ।
रू०भे०—फतवी ।

फते, फतेह, फतै—देखो 'फतह' (रू.भे.)
उ०—१. संमत १६८१ रा काती सुदि १५ टूस नदी ऊपर साहजादे परवेज नुं खुरम लड़ाई हुई । राजा जी नुं हरोळ किया था, फते पाई ।—नैणसी
उ०—२. लंका फतेह कर अवध कूं आये, तमांम जीव अत उमंग सूं छाये ।—र. रू.
उ०—३. पछै आंण सिधमुख मांहे डेरौ कियौ । पाछा फतै कर वळिया ।—नैणसी

फतैचांद—देखो 'फतहचांद' (रू.भे.)

फतैपेच—देखो 'फतहपेच' (रू.भे.)
उ०—सिव सा दत सीसफूल रा सहजां, देख मठोड़ां सला दवै । 'वाघ' सुतन रघुवर जस वातां, फतैपेच रै फैल फवै ।
—स्वांमी गणेसपुरी

फदकण-सं०पु०—१. चारों ओर से आहते से घिरे हुए खेत के प्रवेश द्वार

पर खड्डा खोदकर उस खड्डे के ऊपर रखा जाने वाला सीधा लम्बा पत्थर या काष्ट का डंडा।

२. देखो 'फुदकण' (रू. भे.)

फदकणो, फदकबो—देखो 'फुदकणो, फुदकबो' (रू. भे.)

उ०—दयतां का अंवास सव जद आग जळाया । महलां ऊपर फदक फदक सब सहर घुवाया।—केसोदास गाडण

फदकणहार, हारो (हारी), फदकणियो—वि०।

फदकिओड़ो, फदकियोड़ो, फदक्योड़ो—भू० का० कृ०।

फदकीजणो, फदकीजबो—भाव वा०।

फदकूड़ो-सं० पु० [देशज] (स्त्री० फदकूड़ी) फुदकने या उछल-कूद करने वाला।

फदके-क्रि० वि०—शीघ्रता से, जल्दी।

उ०—आंधी सूं सांटा करती उठ आवै। फदके मूं फाटा नेता चुल जावै।—ऊ. का.

फदको, फदड़कउ, फदड़को-सं०पु० [देशज] १. कूदते-फांदते चलने वाला एक प्रकार का छोटा कीड़ा विशेष।

उ०—१. हरि निज रस विहूणा, मन सित गुणां वेगि वाधता, ताको कीट पतंग, फदड़का नेव उदंति।—रांमरासो

२. दूध का वह सार भाग जो दूध में अम्ल पदार्थ के संयोग से द्रव पदार्थ से पृथक होकर लच्छे के रूप में हो जाता है।

३. रुई कातने वाले की असावधानी या अदक्षता के कारण धागे के बीच में रहने वाला रुई का गुच्छा।

४. आकाश में बिखरे हुए बादल।

५. देखो 'फरड़को' (रू भे.)

उ०—सेटांणी फदड़को मारनै तिबारी में जावती जावती ई बोली—थांरो ग्यांन थांरै पाखती ई राखो, म्हारै को चाहीजै नी।

—फुलवाड़ी

क्रि० प्र०—मारणो।

मुहा०—फदड़को मारणो—गुस्सा करना, नाराज होना।

रू० भे०—फिदड़को।

फदफद-सं० स्त्री० [अनु०] १. खिचड़ी, हलवा आदि के पकते समय उत्पन्न होने वाली ध्वनि विशेष।

२. देखो 'फदाफद' (रू. भे.)

फदफदाटो-सं० पु० [देशज] १. उछल-कूद।

२. जोश, आवेश। उ०—दो वेळा सागेड़ी भारणी उतारीजी। ताचकनै आगै होय वोहो उठायो। सै फदफदाटो मिटग्यो।

—फुलवाड़ी

फदाक-सं० स्त्री० [अनु०] छलांग, कूदान।

उ०—१. म्हैं धरती माथै पड्यो जीव, रूंख माथै फदाकां मारण-वाळा बांदरा री काळजी कीकर काढूं।—फुलवाड़ी

उ०—२. जद हिरण पसवाड़ै बांटकां रै ओळै फदाक भरी तो जोर सूं कवाड़ी उण रै लारै वगाई।—फुलवाड़ी

क्रि० प्र०—भरणी, मारणी, लगाणी।

अल्पा०—फदाको।

फदाको-सं० पु०—देखो 'फदाक' (अल्पा., रू. भे.)

फदाफद-क्रि० वि० [अनु०] हाथ पैर उछालते हुए कूदने की क्रिया।

उ०—राजा जी आप री खुसी में ईं बावळा व्हियोड़ा हा। फदाफद कूदता कह्यो—रात री ओजगो है, थारी आंख्यां घुळै दीसै।

—फुलवाड़ी

रू० भे०—फदफद।

फदाळ-सं० पु० [देशज] 'फदाळी' लोगों द्वारा बजाया जाने वाला वाद्य विशेष।

फदाळी-सं० स्त्री० [देशज] सुन्नी मुसलमानों के अन्तर्गत एक जाति विशेष जो कूंजड़ों, कसाइयों, घोसियों आदि के विवाह में 'फदाळ' या ढोल बजाने का कार्य करते हैं।

फदियो-सं० पु० [अ० फिदिय:] १. एक प्रकार का छोटा सिक्का जो मध्यकाल में प्रायः समस्त राजस्थान में प्रचलित था।

उ०—१. तितरै सीवांणा ऊपर फौज आई। सीवांणै विग्रहीयो। तरै राव मालदे कह्यो—'दरबार बैठां कोई सीवांणो चढ़ै तो आज म्हांरी गरज छै। तरै 'तेजसी' कह्यो—'लाख फदिया म्हांनुं दो म्हैं चढ़स्यां।—राव मालदे री वात

उ०—२. तद कलाखांन मिणहारियो धरती माथै दंड कीयो—लाख दस। लाख फदिया भरीया। बाकी रा माहै सारण 'धनोजी' ओळ दीया।—राव चंद्रसेन री वात

उ०—३. ताहरां एवाळां कह्यो—'दीजै राज!' ताहरां मेळं सेपटै नव फदिया पड़दी मांहै सूं काढ़ि नै दिया।—नैणसी

२. विवाह आदि मांगलिक अवसरों पर फल-प्राप्ति की अभिलाषा से सेवा करने वाली जातियों (कुम्हार, बढ़ई आदि) को नेग के रूप में दिया जाने वाला सिक्का। (यह धेला, दुअन्नी, चौअन्नी, रुपया से मोहर तक भी हो सकता है।)

वि० वि०—प्राचीन काल में विवाहादि अवसरों पर फल-प्राप्ति की अभिलाषा से सेवा करने वाली जातियों (बढ़ई, नाई, दर्जी आदि) को पुरस्कार के रूप में एक-एक फदिया दिया जाता था। कालान्तर में फदिया के स्थान पर एक-एक पैसा दिया जाने लगा, परन्तु सम्पन्न व्यक्ति एक रुपया तक देने लगे और राजा-महाराजा एक मोहर तक देते थे। यह फदिया देने की प्रथा अभी तक प्रचलित है एवं शनैः शनैः लोप होती जा रही है।

३. दृष्टि-दोष निवारणार्थ छोटे बच्चे के हाथ, ललाट या शरीर के किसी अंग पर दी जाने वाली काजल की बिंदी।

उ०—ओढणियो पहराव्यो नहीं कन्हैया, टोपी न दीधी माथ रै। काजल पिण सारयो नहीं कन्हैया, फदिया न दीधा हाथ रै।

—जयवांणी

४. सघवा या कुमारिका के हाथ में लगाई जाने वाली मेंहदी की बिंदी।

५. वह धन जिसके बदले में किसी अपराधी को कारागार से छुड़ाया जाता था।

६. एक प्रकार का अर्थ-दण्ड।

फन-सं० पु० [अ० फ़न] १. गुण, खूबी। २. विद्या।
३. कला, दस्तकारी।
४. देखो 'फण' (रू. भे.)

फनधर—देखो 'फणधर' (रू. भे.)

फनपति—देखो 'फणपति' (रू. भे.)

फनफनाट-सं० पु० [अनु०] शरारत, उदंडता।
उ०—उण रै हाथां पगां दीवा जगता हा। पाखती आय अठी-उठी फनफनाटा करचा के ठोकर सूं वाटकी ऊंधी व्हैगी।—फुलवाड़ी

फनमाळ—देखो 'फणमाळ' (रू. भे.)
उ०—देखि निरंकुस देव इहिं, सज्जित समुहाया। धर पोडन धम-चक्क दै, फनमाळ फिराया।—वं. भा.

फनाळी—देखो 'फणाळी' (रू. भे.)

फनी—देखो 'फणी' (रू. भे.)
उ०—चढचौ हय पक्खर विट्टि रठौर, परचौ सिर सेस समस्तनि जोर। ढुली मनि मत्थ फनी फन चंपि, उरव्विय तांम थरत्थर कंपि।
—ला. रा.

फफरी-सं० स्त्री० [देशज] १. धमकी, घुड़की, डांट-फटकार।
व०—१. नमकीन। २. चिकनी चुपड़ी (बातें)।

फफवा, फफुवौ-सं० पु० [देशज] एक प्रकार का विषैला जन्तु।
उ०—विसधर कोट गोयरो वीछू, फफवा धांमण वेहड़ाफोड़। अमल कराळी जहर उतरै, आप नांम रौ मंत्र अरोड़।
—बखतरांम आसियौ

फफूंदी-सं० स्त्री० [देशज] १. स्त्रियों के लहंगे, साड़ी आदि में लगाई जाने वाली गांठ।

२. वह सफेद तह जो बरसात के दिनों में गीली लकड़ी एवं फलों आदि पर जम जाती है।

३. एक प्रकार का उड़ने वाला बरसाती जन्तु जो अधिकतर रात को रोशनी के पास उड़ता रहता है।
४. भुकड़ी।

फफोळौ-सं० पु० [सं० प्रस्फोट] त्वचा के जलने अथवा रक्त विकार से उत्पन्न एक प्रकार का फोड़ा जिसमें पानी भरा होता है।
उ०—धनस्यांम नहीं अरमांण नया, चिर परिचित म्हारे हिवड़ै रा। आज फफोळा बण फूटचा, गीतड़ला नटवर दुखड़ै रा।
—मीरां

फब, फबण-वि० [सं० प्रभवन] १. सुन्दरता, छवि।
उ०—जळहर गयौ दुनी जीवाडण, फब नहीं दापग फरक। साहां ग्रहण मोखणौ सांगो, आंथमियौ मोटौ अरक।
—महारांणा सांगा री गीत

२. फबने की अवस्था या भाव।

फबणौ, फबबौ—देखो 'फावणौ, फावबौ' (रू. भे.)
उ०—१. गायण एक सपत सुर गावै, लेख अछर उरवसी लजावै। झांकै एक हास द्रग झूलै, फबि रवि उदै कमळ सी फूलै।
—रा. रू.

उ०—२. झूमरदे रंग री लट्ठा री घाघरो अर खादी री मांखी भांत ओरणी उणनै जबरी फबती।

उ०—३. चिड़ियां नै रांणियां रा मैं'ल में ईंडा देवणा फबै कोनीं।
—फुलवाड़ी

उ०—४. तद राजकंवर कह्यौ—थां लोगां री वातां सुणियां पछै म्हनै थांरै जोग फबतौ ई न्याव करणौ पड़सी।—फुलवाड़ी

फबणहार, हारौ (हारी), फबणियौ—वि०।
फबिओड़ौ, फबियोड़ौ, फब्योड़ौ—भू० का० कृ०।
फबीजणौ, फबीजबौ—भाव वा०।

फबती-सं० स्त्री० [राज० फबणौ] १. समय के अनुकूल कही गई बात।
२. व्यंग, चुटकी।

फबियोड़ौ—देखो 'फावियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० फबियोड़ी)

फबीलौ-वि० [सं० प्रभा+रा०प्र०ईलौ] (स्त्री० फबीली) सुन्दर, छेला।
उ०—सजीली फबीली लंजीली छबीली रमकीली लंकीली डमकीली छकीली लटकीली चकीली चटकीली वत्तीस लछणी चौसट कळा विचछणी, केलरस क्यारी, प्रांणप्यारी जिण सुं मांहरौ निज नेह दुरस भांत राखजे देह।—र. हमीर

फबौ—देखो 'फुंबौ' (रू. भे.)

फब्बणौ, फब्बबौ—देखो 'फावणौ, फावबौ' (रू. भे.)
उ०—तुकमां रूप खतंम फतै रा फब्बिया, देखंतां उर दंभ अरंदा दब्बिया।—किसोरदांन बारहठ

फब्बणहार, हारौ (हारी), फब्बणियौ—वि०।
फब्बिओड़ौ, फब्बियोड़ौ, फब्योड़ौ—भू० का० कृ०।
फब्बीजणौ, फब्बीजबौ—भाव वा०।

फब्बियोड़ौ—देखो 'फावियोड़ौ' (रू. भे)
(स्त्री० फब्बियोड़ी)

फभड़ी, फमड़ी—देखो 'पांभड़ी' (रू. भे)
उ०—अंगुरी कूं मूंदड़ी-ओढ़ण कूं फभड़ी, पेरण कूं रेसमी धोतिया।
—जयवांणी

फरंग—१. देखो 'फिरंग' (रू. भे.)

२. देखो 'फिरंगी' (रू. भे.)

उ०—निज घणी कहै आखर जिकै नीमटै, किलकिला जिसा अमराव जुड़सी कटै। जुध फरग जाचसी फेर फौजां जटै, 'ऊद' हर 'मांन' मैं याद आसी उटै।—किसन जी आढ़ौ

फरंगट—देखो 'फरगट' (रू. भे.)

उ०—धप मप धौं मादल वाजइ, भुंगल भेरि ए। ततथै-ततथै नटुया नाचइ, फरंगट फेरि ए।—स. कु.

फरगांण—देखो 'फिरंगी' (मह., रू. भे)

उ०—तालड़ा फिरै फरंगांण तारख तरह, दुरंग बांका लियण रोड ददमां। व्याळ विध तठै अवनीप आवै वहै, कमंध जटधार रै श्रोट कदमां।—मोड जी आढ़ौ

फरंगी—देखो 'फिरंगी' (रू. भे.)

उ०—१. फिरै फरंगी के हुकां काज सुधारै हकारै फौजां।

—महाराजा मांनसिंह रौ गीत

उ०—२. महाराज 'मांन' मुरधरा माथै, चमू फरंगी नांह नड़ै, रे! जांणै सूरज वाळौ रथ, कामी सूं आंतरै कढ़ै।—नाथूरांम जी लाळस

फरंट—वि• [अं० फ्रंट] विरुद्ध, खिलाफ, प्रतिकूल।

फर—सं० स्त्री०—१. पीठ।

२. पर्वत या तालाब की मेंढ़ का वह भाग जो भूमि को स्पर्श करता है, तलहटी। उ०—ढहलाए दद्दर हींसै हैमर फूटि सरोवर पाळ फरं।—गु. रू. बं.

३. पशु के अगले पैर और धड़ से जुड़ने के संधिस्थान के अंदर का भाग। उ०—महारांणौ जी एक इका नै पातसा रा हाथी आगै वहतां मार नीसारिया तठै इका री तरवार घोड़ा रै फर में पड़ी आगलो हावौ पग उठै हीज पड़ियौ।—वी. स. टी.

[स०फलकं] ४. ढाल। उ०—१. आंणी अमह जडाळी आहव,फूटती घोह में फर। हुय तौ वळह 'कुंभकन' होयै, न तौ असुर सुर नर अवर।—महारांणा कुंभा रौ गीत

उ०—२. थें मो पासे धन देख बाहर कर आया सो फर ढाल नै तीरां तीर लीधां आपरै भुजाआं रै भरोसे हां, जकण रै हीज पांण धरती रा धन खावां हां।—वी. स. टी.

[सं० फलम्] ५. बाण में तीर का अग्र नुकीला भाग।

उ०—पैलै पार वरे वींद भराये वेवांणां परी, सोक सरां वायकुंडां पुराये सादीह। फरां फाड़ै सत्रां तोड़ै चुराये भालडां फूटै, श्रेके-राड़ै फतै जांगी घुराये अबीह।—गंभीरसिंघ सोळंकी रौ गीत

६. ढलवां भू-भाग, ढलाव।

७. झूंठी प्रशंसा करना, बढ़ा-चढ़ा कर कहना।

क्रि० प्र०—मारणी।

८. चिड़िया के उड़ने से परों से उत्पन्न ध्वनि।

उ०—चिड़ी तौ फर करती उठा सूं उडगी।—फुलवाड़ी

९. देखो 'फल' (रू. भे.)

उ०—आंपण पांन फर मेल्हिया ईसर, मोटै सुपह दियंता मांन।

—महादेव पारवती री वेलि

फरक—सं० पु० [अ० फ़र्क़] १. पार्थक्य, पृथकता, अलगाव।

२. दो स्थानों के बीच की दूरी, अन्तर, फासला।

३. भेद-भाव, परायापन, दुराव।

उ०—म्हे तौ सगळा आपनै भगवांन अर बाप री ठौड़ मांनां, इण में आपनै कांई फरक निगै आयौ?—फुलवाड़ी

४. दो विभिन्न वस्तुओं या व्यक्तियों में होने वाली विशेषता।

उ०—श्रोर जैं'र तौ मूंढा में आवतां ही झट परलोक नै भेज दै है पण म्हारा पय दूध में ओ आंतरौ फरक है कै कांम पड़ियां मारै, अरथात सत्रुआं सूं जूंझनें मरै।—वी. स. टी.

५. कमी, न्यूनता।

उ०—गुरु खोटा व्है तौ देव में फरक पाड़ देवै अनें धरम में ई फरक पाड देवै।—भि. द्र.

६. भेद, अन्तर।

उ०—१. जी फरक न जांणै, अरक न आणै, भव-भव नरक भुगंदा है।—ऊ. का

उ०—२. उणमें अर आं देतां में म्हांनै तौ कीं फरक नीं लखावै।

—फुलवाड़ी

७. हेर फेर, परिवर्तन।

उ०—वो आप रै कह्योड़ी बात में फरक नीं आवण देवैला, श्रो सगळां नै भरोसौ हो।—फुलवाड़ी

८. असर, प्रभाव।

उ०—रिपिया दोय रिपिया रा खरचा सूं वांरै माथै कीं फरक नीं पड़तौ।—फुलवाड़ी

९. हिसाब-किताब में भूल के कारण होने वाला अन्तर।

१०. एक सख्या या रकम को दूसरी सख्या या रकम में से घटाने पर निकलने वाला शेषांश।

११. दो विभिन्न पदार्थों में होने वाली विषमता।

१२. वह मूल गुण या तत्त्व जो किसी के सुधरने या सुधरे हुए होने पर लक्षित होता हो।

ज्यूं०—बीमारी सूं उठियां पछी हमैं सरीर में घणौ फरक है।

उ०—विणजारा रै श्रोखद सूं बांमण रै खासौ भलौ फरक पड़ियौ।

—फुलवाड़ी

१३. किसी की स्थिति आदि में होने वाला फेर-फार, सुधार, ह्रास आदि परिवर्तन।

ज्यूं०—हमैं ताव हळको है, पैं'ला सूं घणौ फरक है।

ज्यूं०—पैं'ली री दुनियां अर आज री दुनियां में घणौ फरक है।

१४. ध्वजा, झंडी।

रू० भे०—फरक्क ।

फरकणी, फरकवी—देखो 'फडकणी, फडकवी (रू. भे.)

उ०—१. धोळी धजा घणी-ह, फावै देवळ फरकती । घट मो चाह घणी-ह, कोळू जाय दरसण करूं ।—पा. प्र.

उ०—२. फाटा घावळिया घाघरिया फाटा, फरकै चोटळिया देता फरराटा ।—ऊ. का.

फरकणहार, हारौ (हारी), फरकणियौ—वि० ।

फरकिग्रोड़ौ, फरकियोड़ौ, फरक्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

फरकीजणौ, फरकीजवौ—भाव वा० ।

फरकाड़ौ—देखो 'फरकेड़ौ' (रू. भे.)

फरकाड़णौ, फरकाड़वौ—देखो 'फड़काणौ, फड़कावौ' (रू. भे.)

फरकाड़णहार, हारौ (हारी), फरकाड़णियौ—वि० ।

फरकाड़िग्रोड़ौ, फरकाड़ियोड़ौ, फरकाड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

फरकाड़ीजणौ, फरकाड़ीजवौ—कर्म वा० ।

फरकाड़ियोड़ौ—देखो 'फडकायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० फरकाड़ियोड़ी)

फरकाणौ, फरकावौ—देखो 'फडकाणौ, फड़कावौ' (रू. भे.)

फरकाणहार, हारौ (हारी), फरकाणियौ—वि० ।

फरकायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

फरकाईजणौ, फरकाईजवौ—कर्म वा० ।

फरकायोड़ौ—देखो 'फड़कायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० फरकायोड़ी)

फरकावणौ, फरकाववौ—देखो 'फड़काणौ, फडकावौ' (रू. भे.)

उ०—भूंडण आंमण दूमणी, की फरकावै कांन । की करड़ा की कब्बरा, देख मजीठा जांण ।—डाढाळा सूर री वात

फरकावणहार, हारौ (हारी), फरकावणियौ—वि० ।

फरकाविग्रोड़ौ, फरकावियोड़ौ, फरकाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

फरकावीजणौ, फरकावीजवौ—कर्म वा० ।

फरकावियोड़ौ—देखो 'फडकायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० फरकावियोडी)

फरकियोड़ौ—देखो 'फडकियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० फरकियोड़ी)

फरकी—देखो 'फिरकी' (रू. भे.)

फरकीवाड़ौ, फरकेड़ौ—सं०पु०[देशज]१. वर्षा के उपरान्त भूमि के गिलेपन में कुछ न्यूनता आने की स्थिति ।

२. वर्षा के ठीक बाद बादलों के बिखरने तथा धूप निकलने की स्थिति ।

रू० भे०—फरकाड़ौ ।

फरकौ—वि० [देशज] १. वह जिसमें जल की मात्रा न्यूनतम हो ।

२. स्वच्छ, निर्मल (आकाश) ।

सं० पु०—नमकीन खाद्य पदार्थ ।

फरक्क—देखो 'फरक' (रू. भे.)

फरक्कणौ, फरक्कवौ—देखो 'फडकणौ, फडकवौ' (रू. भे.)

उ०—१. फौजक्क रोसक्क फारक्क फरक्क, हूरक्क वरक्क हुवै खळ हक्क । सीसक्क सभक्क हारक्क हरक्क, ग्रिधक्क गहक्क गूंदक्क गटक्क ।—सू. प्र.

उ०—२. झंडा फरक्कै वयंडा पीठ कोमंडां चा चळा झलै, घूवांगोळ आतसां नगारां पड़ै ध्रीह । छडाळा घमोडि मोड़ि कुरम्मां री फोड़ि छाति, दोटै चाढ़ि लेगयो ढूंढ़ाड़ा घोळै द्रीह ।

—वखतसिंघ री गीत

फरक्कणहार, हारौ (हारी), फरक्कणियौ—वि० ।

फरक्किग्रोड़ौ, फरक्कियोड़ौ, फरक्क्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

फरक्कीजणौ, फरक्कीजवौ—भाव वा० ।

फरक्कियोड़ौ—देखो 'फड़कियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० फरक्कियोड़ी)

फरगट—सं०पु० [देशज] १. तिरछी चितवन, नजारा । उ०—१. फरगट मारै फूटरा, कर सूं सरगट काढ़ । सठ दाखै भाळो सरस, गिनका वाळो गाढ़ ।—बां. दा.

उ०—२. चेलो चोलां में मन मोळां में रोळां में रूठंदा है, पकवांन परूसै रळपट रूसै, फरगट सुख फैंकंदा है ।—ऊ का.

२. घोड़े की चाल विशेष । उ०—घोड़ां रै फरगटै चालतां थकां ई वां ईडां नै ग्रैल ई नी आवती ही ।—फुलवाडी

३. एक प्रकार का नृत्य, जिसे राजस्थानी में 'फरकाफूंदी' भी कहते हैं ।

उ०—वाजै नित घूघर वर्धे, फरगट वाळो फैल । तन-मन मिळियो तायफै, छाकां हिळियो छैल ।—बां. दा.

४. तमक ।

५. गोल चक्र में घूमने की क्रिया, घूम, चक्र ।

रू० भे०—फरणगट, फरंगट, फरगट्ट ।

अल्पा०—फरगटौ ।

फरगटौ—देखो 'फरगट' (अल्पा., रू. भे.)

फरगट्ट—देखो 'फरगट' (रू. भे.)

उ०—खुरै खाना पड़ै खुरी, तांनामांना करै तुरी । फौरा दीयै फरगट्ट, नाच छंद जिही नट्ट ।—गु. रू. बं.

फरगांण—देखो 'फिरंगी' (मह , रू. भे.)

फरड़—देखो 'फड़ड़' (रू. भे.)

उ०—१. वढ़ि कधड़ मुख करत वड़वड़, फरड़ फिफरड़ कळिज फड़फड़ । फील घड़ पड़ ग्रभड़ भड़फड़, हुय दड़ड़ रत-मुनंद हडहड़ ।

—सू. प्र.

फरड़कणौ, फरड़कबौ—क्रि० अ० [अनु०] घोड़े, गधे, सूअर आदि पशुओं के नाक से तेज श्वांस लेने पर ध्वनि उत्पन्न होना।

फरड़कणहार, हारौ (हारी), फरड़कणियौ—वि०।

फरड़किओड़ौ, फरड़कियोड़ौ, फरड़क्योड़ौ—भू० का० कृ०।

फरड़कीजणौ, फरड़कीजबौ—भाव वा०।

फरड़कौ—सं० पु० [अनु०] १. सरोष विरोध सूचक या आपत्तिजनक भाव प्रकट करने वाली मनोदशा या मुद्रा। उ०—सेठां री इण बात माथै सेठांणी रीसां बळती फरड़कौ मारनै उठा सूं वहीर व्हैगी। —फुलवाड़ी

२. घोड़े, गधे, सूअर आदि पशुओं के नाक की आवाज।

उ०—१. ताहरां कोढीधज री मुंहडौ कुहटतां कोडीधज फरड़कौ कियौ, सो गांम उगरास मांहे केरडू मगरै तांई सुणियौ। —नैणसी

उ०—२. मांणस रा कमळ ज्यों नासा फून रही छै। नासा रा फरड़का वाजि नै रहीआ छै।—रा. सा. सं.

रू० भे०—फरड़ाटौ, फरणाटौ।

मह०—फरड़ाट।

फरड़ाट—देखो 'फरड़कौ' (मह., रू. भे.)

फरड़ाटौ—देखो 'फरड़कौ' (रू. भे.)

उ०—रांणी तौ फरड़ाटौ मारनै उठा सूं वहीर व्हैगी। राजा रै सांमी ई नीं जोयौ।—फुलवाड़ी

क्रि० प्र०—मारणौ।

२. देखो 'फड़ड़' (रू. भे)

फरड़ाहक, फरड़ाहट—देखो 'फड़ड' (रू. भे.)

उ०—फरड़ाहक बोनत फींफरियूं, करवा हत 'पाल' करै मरियूं। —पा. प्र.

फरड़ी—सं० स्त्री० [देशज] बाजरे के पौधों को बाले (सिट्टे) सहित काटने का ढंग या क्रिया।

रू० भे०—फिरड़ी।

फरड़ौ—सं० पु० [देशज] १. ऊंट का पदाघात।

२. इंठन। ढूंढाड़)

फरजंद—सं० पु० [फ़ा० फ़र्जन्द] १. पुत्र, लड़का, बेटा। उ०—तथा स्रीचंद फरजंद परतू तणौ, पाय संकट घणौ खुड़द पूगौ। कसट सहियौ जिकौ हाल मालुम कियौ, हाल कहियौ अतै व्हाल हूगौ। —मे. म.

२. संतान। उ०—जे जलाल नै बड़ा खून किया। हमारै ड्योढीदार पड़ाइयै कूं मारिया। तद बूबना कही—हजरत, जलाल साहिब आपकी हजूर आता था सो मेरी ड्योढ़ी नजदीक आय निकळिया। इतरै पड़ाइया नै गाळ अचांनक दीन्ही, बेजबांनां वोली। सुणी जद वौ भी हजूर का फरजंद था, फेर सिपाही था, उसकूं भी रीस आई। —जलाल बूबना री बात

रू० भे०—फरजन, फरजन्न, फरजिंद।

फरज—सं०पु०[फ़ा०फ़र्ज]१. कर्त्तव्य, कर्म। उ०—१. अर तीतर रखवाळां री भांत बोल बोल नै सावचेती दरसावता जांणै आप री फरज निभावता हा।—फुलवाड़ी

उ०—२. अब कै धांन चोखौ हुयौ हो। क्यूं नहीं वौ न्यात नै जिमाय नै आप री फरज पूरी करलै।—रातवासौ

२. मुसलमानी धर्मानुसार वे अति आवश्यक धार्मिक कार्य जिनके न करने से मनुष्य दोषी और पतित माना जाता है।

ज्यूं०—नमाज पढ़णी।

३. ऋणभार। उ०—सेवक ईस सनेह सज, एवज भर दिय आप। है न आज किणरोइ हमैं, तो सिर फरज 'प्रताप'। —जैतदांन बारहठ

४. केवल अनुमान के आधार पर तर्क वितर्क के प्रसंग में किसी बात का स्वरूप बनाना या स्थिर करना, कल्पना, अनुमानित बात।

ज्यूं०—फरज करौ म्हैं नहीं हुतौ।

५. एहसान। उ०—अेक दिन कीड़ी सांयड नै कह्यौ—बाई, म्हैं थारौ फरज कद उतारस्यूं, इत्ता दिन म्हैं थारै माथै चढ़ नै घणी सैंलां करी।—फुलवाड़ी

[अ० फ़र्द] ६. हुक्मनामा, आदेश-पत्र। उ०—नौख न जोख करै नवरोजै, जोख न भूखण धरै जवाहर। दसकत करै न मिळै दिवांणां, अरजी फरज मतालब ऊपर।—सू. प्र.

रू० भे०—फरजन, फरजन्न, फरजिंद।

फरजन, फरजन्न, फरजिंद—१. देखो 'फरजंद' (रू. भे.)

उ०—१. दोनूं फरजन खांडा ले राखिया छै। —दूलची जोइयै री वारता

उ०—२. ऐसे सबूं का सिरपोस सईद अबदअली खांन सो अबधअलीखांन कैसा। दिलावरखांन का फरजन दिलावरखांन जैसा। —सू. प्र.

उ०—३. हम खिजमत कबूल, हम्म फरजन्न तुमारै। हम सिरि ऊपरि रजा, हुकम हम कियौ आरै।—गु. रू. बं.

२. देखो 'फरज' (रू. भे.)

उ०—अपांरी जात किणी रौ माथै फरजन नीं राख्या करै। —फुलवाड़ी

फरजि, फरजी—वि० [फ़ा० फ़र्जी] १. माना हुआ, कल्पित।

२. झूठा, असत्य, जाली। ३. असली का उलटा, नकली।

४. सत्ताहीन, नाम मात्र का।

५. शतरंज का एक मोहरा। उ०—पत्र रण चढ़ कट पड़ै, या ले घर-पथ जै लेर। संहरै सतरंज सिपहया, फिरै फरजि ह्वै फेर। —रेवतसिंह भाटी

फरण-सं० स्त्री० [देशज] १. घूमने या चक्र देने की क्रिया।
२. ध्वनि विशेष।
क्रि० वि०—शीघ्र, झट।

फरणफट-क्रि० वि० [अनु०] शीघ्रता से त्वरा से, तेजी से।

फरणाट-सं० स्त्री० [अनु०] तेजगति, शीघ्रता।
क्रि० वि०—शीघ्रता से, तेजी से।

फरणाटो—१. देखो 'फरड़को' (रू. भे.)
२. देखो 'फड़ड़' (रू. भे.)

फरणाहट-सं० स्त्री० [अनु०] १. ध्वनि विशेष।

फरणी—देखो 'फुरणी' (रू. भे.)
उ०—कांधो पूठ अेक सारसो छै। गुळवाट गोहूं जव चिणां री जुवार री चरणहार छै। मयमत छै। मू चर चर फरणियां धाया छै। माछुरां रा संताया छै।—रा. सा. सं.

फरणी, फरबौ—देखो 'फिरणौ, फिरबौ' (रू. भे.)
उ०—सोहरा याई फर गया, मइं सर भरिया रोइ। आव सोहागरा नींदड़ी, वळि प्रिय देखूं सोइ।—ढो. मा.
फरणहार, हारौ (हारी), फरणियौ—वि०।
फरिग्रोड़ौ, फरियोड़ौ, फरयोड़ौ—भू० का० कृ०।
फरीजणौ, फरीजबौ—भाव वा०।

फरती-सं० स्त्री० [देशज] १. वेश्या, रंडी।
२. व्यभिचारिणी, कुलटा स्त्री। उ०—केथ पधारो ठाकुरां, मरदां नैण मिळाय। फरती रा लीधा फिरै, घरती रा घन खाय।
—पी. स.

फरद, फरदी—देखो 'फड़द' (रू. भे.)
उ०—१. तर महाराज री मुंसी फरदी उतार लीन्ही।
—महाराजा जयसिंह आंमेर रा धणी री वारता
उ०—२. महाराज जयसिंह जी कही, कांम री फरदी उतार लेवो।
महाराजा जयसिंह आंमेर रा धणी री वारता

फरफर-सं० पु० [अनु०] १. किसी हल्की वस्तु के उड़ने या फड़कने से उत्पन्न ध्वनि।
२. एक प्रकार का खाद्य पदार्थ विशेष जो गेहूं के फाड़े भिगोकर उन्हें मथकर उसके सार पदार्थ में सज्जी मिलाकर बनाया जाता है।
(मेवाड़)

फरफराणौ, फरफराबौ-क्रि० अ०, स० [अनु०] १. वस्त्र, कागज आदि हल्की वस्तु का फरफर शब्द करते हुए उड़ना।
२. किसी नम या गीले खाद्य पदार्थ को कड़क बनाने या सुखाने हेतु सेंकना।
फरफराणहार, हारौ (हारी), फरफराणियौ—वि०।
फरफरायोड़ौ—भू० का० कृ०।
फरफराईजणौ, फरफराईजबौ—भाव वा०/कर्म वा०।

फरफरियौ—देखो 'फरफरौ' (अल्पा., रू. भे.)

फरफरौ-सं०पु० [अनु०] (स्त्री० फरफरी) १. कोई नम या गीला खाद्य पदार्थ अग्नि पर सेक कर सूखा या कड़क बनाया हुआ।
२. नमकीन।
३. पतला, झीणा।
उ०—अेक अेक सूं इदका रूपाळा थोडा़ल ज्यांनै देख्यां निजर लागै जैड़ा—कोरूगिया कानां रा, फरफरियां होठां रा, मांदी गायड़ रा, हिरणगट्टी आंख्यां रा।—फुलवाड़ी
४. बनावटी।
ज्यूं०—फरफरी वातां।
अल्पा०—फरफरियौ।

फरम-सं० स्त्री० [अं० फर्म] व्यापारिक संस्था।

फरमांण, फरमांन-सं० पु० [फ़ा० फ़र्मान] १. आदेश, हुक्म, आज्ञा।
उ०—जद मोमुख सूं यूं जती, फुरमायै फरमांण। गणपत री मा नाव नै, जायै पूरो जांण।—पा. प्र.
२. राजकीय आज्ञा-पत्र।
उ०—अब बुंदीस रो सुनायो विचारि मऊ रो फरमांण, निराइ पहली ही बुंदी भेजि हाडां रा हुक्म (सूबे) ग्रता सूं मरागीस कियौ।
—वं. भा.
३. विनती, अरज।
रू० भे०—फरवांण, फुरमांण, फुरमांणि, फुरमांन, फुरम्मांण।
अल्पा०—फुरमांणौ।

फरमांबरदार, फरमांवरदार, फरमांबरदार-वि० [फ़ा० फ़र्मांबरदार]
आदेश मानने वाला, हुक्म मानने वाला।
उ०—जब वखत में सनांन दांन अंग का पूजन करि सिरै दरबार का हुकम किया। फरमांवरदारू नै आदाब, बजाय लिया।—सू.प्र.
रू० भे०—फरमावरदार

फरमाइस-सं० स्त्री० [फ़ा० फ़र्माइश] १. आज्ञा, आदेश।
२. इच्छा, मांग।
रू० भे०—फरमास, फुरमायस, फुरमास।

फरमाड़णौ, फरमाड़बौ—देखो 'फरमाणौ, फरमाबौ' (रू. भे.)
फरमाड़णहार, हारौ (हारी), फरमाड़णियौ—वि०।
फरमाड़िग्रोड़ौ, फरमाड़ियोड़ौ, फरमाड़योड़ौ—भू० का० कृ०।
फरमाड़ीजणौ, फरमाड़ीजबौ—कर्म वा०।

फरमाड़ियोड़ौ—देखो 'फरमायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० फरमाड़ियोड़ी)

फरमाणौ, फरमाबौ-क्रि० स० [फ़ा० फ़र्मान] १. कहना।
उ०—१. जद महाराज फरमाई नवाब जी था म्हारी पाठ राखस्यो,

मोनूं खिदमत में राखस्यौ ।

—महाराजा जयसिंह ग्रांमेर रा धणी री वारता

उ०—२. पण डावड़ियां तौ ग्रापरी ठौड़ सूं चुळी ई कोनीं मूंडौ उतारनै बोली—अबै आप हुकम फरमावौ ज्यूं करां ।—फुलवाड़ी

२. आदेश देना, हुक्म देना ।

उ०—१. ताहरां कहियौ—कुंवर दळपत जी ज्यूं राजि फरमाइसै त्यूं करिसि ।—द. वि.

उ०—२. सेठ बोल्या—साख व्हैगी आप रा हक में ठीक है । ग्राप फरमावौ तौ चांद-सूरज री साख मांड दूं ।—फुलवाड़ी

३. विनती करना, अरज करना ।

४. करना । उ०—हाजरियै कह्यौ—हुकम, पांणी नीठग्यौ । घोड़ी ताळ ग्रारांम फरमावौ ।—फुलवाड़ी

फरमाणहार, हारौ (हारी), फरमाणियौ—वि० ।

फरमायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

फरमाईजणौ, फरमाईजबौ—कर्म वा० ।

फरमाड़णौ, फरमाड़बौ, फरमावणौ, फरमावबौ, फुरमाड़णौ, फुरमाड़बौ, फुरमाणौ, फुरमावौ, फुरमावणौ, फुरमावबौ

—रू०भे० ।

फरमायरदार—देखो 'फरमांबरदार' (रू. भे.)

फरमायोड़ौ-भू०का०कृ०—१. कहा हुग्रा. २. आदेश दिया हुआ, हुक्म दिया हुग्रा. ३. विनती किया हुग्रा, ग्रर्ज किया हुग्रा. ४. किया हुग्रा. (ग्राराम)

(स्त्री० फरमायोड़ी)

फरमावणौ, फरमावबौ—देखो 'फरमाणौ, फरमावौ' (रू. भे.)

उ०—चौधरी—ग्राप री फरमावणौ तौ वाजव है पण ग्रवार म्हनै रकम री जरुरत तौ है कोयनी, पछै हुसी जद देखी जासी ।

—रातवासौ

फरमावणहार, हारौ (हारी), फरमावणियौ—वि० ।

फरमाविग्रोड़ौ, फरमावियोड़ौ, फरमाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

फरमावीजणौ, फरमावीजबौ—कर्म वा० ।

फरमावियोड़ौ—देखो 'फरमायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० फरमावियोड़ी)

फरमास—देखो 'फरमाइस' (रू. भे.)

उ०—म्हारो तौ देवाळौ पीटीज रयौ है ग्रर थांरी फरमास ग्रागै-ई खड़ी है ।—वरसगांठ

फरमौ-स०पु० [ग्रं०फ्रेम] १. किसी वस्तु को ढालने का यंत्र या उपकरण, सांचा ।

[ग्रं० फार्म] २. छापाखाने की मशीन पर एक ही समय एक साथ छपने वाले पृष्ठों का समूह ।

फरयाद—देखो 'फरियाद' (रू. भे.)

उ०—१. सुणै माहरी अरज वीकांण वाळी सगत, वार मत लाव रे ! वेद वरणी । ग्राव रे ! आव थळवाट सूं ईसरी, करूं फरयाद फरयाद करणी ।—वखतावर मोतीसर

उ०—२. ग्रोर फरयाद वरस-दिन में दोय तीन वादसाह रै कांनां जाय पड़ै ।—नी. प्र.

फरयादी—देखो 'फरियादी' (रू. भे.)

फरर-सं० स्त्री० [ग्रनु०] १. फहरने की ग्रवस्था, क्रिया या भाव ।

२. देखो 'फररी' (रू. भे.)

उ०—भळहळत चिग्रत भाल, ढळकंत रंग रंग ढाल । धज फरर नेजा धार, सभि तोग धर असवर ।—सू. प्र.

फररणौ, फररबौ—देखो 'फरहरणौ, फरहरबौ' (रू. भे.)

उ०—सुज पूठि नेजा फररत सही, गिर सीस तरोवर ऊगि गही ।

—मा. वचनिका

फरराट-सं० स्त्री० [ग्रनु०] किसी वस्तु के उड़ने या फड़फड़ाने से उत्पन्न ध्वनि ।

ग्रल्पा०—फरराटौ ।

फरराटौ-सं० पु०—देखो 'फरराट' (ग्रल्पा., रू. भे.)

फररी-सं० स्त्री० [देशज] १. छोटी पताका, झण्डी । २. छोटी झंडी जो भाला के साथ लगी रहती है ।

रू० भे०—फउरि, फउरी, फरर, फरि, फरी ।

ग्रल्पा०—फररौ ।

फररौ-सं० पु० [देशज] १. संकेत, इशारा ।

उ०—तरां सांढ़ीयै उपरणी रौ फररौ कीयां ग्रावतौ विरमदे जी री नीजर आयौ ।—वीरमदे सोनगरा री वात

२. देखो 'फररी' (ग्रल्पा., रू. भे.)

उ०—सवजे जरदाई लाल सिहाई वांनै छायौ व्रहमंडं । फररा वैरक्कां फावी कटकां जांणक फूले वनखडं ।—गु. रू. वं.

३. देखो 'फरहरौ' (रू. भे.)

फरळणौ, फरळबौ—देखो 'फुरळणौ, फुरळबौ' (रू. भे.)

फरळणहार, हारौ (हारी), फरळणियौ—वि० ।

फरळिग्रोड़ौ, फरळियोड़ौ, फरळ्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

फरळीजणौ, फरळीजबौ—कर्म वा० ।

फरलांग-सं० स्त्री० [ग्रं०] लंबाई व दूरी का नाप विशेष, मील का ग्राठवां भाग ।

रू० भे०—फलांग ।

फरळियोड़ौ—देखो 'फुरळियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० फरळियोड़ी)

फरवट-सं० पु० [देशज] १. चालाक, चतुर ।

२. वर्तमान युग से प्रभावित ।

फरवरी—सं० पु० [अं०] अंग्रेजी वर्ष का दूसरा महीना ।

फरवांण—देखो 'फरमांण' (रू. भे.)

उ०—यूं सिरोपाव, तरवार, कटारी, घोड़ा देयकर भटनेर रौ फरवांण कर दीन्हौ ।—ठाकुर जैतसी राठौड़ री वारता

फरवास—सं० पु० [देशज] एक प्रकार का वृक्ष विशेष ।

उ०—१. तिण ऊपर घणा वडां पींपळां, हींग, बड़ायण, नींब, नाळेर, आंबा, आंवली, नींबू, सरेस, खेजड़, जाळ, आमापाळी, खिजूर, गूंदी, लेसूड़ो, बेनूला, खिरणी, सोळसिरी, फरवास, रायसेण, महुवा, ढाक, कुमरा, कीकर, हूळा भुकने रह्या छै ।
—रा. म. सं.

उ०—२. ताहरां फरवास वढ़ायो, ढोल रै वास्तै ।—नैणसी

रू० भे०—फरहास, फरास, फराम, फिरास ।

अल्पा०—फरांसो ।

फरवौ—वि० [देशज] (स्त्री० फरवी) तेज चलने वाला ऊंट, बैल एवं घोड़ा । उ०—हिवै जगदे रैबारी नैं नेड़ पूछियौ, घणी फरवी, चलाक सांढ हुवै तिका बताय ।—जगदा मुवदा भाटी री बात

फरस—सं० पु० [अ० फ़र्श] १. कमरे, भवन आदि की पक्की तथा समतल भूमि, फर्श, गृहतल, गृहभूमि । उ०—तिण समै रतनां रा रैवास में मकरांणा रौ एक महल है, जिण में इण री घणी महल है, सो इण री पगथाल्यां रा प्रतबिंब सूं फरस तौ मूंगियां री छिब पावै है ।—र. हमीर

२. उक्त गृहभूमि पर बिछाया जाने वाला वस्त्र । (मेवात)

[सं० स्पर्श] ३. स्पर्श । उ०—अणगळ पांणी लूगड़ा, धोवा नदी तलाव । जीव संहार कियो घणउ, सातूं फरस प्रभाव ।—स. कु.

४. पत्थर या समचौरस शिला ।

५. देखो 'परसु' (रू. भे.)

उ०—१. मुदगर गुरज सावळ खड़ग, फरस कटारां चक्र सहि । चौकमार कुहाड़ां गोफणां, इम आयुध ग्रहियां सबहि ।
—मा. वचनिका

उ०—२. श्रीलंबोदर परम संत, बुधवंत परम सिद्धिवर । आच फरस ओपंत, विघन-वन हंत ऊबर ।—र. ज. प्र.

६. देखो 'परसुरांम' ।

उ०—वणी सूर कासप तणी संकर रै गजबदन, सूर रै करण हाटक अदेवो । वंद रै 'अंजन' जमदगन रै फरस यम, दुकळ 'माहव' तणी असो 'देवो' ।—पहाड़खां आढ़ो

फरसण—देखो 'स्परसण' (रू. भे.)

उ०—विधि फरसण मन माहरो रै, मोहि रह्यो दिन रात रै । पुन्य प्रवन थी पामियो रै, दरसन गिरी केरी जात रै ।
—जिनहरस सूरि

फरसणा—सं० स्त्री० [सं० स्पर्शनम्] १. पालन करना, आचरण में लाना, क्रियान्वित करना । उ०—केइ कहै साध रो धरम और नै ग्रहस्थ रो धरम ओर । जद स्वांमी जी बोल्या—चौथा गुण ठांणा री अनै तेरमां गुण ठांणा री, श्रद्धा तौ एक छै । अनै फरसणा जुदी छै । काचा पांणी में अपकाय रा असंख्याता जीव अनै नीलण रा अनंता जीव, चौथा, छठा, तेरमां गुण ठांणा वाला सरव सरधै सरधै । तिण फरसणा में फेर ।—भि. द्र.

२. ग्राह्य पदार्थ के रूप, रंग, गंध तथा स्पर्श में परिवर्तन होने का भाव जिसके अभाव में वह पदार्थ ग्रहण नहीं किया जा सकता है ।
(जैन)

फरसणौ, फरसबौ—देखो 'परसणौ, परसबौ' (रू. भे.)

उ०—उत्तंग गिरिवर अवर फरसत, मेघ बरसत जोर । दमकती दामिनि, बहुर भांमिनी, चमकती तिहि ठौर ।—वि. कु.

फरसणहार, हारौ (हारी), फरसणियौ—वि० ।

फरसिग्रोड़ौ, फरसियोड़ौ, फरस्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

फरसीजणौ, फरसीजबौ—कर्म वा० ।

फरसतौ—देखो 'फरिस्तौ' (रू. भे.)

उ०—मेरगिर के से तोलरिण फतूह के फरसते, सांम कांम में सधीर, सूरू के सहायक, दीनहूं के दावागीर ।—र. रू.

फरसधर, फरसधरण—देखो 'परसुधर' (रू. भे.)

उ०—१. धकै फरसधर चक्रधर, पाळो जिण निज पैज । सो सूरां सिर सेहरौ, नर पुंगव सुर नैज ।—बां. दा.

उ०—२. धुर तैं सील फरसधर धारघो, विसय विकार विहाई । क्षत्रिय मार अवनि निक्षत्री, वार इकीस बनाई ।—ऊ. का.

फरसपासांण—सं० पु० [सं० स्पर्श + पाषाण] पारस पत्थर । उ०—जसु तणइ प्रदक्षिणावरत्त संख, चिंतांमणि रत्न, फरसपासांण सोना तणउ, ऊपरि सो कोटि बेध रस ।—व. स.

फरसबंध—सं० पु० यौ० [फ़ा० फ़र्श + सं० बंध] वह ऊंचा और समतल स्थान जिस पर फर्श बना हुआ हो ।

फरसरांम—देखो 'परसुरांम' (रू. भे.)

फरसांधर, फरसांधरण, फरसाधर, फरसाधरण—देखो 'परसुधर'
(रू. भे.)

उ०—१. जिमि जाळंधर तकि, कुद्ध कुट्टन हर आयौ । हैहय नैं हुंकार, मनहु फरसाधर धायौ ।—ला. रा.

उ०—२. आरंभ रांम आरंभ गुरु, पारथ ही फरसांधरण । गजसिंघ महण गंभीरपण, कळा तेज सेहसकिरण ।—गु. रू. बं.

फरसि—१. देखो 'परसु' (रू. भे.)

२. देखो 'परसुरांम' ।

उ०—आयो ग्रह 'अममाह' अटकि फौजां उजबंकी, अवधि जेम आदियो, रांम परणी जांनकी । गांजि 'फरसि' असपती, भांजि धांन-

म मुदफ्फर, मारवाड़ा मंडळी, गरै सगळा राजिंदर । राजा 'अजीत' दसरत्थ ज्यौं, सुत मजीत परसै सही, वारणा लिए 'अभसाह' रा जगरी फौजदा जिही ।—रा. रू.

३. देखो 'फरसौ' (रू. भे.)

४. देखो 'परसु' (रू. भे.)

उ०—फरसीसाह फरसि, सरो खत्रियां सिर सेधी ।—पी. ग्रं.

फरसियोड़ो—देखो 'परसियोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री० फरसियोड़ी)

फरसिरांम—देखो 'परसुरांम' (रू. भे.)
उ०—फरसिरांम आयुध ग्रहियौ फरसु, घधिक रेणीया तणी मागी धरसु ।—पी. ग्रं.

फरसी-सं०स्त्री० [सं०परशु] १. परशु के आकार से भिन्न लोहे का बना एक औजार जो 'पाना' काटने के काम आता है । उ०—नगर संग 'दुरगादत' 'लाला' सुतन, हाथ फरसी मगनार । मद हूंगरा दुगहां भसरहूंता, वढ फरसा भीका दड हार ।
—लालसिंह राठौड़ (बड़ली) री गीत

२. देखो 'परसु' (रू. भे.)

रू० भे०—फरसि, फरि, फरी ।

फरसीचुगौ-सं०पु० [सं०परशु+हि० चोगा, चुगा] एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।

फरसीरामरा-सं०पु० यौ० [सं० परशु+राज० रामरा] महर्षि जमदग्नि के पुत्र परशुराम का एक नाम ।

फरसीधर, फरसीधरण, फरसीधारण—देखो 'परसुधर' (रू. भे.)
उ०—१. कमळा सेक गजमुंग लंबोदर, परणी कनक मुकुट फरसीधर । पीतांबर सोभा तन सुंदर, दिनायक अधिक दिवाकर ।
—जगनीरांम प्रोहित री वात

उ०—२. धीर कुण ठगसे घरा धरती वरण, ईस परणग महत सङ्ग ओवा अरण । जिन्हा सतवन निरधंन प्रणमीकरण, धारियो गडाहळ ओप फरसीधरण ।—जवांन जी आढ़ौ

उ०—३. लंबोदर फरसीधरण, सूण में गज दांगा । मुक्ताहार विराजमान, सिंदूर भलाणा ।—बूतारकरण कवियौ

फरसीसाह-सं०पु० [सं०परशु+फा०शाह] परशुराम का एक नामांतर । उ०—हुम्रो रांम हुस्वांम, कठ रं मन मा वेधौ । फरसीसाह फरसि गरो खत्रिआं सिर सेधौ ।—पी. ग्रं.

फरसूधर—देखो 'परसुधर' (रू. भे.)
उ०—श्रीकम पुरसोतम्म, रूप है महा मनोहर, हरि वांमन हयग्रीव, धनुसधारण फरसूधर ।—ह. र.

फरसौ—१. देखो 'परसु' (मह., रू. भे.)

२. देखो 'परसुरांम' ।

उ०—वाह हो वाह फरसा ब्रह्म, सहसबाहु नां साभियौ ।—पी. ग्रं.

फरस्स—१. देखो 'परसु' (मह., रू. भे.)
उ०—आयौ केई बार फरस्स उभार । सहस्रावाहू सैन संहार ।
—ह. र.

२. देखो 'परसुरांम' ।

फरस्सी—देखो 'परसु' (रू. भे.)
उ०—नखां भाळ तूटै, मुखां भाळ चंडा । फरस्सी फरस्सी भ्रमावै प्रचडा ।—सू. प्र.

फरस्सौ—देखो 'परसुरांम' ।

फरहड़णौ, फरहड़बौ-क्रि० अ० [देशज] 'फड़हड़' की ध्वनि करना ।
उ०—फीफरड फूट गोळा गजां फरहड़ै, जगी हौदा गजां लड़हड़ै जौम । धड़हड़ै घोम पै मुसाहब नहीं धर, बिहुं साहब हुंसै हड़बड़ै बोम ।—हरमहाय तणी री गीत

फरहड़णहार, हारो (हारी), फरहड़णियौ—वि० ।

फरहड़िम्रोड़ो, फरहड़ियोड़ो, फरहड़्योड़ो—भू० का० कृ० ।

फरहड़ीजणौ, फरहड़ीजबौ—भाव वा० ।

फरहड़ियोड़ो-भू० का० कृ०—'फड़हड़' की ध्वनि किया हुआ.
(स्त्री० फरहड़ियोड़ी)

फरहद-सं० पु० [देशज] पारिभद्र वृक्ष का नामान्तर ।
रू० भे०—फहद ।

फरहर—देखो 'फहर' (रू. भे.)
उ०—जळवोळ दळ जहंगीर रा, फबि फौज गज धज फरहरा । घण थाट फैजम धरहरा, सुरतांण पांण सरा ।
—मांनसिंघ सगतावत री गीत

फरहरणौ, फरहरबौ-क्रि० अ० [देशज] १. किसी हलकी वस्तु (कागज, वस्त्रादि) का हवा में फर-फर शब्द करते हुए उड़ना ।
उ०—घटा घोर अंबक घरहरिया, फौजां पर भंडा फरहरिया । फौजां तणा हबोळा फिरिया, ओळा जिम गोळा ओसरिया ।
—लालसिंह राठौड़ (बड़ली) री गीत

२. पवन का चलना, हवा का चलना । उ०—फागुन फरहरै वात, प्रभात नो गीत घणार । नाह सु' फाग रमै वहु, राग सुहागणि नारि ।—ध. व. ग्रं.

३. छलांग भरना, कूदना । उ०—फरहरता कपि फाळ, अस दे तैं असवारियां । 'मारांणी' भुरजाळ, भुज री भलौ भवाड़ियौ ।
—वां. दा.

फरहरणहार, हारो (हारी), फरहरणियौ—वि० ।

फरहराड़णौ, फरहराड़बौ, फरहराणौ, फरहराबौ, फरहरावणौ, फरहरावबौ—प्रे० रू० ।

फरहरिम्रोड़ो, फरहरियोड़ो, फरहरयोड़ो—भू० का० कृ० ।

फरहरीजणौ, फरहरीजबौ—भाव वा० ।

फररणौ, फररवौ, फहरणौ, फहरवौ—रू० भे० ।

फरहराड़णौ, फरहराड़वौ—देखो 'फरहराणौ, फरहरावौ' (रू. भे.)

फरहराड़णहार, हारौ (हारी), फरहराड़णियौ—वि० ।

फरहराड़िग्रोड़ौ, फरहराड़ियोड़ौ, फरहराड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

फरहराड़ीजणौ, फरहराड़ीजवौ—कर्म वा० ।

फरहराड़ियोड़ौ—देखो 'फरहरायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० फरहाड़ियोडी)

फरहराणौ, फरहरावौ–क्रि० स० [देशज] ['फरहरणौ' क्रि० का प्रे० रू०]

१. किसी हल्की वस्तु (कागज, वस्त्रादि) को हवा में फर-फर शब्द करते हुए उड़ाना ।

२. किसी को छलांग भरने या कूदने में प्रवत्त करना ।

फरहराणहार, हारौ (हारी), फरहराणियौ—वि० ।

फरहरायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

फरहराईजणौ, फरहराईजवौ—कर्म वा० ।

फरहराड़णौ, फरहराड़वौ, फरहरावणौ, फरहराववौ, फहराड़णौ, फहराड़वौ, फहराणौ, फहरावौ, फहरावणौ, फहराववौ—रू०भे० ।

फरहरायोड़ौ–भू०का०कृ०—१. किसी को छलांग भरने में या कूदने में प्रवत्त किया हुआ. २. किसी हल्की वस्तु (कागज, वस्त्रादि) को हवा में उड़ाया हुआ.

(स्त्री० फरहरायोड़ी)

फरहरावणौ, फरहराववौ– देखो 'फरहराणौ, फरहरावौ' (रू. भे.)

फरहरावणहार, हारौ (हारी), फरहरावणियौ—वि० ।

फरहराविग्रोड़ौ, फरहरावियोड़ौ, फरहराव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

फरहरावीजणौ, फरहरावीजवौ—कर्म वा० ।

फरहरावियोड़ौ—देखो 'फरहरायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० फरहरावियोड़ी)

फरहरियोड़ौ–भू० का० कृ०—१. कोई हल्का पदार्थ (कागज वस्त्रादि) हवा में फरफर शब्द करते हुए उड़ा हुआ. २. छलांग भरा हुआ, कूदा हुआ.

(स्त्री० फरहरियोड़ी)

फरहरौ–वि० [देशज] (स्त्री० फरहरी) १. जो मोटा या घना न हो, सुडोल, सुगठित । उ०—रूड़ा, रंगीला, मीठा, मधुरा,फूटरा,फरहरा, पाका पड़वाड़ा, सुंहाला, सुगंध, सुकोमल, सदाकर ।—सभा.

२. सुबुक, छरहरा ।

रू० भे०—फररौ, फरहौ ।

फरहास—देखो 'फरवास' (रू. भे.)

उ०—है फरहास खुदाय हमारै, थांन रांम जिम 'घूड़ड़' थारै । सुणे वचन धिक वीर सिंघाळा, जांणै जेठ साखुळी ज्वाळा ।—गो. रू.

फरहौ—देखो 'फरहरौ' (रू. भे.)

उ०—जद लोक बोल्या—मनुस्य तौ फरहा फूटरा है । पिण थारी आंख में पीलियौ है ।—भि. द्र.

(स्त्री० फरही)

फरांस—देखो 'फरवास' (रू. भे.)

उ०—विणजारा रै लोभी लाज्यै पींपळ केरो फूल, फळ तौ लाज्यै फरांस रौ विणजारा रै । विणजारी श्रे लोभण,जुग में होय सो मांग, अणहोयौ तौ मत मांग विणजारी श्रे ।—लो. गी.

फरांसीसी–वि० [ग्रं० फ्रेंच] फ्रांस देश सम्बन्धी, फ्रांस देश का ।

सं० पु०—१. फ्रांस देश का निवासी ।

सं० स्त्री०—२. फ्रांस देश की भाषा ।

रू० भे०—फरासीस, फरासीसी, फ्रांसीसी ।

फरांसौ—देखो 'फरवास' (अल्पा., रू. भे.)

फरा–सं० स्त्री० [देशज] गुफा, कदरा ।

फराक–सं० स्त्री० [ग्रं० फ्राक] लड़कियों के पहनने का वस्त्र-विशेष जो कमर से नीचे घघरी के समान घेरदार होता है, फ्रॉक ।

रू० भे०—फिराक ।

फराकत– देखो 'फरागत' (रू. भे.)

उ०—१. परभात हुवौ तरै साहिब अमल करनै फराकत तळाव पधारिया, सु साहिब आप घोड़ै असवार हुवौ छै ।—नैणसी

उ०—२. सु राव रा दिन ऊभा सु राव मोहणदास फराकतां जाय नै दांतण कर नै सेवा कर नै गांव रै फळसा माहे पैठा नै बलोच आया ।—नैणसी

फराकी–सं० स्त्री० [फा० फ़राखी] १. विशालता, विस्तृतता ।

उ०—महल करदां सांड्या नंगियार फराकी ।—केसोदास गाडण

२. घोड़े की जीन के ऊपर बांधा जाने वाला बंधन विशेष ।

उ०—१. जुद्ध में वीर समाध ज्यूं, रेवत घतरोळौ । तंग फराकी धूमची, सज वीरवर चोळौ । फत्र कमधज 'कांधलफरै', दहुं तरफां दोळौ । भाई-भाई भाखतौ, असलो कंध ग्रोळौ ।

—करनळ सुयस प्रकास

उ०—२. तंग फराकी धू्मची, तुटता जिम तूटा । कर आवूं सावळ कीयौ, संजवायक छूटा । भड़ां भायां बंधवां भलां, हालौ अग नूटा । जगदंबा करनी जचे, रवदां पर रूठा ।

—करनळ सुयस प्रकास

३. छलांग । उ०—खांच अर धूळकोट रौ बुरज थौ, हाथ दसे'क ऊंचौ, उण ऊपर चाढ़ी । फराकी मार ऊपर चढ़ियौ । चढ़नै हांकळ कीवी—जे सरदारां हूं राजूखां खोखर छूं, घोड़ौ म्हारी लियां जाऊं छूं ।—सूरे खीवे कांधळोत री वात

फरागत–सं० स्त्री० [ग्र० फराग़त] १. मल-त्याग, पाखाना फिरना ।

२. किसी कार्य की समाप्ति पर मिलने वाला आराम या निश्चिंतता ।

३. मुक्ति, छुटकारा ।

रू० भे०—फराकत ।

फराड़ौ–सं० पु० [देशज] १. वर्षा के बाद होने वाली आकाश की निर्मल अवस्था ।

२. वर्षा ऋतु में एक वर्षा से दूसरी वर्षा के बीच का समय ।

फराणो, फरावौ—देखो 'फिराणो, फिरावौ' (रू. भे.)

फराणहार, हारो (हारी), फराणियो—वि० ।

फरायोड़ो—भू० का० कृ० ।

फराईजणो, फराईजबो—कर्म वा० ।

फरामोस-वि० [फा० फ़रामोश] भूला हुआ, विस्मृत ।

फरायोड़ो—देखो 'फिरायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री० फरायोड़ी)

फरार-वि० [फा० फ़रार] जो भग गया हो, भागा हुआ ।

रू० भे०—फिरार ।

फरारी-वि० [फा० फ़रार+रा० प्र० ई] भागने वाला ।

सं० स्त्री०—भागने की क्रिया या भाव ।

रू० भे०—फिरारी ।

फराळ—देखो 'फळाहार' (रू. भे.)

फरास-सं० पु० [अ० फर्राश] १. वह नौकर जिसका कार्य तंबू गाड़ना, फरस बिछाना, पंखा करना और सफाई करना होता है ।

उ०—१. रूपै री डांडी जरी सूं मढ़ी, टुकड़ी री झालरी । सू वणी थकी खवास पासेवांणा रै हाथ छै, फरास वडा फरासीपंखा सूं वायेरो पात रह्या छै ।—रा. सा. सं.

उ०—२. पेसखाना पाळी थान पटोळह,पाग सुगट करण आराम । दळ बादळ ताणिया दुबाहे, फरस ईसर तणा फरास ।

—महादेव पारवती री वेलि

२. देखो 'फरवास' (रू. भे.)

उ०—मुज पीरां दरगाह मनावो, सेक फरास निजर मद आयो ।... काट फरास दोस करीजै, सोळ सीमा सबद सुणीजै ।—गो. रू.

फरासखांनो-सं० पु० यौ० [अ० फर्राश+फा० खानः] १. तम्बू, कनात, फर्नीचर, बिछाने एवं सफाई आदि के उपकरण तथा सामान रखने का स्थान ।

२. देशी राज्यों में एक राज्य-विभाग जिसके अन्तर्गत उपर्युक्त सामान की देख-रेख होती थी ।

३. उक्त विभाग का कार्य । उ०—तेजो बापोड़, भरामण भागै थको बुगचो गयतो, नारायण पड़िहार, रूपो गुजराती, सोहनो गुजराती फरासखांनो करता ।—द. दा.

फरासत-सं० स्त्री० [अ० फिरासत] १. बुद्धि की तीव्रता, बुद्धिमता, अक्लमंदी । उ०—राव चन्द्रसेन विगै मांहे सीवाणा रै भाखरै रहतो तद भींवला देवत कायमखांणी रहता । जोधपुर तुरक रहता, इतरो घणो बिगाड़ करता । सं० १६६३ पुरवां मूवो स० १७०२ मूवो दससालो मीयां फरासत कराय नै खोजी मेलीयो ।

—राव चंद्रसेन री वात

फरासी-वि० [अ० फ़र्राशी] फर्श या फर्राश के कार्यों से सम्बन्ध रखने वाला ।

यौ०—फरासीपंखो ।

सं० स्त्री०—फर्राश का काम या पद ।

फरासीपंखो-सं०पु०यौ० [अ० फर्राश+रा०प्र० ई+पंखो] काष्ठ निर्मित एवं कपड़े की खोली पहनाया हुआ पंखा जिससे हवा की जाती है ।

वि० वि०—विद्युत-चालित पंखों के आविष्कार से पूर्व धनाढ्य व्यक्ति लकड़ी का एक पंखा बनवाया करते थे जिस पर कपड़े की खोली चढ़ी हुई तथा काफी बड़ी झालरी लगी होती थी । इस पंखे को कमरे या दालान की छत में लटका कर इसके एक लम्बी रस्सी लगा दी जाती थी जिसको नौकर या फर्राश खींचकर हवा करता था । अब भी ऐसे पंखे विद्युत-चालित पंखों के अभाव में प्रयुक्त किए जाते हैं ।

उ०—रूपै री डांडी जरी सूं मंढ़ी टुकड़ी री झालरी । सू वणी थकी खवास पासेवांणां रै हाथ छै, फरास वडां फरासीपंखा सूं वायेरो पात रह्या छै ।—रा. सा. सं.

फरासीस, फरासीसी—देखो 'फरांसीसी' (रू. भे.)

फरि—१. देखो 'फररी' (रू. भे.)

२. देखो 'फरसी' (रू. भे.)

उ०—फरी सीस धरको किलम, दई नबाब विचारि । हय पाटंबर तार हिम, फरि तुप्पक तरवारि ।—ला. रा.

३. देखो 'परसु' (रू. भे.)

फरियाद-सं० स्त्री० [फा० फर्याद] १. पीड़ित या दुखी प्राणी द्वारा परित्राण अथवा न्याय के लिए की जाने वाली पुकार ।

उ०—थें म्हारै भाईजी री हित्या करी हो म्हैं तो पैं'ला राजा जी नै फरियाद करांला ।—फुलवाड़ी

२. दूसरों के द्वारा सताया जाने या कष्ट पाने पर प्रमुख शासक या राज्याधिकारी के समक्ष की जाने वाली प्रार्थना । उ०—अभंग भड़ां 'अजमाल' रां, 'अमरै' 'नाहर' आद । 'मुहकम' दिल्ली मारियो, साह सुणी फरियाद ।—रा. रू.

रू० भे०—फरयाद, फिराद, फिरिद, फिरियाद, फिरीयादि, फ्रियाद ।

फरियादी, फरियादू-वि० [फा० फर्यादी] १. फरियाद सम्बन्धी ।

२. फरियाद के रूप में होने वाला ।

३. फरियाद करने वाला । उ०—१. कोई फरियादी व मागणं वाळो आयो नहीं ।—नी. प्र.

उ०—२. करता कूक कराळ, आया फरियादू असुर । सुणजै 'दला' सिंघाळ, वीर फरास वढ़ावियो ।—गो. रू.

रू० भे०—फरयादी, फिरियादी ।

फरियोड़ो—देखो 'फिरयोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री० फरियोड़ी)

फरिस्तो-सं० पु० [फा० फिरिश्तः] १. ईश्वर की आज्ञानुसार कार्य करने वाला, ईश्वर का कोई दूत । (मुसलमान)

उ०—मुसलमांन पड़ूतर देवता—जनाजो दफणायां पछै मुनकिर अर नकीर नांव रा दो फरिस्ता आवै ।—फुलवाड़ी

२. देव-दूत ।

रू० भे०—परेसतौ, फरसतौ, फरेसतौ, फरेस्तौ, फरैंस्तौ, फिरसतौ, फिरिस्तौ ।

फरी—१. देखो 'फररी' (रू. भे.)

उ०—दिल्ली नगरी रै साज रौ आज कांई केणौ । घर-घर फरियां अर वन्नरमाळांवां बांधीजै है ।—वरसगांठ

२. देखो 'परसु' (रू. भे.)

उ०—जड़लग्ग फरी खड़खड्ड जोड़ । पटहोड़ां वाजिय पूरि पोड़ ।
—रा. ज. सी.

३. देखो 'फरसी' (रू. भे.)

फरीक-सं० पु० [अ० फ़रीक़] १. वादी और प्रतिवादी ।

२. किसी प्रकार का झगड़ा या विवाद करने वाले पक्षों या व्यक्तियों में से हर एक पक्ष का व्यक्ति ।

फरीकैन-सं० पु० [अ० फ़रीक़ का व० व०] १. मुद्दई और मुद्दायलेह, वादी और प्रतिवादी ।

२. परस्पर झगड़ने वाले दोनों पक्ष ।

फरीद-वि० [अ० फरीद] अनुपम, अनोखा, अद्भुत, वेजोड़ ।

उ०—आउचउद्दाजे फरीद जंगां लीला हरि, ढीली जि सेस ते नांम पीर जंपइ हमीर हरि ।—व स.

फरुसरांम—देखो 'परसुरांम' (रू. भे.)

उ०—हेला तउ महेस्वर तणी, स्रिस्टि व्रह्मा तणी, प्रग्या व्रिहस्पति तणी, प्रतिग्या फरुसरांम तणी, मरयादा समुद्र तणी ।—व. स.

फरूकड़ौ-सं० पु० [अनु०] १. फड़कन । उ०—'लाखो' 'अंधो' घी अंधी अंधी 'लखा' नी लोय । आंख तणौं फरूकड़ै,क्या जांणूं क्या होय ।
—अज्ञात

२. इशारा, संकेत । उ०—एकण रै आंख फरूकड़ै जी, हाजर हुवै दस-वीस ।—जयवांणी

फरूकणौ, फरूकवौ-क्रि० अ० [अनु०] १. उपस्थित होना, आना ।

उ०—गांव में स्यापौ छायोड़ौ, पांनड़ौ ई नहीं हिलै, चिड़ी रौ जायौ ई नहीं फरूकै, कुत्ता ई जांणै पताळ में पैठग्या ।—रातवासौ

२. देखो 'फड़कणौ, फड़कवौ' (रू. भे.)

उ०—१. आज फरूकइ अंखियां,नाभि,भुजा,अहरांह । सही ज घोड़ा सज्जणां, सांम्हा किया घरांह ।—ढो. मा.

उ०—२. किरको राखो ठाकरां, हिरण किसो घी खाय । पवन फरूकै उड़ चलै, तुरियां आगळ जाय ।—अज्ञात

उ०—३. नयणां हसइ उर ऊधसइ, वांम फरूकइ अंग । स्वांमी करसिइ तु हुसइ, माधव केरु संग ।—मा. कां. प्र.

उ०—४. ऐ जला जी मारू,रातां घण री आंखड़ली ज फरूकी हो, मिरगा नैणी रा जलाल ।—लो. गी.

उ०—५. कोड़ीधज सवलाल रै, धजा फरूकै धांम । जिणरै घर जादू 'जसा', नव खंड राखण नांम ।—मयारांम दरजी री वात

फरूकणहार हारौ (हारी), फरूकणियौ—वि० ।

फरूकिओड़ौ, फरूकियोड़ौ, फरूक्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

फरूकीजणौ, फरूकीजवौ—भाव वा० ।

फरूखणौ, फरूखवौ, फुरकणौ, फुरकवौ—रू० भे० ।

फरूकाड़णौ फरूकाड़वौ—देखो 'फड़काणौ, फड़कावौ' (रू. भे.)

फरूकाड़णहार, हारौ (हारी), फरूकाड़णियौ—वि० ।

फरूकाडिओड़ौ, फरूकाड़ियोड़ौ, फरूकाड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

फरूकाड़ीजणौ, फरूकाड़ीजवौ—कर्म वा० ।

फरूकाड़ियोड़ौ—देखो 'फड़कायोड़ौ (रू. भे.)

(स्त्री० फरूकाड़ियोड़ी)

फरूकाणौ, फरूकावौ—देखो 'फड़काणौ, फड़कावौ (रू. भे.)

फरूकाणहार, हारौ (हारी), फरूकाणियौ—वि० ।

फरूकायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

फरूकाईजणौ, फरूकाईजवौ—कर्म वा० ।

फरूकायोड़ौ—देखो 'फड़कायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० फरूकायोड़ी)

फरूकावणौ, फरूकाववौ—देखो 'फड़काणौ, फड़कावौ' (रू. भे.)

फरूकावणहार, हारौ (हारी), फरूकावणियौ—वि० ।

फरूकाविओड़ौ, फरूकावियोड़ौ, फरूकाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

फरूकावीजणौ, फरूकावीजवौ—कर्म वा० ।

फरूकावियोड़ौ—देखो 'फड़कायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० फरूकावियोड़ी)

फरूकियोड़ौ-भू० का० कृ०—१. उपस्थित हुवा हुआ, आया हुआ.

२. देखो 'फड़कियोड़ौ (रू. भे.)

(स्त्री० फरूकियोड़ी)

फरूखणौ, फरूखवौ—१. देखो 'फड़कणौ, फड़कवौ' (रू. भे.)

२. देखो 'फरूकणौ, फरूकवौ' (रू. भे.)

फरूखणहार, हारौ (हारी), फरूखणियौ—वि० ।

फरूखिओड़ौ, फरूखियोड़ौ, फरूख्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

फरूखीजणौ, फरूखीजवौ—भाव वा० ।

फरूखियोड़ौ—१. देखो 'फड़कियोड़ौ' (रू. भे.)

२. देखो 'फरूकियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० फरूखियोड़ी)

फरेब-सं०पु०[फा०फ़रेब] १. छल, कपट । उ०—म्हनैं तौ औ खुदा अर भगवांन फगत जाळ अर फरेब लागै ।—फुलवाड़ी

२. चालाकी, धूर्तता । उ०—लोग तो कमाई वास्तै नीं नीं ह्वै जैड़ा कळाप करै—झूठ, फरेब, चोरी, धाड़ौ लूटाखोसी ।—फुलवाड़ी

फरेबियौ—देखो 'फरेबी' (अल्पा., रू. भे.)

फरेबी-वि० [फा० फ़रेबी] कपटी, धूर्त ।

अल्पा०—फरेबियौ ।

फरेसतौ, फरेस्तौ, फरैंस्तौ—देखो 'फरिस्तौ' (रू. भे.)

उ०—अहमद, महमूद अै दोय नांम पैकंबर रा फरेस्ता पढ़ै । महमद

सो नांम पैगंबर री जमी ऊपर रा लोक पढ़ै ।—बां. दा. ख्या.

फरोई—देखो 'फरोही' (रू. भे.)

फरोकड़ौ—देखो 'फिरोकड़ौ' (रू. भे.)

फरोक्त, फरोख, फरोख्त—सं० स्त्री० [फा० फ़रोख्त] बेचने की क्रिया, बिक्री, विक्रय ।

फरोदस्त, फरोदस्तो—सं० पु० [फा०] १ एक वस्त्र विशेष । उ०—गोमेद लुगड़ै, नवांग, कनमदांग कोनरांदणी गजकरणी पडदांणी अतलसी बारबसी फरोदस्तो पूरानाति सकलात पोतु ।—व. स.

२ कान्हड़ा, पूरबी व गौरी के मेल से बना एक संकर राग । (संगीत)

३ चौदह मात्राओं का एक ताल जिसमें ५ आघात के बाद २ खाली लगते हैं । (संगीत)

फरोड़—सं० पु० [देशज] उत्पात, उपद्रव । उ०—इमै फरणीतां रा गांव मारिया, देस में फरोड़ पड़ियो ।

—सुंदरदास चौपुरी नाटी री वारता

फरोळणौ, फरोळबौ—देखो 'फुरळणौ, फुरळबौ' (रू.भे.)

उ०—१ इणरै सुभट चढ़ै फौज सूं भिळियो सो सारी फौज फरोळतो रंदळतो फिरै छै । —राजाजी सूर री वात

उ०—२ गुनावां भीरजां निवावां गाहूं, मछीवळ पानियां हेत माहूं । फरोळै पांगड़ी भांत डर फीफरा, माळजा खंज-मत ममर फाड़ै ।

—सेंअनिघ सेगावत रो गीत

फरोळणहार, हारौ (हारी), फरोळणियौ—वि० ।

फरोळिओड़ौ, फरोळियोड़ौ, फरोळ्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

फरोळीजणौ, फरोळीजबौ—कर्म वा० ।

फरोळियोड़ौ—देखो 'फुरळियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० फरोळियोड़ी)

फरोही—सं० स्त्री० [देशज] मारवाड़ राज्य में पशु-पालकों से लिया जाने वाला एक प्रकार का कर विशेष । (नैणसी)

रू०भे०—फरोई ।

फरौ—सं० पु० [देशज] नगर या ग्राम के बाहर का समीपस्थ स्थान ? उ०—फरा री गोग मुजरो कीयौ । निजर पलकां रै हजारे कुरब दीयौ ।—पनां वीरमदे री वात

फलंग—देखो 'फलांग' (रू. भे.)

उ०—घटा न मावै वाय मैं फलंग घटा गरकाव । पेस छटा सूकै पटा, सिधुर घटा सताव ।—बां. दा.

फलंगणौ, फलंगबौ—देखो 'फलांगणौ, फलांगबौ' (रू. भे.)

फलंगणहार, हारौ (हारी), फलंगणियौ—वि० ।

फलंगिओड़ौ, फलंगियोड़ौ, फलंग्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

फलंगीजणौ, फलंगीजबौ—भाव वा० ।

फलंगियोड़ौ—देखो 'फलांगियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० फलंगियोड़ी)

फळ—सं० पु० [सं० फलम्] १ वृक्षों, पौधों आदि में किसी विशिष्ट ऋतु में फूल लगने के बाद आने वाला बीज या पोषक तत्त्व ।

उ०—अदभूत रोसनी हमरांनी गुरखांनी सहतूत । ऐसे दरखतूं के ऊपर रिसीले फळूं का रसपांन कर ।—सू. प्र.

यौ०—फळफूल, फळकेसर, फळकोस, फळदांन, फळदार, फळभूमि, फळभोम ।

२ प्रयत्न या क्रिया का परिणाम, नतीजा ।

ज्यूं०—परीक्षाफळ ।

उ०—गोळै वरसां री पूजा री भगवांन औ कांई फळ दियौ आपरौ ई रूप देखनै उण रा प्रांण नीसरण लागा । —फुलवाड़ी

३ धर्म या परलोक की दृष्टि से कर्मों का परिणाम जो सुख और दुख के रूप में मिलता है ।

उ०—भगवत करता नै करतब भुगतावै, पिछला पापां रा पांमर फळ पावै । नावी मूलोड़ा मूंकी क्यूं माया, पोचा करमां रा पोचा फळ पाया । —ऊ. का.

४ शुभ कर्मों के परिणाम जो संख्या में चार माने जाते हैं ।

ज्यूं०—धरम, अरथ, कांम, मोक्ष ।

उ०—रड़िया ऊपर खेत, ना कछु तांमें नीपजै । हरि सूं जोड़ै हेत, मारू फळ दे चकरिया । —मोहनराज साह

५ किसी प्रकार का लाभ या प्राप्ति ।

उ०—धरमि अनळ गुण अंग सखी संवति, तवियौ जस करि स्री भरतार । करि सखणी दिन-रात कंठ करि, पांमै स्री फळ भगति अपार । —वेलि

६ किए हुए कर्मों का प्रतिफल, बदला, प्रतिकार ।

७ न्याय-शास्त्र के अनुसार वह अर्थ जो प्रवृत्ति और दोष से उत्पन्न होता है ।

८ गणित की किसी क्रिया का परिणाम ।

ज्यूं०—जोड़फळ, योगफळ, गुणनफळ, भागफळ ।

९ फलित ज्योतिष में ग्रह नक्षत्र की स्थिति एवं योगायोग के परिणाम रूप में होने वाला सुख या दुख ।

ज्यूं०—गिरै दसा री फळ ।

१० गुण, प्रभाव ।

ज्यूं०—इण दवा रै लैण री कांइ फळ ।

११ प्रयोजन ।

१२ भाले, छुरी आदि का वह पैना या नुकीला भाग जिसके बल प्रहार किया जाता है ।

उ०—१ सेलां रा फळ सूरां रै मोरै भांजि भांजि रहिआ छै ।

—रा. सा. सं.

उ०—२ सूरजमाल दुभाल, नेज गज ढाल निहारै, फळ सावळ फोरियौ, विड़ंग ओरियौ वधारै । —रा. रू.

उ०—३ करण निवेधी वे घड़ा, सेधी सांम छळांह । अस तोरे सांम्हा

किया, फीरे सेल फळांह। —रा. रू.
१३ स्त्रियों द्वारा गौर पूजन हेतु सुपारी के आकार के बनाए गए आटे के फल।
१४ जायफल। (डि. को.)
१५ नारियल। (अ. मा.)
१६ ढाल।
१७ हल की फाल।
१८ चार की संख्या।* (डि. को.)

फळक-सं० पु० [सं० फलकं] १ ढाल।
[अ० फ़लक] २. अकाश, आसमान।

फलकी-सं० स्त्री०—देखो 'फुलकी' (अल्पा., रू. भे.) (मेवात, ढूंढ़ार)

फलकू-सं० स्त्री० [देशज] बालूरेत। (जैसलमेर)

फळकेसर-सं० पु० यौ० [सं० फलकेशर:] नारियल का वृक्ष।

फळकोस-सं० पु० यौ० [सं० फलं+कोषः] १ पुरुष की इन्द्रिय, लिंग। २ अंडकोश।

फलको-सं० पु०—१ फफोला।
२ देखो 'फुलको' (रू. भे.)
उ०—पोय पोय फलका जेट वणाई, पोय पोय फलका जेट वणाई तो, जीमो क्यूं ना जी गोरी रा भरतार। —लो. गी.

फलगर देखो 'फूलपगर' (रू. भे.)

फळगट, फळगटी-सं० स्त्री० [सं० फलं + घट्ट] गवार नामक पौधे की फलियों का भूसा।

फळगु—देखो 'फल्गु' (रू.भे.)

फळग्राही-सं० पु० यौ० [सं० फलग्राहिन्] वृक्ष। (अ. मा., नां. मा., ह. नां. मा.)

फळचर-सं० पु० यौ० [सं० फलचर] वानर, बन्दर। (ह. नां. मा.)

फळणो, फळबो-क्रि० अ० [सं० फलम्] १ वृक्षों, पौधों, लताओं आदि का फलयुक्त होना।
उ०—१ वनसपति फूली फळी, नांना रंग धरंति। तिम तूं यौवन जांणीजै, खिण अेक मांहि खिरंति। —मा. कां. प्र.
उ०—२ लूआं थे क्यूं उणमणी, दीठां बादळियां-ह। थांरा बाळ्या पाघरै, फळसी पांघरियां-ह। —लू
२ गृहस्थ का संतान आदि से युक्त होना।
३ स्त्री का संतान उत्पन्न करना, प्रसव करना।
४ इच्छा या कामना पूर्ण होना, मनोरथ सफल होना।
उ०—ढोला, जाइ वळि आविज्यउ, आसा सहि फळियां-ह। सांवण केरी बीज ज्यूं, भावूकइ मिळियां-ह। —ढो. मा.
५ किसी कार्य, पदार्थ या बात का शुभ परिणाम होना, लाभप्रद या उपयोगी सिद्ध होना।
ज्यूं०—औ मकांन आप रै चोखो फळियो।
६ विस्तार होना, वृद्धि होना।
उ०—कैंवण लागा-सेठां, आप लखपति हो जको घणा आछा, नित ऊगतै सूरज आपरै घरै लिछमी जी दिन दूणा अर रात चौगणा फळै, म्हे तो आ इज चावां। —फुलवाड़ी
७ एक संख्या का दूसरी संख्या से गुणा होना।
मुहा०—जबांन या बोली फळणी—कही बात सत्य घटित होना।
फळणहार, हारो (हारी), फळणियौ—वि०।
फळिओड़ो, फळियोड़ो, फल्योड़ो—भू० का० कृ०।
फळीजणो, फळीजबो—भाव वा०।

फळतरीढाल-सं० स्त्री० यौ० [सं० फलकं] एक प्रकार की ढाल।

फळद-वि० [सं० फलद] फल देने वाला, फलदायक।
सं० पु०—वृक्ष। (नां. मा., ह. नां. मा.)

फळदांन-सं० पु० यौ० [सं० फलदान] १ फलों का दान। २ सगाई (मगनी) के अवसर पर वर को वधु-पक्ष की ओर से श्रीफल (नारियल) देने की क्रिया या प्रथा।

फळदाइक, फलदाइक—देखो 'फळदायक' (रू. भे.)
उ०—प्रथम रंग भरे गणनायक, असमलांछण, फलदायक, सकलमोदिक, मोदिकवलमं जयति विजयति गणनायक। —व. स.

फळदात-सं० पु० [सं० फलदातृ] वृक्ष। (अ. मा.)

फळदायक-वि० [सं० फलदायक] फल देने वाला।
उ०—इतरी सुणि राजा त्यां नूं दीन जांण सो मनवांछित फळदायक मणि प्रसन्न-चित्त होय दीन्ही। —सिंघासण बत्तीसी
रू० भे०—फळदाइक।

फळदार-सं० पु० यौ० [सं० फल+फा० दार] १ वह वृक्ष जिसके फल लगते हों। २ फलयुक्त वृक्ष।

फळद्र-सं० पु० [सं० फलद] वृक्ष। (डि. को.)

फळपित, फळपिता-सं० पु० यौ० [सं० फलपितृ] पुष्प, फूल। (अ. मा., नां. मा., ह. नां. मा.)

फळपुहप, फळपुहाप, फळपुहुप-सं० पु० [सं० फल+पुष्प] वह वृक्ष जिसके पुष्प और फल दोनों लगते हैं।

फळप्रद-सं०पु०यौ० [सं० फल+प्रद] १ फल प्रदान करने वाला, फल देने वाला। २ लाभदायक।

फळफूल-सं० पु० यौ० [सं० फलम्+पुष्पम्] १ फल और फूल। २ भेंट के रूप में दिया जाने वाला पदार्थ।

फळभूम, फळभूमि, फळभोम-सं० स्त्री० यौ० [सं० फल+भूमि] वह स्थान जहां कर्मों के फल भोगने पड़ते हैं, पृथ्वी, स्वर्ग, नर्क।

फळराज-वि० यौ० [सं० फलं+राजन्] फलों में श्रेष्ठ।
सं० पु०—१ तरबूज। २ खरबूजा। ३ आम।

फळसंसकार, फळसंस्कार-सं०पु०यौ० [सं० फल+संस्कार:] आकाश के किसी ग्रह के केन्द्र का समीकरण या मंद-फल निरूपण। (ज्योतिष)

फळसाउगाड़, फळसाउघाड़-सं०पु०यौ० [राज० फळसो + सं० उद्घाटनं] एक विशाल भोज जिसमें निकटवर्ती समूचे गांवों को भोजन के लिए आमन्त्रित किए जाते हैं तथा प्रत्येक व्यक्ति बिना रोक-टोक के भोजन में सम्मिलित हो सकता है।

रू० भे०—फिळाउगाड़, फिळाउघाड़, फीळाउगाड़, फीळाउघाड़।

फळसूंडिया-सं० स्त्री० [देशज] राठौड़ वंश की एक उपशाखा।

फळसौ-सं० पु० [देशज] नगर, ग्राम तथा देश या प्रान्त में प्रवेश करने का मुख्य द्वार।

उ०—१ पाबूजी री वरियां बीजो साथ तो परां नूं गडियो। ऊदो माद्राजग नूं गडियो। आधी रात पाछी, आधी रात पाछै जाइ पहुतो। ताहरां उपाड़ि फळसो मांहि लियो।

—ऊदै उगमणावत री वात

उ०—२ कोहर चार कोट मांहै मीठोदंड। पांणी मीठो। गढ़ो कोट हुवो। मारी निस रै फळसै। माता रै ऊपर माट री गढ़ हुवो। —नैणसी

२ खेत, बाड़ी या बाड़े के अहाते के द्वार पर कांटे व घास-फूस का बनाया हुआ फाटक।

वि० वि०—कांटों का बना एक प्रकार का चौकोर फाटक जिसके बीच में दोनों ओर मजबूत लकड़ियां लगाकर उसे मूंज, रस्सी या 'खींपड़े' के बंध से मजबूत कर लिया जाता है। बाहर की ओर लगी लकड़ी जो कुछ लम्बी होती है, वो फाटक बन्द करते समय द्वार पर लगे एक त्रिभुजाकार लट्ठे में फंसा दी जाती है जिससे आसानी से धक्का देकर कोई जानवर आदि न खोल सके।

उ०—बांमणी फळसो खोलनै मांय आई। —फुलवाड़ी

रू० भे०—फळो, फिळसो, फिळो।

अल्पा०—फळियो, फिळियो।

फळस्थापन-सं० पु० [सं० फलस्थापन] सीमन्तोन्नयन-संस्कार, फलीकरण।

फलहकार-सं० पु० [सं० फलकं + कारः] १ मुद्गर, ढाल आदि बनाने वाला व्यक्ति।

उ०—तिहां नगर मध्ये किसा लोक वसइं। मण्डराय रांणा, मंडलीक, महाधर, मडप्फर, सांमंत, सेनुत, वर वीर, राउत, पायक, डिंडिमायन, नयामत, पटायत, फलहकार, छुरीकार, नलिकार······प्रभ्रिति राजवरग। —सभा.

२ फलों को तैयार करके रखने वाला व्यक्ति, फल पेश करने वाला व्यक्ति।

रू० भे०—फलहिकार, फलिहकार।

फलहलि—देखो 'फलहुलि' (रू. भे.)

उ०—वावन पलनां थाल कचोलां अणावु, ताते जिगते फलहलि भीमावु। —व. स.

फलहिकार—देखो 'फलहकार' (रू. भे.)

उ०—नागुड मुरामांगलिय अंगमरद कूटिकार चाटुकार श्रंकार फलहिकार मल्लयोद्ध सेज्जापाल वालवंध। —व. स.

फलहुलि-सं० पु० [सं० फलं + राज० हुलि] अनेक प्रकार के फल।

उ०—१ नारंगिसेलां केलांनी पातली कातली, बीजुरांनी चडुठी, आवांनी कातली, प्रीसि नारि पातली, सडबूजां गोटा, नीकोल्यां रांईण, इसी फलहुलि प्रीसाइ। —व. स.

उ०—२ तदनतर ऊपेलइ मानि, प्रसन्नइ कालि, सुवरणमइ स्थानि, मोटइ भाजनि, आवी ऊजमालि, परीसइं फलहुलि।

—व. स.

रू० भे०—फलहलि।

फलां-वि० [अ०] कोई अनिश्चित स्थान, वस्तु या व्यक्ति, अमुक।

उ०—इण अरज कीवी जे फलां जायगां सूं उठा रा मिनखां नूं गाळ भूग सूं दवाइगा छै। —नी. प्र.

फलांग-स० स्त्री० [देशज] १ स्थान विशेष से कूद कर या उछल कर दूसरे स्थान तक पहुंचने की क्रिया।

२ देखो 'फरलांग' (रू.भे.)

रू० भे०—फलंग।

फलांगणी, फलांगबौ-क्रि० अ०/स० [देशज] १ किसी स्थान पर खड़े खड़े कूदना या उछलना।

२ किसी रुकावट को छलांग मारकर लांघना।

फलांगणहार, हारौ (हारी), फलांगणियौ—वि०।

फलांगिओड़ौ, फलांगियोड़ौ, फलांग्योड़ौ—भू० का० कृ०।

फलांगीजणौ, फलांगीजबौ—भाव/कर्म वा०।

फलांगियोड़ौ-भू० का० कृ०—१ किसी स्थान पर खड़े खड़े कूदा हुआ या उछला हुआ. २ किसी रुकावट को छलांग मार कर लांघा हुआ. (स्त्री० फलांगियोड़ी)

फलांणसिंह—देखो 'फलांणौ'।

उ०—तरै उमराव बोलिया—हां म्हाराज, फुरमायौ छौ, तरै ही फलांणसिंह जी, टीकणसिंह जी गया था।

— जगदेव पंवार री वात

फलांणियौ—देखो 'फलांणौ' (अल्पा., रू. भे.)

फलांणौ-वि० [अ० फलां + रा० प्र० णौ] (स्त्री० फलांणी) किसी ऐसे अज्ञात अथवा कल्पित व्यक्ति, पदार्थ या बात आदि के लिए प्रयोग किया जाने वाला शब्द जिसका नाम न लिया गया हो अथवा न लिया जाने को हो।

उ०—१ तद आप कही तो फलांणै दिन सगळा आय भेळा हुइ जावौ। —ठाकुर जैतसी री वारता

उ०—२ दूसरै-नै पूछियौ-उवै कह्यौ-मनै तो खबर न छै, फलांणै बोलायौ हुसी। —राजा भोज अर खापरै चोर री वात

उ०—३ फलांणै दिन फलांणौ हम्माल आपरै हुकम सूं फलांणी जायगां पत्थर मारग में न्हांखियौ थौ। —नी. प्र.

उ०—४ फलांणी भैंस दूही । —कुंवरसी सांखला री वारता
उ०—५ हुकम करै—जे फलांणी ठोड़ भुंजाई तयारी करावज्यो, म्हैं उठै आवां छां । —राव रिणमल री वात
रू० भे०—फुलांणो ।
अल्पा०—फलांणियौ ।

फला-सं० स्त्री०—प्रतिहार वंश की एक शाखा ।

फळाणो, फळाबो-क्रि० स० [सं० फलम्] संख्या विशेष को संख्या विशेष से गुणा करना, गुणनफल निकालना ।
फळाणहार, हारो (हारी), फळाणियो—वि० ।
फळायोड़ो—भू० का० कृ० ।
फळाईजणो, फळाईजबो—कर्म वा० ।
फळावणो, फळाववो—रू० भे० ।

फळादेस-सं० पु० [सं० फलादेश] वे बातें जो ग्रहों के फल या प्रभाव के रूप में बताई जाती है। (ज्योतिष)

फळाध्यक्ष-सं०पु० [सं० फलाध्यक्ष] सब प्रकार के फलों को देने वाला ईश्वर ।

फळापेक्षा-सं० स्त्री० [सं० फलं+अपेक्षा] फल प्राप्ति की कामना ।

फळाफळ-सं० पु० [सं० फलाफल] शुभाशुभ या इष्ट-अनिष्ट किसी कार्य या कर्म के फल ।

फळायफळाय-सं० स्त्री० [देशज] बच्चे की जोर से रोने की ध्वनि ।

फळायोड़ो-भू० का० कृ०—गुणा किया हुआ.
(स्त्री० फळायोड़ी)

फळार—देखो 'फळाहार' (रू. भे.)

फळारी—देखो 'फळाहारी' (रू. भे.)

फळारथी-वि० [सं० फलार्थिन्] फल की कामना करने वाला ।

फलालेन,फलालैन-सं० स्त्री० [अं० फलानेल] एक प्रकार का ऊनी वस्त्र विशेष ।

फळावट-सं० स्त्री० [देशज] गुणा करने की क्रिया, गुणनफल निकालने की विधि ।

फळावणो, फळाववो—देखो 'फळाणो, फळाबो' (रू. भे.)
फळावणहार, हारो (हारी), फळावणियो—वि० ।
फळाविओड़ो, फळावियोड़ो, फळाव्योड़ो—भू० का० कृ० ।
फळावीजणो, फळावीजबो—कर्म वा० ।

फळावियोड़ो—देखो 'फळायोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री० फळावियोड़ी)

फळासव-सं० पु० [सं० फलासव] दाख, खजूर आदि फलों से बनाया हुआ आसव विशेष ।

फळाहार-सं० पु० [सं० फलाहार] १ फलों का आहार ।
२ व्रत या उपवास के दिन खाए जाने वाले पदार्थ ।
वि० वि०—कुछ विशिष्ट व्यंजन जैसे—सिंगोड़ा, आलू, शक्करकंद, 'मलीचा', 'भुरंट' आदि का हलवा, सागूदाना की खीर, जिसे हिन्दू लोग उपवास के दिन खाते हैं ।
रू० भे०—फराळ, फळार ।

फळाहारी-वि० [सं० फलं+अहारी] १ फलाहार सम्बन्धी ।
२ केवल फल का आहार करके जीवन व्यतीत करने वाला, फलाहार करने वाला ।
रू० भे०—फळारी ।

फलिकार—देखो 'फलहकार' (रू. भे.)
उ०—देसालिक, मसूरिक अंककार फलिहकार मल्लयोद्ध सस्यापाल वालवंध अंगरक्ष । —व. स.

फळित-वि० [सं० फलित] फला हुआ । उ०—भर फूल फळित भढ़ार भार । जुथ करत भ्रमर भणहण गुंजार ।— सू. प्र.
सं० पु०—वृक्ष, पेड़ ।

फळितज्योतिस-सं० पु० [सं० फलित+ज्योतिष] ज्योतिष की दो शाखाओं में से एक जिसके अन्तर्गत ग्रहों व नक्षत्रों का प्राणियों पर होने वाले शुभाशुभ प्रभाव का अध्ययन एवं विवेचन किया जाता है

फळियळ-वि० [सं० फलं+रा० प्र० इयल] फलयुक्त, फल सहित ।
उ०—फळियळ कूंपळ सारसी, नाजक अळियळ नार । ऊभी फळियळ अंवि तळ सळियळ अंग सवार ।—पनां वीरमदे री बात

फळियोड़ो-भू०का०कृ०—१ वृक्ष, पौधा, लता आदि फल-युक्त हुवा हुआ. २ संतानयुक्त गृहस्थ. ३ परिपूरित कामना या इच्छा, सफल हुवा हुआ. (मनोरथ) ४ किसी कार्य, पदार्थ या बात का लाभप्रद या उपयोगी हुवा हुआ. (परिणाम) ५ विस्तार हुवा हुआ, वृद्धि को प्राप्त हुवा हुआ. ६ एक संख्या दूसरी संख्या से गुणित या गुणा हुवा हुआ.
(स्त्री० फळियोड़ी)

फळियो—देखो 'फळसो' (अल्पा., रू. भे.)

फळी-वि० [सं० फलित्] १ फलों से युक्त, फलों वाला ।
२ वह पेड़ जिसके फल लगते हों ।
सं० पु०—१ वृक्ष, पेड़ । (अ. मा., नां. मा., ह. नां. मा.)
सं० स्त्री० [फल+रा० प्र० ई] २ पेड़ पौधों पर लगने वाला वह लंबोतरे आकार का फल जिसके अन्दर केवल बीज मात्र होते हैं ।
३ उक्त प्रकार के पौधों में लगने वाला छोटा फल जिसका शाक बनाया जाता है ।
ज्यूं०—गवारफळी ।
उ०—फोग केर, काचर फळी, पापड़ गेघर पात । बड़ियां मेलै वांणियां, सांगरियां सोगात । —वां. दा.
[सं० फलित्] ४ ओढ़ने के मोटे सूती कपड़े, गमच्छे 'खेसले'. आदि या ऊनी कंबल के छोर के खुले बाहर निकले हुए भाग के धागों को बटकर बनाया जाने वाला मोटा धागा जिससे वस्त्र के छोर पर झालरी गूंथी जाती है ।
उ०—तीडा रै माथै मोडळ लाग्योड़ो कसूंबल गोळ पोरयों

बाधियौ। पोत्या रै मार्थं फळियां गूंथ्योड़ा तुगला री पांन रै उनमांन घोळा गमछा रौ आंटौ दियौ।—फुलवाड़ी
५ वंश, शाखा।
मह०—फळीस, फळू।

फळीजणौ, फळीजबौ-क्रि० अ० [सं० फलम्] १ बकरी या मादा ऊंट या गर्भ धारण करना।
२ फलयुक्त होना। उ०—जगत इण आणंद आच्छादित, वधै फळीजै नीम ज्यूं। समजीवौ मतवाळा वर्णं, मांण मरदमी नीम ज्यूं।—दसदेव
फळीजणहार, हारौ (हारी), फळीजणियौ—वि०।
फळीजिग्रोड़ौ, फळीजियोड़ौ, फळीज्योड़ौ—भू० का० कृ०।
फळीजीजणौ, फळीजीजबौ—भाव वा०।

फळीजियोड़ी-स्त्री०-भू० का० कृ०—गर्भ धारण की हुई बकरी या मादा ऊंट.

फळीजियोड़ौ-भू० का० कृ०—फलों से युक्त हुवा हुआ.
(स्त्री० फळीजियोड़ी)

फळीभूत-वि० [सं० फलीभूत] सफल।

फळीस-सं० पु० [सं० फल+रा० प्र० ईस] १ मोठ या मूंग की फली का भूसा। (शेखावाटी)
२ भुरट नामक घास के दाने जो खाये जाते हैं। (जैसलमेर)
३ देखो 'फळी' (मह., रू. भे.)

फळूंसी-सं० स्त्री० [सं० फल+राज० ऊंसी] मोठ और गवार की फलियों का छिलका। (शेखावाटी)

फळू—देखो 'फळी' (मह., रू. भे.)

फलूरियौ-वि० [देशज] व्यर्थ का प्रलाप करने वाला।

फलोड़ौ-सं० पु० [दे० व० फलोड़ा] जलने से होने वाला फफोला। (शेखावाटी)

फळोदय-सं०पु० [सं० फलोदय] १ फलित ज्योतिष में ग्रह नक्षत्र के योगायोग से शुभाशुभ प्राप्ति का समय।
२ स्वर्ग। ३ फल का प्रत्यक्ष होना।

फळौ—देखो 'फळणौ' (रू. भे.)

फल्गु-वि० [सं०] १ निरर्थक, बेकार।
२ निस्सार। ३ क्षुद्र। ४ साधारण।
सं० स्त्री०—वसन्तकाल।
रू० भे०—फलगु।

फल्गुन-सं० पु० [सं० फल्गुनः] १ इन्द्र का नाम।
२ देखो 'फागण' (रू. भे.)

फल्गुनी—देखो 'फाल्गुनी' (रू. भे.)

फवज, फवज्ज—देखो 'फौज' (रू. भे.)
उ०—१ चतुरंग फवजां चींघ धज्जां पुठि गज्जां बंध ए।—गु. रू. बं.
उ०—२ सावज सीह मरण संभाही, मूंझै म्रिग फवज्जां मांही।—गु. रू. बं.

फवारौ—देखो 'फंवारौ' (रू. भे.)
उ०—नीर फवारां निरखतौ, लागै 'जसवंत' लाम। जितरौ नीचौ हूं जमी, उतरौ ऊंचौ श्राम।—ऊ. का.

फवौ—देखो 'फुंवौ' (रू.भे.)
उ०—सगळौ नै घर री भट्ठी रौ काढ़ियोड़ौ गुलाब रौ अंतर मिळतौ। सेठ जी आपरै हाथ सूं फवा वणाय-वणाय कर सगळौ नै देता।—मुरळीधर व्यास

फव्वज—देखो 'फौज' (रू. भे.)

फव्वारौ—देखो 'फंवारौ' (रू. भे.)

फसट्टौ—देखो 'फिसट्टौ' (रू. भे.)

फसणौ, फसबौ—देखो 'फंसणौ, फंसबौ' (रू.भे.)
उ०—१ हंसियौ जग आगळ हुए, वसियौ सोवण वीत। रसियौ नागी रांड सूं फसियौ होण फजीत।—बां. दा.
उ०—२ पछै तीतर कह्यौ—आप रौ हुकम व्है तौ म्है अबै जावूं म्हनै घरै उडीकता व्हैला। रमण नै बारै निकळियौ हौ के इण जाळ में फसग्यौ।—फुलवाड़ी
उ०—३ पीतांबर कटि काछनी काछै, रतन जटित सिर मुकुट कस्यौ। मीरां के प्रभु गिरधर नागर, निरख वदन म्हारौ मनड़ौ फस्यौ।—मीरां
फसणहार, हारौ (हारी), फसणियौ—वि०।
फसाड़णौ, फसाड़बौ, फसाणौ, फसाबौ,
फसावणौ, फसावबौ—प्रे० रू०।
फसिग्रोड़ौ, फसियोड़ौ, फस्योड़ौ—भू० का० कृ०।
फसीजणौ, फसीजबौ—भाव वा०।

फसत, फसद—देखो 'फस्त' (रू.भे.)

फसल-सं०स्त्री० [अ० फस्ल] १ ऋतु, मौसम। २ काल, समय।
३ कृषि-उपज, कृषि पैदावार।
४ देखो 'फिसल' (रू.भे.)

फसळणौ, फसळबौ—देखो 'फिसळणौ, फिसळबौ' (रू.भे.)
उ०—नगारौ रोड़ चढ़ जाय ऊभा नसल, फतै री वार सरदार पड़िया फसळ। याद हू न आया पूठ देतां असल, माजनौ गमायौ भलौ आठौ मसल।—महादांन महडू
फसळणहार, हारौ (हारी), फसळणियौ—वि०।
फसळिग्रोड़ौ, फसळियोड़ौ, फसल्योड़ौ—भू० का० कृ०।
फसळीजणौ, फसळीजबौ—भाव वा०।

फसळियोड़ौ—देखो 'फिसळियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० फसळियोड़ी)

फसली-वि० [अ० फ़स्ली] १ फसल का, फसल सम्बन्धी।
२ किसी विशिष्ट फसल या ऋतु में होने वाला।
ज्यूं०—फसलीबुखार।

फसळीवुखार-सं० पु० [ग्र० फ़स्ली + फ़ा० बुखार] वर्षा ऋतु में होने वाला ज्वर, विषम ज्वर। (मलेरिया बुखार)

फसाड़णी, फसाड़बौ—देखो 'फंसाणी, फंसावौ' (रू.भे.)
फसाड़णहार, हारौ (हारी), फसाड़णियौ—वि०।
फसाड़िग्रोड़ौ, फसाड़ियोड़ौ, फसाड़चोड़ौ—भू० का० कृ०।
फसाड़ीजणौ, फसाड़ीजबौ—कर्म वा०।

फसाड़ियोड़ौ—देखो 'फंसायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० फसाड़ियोड़ी)

फसाणी, फसावौ—देखो 'फंसाणी, फंसावौ' (रू.भे.)
फसाणहार, हारौ (हारी), फसाणियौ—वि०।
फसायोड़ौ—भू० का० कृ०।
फसाईजणौ, फसाईजबौ—कर्म वा०।

फसाद—देखो 'फिसाद' (रू.भे.)
उ०—१ फाटक रखवाळी करै, फाटक हरै फसाद। सूंम कहै सुख सूं सुवां, फाटक तणौ प्रसाद। —बां. दा.
उ०—२ मुल्ला काजी मंगहु मयाद, फतवा लीजै मेटन फसाद। —ऊ. का.
उ०—३ जिण बंगला में साठ हजार पठाणां री फसाद उठियौ तिकण नूं मार लीधौ। —प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

फसादी—देखो 'फिसादी' (रू. भे.)

फसायोड़ौ—देखो 'फंसायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० फसायोड़ी)

फसावणी, फसावबौ—देखो 'फंसाणी, फंसावौ' (रू.भे.)
फसावणहार, हारौ (हारी), फसावणियौ—वि०।
फसाविग्रोड़ौ, फसावियोड़ौ, फसाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
फसावीजणौ, फसावीजबौ—कर्म वा०।

फसावियोड़ौ—देखो 'फंसायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० फसावियोड़ी)

फसियोड़ौ—देखो 'फंसियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० फसियोड़ी)

फस्त, फस्द-सं० स्त्री० [ग्र० फ़स्द] नस को छेदकर दूपित रक्त निकालने की क्रिया।
रू०भे०—फसत, फसद।

फहम-सं० स्त्री० [ग्र० फ़हम] १ ज्ञान, समझ। २ वुद्धि, अक्ल। ३ ध्यान, ख्याल।
रू० भे०—फै'म।

फहर-सं० स्त्री० [देशज] फहरने की अवस्था क्रिया या भाव।
रू०भे०—फरहर।

फहरणौ, फहरबौ—देखो 'फरहरणौ, फरहरबौ' (रू.भे.)
उ०—अरध धरन मत्थै उरध, फहर फतै फरमांन। ते दिल्ली थप्पै 'पतै', निज हत्थै नीसांन। —जैतदांन बारहठ
फहरणहार, हारौ (हारी), फहरणियौ—वि०।
फहराड़णौ, फहराड़बौ, फहराणौ, फहराबौ,
फहरावणौ, फहरावबौ—प्रे० रू०।
फहरिग्रोड़ौ, फहरियोड़ौ, फहरचोड़ौ—भू०का०कृ०।
फहरीजणौ, फहरीजबौ—भाव वा०।

फहराड़णौ, फहराड़बौ—देखो 'फरहराणौ, फरहराबौ' (रू.भे.)
फहराड़णहार, हारौ (हारी), फहराड़णियौ—वि०।
फहराड़िग्रोड़ौ, फहराड़ियोड़ौ, फहराड़चोड़ौ—भू० का० कृ०।
फहराड़ीजणौ, फहराड़ीजबौ—कर्म वा०।

फहराड़ियोड़ौ—देखो 'फरहरायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० फहराड़ियोड़ी)

फहराणौ, फहराबौ—देखो 'फरहराणौ, फरहराबौ' (रू. भे.)
उ०—पुहपां मिसि एक एक मिसि पातां, खाडिया द्रव मांडिया ऊखेळि, दीपक चंपक लाखे दीधा, कोड़ि धजा फहरांणी केळि। —वेलि
फहराणहार, हारौ (हारी), फहराणियौ—वि०।
फहरायोड़ौ—भू० का० कृ०।
फहराईजणौ, फहराईजबौ—कर्म वा०।

फहरायोड़ौ—देखो 'फरहरायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० फहरायोड़ी)

फहरावणौ, फहरावबौ—देखो 'फरहराणौ, फरहराबौ' (रू. भे.)
उ०—पुलिण रविसुता फहरावजै पीतपट, आवजै रासथळ व्रजनाथ आथ।—बां. दा.
फहरावणहार, हारौ (हारी), फहरावणियौ—वि०।
फहराविग्रोड़ौ, फहरावियोड़ौ, फहराव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
फहरावीजणौ, फहरावीजबौ—कर्म वा०।

फहरावियोड़ौ—देखो 'फरहरायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० फहरावियोड़ी)

फहरियोड़ौ—देखो 'फरहरियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० फहरियोड़ी)

फहरिस्त—देखो 'फेरिस्त' (रू. भे.)

फांक-सं० स्त्री० [सं० फलकं] १ लंबाई के बल फल आदि का कटा हुआ टुकड़ा या खंड।

ज्यूं०—काकड़ी री फांक, खरबूजा री फांक ।

उ०—देह गरदी मेह लौं अब्बीर उड़ागा, फूल कळेजै फिफरे फबि फांक फुलाया ।—वं. भा.

२ प्रायः खरबूजे के अन्दर एवं खरबूजा, ककड़ी, मतीरा आदि के ऊपर बने हुए प्राकृतिक रेखा-चिन्ह जहां पर से काट कर फांक बनाए जाते हैं ।

३ रेखा, लाइन ।

रू० भे०—फांक, फाकी ।

अल्पा०—फांकड़ी, फाकड़ी ।

मह०—फांकड़ ।

फांकड़—देखो 'फांक' (मह., रू. भे.)

फांकड़ी—देखो 'फांक' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—जड़ीयड़ मुकिनन जीवजु मणीए तारड़ी, पंणे लीतां माहि फुजनी फांकड़ी ।—प. स. प्र.

फांकणौ, फांकबौ—क्रि० स० [देशज] १ झूठ बोलना, मिथ्या बोलना ।

उ०—सूरां हूंत सी मुर सयक्र, रोगट कनां न फांक, फिर भी सगट पीवणौ, ओछी मंडै नाक ।—रैवतसिंह भाटी

२ देखो 'फाकणौ, फाकबौ' (रू. भे.)

फांकणहार, हारौ (हारी), फांकणियौ—वि० ।

फांकिअोड़ौ, फांकियोड़ौ, फांकयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

फांकीजणौ, फांकीजबौ—कर्म वा० ।

फांकियोड़ौ—भू० का० कृ०—१ झूठ बोला हुआ, मिथ्या बोला हुआ. २ देखो 'फाकियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० फांकियोड़ी)

फांकी—१ देखो 'फांक' (रू. भे.)

२ देखो 'फाकी' (रू. भे.)

फांगि—सं० स्त्री० [देशज] व्यंजन विशेष ।

उ०—फूलेही नई फगगरी, फूंगारी नई फांगि । फूणा फूली फूलती पोपल फूली सांगि ।—मा. कां. प्र.

फांट—सं० स्त्री० [देशज] १ कई भागों में बांटने या पृथक करने की क्रिया ।

२ सम से बांटा हुआ या पृथक किया हुआ भाग, अंश ।

३ वह बकरी जिसके बच्चा पैदा नहीं हुआ हो, युवा बकरी ।

४ उबलते हुए १६ गुना जल में औषधियों का महीन चूर्ण डालकर तैयार किया जाने वाला रस या पेय पदार्थ ।

वि० वि०—औषधियों के महीन चूर्ण को किसी पात्र में गरम उबलते हुए १६ गुना जल में डाल कर ढक्कन लगा देवे । आधा या एक घंटे के बाद छान लेने से फांट तैयार हो जाता है ।

५ गठरी ?

उ०—तठा उपरांति करि नैं राजांन मिन्नांमति आटा मैदा री फांटां आंणीजै छै ।—रा. सा. सं.

रू० भे०—फंट ।

फांटणौ, फांटबौ—क्रि० स० [देशज] किसी पदार्थ को कई भागों में बांटना, हिस्सा करना, विभाग करना ।

उ०—आपा तीन सारीना ठिकांणां फांट लेस्यां । तीनूं घालि डोरी तीनि पांत्यां बांट लेस्यां ।—गि. वं.

२ औषधियों का रस या सार तत्व निकालने के लिए उन्हें उबलते हुए १६ गुना पानी में डालना ।

३ पृथक करना, अलग करना ।

फांटणहार, हारौ (हारी), फांटणियौ—वि० ।

फांटिअोड़ौ, फांटियोड़ौ, फांटयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

फांटीजणौ, फांटीजबौ—कर्म वा० ।

फंटणौ, फंटबौ—रू० भे० ।

फांटियोड़ौ—भू० का० कृ०—१ किसी पदार्थ का कई भागों में हिस्सा किया हुआ. २ औषधियों के चूर्ण को १६ गुने उबलते हुए जल में डालकर रस बनाया हुआ. ३ पृथक किया हुआ, अलग किया हुआ.

(स्त्री० फांटियोड़ी)

फांटियौ—सं० पु० [देशज] प्राचीन काल में रेखांकन हेतु निर्मित समानान्तर धागे से चिपकी हुई काष्ट या कागज की दस्तरी जिस पर कागज रख कर नाखून से रेखांकन किया जाता था ।

वि० वि०—प्राचीन काल में ग्रन्थादि लिखते समय सीधी रेखाएं खींचने के लिए स्केल आदि के बजाय एक कागज या काष्ट की बनी दस्तरी प्रयोग में ली जाती थी. जिस पर समानान्तर दूरी पर किसी औषधि विशेष से धागे चिपके रहते थे । लेखक लिखते समय लिखे जाने वाले कागज को इस दस्तरी पर दबाव के साथ रखते और नाखून की सहायता से रेखांकन करते जिससे धागों का निन्ह समानान्तर रेखाओं के रूप में अंकित हो जाता था ।

फांटौ—सं० पु० [देशज] १ भूत-प्रेत आदि द्वारा प्रभावित होने की अवस्था । २ भिन्नता, भेद । ३ विरोध, शत्रुता ।

क्रि० प्र०—पड़णौ, पाड़णौ ।

४ कचरा, फूस, भूसी ।

उ०—छात मायै ठकरांणी सा ऊंचौ मूंडौ करियां नायण कना सूं माथौ गूंथावता हा के अचांणचक वांरी डावी आंख में कीं चीज पड़गी । ठकरांणी सा आंख मसळता कह्यौ आंख में कीं फूस-फांटौ पड़ग्यौ ।—फुलवाड़ी

५ धागा ।

फांडर—सं० स्त्री० [देशज] १ वह गाय या मादा ऊंट जिसके गर्भ नहीं रहता हो ।

२ केवल एक ही बार बच्चा देने वाली गाय ।

रू० भे०—फंडर ।

फांडौ–सं० पु० [देशज] (ब० व० फांडा) १ बड़ा सुराख या छेद।
२ चोरी करने हेतु लगाई गई सेंध।
३ हाथी की पीठ पर रखे जाने वाले 'तैहरू' की कसावट या कसने की क्रिया।

फांणस–सं० पु० [सं० पनस] कटहल।

फांद–सं० स्त्री० [देशज] १ आगे की ओर निकला हुआ पेट या तोंद।
२ फादने की क्रिया, ढंग या भाव।

फांवणौ, फांदबौ–क्रि० स० [देशज] १ कूदकर या उछलकर पार करना, लांघना।
उ०—फलंग जांण फांवता, मलंग में काळा मोडी।
—महादांन महडू
२ बंधन में डालना, जाल में फंसाना।
उ०—मकड़ी जिण-भांत अेक माखी नै आपरा जाळ में फांदै, उणी भात वा राजा नै आपरा कपट-जाळ में फांद लियौ हौ।
—फुलवाड़ी
३ नर पशु का मादा पशु से संभोग करना।
फांदणहार, हारौ (हारी), फांदणियौ—वि०।
फांदिअोड़ौ, फांदियोड़ौ, फांदयोड़ौ—भू० का० कृ०।
फांदीजणौ, फांदीजबौ—कर्म वा०।

फांदळ, फांदाळ, फांदाळौ–वि० [देशज] (स्त्री० फांदळी, फांदाळी) बड़े पेट अथवा तोंद वाला।
उ०—कनलै चढ़ चांदेय हाक करी। फिर फांदळ 'पाबुअ' पीट फरी।—पा. प्र.

फांदियोड़ौ–भू० का० कृ०—१ उछल कर पार किया हुआ, लांघा हुआ. २ बंधन में डाला हुआ. ३ नर पशु का मादा पशु के साथ संभोग किया हुआ.
(स्त्री० फांदियोड़ी)

फांदौ–सं० पु०—१ कोल्हू में 'मांणकथंब' और 'पाट' के जोड़ के स्थान को दृढ़ एवं मजबूत बनाने हेतु लगाया जाने वाला फंदा।
२ देखो 'फंदौ' (रू. भे.)

फांनूस–सं० पु० [फा० फानूस] १ एक प्रकार की बड़ी कंडील।
उ०—आंखियां तरहसी, तिण समै कंवर पिण दरसण नूं आयौ, जिण रै मुख नूर वरसै है। आगै आ तिकापिण फांनूस रा दीपक ज्यूं दरसै है।—र. हमीर
२ छतों में लटकाए जाने वाला शीशे का वह झाड़ जिसमें लगी गिलासों में मोम बत्तियां जलाई जाती है।
रू० भे०—फौंनस।

फांफ–सं० स्त्री० [देशज] १ छोटे पक्षियों का शिकार करने का छोटा डंडा। उ०—फांफ रा फटकारा सूं पांन हिलै ज्यूं वौ थर थर धूजण लागौ।—फुलवाड़ी
२ प्रयत्न, कोशिश।
मुहा०—फांफां मारणी—अपना स्वार्थ हल करने निमित्त इधर-उधर पूरा जोर लगाना।
३ ठंडी तीक्ष्ण वायु।
उ०—मोटी-मोटी छांटा री मेह ओसरियौ। आंधी री फांफां चालण लागी।—फुलवाड़ी
क्रि० प्र०—वाजणी, चालणी।

फांबड़ी—देखो 'पांमड़ी' (रू. भे.)
उ०—सवां नै रळती झीणी फांबड़ी, जमड़ि रै मन में उम्मेद चालता करहा रै कांमड़ी।—लो. गी.

फांस–सं० स्त्री० [सं० पाश] १ पशु-पक्षी को फंसाने का रस्सी का बना फंदा विशेष।
२ जाल, बन्धन।
३ सूखी लकड़ी, घास-फूस तथा बांस आदि का अति सूक्ष्म किन्तु कड़ा और नुकीला अंश जो चमड़ी में धस या चुभ जाता है।
क्रि० प्र०—गडणी, चुभणी, धसणी, निकळणी, निकाळणी, भागणी।
मुहा०—१ फांस चुभणी—जी में अखरने वाली घटना या बात का होना, ऐसी बात का होना जिससे जी में दुख हो।
२ फांस निकळणी—संकट दूर होना, अखरने वाले विपक्षी का दूर होना, ऐसे व्यक्ति या पदार्थ का न रहना जिससे दुख या खटका हो।
३ फांस निकाळणी—किसी बाधा या बाधक को दूर करना।
रू० भे०—फास।

फांसड़ी—देखो 'फांसी' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—तलफ तलफ के बहु दिन बीते, पड़ी विरह की फांसड़ियां।
अब तौ बेगि दया कर साहिब, मैं हूं तेरी दासड़ियां।—मीरां

फांसणौ, फांसबौ–क्रि० स० [सं० पाश, प्रा० फास] १ फंदे में या जाल में किसी पशु-पक्षी को फंसाना।
२ छल या कपट से किसी को अपने अधिकार में करना, धोखे में डालना।
उ०—म्हनैभाईड़ा यूं कांई फांसै, म्हैं तौ थारौ ऊपरलौ उस्ताद हूं।
—फुलवाड़ी
३ चिकनी-चुपड़ी बातें कर किसी को फुसलाकर अपन वश में करना, अपने अनुकूल करना।
मुहा०—१ मुरगी फांसणी—अपने स्वार्थ-सिद्धी हेतु किसी को चिकनी-चुपड़ी बातों से वश में करना।
२ चिड़ी फांसणी—देखो 'मुरगी फांसणी'।
फांसणहार, हारौ (हारी), फांसणियौ—वि०।
फांसियोड़ौ—भू० का० कृ०।
फांसीजणौ, फांसीजबौ—कर्म वा०।

फांसियोड़ौ–भू० का० कृ०—१ फंदे या जाल में किसी पशु-पक्षी को फंसाया हुआ. २ धोखे में डाला हुआ. ३ चिकनी-चुपड़ी बातें कर किसी को फुसला कर अपने वश में किया हुआ, अपने अनुकूल किया हुआ.
(स्त्री० फांसियोड़ी)

फांसियौ-वि० [सं० पाश + रा० प्र० इयौ] फांसने वाला, बंधन में डालने वाला।

उ०—चोर चरड नइ चाडिया, गांठीछोडा गाहाट। वाटपाडा नइ फांसिया, नाडीभोडा नाट।—मा. कां. प्र.

फांसी-सं० स्त्री० [सं० पाश, प्रा० पासी] १ फंसाने का फंदा, पाश।

२ रस्सी का बना एक प्रकार का फंदा जिसमें गला फंस जाने से प्राणी के प्राण छूटकर मर जाता है।

३ बन्धन। उ०—अरज करौं अबला कर जोरैं, स्यांम तुम्हारी दासी। मीरां के प्रभु गिरधरनागर, काटौ जम की फांसी।—मीरां

४ अपराधियों को प्राण दंड देने का वह रस्सी का फंदा जो दो ऊंचे खंभों पर लटकाया जाता है और जिसे गले में डालकर अपराधियों को प्राण दंड दिया जाता है।

उ०—जद बी फांसी मार्थ चढ़ण सारू आयण लागी तौ रांणी बैठी बैठी करती उणरै सारै दौड़ी।—फुलवाड़ी

क्रि० प्र०—दैणी, मिळणी, लगणी, लागणी, लैणी, होणी।

मुहा०—१ फांसी दैणी—फांसी द्वारा प्राण दण्ड देना, गले में फंदा डाल कर मार डालना।

२ फांसी मिळणी—पाश द्वारा प्राण दण्ड पाना।

५ अपराधी को पाश द्वारा मार देने का दण्ड विशेष, मौत की सजा जो गले में फंदा डालकर दी जाती है।

रू० भे०—पासी।

अल्पा०—फांसड़ी।

फा-सं० पु०—१ विष। २ तीर्थ। ३ बैठक, गुदा। (एका०)

फाइन-सं० पु० [अं०] जुर्माना, अर्थदण्ड।

फाइल-सं० स्त्री० [अं०] १ पत्रादि नत्थी किए जाने वाला तार।

२ मिसिल।

३ सामयिक पत्रों आदि के पूरे अंकों का समूह।

फाउ, फाऊ- वि० [देशज] मुफ्त।

सं० स्त्री०—गोरवाल जाति की एक प्रथा जिसके अनुसार वर से केवल ८४ रुपये लेकर ही कन्यादान कर देते हैं। (मा. म.)

फाकउ—देखो 'फाकौ' (रू. भे.)

उ०—साम थांकइ देगड़इ, एक न भाजइ रिद्ध। ऊचाळउ क अवरसणउ, कइ फाकउ कइ तिद्ध।—ढो. मा.

फाकड़ी—देखो 'फांक' (अल्पा., रू. भे.)

फाकणी, फाकबौ-क्रि० स० [देशज] १ चूर्ण, दाना, बुकनी के रूप की कोई वस्तु को मुंह में डालना।

२ कण या चूर्ण को दूर से मुंह में फेंक कर खाना।

उ०—पाली में संतिविजय संवेगी रघनाथ जी सूं चरचा कीधी। किण ही सावां नैं मिस्री रैं भेलो लूण बहिरायौ। संतिविजय तो कहै फाक जाणौ।—भि. द्र.

फाकणहार, हारौ (हारी), फाकणियौ—वि०।

फाकिप्रोड़ो, फाकियोड़ौ, फाक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

फाकीजणौ, फाकीजबौ—कर्म वा०।

फंकणौ, फंकबौ, फांकणौ, फांकबौ—रू० भे०।

फाकता—देखो 'फाखता' (रू. भे.)

फाकर-सं० स्त्री० [देशज] लोमड़ी से मिलता-जुलता एक मांसाहारी जानवर।

फाका-सं० पु० [अ० फ़ाक़:] १ उपवास रहने की अवस्था।

२ भूखा रहने की अवस्था।

मुहा०—फाका पड़णा—अभाव, कमी, निर्धनता का प्रकट होना।

यौ०—फाकाकस, फाकाकसी।

फाकाकस-वि० [अ० फ़ाक़: + फा० कश] १ निर्धन, कंगाल।

२ भूखा रहने वाला, भूखा।

फाकाकसी-सं० स्त्री० [अ० फाक: + फ़ा० कशी] १ भूखा रहना।

२ निर्धनता, कंगाली।

फाकी-सं० स्त्री० [फ़ा० फाकी] १ फांकने की क्रिया या भाव।

२ किसी पदार्थ की उतनी मात्रा जो एक साथ हथेली में लेकर फांकी जाय।

उ०—विरता मन री नहि, तन री गति थाकी, फुरणां पर धन री, ग्रन री नहि फाकी।—ऊ. का.

क्रि. प्र०—दैणी, मारणी, लैणी, होणी।

मुहा०—१ फाकी में भाणी—धोखे में आना, जाल या कपट में फंसना।

२ फाकी में पड़णी—देखो 'फाकी में आणी'।

३ फाकी में लैणी—चंगुल में लेना, फुसला देना, धोखे या जाल में लेना।

३ किसी फल आदि का गोल या लंबोतरा टुकड़ा या खण्ड।

रू० भे०—फंकी, फांकी।

मह०—फाकौ, फूकौ।

फाकौ-सं० पु० [देशज] १ तापमान के अनुसार ११ से १४ दिन में टिड्डी के अंडों में से निकलने वाला बिन पंख के फुदकने वाला बच्चा।

२ देखो 'फाकी' (मह., रू. भे.)

उ०—दीनी वीरा भांणजड़ां ने वांट, ऊबरतो को फाकौ म्हैं लियौ जी म्हांरा राज। वीरा रे ! तूं आपणड़ै घर चाल, थारी उलटी ल्यावां घूघरी जी म्हांरा राज।—लो. गी.

क्रि० प्र०—दैणौ, मारणौ, लैणौ, होणौ।

रू० भे०—फाकउ।

फाखता-सं० स्त्री० [फ़ा फ़ाख्त:] पडुंकी नामक पक्षी।

रू० भे०—फाकता, फागता।

फाग-सं० पु० [सं० फाल्गुनः] १ फाल्गुन मास में समवयस्कों द्वारा खेला जाने वाला खेल जिसमें एक दूसरे पर रंग या गुलाल

डालते हैं।

उ०—१ माघ मास टंड़ै जळ न्हायी,फागण फाग न खेली हो रांम। —लो. गी.

उ०—२ अस्त्र गुलाव अवीर उटायौ, सस्त्र पिचरका छिव सरसायौ वीर नाद मोई चंग वजायौ, रंग फाग सम जंग रचायौ।—ऊ. का.

२ फाल्गुन मास में गाए जाने वाले गीत जो प्रायः अश्लील होते है।

उ०—तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलांमति सारीखा साथ री टोळियां कियां-थकां फूल-गैतूळ पड़ि नैं रहिआ छै। केसरिआ वणाव कीआं थकां आगैं वखांणी तिण भांति री नाइका पात्रां रा टूल चलीआ जायै छै। डफ, चंग, मुहचंग वाजि नैं रहिआ छै। वीणा, ताळ, म्रदंग वाज रहिआ छै। वांसली वाजि रही छै। ढोलकां वाजि रही छै, फाग गाइजै छै, फाग खेलीजै छै। नाचीजै छै।—रा. सा. सं.

क्रि० प्र०—गाणौ।

३ फाल्गुन मास में होने वाला उत्सव।

४ देखो 'फागण' (रू. भे.)

रू० भे०—फग्ग।

फागण-सं० पु० [सं० फाल्गुन] १ शिशिर ऋतु का दूसरा मास जो माघ के वाद पड़ता है, फाल्गुन। (डिं. को.)

उ०—१ फागण मास सुहांमणउ, फाग रमइ नव वेस। मो मन खरउ उमाहियउ, देखण पूगळ देस।—ढो. मा.

उ०—२ लगतां फागण लूरां लागी, अड़ै द्रोण अरु द्रुपद अभागी। वीरां खाग पुरस्पर वागी, जिण सूं ज्वाळ लड़ण री लागी। —ऊ. का.

रू० भे०—फग्गुण, फाग, फागुण, फाल्गुण, फालगुणी, फाल्गुण, फाल्गुणी, फाल्गुन, फाल्गुनी।

फागणियामूंग—देखो 'फागुणियामूंग' (रू. भे.)

फागणियौ-वि० [सं० फाल्गुन+रा० प्र० इयौ] १ फाल्गुन मास संबंधी, फाल्गुन मास का।

सं० पु०—फाल्गुन मास में स्त्रियों द्वारा ओढ़ा जाने वाला रंग विशेष का ओढ़ना।

उ०—फागण आयौ रसिया, फागणियौ रंगाई दो। पीळिया में मच रहियै होळी, रम रहियै होळी। फागणियौ रंगाई दो। —लो. गी.

रू० भे०—फागण्यौ, फागुणियौ, फागुण्यौ।

फागणी—देखो 'फाल्गुनी' (रू. भे.)

फागण्यौ—देखो 'फागणियौ' (रू. भे.)

उ०—ऊनाळा रा पोमचा, चौमासा रा लेरिया, फागण रा फागण्या रंगावौ म्हारी जोड़ी रा।—लो. गी.

फागता—देखो 'फाग्गता' (रू. भे.)

फागुआ-सं० स्त्री०—पंवार वंश की एक शाखा।

फागुण—देखो 'फागण' (रू. भे.)

उ०—१ फागुण मासि वसंत रुत, आयउ जइ न सुणेसि। चाचरि कइ मिस खेलती, होळी झंपावेसि।—ढो. मा.

उ०—२ वीणा डफ महुयरि वंस वजाए, रोरी करि मुख पंचम राग। तरुणी तरुण विरहि-जण दुतरणि, फागुण घरि घरि खेलै फाग।—वेलि

फागुणियामूंग-सं० पु० [राज० फागण+मूंग] रवी की फसल में होने वाला मूंग नामक द्विदल अनाज।

उ०—ऊपर छोंतरा, गोंहू, तरकारी हुवै। पांणी मीठौ। विणां, फागुणियामूंग, जवार, सेलड़ी, सोह हुवै। —नैणसी

रू० भे०—फागणियामूंग।

फागुणियौ, फागुण्यौ—देखो 'फागणियौ' (रू. भे.)

फागोटौ-सं० पु० [सं० फाल्गुन+रा० प्र० ओटौ] फाल्गुन मास में इष्ट मित्रों व सगे-सम्वन्धियों को व्यंग में वोले जाने वाले अश्लील शब्द।

उ०—फाग खेलीजै छै। नाचीजै छै। हास-विणोद कीजै छै। हास रस हुइ नैं रहीयौ छै। फागोटां रा मुख सवाद लीजै छै। घरि-घरि वसंत राग हुलरावीजै छै।—रा. सा. सं.

रू० भे०—फणगटौ।

फाड़—देखो 'फाड' (रू. भे.)

फाड़कती, फाड़खती, फाड़गती—देखो 'फारखती' (रू. भे.)

फाड़णौ, फाड़बौ-क्रि० स० [सं० स्फाटनम्] १ किसी पैने या नुकीले उपकरण या शस्त्र को किसी, पदार्थ या प्राणी पर इस प्रकार मारना या खींचना कि पदार्थ या प्राणी का कुछ भाग हट जाय या उसमें दरार पड़ जाय, विदीर्ण करना।

उ०—ताहरां हालतां-हालतां नाहरी नजीक आई, ताहरां मैणौ ऊभौ रह्यौ—'जी, आगैं नाहरी छै।' ताहरां रिणमल जी वेटै अड़माल नूं कह्यौ—'हां!' ताहरां अड़माल नाहरी वतळाई। ताहरां तूट अर आई। ताहरां नांहरी नूं कटारी सूं फाड़ नांखी। —नैणसी

२ कागज, वस्त्र आदि किसी परत वाले पदार्थ का कोई भाग जोर से इस प्रकार खींचना, तानना, झटका देना या कैंची से चीरना की उसका कुछ भाग मूल में से पृथक हो जाय; टुकड़े करना, खंड करना, धज्जियां वनाना।

उ०—पछै रुघनाथ जी आचारंग काढ्यौ। जद खंतिविजय रुघनाथ जी कनै सूं पांनी खोसनै फाड़ न्हाख्यौ।—भि. द्र.

३ किसी समूह या दल को वीच में से पृथक करना, दूर हटाना, दूर करना, चीर देना।

उ०—फाड़ंतौ फौजां अफिर घुमाड़ंतौ घाग्रे घड़, भवाड़ंतौ 'बीक' भलौ खिलंतौ निघात। वीजळा झाड़ंतौ वैरी, वावाड़ंतौ 'जैत'

वीजो, पैलाड़ै पाड़तो सोहै, राठौड़ां री छात ।

—दूदौ सुरतांणोत मीढ़

४ आपस में विरोध डालना, भेद डालना, पृथक कर देना ।

उ०—तिकै उमराव फिर गया था । तिकै कह्वाट रै छोटौ भाई छै। तिण सूं मिळिया नै कह्यौ, म्है तोनै गिरनार वैसांणां । इसौ कहि भाई सूं फाड़िनै उमराव दिल्ली रा पातिसाह कनै ले गया ।

५ परस्पर मिले या जुड़े हुए पदार्थों के मिले हुए प्रदेशों को पृथक-पृथक कर देना, संधि या जोड़ फैलाकर खोलना ।

उ०—१ मावड़िया मुख ढंकियां; वैसे फाड़ै-वाक, स्रवण सुणै नहं वीर रस, दुरबळ घणौ दिमाक । —वां. दा.

उ०—२ फीटी मूंढ़ी फाड़ नाड़ कर लेवै नीची —ऊ. का.

उ०—३ गवैयौ घांटी हिलाय-हिलाय अर वाकौ फाड़-फाड़नै ऊंचा सुर मे गावतौ हौ ।—फुलवाड़ी

६ लंबोतरे पदार्थ के खड़े दो बराबर खंड करना, चीरना ।

उ०—१ चंदेरी बूंदी विची, सरवर केरइ तीर । ढोलइ दांतण फाड़तां, आइ पुहत्तउ कीर ।—ढो. मा.

उ०—२ ले भड़ां रटाकां पूर अरिंदा ताड़व्वा लागा, महांवीर खीज में पाड़व्वा लागा मूंठ । वीर वेसतावा जहां दूधारा भाड़व्वा लागा, रोजगारा खाती ज्यूं फाड़व्वा लगा रूंठ ।

—मुकंदसिंघ सेखावत रौ गीत

७ तालाव, नदी या कुण्ड के पानी में तैरकर आर-पार जाना ।

ज्यूं०—तळाव फाड़णौ ।

उ०—वीजळियां रा झबका में सांमला भाखर रौ उणनै झबकौ पड़ जातौ अर वौ पांणी फाड़तौ उठीनै चालतौ ई रह्यौ ।

—फुलवाड़ी

८ भीड़ को हटाते हुए रास्ता तय करना ।

उ०—पाड़ै धजां चम्मरां सु पक्खरा थंडमां पाड़ै, नरां गिरां पाड़ै करां ऊघड़ां निराट । पाड़ै थूळ वंगाळां अड़ाळां दळां भूळ पाड़ै, साहां वेहूं सीस पाड़ै भीड़ फाड़ै वाट ।—राव सत्रसाळ रौ गीत

९ किसी गाढ़े द्रव पदार्थ के सम्बन्ध में इस प्रकार की क्रिया करना कि उसका जलीय अंश और सार पृथक-पृथक हो जाय ।

१० धारदार औजार के प्रहारों से किसी पदार्थ को कई खण्डों या टुकड़ों में करना ।

ज्यूं०—कवाड़ी सूं लकड़ी फाड़णी ।

११ चोरी करने हेतु मकान की दीवार आदि में सुराख करना, सेंध लगाना ।

ज्यूं०—आज चोरां मोवन जी रौ घर फाड़ियौ, घणौ माल ले गया।

फाड़णहार, हारौ (हारी), फाड़णियौ—वि० ।

फाड़िओड़ौ, फाड़ियोड़ौ, फाड़योड़ौ—भू० का० कृ० ।

फाड़ीजणौ, फाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

फाडणौ, फाडबौ—रू० भे० ।

फाड़ियोड़ौ—भू० का० कृ०—१ कोई पदार्थ अथवा प्राणी किसी पैने या नुकीले उपकरण या शस्त्र से मारकर या खींचकर फाड़ा हुआ. २ कागज, वस्त्रादि किसी परत वाले पदार्थ का कोई भाग जोर से खींचने, तानने, झटका देने या कैंची से चीरने से पृथक किया हुआ, टुकड़े किया हुआ, खंड किया हुआ, धज्जियां बनाई हुई. ३ किसी दल या समूह को बीच में से पृथक किया हुआ, दूर हटाया हुआ, चीरा हुआ. ४ आपस में विरोध डाला हुआ, भेद डाला हुआ, पृथक किया हुआ. ५ परस्पर मिले या जुड़े हुए पदार्थों के मिले हुए प्रदेशों को पृथक-पृथक किया हुआ संधि या जोड़ फैलाकर खोला हुआ. ६ लंबोतरे पदार्थ के खड़े बराबर दो टुकड़े किया हुआ, चीरा हुआ. ७ तालाव, कुण्ड या नदी के पानी में तैरकर आर-पार गया हुआ. ८ भीड़ को हटाते हुए रास्ता तय किया हुआ. ९ किसी गाढ़े द्रव्य पदार्थ के सम्बन्ध में इस प्रकार की क्रिया करने के कारण उसका जलीय अंश एवं सार पृथक-पृथक किया हुआ. १० धारदार औजार के प्रहारों से किसी पदार्थ को कई खण्डों या टुकड़ों में किया हुआ. ११ चोरी करने हेतु मकान की दीवार आदि में सुराख किया हुआ, सेंध लगाई हुई.

(स्त्री० फाड़ियोड़ी)

फाड़ौ—सं० पु० [देशज] (ब०व० फाड़ा) १ वह भूमि जो जमीन जोतते समय दो सीताओं या कुंड के बीच मे बच जाती है ।

२ किसी पदार्थ को तोड़-फोड़ या चीर कर किया हुआ टुकड़ा ।

उ०—तच करती री भोडक अळगी व्हैगी अर दूजोड़ा झटका में वी भोडक रा दोय फाड़ा कर न्हांकिया ।—फुलवाड़ी

३ भाग, हिस्सा ।

उ०—पांणी दो फाड़ा में फाटतौ ई गियौ अर राजकंवर आगै वधतौ गियौ ।—फुलवाड़ी

४ देखो 'फाडौ' (रू. भे.)

फाचर—सं० पु० [देशज] १ पत्थर, काष्ट एवं शरीर का छोटा पैना टुकड़ा, खण्ड ।

उ०—१ आछटै अज्जरा, करिमाळक्करा । फूटरा फूटरा, फाचरा फाचरा ।—सू. प्र.

उ०—२ अठी पांचमौ भाई किसोरसिंघ के ही हाथियां नूं हठाइ चरवीर वैरियां नूं अग्रजां रा तथा आपरा साथी वणाइ धरा री कंवाड़ होण करवाळ रूप ककंचा मैं अंग रा फाचरा उडाय सेलां रा साळां करि पाछौ जुड़ाइ खेत पड़ियौ ।—वं. भा.

वि० वि०—पत्थर एवं लकड़ी के छोटे, पतले एवं पैने टुकड़े जो खाली छूटे हुए स्थान में संधि मजबूत करने के लिए फंसाये जाते हैं । पत्थर के फाचरे दीवार में एवं लकड़ी के फाचरे कोई फर्नीचर, औजारादि में लगाए जाते है । शरीर के फाचरे तलवार से छिन्न-भिन्न किए हुए शरीर के टुकड़े होते है ।

२ देखो 'पाचरौ' (रू. भे.)

उ०—गोळमटोळ पहिया घड़ दे, **फाचर** लाल गुलाल । गड़मच-गड़मच करतौ चालै, गीगै कै मन भाय । सुण-सुण रे खाती रा बेटा, गाडूलौ घड़ ल्याय, गाडूलौ घड़ ल्याय म्हारै गीगै कै मन भाय ।—लो. गी.

रू० भे०—पाचर, फचर, फचराक, फच्चर ।

अल्पा०—पाचरी, फाचरियौ, फाचरौ ।

फाचरियौ, फाचरौ—देखो 'फाचर' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—जेण वेळां उड़ै वे नाचरा वाळा ख्याल जोवै, राचरा आचांणी यो जाचरा वाळा रूक । उचक्कै उठावै **फाचरा** वाळा घाट योंही, टूटै पड़ै गयंदां चाचरां वाळा टूक ।

—मुकंदसिंघ सेखावत रौ गीत

फाचै—क्रि० वि० [सं० पश्चात्] पीछे, बाद में, पश्चात् ।

फाट—सं० पु० [देशज] १ फटने की क्रिया या भाव ।

२ खंड, टूक । उ०—सर छूटइ करता सणणाट, बकतर फोड़ि करै वे **फाट** ।—प. च. चौ.

फाटक—सं०स्त्री० [सं० कपाट:] १ बड़े भवनों, महलों, बाड़ों, कारखानों, बगीचों आदि का बड़ा मुख्यद्वार ।

उ०—१ अठीनै बाग री **फाटक** में राजा जी री पग धरणौ व्हियौ अर अठीनै बनमाळी तौ तड़ाच खायनै जमी माथै हेटै पड़ग्यौ ।

—फुलवाड़ी

उ०—२ अेक पिंजारौ कपड़ा री अेक छोटी सी मील में कांम करतौ हौ । मील री **फाटक** माथै पैरण रा गाभां री संभाळी लेवता तौ ई वौ पिंजारौ खूंजिया में घालनै रूई रा अेक दो फूंवदा तौ ले ई आवतौ ।—फुलवाड़ी

२ कपाट ।

उ०—१ **फाटक** रखवाळी करै, **फाटक** हरै फसाद। सूंम कहै सुख सूं सुवां, **फाटक** तणै प्रसाद ।—बां. दा.

उ०—२ कह पंथी जिण गांम धण, **फाटक** घर न जुड़ाय । अब तौ खूड़ौ ऊवरै, सूर धणी समुझाय ।—वी. स.

३ वह मकान जिसमें व्यक्तिगत या सामाजिक हानि पहुंचाने वाले मवेशी सरकार की ओर से या पंचायत द्वारा बन्द किए जाते है ।

४ उक्त प्रकार से बन्द किए हुए मवेशी आदि को छुड़वाने पर दिया जाने वाला दण्डस्वरूप धन, रुपया, पैसा ।

५ उक्त प्रकार के भवनों या अहाते के मुख्य द्वार पर लगाए जाने वाले विशेष बनावट के कपाट ।

६ राज्य-पथ एवं रेल्वे लाइन के शृंगाटन पर बना हुआ वह कपाट जो रेलगाड़ी के गुजरते समय सुरक्षा की दृष्टि से लगाया जाता है ।

अल्पा०—फाटकी ।

फाटकी—सं० स्त्री० [देशज] १ लकड़ी या धातु की बनी वह चपटी एवं लम्बी पट्टी जो झूलों के बीच में रख कर झूला झूलने के काम आती है ।

उ०—अमवा री डाळी हींडौ बी घाल्यौ, रेसम-डोर बंधायौ । कहौ तौ सहेल्यां, आपां बागां में चाला, बागां में हींडौ अे घलायौ । रूपां री म्हारी वणी अे **फाटकी**, सोना के रौ झोळ चढ़ायौ, कहौ तौ सहेल्यां, आपां बागां में चालां, बागां में हींडौ अे घलायौ ।

—लो. गी.

२ देखो 'फाटक' (अल्पा., रू. भे.)

फाटकौ—सं० पु० [देशज] १ सामान्य व्यापार से भिन्न क्रय-विक्रय का कल्पित प्रकार या ढंग जिसमें लाभ-हानि का निश्चय बाजार की तेजी मंदी के अनुसार होता है, इसलिए इसकी गिनती एक प्रकार के जूए में होती है, सट्टा ।

२ उक्त प्रकार से धन लगाकर खेल खेलने की क्रिया या भाव ।

३ कोई भी ऐसा कार्य जिसमें हानि या लाभ प्रायः अनिश्चित सा ही होता है ।

४ शस्त्र-प्रहार ।

उ०—जद स्वांमी जी बोल्या—किण ही नै मेरां पकड़ ले गया । डेरौ खोस लीधौ । **फाटका** पिण दीधा । पछै घर रा मेहनत कर छुड़ा ल्याया । केतलायेक काले मैला में भेला थया । ओलख नै मेरां सूं मिल्यौ । लोकां पूछ्यौ—थारै कांइ सैंहद ? जद बोल्यौ—म्हारै भाइजी रा हाथ था **फाटका** लागा है, सहलांणी है ।

—भि. द्र.

५. लकड़ी का एक फुट चौड़ा व ६-७ फीट लम्बा पाटिया जिस पर बैठकर चेजारे कार्य करते है ।

फाटणौ, फाटबौ—क्रि० अ० [सं० स्फाटनम्] १ किसी भी चीज का बीच में से फटकर पृथक या अलग हो जाना, दो खंड हो जाना ।

उ०—१ जद ते बोल्यौ—आ तौ मोनै कोइ आवै नहीं पांनां में मंडी है । स्वांमी जी कह्यौ—पांनी **फाट** गयौ अथवा गम गयौ ह्वै तौ कांई करस्यौ ? —भि. द्र.

उ०—२ फाटा डोळां फिरै, फेर कपड़ा **फाटोड़ा** । बोत निकांमां बोर, खाय बैता खातोड़ा ।—ऊ. का.

२ किसी द्रव पदार्थ में ऐसा विकार होना जिससे उसका जल और सार अंश पृथक-पृथक हो जाय ।

ज्यूं०—छाछ फाटणी, दही फाटणौ, दूध फाटणौ ।

३ आघात लगने या ऊपर अधिक बोझ आ जाने से किसी पदार्थ का बीच मे से इस प्रकार अलग हो जाना या उसमें दरार पड़ना कि अन्दर की चीजें बाहर दिखाई देने लगे या बिखर पड़े । तरेर आना, चिर जाना ।

ज्यूं०—गांठ फाटणी, गाबा फाटणा, जमी फाटणी, भींत फाटणी ।

४ अपने पक्ष के समूह से पृथक होना, किसी विपक्षी के साथ मिल जाना, विरुद्ध होना, विमुख होना ।

उ०—अजमखां वांसै लागौ आय गढ़ गिरनार घेरियौ । वरस तीन विग्रह हुवौ । अमीखांन गढ़रोहा मांहे मौत मुवौ । अमीखांन रा वेटा नूं टीकौ हुवौ । वेटा री दिन फिरियौ । आप रौ परधांन थौ तिणसूं वेदवी की । पछै परवांन, रजपूत माहोमांहि फाटा । तरै गढ़ उतार नै अजमखांन नूं दियौ । —नैणसी

५ आंख या मुंह का स्वाभाविक स्थिति से अधिक खुलना, फैलना ।

उ०—१ फळ अंगूर देखि द्रग फाटा, ताटा ऊंचा ताय । पलटी लूंकी देय पळाटा, खाटा अै कुण खाय ।—ऊ. का.

उ०—२ वाक घणा फाटा रहै, नाहर डाच निहाळ । किर काळी रा करग रौ, कोयक खड़ग कराळ ।—वां. दा.

६ तितर-बितर हो जाना ।

ज्यूं०—वादळ फाटणौ ।

७ रक्त विकार, क्षार पदार्थ के स्पर्श या वाह्य मैल के कारण शरीर के अंग विशेष की त्वचा में वारीक दरार पड़ना, फटना ।

ज्यूं०—पग फाटणा, हाथ फाटणा, होठ फाटणा ।

८ रोग, विकार आदि के कारण शरीर के किसी अंग पर असह्य वेदना या कष्ट होना ।

उ०—१ दैंत अणछक जोर सूं डाढ़ियौ—म्हारौ माथौ फाटै! म्हारौ माथौ फाटै । — फुलवाड़ी

उ०—२ अरजण रै हाथां छूट्यौ तीर रै वेग सणण-सणण करतौ वौ हवा नै चीरतौ ऊंचौ उडतौ ई गियौ । राजकंवर रै कांनां रा पड़दा जांणै फाटण लागा । — फुलवाड़ी

९ मर्यादा उल्लंघन होना, सीमा छोड़ना ।

उ०—दख्खणाधि-दळ फाटौ उदधि, रहै न दूजै रोकियौ, कमधज्ज ऊठि कर तेग लै, तौ भुज भार खडक्कियौ । —गु. रू. वं.

फाटणहार, हारौ (हारी), फाटणियौ—वि० ।

फाटिओड़ौ, फाटियोड़ौ, फाटयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

फाटीजणौ, फाटीजवौ—भाव वा० ।

फटणौ, फटबौ, फट्टणौ, फट्टवौ—रू० भे० ।

फाटियोड़ौ, फाटोड़ौ—भू० का० कृ०—१ किसी भी पदार्थ का वीच में से फटकर पृथक या अलग हुवा हुआ, दो खंड हुवा हुआ. २ विकार विशेष के कारण द्रव पदार्थ का सार अंश और जल पृथक हुवा हुआ. ३ आघात या अधिक वोझ के कारण पदार्थ विशेष वीच में से अलग हुवा हुआ, दरार पड़ा हुआ. (पदार्थ, वस्त्रादि) ४ अपने पक्ष के समूह से पृथक हुवा हुआ, शत्रुदल से मिला हुआ. ५ स्वाभाविक स्थिति से अधिक खुला हुआ. (मुख, आंखादि) ६ तितर-वितर हुवा हुआ. ७ रक्त विकार, क्षार पदार्थ के स्पर्श या वाह्य मैल आदि के कारण फटा हुआ. (शरीर का अंग) ८ रोग विकार आदि के कारण असह्य वेदना हुवा हुआ. (शरीर का अंग) ९ मर्यादा उल्लंघन किया हुआ, सीमा छोड़ा हुआ.

(स्त्री० फाटियोड़ी, फाटोड़ी)

फाटौ—वि० [देशज] (स्त्री० फाटी) १ फटा हुआ, विदीर्ण ।

२ अश्लील, अशिष्ट । उ०—फलांणौ वैरी थारौ गिलौ करतौ थौ थारी फाटी वातां करतौ थौ । —नी. प्र.

फाड—सं० स्त्री० [देशज] १ एक प्रकार का वस्त्र ।

उ०—१ नंदरवारी पाघड़ी, पांमडी लोवडी, वाहणवही लोवडी, पछेडी चूनडी गजवडि वोरीआवडि हंसवडि सुवरणवडि कालावडि फाडां ठेपाडां कुमरपछेडु, गोमेद लूगडूं ।—व. स.

उ०—२ वेटा रहिं इकु मांनइ जाग माथइ फाड देई इकि मागइं भाग, वेटा पाखइ इक दोहिलउं घरइं वेटे छते इकि वढ़ी दढ़ी मरइं ।—वस्तिग

२ फल अथवा काष्ठ का चिरा हुआ एक लम्वोतरा खण्ड, फांक ।

रू० भे०—फाड़ ।

अल्पा०—फाडि, फाडी ।

फाडणउ—वि०—१ फटने वाला ।

२ पृथक होने वाला ।

उ०—समुद्र खारउ, वाउल कंटालउ, सरप कालउ, वाउ वायणउ, जन वोलणउ, सुणह भसणउ, ससउ नासणउ, रांणउ लेणउ, स्त्री स्वभाव लाडणउ, सांड आडणउ, कुमित्र फाडणउ दुरजन दुस्ट, स्वजन सिस्ट, आगि ताती, धाहु राती ।—व. स.

फाडणौ, फाडवौ—देखो 'फाड़णौ, फाड़वौ' (रू. भे.)

उ०—१ राजहंस गति जिम चालती, मयगल जिम माह्लती, कांमिनीगरव्व भांजती, चंद्रकला जिम गुणिहिं वाधती, कंचुक ताडती, नयनवांणि जणमण वीधती, वांकउं जोइती, जनह्लदय आह्लादती, सीमंतउ फाडती, कंठकंदलि नवसरहारि रुलंतइ, जोइ ननु न इसी वाल ।—व. स.

उ०—२ तरै सांमरा देवी राजा री देही कनै आइ । राठौ फाडिनै टावर काढ़िनै उरी लीनौ ।—राठौडां री वंसावली

फाडणहार, हारौ (हारी), फाडणियौ—वि० ।

फाडिओड़ौ, फाडियोड़ौ, फाडयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

फाडीजणौ, फाडीजवौ—कर्म वा० ।

फाडसींगौ, फाडासींगौ—सं० पु० यौ० [देशज] (स्त्री० फाडसींगी) वह नर पशु जिसके सींग लम्वे फैले हुए हों ।

उ०—मैंस नै देखतां ई उण रा मगज में जांणै कीड़ौ कळवळियौ । वोल्यौ—हे ओ माजी ! ओ फाडसींगौ खोरौ जे इण गडाळ में मरग्यौ तौ इणनै वारै कीकर काढ़ौला । —फुलवाड़ी

फाडासुपारी—सं० स्त्री०—एक प्रकार का फल विशेष (सुपारी) जो

प्रायः पान के साथ या वैसे भी खाया जाता है तथा जिसका औपधि मे भी प्रयोग होता है, छालिया ।

फाडि—१ देखो 'फाड' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—वीजपूरकनी घणी चडउडी, सरंग नारिंगनी फाडि, अति गुल्यइ आगि, पूरी रंगि, मधुकलस आवां नी चउतली । —व. स.
२ देखो 'फाडौ' (अल्पा., रू. भे.)

फाडियोड़ौ—देखो 'फाड़ियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० फाडियोड़ी)

फांडी–सं० स्त्री०—१ देखो 'फाड' (अल्पा., रू. भे.)
२ देखो 'फाडौ' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—आप मेहरबांनी करनै अेक चंन्नण री लांठी फाडी म्हारी कुपाळी मे अर अेक तीसी फाडी म्हारा कागलिया मे जोरं सूं ठोर दी नीतर म्हारी गति नी व्हैला । —फुलवाड़ी
मुहा०—१ फाडी करणी—कोई कार्य करवाने के लिए शीघ्रता करना । २ फाडी फसाणी—विघ्न पैदा करना, बाधा डालना ।

फाडौ–सं० पु० [देशज] (स्त्री० फाडी) १ फैले हुए लम्बे सीगों वाला नर पशु ।
२ लम्बे-लम्बे डग भरकर चलने वाला व्यक्ति ।
३ पशु का वह सींग जो फैला हुआ हो ।
उ०—भैंस रा सीगड़ा अणूंता फाडा अर लांबा हा ।—चौधरी नीठ इत्ती ताळ स्याणी स्यांणी बैठी रह्यौ ।—फुलवाड़ी
४ काष्ट का चीरा हुआ लंबोतरा खंड ।
उ०—महंत जी नै पूछ्यौ तौ वै खुद आपरै मूंडा सूं मंजूर करियौ के सेठां रै कैणा मुजब ई म्है वांरी मुगति री उपा करियौ हौ । चंन्नण रा दोनूं फाडा म्हैं म्हारै हाथां सूं ठोरिया । —फुलवाड़ी
रू० भे०—फाड़ौ ।
अल्पा०—फाडि, फाडी ।

फातड़ौ–सं० पु० [देशज] हिजड़ों के साथ रहकर नाचने गाने तथा उनकी लाग वसूल करने वाला व्यक्ति ।
रू० भे०—फातलौ ।

फातमा–सं० स्त्री० [अ० फ़ातिमः] १ मुहम्मद साहब की कन्या जो हजरत अली की पत्नी तथा हसन और हुसैन की माता थी ।
उ०—'खि़लंद' तांम बीफरै, घूत दाढ़ी कर धारै । ईसफहां आसफां, इलम फातमां उचारै ।—सू. प्र.
२ वह स्त्री जो बच्चे को स्तनपान कराना जल्दी बन्द कर दे । (मा. म.)

फातलौ–वि० [देशज] (स्त्री० फातली) १ कायर, डरपोक ।
उ०—घीचीवियूं घोड़े-ह, अमईणौ वत आतलै । 'बूढ़ा' लज बोडेह, फिरस्यूं बैठी फातला । —पा. प्र.
२ देखो 'फातड़ौ' (रू. भे.)

फातिया, फतिहा–सं० स्त्री० [अ० फातिह:] १ प्रार्थना ।
उ०—टोप नवज चिलत है, गरै समसेर जमंधर । फजर पढ़ै फातिया, अगुर चढ़िया गज ऊपर ।—सू. प्र.
२ मरे हुए लोगों के नाम पर दिया जाने वाला चढ़ावा । (मा. म.)

फायीजणौ, फायीजबौ–क्रि० अ० [सं० पथ=मार्ग+रा० प्र० ईजणौ] आर्थिक संकट आदि मे घबरा जाना, भ्रम में पड़ जाना ।
फायीजणहार, हारौ (हारी), फायीजणियौ—वि० ।
फाथीजिओड़ौ, फाथीजियोड़ौ, फाथीज्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
फायीजीजणौ, फायीजीजबौ—भाव वा० ।

फायीजियोड़ौ–भू० का० कृ०—आर्थिक संकट आदि मे घबराया हुआ, भ्रम में पड़ा हुआ.
(स्त्री० फाथीजियोड़ी)

फायौ–वि० [देशज] (स्त्री०फायी) १ शीघ्रता करने वाला, उतावला ।
२ भूला हुआ, भ्रमित ।

फाफड़ौ, फाफरौ–सं० पु० [देशज] गेहूं की पतली रोटी ।
उ०—घ्रतवरणी घारडी, पताम फीणी, दहींयरां निलमांकली फाफडा पूरी गुंभां ।—व. स.

फाफानंदफड़ंद—देखो 'फोफानंदफड़ंद' (रू. भे.)
उ०—रण माधौ दे राज लै, अवर मुरग आनंद । घर मायौ दे वरपणौ, फाफानंदफड़ंद । —रेवतसिंह भाटी

फावणौ, फावबौ–क्रि० अ० [सं० प्रभवनम्] १ किसी पदार्थ का उपयुक्त स्थान पर उचित प्रतीत होना, शोभायमान होना, सुन्दर लगना ।
उ०—१ फरहरै नेजा धजा फावइ रे, बहु नेड़ा प्रवहण आवै रे ।
—प. च. चौ.
उ०—२ फैंटा छोगाळा सांधा सिर फावै, टेढा डोढावै डिगतौ नभ ढावै ।—ऊ. का.
उ०—३ आछा हुवै उमराव, हिया फूट ठाकुर हुवै । जड़िया लोह जड़ाव, रतन न फावै राजिया ।—किरपारांम
उ०—४ फळ वहु सेल मछां दुति फावी । मझि जळ ग्रीझ तिरै मुरगावी । चंच चंच जिण अगनि चमंकै । दांमणि जांणि अनेक दमंकै ।—सू. प्र.
२ सुन्दर वेशभूषा धारण करने पर व्यक्ति का सुन्दर लगना, शोभित होना ।
उ०—उडियांणी कसी मेखळी ऊपरि, काख अंधारी डंड कर, भल दीसइ फाबियउ विसंभर, सिहरां छायउ मांनसर ।
—महादेव पारवती री वेलि
३ अवसरानुकूल किसी कथन या उक्ति आदि का ठीक लगना, भला लगना ।
ज्यूं०—व्याव मे सगां नै गाळी गावणी सुंदर फाबै ।

४ किसी व्यक्ति की विशिष्ट विषय में की गई आंगिक चेष्टाओं तथा अंगों पर धारण किये गए वस्त्रों का उसके अंगों के अनुरूप उचित या सुन्दर लगना ।

ज्यूं०—विण लुगाई नै नाच **फाबै**, उणनै साफी घणी ही आछी **फाबै** ।

फाबणहार, हारौ (हारी), **फाबणियौ**—वि० ।

फाबिओड़ौ, फाबियोड़ौ, फाब्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

फाबीजणौ, फाबीजबौ—भाव वा० ।

फबणौ, फबबौ, फब्बणौ, फब्बबौ, फावणौ, फाववौ—रू० भे० ।

फाबा–सं० स्त्री०—पंवार वंश की एक शाखा ।

फाबियोड़ौ–भू० का० कृ०—१ उपयुक्त स्थान पर उचित रूप से शोभायमान हुवा हुआ. २ सुन्दर वेशभूषा धारण करने से शोभित हुवा हुआ. (व्यक्ति, प्राणी आदि) ३ अवसरानुकूल प्रसग के अनुरूप उचित लगा हुआ, भला प्रतीत हुवा हुआ. (कथन, वचन, वात, उक्ति) ४ अंगों के अनुरूप वस्त्रादि एवं आंगिक चेष्टायें शोभित हुवा हुआ.

(स्त्री० फावियोड़ी)

फाबौ–सं० पु०-[देशज] १ पैर का पंजा ।

उ०—पीपळी री उगती कूंपळ री गळाई पतळी अर छोटी लोळां । ओछी गावड़ । सूंठ रा गांठियां जैड़ौ छोटौ अर गोळ नांक । टीलोड़ी री गळाई दांत । पतळा अर चितकवरा होठ । सीना री ऊपरली हाडकियां उफसियोड़ी । ओछा हाथ । मूंगफळियां जैड़ी छोटी आंगळियां । डोयली रै उनमांन छोटी टांगां । ओछौ **फावौ** । आंगळियां छोटी, हळदी रा गांठियां जैड़ी ।—फुलवाड़ी

२ कोल्हू में 'लाठ' के शीर्ष भाग में जोड़ा हुआ वक्राकार एक सात वैंत लम्बा डण्डा जिसका दूसरा छोर 'माकड़ी' से जुड़ा रहता है ।

फाय–सं० स्त्री० [देशज] लोभ, लालच ।

उ०—राजा नै धन री लागी **फाय** ।—जयवांणी

फायदेबंद, फायदेमंद–वि० [अ० फाइद:+फा० मंद] १ लाभदायक, लाभप्रद । २ हितकर ।

फायदौ–सं० पु० [अ० फाइद:] १ किसी प्रकार के शुभ कार्य से होने वाला किसी भी प्रकार का लाभ ।

उ०—तौ मालम हुई—जे मोटा छोटां नूं सरम में **फायदौ** घणौ छ । सरम रै विगर सारा ही गुण काचा छै ।—नी. प्र.

२ व्यापार में हुआ आर्थिक लाभ, आर्थिक रूप से होने वाली प्राप्ति ।

ज्यूं०—इण साल मिरचां री विक्री में घणौ **फायदौ** रह्यौ है ।

उ०—वांरा विणज में हजारूं रिपियां रौ **फायदौ** व्हियौ, कदै ई घाटौ नीं गियौ ।—फुलवाड़ी

३ निष्कर्ष, नतीजा ।

४ बिमारी मे अपेक्षाकृत सुधार ।

ज्यूं०—म्हारै अबै पैलां सूं **फायदौ** है ।

५ प्रतिशोधात्मक गुण ।

ज्यूं०—आ दवा खांसी में बोत **फायदौ** करै है ।

६ हित, भलाई । उ०—चोर हळफळिया होयनै माल-मत्ता संवटण ढूका जित्तै वै कह्यौ—थांरै ई **फायदा** वास्तै आयौ हूं म्हारा सूं किणी वात री डर मन में मत आंणज्यौ ।—फुलवाड़ी

फायर–सं० स्त्री० [अं०] अग्नि, आग ।

फायरबिरगेड–सं० स्त्री० यौ० [अं०] आग बुझाने वाली गाड़ी ।

फायौफीटौ–सं० पु० [देशज] (स्त्री० फाइफीटी) हक्का-वक्का, भौचक्का । उ०—छोरा कणांई सांड पासी दौड़ै कणांई लकडियां सांभै 'बापू-बापू' हेला मारै । बापड़ौ **फायौफीटौ** हुग्यौ ।

—वरसगांठ

फार–वि० [सं० स्फार] बहुत, अधिक। उ०—तहं नहिं तमांम, घन सीत घांम । फळ-फूल **फार**, अध्वग उदार ।—ऊ. का.

सं० स्त्री० [सं० स्फारम्] आधिक्य, अधिकता, विपुलता ।

उ०—मुडै तार कच्चै किनां वार मच्छी । अटे **फार** जे पंच ही धार अच्छी ।—वं. भा.

फारक–वि० [?] १ हलका, घटिया, खराब, बुरा ।

उ०—कर तन समर करण सुर किरिया, घण दळ सभ नर वांदर घिरिया । तिण द्रवत दधि पाहण तिरिया, **फारक** दिवस हमै तो फिरिया ।—र. रू.

२ स्फूर्तिवाला, फुर्तीला । उ०—पेग्खांना वाळी वात परीछइ, आगा लगइ करण आरास । दळवादळ तांणिया दुवाहे, **फारक** ईसर तणा फरास । —महादेव पारवती री वेलि

सं० पु०—१ शत्रु, दुश्मन ।

उ०—१ मचै वेढ़ विकराळ जरमन इंगळ मारकां। पड़ै खग धारकां रीठ प्राझी । पजावण **फारकां** पीठ नंदण 'पतौ'। सारकां गढ़ा लज धीठ साझी ।—किसोरदांन वारहठ

उ०—२ फुराइ फूं फूं फार **फारक** फोज फरि फुरमांणिया, हुंकार कर कडि करइ सर झडि करवि करि क कंमांणिया ।

—रणमल्ल छंद

२ योद्धा, वीर ।

उ०—१ सरीखी सांनिध मेरु समांण, सरीखा राउ अनै सुरतांण । सरीखा सूक वहे संग्रांमि, सरीखा **फारक** सोहै सांमि ।

—रा. ज. रासौ

उ०—२ मारू ए दखणि ए जुद्ध मातौ । त्रिविध घड ऊछळै लोह तातौ । छूटि कोवंड गुण वांण गाजै । **फारकां** मरिकां हाक वाजै ।

—गु. रू. वं.

उ०—३ धुकै भड़ हेक धजवड़ धाड़, धिगै हिक ओग धर्ड़ गज ग्राहि । मिळै हिक रोस घणी रिण माहि, फिरै हिक फारक फेरी खाहि ।—गु. रू. बं.

[सं० स्फारकं] ३ शस्त्रधारी पैदल सिपाही ।

उ०—१ बार पहर तउ चडीउ रोगि गुरुलंरग्र भूभट । रगि पाडिउ भगदत्तु राउ कउरव दल संभट । करि कल्लाणु जु सर्गीउ करणु समहरि रणु माडउ फारक पायक तुरग नाग नवि कोई छंडउ ।

—सं. पं. प.

उ०—२ वीर पुरुष महासुभट प्रमुख नीपना, चक्रव्यूह गुरुड्व्यूह तणी रचना नीपनी, धागेवाणि नीसाणियां तणी नेजि, पदेशांगि फारक तणी पदाति, तलो हरजीपंट मीरकार करती ।—व. स.

सं०स्त्री०—४ लड़कों के खेलने का चकई नाम का खिलौना, फरकी ।

५ देखो 'फारिग' (रू. भे.)

रू० भे०—फारख ।

फारकती—देखो 'फारखती' (रू. भे.)

फारकी—सं० स्त्री० [देशज] पालकी से मिलती जुलती हाथी की पीठ पर रखी जाने वाली एक प्रकार की अमारी विशेष जिस पर आदमी बैठता है ।

फारक—सं० स्त्री०—१ देखो 'फिरकी' (रू. भे.)

उ०—वरहास नाम चाचर विगेरि, फारक जेम ग्रसि फिरइ फेरि । आमिरा तणउ कजळ ग्रागि, वेताळि केलह घडियउ ग्रहागि ।

—रा. ज. सी.

२ देखो 'फारक' (रू. भे.)

उ०—भट्टके भाट ओभडी भोर, फेरी फुरंत फारक फोर । तांडळां दळां डूंगळां टूक, रंडळां रळां सीकळां रूक ।

—गु. रू. बं.

फारखती—सं० स्त्री० [अ० फारिग+फा० खती] १ कर्ज (ऋण) या उधार के रुपये अदा करने या होने की रसीद ।

२ पूर्व लेन-देन का हिसाब चुकाना ।

३ छुटकारा, मुक्ति ।

४ वह लेख जो पूर्व लेन-देन के हिसाब के चुकता होने का प्रमाण हो ।

रू० भे०—फाड़कती, फाड़खती, फाड़गती, फारकती, फारगती ।

फारग—देखो 'फारिग' (रू. भे.)

फारगती—देखो 'फारखती' (रू. भे.)

उ०—१ इससे सब का हिसाब आज करना । पछै सब री लेखो करातौ गयौ, टका देतौ गयौ, फारगती लिखायतौ गयौ । सिपाहियां रो हिसाब कर, सागिरद पेसा रो हिसाब करा, टका देय, फारगती लिखाई ।—पदमसिंह री वात

उ०—२ बोल्यौ—ना रे भाया ! माथै लै'णौ कुण राखै । म्हनै आज थारै नै'णा री फारगती करणी पड़सी ।—फुलवाड़ी

उ०—३ गुरुदेव बिना नहि पार पड़ै, भव भेव बिना फळ फारगती ।

—ऊ. का.

फारम—सं० पु० [अं०] १ विभिन्न कोष्ठों वाला छपा हुआ या टाइप किया हुआ वह कागज जो किसी विषय के लिए प्रार्थना-पत्र प्रस्तुत करने या विवरण भेजने में प्रयुक्त होता हो ।

२ वह कागज जिस आकार में किताई कर के पुस्तक की जाती है तथा आठ पन्ने आदि की भी पूर्ण व्यवस्था हो ।

फारस—वि० [सं० पारस्य] फारस देश सम्बन्धी, फारस देश का ।

सं० पु०—१ अफगानिस्तान के पश्चिम में पड़ने वाला एक प्रसिद्ध देश जिसे आजकल ईरान भी कहते हैं ।

२ फारस देश का निवासी ।

३ देखो 'फारसी' (रू. भे.)

फारसी—सं० पु० [फा०] १ फारस देश का निवासी ।

सं० स्त्री०—२ फारस देश की भाषा ।

रू० भे०—पारसी, फारस ।

फारसीपोस—वि० [फा० फारसी+पोश] फारसी भाषा जानने वाला ।

उ०—घणी मौरखां के वजीरं वजावै, वडै मीरजादे यदावं बजावै । वड़ै फारसीपोस जुब्बान वाली, घरथी पड़ै चुल्लकै मल्लवाली ।

—ला. रा.

फारिग—वि० [अ० फारिग] १ वह जो किसी काम को करके निश्चिंत हो गया हो, जिसने किसी काम से छुट्टी पा ली हो, बेफिक्र ।

उ०—उठा रा सगळा काम सूं फारिग होय नै भाणू थार रै पिता जी नै साथै लेयनै नानेरै आयो ।—फुलवाड़ी

२ पूर्ण, सम्पूर्ण, समाप्त ।

उ०—२ पणी तरवारियां रा वाउ व्हळै छै । पणी बरछी भालांनरै नीसरी छै । सिरै धंग मांगे पडै छै । बढाका, फीफरा बोर रहिया छै । मार-मार जे होय रही छै । वीर नाचै छै । सो इण तरह पोहर दिन चढ़ता कजियौ फारिग किवौ ।

—सूरे खीवे कांधळोत री बात

रू० भे०—फारक, फारग ।

फाळ—सं० स्त्री० [सं० प्लव] १ एक स्थान से खड़े-खड़े कूदकर वेगपूर्वक उछल कर दूसरे स्थान तक पहुंचने की क्रिया या भाव, कुदान, छलांग ।

उ०—१ समंद फाळ कूदै हणू, जहर धारै संकर, सेस ही भुजां धर-भार साहे । 'करण' रै 'पदम' जिम साह रै वडैड़, वदूं जो कोई तरवार वाहे ।—पदमसिंघ री गीत

उ०—२फरहरता कपि फाळ, ग्रस दे तै ग्रसवारियां । भारांणी भुरजाळ, भुज रो भलो भवाड़ियो ।—वां. दां.

क्रि० प्र०—बांघणी, भरणी ।

मुहा०—फाळ चूकणी—छलांग भरते समय चूक जाना, इच्छित स्थान तक न पहुंच सकना, अवसर या मौका हाथ से गंवा देना, अवसर खो देना ।

२ हल का अगला नुकीला भाग जो हल चलाते समय भूमि को चीर कर सीता बनाता है ।

३ एक प्रकार की अपराधी को सजा देने की प्राचीनकाल की प्रथा जिसमें हल की 'फाळ' को गर्म करके अपराधी को चटाते थे ।

वि० वि०—इसे चाटने पर यदि अपराधी की जीभ न जलती तो वह निर्दोष माना जाता था ।

[अ०फ़ाल] ४ पांसा फेंक कर रमल में शुभाशुभ बताने की क्रिया ।

रू० भे०—फाल ।

अल्पा०—फाळियौ ।

फाल—सं० पु० [सं० फल] १ मूंग, मोठ, ग्वार, तिलहन आदि पौधों के लगने वाली फली ।

[सं० फालः] २ वस्त्र खंड । उ०—चपल तणी तरवारिए तोरणि तरवर पांन, गैलि गहिल्ली गोरडी घोरडी भरइं परवांनु । संचियइ घ्रत दधि गोरस ओरस चंदन हेतु, कीजइं फाल फलादली आफली पटइं अचेत ।—जयशेखर सूरि

३ सूती कपड़ा ।

[सं० फाल] ४ फरसा, तलवार आदि औजार का पैना भाग, धार ।

अल्पा०—फालडी ।

फालक—सं० पु०—एक प्रकार का वृक्ष विशेष ।

उ०—केकारी नइ फालसां, फोफल फणस फणिंद । फूपेडी नइ फूलीया, फालक फिरांसण फिंद ।—मा. कां. प्र.

फाळका—सं० स्त्री० [सं० प्लव] १ छलांग, कूदान ।

उ०—फाळा भगां खराजं फाळका वे वे तड़ां गुरै, तवेलां टाळका भुरौ वरीस तोखार ।—जवांन जी आढौ

फाळकौ—सं० पु० [देशज] १ आग में तेज गर्म किया हुआ लोह-खंड ।

२ अंगारा ।

फालकौ—देखो 'फालौ' (रू. भे.)

फालगुण—१ देखो 'फाल्गुन' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

२ देखो 'फागण' (रू. भे.)

फालगुणी—१ देखो 'फाल्गुनी' (रू. भे.)

२ देखो 'फागण' (रू. भे.)

फालज—देखो 'फालिज' (रू. भे.)

फालडी—सं० स्त्री [?] १ एक प्रकार का आभूषण ।

उ०—पहिरणि गजवड फालडी ए, ओढ़णि नवरंग पाटडी ए ।

—हीराणंद सूरि

२ देखो 'फाल' (अल्पा., रू. भे.)

फालणौ, फालबौ—क्रि० अ० [सं० फलं] फल युक्त होना ।

उ०—एहवूं कही रय आपु लेख्यु, पलनां पंथ मुझारि । विढ़ांनु विरख एक आव्यु फूल्यु फाल्यु अपार ।—नळाख्यांन

फालणहार, हारौ (हारी), फालणियौ—वि० ।

फालिओड़ौ, फालियोड़ौ, फाल्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

फालीजणौ, फालीजबौ—भाव वा० ।

फालतू—वि० [देशज] १ व्यर्थ, निरर्थक ।

उ०—मानण कह्यौ—हाल तौ रात घणी आंतरै है, अबारूं ईं फालतू क्यूं आंम्यां वाळौ ।—फुलवाड़ी

२ अनुपयोगी ।

ज्यूं०—म्हनै आ दवा फालतू दी जावै है ।

३ जो आवश्यकता से अधिक हो, अतिरिक्त ।

ज्यूं०—म्हारै कनै औ पेन फालतू है ।

४ जो किसी कार्य में नहीं लगा हो, बेकार, निकम्मा ।

ज्यूं०—औ आजकल फालतू बैठौ है ।

उ०— फालतू बैठा बैठा टुकड़ा तोड़णा ठीक कोनीं । की न कीं उद्यम व्हैतौ रैणौ चाहीजै ।—फुलवाड़ी

मि०—फजूल ।

फालर—देखो 'फालौ' (मह., रू. भे.)

फालरियौ—देखो 'फालौ' (अल्पा., रू. भे.)

फालरौ—सं० पु० [देशज] १ बकरा ।

२ देखो 'फालौ' (रू. भे.)

फाळसौ, फालसौ—सं० पु० [अ० फालसा = सं० परूपक] एक प्रकार का वृक्ष ।

उ०—केकारी नइ फालसां, फोफल फणस फणिंद । फूपेड़ी नइ फूलीया, फालक फिरांसण फिंद ।—मा. कां. प्र.

२ उक्त वृक्ष के लगने वाला फल ।

रू० भे०—फालसौ ।

फालि—सं० स्त्री० [देशज] फांक ।

उ०—तेहनां किसां फल, वांनि बल्यां वावि थकां गल्यां, इसी मधुकलस आंबा नी फालि ।—व. स.

फालिज—सं० पु० [अ० फ़ालिज] एक प्रसिद्ध वात रोग जिसमें शरीर का बायां या दाहिना पार्श्व पूर्णतः बेकाम और शिथिल हो जाता है, पक्षाघात ।

रू० भे०—फालज ।

फालियोड़ौ—भू० का० कृ०—फलयुक्त हुवा हुआ.

(स्त्री० फालियोड़ी)

फाळियौ—देखो 'फाळ' (अल्पा., रू. भे.)

फाली—सं० पु० [सं० फालः + रा० प्र० ई] वस्त्र का टुकड़ा ।

उ०—किहां नाटईउ नइ किहां फाली ? किहां रूपवंत नइ हाली रे ? किहां राजकुमर किहां माली ? किहां कीडीआ मोती जाली रे ।—नळदवदंती रास

फालीय—सं० पु० [देशज] एक प्रकार का आभूषण ।

उ०—करयले कंकण मणि झमकारु, जादर फालीय पहिरण ए । अहर तंबोलीय द्रूपदीवाल पाए नेउर रुणझुणइं ए ।—पं. पं. च.

फालो–सं० पु० [देशज] जलने या चोट लगने से शरीर के किसी अंग पर होने वाला एक प्रकार का फोड़ा जिसमें पानी भरा होता है ।
रू० भे०—फालको, फालरो ।
अल्पा०—फालरियो ।
मह०—फालर ।

फाल्गुन–सं० स्त्री० [सं० फाल्गुनः] १ अर्जुन का एक नाम ।
२ अर्जुन वृक्ष ।
३ देखो 'फागण' (रू. भे.)
रू० भे०—फालगुण ।

फाल्गुनी–सं० पु० [सं०] १ फाल्गुन मास की पूर्णिमा ।
२ पूर्वा और उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र ।
३ देखो 'फागण' (रू. भे.)
रू० भे०—फल्गुनी, फालगुणी ।

फावड़ियो—देखो 'फावड़ो' (अल्पा., रू. भे.)

फावड़ी–सं० स्त्री०—देखो 'फावड़ो' (अल्पा., रू. भे.)

फावड़ो–सं०पु० [देशज] चौड़े फल का लोहे का एक उपकरण, जिसमें डंडे की तरह का लंबा बेंट लगा रहता है, जो मिट्टी खोदने तथा खोदी हुई मिट्टी को दूर फेंकने इत्यादि कामों में आता है ।
रू० भे०—पावड़ो ।
अल्पा०—पावड़ियो, पावड़ी, पावड़ीयो, फावड़ियो, फावड़ी ।

फावणो,फाववो–क्रि० अ०/स० [देशज] १ सफल होना । उ०—अंगित चेस्टा जोउं स्वांमी, ते नल जउ अहां आवइ । हूं उलखीसि भत्तरि माहरांनइ, मनोरथ सघला फावइ रे । —नळदवदंती रास
२ देखो 'फावणो, फाववो' (रू. भे.)
उ०—सबजे जर दाई लाल सिहाई वांनै छायो ग्रहमंडं ।
फररा वैरक्कां फावी कटकां जांणक फूलै वन-खंडं ।—गु. रू. बं.
३ देखो 'फंसाणो, फंसावो' (रू. भे.)
उ०—पढ़ियां विनां मूढ़ पग फावै, पढ़ियां विचै पुमाई नै ।
—ऊ. का.
फावणहार, हारो (हारी), फावणियो—वि० ।
फाविओड़ो, फावियोड़ो, फाव्योड़ो—भू० का० कृ० ।
फावीजणो, फावीजवो—भाव वा०/कर्म वा० ।

फावियोड़ो–भू० का० कृ०—१ सफल हुवा हुआ.
२ देखो 'फावियोड़ो' (रू. भे.)
३ देखो 'फंसायोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री० फावियोड़ी)

फास–सं० पु० [सं० पाशः] १ प्राण दंड देने निमित्त अपराधियों के गले में डाला जाने वाला फंदा ।
२ देखो 'फांस' (रू. भे.)
३ देखो 'स्परस' (रू. भे.)

फासलो–सं० पु० [अ० फासिलः] दूरी, अन्तर ।

फासीगर—देखो 'पासीगर' (रू. भे.)
उ०—ठग फासीगर चोरटा जीवा, धीवर कसाई न्यात ।—जयवांणी

फासुअ, फासू, फासूय–वि० [सं० प्रासुक] १ साधु के ग्रहण करने योग्य, जीव-रहित, निर्दोष ।
उ०—१ नित फासू जल पीवतां, कोड़ा कोड़ी वरस नो पाप रे । दूर करै तिण एक में, निस्चै होय निस्पाप रे । —रांमचंद्र गणि
उ०—२ ता? उन्हउं सीयलु जयह जलु, फासूय थण्डिय विचह्रपरि । निज्जिणिउ विजयांणंद ति (लि) हि, अभयतिलकि चउपट्टि धरि ।
—अभयतिक यती
२ व्यर्थ, फिजूल । उ०—आज लगै हूं जांणती कन्हैया, पूरव करम विसेस रे गिर । फासू जाया मैं छ जणा कन्हैया, इहां नहीं मीन नै मेख रे गिर ।—जयवांणी

फिगरणो, फिगरबो–क्रि० अ० [देशज] १ लाड में इतराना ।
२ फूलना, घमंड-करना ।
३ एकाएक क्रोधित होना ।
फिगरणहार, हारो (हारी), फिगरणियो—वि० ।
फिगरिओड़ो, फिगरियोड़ो, फिगरयोड़ो—भू० का० कृ० ।
फिगरीजणो,फिगरीजबो—भाव वा० ।

फिद–सं० पु०—वृक्ष विशेष ?
उ०—फेकारी नइ फालसां, फोफल फणस फणिंद । फूधेड़ी नइ फूढ़ीया, फालक फिरामण फिद ।—मा. कां. प्र.

फिफर, फिफरड़—देखो 'फेफड़ो' (मह., रू. भे.)
उ०—१ छुटै लंब छड़ ताड़ तड़-तड़, वांण छुटै बड़ सोक सड़-मड़ । फूटै फिफरड़ कळिज भड़-फड़, अंतड़ उघरड़ लोथ लड़-थड़ ।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात
उ०—२ बढ़ि कंधड़ मुख करत वड़वड़, फरड़ फिफरड़ कळिज फड़फड़ । —सू. प्र.

फिकन–वि० [?] दुष्ट, नीच, पतित ।
उ०—पड़तां तोन कई फिकन नाठै परा, उड़ गया कइक असमांण आथै । मात रा हुकम हूं नाक काटै महिप, सात वीसां तणा हेक साथै ।—बालावक्स बारहठ (गजूकी)

फिकर–सं० पु० [अ० फिक्र] १ वह मानसिक स्थिति या अवस्था जिसमें मनुष्य अपने किये हुए विगत कर्मों के दुष्परिणामों, भविष्य के संभाव्य संकट एवं होने वाली हानि या बिगाड़ पर क्षुब्ध होकर बार-बार स्मरण या चिंतन करता हुआ दुखी एवं भयभीत होता है ।

उ०—१ जे यूं करतां ई मरग्यो तो थनै नवो जमारो मिळसी। फिकर क्यूं करै।—फुलवाड़ी

उ०—२ सगळा जांनियां नै पावन दे दियो के वांनै कीं सोच फिकर करण री जरूरत कोनी।—फुलवाड़ी

उ०—३ पछै मीराम जी री फोजां ठोड़-ठोड़ मेवाड़ में जाय सूंघो देस री खळ्ळ जादा दीवांण जी नूं पहुंती। दीवांण जी नै फिकर सबळो हुवो।—नैणसी

२ वह मानसिक स्थिति जिसमें मनुष्य भविष्य के लिए योजना बनाने पर चिंतन करता है।

उ०—स्याळणी स्यावस कयौ तौ वा स्याळ नै कह्यौ—बिचिया देवण सारू कोई ऊंदा घुसाळो तो बणावो। स्याळियो कह्यौ—इतरी फिकर थूं क्यूं करै, जद मन करैला तद घुसाळो बणाय दूंला।—फुलवाड़ी

रू० भे०—फकर, फरकर।

फिड़—सं० पु० [देसज] १ समूह, ढेर।

२ देखो 'फिरड़' (रू. भे.)

फिड़कली—सं०स्त्री० [देसज] १ मादा पतंगा।

२ देखो 'फिरकी' (रू. भे.)

उ०—१ थे ई तो सिरैपोस श्री धारो काढियो। थें म्हारो कैणो मांन्यो व्हो तो अबै दूजा राजा-बादसाह ई मांनै। म्हैं तो अबै थां लोगां रै हाथां री फिड़कली बणग्यो।—फुलवाड़ी

उ०—२ फिड़कली फिरै ज्यूं श्रै सगळी बातां ठग रा मगज में फिरगी।—फुलवाड़ी

मुहा०—फिड़कली बणणी—वशीभूत या अधीन होना, हाथ का खिलौना होना।

फिड़कलो—सं० पु० [देसज] (स्त्री० फिड़कली) १ फसल को हानि पहुंचाने वाला टिड्डी की जाति का ही एक प्रकार का कीड़ा जो दल-दल में पाया जाता है।

उ०—काको टांगां टिरै, कातरो तारै कांचळ। परचरियां री चांद, फिड़कलो फबतो हांचळ।—दसदेव

२ वर्षा-ऋतु में होने वाला कीट, पतंगा। (मेवाती)

रू० भे०—फिड़फकलो।

फिड़कियो—सं० पु० [देसज] १ वह रस्सी जो 'झाल' के पीछे बांधी जाती है जिससे 'भाल' में से घास आदि बिखरने न पावे।

२ देखो 'फिड़को' (अल्पा., रू. भे.)

फिड़को—सं० पु० [देसज] (स्त्री० फिड़की) १ छोटी टिड्डी या टिड्डी का बच्चा।

अल्पा०—फिड़कियो।

फिड़फकलो—देखो 'फिड़कलो' (रू. भे.)

फिचळणो, फिचळवो—क्रि० अ० [देसज] १ चलचित्त होना। २ घृणा करना। ३ कायर होना। ४ इन्कार होना।

फिचळणहार, हारो (हारी), फिचळणियो—वि०।

फिचळिग्रोड़ो, फिचळियोड़ो, फिचळ्योड़ो—भू० का० कृ०।

फिचळीजणो, फिचळीजवो—भाव वा०।

फिचळियोड़ो—भू० का० कृ०—१ चलचित्त हुवा हुग्रा. २ घृणा किया हुग्रा. ३. कायर हुवा हुग्रा. ४ इन्कार हुवा हुग्रा.

(स्त्री० फिचळियोड़ी)

फिजूल—देखो 'फजूल' (रू. भे.)

उ०—आपरै भरतार रा अैड़ा वचन सुणनै वा आंख्यां सूं ठळाक ठळाक आंसू ढुळकायनै गळगळा कंठ सूं कैवण लागी—म्हनै थूं फिजूल क्यूं भरमावै ?—फुलवाड़ी

फिजूलखरच—देखो 'फजूलखरच' (रू. भे.)

फिजूलखरची—देखो 'फजूलखरची' (रू. भे.)

फिट—अव्य० [देसज] १ अपमान या तिरस्कार सूचक शब्द, धिक्, धिक्कार। उ०—फिट बीकां फिट कांधळां, जंगळधर लेडांह। 'दळपत' हुड ज्यूं बांधियो, भाज गई भेडांह।—अज्ञात

[अं०] २ उचित, ठीक, मुनासिब।

ज्यूं०—औ फिट बात कीवी है।

मुहा०—फिट करणी—संतुष्ट करना, समझाना।

३ किसी व्यक्ति, वस्तु या पदार्थ को यथा स्थान लगाना, निश्चित करना।

ज्यूं०—नट्टू फिट करणो, पंखो फिट करणो।

क्रि० प्र०—करणो।

४ कोई मशीन अथवा औजार जो सब कल पुर्जों से युक्त हो तथा पूर्णरूपेण काम में लेने की स्थिति में हो।

५ नाप के अनुसार।

ज्यूं०—औ पैंट म्हारै फिट है।

यौ०—फिटोफिट।

रू० भे०—फट, फटि, फीट।

फिटक—सं०पु० [देसज] १ राठोड़ वंश की एक उप-शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

सं० स्त्री०— २ लज्जा।

३ जाल, कपट, अनुचित प्रभाव।

उ०—१ दूजी वार फिटक में आवण वाळो बांदरो नीं हो। तुरत जवाब दियो—अरे मूटल, निलज्ज, क्यूं वातां वणावै ?—फुलवाड़ी

उ०—२ राजा जी घणी घणी भुळावण दी के किणी असैंधा मिनख री फिटक में मत आजो।—फुलवाड़ी

मुहा०—१ फिटक में आणो, फंसणो, भिलणो—जाल में फंसाना, छला जाना। २ फिटक में लेणो, फंसाणो—जालमें फंसाना, कपट करना।

४ देखो 'स्फटिक' (रू. भे.)

उ०—आंगणे मोती अवर सूं, चीण फिटक चित चाय । रोहिण गिर खोजै रतन, मिघळदीप सिवाय ।— वां. दा.

फिटकड़ी–सं० स्त्री० [सं० स्फटिका] स्फटिक की भांति श्वेत एवं चमकीला खनिज पदार्थ जो औषध के काम आता है ।

रू० भे०—फटकड़ी, फिटकरी ।

फिटकड़ौ–सं० पु० [देशज] सिर में तालू के ऊपर का वह स्थान जो बचपन में कोमल रहने के कारण श्वास-क्रिया के साथ फुदकता हुआ दृष्टिगोचर होता है ।

फिटकरयणमणि–सं० स्त्री० यौ० [सं० स्फटिक+रत्नमणि] स्फटिक रत्नमणि । उ०—फिटकरयणमणि विद्रुम हिंगुल वलि हरियाल । मणसिल पारौ सुवरण आदि धातु नीहाल ।—ग्यांनसागर

फिटकरी—देखो 'फिटकड़ी' (रू. भे.)

फिटकार—देखो 'फटकार' (रू. भे.)

उ०—डाढ़ी तरफ बुकांनदे, किलम दिये फिटकार । अली टकोरी ऊछरै, मो पर मेली कार ।—पा. प्र.

क्रि० प्र०—आणी, लागणी ।

फिटकारणौ, फिटकारबौ—देखो 'फटकारणौ, फटकारबौ' (रू. भे.)

उ०—नींसासइ नींठइ नहीं, सास तणउ ऊसास । फाटइ नहीं फिटकारीउं, हैडुं धरतूं आस ।—मा. कां. प्र.

फिटकारणहार, हारौ (हारी), फिटकारणियौ—वि० ।

फिटकारिओड़ौ, फिटकारियोड़ौ, फिटकारयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

फिटकारीजणौ, फिटकारीजबौ—कर्म वा० ।

फिटकारियोड़ौ—देखो 'फटकारियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० फिटकारियोड़ी)

फिटकारियौ–वि० [देशज] बद्दुआ लगा हुआ, शापित ।

फिटकारौ—देखो 'फटकारौ' (रू. भे.)

उ०—तिको फिटकारौ सुणत समौं धूजणी खाय हीयौ फूट हेठौ पड़ियौ । —वीरमदे सोनगरा री वात

फिटकौ–सं० स्त्री० [अनु०] बद्दुआ, शाप ।

फिटळौ—देखो 'फिटोळ' (रू. भे.)

उ०—पछै जे रैयत बात-बात में पलट जावै तौ अैड़ौ फिटळौ राजा कीकर उण रै माथै धूंस जमा सकै ।—फुलवाड़ी

(स्त्री० फिटळी)

फिटिम–सं०पु० [सं० स्फटी = फणी] १ सर्प, नाग । २ खटमल ।

फिटोफिट–वि० [अं० फिट] देखो 'बठोबठ' ।

फिटोळ–वि० [देशज] १ आवारा । २ जो विश्वास करने योग्य न हो । ३ बदचलन । उ०—अगाड़ी थूं जा आगड़ौ, फीटा पड़ै फिटोळ वा । एक ने एक देखो अबै, आपस देवै ओळवा ।—ऊ. का.

रू० भे०—फिटळौ ।

फिटौ–सं० पु० [देशज] (स्त्री० फिटी) त्याग, परित्याग ।

उ०—१ ताहरां सुरतांण जी री बहू कहियौ । रांमसिंघ जी तौ वैरागी हुआ । सन्यासी हुआ छै सु धरती नहीं उजाड़ै । म्हे तौ ग्रासीपणौ फिटौ नहीं करां, जु ग्रासिया छां सु ग्रासीपणौ करि जोवाड़िस्यां ।—द. वि.

उ०—२ अेक मां जायौ भाई व्है, दूजौ वांणी जायौ भाई व्है । वांणी सूं आदरियोड़ौ भाई, सगा भाई सूं ई घणौ सवायौ व्है । म्हैं अैड़ा गाढ़ा मित रै साथै दगौ करूं, लांणत है म्हनै । थारी इण निकांमी जिद नै फिटौ कर ।—फुलवाड़ी

वि०—१ खुला, ढीला, स्वतन्त्र । उ०—१ सिखरोजी देखता ही रह्या । 'ऊ जाहि ! ऊ जाहि ! ताहरां मेळै रै वांसै सिखरै खड़िया । लारै घोड़ौ लगाय फिटौ कियौ ।—नैणसी

उ०—२ कुतरां रै कनारै धवळी-सौ देखै तौ क्यूं पड़ियौ छै जोयौ । देखै तौ अमल-री पोतौ छै । उठाइ लियौ । घाति घोड़ै-रै पगै पूठै लगाइ फिटौ कियौ ।—ऊदै उगमणावत री वात

२ उपेक्षित, नगण्य, अवहेलना के योग्य ।

ज्यूं०—फिटौ करै नी, क्यूं वहस करै ।

क्रि० प्र०—करणौ ।

३ लज्जित, शर्मिन्दा ।

क्रि० प्र०—पड़णौ, होणौ ।

४ अपमानित ।

क्रि० प्र०—पड़णौ, होणौ ।

फितन–सं० पु० [अ० फ़ित्नः] १ एक प्रकार का पुष्प विशेष ।

२ उक्त पुष्प से निकला हुआ पुष्प-सार ।

रू० भे०—फतन ।

फितूर—देखो 'फतूर' (रू. भे.)

उ०—१ सेठ दो तीन हेला पाड़नै सेठांणी नै जगाई । पग रौ अंगूठौ दबावता कह्यौ—आज तौ म्हारा दिमाग में अेक गजब रौ ई फितूर माच्यौ है । —फुलवाड़ी

उ०—२ लाखेरी गोपाळदास कन्है आदमी मेल्हियौ अौर कहाईजे इसौ फितूर छै सो थे सताब आवज्यौ ।—गोपाळदास गौड़ री वारता

उ०—३ क्या तौ यह तूफान है, कै फितूर यह होय । या तौ कोई भांड है या सांग बणाया कोय ।—दूलची जोइये री वारता

फितूराळौ–वि० [अ० फ़ुतूर+रा०प्र० आळौ] १ उपद्रवी, झगड़ालू ।

२ खुराफात करने वाला, खुराफाती ।

३ धूर्त, कपटी, पाखंडी । ४ विघ्न डालने वाला, बाधक ।

५ हानि या नुकसान पहुंचाने वाला ।

फितूरी–वि० [देशज] फितूर करने वाला, उपद्रव करने वाला, उपद्रवी ।

उ०—अर चाहुवांण प्रांमार फितूरी फेरंड मडंदा रौ मत्तभाव आंणै

जिको उपाजण रो आपणी उपाय है ।—वं. भा.

फिरकड़ी, फिरड़की—सं० स्त्री०—देखो 'फदड़की' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—जीं का मूत में फिरड़की बीरज की पड़ै तीने पीड़िका प्रमेह कहै छै ।—धमरत्न

फिरड़की—देखो 'फदड़की' (रू. भे.)

फिदवी—वि० [अ० फ़िद्वी] १ स्वामीभक्त, आज्ञाकारी ।

२ सेवक, दास ।

उ०—दास मरी कूं देस के मह पड़ी लावै, पीरत के हैज के लोही मे तमाम आवै । किसी तर्फ 'फिदवी' पर मौजता इस तरह दीसै, अपणीं दस्ता मे निर पीटकर दांतु कुं पीसै ।—दुरगादत्त बारहठ

फिदा—वि० [अ० फ़िदा] १ किसी पर आसक्त होने वाला, मोहित ।

२ वशीभूत ।

३ स्वयं को किसी पर न्यौछावर या बलिदान करने वाला ।

क्रि० प्र०—होणो ।

फिद्दो—देखो 'दिद्दो' (रू. भे.)

फिप्फर—देखो 'फैफड़ो' (मह., रू. भे.)

उ०—मेह गरदी मेहनों मच्चीर उड़ाया, प्रत गळेने फिप्फरं फाबि फांस फुलाया ।—वं. भा.

फिफरक—देखो 'फैफड़ो' (मह., रू. भे.)

फियो—सं० पु० [सं० प्लीहा] पेट के अन्दर ऊपरी बांए भाग में पाचन-संस्थान का वह अवयव जो रक्त बनाने में सहायक होता है, तिल्ली, प्लीहा ।

रू० भे०—फियो, पीयो, फीहो ।

फिरंग—सं० पु० [पं० फ्रांक] १ पश्चिम यूरोप का एक देश ।

उ०—हजामति कराइ ग्रर गहु कही ठाकुरां नै कहियो कूं ढाढ़ी रखावो । ग्रर फिरंग कूं हम फतह करेंगे । गहु को ठाकुर फिरंग कूं तइयार हुवो । —द. वि.

२ आतशक रोग, गरमी । (ग्रमरत)

३ एक प्रकार का फूल । (अ. मा.)

सं० स्त्री०—४ चीनी या धातु निर्मित एक पात्र जिसमें शराब संग्रह की जाती है ।

५ देखो 'फिरंगी' (रू. भे.)

उ०—फिरंग ग्रठै जळ पीजियो, तज दूहूं राहां टेक । पांन ग्रगे-चड़ 'पदम' री, ऊंचो रहियो ग्रेक ।—राघोदास सांदू

रू० भे०—फरंग ।

फिरंगण—सं० स्त्री० [राज० फिरंग + ण] अंग्रेज स्त्री, गोरी स्त्री ।

उ०—फिरंगण बीबी मुतसद्दी ग्रंगरेज नूं ग्रंगीकार न करै, जंगी ग्रंगरेज नूं ग्रंगीकार करै ।—बां. दा. ख्या.

फिरंगथांन—सं० पु० [राज० फिरंग + सं० स्थान] अंग्रेजों का देश ।

उ०—ग्रण गरब कळह तर कहै दुज ग्रेकठा, गरब वां कितावां तणा गळिया । थया बळहीण लसकर फिरंगथांन रा, चीण इतांन रा इलम चलिया ।—कविराजा बांकीदास

फिरंगबाय—सं० पु० [राज० फिरंग + सं० वात] १ एक रोग विशेष, आतशक । (ग्रमरत)

२ घोड़े की इन्द्रिय का एक रोग विशेष । (शा. हो.)

फिरंगांण—देखो 'फिरंगी' (मह., रू. भे.)

उ०—१ फिरिया दळ फिरंगांण रा, थरहरिया लख थाट । करिया जुध 'गुनियाळ' सूं, मरिया ग्राळेमाट ।—ग्रज्ञात

उ०—२ सेखावत जळहर समर, फिर चळवळ फिरंगांण । ग्रवी सेग कळहळ पड़ै, गळहळ ऊगां भांण ।—गिरवरदांन कवियो

फिरंगी—वि० [राज० फिरंग + ई] १ फिरंग देश से सम्बन्धी ।

२ फिरंग रोग से पीड़ित ।

सं० पु०—१ यूरोप देश का निवासी, ग्रंग्रेज, गोरा ।

उ०—१ चडै कुदरती हुकमती ग्रनलि-जद्दा, चडै दौलती नेसवा हुकम वंदा । चडै उजबकी रौद्र रूमी फिरंगी, चडै मुगळ पट्ठांण मैंदैं संगी ।—गु. रू. बं.

उ०—२ जंगी रिसाला हलतां ग्रळै, सांमंद हिलोळां जेहा, छात रंगी हुसम्मां भळनां काळ चोट । जोर दीधो फिरंगी लिखायो कौल-नामो जठै, ग्रापरंगी 'पूंठा' तें मेवाड़ राखी ग्रोट ।—राघोदास सांदू

सं० स्त्री०—२ फिरंग देश की बनी तलवार ।

३. एक प्रकार का ग्रोढ़ने का वस्त्र जिसे राजस्थानी में छरंटी भी कहते है । उ०—कतनीभूंना प्रताप सत्तोप, पटणी कथीवु, फिरंगी कथीवु, मानुवाफ जरवाफ ।—व. स.

रू० भे०—फरंग, फरंगी, फिरंग ।

मह०—फरंगांण, फरगांण, फिरंगांण ।

फिरंड—वि० [देशज] (स्त्री० फिरंटी) विरोधी, विपक्षी ।

उ०—इसी ग्राग वरजाग 'ग्रोरंग' नुगरो ग्रमुर, फिरंड ग्ररि दिलीपुर फवाळो । असमरां भाड़ ग्रोनाड़ 'दुरगो' ग्रडर, करंड ले घातियो नाग काळो ।—दुरगादास री गीत

फिर—अव्य० [देशज] १ बाद में, अनन्तर, पीछे ।

२ अतिरिक्त, अलावा ।

उ०—बुड़दोड़ां सूं हूंगा धमगा, नांमरदी फिर म्यारी रे । लाखां रुपया लेसे लागा, कोई न लागी कारी रे ।—ऊ. का.

३ और, पुनः ।

४ उपरान्त, बावजूद ।

उ०—कांमी फिर बांमी किपण, जादूगर नर चार । रात दिवस पड़दे रहै, पड़दा सूं हिज प्यार ।—बां. दा.

रू० भे०—फिरी ।

फिरकी—सं० स्त्री० [देशज] काष्ट या धातु निर्मित एवं बीच में धुरी

कील लगा हुआ गोल एवं चपटाकार बच्चों का एक खिलौना जो घुमाने पर धुरी पर चक्राकार घूमता है, चकरी।

रू० भे०—फरकी, फारक्क, फिड़कली, फुड़कली।

फिरकौ–सं० पु० [अ० फ़िर्क़ः] १ जाति, वर्ग।
२ पंथ, संप्रदाय।

फिरड़–सं० स्त्री० [देशज] टिड्डी की वह अवस्था जब वह गुलाबी रंग की होती है और उड़ना आरम्भ करती है।

रू० भे०—फिड़।

फिरड़ी–सं० स्त्री० [देशज] १ वह ऊंटनी या सांड जो गर्भवती नहीं होती है, बांझ सांड।

उ०—भांत-भांत री सांडियां-सुव्वर, सुवाड़ी, वाखड़ी अर फिरड़ी।
—फुलवाड़ी

२ देखो 'फरड़ी' (रू. भे.)

फिरणवार–वि० [देशज] फिरने वाला, घुमक्कड़।

उ०—ताहरां कुंवर रै मन में हाथी री बात थी सो कुंवर जी फुरमायौ—अे मेवा, कपड़ा-वसत, म्हांरै पण घणा ही है। थे तौ परदे रा परखंड फिरणवार छौ। —पलक दरियाव री बात

फिरणी–सं० स्त्री० [राज० फिरणौ] १ फिरने या घूमने की क्रिया या ढंग। उ०—कविलउ कलूळ कंदळ करेय, फारकां पूठि फिरणी फिरेय। नीछंटिया गोळा तंत्र नाळि, पावक्क जांणि पइठउ पलाळि।—रा. ज. सी.

२ प्रदक्षिणा करने का मार्ग, परिक्रमा।

३ ऊंट या घोड़े आदि की चाल या गति।

४ भ्रमण, परिभ्रमण। (साधु-सन्यासी)

५ चकरी, फिरकी।

उ०—फेरी अफरि फिरणी सि फेरी, वींद 'रतनसी' वांव वड। धकधूणी फुरळी धौ फुरळी, घेर मिळी सुरतांण घड़।—दूदौ.

६ देखो 'फुरणी' (रू. भे.)

उ०—बिडरी हिरणी सी फिरणी विजकाती, मुखड़ै मुसकाती जोरी जतळाती। ओळ भक आटा कोळै जिम कुयिगी, हावर भांमणियां सांमणियां हुयगी।—ऊ. का.

रू० भे०—फरणी।

फिरणौ, फिरबौ–क्रि० अ० [सं० स्फिर] १ इधर-उधर चलना, टहलना। उ०—१ भड़ां लिरीजै हाजरी, नित दीजै मोरांह। जोध फिरै गढ़ जावतै, पै दर पै पोहरांह।—वां. दा.

उ०—२ ढोलउ-मारू पउढ़िया रस-मई चतुर-सुजांण। च्यारे दिसि चउकी फिरइ, सोहइ भूप जुवांण।—ढो. मा.

२ प्रातःकाल घूमने जाना, भ्रमण करना, घूमना।

३ एक ही स्थान पर गोलाकार स्थिति में घूमना।

उ०—वरहास नास चाचर विखेरि, फारक्क जेम असि फिरइ फेरि। आसिरा तणउ ऊजळइ आसि, वेताळि केल्ह चड़ियउ व्रहासि।—रा. ज. सी.

४ दिशा परिवर्तन होना, मुड़ना।

ज्यूं०—आ गळी आगै यूं फिरै है।

५ बार-बार किसी स्थान पर जाना, चक्कर लगाना।

उ०—देखै फिरतौ दूतियां, सूतौ धूंणै सीस। फंसियौ कांमण फंद में, रसियौ करै न रीस। —वां. दा.

६ आवेष्टन होना। उ०—दीन लोक ठहरया कछु देरी, घर हित घणी आनंद री घेरी। फिरगौ रतनागर चहुंफेरी, विचरी वासा मीठी बेरी।—ऊ. का.

७ किसी वस्तु की प्राप्ति या लाभ हेतु चेष्टा करना।

उ०—१ ऊंट रै दूजा डील री तौ कीं पत्तौ नीं, पण भींडी रै माथाकर बधती वा गावड़ तौ बाड़ी रै चारूं खुणा ठेट मथारा लग सगळै फिरगी।—फुलवाड़ी

उ०—२ मोकळ नै जंगळ मंही, फिरतौ मिल्यौ फकीर। स्यांम ताज कफनी असित, सुवरण जिसौ सरीर।—शि. वं.

८ युद्ध-स्थल से हार कर लौटना, भाग आना।

उ०—भड़ सतरै आसुर भारायै, सिंघी पड़ियौ महमद सायै। जवनां हार थई रण जूटै, फिरियौ सेख नगारै फूटै। —रा. रू.

९ पलटना, मुकरजाना।

१० किसी ली हुई वस्तु का वापस होना या लौटना।

११ ग्रहों के अनुसार किसी के दिनमान में परिवर्तन होना।

१२ अस्वस्थतावश असाधारण अवस्था में होना।

१३ देशाटन करना। उ०—ताहरां बीजाणंद ईडर, वागड़, चांपानेर, कछ सिगळै ही फिरियौ।—सयण री बात

१४ व्यर्थ फिरना, भटकना।

उ०—१ कह्यौ—'थांहरौ गढ़ जाजौ। थांरी मत भ्रस्ट हुई, गढ़ तुरकां नूं देईस। तूं तुरकां री (वहू) नूं सेवीस, अखत पढ़ीस, धूड़ खातौ फिरीस।—नैणसी

उ०—२ गुण भमतां गुणवंत नै, वैठां अवगुण जोय। वनिता नै फिरिवौ बुरौ, जो सुकलीणी होय।—वि. कु.

१५ परिभ्रमण करना, चक्कर लगाना।

उ०—सेठ थोड़ा नीचा झुळनै थांभा रै ओळूं-दोळूं फिरण लागा। दोनूं धणी-लुगाई नीची धूण करनै थांभा रै चारूं कांनीं फेरा खावण लागा।—फुलवाड़ी

१६ छान-बीन करना, खोज करना।

उ०—१ काबिल कोट तणी बिलकांगणि, घाए धूम सिंगारि धुरै। फिर फिर अफरि 'रतनसी' फुल्है, फौज अपूठै फेरि फिरै।—दूदो

उ०—२ जद स्वांमी जी पूछ्यौ—थें तीजा पहर नीं गोचरी कहौ। अनै पहले पहर किम करौ। तब तहरनै बोल्या—म्हैं तौ धोवण पांणी रै वासतै फिरां छां।—भि. द्र.

१७ फैलना, व्याप्त होना। उ०—फटकार हलाहल तें फिरगी, घन आनंद अमित घां घिरगी। मुनना पर डार मिना महती, गुरु कारज आरज वेग गती। —ऊ. का.

१८ बाधा-स्वरूप होना। उ०—हा मा बाप हमीर हीहाऊ, गुपहां दाप नवाया। अगलौ पाप फिरै कोइ आडौ, आप निजर नहि आया।—ऊ. का.

१९ खिलाफ या विपरीत हो जाना।

उ०—संमत १६७१ मांहे साहजादौ खुरम पातसाह नुं फिरीयौ, मदू ऊपर आयौ। —नैणसी

२० चारों ओर प्रसारित होना।

२१ वचनों पर दृढ़ न रहना, मुकरना।

२२ ऐंठना।

२३ शौच करने के लिए बाहर जंगल में जाना।

२४ मृतक के घर सहानुभूति प्रकट करने हेतु जाना।

२५ किसी वस्तु का चारों ओर ऊंचा-नीचा मंडलाकार गति में घूमना, धुरी पर घूमना।

ज्यूं०—माळा फिरणी, चकरी फिरणी।

२६ प्रत्युत्पन्नमति होना, शीघ्र उपजना।

उ०—१ म्हैं तौ जांणतौ के किस्सी रा बखांण करणा में थारी अकल घणी फिरिया करै। —फुलवाड़ी

उ०—२ नाईड़ा, मौका माथै थूं आपरी जात नै बचायली, नींतर काले तौ देस निकाळौ मिळण वाळौ इज हौ। म्हारै सावै रयां थारी अकल ई खासी फिरण लागगी दीसै। —फुलवाड़ी

फिरणहार, हारौ (हारी), फिरणियौ—वि०।

फिराड़णौ, फिराड़बौ, फिराणौ, फिराबौ, फिरावणौ, फिरावबौ —प्रे० रू०।

फिरिओड़ौ, फिरियोड़ौ, फिरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

फिरीजणौ, फिरीजबौ—भाव वा०।

फरणौ, फरबौ, फुरणौ, फुरबौ—रू० भे०।

फिरत—सं० स्त्री० [देशज] १ ऊंट, घोड़ा आदि को चाल सिखलाने हेतु दी जाने वाली शिक्षा या प्रशिक्षण।

२ प्रशिक्षित घोड़ा या ऊंट की चाल।

फिरवाज—देखो 'फेरवाज' (रू. भे.)

उ०—अर फिरवाज चोपखेर परिण आंगुळां विहुं विहुं रै पहलै री। अर जु विचि छेती तिण मांहि पणि रासा विचारिया।—द. वि.

फिरसत—देखो 'फेरिस्त' (रू. भे.)

उ०—परगनै जैतारण रा गांवां री फिरसत री गोसवारी।—नैणसी

फिरसतौ—देखो 'फरिस्तौ' (रू. भे.)

उ०—जम के मे फिरसते लगे असमांण जिनूं के देखै से सूकै मदमसत फीलूं के दांण। फुरकांन इजील तौरत जंबून के निडाह मांन।—सू.प्र.

फिरसांगणि—सं० पु०—एक वृक्ष विशेष।

उ०—गलो गोवल तगस अंवठ, करंजनइ केळास। विदांम वंशकड नेलपी, फिरसांगणि पळास। —रुकमणी-मंगळ

फिरांस—देखो 'फरास' (रू. भे.) (शेखावाटी)

फिराऊ—वि०—१ विरोधी, विपक्षी। उ०—सो हरकारा एक समय बादसाह नूं खबर दीवी जे श्री उमराव थां सूं फिराऊ हीयगे सो इण फिरता पहलां इलाज करौ। —नी. प्र.

२ वापस लौटाया जाने वाला।

फिराक—वि०—१ तेज गति से चलने-फिरने वाला।

२ इधर-उधर फिरने वाला।

३ उत्तम चाल से चलने वाला घोड़ा या ऊंट।

सं० स्त्री०—१ खोज, खोज। उ०—अटकती-अटकतौ चकवौ बोल्यौ कठ्योड़ी सोनरी हीर माथै टेरनै वौ दूजी बेन री फिराक में निकळै।—फुलवाड़ी

२ चिंता, फिक्र।

३ स्वार्थ-साधन के विचार से आघात, लाभ आदि के उपयुक्त अवसर की प्रतीक्षा करते हुए पूरा ध्यान रखने की क्रिया या ढंग, घात।

४ देखो 'फराक' (रू. भे.)

फिराड़णौ, फिराड़बौ—देखो 'फिराणौ, फिराबौ' (रू. भे.)

फिराड़णहार, हारौ (हारी), फिराड़णियौ —वि०।

फिराड़िओड़ौ, फिराड़ियोड़ौ, फिराड़्योड़ौ —भू० का० कृ०।

फिराड़ीजणौ, फिराड़ीजबौ —कर्म वा०।

फिराड़ियोड़ौ—देखो 'फिरायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० फिराड़ियोड़ी)

फिराणौ, फिराबौ—क्रि० स० ['फिरणौ' क्रि० का प्रे० रू०]

१ इधर-उधर चलाना, टहलाना।

२ प्रातःकाल के समय भ्रमण कराना, घुमाना।

३ एक ही स्थान पर गोलाकार स्थिति में घुमाना।

४ मोड़ना। उ०—ठठर कहै अतर नह रूड़ी, तूठ न देऊं तार। पूठ फिराय पीनसी जंपै, गांधी ऊठ गंवार। —ऊ. का.

५ चक्कर लगवाना, बार बार फेरे लगवाना।

६ आवेष्टन कराना।

७ युद्ध-स्थल से हराकर लौटा देना या भगा देना।

८ पलटावना।

उ०—पग पटकता बोल्या—म्हैं ईं नांनांणै जावूंला हळदी-फळदी सूं घणौ माल-मत्ती नीं लावूं तौ म्हारौ नांव फिराय दूं।
—फुलवाड़ी

९ किसी ली हुई वस्तु को वापस कराना या लौटाना।
१० देशाटन कराना।
११ व्यर्थ फिराना, भटकाना।
१२ परिभ्रमण कराना।
१३ छान-बीन कराना, खोज कराना।
१४ फैलाना, व्याप्त कराना।
१५ खिलाफ या विपरीत कराना।
१६ वचन-विमुख कराना, मुकराना।
१७ चारों ओर प्रचार कराना।
१८ ऐंठाना।
१९ शौच करने के लिए बाहर जंगल में ले जाना।
२० घोड़े, ऊंट आदि को चाल या गति सीखाना या प्रशिक्षण देना। उ०—पछै ऊंट दोय महिना पाछै, घणा आछा फिराय, साज-बाज वणाय, सजाय दुरगादास जी नूं मेल्हिया।
—सुंदरदास भाटी बीकूंपुरी री वारता

२१ देखो 'फेराणौ, फेरावौ' (रू. भे.)
फिराणहार, हारौ (हारी), फिराणियौ—वि०।
फिरायोड़ौ—भू० का० कृ०।
फिराईजणौ, फिराईजबौ—कर्म वा०।
फराणौ, फरावौ, फिराड़णौ, फिराड़बौ, फिरावणौ, फिराववौ, फेराणौ, फेरावौ—रू० भे०।

फिराद—देखो 'फरियाद' (रू. भे.)
उ०—करणी प्रतपाळ 'खराडी' कमधज, जांणै जग जाडी मरजाद। छत्रपत वणा प्रवाड़ा छाजै, फिरंगां लग नह करां फिराद।
—चांदावत बाघसिंह रो गीत

फिरायोड़ौ—भू० का० कृ०—१ इधर-उधर चलाया हुआ. २ भ्रमण कराया हुवा, घुमाया हुआ. ३ मोड़ा हुआ. ४ बार-बार फेरे या चक्कर लगवाया हुआ. ५ घेरा हुआ, आवेष्टित. ६ युद्ध-स्थल से हराकर भगाया हुआ. ७ पलटवाया हुआ. ८ किसी ली हुई वस्तु को वापस कराया हुआ, लौटाया हुआ. ९ देशाटन कराया हुआ. १० व्यर्थ फिराया हुआ, भटकाया हुआ. ११ परिभ्रमण कराया हुआ. १२ छान-बीन कराया हुआ, खोज कराया हुआ. १३ फैलाया हुआ, व्याप्त कराया हुआ. १४ खिलाफ या विपरीत कराया हुआ. १५ वचन-विमुख कराया हुआ, मुकराया हुआ. १६ चारों ओर प्रचार कराया हुआ. १७ ऐंठाया हुआ. १८ शौच करने निमित्त बाहर जंगल में ले जाया हुआ. १९ घोड़े, ऊंट आदि को चाल या गति का प्रशिक्षण दिया हुआ.
२० देखो 'फेरायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० फिरायोड़ी)

फिरार—देखो 'फरार' (रू. भे.)
फिरारी—देखो 'फरारी' (रू. भे.)
फिराव—सं० पु०—१ चाल गति। उ०—हद चांटी हालतां, हवा हालत रद होवै। तवि जूनौं सपतास, जिकां कांनी रवि जोवै। चक्र धावां चोगांन, फिरै फूटरा फिरावां। कसि ऐड़ा केकांण, आंण दीधा उमरावां। —मे. म.
२ किसी वस्तु के चारों ओर खींची हुई वृत्ताकार रेखा, परिधि, घेरा। उ०—प्रथम ही अयोध्या नगर जिसका वणाव, बारै जोजन तौ चौड़े सोलै जोजन की धाव, चौतरफूं के फैलाव चौसठ जोजन के फिराव।—र. रू.
फिरावणौ, फिराववौ—देखो 'फिराणौ, फिरावौ' (रू. भे.)
फिरावणहार, हारौ (हारी), फिरावणियौ—वि०।
फिराविओड़ौ, फिरावियोड़ौ, फिराव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
फिरावीजणौ, फिरावीजवौ—कर्म वा०।
फिरावियोड़ौ—देखो 'फिरायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० फिरावियोड़ी)
फिरास—देखो 'फरवास' (रू. भे.)
फिरासत—सं० स्त्री० [अ० फ़िरासत] १ दक्षता, प्रवीणता।
२ किसी बात को शीघ्र समझने की क्रिया।
फिरिद—देखो 'फरियाद' (रू. भे.)
उ०—फजर वखत फिरिद, कीद्ध जाय मिरजा कनै। सुण इकतरफा साद, रोकै गढ़वा राखिया। —पा. प्र.
फिरियाद—देखो 'फरियाद' (रू. भे.)
फिरियादी—देखो 'फरियादी' (रू. भे.)
उ०—समत १६०० रा वीरमदे उदावत रावळ कित्यांणमल बीकानेरीयौ राव मालदे ऊपर पठांण सेरसा पातसाह कन्हा पुरब माहे सेहसरांम तठै जाय फिरियादी हुवा।—नैणसी
फिरियोड़ौ—भू० का० कृ०—१ इधर-उधर चला हुआ, टहला हुआ. २ भ्रमण किया हुआ, घुमा हुआ. ३ एक ही स्थान पर गोलाकार स्थिति में घुमा हुआ. ४ दिशा परिवर्तन हुवा हुआ, मुड़ा हुआ. ५ बार-बार किसी स्थान पर गया हुआ, चक्कर लगाया हुआ. ६ आवेष्टित हुवा हुआ. ७ किसी वस्तु की प्राप्ति या लाभ हेतु चेष्टा किया हुआ. ८ युद्ध स्थल से हार कर लौटा हुआ, भाग कर आया हुआ. ९ पलटा हुआ, मुकरा हुआ. १० किसी ली हुई वस्तु का वापस हुवा हुआ, लौटा हुआ. ११ ग्रहों के अनुसार किसी के दिनमान में परिवर्त्तन हुवा हुआ. १२ अस्वस्थतावश असाधारण अवस्था में हुवा हुआ. १३ देशाटन किया हुआ. १४ व्यर्थ फिरा हुआ, भटका हुआ. १५ परिभ्रमण किया हुआ, चक्कर लगाया हुआ. १६ छान-बीन हुवा हुआ, खोज किया हुआ. १७ फैला हुआ, व्याप्त हुवा हुआ. १८ बावा स्वरूप हुवा हुआ. १९ खिलाफ या विपरीत हुवा हुआ. २० चारों ओर प्रचारित हुवा हुआ. २१ वचन विमुख हुवा

हुआ, मुकरा हुआ. २२ ऐंठा हुआ. २३ शौच हेतु जंगल में गया हुआ. २४ मृतक के घर सहानुभूति प्रकट करने हेतु गया हुआ. २५ किसी वस्तु का चारों ओर ऊंचा-नीचा मंडलाकार गति में घुमा हुआ, धुरी पर घुमा हुआ. २६ शीघ्र उपजा हुआ.
(स्त्री० फिरियोड़ी)

फिरस्तौ—देखो 'फरिस्तौ' (रू. भे.)

फिरी—देखो 'फिर' (रू. भे.)
उ०—नेम जी हो अरज सुणौ रे वाल्हा माहरी हो राज, राजुल कहइ घरि नेह, घरि रहउ नै राज। साहिवा एकरस्यउ थे फिरी आवउ, घरि रहउ नै राज। —वि. कु.

फिरीयादि, फिरीयादी—१ देखो 'फरियाद' (रू. भे.)
उ०—अलूखांन एवडु भडवाउ, किम चहूआंएाँ दीधउ दाउ। वोलइ तुरक खांमणइ सादि, आगलि रह्या करइ फिरीयादि। —कां.दे.प्र.
२ देखो 'फरियादी' (रू. भे.)

फिरोकड़ौ-वि० [राज० फिरणौ+रा० प्र० ओकड़ौ](स्त्री० फिरोकड़ी) अधिक घूमने वाला, भ्रमणशील।
रू० भे०—फरोकड़ौ।

फिरोज—देखो 'फिरोजौ' (रू. भे.)

फिरोजियौ, फिरोजी-वि० [फा०] १ फिरोजै के रंग का।
२ देखो 'फिरोजौ' (अल्पा; रू. भे.)
रू० भे०—पिरोजी, पीरोजियौ, पीरोजी, फीरोजी।

फिरोजौ-सं० पु० [फा० फ़िरोज:] १ नीले रंग का एक नग या वहुमूल्य पत्थर।
पर्याय०—हरितास्म, भस्मांग।
२ उक्त प्रकार के नग या वहुमूल्य पत्थर से मिलता-जुलता रंग।
३ वि० सं० १३५१ के लगभग फीरोजशाह (द्वितीय) द्वारा चलाया गया सिक्का विशेष।
रू० भे०—पइरोज, पइरोजउ, पइरोजौ, पिरोजौ, पीरोजौ, फिरोज, फीरोजौ।
अल्पा०—पीरोजियौ, पीरोजी, फिरोजियौ, फिरोजी, फीरोजी।

फिरोळणौ, फिरोळबौ—देखो 'फुरळणौ, फुरळवौ' (रू. भे.)
उ०—दोनूं ईं काला होय हुरड़ियां देवतां फौज नैं फिरोळण लागा।—फुलवाड़ी
फिरोळणहार, हारौ (हारी), फिरोळणियौ—वि०।
फिरोळिओड़ौ, फिरोळियोड़ौ, फिरोल्योड़ौ—भू० का० कृ०।
फिरोळीजणौ, फिरोळीजबौ—कर्म वा०।

फिरोळियोड़ौ—देखो 'फुरळियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० फिरोळियोड़ी)

फिरोळी-सं० स्त्री० [?] उलट-पलट करने की क्रिया या भाव, उलट-पलट।
उ०—फिरोळी देवण सारू कूंजड़ौ भखारियां रा आडा खोलिया तौ उण री छाती रा किवाड़िया खुलग्या।—फुलवाड़ी

फिलम-सं० स्त्री० [अं० फिल्म] १ रासायनिक पदार्थों से वनी एक प्रकार की पट्टी जिस पर फोटू आदि उतारा जाता है।
२ उक्त प्रकार की पट्टी जिसमें सिनेमा के चल-चित्र अंकित होते है।
३ उक्त प्रकार की पट्टी से दिखाया जाने वाला चलचित्र या सिनेमा।

फिलमी-वि० [अं० फिलम+रा० प्र० ई] फिल्म से सम्वन्धित, सिनेमा का।

फिलवांण—देखो 'फीलवांन' (रू. भे.)
उ०—वांम सलांम पिता सूं धारै, आयौ वाहर गयण अधारै। वस घर फील कियौ फिलवांणै, आरोह्यौ सीढ़ी पग आंणै।—रा. रू.

फिळसौ—देखो 'फळसौ' (रू. भे.)
उ०—अेक दिन हळदी वाई नांनांणै चाल्या। सगळी साथणियां उण नै फिळसा वारै छोडण आई।—फुलवाड़ी

फिलहाल-क्रि० वि० [अ० फ़िलहाल] इस समय, अभी।

फिळाउगाड़, फिळाउघाड़—देखो 'फळसाउघाड़' (रू. भे.)

फिळियौ—देखो 'फळसौ' (अल्पा., रू. भे.)

फिळौ—देखो 'फळसौ' (रू. भे.)
उ०—१ ग्वाड़ी री फिळौ खोलनै वौ मांय वड़ियौ तौ उण नै अेक डोकरी नीवड़ा री छींयां में वैठी अरटियौ कातती निगै आई।—फुलवाड़ी
उ०—२ नांनेरा वाळा घणै लाड-कोड सूं उण नै सीख दी। संभाळां री केई वींदड़ियां घाली। कपड़ा-लत्ता दिया। गैणौ-गांठौ दियौ। सगळा गांव वाळा उण नै फिळा वारै छोडण नै आया। —फुलवाड़ी

फिस-अव्य० [अनु०] १ किसी कार्य में प्राप्त होने वाली असफलता की अवस्था या भाव, कुछ नही।
मुहा०—टांय टांय फिस होणी—असफलता मिलना।
२ धिक्। (घृणा-सूचक)
रू० भे०—फुस, फुसकी।

फिसकणौ, फिसकवौ-क्रि० अ० [देशज] १ धोखा खाना। २ वदलना, मुकरना। ३ कायर होना, कमजोर होना।
फिसकणहार, हारौ (हारी), फिसकणियौ—वि०।
फिसकिओड़ौ, फिसकियोड़ौ, फिसक्योड़ौ—भू० का० कृ०।
फिसकीजणौ, फिसकीजवौ—भाव वा०।

फिसकियोड़ौ-भू० का० कृ०—१ धोखा खाया हुआ. २ वदला हुआ, मुकरा हुआ. ३ कायर हुवा हुआ, कमजोर हुवा हुआ.
(स्त्री० फिसकियोड़ी)

फिसड्डी–वि० [देशज] १ हर काम में पीछे रहने वाला, सुस्त, कमजोर। २ अकर्मण्य, निकम्मा।
रू० भे०—फसड्डी।

फिसणौ, फिसबौ–क्रि० अ० [देशज] १ हड्डी का स्थान छोड़ना या संधि-स्थान से हटना। (अमरत)
२ द्रवित होना। उ०—इतरौ कहतां तुरत दोनूं भाई गदगद कंठ होय सिलांम करण लागा, फिस पड़िया।
—पलक दरियाव री वात
३ जीर्ण वस्त्रादि का स्वतः फटना।
४ बदलना, मुकरना।
५ देखो 'पिसणौ, पिसबौ' (रू. भे.)
फिसणहार, हारौ (हारी), फिसणियौ—वि०।
फिसिम्रोड़ौ, फिसियोड़ौ, फिस्योड़ौ—भू० का० कृ०।
फिसीजणौ, फिसीजबौ—भाव वा०।

फिसळ, फिसळण–सं० स्त्री० [सं० प्रसरणं] १ फिसलने की क्रिया या भाव, रपटन।
२ ऐसा स्थान जहां चिकनाई के कारण कोई वस्तु नहीं ठहरती हो।
रू० भे०—फसल।

फिसळणौ, फिसळबौ–क्रि०अ०[राज०फिसळ+णौ] १ चिकनाई एवं गीलेपन के कारण किसी वस्तु का टिकाव न होना, रपटना। उ०—घणी देहसत रै मारै पग उण री विछावणै ऊपर **फिसळियौ**।—नी. प्र.
२ प्रवत्त होना, लालायित होना, झुकना।
ज्यूं०—उण नै एक रुपयौ दिखावतां ही वो **फिसळगौ**।
३ कहकर बदल जाना, मुकर जाना।
४ पथ-भ्रष्ट होना। उ०—पाका काचा ह्वै गया, जीत्या हारै दांव, अंतकाळ गाफिल भया, दादू **फिसळै** पांव।—दादूवांणी
५ देखो 'फिसणौ, फिसबौ' (१) (रू. भे.)
फिसळणहार, हारौ (हारी), फिसळणियौ—वि०।
फिसळिम्रोड़ौ, फिसळियोड़ौ, फिसल्योड़ौ—भू० का० कृ०।
फिसळीजणौ, फिसळीजबौ—भाव वा०।
पिसळणौ, पिसळबौ, फसळणौ, फसळबौ—रू० भे०।

फिसळियोड़ौ–भू० का० कृ०—१ चिकनाई एवं गीलापन के कारण रपटा हुआ. २ प्रवत्त हुवा हुआ, लालायित हुवा हुआ, झुका हुआ. ३ वचन-विमुख या कहकर बदला हुआ, मुकरा हुआ. ४ पथ-भ्रष्ट हुवा हुआ. ५ देखो 'फ़िसियोड़ौ' (१) (रू. भे.)
(स्त्री० फिसळियोड़ी)

फिसाद–सं० पु० [अ० फ़साद] १ लड़ाई, झगड़ा।
उ०—उदियापुर 'जैसिंघ'-रै, सुत सूं थई **फिसाद**। सो घांणोरा आवियो, 'रांण' विचारै वाद।—रा. रू.
२ टंटा, कलह। उ०—जलाल री सूरज सो मुंहडौ मूमना नूं नजर आइयौ सो मूमना रै हिया में झाळ ऊठी। तरै पासी न्हाखती हाथ री झालौ परै जांणै नूं कियौ। जे खोजौ नाजर देख लेसी तौ बादसाह नूं कह देसी तौ **फिसाद** होयसी।
—जलाल बूबना री वात
३ उपद्रव, बलवा, विद्रोह। उ०—१ सेरसाह तमांम पठांणां सूं अेको कर विहार देस में **फिसाद** किवी। दिल्ली री राह बंद कियौ।—वां. दा. ख्या.
उ०—२ मुलक में **फिसाद** दीसै तीसूं अमरसिंह जी नूं बुलाय बादसाह सलामत फेर फरमाई।—ठा. राजसी री वारता
४ बिगाड़, खराबी।
रू० भे०—फसाद।
अल्पा०—फिसादिक, फिसादिय, फिसादी।

फिसादिक, फिसादिय, फिसादी–वि० [अ० फ़सादी] १ लड़ाई-झगड़ा करने वाला, झगड़ालू। उ०—तद करणसिंघ जी पातसा जी सूं सारौ हवाल मालम करायौ, उजीर सादलेखां खना सूं जो हजरत अमरसिंघ **फिसादी** है सीख देवौगे तौ करणसिंघ बिना सीख जावैगा अरु फिसाद होवैगा।—द. दा.
२ बिगाड़ या खराबी करने वाला।
३ उत्पाती, उपद्रवी।
४ दंगा या बलवा करने वाला।
५ देखो 'फिसाद' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—दिन दिन जोर वधै वळ दाखै, आंण' अजीत' तणी मुख आखै। वादै सो हारै समवादी, सोवै सोवै वधै **फिसादी**।—रा. रू.
रू० भे०—पिसादिय, फसादी।

फिसियोड़ौ–भू० का० कृ०—१ सन्धि स्थान से अलग हुवी हुई हड्डी. २ द्रवीभूत हुवा हुआ. ३ जीर्ण वस्त्रादि स्वतः फटा हुआ. ४ बदला हुआ, मुकरा हुआ. ५. देखो 'पिसियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० फिसियोड़ी)

फिह्यौ—देखो 'फियौ' (रू. भे.)

फींकर—देखो 'फीकर' (रू. भे.)

फींच–सं० पु० [सं० स्फिच] (ब० व० फींचां) १ पशुओं व मनुष्यों के चूतड़ के नीचे का भाग।
उ०—१ जद जांण्यौ कपड़ौ इ लेजासी अनै ऊंट इ लेजासी। इम विचार तरवार सूं ऊंट नीं **फींचा** काटी मार न्हांख्यौ।—मि. द्र.
उ०—२ आसोजां रौ कुजरवौ तावड़ौ। चारूंमेर जांणै झाळां दाझै। लांबी मांय। भांवी परसेवा में घांण व्हैगौ। उण री **फींचा** तूटण लागी।—फुलवाड़ी
रू० भे०—फीच।

फींचणौ, फींचबौ—देखो 'फीचणौ, फीचबौ' (रू. भे.)
फींचणहार, हारौ (हारी), फींचणियौ—वि०।

फींचिग्रोड़ी, फींचियोड़ौ, फींच्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
फींचीजणौ, फींचीजबौ—कर्म वा० ।
फींचियोड़ौ—देखो 'फीचियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० फीचियोड़ी)
फींचियौ–सं० पु० [देशज] दौड़ते या चलते हुए के पीछे पैरों में इस प्रकार अड़ाई जाने वाली लात कि जिससे वह लड़खड़ा कर गिर जाय, लत्ती ।
क्रि० प्र०—दैणौ, मारणौ ।
फींडौ–वि० [देशज] (स्त्री० फीडी) चपटी नाक वाला ।
उ०—तोरू री धारियां रै उनमांन ई मूंडा माथै अणगिण सळ । मीडका री गळाई फींडौ नाक ।—फुलवाड़ी
फींण—देखो 'फैण' (रू. भे.)
उ०—१ झड़ै फींण घोड़ां मुखे सेत झारा, तिकै जांणि ऊगा घरा बीज तारा ।—सू. प्र.
उ०—२ सो किण भांति तळाव जांणै दूसरौ मांनसरोवर रातासी एके रडि रै माथै पांडरौ नीर पवन रौ मारिग्रौ कराड़ै फींण आछटतौ ठेपां खाइनै रहिग्रा छै । —रा. सा. सं.
फींणीबाटियौ–सं० पु०—देखो 'फीणावाटी' (अल्पा., रू. भे.)
फींदी–सं० स्त्री० [देशज] (ब० व० फींदियां) बिखरा हुग्रा छोटा टुकड़ा, विभक्त भाग ।
उ०—सिंघ रै दौड़तां ई पूंछां तणीजी, गांठ घणी घुळगी । बांदरी लारै ठिरड़ीजती गियौ । सिंघ किणरी परवा करै । उणनै तौ आपरा जीव री पड़ी ही । वौ तौ दौड़तौ ई गियौ अर गाठ घुळती ई गी । बांदरा री फींदी फींदी बिखरगी ।—फुलवाड़ी
फींफड़ौ—देखो 'फैफड़ौ' (रू. भे.)
उ०—राजकंवर रै कांनां रा पड़दा जांणै फाटण लागा । उण रा फींफड़ा जांणै चीरीजण लागा ।—फुलवाड़ी
फींफर, फींफरड़—देखो 'फैफड़ौ' (मह., रू. भे.)
उ०—१ छैलां छोगाळां छक्का छूटोड़ा, फिरतां फिरता रा फींफर फूटोड़ा ।—ऊ. का.
उ०—२ फींफरड़ फूट गोळा गजां फरहड़ै, जंगी हौदा गजां खड़हड़ै जीम । घड़हड़ै धीम वे मुसाहव लड़ै घर, विहुं साहव हंसै हड़हड़ै बीम ।—हुकमीचंद खिड़ियौ
फींफरौ—देखो 'फैफड़ौ' (रू. भे.)
उ०—१ घणी तरवारियां रा वाढ ऊछेळे छै । घणी वरछी आघोसलै नीसरी छै । सिलै अंग साथै कटै छै । वड़ाका, फींफरा बोल रहिया छै ।—सूरे खीवे कांधळोत री वात
उ०—२ गुलाबां मीरजां निवाबां गाहटै, गळीबळ घातियां हेत गाढ़ै । फरोळै पांखड़ी आंत उर फींफरा, काळजा कंज-लंत भमर काढ़ै । —तेजसिंघ सेखावत री गीत

फी–सं० स्त्री०—१ तिरस्कार सूचक शब्द जो किसी व्यक्ति के पूर्ण तैयारी या मुस्तैदी से कार्य करने पर भी वह असफल रहता है तब प्रयुक्त किया जाता है ।
२ देवता । (एका०)
३ वायु । (एका०)
४ हाथी । (एका०)
[फा०] ५ नुक्स, दोष, विकार । (एका०)
६ कसर, न्यूनता । (एका०)
मुहा०—फी निकळणी—निम्न स्तर या न्यूनता प्रकट होना ।
[अं० फी] ७ फीस ।
अव्य० [अ० फी] प्रत्येक, हर एक ।
फीक–सं० स्त्री० [देशज] १ विशेष दशा में मुख के स्नायुयों की वह स्थिति जिससे किसी भी खाद्य पदार्थ के खाने पर उसका स्वाद न आता हो, मुख का फीकापन । (रोग)
२ आवश्यक, उपयुक्त अथवा यथेष्ट मात्रा में मिठास या नमकीन पदार्थ के अभाव मे होने वाली मुख की स्थिति ।
३ किसी खाद्य पदार्थ की स्वादरहित अवस्था ।
फीकर–सं० पु० [देशज] हिरण या बकरे के पीठ या पिछले पैर के ऊपर के हिस्से (पींडे) का मांसपिंड जो धोने से साफ एवं श्वेत हो जाता है ।
उ०—घणा मसाला दीजै छै । लवांरौ मांस होसनाक सुधारै छै । बकरां रा फीकर गरम पांणी सूं धोयजै छै । ललाई मिटायजै छै ।
—रा. सा. सं.
रू० भे०—फीकार ।
फीकरियौ–वि० [देशज] नीरस, रूखा, फीका ।
उ०—बाळूं बाबा देसड़उ, जहां फीकरिया लोग । एक न दीसइ गोरियां, घरि-घरि दीसइ सोग ।—ढो. मा.
फीकास–सं० पु०—देखो 'फीक ।
फीकौ–वि० [देशज] (स्त्री० फीकी) १ स्वादहीन, स्वादरहित ।
उ०—नांनग सरवर भरियौ नीकौ, झुकै लोग पीवण दे भीकौ । ठग-बाजी गादी रौ ठीकौ, फेर सिकां कर दीनौ फीकौ ।—ऊ. का.
क्रि० प्र०—होणौ ।
२ उदासीन, खिन्नचित्त । उ०—१ तद चार वारे'क तौ नटियौ पण बादसाह फेर गाढ़ कर पूछी जद चारण वांण चाढ़ दूही कहियौ सो बादसाह सुण घणा माणसां रै सुणतां फरमाई—जे उस रोज तौ 'केसरिया' ग्रेसा हीज हुवा । तौ सगळा देखता ही जे रहि गया । चुगलखोरां रौ मुंह फीकौ पड़ गयौ ।—पदमसिंह री बात
३ अपमानित, लज्जित ।
उ०—सिंहदेव हाड़ापणां नूं फीकौ दिखाइ नीचा नेत्र करि पाछौ दिल्ली पूगौ ।—वं. भा.

क्रि० प्र०—दिखाणौ, पड़णौ, पटकणौ, लगाणौ।
४ निष्प्रभ, कान्तिहीन, मलिन। उ०—१ खूटी वीजण कणलांचै खड़ खूटी, छपनै प्रळयागम पावन पड़ छूटी। फीका चै'रा पड़ फीका द्रग फेरै, हाहा! ऊंडा दिन भूंडा भय हेरै।—ऊ. का.
उ०—२ अमलां थें उदमादिया, सेंणा हंदा सैंण। तौ विन घड़ी न आवड़ै, फीका लागै नैंण।—फुलवाड़ी
क्रि० प्र०—पड़णौ।
५ तुच्छ, हीन। उ०—पाक्योड़ा आंबा री गळाई उण रौ पीळौ-जरद रंग हौ, कंचन री जात। फेर पूछौ तौ सोना री दमक ई उण रै आगै फीकी लागै। कागला रै अेक आंख देखनै इचरज व्हियौ।—फुलवाड़ी
क्रि० प्र०—लागणौ।
६ प्रभावहीन।
क्रि० प्र०—होणौ।
७ नीरस, रूखा, शुष्क। उ०—१ रांम विना सब फीकै लागै, करणी कथा गियांन। सकळ अविरथा कोटि कर, 'दादू' योग धियांन।—दादूवांणी
उ०—२ पण दूजोड़ी री जीभ जांणै मिसरी वणियोड़ी ही, वा मिठाय-मिठायनै गडकाई सूं फीकी वात नै ई मीठी बणाय देती।—फुलवाड़ी
८ आनन्दविहीन, उल्लासरहित, उमंगहीन।
उ०—राजा अवै करै तौ कांई करै। टीलोड़ी विना राजा रौ सैंग उच्छव फीकौ।—फुलवाड़ी
क्रि० प्र०—लागणौ।
९ सारहीन, निस्सार। उ०—तन सौं सुमिरण कीजियै, जब लग तन नीका। आतम सुमिरण ऊपजै, तब लागै फीका।—दादूवांणी
१० अलोना। उ०—वांणियौ अेक कवौ लियौ तौ उण नै खीचड़ी फीकी अर विना घी री लागी।—फुलवाड़ी
११ ओजहीन। उ०—मंत्री मुळकनै कह्यौ—हाल अंनदाता री ऊमर ई कांई व्ही है। पच्चीस वरसां रा भर मोट्यार तौ आप रै सांमी फीका लागै।—फुलवाड़ी
१२ तुच्छ, हल्का। उ०—लक्खी सोळै सिणगार करियां पातसाह रै जोड़ै वैठी ही। उण रै रूप रा वखांण वास्तै सगळी ओपमावां फीकी लखावती।—फुलवाड़ी
क्रि० प्र०—लागणौ।
१३ किसी कार्य का अभीष्ट परिणाम न निकला हो।
ज्यूं०—अवकै मांमलो फीकौ रियौ।
क्रि० प्र०—रहणौ।
१४ अप्रिय, असुहावना। उ०—फुरियौ भादरवौ घुरियौ नह फीकौ, नीरदरज आगै लागै नह नीकौ। तिसिया संगारा भूं पर नर तिरसै, विसिया अंगारा ऊपर सूं वरसै।—ऊ. का.
क्रि० प्र०—लागणौ।
१५ न्यूनता, कमी।
ज्यूं०—इण री रंग फीकौ है।
क्रि० प्र०—होणौ, पड़णौ।
१६ निष्फल।
१७ नगण्य। उ०—वाकी सगळा फळ इण अेक नींबू आगै फीका है।—फुलवाड़ी
क्रि० प्र०—होणौ।

फीच—देखो 'फींच' (रू.भे.)
उ०—कनोती लोय दीवै, मगर लादक अछी, छोटी पड़छी, पूठ वाथां न मावै, पूछी चवर दावै, फीचां धनख जैसी, काछ नारंगी तैसी, अैसा घोड़े राव चाकरां रै हाथां में काढ़णा।—रा. सा. सं.

फीचणौ, फीचवौ—क्रि० स० [राज० फींच+रा० प्र० णौ] लत्ती लगाना।
फीचणहार, हारौ (हारी), फीचणियौ—वि०।
फीचिओड़ौ, फीचियोड़ौ, फीच्योड़ौ—भू० का० कृ०।
फीचीजणौ, फीचीजवौ—कर्म वा०।
फींचणौ, फींचवौ—रू० भे०।

फीचियोड़ौ—भू० का० कृ०—लत्ती लगाया हुआ।
(स्त्री० फीचियोड़ी)

फीट—अव्य० [देशज] १ फोकट। २ तुरन्त।
सं० पु०—१ फीकापन।
२ देखो 'फिट' (रू. भे.)
३ देखो 'फिटौ' (मह., रू. भे.)
उ०—आंधौ टूंटौ पांगलौ, कोढ़ियौ जार चोर। मरि फीट जाइ वोल तुं, कह्या वचन कठोर।—स. कु.
४ देखो 'फुट' (रू. भे.)

फीटणौ, फीटवौ—क्रि० अ० [देशज] नाश होना।
उ०—जैहनै नांम स्मरण थी, फीटै सगला फंद। मंदमती पंडित हुवै, दूरि टलै दुख दंद।—वि. कु.
फीटणहार, हारौ (हारी), फीटणियौ—वि०।
फीटिओड़ौ, फीटियोड़ौ, फीट्योड़ौ—भू० का० कृ०।
फीटीजणौ, फीटीजवौ—भाव वा०।

फीटियोड़ौ—भू० का० कृ०—नाश हुवा हुआ.
(स्त्री० फीटियोड़ी)

फीटोकड़, फीटोकड़ौ—देखो 'फीटौ' (अल्पा., रू. भे.)
(स्त्री० फीटोकड़ी)

फीटौ—सं० पु० [देशज] (स्त्री० फीटी) १ वेशर्म, निर्लज्ज।
उ०—१ मूंछां डाढ़ी मूंह फूंकदै बाळै फीटा। धुक धुक दै नित धुवां, काळजा करदै कीटा।—ऊ. का.
उ०—२ रमणी वरहीनां निरख नवीनां, रांम रांम रणकंदा है, कंद्रप रा कीटा फवतन फीटा, भंवर गुफा भणकंदा है।—ऊ. का.
२ ढीट, धृष्ट। उ०—मळ साध सदा सुख भेंटन कौं, फिर फीटन

देवन फेटन कौ। भ्रम भंजन कौ मल छक्क भरचौ, कवि ऊमर त्रोटक छंद करचौ।—ऊ. का.

३ भूठा। उ०—१ पछै ए पात्रा खोलवारी घणी खांच कीधी, जद घणां लोक देखतां पात्रा उघाड़्या। लाडू न दीठा जद ए घणां **फीटा** पड़्या।—मि. द्र.

उ०—२ काछवौ खिरगोसिया सूं जवारड़ा करिया। खिरगोसियौ लचकांणौ होयनै **फीटौ** हंसी हंसियौ।—फुलवाड़ी

क्रि० प्र०—पड़णौ।

४ अश्लील, अपशब्द।

उ०—जद साहुकार वरज्यौ। इण ठांम तमासौ मत करौ। लुगायां वहू वेटी सुणें थें मूंहड़ा सूं **फीटा** वोलौ।—मि. द्र.

क्रि० प्र०—वोलणौ।

वि०—१ लज्जित, शर्मिन्दा।

उ०—मगरमच्छ **फीटौ** पड़नै होळै सूं सिरकतौ सिरकतौ भील में वड़ग्यौ।—फुलवाड़ी

२ अपमानित।

अल्पा०—फीटोकड़, फीटोकड़ौ।

फीण—देखो 'फैण' (रू. भे.)

उ०—तिकौ तळाव किण भांत री छै, राती वरडी री पांडरौ नीर, पवन री मारियौ **फीण** आछंटतौ थकौ भोळा खाय रह्यौ छै।
—रा. सा. सं.

फीणनांखतौ—सं० पु०—ऊंट। (डि. को.)

फीणनाग—सं० पु० [सं० फेणः+नाग] अफीम। उ०—रैणां डंड अडंडा गवावै भींच वाघरा का, खागरा का भूरडंडां अरंद्रां खांणास। पड़ै धाका खंडखंडां **फीणनाग** रा का पीधां, वाही आगरा का झंडां ऊपरै वांणास।—गिरवरदांन कवियौ

फीणावाटी, फीणारोटी—सं० स्त्री०—एक विशेष प्रकार की रोटी जिसे एक वार वेलकर घी टालकर पुनः वेलते हैं, एक प्रकार का परांठा।

अल्पा०—फींणोवाटियौ।

फीणी—सं० स्त्री० [सं० फेनिका] १ स्त्रियों के नाक में पहनने का आभूषण विशेष। उ०—वनी ए थांनै लाद्यां सांचा मोती थैं क्यां में वैठ पुवाती, वना जी में **फीणी** में रे पुवाती, नकवेसर वैठ जड़ाती।—लो. गी.

२ मैदे की वनी गोल एवं चपटाकार मिठाई जिसमें सूत के धागों की भांति रेशों का जाल होता है।

रू० भे०—फेणी, फेनी।

फीणौ—सं० पु० [देशज] लकड़ी के उन दो गुटकों में से एक जो रहट के ऊपरी दोनों लट्टुओं को अपने स्तम्भ के साथ मजवूती से जोड़ने के लिए 'डांड' और 'चूळ' के वीच लगाया जाता है।

फीत—सं० स्त्री० [फ़ा० फ़ीतः] १ सैनिक विभाग में पदोन्नति के समय दिया जाने वाला चिन्ह विशेष।

२ देखो 'फीतौ' (मह., रू. भे.)

फीतौ—सं०पु० [पुर्त० फीता] १ सूत आदि की वनी वह पतली वज्जी जो किसी का नाप लेने के काम आती है।

२ कपड़े या सूत की वह पतली वज्जी जो किसी वस्तु को वांधने या लपेटने के काम आती है। ३ चौड़ी पट्टी वाला गोटा।

मह०—फीत।

फीदौ—वि० [देशज] खोखला।

उ०—कठा री तेलण कठा री पळी, पाड़ौसण मांगै खळ री डळी। अेक गवूं वौ ई **फीदौ**, नित उठ कंथ करावै सीदौ।—फुलवाड़ी

फीनसताई—सं० स्त्री० [देशज] तारीफ, प्रशंसा।

उ०—पांच-पांच दस-दस इकलाळिया दांइदा भेळा वैठा छै। मुनहारां हुय रही छै। घणी **फीनसताई** चोज लियां आरोगजै छै।
—रा. सा. सं.

फीफर—देखो 'फैंफड़ौ' (मह., रू. भे.)

उ०—ताहरां राखायत दीठी। आपरौ **फीफर** वाढ़ि अर ग्रीभ मारी छै। नहीं तौ ग्रीभ म्हारी आंख काढ़त।—नैणसी

फीफरउ—देखो 'फैंफड़ौ' (रू. भे.)

उ०—छिल वहत धक-धक अछक छक, अंतराळ गरळक डुल डक। **फीफरउ** फरडक नद फरक, हुय विढ़क हक-हक वीरहक।—र. रू.

फीफरड़—देखो 'फैंफड़ौ' (मह., रू. भे.)

फीफरियू—देखो 'फैंफड़ौ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—मिल थट्ट वगट्ट सुभट्ट मिलं, दुजडाहत 'पाल' भिड़ै दुभलं। फरड़ाहक वोलत **फीफरियूं**, करवा हत 'पाल' करै मरियूं।—पा. प्र.

फीफरौ—देखो 'फैंफड़ौ' (रू. भे.)

फीयौ—देखो 'फियौ' (रू. भे.)

फीरोजी—१ देखो 'फिरोजी' (रू. भे.)

२ देखो 'फिरोजौ' (अल्पा., रू. भे.)

फीरोजौ—देखो 'फिरोजौ' (रू. भे.)

फील—सं० पु० [फा० फ़ील=सं० पीलुः] १ हाथी।

उ०—वंध ग्राह दरीयाव वीच, पड़ संघट **फील** पुकारियां। ईस-ऊवाहण-पाय आय, धर हत्थूं सूंड उधारियां।—र. ज. प्र.

२ एक प्रकार का वाण।

फीलखांनौ—सं० पु० यौ० [फा०फ़ीलखानः] वह स्थान जहां हाथी वांधा जाता है, हस्तिशाला।

फीलचराई, फीलचरावणी—सं० स्त्री० यौ० [फा० फीलः+राज० चराई, चरावणी] हाथी को चराने पर लिया जाने वाला कर।

उ०—सलावतखांन अरज करी—जे राव **फीलचरावणी** न देवै और पण लाजमे रा जवाव-सवाल न करै। तौ वादसाह फरमाई—**फीलचराई** लेवौ।—अमरसिंह गजसिंहोत राठौड़ री वात

फीलवांन—सं० पु० यौ० [फा० फीलः+सं० वान्] हाथीवान, महावत।

फीळाउगाड़, फीळाउघाड़—देखो 'फळसाउघाड़' (रू. भे.)

फील्ड–सं० पु० [अं०] १ मैदान। २ खेत। ३ खेल का मैदान।

फीस–सं०स्त्री० [अं० फी] १ कर, शुल्क।

२ मेहनताना, पारिश्रमिक।

क्रि० प्र०—दैणी, भरणी, लैणी।

फीहौ—देखो 'फियौ' (रू. भे.)

उ०—ताप सन्निपात जांणी अतीसार संग्रहांणि, फीहौ विघराल पांडु गोला सूल खैण है।—ध. व. ग्रं.

फुंग्रारौ—देखो 'फंवारौ' (रू. भे.)

फुंकणौ, फुंकबौ—देखो 'फूंकणौ, फूंकबौ' (रू. भे.)

फुंकणहार, हारौ (हारी), फुंकणियौ—वि०।

फुंकाड़णौ, फुंकाड़बौ, फुंकाणौ, फुंकाबौ, फुंकावणौ, फुंकावबौ—प्रे० रू०।

फुंकिग्रोड़ौ, फुंकियोड़ौ, फुंक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

फुंकीजणौ, फुंकीजबौ—कर्म वा०।

फुंकाड़णौ, फुंकाड़बौ—देखो 'फुंकाणौ, फुंकाबौ' (रू. भे.)

फुंकाड़णहार, हारौ (हारी), फुंकाड़णियौ—वि०।

फुंकाड़िग्रोड़ौ, फुंकाड़ियोड़ौ, फुंकाड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।

फुंकाड़ीजणौ, फुंकाड़ीजबौ—कर्म वा०।

फुंकाड़ियोड़ौ—देखो 'फुंकायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० फुंकाड़ियोड़ी)

फुंकाणौ, फुंकाबौ–क्रि० स० [राज० 'फूंकणौ' क्रि० का प्रे० रू०]

१ मुह को संकुचित करवा कर फूंक निकलवाना।

२ फूंकने का कार्य करवाना। ३ मंत्रादि पढ़ा कर किसी पर फूंक मारने के लिये प्रवृत्त करवाना। ४ जलवाना, भस्म करवाना। ५ नष्ट करवाना, नाश करवाना। ६ किसी धातु का रासायनिक रीति से भस्म बनवाना। ७ सताने के लिये प्रेरित करवाना। ८ मुह से बजाए जाने वाले वाद्यों को फूंक लगवा कर बजवाना।

फुंकाणहार, हारौ (हारी), फुंकाणियौ—वि०।

फुंकायोड़ौ—भू० का० कृ०।

फुंकाईजणौ, फुंकाईजबौ—कर्म वा०।

फुंकाड़णौ, फुंकाड़बौ, फुंकावणौ, फुंकावबौ, फूंकाड़णौ, फूंकाड़बौ, फूंकाणौ, फूंकाबौ, फूंकावणौ, फूंकावबौ—रू० भे०।

फुंकायोड़ौ–भू० का० कृ०—१ मुंह को संकुचित करवा कर फूंक निकलवाया हुआ. २ फूंकने की क्रिया करवाया हुआ. ३ मंत्रादि पढा कर किसी पर फूंक मारने के लिये प्रवृत्त कराया हुआ. ४ जलवाया हुआ, भस्म करवाया हुआ. ५ नष्ट करवाया हुआ, नाश करवाया हुआ. ६ किसी धातु का रासायनिक रीति से भस्म बनवाया हुआ. ७ सताने के लिये प्रेरित कराया हुआ. ८ मुंह से बजाए जाने वाले वाद्यों को फूंक लगवाकर बजवाया हुआ.

(स्त्री० फुंकायोड़ी)

फुंकार—देखो 'फूंकार' (रू. भे.)

फुंकारी–वि० [अनु०] फूत्कार करने वाला।

सं० पु०—१ सर्प, सांप। (अ. मा.)

२ देखो 'फूंकार' (अल्पा., रू. भे.)

फुंकारौ–सं० पु०—१ विश्राम, आराम।

२ देखो 'फूंकार' (अल्पा., रू. भे.)

रू० भे०—फुणकारौ।

फुंकावणौ, फुंकावबौ—देखो 'फुंकाणौ, फुंकाबौ' (रू. भे.)

फुंकावणहार, हारौ (हारी), फुंकावणियौ—वि०।

फुंकाविग्रोड़ौ, फुंकावियोड़ौ, फुंकाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

फुंकावीजणौ, फुंकावीजबौ—कर्म वा०।

फुंकावियोड़ौ—देखो 'फुंकायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० फुंकावियोडी)

फुंकियोड़ौ—देखो 'फूंकियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री० फुंकियोडी)

फुंणाळ—देखो 'फणाळी' (मह., रू. भे.)

उ०—जहर छक फुंणाळां ऊक ऊटै जिकां, असी किरवांण संभरी तणी आज। घणै दईवांण वीराण वाहण घण, निजुड़ै सिधुरां कंध नाराज।—भगतराम हाडा री तरवार रौ गीत

फुंणौ—देखो 'फुणौ' (रू. भे.)

फुतरकौ—देखो 'फूंतरौ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—कूंजड़ौ तौ आखती-पाखती रा गांवां में कांदां रौ फुतरकौ ई नी छोड्यौ।—फुलवाड़ी

फुंद—देखो 'फौंद' (रू. भे.)

फुंदळ, फुंदल, फुंदाळ, फुंदाल—देखो 'फौंदाळौ' (मह., रू. भे.)

उ०—तिहां बेठा बत्रीसलक्षणा पुरुस दुंदला-फुंदला जाकजमाला, मुंछाला।—व. स.

फुंदाळौ, फुंदालौ—देखो 'फौदाळौ' (रू. भे.)

उ०—तिहा वइठा बत्रीसलक्षणा पुरुस, फांदाला-फुंदाल दुंदाला झाक-झमाला, सुंहाला, आखि अणीआला।—व. स.

(स्त्री० फुंदाळी, फुंदाली)

फुंदी—देखो 'फूंदी' (रू. भे.)

फुंदौ—देखो 'फूंदौ' (रू. भे.)

फुंफकार—देखो 'फूंकार' (रू. भे.)

फुंफकारौ—देखो 'फूंकार' (अल्पा., रू. भे.)

फुंफाड़ौ—देखो 'फूंफाडौ' (रू. भे.)

फुंवी–सं० स्त्री० [सं० पृथ्वी, प्रा० प्रहवी] १ वर्षा ऋतु मे उत्पन्न होने वाला एक प्रकार का भू-फोड़ जो सफेद रंग का होता है।

२ देखो 'फूंभी' (रू भे.)

रू० भे०—फंवी, फूंवी, फूंभी, फूवी।

फुंवौ-सं० पु० [देशज] रुई का लच्छा या वस्त्र खंड ।
रू० भे०—फवौ, फवौ, फूंवौ, फूंभौ, फूहौ, फोग्रौ, फोयौ, फोहौ, फौहौ ।

फुंवार—देखो 'फंवारौ' (मह., रू. भे.)

फुंवारौ—देखो 'फंवारौ' (रू. भे.)

फुंसहलि-
उ०—मंकड नागवल्लीदलि किसिउं करइ, छाली फुंसहलि किसिउं करइ, खल्वाट, सिर कंकणवंधि किसिउं करइ ।—व. स.

फुंसी-सं० स्त्री० [सं० पनसिका, प्रा० फनस] छोटा फोड़ा ।
रू० भे०—फुरणसी ।

फुंहार—देखो 'फंवारौ' (मह., रू. भे.)
उ०—चादर हौज फुंहार नीर चलि, अम्रत नदी आय किर ऊभळि । रंजत सुजळ केइक अंतरांमै, केइक होद भरया कुमकुम्मै ।—सू. प्र.

फुंहारौ—देखो 'फंवारौ' (रू. भे.)
उ०—एकल गिड वाराहूं की दंतळूं झड़ ओझड़ अैसै दरसावै । स्रोण के फुंहारै आसमांन को छूटै ।—सू. प्र.

फु-सं०पु०—१ कार्तिक मास । २ कृतज्ञता । ३ गुण । ४ विलम्व । (एका०)

फुआरौ—देखो 'फंवारौ' (रू. भे.)

फुकनीबाज-वि०—वकवाद करने वाला, व्यर्थ की बातें करने वाला ।

फुकार-सं० स्त्री० [?] १ आवाज, शब्द ।
उ०—युं करतां मेर पच्चीस टका घांमीया । तरै रजपूत लीया । पिण फुकार जसवंत जी तांई जांण दीधी नहीं, डर रा घालीया ।
—राव मालदे री वात
२ देखो 'फूंकार' (रू. भे.)

फुगतरौ-सं० पु० [देशज] १ छिलका, छाल । २ चमड़ा ।

फुड़कली—देखो 'फिरकी' (रू. भे.)
उ०—उणरा डील में झाळ-झाळ ऊठगी । माथौ फुड़कली रै उनमांन घरणाटी चढ़ग्यौ । —फुलवाड़ी

फुट-सं० पु० [अं०] १ एक नाप विशेष जिसमें बारह इंच होते हैं ।
२ एक उपकरण जो किसी वस्तु का नाप लेने के काम आता है तथा जिसमें १२ इंच के निशान होते हैं ।
रू० भे०—फीट ।

फुटकर-वि०—१ अलग, पृथक ।
२ वह जो किसी विशेष वर्ग या मद से न हो, जो अपना पृथक स्थान बनाता हो, भिन्न भिन्न या अनेक प्रकार का, कई मेल का ।
उ०—सोभत था कोस ५ दिखण नुं । वांमण, लुहार, फुटकर कूंपावतां रौ उतन । खेत कंवळा ।—नैणसी
३ माल या सौदा जो इकट्ठा या एक साथ न हो वल्कि पृथक पृथक या खण्डों में आता हो, थोक का विपर्याय ।
ज्यूं०—फुटकर माल री दुकान ।
यौ०—फुटकरखरच ।

फुटनोट-सं० पु० [अं०] किसी लेख या पृष्ठ के नीचे के भाग में अलग से दी जाने वाली टिप्पणी जो किसी अर्थ-विशेष को स्पष्ट करती है ।

फुटवोल-सं० स्त्री० [अं०] एक प्रकार की वड़ी गेंद जिसके अन्दर रवड़ का ब्लैडर तथा ऊपर चमड़े का आवरण होता है और जिसमें हवा भर कर पैर से खेलते हैं ।

फुटरौ—देखो 'फूटरौ' (रू. भे.)
उ०—प्रीतम मारा ममरलां जी, कांइक कीजै संक । फुल्या दीसै फुटरां जी, आफु आडै अंक ।—वि. कु.

फुटस्सणि—
उ०—कांसा भांणा माहि, त्रिसक तीनह सति कडयडि मोडि वीणिउ, फुटस्सणि धोइउ, हितूईइं ऊर गढ़ी वेडं पग देउनइ ।
—व. स.

फुट्टणौ, फुट्टवौ—देखो 'फूटणौ, फूटवौ' (रू. भे.)
उ०—ब्रहमंड किनां फुट्टौ वळै, घसक तळातळ आतळै । मुखै हसै सकति महावळ, वेताळा कुळ व्याकुळै ।—मा. वचनिका
फुट्टणहार, हारौ (हारी), फुट्टणियौ—वि०।
फुट्टिओड़ौ, फुट्टियोड़ौ, फुट्टयोड़ौ—भू० का० कृ० ।
फुट्टीजणौ, फुट्टीजवौ—भाव वा० ।

फुट्टियोड़ौ—देखो 'फूटियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० फुट्टियोड़ी)

फुड, फुडवि-वि० [सं० स्फुट] १ प्रकट, साफ, स्पष्ट ।
उ०—१ एतइं राखसु रोसि जलंतु, आवइ फुड फेकार करंतु । वेटी वूसट मारइ जांम भीमु भिडेवा ऊठिउ तांम ।—सालिभद्रसूरि
उ०—२ जिणि दिणि दुल्लभ सभा सखर खरतर जे तिण दिणि, पडिवोहिय चांमुंड फुडवि खरतर जे तिणि दिणि । जिणीय वाद छद्मइ मासि फुड खरतर तिणि दिणि ।—अभयतिक यती
२ हृष्ट-पुष्ट ।
सं० पु०—१ मुसलमान ।
२ उपस्थ ।
अल्पा०—फुडियौ, फुडौ ।

फुडियौ, फुडौ—देखो 'फुड' (अल्पा., रू. भे.)

फुणंद, फुणंद्र-सं० पु०—देखो 'फणींद' (रू. भे.)
उ०—चढ़ता थट वळै मेलिया चढ़तइ, जांनी आप जिसा घरण जांरण इंद्र फुणंद्र नागिंद्र निरखतां, वरणवजइ केहा वाखांण ।
—महादेव पारवती री वेलि

फुण-सं० पु०—१ पवन। (ना. डि. को.)

२ देखो 'फण' (रू. भे.)

उ०—हिरनमै पत्र हीरै जडित्त, सांकळा करग्गै सुसोभित। मुद्रका सुकर-साखा सुभग्ग, मिण जांण दिपै फुण सेस नग्ग।
—गु. रू. बं.

३ देखो 'फुणो' (मह., रू. भे.)

फुणकलौ-सं० पु०—छोटा फोड़ा, फुन्सी।

उ०—नारी मिली पुण्य जोग, पिण देही ने ग्रांण घेरयौ रोग, फोड़ा फुणकला छलवल ग्रारी।—जयवांणी

मह०—फुणगल।

फुणकार—देखो 'फणकार' (रू. भे.)

उ०—सांप री फुणकार सुणनै विचिया तौ बापड़ा दावड़ नै भेळा व्हैगा।—फुलवाड़ी

फुणकारौ—१ देखो 'फणकार' (ग्रल्पा., रू. भे.)

उ०—कमेड़ी चारुंमेर उडती, चकारा देवती घणा ई कुड़मुड़ करिया पण सांप फुणकारां भरतौ उणनै कीं दाद दीवी नीं।
—फुलवाड़ी

२ देखो 'फुंकारौ' (रू. भे.)

फुणगल—देखो 'फुणकलौ' (मह., रू. भे.)

उ०—देही में निकलै फुणगल फोड़ा, मार जायें नांन्हा छोरा रे। दिन निकलै घणा ज्यांका दोरा, लांछण काढ़ै कोरा रे।—जयवांणी

फुणडसण-सं० पु०[सं०फण:+दंश:] सर्प, सांप। उ०—झाटां फुणडसण खाग झाटकती, राग वीररस तणौ रत्तौ। ऊ लागौ 'जैसिंघ' हिय उड, पांखां ग्रायौ नाग 'पत्तौ'।—प्रतापसिंह हाडा री गीत

फुणद—देखो 'फणींद' (रू. भे.)

फुणधर—देखो 'फणधर' (रू. भे.)

फुणली-सं० स्त्री० [सं० फण+रा० प्र० ली] मादा सर्प, सर्पिणी।

फुणसहस—देखो 'सहसफुण' (रू. भे.)

उ०—जीवै गोरख जुगां, नाथ नित जोग कमावै। भल जीवै भरथरी, सदा हरि नांम सुहावै। भल जीवै फुणसहस, जेण घर भार उठायौ। भल जीवै बळराव, जेण हरि हाथ मंडायौ। ग्राचार करण जीवै इंदर, जगत कहै धिन धिन जियौ। म्होकमा कमंध मोटा मिनख, तै जीवर कासूं कियौ।—ग्ररजुण जी बारहठ

फुणसी—देखो 'फुंसी' (रू. भे.) (ग्रमरत)

फुणांपति, फुणांपत्ति—१ देखो 'फणपति' (रू. भे.)

उ०—वर्णं फौज राजा तणै काजवाळी, कवी ऋत्त जैसी फुणांपत्ति काळी। कजाकां भड़ां दौडियौ रूप कैसौ, 'ग्रभौ' नक्र वीछोड़वा चक्र ग्रैसौ।—रा. रू.

२ देखो 'फणिपति' (रू. भे.)

फुणांफेर-सं०पु० [सं०फण:+राज०फेर] शेषनाग। उ०—हचै खळां थोका भंजै फुणांफेर रा ग्रापांण हूंत, दाखै जेण वेर रा वाखांण झोका देर। सही जीत होय रास्यौ कुवेर रा भीमसिंह, सेर रा कांटला जेम 'रांण' री ग्रासेर।—रावत भीमसिंह चुंडावत री गीत

रू० भे०—फुणाफेर।

फुणाकार—देखो 'फणाकार' (रू. भे.)

उ०—जिसै सिवबै राग काळी जिगायौ, उपाड़ै फुणाकार दरबार ग्रायौ। फुणाकार को झाटकै पूंछ फेरी, घणौ घातियौ सांकड़ै सांम घेरी।—ना. द.

फुणाट—देखो 'फण' (मह., रू. भे.)

उ०—महा भुजंगेसनाथ समाथ खंडियौ मांण, खंम ठौर भराथ तंडियौ जैत-खंम। दंडियौ ग्रदंड नीर उचाटां मिटाय ड्हे, रंजे मित्र फुणाटां मंडियौ नाटारंभ। —र. ज. प्र.

फुणाफेर—देखो 'फुणांफेर' (रू. भे.)

फुणाळ—देखो 'फणाळी' (मह., रू. भे.)

उ०—पढ़ बसंतरमणी प्रथम, मुण जयवंत मुणाळ। ग्राद गीत त्रय ग्रक्खिया, सगपत ग्रगै फुणाळ।—र. ज. प्र.

फुणाळी—देखो 'फणाळी' (रू. भे.)

फुणावण-वि० [सं० फण+रा० प्र० वण] फनधारी।

उ०—लड़वा भुज ग्रंबर जाय लगा, जिणवार फुणावण सेस जगा। सुरखी मुख मूंछ व्रुहार चली, किरदंत वराह खडी कंवळी।
—पा. प्र.

सं० पु०—१ सर्प। २ शेषनाग।

फुणिंद—देखो 'फणींद' (रू. भे.)

उ०—छंद भुजंगी पर लघू, ग्रेक वर्घ सौ कंद। पंकावळि यक गुरु छ लघु, वि भगण कहत फुणिंद।—र. ज. प्र.

फुणी—देखो 'फणी' (रू. भे.)

उ०—कोड़ी-डड्डा फुणी झाट मोड़तौ कमट्ठां कंध, पव्वैराट सिंघ वीछोड़तौ भोम-पाट। थंभ-जंगां वोमवाट जोड़तौ रातंगां थाट तोड़तौ मातंगां घाट रोड़तौ त्रांबाट।—हुकमीचंद खिड़ियौ

फुणीचील-सं० पु० [सं० फण+रा० प्र० ई+राज० चील=सर्प] शेष नाग। उ०—चंगी फौजां विलूंबै वड़क्कै डाड फुणीचील, उमंगै जोगणी कार्चा धड़क्कै उरेव। हैजमां कड़क्कै वीज जंगी होदां रंगी हाडै, जड़क्कै फरंगी सीस वरंगी जनेव।
—दुरगादत्त बारहठ

फुणौ-सं० पु० [सं० फण:] पैर की ग्रंगुलियों का नीचे का भाग।

उ०—मल्ल ग्रापरै डावा पग री फुणौ लारली गाडी माथै टेकियौ।
—फुलवाड़ी

मुहा०—फुणौ फिरणौ—फुरसत मिलना।

रू० भे०—फणी, फुंणी, फूंणी, फूणी ।

फुतरकौ—देखो 'फूंतरौ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—माया रौ अैड़ो तिरस्कार करणियौ, संपत नै फुतरका रै बिरोबर गिणणियौ तौ औ पैं'लौ ई मांनखी मिळियौ ।
—फुलवाड़ी

फुत्कार—देखो 'फूतकार' (रू. भे.)

उ०—एक अटवी तिहां सींह तणउ गुंजारव, व्याघ्र तणा घुर-घुरारव घूअड़ तणा घूत्कार, सिवा तणा फुत्कार । —सभा.

फुदकड़ी—सं० स्त्री० [देशज] विशिष्ट जाति की एक चिड़िया ।

वि० वि०—यह एक छोटी सी एवं अत्यन्त सुन्दर चिड़िया होती है जो राजस्थान के उत्तर-पश्चिम भाग को छोड़कर सब जगह पाई जाती है । इसके पीठ का रंग पीतवर्ण मिश्रित कुछ हरा सा होता है । इसके सिर पर भूरे रंग की सी झलक पड़ती रहती है तथा पैरों का रंग पीला तथा भूरा मिश्रित होता है ।

यह स्वभाव से बहुत चंचल होती है । दिन भर इधर-उधर फुदकती ही रहती है । अपनी पूंछ को यह निरन्तर हिलाती रहती है । 'फुदकड़ी' मधुर-वाणी वाली चिड़िया है जो सदैव कुछ न कुछ गाती ही रहती है । एक विशेष बात यह भी है कि यह अपना नीड़ अत्यन्त कलात्मक ढंग से बनाती है ।

फुदकण—वि० [देशज] कूदने-फांदने वाला ।

सं० पु०—१ एक प्रकार का बरसाती कीड़ा या पतंगा ।

२ देखो 'फदकण' (रू. भे.)

फुदकणौ, फुदकबौ—क्रि. स० [देशज] १ उछल-कूद करना ।

२ छोटी छोटी-छलांग भरते हुए उड़ना, फुदकना ।

उ०—राजा अंत लोभी हो । अमोलक हीरां री वात सुणनै उण रौ जीव डिगियौ तौ अैंडौ डिगियौ के अजेज उण चिड़ी नै छोड दी । चिड़ी फुदकनै आंब री ऊंची डाळी माथै बैठगी ।
—फुलवाड़ी

३ हर्ष से उछलना-कूदना ।

फुदकणहार, हारौ (हारी), फुदकणियौ—वि०।

फुदकिओड़ौ, फुदकियोड़ौ, फुदक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

फुदकीजणौ, फुदकीजबौ—भाव वा०।

पदकणौ, पदकबौ, फदकणौ, फदकबौ—रू० भे०।

फुदकियोड़ौ—भू० का० कृ०—१ उछल-कूद किया हुआ. २ छोटी-छोटी छलांग भरते हुए उड़ा हुआ, फुदका हुआ. ३ हर्ष से उछला-कूदा हुआ. (स्त्री० फुदकियोड़ी)

फुदकी—सं० स्त्री०—फुदकने का कार्य, कुदान, छलांग ।

फुदगळ—देखो 'पुदगळ' (रू. भे.)

फुद्दी—देखो 'फूंदी' (रू. भे.)

फुनिंग, फुनिग—सं० पु० [सं० पन्नगः] १ सर्प, सांप ।

उ०—जैसै फुनिग मेल्हि मणि चै जै, जोति उजाळै (सु) करै जाय । यूं हरि अकळ सकळ की सोभा, तूं तिणी विधी हरि मूं ल्यौ लाय ।—ह. पु. वा.

२ शरीर, देह । ३ परमाणु । ४ आत्मा ।

फुप्फुस—सं० पु० [सं० फुप्फुसं, फुप्फुसः] फेफड़ा ।

रू०भे०—फुपफुस ।

फुफकार—देखो 'फूंकार' (रू. भे.)

उ०—अेक सिपाई खोखाळ में झांकियौ तौ सांमी हार पड़ियौ पळाटा करै । खोखाळ कनै हाका दड़बड़ व्ही तौ गोरियावर फुफकारा करण लागौ ।—फुलवाड़ी

फुफकारणौ, फुफकारबौ—देखो 'फूंकारणौ, फूंकारबौ' (रू. भे.)

उ०—तड़कै दिनूंगा पैली' ई वौ दुस्टी सरप दांतण-कुरळा करनै कमेड़ी रा आळा माथै पूगौ ई । जोर सूं फुफकारतौ फुण करनै अेकण सागै ई सगळा बिचियां नै खावण रौ मनसोबौ करियौ ।
—फुलवाड़ी

फुफकारणहार, हारौ (हारी), फुफकारणियौ—वि० ।

फुफकारिओड़ौ, फुफकारियोड़ौ, फुफकारयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

फुफकारीजणौ, फुफकारीजबौ—कर्म वा० ।

फुफकारियोड़ौ—देखो 'फूंकारियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० फुफकारियोड़ी)

फुफकारौ—देखो 'फूंकार' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—हाथ मांय घालतां ई सांप फुफकारौ करनै उण रा अंगूठा नै तोड़ लियौ ।—फुलवाड़ी

फुप्फुस—देखो 'फुप्फुस' (रू. भे.)

फुर—वि० [अनु०] १ पक्षियों के उड़ते समय पंखों से उत्पन्न ध्वनि ।

उ०—रांणी उचकनै चिड़ा नै मारण सारू झपटी । पण चिड़ी तौ फुर करती री उडग्यौ ।—फुलवाड़ी

२ फड़कने की क्रिया या भाव ।

उ०—राघव ऊपरि कोपीयौ मन०, मूंह चढ़ाई राय लाल मन रंगै रे । होठ बेहुं फुर फुर करइ मन०, किम आयौ अण प्रस्ताव लाल० ।—प. च. चौ.

क्रि० प्र०—करणी, होणी ।

३ अस्थिर । उ०—फुर अफुर दोनां को द्रस्टा, अज अखंड अचलना । सब संतन के सिद्धांत पद में, मम मनवा थित करना ।
—स्रीसुखरांम जी महाराज

फुरकण—सं० पु० [देशज] १ सफेद आंखों वाला बैल जिसकी आंखों पर भंवरी होती है ।

वि० वि०—उक्त भंवरी आंखों की पलकों के साथ-साथ फरकती है । ऐसा बैल अशुभ माना जाता है ।

२ देखो 'फड़कण' (रू. भे.)

फुरकणौ,फुरकबौ–क्रि० अ० [सं० प्रस्पंदनम्] १ प्रस्पंदन।

उ०—पहिलउं नीली मूकिय मूंकिय कागहनि सीस, देनीय मोदक मुरकीय फुरकीय जोगतां जीह।—नेमिनाथ फागु

[सं० स्फुरणम्] २ हवा का बहना, हवा का चलना।

उ०—जिहां सीतल फुरकै पवन, तिसो पाइनि पनि। इम अनेक प्रकार सोभै छै।—सभा.

३ देखो 'फड़काणौ, फड़कबौ' (रू. भे.)

४ देखो 'फल्कणौ, फल्कबौ' (रू. भे.)

फुरकणहार, हारौ, (हारी), फुरकणियौ—वि०।

फुरकाड़णौ, फुरकाड़बौ, फुरकाणौ, फुरकाबौ,

फुरकावणौ, फुरकावबौ—प्रे० रू०।

फुरकिओड़ौ, फुरकियोड़ौ, फुरक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

फुरकीजणौ, फुरकीजबौ—भाव वा०।

फुरकांन–सं० पु० [अ० फ़ुर्क़ान] मुसलमानों का धार्मिक ग्रन्थ, कुरान। उ०—जम के से फिरमते तणे असमांण जिनूं के देरे मे मूकें मदमसत फीलूं के ठांण। फुरकांन इजील तौर सें जंबूर के निडाह मांन। —सू. प्र.

फुरकाड़णौ, फुरकाड़बौ—१ देखो 'फड़काणौ, फड़काबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'फल्काणौ, फल्काबौ' (रू. भे.)

फुरकाड़णहार, हारौ (हारी), फुरकाड़णियौ—वि०।

फुरकाड़िओड़ौ, फुरकाड़ियोड़ौ,फुरकाड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।

फुरकाड़ीजणौ, फुरकाड़ीजबौ—कर्म वा०।

फुरकाड़ियोड़ौ—१ देखो 'फड़कायोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'फल्कायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० फुरकाड़ियोड़ी)

फुरकाणौ, फुरकाबौ—१ देखो 'फड़काणौ, फड़काबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'फल्काणौ, फल्काबौ' (रू. भे.)

फुरकाणहार, हारौ (हारी), फुरकाणियौ—वि०।

फुरकायोड़ौ—भू० का० कृ०।

फुरकाईजणौ,फुरकाईजबौ—कर्म वा०।

फुरकायोड़ौ—१ देखो 'फड़कायोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'फल्कायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० फुरकायोड़ी)

फुरकारौ–सं० पु०—इशारा, संकेत। उ०—रंग तणी परि पग आरोपै, लड़तां रिण नवि लोपै। चक्षु तणै फुरकारै चोपै, कहर करतां न कोपै हो।—वि. कु.

फुरकावणौ, फुरकावबौ—१ देखो 'फड़काणौ, फड़काबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'फल्काणौ, फल्काबौ' (रू. भे.)

फुरकावणहार, हारौ (हारी), फुरकावणियौ—वि०।

फुरकाविओड़ौ, फुरकावियोड़ौ, फुरकाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

फुरकावीजणौ, फुरकावीजबौ—कर्म वा०।

फुरकावियोड़ौ—१ देखो 'फड़कायोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'फल्कायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० फुरकावियोड़ी)

फुरकियोड़ौ—भू० का० कृ०—१ प्रस्पंदन हुवा हुआ.

२ देखो 'फड़कियोड़ौ' (रू. भे.)

३ देखो 'फल्कियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० फुरकियोड़ी)

फुरक्कणौ, फुरक्कबौ—देखो 'फड़कणौ, फड़कबौ' (रू. भे.)

उ०—धरि फुरक्कइ गल फुरइ, गल फुर नयन फुरन्त। नारी मस्तक मधु फुरइ, सो... नाह मिलन्त।—ढो. मा.

फुरक्कणहार, हारौ (हारी), फुरक्कणियौ—वि०।

फुरक्काड़णौ, फुरक्काड़बौ, फुरक्काणौ, फुरक्काबौ,

फुरक्कावणौ, फुरक्कावबौ—प्रे० रू०।

फुरक्किओड़ौ, फुरक्कियोड़ौ, फुरक्क्योड़ौ—भू० का० कृ०।

फुरक्कीजणौ, फुरक्कीजबौ—भाव वा०।

फुरक्काड़णौ, फुरक्काड़बौ—देखो 'फड़काणौ, फड़काबौ' (रू. भे.)

फुरक्काड़णहार, हारौ (हारी),फुरक्काड़णियौ—वि०।

फुरक्काड़िओड़ौ, फुरक्काड़ियोड़ौ, फुरक्काड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।

फुरक्काड़ीजणौ, फुरक्काड़ीजबौ—कर्म वा०।

फुरक्काड़ियोड़ौ—देखो 'फड़कायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० फुरक्काड़ियोड़ी)

फुरक्काणौ, फुरक्काबौ—देखो 'फड़काणौ, फड़काबौ' (रू. भे.)

फुरक्काणहार, हारौ (हारी), फुरक्काणियौ—वि०।

फुरक्कायोड़ौ—भू० का० कृ०।

फुरक्काईजणौ, फुरक्काईजबौ—कर्म वा०।

फुरक्कायोड़ौ—देखो 'फड़कायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० फुरक्कायोड़ी)

फुरक्कावणौ, फुरक्कावबौ—देखो 'फड़काणौ, फड़काबौ' (रू. भे.)

फुरक्कावणहार, हारौ (हारी), फुरक्कावणियौ—वि०।

फुरक्काविओड़ौ, फुरक्कावियोड़ौ, फुरक्काव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

फुरक्कावीजणौ, फुरक्कावीजबौ—कर्म वा०।

फुरक्कावियोड़ौ—देखो 'फड़कायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० फुरक्कावियोड़ी)

फुरक्कियोड़ौ—देखो 'फड़कियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० फुरक्कियोड़ी)

फुरण—देखो 'फुरणौ' (मह., रू. भे.)

फुरणा—सं० स्त्री० [सं० स्फुरणं] १ स्फुरण। उ०—थाका फाटोड़ा थाका दम थाकी, डेल्ही तुळियोड़ा ढुळियोड़ा ढाकी। थिरता मन री नहि तन री गति थाकी, फुरणा परधन री मन री नहि फाकी।

—ऊ. का.

२ कांपना, फड़कना।

३ सहसा मन में किसी बात के उत्पन्न होने की क्रिया। उ०—जोई फुरै अरु होवै मनण,आगै वस्तु ठहरांणी। फुरणा अरु अफुरणा ये तो सब, माया कृत ही जांणी।—स्रीसुखरांम जी महाराज

रू० भे०—फुरना, फोरणा।

फुरणि, फुरणी–सं० स्त्री०—१ स्फूर्ति, तेजी। उ०—घण फुरणि जोध घाहंत घाव, पायाळ डरै पडतै निहाव। लडथडै लोह वाहै लडाक, वडडंत हाड भाजै वडाक।—गु. रू. वं.

२ तेजी से इधर-उधर मुड़ने की क्रिया। उ०—फरहरै वांनरा जेम फाळां फुरणि, घमता नास धरहास हुआ घमणि। पंथि पाखांण पीठौ करै पैंनुहै, मग्र सूधा भरै डांण वांकै मुहै।—गु. रू. वं.

३ नाक से श्वास लेने का छिद्र, नासापुट, नथूना। उ०—१ रीस रै पांण उण री फुरणियां सूं वाफां निकळण लागी, होठ फड़कण लागा अर आंख्या रा कोया भणण-भणण फिरण लागा।—फुलवाड़ी

२ वेहलियां री फुरणी वाज रही छै, जंग घूघरा वाज रह्या छै।—रा. सा. सं.

रू० भे०—फरणी, फिरणी।

मह०—फुरण, फुरणूं, फुरणौ।

फुरणूं, फुरणौ–सं० पु०—देखो 'फुरणि' (रू. भे.)

उ०—१ धिखते आरण से लोयण जमराज से असवार काळी नाग ज्यूं करते फुरणूं का फूंकार ऐसे सारवांनूं के हाकले सें विमरीर वाघूं परि धाए।—सू. प्र.

उ०—२ चहुंआंण कमंधज भूठ-छटै, कर वांण वहै तन आंण कटै। फुरणां वजसी कर ऊभ फरै, कयकांण किता सुर ध्रोण करै।—पा. प्र.

फुरणौ, फुरबौ—१ देखो 'फड़कणौ, फड़कबौ' (रू. भे.)

उ०—अहर फुरक्कइ, तन फुरइ, तन फुर नयंण फुरंत। नाभी मंडळ सहु फुरइ, सांभइ नाह मिळंत।—ढो. मा.

२ देखो 'फिरणौ, फिरबौ' (रू. भे.)

उ०—१ फुरियौ भादरवौ घुरियौ नह फीकौ, नीरदरज आगै लागै नह नीकौ। तिसिया संगारा भू पर नर तिरसै, बिसिया अंगारा ऊपर सूं वरसै।—ऊ. का.

उ०—२ मगरमच्छ तौ तुरत उठा सूं फुरियौ। बोरड़ी नै अंडी जोर सूं धंदूणी दी के तड़ाक तड़ाक अणगिण बोरां री थर लागगौ।—फुलवाड़ी

उ०—३ चीतौ तौ भली सोची नीं कोई भूंडी, पाछौ फुरनै उठा सूं सोकड़ मनाई।—फुलवाड़ी

उ०—४ वेटी धमाका री आवाज सुणी तौ हळफळायी लारै फुरनै जोयौ—मां तौ कठै ई निगै नीं आई।—फुलवाड़ी

उ०—५ मावड़िया दीठां फुरै, मत हिय मांहि पयट्ठ। पुरुस तणी पोसाख कर, बाई आंण वयट्ठ।—वां. दा.

उ०—६ सत सत्ता सूं संकल्प फुरिया, मनवा नांम धराजी। मूल अग्यांन कहीजे यो ही, कारण होय रेयाजी।

—स्रीसुखरांम जी महाराज

उ०—७ फजरां हथणीं सी दधि मथणीं फुरती, माटां घर-घर में घणहरसी घुरती। खूली आथणियां साथणियां खाती, फूली-फूली फिर फूंद्याळी गाती।—ऊ. का.

फुरत, फुरती–सं० स्त्री० [सं० स्फूर्ति] १ शीघ्रता, जल्दी।

उ०—१ पांचूं जणा आ सला विचारनै फुरती सूं पूगा जकौ हाथी री सोय करली।—फुलवाड़ी

उ०—२ सांफळा मिळै सारूं तुरत, फुरत करै दळ फंकिया। मेछांण वंस तपस्या घटी, ढहसीजै वळि ढ्रकिया।—मा. वचनिका

क्रि० प्र०—करणी, होणी।

२ चंचलता, स्फूर्ति। उ०—चिड़ी ही कमगरी, घणी फुरती वाळी, घणी पोच वाळी।—फुलवाड़ी

फुरतीलौ–वि० [सं० स्फूर्ति+रा० प्र० लौ] (स्त्री० फुरतीली)

१ जिसके शरीर में चंचलता हो, स्फूर्ति वाला।

२ बहुत तेज चलने वाला।

फुरना—देखो 'फुरणा' (रू. भे.)

उ०—वरिस्ठ-वरिस्ठ जीतै मनवांणी, नहिं कहणा नहिं सुणणा। सप्त भूमिका ऊपर आसण, हीन असत सत फुरना।

—स्रीसुखरांम जी महाराज

फुरफुरणौ, फुरफुरबौ–क्रि० अ० [अनु०] १ किसी हलके या छोटे पदार्थ का फुर-फुर शब्द करते हुए हवा में उड़ना।

२ शरीरांग का फड़कना। उ०—ओस्ट युगल फुरफुरतउ, वोलतउ खलातउ, रौद्रमुख करतउ।—व. स.

फुरफुरणहार, हारौ (हारी), फुरफुरणियौ—वि०।

फुरफुरिओड़ौ, फुरफुरियोड़ौ, फुरफुरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

फुरफुरीजणौ, फुरफुरीजबौ—भाव वा०।

फुरफुराहट–सं० स्त्री० [अनु०] १ शरीर के अंगों में होने वाला हलका स्पन्दन। २ पवन के साथ किसी हलकी वस्तु, पत्ते, कागज आदि के उड़ने पर उत्पन्न होने वाली ध्वनि। ३ पक्षियों के परों की फड़फड़ाहट।

फुरफुरियोड़ौ–भू० का० कृ०—१ फुर-फुर शब्द करते हुए हवा में उड़ा हुआ कोई छोटा या हलका पदार्थ. २ शरीरांग फड़का हुआ. (स्त्री० फुरफुरियोड़ी)

फुरमाड़णौ, फुरमाड़बौ—देखो 'फरमाणौ, फरमावौ' (रू. भे.)

फुरमाड़णहार, हारौ (हारी), फुरमाड़णियौ—वि०।

फुरमाड़िओड़ो, फुरमाड़ियोड़ो, फुरमाड़्योड़ो—भू० का० कृ० ।
फुरमाड़ीजणो, फुरमाड़ीजबो—कर्म वा० ।

फुरमाड़ियोड़ो—देखो 'फरमायोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री० फुरमाड़ियोड़ी)

फुरमांण, फुरमांणि—देखो 'फरमांण' (रू. भे.)
उ०—१ सुणि धिकै साह वाका सहर, जवन रीस पावक जिसी । फुरमांण लिखे भेजै फजर, दिलीनाथ सयदां दिसी ।—सू. प्र.
उ०—२ बादसाह रो फुरमांण छै । गढ़ मोनूं दियो छै । फुरमांण थांनूं मेला नहीं । थे फुरमांण ले किलो छोडो ही नहीं तो बादसाह नूं पाछो कासूं कहावां ।—गोपाळदास गौड़ री वारता
उ०—३ एक तणी नवि जांणउं भाख, चाल्यां कटक चटी नव लाख । असपति राय तणइ फुरमांणि, खांन ज्यांह राखिउ दीवांणि ।—कां. दे. प्र.

फुरमांणो—देखो 'फरमांण' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—साहां सोच दिली सरसांणो, मुगलां सैदां वाद मंडांणो । वाचत बीचै ऊग विहांणो, फुरमांणां ऊपर फुरमांणो ।—रा. रू.

फुरमांन—देखो 'फरमांण' (रू. भे.)
उ०—जिमनरादर । तसरूफ गुमास्तगांन । श्री गुजारन । औव फुरमांन । सवतीव निज दुरस्त ।—द. दा.

फुरमाणो, फुरमावो—देखो 'फरमाणो, फरमावो' (रू. भे.)
उ०—१ फवतो आयुस स्रीमाधव फुरमायो, कांतीचंदर नैं काळींदर खायो । छपनैं जयपुर री जग में जस छायो, श्रो तो अरवां रा वळ सूं फळ आयो ।—ऊ. का.
उ०—२ टीकम दोसी बोल्यो—वंकचूलीया में कह्यो संवत अठारे तेपनैं पछै धरम री उद्योत होसी । इण वचन रै लेखै तो तेपनां पहिली साध नहीं इम संभवै । जद स्वांमी जी फुरमायो इहां साध नहीं इसो तो कह्यो नहीं ।—भि. द्र.
फुरमाणहार, हारो (हारी), फुरमाणियो—वि० ।
फुरमायोड़ो—भू० का० कृ० ।
फुरमाईजणो, फुरमाईजबो—कर्म वा० ।

फुरमायस—देखो 'फरमाइस' (रू. भे.)

फुरमायोड़ो—देखो 'फरमायोड़ो' (रू. भे.)
उ०—तिण सूं तेजै नूं फुरमायोड़ो तो छोईज सू दस आदमियां हाथ पकड़नै खूब कूटियो ।—द. दा.
(स्त्री० फुरमायोड़ी)

फुरमावणो, फुरमावबो—देखो 'फरमाणो, फरमावो' (रू. भे.)
उ०—१ ज्यूं राखै ज्यूं रहै, जहां निरमै तंहीं जावै । हुकम सो ही सिर हुवै, जिको मीरां फुरमावै ।—ह. र.
उ०—२ तद कंवर 'वीकैजी' कयो—आपरै फुरमावण सूं भायां सूं दावो नहीं करसूं ।—द. दा.
फुरमावणहार, हारो (हारी), फुरमावणियो—वि० ।
फुरमाविओड़ो, फुरमावियोड़ो, फुरमाव्योड़ो—भू० का० कृ० ।
फुरमावीजणो, फुरमावीजबो—कर्म वा० ।

फुरमावियोड़ो—देखो 'फरमायोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री० फुरमावियोड़ी)

फुरमास-सं० स्त्री०—१ एक प्रकार का लगान विशेष ।
२ देखो 'फरमाइस' (रू. भे.)
उ०—जद भेजी जगमाल नैं, महमद सा फुरमास । दीधां साईआदी दीऊं, जूनागढ़ रो वास ।—वी. मा.

फुरम्मांण—देखो 'फरमांण' (रू. भे.)
उ०—पंटवेस सांच मगां फुरम्मांण सोहे प्रथी, धीठ जंगां गुरम्मांण द्रोणंगां धूजांण । उरम्मांण पै सिधां दुजोण पूर भांणअंसी, सोहे फुरम्मांण वंसी दूसरो 'सूजांण' ।—हुकमीचंद खिड़ियो

फुरळणो, फुरळबो-क्रि० स० [देशज] १ इधर-उधर करना, अस्त-व्यस्त करना, बिखेरना, तितर-बितर करना ।
उ०—१ फेरी अफरि फिरणी सि फेरी, वींद 'रतनसी' बांध वड । धकधूणी फुरळी धो फुरळी, घेर मिळी सुरतांण घड ।—दूदो
उ०—२ फेरा लेतै फिर अफिर फेरी घड़ अणफेर । सीह तणी हरखवळ सुत गहमाती गहड़ेर । गहड़ घड़-कांमणी करै पांण ग्रहण । करगि खग वाहतो जुवा जूसण कसण । कोपियै छाकियै षहर भड़ अहर करि । फुरळतै पिसण घड़ फेरवी अफिर फिरि ।
—हा. झा.
२ किसी वस्तु का नीचे वाला भाग ऊपर अथवा ऊपर वाला भाग नीचे करना । नीचे-ऊपर या ऊपर-नीचे करना, उलटना-पलटना ।
३ चीरना, फाड़ना । उ०—संत पैहळाद तणी सुणी साहुळि, कर फुरळै हिरणाखस काहुळि, ग्राहि कन्हि ली वारूण गिरधारी, मोखै दोहूं तैं हींज मुरारी ।—मा. वचनिका
४ कुछ जानने, देखने या समझने के लिए चीजें या उनके अंग कभी ऊपर और कभी नीचे करना ।
ज्यूं०—फायलां फुरळणी, कागदिया फुरळणा ।
फुरळणहार, हारो (हारी), फुरळणियो—वि० ।
फुरळिओड़ो, फुरळियोड़ो, फुरळ्योड़ो—भू० का० कृ० ।
फुरळीजणो, फुरळीजबो—कर्म वा० ।
फरळणो, फरळबो, फरोळणो, फरोळबो, फिरोळणो, फिरोळबो, फुरोळणो, फुरोळबो—रू० भे० ।

फुरळियोड़ो-भू० का० कृ०—१ इधर-उधर किया हुआ, अस्त-व्यस्त किया हुआ, बिखेरा हुआ, तितर-बितर किया हुआ. २ किसी वस्तु का नीचे वाला भाग ऊपर अथवा ऊपर वाला भाग नीचे किया हुआ, नीचे-ऊपर किया हुआ, उलट-पलट किया हुआ.

३ चीरा हुआ, फाड़ा हुआ. ४ जानकारी प्राप्त करने या समझने हेतु किसी वस्तु के अंगों को ऊपर नीचे किया हुआ.
(स्त्री० फुरळियोड़ी)

फुरसत—सं० स्त्री० [अ० फ़ुर्सत] १ अवसर, मौका।
उ०—घर में रोवणौ सुण्यौ तौ तुरत आड़ौस-पाड़ौस री लुगायां ई रोवती रोवती सेठां रै घरै आई। पूछ-ताछ करी। अचांणक आ कांई अजोगती वात व्ही ? कुण चलियौ ? किणी री साज-मांद तौ सुणी ई नीं ही। घरवाळी लुगायां जवाब दियौ—म्हांनै तौ आ जांणण री फुरसत ई नीं मिळी। कंवरसा नै रोवता देख्या तौ म्हां ई रोवण लागगी।—फुलवाड़ी
२ समय, अवकाश। उ०—इण खातर सोनार भांवी सूं मीठी-मीठी वातां करी। उणनै तवांकू पायी। मारग में दोपारी कराई। थावस दियौ के कदेई फुरसत मिळी तौ उण रै रांम-सा पीर री मूरत बणाय देवैला।—फुलवाड़ी
३ निवृत्ति, छुट्टी।
ज्यूं०—म्हनै अबै पढ़ाई सूं फुरसत व्हैगी।

फुरसरांम, फुरुसरांम, फुरुसरांमि—देखो 'परसुरांम' (रू. भे.)
उ०—१ रथगजास्ट सहस्र जउ निरजणइ, दस सहस्र महाभट जो हणइ। फुरसरांम महाहवि निरजणिउ, इसिउं भीस्म पितामह मइं थुणिउ।—सालिसूरि
उ०—२ हरिस्चंद्र चांडाल तणइ घरि पांणी वह्यउं, फुरुसरांमि जननीवधु कीधउ।—व. स.

फुरोळणौ, फुरोळबौ—देखो 'फुरळणौ, फुरळबौ' (रू. भे.)
उ०—फुरोळि फाड़ि डाडरा नहाळ मखंती गळां। करंति देव मेछ कोटि डाकरै खळां डळां।—मा. वचनिका
फुरोळणहार, हारौ (हारी), फुरोळणियौ—वि०।
फुरोळिओड़ौ, फुरोळियोड़ौ, फुरोल्योड़ौ—भू० का० कृ०।
फुरोळीजणौ, फुरोळीजबौ—कर्म वा०।

फुरोळियोड़ौ—देखो 'फुरळियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० फुरोळियोड़ी)

फुल—सं० स्त्री०— अग्नि। (ह. नां. मा.)
वि० [अं०] १ पूर्ण, पूरा।
२ तीव्रगति, तेज।
ज्यूं०—गाडी फुल छोडणी।
३ देखो 'फूल' (रू. भे.)
उ०—सीतल सील छायां वीसमउ भावना, नीरिहिं सींचिउ घरउ। फुल पत्र वार देवलोक जांणि, एह व्रिक्ष, नउं फल मुकति निरखांणि।—वस्तिग

फुलकौ—सं० पु० [सं० फुल्लक] हल्की और पतली रोटी।
रू० भे०—फलकौ।
अल्पा०—फलकी।

फुलगार—सं०पु० [सं० फुल्ल+कार:] १ शाक, रायता आदि में खुशबू देने के निमित्त व स्वाद-बढ़ाने के लिए आग पर घी डालकर वर्तन उल्टा रखकर दिया हुआ धुंगार। २ इस प्रकार से उत्पन्न सुगंध।

फुलगारणौ, फुलगारबौ—क्रि० स० [राज० फुलगार+णौ] शाक, रायता आदि में खुशबू देने के निमित्त व स्वाद बढ़ाने हेतु आग पर घी डालकर वर्तन उल्टा रखकर धुंगार देना।
फुलगारणहार, हारौ (हारी), फुलगारणियौ—वि०।
फुलगारिओड़ौ, फुलगारियोड़ौ, फुलगारचोड़ौ—भू० का० कृ०।
फुलगारीजणौ, फुलगारीजबौ—कर्म वा०।

फुलगारियोड़ौ—भू० का० कृ०—फुलगार दिया हुआ.
(स्त्री० फुलगारियोड़ी)

फुलड़ौ—१ देखो 'फूल' (अल्पा., रू. भे.)
२ देखो 'फूलड़ौ' (रू. भे.)
३ देखो 'फूली' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—लाहोर कसूर री वणी ठावी, घणी वनात में लपेटी थकी, घणै कलावूत सूं गूंथी थकी, रूपै री कुहरी फुलड़ी जीभी लागी थकी, तिके ठावी साठ-साठ तीरा सूं भरी थकी, तिके किण भांत रा तीर छै ?—रा. सा. सं.

फुलड़ौ—देखो 'फूल' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—जाळी वी निरखी, ओ वीजां झरोखा वी निरख्या जी राज, फुलड़ां री सेजां भांणजड़ा री मन रल्यौ जी।—लो. गी.

फुलछड़ी, फुलझड़ी—देखो 'फूलझड़ी' (रू. भे.)

फुलण—देखो 'फूलण' (रू. भे.)

फुलणौ, फुलबौ—देखो 'फूलणौ, फूलबौ' (रू. भे.)
उ०—१ घड़ रत वहै घाव कर घूमै, घायल पड़ै हौफरै घूमै। हद ओपमा तेण रिख हासां, पवन झुलै किर फुलै पळासां।—सू. प्र.
उ०—२ प्रीतम मारा भमरलां जी, कांइक कीजै संक। फुल्या दीसै फुटरां जी, आफु आडै अंक।—वि. कु.
फुलणहार, हारौ (हारी), फुलणियौ—वि०।
फुलाड़णौ, फुलाड़बौ, फुलाणौ, फुलाबौ, फुलावणौ, फुलावबौ—प्रे० रू०।
फुलिओड़ौ, फुलियोड़ौ, फुल्योड़ौ—भू० का० कृ०।
फुलीजणौ, फुलीजबौ—भाव वा०।

फुलपगर—देखो 'फूलपगर' (रू. भे.)
उ०—वायु देवता अंगणइ वुहारइ, चउरासी मेघ छडा छावडा दिइ, वनस्पति फुलपगर भरइं, जमराउ भइंसा रूपि पांणी वहइ।—व. स.

फुलमद—देखो 'फूलमद' (रू. भे.)
उ०—अधुलो प्रोहित माजम कसुमा लै छै, परगहैनै फुलमद का प्याला दै छै।—वगसीरांम प्रोहित री वात

फुलमाळ—देखो 'फूलमाळ' (रू. भे.)

फुलरड़ी—देखो 'फूलरी' (अल्पा., रू. भे.)
फुलरी—देखो 'फूलरी' (रू. भे.)
फुलवांद—देखो 'फुलवाद' (रू. भे.)
उ०—बागां-बागां वावड़्यां, **फुलवांदां** चहुंफेर । कोयल करै टहूकड़ां, अइ हो घर आंवेर ।—अज्ञात
फुलवाई,फुलवाड़ी–सं०स्त्री० [सं० फुल्ल+वाटिका] पुष्पवाटिका,उद्यान ।
उ०—जहां अंब नहीं बाग नहीं, फुलै न **फुलवाई** । रागरंग जहां नहीं, नहीं जहां सुघड़ लुगाई । नदी ताळ जहां नहीं, नहीं जहां वापी सर कुवा । सब ही ऊजड़ देस, देख मन विरकत हुवा ।
—दूलची जोइयै री वारता
रू० भे०—फुलवारी, फुलवाड़ी ।
फुलवाद, फुलवादि–सं० स्त्री० [सं० फुल्ल+वाटिका] १ वह पौधा जिसके फूल लगते हैं, फूलयुक्त पौधा ।
उ०—१ फुली हद **फुलवाद** चली अलवेलियां । वेहद क्यारयां बीच क राज गहेलियां ।—पनां वीरमदे री वात
उ०—२ फूलि आई लेवा फुलां, फूल देख **फुलवादि** ।
—पनां वीरमदे री वात
मुहा०—कच्ची फुलवाद—कायर, बुझदिल ।
२ पुष्प, फूल । उ०—सोनजुह, रियावेल,चंवेल, चंवेली के फुलवाद, मोगरै की महक, गुलाव फूलूं की सुगंध जवाद ।—सू. प्र.
रू० भे०—फुलवांद, फुलाद, फूलाद ।
फुलवारी–सं० पु०—१ एक रंग विशेष का घोड़ा ।
उ०—घोड़ा सात सौ अवलख, समंदा-मंवर, गंगाजळ, संजय, कुम्मेद और गुलदारी **फुलवारी** तयार कराया त्यांरै सुनहरी, रूपहरी सागे साखत साज सजाया ।—जलाल वूबना री वात
२ देखो 'फुलवाड़ी' (रू. भे.)
फुलांणो—देखो 'फलांणो' (रू. भे.)
उ०—ताहरां कुंवर कही—म्हारा तीन्ह चाकर छै । हूं वीच राख आयो छुं । तेना ए पातलां परासूं छुं । **फुलांणो** राजा री वेटी छुं ।—चोवोली
फुलाड़णो, फुलाड़बो—देखो 'फुलाणो, फुलाबो' (रू. भे.)
फुलाड़णहार, हारो (हारी), फुलाड़णियो—वि० ।
फुलाड़िओड़ो, फुलाड़ियोड़ो, फुलाड़्योड़ो—भू० का० कृ० ।
फुलाड़ीजणो, फुलाड़ीजबो—कर्म वा० ।
फुलाड़ियोड़ो—देखो 'फुलायोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री० फुलाड़ियोड़ी)
फुलाणो, फुलाबो–क्रि० स० [राज० 'फूलणो' क्रि० का प्रे० रू०]
१ किसी वस्तु में वायु भरकर विस्तार वढ़ाना ।
२ पुलकित या आनन्दित करना या कराना ।
३ किसी के मन में अभिमान पैदा करना, गर्वित करना ।
मुहा०—गाल फुलाणो—अभिमान से रुष्ट होना,: सारहीन बातें करना ।
४ फूलों से युक्त करना ।
फुलाणहार, हारो (हारी), फुलाणियो—वि० ।
फुलायोड़ो—भू० का० कृ० ।
फुलाईजणो, फुलाईजबो—कर्म वा० ।
फुलाड़णो, फुलाड़बो, फुलावणो, फुलावबो, फूलाड़णो, फूलाड़बो, फूलाणो, फूलाबो, फूलावणो, फूलावबो—रू० भे० ।
फुलाद—देखो 'फुलवाद' (रू. भे.)
उ०—जळ नळां रा फुहारा छूटि नै रहीया छै । क्यारे गुलकारी, रंग रंग री बूंटी, फुलाद री सबजी लागि नै रही छै ।—रा. सा. सं.
फुलायोड़ो–भू० का० कृ०—१ किसी वस्तु का हवा भरकर विस्तार वढ़ाया हुआ, फुलाया हुआ. २ पुलकित या आनन्दित किया हुआ. ३ किसी के मन में गर्व पैदा किया हुआ, गर्वित किया हुआ. ४ फूलों से युक्त किया हुआ.
(स्त्री० फुलायोड़ी)
फुलाळो—देखो 'फूलाळो' (रू. भे.)
(स्त्री० फुलाळी)
फुलावणो, फुलावबो—देखो 'फुलाणो, फुलाबो' (रू. भे.)
फुलावणहार, हारो (हारी), फुलावणियो—वि० ।
फुलाविओड़ो, फुलावियोड़ो, फुलाव्योड़ो—भू० का० कृ० ।
फुलावीजणो, फुलावीजबो—कर्म वा० ।
फुलावियोड़ो—देखो 'फुलायोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री० फुलावियोड़ी)
फुलिंग–सं० पु० [सं० स्फुलिंग] अग्निकण ।
फुलियोड़ो—देखो 'फूलियोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री० फुलियोड़ी)
फुलिसकेप–सं० स्त्री० [अं०] लगभग १२"×१५" माप का कागज ।
फुली—१ देखो 'फूली' (रू. भे.)
२ देखो 'फूल' (अल्पा., रू. भे.)
फुलेल–सं० पु० [सं० फुल्ल+तैल] फूलों की महक से युक्त तेल ।
उ०—१ अमित गुलालां अरगजां, केसर अतर **फुलेल** । हुवै सबोळी मंडळी, होळी हंदा खेल ।—रा. रू.
उ०—२ तारै ढोलोजी मांहि पधारीया, सहेलीयां हथियार खोलाया । फुलेल कुमकुमां रा पांणी सूं मंजण सिनांन कराया ।—ढो. मा.
रू० भे०—फूलेल ।
फुलेली–सं० स्त्री०—काच आदि का वह बड़ा बरतन जिसमें फुलेल रखा जाता है ।
फुलोत्तर—देखो 'फूलग्रांत' (रू. भे.)
फुल्ल–वि० [सं० फुल्ल्] १ फूला हुआ, विकसित ।
२ देखो 'फूल' (रू. भे.)
उ०—सव्वे भला मासड़ा, पण वइसाह न तुल्ल । जे दवि दाधा रूंखड़ां, तीहूं माथइ फुल्ल ।—रा. सा. सं.

फुल्ली—१ देखो 'फूल' (अल्पा., रू. भे.)
२ देखो 'फूलड़ी' (रू. भे.) (शेखावाटी)
३ देखो 'फूलरी' (रू. भे.)
४ देखो 'फूली' (रू. भे.)

फुल्लौ—देखो 'फूलौ' (रू. भे.)

फुवारौ—देखो 'फंवारौ' (रू. भे.)

फुस, फुसकी—सं० स्त्री० [अनु०] १ बहुत धीमी एवं अस्पष्ट ध्वनि।
उ०—सायणियां फुस-फुस करती बोली—लाख मोत्यां थाळी इण लागीणी रात री यूं बारै ऊभां पापौ काट्यां कीकर सरसी।
—फुलवाड़ी
२ अपान वायु एवं अपान वायु के पुरस्सरण की ध्वनि।
क्रि० प्र०—काढ़णी।
मुहा०—फुसकी काढ़णी—किसी कार्य को अधूरा छोड़ देना।
[सं० स्पृशः] ३ स्पर्श।
४ देखो 'फिस' (रू. भे.)

फुसफुसाणौ, फुसफुसावौ—क्रि० स० [अनु०] धीरे-धीरे अस्पष्ट आवाज निकालना, फुस-फुस शब्द करना।
फुसफुसाणहार, हारौ (हारी), फुसफुसाणियौ—वि०।
फुसफुसायोड़ौ—भू० का० कृ०।
फुसफुसाईजणौ, फुसफुसाईजवौ—कर्म वा०।

फुसफुसायोड़ौ—भू० का० कृ०—धीरे-धीरे अस्पष्ट आवाज निकाला हुआ, फुस-फुस शब्द किया हुआ.
(स्त्री० फुसफुसायोड़ी)

फुसलाणौ, फुसलावौ—क्रि० स० [राज०] १ मीठी-मीठी बातें बनाकर किसी को अपने अनुकूल करना, राजी करना।
२ बहकाना।
फुसलाणहार, हारौ (हारी), फुसलाणियौ—वि०।
फुसलायोड़ौ—भू० का० कृ०।
फुसलाईजणौ, फुसलाईजवौ—कर्म वा०।
फुसलावणौ, फुसलाववौ—रू० भे०।

फुसलायोड़ौ—भू० का० कृ०—१ मीठी मीठी बातें बना कर किसी को अपने अनुकूल किया हुआ, राजी किया हुआ.
२ बहकाया हुआ.
(स्त्री० फुसलायोड़ी)

फुसलावणौ, फुसलाववौ—देखो 'फुसलाणौ, फुसलावौ' (रू. भे.)
फुसलावणहार, हारौ (हारी), फुसलावणियौ—वि०।
फुसलाविओड़ौ, फुसलावियोड़ौ, फुसलाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
फुसलावीजणौ, फुसलावीजबौ—कर्म वा०।

फुसलावियोड़ौ—देखो 'फुसलायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० फुसलावियोड़ी)

फुहड़, फुहड, फुहडौ—देखो 'फूड़' (रू. भे.)
उ०—१ मांकुए मांचां भरिया, जु भरियां गोदडां कांन मिलि भरियां, रालडां फुहडा, पग भरिउ साडलउ।—व. स.
उ०—२ मलमलिन सरीर, दीठइ ओकारां आवइ, इसी फुहडी सुगांमणी घरनारि कलिकालि घणी।—व. स.

फुहली—देखो 'फूहली' (रू. भे.)

फुहार—देखो 'फंवारौ' (मह., रू. भे.)

फुहारौ—देखो 'फंवारौ' (रू. भे.)

फुही—सं० स्त्री०—एक प्रकार का जंगली मांसाहारी छोटा जानवर विशेष जो रात्रि को बोलता है तो ऐसा प्रतीत होता है मानों मुंह से आग निकल रही हो, 'फेतकार'।
रू० भे०—फंही, फूही, फोई, फोही।

फूं—सं० स्त्री० [अनु०] किसी प्राणी के मुंह से वेग से निकली हुई वायु से उत्पन्न ध्वनि।

फूंक—सं० स्त्री० [अनु०] १ मुंह को संकुचित करके वेग से छोड़ी जाने वाली या निकलने वाली हवा, सांस, मुंह की हवा।
उ०—१ ढेमकी में बैठ्यां पछै वौ कह्यौ—यें चारूं मांमियां ढेमकी रै फूंक दौ।—फुलवाड़ी
उ०—२ वा आपरा हाथां सूं इण राज री सींव रै बारै वांनै औ लाडू खवाड़ देवैला। खातां ई कंवरां री फूंकां सांस निकळ जावैला।
—फुलवाड़ी
उ०—३ पावक सिव चख प्रबळ, सेस फूंका विखि सब्बळ। मझि धरियौ ध्रत समंद, नीर काढ़ै वड़वानळ।—सू. प्र.
क्रि० प्र०—दैणी, निकळणी, मारणी, लगाणी।
मुहा०—१ फूंक निकळणी—मर जाना, कहकर बदल जाना, कार्य में असफल होना। २ फूंक खींचणी—धूम्रपान करना। ३ फूंक लगाणा—अपव्यय करना।
२ मंत्र पढ़ते हुए मुंह से छोड़ी जाने वाली वायु, फूत्कार।
अल्पा०—फूकी, फूको।

फूंकण—वि० [अनु०] फूंक मारने वाला।
सं० पु०—एक प्रकार का जहरीला जन्तु जिसकी फूंक से प्राणी मर जाता है।

फूंकणी—सं० स्त्री०—१ काष्ठ, धातु आदि की बनी वह पतली नली जिससे हवा फूंककर आग सुलगाई जाती है।
२ भाथी।

फूंकणौ—सं० पु०—रबड़ का बना एक बच्चों का खिलौना जिसमें हवा भरने पर वह गेंद सा हो जाता है, गुब्बारा।
रू० भे०—फूंको, फूको।

फूंकणौ, फूंकबौ—क्रि० स० [अनु०] १ मुंह को संकुचित कर वेग से वायु छोड़ना।
२ मन्त्र आदि पढ़ते हुए मुंह से वायु छोड़ना, फूंक मारना।

उ०—नेड़ा वेसां जाय नित, सीगो मित्र समांन। क्यूं मोनै गुर ना कहौ, किल फूंकां जग कांन।—बां. दा.
३. मुंह से बजाए जाने वाले बाजों को फूंक कर बजाना।
४ जलाना, भस्म करना।
५ नष्ट करना, नाश करना। उ०—फूंकण नवकोटी झंडा फरहरिया, घर घर जाती रा टांमक घरहरिया।—ऊ. का.
६ किसी धातु की रासायनिक रीति से भस्म बनाना।
७ सताना।
फूकणहार, हारौ (हारी), फूंकणियौ—वि०।
फूकाड़णौ, फूंकाड़वौ, फूंकाणौ, फूंकावौ, फूंकावणौ, फूंकाववौ—प्रे० रू०।
फूंकिओड़ौ, फूंकियोड़ौ, फूंक्योड़ौ—भू० का० कृ०।
फूंकीजणौ, फूंकीजवौ—कर्म वा०।
फुंकणौ, फुंकवौ—रू० भे०।

फूंकरड़—देखो 'फूंकार' (मह., रू. भे.)
उ०—प्रिसण तट न आवै तजै गारड़ि पणौ, चुरस पण न रौपै वांवि-चाळी। करि त्रिजड़ फूंकरड़ हूंत वटका करै, कीलणी न मांनै भुयंग काळौ।—महाराव सेखा कछवाहा रौ गीत

फूंकाड़णौ, फूंकाड़वौ—देखो 'फुंकाणौ, फुंकावौ' (रू. भे.)
फूंकाड़णहार, हारौ (हारी), फूंकाड़णियौ—वि०।
फूंकाड़िओड़ौ, फूंकाड़ियोड़ौ, फूंकाड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।
फूंकाड़ीजणौ, फूंकाड़ीजवौ—कर्म वा०।

फूंकाड़ियोड़ौ—देखो 'फुंकायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० फूंकाड़ियोड़ी)

फूंकाणौ, फूंकावौ—देखो 'फुंकाणौ, फुंकावौ' (रू. भे.)
फूंकाणहार, हारौ (हारी), फूंकाणियौ—वि०।
फूंकायोड़ौ—भू० का० कृ०।
फूंकाईजणौ, फूंकाईजवौ—कर्म वा०।

फूंकायोड़ौ—देखो 'फुंकायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० फूंकायोड़ी)

फूंकार-सं० स्त्री० [सं० फूत्कारः] १ संवेगात्मक उत्तेजना के समय श्वास की तीव्रता के कारण कुछ विशेष प्राणियों द्वारा फूं-फूं के रूप में की जाने वाली ध्वनि, फुफकार, फूत्कार।
उ०—चिखते आरण से लोयण जमराज से असवार काळीनाग ज्यूं करते फुरणूं का फूंकार ऐसे सारवांनूं के हाकलेसैं विमरीर वाघूं परि धाए।—सू. प्र.
२ श्वास।
मुहा०—१ फूंकार करणी—क्रोध प्रकट करना, कुपित होना।
२ फूंकार मारणी, फूंकार लेणी—विश्राम करना, आराम करना।
रू० भे०—फुंकार, फुंफकार, फुफार, फुफकार।
अल्पा०—फूंकारौ, फुंकारौ, फुंफकारौ, फूंकारौ।
मह०—फूंकरड़।

फूंकारणौ, फूंकारवौ-क्रि० स०—१ संवेगात्मक अवस्था में किसी पर आघात करने के भाव से सर्प, मगरमच्छ, भैंस, बैल आदि का फूं-फूं की ध्वनि करते हुए श्वास छोड़ना, फुफकारना, फूत्कारना।
२ श्वास छोड़ना।
फूंकारणहार, हारौ (हारी), फूंकारणियौ—वि०।
फूंकारिओड़ौ, फूंकारियोड़ौ, फूंकार्योड़ौ—भू० का० कृ०।
फूंकारीजणौ, फूंकारीजवौ—कर्म वा०।
फुफकारणौ, फुफकारवौ, फूतकारणौ, फूतकारवौ—रू० भे०।

फूंकारियोड़ौ-भू० का० कृ०—१ क्रोधावस्था में आघात करने के भाव से फूं-फूं की ध्वनि करते हुए श्वास छोड़ा हुआ. (सर्प, मगरमच्छ, भैंस, बैल आदि)
२ श्वास छोड़ा हुआ.
(स्त्री० फूंकारियोड़ी)

फूंकारौ— देखो 'फूंकार' (अल्पा., रू. भे.)

फूंकावणौ, फूंकाववौ—देखो 'फुंकाणौ फुंकावौ' (रू. भे.)
फूंकावणहार, हारौ (हारी), फूंकावणियौ—वि०।
फूंकाविओड़ौ, फूंकावियोड़ौ, फूंकाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
फूंकावीजणौ, फूंकावीजवौ—कर्म वा०।

फूंकावियोड़ौ—देखो 'फुंकायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० फूंकावियोड़ी)

फूंकियोड़ौ-भू० का० कृ०—१ मुंह को संकुचित करके वेग से वायु छोड़ा हुआ. २ मंत्रादि पढ़ते हुए मुंह से वायु छोड़ा हुआ, फूंक मारा हुआ. ३ मुंह से बजाये जाने वाले वाद्यों को फूंक मार कर बजाया हुआ. ४ जलाया हुआ, भस्म किया हुआ. ५ नष्ट किया हुआ, नाश किया हुआ. ६ किसी धातु की रासायनिक रीति से भस्म बनाया हुआ. ७ सताया हुआ.
(स्त्री० फूंकियोड़ी)

फूंकौ—१ देखो 'फूंक' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—रसोई में धूंवा फूंकौ पछै ई कर लेजौ, पैंला बेटा री औ ओळवौ भेलौ।—फुलवाड़ी
२ देखो 'फूंकणौ' (रू. भे.)

फूंगारी-सं० स्त्री०—एक प्रकार का भूफोड़।
उ०—फूबेडी नइं फणगरी, फूंगारी नइं फांगि। फूणा फूली फूमती, फोफल फूली सांगि।—मा. कां. प्र.

फूंणौ—देखो 'फुणौ' (रू. भे.)

फूंतकार—देखो 'फूतकार' (रू. भे.)
उ०—सारां देवा जिसी फुणांटा करां कुसाळीसिंग, करै फूंतकारां

कोप आखरां सकाज । पात के गारड़ु थाका गोरावां ठाकरां पढ़ै,
राखै कांण आखरां तो जिहा नागराज ।—कविराजा करणीदांन

फूंतरी—सं० पु० [देसज] किसी पदार्थ का छिलका ।
अल्पा०—फुंतरको, फुतरको ।

फूंतारियौ—सं० पु०—उदयपुर का एक सिक्का विशेष जो एक आने का बारहवां हिस्सा होता था ।

फूंद—देखो 'फूंदौ' (मह., रू. भे.)
उ०—पाई कंकण सिर बंधीयो मोड़, प्रथम पयांणउ दूरग चीतोड़ ।
राता फूंदा पाटका, ब्राह्मण उचरइ वेद पुरांण ।—वी. दे.

फूंदाळ—देखो 'फूंदाळौ' (मह., रू. भे.)

फूंदाळौ—वि० (स्त्री० फूंदाळी) बहुत से गुच्छों वाला, फूंदों वाला ।
उ०—१ लोई ओढ़णनै साड़ी लूमाळी, फूटर लटकंती नाड़ी फूंदाळी ।
पावां पचढोरी पगरखियां पै'रै, नूरत सिघण सी वन जंगळ बैरै ।
—ऊ. का.
उ०—२ बांमण नांमी फूंदाळी राखड़ी सिघ रा पंजा रै बांध दी ।
—फुलवाड़ी

फूंदी—सं० स्त्री० [देशज] १ तितली । उ०—भांत-भांत रा रळियावणा रूड़ा पंखेरू रळियां करता हा—हंस, कळहंस, राजहंस, सारस, बुगला, सूवटा, मोर, कोयलां, कबूड़ा, कमेड़ी, टींटोड़ी, तीतर, तिलोर, बाटवर, मैना, फूकड़ा, फूंदियां, भंवरा, खातीचिड़ा, नुगनचिड़ी, कावर, कोचर, गोगू, कुरज, जळकाग, बटेर अर सोवनचिड़ी सरब इत्याद पंछी मीठा बोल सुणावता हा ।—फुलवाड़ी
२ बालिकाओं द्वारा किया जाने वाला एक प्रकार का नृत्य ।
क्रि० प्र०—खाणी, लैणी ।
३ उक्त नृत्य के साथ गाया जाने वाला लोक-गीत ।
४ देखो 'फूंदौ' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—पिचरंगा सूत री नायां अर पिचरंगा भळेवड़ा, रेसमी, फूंदियां, सूत री राहड़ियां ।—फुलवाड़ी
रू० भे०—फुंदी, फुंद्री, फूंद्याळी, फूंभी ।

फूंदौ—सं० पु० [देशज] १ रंग विरंगे धागों या सूत से बनाया हुआ वह छोटा त्रिभुजाकार अथवा गोल गुच्छा जो सजावट या सुन्दरता के लिए किसी वस्त्र, वन्दरमाल अथवा आभूषण आदि में प्रयुक्त किए जाने वाले धागों के किनारे पर बांधे जाते हैं या लगाये जाते हैं ।
२ देखो 'राखड़ी' ।
रू० भे०—फुंदौ ।
मह०—फूंद ।

फूंद्याळी—देखो 'फूंदी' (रू. भे.)
उ०—फजरां हयणीं सी दधि मथणीं फुरती, माटां घरघर में घणहरसी घुरती । खूली आयणियां साथणिया खाती, फूली-फूली फिर फूंद्याळी गाती ।—ऊ. का.

फूंद्याळीडोरी—सं० स्त्री० यौ० [देशज] लड़कियों द्वारा गाए जाने वाला लोक-गीत ।

फूंफां—सं० स्त्री० [अनु०] जोर-जोर से श्वास लेने से उत्पन्न ध्वनि । (रोश)
उ०—इत्ता में हाथ भर लांबी जीभ लटकायां अेक डाकण फूंफां फूंफां करती दरबार में आई ।—फुलवाड़ी

फूंफाड़ियौ—वि०—१ मुंह या नाक से फूं-फूं शब्द करने वाला, फुफकार करने वाला ।
२ किसी कार्य को शीघ्रता से कराने वाला, जल्दबाज ।
३ देखो 'फूंफाड़ौ' (अल्पा., रू. भे.)
रू० भे०—फूंफाड्यौ ।

फूंफाड़ौ—सं० पु० [अनु०] १ नाक या मुंह से श्वास की तेज गति के साथ निकलने वाली ध्वनि, फुफकार, फूत्कार ।
उ०—भीरू आरातुर मूंफाड़ा भाजै, बैं'तां फुरणां रा फ्रूंफाड़ा वाजै । हाली मूंछ रा लेता हटकारा, फिरता पूंछा रा देता फटकारा ।—ऊ. का.
२ क्रोधावस्था में नाक से तेज श्वास लेने के साथ उत्पन्न ध्वनि ।
उ०—थनै कित्ती वार वरजियौ के किणी सूं बोछरड़ायां मत कर । पण थारै तौ हायां पगां दीया वळै । थूं म्याळमिन्ना री मूंछियां वयूं कुरटी । वौ रीस में फूंफाड़ा करतौ आयौ ।—फुलवाड़ी
मुहा०—१ फूंफाड़ौ करणौ—क्रोध व्यक्त करना, कुपित होना ।
२ फूंफाड़ौ खाणौ—हलका विश्राम लेना ।
रू० भे०—फुंफाड़ौ, फ्रूफाड़ौ ।
अल्पा०—फूंफाड़ियौ, फूंफाड्यौ ।

फूंफाड्यौ—१ देखो 'फूंफाड़ियौ' (रू. भे.)
२ देखो 'फूंफाड़ौ' (अल्पा., रू. भे.)

फूंफी—सं० स्त्री० [सं० पुष्पी, प्रा० पुप्फी] पिता की बहिन, बुआ ।
रू० भे०—फूफी ।

फूंफौ—सं० पु० [सं० पुष्पा, प्रा० पुप्फा] (स्त्री० फूंफी) बुआ का पति ।
उ०—जिण अरभक (बालक) लाड में मत्त, एकण दिन कंदुक री क्रीड़ा करतां आघात री अपराध मांनि कोई ग्रांम्य स्त्री रा कहण हूं फूंफा समुद्रसिंह नूं आपरा बाप री मारणहार जांणियौ ।—वं. भा.
रू० भे०—फूफौ ।

फूंवड़ौ—देखो 'पूंगड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० फूंवड़ी)

फूंवदौ—सं० पु० [देशज] रुई या अन्य रेशेदार पदार्थ का छोटा भाग, गुच्छा, अंश या टुकड़ा ।
उ०—मील री फाटक माथै पै'रण रा गाभां री संभाळी लेवता तौ ई वौ पिंजारी खूंजिया में घालनै रुई रा अेक दो फूंवदा तौ ले ई आवती ।—फुलवाड़ी

रू० भे०—फूंमदौ, फूवदौ, फूभदौ, फूमदौ।

फूवी—देखो 'फुंवी' (रू. भे.)

फूवौ—देखो 'फुवौ' (रू. भे.)

उ०—नाक में अंतर रा फूंवा राखै, आडौ कपड़ौ राखै। —फुलवाड़ी

फूंभड़ौ—देखो 'पूंगड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० फूंभड़ी)

फूंमी-सं० स्त्री० [सं० पुष्पुम्भी] १ वाजरी के वाल पर आने वाला वह फूसनुमा पदार्थ जो वाजरी के वाल में दाना पड़ने का द्योतक होता है।

२ देखो 'फुंवी' (रू. भे.)

३ देखो 'फूंदी' (३) (रू. भे.)

रू०भे०—फूमी।

फूंभौ—देखो 'फुंवौ' (रू. भे.)

उ०—राहु निसत्त करै ग्रसि तेहनइ, जांणी रू नै फूंमौ। तेहज राहु जिनेसर सेवा, करइ सदाइ ऊभौ।—वि. कु.

फूंमदौ—देखो 'फूंवदौ' (रू. भे.)

उ०—विणियां में रूई री ठौड़ सोना रा ई फूंमदा निपजता व्हे तौ कैड़ौ नांमी कांम रैवै।—फुलवाड़ी

फूमी—देखो 'फूंभी' (रू.भे.)

फूंहारौ—देखो 'फंवारौ' (रू. भे.)

उ०—रुधिर की धार साथै ही ऊछळै छै। जकै फूंहारां की सी रोस अंग ऊपर मिळै छै।—पनां वीरमदे री वात

फूंही—देखो 'फुही' (रू. भे.)

उ०—उलकापात उडंड, पवन छूटौ रज वूठी। सादै फूंही विकट, दिवस राजा सुर ऊठी।—मा. वचनिका

फू-सं० पु०—१ फूंक। २ ऋण। ३ भू, भूमि। ४ शरण। ५ वचन। ६ घास। ७ तिनका, तृण। ८ कुश। (एका०)
९ कूड़ा-करकट, कचरा।
मुहा०—फू री ओडी माथै ऊंचाणी—बदनाम होना।
सर्व०—सर्व, सब। (एका०)
वि०—अफल, निष्फल। (एका०)

फूकणूं-सं० पु०—१ फेफड़ा। (डिं. को.)

२ देखो 'फूंकणौ' (रू. भे.)

फूकौ-सं० पु०—१ देखो 'फूंक' (अल्पा, रू. भे.)

२ देखो 'फूंकणौ' (रू. भे.)

३ देखो 'फाकौ' (रू. भे.) (वीकानेर)

फूड़-वि०—१ वह व्यक्ति जिसके कार्य में कुशलता न हो, अदक्ष।

उ०—कांमी कूड़ प्रपंच घणाकर, भूड़ करै तन भेर। ऊ साध्वी दिस धूड़ उडायर, फूड़ वतावै फेर।—ऊ. का.

२ अभद्र, भद्दा, वेशउर, अशिष्ट। उ०—अेक चौधरी जवांन री वेड़ी अर फूड़ अंत इज घणी हौ।—फुलवाड़ी

३ मैला-कुचैला।

४ भद्दी व वेढ़ंगी चाल वाला।

सं० पु०—ध्वनि।

उ०—वस होत वधावा चोहट चावा, भट छावा भूमंदा है। संतां ढिग संका अवम असंका, फूड़ फूड़ फूंकंदा है।—ऊ. का.

रू० भे०—फुहड़, फुहड, फूह, फूहड़, फूहड, फूहड़ि।

फूड़ियौ-सं० पु०—कुत्ते या विल्ली का विष्ठा।

फूट-सं० स्त्री० [सं० स्फुट] १ फूटने की क्रिया या भाव।

२ पृथक होने का भाव।

३ पारस्परिक विरोध या वैमनस्य, आपसी अनवन या विगाड़।

उ०—१ किणी अेक रै साथै न्याव व्हियां तीन जणा सायै अन्याव व्हैला। किणनै वेराजी करै। घर में फूट पड़ जावैला।—फुलवाड़ी

उ०—२ मन अकवर मजवूत फूट हींदवां वेफिकर। काफर कोम कपूत, पकड़ू रांण प्रतापसी।—दुरसौ आढ़ौ

उ०—३ देस में अंग्रेज आयौ कांई कांई लायौ रे, फूट नांखी भायां में वेगार लायौ रे, काळी टोपी रौ, हां हां काळी टोपी रौ, देस में छावणियां नांखै रे काळी टोपी रौ।—लो. गी.

४ वाजरी के पौधे की पेरी में से निकलने वाला अंकुर।

फूटण, फूटणी-सं० स्त्री० [सं० स्फुटनम्] १ फूट कर अलग होने वाला टुकड़ा या भाग।

२ शरीर के संधि स्थलों में होने वाली पीड़ा। (अमरत)

फूटणौ, फूटबौ-क्रि० अ० [सं० स्फुटनम्] १ किसी कठोर वस्तु का दवाव अथवा आघात पाकर टूटना, टुकड़े होना।

उ०—चार पांचेक सायणियां घोड़ा री फेट में आयगी। धड़ावड़ पारियां फूटण लागी।—फुलवाड़ी

२ आनद्ध (चमड़े से मंढे हुए) वाद्यों में दरार पड़ना, छिद्र होना, फूटना।

उ०—फूटै पुड़ नौवत पड़ी, टूटै डंड निसांण। पेस सहेली पीव रै, पूंचै वधियौ पांण।—वी. स.

३ पृथक होना, मतभेद होना, फूट पड़ना।

उ०—भीतरलां फूटां भड़ां, कै खूंटा सांमांन। इण गढ़ में होनी अमल, खम तूं आसिफ खांन।—वां. दा.

४ किसी रोक, वाधा या परदे आदि का दवाव के कारण हट जाना।

ज्यूं०—तळाव फूटणौ, फूंकी फूटणौ, वांध फूटणौ।

५ तालाव, वांध आदि में क्षमता से अधिक पानी भर जाने के कारण पानी का वाहर निकलना।

उ०—नइवाली अगोरिजालि, प्रवाह छूटइं, वंध फूटइं। देहरि दंड कलस आंमलसारा, सोना तणा झलकइं।—सभा.

६ मर्यादोल्लंघन होना, सीमा छोड़ना।

उ०—रज भूधर व्योम आच्छाद रहै, वहते फिर फूट समुद्र वहै। चर आतर प्रांण पगेस चलै, दिख आया हिंदुसथांन दळै।—रा.रू.

७ शरीर के किसी अंग में चोट लगने पर घाव पड़ना और रक्त बहना।
ज्यूं०—आंख फूटणी, कांन फूटणी, पग फूटणी, पेट फूटणी।
मुहा०—१ कांन फूटणी—बहरा होना। २ फूटी आंख नी सुहावणी—अत्यन्त अप्रिय लगना।
८ आरपार होना, वेध कर निकलना।
उ०—१ जग-ज्जेठ जूटै, फरी कूत फूटै। कटक्कै कराळ, जुआ जीण-साळं।—गु. रू. बं.
उ०—२ आ कहता ही पातसाह री सैन मू वजीर री तीर मकवांण री छाती रै पार फूटी।—वं. भा.
९ फोड़े-फुन्सी आदि का पकाव लेने पर मवाद निकलना।
उ०—जद स्वांमी जी कह्यो—किणहि रै गूंबड़ी दुखती घणी नै पछै फूट गयी तो ऊ राजी हुवै के वेराजी हुवै।—भि. द्र.
१० प्रसारित होना, व्याप्त होना।
उ०—१ राणी जांणती के राजकंवरां नै मारण री हुकम सुणतां ई सगळी नगरी में हाको फूट जावैला।—फुलवाड़ी
उ०—२ सोरंभ फूट जव्वाध एम, घण वूठै जळहर लहर जेम। पेखियै तास सोभा परंम, किननागर अंबर जस कदंम।—गु. रू. बं.
उ०—३ राजांन राजावत मारू घरै पधारिआ छै। चौकि कळळ फूटि नै रही छै।—रा. सा. सं.
११ सुरक्षा की दृष्टि से बनाये गये आहते का टूटना या फूटना, आवागमन अबाध गति से खुल जाना।
उ०—उनै एक कर रावणां, त्रिपण कहै सिर फूट। जाचक जन भीतर घसै, फाटक पड़िया फूट।—बां. दा.
१२ रासायनिक पदार्थों, आतिशबाजी के पटाकों एवं बम आदि का विस्फोट होना।
१३ किसी वस्तु का अनावरित होकर स्पष्ट रूप से लक्षित होना, बाहर निकलना, बहना।
उ०—वा आपरा हांचळ उघाड़नै कह्यो—जे म्हैं थारी मां हूं तो म्हारै हांचळां सूं दूध री वत्तीस धारावां फूटै।—फुलवाड़ी
१४ ऊपरी दवाव हटाकर बाहर निकलना, प्रस्फुटित होना, अंकुरित होना।
उ०—काची कूंपळ फूल फळ, फूटी सा वणराय। बाड़ी भरी बसंत री, लूटी लूग्रां आय।—लू
१५ शाखा रूप में विभक्त होना, पृथक होना।
१६ शरीर के संधि-स्थलों में पीड़ा या दर्द होना।
१७ किसी गुप्त बात का भेद खुल जाना, रहस्योद्घाटन होना।
१८ किसी स्थान से चुपचाप रवाना हो जाना, खिसक जाना, भाग जाना।
ज्यूं०—अठा सूं अवै फूटणी छोको है।
१९ किसी तरल पदार्थ का रिसकर एक ओर से दूसरी ओर निकल जाना।

फूटणहार, हारौ (हारी), फूटणियौ—वि०।
फूटिओड़ौ, फूटियोड़ौ, फूटयोड़ौ—भू० का० कृ०।
फूटीजणौ, फूटीजवौ—भाव वा०।
फुट्टणौ, फुट्टवौ—रू० भे०।

फूटर—सं० पु० [देशज] १. निर्मल, स्वच्छ।
उ०—ओथ बावड़ी, पागोड़ा थिर नीलम जड़िया, रतन-नळ जुत हेम-कंवळ जळ फूटर भरिया।—मेघ.
२ देखो 'फूटरौ' (मह., रू. भे.)
उ०—लोई ओढणनै साड़ी लूमाळी, फूटर लटकंती नाड़ी फूंदाळी। पावां पचडोरी पगरखियां पैरै, सूरत सिघण सी वन जंगळ वैरै।—ऊ. का.
(स्त्री० फूटरी)

फूटरमल—सं० पु० [राज० फूटर+सं० मल्ल] पति।
उ०—आयी सगैजी री सूवटी, हे आयी सगैजी री सूवटी, ओ लेग्यो टोळी मां सूं टाळ, फूटरमल ले चाल्यौ।—लो. गी.
वि०—सुन्दर, मनमोहक।
उ०—वन्ना में थांनै फूटरमल यूं कयौ, जटकै नै सरवरियै मत जाय वन्ना, पिणियारियां री नीजर लागणी।—लो. गी.

फूटरियौ—देखो 'फूटरौ' (अल्पा,. रू. भे.)
उ०—फूटरिया हिरणी जणै, वोह कूदणी घट्ट। ज्यांरी मांही वांकड़ी, थांभै रासै थट्ट।—डाढ़ाळा सूर री वात

फूटरौ—वि० [देशज] (स्त्री० फूटरी) १ सुन्दर, मनमोहक।
उ०—एक तणा बांधव भरतार, एक तणा फूटरा कुमार। जे जे हता रिण वाउला, एक तणा मारचा माउला।—कां. दे. प्र.
२ गुणवान।
उ०—भूंडी म्हैं, वा फूटरी,-ज्यां चंपो. नै ववूल। पड़ी घरांणा गायनै, धोवां-धोवां धूळ। धोवां-धोवां धूळ, मूळ सू काया मांडा। कालेजां री मेजां में, संग सेजां रांडां। अंगरेजी पढ़ियां री वाई, अकल ऊंडी। अणपरणी है घणी फूटरी, परणी भूंडी।—आशुकवि पं० नित्यानंद शास्त्री
३ साफ सफाई वाला, सुव्यवस्थित।
रू० भे०—फूठरी, फुटरौ, फूठरौ।
यौ०—फूटरमल।
अल्पा०—फूटरियौ।
मह०—फूटर।

फूटियोड़ौ—भू० का० कृ०—१ कोई कठोर पदार्थ आघात या दवाव पाकर टूटा हुआ. २ कोई नरम पदार्थ (वस्तु) आघात या दवाव से विदीर्ण हुवा हुआ, फटा हुआ, नष्ट हुवा हुआ. ३ पृथक हुवा हुआ, मत-भेद हुवा हुआ. ४ कोई रोक, बाधा या परदा आदि दवाव के कारण हटा हुआ. ५ दरार पड़ा हुआ, छिद्रित. (आनद्धवाद्य)

६ क्षमता से अधिक पानी आजाने के कारण पानी बाहर निकला हुआ. (तालाव, बांध आदि) ७ शरीर के किसी अंग में चोट लगने पर घाव पड़ा हुआ, रक्त बहा हुआ. ८ मवाद निकला हुआ. (फोड़ा-फुन्सी) ९ शरीर का कोई अंग चोट आदि लगने से विकृत या वेकार हुवा हुआ. १० प्रसारित हुवा हुआ, व्याप्त हुवा हुआ. ११ सुरक्षा की दृष्टि से बनाया गया अहाता आदि टूटा हुआ, आवागमन अवाध गति से खुला हुआ. १२ कोई रासायनिक पदार्थ, आतिशबाजी का पटाका या बम विस्फोट हुवा हुआ. १३ कोई पदार्थ अनावरित होकर स्पष्ट रूप से लक्षित हुवा हुआ, बाहर निकला हुआ, बहा हुआ. १४ ऊपरी दवाव हटाकर बाहर निकला हुआ, प्रस्फुटित हुवा हुआ. १५ शाखा रूप में विभक्त हुवा हुआ, पृथक हुवा हुआ. १६ किसी गुप्त वात का भेद खुला हुवा, रहस्योद्घाटन हुवा हुआ. १७ किसी स्थान से चुपचाप रवाना हुवा हुआ, खिसका हुआ, भागा हुआ. १८ मर्यादोल्लंघन हुवा हुआ, सीमा छोड़ा हुआ. १९ किसी तरल पदार्थ का रिसकर एक ओर से दूसरी ओर निकला हुआ.

(स्त्री० फूटियोड़ी)

फूटोड़ौ, फूटौ—वि० [सं० स्फुट्] (स्त्री० फूटी, फूटोड़ी) १ फूटा हुआ, छिद्रित।

उ०—चोखा गुरु खोटा गुरु ऊपरै नावा रौ द्रिस्टांत स्वांमी जी दियौ—तीन नावा। एक तौ काठ की साजी नावा, एक फूटी नावा, एक पत्थर नीं नावा।—भि. द्र.

२ टूटा हुआ, भग्न, खण्डित।

उ०— पण वा तौ मलीच सुभाव री इण फूटोड़ा लोटा सूं ई धकावणी चावै। इण कोजा लोटा सूं म्हारी कित्ती भूंडी लागै।

—फुलवाड़ी

३ दरारयुक्त।

उ०—ज्यां में वसिया तीन कुमार—दो ठोटी नै अेक घड़ जांणै ई नीं। ज्यां घड़ी तीन हांडियां—दो फूटोड़ी नै अेक चढ़ै ई नीं।

—फुलवाड़ी

४ वाह्य आघात से क्षत विक्षित। (शरीर का अंग)

उ०—सेवट तिसां मरती उणीज नाडी माथै पांणी पीवण सारू आई तौ कांई देखै के चिड़ौ तौ पाळ माथै मरियोड़ौ पड़ियौ। पेट फूटोड़ौ। कीड़ियां दोळी व्हियोड़ी।—फुलवाड़ी

४ हत् भाग्य।

५ देखो 'फूटियोड़ौ' (रू. भे.)

फूठरौ—देखो 'फूटरौ' (रू. भे.)

उ०—१ ठाकरसा री कांई रोवीलौ चेहरौ अर कांई रूपाळी ओप है। अैड़ौ फूठरौ उणियारौ म्हारी निजरां में तौ नीं आयौ।

—फुलवाड़ी

उ०—२ चिड़ी उठा सूं उटी जको खेत नै इण छेड़ा सूं उण छेड़ा तांई फूठरौ हळ न्हाकियौ।—फुलवाड़ी

फूढ़ीयौ—सं० पु०—१ वृक्ष विशेष ? उ०—फेकारी नइ फालसां, फोफल फणस फणिंद। फूवेढ़ी नइ फूढ़ीया, फालक फिरांमण फिंद।

—मा कां. प्र.

२ देखो 'फूड़ियौ' (रू. भे.)

फूणी—सं० पु०—१ एक प्रकार का शाक विशेष। उ०—फूवेडी नइं फणगरी, फूंगारी नइं फांगि। फूणा फूली फूमती, फोफल फूली सांगि।

—मा. कां. प्र.

२ देखो 'फुणी' (रू. भे.)

फूतकार—सं० स्त्री०—१ लोमड़ी, गीदड़, बन्दर आदि जन्तुओं के मुख से निकलने वाली 'फें-फें' की ध्वनि।

२ देखो 'फूंकार'।

रू० भे०—फुत्कार, फूंतकार, फून्नकार, फूत्कार, फेतकार फेत्कार, फैंतकार, फैंतकारी, फैत्कार, फैंत्कार, फोतकार, फौतकार।

अल्पा०—फूतकारौ।

फूतकारणौ, फूतकारबौ—क्रि० स०—१ लोमड़ी, गीदड़, बन्दर आदि जन्तुओं के द्वारा मुख से 'फें-फें' की ध्वनि करना।

२ देखो 'फूंकारणौ, फूंकारबौ' (रू. भे.)

फूतकारणहार, हारौ (हारी), फूतकारणियौ—वि०।

फूतकारिओड़ौ, फूतकारियोड़ौ, फूतकारयोड़ौ—भू० का० कृ०।

फूतकारीजणौ, फूतकारीजबौ—कर्म वा०।

फूतकारियोड़ौ—भू० का० कृ०—१ मुख से 'फें-फें' की ध्वनि किया हुआ. (लोमड़ी, गीदड़, बन्दर आदि)

२ देखो 'फूंकारियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० फूतकारियोड़ी)

फूतकारौ—१ देखो 'फूतकार' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—कदंमां करगां घाव दाव व्है अभूतकारा, उडै फूतकारा विखां फुणां रा अभाव।—र. ज. प्र.

फून्नकार—१ देखो 'फूतकार' (रू. भे.)

उ०—पैसारा उसारा खरा पाइकांरा, सहै नाग सारा नरां नाइकांरा। मचै मूंठ मारा झरै स्रोण झारा, फणांरा घंणारा करै फून्नकारा।—ना. द.

फूत्कार—देखो 'फूतकार' (रू. भे.)

उ०—१ किहां इक सिवा फूत्कार घूहड़ तणा घू-घू सब्द कार। सिंह तणा सिंहनाद। वाघ तणा गुंजारव। सूअर तणा घर-घरा रव। वांनर फूत्कार करइ।—सभा.

उ०—२ कबहि ठाइ अलिजर तणा फूत्कार, कवहि ठाइ वांनर तणा वोंकार ।—सभा.

फूदड़ी—देखो 'पूगड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० फूदड़ी)

फूदडी—सं० स्त्री० [?] पंखुरी ?

उ०—तीह पासइ नोही पाटण ना कंदोई,आगर ना जांण, परिकर नां प्रमांण, चीत्रांमनी जाति, माहि बत्रीस फूदडी नी भाति ।—व. स.

फूदडौ—देखो 'पूगड़ौ' (रू. भे.)

उ०—कोठा नइ कोसीसां घणां, गुख बार मढ़ मतवारणां । वली धवलहर जोयां चडी, रतनजडित वइठी फूदडी ।—कां. दे. प्र.

(स्त्री० फूदडी)

फूधेडी—सं० स्त्री०—शाक विशेष ?

उ०—फूधेडी नइं फणगरी, फूगारी नइं फांगि । फूणा फूली फूमती, फोफल फूली सांगि ।—मा. कां. प्र.

फूधेढ़ी—सं० स्त्री०—वृक्ष विशेष ?

उ०—फेफारी नइ फालसां, फोफल फणस फणिंद । फूधेढ़ी नइ फूड़ीया, फालक फिरांमण फिंद ।—मा. कां. प्र.

फूनी—सं० स्त्री०—तितली ।

उ०—फरकट फोकटनु फिरइ, फागुण फूफूकार । फूनी मभ फणगर जिसिउ, जउ जगली नही दार ।—मा. कां. प्र.

२ बच्चों की लिंगेन्द्रिय ।

फूफस—सं० स्त्री०—पति या पत्नी की बुआ । (शेखावाटी)

फूफसरौ—सं० पु०—पति या पत्नी की बुआ का पति । (शेखावाटी)

फूफाड़ौ—देखो 'फूंफाड़ौ' (रू. भे.)

उ०—अर जे गूजरी सूं व्याव री वात रौ भणकारौ ई पड़ जावै तौ लोग कांनी-कांनी सूं फूफाड़ा करता दरबार में हाजर व्है जावैला ।—फुलवाड़ी

फूफी—देखो 'फूंफी' (रू. भे.)

फूफूकार—

उ०—फरकट फोकटनु फिरइ, फागुण फूफूकार । फूनी मभ फणगर जिसिउ, जउ जमली नही दार ।—मा. कां. प्र.

फूफौ—देखो 'फूंफौ' (रू. भे.)

उ०—सांवळियौ बहनोई मांगां, सोदरा बहन मांगां । हांडा धोवण फूफौ मांगां, भाड़ू देवण भूवा ।—लो. गी.

(स्त्री० फूफी)

फूवड़ौ—देखो 'पूगड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० फूवड़ी)

फूवदौ—देखो 'फूंवदौ' (रू. भे.)

फूवौ—देखो 'फुंवौ' (रू. भे.)

फूमदौ, फूमदौ—देखो 'फूंवदौ' (रू. भे.)

उ०—कोई अेक जणौ ई म्हारै अंतस रा आखरां नै वांचणियौ व्हैतौ तौ म्हैं दुख रै आडावळा भाखर नै फूमदा ज्यूं उडाय देती ।—फुलवाड़ी

फूरकणी—चम-चम का सा दर्द विशेष । (अमरत)

फूल—वि० [सं० फुल्ल] १ तुलनात्मक दृष्टि से हलका ।

२ खुश ।

० पु०—१ वनस्पति में फलोत्पत्ति का वह मूलभूत तत्त्व जो नियत ऋतु में विभिन्न रंग की पंखुड़ियों, गुच्छों या गांठ के रूप में प्रस्फुटित होता है, कुसुम, पुष्प, पुहुप ।

उ०—आठम प्रहर संभा समै, घण ठव्वै सिणगार । पांन कजळ पासर करै, फूलां कौ गळिहार ।—ढो. मा.

क्रि० प्र०—आणौ, उतरणौ, खिरणौ, खिलणौ, लागणौ ।

मुहा०—१ फूल सूंघणौ—बहुत कम खाना । २ फूल बरसणौ. भड़णौ—मधुर वाणी निकलना ।

यौ०—फूलगोभी, फूलपत्ता, फूलपांखड़ी, फूलपांन, फूलमंडळी, फूलमाळा ।

२ फूल के आकार का आभूषण ।

ज्यूं०—सीस-फूल ।

उ०—मांग फूल सिर फूल जड़ाऊ मंडिया, खिण खिण निरखै नाह, हिए दुख खंडिया ।—बां. दा.

३ भट्टी से प्रथम बार निकाला हुआ शराब जिसका नशा हलका होता है ।

उ०—सोनै रूपै जड़ाऊ के तूंग ऐराक फूल सूं भरवाए । रस के पूर सूंलूं की नुकल वांटि प्याला फिरवाए ।—सू. प्र.

४ हलका नशा ।

५ बलि चढ़ाए हुए पशु का रक्त जिसे बलिदानी भक्त देवी को चढ़ा कर पीते हैं ।

उ०—बाकरां रौ सिल्हाड़नै ठरका हुवै छै । तरवारां रा छणकार हुयनै रह्या छै । चौरंगां री खाटखड़ हुयनै रही छै । कटोरां मांहे फूल लीजै छै । बाकरा होसनाकां बसू कीजै छै ।—रा. सा. सं.

[सं० स्फुलिंग] ६ अग्नि-कण, चिनगारी ।

उ०—१ कांम रौ कोट, नेठाह धरधीर, वहतौ काळ ढहीओ काहर, तोरण रा आखा, अगनि फूल, सती रौ नाळेर, काली री वेहड़ौ, रुळीआरौ रौ जोड़, रांकां री माळवी, कुंआरी घड़ा री वींद, पांच सै भटां भाइयां भांत्रीजां लिआं, हजार असवारां री ढाल किआ. भूखीअै लोह लिआं, काळै बरछिआं रै चूंग किआं, चड़तै सूर री सिकार चड़िआै छै ।—रा. सा. सं.

७ आतिशबाजी से निकलने वाली चिनगारी ।

८ किन्हीं दो वस्तुओं के संघर्षण से निकलने वाली चिनगारी ।

उ०—१ भंडै बाहिर गड्डिके, धुजदंड भुकाया । फूल भराया सांन पै, असि वाढ़ चिरांया ।—वं. भा.

उ०—२ असि धावक आविया, सस्त्र मांजिया सतावी। सांणां चढ़िया सुक्र, फूल झड़िया हद फावी।—मे. म.

क्रि० प्र०—झड़णौ।

९ चिराग की जलती हुई बत्ती पर पड़े हुए गोल दाने जो उभरे हुए से मालूम होते हैं।

१० चिराग का वह उपकरण जिसमें बत्ती रहती है।

११ पशुओं की स्थूलान्त्र जिसे आग में भूनकर मांसाहारी खाते हैं।

उ०—खेह गरद्दी मेहलौ, अब्बीर उडाया। फूल फळेजे फिप्फरै, फवि फांक फुलाया।—वं. भा.

यौ०—फूलआंत।

१२ तलवार। उ०—फूल घावां फरड़कां, अंग लरड़का उडंवा, झिलम टोप झरड़का, खाग जरड़का खुलेवा। सोक तीर सरड़का, वहै खरड़का वगतर, ठेलै प्रेत ठरड़का, रुळै दरड़का रगतर।

—केवाट सरवहियौ

१३ मरे हुए व्यक्ति के नाम पर गले में पहने जाने वाला आभूषण विशेष, पितरों व देवता के नाम का आभूषण।

उ०—मरियां पछै पितर होवै तरै पितरां रा फूल घड़ीजै। सो पितरां रा फूलां मैं मंढ़ाई होजौ तथा मरनै भूत होवै तरै प्रेत री जंत्र मादळिया में तथा चौकी में मंडाईजजो।—वी. स. टी.

क्रि० प्र०—पै'रणौ।

१४ फूल-पत्ती के आकार की चित्रकारी, नक्काशी या वेल-बूंटे।

उ०—गजवोल चित्रह गात, सिर इंद्रधनुख सुमात। जरकसी के जरतार, पिंड भूल फूल अपार।—सू. प्र.

१५ शव को जलाने के पश्चात् बची हुई हड्डियां जिनको किसी नदी या तालाव आदि तीर्थ स्थान पर पानी में बहाते हैं।

उ०—ताहरां उवांनुं अगनि लगाय दीवी। तहरां वींद उतरि नै चाल्या अर फकीर हुवा। जांनां आपरै घरै गयां। ताहरां एक तौ स्रीगंगा जी फूल ले गयौ। वीजौ देसंव चलतौ रह्यौ।—चौवोली

क्रि० प्र०—लाणौ, घालणौ, पधारणौ।

१६ हड्डी।

उ०—१ पीव-फूल घर कट पड़ै, मही जमै जस-मूळ। पादप नभ हुंत झड़पड़ै, फौजां ऊपर फूल।—रेवतसिंह भाटी

उ०—२ सकज्जां आसुर संभ निसंभ, रवद्दां नाथ वरै त्रिय रंभ। फूटै उर फेफर वीखर फूल, अंत्रावळि वाखर भाखर ऊळ।

—मा. वचनिका

१७ गर्भाशय। उ०—घोड़ी पकड़ी चाकरां, वीय जमी सूं ठाय। घोड़ी केरा फूल में, तत्क्षण दियौ दवाय।

—दूलची जोइये री वारता

१८ कुष्ट रोग के कारण शरीर पर पड़ने वाला लाल धब्बा।

१९ चेचक होने पर शरीर पर उभरे हुए दाने, व्रण।

२० स्त्रियों के मासिक धर्म के समय निकलने वाला रक्त।

२१ तांबे और रांगे के मिश्रण से बनी एक मिली-जुली धातु।

२२ मथानी के आगे का फूल के आकार का हिस्सा।

२३ कागज के कृत्रिम तरीके से बनाए गये फूल-पत्ती।

२४ फूलने की क्रिया या भाव।

२५ किसी पदार्थ का रस निकाल कर जमाया हुआ ठोस पदार्थ।

ज्यूं०—पोदीना रा फूल।

२६ धातु निर्मित गोल या चोकोर छोटा फूल जो कपाट, बैलगाड़ी, आभूषण, ढाल आदि वस्तुओं की शोभा-वृद्धि एवं मजबूती के लिए लगाया जाता है। उ०—१ भूलाळूं की भळहळ,पैदलूं की हळवळ। ढालूं की ढळक, चपड़ास फूलूं की भळक।—सू. प्र.

उ०—२ सिंह आय हायळ री ढाल ऊपर दीवी। ढाल रा फूल च्यारूं सोने रा था सो उड़ गया।—पदमसिंह री वात

२७ तलवार की मूठ में 'कंगन' के ठीक नीचे सूर्यमुखी फूल की भांति बीच में से उभरा एवं चारों ओर गोलाकार में पंखुड़ियों की भांति निर्मित वह भाग जो 'कटार' के ऊपर आधारित होता है।

२८ पानी का बुलबुला। उ०—निसवासर भज रे! घणनांमी, अंतर जांमी अेक अलेख। दुनियां सोख विसेस मती दिल, आंबू वाळा फूलां आरेख।—ओपौ आढ़ौ

रू० भे०—फुल, फुल्ल।

अल्पा०—फुलड़ी, फुलड़ौ, फुली,फुल्ली, फूलड़ी, फूलड़ौ, फूली, फूलौ।

फूलभरड़बौ—सं० पु० [?] एक प्रकार का छोटा पौधा जो औषध के काम आता है, अडूसा।

फूलआंत—सं० स्त्री० यौ० [राज० फूल+सं० अंत्र] पशुओं की स्थूलान्त्र जिसमें मल रहता है। उ०—ओझरा धोय-धोय मांहे मसालां मारियां। मांस घात दवगर कीजै छै। फूलआंतां अवल धोयजै छै। ऊपरा दूसरी आंतां री साढ़ां गूंथजै छै।—रा. सा. सं.

रू० भे०—फुलोत्तर।

फूलकारी—सं० स्त्री०—वेल-बूंटे वनाने व चित्रकारी या नक्काशी का काम।

फूलगार—सं० पु०—१ एक प्रकार का वस्त्र विशेष।

उ०—सिरीसाप भैरव चैतार कसवी महमूदी फलगार अध-रस सेला वाफता डोरिया मोमनी तन जेव सासाहिवी तरै-तरै रै कपड़ै रा वागा छै।—रा. सा. सं.

२ देखो 'फुलगार' (रू. भे.)

फूलगूघर—सं० पु०—शीश पर गूंथा जाने वाला एक प्रकार का रजत आभूषण। (पुष्करणा ब्राह्मण)

फूलगोमी—सं० स्त्री०—गोमी की एक जाति जिसमें मंजरियों का बंधा

हुआ ठोस पिंड होता है जो तरकारी के काम आता है।

फूलड़ी—सं० स्त्री०—१ बिवाई। उ०—देखत रांम हंसे सुदांमां कूं, देखत रांम हंसे। फाटी तौ फूलड़ियां पाव उभांणे, चलतै चरण घसै।—मीरां

२ देखो 'फूल' (अल्पा., रू. भे.)

३ देखो 'फूली' (अल्पा., रू. भे.)

रू० भे०—फुलड़ी, फुल्ली।

फूलड़ो—देखो 'फूल' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—मन वाड़ी गुण फूलड़ा, पिय नित लेता वास। अब उण थांनक रैण दिन, पिय विन रहूं उदास।—अज्ञात

फूलझड़ी—सं० स्त्री०—१ आतशबाजी का एक खिलौना जिसमें एक तार पर बारूद या बारूद मिश्रित मसाला लगा रहता है। जिसे सुलगाने पर उसमें से फूल की भांति चिनगारियां निकलती है।

२ उक्त प्रकार की आतशबाजी की भांति बारूद का एक बड़ा उपकरण जो मस्त हाथियों को वश में करने के लिये प्रयोग में लाया जाता है। उ०—लोक भणै माहुति ग्रित लेजै, सूर महा त्यां हूंत विसेखै। के सरकै सहजै अणकंपै, चरखी फूलझड़ी भुंय कंपै।—रा. रू.

वि० वि०—जब मस्त हाथी काबू से बाहर हो जाता है तो उसे वश में करने हेतु बारूद के इस उपकरण को प्रयोग में लिया जाता है। इसे जला कर हाथी की सूंड के सामने घुमाया जाता है। इसको जलाने से इसमें से फूल के आकार की बड़ी-बड़ी चिनगारियां निकलती है जिससे हाथी चकाचौंध और स्तब्ध हो जाता है।

३ फूलों की वर्षा, पुष्पवर्षा। ४ फूलों की कतार।

५ झगड़ा या विवाद उत्पन्न करने वाली बात।

मुहा०—फूलझड़ी छोडणी—कलह पैदा करना, परस्पर लड़ा देना।

रू० भे०—फुलछड़ी, फुलझड़ी।

फूलझूमको—सं० पु०—१ स्त्रियों के पहनने का एक आभूषण विशेष। उ०—म्हारै नवघा नथ सुहावणी, सांवळड़ो हे मोत्यां विचली लाल। म्हारै फूलझूमका फब रह्या, सावळड़ो हे झूमर री लूम।—मीरां

२ फूलों का गुच्छा।

फूलडोळ—सं० पु०—१ चैत्र शुक्ला एकादशी के दिन मनाया जाने वाला एक उत्सव—इस दिन श्रीकृष्ण भगवान के फूलों का झूला सजाया जाता है।

२ खेड़ापा ग्राम में होली के दूसरे दिन रामस्नेही सम्प्रदाय का लगने वाला एक मेला।

फूलण—सं० स्त्री०—१ काई की तरह की हरी व सफेद तह जो ठंडे या बासी भोज्य-पदार्थ तथा वर्षा ऋतु मे फलों पर जम जाती है।

२ शरीर की सफाई न होने पर पसीना सूखने पर उत्पन्न सफेद तह या रेखाएं। उ०—इस्नांनां रौ डील परसेवा में घांण व्हियोड़ी, धूड़ सूं भरियोड़ी ही, तावड़ा रै कारण होठां कटाई आयोड़ी ही, धोती रै फाटोड़ा घड़चा रा खोजा टांकियोड़ा हा, कुड़तौ ई झीर झीर व्हियोड़ौ अर पोतियौ ई तार-तार व्हियोड़ौ हो। फींचा रै फूलण आवण ढूकी ही।—फुलवाड़ी

३ 'पिंगल प्रकाश' के अनुसार एक-मात्रिक छंद विशेष।

रू० भे०—फुलण।

फूलणौ, फूलबौ—क्रि० अ० [राज० फूल] १ फूलों से युक्त होना। उ०—१ गजां ऊपरै धजां, नेजा, चीधां फरकि नै रही छै, जांणै हेमाचळ रै टूका माथै केसू फूलनै रहीआ छै।—रा. सा. सं.

उ०—२ तिण पग-पग चंदण तणा तरोवर, विविध-विविध फूली वणराइ। पंखी मुखि हरिनांम पुणंतां, सुर ताय मांनव तण सुहाय।—महादेव पारवती री वेलि

२ फूल का खिलना, विकसित होना। उ०—वनस्पति फूलणि वरसात में, उत्पति जीव अपार। पांणी तंबाकू नौ जिहां, पडैरे सहुनो होइ संहार।—ध. व. ग्रं.

३ प्रफुल्लित या खुश होना, आनंदित होना। उ०—जिम-जिम कायर थरहरै, तिम-तिम फैलै नूर। जिंम-जिम बगतर ऊवड़ै, तिम-तिम फूलै सूर।—वी. स.

मुहा०—१ फूल्यो अंग नी समांणौ—बहुत खुशी होना। २ फूल्यो फूल्यो फिरणो—निश्चिंत भाव से प्रसन्नचित्त घूमना।

४ सम्पन्न होना। उ०—वीरा फूलज्यो रै फळज्यो आंम की डाळी ज्यूं वधज्यो मांयली दूब ज्यूं।—लो. गी.

मुहा०—फूलणौ-फळणौ—सम्पन्न होना।

५ किसी वस्तु के भीतरी अवकाश में हवा, पानी या अन्य पदार्थ के समावेश से आस-पास की सतह से कुछ ऊंचा उठ जाना या उभर जाना।

ज्यूं०—गेंद या फुटवाल फूलणौ, पेट फूलणौ।

६ आघात या पीड़ा के कारण किसी अंग पर सूजन आ जाना।

७ स्थूल होना, मोटा होना।

८ गर्व करना, अभिमान करना। उ०—गैल कौ असूल सूल धूल में गह्यौ, मूलकौ गमाय, मूल फूल क्यों रह्यौ।—ऊ. का.

९ सूर्यास्त के बाद आकाश में रक्तिम आभा का छाना।

उ०—१ अ्रित सोभति रेसम लूंब करै, धुरवा किर फूलिय संझ धरै। अति उग्र तुरंगम अंग विये, क्रम सोभत आवत डोर किये।—रा. रू.

उ०—२ माता गज रण मांझ, यों रत राता ईखजै। वाणाया जांणक वादळा, सांवण फूळी सांझ।—रा. रू.

फूलणहार, हारौ (हारी), फूलणियौ—वि०।

फूलाड़णौ, फूलाड़बौ, फूलाणौ, फूलावौ, फूलावणौ, फूलावबौ —प्रे० रू०।

फूलिओड़ौ, फूलियोड़ौ, फूल्योड़ौ—भू० का० कृ०।

फूलीजणौ, फूलीजबौ—भाव वा०।

फूलणौ, फुलबौ—रू० भे०।

फूलता-सं० पु०—एक प्रकार का शस्त्र विशेष। (अ. मा.)

फूलद-सं० पु० [सं० फुल्ल+द] वृक्ष, पेड़। (डिं. को.)

फूलदांन-सं० पु० यौ० [राज०फूल+फा० दान] १ धातु, काच या चीनी मिट्टी का बना वह वर्त्तन जिसमें फूल सजाए जाते हैं। २ देवताओं के समक्ष फूल रखने का वर्त्तन विशेष।

फूलधार, फूलधारा, फूलध्धरा-सं० पु० [सं०फुल्लधार] १ तलवार। उ०—१ फूलधार पींजरै, काढ़ि कींजरा कमाळी। चंड मंड चापड़ै, लिया मारै रुद्राळी।—मा. वचनिका

उ०—२ फूलधारां रा वाड चाचरां ऊपरै झेलै छै। जठै सीरोइयां रा सार झड़ै छै।—पनां वीरमदे री वात

उ०—३ उड्डि सीसं उरा, पिड़ं चक्काफरा। धरि फूलध्धरा, जाणि पंकज्जरा।—सू. प्र.

२ तलवार की धार। उ०—मुखै वास आवै अजै दूध मारां, धुवै खेल दीठा नही फूलधारां।—सू. प्र.

३ तलवार से देव विशेष के वलिदान किये जाने वाले पशु के रक्त की धारा।

४ फूल जाति के शराव की धारा।

फूलनसौ-सं० पु०—१ हलका नशा। २ फूल नामक शराव का नशा।

फूलपगर-सं० पु०—१ एक प्रकार का वस्त्र।

उ०—१ नारी करइ लूणलूछणां, नगर मांहि मांडयां पेखणां। मारगि नवां पाथरयां चीर, फूलपगर परिमल अवीर।—कां. दे. प्र.

उ०—२ सोवनवडि जादर पोती पट साउली अगहल नेत्र रावेटउं साभारावउं मटवी फूलपगर कणवीरउं पोतिउं।—व. स.

२ पुष्प समूह।

उ०—१ सनीस्चर रसोइ चाखइ, मंगल स्रीखंड घसइ, वुध सोनउं कसइ, अढ़ार भार वनस्पति फूलपगर भरइं।—व. स.

उ०—२ अति प्रधांन, स्वरग समांन। ठांमि ठांमि फूलपगर, इस्यउ उज्जयनी नांम नगर।—सभा.

रू० भे०—फलगर, फुलपगर, फूलफगर।

फूलप्रियंगू-सं० पु०—एक औषध विशेष। (अमरत)

फूलफगर—देखो 'फूलपगर' (रू. भे.)

उ०—मांहि वसइ भोगी, वाहिर वसइ योगी। मांहि चउरासी हट्ट स्रेणि, वाहिर अरहट्ट स्रेणि। ठांम ठांम फूलफगर, इसउ धीर कहइ उज्जेणी नगर।—सभा.

फूलवाई-सं० स्त्री०—मेहा की पुत्री व करणीदेवी की बड़ी वहिन।

फूलबाज-सं० पु०—नट जाति की एक शाखा या दल। (मा. म.)

फूलमखांणा-सं० पु०—सफेद ताल मखाना।

फूलमती-सं० स्त्री०—एक देवी का नाम जो राजा वेणु की कन्या और शीतला रोग की अधिष्ठात्री मानी जाती है।

फूलमद-सं० स्त्री०—हलका नशा। उ०—अमल अरोड़ी फूलमद, बाकर मांस वटक्क। मिळियां लीजै माढ़वा, गळियां तणा गटक्क। —अज्ञात

रू० भे०—फुलमद।

फूलमहल-सं० पु० यौ० [राज० फूल+फा० महल] १ राजा महाराजाओं का वह महल जिसमें वेल-बूटों की चित्रकारी विशेष रूप से की हुई हो।

२ भोग-विलास करने का महल, रंगमहल।

उ०—१ आज सियाळै सी पड़ै, ओळग जाय वलाय। फूलमहल में पोढ़स्यां, प्रीतम कंठ लगाय।—अज्ञात

उ०—२ राव जी जोधा जी नै अमलां दारू में घणा सदोरा कीया। गोठ अरोग जोधो जी तळहटी रै डेरै गया नै राव जी फूलमहल में पोढ़ीया।—राव रिणमल री वात

रू० भे०—फूल मोहल।

फूलमाळ-सं० पु०—१ एक विशेष जाति का घोड़ा।

२ देखो 'फूलमाळा' (रू. भे.)

उ०—सह परताप वीण टुकड़ा सिर, सुकरां गूंथी अजव सवी। रुंडमाळ उर ऊपर रुद्रचे, फूलमाळ अद्भूत फवी।—महादांन मेहडू

रू० भे०—फुलमाळ, फूलांमाळ।

फूलमाळा, फूलमाला-स० स्त्री०—फूलों की माला, पुष्पहार।

उ०—फूलमाला लांबावी, सिखरि आरीसा झलकइ, गगनि चिंच पताका, झलहलइ, अच्छादायणु, इसउ जसउ देव निमियउ तिस्तु मंडपु।—सभा.

रू० भे०—फुलमाळा, फूलांमाळ।

२ हड्डियों की माला।

फूलमाळी-सं० पु०—१ माली जाति में पुष्प वेचने का व्यवसाय करने वाला व्यक्ति। २ फूलों का वगीचा लगाने वाला व्यक्ति।

फूलरज-सं० स्त्री०—पुष्परज, पराग।

फूलरी-स० स्त्री०—१ सफेद रंग की या सफेद कान वाली बकरी।

२ देखो 'फूलड़ी' (रू. भे.)

रू० भे०—फुलरी, फुल्ली।

अल्पा०—फुलरड़ी।

फूलवाड़ी—देखो 'फुलवाड़ी' (रू. भे.)

उ०—ऊपर सोहै अंबाड़ी, फूली जांणै फूलवाड़ी। ऊंचा परवत अणुहारा, आंण्या गज सहस अठारा।—घ. व. ग्रं.

फूलहटी-सं० स्त्री० [राज० फूल+सं० हट्टः+ई] फूलों का विक्रय स्थल, पुष्प वाजार। (सभा.)

फूलहत्य, फूलहय–सं० स्त्री०—तलवार ।
उ०—१ पायकां के हमलै वांक पटै फूलहत्यूं का दाव, नजरवछेक का हुन्नर अंगूंगा वचाव ।—सू. प्र.
उ०—२ वंकि पटां फूलहयां, सोरि खिलकार कुसत्री । तस कसीस लेजमां, जजर गत्ती जाजत्री ।—सू. प्र.
रू० भे०—फूलहाय ।
फूलहरौ–सं० पु०—शुभ रंग का घोड़ा । (शा. हो.)
फूलहाय—देखो 'फूलहत्य' (रू. भे.)
उ०—कटकां रा भूर पड़िनै रहीआ छै । हाथी लड़ावीजे छै, पाइक सिरंम साझै छै । फूलहाया फेरीजे छै ।—रा. सा. सं.
फूलां–सं० स्त्री०—देखो 'फूलवाई' ।
उ०—पळासण अंग भसै भर पेट, भेळा उतमग सदासिव भेट । लाला कर थापलि कंथ लंकाळ, फूलां सिघसग भरावत फाळ ।
—मे. म.
फूलांमाळ—१ देखो 'फूलमाळा' (रू. भे.)
उ०—ताळ वाळ दीजै नहर, मनसां फूलांमाळ । वळदां दीजै गाळ घी, पण नंह दीजै गाळ ।—वां. दां.
२ देखो 'फूलमाळ' (रू. भे.)
फूलांरौनारौ–सं० पु०—१ अमीर, भाग्यशाली ।
उ०—पीहर पतळा रा सैणां रा प्यारा, तारक टूटां रा नैणां रा तारा । सीरी सिटियां रा सूल्हां रा सारा, मीठी भूखां रा फूलांरा मारा ।—ऊ. का.
२ कोमल व्यक्ति, नाजुक ।
फूलांसेज–सं० स्त्री० यौ०—पुष्पशैया ।
उ०—अव के ओळंगांणी, पनामारू, नणदोग्री जी ने भेज, अवको चोमासो फूलांसेज पै, जी म्हां का राज ।—लो. गी.
फूलाड़णौ, फूलाड़बौ—देखो 'फुलाणौ, फुलावौ' (रू. भे.)
फूलाड़णहार, हारौ (हारी), फूलाड़णियौ—वि० ।
फूलाड़िओड़ौ, फूलाड़ियोड़ौ, फूलाड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
फूलाड़ीजणौ, फूलाड़ीजबौ—कर्म वा० ।
फूलाड़ियोड़ौ—देखो 'फुलायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० फूलाड़ियोड़ी)
फूलाणौ फूलाबौ—देखो 'फुलाणौ, फुलावौ' (रू. भे.)
फूलाणहार, हारौ (हारी), फूलाणियौ—वि० ।
फूलायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
फूलाईजणौ, फूलाईजबौ—कर्म वा० ।
फूलाद—देखो 'फुलवाद' (रू. भे.)
उ०—वारवरड़ां रा मगरा, मील वसै । चावळ, गोहूं ऊपजै । आंवा फूलाद घणौ ।—नैणसी
फूलायोड़ौ—देखो 'फुलायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० फूलायोड़ी)
फूलाळ—देखो 'फूलाळौ' (मह., रू. भे.)
उ०—जांणूं अजकौ मेघ जावतां कारज म्हारै, परवतिया फूलाळ अलेखां आडा थारै । मीठा वोलै मोर आंखड़ी नेह भरीजै, करतां इतरौ कोड वांसूं सीख लिरीजै ।—मेघ.
फूलाळौ–वि० (स्त्री० फूलाळी) फूलों वाला, फूलों से आच्छादित ।
उ०—१ रांणी रै विना उणनै मुखमल री फूलाळी सेज कांटां रै उनमांन अळखावणी लागण लागी ।—फुलवाड़ी
उ०—२ उणरै अंतस री महकती फूलाळौ संसार अेक ई घपळका में भसम व्हैगौ ।—फुलवाड़ी
रू० भे०—फुलाळौ ।
मह०—फूलाळ ।
फूलावणौ, फूलाववौ—देखो 'फुलाणौ, फुलावौ' (रू. भे.)
फूलावणहार, हारौ (हारी), फूलावणियौ—वि० ।
फूलाविओड़ौ, फूलावियोड़ौ, फूलाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
फूलावीजणौ, फूलावीजवौ—कर्म वा० ।
फूलावियोड़ौ—देखो 'फुलायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० फूलावियोड़ी)
फूलि—१ देखो 'फूली' (रू. भे.)
२ देखो 'फूल' ? (अल्पा., रू. भे.)
उ०—आज चिणोठी ऊजली, मांणिक-केरइ मूलि । सोघी आंणइ सुंदरी, वइठी पूजइ फूलि ।—मा. कां. प्र.
फूलियोड़ौ–भू० का० कृ०—१ वायु, पानी या अन्य वस्तु के भरने से फूला हुआ. २ पुलकित या आनन्दित. ३ अभिमान से भरा हुआ, अभिमान युक्त. ४. फूलों से युक्त ।
(स्त्री० फूलियोड़ी)
फूलियौ—देखो 'फूली' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—फिटकड़ी सो हुयौ फूलियौ, चूनौ धोळौ फट है । लूण लियै कांकरा फंकै, एक ना काळौ-कूट है ।—दसदेव
फूली–सं० स्त्री० [राज० फूल+ई] १ आक या मदार के फूल का मध्य भाग । (अमरत)
२ आंख की पुतली पर पड़ने वाला सफेद दाग ।
३ सिर का आभूषण । (व. स.)
४ भुनी हुई ज्वार, मक्का या चावल, खीरा, लावा ।
उ०—कदै ई खारकां, कदै ई वोर, कदै ई लूंग, खोपरा, नारेळ, पतासा, भूंगड़ा, सोपारी, इळायची, सेवयोड़ा कूंगा, पचायोडी पीपरां, मक्की जवार री फूलियां, मतीरा रा चरपरा वीज, काचरा अर वड़बोर इत्यादि भांत-भांत री चीजां ।—फुलवाड़ी
५ एक प्रकार का शाक विशेष ।

उ०—फूवेडी नइं फणगरी, फूंगारी नइं फांगि । फूणा फूली फूमती, फोफल फूली सागि ।—मा. कां. प्र.

६ देखो 'फूल' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—मुर मे फोग महेस, रेत भसमी पर राच । चांद आगिया माय, जटा लासूड़ा जाचै । गांठ गठीली माळ, महक फूली री गगा । आक धतूरै पास, फ़ैर भूतां हुड़दंगा ।—दसदेव

७ देखो 'फूहली', (रू. भे.)

रू० भे०—फुली, फुल्ली, फूलि, फूहली ।

अल्पा०—फुलड़ी, फूलड़ी ।

फूलेरौ—स० पु० [सं० पुष्पम्+वेला] विवाहित कन्या के प्रथम बार रजोदर्शन की शुद्धि पर उसकी माता द्वारा पुजनादि द्वारा उत्सव मनाने की रीति विशेष ।

फूलेल—देखो 'फुलेल' (रू. भे.)

उ०—तठा उपरांति क़रि नै राजांन सिलांमति जिके छोगाळा छयल छबीला जुआन हुसनांइक फूला रा छोगा नाखीआं थकां फूलां रा चोसर पेहरीआं थकां अगरचै मरगचै केसरिअे कचमैलै वागै कीअे घणै चोअे अतर फूलेल गळा मांहि भीनां थकां घणै अंबीर नै गुलाल मांहे गरकाव हुआ थका भोळी भरिआं थकां दिसि-दिसि छूटि रही छै ।—रा. सा. सं.

फूलौ—सं० पु०—आंख की पुतली पर किसी रोग या चोट लगने से होने वाला सफेद चिन्ह । उ०—कंवर री आंख में केई बरसां सूं फूलौ पड़ियोड़ौ हौ ।—फुलवाड़ी

क्रि० प्र०—पड़णौ, होणौ ।

२ खीला, लावा ।

३ फिटकरी, गोंद आदि जो आग पर भूनने से फूल गया हो ।

४ देखो 'फूल' (अल्पा., रू. भे.)

रू० भे०—फुल्लौ ।

अल्पा०—फूलियौ ।

फूस—सं० पु०—१ सूखा तृण, या तिनका ।

२ कचरा, कूड़ाकरकट । उ०—उखरड़ी कह्यौ—हळदी वाई, थोड़ो म्हारौ फूस बुवार दे ।—फुलवाड़ी

रू० ०—फूह ।

फूसगज—सं० पु० [राज० फूस+सं० गज] पौष शुक्ला पूर्णिमा के दिन फूस का हाथी बनाकर हाथी से युद्ध कराने का उत्सव । (मेवाड़)

फूह—देखो 'फूस' (रू. भे.)

फूहड़,फूहड—देखो 'फूड़' (रू. भे.)

फूहडि—वि० स्त्री०—देखो 'फूड़' (पु०)

उ०—जेवडउ अंतर गुरुड अनइ घुग्घड, जेवडउ अंतर फूटरसी जेवडउ नइं फूहडि, अंतर गाअ अनइ छाली ।—व. स.

फूहली—सं० स्त्री०—वहिन से राखी प्राप्त होने पर भाई द्वारा बहिन को भेजी जाने वाली पोशाक । (मेवाड़)

रू० भे०—फूहली, फूली ।

फूहारौ—देखो 'फवारौ' (रू. भे.)

फूही—देखो 'फुही' (रू. भे.)

उ०—सो साह तो थाको हूतो, सो पोढ़ रह्यौ अर आ जागै छै । इतरै हेक फूही वोली, कही, "जु आ नदी माहे एक मडो बूहो जावै छै ।—कूमरसी

फूहौ—देखो 'फुंवो' (रू. भे.)

उ०—सो महीनै एक टेढ़ में विट्ठलदास रा घाव आछा हुवा । फूहा देणै लागिया ।—गोपाळदास गौड़ री वारता

फें—देखो 'फैं' (रू. भे.)

फेंक—देखो 'फैंक' (रू. भे.)

उ०—कांव-कांव करतौ कागलौ बोल्यौ—अबै यूं रोयां रीबयां तो हींग री ई गरज सरै नी । पुटियौ वद-वदनै फेंकां मारतौ हौ । औ वगत है उणरै धकै जाय कूको ।—फुलवाड़ी

फेंकणौ, फेंकबौ—देखो 'फैंकणौ, फैंकबौ' (रू. भे.)

उ०—१ पण वत्तीस घड़ी रै पछै लोई टपकियां जद बौ मूंडकी री चुट्टी भालनै मंवारा में फेंकै तद उणरै भ्रणूंतौ दरद व्है ।—फुलवाड़ी

उ०—२ वांरी अेक विधवा भूवा अणूंती धनवंती ही । वै उण मायं ठगाई री पासौ फेंकणौ चायौ ।—फुलवाड़ी

फेंकणहार, हारौ (हारी), फेंकणियौ—वि० ।

फेंकाड़णौ, फेंकाड़बौ, फेंकाणौ, फेंकाबौ,

फेंकावणौ, फेंकावबौ—प्रे० रू० ।

फेंकिओड़ौ, फेंकियोड़ौ, फेंक्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

फेंकीजणौ, फेंकीजबौ—कर्म वा० ।

फेंकल—देखो 'फैंकल' (रू. भे.)

फेंकाड़णौ, फेंकाड़बौ—देखो 'फैंकाणौ, फैंकाबौ' (रू. भे.)

फेंकाड़णहार, हारौ (हारी), फेंकाड़णियौ—वि० ।

फेंकाड़िओड़ौ, फेंकाड़ियोड़ौ, फेंकाड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

फेंकाड़ीजणौ, फेंकाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

फेंकाड़ियोड़ौ—देखो 'फैंकायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० फेंकाड़ियोड़ी)

फेंकाणौ, फेंकाबौ—देखो 'फैंकाणौ, फैंकाबौ' (रू. भे.)

फेंकाणहार, हारौ (हारी), फेंकाणियौ—वि० ।

फेंकायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

फेंकाईजणौ, फेंकाईजबौ—कर्म वा० ।

फेंकायोड़ौ—देखो 'फैंकायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० फेंकायोड़ी)

फेंकावणौ, फेंकावबौ—देखो 'फैंकाणौ, फैंकाबौ' (रू. भे.)

फेंकावणहार, हारौ (हारी), फेंकावणियौ—वि० ।

फेंकाविओड़ो, फेंकावियोड़ो, फेंकाव्योड़ो—भू० का० कृ० ।
फेकावीजणो, फेंकावीजबो—कर्म वा० ।
फेंकावियोड़ो—देखो 'फैकायोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री० फेंकावियोड़ी)
फेंकियोड़ो—देखो 'फेंकियोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री० फेकियोड़ी)
फेंगळ-सं० पु०—फेन, झाग ।
उ०—उडाडे गळं फेंगळां रा अंगारां, अधारा झगारा उभै कीधआरां । कांना रा करारा समे हुध्थ थारा, उद्धीरा उघारा वहै वारवारा ।—ना. द.
फेंट-सं० स्त्री० [देशज] १ मल्लयुद्ध का एक दांव जिसमें एक दूसरे की गर्दन को बाहों में दबाकर पीठ के बल से उछाल कर नीचे गिरा देता है ।
क्रि० प्र०—मारणी, लगाणी ।
२ कटिमंडल, कमर का घेरा ।
३ देखो 'फांट' (रू. भे.)
४ देखो 'फेंटो' (मह., रू. भे.)
५ देखो 'फैंटो' (मह., रू. भे.)
फेंटणो, फेंटबो-क्रि० स० [देशज] १ लपेटना, बांधना ।
२ देखो 'फांटणो, फांटबो' (रू. भे.)
३ देखो 'फेटणो, फेटबो' (रू. भे.)
फेंटणहार, हारो (हारी), फेंटणियो—वि० ।
फेंटियोड़ो, फेंटियोड़ो, फेंटचोड़ो—भू० का० कृ० ।
फेंटीजणो, फेंटीजबो—कर्म वा० ।
फेंटो-सं० पु० [देशज] १ कमर पर लपेट कर बांधे जाने वाले वस्त्र का छोर । उ०—पीतांबर के फेंटा बांधे, अरगजा सुवासी । गिरिधर से मु नवल ठाकुर, मीरां-सी दासी ।—मीरां
२ देखो 'फेंटो' (रू. भे.)
मह०—फेंट ।
फेंफड़ो—देखो 'फेफड़ो' (रू. भे.)
फे—१ भ्रमण । २ रटन । (एका०)
फेकरी-सं० स्त्री०—स्यालिनी ।
रू० भे०—फेकारी, फैंकरी ।
फेकल-सं० पु०—कच्चा पीलू ।
रू० भे०—फेंकल ।
फेकारी—१ एक वृक्ष विशेष ?
उ०—फेकारी नइ फालसा, फोफल फणस फणिंद । फूयेढ़ी नइ फूठीया, फालक फिरामण फिंद ।—मा. कां. प्र.
२ देखो 'फेकरी' (रू. भे.)
रू० भे०—फेंकारी ।

फेज—देखो 'फैज' (रू. भे.)
फेट-सं० स्त्री० [देशज] १ टक्कर, धक्का ।
उ०—१ तुंडां गज फेटां तुरी, डाढां भड ओभाड़ । हेकण कोलै धू दिया, फौजा पाथर पाड ।—वी. स.
उ०—२ लोहरा लंगरां झाट लाग, अधफरां गिरां तर झड़ै आग । मेवास तूटगा मगज मेट, फूटगा गिरंद हैताळ फेट ।—वि. सं.
क्रि० प्र०—लागणी ।
२ झपट, चपेट ।
उ०—१ लागी फेट किस्त की लसियै, हुई इतै वड हांनी । तीखै पग को एक तोरड़ो, कियौ प्रथम कुरवांनी ।—ऊ. का.
उ०—२ भूलरा में भगदड़ माची पण माची । चार पाचे'क साधणियां घोड़ा री फेट में आयगी ।—फुलवाड़ी
क्रि० प्र०—आणी ।
३ चोट, आघात । उ०—चित्तोड ऊपर अकबर रै भिलम रै गोळा री फेट लागी ।—बां. दा. ख्या.
४ दृष्टि पथ में होने का भाव वा क्रिया ।
उ०—पड़िया रांणी री फेट, खंदक महलां हेट, सुकोमल साध । एसो हु तो मुज वंदवो ए ।—जयवांणी
५ किसी आसुरी माया का प्रभाव ।
क्रि० प्र०—आणी ।
६ अन्तराय, विघ्न । उ०—फिरी फरी जउ आविउ फेट, तउ देवहं गुरु लाधी भेट । सुह गुरि धरम कहिउ मू सार, सेत्रुजगिरि छइ मुगति दातार ।—वस्तिग
रू० भे०—फेंट ।
फेटणो, फेटबो-क्रि०अ०/स०[देशज] १ टक्कर या धक्का लगना। उ०—नग्री सोनमेनी पछै गाम नांही, महा कासटा घोर उजाड़ मांही । प्रपा कूप नैड़ो न वैड़ो पयांणो, जलाल्या तणो फेटबो थेट जाणो ।—मे. म.
२ दृष्टिगोचर होना ।
३ किसी आसुरी माया के प्रभाव मे आना ।
४ साक्षात्कार होना, मिलना । उ०—भल साध संदा सुख भेटन कौ, फिर फ्रीटन देवन फेटन कौ ।—ऊ. का.
फेटणहार, हारो (हारी), फेटणियो—वि० ।
फेटिओड़ो, फेटियोड़ो, फेटचोड़ो—भू० का० कृ० ।
फेटीजणो, फेटीजबो—भाव/कर्म वा० ।
फेंटणो, फेंटबो—रू० भे० ।
फेटियोड़ो-भू० का० कृ०—१ टक्कर या धक्का लगा हुआ. २ दृष्टिगोचर हुवा हुआ. ३ किसी आसुरी माया के प्रभाव में आया हुआ. ४ साक्षात्कार हुवा हुआ, मिला हुआ.

(स्त्री० फेटियोड़ी)

फेटियौ–सं० पु० [देशज] १ घाघरे के नीचे पहना जाने वाला लंबोतरा वस्त्र। २ विधवा स्त्रियों का खास रंग का रंगा हुआ अधोवस्त्र। ३ कटिमंडल अथवा कमर पर लपेटा जाने वाला वस्त्र।

फेटूड़ौ—देखो 'फेटियोड़ौ' (रू. भे.) (शेखावाटी)
(स्त्री० फेटूड़ी)

फेटौ–सं० पु० [देशज] १ किसी स्थान विशेष पर आने-जाने का अभ्यास या अवसर।
२ मिलने का भाव, मिलाप। उ०—जेठ री बळती लाय में बीस पच्चीस कोस गांव-गांव रवड़णा रै उपरांत ई उण सिरावा सूं फेटौ नी पड़ियौ।—फुलवाड़ी
३ देखो 'फंटौ' (रू. भे.)
रू० भे०—फैटौ।

फेडणौ, फेडबौ–क्रि० स० [सं० स्फेटयति] १ विनाश करना।
उ०—देव तणी घन भक्ति युक्ति, गुरु गुरुणी तेडया,
साहमी साहमिणी संविभाग, करि पातक फेडया।
—गुणविजय
२ दूर हटाना।
३ परित्याग करना, छोड़ना। उ०—युद्ध थी विरम्यां राजिंद रै, हरिया थया सुगुण गिरिंद रै। विस्रति मति सरति अमंद रै, पल्लवित वेलि सुख कंद रै। फेडया सगलाई फंद रै।—वि. कु.
४ जानना ?
उ०—धरण ग्यौ 'माल' गह छाड पै'लै धकै, फेर संसार प्रथमाद फेडी। तांणियां सूर जिम वैर राव 'जैत' रै, गंजवा जोधपुर चाढ़ गेडी।—कल्यांणसिंह जी रौ गीत
५ तोड़ना। उ०—मंत्रि मउडउघा सहूइ तेडइ, वेडीवाहा भ्रंति सु फेडइ। "वयरगु अम्हारं म पडउ पाखइ, देवादेवी सहूयइ साखिइं।—पं. पं. च.
६ उद्घाटन करना।

फेण–सं० पु०—१ श्वेत, सफेद*। (डिं. को.)
२ देखो 'फंण' (रू. भे.)
उ०—१ जडाऊ नगां मिंदर हेम जाळी, सभै सैज सहेलियां चित्रसाळी। वणै ऊजळी सेज एही विराजै, लखै खीर सांमंद रा फेण लाजै।—सू. प्र.
उ०—२ अर दिल्ली रा वीरां नूं कोरड़ौ लोह चखायौ जिण आगै वड़ा-वड़ा दुवाह वांनैत न टकिया। नागराज रा भोग फेण भरिया लटकिया।—वं. भा.

फेणी—देखो 'फीणी' (रू. भे.)

फेतकार, फेत्कार–सं० स्त्री०—१ लोमड़ी के आकार का एक मांसाहारी पशु।
२ स्यालिनी।
३ स्यालिनी के बोलने की ध्वनि जो अशुभ मानी जाती है।
उ०—१ जहां सिवा तणा फेत्कार, घूक तणा घूत्कार। व्याघ्र तणा घूरहराट, न लाभइ वाट नइ घाट।—सभा.
उ०—२ जठै वेताळां रा आस्फाल, डाकिणी गणां रा डमरू रा डात्कार फेरवियां रा फेत्कार, प्रेतां रा आलाप।—वं. भा.
४ लोमड़ी।
५ देखो 'फूतकार' (रू. भे.)
रू० भे०—फैतकार, फैतकारी, फैत्कार, फंतकार, फैत्कार।

फेदड़–सं० स्त्री०—१ दूध आदि तरल पदार्थ में खटाई गिरने से गुच्छों के रूप में पृथक हुवा हुआ सार भाग।
२ आकाश में बिखरे हुए बादलों के टुकड़े। उ०—फेदड़-फेदड़ सी नभ में निजराई, माखण चाखण री मनसा मुरझाई। प्राव्रट-प्राव्रट री आवट मन मारै, थर नैं पापां रा थर लेग्या लारै।—ऊ. का.

फेन, फेनक—देखो 'फेण'. (रू. भे.)

फेनी—देखो 'फीणी' (रू. भे.)

फेफड़ी–सं० स्त्री०—१ गरमी या खुश्की के कारण ओठों की सूखी हुई चमड़ी की तह। उ०—तौ दारिया ढांढ़ा ! कहै नहीं ज्यूं है त्यूं पग चालवै है, राज ! वळै कां है, रे रीड़ा ! तौ राज ! मुंहडै फेफड़ियां आयां है।—प्रतापमल देवड़ा री वात
२ पपड़ी।
रू० भे०—फेफरी।

फेफड़ौ—देखो 'फैफड़ौ' (रू. भे.)

फेफर—देखो फैफड़ौ' (मह., रू. भे.)
उ०—फूटै उर फेफर वीखर फूल, अंत्रावळि वाखर भाखर ऊल।
त्रिपत्तां, ग्रिध भयै तन तेख, पळचर साकणि प्रौंकरि पेख।
—मा. वचनिका

फेफरी–सं० स्त्री०—१ फेफड़ा। उ०—तिसै दोनूं खेलतां-खेलतां वीरमदे इसौ डाव खेल्यौ तिकौ उछळतौ साहमै काळजै पंजूरै काळजै दी। तिकौ पेट फाड़ि आंत, ऊभ, फेफरी नीकळ ढेर हुवा।
—वीरमदे सोनगरा री वात
२ देखो 'फेफड़ी' (रू. भे.)

फेफरौ—देखो 'फैफड़ौ' (रू. भे.)
उ०—घड़ी घड़ी धमोड़ घोड़, बोकड़ा वड़ी वड़ी। झड़ी लगै छड़ाळ, झीक फेफरा फड़ी फड़ी।—मा. वचनिका

फे'म—देखो 'फहम' (रू. भे.)

फेरंड–सं० पु० [सं०फेरंडः] १ शृगाल, गीदड़, स्यार। उ०—१ नीच नास्तिकां रौ वंस प्रांमार राज विक्रम भोज रा वंस रौ संतांन किणि रीति पावै अर चांडाळ रै मुख सावित्री रै समांन केहरी रौ विभाग फेरंड रै मुहुंडै कदापि न खटावै।—वं. भा.
उ०—२ वग्नर चाहुवांण प्रांमार फितुरी फेरंड मइंदां रौ मत्तभाव आंणै जिकौ उडावण रौ आपणौ उपाय छै।—वं. भा.

२ लोमड़ी।
रू० भे०—फेरड।

फेर—सं० पु० [राज० फेरणी] १ फिरने की क्रिया या भाव।
२ किसी के चारों ओर घूमने की क्रिया, चक्कर, घुमाव, मोड़।
उ०—वातां हुंदा मामला दरियां हुंदा फेर। नदियां वहै उतावळी, दे दे घूमर घेर।—फुलवाड़ी
३ परिवर्तनशील क्रम या सिलसिला जिसमें आवश्यकतानुसार परिवर्तन होता रहता है।
४ अन्तर, फर्क, भेद, भिन्नता।
उ०—१ मैं जाण्यो अधमेर है, पिव तो पूरा सेर। हेम-सुता-पत वाहणा, तामैं रती न फेर।—अज्ञात
उ०—२ एक अक्षर रो फरक। एक अकार नो फेर। साध रै अनै असाध रै एक आखर रो फेर है।—भि. द्र.
५ भाग्य का चक्कर, परिस्थितियों का उलझाव, किसी का बुरा वक्त। उ०—१ करम ना जोइ एवडा फेर, धरम आडा छइ काठिआ तेर।—वस्तिग
उ०—२ आपरो धुजतो हाथ वेटा माथै फेरनै दुस्किया भरती कैवण लागी—दिनमांनां रो फेर है।—फुलवाड़ी
६ असमंजस या झमेले में डालने वाली स्थिति, दुविधा, उलझन।
७ झंझट, बखेड़ा, जंजाळ, प्रपंच।
उ०—गुदळका व्हियां पैं'ली पैं'ली व्याव व्है जांणो चाहीजै। म्हैं सावा अर मौरत रा फेर में नीं पड़ूंला।—फुलवाड़ी
८ परिवर्तन, उलट-फेर, अदला-बदली।
९ संशय, भ्रम, संदेह, गलतफहमी।
१० धोखा, प्रवंचना, चालबाजी।
११ देवी अथवा आसुरी माया का प्रभाव।
१२ हानि, नुकसान, टोटा, घाटा।
१३ फासला, दूरी। उ०—दीवाण रा मोहल पीछोला री पाळ ऊपर छै, मोहलां थी आयवण नुं तळाव लग तो सहर छै, कोस २ रै फेर छै, सहर री एक कांनी माछला रो मगरो छै। —नैणसी
१४ विस्तार, फैलाव।
उ०—१ जोड नाचणो जैसळमेर था कोस २ ऊगवण नूं कोस १, घास करड़, वैहख री। जैसळमेर था दिखण नूं कोस २ घास सेवण, कोस २ रै फेर।—नैणसी
उ०—२ साकुर खडै पाखर सेर, फौजां वहै जोजण फेर।—गु.रू.वं.
१५ ऊंट या घोड़े को चाल सिखाने का ढंग।
१६ घोड़े या ऊंट की चाल।
१७ किसानों से लिया जाने वाला एक कर या लाग जो 'बोरा' भरने के रूप में दी जाती है।
१८ झुकाव।
[सं० फेरः] १९ शृगाल, गीदड।
वि०—अन्य, दूसरा, अलावा, अतिरिक्त।
उ०—१ थूं आज सूं ई निसंक व्हैजा। आवळा,म्हैं वगत माथै थारै कांम नीं आवूं तौ फेर किण रै आवूं।—फुलवाड़ी
उ०—२ जीवण सूं वत्तो सुख अर आणंद इण संसार मे फेर की नीं है।—फुलवाड़ी
उ०—३ कोथळी खोलनै वनमाळी पूछ्यौ—सिरावण वास्तै आज फगत तिलिया लाडू इज लाई, फेर की नी।—फुलवाड़ी
क्रि० वि०—१ पुनः, दुबारा, वापस।
उ०—१ स्यांन छोड वहै साध, रमा माता पितु रोवै। सुत तिरिया दुख सहै, जिकणा दिस फेर न जोवै।—ऊ. का.
उ०—२ फेर कदेई ठाकरां रै सांमी यूं मूंछ्यां में वट देवैला। मूंछ्यां नीची नी कराय दूं तौ म्हारी जात माथै जूती।—फुलवाड़ी
२ और, फिर।
उ०—१ कै पड़ जावौ कूप, गिरवरां चढ़ि गिर जावौ। अंजन वाळौ आय, फेर पैंडो फिर जावौ।—ऊ. का.
उ०—२ वार दई सौ वार'क फेर वखांणजै। जाहर हाटक खांन जिसौ मुख जांणजै।—बां. दा.
उ०—३ जिनावरां नै अरदास भरै पड़ती लागी तौ वै हीमत करनै फेर कवण लागा।—फुलवाड़ी
३ तदनन्तर, उपरांत, बाद में, पीछे।
उ०—दीपता पांणी नै छोडनै फेर कठैई उडण रो मन नी करै। तिरस आगै कागला रो जीव जावै।—फुलवाड़ी
४ इस पर भी।
उ०—१ कली वसंत कदंब रै, सांवन वरणै सेस। कहै फेर कविता करूं, वर सर सतरै वेस।—बां. दा.
उ०—२ फेर देस रो कांम तिण सूं नीसरणी नीं आवै।
—कुंवरसी सांखला री वारता
५ लेकिन, परन्तु।
उ०—नांनग सरवर भरियौ नीको, झुकै लोग पीवण दे झीको। ठगवाजी गादी रो ठीको, फेर सिकां कर दीनो फीको।—ऊ. का.
रू० भे०—फैर, फेरू।

फेरड—देखो 'फेरंड' (रू. भे.)

फेरणौ, फेरबौ—क्रि० स० [सं० प्रेरणं] १ ऊंट, घोड़ा, बैल आदि पशुओं को चाल सिखाना, शिक्षित करना।
उ०—१ अरु आप घोड़ा फेरणै रै वहांनै कोस १ अठै सूं जाळ है तठै पवारज्यो, अरु हूंई उठै आय हाजर हुसूं।—द. दा.
उ०—२ वळदां रा फेरणा में ई कोई मैंडो आगो चौधरी जैंड़ो सागड़ी नी हो। उणरै फेरियोड़ा वळद हळां में हंस हालै ज्यूं हालता हा।—फुलवाड़ी

२ किसी शस्त्रादि को हाथ से पकड़ कर इधर-उधर, ऊंचा-नीचा घुमाना।

उ०—हाथी लड़ावीजै छै। पाइक सिरंम साझै छै। फूलहाथां फेरीजै छै।—रा. सा. सं.

३ किसी के द्वारा भेजी हुई वस्तु न लेना, फलतः उसे लौटा देना, लौटाना।

उ०—पछै सोढ़ी नूं पूछण लागो—रावळ कांनड़दे री वडी ठोड़ री नाळेर आयौ छै सु पाछौ फेरस्यां तौ राईततां मांहे बुरा दीसस्यां।—नैणसी

४ शादी के समय दूल्हा-दुल्हिन को अग्नि के चारों ओर चक्कर लगवाना।

उ०—लोह विंमूह 'रतनसी' लाडै, खत्रि मारग रिण जंग खरै। कावल फेरै घड़ा काबली, हठिमल परणी सूर हरै।—दूदौ

५ किसी वस्तु को मण्डलाकार गति देना अथवा धुरी पर चारों ओर घुमाना।

ज्यूं०—चक्की फेरणी, पट्टी फेरणी।

उ०—१ ताळा तोड़ करै भूं काळा, गाळा घालै गूढ़। भाळा नैणां बाळा भोळा, माळा फेरै मूढ़।—ऊ. का.

उ०—२ मैं परणंती परखियौ, मूंछां तणौ, मरट्ट। सायधण फेरै अरटियो, फेरै पीव घरट्ट।—अज्ञात

६ एक दिशा से दूसरी दिशा की ओर ले जाना, मोड़ना।

७ परास्त करना, खदेड़ना।

उ०—१ फेरा लेतै फिर अफिर, फेरी घड़ अरणफेर। सीह-तणी 'हरधवळ' सुत, गहमाती गहडेर।—हा. झा.

उ०—२ काबिल कोट तणी बिसकांमणि, धाए धूम सिगारि धुरै। फिर-फिर अफरि 'रतनसी' फुरळै, फौज अपूठे फेरि फिरै।—दूदौ

८ किसी वस्तु के इर्द-गिर्द चक्कर लगवाना।

९ किसी व्यक्ति को किसी स्थान पर भेजकर आना-जाना करना, सम्पर्क स्थापित करना।

उ०—सु राव जी नूं कह्यौ—"मिलकखांन जी जाळोर रौ धणी छै। इण नूं आंपणौ भीर करौ।" तरै मिलकखांन विचै आदमी फेरियौ। कह्यौ—"म्हे रुपिया लाख १ थांनूं दां छां। थे मांहरी मदत आवौ।"—नैणसी

१० सहलाना।

उ०—मोडी गोडी दे पसवाड़ा मोड़, सड़छां बातोड़ी घड़छां तन तोड़। पीळी पाबल पर फिर-फिर कर फेरै, धोळी धूमर नैं धिर-धिर घर घेरै।—ऊ. का.

११ तेल, वारनिश, कलई आदि तरल पदार्थ से किसी वस्तु की पुताई या पालिश करना।

१२ किसी वस्तु या व्यक्ति को जन-समुदाय के दर्शनार्थ या सूचनार्थ घुमाना।

ज्यूं०—ढंढोळी फेरणी।

उ०—ताहरां राजा पड़वौ फेरियौ—जो चोर म्हारै मुजरै आवै तौ चोरी री तकसीर माफ करूं, सिरकार री रोजगार कर देऊं।—राजा भोज अर खाफरै चोर री वात

१३ किसी वस्तु को उपभोगार्थ प्रस्तुत करना।

ज्यूं०—पांन-सुपारी फेरणी, जळ फेरणौ।

१४ परिवर्त्तन करना, बदलना।

उ०—पछै घोड़ा १३००० ढळनै नाइल आया, वांसै घोड़ां रा धणी आया, तरै देवी घोड़ां रा रंग फेरिया, पछै वे देखनै पाछा फिर गया।—नैणसी

१५ जो पदार्थ जिस दिशा में हो उसका पार्श्व या मुंह विपरीत दिशा में करना।

उ०—रांणी कीं पड़ूतर नीं दियौ। वा मूंडौ फेरनै दूजै कांनी सूयगी।—फुलवाड़ी

१६ किसी पीड़ा अथवा दर्द निवारण के लिए शरीर के किसी अंग पर हाथ फेरना।

१७ प्यार एवं दुलार के निमित्त किसी पर हाथ फेरना।

उ०—१ जेठूते के सिर पर हाथ फेरीजो, छोटी सी नणदली। म्हारी याद कहीज्यो ए कूंजरियां, सनेसो म्हारो लेती जाइज्यो ए उड़ती कंजरियां।—लो. गी.

उ०—२ राजा रांणी रै मोरां माथै हाथ फेरतौ कह्यौ—मरै दुख दाई भूत-पलीत।—फुलवाड़ी

१८ वचन पर दृढ़ न रहना, मुकरना।

ज्यूं०—जबांन फेरणी।

१९ कायरता दिखाना।

ज्यूं०—पूठ फेरणी।

२० पढ़े हुए को दोहराना, पुनः पढ़ना।

फेरणहार, हारौ (हारी), फेरणियौ—वि०।

फेराड़णौ, फेराड़बौ, फेराणौ, फेराबौ,

फेरावणौ, फेराववौ—प्रे० रू०।

फेरिओड़ौ, फेरियोड़ौ, फेरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

फेरीजणौ, फेरीजबौ—कर्म वा०।

फउरणौ, फउरबौ, फेरवणौ, फेरवबौ, फोरणौ, फोरबौ,

फौरणौ, फौरबौ—रू० भे०।

फेरफार—सं० पु० [राज० फेर+फार] १ धूर्तता, चालाकी, छल कपट की बातें। २ घुमाव, फिराव, चक्कर। ३ बहुत बड़ा परिवर्त्तन, उलटफेर। ४ लेनदेन या व्यवहार के चलते रहने की क्रिया या भाव। ५ निश्चय।

६ फरक, अन्तर। उ०—जो अंणी वात मांहे तौ कांई फेरफार काई नहीं।—राजा रा गुर रा बेटा री वात

फेरबाज—सं० स्त्री०—देखो 'फेरवाज' (रू. भे.)

फेरव-सं० पु० [सं० फेरवः] (स्त्री० फेरवी) १ सियार, शृगाल, गीदड़। उ०—१ वजै रव डैरव वीस वतीस, उचैंरव फेरव देत असीस। चंडी द्रहवाट करैं चतुरंग, उडैं खग भाट चुखच्चुख अंग।—मे. म.

उ०—२ जठै वेताळां रा आस्फाल, डाकिणी गणां रा डमरू रा डाकार फेरवियां रा फेत्कार प्रेतां रा आलाप राक्षसां रा रास कुणपां रा कपाळां रा कटकटाहट चिता रा अंगारां करि चित्र विचित्र वडौ अद्भुत चरित देखियौ।—वं. भा.

२ कपटी, चालाक। ३ हिंसक। ४ राक्षस।

फेरवणौ, फेरववौ—देखो 'फेरणौ, फेरवौ' (रू. भे.)

उ०—कोपियै छाकियै चहर भड़ अहर करि। फुरळतै विसए घड़ फेरवौ अफिर फिरि।—हा. भा.

फेरवणहार, हारौ (हारी), फेरवणियौ—वि०।

फेरविओड़ौ, फेरवियोड़ौ, फेरव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

फेरवीजणौ, फेरवीजवौ—कर्म वा०।

फेरवाज-सं० स्त्री० [देशज] लहंगे आदि के नीचे अन्दर की ओर लगने वाली वस्त्र की पट्टी या झलरी।

रू० भे०—फिरवाज, फरवाज, फेरावाज।

फेरवियोड़ौ—देखो 'फेरियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री० फेरवियोड़ी)

फेराड़णौ, फेराड़वौ—देखो 'फेराणौ, फेरावौ' (रू. भे.)

फेराड़णहार, हारौ (हारी), फेराड़णियौ—वि०।

फेराड़िओड़ौ, फेराड़ियोड़ौ, फेराड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।

फेराड़ीजणौ, फेराड़ीजवौ—कर्म वा०।

फेराड़ियोड़ौ—देखो 'फेरायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० फेराड़ियोड़ी)

फेराणौ, फेरावौ-क्रि० सं० [राज० 'फेरणौ' क्रि० का प्रे० रू०] १ ऊंट, घोड़ा, बैल आदि पशुओं को किसी के द्वारा चाल सिखवाना। २ किसी शस्त्रादि को हाथ में पकड़ कर ऊंचा-नीचा या इधर-उधर घुमवाना। ३ दिशा-परिवर्तन हेतु मुड़वाना। ४ परास्त करवाना, खदेड़वाना। ५ किसी के द्वारा भेजी हुई वस्तु को लौटवाना। ६ शादी के समय वर-वधू को अग्नि के चारों ओर चक्कर लगवाने में प्रवृत्त करना। ७ किसी वस्तु के इर्द-गिर्द चक्कर लगवाने के लिये प्रवृत्त करना। ८ किसी वस्तु को मंडलाकार गति में या चारों ओर घुमवाना। ९ किसी व्यक्ति को किसी स्थान पर भिजवाकर आना-जाना, करवाना, सम्पर्क स्थापित करवाना। १० सहलाने के लिए प्रवृत्त करना। ११ तेल, वारनिस, कलई आदि किसी तरल पदार्थ से किसी वस्तु को पुतवाना या पालिश करवाना। १२ किसी वस्तु या व्यक्ति को जन-समुदाय के दर्शनार्थ या सूचनार्थ घुमवाना। १३ किसी वस्तु को उपभोगार्थ प्रस्तुत करवाना। १४ किसी वस्तु के स्थान, क्रम या पूर्व-स्थिति में परिवर्तन करवाना। १५ किसी वस्तु या व्यक्ति को सामान्य स्थिति से विपरीत दिशा की ओर घुमवाना या मुड़वाना। १६ वचन से विचलित करवाना, मुकराना। १७ किसी पीड़ा या दर्द के निवारणार्थ शरीर के किसी अंग पर हाथ फिरवाना। १८ प्यार एवं दुलार के निमित्त किसी का हाथ फिरवाना। १९ पढ़े हुए को दोहराने के लिए प्रवृत्त करना। २० देखो 'फिराणौ, फिरावौ' (रू. भे.)

फेराणहार, हारौ (हारी), फेराणियौ—वि०।

फेरायोड़ौ—भू० का० कृ०।

फेराईजणौ, फेराईजवौ—कर्म वा०।

फेराड़णौ, फेराड़वौ, फेरावणौ, फेराववौ, फिराणौ, फिरावौ—रू० भे०।

फेरादी—देखो 'फरियादी' (रू. भे.)

उ०—उडंडां ऊपड़ी वागां टोळां नूं घेरिया इसा, किसा देस साहिजादा घाड़ा में करूर। बोलै जो फेरादी कूक सांभळै जवन्ना वांगां, जाडा थंडां लागा पीठ सांकड़ै जरूर।—बादरदांन दधवाड़ियौ

फेराफेरी-सं० पु०—किसी वस्तु या पदार्थ को इधर-उधर करने की क्रिया, उलट-पुलट करने की क्रिया।

२ क्रम परिवर्तन करने की क्रिया।

३ आवागमन। उ०—जन मीरां कूं गिरधर मिलिया, दुख मेटन सुख दे री। रूम रूम साता भई उर में, मिटि गई फेराफेरी।—मीरां

फेरावाज—देखो 'फरवाज' (रू. भे.)

फेरायोड़ौ-भू० का० कृ०—१ घोड़ा, बैल आदि को चाल सिखाया हुआ. २ किसी शस्त्रादि को हाथ में पकड़ाकर इधर-उधर ऊंचा नीचा घुमाने में प्रवृत्त किया हुआ. ३ एक दिशा से दूसरी दिशा की ओर मुड़वाया हुआ. ४ परास्त करवाया हुआ, खदेड़वाया हुआ. ५ किसी के द्वारा भेजी हुई वस्तु को वापस लौटवाया हुआ. ६ शादी के समय वर-वधू को अग्नि के सम्मुख चक्कर लगवाने में प्रवृत्त किया हुआ. ७ किसी वस्तु के इर्द-गिर्द चक्कर लगाने में प्रवृत्त किया हुआ. ८ किसी वस्तु को धुरी पर मंडलाकार गति से या चारों ओर घुमाने में प्रवृत्त किया हुआ. ९ किसी व्यक्ति को किसी स्थान पर भिजवाकर आना-जाना करवाया हुआ, सम्पर्क स्थापित करवाया हुआ. १० सहलवाने में प्रवृत्त किया हुआ. ११ तेल, वारनिस, कलई आदि किसी तरल पदार्थ से कोई तल या सतह पोताया हुआ, पालिश करवाया हुआ. १२ कोई वस्तु या व्यक्ति जन-समुदाय के दर्शनार्थ या सूचनार्थ घुमवाया हुआ. १३ किसी वस्तु को उपभोगार्थ प्रस्तुत करवाया हुआ. १४ किसी वस्तु के स्थान, क्रम या पूर्व-स्थिति में परिवर्तन करवाया हुआ.

१५ प्यार एवं दुलार के निमित्त किसी से शरीरांग पर हाथ फिरवाया हुआ. १६ किसी वस्तु या व्यक्ति को सामान्य स्थिति से विपरीत दिशा की ओर मुड़वाया हुआ. १७ वचन विमुख करवाया हुआ, मुकरवाया हुआ. १८ किसी पीड़ा या दर्द के निवारणार्थ शरीर के किसी अंग पर हाथ फिरवाया हुआ. १९ पढ़ हुए को दोहरवाया हुआ, पुनः पढ़वाया हुआ.
२० देखो 'फिरायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० फेरायोड़ी)

फेरावणौ, फेराववौ—देखो 'फेराणौ, फेरावौ' (रू. भे.)
उ०—घोड़ा नै किण उमर में फेरावणौ नै किण तरह फेरावणौ जिण रौ वरणन।—शा. हो.
फेरावणहार, हारौ (हारी), फेरावणियौ—वि०।
फेराविग्रोड़ौ, फेरावियोड़ौ, फेराव्योड़ौ—भू०का०कृ०।
फेरावीजणौ, फेरावीजवौ—कर्म वा०।

फेरावियोड़ौ—देखो 'फेरायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० फेरावियोड़ी)

फेरासारी—सं० स्त्री०—उलट-फेर।
उ०—इतरी वात बादसाह भंवर सुण काजी कांमदार सूं नाराज हुयौ ओर कही—हम सारीखी जोड़ी देख भेज्या था। तुम लालच पड़ कर फेरासारी कीन्ही है।—जलाल वूबना री वात

फेरि—क्रि०वि०—फिर, पुनः।
उ०—पड़ै रिण पाखती छीणवै हार परि। आवरत फेरि संघारि झुंझारि अरि।—हा. झा.

फेरिय—सं० पु०—धतूरा।

फेरियोड़ौ—भू० का० कृ०—१ ऊंट, घोड़ा, बैल आदि पशुओं को चाल सिखाया हुआ, शिक्षित किया हुआ. २ किसी शस्त्रादि को हाथ में पकड़कर इधर-उधर, ऊंचा-नीचा घुमाया हुआ. ३ एक दिशा से दूसरी दिशा की ओर लेजाया हुआ, मोड़ा हुआ. ४ परास्त किया हुआ, खदेड़ा हुआ. ५ किसी के द्वारा भेजी हुई वस्तु को न लेकर पुनः लौटाया हुआ. ६ शादी के समय अग्नि के सम्मुख वर-वधू को चक्कर लगवाया हुआ. ७ किसी वस्तु के इर्द-गिर्द चक्कर लगवाया हुआ. ८ किसी वस्तु को धुरी पर मंडलाकार गति में या चारों ओर घुमाया हुआ. ९ किसी व्यक्ति को किसी स्थान पर भेजकर आना-जाना किया हुआ, सम्पर्क स्थापित किया हुआ. १० सहलाया हुआ. ११ तेल, वारनिस, कलई आदि तरल पदार्थ से कोई पदार्थ पोता हुआ, पालिश किया हुआ. १२ किसी वस्तु या व्यक्ति को जन-समुदाय के दर्शनार्थ या सूचनार्थ घुमाया हुआ. १३ किसी वस्तु को उपभोगार्थ प्रस्तुत किया हुआ. १४ किसी वस्तु के स्थान, क्रम या पूर्व-स्थिति में परिवर्तन किया हुआ. १५ किसी पीड़ा अथवा दर्द के निवारण के लिये शरीर के किसी अंग पर हाथ फेरा हुआ. १६ प्यार एवं दुलार के निमित्त किसी पर हाथ फेरा हुआ. १७ कोई पदार्थ सामान्य स्थिति से विपरीत दिशा की ओर मुड़ा हुआ. १८ वचन से विमुख हुवा हुआ, मुकरा हुआ १९ कायरता दिखाया हुआ. २० पढ़े हुए को दोहराया हुआ, पुन पढ़ा हुआ.
(स्त्री० फेरियोड़ी)

फेरिस्त—देखो 'फैरिस्त' (रू. भे.)

फेरी—सं० स्त्री० [राज० फिरणौ] १ परिक्रमा, प्रदक्षिणा।
उ०—ग्यांन ध्यांन को ढोल वणावौ, फेरी समझ फिरोरी। सुरत निरत सूं देखो साचौ, अनुभव फाग उडोरी।
—स्रीहरिरांम जी महाराज
२ योगी, फकीर या साधु का भिक्षा निमित्त नियमित चक्कर।
उ०—दरसण कारण भई वावरी, विरह विथा तन घेरी। तेरे कारण जोगण हूंगी, देऊं नगर विच फेरी।—मीरां
३ व्यापारी द्वारा विक्रय के लिए लगाया गया नियमित गांव, कस्बा, शहर आदि का चक्कर।
४ चक्कर।
उ०—रांक सां कर रवि परी केरी, झूझवातइं मेल्ही फेरी। तीणि वात मनि हउं लाजउं, सैन्य कौरव तणै नवि माजउं।—शालिसूरि

फेरीवाळौ—वि० [राज० फेरी+वाळौ] गांव, शहर, कस्बा आदि की गली २ में वस्तु-विक्रय हेतु चक्कर लगाने वाला।

फेरू—क्रि०वि०—फिर, पुनः।
उ०—१ सेखै दादरी कै बीचि थांणा नै वठाया, फेरूं या पठांणां नै विहांणी को खिनाया।— शि.वं.
उ०—२ फिरिया नहिं फेरू मारग मेरू, तेरू पार तिरंदा है। बकवाद विखेरू हिये में हेरू, गेरू रंग गहरंदा है।—ऊ. का.
वि०—१ फिराने वाला, घूमाने वाला।
२ ऊंट, बैल, घोड़ा आदि पशुओं को ठीक चाल सिखाने वाला।
रू०भे०—फैरू।

फेरौ—सं० पु०—१ इधर से उधर घूमना, बार-बार आना-जाना।
उ०—विलळी वातां री वांणीं ववरावै, पतळी झिण जिण में पांणी पवरावै। घालै विसमत मत मगमग ठग घेरौ, फोरी किसमत सूं पगपग पग फेरौ।—ऊ. का.
२ विवाह के समय अग्नि के चारों ओर वर-वधू द्वारा लगायी जाने वाली परिक्रमा या भांवर।
उ०—१ कंवा चूंधा कर फेरा उळझावै, वनड़ौ वनड़ी वर मनड़ौ मुरझावै। रस में वेरस वस रागांरळ रीसै, दुलहणि दुलहे नै दावानळ दीसै।—ऊ. का.
क्रि० प्र०—खाणौ, लगाणौ।
३ फिरना, घूमना।

उ०—दुरजन जे वांका हता, नार कीया ते जेरी रे । जिम म्रगपति नै आगलै, न सकै गयवर फेरौ रे ।—वि. कु.

४ किसी वस्तु या स्थान के चारों ओर किया जाने वाला परिक्रमण।

उ०—चौ बकरी रै खोजां उणरी खोय करतौ वाड़ा पासै जाय पुगौ वाड़ा रै चारूं मेर फेरौ दियौ पण डीगी वाड़ रै कारण कीं कारी लागी नीं ।—फुलवाड़ी

क्रि० प्र०—दैणौ ।

५ किसी व्यक्ति द्वारा किसी स्थान पर नित्य-प्रति कुछ प्राप्ति के लालच से लगाया जाने वाला चक्कर ।

ज्यूं०—मंगता रौ फेरौ ।

६ किसी वस्तु या स्थान का निरीक्षण करने या किसी से हालचाल पूछने हेतु लगाया जाने वाला चक्कर ।

ज्यूं०—खेत रौ फेरौ, अस्पताळ रौ फेरौ ।

क्रि० प्र०—दैणौ, लगाणौ ।

७ जन्म-मरण का आवागमन ।

उ०—१ रयणि भ्रुजावळ आफळ 'रतनौ', सारां चढ़ि नीवड़ असमांण । जांमण मरण तणौ लगि चिहुं जुग, भागौ फेरौ कविलै भांण । —दूदौ

उ०—२ आठूं पहर खवासी चाकर, सनमुख राखूं डेरा । बंदीवांन राज रौ चाकर,मेटौ चौरासी रा फेरा ।—स्रीहरिरांम जी महाराज

मुहा०—१ चौरासी रौ फेरौ—जन्म और मरण का चक्र ।

२ निन्याणवे रौ फेरौ—द्रव्य एकत्रित करने का चक्र

८ फरक, अंतर । उ०—फूलांणी फेरौ घणौ, पांचां सातां दूर । रातां दीठा मलफता नहीं उगते सूर ।—अज्ञात

९ वार, दफा ।

उ०—१ प्रथम संवत १७९२ दिली पधारिया राजाधिराज । दूसरै फेरै संवत १८०४ दिली पधारिया ।—बां. दा. ख्या.

उ०—२ गुरु एक बीजौ नगण, इम त्रिणि फेरा आंणि । छेह रगण दीसै छतौ, विधि निसिपाळ वखांणि ।—पि. प्र.

१० समय ।

११ शौच-निवृत्ति । उ०—तठा उपरायंत देसोत फेरां सारा फिर आया छै । हाथ पग मिटी सूं उजळा कीजै छै ।—रा. सा. सं.

फेलौ—वि० [अं०] १ समासद । २ सहयोगी ।

फेस—सं० पु० [अं०] चेहरा । २ सामना ।

फेसणौ, फेसबौ—क्रि०स० [सं० पिष्ट] १ रगड़ के साथ महीन चूर्ण बना डालना, पीसना ।

उ०—सहरयार मीनोचहर, कैकाऊस जुहांक । सुलेमांन जमसेद नूं, फेस गयौ जम फाक ।—बां. दा.

२ तोड़ना, फोड़ना ।

फेसणहार, हारौ (हारी), फेसणियौ—वि० ।

फेसाड़णौ, फेसाड़बौ, फेसाणौ, फेसाबौ,

फेसावणौ, फेसावबौ—प्रे०रू० ।

फेसिओड़ौ, फेसियोड़ौ, फेस्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

फेसीजणौ, फेसीजबौ—कर्म वा० ।

पेसणौ, पेसबौ—रू० भे० ।

फेसन—देखो 'फैसन' (रू. भे.)

फेसाड़णौ, फेसाड़बौ—देखो 'फेसाणौ, फेसाबौ' (रू. भे.)

फेसाड़णहार, हारौ (हारी), फेसाड़णियौ—वि० ।

फेसाड़िओड़ौ, फेसाड़ियोड़ौ, फेसाड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

फेसाड़ीजणौ, फेसाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

फेसाड़ियोड़ौ—देखो 'फेसायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० फेसाड़ियोड़ी)

फेसाणौ, फेसाबौ—क्रि० स० [राज० 'फेसणौ' क्रि० का प्रे० रू०] १ रगड़ के साथ महीन चूर्ण बनवाना, पिसवाना ।

२ तुड़वाना, फुड़वाना ।

फेसाणहार, हारौ (हारी), फेसाणियौ—वि० ।

फेसायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

फेसाईजणौ, फसाईजबौ—कर्म वा० ।

फेसाड़णौ, फेसाड़बौ, फेसावणौ, फेसावबौ—रू० भे० ।

फेसायोड़ौ—भू० का० कृ०—१ रगड़ के साथ महीन चूर्ण बनवाया हुआ, पिसवाया हुआ. २ तुड़वाया हुआ, फुड़वाया हुआ.

(स्त्री० फेसायोड़ी)

फेसावणौ, फेसावबौ—देखो 'फेसाणौ, फेसाबौ' (रू. भे.)

फेसावणहार, हारौ (हारी), फेसावणियौ—वि० ।

फेसाविओड़ौ, फेसावियोड़ौ, फेसाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

फेसावीजणौ, फेसावीजबौ—कर्म वा० ।

फेसावियोड़ौ—देखो 'फेसायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० फेसावियोड़ी)

फेसियोड़ौ—भू० का० कृ०—१ रगड़ से महीन चूर्ण बनाया हुआ, पिसा हुआ. २ तोड़ा हुआ, फोड़ा हुआ.

(स्त्री० फेसियोड़ी)

फेहरिस्त—देखो 'फैरिस्त' (रू. भे.)

फं—वि० [अनु०] १ उन्मत्त, मस्त । उ०—हाजरियौ परभूत सवार हौ, वौ नसा में फं हुयोड़ौ हौ ।—रातवासौ

२ तेज वायु चलने से उत्पन्न ध्वनि ।

रू० भे०—फूं ।

फंक—सं० स्त्री०—१ फेंकने की क्रिया या भाव । २ फेंकने की क्षमता । ३ असत्य बात । ४ सार या तथ्यहीन बात ।

मुहा०—फंकां मारणी—बढ़ाचढ़ा कर बातें बनाना ।

रू० भे०—फंक ।

फेंकणो, फेंकबो—क्रि० स० [सं० प्रक्षेपणम्] १ किसी वस्तु को वेगपूर्वक गति देकर दूर गिराना।

उ०—१ राजकंवर अबकी भळै लोथो फेंकियो। कालिंदरै तो अेक ई गपळका में दूजोड़ो लोथो ई खायग्यो।—फुलवाड़ी

उ०—२ भड़ सो ही पहलां पड़ै, चीलह विलग्गां चेक। नेण वचावै माहू रा, आप कळेजो फेंक।—वी. स.

२ असावधानी, आलस्य या भूल से किसी वस्तु को इधर-उधर रखना या छोड़ना।

ज्यूं०—थारी पोथी री म्हनै कांई ठा, अठै ई कठै फेंक दी व्हैला।

३ लापरवाही एव अनजाने किसी वस्तु को कहीं गिराना।

४ किसी को आघात पहुंचाने हेतु किसी वस्तु को वेगपूर्वक उस तक पहुंचाना। उ०—कुत्ता रै सांमी भाटो फेंको तो वो भुसै अर टू-टू करनै रोटी देवो तो वो पूंछ हिलावै।—फुलवाड़ी

५ अनाव एवं बेकार पदार्थ को जान-बूझकर बाहर डालना, गिराना या त्यागना।

उ०—अर जे भगवांन नै मांन्यां बिना मिनख री कांम नी चालै तो पुरांणा भगवांन नै भांग-भूंगनै उखरड़ी माथै फेंको, अर नवो भगवांन घड़ो जको मिनख-मिनख री छेती भांगे, वांनै आपस में गळै लगावै।—फुलवाड़ी

६ दृष्टि पहुंचाना, नजर फैलाना। उ०—सेठां री निजर कमजोर ही, इणसूं वांनै ताक सूं अड़तो चोर री मूंडो नी दीखियो। पण चोर तो मांय निजर फेंकतां ई सेठां री मूंडो देख लियो।

—फुलवाड़ी

७ उपेक्षापूर्वक एवं घृणापूर्वक किसी वस्तु को गिराना।

उ०—राजा उणरी पूठ सहळावतो बोल्यो—भली मांणस, जूवां रै डर सूं कठै ई घाबळियो फेंकीजै।—फुलवाड़ी

८ जुए आदि खेल में कौड़ी, पासा, गोटी या तास इस प्रकार डालना कि हार-जीत का निर्णय हो।

९ बिना सोचे समझे खर्च करना, अपव्यय करना।

१० किसी तनाव में बंधी हुई वस्तु को तनाव मुक्त करना कि जिससे वह वेग से दूर जाकर गिरे।

ज्यूं०—तीर फेंकणो।

११ किसी पीड़ा, दुख या खुशी के कारण हाथ-पांव हिलाना या पटकना।

ज्यूं०—उणनै बुखार इण तरै री आयो कै वो हाथ-पग फेंकण लागगो।

१२ कुश्ती या मल्लयुद्ध में प्रतिद्वन्दी को उछाल कर गिरा देना। ज्यूं०—भठा वाळो पैलवांन उणनै उठायनै फेंक दियो।

१३ आलस्य या अकर्मण्यतावश स्वयं द्वारा किया जाने वाला काम दूसरे पर डाल देना या सौंप देना।

फेंकणहार, हारो (हारी), फेंकणियो—वि०।

फेंकाड़णो, फेंकाड़बो, फेंकाणो, फेंकाबो,

फेंकावणो, फेंकावबो—प्रे० रू०।

फेंकिओड़ो, फेंकियोड़ो, फेंक्योड़ो—भू० का० कृ०।

फेंकीजणो, फेंकीजबो—कर्म वा०।

फेंकणो, फेंकबो—रू० भे०।

फंकरी—देखो 'फेकरी' (रू. भे.)

फंट—देखो 'फेंट' (रू. भे.)

फंटो—सं० पु०—सिर पर लपेट के साथ बांधने का एक लम्बोतरा वस्त्र विशेष, साफा।

उ०—ओछी अगरखिया दुपटी छीव देती, गोढै वरड़ीजै पूरा गांमेती। फंटा छोगाळा ग्याधा सिर फावै, टेढ़ा डोढ़ावै डिगतो नभ ढावै।—ऊ. का.

रू० भे०—फेंटो, फेटो, फैंटो।

मह०—फेंट।

फंण—सं०पु० [सं० फेणः] किसी तरल पदार्थ में हल-चल होने अथवा अन्य किसी कारण से उठे हुए बुदबुदों का समूह, झाग।

रू० भे०—फीण, फीण, फेण, फेन, फेनक, फंण, फैन।

फंतकार, फंतकारी, फेत्कार—१ देखो 'फेतकार' (रू. भे.)

उ०—कनां वह भायामी रांति वाही, तठा उपरांति करि नै राजांन सिलांमति फंतकारी गहकि नैं रही छै।—रा. सा. सं.

२ देखो 'फूतकार' (रू. भे.)

फंफड़ो—सं० पु० [सं० फुप्फुस] छाती में प्रायः बाई ओर स्थित धौंकनी के आकार का शरीर का वह भीतरी अवयव जिसके द्वारा प्राणी वायु लेता और छोडता है।

रू० भे०—फीफडो, फीफरो, फीफरड़, फीफरो, फेंफड़ो, फेफडो, फेफरो, फंफडो।

अल्पा०—फीफरियू, फीफरियो।

मह०—फिफर, फिफरड़, फिप्फर, फीफर, फीफरड, फीफर, फीफरड़, फेंफर, फेफर।

फंसी—वि० [अं०] दिखने मे सुन्दर व आकर्षक।

फै—सं० पु० [अनु०] १ साख। २ लाल। ३ फूल।

४ वसंत ऋतु। (एका०)

फैकरणो, फैकरबो—क्रि० अ०—१ करुणा करके रोना। उ०—लांघी चांवल पीळी हो खाळ, डांवी देवी जीमणी [सिय] माळ। डांवी महासत्ति फैकरइ, डांवा सारस, स्यंघ सियाळ। उठइ तुरीय खूंदावई वीसळराव।—वी. दे.

२ इतराना।

फैकरणहार, हारो (हारी), फैकरणियो—वि०।

फैकरिओड़ो, फैकरियोड़ो, फैकरयोड़ो—भू० का० कृ०।

फैकरीजणो, फैकरीजबो—भाव वा०।

फंकरियोड़ौ–भू० का० कृ०—१ करुणा करके रोया हुआ, इतरा हुआ. (स्त्री० फंकरियोड़ी)

फंकरी—देखो 'फेकरी' (रू. भे.)

फंकारी—देखो 'फेकारी' (रू. भे.)

फैक्टरी–सं० स्त्री० [अ०] कारखाना।

फैज–सं० पु० [अ० फ़ैज] १ फायदा, लाभ। २ परोपकार, हित। ३ दानशीलता। ४ यश, कीर्ति। रू० भे०—फेज।

फैटौ—१ देखो 'फेटौ' (रू. भे.) २ देखो 'फेंटौ' (रू. भे.)

फैण—देखो 'फेंण' (रू. भे.)
उ०—ऊछळैय फैण मुख भाट लाग, भळकत जेम दरियाव भाग। पग सधर पूठ पींडा प्रचंड, देवळ तन थांमा भुजयडंड।—पे.रू.

फैतकार, फैत्कार—१ देखो 'फूत्कार' (रू. भे.) २ देखो 'फेतकार' (रू. भे.)

फैन–वि०—पाखंडी, ढोंगी।
उ०—नाचै कूदै मोक्ष मांग के, आरंभ करै अनेक। जैन नही ओ फैन है, आंणौ हियै विवेक।—जयवांणी
सं० पु० [अं०] १ विद्युत-चालित पंखा।
२ देखो 'फैण' (रू. भे.)

फैफड़ौ—देखो 'फैफड़ौ' (रू. भे.)

फैंम—देखो 'फहम' (रू.भे.)

फैंमदार–वि० [फा० फहम+दार] बुद्धिमान, चतुर।
उ०—पछै अबु समझायौ, कह्यौ–अं इण तरफ वडा आदमी फैंमदार छै। इणां मु आंपणौ कांम आखर कर देसी।—नैणसी

फैयाज–वि० [अ० फैयाज] उदार, दातार।

फैयाज़ी–सं० स्त्री० [अ० फैयाजी] उदारता, दातारगी।

फैर–सं० पु०[अं०फायर]१ बंदूक, तोप आदि आग उगलने वाले हथियार का दगना, या उक्त हथियार से किया जाने वाला विस्फोटक प्रहार।
क्रि० प्र०—होणौ, करणौ।
२ देखो-'फेर' (रू० भे०)

फैरिस्त–सं० स्त्री० [अ० फ़ेहरिस्त] १ सूची-पत्र। २ बीजक। ३ सूची।
रू० भे०—फहरिस्त, फिरसत, फेरिस्त, फेहरिस्त।

फैरू—देखो 'फेरू' (रू. भे.)
उ०—थंड देखै रंका तणा उद्याळवा वीत थेलां, सुरीठ माळवा रोर गळवा सहीप। फीला सीस चढो मारु प्रजा नै पळावा फेरू माळवा देस पाछा पधारी महीप।—रतळांम वलूंतसिंघ री गीत

फैल–स०पु० [अ० फेअ्ल] १ उत्पात, उपद्रव।
उ०—१ मन फैल'न मावै सेल सुहावै, डेल वंक डोलंदा है। खट चक्र न खोलै तक्र वितोलै, एक चक्र ओलंदा है।—ऊ. का.
उ०—२ हुवै फैल धरण हेकंप हुवै, चढ़ तुरा रसै कुण खाग चाळौ। गढपति आज दूसरा नमिया घणा, अेक रहयौ अनम 'गुमांन'। वाळौ।—जवांन जी आढौ
२ ढोंग, पाखंड। उ०—आगरै कै बंधवां आगै, धूणी घाली सात, अेवड़-छेवड़ बळै बळीतौ, बीच लोटियौ जाट। मारै पलाथी मींट लगावै, करै गजब का फैल।—डूंगजी जवांर जी री पड़
३ अव्यवस्था, गड़बड़ी।
उ०—हूट करै फिरंग जिण वार दीधौ हुकम, करौ मत फैल अण-फैल काजा। अब लिखूं हुकम 'लधन' तणौ आवसी, रीत तद थावसी तिकौ राजा।—रावत जोधसिंह चुंडावत री गीत
४ शरारत। उ०—वाजै नित घूघर बंधै, फरगट वाळौ फैल। तन-मन मिलियौ तायफै, छाकां हिळियौ छैल।—वा. दा.
५ हलका नशा। उ०—सिकार री स्हैल, दारू री फैल घणी सुहायौ। रोसनी आतसबाजी री नूर, जहूर निजर आयौ।
—पनां वीरमदे री वात
६ बच्चों का रुष्ट होकर किया जाने वाला दुराग्रह, हठ
७ फैलने या फैले हुए होने की अवस्था या भाव, विस्तार।
[अं० फैल] ८ असफलता।

फैलणौ, फैलबौ–क्रि०अ० [सं० प्रसरणं,प्रा० पयल्ल] १ विस्तृत होना।
ज्यूं०—अरावली री पहाड़ लांबी दूर ताई फैलियोड़ी है।
२ स्थूल होना, मोटा होना।
३ पनपना, पसरना।
४ आवृत्त होना, छा जाना।
ज्यूं०—बंगळा माथै वेल खूब फैलियोड़ी है।
५ संख्या मे वृद्धि होना।
६ बिखरना, छितरा जाना।
७ आकार, रूप आदि में बढ जाना, अभिवृद्धि होना।
८ प्रचलित होना।
९ प्रसिद्ध होना। उ०—मारग चालता घटावू निसंक रातवासौ लेवता। गांव-गाव सेठां बिचै ई कुमार री जस घणौ फैलियौ।
—फुलवाड़ी
१० प्रसारित होना। उ०—ग्रांमणी लट्ठा सू उतरनै आंगणै आई उण वगत सूरज री उजास दुनियां में फैलण लागौ ही।—फुलवाड़ी
११ प्रकाशित होना। उ०—अधुरां डसणां सू उदै, विमळ हास दुतिवंत। सो संध्या सू चंद्रिका, फैली जाण फवंत।—वां. दा.
१२ व्यापक होना।
१३ कार्य-क्षेत्र की सीमा मे वृद्धि होना।
१४ प्रकट होना। उ०—जिम-जिम कायर थरहरै, तिम-तिम फैलै नूर। जिम-जिम वगतर ऊवड़ै,तिम-तिम फूलै सूर।—वी. स.

फैलणहार, हारौ (हारी), फैलणियौ—वि० ।
फैलाड़णौ, फैलाड़बौ, फैलाणौ, फैलाबौ, फैलावणौ, फैलावबौ —प्रे० रू० ।
फैलिओड़ौ, फैलियोड़ौ, फैल्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
फैलीजणौ, फैलीजबौ—भाव वा० ।
फेलणौ, फेलबौ—रू० भे० ।

फैलाड़णौ, फैलाड़बौ—देखो 'फैलाणौ, फैलाबौ' (रू. भे.)
फैलाड़णहार, हारौ (हारी), फैलाड़णियौ—वि० ।
फैलाड़िओड़ौ, फैलाड़ियोड़ौ, फैलाड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
फैलाड़ीजणौ, फैलाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

फैलाड़ियोड़ौ—देखो 'फैलायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० फैलाड़ियोड़ी)

फैलाणौ, फैलाबौ—क्रि० स० [राज० 'फैलणौ' क्रि० का प्रे० रू०] १ विस्तृत करना, फैलाना । २ पनपाना, पसारना । ३ आवृत्त करना, आच्छादित करना । ४ संख्या में वृद्धि करना । ५ बिखेरना, छितराना । ६ आकार, रूप आदि में वृद्धि करना, अभिवृद्धि करना। ७ प्रचलित करना, प्रचार करना । उ०—म्है दोनूं लोकां में रात-दिन मिनख अर अतलोक रा नारा में भूंडायां फैलाता रैवां, जिणसूं म्हांरै अठा रौ वासी मिनखां सूं किणी भांत री परीत नीं राखै ।—फुलवाड़ी
८ प्रसिद्ध करना । ९ प्रसारित करना । १० प्रकाशित करना । ११ व्यापक करना । १२ कार्यक्षेत्र की सीमाएं वढ़ाना । १३ प्रकट करना ।
फैलाणहार, हारौ (हारी), फैलाणियौ—वि० ।
फैलायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
फैलाईजणौ, फैलाईजबौ—कर्म वा० ।
फैलाड़णौ, फैलाड़बौ, फैलावणौ, फैलावबौ—रू० भे० ।

फैलायोड़ौ—भू० का० कृ०—१ विस्तृत किया हुआ, फैलाया हुआ. २ पनपाया या पसारा हुआ. ३ आवृत्त किया हुआ, आच्छादित किया हुआ. ४ संख्या वढ़ाया हुआ. ५ बिखेरा हुआ, छितराया हुआ. ६ आकार, रूप आदि में वृद्धि किया हुआ, अभिवृद्धि किया हुआ. ७ प्रचलित किया हुआ, प्रचार किया हुआ. ८ प्रसिद्ध किया हुआ. ९ प्रसारित किया हुआ. १० प्रकाशित किया हुआ. ११ व्यापक किया हुआ. १२ कार्य-क्षेत्र की सीमाएं वढ़ाया हुआ. १३ प्रकट किया हुआ.
(स्त्री० फैलायोड़ी)

फैलाव—सं० पु०—१ विस्तार, वढ़ाव ।
उ०—हे ओ काळी टोपी रो, फैलाव फिरंगी कीधौ ओ, काळी टोपी रो ।—लो.गी.
२ प्रचार । ३ लम्बाई–चौड़ाई ।

फैलावणौ, फैलावबौ—देखो 'फैलाणौ, फैलाबौ' (रू. भे.)
उ०—वौ दया नीं करै दया रौ ढोंग करै, वौ धरम नीं करै फगत धरम री जाळ फैलावै ।—फुलवाड़ी
फैलावणहार, हारौ (हारी), फैलावणियौ—वि० ।
फैलाविओड़ौ, फैलावियोड़ौ, फैलाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
फैलावीजणौ, फैलावीजबौ—कर्म वा० ।

फैलावियोड़ौ—देखो 'फैलायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० फैलावियोड़ी)

फैलियोड़ौ—भू० का० कृ०—१ विस्तृत हुवा हुआ, फैला हुआ. २ स्थूल या मोटा हुवा हुआ. ३ पनपा हुआ, पसरा हुआ. ४ आवृत हुवा हुआ. आच्छादित. ५ संख्या में बढ़ा हुआ. ६ बिखरा हुआ, छितरा हुआ. ७ आकार, रूप आदि में वृद्धि हुवा हुआ, अभिवृद्धित. ८ प्रचलित हुवा हुआ. ९ प्रसिद्ध हुवा हुआ. १० प्रसारित हुवा हुआ. ११ प्रकाशित हुवा हुआ. १२ व्यापक हुवा हुआ. १३ कार्य-क्षेत्र की सीमा वृद्धि हुआ हुआ. १४ प्रकट हुवा हुआ.
(स्त्री० फैलियोड़ी)

फैली—वि० १—उत्पाती, उपद्रवी । २ ढोंगी, पाखंडी । ३ वह वच्चा जो दुराग्रही या हठी हो ।

फैसन—सं० स्त्री० [अं० फैशन] १ आकर्षक श्रृंगार, दिखावा । २ प्रथा, प्रचलन । ३ रीति, चाल, ढंग ।

फैसलौ—सं० पु० [अ० फैसल:] १ निर्णय, निपटारा । उ०—इण में सगळी न्यात रौ पोचौ लागै । म्है आवारूं हाथौ-हाथ फैसलौ निवेड़नै आवूं ।—फुलवाड़ी
२ किसी अभियोग या व्यवहार के संबंध में न्यायालय की व्यवस्था ।

फैसवौ—सं० पु०—एक विशेष आकार का पतंग जो एक आने से लगा कर आठ आने तक की कीमत का होता है ।

फो—सं० पु०—१ फल । २ वैभ्रत । ३काल । ४ वंध्या । श्याम । (एका०)

फोई—देखो 'फुही' (रू. भे.)

फोओ—देखो 'फुंवौ' (रू. भे.)

फोक—वि०—१ व्यर्थ, फिजूल । उ०—व्रत न लीधौ रे, आस्रव नाले नै रोक । विकथा कीधी रे पारकी, जनम गमायौ फोक ।—जयवांणी
२ खोखला । उ०—अवधि वली ! अम्रतलता, फोक थयां फळ फूल । सेढ़उ आविउ व्रस्टि नुं, कइ भूयण-पति भूल ।
—मा. कां. प्र.
३ देखो 'फोकी' (मह., रू. भे.)

फोकट—१ देखो 'फोगट' (रू. भे.)
उ०—१ कूडी वात तुम्हारी घणी, फोकट ऊडावी मुझ-भणी । मात-पिता मुझनै पूछियौ, वळतउ मइं ऊतर आपियौ ।—ढो. मा.
उ०—२ दीलइं माहरइ दव वलइ, पवन पही लिइ वाट । सीत मंद सौरभ थई, फूंकि न फोकट माटि ।—मा. कां. प्र.

फोकी-सं० स्त्री० [देशज] १ योनि, भग।
२ गुदा।
मह०—फोक, फोकौ।

फोकौ—देखो 'फोकी' (मह., रू. भे.)

फोग-सं० पु०—१ मरुस्थल की एक छोटी झाड़ी।
उ०—करहा, नीरूं जउ चरइ, कंटाळउ नइ फोग। नागरवेलि किहां लहइ, थारा थोवड़ जोग।—ढो. मा.
अल्पा०—फोगड़ौ, फोगडौ, फोगलियौ, फोगलौ, फोगियौ।
मह०—फोगड़, फोगल।
२ ऊंट, बकरी आदि की चोरी।

फोगड़—देखो 'फोग' (मह., रू. भे.)
उ०—सीस छबीली छांट, भूमखौ मोत्यां झब्बौ। घड़ीक घमकै मेघ, घड़ी दो फोगड़ फबौ।—दसदेव

फोगड़ौ—देखो 'फोग' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—जटा जूट जोगी जबर है, जूनौ जिण री जोगड़ौ। इळा पिगळा जड़ांपियांळां, भल मरु फरजन फोगड़ौ।—दसदेव

फोगट-वि० [मरा० फुकट] १ व्यर्थ, वृथा, फिजूल।
उ०—सुच्चा राड़ लगाय, फोगट सीस फोड़ाय दे। निरनर पच सवाय, चट वण जावै 'चकरिया'।—मोहनलाल साह
२ विना मूल्य।
रू० भे०—फोकट।

फोगडौ—देखो 'फोग' (अल्पा., रू. भे.)

फोगणौ, फोगबौ—देखो 'फोगरणौ, फोगरबौ' (रू. भे.)
उ०—मोडां दुग्गह माळिया, गावर फोगै गाल। भोगै सुंदर भांमणी, मुफ्त अरोगै माल।—ऊ. का.
फोगणहार, हारौ (हारी), फोगणियौ—वि०।
फोगिओड़ौ, फोगियोड़ौ, फोग्योड़ौ—भू० का० कृ०।
फोगीजणौ, फोगीजबौ—भाव वा०।

फोगरणौ, फोगरबौ-क्रि० अ०—फूलना, प्रफुल्लित होना।
फोगरणहार, हारौ (हारी), फोगरणियौ—वि०।
फोगराड़णौ, फोगराड़बौ, फोगराणौ, फोगराबौ,
फोगरावणौ, फोगराववौ—प्रे० रू०।
फोगरिओड़ौ, फोगरियोड़ौ, फोगरयोड़ौ—भू० का० कृ०।
फोगरीजणौ, फोगरीजबौ—भाव वा०।
फोगणौ, फोगबौ—रू० भे०।

फोगराड़णौ, फोगराड़बौ—देखो 'फोगराणौ, फोगराबौ' (रू. भे.)
फोगराड़णहार, हारौ (हारी), फोगराड़णियौ—वि०।
फोगराड़िओड़ौ, फोगराड़ियोड़ौ, फोगराड़योड़ौ—भू० का० कृ०।
फोगराड़ीजणौ, फोगराड़ीजबौ—कर्म वा०।

फोगराड़ियोड़ौ—देखो 'फोगरायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० फोगराड़ियोड़ी)

फोगराणौ, फोगराबौ-क्रि० स० [राज० 'फोगरणौ' क्रि० का प्रे० रू०] फूलाना, प्रफुल्लित करना।
फोगराणहार, हारौ (हारी), फोगराणियौ—वि०।
फोगरायोड़ौ—भू० का० कृ०।
फोगराईजणौ, फोगराईजबौ—कर्म वा०।
फोगराड़णौ, फोगराड़बौ, फोगरावणौ, फोगराववौ,
फोगाणौ, फोगाबौ—रू० भे०।

फोगरायोड़ौ-भू० का० कृ०—फूलाया हुआ, प्रफुल्लित किया हुआ.
(स्त्री० फोगरायोड़ी)

फोगरावणौ, फोगराववौ—देखो 'फोगराणौ, फोगराबौ' (रू. भे.)
फोगरावणहार, हारौ (हारी), फोगरावणियौ—वि०।
फोगराविओड़ौ, फोगरावियोड़ौ, फोगराव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
फोगरावीजणौ, फोगरावीजबौ—कर्म वा०।

फोगरावियोड़ौ—देखो 'फोगरायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० फोगरावियोड़ी)

फोगरियोड़ौ-भू० का० कृ०—फूला हुआ, प्रफुल्लित हुवा हुआ.
(स्त्री० फोगरियोड़ी)

फोगल—देखो 'फोगलौ' (मह., रू. भे.)
उ०—फोगल पछे पिटाळ, जंगळां भींट भिटाळी। सूरज ऊगण वेळ, फड़मलां छवि निराळी।—दसदेव

फोगलियौ—१ देखो 'फोगलौ' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—चेत में फोगां फोगलियौ, मीठी वात वणावतौ। मिनखां री जंगळ गयां, हियौ हिलोळा खावतौ।—दसदेव
२ देखो 'फोग' (अल्पा., रू. भे.)

फोगलौ-सं० पु० [देशज] १ फोग के फूल आने से पूर्व की दशा जो छोटे-छोटे दानों के रूप में होता है।
उ०—वाळक भर वागळी ल्यावै, हरी वाड़ियां लूंट कर। छाछेता, रायता, ढोकळ, किसत फोगलै चूंट कर।—दसदेव
वि० वि०—इनको फोग से पृथक कर सुखा दिये जाते हैं। बाद में इनका रायता बनाते हैं।
२ देखो 'फोग' (अल्पा., रू. भे.)
अल्पा०—फोगलियौ।
मह०—फोगल।

फोगसींगियौ-वि०—वह घोड़ा जिसके पिछले पैर के संधि-स्थल पर भंवरी हो। (अशुभ) (शा. हो.)

फोगाणौ, फोगाबौ—देखो 'फोगराणौ, फोगराबौ' (रू. भे.)
फोगाणहार, हारौ (हारी), फोगाणियौ—वि०।
फोगायोड़ौ—भू० का० कृ०।
फोगाईजणौ, फोगाईजबौ—कर्म वा०।

फोगायोड़ौ—देखो 'फोगरायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० फोगायोड़ी)

फोगियोड़ौ—देखो 'फोगरियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० फोगियोड़ी)

फोगियौ—देखो 'फोग' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—आयण गांण आरतौ गुणै, भगवा भेखां जोगियां। वंसी अलगूं जा वजावै, हरख हुस्योड़ फोगियां।—दसदेव

फोड़उ—देखो 'फोड़ौ' (रू. भे.)

उ०—कंठमाला गड़ गुंबड़ सवला, ग्रंण कुरम रोग टलइ सगला। पीड़ा न करइ कुण गलि फोड़उ, नित नांम जपउ स्रीनाकउड़उ।—कु.

फोड़णौ, फोड़बौ—क्रि० स० [सं० स्फोटनम्.] १ दवाव डालकर, आघात देकर या ऊपर से गिरा कर किसी वस्तु को तोड़ना, खण्ड-खण्ड करना।

उ०—१ आछ 'रांमदे' पीवण अटकी दूमां 'नाभै' घाली भटकी। मीरां फोड़ गई जळ मटकी, पापी श्रेड़ वोवदे पटकी।—ऊ. का.

उ०—२ गुमांन जी री साथ पेम जी, हेम जी स्वांमी नैं बोल्यौ—हेम जी तीन तूं वड़ा वधता हुंता ते आज फोड़ न्हाख्या।—भि. द्र.

उ०—३ गरबै फोड़ै कुंमगज, घण वळ घावड़ियांह। पापड़ फोड़ पोमावही, मन में मावड़ियांह।—वां. दा.

२ आनद्ध-वाद्य-यन्त्र को विदीर्ण करना, छिद्रित करना।

३ दवाव डालकर या धक्का देकर किसी रोक, वांध, वाधा आदि का तोड़ देना, अवरोध हटाकर दूर कर देना, परिधि का खण्डन करना।

उ०—१ सज्जन वांधै पाळ सिर, सीसा छकियां गाळ। दुरजण फोड़ै गाळ दै, प्रीत सरोवर पाळ।—वां. दा.

उ०—२ गड़ां रा तोड़णहार, दरवाजां रा फोड़णहार, दळां रा मोड़णहार, दळां रा पगार, फोजां रा सिणगार, इण भांति गजराज सिणगार पाखरीआ छै।—रा. सा. सं.

४ किसी दल विशेष के सदस्य को या किसी व्यक्ति को प्रलोभन देकर अपनी ओर मिला लेना।

उ०—१ सो रावळ जी राघौ नूं फोड़ियौ। आप वातां कर वरस दोय पाछै सवाई नूं काढ़ वीकूपुर नूं आप उरौ लियौ।
—सुंदरदास भाटी वींकूपुरी री वारता

उ०—२ तो म्हें जोधपुर तोनूं दियौ पण जोधपुर अमरावां सारै छै सो तू उवा नूं फोड़ राजी कर।
—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

५ विरोध डालना।

६ पृथक करना, अलग करना।

७ चोट या प्रहार द्वारा शरीर के किसी अंग में घाव करना, अंग को विकृत करना।

८ किसी स्त्री के साथ संभोग करना, मैथुन करना, रति क्रिया करना।

९ मर्यादा का उल्लंघन करना, सीमा छोड़ना।

१० मारना, पीटना।

११ किसी रहस्य को प्रगट करना, वात खोलना।

१२ किसी घटना या वात को प्रसारित करना, वात फैलाना विज्ञापन करना।

१३ विध्वंस करना, नष्ट करना, तहस-नहस करना।

१४ फोड़े या फुंसी को चीर-फाड़ कर मवाद निकालना।

१५ वंब या आतिशवाजी का विस्फोट करना।

१६ ऊपरी आवरण या तल में स्थान-स्थान पर छिद्र करना, अवकाश करना।

फोड़णहार, हारौ (हारी), फोड़णियौ—वि०।

फोड़ाड़णौ, फोड़ाड़बौ, फोड़ाणौ, फोड़ाबौ, फोड़ावणौ, फोड़ावबौ—प्रे० रू०

फोड़िओड़ौ, फोड़ियोड़ौ, फोड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।

फोड़ीजणौ, फोड़ीजबौ—कर्म वा०।

फोडणौ, फोडबौ, फोरणौ, फोरबौ, फौड़णौ, फौड़बौ—रू० भे०।

फोड़ाड़णौ, फोड़ाड़बौ—देखो 'फोड़ाणौ, फोड़ाबौ' (रू. भे.)

फोड़ाड़णहार, हारौ (हारी), फोड़ाड़णियौ—वि०।

फोड़ाड़िओड़ौ, फोड़ाड़ियोड़ौ, फोड़ाड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।

फोड़ाड़ीजणौ, फोड़ाड़ीजबौ—कर्म वा०।

फोड़ाड़ियोड़ौ—देखो 'फोड़ायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० फोड़ाडियोड़ी)

फोड़ाणौ, फोड़ाबौ—क्रि० स० [राज० 'फोड़णौ' क्रि० का प्रे० रू०]

१ किसी वस्तु को आघात देकर, दववाकर अथवा ऊपर से गिरवा कर खंड-खंड करवाना, तुड़वाना।

२ आनद्ध-वाद्य-यन्त्र को विदीर्ण करवाना, छिद्रित करवाना।

३ दवाव डलवाकर अथवा धक्के दिलवाकर किसी रोक, वांध, वाधा आदि को तुड़वाना, अवरोध हटवाकर दूर करवाना, परिधि का खण्डन करवाना।

४ किसी दल विशेष के सदस्य को या किसी व्यक्ति को प्रलोभन दिलवाकर अपनी ओर मिलवाना।

५ विरोध डलवाना।

६ पृथक करवाना, अलग करवाना।

७ चोट या प्रहार द्वारा शरीर के किसी अंग में घाव करवाना, अंग को विकृत कराना।

८ किसी स्त्री के साथ संभोग करवाना, मैथुन कराना, रति क्रिया करवाना।

९ मर्यादा का उल्लंघन कराना, सीमा छुड़वाना।

१० किसी के द्वारा मरवाना, पिटवाना।

११ रहस्योद्‌घाटन करवाना, बात खुलवाना।
१२ किसी घटना या बात को प्रसारित करवाना।
१३ विध्वंस कराना, नष्ट करवाना, तहस-नहस करवाना।
१४ फोड़े या फुंसी को चीर-फाड़ कर उसमें से मवाद निकलवाना।
१५ बंब या आतिशबाजी का विस्फोट करवाना।
१६ ऊपरी आवरण या तल में स्थान-स्थान पर छिद्र करवाना, अवकाश करवाना।

फोड़ाणहार, हारौ (हारी), फोड़ाणियौ—वि०।
फोड़ायोड़ौ—भू० का० कृ०।
फोड़ाईजणौ, फोड़ाईजबौ—कर्म वा०।
फोड़ाड़णौ, फोड़ाड़बौ, फोड़ावणौ, फोड़ावबौ, फोड़ाणौ, फौड़ाबौ—रू० भे०।

फोड़ायोड़ौ—भू० का० कृ०—१ किसी वस्तु को आघात देकर, दबवा कर अथवा ऊपर से गिरवाकर खंड-खंड करवाया हुआ, तुड़वाया हुआ. २ आनद्ध-वाद्य को विदीर्ण करवाया हुआ, छिद्रित करवाया हुआ. ३ दबाव डलवाकर अथवा धक्के दिलवाकर किसी रोक, बांध, बाधा आदि को तुड़वाया हुआ, अवरोध हटवाकर दूर करवाया हुआ, परिधि का खण्डन करवाया हुआ. ४ किसी दल विशेष के सदस्य को या किसी व्यक्ति को प्रलोभन दिलवाकर अपनी ओर मिलवाया हुआ. ५ विरोध डलवाया हुआ. ६ पृथक करवाया हुआ, अलग करवाया हुआ. ७ चोट या प्रहार द्वारा शरीर के किसा अंग मे घाव करवाया हुआ, अंग को विकृत करवाया हुआ. ८ किसी स्त्री के साथ संभोग करवाया हुआ, मैथुन करवाया हुआ, रति क्रिया करवाया हुआ. ९ मर्यादोल्लंघन करवाया हुआ, सीमा छुड़वाया हुआ. १० किसी के द्वारा पिटवाया हुआ, मरवाया हुआ. ११ रहस्योद्‌घाटन करवाया हुआ, बात खुलवाया हुआ. १२ किसी घटना या बात को प्रसारित करवाया हुआ. १३ विध्वंस करवाया हुआ. नष्ट करवाया हुआ, तहस-नहस करवाया हुआ. १४ फोडे या फुंसी को चीर-फाड कर उसमे से मवाद निकलवाया हुआ. १५ बंब या आतिशबाजी का विस्फोट करवाया हुआ. १६ ऊपरी आवरण या तल में स्थान-स्थान पर छिद्र करवाया हुआ, अवकाश करवाया हुआ.
(स्त्री० फोड़ायोड़ी)

फोड़ावणौ, फोड़ावबौ—देखो 'फोड़ाणौ, फोड़ाबौ' (रू.भे.)
फोड़ावणहार, हारौ (हारी), फोड़ावणियौ—वि०।
फोड़ाविओड़ौ, फोड़ावियोड़ौ, फोड़ाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
फोड़ावीजणौ, फोड़ावीजबौ—कर्म वा०।

फोड़ावियोड़ौ—देखो 'फोड़ायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० 'फोड़ावियोड़ी')

फोड़ियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ दबाव डालकर, आघात देकर अथवा ऊपर से गिरा कर किसी वस्तु को तोड़ा हुआ, खण्ड-खण्ड किया हुआ. २ आनद्ध-वाद्य-यन्त्र को विदीर्ण किया हुआ, छिद्रित किया हुआ. ३ दबाव डालकर अथवा धक्का देकर किसी रोक, बांध, बाधा आदि को तोड़ा हुआ, अवरोध हटाकर दूर किया हुआ, परिधि का खण्डन किया हुआ. ४ किसी दल विशेष के सदस्य को या किसी व्यक्ति को प्रलोभन देकर अपनी ओर मिलाया हुआ. ५ विरोध डाला हुआ. ६ पृथक किया हुआ, अलग किया हुआ. ७ चोट या प्रहार से शरीर के किसी अंग मे घाव किया हुआ, अंग को विकृत किया हुआ. ८ किसी स्त्री के साथ संभोग किया हुआ, मैथुन किया हुआ, रति क्रिया किया हुआ. ९ मर्यादा का उल्लंघन किया हुआ, सीमा छोडा हुआ. १० मारा हुआ, पीटा हुआ. ११ रहस्योद्‌घाटन किया हुआ, बात खोला हुआ. १२ किसी बात अथवा घटना को प्रसारित किया हुआ, विज्ञापन किया हुआ. १३ विध्वंस किया हुआ, नष्ट किया हुआ, तहस-नहस किया हुआ. १४ फोड़े या फुंसी को चीर-फाड़ कर मवाद निकाला हुआ. १५ बंब या आतिशबाजी का विस्फोट किया हुआ. १६ ऊपरी आवरण या तल मे स्थान-स्थान पर छिद्र किया हुआ, अवकाश किया हुआ.
(स्त्री० फोड़ियोड़ी)

फोड़ौ—स० पु० [सं० स्फोटक, प्रा० फोड़] १ शारीरिक विकार के कारण होने वाला वह उभार जिसमें मवाद, खून आदि गंदगी भर गई हो, फोड़ा।
२ तकलीफ, कष्ट, संकट।
उ०—१ कमावण खावण री उणरी पौच कोनी ही। नित फोड़ा पड़ता।—फुलवाड़ी
उ०—२ सीर री खेती, में सेवट तौ हालणौ ई पड़सी, अेकली बन नै कठा लग फोड़ा घालू।—फुलवाड़ी
क्रि० प्र०—घालणौ, दैणौ, पड़णौ, पटकणौ।
रू० भे०—फोड़उ, फोडउ।

फोज—देखो 'फौज' (रू. भे.)
उ०—जगमाळ फोज ले सीरोही आयौ। राय सुरतांण सिरोही छोड़ दी।—नैणसी

फोजआभरण—देखो 'फौजआभरण' (रू. भे.) (डिं. नां. मा.)

फोजगाहण—देखो 'फौजगाहण' (रू. भे.) (डिं. नां. मा.)

फोजदार—देखो 'फौजदार' (रू. भे.) (डिं. को.)
उ०—पाछै बाळक २ पालणा मांहै रहि गया—एक चहुवांण री नै एक जाट री। पछै बाळक २ फोजदार रै नजर गुदराया।—नैणसी

फोजदारी—देखो 'फौजदारी' (रू.भे.)

फोजबंधी—देखो 'फौजबंधी' (रू. भे.)

फोजमुसाहब—देखो 'फौजमुसाहब' (रू. भे.) (डिं. को.)

फोट, फोटकार-सं० स्त्री०—१ धिक्कार, अपमान, तिरस्कार।

२ किसी वस्तु के फूटने या टूटने से उत्पन्न ध्वनि ।

फोटू-सं० पु० [अं०] चित्र, तस्वीर।

रू० भे०—फोटौ

फोटोग्राफ-सं० पु० [अं०] यांत्रिक उपकरण (केमरा) से लिया जाने वाला चित्र।

फोटोग्राफर-सं० पु० [अं०] यांत्रिक उपकरण (केमरा) से चित्र उतारने या लेने वाला व्यक्ति।

फोटोग्राफी-सं० स्त्री० [अं०] प्रकाश की किरणों के माध्यम से किसी यांत्रिक उपकरण (कैमरा) की सहायता से रासायनिक परिवर्तन के परिणाम स्वरूप आकृति या चित्र अंकित करने की कला या विद्या।

फोटौ—देखो 'फोटू' (रू. भे.)

फोडउ—देखो 'फोड़ौ' (रू. भे.)

उ०—जिम हेवाळ तुरंगम पालइ, जिम वणिक हथेली नउ फोडउ पालइं, जिम तंबोली पांन संभालइ तीणइं परि पुत्र पलाइ।

—व. स.

फोडणौ, फोडबौ—देखो 'फोड़णौ, फोड़बौ' (रू. भे.)

उ०—देवी धूमलोचन्न हूंकार धोस्यौ, देवी जाडवा में रंगतबीज सोस्यौ। देवी मोडियौ माथ नीसुंम मोडै, देवी फोडियौ सुंभ जीं कुंभ फोडै।—देवि.

फोडणहार, हारौ (हारी), फोडणियौ—वि०।

फोडिग्रोड़ौ, फोडियोड़ौ, फोडयोड़ौ—भू० का० कृ०।

फोडीजणौ, फोडीजबौ—कर्म वा०।

फोडियोड़ौ—देखो 'फोड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० फोडियोड़ी)

फोत—देखो 'फौत' (रू.भे.)

उ०—बादशाह मुहम्मदशाह पाछौ दिल्ली नूं कूंच कियौ सो मजल दूजी वे धाक फोत हुवौ।—मारवाड़ रा अमरावां री वात

फोतकार—देखो 'फूतकार' (रू. भे.)

उ०—फोतकार फण जोर फवाए, अहि पर घर छत्रधर कर आए।

—सू. प्र.

फोता-सं० पु० [फा० फोतः] अंडकोश।

फोदो-सं० पु० [देशज] एक पक्षी विशेष जो अपने पैर अधिकतर आकाश की ओर रखता है।

फोनोग्राफ-सं० पु० [अं०] एक प्रकार का यंत्र विशेष जिसमें ध्वनि अभिलिखित एवं पुनरुत्पन्न किया जाता है।

फोफळ, फोफल-सं० पु०—१ नारियल का वृक्ष।

उ०—केतकी नइ सातगा, फोफल फनस फणिद। फूवेटी नइ पूगीफल, फाजर किरमाल किर।—मा. कां. प्र.

२ नारियल।

उ०—१ माथा पर फोफल मरम, सीतल वारि विसेस। दस कांई आपिउं वली, निद्रा हुवी निमेस।—मा. कां. प्र.

उ०—२ पंच सव्दउ झल्लरि वाजइ ढोल नीसांण, भवियण जण गावइ, गुरु गुण मधुरि वांण। तिहां मिलीयौ महाजन, दीजइ फोफल दांन, सुंदरी सुकलीणी, सूहव करइ गुण गांन।

—जिनचंद्र सूरि

३ देखो 'फौफळ' (रू. भे.)

उ०—सोवन मइ भ्रंगार भरावु, रंग पांन, फोफल वांकडी, वेल चीगराई, मांगलुहरां पांन, इस्या मुख वासित देवरावु।—व. स.

४ देखो 'फोफळियौ' (मह., रू. भे.)

फोफळणी-सं० पु०—एक वृक्ष का नाम। (सभा.)

फोफळिया, फोफलिया-सं० पु०—एक व्यवसायिक जाति।

रू० भे०—फोफळीया, फोफलीया।

फोफळियौ, फोफलियौ-सं० पु०—१ 'तिसंडी' नामक सब्जी को काटकर सुखाया हुआ टुकड़ा।

२ फफोला।

३ विस्फोट।

४ बढई का एक औजार विशेष जो लोहे में छेद करने के काम आता है।

५ बैलो के सींगों पर लगाया जाने वाला धातु का आभूषण विशेष।

६ धातु-निर्मित टोपीदार कीला जो कपाट, बैलगाड़ी आदि पर शोभावृद्धि एवं मजबूती के लिए लगाया जाता है।

उ०—ताड़ रा, बड़ पीतळ रा भर तावूड़ा गजवेल दांणै रा फळ रांमपुरै रा घड़ियोड़ा, रूपै रा सोने रा नकस छै। फोफलिया रूपै रा लागा छै।—रा. सा. सं.

७ फोफलिया जाति का व्यक्ति।

रू० भे०—फोफळीयौ, फोफलीयौ।

फोफळीया, फोफलीया—देखो 'फोफळिया' (रू. भे.)

उ०—तेली मोची सतूआरा बंधारा चीतारा तूतारा कोली पंचोली डवगर वावर फफलीया फडहटीया फडिया वेगडिया सिंगडिया।

—व. स.

फोफळीयौ, फोफलीयौ—देखो 'फोफळियौ' (रू. भे.)

फोफानंदफड़ंद-सं० पु०—बाह्य ठाठ-बाट तथा आडम्बर दिखाने वाला व्यक्ति।

रू० भे०—फाफानंदफड़ंद।

फोयौ—देखो 'फुंवौ' (रू. भे.)

फोर-सं० पु०—परिवर्तन। उ०—अपना आप निजानंद चेतन, निकलंक ब्रह्म रहोरी। सुद्ध स्वरूप अलाग अनादी, नहीं जहां फोर अफोरी।

—श्रीसुखरांम जी महाराज

फोरणा—देखो 'फुरणा' (रू. भे.)

उ०—स्रिस्टि के आदि अरु अंत परला के, सुद्ध सता निरवासी।

सुतेई फोरणा फुरी सता सूं, नांम अकास घरासी ।
—स्रीसुखरांम जी महाराज

फोरणी-सं०स्त्री०—हाथ से कपड़ा बुनने में प्रयुक्त वह डंडा जो तुर (जिस पर कपड़ा बुनकर लपेटा जाता है) को घुमाने के काम आता है ।

फोरणौ, फोरबौ—१ देखो 'फेरणौ, फेरबौ' (रू. भे.)
उ०—१ सूरजमाळ दुभाळ, नेज गज ढाळ निहारै । फळ सावळ फोरियौ, विड़ंग औरियौ वधारै ।—रा. रू.
उ०—२ ओर की निहार ऐव आजलूं जियौ । आपनै किये कि ओर फोर तूं हियौ ।—ऊ. का.
उ०—३ पीछै फौज अेक मजल सूं पाछी बुलायी । पातसाह जी री मनोहरी स्रीकरनी जी फोर दीवी ।—द. दा.
उ०—४ तद जावदीन खां सूरसिंघ जी री परचै सूं सला करी । जो झगड़ौ कियां तौ पूरवां नहीं । पण वीकानेर रा सिरदारां नूं लालच देय फोरौ ।—द. दा.
२ देखो 'फोड़णौ, फोड़बौ' (रू. भे.)
उ०—१ अतुल वल फोरि कर जोर हिव आपणौ, कुमर तिण ठौर भरडाक आयौ ।—वि. कु.
उ०—२ जाऊं मथुरा कहांना नै गागरियां फोरी । गागरियां फोरी दुलरि मोरी तोरी ।—मीरां
फोरणहार, हारौ (हारी), फोरणियौ—वि० ।
फोरिओड़ौ, फोरियोड़ौ, फोरयोड़ौ—भू० का० कृ० ।
फोरीजणौ, फोरीजबौ—कर्म वा० ।

फोरन—देखो 'फौरन' (रू. भे.)

फोरमैन-सं० पु० [अं०] एक अफसर का पद जिसके अधीन कारीगर एवं कर्मचारी कार्य करते हैं ।

फोरियोड़ौ—१ देखो 'फेरियोड़ौ' (रू. भे.)
२ देखो 'फोड़ियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० फोरियोड़ी)

फोरौ—देखो 'फौरौ' (रू. भे.)
उ०—सेठांणी कह्यौ—इण में जोखा री किसी वात । थारै अठा सूं वरतन कठै जावै । अर पांवणा नै फोरा वरतनां में परोसैला तौ थारी भूंडी लागैला ।—फुलवाड़ी

फोलादीतोड़ौ—देखो 'फौलादीतोड़ौ' (रू. भे.)

फोलौ-सं० पु०—चने का फल ।

फोहारौ—देखो 'फंवारौ' (रू. भे.)

फोहौ—देखो 'फुंवौ' (रू. भे.)

फौंणस—देखो 'फांनूस' (रू. भे.)

फौंद-सं० पु० [देशज] आगे की ओर निकला हुआ पेट, तोंद ।
रू० भे०—फुंद, फूंद ।

फौंदाळ—देखो 'फौंदाळौ' (मह०, रू. भे.)

फौंदाळौ-वि० [राज०फौंद+सं० आलुच्] तोंद वढ़ा हुआ, तोंद वाला ।
रू० भे०—फुंदाळौ ।
मह०—फुंदळ, फुंदाळ, फौंदाळ ।

फौ-सं० पु०—१ शेषनाग । २ द्रोण । ३ स्वर्ण । ४ गंगा । ५ सात की संख्या । (एका०)

फौआरौ—देखो 'फंवारौ' (रू. भे.)

फौड़णौ, फौड़बौ—देखो 'फोड़णौ, फोड़बौ' (रू. भे.)
उ०—गढ़ फौड़ेवा चणौ गरव्वै, कुंजर कूं कीड़ी दव्व । ए विण खून हमारै आगै, जंगम तैं सुर के भ्रम जागै ।—रा. रू.
फौड़णहार, हारौ (हारी), फौड़णियौ—वि० ।
फौड़िओड़ौ, फौड़ियोड़ौ, फौड़योड़ौ—भू० का० कृ० ।
फौड़ीजणौ, फौड़ीजबौ—कर्म वा० ।

फौड़ाणौ, फौड़ावौ—देखो 'फोड़ाणौ, फोड़ावौ' (रू. भे.)
फौड़ाणहार, हारौ (हारी), फौड़ाणियौ—वि० ।
फौड़ायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
फौड़ाईजणौ, फौड़ाईजबौ—कर्म वा० ।

फौज-सं० स्त्री० [अ० फ़ौज] १ सेना ।
उ०—१ काविल कोट तणी विसकांमणि, धाए धूम सिगारि धुरै । फिर-फिर अफिर, 'रतनसी' फुरलै, फौज अपूठै फेरि फिरै ।—दूदौ
उ०—२ मेलै फौज कांमरां मिरजौ, ऊ जंगळ घर आयौ । केवी तैं भांजै कनियांणी, 'जैतराव' जितायौ ।—वां. दा.
२ झुंड, जत्था, समूह । (अ. मा.)
यौ०—फौजदार, फौजदेसरी, फौजपति, फौजवंधी, फौजवक्सी, फौजवळ, फौजवाव, फौजवीडार, फौजमुसाहिव ।
रू० भे०—फउज, फवज, फवज्ज, फव्वज, फोज ।

फौजआभरण-सं० पु०—मंत्री ।
रू० भे०—फोजआभरण ।

फौजगाहण-सं० पु०—योद्धा ।
रू० भे०—फोजगाहण ।

फौजथंघ, फौजथंभ-वि०—फौज को रोकने वाला, योद्धा, वीर ।

फौजदार-सं० पु० यौ० [अ० फौज+फा० दार] १ सेनापति ।
२ हाथ में छड़ी या डंडा लेकर फौज के आगे-आगे चलने वाला फौज का प्रतीक ।
उ०—सझियौ जैतारण जुध सधीर, 'अवरंग' तणौ मारै अमीर । दळ सझि 'अवरंग' रौ फौजदार विढ़ियौ गढ़ आए जेण वार ।
—सू. प्र.
३ सैन्य विन्यास करने वाला ।
४ फौजदारी के मामलों पर निर्णय देने वाला जज या निर्णायक ।
५ हस्तीशाला या फीलखाने का अध्यक्ष ।
उ०—आसाइच मनहर अडर, फौजदार तिण वार । अरज करी

निप आगळी, सव गज थया तयार ।—रा. रू.

६ महावत ।

उ०—पीत कारू का पांन फौजदारू का हलकार जगजेठ ज्यूं जूटे जांण आवू गिरनार भाटकते है ।—सू. प्र.

७ पुलिस, सिपाही । (गिरोही)

८ नगर आरक्षण अधिक्षक ।

रू० भे०—फोजदार ।

फौजदारी–सं० स्त्री० यौ० [अ० फौज+फा० दारी] १ लड़ाई-झगड़ा, मारपीट ।

२ लडाई-झगड़ा, मारपीट आदि के मुकदमों को सुनने व अपराधी को दण्ड देने का न्यायालय ।

३ उक्त न्यायालय सम्बन्धी ।

४ लडाई-झगड़ा मारपीट-सम्बन्धी ।

रू० भे०—फोजदारी ।

फौजदेसरी–सं० स्त्री०—एक प्रकार का सरकारी लगान या कर ।

फौजपति, फौजपती–सं० पु० यौ० [अ० फौज+सं० पतिः] सेनापति ।

फौजबंधी–सं० स्त्री० यौ०—सेना की तैयारी ।

उ०—१ सो ओ भी एक जायगा न रहै जिण आंटै न मारै । जे फौजबंधी कर चढ़ै तदि तौ ओ भाखरा में पैठै ।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

उ०—२ मिरजा पातसाह तैमुरबेग रै आगम आरयावरत में दिसा दिसा दरोळ पड़ती देखि नरेस बैरीसाल भी दुलही नूं बडे वेग लेर बूंदी पधारियौ । अर धीरदेव नूं सहाय देंण वेघम रै मथै फौजबधी करण में विलंब न धारियौ । —वं. भा.

रू० भे०—फोजबंधी ।

फौजबखसी–सं० पु० यौ०—सामन्तों की ओर से राजा के यहां रखे जाने वाले सैन्यदल की नियुक्तियां करने वाला अधिकारी, सैन्य नीति निर्धारक ।

वि० वि०—देखो 'बक्षी' ।

फौजबळ–सं० पु० यौ० [अ० फ़ौज+राज० बळ] १ सैन्य शक्ति ।

२ सामन्तो से लिया जाने वाला एक कर, टेक्स ।

वि० वि०—जो सामन्त राजा को सेना या आदमी देने में असमर्थ होता था उससे यह कर लिया जाता था ।

३ पराजित राजा या सरदार से फौज सम्बन्धी खर्च के लिए लिया जाने वाला धन ।

फौजबाब–सं० पु० यौ० [अ०] फौज के खर्च के लिए लिया जाने वाला एक प्रकार का लगान या कर ।

फौजबीडार–सं० पु० यौ० [अ० फौज+राज० बीडार] १ वह घोड़ा जिसके टीके मे सफेद व लाल बाल हो । (शा.हो.)

फौजमुसायब, फौजमुसाहिब–सं०पु० [अ०] १ फौजबक्षी का सहायक जो सैन्य सम्बन्धी नीति को फौजबक्षी के सामने रखता था ।

२ सेनापति ।

रू० भे०—फोजमुसाहब ।

फौजांअग्रेसर–सं०पु०यौ० [अ०फौज+सं० अग्रेसर] हाथी । (डि.को.)

फौजी–वि० [अ० फौजी] १ सैनिक । २ सेना सम्बन्धी ।

फौत–सं०पु० [अ० फौत] १ मृत्यु, मौत ।

उ०—अरु दिली में मालक परवेज हुवौ । मुसायब लोदीखां । अरु अठै यां साराई मिळ बुहानो कियो कै खुरमसा फौत हुवौ ।—द. दा.

क्रि० प्र०—होणौ, खेलणौ ।

२ नष्ट, अवसान ।

फौतकार—देखो 'फूतकार' (रू. भे.)

उ०—करि फौतकार झुक्कै कहर, चाढि मूंठ फण चाचरै । सिखराळ गिरंद चढि जांणि सप, काळदार भाटक करै ।—सू. प्र.

फौपलौ–सं०पु० [देशज] १ सूखा गोबर ।

२ देखो 'फौफलौ' (रू. भे.)

फौफळ,फौफल–वि०—बादी या वायु से फूला हुआ ।

स० स्त्री० [अ० फौफल] १ सुपारी ।

२ देखो 'फोफळ' (रू. भे.)

फौफलौ–वि०—खोखला ।

रू० भे०—फौपलौ ।

फौरन–क्रि० वि० [अ०फ़ौरन] तुरन्त, झटपट, तत्काल ।

फौरणौ, फौरबौ—१ देखो 'फेरणौ, फेरबौ' (रू. भे.)

उ०—करण निवेधी वेधड़ा, सेधी सांम छळांह । अस तौरै साम्हा किया, फौरै मैंळ फळांह ।—रा. रू.

२ देखो 'फोड़णौ ,फोड़बौ' (रू.भे.)

फौरणहार, हारौ (हारी), फौरणियौ—वि० ।

फौरिओड़ौ, फौरियोड़ौ, फौरयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

फौरीजणौ, फौरीजबौ—कर्म वा० ।

फौरियोड़ौ—१ देखो 'फेरियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'फोड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० फौरियोड़ी)

फौरौ–वि० [देशज] (स्त्री० फौरी) १ अशुभ ।

उ०—१ मांनै नह मोरीह, 'चांदा' थारी न्है सला । 'पाल'-तणी फौरीह, दीसै हव आई दसा ।—पा. प्र.

उ०—२ विलळी बातां री वांणी बधरावै, पतळी भिरण जिणे में पाणी पधरावै । घालै विसमत मत मगमग ठग घेरौ, फौरी किसमत सूं पगपग पग फेरौ ।

२ कमजोर, दुबला-पतला ।

उ०—सूतोड़ा री पागड़ियां जागतड़ा लै मागै, फौरां पतळां री डाव नी लागै ।—फुलवाड़ी

३ निम्न श्रेणी का, हलका ।

ज्यूं०—औ कपड़ो फौरो है ।

४ नीच ।

फौलाद-सं०पु० [अ० फ़ौलाद] उत्तम श्रेणी का मजबूत व सुघरा हुआ लोहा जो शस्त्रादि बनाने के काम आता है, इस्पात ।
रू० भे०—पोलाद, पौलाद ।

फौलादी-वि० [अ० फौलादी] १ फौलाद का बना हुआ ।
२ दृढ़, मजबूत, कठोर ।
रू० भे०—पौलादी ।

फौलादीतोड़ौ-सं० पु० [अ० फ़ौलादी+राज० तोड़ौ] एक प्रकार का शस्त्र विशेष ।
रू० भे०—फोलादीतोड़ौ ।

फौव्वारौ—देखो 'फंवारौ' (रू. भे.)

फौहार—देखो 'फंवारौ' (मह., रू. भे.)

फौहारौ—देखो 'फंवारौ' (रू. भे.)

फौही—देखो 'फुही' (रू. भे.)

फौहौ—देखो 'फुंवौ' (रू. भे.)

फ्यावड़ी, फ्यावरी-सं० स्त्री० [देशज] एक प्रकार का जंगली जानवर । (शेखावाटी)
उ०—इसड़ी वेळा वन मांही फ्यावरी बोलै ।—सिंघासण बत्तीसी

फ्रांगणी-सं०स्त्री०—एक प्रकार का छोटा पौधा जिसकी टहनियों की डलियां व टोकरियां बनाई जाती है ।

फ्रांसीसी—देखो 'फरांसीसी'(रू. भे.)

फ्राक—देखो 'फराक' (रू. भे.)

फ्रियाद—देखो 'फरियाद' (रू. भे.)

फ्री-वि० [अं०] १ स्वतन्त्र, स्वच्छन्द ।
२ प्रतिबन्धहीन, मुक्त ।
ज्यूं०—टैक्स फ्री ।
३ मुफ्त, फोकट ।
ज्यूं०—गाडी में फ्री जाणौ गलत है ।

फ्रेंच-सं० पु० [अं०] १ फ्रांस देश का निवासी ।
सं० स्त्री०—२ फ्रांस देश की भाषा ।

फ्रेम-सं० पु० [अं०] लकड़ी या धातु का बना प्रायः चौकोर आवृत्त, चौखटा ।

फ्रोहारौ—देखो 'फंवारौ' (रू. भे.)
उ०—फ्रोहारू की पंकति जळ चादरू का उफांण । जळ चादरू की घरहर मांनू छिल्लै महिरांण ।—सू. प्र.

फ्लवंगम—देखो 'प्लवंगम' (रू. भे.)

फ्लवग—देखो 'प्लवग' (रू. भे.) (डि. को.)

फ्लूट-सं० स्त्री० [अं०] फूंक से बजाया जाने वाला एक वाद्य-यंत्र, बांसुरी ।

2709
2655
94

इस कोष में लालसजी ने राजस्थानी भाषा के पाण्डित्य का जो अगाध परिचय दिया है, उससे मैं बिलकुल अभिभूत हो उठा। शब्दों की प्रमाणिकता दिखाने को कोषकार ने राजस्थानी वाक्यों मुहावरों और शब्दों के उद्धरण प्रचुर मात्रा में दिये हैं।

ग्रंथ के आरम्भ में राजस्थानी भाषा का जो विवेचन किया गया है वह पूर्ण रूप से वैज्ञानिक और पद्धतिबद्ध है। उसके बाद राजस्थानी साहित्य का जो परिचय दिया गया है वह भी रोचक और ज्ञानवर्धक है।

मैं श्री सीतारामजी लालस के पाण्डित्य और घोर अध्यवसाय की भूरि-भूरि प्रशंसा करता हूँ और चाहता हूँ कि इस ग्रंथ की प्रतियां विश्वविद्यालयों और कॉलेजों के पुस्तकालयों में अवश्य रखी जाय। हिन्दी में इस पुस्तक के प्रकाशन का बहुत बड़ा महत्त्व है।

-रामधारीसिंह 'दिनकर'

पिछले दिनों अपनी बोरुन्दा और जोधपुर की यात्रा के अवसर पर मुझे आपके द्वारा संकलित "राजस्थानी सबद कोस" की प्रगति से परिचय प्राप्त हुआ था। आप अनेक वर्षों से जो यह महत्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं, इसके लिये बधाई स्वीकार कीजिये।

भक्त दर्शन
उपमन्त्री, भारत सरकार

I found it conceived in a fine scientinfic spirit and it's execution appeared to me to be perfectly in order.

I wish your venture all success.

Dr. Sunitkiumar Chatterji

I am most grateful to you for the magnificent first volume of the 'Rajasthatni Sabad Kosh' which has arrived for me by air mail. I shall draw the attention of scholars and Insitutions concerned with Indo-Aryan studies to this monumental piece of work.

Dr. W. S
Professor of

२ जो दूसरों के सिर पर बोझा बनकर रहता हो।

रू०भे०—मुफतखोर,

मुफ्तखोरी–सं०स्त्री [अ०] १ 'मुफ्तखोर' होने की अवस्था या भाव।

२ दूसरों का माल या धन मुफ्त में उड़ाने की आदत।

मुफ्ती–सं०स्त्री०[अ०] मुसलमानों का धर्म शास्त्रवेत्ता'धर्माचार्य,मोलवी।

रू०भे०—मुफती

मुबारक–वि० [अ०] १ मंगलदायक, कल्याणकारी, शुभ।

२ खुश किस्मत, धन्य।

३ जिसके कारण लाभ व बरकत हुई हो।

सं० स्त्री०—१ बधाई।

रू० भे०—मुबारकी, मुबारिक,

मुबारकबाद, मुबाररबाद–सं० पु० [अ०] १ बधाई।

२ धन्यवाद।

३ शुभ सूचना व खुश खबरी।

रू० भे०—मुबारकबादी,

मुबारकबादी–वि०—१ मुबारकबाद देने वाला।

२ देखो 'मुबारकबाद' (रू. भे.)

उ०—बादसाहजी गळे लगाय मिळिया घणी मया कीवी मारां मुबारकबादी दीवी, संसार चैन हुवां री बधाई वांटी।—नी. प्र.

मुबारकी—देखो 'मुबारक' (रू. भे)

मुबारिक—देखो 'मुबारक' (रू. भे.)

उ०—सारी फौज बादसाह नूं मुबारिक मेल्ही।—ठा.जे.

मुबालिग–सं० स्त्री० [अ० मुबालग] १ किसी बात को बढा चढा कर कहने की क्रिया या भाव।

२ उक्त प्रकार से कही जाने वाली बात।

३ अतिशयोक्ति, अतिरंजना।

मुमई—देखो ममाई (रू. भे.)

मुमकिन–वि० [अ० मुम्किन] १ जिसका होना संभव हो, संभव।

२ शक्य।

मुमांनियत–सं०स्त्री० [अ०मुमानअत] मनाहि, निषेध, रोक।

मुमारखी—देखो 'ममारखी' (रू: भे)

उ०—इतरै रोसनी हुई। दासी सहेलियां आं मुमारखी दीवी।

—जलाल बूबना री बात

मुमुक्षा–सं०स्त्री [सं०] मोक्ष या मुक्ति प्राप्त करने की इच्छा, कामना।

रू०भे०—मुमुक्षुता, मुमुखता, मुमुखा,

मुमुक्षु–सं०पु० [सं०] वह जिसे मुमुक्षा हो, मोक्ष की कामना करने वाला

उ०—महा अग्यांन नींद में सूता, सब ही जीव अभागी। जाग्या कोई मुमुक्षु चेतन, सो सब से बड़भागी।—स्री सुखरांमजी महाराज

रू०भे०—मुमुक्षू मुमुखु,

मुमुक्षुता—देखो 'मुमुक्षा' (रू.भे.)

मुमुक्षू—देखो 'मुमुक्षु (रू. भे.)

उ०—जीवन मुक्ति की देहमूं जुगती ग्यांन मुमुक्षू पाई।

—स्त्री सुखरांमजी महाराज

मुमुखता, मुमुखा—देखो 'मुमुक्षा' (रू भे.)

मुमुखु—देखो 'मुमुक्षु' (रू. भे.)

मुम्मुर—देखो 'मुरमुर' (रू. भे.)

मुरंगी–वि०स्त्री०—मृदुअंगी, कोमलांगी।

उ०—ए जिम मइगलीयउ वण वीभ विनोदी, जिम घन दरमण मोरा रे रविदंसणियइ कोक मुरंगी, दरसण चंद चकोरा रे।

—साधु कीरति

मुर–सं०पु० [सं०] १ एक दैत्य, जो ब्रह्मा के अंश से उत्पन्न तालजंघ नामक दैत्य का पुत्र था। इसकी राजधानी चंद्रवती नगरी में थी। इसके वध के लिये विष्णु ने योग माया देवी का निर्माण किया।

२ एक पंचमुखी राक्षस, जो नरकासुर का सेनापति था। इसका वध श्रीकृष्ण ने किया।

उ०—नर नाग सुरासुर जोड़ नथी, कथ वेद पुरांण दुजांण कथी। मुर कीटमधु हण मिध मथी, रट रे मन राघव दासरथी—र.ज.प्र.

३ एक यवन राजा जो जरासंध का मांडलिक था। इसकी कन्या का नाम मौर्वी था जो घटोत्कच को विवाह दी।

४ एक राक्षस जो कश्यप एवं दनु के पुत्रों में से एक था। इसने शिव की तपस्या करके वर प्राप्त किया था। यह कृष्ण द्वारा मारा गया।

५ तीन की संख्या।

उ०—१ इंद्रहू सरस राजस अमास। प्रिय जूथ सात सै मुर पचास।

—सू. प्र.

उ०—२ कळ दह पंच जांण जंकरी, दुज मुर प्रिय अंतै गुरु धरी। भज भज सीता राघव भई, दससिर जेता अघ हर दई।—र.ज.प्र.

६ तीन।

उ० - १ सरव लघु नगण आयुस द्रवण सुर सुरक, तात विध साविश्री कनक रंग तैण। भगु मुनि चढ़ण गज नऊं रस में अभंग,अप मगघ देस कुळ विप्र मुर नैण।—र. रू.

उ०—छळ महेस मुर देस, मुग्रो डीघोड महारिण। परणी अकबर घडा, चढै गज दांतां तोरण।—गु. रू. बं.

७ वेष्ठन, घेरा।

८ मृदंग।

उ०—मती हालियो आगरै चक्र सज्जै, वजै दंब भेरी मुरै त्रंब बज्जे। छळै मेह ज्यों मेह आकास छाई, दिपै चंचळा सेल धारा दिखाई।

—वं. भा.

अव्य०—दुबारा, फिर।

रू०भे०—मर, मुड, मूर,

मुरकी, मुरकीय–सं०स्त्री० [प्रा० मुरुक्की] १ पुरुषों के कान में पहनने की सोने या चांदी की छोटी बाली।

उ०—१ ओरां रे मुरकी कांन ओ बाईसा ओरां रे, मुरकी कांन। ऊजळे तो मोती रांणी काछवी।—लो. गी.

उ०—२ छोटा कांनां में चांदी री मुरकियां, कुड़तो तारतार व्हियोड़ो... ..। —फुलवाड़ी

उ०—३ भींटियो हंसतो थकी ई बोल्यो—मांमाजी, वै तो साळियां थांरा कांन वींधती ही। सो तोळां री सांकळियां अर बीस तोळां री मुरकियां पैरावती ही। —फुलवाड़ी

२ स्त्रियों के नाक का एक आभूषण।(व० स०)

३ सफेद, जलेबी (मिष्ठान्न)।

उ०—१ पछइ प्रीसी मुरकी, खाइवा जीभ फुरकी, सेव झीणी, फगफगती फीणी, घ्रत नी धारी, स्वादस्युं आहारी, साकरस्युं रुली —व. स.

उ०—२ मूक्यां नव नव परि सालणां,मुंक्या सरहां घी अति घणां। मूंकी मांडी मुरकी सेव,मूकी खीर खांड घ्रत हेव —हीराणंद सूरि

उ०—३ पहिलउं नीली सूकिय मूंकिय फलहलि तीह। देखीय मोदक मुरकीय फुरकीय जीमतां जीह। —जयसेखर सूरि

४ नुकती, बूंदी। (मिष्ठान्न)।

५ संगीत में एक स्वर से दूसरे स्वर पर जाने की एक प्रक्रिया विशेष।

६ तीन अथवा चार स्वरों को शीघ्रता से गाने की क्रिया, इसका प्रयोग ठुमरी, टप्पा आदि में होता है। (संगीत)

७ तलवार की मूठ के कलस में लगने वाली कड़ी।

रू०भे०—मरकी, मुरक्की,

मुरकी—सं०पु०—बड़े डील-डोल वाला हाथी जिसके दांत बड़े बड़े एवं सुन्दर होते हैं।

मुरक्की—देखो 'मुरकी' (रू. भे.)

मुरखंड—सं०पु०—तीन लोक।

उ०—हारिया असुर इम हिंदुवै जस हुवो. वांणीये इसो कर दाख वारो। थापियो मालदे तौनूं तेजा थिरा, थयो खंड मुरखडे नांम थारो। —साह तेजा रो गीत

मुरख—देखो 'मूरख' (रू. भे.)

उ०—मीरां के प्रभु गिरधरनागर, को तजि मुरख अनतहि भटकै। —मीरा

मुरखाई—देखो 'मूरखाई' (रू. भे.)

उ०—तद रानी बीनती कीवी "माहाराज,आ वात मुरखाई छै। जु विनां समधां डूमा रै कहै खासो चाकर मारो पण पछतासो।" —ठाकुरै साह री वात

मुरग—देखो 'मुरगो' (मह, रू. भे.) (मा. म.)

मुरगखांनौ—सं०पु० [फा० मुर्ग+खाना] वह स्थान या कक्ष जहां मुर्गे रक्खे जाते हैं, पाले जाते हैं।

मुरगबाज—सं०पु० [फा० मुर्ग-बाज] मुर्गे लड़ा कर खेल करने वाला।

मुरगबाजी—सं०स्त्री० [फा० मुर्ग-बाजी] (१) मुर्गे लड़ाने की क्रिया। (२) मुर्गे लड़ाने का खेल।

मुरगावी, मुरगाबूं—सं०स्त्री०[फा०] १ मुर्गे की जाति का एक पक्षी जो जल में तैरता है और मछलियों का शिकार करता है, जल-मुर्गा

उ०—१ डेडरा डहकनै रहया छै। टीटोड़ी टहकनै रही छै। जळ काग कुटकनै रहया छै। मुरगावी तिरनै रही छै। —रा. सा. सं.

उ०—२ फळ वहु सेल मछां दुति फाबी। मझि जळ ग्रीझ तिरै मुरगाबी। —सू. प्र.

२ एक प्रकार की तलवार।

उ० —वहैं वैर लेण यहै सायत आई जिस सेती जनेवूं मुरगाबूं की झाट खासूं झंडूं के बीच खेलैंगे। —सू. प्र.

३ जूती।

उ०—आ वात कहिनैं गढनूं चालिया, पातसाह री हजूर अमराव मंमूसाह, मीर गाभरू, सु हरम री खुटक नैं मुरगांव्यां पगां उवांणां सो तीजे भाई नूं आपड़ियो थो सु आ घणी वात छै। —नैणसी

मुरगी—सं०स्त्री० [फा० मुर्ग] मुर्गे का मादा, मादा-मुर्ग। यह अण्डे देती है।

उ०—रोजा तीस दिनूं का राखै, सारै पंच निवाजा। मन अपना कूं मारै नाही, मारै मुरगी ताजा। —स्री हरिरांमदासजी महाराज

मुरगौ—सं०पु० [फा० मुर्ग] (स्त्री० मुरगी) १ सिर पर लाल किलंगी वाला एक प्रसिद्ध नर-पक्षी जो प्रभात के समय कुकडूं कूं की आवाज बोलताहै। कुक्कुट पक्षी।

पर्या०—कूकडो, ककवाक, चरणायुधक, तांम्रचूड़।

२ एक चिड़िया।

मह०—मुरग।

मुरड़—सं०पु०—१ एक प्रकार की कंकरीली मिट्टी जो सड़क जमाने व दीवार की चुनाई में गारे के काम आती है।

उ०—१ कथ मुरड़ रो कांकरो, रतना तिका रतन्न। विधना री रचना वडी, जिण रो नको जतन्न। —र. हमीर

उ०—२ परख चीकणीं चुट्ट, पड़ै डागळिया पक्कां, सुद्ध पाधरी पड़ी,जकी सगळी विन टक्कां। मुरड़ मजै री मिळै, गावडां निकट घणेरी, ल्याय मोगरी मार, छांण छोडा घर ढेरी।—दसदेव।

२ आत्म गौरव, स्वाभिमान।

उ०—विढ़ंतो जसो बिसकन्या वाखांणियो। परणती कंथ चो मुरड़ पहचांणियो। —हा. झा.

३ गर्व, अभिमान, घमंड।

४ ऐंठन, अकड़

उ०—धकायो रांण हूं मळण वण करड धज, भडां हड़वड़ उरड़ घाव भाळी। मिट गई किसनगढ़ नाथ वाळी मुरड़, उरड लख साहिपुर नाथ आळी। —अमरसिंह सिसोदिया रो गीत।

५ क्रोध।

रू०भे०—मुड, मुरड,

६ देखो 'मूढ़' (रू. भे)

७ देखो 'मुड़' (रू. भे.)

मुरड़क, मुरड़क्क—सं० स्त्री०—१ मरोड़ने या मोड़ने की क्रिया या

भाव।

उ०—मुरड़वक मुडवक असंघ मुडै। —पा. प्र.

रू०भे०—मरड़क,

मुरड़णो, मुरड़बो—क्रि०अ०[सं०] १ मुड़ना, बलखाना, ऐंठना, घूमना।

उ०—मडळ रै प्रधानजी रौ बखांण सुण'र बीन री मुरड़ीजती मूंछां तणगी। —दसदोख

२ कुपित होना, क्रोधित होना, नाराज होना।

उ०—१ उरड़ मेछ आविया, मुरड़ि जंगळ घर माथै। भगि तोड़ा दव भड़ै, खड़ै घोड़ा जब खाथै —मे. म.

उ०—२ साहज्यहां तिण समै,जुगत त्रिय वसि चित जादा। मिळि अवरंग' 'मुरादि', दखिण मुरड़ै साहिजादा।—सू. प्र.

उ०—३ सूर मुरड़ि इम साह सूं, लूटै हय जय लाह। हणि रच्छक 'दूदा' हठि, आयौ धरत उछाह। —वं. भा.

३ विरुद्ध होना विपरीत होना।

उ०—१ जिण राठौड़ कंवर दूदा नूं अकबर हूं मुरड़ि आयौ जांणि जिकोही आपनूं अवलंब रौ देणहार विचारियो। —वं. भा.

उ०—२ कंवर विरड़ियो मुरड़ अमराव फिरियो सको, एरसी वार बिखमी बणी आंण। पाट चीतोड रो हुवौ ऊथलपथळ,'दुरंग' नूं सिमरियो तई दीवांण। —दुरगादास राठौड़ री गीत

४ पलटना, लौटना, घूमना।

उ०—१ सीस उडतां ही पड़िहार हसिया अर महाराज मुरड़ि चालियो तिकण रै लार। —वं भा.

उ०—२ अत जीतो वीतो समर, जादम पडिया जोड़। लड़ जुड़ खग्गां बोहळै, मुरड़ चलै राठौड़। —रा. रू.

५ भागना, पीछे हटना।

उ०—वांसे बरदेत कमंध बळ दाखे, लोह छतीस भुजां डंड लेव। रांणा रावळ राव मुरड़ंता, दोयण हटक्या वीरमदेव।

—राव वीरमदेव राठौड़ री गीत

६ अलग हटना, दूर होना, विलग होना।

क्रि० स०—७ मोड़ना, मरोड़ना, बलदेना घुमाना।

८ गर्व करना, घमंड करना, अभिमान करना।

९ छीनना, झपटना।

१० उखाड़ना।

११ नष्ट करना।

मुरड़णहार, हारौ (हारी), मुरड़णियौ —वि०।

मुरड़िओड़ौ, मुरड़ियोड़ौ, मुरड़्योड़ौ —भू० का० कृ०।

मुरड़ीजणौ, मुरड़ीजबौ —भाव वा० / कर्म वा०।

मुरडणौ, मुरडबौ —रू. भे.।

मुरड़ियोड़ौ—भू० का० कृ०—१ मुडा हुआ, बल खाया हुआ,ऐंठा हुआ. २ कुपित या क्रोधित हुवा हुआ, नाराज हुवा हुआ. ३ विरुद्ध या विपरीत हुवा हुआ. ४ पलटा हुआ, लौटा हुआ, घूमा हुआ. ५ भागा हुआ, पीछे हटा हुआ। ६ अलग हटा हुआ, दूर हुवा हुआ, विलग हुवा हुआ. ७ मोडा हुआ, मरोड़ा हुआ, बल दिया हुआ,घुमाया हुआ. ८ गर्व किया हुआ, घमंट किया हुआ,अभिमान किया हुआ. ९ छीना हुआ, झपटा हुआ. १० उखाड़ा हुआ. ११ नष्ट किया हुआ.

स्त्री० (मुरड़ियोड़ी)

मुरच—देखो 'मुरचो' (मह., रू. भे.)

उ०—पछै वो आंगळियां रा पैरवां माथै अंगूठां सूं गिणतो नीचो घूण करियां खोड़ां गिणावतो ई जावतो—खुरफाडी फाटै, एक खुरी आगै बध जावै, एडी में मस, मुरचां कमजोर,''' ''। —फुलवाड़ी

मुरचौ—सं०पु०—१ चरणग्रंथी व पैर के मध्य का भाग।

उ०—डाढाळो एक हाथी रै मुरचै री सांध में खग री खळकाई जको मुरचै रो खालड़ो अर मांस चीरनै हाड जाय रड़कियो।

— फुलवाड़ी

२ टखना, गुल्फ।

३ मनुष्य के हाथ और कलाई का संधि स्थल।

४ देखो 'मोरचौ' (रू. भे.)

उ०—गयणा गरज डंबर छायौ छै,सूरिज पीछै पांन सरिसो निजर आवै छै। मुरचां रा मुकांमला मंडाया छै। अणी मेळ हुवो छै।

—रा. सा. सं.

मुरच्छा—देखो 'मुरछा' (रू. भे.)

मुरच्यौ—देखो 'मुरचो' (रू. भे.)

मुरछ—देखो 'मुरछा, (रू. भे.)

उ०—भळाभळ भूलणां भांड भडवां विगत, पिंड रगत देखियां मुरछ पाया। जो मरदपणो छै जिसौ जांणै जगत, ऐ किसे बगत में काम आया। —उदैभांण बारहठ

मुरछगत, मुरछगति देखो 'मुरछागत' (रू. भे.)

मुरछणौ, मुरछबौ—देखो मुरछाणौ, मुरछावौ' (रू भे.)

मुरछत—देखो 'मुरछित' (रू. भे)

मुरछन, मुरछना—देखो 'मूरछना' (रू. भे.)

उ०—गांन सप्त सुर ग्राम मुर, अरु मुरछन यकवीस। तांन कोटि गुणचासते, मूरतिवत मईम। —सू. प्र.

मुरछळ—सं०पु०—१ मुर्च्छित, वेहोश।

उ०—ऐसे कह गिर गिर पड़ै, देही मुरछळ होय। वार वार किललात है, प्रभू न्वारौ मोय। —गजउद्धार

२ देखो 'मोरछळ' (रू. भे.)

मुरछा—सं०स्त्री० [सं० मूर्च्छा] १ किसी प्राणी के शरीर की वह अवस्था जब कुछ समय के लिये वह चेतन्य-हीन हो जाता हो, वेहोशी, मूर्च्छा, संज्ञाहीनता।

उ०—१ आपरौ काळजो बारै नीकाळियोड़ो हो सो काटनै आंखियां

मार्ग न्हांक दीधो कारण काळजो कंवळो होवै सो चील काळजो खावसी जितरै मुरछा खुलजासी नै नेत्र रह जासी इणनै सांम धरमी सूरवीर कहजै। —वी. स. टी.

उ०—१ छन मुरछा,छन चेतना सीतावरजी। कोई छन छन छीजैं देह प्यारा रघुवरजी।—गी. रां.

उ०—३ जोवण थारो गजब छै. लोयण बांण लगाय। चो निजरचां तो सूं चहै. पड़ैस मुरछा खाय। —पनां

उ०—४ सुंदरि दीठ स्रिगार सोळ सझि, मुरछा आय पड़ै उपवन मझि। —सु. प्र.

२ शिथिलता, कमजोरी।

३ प्रमाद, आलस्य।

उ०—हुई सुभद्रा सावधी, वाल मुरछा सेवी रे। गुरणी वचन नंहि मांनियो, हुई बहुपुत्तिया' देवी रे —जयवांणी

रू०भे०—मरछा, मुच्छ. मुरच्छा, मुरछ, मूरच्छा, मूरछ।

मुरछागत. मुरछागति–सं०स्त्री०—अचेतनावस्था, वेहोशी, मूर्छावस्था।

उ०—१ तठै देपाळ कही, म्हे तो मुरछागत हुईनै पचीसे ही लूटीया। —देपाळ धंध री वात

उ०—२ वचन अनिस्ट अलखावणो,तोहरो लागो माय। थई अचेतन तिण समै, पड़ी मुरछागत खाय —जयवांणी

उ०–३ एह अमंगळ वत्त सुणै, मुरछागति पड़ियो। उदियाचळ जिम संभ निसंभ, अमताचळ निड़ियो। —मां. वचनिका

रू०भे०—मरछागत, मुरछगत, मुरछगति, मुरझागत, मूरछागत, मूरछागति।

मुरछाणो, मुरछाबो–क्रि०अ० [सं० मूर्च्छनम्] १ किसी प्राणी की संज्ञा या चेतना का किसी विशेष कारण से अस्थाई तौर पर लोप होना वेहोश होना, मूर्च्छित होना।

२ तांत्रिक क्रिया से समाधिस्थ होना।

३ ऐन्द्र जालिक प्रभाव में आना।

मुरछाण हार, हारौ(हारी), मुरछाणियौ, —वि०।

मुरछायोड़ो —भू. का. कृ.।

मुरछाईजणो, मुरछाईजबो —भाव वा.।

मुरछणो, मुरछबो, मूरछाणो, मूरछाबो —रू. भे.।

मुरछायोड़ो–भू०का०कृ०—१ चेतना या संज्ञा लोप हुवा हुआ, मूर्च्छित, वेहोश. २ समाधिस्थ हुवा हुआ. ३ ऐन्द्रजालिक प्रभाव में आया हुआ।

(स्त्री० मुरछायोडी)

मुरछावत–वि०—मूर्च्छित, वेहोश, अचेत।

मुरछित–वि० [सं० मूर्च्छित] संज्ञा हीन, चेतना हीन, वेहोश, मूर्च्छित।

उ०—१ वन री वातां माता सब सुणी, कोई बीज लड़ी ज्यूं वेल। मुरछित माता जी, सचेती सुन करी। —गी. रां-

उ०—२ मुरछित हो धरणी पड़यो, वलि मूंके हे मोटा निसांस की सूं.। —प. च. चौ.

रू० भे०—मुच्छित. मुच्छिय, मुरछत, मूंछीयइं, मूरछत, मूरछित।

मुरछियोड़ो—देखो 'मुरछायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री० मुरछियोडी)

मुरज, मुरजा–सं० पु० [सं० मुरजा] १ मृदंग, पखावज।

उ०—स्रीमंडळवीणा, मुरज,धस्या सरस रस भीन। मधुरे सुर वाजै नहीं, परस्यां विना प्रवीण।—प्रवीणसागर

२ कुबेर की पत्नी का नाम।

मुरजाद, मुरजादा—देखो 'मरजादा' (रू. भे.)

उ०–१ नीचै धरती ऊपरि अंबर विचिविचि मुलक वसाया। असी मुरजाद आप हरि बांधी, हूकमा कांम चलाया।—रुकमणी मंगळ

उ०—२ सर धनुं धार समाथ, माथदस भंज समर मह। मह राखण मुरजाद, जादपत पव्वै तार जह।—र. ज. प्र.

मुरजादी, मुरजादीक–वि०—मर्यादा से रहने वाला।

मुरजित—देखो 'मुरजीत' (रू. भे.)

मुरजी—देखो 'मरजी' (रू. भे.)

मुरजीत–सं० पु०—मुर नामक राक्षस पर विजय प्राप्त करने वाले, श्रीकृष्ण।

रू० भे०—मुरजित,

मुरझणो, मुरझबो—देखो 'मुरझाणो, मुरझाबो' (रू. भे.)

उ०—१ वैसो 'जसवंत' बळी उरमयो असाध्या व्याधी, मुरझयो मुखारविंद मांगन मलिंद को।—ऊ. का.

उ०—२ सूखां नै हरिया किया, मुरझ्या विकसाया हो। प्रेमानंद पियूखरा वादळ वरसाया हो।सैयां।—गी. रां.

मुरझणहार, हारौ (हारी), मुरझणियौ—वि०।

मुरझिओड़ो, मुरझियोड़ो, मुरझ्योड़ो—भू० का० कृ०।

मुरझीजणो, मुरझीजबो—भाव वा०।

मुरझागत—देखो 'मुरछागत' (रू. भे.)

मुरझाणो, मुरझाबो–क्रि० अ० [सं० मूर्च्छनं] १ पेड़-पौधे या वनस्पती का कुम्हला जाना, सूखने लगना।

उ०—१ सारी ओर सवासण्यां सोदागर रा सेल। कीधा इंद्र वाई कयां, बप मुरझाई वेल।—मे. म.

उ०—२ संत संगत सुर वाग सुकायो,मिळै कहूं वळियो मुरझायो। ठंडो जळ नंहि ठरै ठरायो, भूलै ग्यांन सुण्यो मन भायो।

—ऊ. का.

२ उदास होना, म्लान होना।

उ०—१ सूकी सेवण री हेला उर हाई, मैंदी देवण री वेळा मुरझाई —ऊ. का.

उ०—२ वाजी निसवळ झिताई पुळांणा। मेळाउवां वदन मुरझांणा।—रा. रू.

३ श्री हीन होना, कान्ती हीन होना।

उ०—खांन पांन मोहि फीको सो लागै, नैणां रहै मुरझाई।

—मीरां

४ खिन्न होना।

उ०—कर दिल काठो दियो न दाटो, मन गाठो मुरझाई नै। उरसूं काठो आगे पड़ियो, औ भाटो जद आई नै।—ऊ. का.

५ कुंठित होना।

उ०—फेदड़ फेदड़ सी नभ में निजराई, मायण चारण री मनसा मुरझाई—ऊ. का.

६ विकल होना।

उ०—तुम बीछड़ियां दुख पांऊ जी, मेरा मन मांही मुरझाऊं जी।
—मीरां

७ उत्साह हीन होना, निराश होना।

उ०—जद बाप ही आंख्यां फेरली तो पछै फूलकंवर तिण आगै मुरझायोड़ो हिवड़ा रो संताप प्रगट करै।—फूलवाड़ी

८ शिथिल होना, असक्त होना, रुग्ण प्राय: होना।

९ सुस्त होना, आलसी होना।

उ०—ओघ उरझायो सुरझायो ताकूं सार सार। नाहीं मुरझायो मौज सुंदर मचायो तैं।—ऊ. का.

१०—मूर्छित होना, वेहोश होना।

उ०—१ होस उड़ै फाटै हियो, पड़ै तमाळा आय। देखै जुध तसवीर द्रग, मावड़िया मुरझाय।—वां. दा.

मुरझाणहार, हारो (हारी), मुरझाणियो—वि०।

मुरझायोड़ो—भू० का० कृ०।

मुरझाईजणो, मुरझाईजवो—भाव वा०।

मुंझाणो, मुंझावो, मुझाणो, मुझावो, मुरझणो, मुरझवो, मुरझावणो, मुरझाववो, मूझाणो, मूझावो—रू० भे०।

मुरझायोड़ो—भू० का० कृ०—१ कुम्हलाया हुआ (पेड़-पौधे वनस्पती) २ उदास या म्लान हुवा हुआ. ३ श्रीहीन या कान्ती हीन हुवा हुआ. ४ खिन्न हुवा हुआ. ५ कुंटित हुवा हुआ. ६ विकल हुवा हुआ. ७ निराश या उत्साह हीन हुवा हुआ. ८ शिथिल, असक्त या रुग्ण प्राय: हुवा हुआ. ९ सुस्त आलसी. १० मूर्छित, वेहोश।

(स्त्री० मुरझायोड़ी)

मुरझावणो, मुरझाववो—देखो 'मुरझाणो, मुरझावो' (रू भे.)

उ०—जाचक हिरण तिसाया जावै, पुन्न नीर सुपनें नहि पावै। घर जिग्यासू दिस दिस धावै, अग त्रिसणां गुर लख मुरझावै।
—ऊ का.

मुरझावणहार, हारो (हारी), मुरझावणियो—वि०।

मुरझाविओड़ो, मुरझावियोड़ो, मुरझाव्योड़ो—भू० का० कृ०।

मुरझावीजणो, मुरझावीजवो—भाव वा०।

मुरझावियोड़ो—देखो 'मुरझायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री० मुरझावियोड़ी)

मुरट—सं०पु०[देशज]१ एक प्रकार का घास जो कच्चे झोपड़े की छाजन बनाने के काम आता है।

उ०—१ पीणा पीणा फोग, मुरट बूई मरसावै। भुरट ताड़ी गुळै। गजब वेलां गरणावैं।—दसदेव

उ०—उठै सिरांणै दंवारै एक नाग आय, एक मुरट रो बूंटो हुतो, तिणरै ओळो दोळो हुई, अर पूंछ हुती सु मूंह मे झाली अर इयै भांत वैठो छै।—नैणसी

२ देखो 'मरट' (रू. भे.)

मुरड़—१ देखो 'मुरड़' (रू. भे.)

२ देखो 'मरोड़' (रू. भे.)

मुरडणो, मुरडबो—देखो 'मुरड़णो, मुरड़बो' (रू. भे.)

उ०—१ मरगळां सूंड मुरडंत माट, पूगो हुदत चौसट्टि हाट।
—गु. रू. बं.

उ०—२ सूरा मग्ग उगाडि, मीढ़ करि सांकळ छूटा, मुरडि माम मदमोत, जांण सुंडाहळ छूटा।—गु. रू. बं.

उ०—३ कंवळ मद वोहोनी री कामां, मुरत प्रति विलसाय। ऊरट आई देसण धनी, मुरड चली मुरझाय।—पनां

उ०—४ ज्यों मदि वहतो हाथी मीग्य(पैंड) दोय चलै। अर वळै। मुरड नै ऊभो रहै।—वेलि टी

मुरडणहार, हारो (हारी), मुरडणियो—वि०।

मुरडिओड़ो, मुरडियोड़ो, मुरड्योड़ो—भू० का० कृ०।

मुरडीजणो, मुरडीजवो—भाव वा० / कर्म वा०।

मुरडियोड़ो—देखो 'मुरड़ियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री० मुरडियोड़ी)

मुरतब—१ देखो 'मरतब' (रू. भे.)

उ०—१ तिण सूं बादसाहां री मुरतब पैगंबरां सूं मिळतो जुळतो छै।—नी. प्र.

उ०—२ जे कोई इण सूं दांन मांन तरवार मांन मोल में ऊंचो नहीं पहुचै, मुरतब रा कारण मारा सूं बाध होवै।—नी. प्र.

उ०—३ मो जुलफकारखां बडे मुरतब सूं मुलाहिजे रै साथ महाराज नै कनै राखिया।—पदमसिंह री वात

२ देखो 'मुरत्तब' (रू. भे.)

उ०—१ मुरतबां तोग नेजां मही, धग वहरक फरहर धजा। दळ हिलै एक मुरधर दिसी, समंद ऊमळै जळसजा।—सू. प्र.

उ०—२ सगळा हालो आगरे, होकर अभी तैयार। मुरतब संग मारा रहै, करियै नांहि अवार।—ठा. राजसिंघ री वारता

मुरतबो—१ देखो 'मरतब' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—मुरतबो हजारी हफत महि, पांन अहैतां पावियो। इम विदा होय मुदफरअली, 'अजण' भूप दिस आवियो।—सू. प्र.

२ देखो 'मुरत्तब' (अल्पा; रू. भे.)

मुरति, मुरती—देखो 'सूरति' (रू. भे.)

उ०—जिन आ जळ तैं देह धरि, करि नग चख सुरति। हरिया वाकूं सिवरीयै, अवर एक मुरति।—स्त्री हरिरांमदासजी महाराज

मुरत्तब-वि० [अ०] १ क्रमबद्ध, सिलसिलेवार।
२ शृंखलाबद्ध, श्रेणीबद्ध, कतारबद्ध।
३ संग्रहीत।
४ सम्पादित।
५ तरी युक्त, तर।
रू०भे०—मुरतब, मुरातब,।
अल्पा०—मुरतबौ, मुरातबौ,

मुरत्ति—देखो 'मूरति' (रू. भे.)
उ०—कड़ा लवंग मुद्रिका मुरत्ति कुंद नी।—मे. म.

मुरद-सं०पु०—१ शब्द।
२ देखो 'मुरदौ' (मह., रू. भे.)

मुरदनी-वि०—म्लानता।
उ०—वे महर गुमराह गाफिल, गोस्त खुरदनी। वेदिल बदकार आलम, हयाद मुरदनी। —दादूवांणी

मुरदांणव-सं०पु०—मुर नामक दानव।
उ०—कुंभक्रन इंद्रजीत सारिखा, हिरणाखस हिरण कासिब सारिखा, मुरदांणव महाबळी सारिखा ......। —मा. वचनिका।

मुरदार-वि० [फा०मुर्दार] १ मृतक, निष्प्राण, मृत।
उ०—चुगली विसतारत चुगल, सांप्रत होय सचेत। सो मुरदार सरीर री, लट मुख मांझल लेत। —बां. दा.
२ अपनी मौत से मरा हुआ।
उ०—मुई मटीया मुरदार कहत है, मारी हक निवाला।
—श्री हरिरांमदासजी महाराज
३ कमजोर, अशक्त, वेदम, वेजान।
उ०—छळदार होय छाती छड़ै अमलदार मुरदार री। —ऊ. का.
४ डरपोक, कायर।
उ०—मावड़ियौ वन मांझली, सो नह जाय सिकार। डोळा मिनखी सूं डरै, मूसा ज्यूं मुरदार।—बां. दा.
५ अपवित्र, नापाक।
सं०पु०—१ फोड़ा या फुंसी से निकलने वाली मवाद, पीव।

मुरदासंख, मुरदासिंगी, मुरदासिंघी, मुरदासिंही-सं०स्त्री०—सीसे और सिंदूर को फूंक कर बनाया हुआ एक औषध।
रू०भे०—मुड़दासंख, मुड़दासिंगी, मुड़दासिंघी,

मुरदौ-सं०पु० [फा० मुर्दः] १ प्रेत, भूत।
उ०—मुरदे मनावै मूढ़, जसोदा जणावै जापौ, पिता को जनावै प्रेत खुमी खेल खोवां की। —ऊ. का.
२ शव, लाश।
वि०—१ जिसके प्राण पंखेरू उड़ चुके हों, निष्प्राण, निर्जीव, मृत।
२ मरे हुए के समान, अधमरा।
उ०—क्यूं नहं लालच बस करौ, वहु हाका विरदांह। व्है नह ऊंचौ हत्यड़ौ, मावड़ियां मुरदांह।—बां. दा.
३ अशक्त, कमजोर, दुर्बल।
उ०—हिळता हिळता हाय, भिळौ मत दुख सुं भाई। मिळ मुरदां मनवार, करो मत बुरी कमाई —ऊ. का.
४ कुम्हलाया हुआ, मुरझाया हुआ।
रू०भे०—मुड़दौ, मुड़ौ,
अल्पा—मुड़दियौ,
मह०—मुड़द्द।

मुरद्धर—देखो 'मरुधर' (रू. भे.)
उ०—१ विदा किया तिण वार, धूत वळ असुरमुरद्धर। 'अवरंग' भड आविया, भूत गिड़कंध भयंकर। —सू. प्र.
उ०—२ वरपत सीहै लयौ मुरद्धर। आसथांन तिल पाट उजागर।
—रा. रू.

मुरद्धरा—देखो 'मरुधरा' (रू. भे.)
उ०—तद वार अंस पुरसां तणी, आय वणी जग ऊपरा। महाराज तणै छळ मारवां, धारी लाज मुरद्धरा। —रा. रू.

मुरधर-सं०स्त्री० [रा० मरुधर] देखो 'मुरधर भाखा'
उ०—व्रज भाखा मुरधर विमळ, आदि करै उच्चार। देस देस भाखा डंवर, वरणु करि विसतार। —सू. प्र.

मुरधरभाखा, मुरधरभासा-सं०स्त्री० [सं०मरुधर+भाषा] मारवाड़ की भाषा, मारवाड़ी, राजस्थानी।
२ देखो 'मरुधर' (रू. भे.)
उ०—१ ईसाग्या वरती अचळ अग्घ, मारवा राव मुरधर महग्घ।
—ऊ. का.
उ०—२ पंथ लगौ मुरधर पाय, तज दिली छळ तैं ताय। सुण वात कमंध सुग्यांन, वळ मूंछ धर वळवांन।—रा. रू.

मुरधरमंडण-वि०—मारवाड़ की शोभा बढ़ाने वाला।
उ०—खाधा चोर तणी खेड़ेचा, माथै रहत घणा दिन मोस। मुरधर-मंडण तूझ तणै अत, देतौ दुरंग स टळियौ दोस।
—दुरसौ आढौ
सं०पु०—एक जेवर विशेष।

मुरधरा—देखो 'मरुधरा' (रू. भे.)
उ०—१ वकसी मात राव बीका नैं, धर थळवट रजधांणी। रिड़मल तणै मुरधरा राखी, है साखी हिंदवांणी।—मे. म.
उ०—२ द्रढ़ दंत दव्वि देखत दुसार, आवत न पार दुख सिंधु पार। आपकी इजाजति चहत अग्ग, मुरधरा जांन को देहु मग्ग।
—ऊ. का.

मुरधरियौ—देखो 'मरुधरियौ' (रू. भे.)
उ०—१ मन थारी मुणजै, मुरधरिया, खुम रीझां देवण दव खीर।
—द. दा.
उ०—२ मांणस मुरधरिया मांणक सम मूंगा। कोडी कोडी रा करिया स्रम सूंगा।—ऊ. का.

मुरधा-सं० स्त्री० [सं० मूर्धन] १ सिर।

२ देखो 'मरुधरा' (रू. भे.)

मुरनयण, मुरनैण—सं० पु० [रा० मुर=३+सं० नयनं] तीन नेत्र वाले, महादेव, शिव। (ना० डिं० को०)

उ०—चकव केवी मह्यां मिथां दन चारणां, तरण धण महण मुरनयण छाताळ।—छत्तरसिंह हाडा री गीत

मुरपुर—सं० पु० [रा० मुर=३+सं० पुरम्] तीन लोक।

मुरपुरधणी, मुरपुरपत, मुरपुरपति, मुरपुरपह—सं० पु० [रा०मरु+सं० धनिक+सं० पति,+सं० प्रभु] त्रिभुवन पति, तीन लोक के स्वामी, विष्णु। (ह. नां. मा.)

मुरव्वत—सं० स्त्री० [अ० मुरव्वत] १ भल मनसात, इन्सानियत।

उ०—१ कवी सो इणनूं जांणै ही नहीं थी सो कही हे मोटा मांणस आ मुरव्वत नहीं जो मैं सरणै आयोड़ा नूं काढ किणी नूं देऊं अर तूं मार खावै।—नी. प्र.

२ लिहाज, रिआयत, परोपकार।

उ०—यमन रो बादशाह घणी दांन अहसांन मुरव्वत में ऊठियो थो।—नी. प्र.

३ शील, संकोच। ४ कृपा, अनुग्रह।

रू० भे०—मुरौवत, मुरौवत,

मुरव्वी, मुरव्वी—वि० [अ०] १ आश्रय दाता, संरक्षक।

२ पालन-पोषण करने वाला।

३ सहायक, मददगार।

उ०—कायमखां कपतांन से करि वातें चव्वी, सेख इनायत खांन के भुज पलटण दव्वी। टेरि कुतबीखांन सें खुद कहा मुरव्वी, हल्ले पूठ ना फिरै कल उसकी फव्वी।—ला. रा.

४ बड़प्पन रखने वाला, गौरवशाली।

५ प्रधान, मुखिया, अग्रणी।

उ०—१ पहु सुत दसम प्रवाळ देस बगसर घर दव्वी। बगसरिया जिण वंस मरण सब प्रथम मुरव्वो।—व. भा.

उ०—२ के तुम किल्ले तोरियो के मरियो सव्वी, देखो नव्वी क्या करै कर नाख तसव्वी। उस विरयौं वज्जीर दौल कूं कहै कुतव्वी, जांनिक सुग्गे लेन को हिरनाख्य मुरव्वी।—ला. रा.

६ कृपा या दया करने वाला।

रू० भे०—मुरव्वी,

मुरव्वो—सं० पु० [अ० मुरब्बा] १ कच्चे फल, सेब, आंवला, बेल आदि में चीनी की चासनी मिला कर बनाया जाने वाला पाक।

२ कृषि भूमि का एक माप। ३ उक्त माप का खेत।

४ वर्गाकार, चौखूंटा, समचौरस।

मुरभवण—सं० पु० [रा० मुर+सं० भुवन] तीन-लोक, त्रिलोकी।

उ०—१ गहवगां जण जण अगण गण.मुरभवण कंपण लगण मण लंकाळ पूजिय लंक।—र. रू.

उ०—२ हाकी दूमर डांण, सुर जख रिख डर मालिया। आता वे मुरभवण में, राज करै असुरांण—मा. वचनिका

मुरभवणपति—सं० पु०—त्रिलोकी के स्वामी, विष्णु।

उ०—मुज असुरां संग्राम, कियां नह पोंहचां कदै। कांई न राखो ठकुरां, मुरभवण-पति मांम।—मा. वचनिका

मुरभूम—देखो 'मरुधरा'

उ०—मुरभूम पाठ पिंगळ मता, साहित वीदग सारनै। कहै मंछ भलां रूपक करो, ए दस दोख निवारनै।—र. रू.

मुरभूमभाखा, मुरभूमभासा—देखो 'मुरधरभासा'

उ०—कह मंछ स्रीरघुनाथ रूपक पढ़ै जो नर प्रीत सूं। मुरभूमभाखा तणी मारग रमैं आछी रीत सूं।—र. रू.

मुरमंडळ,मुरमंडल—सं०पु—मारवाड़।

उ०—देमि मुरमंडले नयरि विक्रम पुरे, जसो वरद्धनु जगि जांणीउ ए।—कवि भत्तउ

मुरमरदण—सं०पु० [सं० मुर+मर्द्दन] १ मुर नामक दैत्य को मारने वाले, श्रीकृष्ण।

२ विष्णु।

मुरमुर—सं०पु० [सं०] १ कामदेव, मदन।

२ सूर्य के रथ के घोड़े।

३ अग्निकण, चिनगारी।

रू०भे०—मुम्मुर,

मुरमुरया, मुरमुरिया—सं०स्त्री०—वेसन की नमकीन बूंदी।

उ०—सात रुपियां रा पकवांन मुरमुररियां आदि हुंता तिण में १६ जणा चूकाया गया।—भि. द्र.

मुरराघवेस—सं०पु०—१ श्रीकृष्ण, मुरारि।

२ विष्णु।

मुररिप, मुररिपु—सं० पु० [सं० मुर+रिपु] १ श्री कृष्ण।

२ विष्णु।

मुरळिका, मुरळिया—देखो 'मुरळी' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ पोख हित वेल गावो चरित पेमरा, मुरळिका सुणावो घोख मांही।—वां. दा.

उ०—२ नेम धरम कोन कीनो मुरळिया कौन तिहारै पासु री।—मीरां

मुरळी, मुरली—सं०पु० [सं०] बांस या किसी धातु की नलिका पर छेद कर के बनाया हुआ बाजा जिसे मुंह से फूंक मार कर बजाया जाता है, बांसुरी, वंशी।

उ०—१ संख चक्र गदा पद्म बिराजै, माधुरी मुरळी किसोर। मोर मुकुट सिर छत्र विराजे, कुंडळ की छवि ओर—मीरां

उ०—२ पथिक जाय मथुरा कहे जादवां पती नूं,आपरा मिळण कूं वात उरली। आय गोकळ मही लेर सुर अनोखां, मया कर सुणावो फेर मुरळी।—वां. दा.

मुरळीधर—सं०पु०—१ श्री कृष्ण।

उ०—१ पुरसोत्तम पूरण प्रभू, रावव गिरधर रूप।मुरळीधर मोहण मुकंद, भजलै त्रिभुवण भूप।—ह र.

उ०—२ गांव री पक्की जो'ड़ी, मुरळीधर री मिंदर, जकांरी

कारी-कुटकौ ही नीं हुवै, इयां रै दादेसा रा जस थंभ है।
—दसदोख

२ ईस्वर, परमेस्वर। (ह. नां. मा.)

रू०भे०—घरमुग्ळी,

मुरळीमनोहर-सं०पु०—श्रीकृष्ण का एक नामान्तर। (रू. भे.)

उ०—सेहर खास में ठाकुरजी स्रीमुरळीमनोहरजी रौ मिंदर करायौ। —नैणसी

मुरळीवाळौ-सं० पु०—श्रीकृष्ण।

मुरलोक-सं०पु०[राज०मुर=तीन+सं०लोक]त्रिभुवन,त्रिलोकी,तीनों लोक

उ०—१ मेटै मुरलोक पैठौ जळ मांह। तठै इक अंड निपायौ तांह।—ह. र.

उ०—२ मुत गज-वंध आदि तो सुजडी.मोहियौ-वसु सर्व मुरलोक। असपत इण अजमति इचरजियौ, एक देह अरि पाडै अनेक।
—गु रू. वं

रू० भे०—मुरुलोक, मुरूलोक,

मुरलोकगत-सं० स्त्री०—एक देव जाति। (अ मा.)

मुरलोकनरेस-सं० पु०—त्रिभुवन पति, विष्णु।

मुरलोचन, मुरलोयण-सं० पु० [राज० मुर=तीन+सं० लोचन] महादेव, शिव।

मुरलोयौ-सं० पु०— तीन लोक।

उ०—हरि चाहै सुज हुऐ, लेख साहै मुरलोयौ। भूमंडळ भोगवै, करम प्राचीन सकोयौ।—रा रू.

मुरलौ—देखो 'मोर' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—प्यारा लागे पपीहरा, मुरला करै मल्हार। कुहकै रहि रहि कोयली, भूल भंवर झंकार।—अज्ञात

मुरवा-सं० स्त्री० [सं० मौर्वी] एक प्रकार की घास, जिसकी धनुष की प्रत्यंचा बनती थी।

मुरवि, मुरवी-स० पु० [सं० मौर्वी] धनुष की डोरी, प्रत्यञ्चा।

२ एक शस्त्र विशेष, आयुध।

उ०—त्रिसूल सक्ति सर तोमर मुरवि अरद्धमुरवि परसु पास प्रमुख ३६ सटत्रिंसद्दंडायुधानि।—व. स.

३ मुरवा घास।

मुरवैरी-सं० पु० मुर नामक दैत्य के शत्रु श्रीकृष्ण,विष्णु।

मुरवौ—देखो 'मोर' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ कैसी लगै सुवावणी घरवां घरवां कंत जल भुरवां,सुरवां करै, मुरवां गए महमंत।—अज्ञात

उ०—२ कोयल बोल बोलती हैं मधुरे। मुरवा की नांई चलत वारी वैन। —रसीलै राज रा गीत

२ देखो 'मरवौ' (रू. भे.)

मुरव्वी—देखो 'मुरव्बी' (रू. भे)

मुरसंडौ—देखो 'मुरटंड' (रू· भे.)

उ०—दाता दे वित दांन मोज मांगै मुरसंडा — ऊ. का.

मुरसथळ—१ देखो 'मरुस्थल' (रू भे.)

२ देखो 'मुरस्थल' (रू. भे.)

मुरसद—देखो 'मुरसिद' (रू. भे.)

उ०—१ पढ़ दुरस प्रमादी मुरसद मादी, महंत पुरस माचंदा है।
—ऊ. का.

उ०—२ पीर मुरसद एक आसण, अरस परसै दोय। जन हरीदास पीव सूं ख्याल परगट, सहज सिजदा होय।—ह. पु. वां.

मुरसल—देखो 'मुरसिल' (रू. भे.) (मा. म.)

उ०—सहनाय मुरसला रंग सवाद। नववती घोर मंगळीक नाद।
—सू. प्र.

मुरसिद-सं०पु० [अ० मुर्शिद]१ गुरु, आचार्य।

२ मुसलमानों का धर्म गुरु, पीर।

३ आध्यात्म वाद का उपदेश देने वाला।

४ पथ प्रदर्शक, मार्ग दर्शक।

५ उस्ताद।

६ धुर्त, चालाक। (व्यंग)

रू०भे०—मुरसद,

मुरसिल-सं०पु० [अ०मुर्सिल] १ घोड़े पर नगारा रख कर वजाने वाला व्यक्ति।

२ एक वाद्य विशेष।

३ भेजने वाला, प्रेषण करने, वाला, प्रेषक।

रू०भे०—मुरसल

मुरस्थळ, मुरस्थळी-सं०पु० [सं० मरु+स्थल] १ मारवाड़ प्रदेश।

उ०—माणिक्यदंडउ हस्ती, खुरसाणिउ घोडउ, मुरस्थली नउं उंट दंडाहिनउ वलद......। —व. स.

२ देखो 'मरुस्थळ' (रू. भे.)

रू०भे०—मुरसथळ,

मुरहरी, मुरहारी-सं० पु० [सं० मुर+हारिन्] १ मुर नामक दैत्य को मारने वाले श्री कृष्ण, विष्णु।

२ एक प्रकार का घोडा।

उ०—जिलहरी आवनूंसी जमंद। मुरहरी हरी सेलीसमंद।
—सू. प्र.

मुरहेल—हेल मच्छी का तेल।

उ०—लूंण कपूर समांन थिऊ, अन सोवन सम भाग। तेल थयौ मुरहेळ सम, हय सुहडां थयु आग। —गु रू. वं.

मुराई-सं० स्त्री०—मसूडा।

उ०—पण बोखै मूं डै मोतियां रौ स्वाद दोरौ ई लिरीजैला। मुरायां सूं चिवळ आखा रा आखा गिटूंला।—फुलवाड़ी

रू०भे०—मांराई, माराई, मुहराइ,

अल्पा०—मुरायली, मुराली,

मुराड़ी-सं०स्त्री०—१ भूतों द्वारा प्रज्वलित अग्नि, श्मशान की अग्नि, आग।

उ०—१ दून रा उनाड़ा क्रूर दांत । भूत रा मुराड़ा तरणइ भांत । हुव जेठ तावड़ा दुसह होम, घावड़ा श्रंगारां चिनख धोम ।
—वि. सं.

उ०—२ वैरियां बराड़ा पाड़ बाखांगजै, जांगजै मुराड़ा भूत जेहौ ।
—महारांणा भीमसिंह रै भाला री गीत

२ अग्नि, आग ।

उ०—१ तोपां ताड़ मुराड़ा ताउध, आवध वरिखां परै उरै । तरिण वळिराव आज रा तौ सिरि, घाव वहा नीसांण घुरै ।
—सुभराज गौड़ रौ गीत

उ०—२ उथापै दळो क्रमेद थापै यळा, सवाडा पवाड़ा भाग साथै । आगि बूंदो घरा लियंतां ऊपड़ी, मुराड़ा भड़ै आंमेर माथै ।
—दुरजणमाळ हाडा रौ गीत

३ अग्नि की ज्वाला ।

४ जलती हुई लकड़ी ।

५ सूरत, शक्ल ।

मुराड़ो–सं०पु०—१ अग्नि की ज्वाला ।

उ०—दुरजणसाळ नांम ही ज्यां दुरजन कूं सल्लै । भाटी वीर आखाड़े मैं मुराड़े से भल्लै । —रा. रू.

२ दाह क्रिया में चिता जलाने के लिये जलाया जाने वाला घास का पूवाल ।

३ घास आदि का पूवाल ।

उ०—जिका वात जगमाल रै किणयक घाती कांन । आग वळंती ऊपरा, कियौ मुराड़ौ तांन । वी. मा.

४ सूखे कांटों का ढेर या समूह जो जलाने के काम आता है ।

वि०—१ क्रोध युक्त, कुपित ।

२ भयानक, डरावना ।

३ प्रचंड ।

४ मूढ, मूर्ख ।

मुरातब—१ देखो 'मरातब' (रू. भे.)

उ०—१ वजीर खानमांमां बगसी अपने अपने मुरातब के पाये पर छक पूर छाजे । —सू. प्र.

उ०—२ अपछरा म्हांरी बरोबर मुरातब क्यों कर लहै छै ।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

२ देखो 'मुरत्तब' (रू. भे.)

मुरातबौ—१ देखो 'मरातब' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—तद जलाल बोलियो—चाकरी खूब करावो पण बादसाहां रो अमल-दस्तूर दुरस्त करियो चाहो तो म्हारे मुरातबा माफक मनसब देवो ।—जलाल बूबना री वात

२ देखो 'मुरत्तब' (अल्पा., रू. भे.)

मुरातब्ब–वि०—सुसज्जित, सजा हुआ, शृंगारा हुआ ।

उ०—ओपी रूप में अजब्ब, तूं ही कीयो मुरातब्ब । सांमी आगळी सिगार, आंणीयो लूंण ऊतारै ।—गु. रू. बं.

मुराद–सं० स्त्री० [अ०] १ वह प्रबल इच्छा जिसको पूरी करने के लिये मन हर वक्त लालायित रहता है, तमन्ना, लालसा ।

उ०—१ मांग, थारी इंछा व्है सो मांग । आज री इण खुसी वास्तै म्है थारी मनजांणी मुराद पूरी कर सकूं ।—फुलवाड़ी

उ०—२ वडी ईद री पैं'ली रात, दोनवां आंख्यां सूं काढी, आप आप री मुराद वाढी ।—दमदोख

२ इच्छा, कामना, वांछा, आकांक्षा ।

उ०—हरीया भोजन जीमीयै, ऐसा आवै स्वाद । इन तन का सारा नहीं, मनसा इसी मुराद ।—स्रीहरिरांमदासजी महाराज

३ उमंग ।

४ अभिप्राय, आशय, मतलब, प्रयोजन ।

उ०—मीठा स्वभाव नै मिळता स्वभावां सूं मुराद, तंत भला स्वभाव खलक सूं ।—नी. प्र.

रू० भे०—मुराद, मुरादि, मुरादी,

मुरादा—१ देखो 'मरजाद' (रू. भे.)

उ०—आप मुरादा आप री, असमर जीते आंण । थांणां मुरभवणां थपै, छत्र एक मेछांण ।—मा. वचनिका

२ देखो 'मुराद' (रू. भे.)

मुरादि, मुरादी–वि० [अ०] १ जिसके कोई मुराद हो, इच्छा या तमन्ना रखने वाला ।

२ आशययुक्त, मतलबी ।

३ देखो 'मुराद' (रू. भे.)

मुराफौ–सं० पु० [अ० मुराफअ] अपील ।

मुरायळी, मुरायली–सं० स्त्री०—१ एक प्रकार की कंटीली झाड़ी, जिसकी टहनियां नमक बनाने के खड्डों में डाली जाती है ।

रू० भे०—मुराळी,

२ देखो 'मुराई' (अल्पा., रू. भे.)

मुरार—देखो 'मुरारि' (रू. भे.) (अं. मा.)

उ०—१ वूठा दूनां बादळा, तूठा देव मुरार । जेहल आज जुहारिया, काछ नरेस कुंवार ।—बां. दा.

उ०—२ नमो ध्रम-देह विसंभर धार, नमो घर व्यापिय सोय मुरार ।—ह. र.

मुरारमाळी–सं० पु०—मालियों की एक जाति व इस जाति का व्यक्ति ।

मुरारि, मुरारी–सं०पु०[सं०मुर+अरि] १ मुर नाम क दैत्य को मारने वाले, श्रीकृष्ण ।

उ०—गिणतां गिणतां घस गइ रेखा, आंगरियां की सारी, अजहूं नहि आये मुरारी । —मीरां

२ विष्णु ।

उ०—संत पैहळाद तणी सुणी साहुळि, कर फुरळै हिरणाखस काहुळि । गाहि कन्हि ली बारुण गिरधारी, मोखै दोहूं तैं हींज मुरारी । —मा. वचनिका

३ परमेश्वर, ईश्वर । (अ. मा., ह. नां. मा)

रू०भे०—मुरार,

मुराळ—सं०स्त्री०—१ दुम, पूंछ।

२ देखो 'मराल' (रू. भे.) (हि. को.)

उ०—तिरगुण अनातम माया त्यागी, चेतन संत मुराळ। तुरीये आतम सत सदाई निज स्वरूप अकाळ।—स्रीसुखरांमजी महाराज

मुराळी—१ देखो 'मराळ' (स्त्री.)

उ०—भद्र जाती चुगं सीस मोती स्रोण पंका भळं। खात मोती मुराळी नसंका चुगं खूद।—वद्रीदास खिड़ियौ

२ देखो 'मुराई' (अल्पा., रू. भे.)

३ देखो 'मुरायली' (रू. भे.)

मुरिखौ—देखो 'मूरख' (अल्पा., रू. भे.)

मुरिति, मुरिती—देखो 'मूरति' (रू. भे.)

मुरी—देखो 'मोरी' (रू. भे.)

मुरीद—सं०पु० [अ०] १ चेला, शिष्य।

२ अनुयायी, अनुगामी।

उ०—सुरतांन तारकीन कुतुब साहिब दोनूं मुरीद खाजा मुईनउद्दीन रा।—वां. दा. ख्यात

मुरु—देखो 'मुर' (रू भे.)

मुरुलोक, मुरूलोक—देखो 'मुरलोक' (रू. भे.)

मुरेठी—देखो 'मुलेठी' (रू. भे)

मुरेठौ—सं० पु०—१ साफा।

२ पगड़ी।

मुरैलौ—देखो 'मोर' (अल्पा, रू. भे.)

उ०—आई आई सांवण तीज, मुरैला बोल्या गै'रा डूंगरां जी।
—रसीलेराज रा गीत

मुरैही—देखो 'मुलेठी' (रू. भे.)

मुरोवत, मुरौवत—देखो 'मुरव्वत' (रू. भे.)

मुळ—अव्य०—१ बिलकुल।

२ एकदम।

उ०—वीरमदे दूदावत नै राव मालदे मुळ हीज नाड़ी विरोध हुवौ।
—राव मालदेव री वात

३ कतई।

४ तनिक भी, थोड़ा भी, रंचमात्र।

उ०—जळ मांहे वळ ग्राह रौ वारै मुळ लग नांहि। वारै वळ गजराज रौ, मुळ नाहीं जळ मांहि।—गज उद्धार

५ अगर, मगर, किन्तु, परन्तु, लेकिन।

६ अन्ततः।

७ मूलतः

मुळक—सं० स्त्री० [सं० पुलक] मुस्कराने की क्रिया या भाव, मंदहास्य, पुलक।

उ०—१ लक्खू वोली-म्हारी देह रा इण रूप अर होठां री इण मुळक रै विणासियां म्हैं इण नांव री कांई करूंला।—फुलवाड़ी

उ०—२ जळ जळी आंख्यां अर होठां माथै मुळक रै सागै वै एक दूजा सूं विछड़्या।—फुलवाड़ी

रू० भे०—मुळकी, मुळक्की, मुळिक, मुळुक,

मुलक—स० पु० [अ० मुल्क] १ कोई बड़ा देश, राष्ट्र।
(अ. मा., ह. नां. मा.)

उ०—१ मालिक कावुल मुलक रो, कमरौ साजि कटक्क। जंग करण त्रप जैत हूं, आयौ लांघि अटक्क।—मे. म.

उ०—२ प्रभुता देखी पुत्र नी, राजा हुवै खुस्याल। पुण्य विना किम पांमीयै, एल मुलक ए माल।—वि. कु.

उ०—३ नाग रा झाग पीवै निलज झांक आग चख में झड़ै। अंगरेज मुलक दावण अडै, ए जूंवां सू आथड़ै।—ऊ. का.

उ०—४ म्हैं सगळा मुलकां री धरती विना देख्यां ई ओळखूं हूं। माळी री वेटी हूं, धूळ अर बूंटी देखने धरती री ठा पटकूं।
—फुलवाड़ी

२ रियासत, प्रान्त, सूवा प्रदेश।

उ०—१ दक्खिण मैं साह रै तथा इण रा तीजा कुपुत्र रै साथ केही जुद्ध जीति केही पुर दुरग दावि पचहत्तरि लाख ७५००००० री मुलक दावि दिल्ली हेठै पटकियौ—वं. भा.

उ०—२ थांरे मुलक में भक्ति नहीं छै, लोग वसै सव कूड़ो।
—मीरां

उ०—३ आगला सूंराचंदां नै परा काढीया सूं आगे तो पारकर मुलक में गया था नै हमार थळ रा गांवां में गंगासर नै गंगासर रा गांवां में वैठा है।—नैणसी

उ०—४ कांधळजी हिसार री मुलक मारियौ तीं पर सारंगखांन पठांन आयौ।—नापै सांखले री वारता

मुहा०—मुलक मारणौ—किसी प्रदेश या क्षेत्र अथवा रियासत पर कब्जा करना, कोई देश विजय करना, लूटना।

३ संसार, दुनिया, विश्व।

उ०—१ चोड़ै कर चाळोह, लूटै भाळौ लोक नें। कद हुसी काळोह, मुनस्यां वाळौ मुलक सुं।—ऊ. का.

उ०—२ मुलकां चावी गवाड़ी ही। माया अर मिनख दोनां रा थाट हा।—फुलवाड़ी

मुह०—मुलकां चावौ=विश्व विख्यात, जग प्रसिद्ध, लब्ध-प्रतिष्ठित।

४ कोई भू-भाग, क्षेत्र।

उ०—काळ पडियोड़ा मुलक में वरसात व्हैणा सूं लोग जितरा राजी व्है, हळदी वाई नै देखनै उत्ता ई राजी व्हिया।—फुलवाड़ी

५ जन्म भूमि, वतन।

६ जनता, समाज।

७ विदेश, परदेश।

उ०—ऐड़ौ रूपाळौ मोटयार छोडनै म्हैं कठै मुलकां में रोवता फिरां
—फुलवाड़ी

रू०भे०—मुलक, मुलिक, मुलुक, मुलक,

मुलकगिरी, मुलकगीरी-सं०स्त्री० [अ० मुल्क+फा०गीरी] देशों को जीतना, देश विजय।

उ०—उठा सूं कुंवर मुलकगिरी नै असवार हुवा। मुलक घूमिया, सारा रस लिया। मुलक दोय-तीन दूजा नया बसाया। —पताक दरियाव री बात

२ लूट-पाट, डकैती।

उ०—जे रांमसिंह मेड़ते जाय दाखिल हुवौ तद फेर मुलक मांही मुलकगीरी कीधी।—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

३ देशाटन, भ्रमण, यात्रा।

रू०भे०—मुलकगीरी।

मुळकण-सं०स्त्री०—१ मुस्कराने या हंसने की क्रिया या भाव।

२ मंद हास्य, हंसी।

उ०—छकी हीरां मदन छकि, वण बुध मदन थीमेरा। मंद वदन मुळकण दमक, रदन तडत की रेग।—बगसीरांम प्रोहित री बात

मुळकणो, मुळकबो-क्रि०अ० [सं० पुलकनम] १ मंद मंद हंसना, मुस्कराना।

उ०—१ मनि वहळावी फिरि गई, प्री मिळियउ एकंत। मुळकत होलउ चमकियउ, बीजळ लिवी क दंत।—ढो. मा.

उ०—२ दमण निपाप करिस दामोदर, आणंद तूझ हमैं गिरवर-धर। अहर निपाप करिस अघ-वारण। मुळकै तूझ प्रेम मधु-मारण। —ह. र.

२ हंसना।

उ०—१ चरनीयं पंटी गळां टंटी मुदत मंडी मुळकती। भजियै भवांनी जगत जांनी वी राज रांणी भगवती।—मा. वचनिका

उ०—२ चोजां चटकाळा गुण गटकाळा, मटकाळा मुळकंदा है। माथा हद मराळै श्री कद अमळै, घमळै जद धूजंदा है।—ऊ. का.

३ मुदित होना, हुलसना, चाव आना।

उ०—मैंदी देऊं मुळक मेल सूं करदे गोळी। दीवाळी रे दिवस दिया में ऊठै होळी।—ऊ. का.

४ प्रसन्न होना, खुश होना, पुलकित होना।

उ०—एकलो बैठी फूसी कलपै-कुढै। वटै मारजा हरिजण वाला में रीझै-मुळकै।—दसदेव

मुळकणहार, हारो (हारी), मुळकणियो—वि०

मुळकिग्रोड़ो, मुळकियोड़ो, मुळकयोड़ो—भू० का० कृ०।

मुळकीजणो, मुळकीजबो—भाव वा०।

मुळपकणो, मुलपकबो—रू० भे०।

मुळकाणो, मुळकाबो-क्रि० स० ["मुळकणो" क्रि० का० प्रे० रू०]

१ हंसने या मुस्कराने के लिये प्रेरित करना।

२ प्रसन्न करना खुश करना।

३ हंसाना, मनोरंजन कराना।

मुळकाणहार, हारो(हारी), मुळकाणियो—वि.।

मुळकायोड़ो—भू. का. कृ.।

मुळकाईजणो, मुळकाईजबो—कर्म वा.।

मुळकायोड़ो-भू. का. कृ.—१ हंसने या मुस्कराने के लिये प्रेरित किया हुआ. २ प्रसन्न व खुश किया हुआ. ३ हंसाया हुआ।

(स्त्री. मुळकायोड़ी)

मुलकियोड़ो-भू. का. कृ.—१ मंद मंद हंसा हुआ, मुस्कराया हुआ. २ हंसा हुआ. ३ मुदित हुआ हुआ, हुलसा हुआ. ४ प्रसन्न, खुश व पुलकित हुवा हुआ।

(स्त्री. मुळकियोड़ी)

मुळकौ—देखो 'मुळक' (रू. भे.)

मुलकौ—देखो 'मुलकौ' (रू. भे.)

मुळकौ—देखो 'मुळक'

उ०—म्हारी हुतो नै म्हे ई मारई, वैंन हुतो ने गोत गराई। मांमी बैठी मुरको मारै, मामी नर आ मुळको मारै।—अग्यात

मुळपक—देखो 'मुळक' (रू. भे.)

मुलपक—देखो 'मुलक' (रू. भे.)

उ०—वाजवै मुर जेत रो, टाबो चीम निरवक। माभ पड़ंतां मंम पर, मई मगाह मुलपक।—रा. रू.

मुळपकणो, मुळपकबो—देखो 'मुळकणो, मुळकबो' (रू. भे.)

उ०—सुंदर मोळ सिणार सजि. गई सरोवर-पाळ। चंद मुळक्कपढ जळ हंस्यत्र, जळहर कंपी पाळ।—ढो मा.

मुळपकणहार, हारो(हारी), मुळपकणियो—वि.।

मुळपिकग्रोड़ो, मुळपिकयोड़ो मुळपकयोड़ो—भू. का. कृ.।

मुळकीजणो, मुळपकीजबो,—भाव वा.।

मुळपिकयोड़ो—देखो 'मुळकियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. मुळपिकयोड़ी)

मुळपया—देखो मुळक' (रू.भे.)

उ०—निलजी फेरव नार,वै क्यों मुळपया करै। आगी कुटुंब उधार, देणा सो लेणा दुरस।—रांमनाथ कवियो

मुळगुळ—देखो 'मुगळ'(रू. भे.)

उ०—साथै हिंदू मुगलमांणं. हिंदुवांन मिळे सुरसांणं। मुळगुळ ऊथकि सुरसाणी, बोलै जेम विहंगम वांणी।—गु रू. बं.

मुळगो-वि. [सं. मूल] (स्त्री. मुळगी) १ पूर्णतया।

उ०—१ पण श्री ठकरेल चोर तो वाड़ी री सोभा रो जांणै मुळगो गळ ई मार दियो।—फुलवाड़ी

उ०—२ भारा उपणता—उराणता सगळो माथो जिण दिन मुळगो ई विण जावैला उण दिन इण री अकल ठांणै आवैला।

—फुलवाड़ी

उ०—३ एक बटैनो कहयो—जायनै चौवरी नै पानं, नीतर औ तो अठा सूं अपारो मुळगो पाणी ई काट न्हाखैला। फुलवाड़ी

२ बिल्कुल।

उ०—१ सेठ बाद करता बोल्या–थें राजी व्हो भलांई बेराजी व्हो। म्हे तो मुळगो ई पांतरग्यो.के फेरा कीकर खाया हा।
—फुलवाड़ी

उ०—२ आ कालाई तो वरसां तांई जूता मारियां ई ठांणै नीं आवै, इण वास्तै म्हें तो मुळगी ई माठ झाल ली।—फुलवाड़ी

३ तनिक भी, किंचित मात्र भी।

उ०—१ म्हनै तो नीं खुदा माथै भरोसो है अर नीं भगवांन् माथै मुळगो ई विस्वास है।—फुलवाड़ी

उ०—२ आं हीरां-मोत्यां रो म्हनै मुळगो ई चाव नीं है।
—फुलवाड़ी

४ मुख्य, मूल, व असल।

रू०भे०—मुळको, मुळो, मूळको, मूलको, मूलगउ, मूलगउ, मूलगु, मूलगू, मूळगो, मूलगो, मूलागो

मुलजिम–वि० [अ० मुलजम] १ जिस पर कोई इलजाम या अभियोग लगाया गया हो, अभियोगी, अभियुक्त।

मुळणो, मुळबो–क्रि०अ०—१ नटना, इन्कार करना।

उ०—जो न भांण ऊगमें, जो नवि वासग घर भलें, रांम वांण न ग्रहें, करण पारथ्यो जु मुळे। ब्रह्मा छोड़ै वेद, पवन जा रहै पुळंतो, चंद सूर ना वहे, रहै किम अमी झरंतो। पंमार नाकारो नां करै, मेर-समो जाको हियो, कंकाळी कीरति करै, सीस दांन जगदे दियो।
—जगदेव पंवार री वात

२ मुकरना, पलटना।

मुळणहार, हारो (हारी), मुळणियो—वि०।

मुळिओड़ो, मुळियोड़ो, मुळयोड़ो—भू०का०कृ०।

मुळीजणो, मुळीजबो—भाव वा०।

मुळतवी, मुलतवी—देखो 'मुल्तवी' (रू. भे.)

मुळतांण, मुलतांण–स०पु०—पश्चिमी पंजाब या वर्तमान पाकिस्तान का एक प्रसिद्ध नगर।

रू०भे०—मलतांन, मुलतांणी, मुलतांन, मुलतांनी, मूलथांण

मुळतांणी, मुलतांणी–वि०—मुलताल का, मुलतान सम्बन्धी।

उ०—मुळतांणी घर मन वसी, सुहंगा नइ सेलार। हिरणाखी हसि नइ कहइ, आंणउं हेढि तुखार।—ढो.मा.

सं०पु०—१ एक वस्त्र विशेष।

उ०—१ सुणि सुंदरि साहिब कहें, याछे रेणइ सिवाय। कंचु मुलतांणी तणी पेहरची सोहत खुसि।—व.स.

उ०—२ मुलतांणी ताखो मछीपटण तासतो।—व.स.

सं०स्त्री०—२ हल्के-पीले रंग की एक अत्यन्त कोमल एवं चिकनी मिट्टी जिसे औरतें सिर धोने के काम में लेती हैं।

३ मूलतान का निवासी।

४ एक रागिनी विशेष। (संगीत)

रू०भे०—मुलतांनी,

देखो 'मुळतांण' (रू. भे.)

उ०—जाळंधर कसमीर सिंध सोरठ खुरसांणी, ओड़ीसा कनवज्ज नगर थट्टा मुळतांणी। कुंकुण नै केदार दीप सिंघळ मालेरी, द्राविड़ सावड़ देस, आंण तिलंगांणह फेरी।—नैणसी

मुलतांन—देखो 'मुळतांण' (रू. भे.)

मुलतांनी—१ देखो 'मुळतांणी' (रू, भे)

उ०—१ कोस ४ रीत हर कूण उत्तर रै सांधै। जाट वांणीया मुलतांनी वसै। बसी गांव में छै।—नैणसी

उ०—२ खासो टुकडो जांमसाइ मुलतांनी तपाइ सालु मुगीपटण ताखो सीसाप तासतो चुनडी चोरसो लाखारस दुदांमी जांमावाड कचीयो।—व. स.

उ०—१ जलाजी मारू, छींटां मांयली छींट भली मुलतांनी हो मिरगानैणी रा जलाल।—लो. गी.

२ देखो मुळतांण' (रू. भे.)

मुलतांनी लुहार–सं०पु०—लुहारों की एक शाखा।

मुळमुळच—देखो 'मलमुलच' (रू. भे.) (ह. नां .मां.)

मुलमुल—देखो 'मलमल' (रू. भे.)

उ०—मुलमुल मुहगां मोल की, ताको वागो कीन। सुंदर आवी सांमहि पीउ केंडि कर लीण।—व. स.

मुळमुळाणो, मुळमुळाबो–क्रि०स०—१ फेरना।

उ०—वो जीभ मुळमुळायनै आपरो लोई चाखियो।—फुलवाड़ी

२ हिलाना।

उ०—भांणजी बीच में बोलण सारू होठ मुळमुळाया ई हा के मासी उणनै ढावती कैवण लागी–थूं धीरप सूं म्हारी सगळी वातां सुण वेटी।—फुलवाड़ी

३ मुंह में डाल, कर हिलाना-फिराना।

मुळमुळाणहार, हारो(हारी), मुळमुळाणियो—वि.।

मुळमुळायोड़ो—भू. का. कृ.।

मुळमुळाईजणो, मुळमुळाईजबो—कर्म वा.।

मळमळाणो, मळमळाबो, मुळमुळावणो, मुळमुळावबो—रू. भे.।

मुळमुळायोड़ो–भू०का०कृ०—१ फेरा हुआ. २ हिलाया हुआ. ३ मुंह में डालकर हिलाया व फिराया हुआ।

(स्त्री. मुळमुळायोड़ी)

मुळमुळावणो, मुळमुळावबो—देखो 'मुळमुळाणो, मुळमुळाबो' (रू. भे.)

उ०—१ हांचळ मुळमुळावतो बाळक केई वेळा आंख्यां री जोत रै मारग पाछो जच्चा रै हिवड़ा में समाय जातो।—फुलवाड़ी

उ०—२ हाचळ मुळमुळावतां ई बाळक रै होठां अर मूडा सुं ऐड़ो ठा पड़तो के उणनै मासी बिचै मां रो दूध तो अवस सखरो लागै।
—फुलवाड़ी

मुळमुळावियोड़ो—देखो 'मुळमुळायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. मुळमुळावियोड़ी)

मुलम्मो–सं०पु० [अ० मुलम्मा] सोने या चांदी आदि की कलई, झोल निकल।

मुलवारी—एक प्रकार-का घोड़ा ।

उ०—रुमहरी हुसेना बाद राति, जिण अरब मांहि बळि नीच जाति । खंवारी उतन खंवार सेत, लख लख मुलवारी मोल लेत ।
—सू. प्र.

मुला—देखो 'मुल्ला' (रू. भे.)

उ०—१ मोलवी कराडै अरज काजी मुला, पाडजै देवहर दळा कर पेल । मेच्छ वांचै जिकी हिंद इकळीम मझ, मझो राजा जितै वणै नह खेल ।—नरहरदास बारहठ

मुलाकात-सं० स्त्री० [अ०] १ दो या दो से अधिक व्यक्तियों का होने वाला परस्पर मिलन, भेंट, साक्षात्कार ।

उ०—१ जीव-निरजीव री मुलाकात ! मौत मैणी री घात ! फरारां री टोळी रा दवग अर धाखड़-धाड़ैत चेत्या, चमक्या तथा चट देणी मौके जा पूग्या ।—दरादोख

उ०—२ मारग में काचा आदमियां री बातां नहीं सुणी, पिता री आग्या प्रभू री आज्ञा ज्यूं जांण कूच दर कूच आय बादसाह सलांमत सूं मुलाकात कीवी ।—नी. प्र.

२ जान-पहचान, परिचय ।

उ०—आपरै बेटा सागै ठकरांणी री प्रीत री सगळी बातां उघाड नै सुणाय दियो के कीकर चाकरी चढता ठाकर सूं मुलाकात व्ही ।
—फुलवाड़ी

३ प्रेम-व्यवहार, मैत्री ।

४ सहवास, रतिक्रीड़ा, मैथुन ।

रू० भे०—मुलाखात,

मुलाकाती-वि०—१ मुलाकात करने वाला, जिससे जान-पहचान हो ।

२ परिचित ।

३ प्रेमी, मित्र ।

रू० भे०—मुलाखाती

मुलाखात—देखो 'मुलाकात' (रू. भे.)

उ०—तद उदैरांम कयो, गांम आधा हूं वही मैं उतार देसूं । सू उतार दीना ओर कयो, थे मा'राज सूं मुलाखात मती करज्यो, जो कहावै तो ऊतर देज्यो के हमार नही पछै हुगी "।—द. दा.

मुलाखाती—देखो 'मुलाकाती' (रू. भे.)

मुलाजम—देखो 'मुलाजिम' (रू. भे.)

२ देखो 'मुलाजमत' (रू. भे.)

उ०—संवत १७७५ सावण वद ११ दिली दाखल हुवा । पातसाह फरकसा री मुलाजम कीवी ।—रा. वं. वि.

मुलाजमत, मुलाजमती-सं०स्त्री०[अ० मुलाजमत] १ सेवा,सुश्रुषा ।

२ नौकरी, चाकरी ।

उ०—१ जाहांगीर पातसाहि अजमेर नूं आवतो थो, माहाराजा स्री गजसिंहजी चाटसुं कन्है जाय पातसाह जांहागीर सुं मिळिया । मुलाजमत कीवी । पातसाह अजमेर आया ।—नैणसी

उ०—२ मिगसर वद ६ सोम महाराज साहजादा सूं मुलाजमत करायी तरै पांच हजारियां में समानूं ऊभो रांखियो,सिरपाव दियो पांचहजारी रो मनसब दियो ।—बां. दा. ख्यात

उ०—३ पछै जाय मुलाजमती की बोहत दिलासा कीवी । घोड़ो सिरपाव हाथी दे, डेरा नूं विदा कीया ।—नैणसी

रू० भे०—मुलाजमत मुलाजम, मुलाजिमत,

मुलाजिम-सं० पु० [अ०] १ नौकर, चाकर, सेवक ।

२ दास, गुलाम ।

रू० भे०—मुलाजम,

मुलाजिमत—देखो 'मुलाजमत' (रू. भे.)

मुलाजो—देखो 'मुलाहिजो' (रू. भे.)

उ०—तुंकारो काढै तुरक, मुंह मुलाजो मेट । कुल उत्तम जन्म्यां किसूं, नीच कहीजै नेट ।—ध. व. ग्रं.

मुळाटी-सं० पु०—कपड़े को गोलाकार लपेट कर बनाई हुई एक प्रकार की गेंडुरी (इंडुरी) जो सिर पर बोझा उठाने में काम आती है ।

मुलाणो, मुलावो—देखो 'मोलाणो, मोलावो' (रू. भे.)

मुलाम—देखो 'मुलायम' (रू. भे.)

मुलायजो—देखो 'मुलाहिजो' (रू. भे.)

उ०—१ सिवराज जेसंघ रै दोयाळी होळी दसरोहे वार परब पोसाक सिरपाव गहणो सरब नेग पुमार जैत पावै, कारण ईजत वडो मुलायजो ।—जैतमाल पुमार री वात

उ०—२ मेमद मुराद अबु भेळा हुआ आगे मेमद मुराद पंवार सादूळ रा. नरसिंघदास रो कायदो मुलायजो कोई न करतो,अळगा बैसांणता ।—नैणसी

उ०—३ मालुम मुलायजे करहु माफ,आलिम हैं आलमगीर आप ।
—ऊ. का.

उ०—४ सू इणां रै चारण १ गैंयो सिढायच हो इण री पण मुलायजो छो । सारां नूं तुंकारो देयनै बतळावतो ।—द. दा.

मुलायम-वि० [अ०] १ कोमल, नरम ।

२ नाजुक, सुकुमार ।

३ जिसमें कठोरता या तीव्रता न हो, शान्त, सरल ।

रू० भे०—मुलाम,

मुलायमत, मुलायमी-सं०स्त्री० [अ० मुलायमत] १ मुलायम होने की अवस्था या भाव ।

उ०—वजीर अरज कीवी, मिठाई, मिताई, खमाई, नरमाई ओर मुलायमी किण वास्ते जे इण गुणां सूं रैयत दुआ आपरै बादसाह नू देवै ।—नी. प्र.

२ कोमल, नरमी ।

उ०—मुदार मुलायमत ऐ स्वभाव भला छै ।—नी. प्र.

३ नाजुकता, सुकुमारता ।

मुलायोड़ो—देखो 'मोलायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री० मुलायोड़ी)

मुलावणो, मुलावबो—देखो 'मोलाणो, मोलावो' (रू. भे.)

उ०—गूंधे गोनी तन गुडकावै, ऊंघै नींद न आवै । सूंघै सुजस इतर तव साजन, मूंघै मोल मुलावै ।—ऊ. का.

मुलावणहार, हारौ (हारी), मुलावणियौ—वि० ।

मुलाविग्रोड़ौ, मुलावियोड़ौ, मुलाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

मुलावीजणौ, मुलावीजबौ—भाव वा० ।

मुलावियोड़ौ—देखो 'मोलायोड़ौ' (रू भे.)

(स्त्री० मुलावियोड़ी)

मुलाहिजौ–सं० पु० [अ० मुलाहजः] १ मान, प्रतिष्ठा, इज्जत, आदर ।

उ०—१ नापो पूछी क्यों ना गया । उण कही कासूं जावां । म्हारौ कारण मुलाहिजौ थौ सो सगळी महने सवा महना सूं मेटियौ ।—नापै सांखले री वारता

उ०—२ उम्मीदवार कांम आया त्यांनूं पट्टौ जागीर दीवी । खास चौकी मांही राखिया । वड़ो महरबांनी, कायदौ-कुरब मुलाहिजौ दियौ ।—डाढाळा सूर री वात

२ लिहाज, सकोच ।

उ०—१ सो हम महाराज का बहुत मुलाहिजा राखें हैं । अब हमसे मुलाहिजा नहीं रहेगा ।—जयसिंह आंमेर रा धणी री वारता

उ०—२ ताहरां मां पण आ हीज कही-हालण रै वासते सारौ लोक आतुर छै । महाराज निपट काहल करै छै । यारौ मुलाहिजौ करि दवाय नै कहै न छै ।—पलक दरियाव री वात

३ प्रभाव, रौब, शान-शौकत ।

उ०—यह आंमेर जयसिंह जी रै परणियौ थौ सो दवां री भारी मुलाहिजौ सो अमरसिंहजी नूं बादशाह नीकी तरह राखै ।

—रा. रा. सि. री वारता

४ निरीक्षण, गौर ।

रू० भे०—मुलाजौ, मुलायजौ,

मुलिक—देखो 'मुलक' (रू. भे.)

मुळियोड़ौ–भू० का० कृ०—१ नटा हुआ, इन्कार किया हुआ. २ मुकरा हुआ, पलटा हुआ ।

(स्त्री० मुळियोड़ी)

मुळुक, मुलुक—देखो 'मुळक' (रू. भे.)

मुळेट, मुळेठ–सं०पु०—कुंभकार द्वारा चाक पर से उतारे हुए कच्ची मिट्टी के वर्तन का प्रारंभिक रूप ।

उ०—वै इणी भांत चाक फेरणी सूं चाक घुमावै माथै पींडी धरै । सागै इणी भांती चूळ खांचै । पछै मुळेट उतारै ।—फुलवाड़ी

मुळेठी मुलेठी–सं० स्त्री०[सं० मधुयष्टि,प्रा० मूलयट्ठी] १ उष्ण प्रदेशों में काली मिट्टी मे होने वाली एक लता ।

२ उक्त लता की जड़, जो स्वाद में मीठी व तृष्णा, ग्लानि व क्षयनाशक एवं बल वर्धक औषधि मानी जाती है ।

रू० भे०—मरेठी, महलोटी, मिरिहठी, मुरेठी, मुरैहौ ।

मुळौ—देखो 'मुळगौ' (रू. भे.)

उ०—स्याळिया तौ इण फरमांण आगै बोलणौ मुळौ माठ कर दियौ ।—फुलवाड़ी

मुल्क—देखो 'मुलक' (रू. भे.)

मुल्कगीरी—देखो 'मुलकगीरी' (रू. भे.)

मुल्की–वि० [अ०] १ देशका, देश सम्बन्धी,

२ अपने देश का बना हुआ, देशी ।

रू० भे०—मुलकी ।

मुल्तवी–वि० [अ०] १ जिसका विचार छोड़ दिया गया हो, स्थगित ।

२ रुकने वाला, रुका हुआ ।

रू०भे० - मुलतवी, मुलतवी,

मुल्लौ–सं०पु० [अ०मुल्ला] १ मस्जिद में अजान देने वाला मौलवी, इस्लाम धर्माचार्य ।

उ०—१ मुल्ला काजी मंगहु मयाद, फतवा लीजै मेटन फसाद ।

—ऊ. का.

उ०—२ कांई करैला म्हारौ दुरजन पुरजन, कांई करैला झूंठा पाजी जी । कांई करैला म्हारौ राजा रांणी, कांई करैला मुल्ला काजी जी ।—मीरां

उ०—३ दादू काया मसीत कर पंच जमाती, मन ही मुल्ला इमांम । आप अलेख इलाही आगे, तहं सिजदा करै सलांम ।—दादूवांणी

२ मुसलमानों का विद्या गुरु, शिक्षक ।

रू०भे०—मुला ।

मुवक्किल–सं०पु० [अ०] १ मुसलमानों का एक कल्पित देवता, फरिश्ता ।

२ वह रूह व आत्मा जो आमिल द्वारा वश में की गई हो ।

३ वकील का आसामी, जो अपना मुकद्दमा वकील को सौंपता है ।

मुवारणौ—देखो 'मारणौ' (रू. भे.)

मुवारौ—देखो 'मुहावरौ' (रू भे.)

मुवाळ–सं०स्त्री०—मुखाकृति ।

मुवोड़ौ, मुवौ–वि० [सं०मृत] मरा हुआ, मृत ।

उ०—१ विद्या री जाप अतंजय री जाप छै । जु जपै सु तीन वरसां मुवौ जीवै । —चौबोली

उ०—२ मुआ वालक सुलसा जणौजी, ते मेलै तुम पास । ताहरा मेलै जीवता जी सुलसा री पूरै आस —जयवांणी

मुर्म–वि० [सं०मृषा] झूठा ।

मुसंद—देखो 'मसंद' (रू. भे.)

मुसक—१ देखो 'मसक' (रू. भे)

उ०—चाहैं पर धन चोर, जोर कुविसन ए जांणौ । मुसक बंधि मारिजै, घणी वेदन करि घांणौ ।—ध व ग्रं.

२ देखो 'मुस्क' (रू. भे.)

मुसकरा'ट—देखो 'मुस्कराहट' (रू. भे.)

मुसकराणौ, मुसकराबौ–क्रि०अ०—देखो 'मुमकाणौ, मुसकाबौ' (रू.भे.)

मुसकराणहार, हारौ(हारी), मुसकराणियौ—वि. ।

मुसकरायोड़ौ—भू. का कृ.।

मुसकराईजणौ, मुसकराईजबौ—भाव वा.।

मुसकरायोड़ौ—देखो 'मुसकायोड़ौ (रू भे.)

(स्त्री. मुसकरायोड़ी)

मुसकराहट—देखो मुस्कराहट' (रू. भे.)

मुसकल, मुसकलि, मुसकल्ल—देखो 'मुस्किल' (रू. भे.)

उ०—१ तद रावजी बोल्या–जु आ वात तो खरी पण वैर ही करणां आसांण छै, वैर छूटणा मुसकल छै।—नैणसी

उ०—२ ज्यारी रिच्छ्या देवता, सेवा पीर प्रधान। त्यां अण चीती संपजै, मुसकल मैं आसांन।—रा. रू.

उ०—३ लालच रस रै लाग, मांखी लपटांणी मधू। उडणौ बळियौ आग, जिण रै मुसकल जीवणौ।—बां. दा.

उ०—४ माता पितु बेटी बेटा भल मरिया। प्यारां प्यारां नै मुसकल परहरिया।—ऊ. का.

उ०—५ जन हरियै की बीनती, सांई करीयै कांनि। बंदै कूं मुसकल घनी, तेरै सब आसांनि।—स्रीहरीरांमदासजी महाराज

उ०—६ ऊभां सीहां केस इक, कर लेणौ मुसकल्ल। पांण छतै क्यूंकर पडै, ऊभां सीहां खल्ल।—बां. दा.

मुसकांण, मुसकांन, मुसकांनी—देखो 'मुस्कांन' (रू. भे.)

उ०—हाट वाट मोहि रोकत टोकत, या रसिया की मैं सारी न जानी। सुंदर बदन कमळ दळ लोचन, बांकी चितवन रु मंद मुसकांनी।—मीरां

मुसकाणौ, मुसकाबौ–क्रि०अ० [सं०मुद्]१ मंद–मंद हंसना, मुस्कराना।

उ०—१ बिडरी हिरणीं सी फिरणीं विजकाती, मुखड़ै मुसकाती जोरौ जतळाती।—ऊ. का.

उ०—२ गहै द्रुम–डार कदम की ठाड़ौ, मृदु मुसकाय म्हारी ओर हंस्यौ। पीतांबर कटि काछनी काछै,रतन जटित सिर मुकुट कस्यौ।
—मीरां

उ०—३ मुख मुसकाती उमंग सूं, महदी हाथ भग मंग। भळक छतीसूं आभरण, अतर लगायां अंग।—पनां

२ हर्पित होना, खुश होना, पुलकित होना।

उ०—१ मिळियां मन मेळूं माती मुसकाती। डुसका भरतोड़ी आती डुसकाती।—ऊ का.

उ०—२ मन मुसकाय खेत के माहीं बोल्यौ मोटी वांनी। चंगी चाल चाह कर चूक्यौ, गढ़ नंहं सज्यौ गुमांनी।—ऊ. का.

मुसकाणहार, हारौ(हारी), मुसकाणियौ—वि.।

मुसकायोड़ौ—भू. का. कृ.।

मुसकाईजणौ, मुसकाईजबौ—भाव वा.।

मुसकराणौ, मुसकराबौ मुसकिराणौ, मुसकिराबौ, मुसकुराणौ, मुसकुराबौ, मुसुकाणौ, मुसुकाबौ, मुस्काणौ, मुस्काबौ, मुस्कावणौ मुस्कावबौ—रू. भे.

मुसकायोड़ौ–भू. का. कृ.—१ मंद मंद हंसा हुआ, मुस्कराया हुआ. २ हर्पित हुवा हुआ, खुश हुवा हुआ, पुलकित हुवा हुआ।

(स्त्री. मुसकायोड़ी)

मुसकिराणौ, मुसकिराबौ—देखो 'मुसकाणौ, मुसकाबौ' (रू. भे.)

मुसकिरायोड़ौ—देखो 'मुसकायोड़ौ (रू. भे.)

(स्त्री. मुसकिरायोड़ी)

मुसकिराहट—देखो 'मुस्कराहट' रू. भे.)

मुसकिल—देखो 'मुस्किल' (रू. भे.)

उ०—१ मुसकिल कूंच्यां मांहि, तिकां निठि कीधा तावै। अड़ता सिर आकास, फेण झड़ता मुख फावै।—मे. म.

उ०—२ भूधर कही–गांव मांही तो हूं कोई आऊं नहीं। म्हारै झाड़े री मुसकिल, बीजी तळाव पर पाणी रो निवास छै, कोई नीम उतार दे, कोई हळद तेल आंण देवै, पाळ रै नीचै हूं झाड़े फिर आऊं।—सूरे खीवे कांधळोत री वात

मुसकी—देखो 'मुस्की' (रू. भे.)

उ०—१ के लीला के कागड़ा, करड़ा हरड़ा केक। मुसकी नुकरा मेटिया, इसड़ा तुरंग अनेक।—पे. रू.

उ०—२ वह धवरस मुसकी अर संजाव। बोरता केहरी पेस बाव।—सू प्र.

मुसकुराणौ, मुसकुराबौ—देखो 'मुसकाणौ, मुसकाबौ' (रू. भे.)

मुसकुराणहार, हारौ(हारी), मुसकुराणियौ—वि०।

मुसकुरायोड़ौ—भू० का० कृ०।

मुसकुराईजणौ, मुसकुराईजबौ—भाव वा०।

मुसकुरायोड़ौ—देखो 'मुसकायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० मुसकुरायोड़ी)

मुसकुराहट—देखो 'मुस्कराहट' (रू. भे.)

मुसटंड—देखो 'मुस्टंड' (रू. भे.)

मुसट–सं० स्त्री०—१ चुप्पी, मौन।

उ०—लाज भला कहवी कवै, लाज न आवै काज। कही भलौ कहणौ कही, मुसट भली छै राज।—पंच दंडी री वारता

२ देखो 'मुस्टी' (रू भे)

उ०—दिस्ट न आवै मुसट मैं, नहीं रूप न रेखा। हरिरांमा परि सुनि मैं, मुम्भि मील्या अलेखा।—स्री हरिरांमदास जी महाराज

मुसटक, मुसटि—देखो 'मुस्टी' (रू. भे.)

उ०—छत्रपति इता मिळि जुटत छत्र। तिल मुसटि पड़त नह भोमि तत्र।—सू. प्र.

मुसणौ, मुसबौ—देखो 'मूसणौ, मूसबौ' (रू. भे.) (उ. र.)

मुसता–स० स्त्री०—नागर मोथा।

मुसताक, मुसताकि–वि० [अ० मुश्ताक] १ उमंगित, उत्साहित, उत्तेजित।

उ०—१ हौदां मझि लोह करै करि हाक। महारिख देखि हुवै मुसताक।—सू. प्र.

उ०—२ सकति पूजि 'अभमल' सुपह, पहरि ऊंच पौसाक। करि

दघवंध ग्रावध कसै, मलपै छक मुसताक ।—सू. प्र.

२ बहुत अधिक कामना रखने वाला, अभिलाषी, इच्छुक, उत्सुक ।

३ उत्कंठित, लालायित ।

४ मस्त, मतवाला ।

उ०—१ घर करि अमल पदम छत्र धारै, सुंदरि नवलापुरी सिंगारै । रंग महलि दंपति दुति राजै, छक मुस्ताकि कांम रति छाजै ।—सू. प्र.

उ०—२ अठी हूं कंवर हुवौ मुसताक. छकियौ घणौ छबीलौ प्रेम रस री छाक ।—र. हमीर

रू० भे०—मसताक, मुस्ताक,

मुसदी, मुसद्दी – देखो 'मुतसदी' (रू. भे.)

उ०—१ मोटां छोटां मुसदियां बुलवातौ दरबार । 'जसवंत' खातर जीव का, सारां लेतौ सार ।—ऊ. का.

उ०—२ यो मन मुसदी सकळ का, आपा अंतर जांणी । हरीया पांच पचीस कु, उलटि एकठा आंणि ।

—स्री हरिरांमदासजी महाराज

उ०—३ मूहता मारवाड़ रा मुसद्दी हा तौ सेठ लिछमी रा लाडला —रातवासौ

उ०—४ पाखती गोपाळदास रा मुसद्दियां नूं हाडां रा मुत्सद्दी कह्यौ—जे रांणी जी सूं जुहार कर चढज्यो ।

—गौड़ गोपाळदास री वारता

मुसन्ना–सं० स्त्री० [अ०] १ असल कागज की वह नकल जो मीलान आदि करने के लिये रक्खी जाती हो ।

२ रसीद का अर्द्धांश जो पीछे रक्खा जाता है ।

मुसव्वर–सं० पु० [अ०] १ औषध के रूप में काम लेने के लिये कुछ विशिष्ट क्रियाओं से जमाया हुआ घी-कुंवार-रस । (वैद्यक)

२ एलुवा ।

मुसमल्ला, मुसमुल्ला - देखो 'मुसलमांन'

उ०—मिळिया नर मैदांन में, माझी अपमल्ला, सांमां वीरम सारका, झालै कुण झल्ला । अच्छरां हूरां आवसी, वर सूरां भल्ला, होसी मरणा हिंदवां, मरसी मुसमल्ला ।—वी. मा.

मुसमूरण–वि० [प्रा० मुसमूर] नाश कारक, नष्ट करने वाला विनाश करने वाला ।

उ० –मोह अरि मुसमूरण पूरण परम पसाय । संखेसर परमेसर केसर चरचित काय ।—उदयविजय

मुसरफ, मुसरिफ–सं० पु० [अ० मुशर्रफ] एक उच्चाधिकारी व इस अधिकारी का पद । (नैणसी)

वि० १ प्रतिष्ठित, सम्मानित ।

[अ० मुस्रिफ] २ व्यय करने वाला, खर्च करने वाला ।

३ अपव्ययी, बहु खर्चीला ।

मुसळ, मुसल – देखो 'मूसळ' (रू. भे.)

उ०—त्रिसूल सक्ति सर तोमर मुरवि अरद्ध मुरवि परसु पास पट्टिस दूस लांगूल मुसल मुसंढि मुद्गर लगुड गदा...।—व स.

मुसलमांन–सं० पु० [अ० मुसलमान] महम्मद साहब द्वारा चलाये हुए धर्म एवं सम्प्रदाय का अनुयायी, इस्लाम धर्म को मानने वाला ।

उ०—१ जन हरीया उन देसड़ै, अभिनासी की आंन । और किसी का डर नहीं, हिंदू न मुसलमांन ।—स्री हरिरांमदास जी महाराज

उ०—२ असल मुसलमांन हुवै जकौ मजब रै कायदै सुं निवाज पढै, रोजा राखै अर वरस में दो-चार वार हलाली कर परो र मालक नै मूंढौ दिखाळै ।—दसदोख

रू० भे०—मुसलमीन मुसल्मांन,मूसळमांण,मुसळौ मुसलौ,मुसल्लौ ।

मुसलमांनी–सं०स्त्री०—१ मुसलमानों में बच्चों आदि के की जाने वाली सुन्नत, खतना (रस्म)

२ मुसलमान का कर्त्तव्य, धर्म ।

वि०—मुसलमान का, मुसलमान सम्बन्धी ।

रू० भे०—मूसलमांण, मूसलमांन

मुसलमीन—देखो 'मुसलमांन' (रू. भे.)

उ०—मालिक नहिं खालिक मुसलमीन । अल्ला हैं रब्बुलआलमीन ।

—ऊ. का.

मुसला–सं०पु०—मुसलमान जाति या वर्ग ।

उ०—लूवां मगलागी धरणीतल धायां । मुसला मिटिगा ज्यूं अंगरेजां आयां । ऊ. का.

रू०भे०—मुसल्ला ।

मुसलायुद्ध, मुसलायुध–देखो 'मूसळायुध, मूसलायुद्ध (रू. भे.)

उ०—हलायुध हलायुधइं. मुसलायुध मुसलायुधइं सूलायुध सूलायुधइं ....। —व. स.

मुसळि. मुसलि—१ देखो 'मूसळ' (रू. भे.) (अ. मा.)

२ देखो 'मूसळी' (रू. भे.)

मुसळी–सं०स्त्री०—१ छिपकली, विसूंदरा ।

२ देखो 'मूसळी' (रू. भे.)

मुसळौ, मुसलौ—१ देखो मुसलमांन'

उ०—फटकार हलाहल तें फिरगी, घन आनंद अम्रत घां घिरगी । मुसला पर डार सिला महती गुरु कारज आरज बंस गती ।—ऊ. का.

२ देखो मूसळ, (अल्पा , रू. भे.)

मुसल्मांन—देखो 'मुसलमांन' (रू. भे.)

उ०—कलमां नहिं भरिहैं पांन कांन । मारेहु न व्है हैं मुसल्मांन ।

—ऊ. का.

मुसल्ला—देखो 'मुसला' (रू. भे.)

उ०—गल्ला सुभगाथा को पवित्रता को पल्ला थो वो । अल्ला थो मुसल्लावों को मल्ला थन माता को । अत्र थो प्रसिद्ध आतपत्र मात्र आरट्टयन को, छत्र छत्र धारिन नछत्र सुख साता को । ऊ. का.

मुसल्लौ–सं०पु० [अ०मुसल्ला] १ नमाज पढने की दरी, चटाई ।

२ देखो 'मुसलमांन'

उ०—हिंदू लोग ग्यारा सै असीलां कांमि आया । सोळा सै

सिरोहयां सैं मुसल्ला घोर पाया।—शि. वं.

३ देखो मूसळ' (अल्पा., रू. भे.)

मुसवर—सं० पु०—वस्त्र विशेष

उ०—रदां फरदां मुसवरां, चोपसीदां ललचाव। कंदां केळसी कांमणी, वेहद हदां वणाव।—पनां

मुसव्विर—सं०पु० [अ०] चित्रकार, चितेरा, चित्र–शिल्पी।

मुसव्विरी—सं०स्त्री०[अ०] १ चित्रकारी।

२ मुसव्विर का पेशा।

मुसांण—देखो 'मसांण' (रू. भे.)

उ०—१ कुता कागला जूटैं, मजूरां रा माथा फूटैं है। घर मुसांण भोमका सा हो रैया है।—दसदोख

उ०—२ धूम मुसांणा में निस वासुर धावै। अंतेस्टी आसर टांणा लख आवै —ऊ. का.

मुसाअणा—सं०पु०—यवन या मुसलमान जाति।

मुसाणौ, मुसावौ—क्रि०स० [सं० मुष्–'मूसणौ' क्रिया का प्रे०रू०]

१ चोरी करवाना।

२ लुटवाना।

३ हरण करवाना, अपहरण करवाना।

४ पकड़वाना।

५ ढकवाना, लिपटवाना, घिरवाना, छिपवाना।

६ छिनवाना, झपटवाना।

७ ग्रसवाना।

८ लुब्ध करना।

९ मसोसना।

१० ठगवाना।

उ०—हरीया ख्याली खलक मैं, के तौ गया वसाय। के आया ज्यूंई गया, वुमत मुसाय, मुसाय।—स्री हरिरांमदासजी महाराज

मुसाणहार, हारौ (हारी), मुसाणियौ—वि०।

मुसायोड़ौ—भू० का० कृ०।

मुसाईजणौ, मुसाईजबौ—कर्म वा०।

मुसाप—१ देखो 'मुसाहब' (रू. भे.)

उ०—भक्ती जोग मुसाप है, हट जोग अमराव। सांख सलासूं कांम करीजै, न्याव संतोख चुकाव।—स्री हरीरांमजी महाराज

२ देखो 'मुसाफ' (रू. भे.)

मुसाफ—सं०पु० [अ० मुसाफ] १ समर, युद्ध।

२ लड़ाई का मैदान, युद्ध स्थल, रण क्षेत्र।

३ शत्रु के चारों ओर डाला जाने वाला घेरा।

[अ० मुसहफ] ४ कुरान।

उ०—१ हम तम विचइं खुदाई हइ, लेइ मुसाफ आदइ घरउ। चित्तौड़ देखि वेगइ फिरउ, वाचा देइ थप्पउं खरउ।—प. च. चौ

उ०—२ करौ के सुंस जेतै कहै वोल बंध सवि साच। हम मुसाफ उपारि है, विचलां नहीं वाच।—प. च. चौ.

५ लेखों आदि का संग्रह।

रू० भे०—मुसाप,

मुसाफर—देखो 'मुसाफिर' (रू. भे.)

उ०—मेड़ते रै मारग में नांनड़ौ गांव सुं परली तरफ १ वावड़ी कराई। मारग वेतौ मौ मुसाफरां नै जळ री अड़चन रैती ने नांव सोडी-सर री वावड़ी दीयौ।—नैणसी

मुसाफरखांनौ—देखो 'मुसाफिरखांनौ' (रू. भे.)

उ०—मूं'ता रै घर री गिरै'तो मुसाफरखांनै रै होळ में घिरगी। घर में जाय' र देखै तो पांन सेरं आटै री सरजांम नहीं है।—दसदोख

मुसाफरी—देखो 'मुसाफिरी' (रू. भे.)

उ०—एक जगां रैणं सूं सैः एक कहूंवै रा अंग सा वण जावै है। अठै ना तौ कोई रेलगाडी री मुसाफरी है, अर न कोई धरमसाळ तथा तीजां री मेळौ है।—दसदोख

मुसाफिर—सं०पु० [अ०] यात्री, राहगीर, पथिक, बटोही।

रू. भे. मुसाफर, मुसाफीर.

मुसाफिरखांनौ—सं०पु० [अ०मुसाफिर+फा० खाना] १ रेल्वे स्टेशन पर बना यात्रियों, मुसाफिरों के ठहरने का कक्ष, कमरा या हाल।

उ०—वो थोड़ी देर तौ मुसाफिरखांना में ऊभौ रह्यौ अर पछै सरदारपुरा वाळी सड़क पकड़ी।—रातवासौ

२ धर्मशाला, सराय।

रू०भे०—मुसाफरखांनौ

मुसाफिरी—सं०स्त्री० [अ०] १ मुसाफिर होने की अवस्था या भाव।

२ यात्रा, प्रवास।

रू०भे०—मुसाफरी,

मुसाफीर—देखो 'मुसाफिर' (रू. भे.)

उ०—वातां-वातां में मसाफीर री साग-सब्जी में नींबूं निचोय देतौ —फुलवाड़ी

मुसाब—देखो 'मुसाहब' (रू. भे.)

मुसायख—सं०पु० [अ०मुशायख] धर्म के ज्ञाता, धर्माचार्य।

उ०—दादू सेख मुसायख औलिया, पैगंबर सब पीर। दरसन सौं परसन नहीं, अजहूं वैली तीर।—दादूवांणी

मुसायब—देखो 'मुसाहब' (रू. भे.) (नैणसी)

मुसायबी, मुसायबी—देखो 'मुसाहबी' (रू. भे.)

उ०—पीछै खांनखांना कूं पातसाहजी तमांम मुलक की मुसायबी अनायत करी।—द दा.

मुसायोड़ौ—भू० का० कृ०—१ चोरी करवाया हुआ. २ लुटवाया हुआ. ३ हरण या अपहरण करवाया हुआ. ४ पकड़वाया हुआ. ५ ढकवाया हुआ, लिपटवाया हुआ, घिरवाया हुआ, छिपवाया हुआ. ६ छीनवाया हुआ, झपटवाया हुआ. ७ ग्रसवाया हुआ। ८ लुब्ध किया हुआ. ९ मसोसा हुआ. १० ठगवाया हुआ।

(स्त्री०मुसायोड़ी)

मुसाल—१ देखो 'मूसाळ' (रू. भे.)

उ०—१ प्रथम पुवाडई पूतना सोखी मर दळीयो मुसाळ। ए हरि नई आगई दावानळ, दांणव नइ कुळि काळ।—रुकमणी मंगळ

२ देखो 'मसाल' (रू. भे.)

उ०—१ रवि चे उदय रात मिट जावै, खूटै तेल मुसाल बुझावै। यों नीयति व्रत वेद बतावै, तप तीखै न्रप राज गमावै।—रा. रू.

उ०—२ मदवी को मछालो, हाथ की हाल। तीजणीयां रो तुररो रूप की मुसाल। —मयाराम दरजी री वात

मुसालची—देखो 'मसालची' (रू. भे.)

मुसालो—देखो 'मसालो' (रू भे.)

उ०—१ कोई जांणै के आं पारियां में केर, सांगरियां के मुसाला व्हैला। —फुलवाड़ी

उ०—२ ऐ तीन तळाव मंडाया। तिणां करण नूं पैहला तो आपणो कांमदार मुसालो मेलियो। —नैणसी

मुसवाई—वि० [स० मृषा वादिन्] झूठ बोलने वाला, झूठा (जैन)।

मुसावाद, मुसावाय—सं० पु० [सं मृषावाद] झूठ, असत्य।

मुसाहब—सं०पु० [अ०मुमाहिब] १ राज्य दरबार का एक पद।

२ उक्त पद पर कार्य करने वाला व्यक्ति।

३ सामंत, पार्षद।

उ०—फींफरड़ फूट गोळां गजां फरहड़ै, जंगी होदा गजां खड़हड़ै जोम। घड़हड़ै घोम वे मुसाहब लड़ै घर, विहुं साहब हंसै हड़हड़ै बोम। —हुकमीचंद खिड़ियो

४ किसी राजा या रईस के पास मन बहलाने के लिये रहने वाला, पार्श्ववर्ती, सहवासी।

रू०भे०—मुसाप, मुसाब, मुसायब, मुसाहिब, मूसायब,

मुसाहबी—सं०स्त्री०—१ 'मुसाहब' का काम।

२ मुसाहब का पद।

रू०भे०—मुसायबी, मुसायबी,

मुसाहिब—देखो 'मुसाहब' (रू. भे.)

उ०—जकै वासतै आखा ठाकुर-उमराव अर मुसाहिब दे:की खावै। —दसदोख

मुसिकल—देखो 'मुस्किल' (रू. भे.)

उ०—ताहरां सिरचंद मुंहतै नूं मुसिकल हुई जु राजाजी रांणी जी नूं कारी री खबरि होइसी ताहरां जीव बुरो करिसी। —द. वि-

मुसियारो—सं०पु०—१ चोर।

उ०—मुसियारा मुख मूंद, कपटी क्यूं बोलै नहीं। तूं सारां सिर खूंद, बुरा भला सह रावळा।—गज उद्धार

२ ठग, वंचक, कपटी।

३ दगा-बाज।

मुसियोड़ो—देखो 'मूसियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री०मुसियोड़ी)

मुसिलो—देखो 'मुसलमांन'

मुसीबत—सं०स्त्री० [अ०] १ तकलीफ, कष्ट।

२ विपत्ति, संकट, दुःख।

मुसुकाणो, मुसुकावो—देखो 'मुसकाणो, मुसकावो' (रू. भे.)

उ०—होठ मुसुकाय रिझवाय पातक हरा। हाथ दीधा जिको जोड़ आगळ हरी।—र. ज. प्र.

मुसुकाणहार, हारो(हारी), मुसुकाणियो—वि०।

मुसुकायोड़ो—भू० का० कृ०।

मुसुकाईजणो, मुसुकाईजबो—भाव वा०।

मुसुकायोड़ो—देखो 'मुसकायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री०मुसुकायोड़ी)

मुसैंद—सं०पु०—१ एक प्रकार का घोड़ा।

उ०—वेखता ताव मुज नस्सबाज, वह डसिय दंत तन गुरज बाज। खित तुरकी आलातीन खेत, बाला मुसैंद रोसनी वेत।—सू. प्र.

३ देखो 'मुस्तैद' (रू. भे.)

मुसोर—देखो 'मसोड़' (रू. भे.)

उ०—गाल मसुरिया गींदवा जी थीर माकी जी मुसोर रांनी सोरठी।—लो. गी.

मुस्क—सं० पु० [फा० मुश्क] १ कस्तूरी, मृगमद।

२ गंध, बू।

रू० भे०—मुसक।

मुस्कदांणो—सं० पु०—एक लता विशेष का बीज जो इलायची के दाने के समान होता है और कस्तूरी के समान सुगंधी देता है।

मुस्कनाफो—सं० पु० [फा० मुश्कनाफः] कस्तूरी की थैली, जिसमें कस्तूरी रहती है, मृगनाभि।

मुस्कनाभ—सं० पु०—वह मृग जिसकी नाभि में कस्तूरी होती है।

मुस्कबिलाई—सं० पु०—एक जंगली बिलाव जिसके अंड कोशों से बड़ा सुगंधित पसीना निकलता है।

मुस्करा'ट, मुस्कराहट—सं० स्त्री०—१ मुस्कराने की क्रिया या भाव।

२ मंद-हास्य, मुस्कान।

रू० भे०—मुसकरा'ट, मुसकराहट, मुसकिराहट, मुसकुराहट,

मुस्कल—देखो 'मुस्किल' (रू. भे.)

उ०—१ पण काल तो उठा सूं प्रांण लेणनै वसीठ दूत भेज देवै परंत उण भड रा निरभे पणा सूं रीस नै म्हारो नाह पती नीठ मुस्कल सूं उबारै है।—वी. स. टी.

उ०—२ एक दिन वो आपरी छांग लेयनै पाछो आवतो के एक गाय रा खुर में बांवळिया री सूळ खुबगी। आगै चालणो मुस्कल व्हैगो।—फुलवाड़ी

मुस्कवत—सं० पु० [सं० मुष्कवत्] इन्द्र नामक वैदिक सूक्तद्रष्टा का विशेषण।

मुस्कांण, मुस्कांन—सं० स्त्री०—मंद-हास्य, धीमी हंसी।

रू० भे०—मुसकांण, मुसकांन,

मुस्काणो, मुस्कावो—देखो 'मुसकाणो, मुसकावो' (रू. भे.)

मुस्कायोड़ो—देखो 'मुसकायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री० मुस्कायोडी)

मुस्कावणो, मुस्कावबो—देखो 'मुसकाणो, मुसकाबो' (रू. भे.)

उ०—पावण नै चांदी रा टुकड़ा, वा लागी नाचण-गावण नैं।
वा लागी प्रीत लुभावण नैं, वा हसी विनां मुस्कावण नैं।
—चेत मांनखा

मुस्काबियोड़ी—देखो 'मुसकायोड़ो (रू. भे.)

(स्त्री० मुस्काबियोडी)

मुस्किल—वि० [अ० मुश्किल] १ कठिन, दुष्कर, दुश्वार, असाध्य, असंभव।

उ०—म्हारी इसी हालत व्हैगी ही के बाथिया नै हाको करणो तो आघो रह्यो, म्हारो खुद री ठठा सूं हिलणो मुस्किल व्हग्यो हो।
—रात वासो

२ पेचीदा, जटिल।

३ गूढ़, सार-गर्भित।

४ सूक्ष्म, बारीक।

सं० स्त्री०—१ कठिनाई, दिक्कत।

२ विपत्ति, संकट, बाधा, दुख।

३ पेचीदगी, उलझन, जटिलता।

४ गूढ़ता, गहराई।

५ सूक्ष्मता, बारीकी।

रू० भे०—मुसकल, मुसकलि, मुसकल्ल, मुसकिल, मुसिकल, मुस्कल

मुस्की—वि० [फा० मुश्की] १ कस्तूरी के रंग के समान काला।

२ कस्तूरी के समान सुगंधित।

सं० पु०—वह घोड़ा जिसका शरीर कस्तूरी जैसा काला हो।

रू० भे०—मुसकी,

मुस्कोरणो मुस्कोरबो—देखो मस्कोरणो, मस्कोरबो' (रू. भे.)

उ०—दीवांणजी लप पग बारै काढ दियो। तद वा टावर री गलाई मूंडो मुस्कोर रिसांणो करती व्हैं ज्यूं बोली। —फुलवाड़ी

मुस्कोरियोड़ो—देखो 'मस्कोरियोड़ो' (रू' भे.)

(स्त्री० मुस्कोरियोड़ी)

मुस्टंड, मुस्टंडो—वि०—हृष्ट-पुष्ट, बलवान।

२ मोटा-ताजा।

३ गुंडा, लुच्चा, बदमाश।

रू० भे०—मुसंडो, मुसटंड, मुस्तंड

मुस्ट—सं० पु० [सं० मुष्ट] १ चोरी का माल।

२ चुप, मौन, खामोश।

उ०—रहौं मंमाणी मुस्ट करि, करहो कांब म मारि। कोउ बटाऊ पंथसिर, ढोला तणा उणहारि।—ढो. मा.

३ देखो 'मुस्टी' (रू. भे.)

उ०—नख चख रूप न नासिका, दिसट मुस्ट मै नांहि। हरिरांमा हरि पाईया, सुरति निरति कै मांहि।—स्त्री हरिरांमदासजी महराज

मुस्टि—देखो 'मुस्टी' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—१ चौथे रे दिन दोमत देगा, दिस्ट मुस्टि में नहीं पावै सैना।
—स्री हरिरांमदासजी महाराज

उ०—२ नूर तेज ज्यों ज्योति है, प्रांण पिंड यों होइ। द्रस्टि मुस्टि पावै नहीं, साहिब के यग सोइ।—दादू वांणी

मुस्टिक—सं० पु० [सं० मुष्टिक] १ कंस का एक पहलवान जो बलराम के हाथों मारा गया।

२ सुनार।

३ मुक्का, घूंसा।

मुस्टिका—सं० पु० [सं० मुष्टिका] १ मुट्ठी,

२ मुक्का, घूंसा।

मुस्टिभेद—सं० पु० [सं०मुष्टि—भेद] पुरुषों की ७२ कलाओं में से एक।
(व. स.)

मुस्टी—सं० स्त्री० [सं० मुष्टि:] १ हाथ की पांचों अंगुलियों को हथेली में समेटने पर बनने वाली मुद्रा या स्थिति, मुट्ठी, मुष्टिका।

२ उक्त मुद्रा द्वारा चोट करने या मारने की क्रिया।

३ उक्त मुद्रा में समाने वाली वस्तु की मात्रा।

४ घूसा।

५ पुरुषों की ७२ कलाओं में से एक।

रू० भे०—मुसट, मुसटक, मुसटी, मुस्ट, मुस्टि,

मुस्टो—सं० पु०—कड़ाई के अन्दर दूध का मावा घोटने का एक लकड़ी का उपकरण, जिसके आगे मुट्ठी के आकार की एक लकड़ी चाटो लगी रहती है।

मुस्तंड—देखो 'मुस्टंड' (रू. भे.)

उ०—रात रा कुळवै कुळवै काकड़ियां रो ठौरी दे आवै। गधो तो थोड़ा दिनां में मुस्तंड व्हैगो।—फुलवाड़ी

मुस्त—सं० स्त्री० [फा० मुश्त] १ मुट्ठी।

२ मुक्की, घूंसा।

३ किसी चीज की मुट्ठी भर मात्रा।

मुस्तकिल—वि० [अ०] १ अटल, अडिग, दृढ़, मजबूत।

२ निश्चित, स्थिर।

३ स्थायी।

४ पाबंद।

५ निरन्तर, लगातार।

मुस्तगीस—सं० पु० [अ०] अदालत में अपना कोई दावा या अभियोग पेश करने वाला, दावेदार, वादी, फरियादी।

मुस्तनद—वि० [अ०] १ विश्वास करने योग्य, विश्वस्त।

२ प्रामाणिक, मान्य।

मुस्तफी, मुस्तफो—वि० [अ० मुस्तफा] १ पवित्र, पुनीत।

२ शुद्ध, स्वच्छ, निर्मल।

३ जिसमें अवगुण न हो, गुणवान।

सं० पु०—१ हजरत महम्मद साहिब का खिताब।

२ पीर-पैगंबर ।

मुस्तरका-वि० [अ० मुश्तरकः] जिसमें कई लोग मिले हुए हों, साझे का, सामूहिक ।

मुस्तसना-वि० [अ० मुस्तस्ना] १ जो किसी प्रकार की पाबंदी, शर्त या कानून के दायरे में न हो, मुक्त, स्वतंत्र ।
२ प्रतिष्ठित ।
३ चुना हुआ ।
४ अपवाद स्वरूप ।

मुस्तहक-वि० [अ०] १ स्वत्व या हक रखने वाला, हकदार ।
२ योग्य, लाइक, सुपात्र ।
३ जरूरत मंद ।

मुस्ताक—देखो 'मुमताक' (रू. भे.)
उ०—परियां विरह दी मुस्ताक,न करदी दिल न्यारे ।
रसीलैराज री गीत

मुस्ती खांड-सं० पु०—एक प्रकार की शक्कर जो कम सफेद व आटे की तरह बारीक होती है तथा इसमे कुछ ढेले भी बंधे रहते हैं । इसकी प्रकृति शीतल मानी गई है । गुड़िया-शक्कर ।
उ०—दौड़तो-दौड़तो वो उण सेठ रै घरै पूगो । वो बोरी सूं मुस्तीखांड जोखतो हो ।—फुलवाड़ी

मुस्तैद-वि० [अ० मुस्तइद] १ सन्नद्ध, कटिबद्ध, तैयार, तत्पर ।
२ चुस्त, फुर्तिला, निरालस्य ।
३ सावधान, सचेत, होशियार ।
४ चालाक ।
रू० भे०—मुमैद

मुस्तैदी-सं० स्त्री० [अ० मुस्तइदी] १ 'मुस्तैद' होने की अवस्था या भाव ।
२ तत्परता, तैयारी, उत्साह, सन्नद्धता ।
३ फुर्ती, चुस्ती ।
४ सावधानी, सतर्कता, होशियारी ।
५ चालाकी ।

मुस्लमांण, मुस्लमांन, मुस्सलमांण, मुस्सलमांन—देखो 'मुमलमांन' (रू. भे.)
उ०—१ नह संख्यां कुंजरा, नका संख्या केकांणां । नह संख्या हिंदुवां संख नह मुस्सलमांणा ।
उ०—२ 'अजन' इंद्र अवतार, कियो दरबार हरक्खे । हिंदू मुस्सलमांण, रहै अचरिज्ज निरक्खे ।—रा. रू.
उ०—३ 'अभो' उजागर अरक ज्यों, जस इम करै जिहांन । डरो सको 'अगजीत' सं, हिंदू मुस्सलमांन ।—रा. रू.

मुहंगौ—देखो 'मूंगौ' (रू. भे.)
उ०—ईडर की घर अउलगण, हूं तउ जांणण देसि । घरि बइठाही आभरण, मोल मुहंगा लेसि ।—ढो. मा.

मुहंडौ—देखो 'मूंडो' (रू. भे.)

मुहंम—देखो 'मुहिम' (रू. भे.)
उ०—दक्खण देस मुहंम, नयर मुक्कांम महीकर । भुगति आउ भूपाळ, वरस गुणचासां भीतर ।—गु. रू. बं.

मुह—देखो 'मुख' (रू. भे.)
उ०—१ आयो 'गजसाह' उभारि असंमर, जोध तयांरां जोधपुरी । मुह आगळि तात तणी कळि माती, मारण केवी 'माल' हरी ।
—गु. रू. बं.

मुहकणौ, मुहकबौ—देखो 'मूकणौ, मूकबौ' (रू. भे.)
उ०—दखणी दक्खण पसरिया दळ, किरमं कडा करस्सण मेहळ । दखणी कटक चहूं दिस दौडै, महिकर नह मुहक्यो राठौड़ै ।
—गु. रू. बं.
मुहकणहार, हारौ (हारी), मुहकणियौ—वि० ।
मुहकिओड़ौ, मुहकियोड़ौ, मुहक्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
मुहकीजणौ, मुहकीजबौ—भाव वा० ।

मुहकम-वि० [अ० मुहकम] १ दृढ, मजबूत, पक्का ।
उ०—अर गांव मांहै खेजड़ी हुती तिण सेती च्यारे बांधा मुहकम । तिण ऊपर ढांहर बधाड़िया । —द. वि.
२ टिकाऊ ।
३ अटल, अडिग ।
४ चिरस्थायी ।
५ फंसा हुआ, जकड़ा हुआ ।
उ०—बात मुकते गात बध, मुहकम माया मांहि । सफरी सुवा जाळ पिंजरै, सिर निकळै धड़ निकसै नांहि ।—रज्जब
रू०भे०—मुंहकम, मुंहकम ।

मुहकमौ—देखो 'महकमौ' (रू. भे.)

मुहकांण, मुहकांणि—देखो 'मुकांण' (रू. भे.)
उ०—१ अरजन आख मतांण, पापण भय बीहै प्रथी । दे भेळा मुहकांण, भलो मनावी भीमवतु ।—अरजन हमीर भीमोत री वात
उ०—२ मइं मूरखि अजाणि अविणउ कीधउ तुम्हा रहइं । मूं मोटी मुहकांणि तुम्हं, खमउ अवराहु गुह ।—सालिभद्र सूरि

मुहकियोड़ौ—देखो 'मूकियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० मुहकियोड़ी)

मुहगौ, मुहघौ - देखो मूंगौ' (रू. भे.)
उ०—१ ताखो आखो लावयो कांमण प्यारा कंत । मोल मुहगो मनि समो, सोक्युं रहें निरखंत ।—व. स.
उ०—२ सीत कालि दिवसिइ गोधूम वृद्धि थाई, बेटी आपणी सासुरे जायइ, पास रंग मुहघा थाई कंबलि जोइ···।—व. स.

मुहछाळ—देखो 'मूंछाळ' (रू. भे.)
उ०—मुडै नह कोय थुडै मुहछाळ । कडै चढ पेम झडै किरमाळ ।
—पे. रू.

मुहझि—देखो 'मुझ' (रू. भे.)

मुहडउ, मुहडु—देखो 'मूंडो' (रू भे.) (उ. र.)
उ०—इणि मारीमइ मुहडु भिडंतु बीजउ कोई घाउ तुरंतु । इसुं सुणी नइं धायउ पत्थु, भूझइ भीम मिलिउ भडसत्थु ।
—सालिभद्र सूरि

मुहडे, मुहडै—देखो 'मूंहडै' (रू. भे.)

उ०—१ जुटिया विन्है आवरत जूंहरी, घाए रीठ घडइ घमचाळ ।
उड मच्छा आवघां मुहडे, पाछा दियण परत री वार ।
—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ यु मयारांम नै माल तोरण रै मुहडै लाई । सात वीस सहेलीयां निरखणनै आई ।—मयारांम दरजी री वात

उ०—३ 'पाळ' कळोधर पक्खर पूरै, खैंगां घाहण खागां खूरै ।
थाटां मुहडै थांणा थूरै, आरांणां माथै दळ ऊरै ।—गु. रू. व.

मुहडो—देखो 'मूंडो' (रू. भे.)

उ०—१ त्रिजडां मुहडै तर तूटै, वसु पड़ियौं प्रांण विछूटै ।
—र रू.

उ०—२ अंतरंग जे माया धरइ, मुहडा नी मलि मलि नवि करइ ।
सुख दुख घणउं जांणइ जेह, प्रीतूं मांणस कहीइ तेह ।
—नलदवदंतीरास

उ०—३ दिन घड़ी ४ वांसलो थौ तरै आं ठाकुरां सहर ऊपर दौडाया। सेहर भेळ नै कोट रै मुहडै रो छै तठै जाय मोरचो मांडीयो ।—नैणसी

उ०—४ हे कंथ आपरै मुहडै घोळा खत रा केम देखतां आपरै विसेखतौ जींवण री आस नहीं चोथी पछेवड़ी आयोड़ा हो ।
—वी. स. टी.

मुहत—देखो 'महता' (मह., रू. भे.)

उ०—उज्जयणी पुहचाविज्यो जी, वित्तसुं अम्ह चउ बोल । मुहत मांन्यउ वचन ते जी, रंग रली चित खोलि ।—कनकसोम वाचक

मुहतउ—देखो 'महता' (रू. भे.)

उ०—१ मुहतउ भाव जणावइ, मंगल बाहिर आवइ । जोरि न काढ्यउ ए जावइ, राजा नै मनि भावइ —कनक सोम वाचक

उ०–२ सहीअ कहिउ सहूइ तिहां आवी । मुहतउ हरिखिई बोलइ भावि । – हीराणद सूरि

मुहता—देखो 'महता' (रू. भे.)

मुहताज–वि० [अ०] १ गरीब, निर्धन, धनहीन ।

२ दरिद्र, कंगाल ।

३ जो अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये दूसरों का मुंह ताकता हो, जो दूसरों पर आश्रित हो, जो परवश हो ।

४ जिसे किसी की सहायता की जरूरत हो, जरूरत-मंद ।

५ जिसकी कामना या इच्छा की गई हो, इच्छित, वांछित ।

उ०—सु दैत्य दमनी नै नेडी बुलाय पहराई छै, दैत्य दमनी खुसी हुई, मुहताज पाई ।—पंच दंडी री वारता

रू० भे०—मोहताज,

मुहताजी–सं० स्त्री० [अ०] १ 'मुहताज' होने की अवस्था या भाव ।

२ गरीबी, निर्धनता ।

३ दरिद्रता, कंगाली ।

४ परवशता, विवशता ।

मुहतौ–सं० पु०—देखो 'महता' (रू. भे.)

उ०—१ भलइं भलइं सुंदरिनी बुद्धि, देखउ मुहता तणी कुबुद्धि ।
विना दोख पुत्री दूहवी, मिथ्यउ कलंक रिधि पांमी नवी ।
—कनकसोम वाचक

उ०—२ तीन भंडारी नीवड़ै, मुहतौ पड़ै सुजांण । फोजदार वरियांम भड़, रांमौ पड़ रिण-ढांण । —रा. रू.

मुहपति, मुहपती, मुहपत्ती, मुहपोती—देखो 'मुंहपति' (रू. भे.) (ड. र.)

उ०—१ केई अजांण कहै: म्है तो ओघा मुहपति नें वांदां । म्हांरै करणी सूं कांई कांम ।—भि. द्र.

उ०—२ विण वोयै विण लूहचै पात्रै, एकासण तिम पुरिमढ मात्रै । गई मुहपोती आंबिल सारो, तिम ओघै अट्टिम अवधारो ।
—ध. व. ग्रं.

मुहब्बत–सं०स्त्री० [फा०] १ एक दूसरे के प्रति होने वाला प्रेम, प्रीति ।

२ स्त्री-पुरुश या युवक-युवती में परस्पर होने वाला प्यार, इश्क, लगाव ।

रू०भे०—महोबत,

मुहम—देखो 'मुहिम' (रू. भे.)

उ०—१ एक वादसाह नूं मुहम पण करडी वणी, तरै प्रभू सूं कौल कियो ।—नी. प्र.

उ०—२ परदेसां की मुहम बताबो, फेर कोई किसीय वहांनै ।
राज बहुत विध सूं समझायो, यो मनडो नहीं मांनै ।—लो. गी.

उ०—३ पछै महाराजाजी नुं जेसंघजी नुं नांनग गुरुरी मुहम दीनी तरे सहरोरे पधारिया संवत १७६८ ।—रा. वं वि.

उ०—४ जाय नवोढा सासरे, आंसू नांख उसास । मावड़िया जावै मुहम, इण विध हुवै उदास ।—वां दा.

उ०—५ मुहम प्रकोप उदेपुर माथै, सातेइ महण थया किर साथै ।
लाघां जळ वेसांमो लीजै, छीजै जंतु प्रजा पुर छीजै ।—रा. रू.

उ०—६ यों नव ब मुख आखियौ, मुहम फिरै मो तांम । 'अजन' मिळै पतसाह सूं. टळै दमंगळ जांम ।—रा.रू.

उ०—७ मुहम सिरोही मुलक, सरद करि लेहु पेसकस । लेहु सलांमी लड़ै, विखम मेवाड़ करै वस ।—सू. प्र.

मुहमह—देखो 'मुहिम' (रू. भे.)

मुहमांगी–वि०—इच्छित, वांछित ।

मुहमेज, मुहमेजो–स०पु०—१ युद्ध, समर ।

२ मुठ भेड़, झड़प ।

क्रि० वि०—आमने-सामने, सम्मुख ।

उ०—१ सूर तन तेज भरळाट पोरस सरस, खित सु छळ जेज नह घरै अड़ीखंब । तेज व दोहु ओछाड़ कोटां नवां, थया मुहमेज धरती तणा थंब ।—पहाड़खां आढो

उ०—२ बेमुरीदो लोग सो रहै नहीं, बरछी हाथ लेवै तोलै कहै–हेकर से मुहमेजां हुवै तो ही पैलै री छाती मां देवां ।
—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

वि०—वीर गति प्राप्त ।

रू०भे०—मुंहमेज, मुहमेझ, मूहमेज,

मुहमेझ—देखो 'मुहमेज' (रू. भे.)

उ०—पीछै दूजे फौजां रा मुहमेझ हुआ नै तठै सारांई सैंण करी ।
—द. दा.

मुहमेळ, मुहमेळु–वि०—१ मिलनसार, व्यावहारिक ।

२ एक प्रकार की तुक बंदी ।

उ०—ती चवदह दस गुरु लघुवंत, यण मुहमेळ चवदमी अंत ।
—र. ज. प्र.

३ देखो 'मुहमेज'

उ०—१ इम दुरोस भडसियँ आयो. दळ दुरवेस ऊठ दरसायो । क्यों मुहमेळ कियो नवकोटां, असुर गया भज घाटी ओटां ।
—रा. रू.

उ०—२ क्यों मुहमेळ प्रथम दिन कीधो, लुड घुड गयो कोट निठ लीधो ।—रा. रू.

उ०—३ काज भडां वकड़ां, 'अजन' महाराज उचारै । मीर थयां मुहमेळ, वीर किम जेझ विचारै ।—रा. रू.

रू०भे०—मुंहमेळ, मूहमेल

मुहम्म—देखो 'मुहिम' (रू. भे.)

उ०—चित साह चितवै, भीम इक राह निभम्मां । खुरासांण घमसांण, रांण घेरियो मुहम्मां ।—रा. रू.

मुहम्मद–सं० पु० [अ०] इस्लाम या मुसलमांनी धर्म के प्रवर्तक, अरब के एक प्रसिद्ध धर्माचार्य जो ईस्वी सन् ५७० से ६३२ के बीच में हुए थे । मुसलमांन सम्प्रदाय इन्हीं से चला । ये पैगंबर माने जाते हैं ।

उ०—अल्लाह मुहम्मद सिर उठाय । मगरिब मक्के मन्नत मनाय । चच्चे मांमूंकी घी चकार, बिसमल्ला करैं न बार बार ।—ऊ. का.

वि०—प्रसंशित, प्रसंशनीय, सराहनीय ।

रू० भे०—महमंद, महमद, महमुंद, महमुद, महम्मद, महिमुंद महिमुद, मैमंद ।

मुहम्मदी–वि० [अ० मुहम्दी] मुहम्मद का, मुहम्मद सम्बन्धी ।

सं० पु०—१ मुहम्मद साहब का अनुयायी, मुसलमान ।

२ एक प्रकार का सिक्का ।

३ एक प्रकार का बढ़िया वस्त्र, मलमल ।

रू० भे०—महमदी, महमुंदी, महमुदी, महमूंदी, महमूदी, महिमुंदी महिमुदी ।

मुहर—देखो 'मोहर' (रू. भे.)

उ०—१ कुंवरसी वेहड़ै में पांच मुहर घाली ।
—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ भींतर नूं जुहार कहायो सो मुहर दस ओर नारियळ तो गोपाळदास नूं ओर दोय दोय मुहर नारियळ बेटां नूं ।
—गौड़ गोपाळदास री वारता

उ०—३ ब्रह्मादिक मुहर विसन वर समवड, घणइ उमंग नाइ घमंड घणइ । सवण जस आवइ सांभळता, तोरण प्रभु हेमगिरि तणइ ।—महादेव पारवती री वेलि

उ०—४ गयंद 'मांन' रै मुहर ऊभौ हुतो दुरद गत, सिलहपोसां तणां जूथ साथै । तद वही रूक अणचूक 'पातल' तणी, मुगळ बहलोलखां तणै माथै ।—गोरधन बोगसो

उ०—५ गुडै मयमंत सेना मुहर गैमरां, प्रकटिया मारका थाट जोधापुरा । घूंमियो हैय पुरा पाय अरवद, पसरियै सिंध परवत थया पाधरा — द. दा.

उ०—६ वधाऊ मुहर मेल्हि विध सूं, तांह आंहचइ दीध बधाई आय । आई जांन घणइ आडंबर, घोराडिया जांगी घण घाय ।
—महादेव पारवती री वेलि

उ०—७ मार लियो कहतै मुहर, उर खीजियो छड़ाळ । फिर गजराज संघारियो, सिंघ करंतै आळ ।—रा. रू.

उ०—८ कूंपावत पहिलै अणी, वावर खग्ग करग्ग । भीमाजळ सारां मुहर, पड़ियो धारां लग्ग ।—रा. रू.

उ०—९ 'भीम' रांणा खूमांण, वियो विकमाइत वंभण । त्रियो 'खांन दाराव' मुहर मंडै कळि मत्यण ।—गु रू. वं.

उ०—१० भेळा जूल झळक्कै भालै,मुहर कियो जोधै रिणमालै । साहण–समंद दिलीचै सांमी, दीनो 'गाजीसाह' दमांमी ।—गु.रू.वं.

उ०—११ वइरसी तुरी वीरत्ति वाइ, घण झूझइ भेळिय मुहर घाइ । घोकारव घुण ही वाजि धार, आंमाल फिरी पाखी अयार ।
—रा. ज. सी.

उ० —१२ मेल्हिय प्रधांन कहियउ मुग्गुल्लि । घर साजि मुहर हूम करि ढिल्लि ।—रा. ज. सी.

मुहरखौ—सन्देश वाहक ।

उ०—१ मूगळी घड़ा आवइ मजूस, जासूस फिरइ पसत जापूस । मुहरखे आवि कहियउ मुहाह, असपत्ति सेन आवइ अथाह ।
—रा ज. सी.

उ०—२ जु जाय गोडां ठाकुरां नूं कहौ वळ छै ती काठा मांटीं हुया, नहीं तो परा नासज्यो । फोज पठाण री आकरी आवै छै । मांहरा तो घोड़ा थाको हुवो । थे जाय नै भाखरसी नूं कहिजो । राजा नूं काढजो । काम आवजो । इम सुण नै मुहरखा पाछा चलाया ।—राजा नरसिंघ री वात

मुहरत—देखो 'महुरत, (रू. भे.)

उ०—१ भादवै री देव झूलणी एकादसी रै दिन मुकळावा री मुहरत हो, उण में फगत च्यार दिन आडा रैग्या हा ।—रातवासो

उ०—२ इतरै कुंवर विचित्र नूं बुलायो सो कुंवर पोसाख भली भांति सूं करि, आपरा हजूरिया नै साथै ले आयो । दरवार सारो ही ऊठ ऊभो हुवो । पुरोहित सूं कुंवर मिळियो । कुंवर राजा रै मुंहडे आगै बैठो छै । मुहरत ठीक छै ।—पलक दरियाद री बात

उ०—३ मिळिया दळ जोधांण मझि, देखै भूप दुबाह । डेरा दिल्ली

दिस दिया, सुभ मुहरत 'अभसाह' ।—सू. प्र.

मुहरम-सं०पु०[अ०मुहर्रम] इस्लामी या अरबी वर्ष का पहला महिना।
वि०—वर्जित, निषिद्ध ।
रू०भे०—माहरम ,
देखो 'महरम' (रू. भे)

मुहरमुह-क्रि०वि० [सं०मुहुम, मुहुस] बार-बार, रह-रह कर, पुनः पुनः।
उ०—बोलंति मुहरमुह विरह गये वे.तिमी सुकळ निसि सब्द तणी। हंसणी ते न पासै देखै हंस हंस, हंस न देखै हंसणी ।—वेलि
रू०भे०—मुहुरमुह,

मुहराइ-सं० स्त्री०—१ मुख कान्ति।
उ०—गज बंधी इम आखियौ, करि धूणै कर माळ। 'गोइंद' माथै आवसी, त्यां सिरि आयौ काळ। 'केहरि' वेंडी(वें) घणं, मज्जीठी मुहराइ, 'करन' 'कमौ' कर्क मतै, वे ऊभा पडगाहि।—गु. रू. वं.
क्रि०वि०—२ आगे।
उ०—पौह घणा भागळां गई मुहराइ पड़ि। चाव गुर 'जसौ' जिण वार वर सोह चडि। —हा. झा.
३ देखो 'मुराई' (रू. भे.)

मुहरि—१ देखो 'मोहर' (रू. भे.)
उ०—१ जुगति वात हूं कहूं तूझ जिम। तूं अप मुहिर वात कहिजे तिम। —सू प्र.
उ०—२ स्रीरांम मुहिर लंका समरि, कियौ 'अजै' कवि जिम करूं। झागड़ूं सेर-विलंद हूं, अमरपूर जाऊ अर रंभ वरूं।—सू. प्र.
उ०—३ संमूह सेन असंख मफां, स्रिग मुज्झै मंझळी। मल्हपति फौजां मुहरि मैंगळ, सूंड डोहै सिघळी।—गु.रू.वं.
उ०—४ खांन वरावा खडकियौ, ले मत्थै भर भार। 'गजण' कटक्कां हुई मुहरि, कळि मथ्थण जोधार।—गु.रू.वं.
उ०—५ अधपत्ति चढै देव में ध्रंस, रजपूत चढै छत्तीस वंस। मंडोवर राजा मुहरि मंड, डावै लौ जोगणि भुजाडंड।
—गु रू वं
उ०—६ ग्रहपति भरौ संपेखै ग्रहतां, किताई असुर सुर घग सकांम। 'भगवंत' तणौ दीठ हिक भिडतौ, सुपह अयारां मुहरि सग्रांम। जुग चहुं लगै वडा जुध जोया, भड़ां पराक्रम परपै भाण। मांझी भींचां मुहरि सूर जिम, जुड़तौ नह को दीठ जूवांण।
—लक्खौ बारहठ
उ०—७ दिल्ली जैत सुबोल सहंसदस, राजा मुहरि मरण रिमराह। सुभ दातार जूझार सुपातां, दांन च्यारि वकसिया दुवाह।
—सुभराज गौड़ री गीत
२ देखो 'मोरी' (रू. भे.)

मुहरिर-सं०पु० [अ०मुहर्रिर] १ वकील का मुंशी।
२ लेखक।
३ लिपिक, क्लर्क।

मुहरिरी-सं०स्त्री० [अ०मुहर्रिरी] १ 'मुहरिर' का पेशा।
२ मुन्शीगिरी।

मुहरी—देखो 'मो'री' (रू. भे.)
उ०—१ वहै साज वींटिया, विहद मुखमलां वनातां। रेसम तंग मुहरियां, तव्वी दुरखी दरसातां।—सू.प्र.
उ०—२ ऊमर साल्ह उतारियउ, मन खोटइ मनुहारि। पगसूं ही कूंटियउ, मुहरी झाली नारि।—ढो मा.
२ देखो 'मोहर' (रू. भे.)

मुहरे—देखो 'मोहरे' (रू. भे.)
उ०—वाळियौ वैर-वैरां तणै वाहरू, अमर मुहरे हुये सर रंग आयौ।
—अमरसिंह राठौड़ री बात

मुहरौ-सं०पु० [सं०मधुरं] १ विष, गरल, माहुर।
उ०—गिर सूं पड़ियै वाय, जाय समंदां डूबियै। मरियै मुहरौ खाय, मूरख मित्र न कीजियै।—अज्ञात
२ देखो 'मो'रौ' (रू. भे.)
उ०—आडि पेच करि अडिग, पाघ पर घर हम्मां पर। लाज विरज ताईत, जंत्र मुहरा सिर ऊपर।—सू. प्र.
३ देखो 'मोहरौ' (रू. भे)

मुहल—देखो 'महल' (रू. भे.)
उ०—पातिसाह मनि वात विमासी नाहर मलिक बोलाव्यउ। साथि थिकउ भोजलु खांडावर, मुहल आगिलइ आव्यउ।—कां.दे.प्र.

मुहलत—देखो 'मोहलत' (रू. भे.)

मुहलाअत, मुहलायत—देखो 'महलायत' (रू. भे)
उ०—ऊभी आय अचांनकै, कहै सोक तुम कोय। मुहलाअत ऐह माग को, मलियौ महरम मोय।
—कल्यांणसिंघ नगराजोत वाढ़ेल री बात

मुहलौ,मुहल्लौ—१ देखो 'महल्लौ' (रू. भे.)
२ देखो 'महल' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—आप कह्यौ जु म्हे तौ मास ७ रहिस्यां, सीख नहीं कहां। इतरौ कहिनै अचळजी मुहल पधारिया।
—लाली मेवाड़ी री वात

मुहवड, मुहवडि-सं०स्त्री०—१ युद्ध के समय हाथी की सूंड पर धारण करने वाला कवच।
उ०—निस्कंटक राज्य प्रतिपालतां संग्रांम विसय कदाचित् उपजइ, विपखा ग्रहत्पुरखा सांचरिया, क्षेत्र मूडाविउं, विहुं गमी सन्नद्धबद्ध नीपना. सभटे जरहि जीण साल लीधी, मयगल गुडिया, सुंडादंडि मुहवडि घातिया।—व.स.
२ आगे का भाग।
उ०—इम कांम समरि वे समरथ समवडि, मुहवडि चडी गुरुराय रे —आगम मांणिक्य

मुहांणी, मुहांणौ-सं०पु०—१ प्रवेश द्वार।
२ अग्र भाग।

३ नदी का मुख।

क्रि०वि०—सम्मुख सामने। आगे।

रू०भे०—मुंहांणी, मुंहांणी,

मुहांमहि—क्रि०वि०—सामने, सम्मुख।

मुहा—सं०स्त्री० [सं०मुधा] १ झूठ, असत्य, मिथ्या।

उ०—भक्ष्य भोज्य सवि भीमि निहालि, खाय खाखसि करी मुखि वाली। चंहि माहि मुहा मलिउ प्रीमि, खीच कीचक कर भद्र भीमि।—सालिसूरि

२ व्यर्थ, निरर्थक।

मुहाजीवी—सं०पु०—भिक्षा वृत्ति से जीवन निर्वाह करने वाला।

उ०—मुहादाई ने मुहाजीवी ले, निरदूखण आहारी रे। निरजरा हेते करै तपस्या, फिर फिर न करै हारी रे।—जयवांणी

मुहाडि—विचार विमर्श।

उ०—खीव ऊरिया, खांण भीजव्यां, भूंजाई नीपनी, मंत्रणी मुहाडि हुई, सेलहथनइ सीखांमण हुई……।—व. स.

मुहाळ, मुहाल—सं०पु०—१ मधु मक्खियों का छाता।

२ पशुओं के मुंह में होने वाला एक रोग जिससे पशु के मुंह में छाले हो जाते हैं। —(शेखावटी)

३—प्रसन्न चित, खुश।

उ०—सो कोट जाय कवजे मांही करियौ लोग सगळौ ताजौ थौ हीज, हमै विसेस ताजौ मुहाळ हुवौ।—सुंदरदास भाटी, बीकूं पुरी री बात

४ देखो 'मुहाळौ' (रू. भे.)

मुहाळौ—सं०पु०—१ हाथी के दांत पर,शोभा के लिये लगाई जाने वाली पीतल की चूड़ी या वंद।

२ दरवाजे के आगे का ऊपर का भाग।

मुहावरेदार—वि०—जिसमें मुहावरों का सम्यक प्रयोग हुवा हो, मुहावरों से युक्त। (कथन या भाषा)

रू०भे०—महावरेदार,

मुहावरौ—सं०पु० [अ०मुहावर:] १ वह शब्द, वाक्य या वाक्यांश जिसका अर्थ प्रत्यक्ष अर्थ से विलक्षण हो।

२ अभ्यास, आदत।

रू०भे०—महावरौ, मुवारौ,

मुहासिर—सं०पु० [अ०मुहासर] किसी किले या सेना के पड़ाव के चारों ओर किया जाने वाला घेराव, युद्ध का घेरा।

मुह ह—मुखपर।

उ०—मूगळी घड़ा आवइ मजूस, जासूस फिरइ पसत जापूस। मुहरखे आवि कहियउ मुहाह, असपत्ति सेन आवइ अथाह।—रा. ज. सी.

मुहि—१ देखो मुख' (रू भे.)

उ०—१ माड़ राइ मुहि मूंछ मोड़ि,फेल्हणि कटक्क तांणिया कोड़ि। काळइ कलूळि जांगळू काजि, रउद्रा दळ तांणिय देवराजि।

—रा. ज. सी.

उ०—२ कीधौ विसेख करतै कळह,तरसि तूंग 'चांदै' तणै। वणियौक चंद संकर वदन, सुजड घाइ मुहि सांमणै।—गु. रू. वं.

उ०—३ वपि विहंड पळ खंड, तेग तिमछां मुहि तुटौ। धारां मुहि घडछियौ, कुंभ किरि काली फूटौ —गु. रू. वं.

उ०—४ गजदंतां मुहि चडै, जिकै गजदंत विभाड़ै। गाढ़ि सीम गज भीम, गयण गज रूप भमाड़ै। —गु. रू. वं.

२ देखो मुहिम' (रू. भे.)

उ०—१ अमर अनइ पीथल्ल अचागळ, वरविय राइ मल्ल अतुळीबळ। जोड़ाळां मुहि दियण जवोड़ां, रांभ सिहाइ हु अउ राठौड़ां। —रा. ज. सी.

उ०—२ अभिनमा चौंडरज भुजां वळ एरसो, छात्रपति ग्रहे ग्रहे हूंत छोडै। असपति तणा दळ पूठि तो ऊवरै, मुहि चढै असपति तूहिज मोडै।—गु. रू. वं.

उ०—३ हुऐ मीर संघार, सोक सर पूर विछूटै. प्रळै काळ आव्रत, फौज फौजां मुहि जुट्टै।—गु. रू. वं.

उ०—५ मार की वार मझि मारका ओलै लख दळ उबरै। सत्र सेन तुझ सांगणहरा, मुहि मावै सोई मरै —अ०वचनिका

३ देखो 'महि' (रू. भे.)

मुहिअड़, मुहिअड, मुहिड़—वि०—१ मुख्य, प्रधान।

उ०—मुहिअड़ मोनिगरै फतमल्लौ, दुजडाहथौं जोड़ तिण 'दल्लौ'। 'कमा' सदा आगळ नवकोटां, चडियां पति आरति चड चौटां।

—रा. रू.

२ योद्धा, भट, वीर।

३ सामने, संमुख।

४ आगे।

उ०—वांसै तेग ज फौज विराजी, मुहिअड भीम हरोळां माझी।

—गु. रू. वं.

रू०भे०—मुंहियड़ मुहियड़,

मुहिनाळ—देखो 'मुंहनाळ' (रू. भे.)

उ०—वाहै खग चूहड़-खांन विकाळ, नाराजक वाजतणो मुहिनाळ। आ वाहि पठांण सकै न उभारि। तितै भड़ 'सेर' वाही तरवारि।

—सू. प्र.

मुहिम, मुहिम्म—सं०पु० [अ०मुहिम] १ युद्ध, समर, संग्राम।

उ०—१ 'अमरो' रतना रौ, तिमरणी रा, मुहिम में चोरी की तद राजा गजसिंघ गरदन मरायौ।—नैणसी

उ०—२ घुंध हुऐ सारी धरा, सहर दिली पडि सोर। मुहिम हूंता त्यां मंडि औ, ज्या सहिजादां जोर।—वचनिका

उ०—३ जिण रे उर लालच जच्यौ, बाजै किण विध वीर। मय मतीर दे भड़ मुहिम, कीणा सारै कीर।—रेवतसिंह भाटी

उ०—५ भटनेर भजि सरसउ संघार, हिसार कोट मन्नावि हार। नरहड़ मुहिम्म माडियउ नास, वड़सी नह हांसी करइ वास।

—रा. ज. सी.

२ युद्ध-यात्रा, सेना का प्रयाण, चढ़ाई ।

उ०—आसोजी दसराहो पूजि अर मुहिम कीधी । ताहरां वडी फोज कर मालदेजी आया हीज ।—नैणसी

३ किसी बड़े या महत्वपूर्ण कार्य के लिये किया जाने वाला प्रयाण, प्रस्थान, यात्रा ।

उ०—वूबना सुणी तद नेत्रां खवास नूं कही—जलाल साहिब करड़ी मुहिम नूं जावैं छै ।—जलाल वूबना री बात

४ सेना, फौज ।

५ फौज का अगला भाग, हरावल ।

६ कोई महत्व पूर्ण या बड़ा कार्य ।

७ महिमा, प्रशंसा ।

८ तपस्या ।

क्रि०वि०—१ सम्मुख, सामने ।

२ आमने-सामने ।

३ आगे, अगाड़ी ।

वि०—४ भ्रम में डालने वाला, भ्रामक ।

रू०भे०—महम, महिम, मुंहम, मुहंम, मुहम, मुहमह, मुहम्म, मुहि, मुही, मुहीम ।

मुहियड़—देखो 'मुहिअड़' (रू. भे.)

मुहियौ-वि०—१ प्रधान, प्रमुख, नेता ।

उ०—सू भागचंदजी दरबार रा सांमधरमी छा, फौज रा मुहिया ऐ छै ।—द. दा.

२ व्यर्थ, निरर्थक । (उ. र.)

३ काटने का भाव ।

रू०भे०—मुंहियौ, मुहीओ, मुहीयौ,

मुहिर-सं०पु० [सं०] कामदेव, मदन ।

वि०—मूर्ख, मूढ ।

क्रि०वि०—आगे, अगाड़ी ।

उ०—वीरति असिमर याहि, दूदाउत भांजै दुइण । रतनौ छळि राजा रतन, मुहिर रहै रिण माहि ।—वचनिका

मुहिली—१ देखो 'महल' (रू. भे.)

२ देखो 'महिळा' (रू. भे.)

मुहिवटौ-सं०पु०—एक प्रकार का वस्त्र ।

उ०—नीलवटां, चकवटां धोतवटां, मूहिवटां, नाटी दोटी घटीकठपीठ पाघडी विंडी रेट चूनडी·······।—व. स.

मुही-वि० [अ०] १ जिन्दा करने वाला, जीवन दान देने वाला, प्राण दाता ।

२ पक्का, दृढ़, मजबूत ।

उ०—छूटा सार सबद का गोळा, मुही मोरचा भागा । ग्यान ध्यांन का हाथि खड्ग लै, मन सूं लड़िवा लागा ।—श्रीहरिरांमदास जी महाराज

रू०भे०—मुही,

३ देखो 'मुहिम' (रू. भे.)

उ०—जुमो हजार अगई लोग सिपाही रहै । तरै खुसी आवै सो चाकरी करावो । करड़ी मुही में भेजो ।—जलाल वूबना री बात

४ देखो 'में' (रू. भे.)

मुहीओ—देखो 'मुहियौ' (रू. भे.) (उ. र.)

मुहीम—देखो 'मुहिम' (रू. भे.)

उ०—१ अरु पातसाह जी गुना माफ कर फेर मुनसब दियो । तथा मुहीम का हुकम दिया सू सरंजाम हुवो नहीं ।—द. दा.

उ०—२ इव करतां बरस दोय-तीन नूं बादसाह रो कूच लाहोर नूं हुवो । सो लाहोर आयो, कावल ऊपर मुहीम करी ।

—अमरसिंह राठौड़ री बात

उ०—३ नवाब मुहीम सर कर पदमपुरे सूं पाव कोसे'क गांव थो उण में आ उतरियो थो ।—पदमसिंह री बात

मुहीयौ—देखो 'मुहियौ' (रू. भे.) (उ. र.)

मुहुंगौ—देखो 'मूंगौ' (रू. भे.)

उ०—मुलमुल मुहुंगा मोल की, ताको वागो कीन । सुंदर आवी सांमहि पीउ कैंडि कर लीण ।—व. स.

मुहुतु—देखो 'मुहतौ' (रू. भ.)

मुहुर—१ देखो 'मधुर' (रू. भे.)

उ०—वांणी बोलइ मुहुर, विमल किरि गंगा वांणी । रांणी चउसठि सहस, जास रूवहि इंद्रांणी ।—प्राचीन फागु संग्रह

२ देखो 'मोहर' (रू. भे.)

मुहुरवाई-वि०—परोक्षवादी निंदक । (उ. र.)

मुहुरणौ, मुहुरबौ—देखो 'मोरणौ, मोरबौ' (रू भे.)

उ०—वनि वनि केसू मुहुरिया, तनि तिनि त्रिगुणउ कांम । हे ! है ! दैव! हणि किंसि, हईडा भीतरि हांम ।—मा. कां प्र.

मुहुरत—देखो 'महुरत' (रू. भे)

उ०—करणीगर रूड़ा करै, करनै विलंब न काय । मार उपावै मेदिनी, मुहुरत हेकण मांय । —ह. र.

मुहुरमुह—देखो 'मुहरमुह' (रू. भे)

मुहुरियौ—देखो 'मोर' (अल्पा., रू. भे,)

मुहुल—देखो 'महल' (रू. भे.)

उ०—१ अलूखांन आयसि पूंतारइ, ततखिण गयवर गुडीया । वालि तणा तेजी पखराव्या, मलिक मुहुल मांहि तेडया ।—कां. दे. प्र.

उ०—२ मल्ल भाट सुरतांण पय, आयउ मंगण कज्जि । मुहुल तलइ जइ द्वा करइ, जिहां खडै असपति सज्जि ।—प. च. चौ.

मुहुसाळ—देखो 'मोसाळ' (रू. भे.)

उ०—सूरिज तणइ वंसि हुं आज । बडा पुरुसनी नांणुं लाज । गोल्हण तुं मनि भंखिसि आळ । हिव लाजइ माहरूं मुहुसाळ ।

—कां. दे. प्र.

मुहुडै—देखो 'मुंहडै' (रू. भे.)

उ०-भागोज भूंडो लेय पाघड़ साहि मुहुडै मूंक । गोरिल बोलै फिट्ट तुझ नै, जांती थारी में थूंक'।—पं. चं. चौ.

मुहूरत—देखो 'महूरत' (रू. भे.)

उ०—१ परवांने परधांन पूछिया, लगन मुहूरत वार लेहि । आवै किये दिहाडै ईसर, केही राव सौ बात कही ।

—महादेव पारबती री वेलि

उ०—२ तिण भय करि अर राजि आगळि औ जवाब कियो । राजि उठा हुंती भलै मुहूरत खड़िया छै ।—द. वि.

मुहेंगौ—देखो 'मूंगौ' (रू. भे.)

उ०—मिसंजर के मिस मन भयो, पीउ जो लाय बुलाय । मोल मुहेंगौ थैं लीयो, सो माहरे आवी दाय ।—व. स.

मुहो-सं० पु०—सामना, आगा ।

उ०—१ इतरै में बगळाऊ खड़ा था उहां भेळिया उहां रो मुहो झालियो ।—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

उ०—२ राव ई वेळा मुंह सू आहिज कहै छै-जे बड़ा सरदारां सूअरड़ै री जावती राखजो, मुहो झालियां रहो, लोग सभीड़ो देख फेर आंण पड़सी ।—डाढाळा सूर री वात

मूं-सर्व [सं० अस्मद्] १ म्हैं, मैं ।

उ०—१ सात्रह नह छोडूंह, तोडूं हूं जड ताहरी । मूं खंजर मोडूंह, काळज फीफर छेक कर ।—पा प्र.

उ०—२ तूं बांमण बांणये री, कै विणजारै री धीय । नां मूं बांमण बांणये री, नां विणजारै री धीय ।—लो.गी.

२ मुझे, मुझको ।

उ०—रमतां जगदीसर तणौ रहसि रस, मिथ्या वयण न तासु महै । सरसै रूखमणि तणी सहचरी, कहिया मूं मैं तेम कहै ।

—वेलि

३ मेरा, मेरी ।

उ०—१ चकडोळ लगै इणि भांति सुं चाली, मति तै वखांणणन मूं । सखी समूह मांहि इम स्यांमा, सील आवरित लाज सूं ।

—वेलि

उ०—२ विंडि नख सिख लगि ग्रहणे पहिरिए, महि मूं वांणी वेलि मई । जग गळि लागी रहै असै जिमि, सहै न दूखण जेम सई ।

—वेलि

रू०भे०—मु, मू

मूं' देखो 'मुख' (रू. भे.)

उ०—पींपळ खेजड़ी रो व्याह मांड्यो अर जागण-जीमण रो परवंध करयो । अै सैं बातां पूरी हुई जकै दिन सोनजी नै मांनी मूं' मांग्यो फळ मिळग्यो ।—दस-दोख

मूंओड़ो—भू०का०कृ०—मरा हुआ, मृत्य ।

(स्त्री०मूंओड़ी)

मूंकगिर, मूंकगिरी —देखो 'रिसीमूक' ।

मूंकणौ, मूंकवौ—देखो 'मूकणौ, मूकवौ' (रू. भे.)

उ०—१ धग धगती सगडी भरी, आंणउ अति अंगार । मांहि मूंकउ मांनिनी, सटक देई सिणगार ।—मां.कां.प्र.

उ०—२ मांन कहै दळपत्त री, लाभ निदांन सुणाय । धांम न मूंकै सांम का, तिण मुख सरम सवाय ।—रा रू.

उ०—३ एकदा प्रस्ताव । दिली रै पातसाह सारी धरती मांहे डंड घातियो । गढ़ किरोड़ी मूंकियां । ताहरां महेवे ही किरोड़ी आयो । ताहरां कांनड़दै सरब रजपूत तेड़िया ।—नैणसी

उ०—४ तिवारै पतिसाहजी सरसी पाटण वास गांव दियो । बयांणो, हैंसार, मेवात, रेवाड़ी समेत पड़गना मूंकिया । वहुत दिलासा मूंको ।—द.वि.

उ०—५ संसार सुपहु करता ग्रह संग्रह,गिणि तिणि हीज पंचमी गाळि । मदिरा रीस हिंसा निंदा मति, च्यारै करि मूंकिया चंडाळि ।

—वेलि

उ०—६ गिरवर मोर गहविकया, तरवर मूंक्या पात । धणियां धण सालण लगा, वूठै तो बरसात ।—ढो.मा.

उ०—७ ढोला, ढीली हर किया, मूंक्या मनह विसारि । संदेसउ नह पाठवइ, जीवां किसइ अधारि ।—ढो.मा.

उ० - ८ मुख नीसासां मूंकती, नयणें नीर प्रवाह । सूळी सिरखी सेझड़ी, तो विण जांणे नाह ।—ढो.मा.

उ०—९ मुरछित हो धरणी पड्यो, वलि मूंकै है मोटा नीसांस कि ।—प.च चौ.

उ०—१० मुगल मडाभड़ साहसी, मूंकै दोय दोय वांणो रे । 'लालचंद' पतिसाह स्यूं, पूजे केहो किम पांणो रे ।—प.च.चौ.

उ०—११ ताहरां लाखैजी पूछीयो, "सोढी मांहे कोण छै ?" कह्यो "जी, चच आढो छै।" ताहरां लाखैजी पूछीयो, कह्यो, "सोडी धरती मकौ ।—लाखै फूलांणी री वात

मूंकणहार, हारौ (हारी), मूंकणियौ—वि० ।

मूंकिओड़ो, मूंकियोड़ो, मूंक्योड़ो—भू०का०कृ० ।

मूंकीजणौ, मूंकीजवौ—कर्म वा० ।

मूंकाणौ, मूंकावौ—देखो 'मूकाणौ, सूकावौ' (रू. भे.)

उ०—१ ताहरां रात्र साथै आदमी दे दीव मूंकायो । उठी वाहण वैसि दीव हालियो । इसो हीज समइयो हुवो । चोर न लागो, कोई जीवजंत न लागो । सयणी री वारता

उ०—२ ताहरां लाखैजी पूछीयो, कह्यो, 'सोढी धरती मूंको ।' सोढी धरती मूंकाई नै लाखैजी निजीक आइ नै हूही कह्यो ।

—लाखै फूलांणी री वात

मूंकाणहार, हारौ (हारी), मूंकाणियौ—वि० ।

मूंकायोड़ो—भू०का०कृ० ।

मूंकाईजणौ, मूंकाईजवौ—कर्म वा० ।

मूंकायोड़ो—देखो 'मूकायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री०मूंकायोड़ी)

मूंकावणो, मूंकावबो—देखो 'मूकाणो, मूकावो' (रू. भे.)
मूंकावणहार, हारो (हारी), मूंकावणियो—वि० ।
मूंकाविप्रोड़ो, मूंकावियोड़ो, मूंकाव्योड़ो—भू०का०कृ० ।
मूंकावीजणो, मूंकावीजबो—कर्म वा० ।

मूंकावियोड़ो—देखो 'मूकायोड़ो' (रू. भे)
(स्त्री०मूंकावियोड़ी)

मूंकियोड़ो—देखो 'मूकियोटो' (रू. भे.)
(स्त्री० मूंकियोड़ी)

मूंकी, मूंक्की—देखो 'मुक्की' (रू. भे.)
उ०—१ उत्तम थूंक विलोवहि, मध्यम मूंकी थाप । वणिक ग्रधम चिड़ता करै, पनसेरी सूं पाप ।—बां दा.
उ०—२ धक्का मूंक्की धूप दीप लातां रो देवै, नाक भांग नैवेद साच पद इण विध सेवै ।—ऊ. का.

मूंक्की—देखो 'मुक्की' (मह , रू. भे.)

मूंग-सं० पु०[सं०मुद्‌ग:] १ हरे रंग का एक प्रसिद्ध द्विदल अन्न जिसकी दाल बनती है ।
उ०—१ खोड़उ हुउं डांभिज्यउं, बंधियउ भूख मरूंह । जाउं ढोला रइ सासरइ, सफळां मूंग चरूंह ।—ढो. मा.
उ०—२ सूंम नांम लेणो सुतो, मूंग पकावण वेर । अन दिन उण री आथजूं , डाटो भाठो देर ।—बां. दा
मुहा०—(छाती पर) मूंग दळणा=किसी को दिखाते हुए ऐसा काम करना जिससे उसके हृदय में ईर्ष्या,दाह, जलन या कष्ट हो ।
२ उक्त द्विदल का पौधा ।
रू०भे०—मउंग, मग, मुंगु, मूंध,

मूंगथाळ-सं०पु० यौ० [सं० मुद्‌ग:+स्थाल] बेसन आदि की जमाई हुई चक्की (मेवात) ।

मूंगदणो, मूंगधणो—देखो 'मूंगदणो' (रू भे)

मूंगफळी, मूंगफली-सं० स्त्री० १ जमीन पर फैलने वाला एक प्रकार का पौधा जिसकी खेती उसके फलों के लिए भारत के प्रायः सभी भागों में की जाती है । इसके फलों से तेल भी निकाला जाता है ।
२ उक्त पौधे की फली व उसके दाने ।
३ मूंग नामक पौधे की फली ।
उ०—भुजादंड सोवन घड्या रै कोमल कलस सुनालि रे रंग । मूंगफली चंपाकली रै, आंगलियां सुविसाल रै रंग ।—प. च. चौ.

मूंगम-सं० पु०—१ आदर, सत्कार ।
२ मान, प्रतिष्ठा, इज्जत ।
रू०भे०—मूंघम,

मूंगळ, मूंगल—देखो 'मुगळ, मुगल' (रू. भे.)
उ०—१ इळ नांम उञारण मूंगळ मारण, वंसि वधारण वांन । मनमोट नरिंद समंद जिसौ, महि इंद जिसौ अनमांन ।—ल. पि.
उ०—२ किम गोहर सांई दिवराई,अंगि एतली आहि । मागी म्लेछ मांकड़ा मूंगल, पद्धर पड्या रिण माहि ।—कां. दे. प्र.

मूंगाई-सं० स्त्री०—१ बाजार में वस्तुओं की कीमतों या मूल्यों का उचित से अधिक होने की अवस्था या स्थिति । मूल्यों के बढ़ने की स्थिति, महंगाई । (डीग्ररनेस)
२ उक्त स्थिति से बचाव के लिए कर्मचारियों को वेतन के अतिरिक्त दी जाने वाली राशि, महंगाई भत्ता ।
३ आदर, सत्कार ।
४ मान, प्रतिष्ठा, इज्जत ।
रू०भे०—महंगाई, महगाई, मूंगाई, मूंघाई, मैंगाइ, मैंगाई, मैंघाई ।

मूंगियाड़ो-सं० पु०—१ महंगा होने की अवस्था या भाव, महगाई ।
२ बाजार में वस्तुओं की कीमतें ऊंची होने की अवस्था ।
रू०भे०—मूंगीवाड़ो, मैंगीवाड़ो,

मूंगियो-वि०—१ लाल रंग का ।
२ मूंग के समान हरे रंग का ।
सं० पु०—१ एक वस्त्र विशेष ।
रू०भे०— मूंगियो, मूंगीयो मूगीग्रो, मूगीयो,
१ देखो मूंगो' (ग्रल्पा., रू. भे.)
उ०—१ सोना री पूतळियां. मरदां! मांय मूंगिया भार । पुरसामलजी, अणंतमलजी, वां सेठां री माल ।
—डूगजी जवारजी री छावली
उ०—२ तिण नगर 'रतना' रा रैवास में एक मकराणां रो महल है, जिण में इण री घणी मारी सैं'ल है । नू इणरी पगथाळियां रा प्रतिब्यंबहूं फरस तो मूंगियां री छिब पावै है नै अंग री ओपमा सूं भींतां जिकै सुवरण री निजरि आवे है ।—र. हमीर
उ०—३ भल भला करइ राय भेटणा, चंदन चोवा अबीरो जी । मांणिक मोती मूंगिया, चोली चरणां चीरो जी ।—स.कु.

मूंगीयो—१ देखो 'मूंगो' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—सतगुर साह भये सोदागर, विणजै वसत अपारा । कांही मिणीया लीया मूंगीया, कांही हीर हजारा ।
—श्री हरिरांमदासजी महाराज
२ देखो 'मूंगियो' (रू. भे.)

मूंगीवाड़ो—देखो 'मूंगियाड़ो' (रू. भे.)

मूंगु—१ देखो 'मूंग' (रू. भे.)
उ०—सोहती मंन मोहती, पुंहुचउ मदल सुरंग । अंगुळी मूंगु नी फळी, समस्त तीखा नख सुरंग ।—रुकमणी मंगळ
२ देखो 'मूंगो' (रू. भे.)

मूंगेड़ो—१ देखो 'मगेड़ो' (रू. भे.)
२ देखो 'मूंगियाड़ो' (रू. भे.)

मूंगोड़ी-सं० स्त्री०—मूंग की बड़ी ।
उ०—म्हारै पापड़ बी नाई' म्हारै मूंगोड़ी बी नाई', थ्यां से करां नीगोड्यो ब्याव, रायजादी ये तूर छैला प्यारी ये लुरडी ।
—लो.गी.

रू०भे०—मुंगवड़ी, मूगेड़ी, मूगोड़ी

मूंगौ-सं०पु०—समुद्र में कृमियों के समूह पिंड की लाल ठठरी का एक रत्न, प्रवाल। (अ. मा.)

उ०—हीरा माणक मूंगौ तजीने, कथीर संगाते मलि तोल मां रे। —मीरां

२ रत्न, नगीना।

३ सात प्रकार की उप धातुओं में से एक। (अ. मा.)

वि०—लाल हरा,।

उ० जळ खूटै सीकाळ, रंग मूंगौ पड़ ज्यावै। ज्यूं घोट्योड़ी भांग, दूरसूं वरण दिखावै।—दसदेव

रू०भे०—मुंगौ, मूंगु।

अल्पा०—मुंगियौ, मूंगियौ, मूंगीयौ,

मूंगौ-वि० [सं०मह+अर्घ] १ जिसका मूल्य या कीमत उचित से ज्यादा हो, जरूरत से ज्यादा कीमत का।

उ०—"एक-इ बात कंद? भळै मोल-तोल तो को करो नी'क? 'हां एक-ई।' 'तो लो, ऐ साढ़ी तीन दे दो।' 'नाख-नाख, है तो मूंगां ई।—वरसगांठ

२ जो साधारण से अधिक कीमत का हो, बहुमूल्य। स्वभावतः कीमती।

३ जिसे प्राप्त करने में अधिक कष्ट या व्यय करना पड़ा हो, दुर्लभ्य।

४ सम्मान, इज्जत व मान-प्रतिष्ठा वाला।

५ अधिक प्यारा, विशेष प्रिय।

रू०भे०—महंगौ, महंगौ, महुंगौ, मुंगउ, मूंहगउ, मूंहगौ, मुंहुंगौ, मुहंगौ, मुहगौ. मुहघौ, मुहुंगौ, मुहेंगौ, मूंघौ, मूंघौ, मूंहगौ, मूंघौ, मूहघूं, मैंगौ, मैंहघौ।

मूंघ—देखो 'मूंग' (रू.भे.)

मूंघम—देखो 'मुंगम' (रू. भे.)

मूंघौ, मूंघौ—देखो 'मूंगौ (रू. भे.)

उ०—१ गुरांजीड़ी वडाई रो भूखो, नै एक मूंघै मोल री जेवी तिरपाल भेंट करची।—दसदोख

उ०—२ सुण सुण जसवारी आनंद मन आण्यौ जग में जीवावण जैपुर पति जांण्यौ। मूंघौ मांखण सूं मिसरी सूं मीठौ, द्रग सूं दो घड़ियां अन बिकती दीठौ —ऊ. का.

उ०—३ अंबळीमांगा अड़ग आपांणी, कवळ वाराह संग्राम करै। सूंगा साई अनै सेरड़ो, मूंघा दीधा भळै मरै।—दूदौ आसियौ

उ०—४ मुळकनै ठाकर रै सांम्ही इण भांत मदछकी निजर सूं देख्यौ के वांनै पीयां बिना ई हजार बोतल री नसौ चढ़ग्यौ। पैली वार वांरै समझ में आई के राजाजी री चाकरी कित्ती आंहजी अर कित्ती मूंघी।—फुलवाड़ी

(स्त्री० मूंघी)

मूंचणौ, मूंचबौ—देखो 'मुंचणौ, मुंचबौ' (रू. भे.)

मूंचणहार, हारौ(हारी), मूंचणियौ—वि०।

मूंचिओड़ौ, मूंचियोड़ौ, मूंच्योड़ौ—भू० का० कृ०।

मूंचीजणौ, मूंचीजबौ—भाव वा०।

मूंचियोड़ौ—देखो 'मुंचियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० मूंचियोड़ी)

मूंछंदर-वि०—बड़ी-बड़ी मूछोंवाला।

रू०भे०—मुछंदर,

मूंछ-सं०स्त्री० [सं०श्मश्रु प्रा०-मस्सु, मच्छु] पुरुषों के नाक के नीचे एवं होठ के ऊपरी भाग में उगने वाले केशों का समूह, मूछ।

उ०—१ मूंछ नाक सिर रौ मुकुट, ससतर सांम सनाह। साबत लायौ समर सूं, कै नह लायौ नाह —बां. दा.

उ०—२ चख चोळ मूंछ भूंहां चढी, तांमस ऊठि तमौ गणी। मेहरी गाज जाणै मरद, सारदूळ कांनां सुणी।—मे. म.

मुहा०—१ मूंछ उखाड़णी=१. कठिन दंण्ड देना, अपमान करना।

२. मूंछ नीची होणी=अपमान होना, गर्व नष्ट होना, लज्जित होना।

३. मूंछ पर ताव देणौ=गर्व एवं अहंकार करना।

४, मूंछ मरोड़णी=गर्व करना, गर्व के मारे मूछों पर ऐंठन या बल देना।

५. मूंछ माथै हाथ फेरणौ=अपना पौरुष दिखलाना, विजय का गर्व करना।

६. मूंछरौ बाळ-घनिष्ट व्यक्ति, विशेष विश्वास वाला। ज्यादा नजदीक रहने वाला।

२. कुछ विशिष्ट जानवरों या जीव-जन्तुओं के मुख पर भी यह बाल समूह होता है।

रू०भे०—मुंच्छ, मुंछ, मुच्छ, मुछ, मुछि।

अल्पा०—मूंछड़ली, मूंछड़ी, मूछ, मूछड़ी।

मह०—मुंछार, मुछार, मूंछाळ

मूंछड़ली—देखो 'मूंछ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—कोई मूंछड़ली मुरळावै सूरत सांवळी।—लो. गी

मूंछड़ी—१ देखो 'मौछ' (अल्पा', रू. भे.)

उ०—खोळी खीला री डेढा ढिग ढीली, पोली सेढां री लीलां बिण पीळी। खड़ती सुवाड़ी बाड़ी बिन खटकै, मरती मूंछड़ियां पूंछड़ियां पटकै।—ऊ. का.

२ देखो मूंछ' (अल्पा., रू. भे.)

मूंछण—देखो 'मूछण' (रू. भे.)

उ०—चलू करी मूछण दिया रै लाल, लूंग सुपारी पांन। —प.च.चौ.

मूंछणियौ, मूंछणौ—देखो 'मूंछण' (अल्पा. रू. भे.)

उ०—धण रे तो आंगण बिड़ला बंधावौ ढोला, मूंछणियै रै मिस आवौ रे। हांजी रे मांजि वैवंतै बादल ने केण विलमायौ रे। —लो.गी.

मूंछणौ, मूंछबौ—१ देखो 'मूछणौ, मूछबौ' (रू. भे.)

मूंछणहार, हारौ(हारी), मूंछणियौ—वि० ।

मूंछिग्रोड़ौ, मूंछियोड़ौ, मूंछयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

मूंछीजणौ, मूंछीजवौ—भाव वा० ।

मूंछरेल—देखो 'मूंछाळ' (रू भे.)

मूंछार—देखो 'मूंछ' (मह., रू भे.)

मूंछाळ, मूंछाल-वि० [सं०श्मश्रु+ग्रालुच] १ जिसके मूंछें हो, मूंछों वाला।

उ०—पण ग्रबै ग्रेड़ा ई मूंछाळा मरद हौ तौ म्हारै सांम्ही ग्रांगळी उठायनै तौ जोवौ— —फुलवाड़ी

२ बल पौरुष एव गौरव वाला ।

उ०—मछराळा मूंछाल, बेहद हद वेढ़ीगारा। सुर भगा ग्य वार, प्रथी इक छात्र सारा।—मा. वचनिका

३ युवा, जवान ।

रू०भे०—मुछाळ, मुछियाळ, मुहछाळ, मूंछरेल, मूंछरेळ, मूछरेल मूछाळ।

ग्रल्पा०—मुछाळी, मूछाळौ

४ देखो 'मूछ' (मह, रू भे)

उ०—सुण इम वचन सधीर, वीर रणधीर ववक्कै, मतवाळा मदमत्त, घोम झाळा धक धक्कै। ग्रड़ै भुज्ज ग्रसमांन भिड़ै मूंछाळ भ्रगूटै, चढै रीस चख चोळ, खाग स तोलउ खूटै।—पे. रू.

मूंछाळी-सं०स्त्री०—१ तलवार ।

२ वह स्त्री जिसके मूंछें हो ।

३ देवी दुर्गा।

रू०भे०—मूछाली,

मूंछाळौ—देखो मूंछाळ' (ग्रल्पा., रू भे.)

उ०—१ ग्रागै सयणीजो मूंछाळै मालदेव रै ऊनगिया ।

- सयणी री वात

उ०—२ वांभण पूत न वीसरै, ज्यूं विसहर काळं । ग्राल्हणसीह न वीसरै, मैंहराज मूंछाळै ।—नैणसी

मूंछियोड़ौ—देखो 'मूछियोड़ौ' (रू. भे')

(स्त्री०मूछियोड़ी)

मूंछियौ-सं०पु०—काटना क्रिया या भाव ।

मूंछीयइ—देखो 'मुरछित' (रू. भे.)

उ०—कृत्रिम सरवरि पांणी पीइ, पांचइ पुहवी तलि मूंछीयइं । सरवर पालि द्रूपदि मिली, एकि पुलिंदइ ग्रांणी वली ।

—सालिभद्र सूरि

मूंज-सं०स्त्री० [सं०मुञ्जः] १ सरकंडों की ऊपरी छाल जिसको भिगो कर व कूट कर चार पाई बुनने के लिए रस्सी बनाई जाती है ।

२ उस छाल की बुनी हुई रस्सी ।

उ०—करणी नै वचवचा' र पकड़ लियो, वूकिया झा'ल लिया ग्रर मूंज रा बंध दे परा' र थांणी में सूंप दीनो —द दोव

३ धारा नगरी का परमार राजा मुंज । ।

उ०—स्रीदसरथ दसरथ सुतन, पीथल मूंज पंवार कुंण कुंण ढहकांणा नही, बग चुगलां वापार ।—नां. दा.

रू०भे०—मउज, मऊज, मुंज, मूंझ, मूज, मूझ,

४ देखो 'मुझ' (रू. भे.)

मूंजणौ-सं०पु०—देखो 'मुंगदणौ' (रू. (

उ०—जेई ने जंगळ सूं लावै, फांगां मुं गुभ मूंजणौ। निरत माच मकर घी पावै, भूनै स्पावां मूजणौ।—दनदेव

मूंजणौ मूंजवौ—देखो 'ग्रमूंझणौ, ग्रमूंझवौ' (रू भे.)

मूंजि, मूंजी-सं०पु०—कृपण, सूम, कंजूस ।

रू० भे०— मुंजीड़ौ

मूंजियोड़ौ—देखो 'ग्रमूंझियोड़ौ' (रू. भे)

मूंजीटौ—देखो मूंजी (ग्रल्पा., रू. भे.)

मूंजीपणौ-सं०पु०—१ कंजूस होने की ग्रवस्था या भाव ।

२ कंजूसी ।

उ०—सेठां री मूंजीपणौ चौवड़ा मे किणी सूं ग्रछांनौ नीं हौ ।

—फुलवाड़ी

रू०भे०—मुंजीपणौ,

मूंजोर—देखो मुहजोर' (रू. भे.)

मूंजौ-सं०पु०—मूंज का बना एक प्रकार का ढक्कन जो बड़े-बड़े जल पात्रों पर ढका जाता है ।

वि०वि०—यह ढक्कन प्राय· उस समय काम ग्राता है जब बड़े-बड़े जल पात्रों को गाड़ी पर रख कर दूर दूर से पानी लाया जाता है ।

मूंझ—१ देखो 'मुझ' (रू भे .)

उ०—१ टहियां तो किण राज ठिकांणै, जगत मूंझ दिन उजळ न जांणै। मनि हुव वचन लोपसी मोनं, तन प्रतवाय लागसी तोनूं।

—सू. प्र.

उ०—२ रांणै दाखै 'राजसी' राठोड़ां उपकार। यां कळ झल्ली ग्रावगी, पल्ली मूंझ ग्रंवार।—रा. रू.

२ देखो 'मूंज' (रू. भे.)

मूंझणौ, मूंझवौ—देखो ग्रमूंझणौ, ग्रमूंझवौ' (रू. भे.)

उ०—१ दळ देख डरै, ग्रिध मूंझ मरै। मिळि भोमि तणी, पुड़ि वोम पणी।—गु रू वं.

उ०—२ बार पहर तउ चवीउ रोमि गुर नंदणु झूझइ। रणि पाडिउ भगदत्तु राउ कउरा दल मूंझइ।—सालिभद्र सूरि

उ०—३ विकल थाती, क्षणि जोइ क्षणि रोइ क्षणि हसइ क्षणि ग्राक्रंदइ क्षणि निंदइ,क्षणि मूंझइ, क्षणि झूझइ, क्षणि वूझइ,एवं विधि विरहांनल नीपजइ।—व.म.

मूंझणहार, हारौ (हारी), मूंझणियौ—वि० ।

मूंझिग्रोड़ौ मूंझियोड़ौ, मूंझ्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

मूंझीजणौ, मूंझीजवौ—भाव वा०

मूंझियोड़ौ—देखो 'ग्रमूंझियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० मूंझियोड़ी)

मूंभी—देखो 'मूंजी' (रू. भे.)
उ०—पण मूंभी व्हैतां थकां ई वो नेकनांमी हो। खोटी कमाई नीं करतो।—फुलवाड़ी

मूंभीपणो—देखो 'मूंजीपणो' (रू. भे.)
उ०—वो आपरी माया वास्तै ई चोखळा में चावो हो अर आपरा मूंभीपणा वास्तै ई उण री अणूंती नांमवरी ही।
—फुलवाड़ी

मूंठ—देखो 'मूठ' (रू. भे.)
उ०—१ अणियाळा नयण आंजिया अंजण, कागज रेख सुरेख कर। इंद्र तणइ दिन मूंठ अपूठी, भळका नाखइ वांमवर।
—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ ले भड़ां रटाकां पूर अरिदा ताड़व्वा लागा, महावीर खीज में पाड़व्वा लागा मूंठ। बीर वेसतावा जहां दूधारा भाड़व्वा लागा, रोजगारा खाती ज्यूं फाड़व्वा लागा रूंठ।
—सुखदांन कवियौ

उ०—३ आडा डूंगर वन घणा,तांह मिळीजइ केम। उलाळीजइ मूंठ भरि, मन मींचांणउ जेम।—ढो.मा.

मूंठड़ी—देखो 'मूठी' (अल्पा., रू. भे)
उ०—मुड़ मुड़ पड़तोड़ी आंखड़ियां मींचै, भूखा मरतोड़ी मूंठड़ियां भींचै। सीधी सैणीं सी मैणी सुण माल्है, वैसक पुर वसणी हसणी तजि हालै।—ऊ.का.

मूंठि—१ देखो 'मूठ' (रू. भे.)
२ देखो 'मुट्ठी' (रू. भे.)

मूंठियौ—देखो 'मूठियौ' (रू. भे.)

मूंठी—१ देखो 'मुट्ठी' (रू. भे.)
उ०—१ मूंठी भरि सति रेणु जळ सांम्ही, आपणपउ दाखइ अधिकार। कुंभ हुवइ ततकाळ कहंतां, सो पाणी ल्यावै पणिहार।
—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ म्हैलां सांकडीसी आंण भैली थांभि दीनी। मूंठी एक बालू की पला कै वांध लीनी।—शि.वं.
२ देखो 'मूठ' (रू. भे.)

मूंड—१ देखो 'मूढ' (रू. भे.)
उ०—बांझ के पास प्रसूत की वेदन, भेद न जांनत मूंड भमायौ। पूत कपूतन कों चटसाल कि, ज्यूं कुलटा सुमराल सुनायौ।
—ऊ.का.

रू०भे०—मूंढ, मूड, मूढ,
२ देखो 'मुंड' (रू. भे.)
उ०—१ तकादो भोत वताड़े, दांत से तुड़ावेगो तूं। माजनां सूं रेज्यै देज्यै फुड़ावेगो मूंड।—ऊ.का.
उ०—२ कित छोडी वह मोहन मुरली, कित छोड़ी सव गोपी। मूंड मुंडाइ डोरि कटि बांधी, माथै मोहन टोपी।—मीरां
उ०—३ भड़ीयइ भांजि मरग्गड मूंड। रडव्वड रैण करंडक रूंड।
—गु.रू.वं.

उ०—४ सांग मूंड सहसी सको, समजस जहर सवाद। भड पीथल जीतो भलां, वैण तुरक सूं वाद।—महाराणा प्रतापसिंह
३ देखो 'मूंद' (रू. भे)

मूंडकटाई, मूंडकटी—सं०स्त्री०—१ युद्ध में वीरता पूर्वक लड़ते समय शिर कटने की क्रिया या भाव।
२ वह भूमि या जागीर जो पूर्वजों के युद्ध में वलिदान होने पर पीछे वंशजों को मिलती है।
३ मस्तक मुण्डाने की क्रिया।

मूंडकी—सं०स्त्री० [सं० मुण्ड] कटा हुआ शिर।
उ०—अडसी सूं अड़िया जिकै पड़िया करै पुकार। म्हापुरसां री मूंडक्यां, गिलगी गांव गंगार।
—महारांणा अरिसिंह तीसरे का दोहा

रू०भे०—मूंडि।

मूंडको—सं०पु० [सं० मुंडक:] १ मस्तक, शिर।
२ व्यक्ति, आदमी।
उ०—तरै एकै रजपूत कह्यो, घोड़ी मूंडका माफक बांटो। तरै ऊ वचन सांभळ पिउसंघी कह्यो, कुट्टण मूंडका क्या, आधी हमारी है आधी तुमारी है।—जखड़ा मुखड़ा भाटी री वात
३ सीमान्त पर गड़ा रहने वाला पत्थर, छोटा स्थम्भ।
रू०भे०—मुंडको,

मूंडड़ो—देखो 'मुंड' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—कहाड़ै बीरद वंका भीड़ियां छकड़ा कड़ां, बधै रोळै भड़ां आगा वाधै वंमवांन। विछोड़ै गयंदां घड़ा दजड़ां भोभड़ां बाह, मुगल्लां मूंडड़ां दड़ां मेळै दूजो 'मांन'।
—रावत सारंगदेव रौ गीत

मुंडण—सं० पु० [सं० मुंडन] १ शिर के बाल काटने की क्रिया या भाव।
२ वालकों के प्रथम वार शिर के केश काटने का एक संस्कार।

मूंडणो, मूंडवौ—क्रि०स० [सं०मुण्डनम्] १ उस्तरे, पत्ती आदि से शिर के बाल या शरीर के किसी अंग विशेष पर उगे हुए केशों को, रगड़ कर काटना, साफ करना, मुण्डन करना, केश काटना।
उ०—१ सिर दाढी मूंडी करी, भगवउ लीधउ वेस। पग अणुहांणा पंकज जिसे, पंथि पलिउ परदेसि।—मा. कां. प्र.
उ०—२ दाड़ी मसतग मूछ का, घुरिड़ मूंडीया केस। हरीया मन पलिटघा नहीं, पलिटघा तन का वेस।
—स्रीहरिरांमदासजी महाराज

२ भेड़ के शरीर की ऊन काटना।
३ किसी प्रकार की शिक्षा दीक्षा या सलाह देकर चेला वनाना, अनुयायी वनाना, वशीभूत करना, प्रभाव में लाना।
उ०—जीयो बांमण थोड़ा दिन फेर करड़ो रह्यो। नवा मूंडियोड़ा

दो तीन चेला-चांटियां नैं कीं तकलीफ नीं करण देवतौ ।
—फुलवाड़ी

४ घोसे से माल ऐंठना, ठगना :

५ किसी मृतक के पीछे दाढ़ी-मूंछ कटाना, भद्र करना ।

उ०—गुई बेगम समैं सेहस जग मूंडिया, दूर की मूंछ पतिसाह दूवै । राखिया भोज यम ठाकुरै राखज्यो, हिंदुवां ध्रम अहंकार हूवै ।—राव भोज हाडा रो गीत

मूंडणहार, हारौ (हारी), मूंडणियौ—वि० ।

मूंडिग्रोड़ौ, मूंडियोड़ौ, मूंडयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

मूंडीजणौ, मूंडीजबौ—कर्म वा० ।

मुंडणौ, मुंडबौ,—ग्रक रू० ।

मूडणौ, मूडबौ—रू०भे० ।

मूंडत—देखो 'मुंडित' (रू. भे.)

उ०—समर ढिलीकर मांम नूं लस ग्रावै लवड़ाक । मूंछ थकां मूंडत जिकै, नाक थकां बिन नाक ।—बां दा.

मूंडतहाथ-सं०पु० यो०—१ कोहनी से हाथ की अंगुलियों के मोड़ तक बनने वाला लम्बाई का एक माप । मतान्तर से कुहनी से अंगुलियों के पेरवों से वापिस मोड़कर अंगुलियों की जड़ तक का माप ।

२ उक्त नाप की लम्बाई की वस्तु ।

रू०भे०—मूंडहाथ ।

मूंडवाळ-सं०पु०—नाई, केशकार, नापित । (डिं. को.)

रू०भे०—मूडवाळ, मूंडाळ,

मूंडहाथ—देखो 'मूंडतहाथ' (रू. भे.)

उ०—कुतां रा ढोर छूटै छै । लाहोरी ताजी लूत्र वांणा गिलजा पहाड़ी, जिकांरी मूंडहाथ मोहनाळ हाथ भर नस ।—रा. मा. सं

मूंडांमूंड, मूंडामूंडौ-क्रि०वि०—मुंह के सामने, सम्मुख, मुंह को मुंह पर, रूबरू ।

उ०—घर री कळै सूं नाकों-नाक ग्राय' र, भूवाजी, रांमतै-री मां नैं मूंडांमूंड कैंण लागी-ग्रबै कांम को चालै नी,चार पांच दिनां में म्हां रो उथळो कर दो ।—वरसगांठ

रू०भे०—मूंडेमूंड, मूंडैमूंड ।

मूंडाणौ, मूंडाबौ-क्रि०स० ['मूंडणौ" क्रिया का प्रे०रू०] १ उस्तरे, पत्ती ग्रादी से शिर या शरीर के किसी ग्रंग विशेष पर उगे हुए केशों को कटवाना, मुंडन करवाना, बाल कटवाना ।

उ०—मसतग माळ मूंडाय कै, दाढ़ी मूंछ मूंडाय । हरीया मन मूंड्यां विनां, निज पद कैसैं पाय ।—स्री हरिरांम दासजी महाराज

२ भेड के शरीर की ऊन कटवाना ।

३ किसी प्रकार की शिक्षा दीक्षा या सलाह द्वारा चेला बनवाना, अनुयायी बनवाना, वशीभूत कराना, प्रभाव में कराना ।

४ धोखे से माल ऐंठवाना, ठगवाना ।

५ किसी मृतक के पीछे दाढ़ी मूंछ कटवाना, भद्र करवाना ।

मूंडाण हार, हारौ (हारी), मूंडाणियौ—वि० ।

मूंडायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

मूंडाईजणौ, मूंडाईजबौ—कर्म वा० ।

मूडाणौ, मूडाबौ, मूडावणौ, मूडावबौ—रू०भे० ।

मूंडापाती—सं०स्त्री०—१ एक प्रकार का पौधा जिसकी गांठों पर सफेद फूल लगते हैं, गूमा द्रोण पुष्पी ।

मूंडायोड़ौ-भू०का०कृ०—१ उस्तरे, पत्ती ग्रादि से शिर या शरीर के किसी ग्रंग विशेष पर उगे हुऐ केशों को कटवाया हुग्रा, मुण्डन करवाया हुग्रा, बाल कटवाया हुग्रा. २ शरीर की ऊन कटवाया हुग्रा. (भेड़) ३ चेला बनवाया हुग्रा, अनुयायी बनवाया हुग्रा, वशीभूत या प्रभाव में कराया हुग्रा. ५ धोखे से माल ऐंठवाया हुग्रा, ठगाया हुग्रा. ६ किसी मृतक के पीछे दाढ़ी मूंछ कटवाया हुग्रा, भद्र करवाया हुग्रा ।

(स्त्री०मूंडायोड़ी)

मूंडाळ—देखो 'मूंडवाळ' (रू. भे)   (डिं.को)

मूंडी—१ देखो 'मूंड' (रू. भे.)

२ देखो 'मुंड' (रू. भे.)

३ देखो 'मूंडकी' (रू. भे.)

४ देखो 'मूंडवाळ' ।

मूंडे मूंड, मूंडै मूंड—देखो 'मूंडांमूंड' (रू. भे.)

उ०—ठाला भूला बता तो म्हारी धूंडरा धन रो कांई करघो । खजानै जमा क्यूं नी करायौ । थारो इत्ती हीमत के मूंडैमूंड नटै ।
—फुलवाड़ी

मूंडो दिखाई—देखो 'मुंहदिखाई' (रू. भे.)

मूंडो-सं०पु० [सं०मुंड:] १ मनुष्य या प्राणियों के शरीर का वह ग्रंग जिससे खाने-पीने एवं बोलने ग्रादि की क्रियाऐं होती हैं, मुख ।

उ०—१ गळियोड़ा सब गाय गजब कांधी गळियोड़ी । ग्रमल मांग ने ग्रजे वळै मूंडो वळियोडौ ।—ऊ. का.

उ०—२ मंवळ खायनै छपाक देती रो वो पांणी रै मांय पड़ग्यो । पड़तां ई वो तो मूंडो फाड़नै गळळ गळळ पांणी खांवण ढूको ।
—फुलवाड़ी

मुहा०—१ मूंडा जित्ती वातां=जितने मुंह उतनी वातें होती हैं । मनुष्य हरेक बात अपने ढंगसे कहता है । अफवाहें उड़ने पर ऐसा कहा जाता है ।

२ मूंडा मूं ग्रावै ज्यूं वोलणौ=ग्रसभ्यता से बोलना, बोलते समय सुध न रहना ।

३-मूंडा में ग्रन-पाणी घालणौ=खाना-पीना, मुश्किल से भोजन प्राप्त होने पर ऐसा कहा जाता है ।

४ मूंडा में गुळ देणौ= खुश-खबरी सुनाने या इच्छित बात करने पर मुंह मीठा करना । चुप करना ।

५ (थारा) मूंडा में घी शक्कर=वांछित कार्य करने वाले के लिये अच्छे भोजन कराने का भाव।
६ मूंडा में पांणी आंणो=स्वादिष्ट खाद्य पदार्थ को देखने पर मूंह में पांनी आना, लालायित होना
७ मूंडा में मुळक नीं मावणी=खुशी के कारण मुंह से हंसी फूट पड़ने का भाव होना।
८ (थूक थारा) मूंडा मूं = अमांगलिक बात करने पर।
९ मूंडा में मूंडो घालणो = घुट-घुट कर बातें करना।
१० मूंडा में लाय लागणी = अधिक चर्री चीज खाने से मुंह में जलन होना, मुंह जलना।
११ मूंडा रै खांम लागणी = निरुत्तर होना, मुंह से बोल न निकलने की दशा होना।
१२ मूंडा रो स्वाद = क्षणिक तृप्ति, जिससे कोई स्थाई लाभ न होता हो। जो खाने से अच्छा लगता हो पर वस्तुतः नुकसान दायक हो।
१३ मूंडा सूं थूक उछाळणो = असभ्यता से बोलना, व्यर्थ बकना।
१४ मूंडा सूं फूल झडणा - अच्छी बात कहना हंसना।
१५ मूंडै आंणो = तृप्ति होनी, किसी चीज को खाने से मन भर जाना।
१६ मूंडै मीठो = जो सामने तो मीठी-मीठी बातें करें और पीठ पीछे बुराई करें।
१७ (छोटे) मूंडै मोटी बात - अपनी हेसियत से ज्यादा की बात करना।
१८ मूंडै लगाणो = किसी को बोलनें, बात करनें या पंचायती करनें की छूट देना। शिष्टता की सीमा से बाहर तक बात करने की छूट देना।
१९ मूंडै लागणो = निस्संकोच होकर किसी से बात करना, खुल कर बात करने की दशा में होना, अशिष्टता का व्यवहार करना।
२० मूंडो ऐंठणो, मूंडो ऐंठो करणो - बहुत कम खाना। किसी के यहां खाने का दस्तूर करना, मुंह झूंठा करना।
२१ मूंडो काळो करणो = चले जाना पलायन कर जाना. दृष्टि से दूर हो जाना। बदनामी के रूप में कहा जाता है।
२२ मूंडो खीलणो = निरुत्तर कर देना. कच्चावट पकड़ लेना।
२३ मूंडो खोलणा = कुछ कहना, कहने के लिये मुंह खोलना। बहुत कम बोलने वाले के लिये कहा जाता है।
२४ मूंडो घालणो - खाने या पीने के लिये मुंह आगे करना। जानवरों पक्षियों आदि के लिये।
२५ मूंडो चालतो रैवणो = हर वक्त कुछ न कुछ खाते रहना।
२६ मूंडो फाड़णो = खाने के लिये मुंह खोलना, अधिक पाने की आशा करना, लोभ करना।
२७ मूंडो बंद कर देणो = देखो 'मूंडो खोलणो'।
२८ मूंडो बळणो = मुंह जलना, तेज मसालेदार चीज खाने से मुंह में जलन होना।
किसी चीज के लिये लालयित होना, उत्कंठा दिखाना।
२९ मूंडो मारणो = व्यर्थ फिरना, बद चलन होना।
३० मूंडो मीठो करणो = मीठी चीज खिलाना, खुश खबरी सुनाने, या अच्छा कार्य करने पर ऐसा होता है।
३१ मूंडो रातो करणो = पान खाना, क्रोध करना।
२ चेहरा, आकृति, शक्ल।
उ०—१ मूंडो सूजायं रैती. आयोड़ां पर भुंजती बळती अर कीनैं ई गुड़ री किरची-मिरकी सी ही आपरै हाथ सूं नहीं देती।
—दसदोख
उ०—२ वो मिनखां रा उणियारा देखतो आगै बधतो जावतो। उणरै आगै बधणा रै सागै लोगां रा मूंडा उतरता जावता।
—फुलवाड़ी
उ०—३ पछै खवास काली मासी रै मूंडा सांम्हो देखने कैवण लागो-माजी! कांईं कांईं बातां बतावूं। कह्या सुण्यां पाप लागै जेंड़ा बखांण है।—फुलवाड़ी
मुहा०—१ मूंडा माथै थूकणो - धिक्कारना, फटकारना।
२ मूंडा माथै फें'फा उडणी = मुंह पर थप्पड़ें पड़णी, जूते पड़ने पिटाई होना। ३ मूंडा री प्रीत = अस्थाई या दिखावटी प्रेम, मुंह देखने पर प्रगट किया जाने वाला प्रेम। ४ मूंडा रै ठोकर मारणी = अपमान करना, मुंह पर पांव की ठोकर मारना। ५ मूंडा सांमी देखणो = अवाक रह जाना, परमुखापेक्षी होना। ६ मूंडो ई नीं बतावणो = जाने के बाद वापस न आना, जो काम सौंपा गया है, न तो वह करना, न वापस आकर मिलना। जी चुराना।
७ मूंडो उतरणो = उदास होना, चेहरे पर उदासी छाना, खिन्न होना। ८ मूंडो ऊंचो करणो = गर्दन उठाना, स्वतन्त्र होना, आजाद होना, मुकाबले में आना, विद्रोह करना। गर्व करना।।
९ मूंडो करणो = रुख करना, उन्मुख होना। १० मूंडो चढावणो = मुंह फुलाना, रूठना, गुस्सा करना। ११ मूंडो जोवणो - देखना मात्र. कुछ करने की दशा में न होना। १२ मूंडो ढेरणो = व्यर्थ खड़े होना. असावधान होना। १३ मूंडो थाप खावणो = सहसा उदास होना. किसी बात में पोचा पड जाना। १४ मूंडो धोणो, मूंडो धोवणो = प्राप्ति की आश लगाना, वांछित वस्तु प्राप्त करने को तैयार होना १५ मूंडो निरखणो=किसी के मुंह की ओर एक टक हो कर देखना, बार बार देखना, देख कर खुश होना। १६ मूंडो नीं देखणो=घृणा करना, नफरत करना। १७ मूंडो नीचो करणो=शर्माना. शर्म से झुक जाना, हार मान लेना।
१८ मूंडो फेरणो=मुंह मोड़ लेना, वेरुख हो जाना, सम्बन्ध विच्छेद कर लेना। १९ मूंडो फेर देणो=वापस घुमा देना, हरा देना, ऐसा मारना की गर्दन सीधी न हो सकें। २० मूंडो मग्दूर =हेसियत या औकात की दृष्टि से। २१ मूंडो मस्कोड़णो, मूंडो मस्कोरणो=मुह बिगाड़ना। नखरे दिखाना। २२ मूंडोमोड़णो

=देखो 'मूंडो फेरणो' २३ मूंडो रातो व्हैणो, होणो=शर्माना, शर्म करना। क्रोध करना। २४ मूंडो लुक थुकी पड़णो=भय भीत होना, हवाइयें उड़ना, चेहरा रूखा पड़ जाना, उदासीन होना। २५ मूंडो लुकाणो, मूंडो लुकावणो=मुंह छुपाना, जी चुराना, सामने न आना, कतराना। २६ मूंडो लेय नै जाणो=अपना रास्ता लेना, रूठ कर चल देना। त्याग कर देना, ऐसा जाना कि वापस आने की आशा न हो। कुछ प्राप्त किये बिना, निराश लौटना। २७ मूंडो सूजणो, मूंडो सुजाणो=देखो 'मूंडो चढावणो'

३ पक्षी की चोंच।

उ०—मोटा मोटा पंछियां रै मूंडा सूं सगळी वात सुणियां पछै पुटियो खिल खिल हंसियो।—फुलवाड़ी

४ बोरी, थैली आदि का खुला भाग, मुंह, विवर

५ बर्तन का मुख।

उ०—धरती माथै चारू कांनी दूध दही अर छाछ रळगी। पणाकरी पारियां चकना चूर व्हैगी। किणी री मूंडो खांडो व्हियो तौ किणी किणी री पींदी तिड़कियो।—फुलवाड़ी

६ दरवाजा, द्वार।

७ अग्र भाग, शिरा, नोक।

८ देखो 'मोडो' (रू. भे)

उ०—रांमसिंघजी इसड़ै ताव सेती आइ अर लोहे भिळिया जिम मूंडो हिरण आयतो आवै छै त्यूं फोगां मांहि कूंदता आइ भिळिया।
—द. वि

रू०भे०—मांम्रडो, मांम्रडो, मांहुडो, मांहुडो, मुंहडो मुंडो, मुंडो मुंहुंडो, मुंहडड मुंहडो, मुढो, मुहडो, मुहडड, मुहडु, मुहडो मुहो, मूंढो, मूहडड, मूंहडो, मूंहढो, मूडो मूढो।

मूंढ—१ देखो 'मूढ' (रू. भे.)

उ०—देवल ढहता देखीया, देख न भया उदास। जन हरीया उन मूंढ को, रिदी न खूल्है जास।—स्री हरिरांमदासजी महाराज

२ देखो 'मूंड' (रू. भे.)

मूंढो—देखो 'मूंडो' (रू. भे.)

उ०—१ भल पण खांचै पण रांचै भूंडै में, मांचै सूतां रै हूको मूंढै में।—ऊ. का.

उ०—२ बीन रै बाप री अंस बिचरग्यो। सगळां रा मूंढा घिरतै जान्यां रा सा हुयग्या। मियो-बीबी राजी, जद के करेलो काजी।
—दसदोख

उ०—३ ततरै ठग कन्निआंण सूं कहण लागा—मो अब नो भाग लेख सांई लखिआ को कुण मेट करै। हमैं तूं मांहरै आंची सगो छै। पण मांहरी पुत्री री मूंढो तो देखाळ।
—कल्यांणसिंह नगराजोत वाढेल री वात

मूंण-सं०स्त्री०—१ मिट्टी का बड़ा जल-पात्र, जिसमें तीन-चार मटके पानी आ जाता हो।

उ०—१ लाठी बड़लो। घेर घुमेर। ठौड़ ठौड़ माथां भूमै। गोट रै च्यारूं मेर एक गोळ चांतरो। आठ दसेक मूंणां भरी। पीढ़ा माथै एक रूपाळी डावड़ी बैठी। बटाऊवां नै पांणी पावण सारू।—फुलवाड़ी

वि०वि—ये मूंण दो प्रकार की होती है, एक घड़े के तरह छोटे मुंह की और दूसरी बड़े मुंह की। यह प्राय: जल संग्रह करने या दूर से गाड़ी पर रख कर पानी लाने के काम आती है। संग्रहार्थ कोई अन्य पदार्थ भी इसमें रख दिये जाते हैं।

रू०भे०—मूंणि, मूण,

अल्पा०—मूंणियो।

२ देखो 'मोण' (रू. भे)

मूंणि—देखो 'मूंण' (रू. भे.)

उ०—छळती छिक मूंणि गरास छकै, भर पूंगू पुलाव कवाव भखै गहलो घट पिंड प्रतीत गयो, घर नै नभ मूंढ घमंड घणी।—मे. म.

मूंणियो—देखो 'मूंण' (अल्पा., रू. भे.)

मूंत—देखो 'मूत' (रू. भे.)

उ०—आवै देस उवाक थूक रा मेचा थाया। उतरया सूत अणूंत मूंत रेला नह माया।—ऊ. का.

मूंतणियो—देखो 'मूतणो' (अल्पा., रू. भे.)

मूंतणो—देखो 'मूतणो' (रू. भे.)

मूंतणो, मूंतबो—देखो 'मूतणो मूतबो' (रू भे)

मूंतणहार, हारो(हारी), मूंतणियो—वि०।

मूंतिओड़ो, मूंतियोड़ो, मूंत्योड़ो—भू० का कृ०।

मूंतीजणो, मूंतीजबो—कर्म वा०।

मूंतरणो—देखो 'मूतणो' (रू. भे)

मूंता—देखो 'मुंहता' (रू. भे.)

उ०—बीन रै मूंता परवार में कोंगे ही जमीन पर पग नी टिकै। लालैजी रै वडै, पढ्यै लिख्यै मूंतां लागतै बेटै रै ब्याह री सगळा, बडाई-लाड कोड तथा सरावण करै है।—दसदोख

मूंतियोड़ो—देखो 'मूतियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री० मूंतियोड़ी)

मूंदड़ी—सं०स्त्री० [सं०मुद्रिका] १ हाथ की अंगुली की अंगुठी, मुद्रिका।

उ०—१ रंगीळी चंग बाजणू, चंग घांगळियां वाजे। चग मूंदड़ियां वाजे, चंग पूंचै के बळ वाजे।—लो. गी.

उ०—२ नाई रै मूंडा री आ वात सुण राजाजी इत्ता राजी व्हिया के वणनै अमोलक नग जड़ी मूंदड़ो उतार वगसीस में देदी।
—फुलवाड़ी

उ०—३ ताहरां फूलजो कागळ लिख दीयो। हाथ री मूंदड़ी दीन्ही छै।—लाखा फूलांणी री वात

उ०—४ बाजूबंद मूंदड़ी अंगुळी, नखसिख गहणों साटां। पहर कूबड़ी न्हावण चाली, जळ जमना कै घाटां।—मीरां

२ पितृ कार्य करते समय पहनी जानी वाली कुश की अंगुठी।

रू०भे०—मुंदड़ी, मुंदरी, मुंद्रड़ी, मुद्रड़ी, मुद्रडी, मूंदरी, मूंदली, मूंद्रड़ी, मूदड़ी, मूदरी ।

अल्पा०—मुंदरड़ो, मूंदरड़ी,

मह०—मुंदड़उ

मूंदड़ो—देखो 'मूंदड़ी' (मह., रू. भे.)

उ०—१ मोज कड़ां मूंदड़ां गजां गामां तोखारां । पंच ठांम अंबरां जरी जांमां जर तारां ।—रा. रू.

उ०—२ मोतीयां मूंदड़ां कड़ां जनेऊ जड़ा व मालां । ओपै बींद राजा यमी पोसाकां अनेक ।—मयारांम दरजी री वात

मूंदणौ, मूंदवौ—क्रि०स० [सं०मुद्रण] १ वंद करना, मीचना । (आंखें)

उ०—१ आकूळत व्याकुळत चलत नह आंवणौ । पीव किण भांत आरांम पांमै । सुकरदे सकरचा नैण मूंदै सची । नागणी नाग सिर घडा नांमै ।—महारांणा राजसिंह री गीत

उ०—२ जिणनूं सुपनैं देखती प्रगट भए प्रिव आइ । डरती आंख न मूंदही, मत सुपनउ हुय जाइ ।—ढो. मा.

उ०—३ संत कांई जवाब देवता । आंख्यां मूंदनै माळा फेरण लागा । विचाळै ई दांत पीसता बोल्या—ठाकुरजी रै सांमी-ऊभौ थूं ठाकुरजी नै ई भांडै, थनै सराप लागैला ।—फुलवाड़ी

२ किसी छेद या विवर को वंद करना, सूराख वंद करना ।

उ०—मेरी गई पुकार सब ज्यूं समंद में बूंद । सुणी न एको सांवळा, कांन रहे हो मूंद ।—गजउद्धार

३ ढकना, आच्छादित करना, आवेष्ठित करना ।

४ अंत करना, समाप्त करना ।

मूंदणहार, हारौ(हारी), मूंदणियौ—वि० ।

मूंदिओड़ो, मूंदियोड़ो मूंद्योड़ो—भू० का० कृ० ।

मूंदीजणौ, मूंदीजवो—कर्म वा० ।

मुंदणौ, मुंदबौ—अक०रू० ।

मुंद्रणौ, मुंद्रवौ, मूंधणौ, मूंधबौ—रू०भे०

मूंदरड़ी मूंदरी—देखो 'मूंदड़ी' (रू. भे.)

उ०—१ पदक प्रियु तउ हूं मोतिन माला । हीरउ तउ हूं मूंदरड़ी रे बहिनी ।—स. कु.

उ०—२ द्रुम तळै वाग अमोक दरसै प्रगट परसै पाव । तो कपरावजी कपराव करदे मूंदरी कपराव ।—र. रू.

मूंदली—देखो मूंदड़ी' (रू. भे.)

मूंदियोड़ौ—भू० का० कृ०—१ वंद किया हुआ. मीचा हुआ. (नैत्र) २ छेद: सुराख या विवर बंद किया हुआ. ३ आच्छादित या आवेष्ठित किया हुआ, ढका हुआ. ४ अंत किया हुआ. समाप्त किया हुआ ।

(स्त्री० मूंदियोड़ी)

मूंद्रड़ी—देखो 'मूंदड़ी' (रू, भे.) (व. स.)

मूंध—देखो 'मुग्ध' (रू. भे.)

उ०—१ चौड़े चंड मंडां चवी, संभ आगळि सकाज । मोहण वेली अध नयण, मूंध अजब महाराज ।—मा. वचनिका

उ०—२ स्त्री की केती जाति, कहि न राघव सुविचारी । रूपवत पतिव्रता, मूंध सोहइ सुपियारी ।—प. च. चौ.

उ०—३ जउ तूं साहिव नावियउ, सावण पहिली तीज । बीजळ तणइ झबूकड़इ, मूंध मरेसी खीज ।—ढो. मा.

मूंधणौ, मूंधवौ—देखो 'मूंदणौ, मूंदवौ' (रू. भे.)

मूंधणहार, हारौ (हारी), मूंधणियौ—वि० ।

मूंधिओड़ो, मूंधियोड़ो, मूंध्योड़ो—भू० का० कृ० ।

मूंधीजणौ, मूंधीजबौ—कर्म वा० ।

मूंधारौ—देखो 'मुंअंधारौ' (रू. भे.)

मुंधौकांटौ—सं० पु०—ऊंधा कांटा नामक पौधा ।

मूंन—देखो 'मून' (रू भे.)

उ०—१ जद रुघनाथ जी बोल्या-म्हैं तो साध हां । म्हारै कठै कहणो है रे ? म्हारै तो मूंन है ।—भि. द्र.

उ०—२ पण घणी ताळ तांईं मूंन रांखणी ई उणरै वसरी वात नीं ही । हिवड़ा में ओल्योड़ी मन री अखूट दरद आखरां री रूप धार माडांणी रळक पड़ची ।—फुलवाड़ी

मूंनाळ—१ देखो 'मुंहनाळ' (रू. भे.)

२ देखो 'मोहनाळ' (रू भे)

मूंनी—देखो 'मुनि' (रू. भे)

उ०—मोहणी कंमळा मूख मूंनी । नमो घोम धूतारणी संभ धूनी ।—मा. वचनिका

मूंफाड़,मूंफाड़ौ—सं०स्त्री० यौ०—दोनों होठों के बीच का मुख आयतन । मुख के विवर का बाहरी भाग ।

उ०—१ आ कैयनै वौ पूरी मूंफाड़ फाड़ नै हंसियौ ।—फुलवाडी

उ०—२ भीरू आरातुर मूंफाड़ा भाजै । वैतां फुरणां रा फूंफाड़ा वाजै ।—ऊ. का.

रू० भे०—मूफाड़,

मूंवती,मूंवत्ती—१ देखो 'मुंहपत्ती' (रू. भे.)

२ देखो 'मोमवत्ती' (रू. भे.)

मूंम—देखो 'मोम' (रू. भे.)

उ०—धूंहरि पडय अथाह ते विरहांनल नो धूम । वेगा जावौ कोई पिघलावौ, प्रिय मन मूंम ।—घ. व. ग्र.

मूंमांणी—देखो 'मांमांणी' (रू. भे.)

मूंमारकी—देखो ममारखी' (रू. भे.)

मूंमांरखी—देखो 'ममारखी' (रू. भे.)

उ०—१ बीकानेर रावजी नूं मेल्हिया, कोट फतेह कियां री मूंमांरखी सो मेल्ही ।—ठा. जे.

उ०—२ सारै लोग मूंमारखी दीवी —गौड गोपाळदास री वारता

उ०—३ सांरा ठाकुर गढ ऊपर जाय महाराज नूं खबर मूंमांरखी मेल्ही ।—मारवाड़ रां अमरांवां री वारता

मूंमीठो. मूंमीठौ—देखो 'मुंहमीठौ' (रू. भे.)

उ०—कोड़ां में सपूत रो कोड, करदला में ज्यूं जेसलमेरी टोड जिया जगत जस में वाजींदा है, वियां ही गरब गांव में मूंमोठे ताई घड़ी खड़ वेगराज जी मूंर्तं रो नांव सिवरण सिरै अर नांम जादीक हो रैयो है।—दसदोख

मूंया-सं० पु०—राठौड़ वंश की एक उप शाखा।

मूंरो—देखो 'मोरी' (रू. भे.)

मूंळ—देखो 'मूळ' (रू. भे.)

मूंळी—देखो 'मूळी' (रू. भे.)

मूंवो-वि०—१ मृत, मरा हुवा।

उ०—१ परवार गयो पिस्तावणौं करूं न मूंवां कंथ रो। म्हांरो महा दुःख मेट दें, भलो हुवे भगवंत रो।—ऊ. का.

२ देखो 'मूंडो'(रू. भे.)

उ०—भडांणे रो मूंवो, सर लूणासर ग्रांम री सवाल, मारजा रो हाल हुकम बांणिया भूपाल।—दसदोख

मूंसणो, मूंसवो—देखो 'मूसणो, मूसवो, (रू. भे.)

उ०—१ उत्तम मूसे एक झड़, मध्यम दूहा मूंस। अधम गीत मूंसे अडर,त्रिविध कुकवि विण तूस।—वां. दा.

मूंसणहार, हारो(हारी), मूसणियो—वि०।

मूंसिश्रोड़ो, मूंसियोडो, मूंस्योड़ो—भू० का० कृ०।

मूंसीजणो मूंसीजवो—कर्म वा०।

मूंसल—देखो 'मूसल' (रू. भे.)

उ०—लीकां कुळ लोपी जगत न जोपी, खोपी में खावंदा है। जरकावण जोगा मूंसल मोगा, गोगा गुरु गावंदा है।—ऊ का.

मूंसळी, मूंसली—देखो 'मूसळी' (रू भे)

उ०—मरडा मोगरि मूंसली तापस तेली कद। पाजण क्षीर कपूरीश्रा चंद चमारी चंद।—मा. कां. प्र.

मूंसारो-सं० पु०—चोर।

उ०—कोई मूंसारो मूंसी गयो। कंचु कसण ते लंक की वेढ।

—बी. दे

मूंसाळ—देखो 'मोसाळ' (रू. भे.)

मूंसो-सं० पु०[अ० मूसा] १ यहूदियों के एक पैगंबर, हजरत मूसा।

२ चूहा।

उ०—चीटीं के मुख मेर समांना मूंसै गिली मजारी। दादुर सरप समद में डारया, लोंकी परि असवारी।—ह. पु. वां.

मूंह, मूंहई—देखो 'मुख' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—मूंछा डाढी मूंह फूंकदे बाले फीटा। धुक धुक दे नित धुवां काळजा करदे कीटा।—ऊ. का.

मूंहगो—देखो 'मूंगो' (रू. भे.)

उ०—वाई ऐ जोऊं म्हारा वीराजी री बाट ए, माहेरो मूंहगा मोल रो।—लो. गी.

मूंहडउ—देखो 'मूंडो' (रू. भे)

उ०—मांणस मांरि मांस ले मूंकइ, रिखिदत्ता नइ पासि रे। लोही सुं मूंहडउ वलि लेपइ, आवी निज आवासि रे।—स. कु.

मूंहडो—देखो 'मूंडो' (रू. भे.)

उ०—जद स्वामीजी कह्यो-म्हैं तो यूं न कहां-मूंहडो दीठां स्वरग नरक जाय विण थांरी कहिणी रे लेखे थांरो मूंहडो तो म्हैं दीठो सो मोक्ष ने देवलोक तो म्हैं जास्यां। अने म्हांरो मूंहडो थे दीठो सो थांरी काहिणी रे लेखे थांरे पानैं नरक ईज पड़ी।—भि. द्र.

मूंहनाळ—१ देखो 'मुंहनाळ' (रू. भे.)

२ देखो 'मोहनाळ' (रू. भे.)

मूंहो—देखो 'मुख' (रू. भे.)

उ०—पत मेड़ता समर पत साहां, अणियां मूंहे दीध उझेल। वीरमदेव आवतां वांसै, अन रावां पायो ऊवेल।

—राव वीरमदेव मेड़तिया राठौड़ री गीत

मू—१ देखो 'मूं' (रू. भे)

उ०—१ वंसि तू सूर वसि मू वीक नेजे संग्रह घातउं निभीक। वरन-विय राइ हाकलि व्रहास, नेठहिय तुगी निम्रेड़ि नास।—रा.ज.सी

उ०—२ म मगि कीचक कूड निकालिजा, मरी य मू करि मूढ म जालिजा।—सालिसूरि

२ देखो 'मु' (रू. भे.)

मूअणो, मूअवो-क्रि० अ० [सं०-मृतं] प्राणान्त होना, देहावसान होना, मरना।

उ०—१ मा मूई जब एहनी, तब ए लघुतर बाल रा०। पय पाई मोटो कियो, एम कहै भूपाल रा०।—वि. कु.

उ०—२ उत्तम कुमर किहां अछै, आगलि कहि व्रतांत। जीवै छै किंवां मूओ, भांजि भांजि मन भ्रांत।—वि.कु.

उ०—३ नलनि नरति नथी जाणातो, जीवि छि के मूओ। वलतु समाचार नथी रे, यहि निसा थ्यु जूओ।—नलाख्यांन

मूअणहार, हारो (हारी), मूअणियो—वि०।

मूओड़ो—भू० का० कृ०।

मूईजणो, मूईजवो—भाव वा०।

मूअळी—देखो 'मूमळी' (रू. भे)

मूईमाटी-सं० स्त्री०—१ लाश, शव, मृत शरीर।

२ मरे हुए प्राणी का मांस।

मूउ—देखो 'मूंवो' (रू. भे.)

उ०—आकुलउ अति सुयोधन हूउ। कउण जीवइ किहां कुण मूउ।

—सालिसूरि

मूओड़ो-भू० का० कृ०–मरा हुआ, मृत।

(स्त्री० मूओड़ी)

मूओ—देखो 'मूंवो' (रू भे.)

मूक-वि० [सं०] १ जो वांणी से रहित हो, बोलने में असमर्थ हो, वाणीहीन, गूंगा।

२ जो कुछ बोलना नहीं चाहता हो, मौन हो, चुप हो, शान्त।

उ०—हुड़ सो कायर रण हुवै,मह चोढां सह मूक। वाहे रावत ही

वधा, रग रग कटतां रूक ।—रेवतसिंह भाटी
३ श्रावाक्, स्तंभित ।
४ विवश, लाचार ।
५ दीन, अभागा ।
६ पागल, मूर्ख । (ह. नां. मा.)
७ मौनी ।
सं०पु० [सं०मूकः] १ दानव, दैत्य, राक्षस ।
२ गूंगा या मूक व्यक्ति ।
३ हिरण्य कशिपु के वंश का एक राक्षस, जो सुंद एव ताटका का पुत्र था ।
४ तक्षक वंश का एक नाग, जो जनमेजय के सर्प सत्र में दग्ध हुआ था ।
५ एक चाण्डाल, जो अत्यन्त मातृ एवं पितृ भक्त था ।
६ एक दानव जो इन्द्रकील पर्वत पर रहता था ।
७ मछली ।
रू०भे०—मुक्क, मुगउ,

मूकणौ, मूकबौ—क्रि०स० [सं०मुक्त, प्रा०मुक्कणी सं०मोक्तव्यं, मोच्यं]
१ परित्याग करना, त्यागना, तज देना, छोड़ देना ।
उ०—१ कोड़ प्रकारां खून कर. मूकै नहीं मुकांम । घेरा सूं पीरस घणौ, केहर केरा कांम ।—वां.दा.
उ०—२ भूपाळ भिडै भीमेण छळि,अच्छर मोह मूक्यौ सबळ अंतरह जोति अविणास यह, गयौ भेद सूरज-मंडळ ।- गु. रू. वं.
उ०—३ रंग भीम उतंग सुढ़ ळै. रौदां मारुत मूकै मांण । मदमूक महाबळ प्रंम परध्वळ बारामास वसांण ।—मा. वचनिका
उ०—४ श्रासै पासै लोक मिल्या तेह निसुणी कूक । कूड़ै चित्त सती पग रोवै प्रीय गयौ मुझ मूक ।—घ व. ग्रं.
उ०—५ मन वसियौ वइराग हो राजेस्वरजी, मूकी हो माया ममता मोहनीजी ।—स.कु.
२ फेंकना, चलाना, छोड़ना ।
उ०—मूकै सर हैक ताडका मारी चंड सुबाहु हणे कर चाव । जिग कियौ धनुख भंग जालम, रंग भुजां थारा रघुराव ।—र.रू.
३ घटाना, मिटाना, लोपना, छोड़ना ।
उ०—१ उरड़ै दळ समहर उदमादा । मूकी किर सांमंदा म्रजादा ।
—सू. प्र.
उ०—२ कलियांणीत भाजत कटकै, अरि अंत देखि वचत जो अंग । मेरू चलत म्रजा दधि मूकत पळटत तरण पंकत घर पंग ।
—महेस कल्यांणीत सांखला री गीत
उ०—३ ऊंधौ मुख दस मास गरभ में, असुचि तणी पिंड वाधौ रे । नीसरियौ जब दुख विसरियौ मूक दीनी मरजादी रे ।—जयवांणी
४ बंधन मुक्त करना, आजाद करना, छोड़ना, मुक्त करना ।
५ दूर करना, अलग करना, हटाना ।
उ०—अहिडी अमनि नवि भारि अपूरव अमनि जांणी । राजा तुहि मूकि नहीं ते सुणतां अम्रत वांणी । हंसि हरिनूं समरण कीधूं तूं छि दीनानाथ, कठिण थयु रा नथी मूक तु अही रहु छि हाथ ।
—नलाख्यांन
६ तय करना, निश्चित करना, निपटाना. सलटाना ।
७ भेजना, पठाना ।
उ०—१ ताम साह (ह) जिहंगीर, लिखे मूक्यौ परमांणौ पळ खूटो खुरसांण, सब्बळा अजुं खूमांणौ ।—गु. रू. वं.
उ०—२ मूक्या लिखी दाराब उतांमळ । खाना सांमुहा कागळ ।
—गु. रू. वं.
उ०—३ कहीयौ जी म्हारा घर सुं उठीया, म्हारी वाइर थांनुं मूकीया तै म्हारी वडाई ।—चौबोली
उ०—४ ताहरां ऊदी कहै—सिखरैजी री बेटी थांह—रै बेटै नूं दीनी छै । देव उठियां पछै बांभण मूकां छां पधारिज्यौ ज्यूं परणावां ।
—ऊदै उगमणावत री वात
उ०—५ मया करीनै मूकजो कुसळ खेमना लेख । लीला पति लख जो वळी. स्माचार सू विसेख । —ढो. मा.
८ प्रदान करना, देना ।
९ झोंकना, डालना, पटकना, छोड़ना ।
उ०—त्रिण मूकत झाळ उठै तरसै । रिण माझि पतंग पड़ै हरसै ।
—मा. वचनिका
१० तोड़ना ।
११ रखना, धरना, टिकाना ।
१२ (उच्छ्वास) निकालना, छोडना ।
उ०—खरौ हो अयांणउ उफिरई, आठमौ ठांव रवि वारमौ राहु । ग्रह गणतौ अतिहि वीरा, सिर धुणी मूका छइ धाह ।—बी. दे.
१३ अंकुरित करना, निकालना (पत्ते) ।
मूकण हार. हारौ (हारी). मूकणियौ—वि० ।
मूकिओड़ौ, मूकियोड़ौ, मूक्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
मूकीजणौ, मूकीजबौ—कर्म वा० ।
पमूंकणौ, पमूंकबौ, पमूकणौ, पमूकबौ, पमूखणौ, पमूखबौ, पिमूकणौ, पिमूकबौ, प्रमुकणौ, प्रमुकबौ, प्रमुक्कणौ, प्रमुक्कणौ, प्रमूकणौ, प्रमूकबौ, मुंकणौ, मुंकबौ, मुक्कणौ, मुक्कबौ, मुहकणौ, मुहकबौ मूंकणौ, मूंकबौ, मोकणौ, मोकबौ,—रू०भे० ।

मूकता—सं०स्त्री०—१ मूक होने की दशा, अवस्था या भाव ।
२ गूंगापन ।

मूकपाहाड़—सं०पु०—देखो 'रिमीमूक' ।
उ०—दनां दाखियौ मूकपाहाड़ देखो । प्रभू पंच जोधा महासूर पेखो ।
—सू०प्र०

मूकरड़ै—देखो 'मुकरड़ै' (रू. भे.)

मूकाणौ, मूकाबौ—क्रि०स० ['मूकणौ' क्रिया का प्रे०रू०] १ परित्याग करवाना, त्याग करवाना, छुड़वाना ।

२ फेंकवाना, चलवाना, छुड़वाना ।
३ घटवाना, मिटवाना, लोपाना, छुड़वाना ।
४ बंधन–मुक्त कराना, आजाद कराना, छुड़ाना, मुक्त कराना ।
५ दूर करवाना, अलग करवाना, हटवाना ।
६ तय कराना, निश्चित कराना, निपटवाना, सलटवाना ।
७ भिजवाना, पठवाना ।
८ प्रदान करवाना, दिरवाना ।
९ झोंकाना, डलवाना, पटक वाना, छुड़वाना ।
१० तुड़वाना ।
११ रखवाना, घरवाना, टिकवाना ।
१२ अंकुरित कराना, निकलवाना (पत्ते)
मूकाण हार, हारौ(हारी), मूकाणियौ - वि० ।
मूकायोड़ो—भू० का० कृ० ।
मूकाईजणौ, मूकाईजवौ—कर्म वा० ।
मुंकाणौ, मुंकावौ, मुंकावणौ, मुंकाववौ, मुकाणौ, मुकावौ, मुकावणौ, मुकाववौ, मूंकाणौ, मूंकावौ, मूंकावणौ, मूंकाववौ—रू०भे० ।

मूकायोड़ो–भू० का० कृ०—१ परित्याग करवाया हुआ, त्याग करवाया हुआ,छुड़वाया हुआ. २ फेंकवाया हुआ,चलवाया हुआ,छुड़वाया हुआ. ३ घटवाया हुआ. मिटवाया हुआ, लोपाया हुआ, छुड़वाया हुआ. ४ बंधन–मुक्त कराया हुआ, आजाद कराया हुआ, छुड़ाया हुआ, मुक्त कराया हुआ. ५ दूर करवाया हुआ, अलग करवाया हुआ, हटवाया हुआ. ६ तय कराया हुआ निश्चत कराया हुआ, निपटवाया हुआ, सलटवाया हुआ. ७ भिजवाया हुआ, पठवाया हुआ. ८ प्रदान करवाया हुआ, दिरवाया हुआ. ९ झोंकवाया हुआ, डलवाया हुआ, पटकवाया हुआ, छुड़वाया हुआ. १० तुड़वाया हुआ. ११ रखवाया हुआ, घरवाया हुआ, टिकवाया हुआ. १२ अंकुरित कराया हुआ, निकलवाया हुआ ।
(स्त्री०मूकायोड़ी)

मूकावणौ, मूकाववौ—देखो 'मूकाणौ, मूकावौ' (रू. भे.) (उ. र.)
उ०—एक वार आगइ दैत्यघु रामइ रुद्र मूकाव्यउ । बीजी वार वळी वैरोचनि, भगति विसेख जणाव्यउ ।—कां. दे. प्र.
मूकावणहार, हारौ (हारी), मूकावणियौ—वि० ।
मूकाविओड़ो, मूकावियोड़ो, मूकाव्योड़ो—भू० का० कृ०
मूकावीजणौ, मूकावीजवौ—कर्म वा० ।

मूकावियोड़ो—देखो 'मूकायोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री० मूकावियोड़ी)

मूकि—देखो 'मुक्की' (रू. भे.)

मूकियोड़ो–भू० का० कृ०—१ परित्याग किया हुआ, त्यक्त, छोड़ा हुआ. २ फेंका हुआ, छोड़ा हुआ, चलाया हुआ ३ घटाया हुआ, मिटाया हुआ, लोपा हुआ. ४ बंधन मुक्त किया हुआ,आजाद किया हुआ, छोड़ा हुआ. ५ दूर किया हुआ, अलग किया हुआ, हटाया हुआ. ६ निश्चित व तय किया हुआ. निपटाया व सलटाया हुआ. ७ भेजा हुआ, पठाया हुआ ८ प्रदान किया हुआ, दिया हुआ. ९ झोंका हुआ, डाला हुआ, पटका हुआ, छोड़ा हुआ. १० तोड़ा हुआ. ११ रखा हुआ,धरा हुआ, टिकाया हुआ. १२ (उच्छ्वास) निकाला हुआ. छोड़ा हुआ. १३ अंकुरित किया हुआ, निकाला हुआ । (पत्ते)
(स्त्री० मूकियोड़ी)

मूकीं, मूकी—देखो 'मुक्की' (रू. भे.)
उ०—१ जोर प्रबळ तन सबरजो, सबळ पकड़लै सींह । दुसमण रौची भांजदै महिंग एक मूकींह । पा. प्र.
उ०—२ हे कंथ थे भागळ बण युद्ध सूं जीवना आय कांई कीधौ । इयूं कह हाय हाय कर बळती थकी छाती में दोनूं हाथ हूमिया छाती में मूकीयां वाही ।—वी. स. टी.

मूको—देखो 'मुक्को' (रू. भे.)

मूक्को—देखो 'मुक्को' (रू. भे.)

मूक्की—देखो 'मुक्की' (रू. भे.)

मूक्ता—देखो 'मुक्ता' (रू. भे.)

मूख—देखो 'मुख' (रू. भे.)
उ०—नमो मोहणी कमळा मूख मूंनी । नमो योग भूतारणी संभ धूनी ।—मा. वचनिका

मूखक—देखो 'मूसक' (रू. भे.) (अ. मा.)
उ०—मन दुसह दुहुं विध माहरै. असह वार लगै इसी । मुख लियां कठण न गैंद्र मनु, जग सदोख मूखक जिसी ।—रा. रू.

मूखमल, मूखमलू—देखो 'मखमल' (रू. भे.)
उ०—बरणू बरणू के विलास सेतु में कायम आरसी से मंजुल मूखमलू से मुलायम बरबाग के सांचे पंचराउ री चाव... ।
—र. रू.

मूखौ—देखो 'मुख' (रू. भे)
उ०—देखि जठांणी लागौ छइ जेठ । मूखौ कुंमलांणौ अरि सूकइ छइ होठ ।—बी. दे.

मूगता—देखो 'मुक्ता' (रू. भे.)

मूगताफळ. मूगताहळ—देखो 'मुक्ताफळ' (रू. भे.)

मूगनउ–सं० पु०—एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।
उ०—वीणउसीउं चीणउंमीउं मलउसीउं आउंचीयउं मूगनउं मयउं मगलिकं मेदियउं ··· ।—व. स.

मूगळ—देखो 'मुगळ' (रू. भे.)
उ०—१ मुखै चख चोळ महप मजीठ । धबोड़त सावळ मूगळ धीठ ।—सू. प्र.
उ०—२ मत्रां दळ मूगळ सैयद सेख । वर्णं ग्रह बाज कबूतर वेख ।
—मे. म.

मूगळी—देखो 'मुगळी' (रू. भे.)
उ०—मूगळी घड़ा आवइ मजूस । जासूस फिरइ पसत जापूस ।
—रा ज. सी.

मूगीग्रौ, मूगीयौ—देखो 'मूंगियौ' (रू. भे.)

उ०—ग्रमरीग्रां सूहवीग्रां मूगीग्रां चलवलीग्रां चारूलीग्रां… ।
—व. स.

मूगेड़ौ, मूगोड़ौ—देखो 'मूंगोड़ौ' (रू. भे.)

मूघौ—देखो 'मूंगौ' (रू. भे.)

उ०—ग्राठ सिध थापणी थाळ ग्रासाऊवां, ग्रापणी माळ नवनिध ग्रनूंधा । रिधव रूक दे मूघां न व्है रायहर, सकत सूंवा तणी राय सूंधा ।—दळपत बारैठ

मूचौ—देखो 'मूछौ' (रू. भे.)

उ०—चालू बात रै भच मूचौ देय बोली—पूंख खायां नै केई जुग बीतया ।—फुलवाड़ी

मूछ—देखो 'मूंछ' (रू. भे.)

मूछड़ी—१ देखो 'मूंछ' (ग्रल्पा., रू. भे.)
२ देखो 'मोछड़ी' (रू. भे.)

मूछण-सं०स्त्री०—१ छीलने या काटने की क्रिया या भाव ।
२ भोजनोपरान्त मुंह साफ करने की क्रिया या भाव ।
३ भोजनोपरान्त मुंह साफ करने निमित खाया जाने वाला पान सुपारी, इलायची ग्रादि पदार्थ ।

उ०—पछै गंगजलां सुं इलायची, कपूर वासता जल सुं मनुहारै मनुहार चळु किया । उपरा पांन कपूर, फाल, कसतूरी, लूंग सुं मूछण कराया ।—राव रिणमलरी बात

४ शराब पीते समय व ग्रफीम लेने के बाद मुंह का स्वाद बनाने के लिये खाया जाने वाला पदार्थ, चुर्वन ।

रू० भे० मूंछण, मोछण,

ग्रल्पा.,—मूंछणियौ, मूंछणी

मूछणौ, मूछबौ–क्रि० स०—१ लकड़ी ग्रादि के छोर या सिरे को कारीगरी से काट कर बराबर करना छीलना ।
२ काटना ।

उ०—ग्ररावां घड़ड़ झालै नगा 'फता'वत मेघ भीना ग्रतर समर विच मूछता । पमर घर डमर दुनियां पतोजा, वगर खागां पड़ै 'ग्रगर' बीजा ।—ग्रज्ञात

मूछणहार, हारौ (हारी), मूछणियौ—वि० ।

मूछिग्रोड़ौ मूछियोड़ौ, मूछ्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

मूछीजणौ, मूछीजबौ—कर्म वा० ।

मूंछणौ मूंछबौ मूंछणौ, मूंछबौ —रू० भे० ।

मूछरेल, मूछरैल—देखो 'मूंछाळ' (रू. भे.)

उ०—तैही लंक सांगा सी जोजनां गिर्णं तूछरेळ । मूछरेल ग्रढांगा ग्रयारां मेल मीच ।—र. ज. प्र.

मूछाणौ, मूछाबौ–क्रि० स० ['मूछणौ' क्रिया का प्रे० रू०] १ लकड़ी ग्रादि के छोर या सिरे को कारीगरी से कटवाकर बराबर करवाना, छीलवाना ।
२ कटवाना ।

मूछाणहार, हारौ (हारी), मूछाणियौ—वि० ।

मूछायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

मूछाईजणौ, मूछाईजबौ —कर्म वा० ।

मुंछाणौ, मुंछावौ, मूंछाणौ, मूंछावौ—रू० भे० ।

मूछायोड़ौ–भू० का० कृ०—१ लकड़ी ग्रादि के छोर या सिरे को कारीगरी से कटवा कर बराबर करवाया हुग्रा. २ कटवाया हुग्रा ।
(स्त्री० मूछायोड़ी)

मूछाळ—देखो 'मूंछाळ' (रू. भे.)

उ०– तो काळा सरप रा बर में बिल में ऊंदरा ही बड़ै है । उठै इज चेजौ करै सो मूंसा ही कहदे ही कै म्हेई मूछाळ मूछां वाळा हां ।—वी. स. टी.

मूछाळी—देखो 'मूंछाळी' (रू. भे.) (ना. डि. को.)

मूछाळौ—देखो 'मूंछाळ' (ग्रल्पा , रू. भे.)

उ०—ग्राव्या सुणी म्लेछ मूछाळा, रणि राउतवट कीधी । बतड भणइ पहिला घाउ लेसूं , ग्रन्न प्रतन्या लीधी ।—कां. दे. प्र.

मूछियोड़ौ–भू० का० कृ०—१ लकड़ी ग्रादि के छोर या सिरे को कारीगरी से काट कर बराबर किया हुग्रा, छीला हुग्रा. २ काटा हुग्रा ।
(स्त्री० मूछियोड़ी)

मूछियौ, मूछौ–सं० पु०—१ लकड़ी के शिरे की कारीगरी से को जाने वाली कटाई ।
२ तरास, कटाई ।
३ काटने की क्रिया ।

रू० भे०—मुच्छ, मूचौ,

मूज—देखो 'मूंज' (रू. भे.)

मूजणौ, मूजबौ—देखो 'ग्रमूझणौ. ग्रमूझबौ' (रू. भे.)

मूजाणौ, मूजावौ—देखो 'ग्रमूझाणौ, ग्रमूझावौ' (रू. भे.)

मूजाण हार, हारौ(हारी), मूजाणियौ—वि० ।

मूजायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

मूजाईजणौ, मूजाईजबौ—कर्म वा० ।

मूझाणौ, मूझावौ—रू० भे० ।

मूजायोड़ौ—देखो 'ग्रमूझायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री०मूजायोड़ी)

मूजिब—देखो 'मुजब' (रू. भे.)

मूजियोड़ौ—देखो 'ग्रमूझियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री०मूजियोड़ी)

मूजी–वि०—कृपण, कंजूस, सूम ।

मूझ—देखो 'मुझ' (रू. भे.)

उ०—१ म ठेल म ठेल पगां सुं मूझ । त्रिविक्रम राय दीनानाथ तूझ । जटाधर बंछै दैत जळाय । विमौहै रूप ग्रसाध्य वणाय ।
—ह. र.

उ०—२ मांगूं मुज दीजै चवि स्रीमुख । सरब राज सम तूळ मूझ सुख ।—सू. प्र.

उ०—३ कायर थाको दौड़कर, ससि सूं करै पुकार। अग ज्यूं मूझ वसावजै, मंडळ तणै मंझार।—बां' दा.

मूझणो, मूझवौ—देखो 'अमूझणो, अमूझवौ' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—१ मागन लाधै भांण रथ, रज डंबर घेरी। मांहे अग मूझै मरै, नह लम्भै सेरी।—द. दा.

मूझणहार, हारौ(हारी), मूझणियौ—वि०।

मूझिओड़ौ, मूझियोड़ौ, मूझ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

मूझीजणो, मूझीजवौ—भाव वा०।

मूझाणो, मूझावौ—१ देखो 'अमूझाणो, अमूझावौ' (रू भे.)

उ०—पूरण ग्यांन दसा मन आंणी, वेधक आंणी वखांणीजी। विवुध भणी अवबोध समांणी, मूरख मति मूझांणी जी।—वि. कु.

मूझाणहार, हारौ(हारी),मूझाणियौ—वि०।

मूझायोड़ौ—भू० का० कृ०।

मूझाईजणो, मूझाईजवौ—कर्म वा०।

मूझायोड़ौ—देखो 'अमूझायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री०मूझायोडी)

मूझियोड़ौ—देखो 'अमूझियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री०मूझियोडी)

मूझे, मूझै—देखो 'मुझे' (रू. भे.)

मूटी—देखो 'मुट्ठी' (रू. भे.)

उ०—मूट्यां सूं मसळतां पिसळतां डाढां पीसै। पोसत छांण' र पियै दसत रा दोसत दीसै।—ऊ. का.

मूठ—सं०स्त्री० [सं०मुष्टि] १ किसी उपकरण, औजार या शस्त्र का वह भाग जो हाथ में पकड़ा जाता है। दस्ता, बैंट।

उ०—१ आए सिंघ न डोलै अंगा। खग रख दोदो धनुख निखंगा। हेक बांण गज प्रांण प्रहारै, मूठ अपूठी 'केहर' मारै।—रा. रू.

उ०—२ पाधरी मूठ माथै हाथ गियो। सपाक करती वाढ़ाळी वारै काढी।—फुलवाड़ी

२ मुट्ठी।

उ०—१ जन हरीया मन मूठ गहि, सबद भळाका सांधि। काळ कुबिधि कुंमारियै, तन तरगस कु सांधि।

—स्री हरिरांमदासजी महाराज

उ०—२ चंदन केसर छिरकत मोहन, अपने हात बिहारी, भरि, भरि मूठ गुलाल लाल चहुं, देत सबन पै डारी।—मीरां

उ०—३ राव रै हाथ लाहोरी कवांण री छै। वड़ी खपरीयां रा तीर च्यार तो मूठ में छै और तरकस दोय होदा में छै।

—डाढाळा सूर री बात

३ मुट्ठी में आने लायक किसी पदार्थ की मात्रा।

४ जादू-टोना या तान्त्रिक षट कर्मों में से एक जिसके द्वारा किसी प्राणी को मारा जाता है, मारण।

उ०—१ पूजै कर कर पीर,घर घर नूते गांम में। वळै जगावै वीर, मूठ चलावै मोतियां।—रायसिंह सांदू

उ०—२ पूंगी नाळ गाजियो परवत, पंदरै सहस गारड़ी पूठ। फणधर डसण ऊठियो फौजां, मंत्र जड़ी लागै न मूठ।

—ऊकाजी बोगसौ

क्रि० प्र० आंणी, चलांणी, मारणी,

५ चोरी का माल। (उ. र.)

रू० भे०—मुठ, मूंठ, मूंठि, मूंठी, मूठि,

मूठडी—सं० स्त्री० [सं० मुष्टि] १ मुट्ठी के आकार की बाटी, जिसे सेक कर चूरमा बनाया जाता है।

२ मुट्ठी की धीमी चोट।

३ देखो 'मुट्ठी' (अल्पा., रू. भे)

उ०—माल्ह चलंतै परठिया, आंगण धीखड़ियांह। सोमो हियै लगाडिया, भरि भरि मूठडियांह।—अग्यात

रू० भे०—मूंठड़ी,

मूठदार—सं० पु०—१ पगड़ी को शिर पर बांधने का एक ढंग।

२ कोई उपकरण या शस्त्र जिसके मूठ लगी हो।

मूठरंदौ—सं० पु०—बढ़ई का एक उपकरण, जिसे हाथ में पकड़ कर लकड़ी साफ की जाती है।

मूठाणी, मूठावौ—देखो 'मुठाणी, मुठावौ' (रू. भे.)

मूठावणी, मूठाववौ—देखो 'मुठाणी, मुठावौ' (रू. भे.)

उ०—मूठावै खग मूठ, चालै भारत सांम्ह हौ। सूवेज खावी सूंठ, मात भलांई मोतिया।—रायसिंह सांदू

मूठाली—सं० पु०—तलवार। (डिं. को.)

मूठि—१ देखो 'मूठ' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—१ जर कंथा फाटै जोगेमां, साचां पांव मांहिया सेस। सार मूठि वावै गाजी सुत, अमर नाथ हाडा आदेस।

—अमरसिंह हाडा री गीत

उ०—२ रुखमइयां का बांण काटिया की तांई। सिस्ती बांधी। अणी मूठि द्रिढि एक सिस्ति की।—वेलिटी

२ देखो 'मुट्ठी' (रू. भे.)

मूठियौ—सं० पु०—१ काच, लाख, हाथीदांत आदि की बनी चूड़ियों का समूह जिसे औरतें हाथ की कलाई पर धारण करती हैं।

२ घास या चारे की मुट्ठी में समाने लायक मात्रा।

३ पशु की टांग का नीचे का भाग।

उ०— किसा हेक घोडा छै? वेपख भला, ऊचा अलला, कटोरा नखा, आरसी सारीखा, तिअंगळ गाळा मूठिया बोल फळा।

—रा. सा. सं.

रू० भे०—मुठियौ, मुठीयौ, मूंठियौ।

मूठी—देखो 'मुट्ठी' (रू. भे.)

उ०—१ जग थित झूठी जांणणी, मूठी भीड़ म रख्ख। माया मेवौ माडुवां चंगा चाखव चख्ख।—बां. दा.

उ०—२ सबरी के बोर सुदामा के तंदुल, भर भर मूठ्यां ढूकी।

—मीरां

उ०—३ गुलावी नख वंध्योड़ी मूठ्यां में जांणी आखी दुनियां ईं भींच्योड़ी ।—फुलवाड़ी

मूठी'क–अव्यय—मुट्ठी के बराबर, मुट्ठी के अनुपात में । मुट्ठीभर ।

रू० भे०—मुठीक,

मूड—१ देखो 'मूंड' (रू. भे.)

२ देखो 'मुंड' (रू. भे)

मूडणौ, मूडवौ—देखो 'मूंडणौ, मूंडवौ' (रू. भे.)

उ०—माया सब जग मूडीया, विनां पाछणै मुंड । जन हरीया विन मूंडीयां, रह्या रांम का रुंड ।—स्री हरिरांमदास जी महाराज

मूडणहार, हारौ (हारी), मूडणियौ—वि० ।

मूडिग्रोड़ौ, मूडियोड़ौ, मूड्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

मूडीजणौ, मूडीजबौ—कर्म वा० ।

मूडवर–सं० पु०—रावण । (अ. मा.)

मूडाणौ, मूडाबौ—देखो 'मूंडाणौ, मूंडाबौ' (रू. भे.)

मूडायोड़ौ—देखो 'मूंडायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० मूडायोड़ी)

मूडावणौ, मूडाववौ—देखो 'मूंडाणौ, मूंडावौ' (रू. भे.)

उ०—निस्कंटक राज्य प्रतिपालतां संग्रांम विसय कदाचित् उपजइ, विपखा व्रहदुरुखा सांचरिया, क्षेत्र मूडाविउं, विहुं गंभी सन्नद्धवद्ध नीपना''' ।—व. स.

मूडावियोड़ौ—देखो 'मूंडायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० मूडावियोड़ी)

मूडियोड़ौ—देखो 'मूंडियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० मूडियोड़ी)

मूडीकट—१ घोड़े की एक किस्म विशेष । (१)

२ उक्त किस्म का एक घोड़ा ।

उ०—लिखियौ हंतौ, असल मूडीकट छै दोय पख सुध छै । ऐराकी छै ।—हाहुल हमीर री वात

मूडो–सं० पु०—देखो 'मूड्डो' (रू. भे.)

२ देखो 'मूंडो' (रू. भे.)

उ०—सेठां नै पाछौ खरायनै पूछ्यौ आज तौ किणी भला आदमी रो मूडो जोयो, म्हनै पूरो राजी कर दिरावौला ? —फुलवाड़ी

३ देखो 'मोडौ' (रू. भे.)

उ०—धावणी द्रोड़रा, मूडा म्रिव ज्यौ कूदता, नज ज्यौं नाचता, कुळचता... ।—रा. सा. सं.

मूढ–वि० [सं०] जड़ वुद्धि, मति मन्द, मूर्ख. वुद्धि हीन, अनपढ ।
(ह. नां. मां.)

उ०—१ रांम नांम मत वीसरै आतम मूढ अयांण । काळ सकळ जग काटवा, कम ऊभो केवांण ।—ह. र.

उ०२ पढ़ियां विनां मूढ पग फावै, पढ़ियां विचै पुमाई नै । उण रै ढिग कोई रहै आदमी, तो क्योंहिक कसर कुमाई नैं ।—ऊ. का.

उ०—३ दरवाजा सूमां तणां. मूढां तणा हियाह । खुलिया । माथा पच कियां, सो नह सांभळियाह ।—वां. दा.

२ दुष्ट, दुर्वुद्धि, कुवुद्धि ।

उ०—१ समझ सठ आतम ज्ञान अग्यांनी माया वादी गूढ़ मसकरा मूढ़ महा घभिमांनी ।—ऊ. का.

उ०—२ मूढ जिकै गुरु मंत्र ज्यूं , चुगली स्रवण सुनंत । राग तांन रीझळ नहीं, ढोलो सीस धुनंत —वां, दा.

सं०स्त्री०—१ योग में, चित्त की एक वृत्ति

रू०भे०—मुड, मूडइ, मुढ, मुढ्ढ. मुरड़, मूंढ.

२ देखो 'मुंड' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

३ देखो मूंड' (रू. भे.)

मूढ़ गरभ–सं०पु०—१ वह गर्भ जो विकृत हो गया हो, ।

मूढ़ता–सं०स्त्री० [सं०] १ मूढ होने की दशा अवस्था या भाव ।

२ मतिमन्दता, मूर्खता, वुद्धिहीनता ।

उ०—१ भवाब्धिनाथ भावना, विभू नहीं विकारसी । मदीय में न मूढ़ता त्वदीय है न तारसी ।—ऊ. का.

उ०—२ राजा नै जितौ रांणी री समझ अर उण रै गुणां माथै भरासौ हो, रांणी नै उत्तौ ई राजा री नासमझी अर उण री मूढता माथै भरोसौ हो ।—फुलवाड़ी

३ नासमझी, वेवकूफी ।

उ०—तोडौ राव विकट मूढता री वात केरी ही अर वा ई उण री पार गी परी ,—फुलवाड़ी

४ असभ्यता ।

५ अज्ञानता ।

उ०—सुख री वातां माथै हरख मनावणी अर दुख री वातां माथै रोवणौ–रींकणौ आ तौ निपट मूढ़ता है ।—फुलवाड़ी

६ गंवारूंपन ।

उ०—पढै गुणै नहीं पेखवै, चारु हीं वरण निचिंत । मारवाड़ री मूढ़ता, मिटसी दोरी मित ।—ऊ. का.

मूढ़ौ—देखो 'मूंढो' (रू. भे.)

उ०—१ सूरज उगाळी धुनार सांमी मिळै, लोग मूंढौ फोरै, सांमै सिर सळ घालै ।—दमदोख

उ०—२ ग्यांन पथरणौं धरियो गूढां । मेली विद्या रजाई मूढा ।
—ऊ. का.

मूण—देखो 'मूंण' (रू. भे.)

मूणपठ्ठौ–सं०पु०—मूण के आकर से मिलता जुलता ।

उ०—घरां मोकळी खेती वाड़ी हुवै, वीणै रौ धमरोळ राखै । मीठा मीठा मूण-पठ्ठा मतीरा राजाजी तांई पुगावै अर मोधाव पावै ।
—दमदोख

मूणियड़—देखो 'मणियड़' (रू. भे.)

मूत–सं०पु० [सं०मूत्रम्] १ पेशाव, मूत्र ।

उ०—१ पाद तणो परवांन, गादरो सांप्रत गोटो । असुभ चले को अनुग, मूत रो भाई मोटो ।—ऊ. का.

उ०—२ बोली-ओ होक तो घण्यां ! घणी खमां ! अठै तो मूत देवता रो मिंदर मांडूं हूं ।—दसदोख

मुहा०—१ मूत उतरणौ = अत्यधिक डर या भय के कारण पेशाब कपड़ों में ही आजाना ।

२ मूत काढणौ = इतना मारना या डराना कि पेशाब आजाये ।

३ मूत निकलणौ = देखो 'मूत उतरणौ'

४ मूत निकालणौ = देखो 'मूत काढणौ'

५ मूत बंद होणौ = एक बिमारी है जिसके कारण पेशाब आना बंद होजाता है ।

६ मूत री धार माथै राखणौ = तुच्छ व हेय समझना ।

२ पेदाईश, वंशज ।

उ०—गांवां सहरां गोलणां, रहै हुआ रजपूत । लखणां सूं लख लीजिए, मुकर घणां रा मूत ।—बां. दा.

रू०भे०—मूंत, मूत्र, मूंत्रि ।

मूतणियौ—देखो 'मूतणौ' (अल्पा., रू भे.)

मूतणी—सं०स्त्री—मूत्रेन्द्रिय ।

मूतणौ—सं०पु०—मूत्रेन्द्रिय ।

उ०—रंग रो सफेद, कूंडळी सींगाड़ी, ओछी अर पतळी पूंछ, छोटो मूतणो ।—फुलवाड़ी

रू०भे० - मूंतणौ, मूंतरणौ.

अल्पा०—मूंतणियौ, मूंतरियौ

मूतणौ, मूतबौ—क्रि०स०—पेशाब करना, मूतना, लघुशंका करना ।

उ०—१ भळै थोडी देर हुई कं एक जणौ मूतण टुरियौ । डोकरी आंखियां फाड़ फाड़ जोयौ अर बोली—फगीदिया! ओ थारै कुण गयौ है ? मजूर मूतण गयौ है ।—वरसगांठ

उ०—२ ऐ बाबू लोग कदेई किणी रा न्हिया, बाढ़ी आंगळी माथै ई को मूतै नीं ।—फुलवाड़ी

मूतणहार, हारौ(हारी), मूतणियौ —वि० ।

मूतिओड़ौ, मूतियोड़ौ, मूत्योड़ौ —भू० का० कृ० ।

मूतीजणौ, मूतीजबौ—कर्म वा० ।

मुंतणौ, मुंतबौ, मूंतणौ मूंतबौ—रू०भे० ।

मूताणौ, मूताबौ—क्रि०स०['मूतणौ' क्रिया का प्रे०रू०] १ पेशाब करने के लिये प्रेरित करना पेशाब कराना, मूताना ।

२ बच्चे या किसी असमर्थ प्राणी को पेशाब करने में मदद करना।

मूताणहार, हारौ(हारी), मूताणियौ —वि० ।

मूतायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

मूताईजणौ, मूताईजबौ—कर्म वा० ।

मुताणौ. मुतावौ मुतावणौ, मुतावबौ—रू०भे० ।

मूतायोड़ौ—भू० का० कृ०—१ पेशाब करने के लिये प्रेरित किया हुआ, पेशाब कराया हुआ, मूताया हुआ ।

२ पेशाब करने में मदद किया हुआ ।

(स्त्री०—मूतायोड़ी)

मूतायौ—वि० [स्त्री०मूताई] जिसे पेशाब की हाजत या शंका हो, लघु शंका ग्रस्त ।

उ०—१ ना भाई! इयै कांग सुणं चाहे बियै, मनै तो इयां को पोसावै नी । तो माजी? तिसाया मूताया तो रयीजै ई कोनी ।—वरसगांठ

उ०—२ नाडा छोड़ करणी री जी में आई, जद मारग रै बिचाळै ही बैठगी मूताई ।—दसदोख

मूतियोड़ौ—भू० का० कृ०—पेशाब किया हुआ, मूता हुआ ।

(स्त्री०मूतियोड़ी)

मूती—सं०स्त्री० [सं०मूत्र] पेशाब. मूती ।

क्रि०प्र०—आंणी, करणी, लागणी, होणी,

रू०भे०—मुत्ति, मुत्ती,

मूत्र—सं०पु० [सं०मूत्रम्] वह पानी जो शरीर के विषैले पदार्थों को लेकर उपस्थ मार्ग से निकलता है, पेशाब, मूत । (ड. र.)

पर्या०—वस्तिमळ, मूत, मेह, स्रव ।

मूत्रकच्छ, मूत्रक्रच्छ—सं०पु० [सं०मूत्र कृच्छ्र] पेशाब का एक रोग, जिसमें पेशाब थोड़ा, थोड़ा, रुक–रुक कर तथा कष्ट के साथ आता है ।

उ०—१ जिण समय दिल्लीस साह जिहांन मूत्रक्रच्छ नामक महातंक रो प्रकोप थियो ।—वं. भा.

उ०—२ महोदर जलोदर कठोदर भगदर अतिसार मूत्रक्रच्छ उदरसूल हृदयसूल·······व. स.

मूत्रग्रह—सं०पु० [सं०] घोड़ों का एक रोग जिसमें घोड़े के पेशाब थोड़ा थोड़ा व झाग लिये हुऐ आता है।

मूत्रदसक—सं०पु०—दश प्राणियों के मूत्र का मिश्रण ।

वि०वि०—ये प्राणी इस प्रकार हैं—मनुष्य, स्त्री, गवा, भैंसा, घोड़ा, बकरा, गाय, ऊंट, मेंढा, हाथी ।

मूत्रविग्यान—सं०पु०पु [सं०मूत्र विज्ञान] आयुर्वेदीय मूत्रपरीक्षण विद्या।

मूत्राघात—सं० पु० [सं०] पेशाब सम्बंधी एक बीमारी ।

मूत्रासय—सं० पु० [सं० मूत्राशय] शरीर में नाभि के नीचे का वह स्थान जहां मूत्र संचित होकर बाहर निकलता है ।

मू'या—देखो 'महता' (रू. भे.)

मूद—सं० पु०—कुल्हाड़ी, कस्सी, कुदाली, फावड़ा इत्यादि का पृष्ठ भाग ।

रू० भे०—मूंड

मूदड़ी—देखो 'मूंदड़ी' (रू. भे.)

उ०—मरद पवसाख भूसण कड़ा मूदड़ी, कंठ डोरो मुरति लवंग कांनां ।—मे. म.

मूदड़ौ—देखो मूंदडौ (रू. भे.)

उ०—मोती का कडा मूदड़ा माळा, पेसां गांम पटाला । वेगागळ देवाळ वडाळा, साज बाज सिखराला ।—अग्यात

मूदणौ, मूदबौ—देखो 'मूंदणौ, मूंदबौ' (रू. भे.)

उ०—चित फूळ भ्रम छांडै गुरु गम गाडै, माडै चख मूदंदा है ।

चांमर कर चोळा भांमर भोळा, पांमर पद पूजंदा है।—ऊ. का.

मूदति, मूदती—१ देखो 'मुदित' (रू. भे.)

२ देखो 'मदद' (रू. भे.)

३ देखो 'मुद्दत' (रू. भे.)

मूदरा—देखो 'मुद्रा' (रू. भे.)

उ०—कांन न मूदरा मेखळा, भसम न अंग घसै।

—स्री हरिरांमदास जी महाराज

मूदौ—देखो 'मुदौ' (रू. भे.)

उ०—आवियै जेण संसार री व्है उदौ, मूदौ सब वात री मेह मायै।—ध. व. ग्रं.

मून-सं० स्त्री० [सं० मौन] १ चुप या शान्त रहने की क्रिया या भाव।

२ चुप्पी, खामोशी, शान्ति, मौन।

उ०—देख सरप व्है दादुरा, सब्द कलां कर सून। पुरख असेंदौ पेख व्है, मावडिया मुख मून।—बां. दा.

३ चुप रहने, न बोलने का संकल्प या प्रण, मौनव्रत।

उ०—१ बाना विमतारै वणी, मठ आगै सरवज्ञ। मून ग्रहै छाडै मछर, तीखौ मिलियां तज्ञ —बां. दा.

उ०— २ केइ कहै सावद्य दांन में पुन्य पाप मिस्र न कहिणौ तिण सूं सावद्य दांन में म्हैं मून राखां।—भि. द्र.

वि०—जो मौन रखता हो, जो बोलता न हो।

उ०—ऐसै मैं आरंभ कियौ, पंग चढ़ै गिर कून। वाद करेवा सरसती, कैसौ पोहचै मून।—गज उद्धार

रू०भे०—मुण, मुन, मून, मौन

मूनव्रत—देखो 'मौनव्रत' (रू. भे.)

उ०—पूरउ तप हूउ पतन्या पूगी, ईसर ताईं मूनव्रत लीयइ। वारां जुगां हुंती वहुनांमी, ताळी छोडी दीह तीयइ।

—महादेव पारबती री वेलि

मूनाळ—देखो 'मुंहनाळ' (रू. भे.)

मूनि मूनी—देखो 'मुनि' (रू. भे.)

उ०—१ ऐ बक मूनी ऊजळा, मीठा बोला मोर। पूछौ सफरी पनग नूं, फ़त ऊघड़ै कठोर।—बां. दा.

उ०—२ खूनी खळ खंचळ ऊनी अंचळ, मूनी मिळ मुळकंदा है।

—ऊ. का.

२ देखो 'मौनी' (रू भे.)

मूनेस—देखो 'मुनीस' (रू. भे.)

उ०—करी ज्याग स्याहाय मूनेस कज्जं। दखे जै जया बोल आनेक दुज्जं।—र. ज. प्र.

मूफट—देखो 'मुंहफट' (रू. भे.)

मूफतियौ—देखो 'मुफतियौ' (रू. भे.)

मूफाड़—देखो 'मूंफाड़' (रू. भे.)

मूम—देखो 'मोम' (रू. भे.)

मूमल-सं० पु०—एक राजस्थानी लोक गीत।

मूमारखी—देखो 'ममारखी' (रू. भे.)

उ०—पाछै थटै भखर बादसाह नूं मूमारखी फतै पाई री मेल्ही।

—जलाल बूबना री बात

मूमावडी-सं० पु०—एक प्रकार का वस्त्र।

उ०—नेत्रपट्ट घोतपट्ट राजपट्ट गजवडि हंसवडि वोरि आवडी ऊमावडि मूमावडि पूमावडि ···।—व. स.

मूर—१ देखो 'मूळ' (रू भे.)

उ०—१ दीनानाथ दयाल सबनि का मूर है। हरि हां जन हरिदास तेज पुंज परकास अखंडित नूर है।—ह. पु. वां.

२ देखो 'मुर' (रू. भे.)

मूरख-वि० [सं० मूर्ख] १ जिसमें बुद्धि का अभाव होने के कारण ठीक ढंग से सोचने, विचारने एवं काम करने की योग्यता न हो, बुद्धि हीन मूढ, बेवकूफ। (अ. मा.)

उ०—जद समजू जांणै पोते तौ देवै नहीं अनै दूजा नें पुण्य बतावै। पिण ए बात तो मूरख हुवै ते मांनै। पुण्य हुवै तौ पहिला पोतै कर दिखावै जद दूजा पिण मानै।—भि द्र.

२ समझाने पर भी जिसको कोई बात समझ में न आती हो, मंद बुद्धि।

उ०—१ अंग घणा आलंगियौ, अधर घणांरी ऐंठ। नर मूरख जांणै नहीं, पातरियां री पैंठ।—बां. दा.

उ०—२ एता सुख संसार का, एता सुख न जांनि : जन हरीया सो सुख है, मूरख ताहि न मांनि।—स्री हरिरांमदासजी महाराज

उ०—३ मूरख कथन न मानियौ, लसियौ मूंछ लजाइ। तांनूं रख न दियौ तखत, दोनूं रखत दिखाइ।—वं. भा.

पर्या०—अंगलज, अगूझ अग्यांन, अजांण, अबुध, अबूझ, अमेध, असन, इतिवार, कंद कदवद कुठ खळ, गिंवार, जड़ जथाजात, जालम, डींडौ, निखेद, निलज नेड, बाळ, व ळम. वैवअगा मंद, मंदमति, महाविकळ, मात्रोमुख, मुगध मूक, मूढ, रहित, विकळ, विणवाट विवरण, विमुखगुण, वेधेग्र, वैतवार, सठ, सीमितमुख, स्यानि-निमंठ, स्यांनमठ, हीण,

सं०पु०—मूर्ख व्यक्ति।

उ०—मुझ नाचंता भरह रसाल, ए स्युं जांणइ मूरख ताल। राखि मुझ हीयडइ एह जि चिंत राति दिवस ए मूरख कंत।

—हीराणंद सूरि

२ वन मूंग, उर्द।

रू० भे०—मुरख, मूरिख, मूरूख,

अल्पा०—मुरिखौ, मूरखौ,

मूरखता, मूरखताई-सं० पु० [सं० मूर्खता] १ मूर्ख होने की अवस्था या भाव।

२ मूढता, अज्ञानता, नादानी।

उ०—म्हनै तो केई केई वरसा सूं आं मोटा मिनखां री अकल माथै पूरी पूरी अभरोसो ई ही, पण मूरखता री इण बांनगी री तो म्हैं सपना में ई आस नी करी ही।—फुलवाड़ी

उ०—२ करणी री मूरखता माथै चरचा चालै, गोमदै री काळजो सूंक खावण वेगी हालै है।—देखदोख

३ गंवारूपन।

रू०भे०—मुरखता,

मूरखाई-स०स्त्री०—मुरखता पूर्ण कार्य, मूरखतापूर्ण वात।

रू०भे०—मुरखाई,

मूरखौ—देखो 'मूरख' (अल्पा०, रू. भे)

उ०—१ ताहरां राजा री कुंवरी संचींत हुई। जो पाछा जाईजे तौ ठौड़ नहीं। हिवै मूरखै गति। ताहरां मूरखौ बोलीयो-जो देवी सारदा मोनूं वर दीयौ हिवै हूं मूरिख नहीं।—चौबोली

मूरच्छना—देखो 'मूरछना' (रू. भे.)

मूरच्छा—देखो 'मुरछा' (रू. भे)

उ०—जिसड़ै ही रांमसिंघजी कुंवरजी री कागी दीठी विपरीती तिमड़ै ही मूरच्छा आइ पड़िया —द. वि.

मूरछत—देखो 'मुरछित' (रू. भे.)

उ०—पंडव राज प्रधांन मूरछत राज ब्रहंमंड। जीति राज तन जिता, चक्र सिव राज खंड चंड —सू प्र.

मूरछन, मूरछना-सं०पु० [सं०मूर्च्छना] १ मूर्छित करने की क्रिया या भाव।

२ उक्त कार्य के लिये प्रयोग में लाया जाने वाला मन्त्र विशेष।

३ पारे का तीसरा संस्कार जिसमें त्र्युषण, त्रिफलादि में सात दिन तक भावना दी जाती है।

४ संगीत में एक ग्राम से दूसरे ग्राम तक जाने में सातों स्वरों का आरोह-अवरोह।

५ काम देव का एक बाण।

रू०भे०—मुरच्छना, मुरछना मूरच्छना,मूरछा,

मूरछा—१ देखो 'मूरछना' (रू. भे.)

उ०—मेकवीस मूरछा, त्रिण(ह) ग्रांम निसरति सुर। लहण भेउ खटराग काठ, अक्खै मोखंतर —गु. रू. वं.

२ देखो 'मुरछा' (रू. भे)

उ०—१ हणै ताड़िका वाण हूंता सुबाहां वचै मूरछा होय मारीच वाहां।—सू. प्र.

उ०—२ अर उठी उण खेजड़ी रै वासै मूरछा तूटचां भूत री आंख्या खुली।—फुलवाड़ी

मूरछागत, मूरछागति—देखो 'मुरछागत' (रू. भे.)

उ०— १सो इसौ रूप देख लाडी मूरछागत हुई —पंचदंडी री वारता

उ०—२ भूत रा मन में ऐड़ी अळूझाड़ तौ कदेई नीं गूथीजियौ। वेहल अदीठ व्हैतां ई वौ तौ मूरछागत व्हैगो।—फुलवाड़ी

उ०—३ मूरछागति धरणी पडयांजी, चेतन पामी जांम। बोलै कसण दयांमणीजी, नेम भणी सिर नांम।—जयवांणी

उ०—४ मूरछागति दूरी हुइ, हर उठीयौ सावचेत हुवौ। होतां ही कंवर का राखवा को जूवा वसाल कियौ।—पना

मूरछाणौ, मूरछावौ—देखो 'मुरछाणौ, मुरछावौ' (रू. भे.)

मूरछाण हार, हारौ (हारी), मूरछाणियौ—वि०।

मूरछायोड़ौ—भू० का० कृ०।

मूरछाईजणौ, मूरछाईजबौ—भाव वा०।

मूरछायोड़ौ—देखो 'मुरछायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० मूरछायोड़ी)

मूरछित—देखो 'मुरछित' (रू. भे,)

उ०—रुखमणीजी के देखतां ही सगळी सेना जि हुती तितरां मन पंग हुआ। सहु सेना मूरछित हुई।—वेलिटी

मूरछौ—देखो 'मुरछा' (रू. भे.)

उ०—मारवणीजी री रुप देख दोना नै मूरछौ आई, मोनै तौ मसळ कुसळ उठायौ।—ढो. मा.

मूरट—देखो 'मरट' (रू. भे)

मूरत—१ देखो 'मूरति' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—१ सखी अमीणौ साहिबौ मदन मनोहर गात। महाकाळ मूरत वणै, करण गयंदा घात —वां. दा.

उ०—२ सोई खुड़द आज दिन सांप्रत, स्री दुरगा सकळाई। मूरत अदुल भेख मरदानूं, सूरत हृदय समाई।—मे. म.

उ०—३ पड़या मुख मूरत सूरत पाक, पड़या चक चूरत कंव पिनाक। उभै गजगाह पड़चा दहुं ओड़, पड़चा खुरताळ जड़चा चहुं पोड़ —मे. म.

उ०—४ मूंडा पर काळौ नकाब नांख्यां अर हाथ में छुरो लियां एक मूरत ऊभी ही।—रातवासो

उ०—५ दया री मूरत मोटोड़ी रांणी तौ सुरग सिधाई।
—फुलवाड़ी

उ०—६ छव फुट लांबौ डील, डिघाळ मूरत, तणियोड़ा मूंछां, किलागोड़ी दाड़ी रै सागै सभाव मे तेज झरतौ दीसै —दसदोख

२ देखो 'महूरत' (रू. भे.)

मूरतवंत, मूरतवत-वि० [सं०मूर्तिमत] १ शरीर धारी, मूर्तिमान, सशरीर, देहधारी।

उ०—क्रस्णजी का जुदाजुदा रूप देखण लागा कांमिनी कहइ काम आयौ। सत्रु कहण लागा काळ आयौ और जिकेइ विरोधी न था त्यांह स्री नारायण को स्वरूप जांण्यो. वेद कां अरथी थां। त्यांह कह्यौ मूरतवंत वेद आयौ। योगीस्वरां जाण्यौ जोगतंत योही।—वेलि टी.

२ जिसका कोई आकार-प्रकार या रूप हो, साकार, सगुण।

३ जो किसी प्रतिमा की तरह अचल हो, निश्चेष्ट, स्थिर।

उ०—गंगेव नीबावत भीतर पधारै छै। खमा खमा हुय रही छै। आंण ढोलियै विराजमान हुवा छै। मूंहडै आगै पातरां पोमाख कर

साज वाज लियां खड़ी छै। हुकम हुवो छै। राग रंग हुवै छै। छह राग, तीस रागणी। मूरतवंत खड़ा हुवा छै। —रा. सा. सं.

४ साक्षात्, प्रत्यक्ष.।

रू०भे०—मूरतिवत, मूरतिवंतउ,

अल्पा०—मूरतिवंतो,

मूरति–सं०स्त्री० [सं०मूर्ति] १ कोई देव–प्रतिमा, मूर्ति।

उ०—१ मूरति सालिगरांम की, जल सूं धोवै आंनि। कर सूं मेलै उखणे, आतम रांम न जांनि।—स्री हरीरांमदासजी महाराज

उ०—२ देवळां मूरतां हुंत जो किणी दिन, खुरम रौ डीकरो कुवध खेलै।—नरहरदास बारहठ

२ कलात्मक ढंग से बनाई हुई कोई पत्थर, धातु आदि की प्रतिमा, पुतली।

उ०—१ धात पथर मूरति पधरावै, ठाकुर सेवा नांव धरावै। कर सुं खोळि करै चरणामत, यूं तौ जांनि नहीं परमांगत।

—स्री हरीरांम दासजी महाराज

३ चित्र, तस्वीर।

४ शक्ल, आकृति, सूरत।

उ०—१ वाहि पर तन मन हैं वारी। वह मूरति मोहिनी निहारत, लोक लाज डारी।—मीरां

उ०—२ तीणइं सुंदर मूरति देखी साथिइं लीउ उछाहि। जयमागर केते दीहाडे पहुतउ स्रीपुर माहि।—हीराणंद सूरि

५ स्वरूप, रूप।

उ०—१ सुसील सभ्य साच्छरं, स्तुति प्रमांन सोहनें। अभंग पुत्ति ओज के मनोज मूरति मोहनें।—ऊ. का.

उ०—२ मोहनि मूरति सांवरि सूरति, नैना बनै विसाल।—मीरां

६ शरीर, देह।

उ०—बाळ मुकंद नंद घरि बाळक, मात लडायौ जसोमती। भगतवछळ गोकळ मन भावन, पावन मूरति जगतपति।

—ह. नां. मा.

७ प्रतीक।

उ०—महा अजमति परम मूरति, पैज रघुपति तेज पूरति। प्रभुति सुण अति धूज धरपति, सुणै छत्रपति साह।—रा. रू.

८ साधुओं के लिऐ एक सम्बोधन।

उ०—वै महंतजी नै सिकायत करी तौ महंतजी उण नै बुलायनै समझायौ–भाया, सगळी मूरतियां थारी घणी सिकायतां करै। थूं बिनां कांम मारग चालतौ ई वांरी जमायोड़ी चीजां नै ठौड क्यूं छुडावै ? रांम दुवारा री सगळी मूरतियां थारी इण हेरा–फेरी सूं नाराज है।—फुलवाड़ी

९ प्राचेतस दक्ष की सोलह कन्याओं में से एक जो धर्मऋषि की पत्नी एवं नर–नारायण की माता थी।

१० स्वारोचिष मन्वन्तर का एक प्रजापति, जो वसिष्ठ ऋषि के पुत्रों में से एक था।

११ ब्रह्मसावर्णि मन्वन्तर के सप्तर्षियों में से एक।

१२ देव विशेष की आकृति का गले में धारण करने का सोने या चांदी का एक आभूषण।

रू० भे०—मुरति, मुरती, मुरत्ति, मुरिति, मुरिती, मूरत, मूरती, मूरत्त, मूरत्ति।

मूरतिकार–सं०पु० [सं०मूर्तिकार] १ मूर्तियें, प्रतिमाऐं बनाने वाला, शिल्पी।

२ चित्रकार, चितेरा।

मूरतिपूजक–सं०पु० [सं०मूर्तिपूजक] १ किसी मूर्ति या प्रतिमा की नियमित पूजा करने वाला।

२ सगुण भक्ति धारा का अनुगामी।

मूरतिपूजा–सं०स्त्री०—किसी मूर्ति या प्रतिमा का पूजन कार्य।

मूरतिमत–सं०पु०—मूर्तरय राजा का एक नामान्तर।

मूरतिमांन–वि० [सं०मूर्तिमान्] १ शरीर धारी, देह धारी, साकार।

२ प्रत्यक्ष, साक्षात्।

मूरतिवंत, मूरतिवंतउ—देखो 'मूरतवंत' (रू. भे.)

उ०—१ ऐसी भांति अनेक उछव सें गावते हैं। तारीफ की तांन आसमांन से लावते हैं। ऐसा मूरतिवंत राग का थाट रचि जरकस जंवहरू के इनांम पाए।—सू. प्र.

उ०—२ त्रीजउ मूरतिवंतउ सागर सागर जिम गंभीर। चउथउ बंधव सुणि घन सागर, समरथ साहस धीर।—हीराणंद सूरि

उ०—३ ब्राह्मण विवाह करण नै किसा आंणि बैठा छै जिसा साक्षात् मूरतिवंत वेद।—वेलि टी.

मूरतिवंतो—देखो 'मूरतवंत' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—मूरतिवंतो नाद छै।—वेलि टी.

मूरतिविद्या, मूरतिविध्या–स० स्त्री० [सं० मूर्तिविद्या] १ प्रतिमा बनाने की विद्या, शिल्पी कार्य।

२ चित्रकारी का कार्य।

मूरती —देखो 'मूरति' (रू. भे.)

उ०—१ कारीगर आया, नींव भरी अर च्यार महीणा में मकांन गिगनां चाढ दीनो। किंवाड़ चाढै, घंटा लागै तथा देवांरी मूरती पधरावण वेगी वात चींत हुवै है।—दमदोख

उ०—२ थिरू मूरती सूर रै नूर थाई। तिका स्वप्न रै मांहि पिंडां बताई। —मे. म.

उ०—३ तुही पच्छ तारच्छ में शीघ्रताई। रती मूरती में तुही सुंदराई।—मे. म.

मूरत्त—देखो 'मुहरत' (रू. भे.)

२ देखो 'मूरति' (रू. भे.)

मूरत्ति—देखो 'मूरति' (रू. भे.)

उ०—बूझै कुण नाथ तुहाळा वंग, सकत्ति न रुद्र मूरत्ति न लिंग।

—ह. र.

मूरद्ध-सं०पु० [सं०मूर्द्धन्] शिर, मस्तक।
मूरद्धज-वि० [सं०मूर्द्धज] शिर से उत्पन्न होने वाला।
सं०पु० [सं०मूर्द्धजः] केस, बाल।
मूरद्धज्योती-सं०स्त्री० [सं०मूर्द्धज्योतिस्] योग में ब्रह्म रंध्र।
मूरद्धन्य-वि० [सं०मूर्द्धन्य] १ मूर्द्धा से सम्बन्ध रखने वाला।
२ सिर या मस्तक में स्थित।
मूरद्धन्यवरण-सं०पु० [सं०मूर्द्धन्य वर्ण] वह वर्ण जिसका उच्चारण मूर्द्धा से होता है।
मूरद्धा-सं०स्त्री० [सं०मूर्द्धा] १ मस्तक, शिर
२ व्याकरण में, मुंह के अन्दर का तालु और अलि जिव्हा के बीच का अंश जिसे जीभ का अग्रभाग ट. ठ. ड. ढ. र. ष. का उच्चारण करते समय उलटकर छूता है।
रू. भे.—मूरधा,
मूरद्धाभिसेक-सं०पु०—शिर पर किया जाने वाला अभिषेक या जल सिंचन।
मूरधन-सं०पु० [सं०मूर्धन, मूर्द्धन] १ शिर, मस्तक। (ह. नां. मा.)
२ भृकुटि, भौं।
३ शिखर, शृंग, चोटी।
४ प्रधान, मुख्य।
५ नेता, नायक, अग्रणी।
६ अगला, अग्र।
७ एक देव, जो भृगु एवं पौलोमी के पुत्रों में से एक था।
मूरधा—देखो 'मूरद्धा' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)
मूरवा—देखो 'मुरवा' (रू. भे.)
मूरिख—देखो 'मूरख' (रू. भे.) (ह. नां मा.)
उ०—१ तरै बादसाह पण फरमाई कोई इणसूं अधिको मूरिख छै। —नी. प्र.
उ०—२ मूरिख तैं मुझ नें गण्यौ वचन कह्यौ अविचार। जो पदमणि हाथे जीमस्यु, तो आवुं तुझ बार।—प. च. चौ.
मूरियौ—देखो 'मोरियौ' (रू. भे.)
मू'री—देखो 'मो'री' (रू. भे.)
उ०—वांनै आ बात आछी तरै सूं मालम ही के इण अड़ियल आदमी रै ऊंठां री मू'रियां इण री माथौ पड़ियां रै पछै ईज हाथ में आवैला।—रातवासौ
मूरुख—देखो 'मूरख' (रू. भे.)
मूरौ—देखो 'मोरौ' (रू. भे.)
मूळ, मूल-सं०पु० [सं०मूल] १ वृक्षों, पौधों, लताओं आदि की जड़।
उ०—१ गाज इतै ऊखेड़ गज, माझळ वन तर मूळ। जागै नह यह में जितै, सम्भ हाथळ सादूळ।—वां दा.
उ०—२ तेल-विहूणउ दीवड़, मूल-विहूणी वेलि। पांणी-विहूणी दद्दुरी, तिम होई ति महेलि।—मा.कां प्र.
उ०—३ नहीं तू मूळ नहीं तू डाळ। नहीं तू पत्र नहीं जु पराळ। —ह. र.
२ पेड़ का तना।
उ०—१ घड़ कुंभ निवांण कि भोंण दुड़ै, उर पाट कपाट सूं प्रौळ अड़ै। जुंग जंघ तरोवर मूळ जिसा, अण भंग उत्तंगई सिला इसा। —मा. वचनिका
३ बीज।
उ०—१ रांम नांम निज मूळ है और सकळ विसतार। जन हरीया फळ मुगतिकू, लीजै सार संभार।—श्री हरिरांमदास जी महाराज
उ०—२ अहूं जग मिटावण विघन तन तापरा। खगावण पाप रा मूळ खोटा। अनेकां प्रवाड़ा गिणै कुण आपरा, मात धणियाप रा विड़द मोटा।—खेतसी बारहठ
४ जमीकंद. कद मूल।
उ०—फळ मूळ खाकै हरी मिळै तो, बांदर बांदरा होई।—मीरां
५ किसी वस्तु का नीचे का भाग।
६ पिप्पली मूल, पींपरा मूल।
७ प्रारम्भ, शुरुआत, आदि।
उ०—नहीं तो माय नहीं तो बाप, आपेज आपे ज उपन्नो आप। मनच्छा बीज चलावै मूळ थयो चर वे चर सुक्खम थूळ।—ह. र.
८ उद्भव, उत्पत्ति।
उ०—विदर पिदर जांणै नहीं, मादर विदरां मूळ। राखै अगणत रंग रा, दिलरी कुसी दुकूळ।—वां. दा.
९ कारण, प्रयोजन।
१० नींव, बुनियाद, आधार।
उ०—१ एकां मूळ ऊखेड़िया हेकां किया तिहाल। असपत्ती नह ऊथपै, जै थप्पै 'अजमाल'।—रा. रू.
उ०—२ बाघळो विकट सादूळ बाहण वणै डांखियौ सीस समतूळ डालै। अरोहै मूळ दुस्टा तणां उखाड़ण, झाड़वया रूखाळण सूळ झालै।—मे. म
११ आदिमंत्र, बीजमंत्र।
उ०—देवी मंत्र मूळं देवी बीज वाळा, देवी बापणी सब्ब लीला विसाला —देवि
१२ सत्ताईस नक्षत्रों में से उन्नीसवां नक्षत्र (अ. मा.)
उ०—तू गहलो तूं सानियो, तूं भोळी भंवराळ। मूळ मघा में तूं हुओ, तातं सरस लवाळ।—गजउद्धार
१३ असल पूंजी, मूल धन।
उ०—१ नैनहू बिन सूझै नहीं, भूला कत हूं जाइ। दादू धन पावै नहीं, आया मूळ गंवाई।—दादूवाणी
उ०—२ पिण साहूकार दीवाल्या री खबर तौ मांग्या पड़ै। साहूकार तौ व्याज सहित देवै अनें दिवाल्यौ मूल ही में तोटौ घालै।—भि. द्र.
उ०—३ या जुग मांहि करन कुं सौदा, आयै लोक लुगाई। एक

ले चालै लाभ चौगणौं,एकां मूळ ठगाई ।—

—स्त्री हरिरांमदास जी महाराज

१४ मुद्राविशेष ।

१५ दलाल ।

१६ तल ।

१७ छोर, शिरा ।

१८ वर्ग मूल ।

१९ चंदन । (अ. मा.)

२०—परम्परानुगत सेवक ।

२१ पड़ौस, सामीप्य ।

२२ मूल कृति या लेख जो पहले पहल किसी ने अपनी बुद्धि से तैयार किया हो ।

२३ प्राय: रात के समय, किसी जलाशय के किनारे खड्डा खोदकर या रास्ते के पास किसी पेड़ पर मचान बांध कर, शिकार की ताक में शिकारी के बैठने की क्रिया या भाव ।

उ०—दिन १ आडौ घाल नै कह्यौ-आपे सिकार सूअरां री मूळां री खेलसां । तरै सूरजमल कह्यौ–"भली वात ।"—नैणसी

२४ शिकार के लिये उक्त प्रकार से बैठने का स्थान ।

उ०—पण एक दिन ईसड़ौ दईव संजोग हुवौ सो म्होकमसिंघ तौ हिरण री सिकार मूळ वैठौ थौ ।–प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

२५ पूर्व दिशा ।

उ०—कोस ४ मूळ मांहैं । सीरवी वांणीया वसैं ।—नैणसी

वि०—१ मुख्य, खास, प्रधान ।

उ०—मऊ सूं कोस ७ गांव धूळकोट छै तठै नीसरै छै पांणी मूळ गूंदूवांण री आवै छै ।—नैणसी

२ असल.

उ०—रुडे तीरथराज रै नित जळ कीजै न्हांन । तो पिण न हुए पाक तन, मूल पुरीख मकांन ।—वां.दा.

३ खुद का, अपना, मौलिक, निजी ।

४ पहला, प्रथम ।

५ किंचित, तनिक, थोड़ा ।

उ०—नारायण रा नांम सूं, प्रांणी वांणी पोय । जम डांणी लागै नहीं, हांणी मूळ न होय ।—ह र.

उ०—२ पुत्र त्रिया ने सज्जन घर थकी रै, मूल न आंण्यौ मन में मोहरे ।—जयवांणी

६ दृढ़ मजबूत ।

उ०—वय बीरां सह वोलिया, केसर कुंड दुकूळ । बळै तहरा भड़ वरजिया, मंडै साहस मूळ ।—वं. भा.

क्रि० वि०—१ कतई, बिल्कुल ।

उ०—१ भैंसां मूळ न पावसै,सूकै पाडी साथ । हार दुहारा उट्ठिया, ठाली बरतण हाथ । —लू

उ०—२ खुरम कटक्कै अग्गळी साह दळै असमांन । मूळ न मावै मारका, दोय खंडा इक म्यांन ।—गु. रू. बं.

२ जडामूल से, जड़से

उ०—हूअौ हाहाकार, प्रिथी दमंगळ पेखीजै । जवनां जावण मूळ एह आगम जांणीजै ।—गु. रू. बं.

रू० भे०—मूंल, मूर, मूळी, मूळू, .

मूल—देखो 'मूल्य' (रू. भे)

उ०—१ महा उचूल मूल के, दुकूल देह में नहीं । कहां सुगंध कंध बीचि, ग्रंध गेह में नहीं ।—ऊ. का.

उ०—२ तहां करन क्रीड़ा मुखइ,बीड़ा चाबती त्रिय जात । केसरी सारी मूल भारी, पहिरि कै हरख न मात ।—वि. कु.

मूळकरम–सं०पु० [सं०मूल कर्मन्] १ औषधियों की जड़ों द्वारा किया जाने वाला त्रासन, उच्चाटन, स्तंभन, वशीकरण आदि का प्रयोग ।

२ जादू टोना, मूठ । (मारण)

३ प्रधान कर्म ।

मूळकवळ–सं०पु० [सं०मूल–कमल] हठयोग के अनुसार नाभि के आस-पास का अवयव जिसको कमल के रूप में माना जाता है । नाभि–कमल ।

उ०—सोई निरभै निजनाथ सदा संगि (मेरे), जुरा मरण भै भागा । अनहद सबद गगन में गरजे, मूळ-कवळ मन लागा ।

—ह. पु. वां.

मूळकूण–सं० पु०—पूर्व दिशा ।

उ०—सोभत था कोस ३ मूळकूण मांहै । कुंभार बांभण बसै ।

—नैणसी

मूळको, मूलको–सं०पु०—१ जड़ सहित उखाड़ा हुआ छोटा वृक्ष ।

२ देखो 'मुळगौ' (रू. भे.)

उ०—जद ब्राह्मण बोल्या–एहतौ पठांण रा पेट रा मूलका इ असुद्ध छै सो सिद्ध किम हुवै ।—भि. द्र.

मूलगउं, मूलगउ मूलगु, मूलगू, मूळगौ, मूलगौ—देखो 'मुळगौ' (रू. भे.)

उ०—१ सार किसिउं जीवी तणु प्रिय संगमि सिउं थाइ । फूल माहि सिउं मूलगउं स्त्री परणी किहां जाइ ।—हीराणंद सूरि

उ०—२ कुणइ नेमि राहाविउ कूडीय सघलडी जांन । छप्पन कोडि माहि मूलगउ कूडउ बल भद्र कांन्ह ।—समर

उ०—३ कूवर दुस्टमां मूलगु सेवइ व्यसन सात रे । अन्या मारगि ते हीडइ नवि जांणइ पुण्य वात रे ।—नळ दवदंती रास

उ०—४ नान्हपणा नु नेहडउ, कांइ वीसारिउ नाह रे । कठिन कठोर मांहि मूलगू ताहरू प्रीछउ माह रे ।—नळदवदंतीरास

उ०—५ गिणइ नहीं सास्त्र वलि मूलगा देवगुरू । लाज विण लोक इण कुमति लागै ।—ध. व. ग्रं.

उ०—६ जद स्वांमीजी बोल्या ए पिण मूलगा मित्यात्वी है ।

—भि. द्र.

उ०—७ मिरचां री धूंई सूं भूत पूरौ निबळौ व्हैगौ। उणनें सूभणौ मूळगौ ई बद व्हैगौ।—फुलवाड़ी

उ०—८. जाइ सुरलोक मैं अमल कीधौ जसु, असुर सहु नासि म्रतलोक आया। कसर सहु आपणी मूलगी काढिवा, लागतै जोर जजाळ लाया।—ध. व. ग्रं.

(स्त्री०मूलगी)

मूळचक्र—सं०पु०—एक प्रकार का हाथी।

उ०—अथ हस्ती—त्रिदडगलित त्रिपाट प्रसरित भद्रजाति दक्षिणदंडउ मांणिक दंडउ मूलचक्र वन चक्र तिसोता······—व. स,

मूळछेद—सं०पु० [सं०मूलच्छेद] १ किसी चीज को ऐसा काटना या नष्ट करना कि वापस न पनप सके।

२ समूल नाश, जड़ामूल से नाश।

मूळजग—सं०पु०—संसार का मूल कारण—विष्णु, शिव, ब्रह्मा, शक्ति—।

मूळजड़ी—सं०स्त्री० [सं०मूल—जड़ी] जीवन का मुख्य आधार।

उ०—कब की ठाडी पंथ निहारूं अपने भवन खड़ी। कैसे प्रांण पिया विन राखूं जीवन मूळजड़ी।—मीरां

मूळजांबउ—सं०पु०—एक प्राचीन देश। (व. स.)

मूळजात—सं०पु०—आदि या आरम्भ की जाति, वंश, मूल जाति

मूळतांणि—देखो 'मुलतांन' (रू. भे.)

उ०—फूलभरि भ्रंवर सेख, सेख अहिदर नीसाउरि पुप्फदीन मूळतांणि सेख जक्खा भट्टाउरि।—व. स.

मूळत्रिकोण—सं०पु० [सं०मूल—त्रिकोण] सूर्य आदि ग्रहों की कुछ विशेष राशियों में स्थिति।

मूलथांण—देखो 'मुलतांन' (रू. भे.)

उ०—वंगाल त्रिहूण भोट महाभोट चीण महाचीण सिवस्थांन पुरासन मूलथांण मद्र अंद्र अंतरवेघ विराट······—व. स.

मूळदवार—देखो 'मूळद्वार' (रू. भे.)

मूळदेवी, मूलदेवी—सं०स्त्री०—एक लिपि विशेष।

उ०—मालविणी नडि नागरी लाडलिवी पारसी य बोधव्वा। तहय निमित्ती अ लिवी चांणक्की मूलदेवी अ।—व. स,

मूलद्रव—सं०पु० [सं०मूलद्रव्य] मूल धन, असल पूंजी।

मूळद्वार—सं०पु० [सं० मूल-द्वार]१ सदर या मुख्य दरवाजा, सिंहद्वार।

२ शरीर का वह छिद्र जहां से मल त्यागन होता है, गुदा द्वार।

३ योनी, भग।

रू०भे०—मूळदवार

मूळधन—सं०पु० [सं०मूल—धन] असल पूंजी, पूंजी।

मूळपुरख, मूळपुरुस—सं०पु० [सं०मूल—पुरुष] १ वह आदि मानव, जिससे समस्त मानव जाति का विस्तार हुआ।

२ किसी वंश या परिवार का प्रथम पुरुष।

मूळप्रकति—सं०स्त्री० [सं०मूल—प्रकृति] वह आदिम या मूल सत्ता जिसका परिणाम संसार है, आदि शक्ति।

मूळबंध—सं०पु० [सं०मूलबंध] १ हठ योग में वज्रासन या सिद्धासन द्वारा की जाने वाली एक योग क्रिया, जिसमें शिश्न और गुदाद्वार के मध्यवाले भाग को दबाकर अपान वायु को ऊपर चढाते हैं।

२ एक प्रकार का अंगुलि-न्यास।

मूळमंत्र—देखो 'बीजमंत्र'

उ०—हरिदास जन यूं कहै, रं रं कार मूळ निज नांम। मूलमंत्र सतगुरु दिया, दुःख सुख दोय दूर सराप।—ह. पु. वां.

मूळय—देखो 'मूल्य' (रू. भे.)

मूलवटणी—सं०पु०—एक प्रकार का वस्त्र।

उ०—पटउलउं सावपट्ट पट्टहीर सूहवी चोपाच्छुउहुं सवाडी चंपावती स्वेत सिलाहट्टी सचोपकाची मूलवटणी सारी······—व. स.

मूळस्थांन—सं०पु० [सं०मूलस्थान] १ ईश्वर।

२ किसी प्राणी, वस्तु या विषय आदि का उद्भव स्थल, आदिस्थान।

३ पूर्वजों का स्थान।

४ प्रधान स्थान।

मूळा—स० स्त्री० [सं० मूला] १ मूल नक्षत्र।

२ पृथ्वी, धरती। (डि. नां. मा.)

३ सतावर।

४ पूना के पास बहने वाली एक नदी।

उ०—मूळा १, मोठा २—ऐ दोय नदी पूना हेटै वहै है।
—बां. दा. ख्यात

५ राठौड वंश की एक शाखा।

६ भाटी वंश की एक शाखा।

रू० भे०—मूळ।

मूलागौ—देखो 'मूळगौ' (रू. भे.)

उ०—भीखनजी स्वांमी कह्यौ-कोई साध नें दोख लागां प्रायस्चित लेइ सुद्ध हुवै। पिण एतौ मूलागा मिथ्यात्वी स्रद्धा ऊंधी गाजींखां मुल्लाखां रा साथी।—भि. द्र.

मूळाधार—सं० पु० [सं० मूलाधार] शिश्न व गुदा के बीच का स्थान, जो हठयोग के अनुसार मानव शरीर के भीतर के छः चक्रों में से एक है। इसका रंग लाल व देवता गणेश माना गया है।

मूळासी—वि० [सं० मूल+आश्रित] कंद, मूल, फल खाकर जीवित रहने वाला।

मूळिका, मूलिका—देखो 'मूळी' (रू. भे.)

उ०—ललित उवंग जस प्रवर पुप्फ चूलिका, मूलिका पाप आतंक केरी।—वि. कु.

मूलिकाप्रयोग—सं० पु०—बहत्तर कलाओं में से एक। (व. स.)

मूलिम—क्रि० वि०—बिल्कुल, कतई।

मूळी, मूली—सं० स्त्री [सं०मूलकं, उन्मूलिका, प्रा० उम्मूलिआ] १ बड़े-बड़े पत्ते एवं लम्बी- मोटी, जड़ वाला एक प्रसिद्ध पौधा, जिसकी जड़ कच्ची भी खाई जाती है वा जड़ व पत्तों की सब्जी बनती है। इसका स्वाद चरपरा रुचिकर होता है। यह हृदयरोग, यकृत

व वायु रोगों में लाभ दायक मानी गई है। मूली, मूरी।

उ०—आखा राज में वांरा सेंतीर तिरै। मोटा मोटा धाड़तियां रा थरणां कांपै, पछै औ कुचमादी किण खेत री मूळी।
—फुलवाड़ी

मुहा०—१ गाजर मूळी=अत्यन्त तुच्छ।
२ किण खेत री मूळी है=क्या हस्तीहै, क्या ताकत है।
३ किसी वाग री मूळी=देखो 'किण खेत री मूळी'
४ मूळी पांना सूं आछी लागै=परिवार के कारण ही शोभायमान होता है।
२ जड़ी बूंटी।
उ०—हांकीयां सूं पादरौ न हालै, वांकम नीर वाहण अवळ। मंत्र जंत्र ओखद नह मूळी, खादां जिण दाटीक खळ।
—ठाकर जगरांमसिंघ नीमाज री गीत
३ खाने योग्य जड़, कंद-मूल-फल।
४ चौतीस प्रकार के स्थावर विषों में से एक।
[सं० मूली] ६ छिपकली।
रू० भे०—मूंळी मूळिका, मूलिका।
मह०—मूळौ।
७ देखो 'मूळ' (रू. भे.)
उ०—तरुणी री पोसाक त्रण, जीवन मूळी जांण। कळह समें राखै कनै, मावड़ियी विण मांण।—वां. दा.

मूळू—१ देखो 'मूळा' (रू. भे.) (वां. दा. ख्यात)
२ देखो 'मूळ' (रू. भे.)

मूळौ, मूलौ—देखो 'मूळी' (मह., रू. भे.)
उ०—१ दूजोड़ौ भरपूर वार निछरावळ करण वाळा पर हुऔ सो बरोबर बैठ्यौ होतौ तौ माथौ मूळा री कापी रै ज्यूं आधौ आय पड़तौ।—रातवासौ
उ०—२ मांस भखैं अर मद पीयैं, भांगि धतूरां हेत। हरीया ऊखड़ि जावसैं, ज्यूं मूळै का खेत।—स्री हरिरांमदासजी महाराज

मूल्य—सं० पु० [सं० मूल्यम्] १ मुद्रा या द्रव्य के रूप में किसी वस्तु को खरीदने या प्राप्त करने के लिये दी जाने वाली धन राशि, किसी वस्तु की कीमत, दाम, दर।
२ वह गुण, जो किसी व्यक्ति या वस्तु को महत्व या मान दिलवाता है, विशेषता, महत्व।
रू० भे०—मूल, मूळय।

मूल्यवांन—वि० [सं० मूल्य-वान] १ जिसका मूल्य, कीमत या दर अत्यधिक हो, कीमती।
२ महत्व पूर्ण।

मूवौ—वि० [सं० मृत] मरा हुआ, मृत।
उ०—१ कहता है करता नहीं, ऐसा आदम खोर। मूवा चाहै मुगति कुं, जीवत हरि का चोर।—स्रीहरिरांमदासजी महाराज

मूस—सं० स्त्री० [सं० मूसिका] सुनार की सोना आदि गलाने की घरिया अर्थात एक पात्र विशेष।

मूसउ—देखो 'मूसक' (रू भे.) (उ. र.)

मूसक—सं० पु० [सं० मूषकः] १ चूहा। (ह. नां. मा.)
उ०—१ नाचै मोर निहारै अहिफण ऊपरे, मूसक सीस न धारै घात मंजारियां।—र. रू.
उ०—२ अंत पुरि उत्तम-तणइ, संभलि नीति-विचार। नर-नांमइ आवइ नहीं मूसक अथ मंजार।—मा. कां. प्र.
२ ठग, चोर
उ०—सुनत हुकम पुर सोधि संढ विट चेट विदूसक। पुर जुव तिन मग पिहित, लगं लावन मनु मूसक।—व. भा.
रू० भे०—मुखक, मूखक, मूसउ, मूसौ।
अल्पा०—मुखियौ।

मूसककरणी—सं० स्त्री० [सं० मूषककर्णी] मूसाकानी नामक एक लता।

मूसकवाहण—सं०पु० [सं०मूषक+वाहनम्] गणेश, गजानन।

मूसकौ, मूसखौ—सं० पु०—स्वर्ण पात्र।
उ०—वित्त रा च्यार हिस्सा कीया। एक हिस्सौ ले तेजसी नुं दीयौ तेजसी उरौ लीयौ, नै ऊठता थका एक सोना रौ मूसखौ नै एक पागौ रूपा रौ ढोलीया रौ इधको लेता ही ऊठीया।
—रावमालदे री बात

मूसणौ, मूसबौ—क्रि०स० [सं०मूषणं] १ चोरी करना, चुराना।
उ०—१ उत्तम मूसे एक झड़ मध्यम दूहा मूस। अधमगीत मूसे अडर, त्रिविध कुकवि विण तूस।—बां. दा.
२ लूटना, खसोटना।
उ०—रोजायतो तणैं नव रोजैं, जेय मुसांणा जणीं जण। हींदू नाथ दिलीचे हाटे 'पत्तौ' न खरचै खत्रीपण।—प्रथ्वीराज
३ ठगना।
४ अपहरण करना, हरण करना, उड़ा लेजाना।
५ मोहित करना, लुब्ध करना।
६ मसोसना, दबोचना।
७ पकड़ना।
८ छीनना, झपटना।
९ ढकना, लपेटना, छिपाना।
१० ग्रसना।
मूसण हार, हारौ(हारी), मूसणियौ—वि०।
मूसिओड़ौ मूसियोड़ौ, मूस्योड़ौ—भू० का० कृ०।
मूसीजणौ, मूसीजबौ—कर्म वा०।
मुसणौ मुसबौ, मूंसणौ, मूंसबौ—रू. भे.।

मूसळ मूसल—सं०पु० [सं०मुसलः] १ ऊखली में अनाज आदि कूटने का मोटी लकडी का प्रसिद्ध उपकरण। इसके बीचमें हाथ में पकड़ने का खड्डा होता है
उ०—नीचौ आयनै गवा नै सावळ जंतरावण सारू कीं जोवण लागौ के सांमी ऊंखळ कनै मूसळ पड़्यौ निगै आयौ।—फुलवाड़ी

२ श्री कृष्ण के बड़े भाई बलराम के हाथ में रहने वाला एक शस्त्र।

३ गदा का एक भेद।

४ लकड़ी का मोटा गोल डंडा जिससे स्वर्णकार आभूषणों की मोच निकालने का काम लेता है।

५ वार व नक्षत्रों सम्बन्धी २८ योगों में से बाईसवां योग।

वि०—१ मूसळ के समान, मूसल के अनुरूप।

उ०—१ इंद्र कोप घन बरखौ मूसळ जळधारा। बूड़त व्रज को राखेऊ मोरे प्रांण अधारा।—मीरां

उ०—२ डीगौ खिजूर नै दांतळौ हाथी। कैता ई मूसळ ज्यूं हाथी रा दांत बारै निकळग्या।—फुलवाड़ी

२ मूर्ख, मूढ बेवकूफ।

रू०भे०—मूसळ मुसल, मुसळि, मुसलि, मूसळ, मूसिल्ल, मूहळ।

अल्पा०—मुसलियौ, मुसळौ, मुसलौ, मुसल्लौ, मूसलियौ, मूसळौ, मूसल्यौ।

मूसळदंतौ—वि०—मूसल के समान मोटे दांतों वाला।

उ०—वेह कळायां वाघ री, घडी भयंकर घाट। मूसळदंतां मैंगळां, नित डर रहै निराट।—वां. दा.

मूसळधार, मूसळधारा—सं०स्त्री०—पानी या बरसात की मूसल के समान सीध व वेगसे चलने वाली धारा।

उ०—१ आज विरज पर इंदर कोप्यौ, बरसै मूसळधारा। वांवां नख पर गिरवर धारयौ, डूबत विरज उबारा।—मीरां

उ०—२ चौठी ले पांणी मांहे गाळी नै ऊपर आड़ंग तुरत मंडियौ। मूसळधार बरसण लागौ। तरै इणां घरां नूं चलाया।
— नैणसी

उ०—३ झिर मिर झिर मिर एक चनणा मेह पड़ेजी कोई, बरसै मूसळधार थारी तौ श्रावण एक, चनणा क्यों हुयोजी।—लो. गी.

रू० भे०—मूसळाधार,

मूसळमांण, मूसळमांन—देखो 'मुसळमांन' (रू. भे.)

उ०—कीरत 'अजन' कमंध री, पसरी प्रथी प्रमांण। दहल खमै रहिया दिली, हिंदू मूसळमांण।—रा, रू.

मूसळाधार—देखो 'मूसळधार' (रू. भे.)

उ०—एक एक बोल कांनां रै माय बडनै काळजा में मंडतौ गियौ। जांणै बिना बीज बादळां रै मूसळाधार पांणी ओसरै अर बरसा री सूखी तिरसी धरती तिरपत व्है।—फुलवाड़ी

मूसळायुध, मूसळायुद्ध, मूसलायुध, मूसलायुद्ध—स० पु०—मूसल नामक आयुध, एक शस्त्र।

रू० भे०—मुसलायुध, मुसलायुद्ध,

मूसळियौ—१ वह घोड़ा जिसका केवल दाहिना पैर सफेद हो शेष तीनों पांव काले हों। (अशुभ, शा० हो०)

२ देखो 'मूसळ' (अल्पा., रू. भे.)

मूसळी, मूसली—सं० स्त्री० [सं० मुशली] १ हल्दी की जातिका एक पौधा जिसकी जड़ प्रायः औषध में काम आती है। यह पुष्टिकारक मानी जाती है और सफेद व काली दो प्रकार की होती है।

सं०पु०—२ बलदेव, बलराम।

३ घोड़ों का एक रोग विशेष। इसके कारण घोड़े के पावों में सूजन आजाती है।

वि०—मूसल नामक शस्त्र को धारण करने वाला।

रू०भे०—मुसळि, मुसलि, मुसळी, मूसळी, मूसली, मूश्रळी।

मूसळौ, मूसल्यौ—१ एक प्रकार का घोड़ा।

२ देखो 'मूसल, (अल्पा., रू. भे)

३ देखो 'मूसळियौ' (रू. भे.)

मूसायब—देखो 'मुसाहब' (रू. भे.)

मूसाई—सं०स्त्री०—मादा चूहा, चुहिया।

उ०—धांमणिया कण मांगणिया. पन दै पूळौ बांवणिया। मूसाई नै जाय' र कंजै. चिड़कल बेटा जाया है।—फुलवाड़ी

मूसाळ—देखो 'मोसाळ' (रू. भे.)

उ०—१ भरणवा कारण भरत नै, मेले अप मूसाळ। मोह धार सत्रघण महा, लार गयौ लंकाळ।—र. रू.

उ०—२ मडै दीठ नौ ही अहां बंदि माहे। सकौ तार नौलाख मूसाळ साहे।—सू. प्र.

मूसावाहण—देखो 'मूसकवाहन' (रू. भे.)

मूसिक—देखो 'मूसक' (रू. भे.)

मूसिकांक—सं०पु० [सं०मूषिकांक] गजानन का एक नामान्तर, गणेश।

मूसिल्ल—देखो 'मूसल' (रू. भे)

मूसिल्लमांण, मूसिल्लमांन—देखो 'मुसलमांन' (रू. भे.)

उ०—मूसिल्लमांण खुरिसांण मग्गि। लाहउर राउ सुरितांण लग्गि। कळळियउ खुरासांणी कंधार, सज कीजइ रेवंत सिलह सार।
—रा. ज. सी.

मूसौ—देखो 'मूसक' (रू. भे.)

उ०—१ सूंडा-डंड प्रचडौ मूसा आरूढ़ मेक मय दंतौ। ईस्वर उमया पुत्रोः तस्मै गुणेसाय नमौ।—गु. रू. बं.

उ०—२ मावड़ियौ वन मांझळी, सो नहं जाय सिकार। डोळा मिनकी सूं डरै. मूसा ज्यूं मुरदार।—वां. दा.

पर्या०—आखू, ऊंदर, खणक, भखमंजार, मुख्य, मूखक, मूसक, यतिदेवर, वजरदंत, सुचीमुख।

२ चोर।

३ ठग।

४ सिरस का पेड़।

५ अन्तः करण, मन। (योग)

६ एक देश का नाम।

७ सुनार के यहां काम आने वाली खड्डी या चूने की बनी एक कटोरी, जिसमें सोना, चांदी आदि गलाया जाता है

उ०—८ यहूदियों के धार्मिक व सामाजिक नेता, पेगम्बर, जिन्होंने

मिस्र के इसराइलियों को दासता से मुक्त कराया था।

६ देखो 'मोसौ' (रू. भे.)

उ०—वीरा ऊभी ओरिया रै बार, देवरजी मूसा वोलिया। भावज करती वीरा री गुमेज, वीरौ बत्तीसी ले गयौ।—लो. गी.

रू०भे०—मुंसौ, मूंसौ, मूसउ।

मूह—देखो 'मुख' (रू. भे.)

उ०—मूहां सैंदां तणा मार हिंदू मुगळ, मछर सैंधां-मुहां आंण मिळियौ।—गु रू. बं.

मूहड—देखो 'मुख' (मह. रू. भे.)

मूहडौ—देखो 'मूंडौ' (रू भे)

उ०—इण बाळक री मूहडौ वारै वरसतांई देखणौ जुगत नहीं छै।
—रीसाळु री वात

मूहमेज—देखो 'मुहमेज' (रू. भे.)

मूहमेळ—देखो 'मुहमेळ' (रू. भे.)

उ०—चवद मत्त तुक दोय चवंत, रटेजै मूहमेळ रगणांत।
—र. ज. प्र.

मूहरत—देखो 'महूरत' (रू. भे.)

उ०—ताहरां राजा ब्राह्मण वोलाया, मूहरत पूछाड़ीयौ।
—जेतमाल पुमार री वात

मूहळ—१ देखो 'मूसळ' (रू. भे.)

२ देखो 'महळ' (रू. भे.)

मूहूघूं—देखो 'मूंगौ' (रू. भे.)

उ०—जिणि आवइ मूहूघू थाइ, लोकै लांयां नांम। ए विहूना सर लावये, माधव मांहरि कामि।—मा. कां. प्र.

मूहूरत, मूहूरत्त—देखो 'महूरत' (रू. भे.)

उ०—एक मूहूरत्त नी सांमायक कीधो।—भि. द्र.

में-अव्य०[सं० मध्य, प्रा० मज्झ] १ अन्दर, भीतर।

उ०—स्वांमीजी कह्यो-म्हारो नांम भीखण। तब उवे बोल्या थाने देखवा री मन में थी।—भि. द्र.

२ ऊपर, पर।

उ०—राग द्वेस ओलखायवा स्वामीजी द्रस्टांत दियौ। किणहि डावरा रै माथा में दीधी। जद तो लोक उणनें ओलंभो देवे।
—भि. द्र.

३ किसी समय या अवधि के दरम्यान।

उ०—बैसाखां में विलखां वांमी, हुयगा सवळा जैन विरांमी।
—ऊ. का.

४ किसी क्षेत्र या परिधि के भीतर।

५ किसी के साथ, किसी में संलग्न।

६ कईयों में से।

७ मध्य या बीच।

८ का, के, की।

उ०—लागो जितरो तो आ गयौ, खेती वापरी में तो चूक नहीं।
—भि. द्र.

९ से।

१०—देखो 'मैं' (रू. भे.)

उ०—जे परमेस्वर सुगुणां की निधि छै। जाकै गुण कौ पार कोई न पावै। में निगुण थको ते कौ गुण कहिवा को आरंभ कीयो।
—वेलि टी.

रू० भे०—मंइं, मंइ, मंदं, मंहि, मंही, मइ, मह, महीं, मुंहि, मूंही, मुही, मेंइ।

मेंइ—१ देखो में' (रू. भे)

उ०—पिण चैलै अमा मरतै काचो पांणी पीधो। मोटो प्रायस्चित आयो। नहि तर तौ थोड़ा मेंइ गुदरता।—भि. द्र.

२ देखो मैं' (रू. भे.)

मेंगणी—देखो 'मींगणी' (रू. भे.)

मेंगळ—देखो 'मदकळ' (रू. भे.)

उ०—दळ अकबर तोपां दगै, सूकै वीर निवांण। गोळां लागै चीतगढ़, मेंगळ माछर जांण।—वां. दा.

मेंगाई—देखो 'मूंगाई' (रू. भे.)

मेंगीवाड़ौ—देखो 'मूंगियाड़ौ' (रू. भे)

मेंढक—देखो 'मींडकौ' (मह., रू. भे.)

उ०—पंखी पांखा सजै, मेंढका मीठा बोलै।—दसदेव

मेंढकौ—देखो 'मींडकौ' (रू. भे.)

मेंढल-सं० पु०—मैनफल का वृक्ष। (अमरत)

रू० भे०—मैंढळ,

मेंढौ—देखो 'मींढौ' (रू. भे.)

मेंणा—देखो मीणा'(रू. भे.)

उ०—धन कारण लागै चोरटा, मेंणा मेतर ने थोरी रे।
—जयवांणी

मेंणावती-सं० स्त्री०—राजा गोपीचंद गौड़ की माता का नाम।

रू० भे०—मैंणावती, मैनावती।

मेंहतर—देखो 'महत्तर' (रू. भे.)

मेंदांन - देखो मैदांन' (रू. भे.)

मेंदी—देखो 'मैंदी' (रू. भे.)

उ०—मेंदी देऊं मुळक मैल सूं करदे मोळी। दीवाळी रै दिवस हिया में ऊठै होळी।—ऊ. का.

२ एक लोक गीत।

मेंबर—देखो 'मैंवर' (रू. भे.)

मेंमत—देखो 'मैंमंत' (रू. भे.)

उ०—दोखियां तणी घणी घर दावै, फावै जुध जुध करण फतै। साह तूज कन सहै गज वंध सुत, मेंमत चालै आप मतै।
—नाथो सांदू

मेंमद—देखो 'मैमंद' (रू. भे)

उ०—मार्थं ने मेंमद लाव भवर, म्हारै मार्थं ने मेंमद लाव ।
—लो. गी.

मेंमाय - देखो 'महामाया' (रू. भे.)

मेंवासियौ—देखो 'मेवासी' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—ताखड़ा उलट मेंवासियां लटायत, छटायत नाहरां भड़ां छोगं ।—रावत हम्मीर चूंण्डावत री गीत

मेंहदी—देखो 'मेंदी' (रू. भे.)

उ०—१ एक उगीनी नणद कह्यौ-बाकी भोजाइयां रै हाथां मेंहदी राचयोड़ी, आगंणौ नीपणा सूं रंग मगसो पड़ जावै ।
—फुलवाड़ी

उ०—२ राजाजी रा छाला पड़्या हाथां रै मेंहदी लगाय नाई फूंका देवण लागौ सो देवतौ ई गियौ । मेंहदी अर फूंकां सूं थोड़ी घणी बळत मिटी तौ राजाजी रै जीव में जीव आयौ ।—फुलवाड़ी

मेंहमद—देखो 'मेंमद' (रू. भे.)

उ०—ए मां भाभीजी ने कहकै म्हारै मेंहमद मंडवादे में खेलण जास्यूं लूरड़ी ।—लो. गी.

मे, मे'—देखो 'मेह' (रू. भे.)

उ०—डायमल डागै रै पैल-पोत री बेटी जांमी जद घर हाळां नै, कनलां पाड़ोस्यां बात बताई कै आंधी लारै मे' टोडी लारै कांवळां अर बेटी लारै बेटौ आया करै है ।"—दसदोख

मेआई—देखो 'मेहाई' (रू. भे.)

मेइण, मेइणी—देखो 'मेदिनी' (रू. भे.)

उ०—सोहड खांन खटै सर हुंडह, मेइण धुंधळियौ ब्रहमंडह ।
—गु. रू. बं.

मेउड़ौ, मेऊड़ौ—देखो 'मेह' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—आज धोराऊं धरमी धूंधळौ, काळी कांटण मेह औ । आज ने बरसे धरमी मेऊड़ा भीजै तंबू री डोर औ ।—लो. गी.

मेक—वि० [सं० एक] अकेला, एक मात्र ।

उ०—१ आदि अत आदेस, मेक आदेस नरेसर । अलख तूझ आदेस, अगह आदेस अनंतर ।—ह. र.

उ०—२ उहव पयां नां कोई वह आवै,सुरियण मारग अन्य सह । मेक वहै अरमीह ममोभ्रम, प्रिथी विलग्गी तूझ पहं ।—ह. र'

सं० पु०—एक की संख्या, एक ।

उ०—१ सूंडा-दंड प्रचंडौ, गूना आरूढ मेक मय दंतौ । ईस्वर समया पुत्रौः तस्मै गुणेसाय नमौ ।—गु. रू. बं.

उ०—२ मंत्रियां लियौ पुरमांण मेक । असुरांण तरफ करि मंत्रि एक ।—सू. प्र.

[सं० मेकः] २ बकरा ।

३ देखो 'मेग' (रू. भे.)

रू० भे०—मेकि, मेकौ

मेकडसण—सं० पु० [रा. मेक+सं० दशनः] गणेश, गजानन ।

उ०—गवरी पुत्र गणेसं, मेकडसण आखु जसू वाहण । गज मुख सुर अग्रेसं, सिध बुध-पतिये नमः ।—मा. वचनिका

मेकदंत—सं० पु० [रा० मेक+सं० दन्तः] गणेश, गजानन ।

उ०—गजां ओरापती जेहिं तेज सुरांमुख गिणा, गणां मेकदंत राजै आपगां में सिंध ।—भगतरांम हाडा री गीत

मेकमौ—देखो 'महकमौ' (रू भे.)

मेकळ—सं० पु०—रीवां राज्यान्तर्गत विंध्य पर्वत का एक नामान्तर ।

मेकळकन्यका, मेकळसुता, मेकळाद्रिजा,—सं०स्त्री०—नर्बदा नदी का एक नामान्तर ।

मेकवीस—सं० स्त्री० [रा० मेक+सं० विशंति] एक और बीस, इक्कीस ।

उ०—अस्ट पात्र सब चंग, काइ तरुणि काइ बाळा । पिक हुंसह आलाप, कंठ मोहित मुगताळा । मेकवीस मूरछा त्रिण (ह) ग्रांम निसपति सुर, लहण भेउ खटराग काठ, अक्खै मोखंतर ।
—गु. रू. बं.

मेकि, मेकौ—देखो 'मेक' (रू. भे.)

उ०—१ मेकि बांण मारी मरम पड़ै धसंती प्रांणि ।—रांमरासौ

उ०—२ मेकौ हाथि मोकल्यौ, जोपै जोरावर, उठै न कोड़ उपाव सूं निम रह्या सको नर ।—ठा० भूंझारसिंह मेड़तिया

मेख—सं० स्त्री० [फा० मेख] काठ व धातु की कील ।

उ०—१ जेथ मळैतर मेखचा, गडै मळैतर मेख । जळै मळैतर ईंधणा, दळ चाळक रौ देख ।—बा. दा.

उ०—२ तद राजाजी सिंघासण माथै विराजता स्री मुख सूं फरमायौ—पछै थें लोग विरथा क्यूं डरौ । परवांना री बात रै तौ अठै ई मेख लागगी । फुलवाड़ी

उ०—३ सो चाकर आय इणरी झौपड़ी कन्है होकारौ कियो । च्यांरूं पग इसा रोपिया जांणै जे मेखां गाडी ।
—सूरे खीवे कांधळोत री बात

मुहा०—मेख लागणी=किसी चालु क्रम का रुकना,सहसा रुकना, स्थिर होना ।

२ मवेशी को बांधने या सामियाना तानने आदि के लिये जमीन में रोपी जाने वाली लकड़ी या लोहे की मोटी कील, खूंटी, खूंटा ।

उ०—१ तरे समरथसंघ मने कीयौ अठै डेरौ मती करौ, ऊंट बंधै छै । तरै भाटी गाळ दीनी तिण ऊपर समरथसंघ उठ ने गयौ । तरै आगे भाटी मेख रोपै छे समरथ संघ झटकारी दीनी सो माथौ तुट पडीयौ ।—रा. वं. वि.

उ०—२ जयजरी सिमांनां खंभ जड़ाव । तै रूप मेख रेसम तणांव ।
—सू. प्र.

३ किसी पुरुष या स्त्री के मुंह में सामने वाले दांतों में जड़ी जाने वाली सोने की कील, चूंप ।

उ०—दांता अम्रत मेख दया को बोलणौ । उवटन गुण को ग्यांन ध्यांन को धोवणौ ।—मीरां

४ पलक झपने व खुलने की क्रिया या भाव, निमेष।

उ०—कपोळे मिळे रूप ओपै अलक्कां, प्रभू पेखतां मेख भूलै पलक्कां।—रा. रू.

५ असमंजस, संदेह।

उ०—म्हारी म्हारी करि धन मेलकूं, लोभ वसै लयलीन। नरक तणां घर थूं छूं नव नवा इण में मेख न मीन।—ध. व. ग्रं.

मुहा० मेख न मीन=जिसमें कोई सदेह न हो, निस्संदेह।

६ देखो 'मेष' (रू. भे.)

उ०—गरद्दन कद्दन केक मुगल्ल। छटै खग देखक मेख छगल्ल।
—मे. म.

मेखचौ—सं० पु०—१ हथौडा।

उ०—१ जेत मळैतर मेखचा, गडै मळैतर मेख। जळै मळैतर ईंधणा, दळ चालक रो देख।—बां. दा.

उ०—२ मेखां निहाव पडि मेखचा ताळी तजै तपेसरा। घर धूजि धमक विसहर धुकै, सहस धुकै फण सेस रा।—सू. प्र.

उ०—३ कुतक खिदर धव काठ रा, विदर पचावण वेस। तो पिण हाजर राखणा, घण मेखचा हमेस।—बां. दा.

मेखमो—सं० स्त्री०—स्वर्णकारों के काम आने वाला एक उपकरण, जो आभूषणों पर खुदाई करने के काम आता है।

मेखळ—सं०पु०—१ हवन कूंड।

२ देखो मेखळा' (रू. भे.)

उ०—१ पांच माळ अहिरी गळ पहरी। अविसवि दहूं जनेऊ अहिरी। कट मेखळ अहि धरै सकाजै, रिधू पाव सांकळ अहि राजै।
—सू. प्र.

उ०—२ कर्ण कांन आटंक, वेण नासा मोतीहळ। हार उर चंदन विलेप, रची कांकण कटि मेखळ।—गु. रू. वं.

मेखलगन—देखो 'मेषलग्न' (रू. भे.)

उ०—संवत १७२३ रा माहावद ३ गुरुवार दिन घड़ी १३ चढीयां नै पल १ मेखलगन में जनम हुवी।—नैणसी

मेखळा—सं० स्त्री० [सं० मेखला] १ करधनी नामक आभूषण जो कटि प्रदेश के चारों ओर लपेट कर पहना जाता है, तागड़ी, किंकणी, घंटिका।—(व. स) (अ. मा.)

२ कमर में बांधी जाने वाली सूत की डोरी, कटि सूत्र।

३ कमरबंद, कमरपेटी, इजारबंद।

४ वह वस्तु, जो किसी अन्य वस्तु के मध्य में चारों ओर लिपटी रहती है।

५ मंडलाकार घेरा।

उ०—१ कमठ भार कसमस्स, दाढ़ बाराह खडक्कै। मंडळ मेर मेखळा धमस, धूळी रवि ढक्कै।—गु. रू. वं.

उ०—२ अर तोपां री गाज हूं सेस रा सीसां समेत मकराकार मेखळा मही रै मचोळा लगाया।—वं. भा.

६ पहाड़ की उतराई, ढलान।

७ हवन कुण्ड के चारों ओर बनी पाज, घेरा।

८ पर्वत का मध्य भाग।

९ कमर, कूल्हा।

१० तलवार का परतला।

११ तलवार की मूंठ में बंधी डोरी की गांठ।

१२ घोड़े का जेरबंध।

१३ घोड़े की तोंद पर होने वाली भंवरी।

१४ नर्मदा नदी का नाम।

१५ देखो मेखळी' (रू भे)

उ०—१ माळा मुद्रा मेखळा रे वाला, खपरा लागी हाथ। जोगण हुइ जुग ढूंढसूं, म्हारा रावलिया री साथ।—मीरां

उ०—२ सेली सींगी मेखला, कांनि मुदरका घालि। हरीया जोगी जुगति विन, पंच न सधै पालि।—स्री हरिरांमदासजी महाराज

रू० भे०—मेखळ, मेहल।

मेखलिक—सं० पु०—एक वर्ग विशेष।

उ०—मांत्रिक तंत्रिक गाडरिक मेखलिक लेखक कथक कविकर तालवर कविराज... ।—व. स.

मेखळियौ—सं० पु०—पहनने का कुरता।

रू० भे०—मेखळौ, मेखल्यौ

मेखळी—सं० स्त्री०—१ योगियों व ब्रह्मचारियों का एक पहनावा, जिसमें पीठ व पेट ढके रहते हैं तथा दोनों हाथ खुले रहते हैं।

उ०—तरै जोगी देवराज नूं कह्यौ-थारा वळ रौ विरद वधौ। नै मेखळि, नाद दियौ, पात्र दियौ, नै कह्यौ-औ थे पाट वैसौ तद दीवाळी दसरावै धारिया करौ।—नैणसी

२ झोला, बड़ा थैला।

उ०—१ तद सिद्ध मेखळी मांहै हाथ घातनै गोटौ १ वभूत रो, सोपारी ४ काढ़ दीवी।—नैणसी

उ०—२ वांनी अंग पलेट मेखळी भुजपर मेली। ले माछंदर नांम साहतन कंथा सेली।—पा. प्र.

रू० भे०—मेखळा, मैखळी,

मेखळौ, मेखल्यौ—देखो 'मेखळियौ' (रू. भे.)

मेखसक्रांयत' मेखसक्रांति—सं०स्त्री० [सं०मेष-संक्रांति] मेष राशि में पड़ने वाली संक्रांति। (ज्योतिष)

उ०—जनमे मेखसक्रांति जांम।—रांमरासौ

रू०भे०—मेससंक्रांति, मेससकरांत

मेग—देखो 'मेघ' (रू. भे.)

उ०—ओप सिंदूर तेल अपल्ल, गडडे वाज ढळकै ढल्ल। वहता विडंग दाखै वेग, मारुत पेरियौ किरि मेग।—गु. रू. वं.

मेगजीन—सं०स्त्री० [अं०] १ राइफल में लगी वह छोटी पेटी जिसमें कारतूस भरे रहते हैं।

२ वह स्थान या कक्ष जहां सेना का गोला-बारूद रहता है। बारूदखाना।

३ वह पत्रिका जो किसी निर्धारित समय पर प्रकाशित होती

रहती है। सामयिक पत्र।

मेगळ, मेगल—देखो 'मदकळ' (रू भे.)

उ०—भिडइं सहड रडवडइं सीस धड नड जिम नच्चइं। हमइं घुसइं ऊससइं वीर मेगळ जिम मच्चइं।—सालिभद्र सूरि

मेगवाळ-सं०पु० [स्त्री०मेगवाळण, मेगवाळी] एक अनुसूचित जाति व इस जाति का व्यक्ति।

रू०भे०—मेघवाळ।

मेघ-सं०पु० [सं०मेघः] १ बादल, घन। (अ. मा., ना. डिं. को. नां. मा., डि.को)

उ०—१ उठै घण सायक मेघ 'विलंद'। अयौ किर गोकळ ऊपरि इंद।—सू. प्र.

उ०—२ मेघ जु वरसण लागा। तांह का पांणी परवतां कां कंदरा थें अर नाळां थे पांणी चाल्यौ छै:—वेलि टी.

पर्या०—अभ्र, आकासी, कांमुक, गंजणरोर, घणाघण, जगजीवण, जळद, जळधरण, जळमंडळ, जळमुक, जळवहण, जळहर, जीमूत, तड़ितवांन, तनयतूं, तोईद, धाराधर, धूमज, ध्रवण, नभधुज, नभराट, निवांणभर, नीरद, परजन्य, प्रथवीपाळ, बळाहक, भरणनिवांण, महीरंजण, मुदिर, वरसण, वसु, सघण, सुजळ, स्यांमघटा।

२ वर्षा, बरसात, बारिस,।

उ०—मेघ घणौ वूठौ। धरती अजें नीली नहीं हुई छै। त्रिण अंकुर नहीं हुआ छै।—वेलि टी.

३ रावण का पुत्र मेघनाद, इन्द्रजीत।

उ०—१ जळावोळ लीधां दळां रांण जायौ। अखौ मारियौ सांभळै मेघ आयौ। उठै रांमरा जोध कूदै अमांयौ, सझै हाथ पच्छै अयौ मेघ आयौ।—सू. प्र.

उ०—२ रांवण कूंभ मेघ खर रहचै, कथ सौ वेद पुरांण कही। थगसी भूपां भूप वभीखण, सरणागत हित लंक सही।

—र. ज. प्र.

४ मेघवर्ण, श्वेत-कृष्ण। * (डिं. को.)

५ मेघ के समान।

उ०—उण वेळा वळ अग्गळा, दळ राठौड़ दुबाह। मेघ थया सीसोदियां, लगी लाय अण थाह।—रा. रू.

६ छप्पय छंद का ४६ वां भेद, जिसमें २२ गुरु, १०८ लघु से १३० वर्ण या १५२ मात्राएं होती हैं। (र. ज. प्र.)

७ तारकासुर के पक्ष का एक असुर।

८ स्वायंभु मनु के पुत्रों में से एक।

९ एक राज वंश, जो कोमल नामक नगरी में राज्य करता था।

वि०—मस्त, मत्त।

उ०—इतरे बीच हिरणांरी डार आय नीसरै छै तिकै किण भांत रा हिरणं छै? काळा बडा वेगड़ छै, मुहडां रै डार में मेघ हुय रह्या छै।—रा. सां. सं.

रू० भे०—मेग, मेघु, मेह,

अल्पा०—मेघलौ,

मह०—मेघांण,

मेघप्रिय-सं० पु० [सं०] पवन, हवा। (डिं. को.)

मेघईस-सं० पु० [सं० मेघ+ईश्वर] इन्द्र।

उ०—रखौ सेख वैनतीयै वक्रतुंड तुंडराज, मेघईस वांम सुर वेद भीम जाप। जती पातसाह मांगी मेर दांणी नेक 'जसौ', अठारा विमेक तसौ एक रूप आप।—हुकमीचंद खिड़ियौ

मेघकरण-सं० स्त्री० [सं० मेघकर्णा] स्कंद की अनुचरी, एक मातृका।

मेघकाळ-सं० पु० [सं० मेघ+कालः] वर्षा ऋतु।

मेघजळ-सं० पु० [मेघजलम्] वर्षा का पानी।

मेघजाति-सं० पु० [सं०] एक राजा (प्राचीन)

मेघडंवर, मेघडमर—देखो 'मेघाडंवर' (रू. भे.)

उ०—१ रजि मेघाडंवर रूप सिर झिलत चमर सरूप। वपि ओप वसन बणाव, रवि तेज मुरधर राव।—रा. रू.

उ०—२ सिंधुरां मेघडंवर सकाज। सझि पाखर होदा जंग साज।

—सू. प्र.

मेघदुंदुभी-सं० पु० [सं०] एक राक्षस।

मेघदेहा-सं०पु०[मेघ+देहिन्] बादल के समान जिसकी देह का रंग हो, राम या कृष्ण।

उ०—जिहां मांहि जोया हणूंमांन जेहा। दई मुद्रकां जेण नूं मेघदेहा।—सू. प्र.

मेघनाथ-सं० पु० [सं० मेघनाथः] १ इन्द्र।

२ वरुण।

रू० भे०—मेघनाय,

मेघनांद, मेघनाद-सं० पु० [सं० मेघनाद] १ मेघों की गर्जना, घन-गर्जना।

उ०—१ सींगळी गज्ज गरजंत साद। नभ जांण दवादस मेघनाद।

—गु रू. बं.

उ०—२ मेदनी हैमरां खुरां धूजावै चलायमांन, ऊछजावै लोयणां भळायमांन आग। मेघनाद गजावै यूं सजावै बंदूकां मार, वांघला मयंदां हाडो खिजावै अजाग।—रांमसिंघ हाडा री गीत

२ वरुण।

३ रावण का ज्येष्ठ पुत्र, इन्द्रजीत।

उ०—१ सर पहर अठ जुध सारियौ, मेघनाद लछमण मारियौ। सझि असंख दळवळ सबळ दससिर आवियौ अवनाड़।—सू. प्र.

उ०—२ आहंसी रांम री बंधु सेस री औतार ओपै, कळानिधी कोपै मेघनाद पै करूर। राकसां विणास करै मजादा मही री राखी, जकौ साखी सूरचंद खिती री जहर।—नादरदांन धधवाड़ियौ

४ घटोत्कच के पुत्र मेघवर्ण का नामान्तर।

५ स्कन्द का एक सैनिक।

६ पलास।

रू० भे०—मेघनादि,

मेघनांदानळ, मेघनांदानुळ–सं० पु० [सं० मेघनादानुल] मयूर, मोर। (नां. मा.)

मेघनादि—देखो 'मेघनाद' (रू. भे.)

मेघनाय–सं०पु०—१ नागर मोथा। मुमता।
२ देखो 'मेघनाथ' (रू. भे.)

मेघपंथ—देखो 'मेघपथ' (रू. भे.) (अ. मा.)

मेघपति–सं०पु० [सं०] इन्द्र।

मेघपथ–सं०पु० [सं०] आकाश, व्योम। (अ. मा.)
रू०भे०—मेघपंथ,

मेघपुसप, मेघपुस्प, मेघपुहप–सं०पु० [सं०मेघपुष्प] १ इन्द्र का घोड़ा।
२ श्रीकृष्ण के रथ के चार घोड़ों में से एक।
३ जल, पानी। (अ. मा., ह. नां. मा.)
४ वर्षा मे गिरने वाले ओले, हिमकण।
५ नदी का जळ।
६ बकरे का सींग।
७ मोथा।
८ कुसुम, फूल।

मेघमंडांण–स०पु०—आकाश में बादलों के छा जाने की अवस्था, दशा या भाव
उ०—गडगडि नीसांण मेघमंडांण अंबर भांण रज छाया। हींसा रव घोड़ै दखणी दौड़ै, वागां जोड़ै दळ छाया।—गु. रू. बं.

मेघमलार, मेघमल्लार, मेघमल्हार–सं०पु०—वर्षा ऋतु में गाया जाने वाला सम्पूर्ण जाति का एक राग, इसके सभी स्वर शुद्ध होते हैं। (संगीत)
उ०—१ चौरासी का सांसा मेट्या, कर दीना पेलै पार। दसूं दिसा रा आवे जातरी, करता मेघमलार।—स्री हरिरांमजी महाराज
उ०—२ गांन सुसर गणिका भणै, मुखि मुखि मेघमल्हार। संभू सक्ति नित पूजीइ, आंणी आक कल्हार।—मा. कां. प्र.
उ०—३ कुलवधू तणी पागि नूपर खलकइं, तडिइं कीरत्तिस्तंभ दीसइं लोक हियां विहमइं, मेघमल्हार राग गाइय, वीणावंस मनोहर वाइय, देही पूजा कीजइ, जन्मफल लीजीइ।—व. स.
२ एक प्रकार का बहुत बड़ा पक्षी।

मेघमाळ–सं०पु० [सं०मेघमाल] १ रंभा के गर्भ से उत्पन्न कल्कि के एक पुत्र का नाम।
२ प्लक्ष द्वीप का एक पर्वत।
३ देखो 'मेघमाळा' (रू. भे) (डि. को.)
उ०—१ गज थाट ध्रू सगडस गज दळ, कमे कोग्रण कंठळं। परवत माळ कि हेम हल्लै मेघमाळ कि वद्दळं।—गु. रू. बं.
उ०—२ मयाळ मंडपाळ मेघमाळ मोहनीं नहीं। हिलंब से प्रलंब पंभ विंब सोहनी नहीं।—ऊ. का.

मेघमाळा–सं० स्त्री० [सं० मेघमाला] १ बादलों की घटा, बादलों की पंक्ति या श्रेणी, घनघटा।
उ०—१ बंबी वीण संतार सैंनाय वाजे। अमाळा घुरै मेघमाळा तराजै।—मे. म.
उ०—२ कमाळा लदै सव्व त्यां द्रव्व कोड़ी, सकट्टां लठां भार ज्यों टांस जोड़ी। विभारंभ आचंभ राठौड़ वाळा, मही छेलिवा ऊमड़ै मेघमाळा।—रा. रू.
२ स्कंद की अनुचरी एक मातृका।
उ०—नमो मंत्रणी तंत्रणी मेघमाळा, नमो संकरी सुंदरी प्रेम साळा।
—मा. वचनिका
रू० भे०—मेघमाळ,

मेघमाळी–सं० पु० [सं० मेघमालिन्] १ खर राक्षस का एक आमात्य।
२ स्कंद का एक पार्षद।

मेघराज–सं० पु०—इन्द्र।

मेघलौ—देखो 'मेघ' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—बीजळ-मीट उभोळ पळकती जुगनू जांणै। इतरी खीण उजास मेघला मो घर आंणै।—मेघ.

मेघवत–सं० पु० [सं० मेघवत्] एक दानव, जो कश्यप एव दनु के पुत्रों में से एक था।

मेघवनी—देखो 'मेघवरणी' (रू. भे.)
उ०—१ तेहनी उपम कहीइ किसी, जांणै स्वरग तणी अरवसी। मेघवनी पहिरइ कांचली, निरखइ नारि ते पाछी वली।—
—प्राचीन फागु–संग्रह
उ०२—कडिड खगावि मेघवनी जि पटुली। लई कपूर करि पांन तणीं जिकुली।—प्राचीन फागु–संग्रह

मेघवरण, मेघवरणी–सं० पु० [सं० मेघवर्ण प्रा० मेघवण्ण] १ वरुण। (अ. मा.)
२ घटोत्कच के पुत्र मेघनाद का नामान्तर।
३ एक यक्ष।
४ बादल के रंग वाला वस्त्र।
वि०—बादल के रंग का।
रू० भे०—मेघवनी, मेघवन्न,

मेघवाळ—देखो 'मेगवाळ' (रू. भे.)
(स्त्री० मेघवाळण, मेघवाळी)

मेघवाह, मेघवाहण, मेघवाहन–सं० पु० [सं० मेघवाहन] १ इन्द्र।
(ना डि. को.)
२ वरुण। (ह. नां. मा.)
३ जैगीषव्य नामक शिवावतार का एक शिष्य।
४ जरासंघ का अनुयायी एक नृप।
५ एक दैत्य, जो विष्णु के पद प्रहार से मरा था।

मेघविस्फूरणी–सं० पु० [सं० मेघविस्फूर्जिता] प्रथम एक यगण, तत्पश्चात मगण नगण सगण दो रगण और अंत गुरु सहित १६

वर्णों का वर्णव्रत विशेष जिसमें ६, ६ और ७ पर यति होती है।
मेघवेग–सं० पु० [सं०] कौरव पक्ष का एक वीर।
मेघव्रन्न—देखो 'मेघवरण' (रू. भे.)
उ०—किता वोह हथ्थ किता वोह कन्न। किता वड़रूप किता मेघव्रन्न।—मा. वचनिका
मेघसंधि–सं० पु० [सं०] जरासंघ का पौत्र एवं सहदेव का पुत्र।
मेघसाद–सं० पु० [सं० मेघ+शब्द] घन-गर्जना।
उ०—नींमझै भुजज नव सहस नाद। सादूळ सुणै किरी मेघ-साद।
—गु. रू. वं.
मेघसार–सं० पु० [सं०] घन सार, चीनिया कपूर।
उ०—सुगंध गंधसार एण सार मेघसार ए। सवास श्रंवरे लुवान डंबरे निसार ए।—रा. रू.
मेघस्वना–सं० स्त्री० [सं०] स्कंद की अनुचरी एक मातृका।
मेघस्वाति–सं० पु० [सं०] एक आंध्रवंशीय राजा।
मेघहंतरी–सं० पु० [सं० मेघहन्तृ] सुमेधस् देवों में से एक।
मेघहास–सं० पु० [सं०] राहु का एक पुत्र।
मेघांण—देखो 'मेघ' (मह, रू. भे.)
उ०—सुरतांण दळ मेघांण वट्टळं, सपत समद्र पांणियं सयळं।
—गु. रू. वं.
मेघा–सं० पु०—मघा नक्षत्र।
उ०—यां 'मघकर' हर वज्जिया, आद विखै अणरेह। ज्यां उलटै मेघा रवी, सिद्ध पलट्टै देह।—रा. रू.
मेघाजळ–सं० पु०—बरसात का पानी, वर्षा का पानी।
मेघाडंब, मेघाडंबर, मेघाडंबरि, मेघाडंमर–सं० पु० [सं० मेघ+आडम्बर]
१ मेघ गर्जना, घन-गर्जना।
२ बादलों का विस्तार, बादलों का समूह।
उ०—मेघाडंबर मंडि सूर सज्जें सन्नाहनि, फीलों फरकि निसांन, गरक ताजी गज गाहनि।—ला. रा.
३ कोई बड़ा सामियाना, तंबू, चंदोवा।
४ हाथी पर रक्खा जाने वाला हौदा, अंबाड़ी।
उ०—१ अंग भूलां ओछड़ि, दिया कसि मेघाडंबर। पावां लंगर पड़घा, ऊधड़घा भंडा अंबर।—मे म.
उ०—२ आया बाहिर एम, बैसि गजां मेघाडंबर। चगया वे ढुळतै चमर, हीर जड़ित छत्र हेम।—वचनिका
उ०—३ जय कुंजर हाथीया तणइ कुंभस्थलि चडिउ, पाखती अंगरक्षक तणी ओलि, मंडलिक तणइ परिवारि, पताका फुरकती, मेघाडंवर तणइ आडंबरि''' ।—व. स.
उ०—४ बहमडै गजां मेघाडंबर. कठठे आरावा सकळ। तन ससभ कसे चढ़िया तुरां, दुगम सूर विमरीर दळ।—सू. प्र.
८ एक प्रकार का वस्त्र विशेष।
उ०—१ जादर मेघाडंबर नेत्रपट्ट वोतपट्ट राजपट्ट गजवडि''''''
—व. स.
उ०—२ सानुवाफ, जरवाफ श्रीवाफ सुफ कमखा खरमु नरमु मेघाडंवर मंजीर दाडिमसार''''''।—व. स.
रू०भे०—मेघडंबर, मेघडमर,
मेघावलि–सं० स्त्री०—१ एक प्रकार का वस्त्र विशेष।
उ०—वहमूलं घूगोलियं मीणीयं कालं फूटउतं रातउ फूटउतं। सूपउति मेघावलि मेघडंबर पद्मावलि पद्मोत्तर इत्यादि वस्त्राणि।
—व. स.
२ मेघमाला, मेघपंक्ति।
मेघासुर–सं० पु० [सं०] १ ४९ क्षेत्र पालों में से ४१ वां क्षेत्रपाल।
मेघास्त्र–सं० पु० [सं० मेघ+अस्त्र] एक प्रकार का अस्त्र।
उ०—आग्नेयास्त्र वारुणास्त्र दांनवास्त्र माहेंद्रास्त्र तिमिरास्त्र डिमककरास्त्र नारायणास्त्र अश्वग्रीवास्त्र ब्रह्मास्त्र मेघास्त्र इति अस्त्राणि।—व. स.
मेघु—देखो 'मेघ' (रू. भे.) (उ. र)
मेड़–सं० स्त्री०—१ किसी खेत की सीमा।
२ सीमा, मर्यादा।
सं० पु०—३ स्वर्णकारों की एक शाखा। (मा० म.)
रू०भे०—मेढ़,
मेड़तिया–सं० स्त्री०—राठौड़ वंश की एक शाखा। राव दूदा के वंशज।
उ०—१ मिळ जोधा ऊदा कमंध, मेड़तिया ससमाय। करनौतां चांपां कनै, भल कूपा भागाय।—रा. रू.
मेड़तियौ–सं० पु०—१ राठौड़ वंश की मेड़तिया शाखा का व्यक्ति।
उ०—इम बोलै मेड़तिया अडुर। धुर जोधार पुछै पाटोधर।
—सू प्र.
२ मेड़ता नगर का निवासी।
वि०—मेड़ता संबंधी, मेड़ता का।
रू०भे०—मैड़तियौ, मैड़त्यौ,
मेड़त्या—देखो 'मेड़तिया' (रू. भे.)
मेड़ी—देखो 'मेंड़ी' (रू. भे.)
उ०—१ चढ़ चढ़ दासी मेड़ियां, झांक झरोखां मांय। जे तनै दीसै आवतो म्हारौ मदछकियौ स्यांम।—लो. गी
उ०—२ साची बात है–मत मरज्यौ टावर री माय, ना मरज्यौ बूढै री नार। पेमजी री मेड़ी रौ दीयौ बुझग्यौ। लेवड़ा झड़ग्या, देवळ जमगी अर सूनी ढमढेर वणग्यौ —दमदोख
मेच–सं० पु०—१ मौका, अवसर।
उ०—पड़ै वक्र वीची किंतां नाग पेचां। मिळै आध सूं भी समै साथ मेचां।—वं. भा.
२ देखो मेछ' (रू. भे.)
रू०भे०—मेचु,
मेचक–सं० पु० [सं० मेचकः] १ कृष्ण पक्ष।
उ०—मेचक २ फागुण १२ पंचमी ५, चढै अडर चहुवांण। आयौ पट्टण आगरै, परदळ दट्टण पांण।—वं. भा.
२ श्यामलता, कालापन।
३ अंधकार, अंधेरा।
४ धूंम्रा, धूंम्र
५ बादल।

६ काला नमक।
७ सुरमा।
८ स्तन के ऊपर की घुंडी।
९ एक रत्न विशेष।
१० स्त्रियों द्वारा शृंगारार्थं चिवुक पर लगाई जाने वाली बिंदी। (अ. मा.)
वि०—कृष्ण, श्याम, काला। (अ. मा., नां. मा)
रू०भे०—मेछक।

मेचकता, मेचकताई—सं०स्त्री०—कालापन, श्यामलता।

मेचसिगार—सं०पु०—पीतल।
उ०—मेचसिगार हेम कम मींडां, तोलै ऊड उडीयंद तसा। सीसोदीया तुहाळी समवड़, कीजै जे भूपाळ कसा।—ग्रोपो ग्राढो

मेचु—सं०पु० [सं०मिथ्या] १ असत्य, झूठ।
उ०—वयराट उत्तर पखइ कुरुराउ धायउ। अक्षोहणी दल तणी रज सूर छायउ। नीसांण ने सहसि अंबर घोर गाजइ, ए पांच पांडव तणउ किरि मेचु भांजइ।—सालिसूरि

मेच्छ—देखो 'मेछ' (रू. भे.)
उ०—मौलवी कराडै अरज काजी मुला, पाडजै देवहर दळां कर पेल। मेच्छ वांचै जिको हिंद इकळीम मझ, खडो राजा जितै वर्णै नह खेल।—महाराजा जसवन्तसिंह री गीत

मेछंद—देखो 'मेछ' (मह., रू. भे.)
उ०—ते लरका मुख विख सुनै, वायक सायक सार। स्रुति संभर मेछंद के पंजर करत प्रहार।—ला. रा.

मेछ—सं.पु० [सं०म्लेच्छ] १ असुर, दैत्य, दानव। राक्षस। (ह नां. मा.)
उ०—१ जै जै भूपां भूप, सदा संतां साधारै, दीनां दाता देव, मेछ ग्रांनेका मारै। सीता स्वांमी सूर, वीर वागां वांणासां, लंका जेहा ले'र, दांन देणौ तू दासां।—र. ज. प्र.
उ०—२ इंद्र पूछीया तरइ ब्रह्मादिक, मेछ कीयइ रइ हाथ मरइ। देव अनई महांत दूहवइ, तिण कहर सुरांपति खेद करइ।
—महादेव पारवती री वेलि.
२ यवन, मुसलमान। म्लेच्छ।
उ०—१ मेछ उलट्टा मेदनी, फट्टा जांण समंद। वळ छुट्टा भड़ कायरां, देख प्रगट्टा दुंद।—रा. रू.
उ०—२ मेछां ग्रागळ माथ, निवैं नहीं नरनाथ री। सो करतव समराथ, पाळै रांण प्रतापसी।—दुरसो ग्राढो
उ०—३ निजोड़त मेछ धरै खत्रनेम। खगां 'सगतेस' समोभ्रम 'खेम'।—सू. प्र.
उ०—४ पांडवां जहीं किता पळ खंडिया, विहरै हाड विजू—जळ वाह। सहुग्रां सिर महुग्रो सूरजमल, मेल्यौ मेछ तणै दळ माह।
—गु. रू. वं.
३ नीच, दुष्ट, विधर्मी।
उ०—भांण ऊदोत रै समै पळ भोगणी, थोगणी मोत रै समंद थागै। असुर उर खोतरै मेछ ग्रारोगणी, जोगणी जोत रै रूप जागै।
—खेतसी बारहठ
४ तांबा।
५ देखो 'मेच' (रू. भे.)
रू०भे०—मेचु. मेछंद, मेच्छ,
अल्पा—मेछौ,
मह०—मेछांग, मेछांण, मेछांन, मेछाड़, मेछायण, मेछाळ, मैछांण मैछायण।

मेछक—देखो 'मेचक' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

मेछमुख—सं०पु० [सं०म्लेच्छमुख] तांबा। (डि. को.)

मेछांइण, मेछांण—देखो 'मेछ' (मह., रू. भे.)
उ०—१ हिंदू धरम निवाह सरम गंजै मेछांणां। चक्रवती चालियौ प्रगट वैकुंठ पयांणां।—रा. रू.
उ०—२ पाड़ पतसाह घड़ सिवाडां पौढियौ, देव मंडळ सरी नको दूजौ। मार मेछांण घड़ जोत 'सूजौ' मिळै, पथर पाड़ो तथा कोड़ पूजौ।—सुजांणसिंह सेखावत रो गीत
उ०—३ मलिकहेम डरै मेछांइण, देखै विसमां कमंध दळ।
—विक्रमादीत राठौड़ री गीत
(स्त्री०मेछांणी)

मेछांन, मेछांड़—देखो 'मेछ' (मह., रू. भे.)
उ०—१ चढ़ि चाल्लिय मेछांन भांन गरदावनि भिल्लिय। हल चल्लिय हिंदवांन, खखड़ खुगनि खिल खिल्लिय।—ला. रा.
उ०—२ दळ गहवर ऊलटा, खांन तहवर सारीखा। महा सोच मेवाड, ईख मेछांड़ घणीखा।—रा. रू.

मेछाधिपति—सं०पु० [सं०म्लेच्छ-अधिपति] १ असुराधिपति, दानव राज, दैत्यराज।
उ०—मेछाधिपति संभ बोलियौ—गुमांन रा भार सूं भाजै। जांणै सघण वादळां मांहे, गैहरौ मेह गाजै।—मा. वचनिका
२ मुसलमान बादशाह, यवनाधिपति।

मेछायण—देखो 'मेछ' (मह., रू. भे.)

मेछाळ—देखो 'मेछ' (मह., रू. भे.)
उ०—मेछाळां सिर मार, देतो पह ग्रागै दळां। कंलपुरी भारथि किसन, जाडगो जिणिग्रार।—वचनिका

मेछौ—देखो मेछ' (अल्पा., रू. भे.)

मेज—सं०पु० [फा०] १ लकड़ी की वह बड़ी व ऊंची चौकी या पाट जिस पर प्रायः पढ़ने—लिखने या खाना खाने का कार्य किया जाता है। टेबिल।
२ दावत का सामान, भोजन—सामग्री।

मेजपोस—सं०पु० [फा०मेजपोश] मेज पर बिछाया जाने वाला वस्त्र, चादर।

मेजर–सं॰पु॰ [अं॰] सेना का एक अधिकारी ।
 वि॰—मुख्य, बड़ा ।
मेजरनांमौ–सं॰पु॰ [अ॰महजर नांमा] १ कई व्यक्तियों द्वारा सामूहिक रूप में दिया जाने वाला आवेदन–पत्र ।
 २ वह पत्र जिसमें कई आदमियों की गवाही हो ।
 ३ प्रमाण–पत्र,साक्षी पत्र ।
 ४ लोगों के हाजिर होने का एक स्थान ।
 ५ हत्या या हत्यारे के सम्बन्ध में साक्षीपत्र ।
 रू॰भे॰—महजरनांमौ
मेट–सं॰स्त्री॰—मुल्तानी मिट्टी ।
 उ॰—१ मुरड़ मेट लाल अर पीळी, खणिज खंधेड़ी खलक री । पलक पलक री पूज जोगी, मांनी मुरधर मुलक री ।—दसदेव
 उ॰—२ नायण मुळकती थकी बोली–म्हां गरीबां रै अऊक पड़ै जद मेट, कोयला, चेपौ, मुरड सुं हर पाललां ।—फुलवाड़ी
 सं॰पु॰ [अं॰] २ मजदूरों के ऊपर कार्य करने वाला अधिकारी, जमादार ।
 ३ जहाज पर कार्य करने वाला एक कर्मचारी ।
 ४ मेटने की क्रिया या भाव ।
 रू॰भे॰—मेटि ।
मेट, मेटण–वि॰—मिटाने वाला ।
 उ॰—१ संगट गद मेटण हरि संक ।—ह. नां. मा,
 उ॰–२ नमो नारायण जोग– निवास,नमो दुख मेट उधारण-दास ।
 —ह. र.
मेटणछपा–सं॰पु॰—रात्रि को मिटाने वाला सूर्य । (डि. को.)
मेटणतम–सं॰पु॰—१ अंधकार को मिटाने वाला, दीपक । (नां. मा,)
 २ सूर्य, रवि ।
मेटणौ, मेटबौ–क्रि॰सं॰ [सं॰मृष्ट] १ समाप्त करना, नष्ट करना, मिटाना ।
 उ॰—१ आतम ऊंचा देखीयै, नींच न देखौ कोय । ऊची नींची मेट करि, हरीया हरि का होय ।—श्री हरिरांमदासजी महाराज
 उ॰–२ विलोक लोक लोक को प्रलोक लोक की वदै । त्रिलोक सोक मेट देत फेट दे जदै तदै ।—ऊ. का॰
 उ॰—३ मेटे मुरलोक पैठौ जळ मांह तठै इक अंड निपायौ तांह ।
 —ह. र.
 २ दूर करना, हरण करना, अलग करना, हटाना ।
 उ॰—१ औगण मेटण हार, अमोलख ओखद इणमें । गूंद घणौ गुणकार, अव्यय सक्ति है जिण में ।—दसदेव
 उ॰—२ महादेवजी रै सामी देखनै कैवण लागा—यें भळै भौळा-संकर बाजौ,दीन-दुखियां रा दुख मेटण री गुमांन करौ । थांरै बैठां आ रचना व्है तौ साव खूटगी ।—फुलवाड़ी
 उ॰—३ हिव तुं जड उपगार करि, मेटि सहुनी पीड़ । स्युं भाखै छै मो भणी, भांजि दुहेली भीड़ ।—वि. कु.
 उ॰—४ अधम-उधारन याद करि, तन मन राखि नचित । जन हरीया कुंण मेटसी, सांई बिना गवित ।—
 —श्रीहरिरांमदासजी महाराज
 ३ निवारण करना, समाधान करना, मिटाना, हल करना ।
 उ॰—१ आ थारै संका है तो चरचा करांला । इम कहि उण वेला इज तावड़ै में विहार कीधौ । उत्तमूण में सूत्र उत्तराध्येन थी संका मेट दीधी ।—भि. द्र.
 ४ छोड़ना, त्यागना ।
 उ॰—मांनापमान सुख दुख समांन । मद मोह मेट भगवंत भेट ।
 ५ बंद करना, रोकना ।
 उ॰—सगळी बात चुपचाप गुणियां पछै अबकी चकवी मूंडै बोली-इण देंत नै मारनै औ अन्याव मेटियां बिना म्हैं तौ टूंच में नुगौ-पांणी ई नी मेलूं ।—फुलवाड़ी
 ६ टालना ।
 उ॰—चिड़ा रै वाचा देतां ई चिड़ी तौ प्रांण मुगत व्हैगी । चिड़ौ घणौ ई रोयौ-रींकियौ पण होणी नै कुण मेट सकै ।—फुलवाड़ी
 ७ शान्त करना ।
 ८ कम करना, घटाना, क्षीण करना ।
 ९ मारना समाप्त करना, विनाश करना ।
 उ॰–किरमर वीर पुहप कछवाही, मांन'गयौ महपतियां मेट । धरि हुंस रहचा पेट आपांणै,परहंस रहे अरघा चै पेट ।
 १० लोपना, उलंघन करना ।
 उ॰—१ मुख रांम रांम करज्यौ मती, म्हांरी कह्यौ न मेटज्यौ । चारणां वरण सावां चरण, भूल कदै मत भेटज्यौ ।—ऊ. का.
 उ॰—२ मेट सकइ न को मरजादा, हालइ सको मरजादा माहि ।
 —महादेव पारवती री वेलि
 उ॰—३ आग्या हूं मेटि अठइ ताइ आई, वात इयइ रउ अउहिज विचार ।—महादेव पारवती री वेलि
 ११ कोई लिखावट या चिन्ह मिटाना, साफ करना ।
 मेटणहार, हारौ (हारी), मेटणियौ—वि॰ ।
 मेटिओड़ौ, मेटियोड़ौ, मेट्योड़ौ—भू॰ का॰ कृ॰ ।
 मेटीजणौ, मेटीजबौ—कर्म वा॰ ।
 मिटणौ, मिटबौ—अक॰ रू॰ ।
मेटली–सं॰ स्त्री॰—रहट द्वारा कुए से पानी निकालने का एक मिट्टी का उपकरण ।
मेटि—देखो 'मेट' (रू. भे.)
 उ॰—माथउ धोइ मेटि, उभू सूरिज सांमुही । तउ ऊपनी पेटि, मोहण बोली मारुई ।—ढो॰ मा.
मेटियो–सं॰पु॰—मेट के रंग का घोड़ा ।
 उ॰—के लीला के कागड़ा करड़ा हरड़ा केक । मुमकी नुकरा मेटिया इसडा तुरंग अनेक ।—पे. रू.
 वि॰—मेट के रंग का ।

मेटियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ समाप्त किया हुआ, मिटाया हुआ, नष्ट किया हुआ. २ दूर कियाहुआ,अलग किया हुआ,हरण किया हुआ, हटाया हुआ. ३ निवारण किया हुआ, समाधान किया हुआ, हल किया हुआ. ४ छोड़ा हुआ, त्यागा हुआ. ५ बंद किया हुआ, रोका हुआ. ६ टाला हुआ. ७ शान्त किया हुआ. ८ कम किया हुआ, घटाया हुआ, क्षीण किया हुआ. ९ मारा हुआ, समाप्त किया हुआ, विनाश किया हुआ. १० लोपा हुआ, उलंघन किया हुआ. ११ साफ किया हुआ, मिटाया हुआ।

(स्त्री०मेटियोड़ी)

मेड–सं०पु०—तीर, बाण। (डिं. नां. मा)

रू०भे०—मेढ़, मैंड,,

मेडक—देखो 'मींडकौ' (मह., रू. भे)

मेडल–सं०पु० [अं०] पदक, तमगा।

मेडसुनार–सं०पु०—स्वर्णकारों की एक शाखा।

मेडिकल–वि० [अं०] १ चिकित्सा सम्बंधी।

२ औषधियों सम्बन्धी, भैषेजिक।

मेडिसन–सं०पु० [अं०] औषिधि, दवा।

मेडी—देखो 'मेढी' (रू. भे.)

मेडौ—देखो 'मैंढ़ौ' (मह., रू. भे.)

उ०—मिलिया सुरवए कोडि तेत्रीस, गयणि दुंदुहि व्रह व्रहीय। मेडे वइठला राय कूंयार आवए कूंयरि द्रूपदीय।—सालिभद्र सूरि

मेढ—१ पशुओं के बांधने के लिए जमीन मे गाड़ा जाने वाला खूटा।

२ देखो 'मींढ' (रू. भे.)

उ०—महा उमराव रांणा तणै मेढ रा। वेढ रा डाव वप चड़ेवांनी साख रा भड़ां भिड़ज्जां चढ़ै सावता, मरद् मेवासियां हार मांनो।
—दल्लौ मोतीसर

वि०—२ दृढ, अटल।

उ०—सायर तणौ सरस साई दळ, मरवा छळां मांडियौ मेढ़। मांभी मेर न गौ मेरवड़ै, विढवा रहियौ कांटां वेढ़।—दूदौ आसियौ

३ देखो 'मेड' (रू. भे.)

४ देखो मेड' (रू. भे.)

५ देखो 'मींढ' (रू. भे.)

६ देखो 'मेढी' (रू. भे.)

मेढक—देखो 'मींडकौ' (रू. भे')

मेढकौ—देखो 'मींडकौ' (रू. भे.)

मेढ़ासींगी–सं०स्त्री० [सं०मेढ़ शृंगी] १ प्राय: मध्य प्रदेश व दक्षिण के जंगलों में पाई जाने वाली एक झाडीदार लता जो औषधि के रूप में काम आती है व इससे सर्प का विष दूर होता है।

२ देखो 'मींढ़ासींगी' (रू. भे.)

रू०भे०—मींडासींगी।

मेढ़ि,मेढ़ी–सं०पु० [सं०मेधी] १ रहट या खलिहान में अनाज के पौधों को कुचलने के लिये जोते जाने वाले बैलों में से अन्दर की ओर चलने वाला बैल।

उ०—रिण गाहटतै रांम खळां रिण, थिर निज चरण से मेढ़ि थिया। फिरि चड़ियैं संघार फैरता, केकांणां पाई सुगह किया।
—वेलि

(सं० स्त्री०) २ खलिहान के बीचों बीच रोपा जाने वाला लकड़ी का स्तम्भ, खूंटा जिसके चारों ओर बैल घूमते हैं। (उ. र.)

३ स्तम्भ,।

४ घोड़े के सिर पर होने वाली एक भंवरी।

५ स्त्रियों के सिर की कनपटी के ऊपर की गूंथी हुई लटें जो चोटी के साथ गूंथी जाती है।

वि०—मुखिया, प्रधान, पंच।

उ०—१ चोड़ै धाड़ै चोर ढंग बिन ढेढ़स ढेढ़ी। जिकै नहीं किण जोग, मिल्या घर घर रा मेढ़ी।—ऊ. का.

उ०—२ खत्या खेसलिया भाखलिया खाधं,बेभड़ दांमोदर चांमोदर बांधै। मुखिया मन मोहण दोहण घर मेढ़ी, गोढै ढेरी न्है खूंणी में गेढी।—ऊ. का.

उ०—३ हसम सिणगार मुजरौ कर हालियौ, तेज अजरौ करै नजर तेढ़ी। कूंपहर अडर सुघड़ भंवर अणी रौ, मिसल मुरधर समर अमर मेढ़ी।—ठाकुर महेसदास कूंपावत रौ गीत

रू० भे०—मैंडी, मेंढी

मेढ़ीमणौं–वि०—१ वीर बहादुर।

उ०—१ चालसी जुध गयण धोम चेढीमणौ, मुगळां गाळसी जोम मेढीमणौं। तरह लंकाळ सी घाट तेढीमणौं,जाळसी क्यां कसर दाट वेढेमणौं।—बद्रीदास खिड़ियौ

उ०—२ आरवी बंब मादळ उभै, धुबै नाद वादळ धजर। मोनूं बताय वेढीमणा, नाह कठी टेढी नजर।—मे. म.

मेढौ—देखो 'मींढौ' (रू. भे.)

मेण–सं० पु०—देखो 'मैंण' (रू. भे.)

उ०—१ दिक्षा छे पुत्र दोहिली तो ने कहुं छुं जताय। मेण दांत लोहना चणा, कुण सकेला चवाय।—जयवांणी

उ०—२ जकौ संत जीवत सिंघ नैं कोप करै तौ भसम करदै, उण रै सांमो मेण रौ सिंघ बापड़ौ कित्तीक देर टिक सकै।—फुलवाड़ी

मेणका—देखो 'मेनका' (रू. भे.)

मेणवती, मेणबत्ती–सं० स्त्री० [फा० मोम+वत्ती] मोमवत्ती, शमा।

मेणमाखी–सं० स्त्री०—मधु मक्खी।

उ०—एक मेणमाखी नै तिरस लागी तौ वा पांणी पीवण नैं गी।
—फुलवाड़ी

मेणा—१ देखो 'मैणा' (रू. भे.)

२ देखो मेना' (रू. भे.)

३ देखो 'मैंना' (रू. भे.)

मेणियौ–सं० पु०—जिस पर मोम का रोगन चढ़ा हुआ हो।

मेणी, मे'णी—१ देखो 'मैंणी, मैं'णी' (रू. भे.)

२ मेणा जाती की स्त्री ।

३ गुण्डी ।

मेणौ, में'जौ—देखो 'मंणी' (रू. भे.)

मेतर—देखो 'महत्तर' (रू. भे)

मेतळणौ, मेतळबौ—क्रि० स०—भूनना, तलना ।

उ०—कुभाहरै लडै खळ कीवा, मेतलबौ नह तास मुणं । पवन भणंकै सब रस परसै, सत्रां सगहम नांम सुणं ।
—महाराज प्रथ्वीराज रौ गीत

मेती-सं० स्त्री०—सीस फूल (आभूषण) का वह भाग जिसमें धागा पिरोया जाता है ।

२ देखो 'मेथी' (रू. भे.)

मेथी-सं०स्त्री०—१ भारत में प्रायः सर्वत्र होने वाला पौधा, जिसकी खेती की जाती है । (उ. र.)

२ उक्त पौधे का बीज ।

वि० वि०—इस पौधे की पत्तियों की सब्जी बनती है । इसकी फली के दाने औषधि में काम आते हैं और कई प्रकार से लाभ दायक होते हैं ।

उ०—उसडना लाडू, दूधना लाडू, दहीथरांना लाडू, रवाना लाडू करकरी लाडू, आसधिना लाडू, मेथी ना लाडू.……।—व. स.

मेथौ-सं०पु०—वन मेथी । (वैद्यक)

मेद-सं०स्त्री० [सं०मेदः] १ चर्बी, वसा ।

२ शरीर के किसी भाग में चरबी की बढ़ी हुई गांठ, एक रोग । (डि. को.)

उ०—ऊपरला होठ रै पसवाड़ै मूंछ्यां रा मांमूली सेनांण । गळा रै सांमौ सांम लांठी मेद ।—फुलवाड़ी

३ एक वर्ण संकर जाति जिसकी उत्पत्ति वैदेहिक पुरुष तथा निषाद जाति की स्त्री से होना माना जाता है ।

४ एक नाग का नाम ।

५ एक औषधि विशेष जो अष्ट गण वर्ग में से एक है तथा क्षय रोग की दवा है। (अमृत)

६ कस्तूरी ।

७ देखो 'मेदनी' (रू. भे.)

८ देखो 'मेध' (रू. भे.)

मेदक-सं०पु० [सं०मेदक] शराब खीचने के काम आने वाला द्रव्य ।

मेदकर-सं०पु० [सं०मेदकरः] मांस । (डि. को.)

मेदज-सं०पु० [सं०मेदजम्] १ हड्डी, अस्थि ।

२ एक प्रकार का गूगल ।

मेदड़ेचा-सं०स्त्री०—चौहान वंश की एक शाखा ।

उ०—कान्ह मेदड़ेचा चहुवांण नंघण अमरावत रौ दोहितौ ।
—बां. दा. ख्यात

मेदड़ेचौ-सं०पु०—चौहान वंश की मेदड़ेचा शाखा का व्यक्ति ।

मेदणी—देखो 'मेदनी' (रू. भे.)

उ०—मंडळ धू सथिर, अहराव सिर मेदणी, राव गांगौ कहै, त्यां गीत रहसी ।—राव गांगौ

मेदधरा-सं०पु० [सं०]शरीर की वह झिल्ली जिसमें चरबी रहती है ।

मेदनी-सं०स्त्री० [सं०मेदिनी] १ पृथ्वी, धरती, भूमि । (अ. मा., नां. मा., ह. नां. मा.)

उ०—मेछ उलट्टा मेदनी, फट्टा जांण समंद । बळ छुट्टा भड़ कायरां, देख प्रगट्टा दुंद ।—रा. रू.

२ जगह, स्थान, स्थल ।

३ संस्कृत का एक कोश ।

रू०भे०—मेद, मेइणी, मेदणी, मेदिन, मेदिनी,

मेदनीतळ-सं०पु० [सं०मेदिनीतल] भूमितल, पृथ्वीतल ।

रू०भे०—मेइणीतळ ।

मेदपाट-सं०पु०—मेवाड़ का एक नामान्तर ।

उ०—१ अकबर कीना आद, हींदू नृप हाजर हुआ । मेदपाट मरजाद पग लागौ न प्रतापसी ।—दुरसौ आढौ

उ०—२ मेदपाट नै लाट वलि भोट अनै करणाट । पोतै वसि करि चालीयौ, ले निज सेना थाट ।—वि. कु.

मेदा-सं० स्त्री०—१ अष्ट वर्ग के अन्तर्गत एक औषधि ।

२ देखो मेधा' (रू. भे.)

मेदालकड़ी—देखो 'मैदालकड़ी' (रू. भे.)

मेदिन, मेदिनी—देखो 'मेदनी' (रू. भे.)

उ०—करणीगर रूड़ा करै, करतै विलंब न काय । मार उपावै मेदिनी, मुहुरत हेकण मांय ।—ह. र.

मेदिय, मेदियौ-सं० पु०—एक प्रकार का वस्त्र ।

उ०—चीणउसीउं मलउसीउ मूगनउं मयउं मंगलिकं मेदियउं सीलउरं इत्यादि वस्त्रांणि ।—व. स.

मेदौ-सं० पु० [अ० मेदः] १ पक्वाशय, कोठा ।

२ पेट ।

३ देखो 'मैदौ' (रू. भे.)

मेध-सं० पु० [सं० मेधः] १ यज्ञ हवन, मख ।

२ हवि, बलि ।

३ बलि दिया जाने वाला पशु या पदार्थ ।

४ सीमा, हद ।

रू० भे०—मेद ।

मेधज-सं० पु० [सं० मेधजः] विष्णु का एक नामान्तर ।

मेधा-सं० स्त्री० [सं०] १ वह मानसिक शक्ति जिसके द्वारा सोचने-विचारने व औचित्य समझने का कार्य होता है । बुद्धि, प्रज्ञा, मति ।

उ०—देवी मालणी जोगणी मत्त मेधा । देवी वेधणी सूर असुरां उवेधा ।—देवी०

२ बुद्धि, प्रज्ञा, मति । (अ. मा., नां. मा., ह. नां. मा.)

उ०—१ बालकांड दाख्यौ विमल मेधा मुझ परमांण । अवधकांड वरणूं अवै, सुणजै चिरत सुजांण ।—र. रू.

उ०—२ मेधा महंत दीपत दिगंत, आदांन ओघ अक्षय अमोघ।
—ऊ. का.

३ स्मरण शक्ति, याददाश्त।

उ०—वड जगद विसतारै, निधि मेधा तुम्यौ नम।—रांमरासौ

४ मान्यता, धारणा।

५ सरस्वती का एक रूप विशेष।

६ सोलह मातृकाओं में से एक।

७ दक्ष प्रजापति की एक कन्या।

८ सीमा, हद।

उ०—कांम तौ वडौ नहीं, पण भोळी जनता माथै रोब मेधा वायरौ खाटै।—दसदोख

९ चोर। (अ, मा.)

१०—यज्ञ।

११ छप्पय छंद का एक भेद।

रू० भे०—मेहा, मंधा।

मेधादध, मेधादधि—सं० पु० [सं० मेधा+उदधि] १ बुद्धि का सागर।

२ कवि। (अ. मा.)

मेधामांन—देखो 'मेधावांन' (रू. भे.)

मेधावर, मेधावांन, मेधावाळ—वि० [सं० मेधा+वत्,मेधा+वरः] जिसकी बुद्धि तीव्र हो, बुद्धिमान, मेधावी।

उ०—कनियां ग्रहे हालिया किंकर। वदै अरज प्रोहित मेधावर।
—सू. प्र.

मेधावी—वि० [सं० मेधाविन्] १ जिसकी बुद्धि विलक्षण हो, तीव्र हो, तेज, तीव्र बुद्धि वाला।

२ चतुर, बुद्धिमान।

३ पंडित, ज्ञानी, विद्वान।

रू० भे०—मेवावी

मेधि, मेधी—सं० पु०—कवि। (अ. मा.)

वि०—बुद्धिमान, चतुर।

मेन—सं० पु०—१ अंधकार।

२ कामदेव।

वि०—१ श्यामल, काला।

२ देखो 'मेण' (रू. भे.)

मेनक—१ देखो 'मेनका' (रू. भे.) (डिं. नां. मा.)

२ देखो 'मैनाक' (रू. भे.)

मेनका—सं० स्त्री० [सं०]—१ पुराणानुसार स्वर्ग की एक अप्सरा, जिसने विश्वामित्र ऋषि के साथ संयोग करके शकुन्तला को जन्म दिया था।

२ हिमालय की पत्नी व पार्वती की माता का नाम।

रू०भे०—मेणका, मेनक, मैणांका, मैणका, मैनंका, मैना।

मेनकात्मजा—सं० स्त्री० [सं०] १ शकुन्तला।

२ पार्वती, उमा।

मेना—सं० स्त्री० [सं०] १ हिमालय की स्त्री व पार्वती की माता का नाम।

२ देखो 'मैना' (रू. भे.)

रू० भे०—मयणा, मयना, मेणा।

मेनाक—देखो 'मैनाक' (रू. भे.)

उ०—गिरि मेनाक यूं वीनवै रे स्वांमी, थोड़ौ तौ मेटोनी थकांण।
—गी. रा.

मेनाद—सं० पु० [सं० मेनादः] १ मयूर, मोर।

२ वकरा।

मेनाधव—सं० पुं०—हिमालय।

मेनिक—सं० पु० मछूवा, मल्लाह।

उ०—तसु करमे काल निवास जो,तूं तो वसीयौ रे मछ ना पेट मां रे लो। रहीयौ वलि मेनिक आवास जो,आंन पड्यौ रे दुखनी फेट मां रे लो।—वि. कु.

मेमंत—देखो 'मैमंत' (रू. भे.)

मेमटा—देखो 'मैमट' (रू. भे.)

मेमती, मेमत्तिय—देखो 'मैमंत' (रू. भे.)

उ०—सरगै सुरा न वकरा, ना वाजंती वीण। नां कांमणि मेमत्तिआं, भूरा डळा अफीण।—रा. सा. सं.

(स्त्री० मेमंती, मेमत्ती)

मेमल—सं० पु०—एक प्रकार का वरसाती कीड़ा।

मेमार—सं० पु० [अ०] इमारत वनाने वाला कारीगर,शिल्पी, राजगीर।

मेमूदी—देखो 'महमूदी' (रू. भे.)

मेमोरियल—सं० पु० [अं०] वह वस्तु, भवन, चिन्ह या प्रतीक जो किसी की यादगार हो, स्मारक।

मेमोरेंडम—सं० पु० [अं०] १ स्मरण-पत्र

२ वक्तव्य।

मेय—स० स्त्री० [स०] नापने-तोलने या परिमाण निकालने की क्रिया।

वि०—नापने-तोलने या परिमाण निकालने योग्य।

अव्य०—समान, तुल्य।

उ०—दिपें मेय राधेय सरवस्व दांनी। महाकस्ट भीमांगवै भूप मांनी।—वं. भा.

सर्वं०—मुझे, मुझको।

मेर—सं० पु० [सं० मेरु] १ अस्ताचल।

उ०—सो दिन मेर पेसतां जोड़यां री जमीं छोड खरळां री सींव बड़िया।—कुंवरसी सांखला री वारता

२ सीमा, सरहद।

उ०—इत उणियारौ टूंक उत, मेर मिळत दहुं राज। तदपि असुर को चित वध्यौ, फिर घर दब्बन काज।—ला. रा.

३ राजस्थान की एक पहाड़ी जाति या इस जाति का व्यक्ति।

उ०—१ मैणां पेणू मेर वावरा विलळा वैता। भाळौ थोरी भीळ, रात रा मांगै रैता —ऊ. का.

उ०—३ भील न कूं भलावियौ, नहीं मेरां मीणांह । तोनूं राण भळावियौ, सोहड़ा सुकलीणांह ।—वां. दा.

४ डिंगल के वेलिया सांणोर छंद का एक भेद विशेष, जिसके प्रथम द्वाले में ८ लघु, २८ गुरु कुल ६४ मात्राएं तथा इसी क्रम से शेष द्वालों में ८ लघु, २७ गुरु कुल ६२ मात्राएं होती हैं।

५ देखो मेरु' (रू. भे.)

उ०—१ छबीली घणौं खास श्रावास छाजै, लखै घाट स्वाराट री पाट लाजै। निराळौ फबै फूटरौ भूंठ नांहो, मनों मेर रौ कूट वैकूंट मांही ।—मे. म.

उ०—२ कांमीनर कै कांम कौ, हरीया रतीयेक सुख । यांतै अधिकौ ऊपजै, मेर प्रवांणं दुख ।—स्रीहरिरांमदासजी महाराज

उ०—३ दादू माया फोड़ै नैन दो, रांम न सूझै काळ । साधु पुकारै मेर चढ, देख अग्नि की झाळ ।—दादूवांणी

उ०—४ क्या फेरै कर काठ की, मन की माळा फेर । जनहरीया माळा फिरै, विनां विचेरण मेर ।—स्री हरीरांमदासजी महाराज

उ०—५ सबळ सिघ 'प्राग' का सो मेर व्रत धारी । श्रासकरन भाई जंग काच की सी झारी ।—रा. रू.

मेरउ—देखो 'मेरौ' (रू. भे.)

उ०—चंद्र बाहु चरण कमल, मधुकर मन मेरउ हो । अवर देव तिके वणराइ, नावइ कदि नेरउ हो ।—स. कु.

मेरगरंद, मेरगर, मेरगिर, मेरगिरव्वर, मेरगिरि, मेरग्गिर, मेरग्गिरि—देखो 'मेरुगिरि' (रू. भे) (ह. नां. मा.)

उ०—१ विभाड़ गयंद मयंद विध महि सांमंद इयर्क मच्छरि । 'सुरउत' प्रगट नवनंद सिर, गहअति मेरगिरंद सिरि ।—गु. रू. बं.

उ०—२ 'माला' हरी मनमोट मोटै पाट मेरगिर । भाटियां भवाड़ै भला भींवजी भोवाळ ।—नैणसी

उ०—३ आसण अचल मेरगिर ऊपरि मन हसति गई बांधा । उलटा पल्यास वोडि पहूंता, पंडे पार न लाधा ।—ह. पु वां.

उ०—४ प्रभ्रिति इंद्र प्रताप, पाक पिंड तेजा प्रभाकर । क्रोध जम्म वैभव कुमेर, दिढ मेरगिरव्वर ।—गु. रू. बं.

उ०—५ गज रूपां सीस फावि फरहरियां, उण उणिहार इक्वए । आरुहि करि अछर मेरगिरि स्रिंगी विभ्रप स्रिगक पेख ए ।

—गु. रू. बं.

उ०—६ नरनाह नटै पलटै नहीं, मेरग्गिरि मजबूत सा । करि जोम वोम श्रोधस करै, घोम नयण अवधूत सा ।—सू. प्र.

मेरडंड—देखो 'मेरुदंड' (रू. भे.)

उ०—१ पछिम दिसा की पाई वाटी, वंकनाळि की खूल्ही घाटी । मेरडंड में वसीया वासा, आगैं अंतर उपजी आसा ।

—स्री हरिरांमदास जी महाराज

उ०—२ मेरडंड मधि डोरी लहै, ब्रह्म अगनि काया वन दहै ।

—ह. पु. वां.

मेरणौ—देखो 'वारणौ' (रू. भे.)

मेरपव्वै, मेरपरवत, मेरपरवत, मेरपहाड़—देखो 'मेरुपरवत' (रू. भे.)

उ०—द्वीपमांहि जंबूद्वीप, प्रदीपमांहि रत्नप्रदीप, परवतमांहि मेरपरवत, भूचर जीवने हेतु जलधर····। | व. स.

उ०—२ अममांन थंभ उट्ठै इसौ, पकड़ै मेरपहाड़ नूं । सुरतांण खुरम जुध सूझियौ, पातसाह अल्लाह नूं ।—गु. रू. बं.

उ०—३ पड़ै दीठ आसेर ज्यों मेरपव्वै । दुती देखियां स्वरग री दुरग दव्वै ।—मे. म.

मेरम—१ देखो 'मरम' (रू. भे.)

उ०—सत सब्द री ऐसी लगी, उतरे नहीं खुमार । ज्यांरा मेरम साधौ सोई लखै, पावै दसवैं द्वार ।—हरिरांमजी महाराज

२ देखो 'महरम' (रू. भे.)

मेरवाड़ौ—सं०पु०—अजमेर तथा उसके आस पास के प्रदेश का पुराना नाम ।

मेरी—सर्व०—मैं (खुद) से सम्बन्धित एक सार्वनामिक विशेषण रूप ।

उ०—कसर न काई हरखाई बुद्धि मेरी हेरि । उकत उपाई मनभाई जैसी मांनी मैं ।—ऊ. का.

सं०स्त्री०—१ अहंभाव, अहंकार ।

२ मेर जाति की कोई स्त्री ।

मेरु—सं०पु०[सं०] १ एक पुराणोक्त पर्वत जो स्वर्ण का माना गया है।

उ०—१ अभ्र मांहि जिम ध्र अडिग, सेमनाग पाताल । अत्युलोक मां मेरु जिम तिम ए वरण विसाल ।—वि. कु.

उ०—२ हेला तउ महेस्वर तणी, स्रस्टि ब्रह्मातणी, प्रज्ञा ब्रहस्पति तणी, प्रतिज्ञा फरुसरांम तणी, मरयादा समुद्र तणी, दांन बलि तणउं, अवस्टंभ मेरु तणउ ।—व. स.

२ जप करने वाली माला के बीच का बड़ा मणिया ।

उ०—सैंकड़ां सूरां नूं माथौ करि महा रुद्र री माळा में आ रारा मुंड री मेरु चढाइ रुंड थकौ भी धारा में तिलतिल पळचरां री पांती पुदगळन राखि इस्टलोक पूगियौ । —वं भा.

३ वीणा का एक अंग ।

४ छन्द शास्त्र में एक गणना–पद्धति, जिसके अनुसार किसी छंद के लघु–गुरु ज्ञात किये जाते हैं।

५ छप्पय छन्द का ४० वां भेद, जिसमें ३१ गुरु तथा ९० लघु के अनुसार १२१ वर्ण व १५२ मात्राएं होती हैं।

६ हुक्के का एक भाग ।

७ पर्वत, पहाड़ ।

८ पर्वत–शिखर

वि०—१ अटल, अड़िग, दृढ

२ देखो 'मेरुदंड'

३ देखो 'मेर' (रू. भे.)

रू. भे.—मेरू, मेरौ,

मेरुगिर, मेरुगिरि, मेरुगिरी—सं०पु० [सं०मेरु-गिरि] सुमेरु पर्वत ।

उ०—समुद्र रहइं लवरण मूंठि भेट, रोहरणा चलनइं रत्न भेट, गंगा रहइं कनकफल भेट, मलयाचलनइं चंदन भेट, मेरुगिरि नइ सुवरण्ए, भेट कल्पवृक्ष नइं कांइ फल भेट ? —व. स.

रू०भे०—मेरगरंद, मेरगर, मेरगिर, मेरगिरव्वर, मेरगिरि, मेरग्गिर, मेरग्गिरि ।

मेरुडंड, मेरुदंड—स०पु० [सं०मेरु दण्ड] १ शरीर की पीठ में, गर्दन से लेकर कमर तक की हड्डी, रीढ़ की हड्डी।

२ दो ध्रुवों के मध्य की एक कल्पित रेखा ।

३ किसी वड़े तम्बू के बीच लगा बड़ा स्तम्भ ।

रू०भे०—मेरडंड,

मेरुदेवी—सं० स्त्री० [सं०] ऋषभदेव की माता ।

मेरुधाया—सं० पु० [सं० मेरु धामन्] महादेव, शिव ।

मेरुपरवत, मेरुपरवत—सं० पु० [सं० मेरु+पर्वत]—सुमेरू पर्वत ।

रू० भे०—परवतमेर, परवत्तमेर, मेरपरवत्त, मेरपरवत, मेरपव्वै, मेरपहाड़ ।

मेरुम—वि० [सं० मरहूम] स्वर्गीय, मृत, मराहुआ । (मा. म.)

मेरुसिखर—सं० पु० [सं०] १ मेरु पर्वत की चोटी ।

२ हठयोग के अनुसार, मस्तक के छ: चक्रों में से सब से ऊपर का चक्र ।

मेरू—देखो 'मेरु' (रू. भे.)

उ०—फिरिया नहि फेरू मारग मेरू, तेरू पार तिरंदा है । —ऊ. का.

मेरूवन—सं० पु०—मेरू पहाड के आस-पास का जंगल ।

उ०—नंदीसर विदिसें सोळस कुळगिरि तीस । मेरूवन असी दस कुरु गजदते वीस । मांनसोत्तर परवत च्यार च्यार इखु कार । —वृ. स्त

मेरे, मेरैं—सर्व०—१ 'मेरौ' का बहुवचन एक सर्वनाम ।

उ०—नेरे सुनो जसवंत नरेस्वर, तेरे बिना हम मेरे न तेरे । —ऊ. का.

२ देखो 'म्हारै' (रू. भे.)

उ०—जद बो मालो वोल्यौ—मेरैं तो भूत मुकी री दे नांखी । —दमदोख

मेरेअ—सं० स्त्री० [सं० मैरेय] एक प्रकार की शराब, मदिरा ।

मेरौ—सर्व०—'मैं' का सम्बन्ध कारक एक सार्वनामिक रूप 'मेरा' ।

उ०—१ तूं सुत रायांसिंघ रा, रासा मेरौ प्रांण । जो हूं चाहूं सो करै, तौ आपूं जोधांण ।—रा. रू.

उ०—२ मन मेरा सेवग भया लगा सबद गुर कांन । रोंम रोंम में भिद गया, हरीया किधू न जांन ।—स्रीहरिरांमदासजी महाराज

सं० पु०—१ मेर जाति का व्यक्ति ।

२ देखो 'मेरु' (रू. भे.)

उ०—१ धारा धरस्य धारासंख्या, भूतले रेणुकण गणना, समुद्रे नीर बिंदु संख्या, रोहणे रत्न संख्या, दिवि तारासंख्या, मेरौ सुवरण्ए संख्या,—व. स.

उ०—२ जोधपुर तुल मेरौ, तेरह साखां कोडि तेतीसौ । तथौ 'गजसाह' इंद्रौ, वित चित विसेखांयु ।—गु. रू. बं.

मेळ, मेल—सं० पु० [सं०मेल:] १ दो या दो से अधिक प्राणियों का मिलाप, भेट, समागम, संयोग ।

उ०—१ ईडरिया आचार री, वीर चढै तो वेळ । हसत चढ़ै चारण हुवै, माया सरसत मेळ —वां. दा.

उ०—२ तिकरण अवंती पुरी रै परै पंच कोस रै प्रमांण पूगि वीरां री बासठि हजार सेना रै साथ मेळ पायौ । —वं. भा.

२ मिलने या मिले हुए होने की अवस्था या भाव ।

३ परस्पर प्रेम, एकता, संगठन ।

उ० —१ हाडोती हिळ मिळ हुई, मेळ कियौ मेवाड़ । घर जसवंत रै घुमंड नैं, ढूकी घर ढूंढाड़ ।—ऊ. का.

उ०—२ बरस तयांळौ दुंद घर दौड़ै कमंध दुभाळ । जोस अछायौ मेळ कज, आयौ दुरजणसाळ ।—रा. रू.

४ स्नेह, प्रेम. मित्रता, दोस्ती । (अ. मा., ह. नां. मा.)

उ०—१ हद धरम १ सीम २ गणिया रहण बणिया मेळ सुवेळ बधि । खणियां १ न होड नाडां खटै, ऊफणियां हाडा उदधि ।—व. भा.

उ०— २ भारथ मत कर भांमणी, मी भारथ नंह मेळ । वापी कूप बताव विस, कै कर म्हांसूं केळ ।—वां. दा.

उ०—३ साहूकार दोइ एकै सहर मांहे रहै । दोऊ द्रव्यवंत मोटा आदमी, वडा सुं सगायां । साहूकारे आपस में वडो मेळ छै । —सत री बांधी लिखमी री वात

५ सुलह. समझौता, संधि ।

उ०—बीजै दिन आजमखांन नवीनगर लूंटियौ । पछै जांम वात कर मेळ कियौ ।—नैणसी

६ समता, बराबरी, जोड़ ।

७ ताल-मेल, सामंजस्य ।

उ०—मिनख री मरजादा सूं लुगाई री मरजादा मेळ नीं खावै । —फुलवाड़ी

८ अनुकूलता, उपयुक्तता ।

उ०—तिण समै चाचौ मेरौ आप रै साथ लै साजबाज सुं चढ़ीया। रांणाजी दिसा उनाळी ऊभी मांहे चालीया । तरै रांणै मोकळजी देख कह्यौ—आज खातण वाळा विपरीत दीसै मेळ में तो नहीं । —रावरिड़मल री वात

९ मिश्रण, मिलावट ।

१०—सम्बन्ध लगाव ।

उ०—१ रांणी राजा नै होळै सूं मूंडो मस्कोर न कह्यौ—म्हांरै पगां

सांमी देखनै आप आंरै मन री वात नीं जांण सको ? कंवरां रै बोल अर मंत्रियां रै पगां में कित्तो मेळ है ।—फुलवाड़ी

उ०—२ दुनियां में कोई अमरता रौ परवांनौ लिखायनै नीं लायौ। जीवां नै मारतां एक दिन खुद नै ई मरजाणी है । मरियां पछै किणी नै नीं मारणौ। जीवण अर मरण री तौ आपस में मेळ है।
—फुलवाड़ी

११ यात्रा या किसी कार्य में होने वाली सहगमन की अवस्था या भाव, सहचार्य, साथ ।

१२ एकाकार होने की अवस्था, विलय ।

उ०—सही सुखजोत हि जोत समाय, रही नहिं अंतर में अंतराय। करै निज हंस दुहूं निज केल, मिल्यौ परमातम आतम मेळ ।
—ऊ. का.

१३ काल-चक्र या घटनाक्रम से किसी घटना विशेष का बनने वाला कारण, योग, संयोग ।

उ०—दुख, कळेस अर संताप विना सुख अर आणंद रो साचैलो साव ई नीं आवै । दोनूं वातां रै मेळ सूं सगळी वातां सांतरी लागै।
—फुलवाड़ी

१४ इंतजाम, व्यवस्था, सराजाम ।

उ०—पण जांनिया रै जीमण वास्तै चांदी रा वरतन कम पड़ैला। पच्चास थाळ बाटकियां री मेळ तौ अपांरै घराघरू है।
—फुलवाड़ी

१५ वृद्धि ।

उ०—झांझरकै घड़ी रात थकां वा ई घूं घट घूं घट ! करतां करतां पांच सात दिनां पछै पींजांरी कळदार रिपियौ नोळी में भेळ दियौ। पूरा सौ रिपियां री मेळ ! दोनूं लोग लुगायां रै हरख री पार नीं ।—फुलवाड़ी

१६ टकराव ।

उ०—मैंगळ एथी आव मत, वाघां केरी वाट। सांप अंगूठा मेळ ज्यूं, कदियक हुसी कुघाट ।—बां. दा.

१७ समूह ।

उ०—एक वरदत्त पुत्र अक्षोभ नो, दोय से पांच यादव भेळ रे । स्रीनेम साथै सेजम लियो, श्री सहस्र पुरुस री मेळ रे।
—जयवांणी

१८ फौज, सेना।

१९ मौका, अवसर ।

२० बरात के स्वागतार्थ कन्या-पक्ष व वर पक्ष के लोगों का मिलन ।

२१ विवाह के पहले दिन कन्या के पिता द्वारा अपने पक्ष को दिया जाने वाला भोज ।

२२ मृतक का ग्यारवां दिन ।

२३ द्वादसे के दिन आए हुए व्यक्तियों का समूह ।

उ०—सारा पुण उदास हुवा। पांणी दियो । बारवें दिन सारो मेळ भेळो हुवो । खरचकर पाघ वंधाई।
—सूरे खींवै कांधळोत री बात

२४ गाय के स्थनों में दूध आने की स्थिति ।

२५ आय-व्यय का प्रतिदिन किया जाने वाला लेखा-जोखा ।

२६ प्रकार, वर्ग, जाति ।

ज्यूं०—अठै सब मेळ की चीजां मिळ मकै ।

२७ वह गाड़ी, जिसमें डाक जाती-आती हो।

२८ डाक से भेजी जाने वाली चिट्ठी, पार्सल आदि ।

२९ छंद का तुकान्त चरण ।

३० योग, जोड़ ।

उ०—चवदै चाळ ढूंढाहड़ कहीजै तिण रो मेळ गांव १४४०।
—नैणसी

वि०—१ समान, तुल्य ।

उ०—लड़ंग लाख तुंग तुंग संग जुंग हल्लये । चढ़ै कि वेळ आकुळै समुद्र मेळ चल्लये ।—रा. रू.

रू०भे०—मेलइ

मे'ल—देखो 'महल' (रू. भे.)

मेलइ—देखो मेळ' (रू. भे.)

उ०—हूं जांणूं जइ नइ मिलूं रे लो। साहिब नइ इकवार रे मनेही। सयणा रइ मेलइ करी रे लो, सफळ हुवइ अवतार रे सनेही।
—वि. कु.

मेळकी—स०स्त्री०—एक घास विशेष जिसमें से दाने निकाल कर खाने के काम में लिए जाते हैं ।

मेळग—सं०पु०—१ संग्रह ।

२ देखो 'मेळू' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—जग मुगति भुगति दाता जगा, दांन मांन वंछत दियै। पारथै किसूं मेळग कुपह, प्रभूनाथ पारथियै ।—जगौ खिड़ियौ

मेळगर—वि०—१ मिलाप या मेल करने वाला।

२ एकत्र करने वाला, इकट्ठा करने वाला ।

उ०—मरसी माया तणा मेळगर,कदे न पर उपगार करै। 'माधौ'अमर हुओ यळ माहै, 'माधौ' कमधज नांज मरै ।—ओपौ आढ़ौ

सं०पु०—१ दर्शकगण।

उ०—आगळि रितुराय मंडियौ अवसर, मंडप वन नीझरण म्रदंग। पंच बांण नायक गायक पिक, वसुह रंग मेळगर विहंग ।—वेलि

२ एक वर्ग विशेष।

उ०—खरड लाठा माठा रंगाचारय उचित बोला साहस बोला, मोट बोला मेलगर मांमगर कउतिगीया कुहटीया नट वट गांद्धा छीपा परियटा''''''।—व. स.

मेलड़ियां—देखो 'मावलियां' (रू. भे.)

मेलड़ो—देखो 'महल' (अल्पा; रू. भे.)

उ०— हाट हवेली मेलड़ा रे, कीना होडा होड। जमा पाप तूं संचने रे प्रांणी, जाय पलक में छोड ।—जयवांणी

मेळची-सं०पु०—मित्र, दोस्त।

मेलजोल-सं०पु०—१ मैत्री, दोस्ती, प्रेम।
२ परिचय, मुलाकात।
३ सम्बन्ध।
४ सुलह, संधि।

मेलट्रेन-सं०स्त्री० [अं०] वह रेलगाड़ी जिसमें डाक रहती है और जो बड़े बड़े स्टेशनों पर ही रुकती है।

मेळण, मेलण-सं० पु०—१ दूध को जमाने के लिये उसमें डाला जाने वाला दही, छाछ आदि कोई खट्टा पदार्थ। (जावण)।
२ रोटी के लिये, आटे को गूंदने से पूर्व उसमें मिलाया जाने वाला घी। (मोवण)
३ गोबर में, ऊपले बनाते समय, मिलाया जाने वाला, घास-फूस, चारे आदि का चूरा। (घासण)।
४ कतिपय खाद्य पदार्थ में पड़ने वाले मसाले।
उ०—जदि मीसण लै सस जिकी, आप गोळ द्रुत आइ। बणवायी जिण पळ विविध, मेळण उचित मिळाइ।—वं. भा.
५ मिश्रण, मिलावट।
६ सम्बन्ध।
उ०—केइ उपाय करी मेलण करूं,परिग्रह विविध प्रकार। विरति करूं पिण मन न रहै वाले, तौ किम हुवै भव पार निस्तार।
—ध. व. ग्रं.
वि०—७ मेल करने वाला।
रू० भे०—मळावण, मळेवण, मेळवणी, मेळवणी, मैळण

मेळणौ, मेळवौ-क्रि० स० [सं० मेलनं] १ भेंट कराना, साक्षात्कार कराना, मिलाना।
उ०—कह्यौ-राजा-सूं काहरां मेळिस्यौ? कह्यौ जी! वेगौ ही मेळिस्यां, थे ऊतरौ, जिकूं चाहीजै सू सरब थां नूं दिरावीस, थांहरा घणा वांना करीस,अर थे मांगिस्यौ सू राजा देसी।
—सयणी री वात
२ सम्मिलित करना, एकत्र करना, इकट्ठा करना।
उ०—१ पारबती पिता तणइ थळ पूहती, भायउ ईसर आपरै आवास। परणीजण नूं वळै नवी परि,दळ मेळवा पठावै दास।
—महादेव पारवती री वेलि
उ०—२ अनंत कोट ब्रह्मंड तणा इद्र, तन खोहण अतलोक तणा। सात पायाळ तण इंद्र साखइ, घणूं सुं थक मेळिया घणा।
—महादेव पारवती री वेलि
३ जोड़ना, भिड़ाना, मिलाना।
उ०—पण बापजी, चुगलखोरां री काई सेड़ौ। पांवडै पांवडै चुगलखोर भरचा। एक री इक्कीस मेळ राजाजी नै भिड़ावैला।
—फुलवाड़ी
४ प्रेम करना, स्नेह करना।
ज्यूं०—मन मेळणौ।
उ०—कर दोड़ां दिस कमधजां, गौ मेड़ते सिताब। मोहकम रौ मन मेळवां, मिळ पूछियौ जबाब।—रा. रू.
५ किसी को अपनी ओर करना, मिलाना।
उ०—अथ भीडू दक्खिण तणा, वदिया पहलै बाद। धुर चोथी पच्छिम घणी, मेळै अनुज मुराद।—वं. भा.
६ जोड़ना, अड़ाना, सटाना, संलग्न करना।
उ०—परम सिध म प्रांणी डारं उनमनि लागा प्रेम वंघारं। आतम परमातम सूं मेळौ, परमहंस सूं दिलि मिळि खेलौ।—ह. पु. वां.
७ घाव या जख्म की चिकित्सा करना।
८ मिश्रण करना, मिलाना।
उ०—अब कंठीर सूंडाळ,निळियां प्राक्रम मेळिजै। क्युं इधको अंग आदि सै, पोह असुरेस प्रौचाळ।—मा. वचनिका
९ आंख बंद करना, नींद लेना।
उ०—राति सखी इण ताळ मइं, काइज कुरळी पंखि। उवै सरि, हूं घरि आपणइ, बिहूं न मेळी अंखि।—ढो. मा.
१०—धारण करना ग्रहण करना, अपने में रमाना।
उ०—यूं कंमधज्ज धगैं धू अंबर, ज्यूं गंगा मेळै जोगेसर। आदर जोध विरोध असंका, बंट रतन्नै ज्यां सुर वंका।—रा. रू.
११ गाय भैंस आदि को उनका बच्चा मिला कर दूध देने की स्थिति में करना।
उ०—मांवां टाबर मेळवै, लूआं अंग बचाय। छाती मिळतां छटपटै, बिलख बिलख रह जाय।—लू
मेळणहार, हारौ (हारी), मेळणियौ—वि०।
मेळिओड़ौ, मेळियोड़ौ, मेळ्यौड़ौ—भू० का० कृ०।
मेळीजणौ, मेळीजवौ—कर्म वा०।
मिळणौ, मिळवौ - अक० रू०।

मेलणौ, मेलवौ-वि०स० [सं०मेलनं] १ जाने के लिये प्रेरित करना, प्रस्थान कराना,भेजना, पठाना।
उ०—१ आप अजैगढ़ आवियौ, माप जर्क असमांन। वेग सिहाय विहारियां मेलै मुकरबखांन।—रा. रू.
उ०—२ उदैपुरिया बाजार में एक मैड़ी जाची। आप वैठा ने साथा नें मेल उपगरणा मंगाय लिया।—भि. द्र.
उ०—३ साळा बतळावै अर साळी मनुवार करै तथा सैंग लोग हाथाजोड़ी कर रैया है। पण हा कोई नीं करा सकै। छेकड़ धाप' र घर हाळा पारा नै मेलणै री हंकारौ भरै, जद जुंवाई आपरी जैवयौड़ी ऊंट त्यार करै है।—दसदोख
उ०—४ हालौ धाम दिवाडिहां, अथवा इण नूं ओर। पण अब मेलां साह पग, जांणै जय नय जोर।—व. भा.
२ किसी वस्तु,संदेश,समाचार आदि को किसी के द्वारा,एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुंचाना।
उ०—१ फोग कैर काचर फळी, पापड़ गेघर पात। बड़ियां मेलै

वांणिया, सांगरियां सोगात ।—वां. दा.

उ०—२ जयमल 'पतै' जवाब जद, हजरत तणी हजूर । मंत्र करे लिख मेलिया, सांभळ हरखै सूर ।—वां. दा.

उ०—३ जद चतुरोजी स्रावक बोल्यो-थें तो थोड़ा कोस हालो अनें हूं कासीद मेलनें ठांम ठांम खबर कराय देसूं सो थांनें मन करनें पिण कोइ वंछै नहीं ।—भि. द्र.

उ०—४ नृप मेलै आया नगर, दोड वधाईदार । कही विगत विध विध करै, आनंद भरै अपार ।—र. रू.

उ०—५ राजा कागळ मेलियो, लिखाड़ै चड चोट । जिम जांणै तिम मारलै, कुंवर कणंगिर कोट ।—गु. रू. ब.

३ कोई वस्तु किसी स्थान पर रखना, धरना, टिकाना ।

उ०—१ अर महीप भी आप री माळा नूं मंच पर ही मेलि एक दिसा रो मारग गहियो ।—वं. भा.

उ०—२ केइ कहै पोथी आंगणै मेलणी नहीं । पूठ देणी नहीं । पोथी पांनां तो ग्यांन है । तिण री आसातना करणी नहीं ।
—भि. द्र.

उ०—३ आपरै पगां में पोत्यो मेलूं म्हनै न्है जकी वात वतावो ।
—फुलवाड़ी

उ०—४ पेमजी वैंटो च्योड़ै राज री रकम रा आयोड़ा ढाई हजार रिपियां री थैली भरियोड़ी मेल दी, दलाल-देवता रै आगै बगा नांखी अर कैयो-कीं वता ले जावो सा ।—दसदोख

४ किसी को किसी के पास रहने के लिये छोड़ना ।

उ०—१ पछै बांमण चाल्यो सो वेटा ने ठाकुर तीरै मेले गयो ।
—गांमरा धणी री वात

उ०—२ मुवा बालक सुलसा जणेजी, ते मेले तुम पास ।
—जयवांणी

५ त्यागना, छोडना ।

उं०—१ नैमजी हो सउ मीनति करतां थकां हो राजि, मत जावउ मुझ मेलि ।—वि. कु.

उ०—२ वननाथ न मेलै वासना,टिकियो मेरज टल टळै । सेवगां तणा मेहासद्र साद न करनी संभळै ।—चौथ वीठू

६ धारण करना, मानना ।

उ०—हरीया हरि का अनंत गुण, लिख लिख हिरदै मेल । नीर न पीयु डरपती, मत श्री देत उगेल ।—स्री हरिरांम दासजी महाराज

७ देखो 'मेळणो, मेळवो' (रू. भे.)

मेलणहार, हारो(हारी), मेलणियो—वि० ।

मेलिओड़ो, मेलियोड़ो, मेल्योड़ो—भू० का कृ० ।

मेलीजणो, मेलीजवो—कर्म वा० ।

मेल्हणो, मेल्हवो, मेल्हवणो, मेल्हववो, मेहलणो, मेहलवो मेलणो, मेलवो, मेल्हणो, मेल्हवो—रू० भे० ।

मेळप-सं०स्त्री०—१ मित्रता, दोस्ती ।

२ स्नेह व प्रेम होने की अवस्था या भाव ।

मेळवण, मेळवणी—देखो 'मेळण' (रू. भे.)

उ०—मांहे कपूर कसतूरी घातजै छै । केसर रो रंग दीजै छै । सूंघै चमेली री मेलवणी दीजै छै —रा. सा. सं.

मेळसरज, मेळसरोज-सं०पु०—मक्खन, नवनीत । (अ. मा.)

मेलांण-सं०पु०—१ यात्रा के बीच किया जाने वाला विश्राम, पड़ाव ।

उ०—साख अनंत लाख भड़ साथै । मग मेलांण दियो सुण माथै ।
—रा रू.

२ स्थान, मुकाम ।

३ रहट की माल का एक अतिरिक्त भाग जो पानी के नीचा ऊंचा हो जाने पर माल को घटाने बढाने के लिये जोड़ा जाता है ।

४ महल, प्रासाद आदि ।

रू०भे०—मेलोण, मेल्हांण, मेहलांण, मैलांण, मैल्हांण, मैहलांण ।

मेळाऊ-सं०पु०—१ एकत्रित जन समूह, भीड़ ।

उ०—सगळे असुरे भार संभाया. अघपत सुहड़ ठिकांणै आया । वाजी निसबळ किताइ पुळांणा, मेळाउवां वदन मुरझांणा ।
—रा. रू.

२ शत्रु-पक्ष ।

उ०—सुणियो 'अजन' महाबळी, खळ नाठो पुर छोड । मेळाऊ साथे हुवा, खाटी हाथे खोड़ ।—रा. रू.

वि०—गद्दार, धोखे बाज, शत्रु पक्ष में मिलने वाला ।

उ०—'सांमंतसिंघ' जोगीदासोत नै भाटी 'रांमसिंघ' मुकनदासोत फोजबंधी कीवी नै नवाब रो मेळाऊ मारियो सो विगत कही ।
—रा. रू.

२ मिले हुऐ, एक साथ, इकट्ठे, एकत्र, मिश्रित ।

उ०—रूकह्यो भाटी 'रंणायर' मांझी तीन साथ दळ मोगर । वांरा भड मेळाऊ आया, चचळ थळवट दिसा चलाया ।—रा. रू.

मेळाणो, मेळावो-क्रि०सं० [मेळणो क्रि० का प्रे०रू०] १ भेंट करवाना, साक्षात्कार, करवाना मिलवाना ।

२ सम्मिलित करवाना, एकत्र करवाना, इकट्ठा कराना ।

३ जुड़वाना, भिड़वाना, मिलवाना ।

४ प्रेम कराना, स्नेह कराना ।

५ किसी को अपनी ओर करवाना, मिलवाना ।

६ अड़वाना, सटवाना, जुड़वाना ।

७ घाव या जख्म की चिकित्सा करवाना ।

८ मिश्रण कराना, मिलवाना ।

९ आंख बंद कराना, नींद लेने के लिये प्रेरित करना ।

१० धारण कराना, ग्रहण कराना, अपने में रमवाना ।

११ गाय, भैंस आदि को उनका बच्चा मिलवाना, दूध देने की अवस्था में करवाना ।

मेळाण हार, हारो(हारी), मेळाणियो—वि० ।

मेळायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

मेळाईजणौ, मेळाईजबौ—कर्म वा० ।

मेळावणौ, मेळावबौ—रू० भे० ।

मेलाणौ, मेलाबौ—क्रि०स [मेलणौ क्रि० का प्रे०रू०] १ प्रस्थान करवाना, भिजवाना, पठवाना ।

२ किसी वस्तु, संदेश, समाचार आदि को, किसी द्वारा, एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुंचवाना ।

३ कोई वस्तु किसी स्थान पर रखवाना, धरवाना, टिकवाना ।

४ किसी को किसी के पास रहने के लिये छुड़वाना ।

५ त्याग करवाना, छुड़वाना ।

६ धारण करवाना, मनवाना ।

मेलाण हार, हारौ(हारी), मेलाणियौ—वि० ।

मेलायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

मेलाईजणौ, मेलाईजबौ—कर्म वा० ।

मेलावणौ, मेलावबौ, मेल्हाणौ, मेल्हावौ, मेल्हावणौ, मेल्हाववौ, मेहलाणौ मेहलावौ मेहलावणौ मेहलाववौ मेलाणौ, मलावौ' —रू० भे०

मेळाप, मेलाप—देखो 'मिळाप, मिलाप' (रू. भे.)

उ०—१ कब गिरनार गढड़ चढूं जपतउ अहनिसि जाप, प्रापति बिण किम पांमिइं, मन मांन्या मेलाप ।—स. कु.

उ०—२ उमड़ती जोबन कांठळ आज, रूप रै रिमझोळां री घात। मनां रो दो दिन री मेळाप, वणसी दो दिन बीती बात ।—सांझ

मेळापौ, मेलापौ—देखो 'मिळाप' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—पसुय पुकार सुणी रथ फेरयउ, राजुल करत विलापा हो । सरज्यां बिन सखी क्युं कर पाइयउ, मन मांन्या मेलापा हो ।

—स. कु.

मेळावड़ौ—देखो 'मेळावौ' (रू. भे)

उ—कर जोड़ 'नरपति' कहै, धार थी आवज्यौ भोज नरेस । मात पिता मेळावड़ो, सांभरया रास होई पुण्य प्रदेस ।—बी' दे.

मेलामंतर—सं० पु०—वाम मार्गियों का मंत्र, छोटा मंत्र । (तांत्रिक)

मेलायत—देखौ 'महलायत' (रू. भे)

उ०—१ साथ्यां की मेलायत देख, नाटक त्रिया सुख विसेख ।

—जयवांणी

मेळायोड़ौ—भू० का० कृ०—१ भेंट करवाया हुआ, साक्षात्कार करवाया हुआ, मिलवाया हुआ. २सम्मिलित करवाया हुआ, एकत्र करवाया हुआ, इकट्ठा करवाया हुआ. ३ जुडवाया हुआ, भिड़वाया हुआ, मिलवाया हुआ. ४ प्रेम कराया हुआ, स्नेह कराया हुआ. ५ अपनी ओर करवाया हुवा, मिलवाया हुआ. ६ अड़वाया हुआ, सटवाया हुआ. जुड़वाया हुआ. ७ चिकित्सा करवा कर मिलवाया हुआ, (घाव-जख्म). ८ मिश्रण करवाया हुआ, मिलवाया हुआ. ९ नींद लेने के लिये प्रेरित किया हुआ, आंख मिचवाया हुआ. १० धारण करवाया हुआ, ग्रहण कराया हुआ, अपने मे रमवाया हुआ. ११ बच्चा मिला कर दूध देने की स्थिति करवाया हुआ, (गाय भैंस आदि)

(स्त्री० मेळायोड़ी)

मेलायोड़ौ—भू०का०कृ०—१प्रस्थान करवाया हुआ,भिजवाया हुआ,पठवाया हुआ. २ एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुंचवाया हुआ (संदेश) ३ रखवाया हुआ, धरवाया हुआ. टिकवाया हुआ. ४ रहने के लिये छुडवाया हुआ. ५ त्याग करवाया हुआ, छुड़वाया हुआ. ६ धारण करवाया हुआ, मनवाया हुआ ।

(स्त्री० मेलायोड़ी)

मेळावउ, मेलावउ—देखो 'मेळावौ' (रू. भे.)

उ०—१ घर धंधइ पंडिउ सह कोइ, कुटुंब मेलावउ खावा होइ । खत्र अखत्र कीधां सवि वार,डोकर नी कोइ न करइं सार ।

—वस्तिग

उ०—२ पनहर वरस विछोहउ हूआै,घणइ कस्टि मेळावउ थयउ । वळे विछोही जउ करतारि, तउ इण भवि मुझ एहज नारि ।

—ढो. मा.

मेलावड़ौ—देखो 'मेळावौ' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—मन वल्लभ मेलावड़ौ रे पुण्ये लहीये एह ।—स्रीपालरास

मेळावण—देखो 'मेळावौ' (रू. भे.)

उ०—भूरै मुखड़े पर स्वेदण कण भारी, पहुंची पोळछ में प्रीतम री प्यारी । नाचै खेलावण मेळावण नांही, जोवण जोगी वा वेळा जग मांही ।—ऊ. का.

मेळावणौ, मेळावबौ—देखो 'मेळाणौ, मेळाबौ' (रू. भे.)

मेळावणहार, हारौ (हारी), मेळावणियौ—वि० ।

मेळाविओड़ौ. मेळावियोड़ौ, मेळाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

मेळावीजणौ, मेळावीजबौ—कर्म वा० ।

मेलावणौ, मेलावबौ—देखो 'मेलाणौ, मेलावौ' (रू. भे)

मेलावणहार हारौ (हारी), मेलावणियौ—वि० ।

मेलाविग्रोड़ौ, मेलावियोड़ौ, मेलाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

मेलावीजणौ, मेलावीजबौ—कर्म वा० ।

मेळावियोड़ौ—देखो मेळायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० मेळावियोड़ी)

मेलावियोड़ौ—देखो 'मेलायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० मेलावियोड़ी)

मेळावौ—सं० पु० [सं० मेलापकः] १ मिळने की क्रिया या भाव, साक्षात्कार, भेंट, मिलाप ।

२ कई व्यक्तियों का एक साथ होने वाला मिलाप, भैंट, सम्मेलन ।

३ बरात के स्वागतार्थ होने वाला वर पक्ष व कन्या पक्ष का मिलन ।

४ एकत्रितएवं सम्मिलित होने की क्रिया ।

उ०—पडसां रत वाहै रवदां पर,आवैं आप करीजो ऊपर । मिळियो

जायल सिर मेळावो चढ़िया लै धूहड़ री छावो ।—पा. प्र.

रू० भे०—मेळावउ, मेलावउ, मेळावण,

अल्पा०—मेळावड़ो ।

मेळियोड़ी–भू० का० कृ०—१ भेंट करवाया हुआ, साक्षात्कार कराया हुआ, मिलाया हुआ. २ सम्मिलित किया हुआ, एकत्र किया हुआ, इकट्ठा किया हुआ. ३ जोड़ा हुआ, भिड़ाया हुआ, मिलाया हुआ ४ प्रेम किया हुआ, स्नेह किया हुआ. ५ अपनी ओर किया हुआ. मिलाया हुआ. ५ जोड़ा हुआ, अड़ाया हुआ, सटाया हुआ ७ चिकित्सा किया हुआ. ८ मिश्रण किया हुआ. मिलाया हुआ. ९ आंख बंद किया हुआ, निद्रित. १० धारण किया हुआ, ग्रहण किया हुआ, अपने मे रमाया हुआ. ११ बच्चा मिलाकर दूध देने की स्थिति मे किया हुआ ।

स्त्री० (मेळियोड़ी)

मेलियोड़ी–भू० का० कृ०—१ जाने के लिये प्रेरित किया हुआ, प्रस्थान कराया हुआ, भेजा हुआ, पठाया हुआ. २ किसी के द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुंचाया हुआ. ३ रखा हुआ, धरा हुआ, टिकाया हुआ. ४ किसी के पास रहने के लिये छोड़ा हुआ. ५ त्याग हुआ छोड़ा हुआ. ६ धारण किया हुआ, माना हुआ । ७ देखो 'मेळियोड़ी' (रू. भे.)

(स्त्री० मेलियोड़ी)

मेळू, मेलू–वि०—१ परस्पर मिलाने वाला, मिलान कराने वाला । २ मेल करने वाला, प्रेमी, मित्र, स्नेही, हितैषी ।

उ०—१ भुज भरिवे भेळाह, मिळस्यूं जे दिन मेळुवां । वाल्ही सोइ वेळाह, जनम सफळ गिणसूं 'जसा' ।—जसराज

उ०—२ मेळू विण मिळियांह, मनड़ो क्यूं मांनै नहीं । गहिला ज्यूं गळियांह, फिरै फिकर थयो 'जसा' ।—जसराज

३ मिलने वाला, परिचित ।

४ पक्ष का, पक्षवाला ।

उ०—१ इण विध सांगै आवियो, सुणतां सगळै साथ । हुमिआरा मेळू खळां, सो मारी भाराथ ।—रा. रू.

उ०—२ ताहरां नरै रा मेळू हजूर हंता, तिका नरै नूं कहीयो, नरा थारो पटो जैत सावूत राखीयो ।—जैतमाल पुमार री वात

५ मिला हुआ, मिश्रित ।

रू०भे०—मेळग, मेळि, मेलि, मेळी, मेली, मेळहू, मेलू ।

६ देखो 'मेळूजो' (रू. भे.)

मेळूजो–सं०पु०–पहिये की नाभि पर मजबूती के लिये लगाया हुआ लोहे का कड़ा ।

रू०भे०—मेळू ।

मेलोण—देखो 'मेलांण' (रू. भे.)

मेळो–सं०पु० [सं०मेला] १ मिलने की क्रिया या भाव ।

उ०—जीवत मेळो सजनां, मूवां न दीजो दोस । जनहरीया विरहा विनां, रहै किती लग ओस ।—स्री हरीराम दासजी महाराज

२ किसी विशेष अवसर पर या पर्व के दिन, किसी स्थान विशेष पर बहुत से लोगों का होने वाला जमाव, मिलन ।

उ०—१ चित लागन चेळां चढ़ै, चेळां जिनस चढ़ाहि । हेलां पर घर हांण दै, मेळां मेळा मांहि ।—वां. दा.

उ०—२ जठै गायणां कहवो । इतरी फिकर क्यूं करै छै । थारी कोसीक अवार, तो मोकळो फिरै छै । तूं तो वाई जनम को ही मजाळू, ऐ तो मेळा मेळा छै ।—पनां

उ०—३ एक जगां रैणी सूं ओ: एक मरुथै रा अंग मा दरण जावै है । अठै ना तो कोई रेलगाडी री मुसाफरी है, अर न कोई धरमसाळ तथा तीजां रो मेळो है ।—दसदोस

उ०—४ नाई भोळो वगनै पूछ्यो-ओ बाप जी एकण मागै इत्ता मस्तर क्यूं सजाया मेळा में देवण पधारो काई ? —फुलवाड़ी

वि० वि०– ऐसा जमाव या मिलन, किसी देव-दर्शन, तीर्थ स्थान, मनोरंजन आदि के उद्देश्य से होता है । इस अवसर पर खिलौने, मनिहारी, मिठाई, चाट आदि की अस्थाई दुकानें लगती हैं । झूले लगाये जाते हैं जिन से मनोरंजन किया जाता है, इत्यादि ।

३ बैल या चौपाए पशुओं को, विक्रयार्थ किसी स्थान विशेष पर एकत्र करने की क्रिया, अवस्था या भाव, पशु-मेला ।

उ०—मेळा में ऊंचे दांमां आपरी जोड़िया वेचनै दो सीरवी पाछा आपरै गांव वळता हा के एकाएक वांरा मन में जोधांणो देखण री जची ।—फुलवाड़ी

४ मिलाप, भेंट, साक्षात्कार, समागम ।

उ०—१ द्युं परकमा देवरै, हरख'र जोडूं हाथ । जो मेळो हुवै सजणां, पूजूं पारसनाथ ।—पनां

उ०—२ जो माता ऊळख्यो तो पांच दिन टिकस्यूं, नहीं तो दरसण कर मेळो दे रमतो रहिस्यूं ।—जगड़ामुगड़ा भाटी री वात

उ०—३ अर आज परतख मेडी में निजरां रो मेळो व्हियो । इत्ती वेगी मन जांणी व्है जावैला, इण रो तो सपना में ई वे'रो नीं हो ।
—फुलवाड़ी

उ०—४ म्हारा अभाग के आज इण ठौड़ मां सूं मेळो व्हियो, वो ई इण रूप में ।—फुलवाड़ी

५ एकत्रित जन समूह, भीड़ ।

उ०—१ कठै ही लुगांया, कठै ही मोटियार, कठै ही वांणिया, कठै ही गिवार, मेळो सो लाग रैयो है । मगतां री पांत अर कमीणी जात ल्यावो, ल्यावो कर रैयी है —दसदोस

उ०—२ मेळो री मेळो घकै वहीर कियो । वादळ रा मन में नीं कीं संको हो अर नीं डर ।—फुलवाड़ी

उ०—३ तीडो सावळ मूंडो साफ करनै कोट पै पूगो तो कांई देखै के उठै मिनखां री मेळो मचियोड़ो हो ।—फुलवाड़ी

६ खेल, तमाशा ।

उ०—१ पचास वरसां पै'ला रा उण मेळा नै थोड़ो पाछो याद तो करो । हाल तो उण तमासा नै याद दिरावण वाळो म्हे जीवतो

बैठी है —फुलवाड़ी

उ०—२ राजाजी सेठां नै सावचेत करता बोल्या-कालां अबै कदेई ऐड़ो मेळौ मत करज्यौ :—फुलवाड़ी

७ हुल्लड़।

८ संयोग, योग।

उ०—बादळ री औ विछोव ई तो अनाथ, अभ्यागत, अर निवळों नै सुख रौ मेळौ करावैला। राज री सै लुगायां रै जीव री बळण मिटै तद भटियांणी री कूख सारथक व्है —फुलवाड़ी

६ सभा, सम्मेलन।

१० देशी रियासतों में फसल पर लिया जाने वाला एक कर, लगान।

रू० भे०—मेलौ।

मेलौ—१ देखो 'मैलो' (रू. भे.)

उ०—१ मेला लूगड़ा राखवा, करवी नहीं सिनांन। बावीस परीसा जीतणा, रहणौ, रूड़ै ध्यांन।—जयवांणी

उ०—२ इण जनम और पर जनम प्रद, सब कळंक सब साथ में। मधिलोक वसै मेला मिनख,जांरै हुक्काहि रैला हाथ में।—ऊ. का.

उ०—३ इतरै सांमीदासजी रा दोय साध,मेला वस्त्र, खांधे पोथ्यां रा जोड़ा, विहार करता-भीखणजी कठै, भीखणजी कठै, इम करता आया।—भि. द्र.

(स्त्री० मेली)

२ देखो 'मेळौ' (रू. भे.)

उ०—वस्त्राभरण जिणै हरया, ते छूटइ मेलौ जी। आदिनाथ नी पूजा करइ, प्रहऊठी विहुं वेलौ जी।—स. कु.

मेल्हणौ, मेल्हवौ—देखो 'मेलणौ, मेलवौ' (रू. भे.)

उ०—१ सात सात रै मेल्हिया ईसर गरुड प्रधांन जिकै अउगाढ। मांगण कुंवर लगन पिण मांगण चंचळ रथे आपणै चाढ।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ सरव रसायण में रसी, हर रस समी न काय। टुक तन अंतर मेल्हियां, सब तन कंचन थाय।—ह. र.

उ० ३ अभंग अथाह अग्रेह अरूप, छछोह बदन्न मदन्न सरूप। मुखां नहं मेल्है सेस महेस, आदेस आदेस आदेस आदेस।—ह. र.

उ०—४ आखंतां नांम टळै दुख ओघ,उपज्जे आणंद सुख अमोघ। न मेल्हूं तूझ तणौ हरिनांम,विसन्न भगत्ता-तणा-विसरांम।—ह र.

उ०—५ हृदा में लाधौ आतमरांम, कहौ जो देव करूं स कांम। लाधौ मुझ नेड़ो मोरो नाथ, सांमी री हिव नहिं मेल्हूं साथ।

—ह. र.

६ अर के ही दिन उठै ही रहि चंदांणी कुमरांणी नूं आधांन सहित पिउहर ही मेल्हि आयो, पछै जिण प्रसव रै समय हम्मीर-नांम कुमार जणियो :—वं. भा.

उ०—७ लाखो मोटी हुवौ, वारह वरसां रो हुवौ। ताहरां कागळ दे अर फूलजी आगै मेल्हीयौ।—लाखा फूलांणी री वात

उ०—८ तेह तेह पदि ते अप मेल्हइ आवती लछि पाय कुण ठेलइ। एतलइं गइअ रूपि सुलिद्री, ते सुद्रसण तडि पारथ पुरंद्री।

—सालिसूरि

उ०—६ मेल्हि वात परही सवि वाई, स्त्री तणउं सवि हउं जांणूं माई। नारि नीरस न सांणि न राचइं, पुण्यहीन पति पद्मनि वंचइ —सालि सूरि

मेल्हणहार, हारौ (हारी), मेल्हणियौ—वि०।

मेल्हिओड़ौ, मेल्हयोड़ौ, मेल्हयोड़ौ—भू० का० कृ०।

मेल्हीजणौ, मेल्हीजबौ—कर्म वा०।

मेल्हवणौ मेल्हवबौ—देखो मेलणौ, मेलवौ' (रू. भे.)

उ०—१ इण भांत सात निस दिन अभंग, जुड़ि जीतौ जैचंद भूप जंग। सुरतांण आठ इक दिवस साहि, मेल्हविया कारागेह माहि।

—सू. प्र.

मेल्हांण—देखो 'मेलांण' (रू. भे.)

उ०—१ हाडा वूंदी का धणी, नग्र उजेणी जाई दियौ मेल्हांण। चउरास्या सहुं तिहा मिल्या, उढिय छै खेह न सूझै भांण।

—बी. दे.

उ०—२ कटक्क कांधार, समूह सेलार। पयांण करंत, मेल्हांण दियंत —गु. रू. बं.

उ०—३ गिरंकंदर पाहाड, गाहि पाए केकांणं। किया मट्ठ मैवास, प्रज्ज पाळी मेल्हांणं।—गु. रू. बं

मेल्हाणौ,मेल्हावौ—देखो 'मेलाणौ, मेलावौ' (रू. भे)

उ०—तद ठाकुरसी सारा साथ सूं ऊपर चढियौ भीतर गयौ। लड़ाई हुई। पीरोज कांम आयौ। कोट लियौ। राव स्री कल्यांणमलजी री आंण फेरी। कूंची गढरी राव कल्यांणमल जी नूं मेल्हाई —नैणसी

मेल्हाण हार, हारौ हारी), मेल्हाणियो—वि०।

मेल्हायोड़ौ—भू० का० कृ०।

मेल्हाईजणौ, मेल्हाईजवौ—कर्म वा०।

मेल्हायोड़ौ—देखो 'मेलायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री०मेल्हायोडी)

मेल्हावणौ, मेल्हावबौ—देखो 'मेलाणौ, मेलावौ' (रू. भे.)

उ०—१ धायनु अरजुनु धणुहधरु अवर न धाया केइ। मेल्हाविउ गुरचलणु तसु गुरु किम नवि तूसिइ।—सालि भद्र सूरि

उ०—२ चौथलई फेरइ डाईचौ, पल्यंग सावट्ट सोडि। कुंअरी कर मेल्हावणई दीया, भाव भूखण कोड़ि।—रुकमणि मंगळ

मेल्हावणहार, हारौ(हारी), मेल्हावणियौ—वि०।

मेल्हाविओड़ौ,,मेल्हावियोड़ौ मेल्हाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

मेल्हावीजणौ मेल्हावीजबौ—कर्म वा०।

मेल्हावयोड़ौ—देखो 'मेलायोड़ौ' (रू, भे.)

(स्त्री०मेल्हावियोड़ी)

मेल्हियोड़ी—देखो 'मेलियोड़ी' (रू. भे.)

(स्त्री०मेल्हियोड़ी)

मेळ्ह—देखो मेळ' (रू. भे.)

उ०—तद इयै रै तीन्ह जणां मेळ्ह एक ब्राह्मण एक लोहार एक सुथार। इहां सूं कुंवर रै बडो प्यार।—चौबोली

मेव-सं०पु० [देशज] १ राजस्थान की एक जाति।

२ उक्त जाति का व्यक्ति।

मेवड़लौ—१ देखो 'मेह' (अल्पा., रू. भे.)

२ देखो मेवौ' (अल्पा, रू. भे)

मेवड़ौ-सं०पु०—१ दूत, चर, हलकारा।

उ०—बहु लोय प्रणमइ जासु पयनलि, जगत्रगुरु इह श्री वड़ा तव साहि अकबर सुगरु तेड़ण, वेगि मुंकइ मेवड़ा।—ऐ. जै. का. सं.

२ देखो 'मेवौ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—लुळी लुगायां भेळा करै, आखै साल कलेवड़ौ। वाळक बीजां साथ खोडी, खै मुरघर रौ मेवड़ौ।—दसदेव

३ देखो 'मेह' (अल्पा., रू. भे.)

मेवती-सं०पु०—एक प्रकार की अफीम।

उ०—१ गोठ री तयारी कीवी। अमलां री रह-छह मंडी छै। भूरौ, मेवती, काळौ, किसनागर, आगराई, मरोडी मुहरतोळी।

—डाढाळा सूर री वात

उ०—२ कोटड़ी में भांत भांत रै अमलां री गळणियां भरती ही काळी, मेवती, भूरी, मरोड़ी, आगराई नै किसनागर अर मेड़ी ऊभा बाईसा रै हीयै भांत भांत रै विचारां रा गोट ऊठता हा।

—फुलवाड़ी

मेवलौ—देखो 'मेह' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—नांन्ही सी'क एक वादळी ओसरगी। रेवड़ वाळै रौ अळगोजौ गूंज उठ्यो। रिम-झिम-रिमझिम मेवलौ वरसै।—रा. सा. सं.

मेवसियौ—देखो 'मेवासी' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—ऐतौ मेणा थोरी ने भीलो रे चोर मेर उघाड़ै डीलो। वावरी कोली भंगी मेवसिया रे, आहेड़ी मांम रा रसिया।—जयवांणी

मेवागोद-सं०स्त्री०—विवाह से पूर्व दूल्हे को उसके ईष्ट मित्रों आदि की ओर से दिया जाने वाला रुपया भेंट आदि। (ओसवाल)

मेवाड़-सं०पु० [सं०मेदपाट] १ राजस्थान में चित्तौड, उदयपुर तथा उसके आस पास का प्रदेश।

उ०—१ हाडोती हिळ मिळ हुई, मेळ कियौ मेवाड़। घर जसवंत रै घुमंड नै, ढूकी घर ढूंढाड़।—ऊ. का.

रू०भे०—मेवाड

अल्पा०—मेवाड़ौ, मेवाडौ।

मेवाड़ा कूमार-सं०पु०—कुम्हारों की एक शाखा।

मेवाड़ी-वि०—मेवाड़ का, मेवाड़ सम्बन्धी।

सं०पु०—१ मेवाड़ का निवासी।

२ मेवाड़ के राजपूत, सिसोदिया।

उ०—लिख रे पत्र मीरां भेजियौ, दीज्यो मेवाड़्यां रै हात। साधूड़ां री संग रांणा ना छुटै, कांई करांला थांरौ राज।—मीरां

सं०स्त्री०—३ मेवाड़ की भाषा।

मह०—मेवाड़ौ, मेवाडौ

मेवाड़ौ—१ देखो 'मेवाड़' (अल्पा., रू. भे.)

२ देखो 'मेवाड़ी' (मह., रू. भे.)

उ०—मांनसिंह जिन जिन मेवाड़ा, अस्त प्रब भीम तणो अवसाण।

—दुरसो आढ़ो

मेवाड—देखो मेवाड़' (रू. भे.)

उ०—१ गोळंदा मारे गढ़र गरै, ढंढोळै पहाड़, वाळीया वोग फौजां ढोए, मळवट्टै मेवाड।—गु. रू. वं.

उ०—२ कानड़ मेवाड माळवौ।—धरम पत्र

मेवाडौ—१ देखो 'मेवाड़' (अल्पा., रू. भे.)

२ देखो 'मेवाड़ी' (मह., रू. भे.)

उ०—१ राणौ भीम न रखियौ, दत विन दीहाडोह। हय गयंद देतौ हथां, मुवौ न मेवाडोह।—महारांणा भीमसिंहजी रौ दूहौ

मेवात-सं०पु०—राजस्थान में, अलवर के आस पास का भू-भाग, जहां मेव-मुसलमांन बहुतायत से आबाद हैं। (सभा)

उ०—१ दूसरा मांन छळि लाडखां दूसरै, सार रै जोर दोइ घरा सांधी। वाहांतरि लेय आंबेरि गळ-बंधाणी, वाहांतरि गळै मेवात बांधी।—रावराजा फतैसिंघ नरूका रौ गीत

मेवाती-वि०—मेवात का, मेवात सम्बन्धी।

सं० पु०—१ मेवात का निवासी।

२ एक जाति विशेष या इस जाति का व्यक्ति, इसे मेव भी कहते है। (मा. म.)

मेवावी-सं० स्त्री०—एक प्रकार की तलवार।

मेवाफरोस-सं० पु० [फा० मेवाफरोश] मेवा व फल बेचने वाला व्यापारी।

मेवास-सं० पु० [सं० मेवा+वास, मेघृ-संगमे, मेव-वास] १ लुटेरों या डाकुओं के रहने या छुपने का सुरक्षित स्थान।

उ०—१ नेम पड़ि त्राम मेवास वंका नगर, डारणा न लागै पांव पाछा डगर। आज रौ आंकड़ौ घाट दीसै अगर, बांकड़ौ बाहुडै नहीं वायां विगर।—महादांन महडू

उ०—२ वाथ घलै असमांन ने भड़ कौन भुजाळा। कवण उठावै पालरा' मेवास वडाळा।—पा. प्र.

२ सुदृढ किला, कोट, गढ़।

३ स्थान, मुकाम, डेरा, निवास।

उ०—असमर भुज ग्रहियां 'अवौ' मांकळसर मेवास। सोवा आयौ तीन सिर, माह वहंतै मास।—रा. रू.

४ चोर, लुटेरा, डाकू।

उ०—१ धके सिसोद मेवास चढिया घटा। गोळियां गाज बड राग गवता। हांमळा घरां छळ कीया माहव हचे, रांण रै मांमला जीत रखता।—दल्लौ मोतीसर

उ०—२ जाळंधर डेरां थकां, बीतौ भाद्रव मास। फुरमाया टळिया नहीं, मिळिया सही मेवास।—रा. रू.

५ पूर्व और आग्नेय कोण के मध्य की दिशा।

वि० वि०—इसे सूर्योदय के बाद ही मेवास कहते हैं, इसमे पहले इसे उडीक या परियांण दिशा कहते हैं।

रू० भे०—मेबास, मेवासी, मैंवास,

अल्पा०—मेवसियौ मेवासियौ, मेवासौ।

मेवासियौ—देखो 'मेवासी' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ जाके नख चख (कर मुख) सिर नहीं, चरण, नासिका नांही। ऐसा मन मेवासिया, काया नगरी माही —ह. पु. वां

उ०—२ महा उमराव रांणा तणै मेढ़ रा, वेढ़ रा डाव वप चड़ेवांनी। साखरा भड़ां भिड़ज्जां चढ़ै सावता, मरद् मेवासियां हार मांनी।—दल्लौ मोतीसर

उ०—३ मझ आथण मेवासियौ, पंचादी परभात। वाट निहारै वेगड़ो, जपण उडकियौ जात।—पा. प्र.

मेवासी—सं० पु०—१ चोर, लुटेरा, डाकू।

उ०—१ उिज करतूति कमांण करि, सुबुधि चिलाले चारि। ग्यांन ध्यांन का बांण करि, मन मेवासी मारी।—ह. पु. वां.

उ०—२ हेमै वास छोडियौ। हेमौ जाय घूघरोट रै पहाड़ां पैठो। हिवै हेमौ मेवासी हुवौ। मेहवैरी धरती उजाड़े।—नैणसी

उ०—३ मांणस जळ का बुदबुदा, पांनी का पोटा। दादू काया कोट में, मेवासी मोटा।—दादूवांणी

२ उद्दण्ड, बदमाश, नटखट।

उ०—हरीया यो मन हटकीयो, रहै नहीं छिन एक। मन मेवासी वस्य नहीं, इनका चिरत अनेक।—स्रीहरिरांमदासजी महाराज

३ रसिक।

उ०—पीछो उतर कर रही छै कलालण, यो तो मेवासी बागां री बहारु छै। साहब इनै रच्यौ तो बराबर, तूं औरां नै किण सारू दे।—रसीले राज रा गीत

४ मेवास (पूर्व व आग्नेय के बीच) की दिशा में बोलने वाला तीतर।

५ देखो 'मेवास' (रू. भे.)

रू० भे०—मैंवासी,

अल्पा०—मेंवसियौ, मेवासियौ, मैंवासियौ

मेवासौ—सं० पु० [सं० मेधा–वास] १ सुदृढ़ किला, कोट, गढ़।

उ०—लगी चोट सत सबद की, खूल्हा ब्रह्म कपाट। मेवासा सब जीत कै, बरया नगर वैराट।—स्रीहरिरांमदासजी महाराज

२ लुटेरों का डेरा, रहने का स्थान, छुपने का स्थान।

उ०—अड़ै भोम गिरंदां अड़ै जंगा ललकारै गोरां। मेवासा कै तोड़ै कंपूं, हकारै सुमन्न। रूकां छड़ां मोड़ै छत्रौ, भूमि ले डकारै रुठा, चौड़े हहकारै जूटो, वकारै चिमन्न।

—चिमनसिंह चांपावत रो गीत

रू० भे०—मैंवासौ मैंग्रासौ,

३ देखो 'मेवास' (अल्पा, रू. भे)

मेवौ—सं० पु० [अ० मेवः] १ सूखा फल, बादाम, पिस्ता, काजू, किशमिश आदि।

उ०—१ फळं कंदळी स्रीय स्वादे अफरा, छयै स्रैय बादांम पिस्ता छुहारा। सुवा साव नारंगियां रंग सोहै,महादेव देवेस मेवै विमोहै।

—रा. रू.

उ०—२ मेवा वस्त्र आभरण मिसो,बदजड किसा किसा वाखांण। वरी घणाइ (जाइ) उछाह ल्याया। जांनी ईसर तणा सुजांण।

—महादेव पारवति री वेलि

उ०—३ मीठी और न कोइ मिठाइ, मीठा और न मेवा। आतम रांम कली ज्यों उलसै, देखत दिनपति देवा।—ध. व. ग्रं.

उ०—४ मेंट री हर आवै जद पिस्ता-बिदांम कांकरां री ई गरज नीं सरै। मुरड अर चेपी मेवा सूं ईं इदक मीठी लागी।

—फुलवाड़ी

२ हलुवा, खीर आदि उत्तम भोजन मिष्ठान्न, मिठाई।

उ० १ मीठा मेवा जीमतै, बाहै भोजन बौह भांति। ता सुं तन छैती पड़ै, जनहरीया करि खांति।—स्रीहरिरांमदासजी महाराज

उ०—२ भाई तुझे बतांऊ भेमा, साचे तन मन करियो सेवा। मोज करोगे मिलहैं मेवा। दोसत देखि बोलता देवा।—ऊ. का.

उ०—३ दुरयोधन का मेवा त्याग, साग विदुर घर लूखो। करणा के घर खीच आरोग्यो, लूखो गण्यो नहीं सूखो।—मीरां

अल्पा०—मेवड़लो, मेवडो,

मेस—सं०पु० [सं०मेष] १ नर भेड़, मेष।

२ ज्योतिष की बारह राशियों में से एक।

रू०भे०—मेख,

४ देखो 'महेस' (रू. भे.)

उ०—सेस फुणधर सरकती, मेस करत रूंडमाळ। यण पुळजी होवत अठै, भाई मौ भालाळ।—पा. प्र.

मेसलगन—पु० [सं०मेषलग्न] ज्योतिष में एक लग्न

वि०वि०—देखो लगन

मेसर—देखो 'महेस्वर' (रू. भे.)

उ०—रूंडमाळ छळू गळ मेसर ए। किम आंपत झांपत केसरए।

—पा. प्र.

मेसरी—देखो 'माहेस्वरी' (रू. भे.)

(स्त्री० मेसरणी)

मेससंक्रांति, मेस सकरांत—देखो 'मेख–सक्रांति' (रू. भे.)

मेसी—सं०स्त्री० [सं०मेषी] मादा भेड़।

मेसूरण—सं०पु० [सं०] फलित ज्योतिष में दशम लग्न।

मेस्मराइजर-सं०पु०[अं०मेज्मराइजर] मेस्मेरिजम करने वाला, सम्मोहक।

मेस्री—देखो 'माहेस्वरी' (रू. भे.)

उ०—किण ही मेस्री नीं हाटे साधु उतरया। रात्रे चोर आया। हाट खोली।—भि. द्र.

मेह्दी—देखो 'मेंदी' (रू. भे.)

उ०—१ तठा उपरायंत माळा फूलां री छाबां आंण हजार कीजे छै। सू फूल कुण भांत रा छै? हजारा, नौरंग, तुररी मेह्दी किलंगो……।—रा. सा. सं.

उ०—२ बंनौ बंनीं मेहंदी हाथ मिळायौ विख्यात।

—बादरदांन दधवाड़ियौ

मेह-सं०पु० [सं०मेघ प्रा० मेह] १ बादल, घन, मेघ।

उ०—१ मेह मथारे वरसियौ, नदी किराड़ां मार। घोड़ा हींसन भल्लिया, सीस किराड़ां भार।—बां. दा.

उ०—२ एतलइ सुसरमा दलि ढोल वाजइं। जांणे असाढू किरि मेह गाजइं।—सालिसूरि

२ वर्षा, बारिस।

उ०—१ कैं वासर थी आधा अर देवराज सर विचाळै तेथ एक धाराळो मेह रो आयो।—द. वि.

उ०—२ घर जंगळ ऊपर फौज धिकी, जमरांण जमात समांण जिकी। असमांणक मेह घटा उनई, दधि जांणक छोड मजाद दई।

—मे. म.

उ०—३ वापूह वित अच्छेह में, आगह चित अच्छेह। 'गजजण' मांणे साहिबी, ज्यूं महि मांणे मेह।—गु. रू. बं.

[सं०मेह] ३ मूत्र, पेशाब।

४ एक रोग विशेष। (प्रमेह)

रू०भे०—मे, मे', मैंह,

अल्पा०—मेउड़ौ, मेऊडौ, मेवड़लौ, मेवडौ, मेवलौ, मेहड़लौ, मेहड़ौ, मेहलु, मैंहलौ, मेहू, मेहौ, मेहूडौ।

मेहड़णौ, मेहड़बौ-क्रि०स०—भोगना, उप भोग करना, आनन्द लूटना।

उ०—मात पिता की छोडी मोबत, मोजां मेहड़ली। सात जात मोडां सूं मांधी, नाहक नेहडली।—ऊ. का.

मेहड़लौ -देखो 'मेह' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—मेहड़लौ वूठौ हो म्हारा गाढां मारू हीरा मोतीयां रे।

—लो. गी.

मेहड़ौ—देखो मेह' (अल्पा., रू भे)

उ०—१ स्री आणंद घण आविया, दरसण कियौ 'अजीत'। दूधे वूठा मेहडा हरि तूठौ वरि प्रीत।—रा. रू.

उ०—२ तूठा हे पास जिणंद. वूठा हे अम्रत मेहड़ा हे लो।

—वि. कु.

मेहजाळ—देखो 'मेहझाळ' (रू. भे.)

मेहजुज-वि०—उन्मत्त।

उ०—अर कतराक दन जातां, कतरीएक वरती चुरतौ थकौ बांनैत धणी रो भमर, एका बहादर, आपरा पोरस में मेहजुज हुओ थकौ आभ लागौ थकौ, उजाड़ बंन महा भयांणक जायगा आय नीसरियौ।

—कल्यांणसिंह नगराजोत वाढेल री वात

मेहझाळ—सं०स्त्री० [सं०मेघ-झार] वर्षा के लिये किया जाने वाला यज्ञ या किसी देवता का पूजन।

रू. भे.—मेहजाळ,

मेहणत—देखो मैं'नत' (रू. भे.)

उ०—कर मेहणत कांटा वळ काढ़ै, अय पन पतळा किया यसा। सादत छांट विछूंटया सभू. जांणै जंत्री तार जिमा।

—लालसिंह राठौड़ री गीत

मेहणौ—देखो 'मैंणौ' (रू. भे.)

उ०—फूलां तौ अबोली रैवण साह पैला ई माठ झाल राखी ही। पण अबं ऐ मोसा अर ऐ मेहणियां सुणणा में ई कीं सार नीं ही।

—फुलवाड़ी

मेहणू, मेहणौ—देखो 'मैं'णौ,मैणौ' (रू. भे.)

उ०—१ राजा थांनु मेहणौ सांची दियौ सत्य छै।

—पंच दंडी री वारता

उ०—२ अवसर दांन ज अप्पही, रिण भज्जै मुंह मोड। राठौड़ां कुल मेहणौ, ते सत्री पण खोड।—गु रू. बं.

उ०—३ ताहरां ऐ आपस में बोल उठी। ताहरां बावेली सोना नू मेहणौ दियौ। कह्यौ-थारो भाई थोरियां सू भेळौ जीमै।

—नैणसी

उ०—४ ताहरां आ तौ मेहणै आई, साबास थानैं भली कीवी। कासूं कहां, थांनै आ चाहीजै नहीं। अर वळै जो आया तौ जाय नै माळी रै घरे ऊतरिया।—बूढी ठग राजा री बात

मेहतर—देखो 'महत्तर' (रू. भे.)

उ०—गांव वाळा तौ आखरी वगत तांई काली मासी रै गपोड़ां माथै विस्वास नीं करियौ। पण जद वा घड़ी दिन चढ्यां आपरी भूरी झोरी मेहतरां रै घरै संभळाय, उण री घणी घणी भुळावण देय, आपरै छवूं चीतरां नै साथै लेय, साचांणी महारांणी जी रै घर सांम्ही वहीर व्ही तौ लोगां रै इचरज रौ पार नीं रह्यौ।

—फुलवाड़ी

उ०—२ बेटौ जीवतो रह्यौ तौ सगळी वातां सावळ व्हैला, वा तौ भली सोची नीं कोई भूडी। आपरा बेटा नै मेहतरांणी रै हवालै कर दियौ।—फुलवाड़ी

(स्त्री० मेहतरांणी)

मेहदेहजा-सं० स्त्री०—मेहा की पुत्री,श्री करणीदेवी का एक नामान्तर।

उ०—उन में मेह देहजा आई, किनियांणी जगदंबि कहाई। निज किंकरन करन उन्नत्ती, स्री करनी जय जयति सकत्ती।—मे. म.

मेहनत--देखो 'मैं'नत' (रू. भे.)

मेहनांम-सं०पु० [सं० मेहनाम] अभ्रक।

मेहपाठ-सं० पु०—मेड़ता का पुराना नाम।

उ०—पछे राजा जवनसत री देह छूटी तरै राजा मांनधाता टीकै वेठी, मेहपाठ नगर बसायौ सो मेडतो कहीजै छै।—रा. वं. वि.

मेहपुर-सं० पु०—मारवाड़ के पश्चिमि भू भाग, मालानी रियासत की राजधानी।

मेहमंत—देखो 'मैं'मंत' (रू. भे)

मेहमांण,मेहमांन—देखो 'मैं'मांन' (रू. भे.)

उ०—१ पीढियां लग उणां रै घरै आयोड़ौ मेहमांण भूखौ को गयौ नीं। जिसी भी जव-ज्वार री घर में ऊकळी, मेहमांण रै आगै हाजर कीवी।—गतवामो

मेहमांणी मेहमांनी—देखो 'मैं'मांनी' (रू. भे.)

उ०—तठै जाय राजा स्त्री करणीजी रै पांवै लागा। रुपीया १०००) मेहमांनी गुदराया।—नैणसी

मेहमा—देखो 'महिमा' (रू. भे.)

उ०—उठै देवी सांगवीयां रौ वड़ौ थांन छै। वड़ी मेहमा छै। —नैणसी

मेहर—देखो 'महर' (रू. भे.)

उ०—एक द्रस्टि कर आतम देखे, ब्रह्म दरसीया तांई। आवागमन आवै नहीं कवहूं, जिन मेहर गुरां री पाई। —स्त्री हरिरांमदासजी महाराज

उ०—२ राज इत्ता दिनां सूं पधारया, जे म्हने देख्यां राज रै मन में आणद रा फूल खिल्या व्है तौ ढोल्या माथै ई चंपा रै फूलां री मेहर करावौ।—फुलवाड़ी

२ देखो 'मेर' (रू. भे.)

उ०—भोई मेहर अनइ ठाठीया, चालइ काहर कमांणी। च्यारि सहस सायइ सांचरिया, वहइ पखाळी पांणी।—कां. दे. प्र.

मेहरवांन—देखो 'मैं'रवांन' (रू. भे.)

मेहरवांनगी, मेहरवांनी, मेहरवांनगी, मेहरवांनी—देखो 'मैं'रवांनगी, 'मैं'रवांनी' (रू. भे.)

उ०—१ लोग सारौ सवळौ रहै अर बादसाह री घणी मेहरवांनगी। —अमरसिंह राठौड़ री वात

उ०—२ राजा कह्यौ-सुंदर दास, ऐ विचारा गहला होय गया छै। उवे री मेहरवांनगी रा चाकर था।—पलकदरियाव री वात

उ०—३ इयें-में कांई फरक है। साचैई आपांरी मेहरवांनगी सूं वापड़े-री कमर टूट जावैला।—वरसगांठ

मेहरात-सं० पु०—एक वर्ग विशेप।

उ०—जैतारण था कोस ८ पूरव मांहे मेर मेहरात वसै। धरती हळवा १० वाजरी मोठ, खेत कंवळा।—नैणसी

मेहराब-सं० पु० [अ० मिहराब] किसी द्वार के ऊपर, अर्द्ध मंडलाकार बना हुआ भाग।

रू०भे०—महराव, महराव, मेराब, मैं'राव।

अल्पा०—मिहरवौ।

मेहराबदार-वि०—जिसमें मेहराब लगा हुआ या बना हुआ हो, गोलाकार, अर्द्ध मंडलाकार।

रू० भे०—महराबदार, मैंराबदार।

मेहरित, मेहरितु-सं० स्त्री० [सं० मेघ+ऋतु] वर्षा रितु।

उ०—मांडव आगम मेहरित महलां मज्झ रहास। फुरमायौ 'गजसाह' नूं तुम आवौ हम पास।—गु. रू. वं.

मेहरू-सं० पु०—महनर। (उ. र.)

मेहरौमाग-सं० पु० [सं० मेघ+मार्गः] आकाश, गगन।

उ०—ढकी नींव काकोदरा लोक ढूकै. फतै चिन्ह आकास लागौ फरूकै। मिणै मेहरौमाग पाताळ मांनू,सकी देहरौ सेहरौ रत्न सांनू। —मे. म.

मेहळ,मेहल—१ देखो 'महल' (रू. भे.)

उ०—१ मुहकम री मुहमद अली, सुण मत असत सराह। तुरत घणौ हित तेड़ियौ, मिरजौ मेहलां मांह।—रा. रू.

उ०—२ अण समै वकटापुर माहै अचूकी घड़ी सूं ठीक करै तौ मेहल में नहीं।—कल्यांणसिंह नगराजोत वाढेळ री वात

२ देखो 'महिळा' (रू. भे.)

उ०—खाटी अपणी खाय, आठ पहर समरै अनंत जिण री कदै न जाय, मेहळ उवारै मोतिया।—रायसिंह सांदू

३ देखो मेखळा'

उ०—कडि मणि मेहल नूंपर रूप रहावइं पाय। पहरणि सेत्र पच्डलीय, कूलीप मांन न माइ।—जय सेखर सूरि

मेहलणौ, मेहलबौ—देखो 'मेलणौ, मेलबौ' (रू. भे.)

उ०—तेल भरीनइं तावडउ, हेठलि मेहलि हुतास। तली तली तुम्हनइं दीउं, तन्न सुवामय मांस। ससिहर रहि रे सांसतु जल घट्ट भींतरि लेय। सिर ऊपरि मेहली सिला, डाटसि डारउ देय। मा. कां. प्र.

मेहळांण,मेहलांण—देखो मेलांण' (रू. भे.)

उ०—कोई नगरी कामावती, कामसेन राजा न। नीति निपुण गुण सभळी, तिहा सिधु मेहळांण। —मा. कां. प्र.

उ०—२ इणि परि सीख समप्प करि,राइं आयस दीध। सिर नांमी सेवक पलिउ मार्ग मेहलांण ह कीध।—मा. कां. प्र.

मेहलाणौ, मेहलाबौ—देखो 'मेलाणौ, मेलाबौ' (रू. भे.)

मेहलायत—देखो 'महलायत' (रू. भे.)

उ०—१ पछै कांनडदेजी जाळोर ऊपर घर कराया, तिकै देखण नुं सीमाळ नूं मेलियौ नै सूरमाळणन नूं साथै मेलियौ, सु सीमाळ मेहलायत देख वयूं वैंत में खोड़ काढी।—नैणसी

उ०—२ आय देखै तौ ठग वीरमदे री मेलायत पोळ तीरे आयौ। —कल्यांणसिंह नगराजोत वाढेल री वात

मेहलायोड़ौ—देखो 'मेलायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० मेहलायोड़ी)

मेहलावणो, मेहलाववो—देखो 'मेलाणो, मेलावो' (रू. भे.)

उ०—कीधा वदि भूत मि तेरा, करी सजाई आवे। मांटी हुइ तउ घांटु वांधे, सोमनाथ मेहलावे —कां. दे. प्र.

मेहलावियोड़ो—देखो 'मेलायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री० मेहलावियोड़ी)

मेहलि, मेहली—१ देखो 'महल' (रू. भे.)

२ देखो 'महिळा' (रू. भे.)

मेहलियोड़ो—देखो 'मेलियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री० मेहलियोड़ी)

मेहलु, मेहलू, मेहलो—देखो 'मेह' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—मेघ मनोहर देवता ए बीजु प्रधांन, पुष्करावरतक मेहलु जीवित दीइ दांन।—नळदवदंती रास

मेहवपुर-सं०पु०—राजस्थान में बाड़मेर व उसके आस पास के क्षेत्रका पुराना नाम।

मेहसड़लो—देखो 'मेह'

उ०—झिरमिर-झिरमिर मेहसड़लो (जी) वरसै, मेंड़ियां में चवण लागो।—लो, गी.

मेहांणंद—श्री करणी देवी के पिता का नाम।

मेहांण—देखो 'महारणव' (रू. भे.)

मेहा—१ वर्षा।

उ०—जेहा मेहा जगत सूं, मत विरची सुख मूळ। जीवाड़ै सारो जगत, श्रै अविरच अनुकूळ।—वां. दा.

२ देखो 'मेहाई' (रू. भे.)

मेहाई-सं०स्त्री०—श्री करणी देवी।

उ०—१ इह सरूप जंगळ घर आई। महा सकति दुरगा मेहाई।
—मे. म.

रू० भे०—मेआई, मेहा, मेहाही,

मेहागम-सं०पु० [सं० मेघ+आगमनः] वर्षा ऋतु का आगमन, वर्षा ऋतु की शुरूआत।

उ०—समरै निसिपति जेम चकोर, मेहागम जिम चाहै मोर।
—स्रीपाळरास

मेहावी—देखो 'मेधावी' (रू. भे.)

मेहासदु, मेहासदू मेहासधु, मेहासधू, मेहासिधू,-सं० स्त्री०—मेहा की पुत्री श्री करणी देवी का एक नामान्तर।

उ०—१ करनी तूं केदार, करनी तूं बद्री कमळ। है देवी हरिद्वार, मथुरा तूं मेहासदू।—अज्ञात.

उ०—२ बांका मेहासधू म वीसरै, संकट हरे सांभळै साद गढवाडा गढ ओलै गाजै, मढ रै ओलै गढां मजाद।—बां. दा.

उ०—३ दरबारे दीवांण निसा-दिन, पाय पाय पूंगर रख पात। घात अघात टाळणी घट घट, मेहासधू सेवगां मात।
—कविराजा बांकीदास

रू०भे०—महियासधू महियासुधू,

मेहाही—देखो 'मेहाई' (रू. भे.)

उ०—पायो रचण रूपगां पेंडो, मेहाही थारी महर।—बां. दा.

मेहिली—देखो 'महिळा' (रू. भे.)

मेहुण—देखो 'मैथुन' (रू. भे.) (जैन)

मेहू—देखो 'म्हे' (रू. भे.)

उ०—मेहू तो थ्हां श्रोगण का भरिया, थेई हो न सहां।—मीरां

२ देखो 'मेह' (अल्पा; रू भे)

मेहूड़ो—देखो 'मेह' (अल्पा; रू भे.)

उ०—झिरमिर झिरमिर मेहूड़ो वरसै, वादळियो घररावै ए।
—लो. गी.

मेहेरवांन—देखो 'मेहरबान' (रू भे.)

उ०—बीजो साहिब मेहेरवांन कोई भुगत वतावै।—केसोदास गाडण

मेहेरांण—देखो 'महारणव' (रू. भे.)

मैं-सर्व०—सर्वनाम के उत्तम पुरुष का कर्त्ता-रूप, स्वयं खुद।

उ०—१ नभ सोती जागी लगन धुन लागी जक नहीं। स्वयंभू ध्याऊं मैं परमपद पाऊं सक नहीं।—ऊ. का.

उ०—२ मेहाई-महिमा मुणी, मैं मूरख मति मंद। जिण अंदर चूको जिको, कीजै माफ कविंद।—मे. म.

सं०पु०—१ बकरी के बोलने का शब्द।

सं०स्त्री०—२ अहंभाव, अहमन्यता।

रू०भे०—मंइ, मंह, मय, में, मेंइ,

३ देखो 'मैं' (रू. भे.)

उ०—ज्यांरी रिच्छया देवता, सेवा पीर प्रधांन। त्यां अणचीती संपजै, मुसकळ मैं आसांन।—रा. रू.

मैंगळ—देखो 'मदकळ' (रू. भे)

उ०—१ मन मैंगळ मैमत भयो, आंकस सहे न कोय। जन हरीया कुछी एक सहे,जो ग्यांन गरीबी होय।—स्रो हरिरांमदासजी महाराज

उ०—२ जिण तोटा में ही पोत (तेवटा री चीड़ा) तो गज मोतीयां री ने चूड़ो ही उण होज मैंगळ (मदगळ) मदोनमत हाथी रा दांत रो है।—वी. स. टी.

मैंगाई—देखो 'मूंगाई' (रू. भे.)

मैंगो—देखो 'मूंगो' (रू. भे.)

(स्त्री० मैंगी)

मैंडा—मेरा, मेरे।

उ०—इसो सुण पिउसंघी बोली, मैंडा बोल सच्चा जांणों, तुससांडी पुत्री हूं तो घोड़ी ल्याऊं।—जखड़ा मुखड़ा भाटी री वात

मैंडोवर—देखो 'मंडोर' (रू. भे.)

मैंण-सं०पु०—मोम।

रू०भे०—मयण, मीयांण, मेंन, मेण, मैंण, मोंण,

मैंणका—देखो 'मेनका' (रू. भे.)

उ०—तिलोतमा मैंणका सची, उरवसी सरोतरि।—रा. रू.

मैंणा—देखो 'मैंणा' (रू. भे.)

उ०—कुंन दादू बखना वाजिदा, मैंणा घाटम सेन। गिनका भील

भीलणी मिरीयां,फकर फरीद हुसेन । —स्री हरीरांमदासजी महाराज

(स्त्री० मैंणी)

मैंणावती—देखो 'मेंणावती' (रू. भे.)

उ०—हस्ती घोड़ा गांव गढ, सुत वनिता परिवार । कहै माता मैंणावती, तजि गोपीचंद यहु खार ।—ह. पु वां.

मैंणो—देखो 'मेंणो' (रू. भे.)

उ०—मैंणो पेंगु मेर बावरी,बिलळा बैंता । भाळी थोरी भील, रात रा मांगें रेता । —ऊ. का.

मैंत—देखो 'महंत' (रू, भे.)

मैंतर—देखो 'महत्तर' (रू. भे)

उ०—ठगी मांथै कमर बांधी, सोखीनाई नै धोखा-धड़ी सूं सांधी । सैंसी ग्रर मैंतर तांई मांगें विना नहीं छोड्या ।—दसदोख

मैंदांन—देखो 'मेंदांन' (रू. भे.)

उ०—तीन पोलि तकीया परै, मंडे वीच मैंदांन । जन हरीया घर सुन्य मैं, सहज घुरै नीसांन ।—स्रीहरीरांमदासजी महाराज

मैंदालकड़ो—देखो 'मेंदालकड़ी' (रू. भे.)

मैंदी-सं०स्त्री० [सं० मेघी, मेधिका] (ग्र. मा.)

१ प्राय: समस्त भारत में होने वाली एक झाड़ी ।

२ उक्त झाड़ की सूखी पत्तियां व उनका पीसा हुआ चूर्ण ।

उ०—१ सूकी सेवण री हेला उर हाई, मैंदी देवण री वेळा मुरझाई ।—ऊ. का.

उ०—२ हाथां रै राच्योड़ी मैंदी हींगळू री टीकी, गज गज लांवा वांसवाळी सूं सरगल वाळ । झालर रै डंकै ही पायल री झीणी झणकार बाजती ।—दसदोख

३ एक राजस्थानी लोक गीत ।

वि०वि०—इसकी पत्तियां छोटी छोटी ग्रोर फूल सफेद होते है जिन से भीनी भीनी सुगंध ग्राती है । इसकी पत्तियों के पिसे हुए चूर्ण को स्त्रियां भिगो कर हाथों व पैरों पर लगाती हैं ग्रौर विभिन्न प्रकार की चित्रकारी भी करती हैं ।

रू०भे०—महंदी, महदी, मांहंदी, मेंदी, मेंहंदी, मेहंदी,

मैं'नत—देखो 'मैं'नत' (रू. भे)

उ०—मैं'नत मजदूरी मासक घण मोला, बिलखा विगताळू ग्रासक ग्रणबोला ।—ऊ. का.

मैंपणो-सं०पु०—ग्रभिमान, गर्व, ग्रहं भाव, ।

मैंवर-सं०पु० [ग्रं०] सदस्य ।

रू०भे०—मयंबर, मेंवर,

मैंहघो—देखो 'मूं'गौ' (रू. भे.)

उ०—मैंहघा मोल दियै 'भिवाउत', लियै ग्रपार नफो जस लाह । ग्राडावळै मोतियां ग्रसड़ो, सौदो करै वळापति साह ।

—महाराज छत्तरसिंघ रो गीत

मैंमंद-सं०पु०—स्त्रियों के शिर पर धारण करने का एक ग्राभूषण ।

रू०भे०—महमंद, महमद, महिमद, मेंमद, मेंहमद, मैंमंद, मैंमद, मैमद, मैहमद,

मैंमंतक, मैंमट, मैंमत—देखो 'मेंमंत' (रू. भे.)

उ०—१ खळ थोघण स्रोण ग्ररोगण खप्पर छै रुति सोगण जोस छळै । मद भोगण मांस ग्ररोगण मैंमत धावत मोगण दंत धलै ।

—मा. वचनिका

उ०—२ मन गंगा-जळ-त्रिमळ, वदन किरि पूनम ससिहर । सुवप व्रन्न सोव्रन्न, गात मैंमंतक गेमर ।—गु. रू. वं.

मैंमद—देखो 'मैंमंद' (रू. भे.)

उ०—माथा ने मैंमद, ग्रघक वराजे । तो रखड़ी छब न्यारी जी ।

—लो. गी.

मैं—देखो 'मय' (रू. भे.)

उ० —विप्र मूरति वेद रतन मैं वेदी, वंस ग्राद्र ग्ररजुन मैं वेह ।

—वेलि

मैं'क—देखो 'महक' (रू. भे.)

मैं'कणो, मैं'कवो—देखो 'महकणो, महकवो' (रू. भे.)

मैं'कमो—देखो 'महकमो' (रू. भे.)

मैं'कार-सं०स्त्री०—महक, सुगंध ।

उ०—भर हांडी म्हैं छूकण दीन्हो सीज्यो म्हारो साग । जद हांडी भर नीचै उतारयो, मीठी ग्राय मैं'कार ।—लो. गी.

मैं'कियोड़ो—देखो महकियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री० मैं'कियोड़ी)

मैंख—देखो 'महिम' (रू. भे.)

उ०—देवी मैंख रै रूप देवां डरावै । देवी देवता रूप तूं मैंख खावै ।

—देवि.

मैंखास—देखो 'महिसासुर' (रू. भे.)

उ०—देवी सहस्र' लख कोटिक साथै, देवी मंडणी जुद्ध मैंखास साथै ।

--देवि.

मैंगळ—देखो 'मदकळ' (रू. भे.) (ना. डि. को.)

उ०—वळी मैंगळां फौज दूजी वखांणै । जटाजूट गोरंभ गज-खंभ जांणै —गु. रू. वं.

मैंड़ी-सं०स्त्री०—१ मकान का सब से ऊपरी कमरा, ग्रटारी । (ग्र. मा.)

उ०—१ बावेलो ए मैंड़ियां मांहि दिवलो उजाव । चारां नै दिसा में छेला चांनणो ।—लो. गी.

उ०—२ सौ हूं तो डोडी ऊपरै खेटक (ढाल) नै रूक (तरवार) लेने ऊभी हूं ने ग्राप ग्रायोड़ा पांमणा (सत्रू) ग्रां री सनमांन करो ग्ररथात जुद्ध करो मैंड़ी मैं जाय वंदूक झालो ।—वी. स. टी.

२ महल ।

३ देखो 'मेढी' (रू. भे.)

उ०-कवियण मैंड़ी वेल ज्यूं,बाधै मूंह मरंत । जे'जोगो' न जनमतो, कीर त किणरी करंत ।—ग्रजात

रू०भे०—मयड़ी, मेड़ी ।

मैंछांण, मैंछायण—देखो 'मेछ' (मह., रू. भे.)

उ०—१ मनै खीजीयो साह होय हळां मैंछांण री, भोम ग्रद उठै

न व्है विगत भांण री । दैवरा पड़ै भ्रम घटै दुनीयांण री, 'अमरीया' राख मरजाद हिंदुवांण री ।—ठा. अमरसिंहजी नींबाज री गीत

उ०—२ साजे सोमईयाह, असुरां आभड़ीयो नहीं । पड़ीयै कर पड़ीयाह, माथै मेंछायण तणा ।—अरजन हमीर भीमोत री वात

मंजर—सं० पु०—दवाव ।

उ०—जद फतूजी रै माथै दोख रो मंजर पडयो । जद पहली तो आ चंदूजी यूं कहीती थी सूरच में सेह हुवै तो म्हारी गुरणी में सेह हुवै ।—भि. द्र.

मंजळ—देखो 'मंजिल' (रू. भे.)

मंजिक—सं०स्त्री० [अं०] जादू का खेल, जादू ।

मंजिकलालटेन—सं०पु० [अं०] किसी परदे पर दर्शकों को चित्र दिखाने की एक प्रकार की लालटेन ।

मंड—देखो 'मेड' (रू. भे.)

उ०—तद बखतसिंहजी हाथी रा होदा मांही चाढ़ लिया सो लोहां रो मंड आवै जगा तो वेचेत हुइ जावै ।

—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

मंडल—सं०पु० [सं० मदनफल] मैनफल, । (अमृत)

मंडी—१ देखो 'मेढी' (रू. भे.)

२ देखो 'मंड़ी' (रू. भे.)

उ०—मड मंडी चित्तर-साळा, गढ ढाहे गोख अटाळा ।—गु. रू. ब.

मंढळ—देखो 'मेढल' (रू. भे.)

मंढी—देखो 'मेढी' (रू. भे.)

मणंगना—सं० स्त्री० [सं० मदनांगना] कामदेव की स्त्री, रति ।

उ०—छहै तीस ही आभ्रणां धारी साजै । लखै रूप मणंगना रूप लाजै ।—सू. प्र.

मंण—१ चूड़ामणि, सिर का आभूषण ।

उ०—दुवै पाव वंदै हणू मैण दीधी । कपीमां हणू पांव तारीफ कीधी ।—सू. प्र.

२ देखो 'मैण' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—१ मावड़ियां तन मैण रा, मिटै कदे नंह मांद । मावडियां ढूला मरद, चूला हंदा चांद ।—बां. दा

उ०—२ मैण लगाड़ै पालड़ां, तोलां माहि कसूर । डर तज राखै डांडियां, पारद हूंता पूर ।—बां. दा.

३ देखो 'मदन' (रू. भे.)

उ०—वरणै चारु आभास वदनारविंदं, उरै ऊपजै वेख रेखा अणंदं । सदा हेत संतां इसा नेत सोहे, महा मैण रूपी तिका नैण मोहे ।—रा. रू.

मैणका—देखो 'मेनका' (रू. भे.)

मैणत—देखो 'मेंनत' (रू. भे.)

मैणधार—देखो 'मणिधर' (रू. भे.)

उ०—विनै जड़ाव बाजुबंध, सम्म पार सोहिया । स्त्रीखंड साखि जाणि सप्प. मैणधार मोहिया ।—सू. प्र.

मैणपुज—सं. पु.—एक वाद्य विशेष, बाजा ।

मैणफळ—सं पु.—मदन फल ।

मैणल—सं. पु —हाथी ।

उ०—मारुवै रावतां गाजतां मैणलां । वाधियो वाद गूं इन्द्ररो वादळां ।—गु. रू. बं.

मैणसिल—देखो 'मैनसिल' (रू. भे.)

मैणा—सं. स्त्री. १—एक जाति विशेष ।

२ देखो 'मैना' (रू. भे.) (डि. को.)

रू. भे.—मैंणा, मेणा ,मैणा ।

मैणादे—देखो मैणावती'

मैणी, मैं'णी—सं. स्त्री. १ कटुवचन, ताना, मोसा, व्यंग ।

उ०—सीधी सैणीं सो मैणो सुण मालहै,वैसक पुरबसणो हंसणो तजि हालै ।—ऊ. का.

२ मैणा जाती की स्त्री ।

३ गुंडी, बदमाश ।

रू. भे.—महणि, महणी, मेणी, मेहणी, मैहणी ।

मह०—मैणो, मैं'णो ।

मैणीयात—वि०—कलंकित, बदनाम ।

उ०—ओसियळां अर्म, टोडाफ़ल टळिया नहीं । मैणीयात राख्यां में, जांमोकांमी जेठवा ।—जेठवा

मैणो, मैं'णो—सं. पु. [स्त्री०मैणी] १ मैणा जाति का व्यक्ति ।

२ देखो 'मैणी' (मह; रू. भे.)

उ०—तद वां रजपूतां कयो, कांनाजी म्हांनूं इण बात रो मैणो दो तो, दोरा तो थांनूं ईं नहीं राखिया था । थेई इण सिरकार मै हूता ।—द. दा.

रू. भे.—महणो, मेहणु, मेहणो, मैंणो ।

मैतर—देखो 'महत्तर' (रू. भे.)

मैं'ता—देखो 'महता' (रू. भे.)

मैताव—देखो 'महताव' (रू. भे.)

मैतावी—देखो 'महतावी' (रू. भे.)

मैतारी—देखो 'महतारी' (रू, भे.)

उ०—अलोकी मैतारी धरि तन पधारी मरुधरा ।—मे. म.

मैत्रकार—सं०पु०—एक वर्ग विशेष ।

उ०—गीतकार वातकार ग्रन्थकार पाडकार तुडिकार आरांमकार सास्त्रकार मैत्रकार सुद्धकार उद्दीसकार धृतिकार रूपकार ।—व. स.

मैत्री—सं०स्त्री० [सं०] १ दो या दो से अधिक व्यक्तियों में परस्पर होने वाला प्रेम भाव, मित्रता, दोस्ती ।

२ मेल-जोल ।

३ समानता,

४ अनुराधा नक्षत्र ।

मैथळी, मैथली—देखो 'मैथिळी' (रू. भे.) (अ. मा., नां. मा.)

उ०—१ जुड़े आय सब्बासण्यां रायजादी, दरस्सैं कई सेवकां माय दादी। हुमल्लै घनी उंदरी सेन हुंदै, मनों मैथळी वंदरी सेन वंदै।
—मे. म.

उ०—२ भवांनी नमों ब्रह्मनी ब्रह्मवांमा। भवांनी नमो मैथळी रांम रांमा।—मे. म.

मैथिल-वि०—मिथिला का, मिथिला सम्बन्धी।

सं०पु०—१ मिथिला देश का निवासी। (२) ब्राह्मणों की एक जाति या वर्ग।

रू०भे०—मइथळ, मइथल।

मैथिळी, मैथिली-सं०स्त्री० [सं० मैथिली] मिथिला देश के राजा जनक की पुत्री, सीता, जो राम की पत्नी थी।

रू०भे०—मइथळी, महथळी, महीथळि, महीथळी, मैथळी, मैथली

मैथुन-सं०पु० [सं०] १ किसी स्त्री के साथ किसी पुरुष का होने वाला समागम, संभोग, रति-क्रीड़ा।

उ०—इम हिंसा झूठ चोरी मैथुन परिग्रह सेव्यां सेवायां अव्रत सींची तो उण रै लेखे व्रत पिण वधतो कहिणी।—भि. द्र.

२ काम-वासना की दृष्टि से, किसी स्त्री के साथ किया जाने वाला व्यवहार।

उ०—१ हाथ ता ४ प्रकारे, धूजै-एक तो कंपणवाय सूं। के क्रोध रै वस हाथ धूजै। अथवा चरचा में हारयां हाथ धूजै। के मैथुन रै वसीभूत।—भि. द्र.

रू०भे०—मईथुन, मेहुण,

मैथुनी-वि०—१ मैथुन करने वाला।

२ मैथुन का, मैथुन सम्बंधी।

मैथुनीप्रजा-सं०स्त्री० [सं०] मैथुन द्वारा उत्पन्न होने वाली सन्तान।

रू०भे०—मइथुनीप्रजा, मयथुनीप्रजा।

मैदड़ो-सं०पु०—पटेला। (मेवात)

मैदांन-सं०पु० [फा०] १ वास्तु रचना से रहित, समतल एवं विस्तृत भूखण्ड, क्षेत्र।

२ खेल-कूद के लिये तैयार किया हुआ समतल भू भाग।

३ रण क्षेत्र, युद्ध भूमि।

उ०—१ सूर मंडै मैदांन मैं, वाय खळां सिर खाग। पड़ै भंगांणा भोमियां, सूर सधर्गं लाग।—स्रीहरिरांमदासजी महाराज

उ०—२ दूजै दिन प्रीथीराज चहुवांण नै नाहड़राव मैदांन बुहार लड़ीया।—नैणसी

४ किसी पदार्थ का बिस्तार।

५ रत्तों की लम्बाई-चौड़ाई।

६ मल, टट्टी।

उ०—झांझरके झाड़ लागो सू मांचै माहे-ही-ज मेदांनां बैठो सांखो फाड़ राखियो।—राजा भोज अर खापरा चोर री वात

७ जंगल या मेदान में टट्टी जाने की क्रिया।

८ वह प्रान्त या प्रदेश जिसकी भूमि समतल हो अर्थात् उसमें पहाड़ आदि न हो।

९ स्त्रियों के ओढने के वस्त्र का मध्य का भाग।

रू० भे०—मेंदांन, मेदांन, मैंदांन।

मैदांनी-वि. [फा०] १ मैदान सम्बन्धी, मैदान का।

२ मैदान वाला (क्षेत्र, इलाका)

मैदालकड़ी-सं स्त्री.—एक प्रकार की काष्ठ-औषधि, जो सफेद एवं मुलायम होती है, इसका चोट पर लेपन किया जाता है।

उ०—कायफळ, मैदा-लकड़ी अर अमल मया वांटनै कपड़छांण करयां घी में रळाय लेपन करयो।—फुलवाड़ी

रू० भे०—मेदालकड़ी, मैंदालकड़ी।

मैदो-सं. पु. [फा०मेद:] १ अत्यन्त महीन पीसा हुआ आटा, जिसके हलवा, मिष्ठान्न आदि पकवान बनाये जाते हैं।

उ०—ताहरां खाफरै नीचे वासदेव जगायो, खांड-रा कापा मांहै घात पांणी घातियो। दूध चरू-में थो सू घात खांड निखारी, गळणी-में घाती नीचे चरू राख दियो, कुपो खोल घी कढावै में घातियो, ऊपरा मैदो घातियो, खुरपै-सूं सैंतळ हलावण लागो।
—राजा भोज अर खापरा चोर री वात

२ पक्वाशय, पेट, कोठा।

रू० भे०—मइदो मेदो।

मैघ—देखो 'मेघ' (रू. भे.)

मैघा—देखो 'मेघा' (रू. भे.)

मैन—देखो 'मदन' (रू. भे.)

मैनका—देखो 'मेनका' (रू. भे.) (अ. मा., नां. मा.)

मैं'नत-सं. स्त्री. [अ०महनत] १ किसी कार्य को पूरा करने के लिये किया जाने वाला शारीरिक या मानसिक श्रम, परिश्रम।

२ प्रयास, कोशीश।

उ०—मालक, हुं आपने बुलावण सारू पचहारी, मैं'नत करनें थाक गई-हुलसी, वरणसारू वरमाळ ले केई वार हुलस चूकी पण आप झगड़ो करता ढबो नहीं।—वी. स. टी.

रू० भे०—महनत, महन्नत, मिहनत, मेहणत, मेहनत, मैं'नत।

मैनताई—देखो 'महंताई' (रू. भे')

मैं'नती-वि. १ मेहनत करने वाला, परिश्रमी।

२ जो आलसी न हो, प्रयत्नशील।

मैनफळ-सं पु.[सं मदनफल]एक झाड़दार-कंटीला वृक्ष विशेष व उसका फल।

मैनमूरत-सं. पु. [सं० मदन मूर्ति] कामदेव का स्वरुप।

उ०—होय बदसूरत कहे है मैनमूरत सो, कहत पाप पूर ते डरै नहीं।—र. रू.

मैनसिल-सं. स्त्री. [सं. मन: शिला] पीली मिट्टी को तरह का एक धातु जो नैपाल के पहाड़ों में बहुतायत से पाया जाता है।

वि०—पीला, पीत।

रू० भे०—मणसिल, मैणसिल।

मैना-सं. स्त्री. [सं. मदना] १ पीली चोंच वाला काले रंग का एक

प्रसिद्ध पक्षी, सारिका। (डि. को.)

रू० भे० मयणा, मयना, मेणा, मेना, मैणा।

२ देखो 'मेनका' (रू. भे)

उ०—सूकेसी उरवसी, घ्रितेची मैना रंभा। इंद्रलोक अपछरा, इसी उणिहार अमंभा।—गु. रू. वं

३ देखो 'मैणा' (रू. भे.)

मैनाक-सं. पु [सं.] १ हिमालय के वीर्य से और मेना के गर्भ से उत्पन्न एक पौराणिक पर्वत।

२ हिमालय की एक चोटी।

रू० भे० —मयंनक, मयनक, मेनक मेनाक।

मैनाळ—देखो 'मुंहनाळ' (रू. भे.)

मैनावती—देखो 'मेणावती' (रू. भे.)

मैणावळी-सं० स्त्री०—प्रत्येक चरण में चार तगण का एक वर्ण वृत्त जिसमे १२ वर्ण व २० मात्राए होती हैं।

मैनी—देखो 'म्यांनी' (रू. भे.)

मैनेजर-सं०पु० [अं०] किसी कार्यालय,कारखाने या संस्था का प्रवन्ध-अधिकारी, प्रवन्धक, व्यवस्थापक।

मैं'पाळ—देखो 'महीपाळ' (रू. भे.)

मैं'फल. मैं'फिल-सं०स्त्री० [अ० महफिल] १ किसी शुभ अवसर पर की जाने वाली गोष्ठी, उत्सव, जलसा, मजलिस।

उ०—१ दरवाजे थारै नौवत वाजै उड़दी को वाजो न्यारो जी। मैं'फल मे थारै रास रच्यो है सोभा भारी जी।—लो. गी.

उ०—२ चांनणी तांण्योड़ी मे विछायत विछ रैयी है। दमांमण्यां मैं'फल मे दोड़ी वैं', वाजा वजावणियां नावड़चा नाकी ल्यैं।

—दसदोख

२ विचार गोष्ठी, सभा, वैठक।

३ सम्मेलन, समारोह।

४ उपासना या साधना का स्थान। (इस्लाम)

५ संसार, जगत। (सूफी)

मैं'वूव—देखो 'महवूव' (रू. भे.)

मैमंत-वि० [सं० मदमस्त] १ मदोन्मत्त उन्मत्त, मस्त।

उ०—१ वासठि हजार फौजां रा भांजणहार। छखंड खुरसांण रा विधूंसणहार, मैमत हाथिग्रां रा मारणहार।—वचनिका

उ०—२ सो छवि वाळ वकेळ, सह छळ सोहिग्रं। परहां चंद वदनी मैमंत महानर मोहिग्रं।—कल्याणसिंह नगराजोत वाढेल री वात

सं०पु०—१ हाथी, गज।

उ०—सुज पूठि नेजा फररंत सही, गिर सीस तरोवर ऊगि गही। मिळ द्वारम माय मैमंत मदां, नित जांणि पहाड़ खळक्क नदां।

—मा. वचनिका

२ मस्त हाथी, मदमस्त हाथी।

रू०भे०—मइमंत, मइमत, मनमत, मयमंत, मयमत, मयमत्त महमंत, महमंद, महिमद, मिमत, मेमंत, मेमती, मेमत्तिय, मेहमंत, मैंमट, मैंमंतक, मैंमत, मैंमंद, मैमट, मैमत, मैमत्त, मैमद, मैंहमंत।

अल्पा०—मयमंतो, महमंतो, महमतो, महमत्तो, मैंमतो, मैमत्तो।

मैमंद—१ देखो 'मुहम्मद' (रू. भे.)

उ०—सच्चा मैमंद मुसतफी, अलाह दा प्यारा।—कैसोदास गाडण

२ देखो 'मैंमंद' (रू. भे.)

३ देखो 'मैमत' (रू. भे)

मम-सं०स्त्री० [अं० मैडम] १ योरुपिन या अमेरिकन स्त्री।

उ०—रीझां देवण जुध करण, मैम मुणै जग मांय। 'जवार' 'डूंग' दोनू जिसा, नर जनमै फिर नाय।—डूगजी जवार जी री छावली

२ ताश का वह पत्ता जिस पर स्त्री का चित्र होता है।

३ देखो 'महिमा' (रू. भे)

मैमट-सं०पु०—१ वादल, मेघ।

उ०—गुफा ध्यांन लवलीन गिरेवर। ताळी खुलि ऊठिया तपेसुर। जांणै निसा अमावस जळधर, भाद्रव मैमट घटा भयकर।—सू. प्र.

२ देखो 'मैमंत' (रू. भे)

मैमत—देखो 'मैमंत' (रू. भे.)

उ०—मन मैंगळ मैमत भयो, आंकस सहै न कोय। जनहरीया कुछीकए महै,जो ग्यांन गरीवी होय।—श्री हरिरांमदासजी महाराज

उ०—२ दोखियां तणी धणी वर दावै. फावै जुध जुध करै फतै। साह तूझ संक वहै 'गजन' सुत, मैमत चित वहै आप मतै।

—नाथो सांदू

मैमतौ—देखो 'मैमंत' (अल्पा; रू. भे.)

मैमत्त—देखो 'मैमंत' (रू. भे.)

उ०—हुवै घत्त लोहित्त मैमत्त हाला, नसा रा किसा पार सूळां निवाळा। मधू-मास आसोज में रास मंडै, तिहूं लोक री डोकरी तेथि तंडै।—मे. म.

मैमत्तौ—देखो 'मैमंत' (रू. भे.)

उ०—विकराळ काळ वदन, दारण दुजीह गरळ मैमत्तौ। विपरीत कुळह व्रती, इजगूरं या डिभरू गिळ ए।—गु. रू. वं.

मैमद—१ देखो 'मैमंद' (रू भे.)

२ देखो 'मैमंत' (रू भे.)

मैमदा—देखो 'त्रिगमदा' (रू. भे.)

मैं'मांन-सं०पु० [फा० मेहमान] १ अतिथि, मेहमान।

उ०—वडो आदमी आयां रचां,दरवाजा मरमांन रा। डोरै पौ पांन पै'रावां, गावां गुण मैं'मांन रा —दसदेव

२ दामाद, जंवाई। ३ सगा,सम्बन्धी।

रू०भे०—महमांण, महमांन, मेहमाण, मेहमान।

मैं'मांनदारी-स०स्त्री० [फा० मेहमानदारी] अतिथि सत्कार, स्वागत।

मैं'मांनी-सं०स्त्री० [फा० मेहमानी] १ मेहमान बनने की अवस्था या भाव।

२ अतिथि सत्कार, स्वागत।

रू०भे०—महमांनी, महिमांनी, मिहमांनी, मेहमांणी, मेहमांनी, मैहमांनी।

मैं'मा—देखो 'महिमा' (रू. भे.)

उ०—अधिक वधावत आपतें, जन मैं'मा रघुवीर। सिवरी पद रज परसतां, सुध भो सलिता नीर।—भगतमाळ

मैंमावांन—देखो महिमावांन' (रू. भे.)

मैंयण—देखो 'मदन' (रू. भे.)

मैंया-सं०स्त्री० १ राठौड़वंश की एक उपशाखा। (वां. दा. ख्यात)

२ देखो 'माता' (रू. भे.)

मैंयौ—देखो 'मयौ, (रू. भे.)

मैं'र-सं०पु०—१ हाथी, गज। (ना. डिं. को.)

२ देखो 'महर' (रू. भे.)

उ०—१ वंदण स्त्री गुरुदेव कूं, जिण काटै जंजाळ। मूझ सुणाया मैं'र कर, गुण थारा गोपाळ।—भगतमाळ

मैं'रबांन—देखो 'मैं'रवांन' (रू. भे.)

मैं'रबांनी—देखो 'मैं'रवांनी' (रू. भे.)

मैं'रवांन-वि० [अ० मेह्रवान] १ जो दया, कृपा, अनुग्रह करता हो, कृपालु, दयालु।

उ०—नहर सुधार रु नीर री, दाटी सैर दुमार। मैं'रवांन मुरघर महिप, हैर गया म्है हार।—ऊ. का.

२ दातार।

३ मित्र, दोस्त।

रू०भे०—महरबांन, महरवांन, महिरबांन, महिरवांन, मेहरबांन मैं'रबांन, मैहरबांन, मैहरवांन,

मैं'रवांनगी, मैं'रवांनी-सं०स्त्री० [फा० मेह्रबानी] १ कृपा, दया, अनुग्रह।

२ तरस।

उ०—थांनै कुंवरजी वणावणा चावै है। मैं'रवांनी करावौ। पेमजी री जाड़ चिपगी। दांती जुड़गी। उथलौ नी आयौ।—दसदोख

३ करुणा।

४ ममता, प्रेम।

रू०भे०—महरवांनगी, महरबांनी, महरवांनगी, महरवांनी, मिहरवांनी, मेहरबांनी, मैहरवांनगी, मेहरवांनी, मेहरवांनगी, मैं'रबांनी, मैहरबांनी।

मैं'राब—देखो 'मेहराब' (रू. भे.)

मैं'राबदार—देखो 'मेहराबदार' (रू. भे.)

मैरियाळ, मैरी-सं०पु०—रहट में जोते जाने वाले बैलों में से अन्दर की ओर चलने वाला बैल। (मि० मेढी)

मैरूम—देखो 'महरूम' (रू. भे.)

मैरौ-सं० पु०—ऊंची और पथरीली भूमि, मगरा।

मैल-सं० पु० [सं० मलिन प्रा०-मइल] १ शरीर या वस्त्र आदि पर लगने वाला वह गंदा तत्व जिसके चिपकने से शरीर की स्वच्छता व वस्त्रादि की चमक धुंधली पड़ जाती है, कीट, मैल, गंदगी। (डिं. को.)

उ०—१ मूंजी सूं मूंजी री कांम ले लेणौ सोनजी रै नख सूं मैल काढणौ हो।—दसदोख

उ०—२ नख बधियोड़ा निपट, सीत बधियोड़ी साथै। दुख बधियोड़ौ डैल, मैल बधियोड़ौ माथै।—ऊ. का.

उ०—३ ऊंट री खाल रौ जांमौ। ठौड़ ठौड़ फाटोड़ौ। गधा री खाल रा फाटोड़ा लिगतरा। डील माथै मैल री पड़पड़ियां जमियोड़ी। अमर बकरा री गळाई उण री डील भूंडै ढाळै बासतौ। —फुलवाड़ी

२ विकार, दोष दूषण।

उ०—नांव परताप डर डाकणी ना लगै। नांव परताप मन मैल धोया।—स्रीहरिरांमदासजी महाराज

रू० भे०—मलि, मळी, मेल।

मैं'ल—१ देखो 'महल' (रू. भे.)

उ०—१ मोटा-मोटा मैं'ल दिखाळ्या अर भोळा ने भळै चकमौ दीनौ। ठगी माथै कमर बांधी, सोखीनाई नैं धोखा घड़ी सूं सांधी।—दसदोख

उ०—२ राजा नै सराप देयनै अबै सांयड पाछी वळी। गांव सांमी सोय करनै खोड़ावती, ढचूं ढचूं करती जावती, जावतां जावतां मारग में राजा रौ मैं'ल आयौ।—फुलवाड़ी

२ देखो 'महिळा' (रू. भे.)

उ०—तद माळवणी बोली मैं यु सांभळियौ छौ, क्यूं हेक कंवरजी नुं ग्रह मोळा था तद राजाजी नुं पंडितां कह्यो-हीज एक नीच रै घरे परणावौ जिम भार टळै तद एकण नीच रै घरे परणाया छा, सु ऊ मैं'ल होय तौ जांणां।—ढो. मा.

मैलखोरौ-वि०—जिस पर जमा हुआ मैल दिखाई न देता हो, मैल को आत्मसात करने वाला। (रंग)

सं० पु०— एक वस्त्र को मैल से बचाने के लिए उसके नीचे धारण किया जाने वाला दूसरा वस्त्र। ज्यूं शरीर पर कुरते के नीचे बनियान, साफे के नीचे टोपी, पजामा या धोती के नीचे कच्छा इत्यादि।

मैलझलौ-सं. पु.—१ घोड़े की पीठ पर डाला जाने वाला एक प्रकार का वस्त्र।

उ०—सांहणी विरदाय संवार सलौ। जिण पीठ प्रसीनेय मैलझलौ। पा. प्र.

२ देखो 'मैलखोरौ'।

मैलणौ, मैलबौ—देखो 'मेलणौ, मेलबौ' (रू. भे.)

उ०—१ दुरघर वेळा कठण दुहेळी, उर घर म्है अकुळावां। मुरघर घणी मसांणं मैलनै, पुरघर जांण न पावां।—ऊ. का.

उ०—२ म्हारै एक विस्वास री डावड़ी है। उणनै मरदांनी भेख कराय नै कंवरां रै सागै मैलदां। साथै कटोरदांन में विस रै

लाडुवां री संभाळ घालदां ।—फुलवाड़ी

उ०—३ अेकला बैठा ई कड़मड़ कड़मड़ करण लागा । आ कोई बींनणी है के वजराक है । घर नैं हेमाळै मैल देवेला ।—फुलवाड़ी

उ०—४ तारै रावळजी बोलीया-म्है तौ नाळेर पाछौ मैल देसां ।
—वीरमदे सोनगरा री वात

मैलणहार, हारौ (हारी), मैलणियौ—वि० ।

मैलिग्रोड़ौ, मैलियोड़ौ, मैल्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

मैलीजणौ, मैलीजवौ—कर्म वा० ।

मैलमाळिया—सं० पु० [ब. व.] दीपावली पर बनने वाले शक्कर के खिलौने, जो महल की बनावट के होते है ।

मैलरखौ—देखो 'मैलझलौ' ।

उ०—पूरी संज मांढियां बिना चढ़ण री खोड़ ही । लारै दुमची । मोरां मैलरखौ । पछै पड़ची । डळी माथै खोगीर अर पछै काठी ।
—फुलवाड़ी

मैलांण—देखो 'मेलांण' (रू. भे.)

उ०—रूपां मालाळी हुई नै वळै कोढ कियौ । आगै नाहर उवेड़ो हूवो । जरै मन विवणी हूवो । सारां सिरदारां सांवण बाद आघा चलाया । तिको कोम दस रै माथै मैलांण कीयौ ।
—जैतसी ऊदावत री बात

मैलाकरम—सं० पु० यौ०—१ वह जो समाजिक व मानवता की दृष्टि से उचित न हो, अनुचित कार्य, कुकृत्य, कुकर्म ।

२ वाम मार्गियों के कार्य ।

३ दुर्भाग्य ।

मैलाणौ, मैलावौ—देखो 'मेलाणौ, मेलावौ' (रू. भे.)

उ०—हमें कांई करूं ? सीधौ झालूं का पाछौ लौटावूं ? चट, चेळकै हुयगी । तुरत वुद्धि तुरकड़ाळी कैवत सारू संमळगी । हाजरियै अर गिलपिली सूं सीधाळा थाळ सांमली साळ में मैला लिया ।
—दसदोख

मैलाणहार, हारौ (हारी), मैलाणियौ वि० ।

मैलायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

मैलाईजणौ, मैलाईजवौ —कर्म वा० ।

मैलात, मैलायत—देखो 'महलायत' (रू. भे.)

उ०—१८३२ री साल मंयलीबाग नै झालरौ करायौ नै बाग री कमठौ मैलायत कंवळ-चौकी वगलो आददे सारा पासवांनजी रै हाथ हुवौ, तिण रा रू० ५०००००) पांच लाख अंदाज लागा ।
—मारवाड़ री रुयात

मैलापण, मैलापणौ—सं० पु०—मलिनता, गंदगी, विकार ।

मैलामंतर—सं० पु०—तांत्रिक क्रिया ।

मैलायोड़ौ—देखो 'मेलायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० मेलायोड़ी)

मैलियोड़ौ—देखो 'मेलियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० मैलियोड़ी)

मैळू—सं० पु०—गाड़ी के चक्र की नाभि के चारों ओर लगाया जाने वाला गोलाकार लोहे का टुकड़ा ।

मैलौ—वि० [सं० मलिन,प्रा०—मईल] १ (स्त्री० मैली)जिस पर मैल या गंदगी लगी हो, अस्वच्छ, गंदा, मलिन ।

उ०—१ आपरौ बेटौ दो टाबरां री बाप होय गांव री मैली उखरड़ी माथै लुटै तौ थांरा घर री कुरब नीं घटै ।—फुलवाड़ी

उ०—२ हळदी झट धोमाई सूं बोली—ले भाई, थूं कद कद कैसी, कादो साफ करतां म्हारा किसा हाथ मैला व्है ।—फुलवाड़ी

२ बदबूदार, गंदा ।

३ विकारयुक्त, दूषित ।

उ०—१ मैलौ अत अदतार मन, रुच जस तणी रहै न । तन काळौ विसहर तणौ, कंचुक सेत सहै न ।—वां. दा.

उ०—२ काटळ आवध मूझ कर, मन मंदाइण ब्रन्न । आवध राखै ऊजळा, मैला ज्यांरा मन्न ।—वां. दा.

उ०—३ मन मैला चख मांजरा, भालै जे चख भांज । गोला अवगुण नू ग्रहै, गुण भलपण रा गांज ।—वां. दा.

४ पतित, हीन, नीच, ।

उ०—१ मैला मिनख वचन रै माथै, बात वणाय करै विस्तार । बैठ सभा बिच मंडा बारै, वचन काढणौ, बहुत विचार ।—वां. दा.

उ०—२ ऊपर सूं जिता ऊजळा रै'वै, दुनिया माय नै बिता ही मैला माड़ा कैवै ।—दसदोख

सं०पु०—१ मल, विष्ठा ।

उ०—१ मैले ऊपरै मांखियां, गणणाटा लै गैल । हैकड कठीनै हालिया, दबी खलींगण डैल ।—ऊ. का

उ०—२ पण कुण परवा करै । हाल नखां रौ मैलौ ई को धुपियौ नीं । आं कांळिंदर रा बिचिया नै कित्ता दौरा पाळ पोस नै मोटा करिया, वांनै इण बात रौ कांई चेतौ ।—फुलवाड़ी

२ कूड़ा, कचरा ।

३ रैबारी जाति के ढाढियों का वह व्यक्ति,जो भील,सरगरा बांभी आदि निषिद्ध जातियों के यहां भोजन कर चुका हो ।

रू० भे०—मइलौ, मयलू, मलि, मेलौ, मैलण ।

मैलौमाथौ—सं० पु०—स्त्रियों की ऋतुमति(रजस्वला)होने की अवस्था, दशा ।

उ०—सु वा बैर मैलौमाथौ हुती तिणरी छाया पड़ी ।—नैणसी

मैल्हणौ, मैल्हवौ—देखो 'मेलणौ, मेलबौ' (रू. भे)

उ०—सूरौ आयै सांकड़ै,मना न मैल्है मांण । हरिया मरणौ आदरै, पेस न छाडै प्रांण ।—स्रीहररिरांमदासजी महाराज

मैल्हांण—देखो 'मेलांण' (रू. भे.)

मैल्हियोड़ौ—देखो 'मेलियोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री० मैल्हियोड़ी)

मैंवट, मैंवट्ट—वि० — महान, बड़ा। (ल. पि.)

उ०—१ अंग अंग अवल फट मिळ धाए मैंवट, धार धजव्वट घोम धिखै। आहुडिया अविग्रट बध्धै रिणवट, वळिवंत वाथट वल्ळ बखै —गु. रू. बं.

उ०—२ है पलांण न ऊतरै, रहै दळ चाकै चडिया। मिळै कोट मैंवट्ट, घण घट धाए घडिया।—गु. रू. बं.

उ०—३ गढ़ लियण कोट मैंवट्ट में, कमधज दिखण मथण कळी। महि तैहिज मार मनावि इम, खेडेचा राउ खगबळी।—गु. रू. बं.

रू० भे०—मेवट, मैंवट्ट, मैंमट्ट।

मैंवास—देखो 'मेवास' (रू. भे.)

उ०—१ गिरकंदर पाहाड, गाहि पाए केकांणं। किया मट्ट मैंवास प्रज्ज पाळी मेल्हांण।—गु. रू. बं.

उ०—२ है पाई गिरि गाहिजै. मारीजै मैंवास। निस वासर नागाद्रहा, हियै न पूजै सास।—गु. रू. बं.

मैंवासी—देखो 'मेवासी' (रू. भे.)

मैंवासौ—देखो 'मेवासौ' (रू. भे.)

उ० —नर है मोरठ तणा नर नवै, रूकां मुह मैंवासा राय। आया पाय तिके ऊबरिया, प्रळै किया सेनायां पाय।—द. दा.

मैं'सूल—देखो 'महसूल' (रू. भे.)

मैं'सूस—देखो 'महसूस' (रू. भे.)

मैंहण—देखो 'महारणव' (रू. भे.)

उ०—मैंहण तजै मरजाद, अरक पिछम दिस ऊगमै। सांभळ सावळ साद, पावू नट वैसे परौ।—पा. प्र.

मैंहणी—देखो 'मे'णी' (रू. भे)

उ०—मा चांपाउत मेलिया, सांम्हा निज भड़ सेर। 'उरजण' रा मत जांणजो, मैंहणी जैसलमेर।—वी. स. टी.

मैंहणौ—देखो 'मैंणौ, मैं'णौ' (रू. भे.)

मैंहमंत, मैंहमत—देखो 'मैंमंत' (रू. भे.)

मैंहमद—देखो 'मैंमंद' (रू. भे.)

उ०—माथै रौ रम मैंहमद लीयौ तौ मैंहमद रौ रस राजिद लियौ कहि रे गुमांन करूं रसिया।—लो. गी

मैंहमांनी—देखो 'मैं'मांनी' (रू. भे.)

उ०—उठाथी सलूंबर आयौ, तरै सीसोदियां रै रावत खंगार रतनसीयोत मैंहमांनी करी।—नैणसी

मैंहर—देखो 'महर' (रू. भे.)

उ०—तिण रै पगै लागा। कह्यौ—म्हांनूं गरीब नाथ स्राप दियौ, राज गयौ हमैं राज री मैंहर हुवै तौ म्हे अठै टिकां।—नैणसी

मैंहरवांन—देखो 'मैं'रवांन' (रू. भे.)

मैंहरबांनी—देखो 'मैं'रवांनी' (रू. भे.)

मैंहरवांन—देखो 'मैं'रवांन' (रू. भे.)

उ०—१ अर राजा पण मैंहरवांन हुवौ।

—गांम रा धणी री बात

उ०—२ तद पातसाहजी वौहत मैंहरवांन हुवा। अनूपसिंघजी नूं महाराज रौ खिताब वगसियौ।—द. दा.

मैंहरवांनी—देखो 'मैं'रवांनी' (रू. भे.)

उ०—लालैजी नै कैयौ—पिताजी थे मेरै माथै मोटी मैंहरवांनी कर'र दायजो दिखाळण हाळी जिदनै छोडदचौ।— दसदोख

मैंहरांण—देखो 'महारणव' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

उ०—दांन के प्रमांण दुहुं राजा नूं के पांण। मेघ के मंडांण कहा सातूं मैंहरांण।—रा. रू.

मैंहरात—एक जाति।

उ०—जैतारण था कोस पूरब माहै। मैंहरात वसै। धरती हळवा १० खेत कंवळा। ऊनाळी कोसेबटा हुवै।—नैणसी

मैंहरू—देखो 'महर' (रू. भे.)

मैंहल—१ देखो 'महल' (रू. भे.)

उ०—अठै हरख वधाई हुई। पावूजी सोढी जाय मैंहल मांहै पोढ़िया छै।—नैणसी

२ देखो 'महिळा' (रू. भे)

मैंहलांण—देखो 'मेलांण' (रू. भे)

मैंहलाईत, मैंहलायत—देखो 'महलायत' (रू. भे)

उ०—अबै गांम रा धणी री असतरी सोळै-सिणगार सजैनै कोटड़ी मांहै मैंहलाईत है जंणी मांहै आय बैठी है।

—राजा रा गुर रा वेटा री वात

मैंहेली—एक भोज्य-पदार्थ।

उ०—कुमाच मैंहेली महरि ए मंडोवर के मूंग सुखदा सराय। भोग लंजहा के भात जाय के फूलां की सोभा दरसात।—सू. प्र.

मों—देखो 'मो' (रू. भे.)

मोंड़ौ—देखो 'मोड़ौ' (रू. भे.)

मोंच—देखो मोच' (रू. भे.)

मोंचकरोत—सं पु.—लकड़ी को लम्बाव की ओर से चीरने का एक प्रकार का बड़ा करोत।

मोंची—सं० स्त्री०—१ कूऐ से पानी निकालने के काम आने वाला, लकड़ी का एक उपकरण, जिसके चड़स बांधा जाता है।

२ काष्ठ का एक उपकरण जिससे मिट्टी डाली जाती है।

३ देखो मोची' (रू. भे.)

मोंडकौ—सं० पु०—कूऐ के अंदर की ओर, ईंट या पत्थरों का बना हुआ वह भाग जिस पर वह गोल लट्ठा (लाट) रखा जाता है जिसके सहारे पानी के पात्रों को ऊपर लाने वाला घेरा (डाबडो) घूमता है।

मोंण—१ देखो 'मैंण' (रू. भे.) २ देखो 'मोण' (रू. भे.)

मोंसर—देखो 'मोसर' (रू. भे.)

मोंसी—देखो 'मासी' (रू. भे.)

मोंसीहाई—देखो 'मासियाई' (रू. भे.)

मोंहडौ—देखो 'मूं'डो' (रू. भे.)

उ०—१ कुंवरसी ऊठ भीतर मां कन्है गइयौ। मां छाती सूं लगाय मिळी, मोंहडे ऊपर हाथ फेर राई लूण वारिया।
—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ हुकुम कियौ इस ही जायगा मोंहडा आगे इलाज करौ।
—दूलची जोइये री वारता

मो-सर्व०[सं० मम] १ मुझ, मैं।

उ०—१ करूं न दरस अंतर इण काया। मो तौ चरण सेव गढ़ माया।—सू. प्र.

उ०—२ तिण पणि श्रीकम जे परमेस्वर का जस को पार न पायौ तौ मो मीडका कौ किसौ वस छै।—वेलि टी.

उ०—३ हरीया मारग अगम की, मो सेती गम नांहि। कहि कैसी विध पाईये, चित गयौ ता मांहि।—स्त्री हरिरांमदासजी महाराज

उ०—४ कथ पावू कैहवा कनियांणी। करौ हुकम मो पर कनियांणी।—पा. प्र.

२ मुझे, मुझको।

उ०—१ त्रिभुवण मांहि न तोसूं तोलै। सरण राख मो ईसर बोलै। श्री संसार असार अनांमी, साहिब सरणै राखौ सांमी।
—ह. र.

उ०—२ तूं मत भागै सायबा, तो भागां मो खोड़। साईनी हांसी करै, दे ताळी मुख मोड़।— अज्ञात

३ मुझपर, मुझसे।

उ०—छत्रपत 'गजबंध' गाजणौ छत्रपत, बिया 'मालदे' चमर-बंबाळ। मो चौत्रिया न जावै मारू, तूं तेवड़ा करै रणताळ।
—गु. रू. बं.

४ मेरा, मेरी, मेरे।

उ०—१ मो तेरा वदै हिंदू तुरक, जेती उगै आथमैं। 'गजसाह' कहै पतिसाह दळ, मो उभै कुण आंगमैं।—गु, रू. बं.

उ०—२ म्हारां मननी आसा पूरौ, राजि म्हांरा कठिन करम दल चुरउ। थांरा गुण सुं मो मन लागो, राजि हियइ राखुं रे वांभण जिम तागउ।—वि. कु.

उ०—३ हरि जस रस साहस करे हालिया। मो पंडिता वीनती मोख। अम्हीणा तम्हीणै आया,स्रवण तीरथे वयण सदोख।
—वेलि

उ०—४ थळवट अळग थईह, कुळवट अद भूली किनां। करनी कठै गईह, मो विरियां मेहासदू।—हिंगळाजदांन कवियौ

उ०—५ आखरी लाख मांनै न औ खाक करी मम खाल री। कुण सुणै साल मोटी कथा, हाय व्यथा मो हाल री।—ऊ. का.

उ०—६ वैनांणी ढीली घड़ै, मो कंथ तणौ सनाह। विकसै पोइण फूल जिम परदळ दीठां नाह।—हा. भा.

रू०भे०—मों, मोइ, मौ।

मो'—देखो 'मोह' (रू. भे.)

उ०—मांनुखा जनम पाय कहा कीया, स्वरूप आपणा नहीं जांणा। मन सूता मो' माया माहीं, इनकूं वेग जगाय लैणा।
—स्त्री सुखरांमजी महाराज

मोइ—१ देखो 'मो' (रू. भे.)

उ०—कै तो जोगी जग में नांहीं कै'र बिसारी मोइ। कांई कित जाऊंरी सजनी, नैण गुमाया रोइ।—मीरां

२ देखो 'मोई' (रू भे.)

मोइल-सं० पु०—देखो 'मोयल' (रू. भे.)

मोई-सं० स्त्री०—१ प्राय सारे राजस्थान में होने वाली एक झाड़ी विशेष।

२ बच्चों को खिलाने के लिये, मूंग के आटे को सेंक कर बनाया हुआ पौष्टिक खाद्य पदार्थ।

३ मसाले मिलाई हुई सूखी भांग।

४ देखो 'मो' (रू. भे.)

उ०—१ प्रीत कियां सुख नहिं मोरी सजनी जोगी मींत न कोई। रात दिवस कळ नाहिं परत है, तुम मिळिया बिन मोई।—मीरां

मो'इंडकौ-सं० पु०—बच्चों का एक खेल।

मोउ, मोऊ—देखो 'मऊ' (रू. भे.)

उ०—जाडा धन वाळा सिंधू तट जुड़िया, गाडा तन पाळा गुज्जर धर गुड़िया। घर घर छपनैं में घर घर री घाली, मोऊ मुरधर री सनमुख सुखमाल्ही।—ऊ. का.

मोकड़ौ—देखो 'माकड़ौ' (अल्पा., रू. भे.)

मोकणौ, मोकबौ—देखो 'मूकणौ,मूकबौ' (रू. भे.)

उ०—थेट्ट छोड बवां थोक, मह अघ दीध हांसल मोक। सातं ईतरौ नह सोक, लंगर सुखी सगळा लोक।—र. रू.

मोकणहार, हारौ (हारी), मोकणियौ—वि०।

मोकिओड़ौ, मोकियोड़ौ, मोक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

मोकीजणौ, मोकीजबौ—कर्म वा०।

मोकदमौ—देखो 'मुकदमौ' (रू. भे.)

मोकळ-सं०स्त्री०—१ इजाजत, आज्ञा

२ छुट्टी, अवकाश।

सं० पु०—३ विशेष प्रकार से तैयार किया हुआ खरगोस का मांस, जो बहुत ही स्वादिष्ट होता है।

४ देखो 'मुकळायत' (रू. भे.)

उ०—जाता गैले जिम जुळ जुळ हंसि जोता। रोटी मांगण सूं पैलांवस रोता। छिन छिन खाती बिच छडती नित छाती। मोकळ चाकळ में कोकळ नह माती।—ऊ. का.

५ देखो 'मोकळौ' (मह., रू. भे.)

उ०—१ चढ़ती कंठळि बीज चमक्कै, झड़ माचंतै सुकवि झणक्कै। ऊनड़ हरा इंद्र ऊवक्कै,गुणियण मोकळ सिहड़ गहक्कै।
—आसौ बारहट

उ०—२ ऐरापति जसतिलक अठी दळ, मतवाळौ छावौ मद मोकळ। दळ सिंगार गज घंट बहादर, मद मेदनी विकट गज-

भम्मर।—रा. रू.

मोकळउ, मोकलउ—देखो 'मोकळौ' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—संभलि, पुत्र ! तूं सीखडी, ए सी ताहरी पइरि, मन नवि कीजइ मोकलउं,चारित्र विधि रे सूधी तूं करि कि।

—नळदवदंतीरास

मोकळणौ, मोकळबौ, मोकलणौ, मोकलबौ—क्रि० स० [सं० मोक्षणम्]

१ जाने के लिए प्रेरित करना, भेजना, पठाना।

उ०—१ ग्रहि पांन एम कहियौ अगंज, झट खग बीह बाहू झलूं। मोकळूं पकड़ि मदकर मिलक, मुदफर रौ सिर मोकळूं।—सू. प्र.

उ०—२ तुम्हारो आगमन क्यां हुओ। कह कहतां कहि। किल कहतां निश्चय। कस्मात् कहतां कुण थळ थे आयो। किमरथ कहतां कुण कारण कंन कहतां कुणै मोकल्यो।—वेलि. टी

उ०—३ रांणां सांड्या मोकल्या जी, पाछा ल्यावौ मोड़। कुळ की मांडण इस्तरी जी, मुरड़ चली राठौड़।—मीरां

उ०—४ जे. जे मालिक राइ झालीया, ते कुंअरी ;नइ पाछा आलीया। आगेवांण दाखवइ वाट, साथि मोकल्यउ बीजउ भाट —कां. दे. प्र.

२ मुक्त करना, आजाद करना।

उ०—वाइ मोकळि न मूं मदि मातउ, कूड कीचक पर स्त्री रातु। भूंविसि किमइ मूरख मूं रहइं, उरतउ हुसि स्वामिनि तूं रहइं।

—सालिसूरि

३ छोड़ना, त्यागना।

उ०—कूड़ कपट कलि विकलां केलवी, कीजइ छै केइ कांम। अखावाद पगोपग मोकलौ, सी गति थासी स्वांम।—घ. व. ग्रं.

४ देना।

उ०—हरख मिळै आदर करै, पोखै थाळ मंगाय। मीठो उत्तर मोकळै, मीठो सूंब कहाय।—वां दा

५ फैलना, बिखरना।

उ०—मारू ऊभी गोख तळ, सर मोकलांणा केस। जांणक राजा छत्रपति, मारण चढियौ देस।—ढो. मा.

मोकळणहार, हारौ (हारी), मोकळणियौ—वि०।

मोकळिओड़ो, मोकळियोड़ौ, मोकळ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

मोकळीजणौ. मोकळीजबौ—कर्म वा०।

मोकळणौ मोकळबौ—रू० भे०।

मोकळमुख,मोकळमुह,मोकळमूंडी,मोकळमूंवौ-वि०-वाचाल,मुंहफट,लवार।

उ०—कळदार कळस अर चांदी-सोना री छतर चढावै है' मोकळमूंवां. मूं' आया बोलै अर अवढा चालै है।—दसदोख

मोकळांण—देखो 'मुकळायत।

मोकळाणौ, मोकळावौ—क्रि० स० ['मोकळणौ' क्रि० का० प्रे० रू०]

१ जाने के लिये प्रेरित करवाना, भिजवाना, पठवाना।

२ मुक्त कराना, आजाद कराना।

३ छुड़वाना, त्याग कराना।

४ दिलाना।

५ फैलाना, वखेरना।

६ तानना, फैलाना।

उ०—अर वीजो सकळात ऊपरा मोकळी करि अर ऊभो रहियो।

—द. वि.

मोकळाणहार, हारौ (हारी), मोकळाणियौ—वि०।

मोकळायोड़ौ—भू० का० कृ०।

मोकळाईजणौ, मोकळाईजबौ—कर्म वा०।

मोकळावणौ, मोकळाववो, मोकलावणौ, मोकलावबौ—रू० भे०।

मोकळायत—देखो 'मुकळायत' (रू. भे.)

मोकळायोड़ौ—भू० का० कृ०—१ जाने के लिये प्रेरित करवाया हुआ, भिजवाया हुआ, पठवाया हुआ. २ मुक्त व आजाद कराया हुआ. ३ छुड़वाया हुआ, त्याग कराया हुआ. ४ दिलवाया हुआ. ५ फैलाया हुआ, वखेरा हुआ. ६ ताना हुआ।

(स्त्री० मोकळायोड़ी)

मोकळावणौ, मोकळाववौ. मोकलावणौ, मोकलाववौ—देखो 'मोकळाणौ, मोकळावौ' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—१ खांडइ हाथ घालइं, तेहे सूरे सुभटे संग्रांमि सांचरते सहोदर पुत्र मित्र कलत्र मोकलावी, सप्तांग लक्ष्मी तणा भोग छांड्या।—व. स.

उ०—२ मोकळावी छइ भोज कुंवार। दीधी दासी सहस दुई चारि।—वी. दे.

उ०—३ पिता प्रणांम करुं किस्यूं-मोकळावउं किहां मात। करसिइं ते कलपांत कलि, स्रवणि सुणांतां वात।—मा. कां. प्र.

मोकळावणहार, हारौ (हारी), मोकळावणियौ—वि०।

मोकळाविओड़ो, मोकळावियोड़ौ, मोकळाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

मोकळावीजणौ, मोकळावीजवौ—कर्म वा०।

मोकळावियोड़ौ—देखो 'मोकळायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० मोकळावियोड़ी)

मोकळियोड़ौ—भू० का० कृ०—१ जाने के लिये प्रेरित किया हुआ, भेजा हुआ, पठाया हुआ. २ मुक्त व आजाद किया हुआ. ३ छोड़ा हुआ, त्यागा हुआ. ४ दिया हुआ. ५ फैला हुआ, विखरा हुआ।

(स्त्री० मोकळियोड़ी)

मोकळू, मोकळौ, मोकलौ—वि० [स्त्री० मोकळी] १ बहुत, अधिक, ज्यादा, खूब।

उ०—१ मोटा-मोटा मैं'ल दिखाळै तथा कूड़-कपट करता थका दोनां कांनी सूं मोकळा ही रिपिया अंठै, ठगै अर ठोक लेवै।

—दसदोख

उ०—२ मुलक में मोकळा ही फिरिया, लड़िया तिण सूं एक वार तो ईब जोधपुर हालो।—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

उ०—३ आप वसइ तिहां थी छ दिसइ, करइ कोस जाऊं निज मन मांन्या राखइ मोकला, ए छट्ठा व्रत नी अरगला।—स. कु.

उ०—४ पछै कोई आडी-अंवळी के खांगी-बांकी वात नीं करी। करी जकी ई मोकळी। पण बेटा रै हीयै विछोव रै दाफ मिटावणी वांरै सारै री वात नीं ही।—फुलवाड़ी

उ०—५ माया मोरी मोकळी, वूदी कमी न जाय। जन हरिया सो वूदिसी, भगति भरोसो थाय।—स्रीहरिरांमदास जी महाराज

२ जो गणना, संख्या या मात्रा की दृष्टि से अधिक हो, बहुत हो। कई, अनेक।

उ०—१ रांणीजी मोकळी वार सगळां नै सावळ घर में समझायो-बुझायो, तो ई वांरो भूत नीं उतरियो।—फुलवाड़ी

उ०—२ या ही छै, ओठी, राजाजी री सींव, तालर थोड़ा, ओ ओठी, सरवर मोकळा —लो. गी.

३ पर्याप्त, प्रचुर, काफी।

उ०—१ रांणी नै चूंघाई, हीरणी रा जतन करनै आछो जगा राखी। खांन-पांण रो जतनै मोकळो कीयो हीवै दिन अस्त हुवो। —रीसालू री वात

उ०—२ रात रा आपरो नांणो भांज, आटो, घी सकर आंण चूरमो कर खावै अर वाकी रो परभात रै पगां ऊंचो मेल्ह राखै। तंबाखू मोकळी डाबी भरी रहै। चाकर घोड़ां नूं पांणी पाय, न्हवाय आय वैठा-वैठा तंबाखूडा पीवै, गल्हां करवो करै, अमल-तंबाखू खाणे नूं मोकळो आंण देवै सो महिना अढाई उठै इण तरै रहियो।—सूरे खींवे कांधलोत री वात

उ०—३ यूं तो म्हारी इछा न्है तो एक छदांम ई मोकळी अर यूं म्हैं नीं मांनूं तो दुनियां री आखो धन ई साव थोड़ो।—फुलवाडी

४ चौड़ा, विस्तृत, फैला हुआ।

उ०—१ तठा उपरायंत हिरण खुलै छै सू जांणै धोबी रै घर कपड़ा मोकळा किया छै।—रा. सा. सं.

उ०—२ तठा उपरांयंत चरणां रा गिरदांना मोकळा कर जाजमां गिलमां ऊपर वैसजै छै।—रा. सा. सं.

५ तीव्र, तेज।

६ प्रभाव शाली, प्रभाव पूर्ण।

रू०भे०—मोकळउ, मोकलउ, मोकळो,

मह०—मोकळ, मोकल।

मोकल्यो—वि०—मुक्त, स्वतन्त्र, आजाद।

उ०—जन हरीया मन मोकल्यो, तीन लोक फिर खाय। जे कोई पकड़ै सूरवो, सत का वांण संभाय।—स्री हरीरांमदासजी महाराज

मोकस—देखो 'मोक्ष' (रू. भे.)

मोकी—देखो 'मोखी' (रू. भे.)

मोकुब—देखो 'मौकूफ' (रू. भे.)

उ०—चित्र सेवा री हमार है जठै जनांनी दोढ़ी कराई, ने पछै उवा दोढी मांराज बखतसिंघजी मोकुब कर वाड़ी रा महलां कनै कराई। —मारवाड़ री ख्यात

मोकूफ—देखो 'मौकूफ' (रू. भे.) (मा. म.)

मोकैवारदात—देखो 'मौकेवारदात' (रू. भे.)

मोको—सं०पु०—१ देखो 'मोखो' (रू. भे.)

२ देखो 'मौको' (रू. भे.)

उ०—१ खळ तिण री खोटी करै, पापी अनजळ पाय। मोको लागां मोहिया, चेली सूं चिप जाय।—ऊ. का.

उ०—२ बोदा वतळावै खोदा खावै, खोदा पण सूजंदा है। जद मोको जोवै सेजां सोवै, अरध निसा उचकंदा है।—ऊ. का.

मोक्ख—देखो 'मोक्ष' (रू. भे.) (जैन)

मोक्खमग्ग—देखो 'मोक्षमारग' (रू. भे) (जैन)

मोक्कमणि—सं०पु०—एक रत्न विशेष।

मोक्ष, मोक्स—सं०स्त्री० [सं० मोक्ष] १ किसी प्रकार के बंधन से मुक्ति, छुटकारा, आजादी, स्वतन्त्रता।

उ०—बंध नइ मोक्ष ना वेउं कारण अछइ। दुक्रत नइ सुक्रत जो अव विचारी।—वि. कु.

२ आध्यात्मिक क्षेत्र मे किसी जीव का, जन्म-मरण के आवागमन से छुटकारा, मुक्ति, निर्वाण, कल्याण।

उ०—१ वंक तेज कारण वणीं, निहचळ तप निरदोस। ग्यांन मोक्ष कारण गिणै, सुख कारण संतोस।—बां. दा.

उ०—२ कढै हंस 'बाळेस' नूं मोक्ष कीधो। दई राजकै कंध सुग्रीव दीधो।—सू. प्र.

उ०—३ जुग-जुग भीर हरी भक्तन की, दींनी मोक्ष समाज। मीरां सरण गही चरनन की, पैज रखो महाराज।—मीरां

उ०—४ जोर सूं बोल्यो-जैड़ी थारी इंछा मां! म्है थारै लारै जिग करूला। देस रा सगळा बांमणां नै जीमाऊंला। थारो मोक्स व्है मां। बेटा री डंडोत कबूल कर मां, ओ छेलो डंडोत है। —फुलवाड़ी

३ स्वर्ग वैकुण्ठ।

उ०—१ जद स्वांमीजी कह्यो: मोक्ष देवलोक रो जांणहार तो तूं ठहरयो। थारे लेखे नरक जावण हार थांरा गुरु ठहरया। —भि. द्र.

उ०—२ जद स्वांमीजी कह्यो: म्हैं तो यूं न कहां-मूंहडो दीठा स्वरग नरक जाय पिण थांरी कहिणी रै लेखै थांरो मूंहडो तो म्हैं दीठो सो मोक्ष ने देवलोक तो म्है जास्यां। अनै म्हांरो मूंहड़ो थें दीठो सो थांरी कहिणी रै लेखै थांरे पानैं नरक ईज पडी। —भि. द्र.

४ मृत्यु, मौत।

५ शास्त्रानुसार, कल्याण के चार पदार्थो (अर्थ, धर्म, काम व मोक्ष) में से एक। (नां. मा.)

६ उऋण होने की क्रिया या भाव।

७ बचाव।

८ छूट, ढील।

९ बहाव। पात।

१० ग्रहण (सूर्य व चन्द्रमा) के छूटने की क्रिया।

रू०भे०—मोकस, मोक्ख, मोख, मोखि, मौख।

अल्पा०—मोखी।

मोक्षक-वि० [सं०] १ मोक्ष देने वाला, मोक्षदाता।

२ छोड़ने वाला, छुटकारा दिलाने वाला।

मोक्षण-सं०पु० [सं०] १ मोक्ष देने की क्रिया या भाव।

२ मुक्त होने की क्रिया या भाव।

रू०भे०—मोखण।

मोक्षद-वि० [सं०] १ मोक्षदाता, मुक्तिदाता।

२ छोड़ने वाला, मुक्त करने वाला।

रू०भे०—मोखत्त, मोखद,

मोक्षदा-सं० पु० [सं०] सिक्ख धर्म के अनुसार पांच तत्व, कड़ा, कंघा, कच्छी, कटार व केश, का समूह। (मा. म.)

रू०भे०—मोखदा।

मोक्षदाएकादसी-सं०स्त्री० [सं० मोक्ष+दा+एकादशी] मार्गशीर्ष मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी की तिथि।

मोक्षदाता-वि०—मोक्ष या मुक्ति देने वाला।

उ०—देवी मथुरा माईया मोक्षदाता, देवी अवंती अजोध्या अघ हाता।—देवि.

मोक्षपद-सं०पु० [सं० मोक्ष+पद] जीव का वैकुण्ठ या स्वर्ग में निवास पाने की अवस्था।

रू०भे०—मोखपद।

मोक्षपति-सं०पु० [सं०] संगीत का एक भेद विशेष (संगीत)

मोक्षमारग-सं०पु०यौ० [सं०मोक्ष+मार्ग] ऐसा कार्य या आचरण जिससे मोक्ष प्राप्ति का योग बनता हो।

रू०भे०—मोक्खमग्ग,

मोक्षविद्या-सं० स्त्री० [सं] १ आध्यात्मिक-विद्या।

२ वेदांत-शास्त्र।

रू०भे०—मोखविद्या।

मोखंत, मोखंतर—देखो 'मोक्ष'।

उ०—१ मेरुवीस मूरछा त्रिण (ह) ग्रांम निसपति सुर। लहण भेउ खटराग कांठ अरखे मोखंतर।—गु. रू. वं.

उ०—२ इतरे डूंगरसीजी बोल्या, काकाजी, रजपूतां री साथ घणी अबखी छै, पांणी री तिस आगै, तिण सूं राज अब मोखंतर पधारीस कोई साथ अनपांणी भेळो हुवै —जैतसी ऊदावत री वात

मोख-सं० पु० [सं० मयूख] १ सूर्योदय या सूर्यास्त के समय, प्राय: वर्षा ऋतु में, बादल की ओट से, आकाश में दिखने वाला सूर्य की किरणों का समूह।

रू०भे०—मोघ, मौख।

२ एक प्रकार का वृक्ष।

उ०—एरंड अरणी अगथीउ, अखोड़ ताड़ असोख। खजूरि खारिक कुड़ो सालर, सिवंन सईवल मोख।—रुकमणी मंगळ

३ देखो 'मोक्ष' (रू. भे)

उ०—१ अवसांण आए छत्री पौरस सरसावै। यह लोक जीप परलोक मोख पावै। रा. रू.

उ०—२ माता कर मक्र लहै चक्र मोख। तिलत्तिल अंग न जंग संतोख।—मे. म.

उ०—३ समर तजण सूं सौगुणी, दुरंग तजण रौ दोख। मरद दुरंग जाता मरे, मिळै जिकां नूं मोख।—बां. दा.

उ०—४ जोड़ी तो जुगती मिळी, कुशळी ने तिलोक। ऊ थापै ऊ ऊथपै, किण विध जासी मोख।—भि. द्र.

४ देखो 'मोखी' (मह., रू. भे.)

उ०—जद स्वांमीजी कह्यौ-कठै धोवसी? जद तिण मोख री जागा बताइ-अठै धोवसूं। जद स्वांमीजी कह्यौ-ओ पांणी कठै पड़सी? जद तिण कह्यौ। हेठै पड़सी।—भि. द्र,

५ देखो 'मोस' (रू. भे.)

मोखण—देखो 'मोक्षण' (रू. भे.)

उ०—१ खळ रा दळण दुरद रा मोखण, पत रा रखण सुमत रा पेस। कळमें दरस आप रा करतां, प्रगट पाप रा गया प्रवेस।
—र. रू.

उ०—२ गिरंद् गाहटण अभै-मण सजै रिण विसम गत। दोयण घण दावटण 'जैत' दूजौ। जपै अन सहू जन सिंघ तण विजै जस, साह मोखण-ग्रहण भूप 'सूजौ'।—द. दा.

उ०—३ सांगा ग्रह मोखण सुरतांणा, कूंभाहरा जोड करतार। किय हरिदास रांण केहरियौ, ऊवियां छत्र चमर वड वार।
—हरिदास चारण 'केसरिया'

उ०—४ दिल्ली दावा-मुदी, तूं हिज आगळ है रांणा। तौ दादौ 'संग्राम', ग्रहण मोखण सुरतांणां।—गु. रू. वं.

मोखणौ, मोखवौ-क्रि० स० [सं० मोक्षणम्] १ मुक्त करना, मुक्ति देना।

२ बंधन से छुटकारा करना, छोड़ना, खोलना।

३ रिहा करना, आजाद करना।

४ फेंकना।

मोखणहार, हारौ (हारी), मोखणियौ—वि०।

मोखिओड़ौ, मोखियोड़ौ, मोख्योड़ौ—भू० का० कृ०।

मोखीजणौ, मोखीजवौ—कर्म वा०।

मोखत्त—१ देखो 'मोक्षद' (रू. भे)

मोखद—देखो 'मोक्षद' (रू. भे.)

मोखदा—देखो 'मोक्षदा' (रू. भे)

मोखन—देखो 'मोक्षण' (रू. भे.)

उ०—सुरतांन ग्रहन मोखन सुजांन, हिंदवांन भांन की करन हांन। गळ फेरि छुरी जैचंद गोत, अप्प नूं पोत करियें उदोत।—ऊ. का.

मोखपद—देखो 'मोक्षपद' (रू. भे.)

उ०—वो खग तोलै वोलियौ, अचळ तणौ कुळ भंम। जूटै खेटां मोखपद, माळ पलटां रंभ।—गु. रू. वं.

मोखम—अनिश्चित अवस्था।
उ०—पेमजी री जाड़ चिपगी, दांती जुड़गी। उथळी नीं आयी। हा अर नां, दोनूं मोखम में राख र उंकारै सूं हुंकारौ भरचौ अर मुड्ढै सूं उठ'र रावळै कांनी मूंढौ मोड़यौ।—दस दोख

मोखमल—देखो 'मखमल' (रू. भे)
उ०—मोखमल मोटा मोलरा, पंच रंग पटकूल। जरी कथीपा जुगति सुं, सखर बिछावै सूल।—प. च. चौ.

मोखविद्या—देखो 'मोक्षविद्या' (रू. भे.)

मोखांण—देखो 'मुकांण' (रू. भे.)

मोखांतर—देखो 'मुकातर' (रू. भे.)

मोखाणौ, मोखावौ—क्रि० स० ["मोखणौ" क्रि० का० प्रे० रू०] १ मुक्त कराना, मुक्ति दिलाना।
२ बंधन से छुटकारा कराना, छुड़वाना, खुलवाना।
३ रिहा कराना, आजाद कराना।
४ फिकवाना।
मोखाणहार, हारौ (हारी), मोखाणियौ—वि०।
मोखायोड़ौ—भू० का० कृ०।
मोखाईजणौ, मोखाईजबौ—कर्म वा०।
मोखावणौ, मोखावबौ—रू० भे०।

मोखायोड़ौ—भू० का० कृ०—१ मुक्त कराया हुआ, मुक्ति दिराया हुआ. २ बंधन से छुटकारा कराया हुआ, छुड़वाया हुआ, खुलवाया हुआ. ३ रिहा कराया हुआ, आजाद कराया हुआ. ४ फिकवाया हुआ। (स्त्री० मोखायोड़ी)

मोखावणौ, मोखावबौ—देखो 'मोखाणौ, मोखावौ' (रू. भे.)
उ०—सेखउ राउ ग्रहियउ सीहराइ, ताइया कन्हा मोखावि ताइ। राठउड़ 'वीक' कुण करइ रीस, छेहड़ा छत्र मांडइ छत्रीस।
—रा ज. सी.
मोखावणहार, हारौ (हारी), मोखावणियौ—वि०।
मोखाविओड़ौ, मोखावियोड़ौ, मोखाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
मोखावीजणौ, मोखावीजबौ—कर्म वा०।

मोखावियोड़ौ—देखो 'मोखायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० मोखावियोड़ी)

मोखि—१ देखो 'मोक्ष' (रू. भे.)
उ०—पुण स्राप मो तांम वांणी प्रकामी। प्रभू रांम ओतारि, तूं मोखि पासी।—सू. प्र.
२ देखो 'मोखी' (रू. भे.)

मोखियोड़ौ—भू० का० कृ०—१ मुक्त किया हुआ, मुक्ति दिया हुआ. २ बंधन से छुटकारा किया हुआ, छोड़ा हुआ, खोला हुआ. ३ रिहा या आजाद किया हुआ. ४ फेंका हुआ।
(स्त्री० मोखियोड़ी)

मोखी—सं० स्त्री०—१ मकान या मकान के किसी कक्ष में गंदे पानी के निकास के लिये बनी हुई छोटी नाली, मोरी।
२ गुदा, मूलद्वार।
उ०—पुटियो कंवण लागौ—लोग आ वात जांणण वास्तै भेळा व्हिया के दुनियां में मूंडा घणा है के मोखियां घणी हैं।
—फुलवाड़ी
३ बारी, खिड़की।
उ०—२ खूट्यां माथै पंरण रा गाभा वाळ में डोळा, तेजाब में पड़्या—घाट खोळा हा, आलां में राछ अर मोखी—झरोखा में भांत भांत रा न्हांना मोटा संचा मेल्या पड़्या है।—दसदोख
रू०भे०—मोकी, मोखि।
मह०—मोख।

मोखौ—सं०पु० [सं० मुख] १ गंदे पानी के निकास के लिये बना हुआ बड़ा नाला, मोरा।
उ०—बासै अति विकराळ महा मुख तारत मोखौ। है कूंडौ इक हाथ हाथ हेकण में होकौ।—ऊ. का.
२ रोशन दान।
उ०—च्यारू मेर आभै नै नावड़ती मोटी—मोटी भींत, जकारै विचालै न खूटी ना मोखौ, जाळी, जे'अर ना झरोखौ।—दसदोख
३ दीवार के अन्दर बना हुआ छेद, विवर, ताख।
रू०भे०—मोकौ।
४ देखो 'मोक्ष' (मह., रू., भे.)
उ०—१ भक्ति ग्यांन वैराग योग यग्य, सील स्वधरम संतोखा। ये सबही सत्व गुण का पायक, जहां सत्व गुण तहां मोखा।
—स्री सुखरांमजी महाराज
उ०—२ जोगाभ्यासी कीजै कीजै संग्रांम साम छळ मरणौ। पांमीजै मित मोखौ, निस्चयं तत निरवांण।—गु रू. ब.
उ०—३ सूंस वरत पचखांण में, लागी जावै कोई दोखौ रे। सुगुरू पासै आलोय नै, सुद्ध हुवा मिलै मोखौ रे।—जयवांणी
उ०—४ सुध मन संथारौ करी, करम खपाय गया मोखौ रे। राय केसी डुबोई आतमा, जांमा लगाया दोखौ रे।—जयवांणी
५ देखो 'मोकौ' (रू. भे.)

मोग—१ देखो 'मोख' (रू. भे.)
उ०—ऊगंते री माछळी, आथमते रो मोग। डंक कहै सुण भड्डळी, नदियां चढ़सी गोग।—अग्यात
२ देखो 'मोगौ' (रू. भे)
उ०—सब भांत कही हम सोगन की, मिजलै सिटळै महि मोगन की। अनभायन जोयन आड करें, पुन आय न कोय न खाड परें।
—ऊ. का.

मोगम—देखो 'मोखम' (रू. भे.)

मोगर—सं०पु० [सं० मुद्गर, प्रा० मोग्गर] १ एक प्रकार का शस्त्र जो गदा के आकार का होता है, मुद्गर। (अ. मा.) (ड. र.)
उ०—१ केहर देखे कुंजरां वन घेर विहंडै, 'मट्टू 'झोकी काळमी, कर मोगर जडुं।—बी. मा.
उ०—२ मोगर हाथे सहिया रे, अन्याई करै चकचूर। सेवक स्री जिनराय ना प्रगट्यौ जांणै अंकूर।—स्रीपाल रास

उ०—३ सर सींगणि छुरि कुंत सांग गेडीहल मोगर। गोळी गोफण संख गुरज मूसळ घण तोमर।—रा. मा. सं.

२ सेना, फौज। (ह. नां. मा., अ. मा.)

उ०—१ हरिणागळ आगळ हरिण हल्लि, वेणी रयज्ज वख्यात वल्लि। सेंलहथ मेघ चड्यिउ सिहाइ, मोगर मुगुल्ल भेळिसी माहि।—रा. ज. सि.

उ०—२ तठा उपरांति राजान सिलामति पातिसाह रा दळ वादळ मोगर थाट ऊपड़िया छै।—रा. सा. सं.

उ०—१ रूकहथौ भाटी रैणायर, मांझी तीन साथ दळ मोगर।
—रा. रू.

३ झुण्ड, समूह।

४ मूंग या मोठ की, छिलका उतारी हुई दाल।

उ०—१ इणी भांति रा सींघळी गजराज वेसासनै आंणी छै, तांह नूं मलीदा वेसवार मोगर दे दे नैं पाटि आंणि सझाया छै।
—रा. सा. सं०

उ०—२ कमोद तुळछी स्यांमजीरा दधि मोगर चीनी एळची पूरव कपूर पोहप प्रसंग हरेवी सोरंभ कुसुमवां किय जगनाथ भोग ऐसी चौरासी भांति जिन्हुं के गंज दरसावे—सू. प्र.

५ उक्त दाल की बनी हुई सब्जी।

६ मुसलमान।

७ देखो 'मोगरी' (रू. भे.)

उ०—सिह आगलि न रहइ गज घटा, अग्रत आगलि न रहइ विस छटा। सींचांणा आगलि न रहइ चिडउ, मोगर आगलि न रहई घडु।—नलदवदंती रास

८ देखो 'मोगरौ' (मह., रू. भे.)

रू०भे०—मोगळ मोगर।

मोगरवेलि-सं०स्त्री०—मोगरे की लता।

उ०—मांनि कहिउं ते मांनिनी तूं मद मोगरवेलि। अलगी हुंती अहि डसइ, क्षीर-व्रक्ष सउं खेलि।—मा. कां. प्र.

मोगरि, मोगरी-सं०स्त्री०—१ मूले की जाति के एक पौधे पर लगने वाली फली, जिसकी सब्जी बनती है।

२ एक कंद विशेष।

उ०—मरडा मोगरि मूंसली, तापसतेली कंद। पाजणक्षीर कपूरीआ, चंद चमारी चंद।—मा. कां. प्र.

३ काष्ठ का बना हथौड़ा जो स्वर्णकारों के काम आता है।

४ स्वर्णकारों के काम आने वाला मोटे काष्ठ का उपकरण, जो करीब १½ फुट का गोल मोटा डंडा होता है तथा जिसका एक शिरा उत्तरोत्तर पतला होता है।

५ उक्त प्रकार का उपकरण जो छत कूटने के काम आता है। इसी प्रकार धोवियों के कपड़े धोने का उपकरण, इत्यादि।

उ०—१ मुरड़ मजेरी मिळै, गांवड़ां निकट घणेरी। ल्याय मोगरी मार छांण छोडा घर ढेरी।—दसदेव

उ०—२ आ कैय वा बीजळी री गळाई सळावा भरती भत्र उठा सूं ताचकी सी मोगरी हाथ में आवतां ईं आवेस पूरा जोर सूं आगळ रै दोनूं कांनी भचीड़ मेल दिया।—फुलवाड़ी

६ छोटे मोगरे का फूल।

७ दुरमुस, दुरमच।

रू०भे०—मोगर,

मोगरेल-सं०पु० [सं० मुद्‌गर+तैल] मोगरे का तेल।

उ०—धूपेल चांपेल मोगरेल करणेल जइतेल एवं विध तेलिइं चोला भीजाइ।—व स.

मोगरौ-सं०पु० [सं० मुद्‌गर] १ वढ़िया जाति के वेले का पौवा।

उ०—१ फबै मोगरौ सेवती जाय फूली। भ्रंगी पंति सेवंती भूली अभूली। लता माधुरी मालती फूल लेखै, दसा आप भूलै तपी रूप देखै।—रा. रू.

उ०—२ चंपौ, केवड़ौ, केतकी, मोगरौ, जुई, कंवळ, गुलाव, रातरांणी, कणेर, गुलमीर, मरवौ, तुळसी, केसर, नागकेसर अर चमेली, सरब इत्याद सुरंगी बनसपति रा अनोखा थाट हा।
—फुलवाड़ी

२ उक्त पौधे का फूल। (अ. मा)

उ०—१ सोन जुह रियावेल चवेल चंबेली के फुलवाद। मोगरै की महक गुलाव फूलूं की सुगध जवाद।—सू. प्र.

उ०—२ फूली हद फुलवाद चली अलवेलियां। वेहद क्यारयां बीचक राजगहेलीयां। चुणै चंपेली चाय, मोगरौ मालती, हरी लता मैं जांण, हेम लत हालती। वणी पना इम वागि क साथि सहेलियां, परिहां रंग भीनी आंनूप रूप रंगरेलीयां।—पनां

३ तलवार की मूठ का सब से ऊपरी गुम्वजदार भाग।

४ आभूषणों पर लगने वाली गुम्वजदार घुंडी, मणिका।

५ देखो 'मुगदर'

६ देखो 'मोगर' (अल्पा., रू. भे.)

मोगळ—१ देखो 'मोगर' (रू. भे.)

२ देखो 'मुगळ' (रू. भे.)

मोगिया-सं०स्त्री०—१ एक अनुसूचित जाति, जो पहले जुरायमपेशा कौमों में गिनी जाती थी। (मेवाड़)

मोगौ-वि० [स्त्री०मोगी] १ अशक्त, कमजोर, निर्वल।

उ०—सुरभी कासारी लारै सुख लेगी, देई बीलोई दोई दुख देगी। 'गोगो'मोगौ हुय'गोरंधां' गिरियौ,'तेजौ'मोळौ पड़ि नेजो लै तिरियौ।
—ऊ. का.

२ मंद बुद्धि।

उ०—पिड रै आंण लागां पछै, पड़ै सीस पेजार री। मेट रे मेट मोगा मरद, वुरी फेट विभचार री।—ऊ. का.

३ मूढ, मूर्ख, अयोग्य।

उ०—लोकां कुळ लोपी जगत न जोपी, खोपी में खावंदा है। जरकावण जोगा मूंसळ मोगा, गोगा गुरु गावंदा है।—ऊ. का.

४ चिड़ चिड़े स्वभाव वाला ।

५ सिंचाई की नहर में से खेतों में लगने वाले पानी के खाले की मोरी । (गंगानगर)

रू०भे०—मोरी, मोगी ।

मोघ-वि० [सं०] १ अमोघ का विपर्याय, व्यर्थ, बेकार, निष्फल ।

उ०—चंद्रहासां रा चोड़ा वाढ़ चलावण रै काज प्रथ्वीराज रा वीरां रै चोज लगाय लड़ियौ जिकण रौ सीस महेस रौ मनोरथ मोघ करि अनेक धारांधरा री धारां मांही लागी लीन थियौ ।

—वं. भा.

२ निरर्थक ।

३ निरुद्देश्य ।

४ त्यागा हुआ, त्यक्त ।

५ सुस्त ।

सं०पु०—१ घेरा, अहाता ।

२ मेंड़

३ देखो 'मोग' (रू. भे.)

मोघौ—देखो 'मोगौ (रू. भे.)

मोड़-सं० पु०—१ मुड़ने की क्रिया या भाव ।

२ मार्ग, रास्ता, सड़क या पगडंडी में आने वाला घुमाव व घुमाव का स्थान ।

३ किसी वस्तु में पड़ने वाला बल ।

४ गर्व, अभिमान ।

५ बनावट ।

६ किरण । (सूर्य)

रू० भे०—मड़ड़, मरड़, मावोड़, मोड़ि ।

७ देखो मोड़' (रू. भे.)

उ०—१ उगामण मोड़ दहूं बळ जोत, हूंगां गठजोड़ दहूं बळ होत । दहूं बळ वीर विशीरण दंग, हलै परलोक दहूं बळ हुंस ।

—मे. म.

उ०—२ पण सोधौ 'जीवन' 'पते' मरना वाधै मोड़ । गिर साजै सूंपा नहीं नरपा नूं चीतौड़ ।—बां. दा.

उ०—३ कागौ कुमती दिवदू मन जिण आणि मरोड़ । घर संगम घर मंडियौ, सावै धरियौ मोड़ ।—वं. भा.

उ०—४ बीन-बींनणी रै माथै मोतीं रौ मोड़ बंधयौ । बाळक-भारती गठजोड़ौ जोड़यौ ।—दसदोख

मोड़णहार-वि०—पराजित करने वाला ।

उ०—ऐ पतसाहां मोड़णहार केई सनूरंग विरोळी । सौ वांसाम सीस दै कई सेना आरबोळी ।—शारदुलसी बारहठ

मोड़ाळ-वि०—१ मोड़ने वाला, घुमाने वाला ।

२ लौटाने वाला, भगाने वाला ।

३ विदाने वाला ।

उ०—महरांण मेछांण वंका मद मोड़ण छोड़ण देवां छंग ।

—मा. वचनिका

मोड़णौ, मोड़बौ-क्रि० स० [सं० मुरणम्] १ किसी सीधी वस्तु में वल देना, सीधे खड़े को झुकाना, दूसरी ओर घुमाना ।

२ धारदार वस्तु की धार टेढ़ी करना ।

३ ऐंठन देना, मरोड़ना ।

४ चलते हुए को किसी दूसरी ओर जाने के लिये प्रेरित करना, दिशा परिवर्तन करना ।

उ०—१ के इत्ता में वांरै कांना रिमझोळां रै मीठा रणकारा री भणक पड़ी । कठै ई कोई भरम तौ नीं व्हैगौ । पण रणकारा तर तर नैड़ा सुणीजण लागा—ठम्मक-ठम्मक । दीवांणजी उठीनै ई घोड़ौ मोड़यौ ।—फुलवाड़ी

उ०—२ ऐकरियौ ओ मारूजी, करला पाछाजी मोड़ । राजींदा ढोला, ओळूं घणी आवै म्हारै वीर री ।—लो. गी.

५ लौटकर आने या जाने के लिये कहना, पलटाना ।

६ वापस करना, लौटाना ।

उ०—१ पूत घणौं मैं पालियौ, जूंझण तूं मति जाइ । हूं मोड़ै जाऊं हमैं, सुत दोंही समुझाइ ।—वं. भा.

उ०—२ साह कहियौ म्हारा अनांमय रौ उद्देस करि आवैं तिका नूं सांम्हैं जाइ हूंही समुझाय पाछा मोड़ि आऊं ।—वं भा.

उ०—३ घडनौ दियौ हो जकां रौ पांछौ घेरयौ नहीं मडणौ लियौ जकांरौ घोटौ मोड़यौ नहीं । ईं हाय लियौ, वीं हाथ डकारयौ ।

—दसदोख

७ पराङ्मुख करना, पृष्ठ फिरवाना, विमुख करना ।

८ शरीरांग घुमाना ।

उ०—१ दे पटपोरा दोय नांक में दावै नीकां । मूंढौ बांधौ मोड़ छड़ाछड़ आवै छींकां ।—ऊ. का.

उ०—२ धन लोड़ै तोड़ै धरम, विध विध तोड़ै वात । जड़ सनेह तोड़ै जड़ण, गिनका, मोड़ै गात ।—बां. दा.

९ लौट जाने के लिये मजबूर करना, पीछे हटाना, खिसकाना, भगाना ।

उ०—किसनावत रण कुंभ करारी, 'रांम' सुजाव 'सुजांण' अकारी । मथकर तणौ मेघ गळ मोड़ै जुड़सा भोज कुंवर पित जोड़ै ।

—रा. रू.

१० नष्ट करना, मिटाना, तोड़ना ।

उ०—१ अजवसिंघ ऊदाहरौ, जोड़ै सूरजमाल । पड़ियौ पोढै मीरजां, आ मोड़ै गजढाल ।—रा रू.

उ०—२ केहरि छोटौ बहुत गुण, मोड़ै गयंदां मांण । मोहड़ बड़ाई की करै, सरो सगत परमांण ।—हा. भा

उ०—३ रण मांगाळ रोड़ि, जोड़ि अछरा गठजोड़ा मेल समोढा मार, मार मुगळां दळ मोड़ा ।—मे. म.

११ छिन्न, भिन्न करना, अस्त-व्यस्त करना ।
१२ लकीर की तरह सीधा न रखना, टेढा करना, टेढ़ी मेढ़ी स्थिति में करना ।
१३ विमुख करना, विरुद्ध करना ।
१४ गिराना, पटकाना ।
१५ कागज, वस्त्रादि में सलवट डालना, समेटना ।
उ०—ग्रंथां में जठै कठै ही रूढी-रिवाजां री वात आवै, पांनौ मोड़ देवै अर आपरै लेखां में हवालौ देवै ।—दसदोख
१६ काटना ।
मोड़णहार, हारौ (हारी), मोड़णियौ—वि० ।
मोड़िओड़ौ, मोड़ियोड़ौ, मोड़चोड़ौ—भू० का० कृ० ।
मोड़ीजणौ, मोड़ीजवौ—कर्म वा० ।
मुड़णौ, मुड़वौ—अक० रू० ।
मोडणौ, मोडवौ, मोरणौ, मोरवौ, मौड़णौ, मौड़वौ—रू० भे० ।

मोड़तोड़-सं०पु०—घुमाव-फिराव, चक्कर, ।

मोड़वंध, मोड़वंधौ—देखो 'मौड़वंध' (रू. भे.)

मोड़ाणौ, मोड़ावौ-क्रि०स० ["मोड़णौ" क्रिया का प्रे० रू०] १ किसी सीधी वस्तु में वल दिराना, सीधे खड़े को झुकवाना, दूसरी ओर घुमवाना ।
२ धारदार वस्तु की धार टेढी कराना ।
३ ऐंठन दिराना, मरोड़ाना ।
४ चलते-चलते को किसी दूसरी ओर मुड़ने के लिये प्रेरित करना/कराना, दिशा परिवर्तन करना/कराना ।
५ लौटकर आने-जाने के लिये कहलाना, पलटवाना ।
६ वापस करना, लौटवाना ।
७ पराङ्मुख कराना, पृष्ठ फिरवाना, विमुख कराना ।
८ शरीरांग घुमवाना ।
९ लौट-जाने के लिये मजवूर कराना, पीछे हटवाना, खिसकवाना, भगवाना ।
१० नष्ट कराना, मिटवाना, तुड़ाना ।
११ छिन्न-भिन्न या अस्त-व्यस्त कराना ।
१२ लकीर की तरह सीधा न रखवाना, टेढा कराना, टेढ़ी-मेढ़ी स्थिति में कराना ।
१३ विमुख कराना, विरुद्ध कराना ।
१४ गिरवाना, पटकवाना ।
१५ कागज, वस्त्रादि में सलवट डलवाना, सिमटवाना ।
१६ कटवाना ।
मोड़ाणहार, हारौ (हारी), मोड़ाणियौ—वि० ।
मोड़ायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
मोड़ाईजणौ, मोड़ाईजवौ—कर्म वा० ।

मोड़ायोड़ौ-भू० का० कृ०—१ वल दिराया हुआ, सीधे खड़े को झुकवाया हुआ, दूसरी ओर घुमवाया हुआ. २ धार टेढ़ी कराया हुआ. ३ ऐंठन दिराया हुआ. ४ दूसरी ओर मुड़ने के लिये प्रेरित कराया हुआ, दिशा परिवर्तन कराया हुआ. ५ लौटकर आने-जाने के लिये कहलवाया हुआ, पलटवाया हुआ. ६ वापस कराया हुआ, लौटाया हुआ. ७ पराङ्मुख कराया हुआ, पृष्ठ फिरवाया हुआ, विमुख कराया हुआ. ८ शरीरांग घुमवाया हुआ. ९ लौट-जाने के लिये मजवूर कराया हुआ, पीछे हटवाया हुआ, खिसकवाया हुआ, भगवाया हुआ, १० नष्ट कराया हुआ, मिटवाया हुआ, तुड़वाया हुआ. ११ छिन्न-भिन्न या अस्त-व्यस्त कराया हुआ. १२ लकीर की तरह सीधा न रखवाया हुआ, टेढ़ा कराया हुआ, टेढी-मेढी स्थिति में कराया हुआ. १३ विमुख कराया हुआ, विरुद्ध कराया हुआ. १४ गिरवाया हुआ, पटकवाया हुआ. १५ सलवट डलवाया हुआ, सिमटाया हुआ. १६ कटाया हुआ ।
(स्त्री० मोड़ायोड़ी)

मोड़ि—देखो 'मौड़' (रू. भे.)

मोड़ियोड़ौ-भू० का० कृ०—१ वल दिया हुआ, झुकाया हुआ, दूसरी ओर घुमाया हुआ. २ धार टेढी किया हुआ. ३ ऐंठन दिया हुआ, मरोड़ा हुआ. ४ दूसरी ओर जाने के लिये प्रेरित किया हुआ, दिशा परिवर्तन किया हुआ. ५ लौटकर आने-जाने के लिये कहा हुआ, पलटाया हुआ. ६ वापस किया हुआ, लौटाया हुआ. ७ पराङ्मुख किया हुआ, पृष्ठ फिरवाया हुआ, विमुख किया हुआ. ८ शरीरांग घुमाया हुआ. ९ लौट जाने के लिये मजवूर किया हुआ, पीछे हटाया हुआ, खिसकाया हुआ, भगाया हुआ. १० नष्ट किया हुआ, मिटाया हुआ, तोड़ा हुआ. ११ छिन्न-भिन्न किया हुआ, अस्त-व्यस्त किया हुआ. १२ सीधा न रक्खा हुआ, टेढा किया हुआ, टेढ़ी-मेढ़ी स्थिति में किया हुआ. १३ विमुख किया हुआ, विरुद्ध किया हुआ. १४ गिराया हुआ, पटकाया हुआ. १५ सलवट डाला हुआ, समेटा हुआ. १६ काटा हुआ ।
(स्त्री० मोड़ियोड़ी)

मोड़ो-सं०पु०—खलिहान में अनाज की वालों को कुचलने के लिये गोल गोल घूमने वाले वैलों में से अन्दर की ओर चलने वाला वैल ।

मोड़ेरो-क्रि० वि०—देरसे, विलंव से ।
उ०—ओर रांणी पाछी गढ़ दाखिल हुवी जणां एक दिन नापौ दरवार सूं मोड़ेरौ आयौ ।—नापै सांखलै री वारता

मोड़ो-सं०पु०—१ दरवाजा, द्वार ।
उ०—के इत्ता में मोड़ा रै वारै घोड़ा री हींस सुणीजी । फमसल वात करतां ई आयग्यौ । सेठांणी आडो खोल वोली-वीरा, थारी ऊमर तौ लांठी ।—फुलवाड़ी
(स्त्री० मोड़ी)
२ विलंव, देरी ।
उ०—१ वेटी काठी उतारतां उतारतां ई वोल्यौ-आज तौ सांम्ही वेगौ आयौ, यूं मोड़ौ वतावै ।—फुलवाड़ी

उ०—२ राजाजी पाछा वेगा श्रावण सारू दीवांणजी नैं श्रणूंती ताकीद करी। दीवांणजी थोडी ताळ उपरांत पाछा रा पछा श्राया, पण राजाजी नैं खासो मोड़ौ लखायौ।—फुलवाड़ी

वि०—१ विलंब से, देर से।

उ०—१ काळा में कोडाय चाहि खायौ कर चाळा मोड़ा उघड़्या मिंत चिरत थारा चिरताळा।—ऊ. का.

उ०—२ भांत-भांत रा छापा काढै कै विरखा सात दिनां में होसी, विरखा मोड़ी होसी, विरखा जरूर कर होसी।—वरसगांठ

उ०—३ श्रग कहिश्रो-मत श्राव। पण सबळाई साथ श्राई। राजा रै रसोड़े गया। मोड़ा गया तकण सूं सुश्रांरा श्रोळूंभौ दिश्रो।
—कल्यांणसिंघ नगराजोत वाढेल री वात

२ बहुत प्रतीक्षा करने के बाद।

उ०—१ माठौ सूरज होळै होळै घणौ चढै। नीठ ढुळकतौ ढुळकतौ मथारै चढ्यौ। मथारै श्राय कठै ई रुप तौ नीं गियौ। सिरकै ई नीं। कित्ती मोड़ी सिझ्या व्ही।—फुलवाड़ी

रू०भे०—मउड़ौ, मवड़ौ, मोड़ौ, मौड़उ, मौड़ौ।

मोचंग—देखो 'मुखचंग' (रू. भे.)

उ०—ग्यांन को ढोल बन्यौ श्रति भारी, मगन होय गुण गाऊं ए माय। तन करूं ताल मन करूं मोचंग, सोती सुरत जगाऊं ए माय।
—मीरां

मोच—सं०स्त्री० [सं० मुच्] १ झटका लगने से शरीर के संधी-स्थल की नस का स्थान छोड़ देना।

२ धातु के बर्तन श्रादि में, दबाव पड़ने या चोट लगने से, पड़ने वाला खड्डा।

३ हटने की क्रिया या भाव।

उ०—तूं माता निस्चिंत रह, मन मंह मत कर सोच। राव निर्चितौ ना करूं, कदै न खाऊं मोच।—डाढाळा सूर री वात

४ नष्ट।

उ०—१ सोच महंमदसाह नूं, मोच थयौ मन मद्द। प्रात ससोकित ज्यूं दिपह, राति श्रनंद रवद्द।

उ०—२ हुवौ सोच श्रासुरां हुवौ मद मोच दिलेसर। हुश्रा देस भैचक्क हुवा श्रवनेस भयंकर।—रा. रू.

५ शंका, संदेह।

६ निवारण, त्याग।

७ खड़ी लकड़ी को चीरने के लिये, करौत के चारों श्रोर लगने वाली लकड़ी की चौखट।

[सं० मोचं] ८ केले का फल।

[सं० मोचः] ९ केले का वृक्ष।

१० शोभाञ्जन वृक्ष।

११ देखो 'मौछ' (रू. भे.)

रू०भे०—माच, मोंच, मौच।

मोचक—सं०पु० [सं०] १ साधु, भक्त।

२ मोक्ष, मुक्ति।

३ केले का पेड़।

वि०—छुड़ाने वाला, मुक्त करने वाला।

मोचड़ि, मोचड़ी—सं०स्त्री०—१ पैर की जूती।

उ०—१ जरकस जरी रेसमी जांमो, रतनां साज सजावै। मणियां जड़ी मोचड़ी चरणां, जोयां ही बण श्रावै रे रांमैयो।—गी. रां.

उ०—२ मेह बिना धरती तरसै, मेहड़ौ हुड़ण दै। मोचड़ियां वणावूं मुखमल री मेहड़ौ हुवणदै।—लो. गी.

२ देखो 'मौछ' (श्रल्पा., रू. भे.)

रू०भे०—मोजड़ी, मौजड़ी।

मोचड़ौ—सं०पु०—१ जूता, बूंट। (श्र. मा.)

उ०—घुड़ला सखियां दीसै य न ठांगा, ना रे पगांणै भंवरजी रा मोचड़ा।—लो. गी.

२ घोड़े की श्रांख का एक रोग।

रू०भे०—मौजड़ीयौ

मोचण—सं०पु० [सं० मोचन] १ छोड़ने की क्रिया या भाव।

२ रिहाई, छुटकारा, मुक्ति।

३ दूर करने, हटाने या मिटाने की क्रिया।

४ उऋण होने की क्रिया या भाव।

५ बहने या झरने की क्रिया।

उ०—मौड़ै मुख मौड़ै हीतळ हतवाळी, पीतळ पैरण नैं सीतल सत वाळी। लुब्बा ललचावै लालच घन लागै। लोचण जळ मोचण सोचण खिगलागै।—ऊ. का.

६ खींचा-तानी, छीना झपटी।

सं०स्त्री०—७ मोची जाति की स्त्री।

उ०—हाथ ज लेस्यां मोचड़ी ए श्रंमा मोरी। मोचण होय होय जास्यां।—लो गी.

रू०भे०—मोचन।

मोचणश्रघ—देखो 'मोचन श्रघ' (रू. भे)

मोचणौ, मोचबौ—क्रि०स० [सं० मोचनम्] १ रिहाकरना, मुक्तकरना, छोड़ना।

२ त्यागना छोड़ना।

उ०—१ साह सुणै विध सोचियौ, गह मोचियौ सगाह। मन ठहराई मेळ री, साह 'श्रजीत' सलाह।—रा. रू.

३ मिटाना, समाप्त करना।

उ०—साह सुणै श्रत सोचियौ, मन मोचियौ गरब्भ। ईख प्रताप 'श्रजीत' रौ, रीत विचारी सब्ब।—रा. रू.

४ बहाना, प्रवाहित करना।

उ०—सुणि पदमणी सोचै रे नयणै जल मोचैरे, परधाने पौचे मन में खलभली रे।—प. च. चौ.

मोचणहार, हारौ (हारी), मोचणियौ—वि०।

मोचिश्रोड़ौ, मोचियोड़ौ, मोच्योड़ौ—भू० का० कृ०।

मोचीजणो, मोचीजवो—कर्म वा० ।

मोचणो, मोचवो,—रू० भे० ।

मोचन—देखो 'मोचण' (रू. भे.)

मोचनअघ-सं०पु० [सं० अघ+मोचन] पापों का नाश करने वाला, ईश्वर । (नां. मा.)

रू०भे०—मोचणअत्र ।

मोचरस-सं०पु० [सं०] १ सेमल वृक्ष का गोंद ।

२ सेवगी का फूल । (अमृत)

३ मोर पांख, मयूर पिच ।

४ घोड़े के पिछले पैर के घुटनों से ऊपर होने वाला एक रोग, जो अन्दर व बाहर बोर जैसा होता है । (शा. हो.)

मोची-सं०स्त्री० [स्त्री० मोचण] १ चमड़े के जूते बनाने का कार्य करने वाली एक जाति ।

उ०—१ मोची ढेढ चमार जान में डोली जांचै । चढै चिलमियां चाह नाच नींचां घर नाचै ।—ऊ. का.

२ उक्त जाति का व्यक्ति ।

उ०—हालतां हालतां मारग में मोची री हाट आई ।—फुलवाड़ी

रू०भे०—मोंची ।

मोचो-सं० पु०—१ झुकाव ।

उ०-साथणियां घणाई कळ भळ करिया पण कंवर तो करड़ावण रै पांण मोचो ई नीं खायो ।—फुलवाड़ी

२ जूता ।

मोच्छ—देखो 'मोक्ष' (रू. भे.)

उ०—जुग जुग भीर हरां भगतां री, दीस्यां मोच्छ नेवाज । मीरां सरण गहां चरणां री, लाज रखां महाराज ।—मीरां

मोच्छव—देखो 'महोत्सव' (रू. भे.)

मोछण—देखो 'मूछण' (रू. भे.)

उ०—१ अंतर रै फोवां री लपट,सैंट रै छिड़कां री सौरंभ, लूंग-एळची रा मोछण, बंध्या पांनांरा बीड़ा, सिगरेटां रा छल्योड़ा डिब्बा, काजू-किसमिस्यां रा गेड़, गांजै रा गोट अर थेड़ लाग रैया है ।—दसदोख

उ०—२ मोछण नूं सूला अव्वल तरह रा डाबा में सूं काढ काढ़ देवे छै ।—कुंवरसी सांखला री वारता

मोछव—देखो 'महोत्सव' (रू. भे.)

उ०—चउसठि मघवा मिली कीउ, निरव्वांण मोछव सार । आसाढ सुदि चौदसि दिने, पछइ यात्र करी निज ठारि ।—कल्यांण

मोज—१ देखो 'मौज' (रू. भे.)

उ०—१ अहतै सत डोर 'जगा' छत्रियां गुर,वोह मोजां विध अतुळ बळ । ऊडी जग ऊपर आहाडा, कीरत गुडी तणी कळ ।

—महारांणा जगतसिंहजी रो गीत

उ०—२ दंडकाळ करंगा तरेस सी गणेसदंत, सूर प्रळैरसम्मा मणेस सुधासार । चंडी सूळ पारजात मराळां पंकतां चंगी,किरमाळां मोज पंगी कोसल्या कंवार ।—र. रू.

उ०—३ डूंम न जांणै देवजस,सूम न जांणै मोज । मुगळ न जांणै गो दया, चुगल न जांणै चोज ।—वां. दा.

उ०—४ बीरत कीरत वंस वित, मत मोजां गुण मांन । संप सुलच्छण परम सुख, व्हैयां अघ सूं हांण ।—वां. दा.

२ देखो 'मोजो' (मह., रू. भे.)

उ०—पहरै नरांमा पंचठांमां, अंग जांमा ओप ए । सोहै सकाजा सीस ताजां, सार मोजां जोप ए ।—गु. रू. बं.

मोजड़ी—देखो 'मोचडी' (रू. भे.)

उ०—१ तरे मोचीयां नै बुलाय वां सारी मोजड़ीयां कराय खीन-खाप में मंडाय सीवाय नै देवलीयाळी रा डेरां मेली । केयो-बीन-णीयां तो है नहीं नै मोजडीयां हाजर है ।—नैणसी

उ०—२ पाय लाखीणी धरमी रे मोजड़ी, हलते राता छे पाव ओ ।—लो. गी.

२ देखो 'मोजो' (अल्पा , रू. भे.)

उ०—जरद भीड ज्यारका, सको सारोटकरारी, पगां भीड मोजड़ी झिलम मसत्तक अधारी —अरजुण जी बारहट

मोजड़ो—देखो 'मोजो' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—मेघवना फाडा बांधिवा, पाए मोजड़ा पोगर नवा । खांडां पटा तणा गजवेलि, अलवि आगिला हीडइ गोलि ।—कां. दे. प्र.

मोजांण—देखो 'मौज' (रू. भे.)

उ०—उर करवत वहि आपरै, साठ भडां सप्रमांण । बीकम सिव मारग वहे, ले दीना मोजांण ।—नैणसी

मोजी—देखो 'मौजी' (रू. भे.)

उ०—हुर्र रै भर्र रै कर नेता हलकारा, लांबा सींगाळा देता लल-कारा । मुळकै बेली चख पोळछ लख मोजी, चेली दीठां ज्यूं साधू चित चोजी ।—ऊ. का.

मोजूद—देखो 'मौजूद' (रू. भे.)

उ०—तिण साळां आगळी ऊखेलाय चौसाळै री तरै सुं प्रतापसिंघ जी सा कराई १९३७ में नै मांहें कुवो १ करायो तिको मोजूद है, पांणी भळभळो है ।—मारवाड़ री ख्यात

मोजूदा—देखो 'मौजूदा' (रू. भे.)

मोजो-सं०पु० [फा०मोजः] १ पैर में पहनने का, एक बुना हुआ वस्त्र, जुराब, पायताबा ।

२ जूता ।

उ०—ताहरां मांडणसी मोजा खोल नै तळाव मांहे वडीयो, धोवो सो पांणी नांखें छै ।—मांडणसी कूपावतरी वात

३ युद्ध समय पांवों में पहना जाने वाला कवच ।

उ०—१ बळवंत जडै हायांळां वेय । पैहरिया सार मोजा पगेय ।

—गु रू. बं.

उ०-२ तांहरा केळावै ठाकुर नूं मूळवांणी भीतर बोलायो,सू बीरै सिलह दगलो पैहरियां थकां भीतर आयो छै । सरमूथण पगां मोजा

हथियार सरब बांधा छै। माथै घूघी टोप छै।

—सातल जोधावत री वात

४ कुश्ती का एक पेच, दांव।

५ देखो 'मोजौ' (रू. भे.)

उ०—सु गांव भुणीयांणो जाळीवाड़ै वांसै मोजा चरा घणा ही हरा खाई छै।—नैणसी

मोट—सं०स्त्री०—१ वड़प्पन, वड़ाई।

उ०—१ बोलां में ग्रोछा विदर, मोलां में नह मोट। पोळां में 'परताप' रै, गोलां वाळी गोट।—ऊ. का.

उ०—२ नांन्हो कह्यां न नांनडो, मोटो कह्यां न मोट। हरिया हरि जांणै जिसो, वाकी गहीयै ग्रोट।

—स्त्री हरिरांमदासजी महाराज

२ गर्व, घमड, ग्रभिमान।

उ०—रैत रिछपाळ ग्रोर दीनन दयाल देख्यो। मोट महिपाळ-पन मन में मान्यौ नहीं।—ऊ. का.

३ राठोड़ों की एक उपशाखा। (वां. दा. ख्यात)

४ कूए से पानी निकालने का चड़स।

रू०भे०—मोटड़, मोठ।

५ देखो 'मोटो' (मह., रू. भे.)

उ०—तीन लोक ता वीच मैं, ग्रकल काळ की चोट। जनहरीया जोय मरिसी, छोटा गिनै न मोट।—स्त्री हरिरांमदासजी महाराज

मोटउ—देखो 'मोटो' (रू. भे.)

उ०—१ ग्रकळ सकळ ग्रवगति ग्रपरंपर, रांमिसर मोटउ राजांन। किसनउ कहइ क्रपा हिव कीजइ, वड दातार वधारण वांन।

—महादेवपारवती री वेलि

उ०—२ देस जिणइ ए देहरउ रे लाल, मोटउ देस मेंवाड़ मन मोहयउ रे।—स. कु.

मोटकौ—देखो 'मोटो' (ग्रल्पा., रू. भे.)

उ०—१ छोडाय दियो मत खोटको ए, समभायो राजा मोटको ए।—जयवांणी

उ०—२ मांगळियांणी मोटको, पायो जोयां पी'र, दुभळ 'मदू' 'देपाळदे' सातूं वीर सधीर।—वी. मा.

मोटड़ौ—१ देखो 'मोठडौ' (रू. भे.)

२ देखो 'मोटो' (ग्रल्पा., रू. भे.)

मोटनक—सं०पु० [सं०] एक वर्ण वृत्त, जिसके प्रत्येक चरण में एक तगण, दो जगण, ग्रंत में एक लघु एवं एक गुरु से ११ वर्ण होते हैं।

मोटम—सं०स्त्री०—१ वड़ाई, वड़प्पन।

उ०—मोटम सांम धरम्म री, करै होड सह कोय। 'पातल' ज्यूं खग पछटतां, हेल दुहेली होय।—किसोरदांन बारहट

२ महत्व, विशेषता।

३ गर्व, ग्रभिमान।

रू०भे०—मोटिम, मोटिम्म, मौटिम,

४ देखो 'मोटो' (रू. भे.)

मोटमति' मोटमती—वि०—वुद्धिमान, ग्रकलमंद।

उ०—'मेघ' हरो तेग खरो, राज गति मोटमती। पाटपती देसपती, राउ तणो लखपती।—ल. पि.

मोटमन—वि०—१ दाता, दानी।

उ०—क्रीत खाटण नमी 'कला' सुत कळोवर, सवाया प्रवाड़ा दीह साजा। 'माल' सुत ताक ग्रायो ज्यूंई मोटमन, रेण मुरधर तणो कीध राजा—द. दा.

२ उदार चित्त, सहृदय।

उ०—रिमकोट हण जन ग्रोट रक्खण, मोटमन महाराज। तो महाराज रे महराज, माहव मोटमन महाराज।—र. ज. प्र.

३ महत्वाकांक्षी।

रू०भे०—मोटमन।

मोटमरजाद,मोटम्रजाद—सं०स्त्री०—१ स्वाभिमान।

२ गर्व, ग्रभिमान।

३ मर्यादा, प्रतिष्ठा।

मोटयार—देखो 'मोटियार' (रू. भे.)

मोटर—सं०स्त्री० [ग्रं०] १ पेट्रोल, डीजल या कोयले से चलने वाली एक ग्राधुनिक यान्त्रिक गाड़ी।

उ०—कोयलड़ी रो गीत सरु हुयो। डागै रै दरूजै मोटर रो होरन वाज्यो।—दसदोख

२ वैद्युतिक यन्त्र जिससे मशीनें चलाई जाती हैं।

ग्रल्पा०, मोटरड़ी,

मोटरड़ी—देखो 'मोटर' (ग्रल्पा., रू. भे.)

उ०—समदड़ी मोटो गांव हो ग्रर उण दिनां रेल मोटरड़ियां ही कोयनी। इण वास्तै भाड़ा भत्ता री कमी नहीं ही।—रातवासो

मोटसी—सं०पु०—पंवार वंश की एक शाखा व इस शाखा का व्यक्ति। (वां. दा. ख्यात)

मोटाई—सं०पु०—१ मोटा होने की ग्रवस्था या भाव।

२ किसी वस्तु की लंबाई-चौड़ाई, नाप।

३ स्थूलता।

४ वड़प्पन, वड़ाई।

५ उदारता।

मोटापण, मोटापणौ—देखो 'मोटाई'

उ०—दळथंभ हरो थयो दूसासण, गहण ग्ररिंदा सारगह। मोटापण वाळो महाराजा, मोटो साको कियो मह।

—केसरीसिंघ सेखावत रो गीत

मोटापौ—देखो 'मोटाई'

मोटायत—सं०पु० [सं० मोट्टायिते] साहित्य में एक हाव जिसमें नायिका ग्रनुपस्थित प्रेमी के प्रति ग्रपने ग्रान्तरिक प्रेम को इच्छा न रहते हुए भी प्रकट कर देती है।

मोटिम—देखो 'मोटम' (रू. भे.)

उ०—१ हा सुंदर सुख सागरु, हा ! मोटिम भंडारउ रे । हा रीहड़ कुल सेहरउ, हा ! गिरुवा गण धारउ रे ।—कवि समय प्रमोद

उ०—२ माघ-प्रयोगि मांनीइ, भड भवदुख भाजंति । मोटिम बारह मास महि, महा-पदवी छाजंति ।—मां. कां. प्र.

मोटिममल, मोटिममल्ल—वि०—१ गर्व एवं गौरव वाला, महान ।

उ०—इह उदयउ अविनपाल, अतुलबळ विसाल, मोटिममल मूंछाल महिम धरौ । कवि कहइ सुजस, सद मलिक स्री अहिमद, दलइ दूजणमद सुहडवरौ ।—व. स.

२ वीर, बहादुर, योद्धा ।

मोटिम्म—देखो 'मोटम' (रू. भे.)

उ०—१ मोटिम्म मेरु मलिकह मुकुट स्री अहिमद उद्दम दमइ । अरिमुंड दडा उछालतउ, असि गेडी रांमति रमइ ।—व. स.

उ०—२ अगां मांत मोटिम्म, सुपन सुचित सुत सुंदर । आठ वरस अधिकार कला अभ्यास कुलोवर ।—कविवरम कीरति

मोटियार—सं०पु०—१ पुरुष, आदमी ।

उ०—कठै ही लुगायां, कठै ही मोटियार, कठै ही वांणिया, कठै ही गिवार, मेळौ सो लाग रैयौ है । मंगतां री पांत अर कमीणी जात ल्यावौ, ल्यावौ कर रैयी है ।—दसदोख

२ युवा, जवान, तरुण व्यक्ति ।

उ०—१ दोय जणा अेक कईक ढळती औस्था रौ अर एक मोटियार जिकै रै हाथ में लालटेण, वारणौ खोल' र हड़बडांवता खाथाखाता टुर पड़्या ।—वरसगांठ

उ०—२ तूठे गोगोजी बूढा ठाढा डोकरां, तूठे भल मोटियारां ओ । गाय गवाड़ सीखै सांभळै, जिण री गोगोजी पूरै छै आस ओ ।—लो गी.

उ०—३ तिण सूं आ कहे म्हारौ पती म्हारा बूढा पणा पहला मारीजसी इसो सूरमापणौ दीसै छै और हूं लारै सत कर सुरग में पाछा तरुण मोटियार होय रहसां ।—वी. स. टी.

उ०—४ सु आसथांनजी रौ डेरौ एके बांभण रै घरै । तिणरी वेटी मोटियार । तैनूं आसथांनजी देख अर कहण लागा—जु आ विधवा छै ? तद ब्राह्मण बोलियौ 'राज' आ कूंवारी छै ।—नैणसी

३ पति, खाविंद ।

उ०—बखत री वात, मां मरै बींरी मौसी ही मरै । मोटियार मरग्यौ अर बियैरै लारै लारै वेटौ भी आगीनै गैयौ । बापड़ी सूधी भोळी विधवा दोरो सोरौ आपरौ गरीब गुजरांण करती गयी ।—दसदोख

४ पुत्र, लडका ।

५ युवकों के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला संबोधन सूचक शब्द ।

उ०—१ फेर इण कुंवर नै हीज पूछौ, आपै ठीक पड़सी । ताहरां कोटवाळ पूछियौ—क्योंकर मोटियार, कासूं कहै छै ?

उ०—२ तितरै साह कह्यौ—रै कपूत, कासूं कहै छै, कैरौ वेटो छै ? ताहरां फेर कह्यौ—थांहरौ वेटो छूं । ताहरां कोटवाळ कह्यौ रे मोटियार, यूं विचळियौ क्यूं बोलै छै ।—पलक दरियाव री बात

वि०—१ वीर, बहादुर ।

उ०—१ जैसिंहजी बालक मोटियार फौज आछी सो जाफरखां उज्जीण सूं कूंच करनै नरबदा कन्है जाय पहुंचो ।—गौड़ गोपाळदास री वारता

उ०—२ केसवदास आदमी बडौ संचियार थौ जलाल थौ मरद मोटियार थौ ।—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

२ युवक, युवा, जवान ।

उ०—१ इसा में आप नुं खरळ री बोल याद आयौ, जो म्हां कनां सांवण री तीजां रौ कवल लीयौ थौ । तद कुंवर मोटियारां नूं पूछियो, जो तीज कद छै ।—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ एक रजपूत रावतजी की हजूर रहै । जको आदमी तौ पाधरौ सो । पण मोटियार पगछंटो सो ।—प्रतापसिंघ म्होंकमसिंघ री बात

रू०भे०—मोटयार, मोटीयार, मोट्यार, मोठियार ।

मोटियारपण, मोटियारपणौ—सं०पु०—१ पुरूसत्व, मर्दानगी ।

२ युवावस्था, जवानी, तरुणाई ।

३ इन्सानियत, आदमियत, मनुष्यता ।

रू०भे०—मोट्यारपणौ ।

मोटीनींद—सं०स्त्री०—महानिद्रा, मृत्यु, मौत ।

उ०—जग दातार जनारदन, गिरधारी गुण गेह । व्रजपत रोटी बांटणां, मोटीनींद म देह ।—बां. दा.

मोटीयार—देखो 'मोटियार' (रू. भे.)

उ०—१ म्हांको तौ परणीजणौ भव माथै पड़ीयो नै मोटीयारां नै घणा ही नाळेर आसी, मोटी-मोटी ठोड़ां परणसी ।—राव रिणमल री बात

उ०—२ रावळजी तौ पूखता छै नै निवौ मोटीयार छै ।—वीरमदे सोनगरा री वात

मोटीयारगाळौ—सं०पु०—युवावस्था, जवानी ।

मोटेरू, मोटेरौ—वि० (स्त्री० मोटेरी) १ वृद्ध ।

२ जवान, बड़ा ।

उ०—बांभण-उपरि बापड़ी ! एवड़ी भली न प्रीति । मोटेरू को मेलविसु, सुझ मनि मांनिउ मीत ।—मा. कां. प्र.

मोटोडौ—वि०—बड़े वाला ।

(स्त्री० मोटोड़ी)

उ०—१ परस्या परस्या ए मा, मोटोड़ा थाळ । परस्या नणदां रा वाटका ।—लो. गी.

उ०—२ ए तौ जीमैं मांरा कोडिला साळाजी रा मोटोड़ा थाळ में ।—लो. गी.

उ०—३ राजी हुयां कांम में रगडै, नाराजियां करै नुकसांन । छोटकियां मोटोड़ा छोड़ौ, मिळौ सरीखा चाहौ मांण ।—चंडी दांनसांदू

उ०—४ कठै बजै वडबोर, कठै झाड़ी मोटोड़ी । कठै बोरटी नांव, वणी देवारी छोड़ी ।—दसदेव (स्त्री० मोटी)

मोटौ–वि० [सं० महत्, प्रा० मुह] १ बड़ा ।

उ०—१ घर गंगाजळ धार, आंणी तपकर ऊजळौ । औ मोटौ उपगार, भागीरथ कीधौ भुयण ।—वां. दा.

उ०—२ मीरां एक वहै मन मांणै, थिर रहियौ चोखां रै थांणै । सौ असवार लियां नित साथै, मोटां त्रास न राखै माथै ।—रा. रू.

उ०—३ घर चाढि मांझी मिळै थाट मोटै धड़ै, पिंडवां सतावी तुरां पाखर पड़ै ।—जालमसिंघ मेड़तिया रौ गीत

२ विशाल ।

उ०—१ एक मोटा वड़ला माथै दोनां रौ वासौ हौ । वड़ला री साखां नाडी रा पांणी माथै लूमती ।—फुलवाड़ी

उ०—२ थोड़ो मोटौ मन राख ! यूं आपो कांई खोवै । म्हैं तौ हाथी सूं ई सवायौ गाढ जांणती ।—फुलवाड़ी

उ०—३ म्हारी जांण में ऐ मोटा मोटा सास्तर थारै जैड़ी काली मासियां ई रचिया दीसै ।—फुलवाड़ी

उ०—४ चेजो करणियां चेजो करै, पांणी भरणियां पांणी भरै । भण्यां-गुण्यां नै कळा-कारीगरी री किसत सूंपै । मोटा ताजा नै डील सारू खसाई रौ खोरसौ भोळावै ।—दसदोख

३ जो मान, परिमांण आदि की दृष्टि से अधिक बड़ा हो ।

उ०—डोकरी साळ रै मांय जाय कांमी री मोटौ वाटकौ लाई । गूजरी चरी खांगी करनै वाटकौ डुळडुळतौ भर दियौ ।—फुलवाड़ी

४ जो अपेक्षाकृत बड़ा हो ।

उ०—१ मोटौ कांधौ, मोटौ गाल, लाल–राती आंख्यां अर लिलाड पर सळ ।—दसदोख

उ०—२ दोलड़ै डील री रंगीली जुवांन, चौड़ी छाती अर मुळकती मोटौ मूंछौ ।—दसदोख

५ जो भावनाओं और गुणों से बड़ा हो । विशेष प्रकार के व्यक्तित्व वाला, उच्च, श्रेष्ठ, महान ।

उ०—१ मोटौ दाता मंगियौ, तोटौ भाजै तेण । कीजै सायर खेप किल, जुड़ै जवाहर जेण ।—वां. दा.

उ०—२ मनै समझ मोटौ मिनख, जाचण आवै जीव । वौ इउं जावै दिवस, वौ दीजै मती दईव ।—ऊ. का.

उ०—३ स्वांमीजी बोल्या–थे कहौ छौ साधू ने लाडू खाणा नहीं तो देवकी रा पुत्रां लाडू वहिरघा इम सूत्रां में कह्यौ छै । जब ते बोल्या–ऊवै तो मोटा पुरस छा । जब स्वांमीजी बोल्या–मोटा पुरस व्है सो वली खावै इज है ।—भि. द्र०

७ जिसकी लम्बाई-चौड़ाई अधिक विस्तृत हो, जो क्षेत्र-विस्तार आदि दृष्टि से बड़ा हो ।

उ०—१ मोटै पड़गनै रौ धणी, नांव सुणतां ही ठाकरां रौ काळजौ खरणाट कर उठ्यौ ।—दसदोख

उ०—२ पादू में एक भाये कह्यौ–हेमजी स्वांमी री पछेवड़ी मोटी दीसै । जद स्वांमीजी लंबपणै चोड़पणै माप दिखाई ।
—भि. द्र.

८ जो पद या धन के कारण बड़ा कहा जाता हो ।

उ०—१ मोटा मोटा धनवंती बोलवा बोलण लागा के आज दीवांणजी रै हाथां दुस्टी रौ खातमौ व्है जावै तौ मिंदर मिंदर सोना रा निगोट इंडा चाढैला ।—फुलवाड़ी

उ० २ सगाई री हांमळ भरी है, जद व्याह नै भळै क्यूं लारै छोडौ हो । भळै कोई घाव में घोवौ तथा साख में घोचौ मार नाखसी । मोटा सिरदार है, म्हांसू ही कोई मोटौ घर दबासी ।
—दसदोख

उ०—३ मोटां छोटां मुसदियां, बुलवातौ दरबार । जसवंत खातर जीव की, सारां लेतौ सार ।—ऊ. का.

९ गौरवशाली, प्रतिष्ठित ।

उ०—कुळ मोटै वहुवां कुळ धुवां, मांन महातम निरवहै । कण सूप जिहीं औगण तजै, गुण मोताहळ जिम ग्रहै ।—गु. रू. बं.

१० जो आयु की दृष्टिसे बड़ा हो, वयस्क ।

उ०—१ औ करता सता रै वेटो नरवद मोटौ हुवो छै । सु नरवद काळ पूंछीयौ, उपाधौ । सु नरवद दिन दिन जोर चढतौ गयौ ।
—नैणसी

उ०—२ 'खंगार' पण मोटौ हुवौ । वरस २० तथा २२ मांहै हुवौ । साहबी संभाही ।—नैणसी

उ०—३ सु साह री वेटी तौ सारा ही दीठी । नांनै सूं मोटौ हुवौ ।
—पलक दरियाव री बात

उ०—४ सोचौ के जका माईत म्हनै बीस वरसां तक आपरी गोदी में पाळ पोस नै मोटी करी, वेटो गिणी चाहै वेटी गिणी, वांरै वास्तै तौ सैंग म्हैं इज हूं ।—फुलवाड़ी

११ लम्बा, दीर्घ ।

उ०—१ एक मिणियारा री हाट सूं रूदराख्र रा मिणियां री मोटी माळा लाई ।—फुलवाड़ी

उ०—२ हरजीमल सेठ रागी थयौ जद रुघनाथजी से उरजोजी साधु मोटौ ओळियो लेइ वाचवा लागौ ।—भि. द्र.

१२ जिसका घनत्व बड़ा हो ।

१३ जिसकी गोलाई बड़ी हो ।

१४ जो महीन पीसा हुआ न हो, बुरबुरा, दरदरा ।

१५ महत्वपूर्ण, विशेष ।

उ०—१ ज्यांरा मोटा भाग जग, मोटा किरतब मन्न । वां हंदी आसा करै, खैराती खटन्नन्न । वां. दा.

उ०—२ कह्यौ के भाई रा ऐ समंचार सुणियां कीकर ढबणी आवै । चौनिजरियां एक दूजा रौ उणियारौ देख ले तौ मोटी बात ।
—फुलवाड़ी

१६ अहंकारी, घमंडी ।

उ०—अपणे आपनै मोटौ मिनख मांनती थकी सासरै री पांणी नीं पीयै।

१७ गंभीर, गहरा।

१८ असाधारण, कठिन, भारी।

उ०—१ नरनाथ जांण राखै निजर, वांण वखांणां विसतरै। व्रजराज लाज मोरी वरण, काज सिद्ध मोटा करै।—रा. रू.

उ०—२ खोटै टोटै नग कणियां बीखरगी। माहव मोटै दुख जाटणियां मरगी।—ऊ. का.

१९ अखरने वाला, खटकने वाला।

उ०—१ सासरियां पेट माथै लात मारनै कह्यौ—रांड, हाल भगवांन री नांव जीभ माथै लेवती डरै कोनी। मोटौ पाप करतां तौ डरी ई कोनी, अबै कुळ री लाज बचावण वास्तै इण नाकुछ कांम सूं डरै।—फुलवाड़ी

२० खास, असल,

उ०—घर रा माईत जिणनै आप री वेटी जांणै, उण हूबोहूब उणियारा वाळा मोट्यार नै आपरौ घणी मांनणा में कांई संकौ। उणियारी अर रंग-रूप ई तौ सगळा नाता री मोटी पिछांण।
—फुलवाड़ी

२१ अत्यधिक, बहुत।

२२ प्रसंशनीय।

उ०—राजभगीरथ रांम,जुजठल जस जण जण जपै। कीधां मोटा कांम, नांम रहै जेहल नरां।—बां. दा.

२३ तुलनात्मक दृष्टि से जो किसी से बढ़कर हो।

उ०—१ नसा में झूमती राजकंवर रंग-मैल में आयौ। वांमणी धीरप रै सागै सांत मुद्रा में ऊभी ही। मनांग्यांना विचार करियौ के आप सूं मोटौ जम बिरौबर। लाज वेचणा बिचै मरणौ वाजिब है।—फुलवाड़ी

उ०—२ थांनै हजार वार समझाया के रिपिया सूं मोटौ तौ रांम ई नीं है, तौ ई हाल थांरै समझ में नीं आई।—फुलवाड़ी

२४ ज्येष्ठ। (ह. नां. मा.)

उ०—पाद तणौ परधांन, गादरौ सांगत गोटौ। असुभ चलै को अनुग, मूत रौ भाई मोटौ।— ऊ. का.

२५ खतरनाक।

उ०—आज अपांरी इण दुनियां में लुगाई री मोटी दुस्मी मिनख रै सिवाय कोई दूजी कोनीं, आ बात सूरज सूं ई वत्ती साची है, पण तौ ई आ दूजी बात ई इण सूं कम साची नीं है के मिनख बिना लुगाई रौ जमारौ साव अकारथ अर विरथा है।—फुलवाड़ी

२६ अधिक दिनों का, पुराना।

ज्यूं०—मोटौ घी।

२७—भारी, गरिष्ट।

उ०—तळाव पांणी पीवै। खूटै ताहरां कोहर १ बांधीयौ छै तठै पीवै। पांणी मोटौ। जाट वांणीया वसै।—नैणसी

२८ जबरदस्त, बलवान, शक्तिशाली।

उ०—फौजां लगस नेजियां फरहर, घरहर त्रंबागळ दळ घेर।
कोटां मोटां कळह केवियां, 'जोधा' हरौ करै जुध जैर।
—सादूळजी खिड़ियौ

रू०भे०—मोटइ, मोटउ, मोठउ,।

अल्पा०—मोटकौ, मोटड़ौ।

मह०—मोट।

मोटौ-ताजौ-सं०पु० यौ०—हृष्ट-पुष्ट।

उ०—भींटियौ-ओल्यौ-नांनांणै जावण दै, दूध मळाई पीवण दै, घी अर बटिया खावण दै, मोटौ-ताजौ होवण दै, पछै खाजै।
—फुलवाड़ी

मोटौधणी-सं०पु०—ईश्वर।

उ०—सारै काज सदीव, धारै ज्यूं मोटाधणी। जिती विचारै जीव, पार उतारै तूं 'पता'।—जैतदांन बारहट

मोटौन्रप-सं०पु०— राजाओं में बड़ा राजा, सम्राट।

मोटौमालक—देखो 'मोटौधणी'

मोट्यार—देखो 'मोटियार' (रू. भे.)

उ०—१ जाती तो आवै थारै दूर का सांवळिया मोटचार। बाबा बजरंगजी रौ वंगलौ हद वण्यौ।—लो. गी.

उ०—२ मोटचार चंग ले'र गांव रै बारै गोरमें जाय पूग्या अर लुगायां चांवटी माथै ले लियौ।—रातवासौ

उ०—३ बा: आपरै मोटचार रौ राज में पग मांनती, गांव भर री टग जांणती। पण बै: सै: वातां सफा कूड़ी नीकळी।—दसदोख

उ०—४ काटण नै किरसांण, वखत-बळ भाखां लागै। बांथा नाखै वाळ मिळै मोटचारां सागै।—दसदेव

मोट्यारपणौ—देखो 'मोटियारपणौ' (रू. भे.)

उ०—वींद मिनखां जैड़ौ मिनख हौ। नीं घणौ रूपाळौ अर नीं साव कोजौ। भर मोट्यारपणै ई व्याव व्हियौ पण व्याव रौ अणूंतौ कोड नीं हौ।—फुलवाड़ी

मोठ-सं०पु० [सं० मकुष्ठ, प्रा० माउठ] १ मूंग की जाति का एक द्विदल अन्न।

उ०—१ जाट वांणिया रजपूत बांभण वसै। धरती हळवा २००। बाजरी मोठ हुवै। खेत कंवळा।—नैणसी

उ०—२ पळकती धवळ दूधिया वत्तीसी, जांणै ममोलियां रै बिचाळै मोती पळाट करै। थोडी रै मांय मोठ मावै जित्तौ ऊंडी खाडौ।—फुलवाड़ी

२ उक्त अनाज का पौधा।

उ०—१ म्हैं अर थारा महारांणीजी खेत री माठ माथै सूवर अर भाचरियां नै मोठ चरावता हा।—फुलवाड़ी

उ०—२ देखतां देखतां खेत तौ मोठां री हरियाळी सूं लीलांणौ।
— फुलवाड़ी

३ देखो 'मोट' (रू. भे.)

उ०—अणचींती आ अकाळ मोत सुणी तो वो दाग में ठेट मसांण लग हालियो। उणरै बडापणा री मोठ मरजाद नहीं ई नीं ही।
—फुलवाड़ी

रू०भे०—मउठ, मांठ, मोठउ, मोठ।

अल्पा०—मोठियो।

मोठउ—१ देखो 'मोटो' (रू. भे.)

उ०—तूठउ दिइ मोठउ पसाय, नहीं कुव्यसन सात। अन्हाय मारग नगर मांहि नवि जांणइ को वात।—नळदवदंती रास

२ देखो 'मोठ' (रू. भे.)

मोठड़ो—सं०पु०—बिंदीदार रंगा हुआ एक साफा व ओढना विशेष।

रू०भे०—मोटड़ो.

मोठफळी—सं०स्त्री०—मोठ नामक अनाज की फली।

मोठा—स०स्त्री०—पूना के पास बहने वाली एक नदी।(बां. दा. ख्यात)

मोठियार—देखो 'मोटियार' (रू. भे.)

मोठियो—देखो 'मोठ' (अल्पा., रू. भे.)

मोठेड़ी—सं०पु०—मोठ की फली।

मोड— १ देखो 'मोडो' (मह., रू. भे.)

उ०—रांमदुवारा री वो मोड वांणिया रा सूंप्योड़ो घन सारू गुळाचां खाई तो उण में कीं ऊंधी बात कोनीं।—फुलवाड़ी

२ देखो 'मौड़' (रू. भे.)

मोडकी, मोडड़ो—देखो 'मोडो' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—मोडकी मगरी री पांणी ढाळो ढाळ ढळियो रे। आबू थारे पहाड़ां में अंग्रेज चढ़ियो रे, काळी टोपी रो।—लो. गी.

मोडणी—देखो 'चोटी बढ़ियो'।

उ०—तिण समे देवडो डूंम बोलियो, रावजो हुं पिण स्त्री माताजी री लार आयो छूं। रावळो मोडणी लार छूं।—रा. वं. वि.

मोडणो, मोडबो—देखो 'मोड़णो, मोड़बो' (रू. भे.)

उ०—१ मांभी मोगर थटां मोडो,घातै लखा दळां विच घोड़ो। देसां देसां ऊपरै दोडो, चढियो कळि चालण चीतोडो।—गु रू. वं.

उ०—२ विरह हार त्रोडती, वलय मोडती, आभरण भांजती, वस्त्र गांजती, किंकणीकलाप छोडती, मस्तक फोडती, वक्षःस्थल ताडती, कंचूक फाडती""""।—व. स.

उ०—३ आकासि वैस्वांनर प्रज्वालइ, पाताल कन्या प्रत्यक्ष देखालइ, कडयडाट करतां वनखंड मोडइ, पाताल बलि तणा वचन छोडइ""""।—व. स.

उ०—४ फल पुण तरतर त्रोडइ, मोडइ ए तरूवर डालि। उज्जवल निरमल सरसीअ सरसीय लेयइं बाल।—जयसेखर सूरि

मोडली—देखो 'मोडी' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—मुरधर व्हैगी मोडली, वर तो पड़ता घींग। नर लेगी नव कोट रा, सीग सवाई सीग।—म. मानसिंह

मोडासिया—सं०पु०—राठौड़ वंश की एक उप शाखा।

मोडियांण—सं०स्त्री०—वह हरिणी जिसके बच्चे कृष्ण हरिण होते हैं। इस हरिणी के सींग नहीं होते हैं।

मोडियोड़ी—देखो 'मोड़ियोड़ी' (रू. भे.)

(स्त्री० मोडियोड़ी)

मोडियो—देखो 'मोडो' (अल्पा., रू. भे.)

मोडो—वि०[सं० मुण्डित] (स्त्री० मोडण, मोडी) १ जिसका सिर मुंडा हुआ हो, कटे हुए बालों का।

उ०—सेवो करै राजा घणो बोलै वनन न कायो रे। कुण बैठा इहां आय ने, करि करि मोडा माथा रे।—जयवांणी

२ उद्दण्ड, बदमाश।

३ जो तीक्ष्ण न हो, भोंटा।

४ जिसके सिगर या चोटी न हो।

सं०पु०—१ साधु, सन्यासी, योगी।

२ ढोंगी और पाखण्डी साधु।

उ०—राजा नफर बुलाय, जावो थे वेगा धाय। सुकोमल साध. इण मोडा ने पकड़ो जायने ए।—जयवांणी

३ भिखारी, भिक्षुक।

उ०—केई कहै पूज पधारिया, देवे आदर मांन। केई कहै मोडा क्यूं आवियो, बोलै कड़वी बांण।—जयवांणी

४ बिना सींग का पशु।

५ स्त्रियों के सिर का एक आभूषण।

उ०—अरे सिरिया मोडा लहलहहि, कसतूरिय महिवट्टु। अरे न """ट परि हुयउ देवगण भाठ।—प्राचीन फागु संग्रह

अल्पा०—मोडियो।

मह०—मोड।

मोढो—सं०पु०—मुसलमान रंगरेज। (बीकानेर)

मोढो—सं०पु०—१ कंधा।

उ०—१ मोटी खाधो, मोटी गळ, लाल–राती आंख्यां अर लिलाड़ पर सळ। मोढां माथै तेल सूं सरगळ बाल छिव छिवै भरै, सिंदूर रा टीकां सूं ताळवो तपै तिरै।—दसदोख

उ०—२ हरवखत हिमरा चढ़तो फिरै। लूंठारै लोढ़ै पर गनीवारै मोढै लाग्यो रेवै।—दसदोख

उ०—दलाल ऊभै हो परै र हाथ जोड़चा। होड–होड किसनजी ही कंवणै सूं मोढ़ा मोड़चा।—दसदोख

२ देखो 'मूंडो' (रू. भे.)

उ०—तठा उपरांत करि नै राजांन सिलांमति मांखिरा उकासिया सूअर भाखरां रा मोढा फाड़ फाड़ नै नीकळिया है।—रा. सा सं.

मोण—सं०पु०—१ आटे या मेदे को भिगोने से पूर्व, उसमें डाला जाने वाला घी का मिश्रण।

२ वह परतदार रोटी जिसकी परतों में घी लगाया गया हो।

रू०भे०—मूण, मोंण, मोयण, मोवण।

३ देखो 'मौन' (रू. भे.)

४ देखो 'मोम' (रू. भे.)

मो'णौ, मो'बौ—देखो 'मोहणौ, मोहबौ' (रू. भे.)

मोत—देखो 'मौत' (रू. भे.)

उ०—१ हातां ठाली हालणौ, जांभी संपत जोड़। **मोत** सरीखी मनख रै, खलक महीं नह खोड़।—बां. दा.

उ०—२ कळ चाळौ कळ अगळौ, 'रूपां'रामचंदोत। अमी उबारण आपणां, मेछा कारण **मोत**।—रा. रू.

मोतदिल—वि०[अ०मुअ्रतदिल] जो न बहुत गरम और न बहुत ठंडा हो।

मोतबर, मोतबिर—देखो 'मातबर' (रू. भे.)

उ०—१ खींवसर गांव रौ **मोतबर** अर इज्जतदार चौधरी इण तरै सू बुरी हालत में पड़चौ हौ के उणरै गांव रौ पूनमौ नाई जो काले ईज सहर आयौ हौ उठीनै सूं गुजरचौ, उणं चौधरी नै ओळख लियौ।—रातवासौ

उ०—२ नायक देस में **मोतबिर** सवळा मेलै जका भला आदमी भली चाल में होय अर साचौ सीलवंत निरलोभी होय।—नी. प्र.

मो'ताज—देखो 'मुहताज' (रू. भे.)

उ०—सोनजी रौ कड़ूंवौ गांव में आंखै आयौ हुयग्यौ। मरतक भंडग्यौ। दांणै-दांणै रा **मो'ताज** हुय रैया है।—दसदोख

मो'ताजखांनौ—सं०पु०—गरीबों या याचकों को दान देने का स्थान।

मोताद—सं०स्त्री [अ. मुअ्रताद] १ निश्चित मात्रा।

उ०—सवा सेर घिरत, दोय सेर चीणी खांड, च्यार सेर गेहूं री आटौ परभात रा, आंथण री दससेर चांवलां री खीचड़ी, एक सेर घिरत इतरी **मोताद** नित री करदी।—सूरे खींवैकांधलोत री वात

रू०भे०—मौताद, मौहताद।

मोताहल—सं०पु०—१ तारा।

उ०—**मोताहळ** स तळ हुवा,रैण गळंती दीठ, प्रात विछोहौ सजनां, उठी विरह अंगीठ।—पनां

२ एक प्रकार का हाथी।

रू०भे०—मौताहळ।

३ देखो 'मुक्ताफळ' (रू. भे.) (ह नां. मा.)

उ०—१ दुय गिरि चंदण अढार, वरै जळवंब **मोताहळ**। सेर एक सोव्रत्र पंच रुपक झाळाहळ।—नैणसी

उ०—२ **मोताहळ** उतारि माळ तुळछी गळ धारै। करै तिलक स्रतयका, तिलक कूंकम वीसारै।—रा. रू.

उ०—३ कमळ पत्र कर चरण कंठ **मोताहळ** माळा। प्रवित अंग-मन चंग, गंग जांणै जळधाग।—गु. रू. वं.

उ०—४ हंस सुखाळी मांनसर, चुगि **मोताहळ** खाय। हरीया दूजा ना भखै, लांघणियौ रहि जाय।—स्री हरिरांमदासजी महाराज

मोतिड़ौ—देखो 'मोती' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ घोड़ी ती भींजै घरमी हांसलौ, **मोतीड़** जड़ी लगांम ओ। जांमी विराजै घरमी रै केसरिया, पांच मोहर गज पाग ओ।
—लो. गी.

उ०—२ आउवा ने आसोप धणियां **मोतीड़ां** री माळा रे। वारै' न्हाकौ कूंचियां तुड़ावौ ताळा रे झगड़ौ आदरियौ।—लो. गी.

मोतिणहार—सं०पु०—मोतियों का हार, माला।

उ०—अदभुत रचि सोल स्रंगार उरि, मनोहर **मोतिणहार**। गीत गांन कंठि मधुर, आलापति चरणि लागइ —स. कु.

मोतियदांम—सं०पु० [सं० मौक्तिकदाम प्रा०—मोत्ति अदांम] एक वर्ण वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में चार जगण होते हैं। (रा. रू.)

रू०भे०—मुत्तियदांम, मोतीदांम, मौक्तिकदांम।

मोतियमाळ—सं०स्त्री० [सं० मुक्ता—माल] मोतियों की माला। हार।

उ०—भणै पग सिद्ध सातूं मुनि भाळ, मेल्है पग मांणक **मोतिय-माळ**।—ह. र.

मोतिया—वि०—१ मोती सम्बन्धी।

२ मोती जैसे रंग का।

३ मोती के आकार का

सं०पु०—१ मोती के समान रंग वाला वस्त्र।

२ हल्का गुलाबी रंग, जिसमें हल्की गुलाबी झांई के साथ कुछ पीली झांई दिखाई देती है।

३ एक प्रकार का दानेदार सलमा।

सं०स्त्री०—४ एक लता विशेष जिसकी कली का रंग मोती जैसा होता है। इसका इत्र बनता है।

मोतियाबंध—देखो 'मोतियाबिंद' (रू. भे.)

उ०—सो रूप गुणा कर निपट अवल पण आंख्यां संजम **मोतिया-बंध** सो कुंवारी वेटी घर मांहे।—कुंवरसी सांखला री वारता

मोतियाबिंद—सं०पु०—नेत्र का एक प्रसिद्ध रोग।

वि० वि०—इसमें नेत्र के पर्दे पर मांसादि तत्वों की एक झिल्ली बन जाती है और रोशनी पर छा जाती है। इससे आंख से दीखना बंद हो जाता है। इस झिल्ली को शल्य चिकित्सा द्वारा हटाया जाता है।

रू०भे०—मोतियाबध।

मोतियौ—१ देखो 'मोती' (अल्पा., रू. भे.)

२ देखो 'मोथियौ' (अल्पा., रू. भे.)

मोतींड, मोतींडौ—सं०पु० [सं० मुक्ता+अंड] गाय व भैंस के प्रसव के समय बच्चे से पूर्व निकलने वाला एक पानी का गोला। इसकी झिल्ली बहुत पतली होती है और यह बाहर आते ही फूट जाता है।

मोती—सं०पु० [सं० मौक्तिक प्रा० मोत्तिअ] १ छिछले समुद्र या रेतीले तटों के सीपों से निकलने वाला एक प्रसिद्ध बहुमूल्य रत्न।
(अ. मा., नां. मा, ह. नां. मा.)

उ०—१ मणियां रयण अमोल, रोप अणियां **मोती** रुख। सोहत धणियां सीप, मिळै असिवर फणियां मुख।—वं. भा.

उ०—२ नीर निरासा सीप मुख, निजकण **मोती** होय। पेम उदै भई आतमा, हरिया हरि सुख होय।
—स्त्री हरिरांमदासजी महाराज

पर्या०—आधिकुंभ, उदकज, गुलका, जळज, दधिज, घीरठभख,

प्रयत, मुक्तज, मुक्ता मुक्ताफळ, रखत, रेस, रसउद्भव, ससगोत, सारंग, सीपसुत, सुक्त, मुक्तज, स्वात, हंस–भख।

२ एक प्रकार का आभूषण। (अ. मा.)

३ घोड़े का रंग विशेष या इस रंग का घोडा।

उ०—मोती सुरंग कमेत, लखी अवलख फुलवारी। रंग जडाव हम रंग, हरी सुनहरी हजारी।—सू. प्र.

४ रहस्य सम्प्रदाय के अनुसार मन।

५ कसेरों का एक उपकरण।

६ जागीरदारों अथवा अमीरों के लड़कों को सम्मान पूर्वक सम्बोंधन करने का एक शब्द।

७ सफेद, श्वेत। (डिं. को)

रू०भे०—मुगति, मुगती, मुगतीक, मुत्ति, मुत्ती, मोती।

अल्पा०—मोतिड़ो, मोतियो, मोतीड़ो मोतायड़ो।

मोतीग्रालाडू–सं०पु०—बूंदा के लड्डू, एक मिष्ठान्न।

उ०—महोज्वला ईसा सेवईग्रा लाडू, मोतीग्रालाडू दल लाडू, बीवा लाडू, भगर लाडू।—व० स०

मोतीकड़ो–सं०पु०—१ हाथों मे पहनने का स्वर्ण कंगन जिसमें मोती लगे हों।

२ मोतियों का हार।

मोतीड़ो—देखो 'मोती' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ जीहो–दीधा मेंगल मोतीड़ा, लाला, दीधा हयवर हार, जीहो–दीधा सोनो सावटू, लाला, दीधा अरथ भंडार।—जयवांणी

उ०—२ सीस सुरंगी चूंनड़ी चमकै, मोतीड़ां री माळा दांवणी। —रसीलेराज रा गीत

मोतीचुर, मोतीचूर, मोतीचूरि–सं०पु०—१ मोती के आकार की बूंदियों का बंधा हुआ लड्डू।

उ०—१ नवखंडिया बाजोट माथै सोना रा थाळ में मोतीचूर रा लाडू परूसिया।—फुलवाड़ी

उ०—२ दोनूं ई अेकण सागै हूचटा देय आप रा हाथ छुडाया। मोतीचूर रा लाडू चिगळतां जवाब दिया–मुरख म्हें के थे। —फुलवाड़ी

२ एक प्रकार का वस्त्र विशेष।

उ०—जरजरी मलवारी लाछगी अघोतरी अमरी गंगापारी मोतीचूर टमरू नसरू रतन कंवल छाइल मकवल अगल साउला उरसाला।—व. स.

मोतीचोकड़ो, मोतीचौकड़ो–सं० पु०—कान का एक आभूषण विशेष।

मोतीज्वर–सं०पु०—एक प्रकार का ज्वर, मधुरज्वर।

रू०भे०— मोतीभरो, मोतीझिरो।

मोतीझरो, मोतीझिरो–सं०पु०—१ देखो 'मोती ज्वर' (रू. भे.)

मोतीदाम—देखो 'मोतियदाम' (रू. भे.)

उ०—२ सहस विनव सौ रूप सुभ वलि छावीस बताइ। दीसै मोतीदाम रै प्रघट जगण चत्र पाय।—ल. पिं.

मोतीनीलो–सं०पु०—एक प्रकार का शुभ रग का घोड़ा। (शा. हो.)

मोतीपाक–सं०पु०—एक प्रकार का पकवान्न जो बूंदी और दूध के मावे से बनता है।

उ०—मिसरी मोतीपाक भुरटरी इतरी खोडी। रस गुलियां रै रूप मधुर है होड़ा होडी।—दसदेव

मोतीपुड़, मोतीपुड़ो–सं०पु०—शुक्ति या सीप के अन्दर का वह स्थान जहां पर लाल, पीली व हरी झाई पड़ती हो।

उ०—तठा उपरायंत पुरांणै अगर री चिकायी सूंघी मंगायजै छै। सीसी खुलै छै। मोतीपुडै री सीप रा प्याला में घात हाजर कीजै छै सूंघो बगलां लगायजै छै।—रा. सा. सं०

मोतीबेल–सं०स्त्री०—वेले का एक भेद, मोतिया बेला।

मोतीभात–सं०पु०—एक विशेष प्रकार का भात।

मोतीमाळ, मोतीमाळा, मोतीयमाळा–सं०स्त्री०—१ मोतियों की माला, हार।

उ०—वागा वेस सोहांमणां, भूखण मोतीमाळ। कनक कचोळा जड़ाव रा, सुंदर सोवन थाळ।—ढो. मा.

२ बत्तीस मात्रा व २४ वर्ण का एक छन्द विशेष, जिसमें आठ जगण होते हैं।

उ०—करि अठ जगण वत्रीस कळ, वरण वीस चत्र विद्धि। गति इणि मोतीमाळ गुण, पणि लखपत्ति प्रसिद्धि।—ल. पिं.

मोतीयडो—देखो 'मोती' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—आट करु करि कनक मइ, सखी मोतीयडै पुरू चूक कि। —कां. दे. प्र.

मोतीयो—देखो 'मोती' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ गुळदारक मेतीयो, हस हरीगत मोतीयै तीतर मोर वसै। अवलख कवूतर लखीयो, ऊजळ वोद बीलावीयै वोर वसै। —किसनजी दधवाड़ियो

उ०—२ हरि जळ वूठो मोतीया, हरीया सिर सिख रांह। सुगणां मोती चुणि लिया, हाथि नही निगुणाह। —स्त्री हरिरांमदासजी महाराज

३ देखो 'मोथियो' (अल्पा., रू. भे.)

मोतीसर–सं०पु०— एक जाति या वर्ग जो चारणों के याचक होते हैं। (मा. म.)

२ उक्त जाति का व्यक्ति।

मोतीसरी, मोतीसिरी, मोतीहरि–सं०स्त्री०—मोतियों की माला।

उ०—१ ललाटि तिलक, कने झलक, बांहे वलय, अंगुलि अंगुलियक, कंठि कठिका, गलइ हार, माथि मोतीसरी, हृदय सोवरण्ण ऊतरि, हाथे कंकणरव झलत्कार।—व. स.

उ०—२ जउ मूकी तुहइ तुलसिरी, जउ वींधो तुहइ मोतीसिरी। जउ दुहलूं तुहई गंगाजल जांणि, जउ थोडी तुहइ सपुरिस वांणि। —नळदवदंती रास

उ०—३ पिक कंठ सोभति चीठ परठै,सघण वण मोतीसरी। पर-बंध हीरां जड़ित पाखळ कुसम माळा संकरी।—मा. वचनिका

मोतीहार-सं०पु०—मोतियों का हार।

उ०—कुंडल कांनि सोभइं, **मोतीहार** कंठ कंदलि विवेक हीइ अनइ धरम हनइ संयोगि।—व. स.

मोतौ-सं० स्त्री०—१ मृत्यु।

उ०-घर त्याग करण परघर विघन, आठूं पहर ऊंघारिया। जीवनें देत **मोता** जिके, पोतादार पधारिया।—ऊ. का.

२ देखो 'मोथौ' (रू. भे.)

मोथ-सं०स्त्री०[सं० मुस्ता] १ एक प्रकार की घास विशेष। (उ. र)

२ देखो 'मोथौ' (मह., रू. भे.)

मोथाव-सं०पु०—१ इनाम, पुरस्कार।

उ०—मीठा-मीठा मूण-पठ्ठा मतीरा राजाजी तांई पुगावै अर **मोथाव** पावै।—दसदोख

२ धन्यवाद, वाहवाही। शाबासी।

उ०—१ गांव में पूरौ भेद भाव पाळै है। ऐरा गेरा नथू खैरा लोग वारणै बैठ्या चुगली करै चींचका मारै है। सरपंच सूं **मोथाव** पावै, नांमून कमावै है।—दसदोख

उ०—२ भोळा भोळा वाळ करै रोळा रुड़कावै। भोळा भर घर लाय, मुदित **मोथावां** पावै।—दसदेव

मोथापाळ-सं०स्त्री०—१ जैसलमेर राज्य का एक नामान्तर (व्यंग्य)।

२ मूर्ख-मण्डली।

मोथियौ-सं०पु०—१ एक प्रकार का बारीक घास, जिसकी जड़ मोती के समान व सफेद होती है। खाने में बड़ी मीठी होती है।

उ०—गूंदा, गूदियां, आंमलियां, गेगणियां, डाखियां, घीतोला, **मोथिया**, केट्टला, खोखा, मांमालूणी, काचरा, काकड़ियां खरबूजा, अर मतीरां वास्तै तड़फा तोड़ती —फुलवाड़ी

रू०भे०—मोतियौ, मोतीयौ।

२ देखो 'मोथौ' (अल्पा, रू. भे.)

मोथू—देखो 'मोथौ' (रू. भे.)

मोथौ-वि०—१ मूर्ख, नासमझ अनपढ, गंवार।

उ०—१ लोग सागडी नै कह्यौ-**मोथा** कना सूं नांमी कांवळ ढायो। कीं तौ म्हांनै ई बंट दै। म्हे थारी मिळती मारी ही।—फुलवाड़ी

उ०—२ तो **मोथा** रांमचंदरियै-री हाटरी लच्छाभांत-क्यों लायो नी ? —वरसगांठ

२ ढीला, सुस्त।

सं०पु० [सं० मुस्तक] १ नागर मोथा नामक घास व इस घास की जड़।

२ सूअर, वराह।

उ०—गिड़ गरुवौ आंगमण न आवै, सब हमारै माह सग्रांम। **मोथौ** माल चरै नर मोटा, गढ़ मूळै मूळै वह गांम।

—रावमलीनाथजी रौ गीत

रू० भे०—मोतौ, मोथूं।

अल्प०—मोथियौ।

मह०—मोथ।

मोद-सं० पु० [सं०] १ आनन्द, प्रसन्नता, खुशी, हर्ष।

(अ. मा., ह. नां. मा.)

उ०—१ अटे सोघ अवरोध अचांणक, बोध मोद विसराए। प्रांण नाथ हा नाथ जोधपुर, गौख सोध गणखाए।—ऊ. का.

उ०—२ अर मातामह री सभा रै अंदर दौहित्र कुमार प्रथ्वीराज नूं देखि **मोद** पायौ।—वं. भा.

उ०—३ वरस चतुरदस है वन में विचरण, म्हांनै पिता वचन-परवांण। आग्या आगी हे माता म्हारी **मोद** सूं।—गी. रां.

२ उत्साह, जोश।

उ०—१ वीरां काज वणावियौ, 'बांकै' वीर विनोद। वधसी सुणियां वाचियां,मन मै वीरां **मोद** —ऊ. का.

उ०—२ इक कहत **मोद** अथाह, गिण मच्छ कच्छप ग्राह। जळ गहर सागर जोर, तिण वीच थाह न तोर।—रा. रू.

उ०—३ जे नरक में ही उठ जावै तो देई-देवता अर डोरा-डांडा नै नीं भूलै। इसै कांमां मै घणै **मोद** सूं मालै।—दसदोख

३ गर्व, अभिमान।

उ०—१ ठकराणी वेचेतै होय गुड़गी। ठाकर'नै **मोद** व्हियौ के ठकरांणी कित्ती पतिव्रता अर सुलखणी। धणी रै जोखा री बात सुणतां ईं सुध बुध पांतरगी।—फुलवाड़ी

उ०—२ धनरौ **मोद** आयग्यौ, मनड़ो उघाड़ खायग्यौ। जाट, पूरतौ आदमी, लपोडौ'र जिद चेतै आयग्यौ। वंस बिना वंस नीं कटै। आः सोच बैठ्यौ।—दसदोख

४ मान, प्रतिष्ठा,गौरव।

५ सुगंध, महक।

[सं० मद] ६ शराब, मदिरा।

उ०—सो किण भांति रो दारू। उलटै रो पलटै पलटै रो ऐराक, ऐराक रो वैराक, वैराक रौ संदळी, सदळी रौ कंदळी, कंदळी रौ कहर कहर रौ जहर, जहर रौ कटाव, कटाव रौ नेस, नेस रौ जेस, जेस रौ मोद, मोद रौ कमोद, कमोद रौ हूळ।—रा. सा. सं.

[सं० मधु] ७ शहद, मधु।

८ एक वर्ण-वृत्त जिसमें पांच भगण एक मगण एक सगण और एक गुरू होता है।

९ हिरण्याण पक्ष का एक असुर, जिसका देवासुर संग्रांम के समय वायु ने वध किया।

१० ऐरावत कुलोत्पन्न एक सर्प जो जन्मेजय के सर्प सत्र में दग्ध हुआ।

(सं०स्त्री०)अनाज की भरी गाड़ी।

मोदक-सं०पु० [सं०] १ लड्डू नामक मिष्ठान्न।

उ०—१ मधुकर भ्रमत सुवास मद, भाल सुधाकर भास। मोदक

कर मन मोदमय, नित जय ग्यांन निवास।—बां. दा.

उ०—२ मोदक थाल भरी करी जी, मंदिर मांहे थी लाय। केसरीसिंह जटा जिसा जी, वेहराया उलटे जी भाव।—जयवांणी

उ०—३ मोदकादि बहु चक्र मझारां। पाक अनै अवलेह अगारां।
—सू. प्र.

२ किसी ग्रौषधि का लड्डू।

३ एक वर्ण-वृत्त, जिसके प्रत्येक चरण में चार भगण होते हैं।

४ एक वर्ण संकर जाति विशेष।

वि०—१ आनन्द-दायक, प्रसन्नता देने वाला।

२ उत्साह वर्धक।

रू०भे०—मोदिक, मोयग।

मोदकर-स०पु० [स०] एक प्राचीन मुनि।

वि०—आनन्द-दायक।

मोदण-सं०पु०—१ ईश्वर। (नां. मा.)

२ अनाज ढोते समय गाडी पर लगाया जाने वाला बड़ा कपड़ा।

मोदणौ, मोदबौ-क्रि०अ०—१ प्रसन्न होना, हर्षित होना।

२ उत्साहित होना, उत्तेजित होना।

३ गर्वित होना अभिमान करना।

४ महकना, सुगंध देना।

मोदणहार, हारौ(हारी), मोदणियौ—वि०।

मोदिओड़ौ, मोदियोड़ौ, मोद्योड़ौ—भू० का० कृ०।

मोदीजणौ, मोदीजबौ—भाव वा०।

मोदिक—देखो 'मोदक' (रू. भे.)

उ०—१ न लहइ मसवाडउ न लहइं ग्रास। महियां मोदिक तीह ना दास।—वस्तिग

उ०—२ तेत्रीस कोडि देवता तणु प्रतिहार, सींदूरइसार, सेवंत्रांभार, मोदिक आहार एहवा स्री गणेस वरणवीता सोभइ।—व. स.

मोदिकवलभ-सं०पु०—गणेश, गजानन

उ०—प्रथम रंग भरे गणनायक, वल्लभ लांछण फलदायक, सकलमोदिक, मोदिकवल्लभं जयति विजयति गणनाइक।—व. स.

मोदियउ-सं०पु०—एक वस्त्र विशेष।

उ०—चीणउसीउं चीणउसीउं मलउसीउं आउंचीयउं मूगनउं मयउं मंगलिकं मेदियउं सीलउरं ......।व. स.

मोदियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ प्रसन्न या हर्षित हुवा हुआ. २ उत्साहित या उत्तेजित हुवा हुआ. ३ गर्वित हुवा हुआ. ४ महका हुआ। (स्त्री० मोदियोड़ी)

मोदियौ-सं०पु०—१ गाड़ी पर लगाई जाने वाली घास फूस की वह पट्टी जिसके बीच में अनाज आदि कोई वस्तु भरी जाती है।

२ उक्त गाड़ी में भरी हुई वस्तु।

मोदी-सं०पु० [अ० मद्दम] दाल, चावल आटा आदि खाद्य सामग्री एवं किराणे का सामान बेचने वाला व्यापारी

उ०—१ एक कुमारी उण सारु न्यारो ई पांणी भर देती। मोदी रै अठा सूं न्यारो सांमांन लाय देती। वांमणी नीपचोप नै सुघराई सूं चौको लगाय नै आपरी रसोई बणाय लेती।—फुलवाड़ी

उ०—२ तठा उपरांयत मोदियां नै हुकम हुवौ छै। भूंजाई सारू सारी बसत मीची मीठांण वेसवार मरव लेय राती-माडी चालज्यो।
—रा. सा. सं.

मोदीखांनौ-सं०पु०—१ भोजन या खाद्य-सामग्री रखने का स्थान, रसोड़ा। भण्डार।

उ०—घोड़ां रो रातब दांणी, महीनदारा री महीनी, मोदीखांनै री जिनस ग्रौर ही सारा लोगां री सरंजाम सरतंत कर घोडां नूं खुद रै खेत भोळाय, हाथियां नूं गुळवाड री वाड़ भोळाय आय गैरमहलां रहियौ।—डाढाळासूर री बात

२ मोदी की दुकान।

उ०—१ बाजार रे अधबीच गया। व्योपारी नै मोदीखांनै सराफै मुकीमां री दुकांनां कन्है गया।—गौड़ गोपाळदासरी वारता

उ०—२ बाजार री लोग मोदीखांनौ पेशखांनौ कारखांनौ सारा लेय बहिर हुआ।—कूंवरसी सांखला री वारता

मोदीपगा-सं०पु०—एक प्रकार का बैल (अशुभ)

मोदीलौ-वि०—१ गर्विला, अभिमानी।

२ प्रसन्न, खुश, हर्षित।

मोदोख-सं०पु० [सं० मोदोष] एक आचार्य जो विष्णु के अनुसार वेददर्श नामक आचार्य का शिष्य था।

मोनि, मोनी—देखो 'मून' (रू. भे.)

उ०—मैं लख चौरासी धारि जोनि। का बोलत का गहत मोनि।
—स्री हरिरांमदासजी महाराज

२ देखो 'मौनी' (रू. भे.)

मोपा-सं०पु०—राठौड़ों की एक उप शाखा।

मोफत—देखो 'मुफ्त' (रू. भे.)

उ०—कीं पर राज करै ग्रर कीरै घरां मोफत री माल चरै।
—दसदोख

मोफतियौ—देखो 'मुफ्तखोर'।

उ०—मोफतिया इसां मौकां मौज-मजा ही किया करै है।
—दसदोख

मोब-सं०पु०—प्रथम प्रसव।

उ०—मोब री इण बेटी पछै दो भाया वळै व्हिया। वै उठै ई दादी रै पाखती रै'गा।—फुलवाड़ी

रू०भे—मोभ।

मोबण-सं०स्त्री०—१ प्रथम प्रसव की पुत्री, बड़ी लड़की।

२ विवाह में लग्न के दिन कन्या के पिता के घर में रोपा जाने वाला काष्ट का छोटा स्तम्भ, जिसके ऊपर मिट्टी का कुल्हड़ रखकर पूजा की जाती है।

रू०भे०—मोभण।

मोबत—देखो 'मुहब्बत' (रू. भे.)

उ०—१ मात पिता की छोडी मोवत, मोजां मेहड़ली । सात जात मोडां सूं सांधी, नाहक नेहड़ली ।—ऊ का.

उ०—२ खेतां अर पसुवां रा झगड़ा-झंटा निवेड़ती, गांव मोबत रा न्याव-तपास निमटांवती तथा आपरै सीलसंतोख सूं सगळां री सीरी-भीरी वर्णी रै'ती ही ।—दमदोख

मोबद, मोबिद-सं०पु० [अ० मुअबिद] १ पारसियों का धर्मोपदेशक, धर्मज्ञ ।

२ पुजारी, सेवा-पूजा या भजन करने वाला ।

मोबियो-सं०पु०—एक प्रकार की मोटी मजबूत और अधिक चौड़ी खपरैल जो छाजन में बंडेरे पर 'मगरा' बांधने में काम आती है ।

मोबिलआयल-सं०पु० यौ. [अं.] मशीन से चलने वाली मोटर, गाड़ी आदि वाहनों के काम आने वाला तेल, मशीन का तेल ।

उ०—बनाजी थारी मोटर ने मोबिलआयल, जांन्या ने सरबत प्यालौ, बनाजी थे आप पीवौ भांगड़ली चावोना लूंग सुपारी ।—लो. गी.

मोबी, मोमी-सं०पु०—१ प्रथम प्रसव का पुत्र, बड़ा लड़का, ज्येष्ठ पुत्र ।

उ०—१ हरसा मेरा वाला रै, आवैली सांवणियां री तीज। मेरा मोबी बेटा रै, जग में सिजारा रै बाई का कुण करेला ।—लो. गी

उ०—२ इत्ता में सब सूं मोबी राजकंवर मून तोड़ नै दोनूं छोट-किया राजकवरां सांमी देखनै कह्यौ-थें दोनूं हाल नैना टाबर हो ।—फुलवाड़ी

२ बड़ा भाई ।

उ०—१ आंणां लेवणनै अेवूला आया दरसण देवण नै मोमी मुळकाया ।—ऊ. का.

रू०भे०—मोहभी.

मोम-स०पु० [फा०] १ मिट्टी के तेल से रासायनिक क्रिया द्वारा निकाला जाने वाला चिकना एवं गाढा पदार्थ, जिसकी वत्तियें बना कर उजाले के लिये जलाई जाती है ।

उ०—जिण सिर बाहै खग वळ, देव सराहै जोय । सिलह अटक्का मोम सम, हुवै वटक्का दोय ।—रा. रू.

२ शहद की मक्खियों द्वारा छत्ता बनाने का चिकना व नरम पदार्थ ।

३ यश, कीर्ति ।

४ भूमि, पृथ्वी ।

५ युद्ध ।

६ दयालु ।

रू०भे०—मांम, मूंम, मूम ।

मोमजांमौ-सं०पु०—वह कपड़ा जिस पर मोम का रोगन चढ़ा हुआ हो ।

मोमदसाहिमोळियौ-सं०पु०—विशेष रंगों का एक साफा ।

उ०—दूजा दूजै वेस, निरमळ वागै काछवी । मूंछां वळ सव सेस, मोमदसाहिमोळियौ ।—अज्ञात

मोमदिल-वि०—जिसका दिल बहुत कोमल हो, सहृदय, भावुक ।

मोमन-सं०पु० [अ० मोमिन] १ धर्म निष्ठ मुसलमान ।

२ इस्लाम और खुदा पर ईमान लाने वाला ।

३ जुलाहा मुसलमान ।

रू०भे०—मोमिन ।

मोमना-सं०पु०—घोड़ों की जाति ।

उ०—अन्ने कम की तेजह अथाहि । मोमना चेचि कहि तुरंग माहि ।—सू. प्र.

मोमनी-सं०पु०—एक प्रकार का वस्त्र ।

उ०—सू किण भांत रा वागा छै? सिरीसाप भैरव चौतार कसबी महमूदी फूलगार अव-रस सेला बाफता डोरिया मोमनी तनजेब ।—रा. सा. सं.

मोमवत्ती-सं०स्त्री०—मोम नामक पदार्थ की वत्ती जो उजाले के लिये जलाई जाती है ।

रू०भे०—मूं'वती, मूंबत्ती ।

मोमाखी-सं०स्त्री०—मधु मक्खी ।

उ०—काळी चूंदड़ी री टिपकियां पळाक पळाक करती ही । चूंदड़ी ई साव नवो दीसै । आ सोचनै वौ चोर उण पोटळी नै सैंठी पकड़नै जोर सूं हचीड़ दियौ । हचीड़ देतां ई अलेखूं मोमाखियां उण रै दोळी व्हैगी । इण भांत छिड़ियोड़ी माखियां उणनै ठौड़ ठौड़ सूं डंस न्याकियौ ।—फुलवाड़ी

मोमाळ-सं०पु०—मामा का घर, ननिहाल ।

मोमिन—देखो 'मोमन' (रू. भे.)

उ०—सो मोमिन मोम दिल होइ, सांई को पहचाने सोई । जार न करै हरांम न खाइ, सो मोमिन बहिस्त में जाइ ।—दादू बांणी

मोयग—देखो 'मोदक' (रू. भे.)

मोयण—देखो 'मोण' (रू. भे.)

मोयरेदार—देखो 'मायरादार' (रू. भे.)

मोयल-सं०पु०—१ चौहान वंश की एक उप शाखा ।

मोयला-सं०पु०—१ कुम्हारों की एक उपशाखा । (मा. म.)

२ मिट्टी के बर्तन बनाने व बेचने का व्यवसाय करने वाली एक मुसलमान जाति ।

मोयलौ-सं०पु०—(स्त्री० मोयली) १ 'मोयला' जाति का मुसलमान ।

२ मोयला जाति का कुम्हार ।

३ देखो 'महोलौ' (रू. भे.)

मोरंचदोस-सं०पु०—दातार के गुण गाकर आहार लेने पर होने वाला एक दोष । (जैन)

मोर-सं०पु०[सं०मयूर,प्रा०मोर](स्त्री०मोरनी)१ प्रायःचार फुट लंबा एक अत्यन्त सुन्दर पक्षी जिसकी गर्दन लम्बी तथा छाती का रंग बहुत गहरा व चमकीला होता है । सिर पर किलंगी बनी होती है, पंखों पर चंदोवा बना हुआ होता है । (अ. मा., नां. मा., ह. नां. मा.)

उ०—सुंदर सहस फणां करि सांमली, दीपै मूरति दोइ। मेघ घटा नै देखी मोर ज्यूं हरखित मुझ मन होइ।—ध. व. ग्रं.

पर्या०—ग्रहिभख, कळापी, कळाग्रतमंडी, कुंभ, केकी, खग, घणनादानुळ, घणमंड, नीरदनादानुळ, नीळकंठ, पनंगसंघार, भखपंनग, विखकर, प्रखत, प्रसणपनंग, वरही, रथकुमार, वरहण, विरही, व्याळखळ, सारंग, सिखी, सिखंडी, सिहंड, सिखावळी, सुकळापंग, सेनानीरथ।

रू०भे०—मवर, मोरू, मौर, म्हौर।

ग्रल्पा०—मुरलौ, मुरेलौ, मोरड़ौ, मोरलियौ, मोरलौ, मोरियौ, मोरूलौ, मौरियौ, मौरीयौ, मोरचौ।

२ मुसलमानों की एक जाति।

३ रंग विशेष का घोड़ा।

उ०—त्रिघला चक्कवा मोर कूदणा भंपा किसोर। ऐराकी ऊन्हा ग्रलल्ल, भाडजी ग्रारवी भल्ल।—गु. रू. बं.

४ देखो 'मौर' (रू. भे.)

उ०—१ राजा रे मोरां री घाव साजौ हुवौ ने बाळक मोटौ हुवौ।
—रा. वं. वि.

उ०—२ पुचकारतौ बोल्यौ–हौ, भाई हौ। बळदां रा मोर थापल नै नीचै उतरियौ।—फुलवाड़ी

उ०—३ जोधा जोध जूटतां ग्रढार दीह भागा जोर, बूंदी थांन बागा जंगी जैत रा विधांन। जंमी मोर लागा नीसा पथ लागा ग्रहूं जेठी, जोरावर चौथौ जेठी जांणियौ जिहांन।
—ऊमेदसिंघ हाडा री गीत

उ०—४ तिजारी फूल रह्यौ छै। गूंदगरी, रांमगरी, गुळवाड़ री वाड़ां लाग रही छै। पग–पग नाळा–नीझरणा बह रह्या छै। घणा ही ग्रांबा–महुवां रा मोर झुक रह्या छै।
—डाढाळा सूर री वात

५ देखो 'मोहर' (रू. भे.)

६ देखो 'मोरा' (रू. भे.)

उ०—चंद चकोर तणी परि, मांन्यउ तूं मन मोर रे।—स. कु.

मो'र—देखो 'मोहर' (रू. भे.)

उ०—रुपियो–रुपियो दियौ बांमणां, मो'रां चारण भाट। ग्रसी मो'र दी नानगसाही, साखौ दियौ जुड़ाय।
—डूंगजी जवारजी री छावली

मोरउ—देखो 'मोरा' (रू. भे.)

उ०—१ चंद सूरिज साचं कहूं, मोरउ जीवन जांणउ रे। जांणउ नइ ग्रांणउ वर वेगिइं करी ए।—नळ दवदती रास

उ०—२ चतुर ग्रम्रत रस मोरउ तइं चाख्यउ, कीधी कोड़ि विलास।
—स. कु.

मोरख–सं०स्त्री०—१ हल के नीचले भाग में लगने वाला लोहे का एक उपकरण जिसका ग्राकार 'वी' (V) की तरह होता है।

२ देखो 'मूरख' (रू. भे.)

रू०भे०—मोरक, मोरख।

ग्रल्पा०—मोरखा।

मोरखौ—देखो 'मूरख' (ग्रल्पा., रू. भे.)

मोरड़ी–सं०स्त्री०—१ कच्चे मकान के छाजन के नीचे लगने वाली एक लकड़ी।

२ देखो 'मोर' (स्त्री०)(ग्रल्पा., रू. भे.)

उ०—पण म्हारौ ग्राज दिन पलटचोड़ौ है। सोने नै हाथ घाल्यां लो हुवै। मोरड़ी हार गिटै, म्हारी साता खोटी है। जद सोनै री ग्रास क्यूं राखूं!—दसदोख

३ देखो 'मोरी' (ग्रल्पा., रू. भे)

४ देखो 'मेरी, (ग्रल्पा., रू. भे.)

उ०—मोरा साहिब हो स्त्री सीतलनाथ कि, बीनति सुणि एक मोरड़ी।—स. कु.

मोरड़ौ–१ गेहूं की बालों का गुच्छा जो भूनने के लिये बनाया जाता है।

रू०भे०—मोरलौ।

२ देखो 'मोर' (ग्रल्पा., रू. भे.)

उ०–तुम दरसण हो मुझ मन उछरंग कि मेह ग्रागम जिम मोरड़ा।—स. कु.

३ देखो 'मोरा' (ग्रल्पा., रू. भे.)

उ०—तुम नांमइ हो सुख संपति थाय कि, मन वंछित फलइ मोरड़ा।—स. कु.

मोरचंदरका, मोरचंद्रिका–सं०स्त्री० [मयूर चन्द्रिका] मोर की पंख पर होने वाली चंद्राकार बूंटी।

मोरचांव–सं०स्त्री०—हल चला कर पूरा खेत जोत लेने पर उसके सिरों पर हल मोडने से रही हुई खाली भूमि पर विपरीत ग्रर्थात् ग्राडी खींची हुई रेखा (सीता)।

वि०वि०—प्रान्त भेद से इसे जोतरा, जोता व सेवरा भी कहते हैं।

मोरचाबंदी–सं०स्त्री०—युद्ध में शत्रु पर ग्राक्रमण करने या शत्रु के ग्राक्रमण को रोकने के लिये, जमीन में खाई खोद कर या ग्राड लेकर, सुरक्षा के लिये की जाने वाली व्यवस्था।

उ०—च्यारूं पासां मोरचाबंदी कर रह्या छै। इतरै जलाल जासूस मेल खबर मंगाई।—जलालबूबना री बात

मोरचौ–सं०पु० [फा० मोरचाल] १ वह खाई, ग्राड या स्थान जो युद्ध करने वाले सैनिकों की सुरक्षा के लिये बनाया जाता है।

उ०—१ विदा किया जिण वार, जोधकरि वीर जगाया। किलां सिरै कमधजां लड़ण मोरचा लगाया।—सू. प्र.

उ०—२ तरै मुहणोत नैणसी बळरांमजी कनै गया। तरां बळरांम जी फिर नै मोरचौ दिखायौ। नै कहण लागौ ग्रा जायगा छोडीयां वणै नहीं।—नैणसी

उ०—३ सहस उभै खुलियां खग साथै, मुड़िया मेछ दुरंग चै माथै। ग्रनड़ तजै धरती ग्रर ग्राया, मिरजै फिर मोरचा मंडाया।
—रा. रू.

२ किले या गढ़ के चारों ओर खोदी जाने वाली खाई, जिसमें लड़ने के लिये सैनिक छिपे रहते हैं।

उ०—१ कहायो—भाखरसी थे मोरचै दरवाजै एकै पळीतै रहीया तुरक आवै ताहरां समचै—एकण पळीतै लगाया।

—राजा नरसिंघ री वात

उ०—२ दुरवेसै मोरचौ दवायौ, इतरै 'अखो'मघावत आयौ। बळ धरतौ धीरपतौ वेली, हुई जवन दळ घड़ी दुहेली।—रा. रू.

३ वह गढ़ा जिसमें बैठकर शत्रु पर गोली चलाते हैं।

४ ऐसा स्थान जहां अपनी स्थिति को ठीक बनाये रखते हुए निर्भय होकर रहा जाता हो।

उ०—भागवत कथा भूतावळी, हिरण दरस हींडोरचा। परवीण होय जांणै पुरस, मालजादां रा मोरचा।—ऊ. का.

५ मुकाबिला, सामना।

उ०—आज कालै रा ब्याह-सावा, एक अयोग आफत रौ मोरचौ है।

—दसदोख

६ मुकाबले में खड़े होने का भाव।

७ लोहे का जंग, जो नमी के कारण रासायनिक विकार से उत्पन्न होता है।

८ दर्पण का मैल।

रू०भे०—मुरची, मोरछौ मोरचौ।

मोरछड़, मोरछल—सं०पु०—वह लंबा चंवर जो मोर पंख बांध कर बनाया जाता है। चंवर।

उ०—१ लारै खवासी मैं मुखनस बैठो मोरछड़ करै है।—द. दा.

उ०—२ तद खटीली उडी जठै राज दरबार कियौ बैठी छै। अर नायण रौ मांटी मोरछड़ करै छै।—चौबोली

रू०भे०—मुरछळ, मोरसल।

मोरछौ—देखो 'मोरचौ' (रू. भे.)

उ०—१ तिण पछै गोळ रौ लोक भी मोरछा मांडि तुपक तीरां री वेभौ वणाइ पहर दोइ सूधो लड़ियौ।—वं. भा.

उ०—२ पड़ै केई किवाड़ा केई नीसरी वाहर पड़ै, सूर जमहर करै पड़ै साथां। पड़ै रिण वेहरी मुकंद वाला सपोह, मोरछां, मोरछां पड़ै माथा।—उदैभांण हरभांण गौड री गीत

मोरट—सं०स्त्री० [सं०] १ गन्ने की जड़।

२ एक प्रकार की घास।

मोरण—सं०पु०—बाजरी के कच्चे या आग में सेके हुए सिट्टों को मसल कर चबाने के लिए निकाले हुए दाने। (बीकानेर)

मोरणा—सं०स्त्री०—सारंगी मे लगने वाली वे लम्बी खूंटिया जो दो दांयी ओर तथा दो बांयी ओर लगी रहती हैं।

मोरणी—सं०स्त्री०—१ सारंगी में लगने वाली खूंटी।

वि०वि०—सारंगी की नली की दाहिनी ओर १६ मोरणियां होती हैं, माथे पर दाहिनी ओर दो तथा बांई ओर केवल एक मोरणी होती है।

२ बाजरी के सेके हुए सिट्टे पर से दाने उतारने के लिए सिट्टे के डंडे की बनाई हुइ सूंतनी जिससे दबा कर उक्त दाने निकाले जाते हैं।

रू०भे०—मोरनी,

३ देखो 'मोर' (स्त्री०)

मोरणो—सं०पु०—एक प्रकार सरकारी कर।

रू०भे०—मोरांणो,

मोरणी, मोरबौ—१ देखो 'मोरणौ, मोरबौ' (रू. भे.)

उ०—घणां जु आंब मोरचां छै। सु एही तोरण। कमळ की जु कळी नीकळी छै। सोई कळस हुआ।—वेलि टी.

२ देखो 'मोड़णी, मोड़बौ' (रू. भे.)

उ०—विनीत नीत वोन जे अनीतं बाचते नहीं। महा समूह मूंह देखि मूंह मोरते नहीं।—ऊ. का.

मोरणहार, हारौ (हारी), मोरणियो—वि०।

मोरिओड़ौ, मोरियोड़ौ, मोरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

मोरीजणो, मोरीजबौ—भाव वा०।

मोरत—देखो 'महुरत' (रू. भे.)

उ०—१ कर क्रपांण मोरत किसूं, आखै सूर अवीह। रण मर स्वरग सिधावणौ, सु तौ सुरंगो दीह।—बां. दा.

मोरधज, मोरधुज, मोरधूज, मोरधूजी, मोरध्वज—सं०पु० [सं० मयूर-ध्वज] १ रत्न नगर का एक पौराणिक राजा, जिसने ब्राह्मण वेष में अपने द्वार पर आए श्री कृष्ण व अर्जुन को अपना, मतान्तर से अपने पुत्र का शरीर आरे से चिरवा कर दान किया।

उ०—१ धूं कंवार त्रप मोरधुज, अंबरीक हरिचंद। पद सेवा परि पंडवां, की नव कोट नरिंद।—रा. रू.

उ०—२ जिण भूखी आत्मा हित आपरे बेटा नूं चीर सिंह नूं खुवायौ सो मोरध्वज अक्षय पुण्य यश पायौ।

—साह रांमदत्त री वारता

उ०—३ मोरधूजी महाराज था जन सचा हरका, करवत हत्थां वहर के दिय सीस कंवरका।—दुरगादत्त वारहठ

२ जोधपुर के किले का नाम।

मोरनदेवी—सं०स्त्री०—नमक बनाने वाली खारवाल जाति की इष्ट देवी। (मा. म.)

मोरनाच—सं०पु०—नृत्य का एक भेद विशेष।

मोरनी—१ देखो 'मोरणी' (रू. भे.)

उ०—हरीया जंत्री जंत्र विन, वाजै तार अखंड। विन तूंबा विना मोरनी, घौर पड़ै ब्रहमंड।—स्री हरिरांमदासजी महाराज

२ देखो 'मोर' (स्त्री०)

मोरपंखी—सं०स्त्री०—१ मोर के पंख की तरह बनी हुई व रंगी हुई नाव।

२ मलखंभ की एक कसरत।

वि०—१ मोर के पंख का बना हुआ।

२ मोर के पंख के समान।

मोरमींडली, मोरमींडो, मोरमींढी—१ स्त्रियों के सिर का एक आभूषण।

उ०—अर जड़ाउ सुरलिया-पत्तां वाळी मोरमींढ्या —अरसगांठ

२ स्त्रियों के सिर के बालों की गुथी हुई लटिका।

मोरमुकट मोरमुकुट, मोरमुगट-सं०पु० [सं० मयूर+मुकुट] मोर की पखों का बना मुकुट, ताज।

उ०—१ मोरमुकट वन माळ माळ तुलसी नव मंजर। रुचि कुंडळ कळ रतन, तिलक मंजुल पीतावर।—रा. रू.

उ०—२ मोरमुकट पीतांवर सोहै ओढै लाल दुसाला रे। मीरां के प्रभु गिरधर नागर, भगतन के प्रति पाला रे।—मीरां

उ०—३ मोरमुकुट पीतांवर सोहै गले वैजंती माळा। मीरां के प्रभु गिरधर नागर ठाकुर वंसीवाळा।—मीरां

उ०—४ संख चक्र गदा पदम धारि। वैजयंती माळ मोरमुगट कुंडळ विसाळ मदन मोहन कमळ लोचन स्यामं सुंदर ठाकुर विराज मांन हुआ छै।—वचनिका

उ०—५ मोरमुगट राजै कर मुरली। तरह भांमणं तास तणि।
—ह नां. मा.

मोररथ-सं०पु० [सं० मयूर रथ] स्वामी कार्त्तिकेय।
(ह. नां. मा , नां. मा.)

मोरलियौ—देखो 'मोर' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—हां रे रुम झुम रुम झुम नूपुर वाजै, हां रे मारो मन मोह्यौ मोरलियौ रे।—मीरां

मोरली—देखो 'मुरली' (रू. भे.)

मोरलौ-वि०—१ देखो 'मोर' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—मोरला गोरी घणा वरज्या ऐ न जाय वारी घणा वारी ओ हंजा। आ रुत वोलै ऐ मोरला सुहावणा जी राज।—लो. गी.

५ देखो 'मोरड़ौ' (रू. भे.)

मोरसल—देखो 'मोरछड़' (रू. भे.)

मोरसिका, मोरसिखा-सं०स्त्री० [सं० मयूर+शिखा] १ मोर की चोटी। (उ. र.)

२ एक जड़ी विशेष, जिसकी पत्तियां मोर की किलंगी के आकार की होती हैं। (उ. र.)

मोरसिरी—देखो 'वोलसरी' (रू. भे.)

मोरा-सर्व०—मेरा।

उ०—आलम मोरा औगुणां, साहिब तूझ गुणांह।—ह. र.

रू०भे०—मोर, मोरउ, मोरड़ौ।

मोराइ, मोराई—देखो 'मुराई' (रू. भे.)

मोराफीन-सं०पु०—एक प्रकार का वस्त्र।

उ०—मोराफीन री लैंघौ, गुलाबी चीर अर कसूमल चोळी री सोणौ पैरांन।—दसदोख

मोरादे, मोरादेवी—देखो 'मरुदेवी' (रू. भे.)

उ०—१ मोरादे भारया पुत्र रिखभदेव। रिखभ देव भारया-२ सुनदा १ सुमंगळा २।—रा० वंसावली

उ०—२ एहवी स्त्री ऋखभ तणी माता। मोरादेवी सुखे सुखे सिवपुर पहुंती।—जयवांणी

मोरार, मोरारी—देखो 'मुरारी' (रू. भे)

उ०—१ पांडव दूत मोरार —धरम पत्र

उ०—२ गायां ग्वाळौ कांनौ काळौ वंसी वाळौ वे हारी। झाझां झाझौ प्रिथी प्रांझौ मोटौ आंझौ मोरारी।—पि. प्र.

मोरिय—१ देखो 'मौरध' (रू. भे.)

२ देखो 'मोरी' (रू. भे.)

मोरियौ-सं०पु०—गाय या भैंस के बच्चे के मृत शरीर का खोल, जिसमें मसाला भर कर रक्खा जाता है।

२ एक मारवाड़ी लोक गीत जो पुत्री की विदाई के समय गाया जाता है।

रू०भे०—मूरियौ, मोरचौ।

३ देखो 'मोर' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ मोरिया वागां-वागां जायनै, काची कुळियां लायी रै, घन मोरिया —लो गी.

उ०—२ सोनल री हेलौ सुणतां ई नाडी रा सगळा मोरिया कुरळावण लागा।—फुलवाड़ी

मोरींगौ-सं०पु०—दीवार में लगा हुआ या जमीन में रुपा हुआ वह छेददार पत्थर, जिसमें कपड़े सुखाने की रस्सी या पशुओं को बांधा जाता है।

मोरी-सं०स्त्री०—१ गंदे पानी के निकास की छोटी नाली।

२ तालाब या बांध के पानी के निकास का तंग द्वार, नहर, छोटा नाला।

उ०—१ सहर मांहै पाखती पांणी घणौ, वडौ ताळाब सूरसागर जिण री मोरी छूटे छै, जिण सूं वाग वाडी घणा पीवै।—नैणसी

उ०—२ मिनखां नूं खेती इमारत नूं खपावै कारज चलावै ने हर कारण में ताळाब बांध मोरी राखणे कुवा करणे में इतरी मदत घोरा वंधावण में करै।—नी. प्र.

३ छोटा द्वार, खिड़की।

४ वंदूक का मुख।

५ एक राजपूत वंश जिसे मौर्य भी कहते हैं।

उ०—१ कोट विणायो मोरियां, साह हमाऊं नंद। तोड़ करै नहि टूटही, वीर मदत जग वंद।—वां. दा.

उ०—२ राजकुली ३६, सूरयवंस सोमवंस यादववंस कदंब परमार इख्वाक चाहुमांन चालुक्य मोरी सेलार सैंधव विदक।—व. स.

वि०—खाली, रिक्त।

सर्व०—मेरी।

उ०—१ जोगी कहइ सुणि मोरी माई। दिन तीसरई आवइ घरी राय।—वी. दे.

उ०—२ पंडव कहइ अम्है पापिया, किम छूटां मोरी मायोजी। कहइ कुंती सेत्रुंज तणी, जात्रा कियां पाप जायी जी। - स. कु.

मो'री—सं०स्त्री०—ऊंट की नकेल के बांधी जाने वाली रस्सी।

उ०—१ विये री सुसरौ घरसूं नीकल्यौ, ऊंटरी मोरी झाली अर कैयौ—अबार ही कांई जावौ? त्यौहार रै दिन घर छोडणौ आछौ कोनी।—दसदोख

उ०—२ रांम नांव रो गेढौ करियौ,गेढो मोटो भारी। मोरी सार समझ री दीवी, यूं कर चलै बवारी।—फुलवाड़ी

रू०भे०—महुरी, मुरी, मुहरि, मुहरी, मूरी,मोरिय, मौरी, मोहरि, मोहरी, मौहरि, मौहरी, म्होरी, म्हौरी।

अल्पा०—मोरड़ी।

मोरीर—देखो 'मुहरिर' (रू. भे.)

मोरीसालौ—सं०पु० [अ० मूरिसे आ'ला] गोद लेने का एक नियम, जिसके अन्तर्गत कोई जागीरदार, जागीर पाने वाले के वंशज को ही गोद ले सकता था, अन्यथा जागीर जब्त हो जाती थी।

(भूत पूर्व जोधपुर राज्य)

मोरूं, मोरू—देखो मोरौ' (रू. भे.)

उ०—१ वीछड़ियां मन माहरूं रे, दुख धरइ दिन दिन्न। के तूं जांणइ केवली रे, के वलि मोरूं मन्न।—स. कु.

उ०—२ तरू तरू त्रूटइ पंन्नडां, गिरि गिरि त्रूटइ वाहु। फागुण कागुण ताहरू, नींगमिउ मोरू नाह।—मा. कां. प्र.

२ देखो 'मोरौ' (रू. भे.)

मोरूड़ौ—सं०पु०—एक लोक गीत जो लड़कियों द्वारा गाया जाता है।

मोरूलौ—देखो 'मोर' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—आ रितु वोलै ऐ मोरूला सुहावणा जी राज।—लो. गी.

मोरूं—१ देखो 'मोर' (रू. भे.)

उ०—मुनमथ का इंदका मुनेस्वरूं का मन मोहै। फलफूलूं के भार भरी अढ़ार भार। ठांम ठांम के ऊपर मोरूं का तंडव भौंरूं का गुंजार।—सू प्र.

२ देखो 'मोरौ' (रू. भे.)

उ०—मोरूं मन अस्टापद सुं मोहयुं, फटित रतन अभिरांम मेरे लाल।—स. कु.

मोरूसो—वि०—वंशानुगत, परम्परागत, बाप-दादों से प्राप्त। पैतृक

मोरेचां—सं०पु०—चौहानवंश की एक शाखा, सांचोरा चौहानों की शाखा।

मोरेल—सं०स्त्री०—बनास नदी की एक सहायक नदी जो जयपुर क्षेत्र में बहती है।

मोरेवौ—सं० पु०—गेहुंओं की फसल के साथ होने वाला एक घास विशेष।

मो'रौ—सं०पु० [सं० मुकराकृति] १ ऊंट, बैल, घोड़े आदि के मुंह पर, सुंदरता के लिये लगायी जाने वाल एक जाली विशेष।

उ०—राजा एक नांमी ।ळका काछी ऊंट माथै सजाई कराई—पीतळियौ पिलांण, लूंबाळी गोरवंद, रेसम रौ मो'रौ, सोना रा गिरवांण, रूपै रा पागड़ा।—फुलवाड़ी

२ हाथी के मुंह पर लगाया जाने वाला एक उपकरण।

३ बैल के मुंह पर शोभा बढ़ाने के लिए लगाया जाने वाला एक सूत, जट या चमड़े का उपकरण।

४ आकृति या चेहरा।

५ घास-फूस या पतली लकड़ियों का एक पुवाल जिसको जलाकर किसी दूसरी चीज के आग लगाई जाती है।

क्रि०प्र०—देणौ, मेलणौ, लगाणौ।

६ अग्नि को शीघ्र प्रज्वल्लित करने के लिए उस पर डाली जाने वाली महीन कटीली वस्तुएं।

७ आग, अग्नि।

उ०—चुगल सुरंदर चाव री टहल नारी घर घूंटी। मोरौ मायौ मेल फेर हिरदे री फूटी।—ऊ. का.

८ पशुओं की क्रोधावस्था।

उ०—राजा मांनसिंघजी रा उमराव रै हाथी सूंड सूं पकड़ घोड़ा सूं उतार मोरौ कर दांतां में पोयोड़ी कटारी वाही। हाथी रै कुंभा थल लागी, जोगणीदास मुवौ।—बां. दा. ख्यात

[फा० मुह्र] ९ एक प्रकार का पत्थर विशेष, जिससे सांप का विष उतारा जाता है।

१० एक प्रकार का मणिया, जिसको 'खोळ' (पानी में डुबो) कर पिलाने से बच्चों के गृह दोष मिटते हैं।

११ शतरंज की गोटी।

१२ सेना की अगली पंक्ति।

सर्व०—मेरा।

उ०—१ मन हूं पवित्र करिस हरि मोरौ। टीकम नांम धरे उर तोरौ।—ह. र.

उ०—२ मोरौ मन मगन थयउ। हां रे देखि देखि भाव।

—वि. कु.

रू०भे०—मुहरौ, मूं'रौ, मूरौ, मोरु, मोरु, मोरूं, मोहरौ, मौरौ, मोहरु, मौहरौ, म्होरौ, म्हौरौ।

मोरचौ—१ देखो 'मोर' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—सगळा जणा थोड़ी ताळ तांई उण नाचता मोरचा सांम्ही एकटक देखता रह्या।—फुलवाड़ी

२ देखो 'मोरियौ' (रू. भे.)

मोळ—देखो 'मौळ' (रू. भे.)

उ०—१ पुटियां टोळ पंचोळ, चोळ चंगै चित वाळा। झांमर झोळ तमोळ, मोळ मन मकड़ी जाळां।—दसदेव

उ०—२ ऊपर सूं हेजी-मोगर अर प्याज पापड़ां रा साग ल्हसण रै लाल झोल में फलकां री मोळ मेटण जीमें हैं।—दसदोख

मोल—सं०पु० [सं० मूल्य, प्रा० मुल्ल] १ कीमत, मूल्य।

उ०—१ चंद वदन गुनखांन चतुर चित्त। पर हर अपनी प्यारी।

वेस्या संग मोल विन वालम, विकगो बडो बिकारी ।—ऊ. का.

उ०—२ वरचि दीप वेवड़ा कळी केवड़ा कनोती । लंकी धजर अलोल, वजरमणि मोल विचोती ।—मे. म.

उ०—३ ताखो आखो लावयो. कांमण प्यारा कंत । मोल मुहगो मनि समो, सोक्यूं रहै निरखंत ।— व. स.

उ०—४ चाहे मिनखां चूतियां नहं निरवाहे बोल । गुंजा सूं घटती घणी, मावड़ियां रो मोल ।—बां. दा.

उ०—५ लक्खू विचाळै ई बोली–गिगन रा सूरज अर उणारा उजास री कोई मोल व्है तो म्हारी देह री मोल व्है ।—फुलवाड़ी

२ भाव, दर,

उ०—१ खड़णी जाभै भार खित, वापूकारै बोल । नहीं उचित करणी नरां, घवळा हुंदो मोल ।—वां. दा.

उ०—२ पिंडत कह्यो–सेठां, किणी चीज री मोल तो देवणिया री सरधा परवांण । म्हारै कूड़ नीं बोलण री आखड़ी । रावळी इंछा व्है सो दे दिरावो ।—फुलवाड़ी

उ०—३ या रस को नहीं तोल न मोल, पीयगा उर अंतर खोल ।
—स्त्री हरिरांमदासजी महाराज

३ क्रयण, खरीद ।

उ०—१ खबरदार नर जवर नूं, वसत मंगाड़े मोल । विगड़ै उण दिन वांणियो, तोलण हूंता तोल ।—वां. दा.

उ०—२ अर जे पछै ई थनै पतो नी पड़ियो तो म्हनै किसो मोल लावणो है । म्हैं थनै जांणूं जकी वात वताय देवूंला ।—फुलवाड़ी

४ खरीद के वदले दी जाने वाली रकम, दाम, रुपये ।

उ०—पती जुद्ध में दुसमणां री फौजा रा हाथी मार नै तो मोतियां रा ढिगला दिया है जिण रा ओत वा पोत चीडां ने हाथियां रै दांता रा चूड़ा मोल भांगण रो कांम नहीं ।—वी. स. टी.

५ महत्व, विशेषता, कद्र ।

उ०—१ हरीया मिलै अयारखु, ताहि घटायो मोल । हरि हीरां को क्या घट्यो, घट्यो स वाको बोल ।
—स्री हरिरांमदासजी महाराज

उ०—२ धन वधियां म्हारी जांण में मिनख री मोल घटै ।
—फुलवाड़ी

उ०—३ डोकरी लूखा सुर में बोली–पण म्हारी वेटी राजाजी सूं प्रीत नीं करणी चावै, पछै थारै अंदाता री मरजी रो कांई मोल ।
—फुलवाड़ी

मोगलत—देखो 'मोहलत' (रू. भे.)

उ०—इण रंग महल में आयां म्हारा मन में एक नवो ई ग्यांन सांचरयो । फगत तीन दिन री मोलगत चावूं, थें बोला–बोला देखता रैजो ।—फुलवाड़ी

मोळणो, मोळबो–क्रि०स०—१ काटना, कतरना ।

उ०—१ मूळ मोळता मिनख, मिरड़िया घणां घुरावै । हळ वावतड़ो वेर, फोगड़ां बीज तुपावै ।—दसदेव

उ०—२ दायण सावळ सुथराई सूं आंवळ कानी नाळो सूंत्यो । पाचणा सूं नाळो मोळ डोरा सूं वांध दियो ।—फुलवाड़ी

२ उतारना, हटाना ।

मोळणहार, हारो (हारी), मोळणियो—वि० ।

मोळिओड़ो, मोळियोड़ो, मोळघोड़ो भू० का० कृ० ।

मोळीजणो, मोळीजवो—कर्म वा० ।

मौळणो, मोळबो—रू० भे० ।

मोलणो मोलवो—देखो 'मोलाणो, मोलावो'

मोलणहार, हारो (हारी), मोलणियो—वि० ।

मोलिओड़ो, मोलियोड़ो, मोल्योड़ो—भू० का० कृ० ।

मोलीजणो, मोलीजबो—कर्म वा० ।

मोलत - देखो 'मोहलत' (रू भे.)

मोलवी मोलवी—देखो 'मौलवी' (रू. भे.)

मोलसरी, मोलसिरी, मोलस्री—देखो 'बोलसिरी' (रू. भे)

मोळाई—देखो 'मोळ'

मोलाई–सं०स्त्री०—किसी वस्तु का मूल्य पूछने की क्रिया या भाव ।

मोलाकुमार–सं०पु०—मिट्टी के वर्तनों का कार्य करने वाले वे मुसलमान कुम्हार जिनके, पूर्वज हिन्दू थे ।

मोळाटो–सं०पु०—१ चोर व डाकुओं द्वारा अपना मुंह छुपाने के लिये मुंह पर लगाया जाने वाला वस्त्र ।

२ सिर पर बोझा उठाते समय सिर पर रक्खी जाने वाली किसी वस्त्र की गोल गद्दी ।

रू०भे०—मोळावटो,

मोळाणो, मोळावो–क्रि०स० ['मोलणो' क्रि० का प्रे० रू०] १ कटवाना, कतरवाना ।

२ 'मोळ' आना या होना ।

मोळाणहार हारो (हारी), मोळाणियो—वि० ।

मोळायोड़ो—भू० का० कृ० ।

मोळाईजणो, मोळाईजबो—कर्म वा० ।

मोलाणो, मोलावो–क्रि०स०—१ खरीदने योग्य वस्तु या पशु–धन का भाव, मूल्य या दर पूछना ।

२ खरीदना, मोल लेना । क्रय करना ।

उ०—१ बारठजी उणनै फटकारता कैवण लागा भैंस तो मोलाई कोनीं, उण पैलाई थारी कैवूं जकी रो मार मार नै पोखाळो कर दियो ।—फुलवाड़ी

उ०—२ पारकी वेटी नै जिनावर री जूण जांण'र लालच रै बजार में मोलाई करणी है ।—दसदोख

मोलाणहार, हारो(हारी), मोलाणियो—वि० ।

मोलायोड़ो—भू० का० कृ० ।

मोलाईजणो, मोलाईजवो—कर्म वा० ।

मुलाणो, मुलाबो, मोलणो, मोलबो, मोलावणो, मोलावबो—रू.भे. ।

मोळायोड़ो–भू०का०कृ०—१ कटवाया हुआ, कतरवाया हुआ ।

२ 'मौळ' आया हुआ, मौळ' हुवा हुआ ।
(स्त्री० मोळायोड़ी)

मोलायोड़ौ—भू०का०कृ०—१ भाव—ताव पूछा हुआ ।
२ खरीदा हुआ, क्रय किया हुआ ।
(स्त्री० मोलायोड़ी)

मोळावटौ—देखो 'मोळाटौ' (रू. भे.)
उ०—अर राणी आदमी १०,००० दस हजार लियां खडग दुधारौ पकडीयौ लोकां नूं दिलासा करै छै । आप थिरमा दो **मोळावटौ** मारीयौ छै ।—राजा नरसिंघ री वात

मोलावणो, मोलावबौ—देखो 'मोलाणौ, मोलावौ' (रू. भे.)
उ०—गाडी **मोलावती** वगत वळद जुतियोड़ा हा के नीं । माथा में धोळा आया है, थोड़ौ रांम नै माथै राखनै साची वात केजै ।
—फुलवाड़ी

उ०—२ भैंस्यां **मोलावण** री वात सुणी जद भांणजी मासी नै ढाब बिचाळै वोली—बाजण नै तो म्हैं महारांणी बाजूं पण म्हारै गोडै राती छदांम ई कोनीं ।—फुलवाड़ी
उ०—३ तठा उपरांति करि नै सराफ बजाज जोंहरी दलाल भांति भांति रा वाव भांति भांति रा पदारथ भांति भांति री अमोलक वसतां सूं **मोलावीजै** छै ।—रा. सा. सं.
मोलावण हार, हारौ(हारी), मोलावणियौ—वि० ।
मोलाविग्रोड़ौ, मोलावियोड़ौ, मोलाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
मोलावीजणौ, मोलावीजवौ—कर्म वा० ।

मोलि—देखो 'मोल' (रू. भे.)
उ०—कौडी बदळै लाल कूं, देत न देख्या **मोलि** । हरीया पेलै भाग सूं, खालिक द्यै दिल खोलि ।—श्री हरिरांमदासजी महाराज

मोळिया मंगळ—देखो 'मौळिया मंगळ' (रू. भे.)

मोळियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ काटा हुआ, कतरा हुआ. २ मौळ आया हुआ ।
(स्त्री० मोळियोड़ी)

मोलियोड़ौ—देखो 'मोलायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० मोलियोड़ी)

मोळियौ—सं०पु०—देखो 'मौळियौ' (रू. भे.)
उ०—हवेली सूं कड़ाजूड़ होयनै आया ई हा । कड़प दियोडो सतरंगी **मोळियौ** । लांबौ छिणगौ । माथै किलंगी ज्यूं छोगौ । एकोएक सस्तर पाती ।—फुलवाड़ी

मोलियौ—१ पुरुषार्थ हींन ऐसा व्यक्ति जिसमें औरतों के लक्षण आगए हों । जनखा ।
उ०—मावडिया अंग **मोलियां**, नाजुक अंग निराट । गुपत रहै ऊमर गमै, खाय न निजबल खाट ।—बां. दा.)
२ अशक्त, कमजोर, दुर्बल ।
३ वह भागीदार व्यक्ति जो अपने भाग के कार्य में अपने वैल व हल लाकर खेती करता है ।
४ किराये किया हुआ हल ।
५ काले मुंह का वंदर ।
६ जोरू का गुलाम ।
रू०भे०—मोलीओ, मोलीयौ, मोल्यौ,मोल्हियौ, मोल्हीयौ ।
७ देखो 'मोळियौ' (रू. भे.)
उ०—उत्तरा कूंयर वंधव वोलइ, वीर कोइ तुझ आज न तोलइ । आणिजे सुहड मौलि **मोलिया**, पउतीयां जिम हुइ पटउलीयां ।
—सालिसूरि

मोळी—१ देखो 'मौली' (रू. भे.)
उ०—१ मिठाई मगदर माटा काठा दाटा दे दे' र वूसी **मोळी** सूं बांध्या ।—दसदोख
उ०—२ माथा पर तो **मोळी** और म्हनै तवू में आवण दौ ।
—रेवतसिंह भाटी
२ देखो 'मोळौ, (स्त्री.)

मोली—वि०स्त्री०—१ दुर्बल, अशक्त ।
२ जिसकी कीमत हो, मूल्य वाला ।
३ मूल्यवान, कीमती ।
उ०—घण मोला घोड़ाह, घण **मोली** केइ घोड़ियां । थुयकारिय थोडाह, जगमें तो जोडा जसा ।—ऊ. का.
सं०स्त्री० [सं०मौलिः] १ मादा ऊंट ।
२ सिर की चोटी । बालों का जूड़ा ।
३ जटाजूट ।
४ मस्तक ।
५ मुकुट ।
६ पगड़ी ।
७ प्रधान व्यक्ति ।
रू०भे०—मौलि,मौली ।

मोळिओ—सं०पु०—१ एक प्रकार का वस्त्र ।
उ० हवइ राजा परिवार प्रतिवस्त्र आपइ, गुडीआ सणीआं कस्तूरीआं प्रतापीआं कुसंभीआं **मोलीआं** मांडवीआं मीणीआं वाटलीआं जलोदरीआं ।—व. स.
२ देखो 'मौळियौ' (रू. भे.)
३ देखो 'मोलियौ' (रू. भे.)

मोलीमीयौ—सं०पु०—लकड़ी की वनी वस्तुओं की धार या किनारों को सुन्दर वनाने का एक औजार ।
रू०भे०—मोळीयौ

मोळीयौ—१ देखो 'मोळियौ' (रू. भे.)
२ देखो 'मोलीमीयौ' (रू. भे.)

मोलीयौ—देखो 'मोलियौ' (रू भे.)

मोळू—देखो 'मेळूजौ'

मोळौ—देखो 'मौळौ' (रू. भे.)
उ०—१ गोगौ मोगौ हुय गोरधां गिरियौ, तेजो **मोळौ** पड़ि नैजो लै तिरियौ ।—ऊ. का.

उ०—२ इणी भांत इण नगर गूजरी रै आयां पैली सगळी जूंनी ओपमावां पळापळ चिमकती, पण गुजरी रै परगट व्हैता ई सगळी ओपमावां मोळी पड़गी।—फुलवाड़ी

उ०—२ मेंदी देऊं मुळक मेल सूं करदे मोळी। दीवाळी रै दिवस हिया में ऊठै होळी।—ऊ. का.

उ०—४ रोजीना ऊगता सूरज री गुलावी रंग, उणरी मोळी मीट में वींदणी रै गोरा उणियारा री भरम पैदा करतौ।—फुलवाड़ी

उ०—५ कंवरांणी रै मून रैणा सूं कंवर री करड़ावण कीं मोळी पड़ी।—फुलवाड़ी

उ०—६ सेठ मोळा पड़ग्या। कीं जवाब नीं दियौ। जांणता के राजाजी री मूंछ्यां रौ बाळ ओ नाईड़ौ कदै भिमरग्यौ तौ भूंडी वितावैला।—फुलवाड़ी

उ०—७ ठाकरसा मोळा पड़नै कह्यौ-अवै तौ भावै ई मन में रैगी। थूं मोसा देवै जित्ता ई थनै छाजै।—फुलवाड़ी

(स्त्री० मोळी)

मोलौ-वि०—१ कीमती, मूल्यवान।

उ०—घणा घणा मोला घोड़ा, पाइगहां पाटी होडा। आगला घहै अलंब, अंजुली पियै ज अंब।—गु. रू. बं.

२ जिसकी कोई कीमत या मूल्य हो।

उ०—तेरे कारन सब जग त्याग्यौ, अब मोहे कर मों लो रे। मीरां के प्रभु गिरधर नागर, चेरी भई विन मोलौ रे।—मीरां

३ देखो 'मोलियौ' (रू. भे.)

उ०—भूसर भार न झल्लही, गोघां गावड़ियांह। इम जस भार न ऊपड़ै, मोला मावडियांह।—वां. दा.

मोल्यौ—देखो 'मोलियौ' (रू. भे.)

उ०—१ क्यूं रे मोल्या उंद्यावड़ा वूजवाळौ कुण छै रे तूं। मांकी खुसी होगी जेंडे जावांगा हमेस।—ऊ. का.

उ०—२ तड़की देव वोल्या रे, चुपको रहै मोल्या रे। नर-भव ते पायौ रे, पिण आले गमायौ रे।—जयवांणी

उ०—३ खांड अर घी मांगतां सरम को आवै नीं। घर में कमावू तौ थारै जेंड़ो मोल्यौ भरतार है।—फुलवाड़ी

उ०—४ आ एकली भवांनी सगळां नै भू पाय दियौ अर थें सगळा ई डाढी-मूछाळा मोट्यार उण मोल्या कंवर रै पगां रगड़ रगड़ नै टाकियां पाड़ली।—फुलवाड़ी

मोल्हियौ, मोल्हीयौ—देखो 'मोलियौ' (रू. भे.)

उ०—हिवै मोटीयारां में वेठां मोटीयार मसकरी करै, रे तै वैर गमाई मोल्हीया लांनत रे तोनूं।

—कांवळो जोईयो नै तीडी खरळ री वात

मोवण—१ देखो 'मोण' (रू. भे.)

उ०—१ दूध में ओसणियोड़ो अर घी रै मोवण री फरफरौ वाटियौ। माथै माखण अर निवात लागोड़ी। कागला री भाग जागियौ।—फुलवाड़ी

उ०—२ परात में घी री मोवण देयनै आटौ गूंदियौ।—फुलवाड़ी

२ देखो 'मोहन' (रू. भे.)

मोवणी—देखो 'मोहन' (रू. भे.)

उ०—१ आज पेमजी रै माथै सूं मुरळी दलाल री मांड्योड़ी मूली हाळी मोवणी सीवी साफ हुवै, नीकळै है।—दसदोख

उ०—२ मधुर मोवणी राग, रीझवै आभौ राजा। झीणी छांटां भिलै, सीलवै साळू गाजा।—दसदेव

मोवणौ-वि०—मोहित करने वाला, आकर्षित करने वाला, लुभाने वाला, सुन्दर।

उ०—पण ओ माठौ साचेलौ माठै-रै वदळै नरम, फूटरौ ओर देखणं वाळां-रौ मन मोवणौ हो। ओ माठौ माठौ नहीं, पण माठै मांयली सुकुमार अहिल्या ही।—वरसगांठ

मोवणौ, मोववौ—देखो 'मोहणौ, मोहवौ' (रू. भे.)

उ०—जोवना छांक मै डोढी निजर जोवै छै। चंद मुखी हीरां चकोर सखी मोवै छै। सुंदर अलवेली हीरां अति रूप छाजै छै।

—वगसीरांम प्रोहित री वात

मोवणहार, हारौ (हारी), मोवणियौ—वि०।

मोविओड़ौ, मोवियोड़ौ, मोव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

मोवीजणौ, मोवीजवौ—कर्म वा०।

मोवन—देखो 'मोहन' (रू. भे.)

उ०—१ म्हारी वैनड़ली रा चमक्या छै चीर। भतीजां रा मोवन मोळिया जी।—लो. गी.

उ०—२ राजा री कंवर नित-हमेस उण मारग ई सैर-सपाटां वास्तै घोड़ै चढ़ियौ निकळतौ। गूजरियां री मोवन भूलरौ उणरा मन माथै नित नवा चित्रांम कोरतौ।—फुलवाड़ी

मोवनकंठी-सं०स्त्री०—स्त्रियों के गले का हार विशेष।

मोवनी—देखो 'मोहनी' (रू. भे.)

उ०—रूप री असली देवता तौ प्रगट नीं व्हैगी। पैली निजर रै समचै ई वादळ री मोवनी मूरत उणरा हिवड़ा में कुरगी।

—फुलवाड़ी

मोवनीइग्यारस मोवनीएकादशी-सं०स्त्री०—वैशाख मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी।

मोवारणी—देखो 'मारणी' (रू० भे)

मोवियोड़ौ—देखो 'मोहियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० मोवियोडी)

मोस-सं० पु०[सं० मोष] १ चोर, तस्कर, उचक्का। (डि. को.)

२ चोरी का माल।

३ चोरी, लूट-खसोट।

४ वध, हत्या।

५ झूठ मिथ्या।

उ०—१ सुद्ध क्रिया मारग अभ्यासता, तजता माया रे मोस। रोस धरइ नही केहस्युं, मुनीवरुं सुंदरु चित्तइं नहीं सोस —कवियण

उ०—२ आस्रव कसाय दुर्वचना, वलि कलह अभ्याख्यांनीजी। रति अरति पेसुन निंदा, माया मोस मिथ्या ग्यानी जी।—स. कु.

६ दंड, सजा।

७ ताना, व्यंग।

उ०—सात खेत्रै वित्त वावरै जी, छावरै मोस नै मरम। सीतल चंद्रमा सारिखौ जी, निज प्रजा ऊपरि नरम।—वि. कु.

मोसड़—देखो 'मसोड़' (रू. भे.)

उ०—घूड़ छिलकरो घड़ी धरां ला ताती देवौ। मोसड़ मांय विछाय, सुवांती सूता सेवौ।—दसदेव

मोसणौ, मोसवौ—क्रि० स०—१ झूठा दोषारोपण करना, कलंक लगाना।

उ०—चाडी खावी चउतरइ, कीधउ थांपण मोसउ। निंदा कीधी पारकी, रति अरति निसंक।—स. कु.

२ व्यंग करना, ताना मारना।

३ चोरी करना, लूटना।

उ०—थळ खोसै धापै नंहि थोड़ै, मोसै परजा वेगै मोड़ै।—ऊ. का.

४ देखो 'मसोसणौ, मसोसवौ' (रू. भे.)

उ०—१ कतल कर देवै, कंठ मोस नाखै, टापरा बिकाय देवै, रांध्योड़ी फुड़ाय देवै, छुरी फेरता वुरी कर देवै।—दसदोख

उ०—२ छळ वळ कर छांनै मतळव मांनै मूरख गळ मोसंदा है।
—ऊ. का.

उ०—३ एक दांनौ आदमी कह्यौ—भली आदमण ऐड़ा जंगी गिंडकां नै साव छुट्टा राखै किणी मिनख रा कंठ मोस न्हाकिया तौ कांई भाव पड़ैला।—फुलवाड़ी

उ०—४ पारका मरम ने मोस दोखै नहीं करि रोस। जूना छिद्र सही ए ते ऊघाड़ै नहीं ए।—जयवांणी

मोसणहार, हारौ(हारी), मोसणियौ—वि०।

मोसिओड़ौ, मोसियोड़ौ, मोस्योड़ौ—भू० का० कृ०।

मोसीजणौ, मोसीजवौ—कर्म वा०।

मोसर—सं०पु०—१ शुभ अवसर, अवसर, मोका।

उ०—१ पताहूंत पाघरै, अरज कीधी तिण ओसर। चित सदा चाहतो, मिल्यौ तिसडी हिज मोसर।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

उ०—२ दरवेस भूखां री मंसा पूरण कियां नै न्याव कियां जिकौ मन में होय सोही मोसर छै।—नी. प्र

उ०—३ तरै जसोधर सारां भाइयांनूं भेळा कर ने कयौ. पछेइ पुकारू जावौ तौ घो तौ सरदार छे नै औ मोसर छै।—रा. वं. वि.

उ०—४ पढन पढावन मोसर पायौ, चूक गयौ विभचारी।
—ऊ. का.

२ समय, वक्त।

उ०—रंग लखियौ अनुंराग, मदन छकियौ उण मोसर। मधुकर छकि मुसताक, चुरस पोहपां गळि चोसर।—पनां

३ संयोग।

उ०—चार दफे में आता री, चीजां तरह तरह की ल्याता, किसके हाथा पकडाता मुफत लुटाता रोजीना, मिलणे का मोसर नहीं है चक्कर खाता रोजीना।—लो. गी.

४ मूंछे।

उ०—झालियां सार मोसर झलै, भूझ भार भुज झालियौ, भूपाळ जैत उणहीज भुज, हय कंध थापलि हालियौ—मे. म.

५ देखो 'मौसर' (रू. भे.)

उ०—सांपंड सनमुख सीत ऊंट नंह चुळै अनाड़ी। देखै मोसर डूम अटै नह पैंड अगाड़ी।—ऊ. का.

मोसार, मोसाळ, मोसाल—सं०पु०—१ ननिहाल, मामा का घर।

उ०—१ लाजै पीहर सासरौ, माजै मा मोसार। नितरा आवै वोलमा, थांनै वुरौ कहै संसार।—मीरां

उ०—२ मामी मीरां हौ लाजै माई मोसाळ, लाजै हौ पीहर थारौ सासरौ।—मीरां

२ पीहर, मैका, पिता का घर। (स्त्री.)

३ मामा।

रू०भे०—मुसाल, मुंहसाल, मुहुसाल, मूसाळ, मोसाली, मोसेल, मौसाळ।

अल्पा०—मौसाली।

मोसाळी—देखो 'मोसाळ' (रू. भे.)

उ०—तारचौ पीहर सासरौ तारयौ माय मोसाळी तारी।—मीरां

मोसियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ झूठा दोषारोपण किया हुआ, कलंक लगाया हुआ।

२ व्यंग किया हुआ, ताना मारा हुआ।

३ चोरी किया हुआ, लूटा हुआ।

४ देखो 'मसोसियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० मोसियोड़ी)

मोसी—देखो 'मासी'।

मोसीआई, मोसीहाई—देखो 'मासीयाई' (रू. भे)

मोसेल—देखो 'मोसाळ' (रू. भे)

मोसो—सं०पु०—१ व्यंग, ताना।

उ०—१ राजा थांनूं मेहणौ सांचौ दियौ सत्य छै। कुड़ौ मोसौ दियौ न छै।—पंच दंडी री वारता

उ०—२ उण म्हांनै चुड़लाळी मोसौ बोलियौ, मोसौ बोलियौ, जी म्हांरा राज।—लो. गी.

उ०—३ डोकरी मुळक नै मोसौ मारती जवाव दियौ—जे राजा रै आखै खजांनै सूं ई प्रीत री भुगतांन व्हैती व्है तौ खजांनौ तौ थांरै पाखती है ई, पीछे प्रीत सारू भंवता क्यूं फिरौ।—फुलवाड़ी

२ कटुवचन, आक्षेप।

३ उपालंभ।

उ०—१ इण गीर वंधिया रे कारणे, म्हारी नणदल मोसौ देवै रे,

म्हारी गोरवंध वळती कर ।—लो. गी.

उ०—२ कूड़ा कथन रखे करी, सुंत कूड़ी साख । थांवण मोसो मत करै, रिद्धि पारकी राख ।—ध. व. ग्रं.

क्रि०प्र०—दैणौ. बोलणौ, मारणौ, लगाणौ,

४ देखो 'मासौ' (रू. भे.)

रू०भे०—मूसौ, मौसौ, मोहौ ।

मोह–सं०पु० [सं०] १ आध्यात्मिक क्षेत्र में, संसार व सांसारिक पदार्थों को सत्य मानने तथा इन्द्रिय जनित सुखों को स्थायी मानने का भ्रम, अज्ञान ।

उ०—१ हरीया साचैं सूरवैं, मारया पहली मोह । पकड़्या पांचूं भोमिया, दौड़ां करता दोह ।—स्री हरिरांमदासजी महाराज

उ०—२ ग्यांन विग्यांनीय जांनि सबैं विध, रूप तणौ मन मोह धूतारौ । दास कहै हरिरांम बिनां हरि, होय नहीं नर को निसतारौ ।—स्री हरिरांमदासजी महाराज

उ०—३ इम करि बहु अचड़, मोह परहर वप माया । दिव धरि धरि सुर देह, अछर वर स्रुगि आया ।—सू. प्र.

उ०—४ कांम क्रोध मद लोभ मोह कूं, चित्त से वहाय दीजै । मीरां के प्रभु गिरधर नागर, ताहि के रंग में भीजै ।—मीरां

२ सांसारिक तत्वों के प्रति होने वाली आसक्ति, लगाव, आकर्षण, झुकाव । लोभ ।

उ०—१ रांम नांम रातौ नहीं, मातौ माया मोह । हरिया का तौं घेड़सी, तातौ करि करि लोह ।—स्री हरिरांमदासजी महाराज

उ०—२ रूपाळी चीजां रौ मोह वेजा बात कोनीं, पण रूप रौ पडदौ अंतस रा दूजा गुणां नैं आपरै मांय ढकयोड़ा राखै तौ आ अवस वेजा बात है ।—फुलवाडी

३ ममता, वात्सल्य ।

उ०—१ भला आदमियां थें मोटा भगत बाजौ अर थांनै इण माटी जित्तो ई जायोड़ी बेटियां सूं मोह कोनीं ।—फुलवाड़ी

उ०—२ लाड, मोह अर प्रीत में अबूझ, नादांन, छोटौ टाबर जित्तौ समझै, उत्तौ स्यांणौ, समझणौ अर लांठौ मोट्यार ई नीं समझै ।—फुलवाड़ी

४ प्रेम, स्नेह, प्यार ।

उ०—१ मात पिता री मोह कुटंब छोड़ै जिण कारण । घरै पतीव्रत धरम, तेण समजै भवतारण ।—ऊ. का.

उ०—२ साईनी कमर रौ मोह माईतां रै गना सूं ई घणौ वत्तो व्है ।—फुलवाड़ी

उ०—३ माया मोह न कीजियै, माया वडी हरांम । जन हरिया तिंह लोक में, केता करै विरांम ।—स्री हरिरांमदासजी महाराज

५ प्रसन्नता, खुशी, मोद ।

६ गर्व, अभिमान, घमंड ।

उ०—हरि होदै ऊपरैं, रावत वाई रीठ । मारयौ राजा मोह कुं, पड्यो तळफै पीठ ।—स्री हरिरांमदासजी महाराज

७ मोहित होने की अवस्था ।

उ०—टूंड चढै प्रथीमल भांजै टोडो, लाला तणौं सर धारै लोह । बायै वाय नळी जिम वाजै, अध मणधर जण आवै मोह ।

—महारांणा प्रथीराज रौ गीत

८ उद्विग्नता, आतुरता ।

९ साहित्य में ३३ संचारी भावों में से एक, जिसमें चित्त-वृत्ति अस्त-व्यस्त हो जाती है और उचित-अनुचित का कोई ध्यान नहीं रहता ।

१० एक प्रकार की तान्त्रिक क्रिया जिसे शत्रु के बल को कम करने के लिये प्रयोग में लाया जाता है ।

११ दया, कृपा ।

उ०—कुळ वंस वधारै, साथ सुधारै, तीन पख्ख तारै । महाराज, सतियां पर मोह कीजै, आपणी कर लीजै ।—अ. वचनिका

१२ ब्रह्मा का एक पुत्र ।

वि०—काला, श्याम । (डि. को)

रू०भे०—मो, मों', मोहि, मौह ।

अल्पा०—मोहौ ।

मोहक–वि० [सं०] १ जिसके कारण मन में मोह उत्पन्न हो ।

२ मोहित करने वाला, आकर्षित करने वाला, लुभावना ।

३ अत्यन्त सुन्दर ।

४ राजा सुरथ का पुत्र एक राजकुमार ।

मोहकम—देखो 'मुहकम' (रू. भे.)

उ०—मैं थांहरै विचार रे विरुद्ध नहीं कियौ, थां कही कैद करो सो मैं चाही मोहकम खरी कैद करूं, सौ सबळी कैद अहसांन री सौ न दीठी ।—नी. प्र.

मोहकार–सं०पु०—पीतल या तांबे के घड़े का ऊपरी भाग, मुख ।

मोहड़ौ, मोहडौ—देखो 'मूंडौ' (रू. भे.)

उ०—१ उठै जाय धड़ धड़ौ खाय तीर सारा नांखिया । केई मांही गरक था सो मोहड़ै सूं काढ़ परा किया ।

—डाढाळा सूर री बात

उ०—२ सू हूं तो रजपूत खांमीदार री मोहड़ौ देखूं नहीं । पण कासूं करूं, तू म्हारौ पुराणौ चाकर छै ।

—जैतमाल पुमार री बात

उ०—३ तरै रावजी बात आ राखी, कहौ–माहारौ कोट आवसी तरै म्हे तोनूं छोड़सां । तरै डूंगरसी कोट रै मोहडै जाइ जगहथ' देपावत नुं कहीयौ–साबास तैं पांच मास गढ़ विग्रहीयौ ।—नैणसी

मोहण—१ देखो 'मोहन' (रू. भे.) (नां. मा., ह. नां. मा)

उ०—१ जरै स्रोतांनुराग रै ही प्रभाव आकरसण, मोहण द्रावण, उन्मादण, वसीकरण पांचूं ही मनोज रा सायकां री वेझौ होय तत्काल ही आपरा प्रधान टीला नूं बुलाय प्रभारी रा पांणि ग्रहण रै काज अरबुदाचल जाय सलख रा चित में या बात स्वीकार करावण री पुणी ।—वं. भा.

उ०—२ मिय निय तेज सुरां तन नीसर, मोहण रूप तेज ईख मुनेसर।—मा वचनिका

उ०—३ रगण तगण मयगण करण, चवदह वरण अचूक। सात ध्यारि पंच रूप सुजि, मोहण छंद मलूक।—ल. पिं.

२ देखो 'मोहनी' (रू. भे.)

उ०—मोहण मूरत सांवळी सूरत नेणा वण्या विसाळ अधर सुधारस मुरळी राजत, उर वैजंती माळ।—मीरां

मोहणगती-सं०पु०—काजल। (अ. मा.)

मोहणवेलि, मोहणवेली-सं०स्त्री०—वह लता जो मन को आकृष्ट करती हो।

उ०—१ अम्रत तणउ प्रवाह, मोहणवेलि तणउ कदलउ, पूनिमनउ चंद्र, चालती चिंतामणि.......।—व. स.

उ०—२ तोरण बधाव्या मंदिर बारणै जी, चित्रत कीधी घर मोहणवेलि हो।—वि. कु.

उ०—३ पंचाइण नई पाखरच ?,महंगळ नई मद कीध। मोहणवेली मारुइ, कंत पेम रस पीध।—ढो. मा.

उ०—४ चोड़ै चंड मडां चवो, संभ आगळि सकाज। मोहणवेली अध नयण, मूंध अजब महाराज।—मा. वचनिका

मोहणिज्ज-सं०पु०—मोहनीय कर्म। (जैन)

मोहणिया-सं०पु०—राठौड़ों की एक उप शाखा।

मोहणियो-सं०पु०—उक्त शाखा का व्यक्ति।

वि०—मोहित करने वाला।

मोहणी-सं०स्त्री०—१ एक नदी का नाम। (बां. दा. ख्यात)

२ देखो 'मोहनी' (रू. भे.)

उ०—नमो मोहणी कंमळा मूख मूंनी, नमो धोम धूतारणी संभ धूनी।—मा. वचनिका

मोहणीमंत्र—देखो 'मोहनीमंत्र' (रू. भे.)

मोहणीय-सं०पु०—मोहनीय कर्म, इसमें सम्यकत्व और चरित्र को बिगाड़ दिया जाता है (जैन)

मोहणौ, मोहबौ-क्रि०सं० [सं० मोहनम्, प्रा० मोहइ] १ मोहित करना, लुब्ध करना, रीझाना, वश में करना।

उ०—१ देवी रुक्मणी रूप तूं कांन सोहै, देवी कांन रे रूप तूं गोपि मोहै।—देवि.

उ०—२ सोभव रंग सुगंध री, कैफ नरंग सुरंग। महल सुरंगां मोहियो, राजेस्वर नवरंग।—रा. रू.

उ०—३ पंखी बोलै मोर की, मीठा जग मोहंत। जन मीठा बोला जिकै, क्यूं जग वस न करंत।—बां दा.

२ आकर्षित करना, ललचाना।

उ०—१ सत पाय उपाय डिगाय सती, पद गाय रिझाय छुडाय पती। अति लेखग राग चित्रांम अटा। छिब मोहत है जिन देख छटा।—ऊ. का.

उ०—२ विलास अर सुख रा चंचळ रूप विचै संयम री आ अतुल छिब उण नै घणी मोहयौ।—फुलवाड़ी

उ०—३ सपत कोस कनवजहूं सोहत। मदन विनोद बाग मन मोहत—सू. प्र.।

३ प्रेमपाश में बांधना।

उ०—१ नेम जी हो मुगति रमणि मोहचा तुमे हो राजि। पिण तिण मां नहि स्वाद —वि. कु.

उ०—२ जुलम कियौ सोकण कुब्ज्या ने, ब्रजनंद मोह लियौ।
—मीरां

४ भ्रमित करना, भ्रम में डालना, धोखे में डालना।

उ०—विछायत समियांन वणिया, तई जरकसि हीर तणिया सिध आसण छत्र सोहै, महा जगमग हुप मोहै।—सू. प्र.

५ मूर्च्छित करना, वेहोश करना।

६ परेशान करना, तंग करना।

७ सांसारिक कार्यों में लगाना, माया में फंसाना।

मोहणहार, हारो(हारी),मोहणियौ—वि०।

मोहिग्रोड़ौ, मोहियोड़ौ, मोहचौड़ौ—भू०का०कृ०।

मोहीजणौ, मोहीजबौ—कर्म वा०।

मोहाणौ मोहाबौ—सक० रू०।

मांहणौ, मांहबौ, मोणौ, मोबौ, मोवणौ, मोवबौ,—रू०भे०।

मोहता—देखो 'महत्ता' (रू. भे.)

मोहताज, मोहताद-सं०पु०—१ भोजन सामग्री।

उ०—१ तठा उपरायंत ओळगुवां वाजदारां नैं इनांम दीजै छै। माळी नै मोहताद दीजै छै। सारां ही री आस-उमेद वर आंणजै छै।—रा. सां. सं.

उ०—२ गावै पहती गायणी महराग मलारां। दांम हजारां दीजीयै, मोहताद मझारां।—मयाराम दरजी री बात

२ मांस।

३ देखो 'मुहताज' (रू. भे.)

मोहताजी-सं०स्त्री—मोहताज होने की अवस्था या भाव।

मोहन-सं०पु० [सं०] १ ईश्वर, परमेश्वर।

२ श्री कृष्ण का एक नामान्तर।

उ०—माई म्हांनै मोहन मित्र मिळाय। रमियौ है उर अंतर बसियौ या बिनु कछु न सुहाय।—मीरां

३ शिव, महादेव।

४ माया, भ्रम।

५ काम देव के पांच बाणों में से एक।

६ किसी को वेहोश करने के लिये किया जाने वाला एक तान्त्रिक प्रयोग।

उ०—कांमण, मोहन, मारण थंभन, जंगम, थावर।
—पंच दडी री वारता

७ उक्त प्रयोग में पढ़ा जाने वाला मंत्र।

८ धतूरा।

९ स्त्रीप्रसंग, मैथुन, संभोग।

१० परेशानी, व्याकुलता।

११ आंख। (ना. डि: को.)

१२ एक वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में नगण, तगण, मगण यगण, और अंत मे दो दीर्घ वर्ण–कुल १४ वर्ण होते हैं।

१३ एक वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे एक सगण और एक जगण होता है।

१४ बारह मात्राओं की एक ताल। (संगीत)

१५ राठौड़ों की एक उप शाखा।

वि०—१ मन को मोहने वाला, मोहित करने वाला।

२ मोह उत्पन्न करने वाला, आकर्षित करने वाला।

३ परेशान करने वाला, व्याकुल करने वाला।

४ माया में डालने वाला, फंसाने वाला।

रू०भे०—मोवण, मोवन, मोहण, मोहिण।

मोहनकंठी–सं०स्त्री०—गले (कंठ) में धारण करने का, स्त्रियों का, एक स्वर्णाभूषण।

मोहनगारउ, मोहनगारौ–वि० [स्त्री० मोहनगारी] मोहित करने वाला, मोह उत्पन्न करने वाला।

उ०—१ त्रिभुवन नउ मोहनगारउ, राजि तिणि लागइ मुझ नइ प्यारौ।—वि. कु.

उ०—२ क्रपा निधि विनती अवधारौ। प्रभु मूरति मोहनगारी। निरख्यां हरखे नर नारी, जाऊं वारी हुं वार हजारी।—वृ. स्त.

उ०—३ कांमण मोहन नवि करउ, सूधा दीसउ छौ साधु रे। मोहनगारा गुण तुम्ह तणा, ए परमारथ साध रे।—स. कु.

मोहणभोग–सं०पु०—१ एक प्रकार की मिठाई।

२ एक प्रकार का हलवा।

३ एक प्रकार का आम।

४ केला।

मोहनमाळा–सं०स्त्री० [सं० मोहन+माला] सोने की गुरियां या दानो की माला। गले का आभूषण।

उ०—मोर मुकुट पीतांबर सोहै, भाळ तिळक गले, मोहनमाळा।
—मीरां

मोहनाळ–सं०पु०—१ पशुओं के नाक से सिर तक का ऊपरी भाग।

उ०—लाहोरी ताजी लूब वांण गिलजा पहाड़ी। जिकांरी मूडहथ मोहनाळ हाथ भर नस,—रा. सा. सं.

२ देखो 'मूंहनाल' (रू. भे)

मोहनास्त्र–सं०पु० [सं० मोहन×अस्त्र] शत्रु को मूर्च्छित करने का एक प्राचीन अस्त्र।

मोहनि, मोहनी–सं०स्त्री० [सं० मोहिनी] १ विष्णु का एक अवतार, जो एक सुन्दर अप्सरा के रूप में हुआ। इसमे दानवों को मोहजाल में डाल कर देवों को अमृत पीने का यथेष्ट अवसर दिया।
(पौराणिक)

२ एक वेश्या, जो मृत्यु के समय गंगाजल पीने के कारण अगले जन्म में द्रविड देश के वीर वर्मा राजा की पटरानी हुई।
(पौराणिक)

३ वैशाख शुक्ला एकादशी की तिथि जो पर्व दिन मानी जाती है।

४ सुंदर स्त्री, सुंदरी।

उ०—मन भावनी माधुरी मोहनि, चद वदन चित चंगी। अंतकाळ में अरथ न आवत, कांमनि नेन कुरंगी।—ऊ. का.

५ माया।

६ एक देवी विशेष।

७ प्रीति।

८ वशीकरण मन्त्र।

९ बेहोश या मूर्च्छित करने की क्रिया।

१० भ्रम में डालने की क्रिया।

११ एक वर्ण वृत्त, जिसके प्रत्येक चरण में सगण, भगण, तगण, यगण और सगण होते हैं।

१२ एक मात्रिक छंद जिसके सम चरणों में सात-सात मात्राएं और विषम चरणों में बारह-बारह मात्राएं तथा अंत में सगण होता है।

वि०—१ मोहित करने वाली, सुहावनी, लुभावनी।

उ०—मयाळ मंडपाळ मेघमाळ मोहनी नहीं। हिलंब से प्रलब थंभ, बिंब सोहनी नहीं।—ऊ. का.

२ भ्रमित करने वाली, भ्रम में डाल ने वाली।

उ०—ओ संसार मोहनी माया, देख रीझ मति भाया रे। अगजळ नीर निगै कर नाई, परतक मिथ्या थाया रे।
—स्री सुखरांमजी महाराज

रू०भे०—मोवणी, मोवनी, मोहणी, मौहणी, मोहिणी, मोहीणी।

मोहनीमंत्र–सं०पु०—वशीकरण मंत्र।

मोहनीय–वि०—१ मोहित करने योग्य, सुन्दर, आकर्षक।

२ मोह उत्पन्न करने वाला।

मोहनीरूप–सं०पु०—समुद्र मंथन के बाद अमृत बांटने के लिये विष्णु द्वारा धारण किया सुन्दर स्त्री का रूप।

मोहनौ–वि०—मोहित करने वाला, लुभाने वाला, अत्यन्त सुन्दर।

उ०—सुमील सभ्य साच्छरं, स्रुति प्रमांन सोहनें। अभंग पुत्ति ओज के मनोज मूरति मोहनें।—ऊ. का.

मोहपुर–सं०पु०—स्वर्ग, देवलोक।

मोहवत, मोहब्बत—देखो 'मुहब्बत' (रू. भे.)

उ०—अब मोहबत कौन कांम की, गिरधर बिना हु नगोड़ी—मीरां

मोहमी—देखो 'मोवी' (रू. भे.)

उ०—लाल म्हारा रे, हां, रे मोहमी म्हारा रे। मोनैं तज जावैं मती रे।—गी. रां.

रू०भे०—मोहणीमंत्र।

मोहमदीय–वि०—मुहम्मद का।

उ०—सह बोलिया सकाज मतौ करै बिहुंवै मिसल। मे न वंछित महाराज ए मोहमदीय असपती।—सू. प्र.

मोहम्मद—देखो 'मुहम्मद' (रू. भे.)

मोहर–सं०स्त्री० [फा० मुह्र] १ स्वर्ण मुद्रा, अशरफी।

उ०—१ तद आलम्म 'दुरंग' सूं, बांधे संध विचार। घार दिलासा मोकळी, मोहरां आठ हजार।—रा. रू.

उ०—२ आरती होवे। आरती री मोहर सवासणी नुं दीजै। पछै सगळा मांणसां नुं पगां लगावै।—नैणसी

उ०—३ मोहर तांळं रौ रोगांन रग लागौ छै। तरवार कटारी वरछी रा दाव ही न लागै छै।—रा. सा. सं.

२ कोई चिन्ह या अक्षर आदि दबाकर अंकित करने का ठप्पा, जो किसी धातु या रब्बर का बना होता है।

३ उक्त ठप्पे द्वारा अंकित किया हुआ चिन्ह या अक्षर।

४ धातु की बनी सील जो किसी चीज को बंद करके मुंह या जोडों पर चप्पड़ी लगा कर, ऊपर से लगाई जाती है।

५ सेना का अग्र भाग, हरावल।

६ सिंधी मुसलमानों की एक शाखा।

७ पद्य की द्वितीय और चतुर्थ पंक्ति का परस्पर मेल।

उ०—धुर तुक मह अठार मत, चवद सोळ चवदेण। सोळ चवद लघु गुरू मोहर, जांण सोहणी जेण।—र. ज. प्र.

वि०—१ प्रधान, मुखिया, अग्रणी।

२ प्रथम, पहिला।

क्रि०वि०—३ पूर्व, पहिले।

उ०—वीरा राईका नै कह्यौ। बोलाई सांढ ताती छै। तिण चढने जालोर जा। सवा पोहर दिन चढ़ियां मोहर जाए।

—वीरमदे सोनगरा री वात

४ आगे, अगाड़ी, अग्र भाग पर।

उ०—परठि जीण पाखरां, तुरंग सझिया अतुळीवळ। भार आरावां भरै, मोहर खड़किया अमंगळ।—सू. प्र.

५ सामने–सम्मुख।

उ०—भागळां हत 'रतन' सी भाखै,दाखै चलण न पीठ देऊ। थाटां तणी पीठ हूं थोभूं, थाट मुड़ै किम मोहर थऊं।

—रत्नसिंह सिसोदिया री गीत

रू०भे०—महर, महुंर, महुर, महुरउ, महूर, महोर, महौर, महौरि, मुहर, मुहरि, मुहरी, मुहुर, मोर, मो'र, मोहरि, मोहरी, मोहेर, मौहर, मोर, मोहरि, मौहरी, मोहरू, म्होर।

मोहरत, मोहरत्त—देखो 'महुरत' (रू. भे.)

उ०—१ साह ज मोहरत सोधीयो, मुगत हरख मना। जनमपुत्र मे जोतसीयां, दीनो नांम पना।—पनां

उ०—२ पछै भलौ मोहरत जोवाड़ कूंभे नूं प्रोहित नाळेर दियौ, ताहरां कूंभै ऊठ, सलांम कर नाळेर लियौ।—नैणसी

मोहरम–सं० पु० [अ० मुहर्रम] १ इस्लामी वर्ष का पहला महीना।

२ इस महिने में इमाम हुसेन का मनाया जाने वाला शोक।

रू०भे०—मौरम, मौहरम।

मोहरामेळ–सं०स्त्री०—तुक बंदी।

मोहरि—१ देखो 'मोरी' (रू. भे.)

२ देखो 'मोहर' (रू. भे.)

उ०—१ रुद्रसेण उण गज मोहरि ल्याऊं। वरियावर निज राज वणाऊं।—सू. प्र.

उ०—२ 'किसनेस' बंधव कणौठ अरि खग ओझड़ै। रघु मोहरि लंका राड़ि, लखमण फिर लड़ै। पित मोहरि 'गजण' प्रचंड जग चख जेहड़ौ। तपवंत लड़ै सतेज 'अरजिण' एहड़ौ।—सू. प्र.

मोहराज–सं०पु० [सं०] आध्यामिक क्षेत्र में, मनुष्य की पांच वृत्तियों में से प्रमुख वृत्ति। मोह।

उ०—संसार देस माहि असुख अपार, राज करइ छइ तीह मोहराज।—वस्तिग

मोहरियाळ–वि०—अग्रगामी, अग्रणी।

रू०भे०—मौहरियाळ,

मोहरि–सं०स्त्री०—१ किसी बरतन आदि का मुख या ऊपर का खुला भाग।

२ पाजामें यां पेंट का वह भाग जिसमें टांगे रहती है।

३ देखो 'मोहर' (रू. भे.)

उ०—१ माळी रै घरै सखरी जाइगा बागीचा माहे डेरी लीयौ। माळिण नूं मोहरी दीधी। जीमण करायी। डेरै सरब जावतौ कीधौ।—चौबोली

उ०—२ मोहरी दळ रगतासुर मांझी। सार भंवर सैंहस वळ साझी।—मा. वचनिका

४ देखो 'मोरी' (रू. भे.)

उ०—इतरी मनुहार करि करहा री मोहरी झालि करहा नै झेकीयौ।—ढो. मा.

मोहरे, मोहरै–क्रि०वि०—१ अगाड़ी, आगै।

उ०—वव मोहरै वाजिया, 'कांन्ह' जजमांन सकज्जां। सांम काज कुळ लाज, राज लख आज गरज्यां।—रा. रू.

उ०—२ अन मुड़तां जुड़ता आवहै। सिरदारां मोहरे समसेर। मरणं दीह गजग्राह मडांणं, मुड़ियौ न कहांणी गिर-मेर।

—गोकुळदास सक्तावत

२ सामने, सम्मुख।

उ०—काका तणा कंठीर, सांमळिया भत्रीजै सवद। सकजां भड़ां सधीर, हुय मोहरै हलकारिया।—गो. रू.

रू०भे०—मुहरे,

मोहरी-सं०पु०—१ देखो 'मोरी' (रू. भे.)

उ०—१ तिसपर चित्र कूंतूं का घाव। सीह गोसूं के दाव। ऊछट झाट सें मिळते हैं। मोहरा चडाव करते हैं।—सू. प्र.

उ०—२ विसय हळाहळ खाइ कर, सब जग मर मर जाइ। दादू मोहरा नांम ले, हृदय राखि ल्यौ लाइ।—दादूवांणी

उ०—३ लगा पाखरां साज लूमा लड़ी सूं, प्रडीनां चलै ज्यूं नटी पट्टडी सूं। मिळै मोहरां चोहरां पंति मोती, कळा करत्तरी जीत पावै कनोती।—वं. भा.

उ०—४ इमा ऊंठ झेकजै छै। हाथ फरजै छै। पीतळ रा गीरवांण रुपै रा कड़ा छै। ता मांहे मोहरा वोळचै मोहरा घातजै छै।
—रा. सा. सं.

उ०—५ दै दै लगांम कसि तंग द्रढ़ जेरबंध मोहरां जड़चा। ऐराक घाट काठी उतन, घाट वेह ठाली घड़चा।—मे म.

उ०—६ पिचरंगा सूत री नाथां अर पिचरंगा भळेवड़ा रेसमी फूंदियां, सूत री राहड़ियां, मूंडा रै मोहरा अर माथै चांदी रा घूघरा वाला छड़ा।—फुलवाड़ी

उ०—७ कळ खट करै वीपसा, करणी, बिच जिणगुर संबोधन वरणी। तुक चवदै कळ वलै जितावै मोहरा तिण रा मेळ मिळावै। उण पर दूहौ अरटिया वाळौ, फिर तुक आदि तिका अंत फाळौ। धुरै तिका मोहरा सुध धारौ, चितविलास सौ गीत उचारौ।
—र. रू.

रू०भे०—म्होरी,

मोहल—१ देखो 'महल' (रू. भे.)

उ०—१ देहरी १ वळे जैन री थी। फूल मोहल री ठौड़ थी। तद भलो सहर वसतो।—नैणसी

उ०—२ राजा आपरै मोहल मां आयो छै।—पंच दंडी री वारता

उ०—३ तद अपछरा री मोहल एकायंत कीयो। उठे अपछरा रहै। घांघळजी अपछरा री वारी रै दिन आप जावै।—पाबूजी री वात

उ०—४ राजा रै मोहल मांहे सुदरांणी दहड़ तिका पदमणी।
—राजा नरसिंघ री वात

उ०—५ अतलस अति सोभा दीइं, पहरी पीया के अग। सुंदर ऊभी मोहल में रंभे परि घणी सुचंग।—व. म.

२ देखो 'महिळा' (रू. भे.)

उ०—१ तद ए दोनूं उठे आया, कहियो— मोहल काढो, रावजी नं झांझरके दाग देवौ। सो कुंवर रा सोमा सुवौ मांन पूरे पहूंचाया।—अमरसिंह गजसिंहोतरी वात

उ०—२ मोहल निछरावळ कीवी वैठा हंसी खुशी री वातां कीवी।—नापै सांखले री वारता

मोहलत-सं० स्त्री० [अ०] १ अवकाश, छुट्टी।

२ समय, वक्त फुर्सत।

३ मयाद, अवधि।

४ ढील, छूट, रियायत।

५ विलंब, देर।

रू० भे०—मांलत, मुहलत, मोळगत, मोळत, मोलत, मोलगत, मोलत।

मोहलाइत, मोहलायत—देखो 'महलायत' (रू. भे.)

उ०—१ ताहरां स्याम सुदंर सूं लोक कहै, 'स्यांम सुंदरजी, थांहरै मोहलाइत हुई छै।"—स्याम सुंदर री वात

मोहलौ—१ देखो महोलौ' (रू. भे.)

उ०—१ तिण वेळा संभ नैं निसंभ रै कांनै, आ अमंगळ री वात कांनै आई। बोहत संत्रेत्र सोच उर में हुवौ। दिवांण किया। वडा वडा उमरावां रा मोहला लिया।—मा. वचनिका

उ०—२ तठा संमत १६७७ रा वैसाख माहे साहजादो खुरम दिखण रै सूबै आयो। पछै साहजादी नुं स्री माहाराजा जी मोहलो दियो।—नैणसी

२ देखो 'महल्लौ' (रू. भे.)

उ०—१ जद ए कह्या! भीखण जी! थे वैरागी वाजो नैं इण मोहला में नुखतो थयो तिणरा घर सूं पकवांन लाया!—भि. द्र.

उ०—२ व्यास ऊदैचंद री हवेली मूलनायकजी रा देवरा आगै वांमण रा घर था सु पाड़ नैं गूंदी रा मोहला री चौक करायो नैं उणां नै जायगांवां दूजी दीवी।—मारवाड़ री ख्यात

३ देखो 'महल' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—ऐ ठाकुर घोड़ा दौड़ांवण लागा। घोड़ा छोड़ि दीया छै। राजलोक मोहलै चढीया ऊंचा देखै छै।—लाखा फूलांणी री वात

मोहल्ल—१ देखो 'महल' (रू. भे.)

२ देखो 'महिळा' (रू. भे.)

३ देखो 'मूल्य' (रू. भे.)

उ०—कैवास सूर सारखि क्रियत जास मोहल्ल न पांमता। चौतीस लाख चतुरंग दळ, हय आय सह हालता।—नैणसी

मोहल्लौ—१ देखो 'महल्लौ' (रू. भे.)

उ०—बोल्यो-मितर मोहल्लै परखियै, धीणौ मदै घास।
—दसदोख

मोहांमांही—देखो 'माहींमांह' (रू. भे.)

उ०—राजसिंह जसवंतोत नूं भाद्राजण पटै थौ, सु मोहांमांही छीतर नैं राजसिंघ जसवंतोत उपाव हुवौ, तठै रा. राजसिंघ जसवंतोत छीतरदास नूं भ्रादाजण रै कोट मांहे मारियो।
—नैणसी

मोहाणौ, मोहाबौ—देखो 'मोहणौ, मोहबौ' (रू. भे.)

उ०—१ हमने कहा निरमोहित रहना, तुम तो जात मोहाय रांम।
—मीरां

उ०—२ संसार मगन माया, कांमी क्रोध लोभ मोहाणौ। स्वारथ हित करणी को, भ्राता तात पुत्राई।—गु. रू. बं.

मोहा-सं०स्त्री०—भूमि, जमीन। (अ. मा.)

वि०—मोहित, भ्रमित।

उ०—साहब मन मोहा दुख सूं दोहा, लाहां लोह लड़ंदा है।
—ऊ. का.

मोहागनि मोहाग्नि-सं०स्त्री०—मोह रूपी अग्नि।

उ०—जरियें ना मोहाग्नि घरियें अब धीरज को, मरियें नां रोय सब करियें सबरजू।—ऊ. का.

मोहाजाळ-सं०पु०—१ सांसारिक प्रपंच, जिसमें फंसने के बाद मनुष्य छूट नहीं सकता।

२ शरीर और सांसारिक पदार्थों को अपना व सत्य समझने का का भ्रम-जाळ।

उ०-सत्गुरू वचन वांण सत् लागा। मोहाजाळ नींद माहुं जागा।
—स्री सुखरांमजी महाराज

मोहायण-सं०पु०—मोह का स्थान।

मोहि, मोहि-सर्व० [सं० मह्यं, मय्ह] १ मुझे, मुझको।

उ०—१ दरसन विन मोहि जक न परत है, चित मेरो डांवाडोल।
—मीरां

उ०-२ लंबोदर सारद हित लीजै। दास जांण मोहि वांणी दीजै।
—रा. रू.

२ मेरा, मेरी।

उ०—हिल मिलि सब करत है वाती, पीउ विणु मोहि फाटत छाती। हो लाल।—घ. वं. ग्रं.

३ मुझसे।

उ०—अकथ कथा मोहि लखी न जावै। तीन लोक तेरा जस गावै।
—स्री हरिरांमदासजी महाराज

रू०भे०—मोहीं, मोही, मोहे, मोहै।

४ देखो 'मोह' (रू. भे.)

उ०—वीये दिन चंपा नयर वुलाइ। ले ग्राइ रिख सु मोहि लगाइ।
—रांमरासौ

मोहिण—देखो 'मोहन' (रू. भे.)

मोहित-वि० [सं०] १ मोह में पड़ा हुआ, भ्रमित।

२ लुब्ध, आसक्त, मुग्ध।

३ मूर्च्छित, वेहोश।

मोहिनि, मोहिनी—देखो 'मोहनी' (रू. भे.)

उ०—वाही पर तन मन हैं वारी। वह मूरति मोहिनी निहारत, लोक लाज डारी।—मीरां

मोहिम—देखो 'मुहिम' (रू. भे.) (मा. म.)

मोहिल, मोहिल्ल-सं०पु० (स्त्री० मोहिलणी) चौहान वंश की एक शाखा व इस शाखा का व्यक्ति।

उ०—१ राव चूंडो वूढा हुआ। मोहिलां रै परणीयां, पछै आय मोहिलणी रै वस हुआ।—राव रिणमल री बात

उ०—२ छापरउ कियउ छांगां छयांह, बलिवंडि राइ फरि फेरि बांह। चउंड राउ चड़िय मोहिल्ल चीति, राहाचरक्क देखाळि रीति—रा. ज. सी.

मोहीं, मोही—देखो 'मोहि' (रू. भे.]

उ०—वास जग में त्रास जम की, अलप जीवनी मोही। जन हरि-दास कूं विस्वास तेरा, मैं न छाडौ तोहि।—ह. पु. वां.

मोहीलौ-वि०—१ स्नेही, प्रेम, प्यारा।

२ देखो 'महल्लौ' (रू. भे.)

३ देखो 'महोलौ' (रू. भे.)

मोहूरत—देखो 'महूरत' (रू. भे.)

उ०—लगन लेई नै जोइयो मोहूरत रूड़ो न होयवै। अंगम तिगम सासो लहो, राजा नै कहै जोयवै।—रीसालू री बात

मोहे—देखो 'मोहि' (रू. भे.)

उ०—निरखण री मोहे चाव घणेरी, कव मुख देखूं तेरा।—मीरां

मोहेर—देखो 'मोहर' (रू. भे.)

उ०—तद वलू कही-व्यासजी सांची कहे छै। आपां इसा नीसरो सो सागी हाथी जावां। ताहरां सवार मोहेर हुवा, पाळा पूठे किया, त्यांनूं कही-थे पाधरा तोपखांने ऊपर पड़ज्यो।
—अमरसिंह गजहसिंह री बात

मोहोबत, मोहोव्वत—देखो 'मुहव्वत' (रू. भे.)

उ०—१ मिळी निसांन वजाय करण सूं ज्यो कछु कहो सो सांची। जन मीरां गिरधर की प्यारी, मोहोबत हैं नहिं काची।—मीरां

उ०—२ मेरी ज्यांन मोहोव्वत लगाई रे, गिरधर पीतम प्यारे सों।—मीरां

मोहोर—देखो 'मोहर' (रू. भे.)

उ०—१ हीरां धार वार मुजरो कर हरख घरै छै मोती मोहोर मुंगिया सूं निछरावळ करै छै।—वगसीरांम प्रोहित री बात

उ०—२ भीमाजळ मोहोर झेलिया मारत, घणी पेसि गज बोह घणी।—चतरो मोतीसर

मोहोल—१ देखो 'महल' (रू. भे.)

२ देखो 'महिळा' (रू. भे.)

मोहोलो—१ देखो 'महल्लौ' (रू. भे.)

उ०—लूंबा भूमां हुइ थकी फीरै छै, मोहोला, मोहोला मांसू नीसरी छै राग रंग करै छै।—पनां.

२ देखो 'महोलौ' (रू. भे)

मोहौ-सं०पु—१ कूए की जगत।

२ कूए पर का वह स्थान जहां पर खड़े होकर पानी सींचते हैं।

३ देखो 'मोह' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ कूरम कहै अमर नह काया, पुळवा कारिण हुवा पोहौ। मोहौ बाधियां न जाये मरणि, सरम वाधियां मरै सोहौ।
—सुजांणसिंग जगन्नाथोत कछवाहा री गीत

उ०—२ मूरख जन मोहौ करवाने भालण करै अभिमांनै।
—नलाख्यांन

मोहील—१ देखो 'महल' (रू. भे.)
२ देखो 'महिळा' (रू. भे)

मोहीलो—१ देखो 'महल' (रू. भे.)
उ०—संवारै दिन पोहर चढतां आप रै घरे पाटण मांहे मूळराज सीहाजी नुं सारै साथ सुधा मोहीलां में ले गया।—नैणसी
उ०—२ पछै अहमदावाद पधारीया। वांसै दरगाई उकील मनोहरदास सुं डोळ कीयो। वैसाख सुदि ४ पातसाही मोहीलां पधार डेरो कीयो।—नैणसी
२ देखो 'महोलो' (रू. भे.)

मौं—देखो 'मो' (रू. भे.)

मौंग्रडो—देखो 'मूंडो' (रू. भे.)

मौंज-सं०पु० [सं०] १ भृगुकुलोत्पन्न एक गोत्रकार।
२ देखो 'मौज' (रू. भे.)

मौंजकेस-सं०पु० [मौंजकेश] अत्रिकुलोत्पन्न एक गोत्रकार।

मौंजव्रस्टि-सं०पु० [सं० मौजवृष्टि] अंगिरा कुलोत्पन्न एक गोत्रकार।

मौंजा—देखो 'मांजा' (रू. भे.)

मौंजायन-सं०पु०—युधिष्ठिर की सभा का एक ऋषि।

मौंजायनि-सं०पु०—विश्वामित्र कुलोत्पन्न एक गोत्रकार।

मौंजिवंधण, मौंजिवंधन-सं०पु०—यज्ञोपवीत संस्कार। जनेऊ।

मौंजी—देखो 'मौजी' (रू. भे.)

मौंठोड़ी-सं०स्त्री०—१ मोठ नामक द्विदल अन्न की फली।
२ मोठों की बनी हुई वड़ी।

मौंडो—देखो 'मूंडो' (रू. भे.)
उ०—नै वीदावत उदैकरण री धरती मैं वडो अपजस हुवो। अरू मौंडो काळो कराय आय ऊभो।—द. दा.

मौंत—देखो 'मौत' (रू. भे.)

मौंनाळ—देखो 'मुंहनाळ' (रू. भे.)

मौंसरां-सं०स्त्री० [सं० श्मश्रु] मूछें।

मौंहडो, मौंहडो—देखो 'मूंडो' (रू. भे.)
उ०—कोई जांण पायसी तौ राजा नूं कहि पकडायसी, काळो मौंहडो होसी।—सिंघासण बत्तीसी

मौ—देखो 'मो' (रू. भे.) (उ. र.)
उ०—१ गणपति गिरा निवासी सुरगण, मंगळ करण अमंगळ मेटण। करो दया मौ सीस दयाकर, आपो सार चार गुण अर कर।—रा. रू.
उ०—२ जनक सुता मन रंजण गंजण, असुर अगंजण आहवं। मैं सरणागत कदम सदामद, मौ लजा रख माहवं। दीनांनाथ अभै वरदाता, त्राता सेवग तारणं, तौ निज पायनि मौ दसरथ तण, घण पापां सिंघारण।—र. ज. प्र.
उ०—३ किम भव नीगमीस कांमिनी। राति दिवस मौ थारीय चित।—वी. दे.
उ०—४ सुनी अनोप गिरराज सीस, राखै गुमांन मौ जंग रीस। किण हेक पांण वोलै करूर, आतुर पलाद धावौ अहूर।
—मा. वचनिका

मौकणौ, मौकवौ—देखो 'मूकणौ, मूकवौ' (रू. भे.)
उ०—जटी आक ओकवौ सवेस को झोकवौ जंगां, जतो को मौकवौ नगां लंका सीस झाळ। कळेसां कोकवौ काळ तोकवौ तुरी को कनां, छौळां नाथ संवरी को झोकवौ छडाळ।—हुकमीचंद खिड़ियो
मौकणहार हारौ (हारी), मौकणियो—वि०।
मौकिओड़ो, मौकियोड़ो, मौक्योड़ो—भू०का०कृ०।
मौकीजणौ, मौकीजवौ—कर्म वा०।

मौकळणौ, मौकळवौ—देखो 'मोकळणौ, मोकळवौ' (रू. भे.)
उ०—राह वळ वडो विहवळ हुवै त्रिखावंत जळ मौकळै। कळि मूळ आइ पैठो 'कमो' भुंइ कंठै भाखर वळै।—गु. रू. वं.
मौकळणहार, हारौ (हारी), मौकळणियो—वि०।
मौकळिओड़ो, मौकळियोड़ो, मौकल्योड़ो—भू०का०कृ०।
मौकळीजणौ, मौकळीजवौ—कर्म वा०।

मौकळियोड़ो—देखो 'मोकळियोडो' (रू. भे.)
(स्त्री० मौकळियोड़ी)

मौकळो—देखो 'मोकळो' (रू भे.)

मौकावारदात-सं०स्त्री०यौ० [अ० मौकः+वार्दात] घटना स्थल।

मौकियोड़ो—देखो 'मूकियोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री० मौकियोड़ी)

मौकूफ-वि० [अ०] १ रोका या स्थगित किया हुआ।
२ नौकरी से निकाला हुआ, वरखास्त।
३ दूर किया हुआ, अलग किया हुआ, हटाया हुआ।
४ मिटाया हुआ।
रू०भे०—मोकुव, मोकूब, मोकूफ, मौकूब।

मौकूफी-सं०स्त्री० [अ०] १ "मौकूफ" होने की अवस्था या भाव।
२ वरखास्तगी।
रू०भे०—मौकूबी।

मौकूब—देखो 'मौकूफ' (रू भे.)

मौकूबी—देखो 'मौकूफी' (रू. भे.)

मौको-सं०पु० [फा०] १ इच्छित या किसी अच्छे कार्य के लिये संयोग से मिलने वाला शुभ अवसर।
उ०—१ गरज हुवै जितै गधै नै ही वाप कंय'र वतळाणो पड़ै। मौको है हाथ सूं नीं जावै। ओसर चूकी डूमणी गावै आळ-पताळ।
—दसदोख
उ०—२ सोचण लागो के ऐडो काळ हाथै आयां चूकग्यो तो वळै मौको हाथ नीं आवैला।—फुलवाड़ी
उ०—३ चिड़ो तौ लियां दियां वैठो हो। सांतरो मौको देखनै वो फुरती सूं फटाफट कटोरदांनां रा लाडू अदळ-वदळ कर दिया।
—फुलवाडी
२ अपने विचार प्रगट करने, वात कहने या कोई कार्य करने के

लिये मिलने वाला अवसर। (चांस)

उ०—१ बीनणी नैं तो बोलण री मौको ई नीं मिळियो।
—फुलवाड़ी

उ०—२ आप म्हांरै साथै पंयाळ-लोक चालो अर म्हांनै आपरी सेवा-बंदगी री मौको दो।

३ किसी कार्य का उचित समय, उचित अवसर।

उ०—१ म्हैं आं सरपणी रा बिच्चियां नैं छाती सूं चेप-चेप नैं लांठा इण वास्तै करिया के मौको लाग्यां ऐं म्हनैं ई डसै।
—फुलवाड़ी

उ०—२ जकै मौकै माथै फूल री जगां फांखड़ी तो करणी ही पड़सी।—दसदोख

४ ऐसा समय, जब कोई विशेष कार्य हो रहा हो।

उ०—१ किसै'क मौकै बदळी करवाई। सेठां री तो जद ठा' पड़ती, थांरी बदळी नीं हुवण देंवता।—दसदोख

उ०—२ हजार री खातर पैंठ गमाय दी तो सेठांणी मरियां ई पतियारो नीं करैला। इण मौका माथै हजार रिपिया देवणा ठीक है।—फुलवाड़ी

५ कठिन समय।

उ०—१ साग री कुड़छी रो ही सीर कोनी। ढेढां री सो साख है। मौको पड़ियां करणै नैं चेतैः करो हो, नीं तो करणी जावी वाल्योड़ा तिलां में।—दसदोख

उ०—२ कैवण लागा-यूं तो खुद समझदार है। वता मौका माथै म्हैं कित्ती जोखम ओढ़ी, पण नुगरी रैया गुण थोड़ो ई मांनैला।
—फुलवाड़ी

६ घटनास्थल, वारदात का समय।

उ०—१ जीव-निरजीव री मुलाकात! मौत-मैंणी री घात! फरारां री टोळी रा दबंग अर धाखड़-धाड़ैत चेरया, चमक्या तथा चटदेणी मौकै जा पूग्या—दसदोख

उ०—२ राजा री आंख्यां सांमी अंधारी आयगी। कांनां रा पड़ता फूटण लागा। वेचेत होयनैं पड़णवाळो हो के मौका माथै रांणी उण नैं झाल लियो।—फुलवाड़ी

उ०—३ आखा राज में खळवळी मचाय दी। मौका माथै खुदोखुद देखण नैं नीं जावता तो वळै धोखो व्है जातो।—फुलवाड़ी

७ स्थान, जगह।

उ०—पांणी री असली कीमत तो रोही में ई पिछांणीजै। उण चौरस्तै बीस गांवां री ढूक है। प्याऊ री ऐड़ो मौको सौ सौ कोसां ई नीं लाधै।—फुलवाड़ी

८ अवधि, मोहलत, मयाद।

९ अवकाश, फुरसत।

मुहा०—१ मौको आणौ=उपयुक्त या इच्छित अवसर आना, समय आना।

२ मौको देणौ=अवसर देना, वक्त देना।

३ मौको मिळणौ=समय या अवसर प्राप्त होना।

४ मौको लागणौ=समय या अवसर पाना।

५ मौको सजणौ=समय पर उपयुक्त व्यवस्था होना।

६ मौको हाथ आंणौ = देखो 'मौको मिळणौ'।

रू०भे०—मवौ' मौको, मोखो।

अल्पा०—मकोड़ी, मकोडउ।

मह०—मवक।

मौक्तिक-सं०पु० [सं०] मोती।

उ०—कंठ कंदलि अलंकार विस्तव्वसम्यक्त्व संस्कार, वक्षः स्थलि मौक्तिक तणउ हार।—व. स.

मौक्तिकदांम—देखो 'मोतियदांम' (रू. भे.)

मौक्तिकभंग-सं०पु०—एक प्रकार का आभूषण (व. स.)

मौक्तिकमाळा-सं०स्त्री०—१ मोतियों की माला।

२ ग्यारह अक्षरों की एक वर्ण-वृत्त का नाम, इसमें पहला, चौथा, पांचवां, दसवां और ग्यारहवां वर्ण गुरु होता है।

मौक्तिकसर-सं०पु०—एक आभूषण विशेष। (व. स.)

मौक्तिकहार-सं०पु०—मोतियों का हार।

उ०—जिसिउ चंद्र मंडल, जिसिउ स्फटिकोपल, जिसिउ क्षीर समुद्र जल, जिसिउ हिमाचल, जिसउ विकसित केतकीदल, जिसिउ सरद अभ्रजल, जिसिउ मौक्तिकहार।—व. स.

मौख—१ देखो 'मोक्ष' (रू. भे.)

उ०—माया मोह भरम की भीतां मौख मुगती कै आडी।
—स्री हरिरांमदासजी महाराज

२ देखो 'मोख' (रू. भे.)

मौगर—देखो 'मोगर' (रू. भे.)

मौगो—देखो 'मोगो' (रू. भे.)

मौड़-सं०पु० [सं० मुकुट प्रा. मउड़] १ विवाह में वर के सिर पर बांधा जाने वाला सेहरा।

२ सेना में योद्धाओं के सिर पर बांधा जाने वाला सेहरा।

उ०—१ सझि तुरां साज जकड़ै ससत्र, 'वळू' मौड़ सिर वांधियौ। 'अमर' रै वैर असपति हूं, कमधां जुध आरंभ कियौ।—सू. प्र.

उ०—२ सूर घसै घमसांण घण, कायर लहै न ठौड़। हरीया सूरै मरण का, माथै विध्या मौड़।—स्री हरिरांमदासजी महाराज

उ०—३ तौ औ वडौ अवमांण सिर मौड़ वांधौ।—मा. वचनिका

३ मुकुट।

उ०—थये सचेतन महूरत, वकै झकै विरहाकुळ। हा भवतव्य

अतीठ, असुर सिर मोड़ भड़ै तुळ ।—मा. वचनिका
४ स्त्रियों के शिर का एक आभूषण ।
वि०—१ श्रेष्ठ शिरोमणि ।
उ०—१ गजराज चढै कमधज गरूर । सूरिमा मोड़ महाराज सूर ।
—सू. प्र.
उ०—२ जटीधू वांणांपति गंधारी सुतन जोध, भणां जे कौंतेय धरां कुबेर भंडार । फाबै एता कमंधां मोड़ विया 'फता' सार नै आचार उभै सराहे संसार ।—पदमी खिड़ियौ
२ प्रधान, मुखिया ।
उ०—एम तांम उच्चरै सुमत पूरण गण सायर । मोड़ 'खेम' मंत्रियां जोड़ प्रोहत रैणायर ।—रा. रू.
३ सर्व-मान्य ।
उ०—राठोड़ मोड़ हिंदुवांण सिरि, महा द्रुग गढ़ जोधपुर । गज-सिंघ कुंवर अप सूरसिंघ, सहुवै वदे सुर असुर ।—गु. रू. व.
रू०भे०—मउड़, मउड, मउडि, मउर, मवड़, मवोड़, मोड, मोड, मोड़उ, मोड ।
मोड़उ—१ देखो 'मोड़ौ' (रू. भे.)
उ०—वळतउ पूछइ वात विवेक, लगन विचइ थायइ दिन एक । पंथइ वहतां मांदउ पडचउ, तिणि कारणि मोडउ आपडचउ ।
—ढो. मा.
२ देखो 'मोड़' (रू. भे.)
मोड़णौ,मोड़बौ—देखो 'मोड़णौ, मोड़बौ' (रू. भे.)
उ० –१ तन मोड़ वांकी निजर त्रिपुरा सलज चढ़ियां सोहळी । सळ नाक चाढै विकट सोहै, अहर वेसर अळवळी ।—मा. वचनिका
उ०—२ मोड़ै मुख मोड़ै हीतळ हतवाळी, पीतळ पैरण नैं सीतळ सतवाळी ।—ऊ का.
उ०—३ उण रै वारै जावतां धणी री आंख्यां ईं खुली । वो आळस मोड़ नैं बैठो व्हियो —फुलवाडी
मोड़णहार, हारौ (हारी), मोड़णियौ—वि० ।
मोड़िओड़ौ, मोड़ियोड़ौ, मोड़योड़ौ—भू० का० कृ० ।
मोड़ीजणौ, मोड़ीजबौ—कर्म वा० ।
मोड़बंध, मोड़बंधो–सं० पु०—१ वर, दूल्हा ।
२ राजा ।
वि०—जिसके सेहरा बंधा हो ।
रू० भे०—मोड़बंध, मोड़बधो, मौडबंध, मौडबंधी ।
मोड़बंधी–सं० स्त्री०—१ वधू, दुल्हिन ।
२ मोड़ बांधने की क्रिया या भाव ।
३ वह स्त्री या लड़की जिसके मौड़ बंधा हो ।
मोड़ियोड़ौ—देखो 'मोड़ियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० मोड़ियोड़ी)
मोढ़ौ—देखो 'मोढौ' (रू. भे.)
उ०—१ गिलम बिछायत गरक, पसम मोढ़ा तकिया पर । तठै विराजै तांम, सभै आणंद नरेसुर ।—सू प्र.
उ०—२ जैसे प्रकड़ा नायिका को वस्त्र भरतार आकरसे कहतां खैंचे सु मोढ़ो छूटै, तैसे रात्रि आकास की मोढ़ो छांडै छै ।
—वेलिटी.
मौच—देखो 'मोच' (रू. भे.)
मौचणौ, मौचबौ—देखो 'मोचणौ, मोचबौ' (रू. भे.)
उ०—तनक भणक हरिरस तणी,कढत प्रांण सुण कांन । महापाप सह मौचवै, आवै जनम न आंन ।—ह. र.
मौचणहार, हारौ (हारी), मौचणियौ—वि० ।
मौचिओड़ौ, मौचियोड़ौ, मौच्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
मौचीजणौ, मौचीजबौ—कर्म वा० ।
मौचियोड़ौ—देखो 'मोचियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० मौचियोड़ी)
मौछ–सं० स्त्री०—बछड़े के मर जाने पर भी दूध देने वाली गाय ।
रू० भे०—मोच,मौंछ ।
अल्पा०—मूंछड़ी, मोचड़ि, मोचड़ी ।
मौज–सं० स्त्री [अ०] १ सुख, आनन्द, मस्ती ।
उ०—१ आछो खावै अर ओढै-पैरै, मौजां माणै है ।
– दसदोख
उ०—२ रांमजी री किरपा सूं गिरस्ती रा सगळा ठाट इण रांम-दुवारा में हा । चोर रै तौ मौज वणी पण वणी । सैंकड़ूं चोरियां करनै ई वौ इत्तो आरांम नीं पायो ।—फुलवाड़ी
२ आराम, चैन, संतोष ।
उ०—अवै भाईजी बुढ़ापै क्यूं कळमळ करै कमावणियां म्हैं पांच पांडु हां । वांनै तौ चाहीजै के भगवांन री बैठा माळा फरै अर मौज मनावै ।—फुलवाड़ी
३ लहर, तरंग ।
४ मन की उमंग, जोश, उत्साह ।
५ लगन, धुन ।
६ अवारागर्दी, निकम्मापन ।
उ०—मोफतिया इसां मौकां मौज मजा ही किया करैं हैं । कांम कर'र वैं कीनैं ठारै ।—दसदोख
७ पुरस्कार, इनाम ।
उ०—१ सदा ही महिनै रा महिनै आवै छै, अटै मौ कनां ही मौज पावै छै ।—पंचदंडी री वारता
उ०—२ राग अणभै तणी नित ओळग करैं । एक एकौ सिरै मौज पावैं ।—स्री हरिरांमदासजी महाराज
उ०—३ मौज कड़ा मोतियां कनक नग जड़त कटारां । अणपारां सिरपाव, पमंग बगसिया अपारां ।—सू. प्र.
उ०—४ अदवां खं जाइस ज्यां अपजस, चक्रवत अवै न जांणै चौज । राजा अमर करै ले रूपग, मैंगळ वेगागळ दे मौज ।
—किसनो आढौ

८ दान।

उ०—१ तीजो लख तिण वार, 'अजा' भादा कर अप्पै। भण ताराचंद भाट, मौज लख चवथ समप्पै। पात नांम भट 'गोप' करै जस प्रकट सकाजा। मौज लाख पांचमो, जेण बगसै महाराजा।

—सू. प्र.

उ०—२ मौज जवाहर मोतियां, सांसण तेण सवाय। खिड़ियौ बखतौ खेड़पति, महिपति लियौ मनाय।—रा. रु.

उ०—३ रावां सांभळै तुरतांणां राणां, मुजस हुवौ जग सारै। किव पातां मौजां दै करम, रतनौ नांव ऊबारै।—दीपचंद मांदू

उ०—४ आपै लंका मौजां यूं ही, तौ जैहौ आखां दाता तूं ही। थूरै जणां के दैता थोका, झोका झोका जी राघो झोका।

—र. ज. प्र.

उ०—५ आटौं पौ'र अंगीठा ओपम, उर मीठा वच आंणै। मौजां देतां नैण मजीठा, जो दीठा सो जांणै।—ऊ. का.

सं० पु०—९ दातार।

उ०—मौजां संमद बीजाइ महोकम, चावां घिन खग चौ चरिया। कोलू करि कटक पीसण करि सांठौ, सेठ प्रावुध खग खरिया।

—घासीरांम हाडा री गीत

रू०भे०—मउज, मांज, मोज, मौंज।

मोजड़ी देखो 'मोजडी' (रू. भे.)

मोजड़ीयौ—देखो 'मोचड़ौ' (रू. भे.)

उ०—तद रांणी वीजी मोजडी पग सुं चलाय पहाड़ की गुफां मांहे राखी आप पांणी ले घरे आई अर मोजड़ीयौ वीजो जोड़ौ करायौ।—चौबोली

मोजवत—सं०पु०—१ अक्ष नामक वैदिक सूक्तद्रष्टा का पैतृक नाम।

२ मूजवंत का नामान्तर।

मौजी—वि०—१ अपनी इच्छा के अनुसार कार्य करने वाला, स्वेच्छा से विचरण करने वाला।

उ०—लिया वनौजी दळ निज लारै, गुण फौजी वळ गाजा। एकर सूं धाजे चित-चौजी, मन मौजी महाराजा।—ऊ. का.

२ उन्मत्त, मद मस्त।

उ०—रियासत रा पागी नूं पूंर्फ रोवै, अरजन मौजी रा खोज कुण जोवै।—दसदोख

३ आनन्दित, प्रसन्न चित खुश।

४ दयालु, कृपालु, दातार। (अ. मा.)

उ०—मौजी राघव पलक में, जन सरणागत जोय।—र. ज प्र.

५ अशक्त, कमजोर।

६ कायर, डरपोक।

रू०भे०—मांजी, मौंजी।

मौजीज—वि०—१ बुद्धिमान, समझदार।

२ प्रतिष्ठित।

३ वृद्ध, दाना।

मौजूद—वि० [अ०] १ उपस्थित, हाजर।

२ तैयार, प्रस्तुत।

३ विद्यमान, वर्त्तमान।

उ०—ठाकुरजी स्री महाप्रभूजी रौ मिंदर जो जोसीजी री हवेली कनै करायौ सो मौजूद है।—मारवाड़ री ख्यात

४ यथार्थ, वास्तविक।

उ०—हक हासिल नूर दीदम, करारै मकसूद। दीदार दरिया अरवाहि, आंमद मौजूदे मौजूद।—दादूवांणी

रू०भे०—मवजूत, मोजूद।

मौजूदगी—सं०स्त्री० [अ०] १ मौजूद होने की दशा या भाव।

२ उपस्थिति, हाजरी।

३ तैयारी।

४ विद्यमानता

५ यथार्थता, वास्तविकता।

मौजूदा—क्रि० वि० [अ०] वर्त्तमान काल का।

रू०भे०—मोजूदा

मौजौ—सं०पु० [अ० मौजा] १ ग्राम, गांव।

२ जगह स्थान।

३ देखो 'मोजौ' (रू भे) (अ. मा.)

उ०—१ हेम में जड़ित हीर, जूअळै मौजा जंजीर। दूसरै 'गंगा' दवाड़, जड़ी कडी जमदाढ।—गु. रू. वं.

मौटमन—वि०—देखो 'मोटमन' (रू. भे.) (अ. मा.)

मौटवी—सं०स्त्री०—देवी।

उ०—विन ले जावै विसटियां, पांण चकारां पाड़। मारो ज्यांनै मौटवी, सगत असूलां चाढ।—पा. प्र.

वि०स्त्री०—बड़ी, मोटी।

मौटिम—देखो 'मोटम' (रू. भे.)

उ०—किलंवां कजि काळिका, पलंब इक हाथ पसारै। खप्पर मौटिम करै, बिया अनं धरणी धारै।—मा. वचनिका

मौठ—देखो 'मोठ' (रू. भे)

मौड—देखो मोड़' (रू. भे.)

उ०—दळांनाथ आगळ दिली वंस रौ दीपयण, रूप-राई तणा राउ राठोड़ 'अमर' वणियौ सघर वारियौ आत-पत्र, "माल" री तिलक "रिणमाल" हर मौड।—कैसोदास गाडण

मौडबंध, मौटबंधौ—देखो 'मौड़बंध' (रू. भे.)

उ०—आवंत दरगह अन्न-मंघ। मौडबंधा ठाकर मुगट-बंध। जोघपुर वणी आगळ जोधार, दीवांण बइट्ठा करि जुहार।

—गु. रू. वं.

मौत—सं०स्त्री० [सं० मृत्यु] १ किसी प्राणी की आयु पूर्ण होने पर स्वाभाविक रूप से होने वाला मरण, अन्तकाल, निधन।

उ०—१ अमीखांन गढ रोहा मांहे मौत मूंवौ। अमीखांन रा बेटा नू टीको हुवौ।—नैणसी

उ०—२ 'कूंपा' किरमर भलियां, 'फतमल' विजपाळोत। हूटै न जंगै सांमछळ, मिटै न मेछां मौत।—रा. रू.

उ०—३ पगां री आंगळियां रा कटका पाड़तो पाड़तो नाई बोल्यो-बापजी, मौत नी आवै जित्तै जीवणो कुण नीं चावै।—फुलवाड़ी

उ०—४ मिनख री मौत आवै है, जको घड़ी कमर भर री आडी-माड़ी लारली सारी बातां काच दांई साफ होय जाया करै है।

—दसदोख

२ किसी दुर्घटना के कारण, अकस्मात होने वाली मृत्यु।

उ०—एक पावंडो लारै सिरक ध्यांन सूं वार करघो के गुंनली मारघां कालिंदर रा चार टुकड़ा व्हैगा ठाकर रै माथै आयोड़ी मौत टळगी।—फुलवाड़ी

उ०—२ अबै म्हारी मार खावण री सरधा कोनीं ओपळ भूंडी घणी जंतरायो बेद नै बुलाय ओखद करावो। नींतर म्हारी तो मौत है—फुलवाड़ी

उ०—३ भली आदमण जवाब दियो-थां मिनखां रा ऐड़ा भाग कठै जको म्हारा बेटा थांरो परम करै किणी री मौत रा आगर ई जे इण भांत घाल्योड़ा व्है जिण री तो म्है ई कांई करूं।

—फुलवाड़ी

मुहा०—१ बिना मौत मरणी=दुर्घटना से या किसी अन्य कारण से असमय मृत्यु को प्राप्त होना।

२ मौत आणी, मौत आवणी=अत्यन्त कष्ट होना, मरणान्तक कष्ट, मृत्यु की घड़ी आना।

३ मौत नै नैतणी, मौत बुलावणी=ऐसा काम करना जिसके कारण गहरे सकट में फंसना पड़े।

४ मौत मरणी=अपनी मौत से आयु पूर्ण करके मरना।

५ मौत रै मूंडै=खतरे में, ऐसी स्थिति में, जहां जीवन का हर वक्त भय रहता हो।

६ मौत री नसौ=मरने मारने पर ऊतारू होने की दशा, किसी को मार डालने की दशा मे होना।

७ मौत सूं खेलणौ=ऐसा काम करना जिसमें जान जाने की पूर्ण संभावना हो, जोखिम भरा कार्य।

सं० पु०—३ यमराज, काल।

उ०—१ बूढ़ी मां मौत नै अरदास करै। मौत टाळो दै, परियां ही घेरा घालै। फोड़ा पड़ै, डोकरी दुख ही भुगतै।—दसदोख

उ०—२ म्हनै अबै जीवणो ई कित्तोक है। म्हैं तो खुद मौत री ई दूजो रूप हूं, पण बेटी थनै तो हाल केई बरसां लग जीवणो है।

—फुलवाड़ी

४ ब्रह्मा।

५ विष्णु।

६ कामदेव।

७ अत्यन्त कष्ट, तकलीफ।

उ०—ऊंट कह्यो-भोक बुवारतां तो मौत आई, अबै बैठण नै मूंडी वयं धोवै।—फुलवाड़ी

रू०भे०—मांत, मोत।

मौतबिर—देखो 'मातबर' (रू. भे.)

उ०—परघै रा केई मौतबिर राजाजी नै राजी करण सारू हूंगण री कोसिस करी पण हुंगीजियो कोनीं।—फुलवाड़ी

मौतल—देखो 'मुअत्तल' (रू. भे.)

मौताज—देखो 'मुहताज' (रू. भे.)

उ०—मोमजी रो कटूंबो गांव में आगै आयो हुयग्यो। मरनक भंडरगो। दांणै-दांणै रा मौताज हुय रैया है।—दसदोख

उ०—२ मौताज अम्हां हरवळ मिळण, सो कुळ वार नवी मंत्र। 'गोरधन' दियो 'रजवंध' अन्न, मळह आप अन्न मैं करै।—सू. प्र.

मौताद—देखो 'मोताद' (रू. भे.)

मौताहळ—१ देखो 'मुक्ताफळ' (रू. भे.)

उ०—१ चढ़ि मौताहळ-चरिय, सेत नमन पुनि सिस वदनी। वीणा पुस्तक धरियं वागवादनी तस्मै नमः।—मा. वचनिका

उ०—२ है कांनै मौताहळ, कर पूंची कंठमाळ पै संबळ। रांघो नाम विहूंण, अनखांणी ढोर आदम्मी—र. ज. प्र.

२ देखो 'मोताहळ' (रू. भे.)

मौती—देखो 'मोती' (रू. भे.)

मौदिता-सं०स्त्री०—१ देवी का एक नाम।

उ०—नमो विगळा मंगळा चक्रपांणी। नमो मौदिता, जोत अम्बा मडांणी।—मा वचनिका

२ देखो मुदिता' (रू. भे.)

मौद्ग-सं०पु०—एक आचार्य जो व्यास की अथर्वत् शिष्य परंपरा में से देवदर्श नामक आचार्य का शिष्य था।

मौद्गळ-सं०पु०—एक आचार्य, जो वेदमित्र नामक आचार्य का शिष्य था।

मौद्गलायन-सं०पु०—भृगुकुलोत्पन्न एक गोत्रकार।

मौद्गल्य-सं०पु०—१ एक पैतृक नाम, जो नाक, शतबलाक्ष एवं लांगलायन आदि आचार्यो के लिये प्रयुक्त हुआ है।

२ एक ब्रह्मचारी पुरुष, जिसने ग्लाव मैत्रेय नामक आचार्य के साथ वाद-विवाद किया था।

३ एक ब्राह्मण, जो मुद्गल एव भागीरथी का पुत्र था।

४ एक वृद्ध एव कोढी ब्राह्मण जो द्रोपदी का पूर्व जन्म का पति था। उस जन्म में द्रोपदी का नाम नालायनीइन्द्रसेना था।

५ अंगिरा कुलोत्पन्न एक प्रवर।

६ राम की सभा का एक मन्त्री।

७ जनमेजय के सर्प सत्र का एक सदस्य।

८ एक आचार्य जो शतद्युम्न नामक राजा का गुरु था।

मौन-सं०पु० [सं०] १ अणीचिन् नामक आचार्य का पैतृक नाम।

२ देखो 'मून' (रू. भे.)

उ०—हम बोलत तुम बोलत नाहीं, काहे को मौन धरियां।—मीरां

मौनव्रत–सं०पु०—न बोलने, चुप रहने के लिये सकंल्प ले कर किया जाने वाला व्रत ।
रू०भे०—मूनव्रत ।

मौनाळ—देखो 'मूंहनाळ' (रू. भे.)

मौनि, मौनी—सं०पु० [सं० मुनि] १ वह साधु जिसके मौनव्रत हो । (मा. म.)
२ मुनि, महात्मा ।
वि०—१ जिसके मौन हो, मौनव्रत धारी ।
२ जो वाणी से रहित हो, कुछ बोल या कहने में असमर्थ हो, मूक ।
उ०—भूख प्यास संकट सहै, सह विडाणां मार । जन हरिदास मौनी वळद, कासूं करै पुकार ।—ह. पु. वां.
३ देखो 'मून' (रू. भे.)
उ०—साध कुमारग परहरै, सुमति सुमारग लेह । मौनि गहै कुवचन सहै, हरीया कसनी एह ।—स्री हरिरांमदासजी महाराज
रू०भे०—मूनि, मूनी, मोनि, मोनी ।

मौने, मौनै—देखो 'मोनै' (रू. भे.)
उ०—१ मौने आय अनाहक मारचौ, सांम खून विण लेसा । जादव वंस देवकी जांमण, वर अवतार धरेसा ।—र. रू.
उ०—२ जब तेह कहै–मौने ढांढो कह्यो । वैराजी थयौ ।—भि. द्र.

मौफाड़—देखो 'मूंफाड़' (रू. भे.)

मौवत—देखो 'मुहव्वत' (रू. भे.)
उ०—दलाल कंयौ–हां जगती जांणसी कै साचेली मौवत अर हिरदै री हेत इसौ हुवै ।—दसदोख

मौर, मौ'र–सं०पु०—१ शरीर का पृष्ठ भाग, जो गर्दन से लेकर कमर तक होता है ।
उ०—१ तरै लाडक राव नूं पाछा सूं झटको वाह्यौ । राव रे मौरे लागौ । घणौ वूहो ।—नैणसी
उ०—२ पग साथळ मां सुं भागो नै ढोलीया रा आठौं ई साल भागा नै वरड़ायनै उठीया । ढोलियौ मौरां पाछै लीयां इज ऊठीया ।
—राव रिणमल री वात
उ०—३ म्हारा मौर थापळ नै आप म्हनै हरख सूं जीमौ तो म्हारां मरणा में ई सार है ।—फुलवाड़ी
मुहा०—१ मौर थापणौ, मौर थापलणौ=पीठ थपथपाना, शाबासी या साधुवाद देना । जोश दिराना ।
२ मौर दावणौ=पीठ को हाथों से धीरे धीरे दबाना, पीछा करना ।
३ मौर पाधरा करणा=सोना, आराम करना ।
४ मौर मांडणौ=पीठ पर बोझा उठाने के लिये तैयार करना, प्रस्तुत करना । चोट या आघात झेलने के लिये पीठ आगे करना ।
५ मौरां हाथ देणौ=पीठ पर हाथ फेर कर स्नान करना, उत्साहित करना, आश्वासन देना ।
२ पृष्ठ भाग, पिछला हिस्सा ।
उ०—अकबर रा जतनां रही, 'सोनंग' साह 'दुरंग' । मौर न दव्वै साह दळ, और संभारी जंग ।—रा. रू.
३ वृक्षों पर आने वाली मंजरी, बौर ।
रू०भे०—मंवर, मउर, मवड़, मवर, महुर, मांर, मोर, मोहर, मौरी, मौरू ।
४ देखो 'मोहर' (रू. भे.)
उ०—१ सुण आवाज सूरमां, एम धजराज उठाया । मौर जीत सिरमौर, जांण पर जोर कि आया ।—रा. रू.
उ०—२ सांमंतां मौ'र चौवार यर साजतौ, समर वागौ विनै पातसाही ।—नाथौ सांदू
५ देखो 'मोर' (रू. भे.)

मौरक—देखो 'मोरख' (रू. भे.)

मौरख—१ देखो 'मोरख' (रू. भे.)
२ देखो 'मूरख' (रू. भे.)

मौरखी–सं०स्त्री०—वंदूक की नाळ का मुख ।

मौरखौ–सं०पु०—१ ऊंट बैल, बच्छा आदि के मुख पर शोभा के लिऐ बांधी जाने वाली जाली ।
२ देखो 'मूरख' (अल्पा., रू. भे)
३ देखो 'मोरख' (अल्पा., रू. भे)

मौरचौ—देखो 'मोरचौ' (रू. भे.)

मौरणौ, मौरबौ–क्रि०अ०—१ वृक्षों पर मंजरी आना, बौर आना ।
उ०—१ मलयाचळ परवत सोई तौ रुखमणीजी को सरीर । ऊठै ज्यों मलयतरू मौरजै छै । त्यौं अठै मन मौरचौं, मौरचां पाछै कली हुवै ।—वेलि टी.
उ०—२ ढाढी हेक संदेसड़ी, लग ढोला पूंहचाय । जोबन आंबौ मौरियौ, रस चूसौ नी आय ।—ढो. मा.
उ०—३ हरीया बीह वन मौरीया, पांनां फूल फलांह । हेक न मौरचौ वापडो, सूकौ मेह घणांह ।—स्री हरिरांम दासजी महाराज
२ बाजरी के कच्चे या सेंके हुए सिट्टे को दाने निकालने के लिए मसलना या मोरणी द्वारा सूंतना ।

मौरणहार, हारौ हारी), मौरणियौ—वि० ।
मौरिओड़ौ, मौरियोड़ौ, मौरचोड़ौ—भू० का० कृ० ।
मौरीजणौ, मौरीजबौ—भाव वा० ।
मउरणौ, मउरबौ, मवरणौ, मवरबौ, मोरणौ, मोरबौ—रू० भे० ।

मौरत—देखो 'महूरत' (रू. भे.)
उ०—जे ओ मौरत नीं साजता तौ धकलै सात बरसां में ऐड़ौ नांमी मौरत नीं सजतौ ।—फुलवाड़ी

मौरम—देखो 'मोहरम' (रू. भे.)
उ०—ईद, बकराईद मनावै, ताजियां रा तिवांर आवै जद धोकै । पण मौरम अर तिवांर आवै जद कायर मोर ज्यूं झूरै ।—दसदोख

मौरय—देखो 'मोरच' (रू. भे.)

मौरवी—देखो 'मुरवी' (रू. भे.)

मौरवीकामकंटका-संस्त्री०—मुरु नामक यवन राजा की कन्या जो घटोत्कच की पत्नी थी।

मौरसली-सं० स्त्री०—एक प्रकार का पुष्प।

मौराटी-संस्त्री०—पीठ।

मौरामेळ-संपु०—अंत्यानुप्रास, पद्य के चरणों की तुक बंदी।

मौरित-वि०—जिसमें मंजरी, मौर, बौर आगई हो, मंजरि युक्त। (पेड़)

उ०—निगर भर तरुवर सघण छांह निसि, पुहपित अति दीपगर पळास। मौरित अंब रीझ रोमंचित, हरखि विकास कमळ प्रत हास।—वेलि

मौरियाळ-संपु०—जंगल में चरने के लिये जाने वाले पशुओं के झुण्ड में से सबसे आगे चलने वाला पशु।

वि०—अग्रगामी, अग्रणी।

मौरियोडो-भू०का०कृ०—१ मंजरी या बौर आया हुआ. (वृक्ष)

२ बाजरी के सिट्टे को मसला या सूंता हुआ।

(स्त्री० मौरियोड़ी)

मौरियो—देखो 'मोर' (अल्पा., रू. भे.)

मौरी-संस्त्री०—१ बैल के ककुद स्थान से पिछले पैरों की पीठ तक होने वाली बालों की पंक्ति।

२ तलवार के म्यांन पर छोटी व पतली डोरी।

३ प्याले के ऊपर का भाग, प्याले का मुख।

उ०—सूनें रूपें के मौरियां नूं जड़ाऊ के प्याले फिरते हैं। जिस प्यालूं के बीच ही अग्रार दाळ चीनी परतकाळी अंगुरी गले कुलाव ऐसी भांति भांति के फूल भरते हैं।—सू. प्र.

३ देखो 'मोरी' (रू. भे.)

४ देखो 'मौर' (रू. भे.)

मौरुं—देखो 'मौर' (रू. भे.)

उ०—ढूवासा मोरूं पर कुबासा घेट, तुंबे के घाटा सा माटा सा पेट, वोरूं के कांटा सा आंटा सा पाव। आछा सा चलणें में काछा सा भाव।—दुरगादत्त बारहठ

मौरूसी-वि०—जो बाप-दादा के समय से चला आरहा हो, पैतृक।

मौरौ—देखो 'मोरौ' (रू. भे.)

मौर्य-संपु० [सं० मौर्य] एक प्रसिद्ध राजवंश, जिसका वर्षों तक मगध पर शासन रहा।

रू०भे०—मौरिय, मौरय।

मौर्यौ—देखो 'मोर' (अल्पा., रू. भे.)

मौळ-संस्त्री०—१ सस्तापन, मंदी।

उ०—अेकर एक कूंजड़ा रै अणूंती मौळ रै कारण आंमलियां अर कांदा अणूंता पोतै रैंगा।—फुलवाड़ी

२ अभाव, कमी।

उ०—तीर और रूकडा तरवारियां नै रुख रुख न्यारी न्यारी कर न्हाकदी है, कांनी कांनी वीरां री मौळ पड़ गई।—वी. म. टी.

३ उदासी, सुस्ती।

४ कान्तिहीनता, मंदता।

५ किसी कार्य में यथेष्ट महल-पहल या उत्साह न होने की अवस्था या भाव, शान्ति।

६ हलकापन, न्यूनता।

७ फीकापन, रूखापन, स्वाद हीनता।

८ ज्यादा खट्टेपन का अभाव। (९) प्रभाव हीनता।

रू०भे०—मांळ, मोळ।

मौल—देखो 'मोल' (रू. भे.)

उ०—१ सतगुर तो वोरा भया, सिग सोदागर होय। हरि मोदौ चित्त चौहटौ, तोल न मोल न कोय।

—श्री हरिरांमदासजी महाराज

उ०—२ मंडै पिलाण कोटियं केकांण मौल ऊंचरा। करै सनाह कंठळि पैसार सैन घूमरां।—मा. वचनिका

उ०—३ मैंहघा मौल दियै मेघावत, लिये अपार नकौ जम लाह। आछावळे मोतियां असड़ौ, सोदौ करै वळापति साह।

—महाराजा छत्रसिंघ रौ गीत

उ०—४ माया सूं मिनख री मौल वत्ती व्है। म्हैं बडेरां री ठोकरां खाई हूं। दीखती माया रै सांमी थें आं ठोकरां री कीमत नीं आंक सको।—फुलवाड़ी

मौ'ल—देखो 'महल' (रू. भे.)

उ०—गांठ बांध बाहर निसरिया। देहरौ एक सूनौ थौ जठै जाय बूरियो ऊपर आठौ रात जंगळै पैस राजा नै मौ'ल पो'चाय कह्यौ— हमैं हूं घरां जाऊं छूं।—राजा भोज अर खापरा चोर री बात

२ देखो 'महिळा' (रू. भे.)

मौलगत—देखो 'मोहलत' (रू. भे.)

उ०—सोळै वरस हांकरता लोप व्हैगा। एक छिण लागौ। मौलगत री फगत छे'लौ दिन बाकी हो।—फुलवाडी

मौळट-संपु०—खूंटे आदि गाड़ने का लकड़ी का हथोड़ा।

मौळणौ, मौळबौ—देखो 'मोळणौ, मोळबौ' (रू. भे.)

मौळणहार, हारौ (हारी), मौळणियौ—वि०।

मौळिओड़ौ, मौळियोड़ौ, मौळयोड़ौ—भू० का० कृ०।

मौळीजणौ, मौळीजबौ—कर्म वा०।

मौलत—देखो 'मोहलत' (रू. भे.)

उ०—१ औध तिहारी ये वांवनो हो अब, आवणौ व्है नहिं बात अधूरी। वा विधि को विरमावनौ हो चित, चावनौ मौलत होति मंजूरी।—ऊ. का.

उ०—२ लक्खी कह्यौ—सोळै वरसां री मौलत कोई कम मौलत

नीं व्है ।—फुलवाड़ी

मौलवी–सं०पु० [अ.] १ इस्लाम धर्म का आचार्य । मुसलमानों का धर्म गुरू ।

उ०—मौलवी कराड़ै अरज काजी मुला । पाडजै देवहर दळां कर पेल । मेच्छ वांचै जिकौ हिंद इकळीम मजझ । खड़ौ राजा जितै वर्णं नह खेल ।—गु. रू. बं.

२ अरबी भाषा का विद्वान ।

३ मुसलमानों के बच्चों को पढ़ाने वाला गुरु ।

रू०भे०—मोलवी, मोलवी ।

मौलसरी, मौलसिरी, मौलस्री—देखो 'बोलसरी' (रू. भे.)

उ०—आसापाळौ खिजूर गूंदी लेसूड़ौ केसूला खिरणी मौलसिरी फरवास ।—रा. सा. सं.

मौळायौ–वि०—१ निरन्तर फीकापन होने के कारण स्वाद परिवर्तन के लिये हर प्रकार की वस्तु खाने का इच्छुक ।

२ कामेच्छा से व्याकुळ ।

मौळि—देखो 'मोळी' (रू. भे)

मौलि–सं०पु० [सं०] १ अंगिरा कुलोत्पन्न एक गोत्रकार ।

२ एक आचार्य, जो वाभ्रव्य नामक आचार्य का पिता था ।

३ देखो 'मोली' (रू. भे.)

मौलिक–वि०—मूल्यवान, कीमती ।

उ०—वह मौलिक वागा दिया ।

मौळियामंगळ–सं०पु०[सं०मौलि मंगल] वह लड़का जिसकी जन्म कुंडली में पहले,चौथे, सातवें, आठवें और बारहवें घर में मंगल पड़ा हो ।

रू०भे०—मोळियामंगळ ।

मौळियौ—विविध रंगों का साफा विशेप ।

रू०भे०—मोळियौ ।

मौळी–सं०स्त्री०—१ विभिन्न रंगों में रंगा कच्चे सूत का धागा, जो देव-पूजन व मांगलिक अवसरों पर काम आता है । सूत्र-बंधन ।

उ०— अलंकार बाजणा कदंमां कटि संघ आभा । जटी मौळी वांम अंगां पौसाकां जरीम ।—मा. वचनिका

२ ईंधन की लकड़ियों का गट्ठर ।

उ०—हरि जेम हलाड़ौ जिम हालीजै, कांय धणियां सूं जोर कृपाळा । मौळी दिवौ दिवौ छत्र माथै, देवी सो लेऊं स दयाळ ।
—प्रथ्वीराज राठौड़

३ मस्तक, शिर ।   (ह. नां. मा.)

रू०भे०—मउळी, मोळी, मौळि ।

४ देखो 'मौळौ' (स्त्री.)

मौळू—देखो मेळूजी' ।

मौळौ–वि० [स० मलिन, स्त्री० मौळी] १ मंद गति से काम करने वाला, सुस्त, आलसी ।

२ जो तीव्र न हो, तेज न हो, मंद, धीमा ।

उ०—१ मीट इत्ती मौळी व्हैगी कांई के खुद रै पगां री मोचड़ियां ई नीं दीखै ।—फुलवाड़ी

उ०—२ डोकरी कह्यौ–आप गिणाई जकी सगळी चीजां म्हनै साफ दीसै है, जाळौ वाळौ कीं कोनी ; म्हारी अकल कीं मौळी है, म्हनै आ समझ में नीं आवै के जे आं गाभां अर आं अमोलक चीजां सूं ई कांई राजा बणतौ व्है तो कांई एक बांदरी ऐ सगळी चीजां पैर'लै तौ वौ राजा व्है जावैला ।—फुलवाड़ी

२ निष्तेज, कान्तिहीन, प्रभाहीन, मलिन, धुंधळा । फीका ।

३ उदास, खिन्न ।

४ शान्त, नर्म, धीमा ।

उ०—वौ कीं मौळौ पड़नै बोल्यौ–माजी, म्हारा सूं गोरी उणनै पीळिया रो रोग ।—फुलवाड़ी

५ उत्साह रहित, ठंडा ।

६ निर्बल, कमजोर ।

उ०—मेवाड़ ढूंढाड़ जीऊं ही हाडौती माळवौ मौळौ । दोळा काळ चक्र सौ किणी न आवै दाय ।—सूरजमल मीसण

७ प्रभावहीन, निष्फल ।

८ शर्मिंदा ।

९ नामर्द ।

१० अपेक्षाकृत न्यून स्तर का, हलका ।

११ साधारण, ठीक–ठीक ।

ज्यूं—ऐम जमांनौ मौळौ है ।

१२ जो ज्यादा कीमती न हो, कम दामों का, सस्ता ।

१३ बहुत कम खटाई के कारण जो स्वादिष्ट हो, जो ज्यादा खट्टा न हो ।

ज्यूं—मौळौ दही, मौळी छाछ ।

रू०भे०—मउळु मउलु, मउलूं, मउळू, मउलू, मउळौ, मोळौ ।

मौल्य—देखो 'मूल्य' (रू. भे.)

मौसम–सं०पु० [अ० मौसिम] १ ऋतु ।

उ०—वै बोल सुण्यां पछै दीवांणजी साफ तौ जांणै मौसम ई बदळगी । पौह री ठौड़ चैत री महीनौ आयग्यौ ।—फुलवाड़ी

२ जलवायु, आबोहवा, वातावरण ।

उ०—उठै नीं रितुवां बदळती, नीं हवा बदळती । एक सरीसा दिन, अर एक सरीसौ मौसम । फुलवाडी

३ किसी कार्य या बात–चीत के लिये उपयुक्त समय, वक्त ।

मौसमी–वि०—१ मौसम का, मौसम सम्बन्धी ।

२ किसी ऋतु विशेप मे होने वाला ।

३ जो समय के अनुकूल हो ।

सं.स्त्री०—नारंगी की जाति का एक फल विशेप ।

मौसर–सं पु०—१ मृतक के पीछे किया जाने वाला भोज । मृत्यु भोज ।

उ०—१ जाट आपरी मां रै लारै घणौ ई खरचौ–खातौ करियौ । गंगाजळी वरताय नै सगळी न्यात निंवती । नांमी मौसर करियौ ।
—फुलवाड़ी

उ०—२ श्रोसर उडाया, मौसर मिटाया । श्राखा खरचा-वरचा घटाया, श्रर कुरीतां में, सुभीतै रा कांम पौळाया ।—दसदोख
२ किसी अवसर विशेष पर होने वाला धार्मिक, सामाजिक या रीति रिवाज सम्बन्धी कार्य ।
३ देखो 'मोसर' (रू. भे.)
उ०—१ मांनवियौं चूकी मती, श्रायौ मौसर एह देह । देहु धन दीन नैं, लाभ जनम रौ लेहु ।—ऊ का
उ०—२ भूप 'अजीत' तणौ छळ भाटी, पण परधीर रीत री पाटी । बोल 'किसोर' 'सूर' श्रतुळी बळ, मौसर तणौ सांपनौ मंगळ ।—रा. रू.
उ०—३ सभ भूप निज थांनख सरा, मभ श्रड़ै भूहां मौसरा । रिण रांम जप दसमाथ रा, खित वेध लगा खरा ।—र. ज, प्र.
उ०—४ श्रंग ऊंचास रा, खीजिया खास रा । मुळकती मौसरा, श्राविया श्रास रा ।—मा. वचनिका
रू०भे०—मवसर, मांसर, मावसर, मौंसर, मोसर ।
मौसाड़ौ-सं०पु०—पशुश्रों का एक रोग । इससे पशु के मुंह पर फफोले पड़ जाते हैं ।
मौसाळ—देखो 'मोसाळ' (रू. भे.)
मौसाळौ, मौसालौ—देखो 'मोसाळ' (श्रल्पा., रू. भे.)
उ०—हेमजी स्वांमी घर में था जद एक बहिन थी तिण नैं मांमी श्राय मौसालै ले गयो ।—भि द्र.
मौसिकीपुत्र-सं०पु० [सं० मौषिकीपुत्र] एक श्राचार्य, जो हारिकर्णी पुत्र नामक श्राचार्य का शिष्य था ।
मौसी—देखो 'मासी' (रू. भे.)
उ०—वखत री वात, मां मरै बीगैं मौसी ही मरै । मोटियार मरग्यौ श्रर बियैरै लारै-लारै बेटौ भी श्रागीनैं गयौ ।—दसदोख
मौसीहाई—देखो 'मासीश्राई' (रू. भे.)
उ०—श्रर राजूवां खोवर हींगसर रहै, सोही पण मोहिलां री दोहितौ । सगो ही मौसीहाई भाई लागै ।—सूरेखीवे कांधलोत री बात
मौसौ—देखो मोसौ' (रू. भे.)
उ०—जद भेरूं बावौ ठिरड़ीजतां ठिरड़ीजतां ई इण मौसा रौ पडूत्तर देतौ बोल्यौ-धनैं हाल इण भेद री ठा'को पड़ी नीं । सारी ऊमर मठ में बैठी ई मटरका करीया है, बांणियां नैं टाबर को दिया नीं ।—फुलवाड़ी
मौह—देखो 'मोह' (रू. भे.)
मौहकांण—देखो 'मुकांण' (रू. भे.)
मौहत—सं० पु० [स० महत्व] महत्ता, बड़ाई ।
उ०—घर घर मंगळचार, मौहत चढ़ियौ मंडोवर । नाद वेद वरतिया, सुकवि बोलै सुभ श्रवसर ।—गु. रू. बं.
मौहताज—देखो 'मोताज' (रू. भे.)
उ०—कूंजरां तणौ मौहताज करसी कवण । कवण कोड़ां तणी मौज करसी । —द दा.
मौहतौ—देखो महता' (रू. भे.)
उ०—सरब मुखत्यारी करमचंद री है । श्रर दूजौ ठाकुरसी वैद मौहतौ है । सू इण पर महाराज री वडी मरजी ।—द. दा.
मौहबत, मौहबति—देखो 'मुहब्बत' (रू. भे.)
उ०—वांह छूटै अम्रत की धारा, पीवी संत भया मतवारा । श्रौरन को संगति नहीं सोवति, लागी एक श्रलख सुं-मौहबति
—स्री हरिरांमदासजी महाराज
मौहमंद—देखो 'मुहम्मद' (रू. भे)
उ०—मौहमंद पीर जिवै गउ कीन्ही, वा फिर मारि जीवाई ।
—स्री हरिरांमदासजी महाराज
मौहम—देखो 'मुहिम' (रू. भे)
उ०—दळवळ द्रव्य दांन खग दावै, अनि भूपाळ जोड़ नह श्रावै । कूंत साह नूं हुतौ सकाजा, मौहम जिसी लीध महाराजा—सू प्र.
मौहर—देखो 'मोहर' (रू. भे.)
उ०—दूर कराई दाढ़ियां, मौहरां दे दे हाथ । माळा कंठी मीलची, समचै एकण साथ ।—रा रू.
उ०—२ तोय भूप पग धोयन तखिण । दम दम मौहर समापै दखिण ।—सू. प्र.
उ०—३ 'गाजीसाह' तणौ गाढ़ां गुर, साजै श्रणी वडौ सरदार । सारां मौहर वडा दत समपै, मारां मौहर वजावै सार ।
—तेजसी खिड़ियौ
उ०—४ मौहरि गोठि वीमाह, मौहर दरबार मभारां । रहां मौहरि रावतां, सदा जिम वहतां सारां ।—सू. प्र.
उ०—५ रिम दौड़ियौ दिवस तिण रतियां । मौहर खबर पुगि मेड़तियां ।—रा. रू.
उ०—६ 'पतौ' परिग्गह श्रागळौ, मौहर गजां मरोड़ ।—रा. रू.
उ०—७ मौहर लुघू दीरघ जमल, पायै ए परि श्रांण । सकौ कविंदां सांभळौ, ससि छंदा सिहनांण ।—रि. प्र.
मौहरत—देखो 'महुरत' (रू. भे.)
उ०—भछर उछाह श्रावाज श्रारती, घड़ियौ मौहरत विकट घणौं ।
—दूदा नगराजोत रो गीत
मौहरलौ-वि० [राज०मोहर=श्रागे+प्रत्य-लौ] (स्त्री० मौहरली) श्रागे वाला, श्रग्रणी, प्रथम ।
उ०—सुतन श्रंद्रसींग केहर' श्रनै सुभु'सुत,चैवड़ां वीयां जम न कूच लीया । वांसली श्रणी सु घणी करड़ी वणी, मौहरली श्रणी ग लोह मळीया ।—पहाड़खां श्राढी
मौहरि,—१ देखो 'मोहर' (रू. भे)
उ०—मौहरि गोठि वीमाह, मौहर दरबार मभारां । रहां मौहरि रावतां, सदा जिम वहतां सारां ।—सू. प्र.
२ देखो 'मोरी' (रू. भे.)
मौहरियाळ—देखो 'मोहरियाळ' (रू. भे)
उ०—पळ छळि रायांसींग कलावत । मौहरियाळ 'सिवौ'माहावत ।
रा. रू.

मोहरी—१ देखो 'मोरी' (रू. भे.)

उ०—१ मोहरी डोरी रेसमी, नीखी चंदणी नकेल। रूपाळक फण नाग रंग, बाळक जुंग वकेल।— सू. प्र.

उ०—२ मोहरी चंपा सेलो समंध, पचकल्यांण पहचांणिये। अन्नेक रंग पसमां अलल, जेहा मुखमल जांणिये।—सू. प्र.

उ०—३ परठि त्रसेणी पाव, उरस छिब्र फोव उभल्लै। वह बरसतां वंदूक, भाल मोहरी कर भल्लै।—सू. प्र.

२ देखो 'मोहर' (रू. भे.)

उ०—१ पाती जोव घणी छळ पायां। भगवांनोत मोहरी भायां।
—रा. रू.

उ०—२ मांनड़ो 'वेण' फौजां तणा मोहरी। वाजि वैकुंठ गया डांण भरता —जगो सांदू

मोहरू—१ देखो 'मोहर' (रू. भे.)

उ०—चोळ धजाबोळ मोहरू सैं ऐसी अनेक चल्ली। सीसा सोरडे रूं अटालू के भार।—सू. प्र.

२ देखो 'मोरी' (रू. भे.)

मोहरे, मोहरै—क्रि०वि०—१ अग्र भाग पर, आगे, अगाडी।

उ०—जे लांबा हेला करै, ओछी ओख भरंत। बचै सही वै वाघ सूं, मोहरै गया मरंत।—बां. दा.

२ सम्मुख, सामने।

उ०—मोहरै चढियां मयंद रै, भैंचक जाय भड़ाक। गैंवर भूलै गाळबौ, चीसै चढ़ चित चाक।—बां. दा.

३ किनारे, तट पर।

उ०—मोहरै महरांण रै दळां रा महावळ, भुजावळ वनपती कीध भैरी।—नगराज रो गीत

मोहरौ—देखो 'मोरौ' (रू. भे.)

उ०—१ आसमांनी मोहरा किये पल्लैसे भिलते आए।—सू. प्र.

उ०—२ कांबियां रंग मोहरा करै, रंग वां भैंसा रगति। जदि चाढ़ि मर्दां ज्वाळामुखी, सर्फै तांम तोपां सगति।— सू. प्र.

मोहल—१ देखो 'महल' (रू. भे.)

उ०—जाई सहर के राजा की कुंवरी पंचकली नै मिल्यौ, चंपे री वळी सूं तुलती। तेरौ नांम पंचकली कहावती। तेरै मोहल जाइ बैठो।—चौबोली

२ देखो 'महिळा' (रू. भे.)

उ०—ताहरा आस्या राजलोक मैं गई। ताहरां राजा रा मोहल आस्या नूं देखि नै अचिरज हुवा —स्यांम संदर री बात

मोहळियौ—देखो 'मोळियौ' (रू. भे.)

उ०—ढोला थांरै बांधण पचरंग मोहळियौ। म्हांरै (नै) ओढण नै वालाचूंदड़ी।—लो. गी.

मोहलौ—१ देखो 'महोलौ' (रू. भे.)

२ देखो 'महल' (रू. भे.)

उ०—मंडिया महोछव सिधारथ मोहले, सुपन त्रिसला सुतण किया साचा।—ध. व. ग्रं.

मोहणी, मोहिणी, मोहीणी—देखो 'मोहनी' (रू. भे.)

उ०—१ सरूप हेक सुंदरी, इला नका अगोचरी। प्रतख्ख चख्ख पीइणी, महा मदन मोहिणी।—मा. वचनिका

उ०—२ माळिणी मोहीणी माहेसरी, चकरी कुंडळा बालिका। भखणी जमदूतां भजां, नांम संतां प्रति पाळिका।—मा. वचदिका

मोहूरत – देखो 'महुरत' (रू. भे.)

मोहूरतिक—सं०पु०—एक देव, जो धर्म ऋषि एवं मूहूर्ता के पुत्रों मैं से एक था।

मोहो—देखो 'मोसो' (रू भे.)

उ०—यूं करतां कतराक दन जाता वडां भायां री वहुआं अणी री वहू ने मोहा वोली, तको केहण लागी–थे मांटी वेर घरां रा सुख भुगतो पण रजपूतां री कुमाई वरोळो छो।
—कल्यांणसिंघ नगराजोत वाढ़ेल री वात

म्यंत—देखो 'मित्र' (रू. भे.)

उ०—मछराळ देवदयाळ ग्रीवसु म्यंत रे।—र. ज. प्र.

म्यांउ, म्यांऊ—सं०पु०—बिल्ली की बोली, बिल्ली के मुंह से निकलने वाली आवाज।

उ०—इत्ता में एक मिनकी भंवरा में आय म्यांऊं २ करण लागी।
—फुलवाड़ी

रू०भे०—म्यांव, म्यौं।

म्यांन—सं०स्त्री० [फा० मियान] १ तलवार, कटार आदि का कोष, खाना, कवर। (डि. को)

उ०—खींया थूं खुरसांण, घण तेगी तलवार री। मुखमल हुंदी म्यांन, खंवे विलूंबू 'खींवजी'।—अग्यात

पर्या०—कोष, धरतरवार, चंद्रहासधर, तरवारपिधांन, पगीवार, ससत्रधर।

रू०भे०—मयांन, मिआंन।

२ अन्नमय कोश।

३ शरीर।

म्यांनभाई—सं०पु०—वे दो पुरुष जिनका एक ही स्त्री से मैथुन सम्बन्ध हो।

म्यांनी—सं०स्त्री० [फा०] पाजामे में दोनों पल्लों के रानों के बीच में जोड़ा जाने वाला कपड़े का टुकड़ा।

रू०भे०—मियानी, मैंनी।

म्यांनौ—सं०पु०—१ अभिप्राय, तात्पर्य आशय, अर्थ।

उ०—१ पूछचौ—थूं कुण है? कीकर म्हारी चावना पूरैला, पै'ला म्हनै इण री सावळ म्यांनौ दे, पछै म्हैं हलायां लावतौ ढबूंला।
—फुलवाड़ी

उ०—२ वा तो आवै ज्यूं, जका बोल उकळिया, वै ई विना लाग-लपेट रै पाधरा खळकाय दिया। वांरी की अरथ के म्यांनौ नीं हो।—फुलवाड़ी

२ कारण।

उ०—पण थूं मौत आयां पैं'ली क्यूं मरणी चावै, इण री म्यांनो वता।—फुलवाड़ी

३ भेद, रहस्य।

उ०—पूछ्यो-म्हैं तो थारा प्रांण लेवतो नैं थूं डग डग हसियो कीकर? म्हनै इण रो म्यांनों बता।—फुलवाड़ी

४ खुलासा।

उ०—एक ई चीज सूं किणी नैं सुख उपज सकै तो किणी नैं दुख। इण मरम रा म्यांना वास्तै ई आ बात है।—फुलवाडी

५ एक प्रकार की डोली, पालकी या पालना, जो चारों ओर से ढका हुआ होता था। इसके दोनों ओर मुंह होते थे। यह पर्दा न शीन स्त्रीयों के आवागमन के काम आता था।

उ०—म्यांनै विन मुगळानियां, जरा न जा पातीह। भै खुमांण हुंत भरम खो, छडै उघड़ि छातीह।—रेवतसिंह भाटी

रू०भे०—मयानो।

म्यांव—देखो 'म्यांऊं' (रू. भे.)

म्याई—१ देखो 'माई' (रू. भे)

२ देखो 'वाई' (रू. भे.)

म्यावट—१ देखो 'मावठ' (रू. भे.)

२ देखो 'म्यावट' (रू. भे.)

म्याळ-सं०पु०—१ कच्चे मकान की छाजन के नीचे लगने वाला लकडी का लट्ठा।

२ कमरे में आमने-सामने की दीवार में लगने वाला वह पत्थर जिस पर सामान रखा जाता है। टांड।

३ कूए से पानी निकालने के चक्र के दोनों डंडे के नीचे की पटरी।

४ कच्चे मकान की छाजन में लगे 'वलींड' को सीधा रखने के लिये उसके नीचे लगने वाली धनुषाकार लकड़ी।

म्याळमिनो, म्याळमिन्नी-सं०पु०—जंगली बिलाव।

उ०—अर अठी नैं चौधरी म्याळमिन्ना नैं पकड़ण सारू उणी भात सावचेत होयनैं ऊभो हो।—फुलवाड़ी

म्यावट-सं०स्त्री० [सं० मात्री-वृत्ति] १ तुरन्त ब्याई हुई गाय, भैंस या बकरी के दूध को गर्म करने पर बनने वाला गाढ़ा खाद्य पदार्थ।

रू०भे०—म्यावट।

२ देखो 'मावठ' (रू. भे.)

म्युनिसिपल्टी-सं०स्त्री० [अं० म्युनिसिपेलिटी] नगर की सफाई आदि का उचित प्रबन्ध रखने वाला कस्बे या शहर में गठित एक निगम नगर पालिका।

म्युजियम-सं०पु० [अं] अद्भुत एवं विलक्षण वस्तुओं या पशु-पक्षियों को प्रदर्शनार्थ संग्रह करने का स्थान, अजायबघर।

म्यौं—देखो 'म्यांऊं' (रू. भे)

म्रकंडु-सं०पु० [सं०] मार्कंडेय ऋषि के पिता का नाम।

म्रखा—देखो 'म्रसा' (रू. भे.)

उ०—१ चित करणी म्रखा दिसी नह चाहै, आप विरद चा पखा उमाहै।—र. ज. प्र.

उ०—२ अनट्ट जे म्रख। अवाच्य, सूरमंस री नरा। परं सती अभेट पिंड, दास गाय दीन रा।—सू. प्र.

म्रखावाद—देखो 'म्रिसावाद' (रू. भे.)

उ०—तुच्छ धरम रंग, गुरूजन प्रसंसा भंग, सुक्रतकरण-प्रमाद, बहुल म्रखावाद, एवंविध कलि।—व. स.

म्रगंक—देखो 'म्रगांक' (रू. भे.)

म्रग—देखो 'म्रिग' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—१ मडळ मांह वसाय म्रग, थयौ कलंकी चंद। पायौ सीह मयंद पद, हण हाथळ म्रग व्रंद।—बां. दा.

उ०—२ ठणै मद्र मंदां म्रगां वंस ठावां, छटा फैल हालै किना सैल छावा।—वं. भा.

उ०—३ म्रग जातै आयौ मनै, आयौ पोस अवन्न। पसरंतां उत्तर पवन, घर सीतळ रवि घन्न।—रा. रू.

म्रगअंक—देखो 'म्रगांक' (रू. भे.) (ह. नां. मा)

म्रगअंखी देखो 'म्रगाक्षी' (रू. भे)

म्रगईंद, म्रगइंद्र—देखो 'म्रगेंद्र' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

म्रगचरम-सं०पु० [सं० मृग चर्म] हरिन का चमड़ा जो बिछाने के काम आता है।

म्रगछाळ, म्रगछाळा-सं०स्त्री०—मृगचर्म।

उ०—१ इसौ रूप विक्रम कियौ, कांधे धर म्रगछाळ। द्वादस तिलक सरीर के, हाथ लियौ जयमाळ।—पंचदंडी री वारता

उ०—२ सकारां चुरसां थारां जांणियौ जहांन सारां। बाखांणीयौ छत्र धारां जोड़ रा विसेस। आडंबरां भड़ालां सांवरां साज ओछाड़ीयौ, म्रगांछाळां वागवरां पूजीया महेस।—महकरण मईयारीयौ

रू०भे०—मरगछाळा, म्रगछाळा, म्रिगछाळ, म्रिगछाळा, म्रिघछाळा।

म्रगछावड़—देखो 'म्रगसावक' (रू. भे.)

उ०—लइता जग लहरि तुरंगे लागा, सूरांतण जोवतां सधीर। म्रगछावड़ जिसा लोचन मुख, तीखा जिसा खुतंगी तीर।

—महादेव पारवती री वेलि

म्रगजळ—देखो 'म्रिगत्रसणा'

म्रगझंप-सं०पु०—डिंगल साहित्य का एक गीत छंद विशेष, जिसके प्रथम तीन चरण १४ मात्रा का, चौथा-चरण १० मात्र का तथा बाद में तीन चरण फिर १४-१४ मात्राओं के होते हैं।

म्रगडचण-सं०पु०—सियार।

म्रगडांणी-वि०—मृग के समान छलांग लगाने वाला।

म्रगणाळ-सं०पु० [सं० मार्गण] तीर, बांण। (डिं. नां. मा.)

म्रगतरसणा, म्रगतिसणा, म्रगतिस्णा, म्रगत्रसना, म्रगत्रसिणका, म्रग त्रिसणा, म्रगत्रिसना—देखो 'म्रिगत्रसणा' (रू. भे.)

उ०—१ म्रग-तिसणा रै लारै भटकियो, पण पांणी री छांट ई हाथै लागी नीं।—फुलवाड़ी

उ०—२ जाचक हिरण तिसाया जावै, पुन्न नीर सुपनें नहिं पावै। धर जिग्यासू दस दिस धावै, म्रगत्रिसणां गुरु लख मुरभावै।
—ऊ. का.

उ०—३ जिसिउं स्वप्नराज्य. जिसिउं गंधरवनगर, जिसिउ नदी पुलिनां तरालि लिखित प्रासाद, जिसिउं अलातचक्र, जिसी म्रग-त्रस्णिका, जिसा मायागोलक, जिसिउं इंद्र-जालवन तिसिउ मायामय संसार।—व. स.

म्रगदंस. म्रगदंसक-सं०पु० [सं० मृगदंशक] कुत्ता, श्वान।
(अ. मा., ह. नां. मा.)

म्रगधर-सं०पु० [सं० मृगधर] चन्द्रमा, चांद।

रू०भे०—मरगधर।

म्रगनयणी, म्रगनयनी—देखो 'म्रिगनयणी'

उ०—१ कुवळ नयण कुळ सुच्छ, म्रगनयणी मनांसभी। मुंहडै आगळ मुच्छ, जम वयूं जासी जेठवा।—जेठवौ

उ०—२ म्रगनयणी. म्रगपति-मुखी, म्रगमद तिलक निलाट। म्रगरिपु-कटि सुंदर वणी, मारू अइहइ घाट।—ढो. मा.

म्रगनाथ—देखो 'म्रिगनाथ' (रू. भे.)

म्रगनाभ, म्रगनाभि, म्रगनाभी—देखो 'म्रिगनाभि' (रू भे.)

उ०—१ म्रगनाभ अतर सौंधा प्रमळ, वंटि अरगजा वळोवळां। जदि चढे अनुज अग्रज गजां, हूंतां हाल किलोहळां।—सू. प्र.

उ०—२ म्रगनाभि इं महमह तीय पहुतीय गउखि कुमारि। नयणि निरखू ते निरखिय हरिखिय,नेमि सा नारि।—जय सेखरसूरि

उ०—३ सुखानंद राजा रो पुत्र उग्रनाभि ५४, रो धरम-ध्वज, ५५, रो मकरध्वज ५६, रो म्रगनाभि ५७।—रा. वंसावली

म्रगनिद्रा, म्रगनींद-सं० स्त्री०—निद्रा की वह अवस्था जब नींद लेते समय आखें खुली रहती हों।

उ०—म्रगनिद्रा मांहेह, सोवै जायलपत सदा।—पा. प्र.

म्रगनैणी—देखो 'म्रिगनयणी' (रू. भे.)

उ०—१ तरुणीं बरुणीं में नींभर भर ताकी, थिग थिग म्रगनैंणी पिक-वैणी थाकी।—ऊ. का.

उ०—२ भूरै रे म्रग-नैणी भूलर, मेह तणी परि मोरां। जोगण-पीठ दिया सायजादी, घूमरि ऊपरि घोरा।—रूघो मुहतो

म्रगपत, म्रगपति, म्रगपती—देखो 'म्रिगपति' (रू. भे.
(ना. डिं. को., ह. नां. मा.)

उ०—१ कुण दूजें चालै कहो, म्रगपत वाळै माग। जुध में काचा ताग जिम, तोड़ै ऊमर ताग।—बां. दा.

उ०—२ स्रीवत्स रू खगी लुळाय किरि, स्येन रू बज्र कुरग। छाग फिरि। नंद्यावरत घट रू कच्छप गति, बीलोत्पल रू संख म्रहि म्रगपति।—वं. भा.

उ०—३ म्रगनयणी, म्रगपति-मुखी, म्रगमद तिलक निलाट म्रगरिपु-कटी सुंदर वणी, मारु अइहइ घाट।—ढो. मा.

म्रगपाळ-सं०पु०—तीर। (डिं. नां.मा.)

म्रगमंदा-सं०स्त्री० [सं० मृगमंदा] क्रोधवशा नाम्नी से उत्पन्न कश्यप ऋषि की दस कन्याओं में से एक।

म्रगमद, म्रगमदा—देखो 'म्रिगमद' (रू. रू.)

उ०—१ विद्या गुण वारता भली, म्रगमद परिमळ माळ। तेळ बिंदु जळ माहि ज्यूं, पसरै जगति साळ।—पंचदंडी री वारता

उ०—२ तव मुख पूरण चांद सौ, पूरण सदा प्रकास। अग अंग में खुल रही, म्रगमद के री वास।—कूंवरसी सांखलारी वारता

उ०—३ पंचवरण फूलां नो माल, प्रतिमा कंठि ठकूं सुविसाल। म्रगमद अगर धूप घनसार, जय जय सुमतिनाथ सुखकार।—स.कु.

उ०—४ तन असित घ्राण म्रगमद त्रसींग। हठ अरिन अमल व्है जात हींग।—ऊ. का

उ०—५ जिन चंद-सूरति सकलचंदन, म्रगमदा केसर करी। प्रह समइ-सूंदर पारस्व पूजइ, तेहनी घन्यासिरी।—स. कु.

उ०—६ म्रगनयणी, म्रगपति-मुखी, म्रगमद तिलक निलाट। म्रगरिपु-कटि सूंदर वणी, मारू अइहइ घाट।—ढो. मा.

म्रगमरद, म्रगमारण-सं०पु०—सिंह, शेर। (अ. मा., ह. नां. मा.)

म्रगमास-सं०पु०—मार्गशीर्ष मास।

उ०—नव उच्छव नर नार, नवल स्रंगार वसन्ने। गीता मैं म्रगमास, कह्यौ मम रूप किसन्ने।—रा. रू.

म्रगमित्र—देखो 'म्रिगमित्र' (रू. भे.)

म्रगमिद्र—देखो 'म्रिगमद' (रू. भे.)

म्रगयंद—देखो 'म्रगेंद' (रू भे.) (अ. मा.)

म्रगया—देखो 'म्रिगया' (रू. भे.)

उ०—म्रगया रमैं आवता मारग, देखत ऊभी दोटैं। आज कुलंग भ्रमण तिण ऊपर, लाग जिनावर लोटैं।—र. रू.

म्रगराज, म्रगराव—देखो 'म्रिगराज' (रू. भे.) (नां डिं. को.)

उ०—१ सुख हित स्याळ समाज,हींदू अकबर वस हुवा। रोसीलो म्रगराज, पजै न रांण प्रतापसी।—दुरसो आढो

उ०—२ जिसे जादूराय घोड़ै चढियौ आयो अर आदमियां कयोजी, ऐ राजा पदमसिंघ बैठा। सू देखै तो घायल हुवा म्रगराज ज्यूं घूमैं है—द. दा.

म्रगरिपु-सं०पु० [स० मृग+रिपु] सिंह, शेर।

उ०—म्रगनयणी, म्रगपति-मुखी, म्रगमद तिलक निलाट। म्रगरिपु कटि सूंदर वणी, मारू अइहइ घाट।—ढो. मा

म्रगलउ—देखो 'म्रिग' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—हुं त्रियंच किमु बहरावुं, रथकार नइ सहु थोक जी। म्रगलउ भावना मन भावंतउ, गयो पंचम देवलोक जी—स. कु.

म्रगलोअणी म्रगलोचणी,म्रगळोचना,म्रगलोचनी,म्रगलोयण,म्रगलोयणी, -सं०स्त्री० [सं० मृगलोचना, प्रा० मिअलोअणा] वह सुंदर स्त्री जिसके नैत्र मृग के नैत्र के समान हों।

उ०—१ नवजोवन नारी मिली, उरि लहकइं हे नवसर हार। हंसगमरा म्रगलोमणी, मुहि बोलइ हे मंगलचार।—हीराणंद सूरि

उ०—२ ससि-वदन म्रगलोचना रे, हरिलंकीसु विसाल। राजा मांनै अति घणी रे, जीव सूं अधिक रसाल —जयवांणी

उ०—३ चढंती वय उपमा चढती, म्रगलोचनी कळाइर मोर। गति आसति मति गयंद तणी गति, जोवन तणउ दिखायउ जोर।
—महादेव पारवती री वेलि

उ०—४ हा चंद्रवदनी हा म्रगलोयण, हा गोरी गजगेल।—वि.कु.

उ०—५ चंदवदण म्रगलोयणी, भीसुर ससदळ भाल। नासिका दीप-सिखा जिसी, केळ-गरभ सुकमाल।—ढो. मा.

म्रगलौ—देखो 'म्रिग' (अल्पा., रू.भे.)

म्रगवाह, म्रगवाहण, म्रगवाहन-सं०पु० [स० मृग-वाहन] १ चंद्रमा। (अ. मा.)

२ पवन, हवा। (अ. मा.)

म्रगवीथी—देखो 'म्रिगवीथी' (रू. भे.)

म्रगस—देखो 'म्रिग'

उ०—देवी म्रगसं अश्व हस्ती मयंखे, देवी पंख केकी गरुड घिरट पंखे।—देवि.

म्रगसर—देखो 'मिगसर' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—सुदि म्रगसर सतमी,वार मंगळ वरदाई। अस परम 'अभसाह' विमळ ग्रहि वंस वडाई।—रा. रू.

म्रगसाखा—देखो 'म्रिगसाखा' (रू. भे.)

उ०—म्रगसाखा असि म्रगा, पवन उडांण डांण झापंदा। पाळी हरि विलिपिगा दादुरिया नैव कुदांही।—रांमरासौ

म्रगसावक-सं०पु० [सं० मृग+शावकः] हरिण का बच्चा।

रू०भे०—म्रगछावड, म्रगस्रावक,

म्रगसिर—१ देखो मिगसर' (रू भे) (नां. मा)

उ०—खळ भळ खावण नै म्रगसिर खळ खेधै। बावळ वरफां री तरफां सूं वेधै।—ऊ का.

२ देखो 'म्रिगसिरा' (रू. भे.)

उ०—म्रगसिर नक्षत्र वाउ वाज्यौ सु म्रगां की वइरी हुआै छै। त्रिखा करि व्याकुळ हुआै छै।—वेलि टी.

म्रगस्रावक—देखो 'म्रगसावक' (रू. भे.)

म्रगांक-सं०पु० [सं० मृगाङ्क] १ चंद्रमा। (ना. डिं. को.)

उ०—मालती मेघ म्रगांक मनोहर। मधुकर मोर चकोर जिसी री।
—स कु

२ एक प्रकार की रस औषध।

रू०भे०—म्रगंक, म्रगअंक।

म्रगांकलेखा-सं०स्त्री० [सं० मृगाङ्क लेखा] चंद्र लेखा नामक महासती।

उ०—इम म्रगांकलेखा म्रगावती, सतानीक नी नारजी।—स. कु.

म्रगांण—देखो म्रिग' (मह., रू. भे)

उ०—म्रग छैक म्रगांण उडांण नटी मनु। आंण पटी वछुटी अंवजै। दपटी कळ जांणक तोप थटी दग। डाळ फटी क पठांण वजै।
—किसनजी दधवाड़ियौ

म्रगाक्ष, म्रगाक्षी, म्रगाखी-सं०स्त्री० [सं० मृग+अक्षि] मृगनयनी, मृग के समान सुन्दर नेत्रों वाली स्त्री।

उ०—गवाक्ष तैं म्रगाक्ष की कटाक्ष तैं निगै नहीं। थिराभ चंद्रसाळ चंद्रसाळ पै थिगै नहीं'—ऊ. का.

रू०भे०—म्रगअंखी।

म्रगाट-सं०पु०—१ हरिन।

उ०—थटै गयंदां 'थाट' क फोजां थांहणा। बणै तुरंगा वाळ म्रगाटां वाहणा।—वगसीरांम प्रोहित री बात

२ देखो 'म्रगराट' (रू. भे.)

म्रगादण-सं०पु० [सं० मृग+अदनं] चीता।

म्रगाधिप, म्रगाधिपति, म्रगाधीस-सं०पु० [सं० मृग+अधिपं, मृग+अधीश] सिंह, शेर।

उ०—१ ऊभौ ऊछजियां छरा, जेथ म्रगाधिप जेण। कुण उण वन खांडो करै, हेकौ पान हटेण —बां. दा.

उ०—२ निज कुळ कमळ दिनेसं, चवि सुर गण नखत जांण तिण चदं। मुनि वन रखण म्रगाधिपं, रघुबर अवतं (स) राजेसं।
—र. ज. प्र.

उ०—३ पड़ै गीठ दळां दोळां गोळां व्रज बांण पाथ। कांगरांन घात ओळां जंजाळां कड़क। धूता निसा अयुतां आवते 'मांन' म्रगाधीस, धारी जदी तदी तीसां अयुतां धड़क।
—महाराजा मांनसिंह री गीत

म्रगानयनी, म्रगानेणी. म्रगानैणी—देखो 'म्रिगनैणी' (रू. भे.)

उ०—१ ढोला, म्हांने तो प्यारा लागौ, प्यारा लागौ आप होंजी ढोला आप, अब घर आया, म्रगानैणी रा वालमा होंजी।
—लो. गी.

उ०—२ ऊभी ऊभी म्रगानैणी थांनै, झालो देती घण लाज मरै छै —रसीलै राज री गीत

म्रगराज—देखो 'म्रिगराज' (रू. भे.)

उ०—कुळ हाडां कूरमां, किया विण आडा कारण। ज्यां आगै म्रगराज, घरै गजराज न धारण।—रा रू.

म्रगाळ—देखो 'म्रिग' (मह., रू. भे.)

म्रगासण-सं०पु० [सं० मृग+आसन्] १ म्रगचर्म जो बिछाने के काम आता है।

उ०—बखत म्रगासण त्रिपत विण, देखत रह पिय दीठ। तिम इंद्रासण विण त्रिपत, पियकर परसत पीठ।—बां. दा.

[सं० मृग+अशनम्] २ सिंह, ३ चीता।

म्रगि, म्रगी—देखो 'म्रिगी' (रू. भे.)

उ०—१ सुणियै बसुधाधिप साधन की,विधवा म्रगि मारण व्याधन की।—ऊ. का.

म्रगोली—देखो 'म्रिगी' (अल्पा., रू.)

उ०—ताहरां कह्यो-मैं थारी म्रगीली नहीं खाधी है। जुठो कळंक मनू मतां देई।—सांवतसी री बात

म्रगीस—देखो 'म्रगेस' (रू. भे.)

उ०—यम सुनिय बत्त ग्रंगरेज कांन, मांनो कि तीर मुक्यो कमांन। मातंग हेरि मांनहु म्रगीस, मांनहु पनग्ग लखि खगाधीश।
—ला. रा.

म्रगु—देखो 'म्रिग' (रू. भे.) (उ. र.)

म्रगेंद, म्रगेंद्र—सं०पु० [सं० मृगेन्द्र] १ सिंह, शेर।
२ मध्य लघु की पांच मात्रा का नाम।
३ दो जगण का एक छन्द विशेष। (र. ज. प्र.)
रू०भे०—मिरगेंद्र' ग्रगइंद, ग्रगइंद्र, ग्रगयंद, म्रिगेंद्र।

म्रगेस—सं०पु० [सं० मृगेस] सिंह, शेर।
उ०—तजि तजि हय सो सुनि पकरि तेग, विच्योही जाय थह वह सवेग। सूकर मति पत्तै ढिग ग्रसेस। मयमत्त गज्जि निकस्यो म्रगेस।—वं. भा.
रू०भे०—मिरगेस, म्रगीस, म्रिगेस।

म्रगछाळा—देखो 'म्रगछाळा' (रू. भे.)
उ०—कपाळी चढची वेंळ पै लैर लग्यो, चढ़ी सिंघ काळी लखै वैल भग्यो। गिरि मादि के मेखळी रुंडमाळा, गिरै ग्रंत तंतावळी म्रगछाळा।—ला. रा.

म्रघ—देखो 'म्रिग' (रू. भे.)
उ०—ठावी मूठां ठीक, मूकै बांण महाबळी। म्रिघ सांबर सूकर महिख, भेदंतां निरभीक।—मा. वचनिका

म्रघभखण—सं०पु० [सं० मृग + भक्षणम्] हवा, पवन। (ह. नां मा.)

म्रघवाहण—सं०पु० [सं० मृग वाहन] हवा, पवन।

म्रघ्घ—देखो 'म्रिग' (रू. भे.)

म्रड़ांणी, म्रड़ा—देखो 'म्रडा' (रू. भे.)
उ०—चुणै कर मुंड म्रड़ा वर चाह, सपेख संपेख सराह सराह।
—रा. रू.

म्रजा—देखो 'मरजाद' (रू. भे.)
उ०—कलियांणोत भाजतै कटकै, ग्ररि ग्रंत देखि वचत जो ग्रंग। मेरू चलत म्रजा दधि मूकत, पलटत तरण पंक्त घरपंग।
—महेसकलयांणोत सांखला रो गीत

म्रजाद, म्रजादा, म्रजादि—देखो 'मरजाद' (रू. भे.) (ग्र. मा.)
उ०—१ जांण पणउ कळा तियइ तन जोवण, विघ विन्है ही लागा वाद। मथ काढी जांणी महामह प्यारंभ, मांडी तिण रूप री म्रजाद।—महादेव पारवती री वेलि
उ०—२ सबदी लग कोड़ म्रजाद रायसिंघ। गहवंत रैणायर वड-गात। ऊपर लहर सवाई ग्रपतै, छिलतै छातरिया ग्रन छात।
—द. दा.
उ०—३ मोटा घरां म्रजादा मिटगी, बंगळां रै सो वारी रे। गोला जुगळी मांय गई जद, नसल विगड़ गई न्यारी रे।—ऊ.का.
उ०—४ ग्रा मिटण न दूं ग्रनादि, मो थकां हिंदु म्रजादि।
—सू. प्र.

म्रजादालंगर—सं०पु०—श्री राम की एक उपाधि। (नां. मा)

म्रजादी—वि० [सं० मर्यादित] मर्यादा निभाने वाला।

म्रज्जाद—देखो 'मरजाद' (रू. भे.)
उ०—वडी लाज म्रज्जाद भूजें वर्णै, भळै पार संसार सारो भणै। महा जांण प्रमीण मोटी मती, करै कव्वि कोट गढे कीरती।
—ल. पि.

म्रड—देखो म्रिड' (रू. भे.) (ग्र. मा)
उ०—जैत भूप 'जैतरी' हार 'कमरा' री होसी। म्रड पोसी मुंड-माळ, जगत चख कौतुक जोसी।—मे. म.

म्रडमाळ—देखो 'मुंडमाळ' (रू. भे.)

म्रडांणी, म्रडानी, म्रडा—सं०पु० [स० मृडानी, मृडा] पार्वती, दुर्गा।
(ग्र. मा.)
उ०—१ तुही कांम ही नांम देवी कहांणी। महमांय दूगाय तुंही म्रडांणी।—मे. म.
रू०भे०म्रड़ांणी, म्रड़ा।

म्रण—देखो 'मरण' (रू. भे)
उ०—तद ठाकर ग्रापरै भायां रजपूतां सं सला करी। ग्ररु कयो, जन्म-म्रण तो देहरो सम्बन्ध छै पण परब पर मरियां नांम रहै।
—द. दा.

म्रणाळ, म्रणालिनि—सं०स्त्री० [सं० मृणालं मृणालिनी] १ कमळ की नाल, कमल का डण्ठल
२ कमल की झड़।
रू०भे०—मिरणाळ, म्रिणाळ, म्रिणाळणि, म्रिणाळणी, म्रिनाळ।

म्रणाळी—सं०पु० [सं० मृणालिन्] कमल।
रू०भे०—म्रिणाळी।

म्रतंजय—देखो 'म्रित्युंजय' (रू. भे.)
उ०—तद ब्राह्मण कही ग्रठै हूं एक विद्या सीखूं छूं। विद्या रो जाप म्रतंजय रो जाप छै।—चौवोली

म्रत—वि० [सं० मृत] १ मरा हुग्रा, निष्प्राण।
उ०—ईखे हय म्रत ग्रापरो, दूदा कुमर दुबाह। बाजी साम नवाब रो, ले चढियो जयलाह।—वं. भा.
२ व्यर्थ, निरर्थक।
रू०भे—म्रित म्रिति।
३ देखो 'म्रित्यु' (रू. भे.)
उ० - १ उदोत-तपोनिध त्रैगुण ईस। ग्रजीत-जरा-म्रत जोग ग्रधीस।—ह. र.
उ०—२ सूजा पाट सकाज, वाघ कमधज वरदाई। कर दन खगबह कंवर, पिता पहिला म्रत पाई।—सू. प्र.
उ०—३ मधुमास फागन पख द्वादसी, जुघ प्रकास जग जांणियो।

म्रत जीप गया हरि थांन मझ, म्रत जिहांन वाखांणियौ ।—रा.रू.

उ०—४ मन मूझ तणौ वीमाह जिसौ म्रत, मारु 'गोइंद, आप मरै। आयौ भड साथी जिकौ मौ आवै, काळ निमित्त सरीर करै।

—गु रू. वं.

म्रतउ—देखो 'म्रित्यु' (रू. भे.)

म्रतक—देखो 'म्रितक' (रू. भे.)

उ०—१ जवन म्रतक तन फ़पण घन, अन कर कोडी आंण। धरती में ऊंडी धरै, जांण भलौ निज जांण।—बां. दा.

उ०—२ दाखियौ ऐम पड़दायतां करै नेम म्रतकां मरौ। पण एह अम्हां पाराथ परि साथ न छोड़ां साम रौ।—रा. रू.

म्रतककरम-सं०पु० [सं० मृतक+कर्म] किसी प्राणी की मृत्यु के पीछे किये जाने वाले वे संस्कार या कार्य जिससे मृतक की आत्मा को सद्‌गति मिले।

०भे०—म्रितककरम।

म्रतकर-सं०पु० [सं० मृत्यु+कर] यम। (अ. मा, नां. मा)

म्रतका—देखो 'म्रितिका' (रू. भे.)

म्रतकि—देखो 'म्रितक' (रू. भे.)

उ०—अति कंध सवंकित याळ अंग। सिव त्रिपुर म्रतकि घनु व्याळ संग।—रा. रू.

म्रतग—देखो 'म्रितक' (रू. भे.)

म्रतगाळ-सं०पु० [सं० मृत्युकाल] मृत्युकाल, मौत का समय, मृत्यु।

उ०—भूंडां दीनौ कोट भाटियै, मरण विढण चौ छाडि मतौ। नवगढ तणौ नीर नीसरतै, पाळ हुऔ म्रतगाळ 'पतौ'।

—प्रतापसिंह सुरतांणोत भाटी री गीत

म्रतघात-सं०पु० [सं० मृत्यु+आघात] मौत का संदेश, मृत्यु का आघात।

उ०—विसतरी वात सारी विसव, अणकारी उतपात सी। अजमेर कांन अवरंग नैं, सुण लग्गी म्रतघात सी।—रा. रू.

म्रतजीवनी-सं०स्त्री० [सं० मृत-जीवनी] मुर्दे को जिलाने वाली विद्या, संजीवन-विद्या।

रू०भे०—म्रितजीवनी।

म्रतदातिथि-सं०स्त्री०-[सं०मृत+दा+तिथि]फलित ज्योतिष के अनुसार तिथि व वार सम्बन्धी बनने वाले पांच योगों में से तृतीय योग।

म्रतवासर-सं० पु० [सं० मृत्यु+वासर] मृत्यु-दिवस। मरने का दिन।

म्रतभवण, म्रतभूवण-सं० पु० [सं० मृत्यु+भवन] मृत्यु लोक,

उ०—मीठापणा जांणिया मीठौ, कमधज विनौ तुहारा कृत। 'वीका' हरा वांण विस्तरियौ, म्रतभवणै मांही इम्रत।—द. दा.

म्रतलोक—देखो 'म्रित्युलोक' (रू. भे.)

उ०—१ देवी अम्रत रूप आकास भम्मे,देवी मांनवां रूप म्रतलोक रम्मे।—देवि.

उ०—२ भोळी कमेड़ी अपूठी फिरनै चालती चालती ई होळै सूं कह्यौ-राजकंवर नैं हठ करनै म्हैं ई तौ अठै लाई अर म्हैं ई आपनै पाछा म्रतलोक में पूगावूंला।—फुलवाड़ी

उ०—३ तद दरबारी भीतर जायनै समुद्रजी नूं गुदरावी-जु महाराज-श्री म्रतलोक सूं एक मांनवी आयौ छै।

—वूढौ ठग राजा री वात

उ०—४ पाताळ अनइ (अ) म्रतलोक आदीपुगि, हेकां हेक मनह सह हार।—महादेव पारवती री वेलि

म्रतलोकी-सं० पु०—मृत्यु लोक में रहने वाला, मनुष्य, पशुपक्षी आदि प्राणी। (अ. मा.)

रू० भे०—म्रतिलोकी,

म्रतलौक—देखो 'म्रित्युलोक' (रू. भे.)

उ०—ताहरां परमेस्वरजी आगै पुकार हुई। जु म्रतलौक माहा वघटावत बुरी चाल चालै। ईयां नुं सफा दीजै।

देवजी वगड़ावतां री वात

म्रतवांन-सं० पु० [सं० मरुत्वत्] इन्द्र। (अ. मा., नां. मा)

म्रति—देखो 'म्रित्यु' (रू. भे.)

उ०—निपट चिन्है दळ आया नैड़ा, नरां सुरां म्रति आया नैड़ा। नोवति सोर घड़ड़ि धुवि नैड़ा, नाळि निहाउ गाजिआ नैड़ा।

—वचनिका

म्रतिका—देखो म्रितिका' (रू. भे.)

म्रतिलोकी—देखो 'म्रतलोकी' (रू. भे.) (ह नां. मा)

म्रतु—देखो 'म्रित्यु' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

म्रतुत-सं०पु० [सं० अमर्त्या ऽऽ त्तर] इन्द्र। (नां. मा.)

म्रत्त, म्रत्य—देखो 'म्रित्यु' (रू. भे.)

उ०—रवि ससी पवन ते साखिया म.जु कांई असत्य। कूडूं जु कांई करूं म. तु मुझ देज्यौ म्रत्य।—नळाख्यांन

म्रत्यका—देखो 'म्रितिका' (रू. भे.)

उ०—मोताहळ ऊतारि माळ तुळछी गळ धारै। करै तिलक म्रत्यका तिलक कूंकम वीसारै।—रा. रू.

म्रत्यलोक, म्रत्यलोकि—देखो 'म्रित्युलोक' (रू. भे.)

उ०—कउण तूं कवण तूं घरि नारी, स्वरगि लोकि कइ तूं अवतारी। नारि कोइ नथी तुझ सिरखीं, म्रत्यलोकि कइ तूं अनिमेसी। सालि सूरि

म्रत्युंजय—देखो 'म्रित्युंजय' (रू. भे.) (अ. मा., नां. मा.)

म्रत्यु—देखो 'म्रित्यु' (रू. भे.)

उ०—स्व वंस को सुधारने विजाति को बिगारनें। मनें सु म्रत्यु वारलों अने समांन मारने।—ऊ. का.

म्रत्युलोक—देखो म्रित्युलोक' (रू. भे.)

उ०—पाव पयादे सब चल आये, सुन मुरली का बाजा। म्रत्युलोक में टटियां छाई, जहां देवन का वासा।—मीरां

म्रत्यू—देखो 'म्रित्यु' (रू. भे.)

म्रदंग, म्रदंगी, म्रदंगो–सं०पु० [सं० मृदंग] ढोलक के आकार का कुछ लम्बा एक वाद्य ।
उ०—१ वजि म्रदंग चंग रंग उपंग वारंग । अनंग छबि चंग उमंग अंग अंग ।—सू. प्र.
उ०—२ आगम वेदिनां, म्रदंगो घन घातांन सहते सुखं स्तोत्रयो, युद्धंते सेवका जय: स्वांमिन: ।—व. स.
रू०भे०—मरदंग, मिरदंग, मिरदंगी, म्रिदंग ।

म्रद–सं०स्त्री० [सं० मृद] १ मिट्टी, रज ।
२ मिट्टी का टीला ।
३ मिट्टी का ढेला ।
४ एक प्रकार की गंधदार मिट्टी ।
५ देखो 'मरद' (रू. भे.)
६ देखो 'म्रदु' (रू. भे.)

म्रदु–वि० [सं० मृदु] १ प्रिय, सुहावना ।
उ०—म्रदु रयण सुपन संपेख मंगळ । विमळ उर सुख बिसतरै ।
—रा. रू.
२ सुकुमार, नाजुक ।
उ०—म्रदु रूप सिखर थळ द्रुम विमोह । स्रंगार चमर किर पूंछ सोह । निज तेज सरति चत्र जुवळ नाळि, भव कमळ जंत्रि सूची कि भळि ।—रा. रू.
३ नरम, मुलायम, कोमल ।
४ मधुर, मीठा ।
५ मंद, धीमा, हल्का ।
उ०–सुंदर भाल विलास, अलक सम माल अनोपम । हित प्रकास म्रदु हास, अरुण वारिज मुख ओपम ।—रा. रू.
६ उग्र, प्रचंड, तीव्र आदि का विपर्याय ।
७ निर्बल, कमजोर ।
सं०स्त्री०—१ घृत- कुमारी ।
२ जूही का पौधा और फूल ।
३ कोयल ।
४ शनिग्रह ।
रू०भे०—मिउ, मुदु, म्रद, म्रिदु ।

म्रदुका–सं०स्त्री० [सं० मृद्वीका] दाक्ष, दाख । (अ. मा.)

म्रदुगण–सं०पु० [सं० मृदुगण] चित्रा, अनुराधा, मृगशिरा व रेवती इन चारों नक्षत्रों का समूह ।

म्रदुता–सं०स्त्री० [सं० मृदुता] १ कोमलता ।
२ मधुरता ।
रू०भे०—म्रिदुता

म्रदुधुनि–सं०स्त्री० [सं मृदुध्वनि] कोयल । (अ. मा.)

म्रदुळ–वि० [सं० मृदुल] १ कोमल, मुलायम, नरम ।
२ सुकुमार, नाजुक ।
उ०—सोई खुडद आज दिन सांप्रत, स्री दुरगा सकळाई । मूरत मृदुळ भेख मरदांनू, सूरत हृदय समाई ।—मे. म.
३ दयालु, कृपालु ।
४ नरम ।
सं०पु०—१ पानी, जल ।
२ अगर काष्ठ विशेष ।
३ अंजीर ।
४ तकिया । (अ. मा.)
५ नारेल । (अ. मा.)
रू०भे०—म्रिदुल ।

म्रद्दणो, म्रद्दवो—देखो 'मरदणो, मरदवो' (रू. भे.)
उ०—पारेवइ धावतइ अति पाइ, नीघसइ धरा पुड़ तिणि निहाइ । पंचाइण चडियउ ऊभि पांण, मूगळी घड़ा म्रद्दिवा मांण ।
—रा. ज. सी.

म्रध–सं०पु०—[सं० मृध] युद्ध समर
उ०—टूंड चढै प्रथीमल भांजै टोडी, 'लला' तणै सर घारै लोह । वाये वाये नली जिम वाजै, म्रध मणधर जण आवै मोह ।
—प्रथीराज उडणा री गीत

म्रम्म—देखो 'मरम' (रू. भे.)
उ०—नमो प्रह्ळाद ऊबारण प्रम्म । नमो म्रग–कासब मारण म्रम्म ।—ह. र.

म्रयाद, म्रयादा—देखो 'मरजाद' (रू. भे.)

म्रसा–सं०स्त्री० [सं० मृषा] असत्य, झूठ ।
उ०—मी आगै कह्यो हुंतौ, अयवते ऋसि-रायो रे तेतो वात मिलती नहीं, स्यूं रिख वांणी म्रसा थायो रे ।—जयवांणी
रू०भे०—म्रखा, म्रिखा, म्रिसा,

म्रसावाद—देखो 'मिरसावाद' (रू. भे.)
उ०—कूड़ कपट कलि विकलां केलवी, कीजइ छै केइ कांम । म्रसावाद पगोपग मोकलो, सी गति थासी स्वांम ।—ध. व. ग्रं.

म्रहण—देखो मरहण' (रू. भे.)

म्रतलोक—देखो 'म्रित्युलोक,
उ०—विहांणै म्रतलोक थी स्रगलोक जाइस्यां–।—वचनिका

म्रिंग—देखो 'म्रिग' (रू. भे.)
उ०–वनिता मुख पूंनिम चंद वणी,म्रिग भ्रू ह चखां म्रिगरूप भणी ।
—वचनिका

म्रिखा—देखो 'म्रसा' (रू. भे.)
उ०—पर त्रिय गमण म्रिखा परकासी, ज-दिन एह खग ऊपमि जासी ।—सू. प्र.

म्रिखावाद—देखो 'मिरसावाद' (रू. भे.)

म्रिग–सं०पु० [सं० मृग] (स्त्री० म्रिगी)१ हरिन, मृग ।
उ०—१ काजळ की रेख जको लंकसी लगावै छै । तीखी चख रीज

विधाता कीनी छै जको खंजन मीन म्रिग छलिनां छै।—पनां.

उ०—अहि खग म्रिग दम हंस अळूझै। सुणै न सबद गात नह सूझै।
—सू. प्र.

उ०—१ कसतूरी कमडळ वसै, म्रिग ढूंढै वन वंन। हरीया जुग जांणै नहीं, रांम वसै तन तंन।—स्री हरिरांमदास जी महाराज

२ जीव, प्राणी।

उ०—चत्र दिस जाइ न सकै चक्रति,निजर काळ देखै नयण। म्रिग जीव सरण मारीजतो, राख राख राधारमण।—जगो खिड़ियो

३ जंगली पशु।

४ हाथी की एक जाति।

५ घोड़ों की एक जाति।

६ मार्गशीर्ष मास।

७ मृगशिरा नक्षत्र।

८ डिंगल में 'वेलिया सांणोर' (छोटा सांणोर) छंद का एक भेद-जिसके प्रथम द्वाले में १४ लघु, २५ गुरु कुल ६४ मात्राएं तथा इसी क्रम में शेष द्वालों में १४ लघु २४ गुरु कुल ६२ मात्राएं होती हैं। (पि. प्र.)

रू०भे०—मरग, मिरग, मिरिघ, म्रग, म्रगु म्रघ, म्रघ्घ, म्रिग, म्रिघ

अल्पा०—मरगलियो, मरगलो, मरघलियो, मरघामो, मिरघणो मिरगो, मिरलड़ो, मिरगलो, मिरछलो म्रगलउ, म्रगलो, म्रिगलो, म्रिघलो,

महा०—म्रगांण, म्रगाळ,

म्रिगछाळ,म्रिगछाळा—देखो 'म्रगछाळा' (रू. भे.)

उ०—मैं जपंती नांव मेरे सायब का, आंण मिळो नंदलाला रे। हाथ सुमखी कांख कूबड़ी, ओढ़ रही म्रिगछाळा रे।—मीरा

म्रिगजळ—देखो 'म्रिगत्रिसणा'

म्रिगतरसणा, म्रिगतिरसणा, म्रिगतिसणा, म्रिगतिस्णा, म्रिगत्रसणा, म्रिगत्रस्णा—सं०स्त्री० [सं० मृग-तृष्णा] १ रेगिस्तान या ऊसर भूमि में दिखने वाला धूल कणों का प्रतिबिम्ब जो कड़ी धूप व हवा के विभिन्न ताप क्रमों की तहों में से आवर्तित होकर सूर्य किरणों के गुजरने से बनता है एवं जल की भ्रान्ति पैदा करता है।

२ भ्रम, भ्रांति, धोखा।

३ अवास्तविक पदार्थ।

रू०भे०—मिरगत्रसण, म्रगतरसणा, म्रगतिसणा, म्रगतिस्णा, म्रगत्रसणा, म्रगत्रिसना,

म्रिगधर—सं०पु०—चन्द्रमा।

रू०भे०—मरगधर

रू०भे०—मिरगवर, मिरगधर, म्रगधर,

म्रिगनयणी—देखो 'म्रिगनैंणी' (रू भे.)

उ०—बाघ-लंक पिक-वाणि, हंस-गमणी म्रिग-नयणी —गु. रू.वं.

म्रिगनाथ—सं०पु० [सं० मृगनाथ] १ सिंह।

रू०भे०—मिरगनाथ, म्रगनाथ,

म्रिगनाभ, म्रिगनाभि—सं०स्त्री० [सं० मृग+नाभि] १ कस्तूरी।

उ०—काया केसरी किसनागरि, जवाधि मै जळहरि। म्रिगनाभ मळैतरि, मयाचल।—गु. रू. वं.

२ मृग की नाभि।

सं०पु०—३ एक राठौड़ राजा। (प्राचीन)

उ०—मकरध्वज ५६ रो, म्रिगनाभि।—रा. वंसावळी

रू०भे०—मिरगनाभ, म्रगनाभ, म्रगनाभि, म्रगनाभी।

म्रिगनैंणी—सं०स्त्री० [सं० मृगनयना]मृग के समान सुंदर नेत्र वाली, मृगाक्षी।

रू०भे०—मिरगनयन, मिरगनैंणि, मिरगनैंणी, मिरगानैंणी, मिरघानैंणी, म्रगनयणी, म्रगनयनी, म्रगानयणी, म्रगानेणी म्रिगानयणी, म्रिगानैंणी।

म्रिगपत, म्रिगपति—सं०पु० [सं० मृग-पति] १ सिंह।

२ चन्द्रमा।

रू०भे० म्रगपत, म्रगपति, म्रगपती।

म्रिगमंद, म्रिगमंद्र, म्रिगमद—सं०पु० [सं० मृगमद] १ कस्तूरी।

उ०—१ सोरंभ म्रिगमद गंध, सार घण सार सनेवत। नित नव सार संकेत, अगर नीसार उखेवत।—रा. रू.

उ०—२ अति घण मोला अतर, तई म्रिगमद घण तन्नो। झोला सुगंध समीर, पड़ै झोला जोजन्नां।—सू. प्र.

२ एक आभूषण विशेष।

वि०—काला, श्याम। (डिं. को.)

रू०भे०—मिरगमद, मैंमदा, म्रगमद, म्रगमदा, म्रगमद्र।

म्रिगमित्र—सं०पु०—चन्द्रमा, शशि।

रू०भे०—मिरगमित्र म्रगमित्र।

म्रिगया—सं०स्त्री० [सं० मृगया] शिकार, आखेट।

उ०—विहरंत वाग विलास, किरि संभग्रह कयलास। दिन उदय सुख दरसाव, चित होत म्रिगया चाव।—रा. रू.

रू०भे०—मिरगया, म्रगया।

म्रिगराज, म्रिगराट—सं०पु० [सं० मृगराज] सिंह, शेर।

उ०—सदा मिळै बिल स्याळ रै, वच्छ पुच्छ खुर चांम। मिळै गया म्रगराज थह, गजरद मोती ग्रांम।—बां. दा.

रू० भे०—मरगराज, मिरगराज, म्रगराज, म्रगराय, म्रगराव म्रगाट।

म्रिगरिपु—सं०पु० [सं० मृगरिपु] सिंह।

उ०—म्रिगरिपु नर केई मुणै, मुणै केक म्रगराज। इण गज गंजण सीह उर, दुहुं प्रकारां लाज।—बां. दा.

म्रिगलोचणी, म्रिगळोचनी—देखो 'म्रिगलोयणी' (रू. भे.)

म्रिगलो—देखो 'म्रिग' (अल्पा., रू. भे.)

म्रिगवीथी—सं०स्त्री०—शुक्र की नौ वीथियों में से एक।

रू०भे०—मिरगवीथी, म्रगवीथी।

म्रिगसर—देखो 'मिगसर' (रू. भे.)

उ०—१ जोधांणे जोधाहरी,सुख मांणे 'अभसाह'। विच म्रिगसर फागरण,विचे च्यार थया वीमाह।—रा. रू.

उ०—२ सुदि म्रिगसर सप्तमी, वार मंगळ वरदाई। अंस परम अभसाह, विमळ ग्रहि वंस वडाई।—रा. रू.

म्रिगसिरा-सं०पु० [सं० मृगशिरा] नक्षत्र विशेष का नाम।

रू०भे०—मरगसरा, मिरगसरा, म्रगसिर, म्रगसिरा।

म्रिगसाखा-सं०पु० [सं० शाखा-मृग[वानर, बंदर।

रू०भे०—म्रगशाखा।

म्रिगाक्षी, म्रिगाखी—देखो 'म्रगाक्षी' (रू. भे.)

म्रिगानयणी, म्रिगानैणी—देखो 'म्रिगनैणी' (रू. भे.)

उ०—१ कागद म्रिगानयणी बाच्या न जाय, छाती तो फाटे हिवड़ो ऊछळे जी म्हारा राज।—लो. गी.

उ०—२ आगे म्रिगानैणी, अम्रित वैणी कांमणी सिरणगार सझिया छै, इणियाळा काजळ ठांसिया छै। वणाव किया छै। राजांन रा मन राखै छै।—रा. सा. सं.

म्रिगि, म्रिगी-सं०पु० [सं० मृग+ई] १ मादा हरिन, मृगी।

२ एक प्रकार का रोग जिसके प्रभाव से प्राणी कुछ समय के लिये अचेत व अज्ञानावस्था में हो जाता है।

३ एक प्रकार की स्त्री।

रू०भे०—मिरगी, मिरघी, म्रगि, म्रगी।

अल्पा०—मिरगली, म्रगीलो।

म्रिगेंद्र—देखो 'म्रगेंद्र' (रू. भे.)

म्रिगेस—देखो 'म्रगेस' (रू. भे.)

म्रिगैमद—देखो 'म्रिगमद' (रू. भे.)

उ०—निज पौसाक सु केसरी नोखां। जवहर, अतर म्रिगैमद जोखां।—सू. प्र.

म्रिग्ग—देखो 'म्रिग' (रू. भे.)

उ०—१ संमूह सेन असख सफां, म्रिग्ग मुज्झै मंझली। मल्हपति फौजां मुहरि मेंगल, सूंड डोहे सिघली।—गु. रू. वं.

उ०—२ वैरका झुंडये, गिग्गने लोडयं। फोज हेमज्जयं, म्रिग्ग अमूंजयं।—गु. रू. वं.

म्रिघ—देखो 'म्रिग' (रू. भे)

उ०—१ झांफंता म्रघ झेल, फुळता-तीतर पाकड़े। आवरीया नांह ऊबरे, अणियां दिये ऊथेल।—मा- वचनिका

उ०—२ गरदां घर अंबर गूंधाळियो, धमळा-गिर डूंगर घुं-घुळियो। कटकां विच मीर सिकार करै, म्रिघ नाहर संवर रोझ मरै।—गु. रू. वं.

म्रिघछाळा—देखो 'म्रगछाळा' (रू. भे.)

उ०—अंग भभूत गळै म्रिघछाळा, यो तन भसम करूरी।—मीरां

म्रिघलो—देखो 'म्रिग' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ मंदहास मुळकै म्रिघा त्रंगी विछीया पै वज्जऐ। सिणगार असुरां छळण समहर, सगति अदभुत सझ्झऐ।—मा. वचनिका

उ०—२ म्रिघला चक्कबा मोर, कूदणा झंयां किसोर। ऐराकी ऊन्हा अलल्ल, भाडजी आरबी भल्ल।—गु रू. वं.

म्रिड़, म्रिड-सं०पु० [सं० मृड] शिव, महादेव। (नां. मा.)

उ०—चुणें कर मुंड मृडा वर चाह। संपेख संपेख सराह सराह।—रा. रू.

रू०भे० – म्रड, म्रड, म्रिढ़।

म्रिढ़—देखो 'म्रिड' (रू. भे.)

उ०—माधव दस दम हेक म्रिढ़, ऐ बारह आदीत। एक एक तौ जिम अवर, जेह कुंण जग जीत।—वां. दा.

म्रिणाल, म्रिणालणि. म्रिणालणी—देखो म्रणाल' (रू. भे)

म्रिणाली—देखो 'म्रणाली' (रू. भे.)

म्रित—१ देखो 'म्रत' (रू. भे)

उ०—जीवत म्रित हुइ माहिजहां, दिल्ली वै सुरितांण। राति दीह अंदर रहै, नह मंडै दीवांण।—वचनिका

२ देखो ,म्रित्यु' (रू. भे.)

उ०—हाडा खीची हेक, सोळिंकी सूरिज-वंसि। मुणिस्यइ म्रित माहरउ सदा, अवरे राइ अनेक।—अ. वचनिका

म्रितक-सं०पु० [सं० मृतक] १ मरा हुआ, मुर्दा।

२ शव, लाश।

३ पिशाच, प्रेत।

४ शैतान।

रू०भे०—मिरतक, म्रतक, स्रताकि, म्रतग, म्रितग, म्रितकि, म्रितकी।

उ०—अति कंध सवंकति याल अंग, सिव त्रिपुर म्रितकि धनु व्याल सग।—रा. रू.

२ देखो म्रितक' (रू. भे)

म्रितग—देखो 'म्रतक' (रू. भे)

उ०–हरिया पखी पख विन, पड़े रसातलि आय। ऊडण की सरधा नहीं, जीवत म्रितग थाय।—श्री हरिरामदासजी महाराज

म्रितककरम—देखा 'म्रतककरम' (रू. भे.)

म्रितजीवनी—देखो 'म्रतजीवनी' (रू. भे.)

म्रितदिन-सं०पु० [सं० मृत्यु दिवस] मरने का दिन, मृत्यु दिवस।

म्रितमंदिर, म्रितमिंदरि-स०पु० [सं० मृत्यु मंदिर] १ चिता।

उ०— म्रितमिंदरि पैठी मल्हपि, बैठी अंदर जाइ। हरि हरि हरि तिणि वार हुइ, लै सुरमुक्ख लगाइ।—वचनिका

२ श्मशान, मरघट।

म्रितलोक–देखो 'म्रित्युलोक' (रू. भे.)

उ०—सति उमंगै स्रग दिसा, मोह तजै म्रितलोक। टगटग्गी लागी तई, लागा जोवण लोक।—वचनिका

म्रितस्थांन-सं०पु० [सं० मृत्यु+स्थान] मृत्यु की जगह।

म्रिति—१ देखो 'म्रित्यु' (रू. भे.)

उ॰—ऊजळा बारह आदीत मुखकमळ ऊगा। मनोरथ पूगा। म्रिति लाज रा मौड़ बाघा।—वचनिका

२ देखो 'म्रत' (रू. भे.)

म्रितिका-सं॰स्त्री॰ [सं॰ मृत्तिका] १ गोपीचंदन।

२ मिट्टी।

रू॰भे॰—म्रतक, म्रतिका।

म्रितुंजय—देखो 'म्रित्युंजय' (रू. भे.)

म्रितु—देखो 'म्रित्यु' (रू. भे.)

म्रितौ—देखो 'म्रित्यु' (मह., रू. भे.)

उ॰—पलमेक प्रांण कस्टं. सूरा सहंत रण संग्रांमै। जांमणौ जरा म्रितौ, भव भाजै भाखितं भीम।—गु. रू. बं.

म्रित्युंजय-सं॰पु॰ [सं॰ मृत्युञ्जय] १ शिव का एक नामान्तर।

२ वह जिसने मौत को जीत लिया हो, अमर।

रू॰भे॰—मरतुंजय, मिरतुंञय, मिरत्युंजय, म्रनुंजय, म्रत्युंजय, म्रितुंजय।

म्रित्यु-सं॰ स्त्री॰ [सं॰ मृत्यु] १ वह समय, अवस्था या स्थिति जब किसी प्राणधारी का प्राण शरीर से निकल जाता हो, जीवन का अंत, मौत, मृत्यु।

२ अंतिम अवस्था, समाप्ति, अंत।

३ माया।

४ काली।

सं॰पु॰—५ यमराज।

६ काल।

७ ब्रह्मा।

८ विष्णु।

९ कामदेव।

१० कलियुग।

११ एक साम मंत्र।

१२ फलित ज्योतिष में जन्म-कुंडली का आठवां घर जिसमें मरण सम्बन्धी फलाफल का विचार होता है।

१३ फलित ज्योतिष में २८ योगों में से एक।

रू॰भे॰—मरत, मरतु, मिरतु, मिरत्यु, म्रत, म्रति, म्रतु, म्रतू, म्रत्यु, म्रत्यू, म्रित, म्रिति, म्रितु।

मह॰—म्रितौ।

म्रित्युयोग-सं॰पु॰ [सं॰] एक प्रकार का अशुभ योग जो, रवि और मंगलवार को नंदातिथि, गुरु व चन्द्रवार को भद्रा तिथि, बुधवार को जया तिथि, शुक्रवार को रिक्ता तिथि और शनिवार को पूर्णा तिथि होने पर बनता है। (ज्योतिष)

म्रित्युलोक-सं॰पु॰ [सं॰ मृत्यु लोक; मर्त्य लोक] १ वह लोक जहां समस्त प्राणियों का जन्म व मरण होता है, मनुष्यलोक, पृथ्वी लोक।

२ यमलोक।

रू॰भे॰—मरतलोक, मरत्यलोक, मिरतलोक, म्रतलोक, म्रतलोक, म्रत्यलोक, म्रत्यलोकि, म्रत्युलोक, म्रातलोक, म्रितलोक।

म्रिदंग—देखो 'म्रदंग' (रू. भे.)

सुंदरि सोभता सिणगार सफावै वीणा ताळ म्रिदंग बजावै। जिकै छत्रीस राग करि जांणै, वार वार लख घीर बखांणै।—ल. पिं.

म्रिदु—देखो 'म्रदु' (रू. भे.)

म्रिदुता—देखो 'म्रदुता' (रू. भे.)

म्रिदुळ—देखो 'म्रदुळ' (रू. भे.)

म्रिनाळ—देखो 'म्रणाळ' (रू. भे.)

म्रिसावाद—देखो 'मिरसावाद' (रू. भे.)

म्रिजाद, म्रिजादा—देखो 'मरजाद'(रू. भे.)

उ॰—दमा ऊतराद पछमांण पुरब दखण, भोम येक घर रखण ऊसर भागै। म्रजादा प्रसोतम वेखीयौ जकण मग, लखण रघुवीर रा वरद लागै।—गुलजी आढौ

म्लांन-वि॰ [सं॰ म्लान:] १ कुम्हलाया हुआ, मुरझाया हुआ।

२ उदास, खिन्न।

३ थकाहुआ, दुर्बल।

४ मलिन, मैला।

रू॰भे॰—मलाण,

म्लेच्छ, म्लेछ-सं॰पु॰ [सं॰ म्लेच्छ] १ वह जाति या वर्ग जिसमें वर्णाश्रम धर्म न हों।

२ जंगली या अनार्य जाति जो संस्कृत न बोलते हों और धर्म शास्त्र को न मानते हों।

३ विदेशी।

४ मुसलमान, यवन।

उ॰—१ पढ़ै फारसी प्रथम, म्लेच्छ कुळ में मिळ जावै। अंगरेजी पढ़ अवल, होटलां में हिल जावै।—ऊ. का.

उ॰—२ म्लेच्छनतें मिल्यौ नाह सूरनते सिल्यौ नाह। खूटल पैसिल्यौ खास गंधली न गांधी तें।—ऊ का.

५ अनार्यों की भाषा।

६ तांबा।

वि॰—१ नीच, पापी, दुष्ट।

२ जाति बहिष्कृत।

रू॰भे॰—मलिच्छ, मलिमेच,

म्लेछराय-सं॰पु॰ [सं॰ म्लेच्छ+राजा] म्लेच्छ जाति या वर्ग का राजा, इसका नाम भंग पाया जाता है। (व. स.)

म्ह-सर्व॰—मेरा

उ॰—भण रहे जीत समहर अपार, धजवंध स्यांम कारज सधार। थां भुजां लाज जोवांण थांन, म्ह मोर न को नर थां समांन।
— सि. रू.

म्हनै-सर्व॰—मुझे, मुझको।

उ०—म्हनै तौ मिनख री विस्वास मोटो अर सिरै वात लागै ।
—फुलवाड़ी

म्हल—देखो 'महल' (रू. भे.)

उ०—पायेल वाळी पातळी जी इतनौ गरव न बोल,तेरे म्हल चोरी करां तेरा पकडां पायल का पांव ।—लो. गी.

म्हां–सर्व०ब०व०—१ हम ।

उ०—१ रावळा मासापुरा जांणै, थां थकां क्यूं न जांणां । रावळ टीकै बैठै, तरै म्हां नै रावळ वात ।—नैणसी

उ०—२ भाय राजूखां नूं मालम कीवी । कही-म्हां भाज पहलां इसौ कजियौ कियो न सुणियौ । सारा एक मनगरा था ।
—सूरै खींवै कांधलोत री बात

२ हमारा ।

उ०—हव लड़य कइक दिन हुय हरोळ, इळ पती फौज री बळ अतोळ । सभियौ न सांम सूं म्हां संग्रांम, गढ़ दियौ छोड अरू छोड गांम ।—पे. रू.

३ मेरे हमारे ।

उ०—वलिगणउ घरि राखज्यौ जु म्हां प्रीय पाछौ बाहुड़इ । सोवन कचोळी तोही पावस्यूं दूध ।—बी. दे.

उ०—ठाकर नैड़ा बैठ परा'र पूछै है–हे महाराज ! मांग–जाग'र लेवौ । हुकम रा चाकर हां अबळा नै क्यूं पीड़ो ? म्हां लायक हीडो ओढावौ ।—दसदोख

उ०—३ स्वांमीजी कह्यौ म्हां में अवधि भादि ग्यांन तौ छै नहीं । पिण थांरी नूरांणी देखने कह्यौ ।—भि. द्र.

रू०भे०—मांह, मांहां, मांहा, म्हा ।

म्हांकउ, म्हांकौ–सर्व—(स्त्री० म्हांकी) मेरा, हमारा ।

उ०—१ लाख मीलयां मांहि लख लहई । पाडया म्हांकौ प्रीव छइ इण तौ सहिनांण ।—बी. दे.

उ०—२ कोइल करइ टहूकड़ा म्हांकी सहियर, सूंदर फल फूल पांन हे । राजा एक मांजरी ग्रही म्हांकी सहियर, तिम मंत्री परधांन हे ।
—स. कु.

उ०—३ पूगळ हुंता आविया, पूगळ म्हांकउ वास । पिंगळ राजा तास घू मेल्हा थांकइ पास ।—ढो. मा.

म्हांजळो, म्हांजो,म्हांझो–सर्व—(स्त्री० म्हांजी)हमारा, मेरा ।

उ०—१ ढोला, खीलयौरी कहइ, सुंणै कुढंगा वैण । मारू म्हांजी गोठणी, सै मांरूंदा सैण ।—ढो. मा.

म्हांणी–सर्व०—१ मेरी, हमारी ।

उ०—बाकी तीनूं जणा जांण्यौ म्हांणी तौ खैरियत है । जाट झिलतौ व्है तौ झिलण दौ ।—फुलवाड़ी

रू०भे०—मांहणी,

म्हांणे–सर्व०—हमारे, मेरे ।

उ०—थे विण म्हांणै जग ना सुहावो, निरख्यां सब संसार । मीरां रे प्रभु दासी रावळी, लीज्यौ नेक निहार ।—मीरां

रू०भे०—मांहणै

म्हांणौ–सर्व०—हमारा, मेरा ।

रू०भे०—मांहणौ,

म्हांनु, म्हांनू, म्हांने, म्हांनै–सर्व०—हमें, हमको ।

उ०—१ ऐ जठा तांई जेसलमेर री धरती में छै तितरै म्हांनू धरती री आस काई नहीं ।—नैणसी

उ०—२ अजमेर थंई म्हांनु दौ, गढ़ कोट म्हांरै खटावण रा नहीं ।—नैणसी

उ०—३ एक दिन चरचा करतां सवाई रांम ने कह्यौ–थे म्हांने दोखीला कह्यौ, पिण थांरां गुरां नै पिण किवारिया रौ दोख लागै छै ।—भि. द्र.

उ०—४ जेठ के जिठांणी लाड़ली भंवरजी रात्यूं बरफी खाय । भंवर थोडी म्हांने ई मंगाद्यौ जी ।—लो. गी.

उ०—५ तद सूजै जी कयौ–पूजनीक चीजां म्हांनै ई चाईजै है, देवां क्यूं कर ।—द. दा.

रू०भे०—मांहनै ।

म्हांरी—देखो 'म्हारी' (रू. भे.)

उ०—पिता–वचन–पालण वन जावां, वचन पाळ आवां प्यारी । प्रांण–प्रियाजी थे तौ भवन विराजो हे !आ आग्या मांनौ म्हांरी ।
—गी. रां.

म्हांरे, म्हांरै—देखो 'म्हारै' (रू. भे.)

उ०—१ जद स्वांमीजी कह्यौ–थांनै वावेचा पांच रुपइया देवै तौ पिण म्हांरै नां कहिवा रा त्याग है ।—भि. द्र.

उ०—२ म्हांरै तौ बारी ही पुन–परताप है । बियां कनै ही पढ्या–लिख्या अर कांम करणौ सीख्या ।—दसदोख

म्हांरौ–सर्व० [स्त्री० म्हांरी] हमारा, मेरा ।

उ०—१ चारण सूरज देव रा, कै म्हांरा जस काज । कहिया तै जादव कथन, हुवा अमर हरराज ।—वां. दा.

उ०—२ जीवण मरण अजांण, नहिं गैला सैणा नहीं । अवम–रियां ऐनांण, जांणां म्हे म्हांरा जस ।—ऊ. का.

उ०—३ वीनती सुणौ रे म्हांरा वाल्हा, राजि मरुदेवा रांणी ना लाला ।—वि. कु.

उ०—४ सिकारां रम रह्यौ म्हांरौ राज । चंगा बाज राजे असवारां । संग अलवेलो साज ।—रसीलै राज रौ गीत

म्हांसुं, म्हांसूं, म्हांसौं–सर्व० —हमसे, मुझसे ।

उ०—१ बेटौ सगळयां ही मिळि नै आजैपाळ री बहन ने गोद

दीयौ । सगळयां ही कह्यौ तूं टावर पाळि म्हे सरयां हुस्यां थे टावर पाळिज्यौ । म्हांसु न पळै । थे पाळिस्यौ ।चौबोली

उ०—२ जाण देस्यांजी नहि थांनै आलीजाजी । पं'लो विछोहो उवो मारू म्हांसूं नही नीसरै ।—रसीलै राज री गीत

रू०भे०—म्हासूं, म्हासू ।

म्हांहरी—देखो 'म्हारी' (रू. भे.)

उ०—यळ सारी यम ऊचरै, कमसल ओघ कदीम । म्हां ऊभां इज म्हांहरी, सारंग दाबो सीम ।—पा. प्र.

म्हांहरे, म्हाहरै—देखो 'म्हारै' (रू. भे.)

उ०—क्यु थे म्हांहरे काम आवो ।—सतरीवांधी लिखमी री वात

म्हांहरोड़ो—देखो 'म्हारोड़ो' (रू. भे.)

उ०—ओरां रा पिवजी घर वसै ऐ,लंजा ओठीड़ा ऐ लो । म्हांहरोड़ा वसै परदेस, वाला जो ओ ।—लो. गी.

म्हांहरौ—देखो 'म्हारो' (रू. भे.)

उ०—१ ताहरां राजा कहै म्हांहरौ कह्यौ मांनि ईयै नु घरे ले जाह ।—देवजी बगड़ावत री बात

उ०—२ तद ठग र वेटै कही, तौ थे म्हांहरा बहनेई हुवौ ।
—बूढौ ठग राजा री बात

म्हा—देखो 'म्हां' (रू. भे.)

उ०—ए बात स्वांमीजी सुण कह्यौ—म्हांनै हाट छुड़ाई त्यां ऊपर छद्मस्थ रा स्वभाव थी लहर आवारी ठिकांणो, पिण म्हा सूं तो उपगार ईज कीवो ।—भि. द्र.

म्हाइ—सर्व०—मैं, हम ।

रू०भे०—म्हाई ।

म्हाइनुं, म्हाइनूं—सर्व०—मुझे, हमें ।

उ०—म्हाइनुं थांहरै मिळण री वांछा हुती । उवां कहीया म्हांनु ही मिळण री वांछ हुती आइनै मिळीया ।—चौबोली

म्हाई—देखो 'म्हाइ' (रू. भे.)

म्हाचीन्ह—सं०पु०—एक देश ।

उ०—तिण री धाक ईरांण तूरांन रूम स्यांम फिरंग, रूस चीन्ह म्हाचीन्ह ईण देसा देसां रा पातसाह ईण रा हुकम रा आधीन मारा डरै ।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री बात

म्हाजण, म्हाजन—देखो 'महाजन' (रू. भे.)

उ०—मथुरा में कुबज्या कर राखी, म्हाजन की सी हाट । केसर चंदन लेपन कीन्हो, मोहन तिलक लिलाट ।—मीरां

म्हाटो—देखो 'माटो' (रू. भे.)

उ०—सेठां री बात सुण नै भांवण गतागम में पडगी । इण बात माथै कांई विचार करै । सेठ तो म्हाटा जबरी आडी पजाई ।
—फुलवाड़ी

म्हार—१ देखो 'मार' (रू. भे.)

२ देखो 'हमार' (रू. भे.)

म्हारउ—देखो 'म्हारो' (रू. भे.)

उ०—राज लीला सुख भोगियउ, म्हारउ रिखभ सुकुमाल रे । आज सहइ ते परिसहा, भूख त्रसा नित काल रे ।—स. कु.

म्हारयां—सर्व०—मेरी, हमारी ।

उ०—ताहरा मोर कह्यौ म्हारयां परां माहे पैसि ज्युं ले जाऊं ।
—चौबोली

२ देखो 'म्हारी' (रू. भे.)

उ०—१ ताहरां बोली—हे बायां थें दोनूं म्हारयां सोक्यां छो । थे स्यांमसुंदर री खबरि करण आयां छो ।—स्यांम सुंदर री बात

उ०—२ ताहरां तीडी वोली—आगै म्हारयां देवरांणयां जेठांण्यां छै ।—कांवळी जोइयो नै तीडी खरळ री वात

म्हारलो—सर्व० (स्त्री० म्हारली) मेरेवाला, हमारे वाला ।

उ०—कागज जुंवाई जी रौ आयो है अर मीतरो है । का तो म्हारली छोरी कोनीं अर का इयां री छोरो कोनी ।—दसदोख

म्हारा—सर्व०—मेरा, हमारा ।

उ०—सुकवि कुकवि ह्वेमी सुणै, हरखै कहिया जाव । करसी नह म्हारा कवित, खाल उतार खराब ।—बां. दा.

म्हाराज—देखो 'महाराज' (रू. भे.)

उ०—१ हाथी के सिर हाथ दै, मुळक मुळक म्हाराज । अपणो विरद संभार कै, कियो भगत को काज ।—गज उद्धार

उ०—२ विड़द तमारो रांमजी, ले वहीयो म्हाराज । हरीयै गुण औगुण कीया, तोई तमां कुं लाज ।—स्त्री हरीरांमदासजी महाराज

म्हाराजा—देखो 'महाराजा' (रू. भे.)

उ०—राजा रांणी नुं पूछीयौ । ताहरां रांणी कह्यौ महाराजा पांणी री प्यालो म्हाराजा मोल्हीयो हुतौ तिको पांणी हुतौ ।
—चौबोली

म्हारालो—सर्व०—मेरे वाला ।

म्हारी—सर्व०—मेरी, हमारी ।

उ०—१ नहीं तर म्हारी सींव माहे नगारो देरावै जै हूं वेढ न करूं ।—नैणसी

उ०—२ इसो जवाब करता समान तुरती वेग जांणियो जु म्हारी अदब पड़ै इसड़ै कांपियो ।—द. वि.

रू०भे०—महारी, मांहरी, मारी, मा'री, माहरि, माहरी, माहारी, म्हांरयां, म्हांरी, म्हाहरी, म्होरी, म्हौरी ।

म्हारुड़ो, म्हारूड़ो—देखो म्हारो' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—दासी म्हारूड़ा मारुजी से कहना । मोय नींद न आवे नैना ।
—मीरां

म्हारे, म्हारै—सर्व०—मेरे, हमारे ।

उ०—१ नगरी कुंवारा परणसी, म्हारै नवल बने को व्याव, चोखा सेवरडा गूंथ ल्याय ।—लो. गी.

उ०—२ एक वांई कह्यौ स्वांमीजो म्हारै भैस व्यावै जव पधारो तो लाहो लेवूं ।—भि. द्र.

उ०—३ अेकर सासरै जावण दै । मुकलावो लेय पाछो वळती

वेळा। बतावै उणी ठायं हाजर म्हे जावूंला। मरियां ईं कौल नीं तोड़ू, म्हारै माथै विस्वास कर।—फुलवाड़ी

उ०—४ राज अग्या म्हारै सिर राखिस। भूधर तूझ तणा गुण भाखिस।—ह. र.

रू०भे०—मांहरइ, मांहरे, मांहरै, मांहांरै, मांहारै, माहरइ, माहरे माहरै, म्हांरे, म्हांरै, म्हांहरे, म्हांहरै।

म्हारैई–सर्व०—मेरेही।

उ०—जिसै रायमाल दूदावत कयौ–जी इसड़ा अड़ीला डावड़ा म्हारैई है।—द. दा.

म्हारोड़ा, म्हारोड़ौ–सर्व०–(स्त्री० म्हारोड़ी)मेरा, हमारा।

उ०—क्यांनै वाळी, ए बाइ, म्हारोड़ी चांच, म्है थारौ वीर लडा वियो।—लो. गी.

उ०—२ मरज्यौ मरज्यौ ऐ, मिनड़ी, थारोड़ा पूत। म्हारोड़ौ बाटियौ तूं ले गयी। रातां री निरणी वीरां री बहनड़ी।

—लो. गी.

रू०भे०—म्हांहरोड़ौ।

म्हारौ–सर्व०—मेरा, हमारा।

उ०—१ भागल कायर नें वीर स्त्री कहे छै, हे कंथा औ तौ थारौ घड़ायोड़ौ गहणौ, आ थारी करायोड़ी पौसाख, अवे थे धारण करौ म्हारौ तौ सुहाग गयौ।—वी. स. टी.

उ०—२ म्हे तौ वारघा, ए बहूजी, थांरा बोलने। लडायौ म्हारौ सौ परवार। सहेल्यां ए आंबौ मोरियौ।—लो. गी.

रू०भे०—महांरौ, मांहरौ, मांहारौ, मा'रौ, माहरउ, माहरु, माहरू माहरौ, माहारौ, म्हांरौ, म्हांहरौ, म्हारउ, म्होरौ, म्हौरौ।

म्हालण–सं०पु०—चौहान वंश की एक शाखा।

म्हालणौ, म्हालबौ—देखो 'माल्हणौ, माल्हबौ' (रू भे.)

उ०—१ जलौ म्हारी जोड़ रौ उदियापुर म्हालै रे।

उ०—२ बंस विसुद्ध वरीयांम साम्हौ विढ़ण। घणा दिसि दोइणां म्हालियौ विरद घण।—हा. झा.

उ०—३ प्यार संप्रदा जिण हित चाली, प्रगट हुई ज्यूं झांझी पाली। महिळा नीर भरण ने म्हाली,खारौ जळ ऊंडौ तळ खाली।

—ऊ. का.

म्हालणहार, हारौ (हारी), म्हालणियौ—वि०।

म्हालिओड़ौ, म्हालियोड़ौ, म्हाल्योड़ौ—भू० का० कृ०।

म्हालीजणौ, म्हालीजबौ—कर्म वा०।

म्हालियोड़ौ—देखो 'माल्हियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० म्हालियोड़ी)

म्हावत—देखो 'महावत' (रू. भे.)

उ०—रावत झाटक रजां, गजां म्हावत गरदाया। सपड़ाया जळ सींच, बळे चितरांम वणाया।—मे. म.

म्हासती—देखो 'महासती' (रू. भे.)

उ०—सतियां म्हासतियां कहतां तन सोहैं, मधुरी वांणी मुख प्रांणी मन मोहै। रजपूतांणी रुच सींचांणी सिरखी, नैणां जळ भरती सैणां थळ निरखी।—ऊ. का.

म्हासूं, म्हासू—देखो 'म्हांसूं' (रू. भे.)

म्हीणौ—देखो 'महीनौ' (रू. भे.)

म्हूं, म्हू—देखो 'म्हैं' (रू. भे.)

म्हें, म्हे—देखो 'म्हैं' (रू. भे.)

उ०—१ आवौ घड़ी एक तो अमल पांणी करनें भेळा वैसां। पछै थांरै मारग जाजो नें म्हें म्हारै मारग जासां।—ढो. मा.

उ०—२ थे कहो तो डावड़ियां परणावां। डूंगर कह्यौ–भली वात छै। वेटियां परणावौ। म्हे हीड़ा करस्यां। तद समरसी व्याह थापिया।—नैणसी

उ०—३ झूलाया किणरा नहि झूलां, फूलायां नहि फूलां। भूलाया थारा म्हे भूलां, भूलाया नहि भूलां।—ऊ. का.

उ०—४ नरेस कहियौ पहलौ मऊ रौ फरमांण आयौ जरै ही म्हे तौ जांणि लीधी अब साह रै म्हारा माथा सूं कांम पड़ियौ।

—वं. भा.

म्हेमांन—देखो 'मे'मांन' (रू. भे.)

उ०—वरसिंघ मेड़ते दिन राव बीका दुदा नुं राख म्हेमांन करनै सीख दी।—नैणसी

म्हेल—देखो 'महल' (रू. भे.)

उ०—१ आगरणी रौ म्हेल हमार दौलतखांना रौ चौक है तीं में थौ सो करायौ १७०३।—नैणसी

उ०—२ आंमी सांमी म्हेल देवरिया नित उठ पोढण आवोजी, इस पोढण के कारणे देवर प्यारा लागोजी।—लो. गी.

म्हेलणौ, म्हेलबौ—देखो 'मेलणौ, मेलबौ' (रू. भे.)

उ०—१ रा. वीरमदे रा हेरायत म्हेलीया था सु आया, खवर दी, कह्यौ–सहे सो आप रा साथ सुं रेयां माहे वैठो छै।—नैणसी

उ०—२ पंच सहेली मिळी घन साथ। पीरी म्हेली घन अपइण हाथ।—वी. दे.

म्हेलणहार, हारौ(हारी), म्हेलणियौ—वि०।

म्हेलिओड़ौ, म्हेलियोड़ौ, म्हेल्योड़ौ—भू० का० कृ०।

म्हेलीजणौ, म्हेलीजबौ—कर्म वा०।

म्हेलियोड़ौ—देखो 'म्हेल्हियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० म्हेलियोड़ी)

म्हेसुरी—देखो 'माहेस्वरी' (रू. भे)

उ०—जठै म्हेसुरी अगरवाळा नहीं हैं, वठै रा बांमण कीं माथै धरम री धाक जमावै अर कीरै पड़ पंचायती में जावै।—दसदोख

म्हैं, म्है–सर्व०—हम, मैं।

उ०—१ ताहरा अग्जणजी डेरै आय नै कह्यौ–जु म्हैं म्होटौ (वोन) वोलियौ छै- रिणकताळ पळकेक में भलौ छै जकण रौ भलौ।—नैणसी

उ०—२ तब स्वामीजी पहिलां ही बोल्या-म्हैं तो थांनै आगै देखाड नहीं, नहीं अनै म्हारै थांरै सद्धा आचार मिल जासी तो आहार पांणी भेळो कर लेवां तो अटकाव नहीं।—भि द्र.

उ०—३ इण वीर स्त्री रै वासतै म्है वाळण नै कढायो आ तो मुहगो ही लेलेती।—वी. स. टी.

उ०-४ दळ दोहुं राह जीतो अभंग,ग्रह लिया साह म्हां कीध जंग। खंधार, वळां खदरांण खेत, जुद्ध करै भुजबळ म्है अजेत।—सि. रू.

रू०भे०—मेहू, म्हूं, म्हू, म्हैं, म्हें।

म्हैंइ, म्हैई-सर्व०—हम भी, मैं भी।

उ०—जब ते बोल्या-भूख लागां आहार करै। जद स्वांमीजी कह्यो म्हैंइ सी लागां कपड़ो ओढां।—भि. द्र.

म्हैमांनी—देखो 'मैंमांनी' (रू. भे.)

उ०—मूळराज सीहाजी नुं सारै साथ सुधा मोहोना में ले गया। वडी म्हैमांनी कीधी।—नैणसी

म्हैर—देखो 'महर' (रू. भे)

उ०—थारै रूस्यां रांणां कुछ नहि बिगडै, अब हरि कीनी म्हैर। मीरां के प्रभु गिरधरनागर, हठ कर पी गई ज्हैर।—मीरां

म्हैरवांन—देखो 'मैंरवांन' (रू. भे.)

म्हैरवांनी—देखो 'मैंरवांनी' (रू. भे.)

उ०—मेजर साब वेलण म्हैरवांनी सैं बुलाया। पालट साब भादुर छांवणी सूं फेरि आया।—सि वं.

म्हैल—१ देखो 'महल' (रू. भे.)

उ०—१ आवौ आवौ जी रंगभीना म्हारै म्हैल। प्यालो तो लियां हाजर खड़ी।—मीरां

उ०—२ कदे ये न सूता रळ मिळ सेज में जी ओ जी पियाजी अब घर आवो थारी प्यारी उडीके म्हैल में जी—लो. गी.

उ०—३ कंवर वीरमदे मरजीदांन खवास नै ले। पनां कै म्हैल आयो।—पनां

२ देखो 'महिळा' (रू भे.)

उ०—म्हैलां बम बस मात रै, मंत्री बम मुरझाय। मंगण मिळियां रोयदे, चोदू सूंब कहाय।—बां दा

म्हैलणो, म्हैलबो—देखो 'मेलणो, मेलबो' (रू. भे.)

उ०—पछै असवारां री थंडी वांसै राखियो। सै असवार २० तथा २५ आगै म्हैल नै जेसळमेर सहर री खबर लिराई।—नैणसी

म्हैलणहार, हारो (हारी), म्हैलणियो—वि०।

म्हैलिओड़ो, म्हैलियोड़ो, म्हैल्योड़ो—भू० का० कृ०।

म्हैलीजणो, म्हैलीजबो—कर्म वा०।

म्हैला—देखो 'महिळा' (रू. भे.)

म्हैलियोड़ो—देखो 'मेलियोड़ो' (रू. भे)

(स्त्री० म्हैलियोडी)

म्होंडो—देखो 'मूंडो' (रू. भे.)

उ०—१ इण बेड़ी घाली कैद किया गो इण रो म्होंडो न देखूं।
—गोड़ गोपाळदास री वारता

उ०—२ उठै सूं कोठी में घात, बाहर मांणस था उठा रै म्होंडा आगै आंण नांखियो।—अमरसिंह गजसिंहोत री बात

म्होड़ी-सं०पु०—१ एक प्रकार का वस्त्र।

२ देखो 'मोटो' (रू. भे.)

म्होड़ो—देखो 'मोडो' (रू. भे.)

म्होटो—देखो 'मोटो' (रू. भे.)

उ०—१ पछै सुख कियो, तरै बेटो कान्हड देव जायो। म्होटो हुवो। कुंवरपदो कान्हड़दे जी नुं दियो।—नैणसी

उ०—२ ताहरां अरजणजी डेरै आयनै कह्यो-जु म्हैं म्होटो(बोल) बोलियो छै।—नैणसी

उ०—३ श्री मल्लीनाथ जी ना छह मित्र, महाबल प्रमुख मुनिराय। सरवे मुक्ति सिधाव्या, म्होटी पदवी पाय।—जयवांणी

(स्त्री० म्होटी)

म्होबत—देखो 'मुहब्बत' (रू. भे)

उ०—अधविच में मत तोड,म्हतवारी के तार ज्यूं ज्यूं। ज्यूं टूटै त्यूं त्यूं जोड एजी प्यारी जी म्होबत ओड लगांनी चैये मेरो ज्यांन।
—लो. गी.

म्होर—१ देखो मोहर' (रू. भे.)

उ०—१ कहणी प्रभु रीझै न कछु, रहणीरीझै रांम। सुपने री मो म्होर सूं, कोडी सरे न काम।—ऊ. का.

उ०—२ रोक रुपैयो भंवरजी मैं बणूजी, हांजी ढोला बण ज्याऊ पीळी पीळी म्होर।—लो. गी.

म्होरी—१ देखो 'मोरी' (रू. भे.)

२ देखो 'म्हारी' (रू. भे.)

म्होरो—१ देखो 'मोरो' (रू. भे.)

उ०—निज दळके किवाड जंगू के जैतवार अंगू के ओनाड आधू के उदार काछवाछू के अडोळ अनीके म्होरे, मेरगिर के तोलरिण....
—र. रू.

२ देखो मोरो' (रू. भे)

३ देखो 'म्हारो' (रू. भे.)

म्होड़ो—देखो 'मोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री० म्होड़ी)

म्होडो—देखो 'मोडो' (रू. भे.)

(स्त्री० म्होडी)

म्होरी—१ देखो 'मोरी' (रू. भे.)

२ देखो 'म्हारी' (रू. भे.)

म्होरो—१ देखो 'मोरो' (रू. भे.)

२ देखो 'म्हारो' (रू. भे.)